शुक·
परीक्षित
निगमकल्पतरुः
गोकर्ण·
प्रतरूपी
धुंधुकारी
नारद
वै·
भ·
ज्ञा·

आनन्दाम्बुनिधिकी-

प्रस्तावना।

हे मनुष्यतनुधारि विचारशील सज्जनो ! यह अमूल्यरत्नरूप नरशरीर लब्ध होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष संपादन करना अत्यावश्यक है क्योंकि यह नर शरीर बड़ी कठिनतासे लब्ध होताहै; परंतु भगवत्कृपा विना तो यह मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता, इसलिये हरिशरणागति ही चतुर्वर्गको सिद्ध करनेवाली है, क्योंकि कलिमेंतो मोक्षभी हरिभक्तिद्वारा ही कहा है जैसे "कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा" इसलिये वैष्णवोंके हरिभक्तिको पुष्ट करनेवाला श्रीमद्भागवतसे भिन्न अन्य शास्त्र नहीं, इसीकारण परमज्ञानी महर्षि शुकदेवजीने श्रीमद्भागवतका ही श्रवण, मनन और निदिध्यासन रक्खा है जैसे "पठन्भागवतं शनैः" अर्थात् शनैः शनैः श्रीमद्भागवतका पाठ करते हुए शुकदेवस्वामी राजा परीक्षित्के कल्याणार्थ गंगातटपर प्राप्त हुए। (प्रश्न) भागवतमें ऐसी सर्वोपरि कल्याण करनेवाली शक्ति कहाँसे आई (उत्तर) भगवान् श्रीकृष्णचंद्रने उद्धवके प्रति कहा है कि, हे उद्धव ! यह श्रीमद्भागवत "पुराणार्कोऽधुनोदितः" अर्थात् पुराणोंमें सूर्यरूप है और हे उद्धव ! जगत्के कल्याणार्थ इसमें हम अपना तेज प्रविष्ट करके भूतलमें स्थापनकर वैकुंठ धामको जायँगे। इसलिये शेष आदिकोंने गाया है माहात्म्य जिसका; ऐसे इस श्रीमद्भागवतका माहात्म्य हम स्वल्पबुद्धि एक मुखसे कैसे कहसकते हैं ? और जो कुछ कहैं भी तो वह पिष्टपेषणसे कुछ पृथक् न कहावेगा इसलिये इस वृत्तान्तको यहीं समाप्त करते हैं। अब जिस पद्यभाषात्मकटीकारत्न "आनन्दाम्बुनिधि" नाम टीकासे भूषित होकर जो यह पुराण यहां तैयार हुआहै उसकी प्रशंसा लिखे विना तो चित्तको तृप्तिही नहीं होती है इस कारण कुछ लिखते हैं। भागवतशिरोमणि, परमकारुणिक, वैकुंठवासी रीवाँनरेश श्रीमहाराजाधिराज श्री १०८ श्रीरघुराजसिंहजूदेवने वेदव्यासजीके समान बहुत भाषाग्रंथ निर्माण कर चित्त शांत न होनेपर महात्माओंकी प्रेरणासे चित्तशांतिके लिये-ब्रह्मवैवर्त्त, हरिवंश, वायुपुराण, गर्गसंहिता, नृसिंहपुराण, विष्णुपुराण और रामायण इत्यादिकोंसे प्रसंगोपात्त अतिरोचक कथायें लेकर श्रीमद्भागवतकी पद्य भाषात्मकटीका "आनन्दाम्बुनिधि" नामक निर्माणकी है। इस टीकामें नृपवरने साहित्यके सर्व अंग ऐसे दरशाये हैं कि, इसको पढते २ भक्ति रसिकजनोंकी रुचि यहाँतक बढती चली जाती है कि, इसको छोड़नेको चित्त कदाचित् नहीं चाहता, विशेष क्या लिखें पद्यबंध भाषाकाव्योंमें महात्मा तुलसीदासजी और सूरदासजीकी कविताके समान अन्य कविता नहीं; परंतु इस "आनन्दाम्बुनिधि" के विख्यात न होनेके कारण इसकी प्रशंसा लिखनेमें हम को संकोच करना पड़ता है। जब इसकी प्रसिद्धि हो जायगी तब तो भक्त कविजन स्वयं ही कहने लगेंगे कि, हाँ कविता अत्युत्तम होनेके कारण तुलसीदासजी और सूरदासजीकी कवितासे न्यून नहीं है। बड़े शोकका स्थल है कि, साधारण कविजन महात्माओंकी वाणी मानकर रामायण और सूरसागरकी प्रशंसा करेंगे और राजाकी वाणी मानकर आनन्दाम्बुनिधिकी प्रशंसा नहीं करेंगे, परंतु ऐसा नहीं, उक्त महाराजासाहिब तो महात्माही थे। धन्य है कि, जिन्होंने राज्य करते हुए भी राजाजनकके समान मोक्ष संपादन किया। यदि सुहृद् कविजन पक्षपातको छोड़कर कविता मात्रको देखेंगे तो कदाचित् यह नहीं कहेंगे कि, तुलसीकृत रामायण और सूरसागरकी अपेक्षा यह कुछ नीरस कविता है। बड़े संदेहका स्थलहै कि किंचित् न्यूनाधिक वस्तुओंका न्यूनाधिकभावकी परीक्षा उत्तम परीक्षक विना नहीं होसकती। यदि गोस्वामी तुलसीदासजी और सूरदासजीके दृष्टिगोचर यह ग्रंथ होता तो वे महात्मा स्वयं राजाकी कविताकी प्रशंसा करते। अथवा अब तो संदेह होनेके कारण हे सरस्वति देवि ! आपसे प्रार्थना है कि रामायण और सूरसागरके सदृशगुणोंवाली आनंदाम्बुनिधिकी प्रभा हमको चंद्रप्रभाके समानही प्रतीत होती है परंतु यथार्थतासे हम कैसे कहसकें, क्योंकि चंद्रप्रभाके रसको जाननेवाला तो एक चकोरपक्षी ही है वहां आप नहीं फुरती और जहां शुकमुखमें आप फुरती हो तो यह चंद्रप्रभाके रसको नहीं जानता; हाँ यदि आप कृपाकरके शुकमुखकी समान चकोरमुखमें फुरो तो यह चकोर कह सकता है कि, चंद्रप्रभामें और महाराजासाहिबकी कविताकी प्रभामें यह अन्तर है। अब विशेष लिखना व्यर्थ है, क्योंकि सागरका जल कभी गागरमें समा सकता है ? फिर न्याय भी है कि "प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्" अर्थात् प्रत्यक्षमें प्रमाणका क्या प्रयोजन इसको प्रत्यक्ष देखनेसे आप महाशयोंको इसके गुणविदित हो ही जाँयगे। यह "आनन्दाम्बुनिधि" ग्रंथ राज्यसिंहासनासीन रीवाँनरेश महाराजासाहिब श्री १०८ श्रीवेङ्कटरमण सिंहजूदेवने पिताका यश विख्यात होनेके कारण मुद्रित करनेके लिये हमको आज्ञा दी। उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर हमने निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" यंत्रालयमें मुद्रित कर प्रकाशित किया है और भी महाराजासाहिबके निर्माण किये 'भक्तमाला (रामरसिकावली) रामस्वयंवर, रुक्मिणीपरिणय, जगदीशशतक, रघुराजविलास, आनन्दाम्बुनिधि इत्यादि ग्रंथ तो हमारे यहां मुद्रित होकर तैयार हो चुकेहैं' और 'धर्मविलास, शंभुशतक, सुभगशतक, रघुपतिमृगयाकर, सुंदरशतक, गंगाशतक, नीलाचलपतिशतक, चित्रकूटमहिमा, पदावली, रघुराजविलास, विनयपत्रिका, विनयप्रकाश, राजरञ्जन, ये ग्रंथ मुद्रित होनेवाले हैं इसलिये उक्त महाराजासाहिबको कोटिशः धन्यवाद देते हैं कि, जो अपने तातके यशके लिये रत्नरूप ग्रंथ प्रकाशित कराय २ जगद्धितैषी होरहे हैं। उक्त महाराजासाहिबकी विद्याशीलता, स्वधर्मरुचि, यश अभिरुचि, दानशूरता, रणशूरता, नीतिज्ञता प्रजापालनतत्परता इत्यादि स्वाभाविकगुणोंको सुन २ हर्षसे रोमांचित हुए हम परमकारुणिक श्रीवेङ्कटेश्वर भगवान्से नित्य यह प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभो ! उक्त महाराजासाहिब, उदयाचलसदृश राज्यसिंहासनारूढ़ हुए, तरुणतर तरणिसदृश प्रकाश करते हुए कमलखंडसदृश निज प्रजाको प्रफुल्लित करते हुए तरणि तारानाथके साथतक भारतभूमिको विभूषित करो. अंतमें सज्जन रसिक महाशयोंसे प्रार्थना हैकि, यदिकोई छपते समय इसमें अशुद्धि रहगई हो तो उसे क्षमाकरें. इत्यलम्.

गुणिजनप्रेमाभिलाषी—

क्षेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष-(मुम्बई.)

॥ श्रीः ॥

अथ श्रीमद्भागवत (आनन्दाम्बुनिधि) पद्यात्मकभाषानुवादस्य विषयानुक्रमः प्रारभ्यते ।

इति तृतीयस्कन्ध ॥ ३ ॥

चतुर्थस्कन्ध ४.

इति चतुर्थस्कंध ॥ ४ ॥

पंचम स्कन्ध ५.

इति पञ्चमस्कन्ध ॥ ५ ॥

षष्ठस्कन्ध ६.

इति षष्ठस्कन्ध ॥ ६ ॥

सप्तमस्कन्ध ७.

इति सप्तमस्कन्ध ॥ ७ ॥

अष्टमस्कन्ध ८.

इति अष्टमस्कन्ध ॥ ८ ॥

नवमस्कन्ध ९.

इति नवमस्कन्ध ॥ ९ ॥

दशमस्कन्धपूर्वार्द्ध १०.

इति पूर्वार्द्ध ।

दशमस्कन्ध–उत्तरार्द्ध ।

इति दशमस्कन्ध उत्तरार्द्ध ।

एकादशस्कंध ११.

इति श्रीमद्भागवत (आनन्दाम्बुनिधि) पद्यात्मकभाषानुवादस्य विषयानुक्रमः समाप्तः ।

प्रथमस्कन्ध
नारद
व्यास
कलि
परीक्षित्
उत्तरा
कृष्ण
पांडव कौरव
भीष्म
शमीक ऋषि
परीक्षित्
परीक्षित्
शुक
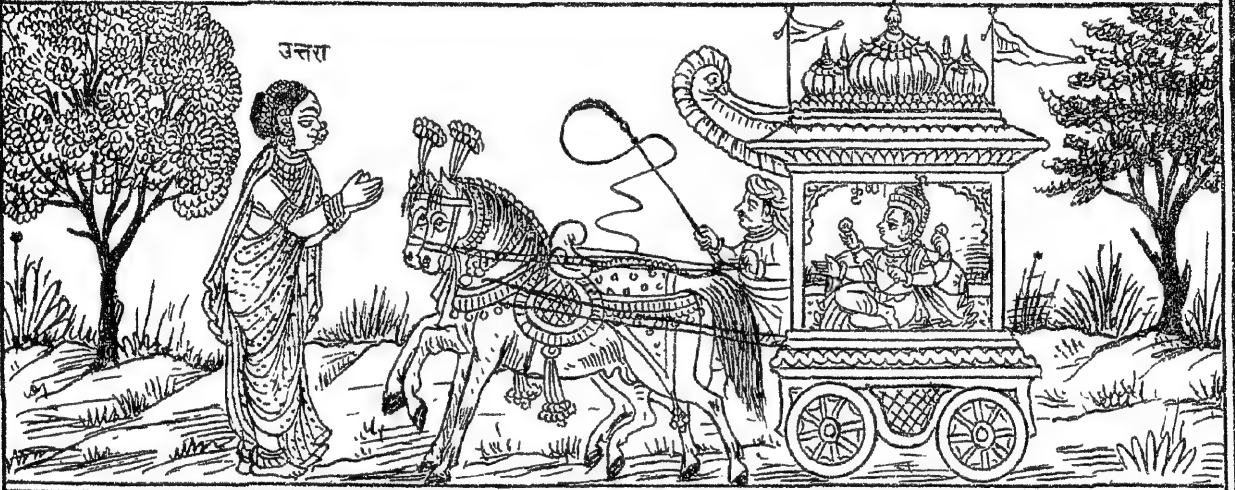
श्रीमद्वेङ्कटेशोविजयते ।

आनन्दाम्बुनिधि.

श्रीमद्भागवतका पद्यात्मक भाषानुवाद ।

श्री १०८ श्रीमहाराजाधिराज राजाबहादुर श्रीकृष्णचन्द्र कृपापात्राधिकारी श्रीरघुराजसिंहदेवजू प्रणीत ।

सोरठा—जयहरिपदअरविंद, भक्तभृंगआनंदकर ॥ स्रवतसुयश मकरंद, कुमति क्रूरता तापहर ॥

छप्पय—भवभयभंजनकरनपूरमनकामजननके । तीर्थास्पदविधिशंभुवंद्यमुनियोग्यमननके ॥
प्रणतपालभवसिंधुयोजजेहिसुरमुनिगावैं । जाकीसेवाछोड़ि भक्तजनमुक्ति न ध्यावैं ॥
कुलकुमतिहरणअशरण शरणभक्तिभरण सुखप्रदनरन । अज्ञानछरनआपदहरन वंदौंश्रीयदुवरचरन ॥

दोहा—तजिसुरदुर्लभसंपदा, पितुशासनधरिशीश । जिनकीन्ह्योवनकोगमन, जयतिरामजगदीश ॥

सवैया—भारतेपीडितभूकोविलोकिकैजेप्रगटेमथुरामेंमुरारी । लीलाअनंतकरीब्रजमें दुखदाई अनेकनि मारिसुरारी ।
द्वारका औ मथुरामें बसेप्रभु दासनको सबभाँति सुधारी । ते यदुनंदनके पदवंदतहैं रघुराज सदै सुखकारी ॥
देवनसोगकीऔधिविलोकिकैनाशनकीकरिऔधिखरारे । रूपकीऔधिधन्यौनरकोवपुमातुपितामुदऔधिपसारे ।
दुःखकीऔधिप्रजानिदेखाइसुवीरताऔधिकेदुष्टनमारे । कीरतिऔधिकैदानकीऔधिदैऔधिपुरीअवधेशसिधारे ॥

दोहा—तवपदपोतप्रभावलहि, हेदशरत्थकुमार । ज्ञानसिंधुभागवतको, पावन चाहौं पार ॥
मीन कमठ शूकर नृहरि, वामन राम सुराम । राम कृष्ण बुध कल्किपद, वंदौंप्रदमनकाम ॥

दंडक—जयतिनँदनंदआनंदवरकंदनिजदासद्रुतदीहदुखद्वंद्वहरता । सुमुखअरविंदद्युतिमंदकरचंदबहुलखतसुखसिंधुउरअवशिढरता ॥ भनतरघुराजब्रजराजराजतरुचिरकोटिरतिराजछबिमंदकरता । कुमतिखंडनकरनसुमतिमंडनकरनआपनेजननकेआपभरता ॥

दोहा—जयजयजयब्रजनाथप्रभु, तुवपद नाऊंमाथ । श्रीभागवतपयोधिके, पारकरहुगहिहाथ ॥
जानहुँनहिंकछुछंदगति, नहिंग्रंथनकीरीति । आनँदअंबुनिधेरचों, तुवपदकरिपरतीति ॥
नंदनंददयासदन, विनयकरहुँकरजोरि । जानिआपनोदासप्रभु, करहुविमलमतिमोरि ॥
ध्रुवकपोलनिजशंखते, परसिविमलमतिकीन । निजप्रस्तुतिकरवायप्रभु, द्रुतहिदासकरिलीन ॥

दीनदयालुनदूसरो, तुमसमहेयदुनाथ। गुणिअनाथनिजहाथमम, शिरधरिकरहुसनाथ॥
एकभरोसो आपको, अहै न मेरे ओर। दीजेमति यहरचनकी, श्रीवसुदेवकिशोर॥
सवैया—जाकीप्रभावरकुंदकलानिधिहारतुषारपहारलजावै। पाणिमेंवीणाविराजतहैअँगअंबरश्वेतअनूपसोहावै।
अंबुजआसनमेंविलसै सुरवंदित जासुपदांबुज भावै। सोजगदंब सरस्वतिदेवि सदारघुराजकी बुद्धिबढ़ावै॥
दोहा—तेरीकृपाकटाक्षको, करिभरोस जगमात। रचत अहौंआनंदको, अंबुनिधैअवदात॥
कहँमोलघुमतिकहँ अगम, यहसागरजगदंब। तेरिकृपासों पोतको, अहैएक अवलंब॥
ताते हेसरस्वतिजननि, करहु कृपा अबसोइ। तेरे यह लघुदासकी, जामें हँसी न होइ॥
जयजयगणपतिगजवदन, विघनकदनशुभरूप। एकरदनआनँदसदन, वंदौं चरणअनूप॥
विनयकरहुँकरजोरिकै,सुनियेयहगणनाथ। आनँदअंबुनिधैरचत, विघनविनाशहु नाथ॥
स०—याकलिकालकरालविलोकिकैजीवनकीगतिहोतनजानी।सत्यवतीकेलियोअवतारजुव्यासस्वरूपह्वैसारँगपानी।
आठदशैसुपुराणनको अरुभारतको विरच्यो गुणखानी। वंदतहै तिनकेपदको रघुराजसदा युगजोरिकै पानी॥
ज्ञानविरागहुयोगविहीनन दीननको हरिओर लगोतो। याकलिकालकरालकलेशको कोअनयासहिमें हठिखोतो॥
टारतकोरघुराजगोविंदकेभक्तिसुधारसकोसुखसोतो। सातादिनामेंकोतारतोभूपहि जोजगमेंशुकदेवनहोतो॥
दोहा—व्याससुवनशुकदेवके, वंदौंपदजलजात। आनँदअंबुनिधैरचन, देहुबुद्धि अवदात॥
संतकमलपदअतिअमल, वंदहुँबारहिंबार। जेहिरजशिरधारतमिलत, श्रीवसुदेवकुमार॥
चौ०—जेहिसुमिरतदुखजातनशाई। वंदौंसंतचरणसुखदाई॥ जेहिपरसतकलिजातपराई। वंदौंसंतचरणसुखदाई॥
जेहिप्रभावनहिंभ्रमनियराई। वंदौंसंतचरणसुखदाई॥ तीरथजेहिनलहतसमताई। वंदौं संतचरणसुखदाई॥
जेहिधारतशिरश्रीयदुराई। वंदौं संतचरणसुखदाई॥ तरतपराशिजेहिक्रूरकसाई। वंदौंसंतचरणसुखदाई॥
हृदयग्रंथिजेहिलहिखुलिजाई। वंदौंसंतचरणसुखदाई॥ कलिमहँजेहिविनकछुनउपाई। वंदौंसंतचरणसुखदाई॥
चहतजाहिनितसुरसमुदाई। वंदौंसंतचरणसुखदाई॥ जोतारतभवनिधिवरियाई। वंदौं संतचरणसुखदाई॥
वेदपुराणकीर्तिजेहिगाई। वंदौंसंतचरणसुखदाई॥ जीवनजीवनमूरिसोहाई। वंदौं संतचरणसुखदाई॥
दोहा—सुंदरसंतसरोजपद, महिमा जासुअपार। वेदनजाकोकहिसकैं, मैंकिमिकरौं उचार॥
परंपरामेंगुरुनकी, वंदतहौं प्रदक्षेम। जाकी समता लहतनहिं, जप तप संयम नेम॥
कमलापतिकेपदकमल, वंदौं परमउदार। जासुकृपाबलसतजनन, जननकिये भवपार॥
चौ०—कृष्णसहचरीजयहितकरनी। रमादयाततनहिंदमधरनी॥वंदौंविष्वक्सेनकृपाले। हरिसेनापतिओजविशाले॥
पायभीतिजाकेवरडंडा। तजै न मर्यादाब्रह्मंडा॥ तासुशिष्यशठकोपहिनाऊं। तिनकेचरणकमलशिरनाऊं॥
तासुशिष्यपुनिनाथमुनीशा। तिनपदधरहुँआपनोशीशा॥ तासुशिष्यपुंडरीकाक्षकहँ। बारबारवंदौंप्रमोदमहँ॥
राममिश्रतेहिशिष्यसुज्ञानी। तिनकेपदवंदौंयुगपानी॥ तासुशिष्यजासुनजगत्राता। वंदौंतिनकेपदजलजाता॥
दोहा—ताकेशिष्यभयेविमल, पूर्णाचार्यमहान। तिनकेपदवंदनकरौं, निजजनदयानिधान॥
चौ०—तासुशिष्यलक्ष्मणमुनिस्वामी। तिनकेपदपंकजननमामी॥तासुशिष्यगोविंदाचारी।मैंवंदौंतिनपदसुखकारी॥
भयेपराशरभट्टशिष्यजिन। वंदौंपरमप्रीतिसोंपदतिन॥तासुशिष्यकलिवैरिदासमुनि। वंदौंतिनपदमंगलप्रदगुनि॥
तासुशिष्यश्रीकृष्णपादवर। वंदौंतिनपदसुखदजोरिकर॥ तासुशिष्यवरलोकाचारज। मैंवंदौंतिनकेपदआरज॥
शैलनाथतिनशिष्यसोहाये। तिनपदवंदौंअतिमनलाये॥ तिनशिषभयेरम्यजामातर। तिनपदमैंवंदौंयुतआदर॥
दोहा— वादभयंकरशिष्यतेहि, तिनपदनाऊंमाथ। श्रीनिवासतेहिशिष्यवर, वंदौं होननाथ॥
चौ०—तासु शिष्य रामानुजकेरे। वंदौं चरण कमल मुदटेरे॥वत्सपुत्ररामानुजजिनके।शिष्यभये वंदौंपद तिनके॥
सुंदरकृपापात्ररामानुज। तिन पद वंदौं मेटन भवरुज॥ तासुशिष्य प्रदवादभयंकर। तिनपदवंदौंज्ञानभक्तिकर॥
शिष्यव्यंकटाचार्यभयेवर। वंदौंतिनपदकलितमदिमकर॥ श्रीनिवाससुंदरशिषउनके। वंदौंचरणकमलमैंतिनके॥
तासुशिष्यरामानुजनामा। तिनकेपदवंदौंसुखधामा॥ सालंकायनश्रीनिवासगुर। तिनकेपदध्याऊंमैंनिजउर॥

दोहा-मंत्ररत्नकुलकमलरवि, श्रीमन्नाथमुनीश । वंदौंतिनकेपदविमल, पुनिपुनिधरिमहिशीश ॥
शिष्यतासुजेवारमुनीशा । पुनिपुनिनाऊंतिनपदशीशा ॥ तासुसौम्यजामातरस्वामी । तिनपदबारहिंबारनमामी ॥
तिनकेशिष्यजगतजनत्राता । निजजनकहँश्रीहरिपददाता ॥ कृपापात्रनीलाद्रिनाथके । वर्द्धकवरवेदांतगाथके ॥
श्रीसंप्रदासमुद्रसुधाकर । कारुण्यादिगुणनकेआकर ॥ वासकियोनीलाचलमाहीं । कियउद्धारअमितजनकाहीं ॥
कृपासिंधुश्रीराजगोपाला । वंदौंतिनपददीनदयाला ॥ जाकेबलजगसागरतरिहौं । यहकलिकालकरालनडरिहौं ॥
दोहा-हेश्रीराजगोपालप्रभु, तवपदकृपाअधार । सोलहिआनँदअंबुनिधि, जानचहौंभवपार ॥
चौ०-श्रीहरिगुरुमुकुंदममस्वामी।कृपापात्रविनतासुतगामी॥जगजीवनलखिपरमअनाथा।प्रगटेकनउजदेशहिनाथा॥
कछुकालहिमेंभयोविरागा । हरिपदमहँउपज्योअनुरागा॥कुलपरिवारगेहतजिदीन्ह्यो । कछुदिनगंगासेवनकीन्ह्यो ॥
पुनिअसमनविचारकियनाथा । दरशनकरहुँनिलाचलनाथा ॥करतपर्यटनदेशनिमाहीं । देतज्ञानबहुलोगनकाहीं ॥
नीलाचलकहँगयेकृपाला । दरशनलैजनभयेनिहाला ॥ लैदरशनजगदीशहिकेरो । वसेसहितआनंदघनेरो ।
दोहा-तहँश्रीराजगोपालगुरु, निजढिगप्रभुकोआनि । कियोसमाश्रेमुदितमन, महतपुरुषपहिचानि ॥
चौ०-तहाँनाथकछुकालहिमाहीं।पढ्योनिखिलवेदांतनिकाहीं॥इतिहासनपुराणप्राचीने। औरौभक्तिग्रंथपढ़िलीने॥
सेवनकरहिंसुमहाप्रसादा । रहहिंएकांतसहितअहलादा॥हरिविमुखनकहँकरिउपदेशा।दियोप्रापतिकरिश्रीपतिदेशा॥
सिखवतजननभक्तिकीरीती।यहिविधिगयोकालकछुबीती ॥ श्रीगुरुराजगोपालविज्ञानी । यहअपनेमनमेंअनुमानी॥
सबआचार्यननिकटबोलायो । सभामध्यअसवैनसुनायो॥ममस्थानअधिपकेलायक।कियोमुकुंदहिश्रीरघुनायक ॥
दोहा-कृपापात्रजगदीशके, एहैंज्ञानअगार । इन्हैंसौंपिदीबोउचित, और न कछूविचार ॥
चौ०-सोसुनिसबसम्मतयहकीन्हे।पदवीआचारजकीदीन्हे॥कह्योबहुरितिनकोगुरुज्ञानी। यहऐश्वर्य लेहुगुणखानी॥
सोनलियोगुरुआयसुमाँगी । ह्वांतिचलेकृष्णअनुरागी ॥ आयेतीर्थराजमहँनाथा । जहाँकियोबहुजननसनाथा ॥
पुनिबदरीवनकहँप्रभुजाई । रहेतहाँकछुदिनचितलाई ॥ हरिद्वारलोहितपुरह्वैके । नैमिषकुरुक्षेत्रथलज्वैके ॥
अवधपुरीऔजनकनगरमहँ । कियोवासएकांतसोथलमहँ ॥पुनिमथुराकहँगयेकृपाला । तहाँकियोसतसंगविसाला ॥
दोहा-तहँममपितुगुरुनामजेहि, प्रियादासमुनिराज । ब्रजमंडलविचरतमिले, लैसँगसंतसमाज ॥
चौ०-प्रियादासबोलेवरज्ञानी । तुमहौसकलज्ञानकेखानी ॥ भनहुभागवतकरसप्ताहा । सबसंतनमधिहोइउछाहा ॥
सोसुनिमुदितकीनआरंभा । रचितहँसप्तलोककोखंभा ॥ तामेंशुकयकवैठ्योआई । अरुयकअहितहँपरयोदेखाई ॥
तिनलखिप्रियादासकहवानी।कथासुननआयेदोउज्ञानी॥तबअहिआइखम्भमेंलपटचो।यदपिभक्षपैसकहिनझपटचो॥
होतअरंभनितेदोउआवैं । कथासमाप्तभयेदोउजावैं ॥ जबसप्ताहसमापतभयऊ । तेहिदिनदोऊतनुतजिदयऊ ॥
दोहा-यहअचरजलखिसन्तसब, मुक्तगुण्योदोउकाहिं । हरिगुरुकी प्रियदासकी, प्रस्तुतिकरी तहाँहिं ॥
चौ०-कछुदिनबसितहँफेरिकृपाला।गंगातटकहँचलेउताला॥यकथलब्रह्मशिलाजेहिनामा । गंगातटसुंदरसुखधामा॥
ताकेनिकटबसे प्रभुआई । पुरवासीसबखबरिहिपाई ॥ आयेसकल किये परणामा । दरशपाइ पूजे मनकामा ॥
कह्यो न यहथलनिवसनयोगू । इहाँनआवहिं दिवशहुलोगू ॥ रहतब्रह्मराक्षसयहिठामा।महाभयानकतनुछुतछामा॥
जोकोउबसत इहांदिनराती।मारततेहिप्रत्यक्षचढ़िछाती ॥चलहुवेगि बसियेयहिग्रामा।करहु पवित्रसकलजनधामा॥
दोहा-बिहँसि कह्यो प्रभुअब अवशि, करिहौं इहैं निवास । सबथलमेंनिवसतसदा, रघुपतिरमानिवास ॥ २९ ॥
चौ०-ब्रह्मशिलामाधिएनपुरानो । रहतरह्योतहँब्रह्ममहानो ॥ तहाँवासकीन्ह्योप्रभुजाई । अतिरमणीयदेखिसुखपाई॥
तहँब्रह्मराक्षसनिशिआयो।प्रभुहिनिरखितबसोगोहरायो॥कियोकृतारथ मोहिंकृपाला। बसहुनाथयहिधामविसाला ॥
यहिथलमहँ बाँचहु सप्ताहा । मोहिंतारिदीजै मुनिनाहा॥ सुनतवचन दाया उरआई । दियो ताहिसप्ताह सुनाई ॥
सुनत ब्रह्मराक्षसगतिपाई । पुरवासिनउर विस्मयआई ॥ शरणागतभे सबजन आई। लहें अंतते पदयदुराई॥
दोहा-या विधिप्रभुकेबसतुतहँ, सूर्यप्रसादहिनाम । आयोप्रभुकेनिकटसो, जानचहत हरिधाम ॥
चौ०-कह्योनाथसों मोहिंगतिदेहू।बाँचिभागवतयहयशलेहू ॥ प्रभुकहश्रमहवैहैअतिमोको।कौनप्रकारसुनैहोंतोको ॥

द्विजकहतुम्हैं श्रमैभरिहैंहै। मेरोतौसबविधि बनिजैहै॥ सोसुनिकरुणाकरममनाथा । कियअरंभसप्ताहसुगाथा॥
रह्योसातदिननिर्जलद्विजवर।ह्वैयकाग्रध्यायो पद यदुवर॥सतयेंदिनशरीरतजिदीन्ह्यों।द्विजकोमुक्तजानिजनलीन्ह्यों॥
कबहुँगंगमज्जनहितस्वामी। गमनेध्यावत अंतर्यामी॥ तहँमृतक यकबालकलीन्हे। तासुजनकजननीदुखभीने॥

दोहा—देखिनाथकोरुदनकरि,गहेकमलपदजाइ। कह्योराखियेवंशमम, दीजे याहि जियाइ॥

चौ०प्रभुकहमृतकनहैयहबालक।ह्वैहैवहतुवकुलकोपालक।देख्योवसनटारिमुखवाको।रोवतलखिफलगुन्योकृपाको॥
सुतकोलैजननीगृहआई। बजनलगीआनंदबधाई॥ ऐसेचरितन करत अपारा। ब्रह्म शिलामहँ बसे उदारा॥
तहँलक्ष्मीप्रपन्नविज्ञानी। भयोसमाश्रितप्रभुपहिचानी॥ प्रभुपढाइभागवतपुराना। दीन्ह्योताहिविमलविज्ञाना॥
सोविचरतविचरतमहिमाहीं। आयोरीवाँनगरहिकाहीं॥सोसुनिमोपितुआदरकरिकै।राखेउनिजभवनहिमुदभरिकै॥

दोहा—सोप्रभुकेसबचरितवर, दीन्ह्योंपितहिसुनाइ। सोसुनितिनकेदरशको, दीन्ह्यो मनहरषाइ॥

ममपितुकहलक्ष्मीप्रपन्नसों।आवहिंकेहिविधिह्वैप्रसन्नसों।जबलगिवेनाहिंममपुरआवहिं।तबलगिकेहिविधिसुतहरिध्यावहिं
इमिकहिपुनिदैकैकछुज्ञाना। गमनकियोपुनिपुरभगवाना॥ द्विजरघुबरप्रपन्नमतिधामा। यथालाभमहँपूरणकामा॥
ताकोममपितुदीन्हनिदेशू। स्वामीकहँआनहु यहिदेशू॥ सोकहमैंअवश्यलैऐहों। तवमनकामहिं पूरकरैहों॥
योंकहिद्विजगमन्योहरषाई। प्रभुसोंकहदीनतादेखाई॥

दोहा—रीवाँनगरनरेशप्रभु, नामजासुविशुनाथ। सोचाहतदरशनकरन, चलितहँ करिय सनाथ॥

चौ०—सुनिरघुवरप्रपन्नकेवैना॥ आयसुदियोनाथमुदऐना॥ नृपतिनगरगमनहुँमैनाहीं। पैनृपप्रेमसोचमनमाहीं॥
रीवाँनगरविशेषिसिधैहों। भक्तभूपकोदरशनदैहों॥ असकहिकरिदायाममनाथा। आयसबनदीन्ह्योमुदगाथा॥
वरहरिमन्दिरलक्ष्मनबागा। बसेतहाँयुतहरिअनुरागा॥पितुममजाइदरशतहँलीन्हे। ममहितविनयवचनकहिदीन्हे॥
प्रभुप्रसन्नह्वैकहशुभवानी। तवसुतकहँयहथलमखठानी॥ विधिपूर्वकचक्रांकितकरिहों। दैहरिमंत्रमोदउरभरिहों॥

दोहा—संवत अष्टादशशतै, अट्ठावनके साल। कार्त्तिकसित एकादशी। दियमोहिं मंत्ररसाल॥

चौ०—औरहुजेममवंधुअपारा। करिकैकृपातिनहिंउद्धारा॥ मंत्रीसुभटआदिममजेते॥ प्रभुकेशरणागतभेतेते॥
सोनभद्रतटदेशनवेला। तहाँवसैंबहुअबुधबवेला। तिनकेगृहमेंयहकुलरीती। हरितजिकरहिंप्रेतसोंप्रीती॥
सुतव्रतबंधनकरहिंनिकेतू॥ मानहिंयहीमरणकरनेतू॥ तुलसीपूजहिंविधवानारी। सधवाडारहिंवेगिउखारी॥
तहँगाउँयक देवरानामा। बहुगिरिमाधिदुर्गमवहठामा॥ तहांनाथयकसमयपधारे। तिनपरकृपाकरनचितधारे॥

दोहा—तहँप्रभुके दरशनलिये, आये सब यकसाथ। पायदरश सुखछायकै, ह्वैगेसबै सनाथ॥

चौ०—गईकुमतिभैशुभमतिभारी। प्रेमबीजउरबयोमुरारी॥होनसमाश्रमकोचितदीन्हे। प्रभुसोंविनयबारबहुकीन्हे॥
तिनकीलखिदीनतामहाई। भईदया दियमंत्रसुनाई॥ तबतेतहँके लोगलुगाई। करनलगेहरिभक्तिसहाई॥
अनाचारसबतजितिनदीन्हे। ज्ञानवानह्वैहरिकहँचीन्हे॥ पुनिदेवराधिपसबनबोलाई। दैशासनव्रतबंधकराई॥
मेटीमरनभीति तिनकेरी। तिनपैकीन्ही कृपाघनेरी॥ पुनिरीवाँनगरहिप्रभुआये। वसततहाँकछुकालबिताये॥

दोहा—यकदिन मज्जनकरनसरि, गयोपुजारीप्रात। अतिकराल तहँ व्यालबड़, डस्यो करत जिय घात॥

चौ०गिरचोआइसोप्रभुपदपाहीं।कह्योनाथरक्षहुमोहिंकाहीं॥प्रभुकहयहिहरिमन्दिरमाहीं। शोचहिमतिलगिहैविषनाहीं
नेकहुविषनहिंतेहिदरशानो।हरिपूजनलाग्योहरषानो॥लियबचाइद्विजकेइमिप्राना। याहिविधिचरितकियेप्रभुनाना॥
पुनिजगदीशपुरीकहँजाई। हरिदर्शनकियआनँदपाई॥ पुनिदक्षिणयात्राप्रभुकीन्हो। दिव्यमूर्तिकेदरशनलीन्हो॥
रंगनाथप्रभुप्रथमपधारचो। पुनितोताद्रिहि जाइ निहारचो॥ करतकरततीरथबहुतेरे। पहुँचे पद्मनाभके नेरे॥

दो०—तहाँ रह्यो यक देशमें, रामराज तेहिनाम। सोप्रभुपदहि प्रणामकरि, मांगी भक्ति ललाम॥

चौ०—ताहिभक्तिशिक्षादैस्वामी। तहँ तेचलेसुमिरिखगगामी॥विचरतविचरतपुनियहदेशू।आयेकरतज्ञानउपदेशू॥
ग्रामअमरपाटनजेहिनामा। तहँजबआयेद्वारनकामा॥ तहँ मैंजाइविनयबहुकरिकै। ल्यायोंनिजपुरप्रभुपदपरिकै॥

विनयकरीकरजोरिबहोरी । राज्यकरनकीनहिंमतिमोरी ॥ तबप्रभुकहछाँड़हुदुचिताई । श्रीपतिकृपासबैबनिजाई ॥
मोहुँसमलहिप्रभुकृपामहाई । राजभारशिरलियोउठाई ॥ मोपरकरिकेकृपाकृपाला । लक्ष्मणबागरहेकछुकाला ॥

दोहा—तुलसीरामहि वैदसुत, राधेकृष्णहिनाम । तेहिसुतरघुनंदन भये, बालहिते मतिधाम ॥

चौ०—भयेसमाश्रयप्रभुपदजाई । पढ्योभक्तिमारगसुखदाई ॥ एकसमैतेहिरोगसतायो । सन्निपातभोबोलिनआयो॥
तबस्वप्नहिद्वैपुरुषबताये । बचिहैनहिंविनगुरुढिगजाये ॥ तेहिवरकेतेहिकोधरियाना । प्रभुसमीपमहँकियेपयाना ॥
ताकोप्रभुसमीपधरिदीन्हे । करिरोदनविनतीबहुकीन्हे ॥ प्रभुकेदरशनपावतसोई । उठिकहअबमोहिंकछूनहोई ॥
गईव्याधिमिटिरहीनथोरी । लहिआयसुगृहजैहौंदोरी ॥ असकहिरघुनन्दनगृहआयो । तेहिपरिवारलोगसुखपायो ॥

दोहा—पुनि मम अन्तरपुर महल, होतरहै यहहाल ॥ प्रसवभये दिनचारिमें, नारि होहिं वशकाल ॥

चौ०—यहिविधिभईमृतकत्रयनारी।तबप्रभुदासनआरतहारी॥जानिसमैनिजनिकटबुलाई।राख्योलक्ष्मणबागटिकाई॥
नाथकृपाप्रसवहिकेकाला । ग्रस्योनतियकोकालकराला ॥ आनँदसहितनारिगृहआई । मेरे गृहमें बजी बधाई ॥
पुनिकछुकालरहेपुरमाहीं । करतकृतारथममकुलकाहीं ॥ रामायण भागवतसुनाई । दीन्हीं भक्तराह दरशाई ॥
रामकृष्णकोकीर्तनशोरा । मच्योबघेलखंडचहुँओरा ॥ पुनिहरिगुरुकछुकालबिताई । गमनेब्रह्मशिलासुखछाई ॥

दोहा—कछुककाल लगिनाथमम, ब्रह्मशिलासुखधाम । सुरसरितटनिवसतभये, सबविधि पूरण काम ॥

मैंपुनिगयोंबितेकछुकाला । प्रभुदरशनकरिभयोंनिहाला॥प्रभुसोंविनयकरीकरजोरी । पुरीपुनीतकरहुचलिमोरी ॥
सुनिममविनयदियोमुसकाई । कह्योयकांतहिमोहिंबोलाई ॥ करिहौंमैंउतअवशिपयाना । हरिदासनसबठौरसमाना॥
असकहिरीवाँकोपगुधारे । हमहुँनाथकेसाथसिधारे ॥ उनइससैगेरहकरसाला । मधुसितएकादशीविशाला ॥
कृष्णप्रपन्नशिष्यकहँबोली।कह्योआपनीआशयखोली ॥ रामानुजस्वामीनिशिआई । मोहिंअसशासनदियोसुनाई॥

दोहा—लीलावैभवमेंवसत, बीतिगयेकछुकाल । चलहुत्रिपादविभूतिको, बोल्योत्रिभुवनपाल ॥

चौ०—मैंकरिहौंवैकुंठपयाना।बितेबहुतदिनविनभगवाना ॥ कृष्णप्रपन्नकह्योकरजोरी।यहअबविनयसुनहुप्रभुमोरी ॥
चित्रकूटकीतीर्थप्रयागा । अथवाब्रह्मशिलाबड़भागा ॥ जहाँआपकोआयसुहोई । तहँपहुँचैहैंहमसब कोई ॥
तबबोलेहरिगुरुमुसुकाई । केहिथलहैनहिंश्रीयदुराई ॥ अपरिछिन्नजोहरिकहँमानहु । ममपयानतौअनतनठानहु ॥
कृष्णप्रपन्नफेरिकरजोरी । कहेउसुनहुविनतीयहमोरी॥केहिदिनआपविकुंठसिधरिहैं । तहँकेवासिनकोसुखभरिहैं ॥

दोहा—तबकहकृष्णप्रपन्नसों, श्रीहरिगुरुमुसकाइ । अक्षयतृतियाकोअवशि, हमदेखब यदुराइ ॥

चौ०—सोइजबअक्षयतृतियाआई । तबहरिगुरुवैष्णवनबोलाई॥झांझआदिबाजनबजवाई। रामकृष्णकीर्त्तनकरवाई॥
एकमुहूरतलगिकरजोरी । नैनमूंदिश्रीपतिहि निहोरी ॥ करिमुद्रासंहार तहाहीं । आतमअर्पणकरिहरिकाहीं ॥
पुनिदोऊकरनाथउठाई । कृष्णदूतनिजनिकटबोलाई ॥ अरचाविग्रहनिजशिरथापी । ऊर्ध्वपुंड्रदैप्रभाअमापी ॥
शुद्धकुशासनमहँथिरह्वैकै । कृपादीठिदासनपरज्वैकै ॥ दुतियातिथिकोनाथबिताई। उत्तरदिशिपगकरिसुखछाई ॥

दोहा—रुद्रखंडशशिसंवतै, माघसुमासअकुंठ । अक्षयतृतियाकोगये, श्रीहरिजूवैकुंठ ॥

चौ०—तिनकोलहिपरतापप्रचंडा । रामानुजसिद्धांतअखंडा ॥ प्रह्लदेशमेंप्रचरच्योपूरो । नास्तिकवादभयोसबदूरो॥
प्रभुदासनकीभवकीभीती । मिटीसकलभैहरिपदप्रीती ॥ कोकृपालुऐसोजगमाहीं । भवसागरतारचोगहिबाहीं ॥
यहिविधिप्रभुकेचरितअपारा । वरणिसकैंनहिंमुखहुहजारा ॥ प्रभुपदपोतपाइमुदमाहीं । तरिहौंमैंभवसागरकाहीं ॥
श्रीप्रभुपदप्रतापबलपाई । आनँदअंबुनिधैसुखछाई ॥ विनश्रमजानचहौंतेहिंपारा । हरियशसाहितसुमतिविस्तारा ॥

सोरठा—जयप्रभुपदअरविंद, दरनकठिनत्रयतापके ॥ निजजनमनहिंमलिंद, नितअनंदमकरंदप्रद ॥

दोहा—अबवंदौंपितुपदपदुम, प्रदप्रमोदकेकंज । मैंअलिजासुकृपासुमधु, लहिकियग्रंथहि गुंज ॥
इग्यारहसैपुस्तिभे, ब्रह्मातेममवंश । सोविस्तृतवंशावली, मैंकविकियोप्रशंस ॥
मैंसंक्षेपहिकहतहौं, ग्रंथहिमंगलहेत । जिनकेपुण्यप्रतापते, पायेमोदनिकेत ॥

क०—वीरध्वजव्याघ्रदेवकरनसोहागदेवसंगरामसिंहऔविलासदेवजानिये।भीमलअनीकदेवबलदेवदलकेन्द्रमलकेसबु छारववरियारमानिये ॥ सिंहदेवभैरोंदेवनरहरिभेददेवत्यौंशालिवाहनवीरसिंहदेवगानिये ॥ वीरभानरामसिंहवीरभद्र विक्रमजूअमरअनूपभावसिंहकोबखानिये ॥

दोहा—भावसिंहमहराजके, अनिरुधसिंहसुजान । श्रीअनिरुधमहाराजके, श्रीअवधूतमहान ॥
महाराजअवधूतके, श्रीअजीतबलवान । श्रीअजीतमहराजके, श्रीजयसिंहसुजान ॥
फहरातोजेहिधर्मको, अबलोंध्वजामहान । जेहिगमनतगोविंदपुर, गंगलियोअगवान ॥
तिनकेपदवंदनकरों, मंगलमोदअपार । जासुकृपालहिचहतहौं, आ नँदअँबुधिपार ॥
महाराजजयसिंहके, धर्मज्ञानयशधाम । महाराजनृपमुकुटमणि, विश्वनाथप्रदकाम ॥

चौ०—बालहितेहरिपदरतकीन्ही।दानदेनकीमतिगहिलीन्ही॥सज्जनसंगहिमेंचितलाग्यो।श्रीअवधेशचरणअनुराग्यो॥ बाढ्योरविसमजासुप्रतापा।करतसदाशत्रुनकहँतापा॥जासुसुयशनिशिकरकरपाये।कविकुलकुमुदरहहिंसुखछाये ॥ दानकरतनहिंदौलतदेख्यो।मानदेतनहिंआतमलेख्यो॥ तीर्थकरतनहिंकछुश्रमजान्यो।यज्ञकरतनहिंआलसठान्यो ॥ कोपकियोनहिंद्विजगणमाहीं । राख्योरामभरोससदाहीं ॥ सतपथजेपदकबहुँनटारे । अपनेराजसुधर्मपसारे ॥

दोहा—भाइनभृत्यनविष्णुसम, हरसोंशत्रुनकाहिं । सत्यवचनमेविधिसरिस, तीनहुगुणप्रभुमाहिं ॥

चौ०—पुरश्चरणबहुराममंत्रके । लिखेविविधजेशास्त्रतंत्रके ॥ चित्रकूटआदिकहरिधामे । करवायोबहुवारअकामै ॥ पुंडरीकआदिकमखनाना । करवायोयुतवेदविधाना ॥ दईदक्षिणातिनमहँभारी । पायविप्रअतिभयेसुखारी ॥ लिखेदानकमलाकरकेरे । दानमयूखहुग्रंथनिबेरे ॥ दीवेकोरहिगयोनयेको । देतक्षोभमनभयोननेको ॥ पाल्योप्रजनपुत्रसमनाथा । दीननकोद्रुतकियोसनाथा ॥ जासुशीलसागरकीथाहा । पाईनाहिंवरणिकविनाहा ॥

दोहा—श्रीशुकदेवहिप्रगटिकै, प्रियाचार्यमेंआइ । तेममपितुकोकरिकृपा, दिय हरिमंत्र सुनाइ ॥

चौ०—गुरुकेपदप्रसादकोपाई । बाढ़ीप्रभुकीसुमतिसुहाई ॥ सबग्रंथनकोकरिअवगाहा।रामतत्त्वलहिबढ्योउछाहा ॥ रामसुयश वर्णन मनलाये । येते सुंदर ग्रंथबनाये ॥ विनयमाल आँनँदरामायन । गीतावली नाटकौ चायन ॥ कृष्णावलीसुमारगटीका । शांतशतककृष्णाह्निकनीका ॥ श्रीरघुनंदनगीतसुभासा । तत्त्वप्रकाशहुव्यंग्यप्रकासा ॥ ग्रंथविश्वभोजनहुँप्रकासा । वैदकविश्वनाथपरकासा ॥ धर्मशास्त्रअरुबीजकतिलकै । राजनीतिहुँविरच्योभलकै ॥

दोहा—हनुमतपैंतीसीरच्यो, औरविचारसुसार । धनुविद्याआरामविधि, शालहोत्रसुखसार ॥
नाटकपरमप्रबोधविधि, येतेभाषाग्रंथ । विरचिचलायेपुहुमिपर, जेसिगरेसतपंथ ॥

चौ०—येतेग्रंथसंस्कृतजानो । प्रथमसर्वसिद्धांतबखानो ॥ राधावल्लभिभाष्यसोहाई । रामाह्निकविरच्योसुखदाई ॥ अतिसुंदरसंगितरघुनंदन । नाटकहूआनँदरघुनंदन ॥ रामायणअध्यात्महितिलकै । तिलकवाल्मीकीकियभलकै ॥ तिलकभागवतकोअतिभारी । विरच्योवर्णतनित्यविहारी ॥ येतेवृहदग्रंथप्रभुकीन्हे । औरहुलघुनाहिंमैंलिखिदीन्हे ॥ निशिदिनआठौयामनमाहीं । रामनाममुखरटतसदाहीं ॥ कोवरणैप्रभुचरितअपारो । धराधर्मधुरधारनहारो ॥ क्रमसोंसकलचरित्रनाथके । धरिछंदनिबहुमोदगाथके॥रच्योसुकविप्रभुजनयुगलेशा । नामचरितविशुनाथसुवेशा ॥ तिनकेपदसहायमोंहिहो वैं । देहिंसुमतिं कुलकुमतिहि खोवैं ॥

दोहा—पैंसठवर्षहिमासषट, वैसगईजबआइ । तबरघुनंदनस्वप्नमें, सादरदई रजाइ ॥

चौ०—दैसुतकोनिजबांधवराजू । इतआवहुअबयहतुवकाजू॥भोरजागितबमोहिंबोलाई।असशासनपितुदियोसुनाई ॥ यहमुद्रिकाराममोहिंदीन्ही।मोपरकृपाकृपाप्रभुकीन्ही ॥ तिनबलअबलोंहमकियराजू । अबतुमलेहुराज्यकरकाजू ॥ हरिविश्वासजैसोहममान्यो । तैसोतुमहुजन्मभरिठान्यो ॥ अहैसाहनीसंपतिजेती । श्रीरघुनंदनकी है तेती ॥ कबहूंनिजकरमानेहुनाहीं । अरपेरह्योकृष्णहीकाहीं ॥ असकहिमोहिंमुद्रिकादीन्ही । मैंशिरनाइशीशधरिलीन्ही ॥

दोहा—उनइससैएकादशै, संवतकार्तिकमास । असितसप्तमीवारभृगु, पितुगे रामनिवास ॥

महाभागवतजनकसम, जोममजनकसुजान । तिनकेचरणप्रतापबल, ग्रंथहिकरौंबखान ॥
जैजैजैगुरुपितुचरण, भरणमोद उरमाहिं । पापदरनकुमतिहिहरण, वर्धनबुद्धिसदाहिं ॥
यहिविधिसबकोजोरिकर, सादरकरिपरणाम । भाषाभागवतहिरच्यो, आनँदअंबुधिनाम ॥
भाषाविरचहुँभागवत,सकलमूलअनुसार । कहुँकहुँहरिलीलाललित, करिहौंकछुविस्तार ॥
कहूंब्रह्मवैवर्त अरु, कहुँहरिवंशहु केरि । वायुपुराणहुकीकहूँ, गर्गसंहिता केरि ॥
अरु नरसिंहपुराणकी,औरहु विष्णुपुराण । कहुँ रामायणकीकथा, लैकरि करिहौं गान ॥
जहाँ जहाँ संक्षेपसों, अहै भागवतमाहिं । इनग्रंथनते लै कथा, करिहौं वृहद तहाँहिं ॥

अथ कथाप्रबंधारंभः ।

दोहा–यहजगब्रह्महिमेंअहै, तेहिविनरहैनसोइ । यहअन्वयव्यतिरेकको, अर्थकहैकविलोइ ॥
यह अन्वयव्यतिरेकते, जेहितेजगजन्मादि । औअभिज्ञअर्थनविषे, स्वयंप्रकाशअनादि ॥
चौ०–जोकविआदिहेतुवेदनको।निजसंकल्पहिकियमुदघनको॥निजसूरिहुँजामेंभ्रमपावत।तेजवारिमृदुजोनमिलावत॥
मृषात्रिसर्गकहैजेहिमाहीं।निजप्रकाशहतकुहकसदाहीं॥तौनसत्यपर कृष्णहिध्याऊँ।जासुकृपा निर्मलमति पाऊँ॥१॥
यहभागवतमहामुनिकृतमहँ । रहितकपटकहँपरमधरमजहँ॥निर्मत्सरसज्जनकेयोगू । वास्तववस्तुजानतेहिलोगू ॥
सोयहमन त्रयताप नशावन। जगतजननको सुखसरसावन॥और शास्त्रतेका भगवाना।होहिंकियेद्रुतथिरखगजाना॥
दोहा–यहश्रवणेच्छाकरतमें, सुकृतनहिययदुनाथ । अतिआतुरआवतअवशि, छाँड़तनहिंतेहिसाथ ॥ २ ॥
चौ०–निगमकल्पपादपअतिभावै।शुकमुखगलितसुफलछविछावै॥अनुपमद्रवपियूषतेसंयुत।रसआलयभागवतसुअद्भुत
भुविमेंभावुकरसिकसुजाना।वारहिंवारकरौंतेहिपाना३(व्यासउवाच)विष्णुक्षेत्रनैमिषतेहिनामा।तहाँशौनकादिकतपधामा॥
स्वर्गलोकहित वर्षहजारा।कियेसकल मुनियज्ञ उदारा ॥४॥ एकसमै तेहरिरस भीने।प्रातहि हव्यहवन ऋषिकीने॥
बैठेलहे सूतसनमाना।तिनसों शौनकादि मुनिनाना॥अति आदर पूंछी यहबाता।कथा श्रवणमेंपरमविख्याता॥५॥
(ऋषयऊचुः)॥दोहा–अनघलियोपढ़िसतिसकल,युतइतिहासपुरान।धर्मशास्त्रहूँसकलतुम,कीन्ह्योसकलविधान ॥६॥
चौ०–वेदविदन महँ वरभगवाना । व्यास बादरायणजोजाना॥औरौ मुनि जे वरतपधारे । सूत परावर जाननवारे॥
तेजानहिंजेसकलपुराना । व्यासकृपासतिउत्तमजाना ॥७॥गोपितहूगुरुसबकहिदेहीं।प्रेमीशिष्यजानितेहिलेहीं॥८॥
तिनातिनमें जन मोक्ष उपाई।चिरंजीव तुम निश्चय पाई॥हमसों कहो कृपाकरि सोई।जामें मुक्ति अवश्यहि होई॥९॥
सुनौसूत कलिकाल कराला।बहुधाजन जीवहिं लघुकाला॥मंदमंदमति मंदहिंभागा।तपेत्रिताप पापमन लागा॥१०॥
दोहा–भिन्नभिन्नसाधनविपुल,अहैंसुननकेयोग । तिनमहँकर्मअनेकहैं,जानहिंकोविदलोग ॥
चौ०–यातेइनमेंजोसतिसारा।निजमतितेनिकारिसुविचारा॥श्रद्धामानहमहिंअतिजानी।कहहुसूततुमसकलबखानी॥
जाते हरिप्रसन्न हठि होवैं । जन्मजन्मके पातकखोवैं॥११॥सूत होइ कल्याणतुम्हारा।जानहुतुमभगवानउदारा ॥
श्रीवसुदेवदेवकीमाहीं । भक्तनपतिजेहिकारजकाहीं ॥ प्रगटेश्रीहरिकृपानिधाना।अहहुयोग्यसोकरनबखाना ॥१२॥
हमरे श्रवण करनकी चाहा।वर्णहुँहरियशसहित उछाहा॥जेहिअवतार अनंदनिकेतू।भूतन भव पालनके हेतू॥१३॥
दोहा–परेघोरसंसारमहँ, विवशहुँहैजेहिनाम । लेतअवशिछूटततुरत, यहसंसृतदुखधाम ॥
चौ०-अपनेतेजेहिंडरउँडराई।हरिजनके समीप नहिं जाई१४हरिपद प्रगटत गंगविशाला।करतपूतसेऽये कछुकाला१५
सुनहुसूतजेमुनिअतिसाता।जेहिहरिपदआश्रितवरदाता॥तेनिजपदपरसतजनकाहीं।करहिंसुपावनतेहिछनमाहीं १६
वर्णनकरनयोगजेहिकर्मा । पुण्यकीर्त्तिविस्तारकधर्मा॥ तेहरिकेयशकलिमलहारी।कौनसुनैशुचिहोनविचारी॥१७॥
लीलाहित जेबहुवपुधारहिं।दासन दीहदुरित दुखदारहिं॥तासु उदार कर्मबुधगाये।गुण श्रद्धाकहियेसुखछाये॥१८॥
दोहा–जेहरिनिजआधीनते, लीलाकरहिंअपार । तिनशुभअवतारनिकथा, कहौसकलमतिचार ॥ १९ ॥
चौ०-उत्तमकीरतिविक्रमकाहीं।श्रवणकरतहमनाहिंअघाहीं॥जौनसुनतसबरसिकनकाहीं।होतस्वादअतिपदपदमाहीं२०
लीलाअमितगूढ़भगवाना । बलयुतकेशवकृपानिधाना ॥कियेअमानुषकर्मअमाना।परतश्रवणमहँसुधासमाना॥२१॥

कलिआयोअबहमसबजानी।यहवैष्णवक्षेत्रहिंअनुमानी॥दीहजागहितहमइतरहहीं।कृष्णकथामेंअवसरलहहीं ॥२२॥
सतगुणहरिदुस्तरकलिकाला।तरणचाहकीन्हेततकाला॥तिनहमकोविधितुमहिंमिलायो।सिंधुतरणनाविकदरशायो।
दोहा—योगेश्वरब्रह्मण्यहरि, धर्मवर्मअभिराम । करिभूतललीलाललित, गमनकीन्हनिजधाम ॥
कहहुसूतमतिमंततुम, हमकोसकलबुझाय । धर्मकौनकेशरणअब, जातभयोअकुलाय ॥ २३ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराजबांधवेश विश्वनाथसिंहात्मज सिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजू
देवकृतेआनंदांबुनिधौप्रथमस्कंधेप्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

श्रीवेदव्यास उवाच।

चौ०—पूछ्योशौनकादि इमिजबहीं।सूतभये आनंदित तबहीं॥तिनकोवचनसराहिअदंभा।सूतकहनकोकीनअरंभा १
(सूतउवाच) जेजन्महितेकर्महिंत्यागी।दुतीसहायनलियेविरागी।चलेजातपरिपूरणज्ञाना।व्यासपिताजेहिपरमसुजाना
विरहाकुलकहिपुत्रपुकारे । शुकमें तरुह्वैउतरउचारे ॥ सबभूतनके अंतर्यामी । तिनशुकदेवमुनीशनमामी ॥२॥
जासुअसाधारणपरभावा । अखिलश्रुतिनसारहिजोगावा ॥ अनुपमअखिलपुराणअनूपा । जीवईशपरकाशकदीपा ॥
दोहा—तरिबोचाहैजीवको, यहभवपारावार । ताकेउरअज्ञानको, नाशलगावत पार ॥
चौ०-ऐसोश्रीभागवतपुराना।गोप्यकृपाकरिकियजिनगाना।व्याससुवनमुनिगुरुविख्याते।तिनकेअवशिशरणहमजाते
नारायणवरउत्तमनरकहँ । देवसरस्वतिव्यासहिमुदमहँ॥वंदनकरितिनचरणसदाहीं।वरणहिंसकलपुराणनकाहीं३।४
हेमुनीशजगमंगलकाही । तुमपूछ्योसुंदरमोहिंपाही ॥ कृष्णविषयकियप्रश्नहिसोई। जातेआत्मप्रसन्नहिहोई ॥५॥
भक्तिअहेतुकिसंततसोई । जातेईशप्रसन्नहिहोई ॥ सोसुभक्तिजातेहरिमाही । होइसोपरमधरमजनकाही ॥६॥
दोहा—वासुदेवभगवानमहँ, भक्तिकरनजोलाग ॥ उपजावतनिरहेतुकै, तुरतज्ञानवैराग ॥ ७ ॥
चौ०—जोजनधर्मकियोशुभरीती । श्रीपतिकथाभईनहिंप्रीती॥तौताकोकेवलश्रमजानो । वृथाजन्मसंसारहिमानो ८
मोक्षदेतजोधर्मबखानो । ताकोफलनहिंअर्थहिमानो ॥ जेहिधनकोफलधर्महिंभावे । तेहिधनफलनहिंकामकहावे ९
जीवनहेतुअहैयहकामा । तेहिफलनहिंइंद्रिनआरामा ॥ जीवनफलहैतत्त्वविचारब । करिजगकर्मनस्वर्गसिधारब १०
तत्त्वकहैमुनिअद्वयज्ञानाहि । ब्रह्मैपरमात्महिभगवानहि ॥ तातेमुनिजेश्रद्धामाना । धर्मजनितवैरागसुजाना ॥११॥
दोहा—इनतेयुतवरभक्तिते, निजजीवात्मामाहिं । अंतर्यामीकृष्णको, निरखत रहैसदाहिं ॥ १२ ॥
यातेद्विजवरजननकृत, वर्णाश्रमअनुसार । सकलधर्मकीसिद्धिहै, हरितोषनसुखसार ॥ १३ ॥
चौ०—तातेकरिइकाग्रचंचलमन । श्रवणकीर्तनसुमिरणपूजन॥करैसदाभगवानहिकेरो । जोभक्तनकोनाथनिवेरो१४
कोविदजासुध्यानअसधारे । कर्मग्रंथखंडनकरिडारे ॥ ताकेकथामाहँअतिप्रीती । कोनहिंकरैसहितपरतीती१५
जाकेश्रवणकरनकीचाहा । बाढ़्योश्रद्धासहितप्रवाहा ॥ पुण्यतीर्थसेवनतेताके । तिमिमहानजनपरमदयाके ॥
तिनकेसेवनतेशुभरीती । विप्रहोतहरिकथासप्रीती ॥१६॥ पुण्यश्रवणकीर्तनजेहिकेरे । सबसज्जनकेसुहृदनिवेरे ॥
दोहा—श्रवणकरतहीनिजकथा, ताकिहियकरिवास । सकलअमंगलकोहरत, जेहरिरमानिवास ॥ १७ ॥
चौ०—भयेदूरिअघबहुजबतनते । संततसंतनकेसेवनते ॥ तबउत्तमश्लोकहिमाही । होतिनिश्चलाभक्तिसदाही॥१८॥
तबहितमादिजनितकामादिक।तिनतेअविहितअतिअहलादिक।थितसतगुणमहँचित्तप्रसन्ना।होतिसर्वदारुचिसंपन्ना॥
इमिप्रसन्ननिर्मलमनजाको । भगवतभक्तियोगतेजाको ॥ भगवततत्त्वविज्ञानहिहोवै । जनमजनमकेसंसृतखोवै २०
देखतहीआत्माहरिकाही । हृदकीग्रंथछूटिसबजाही ॥ दूरिहोहिंसबसंशयतासू । छीनहोहिंसबकर्मउआसू ॥२१॥
दोहा—यातेमुदतेसुकविचित, करप्रसादिनीभक्ति ॥ करहिंसदाभगवानमें, तजिजगकीआसक्ति ॥ २२ ॥
चौ०—सतरजतमगुणप्रकृतिहिकेरे।तिनप्रेरकपरपुरुषनिवेरे।सोजगभवपालनलयहेतू । धरहिनामविधिहरिवृषकेतू ॥

तिनमेंतत्त्वनियामकजोहै । सतितातेमंगलजनकोहै ॥ २३ ॥ जैसे महिविकारहैदारू । तेहितेप्रगटधूमपरचारू ॥
तातेअनलहोतमखसाधक । पुण्यप्रवर्तकअरुअघबाधक ॥ तैसेतमतेरजकोजानो । रजतेसत्वगुणहिअनुमानो ॥
सतुसाधनहरिदरशनकेरो । तमरजतेअघबाधकहेरो ॥ २४ ॥ यातेअधोक्षजहिभगवाने । सत्वप्रचारकशुद्धमहाने ॥

दोहा—कियोसकलमुनिजनप्रथम, सेवनमनहिलगाइ । तिनअनगुणयहजगतमें, भजतसवैवनिजाइ ॥ २५ ॥

जेमुमुक्षुहैंपरमसुजाना । तेतजिघोरभूतपतिनाना ॥ अरुनिंदातजिदेवनकेरी । नारायणकीकलाघनेरी ॥
सत्वप्रचारतिआनँदमाहीं।भजतरहैजगमहँतिनकाहीं॥२६॥जेरजतमप्रकृतिहिजगमाहीं।तेरजतमप्रकृतिहिसुरकाहीं।
प्रजाभूतपितरनकेईशन । भजहिपुत्रधनभूतिहेतुजन ॥ २७ ॥ वासुदेवपरवेदहिजानो । वासुदेवपरयज्ञबखानो ॥
वासुदेवपरयोगगनायो । वासुदेवपरकृपावतायो ॥ वासुदेवहैंपरमहिज्ञाना । वासुदेवपरतपहिबखाना ॥ २८ ॥

दोहा—वासुदेवपरधर्महैं, परगतिवासुहिदेव । अंतर्यामीसुरनके, रक्षत जनन सदेव ॥ २९ ॥

सोईयकहरिसृष्टिहिआगे।तेहिप्राकृतगुणकबहुँनलागे॥सतअरुअसतगुणमयीमाया। तातेविभुयहजगउपजाया॥३०॥
मायाकृतयहजगगुणकाजू । तामेंजीवसहितयदुराजू ॥ अंतःप्रविसिमनोगुणवाना । देखिपरैसबमेंभगवाना ॥ ३१ ॥
जैसेविविधदारुमहँयेकै । प्रगटिशिखामनुलसतअनेकै ॥ तैसेहरिजीवांतर्यामी । भूतनमेंविलसैबहुनामी ॥ ३२ ॥
भूतसूक्ष्मइंद्रियमनजोहै।गुणमयभावकह्योतिनकोहै ॥ इनतेनिजनिर्मितभूतनमें । प्रविशिजीवद्वाराबहुजनमें ॥३३॥

दोहा—सकलगुणनकोभोगहीं, येईश्रीभगवान । सकलकर्मकोकरतहीं, जीवहिद्वारमहान ॥
यहीलोककर्ताहरी, तत्त्वप्रवर्तकजोइ । तिर्यकदेवमनुष्यमें, लीलावपुधरिसोइ ॥
लोकनकीपालनकरहिं, तिनकेचरितनगाइ । बिनप्रयासभवसिंधुको, पामरहूतरिजाइ ॥ ३४ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंद
अंबुनिधौप्रथमस्कंधेद्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

श्रीसूतउवाच ।

प्रथमहिहरिमहदादिककरिकै । लोकनिउत्पतिइच्छाधरिकै ॥ पंचभूतइंद्रियएकादश । येहीकलाकहावतषोडश॥१॥
इनअभिमानीसुरमयरूपा । प्रगटसुपौरुषधरचोअनूपा ॥ सोवतिजेहिजलमहँभगवाना । नाभीसरतेकमलमहाना॥
तातेभयोचतुर्मुखसोई । पतिमरीचिआदिककोजोई॥२॥तिनकेअंगप्रकृतिपरिणामा । कियेकल्पनालोकनग्रामा ॥
सोहैशुद्धरूपभगवाना । उत्तमसद्गुरुकेरनिधाना ॥ ३ ॥ सहसचरणउरभुजमुखजामें । अद्भुतसहसशीशशोभामें ॥

दोहा—नासाश्रुतिदृगसहसपर, कुंडलमुकुटलसंत । सोहरिवपुनिर्महदृगनि, देखहिंसंततसंत ॥ ४ ॥

यहअनिरुधअवतारनिधाना।अव्ययबीजवेदकरिगाना॥ जेहिअंशांशसृजतसंसारा । सुरनरतिर्यकयोनिअपारा॥५॥
सोईहरिविरंचिकेद्वारा । धरचोप्रथमशूकरअवतारा ॥ दुष्करपरमअखंडितजौनै । द्विजह्वैब्रह्मचर्यकियतौनै ॥ ६ ॥
पुनियहजगमंगलकेकारण । गईरसातलरसाउधारण ॥ श्रीयज्ञेशचरित्रउदारा । धरचोदुतीशूकरअवतारा ॥ ७ ॥
पुनितृतीयधरिनारदरूपा । पंचरात्रकियप्रगटअनूपा ॥ जामेंजानिपरतयहधर्मा । करैंमुमुक्षुनप्रवृतिहिकर्मा ॥ ८ ॥

दोहा—नरनारायणधर्मसुत, लेचौथोअवतार । पुष्कर इंद्रियदमनयुत, कीन्ह्योतपहिअपार ॥ ९ ॥

सिद्धनपतिपाँचोअवतारा । कपिलदेवजेहिनामउचारा ॥ लुप्तभयोजोकालहिपाई । जामेंनिर्णयतत्त्वनिकाई ॥
ऐसोसांख्यशास्त्रचितलाई । आसुरिमुनिसोंकह्योबुझाई॥१०॥छठयोंदत्तात्रयअवतारा । कियोप्रार्थनाअत्रिउदारा॥
अनुसुइयाकेभयेकुमारा । आतमविद्याकोविस्तारा ॥ अलरकप्रह्लादादिककाहीं।उपदेश्योबहुविधिसुखमाहीं ॥११॥
पुनिरुचितियआकूतीमाहीं।सतयोंधरचोयज्ञवपुकाहीं॥जामादिकसुरयुतबलघाल्यो।स्वायंभुवमन्वंतरपाल्यो॥१२॥

दोहा—मेरुदेवभेनाभिते, धरिअष्टमअवतार । ऋषभदेवजेहिनामभो, दायापारावार ॥

सबआश्रमतेश्रेष्ठगनायो। परमहंसकोधर्मदिखायो॥१३॥ऋषियांचितनवयोंवपुधारचो।पृथुमहीपह्वैसुयशपसारचो॥
दुह्योधरणितेओषधिसर्वा। तातेभेकमनीयअखर्वा॥ १४॥ पुनिचाक्षुषमन्वंतरमाहीं। प्रलयपयोधिबढ़ैचहुँघाहीं॥
दशयोंधरचोमत्स्यअवतारा। पुहुमीरूपपोतविस्तारा॥ तामेंसत्यव्रतहिचढ़ाई। रक्षाकियोदयादरशाई॥ १५॥
एकादशैकमठवपुधारी।उदधिमथतसुरअसुरनिहारी॥पृष्ठहिपरमंदरगिरिधारचो।क्षीरधिमथिबहुरत्ननिकारचो॥१६॥
दोहा–द्वादशयोंधन्वंतरै, धरतभयेअवतार। अमृतकुंभल्यायेरच्यो, आयुर्वेदअपार॥ १७॥
चतुर्दशौनरहरिवपुधारचो। तृणसमहिरनकशिपुउरफारचो॥१८॥पंचदशोवामनवपुधारी।इंद्रहिदेनहितेगिरिधारी॥
महिपदत्रैयांचतबलिपासा। जातभयेप्रभुरमानिवासा॥१९॥ सोरहौंपरशुरामअवतारा। द्विजद्रोहीनृपक्षत्रिअपारा॥
तिनपरपरमकोपवपुधारा।महिनिक्षत्रकियेकयकवारा॥२०॥ फेरिनिरखिजनअल्पमतीके।सुबुधिपराशरसत्यवतीके
सप्तदशौधरिव्यासस्वरूपा। कियेवेदतरुशाखअनूपा॥ २१॥ अष्टादशपैसुरकेकाजा। भयेरामकोशलमहराजा॥
दोहा–उदधिनिबंधनदशवदन, दवनसहितपरिवार। कियेअमानुषचरितबहु, श्रीदशरथ्यकुमार॥ २२॥
उनइसयेंबलदेवस्वरूपा। प्रगटभयेयदुवंशअनूपा॥विसयेंकृष्णरूपप्रभुधारचो। करिचरित्रभुविभारउतारचो॥२३॥
इकइसयेंकलिकालहिघोरा।मोहनहितअसुरनवरजोरा॥कीकटदेशनजिनसुतह्वैहै। बुधवपुनास्तिकमतप्रगटैहै॥२४॥
पुनिकलियुगकेअंतहिमाहीं। भयेचोरसबभूपनकाहीं॥ विष्णुयशाब्राह्मणकेऐने। बाइसयेंकलिकीयुतचैने॥
ह्वैहैपापिननाशनहेतू। धर्मथापिहैरमानिकेतू२५॥सत्वनिधिहरिवपुअगणितहोते।जिमिअगाधसरसहसनिसोते॥२६॥
दोहा–ऋषिमुनिसुरमनुसुतबली, औरप्रजापतिजोइ। शौनकादितुमजानहू, कृष्णकलाहैसोइ॥ २७॥
एहैंअंशकलाहरिकेरे। कृष्णस्वयंभगवाननिवेरे॥ असुरनतेव्याकुललखिलोकू। युगयुगमेंप्रगटतमुदथोकू॥ २८॥
यहरहस्यहरिजन्मउदारे। भक्तिपूर्वकसांझसकारे॥ ह्वैशुचिचितलगाइजोगावै। दुखसमूहसोवेगिनशावै॥ २९॥
प्राकृतरूपरहितभगवाना।जिनकोवपुगुणमयविज्ञाना॥ मायागुणमहदादिकतेयह।जगनिजमयनिर्मिततातिनविग्रह३०
जिमिनभघनरजपवनहिमाहीं। अहैभिन्नपैमिलतलखाहीं॥जिमिजियकेदेवादिशरीरा।कुमतीमानहिंनहिंमतिधीरा३१
दोहा–जोयहदेहसँयोगते, लहैजन्मबहुजीव। अहैविलक्षणदेहते, सोवहजीवअतीव॥
जीवनचक्षुरादिकोगोचर। कारणकारजप्रकृतिहुतेपर॥ ३२॥ भिन्नथूलजगतेहैजोई। जीवस्वरूपजानियहसोई॥
जनममरनजीवात्माकेरे। होतअज्ञानहिवशबहुतेरे॥ हरिशेषीनिजशेषहिभाऊ। मिटतअज्ञानहितेमुनिराऊ॥
ज्ञानस्वरूपजातजबपाई। तबयहजीवमुक्तह्वैजाई॥ ३३॥ वैशारदीईशकीमाया। मायाकृतअभिमाननिकाया॥
येजबद्वैनिवृत्तह्वैजाहीं। तबहिजीवमहिमाप्रगटाहीं॥ पूजितहोतजीवतेहिमाहीं। यहजानहिंतत्त्वज्ञसदाहीं॥
दोहा–प्राकृतजन्महितेरहित, जन्मनजीवसमान। हृदयबैठिसबजगतके, रक्षकहैंभगवान॥ ३४॥
ऐसेहरिजन्मनिकरम, वेदगुह्यसहसान। ज्ञानीजनअनुरागसों, तिनकोकरहिंबखान॥ ३५॥
जिनअमोघलीलाअमित, सोहरियहजगकाहि। सिरजहिंपालहिंनाशहीं,नहिंअसक्ततेहिमाहिं॥
हैस्वतंत्रह्वैअंतर्यामी। षडगुणनायकखगपतिगामी॥ षडइंद्रियविषयनिकोभोगै। होहिंनातिनअधीनकहुँयोगै॥३६॥
येयदुनायककीबहुलीला। करिकुतर्कनहिंजानिकुशीला॥ मनतेरूपवचनतेनामा। जोविस्तारकरहिसुखधामा॥
नटकसइंद्रजालसबलोगू। जानहिनहिंकेहिकौनसँयोगू॥३७॥जासुपराक्रमकोनहिंअंता। चक्रपाणिसबपरभगवंता॥
तिनकेमारगसोइपहिचानै। जोतजिकपटकृष्णकहँजानै॥सेवहिहरिपदकंजसुगंधू।प्रीतिसहिततजिदुस्तरबंधू॥३८॥
दोहा–यातेतुमजगधन्यहौ, शौनकादिमुनिराज। लोकनाथहरिमेंकरहु, भक्तिभावसुखसाज॥
भयेकृष्णमेंअविचलभावै। आवागमनरहितह्वैजावै॥३९॥ यहभागवतपुराणमहाना। हरिचरित्रमयवेदसमाना॥
सबलोकनकेमंगलहेतू। कियोव्यासमुनिमोदनिकेतू॥ ४०॥ मंगलधामधन्यसुखदाई। सोयहभागवतैमनलाई॥
ज्ञानिनवरदियशुकहिपढ़ाई। जोभवसिंधुनामश्रुतिगाई॥४१॥ सबवेदनइतिहासनसारा।यहपुराणश्रीव्यासनिकारा॥
जबमुनिसुतगंगातटमाहीं। धरिबैठेअनशनव्रतकाहीं॥ तबशुकदेवपरिक्षितभूपै। दियसुनाइभागवतअनूपै॥४२॥

दोहा-धर्मज्ञानआदिकसहित, गयेधामभगवान ॥ ४३ ॥ कलिकुमतिनतमहरणअब, उयउभागवतभान ॥
भूरितेजब्रह्मर्षिसुजाना। सोश्रीशुकभागवतमहाना ॥४४॥ जबराजापरीक्षितहिकाहीं। यहभागवतपरमसुदमाहीं ॥
लगेसुनावनश्रुतिसुखकंदा । बैठेसकलतहाँमुनिवृंदा ॥ सुनहुशौनकादिकतहँजाई । हमहूँबैठिरहेसुखपाई ॥
तिनकेवर्णनकरतसुहावन । श्रीभागवतजगतकरपावन ॥ हमहूँश्रीशुकदेवकृपाते । पढ्योभागवतकोदिनसाते ॥
सोभागवतपढ्योंजेहिभांती। मतिअनुसारहिकथासोहाती ॥ सोहमतुमसोंसकलसुनैहैं। ताकोगुणहमहूँमुदपैहैं ॥
दोहा-नैमिषवैष्णवक्षेत्रयह, तामेंबैठिसप्रीति। सुनहुविप्रहरिचरितको, यहीमुक्तिकीरीति ॥ ४५ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेव
कृतेआनंदांबुनिधौप्रथमस्कंधेतृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

(व्या०उ०)यहिविधिसूतकहीजबबानी।तबसराहिमुनिकुलपतिज्ञानी॥ऋगवेदीबूडेसुखधारे।ऐसेशौनकवचनउचारे॥
(शौ०उ०)-सूतसूतबुधवरबड़भागी।कथाभागवतसुखमेंपागी॥हमसोंकहहुपुनीतकहानी।जोनृपसोंशुकदेवबखानी॥
कौनेयुगकौनेअस्थाना। कौनहेतुकेहिकह्योसुजाना॥वेदव्यासमुनिअतिसुखछायो। श्रीभागवतपुराणहिंगायो॥३॥
समदरशीतिनसुतशुकदेवा।जेजानहिंजियतनकोउभेवा॥तिनकीमतिनहिंहरिपदत्यागै।स्वातमअनुसंधानहिंजागै॥
दोहा-जिनमहत्वप्रगटैनहीं, मूढसरिसदरशाहिं। परमहंसअवतंशशुक, विचरहिंमही सदाहिं ॥ ४ ॥
एकसमैसुरसरिसुरनारी । नग्ननहातरहींछबिवारी ॥ श्रीशुकदेवकढ़ेतहँह्वैके । बसननपहिरयौनग्नहुँज्वैकै ॥
व्यासअनग्नकढ़ेजबजाई।पटपहिरयोतियतिनहिंलजाई॥व्यासकह्योरेसुनहुगँवारी। मोहिंलखिलियकिमिपटतनुधारी
लखिसुतयुवानसारीलीन्ही।म्वहिंविलोकिक्योंलज्याकीन्ही॥तियकहतेहिननारिनरभानू।देखतजगस्वरूपभगवानू॥
तुम्हरेनरनारिनकरभेदा। जानहुयदपिशास्त्रअरुवेदा॥५॥सोशुकमत्तमूकवतजडवत।कुरुजाँगलदेशनमेंविचरत ॥
दोहा-सोहस्तिनपुरकौनाविधि, आयोकाउरचाहि। कौनभाँतिपुरजनसकल, चीन्हिलेतभेताहि ॥ ६ ॥
भूपपरीक्षितमुनिसंवादा। भयोकौनविधियुतअहलादा॥जेहिसंवादमाँहश्रुतिरूपा। प्रगटभयोभागवतअनूपा ॥७॥
सोशुकगोदोहनकालेभर। पावनकरनगृहस्थनकेवर ॥ थिरह्वैखड़ेरहहिंसुखपाई। यहिविधिविचरहिंमहिमुनिराई॥
सातदिनासोथिरह्वैकैसे। कह्योपुराणश्रेष्ठमुनिऐसे ॥८॥ परमभागवतअर्जुननाती । भाषहिंजिनकोमुनिनजमाती॥
जन्मकर्मतेहिअचरजकारी। कहहुसूतसोसकलविचारी॥९॥पांडवसुयशबढ़ावनवारो।सकलपुहुमिपतिजीतनहारो॥
दोहा-सोगंगातटजायकै, अनशनव्रतकोधारि ॥ बैठ्योकौनेहेततें, नृपश्रीतुच्छविचारि ॥ १० ॥
लैधननिजशुभहितअरिपुंजा।शिरनावहिंजाकेपदकंजा ॥ जोलक्ष्मीनहिंछोड़नलायक।ताकोवहकिशोरकुरुनायक॥
प्राणसहितसोतजनउछाहा। कैसेकियोकहोकविनाहा॥११॥जोहरिभक्तिअहैजगपावन । तेजगमंगलभूतिबढ़ावन॥
निजजीवनराखहिंजगमाहीं।जिनजीवनस्वारथहितनाहीं॥सोभूपतिकिमिपरउपकारी।तज्योकलेवरतुच्छविचारी १२
सोसबकहौसूतसमुझाई। पूछयोअनपूछयोचितलाई॥जानहुतुमसबवेदमहाई। यहहमलियनिजमनठहराई ॥१३॥
दोहा-शौनकादिकेवचनसुनि, कह्योसूतहरषाइ । निजप्रश्ननकेउत्तरन, सुनौसबैचितलाइ ॥
द्वापरकीसंध्यासमै, सत्यवतीकेव्यास ॥ सुमुनिपराशरतेभये, कलासुरमानिवास ॥
सोकबहूँसरस्वतिकेतीरा।प्रातहिकालपरशिशुचिनीरा।बैठतभयेअकेलइकांता।जीवप्रकतिईश्वरविदतांता१४॥१५॥
सोऋषिनिरखिअलखगतिकाले।ताकरिकैयुगधर्मविसाले।भयेअवनिमहँतेविपरीते।प्रतियुगसुरनरशक्तिहिंरीते।१६॥
श्रद्धाहीनकुबुद्धिअधीरा। लघुआयुषहतभाग्यसुपीरा॥१७॥ऐसेजननजोहिमुनिव्यासा।करिकैदिव्यदृष्टिपरकासा॥
सबवर्णाश्रमकोजोक्षेमू। सोविचारकीन्ह्योसतनेमू ॥ प्रजनशुद्धकरवैदिककर्मा। चातुरहोतनामशुभधर्मा ॥ १८॥

दोहा-सोयज्ञनविस्तारहित, एकवेदकोव्यास। चारिभागकरदेतभे, पूरकरणद्विजआश ॥ १९ ॥
ऋगयजुसामअथर्वनवेदा। तिनकोकियउद्धारसुभेदा ॥पँचयोजोइतिहासपुराणा।ताकोभेदकियोनिरमाणा ॥ २० ॥
तहँऋषिपैलवेदऋगधारी। कविजैमिनिसामहिअधिकारी ॥ वैशंपायनयजुगुणज्ञाता॥२१॥ क्रूरसुमंतअथर्वनधाता॥
इतिहासनपुराणकेधारक।पितारोमहर्षणजनतारक॥२२॥तेइऋषिनिजनिजवदनउदारा।शिष्यप्रशिष्यनशिष्यनद्वारा
कियेविभागअनेकनतिनते। भयेवेदशाखायुतजिनते॥२३॥जामेंतिनवेदनमतिमंदा। जानहिंबिनप्रयाससानंदा ॥
दोहा-ऐसोव्यासविचारिकै, विरचेवेदविभाग। दीननपैअतिद्रवितह्वै, दयाकरीबडभाग ॥ २४ ॥
औरोशूद्रद्विजाधमनारी। हैंनहिंएवेदनअधिकारी ॥ जानहिंनिजनकर्मकल्याना। कैसेपैहैंक्षेममहाना ॥ २५ ॥
यहविचारिमुनिकृपानिधाना। रच्योमहाभारतभगवाना ॥ यहिप्रकारहेद्विजश्रुतिधारी।यदपिरहेमुनिजगहितकारी
यदपिभयोनहिंजबसंतोषा ॥२६॥ तबनहिंभोप्रसन्नमनचोषा ॥ बैठेपुण्यसरस्वतितीरे। रहीजहाँनहिंजनकीभीरे ॥
तहँविचारियहवैनउचारे।सकलधर्मकेजाननहारे॥२७॥मैंव्रतधरिबहुवेदनमान्यो।छलतजिपावकगुरुसन्मान्यो ॥२८॥
दोहा-इनसबशासनमानिकै, यहभारतकेव्याज ॥ सबवेदनकोअर्थमैं, दरशायोसुखसाज ॥
तियशूद्रादिकहूजेहिमाहीं॥निजधर्मादिकलखैंसदाहीं॥२९॥एतेहुपैआतमशुधमेरो।भयोनहींकियजतनघनेरो॥३०॥
किधौंनभगवतधर्मउचारे।जेहरिप्रियपरहंसनिप्यारे॥३१॥यहिविधिमुनिकेकरतविचारा। हीनगुणतसोचतबहुबारा॥
तबसरस्वतितटव्यासहिंपासा।आयेनारदसहितहुलासा॥३२॥ नारदकोलखिमुदितमुनीशा।सहसाउठिनायोपदशीशा
आदरकरिआसनबैठाये। अर्घ्यपाद्यदियअतिसुखछाये॥ सुरपूजितनारदमुनिकाही। विधिवतपूज्योव्यासतहाँहीं॥
दोहा-कुशलप्रश्नसबभाँतिसों, पूछ्योव्यासमुनीश। अतिप्रसन्नमुनिहोतभे, नारददेवऋषीश ॥ ३३ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेश्रीमद्भागवतेआनंदअंबुनिधौप्रथमस्कंधेचतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

(सू०उ०)दोहा-पूजनकरिजबव्यासमुनि, बैठेआनँदपाय ॥ महायशीनारदकहयो, वीणलियेमुसक्याय ॥ १ ॥
(ना०उ.)तनयपराशरकेबड़भागी।कहहुजोपूँछहिंहमअनुरागी।मनयुतआतमव्यासतुम्हारो।हैप्रसन्नकीनाहिंउचारो२
सबअर्थनकरिकैपरिपूरो। रच्योमहाभारतअतिरूरो ॥३॥ धर्मादिकजेजाननलायक। तेतुमभलजान्योमुनिनायक॥
औरसनातनवेदनकाहीं। पच्यौविचारयौसंशयनाहीं ॥ एतेहुपैप्रभुशोचहुकैसे। आतमकोअकृतारथजैसे ॥४॥
सुनिनारदकीमोहितवानी।बोलेव्यासजोरियुगपानी(व्या०)जोतुमकह्योसोसबमोहिंमाहीं।तदपिआत्ममतोषितनाहीं
दोहा-याकोकारणजोनहै, सोहमजानतनाहिं। हौसर्वज्ञविरंचिसुत, पूछतहैंतुमपाहिं ॥ ५ ॥
जेनिजमनहींतेजगकाहीं। सिरजहिंपालहिंनाशकराहीं ॥ जिनकोअहैनगुणसंबंधू। नाथपरावरसज्जनबंधू ॥ ६ ॥
भजहुँसदाअसपुरुषपुराना। तातेसकलगोप्यतुवजाना ॥ विचरहुँत्रिभुवनमेंजिमिभानू। अंतरचरहौवायुसमानू ॥
यातेआतमसाक्षीरूरे। परमभागवतसद्गुणपूरे ॥ बोधकवेदपरावरकेरो। तामें करिव्रतधर्मघनेरो ॥
मैंहौंपारजानियहलीजे। न्यूनहोइसोसबकहिदीजे ॥ ७ ॥ यहसुनिनारदकहहरषाई। सुनहुबादरायणचितलाई ॥
दोहा-विमलसुयशश्रीकृष्णको, गायोनहिंरसमाति। यातेनहींप्रसन्नमन, यहीन्यूनसबभांति ॥ ८ ॥
धर्मअर्थऔकामकहानी। भारतमेंजसकह्योबखानी ॥ तसयदुपतिप्रभावनहिंगायो। तातेमनसंतोष न पायो ॥ ९ ॥
पदविचित्रहूँग्रंथनमाहीं। जगपवित्रहरियशजिननाहीं ॥ तेकुमतिनकेग्रंथननाना। करतनहींसज्जनसनमाना ॥
जैसेबहुवायसनिनिवासू। मानसहंसकरहिंनहिंवासू ॥१०॥ जामेंहरियशअंकितनामा। यदपिअशुद्धअहैपदग्रामा॥
सोइप्रबंधजनपापनशावत। वर्णतसुनतसंतजेहिगावत॥११॥जौननिरंजनज्ञानबखान्यो। कर्महुँतेवरजेहिजगजान्यो॥
दोहा-सोऊहरिकेभक्तिविन, नेकुनशोभितहोय ॥ विनहरिअर्पितकर्म जो, कैसेशोभितहोय ॥

सोतोसदाअमंगलकारी। यद्यपिकियोअकामहुँभारी ॥ १२ ॥ यातेमहाभागहेव्यासा। सुयशरावरोजगतप्रकाशा ॥
तुमअमोघदरशीव्रतधारी। सबभूतनकेअतिहितकारी ॥ १३॥ तातेश्रीहरिसुयशअपारे। संसृतबंधनमोचनवारे ॥
करिविचारगावहुहरिलीला। सहितपरमअनुरागसुशीला ॥ लीलानामरूपगुणधामा। यदुनंदनकेअतिअभिरामा॥
इनकोछोड़िऔरजोगैहो।तौमतिकीथिरतानहिंपैहो ॥ उदधिमध्यलहिपवनप्रसंगा।भ्रमतिनावजिमिसंगतरंगा ॥१४॥

दोहा—अर्थकाममेंसहजही, जगजनहैंआसक्त ॥ अर्थकामहितधर्मतिन, उपदेश्योतुमव्यक्त ॥

तातेअबकैसेजगलोगू। करिहैंमोक्षधर्मउतयोगू ॥ उपदेशतकहिहैंयहवानी। व्यासदेवतौयहीबखानी ॥
तातेतुमयहनिंदितकीन्ह्यो।भगवतधर्मजुनहिंकहिदीन्ह्यो ॥ अर्थधर्मतजिमोक्षउपाई।करिहैंनाहिंकहेसमुझाई ॥१५॥
जेनिवृत्तिमारगरतज्ञानी। तेचरित्रबहुशारँगपानी ॥ लहैंजानिअनंदहिमाहीं। ह्वैहैकछुप्रयासतिननाहीं ॥
पैजेनरमायागुणभीने। अरुहैंआतमज्ञानविहीने ॥ तेजानहिंजिमिकृष्णचरित्रै। रचउव्याससोइपरमपवित्रै ॥ १६॥

दोहा—अपनोधर्महिछोड़िकै, श्रीहरिपदअरविंद ॥ भजनकरतजोसर्वदा, करिनिजमनहिं मिलिन्द ॥

यद्यपिभयोसिद्धतेहिनाहीं। छूटिगयोतनुबीचहिंमाहीं ॥ तदपिअमंगलभयोनतासू। करहिंआपनोरमानिवासू ॥
तजिहरिभक्तिकरतनिजधर्मा।होतनकबहुँकाहुकोशर्मा॥यागंभीरकालगतिपाई। त्रिभुवनभ्रमततजीदुखछाई॥१७॥
हरिकेदरशनमिलैंनकबहूं। तातेकरिविचारजनअबहूं ॥ जामेंमिलैभक्तियदुराई। सोइनरकरैविशेषउपाई ॥
भगवतभक्तछोड़िकैजोसुख।मिलतअहैसबथलसोअतिदुख॥१८॥श्रीमुकुंदपदजेअनुरागी।तेइजगतमें हैंबड़भागी ॥

दोहा—आवहितेनहिंऔरसम, कैसेहु यहसंसार ॥ श्रीहरिपदछोडहिंनहीं, हैंग्राहीरससार ॥ १९ ॥

उत्पतिअरुपालनसंहारा। जेहरितेहोतेबहुवारा ॥ यहसबविश्वसोइभगवाना। तदपिविलक्षणपुरुषपुराना ॥
सोतुम्हारसबविधितेजानो। तातेमैंइकदेशबखानो॥२०॥तुमअमोघदरशीहौव्यासा। अहोअंशतुमजगतनिवासा ॥
प्रगटेजगमंगलकेहेतू। कर्मअधीननजन्मनिकेतू ॥ ऐसेनिजतेनिजकोजानहु। तातेहरिगुणचरितबखानहु ॥ २१ ॥
तपकीन्हेकोशास्त्रपढ़ेको। दानदियेकोयज्ञकियेको ॥ वापीकूपतडागघनेरो। ज्ञानविज्ञानआदिसबकेरो ॥

दोहा—इनसबकोफलअचलयह, सबकविकरहिंबखान ॥ प्रीतिसहितजोहरिचरित, करतनिरंतरगान ॥ २२ ॥

प्रथमकल्पमहँपूरवजनमें। वेदवादिभूसुरनसदनमें ॥ दासीसुतहमरहेमुनीशा। तहँआवतभेकोउयोगीशा ॥
वर्षाकालजानिकियवासा।तबद्विजवरसबसहितहुलासा॥बालकगुणिबहुभाँतिसिखाये।तिनसेवामेंमोहिंलगाये ॥२३॥
तबयैंनाहिंचपलताकीन्हीं।बालखेलकीरुचितजिदीन्हीं ॥ अनुवर्तीजितइंद्रियह्वैकै।भाषतरह्योंनबहुतिनज्वैकै ॥२४॥
यहिविधिगयोकालकछुवीती। सेवाकरतरह्योंयुतप्रीती ॥ यद्यपियोगेश्वरसमदरशी। तदपिकृपादियमोपरवरशी ॥

दोहा—एकवारयोगीशने, निजजूठनमोहिंदीन। सोप्रसादमैंखायकै, भयोंपापतेहीन ॥

यहिविधिकियसेवातिनकेरी। भईचित्तशुद्धताघनेरी ॥ भगवतभजनमाहँमतिगाढ़ी। मेरेमानसमेंरुचिवाढ़ी ॥२५॥
कृष्णकथानितगावतमाहीं। मुनिनअनुग्रहपायतहाँहीं ॥ हमहूँनितहिंमनोहरगाथा। सादरसुनतभयेमुनिनाथा ॥
कथाश्रवणतेसहितप्रतीती। हरिचरणनमेंभैममप्रीती ॥ २६॥ प्रीतिलगेहरिमेंमुनिराई। ममानिश्चलमतिभईमहाई ॥
मैंहरिदासआपनेमाहीं। कारणकार्यरूपजगकाहीं॥हरिमायाकरिरचितबखान्यो।जेहिमतिकरिकैयहमैंजान्यो ॥२७॥

दोहा—यहिविधियोगिनिमुखसुनत, कृष्णकथातिहुँकाल। बीतीवर्षाशरदऋतु, म्वहिंभैभक्तिरसाल ॥ २८ ॥

मोहिंअकल्मषनामृतजानी। श्रद्धावानपरमपहिचानी ॥ अनुचरइंद्रियजितअनुरागी।बालकहूँ मैंरह्योसुभागी॥२९॥
ऐसेहुँमुहियात्राकेकाला। तेयोगीश्वरदीनदयाला ॥ हरिकोकह्योगोप्यअतिज्ञाना। सोमोसोंकरिकृपाबखाना॥३०॥
जेहिज्ञानहितेमैंमुनिराऊ। जान्योहरिमायापरभाऊ ॥ जौनज्ञानतेसकलमुनीशा। पावहिंपदउत्तमजगदीशा॥३१॥
ब्रह्मईशभगवानहिंमाहीं। अर्पणकियतेकर्मसदाहीं ॥ तेइत्रैतापनशावनवारे। निगमागमयोंकहँहिंपुकारे ॥३२॥

दोहा—जौनवस्तुतिननरनके, रोगहोतहैजौन ॥ तौनवस्तुसेवनकिये, मिटतनहींरुजतौन ॥ ३३ ॥

हरिमहँअर्पितकर्महिंकीने। लहतमोक्षहैंनरसुखभीने॥ कियेसकामकर्मपुनिसोई। आवागमनरहितनहिंहोई॥३४॥
हरितोषकजोकर्मकहावै। सोइजगज्ञानभक्तिउपजावै॥३५॥ हरिशासनतेबारहिंबारा। करतकर्मजेसुजनउदारा॥
तेऊपायभक्तिभगवानै। रूपध्यानकरिनामहिंगानै॥३६॥
'नमोभगवतेतुभ्यंवासुदेवायधीमहि।प्रद्युम्नायानिरुद्धायनमःसंकर्षणायच' ॥३७॥ यहमंत्रहितेएवपुचारी। पूजनकरैं
नामउच्चारी। प्राकृतमूर्तिरहितभगवाना। मंत्रमूर्तियुतकृपानिधाना॥ऐसेयज्ञपुरुषकहँजोई। पूजैज्ञानवानजगसोई॥
दोहा–यहनिजआज्ञामेंनिरत, मोहिंसमुझिभगवान। दियोज्ञानऐश्वर्यपुनि, निजपदभावमहान॥३९॥
हैबड़यशहरिकोसुयश, करहुतुमहुँअबगान। जाननकीजेहिजानिकै, इच्छारहतनआन॥
जिनकोमनत्रयतापते, तापितबारहिंबार॥ तिनकीताप नशावनो, इकयशनंदकुमार ॥४०॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा-
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदअंबुनिधौप्रथमस्कन्धेपंचमस्तरंगः॥५॥

सूतउवाच।

दोहा–नारदकोयहिभाँतिसुनि, जन्मकर्म सहुलास॥ तिनसोंपुनिपूँछतभये, सत्यवतीसुत व्यास॥१॥
(व्या०उ०) जबवेयोगेश्वरदैज्ञाना।औरठौरकोकियोपयाना॥तबतुमकाहकियोमुनिराई। तुमतोबालकरहेबनाई॥२॥
कौनभाँतितवउमिरिसिरानी। कैसेतज्योकलेवरज्ञानी॥३॥ पूर्वकल्पकोसुरतितिहारी। काहेसक्योनकालविसारी॥
जौनकरतसबकोसंहारा४यहसुनिनारदवचनउचारा(ना०उ०)मुहिंदैज्ञानगयेसंन्यासी।तबशिशुमैंयहकियतपराशी५।
इकसुतमैंद्विजदासीमाता। मोपैकियेसनेहअघाता॥६॥ यदपिचहैमेरोकल्याणा। परवशकरिनसकीममत्राणा॥
दोहा–करिनसकतकछुआपसे, ईश्वरवशयहलोग। दारुमयीयोषितयथा, नाचत नटसंयोग॥७॥
पंचवर्षकोबालकरूपा।रहतभयोद्विजकुलहिंअनूपा॥जननिनेहवशकर्महिंठान्यो।देशकालदिशिकछुनहिंजान्यो॥८॥
गऊदुहनहितनिशिइकवारा।ममजननीतजिगईअगारा॥तेहिपगतलमगपरयोभुजंगा।प्रेरितकालडस्योतिहिअंगा ९॥
तबजननीसुरलोकसिधारी। मैंमानीअतिकृपासुरारी॥हरिनिजजननचहैकल्याना।यहगुणिउत्तरकियोपयाना॥१०॥
तहाँदेशधनधान्यहिंपूरे। नगरग्रामब्रजआकररूरे॥वनउपवनवाटिकासुहावन। गिरितटकृषिकग्रामसुखछावन॥११॥
दोहा–चित्रधातुतेशैलबहु, परमविचित्रसोहाय॥ गजगंजितशाखाविपुल, ऐसेद्रुमदरशाय॥
विमलवारियुतविपुलतड़ागा। सुरसेवितसरसीबहुजागा॥१२॥गुंजहिकूजहिंभृंगविहंगा।यहसबनिरखतगयोअसंगा॥
पुनिइककाननलख्योभयावन।कुशकीचकसरवंशसोहावन१३व्यालउलूकशृगालहुँघोरा।डरपावहिंकरिशोरकठोरा॥
श्रमितक्षुधिततृषितौतहँभयऊ।तबसरितातटतुरतहिंगयऊ॥न्हाइपानकरिश्रमकरिदूरी१५तिहिनिर्जनवनमहँभैभूरी॥
वासुदेवतरुकेतरजाई। बैठ्योपरममोदकहँपाई॥ जियअंतर्यामीभगवाना। गुरुशिक्षितकीन्ह्योमनध्याना॥१६॥
दोहा–भावमगनमनदृगसजल, ध्यानकरतपदकंज॥ धीरेधीरेहरिहिये, प्रगटतभेसुखपुंज॥१७॥
प्रेमपुलकयुतभयोशरीरा। बूड्योआनँदसिंधुगँभीरा॥ भूलिगयोआपनोपरायो। केवलकृष्णरूपमनलायो॥१८॥
परममनोहरशोकनशावन। ऐसोश्यामस्वरूपसोहावन॥ क्षणभरप्रगटरह्योमनमेरे। फेरिनदेखिपरयोबहुहेरे॥
तवव्याकुलमैंउठ्योमुनीशा।मणिविहीनजिमिविकलफणीशा१९पुनिथिरमनकियदेखनहेतू।प्रगटभयेनहिंरमानिकेतू।
जैसेविषयलालचीकोई।लहिलघुभोगनतोषितहोई॥२०॥ यहिविधियत्नकरततेहिवनमें।गिराअगोचरप्रभुतेहिक्षणमें॥
दोहा–कह्योवचनगंभीरअति, नभतेसुधासमान। शोकमिटावनमोरसब, सुनियेव्याससुजान॥२१॥
सुनुबालकयहिजन्महिंमाहीं। मेरेदरशयोगतूनाहीं॥जिनकेकामादिकनहिंजाहीं। तेकुयोगिमोहिंदेखतनाहीं॥२२॥

दियोदेखायरूपइकबारा । सोअनुरागहिंहेतुकुमारा ॥ ममअनुरागिपुरुषजोकोई । क्रमसेविषयनाशतेहिहोई ॥२३॥
बड़ी संतसेवा ते तेरी । मोमैं लागी सुमति घनेरी ॥ यह निंदिततनुतजिमुनिराई । जैहौमेरेलोकसिधाई ॥
जबमेरोपार्षदह्वैजैहो । तबतुमपरमानंदहिपैहो ॥२४॥तेरीमतिजोमोमहँलागी । सोममकृपातेोहिंनहिंत्यागी ॥
दोहा–प्रलयकालहूँमेंसुरति, रहिहैमोमहँलागि । ममप्रसादतेसर्वदा, दुखजैहैसबभागि ॥ २५ ॥
योंकहिमौनभयेतेईश्वर । प्राकृतगुणनरहितवपुजिनकर ॥ पायकृपातिनकीवनमाहीं । मैंतवशिवअजपूजितहाहीं ॥
शिरसोंकियप्रणामबहुबारा । उरमहँभयोअनंदअपारा ॥२६॥ मंगलकरणनामहरिकेरे । अतिगोपितअरुकर्मघनेरे ॥
सुमिरतगावतमैंमहिमाहीं।फिरतरह्योंतजिलाजहिंकाहीं।विमदविमत्सरसंतोषितमन।परखतरह्योकालतजिआसन२७
यहिविधिकृष्णभक्तमैंभयऊ।अमलआत्मविषयनतजिदयऊ।द्विजतबसमैपायममकाला।आयोदामिनसमविकराला२८
दोहा–देनलगेजबमोहिंवपु, भागवतीयदुवीर । प्रारब्धहिंभोगीतवै, भौतिकछुट्योशरीर ॥ २९ ॥
पुनिजगभैजबप्रलयमहाना। सोयेसिंधुसलिलभगवाना।।नाभिकमलअजशैनैलीन्ह्यो । तिनप्राणहिंप्रवेशमैंकीन्ह्यो ३०
युगसहस्रउपरांतहिंजागे।जगविस्तारकरनविधिलागे।।तबहमअरुमरीचिऋषिआदिक।भयेप्राणतेयुतसनकादिक ३१
कृष्णअनुग्रहतेमुनिराई । मेरीगतिकहुँरोकिनजाई।। भीतरबाहरत्रिभुवनमाहीं।विचरहुँअविचलभक्तिसदाहीं ॥३२॥
दीनकृष्णयहबीणसुहावन । जेहिसुरब्रह्मबोधउपजावन।।ताहिबजायगायहरिगाथा।मैंविचरहुँत्रिभुवनमुनिनाथा।।३३॥
दोहा–निजचरित्रगावतनिरखि,प्रिययशतीरथपाद । कृष्णबोलायेसमहिये,ममआवहिंसुप्रसाद ॥ ३४ ॥
चाहतविषयनवारहिवारा,व्याकुलचित्तपरेसंसारा ॥ तिनकोश्रीहरिकथासोहाई । भवसागरनौकाश्रुतिगाई ॥ ३५ ॥
कामलोभहतमानसजोई। जसहरिकथासुनतशुचिहोई।।तसनहिंहोतकियेतपयोगू।यहरहस्यजानहिंमुनिलोगू ।।३६॥
परमगुप्तममजन्महिंकर्मा । अरुतुमआत्मतोषहरिधर्मा ॥ येसबपूछ्योजोमुनिराई । सोसबतुमसोंकह्योंबुझाई।।३७॥

सूतउवाच ।

सत्यवतीसुतसोंयहिरीती।नारदमुनिकहिकथासप्रीती।।माँगिविदाकरवीणबजावत।मुनिस्वतंत्रगवनेसुखछावत।।३८॥
दोहा–अहोधन्यदेवर्षिहरि, कीरतिवीणबजाय । हर्षितगावतजगतजो, हर्षितकरतबनाय ॥ ३९ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौप्रथमस्कंधेषष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

दोहा–नारदमुनिअरुव्यासको, सुनिअद्भुतसंवाद । बोलेशौनकसूतसों, पाय परमअहलाद ॥

शौनकउवाच ।

जबनारदमुनिकियेपयाना । तबमुनिव्यासदेवभगवाना ॥ सुनिनारदकीगिरासुहाई । कहाकियोहियहर्षबढ़ाई ॥
सुनिशौनककेवचनसुहाये।बोलेसूतहर्षउरछाये।१।(सूतउ०)सरस्वतिसरपश्चिमतटमाहीं।आश्रमशम्याप्रासतहाँहीं
ऋषिनयज्ञकोवर्द्धनहारा ।२। तहाँबसैंद्विजविपुलउदारा ॥ बदरीवनमंडितचहुँवोरा । अतिरमणीयलगतसबठोरा ॥
तेहिनिजआश्रमव्याससुजाना।शुचिह्वैमनथिरकियभगवाना३निश्चलनिजनिर्मलमनमाहीं।भक्तियोगकरिव्यासतहाहीं
दोहा–पुरुषपुराणोलखतभे, मायातेहिआधीन ॥ ४ ॥ जेहिमायाकरिजीवयह, मोहितहै प्राचीन ॥
यद्यपित्रिगुणात्मकयहितनते । जीवविलक्षणहैअरुमनते।।तदपिआपनोवपुयहमानत।तेहिवशकर्मअनर्थकठानत।।५॥
जेहितेसकलअनर्थनशाहीं । भक्तियोगतेजानतनाहीं ॥ तिनकेहेतुव्यासमुनिराई । श्रीभागवतसंहितागाई ॥ ६ ॥
जेहिभागवतसुनतश्रवणनमें । जगतजननकेताहीक्षणमें ॥ भक्तिहोतिपदश्रीगिरिधारी । शोकमोहभैभंजनवारी।।७॥
सोभागवतैशोधिबनायो । विरतिनिरतिसुतशुकैपढ़ायो ॥८॥ तबशौनकपूछ्योहरषाई । यहशंकाहमरेमनआई ॥
दोहा–विरतिनिरतिचाहतनकछु,आत्मसुखीहरिसेव।पढ्योमहायहसंहिता,केहिकारणशुकदेव ॥ ९ ॥
कह्योसूततबअतिहरषाई । सुनहुशौनकादिकचितलाई ॥ जेलौकिकग्रंथननहिंमानै । आतमसुखीकृष्णउरआनै ॥

तेतजिसकलफलनकीआशा।भक्तिकरहिंनितरमानिवासा।कृष्णचंद्रकेगुणयहिभाँती।करहिंस्ववशनिजभक्तिजमाती १०
हरिगुणमेंमोहितमतिजाकी । संततरहतिभक्तरसछाकी॥सोशुकहरिभक्तनकोप्यारो।पव्योमहाभागवतउदारो॥११॥
भूपपरीक्षितजेऋषिराऊ । जन्मकर्मतिनमुक्तिप्रभाऊ ॥ अरुपांडवनचरित्रअपारा । जिनमेंकृष्णकथाविस्तारा ॥
दोहा—यहसबवर्णनकरहिंगे,तुमकोसपदिबुझाइ । सुनौशौनकादिकसबै, सावधानचितलाइ ॥ १२ ॥
जबकौरवअरुपांडवकेरो । संजयवंशिनकेरघनेरो ॥ कुरुक्षेत्रमहँभोसंग्रामा । वीरगयेसबवीरहिंधामा ॥
रह्योएकदुर्योधनराई । भीमसेनतहँक्रोधहिछाई ॥ गदायुद्धमहँगदाचलाई । जानुतोरितेहिदियोगिराई ॥ १३ ॥
तेहिनिशिद्रोणपुत्रतहँआयो । लखिदुर्योधनकहँदुखपायो ॥ राजाकेप्रियकरनविचारी । गयेरैनिअरिसैनमँझारी ॥
पंचद्रौपदीकेसुतजहँ वै । सोवतरहेगयोद्विजतहँ वै ॥ खड्गनिकासिशीशतिनकाटे । धृष्टद्युम्नादिकशिरछाँटे ॥
दोहा—द्रुपदसुतासुतशिरनको, ल्यायोजहँकुरुभूप । जानिशिशुनशिरनृपतिकह, कियोननिजअनुरूप ॥
निंदितकर्मकियोद्विजराई । वंशछेदह्वैगयोबनाई ॥ हर्षशोकजबभयोसमाना । त्यागोतबदुर्योधनप्राना ॥ १४ ॥
देखिद्रौपदीसुतनविनाशा । दुसहदुःखतनुकियोप्रकाशा ॥ रोदनकरनलगीभरिदाहा । बह्योविलोचनअंबुप्रवाहा ॥
तहँअर्जुनअतिकोपहिपागे।द्रुपदसुतहिसमुझावनलागे।(अ.उ०)आततायिद्विजअधमअधर्मी।जोअश्वत्थामाअघकर्मी
ताकेंनिकटवेगिमैंजाई । गांडीवाहिंसोबाणचलाई ॥ काटितासुशिरजबमैंलैहौं । तेहिबैठायतुमहिनहवैहौं ॥
दोहा—तबतेरोमैंपोंछिहौं,नैनवारिसुकुमारि । मृतसुतवारीममवचन, तूलेसत्यविचारि ॥ १६ ॥
(सू०उ०)यहिविधिद्रौपदिकहँसमुझाई।विविधमनोहरवचनसुनाई॥कवचपहिरिगांडीवहिलैके।मीतकृष्णकोसारथिकैकै
रथचढिकपिध्वजकोपहिछायो । द्रोणसुवनपरआतुरधायो॥१७॥आवतकोपितअर्जुनकाहीं।दूरिहितेदेखतदृगमाहीं॥
सुतबालकनिजमनहिंडराई । रथचढ़िभाग्योप्राणबचाई ॥ जैसेशंकरकोभयपाई । दक्षचल्योगेविकलपराई ॥
भरिशकभाग्योद्रोणकुमारा १८अश्वभयेमगथकितअपारा॥बचबआपनोजबहिंनदेख्यो।अस्त्रब्रह्मशररक्षकलेख्यो १९॥
दोहा—निजप्राणहिंसंकटनिरखि, सावधानशुचिविप्र । जानतउपसंहारनहिं, तज्यो ब्रह्मशरछिप्र ॥ २० ॥
तातेप्रगट्योतेजप्रचंडा । छायोदशहूँदिशनअखंडा ॥ तबप्राणनआपत्तिनिहारी । हरिसोंअर्जुनगिराउचारी ॥ २१ ॥
(अ०उ०)महाबाहुहेकृष्णमुरारी । निजभक्तनकेसंकटहारी॥जेजगतापजातहैंजारे । तिनकेतुमहिंबचावनहारे॥२२॥
तुमहींआदिपुरुषप्रकृतिहुपर।मुख्यतुम्हैंईश्वरकरुणाकर।ज्ञानशक्तिकरिमायात्यागी।रहौसदानिजरूपहिरागी ॥२३॥
मायामोहितजननसदाहीं।निजबलदेहुचारिफलकाहीं२४यहअवतारहरणभुविभारा।निजजनध्यानहेतुप्रभुधारा २५॥
दोहा—हमजानहिनहिंकृष्णयह, कहँतेआवतकौन । दारुणधावतओरचहुँ, तेजभीतिकोभौन ॥
यहिविधिकह्योपार्थअकुलाई । बोलेकृष्णचंद्रमुसक्याई।(श्रीभ०उ०)जानहुअस्त्रब्रह्मशरघोरा।छांडयोद्रोणपुत्रवरजोरा
जानतनहिंयाकोसंहारा । जियसंकटलखियाहिपवाँरा ॥२७॥ औरअस्त्रकरिसकैनवारण । अहैब्रह्मशरयाहिनिवारण ॥
तातेपार्थब्रह्मशरछाँडहु । अस्त्रतेजतेअस्त्रहिआडहु(सू०उ०)सुनतकृष्णकेवचनसुहाये।शत्रुदमनफाल्गुणसुखछाये॥
सलिलपराशिकरिहरिपरदक्षिण।तज्योवीरब्रह्मास्त्रहितेहिक्षण।दोउअस्त्रनकेमिलेप्रकाशा।बढ़ेछायसबअवनिअकाशा ॥
दोहा—मानहुदिनकरदहनदोउ,दहनहेतुसबलोक । लरतमयूखपसारिकै,देवनकरतसशोक ॥ ३० ॥
महातेजदोउअस्त्रनकेरो । जारतलोकनघोरघनेरो । जरतप्रजासबताहिनिहारी।प्रलयअग्निलियमनहिविचारी ॥३१॥
यहिविधिमहाउपद्रवदेखी । वासुदेवकोसम्मतलेखी ॥ दुहुँनअस्त्रकोएकहिबारा । कियोधनंजय उपसंहारा ॥ ३२ ॥
तबहरिअर्जुनरथहिधवाई । दारुणद्रोणसुवनढिगजाई ॥ रिसवशबिजैनैनकरिलालै । बाँध्योद्रोणसुतैतेहिकालै ॥
जैसेयज्ञपशुहिद्विजराई । बांधहिबंधनसोहरषाई ॥ ३३ ॥ ताहिबांधिबलतेदोउवीरा । डेरहिलैगमनतरणधीरा ॥
दोहा—कमलनयनयदुनाथतब,अर्जुनसोंयुतचैन । कोपितह्वैबोलेवयन, सुनहुपार्थमतिऐन ॥ ३४ ॥
यहसोवतमहँरैनिसिधारचो । विनअपराधबालकनमारचो॥तातेयहिरक्षहुअबनाहीं । मारहुवेगिद्विजाधमकाहीं३५॥
तियबालकसोवतमतवारे । शरणागतविरथैभैवारे ॥ रुजीजड़ौअसजगरिपुकाहीं । मारहिंधर्मधुरंधरनाहीं ॥ ३६ ॥

परप्राणनहनिकेनिजप्रानै । पालतजोखलदयानआनै ॥ तेहिवधकरवतासुकल्याना।नहिंतौपावतनरकमहाना ॥३७॥
पांचालीकेढिगतुमजाई । कियोप्रतिज्ञाहमहिंसुनाई ॥ जोतुवसुतनकियोवधरैनै । लैऐहौं तेहिशिरतुवऐनै ॥ ३८ ॥

दोहा—तातेयाकोवेगिवध, करहुधनंजयवीर । अप्रियदुर्योधनहुको, कियोकर्मवेपीर ॥

चौ०—आततायिपापीइहिजानौ । निजसुतहनिकुलदूषकमानौ ॥ ३९ ॥

सूतउवाच ।

यहिविधिधर्मपरीक्षाहेतू । अर्जुनसोंकहरमानिकेतू ॥ तबहूंगुरुसुतगुणिमतिवाना।मारनकोनहिंकियअनुमाना॥४०॥
तबलायेनिजशिविरमँझारी । अर्जुनजेप्रियसूतमुरारी ॥ पुत्रविलापकरतदुखछाई । तेहिद्रुपदीकहँदियोदेखाई॥४१॥
कियोकर्मनिंदितहिमहानो । नीचेकोशिरकियेलजानो ॥ पशुसोंवँधोपरमअपकारी । लखिइमिगुरुसुतद्रुपदकुमारी॥
मृदुलस्वभावदयाउरधारी । कियोप्रणामनयनभरिवारी ॥ ४२ ॥

दोहा—ताकोबांधिलेआइवो, द्रुपदीसकीनजोइ । छोडहुछोडहुयहकह्यौ, विप्रनित्यगुरुहोइ ॥ ४३ ॥

सहितविसर्जनउपसंहारा । धनुर्वेदयुतमंत्रप्रकारा ॥ सकलअस्त्रतुमजासुकृपाते । पढ्योधनंजयबलभोजाते ॥ ४४ ॥
सोइभगवानद्रोणसुतरूपा । वर्तमानयहतेहिअनुरूपा ॥ कृपीद्रोणदाराअरधंगी । बनीरहैजेहिसुतरणरंगी ॥ ४५ ॥
जातेमहाभागमतिवारे । सकलधर्मकेजाननहारे ॥ देहुनतुमयाकोदुखभोगू । गुरुकुलवंदनपूजनयोगू ॥ ४६ ॥
पतिदेवताद्रोणकीनारी । अश्वत्थामाकीमहतारी । जसमेरेबहुसुतहतजाके । तसनहिंहोइव्यथाअबताके ॥ ४७ ॥

दोहा—जेअजितेन्द्रियनृपतिहठि, द्विजनकरावहिंकोप।।सोशोकितद्विजकुलकरत, तुरतराजकुललोप ॥ ४८ ॥

सूतउवाच ।

न्यायधर्मयुतकपटविहीनै । सबमेंसमवरकरुणाभीनै॥कहिद्रुपदीइमिधर्मनिबाह्यो।सुनतधर्मनृपताहिसराह्यो ॥ ४९ ॥
नकुलहुऔसहदेवधनंजय । सात्यकिकृष्णचंद्रदृगकंजय ॥ रहेऔरहूजेनरनारी । कहतभयेधनिद्रुपदकुमारी ॥५०॥
भीमसेनतबकोपहिछाये । सबसोंऐसेवचनसुनाये ॥ सकलभांतियहमारनयोगू । अबनहिंऔरकरौउतयोगू ॥
निजनिजप्रभुकोकरहितनाहीं । सोवतबालकवध्योवृथाहीं ॥५१॥ तबद्रुपदीअरुभीमहुकेरी।सुनिवाणीअर्जुनवपुहेरी॥

दोहा—चारिबाहुसुंदरलसत, कह्योकृष्णमुसकाइ । मेरेहूकछुयेवचन, सुनहुपार्थचितलाइ ॥ ५२ ॥

विप्रनीचहूववबअयोगू । सबविधिआततायिवधयोगू । दोऊविधियेकहीहमारी । पालहुशासनमोरविचारी ॥ ५३ ॥
जामेंसत्यप्रतिज्ञाहोई । कियोप्रियासमुझावतिजोई ॥ द्रुपदीभीमहुकोअरुमेरी । करोसोजेहिप्रियहोइघनेरी ॥ ५४ ॥
(सूतउ.)अर्जुनवेगिकृष्णरुखजानी।कटितेकाढिकरालकृपानी॥काटिकेशतांकेशिरकेरी।काढिलियोमणिकियोनदेरी॥
बंधनछोरितासुधनुधारी । निजडेरातेदियोनिकारी ॥ मणिअरुब्रह्मतेजतेहीनो । चल्योबालघातीद्विजदीनो ॥ ५६ ॥

दोहा—मुंडनअरुसंपतिहरन, देशनिकारनजोइ । नीचहुद्विजकहँदंडयह, दैहिकदंडनहोइ ॥ ५७ ॥

पुत्रशोकतेदुखितसब, पांडवद्रुपदीयुक्त । मृतनिजबंधुनकीक्रिया, करीसकलश्रुतिउक्त ॥ ५८ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्री
महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराज
सिंहजूदेवकृतेआनंदांबुधिनिधौप्रथमस्कंधेसप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

सूतउवाच ।

दोहा—पुनिनिजबांधवमृतकजे, तिनहिंतिलांजलिदैन । यदुपतियुतपांडवसबै, गंगागयेअचैन ॥

आगेकरिपुरवारीनारी । करतविलापपुकारिपुकारी १ ल्याइतिलांजलिदियतिनकाहीं । पुनिमज्जनकियगंगामाहीं ॥
जाकोजलहरिपदरजपावन । तुरतहितीनहुतापनशावन ॥ २ ॥ तहँधृतराष्ट्ररहेनृपराई । औरयुधिष्ठरसंयुतभाई ॥
द्रुपदीकुंतीअरुगांधारी । रहेसबैशोकितअतिभारी ॥ मुनिनसमेतकृष्णतहँजाई ॥ ३ ॥ हतबंधुनकोकह्यो बुझाई ॥

मानहुँसबैकालगतिकाहीं। जगमेंजासुनिवारणनाहीं॥४॥पुनिजेहिद्रुपदिहिसभामँझारी। ल्यायेकेशपकरिअपकारी॥
दोहा–गतआयुषतेहिकर्मते, ऐसेरिपुनहताइ। कितवहरीनृपधर्मको, दियेराजयदुराइ॥ ५॥
नृपतियुधिष्ठिरकोयदुराई। अश्वमेधत्रैसविधिकराई॥ तिनकोयशशतमखसमपावन।जगफैलायोहरिमनभावन॥६॥
पांडुसुतनसोंविदाकराई। सात्यकिउद्धवयुतयदुराई॥ पूजितमुनिव्यासादिकतेरे। पूजितह्वैमुदपायघनेरे॥ ७॥
गमनद्वारकाकरनविचारी। शौनकस्यंदनचढेमुरारी॥ तबउत्तरापायभयधाई। हरिढिगआइगईअकुलाई॥ ८॥

उत्तरोवाच।

देवदेवयदुपतिदुखघाती।रक्षाकरहुमोरिसबभांती॥ तुमहिंछोड़िकोअभयप्रदाता। सबकोकालकरतजगघाता॥९॥
दोहा–आपसशरअतितप्तप्रभु, आयोसन्मुखधाइ। वरुनाशैमोंहिनाथपै, गर्भहिंदेइबचाइ॥ १०॥
(सू.उ.)सुनिउत्तरागिरागिरिधारी।प्रणतपालयहलियेविचारी।करनअपांडवअवनिविचार्‌यो।द्रोणपुत्रब्रह्मास्त्रपवाँर्‌यो।
तेहिक्षणज्वलितपंचवरबाना।गयोपांडवनओरमहाना॥पांडवतोलखिबाणनआवत।लियोअस्त्रनिजकोपहिछावत।१२।
लखिअनन्यदासनदुखकाहीं।तबश्रीहरिकरिकृपातहाँहीं॥रक्षाकियनिजचक्रचलाई। अंतर्यामीयोगिनराई॥ १३॥
गर्भउत्तराकोकरिदाया। छाइलियोहरिअपनीमाया॥ कौरववंशबढावनहेतू। कियेकृपाद्रुतकृपानिकेतू॥ १४॥
दोहा–अस्त्रब्रह्मशिरमोघनहिं, यद्यपिपरमप्रचंड। तदपिसुदर्शनतेजलहि, भयोतुरतशतखंड॥ १५॥
जनिअचरजमानहुमुनिराई। सबअचरजमयहैंयदुराई॥ जोनिजमायातेजगकाही। सिरजहिपालहिनाशकराही॥
मुनिजबकृष्णचंद्रसुखपागे। द्वारावतीचलनप्रभुलागे॥ तबजेब्रह्मअस्त्रतेछूटे। तिनकेदुखबंधनसबटूटे॥१६॥
ऐसेसुतसुतवधूसमेतू। आइपृथाढिगरमानिकेतू॥ स्तुतिकरनलगीसुखपाई। सुनहुशौनकादिकचितलाई॥ १७॥

कुंत्युवाच।

पुरुषआपईश्वरप्रकृतिहिपर। जनअदृश्यथितबाहरभीतर।१८।मुद्रितमायारूपकनाते। मूढमतिनकोनाहिंदेखाते॥
दोहा–इंद्रजालयुतजिमिनटै, जानतनहिंजनग्राम। अविनाशीइंद्रिनअदृश, ऐसेतुमहिंप्रणाम॥१९॥
छंदगीतिका–जेहिअमलमुनिपुनिपरमहंसहुभक्तिकरउरआनहीं।प्रभुतिनहिंतुमकोनारिहमलघुकौनविधिपहिचानहीं
वसुदेवश्रीदेवकीनंदनकृष्णनंदकुमारहौ॥ २१॥ अरविंदनामगोविंदपंकजमालिपरमउदारहौ॥
जलजातदृगजलजातपगतुमकोनमामिनमामिजू॥ २२॥ करुणानिधानप्रधानदेवनजगतअंतर्यामिजू॥
जिमिकंसखलतेकैददेवकिदुखहर्‌योयदुनाथहे। तिमिमोरपुनिपुनिसुतनयुतदुखनाशकियोसनाथहे॥ २३॥
विषवलितमोदकदानतेजिमिलाखभवनकृशानते। अरुद्यूतकोदरबारतेत्योंहिडवादिखलानते॥
वनवासदुखअरुप्रतिसमरभीष्मादिअस्त्रअमानते। कियत्राणतुमहमसबनकोद्रुतद्रोणअस्त्रमहानते॥ २४॥
मोहिंपरैविपतिविशेषिकैजेहिविपतिनाशनहेततू। प्रदमोक्षदर्शनदेहुसबथलआइकृपानिकेततू॥ २५॥
बहुशास्त्रपढिवेकोसुकुलकोविभवकोजेहिगर्व है। शठसोनलेतोनामतुम्हरोवृथाताकोसर्वहै॥ २६॥
निःकामभक्तनकोपियारेपरमदीनदयालहौ। तुमवैष्णवनकेपरमधनविनकामक्रोधहिजालहौ॥
हौशांतआत्मारामजनकैवल्यपदसुखधामहौ। तिनतुमहिकरहुँप्रणाममैंनिजभक्तपूरणकामहौ॥ २७॥
प्रभुकालरूपहितुमहिमानहुँजाहिलहिजनलरतहैं। विभुआदिअंतविहीनसबथलसमविचरतेरहतहैं॥ २८॥
विचरतमनुजसमजानकोउनहिंकाहइच्छाकरनकी।तुमरोनअप्रियप्रियकोऊमतिविषमतुमसेनरनकी॥ २९॥
अजअद्यकर्ताजगतव्यापीजन्मकर्महुरावरे। ऋषिवयसुनजलजंतुमैंगुनिलगतकौतुकसामरे॥ ३०॥
ब्रजमेंजबैदधिमट्टकिफोरीतबयशोदाकोपिकै। तूबांधिवेकोदामलैकरतुरतधाईचोपिकै॥
जेहिमृत्युहूडरपातसोतुमतबैताकोदेखिकै। भयमानिरोवतबह्योअंजनयुगलदृगनविशेषिकै॥
करिवदननीचेरहेसोतुवदशामनहिंविचारिकै। मोहिंमोहआवतपरतकछुनहिंजानितुमहिंनिहारिकै॥ ३१॥
कोउकहततुमकोपुण्ययशयदुनृपतिकीरतिकरनको।अजजन्मतेहिकुललियोजिमिचंदनमलययशभरनको॥ ३२॥

कोउकहतअसुरनवधनहितअरुसाधुजनरक्षनहिते । हरिप्रगटभेमथुरापुरीवसुदेवदेवकियांचिते ॥ ३३ ॥
कोउकहैसागरमध्यडूबतिनावजिमिबहुभारते । तिमिदुखितमहिभाराहरनप्रगटेविनयकरतारते ॥ ३४ ॥
कोउकहिअजातहिकामकर्महितेदुखितनरदेखिकै । जगश्रवनसुमिरनयोग कर्मनकरनकोचितलेखिकै ॥
प्रगटेत्रिलोकीनाथतुम्हरोसुयशजेबहुवारहैं ॥ ३५ ॥ मुखभनतसुमिरतसुनतगावत हर्षलहतअपारहैं ॥
जेइवेगिहीभवनाशकरितुवचरणकमलविलोकते । तिहुँलोकमेंमुदथोकलहिविचरहिंसदाविनशोकते ॥३६॥
हमसुहृदअनुचरराबरेतजिचरणऔरनआसहै । हमसकलभूपनकेविरोधीआपविननहुलासहै ॥
अबतेहमैंतुमभक्तहितकरछोंडिचाहतजानहौ । तुमहौगरीबनिवाज यदुवरपरमकृपानिधानहौ ॥ ३७ ॥
हमनामरूपविख्यातयद्यपितदपितुमविननाथजू।जिमिजीवविनइंद्रीविकलतिमिहमहुँसकलअनाथजू॥३८॥
जिमितुवचरणचिह्नितधरणिअतिहीलसतियहिकालहै । तिमिगमनकीन्हेनाथइततेलसैगीनविलासहै॥३९॥
धनवामपूरणदेशको ओषधितरुनकेजालहै । वनशैलसरितासरितपतितुवलखेहोतनिहालहै ॥ ४० ॥
प्रभुविश्वआतमविश्वमूरतिद्वारकाजोजाइये । तौपांडवनअरुयदुनमेंममनेहपाशछुडाइये ॥ ४१ ॥
यहविनयसुनियेनाथमेरीप्रीतितजिसंसारही । तुवचरणमेंअविचलरहैजिमिगंगपारावारही ॥ ४२ ॥
जयकृष्णअर्जुनसखायदुपतिदहनखलनृपवंशके । अतिवीरश्रीगोविंदगोद्विजसुरनपीडाध्वंसके ॥
दोहा–हरणहेतुभूभारके, लेहुनाथअवतार । योगेश्वरहेअखिलगुरु, तुम्हेंनमहुँबहुवार ॥ ४३ ॥
(सू.उ.)-यहिविधिकहीमनोहरवानी।प्रस्तुतिकरीजबहिंसुखमानी॥तबतेहिमोहतअसयदुराई।कुंतीसोंबोलेमुसक्याई॥
तेरीप्रीतिप्रतीतिविचारी । जावद्वारकैनहिंमतिवारी ॥ धर्मभूपहूतहँसुखछाई । जातजानियदुपुरयदुराई ॥४४॥
प्रेमसहिततहँकियोनिवारन।तबह्वैमोदितहरिजगकारन॥पृथाआदिनारिनसमुझाई । प्रविशिहस्तिनापुरहिकन्हाई ॥
कछुककालकीन्ह्योंतहँवासा । सहितपांडवनरमानिवासा ॥४५॥ तहँस्त्रीचरित्रजेजाने।व्यासादिकमुनिपरमसयाने॥
दोहा–तिनहूंते अरु कृष्णमधि, यदपि युक्तइतिहास । समुझायेंगे धर्मसुत, भयोन शोचविनाश ॥४६॥
प्राकृतमनते कौरवराजा । शोचबंधबांधवनसमाजा ॥ हे द्विजनेह मोहवशह्वैकै । बोलेसकलसभामुखज्वैकै ॥ ४७ ॥
इहांलखो अज्ञानहमारो । मेरेहियमें कियोअगारो ॥ गृध्र काग भक्षकयहदेहा । ताकेहितसबको तजिनेहा ॥
मैंदुरात्मनहिं धर्म विचारी । अक्षौहिणी अनेकनमारी ॥ ४८ ॥ बालविप्रसंबन्धहुमित्रै । पिताबंधुगुरुभ्रातपवित्रै ॥
इनकोद्रोह कियोवरजोरा । तातेनरकपरहुँगोघोरा ॥ यदपिजातबहुवर्ष हजारा । तदपिननरकहुते उद्धारा ॥४९ ॥
दोहा–यदपिनृपतियुत धर्ममें, नृपवधदूषत नाहिं । है यह हरिशासनतदपि, नहिंआवत मनमाहिं ॥ ५० ॥
जिनके सुतपतिहमहने, तिनतिय दोहन दोष । यज्ञादिककरि मिटहिंगे, यह न होत संतोष ॥५१॥
कीचछुटै नहिं कीचते, जिमि मदते मदनाहिं । येकहुजियवधदोष तिमि, जातन जागनमाहिं॥५२॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराजा बांधवेश विश्वनाथसिंहात्मज सिद्धि श्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुर श्रीकृष्णचंद्र कृपापात्राधिकारी श्रीरघुराजसिंहजू देव
कृतेआनंदांबुनिधौ प्रथमस्कंधे अष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

सूत उवाच ।

दोहा–बंधुवधवअघते त्रसित, जाननको सबधर्म । परेभीष्मकुरुक्षेत्रतहँ,तहँ गमनेनृपधर्म ॥१॥
तबतिनकेवरचारिउभाई । कनककलितस्यंदनन मँगाई॥ तरलतुरंगनतुरतहिधाई । चढिनृपसँगगमनेछाविछाई ॥
व्यासधौम्यआदिकमुनिराजू।चलेसकल निजसहितसमाजू॥२॥अर्जुनसंगचढेवरस्यंदन।गमनकियेहर्षितयदुनंदन ॥
तिनयुतधर्मराज अतिराजे । जिमिकुबेरमधियक्षसमाजे ॥३॥यहिविधिसकल समाजसुहाई । पहुँचीकुरुक्षेत्रमहँजाई॥
सबैविलोक्यो भीष्मदेवकहँ । दिवितेगिर्‍योदेवजनुभूमहँ।शरशय्यामहँपर्‍योप्रवीरा । कृष्णसहितपांडवतहँधीरा ॥
दोहा–भीष्मदेवकोकरतभे, सहितसमाजप्रणाम । बैठेतिनकोघेरिकै, भोउरआनँदधाम ॥ ४ ॥

तहँब्रह्मर्षिसुरर्षिसुजाना। औराजर्षि महर्षि महाना॥ भीष्मदेवके देखनकाहीं। सादरबैठेआइ तहाहीं॥५॥
पर्वतनारदधौम्यहुव्यास।भरद्वाजमुनि सहित समासा॥बृहदअश्वमुनितपहिनिकेतू।परशुरामनिजशिष्यसमेतू॥६॥
इंद्रप्रमदवशिष्ठविज्ञानी। त्रितगृत्समदअसितमुनिध्यानी॥ गौतमकक्षीवानमुनीशा। विश्वामित्रहुअत्रिऋषीशा॥७॥
श्रीशुकदेवसुदर्शनमुनिवर॥७॥कश्यपअंगिरसादिकतपवर। भीष्मदेवकेदेखनहेतू। आवतभेतहँशिष्यसमेतू॥८॥

दोहा—तिनमुनिवरनविलोकिकै, भीष्मदेवबड़भाग। देशकालअरुधर्मविद, पूज्यो युतअनुराग॥९॥

कृष्णप्रभावहिजाननवारो। जो अपनेउरकियेोअगारो॥ जो निजमायासमरकरायो। अपनेभक्तन अवशबचायो॥
ऐसेप्रभुजगदीश्वरकाहीं। पूज्योजेबैठेढिगमाहीं॥१०॥ पुनिपांडवनलख्योकुरुवीरा। बैठेनिजसमीपरणधीरा॥
अतिपुनीतअरुप्रेमभरेहैं। परमपराक्रमसमरकरेहैं॥ तिनहिंनिरखिभरिनैननीरा।बोल्यो भीष्मवचनगंभीरा॥११॥

भीष्मउवाच।

जिनके हरि द्विजधर्म अधारा।तितुम क्लेश सहतसंसारा॥यह अनुचित अरु महाकलेशा।सुनहुवचनममधर्मनरेशा१२

दोहा—अतिरथिपांडुनरेशजब, गमनेदेवअगार। तबकुंतीजाकेरहे, छोटेसुतसुकुमार॥

सोतुम्हरेहितदुःखअपारा। लह्योधर्मसुतवारहिवारा॥१३॥भयो जोतुमकोक्लेशमहान्यो।सोसबकालकृतैहमजान्यो॥
जाकेवशसबलोकबनाई। मारुतवशजिमिघनसमुदाई॥१४॥ तहाँ धर्मनंदनमहराजा। गदापाणिजहँभीमविराजा॥
जहँअर्जुनसबअस्त्रनधारी। जहाँसुहृदश्रीकृष्णमुरारी॥ गांडीवहुजहँचापप्रचंडा। तहौंविपतिआश्चर्यअखंडा॥१५॥
येहरिजौनकरनमनआनत।सोभूपतिकोउकबहुँनजानत॥जाकेजाननकीकरिचाहा।मोहतब्रह्मादिककविनाहा॥१६॥

दोहा—तातेदैवअधीनयह, जानिपरतकछुनाथ। ह्वैहरिभगतसोजगतमें, करहुप्रजानिसनाथ॥१७॥

येभगवानआदिनारायण। द्विजभक्तनपैदयापरायण॥ निजमायातेमोहितलोकै। विचरहिंगुप्तयदुनकेथोकै॥१८॥
जिनकोपरमगोप्यपरभाऊ।जानहिंशिवनारदमुनिराऊ॥ जानहिंकपिलदेवभगवाना।औरनजानहिंभूपसुजाना॥१९॥
मातुलपुत्रजिन्हैंतुमजानो।परममित्रप्रियआपनमानो॥सचिवऔरदूतहुजेहिकीनो।सूतसुहृदजाकोकरिलीनो॥२०॥
सर्वात्मासमदरशीयदुवर।सबओषधिकरहितकरुणाकर।अहंकारअरुदोषनजिनके।तातेविषमबुद्धिनहिंतिनके२१॥

दोहा—पैअनन्यनिजभक्तपै, राखतकृपामहान। तातेमेरेतनुतजत, दर्शदियोभगवान॥२२॥

जिनमेंरतिकरिमनहिलगाई। मुखसोंजाकेनामनगाई॥ योगीतजतकलेवरमाहीं।होतिमुक्तितेहिसंशयनाहीं॥२३॥
इष्टदेवसोईभगवाना। कृष्णचंद्रहरिकृपानिधाना॥ हाससुभगलोचनअरुणारे। मुखजलजातचारुभुजवारे॥
ध्यानहितेजोजाननलायक। तेममदृगगोचरयदुनायक॥ सोजवलगिमैंतजौंशरीरा। तबलौंखरेरहैंयदुवीरा॥२४॥

श्रीसूतउवाच।

भीष्मदेवकेसुनिवरबैना। जेशरशय्यापरेसचैना॥ धर्मनृपतिबहुधर्मनिकाहीं। पूछोमुनिनसुनततिनपाहीं॥२५॥

दोहा—मनुजनसाधारणधरम, अरुवर्णाश्रमधर्म। औरहुसबपूंछतभये, प्रवृतिनिवृतिकेकर्म॥२६॥

यहिविधिजबपूंछोनृपराई। सोवर्ण्योंभीषमकुरुराई॥ राजधर्मअरुदानहुधर्मा। सहितविभागमोक्षकेधर्मा॥२७॥
नारीधर्महुभगवतधर्मा। विस्तरसंक्षेपहियुतकर्मा॥ चारिहुफलअरुतासुउपाई। बहुइतिहासनमेंजोगाई॥२८॥
यहिविधिधर्मनकरतबखाना। कालउत्तरायणनियराना॥जाकोचाहतहैंयोगीजन। जेनिजइच्छातेत्यागहिंतन॥२९॥
तबह्वैमौनअनिमिदृगवीरा। अनासक्तसबतेह्वैधीरा॥ चारिबाहुपीतांबरधारी। खडेसामुहेकृष्णमुरारी॥

दोहा—तिनमेंमनहिलगाइदिय, भीषमपरमसुजान॥३०॥ ध्यानहितेबहुजन्मके, हतभेदुरितमहान॥
इंद्रिनवृत्तिनिवृत्तिमें, छूट्योसबअज्ञान। दूरिभईआयुधव्यथा, कृपापाइभगवान॥
भीष्मदेवभागवतवर, त्यागिकरतनिजदेह॥ यदुवरकीस्तुतिकरन, लागेसहितसनेह॥३१॥

भीष्मउवाच। हरिगीतिकाछंद॥

भगवानश्रीयदुनाथविधिशिवआदिईशनईशजे। निर्वधिकआनँदकंदविहरनहेतुश्रीजगदीशजे॥

निजरूपप्रगटतजगतमेंजगहेतुकरुणासिंधुजे । तेकृष्णमें निःकाममतिममलगै दीननबंधुजे ॥ ३२ ॥
त्रिभुवनरसालतमालदुतिजेहितनुपिताम्बरलसतहै । अविंदमुखपैअलककंदमिलिंदगणमनुबसतहै ॥
वरचारिबाहु विशालआयुधजासुछविसुखपागई । सोइविजयमीतहिचरणमेंतजिकाममतिममलागई ॥३३॥
रणतुरँगरजधूसरितकुंतलचारुचंचलसोहहीं ॥ श्रमस्वेदकणछनछनझरतइमिवदनभटजेहिजोहहीं ॥
ममनिशितशरवेधितवपुषजेहिकनककवचविराजहीं।यदुकुलकमलरवितेहिचरणममनपगेहठिआशुहीं ३४
सुनिसखाअर्जुनवैनदोउदलमध्यनिजरथवेगही । थिरकरिहन्योअरिआयुखनिनिजनजरतेताकिकैतहीं ॥
घनश्यामआनँदकंदश्रीवसुदेवनंदमुरारिहैं । सोइविजयमित्रहिकेचरणरतिहोइआजुहमारिहैं ॥ ३५ ॥
कछुदूरिलखिरिपुसैनअर्जुनबंधबधअघमतिडरी । कहिविजयतेतबसुभगगीताकुमतिसिगरीतिनहरी ॥
सबसंतआनँदकरनअसुरनदरनअशरनदरनमें । तिनचरणकमलनमेंलगैमनमधुपमदमधुझरनमें ॥ ३६ ॥
ममआततायीनिशितविशिखनिकवचजिनजरजरभयो।शोणितकननशोभितसुतनछनछनहिरनविचरनठयो।
जोरणहिंमहँतजिप्रणहिनिजममप्रणहिसांचहिकरनको।रथचरणगहिरथतेउतरिजिमिकेहरीकरिदरनको॥३७
तिमिहननमोहिंधावतडगीमहिपीतपटपुहुमीपरो । भगवाननाथमुकुंदसोगतिदेहिंजोसन्मुखखरो ॥ ३८ ॥
यककरलियेअनुरागसोंवरवागविजयतुरंगनै । यककरकसाअतिलसतरक्षतसखारथरवरंगनै ॥
जेहितकततेजशरीरजनसायुज्यमुक्तिहिपावहीं । तेहिकृष्णपदरतिहोइममयहिकालजेहिमुनिध्यावहीं॥३९॥
अतिललितविचरनकुंजविहँरनमंदविहसनिनाथकी।तिमिप्रीतियुताचितवनिरुचिरब्रजबाललखिमुदगाथकी॥
वहुमानलहिमनसिजविवशलीलाकरीबहुलालकी । तवपाइजेहिशीतलकियोतिनतापविरहाज्वालकी ॥
सोइनंदनंदनदुखनिकंदनजगतवंदितचरनमें । इहिकालममतिलगैअबनहिंभ्रमैजगदुखकरनमें ॥ ४० ॥
जहँदेशदेशनकेमहीशमुनीशततआवतभई । नृपधर्मराजहिराजसूयसमाजअतिशोभाछई ॥
तेहिसभामधिजोअग्रपूजनलह्योयदुवरनाथहैं । सोइआजुममदृगपथखरोमहिकरनअवशिसनाथहैं ॥ ४१ ॥
निजरचितदेहिनकेहियेनिवसतयदपिभगवानहैं । नहिंलगततिनकोदोषतिनकोवदतवेदपुरानहैं ॥
जिमिएकभानुजलादिमेंबहुरूपदृगनदेखातहैं । सोइकृष्णअजकोलह्योमैंतजिभेदमोहअघातहैं ॥ ४२ ॥

सूतउवाच ।

दोहा—यहिविधिकरिप्रस्तुतितहां, भीषमभक्तिसुजान । कृष्णचंद्रभगवानजे, हैंजगआत्ममहान ॥
तिनमेंमनवचदृष्टिकी, वृत्तिराखिमतिधीर । निजआतमदैकृष्णको, भीषमतज्योशरीर॥ ४३ ॥
भीषमगमनजानिहरिधामा । भयेमौनमनपूरणकामा॥सांझजानिजिमिसकलविहंगा।मौनहोहिंसबयेकहिसंगा॥४४॥
तवहिंगगनमहँनिकरनगारे । लगेबजावनदेवकतारे ॥ पुहुमीमहँअतिआनँदछाये । मानवसबदुंदुभीबजाये ॥
लगीसहनसबसाधुसमाजा । नभतेकुसुमझरेसुखसाजा ॥ ४५ ॥ मृतककर्मतहँभीषमकेरो । करवायोनृपधर्मघनेरो॥
दुखितभयेसबतहँकछुकाला । रहेजेसज्जनऔरभुवाला॥४६॥गुप्तनामतेश्रीपतिकेरी।मुनिकियस्तुतिमुदितघनेरी ॥
दोहा—पुनिश्रीकृष्णहिध्यायहिय, नृपतिमुनिनकीभीर । निजनिजआश्रमकोगई, सुनुशौनकमतिधीर॥ ४७ ॥
धर्मराजयदुराजयुत, हस्तिनपुरकहँजाइ । गांधारीधृतराष्ट्रको, दुखमेंद्योसमुझाइ ॥ ४८ ॥
तिनसंमातिलैकृष्णकी, आज्ञाधरिनिजशीश । पितापितामहकीकरी, राजधर्मअवनीश ॥ ४९ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीम
हाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारी श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदांबु
निधौप्रथमस्कंधेनवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

दोहा–मुनिमाधवकीमाधुरी, कथापरमअवदात। शौनकबोलेसूतसों, आनँदउरनसमात॥

शौनकउवाच।

हरणहारजेनिजधनकेरे। आततायिमतिमंदघनेरे॥ असदुर्योधनआदिककाहीं। कुरुक्षेत्रमहँहनिरणमाहीं॥
पाइअकंटकराज्यसुहाई। तहांधर्मनृपसंयुतभाई॥ पाल्योसकलप्रजनकेहिभांती। औरौकाहकियोअरिघाती॥
सुनतसूतअतिआनँदपाई।कथाकहनलागेचितलाई।१(सू०उ०)वंशदवानलतेकुरुवंशा।जान्योजेहियदुकुलअवतंशा।
तिनकोवंशअंकुरितकीन्ह्यो। नृपतिपरीक्षितधर्महिदीन्ह्यो। देसबराजधर्मनृपकाहीं। भवभावनभेमुदिततहांहीं॥२॥
दोहा–धर्मनृपतितहँभीष्मके, अरुहरिकेसुनिबैन। लह्योज्ञाननिर्मलहिये, छूट्योभ्रमदुखऐन॥
कृष्णभक्तवधर्मभुवाला। भाइनसहितमुदिततेहिकाला। समुद्रांतमहिपाल्योकैसे।देवराजदिविलोकहिजैसे॥३॥
वर्षाहिंमेघकालनिजपाई। भैमहिसकलमनोरथदाई॥ गौवैंश्रवतसुखदबहुक्षीरा। ब्रजनिशोचिदीन्हेंजिमिनीरा॥ ४॥
सरितसरितपतिशैलकतारा।तहँलतिकाओषधिहुअपारा।निजनिजऋतुनपाइतेहिकाला।फूलहिंफलहिंदेहिंमणिमाला
क्लेशव्याधिअरुतीनिहुँतापा।राजयुधिष्ठिरकाहुनव्यापा॥६॥कियोयुधिष्ठिरयहिविधिराजू।भाइनबंधुनसहितसमाजू॥
दोहा–तहँनिजमित्रविशोकहित, अरुभगिनीप्रियकाज। हस्तिनपुरमेंवसतभे,कछुककालयदुराज॥ ७॥
तहांद्वारकाजानविचारे। कृष्णचंद्रवसुदेवदुलारे॥ जाइमहीपसमीपमुरारी। तिनसोंमांगिविदासुखकारी॥
मिलितिनकोअभिवंदनकीन्हें। औरनसेअभिवंदनलीन्हें॥लहिकेयथाभोगसतकारा।स्यंदनपरभेकृष्णसवारा॥ ८॥
तहाँसुभद्राद्रौपदिरानी। औरउत्तरापृथासयानी॥ गांधारीधृतराष्ट्रमहीशा। औरौकृपाचार्यद्विजईशा॥
औयुयुत्सुनकुलौसहदेवा॥९॥भीमसेनधौम्यहुमहिदेवा।सहिनसकेहरिविरहअपारा।व्याकुलभयेसकलयकवारा १०
दोहा–जोसतसंगहिसेतज्यो, असतसंगबुधलोग। सोसुकृतहुहरिसुयशसुनि, तजिनसकैयहयोग॥११॥
सोइकृष्णमेंनेहलगाये। दर्शतपर्शतअतिसुखपाये॥ यकसँगआसनबैठिवताने भोजनशयनकियेसुखसाने॥
ऐसेपांडवश्रीहरिकेरे। सहैकौनविधिविरहघनेरे॥ १२॥ नेहपाशमेंबँधेप्रवीरा। तिनमेंभावकियेगंभीरा॥
अनमिषनिरखहिंनिपटदुखारी।पुनिपुनिघेरहिंजाइमुरारी॥१३॥महलहितेजवकढेमुरारी।तबकुंतीआदिकसबनारी॥
यदपिप्रेमवशआवहिंआंसू। तदपिअशुभगुणिरोकहिआंसू॥ तहांहोतिभैभीरघनेरी।बालवृद्धनरनारिनकेरी॥ १४॥
दोहा–भेरीशंखमृदंगबहु, वीणढोलकरताल। घंटाझांझनिशानहूं, बाजेबजेविशाल॥ १५॥
हरिदर्शनहितकुरुपुरनारी। चढींवेगहीविपुलअटारी॥ वर्षहिंसुमनवृंदचहुँओरा। जहँजहँगमनहिंनंदकिशोरा॥
प्रेमलाजयुततियमुसक्याई। कृष्णहिंदेखहिंनैनलगाई॥१६॥तहांछपाकरसरिसप्रकासा। मुकुतझालरैकरहिंविलासा
जटितजवाहिरदंडसुहावन।ऐसोकृष्णछत्र छविछावन॥१७॥सो अर्जुनलीन्हेनिजहाथा।गमनकियेसँगप्रिययदुनाथा॥
सात्यकिउद्धवसखापियारे। चमरचारुनिजनिजकरधारे॥ पुष्पनपूरितकृष्णतहांही।शोभितभयेराजपथमाहीं॥१८॥
दोहा–जिनकेप्राकृतगुणनहीं, दिव्यगुणनयुतनाथ। तेगमनत जहँतहँसुनत, द्विजआशिषसुखगाथ॥
तदपिसत्यद्विजआशिर्वादा।पैनयोग्यजेहिनितअहलादा।पैअतिप्रेमसहितद्विजकहहीं।तातेहरिअनुरूपहिअहहीं १९
तहँहस्तिनपुरकी सबनारी।लग्योप्रेमजिनहरिमहँभारी॥ कहहिंपरस्परवचनपियारे। देखिदेखिवसुदेव दुलारे॥२०॥
(स्त्रियऊचुः)॥प्रलैसमैजोसृष्टिहिआगू।रहितजोनामहिरूपविभागू॥जगदातमईश्वरप्रभुजोई।रहितसृष्टिसंकल्पहिहोई
तातेशक्तिशैनजबकीनो।रह्योजातबहियेकमुदभीनो।निमितउपादानहुजगकेरो। सोइयदुवरयहसुखदघनेरो॥२१॥
दोहा–प्रेरितनिजसंकल्पते, निजअधीनजोजीव। जेहिमूंदनवारीसदा, मायाप्रबलअतीव
सोमायाजगसिरजनकाहीं। उदितभईतबहरितेहिमाहीं॥ प्रविशिअनामअरूपजीवको। कियोनामवपुमोदसीवको॥
सकल शास्त्रते सिरजनवारे। तेई ये वसुदेवदुलारे॥ २२॥ जे योगी इंद्रीजितपूरे। जीते प्राणवायुजगरूरे॥
भक्तिसहितनिर्मल मनकरिकै।जाकोपददर्शहिंमुदभरिकै॥ २३॥ सोईयेदेवकीदुलारे। निर्मलहिरदैकरैंहमारे॥
जासुवेदवेदांत पुरातन।गावहिंकथा सो मुनिचतुरानन॥ जो निजलीला करिजगकाही।उत्पतिपालनप्रलैकराही॥

दोहा--जगतदोषजेहिनहिंलगत, सोइईशयहयेक। यदुकुलमें प्रभुप्रगटहै, लीलाकरत अनेक ॥ २४ ॥
जबजबबहु तामसीभुवाला। जगमहँकरत अधर्मकराला ॥ तबयुगयुगजगमंगलहेतू। धरहिंसत्ववपुरमानिकेतू ॥
सत्यसुकर्महुदयासुयशको। धारहिंयुतऐश्वर्यसरसको॥२५॥धन्यधन्ययदुकुलसखिलोगू।सबविधिसबैसराहनयोगू॥
जहँप्रगटेहरिअसुरनघालक। रमानाथत्रिभुवनके पालक॥धन्यधन्यमधुपुरी सुहावनि।परमपुण्यप्रदत्रिभुवनपावनि॥
जहँविहरेबहुभांतिमुरारी।मल्लकंसआदिकखलमारी॥२६॥स्वर्गहुसुयशअनादरकरनी।धरनीमहँशुचिकीरतिभरनी॥
दोहा--धन्यधन्यद्वारावती, जहां बसत यदुनाथ। जेहिहरिकीविहँसनसहित, निरखतहैंमुदगाथ ॥
सोनिजनाथकृष्णकोतितहीं।सादरप्रजाविलोकहिंनितहीं॥२७॥हेसखियेयदुवरपटरानी।सतिपूरवजन्महितपठानी॥
व्रतमज्जन होमादिककरिकै। पूज्योहरिको प्रेमहिभरिकै ॥ जेयदुवरअधरामृतकाहीं । बारबारपीवहिंमुदमाहीं ॥
करिकैजासुपानब्रजवामा। मोहितभईन पूजेहुकामा॥२८॥दैनिजविक्रममोलमुरारी। शिशुपालादिकगर्वहिगारी॥
हरयोस्वयंवरमहँगिरिधारी। जेप्रद्युम्नआदिमहतारी ॥ औरहुभौमासुरकहँमारी। ल्यायेसोरहसहसजेनारी॥ २९ ॥
दोहा--यदपिनारिअतिशयअशुचि, सदाकठोरसुभाउ। करतभईशोभिततेऊ, करिहरिमेंबहुभाउ ॥
नितहीबोलिमनोहरवानी । देतसदासुखशारँगपानी ॥ जेरानिनकेमहलनकाहीं। त्यागिनकृष्णकबहुँकहुँजाहीं ॥
तिनकीभाग्यकौनविधिकहहीं।जिननायकयदुनायकअहहीं(सू.उ.)यहिविधिहरिपुरनारिनकेरी।प्रीतिमईसुनिवाणिघनेरी
तिनकोकरिकटाक्षसुसक्याई। गमनकियोदैमोदमहाई ॥ ३१ ॥ धर्मनृपतिअतिनेहहिभीने। शत्रुनकीशंकामनकीने
यदुनंदनकेरक्षनकाहीं। दियचतुरंगसेनसँगमाहीं ॥ ३२ ॥ कौरवकृष्णविरहउरछाये । बहुतदूरिपहुँचावनआये ॥
दोहा--तिनहिंबुझाइविदाकियो, रहेजेप्राणनप्यार। सखनसंगगमनेपुरी, श्रीवसुदेवकुमार ॥ ३३ ॥
कुरुजांगलपांचालअरु, जामुनमाथुरदेश । कुरुक्षेत्रब्रह्मावरत, मत्स्यसारस्वतवेश ॥ ३४ ॥
मरुधनुऔसौवीरअरु, आभीरादिकनाकि। गयेदेशआनर्तको, गेकछुवाहनथाकि ॥ ३५ ॥
यात्रातीरथकोकरत, जहँतहँवसियदुराइ। तहँतहँकेसबजननते, बहुविधिपूजनपाइ ॥
इतद्वारावतिकोगये, सांझसमैयदुनाथ। उतपश्चिमसागरजलै, कियप्रवेशदिननाथ ॥ ३६ ॥

इतिसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीराजामहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनि
धौप्रथमस्कंधेदशमस्तरंगः ॥ १० ॥

सूतउवाच।

दोहा--पूरणसबधनधान्यते, निजआनर्तहिंदेश। पहुँचिबजायोशंखहरि, मेटतप्रजनकलेश ॥ १ ॥
कृष्णअधरलालिमालहेते । अरुकरकंजनमंजुगहेते ॥ जोदरश्वेतरह्योछविछायो । सोतहँअरुणस्वरूपसोहायो ॥
जैसेअरुणकमलमधिमाहीं। बोलतहंससुहातसदाहीं ॥ २ ॥ भुवनभीतिदायकभयकारी। ऐसोशंखशोरअतिभारी॥
सुनिद्वारकाप्रजासुखपाये। हरिदर्शनअभिलाषितधाये ॥ ३ ॥ सादरराखेभेटसमीपा । मनहुँदेखायेरविकहँदीपा ॥
जोनिजलाभहिपूरणकामा। यदुनंदनहैंआतमरामा ॥४॥ निजनाथहिघेरेचहुँओरे। जिमिनिजपितहिप्रीतियुतछोरे॥
दोहा--अतिप्रसन्नसबकेवदन, नहिंसमातहियचैन। सजलनैनगदगदगिरा, बोलतभेमृदुबैन ॥ ५ ॥

प्रजाऊचुः।

वंदैंचरणकमलतुवनाथा। जेहिध्यावैंविधिमुनिसुरनाथा ॥ चाहतजेजगमेंकल्याना। तिनरक्षकतुवपदनहिंआना ॥
जौनकालशिवविधिवशकरतो। सोऊतुवचरणनकोडरतो॥६॥तुमहींमातापिताहमारे। बंधुस्वामिगुरुसखापियारे॥
इष्टदेवतुमहींजगभावन। हमकोकहहुकृपाकरिपावन ॥ करिरावरीनाथसेवकाई। भयेकृतारथहमजगआई ॥ ७ ॥
प्रेमसहितमाधुरमुसकानी। तेहियुतचितवनिअतिसुखखानी॥ वदनरावरोजनसुखछावन।ऐसोरूपअनूपसोहावन॥

दोहा–सोनिरखहिंनिजनैनते, दुर्लभदेवनकाहि। तातेहेयदुनाथअब, अहैसनाथसदाहि ॥ ८ ॥

कमलनैननिजमित्रनदेखन।जाहुजबहिंकुरुमाथुरदेशन॥कोटिवर्षसमतबक्षणजाहीं। रविविहीनजिमिहगअकुलाहीं९
यहिविधिपुरवासिनकीवानी। श्रवनकरततहँसारँगपानी॥ कृपादृष्टिकरिआनंदवर्षत। कियोप्रवेशपुरीहरिहर्षत॥
जोद्वारकापरमसुखछावनि।विबुधनवृंदनमोदबढावनि ॥१०॥ मधुदाशार्हकुकुरयदुवंशी।अंधकअरुभोजअरिध्वंशी॥
बलप्रद्युम्नवीरअनिरुद्धा।सांबगदादिशुद्धजितक्रुद्धा॥निजसमवीरनभुजबलपालित। भोगवतीजिमिनागनिलालित॥
षटऋतुकेतरुलताविशाला। फूलहिंफलहिंजहाँसबकाला ॥ ११ ॥

दोहा–गृहवाटिकाविशालअति, अरुउपवनवरबाग। लतावितानननतेतने, सोहहिंसहितविभाग ॥

सोहहिंकमलनसहिततडागा।गुंजहिंमधुकररँगितपरागा॥१२॥अतिउतंगपुरकेदरवाजे। तोरनवलितविचित्रविराजे॥
औरहुराजमार्गकेद्वारा। लसहिंद्वारकापुरीमँझारा॥ बहुविचित्रबहुध्वजापताके। जेनिजछायानजरनढांके ॥ १३॥
गलीराजपथचौकबजारा। झारिगयेतहँएकहिवारा॥ सलिलसुगंधितसींचिगयेहैं। अक्षतअंकुरसुमनछयेहैं ॥ १४॥
दधिफलअक्षतइक्षुरसाला। धूपदीपवलिकुंभविशाला॥ यदुनगरीमहँद्वारहिद्वारा। हरिआगमगुणधरेअपारा॥

दोहा–यदुनगरीयदुराजप्रिय,अवशिहिआवतराज ॥ १५ ॥ यहसुनियदुवंशीसकल, हर्षसहितसमाज ॥

आनकदुंदुभिऔअक्रूरा। उग्रसेनबलरामहुशूरा ॥ १६ ॥ चारुदेष्णप्रद्युम्नप्रवीरा। जांबवतीसुतसांबहुधीरा॥
तजेअशनआसनअरुशैना। बढ्योमोदउरकहतबनैना॥ १७॥ आगेकरिभूषितवरवारन। पढतवेदवरविप्रहजारन॥
दधिदूर्वातंदुलयुतथारा। पाणिपुरोहितलियेउदारा॥ बजवावतबहुशंखनगारे। रथचढिमोदितयदुकुलवारे॥
सादरमणिनलुटावतदानी। हरिकोलेनचलेअगुवानी॥प्रेमपरमतनुसुरतिविसारे। कसमसपरतकढतनृपद्वारे॥१८॥

दोहा–कुंडललोलकपोलमधि, विधुवदनीछविवारि। हरिदर्शनलालचभरीं, वारवधूसुकुमारि ॥

चढिचढियाननचलींअपारा। गावतमंगलगीतउदारा ॥ १९ ॥ मागधवंदीसूतसुजाना। नटनर्तकगंधर्वअमाना॥
हरिचरित्रअतिअद्भुतगावत।चलेजातनृपसँगसुखछावत२० यहिविधिहरिसमिपमहँजाई।मिलेयथायोग्यहिसुखपाई॥
तहां आपनेबंधुनकाहीं। औरोपुरवासिन सुखमाहीं॥यथायोग्य सबकरसतकारा।कीन्ह्योतहँवसुदेवकुमारा॥ २१॥
उग्रसेनअरु पितुअरुरामै। बारबारतहँ कियोप्रणामै॥ गुरुजनअक्रूरादिककाहीं। कियअभिवंदनकृष्णतहाँहीं॥

दोहा–अरुमित्रनकोकरपरशि, मिलतभयेयदुनाथ। मंदहसनियुतजोहिकै, पुरजनकिये सनाथ ॥

नीचहुजनतहँरहेजेठाढे।हरिदर्शनलालचअतिबाढे॥ तिनकीअभिलाषाकरिपूरी।पूंछिकुशलदीन्ह्योंमुदभूरी॥ २२॥
तहँगुरुविप्रवृद्धयुतदारा। हरिकहँआशिषदईअपारा॥ वंदीजनवंदनबहुलैकै। कियप्रवेशपुरअतिमुददैकै॥ २३॥
द्वारावतीराजपथपाहीं। जबपहुँचेहरिआनँदमाहीं॥ तबपुरनारिलखनके हेतू। चढींअटारिनमोदसमेतू ॥ २४॥
छनछननिरखहिंरमानिवासा।तदपिनपूजहिदर्शनआसा२५जेहिउरमहँकमलाकरवासा।नितहीं सोहतिकरतिविलासा

दोहा–हगवारेनकोजासुमुख, पानिपपीवनयोग। लोकपाल पालक भुजा, जिनपदमुनिसुखभोग॥ २६॥

चामरचलत लसतदुहुँओरा।छत्रप्रकाशित जनचितचोरा॥ पीतांबरवनमालविराजै। मुकुटमौलिकुंडलश्रुतिछाजै॥
वर्षहिंसुमनचहूँकितनारी। बारबारआरतीउतारी ॥ जोरविशशिसुरधनुअरुतारा। दामिनियुतघनमाधियकवारा॥
करिपरकाशपरमछविछावै।हरिसुखमाउपमातबपावै॥२७॥यहिविधिसोहतपथलोकेशा। मातुपितागृहकियेप्रवेशा॥
तहांदेवकीआदिकरानी।हरिकोमिलींपरमसुखसानी॥निजजननिनवसुदेवकुमारा।शिरसोंकियप्रणामबहुवारा॥ २८॥

दोहा–तेजननीनिजअंकमें, प्रीतिसहितबैठाइ। निजनैननआनँद सलिल, सींच्योहरिहिबनाइ ॥

आनँदसिंधुमगनमहतारी।श्रवहिंपयोधरप्रेमहिभारी॥२९॥पुनियदुवरनिजमंदिरकाहीं।कियप्रवेशअतिआनँदमाहीं॥
परमअनूपमसकलविभूती।जेहिलखिलाजतविधिकरतूती॥हरिरानिनकेअतिछविछाजत।सोरहसहसमहलजहँराजत।
तिनमहलनमहँएकहिवारा।गयोनाथकरिरूपअपारा॥३०॥वसिविदेशबहुदिनमनभावन। कियोआपनेऐनहिआवन॥
दूरिहितेतिनकृष्णहिदेखी।रानीपरममोदमनलेखी॥लज्जितलोचनयुतनिजआनन।विरहतापतजितनुमहँभानन ३१॥

दोहा–तजिनिजनिजपर्यंकको, अतिआतुरतियधाइ। मिलतभईनिजपीतमें, आनँदअंबुबहाइ ॥
रानिनहियेप्रेमअतिगाढो। सोनसमातआशुमिसिबाढो ॥ लज्जातेरोंकींहदृगनीरा । पैपियमिलतरह्योनहिंधीरा ॥
तनमनतेमनमोहनप्यारी। पुनिपुनिभेंटहिंवदननिहारी ॥ पुनिपीतमकहँऐनलेवाई । निजनिजपर्यंकनिबैठाई ॥
सादरपूजनकरिसबरानी।अनमिषनिरखहिंमुखसुखसानी।।३२।।यद्यपिपियपदअंकहिधरिकै। पद्मपाणिपरसहिंमुदभरिकै
तद्यपिनवनवछबिदरशाती। जाकोलखिनहिंदीठिअघाती।। कौननारिजोहरिपददेखी।छनछनछकितनहोतिविशेषी ॥
दोहा–यद्यपिकमलाचंचला, थिरनरहतिइकठाम। तद्यपिहरिपदछबिछकित, तजतिनएकोयाम ॥ ३३ ॥
यहिविधिभूमिभारतेभूपा। अक्षौहिणिअतिओजअनूपा ॥ तिनहिपरस्परवैरकराये । आपनिरायुधसबहिंजुझाये ॥
वसननघरिपावकप्रगटावत। जिमिमारुतसबवनहिजरावत३४ सोइहरिकरिभक्तनपरदाया।जगतप्रगटनिजरूपदेखाया
सोवरनारिनकेमधिमाहीं। नरसमकियेविहारसदाहीं।। ३५।। जिनतियअमलमनोहरहासा।करतभावगंभीरप्रकासा ॥
लाजसहितचितवनिअभिरामा।लखिमोहतछोडतधनुकामा।।तेप्रमदाकरिअतिचतुराई।वशकरिसकींनजिनयदुराई।।
दोहा–जगतअसंगीजेमनुज, लीलाकरहिंमहान। तिनहरिकोंसंगीगुणत, निजसमजनअज्ञान ॥ ३७ ॥
यदपिआपकोप्रकृतिमें,तेहिगुणपरसतनाहिं। जिमिआतमकेगुणसबै, आवतनहिंबुधमाहिं ॥
यहीईशकीईशता, तिन्हैंमंदमतिनारि। बंसियकांतअसकांतको, निजवशगुणैंनिहारि ॥ ३८ ॥
नहिंजानहिंनिजनाथको,अनुपमपरमप्रभाव। जिमिप्राकृतमतिईशकहि,निजवशगुणहिंसचाव ॥ ३९ ॥

इतिसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौप्रथमस्कंधेएकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥

दोहा–परममनोहरसुनिकथा, शौनकमतिमनलाइ। प्रेमभरेपुनिसूतसों, कह्योवचनहर्षाइ ॥

शौनकउवाच।

तज्योद्रोणसुतअतिबलवाना।अस्त्रब्रह्मशरतेजमहाना।।गर्भविराटसुताकोलायो। ताकोश्रीहरिफेरिजियायो ॥ १ ॥
सोमहातमाकेमतिवारे । जन्मकर्मजेपरमपियारे ॥ ताकोनिधनभयोजेहिभांती । लहीजौनगतिनृपअहिघाती ॥
अनशनव्रतभूपतिजोकीन्ह्यो। श्रीशुकदेवज्ञानजेहिदीन्ह्यो।।२।।सुननचहैंसोकथासुखारी।हमसबकीश्रद्धाअतिभारी।।
कहनयोगजोहोइसुजाना। तौविस्तरतेकरहुबखाना ।।३ ॥ सुनिशौनककेवचनसोहाये। लागेसूतकहनचितचाये ॥

सूतउवाच।

दोहा–धर्मराजमुददैप्रजा, पाल्योपुत्रसमान। तजीआशसबकामकी, कृष्णचरणधरिध्यान ॥ ४ ॥
धनधरणीमखजनतियभाई। जंबूद्वीपहुकीठकुराई ॥ निर्मलसुयशस्वर्गलोंछायो। सुरदुर्लभऐश्वर्यसोहायो ॥ ५ ॥
एसबतनकमोदनहिंदीने। धर्मनृपतिमुकुंदरसभीने ॥ जैसेअतिभूंखेनरकाहीं। भूषनवसनदेतसुखनाहीं ॥ ६ ॥
रह्योउत्तरागर्भहिजोई । हेभृगुनंदवीरतहँसोई ॥ जरनलग्योजबअस्त्रहितेरे । देख्योएकपुरुषतबनेरे ॥ ७ ॥
रूपअँगुष्ठप्रमाणसोहायो। कनकमुकुटशिरमेंछविछायो।।अमलअनूपरूपवरजाको।लजहिंश्यामघननिरखतताको।।
दोहा–पीतांबरअतिलसतवपु, निजजनपरमदयाल ॥ ८ ॥ कंचनकुंडलकानमें, चारिसुबाहुविशाल ॥
अरुणनैनदीरघअतिभावत। लूकसमानहिगदाभवांवत।।९।।अपनेचहुँकितनंदकुमारा । रक्षतधावतवारहिंवारा ॥
अस्त्रतेजहतकरतगदाते।जिमिहिमिनाशततरणिप्रभाते१०मिलखिनिकटकृष्णकहँबालक।कियविचारयहकोममपालक
तहँविभुधर्मपालभगवाना। कियोनाशसोअस्त्रमहाना।।दशमासिकबालककेदेखत। तहँअंतर्हितभेप्रियलेखत ॥११॥
पुनिजबकालभयोमुदमूला।तबग्रहउदैभयेअनुकूला ॥ तबहिंपांडुकोवंशहिधारी। पांडुसमानतेजअतिभारी ॥१२॥

दोहा–भयोपरीक्षितभूपको, जन्मजगतसुखदानि । देखियुधिष्ठिरमुदितभे, परमोत्सवउरआनि ॥

धौम्यकृपादिकविप्रबोलाई । धर्मभूपमंगलपढवाई ॥ जातकर्मनिजनातीकेरो । करवायोनृपधर्मघनेरो ॥ १३ ॥
गौवेंकनकधरणिबहुग्रामा । हयगयवररथअन्नललामा ॥ पौत्रपरीक्षितजन्महिमाहीं।दियोधर्मनृपविप्रनकाहीं ॥ १४ ॥
नृपविनीतसोंद्विजवरबोले । ह्वैसंतोषितवचन अमोले ॥ हेकुरुवंशबढावनहारे । सुनियेचितदैवचनहमारे॥ १५ ॥
द्रोणअस्त्रतेनशतपरेषी।करिअनुकंपाविष्णुविशेषी ॥ रक्षणकियसबविधिसुखधामा । तातेविष्णुरातहै नामा॥ १६ ॥

दोहा–नृपतुम्हरेसुतकोसबन, परमयशीजगमाहिं । महाभागवत होइगो, यामें संशयनाहिं ॥ १७ ॥

धौम्यकृपाचार्यहुकेवैना।सुनिबोलेनृपधर्मसचैना ॥(युधिष्ठिरउवाच)॥परमयशीराजर्षिमहाना।जेममकुलमेंभयेसुजाना
तिनकेसमकरिसुयशकुमारा । ह्वैहैकीनहिंकहौउदारा ॥ सुनतनृपतिकेवैनसुहाये । बोलेसबद्विजवरसुखछाये॥१८॥
(ब्रा०उ०)।सुनहुयुधिष्ठिरपौत्रतुम्हारो।ह्वैहैसाधुजननकोप्यारो।प्रजनपालिहैकरतनिदेशा।जिमिमनुसुतइक्ष्वाकुनरेशा
सत्यसंधब्रह्मण्यमहाना । ह्वैहैजगरघुनाथसमाना॥१९॥शरणागतपालकअरुदाता । ह्वैहैशिबिनृपसरिसविख्याता ॥

दोहा–याज्ञकज्ञातिनकोसुयश, वर्धकभरतसमान॥२०॥अर्जुनअर्जुनसहसभुज, समधनुधरबलवान ॥

दुराधर्षपावकसमहोई । दुस्तरसागरसमजगजोई । गमनकरैजोसिंहसमाना । सेवनयोगसरिसहिमवाना ॥
क्षमावानछोनीसमह्वैहै । जननिजनकसमचूकनज्वैहै ॥२२॥ सरिसपितामहहँसमतामाहीं । शंकरसमप्रसन्नतापाहीं ॥
हरिसमसबभूतनकोपालक । कृष्णदासह्वैहैयहबालक ॥ २३ ॥ ह्वैहैसबगुणवंतकुमारा । रंतिदेवसमपरमउदारा ॥
धार्मिकनृपययातिसमहोई॥२४॥बलिसमधीरजमानहुँसोई ॥ प्रह्लादहिसमभक्तिहिधारक । ह्वैहैसज्जनसंग्रहकारक ॥

दोहा–अश्वमेधकरिहै अमित, वृद्धनसेवीपेश ॥ २५ ॥ रचिहैबहुराजर्षिमहि, देहैशठनकलेश ॥

धरणीअरुधर्महिकेकारण।कलिदारुणमदकरिहिविदारण२६द्विजसुतशापहितक्षकतेरे।आपनिमृत्युजानिअतिनेरे ॥
देहादिकममतासबत्यागी। ह्वैहैश्रीहरिपदअनुरागी ॥ २७ ॥ व्यासतनयतेज्ञानहिंपाई । गंगातटमनतजिकुरुराई ॥
करिहैश्रीहरिलोकपयाना।यामेंकछूनह्वैहैआना (सू०उ०) यहिविधिधर्मभूपसोंकहिकै।ज्योतिषकोविदमुनिमतलहिकै
नृपसोंलहिपूजनसतकारा।गमनेसुनिनिजनिजहिअगारा।।गर्भवासमहँजिनकोहेर्‌यो।जनमधितिनहिंध्यानकरिहेर्‌यो॥

दोहा–तातेनामपरीक्षितै, लह्योउत्तरानंद । अरिघालकपालकप्रजन, दायकप्रजनअनंद ॥ ३० ॥

गुरुजनपालितबढ्योकुमारा।शुक्लपक्षजिमिशशिसुखसारा ३१।तहांधर्मनृपमनहिंविचार्‌यो।राज्यहेतुमैंज्ञातिसँहार्‌यो
विनावाजिमखसोंयहपापा । छूटिनसकहिकरेसंतापा ॥ सोमखविनधनह्वैहैनाहीं । लगेराज्यधनखर्चहिमाहीं ॥
केहिविधिलैऔरौधनभूरी । जातेहोइवाजिमखपूरी ॥३२॥ यहिविधिकरिमनमेंअंदेशा । बोलिपठायोहरिहिनरेशा ॥
कह्योसकलआपनोविचारा । सोसुनिकैवसुदेवकुमारा ॥ अर्जुनादिनृपभायनपाहीं । दियरजाइधनल्यावनकाहीं ॥

दोहा–उत्तरदिशिमेंमरुतनृप, कीन्हीयज्ञउदार । दानदियेतेजोबच्यो, तहँधनरह्योअपार ॥

तहांजाइनृपचारिहुभाई । ल्यायेसोधनअतिसुखपाई ॥ ३३ ॥ सोधनकरिकैमखसंभारा । अश्वमेधकरिकैत्रयवारा॥
कृष्णचंद्रकोपूजनकीन्ह्यो । बहुविधिदानद्विजनकहँदीन्ह्यो॥नृपकीसकलकामनापूरी।पातकभीतिभईसबदूरी ॥३४॥
यदुवरनृपहियज्ञकरवाई । करिमित्रनपैप्रीतिमहाई॥ कछुककालतहँकियोनिवासा । सुखसोंबीतिगयेबहुमासा॥३५॥
पुनिनृपसोंह्वैविदाविहारी । पांचालीसोंकहिसुखकारी ॥ बंधुनमिलिअतिआनँददैके । अपनेसँगअर्जुनकहँलैके ॥

दोहा–यदुवंशिनसबसँगले, श्रीवसुदेवकुमार । कियोद्वारकाकोगमन, हेशौनकमतिवार ॥ ३६ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ प्रथमस्कंधेद्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

सूतउवाच।

दोहा-मित्रासुततेज्ञानलहि, जाननलायकजानि। हस्तिनपुरआयेविदुर, करितीरथसुखदानि ॥ १ ॥
कीन्ह्योप्रश्नविदुरबुधजेते। मित्रासुतउत्तरदियतेते ॥ लहीभक्तिगोविंदहिमाहीं । पूँछनआशरहीपुनिनाहीं ॥ २ ॥
हस्तिननगरविदुरजबआये। तिनहिंदेखिअतिआनँदछाये ॥ तहाँधर्मनृपसंयुतभाई। संजयनृपयुयुत्सुकुरुराई ॥३॥
कुंतीद्रुपदसुतागांधारी। औअश्वत्थामामहतारी ॥ अरुउत्तरासुभद्रादोऊ । औरौकुरुकुलकीतियसोऊ ॥ ४ ॥
बंधुसुतनयुतपुरनरनारी। चलेलेनअगुवानसुखारी ॥४॥ यथायोगमिलिविदुरहिदेखी।कियअभिवंदनसकलविशेषी॥
दोहा-विगतप्राणजैसेसकल,इंद्रियगणकुम्हिलान। पुनिप्राणनकोपायके, पावतमोदमहान ॥ ५ ॥
आनँदलहिआनँदजलढारहिं। अतिउत्कंठिततनुनसम्हारहिं॥विदुरहिवरआंगनबैठाई।कियपूजनराजासुखछाई॥६॥
विविधभाँतिजेउनारजेवाई। सकलमार्गकोश्रमहिमिटाई ॥ नम्रिततहांधर्मनृपराई। कह्योवैनसबजननसुनाई ॥ ७ ॥
(यु०उ०)।तुम्हरेहिबाहुपक्षकीछाया॥मातुसहितकरिअभयबढाया।जातेअग्निविषादिकतेरे।रक्षकतुमहिंरहेयकमेरे ८
तातेसुनहुककासुखकारी। करहुकबहुँकहुँसुरतिहमारी॥ विचरतयहिमाहिमंडलपाहीं। रहेआपकेहिवृत्तिहिमाहीं॥
दोहा-पुण्यक्षेत्रअरुतीर्थवर, कौनकौनमहिमाहिं। सेवनकीन्ह्योआपभल, जेसुखदानिसदाहिं ॥ ९ ॥
तुमसमजेभागवतउदारा।अहैंआपहीतीर्थअपारा॥करहिंतीर्थउनकोअतिपावन।सुमिरतहियदुवरमनभावन ॥ १०॥
तिनकेअहैंनाथयदुनाथा। प्रियममबांधवसुहृदसुनाथा ॥ ऐसेयदुवंशिनकहँताता । देखेकबहुँबुद्धिविख्याता ॥
वसहिंद्वारकामहँसुखमाहीं।ऐसहुसुन्योकहूंकोहुपाहीं॥ ११॥जबयहिविधिपूंछ्योनृपराई।तबहिंविदुरअतिआनँदपाई॥
देख्योसुन्योकियोपरकाशा।पैनकह्योयदुकुलकोनाशा। १२॥जोअतिअप्रियदुसहनरनको।विनकारणभोशोकभरनको
दोहा-जाहिसुनतपांडवसकल, ह्वैहैंअवाशिअधीर। करुणावानविचारियह, कहिनसकेमतिधीर ॥ १३ ॥
ज्येष्ठबंधुधृतराष्ट्रहिकेरो । चाहतउरकल्याणघनेरो ॥ सबसोंप्रीतिकरतमतिवारो । देवसमानलहतसत्कारो ॥
ऐसेविदुरप्रमोदसमेतू। बस्योकछुकदिननृपतिनिकेतू॥ १४॥विदुरअहैयमकोअवतारा।सुनुशौनकयहकथाप्रकारा॥
एकसमैभटभूपतिकेरे । तस्करगोलनिविडमहँघेरे ॥ रपटेचोरनकोगहिल्याये ॥ कोपितनरपतिकहँदर्शाये।
भूपतिहुकुमदियोअनखाई। सबकहँशूलीदेहुचढाई ॥

दोहा-तबभटचोरनमुनिसहित, शूलीदियोचढाइ। मुनिकेगड़ीननेकहू, चोरमरेदुखपाइ ॥
लखिकौतुकनृपमनहिंविचाऱ्यो। शूलीतेमुनिकाहँउताऱ्यो॥त्राहित्राहिकरिमुनिपदमाहीं।गिऱ्योभूपकहचीन्ह्योनाहीं॥
मुनिकहभूपतिसोंतजिरोषू। यहिमहँहैतुम्हारनहिंदोषू॥ यहकहिमुनियमसदनसिधाये। यमसोंकह्योकोपउरछाये ॥
रेयममोरकौनअपराधा । जातेमोहिंभईयहबाधा ॥ तबयमकह्योसुनहुमुनिराई । जबतुमबालकरहेबनाई ॥
तबइकयेडीकेगुदमाहीं। बेधिसींकछोड़्योनभकाहीं ॥ सोइपापकोयहफलपायो । हमनहिंतुमकोकछूसतायो ॥
दोहा-तबमुनिकोपितह्वैकह्यो, बालकहोतअजान। लघुअपराधहिमेंदियो, हमकोदंडमहान ॥
तातेसौवर्षहियमराई । शूद्रहोहुतुममहिमेंजाई ॥ सोईविदुरभयोमतिमाना । भक्तिवानभागवतप्रधाना ॥
जबलगिशूद्ररहेयमराजा। तबलगिदंडदियोदिनराजा॥ १५॥राज्यपाइनृपधर्मविशेषी।कुलधारकनिजजनतिहिलेखी॥
लोकपालसमसंयुतभाई।आनँदलह्योभूतिभलिपाई। १६।यहिविधितिनहिंवसतगृहमाहीं।शाशतमहिअचरजतेहिनाहीं
छत्तिसवर्षकियोनृपराजू।भायनबंधुनसाहितसमाजू॥बीतिगयोअतिदुस्तरकाला। मुदवशजान्योनाहिंभुवाला॥ १७॥
दोहा-विदुरसमैतबजानिकै, कहधृतराष्ट्रहिपाहि। महाराजनिकसोद्रुताहि, देखहुयहभयकाहि ॥ १८ ॥
कबहूँकौनेहुकियेउपाई।काहूकीनकालभयजाई॥सोइप्रभुप्रेरितकालकराला । आयोहमसबकोअबहाला ॥ १९ ॥
जौनकाललहिकैजगप्रानी।त्यागहिंनुनहुतुरतसुखखानी॥जासुप्रभाव जियहुहठिताता। जहँसुतवितितियकेतिकबाता
पितुभ्रातासुतसुहृद तुम्हारे । गयेसकलसंगरसंहारे ॥ उमिरिसिरानिजराअबआई । येतेहुपरममतानहिंजाई ॥

वसहुपरायेगृहमहँभाई । अबहुँजियनकीआशमहाई॥२१॥जौनआशतेआपभुवाला । बसहुहस्तिनापुरहिंविशाला ॥
दोहा—जौन तुम्हारेसुतहन्यो, भीमसेन बलवान । आदरविनताको दियो, ख्यातअहौसमश्वान ॥ २२ ॥
जिनहिंलाखके भवनजराये।विषभोजनजिनको करवाये॥जिनकेतियकोकेशहिकर्ष्यों । जिनकोधनधरणीहरिहर्ष्यो॥
तिनतेअबजीवननहिंनीको । तबहुंजीवनदियमनठीको॥२३॥यद्यपिचहौनतजनशरीरा। तद्यपिजराजीर्णकुरुवीरा ॥
वसनपुरानसरिसयहजैहै । अंतसमैयहिकोउनबचैहै॥२४॥जोविरक्तह्वैतजिभवबंधन । निर्जनजाइरहितस्वारथतन ॥
छाँडतहैंहरिपदमनलाई। सोइमतिवानसकलश्रुतिगाई ॥२५॥ जोनिजतेअथवापरतेरे । लहिविरागदुखत्यागिघनेरे॥
दोहा—हरिकोहियमेंध्यानधरि, करतजोकाननगौन । सोइनरवरज्ञानीमहा, सुनहुनृपतिमतिभौन॥२६॥
यातेजामेंकोउनहिंजाने । करहुआपउत्तरहिपयाने ॥ अबआवत हैकालकराला । पुरुषनकेगुणनाशनवाला ॥२७॥
यहिविधिअनुजविदुरजबकहेऊ।अंधनृपतितबबोधहिलहेऊ॥नेहपाशदृढतजिकुलकेरी । विदुरआँगुरीगहिविनदेरी ॥
निकसिचलेउत्तरकुरुराई।विदुरदियोतेहिराहबताई।२८।पतिपयानलखिसुबलकुमारी।निकसिचलींसँगसतीसुखारी ॥
तीनिउँगये हिमालयकाहीं।जहँवसिमुनिमुदलहतसदाहीं॥जिमिरणमहँसुखपावहिंशूरा।लहततहांतिमिमुनिपदपूरा॥
दोहा—अर्धरात्रिमेंविदुरलै, निकसेदंपतिकाहिं । हस्तिनपुरकेलोगकोउ, नेकहुजानतनाहिं॥ २९ ॥
पुनिजबभयोविमलपरभाता । तबहिंयुधिष्ठिरशत्रुअजाता ॥ संध्यावंदनकियोनहाई । होमकियोविधियुतमनलाई ॥
तिलगोधूमकनकमणिधामा । दै विप्रनकहँकियोप्रणामा ॥ वृद्धभूपगुरुवंदनहेतू । गयेभूपधृतराष्ट्रनिकेतू ॥
गांधारीधृतराष्ट्रहिकाहीं । विदुरहुकहँतहँदेखेनाहीं ॥ ३० ॥ तहँसंजयकोलखिनृपराई । पूंछनलगेबहुतविलखाई ॥
संजयअंधवृद्धगुरुमेरे । कहाँगयेकिमिमिलहिंनहेरे ॥ ३१ ॥ जाकेपुत्रनभयोविनासा । गांधारीकहँकियोनिवासा ॥
दोहा—चचासुहृदममविदुरप्रिय,कहाँगयेमतिधाम । संजयवेगिबतावहू,गमनकियोकेहिकाम ॥३२॥
धौंमोहिंअतिअविवेकीजानी । पुत्रनकोउरशोकहिआनी ॥ निंदितम्वहिंलहिनहिंदुखभंगा । गंगामहँडूबेतियसंगा ॥
पितापांडुजबगेसुरलोकै।तबहमसबशिशुरेहसशोकै॥बहुदुखनाशिमोदजिनदीन्ह्यो।तेदोउआजुगमनकहँकीन्ह्यो ३३
(सू.उ.)संजयसुनतधर्मनृपवैना।भयोविकलछूट्योसबचैना॥सोगृहसोनिजनाथनदेखी।कहिनसक्योदुखभयोविशेषी३४
पुनिनिजपाणिपोंछिदृगआंसू।धरिधीरजउरविगतहुलासू॥संजयसुमिरिनाथपदकाहीं।बोलतभयेधर्मनृपपाहीं ॥३५॥

संजयउवाच ।

दोहा—गांधारीअरुविदुरयुत, ताततुम्हारोतात । हमहूंकोछलिकहँगयो, नहिंयहजानैंबात ॥ ३६ ॥
तहँनारदतुंबुरयुतआये।देखियुधिष्ठिरअतिसुखपाये॥करिप्रणामआसनबैठाई।अतिआदरयुतविनैसुनाई॥३७॥(यु.उ.)
मुनिममपितुकेभ्रातादोऊ । गांधारीसुतशोकितसोऊ ॥ कहाँगयेप्रभुवेगिबतावो । दुखसमुद्रकेपारलगावो ॥ ३८ ॥
तबमुनिधर्मनृपतिसोंबोले । सकलजगतव्यवहारहिखोले॥३९॥कोहुनशोचहुतुममहराजा। ईश्वरकेवशहैजगकाजा॥
सिगरेलोकपालयुतलोका । यहिहरिकहँवलिदेहिंविशोका॥४०॥सोइभूतनकोभगवाना । करतसँयोगवियोगमहाना॥
दोहा—जिमिनाथेबांधेवृषभ, करहिंस्वामिकोकाम । तिमिअर्पहिंबलिईशको, जनबांधेश्रुतिदाम ॥ ४१ ॥
मृन्मयपुरुषनारिजिमिबालक।योगवियोगकरतअरिघालक॥तिमिजगमेंसंयोगवियोगू।खेलतईशकरतसुखभोगू४२॥
नित्यलोककोजोतुममानो । तोकाहेपुनिशोचहिठानो ॥ जोअनित्यमानोयाहिलोकै । तौविनहेतुकरहुकिमिशोकै ॥
नित्यानित्यहोयसंसारा।अहैअसंभवपांडुकुमारा ॥४३॥तातेनहिंकोउशोचनलायक । शोचअज्ञानहिंतेकुरुनायक ॥
तातेमोहिंविनधे।किमिराहिहैं ।जीवतकिमिकलेशबहुसहिहैं॥ यहअज्ञानजनितविकलाई।छोंडिदेहुआशुहिनृपराई४४
दोहा—पंचभूतमयदेहगुण, कालकर्मआधीन । सोकिमिरक्षणकरिसकै, औरनकोबलहीन ॥
जिमिअहिग्रसितलोगदुखपाई । औरेकोनहिंसकतबचाई४५जिनकेकरतेमृगहतिखाते।मृगवनतृणचरिअवशिअघाते
बडेमीनलघुमीननखाहीं । जीवनजीवनजीवनमाहीं ॥ ४६ ॥ तातेयहजगवपुभगवाना।आतमआतमकृपानिधाना ॥
भीतरबाहरव्यापकजोई । स्वयंप्रकाशअनादिहिसोई ॥ मायाकृतसुरनरतनुमाहीं।येकहिनिवसतलखोसदाहीं॥४७॥
सोइहरिमहाराजजगपालक।लियअवतारअसुरकुलघालक४८देवकार्यकीन्ह्योसबभांती।कछुअवशेषरह्योअरिघाती॥

दोहा–जौलौंयदुवरधरणिमहँ, विचरहिंअतिसुखपाइ । तौलौंतुमहूंधर्मयुत, शासनकरोवनाइ ॥ ४९ ॥
नृपधृतराष्ट्रविदुरगांधारी।गयेहिमालयज्ञानहिंधारी॥हिमिगिरिदक्षिणवरमुनिआश्रम । कियेनिवासतहांतजिभवभ्रम॥
जहाँकरनप्रियऋषिनउदारा।भईसप्तविधिसुरसरिधारा॥ तातेसप्तश्रोतयहनामा । तेहिआश्रमकोभयोललामा॥५१॥
तहँमज्जनकरिकैतिहुँकाला।होमहुँकरिविधिसहितभुवाला।जलभषितज्योविषयसमुदाई।जितआसनजितश्वासबनाई
पांचोंइंद्रिनयुतमनजीत्यो।हरिरतिकरिसतरजतमरीत्यो॥५३॥विज्ञानातमजीवहिमाहीं।करिसैयोजितइंद्रिनकाहीं॥
दोहा–परब्रह्ममेंजीवको, दीन्ह्योभूपलगाइ। घटाकाशघटहतभये, जिमिनभमिलोदेखाय ॥ ५४ ॥
क्रोधलोभमदमोहनशाई । षटइंद्रिनहरिमाहँलगाई॥सलिलहुकोतजिदियोअहारा । निवसतजडसमभूपउदारा॥५५॥
तिनहिनअबतुमपुनिगृहलावो। तज्योकर्मतिनगतिननशावो॥अवतेपचयेंदिनमहराजा।तजिहैंकुरुपतितनुदुखसाजा॥
योगानलकरिकैतनुजरिहै५६गांधारिहुतेहिमहँजरिमरिहै।यहकौतुकलखिविदुरसुजाना।हर्षशोकदोउपाइसमाना५७
तीर्थकरनकोगमनकरैगो । हरिहरभक्तिप्रमोदभरैगो॥५८॥नारदयहिविधिनृपहिबुझायो।तुंवुरुयुतसुरलोकसिधायो॥
दोहा–धर्मराजनारदवचन, उरधरिशोचगमाइ । राज्यकरनलागेसुखी, हरिपदमनहिंलगाइ ॥ ५९ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुर श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदांबुनिधौ प्रथमस्कंधेत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥

सूतउवाच ।

दोहा–कृष्णचरितजाननलिये, यदुनलखनकेहेत । अर्जुनगमनेद्वारका, जहँश्रीरमानिकेत ॥ १ ॥
सातमासबीते सुखछाये । विजयद्वारकातेनहिंआये ॥ तबहिंधर्मनृपशत्रुअजाता । लखतभयेतहँबहुउत्पाता ॥ २ ॥
ऋतुविपरीतधर्मजेहिमाहीं । ऐसेकालभीमगतिकाहीं॥क्रोधलोभमिथ्यामनलागे । पापजीविकाजनअनुरागे॥ ३ ॥
भयोप्रचारकपटव्यवहारा । स्वारथरतमित्रताअपारा ॥ पितुअरुमातुसुहृदअरुभाई । दंपतिहुनमहँहोतलराई॥४॥
बेचनलगेपितादुहिताको । पुत्रनपालहिंमातुपिताको ॥ वेदविमुखब्राह्मणबहुतेरे । पढ़हिंवेदमहिशूद्रघनेरे ॥
दोहा–ऐसेअतिउत्पातलखि, सूचकअशुभअपार । भीमसेनसोंधर्मनृप, बोलेकरतविचार ॥ ५ ॥
(युधिष्ठिरउवाच)जबतेविजयद्वारकापाहीं।पठयोयदुनविलोकनकाहीं॥हरिचरित्रजाननकेहेतू।सोगमनेजहँरमानिकेतू
सातमासउतवसतविताये । अबहुँभीमतुवअनुजनआये॥तासुहेतुहमजानतनाहीं । शंकाहोतिपरममनमाहीं॥ ७ ॥
नारदमुनिजोकालहिंगायो । सोधौंपरमभयावनआयो ॥ प्राणहुप्रियजेहिमहँयदुराई । जैहैंद्वारावतीविहाई ॥ ८ ॥
जिनहरितेसंपतिअरुराजू । दाराप्राणसकलसुखसाजू ॥ जासुकृपाममकुलपरिवारा । लह्योसुतनयुतमोदअगारा ॥
दोहा–जासुकृपालहिरिपुनसों, पाईविजयमहान ॥ जासुकृपासबलोकमें, पूजनलह्योअमान ॥ ९ ॥
देखहुभीमभीमउत्पाता।नभतेभूतेतनतेजाता॥ विविधअमंगलविविधजनावत । निरखतजाहिमोदमनभावत ॥१०॥
वामअंगपुनिपुनिफरकाहीं । कंपनहोतअमितउरमाहीं॥तातेजानिपरतअसभाई । एसबअशुभआशुदुखदाई ॥११॥
वमतअनलपरभातशृगाली।रविसन्मुखबोलतविकराली॥निर्भयरोवतसन्मुखश्वाना॥१२॥करहिंगवादिकवामपयाना
खरमहिषादिकदक्षिणदौरे । रोवतलखेपरेंजगघोरे ॥ १३ ॥ भयदर्शायकपोतउलूका । निद्रातजिकरतेकुलिकूका॥
दोहा–मृत्युदूतइनकोगुनौ, करनचहहिंगृहसून ॥ १४ ॥ धूमिलदिशादिखातिहै, रविपरमंडलदून॥
कंपैधरणिधरणिधरसंगा । वज्रपातबहुहोइअभंगा ॥ घहरहिंगगनमाहँघनघोरा ॥ १५ ॥ पवनप्रचंडचलतचहुँओरा॥
छाईरेणुभयोअँधियारा । वर्षहिंवारिदशोणितधारा॥१६॥भयोमंदनभभानुप्रकाशा । करहिंयुद्धग्रहलखहुअकाशा॥
प्रेतपिशाचनकेगणधावैं । मनहुँगगनमहिआशुजरावैं ॥ १७॥ सरगुनऔमानससबकेरो । क्षोभितदृगनपरतहैहेरो॥
त्योहींनदनहोहिंसमुदाई । क्षोभितसकलठौरदर्शाई ॥ याज्ञकगुणद्विजयज्ञनिमाहीं । होमदेतहैंअग्निहिपाहीं ॥

दोहा—आहुतिलहिहिशिखिकुंडमें, ज्वलतिनहींयहिकाल । जानिपरतकछुहैनहीं, कहाकरैधौंकाल ॥ १८ ॥
वछरापयकोपाननकरहीं । गौवैंथनतेक्षीरनटरहीं ॥ गौवैंरोवहिंडारहिंआंसू । ब्रजमेंवृषभनलहतहुलासू ॥ १९ ॥
देवनकीप्रतिमापसिनाहीं।गमनतरोवतसरिसलखाहीं॥देशग्रामपुरआश्रमआकर।मुदश्रीहतप्रदअशुभमहाकर २०॥
इनउत्पातनतेयहमानै।तजिधरणीहरिकियोपयानै॥२१॥यहिविधिअशुभनिरखिनृपराई।चिंताकरतचित्तअकुलाई ॥
विजैद्वारकातेदुखछाये ॥ लौटिधर्मभूपतिढिगआये ॥ २२ ॥गिरतभयोपदमहँअतिआरत।वारवारनैननजलढारत ॥

दोहा—नीचेकोकरिवदननिज, बोलतनहिंकछुवैन ॥ बैठ्योनृपतिसमीपमहँ, हतशोभासबचैन ॥ २३ ॥
ताहिविलोकिभूपअकुलाई । सुमिरिबातनारदकीगाई ॥ सभामध्यअर्जुनसोंराजा ।पूँछतभयोछोंडिसबकाजा॥२४॥
(यु.उ.)कहहुद्वारकामहँधनुधारी।यदुवंशीसबअहैंसुखारी॥अंधकसात्वतयदुमधुभोजा।अरुदशार्हवंशीयुतओजा २५
जेमेरेप्राणनतेप्यारे । सकलशत्रुकुलनाशनवारे ॥ शूरनाममातामहमेरे । अर्जुनहैंयुतक्षेमघनेरे ॥
अनुजसहितमातुलवसुदेवा।वसतसुखीलहिपुत्रनसेवा२६॥ममसातुलिनसाततियताकी।वसहिंतहाँसुतयुतसुखछाकी

दोहा—पुत्रवधूयुतदेवकी, सुखीअहैसबभांति ॥ २७ ॥ उग्रसेननृपजियतहै, जासुपुत्रकुलघाति ॥
देवकतिनकेअनुजपियारे । अहैंकुशलसबसुहृदहमारे ॥ सुतसुफल्कअक्रूरप्रवीरा । अहैंसकलविधिकुशलशरीरा ॥
गदजयंतसारनरिपुघाती । पारथकहौकुशलसबभांती२८यदुवंशिनकेप्रभुबलरामा।कुशलअहैंसबविधिबलधामा २९
महारथीयदुवंशिनमाहीं । जगमेंजेहिसमानकोउनाहीं ॥ सोप्रद्युम्नपराक्रमभारी । सुखीबसतद्वारकामँझारी ॥
अरुअनिरुद्धधर्नुद्धरधीरा । सुखीअहैजेहिवेगगँभीरी ॥ ३० ॥जाम्बवतीकोसांबकुमारा।चारुदेष्णऋषभादिउदारा ॥

दोहा—अरुसुखेनआदिकसकल, जेप्रधानयदुवीर । कुशलअहैंसबभांतिसों, कहहुपार्थमतिधीर ॥ ३१ ॥
श्रीयदुवरकेसखापियारे । उद्धवशुद्धबुद्धिबलवारे ॥ श्रुतिदेवादिकअरुहरिअनुचर । सुखीद्वारकानिवसहिंनिजघर ॥
नंदसुनंदआदियदुवंशी।सुखीअहैंअर्जुनअरिध्वंशी॥३२॥सिगरेरामकृष्णभुजपालित।कुशस्थलीकुशलीप्रभुलालित॥
कबहुँसुरतिवेकरहिंहमारी।जिनसोंनेहबँध्योअतिभारी ॥ ३३॥ अरुगोविंदब्रह्मण्यमहाना।भक्तनप[illegible]कजेभगवाना ॥
सुहृदनसहितसुखीपुरपाहीं। राजहिंसभासुधर्मामाहीं ॥३४॥सबलोकनकेमंगलहेतू । यदुकुलनिवसहिंखगकुलकेतू॥

दोहा—जासुसहायकहैंसदा,श्रीबलदेवप्रवीर । यदुकुलसागरचंद्रमा, जिनकोश्यामशरीर ॥ ३५ ॥
पालितजासुमहाभुजदंडा।लसहिद्वारकाप्रभाअखंडा॥हरिसन्मानितजहँयदुवंशी।विहरहिंसुरसमशत्रुविध्वंसी ॥३६॥
करिसेवनजेहिचरणउदारा । सोरहसहसपरमप्रियदारा ॥ इंद्रानिहुदुर्लभसुखकरहीं । नितनवकृष्णमोदउरभरहीं ॥
जिनकीप्रीतिहेतुहरिचाये । जीतिपारिजातादिकल्याये ॥ ३७ ॥ जेहरिबाहुदंडबलतेरे । यदुवंशीहैंअभयघनेरे ॥
शुक्रहिजीतिसुधर्माल्याई । जामेंविहरहिआनँदछाई ॥ऐसेकृष्णकुशलसबभांती।कहहुवेगिअर्जुनअरिघाती ॥ ३८ ॥

दोहा—तुमहुकहहुनिजकुशलसब, कततुववदनमलान । किधौंबहुतदिनवसतते, पायोतहँअपमान ॥ ३९ ॥
किधौंकह्योकोउवचनकठोरा।प्रगटकहौसबपांडुकिशोरा॥दानदेनकहिधौनहिंदीन्ह्यो।धौंशरणागतत्यागहिकीन्ह्यो४०
बालवृद्धरोगीअरुनारी । गोब्राह्मणरक्षानहिंधारी॥नारिअगम्यगमनमनल्याये ॥४१॥ किधौंगम्यतियतजिइतआये ॥
कैधौंमारगमहँधनुधारे।निजसमऔलघुजनतेहारे॥४२॥बालवृद्धतजिभोजनकीन्ह्यो।निंदितकर्महिधौंमनदीन्ह्यो४३॥
पारथजानिपरतअबऐसो । कहौबुझाइसुनोतुमतैसो ॥ श्रीयदुनंदनप्राणपियारे । परममित्रअरुनाथहमारे ॥

दोहा—तिनअरुतुमतेह्वैगयो, दारुणदुसहवियोग । यहीमानदुःखितभये, और नहै कछुरोग ॥ ४४ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुर श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदांबुनिधौ प्रथमस्कंधे चतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

सूतउवाच।

दोहा—कृष्णसखानिजबंधुको, बहुशंकामनलाइ। जबयहिविधिपूंछतभये, धर्मनृपतिअकुलाइ ॥ १ ॥
तबश्रीकृष्णविरहदुखसानो। हृदयकमलअरुवदनसुखानो॥प्रभामंदतनुशोकहिछायो।यदुवरसुमिरतबोलिनआयो २
पुनिजसतसकैधीरजधारी। दोउकरपोंछिविलोचनवारी॥यदपिप्रत्यक्षनअहैमुरारी।तदपिप्रेमव्याकुलधनुधारी ॥३॥
श्रीयदुवरकोअतिहितकरिबो।संगसंगसबठौरविहरिबो ॥ हरिकोनिजसारथिकोह्वैबो। प्रबलरिपुनसोंआसुजितैबो ॥
यहसबसुमिरतगरभरिआयो।अग्रजसोंअर्जुनयहगायो४।(अ०उ०)महाराजवहछलीमुरारी।गमन्योकरिमोसोंछलभारी
दोहा—देवनकोविस्मय दियो, ऐसोजोममतेज। सोहरिमोउरदुःखभरि, गमन्योटोरिकरेज ॥ ५ ॥
जिनतेयकक्षणहोतवियोगू। प्रियनहिंलागतजतसंयोगू ॥ हौंतौप्राणहीनजगजैसे। हरिबिनहोतभयेहमतैसे ॥ ६ ॥
जिनकेबलतेद्रुपदनिकेतू। नृपबहुजुरेस्वयंवरहेतू ॥ तिनदुर्मदमदमर्दनकीनो। धनुचढाइवेध्योहममीनो ॥
लहीसभामधिद्रुपदकुमारी। सोहरिमोहितजिगयेपधारी ॥७॥ जिनकेबलखांडववनभायो।सुरनजीतिमैंअग्निचरायो॥
मयकृतसभाजासुबलपाई।जोत्रिभुवनमहँअनुपमगाई॥ जेहिबलमखनृपदियबलिमारी।सोहरिमोहितजिगयेपधारी ८
दोहा—नृपनशिरनजाकोचरण, दशहजारगजजोर। बीससहसनृपकैदकिय, जाहरजयेकिशोर ॥
ताकोभीमजासुबलमारो। सकलनृपनकोकियोउधारो ॥ जरासंधशिवकेमखहेतू। धनसंचितकियनिजहिनिकेतू ॥
जेहिबलसोंधनलह्योसुखारी। सोहरिमोहितजिगयेपधारी॥९॥ राजसूयअभिषेचितकेशा।द्रुपदसुताकीसुनहुनरेशा ॥
ताकोदुःशासनअपकारी। गहिल्यायोतेहिसभामँझारी ॥ पांचालीतहँरोवनलागी। यदुवरचरणचित्तअनुरागी ॥
जेहिबलभीमतासुउरफारी।पियोरुधिररणमध्यप्रचारी॥जेहिबलरोवहिंसबरिपुनारी।सोहरिमोहितजिगयेपधारी १०॥
दोहा—दुर्योधनकेभवनमें, दुर्वासाऋषिराज। दशहजारमुनिसंगलै, आयेभोजनकाज ॥
दुर्योधनतहँकरिसत्कारा। भोजनदियोअनेकप्रकारा ॥ भेप्रसन्नमुनिभोजनकरिकै। दुर्योधनसोंकहिमुदभरिकै ॥
माँगुमाँगुकुरुपतिवरदाना। कीन्ह्योममसत्कारमहाना ॥ कह्योसुयोधनतबकरजोरी। सुनहुनाथविनतीयहमोरी ॥
जोप्रसन्नअतिभयेकृपाला। तौवरदानदेहुयहहाला ॥ वनमहँजहाँयुधिष्ठिरराजा। तहँ ऐसेमुनिजोरिसमाजा ॥
जबकरिअशनउठै चाली। जाकीद्युतितिहुँलोकविशाली ॥ तबतुमतहांजाहुमुनिराई। यहवरदेहुमोहिंहर्षाई ॥
दोहा—तबदुर्वासाहर्षिकै, कह्योतथास्तुनरेश। योंकहिमुनिनसमाजलै, गमनतभेवहिदेश ॥
बरतनमांजिकुटीमहँ पैठी। जबद्रुपदीकरिभोजनबैठी ॥ तबदुर्वासापहुँचेजाई। जहँतुमरहेसकलयुतभाई ॥
लखितुमकियप्रणामयुतनेहू। पुनिकहआशुहिभोजनदेहू ॥ तबतुमयहमनमाहँविचारो। हमसबकोह्वैहैसंहारो ॥
जोमोहिंबासनदियदिनराऊ। ताकोरह्योयहीपरभाऊ ॥ करैनद्रुपदीजबलोंभोजन। तबलोंअशनकढ़ैतहितेघन ॥
द्रुपदसुताकरिभोजनलीन्ह्यो। ताकोधोइकुटीधरिदीन्ह्यो ॥ अबकिनभोजनइन्हेंकरैहै। विनभोजनहठिशापहिपैहै ॥
दोहा—योंगुणिमुनिसोंतुमकह्यो, परमकलेशहिपाइ। मज्जनकरिआवोसरित, भोजनकरोबनाइ ॥
दशहजारमुनिलैसँगमाहीं। मुनिगमनेसरिमज्जनकाहीं ॥ इतहमपांचोबंधुदुखारी। द्रुपदसुतासोंगिराउचारी ॥
मुनिभोजनहितकरहुउपाई। तबद्रुपदीसुमिर्‍योयदुराई ॥ रक्षहुयाहिअवसरमहँनाथा। तुमहीतेमैंअहौंसनाथा ॥
तहांकृष्णताहीक्षणआये। द्रुपदीसोंबोलेचितचाये ॥ भोजनदेहुभूखअतिलागी। तबद्रुपदीबोलीदुखपागी ॥
धोइचुकीसूरजप्रदबासन। केहिविधिकरौंआपअनुशासन ॥ तबहरिकह्योभांडइतल्याई। द्रुपद्रीमोकोदेहिदेखाई॥
भांडल्याइद्रुपदीतेहिदीन्ह्यो। शाकपाततेहिमहँलखिलीन्ह्यो ॥
दोहा—दुर्वासादशसहसमुनि, सहितहिवेगिअघाहिं। योंकहिभक्षणकरिभये, अंतर्धानतहाहिं ॥
दुर्वासाविनअशनअघाने। लज्जितशिष्यनसहितपराने॥जोइनदुःखनदियोनिवारी।सोहरिमोहितजिगयेपधारी॥११॥
जिनकेबलशिवकहँरणमाहीं। तुष्टकियेकरियुद्धहिकाहीं ॥ पाशुपतास्त्रदियोत्रिपुरारी।सोहरिमोहितजिगयेपधारी ॥

जिनकेबलऔरहुअसुरारी। देतभयेमोहिंअस्त्रनिभारी॥ जिनकेबलमेंइंद्रकेमहलनि। इंद्रअर्द्धआसनमहँसुखसानि॥
बैठेयहीकलेवरधारी। सोहरिमोहितजिगयेपधारी॥ १२॥ देवलोकमहँविहरतभूपा। सुरनसहितसुरनाथअनूपा॥

दोहा–जासुकृपाबलबलितमम, सधनुयुगलभुजदंड। जिनकीकीन्हींआशसब, हतनअरिनबरिवंड ॥ १३॥

जासुकृपालहिरणहिप्रचारी। हन्योनेवातकवचअरिभारी॥ रह्योस्वर्गमेंहयशविस्तारी।सोहरिमोहितजिगयेपधारी॥
जिनकेबलविराटपुरमाहीं।कुरुदलसिंधुअगमअतिकाहीं॥विनप्रयासउतऱ्योद्रुतपारा। रिपुशिरमणिधनहन्योअपारा॥
लह्योअकेलेविजयप्रचारी। सोहरिमोहितजिगयेपधारी॥१४॥भीष्मकर्णगुरुशल्यप्रवीरा।औरहुभूपतिअतिरणधीरा॥
तिनसैननिकेमधियदुराई। मेरोसारथिह्वैसुखछाई॥हन्योरिपुनकेओजानिहारी।सोहरिमोहितजिगयेपधारी॥ १५॥

दोहा–द्रोणद्रोणसुतकर्णअरु, भीष्मजयद्रथवीर। शल्यसुशर्माआदिभट, बाह्लीकरणधीर॥

येसबअस्त्रअमोघअपारे। मोपैएकहिवारपँवारे॥ जेहिभुजबलतेमोतनुकाहीं। कियेपरशतेनेकहुनाहीं॥
जिमिप्रह्लादहिअस्त्रसुरारी।सोहरिमोहितजिगयेपधारी १६ जासुकमलपदमुक्तिहिहेतू।भजहिंसंतनिजत्यागिनिकेतू॥
हाइकुमतिमैंसोहरिकाहीं। सारथिकरिराख्योरणमाहीं॥ जवहिंजयद्रथमारनहेतू। मैंगमन्योरथचढिकपिकेतू॥
मध्यदिवशमधिसैनहिमाहीं। थाकेअश्वचलेकछुनाहीं॥ तबमैंउतरिपऱ्योरथतेरे। तहां शत्रुसमरहेघनेरे॥

दोहा–जेहियदुवरपरभाउते, मोहितसकेनमारि। सोहरिहाइविहाइमोहिं, अबककहँगयेपधारि॥ १७॥

विहँसिकरणहांसीहरिकेरी। औरउचितवनचारुघनेरी॥ हेपारथअर्जुनकुरुनंदन। आवहुइतैसखाअरिकंदन॥
असकहिमाधवकीगुहरावनि।सुरतकरतदुखकरतसुहावनि॥१८॥भोजनशैनकियोइकसंगा।रथचढिविहरेसहितउमंगा
बहुविधिवचनरचनकरिबोले। निजनिजहियकोआशैखोले॥ तुमहिसत्यवादीजगमाहीं।तुमसमछलीअहैजगनाहीं॥
ऐसेहमरेवचनकठोरा। सह्योनेहवशनंदकिशोरा॥ जैसेसखासखाकीसहतो। सुतकटुवचनपितामुदलहतो॥ १९॥

दोहा–सोहमयेनरपतिसुनो, जबयदुपतिममित्र। गमनकियोनिजधामको, करिकैकलाविचित्र॥

तबहमलैकेतिनबहुनारी। हस्तिनपुरकहँचलेदुखारी॥ तहाँमहतलघुगोपअपारा।मोहिंजीतिहरिलीन्हींदारा॥२०॥
सोइभूपगांडीवकोदंडा। सोईरथतेइबाणप्रचंडा॥ सोइतुरंगसोइमहारथीहम। त्रिभुवनमेंभटविदितनमोहिंसम॥
सोसबविनयदुपतिनृपराई। इकक्षणमहँममगयेविलाई॥ जिमिकुपात्रमहँनिःफलदाना। ऊसरबोवहिवृथाकिसाना॥
वृथाहोमतिमिभस्महिमाहीं।तिमिहीरविनममसकलवृथाहीं।पूछ्योकुशलजासुमहराजा।तिनकोकुशलसुनोदुखराजा

दोहा–रहेद्वारकावसतसब, तहँसांबादिकुमार। मुनिआश्रमगमनतभये, करिमनकपटअपार॥

करीऋषीशनतेरुठिहांसी। दईशापऋषिकोपप्रकासी॥ तातेप्रेरितसबयदुवंशी। करिवारुणीपानमतिध्वंसी॥
तातेमत्तसकलयदुवीरा। क्षेत्रप्रभासहिसागरतीरा॥ लरेपरस्परसकलप्रचारी। शस्त्रनजष्टिनमुष्टिनमारी॥ २२॥
भयेअजानसमानसुजाना। लरिलरिसबतजिदीन्हेप्राना॥ भयोहाइयदुकुलकोनाशा।केहिविधिवरणोंशोकप्रकाशा॥
चारिपांचयादवतिनमाहीं। वज्रआदिबचिगयेतहाहीं॥२३॥ जगजनसदापरस्परलरहीं।फेरिपरस्परप्रीतिहुकरहीं॥

दोहा–सोयहचरितविचित्रअति, ईश्वरकेरनिदेश। हानिलाभजीवनमरण, यशअपयशहुनरेश॥ २४॥

जिमियेजीवजबरजलमाहीं।तेलघुजीवनकहँहठिखाहीं॥अरुजिमिजेजलमहँबलवारे।लघुनमारिसमलरहिंप्रचारे॥२५॥
तिमिजेयदुवरअतिबलवाना। तिनकेकरतेश्रीभगवाना॥ महीमहीशननाशकरायो। भूकोपरमभारउतरायो॥
पुनियदुवंशरूपभूभारा। नाशिपरस्परताहिउतारा॥ २६॥ देशकालहीकेअनुसारा। अर्थभरेहरिवचनउदारा॥
काननपरततापहरिलेहीं।सोसुधिकरतदुसहदुखदेहीं२७ (सू.उ.)यहिविधिअर्जुननेहबढाये।कृष्णकमलपदचित्तलगाये

दोहा–बुद्धिभईअतिविमलतेहि, गयोछूटिसबमोह॥ मनप्रसन्नअतिहीभयो, रह्योनकामहुकोह॥ २८॥

सुमिरतवासुदेवपदकंजनि। बाढ़ीआशुभक्तिमनरंजनि॥ तातेसकलवासनाछूटी। हरिपदरतिततिअतिमनजूटी॥
आदिमहाभारतकेजोई। यदुवरगायोगीतासोई॥ कालकर्मतमवशजोभूलो। सोइअर्जुनकहँभयोअतूलो॥ २९॥
ब्रह्मज्ञानप्रकटउरभयऊ।विषमबुद्धिआतमतमगयऊ॥३०॥ स्थूलसूक्ष्मतनुरहितहिंमान्यो।अपनेकहँत्रैगुणविनज्ञान्यो

जन्मरहितगुणिभयोविशोकू। जीवनमुक्तलह्योमुदथोकू॥३१॥भूपगमनसुनिरमानिवाशा।अरुसवयदुवंशिनकोनाशा॥
दोहा-करियकाग्रमनकोतहाँ, धर्मनृपतिदुखछाइ। गमनमहापथकरनको, निजचितदियोलगाइ ॥ ३२ ॥
हरियात्रायदुकुलसंहारा। मुखते अर्जुनजबहिंउचारा॥सुनिकुंतीहरिपदमनदीन्ह्यो।तजिशरीरहरिलोकहिकीन्ह्यो३३
जेहियादवतनुकरिभूभारा। हन्योसकलवसुदेवकुमारा॥ सोयदुकुलतनुतज्योमुरारी। जिमिकंटकतेकाँटनिकारी॥
तजैदुहुँनकोपुरुषसुजाना।तैसहिंईशहिंदोउसमाना॥३४॥ जिमिनटनिजवहुरूपदेखावै।सभामध्यपुनिताहिछिपावै॥
जिमिमत्स्यादिकरूपहिधारी। अंतर्द्धानहिंकरहिंमुरारी॥ हन्योजोतनुतेभारमहाना। सोतनुहरिकियअंतर्द्धाना३५
दोहा-सुननयोगजिनकीकथा, यदुवरदीनदयाल। तजीमहीजेहिदिनहिंते, दिनप्रगट्योकलिकाल॥
जोअविवेकिनअतिदुखदायक।जेहिहरिनामहिंसुमिरनलायक३६तहँनृपनिजजनगृहपुरराजू।लख्योकलितकलिसकलसमाजू
हिंसालोभअसत्यअधर्मा। व्यापितमहीदेखिनृपधर्मा॥ बदरीवनकहँगमनविचारी। लगेकरनतेहिहेतुतयारी ॥३७॥
नीतिनिपुणनातीनिजनिजसम। परमशूरजाकेनहिंकछुभ्रम॥तेहिहस्तिनपुरकरिअभिषेकू।दियोराज्यदैसीखअनेकू॥
कियोनाथमहिसिंधुमालिनी।दईसैन्यनिजशत्रुशालिनी॥३८॥अनिरुधनंदनवज्रहिकाहीं।अभिषेकहिकियमथुरामाहीं
दोहा-प्राजापत्यहिइष्टकरि, पावकआत्मनिधाय ॥३९॥ भूषणवसनहुतजिदियो, हरिपदमनहिंलगाइ॥
ममताअहंकारतजिदीन्ह्यो। भवबंधनकोनाशहिकीन्ह्यो॥४०॥ मनमहँइंद्रिनवृत्तिलगाई। मनकोप्राणहिदियोबसाई॥
प्राणहुकीलयकियोअपानै।वृत्तिसहिततेहिदियोअमानै॥कारणपवनसमानहिकाहीं।दियमिलाइनृपधर्मतहाहीं॥४१॥
पंचभूतयुतइंद्रियगनको। त्रिविधअहंकारहिमहँतिनको ॥ मेल्योजिनमहँवायुसमेतू। धर्मनृपतिह्वैमोदनिकेतू॥
महत्तत्वमहँअहंकारकहँ। महत्तत्वकोमूलप्रकृतिमहँ॥इनसबकहँजीवात्मामाहीं। जियेसमर्प्योब्रह्महिपाहीं॥४२॥
दोहा-चीरवसनधरिमौनह्वै, छांड्योसकलअहार। खुलेकेशजडमत्तसम, ह्वैकैनृपतिउदार ॥ ४३ ॥
देखतसुनतनकुरुकुलसाईं। ह्वैकेअंधवधिरकीनाईं ॥ हरिध्यावतउत्तरनृपराई। गमनेजहँनहिंआवतजाई॥४४॥
अंतकालजहँसंतासिधारी। तनुतजिनिवसतलोकमुरारी॥ महिमहँलखिकलिकालबनाई। तिनकेपीछेविचर्योभाई॥
निकसिचलेतजिकुलपरिवारा।तज्योमोहधनधामअपारा४५ मरणठीककरिहरिपदमाहीं। दीन्ह्योसोलगाइमनकाहीं॥
हरिध्यावतगैभक्तिअमानी।ताकरिबुद्धिविशुद्धिमहानी॥तिनहरिमेंइकांतमतिजिनकी।सकलवासनाछूटीतिनकी ४७
दोहा-ऐसेपांडवगतिलही, दुष्टनदुर्लभजौन। कियोवासआनंदमय, श्रीनिवासकेभौन॥ ४८ ॥
विदुरप्रभासक्षेत्रमहँजाई।कृष्णचरणमहँमनहिंलगाई॥तजिशरीरनिजलोकसिधारो।पितरनसहितमहामतिवारो॥४९॥
पतिनगमनलखिद्रुपदकुमारी।सुमिरतचरणकमलगिरिधारी॥छांडिशरीरमहामतिवारी।वासुदेवकेलोकसिधारी॥५०
येपांडवअतिप्रियहरिकेरे। धर्मवानजगविदितघनेरे ॥ तिनकोयहपयानमुनिराई। मैंविस्तारसहितदियगाई ॥
अतिशयकरकारककल्याना। परमपवित्रविचित्रमहाना॥जोकोउश्रद्धायुतजगमाहीं।करतश्रवणनिजश्रवणसदाहीं॥
दोहा-सोजनभक्तिहिपायकै, ह्वैहरिकोअतिप्यार। निवसतनारायणनगर, ह्वैआनंदअगार॥ ५१ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराजाबांधवेश विश्वनाथसिंहात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदांबुनिधौप्रथमस्कंधेपंचदशस्तरंगः ॥ १५ ॥

सूत उवाच।

दोहा-जबपांडवद्रौपदिसहित, कीन्ह्योमहापयान॥ तबहिंमहाभागवतनृप, परिक्षितगुणननिधान॥
विप्रवर्यसोंसीखहिलीन्ही।धर्मसहितशासितमहिकीन्ही॥ जेहिदिनज्योतिषजाननवारे। जन्मदिनैगुणिवचनउचारे॥
तैसहिगुणयुतभयोअनूपा। अर्जुननंदननंदनभूपा ॥ १ ॥ उत्तरसुतविराटनृपकेरो ॥ जोजूझ्योरणमध्यघनेरो ॥

दुहितातासुइरावतिनामा। व्यांहीताहिभूपछविधामा॥ जनमेजयआदिकसुतचारी। भयेपरीक्षितकेबलभारी॥२॥
गंगातीरपरीक्षितराजा। भाइनभृत्यनसहितसमाजा॥ बहुधनविप्रवर्णकहँदैकै। दानउछाहपरममनकैकै॥

दोहा–अश्वमेधकीन्ह्योनृपति, विनप्रयासत्रैवार। दृगगोचरजहँहोतभे, अमरअनूपअपार॥ ३॥

नृपति परीक्षितयेकसमैमें।करतरहेदिग्विजैसुखैमें॥फिरतफिरतगमन्योकोहुदेशा। कलियुगकहँतहँलख्योनरेशा॥
शूद्रभूपकोरूपहिधारे। करकरालकरवालनिकारे॥ गोअरुवृषभहिमारतलाता। ताहिनिरखिभूपतिविख्याता॥
अपनेवलसोंताहिपकरिकै।दियोदंडतेहिनहिंकछुडरिकै॥४॥शौनकसुनियहकथासुहाई। कह्योसूतसोंअतिहर्षाई॥
(शौ.उ.)करतदिग्विजैनृपकेहिहेतू।पकर्‍योकलिकहँधर्मनिकेतू॥नृपतिचिह्नकोधारनवारो।जोकियगोवृषपापप्रहारो॥

दोहा–ताकेगुणकैसेअहैं, महाभागहेसूत। होइजोयहिमेंहरिकथा, तौकहियेअतिपूत॥ ५॥

अथवाहरिपदकमलमरंदा। जेपीवतअतिलहतअनंदा॥ तिनकीकथाहोइयहिमाहीं। तौवर्णनकरियेहमपाहीं॥
औरकथातेअहैनकामा। जिनकोगावतगुणहुत्रियामा॥ बीततिआयुदायवृथाहीं। स्वारथपरमारथकछुनाहीं॥ ६॥
आयुदायनरनकीथोरी। ताहूमेंमतिह्वैगैभोरी॥ ऐसेकलिमहँजेहरिदासा। भक्तिचहैंहाठरमानिवासा॥
तिनहिंऔरसुनिवेकीभासा। होतिनकबहूंसहितहुलासा॥७॥ नैमिषारयहिक्षेत्रहिमाहीं। जबलौंयज्ञहोतिमहिमाहीं॥

दोहा–तबलौंआवाहितइहां, मृत्युकरेहठिवास। तातेमरेनकोइइत, विचरैसहितहुलास॥

यहीहेतुपरमर्षिविचारी। कियोअवाहनमृत्युहिभारी॥८॥ धन्यभाग्यहैंसूतजगतमें। जोहिलीलाअमृताहिपियतमें॥
कालबितावतआनँदपाई। तिनसमाननहिंकोउसुखदाई॥तेहरिकथासुधाकियपाना। सकलसुकृततेकियेमहाना॥९॥
जिनकेकर्मआयुमतिमंदे। तेकलिमहँनहिंलहतअनंदे॥रैनशैनकरिआयुबितावै। वृथाकर्मकरिदिनहिंगँवावै॥ १०॥
सुनिशौनककेवचनसुहाये।सूतकहनलागेसुखछाये(सूतउवाच)नृपतिपरीक्षितदेतनिदेशा।वसतभयेकुरुजांगलदेशा॥

दोहा–तबअतिअप्रियआगमन, कलिकोअपनेराज। सुनिधनुशरकरतेगह्यौ, कोपिपरीक्षितराज॥ ११॥

भूपितस्यंदनश्यामतुरंगा। योजितकरिउत्साहअभंगा॥ सिंहध्वजरथचढ़िनृपराई। चतुरंगिनीसेनसजवाई॥
हस्तिनपुरतेकढेनरेशा। विजैहेतुबहुदेतनिदेशा॥ १२॥ केतुमालभद्रासोंखंडा। भारतकुरुउत्तरहुअखंडा॥
औरौकिंपुरुषादिककाहीं। जीतिलियोकुरुभूपतहाहीं॥सातहुद्वीपननृपतिउदारा।जीतिवजायोविजैनगारा॥ १३॥
तहँतहँसुनतभयेकुरुराऊ। कृष्णचंद्रसूचकपरभाऊ॥ ऐसोयशनिजपुरुषनकेरो। गावहिंजनलहिमोदघनेरो॥१४॥

दोहा–अश्वत्थामाअस्त्रते, अपनेकोयदुराइ। सोउपरीक्षितसुनतभे, जेहिविधिलियोबचाइ॥

यदुवंशीपांडवहुनकेरो। सुनतभयोनृपनेहघनेरो॥ पांडवयदुवंशीजेहिभांती। हरिमहँकियोप्रेममुदमाती॥ १५॥
सोसुनिअतिप्रसन्ननरपाला। विकसेअंबुजनैनविशाला॥ गावनवारेनकोधननाना।वसनविभूषणदियोमहाना॥१६॥
सारथिकर्मसभाकोरहिबो। वीरासनह्वैरक्षाकरिबो॥ संगचलनस्तुतिहुप्रणामा। कियोपांडवनकोश्रीधामा॥
सकलविश्वकेवंदनलायक। ऐसेश्रीकृपालुयदुनायक॥तिनकेचरणकमलमहँराजा॥कियोभक्तिअनुपमसुखसाजा१७

दोहा–भूपपरीक्षितराज्यकिय, निजपुरुषनअनुसार। सोकौतुकनिरख्योनिकट, सुनहुमुनीशउदार॥ १८॥

विचरतएकचरणसोंधर्मा।गयोगऊकेढिगशुभकर्मा॥ विनवछरासमतेहिलखिरोवत।मलिनदेखिपूंछ्योदुखखोवत १९

धर्म उवाच।

तेजहीनसुनियेममभाता। कछुमलीनतुववदनदेखाता॥जननीअहौकुशलसबभांती।मोकोतुमअतिदुखितदेखाती॥
दूरिगयेकोउबंधुतिहारो।किधौंशोचतेहिजलदृगढारो॥२०॥यकपदयुतत्रयपदतेहीना।धौंयोंम्वहिंलखिहौअतिदीना॥
धौंभोगाहतुमकोनृपपापी। जातेअहौपरमसंतापी॥ लहहिंनदेवयज्ञकेभागा। तिनकोशोचहुधौंवड़भागा॥

दोहा–किधौंनवर्षहिमेघमहि, प्रजादुखीतेहिहेत। तिनहींकोशोचतिअहो, ह्वैकरिदुःखनिकेत॥ २१॥

पितुजननीरक्षहिंसुतनाहीं। पीडादेहिंअमिततिनकाहीं॥ सोईशोचकरहुतुममाता। नवदुखलखिउरदुखनसमाता॥
किधौंनरक्षहिपतितियकाहीं। सोईशोचकरहुमनमाहीं॥ कलिलहिविप्रवेदतजिदीन्हे। धौंतेहिहेतुशोचतुमकीन्हे॥

द्विजद्रोहीभेभूपअपारा। धौंतिनहीकोकियोखँभारा ॥ २२ ॥ किधौंक्षुद्रक्षत्रियकलिकेरे। करहिंउपद्रवदेशघनेरे ॥
तिनदेशनतिनक्षत्रिनकाहीं।शोचहुधौंअपनेमनमाहीं॥अशनवसनमैथुनमदपाना।शोचहुजगकहँताहिलोभाना॥२३॥
दोहा-धौंतुवभारहिहरिहरी,अबभेअंतर्द्धान। गतिप्रदतिनकर्महिंसुमिरि, शोकहिकरौमहान ॥ २४ ॥
मातुव्यथाकोकारणकहहू। जेहितेपरमकृशितअहहू ॥ कैधौंकालपरमबलवाना। हरिलियतुवसौंदर्यमहाना ॥
धर्मरूपवृषकीसुनिवानी। बोलीमहीमहासुदसानी॥२५॥(ध.उ.)जोपूँछेहुसुतधर्मपियारे। सोतुमजानहुसबमतिवारे॥
प्रथमहिंचारिचरणतुवरहेऊ।केहिकारणअबइकपदलहेऊ॥सोइकारणतेपूतपियारे। होतभयोदुखहियेहमारे॥२६॥
सत्यशौचसंतोषहुदाया। क्षमात्यागसरलताअमाया॥शमदमतपसमताअरुसहिबो।यथालाभतेआनंदलहिबो२७॥
दोहा-शास्त्रयथारथजानिबो, ज्ञानविज्ञानविभूत। तेजशूरतास्मृतिहुबल, अरुअद्भुतकरतूत ॥
सुरतिराखिबोअरुस्वतंत्रता।कांतिकुशलमार्जवहुधीर्यता॥२८॥विजैशीलअरुओजढिठाई।अस्तिकताअरुकीर्त्तिमहाई
धारणशक्तिज्ञानउत्कर्षा। थिरतीमानदानयुतहर्षा ॥ निरहंकारआदिगुणजेते ॥ २९ ॥ यदुवरमहँवसतेनितते ॥
जनमहत्वहितपरगुणचाहैं। पैनलहतउररहतउमाहैं ॥ ३० ॥ ऐसेश्रीनिवासगुणधामा। तिनविनभईपुत्रमैंक्षामा ॥
जगप्रगटचोकलिकालप्रभाऊ। यहीशोचमैंभईअचाऊ॥सुरनमुनिनपितरनअरुसंतन।वर्णआश्रमननरनअनंतन३१॥
दोहा-अपनेकोअरुआपको, शोचहुँसुरवरधर्म। कैसेलहिहैंपरमगति, जनकलिमहँकरिकर्म ॥ ३२ ॥
जेहिलक्ष्मीकटाक्षकेहेतू। बहुतपकियविधिसुरनसमेतू॥सोउकमलावनकमलविहाई।हरिचरणनमेंरहीलोभाई॥३३॥
कमलकुलिशअंकुशयुतकेतू। ऐसेहरिपदमोदनिकेतू॥तिनचरणांकनअचरजभयऊ।त्रिभुवनमहँशोभाअतिलहेऊ॥
गर्ववतीगुणिकैयदुराई। करिकारजमोहिंगयोविहाई ॥ ३४ ॥ मोपरअसुरवेशमहिपाला। कियेपापकेकर्मकराला॥
सैनाअक्षौहिणीअपारा। विचरतमोपैभोअतिभारा ॥ सोकरिकृपामुकुंदखरारी। हर्योभारमेरोअतिभारी ॥
दोहा-धर्मपूतद्वैपदसहित, देखिकलेशतुम्हार। चारिचरणकरिबेहिते, यदुकुललियअवतार ॥ ३५ ॥
रुचिरचितैहँसिप्रेमयुत, मृदुवानी बतराइ। मानसहित मनजोहर्यो, मधुमानिनीलोभाइ ॥
तिनकेचरणनकोपरसि, भयोरोमांचहिमोहिं। तिनयदुवरकोको सहे, विरहमहाविनजोहि ॥ ३६ ॥
(सूत०उ०) यहिविधिधरणीधर्मके, भनतवैनसुखसाज। तीर्थप्रभासहिकोगये, पृथितपरीक्षितराज ॥ ३७ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुर श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारी
श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदांबुनिधौप्रथमस्कंधेषोडशस्तरंगः ॥ १६ ॥

सूतउवाच।

दोहा-तहाँभूपकोरूपधरि, शूद्रदंडलैहाथ। गोवृषहनतअनाथसम, लख्योजाइनरनाथ ॥ १ ॥
वृषमृणालसमसेतदुखारी। मेहकरतडरपतअतिभारी॥ कांपतएकचरणसोंठाढो। ताडनकरतशूद्रतेहिगाढो ॥ २ ॥
गऊधर्मप्रश्रवनीदीनी। रोवतकृशितक्षुधितदुखभीनी॥ विनबछरानहिंकोउरखवारो।करतशूद्रतेहिचरणप्रहारो ॥३॥
चढेकनकभूषितरथराजा। दोर्दंडकोदंडविराजा ॥ वचनगँभीरगिराकुरुराई। पूछनलगेकोपअतिछाई ॥ ४ ॥

परीक्षित उवाच।

रेतैंकौनराज्यमममाहीं। हनैबलीह्वैनिर्बलकाहीं ॥ हैनहिंनृपनृपनकलबनाये। निंदितशूद्रकर्ममनलाये ॥ ५ ॥
दोहा-विजैधनुर्धरकृष्णविन, हनेजोनिरअपराध। तातेतूवधयोग्यहै, शोचनयोग्यअगाध ॥ ६ ॥
हेनृपसेतुमृणालसमाने। त्रयपदहनयकपददुखसाने ॥ करतमोहिंखेदैअतिभारी। विचरहुँइतढारतदृगवारी ॥ ७ ॥
पालितकौरवेंद्रभुजदंडा।तुमविनदुखीनकौनवखंडा ॥८॥ शोकनकरहुवृषभदुखजोई। अवशिशूद्रकृतभीतिनहोई॥
मैंखलशासकशासहुँधरणी।रोवहिनहिंसुखलहुपयश्रवणी॥९॥जाकीराज्यप्रजानहुलासा। बसिपावहिंचोरनतेत्रासा॥
सोशठकीगतिआयुविभूती।नाशहोतिकीरतिकरतूती ॥ १० ॥ परमधर्मयहराजनकेरो।दुखिनदुःखहरिलेहिंघनेरो ॥
दोहा-तातेअबयहिशूद्रको, मारहिंगेसुतुधेनु। करतद्रोहसबजीवको, हरतसकलहठिचेनु॥ ११ ॥

काटेहुतीनिचरणकोतेरो। कोअपराधकियोअतिमेरो॥ कृष्णभक्तराजनकेराजै। तुमसमकोउनलहैदुखसाजै ॥१२॥
सोहैंपरमसाधुअपकारी। पारथभूपनकीरतिहारी॥ जोकाव्योपदतीनितिहारे। ताहिबताबहुधेनुदुलारे॥
विनअपराधनजोदुखदेतो। ताकोमैंसर्वसहरिलेतो॥ १३॥ दुष्टनदंडदियेजगमाहीं।साधुनमंगलहोतसदाहीं॥१४॥
जोदीननदुखदेतवृथाहीं। नीतिरीतितजिभीतिहुकाहीं॥ अंगदसहितभुजातेहिकाटों।देवहुहोइतबहुँनहिंनाटों॥१५॥
दोहा—जोसुधर्ममेंरतरहै, यथालाभसंतोष। तिनकोपालननृपनको, परमहेतुहैचोष॥
विनविपत्तिजेजनयुतशर्मा। करहिंअधर्मछोंडिनिजधर्मा॥ तिनकोशास्त्ररीतिसोंशासन।करिभूपतिपावहिंइंद्रासन॥
देवरातनृपकेसुनिबैना।कह्योधर्मलहिआनँदऐना॥१६॥(ध.उ.)वचनककहेजेतुमकुरुनायक।आरतअभयदेनकेलायक॥
पांडववंशीभूपनकाहीं। वचनआपकेउचितसदाहीं॥जिनपांडवनगुणनसमुदाई।लखिकीन्हेउयदुवरसेवकाई ॥१७॥
जातेहोइकष्टकोकारन। तेहिपुरुषहिंहैदुःखनिवारन॥हमजानहींभेदकुरुराई। अमितवचनसुनिमतिनथिराई॥१८॥
दोहा—कोऊअपनेआतमैं, कहतदुःखकोमूल। कर्मस्वभावहिभाग्यको, कोईईशअतूल॥ १९॥
कोइकहतजोनहिंमनआवै। वचनअगोचरतेहिश्रुतिगावै॥ सोइकलेशकोकारणभारी। निश्चितहोतिनबुद्धिहमारी॥
इनसबमेंदुखकारणजोई।लेहुविचारिबुद्धितेसोई।२०(सू.उ.)धर्मकह्योजबमुनियहिभांती।तबहिंपरीक्षितनृपअरिघाती
सावधानमनसहितहुलासे। जानिधर्मकीभूपतिआसै॥ भूपधर्मसोंवचनउचारे। हेधर्मज्ञवृषभतनुधारे॥ २१॥
(प.उ.)अहोधर्मतुबधर्महिकहहूं।धर्मसूक्ष्मगतिजानतअहहूं।जोकोइपापनशूचनकरतो।सोउसंसर्गपापउरभरतो।२२
दोहा—अथवाहरिसंकल्पकी, गतिसुनियेमतिवान। भूतनकेमनवचनको, अहैअगोचरजान॥ २३॥
तपअरुशौचसत्यअरुदाया। धर्मचरणयेचारिगनाया॥ अतिअधर्मतेतीनिचरणको। भयोनाशयहविदितनरनको॥
गर्वहितेतपकीभैहानी। संगकियेशौचतापरानी॥ मददायककोकियोविनाशा। छूटिगईसबधर्मनिआशा॥ २४॥
सत्यचरणचौथारहिगयऊ। जातेतुवआतमथिरभयऊ॥ ताहूकोअसत्यकरिहाला।नाशनचाहतहैकलिकाला।२५॥
धरणिधेनुकोधन्योस्वरूपा।हरियहिभारहन्योदुखरूपा॥श्रीयुतचरणविचारिसबठोरा। मोदितकियवसुदेवकिशोरा२६
दोहा—अबयदुनंदनधरणिको,तजिकैगयेपधारि। महिअभागिनीसीभई, यहकलिकालनिहारि॥
शूद्रसमाननृपतिद्विजद्रोही। पापनिरतभोगहिंहैमोही॥ यहीहेतुतेधरणीसोचति। बारबारनैननजलमोचति॥२७॥
(सू.उ.) यहिविधिधरणिधर्मकोराजा।बहुसमुझाइभूपशिरताजा॥करिकैकलिपैकोपकराला।धर्महिरक्षणहेतुभुवाला॥
कंमरतेकरकैकरवाला। कलिकाटनकोलैजेहिकाला॥२८॥तबकलियुगनिजवधजियजानी।भूपवेपतजिकैअभिमानी॥
नृपतिचरणमहँशीशलगाई।गिन्योभूमिमहँअतिहिडेराई।२९॥कलिकहँपन्योचरणमहँदेखी।दीनदयालुदीनतेहिलेखी
दोहा—महावीरयशवंतनृप, दियकरिकृपाबचाइ। शरणागतपालककह्यो, कलिसोंयहमुसक्याइ॥ ३०॥
(रा.उ.) गुणाकेशयशवर्द्धनहारे। अहैंभूपहमजगतउदारे॥ तिनकेशरणागतकरजोरी। आयोतैंअबभयनहिंमोरी॥
पैतुममित्रअधर्महिकेरे। तातेरहहुराज्यनहिंमेरे॥ ३१॥ जबतेतुमभूपनतनुआयो। तबतेपापसकलजगछायो॥
लोभअसत्यदंभअरुचोरी। कलहकपटशठतानहिंथोरी॥ दारिद्रीतबहोवनलागे। सकलधर्मकेकर्मनत्यागे॥ ३२॥
कलियुगसुनुअधर्मकेभाई। ब्रह्मावर्त्तक्षेत्रसुखदाई॥ तहाँयज्ञकेजाननवारे। करहिंयज्ञमुनिविपुलप्रकारे॥
दोहा—यज्ञेश्वरभगवानको, पूजहिंयुतअनुराग।तहाँवसनकीवासना, करहुवेगितुमत्याग॥ ३३॥
सत्यधर्मकरसोअस्थाना। बसिवेलायकदिव्यमहाना॥ जौनेब्रह्मावर्त्तहिमाहीं। पूजनकीन्हेंकृष्णसदाहीं॥
मंगलदेतमनोरथपूरत।जेसबजगमहँमारुतसमगत (सू.उ.) कलिकरालकरवालहिधारे।जबनृपयहिविधिवचनउचारे॥
तबकलिनृपकहँयमसमदेखी।कांपतबोल्योवचनविशेखी(क.उ०)सुनियेसार्वभौममहराजू।जहँशासनदीजेमोहिंआजू।
तहाँजाइमैंबसौंसुखारी। तुमहिंलखौंसबथलधनुधारी॥३६॥ तातेसोथलदेहुबताई। जहँतुमपरहुनमोहिंलखाई॥
दोहा—जहाँतुम्हारोमानिकै, शासनबसहुँनरेश। धर्मधुरंधरवरनृपति, दीजैमोहिंनिदेश॥ ३७॥
(सू.उ.)यहिविधिजबकलिविवसनकाहीं।मांग्योठौरपरीक्षितपाहीं।तबकलिकोनृपकहस्थाना।नारियुवाहिंसामदपाना।

चारिप्रकारअधर्मप्रकासू । तहाँजाइकैकरौनिवासू ॥ ३८ ॥ तबकलिकह्योसुनहुनृपराई । दीजैमोहिंसदनसुखदाई ॥
तबनृपसुबरणवासबतायो । पांचौपापमूलजोजायो ॥ क्रोधअसत्यवैरमदकामा । इनहूंमेंकलियुगकरधामा ॥ ३९ ॥
अधरमकारककलियुगघोरा।जगतमध्ययेपांचहुठोरा॥नृपतिपरीक्षितशासनपालत।कलियुगबस्योधर्मध्रुवघालत ४०

दोहा–तातेजोमंगलचहै, कोउजनयहिसंसार । तौइनकोसेवैनहीं, हैंयेकलिआगार ॥

येविशेषिसेवैनभुवाला । धर्मशीलगुणपरिजनपाला ॥ ४१ ॥ पुनिनृपशौचदयातपतीनो । चरणधर्मकेपूरणकीनो ॥
दुखनिवारिधरणीकोराजा।बहुसमुझाइदियोसुखसाजा ॥४२॥ सोइपरीक्षितयहमहराजा।अबनृपआसनमध्यविराजा॥
जोआसननृपधर्मपितामहँ।दैगमनेप्रमुदितकाननकहँ॥ ४३ ॥ तामेंबैठिधर्मधुरधारत । शासनधरणीसुयशपसारत ॥
कौरवेंद्रकोविभवमहानो। निरखतजाहिमहेंद्रलजानो ॥ महिमंडलमालिकबडभागा।अहैराजऋषिसहितविरागा ४४॥

दोहा–हस्तिनपुरमेंवसतहै, यहिविधिजासुप्रभाव । जेहिपालतमहिकरतहैं, यज्ञसुखीमुनिराव ॥ ४५ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुर श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौप्रथमस्कंधेसप्तदशस्तरंगः॥१७॥

दोहा–बहुरिशौनकादिकनसों, सूतसुबुद्धिविशाल । कथापरीक्षितभूपकी, लागेकहनरसाल ॥

सूतउवाच ॥ मातुउदरमेंजोनृपति, कृष्णकथाकोपाइ । अश्वत्थामाअस्त्रते, मरयोनअतिदुखपाइ ॥ १ ॥

सोइपरीक्षितकोद्विजशापा । तक्षकडसिकीन्ह्योसंतापा ॥ यदपिगुण्योनिजप्राणवियोगू।तदपिभयोनहिंमोहसँयोगू २
यदुपतिपदपंकजमनलायो । प्राणजानकोकछुनदुरायो ॥ भगवतभक्ततज्योसबसंगा । बैठ्योजाइभूपतटगंगा ॥
श्रीशुकदेवहिगुरुकरिलीन्ह्यो।मुदितकलेवरनिजतजिदीन्ह्यो३जेजगयदुनंदनकेदासा । पियहिंकथामृतसहितहुलासा
तिनकोमरनकालहूमाहीं । हरिपदसुमिरतकछुश्रमनाहीं ४ तबलौंकियोपरीक्षितराजू । धर्मसहितयुतसकलसमाजू॥

दोहा–तबलोंयहजनलोकमें, महाघोरकलिकाल । काहूकोव्याप्योनहीं, चल्योनकोउकुचाल ॥ ५ ॥

जादिनहरिगमनतभये, तजिपुहुमीनिजलोक । ताहीदिनतेजगतमें, कलिप्रविश्योअघओक ॥ ६ ॥

सार्वभौमअभिमन्युसुत, कलिसोंकियोनवैर । सारग्राहीभ्रमरसम, धर्योकुपथनहिंपैर ॥

संकल्पहितेजेहिकलिमाहीं । सिद्धहोहिंशुभकर्मसदाहीं॥लगहिनपापमनहिंगुणिलीन्हे।लागतपापपापकेकीन्हे ॥७ ॥
यहकलिमूढनकोहैशूरो । भीरुअहैधीरनतेपूरो ॥ वृकसमहरिविमुखनकहँसाँचो । ताहिनकछुजोहरिरँगराचो ॥८॥
जोपूछीशौनकचितलाई । पुण्यपरीक्षितकथासुहाई ॥ सोमैंकृष्णकथामुदमाहीं । सबवर्णनकीन्ह्योतुमपाहीं ॥ ९ ॥
जोइजोइकृष्णकथाअतिपावनि।सुखदचरित्रविचित्रजनावनि।सोइसोइतिनकेसेवनलायक। जेजनमोक्षचहैंमुनिनायक

दोहा–सुनतसूतकेवचनवर, सबमुनिएकहिबार । हर्षितह्वैभाषतभये, आशिषदेतअपार ॥ १० ॥

(ऋ.ऊ.)बहुतवर्षजीवहुतुमसूता । जोतुमकहहुकृष्णयशपूता॥कृष्णचंद्रकोसुयशमहाना। हमजगजीवनसुधासमाना।
धूमधूसरेवदनहमारे । करहिंयज्ञकेकर्मअपारे ॥ इनकर्मनमहँनहिंविश्वासा । सोइसुफलकीवृथाप्रयासा ॥
तिनहमकोहरिपदअरविंदा। पानकरावहुतुममकरंदा ॥१२॥स्वर्गमोक्षसुखतूलहिनाहीं । सज्जनसंगतिलेशहुकाहीं ॥
जगतविभवहैकेतिकवाता । जानहुसत्यसूतसबज्ञाता॥१३॥सुनतसुखदहरिसुयशअपारो । कोअघातरसजाननवारो॥

दोहा–गिराकांतत्रिपुरांतह्वै, लहैनातिनगुणअंत । तेएकांतिनसंतके, मेटतदुःखअनंत ॥ १४ ॥

हममधितुमभागवतप्रधाना । हरियशहमसोंकरहुबखाना॥तनुविशुद्धकरपरमउदारा । जाहिसुनतछूटतसंसारा॥१५॥
सोभागवतपरीक्षितराजा।महाबुद्धिमधिमुनिनसमाजा॥व्याससुवनसोंलहिविज्ञाना।कियोकृष्णपदनिकटपयाना १६
सोविस्तारसहितअतिपावन । भगवतभक्तयोगसुखछावन॥कहियेश्रीपतिचरितसमेतू । जोहैसंतनमोदनिकेतू॥१७॥
सुनिशौनककेवचनसुहाये । बोलेसूतहृदयसुखछाये॥(सू.उ.)हमयद्यपिविलोमकुलजाये । तदपिवृद्धसेवाचितलाये॥

दोहा–तातेमेरोजन्मअब, सफलभयोसबभांति । लघुकुलहोबव्यथाहरत,संतसभाशुचिपांति ॥ १८ ॥

सुजनपांतिकेसुंदरनामा । अचरजकौनहरैदुखग्रामा ॥ शक्तिअनंतअनंतहुआपू । गुणअनंतनहिंअंतप्रतापू ॥
तातेमुनिअनंदतेहिगावैं । हरिलीलाकोपारनपावैं ॥ १९ ॥ जाकेअधिकसमहुँकोउनाहीं । यहीहेतुनिहचैमनमाहीं ॥
यद्यपिलक्ष्मीकोनहिंचाहैं।तद्यपिउरकरिअमितउमाहैं ।जाकेपदरतिरमालोभानी।तजिअजशिवविनतीसहसानी २०
जोहरिजववामनवपुधार्यो।वलिछलित्रिभुवनपांयपसार्यो।जबपूजनकरिविधिपगधोयो।परमभाग्यआपनकरिजोयो
दोहा–सोजलशंकरसहितसब, जगकोकरतपुनीत । तातेकृष्णहिमेंसही, भगवतनामपुनीत ॥ २१ ॥
जिनकैकैसज्जनअनुरागी । जगतमोहममतासबत्यागी ॥ परमहंसपदवीकहँपावै । पुनिनहिंयहिसंसारहिआवै ॥२२॥
तौनेमहँभावहिंमुनिशर्मा । सत्यअहिंसाहैनिजधर्मा ॥ हेमुनिजोपूंछेहुमोहिंपाहीं । यथाशक्तिकहिहौंसुखमाहीं ॥
यथाशक्तिजिमिखगनभजावै । नहिंअकासकोअंतहिपावै ॥ जैसेयथाबुद्धिहरिलीला । गावैलहैनपारसुशीला ॥२३॥
एकसमैअभिमन्युकुमारा । हयचढिधनुलैगयोशिकारा ॥ तहँमृगलखिनृपअश्वधवायो । गयोदूरिताकोनहिंपायो ॥
दोहा–मध्यदिवशतहँह्वैगयो, करिनृपअमितप्रयास । थकिबैठेयकतरुतरे, लगीभूखबहुप्यास ॥ २४ ॥
भूपपरीक्षितप्यासहिपागे । तबहिंजलाशयखोजनलागे ॥ देख्योयकआश्रममुनिकेरो । अतिपुनीतरमणीयघनेरो ॥
बैठोमुनिदेखेउनृपराऊ । मुद्रितलोचनशांतस्वभाऊ ॥२५॥ मनबुधिइंद्रियप्राणहिंरोके ॥ तुरीअवस्थाप्रातविशोके॥
अहैब्रह्ममेंरहितविकारे ॥ २६ ॥ खुलीजटामृगचर्महिधारे ॥ ऐसेमुनिसोंनृपजलमांग्यो । तालुतृषातेसूखनलाग्यो॥
नृपतिवचनसुनिश्रवणनआयो२७आसनआदरअंबुनपायो।जानिअनादरनृपअतिकोपे।कबहुँनक्रोधचित्तअसचोपे२८
दोहा–गुणनलगेमनमेंनृपति, जोयहमूंदेनैन । सोधौंसत्यसमाधिहै, किधौंकपटकोऐन ॥ २९ ॥
यौंगुणिचलतसमैनृपराई । मृतकसर्पधनुकोरउठाई ॥ मुनिकांधेमहँकोपितडारी । गयेहस्तिनापुरहिमँझारी ॥३०॥
तासुतनयअतितेजअगारा।करतरह्योशिशुसंगविहारा।।तासोंजाइकह्योकोउबालक।तुवपितुकंधमाहँमहिपालक ३१
यकभुजंगधरिगयोपराई।अतिअनुचितकीन्ह्योनृपराई।।सुनतनृपतिकेकर्मकठोरा।कोपितबोल्योविप्रकिशोरा ॥ ३२॥
अहोमहीपअधर्ममहाना । दुष्टपुष्टहैकागसमाना ॥ करैदासस्वामीअपकारा । सोहैश्वानसरिसभूभारा ॥ ३३ ॥
दोहा–निजरक्षाहितक्षत्रियन, दीन्ह्योंविप्रनियोग । तिनक्षत्रिनद्विजपात्रमें,भोजनकरबअयोग ॥ ३४ ॥
खलशासकजबतेभगवाना । अपनेपुरकोकियोपयाना ॥ तबतेधराअधर्मघनेरे । धराधीशधारतबहुतेरे ॥
तिनदुष्टनमैंदंडहिदेहौं।अबअपनोतपबलहिदिखैहौं।।३५।।यहिविधिविप्रसुतनसोंभाखी।कालसमानलालकरिआँखी ॥
करिआचमनकौशिकीनीरा । वचनवज्रबोल्योतजिधीरा।।३६।।जोनृपतज्योधर्ममर्यादा।सोकुलकोनाशकअहलादा ॥
ममप्रेरितपितुरिपुतेहिंकाहीं । डसैसर्पसतयेंदिनमाहीं ।।३७।।इमिदैशापनृपहिकहँघोरा । आश्रमआयोविप्रकिशोरा ॥
दोहा–मृतकसर्पपितुकेगरे,बालकतहाँनिहारि । रोवनलाग्योदुखितअति,दुखितपुकारिपुकारि ॥ ३८ ॥
मुनिसमीपसुनिपुत्रविलापा।खोल्योनैननजानिसंतापा।।लख्योकंधनिजमृतकभुजंगा।।३९।।ताहिदूरिकरितासुप्रसंगा ॥
पूंछोनिजसुतसोंअकुलाई । रोवहुकिमिबालकदुखछाई ॥ कौनकियोअपराधतिहारो । तबबालकवृत्तान्तउचारो ॥
जनकअधर्मीनृपयकआयो । मृतकभुजंगकंधलपटायो ॥ ताहिदईहमशापमहाई।सतयेंदिनअहिडसिहैजाई ॥ ४० ॥
सुनिसुतशापनृपतिपैघोरा । मुनिकेखेदभयोनहिंथोरा ॥ सुतसोंकह्योमुनीशरिसाई । शापयोगहैनहिंकुरुराई ॥
दोहा–अरेअबुधबालककियो, यहतुमपापमहान । लघुअपराधहिमेंदियो, बडोदंडविनज्ञान ॥ ४१ ॥
अरेकुमतिईश्वरनरनायक । नहींनरनसममाननलायक ॥ रक्षितप्रजाजासुपरतापा । मंगललहतअभीतअतापा ॥
राजाहैयहरूपमुरारी । प्रजाताहिविनहोहिंदुखारी ॥४२॥विनभूपतिमहिप्रगटहिंचोरा । नाशकरहिंपुरजनवरजोरा ॥
मेषयूथविनबालकजैसे । भक्षहिंवृकजानहुसुततैसे ॥ ४३ ॥ सोदुष्टनतेपापमहानो । मोहिंभयोहेपुत्रअयानो ॥
विनानाथपशुतियधनचोरा।हनहिंहरहिंकहिवचनकठोरा।।४४।।वेदविदितवर्णाश्रमधर्मा।लोपहोहिंतवसबशुभकर्मा ॥
दोहा–अर्थकामआशक्तजन, पायअधर्ममहान । होहिंवर्णसंकरसबै, वानरश्वानसमान ॥ ४५ ॥
धर्मपालमहिमंडलपालक।परमयशीनिजअरिकुलघालक ॥ हैराजर्षिभागवतपूरो । नृपतिपरीक्षितजगयहरूरो ॥
चक्रवर्तिवाजीमषकर्ता । देखतद्रुताहिदीनदुखदर्ता।। सोनृपक्षुधातृषाश्रमबाधित।शापयोगनहिंजनअवराधित।।४६।।

कुमतिपुत्रममनृपतिअपापै। कियोपापदीन्हींजोशापै॥सोनिजदासजानिभगवाना। क्षमहिंबालअपराधमहाना॥४७॥
वंचकवचनपुरुषअपकारा। निंदनताडनआदिअपारा॥ लहिसज्जनबदलोनाहिंलेहीं। यदपिईशसामर्थहुदेहीं ॥४८॥
दोहा-यहिविधिसुतअपराधगुणि, बारबारपछितान। राजाकोअपकारकछु, गुण्योनमुनिमतिमान ॥ ४९ ॥
बहुधासज्जननरनते, सुखदुखजोतिततहोइ। नहिंविलखतहर्षतनहीं, गुणिनआतमैसोइ॥ ५०॥

इतिसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदअंबु
निधौअष्टादशस्तरंगः॥ १८॥

सूतउवाच।

दोहा-उतभूपतिअहिमृतकको, मुनिके गलमें डारि। लौटिचले निजनगरको, जब रथचढ़ि धनुधारि॥
तब मारग महँनिजकृत करनी।अतिनिंदित उरमहँ दुखभरनी॥भूपदुखितभेताहिविचारी।कियोकर्ममैंअनुचितभारी॥
जोमुनिगलमें विनअपराधा। मृतकसर्पमैं धरिकियबाधा॥१॥तातेमुनिअपराधहिंकेरो। लहिहौं फलमैंअवशिघनेरो॥
कछुकालहिमें दुःखमहानो।म्वहिं ह्वैहै विचारनहिं आनो॥प्रायश्चित्त सोइमम होवै।जामें पुनिअस नहिंजियजोवै॥ २॥
अतुलसैन बलकोषहु राजू। ब्राह्मणको पदहै ममआजू॥जामें पुनिमेरीमति पापिनि। होइ न गोद्विजसुरसंतापिनि॥३॥
दोहा-यहिविधि नरपति नगरमहँ,आये करत विचार। तहँआयोइकविप्र नृप, द्वारहि कियो पुकार॥
जेहिमुनिगलअहिमृतकहिडार्‌यो।ताकोसुतअसवचनउचार्‌यो।तक्षकरूपकालयहिडसिहै।सतयेंदिननिश्चयकरिनशिहै
सोसुनिभूपमोदअतिपायो।यहविरागकारणचितलायो४स्वर्गहुँलोकतुच्छगनिलीन्ह्यो।कृष्णचरणकमलनचितदीन्ह्यो
सबतजिअनशनव्रतमनलाई।गंगातट बैठ्यो नृपराई॥५॥नवतुलसीदल युतअतिपावनि।कृष्णकमलपदरेणुवहावनि॥
शिवयुत त्रिभुवन पावनकरनी। घोर अघनि ओघनि संहरनी॥ऐसीगंगाको जगमाहीं।मरणजानि सेवै को नाहीं॥६॥
दोहा-असविचारिराजर्षि नृप, विष्णुपदी तटमाहिं। करि यकाग्रमन मुनिसरिस, तजिदीन्ह्यो सबकाहिं॥
धर्‌यो मुकुंदकंजपदध्याना।यहगुणिम्वहिं तारकभगवाना॥७॥तहँ आयेमुनीशअतिपावन।जेत्रिभुवनकेपापनशावन॥
शिष्यनसहित महापरभाऊ। बैठे जहाँपरीक्षितराऊ॥ मज्जनव्याज जाइ मुनिराई। तीरथपातकदेहिं नशाई॥८॥
अत्रि वशिष्ठच्यवनकृपभृगुवर। अरुअरिष्टनेमिहु अंगिरपर॥विश्वामित्र पराशरज्ञानी। परशुरामतनु प्रभा अमानी॥
इंद्रप्रमदअरु इंधमवाहू।मेधातिथि उतथ्यमुनिनाहू॥ ९॥ भरद्वाज गौतम अरुदेवल। पिप्पलाद मैत्रेयऔर्वभल॥
दोहा-आर्ष्टिषेणअरु कवषमुनि, कुंभयोनिअरुव्यास॥१०॥नारदअरुणादिकसवै, आयेसहित हुलास॥
तहँब्रह्मर्षिसुरर्षिहूँ, राजऋषिहुँ सुखधाम। ऋषिसमाजलखिपूजिनृप, शिरसों कियोप्रणाम॥ ११॥
चारिउओरतहाँमुनिराई। नृपसमीपबैठेसुखछाई॥ तबपुनिकरिप्रणामकरजोरी।नृपकहविनयसुनोसबमोरी ॥१२॥

परीक्षित उवाच।

निंदितनृपकुलअतिहिअपावन।दूरिरहतद्विजपदजलपावन॥मोपरकृपाकरीतुमभारी।धन्यधन्यहमनृपनमँझारी १३॥
मैंगृहतियअधीनबहुभाँती।जाकोश्रीयदुवरअघघाती॥विप्रशापमिसिदियोविरागा।भयोंअभयअबमैंसुखपागा ॥१४॥
हेमुनिवरअरुसुरसरिदेवी।शरणहोहुँमैंहरिपदसेवी॥गावहुहरियशमुनिममपाहीं। तक्षकडसैमोहिंसुखमाहीं॥ १५॥
दोहा-साधुसंगहरिचरणरति, जगजनप्रियसबकोय।करिप्रणाम विनतीकरौं, जन्मजन्ममममहोय॥ १६॥
असकहिपूर्वअग्रकुशआसन।सौंपिपुत्रकोक्षितिअनुशासन॥भूपतिदक्षिणगंगातीरा। बैठ्योउत्तरमुखअतिधीरा॥१७॥
ऐसोव्रतनरपतिहिनिहारी। गगनआय सिगरेअसुरारी॥ नृपहिंसराहिसुमनबहुवर्षहिं। बारबारदुंदुभिदै हर्षहिं ॥१८॥
अनुमतिदैमुनिकरीप्रशंसा। हरिगुणगावनलागेहंसा॥ कह्योसबैमुनिवरनृपपाहीं॥१९॥ यहअचरजतुममेंकछुनाहीं॥
तुमहौनृपअनन्यहरिदासा।कृष्णभक्तिउरकरतिविलासा॥नृपतिनसेवितत‌जिसिंहासन।कियअभिलाषमिलनगरुडासन

दोहा–हमसबतबलौंरहबइत, जबलौंमहापयान। करिपहुँचैगोकृष्णपुर, यहभागवतप्रधान ॥ २१ ॥
सुनिमुनिवचनमधुरनृपराई। वारवारतिनकोशिरनाई॥कृष्णचरित्रसुननकरिआसा।बोल्योकुरुपतिसहितहुलासा२२
वेदमूर्तिधरिजिमिविधिलोकू।तिमितुमआयदियोमुदथोकू॥अर्थहेतुविनपरउपकारा।दुहूँलोकमहँसत्यतुम्हारा॥२३॥
तातेमैंपूँछौंमुनिराई। अवशिकृपाकरिदेहुबताई ॥ जाकोमरणसमयनियरानो। चाहतहरिपुरकरनपयानो ॥
ताकोकरनकहाअबयोगू। करहुसबैमिलिसत्यानियोगू॥ तुमसबअधमउधारनलायक।ममविधिवशआयेमुनिनायक॥
दोहा–ऐसेसुनिभूपतिवचन, सबमुनिआनँदपाय। निजनिजमतिअनुसारतहँ, कहनचहेमुनिराय ॥ २४ ॥

छंदगीतिका।

तहँव्यासनंदनक्षोणिविचरतयथाइच्छिततेहिक्षने। सबतजेइच्छावेषगोपितलाभतोषितनिजमने ॥
अवधूतवेषहिधरे २५ षोड़शवर्षउमिरउदारहैं। पदकरउरूअरुबाहुगोलकपोलअतिसुकुमारहैं ॥
समकर्णउच्चसुनासिकाआननअमलभ्रुकुटीबनी। कलकंठकंबुसमाननैनविशालजिनशोभाघनी ॥ २६ ॥
अतिपृथुलअंशउतंगउरगंभीरनाभिसोहावनी। त्रिवलीबलितसुंदरउदरसुरसमप्रभासुखछावनी ॥
बिथुरितकुटिलकुंतलदिगंतरयुगलबाहुविशालहैं ॥ २७ ॥ तनुश्यामसुंदरओरचहुँघेरेसुबालकबालहैं ॥
यौवनसुछविनारिनिमनोहरमंदमृदुमुसक्यानिहैं। शोभाअवधिशुकदेवमुनिआवतभयेसुखखानिहैं ॥
यद्यपिछिपायेतेजहैंनिजतऊजाननवारहैं। जेहिनिरखितेमुनिआसननितेउठेएकहिवारहैं ॥ २८ ॥
तबनृपपरीक्षितनायशिरशुकदेवकोपूजनकियो। मधिमुनिनिकनकसिहासनैमनमुदितह्वैआसनदियो ॥
यहनिरखिबालकनारिसज्जनजानिसबलौटतभये। देवर्षिअरुब्रह्मर्षिअरुराजर्षिसबतिनढिगगये ॥
शुकदेवमुनिनसमाजमध्यविराजमानसुजानहैं। मनुतारगणग्रहमध्यराजितह्वैरहेसितभानहैं ॥ ३० ॥
तबसुमतिमुनिआसीनआसनशांतचितसोहतभये। तबभागवतनृपनाइशिरकरजोरिकैसन्मुखठये ॥
अतिमधुरप्रियवचननविरचिकीन्ह्योरुचिरविनतीतहां। निजदीनतादरशायशुभसरसायकैमनमेंमहां ॥३१॥
(प०उ०) दोहा–करिदायामोहिंनीचपर, अतिथिरूपमुनिराय। सततसेविततीरथसरिस, धन्यकियोमआय॥३२ ॥
जिनकेसुमिरतनरननिवाशू।परमपवित्रहोतहैंआशू॥तौपुनिदर्शपर्शपदधोवत।अचरजकहाजोगृहशुचिहोवत ॥३३॥
तुमसमीपमहँपातकभारी। नशहिवेगिजिमिअसुरमुरारी॥३४॥कृष्णपांडवनप्रियभगवाना।भेप्रसन्नमोपरअबजाना॥
जेत्रिलोकपतिपांडवहेतू। कियोकर्मलघुकृपानिकेतू॥३५॥कृष्णकृपाविनदर्शतुम्हारो।पुरुषनकहँनहिंहोवनहारो ॥
मनवांछितमाँगहुमोहिंपाहीं। याचकसोतुमकहहुँसदाहीं ॥ अहोपरमगुरुयोगिनकेरे।तातेयहपूँछहुँप्रभुमेरे ॥ ३६ ॥
दोहा–जाकोमरणनगीचही, होनचहैमुनिराय। ताकोसबआचरणतुम, वर्णनकरोबनाय ॥ ३७ ॥
कहासुननकेलायकताके। कहाजपनकेयोगसदाके॥ ताकोसुमिरणभजनकहाहै। कहाकरनकोअरुचितचाहै ॥
कौनकर्मकरिवेनहिंयोगू। देहुनाथकरिदयानियोगू ॥ ३८ ॥ गृहीगमनआगमनउदारो।जबहोतोमुनिनाथतुम्हारो॥
तबगोदोहनहूभरिकालै।ठहरहुनहिंगमनहुतत्कालै॥तातेजानिपरतमुनिराया।मोपरतुम्हकीन्हींअतिदाया(३९सू.उ.)
यहिविधिजबपूंछ्योनृपराई। मुनिसोंमाधुरवचनसुनाई॥तबअतिआनँदअम्बुनिराखिकै।नृपहिसराहतज्ञानपरखिकै॥
दोहा–ज्ञाताधर्मनकोसकल, श्रीशुकदेवसुजान। करनलग्योवर्णनतहाँ, व्याससुवनभगवान ॥ ४० ॥
वसुनभनिधिशशिचैत्रसुदि, द्वादशिसूरजवार। आनँदअंबुधिकोचुक्यो, प्रथमस्कंधउदार ॥ १ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुर श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदांबुनिधौ भागवते प्रथमस्कंधेएकोनविंशस्तरंगः ॥ १९ ॥

दोहा–महाराजरघुराजकृत, भाषाप्रथमस्कंध। यहसमाप्तमुद्रितभयो, संयुतछंदप्रबंध ॥
इति प्रथमस्कन्ध समाप्त १.

द्वितीयस्कंध.
वराह
हि॰
वि॰
गरुड
व्यास
सत्यवती
दत्त
सनत्कुमार
नर
नारायण
ध्रुव
पृथु
ऋषभदेव
हयग्रीव
मत्स्यअ॰
ब्र॰
नारद
शुक
परीक्षित
कूर्मअ॰
प्र॰
नृसिंहअ॰
ग॰
देव
न॰
वामन
बली
हंसावतार
नारद
स्वायंभुमनुः
धन्वं॰
परशुराम
ल॰
रा॰
कृ॰
कं॰
बौद्ध
कल्की

श्रीगणेशायनमः ।

अथ श्रीमद्भागवतआनन्दाम्बुनिधि ।

द्वितीयस्कन्ध प्रारम्भः ।
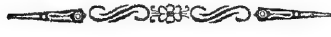
सोरठा–जैजैजैयदुनाथ, गुणआगरसागरकृपा । नटनागरमुदगाथ, कीजैमोहिंसनाथप्रभु ॥
दोहा–जैवाणीजैगजवदन, जैहरिगुरुपदकंज । जैशुकजैश्रीव्यासमुनि, जैपितुपदमनरंज ॥
विरचहुँआनँदअंबुनिधि, दूजो यहस्कंधु । विघ्नरहितपूरणकरौं, हेहरिदायासिंधु ॥
सोरठा–सुनिकुरुपतिकेबैन, व्याससुवनशुकदेवमुनि । लह्योपरमचितचैन, तेहिसराहिबोलेवचन ॥
शु.उ.नरपतिउत्तमप्रश्नतुम्हारे।लोकनमंगलप्रगटनहारे॥ज्ञानिनकरसम्मतसबभाँती।कहतमोरिमतिअतिअधिकाती
पूँछ्योजोतुमयहनृपनायक । सुनबेमहँकासुनबेलायक॥ जेनहिंआत्मतत्त्वकोजानैं। सदाग्रहणविषयनसुखसानैं॥१॥
तिनकेसुननयोगदुखकारन । हैंनरेंद्रजगकथाहजारन ॥ २ ॥ दिनमेंधनहितबहुथलधावैं ।निजकुटुंबपालनमनलावैं॥
निद्रारतिकरिरैनगँवावैं।यहिविधिसिगरीउमिरिबितावैं॥३॥असतदेहतियसुतदलकाहीं।नशतनिरखिनिरखतशठनाहीं
दोहा–तातेभारतजोचहै, यहिजगमेंकल्यान । नामसुयशवपुकृष्णके, कहैसुनैधरिध्यान ॥ ५ ॥
सांख्ययोगनिजधर्महुकेरो । सकलसुकृतनृपयहीघनेरो ॥६॥विधिनिषेधतेरहितहुहोवैं।दिव्यगुणनयुतहरिवपुजोवैं ॥
तेईबहुधाहरिगुणकाहीं । कहतसुनतमुनिरहतसदाहीं ॥ ७ ॥ यहभागवतपुराणप्रधाना । परममनोहरवेदसमाना ॥
द्वापरआदिव्यासपितुपाहीं। पढ्योपरीक्षितमैंमुदमाहीं॥८॥यदपिदिव्यगुणहरिवपुध्यायों।तदपिकृष्णलीलाचितल्यायों
भूपशिरोमणियदुवरलीला । हरिलीन्ह्योमोमनशुभशीला ॥ ९ ॥तातेसोभागवतपुराना । पढ्योंजौनमैंसुधासमाना॥
दोहा–तुमकोसकलसुनायहौं, तुमसमभक्तनकोय । जाहिसुनतश्रद्धाकरत, मतिमुकुंदरतिहोय ॥ १० ॥
योगीअरुपरगतिजेचाहें । तिनकोयहीउपायसदाहें ॥ करैंदिवसनिशिहरिगुणगाना ।उधरनकोउतयोगनआना ११॥
विनाभजनबहुवर्षवृथाहीं ।घटिकावरहरिभजनाहिमाहीं॥१२॥स्वर्गजाइखट्वांगभुवाला।इकमुहूर्तमहँगुणिनिजकाला॥
आइधरणिसवतजिहरिध्यायो।तासुप्रभावकृष्णपदपायो१३सातदिवसनृपअवधितुम्हारी।ध्यायकृष्णकहँलेहुसुधारी॥
अंतकालमहँजनतजिभीती । नरपतिकरैअवशियहरीती॥अशिअसंगलैकाटैआशा।सुतधनतियसुखभोगविलाशा१५
दोहा–धीरकरैगृहतेगमन,तीरथजाइनहाय । शुचियकांतथलबैठिके,आसनदेइलगाय॥ १६ ॥
शुद्धप्रणवपरकोअभ्यासू । मनतेकरैसदाहरिदासू ॥ सुमिरतब्रह्मबीजजितश्वासू । मनकोस्ववशकरैसहुलासू॥१७॥
विषयबँधेइन्द्रिनगुणकाहीं । निजमनतेऐंचैश्रममाहीं ॥ कर्मवलितमनकोहरिरूपै । अचलकरैबुधबोधअनूपै ॥१८॥
करियकाग्रमनकोशुचिसंगा।ध्यानकरैहरिइकइकअंगा॥ विषयविगतमनकृष्णलगाई।करैनपुनिकछुऔरउपाई॥१९॥
होतप्रसन्नजाहिमनध्यावत।सोहरिरूपपरममुनिगावत ॥ रजतममोहितजोमनहोवै । तौतेहिधारणतेमलधोवै ॥२०॥
दोहा–यहिउपायतेहोतहै,भक्तियोगसिधिआसु । तातेयोगीअवशिकै, ध्यावैरमानिवासु ॥ २१ ॥
यहसुनिबोलेकुरुकुलराऊ । मोसोंयहवर्णहुमुनिराऊ ॥ जेहिविधिसोंधारणामहाई । जेहिहरिवपुमहँलागैजाई ॥
दूरकरैमनमलजेहिभाँती । सोमुनिकहहुसकलसुखपाँती ॥२२॥नरपतिवचनसुनतहर्षाई । वर्णनकरनलगेमुनिराई ॥

श्रीशुकउवाच ।

आसनजीतिजीतिपुनिश्वासै । जीतैसँगइंद्रियनविलासै ॥ भगवतरूपस्थूलमनकाहीं।मतिसोंधारणकरैसदाहीं॥२३॥
स्थूलनमेंअतिस्थूलविराटा । भगवतरूपअहैनृपराटा॥।देखिपरैजेहिवपुजगसारो । भयोहोतअरुहोवनहारो॥२४॥
दोहा–यहशरीरब्रह्मांडमें, सप्तावर्णसमेत । तामेंवसतविराटप्रभु, सोइधारणानिकेत ॥ २५ ॥

छंदगीतिका ।

हरिपादमूलपतालहैएडीरसातलजानियो । युगगुल्फगुणहुँमहातलौजंघातलातलमानियो ॥ २६ ॥

युगजानुनीसुतलैउरूद्वैअतलवितलबखानहीं । अरुहैमहीतलजंघप्रभुकोनाभिनभअनुमानहीं ॥ २७ ॥
उरउडुगुलौग्रीवासोप्रभुकोमहरलोकविचारहीं । जनलोकवदनललाटतपशिरब्रह्मलोकउचारहीं ॥ २८ ॥
इंद्रादिसुरहैंबाहुश्रुतिश्रोत्रैद्रिशिब्दगनावहीं । अश्विनिकुमारसोनासिकाघ्राणेंद्रिगंधहिध्यावहीं ॥ २९ ॥
मुखअग्निस्वर्गसोनेत्रहगद्युतिभानुपलकदिवानिसो।विधिसदनभ्रुकुटिविलासजलप्रभुतालरसनाहैरसो ३०
है ब्रह्मरंध्रहुवेदहै यम डाढ़ नेहकला रदै । है हासमायासृष्टिअद्भुतप्रभुकटाक्षगुणौसदै ॥ ३१ ॥
ऊरधअधरलज्जागुणौ अधअधरलोभबखानहीं । है धर्मस्तनपृष्ठअधरममेढ्रब्रह्मामानहीं ॥
मित्रावरुणद्वैवृषणकुक्षिससुद्रअस्थिगिरींद्रहै॥३२॥ हैसहीनाड़ीवृक्षरोमाश्वासवायुमहींद्रहै ॥
प्रभुकोगमनहैकाल अरुसंसारयहतोखेलहै॥३३॥हैं वारवारिदवसनसंध्याप्रकृतिहृदयअकेलहै ॥
मनचंद्रमामहतत्त्वजासु विज्ञान शक्तिमहानहै ॥ ३४ ॥ उरअहंकारविचारियो तुमभूपसतिईशानहै ॥
गजऊंटखच्चरवाजिनखमृगआदिपशुकटिदेशहैं॥३५॥प्रभुबोलखगगणसुमतिमनुथितिमनुजगुणहुँनरेशहैं
गंधर्वविद्याधरहुचारणअप्सरासुरसात हैं ॥ ३६ ॥ सबदैत्यविक्रमविप्रआननभुजाक्षत्रियख्यातहैं ॥
प्रभुवैश्यऊरूशूद्रपदअरुयज्ञभगवतकर्महै।ऐसोविराट्स्वरूपहरिकोकह्योमैंसुखपर्महै ॥ ३७ ॥
यहिमेंसुमतिसोंमनधरैयहितेअधिकनहिंआनहै । यहिभाँतिसकलऋपीशनरपतिईशकरतबखानहै॥३८॥

दोहा—सकलबुद्धिकी वृत्तिते, सोइपरात्माएक । सकलवस्तुकोकरत है, अनुभवसहितविवेक ॥
जिमिजीवात्मास्वप्नमें, तजिइंद्रिनव्यापार । जगकेदुखसुखआदिसब, अनुभवकरतअपार ॥
कृष्णसत्यआनंदनिधि, तिनहिंभजैसबकोय । जननमरणजेहिते मिलै, तेहिआसक्तनहोय ॥ ३९ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज-
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदांबुनिधौद्वितीयस्कंधेप्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

श्रीशुकउवाच ।

दोहा—धारणते संतुष्टहरि, तिनसों यहिविधिज्ञान । लहिविरंचिविरच्योजगत, जेहिविधिरह्योमहान ॥ १ ॥

करिमखस्वर्गअनित्यहिजाहीं । कर्ममार्गकहवेदसदाहीं॥स्वारथहोततहाँकछुनाहीं । भूलोभ्रमतसोमायामाहीं ॥ २ ॥
यातेसावधानह्वैज्ञानी । भोगैमहँअर्थहिअनुमानी ॥ करैसकलअर्थनकोभोगू । जेतनोहोयआपनोयोगू ॥
होइजोतनुनिवाहअनयासा । तौपुनिक्योंनरकरैप्रयासा॥३॥महीबनीशय्यानहिंकामा । तकियाकोजहँबाहुललामा॥
अंजलिजहँतहँपात्रनयोगू । जहँवल्कलतहँ किमिपटभोगू॥४॥चिरकुटचीरकहामगनाहीं।कहानतरुफलदेतसदाहीं॥

दोहा—शैलगुहानिवसनलिये, रोंकीकहाअनेक । पानहेतुबहुसरितमहँ, काहभयोजलनेक ॥

जोयहकहौनयेऊजुरिहैं । तौदासनहरिरक्षैकरिहैं ॥ तातेभजैसंतकेहिकारन । जगमेंधनमदअंधगँवारन ॥ ५ ॥
परमअर्थअतिपरमपियारे।गुणअनंतयुतपरमउदारे॥भजैतिन्हैंसबतजिसुखलेखी । जातेभवनिधितरैविशेषी ॥ ६ ॥
वैतर्णीसमयहसंसारा । परेपुरुषतेहिदुखितअपारा ॥ तिनहिंनिरखिअसकोजगमाहीं । भगवतभक्तिकरैनसदाहीं ॥
भजैंऔरजेयदुपतिछोड़ी । पशुहुनते तिनबुधिहैथोड़ी॥७॥कोइजननिजहृदयअकासा। निवसैजहँश्रीजगतनिवासा ॥

दोहा—द्वादशअंगुलरूपतेहि, अतिअनुपमछविवान । भजैभक्तभगवानको, ताको ऐसोध्यान ॥ ८ ॥

छंदहरिगीतिका ।

युगयुगलबाहुरथांगशंख, गदासुअंबुजराजहीं । प्रसन्नवदनसुकंजदृग, पटपीतअनुपमभ्राजहीं ॥
शोभितरतनयुतकनकअंगद,चारुकुंडलकानमें।कुलिकांतकलितकिरीटशिरपद,मुनिहृदयकमलानमें ॥ ९ ॥
श्रीवत्सहियकौस्तुभसुकंधर, लसतवरवनमालहै॥१०॥कटिमेखलांगुलिअंगुलीयक,उरअनूपविशालहै ॥

नूपुरचरणकंकणकरनमुख, मधुरहँसनिसलीलहै॥११॥अतिअमलकुंचितचारुकुंतल,वदनविलसितनीलहै॥
करुणाकटाक्षनसहित,परमहुलास भ्रुकुटिविलासते। जेदासको अनयासकरत, निराशयहिजगवासते॥१२॥
ऐसोगोविंदअनंदकंदहि, छोंड़िसबदुखद्वंदको। जबलोंरहै विधिधारणामें, भजैकृपाअमंदको॥
दोहा-पदतेलैअरुशीशलों, श्रीहरिअंगअनूप। ध्यानकरैएकाग्रह्वै, पृथकपृथकसुनुभूप॥
जोजोअंगध्यानमहँआवै।ताहिछोंडिआगे चितलावै॥१३॥ज्योंज्योंबढतजाइहरिप्रीती। त्योंत्योंध्यानकरैयहिरीती॥
जौलौंभक्तिभावनहिंपूरो। होइकृष्णजगपतिमहँरूरो॥तौलौंनित्यक्रियाकरिज्ञानी। स्थूलरूपध्यावैमुदमानी॥१५॥
यतीजबहितनुछोड़नचाहै। तबसुखआसनबैठिउछाहै॥ थिरह्वैइंद्रिनकीगतिबोड़ी। उत्तमदेशकालमतिछोड़ी॥
रोंकैप्राणऔरसबश्वासू। विमलबुद्धितेमनहिं विलासू॥ सोइमतिपुनिआत्मामहँलावै। सोइआत्माहरिमाहिंलगावै॥
दोहा-परमशांतह्वैकर्मसब, छोंड़ैयतीविशेषि। श्रीपतिमेंनहिंकालगति, यहज्ञानीचितलेखि॥ १६॥
महाकालजहँसंचरनाहीं। औरदेवगतिकातिनमाहीं॥ जहँनहिंसतरजतमगुणएको। अहंकारमहँतत्त्वननेको॥
जिनमेंकरतिनप्रकृतिनिवासू। तिनहिंभजैसबकीतजिआसू॥१७॥सोइपरमपदवैष्णवजानै।नेतिनेतिजेहिवेदबखानै॥
ताहीकोअनन्यहरिदासा।भजैहियेधरितजिसबआसा॥१८॥यहिविधिजगततजैविज्ञानी।जाकीमतिहरिभक्तिलोभानी
येंडीतेगुदपीड़नकरिकै। ऊरधपवनचढ़ावैभरिकै॥ १९॥ मूलाधारहितेपुनिपवनहिं। नाभीचक्रकरावहिगवनहिं॥
दोहा-मणिपूरकतेवायुको, ल्यावैहियेमँझार। पुनिउदानगतितेपवन, करैकंठआधार॥
तालुमूलराखै पुनिप्राना॥२०॥ सावधानह्वैयतीसुजाना॥ श्रुतिचषनसमुखसातहुद्वारा। रोंकिकरैभ्रूमधिआधारा॥
भ्रूबिचअर्धमुहूरतराखी। पुनिमुकुंदकोपदअभिलाषी॥ ब्रह्मरंध्रतेप्राणनिकासै। तजैसकलइंद्रिनअवकासै ॥ २१॥
ब्रह्मलोकजोचहैविहारू। जहँआठौनिधिकरविस्तारू॥ तौइंद्रियमनतेयुतगमनै।करैभोगसुरलोकहिभवनै॥ २२॥
ब्रह्मांडहिब्रह्मांडहुताके। योगीविचरतनेकुनथाके॥ ज्ञानीतपीभक्तिकैयोगी। लहैजौनगतिकोसुखभोगी॥
दोहा-सोगतिकोनहिंपावहीं यज्ञादिकजेकर्म। करहिंसदायहिजगतमें, औरअनेकनधर्म॥ २३॥
नाडिसुषुम्नातेसहुलासै। ब्रह्मरंध्रजोप्राणनिकासै॥ अग्निलोकसोप्रथमहिंजावै। निर्मलह्वैसत्कारहिपावै॥
सूरजउपरचक्रशिशुमारा॥ २४॥ तहँगमनैपुनियतीउदारा॥विश्वनाभितजिलिंगस्वरूपा। पुण्यपापसंयुतनहिंभूपा
पुनिजनलोकयतीजनजातो।कल्पायुषजहँसुरगणभातो॥२५॥पुनिअनंतज्वालानलमाहीं।जरतदेखियहविश्वहिकाहीं
ब्रह्मलोककोकरतपयानो। द्वैपरार्धजहँअवधिबखानो॥ २६॥ जहँनशोकनहिंमृत्युबड़ाई। नहिंउद्वेगनपीड़ापाई॥
दोहा-पैजेभगवतरूपको, जानतनहिंकछुभाव। तिन्हैंतहाँमानसव्यथा, करतीनिजपरभाव॥ २७॥
पुनिधरणीआवरणहिंजावै। धरणिरूपह्वैभीतिनलावै॥ पुनिजलमंडलजलवपुधरिकै। योगीजायत्वरानहिंकरिकै॥
पावकमंडलपावककरूपा। वायुआवरणवायुस्वरूपा॥ पुनिनभमंडलनभवपुधारी। योगीगमनकरैसुखकारी॥२८॥
गंधघ्राणतेरसरसनाते। रूपदृष्टितेपरसत्वचाते॥ शब्दश्रोत्रतेनाकिइनहिंते। अभिप्रायअंतःकर्णहिंते ॥ २९॥
पुनितामसराजससात्विकगुन।नाँघिमहत्तत्त्वहिगमनैपुन॥मूलप्रकृतिगमनैपुनियोगी॥३०॥तबह्वैदिव्यरूपकोभोगी॥
दोहा-तेहिवपुतेआनंदमय, शांतरूपहरिधाम। तहँगमनैभागवतवर, सबविधिपूरणकाम॥
यहिविधिसोंजोहरिपुरजावै।सोपुनिनहिंसंसारहिआवै॥३१॥अर्चिरादिअरुधूमहुँमारग। जोपूँछेहुनृपमोहिंश्रुतिपारग॥
सोसबभूपतुम्हेंसमुझायो।जेविधिहरिब्रह्मासोंगायो॥ ३२॥ यहसंसारआपअघघाती। औरनमंगलराहदेखाती॥
तातेवासुदेवमहँभूपा। करैभक्तिसबभाँतिअनूपा॥ ३३॥ यहविरंचिचैत्रवारविचारचो। ठीकआपनेमननिरधारचो॥
करैभक्तिभगवानहिंमाहीं। जातेमंगलहोयसदाहीं॥ ३४॥ भूतनमेंबुधिसोभगवानै। अंतर्यामीसज्जनजानै॥ ३५॥
दोहा-तातेनृपसबभाँतिते, सर्वकालसबठोर। श्रवणकीर्त्तनस्मरण, लायकनंदकिशोर॥ ३६॥
सवैया-नँदनंदनआनँदकंदसदा,करुणाकरदासनकेपतिहैं। तिनकीकथारूपसुधाकोसदा,कर्णांजलिह्वैजेपियेंअतिहैं॥

जनतेविषयवासनादूरिकरैं,रघुराजकरैतिनकीनतिहैं।कमलापतिकेपुरकोगमनैं,ह्वैपुनीतरँगेहरिकीरतिहैं ॥३७॥

इतिसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबाँधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदांबुनिधौद्वितीयस्कंधेद्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

श्रीशुकउवाच।

दोहा–मरणसमैकानरनको, करनयोगहैभूप । जोमोहिंपूँछ्योसोकह्यों, सकलकथासुखरूप ॥ १ ॥
ब्रह्मतेजजोचाहैकोई । भजैविरंचिहितौसुखहोई ॥ इंद्रिनकीसामर्थ्यजोचाहै । भजैशक्रकोसहितउछाहै ॥
करैजोकोइजनसंततिआसा । प्रजापतिनध्यावैसहुलासा ॥ २ ॥ चहैजोकोइऐश्वर्य्यअरामा । तोदुर्गाकोकरैप्रणामा॥
तेजचहैतौपावकध्यावै । वसुनभजैजोधनमनलावै ॥ रुद्रनभजैवीर्यअभिलाषी ॥३ ॥ अदितिहिभजैअन्नचितराखी ॥
देवनभजैस्वर्गकोआसी । विश्वेदेवनराज्यहुलासी ॥ प्रजनचहैजोनिजआधीना । भजैसाध्य देवनलवलीना ॥ ४ ॥
दोहा–आयुर्बलकोजोचहै, सोअश्विनीकुमार । पुष्टिकामनाजोकरै, भजैतोभूमिउदार ॥
चहैप्रतिष्ठाजोजनकोई । भजैरोदसीमातनसोई ॥ ५ ॥ रूपकामगंधर्वनकाहीं । नारिकामउर्वशीसदाहीं ॥
अधिपतिहोनचहैसबकेरो । तौपरमेष्ठीभजैनिबेरो ॥ ६ ॥ भजैयज्ञकोकरियशकामा । कोपकामवरुणैसुखधामा ॥
विद्याकामशंभुकहँध्यावै । दंपतिप्रीतिउमाउरल्यावै ॥ ७ ॥ धर्महेतुउत्तमश्लोकै । वंशहेतुपितरनमुदथोकै ॥
पुण्यजननरक्षाकेहेतू । बलहितमरुतगणहिंमतिसेतू॥ ८॥मनुहिंभजैनृपपदलहिवेको।निर्ऋतिहिभजैशत्रुदहिवेको ॥
दोहा–कामभोगजोचाहतो, भजैसोमकोसोइ । परमपुरुषकोसोभजै, जोअकामजनहोइ ॥ ९ ॥
जोइनसबकामनकोचाहै । अथवापुरुषअकामसदाहै ॥ मुक्तहोनकोजोअभिलाषै । ताकोभेदवेदअसभाषै ॥
भक्तियोगकरितीव्रसदाहीं । ध्यावैश्रीयदुनंदनकाहीं ॥ १० ॥ यहीउदयकल्याणहिंकेरी । होइकृष्णमेंभक्तिघनेरी ॥
करैसदासंतनकरसंगा । यहीकरनसंसारहिभंगा ॥ ११ ॥ जातेहोतपरमविज्ञाना । जेहितेरागद्वेषनशाना ॥
उभयलोकमहँहोतविरागा । मनप्रसन्नहरिपदअनुरागा ॥ ऐसीयदुवरकथासुहाई । कोनसुनैजनकानलगाई ॥१२॥
(शौनकउवाच)दोहा–भरतवंशअवतंसनृप, यहसबसुनिकैसूत । औरकहापूंछतभये, ऋषिकविव्यासहिपूत ॥१३॥
हमसबसुननहेतअभिलाषे । तुमतोसकलभक्तिरसचाखे ॥ संतसमाजमाहँसुखदाई । होइकृष्णकीकथासदाई॥१४॥
पांडवपौत्रपरीक्षितराजा । रह्योबालजबसहितसमाजा ॥ खेलैहरिचरित्रकरखेला । भयोभागवतभूमिअकेला ॥ १५ ॥
तैसेकृष्णभक्तशुकदेवा । करतजोनितहरिचरणनसेवा ॥ तातेसंतसमागमयोगू । ह्वैबोकृष्णकथासुखभोगू ॥ १६ ॥
आयुषकृष्णकथाविमुखनकी।हरतउवतअथवतरवितिनकी॥जेनितकरहिंकथारसपानू।तिनकीआयुषहरहिंनभानू ॥
दोहा–तरुगणकानहिंजीवहीं, भस्त्रालेहिंनश्वास । खातनमैथुनकरतका, पशुजिमिग्रामानिवास ॥ १८ ॥

छंद हरिगीतिका।

जिनकेश्रवणमहँपरतकबहुँनकृष्णचंद्रसुधाकथा । तेइश्वानशूकरशुतरखरतेअधिकपशुजीवतवृथा ॥
यदुवंशमणिकेचरितसुंदरपरतनहिंजिनकानहैं॥ १९ ॥तेइकर्णनिर्जलभूभुजंगनिकेविलानिसमानहैं ॥
रसनानजेहरियशरटैंदादुरसमहिंतेकानहीं ॥ २० ॥ जेशिरनवतनहिंहरिचरणसोमुकुट्युतभारहिसहीं ॥
जेकरकरतनहिंकृष्णकोकैंकर्यकुलतजिसाथहैं । युतकांचनेकंकणहुँतेपैतेइमृतककेहाथहैं ॥ २१ ॥
जेनैनकरतनकृष्णदर्शनतेइमयूरहिपुच्छके । जेपदनगमनतकृष्णथलतेइतूलहैंतरुगुच्छके ॥ २२ ॥
जेपुरुषसज्जनरेणुपदआदरसहितनहिंशिरलये । हरिचरणतुलसिनसूँघहींतेमृतकजीवितह्वैगये ॥ २३ ॥
जिनपुरुषहियदुवंशमणिकेनामलेतनद्रवतहैं । पुलकावलीनशरीरमेंनहिंनैननीरहिश्रवतहैं ॥
तिनकोहृदयपाषाणह्वैतेअतिकठोरहिजानियो । तिनकर्मधर्महुयोगजपतपवृथाठीकहिठानियो ॥ २४ ॥

दोहा–हौभागवतप्रधानतुम,भाषहुअतिप्रियज्ञान । शुकजोनृपसोंकहतभे,ताकोकरहुबखान ॥ २८ ॥
इतिसिद्धिश्रीमन्महाराजाश्रीमहाराजबाँधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेव
कृतेश्रीभागवतेआनंदांबुनिधौद्वितीयस्कंधेतृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

श्रीसूतउवाच ।

दोहा–आत्मतत्त्वनिश्चयकरत, सुनिशुकवचनउदार । सतिमतिकीन्हींकृष्णमें, नृपउत्तराकुमार ॥ १ ॥
तनुकलत्रसुतबंधुअगारा । धनपशुसकलराज्यकोभारा ॥ इनकीममतातजीनरेशा। छूटतिनहिंजोकियहुकलेशा ॥२॥
कृष्णकथाकोश्रवणहुलासा । कीन्होनृपउरपरमप्रकासा ॥ यहीप्रश्नपूँछ्योशुकपाहीं। जोतुमपूंछतहौमोहिंकाहीं॥३॥
अर्थधर्मअरुकामप्रकासा । ऐसीछोड़िकर्मकीआसा ॥ भूपतिनिकटमृत्युनिजतोले । करिदृढ़भावकृष्णमहँबोले॥४॥
(श्री०रा०उ०)कृष्णकथाकोकरतखाना।नाशहोतमेरोअज्ञाना॥हौसर्वज्ञनाथसबभाँती।होतवचनसुनिशीतलछाती ५
दोहा–जेहिविधिसिरजैविश्वको, मायाकरिभगवान । जेहिब्रह्मादिनजानहीं,सुनोचहौंसोकान ॥ ६ ॥
जोजोशक्तिधारिभगवाना । पालहिनाशहिजगतमहाना॥आपुहिखेलखेलावतखेलत।प्रगटतहरतआपहीदेखत ॥७॥
अद्भुतकर्मकृष्णकीलीला। जानहिंनहिंविधिशिवशुभशीला॥८॥प्रकृतिगुणनधौंएकहिवारा।धौंक्रमसोंवसुदेवकुमारा॥
धारणकरिबहुधरिअवतारा । करहिंचरितसोकहहुउदारा॥९॥यहसंशयममेटहुनाथा । तुमकोविदितवेदकीगाथा॥
परब्रह्मकोसबविधिजानहुँ।मोपरमुनिकरिकृपाबखानहुँ१०सू.उ.यहिविधिजबपूंछ्योनरनाहा।कृष्णकथाकोबढ्योउछाहा
दोहा–तबहरिकोस्मर्णकरि, श्रीशुकदेवसुजान । सुखदमंगलाचरणपुनि,लागेकरनमहान ॥ ११ ॥

(श्रीशुकउवाच) छंदहरिगीतिका।

जेजगतव्यापकपरहुतेपरदिव्यमंगलगुणभरे । जगसृजतपालतहरतलीलाकरतहितत्रयगुणधरे ॥
देहीनअंतर्यामिजोदुर्लभहुजासुउपासना । तेकृष्णकोवंदनकरहुँजेहरहिंसबभववासना ॥ १२ ॥
संतनसुखददुष्टनदुखदसतमयीमूरतिमाधुरी । अभिलाषपूरणपरमहंसनकरनधरनसुबाँसुरी ॥ १३ ॥
यदुवंशकेअवतंसदंभिनदूरजासुनिवासहै । समअधिकरहितप्रकाशयुतनिजरूपब्रह्मविलासहै ॥ १४ ॥
स्मरणकीर्तनदर्शवंदनश्रवणअर्चननाथके । ध्रुवधुनतकल्मषकोटिकलिकेसुयशप्रदमुदगाथके ॥ १५ ॥
जिनचरणभजनप्रभावतेदुहुँलोककेजेसंगको । निजमनहिंतेतजिवरविवेकीकरिपरिश्रमभंगको ॥
अतिअगमसूक्षमपरहुतेपरब्रह्मगतिअतिपावनी । तेलहतअवशिअनंदवपुहोइभवकलेशनशावनी ॥
जिनकोसुयशवर्णतसुनतनाशतअमंगलमूलको । तिनकेचरणवंदनकरहुँबहुवारमैंतेहितूलको ॥ १६ ॥
तपसीसुदानीयशीयोगीमंत्रजाननवारहै । अरुसदाचारीनिरविकारीधनीजेबड़वारहै ॥
तेविनाअर्पणकियेजाकेलहतकर्मनफलनहीं । तिनकोनमामिनमामिहैजिनसुयशमंगलमयसहीं ॥ १७ ॥
आभीरकंकपुलिंदपुल्कसयमनखसहुकिरातजे । अरुहूनऔरहुमहापापीकरतपापअघातजे ॥
तेजासुपदसेवकनिकेपदसेइहोवहिंपावने । प्रभुनंदनंदनतासुपदवंदनकरहुँसुखछावने ॥ १८ ॥
योगीनजीवनवेदमयअरुधर्ममयतपमयसही । परमात्माश्रीकृष्णकीगतिविधिशिवहुजानैनहीं ॥
दासनदुरितदाहकद्रुतैसबदिव्यगुणसंपन्नहैं । येदेवकीनंदनसोईमोहिंहोहिंआसुप्रसन्नहैं ॥ १९ ॥
श्रीपतिसुमखपतिप्रजापतिमतिपतिसोपतिसबलोकके । प्रभुधरापतिगतिपतिअहोयदुवंशसज्जनथोकके ॥
कलिकालकठिनकरालनाशकअमितजाकेनामहैं । सोकृष्णचंद्रप्रसन्नमोपरहोहिंआनँदधामहैं ॥ २० ॥
जिनचरणकमलनध्यानकरिशुचिबुद्धिसोंयोगीसदा । अतिसूक्ष्मदुर्गमआत्मतत्त्वहिंदेखहींजगसर्वदा ॥
यदुवंशमणिकेरूपछविछकियथारुचिगावतरहैं । सोकृष्णचंद्रप्रसन्नमोपैहोहिंसंततसुखदहैं ॥ २१ ॥

जोपूर्वकल्पहिश्रुतिस्मृतिविधिहियेविस्तारतहरी। यहविश्वकेउत्पत्तिहितजिनसरस्वतिप्रेरनकरी॥
सोइभारतीविधिवदनतेलक्षणसहितप्रगटतभई। सोऋषिऋषभश्रीकृष्णहोहिप्रसन्नदगदायाठई॥ २२॥
जेमहाभूतनतेविरचियेवपुनअंतर्यामिहैं। सोवतसोषोडशआत्महैषोडशगुणनभोगतअहैं॥
सोकृष्णविष्णुप्रधानजिष्णुसखाअवशिआनँदभरैं। यहसमयमेंप्रतिपाद्यहैममवचनकोभूपितकरैं॥ २३॥
दोहा—वंदौपितुसर्वज्ञजो, व्यासदेवभगवान। जिनमुखनिर्गतज्ञानमधु, करहिंसंतसबपान॥
यहमंगलशुकदेवकृत, करैजोकथाअरंभ। ताहिविघ्नव्यापैनहीं, दूरिहोइदिलदंभ॥ २४॥
पुनिकुरुपतिसोंमुदितह्वै, बोलेश्रीशुकदेव। मोसोंजोतुमयहकियो, प्रश्नसुखदनरदेव॥
सोइहरिब्रह्मासोंकह्यो, ब्रह्मानारदपाहिं। वर्णनसोकरिहौंविशद, सुनहुभूपमुदमाहिं॥ २५॥

इतिसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबाँधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजी
देवकृतेश्रीभागवतेद्वितीयस्कंधेआनन्दाम्बुनिधौचतुर्थस्तरंगः॥ ४॥

दोहा—एकसमयनारदहरषि, ब्रह्माकेढिगजाइ। वंदनकरिकरजोरिकै, कियोप्रश्नचितलाइ॥

श्रीनारदउवाच।

देवदेवपूर्वजमतिपावन। सकलजगतकेभूतनभावन॥ १॥ आतमतत्त्वबोधकरज्ञाना। मोसोंकरियेतातवखाना॥१॥
जौनरूपअरुजौनअधारा। होतजहाँतेयहसंसारा॥ जेहिअधीनहोतोजेहिलीना। औउपकरनहुकहोप्रवीना॥ २॥
वर्त्तमानभावीअरुभूता। सबजानहुसबकरहुप्रसूता॥ निजकरमेंआमलकसमाना। यहसंसारआपकोजाना॥ ३॥
जातेलह्योआपविज्ञाना। जोअधारतुम्हरोभगवाना॥ जाकेरहौअधीनसदाहीं। जोअंतर्यामीतुममाहीं॥
दोहा—एकआपसंकल्पते, पंचभूतते नाथ। रचहुअनेकनभूतको, लेउनकाहूसाथ॥ ४॥
उत्पतिपालनअरुसंहारा। बिनश्रमकरहुतुमहिंकरतारा॥बिनप्रयासनिजशक्तिहिधारी। जिनअमोघवांछाविस्तारी॥
करहुसकलतुमजगतकृपाला।जिमिमकरीसिरजैबहुजाला५॥उत्तममध्यमअधमनिदाना।नामरूपगुणसहितजहाना॥
ताकेकरतातुमनहिंआना। असमेरेनिश्चयभगवाना॥६॥ सोतुमकरहुसविधितपघोरा। यहलखिशंकितहैमनमोरा॥
औरहुनाथअहैकहुँकोई। करहुजासुहिततपश्रममोई॥ ७॥ तुमसर्बज्ञईशसबकेरे। तातेप्रश्नकियेबहुतेरे॥
दोहा—करिकैकृपाविरंचिमोहिं, सिगरोकहौबुझाय। जामेंमेरोसकलभ्रम, द्रुतहिदूरिह्वैजाइ॥
नारदकीसुनिगिरासुहाई।बोलेचतुराननसुखपाई।८॥(ब्रह्मो.)कियोवत्सतुमप्रश्नअनूपा।वर्णनाहितहरियशश्रुतिरूपा॥
करुणामयभागवतप्रधाना। हौनारदतुमसतिहमजाना॥अहैशक्तिममजासुप्रभावा॥९॥तेहिनजानजोतुमसबगावा॥
सोऊनहिंअसत्यमुनिराई। पैतुमसोंमैंकहौंबुझाई॥ १०॥ जासुदीप्तिदीपितसंसारा। ताकोमैंकरतोविस्तारा॥
जिमिरविशशिशिषिग्रहउड़आशा।हरिप्रकाशलैकरहिंप्रकाशा११जेहिदुर्जयमायावशप्रानी।मोहिंजगतगुरुकहैंबखानी
दोहा—वासुदेवभगवानसोइ, तिनकोकरिचितध्यान। चरणकमलवंदनकरहुँ, जोदायकविज्ञान॥
जिनकेदृगपथमहँयहमाया। खड़ीहोतिलाजतिमुनिराया॥तातेमोहितकुमतिघनेरे। भाषहिमैंसुततियधनमेरे॥१३॥
द्रव्यकर्मऔकालस्वभावा। जीवआदिकारणजेगावा॥ वासुदेवतेपरकोउनाहीं। यहयथार्थजानहुमनमाहीं॥ १४॥
नारायणकारणवेदनके। नारायणकारणदेवनके॥ नारायणकारणलोकनके। नारायणकारणयज्ञनके॥ १५॥
नारायणकारणयोगनके। नारायणकारणतपगनके॥ ज्ञानहुँकेनारायणकारन। नारायणकारणजगतारन॥ १६॥
दोहा—अखिलात्माअविकारप्रभु, नारायणसर्वज्ञ। तेसंकल्पहितेकियो, मोहिंउत्पतिवपुयज्ञ॥
तिनकेप्रेरणतेमुनिराई। मैंसिरजोंसंसारसदाई॥ थितिउत्पतिनाशनकेहेतू। निजमायातेकृपानिकेतू॥ १७॥
ग्रहणकियेसतरजतमतीने। हैंअप्राकृतगुणगणभीने॥ मोहप्रकाशप्रवृत्तिसुभावा। एतीनौगुणवेदनगावा॥ १८॥

तेकारणकारजकेहेतू । नित्यमुक्तहूजीवसचेतू ॥ ताकोमायामोहितजानी । बंधनकरहिंत्रिगुणमुनिज्ञानी ॥ १९ ॥
त्रैगुणयुतस्वतंत्रखगगामी । करणअगोचरसबजगस्वामी ॥ २० ॥ सोईमायापतिमुनिराई विपुलहोनइच्छाकरिभाई॥

दोहा–आकस्मातहि प्राप्तजे, कालहुकर्मस्वभाउ । तिनकोअंगीकारकिय, सुनहुमुदितमुनिराउ ॥
तहाँ कियोपरमात्मा, बहुह्वैवेकीचाह । भयोप्रथमसोकहतहौं, जोपूंछेहुसउछाह ॥ २१ ॥

महत्तत्त्वकीउतपतिजोई । प्रथमकरतहौंवर्णनसोई ॥ कियोकालतेक्षोभतहाहीं । सतरजतमतीनोगुणकाहीं ॥ २२ ॥
प्रकृतिस्वभावताहितेभयऊ । तेहितेजियकेकर्महिठयऊ ॥ ताहीतेपरमातमजोहै । तासुअधारप्रकृतिजोसोहै ॥
प्रगव्योमहत्तत्त्वतेहितेजब । सोसतरजतेबढतभयोतब ॥ सोमहतत्त्वभयोसविकारा । तबभोतमप्रधानअवतारा ॥
मोहनकरनप्रकाशनहारो । धर्मप्रवर्त्तनताहिविचारो ॥२३॥सोजगअहंकारकहिगयऊ। सतरजतमत्रयवपुसोभयऊ॥

दोहा–पंचभूतउपजावने, अरुसात्विकअहँकार । तेहिसहायकेकरनमें, तिनकीशक्तिअपार ॥

पांचविषयशब्दादिकज्ञाने । साधनजेइंद्रियबलवाने ॥ तिनकेप्रेरणकरिबेमाहीं । तिनकीशक्तिप्रगटदरशाहीं ॥
भूतनप्रथमभयोसविकारा । अहंकारतामसहुअपारा ॥२४॥ तातेशब्दद्वारआकाशा । उत्पतिहोतभयोअनयाशा॥
तेहिनभकोभोसूक्ष्मस्वरूपा । गुणजगव्यापकशब्दअनूपा॥जौनशब्दजोदेखनवारो। तेहिपदार्थकोबोधनहारो॥२५॥
पुनिसविकारव्योमजबभयऊ । तेहिस्पर्शपवननिर्मयऊ ॥ ताकोगुणस्पर्शसुहायो । मुनिवरमैंतुमसोंयहगायो ॥

दोहा–भोअकाशसम्बन्धते, शब्दाहिकोपरमान । प्राणवोजबलसहअहे, ताकोरूपमहान ॥ २६ ॥

कालस्वभावकर्मसँगपाई । भयोवायुसविकारमहाई ॥ ताहूतेरूपहिकेद्वारा । होतभयोहैतेजअपारा ॥ २७ ॥
रूपमानस्पर्शहुमाना । शब्दमानसोइतेजबखाना ॥ भयेविकाशरहिततेहुकाहीं । तेहितेरसद्वाराजगमाहीं ॥
रसगुणहैजामेंइमिवारी । प्रगटतभयोजननसुखकारी ॥ व्योमआदित्रयतत्त्वजुगायो । तेहिसम्बन्धहितेजलभायो ॥
रूपस्पर्शशब्दहूमाना । होतभयोसोविदितजहाना ॥ २८ ॥ सोजलभोविकारयुतजबहीं । तेहितेगंधहिद्वारातबहीं॥

दोहा–होतभईउत्पन्नक्षिति, गंधअहैगुणजासु । तत्त्वचारिनभआदिजे, तिनकोतामेंवासु ।

शब्दस्पर्शरूपरसजोहै । तेहितेसहितभईक्षितिसोहै ॥ २९ ॥ अहंकारसात्विकसविकारै । तेहितेमनउपज्योसंसारै ॥
सतअहमितकेमारगकाहीं । होनहेतथिरइंद्रिनमाहीं ॥ दिशावायुरविइंद्रप्रचेता । शिषअश्विनीकुमारसचेता ॥
मित्रउपेंद्रदेवदशजेहैं । उत्पतिहोतभयेद्रुततेहैं ॥ ३० ॥ राजसअहंकारहैजोई । भयोविकारसहितजबसोई ॥
तातेजेदशइन्द्रियअहहीं । प्रगटभईतिनकोहमकहहीं ॥ श्रुतित्वचघ्राणदृष्टिरसनाहू । वाणीमढ्रअंघ्रिगुदबाहू ॥

दोहा–ज्ञानशक्तिजोबुद्धिअरु, क्रियाशक्तिजोप्रान । राजसअहमितकार्यहित, येदोउभयेमहान ॥ ३१ ॥

भूतेंद्रियमनगुणमुनिभूपा । पृथक्पृथक्इनरहेसुरूपा ॥ याहीतेहरितनुजगकाहीं । समरथभयेनविरचनमाहीं॥३२॥
तबभगवततेप्रेरितह्वैकरि । तेसबपरस्परमिलिसुखभरि ॥ सूक्ष्मथूलअहैंजेभावा । कालकर्मअरुत्योंहिंसुभावा ॥
इनकोकरिकैअंगीकारे । विरच्योयहब्रह्मांडअपारे ॥ ३३ ॥ वर्षहजारनजलमेंसोई । परोरहच्योतेहिनयननजोई ॥
ममअंतर्यामीभगवाना । कालहिकर्मस्वभावप्रधाना ॥ करिकैग्रहणअचेतनअंडै । चेतनकरतभयेबरबंडै ॥ ३४ ॥

दोहा–कढिआयोपरमात्मा, सोब्रह्मांडहिफोरि । ताकोहौंवर्णनकरौं, जैसीमतिहैमोरि ॥

ममउरकेहरिजाननवारे । सहसनऊरुचरणभुजधारे ॥ नैनहजारनआननशीषा । तिनकेमेंइनआंखिनदीखा ॥ ३५ ॥
जेहिपरेशकेअंगनितेरे । वर्णैंज्ञानीलोकघनेरे ॥ सातलोकहरिकटिकेनीचे । सातलोकहैंकटिकेऊँचे ॥ ३६ ॥
मुखतेद्विजक्षत्रियभुजभयऊ।ऊरूवैश्यशूद्रपदजयऊ॥३७॥तिमियदुपतिपदतेभूलोका।नाभितेभुवर्लोकमुदथोका ॥
हृदयहितेसुरलोकजयोहै । उरतेमहरहुलोकभयोहै ॥ ३८ ॥ ग्रीवातेजनलोकहिजानो । आननतेतपलोकमहानो ॥

दोहा–अथवाश्रीपतिवोठते, होतभयोतपलोक । ब्रह्मलोकहरिशीषते, प्रगव्योकरनअशोक ॥ ३९ ॥

वैकुंठहिमानिये ऩातन । व्यापकजेभगवतजड्चेतन ॥ तिनकेकटितेअतलबखानो । ऊरुनतेवितलहुकहँजानो ॥

उभयजानुतेशुद्धसुतलभो। तलातलहुजंघनतेभलभो॥ ४०॥दूनौगुल्फजेहैंहरिकेरे। लोकमहातलभोतिनतेरे॥
अग्रभागजोप्रभुपदकेरो। तेहितेहोतरसातलहेरो॥ कृष्णचरणतेत्योंहिउँताले। प्रगटतभयोलोकपाताले॥ ४१॥
सकललोकमयअसुरअराती। अहैमुनीशईशयहिभाँती॥ अथवाहरिपगतेभूलोके। भुवर्लोकभोनाभिअशोके॥
दोहा–होतभयोहैशीशते, स्वर्लोकहुविख्यात। रचनायहसबलोककी,जानहुमुनिअवदात॥
कलपकलपकीकलपना, हैइनलोकनकेरि। सबकेजाननयोग्यसो, तुमसोंकहीनिवेरि॥ ४२॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री महाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेश्रीमद्भागवतेद्वितीयस्कंधेआनन्दाम्बुनिधौपंचमस्तरंगः॥ ५॥

श्रीब्रह्मोवाच।

दोहा–बोलेबहुरिविरंचियह, सुनहुमुनीशसुजान। वाक्वह्निउत्पत्तिको, हरिमुखहैस्थान॥
गायत्रीआदिकजेअहहीं। सातछंदउत्पतिथलकहहीं॥ हरित्वचआदिधातुजेसातैं। तेइहैंपुहुमीविख्यातैं॥
हव्यकव्यदेवनपितरनको। अन्नदुहुँनकोशेषनरनको॥ अरुसबरसइनउत्पतिथानै। भगवानैकीजीभिबखानै॥ १॥
सबकेप्राणपवनजेदेवा। तिनउत्पतिस्थानहिंसेवा॥ कहौंपरेसनासिकाकेरे। छिद्रअहैंजानहुँसुतमेरे॥
सबओषधिअश्विनीकुमारा। मुदप्रमोदजोअहैअपारा॥ इनकीउत्पतिथलहिबखानो। घनश्यामहिघ्राणेंद्रियजानो॥
दोहा–रूपप्रकाशकतेजअरु, शुक्लादिकजेरूप। इनउत्पतिस्थानहैं, हरिकेनयनअनूप॥
अंतरिक्षरविउत्पतिठौरे। दृगगोलकहैनंदकिशोरे॥ दिशितीरथउत्पतिस्थाना। विलसतकर्णरंध्रभगवाना॥ २॥
शब्दअकाशकेरउत्पतिथल। श्रीपतिकीश्रोत्रेंद्रियहैकल॥ सकलवस्तुकोसारजोअहई। अरुसौभाग्यवेदजोकहई॥
इनकोहैउत्पतिथलभारी। हरिशरीरमेंकहहुँविचारी॥ ३॥ पर्शऔरबाहेरजोपवनू। औसबमखजेहैंअघदवनू॥
तिनउत्पतिथलकहहुँनिवेरी। त्वचाअहैभगवानहिंकेरी॥जिनकरिकेमखहोइसदाई। असतरुऔरहुतरुसमुदाई॥४॥
दोहा–तिनकेउत्पतिकेथलै,हरिकेरोमावेष॥ घनउत्पतिस्थानत्यों, श्रीपतिसुंदरकेश॥
चपलाउत्पतिकेस्थाना। हरिअस्मश्रुकरौमेंगाना॥ उत्पतिथलहैउपलहिकेरे। प्रभुकेपगनखसोभवनेरे॥
आयसउत्पतिथलहिबखानो। श्रीपतिकेकरकेनखजानो॥ सबलोकनकेपालनवारे। इंद्रादिकसुरजेसुखकारे॥
तिनकोउत्पतिथलहरिबाहू। जानहुँनिजमनतेमुनिनाहू॥५॥भुवर्लोकभूलोकमहाना। स्वर्गलोकउत्पतिस्थाना॥
श्रीपतिकेजेचरणसुहाये। तिनकोगवनवेदगणगाये॥ रक्षाक्षेमशरणइनकेरो। उत्पतिथलहरिचरणहिहेरो॥ ६॥
दोहा–वारिवीर्यअरुसृष्टिऊ, अरुपर्जन्यप्रजेश। इनउत्पतिथलहरिहिके, राजतशिश्नविशेष॥
संततिहेतभोगजोहोई। तेहितेतापहानिजोजोई॥ तिनकेउत्पतिकेरनिवासे। हरिउपस्थइन्द्रियअतिभासे॥ ७॥
सुनहुवचननारदबडभागा। यमअरुमित्रदेवमलत्यागा॥ इनउत्पतिथलकहहुँनिवेरी। अहैपायुइन्द्रियहरिकेरी॥
हिंसाऔरदरिद्राजोहै। मृत्युऔरनरकहुजोसोहै॥ इनकीउत्पतिथलहिबखानो। गुदभगवानकेरतुमजानो॥
अहैपायुइन्द्रियकोसोई। अधिष्ठानवर्णौंसुदमोई॥ ८॥ तिरस्कारअधरमअज्ञाना। उत्पतिथलहरिपृष्ठमहाना॥
दोहा–नदनदीनउत्पतिथलै, भगवतनाडीजानु। हरिकेअस्थिसमूहत्यों, गिरिउत्पतिथलमानु॥ ९॥
प्रकृतिअन्नआदिककोसारा। अरुसमुद्रजेसातअपारा॥ भूतनलयइनउत्पतिठामा। हरिउदरैप्रसिद्धअभिरामा॥
मानसउत्पतिकोशुभठौरा।राजतहैहियनंदकिशोरा॥ १०॥ धर्मचतुर्मुखमैंईशाना। तुम्हरोसनकादिकविज्ञाना॥
औरसतोगुणइनउत्पतिथल।हरिकोअंतःकरणअहैभल॥११॥हमतुमअरुसनकादिमुनीशा।सुरनरअसुरनागओईशा॥
खगमृगविषधरजियगंधर्वा॥ १२॥ अप्सरयक्षराक्षसहुसवा॥सर्पभूतगणअरुपशुजाती। पितरसिद्धविद्याधरपांती॥

दोहा–चारणतरुजलथलनभहु, वासीजीवनिकाय। ग्रहनक्षत्रघनबीजुरी, केतुनखतसमुदाय ॥१४॥
भूतभविष्यवखानिये, वर्तमानजुपदार्थ। अंतर्यामीरूपहै, जिनमेंयहुपयथार्थ ॥
तेहितेसकलरूपयदुराई। तिनआवृतसबविश्वलखाई॥ तेइहरिव्यापितजगविख्याते। बीताभरहैअधिकहिताते ॥ १५ ॥
जिमिरविनिजमंडलहिप्रकाशत। बाहेरहूवरतेजहिभासत ॥ तैसेपरमपुरुषभगवाना। व्यष्टिसमष्टिप्रपंचमहाना ॥
ताकोकरतप्रकाशसदाहीं। आपहुपरकाशितेसोहाहीं॥ सोइहरिअभयमोक्षकेदाता। कर्मशुभाशुभविनविख्याता॥१६॥
सुनुमुनिनिजमहिमायहभारी। सकललोकव्यापकअसुरारी॥ तिनकेअंशलोकजेअहहीं। तहँसबभूतवसतमुनिकहहीं॥
दोहा–मंडलप्रकृतित्रिमूर्धजो, ताकेमूर्धामाहिं। लसततहाँवैकुंठहै, नित्यस्वरूपसदाहिं ॥
जरामरणकोजहाँअभावा। सदासत्यसंकलपसोहावा ॥ अघशोकादिशून्यतामहई। यहसिगरोनितथापितरहई॥१८॥
बाहेरप्रकृतिमंडलहिकेरे। परवैकुंठपरतदगहेरे ॥ एकपादमेंअंडविराजे। तीनिपादवैकुंठहुछाजे ॥
जरामरणरहितैजनजोई। सोपुरपावतहैध्रुवसोई ॥ तीनिलोककेभीतरमाहीं। एकपादजोलसतसदाहीं ॥
तहँजेजियवैकुंठतेआवें। निजइच्छातेपुनितहँजावें॥ सोइकपादअहंममघरहै। कर्मैतेपावततेहिनरहै ॥ १९ ॥
दोहा–अहैजीवक्षेत्रज्ञजो, सोद्वैमारगमाहँ। चलतसदामुनिवरसुनो, कहतअहौं तिनकाहँ ॥
साधनधूमादिकमगकेरो। कर्महिकोश्रुतिकियोनिवेरो ॥ अर्चिरादिमारगकोसाधन। प्रीतिसहितयदुपतिआराधन॥
अहैजीवदोहुनअधिकारी। मुनिवरतुमसोंकहेंविचारी॥२०॥ ब्रह्मजोसूक्षमचिदचिदतनहै। तेहितेअंडभयोअतिघनहै ॥
तेहिब्रह्मांडकेरजोकारन। उपजोब्रह्मथूलचिदचिदतन ॥ सोइविराट्कोकरोबखानै। भूतेंद्रीगुणात्मकहिजानै ॥
तेहिअंडहिकेबाहेरभीतर। व्यापकहैपरेशसुखमाघर॥ जैसेनिजकरतरणिसदाहीं। व्यापकअहैसकलथलमाहीं॥२१॥
दोहा–जबहरिनाभिसरोजते, हमउपजेजलमाहिं। पुरुषअंगतजितवलखी, मखसामग्री नाहिं ॥ २२ ॥
वनओषधिनसहितकुशपांती। देवयजनमखभूमिसोहाती॥ गुणअनंतयुतजेहैंकाला। ऋतुवसंतआदिकौ विशाला॥२३॥
वस्तुपुरोडासादिकजेते। औरवस्तुपात्रादिककेते ॥ ओषधिजेयवादिकैअहहीं। नेहघृतादिकजेश्रुतिकहहीं ॥
रससोमादिहेमादिकलोहा। वारिमृत्तिकाअतिजोसोहा ॥ ऋगयजुसामवेदमुनिपर्मा। चारिहोतहुनकेजेकर्मा ॥ २४ ॥
ज्योतिष्टोमादिकजेनामा। स्वाहादिकजेमंत्रललामा ॥ पयभक्षणआदिव्रतवेसा। दक्षिणाआहुतिसुरनउदेसा ॥
दोहा–विधिप्रयोगसंकलपफल, अनुष्ठानपरकार ॥ २५ ॥ प्रायश्चित्तउपासना, अरुनिजकर्मअपार ॥
भगवतकोअर्पणकरब, इत्यादिकसबसाजु। संच्योमैंहरिअंगते, सुनहुसत्यमुनिराजु ॥ २६ ॥
पुनिमखरूपपुरुषहरिकाहीं। यजननकियेमैंयज्ञहिमाहीं॥२७॥ फेरिअहैंजेमुनितुवभ्राता। नौमरीचिआदिकविख्याता ॥
सावधानह्वैतेइप्रजेसै। व्यक्तरूपइंद्रादिकवैसै ॥ अरुअव्यक्तस्वरूपपरेसै। पूज्योभरिउरमोदनिवेसै ॥
तेहिउपरांतपितरऋषिसुरनर। वैवस्वतआदिकमनुजेवर॥ असुरऔरसबनिजनिजकाले। मखतेपूज्योदीनदयाले ॥२८॥
यहजोअहैसकलसंसारा। भगवानहिंमेंटिकोअपारा ॥ हमजोजीवचतुर्मुखअहहीं। सत्वादिकगुणरहितैरहहीं ॥
दोहा–तऊप्रकृतिसंबंधते, सत्वादिकगुणकाहँ ॥ २९ ॥ ग्रहणकिये सृष्टिहिकरैं, हरिप्रेरितसुखमाहँ ॥
तिनआधीनअहैशिवजेऊ। करनविश्वसंहारहितेऊ ॥ उत्पतिस्थितिलयशक्तिमहाना। धारणकियेतिन्हैंभगवाना ॥
विष्णुरूपतेविश्वसुहाहीं। पालनकरतअहैंमुदमाहीं ॥ ३० ॥ हेसुतविश्वकरतहैजोई। तेहिंपूंछ्योभाष्योमैंसोई ॥
चेतनऔरअचेतनरूपा। जगहरितेनहिंभिन्नस्वरूपा॥ यहभगवानसबनकेलायक। हैसबलोकनकेमुनिनायक॥३१॥
मुनिममवाणीकीअनुपमगति। मृषानहोतिकबहुँमानहुसति॥ ममइंद्रीमगअसतहिमाहीं। कौनेहुँसमयकबहुँनहिंजाहीं॥
दोहा–अतिउत्कंठातेसहित, तेहितेमैंहरिकाहिं। रहहुँआपनेहृदयमें, धारणकियेसदाहिं ॥ ३२ ॥
हमश्रुतितपमयअहैमुनीशा। जेमरीचिआदिकप्रजईशा ॥ तेऊहमकोशीशनवावें। तिनसबकेस्वामीहमभावें ॥
विघ्नरहितकरियोगअपारा। कियेएकाग्रचित्तबहुवारा ॥ तऊजन्मताममभयऊ। सोनिश्चितकरिजानिनगयऊ३३॥
यातेतेहिपदकरहुप्रणामा। जोप्रपन्नरक्षकसुखधामा ॥ सबहिंसुसेव्यचरणहैसोई। तेहितेसिद्धकार्यसबहोई॥

उभयजानुनेशुद्धसुतलभो। तलातलहुजंवनतेभलभो॥ ४० ॥दूनौगुल्फजेहैंहरिकेरे। लोकमहातलभोतिनतेरे॥
अग्रभागजोप्रभुपदकेरो। तेहितेहोतरसातलहेरो॥ कृष्णचरणतेत्योंहिंउँताले। प्रगटतभयोलोकपाताले॥ ४१ ॥
सकललोकमयअसुरअराती। अहेमुनीशईशयहिभाँती॥ अथवाहरिपगतेभूलोके। भुवर्लोकभोनाभिअशोके॥
दोहा—होतभयोहैशीशते, स्वर्लोकहुविख्यात। रचनायहसबलोककी,जानहुमुनिअवदात॥
कल्पकल्पकीकल्पना, हैइनलोकनकेरि। सबकेजाननयोग्यसो, तुमसोंकहीनिवेरि॥ ४२ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री महाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेश्रीमद्भागवतेद्वितीयस्कंधेआनन्दाम्बुनिधौपंचमस्तरंगः॥ ५॥

श्रीब्रह्मोवाच।

दोहा—बोलेबहुरिविरंचियह, सुनहुमुनीशसुजान। वाक्वह्निउत्पत्तिको, हरिमुखहैस्थान॥
गायत्रीआदिकजेअहहीं। सातछंदउत्पतिथलकहहीं॥ हरित्वचआदिधातुजेसातै। तेईहैंपुहुमीविख्यातै॥
हव्यकव्यदेवनपितरनको। अन्नदुहुँनकोशेपनरनको॥ अरुसबरसइनउत्पतिथानै। भगवानैकीजीभिबखानै॥ १॥
सबकेप्राणपवनजेदेवा। तिनउत्पतिस्थानहिंसेवा॥ कहौंपरेसनासिकाकेरे। छिद्रअहैंजानहुँसुतमेरे॥
सबओषधिअश्विनीकुमारा। मुदप्रमोदजोअहैअपारा॥ इनकीउत्पतिथलहिबखानो। घनश्यामहिघ्राणेंद्रियजानो॥
दोहा—रूपप्रकाशकतेजअरु, शुक्लादिकजेरूप। इनउत्पतिस्थानहैं, हरिकेनयनअनूप॥
अंतरिक्षरविउत्पतिठौरे। दृगगोलकहैनंदकिशोरे॥ दिशितीरथउत्पतिस्थाना। बिलसतकर्णरंध्रभगवाना॥ २ ॥
शब्दअकाशकेरउत्पतिथल। श्रीपतिकीश्रोत्रेंद्रियहैकल॥ सकलवस्तुकोसारजोअहई। अरुसौभाग्यवेदजोकहई॥
इनकोहैउत्पतिथलभारी। हरिशरीरमेंकहहुँविचारी॥ ३ ॥ पर्शऔरबाहरजोपवनू। औसबमखजेहैंअघदवनू॥
तिनउत्पतिथलकहहुँनिवेरी। त्वचाअहैभगवानहिंकेरी॥जिनकरिकेमखहोइसदाई। असतरुऔरहुतरुसमुदाई॥४॥
दोहा—तिनकेउत्पतिकेथले,हरिकेरोमावेष॥ घनउत्पतिस्थानत्यों, श्रीपतिसुंदरकेश॥
चपलाउत्पतिकेस्थाना। हरिअस्मश्रुकरौंमेंगाना॥ उत्पतिथलहैउपलहिकेरे। प्रभुकेपगनखसोभवनेरे॥
आयसउत्पतिथलहिबखानो। श्रीपतिकेकरकेनखजानो॥ सबलोकनकेपालनवारे। इंद्रादिकसुरजेसुखकारे॥
तिनकोउत्पतिथलहरिबाहू। जानहुँनिजमनतेमुनिनाहू॥५॥भुवर्लोकभूलोकमहाना। स्वर्गलोकउत्पतिस्थाना॥
श्रीपतिकेजेचरणसुहाये। तिनकोगवनवेदगणगाये॥ रक्षाक्षेमशरणइनकेरो। उत्पतिथलहरिचरणहिहेरो॥ ६ ॥
दोहा—वारिवीर्यअरुसृष्टिऊ, अरुपजेन्यप्रजेश। इनउत्पतिथलहरिहिके, राजतशिश्नविशेष॥
संततिहेतभोगजोहोई। तेहितेतापहानिजोजोई॥ तिनकेउत्पतिकेरनिवासै। हरिउपस्थइन्द्रियअतिभासै॥ ७॥
सुनहुवचननारदबडभागा। यमअरुमित्रदेवमलत्यागा॥ इनउत्पतिथलकहहुँनिवेरी। अहैंपायुइन्द्रियहरिकेरी॥
हिंसाऔरदरिद्राजोहै। मृत्युऔरनरकहुजोसोहै॥ इनकीउत्पतिथलहिबखानो। गुदभगवानकेरतुमजानो॥
अहैपायुइन्द्रियकोसोई। अधिष्ठानवर्णौंमुदमोई॥ ८॥ तिरस्कारअधरमअज्ञाना। उत्पतिथलहरिपृष्ठमहाना॥
दोहा—नदनदीनउत्पतिथले, भगवतनाडीजानु। हरिकेअस्थिसमूहत्यों, गिरिउत्पतिथलमानु॥ ९॥
प्रकृतिअन्नआदिककोसारा। अरुसमुद्रजेसातअपारा॥ भूतनलयइनउत्पतिठामा। हरिउदरैप्रसिद्धअभिरामा॥
मानसउत्पतिकोशुभठौरा।राजतहैहियनंदकिशोरा॥ १०॥ धर्मचतुर्मुखमैंईशाना। तुम्हरोसनकादिकविज्ञाना॥
औरसतोगुणइनउत्पतिथल।हरिकोअंतःकरणअहैभल॥११॥हमतुमअरुसनकादिमुनीशा।सुरनरअसुरनागऔईशा॥
खगमृगविपधरजियगंधर्वा॥ १२॥ अप्सरयक्षराक्षसहुसर्वा॥सर्पभूतगणअरुपशुजाती। पितरसिद्धविद्याधरपांती॥

दोहा-चारणतरुजलथलनभहु, वासीजीवनिकाय । ग्रहनक्षत्रवनबीजुरी, केतुनखनसमुदाय ॥१४॥
भूतभविष्यवखानिये, वर्तमानजुपदार्थ । अंतर्यामीरूपहै, जिममेंयदुपयथार्थ ॥
तेहितेसकलरूपयदुराई।तिनआवृतसबविश्वलखाई।।तेइहग्व्यापिनजगविख्याते।बीताभरहैअधिकहितातें ॥ १५ ॥
जिमिरविनिजमंडलहिप्रकाशत । बाहरहूवरनेजहिभासत ॥ तैसेपरषपुरुषभगवाना । व्यष्टिसमष्टिप्रपंचमहाना ॥
ताकोकरतप्रकाशसदाहीं।आपहुपरकाशितसोहाहीं।।सोइहरिअभयमोक्षकदाता।कर्मशुभाशुभविनविख्याता।।१६।।
सुतुमुनिनिजमहिमायहभारी।सकललोकव्यापकअसुरारी।।तिनकेअंशलोकजअहहीं । तहँसबभूतबसतमुनिकहहीं।।
दोहा-मंडलप्रकृतित्रिमूर्धजो, ताकेमूर्धामाहिं । लसततहांवैकुंठहै, नित्यस्वरूपसदाहिं ॥
जरामरणकोजहाँअभावा । सदासत्यसंकलपसोहावा ॥अघशोकादिशून्यतामहई । यहसिगरोनितथापितरहई।।१८।।
बाहेरप्रकृतिमंडलहिकेरे । परवैकुंठपरतहगेहेर ॥ एकपादमेंअंडविराजै । तीनिपादवैकुंठहुछाजै ॥
जरामरणरहितैजनजोई । सोपुरपावतहैध्रुवसोई ॥ तीनिलोकभीतरमाहीं । एकपादजोलसतसदाहीं ॥
तहँजेजियविकुंठतेआवें । निजइच्छातेपुनितहँजावें ॥ सोइकपादअहैममघरहै । कर्मतेपावततेहिनरहै ॥ १९ ॥
दोहा-अहैजीवक्षेत्रज्ञजो, सोद्वैमारगमाहँ । चलतसदामुनिवरसुनो, कहतअहौं तिनकाहँ ॥
साधनधूमादिकमगकेरो । कर्महिकोश्रुतिकियोनिवेरो ॥ अर्चिरादिमारगकोसाधन । प्रीतिसहितयदुपतिआराधन।।
अहैजीवदोहुनअधिकारी।मुनिवरतुमसोंकहौंविचारी।।२०।।ब्रह्मजोसूक्षमचिदचिदतनहै।तेहितेअंडभयोअतिघनहै ॥
तेहिब्रह्मांडकेरजोकारन । उपजोब्रह्मथूलचिदचिदतन ॥ सोइविराट्कोकरोवखानै । भूतेंद्रीगुणात्मकहिजानै ॥
तेहिअंडहिकेबाहेरभीतर । व्यापकहैपरेशसुखमाघर ॥ जैसेनिजकरतरणिसदाहीं।व्यापकअहैसकलथलमाहीं।।२१।।
दोहा-जबहरिनाभिसरोजते, हमउपजेजलमाहिं । पुरुषअंगतजितवलखी, मखसामग्री नाहिं ॥ २२ ॥
वनओषधिनसहितकुशपांती।देवयजनमखभूमिसोहाती।।गुणअनंतयुतजेहैंकाला।ऋतुवसंतआदिकौ विशाला।।२३।।
वस्तुपुरोडासादिकजेते । औरवस्तुपात्रादिककेते ॥ ओषधिजेयवादिकैअहहीं । नेहघृतादिकजेश्रुतिकहहीं ॥
रससोमादिहेमादिकलोहा।वारिमृत्तिकाअतिजोसोहा ॥ ऋगयजुसामवेदसुनिपर्मा । चारिहोतहुनकेजेकर्मा ॥ २४ ॥
ज्योतिष्टोमादिकजेनामा । स्वाहादिकजेमंत्रललामा ॥ पयभक्षणआदिव्रतवेसा । दक्षिणाआहुतिसुरनउदेसा ॥
दोहा-विधिप्रयोगसंकलपफल, अनुष्ठानपरकार ॥ २५ ॥ प्रायश्चित्तउपासना, अरुनिजकर्मअपार ॥
भगवतकोअर्पणकरब, इत्यादिकसबसाजु । संच्योमैंहरिअंगते, सुनहुसत्यमुनिराजु ॥ २६ ॥
पुनिमखरूपपुरुषहरिकाहीं।यजननकियेमैंयज्ञहिमाहीं।।२७।।फेरिअहैंजेमुनितुवभ्राता।नौमरीचिआदिकविख्याता।।
सावधानह्वैतेइप्रजेसै । व्यक्तरूपइंद्रादिकवैसै ॥ अरुअव्यक्तस्वरूपपरेसै । पूज्योभरिउरमोदनिवेसै ॥
तेहिउपरांतपितरऋषिसुरनर।वैवस्वतआदिकमनुजेवर।।असुरऔरसबनिजनिजकालै।मखतेपूज्योदीनदयालै ॥२८॥
यहजोअहैसकलसंसारा । भगवानहिंमेंटिकोअपारा ॥ हमजोजीवचतुर्मुखअहहीं । सत्वादिकगुणरहितैरहहीं ॥
दोहा-तऊप्रकृतिसंबंधते,सत्वादिकगुणकाहँ ॥ २९ ॥ ग्रहणकिये सृष्टिहिकरैं, हरिप्रेरितसुखमाहँ ॥
तिनआधीनअहैशिवजेऊ । करनविश्वसंहारहितेऊ ॥ उत्पतिस्थितिलयशक्तिमहाना । धारणकियेतिन्हैंभगवाना ॥
विष्णुरूपतेविश्वसुहाहीं । पालनकरतअहैंमुदमाहीं ॥ ३० ॥ हेसुतविश्वकरतहैजोई । तेहिंपूंछ्योभाष्योमैंसोई ॥
चेतनऔरअचेतनरूपा । जगहरितेनहिंभिन्नस्वरूपा।।यहभगवानसबनकेलायक । हैसबलोकनकेमुनिनायक ॥३१॥
मुनिममवाणीकीअनुपमगति।मृषानहोतिकबहुँमानहुसति।।ममइंद्रीमगअसतहिमाहीं।कौनेहुँसमयकबहुँनहिंजाहीं ॥
दोहा-अतिउत्कंठातेसहित, तेहितेमैंहरिकाहिं । रहहुँआपनेहृदयमें, धारणकियेसदाहिं ॥ ३२ ॥
हमश्रुतितपमयअहैमुनीशा । जेमरीचिआदिकप्रजईशा ॥ तेऊहमकोशीशनवावैं । तिनसबकेस्वामीहमभावें ॥
विघ्नरहितकरियोगअपारा । कियेएकाग्रचित्तबहुवारा ॥ तऊजन्मतातेममभयऊ।सोनिश्चितकरिजानिनगयऊ३३॥
यातेतेहिपदकरहुप्रणामा । जोप्रपन्नरक्षकसुखधामा ॥ सबहिसुसेव्यचरणहैसोई । तेहितेसिद्धकार्यसबहोई॥

जिमिनभनिजजानननहिंअंत॥तिमिनिजमायाकोभगवंता॥अंतकबहुँनहिंजानतअहहीं।जानैऔरकहायहकहहीं३४।
दोहा–हमतुमशिवओऔरउ, जिनगतिजानिसकैन। औरनजानैतौकहा, कहिबेकोयहबैन॥
श्रीपतिमायाकीगतिमहई। हमसबमतिअतिमोहितरहई॥निजदेहहिंआतमअनुमानै।छूटतनहिंअज्ञानअमानै॥३६॥
जिनकेअवतारनकीलीला। निशिदिनगावैंहमशुभशीला॥ तावहिकरिकैजिनहिंनजानै। तेहीकोप्रणामबहुठानै॥
आदिअजन्मासोइभगवाना।आपहितेआपहीसुजाना॥आपहिकरिकैआपहिकाहीं। उत्पतिथितिलयकरतसदाहीं३७
ज्ञानस्वरूपएकहीराजै। सत्यविशुद्धनित्यछविछाजै॥ निजहितानिजहिप्रकाशितरहहीं। दूजेकीनअपेक्षागहहीं॥
दोहा–पूर्णआदिअरुअंतबिन, प्राकृतगुणतेहीन। अहैसमाधिकतेरहित, सुनहुँमुनीशप्रवीन॥ ३८॥
मनअरुसकलइंद्रियनजीते। छोड़ैअखिलवासनाहीते॥ ऐसेजेमुनिज्ञाननिधानै। तेजबपरमातमकोजानै॥
तबहींअसततर्कतेजोई। हैविरोधसोनाशहिहोई॥ ३९॥ जौनविराटपुरुषसंसारा। सोहरिकेरप्रथमअवतारा॥
सतअसतहुमनकालस्वभावहु।द्रव्यविकारकरनगुणजानहु॥अंतरिक्षअरुस्वर्गहुलोका। हरिविभूतिजड़चेतनथोका॥
हमशिवविष्णुऔरदक्षादिक। तुमहिंआदिदैसबसनकादिक॥स्वर्गअकाशमनुजतललोका।इनपालकजेअहैंअशोका
दोहा–विद्याधरगंधर्वअरु, चारणकेजेईश। यक्षराक्षसहुउरगसब, अरुजेअहैंअहीश॥
ऋषिगणपितरनमेंजेवरहैं। दैत्येश्वरअरुसिद्धेश्वरहैं॥ प्रेतहुभूत पिशाचहुजेते। कूष्मांडबालग्रहकेते॥
दानवेंद्रजलजीवनिकाया। मृगपक्षिनअधीशयदुराया॥ ४२॥ युतऐश्वर्यतेजउत्साहै। वेगक्षमाबलयुतलज्जाहै॥
वस्तुविभूतिबुद्धियुतजेती। अद्भुतशब्दवाच्युतकेती॥ येसबअहैंवस्तुत्रैलोका। तेभगवतिभूपतिमुदथोका॥४३॥
मंगलरूपदिव्यहरिजेई। व्यापकपरमपुरुषहैंतेई॥ तिनकीलीलापरममनोहर। अवतारनकीकहैंजेमुनिवर॥
दोहा–तिनकोहमतुमसोंकहब, क्रमतेहेमुनिनाथ। जेसुनिहैंतिनश्रुतिदुरित, दरिदैहैंमुदगाथ॥ ४४॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदा-
म्बुनिधौश्रीमद्भागवतेद्वितीयस्कंधेषष्ठस्तरंगः॥ ६॥

दोहा–पुनिनारदमुनिसोंतहाँ, विधिबोलेहर्पाइ। हरिअवतारनकीकथा, सुनहुतातमनलाइ॥
करनहेतधरणीउद्धारा। धर्योयज्ञशूकरअवतारा॥ हिरण्याक्षजोदैत्यमहाना। आयोउदधिमध्यबलवाना॥
हरितेहिउदरडाढसेफार्यो। जिमिवासवपवितेगिरिदार्यो॥१॥ रुचिसंबंधहितेमुनिराई। आकूतीकेउदरहिंआई॥
प्रगटतभयेसुयज्ञनामके। भयेकांतदक्षिणावामके॥ तातियसोंजगसुरउपजाये। लोकनकीवेदनामिटाये॥
तबस्वायंभुवमनुतहँआये। प्रभुहियज्ञहरिनामधराये॥ २॥ देवहुतीकर्दमआगारा।नौभगिनिनयुतलियअवतारा॥
दोहा–कपिलदेवअसनामभो, निजजननीलखिदीन। सांख्यशास्त्रउपदेशकरि, ताकोनिजगतिदीन॥ ३॥
अत्रिऋषीशपुत्रअभिलाषी। ताकोतवसुतह्वैहौंभाषी॥ दत्तात्रयलीन्ह्योअवतारा। अमरबजायेअमितनगारा॥
जेहिपदपदुमपरागपवित्रा। यदुहयहयआदिकनृपचित्रा॥४॥भुक्तिमुक्तिनहिंसुलभघनेरी। विनप्रयासपाईमनकेरी॥
प्रथमहिजगतसृजनकेहेतू। मैंकीन्ह्योबहुतपमुनिकेतू॥ तासुप्रभावकृपाहरिकीन्हे। सनकादिकअवताराहिलीन्हे॥
पूरवकल्पविनाशितज्ञाना।ताकोबहुविधिकियोबखाना॥जेहिकरिकैमुनिनिजहियमाहीं।आतमतत्त्वहिलखतसदाहीं
दोहा–दक्षसुताजोधर्मतिय, मूर्तिनामविख्यात। नरनारायणहोतभे, ताकेतपअवदात॥
तिनकेतपखंडनकेहेतू। मैनसैनसुरतियछविसेतू॥ निकटजाइबहुकरीउपाई। तबनारायणतियप्रगटाई॥
तासुरूपलखिगयोगुमाना। करिनसकींतपभंगमहाना॥६॥कामहिंकुपितदह्योत्रिपुरारी। हियतेसकेनक्रोधनिकारी॥
सोहरिउरप्रविशतमहँरोषू। अतिडेरातकिमिप्रगटेदोषू॥ऐसीजहाँकोपकीमतिहै। तहाँकौनविधिमनासिजगतिहै ७॥
नृमउत्तानपादगृहपाहीं। पुनिध्रुवभयेनाथसुखमाहीं॥ एकरह्योपितुअंककुमारा। बैठनकहँजबकियोविचारा॥

दोहा–तासुविमातासुरुचितब, कह्योअशनिसमबैन । करितपमोसोंजनमिकै, लहिअनेकचिनचैन ॥
तबनिजपितुसिंहासनमाहीं । द्वैहौबैठनयोगरुदाहीं ॥ सोसुनिनिजजननीढिगजाई । गवनसिगरीकथासुझाई ॥
सोऊकह्योपुत्रयहठौको । बिनहरिभजनहोतनहिंनीको ॥ सोसुनितपहितमधुवनजाई । पंचमासकियसुतपमहाई ॥
जाकोमुनिहुँप्रशंसनकीन्ह्यो । सोइहरिध्रुवपदध्रुवकहँदीन्ह्यो॥८॥भयेबेनजवपरमभयावन । सकलधर्ममर्यादनशावन॥
यहअनर्थलखिद्विजसबजाई।कह्योवचनबहुविधिसमुझाई॥ऋपिनवचनभूपतिनहिंमान्यो॥तबतिनमहाकोपउरआन्यो॥
दोहा–बेनहिंदीन्हीशापद्विज, बलविभूतिभैनास । ताहिनिरपयगमनतनिरखि, यदुपतिरमानिवास ॥
मुनिप्रार्थनासुनतसहुलासू । निरपयगमननिरखतहरितासू ॥ ताकेपुत्रभयेभगवाना । जाकोजगपृथुनामबखाना ॥
सुरनरमुनिअसुरनकेहतू । दुह्योधरणितधननृपकेतू ॥ ९ ॥ आगनिध्रसुतनाभिनरेशा । मेरुदेवितहितियासुवेशा ॥
ताकेऋपभदेवअवतारा । लीन्ह्योश्रीपतिपरमउदारा ॥ जड़समयोगआचरणकीन्ह्यो । समदर्शीह्वैजगसुखदीन्ह्यो ॥
सोईपरमहंसगतिकाहीं । ऋपिमुनिकरतप्रशंससदाहीं ॥ जीतेइंद्रिनशांतस्वरूपा । तजेसंगजगकेमुनिभूपा ॥१०॥
दोहा–सोइमेरेमखतेभये, हयग्रीवभगवान । योग्यपुरुपकांचनवपुप, श्रीहरिकृपानिधान ॥
यज्ञनिमयसुरअंतर्यामी । वेदनमयत्रिभुवनकेस्वामी ॥ लेतजासुनासाकेश्वासा । चारिवेदबरभयेप्रकाशा ॥
जीवनकेअरुधरणिअधारा।ऐसश्रीवसुदेवकुमारा॥११॥प्रलयकालमहँमत्स्यशरीरा।धर्योकनकद्युतिपरमगँभीरा॥
सत्यव्रतहिमिलेभगवाना । ममसुखविगलितवेदमहाना ॥ तिनहिंनावदैपरमउदारा।प्रलैसलिलमेंकियोविहारा॥१२॥
सतयुगसुधाहेतपयसागर । मथनलगेसुरअसुरउजागर ॥ करिमंदरगिरिकोमंथाना । कियवासुकिहिरज्जुसमाना ॥
दोहा–मथतअधरमंदरधस्यो, लह्योनकछुआधार । तबकच्छपह्वैपृष्ठधरि, हरिकीन्ह्योउद्धार ।
मंदरभँवतपृष्ठपरऐसे । खजुरिहिखजुवावतसुखजैसे॥निद्रावशछोंडीबहुश्वासू । अबलौंवारिधिवीचविलासू ॥ १३ ॥
अमरअमंगलनाशकनाना । दुखितदेखिदासहिभगवाना ॥ धरिनरसिंहरूपअतिघोरा । प्रगटिखंभतेकीन्ह्योशोरा ॥
भ्रुकुटिभयावनिडाढकराला।अरुणनैनतीक्षणनखज्वाला॥हिरणकशिपुलखिकोपहिछायो।गदाधारिआशुहिढिगआयो
ताकोपकरिअंकनिजधार्यो । चटपटातरिपुउरनखफार्यो॥१४॥एकसमैसरवरमहँजाई।लग्योविहारकरनगजराई ॥
दोहा–ग्रस्योग्राहगजगोडको, अतिबलसोंबलवान । छुट्योनकौनेहुँभाँतिसों, संकटपर्योमहान ॥
तबनिजरक्षकगुनिगजराजू । अहैएकयदुकुलउडुराजू॥अतिआरतकरकमलसुधार्यो । हरवगइहरिहहरिपुकार्यो॥
आदिपुरुषसबलोकनस्वामी । पावनयशजगअंतर्यामी ॥ श्रवणपरतमंगलप्रदनामा । रक्षणकरहुमोहिंबलधामा १५
गजकीगिरासुनतयदुराई । चक्रधारिकरचढिखगराई ॥ आइगयेतहँअतिहिउताला । साँचेजेशरणागतपाला ॥
नक्रवक्रहतिचक्रविदार्यो।निजकरकरगहिकरिहिउधार्यो॥१६॥यदपिअनुजदेवनकेनाथा।तद्यपिसवतेवरगुणगाथा
दोहा–द्वैपगत्रिभुवननापिकै, लह्योत्रिविक्रमनाम । बलिसोंछलिइंद्रहिदियो, वामनधरणीधाम ॥
धर्मात्मनकीभूतिमहाई । माँगिलेहिंप्रभुनहिंबरियाई॥१७॥हरिपदजलधारकबलिराई । सुरपतिपदतेहिकौनबडाई ॥
जोनिजवचनहिंपालनकीन्ह्यो । शीशसहितजनहरिकहँदीन्ह्यो॥१८॥तुमनारदहरिसोंयुतनेहू।कियोप्रश्नजगआनँदगेहू
तवप्रसन्नह्वैहंसमुरारी । कर्मयोगादियप्रथमउचारी ॥ भक्तियोगपुनितुमहिंसुनायो । पुनिवरज्ञानयोगसमुझायो ॥
ताकोवासुदेवकेदासा । जानिलेतभेविनहिंप्रयासा ॥ १९ ॥ मन्वंतरप्रतिधारिमनुरूपा । दशोदिगंतनमाहँ अनूपा ॥
दोहा–भानुसमानप्रतापसों, कियोनिदेशमहान । ब्रह्मलोकलोंकीर्तिकिय, करिवरचरितअमान ॥
दंडदियोदुष्टनमहिपालन।यहिविधिकियोसकलजगपालन॥२०॥जगमेंधन्वंतरिभगवाना। प्रगटकीर्तिविमलमतिवाना
जाकोनामलेतमुखमाहीं । रोगिनकेसबरोगनशाहीं ॥ दानवरुद्धभागप्रभुहेरी । लह्योभागमखआयुघनेरी ॥
वेदशास्त्रजोआयुर्वेदू । ताकोकियविस्तारअखेदू ॥ २१ ॥ परशुरामपुनिभेभगवाना । जाकोजाहिरसुयशजहाना ॥
महिकंटकक्षत्रीजेनाना । ब्रह्मद्रोहधारकबलवाना ॥ नरकवेदनाचाहनवारे । वेदमार्गकेमेटनहारे ॥
दोहा–क्षितिक्षयकारकनिरखितिन, करलैकठिनकुठार । क्षत्रिरहितकीन्हींक्षमा अतिबलइकइसवार॥२२॥

पुनिहमपरअतिकरनप्रसादू। नृपइक्ष्वाकुवंशअहलादू ॥ अवधपुरीदशरथकेधामा । बंधुनसहितभयेश्रीरामा ॥
सीतालषणसंगसुखछाये।पितुनिदेशलहिवनहिंसिधाये॥तिनसोंकरिविरोधलंकेशा।सकुलविपुलदललह्योकलेशा२३॥
हरसमअरिपुरलावनवारे । निजदासनपरदयापसारे ॥ लखतउदधिदृगकंजविशाला । सीताविरहरोषभेलाला ॥
तीक्षणतेजतापतहँपाई । तपनलग्योसागरमुनिराई॥मकरमहोरगनक्रसमूहा । अतिआकुलितकियोकुलिकूहा ॥२४॥
दोहा—तबनरवपुधारिसिंधुतहँ, रघुपतिपदशिरनाइ । राखिभेंटकरिबहुविनय, दियोमार्गभयपाइ ॥
जेहिरावणउरमहँअतिजोरा । लागतऐरावतरदघोरा ॥ टूटिटूकादिशिकियेप्रकासा । सोलखिकियोगर्वयुतहासा ॥
ऐसेदशमुखकोरणधावन । बाणनवर्षतसन्मुखआवत ॥ चापटँकोरिरामरणतासू । येकबाणहनिकियोविनाशू॥२५॥
असुररूपभूपनतेभारी । भूकोभारभयोदुखकारी ॥ ताकेनाशकरनकेहेतू । रामकृष्णप्रगटेकुलकेतू ॥
कियोचरित्रविचित्रअपारो । निजमहिमाकोप्रगटनहारो ॥ सुनहुभक्तवशश्रीहरिकेरी । गतिजानहिंसबसंतनिवेरी ॥
दोहा—सोइममप्रभुवसुदेवगृह, प्रगटिसुदियोनिदेश । यहिनिशीथमेंमोहिंतू, लैचलुनंदनिवेश ॥
वसुदेवहुतेहिआशुछिपाई । दीन्ह्योनंदभवनपहुँचाई॥२६॥तहाँपूतनाप्राणनिकारयो॥त्रयमासिकशकटहिसंहारयो॥
दामोदरविचरतब्रजमाहीं । दियउखारियमलार्जुनकाहीं॥२७॥कालीविषदूषितसरिनीरा। ताकोपानकरततेहितीरा॥
गोगोपालनकालसतायो। कृपादृष्टिकरिकृष्णजिआयो ॥ करनशुद्धयमुनाजलकाहीं । कसिकम्मरकूदेदहमाहीं ॥
कालीफणमहँनर्त्तनकीन्ह्यो।रमणकद्वीपवासतेहिदीन्ह्यो॥२८॥ताहीनिशिदावानलभारी।काननदहनलग्योदुखकारी।
दोहा—गोपनगैयनजरतलखि, हरियुतबलबलवान । सबकेनैनमुदाइकै, कियदावानलपान ॥ २९ ॥
जननिमथतदधिगहीमथानी । माखनकपिनदियोलैपानी ॥ तबसुतपैयशुदाअतिकोपी । बंधनकरनहेतुकरचोपी ॥
एकऊनभैतबलियदूजी । ऐसेगृहकीदामनपूजी ॥ कौनहुँसमैबालकोउजाई । यशुदासोंअसकह्योबुझाई ॥
तवसुतआजमृत्तिकाखाई । बरजेहुमान्योनहींकन्हाई ॥ तबयशुदाहरिसोंअसपूँछ्यो । मृदुखायोकैहैमुखछूँछ्यो ॥
तबमुखखोलिविश्वदर्शायो॥सभयजननिकहँविभवजनायो३०वरुणपाशभयपितहिंछोडायो॥व्योमासुरतेसखनबचायो
दोहा—दिवसश्रमितसोवतरजनि, गोकुलवासिनकाहिं । दियदेखाइवैकुंठतो, आनँदसिंधुसदाहिं ॥ ३१ ॥
शक्रनिहतनिजसत्रविचारी । कीन्हीवारिवृष्टिब्रजभारी ॥ पीडितगोपनगौअनजानी । रक्षणहितकरिदयामहानी ॥
सातवर्षकेनंददुलारे । छत्रकसमयककरगिरिधारे ॥रहेसातदिनलोंयहिभाँती । रक्ष्योगौअनगोपजमाती ॥ ३२ ॥
मंजुमयंकमयूषनिछाई । शरदशर्वरीनिरखिकन्हाई ॥ व्रजतियमनसिजतापनशावत । रासरचतकलवेणुबजावत ॥
शंखचूडतहँगोपिनकाहीं । हरणकियोनहिंडरचोतहाहीं ॥ ताकोआशुमारियदुराई । मणिदियरामहिंसखिनदेखाई॥
दोहा—खरप्रलंबबककेकेशिवृष, मल्लमतंगहुकंस । कालयमनपौंड्रकनरक, शाल्वाद्विविदनुजंस ॥
दंतवक्रबल्वलबली, रुक्मविदूरथवीर । हरिकरपर्शप्रभावते, पायेदिव्यशरीर ॥ ३४ ॥
अवधपुरीमहँयदुपतिजाई । सप्तवृषभदमिकन्यापाई ॥ कुरुकेकयसृंजयकांबोजा । मगधमत्स्यकेनृपवरओजा ॥
तिनकोभीमपार्थबलहाथा।वधकराइदियगतियदुनाथा३५॥कुमतिअल्पआयुषजनजानी।वेदअगमतिनकोअनुमानी
सत्यवतीकेव्यासस्वरूपा । प्रगटभयेहरिसुनुमुनिभूपा॥वेदवृक्षकोशाखविभागा।कियोद्विजनपैकरिअनुरागा ॥३६॥
वेदमार्गरततजिपाखंडा । होतभयेजबअसुरप्रचंडा ॥ अतिजवमयानिर्मितपुरतीने । तामेंबसिलोकनदुखदीने ॥
दोहा—तिनकोमनलोभनकरन, मतिमोहनकेकाज । श्रुतिविरुद्धमतप्रगटकिय, बुद्धरूपयदुराज ॥ ३७ ॥
जबसज्जनआश्रमहुनमाहीं । कृष्णकथावर्णीकोउनाहीं ॥ शूद्रजातिराजाजबह्वैहैं । द्विजपाखंडवेषह्वैजैहैं ॥
देवपितरपूजननहिंकरिहैं।पशुसमजनआचरणहिंधरिहैं॥लैकरितबकल्कीअवतारा।हरिहैंहरिकलिपापअपारा ॥३८॥
सृष्टिसमैमहँसुनुमुनिराई । तबहमऋषिप्रजेशसमुदाई ॥ त्योहींपालनसमयहुमाहीं । धर्मयज्ञमनुसुरनृपकाहीं ॥
अंतसमैतिमिकरहुविचारा।हरअधर्मअहिअसुरअपारा ॥ येसबहैंविभूतिहरिकेरी।जिनकीहैशुभशक्तिघनेरी ॥ ३९ ॥
दोहा—जेहिहरिपदजबलहिकँप्यो, ब्रह्मलोकअवदात । रोंक्योनिजपदराखितहँ, गिरतजानिजनव्रात ॥

योगनिलयवैधरणिरज, एकवाग्मनिमान। सोऽतिनहरिकेचरित, करिनहिंसकनबखान ॥ ४० ॥

हमऔतुमसनकादिकध्यावें। हरिचरित्रकोअंतनपावें ॥ गावतरहतसहसमुखशेषा। तेउनहिंलहतगुणनकोलेषा ॥ तौकिमिलहैंअंतकोउआना। अद्भुतगुणचरित्रभगवाना ॥ ४१ ॥ करहिंदयाजापरयदुराई। ताकेहरिपदभक्तिमहाई॥ हमहमाररजिनकेमतिनाहीं।श्वानशृगालभक्षननमहीं ॥ तेदुस्तरमायाहरिकेरी। तरततुरतलागतिनहिंदेरी ॥ ४२ ॥ जेजेजानहिंहरिकीमाया। तिनकेनामकहहुँमुनिराया ॥ हमऔतुमऔशिवभगवाना। सनकादिकप्रहलादमहाना ॥

दोहा-मनुअरुसतरूपासती, प्रियव्रतभूपप्रवीन। अरुउत्तानहुपादनृप, अरुवर्हीप्राचीन ॥

रिभुअरुअंगहुध्रुवमहिपाला॥४३॥नृपइक्ष्वाकुपैलअरिकाला। अंवरीपरघुसगरययाती। गयमुचुकुंदगाधिअघघाती मांधाताअलर्कमिथिलेशू। रंतिदेवशतधन्वनरेशू ॥ अरुभटभीपमदेवमहीपा। वलिअमूर्त्तरयभूपदिलीपा ॥ ४४ ॥ सौभरिशिविउतंकऋषिराजू। देवलपिप्पलादतपभ्राजू ॥ कृपउद्धवहुपराशरसंता। भूपविभीपणऔहनुमंता ॥ भूरिषेणऔश्रीशुकदेवा। पांडवविदुरभूपश्रुतिदेवा॥ आर्ष्टिपेणशौनकअरुव्यासा। पुंडरीकआदिकहरिदासा॥४५॥

दोहा-येहरिमायाजानहीं, तरहिंसिंधुसंसार। हरिपदगतिनिर्मलहिये, जानहिंसारासार ॥

नारिशूद्रऔयमनसँतापी। भिल्लव्याधपामरअतिपापी ॥ हरिदासनकोलहिउपदेशा। येऊहरिपुरकरहिंप्रवेशा ॥ तौजहँयोगमनहिंमुनिज्ञानी।तामेंअचरजकहाबखानी॥४६॥सदाशांतअरुअभयप्रदाता।ज्ञानस्वरूपशुद्धविख्याता॥ समदर्शीचिदचिदपरजोई। परमात्माकोतत्त्वहिसोई ॥ कारकक्रियाअर्थवहुतेरे। करिनसकेंजेहिवेदनिवेरे ॥ जाकेसन्मुखमेंमुनिराई। ठाढ़होतमायहुडरपाई ॥ ४७ ॥ सोईपरमपुरुपपदजानै। जाकोमुनिजनब्रह्मबखानै ॥

दोहा-सोइविशोकसोइनित्यसुख, जानैयतीसुजान। मनलगाइस्वर्गादिके, साधनतजैंमहान ॥

जिमिजलदायकनायककाहीं। कूपखनेकारजकछुनाहीं ॥४८॥ जासुकृपाकर्मनफलहोई।सकलसुमंगलप्रदहरिसोई ॥ व्योमसरिसव्यापकप्रभुरहहीं।जियवपुदोपनेकनहिंगहहीं॥४९॥ ऐसेभवभावनभगवाना। तातकियोसंक्षेपबखाना ॥ जड़चेतनपदार्थजगजेते। हरिशरीरजानहुसवतेते ॥ ५० ॥ यहभागवतमहासुखछायो। हरिविभूतिकोसंग्रहगायो ॥ यहमोसोंवर्ण्योजगदीशा। सोविस्तरअबकरहुँमुनीशा॥५१॥सर्वात्माजगअखिलअधारा। जाकोहमशिवलहैंनपारा॥

दोहा-ऐसेश्रीपतिचरणमें, जेहिविधिजनसुखधारि। करहिंभक्तिअतिपावनी, वर्णहुँसोइविचारि ॥
श्रद्धायुतहरिचरितको, सुनतसराहतमाहिं। वर्णतजोजनतासुमन, मायामोहितनाहिं ॥
पायमनुजतनुजगतमें, नहिंध्यायोयदुनाथ। धर्मअर्थअरुकामते, लग्योनफलकछुहाथ ॥
भईनयदुपतिपद्मपद, प्रीतिप्रतीतिपुनीति। वर्णाश्रमसवधर्मतप, कहाकियेवहुनीति ॥ ५३ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा-
राजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेव
कृतेश्रीमद्भागवतेद्वितीयस्कंधेआनंदांबुनिधौसप्तमस्तरंगः ॥

दोहा-ब्रह्मानारदकोसुनत, अतिअनुपमसंवाद। देवरातशुकदेवसों, पूँछ्योयुतअहलाद ॥

श्रीराजोवाच।

जोब्रह्मानारदसोंगाये। दिव्यगुणीहरिकेगुणभाये ॥ सोनारदहरिदर्शप्रवीने। जेहिजेहिकह्योयथामुदभीने ॥ १ ॥ सोइजाननकोमैंअभिलाषी। वेदविदांवरसोसबभाषी ॥ कृष्णकथाअघगणसंहरणी। सकललोककीमंगलकरणी॥२॥ वर्णहुव्यासपुत्रवड़भागी। सोसुनिहमह्वैपरमविरागी ॥ कृष्णचंद्रमेंमनहिंलगाई। छोड़हुँयहशरीरदुखदाई ॥ ३ ॥ कहतसुनतनिजकथासनेहू। तेहियकरततुरतहरिगेहू ॥ निजदासनसरोजउरमाहीं।कर्णरंध्रह्वैप्रविशिसदाहीं ॥ ४ ॥

दोहा-नाशिसकलअज्ञानहरि, प्रगटतज्ञानसमच्छ। जिमिवर्पामलमोचिकै, शरदकरतजलस्वच्छ ॥ ५ ॥

जाकोमननिर्मलह्वैजाई। सोहरिपदनतजतऋषिराई॥जिमिप्रोपितनहितजतनिवेशू।छूटिजाततेहिसकलकलेशू ॥६॥

निर्दोषीहैजीवस्वरूपा । ताकोपंचभूतकृतरूपा ॥ सोधौंस्वतःहोतमुनिराई । कैधौंकौनौकारणपाई ॥
आपयथाग्थजानहुस्वामी । मोसोंकहियजानिअनुगामी॥ ७ ॥जाकेनाभिसरोरुहजायो।सकललोकआधारसोहायो॥
सोपरमात्माजीवसमाना । ह्वैहैतनुधारीमतिमाना ॥ जीवईशमहँकौनविशेषू । कहौबुझाइनराखहुशेषू ॥ ८ ॥
दोहा–अजसिरजतभूतनविपुल, जासुअनुग्रहपाइ । नाभिपद्मथितह्वैलख्यो,जाकोरूपवनाइ ॥९॥
जगउत्पतिपालनसंहारा । करतरहतजोवारहिंवारा ॥ मायापतिमायाअलगाई । सोकहँसोवतहैमुनिराई ॥ १० ॥
पुरुषावयवलोकयुतपाला । कल्पितहैअससुन्योकृपाला ॥ लोकपालयुतलोकनतेरे।पुरुषअंगहैंरचितघनेरे ॥ ११॥
कहियेकल्पविकल्पप्रमाना।भूतभविषअरुवर्तहुमाना॥१२॥सूक्ष्मथूलकालहुगतिकाहीं।जेजैसेफलकर्मनिमाहीं१३॥
जौनदेशमेंजाकोजोफल । होतसोजौनकर्मकीन्हेंभल ॥ १४ ॥
दोहा–भुवपतालदिशिदीपनभ, गिरिग्रहसरिउडसिंधु । इनकोइनवासिनजनम, वर्णहुकरुणासिंधु ॥ १५ ॥
वहिरंतरब्रह्मांडप्रमाना । चरितसकलभागवतमहाना ॥ वर्णाश्रमनिर्णयकहिदेहू॥१६॥ हरिअवतारचरितयुतनेहू ॥
युगनस्वरूपयुगनपरिमाना।युगनधर्मकोकरहुबखाना॥१७॥वर्णहुमनुजधर्मसाधारण ।अरुविशेषिसबकरहुउचारण ॥
व्यौहारिनराजर्षिनकर्मे । औरकहौसवआपदधर्मे ॥ १८ ॥ वर्णहुसंख्यातत्त्वनकेरी । तिनतिनकारणरूपनिवेरी ॥
हरिपूजनकोकहौप्रकारा । आत्मयोगहूव्यासकुमारा॥१९॥योगिनकेऐश्वर्यप्रकाशा । तिनकोसूक्ष्मशरीरविनाशा॥
दोहा–वेदऔरउपवेदसव, औइतिहासपुरान । धर्मशास्त्रआदिकनके, लक्षणकरौबखान ॥ २० ॥
भूतनउत्पतिथितिसंहारा । अर्थधर्मअरुकामप्रकारा ॥ यज्ञतड़ागादिककोधर्मा।औरहुसकलकामनाकर्मा ॥ २१ ॥
कर्मशेषयुतजीवनकेरे । कहियेतिनकेजन्मनिवेरे ॥ अरुपाखंडिनधर्मबखानो । जीवनबंधमोक्षसवगानो ॥
मोक्षदशाजसजीवस्वरूपा ।वर्णहुसोकरिकृपाअनूपा॥२२॥जोस्वतंत्रवसुदेवकुमारा । मायाकरिवहुकरतविहारा ॥
प्रलयसमैमहँजिमितजिमाया।साक्षीसमसोहतयदुराया ॥२३॥येप्रश्नकेउत्तरजेते । शरणागतगुणिवर्णहुतेते ॥२४॥
दोहा–येसवप्रश्ननकेअहो, ज्ञाताविधिसमआप । तातेसववर्णनकरहु, मेटहुसंशयताप ॥
पूर्वपूरुषनकेपथमाहीं । चलतइतरजनरहतसदाहीं ॥ २५ ॥ ब्रह्मशापलहिदुसहघनेरी । अवधिसातदिनकीहैमेरी ॥
भोजनतजे नजैहैंप्राना।करतकृष्णचरितामृतपाना२६(सू.उ.)॥यहिविधिजवपूँछ्योनृपराई।कृष्णकथामेंप्रीतिलगाई
ब्रह्मराततवअतिहर्षाई । सभामध्यशौनकमुनिराई ॥२७॥ कह्योमहाभागवतपुराना । अतिअनुपमजोवेदसमाना ॥
ब्रह्मकल्पमहँश्रीभगवाना॥ कीन्ह्योविविधसोजासुबखाना॥२८॥जोनजौनपांडवकुलकेतू।पूँछ्योश्रीशुकतेमतिसेतू ॥
दोहा–सोसोउत्तरक्रमहिंते, श्रीशुकदेवसुजान । मुनिमंडलमधिमुदितह्वै, लागेकरनबखान ॥ २९ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुर श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेव
कृते श्रीमद्भागवतेआनंदांबुनिधौद्वितीयस्कंधेअष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

दोहा–ज्ञानरूपतनभिन्नजिय, हरिमायाविनपाइ । भोगनकोसमरथनहीं, अर्थनकोललचाइ ॥
जैसेसोवतपुरुषनकाहीं । होतस्वप्नमायाविननाहीं ॥ १ ॥ बहुरूपामायातेभूपा । देखिपरतजियहैबहुरूपा ॥
मायात्रिगुणरमतबहुकाला ।हमहमारजनकहतभुआला॥२॥मायाकालविगतनिजमहिमा।रमतअमोहजीवजबतेहिमा
तबहिंकालअरुमायाफंदा । छोडिअहंममहोतअनंदा॥३॥विधिव्रतलखिनिष्कपटमुरारी । ह्वैप्रसन्नजगमंगलकारी ॥
विधिकोनिजस्वरूपदर्शावत।कह्योजोवचनसत्यमनभावत४सोहमतुमसोंयहिक्षणमाहीं ।कहिहैंसवसंशयकछुनाहीं ।
दोहा–नारायणकेनाभिते, प्रगटभयोअरविंद । तातेचतुराननभये, जोगुरुसुरमुनिवृंद ॥
आदिदेवनिजआसनमाहीं।कियविचारजगउत्पतिकाहीं॥ यहप्रपंचविधिजेहिविधिहोई।लहीविरंचिबुद्धिनहिंसोई॥५॥
एकसमैजलमेंचतुरानन।सुनतसुन्योतपतपनिजकानन ॥ जोतपविप्रनकोधनगायो।जाकोकरिअसुरनजयपायो ॥६॥

सोसुनिचकितनहेचतुरानन । तुरतचितैचारिहुदिशानन ॥ कहुँकाहुकोनिरख्योनाहीं । तबह्वैआश्रितआसनमाहीं ॥
सोइवाणीहितमनहिंविचारी।लग्योकरनतपपरमसुखारी॥७॥ उभयदिव्यनिजमनअरुपवनै।ज्ञानशक्तिनैकीन्ह्योदवनै ॥
दोहा–सबलोकनकोभासकर,तापितश्रेष्ठतपलीन । दिव्यवर्षसाहस्रलौं, सोब्रह्मातपकीन ॥ ८ ॥
तबप्रसन्नह्वैकृष्णदेखायो । लोकआपनोअतिछबिछायो ॥ जातपरैआरनहिंलोकू । जहँनकलेशमोहभयशोकू ॥
नित्यमुक्तकरनित्यनिवासू।नित्यमोदप्रदनित्यप्रकासू ॥९॥ रजतमकोप्रकाशजहँनाहीं । शुद्धसत्वसोहतोसदाहीं ॥
जहाँकैरनहिंकालप्रवेशा । मायाकोनहिंनेकनिवेशा ॥ सुरअसुरनवंदितअतिपावन । जहँबसैहरिभक्तसुहावन॥१०॥
कमलनैनअतिसुंदरश्यामा । पीतांबरधारीद्युतिधामा ॥ सिरमैचारिबाहुसुकुमारा । मणिनजटितभूषणउरहारा ॥
दोहा–कोउप्रवालद्युतिसोहहीं, कोउवैदूर्यमृणाल । भ्राजमानमाथमहा, मुकुटमणिनकीमाल ॥ ११ ॥
प्रभामानसिद्धनकीनाना।राजिरहींजहँराजिविमाना।उत्तमनारिप्रकाशप्रकाशित।जिमिघनदामिनिघननभभासित१२
रूपवतीजहँरमासुहाई । भू लीलादिसंगसुखदाई ॥ झूलतसुखदहिंडोलनमाहीं । गावतपरिभवँरचहुँघाहीं ॥
कमलकरनकमलासुखभरती।कृष्णकमलपदसेवनकरती।।ऐसोजोवैकुंठसोहायो ।ताकमध्यमहाछबिछायो ॥ १३ ॥
सबसंतनकोरक्षकजोई । रमायज्ञजगनायकसोई ॥ ऐसेकृपासिंधुगोविंदै । ब्रह्मानिरख्योसहितअनंदै ॥
दोहा–कुमुदप्रबलअरिहनअमल, नंद सुनंदप्रचंड । निजपार्षदसेवितसदा, विक्रमजासुअखंड ॥ १४ ॥
करहिंदासपैसदाप्रसादा । जिनकटाक्षनिवसतअहलादा॥मृदुमुसक्यानिनैनकछुलाला।विलसैवदनविलासविशाला॥
कुंडलकीटहुकटकविराजै । पीतांबरभुजचारिहुराजै ॥ लक्ष्मीलजितवक्षससोहै ॥१५॥बरआसनआसितमनमोहै ॥
शक्तिपचीसलसैंचहुँओरा । विभवसहितजेऔरनठोरा ॥ ऐसश्रीवैकुंठविहारी ॥ १६ ॥ चतुराननमुदसहितनिहारी ॥
आनँदसिंधुमगनह्वैगयऊ । प्रेमआशुरोमांचहुभयऊ ॥ ब्रह्मानाथआपनोचीन्ह्यो । चरणकमलकोवंदनकीन्ह्यो ॥
दोहा–जोप्रभुदुर्लभहैसदा, कीन्हेआनउपाइ । प्रेमाभक्तिहिकरतउर, सहजहिआवतधाइ ॥ १७ ॥
हरिलखिप्रीतिवंतकमलासन । विश्वकरनहितचाहतशासन॥विधिकोकरगहिमृदुमुसकाई।मधुरगिराबोल्यदुराई१८

श्रीभगवानुवाच ।

जगसिरजनइच्छाकरिधाता । सहसवर्षतपकियअवदाता॥मोहितोपितकीन्ह्योसुखमाहीं।जोमैंदुर्लभदंभिनकाहीं १९
माँगहुविधिवांछितवरदाना । होइतुम्हारआशुकल्याना॥जोजनमंगलसाधनराचो।तेहिममदर्शअवधिहैसांचो॥२०॥
जोतपतपमैंकियउपदेशू । सोईसुनिकियपरमकलेशू ॥ मेरोलोकदर्शप्रजराऊ । सोमेरोसंकल्पप्रभाऊ ॥ २१ ॥
दोहा–प्रजासृजनमेंमोहयुत, तुमकोलख्योविरंचि । तबमैंतपउपदेशकिय, जोराख्योउरशंचि ॥
हैविशेषितपहृदयहमारो । तपआत्माममवेदउचारो॥२२॥तपसोंजगहमसिरजनकरहीं । तपसोंपुनिसिगरोसंहरहीं॥
तपसोंपालनतुमउरआनो । दुस्तरतपप्रभावममजानो ॥ २३ ॥ सुनिमधुसूदनवैनसुहाये । बोलेब्रह्माआनँदछाये ॥

श्रीब्रह्मोवाच ।

सकलभूतउरगृहभगवाना । जानहुँसबअविहितविज्ञाना ॥२४॥ तद्यपिसुनहुविनयप्रभुमेरी।सबइच्छापूरहुहियकेरी ॥
दीजैमतिमोहिंनाथअनूपा । जातेजानहुँराउररूपा॥२५॥आत्मरूपयहजगतसुहायो । निजसंकल्पहिताहिबढ़ायो ॥
दोहा–सिरजतपालतहरतहौ, आपहियहसंसार ॥ २६ ॥ सतिसंकल्पकरहुसदा, मकरीसरिसविहार ॥
तैसहिबुद्धिसृष्टिकीकरनी । माधोमोहिंदीजैभवतरनी॥२७॥तुवशासनआलसतजिनाथा।करहुँसदाजेहिविधिमुदगाथा
मोपरकृपाकरहुहरिसोई । प्रजासृजतबंधननहिंहोई॥२८॥करगहिमोहिंसखाकरिलीन्ह्यो । मोपरपरमअनुग्रहकीन्ह्यो
उत्तममध्यमअधमप्रजनको।सृजतहोइअभिमानननतनको २९ यहसुनिकृष्णमोदउरछावत।चतुरश्लोकीकह्योभागवत
जाकोहैअपारविस्तारा । वर्ण्योअष्टादशहिहजारा ॥ जाहिसुनतज्ञानिहुँअज्ञानी । होतसदाहरिचरणनध्यानी ॥
दोहा–दशलक्षणतेयुक्तजो, सोईमहापुरान । चतुरश्लोकीमेंलखो, लक्षणसोइमहान ॥

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा–जोअतिगोपितज्ञानमम, अंगसहितविज्ञान । भक्तिसहितमैंदेतहौं, लीजैविधिमतिमान ॥ ३० ॥
जोमोमंजसभावमम, जसगुणकर्महुरूप । होइतत्त्वविज्ञानतस, लहिममकृपाअनूप ॥ ३१ ॥
सृष्टिपूर्वचिदअचिदवपु, रहेहमहिंनहिंआन । मध्यहुहमऔअंतमें, बच्योसोहमहिंसुजान ॥ ३२ ॥
चेतनमेंजानोपरै, हैनहिंचेतनवास । सोममायाजानियो, जसतमजसआभास ॥ ३३ ॥
महाभूतजिमिभूतमें, अहैंनहैकरतार । तैसेलघुबड़जगतमें, जानहुवासहमार ॥ ३४ ॥
मोरतत्त्वजानोचहै, आत्मतत्त्वसोजान । औरतत्त्वजानैनहीं, दोउतेममविभुज्ञान ॥ ३५ ॥
ह्वैइकाग्रयहमोरमत, धारहुविधिकरिछोह । कल्पविकल्पहुमेंकबहुँ, तुमहिंनह्वैहैमोह ॥ ३६ ॥
श्रीभगवानुवाच । ज्ञानंपरमगुह्यंमेयद्विज्ञानसमन्वितम् । सरहस्यंतदंगंचगृहाणगदितंमया ॥
यावानहंयथाभावोयद्रूपगुणकर्मकः । तथैवतत्त्वविज्ञानमस्तुतेमदनुग्रहात् ॥
अहमेवासमेवाग्रेनान्यद्यत्सदसत्परम् । पश्चादहंयदेतच्चयोवशिष्येतसोस्म्यहम् ॥
ऋतेर्थंयत्प्रतीयेतनप्रतीयेतचात्मनि । तद्विद्यादात्मनोमायांयथाभासोयथातमः ॥
यथामहांतिभूतानिभूतेषूच्चावचेष्वनु । प्रविष्टान्यप्रविष्टानितथातेषुनतेष्वहम् ॥
एतावदेवजिज्ञास्यंतत्त्वजिज्ञासुनात्मनः । अन्वयव्यतिरेकाभ्यांयत्स्यात्सर्वत्रसर्वदा ॥
एतन्मतंसमातिष्ठपरमेणसमाधिना । भवान्कल्पविकल्पेषुनविमुह्यतिकर्हिचित् ॥

श्रीशुकउवाच ।

दोहा–यहिविधिविधिउपदेशकरि, सोअनादिभगवान । ताकेदेखतरूपनिज, कीन्ह्योअंतर्धान ॥ ३७ ॥
भेअदृश्यजबशारंगपानी।तबहिंविरंचिजोरियुगपानी॥करिकैहरिकोअमितप्रणामा।सृज्योपूर्ववतजगजनधामा॥३८॥
एकसमैधर्मज्ञप्रजेशा । चाहतजनमंगलहिनरेशा ॥ स्वारथसिद्धहेतहर्षाई । करतभयेयमनियममहाई ॥ ३९ ॥
तिनकेसबपुत्रनमेंप्यारे । शीलविनयसमदमहिअगारे ॥४०॥महाभागवतनारदजाई । पितुकहँतोष्योकरिसेवकाई ॥
मायापतिहरिकीजोमाया।सोजाननकीकरीउपाया॥४१॥अतिप्रसन्ननिजजनकहिजानी।हरिचरित्रसुनिबोचितठानी ॥
दोहा–जोतुमपूँछ्योमोहिंनृप, सोइनारदविधिपाहिं । पूंछ्योपरसहुलाससों, करिश्रद्धामनमाहिं ॥ ४२ ॥
दशलक्षणलक्षितसुखद, श्रीभागवतपुरान । नारदसोंवर्ण्योयही, ब्रह्मापरमसुजान ॥ ४३ ॥
जगकरनिजसुतब्रह्मको, हरिदियहीनिदेश । नारदसोसरस्वतितटै, व्यासहिकियउपदेश ॥ ४४ ॥
कैसेभयोविराटसो, यहजोपूँछ्योभूप । ताकोअरुसबप्रश्नको, उत्तरसुनोअनूप ॥ ४५ ॥
इतिसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेश्रीमद्भा
गवतेद्वितीयस्कंधेआनंदांबुनिधौनवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

दोहा–तहँशुकदेवप्रमोदभरि,लक्षणदशहुपुरान । भूपपरीक्षितसोंकह्यो, संयुतअर्थमहान ॥

श्रीशुकउवाच ।

सर्गविसर्गथानअरुपोषण । ऊतिमन्वंतरईशकथागण ॥ अरुनिरोधअरुमुक्तिआश्रयहु॥१॥एदशलक्षणमहापुराणहु॥
दशमज्ञानहितनवकेलक्षण।मुदितयथाश्रुतकहहिंविचक्षण ॥२॥ नभमहिजलतेजहुवहगंधू।शब्दस्पर्शरूपरसगंधू ॥
पायुउपस्थवाकपदपानी । कर्मेंद्रीयेपांचबखानी ॥ घ्राणश्रोत्ररसनात्वचनैना । ज्ञानेंद्रीयेकह्योसचैना ॥
अहंकारमनबुधिचितजेहैं । अंतःकरणचतुष्टयतेहैं ॥ इनकीसबकीउत्पतिजोई । भूपतिसर्गकहावतसोई ॥

दोहा—कृष्णप्रेरणानभया, गुणकाक्षाभमहान । सोइप्रेरितविधिसृष्टिजो, सोइविसर्गनृपजान ॥ ३ ॥
माधवविजयअहैथितिसोई । जासुअनुग्रहपोषनहोई ॥ भगवनभक्तनधर्मअनूपा । नंईमन्वंतरहैंभूपा ॥
कर्मवासनाजेजगअहहीं । तिनकोऊतिनामबुधकहहीं॥४॥हरिहरिजनकीकथावनेरी । ईशकथासोइकह्योनिवेरी॥५॥
कर्मसहितजियप्रकृतिहिलीना । सोइनिरोधहैभूपप्रवीना॥देवमनुष्यआदिनिजरूपा।मुक्तिलहतपारपदस्वरूपा॥६॥
जगउत्पतिपालनसंहारा । जेहितेहोतरहैबहुवारा ॥ परब्रह्मपरमात्माजोई । केशवहैआश्रयसनिसोई ॥ ७ ॥
दोहा—जीवइंद्रियनदेवको, अरुसबभूतनकेर । अंतर्यामीपरपुरुष, मुनिजनकियोनिवेर ॥ ८ ॥
विनइन्द्रियजियविषयनजानै । विनाविषयइन्द्रियनहिंभानै ॥ इनतीनोकोजानैजोई । सबआश्रयपरमातमसोई ॥९॥
प्रथमहिंशुचिविधिअंतर्यामी।अंडहिफोरिकढ्योजबस्वामी ।रहनहेतनिजधामगँभीरा।विरचतभयोविमलशुचिनीरा॥
सहसवर्षतहँकियविश्रामा । तातेनारायणभोनामा ॥ ११ ॥ द्रव्यकर्मजियकालस्वभावा।जासुअनुग्रहलहैप्रभावा ॥
ईशअनुग्रहजोनहिंपावै । निजनिजकारजकरननभावै ॥ १२॥ कीन्हीइच्छाहोनअनेकू । योगसेजउठिसोहरिएकू ॥
दोहा—जड़चेतनमयदेहको, इच्छातेत्रयकीन ॥ १३ ॥ अधिदैवहिअध्यात्महि, अरुअधिभूतप्रवीन ॥
जेहिप्रकारमोतेविस्तारा । सोसबसुनियेनृपतिउदारा ॥१४॥ चेष्टमानविधिप्राणहितेरे । बलसहोजभेप्राणघनेरे॥१५॥
प्राणहिंबलइन्द्रियसमुदाई । निजनिजकारजकरहिंबनाई ॥ तनुतप्राणहिंकरतपयाना । सबइन्द्रियगणभानभुलाना ॥
जैसेभूपतिभृत्यअपारा । चलतसदास्वामीअनुसारा॥१६॥प्राणनयुतविराटजबठयऊ । क्षुधापिपासातबतेहिभयऊ॥
भोजनपानकरनजबचाहा । तबमुखहोतभयोनरनाहा ॥ १७॥ मुखतेतालुतालुमेंरसना । होतभईबोलनबहुवचना ॥
दोहा—मधुरआमिलोतिक्तकटु, औरहुलवणकषाय । षट्रसयेउत्पतिभये, रसनायोगवनाय ॥ १८ ॥
जबतेहिबोलनकीभैइच्छा।तबमुखतेभैअग्निप्रतिच्छा॥वाकेन्द्रियभैपुनिवचभयऊ।बहुदिनकंठपवनरुकिगयऊ ॥१९॥
पवनलग्योजबकंपनसोऊ । नासारंध्रप्रगटभेदोऊ ॥ गंधग्रहणचाह्योसोजबहीं । घ्राणवायुनासाभैतबहीं ॥ २० ॥
रह्योमहातमलखनचह्योजब।चषगोलकरविरूपभयोतब २१ वेदजगावनवचनसुननहित।कर्णशब्ददिशिश्रोत्रभयेतित
मृदुतालघुताऔरकठिनता । गुरुताउष्णऔरशीतलता॥इनकोपरसकरनमनलाये । तबतरुत्वचालोमउपजाये॥२३॥
दोहा—भीतररहैसुपौनगति, हैत्वक्इन्द्रियमाहँ । सोप्रत्यक्षकरावहीं, अरुपर्शनगुणकाहँ ॥
छंदहरिगीतिका—जबकर्मबहुविधिकरनचाह्योहाथदोउतबहोतभे।तहँपाणिइन्दियइंद्रदेवहुग्रहणविषयउदोतभे ॥२४॥
जबचह्योविचरनचरणमेंतबपादइन्द्रियभैतहाँ । सुरविष्णुहैंगमनादिकारजहव्यमेंविषयहुमहा ॥ २५ ॥
जबपुत्रअरुरतिसुखचह्योतबशिश्नइंद्रिउपस्थभै । तेहिसुरप्रजापतिकर्मरतिअरुविषयआनँदस्वस्थभै॥२६॥
पुनिअन्नमलजबतजनचाह्योतबहिंगुदउत्पतिभयो । अरुपायुइन्द्रियमित्रसुरउत्सर्गविषयहुतहँठयो॥ २७ ॥
तजिदेहयहपरदेहकोजबसोइचाह्योजानको । तबनाभिउत्पतिभईतामेंजन्मभयोअपानको ॥
तहँदेवतावर्णनकरैंसतिमृत्युकोमतिमानहैं । तेहिविषयमरणहिंहोतभोइमिकरतवेदवखानहैं ॥ २८ ॥
जबअन्नभोजनकरनचाह्योकुक्षितबउत्पतिभई । तहँआँतइन्द्रियसिंधुसरितातुष्टिविषयहुतहँठई ॥
जलपानजबकरिबोचह्योतबवामकुक्षिउदोतभै । तहँनाड़िइन्द्रियसरितसुरअरुपुष्टिविषयहुहोतभै ॥ २९ ॥
निजप्रकृतिचिंतनचह्योजबतबहृदयकमलप्रकाशभो।मनतहाँइन्द्रियशशीसुरअभिलापविषयविकाशभो ३०
त्वक्चर्ममांसहुरुधिरमज्जामेदअस्थिहुधातुहैं । धरणीसलिलअरुतेजमययेसातऊविख्यातहैं ॥
आकाशपवनहुँसलिलमयजानियेपंचहुप्राणये ॥ ३१ ॥ शब्दादिग्राहकइन्द्रिगणतेअहंकारहितेभये ॥
कामादिप्रगटेमनहितेबुधिअहैज्ञानस्वरूपिणी ॥ ३२ ॥ यहस्थूलभगवतरूपकोवर्णोकथाश्रुतिभूषिणी ॥
महिवारितेजहुपवननभअहँकारबुद्धिहुप्रकृतिके । क्रमसोंबहिरआवर्णआठहुस्थूलहरिकीप्रकृतिके ॥ ३३ ॥
अबकहौंहरिवपुसूक्ष्मजीवजोचक्षुरादिअगोचरै । शब्दादिगुणबिननित्यआदिहुँमध्यअंतहुतेपरै ॥ ३४ ॥

वपुथूलसूक्षमउभयहरिकेसदाकृष्णअधीनहैं। तेहितेनताहिउपासहींजेपुरुपपरमप्रवीनहैं॥ ३५॥
हरिवाच्यवाचककोशरीरीविविधवपुपकोसोइधरै। नहिंकर्मवशसंकल्पसिधिजगनामरूपक्रियाकरै॥ ३६॥
मनुप्रजापतिअरुदेवऋपितिमिपितरचारणसिद्धजे। गंधर्वविद्याधरअसुरगुह्यकहुस्वर्गप्रसिद्धजे॥ ३७॥
अपस्वराकिन्नरनागसर्पहुउरगअरुकिंपुरुषहैं। अरुभूतप्रेतपिशाचराक्षसमात्रिगणकूष्मांडहैं॥ ३८॥
उन्मादऔरविनायकहुग्रहयातुधानवितालहैं। खगमृगहुनगपशुवृक्षत्यौंहींसरीसृपहुकरालहैं॥ ३९॥
अस्थावरहुजंगमहुविधिजेतेइचतुविधिजगलसैं। उद्भिजजरायुजश्वेदअंडजजलथलौनभजेवसैं॥
उत्तमहुमध्यमअधमकर्मनकेअमितफलजेसवै। तिनकोसृज्योकरतारअंतर्यामिह्वैप्रभुकेसवै॥ ४०॥
तहँसकलगुणतेदेवरजतेमनुजतमतेनारकी। तेहुमाहँसुनियेनृपतित्रयत्रयऔहैविधिविस्तारकी॥ ४१॥
सुरमेंत्रिगुणनरमेंत्रिगुणनारकिहुमेंगुणतीनहैं। रचनाविचित्रहिविश्वकीइमिरचीकृष्णप्रवीनहैं॥
सोइजगतकारकधर्मवपुधरविविधविधतनुधरिलहीं॥४२॥ कालाग्निहरहियजामिह्वैभगवानयहजगघालहीं॥
दोहा–जिमिरविकरसोंतमनशै, जिमिवनपवनाहिंपाइ। रुद्ररूपसोंकृष्णत्यों, यहजगदेहिंनशाइ॥ ४३॥
त्रिगुणरूपतेश्रीभगवाना।उत्पतिथितिलयकरहिंमहाना॥लगैनतिनकोत्रिविधविकारा।यहिविधिजानैंसंतउदारा ४४॥
जैसेजनजन्मादिघनेरे। तैसेनहिंपरमातमकेरे॥ ईशअधीननगुणिजगलोगू। करतकर्मभोगहिंदुखभोगू॥
तासुनिवारनहेतुउधारन।हरिकरिकृपालेहिंअवतारन४५ब्रह्मकलपसविकलपकह्योंयह।सिरजनविधिइमिसवकलपनमह
कालस्थूलसूक्ष्मपरिमाना।कलपनलक्षणरूपविधाना॥ आगेसवकहिहौंनृपराई। पाद्मकलपअवसुनहुवनाई॥ ४७॥
दोहा–परिक्षितशुकसंवादसुनि, शौनकआनँदपाइ। बहुरिकह्योतहँसूतसों, यहमोहिंदेहुसुनाइ॥

शौनकउवाच।

दुस्त्यजतजिवंधुनपरिवारा। करतधरणिकेतीर्थअपारा॥ विदुरसोइभागवतप्रधाना। मैत्रेयसोंप्रश्नजुठाना॥ ४८॥
सोमित्रासुतआनँदछायो। जौनविदुरकोसकलसुनायो॥ कहसंवादभयोतिनकेरो। सोकहिमुदम्वहिंदेहुघनेरो॥४९॥
वर्णहुविदुरचरित्रसोहावन। कारणकौनतज्योकुलपावन॥कौनहेतुतेपुनिगृहआयो। उद्धवकोकौनेथलपायो॥५०॥
यहसबवर्णहुसूतसुजाना। सुनतहोतमोहिंमोदमहाना॥ शौनकवचनसुनतहर्षाई। बोलेसूतप्रीतिउरछाई॥

श्रीसूतउवाच।

दोहा–भूपपरीक्षितसोंकह्यो, जोशुकदेवसुजान। सोप्रश्नअनुसारते, सुनियेकरहुँबखान॥
वसुनभनिधिशशिसंवते,मावकृष्णरविवार। द्वादशिआनँदसिंधुभो, द्वितियस्कंधतयार॥ ५१॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेव
कृते श्रीमद्भागवतेद्वितीयस्कंधेआनंदांबुनिधौदशमस्तरंगः॥ १०॥

महाराजरघुराजकृत, भाषाद्वितियस्कंध। यहसमाप्तमुद्रितभयो, संयुतछंदप्रबंध॥

इति द्वितीयस्कंधसमाप्त २.

तृतीय स्कन्ध
परीक्षित्
शुक
विदुर
मैत्रेय
शेष
सनत्कुमार
ब्रम्हा
शेषशायी
लक्ष्मी
स्वायंभुमनु
शतरूपा
कश्यप
दिति
जयविजय
विष्णु
सनत्कुमार
वराह
हिर०
कर्दमऋषि
देवहूती
कपिल

श्रीगणेशायनमः ।

अथ श्रीमद्भागवतआनन्दाम्बुनिधि।

तृतीयस्कन्धप्रारम्भः ।

सोरठा—जयद्वारकाअधीश, चारिबाहुरुक्मिणिरमण । तुवपदनावहुँशीश, रचियेअस्कंधहितृतिय ॥ १ ॥
जयगजवदनगणेश, विघ्नकदनप्रदसुखसदन । एकरदनसमवेश, मदनकदनकेवरनँदन ॥ २ ॥
श्रीहरिगुरूसुकुंद, मोसमपापिनपूतकर । तासुचरणअरविन्द, जगवंदिनवंदनकरौं ॥ ३ ॥
अष्टादशहुपुराण, जिनकेमुखतेप्रगटभे । व्यासरूपभगवान, तासुचरणमेंशिरधरौं ॥ ४ ॥
कृष्णकथामृतधार, जेहिआननिकसतसदा । ऐसेव्यासकुमार, शुकाचार्यपदशिरधरौं ॥ ५ ॥
बांधवेशमहराज, विश्वनाथपदनतिकरौं । रामभक्त शिरताज, जनकजनकसमजगजगत ॥ ६ ॥
दोहा—कहिदूसरअस्कंधशुक, कुरुपतिसोंमुदमान । पुनितीजेअस्कंधशुक, लागेकरनवखान ॥

श्रीशुकउवाच ।

सबसंपतिपूरणनिजगेहू । ताहिछोंडिहरिपदकरिनेहू ॥ विदुरमहामतिवनहिंसिधारे । मैत्रेयहुतहँमिलेउदारे ॥
तिनसोंयहीप्रश्नतिनकीने । जोतुमपूँछ्योनृपतिप्रवीने ॥ १ ॥ जेपांडवकेसदासलाही। श्रीभगवानकृष्णअरिदाही॥
वासवगृहसमकुरुपतिगेहू। जेहितजिकियोविदुरगृहनेहू ॥ कुरुपतिकेबहुविधिपकवाना।तिनकोमानितुच्छभगवाना॥
विदुरभवनअपनोगनिआये।फलहुछोंडिछिलकाप्रभुखाये२सुनिशुकदेवगिराअतिनीकी। कुरुपतिकहीफेरनिजजीकी

राजोवाच ।

दोहा—कहाँविदुरमैत्रेयको, भयोसमागमनाथ । होतभयोसंवादकब, यहकहिकरहु सनाथ ॥ ३ ॥
विदुरप्रश्नकोअर्थनथोरा । भरोवेदअर्थहिसबठोरा ॥ साधुनसबहिंसराहनलायक । मित्रासुतकेअतिमुददायक ॥४॥

सूतउवाच ।

यहिविधिजबनरपतिशुकपाहीं । पूँछतभेमोदितमनमाहीं ॥ तबकरिपरमप्रीतिसुखपागे । श्रीशुकदेवकहनतबलागे ॥

श्रीशुकउवाच ।

श्रवणकरहुभूपतिमतिमाना । अबमैंसिगरोकरहुँबखाना॥५॥जबधृतराष्ट्रअंधमहिपाला।वसतहस्तिनापुरहिउताला ॥
निजसुतदुर्योधनआदिनको । कुमतीअधरममर्यादिनको ॥ निजपुत्रनपरप्रीतिघनेरी । करनलग्योनृपनीतिनहेरी ॥
दोहा—दैप्रतीतिअनरीतिकरि, लाक्षाभवनबनाइ । पृथासहितपांडवनको, दियोटिकायजराइ ॥ ६ ॥
ताहीदिनतहँएकनिषादी । पंचसुतनयुतअतिअहलादी ॥ लाखभवनमहँआयबसतभै । सुतनसहितसोतहाँजरतिभै॥
पांडुसुतनकहँविदुरसुजाना। दियोनिकासिलोगनहिंजाना॥मातसहितपांडववनवासिकै।पायोअमितकलेशनिदरिकै॥
द्रुपदनगरमहँपुनिसबजाई । वेध्योमत्स्यविजयसुखछाई ॥ द्रुपदसुताकहँव्याहितहाहीं । आयेपुनिहस्तिनपुरकाहीं॥
यदुपतिकृपाविभवअतिबाढो । दुर्योधनउरभोदुखगाढो॥ तबशकुनिहिंदुःशासनकरनै । कियोमंत्रकुरुपतिछलकरनै ॥
दोहा—सभायुधिष्ठिरराजको, भाइनसहितबोलाइ । शकुनिसंगमेंछलसहित, जुवाँयुद्धकरवाइ ॥
कोषराज्यतियलीन्हयोजीती।पुनिकीन्हयोअतिशयअनरीती॥द्रुपदसुताकहँसभामँझारी ।गहिकचदुःशासनभटभारी
ल्यावतभयोधर्मनहिंचीन्हयो।अंधभूपवारणनहिंकीन्हयो॥रजस्वलाद्रौपदिअतिरोवति । दृगजलतेकुचकुंकुमधोवति
धर्मभूपलैतियअरुभाई । काननकोनिकसेदुखछाई ॥ बारहवर्षरहेवनमाहीं । कीन्हेंबहुविधिचरिततहाँहीं ॥

पुनिविराट्पुरमहँयकवर्षा । गोप्यरूपनिवसेयुतहर्षा ॥ वर्षचौदहेंधर्मभुवाला । प्रगटतभेसबन्धुतेहिकाला ॥

दोहा—तवपांचालपुरोहितै, पठयोकुरुपतिपास । हिस्सामाँगनहेतनिज, मेटनहितकुलनाश ॥

दुर्योधनढिगजायद्विजेशा । धर्मभूपकोकह्योनिदेशा ॥ कुरुपतिहिस्सादेहुहमारा । नातरुहोईकुलसंहारा ॥

हर्योराज्यकरिकपटहमारो । नीतिरीतिनहिंनेकविचारी ॥ यहिविधिधर्मभूपकीवानी । कह्योबुझायपुरोहितज्ञानी ॥

पैदुर्योधननेकनमान्यो । कोहमोहममतालपटान्यो ॥ कह्योपुरोहितसेअसबानी । भवनजाहुपंडितअभिमानी ॥

हमनहिंमानहिंकहागवरो । पुनिपुनिकहिजनिहोहिबावरो ॥ सुनिअसतहँदुर्योधनवैना । पंडितपलटिगयोनृपऐना ॥

दोहा—धर्मभूपसोंकहतभो, दुर्योधनकीवाणि । तबकोपितह्वैकहतभे, नृपसोंशारँगपाणि ॥

हमहुँजावअबहेतुतुम्हारे । दुर्योधनकेआशुअगारे ॥ धर्मभूपयहसम्मतकीन्ह्यो । यदुपतिकोपठयोमुदभीन्यो ॥

हस्तिनपुरमहँगेयदुराई । दुर्योधनलीन्ह्योंअगवाई ॥ सभामध्यप्रभुकोबैठाई । बहुविधितहँसत्कारकराई ॥

कुशलप्रश्नयदुपतिहिसुनाये । कहौकौनकारणप्रभुआये ॥ तबयदुपतिकुरुपतिसोंबोले । अपनेउरकोआशयखोले ॥

हिस्सादेवपांडवनकाहीं । तुमकोउचितअहैजगमाहीं ॥ नातौइतपैहौअपवादा । ह्वैहैपरलोकहूविषादा ॥

दोहा—आपुसमहँबढिकैकलह, होइहिकुलसंहार । तातेकुरुपतिमानिये, इतनोकह्योहमार ॥

सुनियदुनंदनकीमृदुवानी । बोल्योवचनमहाअभिमानी ॥ सूजीअग्रभागमहिजेती । बिनरणदेहौंतिनहिंनतेती ॥

ऐसोकहिउठिकियोपयानो । यदुपतिकह्योनेकनहिंमानो ॥ ताकोरहतज्ञाननहिंलेशू । होनहारजेहिहोतकलेशू ॥

यदुपतिफिरिविराट्पुरआये । धर्मभूपकोसकलसुनाये ॥ ९ ॥ उतैविदुरकहँअंधनरेशा । बुलवायेमनमानिअँदेशा ॥

कह्योविदुरअबमंत्रबतावहु । कौरवकुलकोकलहमिटावहु ॥ सुनतविदुरभूपतिकैवानी।कह्योजुमंत्रसुखदगुणखानी ॥

दोहा—विदुरप्रजापतिसोसकल, कहवावतजगमाहिं । नीतिरीतिकछुनहिंबची, कह्योविदुरनृपपाहिं ॥ १० ॥

देहुअजातशत्रुकहँहींसै । तुमकोहियलेनहिंकछुदीसै ॥ करिजोतुमपांडवकीबाधा । तिनसहिलियोसकलअपराधा ॥

कोपितभीमभुजंगभयावन । श्वासलेतचाहतइतआवन॥डसिहैंतुवशतपुत्रनकाहीं।डरतरहौतुमजाहिसदाहीं ॥ ११ ॥

भीषमद्रोणकर्णकृपचोखे । रहहुननृपइनकेअबधोखे ॥ कारकपांडवपरमसहाई । बसतद्वारकामहँयदुराई ॥

जहँयदुपतितहँरामहुह्वैहैं । यदुवंशीतुवओरनजैहैं ॥ जहाँधर्मतहँरहतमुरारी । जहँमुरारितहँविजयविचारी ॥

दोहा—देवअसुरनरदेवके, जीतनहारमुकुंद । वैरकरहुतिनसोंवृथा, बूझहुनहिंमतिकुंद ॥ १२ ॥

हैंदुर्योधनयदुपतिद्रोही । ताकेहोहुनाहितुमछोही ॥ दोषरूपनिवसैगृहमाहीं । निजसुतजानहुतुमतिहिकाहीं॥

याकोगृहतेदेहुनिकारी । यहसम्मतितौअहैहमारी ॥ एकतजेजोकुलबचिजावै । तौतेहितजतविलंबनलावै ॥ १३ ॥

सोसुनिदुर्योधनअतिमार्ख्यो।डसतओंठअधरनअतिचाप्यो॥ पिताविदुरयहकुमतिप्रधाना।कायरकुटिलकुशीलमहाना

खायहमारोजूँठमोटाई । हमहींसोंअबकरतखोटाई॥१४॥ दासीसुतहिकौनइतआन्यो।कौनकुमतियहिबुधवरमान्यो॥

दोहा—जिनकोखायउधनसदा, जियोजासुगृहमाहिं । तिनसोंराखतवैरनित, प्रीतितिनहिंरिपुपाहिं ॥

दासीसुतकहवचनकठोरा । तातेजियचाहतअसमोरा ॥ सभामध्यमारहुँतरवारी । पैपुनिअसजियलेहुँविचारी ॥

जनकबंधुउपज्योकुलदूषण । ममढिगकरतशत्रुगुणभूषण ॥ तातेजीतहिदेहुनिकारी । शत्रुपक्षरतयाहिविचारी ॥

कर्णशकुनिदुर्मतिअतिदोऊ।कहनलगेतैसहितहँसोऊ॥शकुनिकर्णदुर्योधनवानी॥१५॥सुनिभ्राताढिगविदुरविज्ञानी ।

हरिमायागुणिव्यथानलायो।उम्योआशुआनँदउरछायो॥कुरुपतिद्वारधनुपधरिदीन्ह्यो।तीरथकरनगमनद्रुतकीन्ह्यो ॥

दोहा—हस्तिनपुरतेविदुरजब, निकसिगयेमतिमान । मानहुँकौरवकुलहिते, कीन्ह्योकुशलपयान ॥

तीरथजेपतितहुकरपावन । तिनमहँजातभयेसुखछावन॥ करहिंदर्शहरिमूरतिकेरो।तहँतहँपावहिंमोदघनेरो ॥ १७ ॥

पुरनपुण्यकाननअरुकुंजन।शुचिशैलनअरुसरमनरंजन॥हरिमंदिरअरुशुभसरितनमें । दर्शतपर्शततिनक्षणक्षणमें ।

यहिविधिबहुविचरतमहिमाहीं।बुधवरविदुरअकेलेजाहीं॥१८॥भूमिशयनहरिव्रतसबकरहीं।रूपछिपायेपुहुमिविचरहीं

यहिविधिबीतिगयेकछुकाला । विचरतभारतखंडविशाला ॥ तबलोंभारतयुद्धघनेरो । होतभयोकुरुपांडवकेरो ॥

दोहा-भाइनसहितसुयोधनै, भाइनयुततनृपधर्म । मारिविजयलीन्ह्योंनुप, कियोअपूरबकर्म ॥
कियोअकंटकराज्यनरेशा । फैल्योसातहुद्वीपनिदेशा ॥ श्रीयदुपतिनिकीपायमहाई । भयेअजानशत्रुनृपराई ॥ २० ॥
क्षेत्रप्रभासविदुरजबआये । तबद्विजभारतयुद्धसुनाये ॥ जिमिमारुतवशवेणनमाहीं । पावकप्रगटदहततिनकाहीं ॥
कलहअनलतेसहिकुरुकुलमहँ।प्रगटजरयोहरिविमुखनकहँ।सोसुनिविदुरमहामतिमाना।मौनहिसरस्वतिकियोपयाना
तहांशुक्रकोआश्रमहेरो । नृपपृथुमनुअसिताग्निहुकेरो ॥ स्वामिकार्तिकवायुस्वदासू । नंदीश्वरकोविमलनिवासू ॥
दोहा-श्राद्धदेवआदिकनके, ॥ २२ ॥ औरहुसुरमुनिकेर । आश्रमसोहहिंअतिविमल, हरिमंदिरचहुँफेर ॥
हरिमंदिरनमाहँचहुँओरा । लिखेसुदर्शनचक्रअथोरा ॥ जिनकेदृगमेंदेखतराजा । सुमिरिपरैमनमेंयदुराजा ॥ २३ ॥
तहँतहँपुनिमज्जनवंदनकरि । चलेविदुरतहँतेअतिसुखभरि ॥जांगलमत्स्यऔरकुरुदेशन।अरुसौवीरसुराष्ट्रसुवेशन ॥
विचरतविचरतविदुरसुजाना। मथुराकोपुनिकियेपयाना ॥ तहँभागवतउद्धवहिदेख्यो।आनँदअवधआशुउरलेख्यो॥
बुधवरश्रीयदुपतिकोप्यारो । शिष्यबृहस्पतिनीतिअगारो ॥ मिलेविदुरउद्धवकहँधाई । आनँदांबुधिआंसुबहाई ॥
दोहा-पूँछिकुशलअतिप्रीतिसों, आदरकरिबैठाय । हरिदासनकीकुशलपुनि, पूँछीहर्षबढाय ॥ २५ ॥
सुनिविधिविनयहरनभूभारा । पुरुषप्रधानलियेअवतारा ॥ तेहरिभूकरभारअपारा । कुशलदोउवसुदेवकुमारा ॥
मोदितबसहिंशौरिकेगेहू । निजदासनपरकरतसनेहू ॥ २६ ॥ कुरवंशिनकेजेबहनोई । हैंवसुदेवकुशलमुदमोई ॥
जेभगनिनकोकियोविवाहू ।बहुदाइजदीन्ह्योसउछाहू ॥ २७ ॥ जोयदुवंशिनकटकअधीशा । हैप्रद्युम्नमहारथिईशा ॥
यदुपतिकोपाटवीकुमारा । एकहित्रिभुवनजीतनहारा ॥ रुक्मिणिजेहिविप्रनपदपूजी । पायोपुत्रआशसबपूजी ॥
दोहा-जेहिसन्मुखसुरअसुरनृप, महारथीवरजोर । बाणधारधावतधुवै, धधकजरैचहुँओर ॥
सोकुशलीहैकृष्णकुमारा । मोसनउद्धवकरहुउचारा॥२८॥भोजदशार्हवृष्णि यदुवंशी । तिनकोनायकजगतप्रशंसी॥
जाहिकृष्णअभिषेकहिकीन्हें । देवराजजाकोबलदीन्हें ॥ ऐसोउग्रसेनमहराजा । कुशलअहैंसबसहितसमाजा ॥२९॥
अबकहुजाम्बवतीसुतकेरी । जापरमेरीप्रीतिघनेरी ॥ स्वामिकार्तिककोअवतारा । जेहिसमसुंदरमैंननिहारा ॥
सांबनामजाकोजगमाहीं । महारथिनमहँश्रेष्ठसदाहीं॥३०॥अबकहुकुशलसात्यकीकेरी। जाहिकृष्णपरप्रीतिघनेरी॥
दोहा-धनुविद्याजोपार्थसों, पढ्योमहारणधीर । बडोमुसाहिबकृष्णको, दायकअरिउरपीर ॥
सदाकरैयदुपतिसेवकाई।योगिनदुर्लभसोगतिपाई॥३१॥अबकहुकुशलश्वफलकतनयकी।नामअक्रूरजासुमतिनयकी
हरिपदचिह्नितजोसुखभरणी।लोट्योलाजछोंडिव्रजधरणी॥कृष्णप्रेमरसमगनमहाना।रह्योनजाकोतनमनभाना ३२ ॥
अबकहुकुशलदेवकीकेरी। जेहिसमद्वितियभागनहिंहेरी॥ परब्रह्मजोजन्योकुमारा। वेदत्रयिजेहिमखविस्तारा॥३३॥
अबअनिरुद्धकुशलकहुप्यारे।यदुवंशिनमहँजेबलवारे॥जेशास्त्रनकेकारणअहहीं।मनकेनायकजेहिश्रुतिकहहीं॥३४॥
दोहा-चारुदेष्णगदआदिकी, उद्धवकुशलबखान । जिनकोअतिप्यारेसदा, रहहिंकृष्णभगवान ॥ ३५ ॥
अबकहुधर्मराजकुशलाई। विजयजुहरिप्रतापतेपाई ॥ अर्जुनभुजबलरहतनिशंका । लोकनमेंजेहिओजअतंका ॥
पालतसदाधर्ममर्यादा । देतसाधुविप्रनअहलादा ॥ दुर्योधनजेहिसभानिहारी । भूल्योभूपतिभोभ्रमभारी ॥
सातहुद्वीपजासुभोशासन।सुरउअसुरकरसकेविनाशन॥३६॥अबकहुभीमसेनकुशलाता।जोसबंधुकुरुपतिहिनिपाता
गदागहेविचरतरणमाहीं।चरणघातमहिसकिलतजाहीं॥३७॥अबभाषहुअर्जुनकुशलाता।धनुगांडीवजासुविख्याता॥
दोहा-दीन्ह्योशत्रुनमुंडसों, खंडखंडमहिछाय । शिवजाकेशरजालछपि, तोषितभयेवनाय ॥ ३८ ॥
नकुलऔरसहदेवको, उद्धवभाषहुक्षेम । जिनपैनिजसुततेअधिक, कुंतीकीन्होंप्रेम ॥
धर्मभूपअर्जुनअरुभीमा । तिनपैकरहिंनेहकीसीमा ॥ जैसेपलकनिरंतरपरिकै । राखहिअक्षनरक्षणकरिकै ॥
जोकरियुद्धसुयोधनपाहीं।लियेभागयशयुतजगमाहीं॥ जिमिखगेशवासवमदमोरी।लीन्ह्योसुधाकलशबरजोरी॥३९॥
अबकहुउद्धवपृथाभलाई । निजपतिसुतहितजीवतमाई ॥ जाकोकंतपांडुमहराजा । छोंडिसकलनिजवीरसमाजा ॥
आपुअकेलद्वितियधनुकरलै।जीतिचारिदिशिकियरिपुपरलै ४० जेठबंधुनृपअंधहमारा।जोनिजपुरतेहमहिंनिकारा

दोहा-पांडुसुननसोंद्रोहकरि, निजपापिनसुतनेह । अवशिनरकमहँसोगिरत, यहम्वहिंअधिकसँदेह ॥ ४१ ॥
मनुजसरिसलीलाहरिकरहीं । मूढनकेमनमेंभ्रमभरहीं ॥ हमउद्धवलहितासुप्रसादा । विचरहिंवसुधाविगतविषादा ॥
पैनहिंजाननहमकहँकोई । रूपछिपायेरहनभलोई ॥ ४२ ॥ धनअरुविद्याकुलमदवारे । जेधरणीकेनृपतिअपारे ॥
तिनकोहठहिहटावनहेतू । यदुपतिकीन्हचोसंगरनेतू ॥ जबहस्तिनपुरमहँप्रभुआये । दुर्योधनहिंबहुतसमुझाये ॥
शकुनिदुशासनकर्णहुसंगा । दुर्योधनकियमंत्रप्रसंगा ॥ कृष्णचहहिंकुरुकुलकरनासा । देहिंपांडवनकहँविश्वासा ॥
दोहा-इनहींकेवशपांडुसुत, कह्योमानइनकेर । हमसोंकरतविरोधवहु, राखतगर्वधनेर ॥
तातेभलकृष्णइतआये । दैवसबैविधियोगलगाये ॥ जोअबआजकृष्णइतआवैं । तौअबकैसहुजाननपावैं ॥
कैदकोठरीमहँकरिदेहू । तौअबमिटहिसकलसंदेहू ॥ दुर्योधनअसगुणिसुखपायो । यदुपतिकहँनिजसभाबोलायो ॥
यहअनुसरसात्यकिकछुपायो । तवकृतवर्महिंवचनसुनायो॥कर्णादिकनजोरिकुरुनाहा । आशुकरीअसबैठिसलाहा ॥
वेगिवोलायकृष्णकहँलेहू । कैदकोठरीमहँकरिदेहू ॥ तातेचलहुसजगसुनिआजू । रैहैंजहँ रैहैंयदुराजू ॥
दोहा-कुरुपतिकोशासनसुनत, रथचढिवेगिगोविंद॥चलतभयेदरबारको, आनँदपूरणइंद ॥
जबप्रभुगयेनिकटदरवाजा । कहीसवैद्वारपनसमाजा ॥ आजुमंत्रएकांतहिहोई । जाहिंकृष्णतहँऔरनकोई ॥
द्वारपवचनसुनतगिरिधारी । चलेअकेलेधनुशरधारी ॥ तहँकृतवर्मासात्यकिदोऊ । चलेसकलयदुपतिसँगसोऊ ॥
द्वारपतिनकोरोंकनलागे । तबद्वउपेलिभयेबढिआगे॥तबप्रभुसात्यकिकरगहिलीन्हो॥कुरुपतिसभागमनद्रुतकीन्हो॥
शकुनिसुयोधनकर्णदुशासन । बैठेसबरेभरेहुलासन॥ उठिप्रभुकहँदियशासनआई । तबसात्यकिदियहरिहिसुनाई ॥
दोहा-आजुरावरेकोइहाँ, कैदकरनकेहेत । कियेसुयोधननेतहै, भाइनसचिवसमेत ॥
तबगोविंदमंदमुसकाई । कह्योनयहडरमोउरआई ॥ हैकौरवनजोरअसनाहीं । मोहिंपकरिराखहिंगृहमाहीं ॥
पुनिवोलेयदुपतिकुरुपतिसों । कहहुमंत्रसबनिजानिजमतिसों॥होविचारसोसबकरिलीजै॥अबविलंबकेहिकारणकीजे ॥
हींसाउचितपांडवनदीजै । जामेंकौरवकुलनहिंछीजै ॥ दीन्हेअनदीन्हेहठिलैहैं । पांडवतुमहिंननैकुडेरैहैं ॥
परचोजेहमकहँउचितनिहारी।कहहिंसोकुरुकुलकुशलविचारी॥यहिविधिबहुविधियदुपतिभाषे|सुनिदुर्योधनमनअतिमाषे
दोहा-विश्वभरणकेधरणकी, कीन्हींकुमतिउपाय । सभामध्यतवकृष्णदिय, वपुविराटदरशाय ॥
लखिदुर्योधनहँस्योठठाई । कह्योइंद्रजालीयदुराई ॥ चहतजुप्रभुतौतेहिक्षणमाहीं । नाशतकुरुकुलसंशयनाहीं ॥
पैतेहिक्षणकुरुकुलकेमारे । बचतऔरनृपशूद्रअपारे ॥ तातेतहँते उठिगिरिधारी । गेविराटपुरयहीविचारी ॥ ४३ ॥
करनसकलदुष्टनसंहारा । लेहिंअजन्महुँहरिअवतारा ॥ सबलोकनकोशिक्षणहेतू । करहिंकर्मसबधर्मनिकेतू ॥४४॥
निजशरणागतलोकनपालन । करिकैकृपाकरहिंप्रभुपालन ॥ ऐसेश्रीवसुदेवलालकी । सखाकथाकहुमोदमालकी ॥
दोहा-कोटिनतीरथकीसरिस, जाकीकीरतिगाय । पामरपावनहोतहठि, अतिअघओघजराय ॥ ४ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबाँधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा-
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दा-
म्बुनिधौतृतीयस्कंधेप्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

श्रीशुकउवाच ।

दोहा-श्रीउद्धवभागवतसों, विदुरमहामतिमान । पूँछ्योजबयहिभाँतिसों, करिउरप्रेममहान ॥
तबसुधिआयगईहरिकेरी । बहीदृगनजलधारघनेरी ॥ रहीनतेहिसुधिबुधितनुमाहीं । मुखतेबातकहतकछुनाहीं ॥
हरिकोविरहअंबुनिधिबाढ़ो । तिनमेंलग्योप्रेमअतिगाढ़ो ॥ १ ॥ उद्धवपंचवर्षकेजबहीं । रहेमातुगृहमेंसुततबहीं ॥
हरिलीलाकरखेलहिंखेला । हरिपूजहिंरहिसुखितअकेला ॥ करनकलेऊहिततेहिमाता । रहीबोलावतजबकहितांता ॥

तबहरिपदमहँनेहलगाई । देनगेहभोजनबिसराई ॥ २ ॥ सोउद्धवकोहरिसेवकाई । हरिसंगहिमहँगयाबुढ़ाई ॥

दोहा—अतिप्यारेजिनकेसखा, रहेएकगृहमाहिं । तिनबिनतिनकीध्यानसुनि, कैसेनहिंबिलखाहिं ॥ ३ ॥

उद्धवनहींदंडलगिदेई । रह्योमौनहरिगतिमतिमोई ॥ ४ ॥ पुनिजसनसकेधीरजधारी । पुलकितअंगवारिदृगढारी ॥ ५ ॥
हरिस्वरूपतेमनहिंउतारी । आँखिपोंछिअसगिराउचारी ॥ ६ ॥

उद्धवउवाच ।

यदुपतिभानुअस्तजबभयऊ । सबहिंकालअजगरगिलिलयऊ ॥ निनकीकुशलकौनहमकहहीं । बारबारमनशोचतअहहीं
पैजगकेजेजनमतिमंदा । यकसँगरहिनहिंगुण्योगोविंदा ॥ जिमिक्षीरधिकेजंतुसदाहीं । जलचरसमजानहिंशशिकाहीं ॥ ८ ॥
यदुवंशिहुसबकृष्णप्रभाऊ । यद्यपिजानहिंहेकुरुराऊ ॥

दोहा—एकसंगनिवसतरहे, लखेविचित्रचरित्र । परब्रह्मनहिंगुणतभे, मानिसखाअहमित्र ॥ ९ ॥

पैजेपरब्रह्मपहिंचाने । कोऊकहेनभ्रमउरआने ॥ १० ॥ कियेपूर्वहमसबतपथोरा । लखेनदृगभरिनंदकिशोरा ॥
आँखिनकीअभिलापहमारी । लियेगयेनिजसंगमुरारी ॥ यदपिजन्मभरिकृष्णदिखाने । दर्शकरतनहिंनेकुअघाने ॥ ११ ॥
सुखमामंदिरसुंदररूपा । भूपणभूपितअंगअनूपा ॥ ऐसोनिजवपुजगप्रगटाई । निजमायाबलदियोदिखाई ॥
यदुपतिहूनिजवरवपुलेखी । मोहितरहेविलोकिविशेखी ॥ ऐसोवपुजाकेदृगआवै । कहोनयहतेहिमोहवढ़ावै ॥ १२ ॥

दोहा—राजसूयनृपधर्मकी, होतभईजेहिकाल । तबत्रिभुवनवासीसकल, आयेरूपरसाल ॥

यदुपतिदर्शनपावतदृगमें । कहतभयेधनिधनिहमजगमें ॥ जेतीधाताकीनिपुणाई । हरिअँगमेंइकथलहिंदेखाई ॥ १३ ॥
जेप्रभुकीअतिशयसुखदानी । युतअनुरागमंदमुसुक्यानी ॥ पुनितिरछौंचितवनियुतचारू । बोलनिसुधासरिससुखसारू
पुनिकरिहरिब्रजरासविलासू । जिनहिंमानदियसहितहुलासू ॥ ऐसेप्रेमभरीब्रजनारी । ब्रजतेहरिकोचलतनिहारी ॥
हरिकेसँगदृगपठैदुखारी । ठगीरहींसुधिबुधिहुबिसारी ॥ १४ ॥ दुष्टनतेलहिदुखनिजदासन । करिकैकृपाकृष्णअरिनाशन ॥

दोहा—यदिअजहैंपैजननहित, लियोजन्मजगदीश । खेलखुशीसेखूबखुलि, कियेअखिलखलखीश ॥ १५ ॥

समुझिमनहिंयहआवतहांसी । जेकोटिनब्रह्मांडविलासी ॥ तेप्रभुश्रीवसुदेवअगारा । मनुजसरिसलीन्हेंअवतारा ॥
ब्रजमेंवसिकियविविधविहारा । कियोअनेकनखलनसँहारा ॥ सोजनुकालयमनभयपाई । नरसमवसेद्वारकहिजाई ॥ १६ ॥
पुनियहनिरखिमोहिंदुखलागा । सोअबसुनहुविदुरबड़भागा ॥ कंसहिमारिमातुपितुनेरे । आयजोरिकरअसप्रभुटेरे ॥
क्षमहुजनकजननीअपराधा । हमपैकंसकरीअतिबाधा ॥ तातेआपनिकटनहिंआये । असकहिबारबारशिरनाये ॥ १७ ॥

दोहा—जोप्रभुभ्रुकुटिविलासते, हर्‍योभूमिकरभार । तेहिप्रभुपदपंकजरजहि, कोभूलैमतिवार ॥ १८ ॥

धर्मराजकेराजसूयमहँ । आपहुलख्योपरमकौतुकतहँ ॥ कियोजन्मभरिवैरविशाला । ऐसोदुष्टभूपशिशुपाला ॥
ताहिमारिगतिदियोमुरारी । योगिनदुर्लभपरतनिहारी ॥ ऐसेप्रभुविनयहिजगमाहीं । हायजियबकाअनुचितनाहीं ॥
सहैकौनहरिविरहविशाला । पावनहितजगकोजंजाला ॥ १९ ॥ भारतसंगरमहँमतिवाना । यदुपतिमुखसुखमाकरिपाना ॥
भीष्मादिकभागवतप्रधाना । हरिपुरगेलगिपारथवाना ॥ मृषाभयेहमहरिअनुरागी । हरिविछुरततनुदियेनत्यागी ॥ २० ॥

दोहा—जाकेसमनहिंअधिककहुँ, निजपरिपूरणकाम । शिवविरंचिशक्रादिसुर, भेंटदेहिंचलिधाम ॥

निजशिरलहिप्रभुपदनखजोती । मुकुटमणिनद्युतिकरहिंउदोती ॥ हाजिररहहिंहजूरहिमाहीं । प्रभुभ्रुकुटीरुखराखिसदाहीं
तेप्रभुसभासुधर्मामाहीं । उग्रसेनढिगखड़ेसदाहीं ॥ कहहिंवचनअसमध्यसमाजा । सुनियेउग्रसेनमहराजा ॥
देवराजतुवदर्शनहेतू । आयोवलिलैआपनिकेतू ॥ तापरनाथकृपाअबकीजै । नेकुनिहारिमानवहुदीजे ॥ २२ ॥
अपनेप्रभुकोआनँदराशी । यहचरित्रलखिआवतहांसी ॥ यदपिज्ञानप्रभुदियनहिंऊनो । तद्यपितिनविनजगमोहिंसूनो ॥

दोहा—यहअचरजदेखहुविदुर, कालकूटकुचधारि । पयप्यावनमिसिपूतना, बनिकैसुंदरनारि ॥

श्रीनँदनंदनिकंदनहेतू । गेअनंदभरनंदनिकेतू ॥ पययुततासुप्राणकरिपाना । दईमातुगतिकृपानिधाना ॥

अमप्रभुनाजियदुनायककाहीं।कहौकौनकेशरणहिजाहीं २३॥सोप्रभुगयेधामअतिरामा।हायजियतअबहमकेहिकामा
एमीसदानाथकीरीती । करहिंअसुरहुनपरअतिप्रीती ॥ कोपितदैत्ययुद्धकहँआवैं । गरुडचढेहरिकहँलखिधावैं ॥
निनहिंमारिनिर्वाणनयदुराई । अपनेपुरकहँदहिंपठाई ॥ याहीहितदैत्यहुनकाहीं । हममानतभागवतसदाहीं ॥ २४ ॥
दोहा–भूमिभारकेहरणहित, सुनिविधिविनयमुरारि । श्रीवसुदेवहिकंसकृत, कठिनकलेशविचारि ॥
कारागारदेवकिहिजानी । प्रगटभयेप्रभुशारँगपानी ॥ २५ ॥ कंसहितबवसुदेवडेराई । दियोनंदगृहसुतपहुँचाई ॥
ग्यारहवर्षबसेब्रजमाहीं।बलयुतकरिबहुचरिततहांहीं ॥२६॥ बछरनकोकहुँनाथचरावैं । ग्वालबालयुतअतिमुदपावैं॥
कालिंदीकेकूलनकुंजन । कूजहिंजहँकोकिलमनरंजन ॥ नवललितलतिकालहराहीं । तहँविहरहिंनँदनंदसदाहीं२७
कहूँरूसिगेवहिजननीसों । कहूँहँसहिंसुंदरसजनीसों ॥ कहुँचलिमुरिमुरिताकतजाहीं । बालसिंहसमनाथसुहाहीं २८
दोहा–गोवर्धनगिरिकेनिकट, कबहुँचरावतगाथ । ग्वालबालकेमनहरत, मधुरीवेणुबजाय ॥
यहिविधिकरतमनोहरलीला । देखहिंसुखितसंतशुभशीला॥ब्रजवासिनकोआनँदरासी।बकसहिंविपुलविकुंठविलासी॥
वलीदैत्यजेकंसपठाये । नानारूपधारिब्रजआये ॥ तिनहिंहन्योयदुनंदनवेला । जिमिबालकखेलतबहुखेला ॥ ३० ॥
कालीअहिकालीदहमाहीं।अनलसरिसगुणिगरलतहांहीं॥कूदिकाह्लफणनाचिनिकासी।कियरमणकद्वीपहिकोवासी ॥
तेहिविषवशमृतनगौवनग्वालन।दियजियाययशुदाकेलालन ।विनविषयमुनाजलतिनप्यायो।नंदयशोमतिकोसुखछायो
दोहा–पुनिवासवमखजानिकै, नंदहिबहुससुझाय । करवायोगिरिराजको, पूजनदानदिवाय ॥ ३२ ॥
तबवासवकियकोपप्रचंडा । वर्षायोजलधारअखंडा ॥ दुखितगोपगौवनब्रजवासी । जानिनाथब्रजकुंजविलासी ॥
तहँतुरंतछत्राकसमाना । गिरिवरधरिकरपरभगवाना ॥ ब्रजरक्षणकीन्ह्योगिरिधारी । दियवासवकोगर्वउतारी ॥
सुरभीतवअभिषेकहिकीन्ह्यो । प्रभुहिगोविंदनामकहिदीन्ह्यो॥वरुणदूतनंदहिहरिलीन्हे।वरुणहिंजायदर्शप्रभुदीन्हे ॥
वरुणलोकतेनंदहिल्याये । लखिब्रजवासीविस्मयछाये ॥ तिनकोजानिनाथनिजदासा । दर्शायोवैकुंठविलासा॥३३॥
दोहा–शरदनिशाशशिकरकलित, निरखिकुंजमहँजाय । मनमोहनमनमोहनी, मुरलीमधुरबजाय॥
बोलिवेगिब्रजवधुनको, गावतरुचिरारास । मंडितमंडलसखिनविच, विरचेविविधविलास ॥ ३४ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेव
कृतेआनंदांबुनिधौतृतीयस्कंधेद्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

उद्धवउवाच ।

दोहा–पुनिअक्रूरसँगमधुपुरी, आयरामयुतनाथ । रंगभूमिमहँजायकै, पितुकहँकरनसनाथ ॥
कूदितुंगमंचहिमहँजाई । कंसकेशगहिभूमिगिराई ॥ तेहिबहुवारभूमिघिसलाई । मारिताहिदियधामपठाई ॥ १ ॥
पुनिसांदीपिनगुरुगृहजाई । चौंसठकलापढीयदुराई॥तेहिमृतसुतगुरुदक्षिणदीन्ह्यो । जरासंधदलभंजनकीन्ह्यो ॥२ ॥
पुनिरुक्मिणिकेव्याहनहेतू।गेशिशुपालादिकमतिसेतू॥पदधरसबतिनकेशिरमाहीं।हरिलीन्ह्योहरिरुक्मिणिकाहीं ३॥
पुनिप्रभुअवधनगरमहँजाई । नाथ्योसातवृषभयदुराई ॥ नग्नजितीकोकियोविवाहा । लह्योनग्नजितपरमउछाहा ॥
दोहा–सबभूपतिनहिंसहिसकै, कियेकुमतिमगरुद्ध । तिनहिंमारिबहुशस्त्रप्रभु, जीतिलियेकरियुद्ध ॥ ४ ॥
जबनरकासुरअतिबलभीनो । अदितिकर्णकुंडलहरिलीनो॥तबप्रभुभौमासुरहिसँहारी । गयेनाथसुरपुरहिसिधारी ॥
मातुअदितिकहँकुंडलदैकै । सतभामाकीरुखतहँज्वैकै ॥ पारिजातलैगयेउखारी । देवराजकोगर्वउतारी ॥ ५ ॥
सोरहसहसएकशतनारी । रहींभौमकेभवनमँझारी ॥ भूमिविनयसुनितहाँपधारी ॥ ६ ॥ सोरहसहसबहुनारिनिहारी॥
तिनअभिलाषजानियदुराई । तुरतदियेद्वारकापठाई ॥ प्राग्ज्योतिषपुरकेरअधीशा।कीन्ह्योभगदत्तहिजगदीशा॥७॥
दोहा–पुनिद्वारकापधारिकै, तेसबकीसबव्याहि । षोडशसहसहुसदनमहँ, बसेएकसँगमाहिं ॥ ८ ॥

तिनसवरानिनकेमनिमाना । भेदशदशसुतगर्थाप्रधाना ॥९॥ कालयवनमागधअरुशाल्व । दंतवक्रआदिकमहिपाल्व॥
शंवरवल्वलद्विविदहुवाना । मुरनिकुंभदानववलवाना ॥ हरिसोंकीन्हेवैरघनेरे । कोउकवहुँकियदुपुरघेरे ॥
तिनमहँवड़निजहाथनमारयो।वहुकहँभूपनहाथसँहारयो॥१०॥वहुकहँरामप्रद्युम्नपार्थकर।हतवायेवैरिनकहँयदुवर ॥
पुनिजवचभूपमहिमाहीं । तिनदलचलतशैलखसिजाहीं ॥ तेसवकुरुक्षेत्रमहँजाई । कियकौरवपांडवनसहाई ॥११॥

दोहा-तिनसवहींकोनाशकिय, प्रगटप्रभावअपार । पारथसारथिह्वैहरी, हरयोभूमिकोभार ॥ १२ ॥

कर्णदुशासनमंत्रअधीना । भयोसुयोधनआयुपहीना ॥ भीमगदामारितेहिघोरा । कुरुपतिजानुयुद्धमहँतोरा ॥
यदपिअठारहअक्षौहिणिदल।हतवाईनहिंभेप्रसन्नभल॥१३॥भीषमभीमपार्थद्विजद्रोनू । कर्णयुधिष्ठिरादिवलभौनू ॥
इनकरकरिवहुभटसंहारा।तदपिजानियदुकुलमहिभारा॥१४॥तिनकोइहिविधिनाशविचारो।मदपानहितकर्योविस्तारो
औरनकोउइनर्जीतनलायक।जहँप्रद्युम्नआदिभटनायक॥१५॥असविचारियदुपतिनृपधर्मे । दियोराजसंशुननृपधर्मैं॥

दोहा-संतरीतिदर्शायप्रभु, सुहृदनआनँददीन ॥१६॥ द्रौणिअस्त्रतेउत्तरा, गर्भहिरक्षणकीन ॥ १७ ॥

धर्मराजकहँपुनि यदुराई । तीनअश्वमखदियोकराई ॥ सोऊहरिपदअतिअनुरागा।पाल्योप्रजनभूपवड़भागा॥१८॥
पुनिद्वारकैजाययदुराई ।वसतभयेदासनसुखदाई ॥ सकललोककेशिक्षनहेतू । धर्मकर्मकियकृपानिकेतू ॥ १९ ॥
सुधासरिस बोलतमृदुवानी । करिकटाक्षअतिशयसुखदानी॥दरशावतनिजरूपसोहावन।करतचरितपावनजगपावन
उभयलोककहँआनँददीन्ह्यो । जगसहयदुकुलकहँवरदीन्ह्यो ॥ सोरहसहससुंदरीनारी । तिनमहँयकसँगरमेविहारी॥

दोहा-पैअतिअनुरतनहिंभये, सवमेंसमभगवान । यहिविधिवीत्योकालवहु, तवविरागअधिकान ॥ २२ ॥

जेहरिकेहुकेनाहिंअधीने । अहैंस्वतंत्रसदासुखभीने ॥ तिनहरिकहँभोगतसुखभोगू । भयोविरागकेरसंयोगू ॥
तौपुनिकाजेहरिकेदासा । तजैंविविधविधिभोगविलासा ॥२३॥ एकसमययदुनगरीमाहीं । खेलतरहेकुमारतहाँहीं ॥
कीन्हेंसकलमुनिनसोंहासी।तवसिगरेकोपितवलरासी॥दियोशापअतिघोरकुमारन।प्रगट्योमूशलयदुकुलमारन२४॥
तवकछुमासनतेयदुवंसी । गयेप्रभासक्षेत्रअरिध्वंसी॥२५॥ तहँमज्जनकरिपितरनतरपे। देवनकहँवहु

दोहा-विप्रनदीन्हींगायवहु, शीलस्वरूपसुधारि ॥ २६ ॥ हेमरजतशय्यावसन, अरुकन्यासुकुमारि ॥
रथमातंगतुरंगवहु, धराजीविकाहेत ॥ २७ ॥ अन्नस्वादयुतचारिविधि, दियोद्विजनसुखदेत ॥
कृष्णप्रसन्नहिहोनहित, दियोदानसुखधाम । पुनियदुवंशीकरतभे, गोविप्रनपरणाम ॥ २८ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेतृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

उद्धव उवाच।

दोहा-पुनिअज्ञालैद्विजनसों, यदुवंशीवलवान । बहुविधिभोजनकरिसबै, कियेवारुणीपान ॥

सकलसमाजसिंधुतटजाई । बैठेतहँदरबारलगाई ॥ तहँनर्तकनाचनबहुलागे । गायकगावतभेअनुरागे ॥
यहिविधिलागिगयोदरबारा । बैठेसबयदुवंशकुमारा ॥ यहिविधितीनयामनिशिबीती । करतहाससंयुतनृपप्रीती ॥
ज्येष्ठनिकीन्हेआसवपाना । अनुचितउचितनमोहिंलखाना ॥ उठेसकलतहँमज्जनहेतू । चलेसमिटिसबवरुणनिकेतू॥
तहँजलकेलिकरनपुनिलागे । वीरपरस्परअतिअनुरागे॥तहँकृतवर्मासात्यकिओरा । सींचिसलिलकहवचनकठोरा॥

दोहा-दगादारतैंसात्यकी, कायरकपटीकूर । भूरिश्रवकोयुद्धमें, मारयोकरिछलभूर ॥

रहोसोध्यानकरतजगदीशा।तबतैंकाटिलियोतेहिशीशा॥तबसात्यकिकहकोपितवानी।रेकृतवर्माअतिअभिमानी ॥
शूरधर्म तैंजानतनाहीं । महाअधर्मकियोनिशिमाहीं ॥ सोवतपांडवपुत्रनकाहीं । द्रोणसुवनकृपलैसँगमाहीं ॥

नवकोशीवतमेंवधकीन्हचो । क्षत्रियधर्मनेकनहिंचीन्हचो ॥ मोकोहोतपरमसंतापा । तेरोवदनविलोकेपापा ॥
नवकृतवर्माकह्योरिसाई । सात्यकितोरिकुमतिनहिंजाई ॥ कसनहिंबोलतवचनसम्हारी । अबतौतोहिंडारतोमारी ॥

दोहा–पैकछुकरतोकृष्णकी, कानिभीतिउरआनि । शीशकाटिहौंतोरअब, जोकहिहैअसबानि ॥

सुनतसात्यकीकोपहिछायो । कृतवर्महिकरवालचलायो ॥ कह्योशीशकृतवर्माकेरो । तबप्रद्युम्नभोकुपितघनेरो ॥
हन्योसात्यकिहिंनिगप्रचंडा । तुरतहिताततुभोयुगखंडा ॥ सांवसात्यकीकोवधदेखी । हन्योप्रद्युम्नहिंखड्गविशेषी ॥
मदनकदनअनिरुद्धनिहारी । हन्योधायसांबहितरवारी ॥ सांबहिगिरतदेखिगदधायो । अनिरुद्धहिहनिगदागिरायो॥
तहाँनिशठउल्मुकदोउभाई । गदहिमारिअसिदियोगिराई॥चारुदेष्णआदिकहरिनंदन।कीन्हेउल्मुकनिशठनिकंदन॥

दोहा–यहिविधियदुवंशीतहां, देखिघोरघमसान । आधेआधेहोगये, यकयकदिशिबलवान ॥

रथनतुरंगमतंगनचढिकै । भिरेएकएकनसोंबढिकै ॥ भयोतहाँअतिसंगरघोरा । माच्योमहाभयावनशोरा ॥
तहांरामअरुश्रीयदुराई । देखतहीकुलनाशलराई ॥ दौरेद्रुतहिवचावनहेतू । खड़ेभयेमधिकृपानिकेतू ॥
लखिप्रद्युम्नआदिवधघोरा । रामकृष्णकियकोपकठोरा ॥ तहँयदुवंशीआसवछाके । मधिमेंरामकृष्णकहँताके ॥
धायधायदुहुँदिशितेवीरा । मारेहरिरामहिंचहुँतीरा । तबहरिकह्योरामसोंवानी । अबनबचावहुहेबलखानी ॥
लेहलमूशलकरहुसँहारा । वेगिउतारहुभूकरभारा ॥

दोहा–इतशारंगटँकोरके, छोंडिशरनकीधार । यदुपतितबलागेकरन, यदुवंशिनसंहार ॥

उतैरामहलमूशलधारी । मारतभयेकोपकरभारी ॥ रविअथवतअस्ताचलमाहीं । यदुकुलमेंरहिगोकोउनाहीं ॥
रामकृष्णसवकहँहनिडारे । यहिविधिभूकरभारउतारे ॥ वंशसघटिजिमिलागतिआगी । काननजारतज्वालहिजागी ॥
भयोतैसहीयदुकुलनासा । विदुरकहतनहिंहोतहुलासा२ यदुपतिनिजमायागतिजानी ।आयसरस्वतितटसुखमानी॥
बैठेपीपरतरुतरजाई । रामहुँगेतहँसिंधुसमाई ॥ ३ ॥ कहौजुअसतुमकेहिविधिबाचे । तौअबसुनहुवचनममसाचे ॥
जबप्रभुचलननगरतेलागे । तबमोकहँबोलायसुखपागे ॥

दोहा–ज्ञानभक्तिउपदेशकरि, मोकोदियोनिदेश । बदरीवनकहँजाहुतुम, करिकैतहँतपवेश ॥

मेरेधामआशुहीआवहु । मोहममत्वनकछुउरलावहु ॥ मैंचाहहुँयदुकुलसंहारा । यहीरह्योअबभूकरभारा ॥ ४ ॥
मैंतबसुनिकैप्रभुकवानी । मनमहँदुसहविरहउरआनी ॥ हरिप्रथमहिंगेक्षेत्रप्रभासू । मैंहूँपीछेविगतहुलासू ॥
चलोगयोंतहँभोकुलनासू ॥५॥ खोजतखोजतकरतप्रयासू । बैठेतहँअकेलयदुराई ॥ चारिबाहुसुंदरसुखदाई ॥६॥
पीतांबरपहिरेतनुश्यामा।शांतअरुणलोचनसुखधामा॥७वामउरूपरदक्षिणपदधरि।चलदलतरुउठिगेअतिसुखभरि८

दोहा–तहँमैत्रेयमुनीशसह, व्याससखामतिवान । विचरतविचरतजगतमहँ, आयेजहँभगवान ॥ ९ ॥

गहुँतहाँआयशिरनाई । बैठ्योहरिमुखमहँटकलाई ॥ मित्रासुतहुप्रभुहिशिरनायो । चरणविलोकिमहासुखछायो ॥
मुनिहिसुनावततहँयदुराई । कह्योमोहिंकरिकृपामहाई ॥ १० ॥

श्रीभगवानुवाच ।

तुम्हरेमनकीगतिहमजाने । तातेदुर्लभज्ञानबखाने ॥ रहेप्रथमवसुउद्धवआपू । वसुमुखमहँकियमोहितआपू ॥
तातेमैंप्रसन्नअतिअहहूँ । निजमायकज्ञानहिअबकहहूँ ॥११॥अंतजन्मयहअहैउदारो। अबनहिंहोइहिजन्मतिहारो ॥
यहीजन्ममहँतुममतिमाना । लह्योअनुग्रहमोरिमहाना ॥

दोहा–परमलोकयात्राकरत, अतिशयनेहबढाय । बुद्धिवृद्धिउद्धवइतै, मोकहँदेख्योआय ॥ १२ ॥

आदिसृष्टिमहँजोकरतारै । जौनज्ञानमैंकियोउचारै॥जाहिभक्तभागवतबखाने ॥१३॥ तुमकहँदियोप्रथमसोइज्ञाने ॥
ताकोकरिकरिविमलविचारा।उद्धवतजहुदुखदसंसारा ॥यहिविधिजबकरिकृपामहानी । मोहिंकह्योप्रभुशारँगपानी ॥
तनुरोमांचितगरभरिआयो । मैंतबपाणिजोरिशिरनायो॥१४॥सेवतजोपदकमलतिहारो ।दुर्लभतेहिनपदारथचारो ॥

तद्यपिमोमततुवपदलागी।हौंमैंचारिपदारथत्यागी ॥ १५ ॥ तुवअजन्मकरिजन्मनहारे । अरुअकर्मकृतकर्मअपारे ॥
कालरूपतुवअरितेभागव । आत्मारामहिंतियरसगागव ॥

दोहा–यहचरित्रलखिरावरो, हेयदुपतिजगदीश । मनमेंअतिशयभरिभ्रमै, कौतुकगनहिंमुनीश ॥ १६ ॥

पुनिसबजगकेअंतर्यामी । जनकारणयदुपतिबहुनामी ॥ ह्वैअजानसेमोहिंबोलाई।पूछिमंत्रमोहिंदियोबड़ाई ॥ १७ ॥
जौनदियोब्रह्माकोज्ञाना । सोपुनिमोसोंकरहुवखाना ॥ जातेमोकहँकबहुँनभूलै । लहौंनभवनिधिशोकअतूलै ॥१८॥
विनयकियोमैंजबयहिभाँती।तबहरिकमलनयनअबवाती॥मोकहँपुनिकैज्ञानवखान्यो।अपनोदीनदासमोहिंजान्यो ॥
तबमैंचरणकमलप्रभुध्याई।भगवतभक्तिप्रमोदहिपाई ॥ यदुपतिपदपंकजशिरनाई।तुमहिंलख्योंमैंअत्रइतआई।२०॥
सुनहुविदुरक्षणभरिजगमाहीं । यदुपतिविरहजातसहिनाहीं ॥

दोहा–मैंबदरीवनजातहौं ॥ २१ ॥ नरनारायणयत्र । करततपस्याजगतके, मंगलहितएकत्र ॥ २२ ॥

श्रीशुकउवाच।

उद्धवमुखतेसुनिविदुर, निजबंधुनकोनाश । भयोशोकमेंद्योतुरत, करिकैज्ञानप्रकाश ॥ २३ ॥

पुनिभागवतउद्धवहिकाहीं।गवनतदेखिपरेहरिनाहीं ॥ बोलेवचनमानिविश्वासू । सुनियेउद्धवयदुपतिदासू ॥ २४ ॥

विदुरउवाच।

जौनज्ञानतुमकोहरिदीन्ह्यो।औरनसोंप्रकाशनहिंकीन्ह्यो॥सोतुमसिगरोमोहिंसुनावहु । मोहिंकृतारथअवशिबनावहु॥
निजदासनकेहितहरिदासा । विचरहिंजगमहँदेतहुलासा॥ २५ ॥ उद्धवसुनतविदुरकीवानी।छत्तासोंबोलेविज्ञानी॥

उद्धवउवाच।

मोहिंनक्षणभरकोअवकाशा।विदुरसुनहुविनरमानिवाशा ॥ कोअबसुनहिसुनावहितावा।म्वहिंशरीरकरभारअघाता॥

दोहा–पैहरिजबमोकोदियो, अनुपमयहउपदेश । तबमित्रासुतमुनिरहे, कृष्णनिकटतिहिंदेश ॥

तबतिनसोंअसकह्योरमेशा । दियहुविदुरकहँतुमउपदेशा ॥ तातेमित्रासुतढिगजाई।विदुरज्ञानसुनियेसुखदाई।२६॥

श्रीशुकउवाच।

यहिविधिकहतकृष्णगुणगाथा। पावतमोदविदुरकेसाथा ॥ यामिनिजातलगीनहिंवारा । बोलेविहँगभयोभिनुसारा ॥
जानिभोरउद्धवमतिमाना।कालिंदीमहँकरिअस्नाना॥बदरीवनकहँतुरतसिधारयो।तहँतेपुनिहरिधामपधारयो ॥२७॥
उद्धवविदुरकथासुनिराजा । कहशुकसोंमधिमुनिनसमाजा ॥

राजोवाच।

जबयदुकुलकोभयोविनाशा । गयेधामनिजरमानिवासा ॥

दोहा–तबयदुकुलकोकेतुसम, यूथपकोसरदार । मंत्रीहरिकोप्रियसखा, मंत्रीबुद्धिउदार ॥

कहहुनाथमोहिंअचरजलाग्यो।उद्धवकाहेतनुनहिंत्याग्यो २८ सुनतपरीक्षितवचनसोहावन।बोलेव्याससुवनजगपावन

श्रीशुकउवाच।

ब्रह्मशापमिसिजबयदुराई । यदुकुलकोदियनाशकराई॥जानचहेतबनिजपुरकाहीं।तबविचारयहकियमनमाहीं॥२९॥
मेरोपदप्रदजोममज्ञाना । होतजोसुनिभागवतपुराना ॥ ताकोयकउद्धवअधिकारी।दूजोनहिंमोहिंपरतनिहारी॥३०॥
सकलभाँतिहैमोहिंसमाना । इंद्रियजितनहिंविषयलोभाना ॥ इनसोंकबहुँआपनोज्ञाना । सोकहिजीवनतारहिनाना॥

दोहा–मेरेपीछेजगतमें, उद्धवरहिकछुकाल । तारहिजगजीवनअगम, करिउपदेशविशाल ॥ ३१ ॥

असविचारियदुपतिभगवाना । उद्धवसोंनितज्ञानवखाना ॥ पैहरिजबनिजधामसिधारे । तबउद्धवहरिसखापियारे ॥
गयेतुरतबदरीवनकाहीं । यदुपतिविरहगयोसहिनाहीं ॥ रहतमीनजलहीननराजा । रहतनततुविनजियसुखसाजा ॥

बदरीवनमहँध्यानलगाई। गेउद्धवहुजहाँयदुराई॥३२॥ उद्धवमुखतेविदुरसुजाना।सुनिकैकृष्णचंद्रगुणगाना॥३३॥
कृष्णचंद्रकेगमनविचारत।जोसुनिधीरधीरनहिंधारत॥३४॥कृष्णकृपाअपनेपरगुनिकै।हरिशासनउद्धवमुखसुनिकै॥

दोहा—ज्ञानिनमेंपरधानहूँ, लखिउद्धवहिपयान। विदुरविरहकेविवशह्वै, रोदनकियोमहान॥
पुनिकछुदिनवसिमधुपुरी, कालिंदीकेतीर। गमनकियेजहँरहतहैं, मित्रासुतमतिधीर॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुर श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदांबुनिधौतृतीयस्कंधेचतुर्थस्तरंगः॥ ४॥

श्रीशुकउवाच।

दोहा—उद्धवगमनविलोकिकै, विदुरमहामतिमान। हरिद्वारकोजातभे, करतकृष्णपदध्यान॥
तहाँरहेमैत्रेयमुनीशा। करहिंध्यानजेनितजगदीशा॥ विदुरजातमोदितमतिधामा। मित्रासुतहिकियोपरणामा॥
पूँछिकुशलपुनिदोउकरजोरी। कह्योसुनहुविनतीमुनिमोरी॥ १॥

विदुरउवाच।

करतकर्मजनसुखकेहेतू। करिकरिविविधभाँतिकेनेतू॥ पैसुखपावतकैसहुनाहीं। रहतजन्मभरिसोदुखमाहीं॥
तातेदेउउपायबताई। जातेजन्ममरणमिटिजाई॥ २॥ जबप्रारब्धविवशबहुवारे। होतविमुखवसुदेवकुमारे॥
जाकोजगतेकरनउधारा। विचरहिंतुमसेसंतउदारा॥ ३॥

दोहा—तातेमोहिंमुनीशप्रभु, पथअसदेहुबताइ। जातेमोहियबसिहरी, लेहिंआशुअपनाय॥ ४॥

जेहिप्रकारहरिधरिअवतारा।करतकर्मसिरजहिंसंसारा॥पुनिनिजकृतयदुपतिजगमाहीं।पालनपोषणकरहिंसदाहीं ५॥
पुनिजगप्रकृतमाहँकरिलीना।शयनकरहिंप्रभुसुखआसीना।पुनिजबआवतसिरजनकाला।तबप्रवेशकरिजनहिंकृपाला
बहुधाह्वैसिरजहिंसंसारा। लेहिंकलपकलपहिअवतारा॥६॥ करहिंविचित्रचरित्रउदारा। रक्षहिंगोद्विजअमरअपारा॥
पियतकथामृतयदुपतिकेरो।निशिदिननहिंअघातमनमेरो॥७॥लोकअलोकनलोकननाथन।जेहिविधिरच्योकृष्णजियसाथन

दोहा—जौनजौनदेवननरन, लीन्होप्रभुअवतार। नामरूपकरणादिसब, करहुमुनीशउचार॥ ९॥

धर्मकर्मसबप्राणिनकेरे। व्यासवदनतेसुनेघनेरे॥ तिनहिंसुननहितमैंनहिंभाषा। हरियशसुनिबेकीअभिलाषा॥१०॥
कृष्णसुयशसुनिकोमतिमंदा। जायअघायपायआनंदा॥जाहिनिरंतरमुनियशगावैं। हरिविमुखनप्रभुसन्मुखल्यावैं॥
श्रवणकरतहरिचरितसोहावन।होतपतितपामरअतिपावन॥११॥सखारावरेकेमुनिव्यासा।कियोमहाभारतहिप्रकासा
तामेंबहुप्रकारइतिहासै। ताकोहेतमोहिंअसभासै॥ सुनिइतिहासअमितसुखदाई। देहैंजगजनचित्तलगाई॥ १२॥
तौपुनिसुनतसुनततिनकाहीं। रुचनलगीहरिकथासदाहीं॥

दोहा—अबहरिकेगुणगानमें, लगिजैहैमनजाय। तबतेविषयविनोदमें, रहीनमनललचाय॥

सुनिसुनिकृष्णकथादिनराती। ह्वैहैंजनअघगणअरिघाती॥ नितनवमंगलमोदहिलहिहैं। कबहूँयमयातनानसहिहैं॥
यहीहेतमुनिसखातिहारे। लक्षमहीभारतविस्तारे॥१३॥जेजनसुनहिंनहरिगुणगाथा। नावहिंनहिंसाधुनपदमाथा॥
तकुमतिहुतेकुमतिघनेरे। शठकेशठअरुअघअघकेरे॥ जगमेंजनतेजनेवृथाहीं। शूकरकूकरसरिससदाहीं॥
शोचहेतसबहीमनमाहीं। कौनदशाह्वैहैइनकाहीं॥ तिनकोवृथासुरतगतिवानी। जेहरिकथाननिजमतिआनी॥

दोहा—कृष्णकथाजेसुनतनहिं, चित्तलगायहमेश। तिनकीआयुषहरतहाठि, अथवतउवतदिनेश॥ १४॥

तातेहेमित्रासुतज्ञानी। मोपरकरिकैकृपामहानी॥ सुखदायकहरिकथासोहाई। सारवस्तुवर्णहुमुनिराई॥
जाकीकीरतितीरथकाहीं। करतपवित्रआशुजगमाहीं॥ सोकेशवकीकीरतिभूरी। वरणिमुनीशकरहुदुखदूरी॥१५॥

जोजगपालनउत्पतिहेतू। धरहिंरूपबहुकृपानिकेतू॥ करहिंचरित्रविचित्रअपारा। सोअबकहहुसहितविस्तारा॥

श्रीशुकउवाच।

यहिविधिजबैविदुरमतिमाना।मुनिसोंकहहरिकथालोभाना॥तबमित्रासुतनितनहिंसगाहत। बोलेमोदउदधिअवगाहत

मैत्रेयउवाच।

दोहा-सबजगजीवनभद्रहित, विदुरप्रश्नयहकीन। निजकीरतिविस्तारकर, यदुपतिपदमनदीन॥ १८॥

सोहमकोनहिंअचरजलागा। हैहमारतुमपरअनुरागा॥ अहोबादरायणकेनंदन। कियोभक्तिकरवशयदुनंदन॥१९॥ मुनिमांडव्यशापकहँपाई। प्रगट्योकुरुकुलमहँयमराई॥२०॥ सोईतुमहौविदुरसुजाना। सत्यअनन्यभक्तभगवाना॥ तुम्हरेज्ञानदेनकेहेतू। मोहिंकहिहरिगेनिजहिंनिकेतू॥२१॥तातेमैंसिगरीहरिलीला।वर्णहुँसुनहुँगुणहुँशुभशीला२२। प्रथमहिंरहेएकश्रीधामा॥जिनकेअहैंविपुलवपुनामा॥२३॥सूक्षमचितअचितहुविस्तारी।अपनोरूपअकलविचारी२४

दोहा-सर्वशक्तिधारणकरन, जेहिसंकुचितनज्ञान। निजमायाविरचीहरी, जेहितेजगनिर्मान॥२५॥

मायाजोगुणमयीमहानी।धरयोबीजजेहिशारँगपानी॥२६॥प्रगट्योमहत्तत्त्वपुनितातै।उपजतविदुरजगतयहजाते२७ महत्तत्त्वजगसिरजनहेतू। क्षोभितभयोसुनहुमतिसेतू॥२८॥ महत्तत्त्वतेअहंकारभो। जोकारणकारजअधारभो॥ इंद्रियभूतमनोमयजोई॥ २९॥ सात्विकराजसतामससोई।सात्विकअहंकारतेसुनिये। मनऔसरउपजेयहगुनिये॥ जिनतेभोशब्दादिप्रकासा॥ ३०॥ राजसअहंकारपुनिभासा। ज्ञानेंद्रीकर्मेंद्रीदोऊ॥ प्रगटभईतातेपुनिसोऊ।

दोहा-अहंकारपुनितामसै, सिरज्योमात्रानाद। जातेभयोअकाशयह, रूपब्रह्मअहलाद॥३१॥

पुनिअकाशअस्पर्शहिजायो। तातेमारुतहूप्रगटायो॥३२॥मारुततेप्रगट्योपुनिरूपा।रूपहितेपुनितेजअनूपा॥३३॥ भयोतेजतेरसगंभीरा। तातेहूप्रगट्योपुनिनीरा॥ ३४॥ जलतेगंधगंधतेधरणी। जोभूतनकीआनँदभरणी॥३५॥ नभआदिकयेभूतनमाहीं। एकएकतेगुणअधिकाहीं॥३६॥ येदेवताकृष्णकेअंसा।तेहरिकीअसकरहिंप्रशंसा॥३७॥

देवाऊचुः।

प्रभुपदपंकजकरहिंप्रणामा। दासनहरणतापदुखधामा॥ जाकेवंदतसंतउदारा। छोंडहिंअनायाससंसारा॥ ३८॥

दोहा-आपचरणतेजेविमुख, तेनितलहहिंकलेश। तातेतुवपदकमलकी, छायाचहहिंहमेश॥ ३९॥

पढिपढिवेदयकांतहिबैठी। भक्तिसुधासागरमहँपैठी॥ ऋषिखोजहिंतुवचरणअभंगा। जिनतेप्रगटभईयहगंगा॥ जेगंगातटकरहिंनिवासा। तेतुवपदढिगकरहिंविलासा॥४०॥प्रीतिसहितजोतुवपदध्यावै। ज्ञानविरागभक्तिसोपावै॥ तुवपदकमलनिकटमतिधीरा। बसैसदानहिंपावहिपीरा॥ हमतुवपदशरणागतहोवै। पदरावरेदीनदुखखोवै॥४१॥ जगउत्पतिपालनसंहारा। यहिकेहेतआपअवतारा॥ हमशरणागतबारहिंबारा। करियेनाथवेगिउद्धारा॥ ४२॥

दोहा-असतदेहअरुगेहमें, जिनकीमतिलवलीन। कुटिलकुमतितेरहतहैं, तुवपदभक्तिविहीन॥ ४३॥

कूरकुमतिकपटीअज्ञानी। जिनकीमतितुवपदनलुभानी॥ तेतुवदासनचीन्हतनाहीं। आपदासतिनदूरसदाहीं४४॥ जेजनकरहिंकथामृतपाना।लहहिंअवशितेभक्तिविज्ञाना॥तजिसंसारहिविनहिप्रयासा।करहिंविशेषिविकुंठविलासा॥ योगीधारिसमाधिहिकोऊ। उतरहिमहामहोदधिसोऊ॥ प्रथमपायतेअमितप्रयासा। पुनिपावहिंतुवधामनिवासा॥ जेतुवप्रेमपयोधिहिपूरे। तिनकोविनश्रमतुमनहिदूरे॥४६॥सिरज्योआपत्रिगुणतेहिमाहीं।पैसमरथनहिंजगतसृजाहीं॥

दोहा-भिन्नभिन्नहमहैंसबै, सृजनशक्तिहैनाहिं। तातेदेहुमिलायप्रभु, करिदायाहमपाहिं॥ ४७॥

जगसिरजनकीशक्तिजो, हमहिंदेवयदुराज। तुवब्रह्मांडविहारथल, रचहिंभोगकीसाज॥ ४८॥

तुमकारणहौसुरनके, समरथपुरुषपुराण। मायामेंप्रथमहिदियो, शक्तिजगतनिर्माण॥ ४९॥

रचनहेतब्रह्मांडके, हमकोसिरजनकीन। ज्ञानशक्तिअबदीजिये, हमतुम्हरेआधीन ॥ ५० ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते श्रीभागवते आनंदांबुनिधौ तृतीयस्कंधे पंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

श्रीशुकउवाच।

दोहा—यहिविधिदेवनकीविनय, सुनिकैशारँगपानि। कालशक्तिधारेहरी, सोवतलोकनजानि ॥ १ ॥

तेइसतत्त्वप्रगटजेहिकीन्हे। तिनहिमिलायपरस्परदीन्हे२तिनमहँअंशहिकियोप्रवेशा। जिमिसबथलमहँकिरणिदिनेशा रह्योभिन्नतेहियोजितकीन्हो। कर्मजगायजीवकहँदीन्हो॥३॥तबतेतेइसतत्त्वसुजाना॥उत्पतिकियब्रह्मांडमहाना॥४॥ जामेंसूक्षमरूपअतीवा। रहतचराचरसिगरेजीवा ॥ ५ ॥ सोब्रह्मांडरूपहरिकेरो। सहसवर्षजलकियोबसेरो ॥ ६ ॥ सोब्रह्मांडहुभयोएकधा। त्रिधाफेरप्रगट्योपुनिदशधा।७॥यहहैपुरुषप्रथमअवतारा। सिगरेव्यष्टिस्वरूपअधारा।८॥

दोहा—आधिभूतअध्यात्मअरु, साधिदैवविधितीन। जीवएकधाप्राणदश, असविभागतेहिकीन ॥ ९ ॥
सुमिरतमहदादिकविनय, जोकियपूर्वअपार। वर्धनहितब्रह्मांडके, श्रीपतिकियोविचार ॥ १० ॥

हरिहिगुणततेभेअस्थाना॥सुनहुतिन्हैंमैंकरहुँबखाना।११।प्रगट्योमुखपावकअरुवानी। ताकेविषयशब्दपहिचानी १२ रसनातालुवरुणसुरभयऊ। तातेजीवविषयसुरलयऊ॥१३॥नासासुरअश्विनीकुमारा।घ्राणविषयभोगंधअपारा १४॥ देवदिनेशविषयतेहिरूपा।यहिविधिप्रगटेनयनअनूपा।१५॥भईत्वचामारुतयुतजाको।विषयपरशजानैबुधताको १६ भयेश्रोत्रताकेदिशिदेवा।विषयशब्दजानहुयहभेवा॥१७॥भयेरोमऔषधसुरतिनके।कंडूविषयजानियेजिनके॥१८॥

दोहा—भयोमेढ्रताकेभये, विदुरप्रजापतिईश। आनँदताकोहैविषय, वर्णहिंमुदितमुनीश ॥ १९ ॥

भयोफेरगुदमित्रजासुसुर।विषयविसर्गतासुजानहुँधुर॥२०॥प्रगट्योहाथशक्रसुरजाको।विषयग्रहणकरिबेहैताको२१ प्रगटेपादभानुसुरठयऊ।विषयतासुकोगमनतभयऊ॥२२॥भईबुद्धितेहिसुरवागीशा।ताकोविषयबूझयहदीशा॥२३॥ भयोह्रदयसुरतेहिसितभानू।विषयतासुसंकल्पबखानू।२४।भोपुनिअहंकारशिवईशा।वर्णहिंकरतबविषयमुनीशा२५ भयोचित्ततेहिसुरमुनिजानो।तासुविषयविज्ञानबखानो ॥ २६ ॥ भयोस्वर्गहरिकेशिरतेरे। नाभीतेसुरमुनिननिबेरे ॥

दोहा—पदतेपुहुमीप्रगटभै, भेसुरनरजिनमाँहि ॥ २७ ॥ लहेस्वर्गसुरसतगुणी, रजगुणनरमहिकाँहि ॥

रहेगवादिकपशुपुहुमीमें॥२८॥अबसुनियोगतितमोगुणीमें॥शंकरकेगणप्रेतपिशाचा।बसहिंअकाशभेदयहसाचा२९ प्रगटेहरिमुखवेदउचारी। तासुवृत्तिहितविप्रसुखारी ॥ ३० ॥ क्षत्रधर्मभोहरिभुजतेरे। तेहिधारकक्षत्रिहुघनेरे ॥ जोक्षत्रीविप्रनकोपालक।चोरनचंडालनकोघालक ॥ ३१ ॥हरिऊरूतेवैश्यवृत्तिभै। तेहिधारकभेवैश्यहुनिरभै ॥ जेजनजगजीविकाचलावैं। धर्मकर्मआपनोबनावैं ॥ ३२ ॥ हरिचरणनतेभोसेवकाई। ग्राहकतासुशूद्रससुदाई ॥

दोहा—ब्राह्मणक्षत्रीवैश्यकी, सेवाकरतजोशूद्र। तापरहोतप्रसन्नहरि, गर्नहिंनहींतेहिक्षुद्र ॥ ३३ ॥

चारिहुवर्णधर्मनिजधरिधरि।पूजहिंयदुपतिकहँरतिकरिकरि३४मैंवर्ण्योंहरिकोवपुजोई।ताहिसकलकहिसकहिंनकोई। पैजोसुन्योरह्योजोजाना। ताहियथामतिकरहुँबखाना॥ होनहेतअपनीशुचिवानी। विषयवदतजोरहीनशानी ॥ कृष्णचरित्रनिरंतरगाऊँ। जन्मजन्मकेपापनशाऊँ॥३६॥रसनाकोफलहरिगुणगाना। श्रुतिफलकृष्णकथारसपाना॥ वर्षहजारनहूंकर्तारा। गावतहरियशलहैनपारा ॥ ३८ ॥ मायाविदपुरुषनहरिमाया। मोहनकरतवेदअसगाया ॥ हरिहुनजानैंनिजमायागति। तौकिमिजानिसकैंकुत्सितमति ॥ ३९ ॥

दोहा--जेहिमहिमाकोमनवचन, कबहुँनपावतपार । विधिरुद्रादिकथकिरहत, तेहिहरिनतिबहुवार ॥ ४० ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेव कृते श्रीभागवते आनंदांबुनिधौतृतीयस्कंध षष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा--यहिविधिजबमैत्रेयमुनि, कह्योविदुरसोंबैन । तबक्षत्ताकरजोरिकै, विनयकियोभरिचैन ॥ १ ॥

विदुर उवाच।

हेमुनिअविकारीभगवाना । निर्गुणजिनकोकरहुबखाना ॥ तिनकीकृपाऔरगुणकैसे । लीलहिहेतुकहहुजोऐसे ॥२ ॥
तौशिशुसमलीलानहियोगू विनिपेक्षआत्मरतिभोगू ॥३॥निजमायाकरिजगतबनावै ।पालनकरिपुनिताहिनशावै॥४॥
देशकालअरुप्रकृतिहुतेरे । नशतनज्ञानकबहुँहरिकेरे ॥ तेहरिकोमायाकरिसंगा । कैसेहैयहकहहुप्रसंगा ॥ ५ ॥
एकहिहरिसबथलमहँव्यापी।जीवहुकेहिविधिहोतसँतापी॥६॥यहीदेहुसंदेहमिटाई । मेरेहियेज्ञानदुखदाई ॥ ७ ॥

श्रीशुकउवाच।

दोहा--यहिविधिजबविनतीकरी, विदुरमहामतिमान । तबमित्रासुतविहँसिकै, बोलेवचनप्रमान ॥ ८ ॥

जौनतर्कतेगुणहुँविरोधू । सोमायाजानहुँदुर्बोधू ॥ ईश्वरकोबंधनकहुँनाहीं । तैसहिसबजीवनहुबनाहीं ॥ ९ ॥
ज्योंसपनेशिरकटतअसांचे।पैजोलखततेहिलागतसांचे।जिमिजलमहँडोलतशशिछाया।जानिपरतडोलतनिशिराया
प्राकृतजोगतिजीवनमाहीं । देखियबंधनपैसतिनाहीं॥११॥सोभ्रमकृष्णकृपाकहँपाई । भक्तियोगतेजातनशाई १२॥
जबइन्द्रियहरिमहँलगिजाहीं । तबहींसिगरेशोकनशाहीं॥जैसेनिर्भयसोवतमाहीं॥सुखदुखजानिपरतकछुनाहीं ॥१३॥

दोहा--श्रवणकरतहीहरिसुयश, पापनकरतनिपात । तोयदुपतिपदपद्मरति, काकहिवेकीबात ॥ १४ ॥

तबअतिशयउरआनँदपाई । बोलेविदुरसनेहबढाई ॥ (वि.उ.) लहिवाणीतरवारतिहारी । संशयसबकटिगइहमारी ॥
होतकृष्णगुणगावनप्रीती । बाढ़तकृष्णचरणरतिरीती ॥ यहसांचोवर्ण्योमुनिराई । हरिमायावशबंधजनाई ॥
जोहरिदासगुणैअपनेको । तौजीवींहबंधननहियेको॥१६॥अतिज्ञानीअतिमूरुखकाहीं । रहतसदासुखसंशयनाहीं ॥
जेकछुमूरुखअरुकछुज्ञानी । तिनहिंसदालीजैदुखजानी॥१७॥ईश्वरमयजोजगतहिजानै।जोनताहिभूलेह्वभ्रममानै॥
जोनैशुकभ्रममोउरआई । ताहिनशैहौंकरिसेवकाई ॥ १८ ॥

दोहा--जोसाधुनसेवनकरत, बढ़तकृष्णपदप्रीति । तौपुनिकबहुँनपावतो, जननमरणकीभीति ॥ १९ ॥

सोसाधुनपदकीसेवकाई । दुर्लभमोकोपरतजनाई ॥ सदासंतहरिकीरतिगावै । जगजीवनकेपापनशावै ॥ २० ॥
प्रथमविरचिमहदादिकईशा।पुनिप्रगट्योविराटजगदीशा॥तामेंकीन्हचोफेरिप्रवेशा २२ आदिपुरुषबहुपदशिरवेशा॥
रहतलोकसिगरेजेहिमाहीं॥ इन्द्रियविषयप्राणदशताहीं । चारिवर्णजोतुमदियगाई॥तेहिविभूतिअबदेहुसुनाई ॥२३॥
दुहितासुतसुतनातिहुजाती । गोत्रबांधवबहुकेरजमाती ॥ जेहिविधिप्रजाविचित्रभयेहैं । जेसबयाहिजगमाहिंछयेहैं२४

दोहा--रचेप्रजापतिविधिकिते, कहहुसर्गअनुसर्ग । मनुमन्वंतरवर्णिये, देहुमोहिंसुदवर्ग ॥ २५ ॥

तिनकेवंशहुकेजेवंशहु । सहितचरित्रननाथप्रशंसहु ॥ २६ ॥ अधऊरधअवनीकेलोका । वर्णहुमित्रातनयअशोका ॥
तिनकोसबनिर्माणप्रमाना । अरुभूलोकहिकरहुबखाना ॥ सुरनरपशुपक्षीकृमिजेते । इनकीउत्पतिभाषहुकेते ॥२७॥
विधिशिवआदिसुरनकेद्वारा । उत्पतिपालनकरहिंसँहारा॥तेयदुपतिकेकहहुचरित्रा । श्रवणसुधासमपरमविचित्रा२८
वर्णहुवर्णाश्रमहुँविभागा । रूपस्वभावशीलअनुरागा ॥ वर्णहुऋषिनजन्मअरुकर्मा । वेदविभागऔरसबधर्मा॥२९॥

दोहा–मखविस्तारउचारियै, वेदपंथप्रभुजौन । ज्ञानसांख्यअरुकृष्णप्रभु, कह्योतंत्रमुनिकौन ॥ ३० ॥
अरुपाखंडपंथप्रभुभापहु।संकरवर्णकहहुनहिंराखहु।जेतनीकर्मनजीवनकीगति।सोसवमोहिंसुनावहुमुनिपति ॥ ३१॥
अर्थधर्मअरुकाममुक्तिको। कहींयतनअवरुद्धयुक्तिको ॥ राजनीतिजीविकाउपाई।शास्त्रश्रवणविधिदीजैगाई ॥३२॥
पितरसर्गअरुश्राद्धविधाना। ग्रहनक्षत्रतारागणनाना ॥३३॥ दानऔरतपकीविधिजेती।कूपतडागखननविधिकेती ॥
कहियेधर्मप्रवासिनकेरो। औआपतकोधर्मनिवेरो ॥ ३४ ॥ जौनधर्मकीन्हेयदुराई। करउकृपासोदेहुसुनाई ॥ ३५ ॥
पैहठिगुरुजनहोंहिंदयाला। तेसतशिष्यनकोसबकाला ॥ पूंछेविनपूंछेकहिदेहीं। जोनिजदासजानिहठिलेहीं ॥३६॥
दोहा–कितेतत्त्वपरलैसमय, हरिसेवहिंतनुधारि। कितेतत्त्वसोवतरहैं, सोसबकहहुउचारि ॥ ३७ ॥
ईशजीवकरकहहुस्वरूपा। भापहुनिगमज्ञानमुनिभूपा ॥ अरुवर्णहुगुरुशिष्यप्रयोजन ३८ भाषतसंतज्ञानकोसाधन॥
ज्ञानविरागभक्तिमुनिराई। वसहिंआपनेतेनहिंआई ॥ ३९ ॥ येसवजेहैंप्रश्नहमारे। तिनकोकरहुनाथनिरवारे ॥
मैंहौंअंधमहामतिमंदा। केहिविधिछूटैकलिकोफंदा ॥ चारहुवेदयज्ञजपनेमा। शमदमानियमदानव्रतक्षेमा ॥ ४० ॥
दोहा–औरहुजेतेधर्म हैं, वर्णतवेदपुरान । जीवनअभयप्रदानके, कलानएकसमान ॥

श्रीशुकउवाच।

कुरुप्रधानयहिभाँतिसों, जबपूंछचोललचाइ। मुनिप्रधानगदगदगिरा, कहनलगेसुखछाइ ॥ ४१ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्री
महाराजश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदांबुनिधौतृतीयस्कंधेसप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

दोहा–अहैप्रशंसनयोगयह, कुरुभूपतिकोवंश। विदुरभागवतजहँभये, संतनकुलअवतंश ॥
यदुपतिकीकीरतिकीमाला।तुमनितनितनवकरहुविशाला॥ १ ॥सोअवसवजीवनसुखहेतू।परेजेभवनिधिसोकनिकेतू ॥
कहिहैंहमभागवतपुराना। सोतुमसुनहुविदुरदैकाना ॥ जोश्रीशंकर्षणभगवाना। सनतकुमारनसोंकियगाना ॥ २ ॥
यकसमानफणजासुहजारा। धरेभूमिशिरलगतनभारा ॥ सोप्रभुशेपवसतजहँरहेऊ। जाकोविरदवेदअसकहेऊ ॥
तेहिमुखकृष्णतत्त्वसुनिवेको।निजनिजचित्तसदागुणिवेको ३ शशिसुरधुनीधारसनकादी।गयेशेषढिगअतिअहलादी
दोहा–शेपवेशवरवेशजो, शैलमहेशसमान। लखेजायतेहिदेशमें, धृतहमेशहरिध्यान ॥
जानितहाँआगमनमुनीशा। खोलेनेशुकनैनफणीशा ॥ ४ ॥ सनकादिकनलखतभेशेशा। गंगाजलभीजेजिनकेशा ॥
सनकादिकहुसहसफणकाहीं।कियप्रणामशिरधरिमाहिमाहीं॥जेपदकमलनभुजगनकन्या।प्रेमसहितसेवहिंनितधन्या ॥
तेहिप्रभावमानाहिअभिलाषैं।नवनवनजरनिकटनितराखैं॥५॥दियेशेषाशिरक्रीटहजारा। जिनकीचहुँदिशिप्रभाअपारा
मोदितसनकादिककरजोरी।गदगदगिराप्रीतिनहिंथोरी॥रचिकोमलपदविविधप्रकारा।अस्तुतिकीन्होंबारहिंबारा॥६॥
दोहा–पुनिभागवतपुराणको, कियोप्रश्नमुनिराय। तिनसोंसंकर्षणसकल, सादरदियोसुनाय ॥
सोपुनिसनतकुमारहिपाहीं।सांख्यायनमुनिअतिमुदमाहीं॥कियोसप्रेमप्रश्नविधिनाना।सोवर्ण्योंभागवतपुराना ॥७ ॥
पुनिसांख्यायनढिगयकवासर। जायवृहस्पतिऔरपराशर ॥ जाननहितश्रीकृष्णविभूती।कियोप्रश्नभरिप्रेमअकूती॥
तवममगुरूपराशरकाहीं। औरवृहस्पतिकेढिगमाहीं ॥ सांख्यायनमुनिज्ञानप्रधाना। वर्ण्योंश्रीभागवतपुराना ॥
दोहा–वर्णनकरिहौंसकलविधि, श्रद्धाजानितुम्हारि। सावधानह्वैसुनहुअव, हरिकीरतिमनधारि ॥ ९ ॥
शेपशयनमहँजबनारायण।शयनकियेस्वानंदपरायण ॥ गयोबूड़ितबजगजलमाहीं। चौदहभुवनरहेकछुनाहीं ॥ १० ॥
पंचभूतनिजमहँकरिलीना।कालशक्तिप्रेरितसुखभीना॥सहसचतुरयुगसोवतभयऊ।सकललोकनिजमहँलखिलयऊ ॥

पुनिजबप्रलयसमयमिटिगयऊ।सृष्टिकालजबप्रगटनभयऊ।।तबनिजनाभितेभगवाना। विरनचविश्वहेतुविधिनाना।।
प्रगटकियोयककमलअनूपा।जगतअर्थजोसूक्ष्मरूपा।।फैलिरह्योजलमहँदशआशा।सोइपंकजकोपरमप्रकाशा १४।।
दोहा-हरिप्रभावतेकमलमें, प्रगटभयोकरतार। जाहिस्वयंभूकहतहैं, सिरजकसबसंसार।। १५।।
बैठेकमलकर्णिकामाहीं। लखनलगेलोकनचहुँवाहीं।। परेनहींजबलोकनिहारी। तबप्रगटेतिनकेमुखचारी।। १६।।
अपनेकोविरंचिनहिंजान्यो। तबविचारएसोउरआन्यो।।१७।।कोमैंकमलपीठिमहँबैठो। कहँतेकमलभयोयहपैठो।।
पैजोकमलप्रगटयहकीनो। सोकोऊहैपुरुषप्रवीनो।।१८।।असविचारिसरसिजकेनाले। कियप्रवेशचौमुख[illegible]काले।।
चलोगयोअतिवेगबढ़ायो।पैनहिंकंजमूलविधिपायो।।१९।।बीतिगयेशतवर्षतहाँहीं।भटकतरहेमहातममाहीं।। २०।।
दोहा--फेरिकंजकीकर्णिका, फिरिआयेकरतार। धरिसमाधिबैठतभये, श्वासनसाधिअपार।। २१।।
तहाँविधाताअचलह्वै, धरिशतवर्षहिध्यान। अपनेउरमेंलखतभे,कमलापतिभगवान।। २२।।
छंद-कैलाशसरिसप्रकाशजासुफणीशसेजविलासहै।फणसहसछत्रसमानसोहतसलिलजासुअवासहै।। २३।।
असलख्योसोवतपुरुषयकमर्कतसरिसशुभवेशहै।। संध्याजलदद्युतिपीतपटनिदरतसुकुंचितकेशहै।।
सुवरनसुशृंगनशैलशोभाहरतमुकुटविराजतो। मणिसहितसुरधुनिधारसमवनमालयुतउरछाजतो।।
वरभुजगसमभुजलसतसुंदरचरणकिशलयचारहै।। २४।। त्रयलोकजेहिसोरूपअनुपमलंबअरुविस्तारहै।।
आभरणदिव्यविचित्रवसनहुँलसतहरिभुजमहँलगे।। २५।। जेपुरुषप्रभुकोपदपदुमपूजतनखेंदुप्रभाजगे।।
तेलहतअनयासहिहुलासनिरासयमपुरतेसही।।२६।। मुखमधुरविहसनहरणजनदुखलसतकुंडलकानहीं।।
शुकतुंडनासाअधरभासाबिंबभासाहरतिहै। अरुअलकवंकहिप्रगटभ्राजतभुजगशिशुछविदुरतिहै।।२७।।
कटिमेखलाअमलाअनूपमहारशोभअपारहै।श्रीवत्सकौस्तुभवक्षथल।।२८।।भुजमणिकेयूरविहारहै।।२९।।
शशिसूरपावकपवनआदिकसुरनतेप्रभुअगमहै३०धनुशंखचक्रगदास्वस्वर्गहुलसतचहुँकितअसमहै ३१।।
यहिविधिलख्योहरिकोचतुरमुखतहँइपुनिअसलखतभो।तेहिनाभिसरसरसिजप्रगटनभपवनजलतहँलखतभो
दोहा-यहिविधिलखिभगवानको, विश्वरचनकरिआस। अस्तुतिकियकरजोरिकै,निरखतरमानिवास।।३२।।

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबाँधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बु
निधौतृतीयस्कंधेअष्टमस्तरंगः।। ८।।

ब्रह्मोवाच।

दोहा-बहुतदिननमेंआपको, मैंजान्यो यदुनाथ। यहजीवनकोदोषअति, धरखनपदतुवमाथ।।
अहौचराचरकेतुमस्वामी। सबभूतनकेअन्तर्यामी।।तुमतेभिन्नवस्तुकछुनाहीं। सकलरूपहौतुमहिंसदाहीं।। १।।
करिदासनपरकृपामहाई। रूपनाथयहदियोदिखाई।। बीजसहसअवतारनकेरो। उत्पतिथानयहीहैमेरो।। २।।
यहितेपरअबहैकछुनाहीं। हैयहआनँदरूपसदाहीं।। यहीरूपमैंसेवनकरहूँ। यहीविश्वकारणउच्चरहूँ।। ३।।
यहिवपुतेजगमंगलपायो। सोकरिकृपामोहिंदरशायो।। नाथभुवनमंगलकेदाता। हैनमामितुवपदजलजाता।।
जीवनारकीजेअघकारी। तिनहिंनयहवपुपरतनिहारी।। ४।।
दोहा-जेतुवपदपंकजनिरत, करहिंकथाकोश्रौन। तिनकेहियते नाथतुम, करहुकबहुँनहिंगौन।। ५।।
जबलौंतुवपदप्रीतिनलायो। दासरावरोनहिंकहवायो।। तबहींलौंधनतियसुतकेरो। होतलोभमदमोहघनेरो।। ६।।
जेतुवकथानभेअनुरागी। तेकुमतीअतिअहहिंअभागी।।निरतविषयसुखधावतरहहीं।तिनकोयमकिंकरहठिगहहीं।।
करहिंलोभवशकर्मनकाहीं।अनुचितउचितगनतकछुनाहीं।क्षुधातृषाअरुकफपितवाता।कामक्रोधमदमोहअघाता।।

दुखितहोहिंइनतेबहुवारा । निरखिदशामनडरतहमारा ॥ ७ ॥ जवलौंतुवशरीरजगकाहीं । तुममेंदेखतहैजगमाहीं ॥ ८ ॥
तवलौंजनकोहै संसारा । लहतशोकदुखवारहिंवारा ॥ ९ ॥

दोहा—दिनभरकरिव्यापारबहु, श्रमितकरहिंनिशिशैन । विवशविपयसुखउझकिझकि, लहैंकबहुँनहिंचैन ॥

मनमहँकरहिंमनोरथनाना । पूरणहोहिंनतासुविधाना ॥ कबहुँसुनैंनहिंकथातिहारी । तिनकोनरककविशेषविचारी १०
जेसुनिकथाधरहिंतुवध्याना । तिनहियकंजवसहुभगवाना ॥ जोइजोइकरैंकामनादासा । सोइसोइवपुतुवकरहुप्रकासा ११
सुरहुवँधेजेआशापाशा । ध्यावततुमहिंनहोतनिराशा ॥ तिनकोनाथमिलहुतुमनाहीं । विनादयाजेरहहिंसदाहीं ॥ १२ ॥
तपव्रतदाननेममखजेते । तुमपूजनपूजहिंनाहिंतेते ॥ इनकोतुवपदरताहितकरई । सोइजनसंपूरणफललहई ॥ १३ ॥

दोहा—जैसहुतैसहुजोकियो, तुवपदप्रेमहिंपान । जानिपरहुताकोअवशि, तेहिसंसारनशान ॥

जगउत्पतिपालनलयहेतू । लीलाकरहुसदासुखसेतू ॥ हेत्रिभुवनकेसुंदरस्वामी । तुमहिंनमामिनमामिनमामी ॥ १४ ॥
धन्यनाममहिमामुकुंदकी । दलनसकलकलिमलनफंदकी ॥ प्राणपयानसमयजनजेई । कैसहुकृष्णनाममुखलेई ॥
तेमनुजनबहुजन्मनपापा । छूटतपुनिनिकरतसंतापा ॥ अवशिकृष्णपुरगमनतसोई । यामेंशंककरैजनिकोई ॥
तेहरिकेशरणागतमैंहौं । असप्रभुतजिअनतैनहिंजैहौं ॥ १५ ॥ जोहरिहरविधित्रयवपुधारी । पालतसिरजतहरतमुरारी ॥

दोहा—हमअरुहरअरुविष्णुहूं, जेहितरुकेहैंडार । सोनारायणभुवनद्रुम, रक्षकअहैंहमार ॥ १६ ॥

सदानिरतजनपापकर्ममें । कबहुँनरततुवकाथितधर्ममें ॥ तेजनकेजीवनकीआसा । कालरूपतुमकरहुनिवासा ॥
तेमुकुंदकोशिरधरिधरणी । करहुँप्रणाममहामुदभरणी ॥ १७ ॥ जासुप्रतापब्रह्मपुरमाहीं । मैंवसितिनकोवरहुँसदाहीं ॥
जेप्रभुकेपदपावनहेतू । मैंकीन्होंजपयज्ञसहेतू ॥ सोगोविंदकेपदअरविंदा । वंदौंसुखदमुनीशमिलिंदा ॥ १८ ॥
जबजबदासनपरहिकलेशा । तबतबधरिबहुरूपरमेशा ॥ सदाधर्मकोरक्षणकरहीं । वसुधाविहरिजननउद्धरहीं ॥
तिनप्रभुकोमैंकरहुँप्रणामा । रघुवरयदुवरहैजेहिनामा ॥ १९ ॥

दोहा—यदपिअविद्यारहितप्रभु, तदपिउदरजगधारि । शेपसेजसोवतउदधि, निद्रामोदपसारि ॥ २० ॥

तिनकेनाभिपदुममैंजायो । जेहिप्रभावकरतारकहायो ॥ कमलनैननतेप्रभुपदमाहीं । मैंशिरनावहुँमुदितसदाहीं ॥ २१ ॥
जगतसुहृदसांचेभगवाना । करहिंमोदजगकोनिजज्ञाना ॥ कृपादृष्टिकरिम्वाहिपरदेखी । रचहिंजगतममहाथविशेषी २२
निजदासनवांछितवरदानी । रमासहितप्रभुशारँगपानी ॥ जोजगमेंधरिधरिअवतारा । करहिअनंदितअमितविहारा ॥
देहिंबुद्धितोजगतरचनमें । परहुँनमैंअज्ञानखचनमें ॥ २३ ॥ जामेंवेदभूलिनाहिंजाई । करहिंकृपाअबमोहिंयदुराई ॥ २४ ॥

दोहा—मधुरवचनमोहिंकाहिहरी, हरहुतापहठमोरि । दासनपरदायाकरनि, सदावाणिप्रभुतोरि ॥ २५ ॥

यहिविधिजबविधिअस्तुतिकीनी । यदुपतिपदरतिमतिअतिभीनी ॥ थकितमौनभेजबकरतारा । तबमधुसूदनकियोविचारा
विश्वरचनमतिहैविधिकेरी । चाहतआशुकृपाअबमेरी ॥ २७ ॥ असविचारिप्रभुदीनदयाला । बोलेवचनहरतदुखजाला २८

श्रीभगवानुवाच ।

जगतरचहुनाहिंकरहुविषादा । राखहुसकललोकमर्यादा ॥ जाकेहितविनतीतुमकीनी । सोमैंशक्तिप्रथमतोहिदीनी ॥ २९ ॥
जायकरहुकहुँतपअबकानन । ममपदप्रीतिधरहुचतुरानन ॥ तबदेखिहौमोहिंउरमाहीं । औरसनातनलोकनकाहीं ॥ ३० ॥

दोहा—आत्मामेंलोकननिरखि, लोकआत्मामाहिं । दोहुनकोमोमैंलखहु, लागिहिपापतोहिनाहिं ॥ ३१ ॥

जबसबजगमोहिंलखिअनुरागत । तबजीवनपातकनाहिंलागत ३२ जेहियाकोजानहिंममदासा । तेजनपावतपरमप्रकासा
कृपामोरिलहिरचहुप्रजनको । पैहोनहिंकलेशासिरजनको ३३ लगहिरजोगुणतुमकहँनाहीं । कियेप्रीतितुमममपदमाहीं
देहिनदुर्लभमोहिंतुमजानो । जगतविलक्षणमोकहँमानो ॥ ३६ ॥ कमलमूलजबखोजनलागे । तबहमतुमपैअतिअनुरागे ॥
तुमहिंदियोवपुहृदयदेखाई ॥ ३७ ॥ तबतुमअस्तुतिअनुपमगाई । करनतपस्याजोमनतेरो ॥ सोजानियेअनुग्रहमेरो ३८

दोहा—अनुपमयहअस्तुतिसुनत, भयोमोदमनमाहिं । जानोचतुराननसही, हौंप्रसन्नतोहिपाहिं ॥ ३९ ॥

जोजनयहअस्तुतिनितगाई । सोकहँभजिहिप्रीतिआनिआई॥ तासुमनोरथपूजहिंआशू ।मेंप्रसन्नह्वैहोंअनयाशू॥४०॥
तपजपयोगयागव्रतदाना । औरहुधर्मकर्मविधिनाना ॥ इनकोजेहिपूरणफलहोई । मोपदप्रीतिकरेहठिसोई ॥ ४१ ॥
आतमकेआतममेंअहहूँ । प्रियकेप्रियतमसतिमेंकहहूँ ॥ तातेजनतजिकेभवभीती । करैंअवशिमोपदमहँप्रीती४२॥
सर्ववेदमयमोतेहिज्ञाना । तातेकरहुजगतनिरमाना ॥ जैसेपूर्वजगतयहरहेऊ । तसहिरचहुजोमोहिंलैभयऊ ॥ ४३ ॥

दोहा–चतुराननप्रतिभापिअस, परमपुरुषभगवान । विधिकेदेखततासुथल, ह्वैगेअंतर्धान ॥ ४४ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेनवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

दोहा–विधिअस्तुतिसुनिविदुरतहँ, अतिआनँदउरआनि । पुनिबोलेमैत्रेयसो, जोरिसरोरुहपानि ॥

श्रीविदुरउवाच ।

भेमुकुंदजबअंतर्धाना । केतेविधिपरजानिरमाना ॥ रच्योविरंचिदेहतेकेती । कितीमानसीवर्णहुतेती ॥ १ ॥
जेहमप्रश्नकियेतुमपाहीं । तेकहिमेटहुसंशयकाहीं ॥

सूतउवाच ।

विदुरप्रश्नजवयहिविधिकीन्ह्यो।कहनलग्योमैत्रेयमुदभीन्यो॥(मै.उ.)कियोवर्षशततपकरतारा। जेहिविधिश्रीभागवतउचारा
लखिकंपतजलजलजपवनलहि६कियोपानदोउकहँविरंचिगहि७तबअकाशलौंकमलनिहारा। हियमेविरचिविरंचिविचारा
प्रथमत्रिधालोकनकहँकीन्हचो । पुनिचौदहप्रकाररचिदीन्हचो ॥ ८ ॥

दोहा–इतनोईजियलोकको, जानहुविदुरप्रकार । ब्रह्मलोकनिष्कामको, फलहैकरहुविचार ॥

तबमुनिपदमहँप्रीतिलगाई । बोल्योफेरविदुरविदुराई ॥ वि.उ.।कालरूपहरिलक्षणजोई । हेमैत्रेयसुनावहुसोई॥१०॥
सुनिक्षत्ताकेवचनमुनीशा।कहनलगेसुमिरतजगदीशा।(श्री.मै.उ.)जोमहदादिककोपरिणामा।सोईकाललछनमतिधामा
जाकोआदिअंतहैनाहीं । लखिनपरतजेहिवपुद्दगमाहीं॥सोनिमित्तकारणजगकेरो।रच्योजोलहिहरिविश्वघनेरो॥११॥
ईशभिन्ननहिंजगकहँजानो । तासुप्रकारप्रकाशितमानो ॥ १२ ॥ अबजैसोहैजगतमहाना । जैसेरह्योपूर्वनिर्माना ॥

दोहा–विश्वसृष्टिनवभाँतिहै, प्राकृतवैकृतएक ॥ १३ ॥ तिनहीप्रलयप्रकारहै, कालिकगुणद्रव्येक ॥

महत्तत्त्वकीसृष्टिबखानी । प्रथमविचारहुविदुरविज्ञानी॥१४॥अहंकारकीसृष्टिदूसरी।भूतसूक्ष्मकीसृष्टितीसरी॥१५॥
चौथीइंद्रियसृष्टिविचारहु । पचईदेवसृष्टिनिर्धारहु ॥ १६ ॥ छठईतामसृष्टिअपारा । प्राकृतयेषटसर्गउचारा ॥
अबवैकृतकोलक्षणभनहू । ताकोप्रीतिसहिततुमसुनहू ॥१७॥सातौमुख्यसर्गजोअहई । सोवृक्षादिसृष्टिकविकहई ॥
तौनसृष्टिजानहुँषटभाती१८वेणुलताद्रुमआदिकजाती १९ अठईतिर्यकसृष्टिहिसुनिये।सोअट्ठाइसविधिचितगुणिये॥

दोहा–गोअजशूकरमहिषमृग,चीतारोरुअनंत । मेषऊंटद्वैखुरनपशु,यहजानहुमतिवंत ॥ २१ ॥

खरखच्चरतुरंगअरुचमरी।गौरसरभएकखुरकीसिगरी॥अबपशुपंचनखनकेसुनिये॥२२॥तिनमहँश्वानशृगालहुगुनिये
वृकअरुव्याघ्रशशकमार्जारा।शल्यसिंहअरुगजहुअपारा ॥ कच्छमकरआदिकजलजीवा। मर्कटगोधाऋक्षअतीवा॥
कंकगृध्रबकबाजहुवासा । सारसहंसमयूरविलासा ॥ चक्रवाकअरुकाकमयूरा । येसबविहँगजातिजगपूरा ॥ २४ ॥
नवममनुजकोसर्गउचारा । विदुरसुनोवहएकप्रकारा॥रजोगुणीतिनकोकहज्ञानी । कर्मविवशदुखमेंसुखमानी ॥२५॥

दोहा–वैकृततीनहुसृष्टिमें, कहिदीन्हचोमतिमान । देवसृष्टिजोसात्त्विकी, सोउवैकृतअनुमान ॥
उभयात्मकजानहुविदुर, जोहैसर्गकुमार ॥ २६ ॥ देवसर्गजोकहिगये, सोहैआठप्रकार ॥
अपसरसुरअसुरहुपितर, चारणसिधिगंधर्व । राक्षसयक्षहुकिन्नरहु, औविद्याधरसर्व ॥ २७ ॥

भूतहुप्रेतपिशाचसब, येदशसर्गप्रकार । विदुरसुनायेहमतुमहिं, येविरचेकरतार ॥ २८ ॥
अबवंशजमन्वन्तरन, वर्णनकरहुँसुजान । सोसुनियेचितलायकै, विदुरसुबुद्धिप्रधान ॥
यहिविधिचौमुखरूपधरि, सत्यसिंधुभगवान ॥ २९ ॥ आपुहिआपहितेकरहिं, आपहिकोनिर्मान ॥ ३० ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबाँधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदे
वकृतेआनंदांबुनिधौतृतीयस्कंधेदशमस्तरंगः ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–जातेकछुसूक्षमनहीं, सोईहैपरमान । सबकारजकोअन्तसोइ, काहूसोनदिखान ॥ १ ॥
अरुब्रह्मांडअतीवमहाना । जातेबड़ोअहैनहिंआना ॥२॥ ऐसोकालहुकोअनुमाना।सूक्षमथूलहुतासुविधाना ॥ ३ ॥
सोधरणीकोजोपरमानू । ताकोलाँघहिजबलोंभानू ॥ सोइपरमानकालकहवावै । अबभाषहुँजेहिअसकविगावै ॥
जबलौंलँघहित्रिलोकदिनेशा । सोइमहानकालकरवेशा ॥ ४ ॥ हैपरमाणुएकअरुदोई । त्रयअरुएकत्रिसरेणुहिंसोई ॥
सोत्रिसरेणुनैनलखिपरहीं । जालरंध्ररविकरगनझरहीं॥५॥तिकणत्रयलाँघहिंजबभानू । ताहिकहतत्रुटिकालप्रमानू ॥
दोहा–सौत्रुटिकोयकवेधहै, तीनवेधलवहोइ ॥ ६ ॥ त्रयलवगुनोनिमेषयक, त्रयनिमेषक्षणसोइ ॥
पांचक्षणैकाष्ठाकहवावे । पंचदशैकाष्ठालघुगावे ॥ ७ ॥ पंद्रहिलघुकोदंडकहावत । तिमियुगदंडमुहूरतगावत ॥
सातदंडकोजानहुयामा ॥८॥घटिकाविधिअबकहहुँललामा । षटपलकीनहिंअधिकहुथोरी।रचैताम्रकीएककटोरी ॥
चौमासासुवर्णलैताको । चौअंगुलकोरचैशलाको ॥ निशादिवसजबदोउसमहोई । लैशलाककरमेंबुधसोई ॥
छेदैमध्यकटोरीमाहीं । सोइपात्रडारैजलमाहीं ॥ जबलौंबूड़हिजलहिकटोरी । सोइदंडयकैहमतिमोरी ॥ ९ ॥
दोहा–चारपहरकाएकदिन, चारपहरकीराति, । पंद्रहदिनकोपाखयक, बुधवर्णहिंयहिभाँति ॥
शुक्लकृष्णयहभेदप्रकासा॥ १० ॥उभैमिलायजानियेमासा।कृष्णपक्षपितरनदिनजानो।शुक्लपक्षपितरननिशिमानो ॥
उभयमासकोऋतुयकहोई । एकऐनषटमासहिसोई ॥ युगलऐनकोवर्षबखानो । दक्षिणउत्तरभेदहिमानो ॥ ११ ॥
दक्षिणऐनदेवनिशिसोई । उत्तरऐनदेवदिनहोई ॥ जनपरमायुसुवर्षशतैकी । इमिजानहुगतिकालगतैकी ॥ १२ ॥
ग्रहनक्षत्रसहितदिनराई । यहिविधिभोगैकालमहाई॥ एकवर्षमहँद्वादशरासी । भोगहिंदिनमणिकालविलासी॥१३॥
दोहा–विदुरजानियेवर्ष के, हैंसतिचारप्रकार । पृथक्पृथक्तिननामको, मैंअबकरहुँउचार ॥
संवत्सरदूजोपरिवत्सर । औरइडावत्सरअनुवत्सर ॥ पाँचौवत्सरबुधजनकहहीं । औरविभागअनेकनगहहीं ॥ १४ ॥
सबवृक्षनअंकुरनबढ़ावत । सकलजननकोकर्मलगावत ॥ सबभूतनकोभ्रमननशावत । दिनकरसदाव्योममहँधावत ॥
देतसकलफलयज्ञनकेरो।तिनकेचरणशीशहैमेरो ॥ १५ ॥ बोल्योविदुरबहुरिकरजोरी । सुनहुनाथयहविनतीमोरी ॥
पितरदेवअरुमनुजनकेरी । आयुदातुमकरीनिवेरी ॥ जौनप्रलयमहँविधिरहिजाहीं । तासुप्रलयकेजीवनकाहीं ॥
दोहा–कहौजियतकबलौंरहत, तौनप्रलयकेजीव ॥ १६ ॥ सकलकालगतिजौनहै, जानतअहौअतीव ॥
जेज्ञानीअतिशयमतिधीरा । तेजानहिंसबविश्वशरीरा ॥ सुनतविदुरकीमोदितवानी । बोलेमित्रासुतविज्ञानी॥१७॥

श्रीमैत्रेय उवाच ।

सतयुगत्रेताद्वापरकलऊ । येचारिहुयुगजेविधिकहेऊ ॥ दिव्यवर्षद्वादशैहजारा । चारिहुयुगनिर्माणउचारा ॥ १८ ॥
हैसंध्यासंध्यांशसमेतू । इनकोक्रमसुनियेमतिसेतू ॥ चारिसहससतयुगतुमजानो । तीनिसहसत्रेताअनुमानो ॥
द्वयद्वापरकलिएकहजारा।यहिविधिजानहुजगविस्तारा ॥ चारहुयुगसंध्यासंध्यंसू।सहसवर्षद्वयमतिअवतंसू॥१९॥२०
दोहा–धर्मचारपदसतयुगै, त्रेतामेंपदतीन । द्वापरमेंद्वयजानिये, कलिमहँएकप्रवीन ॥ २१ ॥

सहसचारयुगविधिदिनएकू।तैसहिनिशिजानहुसविवेकू।२२॥जवनिशिअंतभयोविधिकेरो।पुनिप्रगटतत्रयलोकवनेरो
चौदहमनुयकदिनमहँहोई ॥ २३ ॥ चौयुगइकहत्तरमनुसोई ॥ निजनिजमन्वंतरमनुभोगै। मन्वंतरपटवस्तुसँयोगै ॥
मनुमनुवंशदेवऋषिइंद्रा।अरुगंधर्वहुकहहिंमुनिंद्रा॥२४॥सृष्टिविरंचिदिवसमहँऐसी।सुरनगादिउत्पतितहँतैसी ॥२५॥
प्रतिमन्वंतरमहँभगवाना।रक्षहिंजगतरूपधरिनाना॥२६॥दिवसअंतजवविधिकरहोवै।शेषशयननारायणसोवै ॥२७॥

दोहा–हरिसोवतात्रिभुवननशत, रविशशिहोतनिपात ॥ २८ ॥ उठतशेषमुखतेअनल, महलोंकलौंजात ॥

सिगरेमहर्लोककेवासी । होहिंभागिजनलोकनिवासी ॥ २९ ॥ शेषश्वासज्वालानलमाहीं।जवैलोकइतकेजरिजाहीं॥
महिजरिकैकरसीसमहोती । चहुँकितज्वालाहोतिउदोती ॥ पवनप्रचंडचलततेहिकाला। उठतितरंगसमुद्रनमाला ॥
सातौसिंधुत्यागिनिजवेला।वोरहिंजगकहँकरिजलरेला ॥३०॥ शेषसेजपरतेहिजलमाँहीं।सोवहिंश्रीपतिमुदितजहाँहीं
अस्तुतिकरिजनलोकनिवासी।लहैंक्षणहिक्षणआनँदरासी॥३१॥ऐसेविधिकेदिनअरुराती।वीतिवर्पशतलौंजवजाती॥

दोहा–तवचतुराननहूँमरत, महाप्रलयतवहोइ । द्वयपरार्द्धविधिआयुपा, यहजानैसवकोइ ॥

पूर्वपरार्द्धवीतिजवगयऊ । द्वितियपरार्द्धअरंभहिभयऊ॥३३॥ पूर्वपरार्द्धगयोजोवीती । तासुआदिजोकल्पप्रतीती ॥
ताकोकहैंब्रह्ममतिधामा । शब्दब्रह्मतहँविधिकोनामा ॥३४॥आगेतासुकल्पजोभयऊ । ताकोनामपद्मअसठयऊ ॥
हरिनाभीतेसोइकल्पमहँ।भयेकमलजहँभयोपितामह ॥३५॥ भयोवराहकल्पतेहिआगे।ताकीकथासुनहुवड़भागे ॥
लीन्ह्योहरिवराहअवतारा।हिरण्याक्षहनिधरणिउधारा॥३६॥यहदुपरार्द्धजोकालवखानो।सोहरिकोनिमेषतुमजानो ॥

दोहा–ब्रह्मादिकजेदेवहैं, जिनहिंदेहअभिमान । तिनहिंकालनाशतरहत, नहींनिरतभगवान ॥ ३८ ॥

जोमैंयहब्रह्माँडवखाना । योजनकोटिपचासप्रमाना ॥ ३९॥जानहुँसातआवरणतिनके । यकतेएकदशैगुणजिनके ॥
जसब्रह्माँडअनंतनकोटी । हरिमहँरहहिंकणनसमजोटी॥ ४० ॥सोईसवकारणकोकारण।अक्षरब्रह्मसकलजगतारण॥
सतिहैप्रकृतिपुरुषकोरूपा । यहजानहिंज्ञानीमुनिभूपा ॥ परमात्माजोपुरुपप्रधाना । सोईसत्यकृष्णभगवाना ॥
प्रकृतिउपरवैकुंठविचारो । ताहित्रिपादविभूतिउचारो॥श्रीनिवासजहँकरहिंनिवासा । गरुडअनंतआदियुतदासा ॥

दोहा–एकपादमहँ सकलजग, तुमजानहुमतिवान । तीनिपादवैकुंठहै, जहँ विलसतभगवान ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौ
तृतीयस्कंधेएकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–कालरूप श्रीनाथको, मैंयहकियोवखान । अवविरंचिकी सृष्टिको, सुनियेसकलविधान ॥ १ ॥

प्रथममोहविरच्योकरतारा । महामोहपुनिरच्योअपारा ॥ मरणकोटिअविवेकहुनाना । येपांचौहैंवृत्तअज्ञाना ॥ २ ॥
निरखिपापिनीसृष्टिविधाता।तहँअतिशयमनमेंविलखाता॥धरचोफेरिभगवतकोध्याना।रचनसृष्टिशुचिकरिअनुमाना
तवमनुतेभेचारिकुमारा । सनकसनंदनसनतकुमारा ॥ औरसनातनप्रगटतभयऊ । ऊरधरेताख्यातहिलयऊ ॥ ४ ॥
तिनसोंअसकहवचनविधाता । रचहुजगतसिगरोतुमताता ॥ मोक्षधर्ममहँनिरतकुमारा । नारायणकेदासउदारा ॥

दोहा–जानिविघनहरिभजनमें, सृष्टिरचनकोकर्म । मानेनहिंविधिकेवचन, भावतभगवतधर्म ॥ ५ ॥

शासनभंगजानिकरतारा । कियोसुतनपरकोपअपारा॥पुत्रजानिपुनिअतिअनुरागेउ।महाकोपतवरोंकनलागेउ॥६॥
रोंकतकोपभ्रुकुटिमधितेतव।प्रगट्योएककुमारअपूरव॥अरुणनीलजेहिवर्णसोहावन॥७॥रोवनलाग्योवालभयावन ॥
रोदनकरतकह्योविधिपाहीं । नामधामदीजैमोहिंकाहीं॥८॥सुनिकरतारवालकीवानी । वोलेवचनमहाविज्ञानी ॥९॥
जन्महिहोतरुदनतुमकीन्ह्यो१०तातेरुद्रनामकहिदीन्ह्यो॥इंद्रीहृदयवायुतपव्योमा।सलिलअमलमहिसूरजसोमा ॥

दोहा–प्रथमहितुम्हरेवासहित, मनमेंकरिअनुमान। रचेसकलअस्थानये, इनमेंवसहुइशान ॥ ११ ॥
कहिहैंप्रजासकलजगमाहीं। नामएकादशयेतुमकाहीं॥मनुमहिनसअहमन्युमहाना।शिवकृतधुजभवकालइशाना॥
औरउग्ररेताअरुधृतव्रत। वामदेवकहिहैंजनतुवरत ॥१२॥शक्तिएकादशअहैंतिहारी। तिनकेनामनिकहौंउचारी ॥
धीधृतिउशनाउमासोहावनि। नियतसर्पिविक्षासुखछावनि॥इलासुधाअंबिकाइरावति। रुद्रएकादशहैंतुवतियसति॥
येअस्थाननामअरुनारी। लेहुजगतसिरजहुत्रिपुरारी १४सुनिविधिशासनशिवभगवाना।कियोभयंकरप्रजाविधाना ॥
दोहा–भूतप्रेतवेतालअरु, महापिशाचकराल। डाकिनिशाकिनियोगिनी, सिरज्योशिवतेहिकाल ॥ १५ ॥
भवभूतलभूतनभरिदीन्ह्यो। तेहिविरंचिहूकहँभयकीन्ह्यो॥तवशंकितवोलेमुखचारी।घोररुद्रकीसृष्टिनिहारी ॥१६॥
ऐसीसृष्टिरचहुतुमनाहीं। मोहिंसमेतजेजगसबखाहीं ॥ १७ ॥ जायकरहुकहुँतपसुखकारी। जातेहोयँप्रसन्नमुरारी॥
रहेपूर्वजसप्रजाअपारा।तवतसरचिहौंरुद्रउदारा।१८।(मै०उ०)सुनिविधिवचनप्रदक्षिणकैकै।शंभुगयेवनतपमनदैकै॥
पुनिजगरचनधरचोविधिध्याना। तबप्रगटेदशपुत्रप्रधाना२१अत्रिमरीचिअंगिराजोई।भृगुकुलकलहपुलस्त्यहुसोई॥
दोहा–पुनिवशिष्ठप्रगटतभये, दक्षप्रजापतिफेर। दशयोंनारदहोतभे, हरिरतमतिजिनकेर ॥ २२ ॥
भयेविरंचिअंकतेनारद। भेअँगुठातेदक्षविशारद ॥ भयेवशिष्ठप्राणतेताके। भयेत्वचातेभृगुपरभाके ॥
करतेक्रतुप्रगटेतेहिकाला ॥ २३॥ पुलहनाभितेतेजविशाला॥ श्रवणनतेपुलस्त्यऋषिराई।आननतेअंगिरामहाई ॥
मनतेभयेमरीचिमहाना। भयेअक्षतेअत्रिप्रधाना ॥ २४ ॥ दक्षिणअस्तनतेभोधर्मा। रक्षकनारायणजेहिकर्मा ॥
जन्योपीठतेअधरमआई। जातेमृत्युमहाभयदाई ॥ २५ ॥ हियतेकामभ्रुकुटितेक्रोधू। लोभअधरअधतेमतिरोधू ॥
दोहा–मुखतेवाणीमेढ्रते, भयेसमुद्रहुसात। निरतिदेवगुदतेभये, जिनकेपापअघात ॥ २६ ॥
छायातेकर्दमतपधारे।देवहुतीकेप्राणपियारे।यहिविधिबहुविधिविधितनमनते।प्रगटभयोजगविनहिजतनते ॥ २७ ॥
विधिलखिसुतासरस्वतिकाहीं।मैथुनकरनचह्योमनमाहीं॥अधरमनिरतपिताकहँदेखी।मुनिमरीचिआदिकदुखलेखी॥
करतनिवारणवारहिंवारा। पितुहिंबुझावतवचनउचारा॥२९॥असअनुचितकीन्ह्योनहिंकोई।करिहैंनहिंअज्ञानिहुहोई
कामविवशह्वैकैतुमताता।चहहुसुतारतिपरमअघाता॥३०॥तेजवंतहुँनकहँयहपापा।करतअवशिअतिशयसंतापा ॥
दोहा–तेजवंतजेहिमगचलत, सोइचलतसंसार। अनुचितउचितनगनतकछु, मानतमोदअपार ॥ ३१ ॥
सोइश्रीपतिकोहैपरिणामा। जोनिजतेजरचतत्रयधामा ॥ रक्षणकरै धर्मको सोई। औरउपायपरतनहिंजोई ॥३२ ॥
यहिविधिसुनिपुत्रनकीवानी। त्याग्योविधितनुमानिगलानी॥सोविधिदेहदशानहिंलीन्ही।तनुकीपरंपरारचिदीन्ही२३
पुनिलहिदुतियविरंचिशरीरा। रह्योविचारकरतमतिधीरा ॥ ३४ ॥ वदनचारतेवेदहुचारी। प्रगटे पूर्वरहेजसभारी ॥
जातेप्रगट्योयज्ञविधाना। नीतिऔरउपवेदबखाना ॥ प्रगटेधर्मचरणपुनिचारी। आश्रमवृत्तिचारिसुखकारी ॥३५॥
दोहा–सुनिमित्रासुतकेवचन, विदुरविनोदबढाय। जोरिपाणिपंकजयुगल, दीन्ही विनयसुनाय ॥

विदुरउवाच।

सिरज्योजेहिविधिवेदविधाता।औररच्योजोवर्णहुँताता॥३६॥सुनतमुनीशविदुरकीवानी।बोलतभयेमहामुनिज्ञानी॥

श्रीमैत्रेयउवाच।

चारहुमुखतेचारहुवेदा। सिरज्योचारिवदनविनखेदा ॥ इज्याशस्त्रहुअस्तुतितोमा। प्रायश्चित्तधर्मकोतोमा ॥
यज्ञकर्मजानहुइनकाहीं।क्रमतेरच्योविरंचितहांहीं ॥३१॥ वैद्यशास्त्रअरुविद्याधरकर।गानशास्त्रअरुशिल्पशास्त्रवर ॥
येचारहुउपवेदबखाना। क्रमतेमुखतेविधिनिर्माना॥३८॥अष्टादशपुराणइतिहासा।सकलमुखनतेकियेप्रकाशा॥३९॥
दोहा–यज्ञषोडशीउक्थमख, अरुअग्निष्टोमादि। बाजपेयआदिकमखन, विधिविरच्योअहलादि ॥ ४० ॥
विद्यासत्यऔरतपदाना। चारिधर्मपदगुणहुँसुजाना ॥ ४१ ॥ ब्रह्मचर्यआदिकव्रतजेते। रच्योविरंचिविधानसमेते ॥
कृषीआदिजीविकाअपारा। हेतुगृहस्थरच्योकरतारा ॥ ४२ ॥ वृत्तिजौनवनवासिनकेरी। रचीविरंचिविचारघनेरी॥

चारिप्रकारहुसंन्यासिनकी । रचीविरंचिजीविकामनकी ॥ ४३॥ मोक्षधर्मसाधारणधर्मा । राजधर्मअरुअर्थहुकर्मा ॥
भूरादिकव्याहृतिजोनाता । प्रणवसहितजरच्योविधाना॥४४॥उष्णिकछंदरच्योरोमननें।गायत्रीपुनिरच्योत्वचनते॥
दोहा-पलतेत्रिष्टुपछंदभो, भयोअनुष्टुपफारि । हाडनतेजगतीभयो, मज्जापंक्तिनिवारि॥ ४५ ॥
बृहतीछंदप्राणतेजायो । यहिविधिसिगरीसृष्टिवतायो ॥ ककारादिजेवर्णपचीशा । शब्दब्रह्मजियकहहिंमुनीशा ॥
अकारादिस्वरहैंतिहिदेहा॥४६॥शषसहइन्द्रियविनसंदेहा।यरलवबलताकोतुमजानो॥४७॥सातौस्वरविहारतमानो॥
शब्दब्रह्ममेंसवयहगायो । परब्रह्मतहतेपरभायो ॥ ४८॥ पुनिनीजोतनुलहिकरतारा । विश्वरचनकोकियोविचारा॥
सिरजेजेऋषिप्रथमहिधाता ।तिनकोधर्मनवढोदेखाता॥४९॥तवतिनवंशवढ़नकेहेतू।असमनगुण्योस्वयंभुसचेतू॥५॥
दोहा-प्रजावढ़नकेहेतुमें, बहुविधिकियोउपाय । सोनवढतयहहोतकह,घातकदैवजनाय ॥
यहिविधिकरतविचारतहांहीं॥५१॥भयोरूपद्वयतेहिक्षणमाहीं॥एकपुरुषदूजोभयनारी॥तासुकथावर्णौंविस्तारी॥५२॥
पुरुषभयोस्वायंभूनामा । शतरूपातियनामललामा ॥ सोतियस्वायंभूमनुकेरी । रानीहोतिभईछविढेरी ॥ ५३ ॥
सोदोउमिथुनधर्म्मप्रगटायो । तातेमानववंशकहायो ॥ शतरूपामहँमनुमहराजा।जन्योयुगलसुतवलीदराजा॥५४॥
जेठोभयोप्रियव्रतभूपा । लघुउत्तानपादवररूपा ॥ कन्याफेरतीनिप्रगटाई । तिनकेनामनदेहुँसुनाई ॥
दोहा-प्रथमअकूतीदूसरी, देवहुतीछविखानि ॥ फेरप्रसूतीतीसरी, इकतेएकसयानि ॥ ५५ ॥
देवहुतीकरदमहिको,रुचिकोदईअकूति । जासुवंशपूरितजगत, दक्षहिदईप्रसूति ॥ ५६ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेद्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

श्रीशुकउवाच ।

दोहा-मित्रासुतमुखतेसुनत, पुण्यकथामनहारि । बहुरिविदुरबोल्योवचन,हरियशसुनतविचारि ॥ १ ॥

विदुरउवाच ।

विधिसुतस्वायंभूमनुगायो । सोजवप्रियनारीकहँपायो ॥तवपुनिकहाकियोमनुराई । तासुचरितमोहिंदेहुसुनाई॥२॥
आदिराजसोमनुमहराजा । यदुपतिदासनकोशिरताजा ॥ ३ ॥ श्रीपतिकोसुंदरयशजोई । गावतरहैंसंतजनसोई ॥
सुनतजोप्रीतिसहितनिजकाना । तासोंभाग्यवंतकोआना॥ तैसेहरिदासनकीगाथा॥ श्रवणकरतकरिदेतसनाथा॥४॥

श्रीशुकउवाच ।

जबजेहिविधिहरिपदरतिकरिकै।बोल्योवचनविदुरसुदभरिकै ॥तवहरिकथाकहतजिनकाहीं।होतरोमांचसकलतनुमाहीं
दोहा-ऐसेश्रीमैत्रेयमुनि, करिक्षत्तापरप्रीति। कहनलगेश्रीहरिकथा, जिनहिनजगकीभीति ॥ ५ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

जबप्रगटेमनुअरुशतरूपा। तबविधिसोंकहवचनअनूपा॥६॥तुमसबप्राणिनसिरजनहारे । तिनकीवृत्तिबढावनहारे ॥
कौनकर्मकरिनाथतिहारी । सेवाकरैसबैजनभारी ॥७॥ तौनबतावहुतुमहिप्रणामा । जोकीरसकैसकलजनकामा ॥
जोकरिलहैसुयशजगमाहीं । तनुत्यागेसुरपुरकहँजाहीं ॥ ८ ॥ सुनिस्वायंभूमनुकीवानी । बोलेचतुराननविज्ञानी ॥
हमप्रसन्नतुम्हरेपरताता । बढैतुम्हारसुयशअवदाता॥विनाकपटतुमविनयसुनाई।सिखवहुमोहिंअसकह्योबुझाई॥९॥
दोहा-यहीधर्महैसुतनको, यहीसत्यपितुसेव । सदाभक्तिभरशीशपर, पितुशासनधरिलेव ॥
पितुसोंकरैकपटकहुँनाहीं। शासनसादरकराहिसदाहीं॥१०॥शतरूपामहँनिजहिसमाना। उत्पतिकरहुपुत्रवलवाना॥
सहितधर्मक्षितिपालनकरहू । करिमखकृष्णपूजिसुखभरहू॥११॥यहीपरममेरीसेवकाई । रक्षणकरहुप्रजामनलाई ॥
ह्वैहैंअवशिप्रसन्नमुरारी । जोदेहैंपरजनसुखभारी ॥ १२ ॥ जापैप्रभुप्रसन्नहैंनाहीं । जन्मकर्महैतासुवृथाहीं ॥

जोसुकुंदकेगुणनहिंगावत।सोजनकवहुँसिद्धिनहिंपावत॥सुनतविरंचिवचनमनुराजा।कह्योजोरिकरगुणिसिधिकाजा॥
दोहा-तुवशासनकरिहैंअवशि, पैयहदेहुसुनाइ। कहँहमरहिहैंकहँप्रजा, थलनहिंकतहुँदेखाइ॥ १४॥
बसहिंजीवसिगरेजेहिमाहीं। सोमहिमग्नमहोदधिमाहीं॥ तासुउधारणकरहुउपाई। जामेंवसहिप्रजासमुदाई॥१५॥

श्रीमैत्रेयउवाच।

मनुकेवचनसुनतकरतारा।लाग्योमनमहँकरनविचारा।केहिविधिहोयधरणिउद्धारा।वसहिंप्रजाजेहिमाहँअपारा१६॥
गईरसातलकोयहधरणी। करहुँकौनउधरणकीकरणी॥ सिरजतहींधरणीजलमाहीं। बूड़िगईदीसतिअवनाहीं॥
कछुनहिंआवतमनहिंउपाई॥१७॥होयँसहायमोहिंयदुराई।यहिविधिविधिकेकरतविचारा।तेहिकालतेहिनासाद्वारा॥
दोहा-निकस्योएकवराहको,बालकअँगुठप्रमान॥ १८॥ देखतहीक्षणमेंतहाँ, नभकोकियोपयान।
भयोआशुगजसरिसविशाला।महाबलीतेहिडाढ़कराला॥१९॥तहँमरीचिआदिकमनुजेते।मनुअरुसनकादिकनसमते
लाग्योकरनविरंचिविचारा। नभलखातवाराहकुमारा॥२०॥अहैकौनयहशूकरव्याजू। निकस्योममनासातेआजू॥
लागतअतिअचरजमनमाहीं।कारणजानिपरतकछुनाहीं २१ भयोप्रथमयहअँगुठसमाना।पुनिभोमनहुमतंगसमाना
अवतौदीसतशैलसमाना। धौंसतिहैवराहभगवाना॥२२॥यहिविधिविधिकेकरताविचारा।युतमरीचिमनुसनतकुमारा
दोहा-ताहीसमयअकाशमें, अंबुदसरिसकठोर। कियोशोरवाराहप्रभु, भरयोचारहूओर॥ २३॥
ब्रह्माकोअतिमोदितकीन्हयो।दशोदिशासबद्युतकरिदीन्हयो॥सुनिवराहकाघुरघुरशोरा। मिट्योविरंचिकलेशकठोरा
जनअरुतपसतलोकनिवासी।करीवेदअस्तुतिसुखरासी॥२५॥सुनिमुनीशमुखअस्तुतिकाना।ह्वैप्रसन्नशूकरभगवाना
ध्रुवधरणीउद्धारणहेतू। देवनहोनमहामुदसेतू॥ चलेसलिलप्रविशनभगवाना। मनहुँतड़ागमतंगमहाना॥ २६॥
उठीपुच्छऊरधशिरकेशा। महाकठोरश्यामजेहिवेशा॥ कँपतसटाकीछटासोहावनि। रोमावलिजाकीभयपावनि॥
दोहा-खनेजातजाकेखुरन, नभजलघरचहुँओर। महाकरालविशालअति, सोहतडाढकठोर॥
श्वेतडाढराजतमुखकैसे। द्वितियाशशिश्यामघनजैसे॥ नयनप्रकाशअकाशहिपूरा। रहेनतबतहँशशिअरुसूरा॥
योजनदशलक्षहितनुजाको।जासुप्रभालियछाइदिशाको २७सूँघतमहिखोजतभगवाना।कियोमहोदधिसलिलपयाना
डाढ़करालननयनकराला। नाशकमुनिनमहादुखजाला॥कूदेसलिलमध्यप्रभुकैसे।गिरयोमहोदधिमंदरजैसे॥ २८॥
प्रभुपैठतसागरकियशोरा। उच्योतरंगतरलचहुँओरा॥ मानहुभुजाउठायनदीशा।दुखितकहतरक्षहुजगदीशा॥२९॥
दोहा-अतितीक्षणनिजखुरनते, खनतजलधिजलनाथ। धसतधसतधरणीनिकट, गयेऊँचकरिमाथ॥
देखिधरणिशूकरअवतारा। जोजीवनकीरहीअधारा॥ ३०॥ ताहिडाढ़तेलियोउठाई। रहीरसातलमहँजोजाई॥
विदुरतहाँलैगवनतधरणी। करीनाथयकअद्भुतकरणी॥ आयोयकदानवबलवाना। धरणिहरणहितकुपितमहाना॥
गदाधारिशितछोरनलाग्यो। तहाँकोपप्रभुकोअतिजाग्यो॥३१॥करतखेलअसतहाँमुरारी।दानवशिरमूठीयकमारी॥
मूठीलगतगिरयोअसुरेशा। मृगपतिकरजिमिमरयोगजेशा॥ उठीदैत्यतनुशोणितधारा।सलिलअरुणह्वैगयोअपारा॥
दोहा-शोणितसंयुतप्रभुवदन, सोहतडाढ़समेत। मनुसंध्यामेंश्यामघन, दुइजइंदुछविदेत॥
कढ़ेधरणिधरिडाढहिमाहीं।मारिअसुरकहँनाथतहाँहीं॥जिमिसरसीमधिमत्तमतंगा।कढ़िआवैपंकितसवअंगा॥ ३२॥
कढ़ेडाढ़धरिधरणिमुरारी। श्यामशरीरदुष्टदुखकारी॥३३॥देखिविरंचिआदिसबदेवा। करननाथकीअनुपमसेवा॥
सकलवेदमयवचनउचारी।अस्तुतिकरनलगेसुखकारी३४(ऋ.उ.)जयजयअजितयज्ञकेभावन।जयकृतज्ञसर्वज्ञसुहावन
जयजयवेदस्वरूपतुम्हारो। देवदुसहदुखनाशनवारो॥ जयजयरोमकूपप्रतियागा। धरणिउधारकजनबड़भागा॥
जयजयशूकररूपमुरारी। असुरनदरनसुरनसुखकारी॥
दोहा-जयदुष्टनदुर्लभदरश, जयमखमयीशरीर। जयत्वचधारकछंदसब, आज्यनयनगंभीर॥
चातुरहोत्रचारजयचरना॥३५॥जयनासिकास्त्रुवासुखभरना॥जयआननस्त्रुकरूपतुम्हारो।जयजयउदरइडावनहारो॥

जयजयसोमपात्रश्रुतिजामू । जयविधिभागपात्रसुननामू॥जयग्रहपात्रछिद्रमुखकेरो।चम्वनअग्निहोत्रजयतेरो॥३६॥
जयप्रगटनतुवदीक्षासाँची । जयउपसदग्रीवामनगाँची ॥ जययुगडाढ़इष्टितुवदोऊ । जयप्रवर्गग्सनातुवसोऊ ॥
जयजयअग्निउभयतुवशीशा । जयचिनचनप्राणजगदीशा।३७।जयजयसोमगेनभगवाना।जेतुवआसनवसनप्रधाना॥

दोहा-जयजयसातहुधातुतुव, सातहुयज्ञस्वरूप । जयशरीरकीसंधितुव, सत्रयागबहुरूप ॥
जयवपुकेबंधनसकल, सबमखमयेतुम्हार । यज्ञरूपवाराहयह, यहिविधिवेदउचार ॥ ३८ ॥

छंदमनोहरा-जयसवसुररूपात्रिभुवनभूपारूपअनूपायज्ञमयेप्रभुप्रगटभये ॥
जयज्ञानविरागाभक्तिविभागाप्रदवडभागाक्षमाछयेसुखदासदये ॥ ३९ ॥
जयवपुपवराहाखलनरनाहादायकदाहाकृष्णहरेअतिभासभरे ॥
जयधरणिउधारनज्योंवरवारनपदमिनधारनदंतकरेजलतेनिकरे ॥ ४० ॥
तुवडाढ़करालैमहँयहकालैधरणिविशालैविलसिरहीकविसुछविकहीं ॥
जिमिमेवनमालामधिउडपालातापरकालाराहुसहीतेहिग्रसतनहीं ॥
जैधरणीधारीजलधिविहारीसुछवितिहारीनिरखिपरैमनमोदभरे ॥
मनशैलश्रृंगपरद्वैजचंदवरजलधरतापरप्रभाभरेकवियोंउचरे ॥ ४१ ॥
जयदीनदयालारूपविशालाहरनउतालाशोकसबैहमलखेअबै ॥
जयविधिविधुभालादेवनमालात्रिभुवनपालाचरणनवैकृतमहारवै ॥
जननिवसनहेतूहेखगकेतूमोदनिकेतूधरणिधरोयहकाजकरो ॥
हैतुमहिंप्रणामामहितुववामाहेश्रीधामातेजभरोनिजथानअरो ॥ ४२ ॥
तुवविनासुरारीहमहिंनिहारीपरैनभारीमहिधरतातेहिउद्धरता ॥
पैअचरजनाहींरचहुसदाहींयहजगकाहींसुखकरतालक्ष्मीभरता ॥ ४३ ॥
तुवकेशनझारेपारावारेविंदुअपारेउछटिगयेसुरलोकछये ॥
विधिलोकनिवासीदर्शनआसीहमशुचिराशीहोतभयेतुवदर्शलये ॥ ४४ ॥
जोचहतमहानातवगुणनानाकोअवसानामूढ़सोईनहिंसकतजोई ॥
तुम्हरीयहमायाजगतनिकायामोहहिछायानाहिंगोईतेहिसमनकोई ॥
जगमंगलकीजैजेहिनहिंछीजैयहयशलीजैजगदीशाधृतक्षितिखीशा ॥
हेकरुणासागरगुणगणनागरओजउजागरमोहिंदीशाप्रभुविधिईशा ॥
जेतुवपदविमुखैमानतससुखैरहततेसदुखैजगतसदानहिंतरतकदा ॥
मरिमरिजेजन्मतयोनिनभरमतएकहुतरसतहोतकदातेउतरतदा ॥
कोटिनजेपापाऔरहुशापादुसहसतापाकरिनसकैनियरातजकै ॥
जेअतिमनलाईकथासोहाईतिहरीगाईकहिनथकैमतिप्रेमछकै ॥
कोउतुमसमनाहींत्रिभुवनमाहींजेहिढिगपाहींहमजाहींस्वारथचाहीं ॥
दृगनहिंदर्शाहीतेहिभुजछाहींहमसुखपाहींदुखदाहींअतिविलसाहीं ॥
हेतुमहिगोविंदायदुकुलचंदाआनँदकंदानँदनंदाहरभवफंदा ॥
तुवपदअरविंदानिकटवसिंदाहममतिमंदास्वच्छंदातजिजगनिंदा ॥
शूकरवपुधारेनाथहमारेमोदअपारेविस्तारेसुरदुखदारे ॥
मधिपारावारेकरहुविहारेसदासुखारेबहुवारेसंतनप्यारे ॥

धरणीउद्धारेदानवमारेसुयशपसारेबलवारेतनमनवारे ॥
युगचरणतिहारेसदाहमारेरक्षणहारेसुखसारेयहसंसारे ॥ ४५ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच।

दोहा–यहिविधिजवअस्तुतिकरी, मुनिनसहितकरतार। तबधरणीमेंधरतभे, अपनोतेजअपार ॥
पुनिजलमहँनाकोधरिदीन्ह्यो।अचलाकोअचलाप्रभुकीन्ह्यो४६यहिविधिकरिधरणीउद्धारा।श्रीवराहभगवानउदारा॥
दैत्यहरीजोरहीरसातल। ताहिअचलकरिकैऊपरजल ॥ सबकेलखततहाँभगवाना।गवनकियोअपनेअस्थाना॥४७॥
जोवराहकीकथासुहाई । सुनैंसुनावहिंप्रीतिवढ़ाई ॥ ताकेऊपरश्रीभगवाना । होहिंप्रसन्नआशुमतिमाना ॥ ४८ ॥
जबप्रसन्नभोजाहिमुरारी। कछुनहिंदुरलभताहिनिहारी ॥ ताकीसकलकामनापूजै । तेहिसमानयहजगतनदूजै ॥
दोहा–जो अनन्यगतिसोंभजत, केशवपदअरविंद । पकरिहाथभवसिंधुते, तिहितारतगोविंद ॥ ४९ ॥
कवित्त–कौनहै अभागी काके कुमति प्रजागी काके, लागीकुल आगी कौनकागीयोनिपावैगो।
कौन विषपान कीन्ह्यो स्वारथ न चीन्ह्यो कछू, कौन धर्म सेतु नाँघि नरक सिधावैगो ॥
पुच्छ शृंग हीन कौन पशु पातकीन होत, कहै रघुराज काज काहूके न आवैगो ॥
रसिक कहाय हाय कौन मतिमंदह्वैहै, जौन ना अनंदसों गोविंद गुणगावैगो ॥ १ ॥
सोरठा–कौन जगतमें मूढ, कृष्णकथामृत पान करि। होत विषय आरूढ, सोपशुपुच्छविषान विन॥५०॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दाम्बुनिधौ
तृतीयस्कंधेत्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

श्रीशुकउवाच।

दोहा–सुनिमित्रासुतवदनते, प्रभुवराहगुणगाथ। विदुरफेरपूंछतभये, जोरिजलजयुगहाथ ॥ १ ॥
(वि०उ०)जोवर्ण्योतुमविविधप्रकारा।मित्रासुतधरणीउद्धारा॥धरयोवराहरूपभगवाना।हत्योहिरण्याक्षहिवलवाना ॥
सोहमसुन्योजन्मधनिमान्यो।सुनतमोरमनपुनिललचान्यो२जबहरिकियोधरणिउद्धारा।तबकेहिहितभोयुद्धअपारा ३
सुनतविदुरकेवैनसुहावन। बोलेमित्रासुतअतिपावन॥कुरुकुलमणिपूंछ्योयहनीको। हरिअवतारचरितसुखजीको॥
सुनतकृष्णअवतारनिगाथा। कालकर्मछूटतइकसाथा॥४॥जोउतानपदपुत्रदराजा। कृष्णकथासुनिध्रुवमहराजा ॥
दोहा–दैईकायमलोकमें, सुरन शीशधरिपाय। गयोयहीतनुकृष्णपुर, जगमहँकीरतिछाय ॥ ५ ॥
सुन्योएकमैंयहइतिहासा। जोदेवनविधिकियोप्रकासा६रह्योनामदितिदक्षकुमारी। सोपतिकश्यपकियो विचारी ॥
एकसमयसोकियोविचारा। कौनभाँतिमोहिंमिलैकुमारा ७ कश्यपरहेयज्ञशालामहँ। सांझसमैदितिगवनकियोतहँ ॥
कामविवशह्वैकैकरजोरी।कह्योवचनबहुभाँतिनिहोरी८(दि०वा०)पुहुपधनुषधरिमनसिजघोरा।शरहतिकरतव्यथितमनमोरा
जिमिकरिकदलीकदनकरतहै।तिमिमनसिजममधीरहरतहै ९ लगीवपुषवनमदनदमारी।देहुबुझायकृपाकरिभारी ॥
दोहा–सवतिसुवनकीसाहिबी, जोहिजरतमनमोर। तातेप्रियकरिकैकृपा, देहुपुत्रवरजोर॥१०॥
तुमसमपतिजोपावतनारी।सोसतजननजगतयशकारी११पूंछ्योप्रथमहिपिताहमारा।कहहुकौनपतिहोयतुम्हारा१२
तबहमतेरहभगिनिसोहाई। आपहिमहँमनदियोलगाई १३ तातेकरहुकंतकल्याना। देहुकामनाकृपानिधाना॥१४॥

मैत्रेयउवाच।

सुनिकश्यपअसदितिकेबैना।बोलेवचनदेनसुदऐना१५क०उ०कीन्ह्योकौनकामनाप्यारी।पुजवहिंगेसबभाँतितिहारी
साधकअर्थधर्मअरुकामा। कोनपुरुषसेवहिअसवामा१६॥जाकेघरमेंनारिसयानी। सोनरसबआश्रमसुखदानी ॥

तिमिनरुणीलहिदुखजलधि, जनइनरतसहुलास । जिमिनग्नी लहितग्नजन, वारिधिविनहिंप्रयास ॥ १७ ॥
नारिकहावतिहैअरधंगी । यहलोकहुपरलोकहुसंगी ॥ जेहिविनसकलधर्मधुरधारी । करहिंनकर्महोनिअसनारी ॥ १८ ॥
निजतियकेसँगकरिअतिप्रीती ॥ मिटहिंमुनिजनमनसिजभीती ॥ जैसेंकिलावैठिमहिपाला । जीनहिविनश्रमवैरिगिविशाला ॥
करिनसकैतियप्रतिउपकारा । जोजनजीवहिवर्षहजारा ॥ एसीतुमहौसुमुखिसयानी ॥ प्रतिउपकारसकहिंनहिंठानी २० ॥
पैसुतहेतुमनोरथतेरो । पूरकरनकोहैमनमेरो ॥ एकमुहूरतधीरजधरहू । अवैनगतिकीइच्छाकरहू ॥ २१ ॥
दोहा–संध्यासमयभयावनी, धावहिंभूत पिशाच २२ वैलचढेनिजगणनयुत, विचरहिंशिवमुखपाँच ॥ २३ ॥
धूरधूसरितविथुरेवेसा । तड़ितसरिससोहतशिरकेशा ॥ चिताभस्मअंगनिअँगरागा । रजतसरिससोहहिंतनुनागा ॥
तुवदेवरशंकरभगवाना । तीनिनयनतिनकेजगजाना ॥ तेयहिकालकरतसंचारा ॥ अवशिदेखिहैंकरतविहारा ॥ २४ ॥
तिनकेअपनपरायोनाहीं । नहिंमानतनिंदतकोहुकाहीं ॥ छुवतनपदतेजौनविभूती ॥ सोहमसवशिरधरहिंअकूती ॥ २५ ॥
शिवआचरणअदोषसदाहीं । वर्णतजासुदोषनशिजाहीं ॥ गावतरहतसदामतिमाना । जिनतेअधिकनकोउसमाना ॥
दोहा–सोशंकरसंतनसुखद, यद्यपिहैंभगवान । तद्यपिकरहिंपिशाचको, सवआचरणमहान ॥ २६ ॥
जेशंकरकेचरितनकाहीं । निंदनकरहिंसदामुखमाहीं ॥ तेजनजगमहँसदाअभागी । होहिंजेज्ञानिहुपरमविरागी ॥
शिवआचरणहेतुनहिंजानैं । कूकुरकौवेकाप्रियमानैं ॥ पहिरहिंभूपणवसनअनेका ॥ कवहुँनतिनकोहोयविवेका ॥ २७ ॥
ब्रह्मादिकसुरअरुदिगपालै । जेहिथापितमर्यादापालै ॥ जगकारणश्रुतिकहइपुरारी । मायाजिनकीशासनकारी ॥
करहिंनप्रभुआचरणपिशाचा । सोसवविधिअतर्कहैसाँचा ॥ २८ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

यहिविधियदपिमुनीशवुझायो । तदपिनदितिकेमनकछुआयो ॥
दोहा–कामविवशकश्यपप्रिया, छोंड़िसकलतनुलाज । पतिकोपटपकरचोतुरत, गणिकासमरतिकाज ॥ २९ ॥
रतिहिततियहठिगुनिमुनिराई ॥ ईश्वरकोतहँशीशनवाई ॥ कियोविहारयकांतहिजाई ॥ ३० ॥ पुनिसरितामहँजायनहाई ॥
प्राणायाममौनह्वैकीन्ह्यो । गायत्रिहुकोकछुजपिलीन्ह्यो ॥ ३१ ॥ निंदितकर्ममानिपछिताई ॥ दितिलज्जितह्वैशीशनवाई ॥
पतिकेनिकटजायअसवोली । अपनेमनकीआशयखोली ॥ ३२ ॥

दितिरुवाच ।

मैंशिवकीलज्जानहिंमानी । सोअपराधभयोमैंजानी ॥ सोअपराधनमनहिंविचारी । नाशहिंनहिंममगर्भपुरारी ॥ ३३ ॥
महारुद्रकोकरहुँप्रणामा ॥ नाशकसकलदासदुखग्रामा ॥ ३४
दोहा–मोपरहरकीजैकृपा, ममभगिनीकेकंत । नारिनपरदायाकरत, व्याधहुअतिअघवंत ॥ ३५ ॥

मैत्रेयउवाच ।

यहिविधिकहतकँपतदितिगाता । पुत्रलालशातियनअघाता ॥ संध्याकरिदितिसोंमुनिराई ॥ देतभयेअसवचनसुनाई ३६

कश्यपउवाच ।

अशुचिरहीपुनिसांझहिधाई । मेरोवचननकछुउरलाई ॥ शंकरहूकीलाजनमानी । तातेसत्यलेहुयहमानी ॥ ३७ ॥
ह्वैहैंपुत्रयुगलबलवारे । देवनकेदुखदेवनहारे ॥ महाअभद्रभयावनरूपा । त्रिभुवनजितिहैंयुतसुरभूपा ॥ ३८ ॥
जबप्राणिनकोअतिदुखदैहैं । परनारिनवरवशधरिलैहैं ॥ करिहैंहरिदासनअपकारा । जवतेकरिहैंकोपअपारा ॥ ३९ ॥
दोहा–तबकोपितह्वैकृष्णप्रभु, अवशिधारिअवतार । तुवपुत्रनकोमारिहैं, जिमिपुरुहूतपहार ॥ ४० ॥
कश्यपवचनसुनतभयमानी ॥ वोलीदितिअतिमंजुलवानी (दि०उ०) कृष्णहनैंपुत्रनकहँमेरे ॥ होयँननाशकुपितद्विजतेरे ४१
जेजनहोहिंविप्रअपकारी । जेप्राणिनकहँकरहिंदुखारी ॥ जौनजौनयोनिनमेंजावैं । तहँतहँअवशिनिरादरपावैं ॥
परेजीबनरकहिंमहजेऊ ॥ करहिंनिरादरतिनकहँतेऊ ॥ ४२ ॥ सुनतप्रियाकेवचनसुहाये । कश्यपमुनिअसवचनसुनाये ॥

कश्यपउवाच ।

पतिगुरुअरुकुलवृद्धवड़ेरे । औरहुजेगुणमाहँजठेरे ॥ इनकोनिदरिकरहिजोकामा । पावतनरसोदुखपरिणामा ॥
दोहा—तातेवाणीवड़ेनकी,कवहुँनडारोठेलि । अनुचितउचितविचारतजि,निजशिरलीजैमेलि ॥
करिअधर्मजोतैंपछिताई । अपनेमनविवेकअसलाई॥कृष्णचंद्रकोकियसनमाना।हमहिंशिवहिआदरदियनाना॥४३॥
तानेजेठपुत्रतुवहोई । ताकेएकपुत्रअसहोई ॥ ताकोयशहरियशकेसंगा । गैहैंसंतसकलअवभंगा ॥ ४४ ॥
ह्वैहैसोहरिदासनप्यारो । अतिशयअनुपमगुणनअगारो ॥ जिमिबुधपावककनकतपाई।लेहिंशोधिमलसकलविहाई॥
तिमिअवगुणतजिगुणगहिलैहैं॥सवसाधुननिजगुणनसिखैहैं॥४५॥जासुकृपालहियहरसंसारा।रहतसदाहिप्रसन्नअपारा॥
दोहा—सोयदुपतिकोदासवह, होइहिसदाअनन्य । पायकृपाहरिसंतमधि अग्रगण्यअतिधन्य ॥ ४६ ॥
महाभागवतमहाप्रभाऊ । मनिहैंसकलजगतहरिभाऊ ॥ सवसंतनमैंपरमप्रधाना । करिहरिभक्तितजैअभिमाना ॥
सदाधरेहियमेंहरिध्याना ॥ ४७ ॥ शीलसिंधुग्राहकगुणनाना।परकेसुखसेरहिहिसुखारी ॥परकेदुखमेंरहिहिदुखारी ।
वाकोशत्रुजगतनहिंहोई।सवकोशोकहरिहिहठिसोई॥जिमिनाशतश्रीषमशशितापा।तिमिनाशिहैजगतसंतापा॥४८॥
जेप्रभुदासेहतुवपुधरहीं । सदाभारधरणीकरहरहीं ॥ कुंडलमंडितआननजाको । कमलनयनजोकंतरमाको ॥
दोहा—अंतरवाहेरजगतमें,मेरोनातिविशेषि । नवनवआनँदपाइहै, नितहिनिरंजनपेखि ॥ ४९ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

सुनिनातीकोभागवत,पुत्रनवधहरिहाथ । गुणिकैदितिमोदितभई,पतिपदनायोमाथ ॥ ५० ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौचतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

दोहा—फेरमुदितमित्रातनय,करिकैश्रीहरिध्यान । विदुरमहामतिमानसों, लाग्योकरनवखान ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

तेजरूपकश्यपकोरेतू । धारयोदितिअतिमोदनिकेतू ॥ रह्योगर्भशतवर्षप्रमाना । देवनउरभोशोचमहाना ॥ १ ॥
गर्भतेजतेरविभेमंदा । लोकपालहुनगयोअनंदा ॥ छाईदशहुदिशाअँधियारी । ब्रह्मनिकटगेदेवदुखारी ॥
कियेसकलविनतीकरजोरी।नाथहमहिंनहिंभयभैथोरी॥२॥यहतुमकसनविचारहुधाता। हमहिंजानपरतोउत्पाता ॥
भूतभव्यअरुवरतहुमाना । तुमहिंविरंचिकछूनछिपाना॥३॥देवदेवदिगपालसिखावनि।जगसिरजनहारेतुमहौधनि ॥
दोहा—स्थावरजंगमजीवके,ज्ञाताहौतुमतात । तातेहमपरकरिकृपा, करिदीजैसवतात ॥ ४ ॥
जयविरंचिविज्ञानप्रकाशी । जयमायाधृतवपुतपराशी॥जयचतुराननरजगुणधारक । जयप्रपंचपूरणपरचारक ॥५॥
जेअनन्यह्वैतुमकहँभजहीं।तेजननरककबहुँनहिंव्रजहीं॥तुमहौचेतअचेतनकारण।करहुसकलजगनिजउरधारण॥६॥
जेइन्द्रियजीतिसवकाला ।आपअनुग्रहलहहिंविशाला॥तेपावतनहिंतुमहिंकलेशा।विचरहिंजगमहँमुदितहमेशा॥७॥
वधेप्रजाजोप्रभुकीवानी। जैसेवृषभनथेवलखानी ॥ जेहिसवदेवजायवलिदेहीं । आशुप्रसादमोदअतिलेहीं ॥
दोहा—ऐसेप्रभुहौनाथतुम,तिनकोकरहिंप्रणाम । करहुशरणकल्याणअव,आपकृपाकेधाम ॥ ८ ॥
दुखितहोहिंदिशिलखिअँधियारा । तातेकरहुनाथउद्धारा ॥ बूडतशोकसमुद्रनिहारी।नाथलीजियेआशुउवारी॥९॥
दितिकोगर्भबढ़तनितजावे । नितनितहमकोदुखउपजावै ॥ परैनजानिरैनदिनभेदा।तातेउरउपजतअतिखेदा ॥१०॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

सुनिकरतारसुरनकीवानी।वोलेविहँसिकृपासुखखानी॥११॥(ब्र.वा.)सुनहुदेवअववचनहमारे।मनतेप्रथमहिभयेकुमारे ॥

सनकसनंदनसनतकुमारा । औरसनातननामउचारा ॥ येचारिहुसबदेवनकेरे । हैंपूर्वजहरिभक्तिघनेरे ॥
दोहा-विचरतरहतत्रिलोकमें, चलनअकाशअकास । छोंडिकामनासकलमन,श्रीनिवासकेदास ॥ १२ ॥
एकसमयसनकादिकतेई । विचरतविचरतहरिपदसेई ॥ करिमनमेंहरिदर्शनआसा । गवनकीनवैकुंठनिवासा ॥
जाहिलोकसबकरहिंप्रणामा।अभिगमनमेंअतिअभिरामा॥१३॥जिनस्वरूपहरिरूपसमाना।वसहिंतहांभागवतप्रधाना
जेनिष्कामभजैंभगवानै । तेविशेषनहँकरहिंपयानै ॥ औरैहरिपार्षदजहँरहहीं । हरिसेवनहितनितमुदलहहीं ॥१४॥
वसहिंतहाँयदुपतिजगदीशा॥निगमगम्यवंदितममईशा॥शुद्धतत्त्वमयमूरतिजाकी । हरनिहारहठिमदनप्रभाकी १५
दोहा-जहँकाननसुंदरलसत,निश्रेयसआराम । विलसहिंकोटिनकल्पतरु,पटऋतुनितविश्राम ॥
मंजुलवंजुलकुंजविराजैं । मूरतिवंतमुक्तिसमभ्राजैं ॥ तालतमालहुसालविशाला । अरुप्रियाल हिंताल रसाला ॥
लतिकालोनीलुरिलहराती । लखतलेखललनाललचाती ॥ फरशनिफूलेफूलनिपुंजा । मंडितमत्तमधुपकलगुंजा ॥
जीवनकेअघमोचनवारे । ऐसेजेहरिजनहरिप्यारे॥ १६ ॥जगजाहिरयदुपतियशगावैं । ललनासहितसदासुखपावैं ॥
शीतलमंदसुगंधसमीरा । वहतसदानाशकत्रयपीरा ॥ जेवसंतलतिकामनभाई । फूलिरहींसौरभसरसाई
दोहा-हरिपार्षदविचरतरहत, सौरभतिनकीपाइ । गावतहरियशसर्वदा, रहतनतहाँलोभाइ ॥ १७ ॥
कीरकपोतऔरचकवाका । सारसहंसमयूरबलाका ॥ चातकतीतरऔरचकोरा । हरियशगावहिंकरिकलशोरा ॥
गुंजतबहुमधुमत्तमलिंदा । तेयशगावहिंसदागोविंदा॥सुनिसुनिमोहिपरस्परजाहीं।पुनिपुनिगावहिंसुखदसदाहीं१८॥
तुलसीवनसोहहिचहुँघाहीं । थलथलपूरपरागसोहाहीं ॥ कुरवककुदचंपकमंदारा । नागवकुलपुन्नागअपारा ॥
कुमुदकमलजेचारिप्रकारे।हरिगलतुलसीमालनिहारे॥धनिधनिधनितुलसीसोंकहहीं।निजतपलघुगुणिलज्जितरहहीं ॥
दोहा-जेजगमेंकेवलकियो,श्रीपतिकोपरणाम । तिनकेश्रीवैकुंठमें,सोहतअनुपमधाम ॥
केतेबैडूरजमणिकेरे । कितेकनककेतेजघनेरे ॥ पद्मरागमणिकेबहुसोहैं । मरकतमणिमंडितमनमोहैं ॥
थलथलललनाललितसोहाहीं।रतिरंभाजिनलखिलजिजाहीं॥कोटिशशीसमवदनप्रकासा।फैलतफरशफवतसुखवासा
हरिदासनकोतकितेउतरुणी । विहँसहिंमंदविमोहनकरणी॥पैविकुंठवासीहरिदासा । फँसहिंकबहुँनहिंमनसिजफांसा
निरखततेनितनंदकुमारै । नितनितनवसुखलहतअपारै॥हरिमंदिरमहँरमासोहाई।जोक्षणक्षणछविकीसमुदाई ॥२०॥
दोहा-कमलकरनलैकमलयक, फेरहिंलीलाहेत । मनहुँनाहकेनेहहित, झारहिंनेहनिकेत ॥
कमलाकृपाकटाक्षहिहेतू।करहिंअमिततपविधिवृपकेतू ॥ सोकमलाकृष्णहिपदमाहीं । निजतेरहीलोभाइसदाहीं ॥
हरिमंदिरशोभाकोवर्णै । सातहुमणिनसातआवर्णै ॥ दिव्यकनकजांबूनदकेरे । बनेसातद्वारेछविढेरे ॥
जहाँविधाताविश्वकर्माकी।यकथलनिरखतगतिमतिथाकी२१बहुवापिनमहँविद्रुमघाटा।जटितसकलहीरनतेबाटा ॥
सुधासरिससोहतशुभनीरा । इंद्रनीलसमअतिगंभीरा ॥ तहँतबकहुँभगवाननहाहीं । सखिनसहितकमलासँगजाहीं॥
दोहा-तुलसीदलकरअमललै, जलमधिप्रेमहिछाइ । पतिपदपंकजपूजती, आनँदअंबुवहाइ ॥
जलमहँनिजमुखअलकसमेतू।निरखिरमाअतिसुछविनिकेतू॥निजशोभाप्रभुकृपाप्रभाऊ।असगुणिवढ़तहियेअतिचाऊ
रमारमापतितिनजलमाहीं । करतकेलिबहुविधिविलसाहीं॥कहुँविचित्रवनउपवनबागा।जहँआनँदमयउड़तपरागा ॥
बनीजहाँजांबूनदधरणी । तीनहुँलोकप्रभाकीभरणी ॥ बहुविधिरतनखचितसबठोरा । होतजहाँविधिहरमनभोरा ॥
कीटपतंगकुरंगविहंगा । वैरविहायचरहिंयकसंगा ॥ सबैसच्चिदानंदस्वरूपा । प्रभावंतजेपरमअनूपा ॥
दोहा-हरिकोमनजहँहोतजस, तहँतैसहिफलहोत । दिव्यशशीसूरजविमल, दिव्यप्रकाशउदोत ॥
त्रिभंगीछंद-सरसैबहुसरसीसुंदरसरसीकंचनफरसीफाविरही।मणिमंडितघाटाविचविचबाटाकलशनिठाटाशोभसही
बहुबनीकियारीजलसंचारीमणिउजियारीराजतिहैं । मनसिजमनहारीअतिसुखकारीअतिद्युतिवारीभ्राजतिहैं ॥
कहुँविपुलसुबागावलितविभागाप्रदअनुरागामुनिजनके । तहँअमिततड़ागालैचहुँभागानीरअदागामज्जनके ॥
चौहट्टबजारूचहुँकितचारूवस्तुअपारूयुतविलसै । तहँबहुनरनारीभूपणधारीनितसंचारीहैहुलसै ॥

धृतचंदनभालाउरवनमालाबाहुविशालाचाग्छजै । पीतांबरधारेश्रीहरिप्यारेमुक्तउदारेनित्यव्रजै ॥
तहँमहाउतंगाकृतमणिरंगामहलअभंगासोहिरहे । जिनकोपरकाशाछ्योअकाशाचारहुआशाप्रभागहे ॥
कलशाकलसोहैंजिनकहँजोहैंगविशशिमोहैंप्रभाभरे । बहुध्वजापताकेविविधकिताकेबहुचपलाकेगर्वहरे ॥
तहँद्वारद्वारेकलशअपारेवंदनवारेमुक्तनके । हरिआगमजानीजनविज्ञानींहैंसुखखानीतनमनके ॥
हरिअस्तुतिगावतखड़ेसोहावतनिजथलछावतक्षणक्षणमें ॥निशिदिनहरिध्यावतकहुँनसिधावतहरिढिगआवतपलपलमें॥
मुक्तनमुदभरितावि‍रजासरिताअर्मानिदरिताअंबुढरै । तहँहरिपुरवासीआनँदराशीमज्जनआशीगमनकरैं ॥
जेजसअभिलापैंमनमहँराखैंमुखनहिंभापैंहरिदासा । चलिरमानिवासासहितहुलासापुजवहिंआसाअनयासा ॥
जेहिदर्शनहेतूविधिवृषकेतूबहुविधिनेतूकरतरहे । सोश्रीवैकुंठाप्रभाअकुंठाकिमिमतिकुंठावरणिकहे ॥
तहँजेजनजावैंअतिसुखछावैंपुनिनहिंआवैंसंसारे । नितहरिहिविलोकैंसदाअशोकैवसतसुवोकैसुखसारे ॥
ऐसोहरिधामातहँश्रीधामापूरणकामाराजतहे । शिरकीटरसालाउरवनमालाबाहुविशालाभ्राजतहे ॥
पटपीतसोहावनतडितलजावनप्रभावढावनकटिसोहै । वपुअतिअभिरामासुंदरश्यामाकोटिनकामामनमोहै ॥
मणिकनकअगाराखम्भहजाराप्रभाअपाराचहुँघाहीं । सिंहासनमाहींप्रभुविलसाहींरमासोहाहींउरमाहीं ॥

सोरठा–जोवहुवेदनगूढ़, पारनपावहिंशेषकहि । ताकोमैंमतिमूढ़, केहिविधिवर्णनकरिसकों ॥ २२ ॥

दोहा–मतिहरणीभरणीदुखै, हरिचरित्रविनजोय । तौनकथाजेसुनहिंशठ, तेनजायँतहँकोय ॥

हरियशविनगाथाजेगावैं । तेनररवरवनरकसिधावैं ॥२३॥ चहहिंहमहुँमानुपतनुपावैं । तौकरिभक्तिकृष्णपुरजावैं ॥
धर्मज्ञाननरतनुमहँहोवै । ताकोपायवृथाजनखोवै ॥ ऐसीमनुजयोनिकहँपाई । जेनभजहिंहरिपदरतिलाई ॥
तेनरघोरनरकमहँजावैं । कोटिनजन्मकीटतनुपावैं ॥ जेजनयदुपतिकथासोहाई । गावतरहतप्रीतिउरछाई ॥२४॥
पदपदमहँबाढ़तअनुरागा । ढारतनैननीरबड़भागा ॥ क्षणक्षणमहँपुलकावलिहोती । पूरप्रेमरसप्रीतिउदोती ॥

दोहा–जेजनहमसवसुरनके,अहैंशिरोमणिसांच । कवहुँनतिनकेतनुलगत, नरकअनलकीआँच ॥

श्रीवैकुंठजातजनजेई । होतसदायदुपतिपदसेई ॥ देखहिंनितनवयदुपतिलीला । महामोहमंडितशुभशीला॥२५ ॥
एसोश्रीविकुंठहरिधामा । जाहिकरैंसबलोकप्रणामा ॥ लसहिंमुक्तजनविपुलविमाना । फैलरह्योपरकाशअमाना ॥
तेहिविकुंठहरिदर्शनहेतू । गेसनकादिकयोगनिकेतू ॥ लखिवैकुंठनगरकीशोभा।सनकादिकहुनकरमनलोभा॥२६॥
नांघिगयेजबपटदरवाजे । निरखतसुछविसुनतबहुबाजे ॥ पहुँचेजबहिंसातयेंद्वारे । तबद्वैहरिपारषदननिहारे ॥

दोहा–वैसवरोबरदुहुँनकी,तनुसुंदरघनश्याम । भुजकेयूरकुंडलश्रवण,शीशकिरीटललाम ॥

गहेगदाद्वारेदुहुँओरा । खड़ेजयविजयअतिवरजोरा ॥ २७ ॥ पहिरेउरमंजुलवनमाला । जामेंगुंजिरहेअलिजाला ॥
सोहतचारिहुबाहुविशाला । ठाढेदोउद्वारकृपाला ॥ २८ ॥ खुलेरहेसातहुदरवाजे । जिनकपाटमणिसहितविराजे ॥
षटद्वारननँघिगयेअशोके । सनकादिकनकोउनहिंरोंके ॥ तैसहितेमुनिसरलस्वभाऊ । सतयोंद्वारचलेकरिचाऊ ॥
हरिदासनसोंपूछेउनाहीं।नहिंकछुविषमज्ञानमनमाहीं॥विचरतजसलोकनपरवीने।तैसहिकृष्णपुरहुलखिलीने ॥२९॥

दोहा–पंचवर्षवयरहतनित,सनकादिकऋषिचारि । बिनपूँछेप्रविशतमहल,तहँजयविजयनिहारि ॥

कुटिलभ्रुकुटिदृगअरुणविशाला । श्वासलेतकोपितजनुकाला ॥हेमदंडदोउपार्षदभारी।रोंक्योद्वारमध्यमुनिचारी॥
जानैंनहिंतेमुनिनप्रभाऊ । हरिइच्छावशरहेउनभाऊ ॥ बोलतभेदोउवचनकठोरा । जाहुकहाँतुममुनिनकिशोरा ॥
हौतुमपाँचवर्षकेछोटे । पैहमकोदीसहुअतिखोटे ॥ बिनपूँछेहरिमंदिरजाहू । प्रभुदर्शनकोकियेउछाहू ॥
खड़ेरहौद्वारेमुनिचारी । करतशयनह्वैहैंगिरिधारी ॥ मुक्तजननदेखतमुनिचारी । रोंकिगयेतबअतितपधारी ॥३०॥

दोहा–सनकादिकत्रयलोकमें,रोंकिजाहिकहुँनाहिं । तिनहिंविजयजयरोंकदिय,सतयेंद्वारेमाहिं ॥

करनहेतुहरिदर्शनआये । हरिसमीपमुनिजाननपाये ॥ तबसनकादिककोपितह्वैकै । बोलेवचनद्वारपनज्वैकै ॥ ३८॥

मुनयऊचुः ।

करिकै भगवतधर्मअपारें । यहविकुंठकहँजीवासिधारें ॥ सिगरेजेविकुंठकेवासी । अहैंशीलसागरसुखरासी ॥
कोहुकेनहिंअहँकारविकारा । जानहिंवस्तुहिसारअसारा॥सोविकुंठमधिहरिजनजाहीं । कसकपटीदोउवसहुइहाहीं॥
कहँपायउतुमविपमस्वभाऊ।जानहुनहिंतुमकृष्णप्रभाऊ॥जसतुमकपटस्वभावहिरहहू। तसहिसवकहँजानतअहहू ॥
दोहा-कपटीकुमतीकलमपी, कूरकठोरस्वभाय । तुमपाखंडीपूरहौ, कहाँरहेइतआय ॥
जोअसशठस्वभावतुमधारहु।तौअसप्रभुकहँक्योंनविचारहु॥तुमकतविश्वउदरमहँधारे।होहुनतुमसाधुनकेप्यारे ३२
प्रभुहिसंतजनव्यापकदेखे । जिमिनभमहँनखकोहपरेपे ॥ तेप्रभुकेतुमहौनहिंदासा । केवलवेपहिकेरप्रकासा ॥
हरिमेंकहूँविपमतानाहीं।किमिआयोअवगुणतुमपाहीं॥अहौनहरिपुरनिवसनलायक।जहँकृपालुविलसहिंयदुनायक॥
तातेलोभकोहमदकामा । ऐसोजगतजौनदुखधामा ॥ तहाँजाहुदोउममअपकारी । होहुदैत्यराक्षसदुखकारी॥३४॥
दोहा-यहिविधिसनकादिकदई,जवजयविजयकुशाप । जोअनिवारणशस्त्रते,कारकईशहुताप ॥
तबजयविजयभीतिअतिपाई । परेमुनिनचरणनअकुलाई॥३५॥बोलेयुगलयुगलकरजोरी।नाथभईहमतेबड़िखोरी ॥
दियोदंडहमरेअपराधा । जेहितेमिटैशापकीवाधा ॥ सोउपायप्रभुदेहुबताई । विनतीकरहिंचरणशिरनाई ॥
वरुहमराक्षसदानवहोवैं । पैमनमेंहरिसुधिनहिंखोवैं ॥ लहबकुयोनिकलेशनितेतो । हरिसुमिरणभूलबमतिजेतो ॥
तातेकृपाकरहुयहिभाती।हरिसुधिनहिंविसरैदिनराती॥हमअज्ञानवशतुमकहँरोके।ताकोफलननयनअवलोके॥३६॥
दोहा-सनकादिकजयविजयकहँ, जौनभयोसंवाद । तौनजनार्दनजानिकै, राखनहितमर्याद ॥
श्रीपतिनिजपार्पदनकृत,गुणिमुनिकोअपराध । वैठरहेजसतेसही, दौरेकृपाअगाध ॥
निजपदअरविंदनमकरंदा । पानकरतमुनिवृंदमिलिंदा ॥ तिनपदसोंधरणीमहँधावत । आयेप्रभादिगंतनछावत ॥
पीछेतुरतहिरमासिधाई । पैनहिंप्रभुहिंबीचमहँपाई ॥ ३७ ॥ तहँधायेपार्पदचहुँओरा । जानैंनहिंचरित्रतेहिठोरा ॥
कोउचमरलीन्हेंतहँधावत । कोउछत्रलैपीछेआवत ॥ कोउपादुकालैतहँआये । कोउविजनलैसपदिसिधाये ॥
मूर्तिमानसिगरेतहँआयुध । पीछेधायेजानिमहायुध ॥ सनकादिकश्रीपतिहिनिहारे । जेप्रभुसदासंतरखवारे ॥
दोहा-पहुँचितहाँपार्पदसवै, लगेचलावनचौर । छत्रपादुकालैखड़े, रमारमणजेहिठौर ॥
चमरपवनलहिझालरहलकै।छत्रछटाक्षणक्षणक्षितिछलकै॥लगीचंद्रमणिछत्रहिमाहीं।हरिमुखशशिताकिश्रवहिंसदाहीं॥
अतिप्रसन्नसोहतप्रभुआनन । दासनसुखददिपंतदिशानन ॥ सुखसागरगुणआगरनाथा । देखतहीकरिदेतसनाथा ॥
नवनीरदसोहततनुश्यामा । उरमहँविलसतिरमाललामा॥जनुविकुंठकीछविसवआई । हरिउरमहँवसिरहीलुभाई ३९
पीताम्बरसोहततनुकैसे । नवसाधनघनचपलाजैसे ॥ कांचीकटिकंचनपरकासी । नचतमालमधिचंपलतासी ॥
दोहा-उरविशालमेंलसिरही, शुभवनमालअपार । मनहुनीलगिरितेगिरी, वहुरँगसुरधुनिधार ॥
कंचनकंकणकड़ेलसहिंवर । धरेबाहुयकपाक्षिराजपर ॥ यककरमेंप्रभुकंजभँवावैं । अभयदानयककरदर्शावैं ॥
यककरकमलाकंधनिसोहै।मुरिमुरिताहिरमाछविजोहै॥४०॥चपलादुतिहरकुंडललोला।सुछविलहततेलसतकपोला
उन्नतनतशुकतुंडहिकरती।प्रभुनासिकावदनछविधरती॥कोटिनरविजेहिलखिलजिजाहीं।मणिकिरीटराजतशिरमाहीं
सोहतउरमहँबाहुविशाला।मनहुँश्यामवारिधवकमाला॥कंधरमेंकौस्तुभछविछावै।मनुमरकतगिरिहंससोहावै ॥४१॥
दोहा-हरिसुखमाकहँलौंकहौं, कमलाकोछविगर्व । भयोअस्तहरिअँगनिरखि, असभाषतकविसर्व ॥
मअससिवअरुतुमसबजेते । अहैंदासयदुपतिकेतेते ॥ जसइच्छादासनकीहोवै । तेतैसहिप्रभुकोवपुजोवै ॥
तहँसनकादिकलखियदुराई।कियेप्रणामचरणशिरनाई ॥४२॥दृगअरविंदचरणअरविंदा।नवकोमलतुलसीमकरंदा ॥
तासुसुरभिसँगपवनअपारा । प्रविशीहियनासाकेद्वारा ॥ मुनिमानसहरिलियोतुरंतै । सनकादिकभेमुदितअनंतै ॥
यद्यपिज्ञानमगनमुनिराई।तदपिहरिहिलखिगयेलोभाई ॥विकसितवारिजवदनविराजत।कुंदप्रकाशहासछविछाजत ॥
निरखतमुनिनमनोरथपूजे । गुणतभयेहमसमनहिंदूजे ॥

दोहा—श्यामपीठिपदतलअरुण, नखश्रेणीछविसेत। चरणत्रिवेणीमुनिनदृग, मज्जनकरिसुखलेत॥ ४४॥
पुनिसनकादिकधरिहरिध्याना। निरखतअनिमिषमुदितमहाना॥लगेविचारकरनतपधारी।धन्यधन्यहैभाग्यहमारी॥
जेइनकेपदकंजलोभाने। करहिंसप्रीतिप्रेमरसपाने॥ तिनकेध्यानसदाप्रभुआवैं। जिनकोयोगीकहुँकहुँपावैं॥
सुफलभयेदृगआजहमारे। देखिपरेप्रभुनरवपुधारे॥ दुर्लभऔरहुजौनविभूती। सोप्रभुनिकटविनहिकरनूती॥
असविचारिसनकादिकचारी। अस्तुतिगावतगिराउचारी॥ ४५॥

सनकादयऊचुः।

निवसहुयदपिसबैउरमाहीं। तदपिनजानहिंशठतुमकाहीं॥
दोहा—तेतुमप्रभुममदृगपथै, भयेकृपाकरिनाथ। कोकृपालुहैतुमसरिस, कीन्होहमहिंसनाथ॥
आपचरितजवपिताहमारे। सुधासरिसकाननमहँडारे॥ तबतेनिवसहुहियेहमारे।अबप्रत्यक्षलखिभयेसुखारे॥ ४६॥
सोइपरमातमतत्त्वप्रकासू। त्रिभुवनपूरितप्रगटप्रभासू॥ रूपमधुरदासनदरशाई। देहुभक्तिनिजउरउपजाई॥
जबदृढभक्तिभईजनकाहीं। तबदेखततुमकहँउरमाहीं॥छूटतअहंकारममकारा।पुनिनहिंआवतयहसंसारा॥ ४७॥
जेंअनन्यरावरेसुदासा। तेनकरहिंमुक्तिहुकीआसा॥ तौविधिशिवसुरपतिऐश्वर्या। चाहतनहिंतौकारुअचर्या॥
दोहा—भ्रुकुटिभंगतुम्हरेकरत, उपजतनशतअनंत। तिनकोनहिंचाहतकवहुँ, तेविरलेजनसंत॥
जेतवचरणशरणजनआवैं। चरितरावरोसुनैंसुनावैं॥ करतप्रेमरसकोनितपाना।तिनकेसमकोत्रिभुवनआना॥ ४८॥
हमसोंभयोमहाअपराधा। दियोनाथदासनकोबाधा॥ तातेनरकवसैंहमजाई। पैइतनोदीजैयदुराई॥
मनमिलिंदनिवसेपदकंजा। रसनाकहैचरितमनरंजा॥ तुलसीसमप्रभुसुरतिहमारी। लगीरहैनिशिदिनसुखकारी॥
आपकथापूरितममकाना। रहैसर्वदाहेभगवाना॥ ४९॥ सुंदरवपुनिजहृदयदेखायो।नयननअमितअनंदहिछायो॥
दोहा—देवनकोदुर्लभअहो, तुमकृपालुश्रीराम। सोहमकोदर्शनदियो, तुमहिंकरहिंपरणाम॥ ५०॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदे
वकृतेआनंदाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेपंचदशस्तरंगः॥ १५॥

ब्रह्मोवाच।

दोहा—यहिविधिजबअस्तुतिकरी,मुनिनसहितमतिमानि। तबसराहिबोलतभये, मुनिसोंशारँगपानि॥ १॥

श्रीभगवानुवाच।

पार्षदयेजयविजयहमारे। मोरधर्मनहिंनेकविचारे॥ कियोरावरोअतिअपराधा। तातेलहेशापकीबाधा॥ २॥
उचितदंडतुमइनकहँदीन्हों। यामेंसम्मतहमहूँकीन्हों॥ जेजनहोतविप्रकेद्रोही। कवहुँनतेप्रियलागहिंमोही॥ ३॥
करहुकृपाअवमोपरभूरी। विप्रचरणमहँममरतिपूरी॥ इष्टदेवहैंविप्रहमारे। तौनधर्मजयविजयविसारे॥
जोअपराधदासममकीन्हे। सोहमअपनेशिरधरिलीन्हे॥ ४॥ चाकरकरतचूकजोकोई। तौअकीर्तिस्वामीकीहोई॥
दोहा—जैसेइन्द्रियकरतिहै, विषयविवशअपराध। पैताकेसंबंधते, होतजीवकीबाध॥ ५॥
जासुसुधासागरसुयश, अवगाहेइकवार। सपदिश्वपचहूहोतशुचि, पुनिनलहतसंसार॥
ऐसोमैंकरितुवसेवकाई। ऐसीअनुपमकीरतिगाई॥ तातेभुजहुहोय मम द्रोही। तौतेहिकाटउँहोहुँनछोही॥ ६॥
विप्रनकीकीन्हेसेवकाई। ममपदरजपवित्रतापाई॥ नाशतजगकलिमलभलसोई। धरहिंशिवादिकशिरसवकोई॥
विप्रनकीकीन्हेसेवकाई। मैंपाइयहशीलबड़ाई॥ विप्रनकीकीन्हेसेवकाई। धरणिधरमधुरधरहुँ सदाई॥
विप्रनकीकीन्हेसेवकाई। मोहिंकहतजग त्रिभुवनसांई॥ विप्रनकीकीन्हेसेवकाई। रणमेंहारकवहुँनहिंपाई॥

दोहा-विप्रनकीसेवाकिये, भेअनंतममनाम । विप्रनकीसेवाकिये, भयो सत्यसुखधाम ॥
जाचंचलाकटाक्षहित. विधिशिवबहुतपकीन । तौनरमामोमहँअचल, यदपिनमैंतिहिलीन ॥
सोसबविप्रप्रसादप्रभाऊ । नहिंकछुममसहिमामुनिगाऊ ॥ ७ ॥ पावकअरुब्राह्मणमुखमेरे । ऐसोकहतवेदगणटेरे ॥
विप्रवदनतेयथाअघाऊँ । तथा न तोपअनलते पाऊँ ॥ जेनिरलोभीशांतउदारे । तेइविप्रमोहिंअतिप्यारे ॥८॥
मायाहसबमोगिविभूती । रुकनिनजासुकहूँकरतूती ॥ ममचरणोदकसुरधुनिधारा । पूतहोनहितशिवशिरधारा ॥
सबलोकनकी पावनकरणी । धरणीमेंअधमनउद्धरणी ॥ ऐसीमैंद्विजपदरजकाहीं । धरहुँआपनेमुकुटसदाहीं ॥
दोहा-ऐसोविप्रप्रभावसनि, जिनविप्रनसोंजोइ॥करतवैरतेहिकुमतिको, कबहुँउधार नहोइ ॥ ९ ॥
ब्राह्मणहैयहमोरशरीरा । गनेनभेदकबहुँमतिधीरा ॥ मोहिंअरुद्विजमहँलखहिंजोभेदू । जाहिहोतअसयमपुरखेदू ॥
गीधरूपधरियमभटबेरी । उभयआंखिऐंचहितेहिकेरी॥१०॥जोविप्रनममरूपहिंजानी । पूजहिंनवहिंजोरियुगपानी॥
जेमानहिंविप्रनकीगारी । होय विप्रजो निपटअनारी ॥ बोलतमधुरवचनमुसुकाई । राखतशील स्वभावसदाई ॥
कुपितविप्रकहँलेहिंमनाई । जसमैंभृगुमुनिकहँशिरनाई ॥ गावतमेरीकथासदाहीं । मानतहैकोउकीभयनाहीं ॥
दोहा-ऐसेजे जनजगतमें, विप्रभक्तपरवीन । तेसाधनकेअवशिमें, सदारहौं आधीन ॥ ११ ॥
मेरोधर्मदासनहिंजानी । कीन्होतुवअपराधअज्ञानी ॥ तातेविप्रकृपाअबकीजे । ममदासन ऐसोवरदीजे ॥
पायदैत्यराक्षसकीयोनी । भोगिशापकरिबहुअनहोनी ॥ आवहिंआशुनिवासहमारे । मिटहिंशापकेसकलखँभारे ॥
मोरविरहसहिसकिहैंनाहीं।जेतेदिनरहिहैंजगमाहीं १२(ब्र.वा.) सुनिसनकादिकश्रीपतिवानी।भयेशांतअतिशयमुदमानी
हरिछविपीवतदृगनअघाने । पुनिपुनिलखनहेतललचाने ॥ १३ ॥ थोरेअक्षरअर्थनथोरा । जामेंबस्योवेदसबठोरा ॥
दोहा-अमीउदधिअसहरिवचन, यदपिसुनेमुनिराय । अभिप्रायहरिकीतदपि, नहिंकछुपरीजनाय ॥ १४ ॥
देखिप्रगटऐश्वर्यनाथको।पुलकिततनुमुनिजोरिहाथको ।।बोलेमंजुलवचनसोहावन।सुनहुकृष्णहैंपतितनपावन॥१५॥

ऋषयऊचुः ।

कियजयविजयजौन अपराधा । सोनिजमान्योबुद्धिअगाधा॥इनपरचाह्योकृपाहमारी।आवहिंहरिपुरआशुसिधारी ॥
दईविप्रकहँनाथबड़ाई । सोतुवचरित पैरनजनाई ॥ १६ ॥ इष्टदेवहैं विप्रआपके । विप्रनकेतुमप्रभु प्रतापके॥१७॥
रक्षहुसदाधर्ममर्यादा । धरिअवताराहिनाथ विपादा ॥ अहौसकलधर्मनफलसांचे।सदासंतजनके मनरांचे ॥ १८ ॥
दोहा-तासुकृपालहिजनतरत, यहसागरसंसार । तहिप्रभुकोकोदूसरो, जोकरिकृपाअपार ॥ १९ ॥
जोकमलाकेपदरजकाहीं । धारहिंसुखहितसुरशिरमाहीं ॥ सोकमलातुवचरणनआई । तुलसीसमहठिरहीलुभाई ॥
जिमिअलिअंबुजसौरभपाई।औरसुमनपरबसोनजाई ॥२०॥ जसतुमप्रियदासनकहँजानो ।तसनहिंपद्माकहँप्रियमानो
सोतुमकोद्विजपदरजजोई । कैसेशुचिवरणीहठिहोई ॥ कहाविप्रपदपायप्रसादा । सेवततुमहिंरमाअविषादा ॥
कमलातौतुवमूरतिलोभी । आयआपनेतेउरशोभी ॥२१॥ तपअरुशौचदयाभगवाना। धर्मरूपतुवत्रिपदबखाना ॥
सोद्विजदेवहेतुतुमधारहु । पालहुजगतअधमउद्धारहु ॥
दोहा-जोयहिभाँतिनराखिये, विप्रनकीमर्याद । तौकोराखहिदूसरो, कोअसकरैप्रसाद ॥ २२ ॥
जोअसकरहुनद्विजसत्कारा । वेदपंथतौनशहिअपारा॥द्विजद्रोहीद्विजकहुँद्विजदरशै । तुमहिंविनाकोतिनहिविधंशै॥
जोतुमकरहुनद्विजपदप्रीती । तौसबलोगचलहिंतेहिरीती॥२३॥वेदपंथकोनाशकजोई।तुमहिंननीकलगतप्रभुसोई ॥
धर्मविरोधिनकेतुमध्वंसी । सदाधर्मधारिनपरशंसी ॥ भाषवविप्रप्रभावअपारा । हैयहनाथप्रभावतिहारा ॥ २४ ॥
चाहहुखीझकरहुइनपाहीं । चाहहुरीझकरहुइनकाहीं ॥ सुनिसनकादिकविनयमुरारी । पैअबविनयसुनहुगिरिधारी ॥
दोहा-विनअपराधहिहमदियो, तुम्हरेदासनशाप । उचितदंडदीजैहमहिं, कीजैनहिंसंताप ॥ २५ ॥
सुनिसनकादिकविनयमुरारी।मंदविहँसिअसगिराउचारी॥(श्रीभ.)गुणिअपराधविजयजयकाहीं।दियोशापतौअनुचितनाहीं
येममदासअसुरतनुपाई । भोगिआपकोशापमहाई ॥ एहैंआशुनिवासहमारे । ममप्रेरिततुमवचनउचारे ॥ २६ ॥

तहँसनकादिविकुंठविलोकी।अरुहरिकोकरिदासअशोकी॥ सिगरेसफलनयननिजकरिकै।परममोदअपनेउरभरिकै॥
देहरिकोपरदक्षिणचारी। मंदविहँसिअसगिराउचारी॥बहुविधिकरतविकुंठविधाना।प्रभुशासनलहिकीनपयाना॥२८॥
दोहा—पुनिदोहुनपार्षदनसों, बोले श्रीपतिवैन । होइहिहठिकल्याणतुव, मानहुउरकछुभैन ॥
तुम्हरेदेखिपरमसंतापा । सकहुँमेटिमैंयद्यपिशापा ॥ तद्यपिनाशहुँशापनघोरा । कछुलीलाकरिबोमनमोरा ॥२९॥
औरहुवाक्यसुनौचितलाई । शापकलंकनविप्रलगाई ॥ भयोयोगनिद्रावशजबहीं । मोढिगरमाआनचह्योतबहीं ॥
द्वारपरनरोकीतुमकाहीं । क्रुद्धहोयशापेमनताहीं ॥ विप्रनको जनिदेवोदोषू । धीरजधरिनिजनिजमनतोषू ॥ ३०॥
ह्वैकेदैत्यराक्षसहुधरणी । जीतिसुरनकरिअद्भुतकरणी ॥ पायनिधनतुमहाथहमारे । विप्रशापतेविगतसुखारे ॥
थोरेकालमाहँयहिलोकू । ऐहौपुनिपैहौनाहिसोकू ॥ ३१ ॥ यहिविधिद्वारपालदोउकाहीं । शासनदैभगवानतहाँहीं ॥
अतिसुंदरनिजमंदिरपाहीं।कियप्रवेशलैश्रीसँगमाहीं॥३२॥ तबतहँसुरवरदोउहरिदासा । भयेतुरंतहिहीनप्रकासा ॥
दोहा—सनकादिककेशापवश, वैकुंठहितेसोय । गिरतभयेधरणीतलै, सबसुधिबुधिनिजखोय ॥ ३३ ॥
गिरतविकुंठहितेसंसारा । माच्योसुरपुरहाहाकारा॥३४॥तेहरिकेपार्षददोउजाई । दितिकेगर्भहिगयेसमाई ॥ ३५ ॥
तासुतेजतिहुँलोकनव्याप्यो।अंधकारकरितुमहिंसँताप्यो॥सुनहुसुरोतुम्हरोकल्याना।करहिंअवशिसोईभगवाना ३६
जोजगसिरजिपालिपुनिनाशै । हैअनादिजेहिपरमप्रकाशै ॥ योगीजासुनजानहिंमाया । सोईप्रभुसबपैकरिदाया ॥
देहैंमेटिकलेशननाना । करिहैंमंगलश्रीभगवाना ॥ अपनेनहिंकछुअहैविचारा । काहेकीजतवृथाखँभारा ॥
दोहा—देवसबैअबगवनकरि, बसहुआपनेधाम । देखहुश्रीपतिकोचरित, हर्षशोकनहिंकाम ॥ ३७ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेषोडशस्तरंगः ॥ १६ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

दोहा—सुनिब्रह्माकेवचनअस, सकलदेवतजिशंक । गयेभवनमनमहँगुणत, कोमेटहिविधिअंक ॥ १ ॥
दितिशतवर्षगर्भकहँधारी । शंकितपतिकेवचनविचारी ॥ जबशतवर्षपूरह्वैगयऊ । तबद्वैपुत्रप्रगटदितिदयऊ॥ २ ॥
होनलगेतहँअतिउत्पाता । विविधभाँतिकेसुरभयदाता॥३॥धरणीकँपनलगीबहुबारा। भयोदशहुदिशिदाहअपारा॥
उलकागाजगिरनबहुलागी । केतुप्रभाभयदायकजागी ॥४॥ बहनलग्योतहँमारुतघोरा। उखरिगयोतरुगणचहुँओरा
उठेबवंडरबहुतभयावन। अंधकारभोभयउपजावन॥५॥विनपावसमहँअतिदुखजागी।चपलाचहुँकितचमकनलागी॥
दोहा—धूरधूसरितव्योमभो, रहीघटाघनघेरि । सूरजशशितारागणहु, परेनहींहगहेरि ॥ ६ ॥
कियोभयावनसागरशोरा । तरलतरंगउठीचहुँओरा ॥ वापीकूपसरितसरनीरा । सूखनलाग्योपरमगँभीरा ॥
सरितनसरनसरोजसुखाने॥७॥रविशशिमहँमंडलदरशाने।ग्रस्योराहुरविशशिविनकाला॥विनवारिधभोशोरकराला।
तैसहिगिरिनगुहारवभयऊ।अग्नितेजमंदहिपरिगयऊ॥८॥मुखतेवमतअग्निकीज्वाला ।ग्रामनघुसिबोलतेशृगाला ॥
काकउलूकरैनदिनमाहीं।करहिंभयावनशोरतहांहीं॥९॥नयनमूँदिअरुकंठउठाई।बोलहिंश्वानभानुमुहँलाई॥ १० ॥
दोहा—खुरखुरतेखोदतमही,करतभयंकरशोर । यूथबांधिकैधरणिमहँ,धावतहैंचहुँओर ॥ ११ ॥
रोदनकरतसबैयकसंगा । विपुलवृक्षतेगिरहिंविहंगा ॥ पुरनपहारनमहँपशुजेते । करहिंमूत्रमलक्षणक्षणतेते ॥ १२॥
रुधिरश्रवतगौवनथनमाहीं । पीकपयोधरवर्षतजाहीं॥सुरमूरतबहुरोदनकरहीं । विनापवनतरुगणगिरिपरहीं ॥१३॥
शुभग्रहकाहँपापग्रहघेरे । वक्रीह्वैयुधकरहिंघनेरे॥१४॥यहिविधिकरतअमितउत्पाता । भयेकलेशितप्रजाअपाता ॥
पैकोउमर्मनेकुनहिंजाने । सबकोनाशआशुउरआने॥विनसनकादिकसबजगलोगू।मानिप्रलयकीन्हेसबशोगू ॥ १५ ॥

दोहा-दोउदितिसुततहँप्रगटभे, बाढ़ेवेगअपार । वज्रसमानशरीरभो, भयेमंदराकार ॥ १६ ॥

छंदनाराच ।

विशालभालत्योंकरालललालबालसोहत । अखंडआजदाग्दंडब्रह्मअंडपोहत ॥
अमंदरत्नवृंदयुक्तअंगदोविराजते । विलोकिश्यामअंबसोंशरीरदेवभाजते ॥
प्रततहेमरत्नकोजड़ोमहाप्रकाशनो । किरीटकोटनोककोत्रिलोककोप्रकाशनो ॥
गिरींद्रकंदरैसमानकानऊमहानहैं । महाप्रकाशनैनज्योंप्रलयकृशानुभानुहैं ॥
चलैंस्वभावतेपदैधरैधराधरक्कती । फणीशशीशवारवारभारसोंखरक्कती ॥
भुजानकेप्रमानबेमहानहैदिशानलों । दुहूनकेशरीरभासमानआस्मानलों ॥
अनेकगर्भगाजकोगराजिकैपराजते । समाजतेसमेतमेवराजभूरिलाजते ॥
दलैसमेतदेखिकैदुरातदेवराजहैं । लवालुकातज्योंविलोकिकैविलंदराजहैं ॥
मनोअनंतविश्वकोतुरंतहीग्रसंतहै । मनोसमुद्रसातहूनपानकेकरंतहै ॥
मनोमहानमंदरैप्रवेगसोंउखारहीं । मनोकृशानुकोपतेत्रिलोकवोकजारहीं ॥
करालकालमींचहूनगींचनाहिंजातहैं । अशेषजीवदेखिकैत्रिशेषकोडरातहैं ॥
पसारिपाणिपौनवोनचासहूनरोकहीं । अपारतारतोरिकैमनोपतालझोंकहीं ॥
विलोकिकैदोऊदितीकुमारदेवयोंभनैं । भयेनहैंनहोयँगेइन्हैंसमानजीवनैं ॥
कृशानुभानुशीतभानुदेखिभानुभूलिगे । दिशानकेगजानसोंसभूरिभारतूलिगे ॥
विशालवक्षवज्रसेलसंतवज्रमालहै । सुवज्रपाणिवज्रकीनत्राससर्वकालहै ॥
पतालसोंमहानजासुआननेभयावने । विलोकिकैतिन्हैंपरेत्रिलोकमेंपरावने ॥

दोहा-दितिकुमारजबजन्मके, ठाढ़ेभयेसुभाय । तबदोहुनकेलंकलौं रविशशिपरेदेखाय ॥ १७ ॥

तहँकश्यपतिनकेढिगआये।दोउपुत्रनकोनामधराये॥जेठोहिरण्यकशिपुबलवाना।हिरण्याक्षतेअनुजमहाना ॥ १८ ॥
हिरण्यकशिपुतपकियवनजाई । ब्रह्मासोंबहुविधिवरपाई ॥ दैत्यराजनिजबाहुनजोरा। त्रिभुवनवशकीन्ह्योबरजोरा॥
मीचनगीचसकीनहिंजाई । भाजिगइअतिदूरपराई ॥ १९ ॥ हिरण्याक्षताकोलघुभाई । सदाजेठभ्रातहिसुखदाई ॥
गहिकरगदास्वर्गकहँधायो । करिरणअसुरहतनमनलायो॥२०॥धावतमहावेगसोंजवहीं।बजहिंचरणमहँनूपुरतवहीं॥

दोहा-आभूषणपहिरेअँगन, उरवैजंतीमाल । हिरण्याक्षकेकंधमें, सोहतगदाविशाल ॥ २१ ॥

महानिशंकनिरंकुशवीरा । लखितिहिकालहुछोंड़तधीरा ॥ ऐसोहिरण्याक्षकहँदेखी । चारिहुलोकपालकहँलेखी ॥
इंद्रवरुणयमऔरकुबेरा । भागिकूदिरणकियेवसेरा ॥ गरुडहिलखिजिमिनागपराने।तिमिदानवलखिदेवदुराने ॥२२॥
हिरण्याक्षसँगलरैनकोई । रहेबहुतसुरनिजवपुगोई ॥ देवपराजयदेखिसुरारी । मानिअनंदहियेअतिभारी ॥
महाजोरसोंकियोगराजा।डोलिउठ्योत्रयलोकदराजा॥२३॥इंद्रहिजानिनपुंसकलीन्ह्यो। तातेपुनिखोजननहिंकीन्ह्यो॥

दोहा-हिरण्याक्षकश्रमितहै, लाग्योकरनविहार । घुसतभयोअतिवेगसों, पूरवपारावार ॥

जिमितडागमहँहिलहिमतंगा । तिमिमज्जनलाग्योसबअंगा॥२४॥तासुप्रवेशवरुणगणदेखे। भागतभयेमहाभयलेखे॥
तासुअंगलखिसागरजीवा । बहुमरिगेभजिगयेअतीवा ॥ उठीतरंगतरलचहुँओरा । गयोमझाइसिंधुजलघोरा ॥२५॥
बहुवर्षनलौंसागरमाहीं । करिविहारमेव्योश्रमकाहीं ॥ आयसगदाजोरकरभारी । लग्योतायताडनअसुरारी ॥
गदालगेउछलैनभनीरा । नभचारीगिरिपरहिंअधीरा ॥ यहिविधिकरिबहुसलिलविहारा।वरुणपुरीकहँदैत्यसिधारा ॥

दोहा-रहींसिंधुकेबीचमें, जेहिविभावरीनाम । वरुणताहिपालतसदा, तहँपहुँच्योबलधाम ॥ २६ ॥

हिरण्याक्षकहँअतिहिडेराई । बसेरहेतहँवरुणलुकाई ॥ लखिजलेशकहँदैत्यअधीशा । बोल्योवचनकँपावतशीशा॥

वरुणतुमहिंहमकरहिंप्रणामा। देहुआजुहमकहँसंग्रामा॥ २७॥ लोकपालहौयशीघनेरे। मारेमदभटमानिनकेरे॥
प्रथमहिंदैत्यदानवनजीती। राजसूयमखकियेअभीती॥तातेआयलरौहमसेअब। अपनोबलदेखाइहौपुनिकब॥२८॥
हिरण्याक्षजवयहिविधिभाष्यो। तवजलेशशांतापरअतिमाष्यो॥पैवैरिहिबलवानविचारी। रोंकिकोपअसगिराउचारी॥
दोहा—युद्धकरनजानैंनहीं, हमतोहैंजलनाथ। प्रथमहिंतुमगुणिआगवन, भगेइंद्रकेसाथ॥ २९॥
तुमकहँयुद्धदेहिंजगमाहीं। हरिहिछोंडिअसदूसरनाहीं॥ तुमतौरणविधिजाननहारे। सुरपतियुततुमसोंहमहारे॥
पैअसजानिपरैमनमाहीं। देहैंहरिहठियुधतुमकाहीं॥ हरिकहँतुमसेवीरअनेका। रहहिंसराहतसहितविवेका॥ ३०॥
करिहौयुद्धजवैप्रभुसाथा। तवैजानिहौदानवनाथा॥ महागर्वनहिंरहहितिहारा। ह्वैहौश्वानशृगालअहारा॥
करिहौशयनभूमितलमाहीं। यामेंहैकछुसंशयनाहीं॥ जबलौंमिलहिंनकमलानाहू। तबलौंसबसतिजौनबताहू॥
दोहा—तुमहींऐसेखलनको, खंडनहेतुखरारि। नानातनुधारतरहत, धराधर्मधुरधारि॥ ३१॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेसप्तदशस्तरंगः॥ १७॥

श्रीमैत्रेयउवाच।

दोहा—वरुणवचनसुनिअसुरपति, ताकोदीनविचारि। हेरनहरिकेहेतुहठि, हरबरचल्योसिधारि॥
मारगमहँनारदमुनिराई। मिलेहिरण्याक्षहिकहुँआई॥ तिनसोंअसुरकहनअसलाग्यो। वसतकहाँहरिजीडरिभाग्यो॥
तबनारदबोलेमुसुकाई। जाहुरसातलदानवराई॥ हेरहुजाइवसततहँसोई। जाहिकहतयदुपतिसबकोई॥
अवशितासुसँगसंगरकीजै। जीतितहिजगमेंयशलीजै॥ हिरण्याक्षसुनिनारदवानी। कृष्णखबरलहिअतिसुखमानी॥
गहिगरुगदातहाँअसुरेशा। कियोरसातलआशुप्रवेशा॥ १॥ देख्योजायतहाँभगवाने। धारेशूकररूपमहाने॥
दोहा—एकडाढधरणीधरी, मनुगजदंतसरोज। छायोप्रभुपरकाशवर, अतिहिअपूरवओज॥

तोमरछंद।

लखिप्रभुवराहशरीर। हिरण्याक्षबलगंभीर॥ विहँस्योठठाइअपार। पुनिमनहिकीनविचार॥
मैंफिरचोत्रिभुवनमाहिं। असलख्योशूकरनाहिं॥ अतिलगतअचरजमोहि। अनुपमवराहैजोहि॥
यहिभाँतिअसुरविचारि। असदियोवचनउचारि॥ २॥ रेअधमशूकरधृष्ट। सुनिवचनमेरेदुष्ट॥
तजिदेइधरणिहमारि। नहिंडारिहौंतोहिंमारि॥ मोकोदियोकरतार। मैंहौंधरणिआधार॥
जोचहौअपनेप्रान। तौछोंडिशठअभिमान॥ ममलखतदुष्टइहाँहिं। लैधरणिजैहैनाहिं॥ ३॥
मोहिंलखतइंद्रडेराय। गोसैनसहितपराय॥ नहिंकीन्हयुधयमराज। जेहिजगतमारनसाज॥
तजिदीन्हदेशधनेश। जलदुरचोजायजलेश॥ मोहिंसकलदेवडेराय। भजिगयेसहितसहाय॥
तोहिंदियोइतहिपठाय। मोसोंलरनहितआय॥ तैंखडोधरणीधारि। मैंलियोसकलविचारि॥
तैंकपटकरिकैनित्य। मारेमहानदइत्य॥ नहिंभिरहिसन्मुखआय। रणजुरतजाहिपराय॥
छलयुद्धकोतुवजोर। बलहैशरीरहिथोर॥ हतितोहिशूकरराज। ह्वैहौंउऋणमैंआज॥ ४॥
दोहा—मोरिगदापरचंडयह, ममभुजकोबलपाय। अवशितोरशिरफोरिहौं, अबनाहिंविलमदेखाय॥

छंदभुजंगप्रयात।

जबैफूटिजैहैबड़ोशीशतेरो। तबैहोयगोमोदमेरोघनेरो॥ सबैदेवतादासजेमूढतेरे। बिनाहीहतेतेहतेसेघनेरे॥
तुहीसर्वदेवानकोहैअधारा।यहीतेतुहीकोचहौंआशुमारा॥५सुनैसो।हिरण्याक्षकीक्रूरवानी।धरीनाथडाढेंधराभीतिमानी

लखीभूमिकीभीतिभागिक्षपाला।लगेन्योंहिरण्याक्षकेंवनभाला॥कढेअंबुतेंकोपिकैंश्रीवराहा।भगेदानवैंकेदलैंकेउछाहा
मनोग्राहकेंसंजिबैकोगजेशा।कह्योंलिगजींभीनिकोंनाहिंलेशा।कह्यो मो हँ गो बराल नयाना॥गुण्योसोहिरण्याक्षजातेपराना
चल्योतासुपीछेगदाहाथलीन्हे॥दगोहैंबधेकोनडोंकोपकीन्हे॥चलेमंदमंदैगोविंदोअनंदै।नकेनाहितेकोदिशाभेअनंदै
यथासिंहपीछेचलैतुच्छश्वाना।तिकैतासुऔरैकैंशोरनाना॥हँसैवारवारैंप्रच्चारैंअपारैं।वर्गीहीवर्गाहीहर्गीहीनिहारैं॥
महागर्वपूरोकहैंवैनयोंरा।वचेगोनहींभाजिहेकौनओरा॥मिलेखोजतेखोजतेमोहिंआजू।कहाआपनीछोंड़िआयोसमाजू
अरेकृष्णतूनाअयोगैविचार्यो।महानीचयाशूकरैरूपधार्यो॥घुस्योसिंधुमेंतैंधराकोचुराई।अबैदेखिमोकोचल्यातूपराई

दोहा-हिरण्याक्षवाराहको,ऐसेवचनकराल। कहतभयोअतिशोरकरि,लालनयनतेहिकाल॥
पैशूकरप्रभुनहिंगने, फिरेनताकीओर। मंदहिमंदचलेगये, अतिनिशंकवरजोर॥
तबगराजकरिगाजसम, पुनिबोल्योअसुरेश। जानिपर्योमोहिंसत्यअब, कादरअहैरमेश॥
जिनकेतनुनहिंहोतिहै, नेकलोककीलाज। तेअपनेकाननसुनत, अपनीनिंदअवाज॥७॥

छंदरूपमाला-यहिभाँतितहँवाराहप्रभुशठकेसुनतकटुवैन। निकसेसपदितहँसलिलतेकछुगन्योताकीभैन॥
प्रभुजंघजोरनपायकैगोअंबुसिंधुमताइ। यकसंगउच्चतरंगउठहिअभंगसुरपुरछाइ॥
निजतेजधरितहँधरणिमेंधरिदीनजलमधिताहि। यहनिरखिकौतुकविधिशिवादिककहेवचनसराहि॥
हिरण्याक्षकेदेखततहाँवरपेसुरेंद्रप्रसून। बहुभाँतिबाजबजायकैमानेहियेमुददून॥८॥
धरिधरणिधरणीधरणिवारिधतक्योतिहिदृगफारि। निरख्योनिकटआवतसुधावतकहतवाणिकरारि॥
धारेकनकतेकलितकंधहिगदापरमप्रचंड। द्वैलक्षयोजनउच्चतनुनाँवतमनहुँब्रह्मंड॥
तहँठाढ़ह्वैकरिडाढ़सूधीगाढ़करिकैकोप। विहँसतवदनबोलेवराहउछाहकीतनुवोप॥९॥

श्रीभगवानुवाच।

हमसत्यहैंवनकेमृगावनमेंवसैंरचिधाम। पैरहहिंतुमसेश्वानखोजतयहैहमरोकाम॥
जेबँधेमीचहिपाशमेंतेचहाहिंतौनवताहिं। मतिधीरतिनकेवचननेकहुगनहिंनाहिंमनमाहिं॥१०॥
यहधरणिसांचीआपकीतिहिसत्यहमहरिलीन। सोभयोअतिअपराधहमसोंसोउभ्रमसोंकीन॥
अबगदाधारेआपकोलखिमानिअतिशयभीति। तजिलाजजीवनकाजभागेआनिकादररीति॥
नहिंलखेभागिहुपैबचबतबधारिकछुउरधीर। सन्मुखखड़ेअबरहेतुम्हरेमध्यसागरनीर॥
बलवंतसोंकरिवैरनिर्बलबचतहैनहिंभागि। यहजानिजलमहँधरणिधरिकैरुकेहमभयपागि॥११॥
तुमअहोदानवयूथकेपतिचलहुपदसोंधाइ। अबकरहुमेरेहतनकोबहुयतनरहिनहिंजाय॥
मोहिंमारिकैनिजबंधुगणतेउऋणहोहुसुरारि। भटकरतसाँचीजोप्रतिज्ञाकरतमनहिंविचारि॥
मोहिंहतेबिनपैहौनधरणीकरहुकरणीसर्व। विनकर्मकीन्हेकरहुकाहेवृथाऐसोगर्व॥१२॥

छंदपद्धरी। मैत्रेयउवाच।

सुनिनाथवैनदानवअधीश। मुनिलियोहाथझमकायशीश॥पुनिकियोकोपपावकप्रचंड।मनुकरनचहतब्रह्मांडखंड॥
जिमिचरणचपतकारोभुजंग॥तिमिकँपेदैत्यकेसकलअंग१३मुखश्वासलेतभोवारबार।भ्रुकुटीत्रिवंककरिदितिकुमार
इकसंगदंतसबकटकटाय।यहिगदावोरहरिओरधाय॥ करिशोरदेयचहुँओरपाय।मार्योवराहउरगदाआय॥१४॥
वरकायगदागेचटक्षपाल।योगीवचायजिमिजातकाल॥भरिजोरगयोगिरिदैत्यभूमि।पुनिउठच्योसम्हरिकेकछुकघूमि
लखिअसुरगिरतसुरहासकीन।तबकियोकोपदानवबलीन॥शठउक्योतुरतगहिगदाघोर।अधरनचवातरदसोंकठोर१५
पुनिगदाभवांवतवारबार।धायोसुरारिपैओजदार॥ आवतविलोकिअरिकहँअनंत। गहिगदाघोरधायोतुरंत॥१६॥
तेहिअसुरदाहिनीभ्रुकुटिबीच।हनिदियेगदालियजानिमीच॥तहँगदागदातेरोकिलीन।भटहिरण्याक्षयुधमेंप्रवीन१७

यहिभाँनिगदायुधह्वोनलाग । हरिहिरण्याक्षकोकोपजाग॥दोउहनैंवरावरगदाघाय ।दोउलैतगदादोउनवचाय ॥१८॥
दोउवीरअहैंकोपिनसमान । दोउगदायुद्धमेंअतिसमान ॥ दोउचहतआपनीविजयभूरि । दोउकियेअंगतेशंकदूरि ॥
दोउकरहिंपरम्परसिंहनाद । दोउकरहिंपरस्परवीरवाद॥दोउजातकहूँउड़िकैअकास ।दोउकरतकहूँजगतीविलास ॥
दोउलगतगदाअंगनिप्रहार । दोउतनैवहतशोणितैधार ॥ ह्वैगयेसिंधुकोसलिलशौन । दोउहोतक्षणैक्षणकोपभौन ॥
जवहिरण्याक्षह्वैजातवाम ।तवगहहिंनाथदाहिनोठाम॥जवहिरण्याक्षदक्षिणहिजात । तववामदिशाश्रीपतिलखात ॥
जिमिलरहिंवृपभद्वैसुरभिहेत।तिमिधरणिहेतदोउबलनिकेत१९हरिहिरण्याक्षयुद्धहोतजानि । ऋषियुतस्वयंभुअतिमोदमानि॥
आयेअकाशमहँचढ़िविमान ।वर्षेप्रसूनहरिपैअमान॥२०॥हरिहिरण्याक्षपदपायघात। जलउच्छलिआशुआकाशजात
भीजतविमानवासिनशरीर । उठतीअभंगजलभंगभीर॥बहुमच्छकच्छपदपिसेजाहिं । निजवचननेहतआतुरपराहिं ॥
चटचटाशोरह्वैरह्योघोर । भरिरह्योभुवनमेंचहूँओर ॥ हरिहिरण्याक्षकोयुद्धदेखि । सबदेवडरेमनमहँविशेषि ॥

दोहा–ऋपिनसहितकरतारतहँ, जानिअनर्थमहान । बोलेवचनवराहसों, देखिदैत्यबलवान ॥

ब्रह्मोवाच ।

नाथरावरेदासनकाहीं । देतकलेशरह्योबहुधाहीं ॥ यहशठविप्रनकोभयकारी । विनअपराधदेतदुखभारी ॥
जगजीवनभक्षणहठिकरतो । जानिकालयाहिकोउनहिंलरतो ॥२२॥मोतेयहपायोवरदाना।तातेभयोमहाबलवाना ॥
वागतलरनहेतसबलोकन । ढूंढ़तसकलदेवकेथोकन ॥ सिगरोसुरसमाजकहँजोरी । चढ़िऐरावतकरिवरजोरी ॥
लकरवज्रवज्रधरआयो । हिरण्याक्षकेअंगचलायो ॥ औरहुदेवसबैइकवारा । निजनिजआयुधहनेअपारा ॥

दोहा–गडेनआयुधअसुरके, टूटगयेतनुलागि । तबदेवनलैदेवपति, भाग्योअतिभयपागि ॥

तबतेलरहिंदेवकोउनाहीं । हिरण्याक्षकहँलखतपराहीं ॥ त्रिभुवनहैयाकीनहिंजोरी।याकेमारनकीगतितोरी ॥ २३ ॥
मायावीअतिभरोघमंडा । महानिरंकुशहैबरिबंडा ॥ अबनहिंयाकोनाथखिलावो । बालसरिसकसकलादेखावो ॥
सांपखेलावनहोतनयोगू । बचेअसुरदेहैंसुरशोगू ॥ २४ ॥ सांझसमैलहिअसुरउदंडा । होहिआशुअतिशयबरबंडा॥
तातेजबलौंसाँझनआवै । तबलौंनाशअसुरयहपावै ॥ जोहरिहिरण्याक्षकहँमारयो।तौजनुसिगरेसुरनउबारयो ॥२५॥

दोहा–संध्यासमैभयावनी, दैत्यनदेनहुलास । आवतिहैअबआशुही,दायकलोकनत्रास ॥
हेदेवनदायकविभव, दीनोद्धरसुखधाम ॥ २६ ॥ शठवधहेतमुहूरतो, आयोअभिजितनाम ।
सबमित्रनमंगलकरन, पुजवहुममनकाम । शांतकरोहनिअसुरको, यहदुस्तरसंग्राम ॥ २७ ॥
भलीबातप्रभुयहभई, लरयोजोतुमतेआय । असविश्वासआयोहिये, बचिहैनाहिंपराय ॥
किधौंभूलिविक्रमगये, यहशठकेतिकबात । देहुमोदसबजगतको, करिरणमेंरिपुघात ॥ २८ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुर
श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ तृतीयस्कंधे
अष्टादशस्तरंगः ॥ १८ ॥

श्रीशुकउवाच ।

दोहा–सुनिविरंचिकेवचनप्रभु, नेसुकहीमुसक्याय । नैनसैनकरिआपनो, दियमानिबोजनाय ॥ १ ॥
छंदरूपमाला–पुनिलख्योसन्मुखहिरण्याक्षहिफिरतहैचहुँओर । गुरवीगदानिजकंधधारेकरतशोरकठोर ॥
हैपरम निर्भय देवभयप्रद महाभूधर रूप । आदित्य सरिस उदण्डलीन्हे गदाहाथ अनूप ॥
ऐसेहिरण्याक्षहिनिकटद्रुतकूदिश्रीभगवान । हनुमेंहन्योकौमोदकीकोकोटिकुलिशसमान ॥
तहँहरिगदापैअसुरअपनीगदाआशुचलाय । हरिहाथतेकौमोदकीकोदियोभूमिगिराय ॥ २ ॥

जबभ्रमतभूतलमेंगिरिकौमोदकीदुनछाय । तबगुनिनिजायुधनाथकोनहिंसक्योशस्त्रचलाय ॥
अवलोकि अचरज अमरसब अतिशंक मनमेंधारि । चहुँओर हाहाकारकीन्हे अमुर विकलविचारि ॥
तब हिरण्याक्षहि हरिसराहि प्रचंड करिकैकोप । स्मरणकीन्ह्यो चक्रको करिअसुरवधकी चोप ॥ ५ ॥
चक्रहिगहे हरिको निरखि हिरण्याक्ष अतिहिरिसाइ । गहिगदासन्मुखचलतभो गुणिमनहिबचिनहिंजाइ ॥
आवतनिरखिहिरण्याक्षको आतुरअमरअवलोकि । हरिहिरण्याक्षहिहनहुअब असकहतभेसबशोकि ॥६॥
सुनिसुरनकी वाणी असुरअति अचलप्रभुहिं निहारि।अतिकुपित दंतन दरतअधरनगदानिजकरधारि ॥७॥
विकरालकालसमानदृगते असुरअति बलवान । पुनिपुनितकत हिरण्याक्ष हरिपै दहत मनहुँ दिशान ॥
मुखमध्यडाढ़ीअतिहिबाढ़ी दुखदगाढ़ी डाढ़ । अतिनदतसों हिरण्याक्षधायो मनहुँ जलदअसाढ ॥
अबनहिंबचत अस वचन कहि चपला समान चमंकि । हरिकेहन्यो उरमें गदाशठबारबारहिंहंकि ॥ ८ ॥
कमलाक्ष तब हिरण्याक्षको कियबामचरणप्रहार । सबकेलखत गिरिगैगदा शठ गिरच्योखायपछार ॥
सबदेवलागेहिरण्याक्षहिदेखिहँसनठठाय ॥ ९ ॥ पुनिकरच्योमंदाहिमंदवचनमुकुंदमृदुमुसुकाय ॥
रेअसुरनिर्बलचरणलागेगयोगिरिमहिमाहिं । प्रथमहिंरह्योबहुवचनबलगतसुरतिहैतोहिंनाहिं ॥
गहुगदाउठिकरियुद्धजीताहिमोहिंमधिसंग्राम । हमतोअबलवनकेमृगातुमअसुरपतिबलधाम ॥
असवचनप्रभुकेसुनतकोपितउठ्योपुनिअसुरेश । गहिगदाधायोकृष्णसन्मुखमहाभीषमभेश ॥
शठदूरतेगरुईगदादियफेंकि॥१०॥हरिपैझोंकि।जिमिविहँगपतिअहिकोगहततिमिलियोप्रभुतिहिंलोकि ११
पुनिकह्योहरिलेगदाअपनीफेरमोकहँमारु । तैंबचैगोनहिंकह्योअसजोवचनसोनविसारु ॥
कहिअसवचनप्रभुफेंकिदीन्हींगदाअसुरहिओर । हिरण्याक्षसोनगहीगदालज्जितभयोतिहिठोर ॥
निजविफलविक्रमदेखिदितिसुतभयोतेजविहीन ॥ १२ ॥ पुनिसाठिसहसहिभारआयसशूललीन्ह्योपीन ॥
दामिनिसमानप्रकाशजासुअकाशमेंरहछाय । मनुप्रलयपावककीशिखात्रयरहीसमरसोहाय ॥
मनुग्रसनचहतत्रिलोकयुतसुरथोकताकोनोक । मनुकालवोकअरोकअतिसुरसदादायकशोक ॥
ऐसोत्रिशूलअतूलहरिपैदैत्यदीनचलाय । जिमिकुमतिकरहिप्रयोगमारनसाधुकोअघलाय ॥ १३ ॥
आवतत्रिशूलदिशानलावतकरतपरमप्रकास । तिहिंदेखिकेछांडयोसुदर्शनआशुरमानिवास ॥
हरिचक्रवक्रत्रिशूलकोकियतुरतखंडहिखंड । जिमिगरुडत्यागतपक्षकोखंडयोकुलिशपरचंड ॥ १४ ॥
लखिकैत्रिशूलछ्टूकशठनिजकोनिरायुधजानि । करिअट्टहासदशासछायोकियननेकगलानि ॥
अतिधृष्टहैदितिपुत्रपुष्टसुमुष्टिबाँधिप्रचंड । हरिवक्षमेंमारयोप्रतक्षहेमाक्षअतिबरबंड ॥ १५ ॥
यद्यपिकठोरहुकुलिशतेशठमुष्टिहरिउरलागि । पैटरैनहिंजिमिसुमनमारेजातनागनभागि ॥ १६ ॥
वाराहसोंसन्मुखलरतमेंजानिजीतवनाहिं । ह्वैगयोअंतर्धानसुवरणअक्षतेहिथलमाहिं ॥
लखिकैहिरण्याक्षहिसमरमधिहोतअंतर्धान । निजहतनकोकरिशंकमनतेभगेदेवविमान ॥ १६ ॥

दोहा–सकलदेवमायाअधिप, जेवराहभगवान । तिनसोंमायाकरतभो, दानवपतिअज्ञान ॥
महाघोरमायानिरखि, सकलजगतकेलोग । किमिमिटिहैअसमानिकै, मानतभेअतिशोग ॥ १७ ॥

छंदरूपमाला–तबबह्योमारुतजोरसोंअतिघोरचारहुओर । नभठौरठौरहिदौरतेघनघोरकरिकरिशोर ॥
सबधरणिमेंअतिधूरसेह्वैगयोधुंधाकार । जिमिभाद्ररैनिभयावनीनहिंसूझहाथपसार ॥
मनुकोटिदानवव्योमतेइकबारकरहिंप्रहार । तिमिगिरहिंदिवितेदीहद्रुतपाषाणअसनिअपार ॥
नहिंलखिपरहिंशशिसूरतारानीरधाराभूरि । चहुँओरतेचपलाचमकिपुहमीप्रकाशहिपूरि ॥ १८ ॥
आकाशतेकरिकैअवाजसुहोतगाजप्रपात । सबदेवजानतह्वैगयोतिहुँलोककेरनिपात ॥
पुनिवर्षपीवहिपुहुमिपूरच्योभयमहादुरगंधि । पुनिकोपिकेशअसेशवरष्योरहीनहिंकहुँसंधि ॥

पुनिरुधिरवरष्योअसुरअतिह्वैगयोनीरधिलाल । पुनिहाड़अरुपदकंधकरनभतेगिरेतेहिकाल ॥
पुनिमूत्रमलअरुमांसमज्जासेदवरषनलागि । तबकरतहाहाकारसिगरेदेवऊरधभागि ॥ १९ ॥
पुनिप्रगटभेचहुँओरतेवहउच्चअमितपहार । तेकरतशोरकठोरछोंडतदरिनतेहथियार ॥
प्रगटींपिशाचीनगिनपुनिवहुहाथलीन्हेशूल । शिरकेशखोलेधरणिधावहित्यौंपिशाचअतूल ॥ २० ॥
पुनिरथतुरंगमतंगपैदरप्रगटदलचतुरंग । हरिकोचहूँदिशिघेरिलीन्ह्योसहितजंगउमंग ॥
बहुयक्षराक्षसभूतभैरवभलभयंकररूप । धरुमारुकाटपछारबोलहिंवचननिजअनुरूप ॥ २१ ॥
यहिभाँतिऔरहुकरीमायाहिरण्याक्षमवान । तवभयोकोपितसमरमहँबाराहश्रीभगवान ॥
जेहिभानुकोटिप्रकाशभास्योलैसुदरशनचक्र । हरिअसुरमायालकितज्योनाशतजुशत्रुनवक्र ॥
चलतेसुदर्शनकेतहाँमिटिगयोअतिअँधियार । हिरण्याक्षकीमायासकलछनमेंभईजरिछार ॥ २२ ॥
दितिउरलग्योकंपनतवैकुचवहीशोणितधार । सुधिभईतबतेहिवचनकीजोकह्योकंतउदार ॥
हरिहाथतेनिजपुत्रकोवधजानिकश्यपनारि । अतिमुदितह्वैवैठीभवननिजसकलशोकनिवारि ॥२३॥
निजसकलमायानाशलखिकनकाक्षअतिरणदक्ष । हरिकेसमक्षततक्षधायोकरतमानहुभक्ष ॥
दोउभुजपसारिमुरारिपैगहिलेतभोवलवान । पैतासुभुजमंडलहिबाहिरलखिपरेभगवान ॥ २४ ॥
तबचकितह्वैपुनिकुपितह्वैकरिपुष्टवज्रसमान । हरिओरधायोतुरततरकततरकिरिपुबलवान ॥
दोउमुष्टिमारतरुष्टह्वैअतिपुष्टहरिकेगात । अबवचतनाहिंअसबारबारहिंबचनबोलतजात ॥
तबकोपिश्रीवाराहप्रभुकरितासुहतनउछाह । निजकरहन्योतेहिकानमूलहिवृत्तज्योंतुरनाह ॥२५ ॥
कोटिनकुलिशसमकृष्णकरलहिहिरण्याक्षसुरारि ।बहुभमतभमतहिरुधिरवमतहियुगलआँखिनिकारि
करचरणनिजपसरायकैगिरिगोअसुरमुँहनाइ । खुलिगयेशिरकेवारभूषणभूमिगेबिथिराइ ॥
जिमिपवनजोरकठोरलहितरुटूटिगिरतमहान।तिमिकृष्णकरलागतगिरयोहिरण्याक्षमहिविनप्रान२६
दंतनअधरदाबेदुरासददीहदेहकराल । धरणीपरयोसोवतसरिसतेहिदेवलखिततकाल ॥
गतिदेखिताकीअतिविचित्रसुप्रीतिहियमेंधारि । हरिकोसराहनलगेसिगरेजयतिजयतिउचारि॥२७॥
जेहियोगिजनध्यावतरहतएकांतवनमहँजाय । बहुकरिपरिश्रमकबहुँनिरखहिंअमितकालबिताय ॥
तवहोतजगतेमुक्तजेजनमुक्तजनमिलिजाहिं । सोनाथवपुपदशीशलोंनिरखतनयननिजमाहिं ॥
यहअसुरछोंड्योयहीक्षणतनुकरिमहासंग्राम । धनिधनिअहैदितिनंदजगमेंसबसुकृतकोधाम ॥२८॥
कोउकहहिंयेदोउकृष्णपार्षदविप्रशापहिपाय । त्रयजन्मधरिजगअसुरतनुउतबसहिंगेपुनिजाय ॥
असकहतहरषहिंसुमनवरषहिंदुंदुभीनबजाय । अंबरअमरगणचढ़िविमाननउरनमोदसमाय ॥ २९ ॥

देवाऊचुः ।

कवित्त—जैजैयज्ञरूपजैजैनाशीभवकूपजैजैसतोगुणधारीजैजैसदासुखकारीकी ।
जैजैहिरण्याक्षहंतजैजैकमलाकेकंतजैजैश्रीअनंतजैजैअधमउधारीकी ॥
जैजैश्रीवराहजैजैदायकउछाहअतिजैजैचक्रधारीजैजैदासहितकारीकी ।
रघुकुलराजजैजैयदुकुलराजजैजैवासुदेवराजजैजैद्वारकाविहारीकी ॥ ३० ॥

श्रीमैत्रेय उवाच ।

छप्पय—हिरण्याक्षरणदक्षभक्षकरत्रिभुवनहेरो । तेहिसमक्षकमलाक्षतुच्छसमहनियशफेरो ॥
देवदुसहदुखदंसिपायपरशंसतहाहीं । सहसबर्पकरियुद्धकेलिकरिसागरमाहीं ॥
तहँप्रभुशूकरवपुधरिमहागवनकियोनिजलोकको।सुरसकलजायनिजनिजसदनवसतभयेतजिशोकको
सुन्योजौनविधिविदुरस्वयंभूमुखतेकाना । श्रीवराहअरुहिरण्याक्षकोयुद्धमहाना ॥

देखितुम्हेंहरिदासजानिहरिपदमहँप्रीनी । वर्ण्योसकलप्रबंधसमेनकथाकीरीती ॥
हरिचरितविचित्रअनंतहैकोवरणैमुखएकतें।नहिंपारलहतगावतरहतअहिपतिमुखनिअनेकतें ३

श्रीसूतउवाच ।

दोहा-सुनिमित्रासुतवदनते,सुंदरचरितवराह । परमभागवतविदुरकिय,मोदउदधिअवगाह ॥ ३३ ॥
हरिदासनकोसुयशसुनि,सुखपावतहरिदास । तौपुनिकाजोसुनहिंनित,श्रीपतिचरितविलास ॥३४
कवित्त-सुनतगजेंद्रकीगुहारगिरिधारीकानजेसहीविकुंठतेउठेतैसहीसिधारचोहै ।
पक्षिराजपादुकालैधायोपैनपायोपांयखसतमहींमेंपीतपटनासम्हारचोहै ॥
कहैरघुराजमेरेनाथसोंकृपालकौनसरकेसमीपशुद्धसिंधुरनिहारचोहै ।
जौलोंग्राहग्रीवापैगोविंदजूचलावैंतौलौंचक्रग्राहग्रीवाकोअगाऊकाटिडारचोहै ॥ ३५ ॥
दीनदुखदुसहदरैयात्योंदवैयामोददासनकोदूसरोदुनीमेंउधरैयाको ।
करतविकुंठकोवसैयानिजभैयासमएकवारनेकनिजसुरतकरैयाको ॥
भापैरघुराजपदपंकजसिवैयाजौनताकोप्रभुतारोतीनोंलोकयेकहैयाको ।
नरकजवैयासोईशासतसहैयाजौनभयोंनाभजैयाबलभद्रलघुभैयाको ॥ ३६ ॥
दोहा-हिरण्याक्षवधकालकृत,सुनतसराहततात । अरुवर्णततेहिसहजहीं, द्विजवधअघनशिजात ॥ ३७ ॥
ध्रुवधनधरणीधामयश,आपुवढ़ावनहार । अतिपवित्रअतिपुण्यप्रद,चरितवराहउदार ॥
जोयहसुनिगमनतसमर,बढतिशूरतातासु । पावतविजयविशेषते,अंतरमापुरवासु ॥ ३८ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआन
न्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेएकोनविंशस्तरंगः ॥ १९ ॥

दोहा-हरिशूकरकृतसुनिसुखद, हिरण्याक्षवधजोय । बोलेशौनकसूतसों, जोरिपाणिमुदमोय ॥

शौनकउवाच ।

जलतेपुहुमिप्रगटजबआई । तबस्वायंभुवमनुनृपराई ॥ प्रजनकौनविधिउतपतिकीने ।सोसबवर्णिकहौसुखभीने॥१॥
विदुरजौनभागवतमहाना । यदुपतिकोप्रियपरमसुजाना ॥ जानिज्येष्ठभ्रातहिअतिपापी ।हरिदासनपांडवनसँतापी॥
सोधृतराष्ट्रहिसुतयुतत्याग्यो।पुनिनहिंतासुओरअनुराग्यो॥२॥यदपिविदुरहैंव्यासकुमारा।तदपितासुसमज्ञानअगारा
विदुरहिप्रियवसुदेवकुमारा । सोहैसकलमुनिनसोंप्यारा ॥३॥ सोक्षत्तामित्रासुतपाहीं । हरिद्वारमहँअतिमुदमाहीं ॥
दोहा-कियेसमागमजायतहँ, तीरथअमितनहाय । पुनिकीन्ह्योमैत्रेयसों, कौनप्रश्नचितचाय ॥ ४ ॥
सूतहोतदोउनसंवादा।भयोपरस्परअतिअहलादा।।प्रकटीकृष्णकथाअघहरणी । जिमिसुरसरिजलपावनकरणी॥५॥
सूतदेहुसोसकलसुनाई । विदुरहिंजौनकह्योयदुराई ॥ हरिलीलामृतश्रवणनमाहीं ।करतपानकोरसिकअघाहीं॥६॥
यहिविधिशौनकादिमुनिराई । कियोप्रश्नअतिप्रीतिबढ़ाई ॥सुनतसूतशौनककीवानी।बोलतभयेमहामुदमानी ॥७॥

सूतउवाच ।

सुनहुसकलहरिचरितसोहावन।जोवर्ण्योमित्रासुतपावन॥श्रीपतिकोशूकरअवतारा।अरुतेहिप्रभुकृतधरणिउधारा ॥
दोहा-हिरण्याक्षकोजौनविधि, वधकीन्ह्योभगवान । यहसबजबमित्रातनय, कीन्ह्योमुदितबखान ॥
तबहिंविदुरअतिआनँदपाई।जोरिपाणिअसविनयसुनाई ॥ ८ ॥

विदुरउवाच।

उत्पतिप्रजनहेतनपरजापति।प्रजापतिनकीकरिकैउत्पति॥कौनकर्मकीन्ह्योचतुरानन।सोमैंसुननचहौंनिजकानन॥९॥
मुनिमरीचिआदिकनृपगाथे।स्वायंभुवमनुचरितसुनाये॥तिसिगर्गविधिशासनपाई।केहिविधिरचीप्रजाससुदाई॥१०॥
धौंअकल्पधौंलिसँगनारी।कियोअलगसोंमिलितपधारी॥केहिविधिसकलसृष्टिविस्तारी।सोवर्णहुमुनिनाथविचारी ११
सुनिमैत्रेयविदुरकीबानी। वर्णनलगेकथामृतसानी॥

श्रीमैत्रेयउवाच।

दोहा–प्रथमप्रकृतिनिकालवश, महत्तत्त्वप्रगटान॥ १२ ॥अहंकारतातेभयो, ताकोत्रिविधबयान॥
सात्विकराजसतामसभेदा। अहंकारत्रयविधकहवेदा॥ तामसअहंकारमतिमाना। पंचभूतकोकियनिर्माना॥१३॥
महदादिकजेतत्त्वअनेकू। सृजनसमर्थएकतेएकू॥ तबहरिदीन्होसकलमिलाई। तहँब्रह्मांडशून्यसुखदाई॥ १४॥
सहसवर्षलौंसोब्रह्मंडा। परोरह्योमधिसलिलअखंडा॥ तबतामेंहरिकियोप्रवेशा। तबतेचेतनभयोहमेशा॥ १५॥
प्रभुकीनाभिकंजयकजायो। कोटिभानुसमभासदेखायो॥ तातेजगकोसिरजनहारा।चतुराननलीन्होंअवतारा॥१६॥
दोहा–कृष्णप्रभावविरंचिलहि, रच्योपूर्वजेहिभाँति॥ यहिविधिजगकोरचतभो, बहुविधिजीवनजाति॥ १७॥
छायातेअज्ञानजनमायो। सोअज्ञानविधिपाँचकहायो॥ मोहमहातमआदिकजेते। भयेभयंकररूपहितेते॥ १८॥
जानततेविरंचिभगवाना।सोतनुकोविधितज्योनिदाना॥तातनुकोराक्षसअरुयक्षा।ग्रहणकियोयुततृषाबुभुक्षा॥१९॥
राक्षसयक्षपरम्परभाषे। कोउकहभक्षहुकोउकहराखे॥ २०॥ तबतूजोतनुधरिकरतारा।तिनसोंऐसोवचनउचारा॥
जेभक्षणकहहोउतेयक्षा। जेरक्षणकहहोउतेरक्षा॥ २१॥ निजतनुप्रभाफेरविधिदेवन। विरचतभयोतहाँदुखभेवन॥
दियोत्यागितहँविधिनिजदेहू। ग्रहणकियेसुरसहितसनेहू॥ २२॥
दोहा–पुनितीसरतनुधारिविधि, निजजंघनतेजोइ। असुरनकोउत्पतकियो, तेकामीसबकोइ॥
मैथुनकरनहेतविधिकाहीं।तिनिलज्जधायेचहुँपाहीं॥तिनहिंनिरखिविधिविहँसनलागे।कुपितभीतिभरपुनिअनुरागे २३
असुरधरनहितपीछेधाये। पैविरंचिकहँधरननपाये॥२४॥ औरठौरविधिबचव न जानी। गयेतुरतप्रभुशारँगपानी॥
जेहरिदीननकेदुखहारी। दुष्टदुरासदकेसंहारी॥ २५॥ विधिबोलेतहँवचनविचारी। राखहुप्रभुमर्यादहमारी॥
असुरमोहिंमैथुनकेहेतू। धरनचहतहैंकरिबहुनेतू॥२६॥ तुमहिंएककहौसदारमेशा। हरणदासकुलकठिनकलेशा॥
दोहा–दुष्टनदातादीहदुख, तुमहिएककहौनाथ। सुखदायककहो दासके, करनअनाथसनाथ॥ २७॥
दीनवचनसुनिकैविधिकेरे। विहँसिवचनऐसेप्रभुटेरे॥त्यागहुयहतनुतुमकरतारा। यहशरीरहैअघीअपारा॥
सुनिऐसीश्रीपतिकीबानी।सोतनुतज्योविरंचिविज्ञानी २८॥सोतनुह्वैगोसन्ध्यानारी। जासुसुछविअसकह्योउचारी॥
पगनहोतिनूपुरझनकारी। घूमहिंआँखैंमदमतवारी॥बाजतिकटिकिंकिनिमनहारी। लसतदुकूलजासुछविभारी॥
पीनपयोधरजनसुखकारी। विहँसनिजासुविज्जुअनुहारी॥
दोहा–विवशकरतिसबअसुरको, लोनीजासुकटाक्ष॥ ३०॥ बारबारगोवतिरहति, पटसोंवदनमृगाक्ष॥
जासुअलकअहिशावकलोला। करहिंकलाआरसीकपोला॥ असुरअनूपमलखिअसनारी।मोहिगयेअसवचनउचारी
अहोरूपनिरख्योअसनाहीं। याकोधीरबडोमनमाहीं॥ सुंदरनवयोवनमदमाती।शीतलकरतसबनकीछाती॥ ३१॥
हमरेसबकामिकेबीचै। फिरतअकामकामरससींचै॥३२॥यहिविधिनारिरूपसंध्याको।करततर्कअसुरनमनछाको॥
पुनिताकोबहुविधिसतकारे। असुरसबैअसवचनउचारे ३३अहोकौनतुमकासुकुमारी।कौनहेतइतसुघरि सिधारी॥
दोहा–प्यारीतेरीसुछवियह, सुधिबुधिहरतिहमारि। अपनोसबवृत्तांतयह, हमसोंकहौउचारि॥ ३४॥
बडोभागहमनिजगुणिलीन्हे। जोइमकोतुमदर्शनदीन्हे॥ खेलिगेंदविचरहुमनभाई।हमसबकोचितलियोचुराई ३५
सुंदरिकरहुनअवसंचारा। अतिकोमलहैचरणतुम्हारा॥ ह्वैहैकहूँचरणमहँपीरा। यहगुणिममनहोतअधीरा॥

खेलहुकरकंदुकनहिंप्यारी । ह्वैहैअवशिवेदनाभारी ॥ लहिउरोजभारहिबिनदेरी । लचिलचिजातिलंकतियतेरी ॥
बिथुरीअलकनिलेहुसम्हारी।स्वेदबिंदुपोंछहुमुखप्यारी॥हमतननिरखहुवारहिंवारा।हरहुसकलमनसिजदुखभारा ३६

दोहा-यहिविधिसंध्यानारिकहँ, गहेअसुरसबधाइ । जान्योताकोभेदनहिं, तेछविरहेलुभाइ ॥ ३७ ॥

यहकौतुकलखिहँसेविधाता । लागेसृष्टिकरनअवदाता ॥ निजदुतितेगंधर्वनकाहीं।औरअप्सरनरचेतहाँहीं ॥ ३८ ॥
पुनिसोऊशरीरतजिदीन्हो । विश्वावसुशरीरगहिलीन्हो ॥३९॥ पुनिधरितनुनिजआलसतेरे।रचेपिशाचनप्रेतघनेरे ॥
तेविनपटछोरेनिजबारा । मुणिदृगभयमूंदेकरतारा ॥ ४० ॥ पुनिसोऊनिजतजेशरीरा । सोईनिद्राभयगंभीरा ॥
औरभयेतातेउन्मादा । अशुचिरहेजेदेतविषादा॥४१॥पुनिशरीरधरिकमलनिवासी।रचेसाध्यपितरनगणभासी४२॥

दोहा-सोऊतनुविधितजतभे,सोपितरनगहिलीन । श्राद्धभागअधिकारसब, ब्रह्मातिनकहँदीन ॥ ४३ ॥

फेरऔरतनुधरचोविधाता।रचिविद्याधरसबविख्याता॥सोतनुछोडितिनहिंकहँदीन्हे।अंतर्धानशक्तितिनकीन्हे॥४४॥
फेरऔरतनुधरिकरतारा । रचेकिन्नरनआदिअपारा ॥ ४५ ॥ सोऊतनुतजिदियेविधाता । तेकिन्नरलीन्हेअवदाता ॥
तेसबमिलिमिलिअतिसुखपावैं।विधिकोसुयशभोरनितगावैं॥यहिविधितनुसोऊतजिदीन्हयो।महाशरीरफेरधरिलीन्ह्यो
पैनहिंसृष्टिबढीतेहिकाला । तबविधिकेभोशोचविशाला॥पदपसारिसोवनतहँलाग्यो।जागिकुपितसोऊतनुत्याग्यो॥

दोहा-सोशरीरकेकेशते,प्रगटेविविधभुजंग । जिनकेअतिशयवृहदतनु,अतिविषकारेअंग ॥ ४८ ॥

पुनिस्वयंभुऔरहुतनुधारा । देखिसृष्टिभोमुदितअपारा॥सिरज्योपुनिचौदहमनुकाहीं।तेसिरजेबहुपरजनकाहीं ४९॥
तजितनुदियोमनुहिकहँधाता।औरधरचोनिजवपुविख्याता॥लखिविधिचरितअतिहिअनुरागे ।पूरबप्रजाप्रशंसनलागे
भलीसृष्टिविरचीकरतारा । यातेहैउपकारहमारा ॥ करिवैपरजायज्ञनकाहीं । पैहैंहमसबभागसदाहीं ॥ ५१ ॥
पुनिधारचोविधिशुद्धशरीरा।ज्ञानविरागयोगगंभीरा॥पुनिमुनिगणकीउत्पतिकीनी ।जिनकीकीरतिसदानवीनी ५२

दोहा-विद्यायोगसमाधितप, भक्तिहुज्ञानविराग । यकयकअंशहिदेतभे, ब्रह्मासहितविभाग ॥ ५३ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दां
बुनिधौतृतीयस्कंधेविंशतितमस्तरंगः ॥ २० ॥

दोहा-सुनिब्रह्माकीसृष्टियह, विदुरपरममुदपाय । जोरिकंजकरफेरअस, दीन्हींविनयसुनाय ॥ १ ॥

विदुर उवाच ।

स्वायंभुवमनुकोजोवंसा । ताहिकहहुद्विजकुलअवतंसा॥१॥स्वायंभुवमनुकेसुतदोई । प्रियव्रतजेठकरयोतुमसोई॥
लघुउत्तानपादमहिपाला । जिनकोयशतिहुँलोकविशाला ॥ ध्रुवैधर्मधुरधारणवारे । सातद्वीपधरणीरखवारे ॥
तिनकोचरितसकलमुनिराई । मोहिंकृपाकरिदेहुसुनाई ॥२॥ स्वायंभुवमनुकीयककन्या । नामदेवहूतीजगधन्या ॥
रहीसोकर्दममुनिकहँव्याही।कहँलगिताकीसुछविसराही॥३॥कर्दममुनिसोनिजतियमाहीं। सिरज्योकेतेपुत्रनकाहीं॥

दोहा-ब्रह्मपुत्रभोदक्षअरु, रुचिपरजापतिजोइ । लहिमनुदुहिताद्वैदोऊ, करीसृष्टियशहोइ ॥

सोसबमोकहँ देहुसुनाई । सोसुनिकहनलगेमुनिराई ॥ ५ ॥

मैत्रेयउवाच ।

जबकर्दममुनिकहँकरतारा । कह्योसृष्टितुमकरहुअपारा ॥ तबसरस्वतिसरिकेतटमाहीं ।कर्दमकरनलगेतपकाहीं ॥
कर्दममुनितपकरतअपारा।बीतिगयेदशवर्षहजारा ॥ ६ ॥ सतयुगमहँमुनिअतिअनुरागे।भक्तिसहितहरिसेवनलागे ॥
तबप्रसन्नभेश्रीभगवाना । जेदायकनानावरदाना॥७॥ गरुड़चढ़ेत्रिभुवनरखवारे । कर्दमकेआश्रमहिसिधारे ॥ ८ ॥
कोटिसूर्यसमवदनप्रकाशा । निरखेकर्दमतिनहिंअवाशा ॥

दोहा—नीलअलकझलकेंझलक, छलकिछलकिछविजाहि।ललकिललकिजिनकोअमर, ललनालखतलोभाहि ॥९॥
मोहनउरइंदीवरमाला। पीतांबरसुंदरछविजाला ॥ कोटिनविधुसमवदनविराजै। मुकुटमणीनजटितशिरभ्राजै ॥
कुंडलमंडितश्रोनमोहावन। इवनकंजकरअनिमनभावन॥ शंखचक्रकरगदाविशाला। सोहतआयुधअरिनकराला॥
नलिननयनअतिआनँदपाई॥१०॥कौस्तुभकंठरमाउरछाई।लखिकर्दमऐसेश्रीधामै॥११॥कियेदंडसमभूमिप्रणामै ॥
मनकोसकलमनोरथपाय। जोरिपाणिअसवचनसुनाय॥ १२॥

कर्दमोवाच।

आजसफलभेनयनहमारे। पायअनूपमदर्शतिहारे॥
दोहा—जौनतुम्हारेदर्शको, योगीजनललचाहिं। कोटिजन्ममहँकरियतन, पावतकोऊनाहिं ॥ १३ ॥
तुवमायावशजेमतिमंदा। जगनारणतवपदअरविंदा॥ सेवहिंविषयविनोदहिहेतू। तेजनशूकरसहितअचेतू ॥ १४॥
तैसहिमैंमतिमंदमहाना। तुमहिंपायकैश्रीभगवाना ॥ चहहुँआपनोकरनविवाहू। दारादेतदुसहदुखदाहू ॥ १५ ॥
वेदरूपजोवचनतुम्हारा। जेहिमहँबँध्योसकलसंसारा॥ बँधेहमहुँतैसाहितेहिफांसी।तुमपदपूजहिंआनँदरासी ॥१६॥
लोकलोकजनपशुसमत्यागी। जेतुवपदछायाअनुरागी॥ कथरावरीसुधासमाना। करहिंपरस्परकाननपाना॥
दोहा—रँगरहैतेहिरंगमें, मानहुमत्तमहान। जननमरणकेभीतिको, तिनकोहोतिनभान ॥ १७ ॥
ऋतुदिनमासजासुसबअंगा। कालचक्रयहपरमअभंगा॥छीनतिसबकीआयुदाई।पैनहिंतुवदासनढिगजाई ॥ १८ ॥
आपएकहीयहसंसारा।निजमायाकोकरिविस्तारा॥पालहुसृजहुहरहुसबकाला।सृजतिहरतिमकरीजिमिजाला १९॥
जौनविषयसुखमोमनचाहै। सोनहिंप्रभुतुम्हरेमनमाहै ॥ तद्यपिगुणिअभिलाषहमारी। पूरहुनाथकृपाकरिभारी॥
भुक्तिमुक्तिकेहौतुमदाता। सबविधिपूरतहौजगत्राता॥विचरहुनिजसंकल्पजगतको।पुजवहुसबअभिलाषभगतको॥
दोहा—जयतुलसीवनकेअधिप, धृततुलसीवनमाल॥ २० ॥ तुम्हरेचरणसरोजको, हैप्रणामसबकाल ॥ २१ ॥

मैत्रेयउवाच।

ऐसीसुनिकर्दमकीवानी। चढ़ेपक्षिपतिशारँगपानी॥ करिअतिकृपामंदमुसुकाई।सुधासरिसयहगिरासुनाई॥ २२ ॥

श्रीभगवानुवाच।

जौनहेतुतपकरिमुनिराई। मोकहँतुमपूजेउचितलाई॥ ताकोमैंकरिअमितउपाई।प्रथमहिराख्योयोगलगाई॥२३॥
नृपानपूजनममतिमाना। तौपुनिकाजेतुमहिंसमाना॥२४॥ब्रह्मावर्त्तहिक्षेत्रविशाला।मनुमहराजवसतसबकाला॥
सातद्वीपधरणीकरभूपा। ताकीप्रियनारीशतरूपा॥२५॥सोनिजनारिसहितमहिपाला।आपदर्शहितअतिहिउताला॥
दोहा—ऐहैतुम्हरेआश्रमै, परसौंकेदिनसोइ। देवहुतीनिजपुत्रिका, संगलियेमुदमोइ॥ २६ ॥
सोपतिचाहतिहैसुकुमारी। ताकीमनअभिलाषविचारी॥निजदुहितातुमकोनृपदैहै।जगतीपतिजगतीयशलैहै ॥२७॥
देवहुतीअतिप्रीतिबढाई। करिहैअवशिआपसेवकाई॥२८॥देवहुतीलहितुवसँगधन्या। करिहैप्रगटआशुनवकन्या॥
होइतिनकरविपिनविवाहा। रचिहैंसृष्टितेईमुनिनाहा ॥२९॥ तुममममशासनसत्यविचारी। बसौइतैह्वैपरमसुखारी ॥
मोहिंअर्पिसिगरेनिजकर्मा ॥३०॥करिजीवनपैदयासुधर्मा। मेरेचरणनप्रीतिलगाई। ऐहौममपुरतुममुनिराई ॥३१॥
दोहा—देवहुतीकेआयहम, जन्मलेहिंगेआशु। कपिलनामअसकरहिंगे, सांख्यशास्त्रपरकाशु॥ ३२ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच।

यहिविधिमुनिसेकहिभगवाना। श्रीविकुंठकहँकीनपयाना॥ ३३॥ पक्षिराजकेपक्षनतेरे। सामवेदस्वरकढ़ेघनेरे॥
अस्तुतिकरहिंसिद्धगंधर्वा।चलेजाहिंहरिकेसँगसर्वा॥३४॥यहिविधिगवनेजबहिंमुरारी।तबमुनिश्रीपतिवचनविचारी॥
सोइबिंदुसरसरस्वतितीरा।वसतभयेकर्दममतिधीरा॥३५॥एकसमयतहँमनुमहराजा। चढेकनकस्यंदनछविछाज॥

तामेलियचढायनिजरानी । अरुनिजकन्याजोछबिखानी॥करतपुहुमिपर्यटननरेशा ।चलतभयेदेखतबहुदेशा ॥३६॥
दोहा–जादिनकोमुनिसोंकह्यो, मुनिआगमभगवान । ताहीदिनकर्दमभवन, आयेमुनिमतिमान ॥ ३७ ॥
जौनेबिंदुसरोवरमाहीं । कर्दमपरकरिकृपातहाँहीं ॥ ढारयोनयननआनँदनीरा ॥ ३८ ॥ बिंदुसरोवरभयोगँभीरा ॥
जायनिकटदेखेनृपराई । चहुँकितरहीपरमछबिछाई ॥ मणिसमसोहतनिर्मलनीरा । परमपुण्यप्रदअतिगंभीरा ॥
जहँतहँलसहिंमहर्षिनिवास।लतालसितलहरेचहुँपास॥बिलसहिंविपुलवृक्षमनभावन॥बोलहिंखगमृगअतिसुखछावन
सबऋतुकरहिंसदासंचारा।शाखानमितफूलफलभारा॥४०॥चहुँकितमंजुलवंजुलराजी ।कूजहिंकोकिलकेलिनकाजी
दोहा–गुंजहिंकुंजनकुंजमहँ, मनरंजनअलिवृंद, । सुखपुंजनपीवतरहैं,कंजनकंजमरंद ॥
नाचहिंथलथलमोरमयूरी । गानकरहिंकोइलसुरपूरी ॥४१॥ चंपककदंबअशोककरंजा।वकुलअशनकुरुवकमनरंजा ॥
मृदुमुचुकुंदकुंदमंदारा । शाखानमितफूलफलभारा॥औरहुवृक्षअनेकनजाती । कोवर्णैचहुँकितबहुभाँती ॥ ४२ ॥
कारंडवजलकुक्कुटहंसा । सारसहंसचक्रयुतवंसा॥चहुँकितकरहिंमनोहरशोरा । विचरहिंचहुँकितचारुचकोरा ॥४३॥
हरिणवराहरोझगजराजा । कस्तूरीमृगसहितसमाजा ॥ सिंहबाघबाँदरगोपुच्छा । नकुलआदिबहुजीवअतुच्छा ॥
दोहा–ऐसेकर्दमआश्रमहि, मनुनरेशतहँजाय । कियेहोमबैठेशुचित,मुदितलखेमुनिराय ॥ ४५ ॥
जासुप्रकाशप्रकाशितकानन । तपकेतूलतेजयुतआनन ॥ यद्यपितपतेकृशव्रतधारी । तदपिथूलभेहरिहिनिहारी ॥
श्रीपतिकेगुणिवचनरसाला । कर्दमभेतेहिकालनिहाला॥४६॥कमलनयनहेलंबशरीरा।जटाशीशतनुवल्कलचीरा॥
मलिनअंगजिमिमणिबिमेनुधोई।तिमिकर्दमनिरख्योनृपसोई॥आवतआश्रममनुमहराजै।निरख्योकर्दमसहितसमाजै॥
कछुआगूचलिकैमुनिलीन्हो।नृपमुनिकहँप्रणामतबकीन्हो॥कर्दमदीन्होआशिर्वादा।लायआश्रमहियुतअहलादा ४८
दोहा–प्रीतिसहितनृपकोकियो, सकलअतिथिसत्कार । सुमिरिवैनश्रीऐनके, बोलेवैनउदार ॥ ४९ ॥
विचरहुसंतनरक्षनहेतू । वसुधाधिपवसुधाबलसेतू ॥ पुहुमिपालपुहुमीप्रतिपालौ । हैप्रणामतेहिनाथकृपालौ ॥
कृपापात्रवसुदेवनंदके। दीननदायकनितअनंदके॥५०॥रविशशिअनलअनिलयमशक्रा।वरुणधर्मआदिकसुरचक्रा॥
इनकोरूपधरहुलहिकालै।हैप्रणामलहिनाथकृपालै॥५१॥कनककलितमणिजटितसुयाना।तामेंचढिप्रभुकरहुपयाना
दोरदंडकोदंडप्रचंडा । धरिधावहुधरणीबरिखंडा ॥ करहुमलीनअवीनविनाशा । धूरधारधावहुआकाशा ॥ ५२ ॥
दोहा–महासैनलैसंगमें, विचरहुवसुधामाहिं । ग्रीषमभीषमभौनसम, तुमहितकहिंरिपुनाहिं ॥ ५३ ॥
जोनकरहुअससैनलै, देशनदेशपयान । सकलधर्ममर्यादतौ, नाशहिंचोरमहान ॥ ५४ ॥
अहैंनिरंकुशदुष्टजे, तेअघदेहिंबढाय । करतशयनतुम्हरेधरणि, धर्मधाकधँसिजाय ॥ ५५ ॥
पैहमपूछहिंआपसे, ममआश्रमजेहिहेतु । कियोआगमनसोकहहु,सोहमसाधहिंहेतु ॥ ५६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचं-
द्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदांबु
निधौतृतीयस्कंधेएकविंशस्तरंगः ॥ २१ ॥

मैत्रेय उवाच।

दोहा–यहिविधिमनुमहराजसों, जबकर्दममुनिराय । बोलेवचनविनोदभरि, अतिशयमोदबढ़ाय ॥
निजपरशंसासुनतलजाई।कर्दमसोंबोलेमुनिराई॥१॥ (म०रु०) तुमकोअपनेरक्षणहेतू । विधिप्रगटायोमोदनिकेतू ॥
विद्यावेदऔरतपयोगू । तुममेंसबनविषयकरभोगू ॥ २ ॥ विप्रनरक्षणहितजगमाहीं । सिरज्योश्रीअनंतहमकाहीं ॥
हृदयविप्रक्षत्रियपुनिवाहू॥३॥करहिंपरस्परक्षसदाहू॥४ ॥आपदर्शममिटेकलेशा । धर्मरूपतुमअहौपरेशा ॥५॥
धन्यभाग्यहमदर्शनपाये । दुष्टनकोनहिंपरहुदेखाये॥आपचरणरजमेंशिरधारयो॥निजजीवतजगधर्मविचारयो॥६ ॥
दोहा–सुधासरिसकरिकैकृपा, दीन्हयोवचनसुनाइ । श्रवणसफलममआजभे, भाग्यकह्योनहिंजाइ ॥ ७ ॥

मोकोंयहदुहितारअतिप्यारी।सुनहुनाथयहविनयहमारी॥८॥प्रियव्रतअरुउत्तानपादकी।हैभगिनीयहविनप्रमादकी ॥
शीलरूपगुणनिजसमजोई । यहदुहितावरचाहतसोई ॥९॥ जबतेयाकोनारदआई । दीन्हचोतुमगुणरूपसुनाई ॥
तबतेयहअपनेमनमाहीं।तुमहिंचहतिपतिऔरननाहीं॥१०॥तातेयहकन्याकहँलीजै।गृहकारजहितदासीकीजै ॥११॥
वस्तुजोअपनेतेंमिलिजाई । उचितननेतिहित्यागवमुनिराई॥हैविरागवंतहुयहधर्मा।तौपुनिकाजुरतिग्रहकर्मा ॥ १२ ॥
दोहा—वस्तुजुअपनेतेमिलै, ताहित्यागजोकोय । पुनिवरघरमाँगताफिरै, तासुहँसीहठिहोय ॥
औरनसोंमाँगतभुवमाहीं । तनुतेमानसुयशकढिजाहीं॥१३॥हमसबकानसुन्योमुनिनाहा।तुमचाहहुआपनोविवाहा॥
तातेदेवहुतीमैंदेहू । करिकैकृपानाथअबलेहू ॥ १४ ॥ मनुमहराजवचनमुदअपना । सुनिबोलेकर्दमअसवचना ॥

कर्दमोवाच ।

मैंकुमारयहसुताकुमारी । तुमविवाहयहरच्योविचारी॥ यहिकन्याकेसँगनरनाहा।जन्मजन्ममममभयोविवाहा ॥१५॥
वेदविधानवेदयहहोई॥हमकोतुमकोअतिमुदमोई ॥ भूषणभूषितजेहिछविकरती । सोतुवसुतानकेहिहियहरती १६
दोहा—एकसमयऊँचीअटा, नूपुरपगनबजाय । कंदुकखेलतयहरही, मंदमंदमुसुक्याय ॥
विश्वावसुगंधर्वसुजाना । नभमहँगमनतचढ़ोविमाना ॥ सुतारावरीकोतहँज्वैकै।गिरच्योविश्वावसुमोहितह्वैकै ॥१७॥
देवहुतीसोपतिअभिलाषा । मोकहँअपनेमनकारिराखा ॥ सुरललनाजेहिलखतलजाहीं । रमाअसेविनिअटससदाहीं॥
मनुदुहिताप्रियव्रतकीभगिनी।कोनहिंचहैज्योतिजगजागिनी॥अवशिग्रहणकरिहैंहमताता।तुवदुहिताजगमेंविख्याता
याकेजबलौंपुत्रनह्वैहै । तबलौंअंगसंगममपैहै ॥ पुनिहमपरमहंसह्वैजैहैं । वासविलासआशुतजिदैहैं ॥ १९ ॥
दोहा—जेप्रभुजगसिरजतहरत, पालतरहतसदाहिं । प्रजापतिनकेपतिसोई, उपदेश्योहमकाहिं ॥ २० ॥

मैत्रेयउवाच ।

असकहिमौनभयेमुनिराई । श्रीपतिपदपद्मनमनलाई ॥ मंदहँसनिकर्दमकीदेखी । देवहुतीगैलोभविशेषी ॥ २१ ॥
शतरूपाकोमनुअनुमानी । मनुमहराजमहामतिखानी ॥ देवहुतीकर्दमकोव्याही ।भयोमहामनमाहँउछाही ॥२२॥
पुनिशतरूपामुनिपटनाना । दायजदियोअनेकविधाना२३पुनिदुहितादुखदुखितनरेशा ।भुजभरिमिलेताहितेहिदेशा
सुतावियोगजातसहिनाहीं । नयननसोंजलढारतजाहीं ॥ बारबारउरलायकुमारी । रोदनकियेमहीपतिभारी ॥
दोहा—पुनिशतरूपानिजसुता, निजअंकहिबैठाय । बारबारसींचीशिखा, निजदृगवारिबिहाय ॥
पुनिपुनिमिलिकहहायकुमारी।रोदनकरिअतिभईदुखारी॥जननीजनकविरहजियजानी।देवहुतीअतिशयदुखमानी॥
तातमातकहिंवाराहिबारा । तेहिक्षणरोदनकियोअपारा२५पुनिभूपतिलैनिजसँगरानी।माँगिविदामुनिसोंमतिखानी ॥
चढ़िरथसैनसहितगहिडगरे।चलतभयेभूपतिनिजनगरे॥सरस्वतितीरलखतमुनिभीरा।तिनहिंप्रणामकरतमतिधीरा ॥
आयेब्रह्मावर्त्तहिकाँहीं । नृपआगमसुनिप्रजातहाँहीं ॥ गावतबाजबजावतधाये । मोदितमहलमहीपाहिल्याये ॥२८॥
दोहा—बर्हिपमतीपुरीरही, सबसंपदासमेत । झारचोयज्ञवराहजहँ, अंगनलोंमनिसेत ॥ २९ ॥
तेईभयेकुशाअरुकाशा । जिनकेसुंदरहरितप्रकाशा ॥ जिनकोलैऋषिठानतयागा । ढारतनयननीरबड़भागा ॥३०॥
मनुमहराजआयनिजनगरी।कुशविछायकरिकैविधिसिगरी॥ठानियज्ञपूज्योभगवानै।प्रेमपयोदधिमगनमहानै ॥३१॥
वसेनगरमहँमनुमहराजा । भाइनभृत्यनसहितसमाजा ॥ पाल्योप्रजनधर्ममर्यादा । वसेवामयुतविगतविषादा ॥
मंडितमंदिरमणिनविलासा । अतिसुंदरफैलतपरकासा ॥ तीनहुतापविनाशनहारा । वसहिंमहीपतिसहितकुमारा ॥
दोहा—भोगैंभोगसुरेशसम, भूमेभूपतिभूरि । तीनहुँलोकनमेंरही, जिनकीकीरतिपूरि ॥ ३२ ॥
किन्नरअरुगंधर्वविख्याता । भूपतिद्वारेआयप्रभाता ॥ करतरहैंजिनकोगुणगाना । पावहिंनितनवमोदमहाना ॥
मनुनितसुनतकृष्णगुणगाथा।मानतअपनेकाहिसनाथा ॥ ३३ ॥ भोगैयद्यपिभोगअनेका।पैनहिंछूट्योनेकविवेका ॥
मनुभूपतिकोपरमप्रवीनै । भोयदुपतिपदपद्ममलीनै ॥ ३४॥ दुर्लभदेवपायप्रभुताई । भूपतिनहिंभूल्योयदुराई ॥

गावतसुनतगुनतहरिगाथा। दियेबितायकालनरनाथा॥ गयेवृथानहिंएकहुयामा॥सुमिरतरह्योजानकीरामा॥३५॥
दोहा-इकहत्तरयुगराज्यकिय, वासुदेवकोदास। जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिमहँ, सुमिरतरमानिवास॥ ३६॥
दैविकभौतिकमानसिक, औरसकलजेताप। तिनहिंव्यापहिंजननकहँ, कियेकृष्णकोजाप॥ ३७॥
वर्णाश्रमआदिकसकल, धर्मअनेकप्रकार। मनुसोंपूछ्योजौनमुनि, सोसबकियोविचार॥ ३८॥
आदिराजमनुकीकथा, मैंसबयहकहिदीन। तेहिदुहिताकोवंशअब, सुनियेपरमप्रवीन॥ ३९॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदांबुनिधौ तृतीयस्कंधेद्वाविंशतितमस्तरंगः॥ २२॥

श्रीमैत्रेयउवाच।

दोहा-मातपिताजबगवनकिय, देवहुतीतबसोय। निजपतिकीसेवाकरी, जिमिगौरीहरजोय॥ १॥
ह्वैपवित्रविश्वासबढ़ायो।नितनिजमुखपतिकोयशगायो॥ बोलतरहीमधुरमुखबानी।करेकर्मपतिकीरुखजानी॥ २॥
कामक्रोधमदलोभविहाई।दियोकंतकोतोषमहाई॥ ३॥ यहिविधिकरीकंतसेवकाई।निजशरीरसुधिसकलभुलाई॥४॥
कृशितअंगह्वैगेसबताके। पैपतिसेवनकरतनथाके॥ यहिविधिदेवहुतीकीसेवा। निरखिकृपाकरिकर्दमदेवा॥
गदगदगरबोलेअसिबानी।देवहुतीसुनुतैंमतिखानी॥ ५॥ अतिशयसेवाकरीहमारी। मैंप्रसन्नतुवकर्मनिहारी॥
दोहा-जोसबहीकोपरमप्रिय, तातनुसुरतिविसारि। सकलभाँतिसेवाकियो, निशिवासरहुहमारि॥ ६॥
जोतपकरिकैकृष्णप्रसादा। पायोमैंशत्रुनअहलादा॥ सोसुरदुर्लभभोगअपारा। मैंतोहिंदेहुँप्रियासुखसारा॥
दिव्यदृष्टितुमकहँमैंदेहू।जातेसकललोकलखिलेहू॥७॥ औरभोगासिगरेनाशिजाहीं।हरिप्रभावतेसोनविलाहीं॥ ८॥
यहिविधिजबकर्दमकहबानी।देवहुतीतबअसकहवानी॥ करतकटाक्षमंदमुसुकाई। बोलीलज्जितनयननवाई॥ ९॥

देवहूतिरुवाच।

जोतुमकहेवचनमुनिराई। तेसिगरेमोहिंसत्यजनाई॥ अहैमनोरथनाथहमारा। आपहुप्रथमहिवैनउचारा॥
दोहा-कछुककाललौंआपसँग, मोदितकरहिंविहार। जबलौंहोयनगर्भमोंहिं, यहवरदेहुउदार॥ १०॥
कौनतोहिकरिवेकेलायक। सोशासनदीनेमुनिनायक॥ करतआपनीपदसेवकाई। मैंतनुकीकृशताअतिपाई॥
होयमोरप्रभुपुष्टशरीरा। सोकरिकृपाकरहुमतिधीरा॥केलिसाजसाजहुसुखमाहीं।जेहिअवलोकतअमरसिहाहीं॥११॥

श्रीमैत्रेयउवाच।

सुनिप्यारीकेवचनसोहाये। कर्दमएकविमानबनाये॥ तपप्रभावतेतौनविमाना। भयोमनोरथदायकनाना॥ १२॥
सकलरत्नजेहिकरहिंप्रकासा।विलसतिसकलविभूतिविलासा॥मणिनअनेकनखंभसोहाहीं। सुमनश्वेतशोभितचहुँपाहीं
दोहा-ग्रीषमपावसशिशिरअरु,शरदहेमंतवसंत। निजप्रभावप्रगटतनिपट, षटऋतुसदालसंत॥
विपुलविमलबहुलसहिंपताके।तनैविमानअमानकिताके॥१४॥मंडितसुमनसुमंजुलमाला।गुंजहिंमत्तमधुपसबकला
अतिअमोलबहुवसनविराजैं॥१५॥परम्परामहलनकीछाजैं।आसनचमरव्यजनपरयंका१६सोहहिंभवनभवनहरशंका
लसहिंचित्रशारीमनहारी। मर्कतमणिकीभूमिविचारी॥ माणिककीवेदीछविदेही॥ १७॥ द्वारदेहलीविद्रुमकेही॥
लसहिंवज्रकेकलितकिवारा। इंद्रनीलमणिशिखरअपारा॥ कनककलशकलशाकुलसोहैं। पद्मरागभीतीमनमोहैं॥
दोहा-चामीकरतोरणअमित, तनेविचित्रवितान॥ १९॥ मणिकपोतहंसनिनिरखि, हंसकपोतलोभान॥
तिनकेसंगबैठसबठोरा। करहिंमनोहरचहुँकितशोरा॥२०॥शोभितअटाउच्चशशिशाला। सकलसैनकेऐनविशाला॥
चौडीचौकचाँदनीचारू। यथायोगतिनकोविस्तारू॥ विमलवापिकाकूपतडागा। मंजुलकुंजपुंजतरुबागा॥२१॥

देवहुतीलखिसुपदविमाना। पतिसेवालखिचित्तलुभाना॥ तवताकेमनकेमुनिज्ञाता। बोलेकर्दमवचनविख्याता ॥२२॥
मज्जनकरहुविंदुसरमाहीं। रच्योजनार्दनयहिसरकाहीं ॥ सकलमनोरथदायकसाँचो। अतिशयमनमेरोयहराँचो ॥

दोहा—चढ़िविमानप्यारीसुभग, विंदुनडागनहाय। देवहुतीसुनिपतिवचन, अतिशयआनँदपाय ॥ २३ ॥
मलिनवसनअंगहुमलिन, बँधिगेकेशमलीन। सवतपतिपदपद्मनित, भरीकृशितबलछीन ॥ २४ ॥

देवहुतीसरग्वनिमसरिमाहीं। धोवनलागीअंगनकाहीं ॥ प्रगटींतहांसहसवरदासी। नवयौवनअमलाचपलासी॥२६॥
देवहुतीतेकरजोरी। बोलींवाणिप्रीतिरसबोरी ॥ हैंदासीहमस्वामिनितेरी। सेवकाईकरिहैंबहुतेरी ॥
करहिंकोनसिगरीहमकामा॥ कहहुनकतकर्दमकीवामा ॥२७॥ असकहितेहिमज्जनकरवाई। नवदुकूलअंगनपहिराई ॥
पुनिभूषणनेभूषितकीनी। बहुविधिभोजनदियोप्रवीनी ॥ सुधासरिसआसवतहँल्याई। देवहुतीकहँपानकराई॥२९॥

दोहा—लायआरसीविमलअति, स्वामिनिसन्मुखराखि। तासुरूपनिजनयनलखि, मुदितभईछविचाखि॥ ३० ॥

देवहुतीयहिविधिकरिमज्जन। पहिरचोवसनविमलमनरज्जन ॥पहिरचोहीरनकोहियहारा। वलैविराजतकरसुकुमारा॥
नूपुरकरहिंचरणमहँशोरा ३१ कटिकिंकिणिविलासचितचोरा ३२ सुंदररदभ्रुकुटीयुगबाँकी। हरतिहियोनिजनयननताकी
आननपूरणशशीसमाना। ताछविकोकरिसकहिबखाना॥३३॥ देवहुतीकरिसकलशृँगारा। मिलनचहैप्रियप्राणपियारा
गईसहस्रसखीयुततहँवां। रहेप्रजापतिकर्दमजहँवां॥३४॥ निरखियोगमायामुनिकेरी। देवहुतीभैचकितघनेरी ॥३५॥

दोहा—मज्जनकरिशृंगारधृत, सहससखीयुतताहि। मुनिवरलखिकर्दमतहां, मुदितभयेमनमाहि ॥ ३६ ॥

करिनवयौवनसुंदररूपा। भूषणवसनहुपहिरअनूपा ॥ देवहुतीकरकंजपकरिकै। चढेविमानमहामुदभरिकै ॥३७ ॥
चढीसंगमहँसखीहजारा। कियेअंगषोडशहुशृँगारा ॥ सेवनकरनहेतुतहँआई। सुरसुंदरीसकलछबिछाई ॥
लख्योसखिनमधिमुदितमुनीशा। मनहुँव्योमउडुमधिउडुईशा ३८ शीतलमंदसुगंधसमीरा। चहतसुखदनाशकरतिपीरा
मेरुकंदरनचढेविमाना। विहरनहितमुनिकियेपयाना॥ तहँकर्दमकियविविधविहारा। जहाँबहतिसुरसरिकीधारा॥३९॥

दोहा—विश्रंभकनंदनविपिन, पुष्पभद्रवनजौन। मानसरोवरचैत्ररथ, हरचोमुनिनकरिगौन ॥

कर्दमकेलिकुतूहलकरहीं। सुरललनालालचलखिभरहीं ४० चढिविमानसबसुरननिवासू। कर्दमकीन्हेविपुलविलासू॥
दुर्लभतिनत्रिभुवनकछुनाहीं। जेयदुपतिपदपद्मलुभाहीं ४२ पुनिभूमंडलविचरनकीन्ह्यो। देवहुतिहिअतिआनँददीन्ह्यो।
यहिविधिमुनिकरिविपुलविहारा। पुनिनिजआश्रमकहँपगुधारा ४३ देवहुतीसँगवर्षहजारन। बीतेक्षणसमकरतविहारन॥
जान्योनहिंवीततकछुकाला। एकसेजसोवतसुखजाला॥४५॥ दिव्यवर्षवीतेशतजवहीं। मानहुँभोरभयोहैअवहीं॥४६॥

दोहा—तवकर्दममुनिजानिकै, देवहुतीमनआस। कियोगर्भआधानतिहि, नवविधिसहितहुलास ॥४७॥

देवहुतीएकहिदिनमाहीं। प्रगटकरीनवदुहितनकाहीं॥ सिगरीअतिसुंदरमनहारी। मनहुकामानिजकरनसँवारी ॥४८॥
पुनिपतिकोवनगवनविचारी। देवहुतीभइपरमदुखारी ॥ खोदतपदनखतेमहिकाहीं। अंवकअंबुबहुतबहजाहीं ॥
कंपतगातनीचमुखकरिकै। पियसोंकह्योवैनमुदभरिकै ॥ जौनकह्योसोपूरणकीन्ह्यो। मोकहँअतिआनँदप्रभुदीन्ह्यो ॥
पैअबविनयकरौंयहथोरी। करिकैकृपापूरियेमोरी ॥ तारहुमोहिंसागरसंसारा। यहमेरेअतिहियेखँभारा ॥ ५१ ॥

दोहा—नवदुहितनकेसरिसपति, खोजदेहुमुनिनाथ। दैसुतमोहिंपुनिजाहुवन, कहौंजोरियुगहाथ ॥ ५२ ॥

विवशविषयसुखबीतेवासर। अबनहिंनाथतासुहैअवसर॥५३॥ सोनहिंगुनहुमोरअपराधा। मेटहुनाथसकलयहबाधा ५४
कामिनिसंगकरतजसरीती। तैसहिहोयजोहरिपदप्रीती॥ तौताकीतुरतहिबनिजावै। पुनिसंसारभीतिनहिंपावै ॥५५॥
जासुकर्मनहिंधर्मसमेतू। भयोनपुनिविरागकरहेतू॥ हरिपदपद्मनअलिमनभयऊ ॥ सोजनजगजीवनमरिगयऊ॥५६॥
सोहमहरिकीमोहितमाया। विषयविनोदहिकालगमाया॥ तुमसोंलह्योनभक्तिविरागा। हरिपदमेंममननहिंलागा ॥

दोहा—तुमसमसमरथपायकै, लियोमोक्षनहिंमाँगि। जानिलियोसोसकलविधि, मेरीअहैअभागि ॥ ५७ ॥

इतिसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेव
कृतेआनंदाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेत्रयोविंशस्तरंगः ॥ २३ ॥

मैत्रेयउवाच।

दोहा–देवहुतीयहिभाँतिजब, विनयकरीपतिपाहिं । तबदयालुकर्दमकह्यो, सुमिरतश्रीपतिकाहिं ॥ १ ॥

कर्दमोवाच ।

नहिंशोचहुमनमेंकछुप्यारी । ह्वैहैतेरोपुत्रमुरारी ॥ २ ॥ भजहुसप्रीतिरमापतिकाहीं । जेदयालुहैंदासनमाहीं ॥३॥
कछुककालमहँतुवसुतह्वैकै।हरिहैशंकअनुग्रहकैकै ४ (मै.उ.) देवहुतीसुनिपतिकैवाणी। भज्योकपटतजिशारँगपाणी
तहँकछुदिनमहँदीनदयाला। प्रगटेताकेत्रिभुवनपाला॥६॥तबहिंव्योमबाजनबहुबाजे।ऋषिमुनिसकलवेदध्वनिगाजे।
किन्नरगुणगणगावनलागे।अप्सरगणनाचहिंअनुरागे॥७॥ सुमनससुमनवारबहुवर्षे।शंकरविधिआदिकसुरहर्षे ॥ ८ ॥
दोहा–दिशप्रसन्नभोविमलजल, मनमोदितसबकेर । सरस्वतितटकर्दमभवन, आयेदेवघनेर ॥
मुनिमरीचिआदिकलैसंगा।आयेब्रह्माजानिप्रसंगा ९ करिहरिकोविरंचिसत्कारा।।कर्दमसोंअसवचनउचारा १०।११

ब्रह्मोवाच ।

कर्दमकियसत्कारहमारा।मान्योहमजोवचनउचारा॥१२॥सुताहियोगअसपितुसेवकाई ।जैसेतुमकीन्ह्योमुनिराई ॥
पितुशासनसुतनिजशिरधारी।करहिंविनाशुभअशुभविचारी १३येनवकन्याजोनतुम्हारी।तेह्वैहैंबहुजगविस्तारी १४
जेइनकेसमानवरहोहीं । तिनकोव्याहिदेउतुमछोहीं ॥ तुमकन्यासमानवरपाई । देहैंतुम्हरोसुयशबढाई ॥ १५ ॥
दोहा–आपपुत्रभगवानभे, जनपरकरिअनुराग । कपिलदेवअसनामहै ॥ १६ ॥दायकज्ञानविराग ॥
कर्मवासनानाशनहारे । कनककेशअरुदृगअरुणारे ॥ मुद्रापद्मपदांबुजमाहीं ॥१७॥ पुनिकहदेवहुतीतियकाहीं ॥
आयगर्भतेकैटभनाशी । प्रगटेप्रभुकृतज्ञसुखराशी ॥ संशयहरिअज्ञानकरिदूरी । जगतविचरिहैंकरियशभूरी॥१८॥
सांख्यशास्त्रआचारजनाथा । करिहैंसकलअनाथसनाथा ॥ १९ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

असतिनसोंकहिसहितकुमारा।गयेहंसचढ़िगृहकरतारा॥२०॥विधिनिदेशलहिकर्दमतेई । दुहितनदियोयोगवरजेई ॥
दियमरीचिकहँकलाकुमारी । अत्रिहिदियअनसुइयाप्यारी ॥
दोहा–अंगिरकोश्रद्धादई, हविभुजिदईपुलस्ति ॥ २२ ॥ दईपुलहकहँगतिसुता, क्रतुकहँक्रियाप्रशस्ति ॥
ख्यातिसुतापुनिभृगुकहँदीन्ही ।अरुंधतीवशिष्ठगहिलीन्ही॥२३॥लियोअथर्वाशांतिकुमारी।जातेभयेयज्ञविस्तारी॥
यहिविधिनवदुहितासुनिव्याही।विदाकरीह्वैपरमउछाही॥निजनिजतियलैनिजनिजधामा।जातभयेमुनिवरअभिरामा
गुणिहरिसुतयकांतमहँजाई । कर्दमबोलेपदशिरनाई ॥ २६ ॥ पापीपुरुषनरकहठिजाहीं । कबहूँमंगलपावतनाहीं॥
भाग्यविवशकरिकहुँशुभकर्मा।देवनकरहिंप्रसन्नसधर्मा॥तबबहुजन्मनिजतनकराहीं । ध्यावहिंचलिअकेलिवनमाहीं
दोहा–जबतेकबहूँमिलहिंप्रभु, तेप्रभुममगृहआय । प्रगटेसाहिलघुताविपुल, कोसमश्रीयदुराय ॥ २९ ॥
अपनीकियोसत्यप्रभुवानी । सांख्यशास्त्रज्ञानैकेदानी ॥ भक्तनमानबढ़ावनहारे ॥ ३० ॥ रूपअनेकनधारणवारे ॥
जसअभिलाषदासकीहोवै । तैसहिनाथआपुवपुजोवै ॥ ३१ ॥ सदामुक्तवंदितपदकंजा । दायकतत्त्वबोधमनरंजा ॥
विभवविरागज्ञानयशपूरे । रमासमेतरूपकेरूरे ॥ सोतुम्हरेपदकोपरणामा । दायकसंततसंतअरामा ॥ ३२ ॥
पुरुषप्रधानईशबलवाना।विरचकसकलजगतयहनाना॥लोकलोकप्रतिअंतर्यामी।कपिलदेवहैतुमहिंनमामी ॥ ३३ ॥
दोहा–कुलपावनसोआजमम, उऋणपितरगुरुकाहिं । ह्वैसंन्यासीभजतमोहिं, विचरौजोजगमाहिं ॥ ३४ ॥
ऐसीसुनिकर्दमकीवानी । बोलेकपिलदेवसुखखानी ॥

श्रीभगवानुवाच ।

हमसुतह्वैहैंजोकहिदीन्हो।सोसबसत्यप्रगटहमकीन्हो ॥ ३५ ॥ करनहेतअधमनउद्धारा । होतहमारसदाअवतारा ॥
तत्त्वज्ञानसंतनकहँदेहीं । तिनकीसबबाधाहरिलेहीं ॥ ३६ ॥

सांख्यज्ञानकोभयोविनाशा।तबहमकिययहपुरुपप्रकाशा ॥जाहुसुखीध्यावहुहमकाहीं।मृत्युजीतिविचरहुजगमाहीं॥
पैहौकहुँनशोकमुनिराई।त्रिभुवनपतिपदमोंचितलाई॥३९॥ सांख्यशास्त्रअज्ञानप्रकाशी।मैंमातहिदेहौंमुदराशी ४०

श्रीमैत्रेयउवाच ।

दोहा–कपिलदेवजबअसकह्यो, तबकर्दमसुखपाइ । करिप्रदक्षिणानाथकी, निवसेकाननजाइ ॥ ४१ ॥
तजिजगसंगमौनव्रतधारी।विचरतभेसंसारसुखारी ॥४२॥पारब्रह्ममहँमनहिंलगाई।करनलगेहरिभक्तिमहाई ॥ ४३॥
सुखदुखशोकमोहतजिदीन्यो।समदरशीप्रशांतसुखभीन्यो४४यहिविधिहरिपदभक्तिबढ़ाई।जगतभीतिकर्दमनहिंपाई
जड़चेतनमहँनिरखेईशै । ईशहुमहँजड़चेतनदीशै ॥ ४६ ॥ तज्योईर्षाइच्छासिगरी । धरचोधीरमतिकबहुँनबिगरी॥
भगवतभक्तियुक्तमुनिराई । दुर्लभमोकहँपरतजनाई ॥ चितअरुअचितविलक्षणजोई । त्रिगुणप्रकाशजहाँनहिंहोई ॥
दोहा–ऐसोश्रीपतिधामजो, तहँकर्दममुनिजाय । वसतभयेप्रमुदिततहाँ, हरिसेवतचितलाय ॥ ४७ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दा
म्बुनिधौतृतीयस्कंधेचतुर्विंशस्तरंगः ॥ २४ ॥

दोहा–तहँशौनककरजोरिकै, अतिशयप्रीतिबढ़ाय । कपिलकथाकेसुननहित, कह्योपरमचितचाय ॥

शौनकउवाच ।

सांख्यशास्त्रकोप्रगटनहारा।उपदेशनहितालियअवतारा१सबयोगिनकेअहहिंशिरोमनि।तासुकथासुनिकैहमभेधानि २
कपिलकथासुनिजियनअघाता।कियोजौनप्रभुचरितविख्याता॥सोतुमवर्णहुसूतसुजाना।बाढ़चोहियेउछाहमहाना ३
सुनतसूतशौनककीवानी । बोलेवचनमोदरससानी ॥

श्रीसूतउवाच ।

व्यासकथामैत्रेयमुनीशा । विदुरहिंकहेउसुमिरिजगदीशा ॥ ४ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

तबकर्दमलीन्ह्योवनवासा।कियोविंदुसरकपिलनिवासा ॥५॥एकसमयसुतकेढिगजाई ।कपिलमातुअसगिरासुनाई ॥

देवहूतिरुवाच ।

दोहा–विषयविवशसुततेहमैं, उपज्योअतिअज्ञान । सोहमतजिदीन्ह्योसकल, पायपुत्रभगवान ॥ ६ ॥ ७ ॥
यहअपारसागरअज्ञाना।पारकरहुहेपुत्रसुजाना॥८॥उयेभानुजिमितमनशिजाई।मिलेतुमहिंतिमिकुमतिनशाई ॥९॥
तुवमायावशभोअज्ञाना।ताहिवेगिनाशहुभगवाना ॥ १०॥ तुमभवतरुकेकाठिनकुठारे । सतिशरणागतपालनहारे॥
प्रकृतिपुरुषकेजाननहेतू । तुमहिंप्रणामकरहिंकुलकेतू ॥ ११ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

सुनिजननीकीसुंदरवानी । विहँसिकपिलअसकहेउवखानी ॥ १२ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

भक्तिज्ञानजनमंगलमूला।नाशकजियसुखदुखप्रतिकूला १३ प्रथममुनिनसोंजोहमगाये।सोहमतुमसोंदेतसुनाये १४
दोहा–जातहिंजननीसत्यहम, मोक्षबंधकोहेत । प्रभुपदरतमनमोक्षप्रद, विषयनिरतसुखदेत ॥ १५ ॥
मोहादिकविनमनशुचिजोई।सुखदुखताहिकबहुँनहिंहोई॥जबह्वैगयोशुद्धमनमाता।होतविरागज्ञानअवदाता ॥१६॥
आतमज्ञानभयोजबपूरो । पावतकृष्णप्रेमतबरूरो ॥१७॥ ज्ञानविरागयोगतपनाना।येसबहैंनहिंभक्तिसमाना॥१८॥
ऊंचहाथकरिकहौंपुकारी।विनाभक्तिनहिंमिलहिंमुरारी ॥ १९ ॥ अहैसंगजनकीदृढफासी ।अहैसंगप्रदआनँदरासी ॥

साधुसंगकरिआनँदपावै।करिकुसंगजननरकसिधावै ॥ २० ॥ मातासाधुहोययहिभाँती।करुणावानक्षमायुतछाती ॥
दोहा—सबसोंमानहिमित्रता, शत्रुनकहूँदेखाय । मानहुमेंअपमानमें, शांतरहैसुखपाय ॥
सदाशीलभूषणजिनकाहीं । ऐसेसंतकहूँमिलिजाहीं॥२१॥भावअनन्यकृष्णमहँकरिकै।करहिंभक्तिजेदृढ़सुखभरिकै॥
कृष्णहेतुछोड़हिसबकर्मा।कृष्णहिकरहिंसमर्पणधर्मा॥कृष्णहेतुछोड़हिंपरिवारा ॥२२॥सुनहिंकृष्णकीकथाअपारा ॥
वर्णहिंकृष्णकथामुखमाहीं। तिनहिंनकलिकिल्मपनियराहीं २३ ऐसेसाधुनकोसतसंगा । करुजननीकरिप्रीतिअभंगा
तिनकेसंगकरतयकबारा । पुनिनरहतसंसारखँभारा॥२४॥प्रथमकियेसतसंगहिकाहीं।कृष्णकथाआवहिमुखमाहीं ॥
दोहा—जौनकथाकेसुनतहीं, निर्मलहोतशरीर । जनजानतजियमेंअवशि, असदयालुयदुवीर ॥
सुनतकृष्णगाथाजिनकाना।मिटतआशुउरकोअज्ञाना ॥ कृष्णचरणमहँबाढ़तिप्रीती।करतैसकलभक्तिकीरीती २५
जबहरिचरणभक्तिअतिबाढ़ी।तबदुहुँलोकआशभैगाढ़ी ॥गुणनलग्योनिशिदिनहरिलीला।सहजहोतवशचितबलशीला
पूरणभक्तिभई जेहिकाहीं । तेहियहदेहकृष्णमिलिजाहीं॥२७॥देवहुतीसुनिकपिलसुवाणी ।बोलीवचनजोरियुगपाणी

देवहूतिरुवाच ।

जौनभक्तितेहरिमिलिजाहीं।सोमोसोंवर्णहुसुखमाहीं॥ सहजहिंमिलहिंमोहियदुराई।सोउपायमोहिंदेहुबताई ॥ २८॥
दोहा—कपिलकहहुमोसोंसविधि, हैवहकैसोयोग । जोकरिकैयोगीसकल, लहतभक्तिकोभोग ॥ २९ ॥
यद्यपिहैवहकठिनमहाई । तद्यपिभाषहुसरलउपाई॥हैमतिमंदसकलविधिमोरी । यकभरोसदायाप्रभुतोरी ॥ ३० ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

कपिलजानिमाताकीरीती । वर्ण्योज्ञानभक्तिकीरीती ॥ ३१ ॥

कपिलउवाच ।

सबइंद्रिनकीवृत्तिस्वभावै।हरिमहँलगेसोमुक्तिकहावै॥३२॥ मुक्तिहुतेसोअधिकभक्तिहै।दहनसूक्ष्मतनुतासुशक्तिहै ॥
ज्योंजठरानलउदरमहाई।सिगरोभोजनदेतपचाई ॥३३॥ जेजनहरिजनसेवनकरहीं।कृष्णकथामिलिमिलिउच्चरहीं ॥
सुनैंसुनावैंसदासराहैं । हरियशसुधासिंधुअवगाहैं ॥
दोहा—करहिंकर्मसबकृष्णहित, जगतेरहैंनिराश । तिनहिंकबहुँनहिंहोतिहै, सायुज्यहुकीआश ॥ ३४ ॥
कोटिनशशिसमवदनप्रकासा॥अरुणविलोचनसुखदविलासा ॥ऐसेश्रीहरिरूपसोहावन । ध्यावहिंसदासंतजनपावन ॥
ध्यानहिमहँमिलिहरिसँगमाहीं॥बोलहिंबहुविधिवचनतहाहीं॥कृष्णकटाक्षविलासविलोकी॥वारहिंतनमनसदाअशोकी
जोजोकलाकरहिंहरिसंगा । सोसोयहतनुप्रगटअभंगा ॥ ऐसेसंतकृष्णकेप्यारे । रहैंकृष्णपदध्यानहिंधारे ॥
चहैंनयदपिमुक्तिमनलाई । तदपिमुक्तिआवैवरियाई॥३६॥सुरदुर्लभविभूतिहरिदेहीं । पैअपनेतेकबहुँनलेहीं ॥३७॥
दोहा—जासुमित्रसतगुरुसखा, प्राणहुप्रिययदुनाथ । तिनकेशिरमेंकालहू, धरैनकबहूंहाथ ॥ ३८ ॥
जेपशुधनसुततियकुलगेहू । छोड़िकरहिंहरिचरणसनेहू ॥ उभयलोककोसबसुखत्यागी।होतअनन्यकृष्णअनुरागी॥
तिनकोमहाकालकरतेरे।लेतछीनिहरिप्रभुतिनकेरे॥३९॥सबप्राणिनकेहरिहितकारी।प्रकृतपुरुषईश्वरगिरिधारी ४०
तिनहिंछोड़िकैहेसुनुमाता । जगभयतेदूजोनहिंताता॥४१॥कृष्णभीतितेमारुतबहतो । कृष्णभीतितेसूरजतपतो॥
कृष्णभीतिपावकसबजारै । कृष्णभीतिवासवजलढारै ॥ कृष्णभीतितेयहसंसारै । महामीचसबजगकहँमारै ॥४२॥
ज्ञानविरागभक्तिकरयोगू । योगीहरिपदलहहिअशोगू ॥
दोहा—मनथिरकरिअतिभक्तिसों, हरिमहँदेइलगाय । इतनोईसंसारमें, यदुपतिमिलनउपाय ॥ ४४ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेपंचविंशतितमस्तरंगः ॥ २५ ॥

दोहा–अवलक्षणसवतत्त्वके, तोकोदेहुँसुनाँइ । जाकेजानेपुरुषके,प्राकृतगुणमिटिजाँइ ॥ १ ॥

जोनज्ञानहियग्रंथिमिटावे । परमपुरुपप्रत्यक्षकहावे ॥ जातेलहतजीवकल्याना । सोहमप्रथमहिंकरहिंबखाना ॥२॥
आत्माहैअनादिअविनाशी।अगुणप्रकृतिपरविश्वप्रकाशी ३ सूक्ष्मप्रकृतिगुणमयीजोई।हरिलीलाहितलहजियसोई ४
प्रजात्रिगुणमयसिरजतिमाया।मोहततासोंजीवनिकाया॥५॥भयोजबहिंजीवहिअज्ञाना।तबकरताअपनेकहँमाना ६॥
तातेजीवलहतसंसारा । पावतयोनिकर्मअनुसारा ॥ जबकरतानिजकहनहिंमानै । तबछूटतजगबंधमहानै ॥ ७ ॥

दोहा–करताकारजकारणहु, इनकोप्रकृतिहिहेतु । सुखदुखभोगहुमेंअहै, जीवहेतुमतिसेतु ॥ ८ ॥

सुनिकैकपिलदेवकीवानी।देवहुतीबोलीमतिखानी॥(दे०रु०)प्रकृतिपुरुषकेलक्षणजोई।जगकारणभाषहुतुमसोई ९॥
सुनिकैमातुगिरामनभाई । बोलेकपिलदेवहर्पाई ॥

श्रीभगवानुवाच ।

प्राकृतसोइजेहिकहतप्रधाना।त्रिगुणनित्यसतअसतमहाना॥चौबिसतत्त्वसकलकविकहहीं।तासुभेदयहिविधिकविगहहीं
अनिलअनलअपअवनिअकाशा।अरुशब्दादिकपंचप्रकाशा॥ ज्ञानकर्मइन्द्रियदशन्यारी।मनबुधिअहंकारचितभारी
चौबिसतत्त्वहोयँयहिभाती । सगुणब्रह्मयहहैअघघाती ॥ प्रकृतिअवस्थारूपविशाला।सोईतत्त्वपचीसोकाला॥१५॥

दोहा–सोईकृष्णप्रभावको, करतकालमतिमान । तौनकालकोप्रकृतिवश, जियकीभीतिमहान ॥ १६ ॥
जामेंसमतात्रिगुणकी, प्रकृतिक्रियावशजोय । जातेहोयकहैकोई, कालअहैहरिसोय ॥ १७ ॥

जोभगवानपुरुषकोरूपा । भीतरसोइहैकालस्वरूपा॥निजसंकल्पवसतजगमाहीं।संतसुखदकरभरणसदाहीं ॥१८॥
सोईस्ववशदेवहितक्षोभित।निजचितशक्तिप्रकृतिकियेयोजित॥प्रकृतिसुमहत्तत्त्वप्रगटायो॥अतिप्रकाशमयजगतसोहायो॥
सोहमतत्त्वजगतकोकारण । निजविकारकीन्हेजोधारण ॥ सूक्ष्मरूपयहजगहैसोई । प्रगटकरतताकोसुदमोई ॥
संकोचकजोजियकेज्ञाने । तेहितनुकोनिजदुतिकियपाने॥ २०॥ परमातमअरुज्ञानिहुकेरे।साधनयेजेश्रुतिननिबेरे ॥

दोहा–मनबुधचितअहँकारको, दीन्होजगप्रगटाय । वासुदेवकेचित्तमें, दियोउपास्यजनाय ॥

अहमितमेंसंकर्षणकाहीं।कहउपास्यअनिरुधमनमाहीं॥बुधिमेंदियप्रद्युम्नउचारी॥२१॥शांतस्वरूपस्वच्छअविकारी
महत्तत्त्वकेक्षोभहितेरे । क्रियाशक्तिअहँकारनिबेरे ॥ २३ ॥ सात्विकराजसतामसजेहैं । उत्पतिहोतभयेजगतेहैं ॥
सात्विकअहंकारतेभोमन।राजसअहमितत्तेइन्द्रियगन॥तामसअहमितत्तेमहिआदिक॥पंचमहाभूतहुअहलादिक २४
शेषसहस्रशीशतिनभाये । तेतातेउपास्यकहवाये ॥ अथवासुरइन्द्रियपँचभूता । इनउपासनातेमजबूता ॥ २५ ॥

दोहा–अथवाशांतहिघोरअति, मूढ़रूपअहँकार । शेषउपासनथलइनहु, कहदियवेदउचार ॥ २६ ॥

सात्विकअहमितत्तेमनजायो।जोसंकल्पविकल्पबढ़ायो॥ जिनतेसकलकामनाकेरी।उत्पतिमेंकहश्रुतिननिबेरी॥२७॥
शरदेंदीवरसरिसशरीरा । ध्यावतजाहियोगिजनधीरा ॥ तेअनिरुद्धदेवजेअहहीं । तिनउपासनाथलमनकहहीं॥२८॥
बुद्धिभईराजसअहँकारे । जातेज्ञानअर्थकोधारे ॥ तबहींसकलइंद्रियनकेरी । भैसहायतासुखप्रदढ़ेरी ॥ २९ ॥
संशयऔरविपर्ययनिहचै । निद्रासुधिबुधकर्मेंद्रियचै ॥ ३० ॥ ज्ञानेंद्रिहुकीउत्पतिभाई । राजसअहंकारतेगाई ॥

दोहा–क्रियाशक्तिजोप्राणकी, ज्ञानशक्तिबुधिकेरि । सोउराजसतेहोतिभै, वेदनकह्योनिबेरि ॥ ३१ ॥

तामसअहँकारहितेमानो । होतशब्दतनुमात्रबखानो ॥ तातेहोतभयोआकाशा । शब्दग्राहीश्रवणप्रकाशा॥ ३२ ॥
शब्दअर्थकोवाचकजोहै । वक्ताकोबोधकनभसोहै ॥ ताकोसूक्ष्मरूपहैजोई । लक्षणशब्दहुकेरहैसोई ॥ ३३ ॥
भीतरबाहेरभूतनकाहीं । देवैजोअवकाशसदाहीं ॥ इन्द्रियमनकोहोबअधारा । मनकोलक्षणकियोउचारा ॥ ३४ ॥
नभतेभोअस्पर्शसोहायो।अस्पर्शहितेपवनहिजायो॥गाहकपरसत्वचाविख्याता॥३५॥कोमलकठिनशीतअरुताता

दोहा–सूक्ष्मरूपजोपवनको, लक्षणपरसोआय ॥ ३६ ॥ चालनमेलनप्रापनो, करिबोकरनसहाय ॥

कह्योपवनकोलक्षणऐसो । औरहुकहतअहौंदैजैसो ॥ ३७ ॥ वायुतेहोतभयोहैरूपा । रूपहितेभोतेजअरूपा ॥

ग्राहकरूपकेरदृगजेहैं । उत्पतिहोतभयेजगतेहैं ॥ ३८ ॥ दीवोजोद्रव्यहिआकारा । द्रव्यहिमेंगुणरूपप्रकारा ॥
सूक्षमरूपतेजकोजोहै । लक्षणकह्योरूपकोसोहै ॥ ३९ ॥ पाचनऔरप्रकाशनपाना । शीतनिवारणभोजननाना ॥
शोषणक्षुधातृषाकोकरना । लक्षणतेजकेरश्रुतिवरना॥४०॥तेजतेरसरसतेभोपानी॥तेहिग्राहकरसनाभैजानी॥४१ ॥
दोहा-मधुरलवणकटुतीतअरु, अम्लकपायसमेत ॥ ४२ ॥ रसउत्पतिजगहोतभैं, वर्णहिंबुद्धिनिकेत ॥
भिजवनअरुपिंडीकरन, तोपजियावनकर्म । तृपातापहरमृदुकरन, बढ़वनजलकोधर्म ॥ ४३ ॥
जलतेगंधगंधमहिजायो।ग्राहकगंधघ्राणप्रगटायो ॥ ४४ ॥अरुसुगंधदुर्गंधअपारा । मिश्रगंधबहुगंधप्रकारा ॥ ४५ ॥
ब्रह्मभावनहुअरुअस्थाना । धारणछिद्रदेवहूजाना ॥ उपजावनसवप्राणिनकेरो । लक्षणमहिकोकियोनिवेरो ॥ ४६॥
नभकोगुणहैशब्दमहानो।सुनबश्रवणकोलक्षणमानो।।परसवायुकोगुणमुनिगायो।तासुग्रहणगुणत्वचासुहायो ॥४७॥
अहैजेजनगुणरूपविख्याता।तेहिग्राहकदृगलक्षणताता॥ जलकोगुणरसतेहिग्रहणैकर । रसनाकोलक्षणभाष्योवर ॥
दोहा-गंधअहैगुणअवनिको, ग्रहणकरबजोतासु । लक्षणलेनोघ्राणको, श्रुतिगणकियोप्रकासु ॥ ४८ ॥
नभआदिककोगुणसमुदाई । वायुआदितेपरैलखाई ॥ तातेमहिसबकेगुणकाहीं । धारणकरतीअहैसदाहीं ॥ ४९ ॥
कालकर्मगुणसहितहमेशा । इनसबमेंहरिकियोप्रवेशा॥५०॥तबयेसिगरेमिलेअचेतन।अंडरह्योउत्पतिह्वैश्रुतिमन ॥
वयविराटब्रह्मांडहिमाहीं । उत्पतिभोजोरहतिसदाहीं ॥ ५१ ॥ एकतेएकदशगुणोजोई । आवरणितजलादितेसोई ॥
बाहिरप्रकृतिहितेआवरनित । सोब्रह्मांडअहैअतिशोभित॥ताहीमेंभगवतकोरूपा।सकललोकविस्तारअनूपा॥५२॥
दोहा-परोसलिलमेंकनकमय, यहब्रह्मांडजोवेश । कियोअनेकनछिद्रको, करिहरितहांप्रवेश ॥ ५३ ॥
प्रथमभयोमुखपुनिवचन, अग्निदेवतातासु । फेरनासिकाप्रगटभये ॥ ५४ ॥ पुनिभोनयनविलासु ॥
फेरश्रवण॥५५॥पुनित्वचाभईहै।फेरलोमतजितनैछईहै॥भयोशिश्न॥५६॥पुनिगुदप्रगटानी।मृत्युदेवतातासुबखानी
हस्तचरण॥५८॥नाड़ीपुनिजाई।फेरउदर॥५९॥उरभोसुखदाई६० यद्यपियेइन्द्रिययुतदेवा।होतभईविराटहितसेवा॥
पुनिक्रमसोंनिजनिजथलमाहीं।कियोप्रवेशउठावनकाहीं ६२अग्निप्रवेशकियोमुखमाहीं।उठ्योविराटपुरुषतबनाहीं ॥
फेरपवनप्रविस्यौनसमाहीं उठ्यो विराटवपुषतबनाहीं॥६३॥ पुनिसूरजप्रविशेदृगमाहीं।उठ्योविराटवपुषतबनाहीं ॥
दोहा-कियप्रवेशश्रुतिमेंदिशा, तबहुँनउठ्योविराट ॥ पुनिप्रविशीऔषधित्वचा, तबहुँनउठ्योविराट ॥
जलप्रवेशकियशिश्नहिमाहीं।उठयोविराटवपुषतबनाहीं ६५॥मृत्युप्रवेशकियोगुदमाहीं।उठयोविराटवपुषतबनाहीं
इंद्रप्रवेशकियोकरमाहीं । उठ्योविराटवपुषतबनाहीं ॥ ६६ ॥ वरुणप्रवेशकियोपदमाहीं।उठ्योविराटवपुषतबनाहीं ॥
प्रविशीनाड़िननदीतहांहीं । उठ्योविराटवपुषतबनाहीं॥६७॥प्रविश्योसागरउदरहिमाहीं।उठ्योविराटवपुषतबनाहीं॥
मनयुतशशिप्रविश्योहियमाहीं।उठ्योविराटवपुषतबनाहीं ॥पुनिब्रह्माप्रविश्योबुधिमाहीं।उठ्योविराटवपुषतबनाहीं ॥
प्रविश्योशिवअभिमानहिमाहीं । उठ्योविराटवपुषतबनाहीं ॥ ६९ ॥
दोहा-जीवसहितचैतन्यहरि, जबप्रविशेहियमाहिं । तबविराटवपुसलिलते, उठ्योतुरंततहाँहि ॥ ७० ॥
जैसेसोवतपुरुषको, कोउनहिंसकहिजगाय । जैसेजियपतिकृष्णविन, कोतनुसकैउठाय ॥
सोरठा-तातेतनुतेभिन्न, भक्तिसहितहरिकोगुनै । तौनहोयमतिखिन्न, भवबंधनमेंपरतनहिं ॥ ७२ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दाम्बुनिधौ
तृतीयस्कंधेषष्ठविंशतितमस्तरंगः ॥ २६ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा-जीवअकरताहैजननि, अगुणऔरअविकार । रहतप्रकृतिमधियदपिसो, लहतनतदपिविकार ॥

जिमिजलअंतरभानुदेखाहीं।पैजलतिनकोपरसननाहीं॥१॥जबमायासबलितजियहोवै।तबअपनेकहँकरताजोवै॥२॥
ईसंसारहेतुसनिसोई। निजकृतनकर्मअवशिफलहोई॥ करिकेकर्मचहतजियस्वर्गा। नहिंचाहतकबहूँअपवर्गा॥ ३॥
तेसबकालपायनशिजाहीं। जैसेजगसपनभ्रमजाहीं ॥ ४॥ स्वर्गहेतुजनकरतउपाई। जातेसकतनजगहिविहाई॥
तातेक्रमक्रमचंचलचित्ते। राखैसतपथमहँजननित्ते॥५॥ करिविरागअतिभक्तिहुकाहीं। राखैमनअपनेवशमाहीं॥

दोहा—साधनकरिश्रद्धासहित, करैकृष्णमहँभाउ। सुनैकृष्णकीनितकथा, अतिहिबढायउछाउ॥ ६॥

सिगरोजगतमित्रसमदेखै। ब्रह्मचर्यजनकरैविशेषै॥ ७॥ रहैमौननिजधर्महिधारै। मिलैजौनसोकरैअहारै॥
शांतकरैएकांतनिवासू। जितइन्द्रियकरुणापरकासू॥८॥ सुततीयनमहँकरैनभोगू। ज्ञानधारिमेटहिभवशोगू॥९॥
निजमतितेआतमकहँजानै।जिमिदेखतदृगतेजनभानै॥१०॥बुद्धिभेदजबनहिंरहिजातो।तबयहितनुआतमादेखातो॥
सोआत्मानहिंअहैविकारी। सबतनुकोप्रकाशविस्तारी॥ ११॥ जलमहँपरैभानुपरछाहीं।भौनप्रकाशहोतचहुँघाहीं॥

दोहा—तातेजलमहँभानुको, जोप्रतिबिंबदेखाय। सोप्रतिबिंबविलोकतै, रविकोरूपदेखाय॥ १२॥

यहिविधिभयउज्ञानजेहिजबहीं।आतमवपुदेखानतेहितबहीं॥ आत्मरूपजबपरचोनिहारी।शुद्धातमतबलेतविचारी॥
जबहिंसुषुप्तिअवस्थाआई। बुधिइन्द्रियथिरताकहँपाई॥१४॥ तबअनुभवभोआत्मस्वरूपै। टूटतअहंकारकोजूपै॥
सोसुषुप्तिजबपुनिमिटिजावै। तबजनकेसुखदुखउरआवै॥१५॥ देहीदेहभेदअसमानै।तनुपरतंत्रजीवकोजानै॥१६॥
सुनिकैकपिलदेवकीवानी। देवहुतीअसगिराबखानी॥

देवहूतिरुवाच।

छोंड़ैप्रकृतिपुरुषकहँनाहीं। तैसहिप्रकृतिपुरुषहूकाहीं॥ १७॥

दोहा—जैसेमहिमहँहोतिहै, सकलभाँतिकीगंध। अहैपरस्परतैसही, प्रकृतिपुरुषसनबंध॥ १८॥

कर्मबंधतेजियहिघनेरे। तेत्रयगुणसंबंधहितेरे॥ कर्मबंधतातेनहिंछूटै। कैसेमोक्षमोदसुखलूटै॥ १९॥
तत्त्वविचारकियेभ्रमजाई। पैनवासनामिटतमिटाई॥ तातेहोतफेरअज्ञाना। यहसंशयमेटहुभगवाना॥ २०॥
सुनिकैजननिगिरासुखदाई।बोलेकपिलदेवहर्षाई॥(कपि०उ०)करैअकामसुधर्मसदाहीं।श्रीहरिकथाकहैश्रुतिमाहीं॥
ज्ञानदृष्टितेतत्त्वहिदेखै। धरैबलीवैरागविशेषै॥ योगसमाधिसहिततपठानै। करैकृष्णगुणगाथागानै॥ २२॥

दोहा—यहिविधिजबसाधनकरै, तबअज्ञाननशिजाय। जैसेअरणीअग्निमहँ, क्रमक्रमसोंजरिजाय॥ २३॥

मायाविभवभोगसबभोगी। तज्योदोपलखिभोजनयोगी॥ तबमायाबंधननहिंपरई। परमातमकोदेखतरहई॥२४॥
जैसेसपनमाहँदुखभोगै। जागेवृथाहोतनहिंलोगै॥ २५॥ ऐसहितत्त्वज्ञानजोपायो। कृष्णचरणमहँमनहिलगायो॥
तबहरिमायाकरतिनबाधा।मगनरहतसुखउदधिअगाधा२६बहुदिनमहँअसभयोविरागा।ब्रह्मलोकलगिलौमनलागा॥
तबहरिप्रेमपयोधहिपाई।बसतकृष्णपुरमोदितजाई॥ सोनहिंपुनिआवतसंसारा। रहतसंगवसुदेवकुमारा॥ २९॥

दोहा—योगीकरिकैयोगबहु, योगसिद्धिसबपाय। तिनतनतनकोतकतनहिं, तबनकालढिगजाय॥ ३०॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दाम्बुनिधौ
तृतीयस्कंधेसप्तविंशतितमस्तरंगः॥ २७॥

श्रीभगवानुवाच

दोहा—बीजसहितअबयोगको, लक्षणदेहुँबताय। जेहिकीन्हेमनअमलहै, सतपथमेंलगिजाय॥ १॥

करैआचरणसदास्वधर्मा। छोंडैसबअधर्म्मकेकर्मा॥ दैवयोगतेजोमिलिजाई। तातेराखैतोषसदाई॥
हरिदासनकेपदशिरनावै॥२॥लौकिकधर्ममनहिंनहिंआवै॥ मोक्षधर्ममहँराखहिप्रीती।नितनितअशनकरहिशुचिरीती

वसहिइकांतविपिनमहँजाई । सहजैजहँकोउसकहिनजाई ॥३॥ सत्यअहिंसाऔरअचोरी । करैअर्थभरसंचयथोरी ॥
ब्रह्मचर्यस्वाध्यायशौचतप । हरिपूजन॥४॥मौनतानामजप॥ आसनजीतिप्राणपुनिजीती।मनकीकरैअचंचलरीती॥
दोहा-इंद्रिनकोएकाग्रकरि, नाशैविषयमहान ॥ ५ ॥ मूलाधारादिकनमें, मनतेलावैप्रान ॥
यदुपतिकीलीलानितगावै । यदुपतिकेपदमेंमनलावै॥ ६ ॥ निजमनकहँऐसीकरिरीतै । क्रमक्रमसेबुधिसोंबुधजीतै ॥
असतपंथमहँजाननपावै।तजिआलसतिहिनिजवशलावै७कुशपरअजिनअजिनपरचीरा।असआसनशुचिथलरचिधीरा
स्वस्तिकआसनकरितहँबैठै ।सूधकायकरिपुनिनहिंऐंठै॥८॥पूरककुंभकरेचककरिकै।अथवातेहिविपरीतहिधरिकै॥
यहिविधिकरैप्राणअभ्यासा। तबमनअचलहोयअनयासा॥९॥यहिविधिसाधनकरैजोकोई।जाकोअचलशुद्धमनहोई॥
दोहा-जैसेकनकतपायकै, अमलकरैमतिमान । तिमिसाधनतेहोतहै,मानसअमलमहान ॥ १० ॥
रोगदहैकरिप्राणायामा । धारिधरणिध्वंसैअघग्रामा॥इंद्रिनजीतिविषयतजिनाना। कामादिकजीतैधरिध्याना॥११॥
निजमनहोयअचंचलजबहीं।अवलोकतनासाग्रहितवहीं १२ ध्यानकरहियदुपतिकररूपा।जोत्रिभुवनमहँपरमअनूपा
मुखअरविंदनयनअरविंदा । गदाचक्रदरधरअरविंदा ॥ इंदीवरसमश्यामशरीरा ॥१३॥ सरसिजकेसरिकेशिरचीरा ।
वक्षसमहँश्रीवत्सविराजै । कौस्तुभमणिकंधरमहँराजै ॥ गुंजतमधुपलसतवनमाला । उरअमोलमणिहारविशाला॥
दोहा-पदनूपुरअंगदभुजनि, करवरवलयविलाश । कोटिसूर्य्यसमशीशमें, राजतकीटप्रकाश ॥ १५ ॥
कटिकांचीकलापकमनीया । दृगमुददायकतनुरमनीया॥१६॥सदारहतप्रभुवैसकिशोरा। त्रिभुवनवंदितनंदकिशोरा
वसतसदाभक्तनउरमाहीं॥१७॥कहतनामजेहिपापनशाहीं ।शरणागतपालकभगवाना॥यहिविधिकरैकृष्णकोध्याना
बैठतसोवतकरतपयाना । सबविधिधरैकृष्णकोध्याना ॥राखैशुद्धभावहरिमाहीं । सुनैश्रवणहरिसुयशसदाहीं॥१९॥
रूपसमग्रजबहिंउरआवै। पृथकपृथकहरिअँगतबध्यावै ॥ पुनियहिविधिहरिकोपदकंजा । ध्यानकरैमंजुलमनरंजा ॥
दोहा-ध्वजअंकुशयववज्रअरु, सरसिजचिह्नयुक्त । अंधकारअज्ञानको, करनहारहैमुक्त ॥
यकयकनखशकोटिजुन्हाई। मंडलतासुलसैसुखदाई ॥२१॥ जेहिपदपद्मपखारननीरा।होनहेतुशुचिसकलशरीरा ॥
धरयोशीशशंकरमतिधामा । तबतेपायोशंकरनामा ॥ सेवकमनअज्ञानपहारा । ताहिवज्रसमफोरनहारा ॥
प्रभुचरणाबिंदअसध्यावै । तौजनकबहुँकलेशनपावै ॥ २२ ॥ जंघाजानुयुगलहरिकेरी ।धरैध्यानकरिप्रीतिघनेरी॥
जलजाक्षीजननीजगजोई । विधिशिवसुरवंदितनितहोई॥ सोकमलानिजकरनलगाई।धारिअंकमरदतमनलाई॥२३॥
दोहा-पुनिऊरूहरिकेयुगल, ध्यानकरैमनलाय । अतसीकुसुमसमानदुति, लसहिंकंधखगराय ॥
पुनिहरिकटिध्यावैमनलाई । निरखतजेहिहरिगर्वनशाई॥कांचीकरैविलासतहाहीं । अंबरपीतलंबतिनमाहीं॥२४ ॥
पद्मनाभनाभीपुनिध्यावै। विश्वअधारउदरमधिभावै॥जोनाभीतेसरसिजजायो ।सोइसरसिजविधिकोप्रगटायो २५॥
पुनिध्यावैउरअतिसुकुमारा । मनुमरकतमणियुगलकेवारा॥छाजतिछटाछहरितहँद्वारा।मनहुनीलगिरिसुरसरिधारा॥
रमानिवासवक्षथलभ्राजै । भक्तनयनउरआनँदछाजै॥पुनिविकुंठपतिकंठहिध्यावै।जहँकौस्तुभमणिसुखमापावै॥२६॥
दोहा-ध्यावैबाहुविशालपुनि, जिनबाहुनकीछाहँ । वसहिंविशोकीदेवगण, मंथकक्षीरधिकाहँ ॥
सहसआरचक्रहिपुनिध्यावै । जासुतेजत्रिभुवनमहँछावै॥पांचजन्यशंखहिपुनिध्यावै । प्रभुकरकंजहंससमभावै॥२७॥
कौमोदकीगदाहरिप्यारी । ध्यानकरैउरप्रीतिहिधारी ॥ सबलितशत्रुनशोणितजोई । दहतदीहदासनदुखसोई ॥
पुनिध्यावैप्रभुकीवनमाला। गुंजहिजामेंमधुकरजाला॥कौस्तुभलखिजीवहिअभिमानी।पसरतिजाकीप्रभाअमानी ॥
वारिजवदनविष्णुकोध्यावै । संतसकलसंतापनशावै ॥ २८ ॥
विलसहिंअमलकपोलहुगोला।जहँमकराकृतकुंडललोला॥शुकतुंडहिशोभाकीहरणी। लसतिनासिकाअतिसुखकरणी ॥
दोहा-युगझषअजिअवलीसहित, पुनिइंदिरानिकेत । असकंजहुनहिंलहतछवि, हरिमुखसुखमासेत ॥
कुंतलकुटिललसहिंसुकुमारे।मनहुकुंडलितसर्पकुमारे॥नयनउपरयुगभ्रुकुटिविलाशा। मनुअलिअवलिकंजमधुआशा

पुनिहरिकृपाकटाक्षहिध्यावै।जोजीवनत्रयतापनशावै॥सोहतसहितमंजुमुसक्यानी।जासुछटाछहरतिछबिखानी ३१
पुनिध्यावैश्रीपतिकोहासा। शोपनशोकसिंधुअनयासा॥श्रीमुकुंदभ्रुकुटीयुगसोहैं।मुनिमोहकमदनहुमनमोहैं॥ ३२॥
पुनिप्रहासप्रभुकोमनध्यावै। दंतनअधरअरुणिभाध्यावै॥ जेहिविधिहरिअंगनमहँजाई। करैनपावैमनचपलाई॥
दोहा—यहिविधिश्रीयदुनाथको, करैभक्तजनध्यान। नितप्रतितेहिचिंततरहै, हठिभुलायतनुभान॥ ३३॥
यहिविधिकरतकरतहरिध्याना। भयोभावहरिमाहँप्रमाना॥द्रवितहोतहियतनुपुलकाई।गदगदगरनगिराकहिजाई॥
नयननवहतिनीरकीधारा। रहतनतनुकरतनकसम्हारा॥मगनप्रेमसागरमहँरहतो।हरिकोविरहनक्षणभरिचहतो ३४
जबअसिभईदशाजनकेरी। ताहिमिलैहरिअसमतिमेरी। हरिपदछोंडिनकहुँमतिजाती।विषयतापतेतपतिनछाती॥
शांतरहतछूटतव्यापारा।धूमरहतजिमिअग्निमँझारा॥पुनिप्रभुसोंअन्तरनहिंरहतो।नितनितनवछविसुखद्दगलहतो॥
दोहा—छूटगयोव्यापारजब, निरख्योआत्मस्वरूप। दुखसुखकीनहिंरहतिसुधि, यहहैज्ञानअनूप॥ ३६॥
भागवबैठबअरुउठब, यहतनुकोजोहोय। जानिपरतसोताहिनाहिं, जिमिमदांधजमकोय॥ ३७॥
यहिविधिजौलौंरहतशरीरा। जोकछुहोतदैववशपीरा॥ तौलौंताहिगनतकछुनाहीं। हमहमारसुधिनहिंतनुमाहीं३८
जिमिनिजसुतनिजधननहिंमानै।पैहौविलगाकियेयहज्ञानै॥तैसहिदेहआतमाभेदू।जानहुजननकहतअसवेदू ३९॥४०
जिमिइंद्रिनतेजीवनिवेरा। तिमआतमपरमातमकेरा॥४१॥ कृष्णअहैजगअंतर्यामी। सबभूतनअधारखगगामी॥
पंचभूतमयचारजातिजिमि।अहैकृष्णमयसकलविश्वतिमि॥जिमिजसतहँतसआमिदेखातो। तिमिगुणविवशजीवदरशातो
दोहा—कारजकारणरूपयह, हैहरिमायाजोय। ताहित्यागिनिजरूपको, लखतरहैबुधसोय॥ ४४॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेअष्टाविंशतितमस्तरंगः॥ २८॥

दोहा—कपिलदेवकेवचनसुनि, देवहुतीसुखपाय। जोरिकंजकरपुत्रसों, बोलीप्रीतिबढ़ाय॥
प्रकृतिपुरुषमहदादिके,लक्षणदेहुसुनाय। रूपपारमार्थिकसकल, जातेजानोजाय॥१॥
भक्तियोगकेसकलप्रकारा।भाषहुतातसहितविस्तारा॥२॥विविधदशादुखमयजगकेरी।लहतजीवजिमियोनिघनेरी॥
जौनसुनेउपजतवैरागा। कहौसकलसोसहितविभागा॥ ३॥ कहौकालकोरूपप्रमाना। जोहैसत्यरूपभगवाना॥
जौनकालकोजनभयपाई। पुण्यकर्मकरतोअतुराई॥ ४॥ जेजगअनितदेहअभिमानी। मोहनिशासोवतअज्ञानी॥
जगतकर्ममेंअतिलवलीनो। परमारथमेंहैनप्रवीना॥ अंधकारतिनकोअज्ञानू। तासुनाशहिततुमहौभानू॥ ५॥

श्रीमैत्रेयउवाच।

दोहा—सुनिमाताकेवचनअस, कपिलसराहिसुजान। कहनलगेअतिप्रीतिसों, करुणाकरभगवान॥ ६॥

कपिलउवाच।

भक्तियोगहैविविधप्रकारा। त्रिगुणवलितसुनुतिहिविस्तारा॥७॥ सबतेअधिकहोनकेहेतू।औरमहापाखंडसमेतू॥
औकाहूकेमारनकाहीं। कृष्णभक्तिजोकरैसदाहीं॥ तौनतामसीभक्तिकहावै। बहुतकालमहँहरिकहँपावै॥ ८॥
विषयभोगसुतयशधनहेतू। औरमहापाखंडसमेतू॥ तौनराजसीभक्तिकहावै। बहुतकालमहँहरिकहँपावै॥ ९॥
जोनिजपापविनाशनकाजा। ध्यावतरहैसदायदुराजा॥ करैकर्मयदुपतिहितप्रीती। राखैस्वामीसेवकरीती॥
तौनसात्विकीभक्तिकहावै। यदुपतितेहितुरंतामिलिजावै॥
दोहा—उत्तममध्यमअधममें, इकमेंत्रयत्रयभेद। यहिविधिश्रवणादिकनमें, यकयकनवनवभेद॥
सबमिलिभयेप्रकारएकाशी। सगुणभक्तिभेदेसुखरासी॥१०॥अबनिरगुणाभक्तिमेंभाषौं। ताकोएकभेदकहिराखौं॥

कृष्णकथासुनतेमनलाई । लगेनिरंतरपदयदुराई ॥ जिमिसागरसुरसरिकीधारा । नहिंलौटतिकोनिहूप्रकारा ॥११॥
हरिपदप्रीतिकरहिबिनहेतू । कहहिंनिर्गुणातेहिमतिसेतू ॥ सबमेंदेखहिंश्रीपतिकाहीं । करेंकोनिहूआशानाहीं ॥
सोईनिरगुणभक्तिकहावे । जेहिकीन्हेहरिसहजहिपावे॥१२॥साष्टिसमीपऔरसालोकू । अरुसमीपसायुजसुखवोकू ॥

दोहा–निजभक्तनकीमुक्तिहरि,देतपंचप्रकार । पैहरिपदकेकार्यतजि, लेतनप्रेमअधार॥ १३ ॥

यातेअधिकभक्तिहैनाहीं । यहीकहतपहुँचतहरिपाहीं॥ १४॥तौनभक्तिकीकहौंउपाई । सोजननीसुनियेचितलाई ॥
श्रद्धासहितकरैनिजधर्मा । करेकामनानहिंफलकर्मा ॥ पंचरात्रिकोकह्योप्रकारा । तातेपूजनकरेउदारा ॥
दयासकलजीवनमहँराखै । कबहूँकाहूपैनहिंमाखै ॥ १५ ॥ सदाकृष्णमंदिरमहँजाई । हरिमूरतिकेपदशिरनाई ॥
पूजनकरिहरिकेगुणगावे । भूतनमहँराखेहरिभावे ॥ रहैधीरधारेमतिधीरा । गनैनलोभप्रमोदहुपीरा ॥ १६ ॥
सदाकरैसंतनसतकारा । करैनकाहूकोअपकारा ॥

दोहा–जोअपनेसमहोहिंजन, तिनसोंराखैनेह । यमअरुनेमसदाधरै, गनैअनितयहदेह ॥ १७ ॥

भारतभागवतोरामायण । श्रवणकरनमेंअहैपरायण ॥ निशिदिनजपैकृष्णकोनामा । मनवचकर्मएकमतिधामा ॥
तजिअभिमानकरैसतसंगा॥१८॥यहिविधिरँगैकृष्णकेरंगा । तेहियदुपतिअपनेतेआई।मिलहिंदूरतेदेखतधाई॥१९॥
जिमिसुगंधमारुतवशआई । मिलतनासिकामेंसुखदाई॥२०॥सबभूतनव्यापीभगवाना।ऐसोमनकरिनहिंअनुमाना॥
सबभूतनकोकरिअपमानै । केवलप्रतिमहिमहँहरिमानै ॥जगव्यापीहरिप्रतिमनमाहीं। पूजतपैअसजानतनाहीं २१॥

दोहा–ताकोपूजननकलसब, पावतसोफलनाहिं । होमकियेजिमिभस्ममें, सकलवृथाह्वैजाहिं ॥ २२ ॥

वैरकरतसबप्राणिनमाहीं । मानीहैसमदरशीनाहीं ॥ तौजनवैरकियोहरितेरे । तेहिनारकीकहहिंश्रुतिटेरे ॥ २३ ॥
सबजीवनकोकरिअपमाना । हरिकोपूजैसहितविधाना ॥ताकोप्रभुपूजननहिंलेही॥२४॥जोनहिंजीवनकरहिसनेही॥
जबलौंहरिहिनसबथलदेखै । तबलौंपूजनकरहिविशेषै॥२५॥पूजनकरतकरततेहिमाता।निजमहँसबमहँकृष्णदेखाता
हरिरूपनमहँलखहिजोभेदा । सोकुमतीपावतहठिखेदा॥२६॥जानिसकलथलमेंयदुराई । सबजीवनसोंकरैमिताई ॥
सबसोंकरैदानसनमाना । जाकोजैसोउचितमहाना ॥ २७ ॥

दोहा–पाहनतेतरुश्रेष्ठहै, तरुतेपशुखगजान ॥२८॥२९॥३०॥ तेहितेनरनरमेंसुद्विज, द्विजमेंजेहिश्रुतिज्ञान॥

तामेंश्रेष्ठजोअर्थविचारै॥३१॥तातेपुनिजोशंकनिवारै । तिनमेंजेआचरणनिवाहैं । तिनतेवरजेफलहुनचाहैं ॥ ३२ ॥
तिनमेंश्रेष्ठअहैसतिसोई । अपैंहरिहिकर्मफलजोई ॥ उनसेअधिकअहैकोउनाहीं । समदरशीजेसाधुसदाहीं॥ ३३ ॥
एकअंशतेजीवनमाहीं । रमेरमापतिरहहिंसदाहीं ॥ यहिविधिसबथलमेंगुणिरामै ।मनतेसबकोकरहिप्रणामै ॥३४॥
ऐसोभक्तियोगअरुभोगू । मैंवर्ण्योमंगलप्रदशोगू ॥ यहिमेंएकहुकरैजोकोई । गमनकरैहरिपुरकहँसोई ॥ ३५ ॥

दोहा–परमपुरुषकोरूपजग, ताकोकारणकाल । तौनकालतेअबुधको, होतीभीतिकराल॥ ३६ ॥

कालरूपपरमात्मप्रतक्षे । भूतनमेंभूतनकोभक्षै॥३७॥सोईकृष्णईशकरईशा । यज्ञरूपयदुपतिजगदीशा ॥ ३८ ॥
शत्रुमित्रताकोनहिंकोई । अहैसकलथलव्यापकसोई ॥३९॥मारुतबहतजासुभयपाई । तपहिंदिवाकरजाहिडेराई॥
वर्षहिंमेघभीतितेजाकी।भासहिंतारागणभयताकी४० जासुभीतिलहिनिजनिजकाला।फूलहिंफरहिंसदातरुजाला॥
जासुभीतिसरिवहहिंसदाहीं । सिंधुतजतमर्यादानाहीं ॥ जासुभीतिअवकाशअकाशै।जासुभीतितेअनलप्रकाशै ॥
जासुभीतिबूडैनहिंधरणी । असउदंडजाकीजगकरणी ॥ ४२ ॥

दोहा–जाकीभयअतिपायकै, जोहैतत्त्वमहान। सतावरणहिसहितकिय ब्रह्मांडहिनिर्मान ॥ ४३ ॥
गुणअभिमानीदेवसब, जाकेभयकहँपाय । विचरहिंपालहिंसंहरहिं, जगजीवनसमुदाय ॥ ४४ ॥
सोउकालहुकोकालहरि, अहैअनादिअनंत । पितररूपतेसुतरचहिं, करहिंमृत्युतेअंत ॥ ४५ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेएकोनत्रिंशतितमस्तरंगः ॥ २९ ॥

कपिलउवाच ।

दोहा–कालवलीकेवेगको, प्राणीजानतनाहिं । जिमिजनायनहिंपरतहै, मारुतघनवलकाहिं ॥ १ ॥

जौनजौनजननिजसुखहेतू । बांधतरहतरैनदिननेतू ॥ तौनतौननाशहिभगवाना।तिहितिहिउपजतशोकमहाना॥२॥
हैअनित्यतनुधनअरुगेहू । नित्यमानशठकरतसनेहू ॥ ३ ॥ जौनजौनयोनिनजियजावै।तौनतौनमहँअतिसुखपावै॥
होतनताकोकवहुँविरागा । पुनिपुनिजन्मतमरतअभागा॥४॥शूकरकूकरयोनिहुमाहीं । मानतआनँदजीवसदाहीं ॥
तजनचहततौनहुतनुनाहीं।मोहितहरिकीमायामाहीं॥५॥सुततियतनुधनगृहगजवाजी।कुलपरिवारमाहँअतिराजी॥

दोहा–पालनहितपरिवारके, करतरहतनितपाप । मानतनहिंकैसेहुकहे, यदपिलहतसंताप ॥ ७॥

सुनतशिशुनकीतोतरिवानी।तामेंमतिनितरहतिलुभानी ॥करतनेहनारिनसोंधाई । तिनकोमुखलखिरहतलुभाई ॥
कुलटानारिकहैजोवानी। करतसोईनिजसर्वसमानी ॥ यदपिसकलधनतियहरिलेही । तद्यपिप्रकटछोंड़िसवदेही ॥
खर्चहिधर्महेतुनहिंनेकू । अधरममहँदैदेहिअनेकू ॥ विप्रसाधुमांगेमुखफेरै । गणिकहिदेतकरतनहिंदेरै ॥ ८ ॥
धर्मकर्ममहँआलसकरहीं । पापकर्मतुरतैअनुसरहीं॥करहिंसकलदुखआपहिकर्मा।मानतमोदकरहिंहमधर्मा ॥ ९ ॥

दोहा–मारगलगिहानिपथिकवहु, करिचोरीनिशिमाहिं । छलछिद्रनकरिजननसों, ल्यावहिंबहुधनकाहिं ॥

ल्यायल्यायसुतनारिखवावैं । तिनकोजूंठआपहूखावैं ॥ औरनकेहितकरहिंअधर्मा । करहिंसकलऔरनहितकर्मा ॥
लहहिंआपनेतनुसुधिनाहीं।कामीकुमतिनरकहठिजाहीं॥१०॥ मिल्योनजबधनकियोउपाई।लेनलग्योतबवस्तुचुराई
कोहूकेघरपकरिकूटिगो । पूरवजीवनसोउछूटिगो ॥ ११ ॥ अरुपरिवारबढ्योघरमाहीं । उद्यमसबह्वैगयेवृथाहीं ॥
जबनमिल्योधनचोरिहुकीन्हे।तबबैठ्योअपसोसहिलीन्हे ॥जबनसक्योपरिवारहिपाली।महाअभागीकृपिनकुचाली ॥

दोहा–तियसुतताकोनिदरिकै, देहिंनभोजनभूरि । जैसेबूढेबैलको, देतनघासहुझूर ॥ १३ ॥

लहतअनादरविविधप्रकारा।तेहितनकोउनचहतनिहारा॥यहिविधिशिथिलजबैह्वैगयऊ ।तबहूंतेहिविरागनहिंभयऊ॥
प्रथमहिंजेजनपालितरहहीं । तेकटुवचनविलोकतकहहीं ॥ यहिविधिआईतासुबुढ़ाई । महाकुरूपशरीरदेखाई ॥
गृहमहँवसतमरणनियरान्यो।तदपिनकछुगलानिमनआन्यो१४ जिनकेचुकेसकलगृहभोजन।सूखरूखदेतेतेहिरोजन
श्वानसरिसटूकातेहिदेहीं । तद्यपिघरकोरहैसनेहीं ॥ बैठोरहैद्वारकोताके । शिशुनितहनहिंशीशमहँताके ॥

दोहा–पुनिजबरोगीह्वैगयो, दीठक्षुधाभैमंद । परोरहतनहिंचलतकहुँ, चलतनयेकोफंद ॥

मुखमाच्छिकाउड़ैंनउडाये । बधिरभयोनहिंसुनैसुनाये॥१५ ॥ आयोमरणकालजबतासू । निकसैंनयनढरैंबहुआंसू॥
कफबाढ्योआवतबहुखांसी॥लखिकुटुंबकेकरतेहांसी॥बढ्योश्वासअतिशयदुखपाग्यो।घुरघुरकंठहोनतबलाग्यो १६
मरणजानिताकेसबप्रानी । डारहिंतिहिमुखसुरसरिपानी ॥ बैठहिंताकोचहुँदिशिघेरी । करहिंशोकताकोतनुहेरी ॥
कहहिंबतायदेहुधनगाड़ो । जानौहोइसराउरहाड़ो ॥ असकहिचहुँदिशितेगुहरावैं । भाँतिअनेकताहिसमुझावैं ॥

दोहा–कालपाशवशतासुमुख, कहिआवैनहिंबात । रोवहिंसबपरिवारके, हायहायपितुमात ॥ १७ ॥

तदपिसुमिरिनहिंआवतरामा।चाहतकरनतऊगृहकामा॥पुनिजबउदरपीरभयभारी।तबमरिगोशठआंखनिकारी १८
महाभयंकरद्वैयमदूता । ग्रहणकरणआयेमजबूता ॥ महाभयंकरनयनदेखावैं । लियेहाथफांसीडेरवावैं ॥
तिनहिंलखतमलमूत्रकरतहै ।बारबारहियभीतिभरतहै ॥१९॥वरवशपकरिडारिगलफांसी।दैयातनादेहिंतेहिखांसी॥
लैगवनहिंयमपुरयमदूता । अपराधीकोजिमिनृपदूता ॥ २० ॥ योजननिन्यानवेहजारा । हैमहितेयमराजअगारा ॥

दोहा–तहँकोजबयमराजभट, वरवशतेहिलैजात । तबमारगमहँश्वानबहु, चोंथिचोंथितेहिखात ॥

गिरतउठतकांपतसबअंगा। हनहिंकसायमभटइकसंगा॥करतचीतकारहिंबहुवारा।सुमिरतअपनोपापअपारा॥२१॥
भूंखपियासलगतमगमाहीं । भोजनमिलतताहिकहुँनाहीं ॥ बारूतपतबिछीपगपरते । भालावाप्रतापरविजरते ॥
वहतपवनमनुपावकज्वाला२२गिरतउठतपुनिभ्रमतविहाला।पुनिपुनिताडहिंतातनुताके।जीवलहतपुनिपुनिमुर्छाके

मिलतनकहुँमारगमहँपानी । हायहायनिकसनमुखवानी॥चलिनसकनयमभटविमलावें । गिरनउठावहिंफेरिगिरावें ॥

दोहा–यद्यपिपापीलहतहैं, बहुकलेशकोमाय । तद्यपिनाकोकढनर्नाहिं, तहिनतनुनरहँजाय ॥ २३ ॥

यहिविधितेयमभटबरबंडा । पहुँचावहिंयमभटपटदंडा ॥ तहँयातननावहुविधिहोई । रक्षाकरनासुनहिंकोई ॥ २४ ॥
तृणलपेटितेहितनुहिजरावें।तासुमांसतेहिकाटिखवावें॥श्वानगीधअरुकाकभयावन।आवहिंतेहितनुचोंचचलावन ॥
जीवहिताकोउदरहिफारी । भक्षहिताकीआंतनिकारी ॥ आंखिनमेंबीछीबहुमारें । विषज्वालानतनुअहिजारें ॥
जेजेजीवइतैजनमारें । तेतेतिनतनुउतैविदारें ॥ २६॥ पृथकपृथकअँगयमभटकाटें।पुनिपुनिजोरहिंपुनिपुनिछांटें॥

दोहा–दंतीदंतनसोंदरत, पीसहिंपाँयचलाय । पाँयपकरिपटकैंपुहुमि, पुनिपुनिताहिभ्रमाय ॥

ऊँचशैलतेदेहिंगिराई । अंगअंगचूरणहोइजाई ॥ करपगबाँधिवारिमहँडारें । बहुतकाललौंतेहिननिकारें ॥
खोदिगरतगाड़ैंधरणीमें । लावहिंजियतताहिअरणीमें ॥२७॥अंधतमिश्रतमिश्रहुरौरव।कुंभीपाकआदिनरकनसव॥
नरनारिनयमभटलैजाई । देहिंयातनातिनहिंमहाई ॥ २८ ॥ यहाँलोकमहँस्वर्गनर्कहै । करदेखसितैंमातुतर्कहै॥
पुण्यात्मनकोआनँद देतो।पापिनकोअतिशोकउदेतो॥ पैनहिंसमुझतदुखशठकोई।जननीअचरजअहैवड़ोई ॥२९॥

दोहा–अपनहिंउदरहिहेतुअरु, अपनेकुलकेहेतु । भोगहिंयहिविधियातना, चेतहिंनाहिंअचेतु ॥ ३० ॥

तनुपरिवारसंगनहिंजाहीं । जाकेहितबहुयत्नकराहीं ॥ मरेनपुनिकोउयत्नकरैया।पापपुण्यहैसंगजवैया ॥ ३१ ॥
पापकियेनरकहिहठिजावै। पुण्यकियेसुरसदनसिधावै ॥ ३२ ॥ पैअधर्मसोंजोकुलपालै। ताहियातनायमपुरहालै ॥
जोपालैकुलधर्मसमेतू । ताहिनदुखयमराजनिकेतू ॥ ३३ ॥ जोजसपापकरैयहलोके । सोतसदुखपावतयमवोके ॥
क्रमसोंसवनरकनकरिभोगू । शुचिह्वैयोनिलहतपुनिलोगू ॥ जियइतैसववर्षहिमाई। पापपुण्यजोकरहिमहाई ॥
सोउतलाखनवर्षनभोगै । तदपिनचेततमूरुखलोगै ॥

दोहा–यहअचरजअतिशयजननि, बोधेउबोधनहोय । जोउपदेशहिताहिशठ, शठभापहिंसबकोय ॥ ३४ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेत्रिंशतितमस्तरंगः ॥ ३० ॥

कपिलउवाच ।

दोहा–ईशविवशनिजभागते, पुरुषबीजमहँआय । देहहेतनारीउदर, करिप्रवेशजियजाय ॥ १ ॥

शोणितशुक्रअमिषजबजावै ।कललनामताकोकहवावै॥कललहोतसोएकरातिमहँ।पंचरातिमहँबुदबुदभोतहँ ॥२ ॥
दशदिनमहँबदरीसमभयऊ । ताकेउपरअंडह्वैगयऊ ॥ एकमासमहँप्रगटेउमाथा । उभयमासमहँभेपदहाथा ॥
तीनिमासमहँगर्भहिमाहीं । लोमअस्थिनखछिद्रतहांहीं ॥ ३ ॥ चारिमासमहँसातहुधातू।पँचयेंक्षुधातृषाउपजातू ॥
छठयेंमासहिझिल्लिहिपरिकै । भ्रमहिदाहनिहिकुक्षिहिपरिकै॥४॥पूरवकर्मसातयेंमासा।करतजीवसुधिविगतहुलासा॥

दोहा–खानपानतेजननिके, दिनप्रतिबाढतजात । मलमूत्रहिकेकुंडमें, परोरहतविलखात ॥ ५ ॥

अतिसुकुमारअंगमहँताके।काटहिंकृमिक्षणक्षणहितहांके॥होतिमूरछालहतकलेशा।मिटतनक्षुधापियासहमेशा॥६॥
लवणतिक्तकटुजननिजोपावै । सोअंगनिलगिदुखउपजावै ॥ ७ ॥ बंधनतासुजरायुहिकेरो ।आंतनबंधनउपरघनेरो ॥
शिरझुकायजननीकेकुक्षे । परोमूत्रमलमेंतहँभुक्षे ॥ जिमिविहंगपिंजरमहँरहई । लखिसंकेतमहादुखसहई ॥
सकैनपदकरनेकचलाई। जिमिजियजननिउदरदुखदाई॥८॥पुनिजबआयोसातवँमासा।तबजियकोभोज्ञानप्रकासा ॥

दोहा–होतिसुरतिसौजन्मकी, देखिपरहिंकृतकर्म । तिनहिंविचारतदुखितह्वै, कबहुँनपावतशर्म ॥

तबगलानिउरआनिकै, संयुतविमलविज्ञान । गर्भवासनहिंहोयपुनि, ध्यावतश्रीभगवान ॥९॥१०॥
ह्वैविनीतकरजोरिकै, दियोजोगर्भहिवास । तेप्रभुकीअस्तुति करत, मानिहियेअतित्रास ॥ ११ ॥

जीवउवाच । छंद ।

तेहिकृष्णकेचरणारविंदहिशरणमेंअबहोतहौं । जेदासहितबहुरूपधारतमैंपरचोदुखसोतहौं ॥ १२ ॥
मायाविवशसेकर्मबँधनबँध्योगर्भहिमेंपरो । अविकारशुद्धअखंडबोधमुरारिदुखमेरोहरो ॥ १३ ॥
मैंहौंअसंगहिपैवृथाहीबँध्योपंचहिभूतमें । इन्द्रियविषयआसक्तह्वैमैंबढ्योमायासंचमें ॥ १४ ॥
दुखरूपयहसंसारमेंजेहिविवशजीवसिधावतो । नहिंकटतजाकीकृपाविनतेहिनाथकोगोहरावतो॥ १५ ॥
यहज्ञानदायकनाथसोइजोसकलजगव्यापितरहै । ममतीनज्ञानविनाशहितअबनाथसोइदायागहै ॥ १६ ॥
मलमूत्रशोणितकूपमेंजननीजठरज्वालानलै । तनुदहतमासनकोगनतउद्धारकरिहौकबभलै ॥ १७ ॥
दशमासबालकमोहिंजोयहज्ञानदियसुखगाथहै । जोकरननिरहेतुककृपासोसत्यदीननाथहै ॥ १८ ॥
प्रभुकोननिरखतपशुखगादिकनिजसुखैदुखभोगते । मैंतौलखहुँतुमकोसकलथलआपज्ञानसंयोगते ॥ १९॥
पैमैंनइततेकढनचाहहुँसहहुँयदपिकलेशहै । निकसेग्रसेतुवप्रबलमायायहविशेषअशेषहै ॥ २० ॥
यहगर्भहीसेभक्तिकरिसंसारसागरतरहुँगो । तुवकृपावशवैकुंठवसिनहिंविश्वव्यालहिडरहुँगो ॥ २१ ॥

कपिलउवाच ।

दोहा—पूजिगयोनवमासजब, लाग्योदशयोंमास । प्रसववायुतेहिजननहित, कियप्रेरणाप्रकास ॥ २२ ॥
तबनीचेकोशिरह्वैगयऊ । अतिकलेशतहँपावतभयऊ ॥२३॥ गिरतभयोधरणीमहँसोई । तबहींज्ञानगयोसबखोई ॥
कहाँकहाँअसरोवनलागा।मनहुँकहतकहँज्ञानविरागा ॥ रुधिरमूत्रमहँलोटनलाग्यो।तिमिमलकृमिअतिशयदुखपाग्यो
कहिनसकैकछुक्षुधापियासै। जननिजनकजमिनहिंभासै॥भयेअजीरणदूधपिआवत।क्षुधालगेपरडीठझरावत॥२५॥
अशुचिसेजमहँसोवतरहतो।कृमिकाटहिंअतिशयदुखसहतो॥उठिनहिंसकतदेहखजुआती।दुखमयव्यथासहीनहिंजाती
दोहा—कोमलबालककायमें, काटहिंमशकअनेक । सोदुखलहिरोवतरहत, कुलकेगनहिननेक ॥ २७ ॥
यहिविधिशिशुपनभोगिभवनमें । भोसमरथजबकरनगवनमें ॥ तबबाहेरकढिखेलनधूरी । रहतजनकजननीतेदूरी ॥
पुनिदशवर्षकेरजबभयऊ।तबविद्यामहँमननहिंदयऊ॥खेलतखेलतउमिरिवितायो।कबहुँनकृष्णचरणमनलायो २८॥
जबपुनिआईतासुजवानी । तबअतिभयोदेहअभिमानी॥ अपनेसमकोहुकोनहिंमानै । गलीचलतझगरोनितठानै ॥
कियोनेहपरनारिनमाहीं।वरकोधनदीन्हेउतिनकाहीं॥२९॥चाह्योअहंकारममकारा।चल्योकुमारगयहसंसारा॥३०॥
दोहा—करतकर्मतेहिहेतुहठि, जामेंनरकहिजाय । सहिकलेशपुनिआपतो, सकैनजगतविहाय ॥ ३१ ॥
करतसदाकुमतिनकोसंगा । कबहुँनलागतज्ञानप्रसंगा ॥ शिश्नउदरकेआनँदहेतू । करतरहतनितनितनवनेतू ॥
सोइकर्मवशनरकहिजावै । कह्योजोप्रथमदंडसोपावै॥३२॥श्रीयशक्षमाबुद्धिअरुलाजू । सत्यअकारदयाशुभकाजू॥
शमदमनेमविभूतिबड़ाई । कुमतीसंगनजाहिनशाई॥३३॥जातेकुमतिनकामिनिकेरी। करियनसंगतिकबहुँघनेरी ॥
जेअसाधुहैंनारिअधीना।कामकलामहँपरमप्रवीना ॥ तियवशमहँकलमृगसमनाचैं । कबहुँनहरिचरणनरतिरांचैं ॥
दोहा—कबहुँनातिनकोसँगकरै, चहैजोनिजकल्यान । ज्ञानिहुकेउरमेंअवशि, तेभरिदेतअज्ञान ॥ ३४ ॥
तियसंगीसँगअरुतियसंगा । अहैदुखदसमउभयप्रसंगा ॥ येदोउसमहैंदुखदनआना । भाषतएसोवेदपुराना ॥ ३५ ॥
ब्रह्मानिजदुहिताकहँदेखी।पशुसमकामहिविवशविशेखी॥लाजविहायताहिपरधाये।अनुचितउचितनकछुमनलाये ॥
विननारायणकोजगमाहीं । नारिविवशहोतोजोनाहीं ॥३७॥ तियरूपीमायाहरिकेरी । राखतज्ञानिहुनिजवशप्रेरी ॥
भ्रुकुटिविलासहितेजनकाहीं।वरवशनिजवशकरतसदाहीं॥३८॥जोकोउचहैकृष्णपदप्रीती ।मानहिसदाकालकीभीती
दोहा—उतरनभवसागरचहै, चहैनरकनहिंजान । तौकबहूँनाहिंनारिके, नहैनेहमतिमान ॥ ३९ ॥

सेवनहितआवहिजोनारी।महामीचतेहिलेहिंविचारी॥नारिशृँगारविलोकिअनूपा।गिरहिनतृणछिपानतृणकूपा॥४०॥
जगमहँचहैमुक्तिजोनारी। तासुरीतिमैंकहौंउचारी ॥ पुरुषसंगिसमायाहरिकेरी । तामेंरहनिलेआनिवेनेरी ॥
माननिमोहिंधनसुतपतिदेहें।मोकोछोंडिकतहुँनहिंजेहें।ऐसीरीतिकबहुँनहिंराखै।जोतियमुक्तिमनहिंअभिलापै ४१॥
कंतहोहिजोश्रीपतिदासा। तौंतहिंसवहिसहितहुलासा॥जोहरिविमुखीनिजपतिहोवै। ताकीदिशिकबहूँनहिंजोवै ॥
दोहा–जिमिहरिणीकोहनतवन, व्याधारागसुनाय । तैसेहरिविमुखीपतिहि, नारिअवशिडगाय ॥ ४२ ॥
यहतनुतजिलहियोनिअनेका।भोगतनिजकृतकर्महिएका॥तहांकरतजसपुण्यपापहै।तैसहिसुखदुखलहनआपहै ४३
सूक्षमअरुअस्थूलहुकाया। करिनसकैजबकर्मनिकाया॥ मरणजीवसोईबुधगावैं। जन्मतासुतनुलहबकहावै॥ ४४॥
जबदृगतकछुपरांह जयभोमनअंधविशेखी॥तिमिजनयोगवियोगहुजीको।जन्ममरणकहवावतठीको ४५॥
जीवात्महिनहिंजननमरनहै।यहतौसवभ्रममात्रनरनहै ॥४६॥ यहविचारतजिकुमतिनसंगा।पानकरहिकरिप्रेमअभंगा
दोहा–योगविरागहुज्ञानको, बुद्धविशेषविचारि । यहतनुकीसुधितजिजगत, विचरैअतिसुखधारि ॥ ४८ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेएकत्रिंशतितमस्तरंगः ॥ ३१ ॥

कपिलउवाच ।

दोहा–गृहनिवसतकर्मनिकरत, अर्थधर्मप्रदकाम । तेश्रीपतितेविमुखह्वै, लहैंनश्रीपतिधाम ॥
भूतपितरबहुदेवनकाहीं। पूजतवंदतरहतसदाहीं॥ १॥तिनहिनमेंराखतअतिप्रीती।मानतनहिंनेकहुजगभीती॥२॥
॥ ३ ॥ शेषसेजसोवहिंभगवाना। प्रलयहोततबजगतमहाना ॥
तबहींगृहमेधिनकरजीवा।हरिमहँलीनहोतसुखसीवा॥४॥करहिंकर्मजेतजिफलआसा। कुमतिसंगनहिंकरहिंविलासा
सकलकर्मश्रीकृष्णहिअरपैं।शांतशुद्धचितजगहिनडरपैं॥राखहिमोक्षधर्ममहँप्रीती।निरअभिमानीविगतअनीती॥६॥
दोहा–सूर्यमंडलहिभेदते, रामधामकहँजाहि । पुनिनहिंआवहिजगतमहँ, तेविरलेदरशाहिं ॥ ७ ॥
जेब्रह्माकहँईश्वरमानैं। योगजापतिहिहितनितठानै ॥ तेजनजबलौंब्रह्मारहहीं। तबलौंविधिपुरसुखितनिवसहीं ॥८॥
अनिलअनलअपअवनिअकाशा।इनआवृतब्रह्मांडविलाशा॥जबविधिभेआयुपतेछीना।तबतेअंडसहितभेलीना॥९॥
तबविधिसेवकविधिकेसंगे। लीनहोतहरिमाहँअभंगे॥१०॥औरउपासकयहिविधिजाहीं।पैहरिरसिकरीतियहनाहीं ॥
तातेजननिभजहुयदुराई। जेसबकेहियबसतसदाई ॥
दोहा–शरणागतपालकजगत, तिनसमदूजोनाहिं । जासुचरितश्रवणनपरत, कलिमलहरतसदाहिं ॥ ११ ॥
सबकोजोसिरजककरतारा। सोसंयुतबहुऋषिनउदारा ॥१२॥ हरिरूपनमहँभेदविचारै। तौलयह्वैपुनिजगतसिधारै॥
जौनहिंभेददृष्टिउरलावै। सोपुनियहसंसारनआवै॥ भेददृष्टिब्रह्महुफिरिआवै। तौऔरनकीकौनचलावै॥१३॥१४॥
विविधभाँतिहैकाम्यकर्मफल।कर्मकियोताकोभोगहिंभल॥१६॥धर्मकर्ममहँजिनकरिप्रीती। धारहिंसदारजोगुणरीती
श्रद्धासहितकरहिंसोइकर्मा। जानहिंकबहुँनभगवतधर्मा ॥ चंचलमनइन्द्रियजितनाहीं। पूजहिंदेवनापितरसदाहीं ॥
दोहा–करहिंगेहमेंनेहनित, बहुआशामनलाग । तिनकेकहूँनहोतहै, यदुपतिपैअनुराग ॥ १७ ॥
सुनैंपढ़ैंबहुग्रंथनकाहीं। तातेभेदबुद्धिह्वैजाहीं ॥ हरिविमुखीतेईजनअहहीं। कबहुँनहरिपुरआनँदलहहीं ॥ १८ ॥
कृष्णकथामतछोडिअभागी। होतजोऔरग्रंथअनुरागी॥सोसतिक्षुधाछोंडिमलखायो।नाहकनरकनिकेतबनायो १९
धर्मकर्ममहँजेअनुरागी। तिनकीमतिसुनियेबड़भागी ॥ दक्षिणमार्गपितरपुरजावैं। भोगकछुकदिनहूँफिरिआवैं ॥
निजपुत्रनकेसुतह्वैठिहोहीं। रहहिंसदानिजकलकेमोहीं॥गर्भहितेअरुमरणप्रयंता।करहिंकर्मनहिंपावहिंअंता ॥२०॥
दोहा–देवलोकमेंजायके, पुनिआवहिंसंसार। यहिविधिआवतजातहैं, जिनकेकर्मअधार॥ २१ ॥

तातेजननींतैंमनलाई । भजहिकमलपदश्रीयदुराई ॥ करहिकृष्णकीभक्तिसदाहीं।औरउपायनदृगनदेखाहीं ॥२२॥
भक्तियोगजबहरिमहँलागा।तबद्रुतउपजतज्ञानविरागा॥इंद्रिनदुखसुखरहैनभाना । तबउपजैउरआतमज्ञाना ॥२४॥
आतमज्ञानहिभयेउदोतो । पुनिपरमातमज्ञानाहिहोतो॥२५॥जोचितअचितहुअहैविलक्षण।परब्रह्मकरताजगरक्षण॥
कबहूँविपयविनोदनरांचै । यहीसकलयोगनफलसांचै ॥२७॥ जीवब्रह्मयेउभैअरूपा।ज्ञानगुणकदोउज्ञानस्वरूपा ॥
दोहा—पैअज्ञानजियकोलगै, तातेभ्रमह्वैजात । ब्रह्महिकहुँअज्ञाननहिं, तोतेभ्रमनदेखात॥२८॥
महदादिकजिमिकृष्णशरीरा।तैसेजगहुकहहिंमतिधीरा॥२९॥भक्तिज्ञानकरियोगविरागा।परब्रह्मजानैबड़भागा३०॥
जननींमैंजोज्ञानबखाना।यातेप्रकृतईशजियभाना॥३१॥श्रीहरिभक्तिऔरहरिज्ञाना।इनकोफलदर्शनभगवाना॥३२॥
जिमिनानाइंद्रिनसुखयेकू । तिमिरुरियेकउपायअनेकू ॥ ३३ ॥ यज्ञदानतपवेदविचारा।इंद्रिनजीतनआदिअपारा ॥
औरसकलकर्मनफलत्यागा॥३४॥विविधयोगसंन्यासविरागा॥ औरहुआत्मतत्त्वकरबोधू।अरुयमनेमव्रतनकरशोधू॥
दोहा—प्रवृतनिवृतकेधर्मसब, सकलधर्म हैंसोय । इनसबतेश्रीकृष्णपद, जनकहँप्रापतिहोय ॥ ३५ ॥ ३६ ॥
भक्तिकह्योमैंचारिप्रकारा।अरुअलक्षगतिकालउचारा३७जीवनघातअज्ञानकुयोनी।लहिकुयोनिजियकीअनहोनी ॥
यहमैंसबतोहिंदियोसुनाई।जोपूंछ्योमातामनलाई॥३८॥जोखलअरुकुशीलजोहोई।अरुगरबीपाखंडीजोई ॥ ३९ ॥
दुराचारलोभीअरुकामी । अरुजोकरैद्रोहखगगामी ॥ अरुद्रोहीहरिदासनकेरो । जेहिउपदेशनभयउघनेरो ॥
अतिआसक्तजौनगृहमाहीं।प्रीतिजासुसुनिबेकीनाहीं॥इनसबसोंयहभणितहमारी ।कबहुँनकोविदकरहिंउचारी ४०
दोहा—सुनिबेकीश्रद्धाजिनहिं, शीलमानहरिदास । जिनकेहियइर्षानहीं, जीवनदयाप्रकास ॥
जेनिंदहिंनींहेदवगुरु॥४१॥ जिनजगविषयविराग । मदमत्सरतेरहितजे, जिनहरिपदअनुराग ॥
तिनकोयहमेरोकह्यो, कहिबोउचितविशेषि । तिनहीकेदीन्हेसफल, जन्मलेहिंमनलेषि ॥ ४२ ॥
मोरकथितश्रद्धासहित, सुनतजोएकोबार । कहतप्रीतियुतसोअवशि, गमनतकृष्णअगार ॥ ४३ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेद्वात्रिंशतितमस्तरंगः ॥ ३२ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा—कपिलवचनसुनिकैतबहिं, कपिलजननिसुखमानि।विगलमोहकरिनतिअमित, अस्तुतिकरीबखानि॥

देवहूतिरुवाच ।

सोबहुक्षीरधिमहँभगवाना।कराहिंविरंचिसदातवध्याना ॥१॥ ध्यानहिमहँ देखततुमकाहीं।सकलभाँतिजानतहैंनाहीं॥
तुमहिंरचहुनिजशक्तिनद्वारा । जीवनभोगहेतुसंसारा ॥ अहौसत्यसंकल्पमुरारी । दिव्यगुणीबहुशक्तिनधारी ॥
सकलविश्वजेहिउदरनिवासा।सोकसकियममगर्भहिवासा॥प्रलयसलिलमहँवटदलमाहीं।पानकरतपदअँगुठाकाहीं ॥
विहरतसोबहुसदामुरारी । सोबहमायाअहैतिहारी ॥ ४ ॥ निजभक्तनकेरक्षणहेतू । खलखंडनहितकृपानिकेतू ॥
दोहा—मीनकमठकोलादिसब, जैसेसबअवतार । तैसेमोहिंउपदेशहित, मेरेभयेकुमार ॥ ५ ॥
कवित्त—जाकोनामएकौबारमुखतेउचारकीन्हे, जाकोनामएकबारसुनैश्रुतलायके ।
जाकेगुणगायेएकौबारमनलायेजाकी, सेवाशुश्रूषाहूकीन्हीहैबनायके ॥
भनैरघुराजहैपतिततेपतितसोऊ, होतसाधुसोऊसोहैरमापुरजायके ।
तौनकृष्णरूपकोविलोकेकहाकहिबेको, पावैजोपरमपदजगतविहायके ॥ ६ ॥
सोई कैचुक्योहैजपसोईकैचुक्योहैतप,सोईसबतीरथकेनीरमेंनहातभो ।
सोईपढ्योचारवेदहोमकैचुक्योअखेद, सोईकोसिगरोकलिकलुषनिपातभो ॥

कहँरघुराजसोईश्वपचहूसाधुसांचो, संतनसमाजमध्यशुठिकनहानभो ।
जाकेरसनामेंकैसहूकैकृष्णनामआयो, ताकेसमद्गजोदुनियामेंनदेखानभो ॥ ७ ॥
दोहा-परब्रह्मश्रीविष्णुतुम, कपिलतनजतपधाम । वेदगर्भमुनिवंदिपद, तुमकोंकरहुँप्रणाम ॥ ८ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

सुनतमातुअस्तुतिसुखसानी । वोलेकपिलदेवमृदुवानी ॥ ९ ॥

कपिलउवाच ।

जोममभाषितसेवनकरिहै । तौलहिआशुमुक्तिसुखभरिहै ॥१०॥ मुनिसंमतहैयहमतमेरो ।यहजानेसुखहोतघनेरो॥
जेयहजानतहैंजननाहीं । रहतजेजन्मतमरतसदाहीं ॥ ११ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

असकरिभक्तिज्ञानउपदेशा । लहिजननीकोतुरतनिदेशा । चलेकपिलकरिकेअतुराई।गंगासागरनिवसेजाई॥ १२ ॥
देवहुतीलहिविमलविज्ञाना। आपहुयोगकरतसविधाना॥सरस्वतितटनिजआश्रममाहीं।निवसतभईदुखितचितनाहीं
दोहा-तीनिकालमज्जनकरत, भयेशिरोरुहपीत । पहिरचीरकियउग्रतप, मान्योसवजगभीत ॥ १४ ॥
सुरदुर्लभजोविभवमहाना । कर्दमतपप्रभावप्रगटाना॥१५॥ गोरसफेनसरिससुखसेजू।दंतनहेमखचितअतितेजू ॥
अतिकोमलजहँविछेविछौना।औरसाजासिगरोछविभौना॥स्वच्छफटिककीवर्नीदिवाला ।मरकतमणिकीभूमिविशाला
होतजहांमणिकीउजियारी । सखीसहसशृंगारसँवारी॥१७॥कुसुमितगृहवाटिकाविराजै ।थलथलथोककल्पद्रुमराजै
कूजिरहेजहँबिपुलविहंगा । गुंजहिंमधुपमत्तयकसंगा॥१८॥फूलेसरवापिनअरविंदा । झरतमधुरमुदकरमकरंदा ॥
दोहा-हरिपूजनहितकुसुमको, देवहुतीनितजात । तबगावतगंधर्वगण, कीरतितासुविभाग ॥ १९ ॥
सचिहुजाहिललचैंमनमाहीं।ऐसोविभवविहायतहांहीं।सुतवियोगमुखनेकुमलाना ॥२०॥ यद्यपिसुन्योतासुमुखज्ञाना
कपिलचरणमहँमनहिंलगाई।तजीकामनासवदुखदाई।जेहिविधिकह्योकपिलहरिरूपा।तेहिविधिकरिप्रभुध्यानअनूपा
करिकैभक्तियोगवैरागू । ब्रह्महेतुलहिज्ञानअदागू॥२४॥ तातेशुचिमनआत्महिदेखी।मायागुणसवतज्योविशेषी २५
अचलचित्तहरिचरणलगाई।ब्रह्मलोकलगिविभवविहाई।स्वप्नसरिससुखसकलविचारी ।करिसमाधिसुधिसकलविसारी
दोहा-देवहुतीवैठीअचल, भोजनपानविहाय । सेवकाईसखियांकरैं, पैतेहिकछुनजनाय॥२८॥
भयोमलिनतहँतासुशरीरा।छूटेकेशशिथिलअँगचीरा॥लग्योनिरंतरहरिपदध्याना।छूटततेहितनुभयोनभाना॥२९॥
यहिविधिकपिलभणितलहिज्ञाना।कियोपरमपदतुरतपयाना।आश्रमतासुसिद्धपदनामा ।भयोपुण्यप्रदत्रिभुवनआमा
तासुशरीरसरितह्वैगयऊ।नामसिद्धदाताकरभयऊ॥सेवततहिसिद्धवसितीरा । मज्जनकरतनशतअघभीरा ॥ ३२॥
गंगासागरकपिलसिधारी।मांगिसिंधुसोंआश्रमभारी३३वसतभयेयदुपतिपदध्यावत।जासुसुयशसिधिचारणगावत ॥
दोहा-कपिलदेवकोसिंधुहू, पूजनकियोसप्रेम३४सांख्यशास्त्रआचार्यप्रभु, दायकत्रिभुवनक्षेम ॥ ३५ ॥
देवहुतीअरुकपिलको, जौनभयोसंवाद । विदुरकह्योतुमसोंसकल, नाशकजगतविषाद ॥ ३६ ॥
कपिलभणितयहप्रीतियुत, कहैसुनैसविधान । सोखगपतिपतिनगरको, डगरगहतमतिमान ॥
दिशिनिधिशशिसंवतसुखद, श्रावणपूरणमास । आनँदअंबुधितीसरो, भोअस्कंधप्रकास ॥ ३७ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौतृतीयस्कंधेत्रयस्त्रिंशस्तरंगः ॥ ३३ ॥ शुभमस्तु ॥

दोहा-महाराजरघुराजकृत, भाषातृतीयस्कंध । यहसमाप्तमुद्रितभयो, संयुतछंदप्रबंध ॥

इति
श्रीमद्भागवत-आनंदाम्बुनिधि
तृतीयस्कंध समाप्त ३.

चतुर्थ स्कन्ध
अत्रि
राजा
विदुर
मैत्रेय
आकुती
रुचि
रुद्र
प्रसूति
दक्षादिक
दक्ष
पुण्यजन
प्राचीनबर्हि
नारद
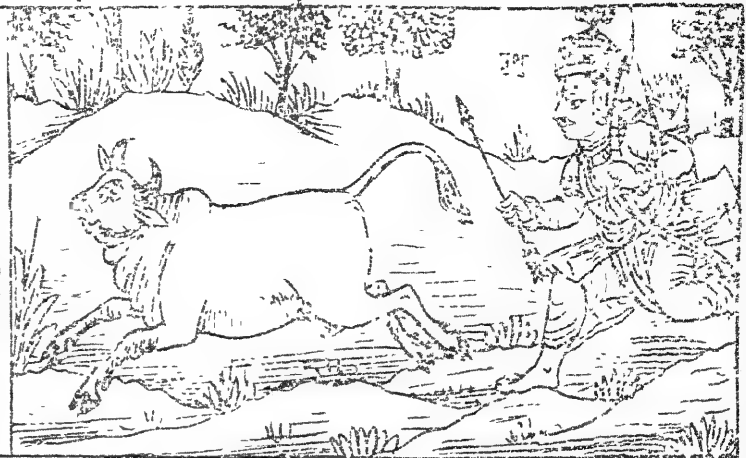
श्रीगणेशायनमः ।

अथ श्रीमद्भागवत-आनन्दाम्बुनिधि ।

चतुर्थस्कंधप्रारंभः ।

सोरठा–जयद्वारकाअधीश, यदुकुलसागरचंद्रमा । रमाकंतजगदीश, शरणागतपालकप्रबल ॥
दोहा–षटआननभ्रातासुखद, पंचाननसुतजोय । चतुराननकेनातिप्रभु, नौमिगजाननसोय ॥
मतिकरणीहरणीकुमति, सुखभरणीसबकाल । दुखदरनीजयशारदा, उद्धरणीभ्रमजाल ॥
सत्यवतीसुतवंदिकै, वंदौंशुकमुदगाथ । श्रीसुकुंदहरिगुरुचरण, मैंनाऊँनिजमाथ ॥
बान्धवेशविश्वनाथपद, वंदौंबारंहिबार । यहचौथोअस्कंधमें, भाषाकरहुँप्रचार ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–मनुतियशतरूपाजनी, तीनिसुतासुकुमारि । देवहुतीआकूतिहू, अरुप्रसूतिछबिवारि ॥ १ ॥
शतरूपासंवतमनुजानी । रुचिकहँदियअकूतिछविखानी॥२॥आकूतीमहँरुचिमुनिराई ।कन्यापुत्रदियोजनमाई॥३॥
यज्ञनामसुतभयेसुरारी । रमाअंशदक्षिणाकुमारी॥४॥यज्ञनामसुतमनुघरआन्यो॥सुताराखिरुचिगृहमुदमान्यो ॥५॥
सुतारमासुतयज्ञमुरारी । भयोव्याहयहहेतुविचारी ॥ द्वादशपुत्रभयेतिनकेरे । तिनकेनामनकहौंनिबेरे ॥ ६ ॥
भद्रशांतइड़पतिसंतोषू । कविविभुपन्हसुदेवप्रतोषू ॥ रोचनईधमतोषसुजाना ॥ ७ ॥ तुषितनामतेदेवबखाना ॥
दोहा–स्वायंभुवमन्वंतरै, द्वादशदेवहिजान । मुनिमरीचिआदिकभये, इंद्रयज्ञभगवान ॥ ८ ॥
मनुसुतजेठोप्रियव्रतभयऊ । अरुउत्तानपादलघुठयऊ ॥ जासुपुत्रअरुपौत्रअपारा । प्रगटभयेपूरोसंसारा ॥ ९ ॥
व्याह्योकर्दमदेवहुतीकहँ । कह्योंतासुसंततिमैंतुमपहँ ॥ १० ॥ मनुदुहिताप्रसूतिरहजोई । व्याहीदक्षप्रजापतिसोई ॥
तासुप्रसिद्धवंशजगमाहीं ॥ ११ ॥ अबसुनुकर्दमकन्यनकाहीं । कर्दमकीनवसुतासोहाई।नवब्रह्मर्षिलियोसुखपाई ॥
तिनकोवंशविदुरअबसुनिये।हरिमायाअचरजनहिंगुनिये॥१२॥ लियमरीचिजोकलाकुमारी।तातेभेद्वैसुततपधारी ॥
कश्यपऔरपूर्णिमानामा । जासुवंशपूरितत्रयधामा ॥ १३ ॥
दोहा–भयेपूर्णिमासुतउभय, विरजविश्वगहुनाम । औरएकदुहिताभई, सुरकुल्याछविधाम ॥
जोहरिपदधोयेदिविमाहीं । सुरसरिताभैसुखदसदाहीं॥सोईसुरकुल्याअभिरामा । जाकीकीरतिजगतललामा॥१४॥
अनसुइयाभैअत्रिहिनारी । जाकेसुतउपजेयशकारी ॥ दत्तात्रेयऔरदुर्वासा । तीजोभोशशिनामप्रकासा ॥
हरिहरविधिकेजानहुअंसा।होतभयेजगपरमप्रशंसा१५ वि.उ.यहसुनिकह्योविदुरकरजोरी।सुननहेतुयहमुनिमतिमोरी
अत्रिभवनहरिहरविधितीने।जन्मलियेकेहिहेतुप्रवीने१६विदुरवचनसुनिमुनिमतिमाना। करनलग्योयहिभाँतिबखाना

मैत्रेयउवाच ।

एकसमयअत्रिहिकरतारा । दियशासनसिरजनसंसारा ॥
दोहा–सुनिविधिशासनअत्रिमुनि, लैनिजनारीसंग । गयेऋक्षपर्वतहुतै, तपहितभरेउमंग ॥ १७ ॥
सोहतजहाँअशोकपलासा।फूलेफूलवनहिचहुँपासा॥बहतिशिखरतेसरितसुहावनि।निरविंध्यानामकअतिपावनि१८
तहाँअत्रिमुनिजायसुखारी । प्राणायामवर्षशतधारी ॥ खड़ेएकपदसोंमुनिराई । कियोपवनभक्षणसुखपाई ॥
सह्योशीतआतपअतिघोरा।१९। निजमनसोंअसहरिहिनिहोरा॥निजसमदेहुपुत्रप्रभुमोहीं।हमतुम्हरेशरणागतहोहीं
असतपकरतगयोबहुकाला।तबशिरतेनिकसीशिखिज्वाला॥जरनलगेतबतीनिहुँलोका।देवनकेउरभोअतिशोका २१
दोहा–तबहरिहरविधिआगमन, कीन्हचोमुनिअस्थान । विद्याधरगंधर्वसिधि, करहिंसंगयशगान ॥ २२ ॥

तीनिहुसुग्नेदेखिनपधामा ॥ २३ ॥ कियप्रसन्नमनदंडप्रणामा ॥ लखतीनहुनवारहिंवारा । अहैंहंसवृषगरुडसवारा ॥
पूजनकरिपुनिदोउकरजोरी।निरखनलगेसुछविनहिंथोरी॥२४॥रह्योप्रगटतहँपरमप्रकाशा।करतिनतहँऋषिदीठिविलाशा
तीनिहुँदेवतहांसुखमाहीं । कृपादीठिदेखहिंमुनिकाहीं॥२५॥मूंदेनयनहाथदोउजोरे।मुनिकहवचनप्रेमरसबोरे॥२६॥

अत्रिउवाच ।

जगउत्पतिलयपालनहेतू । मायागुणतनुधरहुसचेतू॥ब्रह्माविष्णुमहेशनमामी । जेहिमैंभज्योंकौनसोस्वामी॥२७॥
मैंध्यायोंयकचित्तलगाये । आपकृपाकरितीनिहुँआये ॥

दोहा—ताकोकारणकरिकृपा, मोकोदेहुबताय । तौमेरेउरकोसकल, विस्मयजायनशाय ॥ २८ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

सुनिमुनिवचनविहँसिसुखभीनो।बोलेमधुरवचनप्रभुतीनो(वि.ह.ह.ऊ.)जसविचारकियमुनिमनमाहीं।तैसहिअहैअन्यथानाहीं
एकतत्त्वजाकोतुमध्याये । सोईतीनिरूपहमआये॥३०॥तीनिहुँअंशतीनसुतह्वैहैं । तुम्हरोयशजगमेंअतिछैहैं॥३१॥
असकहितीनिहुँदेवसुखारे । दंपतिदेखतसदनसिधारे ॥ ३२ ॥ विधिअंशहितेभयोसुधंशू । दत्तात्रेयकृष्णकेअंशू ॥
शिवअंशहितेभोदुर्वासा । जासुकोपहैसदाप्रकासा ॥ ३३ ॥ अंगिरमुनिकीश्रद्धानारी । ताकेसुतद्वैदुहिताचारी ॥

दोहा—अनुमतिराकाअरुकुहू, सिनिवालिहूकुमारि ॥ ३४॥ अरुउतथ्यअरुसुरगुरूये, सुतद्वययशकारि॥३५॥

मुनिपुलस्त्यकीहविभूनारी। तासुतभेअगस्त्यतपधारी॥भयोविश्रवापुनिसुतदूजो।जाकोसकलजगतपदपूजो॥३६॥
ताकेप्रथमइडविडानारी । ताकेभोकुवेरयशकारी ॥ दूजीतियाकैकसीनामा । ताकेभेत्रयसुतबलधामा ॥
रावणकुंभकर्णबलवाना । भयोविभीषणभक्तमहाना॥३७॥पुलहनारिगतितेहिसुततीना।कर्मश्रेष्ठतेहिप्रथमप्रवीना ॥
दूजोवरीयानपुनिभयऊ । तीजोपुनिसहिष्नुजगठयऊ॥३८॥क्रतुकीक्रियानामकीदारा । सुतजन्मायोसाठिहजारा ॥

दोहा—नामवालखिल्याभयो, जिनकोतेजअघात ॥ ३९ ॥ उरजातियहुवशिष्ठकी, सोप्रगट्योसुतसात ॥ ४० ॥

उल्वणविरजामित्राचितकेतू । वसुभृतजानसरोचिसचेतू॥ अरुसतयोंद्युमानभोताके।सत्यादिकऔरहुपरभाके॥४१॥
नारिअथर्वणकीचितिजोई । ताकेभोदधीचिमुनिसोई ॥ व्रतधारकध्यायकजगदीशा । रह्योतुरंगकेरतेहिशीशा ॥
अवसुनियेभृगुमुनिकरवंसा।जाकीजगतीजगतप्रशंसा॥४२॥ तासुनारिख्यातीछविछाई।द्वयसुतयकदुहिताजन्माई॥
धातविधातपुत्रश्रीकन्या।जिनसमजगतऔरनहिंधन्या॥४३॥आयतिनियतिहुमेरुकुमारी।व्याहेधातविधातसुखारी॥

दोहा—आयतिपुत्रमृकंडभो, नियतिप्राणसुतजान ॥ ४४ ॥ मारकँडेयमृकंडके, वेदशिरासुतप्रान ॥
तीजोसुतभृगुकेभयो, शुक्राचारजनाम ॥ ४५ ॥ येत्रयसुतकीसृष्टिते, रह्योपूरिसबठाम ॥
कर्दमकन्यावंशयहु, मैंदियतुमहिंसुनाय ॥ ४६ ॥ श्रवणकरतश्रद्धासहित, पापपहारविलाय ॥
व्याह्योदक्षप्रसूतिकहँ,॥ ४७ ॥षोडशदुहिताजासु।तेरहिंदीन्ह्योधर्मको, यकदियव्याहिहुतासु॥४८॥

दियोएकसबपितरनकाही । एकसुताशंकरकहँव्याही ॥ श्रद्धामैत्रीउन्नतितुष्टी । मेधादयाशांतिबुधिपुष्टी ॥
मूर्तिक्रियातितिक्षालाजू । धर्मनारितेरहिसुखसाजू ॥ श्रद्धाकोसुतशुभजगभयऊ । मैत्रीकोप्रसादसुतठयऊ ॥
अभयभयोपुनिदयाकुमारा॥५०॥शांतिसुवनसुखनामउचारा॥ तुष्टिसुवनआनंदमहानो।पुष्टिसुवनगर्वहिकोजानो॥
क्रियाकुमारयोगतहँजायो । उन्नतिपुत्रदर्पकहँपायो ॥ बुद्धिपुत्रभोअर्थउदारा ॥ ५१ ॥ मेधासुतअस्मरणउचारा ॥

दोहा—सहनशीलताक्षेमसुत, विनयभयोसुतलाज । नरनारायणमूर्त्तिते, होतभयेजगकाज ॥ ५२ ॥

लियोजन्मजबनरनारायण । सकलजगतकेक्षेमपरायण ॥ भयोसकलजगकोआनंदा । वर्षेसुमनससुमनसवृंदा ॥
बह्योत्रिविधतहँसुखदसमीरा।दिशाप्रसन्नअमलसरिनीरा५३ बजेव्योममहँविपुलनगारे।अस्तुतिअमलमुनीशउचारे॥
किन्नरअरुगंधर्वहुगावैं।नृत्यकरतअप्सरासुहावैं॥ब्रह्मासहितदेवसबआये।अस्तुतिकरनलगेसुखछाये ॥ ५४ ॥ ५५ ॥
जासुउदरमहँसकलजगतहै । जिमिगँधर्वपुरगगनभ्रमतहै ॥ सोजगकेरक्षणकेहेतू । प्रगटेप्रभुअबधर्मनिकेतू ॥

दोहा-सोनरनारायणचरण, हमसवकरहिंप्रणाम । करहिंनाथहमपरकृपा, देहिंसदासुखधाम ॥ ५६ ॥
जासुनयनलखिलाजतकंजा।जोलक्ष्मीनिवाससुखपुंजा॥ शास्त्रगम्यहैनरनारायन।जगहितसुरसिरजेसत्वायन ॥५७॥
अस्तुतिकियोजवहिंअसुरारी । कृपादृष्टिप्रभुतिनहिंनिहारी ॥ सवदेवनतेपूजनपाई । गयेगंधमादनहर्षाई ॥ ५८ ॥
नरनारायणतपवहुकीन्हे । यदुकुरुकुलअवतारहिलीन्हे ॥ हैनरकोअर्जुनअवतारा । नारायणवसुदेवकुमारा ॥
रथीसारथीह्वैदोउवीरा । हरयोअवनिभारामतिधीरा ॥५९॥ अग्निनारिस्वाहाजेहिनामा।भयेतासुत्रयसुनतपधामा॥
दोहा--शुचिपावकपवमानहू, ॥ ६० ॥ तिनसुतपैंतालीस । यसवमिलिउंचासभे, कृपापात्रजगदीस ॥ ६१ ॥
तिनकेलैलैनामद्विज, करहिंयज्ञजगमाहिं ॥ ६२ ॥ पितरवंशसुनियेविदुर, जगपूजतजिनकाहिं ॥
सौमिवर्हिपदआज्यपहु, चौथोअग्निप्वात । कोऊहविलेतेअगिनि, कोउजलादिविख्यात ॥
तासुसुधातिय ॥ ६३ ॥ ताहिके, दुहिताप्रगटीदोय । वयुनाधारिणनामकी, वेदज्ञानरसमोय ॥ ६४ ॥
शंकरकीनारीसती, निजसमलह्योनपूत ॥ ६५ ॥ दक्षद्रोहत्याग्योतनुहि, करिकैयोगअकूत ॥
-इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेप्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

दोहा-सुनिमित्रासुतकेवचन, विदुरविनोदहिपाय । जोरियुगलकरकंजपुनि, दीन्होविनयसुनाय ॥

विदुरउवाच ।

शीलसिंधुशिवसोमतिसेतू।दक्षविरोधकियोकेहिहेतू॥ करतरह्योदुहिताकोआदर।केहिकारणअतिकियोअनादर॥१॥
शांतचराचरगुरुत्रिपुरारी।दक्षवैरकियकहाविचारी॥२॥श्वशुरजमातविचारिविरोधू । सतीतज्योतनुकरिअतिक्रोधू॥
कारणतासुसकलमुनिराई।देहुकृपाकरिमोहिंसुनाई॥३॥ सुनिमित्रासुतविदुरसुवानी । कहनलगेसोकथावखानी ॥

मैत्रेयउवाच ।

पूरवमुनिमरीचिकीयागा । होतभईतहँसववडभागा ॥ देवऋषीशमुनीशहुआये । औरहुसिद्धप्रसिद्धसुहाये ॥ ४ ॥
दोहा-लागिगईसुंदरिसभा, दक्षप्रजापतितत्र । आवतभोपरकाशनिज, फैलावतसर्वत्र ॥ ५ ॥
देखिदक्षपरजापतिकाहीं । सिगरोउठ्योसमाजतहांहीं ॥ पैनउठेविरंचित्रिपुरारी । अपनेतेतेहिछोटविचारी ॥ ६ ॥
सुरमुनिसिद्धहुविप्रउदारा । दक्षहिसकलकियेसत्कारा॥दक्षविधाताकहँशिरनाई । वैठ्योनिकटनिदेशहिपाई ॥ ७ ॥
शंकरउठेनदक्षनिहारी । कीन्ह्योकोपदक्षतवभारी ॥ शिवकहँजारतअसदृगहेरे । कह्योदक्षवहुवचनकरेरे ॥ ८ ॥
सुनहुसकलब्रह्मर्षिसुजाना । औरसवैजेदेवमहाना ॥ मैंनहिंकछुघमंडतेभाषौं । अरुअज्ञानतेनहिंमनमाषौं ॥ ९ ॥
दोहा-यहशंकरनिर्लज्जअति, सुरयशकियोविनाश । सतमारगतेहीनहै, करतकुपंथप्रकाश ॥ १० ॥
सावित्रीसममोरिकुमारी।लीन्ह्योअग्निसाखिदेभारी ॥ तवतेमोरशिष्यह्वैगयऊ । सुतसमानमैंमानतभयऊ ॥ ११ ॥
जवतेव्याह्योसुताहमारी।तवतेगर्वनजातसँभारी॥ मोहिंलखिउठवउचितयहिरहेऊ।सोमोहिंलखिवातहुनहिंकहेऊ ॥
यहमरकटलोचनपाखंडी । वैठोमानहुशांतत्रिदंडी ॥ १२ ॥ अशुचिअनाचारीअभिमानी ।अमर्यादकारीअज्ञानी॥
विनचाहेदियसुतासुहाई।यथाशूद्रकहँवेदपढ़ाई ॥ १३ ॥ श्मशानमहँयहकृतिवासा । भूतप्रेतयुतकरतनिवासा ॥
दोहा-नग्नरहतरोवतहँसत, खोलेशिरकेवार । वैकलसमवागतरहत, श्मशानवहुवार ॥ १४ ॥
चिताभस्मनितअंगलगावै । मनुजमुंडमालाउरभावै ॥ अहैमत्तमतवारनप्यारो । सदाअशिवशिवनामहिधारो ॥
तामसभूतपिशाचननाथा।सज्जनयाहिननावहिंमाथा ॥ १५ ॥ हायविरंचिनिदेशविचारी । बन्योनमोसोंदेतकुमारी ॥

मैत्रेयउवाच।

यहिविधिकरिनिंदाहरकेरी। देनशापचहघोरघनेरी॥ दक्षआचमनकरितेहिठौरा।दियोशंभुकहँशापकठोरा॥ १७॥
इंद्रउपेंद्रसंगत्रिपुरारी। होयनयज्ञभागअधिकारी॥ अहैअधमयहदेवनमाहीं। तातेअसतवचनममनाहीं ॥ १८॥
दोहा–यदपिदेववारणकियो, तदपिदक्षहरकाहिं। शापहिदैदरबारते, गयोकुपितगृहमाहिं॥ १९॥
दक्षशापशिवकोसुनिघोरा। बोल्योनंदीकुपितकठोरा॥ जेदक्षहुकहँहरहेसराहत। तिनहूँकेउरअतिशयदाहत॥
नंदीश्वरदियदक्षहिशापा। फैलायोनिजपरमप्रतापा॥२०॥समदर्शीशंकरभगवाना। करतद्रोहजेहिसुन्योनकाना॥
ऐसेप्रभुहिजेभरिअभिमाना। करहिंद्रोहतेकुमतिमहाना॥ तिनकोखोयजायपरलोका। जाहिरैनदिनसंयुतशोका॥
जोगृहविषयलोभलवलीना। कपटकर्ममेंपरमप्रवीना॥ सुखकेहेतुरैनदिनधावै। वृथावेदवादीकहवावै ॥ २२॥
दोहा–आतमज्ञानभुलायदिय, करतजननअपमान। नारिअधीनसदारहै, दक्षपशूनसमान॥
दक्षदुष्टहोवैमुखछागै। मोवचननमेंवारनलागै॥ २३ ॥ मानतनहिंअज्ञानहिज्ञाना। दक्षजड़नमहँअहैप्रधाना ॥
तातेपरोरहैसंसारा। तहँतेकबहुँनहोयउबारा ॥ अरुजेदक्षहिदुष्टसराहैं। तिनहुँनजानहुनरकहिमाहैं॥ २४॥
शंकरनिदरिवेदबहुमानै। करिहैंतेहठिनरकपयानै॥ २५॥ होहिंसर्वभक्षीशठतेई। जेजीविकाहेतुतपसेई ॥
देहगेहधनमहँजिनप्रीती। तेपावहिंभिक्षुककीरीती॥ २६॥ ऐसोसुनिनंदीकोशापा। भृगुमुनिपायपरमसंतापा॥
दोहा–दुसहशापभृगुहूदयो, जोनहिंवारणहोय। जाहिसुनतसिगरेअमर,रहैमहादुखमोय॥ २७॥
जेशठशिवकोपंथचलावैं। औशंकरकेभक्तकहावैं॥ तेपाखंडीहोयँविशेषी। शुभशास्त्रनतेविमुखहिलेषी॥ २८॥
जटाभस्महाड़नजेधारैं। महामूढमतितजेअचारैं॥ शिवकेमतमेंनिरतसदाहीं। तेनरघोरनरकमहँजाहीं॥
जेशिवकेमतरहैंलोभानै। तिनकोहोयप्रीतिमदपानै॥ २९ ॥ विप्रवेदनिंद्योतैंनंदी। धारकजगमर्यादअनंदी॥
तातेजेसबशिवगणअहहीं। तिनकोबुधपाखंडीकहहीं॥३०॥वेदमार्गदायककल्याणा। जासुजनार्दनअहैंप्रमाणा३१
दोहा–बहुब्रह्मर्षिसुरर्षिसब, चलहिंजौनसतपंथ। ताकीतैंनिंदाकरी, धरिपगमहाकुपंथ॥
तातेहोहुसकलपाखंडी।भयेअदंडिनकेतुमदंडी॥३२॥(मै.उ.)ऐसोसुनिभृगुमुनिकोशापा॥महादेवलहिअतिसंतापा॥
उठेसभातेमौनइशाना। विमनकियोकैलासपयाना॥ ३३॥ तबपुनिरहेप्रजापतिजेते। करनयज्ञलागेतहँतेते॥
जहँसंगमगंगायमुनाको। पातकनाशकजासुपताको॥ सोईतीरथराजप्रयागा। तहांप्रजापतिकीन्हेयागा॥
जाकेनाथअहैंयदुनाथा। नाशतकोटिपापयकसाथा॥३४॥ऐसेतीरथमहँमखकरिकै। न्हायात्रिवेणीअतिमुदभरिकै॥
दोहा–विमलतेजततुपायकै, सिगरेसुखितप्रजेश। विधिशासनधरिशीशमें, निजनिजगयेनिवेश॥ ३५॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्री
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेद्वितीयस्तरंगः॥ २॥

मैत्रेय उवाच।

दोहा–शंकरदक्षविरोधमहँ, बीतेवर्षहजार॥ १॥ पुनिदक्षहिविधिदेतभे, प्रजनपालअधिकार॥
भयोदक्षकेगर्वमहानो। तबपुनिवाजपेयमखठानो॥ २॥ वाजपेयकरिदक्षसुखारी। फेरिबृहस्पतिसवमखभारी॥
दक्षकरनलाग्योतेहिकाला॥ ३॥ तहँसुरर्षिब्रह्मर्षिविशाला॥ औरहुवेदपितरसबआये।नितनिजनारिनसंगलेवाये॥
मंगलवचनपढ़नसबलागे। भूषणवसनज्योतिसोजागे ॥ ४॥ औरहुविद्याधरगंधर्वा। चारणकिन्नरआदिकसर्वा॥
करतदक्षयज्ञहिअसगाई। गवनेकैलासहिनियराई॥ असमुनिसुरनसुरिनकेवैना। भयोसतीउरआनँदऐना ॥ ५ ॥
दोहा–भूषणवसनसँवारिकैं, निजनिजचढ़ेविमान। दक्षयज्ञउत्सवमहा, पेखनकरहिंपयान॥६ ॥

असमुरसुरसुंदरीनिहारी।सतीशंभुसोंगिगउचारी ॥७॥ (म.उ.)दक्षप्रजापतिआपसयाने । करनयज्ञआरंभहिठाने ॥
तहांदेवसबकरहिंपयाने।मोहिंयुतचलियजोप्रभुमनमाने८ममभगिनीनिजपतियुतजैहैं । इकइकसोंमिलिअतिसुखपैहैं
तातेमोरिहुअसअभिलाषा।करौंजायतहँकछुयशशाखा ॥ देहैंपितामोहिंबहुभूषण । तहाँगयेनहिंहैकछुदूषण ॥ ९ ॥
लखिहौंमातुमातुभगिनीको।निजभगिनिनिमिलिहौंयहठीको॥लख्योनपितुकहँबहुदिनबीते । पुनिकबजैहैंयज्ञव्यतीते
दोहा–अबैक्रपिनयुतजनकमम, करतबृहस्पतियाग । उचितगवनयहिकालगुणि, हियेहोतअनुराग ॥ १० ॥
यद्यपिजगतअहैतुममाहीं ।सोकछुतुमकोअचरजनाहीं॥नारिस्वभावनमोहिंकछुचेतू।देखनचाहौंजनमनिकेतू ॥११॥
लखहुचढींसुरनारिविमाना ।ममपितुगृहकहँकरहिंपयाना ॥ अलंकारकीन्हेसबअंगा ।चलींजाहिंनिजनिजपतिसंगा ॥
अगनविमानगगनमहँराजैं।सोहतजनुकलहंससमाजैं॥तातेहोतिहमारिहुआशा।लखहुँजायपितुयज्ञतमाशा ॥ १२ ॥
पितुकोमखउछाहसुनिकाना।किमिहमसोंरहिजायइशाना॥यद्यपिपिताबुलायोनाहीं । तद्यपिउचितपरतमनमाहीं ॥
दोहा–पतिपितुसुहृदहुगुरुसदन, बिनहिबोलायेजाब । मोहिंउचितलखिपरतप्रभु, कसनहिंदेहुजवाब ॥ १३ ॥
नाथकरहुमोपरकृपा, पूरिकरहुअभिलाष । मोहिंअर्द्धंगीकरिलियो, कियोकबहुँनहिंमाष ॥
जोरिपाणिविनतीकरौं, सुनियेकंतमहेश । पिताभवनकेगवनको, मोकोदेहुनिदेश ॥ १४ ॥

मैत्रेयउवाच ।

छंद–सुनिसतीकेअसवचनशंकरनेकुमुखमुसुक्याय । तहँदक्षकेकटुबैनसुमिरतदियोजोहियलाय ॥
तबकहचोशंकरसतीसोंअसविविधविधसमुझाय ॥१५॥यहभनीतैंनीकीगिरामोहुकाहिंउचितजनाय ॥
पतिपितुसुहृदगुरुगृहगवनबिनबोलेहूसतिधर्म । पैजोकियेनहिंहोहिनिजपरदोषदृष्टिअशर्म ॥ १६ ॥
तपवित्तवयविद्याकुलहुवपुसंतपटगुणजानु । येषटजोहोहिंअसंतकेतौकरहिंदोषमहानु ॥
सबसुरतिताकीभूलिजातीहोतअतिअभिमान । सोकरतनिंदासंतजनकीरहततेहिनहिंज्ञान ॥ १७ ॥
ऐसेजननकोसुजनगुणिनहिंजायतिनकेगेह । जोजायहठितौकुटिलभ्रुकुटीतकहिंतजितेहिनेह ॥ १८ ॥
तसवैरिविशिखनदुखनहोतजेफोरितनुकढ़िजाहिं।जसदहतनिशिदिनबंधुकेकटुवचनजननहिंकाहिं १९॥
यद्यपिसतीतुमतासुदुहितातदपिममतियलेपि । वहदक्षअवशिअज्ञानवशअपमानकरहिविशेषि ॥२०॥
शठहठकरतसज्जनविरोधविलोकिसंतविभूति। जिमिदैत्यहरिसों वैरकरहिंनचलतिकछुकरतूति ॥
नहिंहोहितिनसमजरतनिशिदिनभरतदुखउरभूरि।तिनकुमतिजनकीकामनानहिंहोतिकौनिहुपूरि २१॥
चलिलेबआगूकरबवंदनकरहिंजेबुधजौन । तेमानिअंतर्यामिसबथलकरहिंमनतेतौन ॥
नहिंदेहअभिमानहिकरहिंगुणिलोककोव्यवहार॥२२॥हमकियेमनतेतिहिंप्रणतिजेहिहियेनंदकुमार २३
हैपितातेरोमोरद्रोहीकहौंतातेतोहिं । नहिंलखबताकीओरतोकोउचितपरतोजोहिं ॥
मधिसकलदेवसमाजकेमोहिंकह्योकटुबहुबैन । मैंकियोकछुअपराधनहिंजानहिंसकलसुरसैन ॥ २४ ॥
दोहा–मानिनमेरोवचनजो, हठिजैहौपितुगेह । देखिअनादरमोरतौ, तैंतजिदेहैदेह ॥
बंधुनकेमधिमेंलहै, जोसज्जनअपमान । तौअतिशयदुखलेखिकै, तजततुरततहँप्रान ॥२५॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेव
कृतेआनंदाम्बुनिधौ चतुर्थस्कंधे तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–भाषिसतीसोंवचनअस, ह्वैगेमौनमहेश । लागेकरनविचारमन, पायोपरमकलेश ॥
छंद–सुनिसतीशंकरकेवचननहिंसकतिगवनपितागृहै । जोहनजनककोयागउरअभिलाषजागीतेहिमहै ॥

कहुँजातिकहुँपुनिलौटिआवतिफेरिगवनतिद्वारलौं । पुनिलौटिशिवकोवदनताकतिरहतिठगिबहुबारलौं ॥१॥
कहुँरुदनकरिअतिकोपभरिशिवकोतकतिदृगवंकते।यहिभाँतिह्वैपुनिविकलअतिनहिंकहिसकतिकछुशंकते॥
पुनिबारबारहिंश्वासलैअतिशोकरोपहितेपगी । निजकंतकोनहिंवचनगुणिपितुप्रीतिकेरंगहिरँगी ॥
गवनीसतीपितुयागदेखनत्यागिशिवअर्द्धंगको ॥ २ ॥ तहँशंभुकेगणद्रुतहजारनचलेगाहितेहिसंगको ॥
अतिचपलमहिमहँधरतपदनहिंसंगशिवगणपावहीं । मणिमानमदआदिकसुभटनंदीश्वरहिलैधावहीं ॥
चलिवेगसोंबहुदूरमेंपहुँचसतीढिगजायकै ॥ ४ ॥ बहुविनयकरितेहिवृषभपहँलैचलेद्रुतहिचढ़ायकै ॥
कोउलियेकंदुककंजकोकोउसारिकाकोउआरसी । कोइछत्रकोईचमरकोईमालसुरधुनिधारसी ॥
कोइवेणुकोईशंखकोईदुंदुभीनबजावहीं । कोइगानकैबहुतानलैकलरवदिशाननछावहीं ॥ ५ ॥
यहिभाँतिसंयुतगणनतेपहुँचीसतीपितुयागमें । जहँवेदपढ़िपढ़िकरतहिंसाविप्रअतिअनुरागमें ॥
बहुदेवअरुबहुविप्रअरुबहुसिद्धचारणसोहहीं । मृद्दारुकंचनलोहकुशकेपात्रतहँमनमोहहीं ॥
किययज्ञशालाकेप्रदेशप्रवेशअतिमोदितसती ॥६॥तहँजननिअरुतेहिभगिनिउठिउठिमिलींकरिआदरअती ॥
पैऔरदक्षसमाजकेकोउदेवमुनिनहिंतकतभे । नहिंनेकुपूछेहुकुशलप्रश्नहुदक्षकोअतिजकतभे ॥ ७ ॥
यद्यपिजननिअरुभगिनिसादरताहिआसनदेतिभे । पैजनकतेअतिलहिअनादरसतीश्वासहिलेतिभे ॥ ८ ॥
तहँरुद्रकोनहिंभागलखिपितुकृतअनादरलेखिकै । लोकनजरावतइवकियोतहँसतीकोपविशेषिकै ॥ ९ ॥
सबसुरसमाजसुनाइकैबोलीगिराअप्रियअती । मखकर्मरतनिजजनककीनिंदाकरनलागीसती ॥ १० ॥

सतिरुवाच ।

जाकोनकोऊप्रियअप्रियजेहिचरणरजजगशिरधरै । तेशंभुकोतुमहींविनापितुकोअनादरअसकरै ॥ ११ ॥
परदोषकोसज्जनगुणतगुणतुमहिंसमशठजेनहीं । लघुगुणहुकोबहुतैविचारहिंजेविवेकीहैंसहीं ॥ १२ ॥
जेभरेतनुअभिमानअतितेहरहिजोनिंदनकरैं । तौअहैअचरजनाहिंकछुतेसुकृतहतनरकहिंपरैं ॥ १३ ॥
जेहिनामशिवइकवारकहततहिनशतद्रुतअघओघहैं । तिनकेभयेपितुहायद्रोहीजासुशस्त्रअमोघहैं ॥
कैलासपतिकीरतिविमलशासनसबैसुरमानहीं ॥ १४ ॥ पदकमलरजशिरमेंधरहिंअरुकरहिंगुणगणगानहीं ॥
जेचहतब्रह्मानंदतेजनकरतभक्तिमहेशकी । तिहुँलोककेपूरणमनोरथबानिजासुमहेशकी ॥
तिनकोविरोधीहोतकतपितुतोहिंकछुसूझैनहीं । अतिशंकहरशंकरसुशंकरशंकरारीतैंसही ॥ १५ ॥
जोकहैतैंशिवकोअशिवसोविधिनजानहितेहिकहा । अंगनविभूतिकपालमालमशानवाससदामहा ॥
पैचरणरजकोशीशधारहिंमोदमंगललहनको । यहविदितसबजगबाततातेउचितनहिंतोहिंकहनको ॥ १६ ॥
जोकहहिशठसुखनाथनिंदनतासुरसनाकाटिये । बलहोयजोनहिंतौतुरततहँशीशअपनोछाँटिये ॥
अथवानऐसेहुह्वैसकैतौश्रवणमूँदिपराइये । यहहैसनातनधर्मसांचोऐसहीचितलाइये ॥ १७ ॥
तातेजनितजोमोरतनुअबअशुचिमैंनहिंराखिहौं । करिकैमहाविषबलितभोजनवमनकेसमनाखिहौं ॥ १८ ॥
जेमगनआत्मानंदमहँतेविधिनिषेधनमानहीं । जेप्रवृतिमारगनिरततेनहिंनिवृतिमारगजानहीं ॥
यकसंगह्वैनहिंसकतदोउजिमिदेवमानुषभिन्नहैं । जेकरतनिंदनहैंपरस्परतेसदामतिछिन्नहैं ॥ १९ ॥
हैनित्तमारगनिरतशंकरकर्मसंभवकछुनहीं । तिनकीकरीतैंजनकनिंदाकुमतिउरआनीसही ॥ २० ॥
जेसिद्धिअणिमादिकहमारीतिनतुम्हरेयोगहैं । वैराग्यमानविशालबुधजनकरतातिनकोभोगहैं ॥
तुमकर्महीमेंनिरतनिशिदिनकर्महीभोगतरहो । बहुकुमतिजनतुमकोप्रशंसतताहितेगर्वहिगहो ॥ २१ ॥
धिक्कारहैतनुकोहमारेशंभुद्रोहीतैंभयो । यहिराखिहैंनहिंकैसहूअबछोड़िकैलैहैंनयो ॥ २२ ॥
अबलाजलागतिदक्षदुहितानामअसकहवावते । नहिंमुखदेखावनयोगशिवकेखेदबहुउरआवते ॥ २३ ॥

मैत्रेयउवाच।

असकहिसतीउत्तरवदनआचमनकरिबैठतभई। पटपीतधारिमूँदियुगदृगयोगमारगगतिलई ॥ २४ ॥
तहँप्राणऔरअपानपवनहिंकरिसमानउदानको। पुनिनाभिचक्रहितेउठाइसुराखिहियेमहानको ॥
तहँकंठमारगतेभ्रुकुटिमधिल्यायथापनतेहिकियो२५शंकरप्रियानिजतनुतजनहितप्रगटियोगानलल्यिो २६॥
शंकरचरणधरिसतीध्यानहिभस्मतनुकरिदेतिभे ॥ २७ ॥ तहँमच्योहाहाकारनभमहिसुरसमाजअचेतिभे ॥
असकहहिंसवशंकरप्रियाकरिकोपदक्षहिपैमहा। सुनिनाथनंदनश्रवणनिजतनुतजिदियोवेदीजहाँ ॥ २८ ॥
देखोसवैसुतजेहिचराचरदक्षसोंकुमतीखरो। अतिमानलायकनिजसुताअपमानताकोअतिकरो ॥
निजपिताकेअपराधतेनिजतनुसतीतजिदेतिभै। सवसुरनकेदेखतइतैजगयशउजागरलेतिभे ॥ २९ ॥
यहदुष्टअतिशयदक्षदुहितामरतनहिंवारणकियो। अपनेकरमअपनीअकीरतिआपहीतिलैलियो ॥ ३० ॥
असमुनतदेवनकेवचनलखिकैसतीतनुत्यागको। लैशस्त्रधायेशंभुकेगणहननदक्षअभागको ॥ ३१ ॥
लखितिनहिंआवतदेखिभृगुकियअग्निहोमसुमंत्रते ॥ ३२ ॥ तातेभयेरिभुसुरप्रगटबलवानवेदीयंत्रते ॥ ३२ ॥
तहँतुरततेगहिकरलुवाठनशोरकरिधावतभये ॥ हनिशंभुकेअनुचरनतेहिक्षणतनुजरायेरिसछये ॥ ३३ ॥
दोहा–रिभुदेवनकेलूककी, मारपायअतिघोर। शंकरगणगुह्यकप्रथम, भागिगयेचहुँओर ॥ ३४ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेचतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

।

दोहा–शंकरकेगणभागिकै, गयेदुखितकैलाश। सतीमरणभारिभीतिहिय, करिनहिंसकेप्रकाश ॥
छंदहरिगीतिः–तवजायनारदशंभुकेढिगकहीऐसीवानि। तुमकहाबैठेसुचितशंकरपरैनहिंकछुजानि ॥
उतदक्षकेमखमेंसतीलखिकैनभागतुम्हार। अरुपायकेअपमानपितुसोंह्वैप्रकोपअगार ॥
उत्पन्नकरियोगाग्निनिजतनुभस्मकियतेहिठोर। तवआपकेगणदक्षकहँधायेहननकरिशोर ॥
तवभृगुअनलमहँहोमकरिरिभुदेवतहँप्रगटाय। तिनरावरेगणकोलुवाठनमारिदीनभगाय ॥
सुनिकैसतीकोनिधनशंकरकोपकीनकठोर ॥ १ ॥ दंतनविकटकटकटकरतचटपटचटकितिहिंठोर॥
अधरनडसतधुरजटिजटानिजझटकितडितसमान । पुहुमीपटकिपावकसटासीकियोनादमहान॥२॥
पटकतधरणिधुरजटिजटायकपुरुषप्रगट्योघोर। सौयोजनहिकोवपुपअतिउरदंडवनसमशोर ॥
सूरजसरिसत्रयदृगभयंकरदोरदंडहजार। जेहिडाढ़कालहुतेकरालपतालमुखविस्तार ॥
बहुज्वलनज्वालामालसेविकरालशिरकेवाल। सवकरनअस्त्रनशस्त्रधारेगलकपालहिमाल ॥
हैनामजाकोवीरभद्रअभद्रशिवअरिदानि। करजोरिकैसन्मुखखडोशिवसोंकहीअसिवानि ॥
मैंअहौंकिंकरआपशंकरकरौहुकुमजोहोय। तवविहँसिहरवोलेवचनहनुदक्षकोमखखोय ॥
ह्वैहैहमारेभटनकोसैनाअधिपबलवान। अबकरुविलंबविहायदक्षहिहननहेतुपयान ॥ ४ ॥
असपायशासनशंभुकोतहँवीरभद्रप्रकोपि। शिवकोप्रदक्षिणदैचल्योदक्षहिदलनचितचोपि ॥
करवेगपरमप्रचंडठोंकतदोरदंडअखंड। जनुखंडखंडहिकरतअंडहिशंभुगणवरिवंड ॥ ५ ॥
शंकरहुकेकिंकरभयंकरचलेताकेसंग। अंतकसरिसझंखतनकछुअतिवंकअंगअभंग ॥
गहिवीरभद्रअतूलपाणित्रिशूलतडितसमान। धायोढहावतधराधरधसकायधरणिमहान ॥
तनुनीलपहिरेविविधभूषणतडितजनुघनश्याम। करिघोरशोरकठोरधावतकालसमबलधाम ॥ ६ ॥

जबदक्षकोमखगह्यचोयोजनपांचसातप्रमान। तबसदसिअरुयजमानऋत्विजऔरसुरहुमहान ॥
उत्तरदिशादेखतभयेधुवधूरिधुंधाकार। सबकहहिंसुरमुनिनिजपरस्परविरचिविविधविचार ॥ ७ ॥
भोधूमधूसरव्योमउत्तरहेतुकछुनजनात। नहिंवहतमारुतनहिंतपतरविअहैकछुउत्पात ॥
अवहींजियतप्राचीनवहींउग्रजाकोदंड। नहिंचोरहैंतातेकहूकतधूरिधारअखंड ॥
नहिंगऊवेढतवोययातेगुणहुँपरलैआज। अतिशयचकितचहुँओरचितवतकहतदेवसमाज ॥ ८ ॥
तबकहप्रसूतीआदिनारीलेहुफलअबसोय। अपराधविनजोसतीकोअपमानकियसबकोय ॥
सबकेलखतअपमानलहिदीन्ह्योसतीतनुत्यागि ॥ ह्वैहैनहींकल्याणकबहूँदक्षपरमअभागि ॥ ९ ॥
जेहरप्रलयकेकालछेदित्रिशूलदिग्गजगात। फटकारिकेशपसारिभुजकरिशोरसमरनिपात ॥
निरततसदाजिनशंभुकोहैदुसहकोपप्रचंड ॥ १० ॥ भ्रुकुटीकुटिलकेकरतनशतअखंडयहब्रह्मंड।
हैजासुडाढ़करालललालविशाललोचनतीन। तेशंभुकोअपराधकरिकोभयोनहिंसुखहीन ॥
चतुराननौजाकीरुखैराखतरहैंदिनरैन। तेहिशंभुकोअपराधकरिशठदक्षचाहतचैन ॥ ११ ॥
असकहतनारिनकेवचनतहँहोतभेउतपात। हतरक्षमरणअदक्षदक्षहितहँप्रत्यक्षलखात ॥ १२ ॥
तेहिसमयशंकरसकलकिंकरअतिभयंकरधाय। शठदक्षकेमखठौरकोचहुँओरघेरयोआय ॥
आयुधविविधआननविविधवाहनविविधसबकेर। वर्णहुविविधबोलनविविधडोलनिविविधचहुँफेर ॥
तहँदौरिशंकरकेसुभटघुसियज्ञशालामाहिं। करिपानलियघटअंभतोरेखंभरंभनकाहिं ॥
कोउप्रविशिपतिनीशालमहँकोउअग्निशालाजाय। तोरेसुतोरणसकलफोरेकलशमोरेधाय ॥
कोउघुसेपुनियजमानगृहतहँकियउपद्रवघोर। बहुवसनफारेगृहविदारेकरिभयावनशोर ॥ १४ ॥
सबयज्ञपात्रनभंजिडारेअग्निदीनबुझाय। करिमूत्रमलदियकुंडमहँमेखलादीनगिराय ॥
बहुफोरिवेदीघोरिरुधिरकरोरिकुंभनमांहिं। मखदक्षकीविध्वंसकरिशिवगणप्रकोपितहांहिं ॥ १५ ॥
कोउमुनिनकोतहँपकरिलीन्हेदुर्दशाबहुकीन। पुनिदौरिदारनकोदपटिदारुणदुसहदुखदीन ॥
पुनिदक्षपक्षीसुरनकोशिवसुभटदक्षप्रतक्ष। गहिगहिहननलागेकसाफोरततक्षहिअक्ष ॥
तबकरतहाहाकारसुरमुनिभगेचारिहुँओर। तिनकोसपटिकैरपटिशिवगणकियप्रहारकठोर ॥ १६ ॥
दोउबाहुबंधनकठिनतेबांधेभृगुहिमातिमान। दक्षप्रजापतिकोपकरिलियवीरभद्रप्रधान ॥
धरिधायपूषादेवकोमारयोचरणचंडीश। भगदेवभाग्योभभरितहँपकरयोतुरंतनदीश ॥ १७ ॥
ऋत्विजसदसिद्विजवेदमुनिभजिकरतहाहाकार। तिनकोकरहिंशिवपारषदअतिशयपषाणप्रहार ॥
शंकरसुकिंकरपकरितिनमुखमेलिकंकरदीन।कोहुकोपुहुमिमहँपटकिचटपटचरणशिरमहँकीन १८॥
जोमुच्छफरकावतहँस्योभृगुसभाशिवहिनिहारि।तेहितुच्छकीलियरुच्छमुच्छहिगुच्छआशुउखारि॥
भृगुतहाँधारेकरस्रुवाकरतोरहोअतिहोम। तेहिशठहिपुहुमीपारिपुनिशिरबारखींच्योतोम ॥ १९ ॥
भगदियइशारादक्षकहँनिजनैनकोमटकाय। लियतासुआँखिनिकारितुरतहिवीरभद्रगिराय ॥ २० ॥
जोहँस्योदंतनिकारिपूषाताहितहँचंडीस। हनिमुष्टिताकेमुखहिमहँझारयोरदनबत्तीस ॥
वासवहुपूपासंगविहँस्योहरहिदंतप्रकासि। तातेतेहूकोमारिमुठिकानिलियोदंतनिकासि ॥
जैसेसभामधिरामकोविहँस्योकलिंगठठाय। तेहिपकरिकलहनिमुष्टिमुखमहँदियोदंतगिराय ॥ २१ ॥
पुनिदक्षकोमहिपटकिकैकिरवानपरमकठोर। शिरलग्योकाटनवीरभद्रउचारिशठशठशोर ॥
पैकव्योनहिंकिरवानतेशिरकियोकोटिउपाय ॥ २२ ॥ तबलग्योकरनविचारमनमेंउरहिअतिदुखछाय ॥
यहशस्त्रतेंहैअबधकटिहैशस्त्रमेंशिरनाहिं। निजहाथतेंमैंशिरउखारौंदक्षदुष्टहिकाहिं ॥ २३ ॥

असकहिकरनतेंऐंठग्रीवालियेशीशउखारि । पशुशीशसमपूर्णाहुतेंगुणिदियोकुंडहिडारि ॥ २४ ॥
तबवीरभद्रहिकीप्रशंसाकरीभूतपिशाच । द्विजदक्षपक्षीकियेहाहाकारदुखगुणिसाच ॥ २५ ॥
दोहा–दक्षशीशकोलायकें, मखशालाकोजारि । पूषाकेदंतोरिकें, भृगुकीमूँछउखारि ॥
दक्षयज्ञविध्वंसकरि, वीरभद्रयहिभांति । कियोगमनकैलाशको, लैआपनीजमाति ॥ २६ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेपंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–दक्षप्रजापतियागमें, ह्वैहैविघ्नविशेषि । हरिविरंचितातेंतहाँ, गयेनयहमनलेषि ॥ १ ॥
छिन्नभिन्नभेसबकेअंगा । भगेभभरितजिइकइकसंगा ॥ विधिकेनिकटजायअसुरारी । कहेसकलवृत्तांतपुकारी॥२॥
दोहा–देवदक्षपक्षीसबै, गेशिवगणतेहारि । शूलगदामुद्गरपरिघ, गयेशस्त्रतेमारि ॥ ३ ॥
तहांदक्षकेपितुकरतारा । सुनिकैपुत्रयज्ञसंहारा ॥ कहेवचनसबसुरनसुनावत । साधुविरोधमोदकोपावत ॥ ४ ॥
हरकोकियोमहाअपराधा । तातेतुमपाईयहबाधा ॥ रहेशंभुमखभागहियोगू । तिनहिंनदेलीन्हचोदुखभोगू ॥
छोंडिकपटकैलासहिजाई । शंकरकेपदमेंशिरनाई ॥ पाहिपाहिकहिक्षमाकरैहौ । तबअपनोमनवांछितपैहौ ॥
दोहा–कोकृपालुशंकरसरिस, दूजोत्रिभुवनमाहिं । अतिअपराधिहुदीनलखि, करहिंकृपातेहिपाहिं ॥ ५ ॥
हैअमोघसुरशंकरकोपू । करतलोकलोकपकरलोपू ॥ शंकरकोपयज्ञभैछारा । गयोदक्षसेवकयुतमारा ॥
चाहौसिद्धिदक्षमखकेरी । जाहुशंभुपहँकरहुनदेरी ॥ निजअपराधक्षमाकरवावो । शिवाविहीनशिवहिशिरनावो ॥
दक्षवचनसायकउरलागे । शंकरअहैकोपमहँपागे ॥ हमअरुविष्णुतुमहुँसबजेते । हरमनगतिजानहिंनहिंतेते ॥
तातेकौनउपायबतावैं । जातेसकलदेवसुखपावैं ॥ ऐसेसुनिविरंचिकेबैना ॥ मानेसुरअतिशयउरचैना ॥ ७ ॥
दोहा–पुनिपितरनअरुसबसुरन, अपनेसंगलेवाय । गेविरंचिकैलासकहँ, जहँनिवसतगिरिराय ॥ ८ ॥
जहँओषधिमंत्रनसिधिरहती । सरितसुहावनिपावनिबहती ॥ सिद्धियक्षचारणगंधर्वा । बसहिंअप्सरनसंयुतसर्वा ॥९॥
सोहतजहँमणिशृंगहुनाना । धातुअनेकविचित्रविधाना॥लताकुंजद्रुमसुमनसुहाये।डोलहिंमृगगणअतिसुखछाये १०
निरझरझरहिंनीरबहुभांती।विविधभांतिकंदरासोहाती॥रमणनयुतसिद्धनकीरमनी।करहिंविहारमुदितगजगवनी ११
मदमातेमयूरचहुँओरा । करहिंमयूरिनयुतकलशोरा॥चक्रवाकचातकहुचकोरा।करहिंशोरचहुँकितचितचोरा॥१२॥
दोहा–शाखाडोलहिंपवनलहि, मनहुदेनफलहेत । विपुलविहंगबोलावहीं, तेनिजनिजहिनिकेत ॥
मंदमंदतहँचलहिंमतंगा । मानहुँगमनतशैलउतंगा ॥ निरझरशोरचहूँदिशिछावत।मनहुँवेदध्वनिशैलसुनावत॥१३॥
पारिजातसरलहुमंदारा । कोविदारअर्जुनसुखसारा ॥ असनतमालतालहिंताला ॥ १४ ॥ नीपकदंबरसालहुशाला ॥
चंपकनागऔरपुन्नागा । वंशनकेबहुभाँतिविभागा ॥ कुरवकबकुलअशोकहुकुंदा॥१५॥स्वर्णअर्णशतदलमुचुकुंदा॥
मधुरमाधवीमृदुलमल्लिका । औरहुफूलींविविधवल्लिका ॥ पीपरपाकरपनसपलासा। हिंगुउदुंबरवटचहुँपासा ॥१६॥
दोहा–राजपूगअरुपूगतरु, भोजपत्रअरुजंब । नारिकेलखरजूरबहु, धात्रीवृक्षकदंब ॥
इंगुदमधुकप्रियालसुहावन।ओषधिअमितविटपमनभावन॥उत्पलऔरकुमुदकल्हारा॥नलिनिनसोहतसुछविअपारा॥
गुंजिरहेतहँमत्तमिलिंदा । कलरवकरहिंविपुलखगवृंदा॥१९॥मृगशाखामृगबाघवराहा। शल्यकसिंहऋक्षसउछाहा ॥
गवैऔरकस्तुरीकुरंगा।महिषनसहितचरहिंइकसंगा॥सरासिनपुलिनकदलिकुलराजैं २०॥२१॥तहँमज्जैंसुरनारिसमाजैं
यहिविधिदेवदेखिकैलासै । पायोअतिशयहियेहुलासै ॥२२॥ निरखेअलकानामकनगरी । शोभावंतअहैजोसिगरी ॥

दोहा–सौगंधिककाननलखे, सौगंधिकजहँकंजु ॥ २३ ॥ नंदाअलकनंदानदी, सोहिरहींतहँमंजु ॥
श्रीपतिचरणरेणुलहिसरिता।भईपापहरणीसुखभरिता॥अलकापुरीदुहूँदिशिबहती।सुरसरिसूरसुताछविलहती २४॥
दोउसरितनमहँवहुसुरनारी।उतरिविमाननतेसुखधारी॥मज्जिसुरतिश्रमलेहिंनेवारी।सकलकरहिंजलकेलिसुखारी २५
छूट्योकुचकुंकुमसरिमाहीं।भयोसलिलसुरभितचहुँवाहीं॥तहांआयगजविनहिपियासे।पानकरावहिंगजिनहुलासे २६
सोहतिअलकापुरीविशाला । रजतकनकमणिमहलरसाला॥सुकतनझालरिझलकतझूलै । मेघमध्यबकपांतिनतूलै॥
दोहा–पुण्यजननकीनारिबहु, मोदितकरहिंनिवास । फैलिरहीचहुँपासतहँ, तिनमुखसुखदसुवास ॥ २७ ॥
दक्षपुरीअसलखिसुखपागे । ताहिनाँघिसबसुरगेआगे ॥ तबसौगंधिकवनकीशोभा । देखिसकलदेवनमनलोभा ॥
जहाँकल्पद्रुमलसहिंहजारा।सौगंधिकसरसिजसुखसारा॥फरेसुफलफूलेफविफूला।नवकोमलदलसुखकरमूला ॥२८॥
करहिंकोलाहलकोकिलकुंजन।सोहिरह्योवनअतिअलिगुंजन॥कलहंसादिकनीरविहंगा।बोलतविचरहिंनिजतियसंगा
सरससरससरसारससोहैं ॥ २९ ॥सुरसुंदरीसरिससुखजोहैं ॥ मंदमंदमातंगमहाना । गमनतविविधभांतिबलवाना ॥
दोहा–हरिचंदनगजदानछ्वै, चलतपवनगतिमंद । पुण्यजननारिनसुमन, हरतबढ़ायअनंद ॥ ३० ॥
वारिजवलितवापिकाराजैं । वयदूरजसुपानछविछाजैं ॥ करहिंतहाँकिंपुरुषविहारा । वरणिनजायअनूपअपारा ॥
ऐसोसौगंधिकवनदेखी । गेआगूसुरअतिसुखलेखी ॥ तहाँलख्योवटवृक्षसुहावन ॥३१॥ सौयोजनउतंगअतिपावन ॥
पचहत्तरयोजनविस्तारा । शाखाचहुँदिशिलसैंअपारा ॥ अचलसकलथलछायारहती । देखतहीदारुणदुखदहती ॥
रचैंनतेहिवटनीडविहंगा । करहिंसकलकलरवइकसंगा ॥ सोवटहैमुमुक्षुसुखदाई । छायासकलयोगमयभाई ॥३२॥
दोहा–तेहिवटकेनीचेलखे, देवशंभुकोजाय । मानहुँअंतककोपतजि, बैठ्योशांतस्वभाय ॥ ३३ ॥
सनकादिकअरुसिद्धअपारा । बैठेशांतरूपसुखसारा ॥ यक्षराक्षसनगुह्यकनाथा । सखाकुबेरनवायेमाथा ॥
बैठेमहादेवमुखताकत । ज्ञानविज्ञानमोदरसछाकत ॥ ३४ ॥ विद्यातपयोगहुपथधर्ता । सकललोककेमंगलकर्ता ॥
सकलजगतकेहैंहितकारी । राजतमधिसमाजत्रिपुरारी ॥ शंभुवेपतापसमनभावन । शीशजटामृगचर्मसुहावन ॥
भस्मअंगदंडहिकरधारे । संध्यामेघसरिससुखकारे ॥
दोहा–कुशआसनआसीनप्रभु, लसतभाल विधुबाल । जेहिदरशतसबजननके, मिटतअमंगलमाल ॥ ३६ ॥
नारदपूंछतज्ञानविरागा । तिनसोंशंभुसहितअनुरागा ॥ सबसंतनकोतहांसुनाई । भाषहिंभवभलभेदबुझाई ॥ ३७॥
दक्षिणउरूवामपदकरिकै । बाईजानुपाणिनिजधरिकै ॥ अक्षमालदहिनेकरधारी । कियेतर्कमुद्रात्रिपुरारी ॥ ३८ ॥
ब्रह्मसमाधिसमाधितईशा । लोकपालजेहिनावहिंशीशा ॥ योगपट्टकटिजानुहिबांधे । योगमार्गआछीविधिकांधे ॥
ऐसेशिवहिंनिरखिअसुरारी । कियप्रणाममहिपाणिपसारी॥३९॥देवनयुतविरंचिकहँदेखी।अतिआनंदहियेमहँलेखी॥
दोहा–सुरासुरनतेजासुपद, वंदितहैंवसुयाम । सोहरसज्जनरीतिगुणि, उठिकैकियोप्रणाम ॥
जिमिवामनकश्यपकहँवंदे।तिमिस्वयंभुकहँशंभुअनंदे४०औरहुसबविधिकहँशिरनाये।विबुधनयुतविनोदविधिपाये॥
तहँहँसिकैशशिशेखरपाहीं । कह्योविरंचिवचनमुदमाहीं ॥

ब्रह्मोवाच ।

यदपिआपुमोहिंकियोप्रणामा।तदपिअहौतुमप्रभुत्रयधामा॥प्रकृतिपुरुषकेईशमहेशा।ब्रह्मरूपतुमअहौमहेशा॥४२॥
युगउत्पतिपालनसंहारा । तुवकरधारकसुरधुनिधारा । जगविस्तारिहरहुशशिभाला । करैहैमकरीजिमिजाला ॥
शास्त्रमार्गसबमखफैलाये । धर्महेतुवर्णाश्रमजाये ॥
दोहा–जोमर्यादाधारिद्विज, सदाचलहिंसतपंथ ॥ ४४ ॥ देहुभद्रसुकृतीजनन, मेटहुसकलकुपंथ ॥
नरकवासपापिनकहँदेहू । दीननपैअतिकरहुसनेहू ॥ ४५ ॥ जेतुम्हरेपदकोअवराधै । तिनकोकवहुँकोपनहिंबाधै ॥
तौतुमकोजेकहहिंप्रकोपी । तेजनअवशिनिरयकेचोपी॥४६॥जेजनदेखिपरायविभूती । जरतरहैंनचलतिकरतूती॥

कहहिंवचनकटुविशिखसमाना ।भेदहिंमर्मदेहिंदुखनाना॥तेजननिजकर्महिंगेमारे।हनहिंननिनकहँसरिसतुम्हारे॥४७॥
हरिमायामोहितअभिमानी ।संतविरोधकरहिंजेप्रानी॥तिनपरसंनकरहिंनहिंरोषा।मानहिंनिजकर्महिकरदोषा॥४८॥

दोहा–हरिमायादुस्तरअतिहि, लगनसोतुमकाहिं ॥ हरिदासनवर्गविश्वगुरु, दायासिंधुसदाहिं ॥

तिनपरशंकरकीन्हेदाया । जिनकोमोहकियोहरिमाया ॥४९॥तुमहिंनदियोदक्षमखभागा । तातेभेपूरणनहिंयागा ॥
भयोनाशतुम्हरेगणहाथा । ताहिकृपाकरिकरहुसनाथा॥५०॥जियैदक्षभगदृगनिजपावें।भृगुकेमुखमूछहुजमिआवें॥
पूपालहैदंतमुखपूरण ॥ ५१ ॥ अंगलहेंसुरगजनभचूरण ॥ लगिपपाणजिनाद्विजशिरफूटे । तिनकहांहिंपूर्वजसजूटे ॥
आपकृपासिगरोयहहोवे । दक्षनफिरिऐसोदुखजोवे॥ ५२ ॥ जोकछुबच्योयज्ञकरशेशा । सोतुम्हारहैभागमहेशा ॥

दोहा–सबयज्ञनकोभागजब, लहोआपत्रिपुरारि । तबसंपूरणहोइमख, ऐसोविनतिहमारि ॥ ५३ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेषष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–यहिविधिजबश्रीशंभुसों, कह्योस्वयंभुबखानि । तबहिंहँसतहरकहतभे, सुनहुकमंडलुपानि ॥ १ ॥

महादेवउवाच ।

नहिंअज्ञानिनकोअपकारा । हमकबहूँमुखकरहिंउचारा॥नहिंमनमेंकबहूँगुणिलेहीं।उचितदंडभरितिनकहँदेहीं॥२॥
दक्षशीशजरिगोहैजोई । आननतासुछागकोहोई ॥ भगनिजभागमित्रदृगदेखी । औरनकछुलखिपरीविशेषी ॥ ३॥
देवराजनिजदंतहिपैहें । पूषायजमानहिंमुखखैहैं ॥ अथवापीठिभोजनकरिहै । पैनिजवदनरदननहिंधरिहै ॥
देवजोमोहिंदियजूंठोभागा । कटेअंगतेरहहिंअभागा ॥ ४ ॥ औरहुरहेजेभूसुरनाहू । तेअश्विनिकुमारकेबाहू ॥

दोहा–बाहुमानह्वैहैसही, पूपाकरकरवान । मेषपूंछकीमूछमुख, पैहैंभृगुहुनिदान ॥ ५ ॥

मैत्रेयउवाच ।

सुनिशंकरकीऐसीवानी । सुरमुनिसबैपरमसुखमानी॥हरकहँबहुविधिलगेसराहन ।लेहतोपसबसाहितउछाहन ॥ ६ ॥
पुनिशंकरसोंगिराउचारी।आपुवहांचलियेत्रिपुरारी ॥असकहिशिवकहँसंगलेवाई । यज्ञभूमिविधिगेसुखपाई ॥ ७ ॥
सबहिकियोशिववचनप्रमाना।दक्षजियतअसरच्योविधाना॥छागशीशताकेधरसाजी ॥८॥ देख्योताहिशंभुह्वैराजी ॥
उठ्योदक्षसोवतअसजाग्यो।शंभुहिनिरखिअतिहिअनुराग्यो॥९॥रह्योजोप्रथमशंभुविरोधी ।भयोअकलमखआशुअक्रोधी

दोहा–शरदचंद्रसोंअमलभो ॥ १० ॥ अस्तुतिकोमनकीन । सतीमरणशिववैरगुणि, बोलिनसक्योप्रवीन
जसतसकैपुनिरोकिमन, विकलशंभुअनुराग । अस्तुतिलाग्योकरनतहँ, दक्षदक्षबड़भाग ॥ १२ ॥

दक्षउवाच ।

यदपिवैरतुमसोंमैंकीन्हयो । तद्यपिमोहिंसनाथकरिदीन्हयो ॥ नामहुँकेजेब्राह्मणहोही । तिनहूँकेतुमहौबहुछोही ॥
तौपुनिकहाजेतपव्रतधारी । करहुकृपातिनपरत्रिपुरारी॥१३॥तुमपूरबचतुराननह्वैकै । कृपादीठिवेदनकहँज्वैकै ॥
तबव्रतधारकद्विजउपजायो । तिनद्वाराश्रुतिपंथचलायो॥तिनकोरक्षणकरहुसदाहीं।जैसेपशुपालकपशुकाहीं॥१४॥
तुमकोमैंसुरसभामझारी । दियोवचनकटुसायकमारी ॥ तेहिअपराधनिरयहमजाते । कियोकृपाकरिरक्षणताते ॥
कोकृपालुतुवसरिसदूसरो । मोहिंभृगुसमनहिंअधमतीसरो ॥ १५ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–यहिविधिनिजअपराधतहँ, हरसोंक्षमाकराय । उपाध्यायऋत्विजसहित, मखअरंभकियचाय ॥ १६ ॥
प्रेतपरसतेअशुचिगुणि, लैपात्रहित्रिकपाल । शुद्धहेतुमंत्रनसहित, होमकियोतेहिकाल ॥ १७ ॥

हव्यलियेभृगुतेसहित, दक्षतहांहपान । शुद्धचित्तकरिकरतभो,श्रीयदुपतिकोध्यान ॥ १८ ॥

छंदमनोहरा—तहँध्यानहिधरतेअतिमुदकरतेदिशिद्युतिभरतेदुखदरतेभ्रमकोहरते ।
जेहिपदशिरधरतेअवगणजरतेभवनिधितरतेनहिंडरतेशोकहुटरते ॥
पुनिभवनहिंपरतेअधिकअमरतेकबहुँनमरतेकटिधरतेहरिपुरअरते ।
वसुभुजतेहिथरतेश्रीयदुवरतेप्रगटेतुरतेखगवरतेयुतश्रुतियरते ॥ १९ ॥
पटपीतललामातनुघनश्यामाकिंकिणिदामाकटिधामाअतिअभिरामा ।
अलकैंसुठिश्यामामनुअलिग्रामाकुंडलवामाश्रुतिठामाजनुझषकामा ॥
सोहतउरदामाबहुरविधामाक्रीटसुवामावसुयामासुखमाधामा ।
वपुमनहरवामाकटिअतिछामापूरणकामाश्रीधामाजनप्रदकामा ॥
इककरशरसाजैचक्रदराजैशारँगभ्राजैजेहिगाजैगाजिहुलाजै ।
अरिकरनिपराजैगदाविराजैचमरहुछाजैदरराजैजोरणबाजै ॥
संतनसुखकाजैनंदकराजैअरिनसमाजैलखिभ्राजैअसिशिरताजै ।
जेहिबलऋषिराजैकरहिंसुयाजैसोयदुराजैकरराजैराजिवराजै ॥ २० ॥
सोहतवनमालाचंदनभालादृगकछुलालासबकालाअतिकिरपाला ।
श्रीवत्सरशालावक्षविशालामणिछविजालारतिपालामोहकहाला ॥
दैत्यनकोकालाप्रभुततकालादीनदयालाशशिमालाविधिकोपाला ।
जेहिनामनिमालापरमकरालाहरतउतालाजगजालादेवकिलाला ॥
कोउशशिकरवारेचामरधारेछत्रसुधारेद्युतिवारेघनतनुकारे ।
कोउविजनउदारेवीजनहारेपरमसुखारेअनियारेरणनहिंहारे ॥
मारहुमदमारेतनुसुकुमारेतेजपसारेबलवारेवयकेवारे ।
कुमुदादिअपारेसुयशउचारेबुद्धिअगारेहरिप्यारेसँगपगुधारे ॥
उररमासुहाईक्षितिछविछाईछविछविदाईसुखदाईहरिमनभाई ।
विधिशिवसुरराईजेहिपदध्याईकीर्तिमहाईअनपाईसहजहिपाई ॥
चितकोमलताईप्रगटजनाईयशससुदाईअजमाईवेदनगाई ।
शारदसकुचाईसकीनगाईगुणबहुताईवरदाईत्रिभुवनमाई ॥
जेहिनामउचारीपरमदुखारीपरधनहारीछलकारीजनअपकारी ।
तेशठसंसारीसंश्रितजारीगेगिरिधारीपुरभारीयमसुखमारी ॥ २१ ॥ २२ ॥
तेहिदृगननिहारीवज्रहुधारीअरुसुखचारीत्रिपुरारीसबअसुरारी ।
अंजलिशिरधारीउठेसुखारीनतिविस्तारीमनहारीयशउच्चारी ॥ २३ ॥
जयआनँदकंदाहरभवफंदातेजअमंदास्वच्छंदाजयगोविंदा ।
वंदितपदवृंदाविबुधनवृंदावल्लभवृंदारदकुंदादृगअरविंदा ॥
उद्धरणकरिंदाहृदयबसिंदामुनिवृंदाजगखामिंदाआनँदकंदा ।
जययदुकुलचंदाअवधनरिंदाजयतिमुकुंदानँदनंदादशरथनंदा ॥ २४ ॥

दोहा—तहाँदक्षहरिकोनिरखि, सिंहासनबैठाय । सविधिकरतपूजनभयो, अतिशयप्रेमबढ़ाय ॥
यज्ञेश्वरगुरुगुरुनके, प्रभुहिंजोरियुगपानि । लग्योदक्षअस्तुतिकरन, धन्यभाग्यनिजमानि ॥२५॥

दक्षउवाच।

कवित्त-शुद्धज्ञानरूपआपइंद्रिनअधीननाहिं, एकतुमअभेनहिंमायामेंाहव्यापैहै।
आपहीस्वतंत्र परतंत्रसबआपहीके, लीलालखिलोनीजनजीवसमथापैहै॥
कहैरघुराजप्रेमरसगावरेकोजाके, बाढ़तरहतरोजरुचिरअमापैहै।
ताकोतीनौकालअतितीक्षणतरणिहूतें, तरणितनैकोतापतनकोनतापैहै॥
दोहा-पुनिऋत्विजअरुदेवद्विज, पृथकपृथककरजोरि। लगेकरनअस्तुतिसबै, वहुविधिहरिहिनिहोरि॥ २६॥

ऋत्विजऊचुः।

सवैया-शंकरशापबशैकुमतीहम, आपनिरंजनकोनहिंमानें। स्वर्गकेदायककर्मअधीनहैं, वासवपूजनयज्ञहिठानें॥
जाहिरहैंजगमेंरघुराज, नजानतहैंयहबातअजानें।तियमकेजकरेहैंजँजीरन, जेजनजानकीजाननजानें॥२७॥

सदस्यऊचुः।

कवित्त-उतपतिमारगयाकठिनसंसारसाँचो, कहूँनाअरामयामेंघोरकालव्यालहै।
अतिशैकरालनदीनालसुखदुखहीके, शोकदावाज्वालखलखलमृगमालहै॥
विषयमृगतृष्णावशसाथीअज्ञानलीन्हे, धरिभ्रमभारजनचलतउतालहै।
कामनाकलेशितह्वैचलिकैकुपंथनाथ, पैहैकबरावरेकोमंदिररसालहै॥ २८॥

रुद्रउवाच।

सवैया-शारदजाहिअकाममुनीश, सदाकरिपूजनशीशनवामैं। तेपदपंकजरावरेके, रघुराजभजैअरुभक्तकहामैं॥
जेतुवदासनमोहिंगनैंशठ, तेहठिघोरनिरैकहँजामैं। मोपररावरेदासदयाकरें, रोजहमारेयहीमनकामैं॥२९॥

भृगुरुवाच।

छप्पय-जिनमायाहरिलीनज्ञानब्रह्मादिककेरो। सबकेअंतर्यामिआपकहँकबहुँनहेरो॥
करुणासागरपुण्यसुयशअतिदीनदयाला। भवसागरकोपारकरहुप्रभुतुमहिंउताला॥
शरणागतपालनमेंप्रबलनिरबलकेबलतुमहिंभल।सबथलखलदलखलभलकरोअचलसचलसचलहिअचल३०॥

ब्रह्मउवाच।

छंदभुजंगप्रयात-नइंद्रीविषैआपकोरूपसाँचो। जोइंद्रीविषैदेखतोसोअसाँचो॥
विज्ञानार्थकेआपहीहोअधारा। नलागैतुम्हैंनाथमायाविकारा॥ ३१॥

इंद्रउवाच।

छंदत्रोटक-तुवरूपहरेभवभावनहै। मननयननमोदबढ़ावनहै॥युतआठभुजाछबिछावनहै।सुरशत्रुसमूहनशावनहै॥
द्रुतदासनकेहितधावनहै।वरआयुधयुक्तसोहावनहै।परपामरकोकरपावनहै।रघुराजहिदासबनावनहै ३२

पत्नीऊचुः।

छंदनाराच-रमेशआपअर्चनैरच्योसुदक्षयज्ञको। महेशकोपकैकियोविनाशमारिअज्ञको॥
चितैसरोजनाभकैकृपासँपूर्णकीजिये। पवित्रताविधानकैयशैअनूपलीजिये॥ ३३॥

ऋषयऊचुः-छंद भुजंगप्रयात।

कोईआपकामर्मजानैनहीं।करोकर्मसबैंनलिप्तैसही॥ भजैजोश्रियेदेवहूश्रीहितै। तुम्हैंसोभजैतूचहौनाचितै॥ ३४॥

सिद्धाऊचुः-छंद द्रुतविलंबित।

भवदवारिजरोमनवारनो। तवकथामृतसिंधुधसोयदा॥ चहतहैतहँतेनउवारनो। तृषिततूलरह्योजगमेंसदा॥

करतनासुधिसोभवभारिकी। पियतकीर्तिसुधासुमुरारिकी॥मगनब्रह्ममुदैजसजीवहै।लहततत्रतसैसुखसीवहै॥३५॥
(प्रसूतिउवाच) छंदवसंततिलका–श्रीनाथआगमभलोकियथज्ञमाहीं। शोभाबिनातुवरहीयहठौरनाहीं॥
जैसेविनाशिरशरीरनशोभमाना। आपैअहौसकलकर्महरेप्रधाना ॥ ३६ ॥

लोकपालाऊचुः।

छंदहरिगीतिका–इंद्रीविषैग्राहीनतेकाहमहिंप्रभुतुमलखिपरो। विज्ञानरूपीज्ञानगुणकोजगप्रकाशकसुखभरो॥
यहपंचभूतात्मकशरीरहिजीवसमछठयोलसो। यहअहैमायारावरीजामेंजगतअतिशयफँसो॥ ३७॥
(योगे.ऊ.)छंदशिखरणी–कहाकीन्हेज्ञानानमिलभगवानातुमसही। कियेनौधाभक्तीजगजननमुक्तिप्रदमही॥
चराचरकेस्वामीसुखदखगगामीयदुवरे। सदाप्रेमाधारेजनतुमहिंप्यारेसुखकरे॥ ३८॥
छंदत्रिभंगी-जगउत्पतिपालनअरुसंहारनदेवकिलालनजबकरहू।तबनिजमायाकरिभेदनकोभरिबहुरूपनधरिसंचरहू
देआतमज्ञानागुणभ्रमनानाहेभगवानादूरिकरो।हैतुमहिंप्रणामाबहुश्रीधामाजलप्रदकामाशोकहरो३९॥

वेदउवाच।

छंदबरवै–धर्मनिप्रगटौसतगुणधारोआप। प्राकृतगुणतेरहितैपरमप्रताप॥
आपतत्त्वकोहमअरुसिगरेदेव। जाननचाहैंपैनहिंपावहिंभेव॥
जयगोविंदमुरारीकमलाकंत। तुम्हरेचरणप्रणामहिकरहिंअनंत॥ ४०॥

अग्निरुवाच।

कुंडलिया–हरसबपापनकोहरे, आपप्रतापहिपाय। घृतयुतहविहमभक्षहीं, महिमावरणिनजाय॥
महिमावरणिनजायकरैकोउकोटिउपाई। विनारावरेभक्तिकियेजननहिंहर्षाई॥
खांईकलिकीकठिननवैनहिंकैसेहुबुधिवर। विनतुवपदरजपायजाहिशिरधारैंविधिहर॥ ४१॥

देवाऊचुः।

छंदझूलना–प्रभुकल्पकेअंतमहँविश्वनिजउदरभरिशेषकीसेजमधिसलिलसोये।
जेहिज्ञानसबसिद्धिनिजबुद्धिदेखतनितैऋद्धिअरुसिद्धिपरसिद्धिखोये॥
सोइकृपाकरिकृष्णयदुराजसबसुरनपैनयनपथआयअतिमुदहिमोये॥
सवपूर्णमनकामभोपूतयहधामभोआजुनिजभागहमधन्यजोये॥ ४२॥

गंधर्वाऊचुः।

छंदवामन–ब्रह्मेंद्रसुरसनकादि। शिवमुनिमरीचिहुआदि॥ हैंअंशवंशतुम्हार। तुवखेलधरसंसार॥
तुवचरणकरहिंप्रणाम। जेअखिललोकअराम॥ तेईलहैंसुखधाम। सबहोतपूरणकाम॥ ४३॥

विद्याधराऊचुः।

छंदमालिनी–जियनरतनुपाई। देतआपैभुलाई॥ जगअतिदुखदाई। तेगिरेआशुआई॥
नहिंलहतउधारा। वेसुनेमोदसारा॥ तुवचरितउदारा। देवकीकेकुमारा॥ ४४॥

ब्राह्मणाऊचुः।

छंदजयकरी–तुमहव्यहुतासहुमंत्रअहौजू। समिधौअरुदर्भहुयज्ञमहौजू॥
पशुआज्यस्वधाअरुसोमसहीजू। सदसौअरुऋत्विजहौतुमहींजू॥
शिखिहोत्रसुरौयजमानहुहौजू। अरुआपहियज्ञवितानहुहौजू॥ ४५॥
तुमहींधरिशूकररूपहरेजू। धरणीधरिडाढ़उधारकरेजू॥
नलिनीजिमिदंतगयंदधरैजू। नहिंनेकुपरिश्रमताहिपरैजू॥

श्रुतिमृगतियज्ञवगाहविभोजू । यशगावहिंयोगिनयूहप्रभोजू ॥ ४६ ॥
यकवारहुजेतुवनामलियेजू । मग्वविघ्नविनाशहिआशुकियेजू ॥
तुवदेखनकीअभिलापरहीजू । करिनाथकृपाकियपूरसहीजू ॥
हतकर्मसबैहमशोकभंगजू । तुमकोवहुवारप्रणामकरेजू ॥
तुमग्राहतगैयरवाग्लियेजू । तेहिकोपुनिपूरणधामदयेजू ॥ ४७ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–यहिविधिसिगरेदेवमुनि, हरिकीअस्तुतिकीन । दक्षअनंदितह्वैतहां, मखअरंभकरिदीन ॥ ४८ ॥
लैनिजभागतहाँभगवाना।कहचोदक्षसोंवचनप्रमाना॥भ.उ.जगकारणमोहिंलेहुविचारी।ममवपुजानहुविधित्रिपुरारी।
आत्मासाक्षीस्वयंप्रकाशा । मोतेउत्पतिपालननाशा ॥ ब्रह्मरूपधरिरचहुसदाहीं । विष्णुरूपपालहुजगकाहीं ॥
रुद्ररूपनाशहुसंसारा । तातेकरहुनभेदविचारा ॥ ५१ ॥ ज्ञानवंतजानहिंजेवेदा । तेकबहूँनहिंमानहिंभेदा ॥ ५२ ॥
जिमिप्राणीनिजअंगनकाहीं । मानतनिजऔरकेनाहीं ॥ यहिविधिसबभूतनकहँज्ञानी।मेरोरूपलेतमनमानी॥५३॥
दोहा–विधिहरिहरमहँभेदनहिं, देखतजोमतिवान । लहतशांतिसोदहतदुख, गहतमहतकल्यान ॥ ५४ ॥

मैत्रेयउवाच ।

यहिविधिदक्षसुन्योहरिबैना।मान्योअतिउरआनँदऐना॥पूजनकियोसविधिहरिकाहीं।यथायोगसबसुरनतहांहीं॥५५॥
शिवकोदियोतहाँमखभागा । यहिविधिकियोसमापतियागा॥निजनिजभागपायअसुरारी।भयेसकलमनमाहँसुखारी॥
पुनिअवभृथकीन्हचोअस्नाना।सादरदियोद्विजनबहुदाना॥५६॥दक्षहिधर्मबुद्धितहँदैकै।गेनिजनिजगृहसुरसुखलैकै॥
यहिविधिविदुरसतीतनुत्यागी।भैहिमवानसुताबड़भागी॥५८॥पुनिशिवकेसँगभयोविवाहा।पायोशंकरपरमउछाहा॥
दोहा–यहिविधिशंकरयज्ञयुत, कियोदक्षकोनास । जीवशिष्यउद्धववदन, मैंसुनिलह्योहुलास ॥ ६० ॥
यहपुनीतशिवचरितयश, आयुषवरधनहार । भावभक्तियुतसुनिभनत, तेहिअघनशतअपार ॥ ६१ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेसप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–नारदरिभुअरुअरुनयुत, सनकादिकअरुहंस । येगृहमेंनहिंवसतभे, तातेभयोनवंस ॥ १ ॥
विधिसुतजोअधरमबलवाना । ताकोवंशसुनहुमतिवाना ॥ मृषाभईअधरमकीनारी । जन्योसोइकसुतएककुमारी ॥
मायासुतादंभसुतनामा । तिनकोलियोनिऋतिसुतकामा ॥ २ ॥ मायादंभसँयोगहिपाई । एकपुत्रइककन्याजाई ॥
शठतादुहितालोभकुमारा ।तिनसँयोगपुनिभयोअपारा॥हिंसासुताक्रोधसुततिनके । जाहिरजगप्रभावहैजिनके ॥
ताकेसुतकलिनामकभयऊ । सुतादुरुक्तिनामअसठयऊ ३ भेदुरुक्तिकेपुत्रकुमारी । नाममृत्युभयजिनहिउचारी ॥
दोहा–भयअरुमृत्युसंयोगते, भैयातनाकुमारि । नरकनामकोपुत्रभो, जोगृहविमुखमुरारि ॥ ४ ॥
यहअधर्मकोवंशमहाना । मैंकीन्हचोसंक्षेपबखाना ॥ कहैसुनैजोयहित्रैवारा । होयपुण्यअघनशैअपारा ॥ ५ ॥
अबमैंमनुसुतवंशप्रचारौं । जाहिकृष्णकोअंशविचारौं ॥ जाकेकहेपुण्यअतिबाढ़ै । नशतआशुपातकअतिगाढ़ै ॥६॥
मनुसुतजेठोप्रियव्रतभयऊ । लघुउत्तानपादजगठयऊ॥पैदोउवासुदेवकेअंसा । पाल्योजगकहँलहतप्रशंसा ॥ ७ ॥
द्वैउत्तानपादकीरानी । सुरुचिसुनीतिनामछबिखानी ॥ जैसीसुरुचिभईपतिप्यारी । तैसीप्रियसुनीतिनहिंनारी ॥
दोहा–भोसुनीतिकेध्रुवसुवन, धराधर्मआधार । उत्तमसुतभोसुरुचिके, जोपितुकोअतिप्यार ॥ ८ ॥

नृपउत्तानपादयककाला।बैठिरहचोमधिसभाविशाला॥सुरुचिपुत्रउत्तमतहँआयो।जनकहिजोहिचरणशिरनायो॥
सादरभूपतिताहिबोलाई। अपनेअंकलियेबैठाई॥ उत्तमकोनृपलग्योखेलावन। चूमतमुखलाग्योबतरावन॥
ध्रुवजननीद्रुतध्रुवहिबोलाई॥ विविधवसनभूपणपहिराई। लघुकृपाणलघुचर्मबँधाई॥ कह्योवचनसुतसोंसुखछाई।
पुत्रजाहुपितुकेदरबारा। जहँबैठेसबवीरउदारा॥ ध्रुवसुनिकैजननीकीवानी। चटपटचल्योपरमसुखमानी॥
दोहा–गयोभूपदरबारमधि, ध्रुवबालकमतिधाम। जोहिजनककहँजोरिकर, पगपरिकियोप्रणाम॥
उत्तमकहँपितुअंकहिपाहीं। निरखिध्रुवबहुमोदितमनमाहीं॥ पितुअंकहिमहँबैठनहेतू। चल्योआपहूबुद्धिनिकेतू॥
बैठतध्रुवहिंअंकनिजजान्यो। नहिंउत्तानपादसुखमान्यो॥९॥बैठीरहीसुरुचितहँरानी।सवतिपुत्रध्रुवकहँअनुमानी॥
निजसुतसमध्रुवबैठतज्वैकै। गर्वभरीईर्षावशह्वैकै॥ राजहुकीरुखतहाँविचारी। सुरुचिगाजसमगिराउचारी॥१०॥

सुरुचिरुवाच।

सुनौबालध्रुववचनहमारे। बैठहुधरणीमहँसुखधारे॥ भूपअंकबैठनकेयोगू। तुम्हैंनकहतसकलबुधलोगू॥ ११॥
दोहा–भयेनमेरेगर्भते, अहौसुनीतिकुमार। मेरोसुतनृपअंकमें, बैठनयोगउदार॥
पुनिवहहैजेठोतुवभाई।उचितउहैताकीसमताई॥ अनुचितउचितनतुमकछुजानो।अपनेकोममसुतसममानो॥१२॥
जोममसुतसमबैठनचहहू। तौममवचनहृदयदृढ़गहहू॥ काननजायमहातपकरिकै।हरिअवराधनकरिसुखभरिकै॥
यहतनुतजिममगर्भहिऐहौ। तौनृपआसनबैठनपैहौ॥ १३॥

मैत्रेयउवाच।

ध्रुवहिविमातावचनकठोरा। लाग्योहृदयवज्रसमघोरा॥ डंडलगेजसकुपितभुजंगा। तैसहिफरकउठेसबअंगा॥
श्वासलेतमुखवारहिंबारा। रुदनकरतह्वैदुखितअपारा॥
दोहा–लौटिचल्योध्रुवतहँतुरत, दुखगुणिमरणसमान। मींजतदोउकरकरनसों, गोजननीअस्थान॥ १४॥
विदुरमानुजनिबालकदोपू। होतकठिनक्षत्रीकररोपू॥ देखिदशाभूपतिध्रुवकेरी। रह्योमौनआन्योनहिंटेरी॥
फरकतअधरलेतमुखश्वासू। युगलविलोचनढारतआँसू॥ ऐसोनिरखिजननिध्रुवकाहीं।लियबैठायअंकनिजमाहीं॥
पोंछिवदनपूछ्योकसरोवहु।कहहुसकलदुखअबनहिंगोवहु।यहिविधियद्यपिपूछ्योमाता।तदपिनवदतवदनकछुबाता
तबध्रुवसंगरहेजेवारे। तेसुनीतिसोंवचनउचारे॥ भूपअंकमहँबालकतेरो। बैठनहेतुजातभोनेरो॥
दोहा–तबवरज्योरानीसुरुचि, कहिकैवचनकठोर। भूपअंकनहिंयोगतुम, ध्रुवहौकासुतमोर॥ १५॥
सुतपैसुनतसवतिकीवानी।मानीमनहिंसुनीतिगलानी॥पुनितजिधीरजलहिसंतापा। कियसुनीतितहँविपुलविलापा॥
बाललताजिमिदहतिदमारी।तिमिसुनीतिशोकानलजारी॥सरसिजसुखीसवतिकेवैना।सुमिरिसुमिरिढारतिजलनैना॥
श्वासलेतिमुखवारहिबारा। शोकसिंधुकोलहतिनपारा॥ पुनिसुनीतिरानीधरिधीरा। बालकसोंकहवचनगँभीरा॥
परकृतदोषगुणहुजनिताता।होतसोइजोलिख्योविधाता॥देतजुहैदुखऔरनकाहीं।सोइभोगतदुखअवशिसदाहीं १७॥
दोहा–सुरुचिकहचोसतिवचनयह, तुमननृपासनयोग। ममअभागिनीगर्भवश, तुमहुँसहचोदुखभोग॥
तुमहिंजोनिजपयपानकरायो।तासुदोषविधिमोहिंदेखायो॥सकुचतभूपकहतनिजनारी।चेरिहुसमनहिंलियोविचारी॥
तातेसुरुचिजोगिराउचारी। सोइपुत्रहितलेहुविचारी॥ चहहुजोनृपआसनमहँबैठन। परमप्रमोदपयोनिधिपैठन॥
तौकहुँद्रुतकाननमहँजाई। ध्यावहुपदपंकजयदुराई॥१९॥यदुपतिपदध्यावतमुखचारी।लहचोब्रह्मपदआनँदभारी॥
योगीजनजाकोपदध्यावैं। निजनिजअखिलमनोरथपावैं॥महामाधुरीमूरतिजाकी।सदावाणिप्रभुदीनदयाकी॥२०॥
दोहा–तोरिपितामहमनुरहे, तेकरिकैबहुयाग। दैविप्रनकोदक्षिणा, करिहरिपदअनुराग॥
भोगिभोगसुरदुर्लभजोई। अंतकालगोहरिपुरसोई॥२१॥ हैयदुपतिसतिदीनदयाला। दासनदुखनाशततत्काला॥
योगीजनजेहिपदअरविंदा।कियेरहैंनिजमनहिंमिलिंदा॥सोइप्रभुकोअनन्यह्वैदासा।भजहुतातकरिदृढ़विश्वासा॥२२॥

कमलाकृपाकटाक्षहिहेतृ । करहिउपायअमितमुखकेतृ ॥ मोकमलाजेहिमाधवकाहीं । खोजतिलियेकमलकरमाहीं ॥
कमलनैनप्रभुजेहिबिनबालक । ढिनियनदिखिपरेदुखघालक ॥ २३ ॥

मैत्रेयउवाच ।

मनकामनापूरकीकरनी । जननिवानिसुनिकेसुखभरनी ॥

दोहा–धारिधीरमतिधीरध्रुव, जननीढिगतेआसु । उठ्योतुरंतहितमातुके, ध्यावनरमानिवासु ॥

वनैजायकीतजौंशरीरा । कीप्रसन्नकरिहौंयदुवीरा ॥ ढिनियवानतनृनियनहोई । ऐसोकरिविचारमनसोई ॥
छोंड़िसंगबालकखेलवारी ॥ निकस्योपितुपुरतेप्रणधारी ॥ चल्योअकेलहिकाननओरा ॥ नारायणपदप्रेमनथोरा ॥ २४ ॥
ध्रुवकेमनकीगतितहँजानी ॥ नारदमुनिअतिशयसुखमानी ॥ मिलेकुमारगहिमारगआई ॥ निरखिताहिविस्मितमुनिराई ॥
अवहरपाणिपरसिध्रुवशीशा । बोलेवचनविचारिमुनीशा ॥ २५ ॥

नारदउवाच ।

क्षत्रियजातिस्वभावकठोरा । सहहिनमानभंगलघुछोरा ॥

दोहा–वचनविमाताकेअसत, पवितेलगेकठोर । तेंकहिआयोसकलतजि, जननिजनकनिजठोर ॥ २६ ॥

मानवमानहुअरुअपमाना ॥ अबैनतुवमोहिउचितदखाना ॥ अबबालतैंखेलनजानै । जानैकहामानअपमानै ॥ २७ ॥
मोहमानअपमानहिकारन । होतसोमोहकर्मअनुसारन ॥ २८ ॥ भाग्यविवशजोईमिलिजावै । ताहीमेंसंतोषहिलावै ॥
दैवहाथहैसुखदुखप्यारे । तातेकरैनकवहुँखँभारे ॥ २९ ॥ अथबालहिजननीउपदेशा । ध्यावनचाहहुजौनरमेशा ॥
सोमनुजनदुर्लभभगवाना ॥ मिलतनकियेकलेशननाना ॥ ३० ॥ जन्मअनेकसमाधिलगावैं ॥ तदपिनमुनिश्रीपतिकहँपावैं
जापरकृपाकरैंयदुराई । ताहिमिलैंअपनेतेधाई ॥ ३१ ॥

दोहा–तातेतेरोवनगवन, मोकोवृथाजनाय । लौटिजाहुबालकघरै, यहहठवेगिविहाय ॥

ऐहैजवतीसरपनतेरो । तवतपकरिलीजियोघनेरो ॥ ३२ ॥ जाहिदैवसुखदुखजसदेई । ताहीमेंसँतोषकरलेई ॥
सोइभवसागरपावतपारा । यामें हैनाहिंऔरविचारा ॥ ३३ ॥ निजतेहोयअधिकगुणजाके । रहैविशेषिसंगबुधताके ॥
होयजोअपनेतेगुणहीना । करैकृपातापरपरवीना ॥ जेहिसमानगुणपरैंलखाई । तातेकरैविशेषिमिताई ॥
राखतजोअपनीअसरीती । ताकोहोतिकवहुँनहिंभीती ॥ असतोबालकमतोहमारा ॥ पुनितेराजसहायविचारा ॥ ३४ ॥

दोहा–सुनिनारदकेवचनअस, सोध्रुवध्रुवमतिधीर । जोरिपाणिशिरनायपग, बोल्योगिरागँभीर ॥

ध्रुवउवाच ।

जौनकृपाकरिमोहिंमुनिराई ॥ सकलशांतिविधिदियोबताई ॥ सोहमसेमतिमंदनकाहीं ॥ कठिनकरवसबभांतिसदाहीं ३५ ॥
अहौंक्षुद्रक्षत्रियमैंनाथा । अतिअविनीतनहैकोउसाथा ॥ सुरुचिवचनउरभयोदुशाला । उठतिरोमरोमनतेज्वाला ॥
क्षत्रिजातिकरकोपकठोरा । गहतनआपवचनमनमोरा ॥ ३६ ॥ त्रिभुवनमहँउत्तमपदजोई ॥ जाहिनपायसकतजनकोई ॥
पितापितामहजितेहमारे ॥ सपनेहुनहिंजेहिलोकसिधारे ॥ मैंभजिश्रीयदुपतिपदकंजन ॥ सोपदलेहौंकरिदुखभंजन ॥ ३७ ॥

दोहा–जेहिउपायतेतौनपद, म्वहिंसहजहिमिलिजाय । हेविरंचिनंदनसोई, दीजैआपवताय ॥

लैवीणाकरजगहितहेतू । गावतयशश्रीरमानिकेतू ॥ विचरहुनारदतुमचहुँओरा । जैसेरविप्रकाशसबठोरा ॥ ३८ ॥
ऐसीसुनिनारदध्रुववानी । मनमहँअतिशयआनँदमानी ॥ करिकैबालकपैअतिनेहू । बोलेहरतसकलसंदेहू ॥ ३९ ॥

नारदउवाच ।

साधुसाधुबालकमतिमाना । तैं तौभयोभक्तभगवाना ॥ जोतैंकृष्णभक्तिमनलायो । तौतोहिंजननीजौनबतायो ॥
सोइमारगमंगलप्रदतोरा । असबालकनिदेशहैमोरा ॥ करहुपुत्रयदुपतिपदप्रीती ॥ ह्वैहैतुमहिंकवहुँनहिंभीती ॥ ४० ॥

दोहा–धर्मअर्थअरुकामहू, मोक्षपदारथचारि । इनकोजोचाहैपुरुष, तौपदभजैमुरारि ॥ ४१ ॥

तानेसुनहुसत्यध्रुवप्यारे । अबउपायहितकहौंतुम्हारे ॥ श्रीयमुनातटपरमसुहावन । तहाँअहैमधुवनअतिपावन ॥
करैंसदानहँवासमुरारी । असभापतहैंवेदहुचारी ॥ तहाँजाहुआसुहितुमताता । कालिंदीजलअघहरख्याता ॥४२॥
यमुनामहँत्रयकालनहाई । नित्यकृत्यकरिअतिसुखछाई॥बैठहुपद्मासनहिलगाई ॥ ४३ ॥ प्राणायामकरहुमनलाई ॥
प्राणऔरइन्द्रियमनजेते। करहुविमलक्रमक्रमतुमतेते॥तबकरिकैअपनोमनधीरे।ध्यानकरहुयहिविधियदुवीरे ॥४४॥
दोहा--सुंदरभ्रुकुटीनासिका, सुंदरगोलकपोल । अतिप्रसन्नप्रभुकोवदन,काननकुंडललोल ॥
लसतनैननेसुकअरुणारे । दासनआशनपूरणहारे ॥ ४५ ॥ अतिरमणीयअंगसुकुमारे । अरुणअधरवयतरुणउदारे ॥
कृपासिंधुशरणागतपालक।निजजननिकटविकटअरिघालक ॥तनुघनश्याममंजुवनमाला।श्रीवत्सहुउरलसतविशाला
गदाचक्रदरकंजविराजे । प्रभुकेपीनचारिभुजभ्राजे ॥४७॥ भुजकेयूरकटककरमाहीं । मौलिमुकुटमयूपचहुँघाहीं ॥
कौस्तुभकंठपीतपटसोहै ॥ ४८ ॥ कटिकिंकिणिकलापमनमोहै।कंचननूपुरकंजचरणमें।अभैसंतजनजासुशरणमें ॥
दोहा--मननैननआनंदकर, सुंदरशांतस्वरूप ॥ ४९ ॥ शशिततिछविहरनखनतति, युतपदलसतअनूप ॥
योगिनहियसरोजसबकाला।विलसहिश्रीयदुनाथकृपाला ५०॥कृपादृष्टिकरिमृदुमुसक्याई।योगिनकोचितलेतचोराई
ऐसोश्रीयदुवरकोध्याना।निहचैमनकरिकरुमतिमाना॥५१॥जोएसोहरिकोवपुध्यावै।सोआशुहिमनकामहिपावै ५२
अबसुनुसुमतिसुनीतिदुलारे। सुखदमंत्रमैं देहुँउचारे ॥ जपेशांतनिशिमंत्रहिजोई । ताकोदेवदरशहठिहोई ॥ ५३ ॥
प्रणवप्रथमहैमंत्रहिमाहीं । पीछेनमोकहौतेहिपाहीं ॥ भापैपुनिभगवतेसुसंते । कहैवासुदेवायहिअंते ॥
दोहा--यहीमंत्रतेकृष्णको, पूजनकरैसुजान । देशकालकोदेखिकै, तैसोरचैविधान ॥ ५४ ॥
शुचिजलदलफलफूलहुलावै।प्रीतिसहितहरिकाहिचढ़ावै॥ पुनिकृष्णहिशुचिपटपहिरावै।चतुरचारुचंदनहिचढ़ावै ॥
नवकोमलदलतुलसीकेरे । हरिहिसमर्पैप्रेमघनेरे ॥ ५५ ॥ शालग्रामशिलामहँपूजै । रचिमूरतिविधानहैदूजै ॥
अथवाजलअथवाथलमाहीं।यदुपतिपूजनकरैसदाहीं ॥ शांतमौनचितअचलहिधरिकै।वनफलादिलघुभोजनकरिकै ॥
चरितअपारकृष्णकेगावै । हैअचिंत्यप्रभुअसचितलावै ॥ मोरमनोरथपूरणकरिहैं।करुणाकरकरुणाउरधरिहैं ॥५७॥
दोहा--करिहरिमहँविश्वासदृढ, ममपूर्वोक्तविधान । द्वादशाक्षरहिमंत्रते, पूजैश्रीभगवान ॥
अरपैअखिलकर्महरिकाहीं।जगकीआशतजैमनमाहीं॥५८॥ यहिविधिमनवचकर्महिकरिकै।जोपूजैहरिकहँमुदभरिकै
कपटहीनतेहिजनहिनिहारी । पूरहिआशअशुगिरिधारी।अर्थधर्ममोक्षहुअरुकामा।ताकोअवशिदेहिश्रीधामा॥६०॥
जोनहिंचहैपदारथचारी । तौनिजसेवनदेतमुरारी ॥ ६१ ॥

मैत्रेयउवाच ।

जबअसवचनकहेमुनिराई । तबध्रुवअतिशयआनँदपाई॥ मुनिकहँदैप्रदक्षिणाचारी । शिरनवाइसुमिरतगिरिधारी ॥
हरिपदअंकितधरणिजहाँहीं । गयोभूपसुतमधुवनकाहीं ॥ ६२ ॥
दोहा--जबमधुवनकहँध्रुवगयो, तबनारदमुनिराय । नृपउत्तानहिपादगृह, जातभयेअतुराय ॥
रहैभूपअंतःपुरमाहीं । नारदगवनेसपदितहाँहीं ॥ मुनिकहँआवतनृपतिनिहारयो । उठिसादरबहुविधिसतकारयो॥
पूजनकरिबैठेनृपजबहीं।नारदमुनिपूँछतभेतबहीं॥६३॥(ना.उ.)काहेभूपतिवदनमलाना।कौनशोकशोकितमतिवाना
कियैंभयोकारजकछुहानी । किधौंधर्मकीरीतिनशानी ॥ किधौंअर्थकोभोअवरोधू।किधौंकियोकाहूपरक्रोधू॥६४॥
नारदकेसुनिवचनअनूपा । बोल्योजोरियुगलकरभूपा ॥

राजोवाच ।

दोहा--हेमुनिमैंनारीविवश, अकरुनकछुनविचारि । तासुमातुअपमानकरि, ध्रुवसुतदियोनिकारि ॥ ६५ ॥
श्रमितक्षुधितसोवतवनमाहीं । वृकखैहैंवाहिबालककाहीं ॥ तहँकोऊनहिंरक्षणहारो । कौनउपायकरिहिममवारो ॥
सूखिगयोह्वैहैमुखकंजा । लहतहोयगोसुतदुखपुंजा ॥ ६६ ॥हायलखोमुनिममशठताई । नारिविवशमैंबुद्धिगमाई ॥
बैठतसुतनअंकबैठायों । मैंशठवैनहुतेनबुझायो ॥ ६७ ॥ सुनिमुनिनृपतिवचनदुखसाने । भनेभूपसोअतिहरषाने ॥

नारदउवाच ।

शोककरहुनहिंधरणिअधीशा।तुवसतकोरक्षकजगदीशा ॥ बालककोप्रभावनहिंजानो।तानअतिशयदुखउरआनो ॥
दोहा—जगमेंअनुपमयशभरे, नेगेबहुध्रुवलाल ॥ ६८ ॥ कठिनकर्मकरिहैजवन, करैंनलोकहुपाल ॥
थोरेकालहिमहँमहिपाला । द्रुतऐहैसुनबुद्धिविशाला ॥आपहुकोबहुसुयशबढ़ाई । ताकीकोउसमतानहिंपाई॥६९॥

मैत्रेयउवाच ।

सुनिदेवर्षिवचननृपगाई । शोचनलगेसुनहिदुखछाई॥राजविभूतिदियोविसराई ।शोचतसकलरैननिदिनजाई ॥ ७० ॥
उतेगयोध्रुवमधुवनकाहीं । वस्योनिशायमुनातटमाहीं ॥ भोरभयेशुचिह्वैमतिधीरा । वैठ्योनेमठानितजिपीरा ॥
जेहिविधिनारदकियउपदेशै । तेहिविधिपूजतभयोरमेशै॥७१॥तीनितीनिदिनमाहँउदारा ।वदरीकैथाकियोअहारा॥
दोहा—ऐसीविधिकरिकैतहाँ, दियइकमासविताय । यदुपतिपदपंकजयुगल, पूज्योप्रीतिबढ़ाय ॥ ७२ ॥
पुनिछठयेंछठयेंदिनमाहीं । भक्षणकरितृणपत्तनकाहीं॥यहिविधिदूजोमासवितायो।हरिपदपूजनप्रेमबढ़ायो ॥७३॥
पुनिनवयेंनवयेंनिशिवासर।पियोपाथपूज्योकरुणाकर॥यहिविधिवीत्योतिसरोमासा।ध्रुवकीन्हचोहरिहेतुप्रयासा ७४
पुनिजवचौथमासतहँलाग्यो । नृपकुमारतबअतिअनुराग्यो॥द्वादशद्वादशद्योसनवीते।कीन्हचोभोजनपवनसप्रीते॥
यहिविधिचौथमासनँघिगयऊ ७५ मासपांचयोंआवतभयऊ॥रोंकिश्वासइंद्रिनमनकाहीं।दियोलगायकृष्णपदमाहीं॥
रहचोएकपगसोध्रुवठाढ़ो । अचलसूखतरुसोंमुदबाढ़ो ॥ ७६ ॥
दोहा—केवलकृष्णस्वरूपको, देखतभयोकुमार । परचोनलखिताकेहगन, औरकछूसंसार ॥ ७७ ॥
जोअधारमहदादिककेरो । मायाईशवेदजेहिटेरो ॥ सोईपरब्रह्मयदुराई । तामेंजबध्रुवध्यानलगाई ॥ ७८ ॥
यकपदअँगुठादाविधरापै । खड़ोपाँचयेंमाससजापै ॥ ध्रुवपदकोधरणीलहिजोरा । धसकिगईआधीयकओरा ॥
जिमितरणीगैयरपदपाई । लहिभाराआशुहिनैजाई ॥७९॥ ध्रुवतपतेजकँपेत्रयलोका । देवनउरबाढ़चोअतिशोका॥
हरिकोउरधरिश्वासहिरोकी । ध्यानमगनहरिवपुपविलोकी ॥रुकीसकलदेवनकीश्वासू ।सबकेउरउपज्योउसवासू ॥
दोहा—लोकपालअतिशयदुखित, जाननताकोहेत । गिरेजायहरिशरणमें, बोलेवचनअचेत ॥ ८० ॥

देवाऊचुः ।

हेहरिहमजानतनहीं, कियाकौनधौंक्रोध । त्रिभुवनकोयकबारही, भयोश्वासअवरोध ॥
केशवकठिनकलेशते, दीजैवेगिछोड़ाय । शरणागतकेपालतुम, शरणपरेहमआय ॥ ८१ ॥
आरतवाणीसुरनकी, सुनिश्रीपतिमुसुक्याय । मधुरवचनबोलतभये, श्रवणसुधासमप्याय ।

श्रीभगवानुवाच ।

जाहुसबैनिजनिजसदन, मतिभयमानहुदेव । यहश्वासाअवरोधको, मैंसबजानहुँभेव ॥
सवैया—भूपउतानहिपादकोलाड़िलो,हैध्रुवनामप्रसिद्धधरामें । सोनिकस्योतुरतैपुरते,भिदवैनविमातववज्रसभामें ॥
मोपदपंकजपावनहेतुकियोतपघोरतपेतुमतामें। मैंमिलिहौंध्रुवैधायध्रुवैध्रुव,दैहौंसुनौध्रुवकोध्रुवधामें॥८२॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ चतुर्थस्कंधे अष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा—सुनिकैश्रीपतिकेवचन, सिगरोशोकविहाय । करिप्रणामगवनेभवन, अतिशयआनँदपाय ॥
मधुसूदनह्वैगरुडसवारे । दासलखनमधुवनपगुधारे ॥ आयेगरुडचढेप्रभुनेरे । ध्यानमगनध्रुवतिनहिंनहेरे ॥ १ ॥

तवध्यानरिकोवपुयदुराई।दामिनिसमद्युतदियोदुराई।।उब्योचौंकिचितयोचहुँओरा । लख्योनिकटवसुदेवकिशोरा ॥
रह्योध्यानधरिजसमनमें । तसहिरूपलख्योनयननमें ॥ २ ॥ हरिदर्शनलहिदुखभोदूरी । मनकीअभिलाषाभैपूरी ॥
तहँतनुमनकीसुरतिविसारी । गिरचोदंडसमधरणिमँझारी।।पुनिउठिभयोजोरिकरठाढ़ो।कहैकौनजसध्रुवमुदबाढ़ो॥
दोहा—मनप्रभुछविद्दगतेंपियत, मिलतोभुजनपसारि । मनुमुखतेचूमतवदन, ध्रुवअसपरचोनिहारि ॥ ३ ॥
अस्तुतिकरनचहतमुखमाहीं ।वालस्वभाववनतकछुनाहीं।।ध्रुवकीमनगतिजानिमुरारी । करिकैकृपादासपरभारी॥
पांचजन्यनिजशङ्खअमोला। दियछुआयप्रभुबालकपोला॥४॥परसतशंखहितेहिउरनाना।धसेवेदअरुशास्त्रपुराना॥
ध्रुवतहँपायज्ञानविज्ञाना। भक्तिभावयुतप्रेममहाना ॥ जोरिपाणिहरिआननदेखत । अपनेसमदूजोनहिंलेखत ॥
मंदमंदधरिकैध्रुवधीरा । कोमलपदरचिअर्थगँभीरा॥ अघहरणीकीरतिहैजाकी । अस्तुतिकरनलग्योध्रुवताकी॥५॥

ध्रुवउवाच ।

दोहा—अखिलशक्तिधारकरहे, मेरेहियमेंआय । मेरीवाणीकरिकृपा, सोवतदियोजगाय ॥
इंद्रीकरनचरणश्रवणादी । तिनकोचेतनकरहुअनादी॥पुरुषपुराणनाथश्रीधामा। आपपगनकोकरहुँप्रणामा ॥ ६ ॥
एकहितुममायाविस्तरिकै।रचिकैजगप्रवेशतेहिकरिकै।देखिपरहुवहुवपुभगवाना।विविधदारुजिमिपावकनाना॥७॥
करतारहुह्वैशरणतिहारे। ज्ञानशक्तिलहिजगविस्तारे॥कहचोनश्रमसोवतसमजाग्यो।जगतविकारताहिनहिंलाग्यो॥
ऐसेआपचरणभगवाना। कोकृतज्ञजोधरैनध्याना॥ ८ ॥ जननमरणकेनाशनहारे । दासनकेदुखदारनवारे ॥
दोहा—ऐसेतुमकोजेकुमति, भजैंविषयसुखहेत । तेजनुसुरद्रुमनिकटचलि, मांगिवराटकलेत ॥
शूकरकूकरयोनिहुनाना। होतविषयसुखमनुजसमाना॥मनुजजन्मलहितुमहिंनध्यायो।सोइशूकरकूकरकहवायो९॥
जोसुखआपकथामहँनाथा। सुनेआपदासनकीगाथा ॥ सोसुखब्रह्मज्ञानमहँनाहीं । तौसुरसुखकेहिलेखेमाहीं ॥
कठिनकालकरबालहिलागै।कटैस्वर्गसुखतरुजेहिमागै॥ १० ॥ भक्तिमानजेसाधुतुम्हारे।निर्मलमनदायकउरधारे॥
नाथदेहुमोहिंतिनकरसंगा।अघगणहरणहारजिमिगंगा ॥ यहभवसागरघोरअपारा । यहिविधिसहजहिलगिहौंपारा॥
दोहा—आपकथाआसवपियत, तासुनशांतनछाय । मैंफिरिहौंअतिशयअभय, दुखसुखसबविसराय ॥ ११ ॥
जेतुवपदपंकजसुरभि, घ्राणकरतलवलीन । तिनकोसँगजेकरहिंजन, तेईपरमप्रवीन ॥
तनुसुतसुहृददारगृहमाहीं । तेकवहूँसुधिराखतनाहीं॥१२॥ यहब्रह्मांडस्वरूपतुम्हारा । स्थूलरूपजेहिवेदउचारा॥
अहेचराचरकेरनिवासा । सतअरुअसतहुजासुप्रकासा ॥ आपरूपहमजानहिंसोई । ब्रह्मरूपपरतोनहिंजोई ॥
ब्रह्मरूपमहँहैवहुवादा । होतविवादहिकियेविषादा ॥१३॥ प्रलयसमयधरिउरजगकाहीं । सोवहुशेषसेजसुखमाहीं॥
प्रगटतनाथनाभिजलजाता । तातेप्रगटतसदाविधाता ॥ जाकेहैंफणवृहदहजारे । शेषसखातेनाथतिहारे ॥
दोहा—ऐसेयदुवरआपको, हमसवकरहिंप्रणाम । कोटिजन्मअघनशतद्रुत, लेततिहारोनाम ॥ १४ ॥
तुमहौनित्यमुक्तभगवाना । ज्ञानरूपहौशुद्धसुजाना ॥ आदिपुरुषहौअंतर्यामी । अविकारीहौत्रिभुवनस्वामी ॥
अहौजगतकेपालनकरता।जगतविलक्षणजनसुखभरता१५ विविधशक्तिहैयदपिविरुद्धा।रहहितदपितुवमहँअविरुद्धा
एकअनेकआदिजगकारा।आनँदरूपीसदाविकारा ॥सोप्रभुकेशरणागतहोहूं। तारहुअगनअघीसममोहूं ॥१६॥
केवलकेशवपदअरविंदा । भजहिंजेजनतेनहिंमतिमंदा॥ त्रिभुवनविभवभोगसवजेते । तिनहिंतुच्छलागतसवतेते॥
दोहा—पूरणफलतिनकोअहै, सेवततुवपदकंज । तदपिदीनममदासको, करहुनाथभवभंज ॥
जिमिजननीनिजवालके, गनततनकछुअपराध । तिमिक्षमियोअपराधमम, केशवकृपाअगाध ॥
छंदमनोहरा—जयजयअविकारीअधमउधारीजगविस्तारीभुजचारीपतित्रिपुरारी ।
जयजयकंसारीजयतिमुरारीजयतिखरारीयशकारीधरणीधारी ॥
जयअवधविहारीसदासुखारीखलदलहारीअतिभारीसायकमारी ।
मनसिजमदगारीमनहरनारीब्रजसंचारीगिरिधारीभवभयहारी ॥

वृंदावनवासीनित्यविलासीगोचकगसीरुचिगसीदानवनासी ।
घटघटकेवासीजगनप्रकासीरमानिवासीभवफांसीनाशकभासी ॥
तुवपदसमकाशीगतिप्रदस्वामीदासनआसीअनयासीपूरणआसी ।
कीरतिशशिभासीजन्हुसुतासीश्रवणसुधासीहैजासीमुक्तिहुदासी ॥
जयमीनस्वरूपारक्षकभूपाकमठअनूपाविबुधनेरमंदरगहिधेरे ।
जययज्ञवराहासहितउछाहादानवनाहाघातकरेअवनीउधेरे ॥
जयनरहरिघोराकृतवहुशोराअरिवरजोरानखनिदरेसुरत्रासहरे ।
जयजयवटुवामनपरमसोहावनवलियशछावनपगपसरेब्रह्मांडभरे ॥
जयजयभृगुनंदनभृगुकुलचंदनक्षत्रिनवृंदनसंहारेयकइसवारे ।
जयरघुकुलमंडनहरधनुखंडनखलदलदंडनधनुधारेद्विजमदगारे ॥
जयजनकललीशाअवधअधीशाजयजगदीशाप्रणधारेवनपगुधारे ।
मदहरनजयंताजयखरहंतासुखकरसंतामृगमारेखगउद्धारे ॥
जयदलनकवंधूशीननवंधूधृतधनुकंधूअनियारेशवरीप्यारे ।
जयमित्रकपिंदावालिनिकंदावासिगिरिंदाकपिद्वारेलंकाजारे ॥
जयउदधिमँझारीसेतुहिकारीपादपधारीयुतवारेदशशिरमारे ।
जयसियासमेतूरघुकुलकेतूआयनिकेतूसुखसारेजनाविस्तारे ॥
जयदेवकिनंदनजयनँदनंदनशकटनिकंदनककमारीअघसंहारी ।
जयकालियदमनंराधारमनंब्रजदुखशमनंगिरिधारीरक्षणकारी ॥
वृंदावनवासीरासविलासीहियोहुलासीब्रजनारीमंडलधारी ।
कटिपीतदुकूलातियअनुकूलायमुनाकूलासंचारीसुरमनहारी ॥
जयकेशिविनाशीमधुपुरवासीआनँदराशीधनुधर्त्ताकुवरीभर्त्ता ॥
जयगैयरघातीमल्लजमातीआशुनिपातीअघकर्त्ताकंसहिहर्त्ता ।
पितुमातुदुखारीमनहिविचारीभयेमुरारीसुखभर्त्तादुखउद्धर्त्ता ॥
सांदीपिनिगेहूसहितसनेहूशास्त्रअछेहूसंधर्त्तासुतआहर्त्ता ।
वसुदेवदुलारेजराकुमारेदलसंहारेजैचाहीयमनहिदाही ॥
यदुनगरविहारीयदुकुलभारीहैसुखकारीसउछाहीरुक्मिणिव्याही ।
मन्मथसुतजायेमणिद्रुतल्यायेदुहितनपायेनरनाहीभौमहिगाही ॥
वलिसुतभुजभंज्योनृपमनरंज्योपौड्रकगंज्योरणपाहीचक्रहिमाही ॥
मुनिपतिकहँमायाविभभवदेखायापुनिहतवायाभीमकरैमगदेशवरै ।
पुनिधर्मभुवालैयागविशालैहनिशिशुपालैअघनिकरैदियमोदघरै ॥
नृपशाल्वहिमारयोविदुरथदारयोआशुहिटारयोभूमिभरैनहिशस्त्रकरै ।
हेजगतपवित्राब्राह्मणमित्राचरितविचित्रासरिसनरैजगकहिउधरै ॥
कुरुक्षेत्रहिआईश्रीयदुराईआनँददाईभेवासिकैप्रीतिहिफँसिकै ।
गुणिकैनिजदासूनृपवहुलासूदियोहुलासूपरधसिकैहरयोहँसिकै ॥
हरिसंकटटारोपांडुकुमारोकीमदगारोरथलसिकैआयुधकसिकै ।
पुनिविविधविहाराकियोविचारालैसँगदारादुखनशिकैरतिरसचसिकै ॥

हेदेवननाथातुवयशगाथामुनिश्रुतिसाथागावतहैसुखछावतहै ।
तुवचरणकृपालाविधिविधुभालानेहविशालाल्यावतहैमुदपावतहै ॥
तुवपदजलगंगातरलतरंगाअघनिअभंगालावतहैजोइन्हावतहै ।
तुवपदअरविंदाकरमकरंदामुनिअलिवृंदाभावतहैयशछावतहै ॥
जयजयबलरामाजयबलधामातुवव्रजठामावत्सहन्योलछुकोपसन्यो ।
जयहननप्रलंबावपुजेहिलंबादुष्पकदंबाजोनतन्योसुरकुछनगन्यो ॥
रासभअतिभारीतेहिहलधारीदियोविदारीजौनखनोवनतालघनो ।
पुनिकंससभामाधिमुष्टिककोवधिकंकादिकवधिपरिखवनोकियद्रुतनिधनो ॥
जयरेवतिरमनंद्विविदहिदमनंपुनिब्रजगमनंसहुलासैहेतहिरासै ।
कृतवारुणिपानंकरिवनजानंकियअह्वानंनिजपासैगोपिनआसै ॥
जयआनँदअयनंघूमतनयनंअहिकृतशयनंसविलौसउरअतिश्वासै ।
कुंडलइककरनंखसतअभरनंकुंजविहरनंकृतहासैशशिसमभासै ॥
जययमुनाऽहरनंकुरुपुरदरनंजगयशभरनंसितवरनंजनकृतशरनं ।
बल्वलंजियहरनंमुनिमुदकरनंबहुखलछरनंहलधरनंपंकजकरनं ॥
अधमनउद्धरनंधरणीधरनंप्रेमहिढरनंनिजनरनंभ्रमनिस्तरनं ।
जयधर्माचरनंनितअनुशरनंजननहुमरनंजनटरनंशिरसैकरनं ॥
कलियुगअतिघोराधर्मनिचोरासत्पथफोरासंतापीअतिशयपापी ।
वसुदेवकुमारापरमउदारालियअवतारापरतापीप्रभुपरतापी ॥
जेहिनामकलंकीपैनकलंकीपरमअशंकीमुनिजापीमहिमहथापी ।
कियपापिननाशाधर्मप्रकाशाजगचहुँआशाजयव्यापीमधुरालापी ॥
जयबहुवपुनामंजयबहुधामंजयगुणग्रामंअभिरामंजनप्रदकामं ।
जयजयश्रीरामंजयघनश्यामंजयश्रीधामंकृतछामंद्विजदुतिकामं ॥
जनहितव्यायामंकृतवसुयामंरूपललामंवरधामंपतिरिपुकामं ।
दासनगतिदामंबँधेप्रकामंआपुमुदामंसबठामंप्रियनिःकामं ॥ १७ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–यहिविधिजबअस्तुतिकियो,बालकअतिमतिमान । तबसराहिध्रुवदासको,बोलेश्रीभगवान ॥ १८ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

सुनउत्तानपादकेबालक । तैंप्रगटेसिगरोजगपालक ॥ मनकामनातोरिमैंजान्यो । जाकेहेतुमहातपठान्यो ॥
यद्यपिदुर्लभहैसवकाहीं।तदपितोहिदैहौंसुखमाहीं॥१९॥अबलौंकोउनहिंजेहिअस्थाना।कियोनिवासप्रकाशमहाना॥
जाकोअचलवासकहवेदा । हैनहिंजननमरणकरखेदा ॥ सोइथलनिवासतोहिंदेहौं । प्रेमसुधानिजनितैपियैहौं ॥
ग्रहनक्षत्रऔरसबतारा । अहैजोचक्रनामशिशुमारा ॥ तासुपुच्छतेरेकररैहै । चक्रअधारतुहींहठिह्वैहै ॥
दोहा–गृहनक्षत्रतारासबै, दक्षिणदैध्रुवताहि । फिरिहैंसकलअकाशमें, निजअवलंबनजाहि ॥ २० ॥
जैसेमेढीचक्रहिमाहीं । फिरतचहूँदिशिगोगणजाहीं ॥ सबकेऊपरअहैसोलोका । रहिहौतहँतुमनितहिअशोका ॥
धर्मअगिनिकश्यपकविमुनिगन।दैहैंतोहिंप्रदक्षिणसुखसन॥२१॥अबैजाहुपितुनगरकुमारा।देहुधरणिकहँधर्मअधारा।
तुमहिंराज्यदैपितुवनजैहैं । करितपकठिनधाममममऐहैं ॥ हेध्रुवछत्तिसवर्षहजारा । करहुराज्यतुमविभवअपारा ॥
इन्द्रियजितह्वैहौमहराजा । पलिहौभाइनसहितसमाजा ॥२२॥ जोतुवउत्तमजेठोभ्राता । जैहैमृगयाहितवनताता ॥

दोहा-तेहिकाननमेंउत्तमहि, यक्षडारिहैमारि । सुनखोजतनाकी जननि,जरिहैजायदवारि ॥ २३ ॥
महाचक्रवर्तीतेंह्वैहै । मखकरिद्विजनदक्षिणादैहै ॥ शक्रहुतेंलहिअधिकविभूती । करिजगमें अनुपमकरतूती ॥
अंतकालमोहिंसुमिरणकरिहै॥२४॥सुनध्रुवतेंध्रुवधामसिधरिहै।सकललोकलोकपजेहिधामै।करहिंप्रातउठिकैपरणामै
गयेजहाँफिरिअवनिनआवत । तहँतेंरहिहैममयशगावत ॥ सुरहुअसुरऋषिमुनिनरनाना । सबतेंह्वैहैतुहींप्रधाना ॥
रहिहैअचलनरेशकुमारे । गृहतारगणगातिनिजकरधारे ॥ २५ ॥

मैत्रेयउवाच ।

यहिविधिकहिध्रुवतेयदुराई । ध्रुवकरपंकजपूजनपाई ॥
दोहा-ध्रुवकेदेखततहँतुरत, गरुड़चढ़ेभगवान । रमापारिपदसहितप्रभु, निजपुरकियोपयान ॥ २६ ॥
ध्रुवअभिलाषपूरनिजजानी।हरिपदसेवनफलअनुमानी॥श्रीपतिदरशवियोगविचारी।चल्योनगरकहँपरमदुखारी २७
तहँपुनिकह्योविदुरकरजोरी । सुनहुमुनीशविनययहमोरी ॥

विदुरउवाच ।

जोदुर्लभसकामजनकाहीं।सोहरिपदइकजनमहिमाहीं॥हरिपदसेवनकरितेहिपाई।कतप्रसन्ननहिंभोमुनिराई॥ २८॥
सुनिक्षत्ताकेवचनसुहाये।बोलेमित्रासुतसुखछाये॥ (मै.उ.) वचनविमातवज्रसमलागे । तातेंध्रुवअतिकोपहिपागे ॥
पायरमापतिमुक्तिनमागे । राजकरनकोतहँअनुरागे ॥
दोहा--राज्यलह्योतातेंप्रथम, करिसुरदुर्लभभोग । अंतसमैहरिधामको, जैहैतजिसबशोग ॥
प्रथमहिवासविकुंठनपायो।तातेध्रुवमनमेंदुखछायो॥ चल्योनगरकहँध्रुवपछितातो।वारहिवारयदतअसबाता ॥२९॥

ध्रुवउवाच ।

जन्मअनेकसमाधिनकरिकै।सनकादिकजेहिपदचितधरिकै ॥जानहिंकबहुँपरमपदजाको।सोइत्रिभुवनपतिनाथरमाको
पटमासहिंभरिमैंतपकीन्ह्यो।करुणानिधिदर्शनमोहिंदीन्ह्यो ॥ ऐसेकरुणानिधिकहँपाई।माँगिलियेनहिंमुक्तिसोहाई ॥
हायकोपवशभयोअभागी । ममशठतामोकहँनहिंत्यागी ॥ करनहारजेभवनिधिपारा।ताकोपायरह्योसंसारा ॥ ३१॥
दोहा-देवसबैकरिदेतभे, मेरीमतिकोभंग । जोहरिसोंयाँचतभयो, दुखप्रदराज्यप्रसंग ॥
हायजौनभाष्योमुनिराई । सोउनमान्योबुद्धिगमाई॥३२॥अहैनकोउजगमोरविरोधी।वृथाभयोभ्रातापरक्रोधी॥३३॥
स्वप्नसरिसयहजगसुखसाँचो।वृथाकुमतिमैंहरिसोंयाँचो ॥ भयोछिन्नजिमिआयुर्दाई।करैवैद्यतेहिवृथाउपाई ॥ ३४ ॥
पायप्रगटवसुदेवकुमारा । हायहायमाँग्योसंसारा ॥ निजसमकरनहारयदुराई । तिनसोंमाँग्योलोकबड़ाई ॥
यथाचक्रवर्तीढिगजाई । करिसेवापरसन्नकराई ॥ माँगैतृणजोविनयसुनाई । ताकीप्रगटसत्यशठताई ॥ ३५ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा--ध्रुवकोपछितैबोविदुर, उचितहिपरयोनिहारि । तजिहरित्रिभुवननहिंचहत, तुमसमदाससुरारि ॥ ३६ ॥
नगरनगीचजबैध्रुवआयो । नृपहिदूतयकखबरिजनायो ॥ आपपुत्रलघुजोकाढिगयऊ । नाथफेरिसोआवतभयऊ ॥
भूपसुनतविश्वासनमान्यो।मृतकनआवतअसअनुमान्यो।पुनिसुधिकरिनारदकीवानी।नृपसुतआगमसतिजियजानी।
सुतआगमसुनिनृपसुखभीन्यो।दूतहिद्रुतहिमालमणिदीन्यो॥३८॥नाधिस्यंदनतरलतुरंगा।चामीकरभूषितसबअंगा।
चढिउत्तानपादमहराजा । लैब्राह्मणअरुवृद्धसमाजा॥सचिवसखासुहृदहुसरदारा । लैसँगपुरतेतुरतसिधारा ॥ ३९ ॥
दोहा--शंखदुंदुभीवेणुडफ, बाजेबजेअपार । पढतवेदबहुविप्रगण, आगेचलेउदार ॥ १ ॥
कनककलशशिरधरिपुरनारी । दधितंदुलदुर्वाभरिथारी॥चलींकरतकलमंगलगाना । साजिसाजिशृंगारननाना४०॥
सुरुचिसुनीतिउभयमहरानी। भूषणवसनपहिरिछविखानी॥चढिशिबिकनमहँअतिहर्षानी।चलींलेनध्रुवकोअगवानी॥
चल्योसंगउत्तमहुकुमारा । अनुजलखनआनंदअपारा॥ यहिविधिकह्योनगरतेराजा । सुतभागवतभेटकेकाजा४१॥

नगरनिकटशीतलअमराई । तहँजवगयेसदलनृपराई॥ तवध्रुवकहँआवतनृपदेख्यो । सुतकोपुनर्जन्मचितलेख्यो ॥
दोहा–प्रेमविकलरथतेंउतरि, आशुभूपतहँधाय ॥४२ ॥ अतिउत्कंठितभुजनभरि, लीन्हचोध्रुवहिउठाय ॥
श्रीपतिचरणपरसलहिजासू । जरेअखिलअघविमलविकासू॥४३॥ऐसेसुतहिअंकबैठाई। निजनयननीरहिनहवाई॥
सूँघतशीशहिबारहिंबारा।गुण्योंमनोरथपूरहमारा॥४४पुनिपितुपदप्रणामध्रुवकीन्हचो । आशिर्वादहर्षिसोदीन्हचो ॥
पुनिकरिमातुननिकटपयाना।कियप्रणामभागवतप्रधाना४५परोचरण सुतसुरुचिनिहारी।लियोउठायभयोसुखभारी।
गदगदगिरामिलतवहुवारा ।कहचोजियहुवहुकालकुमारा॥४६॥विदुरमित्रतागुणनिनिहारी।जोपैहोयप्रसन्नमुरारी॥
दोहा–तेहिअपनेतेजीवसव, निरखतकरहिंप्रणाम । जिमिअपनेतेजातजल, होतनीचजोठाम ॥ ४७ ॥
पुनिउत्तमअरुध्रुवदोउभ्राता । मिलेपरस्परसुखनसमाता । दोहुनअँगपुलकावलिछाई ॥ दोउअनदजलदृगनवहाई॥
घरीएकभ्रातामिलिजूटे।जननछोडायहुपरनहिंछूटे॥४८॥पुनिसुनीतिजननीध्रुवकेरी।प्राणहुतेप्रियनिजसुतहेरी ॥
लियोहृदयमहँललकिलगाई ।दुसहविपादविशेपिविहाई ॥४९॥ श्रवीपयोधरतेपयधारा। तैसहिनयननीरअपारा॥
सींचतपयधारनध्रुवकाहीं । वीरजननिकहँजोहिततहाँहीं॥५०॥लगेसुनीतिसराहनलोगू।लहचोफेरियहसुतसुखभोगू॥
दोहा–निकरिगयोजोनगरते, पांचहिवर्षकुमार । ह्वैआयोलहिहरिकृपा, धराधर्मआधार ॥ ५१ ॥
ध्रुवतैंसातिहरिपदसेवकाई । भक्तीकरीअतिप्रीतिबढाई॥जासुध्यानकरिकैमतिधीरा।जीततअजयजगतकीपीरा॥५२॥
यहिविधिजनकहलोगसराहैं। निरखतध्रुवसुखसहितउछाहैं॥तहँनृपध्रुवअरुउत्तमकाहीं।लियचढ़ायइककरिनीमाहीं॥
श्रवणकरतविरदावलिराजा । चल्योनगरकहँसहितसमाजा ॥ तहँबाजेबजवावतभूपा । देतदानदीननअनुरूपा ॥
कीन्हचोनगरप्रवेशनरेशा । निरखतसुखमासकलप्रदेशा॥५३॥ठोरनठोरनमरकततोरन । भरेचारुताकेचितचोरन॥
दोहा–लघुपूगनअरुरंभके, खंभद्वारप्रतिद्वार ॥५४ ॥ नवरसालपल्लवनके, बांधेवंदनवार ॥
मुक्तझालरैंझलकहिंनाना । विभावंतबहुतनेविताना ॥थलथलमुक्तमालकेसाजे । कनककलशयुतदीपविराजे॥५५॥
शहरपनाहनगरदरवाजे । चामीकरकेचारुविराजे ॥ अतिउतंगमंदिरचहुँवाहीं । निरखतमंदरशृंगलजाहीं ॥
रचितरतनतेकनकअगारे । सकलसाजतेसकलसँवारे॥५६॥चंदनचरचितगलीबजारा।उडतसुरभिचहुँओरअपारा॥
लाजाअक्षतअरुफलफूला।लियेखडींपुरनारिअतूला॥५७॥नगरमध्यजहँजहँध्रुवआवैं। तहँतियलाजसुमनझरिलावैं॥
दोहा–दधिदुर्वासरसोंअछत, फूलहुफलभरिथार ॥ ५८ ॥ धायधायपुरनारिसब, ध्रुवैमिलैंयकवार ॥
देहिंविविधविधिआशिर्वादा।पावैंध्रुवजातिशयजहलादा॥यहिविधिसुनतमनोहरवानी।पिताभवनगेध्रुवसुखमानी ५९
तेहिउत्तममणिमंदिरमाहीं । वसतभयोध्रुवमुदिततहाँहीं॥तहँउत्तानपादनृपकाहीं। ध्रुवहिखेलावतनिशिदिनजाहीं ॥
वस्योसुवनयुततहँमहराजा॥जिमिकश्यपसंयुतसुरराजा॥६० ॥ क्षीरफेनसमसेजसोहावै । पलँगदंतिदंतनकेभावै ॥
खंचितकनकमणिरचितअपारे।मानहुनिजकरमारसँवारे।आसनअनुपमअमलअमोला।कनकउपकरनअतिहिअतोला
दोहा–फटिकफरशमरकतमहल, मणिकेदीपतदीप । ज्योतिजगीयुवतीजहां, जिनमुखसमरजनीप ॥ ६२ ॥
वनउपवनवाटिकासुवागा । अवलोकतउपजतअनुरागा॥अतिरमणीयलताद्रुमजाला । कल्पवृक्षकेसरिसरसाला ॥
कूजहिंकलअतिमत्तविहंगा।गुंजहिंकुंजनिकुंजनिभृंगा॥६३ ॥कनकमयीबापिकाविराजै। वैदूरजसुपानछविछाजै ॥
पद्मकंजउत्पलकलहारा । फूलेसरसिजचारिप्रकारा ॥ सरसरसीसोहतेसोहावन। चहुँदिशिकुमुदनगणमनभावन ॥
चक्रवाककारंडवहंसा । करैंशोरसवशोकविध्वंसा ॥ जहँतहँदंपतिसारससोहैं । डोलिडोलिमृगगणमनमोहैं ॥
दोहा–जोसुरेंद्रनागेंद्रके, औरनरेंद्रनजौन । विभवविशेषसोताहते, ध्रुवनगरहिमहँतौन ॥
तासुविभवकोकरैबखाना । करैकृपाजापरभगवाना॥दिनदिनबढ़तघटतकछुनाहीं । विभवनिरखिसुरपतिललचाहीं॥
ध्रुवहिवसततेहिनगरविशाला।विदुरव्यतीतभयोकछुकाला॥ तहँउत्तानपादऋषिराजू।ध्रुवप्रभावलखिसहितसमाजू
औरहुसुन्योसकलयहकानन।कियप्रसन्नहरिकरितपकानन॥ध्रुवहिजानिध्रुवयदुपतिदासा।भूपउतानपादसहुलासा ॥
प्रकृतिनप्रजनसचिवगणबोली ।कहचोबातयहभूपअमोली ॥यद्यपिउत्तमजेठकुमारा। तद्यपिअसमनहोतविचारा ॥

दोहा–रूपवानगुणवानअति, शीलवानमतिवान । भटप्रधानछोटोकुँवर, भयोभक्तभगवान ॥
होइजो सम्मतअससवहीको । करौंतोधरणिअधिपध्रुवहीको॥ नृपतिवचनसुनिसचिवसुखारी।एकबारसबगिराउचारी
कियोनाथतुमनीकविवेकू । कीजै ध्रुवहिराजअभिषेकू॥ध्रुवगुणगुन मैं बँधेसकलजन।निरखतमुखहर्षतमनछनछन॥
संमतसचिवविचारिभुवाला।राज्यतिलककियध्रुवहिउताला।भूपजठरपनआपनजानी ।उचितकरवतपअसअनुमानी
ह्वैविरक्तवनकियोपयाना । भज्योप्रीतियुतश्रीभगवाना ॥ कछुककालकरितपअतिघोरा।योगमार्गतेंपुनितेहिठोरा ॥
दोहा–भूपतिसोउत्तानपद, तुरतहितज्योशरीर । भक्तिभावपरभावते, गयोधामयदुवीर ॥ ६७ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दाम्बुनिधौ
चतुर्थस्कंधे नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा--रह्योप्रजापतिएकजो, जासुनामशिशुमार । भ्रमीनामताकीसुता,सुखमाशीलअगार ॥
निजअनुरूपजानिनरनाहा । तासुसंगध्रुवकियोविवाहा ॥ ताकेदुइसुतभेबलधामा।कल्पऔरवत्सरनिजनामा ॥ १॥
इलानामकीवायुकुमारी । सोध्रुवकीदूसरिभैनारी ॥ उत्कलनामतासुसुतभयऊ । कन्याएकजन्मपुनिलयऊ ॥
जाकोकहैंसकलमतिधारी । सकलकुमारिनमेंसुकुमारी॥२॥उत्तमजौनजेठध्रुवभ्राता। सोनिजव्याहकियोनहिंताता॥
एकसमैचढ़ितरलतुरंगा । कियोगमनवनसवनअभंगा ॥ खेलनलाग्योतहाँशिकारा । करतअनेकनविपिनविहारा ॥
दोहा–तहँकोऊआवतभयो, यक्षएकबलवान । काटिगिरायोतासुशिर, मारिपैनयकबान ॥
गेदशपाँचदिवसजबबीती । सुरुचिमानिअतिशयतबभीती॥खोजनगईवनहिसुतकाहीं ।भेंटचोनहिंपुत्रहिवनमाहीं ॥
लगीरहीतहँघोरदमारी । तातेसुरुचिभईजरिछारी ॥३॥ पुनिजबबीतिगयोकछुकाला।तबनारदमुनिबुद्धिविशाला॥
ध्रुवमहराजनिकटद्रुतआये । सभामध्यअसवचनसुनाये ॥ उत्तमभ्राताजेठतुम्हारो । गयोयक्षकरवनमहँमारो ॥
बैठेआपकहाघरमाहीं । लेहुवैरभ्राताकसनाहीं ॥ मुनिकेवचनभूपकेकाना । सुनतेलागेवज्रसमाना ॥
दोहा–प्रथमबंधुवधशोकभो, पुनियक्षनपरकोप । सिंहासनतेउठतभो, शत्रुवधनकरिचोप ॥
सचिवसबैबोलेकरजोरी । सैनआपकेनाथनथोरी ॥ लैचतुरंगविजयरिपुकीजै । सैनसजावनशासनदीजै ॥
कह्योवचनतबध्रुवमहराजा । रहैइतैसबसचिवसमाजा ॥ मैंअकेलअलकापुरजैहौं । हरिप्रतापतेभयनहिंपैहौं ॥
असकहिपहिरेउकवचप्रकासी।कटितूणीरकस्योशररासी ॥करकोदंडचर्मअसिखासी।यहिविधिसज्योभूपअरिनासी॥
सुवरणस्यंदनतुरतमँगायो । मुनिमुखअभिमंत्रितकरवायो ॥
दोहा--हरिपदचिह्नितचारुरथ, सोहतविमलपताक । श्वेतवर्णवाजीतरल, जिनजवकीजगधाक ॥
चल्योसुरथध्रुवधरणिअधीशा । सुमिरिजलजयुगपदजगदीशा॥सारथिसोंअसगिरासुनाई।अलकापुरीदेहुपहुँचाई ॥
सुनतसूतकरगहितबताजिन । हूँकीदेतहन्योतहँवाजिन ॥ लागतताजनतरलतुरंगा । चलेचपलमनमारुतसंगा ॥
प्रथममचीकिंकिणिझनकारी।भयोशोरपुनिघरघरभारी॥४॥उत्तरदिशासहस्रनयोजन ।चलोगयोनृपमानिप्रयोजन ॥
पहुँच्योजबहिंनिकटहिमवाना।लख्योकंदराभूपप्रधाना ॥ सोइदरीमहँअलकानगरी । लखीभूपछविमयजोसिगरी ॥
दोहा–जहँकोटिनहरिगणबसहिं, कोटिनगुह्यकवीर । कोटिनराक्षसयक्षतिमि, अरुगंधर्वनभीर ॥
बसतरहचोजहँसुचितधनेशा।राखेसबपरनिजहिनिदेशा ५ नगरनिकटभूपतिजबआयो ।पाञ्चजन्यसमशङ्खबजायो॥
छायरहचोदशआसनशोरा । वज्रपातभोमनहुकठोरा ॥ गुह्यकराक्षसगंध्रवनाना । सुनेशङ्खकोशोरमहाना ॥
प्रथमपुहुमिगिरिगेयकवारा ।पुनिमानेउरभीतिअपारा ॥ ६ ॥ पुनिधरिधीरजवैनउचारे । आयोकौनवीरदरधारे ॥

सुननशङ्खध्वनिकुपितधनेशा।दियोभटनकहँतुरतनिदेशा ॥ जोयहयुद्धहेतुभटआयो ।नगरनिकटनिजशङ्खबजायो॥

दोहा–ताहिमारियमलोकको, दीजोतुरतपठाय । तासुमाथनिजहाथगहि, मोकोदेहुदेखाय ॥

सुनतसुभटधनपतिकीवाणी।चलेसकलगहिआयुधपाणी ॥कोऊतुरँगकोउचढेमतंगा । कोउस्यंदनमहँकंधनिषंगा ॥
औरोविविधभाँतिकेवाहन।विविधभाँतिआयुधअरिदाहन॥विविधभाँतिकरिशोरकठोरा।विविधभाँतिकेआननघोरा॥
हरअनुचरगंधर्वबहुनाना । अरुगुह्यकअतिशयबलवाना ॥ विद्याधरचारणअरुयक्षा । औरौभूमिभयानकरक्षा ॥
निकरेसकलनगरतेजबहीं । लखेअकेलेध्रुवकहँतबहीं ॥ लम्बेबाहुइंदुसमआनन । मानहुखड़ोकुपितपंचानन ॥

दोहा–निपटनिडरनोखोनवल, नागरनिपुणनरेश । नीतिनिलयनिष्कपटनित, नरनंदकनिरदेश ॥
निर्णयवारणनरनके, निरवाहकनिश्शेष । नारायणनिरखतनितहि, नयननतजेनिमेष ॥

छंदतोमर–गंधर्वगुह्यकसर्व । राक्षसपिशाचअखर्व ॥ कढ़िकैनगरतेवीर । लखिध्रुवहिध्रुवधुरधीर ॥
कोइकाढ़िकरकरवाल । निजअंगढाँपेढाल ॥ कोउलियेशूलअतूल । धायेचलावनहूल ॥
कोउपरिघपरमप्रचंड । कोउदोर्दंडनदंड ॥ कोइलियेचक्रनवक्र । कोउधनुषवाणनचक्र ॥
कोइतोमरानिअतूल । जेकरनअरिनिर्मूल ॥ कोइभिंदिपालकराल । कोइगदापरमविशाल ॥
कोउलियेमूशलघोर । कोइपाशलैबरजोर ॥ कोइलियेवृक्षनहाथ । कोउसेलधरिनिजमाथ ॥
कोउलियेपीनपषान । कोउवमतवदनकृशान ॥ कोउनखनिकासेपैन । कोइतकतटेढ़ेनैन ॥
कोइगहेपरशुमहान । कोइशक्तिभटबलवान ॥ कोइलियभुशुंडीशूर । कोइलियशतघ्नीकूर ॥
कोइलियेमल्लतबल्ल । कोइसूधकीन्हेभल्ल ॥ धायेसबैतेहिओर । जहँरह्योभूपकिशोर ॥
कोउमकरआननघोर । कोउगजवदनवरजोर ॥ कोउखलखराननफारि । कोइगिद्धकीअनुहारि ॥
कोउवीरवदनवराह । कोइमृगनमुखसउछाह ॥ कोउसकलअंगनिनंग । धायेकरनहठिजंग ॥
बहुयोगिनीनजमाति । पसरायकेशनपाँति ॥ अतिकृशितलम्बशरीर । दृगकूपसरिसगँभीर ॥
धरुमारुधरुधरुमारु । बहुवारकरहिंपुकारु ॥ कोउतहँपिशाचिनकूरि । दोउहाथमेलैधूरि ॥
कोउकरहिंकटकटदंत । कोऊठठायहसंत ॥ कोउकरहिंखरसमशोर । कोउधावतीचहुँओर ॥
कोउचलहिंगतिअतिवंक । किलकारकरहिंनिशंक ॥ कोउखङ्गखप्परधारि । कज्जलअचलआकारि ॥
यहिभाँतियोगिनयूह । धाईकरतअतिकूह ॥ तहँभयोधुंधाकार । रविछप्योतेजअपार ॥
रिपुदलभयोउत्पात । ध्रुवकोसोसगुनलखात ॥ ७ ॥

दोहा–धावतआवतरिपुनलखि, घोरमचावतशोर । अतिनिशंकभूपतिसुवन, तिलभरतज्योनठोर ॥

छं.तो.-ध्रुवहूपरचंडकोदंडगह्यो । तहँसारथिसोंअसवैनकह्यो॥द्रुतलैचलुलैचलुस्यंदनको।मनहैममशत्रुनिकंदनको॥
ध्रुववैनसुनेतहँसूतसुखी । कियस्यंदनकोअरिसैनमुखी॥हनितीक्षणताजनवाजिनको। करिकंपितप्रेतसमाजिनको ॥
रणमेंअतिवेगधवायरथै । पहुँच्योजहँप्रेतापिशाचगथै ॥ धनुकीध्रुवहूध्वनिकीनतहाँ । अरिकेदलमेंभयभीतिमहाँ ॥
शरधारअपारतजीछनमें । मनुदामिनिदौरिरहीघनमें ॥ अँधियारतहाँअतिछायगयो। नहिंवीरनकोदिशिभानभयो॥
इकएकहितीनहितीनशरै ।ध्रुवमारतभेतेहियुद्धभरै ॥ ८ ॥ भटभालनमेंशरलागतभे । कछुदूरिसबैअरिभागतभे ॥
निजमानिपराजयलेतभये । ध्रुवकोपरशंसिप्रकोपछये ॥ ९ ॥ जिमिपायप्रहारभुजंगपदै । फुसकारिकरैद्रुतदंतछदै ॥
तिमितेसमिटेसिगरेसुभटे।गहिआयुधकोअतिशयविकटे।।यकलाखहितीसहजारतहाँ।मुखियापहुँचेध्रुववीरजहाँ १०
अतिपैनपरस्वधपासहने।परिघौविशिखौदियमारिघने।११॥पुनितीसहजारहुलाखभटे।यकएकहन्योविशिखानघटे॥
पुनिकोटिनराक्षसधावतभे । ध्रुवपैबहुशस्त्रचलावतभे ॥ पुनिलक्षणयक्षततच्छनमें । बहुअस्त्रतजेकरस्वच्छनमें ॥
हरिकेगणहूगहिवृक्षनको।चढिपेलतपक्षिनऋक्षनको १२ध्रुवकोनहिंस्यंदनदेखिपर्‌यो ।दशहूदिशिमेंअँधियारभर्‌यो॥

जिमिशैलछिपैंघनधारनसों। तिमिभूपछिप्योशरधारनसों॥१३॥ध्रुवकीयहदेखिदशारनमें।नभमेंसबसिद्ध दुखीमनमें॥
ध्रुवकोगुणिनाशहिताहिछनें। भरिशोकसबैयहवैनभनें॥ मनुवंशविभाकरअस्तभयो। यहसंततिकोअबअंतठयो॥
ध्रुवयक्षमहार्णवबूड़िगयो।चलिकैवशकालहियुद्धलयो॥१४॥उतयक्षनजीतिनिशानवजे। सबराक्षसएकहिबारगजे॥
बहुयोगिनिनाचनआशुलगीं। गुणिआपनजयअनुरागरँगीं॥भटभापहिंआपुसमेंसिगरे। अबआशुचलोअपनेनगरे॥
जिमिपावकमाँहपतंगपर्चो।तिमिगर्वभर्चोनृपआयलर्चो।यकबालककोहनिजीतिलहे।पछितातसबैयहिभाँतिरहे।

दोहा–सिगरेमुनिगुणिध्रुवमरम, रह्योजोधर्मअधार। एकवारसबव्योमते, कीन्हेहाहाकार॥ १ ॥

छं.प.-तहँमुनिनकेरहाहापुकार।तिमिशत्रुदुंदुभीकीधुकार॥ जयवंतवचनरिपुकेमहान।ध्रुवसुन्योसमरआपनेकान॥
अरिअस्त्रवृंदनिजरथकृपान। यहनिरखिभयोध्रुवकोपवान॥ कोदंडकियोटंकोरघोर। श्रुतिफोरभयोरवचहुँओर ॥
पुनितजीविशिषकीध्रुवबहुधार। अरिअस्त्रभयेतिलतिलअपार।निकस्योतुरंतधरणीअधीश।मनुयक्षकालहैविश्वेबीश॥
जिमिमूँदिजाहिंरविअतिनिहार।पुनिनिकसितेजकरतेअपार॥तिमिध्रुवबहुधनुपर्धारिधीरधारि।कियबाणवृष्टिमनधरिधारि
चहुँओरचपलचमकैंतुरंग। निजटापकरैंअरिअंगभंग ॥ शरतजतलेतखैंचतानिषंग। लखिसकैंनाहिंतेहियक्षसंग ॥
लहिबाणवेगयक्षनसमाज।उडिकरैंदिशनआरतअवाज॥जिमिपायपवननभमेघमाल।फटिफूटिजाहिंथलतजिउताल॥
शरलगतकटतराक्षसनगात।जिमिवज्रलगेगिरिफाटिजात।यकबाणकटैंदशपांचफोरि।यहिभाँतितजेध्रुवशरकरोरि१७
कहुँकटहिंउरूकटिचरणहाथ।कहुँकटहिंउदरउरबाहुमाथ॥ध्रुवभटप्रबल्लतजिबाणभल्ल।कियछिन्नभिन्नबहुयक्षमल्ल ॥
कहुँकटेपरेकुंडलअनंत। कहुँहारपरेरणमहँलसंत॥कहुँकनककटकसकलैसोहाहिं। कहुँमुकुटमाथयुतमहिगिराहिं॥
कहुँपरेपागफटेअपार। मनुकियोअवनिअंगनिशृँगार॥कहुँभगेयोगिनीकरिचिकार।भ्रमिभूमिगिरहिंतनुनहिसँभार॥
कोउभईशीशतेकेशहीन। खरचढींभगींकुचकटेपीन ॥ कोउविनाहिनासिकाविनाहिदंत। लैभजींआपनेसंगकंत ॥
रणमध्यमच्योहाहापुकार। धसिसकैनरिपुध्रुवबाणधार॥ दृगफूटिगयेकोउकटेकर्ण।कोउविननितंबकोउविनहिचर्ण॥
कहुँचूरचारुरथचक्रहोत । नहिंलहतएकक्षणयक्षवोत ॥ कहुँअंगभंगभेबहुतरंग । मंदरसमानमरिगेमतंग ॥
नहिंसकतकोऊसायकचलाय। कोसकैवीरध्रुवनिकटआय॥जहँलखतयक्षकीयुत्थघोर।तहँधसतधुनतधनुध्रुवकठोर
इकवारगिरहिंध्रुवपैपिशाच।प्रविशैंपतंगजिमिअनलआच॥नहिंवचतएकभजिजाहिंजौन।लखिअपरवीररहिगयेमौन॥
भोध्रुवकोदंडमंडलाकार। चहुँओरझरतसायकअपार ॥ ध्रुववेगसिंधुराक्षससमस्त। असदेखिपरेह्वैगयेअस्त ॥

दोहा–गिरतउठतझूमतझुकत, डहरतडहरतयक्ष। पुनिपुनिधावतओरध्रुव, भिरतप्रचारिप्रत्यक्ष॥

छंदकिरवान–जहाँलक्षणप्रत्यक्षयक्षआयुधमेंदक्षधायेबोलिभक्षभक्षपक्षवानसेदिखान।
कोईमच्छपैसवारकोईकच्छपैसवारकोईअक्षविकरारवीरराक्षसमहान॥
कोऊकहेगच्छगच्छकोऊकहैरक्षरक्षतेगकाढस्वच्छस्वच्छकियेलक्षनृपजान।
तहाँतेजअंशुमानधराधीशधीरवानध्रुवजाहिरजहानबाणझारचोवेप्रमान॥
जहाँसुंडनकेझुंडपरेशोणितकेकुंडभरेरुंडखंडखंडखंडखंडदरशान।
जहाँआयुधउदंडहनेवीरबरिवंडभरेभारीहैघमंडपरचंडशोरवान॥
जहांठोकैंदोरदंडदंडपायकैअदंडधुंधकारभोअखंडमारतंडहुछपान।
तहाँतेजअंशुमानधराधीशधीरवानध्रुवजाहिरजहानबाणझारचोवेप्रमान॥
जहांकुंभिनकरारघाटवाजीवेसु। मारवीरवारकेसेवारमुंडपुंडरिकभान॥
जहांरतनकतारअहैकंकरअपारमीनतेगओकटारनक्रचक्रहैमहान।
जहाँशोणितकीधारभुजभुजगविहारढालकच्छअनुहारशिशुमारस्यंदनान॥
तहाँतेजअंशुमानधराधीशधीरवानध्रुवजाहिरजहानबाणझारचोवेप्रमान।
जहाँगिद्धहरषानलगेमासमेंदेखानकहूँआँतलैउडानकाककंकदरशान॥
जहाँशोणितकोपानकरिजंबुकअघानकरैंभूतगणगानजुरीयोगिनीजवान।

जहाँकंधधैकृपानतेकबंधधेगवानधावैंमध्यमयदानमच्योवोरघमसान ॥
तहाँतेजअंशुमानधराधीशधीरवानध्रुवजाहिरजहानबाणझारचोबेप्रमान ।
जहाँभूतऔबितालरूपधारिविकरालशोरकरतकरालदेखिपरेचहुँघान ॥
जहाँलैकरवालरोकिबाणनकोढालपिलेजातहैंउतालनैनलालकोपवान ।
जहाँवीरताविशालवदैंफूलिफूलिगालहटैनेकहूनहालमरेभेदिजातभान ॥
तहाँतेजअंशुमानधराधीशधीरवानध्रुवजाहिरजहानबाणझारचोबेप्रमान ।
जहाँकोईकहैआवआवकोईकहैजावजावकोईकहैखावखाववैरीबलवान ॥
जहांकोईकहैधावधावकोईकहैलावलावकोईकहैमारुघावयक्षओजवान ।
जहाँबाढ्योहैउछावदेहिंमोछनमेंतावभूल्योशत्रुमित्रभावदेखेदावदर्पवान ॥
तहाँतेजअंशुमानधराधीशधीरवानध्रुवजाहिरजहानबाणझारचोबेप्रमान ।
जहाँशीशनट्टवट्टसेअनेकफट्टफट्टफूटैंभट्टभट्टभट्टगिरैंभूमिभासवान ॥
जहाँउठैझट्टझट्टपिलेवीरठट्टठट्टगदाचलैचट्टचट्टचट्टपट्टपट्टवान ।
जहाँरक्तसरिघट्टवटशोणितकोघट्टघट्टयोगिनीगरट्टकरैघट्टघट्टपान ॥
तहाँतेजअंशुमानधराधीशधीरवानध्रुवजाहिरजहानबाणझारचोबेप्रमान ।
जहाँमध्यजंगआयवीरमुंडनवेरायलेहिमालनबनायसुखछायकैइशान ॥
जहाँवीरनाभगायकोईभाग्योनबचायकोईलोथिनलुकायरहेमृतकसमान ।
जहाँयक्षसमुदायमध्यमच्योहायहायप्रलैहोतसीदेखायभयोशोचदेवतान ॥
तहाँतेजअंशुमानधराधीशधीरवानध्रुवजाहिरजहानबाणझारचोबेप्रमान ॥ १९ ॥

दोहा—ध्रुवधरेशशरधारते, विकलयक्षसरदार । भागतभेमधिसमरते, करिकरिहाहाकार ॥
जैसेगैयरयूथको, मृगपतिदेतभगाय । तैसेराक्षसयक्षदल, ध्रुवदीन्ह्योबिचलाय ॥ २० ॥
जबसन्मुखनहिंलखिपरे, एकहुराक्षसयक्ष । तबअलकापुरधसनको, कियविचारध्रुवदक्ष ॥
नगरधसतकरिहैंअवशि, मायागुह्यकवीर ॥२१॥असगुणिपुनिबोलतभयो, सारथिसोंध्रुवधीर ॥
हेसारथिअसहोतमन, अबकरिनगरप्रवेश ॥ धीरधारिकैधाममें, धसियेधौरिधनेश ॥
पैप्रविशतअलकापुरी, राक्षसयक्षप्रचंड । मायाकरिहैंअवशिये, मायावीबरिबंड॥
तबसारथिकरजोरिकै, बोल्योध्रुवसोंबैन । नाथनगरनहिंजाइये,येगुह्यकछलऐन ॥
आगूपाछूऔरलुकि, करैजोछलकरिघात । तौजीतीबाजीअवशि, हारिजाहिसुनुतात ॥
उतैयक्षगुह्यकध्रुवै, ध्रुवैमानिबलधाम । मायाकरिचहुँओरते, चहेजीतिसंग्राम ॥
गंधर्वीअरुराक्षसी, देवीआदिअपार । चहुँकिततेछिपिव्योममें, कियमायायकवार ॥

छंद नाराच।

बतात बात ऐसही ध्रुवै सुसूत संगमै । महानशोर होतभो दिशान मध्य जंगमै ॥
मनौ प्रलय पयोधिएकवारकै गराजको । दशौदिशान पूरिदेतभे महा अवाजको ॥
चलैप्रचंड पौन बोनचास एकबारही । मनौ सभूधरै धरै समूलते उखारही ॥
दिशानमें भयो महान धूरिधुंधकारहै । रह्यो तहाँ न नेकहू सुदीठिकोपसारहै ॥ २२ ॥
उठे चहूँ दिशानते जलध्र घोर श्यामहै । कियो अकाश छाय अंधकार ठाम ठामहै ॥
दिशानमें दमंकती अनेकभाँति दामिनी । मनौमहाभयावनी प्रत्यक्षकाल यामिनी ॥

त्रिलोक त्रास छैगई मनौ महा प्रलै भई । ऋषीश सिद्धि चारणौ पुकारते दई दई ॥
अघात वज्रव्रातको निपात एकवारभो । मनौ प्रजा समेत या संसारको सँहारभो ॥ २३ ॥
भई महानवृष्टिएकओररक्तधारकी । पुरीष पीव मूत्र मेद माँस मद्य वारकी ॥
धराअधीश जान अग्र में तुरंतही तवै । कृपाणकंधमें धरे गिरे कबंधमें रवै ॥ २४ ॥
तहाँ परचो लखाय एक शैल आसमानमें । तन्यो वितानसो महान चारिहू दिशानमें ॥
करीपषाणवृष्टिसो गजानकेसमानहै । अखंड वृक्षवृष्टि फेरिभैभरीकृशानहै ॥
गदा कृपाण मूशली कठोरजेकुठारहै । गिरेनरेशशीशमेअनेकवारवार है ॥ २५ ॥
फणीशफेरिफूतकारज्वालकोवमंतही । करोरिधावतेभयेमनौ ध्रुवेडसंतही ॥
तहां सनाद नाग एकओर मत्त धावहीं । मनौ लपेटि शुंडते ध्रुवै नभै उड़ावहीं ॥
वराह बाघ ऋक्ष श्वान सिंहशल्यखर्गहै । चलेनरेशकोग्रसे अनेकजीववर्गहै ॥
द्विमुंडके त्रिमुंडके द्विबाहुचारिबाहुके । द्विपादकेत्रिपादके अनेकपादकाहुके ॥
अनेक भांतिके वेताल धावते प्रचारिकै । नगीचमें न आवते विरावते निहारिकै ॥
तहाँदेखातभै पुरी मनोहरी नगीचहीं । सुहाट बाट घाट आट ठाट मंजु बीचहीं ॥
लसैसुहावनी नदी नरौ सुनारिमज्जहीं । विशालहै निशानहू निशान डप्फबज्जहीं ॥ २६ ॥
तहां महान नादके समुद्रवेल त्यागिकै । चल्यो दशौदिशानते तरंग तुंगजागिकै ॥
मनौ डुबायदेतभो धरामहाभयावनो । लग्यो मुनीश सिद्धको समूहस्वस्ति गावनो ॥
कहूँनिशादेखातिहै कहूँसोघोशहोतहै । तहैंकहूँनिशीथमें दिनेशको उदोत है ॥
कहूँ उतानपादको स्वरूप धारि आवते । अनेकभांतिवैनभाषिकै ध्रुवैबुझावते ॥ २७ ॥
यहीविधै अनेकमायकी उपायको किये । अनेकयक्षरक्षमान जीतिआपनी लिये ॥
तज्यो ध्रुवौतिलौभरीमहीनहीं रही खडो । अनेकबाणवृंदको चलावतोतहैंअडो ॥ २८ ॥
विलोकिकै महाउपद्रवै ध्रुवै विनाशको । ऋषीशऔमुनीशमानिकै महानत्रासको ॥
अनन्यकृष्णभक्तजंगमें ध्रुवै निहारिकै । भनेअकाशते सुवैन आशुही पुकारिकै ॥ २९ ॥

मुनय ऊचुः।

उतानपादके कुमार शंकनाहिं कीजिये । गोविंदकेपदारविंदमें सुचित्तदीजिये ॥
सोई हरीअरीन आपके विनाशिदेयँगे । निजै प्रतापते निजै सुदास रक्षिलेयँगे ॥
दोहा—जासुनामकहिसुनिपुरुष, यहसागरसंसार । विनउपायबिनश्रमकिये, सहजहिलागतपार ॥ ३० ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजवांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ चतुर्थस्कंधे दशमस्तरंगः ॥ १० ॥

मैत्रेय उवाच ।

दोहा—सुनतमुनिनकेवचनअस, ध्रुवअतिशयहरषान । कियोआचमनशुचिसलिल, धरिश्रीहरिकोध्यान ॥
कियनारायणअस्त्रको, ध्रुवहुधनुषसंधान । त्रिभुवनमेंदूजोविदुर, हैनहिंआपसमान ॥ १ ॥

छंद भुजंगप्रयात ।

तज्योवैष्णवास्त्रै जबैकोपिराजा । उठीज्वालमालाकरालादराजा ॥

चहूँओरधावैकरै जोरशोरा । प्रलयकालकीवह्निज्यों हैकठोरा ॥
महागुह्यकौराक्षसौ औपिशाचा । तजैंशूलसाँगैं कृपाणैनराचा ॥२॥
इतै केशवास्त्रे वम्योबाणजाला । चलीचारिहूँओरतै अग्निज्वाला ॥
जड़े रत्न जांबूनदै पंखवारे । लगे हंसके पंखकेरेकतारे ॥
यही भाँतिके वाण छाये अकासे । दिशानै दशोमें भयो भूरि भासै ॥
महातीखते भीषणे शत्रुकेरे । कढेकालसे कोटिकोटीकरेरे ॥
जहाँ गुह्यको यक्षरक्षौमहाना । रहे रुद्रके वैगनौ भीम नाना ॥
तहाँतेसुपर्वैअखर्वैनिखर्वै । भिदेजायवैरीनकेअंगसर्वै ॥
रहीराक्षसौयक्षकोटीनसैना । सुमायावलैमानतेनेकुभैना ॥
महाबाणधारैसबैएकवारे । गयेछायआकाशमेंशत्रुभारे ॥
धसेसैनमेंशोरकैबाणकैसे । महाकाननेपैधुसैमोरजैसे ॥ ३ ॥
कटेयक्षकेतेगिरेभूमिमाहीं । हटेवीरकेतेसहेबाणनाहीं ॥
तहाँजेरहेसैनमेंवीरभारी । सबैआपनीसैनभागीनिहारी ॥
सबैसैनकोएकवारैसमेटी । चलेभूपकेपुत्रकोतुच्छसेटी ॥
लियेशस्त्रभारीकियेकोपघोरा । ध्रुवैधायघेरेकरैंदीहशोरा ॥
यथाकोपकैकैफणीभूरिभारी । गरुत्मानकोघेरिलेहींप्रचारी ॥ ४ ॥
कटेजाहिंबाहूउरूजंघशीशा । यथावज्रतेखंडहोतेगिरीशा ॥
जरेजाहिंकेतेमरेजाहिंकेते । धसैसन्मुखैजेबचैंनाहिंतेते ॥
मरेसूरकोमंडलैभेदिजाते । जहाँऊर्द्धरेतामहामोदमाते ॥
गिरैंओउठैंओभ्रमैभूमिपाहीं । टरैंनाहिंटोरैंरँगेजंगमाहीं ॥
इकैएकयक्षैशरैलक्षलागे । कटैधूरिसेह्वैउड़ैजंगजागे ॥
हनैशस्त्रजेतेध्रुवैओरकाँही । लगेवैष्णवास्त्रैरजैह्वैउड़ाही ॥
चलैनेकहूयक्षकोनाहिंजोरा । महानाशहोतोदलैचारिओरा ॥
पटीलोथिसोंभूमिबाकीनथोरी । वटीहीघटीहीघटेवीरदोरी ॥
सहीनागईअस्त्रकीबाणधारा । दुखीदेवकीन्हेहहाकोपुकारा ॥
जरेयक्षरक्षौअनंतैतुरंते । बचेथोरजेतेदुरेतेदिगंते ॥
भजेऔतजेशस्त्रजेजंगमाहीं । तिन्हैंवैष्णवास्त्रोनजारयोतहाँहीं ॥
महाविक्रमैभूपकौसिद्धदेषी । लगेहैप्रशंसैसमोदैविशेषी ॥

सोरठा—वरषहिफरपरफूल, देहिदुंदुभीव्योममें । कहहिंवचनअनुकूल, धन्यधन्यध्रुवधरनिधनि ॥ ५ ॥

दोहा—जगयक्षनविनहोतगुनि, संयुतमुनिनसमाज । आयसमरध्रुवसोंकह्यो, आशुहिमनुमहराज ॥ ६ ॥

मनुरुवाच ।

वृथारोसकीजतकतनाती । रोपनरकदायकसबभाँती ॥ यक्षपुण्यजनअहैंविचारे । हनैविनाअपराधविचारे ॥ ७ ॥
यहहमरेकुलकीनहिंरीती । निंदहिसंतकरहिनहिंप्रीती ॥ येउपदेववापुरेदीना । तेरोकुछअपराधनकीना ॥
तिनकोवधकरिबोतजिधरमा । तोहिनउचितकरवअसकरमा ॥८॥ कियोएकतेरोअपराधा।करीअनेकनकोतैंवाधा॥
भ्रातावधविलोकितैनाती।भयोसकलयक्षनकुलघाती॥९॥यहहरिदासनमारगनाहीं।पशुसमहिंसाकरवसदाहीं॥१०॥

दोहा--यहतुमसाँचोजानहू, अहैदेहअभिमान। हिंसामेंकबहूनहीं, रीझतहैभगवान॥ १० ॥
सकलभाँतितैंहरिकहँध्यायो।हरिहिसकलथलभलतैंभायो॥हरिप्रसाददुर्लभपदपायो ११ हरिदासनमहँश्रेष्ठकहायो॥
असतैंह्वैकसकियअसकर्मा।जानिहुसकलभागवतधर्मा॥१२॥दयाक्षमासबजीवमिताई।सहनशीलसबमहसमताई॥
जाकेयेगुणहोहिंमहाना। तापैकृपाकरहिंभगवाना॥ १३ ॥ जबप्रसन्नभेहरिजेहिपाहीं।ताकप्राकृतगुणनशिजाहीं॥
जीवमुक्तसोहोतविशेषै। लहतमोदसोसदाअलेपै॥१४॥पंचभूतमययहनरनारी। जिनसँयोगतिनसृष्टिविचारी॥१५॥
दोहा-यहीभाँतिपालनहरन, हरिमायाकृतहोत॥१६॥हरिनिमित्तमात्रहिगुणौ, गुणउनमहतहदोत॥ १ ॥
हरिप्रभाववशयहसंसारा।उपजतपलतनशतबहुबारा॥हरिकोकछुकहोतनहिंमोहा।जिमिचुंबकवशडोलतलोहा१७॥
कालशक्तिकृतगुणविषमाई।महदादिकदेशक्तिमहाई॥ करहिजगतयद्यपिनहिंकरता।हरहिंजगतयद्यपिनहिंहरता॥
हरिचरित्रकोजाननहारा।कहाकरतकहँकरतविचारा॥१८॥सबकेआदिअनादिअनासी। जगअंतकअनंतसुदराशी॥
जनतेजनतजननसमुदाई। मारतमीचुद्वारयदुराई॥ १९ ॥ अहैनतेहिआपनोपराऊ । सबमेंसदासमानहिभाऊ ॥
दोहा-प्रभुप्रेरितनिजकर्मवश, जियजगआवतजात। जैसेमारुतसंगमें, रजकणअमितउड़ात॥ २० ॥
जियआयुषवरधैअरुनासै। तिनकीकबहुँवृद्धिनहिंहासै॥ ईश्वरअहैसदास्वाधीना।जानहुजीवाहिकर्मअधीना॥२१॥
सोप्रभुकोकोइकर्मविचारै। कोइस्वभावपुनितासिउचारै॥ कोईकहतकालतेहिकाहीं। कोईकहतदैवसुखमाहीं॥
कोईकहततताहिपुनिकामा। हैसबरूपसोइश्रीरामा॥२२॥अप्रमेयअव्यक्तशक्तिधर।कोउजानतकर्तव्यनताकर॥२३॥
हनेयक्षभ्रातातुवनाहीं। कारणईशअहैसबमाहीं॥२४॥ सोसिरजतपालतसंहरता।निजमायाशक्तिनिविस्तरता॥२५॥
दोहा-सोइअभक्तकोमृत्युहै, अमृतभक्तकोनित्त। होहुतासुबालकशरण, ठानिअचंचलचित्त॥
जाहिसकलसुरपतिबलिदेही। ताकेवशमहँहैसबदेही॥ जैसेनाथवृषभघनेरे। रहहिंसदावशपालककेरे॥ २७ ॥
रहेपंचवर्षहितुमजबहीं। वैनविमातुदुसहसुनितबहीं॥ तज्योभवनवनगमनकियोतैं । दुसहतपस्याठानिलियोतैं॥
लहिप्रत्यक्षदर्शनयदुराई। त्रिभुवनशिरदुर्लभपदपाई॥ भयोचक्रवर्तीमहिपालक। हेउत्तानपादकेबालक॥ २८॥
विगतवैरआत्माकोकरिकै। तेहिमहँहरिहिदेखुचितथिरकै॥प्राकृतगुणजिनमेंनहिंएकू।जोअक्षरहैरूपअनेकू॥२९॥
दोहा-अंतर्यामीजगतके, जिनमेंकबहुँनभेद। नित्यानंदस्वरूपहै, वर्णाहिंचारिहुवेद॥
सकलशक्तिधरश्रीभगवाना। तिनमेंकरिकैप्रेममहाना॥ छोड़हुअहंकारममकारा। अबनहितजहुधनुषशरधारा३०
दृढ़विचारकरिलोपहुकोपू। कोपकरतसबमंगललोपू॥ जैसेओषधिनाशतिरोगू। तिमिंविचारकरिक्रोधहिलोगू ३१
क्रोधीजनतेजनदुखपावैं। क्रोधीहठिचंडालकहावैं॥ भीतिविनाशनचहहियेकी। क्रोधविवशनहिंहोयविवेकी॥३२॥
शंकरसखाधनदअपमाना। तैंकीन्हयोवधयक्षननाना॥ हन्योयक्षउत्तममममभ्राता। यहविचारभलकियोनताता॥
कोपविवशचलिअलकानगरी। हन्योयक्षसैनाशिशुसिगरी॥ ३३ ॥
दोहा-यदपिसमरधनुधरिधनद, तोहिंदैसकैनताप। तदपिसुभटवधगुणिमनहि, अवशिदेहिंगेशाप॥
तातेजबलौंशापतोहिं, धनददेहिंनहिंआय। तबलौंकहिमंजुलवचन, लेहुप्रसन्नकराय॥
महतपुरुषकोकरतजो, कैसेहुकैअपमान। जरतसपदिसोसकुलशठ, यद्यपिहोयमहान॥ ४ ॥
असकहिध्रुवसोंमुनिसहित, ध्रुवसोंवंदनपाय। गमनकियोमनुनिजभवन, रमारमणपदध्याय॥ ५ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ चतुर्थस्कंधे एकादशस्तरंगः॥ ११ ॥

मैत्रेयउवाच।

दोहा-सुनतपितामहवचनध्रुव, बाणतजनकियबंद। अड़ोअकेलोसमरमहँ, खड़ोरह्योनृपमंद॥

विगतकोपगुणिध्रुवहिंधनेशा।।चढ़िशिबिकाआयोतेहिदेशा।।चारणकिन्नरयक्षहुनाना।करहिंचहूँकितअस्तुतिगाना॥
हेरिकुबेरहिध्रुवबलधामा।जोरियुगलकरकियोप्रणामा।।ध्रुवहिधनददियआशिरवादा।बोलेवचनसहितअह्लादा॥१॥

कुबेरउवाच ।

हमप्रसन्नहैंतोपरराजा । कियोसमरमहँअद्भुतकाजा॥ पायपितामहकेरनिदेशा । त्यागेहुदारुणद्रोहनरेशा॥ २॥
आपभ्रातकहँ यक्षनमारचो।आपहुनहिंयक्षनसंहारचो॥ जननमरणकोकारणकाला।यहतुमजानहुसत्यभुवाला॥३॥
दोहा–हमहमारियहकुमतिजो, सोअज्ञानतेहोति । स्वप्नसरिससबहैमृषा, अतिदुखकरतिउदोति ॥ ४॥
तातेजाहुभवनमहराजा । भजहुभूतभावनयदुराजा॥५॥ भवनाशनहरिपदअरविंदा । रहहिंसदाजेहिंसंतमिलिंदा॥
गुणमयमायारहितमुरारी । ताहिभजेसबहोतसुखारी॥ ६॥ मांगुमांगुभूपतिवरदाना । होयजोतेरोमनहुलसाना॥
हौवरदानदेनकेलायक । सदासमीपीकमलानायक॥ असमैंसुन्योआपनेकाना । ध्रुवसमकृष्णभक्तनहिंआना॥७॥

मैत्रेयउवाच ।

यहिविधिकहजबवचनधनेशा।तबबोल्योकरजोरिनरेशा॥हमतोकोउतेमाँगतनाहैं।केवलकृष्णभक्तिउरचाहैं॥
दोहा–जौनिभक्तितेअतिदुखद, यहअपारसंसार । सहजहिमेंउतरतपुरुष, नेकुनलागतिबार॥ ८॥
सुनिभूपतिकेवचनकुबेरा । कहतभयोलहिमोदवनेरा॥कृष्णभक्तिकेतुमअधिकारी । कृष्णचरणरतिहोयतुम्हारी॥
दैध्रुवकहँयहिविधिवरदाना । भोधनेशतहँअंतरधाना॥ कियोशंखधुनिधराअधीशा । पायोविजयकृपाजगदीशा॥
चल्योलौटिनिजनगरनरेशा।छावतकीरतिदेशनदेशा॥ आयोजबनिजघरध्रुवराजा । तहांसचिवसबसहितसमाजा॥
गावतबजवावतअनुरागे । लीन्हेअगवानीचलिआगे॥ ध्रुवहिल्यायमणिमंदिरमाहीं । दियलुटायधनदीननकाहीं॥
दोहा–यहिविधियक्षनजीतिध्रुव, त्रिभुवनमेंयशछाय । आयनगरनिजवसतभो, प्रजजनअनँदबढ़ाय॥ ९॥
वाजपेयआदिककरियागा । प्रभुकहँपूज्योयुतअनुरागा॥ दियोदक्षिणाजोदुजमाँगे । क्षुधितनअन्नवसनजननागे॥
दिव्यक्रियाफलकर्मदेवता । सकलकृष्णहैंविनाभेवता॥१०॥ असअंतर्यामीभगवानै । करतभयोध्रुवप्रेममहानै॥
निजउरअस्थितजोगिरिधारी । तिनहीमयजगलियोनिहारी११शीलसिंधुब्रह्मांडविख्याता।दयावंतदीननकोत्राता॥
रक्षकसकलधर्ममर्यादा । ज्ञातासकलशास्त्रश्रुतिवादा॥ ऐसेध्रुवकहँप्रजासुखारी । मान्योपितासरिसहितकारी १२
दोहा–छत्तिसवर्षहजारनृप, महिमंडलवशकीन । पुण्यभोगकरिक्षयकियो, नहिंपापहिमनकीन ॥ १३ ॥
यहिविधिदियवितायबहुकाला । इंद्रियजितश्रीध्रुवमहिपाला॥नृपकोजबहिंजरठपनआयो।तबनिजजेठोपुत्रबोलायो
राजतिलकताकोकरिदीन्ह्यो।बहुविधिनीतिसिखापनदीन्ह्यो॥सुततियसुहृदकोषगृहराजू। औरहुसकलविहारसमाजू
जलधिमेखलासकलमेदिनी।जोविज्ञानिनपरमखेदिनी॥सोसबविभवजानिकृतमाया।स्वप्नसरिसगुणिनहिंमनलाया॥
सकलत्यागिवदरीवनजाई॥१५॥१६॥ध्रुवगंगामहँतुरतनहाई।आसनजीतिश्वासपुनिजीती।बैठेध्रुवकरिहरिपदप्रीती
दोहा–प्रथमथूलवपुकृष्णको, ध्यावतभयोसुजान । पुनिसूक्षमवपुनाथको, धरिसमाधिकियध्यान॥ १७॥
ध्यानहिमहँलखिश्रीहरिरूपा । प्रेममगनमोदितभोभूपा॥ बहीदृगनआनँदजलधारा । पुलकावलितनुभईअपारा॥
गईभूलिसबसुधिजगकेरी॥बिनहरिऔरपरचोनहिंहेरी॥१८॥ तहांअनूपमएकविमाना । नभतेउतरततुरतदेखाना॥
दशहूदिशिप्रकाशभोताका । मनहुँउदितपूरवशशिराका॥१९॥तामेंचढ़ेयुगलहरिदासा। नंदसुनंदनामसहुलासा॥
चारिबाहुसुंदरतनुश्यामा । अंबुजअरुणनयनछविधामा॥ शिरकिरीटउरसोहतहारे । भुजअंगदकुंडलश्रुतिधारे॥
दोहा–पीतवसनयुगयुगगदा, युगयुगवयसकिशोर । आननसदाप्रसन्नजिन, सुरनारिनचितचोर॥ २०॥
जबदोउध्रुवकेनिकटसिधारे । हरिपार्षदनृपतिनहिंविचारे॥उठ्योआशुकरिदंडप्रणामा।पूजनकरनलग्योमतिधामा॥
प्रेमविवशह्वैकैविपरीती । कोकहिसकैभूपकीप्रीती॥जयहरिजयहरिजयहरिभाषत । खड़ोरह्योध्रुवसुखरसचाखत॥
करजोरेनिजशीशनवाये।हरिपार्षदचरणनचितलाये२१ऐसोध्रुवहिंनिरखिहरिदासा।कियेप्रीतियुतवचनप्रकासा २२

सुनंदनंदावूचतुः।

महाराजध्रुवधर्मअधारे ॥ सुनियेसुंदरवचनहमारे ॥ पाँचवर्षकोजिनकोध्यायो । जासुप्रसादअचलपदपायो॥२३॥
दोहा–श्रीपतिश्रीत्रिभुवनधनी, हैंतिनकेहमदास । तुमहिंलेवावनहेतुहम, आयेतुम्हरेपास ॥ २४ ॥
निजपुरकोप्रभुतुमहिंबुलायो । हमकोयाहीहेतुपठायो ॥ दुर्लभपरमविष्णुपदजोई । मुक्तनकोनिवससतिसोई ॥
निरखहिंसप्तऋषीनितजाको । पैकबहूँनहिंपावहिंताको॥सोध्रुवपदमहँसहितहुलासा । करिहौध्रुवतुमसदानिवासा ॥
सूर्यशशीतारागणजेते।करिहैंतुमहिंप्रदक्षिणतेते ॥ २५ ॥ पितापितामहजितेतुम्हारे । कबहुँनतेतेहिपदाहिंसिधारे ॥
तौनविष्णुपदमहँनृपनंदन ।चलहुअचलबैठहुजगवंदन॥ २६ ॥ यहविमानश्रीकंतपठाये । तुम्हरेचढनहेतुलैआये ॥
दोहा–चढिविमानध्रुवधरणिधनि,संयुतयहीशरीर । चलहुकृष्णपुरकोचपल, धराधीशमतिधीर ॥ २७ ॥

नंदसुनंदनकीयहवानी । प्रेमअमीरसमेंलपटानी ॥ सुनिकैध्रुवअतिआनँदपायो । धन्यधन्यनिजजन्मगनायो ॥
करिमज्जनसुरधुनिमहँभूपा । पहिरचोभूषणवसनअनूपा॥वदरीवनवासिनमुनिकाहीं । वंद्योशिरभरिसुखदतहांहीं ॥
लैतिनसोंबहुआशिर्वादा।गोविमानढिगयुतअहलादा।२८।करिपूजनप्रदक्षिणादीन्हचो।हरिदासनकहँवंदनकीन्हचो॥
सुवर्णवर्णभयोध्रुवकेरो।छायोदिशनप्रकाशघनेरो॥२९॥हरिदासनकोकरगहिभूपा।चढ्चोविमानहिंचपलअनूपा ३०
दोहा–तहांशङ्खअरुदुंदुभी, बाजेविपुलमृदंग । गावनलागींअप्सरा, गंधर्वनकेसंग ॥
सुरहर्षितवर्षहिंबहुफूला।गावहिंध्रुवकोसुयशअतूला ॥३१॥ गहिविकुंठमारगद्युतिमाना।चल्योपवनकेसंगविमाना ॥
कछुकदुरचलिनृपविख्याता।सुहिकीन्हचोसुनीतिनिजमाता॥मैंजननीतजिजोअबजैहौं ।तौअतिअयशभुवनमहँपैहौं
जोममसंगगईनहिंमाई । तौकोतेहिहरिपुरपहुँचाई ॥ ३२ ॥ ध्रुवविचारहरिपार्षदजानी । बोलेविहँसिमंदयहवानी ॥
आगूतोदेखहुमहिपाला । जातयानजोतेजविशाला ॥ तामेंजननीचढ़ीतिहारी । हरिपुरकोगवनतिछविभारी ॥
दोहा–जहांहोतहरिभक्तसो, कुलपवित्रह्वैजात । जाकेतुमसेसुतभये, तासुकौनपुनिबात ॥
तबध्रुवदेख्योनयनउठाई । आगूचलीजातिनिजमाई ॥ वर्षहिंसुमनशीशसुरताके । फहरहिंताकेपुण्यपताके ॥
तवतजिजननीशोचमहाना।कियोगवनहरिभवनसुजाना॥रविशशिमंडलऔरनक्षत्रा।लखतचल्योसुरसदनविचित्रा॥
जेहिजेहिलोकनगमनतराजा।तहँतहँकेसुरसहितसमाजा॥आगूचलिपूजनतेहिकरहीं।बारबारध्रुवपदशिरधरहीं ३४ ॥
इंद्रलोकजबगयोनरेशा । चलिआगूतेहिलियोसुरेशा ॥ कहच्योवसहुध्रुवतुमयहिंधामा । मैंसेवककरिहौंसबकामा ॥
दोहा–ध्रुवसुनिवासववचनगुनि,त्रिभुवनतुच्छविभूति । दियोबढ़ायविमानको, अद्भुतजेहिकरतूति ॥
पहुँच्योब्रह्मलोकमहँजबहीं।विधिआगूचलिलीन्हचोतबहीं॥ब्रह्मलोकमहँवसनकहतभो।पैध्रुवक्षणभरितहँनरहतभो ॥
पुनिसप्तर्षिनमंडलडाँक्यो ।पुनिब्रह्मांडनकोसुखछाक्यो॥पहुँच्योध्रुवध्रुवहरिपुरमाहीं ३५जहांकुमतिकबहूँनाहिंजाहीं
करहिंजेहरिपदप्रेमहिपाना।तेविशेषितहँकरहिंपयाना॥निजहिप्रकाशप्रकाशितपूरो।सबलोकनमेंजोअतिरूरो॥३६॥
समदरशीशुचिशांतउदारा । जीवनपरजिनदयाअपारा ॥ तिनकेबनेबिलंदअगारे । प्राणहुतेयदुपतिकहँप्यारे ॥
दोहा–तहँपहुँच्योजबभूपध्रुव, तबप्रभुनिकटबोलाय । दियोताहिअतिअचलपद, निजमहिमादरशाय ॥ ३७ ॥
ध्रुवत्रिभुवनचूड़ामणिभयऊ।अमलसुयशत्रिभुवनमहँछयऊ॥गहेपुच्छचक्रहिशिशुमारा।निवसतअचलसुनीतिकुमारा।
सूर्य्यचंद्रनक्षत्रहुतारा । ताहिप्रदक्षिणदेतअपारा ॥ भ्रमतादिवसनिशिध्रुवहिअधारा । अबलौंनिरखिपरतध्रुवतारा॥
उत्तरदिशिनभसोहतसोई । अरुउत्तानपादनृपजोई ॥ सुतप्रभावतेदेवस्वरूपा । देतप्रदक्षिणसुतहिअनूपा ॥
ताकेनिरखिपरतयुगतारे । यहज्योतिषविदकहहिंविचारे ॥ मेषआदिद्वादशहूराशी।ध्रुवउत्तानतेहोहिंप्रकाशी॥३९॥
दोहा–महिमाध्रुवकीनिरखिकै, जायप्रचेतनयाग । वीणागहिगायोसुयश, नारदयुतअनुराग ॥ ४० ॥

नारदउवाच ।

कवित्त-पतिव्रतारानीजोउत्तानपादकीसुनीति, ताकोध्रुवधरमधुरंधरधराभयो ।
खायफलफूलत्योंहींन्हाययमुनामेंमन, लायकैमुकुंदतपकठिनतराठयो ॥
तपकठिनाईअरुहरिसेवकाईताकी, देखिवेदवादिनमुनीशनगरागयो ।
कहैरघुराजदूजोभूपतिसमानकौन, जाकीबाणधारतेधनेशकंधरानयो ॥ ४१ ॥
पाँचवर्षहीमेंजौनवचनविमाताबाण, उरमेंदुसालामानिवनकोचलोगयो ।
मेरोलैनिदेशमधुवनमेंप्रवेशकरि, पांचमासलौंकलेशसहतभलोभयो ॥
भनैरघुराजभयोहैहैभूपहैनकोई, ध्रुवकेसमानयक्षवदलोभलोदयो ।
देवनअदेवनतेदेवजोनजीत्योजात, ताकोसेवाजोरजीतिपदअचलोलयो ॥ ४२ ॥
कोटिनजनमबीतेकोटिनवरषबीते, क्षत्रीकोटिकबहुँनऐसोपदपावैंगे ।
पाँचमासहीमेंउभैलोककोसुधारिलीन्ह्यो, जाकोयशकोटिनकलपकविगावैंगे ॥
भनैरघुराजधन्यधरणीअधीशध्रुव, जाकोधरोधर्मधराधर्माचलावैंगे ।
धीरधुरधारीध्रुवभूपैध्रुवधामदीन्हे, ध्रुवपददाताध्रुवकेसबकहावैंगे ॥ ४३ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

दोहा-जोतुमपूछ्योमोहिंविदुर, ध्रुवधरेशआख्यान । सोमैंतुमसोंकहिदियो, विस्तरसहितबखान ॥
ध्रुवचरित्रसंतनसुखदाई ॥४४॥धनयशआयुषदेतबढ़ाई ॥ दायकसकलपुण्यकल्याना।सुनतअचलथलदेतमहाना॥
कोटिनपापनशावनवारो । मनप्रसन्नतावर्द्धनहारो ॥ ४५ ॥ प्रीतिसहितजोजनबहुवारा । ध्रुवचरित्रकोसुनैउदारा ॥
लहैभक्तिसोहठिहरिकेरी । जोनाशतिकलेशकीढेरी ॥ ४६ ॥ जोचाहैआपनीबड़ाई । ताकोअवशिबड़प्पनदाई ॥
चहैजोशीलादिकगुणनाना । लहैसकलगुणसुनतहिकाना ॥

दोहा-सुंदरताअरुसुमतिता, औरहुतेजप्रताप । जोचाहैतोहठिसुनै, ध्रुवकोचरितअमाप ॥ ४७ ॥
द्विजसमाजमेंसांझसबेरे । ह्वैपवित्रध्रुवचरितघनेरे ॥ कहैंसुनैजेपुरुषसदाहीं । तिनअघओघअवशिनशिजाहीं॥४८॥
कुहूद्वादशीपूरणमासी । जेहिदिनजाहिअर्ककोउरासी ॥ अथवाव्यतीपातजबआवै । अथवाश्रवणनखतशशिपावै ॥
अथवातिथिक्षयअरुरविवारा ॥ ४९ ॥ इनमहँजोध्रुवचरितउदारा॥श्रद्धावंतनजननसुनावै।अथवाअपनेमुखतेगावै ॥
सोमनकोवांछितफलपावै । जोअकामतौहरिपुरजावै॥५०॥देतजोअज्ञानिनयहज्ञाना।सतपंथिनसतिसुधासमाना ॥
सोइकहवावतदीनदयाला । ताकोसनमानतादिगपाला ॥ ५१ ॥

दोहा-ध्रुवचरित्रमाहात्म्यमैं, दीन्होंविदुरसुनाइ । सोगृहजननीखिलतजि,भज्योहरिहिवनजाइ ॥ ५२ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजू देवकृतेआनन्दाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेद्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

सूतउवाच ।

दोहा-मित्रासुतमुखतेसुन्यो, ध्रुवकोहरिपुरगौन । हरिमेंप्रीतिलगायपुनि, विदुरकहचोमतिभौन ॥ १ ॥

विदुरउवाच ।

कौनप्रचेताहैकानाना । कौनवंशमेंकहँतिनधामा ॥ काकेसुतकीन्हचोकहँयागा । वर्णहुमोसनसोबड़भागा ॥ २ ॥
महाभागवतदेवऋषीशा । जोसेवतनिशिदिनजगदीशा ॥ पंचरात्रिविरच्योमुनिग्रंथा । जामेंहैहरिपूजनपंथा ॥ ३ ॥

धर्मशीलजनजेसबकोई । तिनतेजोपूजितप्रभुहोई ॥ सोहरिकीप्रस्तुतिसुखगाई । महाभागनारदमुनिराई ॥ ४ ॥
कहयोप्रचेतनसोमखमाहीं।सोसबकथाकहोम्वहिंपाहीं।।सुनिकैविदुरवचनसुखमानी।कहनलगेमित्रासुतज्ञानी ॥५ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा-ध्रुवकोसुतउत्कलभयो, पितुवनगमननिहारि । नृपआसनबैठ्योनहीं, जगतअनित्यविचारि ॥
सातहुद्वीपधरणिप्रभुताई।तज्योगरलसमसोनृपगई।।६।।जन्महितेसज्जनसगकीन्हयो।सबकोयकसमानलखिलीन्हयो
आतमलोकलोकमहँआतम।निरख्योसकलदृष्टिपरमातम।।७।।करतविचारब्रह्मनिरवाना।भूल्योसकलशरीरहिभाना।
ब्रह्मानंदमगनसबकाला । जरेपापयोगानलज्वाला ॥ ब्रह्मछोडिदेख्योनहिंदूजो । कृष्णछोडिदूजोनहिंपूजो ॥ ९ ॥
तुरतैपुरतेकियोपयाना । छिपीभस्ममनुअनलमहाना ॥ तिनहिंपंथपुरबालकदेखे।बधिरअंधजडमूकहिलेखे।।१०।।
दोहा-सचिवऔरकुलवृद्धगुणि, उत्कलकोउनमत्त । भ्रमिसुतवत्सरकोकियो, भूपतिजानिसुवृत्त ॥ ११ ॥
स्वरवीथीजेठीतेहिरानी । ताकेभेषटसुतबलखानी ॥ पुष्पारनऋतुतिग्मकेतुवर । इपऊर्जवसुजयअतिधनुधर।।१२।।
पुष्पारनकीतहँद्वयरानी । दोषाप्रभानामछविखानी ॥ प्रातमध्यदिनसायंकाला । प्रभापुत्रयेतीनिविशाला ॥ १३ ॥
ऊषनिशीथहुऔरप्रदोषा । जन्योपुत्रयेतीनिहुदोषा ॥ पुहकरनीऊषाकीनारी । सर्वतेजसुतजन्योसुखारी ॥ १४ ॥
द्वितियअकूतिनारिजोताके । जन्योचक्षुमनुपरमप्रभाके ॥ सोमनुनारिनड्वलानामा । द्वादशसुतजनमेबलधामा।१५।।
दोहा-सबव्रतऋतुव्रतकुत्सपुरु, त्रितसिउल्मुकद्युम्न । जानहुअग्निष्टोमहू, अतिरात्रहुप्रद्युम्न ॥ १६ ॥
उल्मुककीपुहकरनीनारी । ताकेषटसुतभेबलभारी ॥ जेठोअंगसुमनअरुख्याती।क्रतुअंगिरागयहुविख्याती ।।१७।।
नामसुनीथअंगनृपनारी । वेनहिंजन्योघोरअघकारी ॥ जासुअधर्मस्वभावविलोकी । अंगराजऋषिहैअतिशोकी ॥
पुरतेकढिकाननमहँजाई । करितपदियोशरीरविहाई।।१८।।मुनिजननिरखिवेनकरपापा।दीन्ह्योताहिवज्रसमशापा ॥
मरयोवेननृपजबदुखदाई । तबमहिरह्योनकोउमहिराई ॥ कियोचोरतबअतिउत्पाता । भयेप्रजातहँदुखितअघाता।।
दोहा-दक्षिणकरतबवेनको, मंथनकरिमुनिराय । आदिराजपृथुप्रगटकिय, भयोअंशयदुराय ॥ १९ ॥ २० ॥
ऐसेसुनिमित्रासुतवैना।बोल्योविदुरवचनभरिचैना (विदुरउ०) अंगभूपब्रह्मण्यमहाना।शीलसिंधुशुचिसाधुसुजाना ॥
तासुपुत्रभोकिमिअघकारी।गयोविपिननृपजाहिनिहारी२१ कौनवेनकोलखिबड़पापा।दईमुनीशनघोरशरापा।।२२।।
प्रजापालनृपपापिहुहोई । तासुअनादरकरैनकोई ॥ आठहुलोकपालकरअंसे । होतभूपयहवेदप्रशंसे ॥ २३ ॥
कहौवेनकेचरितमुनीशा । हमतुम्हरेपदनावहिंशीशा ॥ वर्त्तमानभावीअरुभूता । तुमजानहुमित्राकेपूता ॥ २४ ॥
दोहा-विदुरवचनसुनिकैतहां, मित्रासुतहरषान । वेनचरितमिसिपृथुचरित, लागेकरनबखान ॥

मैत्रेयउवाच ।

राजऋषीशअंगमहिपाला । अश्वमेधकियज्ञविशाला ॥ भागलेनदेवतानआये । यदपिवेदपढ़िविप्रबोलाये ।।२५।।
तबऋत्विजकहनृपयजमानै । ताततहोतआश्चर्यमहानै ॥ सविधिहोमहविहमकरिदेहीं।।निजनिजभागदेवनहिंलेहीं२६
श्रद्धासहितवेदकेमंत्रा । पवैसवैहमविप्रसुतंत्रा ॥ भयेनमंत्रतेजतेहीना । देवअनादरकबहुँनकीना ॥ २७ ॥
देवकर्मसाक्षीसबजेवैं।कारनकौनभागनहिंलेवैं २८मैत्रेयउ० विप्रवचनसुनिनृपयजमाना।कह्योद्विजनसोंदुखितमहाना
दोहा-भागलेनहितदेवनहिं, आयेकारणकौन । सोहमसोंद्विजकहहुसब, भयोव्यतिक्रमजौन ॥ ३० ॥
सुनिनृपवचनसभासदबोले,अपनेउरकीआशयखोले।सदस्याऊचुः,महाराजयहिजन्महिमाहीं।तुमतोपापकियोकछुनाहीं
पूर्वजन्मकोकछुअपचारा । तातेलहेनआपकुमारा ।।३१।।सोईसाधनकरहुमहीशा । जामेंपुत्रदेहिजगदीशा ॥ ३२ ॥
पुत्रपायकरिहौजबयागा । तबसबदेवलेइँगेभागा ॥ ३३।।जौनकामनाकरिहरिपूजै।सोकामनातासुहठिपूजै ॥ ३४ ॥
पुत्रइष्टितबकियेनरेशा ॥३५॥ दियोअग्निमहँभागरमेशा।।पायसभरितबकंचनथारी । कढ्योपुरुषइकअग्निमझारी ॥
दोहा-कंचनमालालसतउर, अंबरअमलअनूप । निजकरसोंपायसदियो, सुतप्रदअंगहिभूप ॥३६॥

पूछिद्विजनपायसनृपलीन्ह्यो।सूँविसुनीथारानिहिदीन्ह्यो३७पायसखायपुत्रप्रदरानी।धरयोगर्भअतिशयसुखमानी ॥ कालपायसोजन्योकुमारा । महाअधर्मीपापअगारा ॥ रहीसुनीथामृत्युकुमारी । तातेभयोपुत्रअघकारी ॥ बालहितेमातामहरीती । गहीसुवनमानीनहिंभीती ॥ भेउतपातजनमकेकाला । नामवेनभोरूपकराला ॥ जबतेपदतेधावनलाग्यो । तबहींतेपापहिअनुराग्यो ॥ ३९ ॥ धारिधनुषकरवनमहँजाई । मारेदीनमृगनसमुदाई ॥ जौनजीवआगेपरिजावै । ताहिवेननहिंकबहुँबचावै ॥

दोहा–पशुपक्षीजलजीवबहु, औरहुकीटपतंग । विनावधेछाड़ैनहीं, सहसनकोइकसंग ॥ ४० ॥

खेलशिकारभौनजबआवै । तबपुरजनबालकनबुलावै ॥ पकरिपकरिबालननतहँबाँधी । राखैअंधकोठरीधाँधी ॥ पुनितिनकोमुठिकनसोंमारी । लेतप्राणदैदैबहुगारी ॥ वेनहिनिरखितप्रजाअपारा । भागतहैंकरिहाहाकारा ॥ केहुकेघरमेंआगिलगावै । केहुगहिगहिरेकूपगिरावै ॥ केहुकीवरवशपकरतनारी । केहुकोसकुलडारतोमारी ॥ जेहिमारगह्वैवेनासिधारे । तहँपरतपुरहाहाकारे ॥ प्रजानिरखिअसभापतवेना । भागहुभागहुआवतवेना ॥ ४१ ॥

दोहा–ऐसेखलनिजपुत्रलखि, अंगसमीपबोलाय । नृपकुलउचितहिधर्मबहु, वेनहिकह्योबुझाय ॥ १ ॥

सुनीनएकौपितुकीवानी । वेनअधमअतिशयअभिमानी ॥ तबपितुलग्योनिकारनताही।पैनहिंनिकरयोवेनकुराही॥ तबअतिदुखितभयोमहिपाला । उरमहँकियोविचारविशाला॥ जिनकेसुतनहिंतेइसुखारी।तिनहींपैप्रसन्नगिरिधारी॥ जोसुतहेतुकरैश्रमभारी । सोसुतलहिपुनिहोतदुखारी ॥ पापीपुत्रभयोजोअपने । तौसुखपावतकबहुँनसपने ॥४३॥

दोहा–पापीसुततेलहतहै, पुरुषअमितदुखभोग । पापीसुतकेयोगते, होतरोगअरुशोग ॥

सुतसोंरिपुदूजोजगनाहीं । सुतवशउपजतमोहसदाहीं॥कुत्सितसुतवशनरकहिजावै।कुत्सितसुतवशमोदनपावै४४॥ कौनसुमतिसुततेसुखजानै । कौनसुमतिसुततेरतिठानै ॥ होतदुःखदायकग्रहसांचो।सोइकुमतीजोतेहिमहँरांचो४५ पैकुमतीसुतमोहिंप्रियलागै । जासुकर्मलखिहोतविरागै॥जोविरागलहिगृहदुखदाई । तजिवनजायभजौयदुराई ४६ असविचारकरिकेतेहिकाला । लह्योनरैननींदमहिपाला ॥ शक्रसरिसतजिविभवमहाना।अर्धरात्रिउठिभूपसुजाना ॥

दोहा–रहीसुनीथासोवती, पुरजनसोवतसर्व । गयोभूपकढ़िकाननै, साधनमुक्तिअखर्व ॥ ४७ ॥

भयोभोरपुरजनसबजागे । गयेभूपदर्शनसुखपागे ॥ निरखेतहँनरेशकोनाहीं । अतिशयदुःखितभेमनमाहीं ॥ सचिवपुरोहितसुहृददुखारे । भूपहिहेरनसकलसिधारे ॥ गृहगृहवनवनपुरजनहेरे । अंगभूपकहँकतहुनहेरे ॥ सिगरीधरणिखोजितिनडारे । अपनोनाथकहूँननिहारे॥जिमिविषयीजनश्रीहरिकाहीं।बहुविधिखोजेहुपावतनाहीं४८ जबभूपतिकहँकतहुँनपाये । तबशोकितसिगरेफिरिआये ॥ नगरआयकैढारतआँसू । गयेऋषिनढिगलेतउसाँसू ॥

दोहा–वंदनकरिकरजोरिकै, कहैंऋषिनसोंवैन । अंगभूपकहुँकढ़िगयो, खोजेहुहमैमिलैन ॥ ४९ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौच०स्कं०त्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–जगतक्षेमचिंतकसकल, भृगुआदिकमुनिराज । विनानाथधरणीनिरखि, लगेविचारनकाज ॥ १ ॥

प्रजापरस्परपशुसमलरहीं । निजनिजधर्मोहिनहिंअनुसरहीं॥रह्योनअवकोउशासनकर्त्ता।तातेचहियअवाशिभूभर्त्ता१ असविचारिकरिसबमुनिराई । रानिसुनीथहिंसपदिबोलाई॥यदपिसचिवनहिंसंवतकीन्हे।तदपिवेनकहँनृपपददीन्हे॥ सिंहासनमहँतेहिबैठाई । शुभअभिषेककियेमुनिराई ॥ २ ॥ फिरीधरणिमहँवेनदोहाई।वरणिनजायतासुप्रभुताई ॥ तासुउग्रशासनसुनिकानन।चोरपरायलुकेद्रुतकानन॥जैसेपायभुजंगमत्रासा । भागहिंआखुछोड़िनिजवासा ॥ ३ ॥

दोहा–वासवसमलहिकैविभव, राजासनमहँबैठि । कुलकीमर्यादातजी, कोपसिंधुमहँपैठि ॥

वृद्धसचिवसुहृदहुसरदारा ।जिनहिंअंगनृपदियअधिकारा ॥ तिनहिंबोलिकैसभामँझारी । देदैगारीदियोनिकारी ॥
जेजनसदासराहतरहहीं । अनुचितउचितकबहुँनहिंकहहीं ॥ वेनभूपकीरुखकहँराखे । पापकरनकोवनहिभाखे ॥
तेकुमतिनकीजोरिसमाजा ।राजकरनलाग्योमहराजा ॥ अपनेमनदूजोनहिंमान्यो । कबहुँननीतिरीतिउरआन्यो ॥
सदाशराबपानकरिराजा । गणिकनकीबहुजोरिसमाजा ॥ परोरहैअतिशयसुखभीनो । कोकशास्त्रमेंपरमप्रवीनो ॥
दोहा–महानिरंकुशअघनिपुण,जिमिमतंगमतवार । वेनअनूपमअवनिमें, भयोअधर्मअधार ॥ ४ ॥
कहुँकहुँरथचढ़िसैनसजाई । चलतदेशदेखननृपराई ॥ सैनभारकंपतिहैधरणी । चढ़ेमतंगहिजिमिलघुतरणी ॥ ५ ॥
बहुगजमहँदुंदुभीधराई । दियोअवनियहिविधिगोहराई ॥ जोकोउयज्ञकरिहिअबभाई । ताकोसकुलनाशह्वैजाई ॥
जोकोउद्विजनदेइगोदाना । तासुशीशकटिहैकिरपाना ॥ जोकोउहोमअग्निमहँकरिहै । सोशठसकुलकूपमहँपरिहै ॥
जोकोउकरिहैपरउपकारा । तासुअवशिहोइहिसंहारा ॥ तीरथगमनकरिहिजोकोऊ । काटिजायँगेतेहिपददोऊ ॥
दोहा–जोकोउलैहैनामहरि, जरिजैहैतेहिजीह । जोकोउप्रतिमापूजिहै, सोपैहैदुखदीह ॥ ॥
जोकोउतपकरिहैमनलाई । ताहिहोयगीबेगिसजाई ॥ जोकोउव्रतकरिहैचितचाई । सोनासिकाविगतह्वैजाई ॥
जोकरिहैसुरभीसेवकाई । ताककरकटिजैहैभाई ॥ माधवमारगमाधनेहैहैं । सोनरगृहमेंरहननपैहैं ॥
जोमातापितुगुरुकहँमानी । अवशिसोवधआपनजनजानी ॥ जौनखनैहैकूपतड़ागा । सोलुटिजैहैअवशिअभागा ॥
जोशरणागतजनकोपाली । ताकीखींचिजायगीखाली ॥ जोकोउपितरनकरीसराधा । सोपैहैहमतेंहठिबाधा ॥
दोहा–हिंसाजोकरिहैनहीं, जोनगहीपरदार । जोवृद्धनकोपूजिहै, होईतासुसँहार ॥
मोकोजोपरमेश्वरमानी । मेरेहीहिततपजपठानी ॥ मोकोयज्ञभागजोदैहैं । मेरोनामरैनदिनलैहैं ॥
मेरहितकरिहैंव्रतभारी । मेरोपदजलशिरमहँधारी ॥ ताकोसबविधिमैंसुखदैहौं । अपनोभक्तताहिकरिलैहौं ॥
॥ जोवैरागिनीब्राह्मणकाहीं । नहिंहनिहैतेहिजीवननाहीं
जोधनदैगणिकानाहिंराखा । जोनाहिंमदमांसहि
दोहा–मोकोतजिजोदूसरो, मानहिगोजगईश । ताकोकरिप्रणमैंकहौं, अवशिकाटिहौंशीश ॥
लैहैजौनधर्ममुखनामा । ताकोलुटिजैहैधनधामा ॥ जोअधर्मकरिहैमनलाई । ताकोसबविधितेबनिजाई ॥
जोकरिहैबहुश्रवणपुराना । शीशपियायजायगोकाना ॥ जोकोउकुमतिवेदकोपढिहैं । तिनकीभटरसनागहिकढ़िहैं॥
जोखेलिहैंजुवाजननाहीं । सोफांसीबँधिमरिहिसदाहीं ॥ जौनदेवमंदिरबनवाई । ताकोगृहयुतजायगिराई ॥
जोजनमिथ्याकबहुनबोली । सोजनझोंकिजायगोहोली ॥ जोजनजीवनदयापसारी । सोजनजैहैसकुलसँहारी ॥
दोहा–जोमेरोशासनप्रबल, मानहिजननहिंकोय । नरकयातनासबलहीं, यहीलोकमहँसोय ॥ ६ ॥
ऐसोवेनभूपकोशासन । धराधर्मधुरध्रुवैविनासन ॥ मुनिकैप्रजासकलभयपागे । महाअधर्मकरनसबलागे ॥
रह्योनधरणीमहँकहुँधर्मा । छायोजगमहँअतिहिअधर्मा ॥ तहँअतिशोकितभेमुनिराई । देखिवेनकोपापमहाई ॥
रहेकरतजेछिपिछिपियागे।तेमिलिकहेवचनदुखपागे॥ ७॥हायउभयविधिगयोनशाई । कहाकहैंकछुकहिनहिंजाई ॥
विननृपचोरप्रजनदुखदेहीं ।भयेदुखितअबनृपहुकियेहीं ॥ जैसेदारुउभयदिशिजरई।मध्यापिपीलकहौकाकरई॥८॥
दोहा–अंगभूपजबवनगये, शासकरह्योनकोय । तबवेनहिनरपतिकियो, भयोअधर्मीसोय ॥
कहौहोयकेहिविधिकल्याना।छायोजगतअधर्ममहाना॥९॥जिमिभुजंगकहँपयकरपाना । बाढ़तगरलकहैंगतिमाना॥
जेअहिकहँपालनगृहकरहीं।तिनहूँकोडसिप्राणहिहरहीं॥महाक्रूरयहअघीअपारा । भयोसुनीथारानिकुमारा॥१०॥
प्रजापालहितहमनृपकीन्हो । सोईलौटिप्रजनदुखदीन्हो ॥ पैअबहमकहँउचितजनाई । समुद्रावहिंनृपवेनहिजाई ॥
तातेलगैनहमकहँपापा । मिटैवेनकृतप्रजासंतापा ॥ ११ ॥ अहैहमारोभूपबनायो । सोअधर्मअतिधराचलायो ॥
दोहा–जोमानीनहिंकैसहू, यहउपदेशहमार ॥ १२ ॥ तौताकोनिजतेजते, जारिकैरैगेछार ॥
असविचारिकैसबमुनिपावन । चलेवेनभूपहिसमुझावन॥प्रथमहिअपनोकोपछिपाई।बोलेवचनभूपढिगआई॥ १३ ॥

मुनयऊचुः।

नृपवरसुनियेवचनहमारे। जाकेहितहमइतेसिधारे॥ आयुपवलकीरतिश्रीदाता। जेहिसुनिहोतनृपतिविख्याता॥
पुरुषजोननमनवचनहुतेरे। करैंधर्मआचरणघनेरे॥ सोविशोकलोकनकहँपावै। जगमेंसुयशअनूपमछावै॥
जोअकामह्वैकरैसोधर्मा। लहतमुक्तिसोपुरुषसुकर्मा॥१५॥रहैधर्मजेहिभांतितुम्हारा। सोउपायकरुनृपतिउदारा॥

दोहा–धर्मनाशकेहोतहीविभौनाशह्वैजात। धर्मप्रकासतहीनृपतिविभौप्रकाशविख्यात॥१६॥

दुष्टसचिवअरुचोरनतेरे। जोरक्षतनृपप्रजनघनेरे॥ लेतयथोचितभागसदाही। ताकोसुखदोउलोकनमाही॥१७॥
जासुराजपुरमहँभगवाना। पूजितहोहियज्ञतेनाना॥ चारिहुवरनकरैंनिजधर्मा। कहुप्रचारनहिंहोयअधर्मा॥१८॥
अरुसधर्मनिजशासनधारी। तापरहोहिप्रसन्नमुरारी॥ १९॥ भेप्रसन्नगिरिधरजेहिपाहीं। ताकोदुरलभहैकछुनाहीं॥
लोकपालसवताहिडराई। अरपहिंवलिसादरशिरनाई॥ सकललोककेश्रीहरिस्वामी। सकललोककेअंतरयामी॥

दोहा–सकलयज्ञमयवेदमय, सबतपमयभगवान। तिनकोपूजहिसबप्रजा, संयुतसकलविधान॥

तिनपरजनकोदुखनहिंदेहू। तिनपैभूपतिकरहुसनेहू॥ २१॥ कियेयज्ञसुरहोतसुखारी। जेहैसकलसत्यगिरिधारी॥
यागभागअपनोसुरपाई। होहिसकलमनवांछितदाई॥ तातेयज्ञभूपकरवावहु। विविधभांतिकेधर्मचलावहु॥
करौनतुमसवधर्मविनाशा। नतह्वैहैतुम्हारहठिनाशा॥ प्रथमहिमुनिजुवसभासिधारे। तिनकीओरनवेननिहारे॥
वंदनपूजनअरुसन्तकारा। तहँकिमिलहहिमुनीशउदारा॥ पैताकरहितगुनिमुनिराई। दियेधर्मउपदेशसुनाई॥
सुनिमुनिवचनवेनमनभाष्यो। करिकैअरुणनैनअसभाष्यो॥

वेनउवाच।

दोहा–रेमूरुखमुनिजनसबै, आयेइतकेहिहेत। अपनेकोधरमीगुनौ, अहौअधर्मनिकेत॥

हमईश्वरहैंसत्यातिहारे। सकलवृत्तिकेबखशनहारे॥ मोहिंसमप्रभुतजिकेमतिमंदा। ध्यावहुदूसरईशगोविंदा॥
जिमिपरकीयातजिकुलभीती।पतितजिकेयारसोंप्रीती।तैसेतुमहौमुनिजनासिगरे। सांचेहुधर्मतुम्हारेविगरे॥२३॥
प्रगटईशमोंहितजिरेमूढा। धरहुध्यानकौनकरगूढा॥ औरईशजेनृपतजिध्यावै। तेनिजकरदोउलोकनशावै॥२४॥
कौनकृष्णहैईशतुम्हारा। जाकीकीजतभक्तिअपारा॥ भूपसनेहछोडावनहारी। कुलहिसमूलजरावनवारी॥
कियोजोतुमहरिपदमहँप्रीती। सोसतिकुलटानारिनरीती॥ २५॥

दोहा–विष्णुविरञ्चिमहेशयम, धनदवायुघनभान। क्षितिपावकवरुणहुशशी, औरहुदेवमहान॥ २६॥

समरथशापअनुग्रहमाहीं। नृपकेतनयेवसहिंसदाहीं॥ सर्वेदेवमयनृपकहँजानौ॥२७॥तातेनिजस्वामीमोहिंमानौ॥
तातेगर्वछोड़िकरियागा। देहुसकलमुनिमोकहँभागा॥ जपतपकरहुसकलममहेतू। ममप्रसन्नहितबांधहुनेतू॥
मोहिंप्रसन्नबिनभयेमुनीशा।जपतपसकलविफलतुवदीसा॥उठिप्रभातमोहिंनावहुमाथा।मोतेअधिकनदूसरनाथा २८

मैत्रेयउवाच।

यहिविधिकुमतिकुपंथीपापी।मंगलहीनसंतपरतापी॥मुनिउपदेशनरेशनमान्यो।कह्योकठोरवचनरिसिसान्यो॥२९॥

दोहा–गर्ववंत नृप वेनते, पाय अनादर घोर। निज उपदेश विनाश लहि, कीन्हे कोप कठोर॥ ३०॥

कुपितवेनपैमुनितपधारी। एकवारअसगिराउचारी॥ मारहुमारहुभूपतिकाहीं। यहपापीदारुणजगमाहीं॥
जियेजगतयहअवशिजराई। महाअधर्मकुपंथचलाई॥ ३१॥ यहनहिंहैनृपआसनयोगू। यातेदुखपावतसबलोगू॥
यहनिलज्जहरिनिंदनकीन्ह्यो।धराधर्मध्वंसहिकरिदीन्ह्यो॥३२॥जासुकृपालहिविभववड़ाई।पायोयहदियत।हिभुलाई॥
वेनछोड़िअसकोजगअहई।जोनिजमुखहरिनिंदनकहई३३यहिविधिकुपितऋषीशअपारे।जबवेनाहिअसवचनउचारे॥

दोहा–सुनिकै वैन ऋषीनके, वेन प्रकोपि महान। मुनि मारनकोउठतभो, तुरतहि काढ़ि कृपान॥

तहँमुनिगणकीन्हेहुंकारा। मरचोवेनलागीनाहिंवारा॥ हरिनिंदनतेरह्योमृतकसम।मुनिमिसिमरचोवेनपुरुषाधम॥

वेनहिनिजहुंकारहिमारी । निजआश्रममुनिगयेसिधारी॥मातुसुनीथातहँपुनिआई॥सुतहिमृतकलखिअतिदुखपाई॥
मंत्रनकेबलसोधरधीरा । धरिराख्योनिजपुत्रशरीरा ॥ तबधरणीमहँबिनमहिपाला । बिदुरव्यर्ततभयोकछुकाला ॥
तेहिधरणीमहँशठकरुचोरा॥दियोप्रजनकहँअतिदुखघोरा॥एकसमैसरस्वातितटमाहीं॥मुनिमज्जनकरिसुखिततहाँहीं॥

दोहा—कियोहोमबैठेसुचित, बरणतकृष्णचरित्र । तहँनरखेउतपातअति, नाशकप्रजनविचित्र ॥

सकललोकभयवोकबिलोके॥अरुचोरनतेप्रजनसशोके ॥ बिनानाथकीधरणिबिचारी । आपुसमेंअसगिराउचारी ॥
देखहुचोरचपलचहुँओरा॥बाढ़तभयेअतिहिबरजोरा॥३७॥धावतउडतिधूरिधरणीमें॥लोगदुखितअतिनिजकरणीमें॥
रह्योनकोउअबधरणिअधीशा । पालैप्रजनकाटिशठशीशा ॥ करहिपरस्परप्रजाविरोधू॥तिनकोअबकोकरैप्रबोधू ॥
महाउपद्रवजगमहँमाच्यो । काहूकोकछुकहूँनबाच्यो॥चोरहुआपुसमहँसबलरहीं॥यकएकनधनहितसंहरहीं ॥ ३९॥

दोहा—हीन तेज यह जगतमें, चोरमयीभैराजि । कहा कहैं कैसो करै, कहां जाहिं अब भाजि ॥

असकहिमुनिसबभयेदुखारी । यदपिसमर्थरहैतपधारी॥रक्षणप्रजनकरनकेलायक॥निजअधिकारनगुनिमणिनायक॥
दोषहुदेखिनरक्षणकीने । समदरशीमुनिहरिरतिभीने ॥ ४० ॥ यद्यपिसंतसुशीलउदारा । विप्रहोयजोधर्मअधारा॥
दीननदुखितदेखिनहिंरक्षै। तासुधर्मनशिजायप्रतक्षै ॥ जैसेफूटेभाजनमाहीं । श्रवैनीररहिजातोनाहीं ॥ ४१ ॥
पुनिकीन्हेअसमनहिविचारा॥बिननृपनहिंमहिदक्षनहारा॥है यह वंशजगतमहँपावन । कीजैतासुउपायचलावन ॥

दोहा—धर्मात्मा यहिवंशमें, भये भूप हरिदास । तातें भूपति रचहु कोउ करै जो धर्म प्रकास ॥ ४२ ॥

असविचारिसिगरेमुनिराई । वेननगरमहँपुनिद्रुतआई ॥ मृतकशरीरवेनकरमांगे । मंत्रनतेंतेहिमंथनलागे ॥
मथ्योवेनकीऊरूजबहीं॥प्रगटयोछोटपुरुषयकतबहीं॥४३॥काकसरिसकारोतनजाको ।अतिलघुबाहुचरणशिरताको
चपटीनाकनैनअरुणारे॥तैसहिअरुणशीशकेबारे ॥४४॥ पुरुषसुप्रगटियुगलकरजोरी । करीमुनिनसोंविनयनिहोरी॥
मैंकिंकरअतिदीनतुम्हारा॥कहाँजाउँकहँकरहुँअगारा॥ मुनिकहतेनिषीदयहिठामा ।तातेभोनिषादतेहिनामा॥४५॥

दोहा—दक्षिणदिशिसोजायकै, गिरिकाननकियवास । वंशआपनोकरतभो, बहुविधिजगतप्रकाश ॥
गोंडभिल्लअरुपावहू, औरनिषादकराल । बारिव्याधतैलकरजक, कोलकहारकुम्हार ॥
वेनभूपपातककियो, जगतीतलमहँजोय । पापपुरुषमिसिप्रगटभो, नीचजातकरसोय ॥ ४६ ॥

इति श्री भाग० सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धि श्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारि श्रीरघुराजसिंहजू
देवकृतेआनन्दाम्बुनिधौचतुर्थस्कन्धेचतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा—पुनिअपुत्रनृपवेनको, सुतउतपातिकेहेत । युगलबाहुमंथनकियो, सबमुनिवरमतिसेत ॥

बाहुमथतभेपुत्रकुमारी । भेसंतुष्टनिरखितपधारी॥१॥जानिकलाहरिकीतिनकाहीं॥कहतभयेअसवचनतहाहीं ॥२॥

ऋषयऊचुः ।

यहकमलाकीकलाकुमारी॥जोश्रीहरिकहँअतिशयप्यारी॥कृष्णकलातेयहजगपावन॥प्रगट्योपुत्रप्रजनसुखछावन ३॥
आदिराजयहजगयशछैहै । पृथुमहराजनामअसपैहै ॥ ४ ॥ यहदेवीसुंदररदवारी । गुणअरुभूषणभूषणकारी ॥
अर्चिनामछबिकीछबिकरनी॥मैंहैप्रभुभूपतिकी घरनी॥५॥पृथुसाक्षातकृष्णकोअंसा॥प्रगट्योजगदुखकरनाविध्वंसा ॥

दोहा—जगरक्षणकरिहैंअवशि, यामेंसंशैनाहिं । यहरानीपृथुराजकी, कमलाअंशसदाहिं ॥

सुनिमुनिवचनमहासुखपागे॥तहँगंधर्वगुणगावनलागे ॥ करहिंप्रशंसनाद्विजगणनाना । वरापिरहेसुमासिद्धसुजाना ॥
नाचहिंसुरसुंदरी सुहावनि । पृथुनृपजनमधरनिभेपावनि ॥ ७ ॥ दियेदेवदुंदुभीधुकारे । वाजेमंजु मृदंग अपारे ॥
चहुकितशंखधरनिधुनिछाई॥बाजिरहीतुरहीसहनाई॥ पृथुमहाराजाजन्मसुनिकाना ।पितरदेवऋषिचारणनाना॥८॥

औरहुसबलैलोकनपाला।ब्रह्माशिवआयेतेहिकाला ॥ पृथुनृपकेदक्षिणकरमाँहीं । चितैचक्रकोचिह्नतहाँहीं ॥ ९ ॥

दोहा—चरणनमेंअरविन्दको, चिह्नसबैसुरदेखि । मानेपृथुमहराजको, श्रीहरिकलाविशेखि ॥

चक्ररेखजाकेकरहोई । हरिकोअंशकहावतसोई ॥ १० ॥ तहँब्रह्माअतिआनँदपाई । वेदवादिब्राह्मणनबुलाई ॥
पृथुमहराजकरअभिषेका । करनचहयोब्रह्मासविवेका ॥ तहअभिषेककेरसंभारा । लायेपुरजनसुखीअपारा ॥
पृथुकहँसिंहासनबैठायो।कियअभिषेकविरंचिसुहायो११भूषणवसनपहिरिछबिछाजा।लहिअभिषेकहिपृथुमहराजा॥
बैठ्योसिंहासनमेंजबहीं । लस्योद्वितियपावकसमतबहीं ॥ तैसहिभूषणवसनसवारी । रानीअर्चिषआनँदधारी ॥

दोहा—बैठीमाधिसिंहासनै, पृथुमहराजाहिवाम ॥ १२ ॥ जाकीछविछिनछनननिरखि,लाजतिमनसिजवाम ॥

तबैसिंधुसरिशैलमहाना । नागधेनुअरुखगमृगनाना ॥ धरतिअकाशहुमूरतिधारी । औरहुसबजगजीवसुखारी ॥
लैलैभेटसकलतहँआये।पृथुमहराजाहिदियसुखछाये॥१३॥हेमसिंहासनदियोधनेशा।दियोछत्रशशिसरिसजलेशा १४
पवनदीनयुगचमरविशाला । धर्मदईकीरतिकीमाला ॥ इंद्रकिरीटदियोरविभासी। दियोदण्डयमदुष्टविनासी ॥१५॥
कवचवेदमयदियकरतारा । उत्तमदीनभारतीहारा ॥ दियोचक्रधरचक्रसुदर्शन । लक्ष्मीदईविभूतिताहिचन ॥१६॥

दोहा—नामजासुदशचंद्रहै,रुद्रदईकरवाल । नामजासुशतचंद्रहै, दईअंबिकाढाल ॥

चंद्रचारुदियअमरतुरंगा।त्वष्टादियसुंदरशतअंगा॥१७॥अगिनिदियोअखंडतेहिचापा।दियशरसूरजरिपुप्रदतपा ॥
भूपादुकायोगमयदीन्ही । सुमवरषानितनवनभकीन्ही ॥ १८ ॥ विद्याधरचारणगंधर्वा । दईगानवादनविधिसर्वा ॥
अंतरध्यानहोनकीशक्ती । खेचरदियवतायसबयुक्ती॥ऋषिमुनीशदियआशिरवादा।दियोसमुद्रशंखकलनादा॥१९॥
रथपथनदीनगेंद्रहुदीन्हे । मागधबंदीप्रस्तुतिकीन्हे ॥२०॥ मागधबंदीसूतनकाही । प्रस्तुतिकरतजानिढिगमाही ॥

दोहा—महाप्रतापीप्रथितजश, पृथिवीपृथुमहराज । घनरवसमबोल्योवचनविहँसतमाहिसमाज ॥ २१ ॥

पृथुरुवाच ।

हेमागधबंदीगणसूता । कसममकरहुप्रशंसअकूता ॥ जसतुमगावहुगुणमोहिंगाहीं । अबैनतसममगुणदरशाहीं ॥
तातेप्रस्तुतिकरहुनमेरी।होतिवृथातुववाणिघनेरी॥२२॥जबमैंहोउंसुयशकेलायक । तबप्रस्तुतिकरियोकविनायक॥
कृष्णसुयशहैगावनयोगू । तेहिआगूममसुयशअयोगू ॥२३॥ जेगुणवंतपुरुषकहवावैं । कबहुनतेनिजसुयशगवावैं॥
सुयशगवायेगुणबहुहोते । असजेगुनहिंतेजनमतिकोते ॥ हैनहिंतसजससुनैवड़ाई । तेअपनहुगुणदेयँगमाई ॥२४॥

दोहा—जेसमर्थजाहिरजगत, कीरतिवंतसुजान । तेलज्जितहोतैअवशि, निजयशसुनिनिजकान ॥
जैसेब्राह्मणविक्रमी, ताहिहनैभटकोय । कौनसुयशनिंदासरिस, सुनिसोलज्जितहोय ॥ २५ ॥
हेबंदीगणमोरगुण, अबहिंविदितजगनाहिं । अपनोसुयसगवाइकै, कसकुमतीव्हैजाहि ॥२६॥

इतिसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू-
देवकृतेआनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेपंचदशस्तरंगः ॥ १५ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

दोहा—बंदीसूतनकोजबै, यहिविधिकह्योनरेश । वचनसुधारसपानकरि, तेसुखलहेअशेश ॥ १ ॥

जहँ बंदीसूतनसमुदाई । मुनिवरबोलेवचनबुझाई ॥ मागधबंदीसूतसुहावन । गावहुपृथुयशप्रहमीपावन ॥
गायकसुनिमुनिवचनसुखारी । गावतभेपृथुयशमनहारी ॥

गायकाऊचुः ।

सकैवरणिकोआपप्रभाऊ । सदारावरोशीलस्वभाऊ ॥ निजसंकल्पहिसहितउदारा । वेनअंगतजिलियअवतारा ॥
आपचरितसुखवरणतमाहीं । ब्रह्माशिवादिकहूथकिजाहीं॥२॥पैहरिअंशजोपृथुमहराजा।जाकोयशजगमाहिंदराजा॥
ताकोचरितसराहनलायक । कहतसुनतअतिशयसुखदायक ॥

दोहा--हमकोदियोनिदेशमुनि,गावनआपुचरित्र। तातेहमगैहैंअवशि,पुहुमीकरतपवित्र ॥ ३ ॥
यहपृथुसत्यकृष्णअवतारा । धर्मधुरंधरधरणिअधारा ॥ सबलोकनमेंधर्मचलैहै । अधमअधर्मिनछयकरिदैहै ॥
रक्षकसकलधर्ममरयादा । ह्वैहैजनदायकअहलादा ॥ ४ ॥ सकललोकपालनकोकर्मा । करिहैकालकालयुतधर्मा ॥
साँचोउभयलोकहितकारी । करिहैयज्ञअनेकनिभारी ॥ ५ ॥ लैहैकरपरजनतेजोगू । दैहैकालपायहितभोगू ॥६॥
सबमेंसमदरसीमहराजा । बढ़ीप्रतापसरिसदिनराजा ॥ ७ ॥करिहैजोकोटिहुअपराधा। शरणगयेतेहिकरीनबाधा॥

दोहा-करुणासागरक्षितिक्षमा, दीरहदीनदयाल । नरतनधरिहरिऔतऱ्यो, पृथिवीपृथुमहिपाल ॥ ३ ॥
पावसमेघवरसिहैनाहीं । अतिदुरभिक्षपरीजगमाहीं ॥ परजापैहैमहाकलेशा । तबधनदैदुखदरिहिनरेशा ॥ ८ ॥
पूरणशशिसमआननहोई।मृदुमुसक्यायप्रजनमुदमोई॥अवलोकनकरियुतअनुरागा।करिहैसकलप्रजनबडभागा॥९॥
गमनागमनकोउनहिंजानी । निगमागमसबयहिपहिचानी ॥ ह्वैहैवेगमहागंभीरा । रक्षनकरिहैधनमतिधीरा ॥
महिमाअखिलसकलगुणधामा।जिमिसागरमहँरतननिग्रामा॥१०॥दुवनदुरासददुसहप्रतापी।दीरघदृष्टिदुष्टसंतापी॥

दोहा-निकटरहीसबकेयदपि, तदपिलगीअतिदूर । वेनअरनिउत्थितअनल, विक्रमज्वालापूर ॥ ११ ॥
गुप्तप्रगटपरजनकेकर्मा । चारपठैजानियसबमर्मा ॥ निंदाप्रस्तुतिसुनिनिजकाना । कोपहर्षनहिंकरियसुजाना ॥
वायुसरिससबस्थलसंचरिहै।जनमंगलनिशिदिवसविचरिहै।१२।निजरिपुदंडयोगनाहिंजेई।तिनहिंदंडपृथुकबहुनदेई॥
दंडयोगनिजसुतहुजोहोई । दंडलहीपृथुकरतेसोई ॥ धरणिधर्मपथअवशिचलैहै । कबहुनकाहूकोदुखदैहै ॥ १३॥
जहँलौंकरतप्रकाशदिनेशा । तहँलौंपृथुकोरहिहिनिदेशा॥देवअसुरअरुनृपबलधारी। सकिहैंपृथुकरहुकुमनटारी१४

दोहा-निजचरित्रतेजननको, करिहैअतिमनरंज । तातेपरजाकहहिगे, पृथुराजादुखभंज ॥ १५ ॥
सत्यसंधशरणागतपालक । दृढव्रतद्विजसेवकअघघालक ॥ सबप्राणिनदेहैसनमाना । ह्वैहैदीनदयालप्रधाना ॥१६॥
परनारिनमातासममानी । परधनकोगनिहैविषखानी ॥ निजनारिनमहंअतिरतिठानी । प्रजनपुत्रसमपृथुपहिचानी॥
किंकरवेदवादिविप्रनको । करिहैसत्यकरिहिजोप्रणको ॥१७॥ प्राणिनकोप्राणहुतेप्यारो।सुहृदअनन्दवकसनेहारो॥
संतनसंगकरि[illegible]सबकाला। पापिनकालसरिसविकराला॥१८॥अहैसत्यपृथुहरिअवतारा।तौगुणकोकहिसकेअपारा॥

दोहा-उदयहोतजेहिशिलते, अस्तहोतदिनराज । इतनैकोहोइहैअधिप, अनुपमपृथुमहराज ॥१९॥
जयदायकचढिस्यंदनमाँही।धनुधरलैसँगसैनहिकाँही॥रविसममहिमंडलसंचरिहै।पापिनदरिधरमिनसुखधरिहै॥२०॥
लोकपालअरुबहुमहिपाला । दैहैंपृथुकहँबलिसबकाला॥लोकपालमहिपालननारी।हरिगुणिगणगैहैंसुखकारी॥२१॥
धेनुरूपधरनीदुहिलैहै। प्रजनजीविकाबहुविधिदैहै ॥ धनुषनोकतेशैलनफोरी । समकरिहैमहिकरिवरजोरी ॥ २२॥
रथचढ़िचपलचलतचहुँवोरा। करिहैपृथुपिनाकटंकोरा॥ महाप्रबलरिपुसुनिसबभगिहैं । दुरिहैदरिनदुतेदुखपगिहैं॥

दोहा-उद्यतपुच्छमृगेंद्रकहँ, जिमिलखिकैमृदूयूह ॥ भागतहैअतिसैलभरि, करकैआरतकूह ॥ २३ ॥
पृथुमहराजसरस्वतितीरा । शतहयमेधकरिहिमतिधीरा ॥ यज्ञअंतमेंवासवऐहै । नृपकोवाजीहरिलैजैहै ॥
तबविजितासुनरेशकुमारा । वाजीछीनिलइहिबलवारा॥ २४ ॥ सनकादिकपृथुकेग्रहऐहै। तिनसोंब्रह्मज्ञाननृपपैहै॥
पुरुषजौनज्ञानहिकोपाई । जगतेअवशिमुक्तह्वैजाई॥२५॥करिहैप्रजाभूपयशगाना । सोसुनिहैसबथलपृथुकाना२६॥
जाहिरविक्रमजगमहँहोई। इनकीसमतालहिहिनकोई ॥ जीतिजोरसोंदशहुदिशाना । निजनिदेशप्रगटैहैनाना ॥

दोहा-निजप्रतापतेनाशिहै, बहुअधर्मदुखरूप । सुरहुअसुरगैहैसुजस, असह्वैहैपृथुभूप ॥ २७ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारी श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दाम्बुनिधौ
चतुर्थस्कंधे षोडशस्तरंगः ॥ १६ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा–यहिविधिबंदीसूतजब, वहुयशकियोवखान । धनदेतिनहिंसराहिके, पृथुकीन्हचोसनमान ॥ १ ॥
चारिवरणविप्रादिकजेते, प्रकृतिपुरोहितपुरजनकेते । सचिवसुभटसिगरेसरहारे, स्वामीसदनहिंसपादिसिधारे ॥
यथाउचिततिनकोदैकाजा । राजकरनलागेमहाराजा॥२॥पृथुकोचरितसुनतसुखपाई । बोलेविदुरमुनिहिशिरनाई॥

विदुरउवाच ।

धरणीधेनुदेहकिमिधारी । जाकोदुह्योभूपयशकारी ॥ कोदोहनीवत्सकोभयऊ । विषमधरणिकिमिपृथुसमकियऊ॥
शक्रहरयोकेहिहितमखवाजी।सोवरणहुमुनिह्वैअतिराजी॥४॥सनत्कुमारहितेलहिज्ञाना।कौनलोकपृथुकियोपयाना॥
दोहा–औरहुपृथुकेचरितसव, सकलपुण्यप्रदजोय ॥ ६ ॥ भक्तकथाअनुरक्तमोहिं, मुनिसुनाइयेसोय ॥
कौतुकलगतमोहिमुनिनाथा । दुह्योधरणिपृथुकिमिनिजहाथा ॥ ७ ॥

श्रीसूतउवाच ।

कह्योविदुरजवदोउकरजोरी । कथासुननमेंप्रीतिनथोरी ॥ तवप्रसन्नह्वैताहिसराही । बोलेमित्रातनयउछाही ॥८॥

मैत्रेयउवाच ।

जवपृथुराजतिलकविधिकरिके । सुरयुतगयेभवनमुदभरिके ॥ तववोलेसिगरेमुनिराजा।पालहुपृथिवीपृथुमहराजा॥
तहाँप्रजासिगरेजुरिआये।क्षुधाक्षामअसवचनसुनाये ॥९॥ नाथहमैअतिक्षुधासतावै।जिमितरुकोटरअगिनिजरावै ॥
हमतुम्हरेशरणागतआये । रक्षहुमरहिविनाकछुखाये ॥

दोहा–हमरेपालनहेतमुनि, तुमकोदियोनिदेश । जीवनहोयहमारजिमि, सोअबकरहुनरेश ॥ १० ॥
परयोधरणिदुरभिक्षमहाना । जवलौंगमनकरेनहिंप्राना ॥ तवलौंअन्नदेहुहमकाही । क्षुधाकलेशसहेनहिंजाही ॥
तुमनृपपालकअहौहमारे । तुम्हहिकहहिंमुनिहरिअवतारे ॥ ११ ॥

मैत्रेयउवाच ।

करुणवचनसुनिपरजनकेरो । कियविचारपृथुराजवनेरो ॥ धरणिनदेतिअन्नउपजाई । यहकारणमोहिंपरतजनाई ॥
ठीकठानिअसपृथुमहराजा । कियोधरणिपैकोपदराजा ॥ धारयौदोरदंडकोदंडा । लियेवाणयकपरमप्रचंडा ॥
कोपितकालहिसारिससुहायो । धरणीभस्मकरनचितचायो ॥ १२ ॥

दोहा–भस्मकरतयकवाणसों, आपनकहँपहिचानि । धेनुरूपधरिधरणितव, भागीपृथुभयमानि ॥
जैसेमृगीवधिककहँदेखी।भागतिहैभयमानिविशेखी॥१४॥भागतिभूकहँभूपविलोकी।रथचढिधायोकुपितअशोकी ॥
अरुणनयनधारेशरचापा ॥ १५ ॥ चल्योवेगसोपरमप्रतापा॥भूमिभरीभयजहँजहँभागै ॥ भूपतिजानजातसँगलागै॥
विदिशनदिशनअवनिआकासा।नरपुरनाकहुनागनिवासा॥जहँजहँजातिभूमिभयपाई।लौटिलखतितहँतहँनृपराई ॥
उद्यतधनुकीन्हेशरसाजे । धावतआवतममवधकाजे ॥ १६ ॥ सिगरेलोकपालकेलोकू । अवनीगवनीसंयुतशोकू ॥

दोहा–इंद्रवरुणअरुधनदयम, गुनिपृथुद्रोहीताहि । राखिसकेनहिंनिजभवन, अतिशंकितमनमाहिं ॥ १ ॥
ब्रह्मलोकलोमहिफिरिआई।कहुँनहिंजबनिजरक्षापाई।१७।तबकरजोरिभूपकेसन्मुख।आयवचनअसकह्योसहितदुख॥
धर्मधुरंधरपृथुमहराजा । शरणागतपालकतवकाजा ॥ रक्षणकरहुनाथअवमोरा । तुमसमनहिंकोउजगवरजोरा ॥
महिपालनहितप्रगटेआपू ॥ १८॥ सोकिमिदेहमोहिंसंतापू । मैंनकियोअपराधतिहारो॥मोहिंअनाथकेनाथउवारो॥
इधर्मज्ञहनहुकसनारी । धर्मात्मनामतलेहुविचारी ॥१९॥ करहिंयदपिनारिअपराधा । तदपिनवीरकरहिंतेहिवाधा॥

दोहा–शरणागतपालकप्रवल, तुमसमकरुणामान । कबहुंननारीवधकरहिं, भाखतवेदपुरान ॥ २० ॥
मैंहौंजगतजननकीतरनी । सकलप्रजनकीअतिसुखभरनी ॥ मोमहँवसहिंजीवसमुदाई । करहिंधर्मकर्मनिसुखदाई ॥

मोहिंभसमकरिनाथइहांहीं । किमिरखिहौजीवनजलमाहीं ॥ मोहिंहनेजलभरिरहिजैहै । कहँनिवासपुनिराउरहैहै ॥
भूकेवचनसुनतभूपाला । बोल्योकरिकैकोपकराला ॥

पृथु उवाच ।

रेवसुधावधकरिहौंतेरो । तैंशासनमानतिनहिंमेरो ॥ आगलेहिसबयज्ञनमाहीं । पैअनाजउपजावसिनाहीं ॥ २२ ॥
तृणबहुखायदूधनहिंदेवै । तौनधेनुकसदंडनलेवै ॥ २३ ॥

दोहा–बीजऔषधीअन्नसब, तुममेंधर्‍योविरंचि । सोअबतुमग्रस्योनहीं, मोहिंपृथुनृपकहँवंचि ॥

रेधरणीकुमतीदुखदाई । नहिंजानसिमेरीप्रभुताई ॥ २४ ॥ क्षुधाविवशसबप्रजाहमारे । होहिंदिनैदिनदूनदुखारे ॥
तिनकेआरतवचनअपारे । लगेकुलिशसमश्रवणहमारे॥निजशरतोहिभस्मकरिआजू।करिहौंप्रमुदितप्रजासमाजू२५
पुरुषनपुंसकनारिहुहोई । प्रजनकलेशदेतहठिजोई ॥ जाकदयालेशउरनाहीं । करैसाधुसोंद्रोहसदाहीं ॥
इनकेवधेजगतयशजागै।कबहुँभूपकहँपापनलागै२६गर्वभरीतेअवनिकुमतिअति।तिलसमकरितोहिहतिबाणनतति॥

दोहा–अनुपमअपनेयोगबल, रखिहौंप्रजनसदाहिं । धेनुरूपधरितेछलसि, जानसिकसमोहिंनाहिं ॥ २७ ॥
पृथुकोकालकरालवपु, निरखिकँपतकरजोरि । धरणिकरनप्रस्तुतिलगी, बारहिंबारनिहोरि ॥ २८ ॥

छंदगीतिका । धरोउवाच ।

जयपरपुरुषपृथ्वीशपृथुपृथुगुणप्रथितपृथिवीसवे । जेअपनेसंकलपतेबहुरूपधारकनितनवे ॥
जयदिव्यगनसंयुक्तनहिंअहंकारममकारहू ॥ २९॥ जयसकलजगकारणविकारणदियोममअवतारहू ।
मैंसकलजियआधारहौंमेरोअधाररमेशहैं ॥ सोइनाथसरसोदहतमोहिजेहिंकृपानसतकलेसहैं ॥ ३० ॥
जोरच्योमायातेचराचरजगतकोप्रभुआदिहै । रक्षकचराचरजगतकोअव्ययअनंतअनादिहै ॥
सोइहनतमोकोकहोसरनैजाउंअबमैंकौनकी । ममवचनआशाबाँधिरहियेनाथकृपाचितोनकी ॥ ३१ ॥
नहिंकुमतिजानहिइशमायाविवशईशचरित्रको । जोविरँचिब्रह्माकोरच्योजगमोददायकमित्रको ॥ ३२॥
निजशक्तिवेजगसृजहुपालहुहरहुआपहिसर्वदा । मैंतुमहिंकरहुनमामिबारहिंबारहोतुमशर्मदा ॥ ३३ ॥
जोजीवनिवशनहेतमोपरधारिसूकररूपको । परलैसलिलतेकियउधारसँहारिअसुरअनूपको ॥
कनकाक्षमार्‍योजलउधार्‍योमोहिंधार्‍योडाढमें । सोनाथनासुतमोहिंकसहैविवशकोपहिगाढमें ॥ ३५ ॥
नहिंजानिपरतोमोहिंकछूनहिंलखिपरतकोउनाथहै । जोकरहियहदुखसिंधुतेउद्धारममगहिहाथहै ॥

दोहा–त्राहित्राहिआरतहरन, पृथुस्वरूपभगवान । मोहिंअनाथकोनाथतुम, रक्षहुकृपानिधान ॥ ३६ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौ
चतुर्थस्कंधेसप्तदशस्तरंगः ॥ १७ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

दोहा–यहिविधिप्रस्तुतिकरिधरणि, मुनिअतिधीरजधारि । कँपतअधरनृपकोनिरखि,बोलीवचनविचारि ॥ १ ॥

धराउवाच ।

देहुनाथमोहिंअभयप्रदाना । मेरेवचनकरहुप्रभुकाना ॥जिमिअलिलेतसकलसुमसारा।तिमिछोटेवचनमतिवारा॥२॥
उभयलोकमहँसुखकेहेतू । कहेउपायजेसबमतिसेतू॥३॥तौनउपायकियेमहराजा । होतसिद्धमनुजनकेकाजा ॥ ४॥
जौनउपायकहेमतिमाना । करैजोतेहिनहिंपुरुषअयाना ॥ जिनमनतेरचिकरैउपाई । ताकोपुनिपुनिजातनशाई५॥
प्रथमजेऔषधिरचीविधाता । तेहिभोजनकियअवीअवाता॥६॥ताततेसबमैंलियोलुकाई । पर्‍योअकालमहादुखदाई॥

दोहा--कुमतीनृपपाल्योनमोहिं, कियोनधर्मेहियाग । चोरचारिहूओरचलि, लोगनलूटनलाग ॥
येऔषधिनहिंपापिनयोगू । तिनकोंकियोअधीहठिभोगू ॥ जोऔषधिपापीभखिलेहे । तौपुनिमुनिमखहितकहँपैहै ॥
लियोभक्षिमेंअन्नघनेरो । यहकारणदुरभिक्षहिकेरो ॥ ७ ॥ पचीऔषधीलाहिबहुकाला । बोवनबीजरह्योनहिंहाला ॥
तातेअसअबकरहुउपाई । जोमेंतुमकोदेहुँबताई ॥ ८ ॥ उचितवस्तुदोहनीबनाई । मोहिंदुहिलिहिजौनमनभाई ॥
तौदुरभिक्षमिटीदुखदाई।लहिहैप्रजाप्रमोदमहाई॥९॥औरहुजौनजौनजेहिचहिहै।तेसबमोहिंदुहिकैफललहै ॥१०॥

दोहा--मोहिंसमकरिदीजैनृपति, सकलशैलकोटारि । भरोरहैजामेंसदाबहुवरषाकोवारि ॥ ११ ॥
ऐसीसुनतधरणिकोवानी । पृथुमहराजमहामुदमानी ॥ मनकोबछराकरितेहिकाला । अरुनिजकरदोहनीविशाला॥
दुह्योधेनुधरणीसोअन्ना॥१२॥भयेप्रजातबपरमप्रसन्ना ॥ पृथुकोदुहतधेनुधरणीको । सुरमुनिलखिअद्भुतकरणीको॥
दुइनधेनुधरणीकहँआये । जोजोअपनेमनमेंभाये ॥ १३॥ ऋषिबछराकरिसुरगुरुकाहीं । दुह्योवेददोहनिमुखमाहीं ॥
बछरासुरपतिकहँसुरकरिकै । कनकदोहनीनिजकरधरिकै॥सुधारूपदूधहिदुहिलीन्हे।जाकेपियतमरणक्षयकीन्हे १५

दोहा--करिबछराप्रहलादको, दानवदैत्यमहान । विरचिदोहनीलोहकी, आसवदुहिहरषान ॥ १६ ॥
अप्सरअरुगंधर्वेहुआई।विश्वावसुकहँवत्सबनाई ॥ कमलदोहनीमेंमनलाई । दुहेगानविद्यासुखदाई ॥ १७ ॥
पितरअर्यमावत्सविरचिकै । काचोघटमाटीकोरचिकै ॥ पिंडदानदुहिलियेतहाँहीं।जाकोपायसदाहरषाहीं ॥ १८ ॥
विद्याधरअरुसिद्धसुजाना।कपिलहिकरिकैबच्छमहाना॥दुहतभयेसबसिद्धिनकाँहीं । जिनतेउड़िअकाशमहँजाहीं ॥
औरहुमायावीबहुजेते । दुहिलीन्हैमायासबतेते ॥ २० ॥ राक्षसयक्षहुऔरपिशाचै । औरहुआमिषभोजीसांचै ॥

दोहा--कीरकपालकोदोहनी, हरकोबच्छबनाय । दुहेरुधिररूपीसुरा, पानकियेहरषाय ॥ २१ ॥
बिछीसाँपहुआयअपारा । तक्षककोकरिबच्छउदारा ॥ दुहेमहाविषतेमुखमाहीं । जिनकेडसेमनुजमरिजाहीं ॥२२॥
औरहुपशुसबआयततक्षण । नंदीकोकरिबच्छविलक्षण ॥ वनरूपीदोहनतहँकीन्हैं । विविधभाँतिकेतृणदुहिलीन्हैं॥
औरहुमाँसाशीजेजीवा । सिंहबच्छकरिसुखितअतीवा ॥ २३ ॥ तनदोहानिकरिकैतहँनेतू । दुहेमांसभक्षणकेहेतू ॥
पुनिविहंगसिगरेजुरिआये । विहँगराजकहँबच्छबनाये ॥दुहतभयेतहँफलबहुभाँती।निजभक्षणहितकृमिबहुजाती ॥

दोहा--पुनिवटकोबछराविरचि, सकलवृक्षतहँआय । विविधभाँतिकेरसदुहे, अतिशयआनँदछाय ॥
गिरिसबहिमवानहिबच्छराकरि।दुहेधातुशृंगनिदोहनिधरि॥२५॥औरहुजगजीवनसमुदाई।उचितवत्सदोहनीबनाई॥
दुहतभयेजोमनमेंआयो।धेनुधरणिसबकहँसुखछायो२६॥२७तबपृथुकरिपृथिवीपरप्रीती।मान्योंतेहिदुहिताकीरीती
तबतेबहुअनाजउपजावै।पृथुदुहितापृथिवीकहवावै ॥२८॥ पुनिचढिरथमेंपृथुमहराजा।लैकरमेंनिजधनुषदराजा ॥
धनुषनोंकतेशैलमहाना । सहजहिटारतभोबलवाना ॥ टारतगिरिनशोरभोभारी । दक्षिणउत्तरदियोपवारी ॥

दोहा--धनुषकोरकोजोरलहि, चूरणभयेगिरिंद । जिमिगयंदकोशुंडलहि, पीसिजातअरविंद ॥
भूमंडलपृथुसमकरिदीन्ह्यो।सुयशअखंडलजगमहँलीन्ह्यो॥पुनिमनुजनकेनिवसनहेतू।पृथुमहराजकियोअसनेतू॥
नगरग्रामपत्तनपुरघोषू । आकरखरवटखेटअनोषू॥ इनकोरचतभयेनृपराई । तिनमेंबसीप्रजासमुदाई ॥
पुनिनिवासगौवनकेकाजा॥व्रजकोविरच्योपृथुमहराजा॥किलागढीपुनिरच्योअनेकू । लरहिंजिनहिंबसिबहुसँगपेकू ॥
पुनिनिवसनहितनृपनविदेशू । वसनभवनबहुरचेनरेशू ॥सिविरनामजिनकेकहवावै।नृपविदेशजिनबसिसुखपावै३१

दोहा--प्रथमहियेकछुनहिरहे, विरच्योपृथुमहराज । अबपत्तनपुरग्रामवसि, जनसुखलहहिंदराज ॥ ३२ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृतेआनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधे अष्टादशस्तरंगः ॥ १८ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा--ब्रह्मावर्त्तसुक्षेत्रमें, जहँमनुकोसुस्थान । जहँप्राचीसरस्वतिवही, हर्णापापमहान ॥
आदिराजतहँपृथुमहराजा । भाइनभृत्यनसहितसमाजा ॥ अश्वमेधशतकरनहिहेतू । कियसंकल्पमहामतिकेतू॥१॥
जिनतेचौगुनविभवविलोकी । इंद्रभयोमनमेंअतिशोकी ॥ आयोनहिंपृथुभूपतिजागा । बैठ्योथरमहँकोपहिपागा २
देखिइंद्रकीदशामुरारी । पृथुभूपतिकोयज्ञनिहारी ॥ चढिविहंगपतिमहँतहँदेपी ॥३॥ विधिशंकरमुदमानिविशेषी ॥
दोहा--निजनिजवाहनमेंचढे, निजनिजगणलैसाथ । आवतभेतुरतैतहँ, जहँश्रीपृथुनरनाथ ॥
यमअरुवरुणकुवेरहुआये । निजनिजसेवकसंगलेवाये ॥ हरियशगानकरतगंधर्वा । आयेचारनसहितअखर्वा ॥ ४ ॥
विद्याधरअरुसिद्धसुजाना । गुह्यकदानवदैत्यमहाना॥ हरिसेवकसुनंदनंदादिक । आवतभेअतिशैअँहलादिक ॥५॥
नारदकपिलआदिमुनिराई । आवतप्रतिआनंदउछाई ॥ आयेसनकादिकयोगीशा । औरहुदाससबैजगदीशा ॥
महीमहीपतिसबजुरिआये । औरहुद्विजवरआयसुहाये॥ विनाइंद्रयहत्रिभुवनमाहीं । असकोउनहिंजोआयोनाहीं ॥
दोहा--यथाउचितसबकोतहां, पृथुकीन्हयोसत्कार । रह्योनकोउअसयज्ञमें, जेहिमुदभोनअपार ॥ ६ ॥
जौनजौनजाकेमनभावै । सोसोसकलधरणिसोपावै ॥ जौनवस्तुचाहैनृपराई । प्रगटतौनतुरतैह्वैजाई ॥
कोटिकलपतरुसमभैधरणी।पायअपूरबपृथुकीकरणी॥७॥नदिनबह्योदधिघृतमधुक्षीरा।औरहुविविधभाँतिरसनीरा ॥
भूषणवसनसेजसुखदाई । लगेझूरनतरुवरसमुदाई ॥८॥ सातसिंधुधरिमनुजस्वरूपा । भरिथारनबहुरत्नअनूपा ॥
संयुतनदअरुनदिनसमाजे । आयनजरदीन्हेपृथुराजे ॥ धनदवरुणयमआदिकदेवा । देदैनजरकरैंपृथुसेवा ॥
दोहा--पृथुभूपतिदरबारमें, रह्योनसुरनरभान । सुरसमाननरकेभये, नरभेसुरनसमान ॥ ९ ॥
पृथुकोअतिऐश्वर्यनिहारी । इंद्रभयोमनमाँहदुखारी ॥ सकलभुवनमहँसिधिमुनिजेते । पृथुकोयशगावहिंसुखतेते ॥
पृथुमखलखिजेसुरपुरजाहीं । इंद्रसभामहँअसवतराहीं ॥ पृथुमहराजविभवलखिनीको । इंद्रविभवअबलागतफीको ॥
त्रिभुवनपतिहैपृथुमहराजा । सेवकसमलागतसुरराजा ॥ वृथावमंडकियेमनमाहीं । पृथुकोडरिगवनततहंनाहीं ॥
ऐसीसुनतऋषिनकीवानी । भयोकुपितवासवअभिमानी॥लैकरकुलिशकुटिलकरिनैना । बोल्योसभामध्यअसवैना ॥
दोहा--पृथिवीपतिहैकौनपृथु, जाकीकरहुप्रशंस । मैंहिएकत्रिभुवनधनी, कश्यपकुलअवतंस ॥ १ ॥
अतिशयअमलसुयशहैमेरो । बलीकौनमोहिंसरिसवनेरो॥ अहैक्षुद्रक्षत्रीक्षितिमाहीं । कहहुभूपपृथुतमजेहिकाहीं॥
अतिपापीनृपवेनकुमारा । भयोमृतकतेजेहिअवतारा ॥ थोरोधनथोरीप्रभुताई । पृथुकोगर्वसहोनहिंजाई ॥
पृथुसँगउपजीएककुमारी । ताकोकुमतिकियोनिजनारी ॥ दैकिरीटदियभूपबनाई । सोपृथुचहतमोरसमताई ॥
अबमैंयज्ञविध्वंसनकरिहौं । यहिमिसिपृथुकहंकुलसंहरिहौं ॥ देखतहौंपृथुकीमनुसाई।कुलिशघातकसकेबचिजाई ॥
दोहा--असकहिवज्रीवज्रगहि, चढ़िऐरावतमाहि । चल्योकोपिपृथुभूपपैयज्ञविध्वंसनकाहि ॥ १० ॥
गईपूजिनिन्यानवै, पृथुकीवाजीमेध । शतयेंमखकेकरतमें, पहुंच्योइंद्रकुमेध ॥
पृथुकोनिरखियज्ञसंभारा । कियोइंद्रमनमाहिंविचारा ॥ जोविध्वंसिहौंसन्मुखयागा । तौइतजुरेवीरबड़भागा ॥
करिकैपृथुकीअवशिसहाई । करिहैंमोसेयुद्धमहाई ॥ पृथुकोहरहुँमैंयज्ञतुरंगा । होइहितबैवाजिमखभंगा ॥
निरखिभंगमखहरित्रिपुरारी । जैहैंअपनेधामासिधारी ॥ तबपृथुभूपतिकोवधकरिहौं । अपनोयशजगमेंविस्तरिहौं ॥
असगुनिगजतेउतरिसुरेशा । अंतरध्यानभयोतेहिदेशा॥हरिकेपृथुमखतरलतुरंगा । चल्योव्योमह्वैमारुतसंगा॥११॥
दोहा--लैगोलैगोतुरंगकोउ, भयोतहांअसशोर । चकितचपनचितवनलगे, मुनिवरचारिहुंओर ॥ १२ ॥
हयकोहरतहेरिहरिकाही । कह्योअत्रिमुनिवचनतहांही ॥ पृथुमहराजइंद्रछलवारो । लियेजातहैअश्वतिहारो ॥
देवराजहैअतिपाखंडी । चाहतआपयज्ञकोखंडी । रह्योतहांपृथुप्रबलकुमारा । नामजासुविजिताश्वउचारा ॥
ताकोकह्योअत्रिमुनिवानी । तुमकाकरतअहौबलखानी ॥ तेरेपितुमखकोहयवाजी । लीन्हेजातपुरंदरपाजी ॥

दीक्षामहँचैठेमहराजा । जेहैंनहिंनाशनसुरराजा ॥ धावहुधावहुतुमविजितासू । मखतुरंगलैआवहुआसू ॥

दोहा–सुनतअत्रिमुनिकेवचन, धारिधनुपशरवीर । दौन्योद्रुतविजिताश्वतहँ, कियेकोपगंभीर ॥

बहुतदूरलगिजाननपायो । वासवकहँकुमारगोहरायो ॥ रेशठचोरमहाअभिमानी । देवराजअतिशयअघखानी ॥ जैहैकहँतुरंगलैमेरो । लैहौंकाटिशीशअबतेरो ॥ करिकैविघ्नपिताकीयागा । हरितुरंगजातोकतभागा ॥ रहोठाढ़अबठाढ़रहोइत । देवराजवाचिहोभागकित॥सुनिविजिताश्ववचनदनुजारी । फेरिशीशतेहिनिकटनिहारी ॥ लख्योकुमारहिकालसमाना । धावतआवतअतिबलवाना ॥ साजेधनुमहँबाणकराला । निकसैजातेकोटिनज्वाला ॥

दोहा–वज्रचलावनभूलिगो, वासवअतिहिडेराय । मानीमीचनगीचानिज, चितयोचितचौआय ॥

वासवसोंकछुबन्योनकरतो।भाग्योपृथुकुमारकहँडरतो॥पीछूचल्योकुपितविजिताशू।शरतेकरणसुरेशविनाशू १३॥ मांग्योवासववचतनदेखा । तबकारिलियतापसकरभेखा॥सकलअंगमहँभसमलगायो । जटाजूटनिजशीशबनायो ॥ लेचिमटातुंबीकरमाहीं । चल्योतुरंगछिपायतहाहीं ॥ तबविजिताश्वजानिसंन्यासी । तज्योनशरवासवकरनासी ॥ पूछततहाँताहिसोंभयऊ । लैतुरंगवासवकितगयऊ ॥ संन्यासीकहमैंननिहारचों । कहँतुरंगलैशक्रसिधारचौ ॥१४॥

दोहा–तबवासवकेवधनते, ह्वैकैतुरतनिराशु । लौटतभोनिजभवनको, महाबलीविजिताशु ॥

लौटतदेखिअत्रिमुनिराई । बोलेविजिताश्वहिगोहराई ॥ हनहुसुराधमशक्रहिकाहीं । नृपसुतयहसंन्यासीनाहीं ॥ यहहैमघवाभूपकिशोरा । चोरचोरायेमखकरघोरा॥१५॥सुनिविजिताश्वअत्रिकीबानी । लौटचोधनुसायकसंधानी॥ चल्योकुपितह्वैमनपछिताई । धोखाह्वैगोमोहिंमहाई ॥ अबबचिहैकैनेहुविधिनाहीं । जहँचाहैतहँशक्रपराहीं ॥ पुनिविजिताश्वहिआवतदेखी।उड्यचोतुरंगलैडरचोविशेखी॥देखिपुरंदरजातअकाशू ।चल्योअकाशपंथविजिताशू॥

दोहा–वासवढिगअतिवेगसों, आयोभूपकुमार । जैसेरावणपैगयो, गृद्धराजबलवार ॥ १६ ॥

वासववचनआपनजानी।तुरंगछोड़िभाग्योभयमानी॥तदपिरुक्योनहिंकुपितकुमारा । करनचह्योसुरपतिसंहारा ॥ ऐंचिकानलौंकठिनकोदंडा । छोड़नचह्योबाणपरचंडा ॥ तबवासवह्वैअंतरधाना । तहँतेतुरतैसभयपराना ॥ भूपकिशोरशक्रनहिंहेरचो । तेहिथलमेंताकोबहुहेरचो ॥ मिल्योनदेवराजजबचोरा । तबलौटचोपृथुराजकिशोरा॥ लैकेतुरँगयागगृहआयो।करिप्रणामनिजपितुहिदेखायो॥१७॥अदभुतविक्रमतासुनिहारी। सबैमहर्षिमुदितभेभारी॥

दोहा–पृथुकेजेठेपुत्रको, दियोनामविजिताशु । जोवासवकोजीतिके, कीह्वचोसुयशप्रकाशु ॥ १८ ॥

पुनिपृथुकोमुनिवरजगपावन । लगेयज्ञकीकृत्यकरावन ॥ तहाँपुरंदरपुनिकेआयो । तुरँगहरनकोचित्तलगायो ॥ अंधकारभारीकरिदीह्वचो । जामेंकोउकाहूनहिंचीह्वचो ॥ बँधोयज्ञकेखंभतुरंगा । लगिकनकशृंखलाअभंगा ॥ तेहितमतेतुरंगहिढिगआई।बंधनकाटिकृपाणचर्[illegible]॥लैभाग्योवासवपुनिवाजी।जान्योनहिंपृथुभूपजिजाजी ॥ १९ ॥ जबलैगयोबाजिकछुदूरी।तबमिटिगयोतहाँतमभू[illegible]॥ सहिततुरंगजातनभमाहीं । लख्योअत्रिमुनिवासवकाँही ॥

दोहा–पुनिबोल्योविजिताश्वसे, हेपृथुराजकिशोर । हन्योवोरजोप्रथमही, सोइहन्योपुनिचोर ॥

अबकीवासववचननपावै । करनउपद्रवपुनिनहिंआवै ॥ धावहुधावहुनृपसुतन्यारे । छोड़हुतापरतुमशरधारे ॥ सुनिविजिताश्वअत्रिकीबानी । धायोपुनिधनुशरसंधानी ॥ बोलतपुनिपुनिवचनकठोरा । रेरेदेवराजतैंचोरा ॥ कहँजैहैहरिकैमुखघोरा । अबकीशीशकाटिहोंतोरा ॥ असभाषतइंद्रहिनगिचान्यो । सोऊनिजवधमनअनुमान्यो ॥ कालहुतेकरालविजिताशू । मानिमहामनमेंतहँत्राशू ॥ निजमायातेतुरंगछिपाई । धरचोअघोरीवपुसुरराई ॥

दोहा–माथेमनुजकपालयक, हाथेमृतकशरीर । नाथेवृषकोचलतभो, सुनाशीरभयभीर ॥

जानिअघोरीतेहिविजिताशू । तज्योनशरजेहिपरमप्रकाशू ॥ तेहितेपूछचोफेरिकुमारा।तुमहमरोकहुँतुरंगनिहारा॥ शिरडोलायकीन्ह्योसोनाहीं।लखेनहमतुवतुरंगइहाहीं॥पुनिविजिताश्वअ[illegible]हिपछिताई।लौटिचल्योमखकोदुखछाई॥ तहाँअत्रिमुनिफेरिपुकारो । याहिअघोरीतुमनविचारो ॥ यहहैदेवराजशठचोरा । लियेजाततुवपितुमखघोरा ॥

मारहुमारहुअसनवचावहुतुरंगछीनिआशुहिइनल्यावहु ॥ सुनतअत्रिकेवचनकुमारा । भयोतुरतहिकोपअगारा ॥

दोहा–अतिप्रचंडकोदंडगहि, भायकमानिउदंड । चल्योशक्रकेदंडनहित, पृथुनंदनबरिबंड ॥

लैतुरंगभाग्योसुरराइ । चल्योअकाशहिअवनिविहाई ॥ पाछेनृपकुमारद्रुतधायो । जैसवाजलवापरआयो ॥
साजेधनुपवाणइकघोरा । कालसरिसपृथुराजकिशोरा ॥ शक्रनिरखिआवतविजिताशै । गयोअश्वलैऊंचअकाशै ॥
भूपसुवनतहँगयोभयावन । चह्योशक्रपैवाणचलावन ॥ तबवासवभाजिनीचेआयो । कुँवरहुकुपिततुरततहँधायो ॥
पृथुकुमारपैव्यर्थविचारी । वासवसकतनवज्रपवारी ॥ इककरकुलिशएककरवाजी । भागतवागतवासवपाजी ॥
लहतनवज्रतजनअवकाशू । निरखिपरेपीछेविजिताशू ॥

दोहा–कहुँनीचेआवतदोउ, कहुँपुनिजाहिंअकाशु । चकसमभागतवज्रधर । वरहीसमविजिताशु ॥

बारहिंबारहिवचनकठोरा । कहतशक्रकहँभूपकिशोरा ॥ लैजैहैतुरंगकहँमोरा । काटिहौंआजुशीशमैंतोरा ॥
देवराजतैंजाहिरचोरा । मोहिंनजानिहरैकसघोरा ॥ हनैदैत्यबापुरेअजोरा । अबनलखैवीरवरजोरा ॥
रेकपटीकश्यपकेछोरा । बचिहैनहिंभागिचहुँओरा ॥ मारुवत्रबज्रीकरिजोरा । मनकीआसुपुजैयहिठौरा ॥
तोरकुलिशसमकुलिशकरोरा । सकैनमेरेतनकहँफोरा ॥ मेरेप्रभुवसुदेवकिशोरा।जिनयशकियतिहुँलोकअजोरा ॥

दोहा–यहिविधिभाषतकटुवचन, वासवपाछूलाग । दौरतनभविजिताश्वभट, महाकोपमहँपाग ॥

वासववचनलख्योनिजनाहीं । काटनकुँवरचहतशिरकाहीं ॥ फेकिवज्रवासववसुधामें । वाजीकोविहायतेहिठामें ॥
भग्योनिरायुधदेवअधीशा । मान्योबच्योआपनोशीशा॥ कछुकदूरचलिअतिहिडेराना । भयोअमरपतिअंतरधाना॥
लख्योवाजिवासवनहिंदेख्यो।भटविजिताश्वविजयनिजलेख्यो २१ लैतुरंगसायकधनुधारी।लौटचोभूपकुँवरबलभारी
आयोलैवाजीमखशाला । जहँबैठ्योपृथुप्रथितभुवाला ॥ पितुपदकोकियकुँवरप्रणामा । वंद्योमुनिनमहामतिधामा ॥

दोहा–लखसराहनसिद्धमुनि, औरहुसकलसमाज । कौनसरिसविजिताश्वके, जोजीत्योसुरराज ॥ २२ ॥

जौनजौनवासववपुधारचौ । विनरणविजिताश्वहिसोहारचौ ॥ तौनतौननिंदितवपुकाहीं । पाखंडीधारेजगमाहीं ॥
पापाचिह्नपाखंडकहावै । तेहिजोकरैनरकसोजावै ॥ २३ ॥ कोइगेरूरँगिवसनहिवागै । कोउनंगेइकबांधेधागै ॥
जटाजूटराखेकोउशीशा । कोउलपेटेअंगफणीशा ॥ कोउवागैभसमलगाये । कोऊपरमहंसकहवाये ॥
पाखंडीअसविविधप्रकारा । जगमहँकितेकरहिंसंचारा ॥ भीतरक्रोधलोभअतिछाये । वागहिवाहेरवेषबनाये ॥

दोहा–ऐसेपाखंडिनविदुर, करैनसंगसुजान । पाखंडिनकेसंगते, उपजतपापमहान ॥ २४ ॥ २५ ॥

देवराजकीगुनिशठताई । कियोकोपअतिशयपृथुराई॥यद्यपिदीक्षितरहचौनरेशा।तदपिहुतनहितकुमतिसुरेशा ॥
धराअधीशधनुषकरधारी । वासववधनिजमनहिविचारी ॥ लियोवाणयकपरमप्रचंडा । मनहुचहतफोरनब्रह्मंडा ॥
उठतिविशिखतेपावकज्वाला।मनुकरालकालहुकरकाला॥२६॥लेतबाणपृथुकेकरमाहीं।दशौदिशावरिउठीतहाँहीं॥
धरणीकँपनलगीबहुवारा । प्रगटेउलकापातअपारा ॥ छोडिदईसागरनिजवेला । दिग्गजकियचिकारतेहिवेला ॥

दोहा–बाणज्वालकीजालते, जरनलगेत्रैलोक । वाढतभोतेहिकालमें, देवनकेउरशोक ॥

अबवासवबाँचतहैनाहीं ॥ ठीकपरचोदेवनमनमाहीं ॥ त्रिभुवनमाच्योहाहाकारा । कोहुकेतननहिंतनकसम्हारा ॥
उठचोनआसनतेमहिपाला । छोडनचाहचोबाणकराला॥ होतइंद्रवधअवसतिजानी ।मुनिवरअतिअनर्थमनमानी ॥
कोपवंतलखिकैपृथुराजै । विनयकियेमुनिसहितसमाजै ॥ बुधवरवरदेपृथुमहराजा।तुमहिंकरवअसउचितनकाजा ॥
अश्वछोडिकैयहमखमाहीं । दूसरकोवधहोतोनाहीं ॥२७॥ पैऐसहिजोखुशीतिहारी । तौमुनियेपृथुविनयहमारी ॥

दोहा–देवराजअतिशैछली, पापिनमाहँप्रधान । जन्योरावरेतेजसों कियअपराधमहान ॥

पढ़िमंत्रनहमसुरपतिकाहीं । होमिदेवयदिकुंडहिमाहीं॥आपतुच्छपरशरणचलाओ । यककारणकसभुवननशाओ॥
इंद्रहिभरितुवशरनहिंमारिहै । सिगरोस्वर्गक्षणैमहँजरिहै॥भूपतिसुनतमुनिनकीवानी । बोल्योवचनमहामतिखानी ॥

होमहुइंद्रहिपावकमाहीं । तौहमतजैवाणपुनिनाहीं॥२८॥तहँह्वैकुपितसकलमुनिराई । निजानिजहाथनस्रुवाउठाई ॥
करिशक्रहिउद्देशतेहिकाला । लगेकरनमुनिहोमकराला॥शक्रहिंगिरतजानिकरतारा । आयमुनिनसोंवचनउचारा॥
दोहा–भस्मकरहुमतिइंद्रको, मानहुकहोहमार । यहमन्वंतरमहँधरचो, कृष्णयज्ञअवतार ॥
वासवसोइयज्ञकोरूपा । देवअहैहरिअंशअनूपा ॥ तातेवासववधकेकीने । व्हैहैमहाअधर्मप्रवीने ॥ ३० ॥
करिपाखंडइंद्रमतिमंदा । करनचह्योपृथुयज्ञनिकंदा ॥ केवलसोअधर्मकेहेतू । कियोअघोरीतनधरिनेतू ॥ ३१ ॥
अश्वमेधशतकियेमुनीशा । होतइंद्रहठिस्वर्गअधीशा ॥ पृथुहिनइंद्रहननकीआसा । सोजैहैश्रीनाथनिवासा ॥
असकहिमुनिवरतेकरतारा । पुनिपृथुसोंअसवचनउचारा ॥ मोक्षधर्मकेआपविज्ञाता । तुच्छइंद्रपदचाहहुताता ॥
दोहा–शतवाजीमखकेकिय, होतविशेषिसुरेश । सोतुमकोनहिंउचितहै, तुमतौदासरमेश ॥
शतमेंकरहुएककमजागा । इंद्रहोहुनहिंतुमबडभागा ॥ कीरतिआपदिगंतनछाई । जोसुरेशस्वप्नेहुनहिंपाई ॥३२॥
अबनहिंकरहुइंद्रपरक्रोधू । शक्रकरिहितुमसोंनविरोधू ॥ क्षमहुभूपवासवअपराधा । तुमतौकरुणासिंधुअगाधा ॥
कृष्णस्वरूपअहौतुमदोऊ । यहप्रसंगजानतसबकोऊ॥३३॥ यज्ञविघ्नकरकरहुनशोचू । वासवकोजानहुमतिपोचू ॥
हेपृथुमहाराजबलवारे । सुनहुकृपाकरिवचनहमारे ॥ चहैनईशकरनजोकाजा । सोकारजकोहेमहराजा ॥
करतोकोपविवशजोकोई । तासुकाजसिधिकबहुँनहोई ॥ ३४ ॥
दोहा–करहुसमापतियज्ञअब, इंद्रअतीदुखिहोय । होतोसुरहठिकैहठी, यहजानतसबकोय ॥
इंद्रकरतपाखंडअपारा । तातेहोतअधर्मप्रचारा ॥ यहवासवतवमखकोद्रोही । चोरघोरकोअतिशयकोही ॥ ३५ ॥
यहजोकियपाखंडप्रचारा । ताहिसीखिजगजीवअपारा ॥ छोड़िधर्मनिजह्वैविनदंडा । करिहैप्रकटपहुमिपाखंडा ॥
ताकरदोषआपकोलागी । जोहैहौअबमखअनुरागी ॥३६॥ वेनुकियोसबधर्मविनाशा।भयोजगतमहँपापप्रकाशा ॥
सोइवेनतनुतेअवतारा । होतभयोपृथुराजनिहारा ॥ अहौकृष्णकीकलाविशेखी । रक्षहुधर्मधर्मनिजलेखी ॥
दोहा–जगकेपालनहेततुम, प्रगटभयेपृथुराज । धर्मसहितपालनकरहु, यहीतुह्मारोकाज ॥ ३७ ॥
जोनबंधकरिहौमखराजा । तौपखँडकरिहैसुरराजा ॥ तातेमखकरिबंधउदंडा । दलहुपुरंदरकेरपखंडा ॥ ३८॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

यहिविधिकह्योजवैविधिवानी।तबपृथुभूपमहामतिखानी।जसविधिकह्योतैसेहिकीन्ह्यो।वासववधमेंचित्तनदीन्ह्यो ३९
यज्ञअंतअवभृतसुस्नाना । करतभयोदेविप्रनदाना ॥ क्षम्योशक्रकोसबअपराधा । तापरकियोनशरकीबाधा ॥
जोइजोनजांच्योपृथुकाहीं । ताहितौननृपदियोतहांहीं॥भयेअयाचकयाचकवृंदा।गावतपृथुकोसुयशअमंदा ॥ ४०॥
सादरविप्रदक्षिणापाई । ह्वैतोषितमुदमगनमहाई ॥
दोहा–बारबारपृथुराजको, दैदैआशिरवाद ॥ पुनिअसनृपसोंकहतभे, मुनिवरयुतअहलाद ॥ ४१ ॥
आगेआयेआपको, पितामनुजमुनिदेव ॥ तेसबदानहुमानते, पूजितभेनरदेव ॥ ४२ ॥
इतिश्रीभा०च०सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजश्रीमहा-
राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौएकोनविंशस्तरंगः ॥ १९ ॥

श्रीमैत्रेयउवाच ।

दोहा–वासवपैपृथुकोकुपित, लखिविकुंठकोनाथ । ल्यायोनृपकेनिकटतेहि, गहिमघवाकोहाथ ॥
भूपतिकेसन्मुखकरिठाढ़ो । कह्योवचनकरुणारसबाढ़ो ॥ १ ॥ वासवकियअपराधतिहारो । कियेयज्ञमेंविघ्नअपारो ॥
यहशरणागतभयोतिहारे । चूकमाफकरुभूपउदारे ॥ यहअबकरहिसदासेवकाई । अभयदानदीजैनृपराई ॥ २ ॥

सुमातसाधुजहातनरेशा । तनहिंजीवनदंतकलशा ॥ वेरकरतकाहूसोनाहीं । शत्रुमित्रसमगुनतसदाहीं ॥ ३ ॥
जिनकेतनमेंनाहिंअभिमाना । तेमतिवंतनमाहप्रधाना ॥ तुमसमपुरुषकोपवशह्वैकै ।करैजोअनुचितउचितनज्वैकै॥
दोहा-तौसंतनकोसंगअरु, श्रवणशास्त्रसमुदाय । अरुवृद्धनसेवनसकल, मोकोवृथाजनाय ॥ ४ ॥
गुणिअज्ञानकृतअधमशरीरा।कबहुँनहोयकोपवशधीरा५भयोनजोशरीरकोछोहो।तौकहपुनिसुतनियधनमोही॥६॥
निर्गुणसगुणशुद्धअरुएकू । साक्षीस्वयंज्योतिसविवेकू ॥ ७ ॥ देहभिन्नहैदेहप्रकाशी । प्रभुपरतंत्रमहामुदराशी ॥
ऐसोतोआतमकहजानै । तेहिनकबहुँउपजतअभिमानै॥८॥जोयुतप्रीतिछोडिसबआसा।भजैसधर्ममोहिंसहुलासा ॥
ताकोक्रमक्रमतेनृपराई । निर्मलमनह्वैजातबनाई ॥ ९ ॥ जनकोजबानिर्मलमनभयऊ । गुणसंसर्गछूटितबगयऊ ॥
दोहा--मनमेंउपजीशांतिअति, पुण्यपापमेंक्षीन । लहतमनुजतबमोक्षको, ममदायातेहीन ॥ १० ॥
सबतेभिन्नजोनिजकहँदेखै । तनधनतियनिजसुतनहिंलेखै ॥ गुनैजीवअपनेअविकारी।लहतमोक्षसोइजनसुखकारी॥
आत्माकोहैनहिंसंसारा । यहदेहहिकोअहैविकारा ॥ तातेसम्पतिविपतिसमाना । मानतसर्वकालमतिमाना ॥
रँगेरहतमेरेअनुरागा । विचरतअभयसंतबडभागा॥१२॥उत्तममध्यमअधमसमैगुनि । इंद्रीजीतिदुखौसुखसबधुनि॥
ममविरचितमहिमंडलकाहीं।सचिवसहितपालियेसदाहीं१३पालतप्रजनजौनमहिपाला ।सोइपावतकल्याणविशाला
दोहा-प्रजापापअरुपुण्यहू, करैजौनभरिकोय । ताकोछठयोअंशपृथु, नृपपावतहैसोय ॥
जोपालैनहिंप्रजनसमाजन । सोहठिहोतप्रजाअघभाजन १४यहिविधिपालतप्रजनसमाजा।धारतधरणिधर्ममहराजा॥
जैहैकछुककालजबबीती । पुहमीमेंप्रगटतसतरीती ॥ तबऐहैतुम्हरेगृहमाहीं । सनकादिकजिननामसदाहीं ॥१५॥
माँगहुवरहेपृथुमहराजू । हौंप्रसन्नतोपरमैंआजू ॥ जोमैंयोगयागतपतेरे । कबहुनआवहुकैसेहुनेरे ॥
सोमैंबँध्योप्रीतितुवडोरी । यदपिरीतिसमदरशीमोरी ॥ १६ ॥

मैत्रेयउवाच ।

यहिविधिसुनियदुपतिकीवानी।धन्यधन्यनिजकहँपृथुमानी॥हरिदासनशिरमेंधरिलीन्ह्यो।प्रभुपदपंकजवंदनकीन्ह्यो
दोहा-यदपिविश्वविजयीरह्यो, पुहुमीपतिपृथुराज । तदपिकर्मनिजछोटगुनि, मानीउरमेंलाज ॥
इंद्रहिमिल्योभूपमतिमाना । दियोताहिपुनिअभयप्रदाना ॥१८॥ पुनिपूज्योहरिकोपृथुराई।बारबारपदमेंशिरनाई ॥
पृथुपूजनलहिश्रीभगवाना । चहेविकुंठहिकरनपयाना ॥ गवनकरतगुनिकेगिरिधारी ।पृथुभूपतिअतिभयोदुखारी॥
दौरिधरचोप्रभुपदअरविंदा । ढारतआँखिनआँसुनवृंदा ॥ १९ ॥ लखिपरेसपृथुप्रेममहाना।सकैनकरिबैकुंठपयाना॥
ठाढेरहेमहामुदछाये । बारबारदृगवारिबहाये ॥ २० ॥ पुनिमहराजयुगलकरजोरी।खड़ोभयोकरिप्रीतिअथोरी ॥
निरखनलग्योकृष्णकोरूपा । उपज्योआनँदउदधिअनूपा ॥
दोहा-भरेविलोचनवारिते, कढिनसकनमुखवैन । ध्यानहिमेंमिलिनाथको, मूंदिलियोनिजनैन ॥२१ ॥
पुनिआँखिनकोपोंछिनरेशा । नहिंअघातनिरखतहरिवेशा ॥ धरेगरुडकंधहिइकहाथा । बडेधरतिमहँश्रीयदुनाथा ॥
जसतसकेधरिकैउरधीरा । बोल्योवचनभूपगंभीरा ॥ २२ ॥

पृथुरुवाच ।

तुमहोवरदातनकेस्वामी । जगतचराचरअंतरयामी ॥ ऐसेतुमहिंपायकेसन्मुख । कोबुधजांचेतुच्छविषेसुख ॥
जाकोकुमतीचहैसदाहीं । तौनविषेसुखनरकहुमाहीं ॥ ब्रह्मलोकलौविभौबड़ाई । मैंनहिंचहौंलेनयदुराई ॥ २३ ॥
जहाँनआपुपदकंजमरंदा । चहौंनऐसोब्रह्मानंदा ॥
दोहा--येआशामनमेंअहै, सोदीजेवरदान । मेरेतनमेंहोयप्रभु, दशहजारअबकान ॥
संतकथिततुवचरितसुहावन । सुनौरैनादिनत्रिभुवनपावन ॥पियतकथारसअतिसुखपाऊँ।युगुलश्रवणतेमैंनअघाऊँ॥
कथासुधासंतनमुखढारी । तासुबिंदुलैवहतबयारी ॥ सोबयारिपरसतबहुपापी । होतआशुअतिअमलअतापी ॥
तातेराउरदाससदाहीं । तुवयशतजिकछुचाहतनाहीं ॥ २५ ॥ सुयशरावरोमंगलमूला । जगमेंदूजोताहिनतूला ॥

संतवदननेएकहुवारा। सुनहिकथाजोरसिकउदारा॥ सोनअघातबढ़तनितप्रीती। करतसदातुवपदपरतीती॥
तेतुवकथासुनतअघातनाहीं। सत्यसत्यपशुतेजगमाहीं॥होनहेतात्रिभुवनठकुराइनि।सन्योसुयशतुवरमागुसाइनि॥२६॥
दोहा--गुणआगरनागरनिपट, भक्तनभयकेभंज। रमासरिसहमआपके, सेवहिंगेपदकंज॥
कमलासोहमसोंगिरिधारी। ह्वैहैकहाकलहनहिंभारी॥ जोअसकहहुनाथहमपाहीं। सेवहुँसमैसमैसुखमाहीं॥
क्षणकोविरहनहींसहिजैहै। नाथसमैभरिकोपहुँचैहै॥ २७॥ तुवपदसेवतमाहिंमुरारी। बरुकहोयलक्ष्मीसँगरारी॥
यहांनहिंकछुशंकामोहिंलागै। तुवगुणनिरखिबढतअनुरागै॥ जैसेवासवबातवटाई। मोरिबातराखीयदुराई॥
तैसेहिलक्ष्मीतेमोहिनाथा। अधिककरोगेअवशिसनाथा॥ रमाशेषहूतेप्रियलेषी। दीनदासपरद्रवहुविशेषी॥२८॥
दोहा--यहीराखिविश्वासदृढ़, छोड़िसकलजंजाल॥ संतभजहिंपदरावरो, नाशहिकलिविकराल॥
छोडिकमलपदनाथतिहारो। परैनसेतनऔरनिहारो॥२९॥जौनकह्योमाँगहुवरदाना। तौनलोभावनहेतुबखाना॥
बँधेजगतसबतुवगुनखानी।मायामोहितह्वैअभिमानी॥यातेकरतकर्मजवनाना। कबहुँनलहततुम्हैंभगवाना॥ ३०॥
तुवमायाजनमतिहरिलेती। आपचरणरतिहोननदेती॥ मायावशजनतुमहिंभुलाई। चाहतविश्वविभूतिबढ़ाई॥
तातेजिमिपितबालककाहीं।मेटिकुपंथसुपंथसिखाहीं॥तैसेहितुममोहिकरिवरजोरी। देहुभक्तिआपनीअथोरी॥३१॥

मैत्रेयउवाच।

दोहा--ऐसीसुनिपृथुराजकी, सुधासरिसमृदुवाणि। बोलेवचनविनोदभरि, विहँसतशारँगपाणि॥
मोपरअतिशयप्रीतितिहारी। होयभक्तितोहिभूपहभारी॥ जौनभक्तितेसहजहिमाहीं। तुरतमनुजममायाकाहीं॥
सावधानह्वैपृथुमहराजा। ममनिदेशकरुसाहितसमाजा॥ ममनिदेशजोकरतोकोई। ताकोसबथलमंगलहोई॥३३॥

मैत्रेयउवाच।

असकहिपृथुसोशारँगपानी। बारबारहीताहिबखानी॥ पृथुसोंसादरपूजनपाई। चलेविकुंठयानयदुराई॥ ३४॥
तहँदेवर्षिपितरगंधर्वा। सिद्धअपसराचारणसर्वा॥ पन्नगनरपक्षीपशुनाना। औरहुहरिपार्षदहुसजाना॥ ३५॥
दोहा--औरहुजोनिजयागमें, आयेजीवअपार। तिनसबकोहरिरूपही, मान्योपृथुमतिवार॥
जोरिजोरिकरसबनसों, कहिकहिमंजुलबैन। करिआदरकोन्ह्योविदा, गेसबनिजनिजऐन॥ ३६॥
राजऋषीशनरेशको, औरमणिनगनकेर। हरिकेमनहरिगवनकिय, आपनभवनअदेर॥ ३७॥
पुनिप्रभुकोपरनामकरि, लैनिजसकलसमाज। गवनकियोनिजनगरको, मोदितपृथुमहराज॥३८॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधे विंशस्तरंगः॥ २०॥

श्रीमैत्रेयउवाच।

दोहा--गंगायमुनाबीचमें, पृथुकोनगरप्रयाग। सौनसहितआवतभयो, जाकोयशजगजाग॥
मुक्तभिलतबहुकुसुमनकेरी। झालरिझूलहिसुछबिघनेरी॥ औरहुमुक्तकुसुमकीमाला। भौनभौनमहँबँधीविशाला॥
तनेवितानहुविविधकिताके। फहरिरहेअतितुंगपताके॥ लसहिकनकतोरणचहुँओरा। छायोबहुबाजनकलशोरा॥
मंडितधूपधूमतेधामा। फैलीसौरभठामहिठामा॥ १॥ चंदनअगरसुवासितवारी। सींच्योगलिनमलिनसुखकारी॥
जवाफूलफलअक्षतलाजा। बिछेबजारनमहँसुखसाजा॥२॥ कदलीखंभसकलसबद्वारा। डगरडगरमहँनगरअपारा॥
दोहा--पूगखंभफरशनफुवै, फूलनफलनसमेत। नवदलवंदनवारबहु, नगरनिकेतनिकेत॥ ३॥
जासुसुनतपृथुराजअवाई। भयेमुदितमनुसरवसपाई॥ लेनचलेपृथुकोअगवानी। बालकवृद्धजुवतिछविखानी॥
कनककलशशिरविप्रकुमारी।तिनमेंदीपावलिद्युतिकारी॥कोउदधिदूबअछतभरिथारन। चलीपहरिउरहीरनहारन॥

गणिकागणकरिकेशृंगारा। चलींसुयशगावतसुखसारा ॥४॥ बजहिंशङ्खदुंदुभिसहनाई। पढहिंअखेदवेदद्विजराई ॥
यहिविधिप्रपितामहसुदर्भाने। निजनाथहिआँगृचालैलीने ॥ नृपहिनिरखिभयेपूरणकामा।एकवारसवकियेप्रणामा ॥

दोहा--वरनहिंचहुँकिततेसुयश, वंदीचारणसर्व। सोसुनिपृथुमहराजके, भयोननेकौगर्व ॥

प्रजासकलपृथुपूजनकीन्हे।निजकरनजरनिकरमणिदीन्हे॥पृथकपृथकतहँपृथुमहराजा।मिल्योप्रजनदियमोददराजा
पृथकपृथकपूछीकुशलाई। सुधासरिसमृदुवाणिसुनाई ॥ पृथकपृथकपरजाअसजाने। हमहींकोपृथुप्रभुप्रियमाने ॥
पुनिसिंधुरचढिपृथुमहराजा। सवप्रजानकेदरशनकाजा ॥ नगरप्रवेशहिकियोनरेशा। मेटतपुरजनहगनकलेशा ॥
निजमंदिरचंदरतेचारू। फैलिरहीजेहिप्रभाअपारू ॥ तहँप्रवेशकरिअतिसुखपाई। बैठ्योसिंहासननृपराई॥५॥६॥

दोहा--बहुतकाललगिभूपपृथु, वसिनिजनगरप्रयाग ॥ पाल्योक्षितिमंडलसकल, करिहरिपदअनुराग ॥

भूमंडलमहँसुयशअखंडा। छावतभयोभूपवरिबंडा ॥ लाखनवर्षभोगिसुखभोगू। गयोफेरिहरिपुरविनशोगू ॥ ७॥

सूतउवाच।

पृथुपृथिवीपतिसुयशमहाना। जासुकरैंगुणवंतवखाना ॥ सुंदरसकलगुणनतेपूरो । सुनतसप्रीतिकरतअघचूरो ॥
ऐसोपृथुयशसुनिनिजकाना। विदुरपायआनंदमहाना॥बोल्योमित्रासुतसोंबानी।औरहुकथासुननचितआनी॥ ८ ॥

विदुरउवाच।

जवपृथुकहँसुनिकियअभिषेका। पाल्योपृथिवीसहितविवेका॥बहुतइंद्रसमपायविभूती। जगमेंकरिअद्भुतकरतूती॥
सवदेवनतेपूजनपायो। अनुपमकृष्णदासकहवायो ॥

दोहा--दुह्योधरणिवरभुजनबल, धाऱ्योवैष्णवतेज ॥ निजप्रतापतेरिपुनकोदाह्योदुतहिकरेज ॥ ९ ॥

औरचरितकाकियोमहीशा। सोसुनायमोहिंदेहुमुनीशा॥पृथुयशकोसुनिकेनिजकाना।कोसुजानजगमाहिंअघाना ॥
जाकेविक्रमकोलहिलेशा। अबलौंभोगतजगतनरेशा ॥ अबलौंपृथुयशआनँदरासी। गावनहैंनितनाकनिवासी १०
सुनिकेविदुरवचनतेहिकाला। कहनलगेमुनिनाथकृपाला ॥

मैत्रेयउवाच।

गंगयमुनमधिनगरप्रयागा।तहाँवस्यौपृथुनृपवडभागा॥भोग्योविभौभोगविख्याता।जेहिलखिसुरपतिरह्योसिहाता॥
पूर्वपुण्यक्षयहानहिहेतू। भोग्योभोगमहामतिकेतू ॥ ११ ॥

दोहा--कियोचक्रवर्तीनृपति, शासनसातहुद्वीप। कहूँहुकुमनहिंरुकतभयो, कोउनहिंरह्योप्रतीप ॥

दियोदंडसबकोनृपराई। ब्राह्मणअरुहरिदासविहाई ॥ ब्राह्मणअरुहरिदासनकाहीं।क्षमाकियोअपराधहुमाहीं॥१२॥
एकसमयकीन्ह्योनृपयागा। जुरेसकलभूपतिवडभागा॥बहुब्रह्मर्षिराजऋषिआये। औरहुसकलदेवसुखछाये॥१३॥
सबकोकियोभूपसतकारा। रह्योजासुजैसेअधिकारा ॥ लागिगयोसुंदरदरबारा। बैठेपुहमीप्रजाअपारा ॥
मध्यकनकसिंहासनराज्यो। तापरपृथुमहराजविराज्यो ॥ जिमितारनमधिशशीसुहावै।
तिमिसमाजमधिपृथुछविछावै। पृथुप्रकाशतहँछावतभयऊ ॥ सुरमुनितेजतुरतदबिगयऊ ॥ १४ ॥

दोहा--उन्नतसुंदरजासुतन, कोटिकामसुकुमार। युगलपीनआयतभुजा, धराधर्मआधार ॥

कोटिशशीसमवदनप्रकासा। कंजनैनजनकरनहुलासा॥शुकछविहरनासिकासुहावनि।मंजुलवाणिसुधावरसावनि ॥
कंधपुष्टबिंबाधरजाके। रदमददरनकुंदकलिकाके ॥१५॥ केहरिकटिअतिवक्षविशाला।त्रिवलीसंयुतउदरविशाला॥
पृथुकोउदरविलोकिहारिभला।कंपतचलदलदलदलदलदल॥नाभिगँभीरमनहुछविवापी।उरूकदलिसमसुछबिकलापी ॥
उन्नतअग्रचरणअरविंदा । नखश्रेणीसुषमाहरचंदा ॥१६॥ सूक्षमकुटिलमृदुलसटकारे। केशसर्पशावकसमकारे ॥

दोहा--कंबुकंठशोभाहरन, भृकुटीमदनकबान ॥ अर्धचंदसमभालमें, ऊर्द्धपुंड्रदरशान ॥

युगलपीतपटपरमअमोला।लसहिसुधारससरिसकपोला।१७।विनभूषणतनसुंदरगोरा।फैलतजेहिप्रकाशचहुँओरा ॥
कृष्णाजिनधारणनृपकीन्हे। शोभावंतकुशाकरलीन्हे॥पूरणयज्ञकृत्यसबकरिकै। बैठ्योसभामध्यसुखभरिकै॥१८॥

सबपैफेरिडीठिसुखदाई। उठिकेआसनतेनृपराई॥निजछबितेसबचित्तचोरावत। सबकेश्रवणसुधाढरकावत ॥१९॥
चारुचित्रपदमुनिमनहारे। शीलभरेनृपवचनउचारे ॥ २० ॥

राजोवाच।

सुनहुसिखापनप्रजाहमारो । हैहैमंगलअवशितुम्हारो ॥ औरहुसुनैसाधुजेआये । मैंशासननिजदेतसुनाये ॥
दोहा–जोचाहैसबधर्मको, जाननबुधिवरकोय ॥ तौनिजमनकीसाधुसों, कहैनराखैगोय ॥ २१ ॥
मोहिंराजाविरच्योभगवाना। दंडदेनमेंकियोप्रधाना ॥ पालनप्रजनदियोअधिकारा। देनजीविकाजननअपारा ॥
राखनधर्मनकीमरयादा।कह्योननिजसुनिबोअपवादा२२येसबकर्मकियोजोलोका। होतसोमोहिमुनिकह्योविशोका॥
जोपालतनृपपरजनकाहीं। तापरकृष्णप्रसन्नसदाहीं ॥ २३ ॥ जोकरलेतनधर्मसिखावै। सोनृपप्रजापापकोपावै ॥
थोरेकालमाहँनृपराई। विभौहीनह्वैजातोभाई ॥ २४ ॥ तातेप्रजामोहिंप्रभुमानो।ममसंगलकरिबोचितआनो ॥
दोहा--तौयदुपतिकेचरणमें, दीजेचित्तलगाय। प्रीतिसहितगोविंदगुण, गावहुगर्वगँवाय ॥
भगवतभक्तिकरहुरेभाई। यहिमेंतिहरोकछुननशाई ॥ २५ ॥ हेदेवर्षिसुरर्षिविज्ञानी। जोमेंकहीप्रजनकोवानी ॥
देहुसराहितुमहुसहुलासन। जोमैंदेतहोहुँशुभशासन ॥ जोनहोययदुपतिपदसेई। ताकहँउचितसिखापनदेई ॥
जौनसराहतकरतकरावत। मरतौनिहुसमफलपावत ॥ २६॥ जेशठकहैंकृष्णहैनाहीं।तिनकेमुखपषाणधसिजाँहीं ॥
जोयदुपतिप्रत्यक्षनहिंहोते। तौसज्जनअभीतनहिंसोते ॥ शुभअरुअशुभफलनकोदेतो।दीनदुसहदुखकोहरिलेतो ॥
दोहा–मनुनरेशउत्तानपद, अरुश्रीध्रुवमहराज। औरप्रियव्रतभूपजो, राजऋषिनशिरताज ॥
ममपितुपितुजोअंगनरेशा॥ २८॥ औरहुधर्मप्रसिद्धधरेशा॥ब्रह्माशंकरअरुप्रहलादा। अरुबलिधारकधर्मप्रजादा ॥
येसबश्रीयदुनंदनकाहीं। मानतअपनोनाथसदाहीं ॥ यदुवरसकलकर्मफलदाता। ऐसोकहतवेदविख्याता ॥
कृष्णछोडिदूजोनहिंनाथा। जोयहत्रिभुवनकरैसनाथा ॥ २९॥पैवेनादिकभूपतिपापी। जानैंनहिंहरिकहँजगतापी ॥
तेसबविधितेनिंदनलायक। जेजननहिंजानतयदुनायक ॥ करहिधर्मकेवलमतिमंदा। गावतनहिंगुणगणगोविंदा ॥
दोहा–तेजनधरमीनामके, अहैंअधर्मीचोर। जियतजगतदुखभोगही, जातनरकमरिघोर ॥
महिमहँअर्थधर्मअरुकामा। स्वर्गविभौअपवर्गललामा ॥ दूजोदुनीमाहँनहिंदायक। दायकएककेवलयदुनायक३०
कृष्णचरणसेवनकीप्रीती। फोरतिकोटिजन्मअघभीती॥जैसेकृष्णचरणजलगंगा।करतिकोटिकलिमलद्रुतभंगा३१॥
करैकोटिवनमहँतपजाई। होयप्रीतिजोनहिंयदुराई ॥ तौनहिंकतहुँकृष्णपदजोवै । पुनिपुनिपरिजगमहँनितरोवै ॥
करैजेयदुपतिपदमहँप्रीती। राखहिंसाधुनवचनप्रतीती॥तिनकेतुरतअमलमनहोवत । कोटिजन्मकेपातकखोवत ॥
दोहा–पहुँचततुरतपरेशपुर, गाहतप्रेमसमुद्र ॥ आवतनहिंतेकबहुँपुनि, यहसंसाराहिक्षुद्र ॥ ३२ ॥
तातेमनवचकर्मते, भजहुप्रजायदुनाथ ॥ नातोयहसंसारमें,लागीनहिंकछुहाथ ॥
कपटकुशीलकुसंगविहाई। करिअनुरागभजोयदुराई ॥ ३३ ॥ हैपरेशप्राकृतगणहीना। शुद्धज्ञानवपुपरमप्रवीना॥
येअनेकअंगनयुतयागा। हैहरिसुनहुप्रजावडभागा ॥ ३४ ॥ हैसबकेप्रभुअंतर्यामी । हैफलरूपसोइबहुनामी ॥
जिमिजसदारुहिकीअनुहारी।तैसीपावकपरतिनिहारी३५जेस्वधर्मयुतमहितलमाहीं।ध्यावहिंत्रिभुवनपतिहरिकाहीं।
धन्यधन्यतेप्रजाहमारे। मोपरपरमकृपाविस्तारे ॥ यज्ञभागभोगिनकेनाथा । त्रिभुवनगुरूएकयदुनाथा ॥ ३६ ॥
दोहा–ज्ञानीतपीदयालद्विज, जिनकेहरिकुलदेव। क्षमाशीलकेसदनजे, करतजेसंतनसेव ॥
ऐसेवैष्णवअरुविप्रनको । करैअनादरभूपनतनको ॥ जोइनकोअभिमानदेखावै । जरामूलतेसोनृपजावै ॥
पैजेकृष्णभक्तनृपहोहीं। तिनपरहोहिंसाधुजनछोहीं॥३७॥हरिविप्रनपदपूजनकरिकै।लहीरमाकोअतिसुखभरिकै॥
विप्रनपदकोपूजिमुरारी । लह्योपवित्रसुयशजगभारी ॥ पूजिविप्रपदकोश्रीधामा । लहब्रह्मण्यदेवअसनामा ॥
पूजिविप्रपदकोविकुंठधनि।भयेब्रह्मशिवसुरनशिरोमनि॥३८॥जेविप्रनपदपूजनकरते।तिनकोअवशिकृष्णमुदभरते॥
दोहा–तातेमानहुसबप्रजा, ऐसेवचनहमार ॥ प्रीतिधर्मतेसहितानित, करहुविप्रसतकार ॥ ३९ ॥

जेविप्रनपूजैमनलाई । तितकोचित्तशांतह्वैजाई ॥ विप्रनकेपदपूजतभाई । पावतमनुजमुक्तिअनपाई ॥
तातेविप्रनतेजगमाहीं।अधिकजनातमोहिंकोउनाहीं॥४०॥जसब्राह्मणमुखजातअवाई।तसनहिंपावकमहँयदुराई ४१
श्रद्धातपआचरणहुँकरिकै । धारतविप्रवेदमुदभरिकै ॥ जौनवेदपढ़िकेमतिवाना । लखतधर्मआरसीसमाना ॥४२॥
मैंकिरीटयुतशीशहिमाहीं । धरौंनित्यद्विजपदरजकाहीं ॥ विप्रचरणरजशिरमहँधारे । छूटतक्षणमहँपापअपारे ॥
विप्रचरणरजाशिरधरिलीने । होतआशुसबगुणनप्रवीने ॥ ४३ ॥

दोहा--विप्रकरतजापैकृपा, ताकेगुणपरताप । दूनदूनदिनदिनबढ़त, तापतिकबहुँनताप ॥

जाहिविप्रभैकृपामहाई । ताकीबढतिविभवप्रभुताई ॥ तातेविप्रगऊगिरिधारी । मोपरकरहिंकृपानितभारी ॥
सबैवृद्धकोसेवनकरहू । सबैविप्रकोअतिमुदभरहू ॥ सबैमुकुंददासहठिहोहू । सबैकरहुँदीननपरछोहू ॥
जाहिकरतअसनहिंसुनिलेहौं । ताकोअवशिदंडमैंदेहौं ॥ ४४ ॥

मैत्रेयउवाच ।

ऐसीसुनतभूपकीवानी । देवपितरमुनिनरसुखमानी ॥ एकबारसबभेरउछाहन । साधुसभामहँलगेसराहन ॥
पुनिपृथुसोंअसवचनबखाने । कौनभूपाभूआपसमाने ॥ ४५ ॥

दोहा--पितुपावतहैपुत्रके,सुकरमवशशुभलोक । यहजोभाषतवेदसब, सोसतिपरोविलोक ॥

तुमसमपायपुत्रजगजेना । निकस्योनरकनतेनृपवेना॥रह्योमहापापीद्विजशापी । आपपुण्यवशभयोअतापी॥४६॥
जैसेहिरणकशिपबलवाना । पायपुत्रप्रहलादसमाना ॥ यद्यपिकियोनाथकीनिंदा । तदपिभयोवैकुंठवसिंदा ॥ ४७॥
चारिहुयुगजीवहुमहराजा । पालहुसिगरीप्रजासमाजा ॥ तुमसमरामदासनहिंदूजो । कोविप्रनतुमसमजगपूजो४८॥
हमहुँअवशिहरिदासकहाये । जिहँतेतुमसमानप्रभुपाये ॥ श्रीब्रह्मण्यदेवहरिकेरो । कियोहमहिंउपदेशघनेरो ॥४९॥

दोहा--ऐसोकहिबोआपको, कछुअचरजहैनाहिं । तेऐसहिसिखवतप्रजन, जिनकरुणाउरमाहिं ॥ ५० ॥

हमअभागवशभवउदधि, भ्रमतरहेभ्रमछाय, तुमचढायवाणीतरनि, दीन्ह्योपारलगाय ॥ ५१ ॥

शुद्धसतोगुणपरपुरुष, पृथुसरूपश्रीधाम । पालतहैंपुहमीप्रजन, शिरसोंताहिप्रणाम ॥ ५२ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेएकविंशस्तरंगः ॥ २१ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा--यहिविधितहँसिगरेप्रजा, पृथुकोकियोबखान, मध्यसभासोहतनृपति, मनुतारणसितभान ॥

तहाँचारिहूओरअकाशा । छावतसूरजसरिसप्रकाशा॥ऋषिपुनीतसनकादिकचारी । आयेभूपतिसभासुखारी ॥१॥
नभतेउतरततिनहिंनिहारी ।पृथुमहराजधर्मधुरधारी॥सनकादिककैहैंअसजियजानी॥हरहिंलोककीसबअवखानी ॥२॥
उठ्योसमाजसहितमहराजा।मान्योसरवसभोममकाजा३कियोधरणिमहँदंडप्रणामा।पुनिकरिविनैमुदितमतिधामा॥
ल्यायोसनकादिकनलेवाई।कनकासनआसीनकराई॥तिनकोविधिवतपूजनकीन्ह्यो।तिकरिकृपाग्रहणकरिलीन्ह्यो॥

दोहा--चरणपखारिमुनिनके, शिरसींच्योमहराज । शीलसिंधुप्रमुदितनृपति, कियसनमानदराज ॥ ५ ॥

लसहिपरमऋषिहेमसिंहासन।मनिवेदीबिचज्वलितहुताशन।प्रीतिसहितपुनिदोउकरजोरी।बारबारतिनऋषिननिहोरी
शिवकेजेठेभ्रातनपाहीं । बोल्योवचनविचारितहाँहीं ॥ ६ ॥

पृथुमहराजउवाच ।

अहोकौनमैंसुकरमकीन्ह्यो । जातेआपदरशमोहिंदीन्ह्यो ॥राउरदरशनमंगलमूला । करतसकलपापननिरमूला॥
योगिनदुर्लभदरशतिहारो ।धन्यधन्यहैजन्ममहमारो ॥ ७ ॥ जापरविप्रप्रसन्नसदाहीं । उभयलोककछुदुर्लभनाहीं ॥
होहिंप्रसन्नजाहिंपरविप्रा । तेहिहरिहरप्रसन्नह्वैछिप्रा ॥ ८ ॥

दोहा--यद्यपिविचरहुत्रैभुवन, तदपिननिरखतकोय । जिमिव्यापकपरमातमा, दृगगोचरनहिंहोय ॥ ९ ॥

धनिगृहस्थअधनहुमतिमाना।जिनवल्लहहिंसंतसनमाना॥हैतृणआसनजेपदधोये।तेकोटिनकलमषनिजखोये॥१०॥
मनुजयोनिलहिजिनवरमाहीं।पर्‍योसंतचरणोदकनाहीं॥तिजनयदपिधरणिधनमाना।पैतिनगृहअहिभवनसमाना ११
नाथकृपाकरिभलपधारे । पंचवर्षकोवरवपुधारे ॥ यद्यपिदेखिपरमअतिछोटे । तद्यपिकरहुसकलव्रतमोटे ॥
जिनकेमुक्तिलहनकीप्रीती । जेजनचलहिंआपकीरीती ॥१२॥ हमतोनाथपरेभवकूपा । लहैंविपैदुखगुनिसुखरूपा ॥

दोहा--तातेदेहुबतायप्रभु, केहिविधिकुशलहमारि । महामंदमतिह्वैरहे, कछुनहिंपरतनिहारि ॥ १३ ॥

बूझियकेहिविधितुवकुशलाई।तुमहौजगतकुशलकेदाई॥सदामगनहरिप्रेममहाना।अकुशलकुशलसकलसमभाना १४
संसारिनकेहोहितकारी । तुममेंअसपरतीतिहमारी ॥ तातेकरिकैकृपामहाई । देहुनाथअबमोहिंबताई ॥
केहिविधिसहजहिमहँजगजीवा। पावहिंमुक्तिमोदकीसींवा१५यहजाहिरहैसकलजहाना।सनकादिकसरूपभगवाना॥
विचरहिंजगनिजदासनहेतू । करहिंकृपाहठिकृपानिकेतू ॥ १६ ॥

मैत्रेयउवाच ।

पृथुमहराजमधुरसुनिवैना । सनकादिकपायोअतिचैना ॥

दोहा--प्रथमहिसनत्कुमारतहँ, मंदमंदमुसकाय । बोल्योपृथुमहराजसों । सिगरीसभासुनाय ॥ १७ ॥

सनत्कुमारउवाच ।

हेपंडितवरपृथुमहराजा । जानहुसिगरेशास्त्रसमाजा ॥ पैसबजनकेजाननहेतू । कियोप्रश्नयहअतिसुखसेतू ॥
साधुनकीमतिऐसहिहोती।निजमिसिपदसुखकरतउदोती॥१८॥साधुनकोसंगमदुहुँओरा।वक्ताप्रच्छकमोदअथोरा॥
औरहुश्रोतनप्रदकल्याना । यहचरित्रसुंदरभगवाना॥१९॥हरिचरणारविंदमहँभूपा । अहैतोरिमतिअचलअनूपा ॥
हियकीकामवासनाहरनी।भवसागरकीतारनतरनी ॥२०॥जोपूछहुसोसुनहुनरेशा। मैंअबसकलकरहुउपदेशा ॥

दोहा--सबशास्त्रनमेंजानिये, मुक्तिहेतुहैंदोय । करैजगतकोसंगनहिं, कृष्णप्रीतिअतिहोय ॥ २१ ॥

तेदोउवस्तुजौनविधिहोई । अबमैंवरणहुँतुमसोंसोई ॥ करैवेदगुरुवचनप्रतीती । बढ़ैकृष्णसेवनमहँप्रीती ॥
अहैकृष्णस्वामीमैंदासा असगुनिकरैअनन्यविश्वासा ॥ करैसदासंतनसेवकाई। कृष्णचरित्रसुनैचितलाई॥ २२ ॥
क्रोधीलोभीकामिनकामिनि। बैठहितिनसँगनहिंदिनयामिनि॥क्रोधलोभमदकामहुत्यागै।सदाइकांतवासअनुरागै॥
करैकृष्णप्रेमहिरसपाना । राखिसदासंतोषमहाना॥२३॥करैपरमहंसनआचरना । कबहुँनकरैजीवसंहरना ॥

दोहा--हरिसेवनकोछोडिकै, हितनहिजानैऔर । कृष्णकथापीयूषको, करैपानसबठौर ॥

तपजपव्रतसबकरैअकामा । केवलप्रीतिहेतुश्रीरामा ॥ औरदेवऔरनमतिकेरी । करैननिंदाअनुचितहेरी ॥
लाभहानिमहँहर्षविषादा । करैनकबहुँछोडिमरयादा ॥ आतपशीतसहैसबकाला । परैनकबहुँजगतजंजाला ॥२४॥
सुनैमहाभारतपरभाता । रामायणमध्यानविख्याता ॥ सुनैभागवतसंध्यामाहीं । यहिविधिकाटैकालसदाहीं ॥
असजोसाधनकरैनरेशा । तबगमनतश्रीनाथनिवेशा॥२५॥जबविज्ञानआगिउरबाढी । तबवासनाजरैसबगाढी ॥

दोहा--तौनज्ञानजगमहँनृपति, विनगुरुकियेनहोय ॥ २६॥ लहिश्रीगुरुउपदेशजन, मुक्तिलहैसबकोय ॥

जबवासनासकलजरिजाहीं । अहंकारतबउपजतनाहीं ॥ तबहरितजिपुनिकछुनदेखाई । हरिसोंनहिंअंतररहिजाई ॥
स्वप्नसरिसलागतसंसारा । रहतनपुनिमननेकुखँभारा॥२७॥ जबलोंरहहिवासनानाना । तबलौंविषैभोगतनभाना ॥
जबलौंविषैमालिनजियरहतो।तबलौंईशज्ञाननहिंगहतो ॥ २८॥ जिमिजलमहँद्वैवपुजियदेखै।जलनहिंरहेएकहीलेखै॥
तैसहिजबलौंरहतिउपाधी।तबलौंकृष्णकृपानअगाधी२९विषैविवशमनज्ञानहिनाशै।जिमित्रिननिजसँगसबिलनिकाशै॥

दोहा--नशैज्ञानहरिकीसुरत, भूलिजायततकाल । हरिकेमिलबेमेंनृपति, यहअवरोधकराल ॥ ३१ ॥

यहमैंप्रभुकोनहिकछुदोसू । निजतेखोवतनिजतनहोसू॥यातेअधिकनहैकछुहानी।प्रभुकोतजबविषैप्रियमानी॥३२॥
जेजननिशिदिनविषैविचारे । तिनकहँविषैनरकमहँडारे । रहतनज्ञानभक्तिलौलेशा।तरुपषाणहठिहोतहमेशा॥३३॥

जातेभवनिधिचहैजोपारा । तेनविपैसँगकरैउदारा॥अर्थधर्मअरुमोक्षहुकामा । विपैविवशनशिजाहिंमुदामा ॥३४॥
अर्थधर्मअरुकामहुतेरे । मोक्षप्रधानकहैकविटेरे ॥ त्रैमहँअहैकालकीभीती । मोक्षमाहँनहिंभीतिप्रतीती ॥ ३५ ॥
दोहा-अजशंकरआदिकसबै, त्रिगुणवलितसबकाल । तिनकरतविनाशहठि, कालपायकेकाल ॥ ३६ ॥
तातेस्थावरजंगमकाहीं । ईशरूपजानहुमनमाहीं ॥ अपनेकहँजानहुहरिदासा । राखहुसदाकृष्णकीआसा ॥ ३७॥
सबकेमाधवअंतरयामी । सबकेपालककहैंबहुनामी ॥ जिमिभ्रमसोमालाअहिमाने । तिमिनिजकहसुग्नरजियजाने ॥
जबभ्रमछूटिगयोजियकेरो । तबनिजकहँहरिदासनिबेरो ॥ हरिस्वामीमैंदाससदाहीं । असनरशरणगहहुमनमाहीं२८॥
श्रीयदुनंदनपदअरविंदा । तामेंमनकरिदेहुमलिंदा ॥ प्रेमपियूपकियेजसपाना । नशहिंकोटिजनममनिअवनाना ॥
तसनहिंकोनेहुकियेउपाई । उरकीविविधवासनाजाई ॥
दोहा-ज्ञानीयोगीअरुतपी, संन्यासीव्रतवान । प्रेमीकीसमताकबहुँ, लहैनभूपसुजान ॥
तातेप्रीतिसहितसबठोरा । भजहुभूपवसुदेवकिशोरा ॥ ३९ ॥ यहदुस्तरसागरसंसारा । कामादिकजहँग्राहअपारा॥
तरनचहैविनहरिरतितरणी । तिनकीदुखकरणीसबकरणी॥तातेभक्तिनावरचिराजा।उतरहुभवनिधिसहितसमाजा ॥

मैत्रेयउवाच ।

ब्रह्मपुत्रजबसनतकुमारा । यहिविधिपृथुसोंज्ञानउचारा ॥ सोसुनिभूपसराहिसुखारी।जोरियुगलकरगिरगउचारी४१॥

पृथुरुवाच ।

प्रथमहिमोकहँकृपानिधाना । करिकैकृपादियोवरदाना॥ प्रभुकेवचनहोनसतिहेतू।कियोआगमनइतमतिसेनू॥४२॥
दोहा-दयासिंधुसनकादिप्रभु, भाष्योभगवतज्ञान । सोसुनिभयोसनाथमैं, वाढ्योमोदमहान ॥
राजकोषदलभूतिवनेरी । हैसबमेरीसाधुनकेरी ॥ मैंहूँहौसाधुनकरदासा । साधुजूँठयहविभवविलासा ॥
भोगहुभोगसाधुकोदीन्ह्यो । मोरनसत्वसत्ययहचीन्ह्यो ॥ हैनहिंमोरदेनअधिकारो । यहसिगरोहैनाथतिहारो ॥
आपहिकोआपहिअबलीजे । मोपरनाथअनुग्रहकीजे॥४३॥प्राणदारसुतगृहपरिवारा । राजकोपदलविभवअपारा ॥
सनकादिकअरप्योतुमकाहीं । मोकहँचाहकछूअबनाहीं॥४४॥सेनापतिदंडहुकरधारण।अरुपालनपरजनपरिवारन॥
दोहा-सकललोककोअधिपहू, होनयोगसोइहोत । अखिलशास्त्रजाकसदा, मुखतेकरतउदोत ॥ ४५ ॥
भोगहिवस्तुआपनीआपे । बखशैविप्रद्रवैजबजापे ॥ क्षत्रिआदिविप्रनकेदीने । भोगहिभोगनवीननवीने ॥ ४६ ॥
जेहरिमिलनपंथदिखराये। ज्ञानविज्ञानविवेकबताये ॥ ऐसेगुरुनउऋणकोउनाहीं । उऋणचहैसोशठजगमाहीं ॥
करजोरेविनकोसंसारा। सकैकौनकरिगुरुउपकारा ॥ ४७ ॥

मैत्रेयउवाच ।

यहिविधिसुनिपृथुकीसुनिवानी । पायोमहामोदकीखानी ॥ लहिभूपतिसोबहुसतकारा । नृपहिसराहतबारहिंबारा॥
सबकेदेखतउड़ेअकासा । सनकादिकगेब्रह्मनिवासा ॥ ४८ ॥
दोहा-धर्मधुरंधरधरधुरा, धरणिधर्मकीधाक । धीरधुरीननकोअधिप, पृथुधरेंद्रध्रुवसाक ॥
सनकादिकतेलहिविज्ञाना।पूरणकामभयोमतिवाना॥४९॥देशकालधनबलअनुसारी।कियोकामनृपउचितविचारी ॥
सकलकर्मअरपैहरिकाहीं । फलकीआशकरतकछुनाहीं ॥ अपनेकहकरतानहिंजाने ।सबतेअलगआपकोमाने५१॥
सावधाननृपरहैसदाहीं । माधवचरितसुनतक्षणजाहीं ॥ यदपिरहैगृहमेंमहराजा । महाचक्रवर्तीक्षितिछाजा ॥
पैअशक्तविषयनिनाहिंभयऊ।अहंकारनहितनछैगयऊ॥जिमिरवितपतरहतअतिदूरी । पृथुप्रतापपुहमीतिमिपूरी ५२
दोहा-करतकर्मअसज्ञानयुत, पालतपुहुमिसधर्म । पंचपुत्रपृथुकेभये, जगजाहिरनिजकर्म ॥ ५३ ॥
धूम्रकेशहरियक्षद्रविनवृक । जेठोभोविजितासुप्रबलयक ॥ सबलोकनपालनगुणजेते । धार्योइकभूपतिपृथुतेते ५४
जैसेजहँआवतोकाला । तसतहँपालतप्रजनभुवाला ॥ मनवचकरमहुशीलसुभाऊ। रंजनकरतप्रजनपृथुराऊ॥५५॥

गजानामपृथुहिमहसाँचो।जेहिलखिसकलप्रजनगणराँचो । आनँददायकमनहुनरेशा । हरतभरतरविसरिसनरेशा५६
पावकसमदुरधर्षमहाना । दुरजैमहामहेंद्रसमाना ॥ क्षितिसमक्षमाक्षमाछविछाई। स्वर्गसमानमनोरथदाई ॥ ५७ ॥

दोहा--घनसमधनक्षणक्षणजनन, बरषतपृथुमहराज । अतिअगाधमतिउदधिसम, अचलमनहुगिरिराज५८॥

दंडिनदंडतसरिसदंडधर । हैविचित्रमानहुहिमिभूधर।भूपतिधनमहँसरिसधनेशा।गोपकअर्थसरिससलिलेशा ॥५९॥
बलविक्रमअरुवेगमहाना।विचरतनृपमहिपवनसमाना६०दुसहरुद्रसमअरिनदेखातो।रूपनिरखिकामहुलजिजातो ॥
हैनिशंकमानहुपंचानन । प्रभुतामेंसमानचतुरानन मनुसमवातशल्यमनुजनमें॥६१॥सुरगुरुसरिसवेदवादनमें ॥
हरिसमानस्वाधीनसदाही । प्रीतिवानहरिदासनमाहीं ॥ करैविप्रगोगुरुसेवकाई । सदाअयशकीलाजमहाई ॥

दोहा--शीलभरेकोमलवचन, सबसोंबोलतभूप । परउपकारहिकरनमें, भूपतिभयोअनूप ॥ ६२ ॥
त्रिभुवनमेंपृथुराजकी, रहीसुकीरतिछाय ॥ सुनिसुनिसबसुरसुंदरी, लखनरहींललचाय ॥
कहँलोंवरणहुँएकमुख, बहुगुणपृथुमहराज । धीरवीरधरमातमा, धरामनहुरघुराज ॥ ६३ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दाम्बुनिधौ
चतुर्थस्कन्धे द्वाविंशस्तरंगः ॥ २२ ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा--स्थावरजंगमजगतके, जीवनदाताभूप । धरणीधरमधुरीनको, ध्रुवआधारअनूप ॥

ग्रामनगरकारकनिरमाना । प्रगटनहारअन्नजगनाना ॥ सातद्वीपधरणीकोनायक । सबविधिसंतसराहनलायक ॥
प्रभुकोसबविधिकियोनिदेशा।जेहिहितप्रगट्योअवनिनरेशा ॥एकसमयसोसभामँझारा।निरखिजठरपनमनमाहिंविचारा
[illegible]बतोंगवनगहनकरयोगू।कीन्ह्योबहुतराजसुखभोगू१॥२असविचारिनिजसुतहिबोलाई।राजतिलककियधर्मसिखाई
चलनचह्योजबकाननकाहीं । प्रजादुखितभेतेहिक्षणमाहीं ॥ प्रजनबहुतविधितबसमुझाई।रानीअर्चिहिसंगलेवाई ॥

दोहा--निकस्योवनकोअतिमुदित, ज्ञानीपृथुमहराज, ध्यावतविकसितपदमसम, चरणयुगलयदुराज ॥

परुयोघोरकाननमेंजाई । वानप्रस्थमारगचितलाई ॥ करनलग्योतपउग्रनरेशा । नशेविघ्नलहिकृपापरमेशा ॥
जिमिविक्रमसोंवैरिनजीत्यो । तिमिदमसोंइंद्रिनगुणरीत्यो ॥४॥ कबहुँकंदफलमूलअहारा।कबहुँसुखानेपत्रउदारा ॥
कबहुँसलिलकहुँमारुतभोजन । करैअहारतबहुँनृपरोजन५ग्रीषमपंचतपातपकीन्ह्यो।वरषासलिलशीशमहँलीन्ह्यो ॥
शिशिरकंठभरिजलमहँरहेऊ। भूमिशयनकीनोव्रतगहेऊ॥६॥इंद्रिनजीतिपवनपुनिजीत्यो।भयोऊर्द्धरेतानहिंभीत्यो।

दोहा--क्षमाशीलमयप्रथमते, रह्योभूपमतिवान । कृष्णमिलनकेहेतुनृप, धरयोएकाग्रहिध्यान ॥ ७ ॥

यहिविधिकरतनृपहितपभारी । पुण्यपापमिटिगेदुखकारी॥करिकैभूपतिप्रानायामा । रोक्योइंद्रिनवर्गअकामा॥८॥
जेहिविधिसनत्कुमारबतायो । सोइयोगपथनृपमनलायो॥९॥श्रद्धासहितसकलदुखगंजा।भज्योअनन्यकृष्णपदकंजा
भईभक्तिश्रीयदुपतिकेरी । जौनमुनीशनदुर्लभहेरी॥१०॥क्षणक्षणसुमिरनकरतनरेशा । लह्योनिर्गुणाभक्तिरमेशा॥
प्रेमानंदमगनपृथुराई । निरखतध्यानचरितयदुराई॥११॥ हरिपदछोडिनकछुतेहिसूझो।कृष्णनेहगुनचित्तअरूझो ॥

दोहा--वैरागीयोगीयती, तबलौंसिद्धनहोय । जबलौंश्रीयदुपतिकथा, प्रीतिकरैनहिंकोय ॥ १२ ॥

प्राणपयानकालजबआयो । तबयहिविधिउपायनृपलायो॥१३॥निजएँडीगुदमाहिंलगाई।क्रमसोंतहँतेप्राणचढाई ॥
प्रथमनाभिमहँपुनिउरमाहीं । फेरिकंठमहँपुनिशिरपाहीं॥१४॥पौनपौनमहँभूपमिलाया।धरणीमहँमेल्योपुनिकाया॥
तेजतेजमहँमेलनकीन्ह्यो।नभतेतनछिद्रनकरिदीन्ह्यो॥१५॥जलकोअंशधरयोजलमाही।मेल्योऔरजौनजहचाही ॥
पुनिक्षितिकहँजलमहँनृपमेल्यो ।जलकहँतेजाहिमहँपुनिभेल्यो॥तेजपवनमहँदियोमिलाई।मारुतकोअकाशनृपराई॥

दोहा--फेरिआपनेमनहिंको, इंद्रिनदियोमिलाय । इंद्रिनकोशब्दादिमें, मेलनकियोबनाय ॥

पुनिशब्दादिककोमतिवारा।दियमिलाइतामसअहँकारा॥तामसअहंकारकहँपुनितहँ।मेल्योभूपतिमहातत्त्वमहँ १७॥
महत्तत्त्वकहँप्रकृतिमिलायो । तानप्रकृतिकहँजीवहिल्यायो॥परमातममेंआतमकाहीं । दियोमिलाइभूपमुदमाहीं ॥
ज्ञानविरागवेगअतिपाई । प्रथमहिंगैवासनापराई॥यहिविधिकरिकैयोगविधाना । भूपतिकियवैकुंठपयाना॥ १८ ॥
अर्चिनामताकीमहरानी।अतिसुकुमारिमहाछविखानी॥धरच्योनकबहुँचरणधरणीमें।सोपतिसँगवनगेसुखहीमें ॥१९॥

दोहा--कंदमूलफलखाइकै, यदपिकियोवनवास । तद्यपिपियकेसंगमे, मान्योपरमसुपास ॥ २० ॥

पीतमकोलखिमृतकशरीरा । रानीदुखिततजतदृगनीरा॥कछुककाललगिकियेविलापा । लहीविजनवनमेंघनतापा॥
पुनियकशैलशृंगमहँजाई । लैबहुइंधनचिताबनाई॥२१॥धरच्योचितामहँकंतशरीरा । कियमज्जनआपहुसरिनीरा ॥
पतिकहँदियोतिलांजुलिजलमें । आईचितासमीपाहिपलमें ॥ पुनिसबदेवनवंदनकैके । चितातीनपरदक्षिणदैके ॥
ध्यावतपतिपदपंकजसोई । चढीचितामहँसबदुखखोई ॥ पुनिपावकपतिवदनछुआई । लियोसकलनिजअंगलगाई॥
प्रथमहिज्वालसंगछबिखानी । गैसतिलोकअर्चिमहरानी ॥ २२ ॥

दोहा--देवदेवनारीसबै, सतीहोतितेहिदेपि । लगेप्रशंसाकरनसब, आनँदलहेविशेषि ॥ २३ ॥

चढीविमाननमेंसुरदारा।बरषहिंनभतेसुमनअपारा॥बाजनविविधबजावनलागीं।कहहिंपरस्परअतिअनुरागीं ॥ २४ ॥

देवदाराऊचुः।

धन्यधन्यअर्चामहारानी । तनमनतेपतिसेवाठानी॥जिमिकमलाकमलापतिकीही।कर्मवचनमनभजतिसदाही॥२५॥
हमरेदेखतहमकहँनाकी । गयविकुंठपतिसँगसुखछाकी॥कियोकर्मदुष्करयहनारी।पतिव्रतधर्मदियोनिरधारी ॥२६॥
तिनकोकहदुर्लभजगमाहीं । भजहिप्रीतियुतजेहरिकाहीं॥हैअनित्यआयुषधरणीमें।बिनाभक्तिनहिंफलकरणीमें२७

दोहा--सोईशठसोईकुमति, सोइपापीजगमाहिं । जोलहिदुर्लभमनुजतन, भज्योनयदुपतिकाहिं ॥

सोइठगिगयोआयसंसारा । जोनभज्योवसुदेवकुमारा ॥ २८ ॥

मैत्रेयउवाच।

यहिविधिपृथुकीअर्चिसुवामा।पतिसँगलह्योकृष्णकोधामा२९यहपृथुभूपतिचरितउदारा।कह्योविदुरसंयुतविस्तारा॥
सुनैसुनावैपढैसप्रीती । सोजनलहैनकलिमलभीती ॥ परमपुण्यलहिजगजसछावै । अंतसमैपृथुपदवीपावै ॥ ३१ ॥
ब्राह्मणजोसप्रीतियहगावै । ब्रह्मतेजसोअनुपमपावै ॥ भाखेपृथुचरित्रजोराजा । होयचक्रवर्तीमहराजा ॥
पढैवैश्यजोप्रीतिलगाई । विदुरलहतसोधनसमुदाई ॥

दोहा--कहैसुनैजोशूद्रयह, पृथुचरित्ररतिमान । सोसबअपनीजातमें, आसुहिहोतप्रधान ॥ ३२ ॥

पृथुचरित्रकोविदुरत्रिवारा । कहैसुनैनरनारिउदारा॥असुतलहैसुतअधनलहैधन॥३३॥अजैशीलहैजगमहँजसघन ॥
मूरखपंडितहोयतुरंता । वसतवैकुंठनगरमहयंता ॥ जननअमंगलसकलनिवारै । मंगलमूलतुरंतपसारै ॥ ३४ ॥
धनयशआयुषवरधनहारो । कलिमलसकलविनाशनवारो॥धर्मअर्थकामहुअपवर्गा॥साधकबाधकबहुउपसर्गा ॥३५॥
सुनिकैपृथुचरित्रसुखदाई । जोरिपुपैनृपकरैचढाई ॥ तौतेहिभूपाहिशत्रुडेराई । भेटदेहिआगुहितेआई ॥ ३६ ॥

दोहा--जोकुसंगताजिपृथुचरित, सुनैत्यागिफलआस । ताकोवकसतभक्तिनिज, यदुपतिविनहिंप्रयास ॥
सुनैसुनावैजोपढै, विदुरप्रतीतिबढाय । उभैलोकसोसुखलहत, पृथुपदवीकहँपाय ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

स०-जोरुचिसोंसुनैयापृथुको,सुचरित्रविचित्रपवित्रसुहावन।छोडिकुसंगसबैफलआस,हुलाससोध्यावतश्रीमनभावन।
सोचढिकैहरिप्रेमकेपोत, तरैभवसागरशोकबढावन।श्रीरघुराजसोजायविशेषि, बसैपद्मापतिकेपुरपावन ॥३९॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेत्रयोविंशस्तरंगः॥२३॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा--जबपृथुवनकोगवनकिय, तबविजितासुउदार । भयोभूपपाल्योप्रजा, छायोसुयशअपार ॥
दिशाबांटिभाइनकोदीन्ही । आपसुतंत्रराजरतिकीन्ही ॥१॥ हरिजक्षहिदियपूरबआशा । धूम्रकेशकहँदक्षिणबासा ॥
दियपश्चिमजाकोवृकनामा । उत्तरदिशिद्रविणहिमतिधामा ॥२॥ रानीताकीभैसिखंडनी । अवनिजासुआभाअखंडनी ॥
ताकेभेत्रयसुतबलवाना ॥३॥ शुचिअरुपावकअरुपवमाना ॥ पूरुबरहेअगिनियेतीनी । कबहुँवसिष्ठशापतिनदीनी ॥
जाकेभेविजितासुकुमारा । शापभोगिभेअगिनिउदारा ॥४॥ अंतर्धानशक्तिकहँपाई । भोविजितासुप्रबलनृपराई ॥
दोहा--ताकीदूजीनारिजो, नभस्वतीजेहिनाम । हविरधानताकेभयो, पुत्रपरमबलधाम ॥
ताकेमखमेंबासवआयो । करिबहुछलबलवाजिचुरायो ॥ ताकोचोरहुजानिनरेशा । दियोनबासवबधननिदेशा ॥५॥
सकलप्रजनतेनिजकरलीवो । दुसहदंडअपराधिनदीवो ॥ निरदैकर्मजानिविजितासू । छोडिराजकीन्ह्योवनवासू ॥६॥
तहँनितध्यायतंसभगवाना । कियविकुंठविजतासुपयाना ॥७॥ हविरधानकीतियहविधानी । ताकेषटसुतभेबलखानी ॥
बर्हिषटकृष्णशुक्कगयजितव्रत । औरसत्यधारकनेमनव्रत ॥८॥ बर्हिषदभेबड़भागप्रजापति । क्रियाकांडमेंनिपुणयोगरति
दोहा--बर्हिषटकेमखकरतमहि, पूरिगईकुशमाहिं । विधिनिदेशलहिव्याहकिय, सामुद्रीतियकाहि ॥ १० ॥
जाकोरह्योशतद्रुतिनामा । नवयौवनसुंदरिछबिधामा ॥ जैसेसप्तऋषिनतियदेखी । कामविवशभेअगिनिविशेखी ॥
तैसेनिरखिशतद्रुतिकाहीं । राजहुकोचितचुम्योतहाँहीं ११ चलतिचरननूपुरनबजावति । शशिसरीसआभादिशिछावति
तबसुरअसुरसिद्धगंधर्वन । चंचलचितुचोरावतिसर्वन ॥१२॥ बर्हिषटनृपवरहीप्राचीना । लह्योनामकरिज्ञयप्रवीना ॥
नृपप्राचीनवरहिसातिदुतिमह । उपजायोवरदशपुत्रनकह ॥ तेसबनामप्रचेतापाये । येकसुभाउधर्मजगछाये ॥ १३॥
दोहा--सृष्टिकरनकेहेतपितु, तिनकहँशासनदीन । दशहजारभरिवर्षलौ, वसिसमुद्रतपकीन ॥ १४ ॥
मारगमहँशंकरमिले, जोइकीन्ह्योउपदेश । ताकोविधियुतजयतमुख, पूज्योसुखितरमेश ॥ १५ ॥
पुनिमित्रासुतकीयहवानी । बोलेविदुरजोरियुगपानी ॥

विदुरउवाच ।

केहिकारणपथमाहिमुनीशा । मिलेप्रचेतनकाहिगिरीशा ॥ कह्योप्रचेतनसोंहरिजोई । मोहिसुनाइदीजैसबसोई ॥१६॥
हैदुर्लभदर्शनमुनितासू । करहिंध्याननितमुनिवरजासू ॥ छोडिजगतजेहिमिलहिविज्ञानी । तेशंकरजगमंगलदानी १७॥
ब्रह्मानंदमगननितरहही । तदपिजगतकोमंगलचहही ॥ तातेशंभुरूपधरिघोरा । बैलचढेविचरहिंचहुँवोरा ॥ १८ ॥
सुनिकैविदुरवचनअनुरागे । मित्रासुतसबवरननलागे ॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा--जबनिदेशदीन्ह्योसुतन, नृपवरहीप्राचीन । पितुशासनधरिशीशमें, दशौपुत्रपरवीन ॥
गेपश्चिमदिशितपमनलाई । पहुँचेसागरतटमहँजाई १९ तहँदेख्योयकसरअभिरामा । मुनिमनसमजलभरचोललामा २०
फूलेवारिजचारिप्रकारा । कच्छपमच्छकरहिंसंचारा ॥ चक्रवाकसारसअरुहंसा । करहिंशोरचहुँकितदुखध्वंसा ॥२१॥
कुंजनकुंजनगुंजहिंभृंगा । औरहुबोलहिविपुलविहंगा ॥ लोनीलतालपटितरुलहरै । अतिसियरीछायाछितिछहरै ॥
पदुमपरागपवनकेसंगा । उड़तसदातेहिथलबहुरंगा ॥ २२ ॥ तहाँजायदशराजकुमारा । सुनैमृदंगसोरसुखसारा ॥
दोहा--गंधर्वनकोगानसुनि, महामनोहरजोइ । विस्मितह्वैयहकहतभे, यहिसरमहँकहहोइ ॥ २३ ॥
ताहीसमयसरोवरतेरे । निकसतश्रीशंकरकहँहेरे ॥ गौरीगणनसहितत्रिपुरारी । बैलचढेअहिअंगनिधारी ॥
चहुँकितगानकरहिंगंधर्वा । बाजबजावहिंमंजुलसर्वा ॥२४ ॥ तपतहेमसमदेहप्रकासा । नीलकंठत्र्यंबककृतिवासा ॥
सदाप्रसन्नवदनजिनकेरो । पुजवहिभक्तनकामघनेरो ॥ तिनकोनिरखतसकलप्रचेता । कियोप्रणामसुबुद्धिनिकेता ॥२५॥
दासनदुखनाशनत्रिपुरारी । शीलधर्मयुततिनहिंनिहारी ॥ करिकैतिनपरकृपामहाई । बोलेतिनसोंगिरासुहाई ॥२६॥

रुद्रउवाच ।

दोहा—हौवरहीप्राचीनके, तुमदशसुमतिकुमार । तिहरेमनकीकामना, मैंकरिलियोविचार ॥

करनअनुग्रहमैंतुमपाहीं । दर्शनदियोआइतुमकाहीं॥२७॥प्रकृतिपुरुषकेजसतिस्वामी । सकलजगतकेअंतर्यामी ॥
ऐसोजोवसुदेवकुमारा । तासुदासमोहिंप्राणनप्यारा ॥ २८ ॥ जोशतजन्मसुधर्मचलावै । तबदुर्लभविरंचिपदपावै ॥
फेरिकरैतपजन्महजारा । तबपावैपदसुमतिहमारा ॥ अरुजोकरैकृष्णसेवकाई । सोसहजहिंवैकुंठहिजाई ॥
जोविकुंठहममहँविधिकाहीं । मिलतसहजमहँकैसेहुनाहीं ॥ निजअधिकारअंतमहदेवा।करिकैकृष्णचरणकीसेवा ॥
जाहितौनवैकुंठहिकाही । जहाँमुक्तजनरहतसदाही ॥ २९ ॥

दोहा—तुमहौश्रीहरिदाससब, तातेअतिप्रियमोहि । हरिदासनतेऔरकोइ, परैनाप्रियमोहिजोहि ॥ ३० ॥
तातेयहअस्तोत्रशुभ, तुमकोदेहुसुनाइ । सबमंगलकोमूलयह, पढतपापनसिजाइ ॥
जोजपिहौएकांतमहँ, यहअस्तोत्रविचित्र॥३१॥कह्योप्रचेतनसोंसकल,तिनमतिजानिपवित्र ॥ ३२ ॥

अथ रुद्रगीतनामस्तोत्रम् ।

श्रीरुद्रउवाच।

जितंतआत्मविद्धुर्यस्वस्तयेस्वस्तिरस्तुमे।भवताराधसाराद्धंसर्वस्माआत्मनेनमः ॥ ३३ ॥ नमःपंकजनाभायभूत सूक्ष्मेंद्रियात्मने ॥ वासुदेवायशांतायकूटस्थायस्वरोचिषे ॥ ३४ ॥ संकर्षणायसूक्ष्मायदुरंतायांतकायच ॥ नमोविश्वप्रबोधायप्रद्युम्नायांतरात्मने ॥ ३५ ॥ नमोनमोनिरुद्धायहृषीकेशेंद्रियात्मने । नमःपरमहंसायपूर्णायनिभृ-तात्मने ॥ ३६ ॥ स्वर्गापवर्गद्वारायनित्यंशुचिषदेनमः । नमोहिरण्यवीर्य्यायचातुर्होत्रायतंतवे ॥ ३७ ॥ नमऊर्ज्जइषेत्रय्यापतयेयज्ञरेतसे । तृप्तिदायचजीवानांनमःसर्वरसात्मने ॥ ३८ ॥ सर्वसत्वात्मदेहायविशेषाय स्थवीयसे । नमस्त्रैलोक्यपालायसहओजोबलायच ॥ ३९ ॥ अर्थलिंगायनभसेनमोंतर्बहिरात्मने । नमःपुण्या-यलोकायअमुष्मैभूरिवर्चसे ॥ ४० ॥ प्रवृत्तायनिवृत्तायपितृदेवायकर्मणे । नमोधर्मविपाकायमृत्यवेदुःखदा-यच ॥ ४१ ॥ नमस्तआशिषामीशमनवेकारणात्मने । नमोधर्मायबृहतेकृष्णायाकुंठमेधसे । पुरुषायपुरा-णायसांख्ययोगेश्वरायच ॥ ४२ ॥ शक्तित्रयसमेतायमीढुषेहंकृतात्मने । चेतआकूतिरूपायनमोवाचोविभूतये ॥ ॥ ४३ ॥ दर्शनंनोदिदृक्षूणांदेहिभागवतार्चितम् । रूपंप्रियतमंस्वानांसर्वेंद्रियगुणांजने ॥ ४४ ॥ स्निग्ध प्रावृड्घनश्यामंसर्वसौंदर्य्यसंग्रहम् । चार्वायतचतुर्बाहुंसुजातरुचिराननम् ॥ ४५ ॥ पद्मकोशपलाशाक्षंसुंदर भ्रूसुनासिकम् । सुद्विजंसुकपोलास्यंसमकर्णविभूषणम् ॥ ४६ ॥ प्रीतिप्रहसितापांगमलकैरुपशोभितम् । लसत्पंकजकिंजल्कदुकूलंमृष्टकुंडलम् ॥ ४७ ॥ स्फुरत्किरीटवलयहारनूपुरमेखलम् । शंखचक्रगदापद्ममालाम ण्युत्तमर्द्धिमत् ॥४८॥ सिंहस्कंधत्विषोबिभ्रत्सौभगग्रीवकौस्तुभम्।श्रियानपायिन्याक्षिप्तनिकषाश्मोरसोल्लसत् ४९ पूररेचकसंविग्नवलिवल्गुदलोदरम्। प्रतिसंक्रामयद्विश्वंनाभ्यावर्त्तगभीरया॥५०॥श्यामश्रोण्यधिरोचिष्णुदुकूलस्वर्ण मेखलम् । समचार्वंघ्रिजंघोरुनिम्नजानुसुदर्शनम् ॥ ५१ ॥ पदाशरत्पद्मपलाशरोचिषानखद्युभिर्नोंतरघंविधुन्वता । प्रदर्शयस्वीयमपास्तसाध्वसंपदंगुरोमार्गगुरुस्तमोजुषाम्॥५२॥एतद्रूपमनुध्येयमात्मशुद्धिमभीप्सताम्।यद्भक्तियो-गोभयदःस्वधर्ममनुतिष्ठताम्॥५३॥भवान्भक्तिमतालभ्योदुर्लभःसर्वदेहिनाम्। स्वाराज्यस्याप्यभिमतएकांतेनात्म-विद्गतिः॥५४॥तंदुराराध्यमाराध्यसतामपिदुरापया॥एकांतभक्त्याकोवाञ्छेत्पादमूलंविनाबहिः॥५५॥यत्रनिर्विष्टमा णानांकृतांतोनाभिमन्यते ॥ विश्वंविध्वंसयन्वीर्यशौर्यविस्फूरितभ्रुवा ॥५६॥क्षणार्द्धेनापितुलयेनस्वर्गंनापुनर्भवम् ॥ भगवत्संगिसंगस्यमर्त्यानांकिमुताशिषः ॥ ५७ ॥ अथानघांघ्रेस्तवकीर्तितीर्थयोरंतर्बहिस्स्तानविधूतपाप्मनाम् ॥ भूतेष्वनुक्रोशसुसत्वशीलिनांस्यात्संगमोनुग्रहएषनस्तव ॥ ५८ ॥ नयस्यचित्तंबहिरर्थविभ्रमंतमोगुहायांचवि शुद्धमाविशत् ॥ यद्भक्तियोगानुगृहीतमंजसामुनिर्विचष्टेननुतत्रतेगातिम्॥५९॥ यत्रेदंव्यज्यतेविश्वंविश्वस्मिन्नवभा-

तियत् ॥ तत्वंब्रह्मपरंज्योतिराकाशमिवविस्तृतम् ॥ ६० ॥ योमाययेदंपुरुरूपयासृजद्बिभर्तिभूयः क्षपयत्य-विक्रियः॥यद्भेदबुद्धिःसदिवात्मदुःस्थयातमात्मतंत्रंभगवन्प्रतीमहि ॥ ६१॥ क्रियाकलापैरिदमेवयोगिनःश्रद्धान्विता साधुयजंतिसिद्धये ॥ भूतेंद्रियांतःकरणोपलक्षितंवेदेचतंत्रेचतएवकोविदाः ॥ ६२ ॥ त्वमेकआद्यःपुरुषःसुप्तशक्ति-स्तयारजःसत्वतमोविभिद्यते ॥ महानहंखंमरुदग्निवार्धराःसुरर्षयोभूतगणाइदंयतः ॥ ६३ ॥ सृष्टंस्वशक्त्येदमनु-प्रविष्टश्चतुर्विधंपुरमात्मांशकेन ॥ अथोविदुस्तंपुरुषंसंतमंतर्भुंक्तेहृषीकैर्मधुसारघंयः ॥ ६४ ॥ सएषलोकानति-चंडवेगोविकर्षसित्वंखलुकालयानः ॥ भूतानिभूतैरनुमेयतत्वोघनावलीर्वायुरिवाविषह्यः ॥ ६५ ॥ प्रमत्तमुच्चैरि-तिकृत्यचिंतयाप्रवृद्धलोभंविषयेषुलालसम् । त्वमप्रमत्तःसहसाभिपद्यसेक्षुल्लेलिहानोहिरिवाखुमंतकः ॥ ६६ ॥ कस्त्वत्पदाब्जंविजहातिपंडितोयस्तेऽवमानव्ययमानकेतनः । विशंकयास्मद्गुरुरर्चतिस्मयद्विनोपपत्तिंमनवश्चतु-र्दश ॥ ६७ ॥ अथत्वमसिनोब्रह्मन्परमात्मन्विपश्चिताम् । विश्वंरुद्रभयध्वस्तमकुतश्चिद्भयागतिः ॥ ६८ ॥

दोहा--हेविशुद्धभूपतिसुवन, यहअस्तोत्रसप्रीति । करहुपाठनिजधर्मयुत, राखिकृष्णपरतीति ॥ ६९ ॥

सबजगमेंव्यापितभगवाना।जगतनाथसोइकृपानिधाना ७० पूजहुतिनहिंधारिहियध्याना।कृपाकरहिंगेकृपानिधाना॥ योगादेशअहैयहिनामा । जोअस्तोत्रभनैअभिरामा ॥ ताकोपाठकरहुदिनरैना । यहिसमानउत्तमकछुहैना ॥ ७१ ॥ हमकोअरुभृगुआदिककाहीं।पूरवकालविरंचिकृपाहीं॥सबकोयहअस्तोत्रपढाये॥७२॥तबहमप्रजनसृजनमनलाये ॥ पढिअस्तोत्रतजेअज्ञाना । जगमहँसृजेप्रजाविधिनाना॥७३ ॥तातेसावधानह्वैतुमहू । पाठकरहुयुतनेमहुयमहू ॥

दोहा--नामकयोगादेशयह, अस्तवकरैजोपाठ॥सोआशुहिपावतप्रमुद, छूटतहियकीगांठ ॥

नारायणपारायणहोवै । कोटिजन्मकेपातकखोवै ॥ ७४ ॥ जेतनेजगमहँहैंकल्याना।तिनमेंजानहुज्ञानप्रधाना ॥ रहैज्ञानतेहियामहँआठा । करैजोयहअस्तोत्रहिपाठा॥चढिकैज्ञानतरणिमतिमाना।भवसागरतरिजातमहाना॥७५॥ हरिअस्तवमैंजोयहभाष्यो।जोजनअपनेमुखनितराष्यो॥सोजनसकलपुण्यफलपायो।सबविधितेयदुपतिपदध्यायो ॥ करैजौनजौनहिमनआसा।देहिआशुतेहिरमानिवासा॥ममभाषितअस्तोत्रसुहावन।पतितनकोकारकअतिपावन ७७

दोहा--उठिप्रभातकरजोरिकै, प्रीतिसहितजनजोय । पढ़ैसुनैअस्तोत्रयह, तासुजनमनहिंहोय ॥ ७८ ॥

यहअस्तवजोमैंकह्यो, तुमसोंराजकुमार । ताहिजपततपअंतमैं, पूजिहिकामतुम्हार ॥ ७९ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजासिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेचतुर्विंशस्तरंगः ॥२४॥

मैत्रेयउवाच ।

दोहा--यहिविधिभूपतिसुवनसों, कहिलहिकैसनमान । तिनकेदेखततहँभये, शंकरअंतरधान ॥ १ ॥

हरकृतअस्तवयोगादेशा । पापप्रचेताविनहिकलेशा ॥ जपनाकियेतपजलमधिजाई । दशहजारसंवतमनलाई ॥२॥ कर्मनिरतवरहीप्राचीनै । नारदमुनिजियजानिप्रवीनै ॥ जायनरेशनिकटमुनिराई । लहिआदरअसगिरासुनाई ॥ ३ ॥ जगमहँकरिकैकर्मअपारा।चहहुकौनकल्याणउदारा॥सुखमिलिबोअरुदुखकीहानी।कहहिंनयहिमंगलविज्ञानी ॥४॥ मुनिनारदकेवचनमहीशा । बोलतभयोनायपदशीशा ॥

राजोवाच ।

हैंहमकर्मअशक्तअभागे । जानहिंनहिंविज्ञानबड़भागे ॥

दोहा--परमकृपाकरिनाथमोहिं, दीजेविमलविज्ञान । जातेकर्मनबंधते, छूटिलहौंकल्यान ॥ ५ ॥

वधूबंधुसुतधनपरिवारै । करिसनेहजनवसतअगारै ॥ याहीकोपरमारथमानै । केहिविधिलहैकुमतिकल्यानै ॥ भ्रमतरहतसागरसंसारा । मोक्षमार्गनहिंगुनैगँवारा ॥ ६ ॥ सुनिप्राचीनबींहकीबानी । बोलेनारदमुनिविज्ञानी ॥

नारदउवाच ।

नृपजेपशुतुमसखमहँमारे । तेअबवैरभयेनिहारे ॥ कियेनकछुजीवनपरदाया । हनीहजारनपशुकीकाया ॥ ७ ॥
तेसबदेखहुखड़ेअकाशा । चाहहिंआशुतुम्हारोनाशा ॥ जबमरिहौबरहीप्राचीने । तबजेपशुनमारिमखकीने ॥
दोहा--तेवेसहसनपशुतुम्हैं, लोहसींगशिरधारि । सबअंगनकोछेदिहैं, पूरववैरविचारि ॥ ८ ॥
तातेकहौंयेकइतिहासा । जोसुनिह्वैहैशोकविनासा ॥ चरितपुरंजनकोमैंगाई । आदिअंततेदेतसुनाई ॥ ९ ॥
पूरवरह्योपुरंजनराजा । जाकोयशजगमाहिंदराजा॥तासुसखानामकअविज्ञाता।जासुकर्मकोहुजानिनजाता ॥ १०॥
वसनहेतनृपनगरनपायो।खोजतसकलपुहुमिफिरिआयो११ यदपिधरणिमहँनगरअपारा।तदपिननिवसनयोगविचारा
जबपुरलह्योपुरंजननाहीं।भयोदुखिततवअतिमनमाहीं१२एकसमयगमन्योहिमवाना।तहिदिशिदक्षिणनगरदेखाना॥
दोहा–लक्षितह्वैलक्षणसकल, जामेंहैनवद्वार ॥१३॥ ऊँचअटापरिखागहिर, तोरनतुंगप्रकार ॥
कनकरजतकेकलसैंझरोखे।ऊंचनिवासविलासनचोखे॥१४॥फूलनफटिकफरशअतिफावै।मरकतमणिमंडितमहभावै॥
वैडूरजकीवनीदेवाला । सोहतसुभगसुखदशशिशाला ॥ छाजतछज्जालालनकेरे । हीरनहौदहरैहियहेरे ॥
भोगवतीसमसोहातिनगरी । जामेंएकोबातनबिगरी ॥ १५ ॥ चौहटहाटबाटबहुबाटा । केलिसदनठाढ़ेबहुठाटा ॥
फविफविफहरतविमलपताके।मानहुछुवतभानुरथचाके॥रतनचौतरेचहुँकितचारू।विविधवस्तुतेवलितबजारू १६
दोहा–पुरचहुँकितउपवनरुचिर, नवलतिकाद्रुमकुंज । कलरवकरहिंविहंगकुल, मंडितमधुपनपुंज ॥
सोहतनिर्मलनीरतडागा । औरहुबनेसुखदगृहबागा ॥ १७ ॥ शीतलमंदसुगंधसमीरा । वहतहरततनकीसबपीरा ॥
रहतवसंतसदाऋतुछाई । पूरीपुहुमिपरागमहाई ॥ सरसीसरससरससरसाहीं । विकसितवारिजबहुदरशाहीं ॥१८॥
जहँतहँकरहिंविहारकुरंगा । ह्वैअभीतविचरहिंयकसंगा॥कोकिलकूजहिंकुंजनमाहीं । मनहुबलावहिंपथिकनकाहीं॥
ऐसेपुरमहँभूपपुरंजन । कियोनिवासदेखिमनरंजन । पुरउपवनमहँनृपइकवारा । गयेकरनमनमुदितविहारा ॥१९॥
दोहा–तहांपुरंजनलखतभो, एकसुंदरीनारि । विचरनहितआईसोऊ, वनरमणीयविचारि ॥
ताकेसँगदासीदशसोहैं । जेवरवसकामिनमनमोहैं॥यकयकतियप्रतिशतशतदासा।चलैचहूँकितसहितहुलासा॥२०॥
पाँचशीशकोएकफणीशा । चोपदारसोइरह्योमहीशा॥ऐसीसोसुंदरिवनमाहीं । निजहितखोजतिवरपतिकाहीं॥२१॥
यौवनवतीदंतजेहिचारू । सुभगनासिकामुखसुखसारू॥मनहुआरसीगोलकपोला।तिनमेंहलकतकुंडललोला ॥२२॥
सुवरणवरणवसनछविछावै । अतिसूक्षमकटितासुसुहावै ॥ तामेंकनकचारुचौरासी । सोहतिबालनवलचपलासी ॥
दोहा--रतनजड़ितनूपुरयुगल, चरणकरतकलशोर । मनहुदेवमायामही, चलिआईचितचोर ॥ २३ ॥
कनककलशसमयुगकुचकाहीं।गोवतिपुनिपुनिअंचलमाहीं॥मत्तमतंगनिरखिगतिताकी।लज्जितलहैनसरिसुखमाकी।
निरखिपुरंजनकाहिलजाई । करतिकटाक्षमंदमुसक्याई ॥ तासुनैनशरनृपउरमाहीं । भेदुशालतेहिकालतहाँहीं ॥
वीरपुरंजनलहिसुखऐना । कह्योवालसोंमंजुलवैना ॥ २५ ॥ अहोकौनतुमपंकजनैनी । काकीदुहिताहौसुखदैनी ॥
केहिकारणयहिवनपगुधारी । कौनकामनासुवरितिहारी ॥ मोसोंकहहुकृपाकरिभारी।तनमनतेतुममोकहँप्यारी२६
दोहा-- तेरेसँगयेकौनभट, एकादशसुकुमारि । वेगिबतावहुसुंदरी, कौनिअहैदशनारि ॥
चोपदारजोतोरभुजंगा । तेहिकैसेल्याईनिजसंगा ॥२७॥ किधौरमाहौकिधौभवानी।देखिपरहुतुमसबगुणखानी ॥
किधौलाजमूरतिधरिआई । मोसोंसुंदरिदेहुबताई ॥ मुनिसमविचरिमहावनमाहीं । खोजहुधौंनिजपीतमकाहीं ॥
लहेजेजनतुवपदअरविंदा । तिनहिंनकछुवाकीआनंदा॥होतुमरमासत्यमोहिंभायो।कहांपाणितेपदुमगिरायो ॥२८॥
पैतुमरमानहौमनहारी । देवनहोहिधरणिसंचारी ॥ तातेसुनिकैविनयहमारी । मोपैदयादीठिपसारी ॥
दोहा--नवलनगरयहआपनो, नागरिलेहिविचारि । तामेंवासिमोहिंसंगलै, विहरहुनितसुकुमारि ॥
वासवशचीसरिसहमदोई । करहिंविहारस्वर्गकरजोई॥२९॥भौंहकमानतानिदृगबाना।मारिकियोमहियोगनिशाना॥
देहदहतअबमदनदवारी । अधरसुधादैदेहुनिवारी ॥ मैंतेरोसेवकह्वैरहिहौं । निशिदिनतुवपदपंकजगहिहौं ॥ ३० ॥

अहिसावकसमझलकतअलकैं।द्दगखंजनलखिपरहिंनपलकैं।भ्रुकुटिवक्रमुखश्रवतसुधाहै।शशिसमसुछविछईवसुधा॥
सोमुखघूंघुटकोपटटारी। मोहिंदेखाउदुराउनप्यारी॥ वचनसुधासममोहिंपियाई।देहुमदनउरतापमिटाई॥ ३१॥
दोहा–सुनतपुरंजनकेवचन, प्रेमभरेअतिदीन। विहँसतहरिताकोहियो, वालमानिमनलीन॥
बोलीभूपतिसोंमुसक्याई।परमअवधिआनँददरशाई३२जोमोहिजन्योनमैंतेहिजानो।नामजातिकरमोहिंनभानो ३३॥
कहँतेकेहिहितमैंइतआई। कोयहसुंदरपुरीवनाई॥ कौनअहौतुमकाकेभाई। नहिंकछुमोकहँपरैजनाई॥ ३४॥
येसबसखासखीहैमेरे। रक्षतमोहिंभुजंगवसिनेरे॥ जबमैंसोइहौंतवयहजागी। मेरीपुरीक्षणहुनहिंत्यागी॥ ३५॥
भूपतिआपभलेइतआये। मेरेउरआनँदअतिछाये॥ जौनआपकीन्हेमनकामा। सोहमपूरहिंगवसुयामा॥
सखिनसखासँगनिकटातिहारे। रहिहहिंमहलहिंमोदअपारे॥ ३६॥
दोहा–यहनगरीनवद्वारयुत, प्रमुदितवसहुनरेश। मेरेसँगवहुवर्षलों, भोगहुभोगअशेश॥ ३७॥
हौतुमरसिकशिरोमणिभूपा।तुमहिंछोड़िकोभजैकुरूपा॥जेपरलोकमृषाजियजानै।तिनकोजानहुपशुनसमानै॥३८॥
अर्थधर्मअरुकामअवाधक।सुतसुखअमलसुयशकोसाधक॥असगृहस्थआश्रमकोजानो।सुखदलोकप्रदताकहमानो॥
सोगृहस्थआश्रमसुखकाही। संन्यासीजानैकहुनाही॥३९॥ देवपितरऋषिभूतहुनाना। पायगृहस्थनतेसनमाना॥
करहिंसदातिनकोकल्याना।ग्रहीसरिसआश्रमनहिंआना॥४०॥नागरगुणआगरसुखदाई।तुमसमप्रियपीतमकहँपाई॥
मोसमरूपवतीकोनारी। वरैनतुमकहँयोगविचारी॥ ४१॥
दोहा–भुजँगभोगभुजरावरे, केहिमनहरिनहिंलेहु। विचरिअनाथनविहँसितकि, सुखसागरतुमदेहु॥ ४२॥

नारदउवाच।

यहिविधिदोउप्रणकरितहँभारी। दंपतिप्रीतिप्रतीतिपसारी॥ गहिपुरंजनीकोतहँहाथा। गयोपुरंजनपुरलैसाथा॥
तहाँवसेदंपतिशतवर्षा। केलिकुतूहलकरतसहर्षा॥ ४३॥ करहिंतहाँगायकगणगाना। सोहिरहीनारीसहसाना॥
मध्यपुरंजनअरुपुरंजनी।करहिकेलिसबशोकगंजनी॥सरसिनगमनहिग्रीषममाहीं।विविधकरहिजलकेलितहांहीं ४४॥
पुरमहँसातउपरकेद्वारा। द्वैनीचेकेनृपतिउदारा॥ तिनद्वारनद्वैदेशननाना। सदापुरंजनकरैपयाना॥
रह्योनगरकोनायकजोई। ताकोतहँजान्योनहिंकोई॥ ४५॥
दोहा–यकदक्षिणयकउत्तरे, पूरुवद्वारेपांच। पश्चिममेंद्वैजानिये, नामसुनोतेहिसांच॥ ४६॥
आविर्मुखीऔरखद्योता। द्वौयकथलपूरवसुखसोता॥ तिनह्वैरूपदेशकहँदेखन। जातपुरंजनमुदितअलेखन॥
द्युमतनामलैसखासंगमें। करतसैरनृपसुखउमंगमें॥ ४७॥ नलिननालिनीद्वैदरवाजे। येऊयकथलपूरवभ्राजे॥
तिनह्वैसौरभदेशहिकाहीं। लैअवधूतसखासँगमाहीं॥ जातपुरंजनकरनविहारा। संगसकलसोहहिंसरदारा॥४८॥
पँचयोपूरवसुखदरवाजा॥ तहँह्वैनिकासिपुरंजनराजा॥ आपनऔरबहूदनदेसै। जातकरनबहुसैरहमेसै॥
दोहा–तबरसज्ञअरुविपिनद्वै, सखालियेनिजसंग। विहरतदोऊदेशमें, रँगेप्रीतिकेरंग॥ ४९॥
दक्षिणद्वारापितृहूनामा। तबह्वैनिकसिभूपमतिधामा॥ श्रुतिधरसखासंगयकलीने। जातनिवृत्तदेशसुखभीने॥५०॥
नामदेवहूउत्तरद्वारा। लैश्रुतिधरसँगसखाउदारा॥ जातनिवृत्तदेशकोभूपा। तहँपावततैंमोदअनूपा॥ ५१॥
पश्चिमद्वारआसुरीनामा। तहँह्वैनिकसतनृपसुखकामा॥ दुरमदसखालेततवसंगा। गमनतग्रामकदेशअभंगा५२॥
निरितिनामपश्चिमदरवाजा। तहँजवकढ़तपुरंजनराजा॥तववैससदेशहिकहजाहीं।लुब्धकनामसखासँगमाहीं॥५३॥
दोहा–पेससक्तानिरवाकद्वै, रहतअंधपुरमाहिं। यकलैसँगकारजकरत, यकलैजातसदाहिं॥ ४५॥
जबहिंपुरंजनअतिसुखमाहीं। गमनतहैअंतहपुरकाहीं॥ विषूचीनसँगसखाप्रवीना। जातसंगताकेरसभीना॥
नारिसंगकरिविपुलविहारा। हरषतमोहतबारहिंबारा॥ कहूपुरंजनहोतप्रसन्ना। भोपुरंजनीकेरप्रपन्ना॥ ५५॥
यहिविधिभयोनारिआधीना। सदाकामरसमेंलवलीना॥ जोइजोइकरैपुरंजनरानी। सोइपुरंजनकरैअज्ञानी॥५६॥
करैजबहिप्यारीमदपाना। तबसोउमदरसरहैलोभाना॥ दोउविसंगह्वैयकसँगसोवैं। तनमनकीसबसुधिबुधिखोवैं॥

दोहा-जबपुरंजनीखातिहै, तबहिपुरंजनखात । जबजलपियेपुरंजनी, तबसोउजलहिअघात ॥ ५७ ॥
जबपुरंजनीगीतनगावें । तबसोऊगावतसुखपावें ॥ जबपुरंजनीरोदनकरई । तबसोउरोदनकरिदुखभरई ॥
जबपुरंजनीहँसैठठाई । तबसोउहँसैमहासुखपाई ॥ जबपुरंजनीबैननिबोलै । तबहिंपुरंजननिजमुखखोलै ॥ ५८ ॥
जबपुरंजनीगमनैधाई । तबआपहुधावतपछिआई ॥ जबथकिठाढ़िहोतिनिजप्यारी । ठाढ़होततबभूपसुखारी ॥
जहँसोवतितहँसोवतसोऊ । जहँबैठतितहँबैठतवोऊ ॥ ५९ ॥ जोपुरंजनीसुनैश्रवणमें । सुनैपुरंजनसोतेहिक्षणमें ॥

दोहा-जोपुरंजनीदेखती, लखैपुरंजनसोय । जोसूंघैसोसूँघतो, वाहीकोमुखजोय ॥
जोइपरसैसोइपरसतो॥६०॥शोचतशोचतसोय । दीनहोतलखिदीनसोउ,सुखीसुखीलहिहोय ॥६१॥
यहिविधिनारीकेविवश, भयोपुरंजनराज । यंत्रीवशजिमिदारुमृग, नाचतमध्यसमाज ॥ ६२ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कन्धेपंचविंशस्तरंगः ॥ २५ ॥

नारदउवाच ।

दोहा-एकसमैसोधनुषधरि, मुदितपुरंजनराज । स्यंदनमेंद्रुतचढतभो, मृगयाखेलनकाज ॥
नाधेरथमेंपंचतुरंगा । उभैदंडदुइचक्रअभंगा ॥ एकजुवाहेतीनपताके । बंधुरपंचहुपरमप्रभाके ॥ १ ॥
रज्जुएकसारथियकजाको । कूबरद्वैयकबैठकताको ॥ आयुषपंचमसप्तआवर्णा । औरसाजसबबलितसवर्णा ॥
रथगतिजानहुपाँचप्रकारा॥२॥कनककवचनृपपहिरिउदारा॥अछैतूणकसिकंधनरेशा।रथचढिचल्योलखनसबदेशा।
दशअक्षोहिणीहैसँगजाके । ग्यारहौचारुचमूपतिताके ॥ पंचशृंगरहजेहिवनमाहीं । तुरतपुरंजनगयोतहांहीं ॥
गोपुरंजनीकोघरराषी ॥ ३ ॥ नृपखेलनशिकारअभिलाषी ॥

दोहा-लैधनुशरकरविपिनमें, खेलनलग्योशिकार ॥ ४ ॥ गहेअसुरीवृत्तिको, तजिदायातेहिवार ॥
शरसोंबहुवनजीवनमारचो । धर्मअधर्मननेकुविचारचो ॥ ५ ॥ लिख्योशास्त्रमेंअसनृपराई । यज्ञहेतभूपतिवनजाई ॥
मारैमृगनप्रयोजनहेतू । अधिकहनैसोपापनिकेतू ॥ ६ ॥ हिंसाकरैजोऐसोजानी । ताहिनपापीकबहुँबखानी ॥ ७ ॥
जोसबदिनजीवनकोमारै । भोजनाहितनहिंधर्मविचारै ॥ ८ ॥ सोजनजातनरककोघोरा । लहततहांयमदंडकठोरा ॥
जबहिंपुरंजनबाणपवारचो । काननमेंबहुजीवनमारचो ॥ भयोबहुतवनजीवननासा । बचेभगेतेछोड़िनिवासा ॥९॥

दोहा-महिषाशशसामरगवै, सल्लकभालुवराह । चाहेअनचाहेबहुत, हतेजीवनरनाह ॥ १० ॥
खेलिशिकारमहाश्रमपायो । क्षुधापिपासाताहिसतायो ॥ आयोलौटिपुरंजनगेहू । धोईसुरभिसलिलनिजदेहू ॥
भोजनकरिसबथाकनिवारी११भूषणवसनपहिरिछबिकारी॥लेपिसकलअँगमेंअँगरागा।पहिरचोसुमनमालबडभागा।
प्रविश्योमहलसकलसुखकारी।करिपुरंजनीपरैतिभारी१२मदनमथितमननृपगृहमाहीं।देख्योनहींपुरंजननीकाहीं१३
तहँसखियनसोंपूछनलाग्यो।नृपतिपुरंजनअतिदुखपाग्यो।।अहैकुशलसुंदरीतिहारो।निजठकुराइनकुशलउचारो १४

दोहा-जेहिविनयहगृहलसतनहिं, वृथोविभूतिलखाति । जेहिवरजननीअरुतिया, नहिंसोघरदुखपाति ॥
वसवसखीऐसेगृहमाहीं । चढ़िवोस्यंदनचक्रविनाहीं ॥ १५ ॥ कहाँगईललनावहमेरी । जोमोहिसुखदायिनीघनेरी ॥
बूडतमोहिंदुखसागरमाहीं । जौनउबारतरहीसदाहीं ॥ पदपदमहमोकहसुखदेती।दुसहविरहदुखसबहरिलेती ॥१६॥
सुनतपुरंजनकीअसिवानी । बोलीसकलसखीछबिखानी ॥ महाराजजोप्रियातिहारी । ताकीगतिनहिंपरैविचारी ॥
परीपुहुमिविनसेजदुखारी । कसनलेहुचलिनाथनिहारी ॥१७॥ सुनतैसखिनवचननरपाला।गैपुरंजनीढिगततकाला॥

दोहा-पुहमीपरीपुरंजनी, विथुरितचिकुरकुरूप । ताकोनिरखिपुरंजनो, भयोतुरतदुखरूप ॥ १८ ॥
धरिधीरजअतिशैभयपाग्यो । मधुरेवचनमनावनलाग्यो॥पैपुरंजनीनेकुनमानी।कियोनकछुकटाक्षसुखसानी ॥१९॥

मंदहिमंदपुरंजनताके । गह्योचरणयुगप्रियरसछाके ॥ लीन्ह्योनिजअंकहिबैठाई । करनलग्योअतितासुबडाई॥२०।
जेअपराधकरैंजगमाहीं । प्रभुसोलहतदंडपुनिनाहीं ॥ तेपूरुवकछुपुण्यनकीने । रहतनिरंतरदुखमहभीने ॥ २१।
दियोदंडदासहिप्रभुजोई । परमअनुग्रहताकहसोई ॥ जोयहकृपादासनहिंजानै । ताकोप्रियामूढहममानै ॥ २२ ॥
दोहा–मंदहँसनिलाजहिललित, विरचिभौंहवरबंक । मोपकरिअनुरागअति, लखुलखुललीनिशंक ॥
अलकैहलकिहलकिछबिछलकैं । तुवमुखदेखतपरैनपलकैं ॥सुभगनासिकाकीदुतिदेषी।सुखसमुद्रमनमगनविशेषी॥
कसनहिंघूँघुटकोपटटारी। वदनदेखावहुमोकहँप्यारी ॥ कसनहिंसुधासरिसमृदुवानी । मोहिंसुनाइदेहुठकुरानी २३
कियोजोतेरोकोउअपराधा । ताकोअबहिंदेहुँमैंबाधा ॥ असकोउहैनहिंत्रिभुवनमाहीं । तवअपराधभीतिजेहिनाहीं ॥
पैजोविप्रऔरहरिदासा । ताकोदैसकिहौंनहिंत्रासा॥२४॥विनचंदनतववदननदेख्यो।कवहुँमलिनताहियनहिंलेख्यो॥
दोहा–कवहुँलख्योनहिंविरहरप, कवहुँनविनअँगराग । कवहुँनलख्योसकोपतोहिं, कवहुँनविनअनुराग ॥
कवहुँउरोजनलगिलली, आयेनहिंदुखआंसु । कवहुँनवीरोविनलख्यो, तेरोवदनविलासु ॥ २५ ॥
विनतेरपूछेगयो, खेलनविपिनशिकार । चतुरिकृपाकरिसोक्षमहु, यहअपराधहमार ॥
व्यथितमदनशरकंतनिज, परैआपनेआय । कौनकामिनीकुटिलअस, लेइनकंठलगाय ॥ २६ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजासिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कन्धेषड्विंशस्तरंगः ॥ २६ ॥

नारदउवाच ।

दोहा–सुनतपुरंजनकेवचन, पुरंजनीवशजानि । उठिपीतमकोमिलिकियो, वहुविहारसुखमानि ॥ १ ॥
भूपपुरंजनअतिसुखपायो । केलिभवनकोतेहिसँगआयो ॥ पुरंजनीकरिकैअस्नाना । पहिरिवसनभूषणविधिनाना ॥
करिकैसकलशृंगारविताना । पतिप्रसन्नहितकियोपयाना ॥२॥ मिल्योपुरंजनपुनितेहिधाई।रहेपरस्परदोउलपटाई ॥
बैठेदोउपरयंकहिआई । भरहिंमोदरसवातबताई ॥ रैनदिवसदम्पतिसुखसाने । बीततकालनेकुनहिंजाने ॥
रह्योनकछुविवेकलवलेशा । भयोनारिवशसदानरेशा ॥ ३ ॥ सेजअमोलकनकमणिखाँची।तामेंशेनकरतरतिराची ॥
धरिपुरंजनीभुजपरशीशा । सुखलूटतदिनरातिमहीशा ॥
दोहा–औरनकछुजानतभयो, मैंकोकहसंसार । सबतेअधिकपुरंजनी, असकियठीकविचार ॥ ४ ॥
यहिविधितासँगकरतविहारा।कामविवशगेदिवसअपारा॥बीतींतिनकीसकलजमानी।परचोतिन्हैआधोछिनजानी ५॥
भयेपुत्रपुनिपुरंजनीके । एकादशशतअतिशयनीके॥६॥भईएकसोदशैकुमारी । जननीजनकजगतयशकारी ॥
शीलसुभाउसकलगुणखानी । रूपवतीअतिकोमलवानी ॥७॥ नृपतिपुरंजनपुरंजनीकी । बीतीआयुषआधीनीकी॥
पुनिदुहितनवरखोजिवियाही । व्याह्योपुत्रनवंशहिचाही ॥८॥ भेइकइकसुतकेशतशतसुत।पूरिरह्योपंचालदेशनुत९
दोहा–पुत्रपौत्रमहँप्रीतिकरि, ग्रहधनबाढिमहीश । वसतभयोतहँमोहबँधि, जैसेकीरकपीश ॥ १० ॥
पशुमारककीन्ह्योबहुयागा । जैसेआपभूपबडभागा ॥ ११ ॥ ऐसेनेहनहेपरिवारा । अपनोहितनहिकबहुँविचारा ॥
पुनिआयोवहकालभयावन।जोविषइनकोदुखउपजावन॥१२॥चंडवेगगंधर्वअधीशा।त्रिशतसाठिभटजासुमहीशा १३
तेतनीगंधर्वीतहँजानो । कोउस्यामकोउसेतहिमानो ॥ तेसबपुरीपुरंजनकेरी । लूटनलगेचहूँकितघेरी ॥ १४ ॥
पंचशीसकोतवसोनागा।रोकिकियोयुधजोरहिजागा ॥१५॥ वीशसातसैगंधर्वनसो।लरच्योवर्षसतअहिशर्वनसो॥१६॥
दोहा–लरतलरतजबवथकिगयो, अहिपुरपालकजोय । तवहिपुरंजनदुखितभा, प्रवलरिपुनकहजोय॥१७॥
राजऔरपुरबंधुनमाहीं । विगरबबनवगन्योकछुनाहीं ॥१८॥ कालसुतायकभईसयानी ।अपनेकोपतियोगहिजानी॥
निजपतिखोजतित्रिभुवनमाहीं।फिरीचहूँकितलियकोउनाहीं।नामदुर्भगामहाअभागिनि।मरनशीलकीअतिअनुरागिनी

शुक्रशापतेताहियथाली।लहिहुनिदियसुतकहँसबभाँती॥जबसुतालियोदुर्भगानारी।तबकियनृपतिराजअधिकारी २०

दोहा-ब्रह्मालोकतेआवतो, महँरह्योयकवार । कालसुतासोमोहिनिरखि, भईतुरतवशमार ॥

यद्यपिब्रह्मचारिमोहिजानी।तद्यपिमोहिवरनहठठानी॥२१॥जबमैंनाहींताकहकीन्ही।तबमोहिकुपितशापअसदीन्ही।

पूरयोतैनमनोरथमेरो । तातेयकथलवासनतेरो ॥ २२ ॥ तबनिराशह्वैकालकुमारी । मानिसीखसबभूपहमारी ॥

भैनामकयमनेशहिकाहीं । गईकरनपतितुरततहाँहीं॥२३॥ बोलीयमनेसहिकरजोरी । होहुकंतविनतीयहमोरी ॥

जोतुमसोमाँगतहैआई।सोनिराशकबहूँनहिंजाई॥२४॥उचितनदेतउचितनहिंलेतो।बुधजनतिनकोगनतअचेतो २५॥

दोहा-तातेमोपरकरिकृपा, करहुमोहिंनिजनारि । यहीपुरुषकोधर्महै, परदुखदेवनिवारि ॥ २६ ॥

कालसुताकीसुनिअसवानी।बोल्योयमनविहँसिसुखमानी२७कारिकैमनमोंविमलविचारा।राख्योमैंपतिखोजतिहारा ॥

तुमहौमहाअमंगलरूपा । वरिहैकोउनरंकअरुभूपा ॥ २८ ॥ तातेलेममसैनमहाई । जाहुजगतमहँरूपछिपाई ॥

छिपिछिपिवरहुसकलजगमाहीं।मारिमारिवदलहुपतिकाहीं॥तुमकोजीतिसकीनहिंकोई।तुम्हरेविवशसकलजगहोई॥

तुमहमारिभगिनीह्वैजाहू । जरममभ्राताओजअथाहू॥हमतीनिहुँमिलिकैसंसारा । जीतबक्षणमहँलगीनवारा ॥

दोहा-एकहुकोयहिलोकमें, अहैजितैयाकौन । जबतीनिहुँमिलिचलहिंगे, असकोजुरिहैजौन ॥ ३० ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदे
वकृतेआनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कन्धेसप्तविंशस्तरंगः ॥ २७ ॥

नारदउवाच ।

दोहा-भैनामकयमनेशकी, लैसँगसैनविशाल । अरुज्वरकोनिजसंगलै, कालसुताविकराल ॥ १ ॥

फिरनलगीसिगरेजगमाहीं । व्याहिलियोसिगरेजगकाहीं॥१॥करतकरतसबजगमहँफेरा । जायपुरंजनपुरकहँघेरा ॥

सकलसंपदायुतमनहारी । पन्नगकरतपुरीरखवारी ॥ २ ॥ कालसुताभटघुसिसबधारन । लगेपुरंजनपुरीउजारन ॥

पीडितपुरीपुरंजनदेखी । ममताजामेकियेविशेखी ॥ कालसुताकोलहिबलभारी । भयोकुरूपनगरछविकारी ॥

ह्वैगौदीनपुरंजनराजा । करतरह्योजोऐशदराजा ॥ ३ ॥ यमनऔरगँधरबबलवाना । हरयोपुरंजनविभौमहाना॥४॥

भूपदियोबुधिबलसबखोई । बितयोआठहुयामनिरोई ॥ ५ ॥

दोहा-कालसुतानास्योनगर, करिकैकोपकराल । यमनऔरगंधर्वमिलि, हरयोदेशपंचाल ॥ ६ ॥

पुरीदेशकोनाशविलोकी।भयोपुरंजनअतिशयशोकी॥सुततियसचिवसकलपरिवारा।करनलगेअपमानअपारा॥ ७॥

कालसुतावशनिजकहँजानी । औरउपायकछूनदेखानी॥चितचिंताउपजीअतिभारी।तदपिनआशतजीपुरधारी ॥८॥

यदपिनसुततियताकहमानै । तदपिपुरंजनतिन्हैंलोभानै॥नितनातीसुतरहतखेलावत।कहँजैहैंममनाहिनआवत ९

जबगंधर्वयमनवरुजेरा । कियोउपद्रवपुरअतिघोरा॥तबनगरीकहँछोडनचाहा । भयोपुरंजनविगतउछाहा ॥ १० ॥

दोहा-तबभैअग्रजजौनज्वर, सोनगरीमहँआय । भाईकेहितहेततेहि, दीन्हीपुरीजराय ॥ ११ ॥

जरनलग्योजबनगरअनूपा।तबकुलसहितपुरंजनभूपा॥अतिशयतापितभोतेहिकाला।सुततियमंत्रीभयेविहाला १२॥

यमनकालकन्यागंधर्वा । घेरयोदौरिपुरंजनसर्वा ॥ अरुपुरपालकजोअहिरहऊ।ताकोभवनजमनहरिलयऊ॥ १३ ॥

सक्योनरक्षणकरिपुरकाही । भागनचह्योऔरथलमाहीं॥जैसेतरुमहँपावकलागे॥भागतभुजँगमहाभयपागे॥ १४ ॥

पुरपालककीदशादेखियह।रक्षकरह्योनकोउअपनेकह।तबहिपुरंजनरोवनलाग्यो १५सुततियनातिसचिवरतिपाग्यो।

दोहा-राजविभौधनधामसब॥१६॥अपनोकुमतिविचारि । करनलग्योबहुभाँतिदुख, तासुवियोगनिहारि॥१७॥

जबमैंजैहौंऔरहिठौरा । किमिरैहैयहतिययुतछोरा ॥१८॥ खायोनहिंविनमोहिंखवाई । न्हायोनहिंविनमोहिंनहाई ॥

कोपतमोहिडरतसबकाला।मोमहँनेहकियोअतिबाला॥मोहिंभ्रमभयरहिंसमुझावति।मोहिविदेशलखिअतिदुखपावति।

सोमोहिंविनइतकैसेरहिहै । केहिविधिदुसहविरहदुखसहिहै२०नातोपुत्रसहितपरिवारा । किमिपुरंजनीरहीअगारा ॥
जिमितरनीसमुद्रमहँदोई । भिन्नभयेपुनिएकनहोई ॥ मोहिंविनयहपुरंजनीप्यारी । जरिहैविरहदवानलभारी ॥२१॥

दोहा–यहिविधिकरतपुरंजन, बहुविधिशोचविचार । धरनहेततेहिथमनपति, आवतभोबलवार ॥ २२॥

पकरचोयमनपुरंजनकाहीं । द्रुतलैचल्योभोननिजपाहीं ॥ तहाँपुरंजनकेसरदारा । आगतभेकरिहाहाकारा ॥२३॥
गयोभुजंगहुतुरतपराई । चलीनताकीकछूउपाई ॥ जवगेनृपअरुअहितेहित्यागी । तबजहँकीनगरीतहँलागी ॥२४॥
बाँधिपुरंजनकहवरजोरी । यमनचलेलैताहिकठोरी ॥ रह्योसुहृदइकनामअज्ञाता।तेहिसुधिकरततोनहिंदुखपाता ॥
पैअज्ञानवशसुधिनहिंकीन्ही । तातेयमनताड़नादीन्ही ॥२५ ॥ जौनपुरंजनमखपशुमारो।तेसबआयपरशुकरधारे ॥

दोहा–काटनलागेअंगसब, भूपपुरंजनकेर । करतकुठारप्रहारबहु, समझिपाछिलोवैर ॥ २६ ॥

पुनिजबनेशपुरंजनकाही । डारयोअंधकूपयकमाही ॥ परोरह्योतहँवर्षहजारा । भूलीसुधिदुखलह्योअपारा॥२७॥
पैजमनेसहिपकरतमाही । सुधिकीन्ह्योपुरंजनीकाँही ॥ तातेभूपविदर्भअगारा । दुहिताभैसुंदरीअपारा ॥ २८ ॥
तहँमलयध्वजकोउमहिपाला । नाशकशत्रुनबुद्धिविशाला ॥ वैदर्भीकेव्याहनकाजा । गयोस्वयंवरमहँसोराजा ॥
जीतिसकलराजनजसछायो । वैदर्भीविवाहिवरल्यायो ॥ २९ ॥ वैदर्भीदुहितायकजाई।जेहितेकृपाकरैयदुराई ॥

दोहा–पुनिभेताकेसातसुत, द्रविडनरेससुपूत ॥ ३० ॥ एकएककेतहँहोतभे, अरवुदअरवुदपूत ॥

जासुवंशपूरितयहधरणी । लहेविभूतिसवैसुखभरणी ॥ ३१ ॥ जाकेरहेसातयेभाई । तेहिंव्याह्योअगस्तिमुनिराई ॥
भयोदृढाच्युततासुकुमारा । तासुतइधमवाहबलवारा॥३२॥मलयध्वजनिजपुत्रनकाही।दियोबाँटिसबराज्यतहाँही ॥
करनभजनहितगयोकुलाचल३३तजिगृहसुतदाराभोगनभल॥ विनपतिसकलविदर्भिहुत्यागी।शशिमरीचिसमपतिसँगलागी
नदीताम्रपरनीछविछाई।चंद्रवसावटोदकाभाई ॥ पुण्यसलिलतिनमहँकरिमज्जन।दंपतिकियोसकलमलभंजन॥३५॥

दोहा–कंदमूलफलदलसलिल, भोजनकरिकियवास । करिकलेशअतितपकियो, ध्यावतरमानिवास॥३६॥

शीतघामअरुभूँखपियासा।सुखदुखजीत्यौकरतप्रयासा॥३७॥ नेमजपादिकियेअतिभारी।जीतेइंद्रिनप्राणसुखारी ॥
हरिकोकरतनिरंतरध्याना।खडेवर्षशतसरिसपखाना ॥३९॥ तिनकोतनकोतनकनभाना । तवपायोतेआतमज्ञाना ॥
स्वप्नसरिससबजगतहिजाने।ताकोआपनकबहुनमाने॥४०॥जौनरीतिहरिगुरूबताई।तेहिविधितेजगदियोविहाई ४१
मान्योस्वामीरमानिवासा । अपनेकोजान्योहरिदासा ॥४२॥वैदर्भीमलयध्वजकेरी । सेवाकरीसप्रीतिघनेरी ॥ ४३॥

दोहा–जटिलकेशवलकलवसन, व्रतसोंकृशितशरीर।पतिसमीपशोभितभई, जनुशिखिज्वालगँभीर ॥४४॥

जादिनमलयध्वजमरिगयऊ । हरिध्यावतवैठेतसरहेऊ।तेहुदिनगेपतिढिगमहरानी।करनचरनसेवनसुखसानी॥४५॥
परसतपदतेहिगरमनलाग्यो।तवताकोमनअतिदुखपाग्यो॥विननायकजिमिमृगीदुखारी।तैसेढारचोदुखदृगवारी४६॥
शोचकरनरोअनहुलागी । भाषतवचनमहादुखपागी॥४७॥उठहुकंतकीजैवलकरणी । चोरनसोंरक्षहुयधरणी॥४८॥
यहिविधिकियबहुभांतिविलापा।पतिपदशिरधरिलहिबहुतापा॥दारुमयीपुनिचिताबनाई।पतितनधरिचढ़िबोमनलाई।

दोहा–जरनलगीजबअगिनिमें, तबयकविप्रसुजान । आयवचनभाषतभयो, प्रथमसखामतिमान ॥ ५१ ॥

अहोकौनतुमकौनकुमारी । कोहैयहजेहिशोचहुभारी ॥ जानहुहमहिंसखाकीनाहीं । रहीपूर्वजेहिसंगहिमाहीं॥५२॥
रह्योसखाहमरेअविज्ञाता । तुमहिजनाताकिनाहिंजनाता ॥ मोपदछोड़िभूमिमहँआई।विषैलालसाविपुलबढाई५३॥
हमतुममानसरोवरवासी । अहोहंसनितआनँदरासी ॥ इकसँगवसेहजारनवर्षा । भरेचित्तमेंअतिशयहर्षा ॥ ५४ ॥
तहँविचरततियकृतपुरएका । निरख्योजामेंविभौअनेका॥५५॥पंचअरामद्वारनवजामें। पालकयककोठात्रयतामें॥

दोहा–पंचहाटहैवणिकषट, पाँचैउतपतिहेत । नारीपुरकीस्वामिनी, असभाषहिंमतिसेत ॥ ५६ ॥

पांचहुइंद्रीविषैअरामा । नवौछिद्रनवद्वारललामा ॥ अवनिअनलजलकोठातीना । ज्ञानेंद्रीमनवणिकप्रवीना ॥५७॥
करमेंद्रीहैतहींबजारा । पंचभूतकारणअवतारा ॥ स्वामिनितासुबुद्धिहैनारी । पुरशरीरजियपुरुषविचारी ॥
बुद्धिविवशह्वैजीवअनूपा । तेहिपुरवसिभूलतनिजरूपा॥५८॥तामेंतुमह्वैवसिकैप्यारी।सिगरीअपनीसुरतिविसारी ॥

लहीताहितेदशाहुलगी॥५९॥जहिंविदर्भसुतहिंगातुमप्यारी।नहिंयहतेरेसुहृदसुजाना।नहिंपुरंजनीपतिमतिमाना६०

दोहा–मलयध्वजराजतमायामहा, नहिंमृगशाजानहुतव । हमतुमदोऊहंससहैं, जानितजहुसवगर्व ॥ ६१ ॥
हमतुमभिन्नहुएकनाहिं, यहविचारमनमाहिं । कहहिंनेकुहूंभिन्नता, कविहमअरुतुमकाहिं ॥
आनंदादिकसकलगुण, हमतुममहँजोएक । ताहितुमजनलघुवडगुनहि, करिकैविमलविवेक ॥ ६२॥
जिमिलघुवडआदर्शमहँ, एकवस्तुहीजोय । लघुमेलघुवडमेंवडी, देखैयकजनसोय ॥ ६३ ॥
यहिविधिसखाअज्ञातजव, भाष्योताहिवुझाइ । वहुदिनकीभूलीसुरति, तुरतगईतेहिआइ ॥ ६४ ॥
हेप्रचीनवरहीनृपति, यहअध्यातमज्ञान । कह्योकथामिसिमेंसकल, यहप्रियअतिभगवान॥ ६५ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधि-
राजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृतेआनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेअष्टविंशस्तरंगः ॥ २८ ॥

दोहा–सुनिनारदमुनिकेवचन, कथाललितविज्ञान । नृपप्रचीनवरहीवहुरि, वोल्योमुदितमहान ॥

प्राचीनबर्हिरुवाच ।

दोहा–भलीभांतिमुनिवचनतुव, परेमोहिनहिंजानि । बुधजानेबुधकेवचन, गुनेनकर्मलोभानि ॥ १ ॥
सुनिभूपतिकेवचनअस, तहँनारदमुनिराय । विस्तरतेसवकरतभे, कथाप्रसंगवुझाय ॥

नारदउवाच ।

पुरुषपुरंजनजीवहिजानों । ताकोमैंवहुभाँतिवखानों ॥ यकद्वैत्रयचौचरणहिवारे । औरहुविपुलचरणकहँधारे ॥
ऐसेजेशरीरजमाहीं । तेईतासुपुरलसतसदाहीं ॥ तिनकोनिजकर्मनिवशपावे । यातेवेदपुरंजनगावे ॥ २ ॥
परमातमासखाअविज्ञाते । अहैजीवकोजगविख्याते ॥ नामक्रियाणनतेहरिकाहीं । अनुगुणादितेजानतनाहीं ॥
सोजियभ्रमतशरीरअनेकू । तहांनहींसुखपावतनेकू । जबमानुषशरीरकोपावे । तवसुखसरसमानिजमभावे ॥३॥
दोहा–अरुपुरंजनीवुद्धिहै, जेहिसंवंधहिजीव । अहंकारममकारते, संयुतहोतअतीव ॥ ४ ॥
ताहिबुद्धिकोपाइसँयोगे । इंद्रिनविषैभोगजियभोगे॥५॥ ज्ञानकर्मइंद्रीदशजेहैं । तेईसुखापुरंजनिकेहैं ॥
इंद्रिनकीजेवृत्तिघनेरी । तेईताकीसखीनिवेरी ॥ प्राणअपानसमानउदाना । व्यानपंचविधिकोजोप्राना ॥
सोईसर्पपंचमुखकोहै । पुररक्षामेंरहतवनोहै ॥ ६॥ सैनवुद्धिकीइंद्रिनकीतति । तिनसबकोविशेषिहैमनपति ॥
शब्दस्पर्शरूपरसगंधा । यहजोपंचविषैसनबंधा ॥ सोइपंचालनामकोदेशा । भाषतअहैवेदमुनिशेशा ॥ ७ ॥
दोहा–द्दगमुखनासाकर्णगुद, लिंगनवौपरद्वार । तिनमेंद्दगनासाकरण, यकथलद्वैद्वैवार ॥
इंद्रीजेतिनद्वारनमाहीं । तिनकेसंगद्वैसपदिसदाहीं ॥ तिनतिनइंद्रिनाविषैभोगको । तिनतिनद्वारनद्वैअसोगको ॥
जीवसोइबाहिरसुखमानी । निकसतअहैकहतमुनिज्ञानी ॥ ८ ॥ द्दगनासिकावदनयेपाँचा । पूरवदरवाजाहैसाँचा ॥
दक्षिणकर्णदक्षिणकेद्वारा । उत्तरकर्णउत्तरकोवारा ॥ ९ ॥ शिश्नऔरगुदयहयुगजोहै । पश्चिमकोदरवाजासोहै ॥
दक्षिणद्दगआविर्मुखद्वारा । नामखद्योतवामद्दगवारा॥ सखाचक्षुइंद्रीलैसाथै । रूपदेशलखिहोतसनाथै ॥ १० ॥
दोहा–दक्षिणनासाछिद्रसो, द्वारनालिनीनाम । नलिनीनामकद्वारत्यों, छिद्रनासिकावाम ॥
तेईद्वारनसोसदा, घ्राणेंद्रीलैवेश । सूँघतअहेसुगंधसोइ, जैवोसौरभदेश ॥
पुरकोमुख्यमखैदरवाजो । तामेंवाकऔररसनाजो ॥ येदोउइंद्रीसखासंगलहि ॥११॥ अपनोवचनरूपजोदेसहि ॥
अन्नरूपजोविविधदेशहै । करततहाँकोद्रुतप्रवेशहै ॥ सोवोलिवोअहैतेहिकेरो । अरुभोजनकोकरवनिवेरो ॥
दक्षिणकर्णपित्तरहजानो । उत्तरकर्णदेवहूमानो ॥ १२ ॥ प्रवृत्तानिवृत्तशास्त्रजोअहई । सोपंचालदेशश्रुतिकहई ॥

दक्षिणकर्णहितसुखमाहीं।सुनतोशास्त्रप्रवृत्तसदाही॥त्योंहीउत्तरकर्णहितेनित।सुनतनिवृत्तशास्त्रकोगुनिहित ॥१३॥

दोहा—शिश्नद्वारजोअवअहै, तासुआसुरीनाम । मैथुनहूकोजानिये, ग्रामकनामललाम ॥

इंद्रीसाउपास्थिनभावै । सोऊदुर्मदनामकहावै ॥ गुदानिरतेंद्रीलुब्धकसोई ॥ १४ ॥ कहियेनरकत्यागमनजोई ॥ तहिपुरअंधपानिपगहैंविय॥१५॥अंतहपुरहिजानियेतहँहिय ॥ तामेंविषूचीनमनआहई । ताकोसंगजीवजबलहई ॥ तबमनगुणरजतमसततेसति।मोहप्रसादहर्षपावतअति१६जसजसबुद्धिहोइसविकारा।तसतसअसपरशादिअपारा ॥ जाग्रतआदिअवस्थामाहीं । करतरहतहैंजीवसदाहीं ॥ नारिविवशह्वैवोहैसोई । भाषतअहैवेदमुनिलोई ॥ १७ ॥

दोहा—अहैदेहरथपाँचजे, ज्ञानेंद्रीविख्यात । पाँचअश्वतेइतासुके, जानहिंमतिअवदात ॥

संवतसरकोवीतवजोई । तेहिरथकोचलिवोहैसोई ॥ पुण्यपापयुगतेहिरथचाके । सतरजतमतेइतीनिपताके ॥ पंचप्राणबंधनरथकेरे ॥ १८॥अश्वनकसामनहिंमुनिटेरे ॥ बुद्धिसारथीहैतेहियानै । रथीबैठकाहियअसथानै ॥ युवायुगलतेहिरथमेंभाये । शोकमोहकोमुनिगणगाये ॥ विषयिनमेंइंद्रिनकोचलिवो । सोईशास्त्रनकोहैघलिबो ॥ सातआवरणजेकहिआये । तेईसातोत्वचासुहाये ॥१९॥ पंचप्रकारकेरिहैजोगति । सोइकर्मेंद्रिकर्मकरिवोसति ॥ एकादशसैनाहैजोई । मनयुतदशइंद्रीहैंसोई ॥

दोहा—जैबोकह्योशिकारको, मृगतृष्णाहिसमान । विषयनकेवशधोइवो, भाषतवेदपुरान ॥

गंधर्वनृपतिवेगप्रचंडा । सोइसंवतसरहैवरिबंडा ॥ २० ॥ वासरकोगंधर्वहिजानो । गंधर्वीनीरैनकोमानो ॥ गंधर्वीनिगंधर्वविख्याते । अहैवीसऔरद्वुशतसाते ॥ तेईपुरंजनकेपुरकाहीं । लूटमारकरिलैंतहाँहीं ॥ सोइशरीरकीआयुदाई । हरिवोदियोवेदमुनिगाई ॥ २१ ॥ कालसुतादुर्भगामहाई । सोईहैजगविदितबुढ़ाई ॥ ताकोकोईनाहिविवाहै । सोयहजेरतेहिकोउनचाहै ॥ यमनेश्वरहैकालमहासति । तासुसहायजरानितठानति ॥

दोहा—तातेतेहिभगिनीजरा, मुनिवरकियोउचार ॥ २२ ॥ आधिव्याधिसैनाअहै, ताकीप्रबलअपार ॥

आधिव्याधिआवतिहैजबही।धर्मकर्मबिनहोवैतबही ॥ तेहितेतिनकोयमनउचार्‍यो।प्रज्वरमृत्युभ्रातानिरधार्‍यो ॥ सोज्वरद्वैप्रकारविख्यातो । जेहिआयेजलदीमरिजातो॥२३॥ याहीविधितेविविधप्रकारा।दुखत्रितापतेलहतअपारा॥ शतवर्षहिलोंभरोअज्ञाना । जीवतरहतपरमसुखमाना ॥ २४ ॥प्राणेंद्रीमनकेजेधर्मा । क्षुधापिपासादिकजेकर्मा ॥ तिनकोपुनिआपनोसदाही।ह्वैवशविषयवासनामाही॥हमहमारयहकरिअभिमाना।करतरहतसबकर्ममहाना २५॥

दोहा—परमगुरूभगवानको, दियोअजानविहाय । ह्वैअशक्तगोप्रकृतिके, गुणमहँजगतजनाय ॥ २६ ॥

गुणाभिमानीनिजकहमानी । करतअनेककर्मअज्ञानी ॥ ताहीतेबहुयोनिनमाहीं । भ्रमतरहतहैजीवसदाहीं ॥ २७॥ सात्विककर्मकरतहैजबही। स्वर्गादिककोपावततबही॥राजसकर्मकरतजबसोई।अभिमानीराजादिकहोई ॥ तामसकर्मजबहिमनलावै । तबहीनरकादिककोपावै॥ २८ ॥मनवासनासकलअनुसारै । कहूँदेवकहुँनरतनधारै ॥ तिर्यककबहुँहोतहैसोई। तिनमेंकबहुँदेहनरहोई॥ कबहूँहोतअहैसोनारी । कबहुँनपुंसककोतनधारी ॥ २९ ॥

दोहा—क्षुधापिपासापीडितै, घरघरश्वानसमान । धावतमारोजातकहुँ, आदरलहतजहान ॥ ३० ॥

छंद—करिकर्मजगदुखदूरिकीबोचहतहैमनमाहिं । तनतऊइकदुखलगोइरहतोलहतसुखहैनाहिं ॥ ३१ ॥
तेहितेसकामहिकर्मकेतौकरेकोउमतिवान । दुखतेनछूटतकबहुँपैयहकियोवेदबखान ॥
जेहितेजेभगवतधर्मतेअतिरिक्तकर्मअमान । सतिजानियेतेसबैमिथ्याअहैस्वप्नसमान ॥ ३२ ॥
जिमिधरेशिरमहँबडोबोझादूखतैतेहिकाहि । धरिलियोकाँधेतऊदुखउतरतनवोझतहाँहि ॥ ३३ ॥
तिनकर्मतेफलहोतजेतेतेऊनिजनवृथाहिं । जिमिस्वप्नमेंजोस्वप्नदेखतसोऊमिथ्यामाहिं ॥ ३४ ॥
नहिंअहैयद्यपिविषयनिजअभिमानतेदुखहोत । जिमिस्वप्नशिरकाटवनसतिपैहोतशोकउदोत ॥३५॥
सुखरूपजियकोजेहिअज्ञानहिजौनदुखकोहेत । जगमेंजननमरणादिहोतोफिरतमहाअचेत ॥
तेहिकीनिवृत्तिजबभेगुरुमेंभक्तितबहियलेत । असिसोनिवृत्तिहिहरिमाहँसगुणभक्तिबाँधतनेत ॥ ३६ ॥

दोहा–हरिमेंसगुणाभक्तिसो, यहजगतेवैराग । ज्ञानहुकोप्रगटावती, लहतके उवड़भाग ॥ ३७ ॥

सोजेहिगुरुमुखवचनविश्वासा । जोअध्ययनकरतगुरुपासा ॥ तामेंश्रद्धाकियेमहाई । ताहिजीवकेध्रुवह्वैजाई ॥ सोहरिसगुणाभक्तिसुहाई।कृष्णकथारुचिदेतिबढाई॥३८॥सोजहँहोतिअहैहरिगाथा।जनुअनुरागीलहिमुदगाथा३९॥ वासकियेतहँसरितसमानै।वहतिताहिजोकियभलपानै॥तेहिदुखप्रदभयभूखपियासा।शोकनमोहप्रकाशतत्रासा ४०॥ येईजेमोहादिकचोपे । तेहरिकथाप्रीतिमेरोपे ॥ करननदेतिप्रीतिहरिमाहीं । ऐसेश्रीयदुनंदनकाहीं ॥ ४१ ॥

दोहा–अहैप्रजापतिआदिजे, औहमहूँब्रह्मादि।तपविद्याहुसमाधिते, देखहिगुणहिअनादि॥ ४२ ॥ ४३ ॥

औरहुजेहैंसुरनरमाहीं । जिनहरिकथाप्रीतिकछुनाहीं ॥ तेनिजनैननिमाहिंविशेखे । कौनेहुजन्महिमेंनहिंदेखे॥४४॥ अरुजावेदपढ़ोअतिह्वैथिर । तौतिनमेंकामैसिधिखातिर ॥ वरणितजेइंद्रादिकदेवा । तिनहिमानिपरकरतजोसेवा ॥ सोनरश्रीभगवानेकाहीं । कबहूँनेकहुँजानतनाहीं ॥४५॥ निजसेवकजबयदुपतिजानी । जापरकरतकृपासुखखानी ॥ तबसोहरिजनकाममखादिक।प्रतिपादकजोश्रुतिअहलादिक॥तामेंलगीरहतिमतिजोई।ताकोत्यागिरागिमुदमोई ॥

दोहा–वेदपरमसिद्धांतजे, यदुनंदनव्रतचंद । निशिदिनसेवततिनहिंको, लहतअमंदअनंद ॥ ४६ ॥

तेहितेहेभूपतिमतिवाने । जिनकेवशअज्ञानमहाने ॥ अर्थसाधिकेअसजेदेखाते । कर्मसकाममखादिविख्याते ॥ तिनहिंयथार्थअर्थकेसाधक।जानोनहिंतेहैंतेहिवाधक ॥४७॥ पूर्वमिमांसकजेश्रुतिकाहीं । कहतकर्मपरअहैसदाहीं ॥ तेतोअहैमहाअज्ञानी । वेदअर्थजानतनहिमानी ॥ जातेवेदतातपरयर्थे । जानतनहिंश्रीकृष्णसमर्थे ॥ ४८ ॥ याहीतेयज्ञादिकठानी । हिंसारततुमजेअभिमानी ॥ तेश्रीकृष्णकेरप्रदशर्मा । सेवारूपपरमजोधर्मा ॥

दोहा–ताकोजानतहौनहीं, याहीतेयदुनाथ । नहिंप्रसन्नतुवकर्ममें, वदतवेदमुनिनाथ ॥
तातेयेनहिंकर्महैं, जेहिप्रसन्नहरिहोत । सोइकर्मविद्यहुसोई, जिहिहरिप्रीतिउदोत ॥ ४९ ॥

स०–श्रीयदुनंदनकेशरणैभयेहोतकल्याणअहैजनकेरो । भैतनकोतेहिकेतनमेंकवहूँनपरैकोहुकेहगहेरो ॥ ५० ॥
जोअसजानतसोइगुरूतेहिकैशरणैलहिमोदवनेरो, श्रीभगवानकोज्ञानमहानहिपूछैसुजानकरैनहिंदेरो॥५१॥
दोहा–कियोप्रश्नजोतुमनृपति, सोहमकियो उचार । औरगोप्यकछुकहहिंसो, सुनिध्रुवकरहुविचार॥५२॥

नारदउवाच ।

कवित्त–देखौएकमृगथोरोचरैफूलवाटिकामें, मृगीयुतअलिगणगानसुनिमोहैजू । ताकेपीछेव्याधहनैहेतुलिये धनुशर, आगेआवैवृकजाहिदृगहूनजोहैजू । मृगसोजगतजानिशरसोचलतचित, ताकोरोकिजामैपुनि कबहूनजोहैजू । हंसयदुवंशअवतंसकेमिलनहेतु, भक्तिज्ञानकीसोपानआशुअवरोहैजू ॥ ५३ ॥

दोहा–सुमनसकह्योसोनारिहै, शरणउनहिकेधाम । क्षुद्रफूलमकरंदसम, इंद्रिनविषयललाम ॥
ताकोखोजतरहतजिय, अलिगणसबतियजान । सामवेदसमगानतिन, मोह्योरहतुअजान ॥

सवैया-आयुहरैदिनरातिजोकालवृकाअहैआगेखडोयहमानो।बाणचलावनवारोप्रसिद्धहैमृत्युहिव्याधअवध्यमहानो॥ याहीतेजीवमृगासरिसैजेहिआपस्वरूपपरैनपिछानो।सोअबसत्यकहैतुमसोंविषयीसबजीवनऐसहीजानो॥५४॥५५॥

दोहा–सुनिकेनारदकेवचन, नृपवरहीप्राचीन । जोरियुगलकरकहतभे, मुनिसोंअतिमुदभीन ॥

राजोवाच ।

मखहिंसावरज्योमुनिराई । सोमेरेमनशंकाआई ॥ जेमुनिमोकोयज्ञकराये । तेअजानधौंमोहिनबताये ॥ ५६ ॥ जोआतममहँममभ्रमरहेऊ।सोतुववचनसुनतमिटिगयऊ॥५७॥अबतुववचनमाहँमुनिराई।मोहिसंशयसोदेहुसुनाई ॥ जौनदेहतेकरमकरतहै । सोतनतौइतपरोरहतहै ॥ जीवात्माऔरहितनपाई । भोगैफलपरलोकाहिजाई ॥ ५८ ॥

तातेहोतहियेममसोगे। करैऔरऔरैकोउभोगै॥ कियेकर्मयगादिकजेई। नाशभयेतुरतहिंततेई॥

दोहा–तवपावतकेहिभाँतिफल, यहीवड़ोसंदेह। सोभ्रमभेटहुसकलमुनि, करिमोपरअतिनेह॥ ५९॥

सुनिभूपतिकेवचनमुनीशा। बोलेवचनसुनोअवनीशा॥

नारदउवाच।

मनप्रधानजोलिंगशरीरा। करतकर्मजातेमतिधीरा॥ लिंगशरीरनशतनहिंसोई, ताकोदुखसुखभोगहुहोई॥ ६०॥

जिमिसपनेयहदेहविहाई।भोगतदुखसुखअनतहिजाई॥६१॥हमहमाराजोजोमनआवै।सोसोपरलोकहुमहँपावै॥६२॥

जोनीकीकरणीजगकरई। पूवरपुण्यतासुलखिपरई॥ अनुचितकर्मकरैजोप्रानी। तेहिपूरुवपापीअनुमानी॥ ६३॥

सुखीदुखीनिरधनधनवाना। पूरवकर्महिहेतप्रमाना॥ जौनहिंसुन्योनदेख्योकबहूं। सोऊआवतमनमहँअबहूं॥

सोसबपूरवकर्मप्रभाऊ॥ यहजानहुवरहीनृपराऊ॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥

दोहा–स्वप्नअसंभ्रवलखिपरै, सोहैचित्तविकार। रोगविवशजिमिदृगनमें, द्वयशशिपरैनिहार॥ ६८॥

जोमनयदुपतिपदलगिजाई। पूर्वकर्मतेहिसकलदेखाई॥पैकरिसकैनकछूविकारा।जिमिशशिमधिनराहुअँधियारा६९

रहतजबैलगिलिंगशरीरा। तबलगिमैंममहैमतिधीरा॥ ७०॥जोसुषुप्तिअरुमूर्छहुमाहीं।अरुजबमित्रमित्रबिलगाहीं॥

तबहुँयदपिरहतोअहँकारा। इंद्रीनहिंतेहितेनप्रचारा॥७१॥ गर्भहुमहँअरुबालहुपनमें। इंद्रीपुष्टिरहतिनाहिंतनमें॥

तातेअहंकारनहिंसरसै। जैसेकुहूचंद्रनहिंदरसै॥ ७२॥ यदपिननितसुतधनकुलदारा। तद्यपितेदुखदेतअपारा॥

दोहा–जिमिसोवतअरिदेतदुख, जागेसबमिटिजाय। तिमिजानेजगदीशके, यहसंसारविलाय॥ ७३॥

दशइंद्रीअरुपंचहुप्राना। मनअरुबुद्धिउभैमतिवाना॥ येसत्रहियुतलिंगशरीरा। यहिजीवहिजानहुमतिधीरा॥

येकबहूँनहिंहैभगवाने। ऐसोचारिहुवेदवखाने॥ ७४॥ यहीलिंगतनतेयहजीवा। धरततजततनथूलअतीवा॥

दुखसुखशोकभीतितेहितेरे।पावतहैयहजीवघनेरे।॥७५॥तनतजतहुभरजियतनमाहीं। ममतात्यागतकैसेहुनाहीं॥

जबदूजोतनसबविधिपावै। तबयाकोअभिमानभुलावै॥ जिमिजलौकआगेतृणगहिकै।तजैपाछिलोतृणसुखलहिकै॥

दोहा–मनहीकोकारणगुनौ, बंधमोक्षकोभूप। जक्षिमनमेंभैवासना, तैसोपावतरूप॥ ७६॥ ७७॥

पायअविद्याकरसंबंधा। बारहिबारलहतजियबंधा॥७८॥ तौनअविद्यानाशनहेतू। भजहुसकलविधिरमानिकेतू॥

जगउत्पतिपालनसंहारा। व्यापकहरितेकरहुविचारा॥ ७९॥

मैत्रेय उवाच।

यहिविधिनृपसोतहँमुनिराई।ईशअनीशहुकीगतिगाई॥वहुसराहिवरहीप्राचीनै। मुनिगेसिद्धलोकसुखभीनै॥ ८०॥

तववरहीप्राचीननरेशा।प्रजासृजनदैसुतहिनिदेशा॥आपकरनतपअतिचितलाई।बसेकपिलआश्रममहँजाई॥८१॥

तहँएकाग्रमनकरितजिसंगा। रँग्योगोविंदचरणरसरंगा॥

दोहा–भक्तिरीतिसबभाँतिकरि, प्रेममगनमतिवान। यहतनतजिकछुकालमें, हरिपुरकियोपयोन॥ ८२॥

मुनिवरनितअध्यात्मयह, ज्ञानगुप्तजोकोइ। सुनैसुनावैप्रीतियुत, ताहिज्ञानहठिहोइ॥ ८३॥

त्रिभुवनशुचिकरकृष्णयश, मुनिवरवरणितजौन।तेहिसुनिशुनिपरपुरलहत, पुनिनभ्रमतहैतौन॥८४॥

यहअध्यातमज्ञानवर, विदुरहमहुँसुनिलीन। तेहिप्रभावदुहुँलोकके, सबसंशयतजिदीन॥ ८५॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा-
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौ चतुर्थस्कंधे एकोनत्रिंशस्तरंगः॥ २९॥

दोहा–यहसुनिकैबोलेविदुर, युगलकंजकरजोरि। सुननकथाभगवानकी, मित्रासुतहिनिहोरि॥

[illegible] उवाच ।

जेबरहीप्राचीनकुमार [illegible] कोमाना । कौनसिद्धिपायेमतिमाना ॥ १ ॥
जेमोक्षहुकेवक [illegible] दरशप्रचेता।वसियहिलोककियोकहनेता ॥२॥
सुनिकैविदुरवचनसुखपाये । मित्रासुत [illegible] ॥

मैत्रेय उवाच ।

पितुआज्ञाधरिसकलप्रचेता।रहिसमुद्रमहँपरमसचेता ॥ रुद्रगीतमुखजपततहाँहीं । तोपतभयेरमापतिकाँहीं ॥३॥
जबबीतेदशवर्षहजारा । [illegible] कुमारा ॥

दोहा-तेहिक्षणतहँप्रगटनभये, श्रीहरि [illegible] । निजद्युतिसोंनृपसुतनको, नाशतशोकमहान ॥ ४ ॥

छंद मनोहरा-प्रभुगरुडसवारेभासपसारेगिरिसिपनकोगेगिरिसोहै । जनमनमोहै ॥
पटपीतललामामनअभिरामाहिदिशितमघामाछवियोहै । दासनछोहै ॥ ५ ॥
अतिगोलकपोलाकुंडलडोलालसहिअतोलाअरुणोहै । दृगधनुमोहै ॥
सुरसिद्धअपारेसंगसिधारेसुयशउचारेमुखजोहै । सुखअवरोहै ॥
वसुआयुधभासीदुवनविनाशीकीटप्रकाशीशिरराजै । दिनकरलाजै ॥ ६ ॥
उरमहँवनमालाहारविशालारत्नरसालाउरभ्राजै । सबसुखसाजै ॥
करुणाकेसागरसबगुणआगरसुयशउजागरक्षितिछाजै । जनसुखकाजै ॥
असरमानिकेतानिरखिप्रचेतालहिसुखसेतासमाजै । धनिभेआजै ॥

दोहा-तिनपरकरुणाकरतहां, करुणामहापसारि । बोलेवनरवसमवचन, आपनदासविचारि ॥ ७ ॥

भगवानउवाच ।

नृपकुमारमाँगहुवरदाना । हमप्रसन्नतुमपरमतिवाना ॥ परमअनूपमप्रीतितिहारी । मैंअपनेमहँलियोविचारी ॥
सबभ्रातनसमानहैधर्मा।कियोउदधिमधिअनुपमकर्मा ॥८॥ साँझप्रातजोजनतुमकाहीं।सुमिरणकरैसप्रीतिसदाहीं ॥
बढैतासुभ्रातनमहँप्रीती । प्राणिनसोंनकरैअनरीती ॥ ९ ॥ रुद्रगीतपठिसाँझसवेरे । जोमोहिंध्यावतप्रेमघनेरे ॥
ताकोमनवांछितमैंदेहूँ । युतअज्ञानकुमतिहरिलेहूँ ॥ होइताहिममचरणप्रतीती । बाढ़ैसुमतिसंतपदप्रीती ॥ १० ॥

दोहा-पितुनिदेशधरिशीशमें, तुमतपकियमुतहर्ष । तातेतुम्हरोजगतमें, यशह्वैहैउतकर्ष ॥ ११ ॥

ह्वैहैतिहरेएककुमारा । सोविरंचिसमगुणनिअगारा ॥ पूरीत्रिभुवनतेहिसंताना । औरहुवचनसुनहुमतिवाना ॥१२॥
कंडुकरतहैंवनतपभारी । करनविघनतेहिशक्रविचारी ॥ प्रमलोचाअपसरापठाई । कंडुसंगनिवसीसोआई ॥
ताकेजनमीएककुमारी । गईस्वर्गतेहितरुमहँडारी ॥ ताकोवृक्षग्रहणकरिलीने॥१३॥शशिलखिक्षुधितदयारसभीने॥
अंगुलितर्जिनिसुधादायिनी।तेहिमुखडारीदुखविहायिनी॥तरुकीसुतासुधाकरिपाना।लह्योमोदतेहिकालमहाना १४

दोहा-तुमहिसृष्टिविरचनहितै, दीन्ह्योपितानिदेश । तातेकन्याव्याहिकै, वसियेनिजहिनिवेश ॥ १५ ॥

दशहुजाइह्वैहैपतिताके । रहिहौतेहिछविमहँसवछाके ॥ सोकरिहैसबमहँसमप्रीती । कबहूँकरिहैनहिंअनरीती ॥
तुमकोकछुकदोषनहिंलागी।ह्वैहैसबजगमहँबडभागी॥१६॥तुमसबदिव्यहजारनवर्षा।भूमिभोगभोगहुयुतहर्षा॥१७॥
अपनेपरमकृपाविचारो । भक्तिमोरिनितहीउरधारो ॥ छोडिनरकसमजगदुखधामा।अंतकालऐहौममधामा ॥ १८॥
जेजनसदागृहहुमहँरहही । मेरीकथारैनदिनकहही ॥ गृहबंधनतिनकोनहिंहोई । तेहिसज्जनजानहिसबकोई ॥ १९॥

दोहा-जेजनमेरोसर्वदा, धरेहियेमहँध्यान । तेहर्षतशोचतनहीं, मोहतनहिंमतिवान ॥ २० ॥

मैत्रेय उवाच ।

दोहा-ऐसेसुनिहरिकेवचन, लहिमुदपरमप्रचेत । गदगदगरजोरेकरन, बोलेसुमतिनिकेत ॥ २१ ॥

प्रचेतसऊचुः।

छंद–जयशोकनासनगणविभासननामतुवअघध्वंस। यनवचनपररघुवंशअरुयदुवंशकेअवतंस ॥ २२ ॥
जयशुद्धशांतसरूपनित्यअहेतुकरुणउदार। जयसजनपालनहरनजगधारनअमितअवतार ॥ २३ ॥
यदुवंशचंदननंदनंदनदुष्टदंदननाथ। अज्ञानखंडनधरणिमंडनहरनभवदुखगाथ ॥ २४ ॥
जयकंजपदजयकंजकरजयकंजदृगमुखकंज। जयकंजनाभसुआभजयजयकंजमालामंजु ॥ २५ ॥
जयकंजकेसरसरिसपटसबभूतअंतरयामि। जयजगतसाक्षीदीनपक्षीपापहरबहुनामि ॥ २६ ॥
सबदुखविदारनरूपआपनदियोहमहिंदेखाय। यहितेअनुग्रहदीनपैहमकोदुतीनजनाय ॥ २७ ॥
हेभद्रदायकभुवननायकप्रभुहिऐसहियोग। निजदासकोलखिदुखिततुरतहिहरैसिगरोसोग ॥ २८ ॥
अस्मरणकीन्हेतुवचरणनहिंरहताहियअज्ञान। सबउरबसहुजानहुमनोरथकरहिकौनबखान ॥ २९ ॥
तुवकृपाचाहततहमरहेसोलहीआजअपार। तुमहींअहौयकमोक्षदायकदयापारावार ॥ ३० ॥
जेवरअनंतनिजगतमेंतिनतुमहिंबखशनहार। तातेअनंतकहावतेअसकरहिंसुकविविचार ॥ ३१ ॥
जिमिभागवंशकहुँपारिजातकपुहुपमधुकरपाइ। नहिंचहतदूजोपुहुपरसतेहिमाहँरहतअघाइ ॥
तिमिशवरौपदकमललहिब्रह्मादिवंदितजोइ। वरदानकाहममांगहींनहिंपरतदूसरजोइ॥ ३२ ॥
अबदेहुयहवरदानहमकोकृपाकरिभगवान। तुवपदपदुमरसपानपरिहरिचहैनहिंकछुआन ॥
प्रभुविवशमायारावरीहमभ्रमैंजेहिजेहियोनि। तहँतहँलहैंसतसंगसंततस्ववशविचरैंछोनि ॥ ३३ ॥

दोहा–स्वर्गऔरअपवर्गसुख, एकओरधरिदोइ। संतसंगलवमात्रकी, तऊनसमताहोइ ॥ ३४ ॥

संतसंगमहँवारहिवारा। कृष्णकथासुनिवोसुखसारा ॥ संतसंगतृष्णानहिंआवै। संतसंगकोहुवैरनभावै ॥
संतसंगमहँभयनाहिहोई। संतसंगमेंभ्रमनहिंकोई ॥ संतसंगमहँदुखनहिआवै। संतसंगतुवनगरपठावै ॥
संतसंगमहँनहिंसंसारा। संतसंगमहँविमलविचारा ॥ संतसंगअनुपमआनंदा। संतसंगतेमिलतगोविंदा ॥
संतसंगदुर्लभकछुनाहीं। संतसंगदुर्लभजगमाहीं ॥ संतसंगकहँसुरललचाहीं। संतसंगविनजनमवृथाहीं ॥

दोहा–जोपावनहरिकोचहै, तौयहसरलउपाय ॥ करैअवशिसतसंगजन, कारजकोटिविहाय ॥ ३५ ॥

संतसमाजनमहँसुदमाहीं। गावहितुमकोनाथसदाहीं ॥ ३६ ॥ सज्जनपदपावनकहँपाई। पामरहूपावनह्वैजाई ॥
सबकोशुचितीरथकरिदेहीं। तिनकेअघसज्जनहरिलेहीं॥जोनहिंसज्जनपदअनुरागी।ताकोजानहुपरमअभागी ॥ ३७॥
आपदासशंकरकरसंगा। हमहिभयोक्षणमात्रअभंगा ॥ तेहिप्रभावतुवदरशनपाये। विनप्रयाससंसारनशाये ॥
रोगरूपयहभवसुखघाती। ताकेवैद्यआपसबभाँती ॥३८॥ जोहमवेदपढ्योप्रभुचारो। कियोगुरुनकोबहुसतकारो॥

दोहा–विप्रनकीसेवाकरी, वृद्धनकोसनमान ॥ अरुसाधुनमेंप्रीतिकरि, सबकोगुनेसमान ॥ ३९ ॥

अरुजोकियोसलिलतपभारी। भयेनपवनहुकेरअहारी॥इनसबकोफलयहहममाँगैं। सदाआपचरणनअनुरागैं॥४०॥
मनुस्वयंभुऔशंभुसुरेशा। औरहुऋषिमुनिसबसिद्धेशा॥तुवमहिमाकोपारनपाये।तैसहिहमहुँआपयशगाये ॥४१॥
जयसमशुद्धपुरुषपरस्वामी। वासुदेवहेतुमहिंनमामी ॥ शुद्धसत्वजयजयभगवाना।तुमकोहैप्रणामविधिनाना॥४२॥

मैत्रेय उवाच।

यहिविधिअस्तुतिकरीप्रचेता।ह्वैप्रसन्नतबरमानिकेता॥कह्योलहोतुमभक्तिहमारी।असकहिगेप्रभुसदनसिधारी ४३॥

दोहा–तहांप्रचेतासलिलते, आशुहिबाहिरआय। तरुतेपूरितपुहुमिलखि, कोपितभयेबनाय ॥

मानहुछुअतस्वर्गतरुगणहीं।तिनहिजरावनकीन्हैंमनहीं४४विनतरुधरणिकरनतेहिकाला।निजनिजमुखतेप्रगटेज्वाला॥
कोपप्रचेतनकरविधिदेखी।विनतरुधरणिकरतअसलेखी॥आइप्रचेतनकह्योबुझाई ॥४६॥ वाकीवृक्षनदियोवचाई ॥
पुनिवृक्षनसोंकहँमुसचारी।देहुप्रचेतनव्याहिकुमारी ॥४७॥ तबतरुसुताप्रचेतनव्याही। भयेप्रचेतापरमउछाही ॥

भयोसुताकेदक्षकुमारा।तासुकथाकरअसविस्तारा ॥ विधिसुतरह्योप्रथमसेदक्षा। लहिमखमहँशिवकोपप्रत्यक्षा ॥

दोहा–क्षत्रिवंशमेंहोतभो, पुत्रप्रचेतनकेर ॥ ४८ ॥ चाक्षुपमन्वंतरहिमें, रच्योजोप्रजनघनेर ॥ ४९ ॥
वहुदेवनकेतेजको, कियोपरगभवजौन। करीदक्षताताहित, दक्षनामलहतौन ॥ ५० ॥
सोइप्रचेतनपुत्रको, सृष्टिरचनकेहेत। तिलककियोकरतारतहँ, भयोसुबुद्धिनिकेत ॥ ५१ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेत्रिंशस्तरंगः ॥ ३० ॥

श्रीमैत्रेय उवाच।

दोहा–दक्षसृज्योजबबहुप्रजन, सकलप्रचेतादेखि। भगवतभाषितज्ञानगहि, सबजगतुच्छपरेखि ॥

गृहतजिगे-॥१॥-सबपश्चिमकाहीं।निवसेसागरकेतटमाहीं॥जहाँप्रथमजाजलिमुनिराई।तपकरिसकलसिद्धितापाई॥२॥ तहँवसिकहतसुनतहरिगाथा।नावतनिशिदिनहरिपदमाथा॥इंद्रीजीतिप्राणपुनिजीते।आसनजितविषयिनसुखरीते। परब्रह्ममहँमनहिलगाये। यहिविधितहँकछुकालविताये॥तहँआयेनारदमुनिनाथा।जेहिनावहिंसुरअसुरहुमाथा ॥३॥ तिनहिनिरखिसबउठेप्रचेतू। वंदनपूजनकियमतिसेतू ॥ जबबैठेनारदमुनिराई। कहेप्रचेतातबसुखपाई ॥ ४ ॥

प्रचेतस ऊचुः।

दोहा–आजुलहेमुनिदरसतुव, धनिधनिभागहमारि। तुवविचरनजनअभयहित, जैसेसदातमारि ॥ ५ ॥

हमहिजोकह्योशंभुगिरिधारी।सोहमग्रहवसिसकलविसारी॥६॥मुनिसोंपुनिअबहमहिंबुझाई।तत्त्वज्ञानसबदेहुबताई जातेहमदुस्तरभवसागर। सहजहिंउतरहिंहेगुनआगर ॥ ७ ॥

मैत्रेय उवाच।

यहिविधिसुनतप्रचेतनवानी।नारदमुनिअतिआँनदमानी ॥ जानिसंततिनकोमनमाहीं। बोलेवचनप्रचेतनपाहीं॥८॥

नारद उवाच।

तौनजन्मश्रुतिसुफलगनावै। जोयदुपतिचरणनचितलावै ॥ सफलकर्महैजगमहँसोई । जोयदुनंदनकेहितहोई ॥ सफलतौनआयुषावखानी। वीतेभजतजोशारँगपानी ॥

दोहा–सोइमनहैजोकृष्णपद, छोडिअनतनहिजाय। वचनसफलसोईसदा, जिनमेंजसयदुराय ॥ ९ ॥

कहाभयोबडेकुलभयऊ। जेहरिचरणहिंशिरनयऊ ॥ कहाभयोव्रतबंधहुपायो । जोहरिचरणचित्तनहिंल्यायो ॥ कहाभयोबहुयज्ञनकीने। जोनहिंकृष्णप्रेमरसभीने ॥ कहाभयोबहुवेदनपढिकै। भज्योनयदुपतिजोगृहकढिकै ॥ कहाभयोसुरआयुपपाये। जेहरिप्रेमपयोधिनन्हाये ॥१०॥ कहाभयोबहुसुनेपुराना। जोसबतजिनभजैभगवाना ॥ कहाभयोतपकियेकठोरा। जोछबिछक्योनननंदकिशोरा ॥ कहाभयोबहुवचनबखाने। हरिचरित्रजोमुखनहिंगाने ॥

दोहा–सबइंद्रिनकोरोकिकै, कहाकियोजनसोइ। जोयदुपतिजससुनतश्रुति, हुलसिदियोनहिंरोइ ॥

कहाभयोतीक्षणबुधिपाये। जामेंकृष्णचंद्रनहिंभाये ॥ कहाभयोजोभोबलवाना। जोहरितीरथकियनपयाना ॥ कहाभयोसुंदरकरपाये। जोनसंतसेवनमहँआये ॥ ११ ॥ कहाभयोलहियोगविरागा। जोनभयोहरिपदअनुरागा ॥ कहाभयोसीखेबहुज्ञाना। जोनकृष्णकीकथालोभाना ॥ कहाभयोजोभोसंन्यासी। जोनभज्योव्रजवधूविलासी ॥ कहाभयोविद्याअभ्यासा। जोनकहायोजगहरिदासा ॥ कहाभयोकैवल्यहुपाये। जोहरिसेवनसुखनहिंछाये ॥

दोहा–बहुमंगललहिकाभयो, कहाभयोसबपाय। जोजान्योयदुनाथनहिं, तासुवृथासबआय ॥ १२ ॥
प्रीतिकरबहरिचरणमें, सबमंगलकोमूल। सबभूतनचैतन्यकर, हैप्रभुजनअनुकूल ॥ १३ ॥
जिमिसींचेतरुमूलके, शाखासबहरिआय। तिमिपूजेयदुनाथके, पूजिसकलसुरजाय ॥

जिमिसुमनसेभोजनकिये, होतसकलअँगपुष्ट। तिमियदुपतिकीभक्तिते, होतदेवसबतुष्ट ॥ १४ ॥
जिमिरविकेप्रगटेबहुनीरा। लीनहोतनहिंपरहैमनिधीरा ॥ जिमिघटादिप्रगटाहिमाहितेरे। लीनहोहितेहिमाहघनेरे ॥
तिमिहरिमनतेयहसंसारा।प्रगटतमिलतरहतबहुवारा १५ जिमिदूखेनाहिंरविहिप्रकाशा।तिमिमायागुणरमानिवासा ॥
जिमिइंद्रीजियबलल्हिजागें। तिनकदोषजियहिनहिंलागें ॥ तिमिप्रकृतिहुहरिसत्तापाई। औरेनमोहैतहँनहिंजाई ॥
अहंकारकृतभेदअपारा।श्रीहरिभजतहोतजरिछारा॥१६॥जिमिनभमहँघनतमहुप्रकाशा।कहुँप्रगटतकहुँहोतविनाशा ॥
दोहा–पअकाशमेंनाहिंलगत, तिनकोतनकविकार। तैसेत्रैगुणईशमहँ, करतनहींसंचार ॥ १७ ॥
रहितअधिकसमहैभगवाना। सबथलव्यापकपुरुषप्रधाना ॥ उतपतिलयपालनकेकर्ता।निजप्रभावदासनदुखहर्ता॥
ऐसेप्रभुहैंश्रीयदुराई। तिनकोभजहुभूपचितलाई ॥ १८ ॥ सबभूतनपरदयापसारे। यथालाभसंतोषहिधारे ॥
सबइंद्रिनकोनिग्रहकीन्हें। संतनकेसबनमनदीन्हें ॥ होतप्रसन्नआशुयदुराई। यहमेंसंशयकरहुनभाई ॥ १९ ॥
जोकामनादियोसबत्यागी। भयोअनन्यकृष्णअनुरागी ॥ तासुनेहगुणबँधेमुरारी। तेहिउरनिवसहिआशुसिधारी ॥
दोहा–कबहुनताकोपुनितजत, गनतनतेहिअपराध। सुरदुर्लभनिजप्रेमदे, पुजवतमनकीसाध ॥ २० ॥
स०–पढ़िकैबहुशास्त्रघमंडभरेहरिकेयशकाननमेंनसुनै। करिसंतनकोमुखतेअतिनिंदनऔतिनकोउपदेशधुनै ॥
रघुराजकहैतिनकोनितहीहरिआपनोवैरिविशेषिगुनै। जनतेमरिभोगिकैनर्कमहाखरसूकरकूकरहोतपुनै॥
दोहा–धनकुलविद्याकर्मको, जिनकेअतिअभिमान। तिनकोपूजनलेतनहिं, कबहूँकृपानिधान ॥ २१ ॥
स०–शेशमहेशप्रजेशखगेशनदासनतेजिनकोअतिप्यारे। भक्तनकाजलगेयदुराजरमातनहूतनकोननिहारे ॥
कोसुमतीअसहैजगमेंरघुराजप्रभूकोसुभावविचारे।जोनभजैअसनाथहिप्रीतिसोकालसमैजगजालविसारे ॥

मैत्रेय उवाच।

दोहा–यहिविधिनारदहरिकथा, भूपतिसुतनसुनाइ। ब्रह्मलोककोगवनकिय, बीनाविमलबजाइ ॥ २३ ॥
नारदमुखतेहरियशपावन। सुनतप्रचेतापरमसुहावन॥ हरिपदध्यावतहरिरसभीने।हरिपुरकोपयानद्रुतकीने॥२४॥
यहजोपूछ्योविदुरसुजाना। सोमैंसिगरोकियोबखाना॥नारदअरुप्रचेतसंवादा। हरिचरित्रदायकअहलादा ॥२५॥

शुक उवाच।

यहउत्तानपादकरवंसा। महाराजमैंकियोप्रसंसा ॥ अबसुनुवंशप्रियव्रतकेरो ॥२६॥ जेहिदियनारदज्ञानघनेरो ॥
पुनिकियभूमिभोगभूपाला। देइसुतनकहराजविशाला॥फेरिपरमपदजसपगुधारा।सोसबसुनहुसहितविस्तारा २७॥
दोहा–मित्रासुततेहरिकथा, मुनिसत्तामतिवान। पुलकिततनगदगदगरो, बाढ्योप्रेममहान ॥
शिरसोकियमुनिपतिहिप्रणामा।ध्यावतरूपकृष्णघनश्यामा२८जोरियुगुलकरअतिहिनिहोरी।भाखीगिराप्रीतिरसबोरी॥

विदुर उवाच।

करुणाकरकरिकृपामहाई। हरिचरित्रमोहिंदियोसुनाई ॥ दियलगाइभवसागरपारा।ढारीश्रवणसुधाकीधारा ॥२९॥

शुक उवाच।

असकहिविदुरपाइसुखधामा।करिमित्रासुतचरणप्रणामा।।नृपतियुधिष्ठिरदर्शनहेतू।गयोहस्तिनापुरमतिसेतू ॥ ३०॥
यहहरिभक्तनराजनकेरो। चरितविचित्रपवित्रघनेरो ॥ मित्रोसुतमखवरणतगाथा। सुनैजोप्रीतिसहितनृपनाथा ॥
दोहा–ताकीआयुपधनसुयश, विभवबढतजगमाहिं। अंतकालजनत्यागिके, गवनतहरिपुरकाहिं ॥ ३१ ॥
दिशिनिधिशशिसंवतसुभग, ऊर्जअशितकविवार। यहचतुर्थऽस्कंधभो, एकादशीप्रचार ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबान्धवेशश्रीमहाराजविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा-
राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराज
सिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौचतुर्थस्कंधेएकत्रिंशस्तरंगः ॥ ३१ ॥

इति चतुर्थस्कंधः।

पंचमस्कंध
शुक
परीक्षित
नारद
विष्णु
नाभिराजा
ऋषि
रहूगणराजा.
जडभरत.
चोरप.
भरत.
भ. का.
भरत.
हरिण.
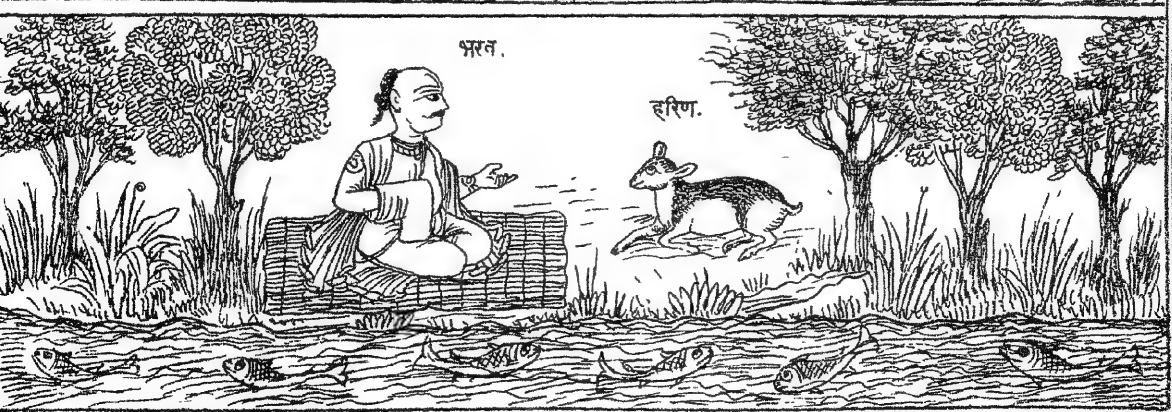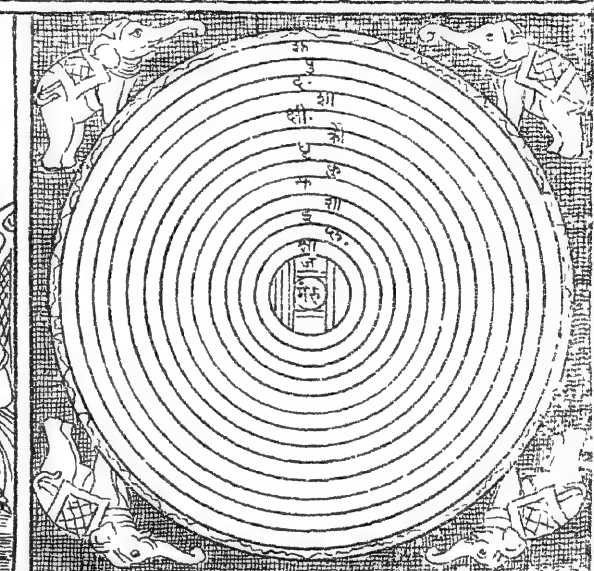
श्रीगणेशाय नमः ।

अथ श्रीमद्भागवत--आनन्दाम्बुनिधि ।

पंचमस्कंधप्रारंभः ।

सोरठा-जययदुकुलदिनराज, पालकभक्तसमाजके । चरणपगतरघुराज, राखहुनिजजनलाजप्रभु ॥
जयगजवदनगणेश, एकरदनगौरीसुवन । नाशकविघनअशेष, प्रणतपालसुमतीनके ॥
जयवानीसुखरूप, दयासिंधुआरतिहरनि । दाइनिबुद्धिअनूप, सुतसमदासनरक्षिनी ॥
दोहा--जयजयसत्यवतीसुवन, तासुतपदसुखसिंधु । तेहिनतिकरिभापारचहुं, यहपंचमअसकंध ॥
श्रीमुकुंदहरिगुरुचरण, वंदौंसिधिकरकाज । पुनिवंदौंचारिजचरन, विश्वनाथमहराज ॥
सुनिचौथेअसकंधकी, कथापरीक्षितराज । पुनिपूछ्योसुकदेवसो, मध्यमुनीनसमाज ॥

राजोवाच ।

प्रियव्रतकोनारददियज्ञाना । ऐसोमुनितुमकियोवखाना॥ सोलहिज्ञानफेरकेहिकाजू। वस्योभवनमहँअतिदुखसाजू॥
ऐसेज्ञानिनकोमुनिराई । वसवभवननहिंउचितदेखाई ॥२॥जेकियहरिप्रेमहिरसपाना।तेनकुटुंबरमहिंमतिमाना॥३॥
सोप्रियव्रतकेसुतातियनेही । लहीसिद्धिजगमहँविधिकेही॥भयोकृष्णकोअतिअनुरागी।जाकीकीर्तिजगतमहँजागी॥
यहसंशयममहियेमहाई । नाथकृपाकरिदेहुमिटाई ॥४॥ सुनिकेकुरुपतिकेअसवानी । बोलेवचनविहँसिमुनिज्ञानी॥

शुक उवाच ।

दोहा--भलोप्रश्नकुरुपतिकियो, ताकोजुतविस्तार । मैंउत्तरअवकहतहों, सुनियेबुद्धिउदार ॥
श्रीयदुनाथचरणअरविंदा । तामेंजेहिमनभयोमिलिंदा ॥ कृष्णकथासुनतोदिनराती।जासुसुमतिनहिंकबहुँअघाती॥
परमहंसभागवतोसोई । तेहिहरिभजतविघनयदिहोई । तदपितजहिनहिंअपनीरीती।करहिफेरहरिपदमहँप्रीती॥५॥
मनुमहाराजपुत्रअतिप्यारो । नामप्रियव्रतअवनिउदारो ॥ नारदचरणकरतसेवकाई । सहजहिलह्योज्ञानसुखदाई ॥
महाभागवतधारकधर्मा । करतासबपरमारथकर्मा ॥ एकसमयतहँमनुमहराजा । भजनचह्योप्रभुतजिनिजकाजा ॥
दोहा--प्रियव्रतमेंसबगुणनिरखि, जगरक्षणकेकाज । तेढिगजाइनिदेशदिय, नीतिसहितमनुराज ॥
रह्योकृष्णपदअतिलवलीना।हरिमहँकर्मअरपिसबदीन्हा॥तातेपितुशासननहिंमान्यो।राजकरनकोचितनहिंआन्यो ॥
यद्यपिपितुशासनाशिरमाहीं ।धरैपुत्रयहधर्मसदाहीं॥तद्यपिराजकरनापितुशासन । प्रियव्रतमान्योधर्म्मविनाशन॥६॥
तवब्रह्माजगपालनहेतू । कियोविचारमहामतिसेतू ॥ प्रियव्रतकोमनमेंसुखचारी । जानिजगतरक्षणअविकारी ॥
निजपितुकोनिदेशनहिंमान्यो।कृष्णचंदपदप्रेमलुभान्यो॥प्रियव्रतकेसमुझावनकाजा। चल्योचतुरमुखसहितसमाजा
दोहा--चढ्योहंसलैवेदसँग, निजपुरतेकरतार । उतरयोनभमेंलसतभो, मानहुआत्रिकुमार ॥ ७ ॥
लसहिसंगमहँविविधविमाना । मनहुव्योमतारागणनाना॥जेहिजेहिलोकजातकरतारा । तहँतहँकरहिंदेवसतकारा ॥
विद्याधरचारणगंधर्वा । किन्नरअरुमुनिगणऋषिसर्वा ॥ करहिंविरंचिसुयशकरगाना । पावहिंमारगमोदमहाना ॥
शैलगंधमादनमहँराजा । नारदरहेऋषिनशिरताजा ॥ तहांप्रियव्रतनिवसतभयऊ । मनुमहराजबुझावनगयऊ ॥
रहेतीनहूतहँतेहिकाला । गयोविरंचिहुतेजविशाला ॥ करतप्रकाशकंदरामाहीं । गयोविरंचितीनहूपाहीं ॥ ८ ॥
दोहा--मनुप्रियव्रतयुतदेवऋषि, चतुराननकहदेपि । उठिआगूचलिलेतभे, लह्योप्रमोदविशेषि ॥
तीनहुभक्तिभावनहिंथोरे । खड़ेभयेआगूकरजोरे ॥ पुनिकीन्ह्योपूजनविधिकेरो । कीन्ह्योकुशलप्रश्नवहुतेरो ॥ ९॥
तिनकोलहिपूजनसुखचारी । दयादीठतिनओरनिहारी॥मंदमंदविहँसतकरतारा॥प्रियव्रतसोअसवचनउचारा ॥१०॥

ब्रह्मोवाच ।

कछुकाग्जहितहमहुँसिधारे । सुनहुप्रियव्रतवचनहमारे ॥ करिकेराजकरहुमखनाना । देवनकोनकरहुअपमाना ॥
हमशिवतुर्वांपतुऋषिसुनिजेते । हरिअधीनजानहुसबतेते ॥ जेहिशासनहमसबाशिरधरहीं।बारबारतिनचरणनपरहीं॥
दोहा--जोहमतुमसोंकहतहैं, सोहरिशासनजानु । अंतरयामीसर्वदा, सबकेहैंभगवान ॥ ११ ॥
तपविद्याअरुबुधिबलयोगू । अर्थधर्मकरमहुउतयोगू ॥ इनसबतेयद्यपिबलभारी । पैनसकेहरिशासनटारी ॥
लेहियदपिबहुवर्लीसुहाई।सकैनहरिशासनविसराई॥१२॥सुखदुखशोकमोहभयनासा।जनमकर्मअरुविविधविलासा॥
इनकेहेतकृष्णतनदेहीं।जेहिजसकरहिहोततसतेही॥१३॥कृष्णचरणश्रुतिगणमहँबांधे । हमसबकर्मशकटमहँनाधे ॥
हरिशासनसबविधिअनुसरहीं।पालकवशपशुसमसंचरहीं॥१४॥हमसबकेकर्महिअनुसारा। दुखसुखजोहरिदेतअपारा
सोहमसबविधिभोगहिंभोगू । सदाचलहिंवशईशनियोगू ॥
दोहा--जैसेअंधनपथकुपथ, चक्षुमानलैजात । तैसहिसबकहँकृष्णप्रभु, सुखदुखदायकजात ॥ १५ ॥
ज्ञानिहुप्रारब्धहिभोगनहित । राखहिदेहनयदपिचारुचित॥पैनतनकतनमेंअभिमाना।जागेजिमिनस्वप्नअभिमाना॥
अज्ञानीआवनसंसारा । ज्ञानीजन्मनलेतदुबारा ॥१६॥ क्रोधादिकजिमितनमहँरहहीं । वनहुरहेतेसुखनहिंलहहीं ॥
जेइंद्रीजितगृहहौवसतहैं । तेअनुपमसुखपाइलसतहैं॥१७॥कामलोभमदमत्सरकोहू । अरुछठयोरिपुजानहुमोहू ॥
चहैजोजीवनपटरिपुकाहीं । वसैकिलागृहआश्रममाहीं॥विनगृहस्थआश्रममतिधीरा ।जीतनजाहिकबहुँमतिधीरा॥
दोहा--तेईपटशत्रुनजवै, जीतलेहिंमतिमान । तबजहँचाहैतहँवसे, गृहवनएकसमान ॥ १८ ॥
तुमतोपटरिपुजीतिलिय, हरिपदगढ़गहिगूढ़ । भोगहुभोगजेहरिकहे, राजधर्मआरूढ़ ॥
प्रजापालधरणीधरम, धराधारिध्रुवधीर । पुनितजिकैसबसंगको, जैयौवनगंभीर ॥ १९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिजबजगगुरूविधाता।प्रियव्रतसोंकहवचनविख्याता॥तबसुखपाइप्रियव्रतज्ञानी।पदशिरधरिशासनलियमानी
पुनिविरंचिमनुनारदकेरो । प्रियव्रतकरिसतकारघनेरो ॥ सादरलैअतिप्रीतिपसारी । तीनहुकासमप्रीतनिहारी ॥
वाकमनसिगोचरजोनाहीं।हरिउपदेशदियोतिनकाहीं॥पुनिविधिब्रह्मलोकपगुधारा।तिनहिंसराहतबारहिंबारा ॥२१॥
मनुभूपतिसुनिविधिसुखज्ञाना । मान्योपूरमनोरथनाना ॥ नारदकोशासनतहँलैकै । धराधीशप्रियव्रतकहँकैकै ॥
दोहा--विषयभोगगृहत्यागिकै, हरिपदचित्तलगाइ । करनकठिनतपमनुनृपति, वस्योविपिनमहँजाइ॥२२॥
संपूरणधरणीकोराजू । पाइसुमतिप्रियव्रतमहँराजू ॥ हरिबखशोगुणनिजअधिकारा।अतिअशक्तनहिंविषयअपारा ॥
जगबंधनध्वंसनहरिचरणा । ध्यायोरैनदिवसभयहरणा ॥ जेहिप्रभावनिर्मलमनभयऊ । अहंकारउरनेकनठयऊ ॥
प्रियव्रतचक्रवर्तिमहराजा । पाल्योपहुमीसहितसमाजा॥२३॥विश्वकर्माकीरहीकुमारी।बरहिषमतीनामछबिवारी ॥
ताकरकियोप्रियव्रतव्याहा।वेदविदितविधिसहितउछाहा॥ताकेभेदशप्रबलकुमारा।सुताएकसबगुणनिअगारा॥२४॥
दोहा--जेठोभोअग्निध्रसुत, इध्मजिह्वजयबाहु । महावीरघृतपृष्ठअरु, मेधातिथिकविनाहु ॥
सवनकनकरेतावलवाना । वीतिहोत्रभोपरमसुजाना-एदशराजकुँवरसुखदाई । दुहिताऊरजसुतीसोहाई ॥ २५ ॥
महावीरअरुसवनकवीशा । ऊरधरेताभयेऋषीशा ॥ बालहितेतेहिआतमज्ञाना । परमहंसभेपरमसुजाना ॥ २६ ॥
दयाशीलसागरसमदरशी । साधुनप्रीतिसहितपगपरशी ॥ जगभेहरिहरपदअरविंदा । तामेंमनकरिदियेमलिंदा ॥
सुमिरतकृष्णचरणनृपराऊ । भक्तियोगकरबढ्योप्रभाऊ ॥ भयोअमलमननशेविकारा।मगनप्रेमरसपारावारा ॥
दोहा--बहुतकालयहिभाँतितै, सुखितरहतमनमाहिं । अंतकालहरिपुरगये, जहँयोगीजनजाहिं ॥ २७ ॥
प्रियव्रतकीजोदूजीरानी । तातेत्रयसुतभेबलखानी ॥ रैवततामसउत्तमनामा । भेमन्वंतरअधिपललामा ॥ २८ ॥
ऐसेतेरहपुत्रनपाई । लह्योप्रियव्रतमोदमहाई ॥ ग्यारहअर्बुदसंमतराजा । कियोराजभलसहितसमाजा ॥

दोरदंडअतिजासुउदंडा । तामेंगहतजबहिंकोदंडा ॥ तासुधनुपधुनिसुनिभयपाई । विनासमयगेशत्रुपराई ॥
बर्हिष्मतीसहितदिनराती । प्रियव्रतलह्योमोदसबभाँती॥मंदहँसनिचितवनयुतलाजू।औरहुकेलिकरनकुलिकाजू॥
करिकरिपतिकोआनँददेती । बर्हिष्मतीपरमसुखलेती ॥

दोहा–अबुधसरिसविहरतभये, सोप्रियव्रतमहराज । मानतभयहहेसकल, रघुपतिहीकोराज ॥ २९ ॥

करहिंसुमेरुप्रदक्षिणभानू । कहुँसंध्याकहुँहोतविहानू ॥ जबसुमेरुदक्षिणरविजाहीं । होतरैनउत्तरदिशिमाहीं ॥
जबउत्तरदिशिरविरथआवै । तबदक्षिणरजनीकेजावै ॥ प्रियव्रतभूपदशायहदेखी । अंधकारदुखदायकलेखी ॥
सभामध्यअसवचनउचारा । अंधकारकसहोतअपारा ॥ तहांसचिवअसवचनसुनाये । दिनरजनीदिननाथबनाये ॥
अबउत्तरदिशिगयेतमारी । तातेअंधकारभोभारी ॥ तबबोल्योप्रियव्रतमहराजा । करैभानुअनुचितयहकाजा ॥

दोहा–लागतमोकोनीकनहिं, अंधकारममराज । कहहुजाइअसभानुसों, करहिहमारोकाज ॥

करहिनअवनिमाहँअँधियारा । मानहिशासनअबशिहमारा॥कहेसचिवसबविहँसिसभर्मा।नाथअहैयहदिनकरकर्मा॥
भन्योभूपतबकोपहिधारी । रविअधीननहिंराजहमारो ॥ तमलहिदुखितप्रजासबहोहीं । जानहिंरविसोनिर्बलमोहीं ॥
भानुसमानहियानबनाई । देहोंअबमेंनिशानशाई ॥ असकहिविशुकरमहिंबुलवायो । भानुसमानहियानबनायो ॥
तापैचढ़िप्रियव्रतमहराजा।चल्योमनहुदूजोदिनराजा॥जबदिनकरदिशिपश्चिमलयऊ।तबप्रियव्रतपूरबदिशिगयऊ॥

दोहा–जबलोंउत्तरतेफिरत, पूरबआवैभानु । तबलोंदक्षिणतेफिरत, पश्चिमगयोसुजानु ॥

प्रियव्रतभूपतिजानुप्रकाशा।छायगयोअतिअवनिअकाशा॥कोउकहभयोननिशिकरभानू।प्रजागुन्योदूजोतेहिभानू॥
जहँजहँदिनकरकरहिंअँधेरो।तहँतहँप्रियव्रतकरहिउजेरो॥यहिविधिसातदिवसलगिराजा।मेटिनिशाकियदिनकरकाजा॥
निशाविनाशविरंचिविचारी।प्रियव्रतकोलखिद्वितियतमारी॥नृपतिनिकटद्रुतआयविधाता।बोल्योवचनमृदुलसुनुताता।
करबदिवसमेटबअँधियारा।यहनअहैराउरअधिकारा॥विधिकेवचनमानिमहराजा।वंदिकियोनिशिनाशनकाजा ३०॥

दोहा–प्रियव्रतरथकोचक्रजो, फिर्योसातहीवार । ताकेसातहिहोतभे, महिमहपारावार ॥

रहीधरणिजोतिनमधिमाहीं।सातद्वीपजानहुतिनकाहीं ॥३१॥ जंबूद्वीपमध्ययहभयऊ।लक्षशालमलिपुनकुसठयऊ॥
क्रौंचसाकपुष्करपुनिजानो । यहिविधिद्वीपननामबखानो ॥ यकयकतेदूनेविस्तारा।भयेद्वीपकुरुनाथउदारा॥३२॥
लवणसमुद्रप्रथमअनुमानो । ऊषरसहिकोदूजोजानो ॥ तीजोसुराचौथघृतकेरो । पँचयोक्षीरछठोदधिहेरो ॥
सतयोंशुद्धनीरकोसागर । यहिविधिसातहुसिंधुउजागर ॥ द्वीपनपरिखापारावारा । यकतेएकदुनैविस्तारा ॥

दोहा–प्रियव्रतसातहुपुत्रको, दीन्हेसातहुद्वीप । तिनकेवरणतनाममैं, सुनियेकुरुकुलदीप ॥

आग्नीध्रहिदियजंबूद्वीपा । इध्मजिह्वकहप्लक्षअनूपा ॥ यज्ञबाहुकहशालमलदीनो । कुशहिरण्यरेतहिसुखभीनो ॥
क्रौंचद्वीपघृतपृष्ठहिदयऊ।मेधातिथिहिशाकमहँठयऊ॥वीतिहोत्रकहपुष्करदीना।इमिकियसुतनविभागप्रचीना ३३
ऊर्जसुतीदुहितासउछाही।शुक्राचारजउहनृपब्याही॥सुतादेवजानीभयताकी।त्रिभुवनमहँअनुपमछविजाकी॥३४॥
असअनुपमप्रभावमहिमाही । हरिदासनकछुअचरजनाहीं ॥ कामलोभमदमत्सरकोहू । छठयोशत्रुबलीअतिमोहू॥

दोहा–येषटरिपुअतिशयबली, डारहिनरकनघोर । हरिपदरजधारतसहज, भजतसभयचहुँओर ॥

हरिकोनामलेतइकवारा।पतितहुतुरततजतसंसारा॥३५॥महाबलीसोनृपइककाला।कियविचारअसबुद्धिविशाला ॥
लहिनारदकोचरणप्रसादा । पायोज्ञानकेरमरयादा ॥ भोगिभोगसोमैंबिसरायो । बनोजन्ममैंसकलनशायो ॥ ३६॥
गिर्योविषयसुखअंधहिकूपा।कहाकियोमैंहैकरिभूपा॥इंद्रीसुखमहँफिरयोभुलाना।आपनवनवनसबनहिंजाना ३७॥
नारिनमहँनारिनसँगराच्यो । तिनवशमरकटसमजगनाच्यो॥हैधिकहैधिकहैधिकमोही। भयोनकृष्णचरणकोछोही॥
यहिविधिकरिअपनीनृपनिंदा । होनचह्योवैकुंठवासिंदा ॥

दोहा–पुत्रनकोकरिदेतभे, सातोंद्वीपविभाग । आपुकरतभोविपिनवसि, हरिचरणनअनुराग ॥

हरिप्रभाववशपायविज्ञाना।यदुपतिरूपकरतचितध्याना॥मंदरकंदरअंदरगयऊ।तहँतपकरिहरिपार्षदभयऊ॥३८॥

प्रियव्रतमहाराजकीकीरति।यहिविधिगावहिंसुकविनकीतति।प्रियव्रतसारसकरिहिकोकर्मा।विनईश्वरअसकोधृतधर्म्मा
निजरथचक्रउदधिरचिसाता३९कीन्ह्योद्वीपविभागविख्याता॥सातदिवसलौंनिशानशाई । धरणीकीमरयादबनाई॥
गिरिअरुसरितऔरवनगपी । देशनकीसीमानृपथापी॥ जातेकलहकरैंनहिंकोई । बसहिदेशमहँजनमुदमोई॥४०॥
दोहा--नागनाकनरलोकसुख, जान्योनरकसमान ॥ यदुपतिकीरतिमेंविमल, कीरतिकीन्ह्योगान ॥ ४१ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृतेआनंदाम्बुनिधौपंचमस्कंधे प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

शुक उवाच ।

दोहा–भूपप्रियव्रतजवगयो, काननतपक्षनलाइ । भयोभूपआग्नीध्रतव, राजतिलककहँपाइ ॥
जेहिविधिप्रियव्रतपाल्योपरिजन।तिमिआग्नीध्रहुसुतसमसस्रजन।राजधर्मधार्‍योधरणीमें।कोउनलह्योदुखनृपकरनीमें
एकसमयअग्नीध्रनरेशा । सुतविनकरिअतिशयअंदेशा ॥ गयोमंदराचलतपहेतू । पुत्रलहनहितकियअतिजेतू ॥
सुरसुंदरीकेलिजहँकरहीं।निजनिजपतिसँगअतिमुदभरहीं॥ तहँजायआग्नीध्रभुवाला। विधप्रियहिततपकियोविशाला॥
गयोबीतिकछुकालतहाँहीं ॥ २ ॥ तवह्वैविधिप्रसन्नमनमाहीं ॥ पूर्वचितीअपसरासोहाई । गावतरहीसभासुखदाई ॥
तेहिपठयोआग्नीध्रसमीपा ॥ ३ ॥ सोआईजहँरह्योमहीपा ॥

दोहा–तेहिआश्रमकेनिकटमें, उपवनअतिकमनीय । तहँसुंदरिविचरनलगी, करिकरिगतिकमनीय ॥
सघनविटपजहँवहुतसोहाहीं।तिनमहँललितलतालहराहीं॥शुककपोतचातकअरुमोरा।विपुलविहंगकरहिंकलशोरा।
लसहिंमनोहरविविधतडागा । विकसितवारिजउडतपरागा॥चक्रवाकवकसारसहंसा।करहिंसोरचहुँकितदुखध्वंसा ॥
मरकतमणिसमनिर्मलनीरा।वहतसुहावनत्रिविधसमीरा॥ पूर्वचितीअपसरछविपागी । ऐसेवनमहँविचरनलागी॥४॥
तासुललितजगचरणविलासू । काकेउरनहिंकरतहुलासू ॥ ललितचरणनूपुरझनकारी । छाइरहीवनमहँमनहारी ॥

दोहा–हुतोसमाधअगाधगहि, सोनरदेवकुमार । ताकेकाननमेंपरी, मनहुसुधाकीधार ॥
नलिननयनमूंदेनृपरहेऊ । पैनतासुधीरजउररहेऊ ॥ नैसुकनैननननृपतिउघारी । पूर्वचितीकहनिकटनिहारी ॥ ५ ॥
भमरीसनलतिकमलतिकनमें । तोरतकुसुमरमतछनछनमें॥सलजकटाक्षमृगाक्षणकरनी।हेरतहींसुरनरहियहरनी ॥
गावतमंदमंदगजगामिनि । मानहुदुतियकामकीकामिनि ॥कोअसपूर्वचितीकहदेषी । जोनमदनवशहोयविशेषी ॥
आननपूरनशशीउदोतो । मुखसुवासवनवासितहोतो।भौंरभीरघेरहिंतहँआई । तातेचलतचपलमनभाई ॥

दोहा–कनककलशसमकपतजेहि, युगउरोजयुतहार।लफिलफिलचकतलंकलघु, लहिलहिकुचकचभार ॥
ताहिंनिरखिआग्नीध्रनृप, कामविवशह्वैआशु, बोल्योमंजुलवचनअति, जडसमचलिढिगतासु ॥ ६ ॥

स०–कौनहौकौनकीबेटीअहौकेहिहेतफिरौवनमेंमनहारी । आइइतैरघुराजकहैकिधौंईशकीमायातियातनधारी॥
जौनकेहेतविनागुनकेयुगचापगहेशरपैनपवारी।मोसेकुरंगनकामिनकेहियमोहनकोजियमाहँविचारी ॥ ७॥

दोहा–विनगासीकेवाणये, केहिहनिहहुसुकुमारि । अतितीक्षणलखिकँपतहिय, रक्षाकरहुहमारि ॥ ८ ॥
तुववेनीविगलितकुसुम, लपटिसुखितभलभोर । करतगानतेरोसुयश, सुकविसरिसचहुँओर ॥ ९ ॥

स०–पदपंकजपंजरमेललना यहतीतुरीनूपुरशोरकरै । ममकाननधारसुधासीढरै नहिनैननमेंकछुमोदठरै ॥
वनमेंवसिकैतरुकोत्वचत्यागि कदंवप्रभापटकाहेधरै । यहिहेतकसीकलकिंकिनतू कटिमेरोकहूँनहिंटूटिपरै ॥१०॥
केसरिकेरँगसोंरँगिकै युगशैलधरेतुमकाहविचारी । यद्यपिताकीसुवासतेवासित वेस[illegible]रोकुटीटूटीहमारी ॥
येउपजेअतिशैउरपीर कहाकहियेकहिजातनप्यारी । भूधरभारहिभूरिलहे करकैगीललीकटिखीनतिहारी ॥११॥
दोहा–कामिनकीकरनीकतल, मुखापियूषरसधारि ॥ अपनोदेशवताउवालि, जहँउपजैअसनारि ॥

कैसोथलवहजहँहरी, तियप्रभावअसदेहि ॥ धारिअनुपमयुगकुंभउर, वरवशवशकारिलेहि ॥ १२ ॥
नैनमीनअलकेंअली, कुंडलमकरअदाग ॥ सुभगदंततुवमुखलसत, मानहुसुधातडाग ॥
प्यारीकाभोजनकरहु, सोमोहिंदहुबताइ ॥ जेहिप्रभावमुखतेनिकासि, रहीवासवनछाइ ॥ १३ ॥
प्यारीपंकनपानिते, गलितमनोहरगंद ॥ जसभूमहँवहभ्रमततस, मोमनभ्रमतसखेद ॥
छूटीअलकसम्हारले, हेसुंदरिसुखरासि ॥ क्योंडारतवरवशअली, मेरेगलमेंफाँसि ॥
देतदुसहदुखपवनमोहि, अंचलचारुउडाय ॥ कसकामिनिकारिकैकृपा, औदियसुधिबिसराय ॥ १४ ॥
यहकाननमेंकरनतप, आईमनहिविचारि ॥ जपिनतपहिनाशनवपुप, केहितपलस्योखरारि ॥
वनमेंमोसँगकरहुतप, अबनअनतकहुँजाहुँ ॥ मैंप्रसन्नजान्योभयो, मोसोविधिसुरनाहु ॥ १५ ॥
मैंअबतजिहौंनहिंतुमहिं, हमहिंदियोकरतार ॥ तुमहिंनिरखिनहिंचहतहै, चखचितचपलहमार ॥
सो०–तेरोरूपअनूप, मेरोमनवशकरनहै, तैंमेरेअनुरूप, तातेमोहिवशकियचहत, जोतैंतजिहैमोहिं,
तौभक्षणकरिहैसिवा, होईअतिअघतोहि, तातेअबनहिंत्यागिये ॥ १६ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–रमणिरिझावनमेंचतुर, जबआग्नीध्रनरेश । पूर्वचित्तिसोंकियविनय, निजदरशायकलेश ॥ १७ ॥
रसिकशिरोमणितिहि जियजानी । पूर्वचित्तिचितमेंसुखमानी॥रूपशीलवपुबुद्धिसुभाऊ।अपनेसमगनितेनृपराऊ ॥
मोहिगईअपसरासोहाई । नृपतिनिकटनिवसीहुलसाई ॥ पूर्वचित्तिसँगनृपतिउदारा । लाखनवरषनकियोविहारा ॥
सुरसमभोगेभूमहँभोगू । सहिनसकेक्षणतासुवियोगू ॥ १८ ॥ भूपतिकोसयोगसुखपाये । पूर्वचित्तिकेनवसुतजाये ॥
प्रथमनाभिकिंपुरुषद्वितीयो । फेरभयोहरिवर्षतृतीयो ॥ चौथइलावृतरम्यकपाँचों । छठोंहिरण्मयसज्जनसाँचों ॥
दोहा–सतयोकुरुभद्राश्वपुनि, आठोंभयोकुमार । केतुमालनवमोभयो, जाकोसुयशअपार ॥ १९ ॥
नवसुतकोगृहमाँहविहाई । पूर्वचित्तिविधिधामसिधाई ॥ २० ॥ नवआग्नीध्रनरेशकुमारे । मातुकृपालहिभेबलवारे॥
तहँआग्नीध्रभूपबड़भागा । जंबूद्वीपहिकरिनवभागा॥यथायोगनवपुत्रनदीन्हे।निजनिजनामखंडतिनकीन्हे ॥ २१ ॥
नृपआग्नीध्रकरतसुखभोगू। कियोनकछुसंतोपप्रयोगू ॥ निशिदिनपूर्वचित्तिकहँध्यावै।तासुविरहवशअतिदुखपावै॥
तासुमिलनहितकरिबहुयागा।तासुधामगेतेहिअनुरागा॥निवसहिमोदितपितरनगनजहाँ।पूर्वचित्तिसँगनृपतिवसेतहँ॥
दोहा–जबपितुगवनेसुरसदन, तबनवनृपतिकुमार । मेरुसुतनिव्याहतभये, शोभाशीलअगार ॥ २२ ॥
नाभिमेरुदेवीकहँव्याही । प्रतिरूपाकिंपुरुषउछाही ॥ उग्रदंतिव्याहीहरिवरषा । लताइलावृतलईसहरषा ॥
रम्यारम्यकलईललामा । गहीहिरण्यकवामाश्यामा ॥ नारीसँगकीन्हेकुरुकाजा । भद्राभद्रअश्वमहराजा ॥
केतुमालल्रियदेववीतिको । दीन्हीसिगरीप्रीतिरीतिको ॥ यहिविधिनवआग्नीध्रकुमारा । व्याहिमेरुदुहितासुखसारा॥
निजनिजखंडनकियेनिवासा । पाल्योपरिजनसहितहुलासा ॥ नीतिरीतिमहँमाहचलाई । अपनीअपनीफेरिदुहाई ॥
दोहा–धीरधारिअरिध्वंसके, धरनीधरमचलाइ । पृथक्पृथक्निजनिजसुयश, दीन्हेत्रिभुवनछाइ ॥ २३ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ पंचमस्कंधे द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

शुक उवाच ।

दोहा–जेठोनाभिनरेशजो, भयोपुत्रतिहिंनाहिं । तबहिं यज्ञभगवानको, पूज्योतियसँगमाहिं ॥ १ ॥
शुद्धभावकरिकैअतिप्रीती । करीसकलमखकैनृपरीती ॥ देशकालऋत्विजअरुमंत्रा । द्रव्यदक्षिणाऔरहुतंत्रा ॥

इनतेयुतयद्यपिमखठानें। तदपिमिलबदुर्लभभगवानैं ॥ जैसेहरिलखिकैनृपप्रीती। करनहेततेहिजगतअभीती ॥
पूरणहेतमनोरथताको। प्रगट्योनिजवपुपरमप्रभाको ॥ जेहिनिरखतनैननकीआसा। पूजतिक्षणक्षणबढ़तहुलासा॥
अतिअनूपसुंदरतनश्यामा॥अतिशयअमलअंगअभिरामा॥चारिबाहुसुंदरसुविशाला॥तपितकनकसमप्रभारसाला ॥

दोहा–राजतअतिशयपीतपट, उरलछिमीवनमाल ॥ शङ्खचक्रअंबुजगदा, अरुकोदंडकरवाल ॥

छंदरूपमाला–कौस्तुभविकुंठहिकंठराजतरुचिरअतिवनमाल। रविकोटिसमशिरमुकुटमंडितकटककरनविशाल॥
केयूरभुजनूपुरचरणकटिमेखलामँजीर। औरहुसकलभूषणनभूपितहारहीरनहीर ॥
असपदुमनाभहिनिरखितहँनृपनाभिपायअनन्द।ऋत्विजसदसियुतउव्योद्रुतजिमिअधनलहिधनवृंद ॥
प्रभुचरणमहँधरिशीशपुनिकरजोरिदेखतरूप। ठाढोरह्योनहिबोलिआयोबढ्योप्रेमअनूप ॥ ३ ॥
तहँविप्रसबकरजोरिकेप्रभुसोंकहेअसवयन। हैसकलविधिसतकारलायकसकलसुखमाअयन ॥
करिकैकृपायहलेउपूजनफूलफलयाहिठाहिं। कोकरनलायकरावरोसतकारयाहिजगमाहि ॥
जैजैरमापतिक्षमापतिरघुराजजययदुराज। जयजयअनादिअनंतअच्युतकियेधनिमोहिआजु ॥
सज्जनसिखायोहमहिंयेहीकरनतुमहिप्रणाम। हमऔरनहिंकछुकरनलायकनाथपूरणकाम ॥
कहँलोंकरहिंवरणनगुणनप्राकृतवपुपयहपाय। तुमचितअचिततेपरअहौजगदीशश्रीयदुराय ॥ ४ ॥
यैसत्यजानहिनाथइतनोआपकोगुणगान। मुखभनतअतिशयअघहनतपरगटपुराणप्रमान ॥ ५ ॥
अनुरागसोंजेसलिलतुलसीदुबदलफलदेत। तिनपैप्रसन्नपरेसतुमपूजनसकललैलेत ॥ ६ ॥
विनप्रीतित्रिभुवनधनहुतेपूजैतुमहिंजोकोइ। ताकोनपूजनलेहुतुमनहिंताहिकछुफलहोइ ॥ ७ ॥
सच्चिदानंदस्वरूपतुमसबभांतिपूरणकाम। पैहमसकामीजाहितेपूजनकरहिंअभिराम ॥ ८ ॥
हममूढजानतहैंनहींकल्याणकेहिविधिहोत। करिकैकृपागतिदेनहितनिजरूपकीनउदोत ॥ ९ ॥
आयेमनहुकरिकामनानहिंकामनाउरमाहिं। तुमप्रीतिआसीमोदरासीरहहुनाथसदाहिं ॥
तुमयदपिआयेदेनवरहममानिवरयहलीन। दुरलभसुरनतुवपरशजोसोइनहगनहमकीन ॥ १० ॥
जेदहेज्ञानानलविपुलमलआपसरिसस्वभाव। अतिमूलमंगलआपकेगुणकथहिंजेमुनिराव ॥
तजिदियेसकलमनोरथनिविचरहिंअभयजगमाहिं।तिनहुनकबहुँनहिमिलेयदुपतिमिलेजसहमकाहिं ११
छींकतछटतजमुहातगिरतहुजनतमरतहुमाहिं। तुवनामकोउच्चारहमकोहोहिनाथसदाहिं ॥
अबकृपाकरिकेनाथहमकोदेहुयहवरदान। अघओघनाशतकहतमुखतुवनामश्रीभगवान ॥ १२ ॥
हौसत्यबख्शनहारनाथउदारतुमफलचारि। पैनाभिनृपयहमाँगतोसुतआपकीअनुहारि ॥
यहतुच्छवरमाँगतमुकुंदअतीवलागतलाज। जिमिधनदकेढिगअधनचलियाचैतृनैनिजकाज ॥ १३ ॥
सबतेअजितयहरावरीमायालियोजगजीत। नहिंजानतीकोउरीतिताकीरहहिनिततेहिभीत।
नहिंकोउविषयविपतेबचेजेसंतसंगनकीन। जेसाधुपदसेवनकरततेरहतविषयविहीन ॥ १४ ॥
यहतुच्छफलसुतकेलियेहमतुमहिंलीनबोलाइ। सोक्षमहुयहअपराधममगतिमंदगुनियदुराइ ॥
हौनाथसमदरशीसदाबहुफलनकेदातार। सबजगतअंतरयामितुमहिनमामिनंदकुमार ॥ १५ ॥

दोहा–सुनिकेविप्रनकेवचन, अतिशयआनँदपाइ ॥ सादेह्दयबोलेविहँसि, नृपद्विजपूजितपाइ ॥ १६ ॥

श्रीभगवानुवाच।

विप्रहौंहिसतिवचनतिहारे। ब्राह्मणतौसुखअहैहमारे॥होहिनृपतिसुतमोहिसमाना।यहदुरलभमाँग्योवरदाना ॥१७॥
मोहिंसमऔरनत्रिभुवनकोई।तातेममअंशहिसुतहोई ॥१८॥ नाभिमेरुदेवीयुतकाहीं। असकहिकैभगवानतहांहीं ॥
तुरतभयेप्रभुअंतरधाना।श्रीविकुंठकहँकियेपयाना ॥१९॥ नाभिनरेशकियोमखभारी। मुनिअस्तुतिप...

नाभिनरेशहिकेप्रियकाजू । दरशावनहितधर्मदराजू ॥ राखनहितऋषीनमर्यादा । जेवादकवेदनकरवादा ॥
दोहा–गर्भमेरुदेवीनिवास, श्रीवसुदेवकुमार ॥ ऋषभदेवह्वैनाभिगृह, लेतभयेअवतार ॥ २० ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृतेआनन्दाम्बुनिधौ तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

शुक उवाच ।

दोहा–हरिलक्षणलक्षितसकल, ज्ञानविरागप्रभाव ॥ बाढतभोबालकसुभग, समदरशित्वस्वभाव ॥
प्रजासचिवब्राह्मणअरुदेवा । करतभयेबालककीसेवा ॥ कहतभयेमनमहँयहकाजा । पालैप्रजनहोयमहराजा ॥१॥
सुभगअंगअतिगौरशरीरा । जासुसुयशगावैंकविधीरा ॥ प्रभावंतअतिशयबलवाना । शौर्य्यवीर्य्यतपबुद्धिनिधाना॥
नाभिनिरखिसुतसबगुणधामा॥तातेऋषभदेवकियनामा॥२ऋषभदेवकोनिरखिप्रभाऊ॥अतिशयतापितभयोसुरराऊ ॥
तासुदेशवरष्योनहिंनीरा । भोदुरभिक्षप्रजनप्रदपीरा ॥ ऋषभदेवलखिप्रजादुखारी । तुरतयोगमायाविस्तारी ॥
दोहा–तातेप्रगटेघोरघन, वरपिधराजलधार । कीन्होंप्रगटसुभिक्षबहु, लहेप्रजासुखसार ॥ ३ ॥
जबपूज्योपरजनमनकामा॥तहांनाभिनृपलहिसुखधामा॥प्रेमविवशगद्गदगरभयऊ । ऋषभपुत्रढिगआशुहिंगयऊ॥
धराधर्मधुरधारनहारे । त्रिभुवनमहँनिजसुयशपसारे ॥ पुरुषपुरानेश्रीभगवाने । मायाविवशभूपसुतजाने ॥
बोल्योवचनउमँगिअनुरागा । अहोपुत्रप्यारेबड़भागा ॥ असकहिलीन्ह्योअंकउठाई । नयननीरनृपनाभिबहाई ॥
पायोभूपतिपरमअनंदा । दह्योदुसहदीरघदुखद्वंदा॥४॥ऋषभदेवमहँपरजनप्रीती । नाभिनिरखिऋषभहुप्रियप्रीती ॥
दोहा–जानिजरठपनआपनो, प्रजासमाजबोलाइ ॥ ऋषभदेवकोकरतभे, राजतिलकहरषाइ ॥
विप्रनसौंपिदियोसुतकाहीं । मेरुदेविलैनिजसँगमाहीं ॥ करनमहातपनिजमनलाई । बदरीवनहिगयेनृपराई ॥
तहँकरिकठिनसुतपकछुकाला॥सहितमेरुदेवीमहिपाला॥योगरीतिसोंतनुतजिदयऊ॥नरनारायणमहँमिलिगयऊ ५॥
हेअभिमन्युकुमारसुजाना॥करहिंनाभिजसअसकविगाना ॥ करैकर्मकोनाभिसमाना । जाकेपुत्रभयेभगवाना ॥६॥
विप्रभक्तभोनहिंअसदूजो । जेहिमखद्विजप्रत्यक्षहरिपूजो॥७॥नाभिगयोजबकाननमाहीं॥भयोभूपतबऋषभतहाँहीं ॥
दोहा–जंबूद्वीपहिगनतभो, कर्मक्षेत्रमतिमान ॥ पढनहेतविद्याविपुल, गुरुगृहकियेपयान ॥
पढिविद्यासिगरीगुरुगेहू । लैगुरुशासनसहितसनेहू ॥ गृहमेंआइऋषभमहराजा । कियेगृहस्थनकेसबकाजा ॥
श्रुतिअस्मृतिकर्मनिसबकीन्हों॥लोकनकोशुभशिक्षणदीन्हों ॥ तिनकेरहीजयंतीरानी । ताकेशतसुतभेविज्ञानी॥८॥
तिनमेंजेठभरतभेभूपा॥सबगुणपितुसमओजअनूपा॥भरतभूपकोजगयशछायो । जिनतेंभारतखण्डकहायो ॥ ९ ॥
भरतभूपनवबंधुसुजाना । तेनवहूतहँभयेप्रधाना ॥ कुशावर्तअरुब्रह्मावरता । इलावर्त्तजगयशविस्तरता ॥
दोहा–भद्रसेनअहकेतुहू, मलयविदर्भसुजान ॥ इंद्रपरशुअरुकीकटौ, येनवअतिबलवान ॥ १० ॥
येनवभयेपरमविज्ञानी । तिनकेनामनिकहौंबखानी ॥ कविहरिअंतरिक्षकरभाजन । चमसपिप्पलायनसुखसाजन ॥
आविरहोत्रप्रबुद्धद्रुमिलवर ॥११॥ भयेमहायेनवयोगेश्वर ॥ इनकोचरितपरीक्षितभूपा ॥ आगेवरणनकरबअनूपा ॥
नारदवसुदेवहिसंवादा । एकादशमहँहरनविषादा ॥ १२ ॥ अनुजरहेजेऔरइकासी । धारकवेदशीलसुखरासी ॥
यज्ञकरतमहपरमप्रवीने॥पितुआज्ञापालनअतिकीने ॥ कियेविशुद्धकर्मविधिनाना । तेसबब्राह्मणभयेसुजाना॥१३॥
दोहा–ऋषभदेवयद्यपिरहे, परमस्वतंत्रनरेश ॥ नाशकसकलअनर्थके, आनँदरूपहमेश ॥
तद्यपिमूढनसिखवनहेतू । धर्माचरणकियेमतिसेतू ॥ समदरशीसबमेंनृपरहेऊ । सबसोंपरममित्रतागहेऊ ॥
करुणाकरगुणआगरशूरा । दियोप्रजनकहँआनँदपूरा ॥ धर्मअर्थअरुसुयशबढायो । सबकोमुक्तिमार्गदरशायो ॥
वसिकेऋषभदेवमहिमाहीं । धर्मकर्मबहुकियेतहांहीं १४ रीतिसनातनयहकुरुराई । बड़नचाललघुचलहिंसदाई १५

यद्यपिसकलधर्मकेज्ञाता । ऋषभदेवजगमेंविख्याता । तद्यपिपूछिविप्रनसोंराजा । ठानहिंसकलराजकेकाजा॥
दोहा–ऋषभदेवमहँराजसों, इहिविधिधर्मचलाइ ॥ पाल्योपुहुमीप्रजनयुत, परमप्रीतिप्रगटाइ ॥ १६ ॥
द्रव्यदेशअरुकालहुकारिके।प्रीतिसहितअतिशयमुदभरिके।इकइकमखशतशतधाकीन्ह्यो।विप्रनअमितदक्षिणादीन्ह्यो॥
ऋषभदेवमखमहँलहिभागा । भयेसुखितसुरकियअनुरागा॥१७॥ऋषभदेवरक्षितसबलोगू।तोषितभयेपाइसबभोगू॥
सबकेसकलमनोरथपूजे । प्रीतिसहितसबश्रीपतिपूजे॥ रहीनपरधनजांचनआसा । निजनिजगृहसबकरहिंविलासा ॥
नितनितहोंहिनृपतिअनुरागी ।प्रजाऔरआशासबत्यागी१८एकसमयसोनृपतिसुजाना।चल्योदेशदेखनचढ़ियाना॥
दोहा–देखतदेखतदेशसब, ब्रह्मावर्त्तहिआय । लखिब्रह्मर्षिसमाजतहँ, बैठतभोशिरनाय ॥
तहँनिजसुतनबोलायके, विप्रनप्रजनसुनाइ ॥ ऋषभदेवबोलेवचन, ज्ञानविरागबुझाइ ॥ १९ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंह
जूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौपंचमस्कंधेचतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

ऋषभ उवाच।

दोहा–सुनहुपुत्रनरदेहयह, विषयभोगनहियोग । कूकरशूकरहूलहत, सबयहविषयसँयोग ॥
तपकेयोगअहैनरदेहू । करहुकृष्णपदसहजसनेहू ॥ तपकीन्हेंमननिर्मलहोई । तातेमुक्तिलहतसबकोई ॥ १ ॥
सज्जनसंगमुक्तिकोद्वारा । कामीसंगनरकआगारा ॥ पैसज्जनतेईकहवावैं । जेसबमेंसमतादरशावैं ॥
शांतचित्तनहिंकोपहिलेशू । केहकरचहतनकबहुँकलेशू ॥ २ ॥ छकेरैनदिनहरिकेप्रेमा । हरिकेहेतकरहिंसबनेमा ॥
तनधनगृहबनितासुतमाहीं । हरितजिकरैंप्रीतिबुधनाहीं ॥ विषयिनकेबैठेनहिंनेरे । सुनेसुयशनितयदुपतिकेरे ॥
दोहा–देहप्रयोजनमात्रभरि, राखहिवस्तुसदाहिं । होहिप्रयोजनतेअधिक, ताकोराखहिनाहिं ॥ ३ ॥
करिहैकर्मजोइंद्रिनप्रीती । सोकरिहैहठिकैअनरीती ॥ कर्मकियेजोपुनितनपावै । सोइकर्मनपुनिपुनिमनलावै ॥
तातेपुनिपुनिलहतविपादू । यहनसाधुसंमतसंवादू॥ ४ ॥ तबलोंलहतजीवसंसारा । जबलोंलहतनआत्मविचारा ॥
करैकर्मजोजीवसदाही । रहैतासुमनकर्महिमाही ॥ ताहीमनतेहोतशरीरा । लहतजगतनानाविधिपीरा ॥ ५ ॥
जबलौंमनमेंरहतअज्ञाना । तबलोंजीवकर्मवशनाना ॥ जबलोंहोतनहरिपदप्रीती । तबलोंछूटतनहिंभवभीती ॥६॥
दोहा–जबलोंमिथ्याविषयसुख, नहिंजानतोअजान । तबलोंतिययुतबसिभवन, पावततापमहान ॥ ७ ॥
नेहविवशनारीनरजूटै । यहीगाँठिहियकीनहिंछूटै ॥ यहितेमानतसकलहमारा । तनधनधामसुजनसुतदारा ॥ ८ ॥
सोहियगाँठजबैखुलिजावै । विषयभोगतबकछुनहिंभावै ॥ छूटततबहिअहंममकारा । तबगवनतगोविंदअगारा॥९॥
श्रीगुरुचरणमाहँकरिप्रीती । सेवाकरैदासकीरीती ॥ सुखदुखतजैतजैसबआसा । स्वर्गहुकोजानेदुखवासा ॥
आतमज्ञानगुनतनितरहई।तबकरियोगजुगतिसबचहई॥करहिनकबहूँकर्मसकामा।१०॥करैकर्महरिहितअभिरामा॥
दोहा–सुनतकृष्णलीलाकथा, बीतिरैनदिनजाइ । हरिदासनकोखोजिके, करैकर्ममनलाइ ॥
जपैरैनदिनयदुपतिनामा । करैनवैरकबहुँमतिधामा ॥ रहैसदासबमेंसमदरसी । करैअचंचलबुधिगिरिवरसी ॥
देहगेहमेंनेहनराखै ॥ ११ ॥ वेदवेदांतसदामुखभाखै ॥ बसैएकांतइंद्रियनजीती । धारैब्रह्मचर्य्यकीरीती ॥
नित्यकर्मश्रद्धायुतकरई.। वृथावचननहिंमुखउच्चरई॥१२॥राखैसबथलकृष्णभावना । करैध्यानहरिछोड़िकामना ॥
करैउपायमिलनयदुवीरा । सहितविवेकधरैउरधीरा ॥ इतनेकर्मकरैजोकोई । आवागमनरहितसोहोई ॥
दोहा–जबलोंहियकिगाँठदृढ़, सकलछूटिनहिंजाय । तबलोंताकेछुटनकी, येसबकरहिंउपाय ॥ १३ ॥
गुरुमुखज्ञानगाँठनहिंछूटै । तबनितकृष्णभक्तसुखलूटै ॥यदुपतिप्रेममृगनजगवागै । पुनिनहिंजियउपायअनुरागै ॥
वहैकृष्णपुरजोजनजाई । कृष्णकृष्णजोचहैमहाई ॥ तौयहमोरकथितवरज्ञाना । सबकोउपदेशैमतिमाना ॥१४॥

पितासुजनगुरुशिष्यनकाहीं।नृपतिप्रजनसिखवैमुदमाहीं ॥प्रजाशिष्यसुतजोनहिंमाने । तौतिनकेपरकोपनठाने ॥
पुनिपुनिसिखवैनिकटबोलाई । विषयकर्मसबदेहिछुडाई ॥ विषयकर्मजेजननलगावैं । तेजनकहाजगतमेंपावैं ॥

दोहा-अंधकूपमेंअंधकह, जिमिदियकोउगिराइ । तौताकोकछुमिलतनहिं असमोहिंपरतजनाइ ॥ १५ ॥

कवित्त-तियकेसनेहीसबदेहीसदागेहीसुख जानैनहिंकौनोभाँतिआपनोकल्यानहै ।
थोरेविभौभूमिहेतकरिकेअनेकनेत लरिकेअचेतखोइडारैनिजमानहै ॥
कहैरघुराजसुखलेशहीकेलेनाहित जानतनअंतकेकलेशजेमहानहै ॥ १६ ॥
ऐसेसंसारिनमतिमंदनकीदशादेखि कबहूँनाकुपथसिखावतसुजानहै ॥ १७॥
सोहैनहिंमातासोहैगुरुनहींत्रातासोहै भूपतहिंज्ञातासबसुखानिसमाजको ।
सोहैनहिंभ्राताझूठौसाकरेकीनाताअरु सोहैनहिंताताजोरखैयालोकलाजको ॥
सोहैनहिंमित्रत्रातासोहैनविधाताकछू सोहैनहिंजातिअरुनातासर्वकाजको ।
कहैरघुराजसोविख्यातावैरीविश्वमेंजो पदजलजातानगहायोयदुराजको ॥ १८ ॥

मोहिजानिहरिअंशकुमारा । शुद्धधर्ममहिकियेअपारा ॥ मेरेनिकटअधर्मनआवै । ऋषभनामतातेजगगावै ॥ १९ ॥
मेरेतनतेतुमप्रगटाने । तुमसबमेंहैभरतसयाने ॥ तातेकरहुभरतसेवकाई । प्रीतिसहितसबकपटबिहाई ॥
सेवाभरतकेरिजोकरिहौ । तौतोहिसहितप्रजासुखभरिहौ ॥२०॥ हैपषाणतेविटपप्रधानै । तिनतेवरसर्पादिकजानै ॥
तिनतेश्रेष्ठपशुनकविकहहीं । मनुजश्रेष्ठतिनहूतेअहहीं ॥ मनुजनतेवरवृत्तपिशाचे । तिनतेवरगंधर्वहुसाँचे ॥
गंधर्वहुतेउत्तमसिद्धा । तिनतेकिन्नरश्रेष्ठप्रसिद्धा ॥

दोहा-किन्नरतेहैवरअसुर, ॥ २१ ॥ असुरनतेसुरवेश । सुरसमाजमेंजानिये, अहैप्रधानसुरेश ॥

हैसुरपतितेदक्षादिकवर । तिनतेशंकरशिरसुरसरिधर ॥ शंकरतेब्रह्मापरधाना । ब्रह्मातेप्रधानभगवाना ॥
सोश्रीपतिपूजेद्विजकाहीं । तिनहूँतेद्विजश्रेष्ठसदाहीं ॥ २२ ॥ हैकोऊनहिंविप्रसमाना । तौकिमितिनतेहोइमहाना ॥
जसद्विजमुखहरिजाहिअघाई।तसनहिंपावकहोमहिपाई२३शमदमसत्यआदिगुणजेते। रहहिंविप्रमहँनिशिदिनतेते ॥
हरिवपुवेषविप्रनितधारै । तातेतिनतेअधिकउचारै ॥ स्वर्गहुओअपवर्गनदाता । हैकेशवसबतेपरताता ॥

दोहा-ऐसेहरिपदविप्रसब, सेवनकरहिंसदाहि । रहतप्रेमतेनितमगन, माँगतहैकछुनाहिं ॥ २४ ॥

चहतनकछुहरिहूसोलहिबो । तौऔरनसोंकापुनिकहिबो॥तातेकरहुविप्रसेवकाई । जातेउभयलोकबनिजाई ॥२५॥
व्यापकचरअचरहुभगवाना।तातेसकलकरहुसनमाना॥कोउसोंकबहुँकपटनहिंकीजे।यहीपरमपूजनगुनिलीजे॥२६॥
कायिकवाचिकमानसकरमा।हरिमहँअरपैसबशुभधरमा॥बिनाधर्मअरपेहरिमाहीं।कबहुँकालभयछूटतनाहीं ॥ २७॥
यहिविधिपुत्रनशासनदैके । तिनकोसकलगुणनयुतज्वैकै ॥ जगतमित्रसोपरमप्रभाऊ।बोलिभरतनिजसुतनृपराऊ ॥

दोदा-राजतिलकताकोकियो, जगपालनकेहेतु । आपकियोवनकोगवन, सकलधर्मकेसेत ॥

ब्रह्मावर्तहितेनृपराई । काननगेगृहसुधिबिसराई ॥ परमहंसकोधर्मसोहावन । ज्ञानविरागभक्तियुतपावन ॥
वनमहँमुनिननसिखावनलागे । पुनिनहिंराजकोषतियपागे ॥ केवलनिजतनहैनिजसंगा । नभपटऋषभदेवकेअंगा ॥
खुलेकेशउन्मत्तसमाना।विचरहिंवनहिऋषभभगवाना॥अग्निहोत्रआदिकजेकर्मा ।तनहिलीनकरिलीनसुधर्मा॥२८॥
बधिरमूकजोअंधसरिसतहँ । विचरहिंधरिअवधूतवेषकहँ ॥ धरेमौनव्रतजगतविदेही । पूछेउतेनहिंउत्तरदेही॥२९॥

दोहा--गिरिवनमुनिआश्रमनमें, शिबिरनगरव्रजग्राम । ऋषभदेवविचरहिंधरणि, सबथलपूरणकाम ॥

कौशठतिनकोताड़नकरहीं।कोउतिनकेमुखमहँरजभरहीं।कोउमलमूत्रकरहिंकोउथूकैं।कोउपषाणमारहिंकरिकूकैं॥
कोउदेहिंताकोबहुगारी । कोउपाछियाइलैहिदेतारी ॥ पैनहिंऋषभभगनैमनमाहीं । ज्योंमक्षिकागजहिंपछियाहीं ॥
ऋषभनरह्योतनकअभिमाना, परयोनतातेतेहिकछुजाना ॥ ब्रह्मानंदसिंधुमहँभीने । चंचलचित्तअचंचलकीने ॥
तिनकेसंगरह्योकोउनाहीं।विचरतऋषभदेवमहिमाहीं३०अतिसुकुमारचरणकरकंजा।भुजविशालउरअतिमनरंजा॥

दोहा--अतिसुंदरवारिजवदन, कुंदरदनमृदुहास ॥ नवलनलिनदलयुगलदृग, हेरतहरतहरास ॥
सुंदरगोलकपोलअनूला।सुभगकंठनासाछबिमूला ॥ मुखमुसक्याननिरखिपुरनारी । जहँतहँहोहिंमैनमतवारी ॥
कोमलकुटिलश्यामसटकारे । शीशकेशमहिलगिछटकारे।धूरधूसरितयदपिदेखाहीं।तदपिछिपांतिप्रभातिनाहीं ॥
यद्यपिज्ञानाज्ञानविज्ञाना।देखिपरहिंउन्मत्तसमाना३१जगहिजानिअतिशयदुखकारी।अजगरवृत्तिऋषभऋषिधारी।
पुहुमिपरेभोजनअरुपाना।करहिंऋषभनहिंकतहुँपयाना॥मलमूत्रहुताहीथलत्यागै।रोवहिंहँसहिनसुखदुखपागे ३२ ॥
दोहा-तिनकेमलकीशुभसुरभि, दशयोजनलौंछाय । करतसुगंधितपुहुमिको, अनुपमगतिदरशाय ॥ ३३ ॥
कहुँपशुपक्षिनकीगहिरानी।बैठनलागतपरमअभीती॥तजहिमूत्रमलपशुहिसमाना।तिनकोतनकरतनकनभाना ३४॥
यहिविधिकरतयोगपथनाना । महाप्रभावऋषभभगवाना ॥ हरिकेप्रेमछकेऋषिराई । सँगसँगफिरहींसिद्धिसमुदाई॥
तनकोतकहिनसिद्धिनवोरा।जिमिशिशुचहैनकनककटोरा॥अणिमामहिमाप्रापतिगरिमा।वशीकरनईसितासुलघिमा
अरुअकाम्यथेआठहुसिद्धी । जगमेंहैंतेपरमप्रसिद्धी ॥ यद्यपिदुर्लभयोगिनकाहीं । तदपिनऋषभतकेतिनपाहीं ॥
दोहा-रहेजेजानतऋषभको, तेजनकियेप्रणाम । जानतभेउनमत्तसम, जेकुबुद्धिकेधाम ॥ ३५ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ पंचमस्कंधेपंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

दोहा--ऋषभदेवकोचरितसुनि, कुरुकुलकमलदिनेश । बोल्योश्रीशुकदेवसों, ध्यावतधीररमेश ॥

राजोवाच ।

इंद्रीजितअरुनिरअभिमाना । जरेमोहादिकयोगकृशाना ॥ ऐसेहरिदासनमुनिराई । होहिनकबहुँसिद्धिदुखदाई ॥
विनमाँगेहरिकीसबदीन्ही।ऋषभदेवकससिद्धिनलीन्ही ॥१॥ सुनिकैकुरुकुलमणिकीवानी।बोलेश्रीशुकदेवविज्ञानी॥

श्रीशुक उवाच ।

कह्योसत्यसबतुमकुरुराई । याकोकारणकहौबुझाई ॥ चंचलचित्तयदपिवशहोई । तदपिविश्वासैनहिंबुधकोई ॥
जिमिमृगपतिकेतोवशरहतो । पैपालकविश्वासनहिंगहतो ॥ ऐसोभाषहिंवेदपुराना । सोमैंतुमसोंकरहुँबखाना॥२॥
दोहा--यहचंचलमनकोकबहुँ, करैनबुधविश्वास । करैकबहुँविश्वासजो, होयअवशितपनास ॥
हरहुनिरखिहरिमोहनिरूपा । खोइदियोमरयादअनूपा॥३॥जोविश्वासमनकोबुधमाने।तौमनअवशिकाममहँआने॥
क्रोधादिकसबकामहिसाथी।योगिनयोगनहोहिप्रमाथी॥कुलटानारिआनिजिमिजारो।करवावतनिजपतिसंहारे ॥ ४ ॥
कामक्रोधमदमत्सरमोहू । डारहिसंसारहिकरकोहू ॥ तेसबरहहिंमनहिकेसंगा । तातेबुधनरँगहिमनरंगा ॥ ५ ॥
कुरुपतितहाँऋषभभगवाना । करतमूकजडसरिसपयाना ॥ बोलतबहुप्रमत्तसमवानी।परतनतिनप्रभावपहिचानी॥
दोहा--मरणरीतियोगीजनन, सिखवनहितऋषिराय । चल्योकलेवरतजननिज, तनअभिमानविहाय ॥
दीन्हीअचलसमाधिलगाई । दियोब्रह्मआतमामिलाई॥६॥कर्मवासनाविवशशरीरा । भ्रमतरह्योसुखदुखनहिंपीरा ॥
जिमिकुलालकोचक्रजोरवस । भ्रमतरह्योतनऋषभदेवतस ॥ कोंकवेंकदक्षिणकरनाटा।औरकटकदेशनसिखराटा ॥
विचरयोनिजइच्छावशजहँतहँ।पुनिगवनतभोकुटकाचलमहँ॥खुलेकेशउनमत्तसमाना।मेलिलियोमुखतहाँपषाना॥७॥
तेहिवनमहँबहघोरबयारी । वंशविवर्षणलगीदवारी॥तेहिदवारिमहँतनजरिगयऊ। ऋषभविष्णुपुरपावतभयऊ ॥८॥
दोहा--कोंकवेंकदेशनजबै, गयोहतोऋषिराइ ॥ करिनिजबहुआचरणको, दियोदवातनुलाइ ॥ ९ ॥
ह्वैहैमूड़मुड़ायविरागी । तजिअचारअस्नानअभागी ॥ सबजातिनछ्वैभोजनकरिहै । शुद्धअशुद्धनमनहिविचरिहै ॥
कलिमहँनामहिकेवैरागी । ह्वैहैधनहितसुततियत्यागी ॥ निजकहमानिमहात्मापूरे । द्वारद्वारपाखंडीकूरे ॥
वेदविप्रकीनिंदाकरिहै । धनहितवेषअनेकनधरिहै ॥ १० ॥ वेदविरुद्धकर्ममहँभूपा । करिहैशठविश्वासअनूपा ॥

परंपरानिजमतिविस्तरिहै।इहिविधिवेषअनेकनधरिहै११लियोजोकृष्णऋषभअवतारा।ताकोनृपअसकरहुविचारा॥
दोहा--मोक्षमार्गसिखवनहितै, रजोगुणीजनकाहि। भयोऋषभअवतारयह, पाखंडिनहितराहि॥
ऋषभसुयशयहिविधिकविगाई।सुमतिनआनँददेहिंसदाई॥१२॥नवहुखंडअरुद्वीपहुसाता।येधरणीमहँहैंविख्याता॥
तिनमहँभरतखंडधनिधनिहै।जहँगावहिंहरियशसुखसनिहै।ऋषभादिकअवतारनकेरे।सुयशकविनप्रदमोदघनेरे१३
धन्यधन्यप्रियव्रतकोवंशा। लियअवतारजहाँहरिअंशा॥मोक्षधर्मप्रगट्योजगमाहीं। ताकोशठजान्योकोउनाहीं १४॥
ऋषभसरिसह्वैहैकोयोगी। ब्रह्मनिष्टपरपंचवियोगी॥जिनसिद्धिनहितयोगिहमेशा। करहिंकठिनकुलिकायकलेशा॥
दोहा--ऋषभनिकटतेसिद्धिसब, रहैंसदाआधीन॥ पैतिनमेंनेकहुकबहुँ, चितचाहनानदीन॥ १५॥
विप्रवेदकेगुरुऋषभ, तिनकोचारितउदार॥ दायकमंगलमोदनित, करतपापसबक्षार॥
ऋषभचरितयहप्रीतियुत, सुनैसुनावैजोय॥ श्रीवसुदेवकुमारमें, तासुप्रीतिहठिहोय॥ १६॥
जेयदुपतिपदपदुमको, रसिकसुकविजगमाहिं॥ तेहरिभक्तसमुद्रमें, नहवावतजगकाहिं॥
यहजगतापहितेतप्यौ, जियहिउपायनआन॥ कृष्णभक्तिरसउदधिमें, नितमज्जैमतिमान॥
सोईभक्तिआनंदते, श्रीहरिदाससदाहिं॥ पंचप्रकारहुमोक्षको, दीन्हेलेतेनाहिं॥
त्रिभुवनमेंश्रीकृष्णके, चरणदासलहिनाम॥ सबपुरुपारथपावते, हैपरिपूरणकाम॥ १७॥
कवित--कुरुनृपवंशअवतंसमहाराजसुनो, पांडुयदुवंशस्वामीसोईखगकेतुहैं।
इष्टदेवहूहैंप्राणप्यारेहैंगुरूहैंसत्य, दूतभयेसूतभयेकृपाकेनिकेतहैं॥
कहैंरघुराजहौतुम्हारएकवारवंश, भाषतहीद्रुतदुखहरहरलेतहैं।
ऐसेश्रीमुकुंदभजेदेतपंचमुक्तिहूको, पैनप्रेमभक्तिसबमुक्तनकोदेतहैं॥ १८॥
दोहा--ब्रह्मानंदहिपायके, कियतृष्णाकोनाश॥ अज्ञानिनकेमोक्षहित, कीन्होज्ञानप्रकाश॥
दुजोअसकोउनाहिंभयो, जगमहँकरुणाधाम॥ ऋषभदेवभगवानको, बारहिंबारप्रणाम॥ १९॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारि रघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौपंचमस्कन्धे षष्ठस्तरंगः॥ ६॥

दोहा--जबहिंऋषभप्रभुवनगये, जेठसुतहिदैराज॥ तबधरणीपालतभये, मुदितभरतमहराज॥ १॥
विश्वरूपकीसुतासयानी। पंचजनीव्याहीछविखानी॥१॥ ताकेभेतहँपाँचकुमारा। सुताएकसबगुणनिअगारा॥२॥
सुमतिराष्ट्रभृतऔरसुदर्शन। धूम्रकेतुआवरणमहामन॥ अजनाभकयहखंडसोहायो।भरततेभारतखंडकहायो॥३॥
भरतभूपअतिशयसुखदाई। पितापितामहराजाहिपाई॥पितापितामहसरिसप्रजनको।पालतभयोविनाशिव्रजनको॥
निजनिजकर्मनिजननलगाये। धरमधुरंधरधरनकहाये॥४॥ करिकैमखपूज्योभगवाने। कियसप्रीतिविप्रनसनमाने॥
दोहा--अग्निहोत्रपशुसोमअरु, दरशहुपूरणमास॥ करीयज्ञप्रकृतिहिविकृत, औरहुचातुरमास॥ ५॥
ऋत्विजकरहिंयज्ञकेकर्मा। बैठेभरतभूपयुतधर्मा॥ यज्ञफलनहरिमहँनृपअरपे। हरिबलिभवकहँनेकुनडरपे॥
हरिआंगनसबदेवनध्यावै।हरितेपृथकनकछुमनलावै॥६॥इहिविधिकर्मविशुद्धहिकरिके।भोमनअमलवासनादरिके॥
परब्रह्मयदुपतिपदमाहीं। भईभक्तजोअचलसदाहीं॥ हियमेंहरिकोध्यावनलाग्यो। ध्यानहिनिरखिरूपअनुराग्यो॥
उरश्रीवत्सलसतवनमाला। चक्रादिकयुतबाहुविशाला॥ नवनीरदसमश्यामशरीरा। पीतांबरकीछविगंभीरा॥
निजभक्तनहितनिश्चलवासी। सकलविश्वकेएकप्रकासी॥
दोहा--ऐसेहरिकोहेरिहिय, नितनितबढ्योहुलास॥ प्रगटीप्रीतिप्रतीतअति, चरणनरमानिवास॥ ७॥
लाखनवर्षराज्यनृपकीन्ह्यो। प्रजनसधर्मपालसुददीन्ह्यो॥ सौंप्योसुतहिराजकोभारा। जानिजरठपनभरतउदारा॥

औरहुसुतनबांटदियहीसा । आपुचरणध्यावतजगदीसा॥घरतेनिकस्योभरतनरेशा । मुक्तक्षेत्रगमन्योमतिवेशा॥८॥
हैविद्याधरकुंडतहाँहीं । निवसहिंजहँहरिदाससदाहीं ॥ दासनप्रीतिहितभगवाना । रहतप्रगटनिततिहिअस्थाना॥९॥
शालिग्रामीसरितसोहावनी।बहतअमलजलपतितपावनी॥जहँप्रगटहिंप्रभुशालिग्रामा।विविधभाँतियुतचक्रललामा॥
दोहा--तहाँअकेलेनिकसिकै, भरतभूपमतिमान ॥ लग्योकरनतपअतिकठिन, ध्यावतश्रीभगवान ॥
तुलसीदलअनुफलअरुफूला । नितनवअंकुरकंदहुमूला ॥ निजकरसोंवनतेलैआवैं । भावभक्तियुतहरिहिचढ़ावैं ॥
नितनिजकरभरिसुंदरनीरा । हरिकहँनहवावतमतिधीरा॥ यहिविधिवसतइकांतहिमाहीं। नृपमनरहीवासनानाहीं ॥
प्रेममगनभोभरतनरेशा । छूटेजगकेसकलकलेशा ॥ ११॥ नितनववढ़ीकृष्णपदप्रीती । गहीअनन्यभक्तकीरीती ॥
ध्यानहिमहँहरिकहँनृपदेखे । पुलकतकुलकतरहतअलेखे ॥ नैननिबहतिनीरकीधारा।रह्योनतनकरतनकसम्हारा ॥
दोहा--श्रीमुकुंदअरविंदपद, ताकोमधुरमरंद ॥ मनमलिंदनितपानकरि, पावतपरमअनंद ॥
प्रेमपयोधिमगननृपराई । दियोकृष्णपूजनहुभुलाई॥१२॥ धारणकियेरहतमृगछाला। मज्जनकरतत्रिकालभुवाला ॥
शालिग्रामीजलतेताके । भीजजटाशिरपीतप्रभाके ॥ उदितहोइजबपूरबभानू । सरिमज्जनकरिभरतसुजानू ॥
सनमुखबव्योभरतकेभूपा । तेहिमंडलमहँयदुपतिरूपा ॥ ध्यानकरैयुगनयनलगाई । तनमनअरपिमहासुखछाई ॥
गायत्रीअर्थहिजेहिमाहीं । पढ़तभयेइहिमंत्रहिकाहीं ॥१३॥ मंत्रजानिमैंकियोनभाषा । मंत्रहियहग्रंथहिलिखिराषा॥
दोहा--गायत्रीकोअर्थहै, यहअश्लोकहिमाहिं ॥ जाहिवेदअधिकारनहिं, पढ़ैंतेयाकोनाहिं ॥
श्लोक-परोरजः सवितुर्जातवेदो देवस्य भर्गो मनसेदं जजान॥सुरेतसाऽदःपुनराविश्य चष्टे हंसं गृध्राणं नृषद्रिंगिरामिमः

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दाम्बुनिधौ
पंचमस्कन्धे सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

शुक उवाच ।

दोहा--एकसमयतहँभरतनृप, शालिग्रामीतीर । मज्जनहितगमनतभयो, प्रातसमयमतिधीर ॥
तहँमज्जनकरिभरतनरेशा । नित्यकर्मकरिवंदिदिनेशा ॥ जापकरनगायत्रीलाग्यो । हरिकोध्यानकरतसुखपाग्यो ॥
तीनमहूरतलगिमतिधीरा।बैठ्योनदीगंडकीतीरा ॥ १ ॥ गर्भवतीहरिनीयकराजा । आईतहँजलपीवनकाजा ॥ २ ॥
पियनलगीजबजलजेहिठोरा।गरज्यौनिकटसिंहयकघोरा॥३॥सोसुनिमृगीभयंकरनादा।अतिशयउरमेंमानिविषादा ॥
चौंकिचहुँकिजबचितवनलागी।प्यासीजलतटतेद्रुतभागी॥अतिउतंगकूदीकरिजोरा।भयवशताहिभयोअतिभोरा॥४॥
दोहा--हरिनीकेकूदततहां, महावेगकोपाय । तासुगर्भद्रुतउदरते, गिरच्योसरितमहँआय ॥ ५ ॥
प्रसवपीरमृगपतिभयभारी।संगनकोउहरिनीसहकारी॥मृगीगिरीगिरिकंदरभागी।प्रसवपीरवशदियतनत्यागी ॥ ६ ॥
यहसबचरितराजऋषिदेखी ।बहतिधारमृगसावकलेखी ॥ मृगसावककहँजानिअनाथा । करिकैकृपाभरतनरनाथा ॥
अतिआतुरमृगशिशुढिगजाई।लियोबंधुसमताहिउठाई।लैमृगबालकआश्रमआये॥७॥ तेहिसेवनमहँअतिमनलाये ॥
तेहिहितनितवनतेतृणल्यावैं । तोडितोडिनिजहाथखवावैं ॥ वाघविगातेरक्षनकरहीं । गलखजुवाइताहिसुखभरहीं॥
दोहा--कहुँमुखचूमततासुनृप, बैठावतनिजगोद । ताहिखिलावतरैनदिन, पावतपरमप्रमोद ॥
मृगशिशुमेंअतिनेहलगायो।क्रमक्रमयमअरुनेमभुलायो ॥ छूटिगयोहरिपूजनकरिबो । मज्जनभोजनपानहुकरिबो ॥
भरतभूपअसमनहिविचारा । हैमृगसावकदीनअपारा ॥ नहिंभ्रातानहिंहैकोउत्राता । हमहीहैंयाकेपितुमाता ॥
मोहितजिद्वितियनमृगशिशुजाने।मेरोअतिविश्वासउरआने॥८॥अहैनमोकहँत्यागवयोगू।त्यागेनिरदयकहिहैंलोगू॥
पालनपोषनलालनयाको।मैंकरिहौंकरिहियेदयाको॥९॥निजकारजतजिसंतसुजाना।शरणागतपालहिंभगवाना१०॥
दोहा--असविचारकरिभरतनृप, मृगसुतमहँकरिनेह । ताकोनितसेवनलगे, दियभुलायसुधिदेह ॥

मृगसुतकोनितलैसँगसोवें । तेहिबैठेबैठेमुखजोवें ॥ तेहिनहवावतआपुनहाहीं । ताहिखवावतआपहुखाहीं ॥
जहाँजाहिंतहँसँगलैजाहीं ।एकहुक्षणछोड़हिंतेहिनाहीं॥ ११ ॥खननहेतुबहुकंदहुमूला । तोरनहेतुफलहुअरुफूला ॥
भरतभूपजवकाननजाहीं । तबमनमेंअसअभितडेराहीं ॥ जोहमआश्रममहँतजिजैहैं । तौयहिवाघविगाधरिखैहैं ॥
तातेजातजहांनृपराई । ताकोसंगहिजातलेनाई ॥१२॥ जोकहुँचरणलगततृणकाहीं । अथवाचलतथकतपथमाहीं ॥
तौताकोनिजकंधचढ़ाई । विचरहिंवनमहँप्रीतिबढ़ाई ॥

दोहा--कबहुँशीशकहुँअंकमें, कबहुँकंधधरताहि । मृगशिशुनितहिखेलावहीं, परममुदितमनमाहि ॥ १३ ॥

जबकहुँध्यानकरहिंनृपराई । मृगशावकआवततहँधाई ॥ कहुँसूँधैमुखकहुँकरमाहीं । तबनृपनयनतुरतखुलिजाहीं॥
देहिंअशीसताहिपुचकारी।मृगसुतआयुषबढ़ेतुम्हारी१४केहुक्षणजबतेहिदेखहिंनाहीं।तबनृपबहुतविकलहोइजाहीं ॥
जैसेकृपणगयोधनखोई । ताकेहितचिंतवतदिनरोई ॥ जोकहुँचरणदूरकढ़िजाई । तौविलपतभाषहिनृपराई ॥१५॥
हरिणीसुवनजातकहँभयऊ । हायमहूंतेहिसंगनगयऊ ॥ मैंनिर्दयशठव्याधसमाना । मंदभागमोहिंसमकोआना ॥

दोहा—ममअपराधविसारिके, मृतहरिणीकोबाल । सुजनसरसकाआइहै, करिविश्वासविशाल ॥ १६ ॥

रक्षितदेवनतेमृगशावक।चरतनवीनतृणहिमनभावक।देखबकबनिजआश्रममाहीं।जेहितेप्रियदूजोमोहिंनाहीं ॥१७॥
वृकवाधनतेबचोजोहोई । तौइतआयमोहिसुददेई॥१८॥अथवनचहतभानुयहिकाला । अबलौंनहिंआयोमृगबाला॥
सौंप्योमृगीमोहिंनिजथाती।तेहिविनशीतलहोतिनछाती१९हायहरिणसुतकबइतऐहै।कबकरिकेलिमोहिसुददैहै २०
जबहमबैठहिंध्यानलगाई । मृदुशृंगनखजुवावहिआई ॥२१॥ होमकरनकहँजबहमबैठे । तबमृगसुवनकुटीमहँपैठे ॥

दोहा—होमसाजलागतचरन, जबहमहांकहिंताहि । तबमुनिसुतसमचुपरहत, परममुदितमनमाहि ॥ २२ ॥

धन्यधन्यहैधनियहधरणी । करीअपूरबपूरबकरणी ॥ रजमेंमृगसुतचरणदेखाहीं । तातेतासुखोजहमपाहीं ॥
जिमिचोरीकीदसीमिलतहै।तिमिपदलखिममनललकतहै।श्यामकुरंगरहतजेहिदेशा।यागयोगसोभूमिहमेशा२३॥
यहिविधिकहतनिशाजबआई । तबशशिलखिबोलेनृपराई ॥ ममआश्रमतेबाहिरपाई । मेरेमृगकीदेखिलुनाई ॥
मृगकोमृगपतिकोभयजानी।यहनिशिनाथदयाउरआनी।राख्योकोउनिजअंकछिपाई।ऐसीहमकहँपरतजनाई ॥२४॥

दोहा—मोहिंमृगविरहानलजरत, जानिकृपाकरिचंद । सुखदमयूषपियूषतें, सींचतदेतअनंद ॥ २५ ॥

शुक उवाच ।

यहिविधिकरतविलापननाना।विनमृगभरतभूपमतिमाना।भोरभयोमृगआश्रमआयो।तेहिलखिनृपतिमोदअतिपायो।
जैसेधनीनष्टधनपावे । धनिधानिअपनीभागगनावे ॥ कर्मविवशमृगमहँकरिनेहू । भरतभूपभूल्योनिजदेहू ॥
भूल्योजपतपहरिसेवकाई । जेहिहितनिजकुलराजविहाई।जोनअभागिभरतकीहोती।तौनमृगहिअसप्रीतिउदोती ॥
मृगलालतपालतमहिपाला।यहिविधिबितैदियोबहुकाला।कियोनकछुविचारमतिमाना।मरणकालताकोनियराना ॥
मीचनगीचभरतकेआई । जिमिमूषकबिलव्यालहिजाई ॥ २६ ॥

दोहा--तबमृगसुतसुतकेसरिस, नृपढिगरोवनलाग ॥ तेहिविलोकिभरतहुकियो, तामेंअतिअनुराग ॥

मृगमहँमनदैतज्यौशरीरा । तातेमृगहिभयोमतिधीरा॥२७॥भूल्योभाननभजनप्रभाऊ । शोचकरनलाग्योनृपराऊ॥
महामोहमैंमृगमहँकीन्हो।तातेमोहिंमृगतनविधिदीन्हो।उपज्योकालंजरगिरिआई ॥२८॥ हायसकलमैंदियोनशाई॥
योगमार्गतेभ्रष्टभयोमैं । जेहितेनिजकुलछोड़िदियोमैं ॥ वस्योगंडकीकेतटजाई । यदुपतिभक्तिकरीमनलाई ॥
श्रवणकीरतनअरुअस्मरणा । करिदृढनेमभज्योहरिचरणा।त्याग्योसकलजगतजंजाला।बीत्योवृथानकौनेहुकाला ॥

दोहा--जोमनतेमैंहरिभज्यो, सोमनमृगहिलगाइ । भजनकमाईहायमैं, सिगरीदईगमाइ ॥ २९ ॥

यहिविधिकरिविचारबिलखाता।भरतत्यागिआशुहिनिजमाता।कालिंजरतेतुरतहिधायो।मुक्तिनाथकहआतुरआयो॥
शालिग्रामीसरितनहाई । सूखेतृणपत्रनकहँखाई ॥ मृगनमध्यमहँरहतनभयऊ । यहिविधिकछुककालचलिगयऊ ॥
पूरबसुधिराखेमतिधीरा । चाहततजनतुरंतशरीरा ॥ करतविनययहिविधिहरिपाहीं । होइकबहुँमोहिंअससँगनाहीं ॥

पुनिजन्ममरणकालतेहिआयो। तत्रसरितागंडकीनहायो॥ तेहिजलमधिहरिमहँमनलाई।दियोमृगातनतुरतविहाई॥
दोहा-धनिहरिभजनप्रभावहै, कुरुपतियहजगमाहिं। तीनजन्मभरिभरतनृप, भूल्योनिजसुधिनाहिं॥३१॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ पंचमस्कंधेअष्टमस्तरंगः॥ ८॥

दोहा-विप्रअंगिरसगोत्रको, कोउइकरह्योसुजान। शमदमतपश्रुतित्यागव्रत, क्षमातोषविज्ञान॥ १॥
पैसिगरेगुणतेहिद्विजकाहीं। अभिमानहुताकेतननाहीं॥ रहीतासुद्विजकेद्वैनारी। जेठीकेनवसुततपधारी॥
शीलअचारउदारसुभाऊ। भयेनवौसुतपरमप्रभाऊ॥ रहीकनिष्ठतासुजोनारी। भयेभरतअरुएककुमारी॥
जड़समरह्योकृष्णपदध्यायो।जातेजगजडभरतकहायो॥२॥तहौंभीतिकुलगृहकैमानी।तज्योसंगभोनिरअभिमानी॥
भवनिधिनाशनहरिअस्मरना। कथाश्रवणगुणवरणनकरना॥हरिचरणारविंदमहँप्रीती।गहतभयोअतिदृढ़परतीती॥
दोहा-श्रीहरिभजनप्रभावते, सोजड़भरतहिकाहिं। पूरवजन्मनकीसुरत, नेकहुभूलीनाहिं॥
तातेअतिशयजगहिडेराई। मत्तसरिसनिजरीतिदेखाई॥ अंधवधिरजड़मत्तसमाना। विचरतबैठतबोलतनाना॥
यदपिप्रमत्तताहिसबजाना॥ ३॥ पैतेहिपितानेहसोसाना॥कीन्हेव्रतबंधादिककरमा।सिखयोताकहँनिजकुलधर्मा॥
पैजड़भरतहिनीकनलाग्यो।सोतोहरिचरणनअनुराग्यो॥जसचाहैतसनिजसुतहोई।पितहिउचितसिखउबसबसोई ४॥
पितुकोशिक्षणपुत्रनमानै। एकोकुलकेकर्मनठानै॥ करतरहैअसभरतउपाई। जामेंपितुमोहिंदेइविहाई॥
चारमासपितुथक्योपढाई। पैगायत्रिहुताहिनआई॥
दोहा-औरवेदविद्याविदित, पढिवेकीकहबात। पैनिजउचितविचारिकै, सकलसिखायोतात॥ ५॥
सिखवतकालगयोबहुबीती। पैजड़भरतगहीनहिंरीती॥मरयोपिताकछुकालहिपाई॥६॥तबतेहिमातमहादुखछाई॥
सौंपिसवतिकहँपुत्रकुमारी। भईसतीपतिसंगसिधारी॥७॥तबजडभरतकेरसबभ्राता। सिखवनलगेधर्मविख्याता॥
तेसबकरमहिकांडप्रवीने। रहेनयदुपतिपदलवलीने॥निजभ्रातहिबहुभाँतिसिखायो। पैनहिंताहिधर्म्मकछुआयो॥
जानिमहाजड़ताकहँत्यागे। पुनिनहिंतासुओरअनुरागे॥ ८॥ भागनलगेभरतपुरमाहीं।सुनैजौनसोमुखवतराहीं॥
दोहा-बैठोतिहिंबैठोकहै, कहैजाउतिहिंजाउ॥ आवोतिहिंआवोकहै, ल्यावकहैंतिहिंल्याव॥
इहिविधिवचनअसंगतबोलै। बधिरमूकजडसमपुरडोलै॥नहवावहिकोउजबहिनहाहीं। जबहिंखवावैकोउतबखाहीं॥
करवावैजोकोउमजूरी। अथवापकरिजाहिलैदूरी॥ कामहुभयेकरतसोरहही। विनवरजेतहँतेनहिंटरही॥
नीकनिषिद्धअन्नजोपावै। भोजनकरैनसुखदुखल्यावै॥ मानहिनाहिंमानहुअपमाना। तिनकोतनकोतिनाहिनभान॥
इंद्रीप्रीतकामनहिंकरही। ध्यावतकृष्णनिरंतररहही॥ ९॥ शीतघामवरषासबसहही।छायावसतिहुकबहुँनगहही॥
दोहा-मत्तवृषभसमचलतमग, परमपुष्टसबअंग॥ धूरधूसरिततनरहत, त्यागेसबकोसंग॥
रहतअनलजिमिभसमछिपाना।तिमिजड़भरतप्रभावनजाना।कटिचिरकुटकीलगीलँगोटी।शिरकचसामिटभईइकचोटी
अतिमलीनएकतनहिजनेऊ। तातेजानिपरताद्विजभेऊ॥ देखतदूरदूरशठकहहीं। दूरदूरतातेसबरहहीं॥ १०॥
करिकैऔरनकेरमजूरी। भोजनकरहिउदरभरिपूरी॥ ऐसोलखिताकोसबभ्राता। सिखवनलगेधर्मविख्याता॥
ताकेपीनअंगसबदेषी। ताहिमानिमनवलीविशेषी॥ खेतखनावनहेतुबोलाई। कृषीकर्ममहँदियोलगाई॥
दोहा-खननलगेतौखनतहीं, देतेकूपबनाइ॥ कहूँऊँचकरिदेतअति, जातेखेतनशाइ॥
कहुँतृणकाटतअन्नहुकाटै। पशुनचरतकबहूँनहिंडाटै॥ कनाखरीभूसीजोदेहीं। अमृतसमानखायसोलेहीं॥ ११॥
यहिविधिसोजड़भरतसुजाना। हरिरसमगननतनकरभाना॥तहँएकशूद्रराजकोऊरहेऊ। भक्तिभद्रकालीकीगहेऊ॥
रह्योपुत्रताकेकोउनाहीं। सोचलिदेवीमंदिरमाहीं॥ कह्योमातजोसुतहमपैहैं। तौतुमकोहमनरबलिदैहैं॥ १२॥

असकहिबलिहितनरइकबांधी।राख्योताहिकोठरीधाँधी॥तेहिकछुकालहिमहँसुतभयऊ।देवीभवनशूद्रनिशिगयऊ ॥
दोहा–द्रुतदूतनअसकहतभो, ल्यावहुनरबलिआसु। दूतदौरिगृहआयकै, शोरनकरयोहुलासु ॥
चलेसंगलैबंधनछोरी। सोभाग्योकरिकैबरजोरी॥ तेहिपीछेदौरेसबकोई। पैतममहापरयोनहिंजोई ॥
अर्द्धरात्रिमहँखोजनलागे। बहुतदूरलोंअतिदुखपागे। मिल्योनसोनरअतिअँधियारे। दूतफिरतजडभरतनिहारे॥
बैठखेतमहँशोरमचावत। मनमहँकृष्णरूपकहँध्यावत ॥ ताकोनिरखिपुष्टसबअंगा। दूतसकलजुरिकेइकसंगा॥
कियोविचारसबैमनमाहीं। सोनरतोमिलनोअबनाहीं ॥ याकोहैनहिंकोइरखवारो। वैकलकेसमपरतनिहारो॥
दोहा–अहैअंगमोटेसकल, बलिलायकयहनीक॥ तातेधरिलैचलहुअब, यहविचारहैठीक॥ १३ ॥
असविचारिजड़भरतहिकाहीं। पकरिजकरिलैचलेतहांहीं ॥ देवीमंदिरतुरतहिंआये। दूतसकलअतिआनँदपाये॥
शूद्रराजकहँमाथनवाई। जोरिपाणिअसविनयसुनाई ॥ सोनरमिल्योनहमकहँहेरे। खोजेनिशिअँधियारघनेरे॥
नाथपरयोयहलखिबलियोगू। अतिमोटोनहिंतनकछुरोगू ॥ याकोभक्षतदेवीमाई। आशुहिजैहैनाथअघाई॥
लखिजड़भरतहिंशूद्रनरेशा। दूतनकह्योकियोतुमवेशा॥१४॥ पुनिताकोमज्जनकरवायो।अंगनिअंगरागलगवायो॥
दोहा–अरुणवसनपहिरायकै, भूषणभूषितकीन॥ रक्तचंदनहिभालमें, तिलकललितकरिदीन॥
जडभरतहिंबहुभाँतिखवायो।सुमनमालबहुतिहिंपहिरायो॥ लाजाअंकुरपत्रचढायो। धूपदीपविधिविदितदेखायो॥
पुनिअरप्योताकोफलनाना। कीन्हेबलिकेसकलविधाना॥ पणवमृदंगतूरसहनाई। औरहुसिगरेबाजबजाई॥
भूपभद्रकालीढिगलाई। जड़भरतहिसनमुखबैठाई॥ १५ ॥ नरशोणिततेपूजनकीबो। देवीकोप्रसन्नकरिलीबो॥
ऐसोचितदैशूद्रभुवाला। अभिमंत्रितकरिकैकरवाला॥ दियोपुरोहितकेकरमाहीं। कह्योदेहुबलिदेवीकाहीं॥१६॥
दोहा–शूद्रराजऔतासुभट, घेरिखड़ेचहुँओर॥ करहिंभद्रकालीनिरखि, बारहिंबारनिहोर॥
धनमदगर्वितअतिशयपापी। ब्राह्मणवैष्णवकेसंतापी ॥ महानिरंकुशहिंसाकारी। अतिदारुणस्वभावअविकारी॥
ऐसोसिगरोशूद्रसमाजा॥ मोहितखड़ोरहोकुरुराजा॥ जहँजड़भरतकृष्णकोदासा। समदर्शीनहिंकछुमनत्रासा ॥
कोहुकोमित्रनकोहुकोबैरी। सदाकृष्णआनँदसैरी॥ तासुतेजप्रगट्योअतिघोरा। छाइरह्योमंदिरचहुँकोरा॥
देवीमूरतिउचटतुरंते। परतभईतेहिथलतेअंते॥ ब्रह्मतेजतेअतिदुखपागी। जरनभद्रकालीतहँलागी ॥
दोहा–लखिशूद्रनदारुणकरम, विप्रघातअतिघोर। करिकरालकालीवपुष, प्रगटतभैतेहिठोर॥ १७॥
भृकुटीबंकलंकअतिखीनी। कुटिलदंतरसनाबड़बीनी॥ अरुणनयनअरुवदनभयावन।मानहुचहतजगतकहलावन॥
करिकैअट्टहासअतिघोरा। कूदतभइकरिकोपकठोरा ॥ उपरोहितकरआशुमुरेरी। लीन्हछुडायकृपाणकरेरी॥
प्रथमपुरोहितकोशिरकाट्यो।शूद्रराजकापुनिशिरछाँट्यो।।तेहिकृपाणसबशूद्रनशीशा। काटिलियोकालीअवनीशा॥
सगणसद्यशोणितकरिपाना। नाचनलगीकरतकलगाना॥ कंदुकतिनकेशीशबनाई। खेलतकालीतहँमनभाई॥
दोहा–बचेनएकहुशूद्रतहँ, कालीकियसंहार॥ तिनपापिनकोकरतिभै, शोणितमांसअहार॥ १८॥
हेकुरुपतिजोकरतहै, हरिजनकोअपराध॥ ताहीकोपुनिहोतहै, सकुलजीवकोबाध॥ १९॥
जनिअचरजमानहुकुरुराई। वेहैंप्रेमरसिकयदुराई ॥ यहीसत्यसंतनकीरीती। भईनजड़भरतहिंकछुभीती ॥
तिनकीहृदयग्रंथिसबछूटी। सबइंद्रीहरिपदमहँजूटी ॥ तजेवैरजगमित्रउदारा। मिलनचहेवसुदेवकुमारा ॥
इमिअनन्यदासनरघुनाथा। रक्षाकरहिंआपनेहाथा ॥ तिनहिंभीतिदैसकहिनकोई। कालहुतिनकोरक्षकहोई॥
परमहंसजेमहाभागवत। कृष्णचरणअरविंदनमेंरत॥ तिनकेसमजगमहँकोआना। सतिजानहुकुरुनाथसुजाना॥
दोहा–कोकृपालुयदुनाथसम, निजदासनकेहेत॥ धारिअनेकनरूपप्रभु, रक्षणकरिसुखदेत॥ २०॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौपञ्चमस्कन्धेनवमस्तरंगः॥ ९॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–पश्चिममेंइकदेशहै, नामसिंधुसौवीर ॥ नामरहूगणतिहिरह्यो, तहँकोनृपमतिधीर ॥
लहनहेतसोंज्ञानविज्ञाना । कपिलदेवढिगकियेपयाना ॥ ह्वैसवारयकसुभगपालकी । लगींझालरैंमुक्तजालकी ॥
इक्षुमतीसरिताकेतीरा । आयोभूपसिंधुसौवीरा ॥ तहँयकवाहककोउथकिगयऊ । लेशिविकाचलिसकतनभयऊ ॥
ताहितहाँताजिदियेकहारा । वाहकपतिसोंवचनउचारा ॥ यकचारकथकिगयोइहांहीं । प्रभुशिविकालैचलतोनाहीं॥
दूजोऔरखोजिकहुँलेहू । जाकोहोयअरोगितदेहू ॥ तबवाहकपतिदूतपठायो । वाहकहिततहँखोजकरायो ॥
दोहा–दूतदौरितेहिदेशमें, खोजतभेचहुँओर ॥ देखतभेयकदेशमें, द्विजअंगिरसकिशोर ॥
अतिदृढ़पीनअंगसबताके । अहेनरोगशरीरहिजाके ॥ दूतकियेअसमनहिंविचारा । अबलौंइतनहिंमिलतकहारा ॥
यहीभलोअतिबलीदेखातो । हमहिंदेखिकछुनाहिंडेरातो ॥ अहैसूधनहिंदरशतबाँको । नीकेलैचलिहैशिविकाको ॥
असविचारिजड़भरतहुकाहीं।गहिल्यायेनिजमालिकपाहीं॥वाहकपतिद्रुतनृपशिविकामें । लियोलगायतुरतमतिधामें ॥
सबकेआगूताहिलगाई । चल्योआशुशिविकाउठवाई ॥ परमहंसश्रीभरतसुजाना । लैशिविकाकहँकियेपयाना ॥१॥
दोहा–लखिआगूयकवाणभर, भरतधरतमगपाइ ॥ निजपायनतेजीवकोउ, जातेकचरनजाइ ॥
तातेमंदमंदगतिचलही । ऊँचोनीचोलखहिनथलही ॥ तबपालकीविषमह्वैजाती । धक्कालगतभूपकीछाती ॥
तहांरहूगणकछुदुखछाये । सकलवाहकनवचनसुनाये ॥ शिविकाटेढ़ीह्वैकसजाती । अतिशयदुखहोतोममछाती ॥
चलहुसुगमगतिसकलकहारा।पहुँचावहुद्रुतकपिलअगारा॥नातोताड़नतुमकहँकरिहैं।तुम्हरोवेतनहमसबहरिहैं ॥२॥
सुनिभूपतिकेवचनकठोरा । डरिवाहकअतिकरतनिहोरा ॥ कहींरहूगणतेअसवानी ॥३॥ हमतौराउरशासनमानी ॥
दोहा–चलहिंविषमगतिमगनहीं, अतिहिवेगगतिधारि ॥ शिविकागतिसीखेसदा, हैनहिंचूकहमारि ॥
यहनवीनवाहकजोआयो । वाहकपतिपालकीलगायो ॥ चलतमंदगतियहमगमाहीं । ऊँचनीचथलदेखतनाहीं ॥
तातेप्रभुधक्कालगिजाहीं।चलिनसकतयहिसममगमाहीं ॥ हैयद्यपिसबतेयहमोटो । यौगतिजानतिनहिंअतिखोटो ४॥
तबदुकिजड़भरतहिंनृपहेरो । कियोविचारविषमगतिकेरो ॥ कियअपराधएकमगमाहीं । संगदोषलाग्योसबकाहीं ॥
यदपिरहूगणरह्योसुज्ञानी।तदपिरजोगुणकीमतिआनी॥रजहिछिपतजिमिरतनमहाना॥तिमिजड़भरतप्रभावनजाना॥
तिनपैकछुकोपितह्वैराजा । बोलेवचनविगतनिजकाजा ॥ ५ ॥
दोहा–हेनवीनवाहकसुनो, तुमबहुलह्योकलेश ॥ घरतैलैममपालकी, आयेदूरविदेश ॥
दुर्बलअहौथकेतुमभाई । तुमअकेलपालकीउठाई ॥ दूजेकाकोउलगेकहारा । तुम्हरेहिएककंधपरभारा ॥
अतिशयवूढ़परहुतुमजानी । तातेविषमचालमगठानी ॥ सिगरेबलीतुम्हींबलहीने । क्षुधापिपासातेअतिक्षीने ॥
यहिविधिउलटेवचनभुवाला।जड़भरतहिभाषेउतेहिकाला॥पैतिनकेनतनकअभिमाना।नृपतिवचनकछुकियेनकाना।
मौनचलेलैशिविकाकाहीं । ध्यानधरेहरिचरणनमाहीं ॥ ६ ॥ पुनिटेढ़ीह्वैगईपालकी । दुखभोछातीमहीपालकी ॥
दोहा–तबहिरहूगणकुपितह्वै, अतिहिअरुणकरिनयन ॥ देखिदशाजडभरतकी, बोलतभोअसवयन ॥
कसरेवाहकदुष्टनवीनो । शासनमेरोकाननकीनो ॥ जोवतहोतैंमृतकसमाना । मोकोनेकहुतैंनडेराना ॥
तातेमैंतोहिंदेहौंदंडा । जिमियमजीवनदेतअखंडा ॥ तबतैंगतिसीधीगहिचलिहै । तातेपुनिनपालकीहलिहै ॥ ७ ॥
यहिविधिजबैभूपअभिमानी । कहीकुटिलभरतहिबहुवानी॥रह्योनपंडितपंडितमानी । रजतमतेतेहिमतिलपटानी॥
भरतप्रभावनेकनहिंजाना । जौनअनन्यदासभगवाना ॥ जबजगमित्रभरतमतिमाना । मगनकृष्णपदप्रेमलुभाना ॥
दोहा–सुनतरहूगणकेवचन, नैसुकसुखमुसकाय ॥ मंदमंदऐसेवचन, बोलेसरलसुभाय ॥ ८ ॥

जडभरत उवाच।

व्यंगवचनजेभूपउचारे ॥ तेहैंसिगरेसत्यतिहारे ॥ पैकछुवस्तुहोतजोभारा । तौदुखतनहिंचलावनहारा ॥
तनसंबंधजीवकोहोतो । तौसुखदुखकोहोतउदोतो ॥ तनसंबंधहमैंकछुनाहीं । तातेनहिंदुखकछुमनमाहीं ॥

जोजैबेकोकहुँथलहोई । अरुजोपंथपरतकहुँजोई ॥ तबगवनतत्रनतोनृपराई । पंथहुदेशनकहुँदरशाई ॥ ९ ॥
जीवनमोटदूवरोहोई । दूवरमोटपरततनजोई ॥ आधिव्याधिदूत्ररीसुटाई । क्षुधातृपाभयनींदबुढ़ाई ॥
कलहकोपमदप्रीतिहुशोकू । इनसवकोशरीररहैओकू ॥

दोहा-जिनकोतनअभिमाननहिं, तिनहिंपरतनहिंजानि ॥ हमहिंनतनसंबंधकछु, तातेसुखनगलानि ॥ १० ॥
हमहिंनजियतमृतकसमअहहीं।जियतमरतसवजगजनरहहीं॥कोउस्वामीकोउसेवकहोई।तौतिहिशासनमानतसोई॥
कवहुँस्वामिसेवकह्वैजाई । सेवककवहुँलहतठकुराई॥११॥सेवकअरुस्वामीकरभाऊ । यहव्यवहारहिभरिनरराऊ ॥
नहिंस्वामीकोउसेवकनाहीं । यहजोगर्वतुम्हरेमनमाहीं ॥ तौजोकहहुकरैंहमसोई । हानिलाभनहिंहमकोहोई ॥१२॥
शिक्षाहेतदंडतोदैहौ । तोतुमभूपकौनफलपैहौ ॥ प्रथमाहिसकलशीखहमलयऊ । पुनियहमारगमहँमनदयऊ ॥
दोहा-जोप्रमत्तमानोहमहि, शीखदेतकेहिकाज ॥ कौनहेतऐसेवचन, कहतरहूगणराज ॥ १३ ॥

शुक उवाच ।

असकहिमुनिवरशांतसुशीला । भयोमौनध्यावतहरिलीला॥निजप्रारब्धकर्म्मकरिभोगू।क्षयकरिवेकोकियोप्रयोगू ॥
लैशिविकाध्यावतजगदीशा।विमलचालपुनिचल्योमुनीशा १४ तहांसिंधुसौवीरभुवाला।लहनहेतविज्ञानविशाला ॥
जातरह्योमुनिकपिलसमीपा । सुनेउभरतकेवचनमहीपा ॥ हृदयग्रंथिकेछोरनवारे । योगमार्गदरशावनहारे ॥
तबशिविकातेउतरिमहीशा।तुरतभरतपदनायोशीशा।अतिपछिताइभूपभयपाग्यो।निजअभिमानतुरतनृपत्याग्यो॥
दोहा-नृपतिरहूगणजोरिकर, क्षमाकरावतभूल ॥ कहतभयोजडभरतसों, गुनिअपराधअतूल ॥ १५ ॥

रहूगण उवाच ।

अहौकोनतुमवेषछिपाये । विचरहुधरणिमहासुखछाये ॥ कोहौतुमधारेउपवीता । कीक्षत्रीकीविप्रपुनीता ॥
काकेसुतकेहिहितइतआये । निजनिवेशकेहिदेशबनाये ॥ कीधौंतुमहौदत्तात्रेऊ । किधौंकपिलहुवरणहुभेऊ ॥
मोपरकृपाकरनकेहेतू । दरशनदीन्होज्ञाननिकेतू ॥ १६ ॥ वज्रीवज्रशूलधरशूला । यमकोजोयमदंडअतूला ॥
अर्कअग्निअरुसोमहुअस्त्रा । पवनहुऔरकुबेरहुशस्त्रा ॥ तसइनभयतेमननहिंभागै।जसद्विजअपमानहिडरलागै॥१७॥
दोहा-अवनाछिपावहुकरिकृपा, दीजैमोहिंबताय । विचरहुजडसमजगतमहँ, ज्ञानप्रभावछिपाय ॥
महिमाअहैअपारतिहारी।जाननकीगतिनाहिंहमारी॥आपवचनकोअर्थगँभीरा।जानिनसकहियदपिमतिधीरा ॥१८॥
जेगुरुहैंज्ञानिनमुनिकेरे । कपिलदेवहरिकलानिवेरे ॥ कोरक्षकहैयहजगमाहीं । जातरह्योपूछनतिनकाहीं ॥ १९ ॥
सोईकपिलस्वरूपछिपाये । मोपरकृपाकरनइतआये ॥ योगेश्वरनकेरिगतिजोई । मंदबुद्धिजानैकिमिसोई ॥ २० ॥
कह्योजोआपदेहमेंश्रमनाहीं । सोसुनिभइशंकामनमाहीं ॥ कर्मकियेश्रमहोतसदाहीं । सोहमकोअनभोरनमाहीं ॥
दोहा-यहप्रपंचहैसत्यनहिं, यहजोकह्योमुनिराय । सोसिगरोपरपंचयह, हमकोसत्यजनाय ॥ १२ ॥
जोप्रपंचयहसत्यनहोई । घटभरजलआनेकिमिकोई ॥ नहिंशरीरसंबंधहमारे । यहजोमुनिवरवचनउचारे ॥
सोसंबंधसत्यहैनाथा । तनसँयोगतेसुखदुखगाथा ॥ २१ ॥ जिमिपावकथारीधरिदीजे । तामेंक्षीरतंदुलौकीजे ॥
थारतपततेतपतक्षीरहै । तेहितपितंदुलहोतखीरहै ॥ जैसेप्रथमतापतपतोतन । ताहितपेपुनिप्राणफेरमन ॥
मनकेतपेतपतहैजीवा । तातेसतिसंबंधअतीवा ॥२२॥ नहिंस्वामीनहिंसेवकभाष्यो ॥ तासुभेदपूछनअभिलाष्यो ॥
दोहा-भूपतिपालतप्रजनको, देतदंडलखिभूल ॥ पावहिसेवकसकलफल, निजसेवाअनुकूल ॥
जैसेजेहरिभजतसदाहीं । यथायोगपावतफलकाहीं ॥ तातेमृषानसेवकस्वामी । सेवहिकियेमिलैअवगामी ॥ २३ ॥
क्षमहुनाथअवममअपराधा । मैंदीन्होंतुमकोअतिबाधा ॥ भूपतिगर्वविवशमेंअंधा । शिविकादंडधरचोतुवकंधा ॥
हेमुनिनायकदीनदयाला । देखिदशामेंहोहुँविहाला ॥ यहपातकसमुद्रतेनाथा । मोहिंनिकारोप्रभुगहिहाथा ॥२४॥
कहौजोतुमनकियोअपराधा । विनजानेदीन्ह्योमोहिंबाधा ॥ तौजानेविनजानैजोई । करतसंतअपराधैकोई ॥

दोहा–यदपिहोहिहरशूलधर, तद्यपिलहहिविनास ॥ कोसाधुनअपराधकरि, पावहिजगतसुपास ॥
अहौजगतकेसुहृदतुम, समदरशीमुनिराव ॥ नेकअहैअभिमाननहिं, सरलसुशीलस्वभाव ॥ २९ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौपंचमस्कन्धेदशमस्तरंगः ॥ १० ॥

दोहा–सुनतरहूगणकेवचन, श्रीजड़भरतसुजान ॥ समाधानगुनितासुसब, बोलेवचनप्रमान ॥

ब्राह्मण उवाच।

दोहा–अहोअकोविदभूपतुम, वदहुसुकोविदवाद ॥ तुमजानहुनेकहुनहीं, ज्ञानिनकीमरयाद ॥
लौकिकसेवकस्वामीभाऊ। परमारथभाषहुनृपराऊ ॥ जेमुनिजानहिज्ञानविज्ञाना। तेअसकबहुँनकरहिंबखाना१॥
स्वर्गादिकहितजेमखकाजा। कह्योवेदमयजोमहराजा ॥ सोपरमारथसाधकनाहीं। जोनकर्मअरपैहरिमाहीं ॥ २ ॥
स्वप्नसरिसजबलौंसंसारा। मानतनहिंकरितत्वविचारा ॥ जबलौंतेहिवेदांततेज्ञाना। होइकबहुँनहिंसुखदमहाना३॥
जबलौंत्रिगुणवलितमनरहई। तबलौंरीतिनिरंकुशगहई ॥ तबलौंधर्महुऔरअधर्मा। करवावहिंमनजियसोकर्मा॥४॥
दोहा–विषयवासनायुतसदा, रहतविषयलपटान ॥ गुणप्रवाहमेंबहतमन, सकैनरोकिसुजान ॥ ५ ॥
इंद्रिएकादशभूतहुपांचा। इनमेंहैप्रधानमनसांचा ॥ जबगुणवशमनलह्योविकारा। देतजियहिंतबयोनिअपारा॥ ६ ॥
मनहींकेवशजियसुखदुखलहि।सदामोहमंदिरमहँनिवसहि॥संसृतिकारणकारजमाहीं।मनहिफिरावतजियहिसदाहीं७
गुणयुतमनजियबंधनकारण। सोइनिर्गुणजियबंधनिवारण ॥ जबलौंरहततेलअरुबाती। दीपशिखासधूमदरशाती॥
नशैतेलबातीकेसोई। आपुहिआपशांतसोहोई ॥ तैसाहिमनजबलौंगुणवशहै ॥ जियहिचखावतविषयनतसहै ॥
जबमनगुणविकारतजिदेई। जियहिकरततबहरिपदसेई ॥ ८ ॥
दोहा–ज्ञानेंद्रीकीपांचहैं, कर्मेंद्रीकीपांच ॥ अरुअपमानहुमनहिकी, वृत्तिएकादशसांच ॥
शब्दरूपर्शरूपरसगंधू। विषयज्ञानइंद्रीमतिसिंधू ॥ ग्रहनगवनरतिवचनविसर्गा। येकर्मेंद्रीविषयनवर्गा ॥
अरुअभिमानविषयतनजानो।यहिविधिताकोभेदबखानो॥ज्ञानीतनहिभिन्नजयमाने।अज्ञानीअभिन्नकरिजाने९।१०
द्रव्यस्वभावकर्मअरुकाला। औरपूर्ववासनाभुवाला ॥ इनतेइकइकवृत्तिनतेरे। लाखनकोटिनभेदनिवेरे ॥
वृत्तिभेदकृतहरिसबहोई। दूजोकरताअहैनकोई ॥ ११॥ त्रिगुणवलितजबमनहिनहोतो। तत्वज्ञानतबहोतउदोतो॥
दोहा–मायावशगोपितप्रगट, करतजेकर्मअनीश। अरुजोभोगतभोगबहु, सोसबदेखतईश ॥ १२ ॥
सोइआत्माहैपुरुषपुराना। नारायणयदुपतिभगवाना ॥ स्वयंप्रकाशअनादिअनंता।जगसाक्षीविधिशिवहुनियंता ॥
इसबजीवनअंतरयामी।रघुनायकयदुनायकनामी॥१३॥यथापवनसबथलसंचारी।तैसहिव्यापकजगतमुरारी ॥१४॥
ज्ञानपाययहदुस्तरमाया। जौलौंनहिंछूटतनृपराया ॥ तौलौंनहिंछूटतजगसंगा ॥ जौलौंषट्रिपुहोतनभंगा ॥
जौलौंआत्मतत्वनहिंजानै।भ्रमतरहतयहजगतमहानै॥१५॥जगततापदायकयहसाँचो।शोकमोहअरुलोभहिराँचो॥
दोहा–रागद्वेषभयवैरअरु, ममताकोसम्बन्ध ॥ कातिचंचलसबविषयके, बांधतविविधप्रबंध ॥
तबलौंअसमनकोरहत, जानतहैबुधनाहिं। तबलौंअतिशयलहतदुख, भ्रमतरमतहनमाहिं ॥ १६ ॥
सहजशत्रुअतिशयबली, ज्ञानचुरावनहार। जोसहजहिमानहुयही, करैअवशिअपकार ॥
हरिगुरुचरणउपासना, तिहिकरिकठिनकृपान। सावधानह्वैशत्रुमन, मारहुभूपसुजान ॥ १७ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौपंचमस्कंधेएकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥

दोहा-सुनतभरतवाणीसुखद, चरणनमेंशिरनाइ। कह्योरहूगणजोरिकर, अतिशयआनँदपाइ॥

रहूगण उवाच।

जैजैकारणधृतमुनिरूपम्। तुच्छीकृतविग्रहसंयूपम्॥ धृतावधूतवेषपरमंशम्। आत्मानंदस्वचिह्नप्रशंसम्॥
नमोममभ्रमनाशनस्वामिन्। वेदवादरतनित्यमकामिन्॥ नमोनमोद्विजचिह्नवेषधर।उत्तमनिजमहिमागोपनकर॥
नौमिसुदेवकृपालस्वभावम्। प्रगटतधरणीपरमप्रभावम्॥ रक्षकृपालोकृतापराधम्। शिबिकाहेतदत्तबहुबाधम्॥
स्वजनागस्सहतेहरिदासा। जोहरिप्रेमानंदप्रकासा॥ पाहिपाहिपरमार्तविनाशिन्। निजसेवकपरतंत्रप्रकाशिन्॥

दोहा-हेकरुणाकरममशिरसि, चरणाम्बुजंनिधेहि॥ संसाराब्धिनिमग्नमति, दीनंमामवधेहि॥ १॥

जैसेज्वरपीडिततनकाहीं। जिमिऔषधिसुखदेतसदाहीं॥ तृषातपितजिमिसुरसरिनीरा।तिमितववचनमाहगंभीरा॥
यहिकुदेहमेंअहिअभिमाना। डसिकेहरयोप्राणसमज्ञाना॥ गिरागारुडीरावरपाई। सोविषउतरगयोदुखदाई॥ २॥
निजसंशयपुछिहौंमैंपाछे। पैजोवचनकह्योमुनिआछे॥ तिनकोअर्थपरयोनहिंजानी। तातेसुननसोमतिललचानी॥
सोकरुणाकरदेहुबताई। जातेसंशयसबमिटिजाई॥३॥ कह्योआपजोजगव्यवहारा। हैनवस्तुकछुकियेविचारा॥
सोसबसत्यपरैदृगदेखी। तेहिअसत्यकैसेप्रभुलेखी॥ ४॥

दोहा-सुनतरहूगणकेवचन, कहमुनिवरमुसकाइ। बोल्योवचनविज्ञानप्रद, जेहिनृपसंशयजाई॥

जडभरत उवाच।

भूविकारजिमिअहैपषाना। भूविकारातिमितनहुबखाना॥ जोपषानकहभारनपीरा। तौकैसेदुखभारशरीरा॥
कौनहुहेतचलततनजानो। अचलपषानभेदयहमानो॥ अंगीभिन्नअंगतेनाहीं। कहौभारभूपतिकेहिकाहीं॥
जोअँगभारअंगकहकहहू। तौविवेकअसकसनहिंगहहू॥ पगपरगुलफगुलफपरजानू। जानूपरऊरूकहँमानू॥
ऊरूपरकटिकटिपरछाती। छातीउपरकंधरिपुघाती॥ कंधनपैग्रीवापुनिशीशा। कहौभारकेहिकाहमहीशा॥ ५॥

दोहा-कंधनपैशिविकाधरी, तापरतुमअसवार। होहिजोशिविकहिभारतो, होइतनहुकोभार॥

हौमदांधतुमसिंधुनरेशा। तातेतुमकहँहोतअँदेशा॥६॥ कहतअहोहमपालहिंराजू। भाषतअसलागतनहिंलाजू॥
धरिबापुरेकहारनकाहीं। दीजतदुखकिमिशिबिकामाहीं॥७॥ स्थावरजंगमजौनलखाहीं।महितेभयेमहीमिलिजाहीं॥
महीभिन्नकछुनाहिंनृपराई। नामरूपभरभेदलखाई॥ ८॥ महीहोतपरमाणुस्वरूपा। यातेसोउनित्यनहिंभूपा॥
प्रकृतिरूपपरमाणुहुअहही। तातेकविजननित्यनकहही॥ ९॥

दोहा-दूबरमोटोबृहदलघु, कारणकारजजोइ। सोसबमायाकृतअहै, यहजानेसबकोइ॥

द्रव्यस्वभावकर्मअरुकाला। मायानामजानमहिपाला॥१०॥ अंतररहितएकसबमाहीं। सत्यब्रह्मपरमार्थसदाहीं॥
शुद्धशांतहैस्वयंप्रकासा। भगवतशब्दजाहिमहँभासा॥ सिगरेकविअसकरहिंउचारा। ऐसोहैवसुदेवकुमारा॥
विनतेहिकछुकारजनहिंहोई। मायाईशसदाहैसोई॥ ११॥ यहजोतुमसोंज्ञानबखाना।सोनहिंमिलतकियेतपदाना॥
यज्ञकियेअरुपढ़ेवेदहु। मिलैनकीन्हेव्रतसखेदहु॥ वर्षासहेकियेजलशयना। तापेपंचहुअगिनामिलैना॥

दोहा-विनधारेनिजशीशमें, संतचरणरजकाहिं। भक्तिज्ञानरघुनाथको, मिलहिरहूगणनाहिं॥ १२॥

कृष्णकथासंतनमुखगाई। विषयकथारुचिदेतनशाई॥तिहिंनिशिवासरसुनहिजोकोई। तासुप्रीतियदुपतिपदहोई॥
प्रीतिजोभैयदुपतिपदराजा।पुनिनकरनकोकौनेहुकाजा॥बिगरहियदपिकुसंगहुपाई।कृष्णकथापुनिदेतबनाई॥१३॥
पूरवरहेभरतमहराजा। तजेसंगसबदुखददराजा॥ यदुपतिपूजनमेंमनलाई। वस्योविपिनमहँभवनबनाई॥
पैअभागवशयकमृगमाहीं। लग्योनेहछूट्योपुनिनाहीं॥ छूटिगयोहरिपूजनसिगरो। बनोकाममेरोसबबिगरो॥

दोहा-मुक्तिनाथमेंमैंमरयो, मृगहीमेंमनलाइ। तातेमैंमृगहीभयो, कालिंजरमोंजाइ॥ १४॥

हरिपूजनप्रभावअतिपाई। पूरवजन्मसकलसुधिआई॥ तबमैंमुक्तिनाथमेंजाई। दियोमृगातनतुरतविहाई॥

लह्योजन्मब्राह्मणकेगेहू । केहुसोकियोंनफेरसनेहू ॥ हरिपूजाप्रभावतेमेरी । भूलीनहिंसुधिपूरबकेरी ॥
तातेमेंजगकाहिडेराई । फिरहुँअकेलेहरिमनलाई ॥ १५ ॥ सुनहुरहूगणतुमहुसुजाना । संतसंगगहिज्ञानकृपाना॥
काटहुसकलमोहकीफांसी । होहुआशुअबआनँदरासी ॥ कृष्णकथासुनियेदिनराती । भवनिधिपारहोहुसबभाँती॥
दोहा–कृष्णकथासुनिकेसदा, कृष्णप्रीतिअतिठानि ॥ उतरेसज्जनभवजलधि, पावतभेसुखखानि ॥ १६ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजासिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौपंचमस्कंधेद्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

दोहा–फेरिरहूगणनृपतिपै, भरतकृपाअतिकीन ॥ ताकेअतिसंबोधहित, भवाटवीकहिदीन ॥

ब्राह्मण उवाच ।

जगमोहनीजौनहरिमाया । प्रवृतिमार्गसोजियहिलखाया ॥ सोईजीवबनिकजगमाहीं । रजसततमकेकर्मकराहीं ॥
करतेधनसुखहितव्यापारा । भवाटवीमेंभ्रमतअपारा ॥ भावनभ्रमतलह्योसुखनाहीं ॥१॥लूटच्योतेहिषटचोरतहांहीं॥
रह्योतासुगाफिलरखवारा । तातेलूटगयोधनसारा ॥ सोवततेहिसियारबसिलावे । जैसेवृकामेषधरिलावे ॥ २ ॥
बझेलतातरुबनवनमाहीं । मशकदंशदंशहितनकाहीं ॥ कहुँगंधर्वनगरमहँजाई। तामेंजातभुलायलुभाई ॥
दोहा–कहूँशीतकोभीतिभरि, निरखिप्रेतमुखज्वाल ॥ तापनहितचलिजातसो, जेहिभक्षतवेताल ॥ ३ ॥
निवसनहितजलहितधनहेतू । भ्रमतविपिनमहँकुमतिनिकेतू॥कबहुँबडेबौंडरमहँपरई।होतदिशाभ्रमद्गरजभरई॥४॥
झिल्लीगणबोलहिंचहुँओरा । लगतशूलसमश्रवणकठोरा ॥सनमुखबोलहिघोरउलूका।तिनकीसहिनजातकटूकूका ॥
क्षुधितअपावनतरुतरजावै।प्यासोमृगमरीचिलखिधावै॥५॥गिरतधायकहुँसरितसुखानी।व्याकुलहोततहांविनपानी॥
अतिशयक्षुधितनतनसंभारा । चहहिपरसपरलेनअहारा ॥
दोहा–कहुँदमारिमहँजरतहै, लूटहिंधनकहुँयक्ष ॥ ६ ॥ डांडलेतकहुँशूलधर, पावतशोकप्रत्यक्ष ॥
कहुँगंधर्वनगरपुनिआवे । तहांमुहूरतभरसुखपावे ॥ ७ ॥ कहुँकंटककंकरमगगडई । छीलतपगपावतदुखबडई ॥
शैलउतंगचढनसोंचाहै । चढिनहिंजातघोरपगमाहै ॥ कहुँडेरामहँलागतआगी । बंधुनपैकोपतदुखपागी ॥ ८ ॥
कहुँबोलतअजगरमुँहवाई । जातसकलसुधितासुविहाई॥कहूँडसहिंकारेतिहिनागा।अंधकूपकहुँगिरतअभागा ॥ ९॥
कहुँमधुहेरनजातोधाई । काटहिंमधुमाखीलपटाई ॥ भागविवशनेकहुमधुपावे । ताकोकोईआनछुडावे ॥ १० ॥
दोहा–वर्षाआतपशीतहू, सहतसकैनबचाइ ॥ लेनदेनकेकरतमें, ठगतवैरबढिजाइ ॥ ११ ॥
जबधनकछुनरह्योघरमाहीं । भोजनवसनमिलतकहुँनाहीं॥मांग्योतदपिकहूँनहिंपायो । तबताकोधनरातिचुरायो ॥
जाहिरभयेताहितहँबांधी । राख्योअंधकोठरीधांधी ॥ १२ ॥ भागवशातछूटिजोगयऊ । लेनदेनतैसहिपुनिठयऊ ॥
करनपरस्परलग्योविवाहा।यहिविधिलहतपरमदुखदाहा॥१३॥जोमरिगयेताहितहँडारी।भाग्योलैनिजबालकनारी॥
कबहुँननिकसततेहिवनतेरे । भ्रमतरहदुखलहतघनेरे॥१४॥तेहिवनमहँक्षत्रीकहुँरहही।तेदिग्गजनजीतियशलहही ॥
दोहा–तेउपरस्परवैरकरि, निजधरणीकेहेत ॥ लरहिंमरहिंसंग्राममहँ, तजहिंनविपिननिकेत ॥ १५ ॥
तेहिकाननमहँसदाभ्रमतहै । कहूँलतागहिलोभिरमतहै ॥ लताउपरजेबैठिविहंगा । तिनहिंगहनहितकरतउमंगा ॥
बाघसिंहदेखहिवनमाहीं । तिनकोअतिशयवनिकडेराही॥काककंकबककेढिगजाई।वचनहेतबहुकरतमिताई॥१६॥
काककंकतिनकोठगिलेही । निजग्रहतेनिकारद्रुतदेही ॥ तबपुनिजातहंसकेपासा । तहँपुनिअपनोलख्योसुपासा ॥
तहँतेभगिमर्कटढिगजाई । रम्योबाघकीभीतिभुलाई ॥ लखिमर्कटकीचंचलताई।आपउखेलहितहँसुखपाई ॥ १७ ॥
दोहा–सुतदारनतेसहितसो, सीरीवृक्षनुछाहँ ॥ बैठतविहरतरैनादिन, परममुदितमनमाहँ ॥
तहांबाघपहुँच्योजबजाई । तबतरुमहँचढिगयोडेराई ॥ कूद्योजबहिकंदरामाहीं । नीचेलख्योमत्तगजकाहीं ॥

बीचहिकठिनलताइकगहिकै।पायोमहाशोकउररहिकै॥१८॥कैसहुछूटगयोतहँतेजब।सकलकर्मसोइकरनलग्योतब॥
यहिविधिभवाटवीमहँसोई। भ्रमतरहततेहिपारनहोई॥ निकसनकीउपायनहिंजाने। लोभीरहतलोभलपटाने१९॥
तातेतुम्हहुरहूगणराजा। छोडिसकलसंसारिककाजा॥ सकलजगतसोंवैरविहाई। होहुसुहृदप्राणिनसुखदाई॥

दोहा-हरिपदप्रीतिकुठारगहि, भवकाननकहँकाटि॥ करिमारगकढ़िजाहुद्रुत, उरअनंदअतिपाटि॥२०॥

भवाटवीकोवर्णनसुनिकै। भूपरहूगणनिजमनगुनिकै॥ नायभरतचरणनमहँशीशा। भन्योवचनअसकुरुकुलईशा॥

रहूगण उवाच।

सकलयोनितेमनुजयोनिवर।जाकोललकहिअमरसुष्टिकर॥लह्योजोमानुपतनमुनिनायक।तौबाकीकहपावनलायक॥
मनुजयोनिमहँआपुसमाना।मिलतजियहिहरिदाससुजाना॥भयोजोजगकोसज्जनसंगा।तौसुधरच्योद्रुतसकलप्रसंगा २१
जोतुवपदरजधरैसदाहीं। होयभक्तितेहिअचरजनाहीं॥ एकमहूरततुवसँगपाई। गयोमहाअविवेकनशाई॥२२॥

दोहा-युवाबालवटुवृद्धजे, विप्रदासश्रीधाम॥ विचरहिंधरिअवधूततन, पुनिपुनितिनाहिंप्रणाम॥

तिनकेवंदनकियेमहीपा। पावहिमंगलज्ञानप्रदीपा॥२३॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिहेउत्तराकुमारा। भरतब्रह्मऋषिपरमउदारा॥ नृपतिरहूगणकहँविधिनाना। ज्ञानविरागहुकृपानिधाना॥
देतभयोमुनिमहाप्रभाऊ। जेहिदुर्लभभाषहिनृपराऊ॥ पुनिजडभरतचरणमहँशीशा। नायरहूगणमुदितमहीशा॥
मुनिसोंनिजअपराधक्षमायो।सोअपराधैनहिंमनलायो॥पुनिजडभरतमुदितमुनिराई।विचरनलग्योधरणिसुखछाई २४
कपिलनिकटसोनृपतिसुजाना। जातरह्योसीखनवरज्ञाना॥

दोहा-सोबीचहिजडभरतसों, पायोज्ञानविज्ञान॥ धन्यधन्यनिजभागगुनि, घरकोकियोपयान॥

देहगेहछोड्योममकारा। अहंकारहूतज्योउदारा। सुतकहँराजसौंपिमतिमाना। विचरनलाग्योभरतसमाना॥
हेकुरुपतिहरिदासनकेरो। देखोयहप्रभावघनेरो॥क्षणहुजेहरिसँगसेवनकरहीं। तिनहिंसंतयहिविधिउद्धरहीं॥२५॥
सुनिशुककेअसवचनउदारा। बोलतभोअभिमन्युकुमारा॥

राजोवाच।

भरतभवाटविजोयहगाई। सोमोहितुमसबदियोसुनाई॥ ताकोअर्थपरच्योनहिंजानी। गुतवचनजानहिंमुनिज्ञानी॥
तातेनाथसहितविस्तारा। भवाटवीजोकहीअपारा॥

दोहा-सुगमअर्थसबप्रगटअब, करिकेकृपामुनीश। मोकोदेहुसुनाइसब, मैंपदनावहुँशीश॥२६॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ पंचमस्कंधेत्रयोदशस्तरंगः॥१३॥

दोहा-सुनतपरीक्षितकेवचन, श्रीशुकदेवसुजान॥ महामोदमनमानिकै, लागेकरनबखान॥

श्रीशुक उवाच।

अहैंवनिकजेजीवनरेशा। मायावशभववनहिंहमेशा॥ फिरतरहहिंकरिधर्मअधर्मा। पावहिंसदाअशर्महुशर्मा॥
अतिशयदुस्तरमालिनअपारा। जनुतमरजयहिमहँबहुवारा॥ कियेविनाहरिगुरुसेवकाई। कोऊपुरुषपारनहिंपाई॥
पंचज्ञानइंद्रीअरुइकमन। येषटचोरप्रबलनृपछनछन॥१॥कृष्णभजनधनहरैविशेषी। साँच्योजोश्रमकरिशुभलेषी॥
बरवशजियकहविषयलगाई। कृष्णभक्तिद्रुतदेहिनशाई॥ रक्षकवृद्धिहोतितहँभोरी। तापरचोरकरहिंद्रुतचोरी॥२॥

दोहा-सुतदारादिकुटुंबजे, तहँइअहैशृगाल। चहुँकितनिशिवासरहु, धनहितखैंचहिखाल॥३॥

जबलौंहियवासनानजाई। तबलौंऊर्मिनमिटहिबनाई॥ तिमिजबलगिनबीजगलिजाहीं। तबलगिजामहिखेतनमाहीं॥

जिमिभाजनतेंगिरेकपूरा। सौरभतदपिरहतपरिपूरा ॥ ऐसेभवनतजेमहिपाला । गृहवासनानजातविशाला ॥
पुनिवासनाकर्म्मउपजावै। वढिभवविपिनवृक्षसमभावै ॥ भाजनतपेगंधक्षयहोवै। तिमिज्ञानाग्निवासनाखोवै ॥४॥
शलभविहँगमूपकठगचोरा। रहहिंप्राणसमधनचहुँओरा ॥ फिरतरहतजनयहिसंसारा। बडेविरागनहींममकारा ॥
दोहा–हैअनित्ययहजगतनृप, परतानित्यसमदेखि ॥ मृगतृष्णासमलखिविषय, धावतजनसुखलेखि ॥५॥
मैथुनभोजनऔरहुपाना। याहीमेंजनरहतभुलाना ॥ ६ ॥ प्रेतवदनजोभाष्योज्वाला। सोसुवर्णजानोमहिपाला७॥
तासुहेतधावतजनरहतो । कबहुँनउरसंतोपहिगहतो ॥ ताकेहितकहुँवधह्वैजावै । कहुँअपमानअनेकनपावै ॥
करनहेतजीविकामहाई। भ्रमतरहतकरिजतनउपाई ॥८॥ अहैबवंडररूपीनारी। तेहिवशभ्रमतरहतव्यभिचारी ॥
तिहिसुखनिरखिपरमसुखमानै। रहतोतेहिसनेहलपटानै ॥ दिगपालनकोजानतनाहीं।कर्मसाक्षिजेकहहिंसदाहीं ९॥
दोहा–मृपाविषयजान्योयदपि, तदपिनछोडततााहि ॥ मूलअहैतिहिवासना, तजतकबहुँहियनाहि ॥ १०॥
कोउप्रत्यक्षकरहिवहुनिंदा। कोउपरोक्षमहँनगरवासिंदा ॥ जिनकेवचनशूलश्रवणनकोतेउलूकझिल्लीभवबनके॥११॥
अहैंकृपणधुतवेषउदारा। तेहैंजगतकुवृक्षअपारा ॥ तिनढिगजातनकछुधनपावै। तेदोउजीवनभृतककहावै ॥१२॥
सूखीसरितासमपाखंडी।तिनसँगउभयलोकसुखखंडी॥करहिजोपाखंडिनसँगजाई।उभयलोकतिहिंजातनशाई॥१३॥
जबधनकछुनवराहिराहिजावै।तवकुटुंबकोधनलैखावै॥१४॥घरहैदुखदायकयहभारी।जरततााहिवशशोकदवारी॥१५॥
दोहा–कह्योयक्षजेविपिनमें, सोईजानहुभूप ॥ लखिकेकहुँअपराधनिज, लेतलूटधनरूप ॥
मत्तसरिसतहँरहतदुखारी।सोचकरतबीततनिशिसारी ॥१६॥ कुलगंधर्वहिनगरसमाना।तिनतेकबहुँलह्योसनमाना ॥
तीक्षणभरकोउअतिसुखमानै।हैअनित्ययहकुमतिनजानै१७कह्योजोप्रथमचढ़नगिरिचहतो।लगिकंटककंकरमगगडतो॥
तेईगृहगिरिकारजभारी। कंकरकंटकविघनविचारी ॥ करनलग्योगृहकारजकोई।सिद्धिनहोतदुखीतवहोई ॥ १८॥
क्षुधाअनलजारतनिशिवासर। पुनिपुनिकोपतनिजकुटुंबपर ॥ १९ ॥
दोहा–निद्राअजगरसांपिनी, लीलिलेतिजनकाहिं ॥ तवजनकेतनमेंनृपति, सुधिबुधिरहतीनाहिं ॥ २० ॥
श्यामसर्पदुर्जनहैंनाना। तिनतेजनपावतअपमाना ॥ तामेंव्यथितरैनदिनरहतो। कबहुँननयननींदनिशिलहतो ॥
अंधकूपहैयहसंसारा। तामेंगिरतभरोदुखभारा ॥ २१ ॥ हैमधुसमपरधनपरदारा। करतामिलनहितयत्नहजारा ॥
मधुमाखीहैभूपतिदूता। देखिहरतपरधनमजबूता ॥ मारहिधरिबंधनमहँबांधी। राखहिकैदकोठरीधांधी ॥
जियतभोगियहिविधिदुखनाना।मरेपरतहैनरकनिदाना॥२२॥ प्रवृतिकर्मजगजन्महिहेतू।निवृतकर्मसुदमोदनिकेतू॥
परधनहरतलियोकोउदेषी। जीवघाततबकरैविशेषी ॥ २३ ॥
दोहा–अथवाभूपतिभटसकल, धनसबलेहिंछुटाइ ॥ कशामारिद्वैपीठपर, जीवहिदेहिंबचाइ ॥ २४ ॥
शीतवातआतपहुअपारा। अरुत्रितापनरेशउदारा ॥ सहतरहतनहिंसकतनिवारी। यहिविधिदुखीजीवसंसारी२५॥
कौडिहुहेतपरस्परलरहीं।सुतपितुकोपितुसुतसंहरहीं॥२६॥सुखदुखरागद्वेषअभिमाना॥शोकलोभमदमोहमहाना॥
भयईर्षामत्सरअपमाना। क्षुधापिपासाव्याधिविधिनाना॥जननमरणअरुभूखबुढ़ाई।येउपाधिजगमहँदुखदाई ॥२७॥
देवहुमोहकरावनहारी। ऐसीहोतिकठिनयहनारी ॥ सोनारीभुजलतापसारी। लपटीजवतनक्षणसुखकारी ॥
दोहा–ताहीक्षणभूल्योसकल, धर्मविवेकविज्ञान ॥ विहरनाहितविचरनलग्यो, नितनितनयेमकान ॥
श्रमकरिजोधनालियोकमाई। सोतियकोदीन्ह्योवरियाई ॥ भयेसुतासुतजबवरमाहीं। प्रमुदितहोतताकितिनपाहीं॥
जिनमेंनिशिदिनरहतभुलाना।कबहूँनहिंसुमिरतभगवाना॥जियतहिसहतकलेशकठोरा।मरेनरकपावतअतिघोरा २८
अणुतेद्वैपरार्द्धपर्यंता। कालचक्रभाषहिमतिवंता ॥ भ्रमतरहतकरिवेगघनेरो। हैपरतंत्रकृष्णहीकेरो ॥
लैपिपीलिकाऔविधिताई। प्राणिननाशतहैवरियाई ॥ तौनकालकहँडारिसबप्रानी। यदुपतिशरणछोडिअभिमानी॥
दोहा–काककंकबकगीधअरु, क्षुद्रदेवतनकाहिं ॥ भजतरहैमतिमंदनित, बचहिकालतेनाहिं ॥ २९ ॥
भैरवभूतपरेतभवानी। जबइनतेरक्षानहिंजानी। हंसरूपजेसाधुसुजाना। तिनकेढिगसोकियोपयाना ॥

पैवैष्णवमारगजियकाहीं । नेकहुलग्योनीकतिहिनाहीं ॥ तबपुनिवानरसरिसशूद्रकुल ।आयोपुरुषपायदुखसंकुल॥
तहँशूद्रनसमसबपरिवारा । पालनलग्योकरतव्यापारा ॥३०॥ रह्योनतहँउपदेशककोई।जसइच्छातसविहरतसोई ॥
निरखतबालकतियमुखताको।बीत्योकालविषयसुखछाको।दियोमरणसुधिसकलभुलाई।जान्योतियसुतअतिसुखदाई

दोहा--जिमिकपिद्रुममहँखेलबहु, खेलतरहतसदाहिं । तिमिविहरतसबतियनहम, वसतगृहीगृहमाहिं॥३२॥

जिमिवानरमृगपतिभयपाई।कूदतगिरचोकंदराजाई।तैसहिमीचभीतिवशजीवा।रोगदरीमहँदुखितअतीवा ॥ ३३॥
शीतवातअतिशयतिहिवेरचो।जबसोमरचोकालकोप्रेरचो३४तबधनविभवऔरपरिवारा।ताकेसंगनकोउसिधारा३५
गहियमदूतनरकदियडारी । विविधभाँतियातनापसारी॥अथवापुण्यकर्मवशसोई।वस्योजाइस्वर्गहिमुदमोई ॥३६॥
छूटतजन्ममरणतेहिनाहीं।यहिविधिजनमतमरतसदाहीं ३७जनमिफेरकरतोसोइकर्मा।करतकतहुँनहिंभगवतधर्मा॥
जेमरिगयेतिनहिंबिसरायो । जेरहिगयेतिनहिंमनलायो ॥

दोहा--कोहतसोहतसोचतो, रोदतमोदतकुत्र । कबहुँनध्यावतकृष्णपद, निरतनारिअरुपुत्र ॥

कृष्णभजनविनसुनुकुरुराई।जननमरनकैसहुनहिंजाई॥३८॥ जेमुनिशांतसुशीलसुभाऊ।तेजानहिंयदुनाथप्रभाऊ ॥
कुमतिपुरुषसज्जनपथमाहीं।तिअभागवशगमनतनाहीं॥३९॥दिग्गजविजयीनृपबलवाना।जिनकोपूरुबकियोबखाना॥
तेसबमरिकेहेमहिपाला । पुहमिहेतकरिवैरविशाला ॥ यामेंइतनीअहैहमारी । ऐसीबातैंविविधउचारी ॥
सैनजोरिकेकरैलराई । धरणीहितजियदेहिगमाई ॥४०॥ जहँयोगीजनसुखितासिधारे । तहँकोकछुनहिंकरतविचारे॥

दोहा--जोनरहूगणकोभरत, भवाटवीकहिदीन । ताकोसिगरोअर्थमैं, तुमकोवरणनकीन ॥ ४१ ॥

भरतभूपकरसुयशअपारा।ऐसोजगकविकरहिउचारा ॥ ऋषभदेवसुतकीममताई । मनहुँतेकोउनमहीपतिपाई ॥
जिमिमक्षिकागरुड़प्रभुताई।पावहिनहिंकरिकोटिउपाई॥दुस्त्यजसुहृदराजसुतदारा।मलसमत्याग्योऋषभकुमारा ॥
ज्वानीमहँविभूतिसबत्यागी।वनबसिभयोकृष्णअनुरागी॥४३॥वासवतेवरविभवबड़ाई।तियसुतसुहृदराजप्रियभाई ॥
त्यागबतिनहितअनुचितराजा।प्रेममगनहैजेयदुराजा॥हरिप्रेमिनमोक्षहुलघुलागै।सेवतहरिनिशिदिनबड़भागै ॥४४॥

दोहा--धर्मसांख्यमखयोगपति, नारायणहिप्रणाम । मृगहूतनमेंयहकहत, गयोजुप्रभुकेधाम ॥
हरिकेभजनप्रभावते, भरतभूपकहभूप । सबजन्मनिकीसुधिरही, पायोजानअनूप ॥ ४५ ॥
भरतभूपकोसुयशयह, प्रीतिसहितजोकोइ । सबैसराहैंसुखकहैं, तासुमुक्तिहठिहोइ ॥
धनयशआयुषमोदबहु, होयजोनिजमनकाम । सविधिहरिहिपूजहिसकल, नँदनंदनघनश्याम ॥४६॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजासिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौपंचमस्कंधेचतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

शुक उवाच ।

दोहा--भरतभूपकोसुतसुमति, कह्योजोमैंनरनाह । ऋषभदेवकीरीतिगहि, विचरचोसोमहिमाँह ॥

पाखंडीसिगरेतिनकाही । मान्योबौधदेवतिनकाही॥१॥ रहीवृद्धसेनातिहिनारी । तासुदेवजितसुतयशकारी ॥ २ ॥
ताकीभईआसुरीवामा । देवगुप्तताकेबलधामा ॥ धेनुमतीताकीमहरानी । परमेष्ठीसुततेहिबलखानी ॥
परमेष्ठीतियभइसुवर्चला । तासुपुत्रप्रतीहजितकला ॥३॥ भयोब्रह्मज्ञानीसोराजा । ज्ञानसिखायोप्रजनसमाजा ॥
आपहुध्यानकियेहरिकेरो।करचोभूपआनंदघनेरो ॥४॥ ताहूकोसुवर्चलावामा । कुरुपतिरहीअनूपमवामा ॥

दोहा--ताकेतीनकुमारभे, मखकरताविख्यात ॥ प्रतिहर्ताप्रस्तोतऊ, अरुतीजोउदगात ॥

प्रतिहर्ताकीअस्तुतिनारी । ताकेद्वैसुतभेमतिधारी ॥ जेठोअजभूमालघुभाई ॥ ५ ॥ भूमातियऋषिकुल्याभाई ॥
भूमाकेउद्गीथकुमारा । रहीदेवकुल्यातेहिदारा ॥ ताकोभयोपुत्रप्रस्तावा । जाकोयशजगतीतलछावा ॥

ताकीरहीनियुत्सानारी। ताकेविभुभोसुतयशकारी॥ विभुभूपतिकीरतिमहरानी। सोपृथुसेनजन्योवलखानी॥
नासुअकूर्तनारिललामा। ताकेनक्तपुत्रवलधामा॥ रहीनक्तकीदुतिजोरानी। ताकोभयोपुत्रविज्ञानी॥

दोहा--जगमेंजाहिरहोतिभो, गयनामकमहराज। उज्ज्वलयशजाग्योजगत, दानिनकोसिरताज॥

कृष्णकलाभेगयमहराजा। अगञ्योपुहमीपालनकाजा॥६॥सहितधर्मनिजपुरजनकाहीं। लालनपालनकियोसदाहीं
यथायोगदंडहिनृपदन्ह्यो। करिबहुमखहरिअर्पणकीन्ह्यो॥ करतरह्योसंतनसेवकाई।तातेकृष्णभक्तिकहँपाई॥
भयोअमलमनशीलअपारा। छूट्योअहंकारममकारा॥ हरिअनुभवयद्यपिह्वैगयऊ। पैनृपकेअभिमाननभयऊ॥
पाल्येपुहुमिभूपबहुकाला॥७॥गावहिंकवियशसुयशविशाला॥८॥कौनभूपगयभूपसमाना।भयोजोविनाकलाभगवाना॥

दोहा--कर्तासिगरेयज्ञको, पालकधर्मप्रयाद॥ धनमेंधनदसमाननृप, ज्ञानिनजिमिप्रहलाद॥

कियोसदासंतनसेवकाई। बुधसमाजमहँलहीवडाई॥ ९॥ दक्षराजकीसुतासोहाई। श्रद्धासत्यहुदयामिताई॥
येसबगयकोकियअभिषेका।सुरसरिजललैसाहितविवेका॥महिपूरच्योपरिजनमनकामा।शशकलखिगयनृपबलधा
यद्यपिनृपकामनानकीन्हे। तद्यपिवेदकर्मफलदीन्हे॥ रणशरपूजितशत्रुसमाजा। दीन्हेबलिनिजजीवनकाज
छठयोअंशयज्ञकोविप्रा। दीन्ह्योलहिसतकारहिक्षिप्रा॥११॥ गयकेमखमहँवासवआई। सोमपानकरिगयोअघा

दोहा--श्रद्धायुतमयफलसकल, नृपहरिअर्पणकीन्ह॥ प्रभुप्रसन्नह्वैप्रगटके, निजकरतेलयलीन॥ १२॥

देवदनुजतिरयकहुअनंता।तृणतेलेविरंचिपरयंता॥ जिनतोषेसबतोपितहोहीं। तेहरिकह्योतोषभोमोहीं॥ १३।
गयकीरहीजयंतीरानी। ताकेतीनसुवनबलखानी॥ जेठचित्ररथसुबुधिप्रवोधन। दूजोसुगतितृतियअवरोधन
ऊर्णाचित्ररथहिकीनारी। भोसंम्राटतासुबलभारी॥ १४॥ ताकेरहीउत्कलारानी। ताकेभोमरीचिबलखानी
बिंदुमतीमरीचिकीदारा। बिंदुदमानभोतासुकुमारा॥ बिंदुमानकीसरधाप्यारी। ताकोसुतमधुभोयशकारी॥

दोहा--सुमनसताकीतियरही, भयोवीरव्रततासु॥ भोजातियताकीभई, मंथुप्रमंथूजासु॥
मंथुनारिसत्याभई, भौवनतासुकुमार॥ १५॥ भौवनकीतियदूषना, त्वष्टानामउदार॥
त्वष्टानारिविरोचना, ताकेविरजसपूत॥ नामविषूचीतासुतिय, ताकेशतसुतपूत॥
अरुदुहिताताकेभई, सुंदरगुणनिअगार॥शतसुतमेंजेठोभयो, शतजितनामकुमार॥
चल्योप्रियव्रतवंशवर, विरजहिलौंजगमाहिं॥ भयोविभूषणवंशको, जिमिहरिसुरगणकाहि॥१६॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ पंचमस्कंधे पंचदशस्तरंगः॥ १५॥

दोहा--सुनिप्रियव्रतकोवंशसब, तहांपरीक्षितराज॥ कह्योफेरशुकदेवसों, मध्यमुनीनसमाज॥

राजोवाच।

प्रथमहिहेशुकदेवसुजाना। भूमंडलसंक्षेपबखाना॥ जहँलौंदिनकरकेकरजाहीं। जहँलौंचंद्रतारदरशाहीं॥
सोऊतुमसंक्षेपबखान्यो। नहिंविस्तारपरचोमोहिंजान्यो॥१॥प्रियव्रतरथकोचक्रप्रचंडा। कियोसातहूंसिंधुअखंडा॥
सातसिंधुतेसातहुद्वीपा। होतभयेतहँमुनिकुलदीपा॥ यहौकियोसंक्षेपउचारा। अबऐसोमनभयोहमारा॥
भूप्रमाणअरुद्वीपहुलक्षण। कहियेयुतविस्तारविलक्षण॥२॥प्रथमथूलमहँमनहिलगावै।पुनिहरिकोसूक्षमवपुध्यावै॥

दोहा--तातेप्रथमहिस्थूलवपु, जाननचहौमुनीश॥ याकेपाछेपूछिहौं, उत्तमवपुजगदीश॥

यहभूमंडलयुतविस्तारा। वरणहुअबहेव्यासकुमारा॥३॥कुरुपतिमहाराजकीवानी। सुनिबोलेशुकअतिसुखमानी॥

श्रीशुक उवाच।

महाराजअभिमन्युकुमारा। हरिमायागुणकोविस्तारा॥ लहैविधिहुकीआयुदाई। तबहुँनसकलसकतजनगाई॥

येजोहैभूगोलप्रमाना । ताकोमैंअवकरहुँबखाना ॥ ४ ॥ अहैलक्षयोजनविस्तारा । सुभगपद्मिनीपत्रअकारा ॥
कमलसरिसमहिकोशप्रदीपा । मध्यकोशहैजंबूद्वीपा ॥ ५ ॥ जंबूद्वीपमाहँनवखंडा । तिनकीविस्तरकहौंअखंडा ॥
दोहा--नवनवयोजनसहसनृप, यकयकखंडप्रमान ॥ मर्यादानवखंडकी, हैगिरिआठमहान ॥ ६ ॥
येनवखंडनकेमधिमाहीं । जानहुखंडइलावृतकाहीं ॥ खंडइलावृतकेमधिभूपा । कनकाचलहैपरमअनूपा ॥
सकलधराधरकेरअधीशा । योजनलक्षहिऊँचमहीशा ॥ जिमिकर्निकाकमलमधिभावे । तिमिधुरनीमधिमेरुसोहावै ७ ॥
नृपबत्तिसयोजनहिहजारा । मेरुउपरकोहैविस्तारा ॥ योजनषोडशसहससुमेरा । गडोधरणिमहँनिगमनिबेरा ॥
भूपसहसयोजनचौरासी । खुलोमेरुहैपरमप्रकासी ॥ खंडइलावृतउत्तरमाहीं । औरहुतीनगिरीशसोहाहीं ॥
दोहा--नीलसेतअरुशृंगवत, एकतेउत्तरएक ॥ रम्यकऔरहिरण्यकुरु, खंडत्रयादविवेक ॥
पूर्वतुंगतीनहुगिरिजानो । पश्चिमपूर्वसिंधुलगिमानो ॥ तेतीनहुगिरिकीचौडाई । द्वैद्वैयोजनसहसगनाई ॥
तीनहुगिरिकीनृपलंबाई । यकयकतेदशांशकमिआई ॥ ८ ॥ खंडइलावृतदक्षिणओरा । तीनशैलअभिमन्युकिशोरा ॥
निषधहिरण्यकूटहिमवाना । लंबाईनीलादिसमाना ॥ दशसहस्रयोजनकेतुंगा । कहहुखंडमरयादप्रसंगा ॥
प्रथमअहैहरिवर्षउदंडा ॥ पुनिकिंपुरुषसोभारतखंडा ॥ तीनहुखंडनकीमरयादा । तीनहुगिरिहैंयहश्रुतिवादा ॥ ९ ॥
दोहा--इलावर्त्तकेपश्चिमे, माल्यचारगिरिजान ॥ इलावर्त्तकेपूर्वमें, गंधमादनैमान ॥
द्वैहजारयोजनचौडाई । दोउगिरिकोजानहुकुरुराई ॥ दक्षिणनिषधगिरिउत्तरनीला । दोउगिरिलंबेनृपशुभशीला ॥
केतुमालभद्राश्वखंडके । दोउगिरिहैंसीमाअखंडके ॥ १० ॥ मेरुरूपहैसरिसनिहाई । चारशैलचहुँदिशिनृपराई ॥
दशदशयोजनसहसउदारा । चारिहुकोजानहुविस्तारा ॥ तैसहिचारिहुअहैंउतंगा । रोकिमेरुकहँखडेअभंगा ॥
मंदरमेरुमंदरोहोई । इकसुपार्श्वइककुमदोसोई ॥ ११ ॥ चारवृक्षचारेहुगिरिमाहीं । तिनकेनामकहौंतुमपाहीं ॥
दोहा--हैमंदरहिरसालतरु, मेरुमंदरहिजंब ॥ कुमुदमाहँवटवृक्षहै, अहैसुपार्श्वकदंब ॥
ग्यारहसैयोजनतरुचारो । हैंउतंगकहनाथविचारो ॥ शतशतयोजनकीचौड़ाई । तिनकीछायाअतिसुखदाई ॥
शैलशीशमहँवृक्षप्रभाके । मानहुफहरहिशैलपताके ॥ १२ ॥ मंदरमेंयकक्षीरसरोवर । मेरुमंदरहिमधुकोहैसर ॥
अहैइक्षुसरिगिरिसुपार्श्वमहँ । शुद्धनीरसरकुमुदशैलपहँ ॥ जोकोउतिनसरसलिलनहावै । योगेश्वरऐश्वर्यसोपावै ॥ १३ ॥
चारहुगिरिमहँचारिअरामा । तिनकेकहौंभूपमैंनामा ॥ नंदनवनहैनृपतिमंदरै । अहैचैत्ररथमेरुमंदरै ॥
दोहा--हैसुपार्श्वगिरिशिखरमें, वैभ्राजकआराम । नृपतिसर्वतोभद्रवन, कुमुदमाहँअभिराम ॥ १४ ॥
तहँसुरललनासुरहुललामा । करहिविहारविविधवसुयामा ॥ तहँगंधर्वकरहिंकलगाना । सजीअपसरानाचहिंनाना ॥ १५ ॥
मंदरमेरुसालतरुजोई । शैलशृंगसमतेहिफलहोई ॥ ग्यारहसौयोजनउतुंगते । गिरहिसुफलमारुतप्रसंगते ॥ १६ ॥
परतप्रमाणफूटतेजाहीं । मधुरसुरभिफैलतिचहुँवाहीं ॥ अमृतसरिसतेफलनृपराई । निकसतअरुणसुरससुखदाई ॥
तिनतेभईनदीअरुणोदा । सुरसमाजकीदाइनमोदा ॥ मंदरकेकंदरतेढरती । इलावर्त्तमेंपूर्वपसरती ॥ १७ ॥
दोहा--उमाअनुचरीकिन्नरी, औरदानवीजोइ । तेहिसरिताकेसलिलमें, मज्जहिंनितमुदमोइ ॥
सरिप्रभावभूपतिअसतासू । दशयोजनतनजातसुवासू ॥ १८ ॥ मेरुमंदिरहिजोतसजंबू । गिरहिजासुफलशैलनितंबू ॥
एकादशहजारयोजनते । फूटहिंतेपषानयोगनते ॥ अतिसूक्ष्मबीजातिनमाहीं । गजसमानजवफलफटिजाहीं ॥
तबतिनकेरसतेतहँभूपा । जंबूसरिताबहीअनूपा ॥ इलावर्त्तमेंदक्षिणओरा । बहतिनदीप्रवाहकरिजोरा ॥ १९ ॥
दोउकूलनकोकरदमताको । लहिमारुतअरुसूर्य्यप्रभाको ॥ होतहेमजांबूनदनामा । तामेंहोतसुगंधललामा ॥ २० ॥
ताकोकटकमुकुटचौरासी । धारहिंसुरसुरतियसुखरासी ॥ २१ ॥
दोहा--गिरिसुपार्श्वमेंजोकह्यो, तरुकदंबकोसांच । ताकेकोटरतेकढहिं, मधुधारानृपपांच ॥
मोटीअहैपंचअकवारा । बहहिइलावृतपश्चिमधारा ॥ २२ ॥ जोकोउतिनकोसेवनकरही । शतयोजनमुखसुरभिपसरही २३
कुमुदशैलपरजोवटवृक्षा । कुरुपतितासुप्रभावप्रत्यक्षा ॥ तेहिशाखातेदधिमधुक्षीरा । गुड़घृतऔरअन्नबहुचीरा ॥

सुखदसेजआभरणअनेकू । औरहुनीकएकतेएकू ॥ तेहिशाखातेमरहिंसदाहीं । इलावर्तकेउत्तरमाहीं ॥
हैशतबलससोईवटनामा । नीचीसुखशाखाअभिरामा॥तिनशाखनतेबहुनदनिकसैं । इलावर्त्तकेउत्तरविलसैं॥ २४॥

दोहा--तिनमेंजोमज्जनकरत, औरकरतजलपान । ताकीसिगरीकामना, पूजतभूपसुजान ॥

श्रमअरुखेदऔरदुरगंधू । औरहुजरामरणसंबंधू ॥ शीतउष्णआदिकविषजेते । तिननदमज्जतहोहिंनतेते ॥
जबलोंपुरुपजियतकुरुराई।तबलोंभोगतसुखसमुदाई।।२५॥कमलकर्णिकाकेचहुँओरा।केसरसमअभिमन्युकिशोरा॥
बीसगिरीशमेरुचहुँपासा । तिनकेनामनिकरहुँप्रकासा ॥ केसरकुररकुसुंभकुरंगा । अरुवैकंकत्रिकूटपतंगा ॥
शिशिररुचकनिपिधहुसिनिवासा।कपिलशंखवैडूर्य्यप्रकासा॥हंसऋषभकालंजरनागा।नारदजारुधगिरिवडभागा२६

दोहा--नृपपूरवदिशिमेरुके, जानोयुगलपहार । देवकूटदूजोजठर, तिनकोअसविस्तार ॥

योजनअष्टादशहिहजारा । उत्तरदिशिकहलंबपहारा ॥ द्वैसहस्रयोजनकेतुंगा । तिमिचौड़ाईअहैअभंगा ॥
मेरुशैलकेपश्चिमओरा । जिमिद्वैगिरिअभिमन्युकिशोरा ॥पारियात्रअरुपवनसुनामा । दक्षिणकेसुनियेमतिधामा ॥
यककैलासदुतियकरवीरा । पूरबकहलंबेमतिधीरा ॥ तिमिउत्तरद्वैशैलअभंगा । एकमकरदूजोत्रयशृंगा ॥
येआठौगिरिहैंचहुँफेरा । मधिमेंमंडितअहैसुमेरा ॥२७॥ मेरुमाथमधिहैविधिनगरी ।कनकरतनमधिजानहुसिगरी॥

दोहा--भूपतियोजनदशसहस, ताकोहैविस्तार । हैसमानचहुँकोनमें, असकविकरहिंउचार ॥ २८ ॥
ताकोआठौदिशनमें, आठपुरीदिशिपाल । इंद्रअगिनयमनिरतशिव, वरुणवायुधनपाल ॥
सहसअढ़ाईयोजने, दिगपतिपुरीप्रमान । विधिपुरतेंकछुदूरलौं, सिगरीनगरीजान ॥ २९ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौपंचमस्कन्धेषोडशस्तरंगः ॥ १६ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा--बलिकेमखमेंकृष्णप्रभु, नाप्योजबत्रयलोक । दक्षिणपदपाताललगि, वामसातसुरओक ॥

वामनचरणवामपरचंडा । निकस्योभूपभेदब्रह्मंडा ॥ सोईछिद्रह्वैविरजासरिकी । महापुण्यतमधाराढरकी ॥
बलिकुंकुमहरिचरणलगायो । ताकोध्वैगंगाजलआयो ॥ तातेअरुणतरंगदेखाहीं । जेहिपरसतअघओघनशाहीं ॥
विष्णुचरणछिद्रहितेआई । तातेविष्णुपदीकहवाई ॥ सहसनयुगमहसरितसोहाई । स्वर्गलोककेशीशहिआई ॥१॥
जाकोकहतविष्णुपदज्ञानी । जहँध्रुवधराधीशविज्ञानी॥निवसहिकृष्णचरणमहँध्यावत । श्रीगोविंदगुणगाथागावत॥

दोहा--कृष्णप्रेमसागरमगन, तनकरतनकनभान । वारिविलोचनजेबहत, पावतमोदमहान ॥

क्षणक्षणपुलकितहोतशरीरा । ऐसोध्रुवनृपबुद्धिगँभीरा ॥ ममकुलदेवकृष्णपदनीरा । असविचारगंगहिमतिधीरा ॥
अजउँलागसोधरणिअधीशा । सोजलधारतसादरशीशा॥२॥ध्रुवधामहितेसुरधुनिधारा । चलिआईसप्तर्षिअगारा ॥
जेमुनिकृष्णप्रेमरसभीने । ज्ञानविज्ञानतुच्छकरिदीने ॥ तेमुनिगंगप्रभावहिज्ञाता । निजतपसिद्धमानिसुखदाता ॥
जटाजूटमहँसुरसरिनीरा ।सादरधारतभेमतिधीरा ॥ जिमिमुमुक्षमोक्षहिकहँपावै । ग्रहणकरैधनिजन्मगनावै ॥ ३ ॥

दोहा--सुनिसुरधुनिकोआगमन, देवसकलहरषान । चलेलैनअगवानचढ़ि, कोटिनसहसविमान ॥

छायेनभमहँविपुलविमाना।सुरसरिसँगसुरकियेपयाना ॥चंदनसुमनचढ़ावहिंनाना । करहिंतासुअतिशयसनमाना ॥
यहिविधिशशिमंडलह्वैगंगा ।गिरीसुमेरशीशसुरसंगा ॥ तहाँरहीविधिपुरीसोहावनि । आईसुरधुनितहँजबपावनि ॥
तबविधिसबविधिपूजनकीन्हो।सुरसरिसलिलशीशधरलिन्ह्यो॥४॥मेरुशीशसतेंसुरधुनिधारा।गिरतभईनृपचारिप्रकारा ५
मेरुशृंगतेसीताधारा । गिरिकेसराचलहिमँझारा ॥ गईगंधमादनगिरिपाहीं । पुनिभद्राश्वखंडहूमाहीं ॥

दोहा--करिपुनीतभद्राश्वको, सीतासुरधुनिधार । प्रविशतभईप्रवेगसों, पूरवपारावार ॥ ६ ॥

दूजीचक्षुनामकीधारा। माल्यवानगिरिह्वैसुखसारा। केतुमालखंडहिकिरिपावनि। पश्चिमसागरमिलीसोहावनि॥७॥
भद्राधारतीसरीतासू। कियोकुमदगिरिशिखरविलासू॥ तहँतेनीलाचलपैआई। संतशैलपैफेरसिधाई॥
पुनिगइशृंगमानकेशृंगा। तहँतेकुरुखंडहिगैगंगा॥ कुरुखंडहिकोपावनकरती। उत्तरसागरमेंअवहरती॥ ८॥
चौथअलकनंदाअघलावनि। दक्षिणगिरिमेरुतेपावनि॥ बहुगिरिकूटनफोरतधारा। परसतमस्तकनिषधपहारा॥
दोहा–हेमकूटकोफोरिके, पुनिआईहिमवान। निकसिहिमालयतेकियो, भारतखंडपयान॥
भागीरथीअहैजेहिनामे। अतिसवेगधावतवसुधामे॥ दक्षिणसागरमेंयहगंगा। मिलीकरतजगपातकभंगा॥
जाकेमज्जनपानहुहेतू। करतपयानजोकोउमतिसेतू॥ राजसूयहयमखआदिकफल।पगपगमहँतिहिहोतभूपभल॥
कावरणेगंगाप्रभुताई। जेहरिपदतेप्रगटसिधाई॥ ९॥ औरअनेकनदीनदभूपा। खंडखंडमहँअहइअनूपा॥ १०॥
कर्म्मभूमिहैभारतखंडा। भोगिभूमिहैआठहुखंडा॥ थोरीपुण्यरहेनृपराई। तबतेजीवसर्गतेआई॥
आठहुखंडनमहँसुखभोगै। भयेपुण्यक्षययोनिसयोगै॥ ११॥
दोहा–आठौखंडनमहँनृपति, मनुजदेवसमहोत। दशहजारसंमतहिकी, आयुषहोतउदोत॥
तिनकेदशहजारगजजोरा। वज्रसरिसतनहोतकठोरा॥ महामुदिततेकरहिंविहारन। नलिनीपुलिनीपुरनपहारन॥
एकवर्षआयुषजबरहती।तबतिनकीतियगर्भहिगहती॥ कोउकुमारकोउजनैकुमारी।जनतहियुवाहोहिबलभारी॥
सुतअरुसुताप्रगटपितुमाता। भरततुरतपुनितियजनताता॥तहँनृपत्रेतायुगकीनाई। रहतकालवशखंडसदाई॥१२॥
तहांसकलसुवरणकोजूहा। लैसँगनिजसुंदरीसमूहा॥ विचरहिवनगिरिकंदरमाहीं। जहांसकलऋतुरहहिसदाहीं॥
दोहा–फूलेकुंजनसुमनबहु, बहुकिसलयफलगुच्छ॥ नयेनयेवीरुधविटप, कहुँदरशहिंनहिंतुच्छ॥
गिरिकंदरतहँसुंदरकानन। खगरवलगतमधुरअतिकानन॥सरसीसरससरोवरसोहै। विकसितवारिजवनमनमोहै॥
वतकारंडवसारसहंसा। चक्रवाकबककुक्कुटवंसा॥ करहिंचहूँकितमंजुलशोरा। गुंजहिंकुंजनकुंजनभोरा॥
नाचहिंतहांनर्तकीनाना। विचरहिंविविधविलासविधाना॥ करहिंसकलजलमहँबहुलीला। सुंदरसुरसुंदरीसुशीला॥
हावभावनानाविधिकरहीं।तियगणहँसिपियगणमनहरहीं॥यहिविधिकरहिंअनेकविहारा॥मुदितदेवदेवनकीदारा १३॥
दोहा–नवहुखंडमेंसुनहुनृप, जननअनुग्रहहेत। नारायणनवरूपते, मनवांछितफलदेत॥ १४॥
प्रथमहिसुतहुइलाव्रतमाहीं। जोपूजकअरुपूज्यसदाहीं॥ सहसशीशसंकर्षणस्वामी। जेशंकरकेअंतरयामी॥
इलावर्तमहँठाकुरतेई। हैशंकरपूजकपदसेई॥ तहाँपुरुषदूजोकोउनाहीं। पुरुषहुगयेनारिह्वैजाहीं॥
आगेतासुकथाविस्तरिहैं।जबहिंनवमअस्कंधउचरिहैं॥१५॥ तहँराजाअर्बुदलैनारी।सहितउमानिशिदिनत्रिपुरारी॥
यहीमंत्रजपिशंभुसुजाना। पूजहिंशेषशचरणसविधाना॥ इलावर्त्तखंडहिकीवामा।सेवहिउमाशंभुसुखधामा॥ १६॥

अथ श्रीसंकर्षणमंत्रः।

ॐनमोभगवतेमहापुरुषाय सर्वगुणसंख्यानायानंतायाव्यक्तायनमः॥ १७॥

दोहा–प्रेमभरेअतिशंभुपुनि, जलजयुगुलकरजोरि।पाठकरहिंअस्तोत्रयह, बारहिंबारनिहोरि॥

श्रीभगवानुवाच।

छंद–सुज्ञानादिऐश्वर्य्यतेयुक्तजोई। सबैविश्वकोकारणैसत्यसोई॥
सदाभक्तकीकामनापूरकर्ता। महाघोरसंसारकीभीतिहर्ता॥
उमैनाथपादारविंदौतिहारे। सदाविश्वकेरक्षनैकर्नहारे॥
भजोभावसोंआपकोमैंसदाहीं। रहौंध्यानधारेसदाचित्तमाहीं॥ १८॥
अहौतूनियंतासबैविश्वकेरे। नमायागनौआवतेआपनेरे॥
हमौकोविषैवासनानाहिंत्यागै। सदामोहकोहादिमेंचित्तपागै॥

अहैकोमुमुक्षूतुम्हैंजोनध्यावै। अहैकोजुध्यावैनहींमोक्षपावै ॥ १९ ॥
अज्ञानीकुबुद्धीजेमायाविमोहै। तुम्हारेसवैरक्तनयनानिजोहै ॥
तुम्हैंभावहीआसवैपानमत्ते। अहैविश्वमेंसत्यतेईप्रमत्ते ॥
तुम्हैंअर्चनेहेतजोनागकन्या। नितैआवतीपावतीमोदधन्या ॥
गहैकोमलेपादकंजैतिहारे। लहैक्षोभतेपन्नगीलाजधारे ॥
सकैचंदनैफूलकोनाचढाई। गडैगेविशेषैयहीचित्तलाई ॥ २० ॥
सृजौपालहूसंहरौविश्ववाही। तुह्मैंहोतयेतीतऊनाथनाही ॥
कहेसर्वदाशेषस्वामीअनंता। कहैवेदऔसंतजेबुद्धिमंता ॥
फणोंजेसहस्रौतिहारेप्रकाशी। धरोहैधराएकमेंसर्ववासी ॥ २१ ॥
महत्तत्वकोपूर्वहीआपजायो। अधिष्ठानसोईहरीकोगनायो ॥
कहैताहिब्रह्माभयोमैंतेहीते। भयेभूतइंद्रीसुरौहैजिहीते ॥ २२ ॥
हमौऔरजेतेसुरौहैंअपारे। सबैजानियेशासनैमैंतिहारे ॥
बँधेदामज्योंकीटऔरौविहंगा। रचैखेलकोओनचैएकसंगा ॥
तेहीभाँतितेआपुहीकोनिदेशै। सबैविश्वकोविश्वकर्त्ताहमेशै ॥ २३ ॥
दोहा–तुवमायाजानहिसवै, जाकोयहविस्तार।शेषसहसमुखआपको, हैप्रणामबहुवार ॥ २४ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौपंचमस्कंधेसप्तदशस्तरंगः ॥ १७ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–भूपखंडभद्राश्वमें, हयग्रीवभगवान। धर्ममयीमूरतिधरे, ठाकुरकृपानिधान ॥
भद्रश्रवाजोधर्मसुत, निजसेवकसुतसोय। यहीमंत्रजपिनाथको, पूजतहैमुदमोय ॥ १ ॥

श्रीहयग्रीवभगवतोमंत्रः।

ॐनमो भगवते धर्मायात्मविशोधनाय नम इति।

दोहा–हयग्रीवभगवानको, भद्रश्रवासुतधर्म। सन्मुखयहअस्तुतिकरत, जोरिपाणियुतशर्म ॥

भद्रश्रव उवाच।

छंद–यहहैविचित्रविशेषमायाकर्मनाथतुम्हार। सबकोविनाशतकर्मपैनाहिंजानतोसंसार ॥
प्रत्यक्षपितुनिजपुत्रकोमरघटजरावनजाइ। अभिलाषराखहिआपनीपुनिजियनकीघरजाइ ॥
करिकेकुसंगअनेकपापनकर्ममेंलवलीन।नहिंभजतयदुपतिपदपदुमशठसकलविधिबुधहीन ॥२॥३॥
कविऔरज्ञानीशास्त्रतेप्रत्यक्षहूदृगजोहि। यहजगतकहतअनित्यपैनितरहतमायामोहि ॥
यहरावरीरचनाविलोकतलगतकौतुकनाथ। तातेधरहिहमरावरेकेचरणमेंनिजमाथ ॥ ४ ॥
जगसृजनपालनसंहरनतुमहींकरहुभगवान। तद्यपिअकर्ताकहततुमकोसकलवेदबखान ॥
यहहोततुवसंकल्पतेतातेनकौतुकसोइ। जियकर्मकेअनुसारफलदानीपरहुतुमजोइ ॥
जबदैत्यचारोंवेदकोहरिलेगयोयुगअंत। तबहयग्रीवशरीरधरितुमहीरमाकेकंत ॥
हनिदैत्यलायेचारवेदनपैठिप्रभुपाताल। विधिकोदियोकोआपसमातिहुलोकमाहकृपाल ॥

तुवसत्यहैसंकलपकलपनिअलपकबहुँनहोइ।असजलपकरहिअनलपमतिमंदहुतुमहिपदजोइ ॥५॥६॥

दोहा--कुरुपतिहैहरिखंडमें, श्रीनरहरिभगवान । तासुकथाविस्तारयुत, आगकरबबखान ॥
नरहरिठाकुरकोतहाँ, श्रीप्रह्लादसुजान । यहीमंत्रजपिकरतहैं, पूजनसहितविधान ॥
जेहिप्रह्लादप्रभावतें, भयोदैत्यकुलपूत । गुणभाजनहरिभक्तको, हैअनन्यमजबूत ॥ ७ ॥

श्रीनरहरिमंत्र ।

ॐनमोभगवते नरसिंहाय नमस्तेजस्तेजसे आविराविर्भववज्रनख वज्रदंष्ट्र कर्माशयान्रंधयरंधय तमो ग्रस ग्रस ॐस्वाहा अभयमभयमात्मनि भूयिष्ठाः ॐक्ष्रौम् ॥ ८ ॥

दोहा--नरहरिसंमुखदैत्यपति, जलजयुगलकरजोरि । यहअस्तुतिनिशिदिनकरत, बारहिंबारनिहोरि ॥

प्रह्लाद उवाच ।

छंद--मंगललहैसंसार । खलतजैखलताभार ॥ त्यागैपरस्परद्रोह । जनफसहिकबहुनमोह ।
मनरहहिसबनप्रसन्न । जनहोंहिआपप्रपन्न ॥ यहविनयनाथहमारि । पुजवहुमुकुंदमुरारि ॥
निरहेतुकीतुवभक्ति । ममहोहितिहिअनुरक्ति ॥ ९ ॥ सुतदारधनआगार । नहिंहोयमोहहमार ॥
तुवदासकोसतसंग । नितहोहिनाथअभंग ॥ जसविषयतजिसुखहोय । तसविषयमेंनहिंसोय ॥ १० ॥
तीरथसबैजेभूमि । तिनकोजेमज्जहिंघूमि ॥ तौहोतशुद्धशरीर । नहिंमनमहागंभीर ॥
अरुसुनैकृष्णचरित्र । तनमनजोहोतपवित्र ॥ सोविनमिलेहरिदास । नहिंहरिचरित्रप्रकास ॥
कोकुमतिअसजगमाहिं । जोसुनततुवयशनाहिं ॥ ११ ॥ तुवभक्तितेनिःकाम । तेईसुरनकेधाम ॥
जेविषयसुखलवलीन । नरसिंहभक्तिविहीन ॥ तिनकोनज्ञानविराग । तेइजगतमहँहतभाग ॥ १२ ॥
जिमिमीनजलकहँप्यार । तिमिकृष्णजगतअधार ॥ ऐसेनृसिंहहिछोडि । जेरहतगृहसुखवोडि ॥
वयवृद्धहैंतिहिंगृद्ध । नहिज्ञानवृद्धप्रसिद्ध ॥ १३॥ मदलोभमत्सरमोह । भयेदीनतारुजकोह ॥
इनसबनकोगृहमूल । हरिभक्तकोप्रतिकूल ॥ तातेनिकेतविहाउ । नरहरिअभयपदध्याउ ॥ १४ ॥

दोहा--केतुमालमहँसुनहुनृप, हैप्रद्युम्नभगवान । रमाअंशरतिसहितप्रभु, छावतमोहमदान ॥

छत्तिससहस्रदिवसअभिमानी। संवतकेसुतसुरछविखानी॥निशिअभिमानीसहसछतीसा।संवतसुताविचारमहीसा ॥
सहसबहत्तरसुरसुरदारा । इनसबकोतहँअहइअगारा ॥ तिनकोगर्भरहतयकसाला । कृष्णचक्रकीतापकराला ॥
पायविनाशगर्भहैजाही । तातेबढतघटतहैंनाहीं॥ १५ ॥ तहँकरिकेगतिललितविलासा । सहितकटाक्षमंजुमृदुहासा ॥
नेकुबंकताकरिभृकुटीमें। चंदनरेखसेखत्रिकुटीमें ॥ प्रभुप्रद्युम्नसुखरतिमहरानी । देखतरहतमहामदमानी ॥

दोहा--रतिरमणीसँगअतिहचिर, ठानतरासविलास । केतुमालमेंभांतियहि, करतप्रद्युम्ननिवास ॥ १६ ॥
ठाकुरश्रीप्रद्युम्नको, रतिमहरानीसोइ । निशिवासरपूजनकरत, नितनवसुखछविजोइ ॥
दिनमेंपूजतसंगलै, सुरछत्तिसोंहजार । निशिपूजतछत्तीसलैं, सँगमेंसुरकीदार ॥
यहीमंत्रजपिपूजती, अस्तुतियहसुखगाय । सोसिगरोमैंआपकोकुरुपतिदेतसुनाय ॥ १७ ॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ॐनमोभतगवते हृषीकेशाय सर्वगुणविशेषैर्विलक्षितात्मने ॥ आकूतीनां चित्तीनां चेतसां विशेषाणां चाधिपतये षोडशकलाय छंदोमयायान्नमयायामृतमयाय सर्वमयाय सहसे ओजसे बलाय कांताय कामाय नमस्ते उभयत्र भूयात् ॥ १८ ॥

रतिरुवाच ।

छंदपद्धरी--प्रभुतुम्हहिपूजिपतिचहइआन । तेतियनकंतनिजधनसुतान ॥
नहिसकहिरक्षतेपरअधीन । तेरहतविषयसुखमाहँलीन ॥ १९ ॥
जोईहरैभीतिसोईसत्यकंत । असअहहिआपहीकहतसन्त ॥

जोहोहिसबैअपनेअधीन। तौहोतिनकोहुकोमीतभीन॥ २०॥
जोभजततुम्हहिनिहकामनाथ। सोलहतकामनासकलहाथ॥
भजतोसकामजोकंतकाम। सोलहतअनितकेवलहिकाम॥ २१॥
मोहिंलहनहेतविधिशिवसुरादि। तपकरतयदपिबहुवेदवादि॥
पैतुमहिंभजेविनलहतनाहिं। हैहमहुआपकेवशहुमाहिं॥ २२॥
जाधरहुसंतकेशीशहाथ। सोधरहुनाथमेरहूमाथ॥
प्रभुजदपिधरहुमोहिंहियेमाहिं। हैहमहुँआपकेवशहुमाहिं॥
यहगतिविचित्रहैविभुतुम्हारि। कोजानिसकैबहुविधविचारि॥
हैबारबारतुमकोप्रणाम। हैकामदानिरावरोनाम॥ २३॥

दोहा—रम्यकखंडहुमैंनृपति, ठाकुरमत्स्यस्वरूप। जाकोपूजनकरतहै, श्राद्धदेवमनुभूप॥
परमभक्तिसोमंत्रयह, पठिअस्तुतियहगाय। पूजतहैश्रीमत्स्यप्रभु, पूर्वप्रगटचितलाय॥ २४॥

मत्स्यमंत्र।

ॐनमो भगवते मुख्यतमाय नमः सत्वाय प्राणायौजसेसहसेबलाय महामत्स्याय नमः॥ २५॥

मनुरुवाच।

छंदतोटक—नहिंलोकपआपहिदेखिसकै। महिमातवगावतशेषथकै॥
तिहरेमुखकीधुनिवेदअहै। सोइव्यापकआपहिसत्यकहै॥
करकैतियज्यौंनटकेवसहै। तुम्हरेवशमेंजगहूतसहै॥ २६॥
जितनेसबलोकपगर्वभरे। प्रथकेअथवामिलकैसिगरे॥
विनआपसहायचराचरको। नहिंरक्षणकोबलहैसुरको॥ २७॥
अतितुंगतरंगप्रलैजलमें। हमकोलखिकेअतिकश्मलमें॥
अवनीयुतऔषधिमत्स्यहरै। करिनाथकृपाममत्राणकरै॥
तुमप्रेरकहौसबप्राणिनके। परिनामकरौंपदकेतिनके॥ २८॥

दोहा—खंडहिरण्मयमेनृपति, कूर्मरूपभगवान। तहांअर्यमापितरपति, करिकेप्रेममहान॥
तासुखंडजनसंगले, पूजतयहपढ़िमंत्र। यहअस्तुतिगावतमुदित, रहतकृष्णपरतंत्र॥ २९॥

ॐनमोभगवतेअकूपारायसर्वसत्वगुणविशेषणायनोपलक्षितस्थानायनमोवर्त्मनेनमोभूम्नेवस्थानायनमस्ते॥ ३०॥

अर्यमोवाच।

छप्पय—तुवमायावशविश्वविविधविधसंख्यानाहीं। एकरूपनहिंरहतभ्रांतअसघटतसदाहीं॥
प्राकृतनामहुरूपअहैंनहिंनाथतिहारे। तुवपदपदुमप्रणामअमितजेअधमउधारे॥ ३१॥
अंडजहुजरायुजस्वेदजहु,उद्भिजसुरऋषिपितरगन।नभक्षितिजलशैलसमुद्रहूतवस्वरूपअसवेदभन॥३२॥
हैअसंख्ययहयदपिजगतरावरोशरीरा। तद्यपिचौबिसतत्वकहतकविमुनिमतिधीरा॥
सोईतत्वकोकरतविचारअहैप्रभुआना। तातेछूटतजगतजालअसवेदबखाना॥
सोइज्ञानविनातुम्हरीकृपाकैसहुजनपावतनहीं। तातेतुवपदकंजमेंमैंप्रणामकरतोसही॥ ३३॥

दोहा—नृपउत्तरकुरुखंडमें, ठाकुरयज्ञवराह। भूदेवीपूजनकरत, तहँकेजनसँगमाह॥
भक्तिसहितपढ़िमंत्रयह, यहअस्तुतिसुखगाय। सविधिहरिहिपूजतिरहति, नितनवनेहबढ़ाय॥३४॥

भूरुवाच ।

ॐनमोभगवते मंत्रतत्वलिंगाय यज्ञक्रतये महाध्वरावयवाय महापुरुषाय नमः कर्म्मशुक्लाय त्रियुगाय नमस्ते३५

सोरठा–यज्ञादिककरिकर्म, लखिनपरततवरूपप्रभु । तातेमुनितजिभर्म, लखतरावरेरूपको ॥

इंद्रिनकुंभवनाय, मनकोमंथानोविरचि । मथनकरैसुखछाय, पावहिमाखनरूपतुव ॥ ३६ ॥

द्रव्यदेशकालादि, यसबमायागुणअहैं । असभाषहिश्रुतिवादि, इनकेकारणआपहैं ॥

जेकरिविमलविचार, निश्चलमतितुममेंकरैं । तिनकोनहिंसंसार, ऐसेप्रभुहिप्रणामबहु ॥ ३७ ॥

तुवसंकल्पसहाय, मायाविरचितजगतको । तिमिचुंबककहँपाय, फिरतलोहहूजडयदपि ॥

जगसाक्षीहौआप, जगव्यापीहौसर्वदा । प्रगटहुपरमप्रताप, दासनदुखदरताद्रुतहि ॥ ३८ ॥

सवैया–बूडिविलोकिप्रलैजलमेंमोहिंधारिवराहकोरूपमेंपावन।मारितुरंतहिशोकनकाक्षहिजोतिहुँलोकनमेंदुखछावन

विश्वअधारतहैनिजडाढ़मेंधारिकैमोहिंउधारचोहैपावन । वारहिंवारप्रणामकरौंरघुराजतहींसबशोकनशावन॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौपंचमस्कंधेअष्टादशस्तरंगः ॥ १८ ॥

दोहा–भूपखंडकिंपुरुषमें, सीतापतिश्रीराम ॥ लछिमनयुतठाकुरअहै, त्रिभुवनपतिअभिराम ॥

महाभागवतपवनकुमारा । हनूमानजेहिनामउचारा ॥ तेकिंपुरुषखंडकेवासी । प्रेमभक्तिसोंआनँदरासी ॥

निरखतरघुपतिचरणसरोजू । पूजनकरतमुदितमनरोजू॥१॥ अर्ष्टिषेणगंधर्वअधीशा । वसतनेहकरिनिकटकपीशा॥

वालमिकिकृतश्रीरामायण । परमप्रेमसोरामपरायण ॥ मारुतसुतढिगनितसोगावै । वीनमृदंगसहितसुरछावै ॥

रामकथामुदमंगलदायन । साधनजननीकलुषकसायन॥सुनतपवनसुतसहितहुलासू । ढारतआँखिनआनँदआंसू ॥

दोहा–यहीमंत्रजपिरामको, पूजनकरतंकपीश ॥ पुनियहअस्तुतिनिजवदन, गावतरहतमहीश ॥ २ ॥

ॐनमो भगवते उत्तमश्लोकाय नमः आर्य्यलक्षणशीलव्रतायनमउपाशिक्षितात्मनेउपासितलोकायनमःसाधुवाद-
निकर्षणायनमोब्रह्मण्यदेवायमहापुरुषायमहाराजायनमः ॥ ३ ॥

कवित्त–जाकोशुद्धहियोताकोअनुभौतिहारोहोतनाथनिजतेजहीतेमायागुणनासीहै ।
जगतकेव्यापीनिजजापीकोअतापीकरोनामरूपआपकेअनंतदिव्यभासीहै ॥
आपकेसमाननहिंआधिककहांतेहोयअहंकारक्षारहोतध्यायेमुदरासीहै ।
कालत्रासनाशिततकालकैनिहालदेत राजैरघुराजऐसेअवधविलासीहै ॥ ४ ॥

नरअवतारनहिकेवलदनुजकुलनाशनकेहेतयहपरतविचारहै ।
जननसिखायवेकोओरहूदेखायवेकोनारिकेअधीनजैसेहोतदुखभारहै ॥
अवधनिवासीसीतासंगहीविलासीनितजगतप्रकासीकोनउचितखभारहै ।
तजिकेनिवेसजाइकाननकलेशसह्योधनसोधरामेंअवधेशकोकुमारहै ॥ ५ ॥

कालमुनिरूपकीन्ह्योमंत्रअसप्रणकरिआवैगोइतैजोसोईह्वैहैवशकालके ।
द्वारदुरवासाआयेकोपितलषणलख्योजाइकह्योनाथसोहेलालमुनिपालके ॥
सबकेनियंतासबलोकनकेनाथसोई साँचेईशशक्रकरतारशशिभालके ।
प्रणपालिवेकोप्राणप्यारोबंधुत्यागिकीन्ह्योस्वामीको समानह्वैहैदशरथलालके ॥ ६ ॥

कुलकीबड़ाईनाहिंधनप्रभुताईनाहिंजातिकीनिचाईसबभाँतिअधिकाईहै ।
बुद्धिहीनताईभूरिचितमहँचंचलाईफलफूलखाईवसैवनमेंसदाईहै ॥

ऐसहूछुटाईकछुचित्तमेंनलाईप्रभुआपुहीतेआईकियोकौशनमिताईहै ।
दीनदीनताईदेखिनहिंसाहिजाईऐसोलपणकोजेठोभाइएकरघुराईहै ॥
दोहा--नहिंकुलनहिंविद्यानतप, नहिंतनकोछविधाम ॥ प्रीतिरीतिकोबूझिके, आशुहिरीझतराम ॥ ७ ॥
कवित--सुरनरनागपशुपक्षीआदिजीवनके, कोटिअपराधनिजचित्तमेंनलायेहैं ।
नैकउपकारकोसहस्रगुनिमानिनाथ, केतेजगपतितकोपावनबनायेहैं ॥
भजोरेभजोरेरघुराजैकोशलाधिराजैसरलसुभावऐसोवेदनबतायेहैं ।
कौशलाकेनारिनरपशुपक्षीकीटजेतेरामदयाधामनिजधामकोपठायेहैं ॥ ८ ॥
दोहा--भारतखंडहुमेंनृपाति, नरनारायणईश ॥ बदरीवनमहँकरततप, यज्ञहिताहिजगदीश ॥ ९ ॥
तहँपूजतनारदअहै, मुनिनसहितमतिमान ॥ जपतमंत्रयहप्रेमयुत, करिअस्तुतियहगान ॥ १० ॥
ॐनमोभगवतेउपसमशीलायोपरतानात्म्यायनमोकिंचनवित्तायऋषिऋषभायनरनारायणायपरमहंसपरमगुरवेआ-त्मारामायाधिपतयेनमोनमः ॥ ११ ॥

नारद उवाच ।

छंद--जगविरचाहिनानानहिअभिमानाश्रीभगवानाजगव्यापी।अच्युतअविकारीवरगुणधारीरमाविहारीपरतापी १२॥
बहुयोगउचारीठीकविचारीतवसुखचारीकहतभयो। सोईयोगीसाचोजोहरिराचोयहतनकाचोछोड़दयो ॥ १३ ॥
जेविभौविलासीस्वर्गहिआसीधनसुतदासीमहँमोहे । तिनकेसमज्ञानीरीतिजोठानीतौतेप्रानीनहिंसोहे ॥ १४ ॥
तातेयदुराईभक्तिसोहाईकृपामहाईकरिदीजे । जेहिजगममताईअतिदुखदाईमोहियछाईसबछीजे ॥ १५ ॥
दोहा--कुरुपतिभारतखंडमें, हैबहुशैलमहान ॥ पैतिनकेनामनिकहौं, जेजेअहैप्रधान ॥
मंगलप्रस्थऔरमलयाचल । अरुमैनाकत्रिकूटऋषभभल॥कूटककोलकसह्यदेवागिरि । ऋष्यमूकश्रीशैलऋक्षगिरि॥
व्यंकटअरुमहेंद्रमहिधारी । वारिधारिअरुविंधहुभारी ॥ पारियात्रद्रोणहुअभिरामा । चित्रकूटजहँबिलसहिरामा ॥
गोवरधनजेहिहरिकरधारा । शैलकामदारामअगारा ॥ अरुरैवतद्वारावतिपाहीं । शुक्तिमानहैदक्षिणमाहीं ॥
ककुभगोरमुखअरुगिरिनीला।औरजानियेइंद्रहुकीला॥औरहुपर्वतअहैहजारा । तिनकोकहुँलगिकरहुँउचारा ॥१६॥
दोहा--शैलनतेसहसननदी, निकसीहैंमतिमान ॥ जेप्रधानयहखंडमें, तिनकोकरहुँबखान ॥
जिनकेनामहिलेतमुख, पापसकलनाशिजाहिं ॥ भरतखंडकीधनिप्रजा, मज्जतहैतिनमाहिं ॥ १७ ॥
जिनमेंगंगाअहैप्रधाना । जाकोप्रथमहिकियोबखाना ॥ चंद्रवशाअरुताम्रहुपरनी । कृतमालावेनाअघहरनी ॥
वैहायसीऔरअवटोदा । कावेरीदायनिअतिमोदा ॥ औरतुंगभद्राकृतमाला । औरशर्करावर्त्तभुवाला ॥
भीमरथीअरुकृष्णावेनी । गोदावरीपरमसुखश्रेनी ॥ निरविंध्यापयउष्णीभूपा । तापीसुरसासरितअनूपा ॥
वेदसमृतिऋषिकुल्याजोई । अरुकौशिकीत्रिसामासोई ॥ दृषद्वतीअरुओधवतीहू । सरितसुषोमासत्यवतीहू ॥
दोहा--विश्वामरुतबृधानदी, औरअसाकिनीभूप ॥ औरवितस्ताजानिये, पारसदेशअनूप ॥
सिंधुचंद्रभागासतरंजै । अरुनर्मदासकलअघभंजै ॥ पयस्वनीमंदाकिनिभूपा । चित्रकूटमहँबहहिअनूपा ॥
सरयूअरुसरस्वतीनरेशा । मज्जतरहतनअघकरलेशा ॥ चामिलअरुगोमतीभुवाला । मज्जतरहतनअघकरमाला ॥
यमुनाजोव्रजह्वैबहिआई । जेहिमज्जतयदुवरपुरजाई ॥ हैनदजानहुनृपमतिभोना । एकमहानददूजोसोना ॥
मार्कंडेयआश्रमहिआई । महानदीमिलिसोनासिधाई॥जानहुइतनीनदीप्रधाना । औरहुलघुअनेकमतिमाना ॥ १८॥
दोहा--भारतखंडहुमेंनृपाति, मनुजजन्मजियपाइ ॥ सात्वकराजसतामसौ, करतकर्म्ममनलाय ॥
स्वर्गलहतकरिसात्वकधर्म्मा। मनुजहोतकरिराजसकर्म्मा॥तामसकर्म्मकियेमतिभोरा । लहतयातनानरकनघोरा ॥
जोजनहरिमहँप्रीतिलगावै।अवशिआशुअच्युतपदपावै॥ १९॥कृष्णभक्तिबिनहेकुरुराई।मिलतनकृष्णचरणसुखदाई।

तौनभक्तिविनकारिसतसंगा । मिलतनहींयहसत्यप्रसंगा ॥ कृष्णभक्तिजाकेउरआई । जगनवासनादेतनशाई ॥
कृष्णभक्तिहीमुक्तिकहावे । जाकोलहिपरमानँदपावे ॥ भरतखंडहीमेंसोहोती । औरखंडमहँनाहिंउदोती ॥ २० ॥

दोहा–तातेभारतखंडकी, भारतकुलअवतंस ॥ करहिंप्रशंसाअसतवै, देवसिद्धमुनिहंस ॥

सवैया–जेजनपूरबजन्ममेंजौनकियेतपउत्तमधौतपरासी । धौंअपनेतेप्रसन्नभयेइनपैरघुराजविकुंठविलासी ॥
श्रीहरिकेपदसेवनयोगलहेनरकोतनप्रेमप्रकासी । जाहिसदाहमहूँतरसैंधनिहैंधनिभारतखंडकेवासी ॥ २१ ॥
काहभयोबहुयागकियेअरुकाहभयोव्रतऔकरिदानो।काहभयोकठिनोतपकेकियेकाहभयोकियोस्वर्गपयानो
काहभयोविभोभोगलहेरघुराजसुनोसवैतुच्छनिदानो।काहाजियेजगमेंजेहिकोरघुनाथकेहाथनमाथविकानो॥

दोहा–हरिकोभूलतस्वर्गमें, लखिकेभोगअखंड ॥ तहँकेजनभूलतनहीं, धनिधनिभारतखंड ॥ २२ ॥

सवैया–पुण्यअनेकनकोकरिस्वर्गमेंलाखनवर्षकीआयुषपावै । तासोंक्षणैभरकीजनआयुषभारतखंडकीउत्तमभावै॥
लाखनवर्षहूँमेंहमकोयदजोनकहूँसपनेनहिंआवे । सोक्षणमेंरघुनाथपदैमनदैरघुनाथपदैजनजावै ॥ २३ ॥
कृष्णकेउत्सवमोदविनोदजहांनहिंनैननमेंलखिलीजे । श्रीरघुराजजहांनहिंसंतनकेपदकेजलतेमहिभीजे ॥
कृष्णकथासुधाधारितहाँनहिंकाननकीकरिअंजलपीजे।ऐसोनरेशसुरेशमहेशप्रजेशनिवेशप्रवेशनकीजे २४॥
यहदेवनदुर्लभभारतखंडमेंजेनरदेहकोपावतहैं । लहिकेधनकोकरिकेमखकोजगमेंबड़ज्ञानीकहावतहैं ॥
जगयेतीबड़ाईकहेरघुराजनजेरघुराजकोध्यावतहैं । कड़िफंदहितेफँदतेखगसेजगजन्मवृथाहिंबितावतहैं२५॥

दोहा–प्रीतिसहितजेमखकरत, भारतखंडहिमाहिं ॥ सुरननाथनिजहाथहरि, लेतेभागनकाहिं ॥ २६ ॥

स०-जगजेजनश्रीरघुनायककोभजैकौनिहूकामनाकोकरिकै । तिनकोप्रभुदेनचहेजितनोनहिंपूरणकामकरैअरिकै ॥
रघुराजतेरामअकामभजैतिनकेउरमेंपदकोधरिकै।विनकामहुकामनापूरकरैदयासिंधुदयादिलमेंधरिकै ॥२७॥
जोजपकीतपकीमखकीकछुपुण्यरहीवचिहोयहमारी । तौदयादीठिपसारिद्रुतैअबऐसीविनैसुनोऔधविहारी ॥
भारतखंडमेंहोयहमारोकहूँनरजन्मवृथासुखकारी।जातेलहैअबमुक्तिविशेषिकेगायकेकीरतिरामतिहारी।॥२८॥

श्रीशुकउवाच ।

दोहा–चहुँदिशिजंबूद्वीपके, आठअहैंउपदीप ॥ तेजेहिविधिउतपतिभये, सोअवसुनहुमहीप ॥
वाजीखोजतखनतमहि, सगरसुवनबलधाम ॥ धरणीजौनबचाइदिय, सोउपद्वीपललाम ॥ २९ ॥
स्वर्णप्रस्थआवर्तनहु, रमणकचंद्रमहीप ॥ पांचजन्यमंदरहरिन, लंकासिंहलद्वीप ॥ ३० ॥
जंबूद्वीपविवर्नयह, मैंभाष्योंससुझाय । जामेंभारतखंडयह, अतिउत्तमदरशाय ॥ ३१ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ पंचमस्कंधे एकोनविंशस्तरंगः ॥ १९ ॥

दोहा–अवप्लक्षादिकद्वीपके, लक्षणऔरप्रमान । अरुविभागतिनकेसकल, तुमसोंकरहुबखान ॥ १ ॥

जंबूद्वीपभूपचहुँओरा । लवणसमुद्रअहैअतिघोरा ॥ अहैलक्षयोजनविस्तारा । प्लक्षद्वीपअबसुनहुउदारा ॥
लवणसमुद्रहुकेचहुँओरा । लक्षद्वीपअभिमन्युकिशोरा ॥ योजनयुगुललाखविस्तारा । महाकनकतरुप्लक्षउदारा ॥
अग्निदेवतहँकरहिंनिवासा । सप्तजीभजेहिनामप्रकासा ॥ इध्मजिह्वसुतप्रियव्रतकेरो । अधिपतहाँकोतेजघनेरो ॥२॥
शिवअरुप्रवयसशांतहुक्षेमा । अमृतसमुद्रअभययुतनेमा ॥

दोहा–येनृपसातहुसुतनके, नामहितेतहँद्वीप । सातखंडह्वैजातभे, कियेविभागमहीप ॥

सातखंडसीमागिरिसाता । तिनकेनामकहौंअवदाता ॥ ३ ॥ इंद्रसेनअरुवज्रहुकूटा । जोतिषमतिसुपर्णमणिकूटा ॥
हिरनष्ठीवऔरधनमाला । येसातहुनृपशैलविशाला ॥ अरुणानृम्णाअरुसुप्रभाता । अंगिरसीसावित्रीख्याता ॥
ऋतंभराअरुसत्यभराही । सातनदीतितिहिंद्वीपहिमाही ॥ तिनकोजलसबपातकनासी । तिनमेंमज्जततहँकेवासी ॥
हंसपतंगऔरऊर्द्धायन । अरुसत्यांगहुधर्मपरायन ॥ तहँकेवरणचारयेजानो । सहसवर्षकीआयुषमानो ॥

दोहा–तहँकेवासीदेवसम, जपियहमंत्रसदाँहि । धर्मकर्मनिष्ठासहित, पूजहिंदिनकरकाहिं ॥ ४ ॥

मंत्र–प्रत्नस्यविष्णोरूपंचसत्यस्यर्तस्यब्रह्मणः । अमृतस्यचमृत्योश्चसूर्य्यमात्मानमीमहि ॥ ५ ॥

ताकेउतेशालमलिदीपा । चारलक्षयोजनहिमहीपा ॥ सुरासिंधुताकेचहुँफेरा । चारिलक्षयोजनकोघेरा ॥ ६ ॥ ७॥
तहाँवसतहैविहँगअधीशा । जहाँशालमलिवृक्षमहीशा ॥ ८ ॥ यज्ञबाहुसुतप्रियव्रतकेरो । तहँकोभूपप्रतापघनेरो ॥
ताकेसातपुत्रबडभागा । तिनकोपितुकरिदियोविभागा ॥ तिनकेनामहितेतहँभूपा । सातखंडह्वैगयेअनूपा ॥
देववर्षरमणकहुसुरोचन । सुमनसदारभद्रअप्यायन॥सतवाँखंडअहैअविज्ञाता।यहिविधिहोयविभागविख्याता ॥९॥

दोहा–वामदेवकुंदहुकुमुद, स्वरसऔरशतशृंग ॥ पुष्पवर्षअरुसहसश्रुति । येगिरिसातउतंग ॥

कुहूसिनीवालीअरुअनुमति।नंदाराकारजनिसरस्वति॥सातहुनदीतहाँकीजानो ॥१०॥ चारवरणअबकरहुँबखानो॥
श्रुतधरवीरजधरहुवसुंदर । इषुधरचारहुवरणधर्मधर ॥ जपियहमंत्रतहाँकेवासी । ध्यावहिंचंद्रदेवमुदराशी ॥ ११॥

मंत्र–स्वधोभिःपितृदेवेभ्योविभजन्कृष्णशुक्लयोः प्रजानांसर्वासांराजांऽधः सोमोनआस्त्विति ॥ १२ ॥

सुरासिंधुकेउतैमहीपा । आठलक्षयोजनकुलदीपा ॥ ताकेचहुँकितघृतकोसागर । योजनआठहिलक्षउजागर ॥
हिरण्यरेतप्रियव्रतसुतजोई । तौनद्वीपकोभूपतिसोई ॥ तहँकुशकोइकवृक्षअनूपा । परमप्रकाशितजानहुभूपा॥१३॥
जानहुनृपकेसातकुमारा । तिनकेनामनिकरौंउचारा ॥

दोहा–नाभिगुप्तअस्तुतिवृतौ, देवविविक्तहुनाम । वसुवसुदानहुजानिये, सातखंडअभिराम ॥

सातसीमसातहुगिरिसरिता । तिनकेनामकहहुँमुदभरिता ॥ कपिलचक्रअरुचारहुशृंगा । चित्रकूटहैचौथउतंगा ॥
ऊर्द्धरोमअरुदेवानीका । द्रविणसातयोगिरिअतिठीका ॥ श्रुतविंदाऔरहुमधुकुल्या । औरमित्रविंदामधुकुल्या ॥
सुरगर्भाअरुमंत्रहुमाला॥१४॥१५॥घृतच्युतासारिसातविशाला॥तिनकेजलतेतहँकेवासी॥होतसबैअघओधविनाशी॥
कुशलकोविदौशुभआचरणा॥अभिजिककुलकचारयेवरणा॥अगिनदेवध्यावहितहँकेजन॥पढ़ियहमंत्रसदाप्रमुदितमन

मंत्र–परस्यब्रह्मणःसाक्षाज्जातवेदोऽसिहव्यवाट्देवानांपुरुषांगानां यज्ञेनपुरुषंयजेति ॥ १७ ॥

दोहा–घृतसमुद्रकेनृपउते, क्रौंचद्वीपचहुँओर । योजनसोरहलक्षको, तहँहैमोदनथोर ॥

ताकेचहुँकितसागरक्षीरा । योजनसोरहलक्षगँभीरा ॥ क्रौंचनामतहँशैलउतंगा । तातेतासुभयोदुखभंगा ॥ १८ ॥
हन्योस्वामिकार्तिकतिहिशूला । भयोदुसालशैलतेहिहूला ॥ क्षीरसिंधुकेलगेतरंगा । तातेतासुभयोदुखभंगा ॥
वरुणसदातेहिरक्षतरहई । तातेअभयशैलसोअहई ॥ प्रियव्रतकोघृतपृष्टकुमारा । जासुसातसुतपरमउदारा ॥
सातखंडकरिद्वीपहिकाँही।पुत्रनबाँटिदियेतिहिठाँही ॥१९॥ आपुगयोहरिचरणनशरणा।जेहैंजनकल्यानिहिकरना ॥

दोहा–मेघपृष्ठभ्राजिष्टअरु, लोहितस्वर्णसुधाम । आमवनस्पतिमधुरहो, सुनहुखंडकेनाम ॥ २० ॥

वर्द्धमानउपबर्हणनंदन । सुक्तसरवतोभद्रहुभोजन ॥ अहयकनंदसीमागिरिसाता ॥२१॥ अबमैंनदीकहौंविख्याता ॥
तीर्थवतीअरुरूपवतीहू । सुकलाऔरपवित्रवतीहू ॥ अभयाअरुअमृतौघाजोई । सतईअहैआर्यकासोई ॥
तिनसरिमहँतेहिद्वीपनिवासी।मज्जनपानकरतमुदरासी॥ चारिवरणजानहुहरिसेवक।पुरुषऋषभअरुद्रविणहुदेवक॥
पढ़ियहमंत्रतहाँकेवासी । पूजहिंजलमहँअवधविलासी ॥ २२ ॥

मंत्र–आपःपुरुषवीर्यास्स्थपुनंतीर्भूर्भुवःसुवतानः पुनीतामीवघ्निः स्पृशतामात्मनाभुवः ॥ २३ ॥

क्षीरसिंधुकेउतैमहीपा । शाकनामकोजानहुद्वीपा ॥

दोहा–योजनबत्तिसलाखको, तहँकोहैविस्तार । ताकेचहुँकितजानिये, दधिकोउदधिअपार ॥

सोऊयोजनबत्तिसलाखे । शाकद्वीपमधिअसकविभाखे ॥ शाकवृक्षइकअतिहिंउतंगा । दीपनामभोताहिप्रसंगा ॥
ताकीसुरभिदीपमधिछावे । कोमलकठिनतासुदलभावे॥२४॥प्रियव्रतसुतमेधातिथिसोई । तौनद्वीपकोभूपतिसोई॥
ताकेसातपुत्रबडभागा । करिकेद्वीपहिसातविभागा ॥ दैकैसुतनगयेहरिधामा । तिनसुतनामहिखंडहुनामा ॥
चित्ररेफबहुरूपमनोजव । विश्वधारपवमानपुरोजव ॥ धूम्रानीकजानियेसाता । येपुत्रनकेनामविख्याता ॥ २५ ॥

दोहा-सहसस्रोतउरुशृंगअरु, सतकेसरईसान । देवपालबलभद्रअरु, महानसोनृपजान ॥

सातशैलतेहिद्वीपहिमाहीं । अबवरणहुमैंसरितनकाहीं । अनघाआयुर्दाअपराजित । उभयसृष्टिपंचपदनिजधृत ॥
औरसहसश्रुतिसरितामाता २६ चारिहुवरणकहौंअवदाता॥ऋतव्रतसतिव्रतऔरदानव्रत।चौथोजानहुऔरअनुव्रत ॥
यहीमंत्रपढ़ितहँकेवासी । पूजहिंपवनदेवसुखरासी ॥ २७ ॥

अथमंत्रः ।

अन्तःप्रविश्यभूतानियोविभर्त्यात्मकेतुभिः । अंतर्यामीश्वरःसाक्षात्पातुनोयद्वशेस्फुटम् ॥ २८ ॥

दधिसागरकेउतैनरेशा । पुहकरद्वीपजानिमतिवेशा ॥ योजनचौंसठलक्षप्रमाना । ताकेचहुँकितभूपसुजाना ॥
शुद्धनीरसागरसुखसारा । योजनचौंसठलखविस्तारा ॥

दोहा-पुहकरद्वीपहिमेंनृपति, पुहकरपुरटहिकेर ॥ लावनदलतामेंलसै, हैप्रकाशचहुँफेर ॥

जामेंकरहिंवासकरतारा॥२९॥खंडयुगलतेहिद्वीपउदारा ॥ शैलमानसोत्तरअसनामा । तौनद्वीपमधिअहैललामा ॥
करतद्वीपकरयुगलविभागा । महाप्रकाशतासुबड़भागा ॥ दशहजारयोजनचौड़ाई । तितनीहीहैतासुउँचाई ॥
इंद्रवरुणयमधनदहुकेरी । गिरिपरपुरीचारुचहुँफेरी ॥ दिनकरमानसउतरहिमाहीं । दक्षिणउत्तरसदाफिराहीं ॥
उतकोदिनजबलोबितजावे । इतकोउत्तरअयनकहावे ॥ उतकीजबलौंनिशासिरावे । इतकीदक्षिणअयनकहावे ॥

दोहा-तातेसुरकोदिवसनिशि, मानुषसंवतएक ॥ सुरअरुमानुषदिवसनिशि, ऐसोअहइविवेक ॥ ३० ॥

वीतिहोत्रप्रियव्रतसुवन, ताकोअधिपललाम ॥ ताकेद्वैसुतहोतभे, धातकिरमणकनाम ॥

दोउपुत्रनकरिद्वीपविभागा । हरिपुरगोभूपतिबड़भागा॥३१॥तौनद्वीपकेप्रजाअपारा । जपियहमंत्रसदासुखसारा ॥
ब्रह्मरूपकृष्णकोध्यावे । तनतजिब्रह्मलोककहँजावे ॥ ३२ ॥

अथमंत्रः ।

यत्तत्कर्ममयंलिंगंब्रह्मलिंगंजनोर्चयेत् । एकांतमद्वयंशान्तंतस्मैभगवतेनमः ॥ ३३ ॥

शुक उवाच ।

ताकेउतैनरेशउदारा । जानहुलोकालोकपहारा ॥ ३४ ॥

ताकेउतैमहाअँधियारा । करतनदिनकरतेजपसारा ॥ मेरुमानसोत्तरगिरिकेरो । बीजजोनसोकियोनिबेरो ॥
एककोटिसत्तावनलाषे । योजनसहसपचासहुभाषे ॥ शुद्धोदकसमुद्रकेउत्तर । इतनोईहैधरणीविस्तर ॥

दोहा-तामेंप्राणीवसतकोउ, वरणजातअरुनाम ॥ नहिंविख्यातजानोपरे, असजानहुमतिधाम ॥

ताकेउतैनिगमअसभाषे । आठकोटिउन्तालिसलाषे ॥ योजनसुवरणधरणीजानो । निरमलमुकुरसरिसतेहिमानो ॥
तामेंकोउनहिंनिवसतप्रानी।गिरीवस्तुपरतीनहिंजानी।तहँदेवअरुदेवनदारा।निशिदिनप्रमुदितकरहिंविहारा३५ ३६
पुरटधरनिकेउतैउदारा । जानहुँलोकालोकपहारा ॥ ताकेउतैनरेशउदारा । कर्दमसरिसगाँठअँधियारा ॥
दिनकरतेजतहांनहिंजातो । लोकालोकइनैरहिजातो ॥ इतैलोकअरुउतैअलोका । नामताहितेलोकालोका ॥३७॥

दोहा-साढ़ेबारहिंकोटिनृप, योजनशयलउतंग ॥ सीमातीनहुँलोककी, सोईअहैअभंग ॥

तितनोविस्तरजितनोतुंगा । तामेंजानहुकोटिनशृंगा ॥ ३८ ॥ लोकालोकपकेचहुँओरा । धारेधरणिनागवरजोरा ॥
ऋषभऔरअपराजितवामन । पुष्करचूडबलीअतिपावन॥तेविरंचिकेथापितकीन्हें । खड़ेचारगजधरणीलीन्हें॥३९॥
लोकालोकशैलकेऊपर । युतधरमादिकअंगै सिधिवर ॥ लैपार्षदविष्वक्सेनादी । धारेआयुधअतिअहलादी ॥

वसहिरमायुतश्रीभगवान।करनहेतजीवनकल्यान॥४०॥४१॥वरण्योंजौनमहाअँधियारा।ताकोसुनहुभूपविस्तारा॥
योजनसाढ़ेबारहिंकोटी । छाईअँधियारीअतिमोटी ॥

दोहा--भूपमहातमकेउतै, कोटिनयोजनमाँहिं, हैविकुंठयदुपतिनगर, जहँयोगीजनजाँहिं ॥ ४२ ॥
यहब्रह्मांडहिमध्यमें, भ्रमतरहैदिनईश ॥ साढ़ेबारहिंकोटिनृप, योजनचहुँकितदीश ॥
तातेयहब्रह्मांडहै, योजनकोटिपचास ॥ ४३ ॥ मारतंडरवियाहितें, मृतअंडहिकरवास ॥
हिरण्मयोब्रह्मांडयह, तामधिकरहिंनिवास ॥ हिरण्यगर्भतातेभयो, रविकरनामप्रकास ॥ ४४ ॥
दिशाव्योमनरकहुस्वरग, असधरणीबड़भाग ॥ अतलादिकअपवर्गहू, रवितेहोतविभाग ॥ ४५ ॥
सुरनरनिरयकआदिसब, जेजगकेहैंजीव ॥ तिनकेनेत्रअधीशरवि, यहजानहुमतिसीव ॥ ४६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृतेआनन्दाम्बुनिधौ पंचमस्कंधेविंशस्तरंगः ॥ २० ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा--यहवरणनभूगोलको, मैंसिगरोकहिदीन ॥ अबखगोलवरणनकरौं, सुनियेभूपप्रवीन ॥
जैसेनृपसंपुटकरवेशा । एकउपरइकतरेनरेशा ॥ १ ॥ ऐसेहैभूगोलखगोला । अंतरिक्षजोसोमधिपोला ॥ २ ॥
सोईअंतरिक्षमधिभानू । करहिप्रकाशितदशहुनिशानू ॥ अहैतीनगतिदिनकरकेरी । शीघ्रमंदअरुसमहुनिवेरी ॥
तेहितेबढ़तघटतदिनराती । समहुहोतकहुँहैअरिघाती ॥३॥ रविजबतुलामेषमहँजावै । तबदिनरातसमानहिभावै॥
वृषअरुमिथुनकर्कसिंहकन्या । इनमेंजबआवैरविधन्या॥यकयकदंडहियकयकमासा॥बाढतवासरलहिनिशिनासा ॥
जैसहियकयकदंडहिराती । सुनिभूपतिक्रमतेबढ़िजाती ॥ ४ ॥

दोहा--वृश्चिकअरुधनमकरहू, औरकुंभअरुमीन ॥ इनकेरविमेंबढ़तनिशि, होतदिवसतिमिछीन ॥ ५ ॥
बढतनिशाजबलोंदखिनायन।चढ़तदिवसजबलोंउतरायन ॥६॥ नवकरोरइक्यावनलाखा॥योजनमानसउत्तरभाखा॥
पुष्करद्वीपहिमाँहअखंडल । शैलमानसोत्तरकोमंडल । ताकेउपरउपरादिनराई । मेरुप्रदक्षिणकरतसदाई ॥
मेरुपूर्वमानसागिरिपाहीं । वासवनगरीवसतसदाहीं ॥ नामदेवधानीहैताको । तहाँवासहैनितमघवाको ॥
मेरुदखिनमानसगिरिपाहीं । संयमनीयमपुरीतहांहीं ॥ पश्चिमदिशासोइगिरिऊपर । वरुणपुरीनिम्लोचासुखभर ॥

दोहा--उत्तरमेरुगिरीशके, मानसउत्तरमाहिं ॥ विभावरीधनपालकी, नगरीवसतसदाहिं ॥
इंद्रपुरीमहँजबरविआवै । तबदिनरातिसमानाहिभावै ॥ जबआवैयमपुरीदिनेशा । मध्यदिवसतबहोतनरेशा ॥
वरुणपुरीआवैजबभानू । तबइतसंध्याहोतसुजानू ॥ धनदपुरीजबजाहिदिवाकर । अर्द्धरातिइतहोतिभूपवर ॥ ७॥
वसहिंजेमेरुमाथमधिमाहीं।तिनहिंरहतमध्याह्नसदाहीं ॥ तिनकीनिशाकबहुँनहिंहोती।सदारहतदिनकरकीज्योती॥
पूरबचलहिंचंद्ररवितारा।जानिपरतपश्चिमसंचारा ॥८॥ तहँरविउदयपरहिदृगजोही।तेहिसन्मुखपुनिअस्तहुहोही ॥

दोहा--इंद्रपुरीजबरविरहहि, तबयमपुरीप्रभात ॥ वरुणपुरीमहँभूपतब, कालनिशीथदेखात ॥
धनदपुरीसंध्याह्वैजाती । असविभागऔरहुदिनराती ॥ जौनपुरीऊपररविआवै । नृपतहँमध्यादिवसह्वैजावै ॥
जहँजिनकोरविउदितदेखाही।तेइपूरबतेहिकहतसदाही॥जिनकोजहांअस्तलखिपरहीं।तेजनपश्चिमताहिउचरहीं ९॥
युगलकोटिअरुसैंतिसलाखा । अरुपचहत्तरसहसदुभाषा ॥ इतनेयोजनजाहिदिनेशा । पंद्रहिदंडहिमाहिंनरेशा ॥
रविइंद्रादिपुरिनमहँजाहीं।पंद्रहिपंद्रहिदंडहिमाहीं॥ऐसहिऔरचंद्रअरुतारा।उदयअस्तलखिपरहिअपारा॥१०॥११॥
चौंतिसलक्षअष्टशतयोजन । जाहिंदंडयुगमहँरविरोजन ॥ १२ ॥

दोहा--अबरविकोरथमैंकहौं, जैसोजासुप्रमाण ॥ सोसुनियेचितलायके, कुरुकुलभूपप्रमाण ॥

वेदमयोसिगरोरथजानो । संवतसरचक्रहिअनुमानो ॥ द्वादशमासहिद्वादशआरा । पटऋतुहैषटनेमिउदारा ॥
चतुरमासत्रयमासहुतीना । असजानहुयहभूपप्रवीना । मेरुमानसोत्तरगिरिताकी । धुराजानियेपरमप्रभाकी ॥
ऐसोरविकोरथनृपराई । नभमहँपवनअधारहिपाई ॥ शैलमानसोत्तरकेऊपर । योजनसहसपचासहुकेपर ॥
तैलयंत्रसमचारिहुओरा । चलतचक्ररविकोजवजोरा ॥ तौनधुरामेंदियोसुनाई । तासुस्थूलताकहौंबुझाई ॥
दोहा—एककोटिसत्तावने, लक्षसहस्रपचासु ॥ एकओरकीस्थूलता, इतनेयोजनतासु ॥ १३ ॥
साढेसैंतिससहसअरु, लाखहुउन्तालीस ॥ एकओरकोजानिये, ताकोधुरामहीस ॥
सोइधुराध्रुवलोकहिलोहै । मारुतबंधनसकलबँधोहै ॥ १४ ॥ रथकेउपरकेरचौडाई । योजनछत्तिसलाखगनाई ॥
जुवाजासुयोजनसोलाखा । सततुरंगवेदमयभाषा ॥१५॥ अरुणनामसारथीभानुको ॥ ताहिजानियेविनाजानुको॥
सोवैठोसूरजकेसन्मुख।हाँकतवाजीनिरखतरविमुख॥१६॥वालखिल्यमुनिसाठहजारा।तिनकेहैतिहिदिशाअगारा ॥
रविकीअस्तुतिकरतसदाहीं । रविसन्मुखमुखपाछेलतजाहीं॥१७॥ऋषिअप्सराऔरगंधर्वा।नागडाकिनीरक्षसपर्वा ॥
दोहा—येसातहुगणसंगमें, पृथक्पृथक्करिनाम ॥ अस्तुतिकरहिंदिनेशकी, गायगायगुणग्राम ॥ १८ ॥
इक्यावनलाखैनृपति, अरुनवकोटिसुजान ॥ शैलमानसोत्तरहिको, मंडलकेरप्रमान ॥ १९ ॥
योजनयुगलहजारअरु, युगलकोशरविजान ॥ एकहिक्षणमहँजातहै, ऐसोअहैप्रमान ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृतेआनन्दाम्बुनिधौपंचमस्कंधेएकविंशस्तरंगः ॥ २१ ॥

दोहा—सुनिमुनिकेअसवचननृप, अतिशंकाउरआनि । बोलतभोशुकदेवसों, जोरिजलजयुगपानि ॥

राजोवाच ।

पूरवयहवरण्योमुनिराई । रविअरुशशितारासमुदाई ॥ मेरुहिध्रुवहिप्रदक्षिणदेही । तौपूरवगतिभैविधिकेही ॥
यहविरुद्धलागतमनमाहीं।कहियकृपाकरिमुनिमोहिपाहीं॥१॥सुनतपरिक्षितकेअसवैना।कहनलगेशुकदेवसचैना ॥
जिमिकुलालकोचक्रनरेशा । भ्रमतोदक्षिणओरहमेशा॥अरुपिपीलिकाचढितिहिमाहीं।यद्यपिजाहिवामदिशिकाहीं॥
तद्यदिचक्रचलतचहुँघाही । तेहिदिशितेऊलखतभ्रमाही ॥ ऐसहिचंद्रसूर्यअरुतारा । यद्यपिगमनहिंपूर्वअपारा ॥
दोहा--तदपिचक्रकेवेगवश, दक्षिणगतिदरशाहि । येद्वादशआदित्यनृप, नारायणअतिआहि ॥
करनहेतलोकनकल्याना । द्वादशरूपभयेभगवाना॥ वसंतादिषटऋतुकेधर्मा । प्रकटावतजगदायकशर्मा ॥२॥३॥
वेदविहितविधिजेरविध्यावैं।तेजनमंगलआशुहिपावैं ॥४॥ भोगहिजबरविद्वादशराशी । सोसंवतभाषतमतिराशी ॥
सोईद्वादशमासकहावै । युगलपक्षप्रतिमासहिभावै ॥ नरकोमासपितरदिनएकू । वदिदिनसुदिनिशिकियोविवेकू ॥
द्वैनक्षत्रऔरयकचरना । एकमासभोगहितमहरना ॥ युगलमासकीइकऋतुहोई । षटऋतुवर्षकहैसवकोई ॥ ५ ॥
दोहा--अयनएकषटमासकी, द्वैअयनाहिकोवर्ष । चंद्रमासअरुमासरवि, येद्वैसुनहुसहर्ष ॥ ६ ॥
चंद्रमासमहँषटादिनघटहीं । सूर्यमासमहँषटादिनबढ़हीं ॥ संवतसरपरिवत्सरजानो । इडवत्सरअरुवत्सरमानो ॥
अरुवत्सरयेपांचहुनामा । संवतकेजानहुमतिधामा ॥ चंद्रमासकेतीजेसाला । होतएकअधिमासभुवाला ॥ ७ ॥
महितेयोजनलक्षहिभानू । तेहितेलखयोजनसितभानू ॥ जेतोसंवतमहँरविजाहीं । तितनोशशियकमासहिमाहीं ॥
जाहिभानुयकमासहिजितनो। सवाद्वैदिनामहँशशितितनो॥८॥चंद्रकलासुरगणहरिलेहीं। तैसहिफिरपूराकरिदेहीं॥
हरचोजवेसोइकृष्णकहावै । पूरकियोसोइशुक्लगनावै ॥ ९ ॥
दोहा--एकनखतशशिभोगतो, साठदंडमहिपाल । सवजीवनजीवनप्रदै, षोडशकलाविशाल ॥
अमृतमयोअन्नहिमयो, मानसमयोमयंक । अहैताहितेसर्वमय, गवनतगगननिशंक ॥ १० ॥

शशिकेउपरतीनलखयोजन। नृपअट्ठाइसअहैनखतगन॥ इनकीहैपूरवगतिनाहीं।चक्रहिगतितेचलतसदाहीं॥११॥
नखतउपरयोजनद्वैलच्छा। असुरपुरोहितराजतस्वच्छा॥शीघ्रसमानऔरगतिमंदा। शुक्रतीनिगतिकहमुनिवृंदा॥
शुक्रशीघ्रगतिमहँजबजावै। तबरविकेआगूदरशावै॥ चलहिअसुरगुरुजबगतिमंदा। तबरविपाछूरहहिविलंदा॥
शुक्रजबैसमगतिकहँगहही। तबदिनकरकेसंगहिरहही॥ सदारहैजीवनअनुकूला। कोहुकेकबहुँनहींप्रतिकूला॥

दोहा--अतीचारजबशुक्रको, होइवृष्टितबहोइ। वृष्टिविरोधीग्रहणफल, अबशिडारतीखोइ॥ १२॥

ऐसीगतिजानहुबुधकेरी। औरबातकछुकहौनिवेरी। कवितेपरयोजनद्वैलाखा। बुधकोअस्थलमुनिजनभाखा॥
बुधबहुधाजीवनहितकारी। सदासंचरतसंगतमारी॥ कबहुँजोहोतविलगरवितेरे। रहहितबैरविकहघनघेरे॥
अतिप्रचंडतहँवहतनयारी। वृष्टिनहोतसृष्टिसुखकारी॥१३॥युगललक्षयोजनबुधकेपर। जानहुनरवरमंगलकेघर॥
डेढमासभोगतइकरासी।यदिनवक्रगतिहोतविलासी॥बहुधाकरतअशुभजनकाहीं।गनतपापग्रहसुमतिसदाहीं॥१४॥

दोहा--मंगलकेऊपरनृपति, द्वैलखयोजनमाहि। अहइबृहस्पतिसुरगुरू, सुखदायकद्विजकाहि॥

यदिनवक्रगतिसुरगुरुभोगै। तौइकमासवर्षभरभोगै॥१५॥ ताकेपरयोजनद्वैलाखा। रहहिंशनैश्चरकविगनभाषा॥
तीसमासभोगतइकराशी। चलतग्रहनपीछेतमराशी॥ सबकोहैदुखदायककोरा। अहैक्रूरग्रहअतिवरजोरा॥१६॥
शनिकेउपरउतरदिशिपाहीं। एकादशयोजनलखमाहीं॥ जानहुनृपसप्तर्षिनिवासा। तेध्यावहिंनितरमानिवासा॥
अचलकृष्णपदअतिअभिरामा। जाकोकहैंसबैबुधिधामा॥ तेहिसप्तर्षिप्रदक्षिणदेही। जामेंसुखपावहिसबदेही॥

दोहा--कश्यपअत्रिवशिष्ठहू, गौतमविश्वामित्र, भरद्वाजजमदग्निअरु, हैसप्तर्षिपवित्र॥ १७॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबान्धवेशश्रीमहाराजविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धि
श्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारि
रघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौपंचमस्कंधेद्वाविंशस्तरंगः॥ २२॥

शुक उवाच।

दोहा--सप्तऋषिनकेउपरनृप, योजनतेरहलाख। अहैविष्णुकोअचलपद, ऐसोमुनिजनभाख॥

तहांवसतभागवतउदारा। ध्रुवउत्तानहिपादकुमारा॥ अगिनिइंद्रपरजापतिधर्मा। अरुकश्यपदायकजगशर्मा॥
नखतरूपतेपरमसनेही। ध्रुवहिसदापरदक्षिणदेही॥ जियहिकलपहूभरजेजीवा। तिनकेध्रुवआधारअतीवा॥
ध्रुवमहराजचरित्रसोहावन। पूरवमेंवरण्योअतिपावन॥१॥रविअरुचंदनखतअरुतारा।भ्रमतरहैंतेव्योमअपारा॥२॥
जैसेमेढीखंभहिंमाहीं। बँधेबैलचहुँओरफिराहीं॥ ऐसेचक्रगथेसबतारा। भ्रमतरहहिलहिपवनअपारा॥

दोहा--जैसेमेघविहंगबहु, लहिकेपवनअपार। नभमंडलमहँफिरतहै, गिरहिनधरणिमँझार॥ ३॥

कोइतेहिकहहिचक्रशिशुमारा। कालचक्रकोउकहहिउदारा॥४॥ पुच्छउपरनीचमुखताको। रूपजासुहैपरमप्रभाको॥
ध्रुवमहराजहाथतेहिपुच्छा। कुंडलसोहैचक्रप्रतिच्छा॥ पुच्छमध्यमहँसुवसेचारी। ब्रह्माअगिनिपरमपविधारी॥
पुच्छमूलमहँधातविधाता।कटिमहँहैसप्तर्षिविख्याता॥दक्षिणआवर्तहितितिहिकुंडल। तेहितनसकलनखतकरमंडल॥
नखतचतुर्दशदक्षिणऐना। वामअंगमहँहैमतिऐना॥ उत्तरायणकेनखतचतुर्दश। दक्षिणअंगमाँहतेहैतस॥

दोहा--पवनपंथतेहिपीठमें, अहैउदरनभगंग॥ ५॥ नखतपुनर्वसुपुष्यद्वै, उभयनितंबअभंग॥

आर्द्राअरुआश्लेषादोई। पीछेकेपायनमहँहोई॥ अभिजितऔरउत्तराषाढ़े। अहैनासिकामहँसुदबाढ़े॥
श्रवणपूर्वाषाढ़सुवेशा। दक्षिणवामहिनेत्रनरेशा॥ दक्षिणवामहिकाननमाहीं। रहतधनिष्ठामूलसदाहीं॥
नखतमघादिकआठहुजेते। बायेंपार्श्वरहतनृपतेते॥ पूर्वभाद्रमृगशिरपर्यंता। दक्षिणपार्श्वहिमहँमतिवंता॥
शतभिषअरुज्येष्ठानृपराई। दक्षिणवामाहिकंधदेखाई॥६॥ दक्षिणकपोलहिकुंभजराजे।वामकपोलहिमहँयमसाजै॥
मुखमहमंगलशनिउपस्थमहँ। ककुदबृहस्पतिरविहैउरमहँ॥

दोहा-हियमेंनारायणवसैं, मनमेंअहैमयंक ॥ शुक्राचारजनाभिमें, निवसतभूपनिशंक ॥
दोउहस्तअश्विनीकुमारा । प्राणअपानहुबुधौउदारा ॥ ताकेकमरमाँहहैराहू । सकलकेतुअंगननरनाहू ॥
सिगरेरोमनमहँसबतारा ॥ ऐसोहैचक्रवशिशुमारा ॥ ७ ॥ सत्यप्रत्यक्षरूपहरिकेरो । सकलदेवमेंकियोनिवेरो ॥
जोकोउजननितसंध्यामाहीं । शुचिह्वैदरशनकरहिसदाहीं॥पढियहमंत्रहिकरहिंप्रणामा॥सोतवहोयआशुमतिधामा ॥
रैनदिवसकेपापनशाहीं । यामेंहैकछुसंशयनाहीं ॥ ग्रहनक्षत्रऔरसबतारा । इनकोहैशिशुमारअधारा ॥
दोहा-धराधीशधनिधनिध्रुवै, त्रिभुवनमेंकुरुनाथ ॥ कृष्णरूपाशिशुमारयह, रहतसदाजेहिहाथ ॥
अथमंत्र-नमोज्योतिर्लोकाय कालायनायानिमिषां पतये महापुरुषाय धीमहिति ॥ ८ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजासिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा-
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौपंचमस्कंधेत्रयोविंशस्तरंगः ॥ २३ ॥

शुक उवाच ।

दोहा-अबसुनियेनृपधरणिके, नीचेकोविस्तार ॥ सूरजसोपाताललों, मैंसबकरतउचार ॥
योजनदशहजाररविनीचे । अहैराहुमंडलनभवीचे ॥ कहहिनक्षत्रसरिसकोउताको । कज्जलगिरिसमहैवपुजाको ॥
यद्यपिअसुरअहैनहिंदेवा । कृष्णकृपालहिंसोनरदेवा ॥ भयोदेवग्रहमधिकियवासा । तासुजनमअरुकरमप्रकासा॥
अष्टमअसकंधहिमहँआगे । कहिहोंसकलभूपवडभागे॥१॥दशहजारयोजनरविमंडल।द्वादशसहसमयंकअखंडल ॥
तेरहसहसराहुविस्तारा । ताकीसुनियेकथाउदारा ॥ रूपछिपायराहुसुरमाहीं । चह्योपियनपियूषहिकाहीं ॥
सुधापियतरविशशीबतायो । मारिचक्रहरिशीशगिरायो ॥
दोहा-सोईवैरविचारिकै, पर्वपाइनरनाहु ॥ रविशशिसन्मुखधावतो, अतिरोषितह्वैराहु ॥ २ ॥
लीलतजानिचंदरविकाहीं । करिकैकृपाकृष्णमनमाहीं॥चपलचलावहिचक्रहिघोरा । आवतसोरविशशिढुतठोरा ॥
तासुतेजतपिभागतराहू । लीलिनसकतसुनहुनरनाहू ॥ जबलोंरहतराहुकीछाया । सोईग्रहणअहैनृपराया ॥३॥
शशिरविरिपुनीचेनभपाहीं । नृपयोजनदशसहसैमाहीं ॥ विद्याधरसिधिचारणकेरे । अरुगंधर्वननगरघनेरे ॥ ४ ॥
तिनकेनीचेसुनकुरुराई । भूतपिशाचप्रेतसमुदाई ॥ राक्षसयक्षनकरअस्थाना । करहिंविहारतहाँविधिनाना ॥
नौसैयोजनसहसउनासो । येसबविचरहिंअतिसुखरासी ॥
दोहा-जहँलोमारुतबहतअति, जहँलगिजाहिंपयोद ॥ ५ ॥ प्रवहवायुशतयोजनै, नीचेमहिप्रदमोद ॥
प्रवहवायुलगिवारिदजाहीं । घननीचेहंसादिउडाहीं ॥ धरणीतेखगगतिपरयंता । सोभूलोकगनहुमतिवंता ॥ ६ ॥
वरण्योंपुरुषधरणिप्रमाना । अबआगेसुनियेमतिमाना ॥ सातलोकहैभूकेनीचे । दशदशसहसयोजनहिबीचे ॥
तिनकोअससुनियेविस्तारा।जहँलौंअंडकटाहअपारा॥प्रथमअतलपुनिवितलविचारो।सुतललोकपुनिकियोउचारो॥
फेरितलातलफेरमहातल । जानहुभूपतिफेररसातल ॥ ताकेनीचेअहैपताला । सातलोकयेहैंमहिपाला ॥ ७ ॥
येसातहुलोकनमहराजा । अहैस्वर्गतेमोददराजा ॥
दोहा-दैत्यदानवहुअरुउरग, सुतातियबंधुसमेत ॥ अनुचरअरुसुहृदहुसहित, निजनिजवसतनिकेत ॥ ८ ॥
तहँउपवनवनबागतडागा।क्रीडाअस्थलसहितविभागा ॥ दानवदैत्यहुऔरहुनागा । तहँविचरहिंप्रमुदितबडभागा ॥
ईशकृपातेतिनकरकामा।कोउनहिंरोकिसकहिमतिधामा ॥ मैंदानवविरचितमहराजा।जडितमणिनकेनगरदराजा ॥
सुवरनकेगोपुरप्राकारा। अंगनसभाउतंगअगारा ॥ शुककपोतसारिकासुहावन ॥ करहिंशोरकलअतिमनभावन॥
रतनखचितधरणीअतिराजै।विहरहितहँअहिअसुरसमाजै९अतिसोहहिंसुंदरआरामा।तिनमेंतरुगणविविधललामा ॥
फूलनफलनपत्रकेभारे । परसहिअरुणतरुणकीडारे ॥

दोहा–लपटिलतालहरैललित, निर्मलनीरतडाग॥जलविहंगबोलहिमधुर, लसहिघाटचहुँभाग ॥
मीनमकरतहँकराहिंविहारा । उठहितरंगअभंगअपारा ॥ फूलेसरसिजचारिप्रकारे । लसहिकुमुदगणातिनिमनहारे ॥
असुरनागकोलखिसुखरासी॥ललचहिनितनितस्वर्गहुवासी तहाँदिवसनिशिकीभैनाहीं॥अहिशिरमणिनप्रकाशसदाहीं
करहिंदिव्यऔषधरसपाना । तेनृपहैंसबसुधासमाना ॥ आधिव्याधिअरुजरागलानी॥ स्वेदश्रमहुँअरुदेहमलानी ॥
येतिनकोकबहूँनहिंहोवै॥तनतेसुरभिसरससुखमोवै॥१३॥यदुपतिचक्रविनातिनकाहीं । कबहूँमरणहोतहैनाहीं॥१४॥
दोहा–जबतिनलोकनमेंनृपति, चक्रसुदर्शनजात ॥ तबहीतहँकोतियनको, होतोगर्भनिपात ॥ १५ ॥
यहसाधारणवरण्योंताता॥अबसुनियेविशेषविख्याता॥प्रथमअतललोकनमतिधामा । जहँनिवसतमयसुतबलधामा॥
छियानवैविरचीसोमाया । तिनमेंकोउकोउजनकोउपाया ॥ सोइअबलोंजगमाहिंदेखाहीं । औरसबैताकेढिगमाहीं॥
जबबलदानवेशजमुहाना । तबत्रयनारिकढींमतिमाना॥प्रथमस्वैरिणीदुतियकामिनी॥ तृतियपुंश्चलीजनलुभावनी ॥
अतलमाहिंतिनकेगणराजा॥विचरहिंचहुँकितसहितसमाजा॥जोकोउजीवअतलमहँजाहीं ।ताकोनारियेरिचहुँघाहीं॥
दोहा--हाटकनामहियेकरस, तिनकोदेहिपियाइ ॥ भोगशक्तिअतिप्रबलदै, तिनकोरमहिरसाइ ॥
करिकेबहुविधिवचनविलासा । सहितलाजअरुमंदहिहासा ॥ आलिंगनकरिबारहिंबारा । तिनकोदेहिअनंदअपारा॥
तेहिरसपानकियेजेजीवा । निजकरमानहिसिद्धअतीवा ॥ दशहजारगजजोरहिपावै । ह्वैमदांधसबसुरतिभुलावै ॥
ऐसोजानहुअतलविधाना॥१६॥अबसुनवितललोकविज्ञाना॥ वितललोकमहँहैत्रिपुरारी । हाटकेश्वरहिनामउचारी॥
उमासहितनिजगणनसमेतू । रचतप्रजाविलसहिवृषकेतू॥शिवअरुशिवाशुक्रतेपावनि॥बहतिहाटकीनदीसोहावनि ॥
दोहा--पवनवेगतेबढ़िअगिनि, पानकरतसोरेत ॥ पुनिधूकतसोइहोतहै, हाटकप्रभानिकेत ॥
ताकोभूषणअतिछविकारी । धारहिअसुरअसुरकीनारी ॥१७॥ वितललोककेनीचेभूपा॥सुतललोकहैपरमअनूपा ॥
तहांवसहिंश्रीबलिमहराजा । जाकोजगमेंसुयशदराजा ॥ लियोजीतिवासवकोराजू । पाल्योत्रिभुवनसहितसमाजू॥
अदितिपुत्रह्वैवामनरूपा । वासवहितहरियाचनभूपा ॥ असुरअधिपढिगकियेपयाना । त्रिपदमहीमाँग्योभगवाना ॥
त्रैपदनापेहुतीनहुलोका । सबदेवनकोकियोअशोका ॥ करिकेपरमकृपाबलिपाहीं । सुतलनिवासदियोतिनकाहीं ॥
दोहा--देवनकोदुर्लभविभो, सोबलिकोप्रभुदीन ॥ असुरअधिपअबलोंसुतल, करतनिवासप्रवीन ॥
पूजतहरिकोप्रीतिबढाई । कालहुकीसोभीतिविहाई ॥ १८ ॥ आगेकेमन्वंतरमाहीं । पैहैबालिइंद्रासनकाहीं ॥
कोउअसकहहिमूढमुखमाहीं॥ भुवनदानदैवामनकाहीं॥लह्योअसुरपतिसुतलनिवासा॥स्वर्गहुतेजहुँअधिकविलासा॥
सोनहिंसत्यअहैकुरुराई । हरिकोदाननअसफलदाई ॥ सबजियअंतरयामिमुरारी । तीरथकेप्रभुतीरथकारी ॥
मनहुतेजिनकहअर्पणकीने । लहतपरमपदपुरुषप्रवीने ॥ तिनहिप्रत्यक्षपायबलिराई । अर्प्योसबसंपतिशिरनाई॥
ताकोफ़लकासुतलनिवासा । ताकोफलवैकुंठविलासा ॥
दोहा--जेहिसंसारहितजनाहित, योगीयतनकराहिं ॥ नाशहोतसंसारसो, रामकहतमुखमाहिं ॥
सवैया--जाकेलियेबहुयोगिजनैकरतेजतनैकरिकायकलेशे । धर्मऔकर्मव्रतोजपहूतपजोजगछूटतहेतहमेशे ॥
भाषतहैंरघुराजसुनोजनसोसहजैनाशिजातविशेसे१९छींकतहूगिरतोपरतोडरतोकहौंकैसहुनामरमेसे ॥
दोहा–कोजगमेंहैदूसरो, यदुपतिसारिसउदार ॥ देतप्राणहूप्रीतिलखि, निशिदिनताकतद्वार ॥ २० ॥ २१॥
रहीवासनाकछुमनमाहीं । तातेविभौदियोबलिकाहीं ॥ २२ ॥ बलिकेविभौहरणकेहेतू । छोडियाचनाकृपानिकेतू॥
लख्योउपायनद्वितियमुरारी । तबमाँग्योहरिहाथपसारी ॥ रह्योमहाभागवतसुरारी । धरणीधीरधर्मधुरधारी ॥
बलित्रिभुवनवाममकहदीन्ह्यों । ताहूपैहरिबंधनकीन्ह्यों॥गेरिदियोगिरिगुहामँझारी । तबहूँबलिअसगिराउचारी२३॥
सचिवबृहस्पतिजासुअमंदा । सोवासवसबविधिमतिमंदा ॥ पायनाथयदुनाथसमाना । विभौभोगमहँरह्योलुभाना॥
याच्योकृष्णभक्तिनहिंभारी । चाह्योतुच्छविभूतिहमारी ॥
एकमन्वंतरमेंनसत, जोयहतुच्छविभूति ॥ जचवायोहरिहाथसों, कियोकौनकरतूति ॥ २४ ॥

मोरपितामहजोप्रहलादा । मांग्योहरिसोंभक्तिप्रसादा॥ हिरण्यकश्यपकहहनिभगवाना । देनलगेतेहिविभवमहाना ॥
पैप्रहलादभक्तिकहत्यागी॥लियोनविभवकृष्णअनुरागी२५तिनकेसमहमकेहिविधिहोवैं॥विषयभोगमहँतनमहिखोवैं॥
बलिकेवचनसुनतभगवाना॥ताकोदियोसुतलअस्थाना ॥२६॥ तिनकोचरितकहैंगेआगे॥अष्टमअसकंधहिबड़भागे॥
बलिकोछलनगयेभगवाना । आपहुछलिगेकृपानिधाना ॥ गदाहाथगहिबलिकेद्वारे । खडेरहतहैंनजरनिहारे ॥
हरिकेसरिसभूपबड़भागी । कोअसदुतियदासअनुरागी ॥

दोहा–कोदूजोबलिसारिसमहि, भाग्यवानमहिपाल ॥ जाकेत्रिभुवनगुरुहरी, भयेद्वारकेपाल ॥

एकसमयतहँरावणवीरा । जगकीविजयकरतरणधीरा॥ गयोसुतलबलिजीतनकाहीं । प्रविश्योगृहनिरशंकतहांहीं॥
रहेद्वारमहँवामनठाढे । जेनिजभक्तिप्रीतिमहँगाढे ॥ रावणकोरोंक्योभगवाना । बिनपूछेकसकरहुपयाना ॥
बावनआँगुरकोलखिबालक । हँस्योठठायलंककोपालक ॥ कह्योवचनबालकतेछोटो । पैमोहिजानपरतअतिमोटो॥
अपनेतनकोभाननतोहीं । रोकनचहतगदालेमोहीं ॥ सहिहैनहिंअंगुलिहुप्रहारा । पैयमंडनहिंजातसम्हारा ॥

दोहा–असकहिप्रभुकोरेलके, भीतरचाह्योजान ॥ तहँविहँसतबलिद्वारमें, श्रीवामनभगवान ॥

दशशिरकोपदकेअँगुठासों॥फेंक्योतेहिअतिहीलघुतासों॥गिरयोसोचालिससहसकोशमें । भग्योतहांतेविगतरोषमें॥
बलिरक्षतयहिभाँतिसदाहीं । खडेरहतप्रभुद्वारेमाहीं ॥ २७ ॥ सुतललोककेनीचेभूपा । अहैतलातललोकअनूपा ॥
दानवेंद्रजाकोमयनामा । वसततहांसोअतिसुखधामा ॥ पूरवजोरचित्रिपुरनरेशा । दियोजगतकहविपुलकलेशा ॥
तबयकसायकहनित्रिपुरारी॥दियोतुरंतत्रिपुरकहँजारी॥हरिशरणागतजबमयआयो॥करिअस्तुतिचरणनशिरनायो॥

दोहा–ताकोशंकरकरिकृपा, दियोतलातलवास ॥ हरणहेतहरिचक्रभय, आपहुकियोनिवास ॥

मयमायाविनकोआचारज । वसततहाँदनुकुलकोआरज॥२८॥ताकेनीचेअहैमहातल। रहहितहांकद्रूसुतअहिभल॥
जिनकेअहैअनेकनशीशा । तिनमेंयहहैमुख्यफनीशा ॥ कुहकऔरतक्षकअरुकाली। अरुसुखेनजानहुविषशाली ॥
महाशरीरजानुनृपतिनके । तैसाहिमहाकोपविषजिनके ॥ पायगरुड़कीभीतिमहाई । लैनिजतियसुतकुलसमुदाई ॥
वसेमहातलमेंसबभाई । विहरहिंमत्तमहासुखछाई ॥२९॥ ताकेअधहिरसातललोका । दैत्यदानवहुवसहिविशोका ॥
तहँदानवाहिरण्यपुरवासी । औरनिवासकवचबलरासी ॥

दोहा–अरुकालेयपौलोमहू, निवसहिमोदविस्तारि ॥ सबैतेजसीतेजसी, अतिसाहसीसुरारि ॥

कुरुपतितिनकेगर्वप्रहारी । अहैएककेवलगिरिधारी ॥ यदुपतिकीतेमानिभीतिभल, वसहिंभुजंगसमानरसातल ॥
एकसमयवासवकीदूती । सरमानामनिपुणकरतूती ॥ इंद्रपठायोताहिरसातल । जानततहँकीखबरभाँतिभल ॥
दूतिसोदानवअसभाषे । करहिसंधिवासवकसमाषे ॥ जबदूतीअसगिराउचारी । वासवतुमहिंडारिहैमारी ॥
तबतेदानवकछुमनमाहीं । सदाडेरातसुरेशहिकाहीं ॥ यदुपतिसखापार्थबलभारी । गयोरसातलधनुशरधारी ॥

दोहा–तहांअकेलेझारिशर, कियोदानवननाश ॥ विजयपायकरिशंखध्वनि, कियजशजगतप्रकाश ॥ ३०॥

ताकेनीचेअहैपताला । तहांवासुकीनागविशाला ॥ औरहुसर्पनकीबहुजाती । तिनकेनामकहौंअरिघाती ॥
महाशंखअरुशंखधनंजय । कुलिशसेतधृतराष्ट्रविगतमय ॥ शंखचूडकंवलहुअश्वतर । देवदत्तआदिकभुजंगवर ॥
महाअमरषीतेउरगेशा । तिनकेवपुअतिवृहदनरेशा ॥ केहुकेपाँचअहैफनभूपा । कोहुकेसातअहैंसुअनूपा ॥
केहुकेदशफनजानहुँराजा । केहुकेदशफनअहैदराजा ॥ कोहुकेफनहैफवेहजारा । तहँतिनकेमणिफनिउजियारा॥

दोहा–अंधकारनाशतसकल, दिनसमरहतप्रकाश । ऐसहिवासुकिआदिअहे, करहिंपतालनिवास ॥ ३१ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ पंचमस्कंधेचतुर्विंशस्तरंगः ॥ २४ ॥

शुक उवाच।

दोहा–ताकेनीचेभूपवर, योजनतीसहजार। कृष्णकलाश्रीशेषहै, जिनकेफनहुहजार॥
आतमशुद्धिकरैतनमाहीं। ऐसोजोहंकारसदाहीं॥ ताकेस्वामीशेषफनीशा। सोहैप्रतिस्वरूपजगदीशा॥ १॥
धरयोएकफनमाहअखंडा। सरसौंसरिससकलब्रह्मंडा॥२॥ चहतशेषजबजगसंहारा। करतकोपतेहिकालअपारा॥
भ्रमतिभ्रकुटिअतिबंकविशाला। जेहितेप्रकटतरुद्रकराला॥ एकादशमूरतिकेधारी। त्रयलोचनत्रिशूलकरमारी॥
करिकैतीजोनयनप्रकाशा। सोईकरतजगतकरनाशा॥३॥ शेषरूपअबसुनहुनरेशा। औरसबैहैनरसमवेशा॥
दोहा–अहैकंठतेसहसफन, मनहुसहसकैलास। चारिभुजासोहतसुभग, कोटिनशशीप्रकास॥
अरुणकमलपदयुगलविराजै।नखमणिमुकुरविमलछबिछाजै॥ वासुकिआदिकभुजँगअधीशा।तिननखनितनवनावहिशीशा
कुंडलदुतिमंडलतेमंडित।निरखहिनिजमुखप्रभाअखंडित॥औरहुभक्तसबैतहँआई। पावहिंसुखशेषहिशिरनाई॥४॥
सिगरीनागराजकीकन्या। शेषसमीपआइतेधन्या॥ विलसितवलयविशदविस्तारू।विपुलधवलभुजचारिहुचारू॥
मानहुरजतखंभपरकाशी। तिनमेंनागसुताछविराशी॥ चंदनकुंकुमलेपनकरहीं। प्रभुअँगपरसिमहामुदभरहीं॥
दोहा–मदनविवशमंदाहिविहँसि, ललनाललितलजाय। अहिपतिवारिजवदनबहु, अवलोकहिंटकलाय॥
प्रदमुदघूमतसरसिजनयना।नैसुकअरुणकरुणकोअयना॥नागसुतामुखताकहिनाथा।मंदविहँसकरदेहिसनाथा॥५॥
हैअनंतगुणसागरसोई। तातेकहअनंतसबकोई॥ करनहेतलोकनकल्याना। बसहिविरंचिमहितलअस्थाना॥ ६॥
आदिदेवहैशांतस्वरूपा। वंदहिसुरअसुरहुतेहिभूपा॥ विद्याधरअरुसिद्धमुनीशा। किन्नरअरुगंधर्वअहीशा॥
अस्तुतिकरहिंचहूँदिशिठाढ़े। पुलकिततनआनँदअतिबाढ़े॥ मदमोहितनैनाअरुणारे। मणिमालाउरमेंप्रभुधारे॥
दोहा–नीलवसनसोहतसुभग, इककुंडलहैकान। एकहाथमेंहललसत, इककरमुशलमहान॥
कंचनकीसोहतचौरासी।कनककवचतनपरमप्रकासी॥नवकोमलतुलसीदलजामें।बिचबिचकुसुमकलितकलितामें॥
तिनकेझरतमधुरमकरंदा। करतपानकरिगुंजमिलिंदा॥ ऐसीसोहतिउरवनमाला। मनुसितधनधनुइंद्रतमाला॥
निजपार्षदनविबुधगणकाही। वचनसुधाकहिविबुधतहाँहीं॥आदरसहितअनंदहिदेही।तनकीतापतुरतहरिलेही॥७॥
जोकोउकरहिशेषकरध्याना। ताकेहियकरतुरतपयाना॥ ताकीनाशवासनानाना। प्रगटहितुरतविमलविज्ञाना॥
दोहा–नारदमुनितुंबरसहित, ब्रह्मसभामहँजाय। शेषप्रभावहिगायअस, सबकोदेहिंसुनाय॥ ८॥
छंद–जगतउतपतिपालनअरुसंहारननिजप्रेरणतेप्रकृतिकरै। जाकोरूपअनादिअनंतहुरहितसमाधिकनिगमररै॥
जिनमेंविविधभाँतिजगसिरजतजेसबजगतअधारअहै। ऐसेशेषसहसमुखकीगतिकोसमरथमुखएककहै॥ ९॥
शुद्धसतोगुणमयस्वरूपधरिअवधद्वारिकाकारिलीला। कियोउधारअनेकनपापिनगावहिजेहिंजनशुभशीला॥
जासुमंदगतिलहिमृगपतिवनगहतमंदगतिशोभभरी। रेवतिरमणउरमिलारमनंनिशिदिनदायाद्दगनभरी॥१०
वागतजागतगिरतपरतअरुबैठतहँसतउठतदूखैं। शेषियुगुलअक्षरयेजोजनकढैकैसहूकहूँमुखै॥
ताकेपापतापसबशापहुरहतनहींलेशहुतनमें। ऐसेप्रभुकोतजिमुमुक्षुजनकेहिदूजोध्यावैमनमें॥ ११॥
सोहैसरसोसरिसशीशमेंसिंधुशैलसहभूगोलै। शेषअशेषचरित्रकेहैकोउयदिसहस्रनसनहुबोलै॥ १२॥
वलदुरंतऐसेअनंतप्रभुहैंअनंतजिनपरभाऊ। सकललोकनीचेनिवसहिधरिशीशसकलजगनृपराऊ॥ १३॥
दोहा–यहअहीशअस्तुतिअमल, सुनिअजसहितसमाज। शेषचरणध्यावतरहत, पावतमोददराज॥
यहखगोलभूगोलसब, मैंजोवरण्योभूप। इतनेहीमेंलहतफल, पुरुषकर्मअनुरूप॥ १४॥
यहजोपूरवप्रश्नकिय, सोमैंदियोसुनाय। काहसुननकीचाहअब, सोकहियेकुरुराय॥ १५॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौपंचमस्कंधेपंचविंशस्तरंगः॥ २५॥

राजोवाच।

दोहा–हेमहर्षियहलोकको, सुखदुखभोगविचित्र। सोकेहिविधितेहैसकल, कहियोकथापवित्र॥
सुनिकेकुरुपतिकीअसबानी। बोलेव्याससबनसुखदानी॥ १॥

श्रीशुक उवाच।

जीवत्रिगुणबलमैंनृपजानो। तातेश्रद्धहुत्रैविधिमानो॥ जाकीश्रद्धासात्विकिहोई। आनँदपावतहैजगसोई॥
श्रद्धासोईराजसीजाकी। सुखदुखदशाहोतहैताकी॥ जाकीहोततामसीश्रद्धा। सोजनरहतसदादुखवृद्धा॥
यहीविचित्रभोगकोहेतू। जानहुसत्यभूपमतिसेतू॥ २॥ सकलपापभोगनअस्थाना। कीन्होंविधिजैसोनिरमाना॥
सोमैंविस्तरकरहुँबखाना। सुनियेसकलभूपदेकाना॥ ३॥
दोहा–सुनतव्यासनंदनवचन, अतिमोदितमहिपाल। जोरिपाणिपंकजतुरत, बोलेवचनरसाल॥

राजोवाच।

कौनदेशमहँहैमुनिराई। निगमनरकसबदियोगनाई॥ धौंत्रिभुवनकेभीतररहही। धौंत्रिभुवनकेबाहेरअहही॥
अंतरिक्षमहँधौंमुनिगाई। किधौंभूमिमहँहैदुखदाई॥४॥सुनिकुरुपतिकेवचनसोहावन। बोलेशुकाचार्यअतिपावन॥

शुक उवाच।

त्रिभुवनभीतररहैसदाहीं। नरकसबैदिशिदक्षिणमाहीं॥ जलकेउपरभूमिकेनीचे। नरकअहैदोहुनकेबीचे॥
अग्निष्वादिजेपितरअपारा।हैंतिनकेतिहिदिशाअगारा॥निजकुलकोचाहतकल्याना।वसहिंतहांध्यावतभगवाना॥५॥
दोहा–नरकनिकटयमलोकहै, तहांवसतयमराज॥ औरहुतहँयमदूतबहु, निवसतसहितसमाज॥
करहिपापजेजियजगमाहीं। धरियमदूतघोरतिनकाहीं॥ तुरतहियमसमीपलैजाहीं। दंडदेतजसपापकराहीं॥
हैअधिकारकृष्णकोदीना। तातेतिनकेरहतअधीना॥ ६॥ कोइइकइसनरकबखाने। कोईअट्ठाइसअनुमाने॥
तिनकेनामरूपअरुलक्षण। मैंतुमसोंसबकहौंविलक्षण॥ हैतामिस्रअंधतामिस्रहु। रौरौऔरोमहारौरवहु॥
कुंभीपाकहुकालसूत्ररुख। अरुअसिपत्रवनहुशूकरमुख॥ अंधकूपऔरहुकृमिभोजन। अहसंदंशतप्तसुरभीषन॥
दोहा–वज्रहिकंटकशाल्मली, वैतरणीजलपीव॥ प्राणरोधअरुबिससुनहु, लालाभक्षअतीव॥
औरसारमेयादनजोई। अरुअवीचअयपानहुसोई॥ येइकईसोकियोबखाना। अबसुनसातऔरमतिमाना॥
कर्दमक्षाररक्षगणभोजन। शूलप्रोतअरुदंदशूकभन॥ अवटनिरोधनपरजावरतन। सूचीमुखसोतहुँकहमुनिगन॥
येअट्ठाइसनरकप्रधाना। औरहुलघुअनेकमतिमाना॥७॥ जोकोउपरधनपरसुतदारा। हरणकरतबरवशसंसारा॥
तौनजीवकोयमभटघोरा। कालपाशमहँबाँधिकरोरा॥ तामिस्रहिनरकहिमहँडारैं। दंडप्रचंडपीठमहँमारैं॥
दोहा–भोजनपाननदेतकछु, डरवावतबहुभाँति॥ गिरतकहूंकहुँउठिभगत, कहुँमूर्च्छाह्वैजात॥
अंधकोठरीमेंबँध्यो, पर्‍योरहतदिनरात॥ हायहायमुखसोंभनत, कछुनहिंतासुवशात॥८॥
जोकोउठगिपरधनपरदारा। हरणकरतवरवशसंसारा॥ नरकअंधतामिस्रहुमाहीं। यमभटगहिडारहिंतिनकाहीं॥
सुधिबुधिरहतनकछुतनमाहीं। आँखिनतेदरशतकछुनाहीं॥मारहिंलोहदंडतिहिशीशा॥करतपुकारसुआरतदीशा॥
कटोमूलतरुसमगिरिपरतो।पुनिपुनिउठतभगतअतिडरतो॥अँधतामिस्रनरकमहँराजा।यहिविधिबहुयातनादराजा॥
जोकोउपुरुषअहैअहँकारी। मानतयहसबवस्तुहमारी॥ करिकेसबसोंद्रोहअपारा। पालतकेवलनिजपरिवारा॥
दोहा–ताकोयमकेदूतगहि, रौरवनरकहिडारि॥ तपतलोहकेदंडहनि, देतदेहकोजारि॥ १०॥
जेजनइतजीवनकहमारैं। यमभटतिनहिंरौरवहिडारैं। जेजेजीवनमारतप्रानी। तिनहिंतहाँकृमिह्वैदुखदानी॥
काटित्वचातनमेंघुसिजाहीं। लाखनछिद्रकरहिंतनमाहीं॥ नाभिलिंगगुदह्वैतेप्रविसैं। नासानैनकानह्वैनिकसैं॥
मरतनहींअतिशयबिलखाता। करतपुकारहायपितुमाता॥यहहैविशिखपराकरनामा। जाकेडरसेजियेनहिंजामा ११
जोकोउकेवलनिजतनपालै। ताकेहितबहुप्राणिनघालै॥ तेहियमदूतपकरिलैजाहीं। डारहिंमहारौरवहिमाहीं॥
दोहा–तहांमांसभक्षीमहा, रुरुनामकबहुकीट॥ चोंथिचोंथितनचामको, खायँघसीटघसीट॥
यहिविधिवर्षबीतिबहुजाहीं। परोनरकमहँमरतोनाहीं॥ १२॥ जोपशुपक्षिनकोचंडाला।जीतहिभूंजतहैमहिपाला॥

तिहिंनिरदयकहँदुतयमदूता। डारिगलेफांसीमजबूता॥ कुंभीपाकनरकलेजाहीं। तपततेलतहँचुरतसदाहीं॥
ताहितेलमहँताकहडारी। भूंजहिलैकरछुलीकलहारी॥ मरतनहींजियकरतचिकारा। रहतनतनकरतनकसम्हारा॥
जितनरोमापशुतनमाहीं। तितनेसहसवर्षवितिजाहीं॥ १३॥ करैनजोपितुकीसेवकाई। करहिंविप्रसोंवैरमहाई॥
करहिंवेदनिंदाजोकोई। सुनहुयातनाजोतिहिहोई॥

दोहा–कालसूत्रनामकनरक, योजनदशैहजार॥ तपिततताम्रधरणीतहां, ज्वालाउठतअपार॥

भालामात्रउपररविरहही। तातेतहँअँगारगनझरही॥ तेहिपापीकहयमभटपकरी। डारहिंतौनभूमिमहँजकरी॥
लागततेहिअतिक्षुधापिपासा।मिलतनहींभोजनजलवासा॥कहूँगिरतकहुँउठतपुकारत।चटपटातचहुँओरनिहारत॥
ठाढ़होतकहुँपुनिकहुँधावै। जरतअंगकहुँजियकढ़िजावै॥पूरवकरणीकीसुधिआवै।कहाकियोवहुमनपछितावै॥१४॥
विनआपतिजोअवअनुरागै। वेदविदितनिजमतिकोत्यागै॥ उदरनिमित्तकरहिपाखंडा। ताकोगहियमदूतप्रचंडा॥

दोहा–नरकघोरअसिपत्रवन, जहँअसिसमतरुपत्र॥ पापीप्राणिनडारिकै, मारहिंताजनतत्र॥

चीतकारकरिचहुँदिशिभागै। तरुकेदलकृपाणसमलागै॥ छिन्नभिन्नकैजातशरीरा। उपजतदुसहदेहमेंपीरा॥
हायमरचोमैंकहतपुकारी। मुरछितहोतपीरतेभारी॥ पुनिउठिभागतताजनलागै। पगपगमहँगिरतोदुखपागै॥
ऐसोनिजमतत्यागनहारा।पावतदुखयमराजअगारा॥१५॥जोभूपतिभूपतिअधिकारी।करहिनिसाफननीतिविचारी॥
देहिअदंडिनदंडउदंडा। देहिनदंडिनकोअतिदंडा॥ देहदंडविप्रनकोदेही। तिनकोयमभटद्रुतगहिलेही॥
शूकरमुखनरकहिमहँगेरै। ऊखसरिसताकोतहँपेरै॥

दोहा–पीसिजातसबअंगहै, पैनहिंनिकसतजीव॥ चीतकारकरतोअमित, मुरछितहोतअतीव॥

विनअपराधिनजसदुखदेतो। तैसाहितहँआपहुदुखलेतो॥१६॥माछीमसादंशखटकीरा। चीतरजुवाआदिसबकीरा॥
इनकीवृत्तिरचीभगवाना। करहिमनुजतनशोणितपाना॥ जानहिनहिंकक्षुविथापराई। तिनकोजेमारहिनृपराई॥
तेजीवनयमभटगहिभूपा। डारहिंनरकअंधअतिकूपा॥ पशुपक्षीकृमिकीटअपारा। जिनकोजीवजानिजगमारा॥
तेजियअंधकूपमहँतिहिजन। चोंथिचोंथिकेखातछनहिछन॥ कहूँचेतकहुँहोतअचेतू। कठनकूपतेलहतननेतू॥
जैसेकुत्सिततनमहँजीवा। लहतअनेककलेशअतीवा॥ १७॥

दोहा–मीठपदारथकोउपुरुप, विनबाटेजोखाय॥ पंचयज्ञजोनाहिकरत, विनअरपेयदुराय॥

तेहियमभटकृमिभोजननामा। नरकदेहिजोअतिदुखधामा॥ शतसहस्रयोजनचौंडाई। हैकीरनकोकुंडमहाई॥
सोइनिवसतकृमिकुंडहिमाहीं।खातकृमिहिकृमिहूतिहिखाहीं॥ लक्षवर्षतिहिनरकहुमाहीं।कृमिसमकरतनिवासतहाँहीं॥
जोकोउद्विजकोकनकचुरावै। अथवाबरवसधनहरिलावै॥ अथवाविनहिविपत्तिपरेही। धनचुरायऔरकरलेही॥
सोसंदंशनरकमहँजावै। यमभटहाथदंडअसपावै॥ तपतलोहकेरचिवहुगोला। धरहिसुलैतनपरहिफफोला॥

दोहा–चटपटातचहुँओरतहँ, छूटनपावतनाहिं। चीतकारक्षणक्षणकरत, मरतनजरततहाँहिं॥ १९॥

जोकोउगमनकरतपरदारा। अथवातियपरपुरुषविहारा॥ अथवाब्राह्मणवेश्याराखै। क्षत्रीविप्रनारिअभिलाखै॥
ताकोडारिलेगमहँफाँसी। लैगमनहियमभटबलराशी। रचितहँतपितलोहकिनारी। तेहिलपटाइदेहिंतनजारी॥
तपितलोहकेपुरुषबनाई। तियतनमेंतेसहीलगाई॥ चटपटातसोछुटननपावै। नहिंतनतेजीवहुकढ़िजावै॥
चाबुकचारउपरतेमारे। मिलहुमिलहुअसबैनउचारे॥२०॥ जोकोउगवनकरैपशुजोनी।वरकैनहिंकोनिहुअनहोनी॥
ताकोयमभटयमपुरमाहीं। मारतकसाकेलेतजाहीं॥

दोहा–तहाँलोहकोअतितपित, सेमरवृक्षविशाल। तामेंकाँटातीखअति, ज्वालाउठतिकराल॥

तामेंतेहिपापीकहगोरे। सहसनवरषताहिनहिंछोरे॥ करततहाँअतिआरतशोरा। तापरताडतताजनघोरा॥ २१॥
जोकोउराजाराजकुमारा। अथवासचिवऔरसरदारा॥ मेटहिसकलधर्ममरयादा। करहिपखंडपंथप्रतिपादा॥
ब्राह्मणवैष्णवकोनहिंमानै। भजेभूततजिकेभगवानै॥ हैपरलोकमृषाअसकहहीं। तिनकोयमभटआशुहिगहहीं॥
परिखानरकनकीवैतरनी। तामेंडारहिशुनितिहिकरनी॥ वहुतपीवमलमूत्रहुमेदा। नसअरुहाडकेशप्रदखेदा॥

दोहा–भरोसदातेहिसरितमें, फैलतिअतिदुरवास। सोपापीतहँवहतानित, खातमकरअरुमास॥

मलमूत्रहुआपहुनितखाई।कहुँबूड़तकहुँपुनिउतराई॥तहँसुधिकरिकेनिजकृतपापा।बारहिबारलहतअनुतापा॥२२॥

जेदासीअरुगणिकाराषै । जेवरजैतिनपैअतिमावै ॥ छोडतसिगरोधर्मअचारा । करततनेवरनीकविचारा ॥
करैनकबहूँकेहुकीलाजा । मातुपितागुरुभ्रातहुराजा ॥ ऐसेपापीजबमरिजाहीं । तबयमभटयमपुरलैजाहीं ॥
पीबमूत्रमलरक्तखकारा । याहीकोतहँसिंधुअपारा ॥ तामेंनितपापिनकहँडारै । बोरहिंअरुपुनिताहिनिकारै ॥
सोईखातनिवसततेहिमाहीं । लाखनवरषनरहततहाँहीं ॥

दोहा–जोअरुक्षत्रीब्राह्मणहुँ, पालैखलअरुश्वान । सोयमपुरमेंपावतो, इहिविधिदंडमहान ॥ २३ ॥
वैतरणीनामासरिमाहीं । परोखातमलमूत्रहुकाँहीं ॥ वर्षहजारनतहँदुखपाई । होतश्वानगर्दभमहिंआई ॥
जोक्षत्रीअरुविप्रउदारा । वैश्यहुशूद्रहुआदिअपारा ॥ विनायज्ञजेपशुवधकरहीं । खेलिशिकारमृगनसंहरहीं ॥
तिनकीयमभटयमपुरमाहीं । बांधिअंगतरुमहँलटकाहीं ॥ लैलैधनुपऔरसितवाना । छेदहिंतिनहिंवनायनिशाना ॥
लगतवानसोंकरतपुकारा । यहिविधिबीततवर्षहजारा ॥२४॥ जोपाखंडीयहजगमाहीं । काटहिंभैंसनबकरनकाहीं ॥

दोहा–जाहिरजगमेंहोनहित, ठानहिंऐसोयाग । तिनकीयमपुरमेंसुनहु, जोनदशाबड़भाग ॥
तेपापिनकोगहियमदूता । वैशसनरकडारिमजबूता ॥ तिनकेअंगनतिलतिलकाटैं, पुनिपुनिजोरहिंपुनिपुनिछाटैं ॥
यहिविधिबीतहिवर्षहजारा।कबहुँनतहँतेहोतउबारा२५जोनिजजातियुवतिकहमानी।कामविवशअतिशयसुखमानी।
रेतपियावतहैसुखमाहीं । कोकशास्त्रविधिकरतसदाहीं ॥ सोपापीयमपुरहिसिधाई । लालाभक्षनरकमहँजाई ॥
वीर्यकुंडमहँपैरतवागै । वीरजपियतमहादुखपागै । यहिविधिबीतजातबहुकाला । भोगतनिजकृतकर्मकराला२६॥

दोहा–जेजारहिंबहुग्रामवर, पापीआगिलगाइ । दैमाहुरमारहिंमनुज, धनसबलेहिंचुराइ ॥
राजाअरुराजाकेचाकर । लूटहिंगांवतियनदैसांकर । यमभटलेतिनपापिनकाहीं । नरकसारमेयादनमाहीं ॥
डारहिंबाधितासुसबअंगा । तहाँसातसैश्वानउतंगा ॥ जिनकेदंतकुलिशसमअहहीं । श्वानसबैतिहिपापिहिगहहीं ॥
फारहिंउदरचामतिहिचावैं।तबहूँतिनकेजीवनजावैं ॥ घासिलावैंतिनकोचहुँवाही । चींतकारतेकरतसदाही ॥
यहिविधिसंवतसहसविताहीं।सहतयातनायमपुरमाहीं ॥२७॥ जोनियावमैंसाखीभयऊ । धनलैझूठसाखिकहिदयऊ॥

दोहा–लेनदेनमेंजोकह्यो, धनबहुझूठबताइ । तिनहिंअवीचिनरकाबिच, यमभटदेहिगिराइ ॥
तहँशतयोजनशैलउतंगा । तिनपापिनयमभटयकसंगा ॥ शैलशृंगपरतिनहिचढाई । नीचेशिरकरिदेहिंगिराई ॥
नीचेकोशिरपरमकठोरा । जानिपरतजलभरोअथोरा ॥ गिरतपरतजबतेहिथलमाहीं । तिलतिलअंगभंगह्वैजाहीं ॥
तदपिनजीवकढततनतेरे । पुनिपुनिजेयमदूतघनेरे ॥ लेशैलतेइतिनहिगिरावैं । यहिविधिसहसनवर्षवितावैं ॥२८॥
जोब्राह्मणअरुब्राह्मणनारी । करहिंसुरापानहिंअविकारी ॥ क्षत्रीऔरवैश्यअज्ञाना । करहिंयज्ञमहँसोमहिपाना ॥

दोहा–क्षत्रीवैश्यहुशूद्रहू, वैष्णवव्रतरतहोय । अतिप्रमोदसोमदपियै, ताहिदंडअसहोय ॥
यमभटडारिफाँसगलमाहीं । लोहपाननरकहिलैजाहीं ॥ करिकैकसाप्रहारअघाता । तिनकीछातीमहँदैलाता ॥
पावकमहँबहुलोहगलाई । तिनकेमुखमहँदेहिंपियाई ॥ भीतरबाहरतनजरिजाई । कहतनाजियऐसेसुखपाई ॥
बारबारप्रतिवारपियावै । यहिविधिवर्षबीतिबहुजावै ॥२९॥ जेकोउतपविद्याद्भुतज्ञानी।तिनहिनवंदेजोअभिमानी ॥
अथवाविद्यागर्भहिभारिके । कहतमनुजसज्जनहिनिदरिके॥तपवरणाश्रमऔरविचारा । इनमेंकरिअभिमानअपारा ॥
पूजैनहिंहरिदासनकाहीं । ताहिहोतअसयमपुरमाहीं ॥

दोहा–ताकोयमभटजातलै, नरकजोकरदमद्वार ॥ काटिअंगभरिलौनबहु, ताजनहनैअपार ॥
पुनिनीचेमुखकारिलटकावैं । ताकेनीचेअगिनिलगावैं ॥ जरतवदननिकरैनहिंप्राना।जाहिवर्षइहिविधिसहसाना ३०॥
जोकोउभैरवभूतभवानी । देहिमनुजबलिअसजियजानी ॥ अरुनारीजेआमिषखावैं । तेजीवनपरदयानलावैं ॥
जेपतिकीनिंदासुखगावैं । तेयातनामरेअसपावैं ॥ ताकोडारहिंदुतयमकेगन । नरकनामरक्षोगनभोजन ॥
जगमहँजेजीवनकहमारैं । तेईतहँराक्षसतनधारैं ॥ श्यामशरीरवदनअतिघोरा । वज्रसरिसनखदंतकठोरा ॥

दोहा–तेराक्षसकरचालते, आशुहिउदरविदारि ॥ पानकरहिंशोणितसुखद, सिगरीआँतनिकारि ॥
गावहिंनाचहिंदैदैतारी।पुनिपुनिखाहिंतासुतनफारी॥मरहिनसोजियकरतचिकारा । वीतहियाहिविधिवर्षहजार३१॥
जेवनकेअथवाघरकेरे । पालिपशुनअरुविहँगघनेरे ॥ अथवाछलकरिफंदफँदाई । मारहितिनहिखिलाइखिलाई ॥
जीतहिंशूलबाणमहँछेदे । मनमहँमानततासुनखेदे ॥ मरेतिनहियमभटलैजाहीं । शूलप्रोतहीनरकहिमाहीं ॥

जेंसेजीवनछेदेउशूला। तेसाहितहँयमभटप्रतिकूला॥ गुदतेमुखलोंशूलहिडारी। मारहिंताजनकीरवलभारी॥
पुरुषहन्योजीवनइतजाका। तेह्वैगृध्रकंकअरुकाका॥

दोहा–वज्रसरिसतिनचोंचहै, अतिलंबेअतिचोष॥ तेविहंगचहुँओरते, तिनपैकरिअतिरोष॥

फारिउदरतेहिआँतनिकारै। तासुमांसकोकरहिअहारै॥ तदपिनमरतजियतहैपापी। भूखपियासहुतेसंतापी॥
सुमिरतनिजकृतकर्मअपारा। लहतमहादुखवर्षहजारा॥३२॥जेप्राणिनकोक्रूरसुभाऊ। राखहिंशीलसकोचनकाऊ॥
सबकोसदाभातिअतिमरही। सबप्राणिनकीचुगलीकरही॥ नरकदंदशूकहिमहजावै। तहँयातनामरेअसपावै॥
सर्पसातमुखअरुमुखपाँचा। जिनकेमुखनिकसतविषआँचा॥ परमउग्रहैबृहदशरीरा। देखतहींउपजतअतिपीरा॥
तेअहितिनपापिनकहँलीलैं।पुनिगुदमारगह्वैतिनठीलैं॥लीलहिआविनअहीयाहिभाँती।यहिविधिबीततबहुदिनराती॥

दोहा–जेकोउप्राणिनकूपमें, निरदयदेहिंगिराय॥ शैलकंदराडारहीं, कुठरीदेहिधँधाय॥

तिनकोयमपुरमहँयमदूता। कुठरीजहँअँधियारअकूता॥ तामेंधाँधिदेहिवरियाई। पुनितेहिमहँपावकसुलगाई॥
तामेंडारिदेहिविषघोरा। धुवाँभरतकुठरीचहुँओरा॥ तातेनैनफूटियुगजाहीं। होतकलेशपरमतनमाहीं॥
तऊनतनतेनिकसहिप्राना। धँधेवर्षबीतेसहसाना॥३४॥जोकोउअतिथिसाधुअभ्यागत।आयेद्वारनतेहिअनुरागत॥
देखतहींदेखतहगटेढे। टरहुटरहुमुखतेअसरेढे॥ गृहमेंधनहैपैनहिंदेही। मानिआपनोरिपुतिहिलेही॥
मीठेवचनबहुरिनाहिंबोले। संचितधनकुठरीकिमिखोले॥

दोहा–सदासाधुद्रोहीरहै, चितवहिंकबहुँनसीध॥ तिनकोयमपुरमेंसुनहु, काककंकअरुगीध॥

निजपंजनसोंपेटहिफारैं। चोंचनचोषनचषननिकारैं॥ छटपटातछूटतहैनाहीं। गहैबाजजिमितीतरकाहीं॥
इहिविधिलाखनवरषसिराहीं।तहँतेनिकारिसकतहैनाहीं॥३५॥जोकोउहोयधनीजगमाहीं। अहंकारमेंभरोसदाहीं॥
कोहूकोविश्वासनराषै। सबसोक्रूरवचनमुखभाषै॥ टेढ़ैनैननतकतसदाहीं। धननाशनशंकामनमाहीं॥
ब्राह्मणतेअथवाऔरनते। देनकह्योधनवचनहुमनते॥ पुनिजबमाँगनआयोसोई। भयोलोभमनमेंधनजोई॥

दोहा–मुखसूख्योकांप्योहियो, कहिनसकतकछुबात। देनकह्योपुनिदेतनहिं, धनरक्षतदिनजात॥

धनबाढनहितबांधतनेतू। धर्मकर्मसबधनकेहेतू॥ खरचहिजोपैसहुयककबहूं। दृगतेआँशुपरैगिरितबहूं॥
ऐसोपापीजबमरिजावै। सूचीमुखनरकाहिसोपावै॥ यमभटतेहिअतिलोभीकेरे। चांधहिअंगनबंधकरेरे॥
लैसूजासहसनकरचोखे। दर्जीसरिससियततनरोखे॥ चीतकारसोकरतअपारा। यहिविधिबीततवर्षहजारा॥३६॥
यहिविधियमपुरमहँकुरुराई। शतनसहस्रननरकमहाई॥ तिनमेंजाहिअनेकनपापी। तेजसतसतेहोइसतापी॥

दोहा–ऐसेस्वर्गहुमेंनृपति, हैंअनेकसुखभौन। जाकीजैसीपुण्यभै, पावहिसुखतेतौन॥

जबनृपपापरह्योकछुबाकी। लहतकुयोनिविबुधवसुधाकी॥ तैसहिपुण्यरह्योकछुशेषा। तबसुयोनिपावतसुखवेषा॥
जेहिविधिहोतनपुनिअवतारा। सोप्रकारमैंप्रथमउचारा॥ यहब्रह्मांडमाहँमतिमाना। लोकचतुर्दशकहैंपुराना॥
थूलरूपनारायणकेरो। यहासिगरोमेंकियोनिवेरो॥याविधिवेदपुराणबखानो। प्रथमहिसूक्ष्मरूपकहजानो॥
जाहिउपनिषदकरतबखाने॥ यदुपतिचरणहोइजेहिप्रीती॥ जानहिसकलभक्तिकीरीती॥ ३७॥ ३८॥

दोहा–हरिवपुसूक्षमथूलसुनि, प्रथमथूलकहध्याय। पुनिसूक्षममेंक्रमहिक्रम, निजमनदेहिलगाइ॥ ३९॥

कवित्त-सातहुखंडनौद्वीपमहीसरसिंधुऔरशैलहूसातपताला।औरदिशानकेभागसबैनरकोस्वरगौनक्षत्रनमाला॥
श्रीरघुराजहरीकोअहैयहथूलसरूपगुनीमहिपाला। जीवनधामसबैवरण्योसबकोपतिएकहैनंदकोलाला॥

दोहा–दिशिनिधिशशिसंवतसुभग, पौषकृष्णबुधवार। त्रयोदशीतिथिकोभयो, पंचमकोअवतार॥ ४०॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुर श्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दाम्बुनिधौपंचमस्कन्धे षड्विंशस्तरंगः॥२६॥

दोहा–महाराजरघुराजकृत, शुभपंचमअसकंध। यहसमाप्तमुद्रितभयो, संयुतछंदप्रबंध॥

समाप्तोयं पंचमस्कंधः ५.

षष्ठस्कन्ध
परीक्षित्
शुक
यमदूत
विष्णुदूत
विष्णुदूत
अजामिल
विश्वरूप
देव
वृत्र
इंद्र
स्त्रिया
अंगिरा
चित्रकेतु
मृतपुत्र
ऋ.
शंकर
चित्रकेतु विमा-
नस्थ.
इंद्र
दिति

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ श्रीमद्भागवत--आनन्दाम्बुनिधि ।

षष्ठस्कंधप्रारंभः ।

दोहा–जयराधामाधवचरण, हरनकलेशअनंत । मोदभरनसबदुखदरन, पावनकरनलसंत ॥ १ ॥
सदादासप्रदभद्रभल, जयबलभद्रदयाल । रुष्टदुष्टपैंसुष्टपै, तुष्टपुष्टततकाल ॥ २ ॥
जयवानीजयगजवदन, जयतिपराशरसूनु । जयशुकदेवसदैवजन, करतज्ञानदिनदूनु ॥ ३ ॥
श्रीमुकुंदहरिगुरुचरण, वंदौवारहिंवार । जयतिजनकविश्वनाथप्रभु, धराधर्मआधार ॥ ४ ॥
सुनिपंचमअसकंधकी, कथापरमकमनीय । फेरिपरीक्षितजोरिकर, वचनकह्योरमनीय ॥ ५ ॥

राजोवाच ।

सोरठा–हेशुकदेवसुजान, ज्ञानवानदायासदन । जीवनकृपानिधान, यहविनतीमेरीसुनौ ॥
प्रथमनिवृत्तिमारगसबगायो । अर्चिरादिमारगहुसुनायो॥तेहिमारगह्वैविधिपुरआवै।पुनिविधियुतजियहरिपुरजावै ॥
यहूमोहिसबदियोसुनाई ॥१॥ औरप्रवृत्तिमार्गसबगाई ॥ जोहैहठिस्वरगादिकदाता । जासुप्रकृतिसंबंधनजाता ॥२॥
वरण्योनरकनकोसमुदाई । जोपापिनकहँअतिदुखदाई ॥ स्वायंभुवमन्वंतरभाख्यो।जाकोवेदआदिकहिराख्यो॥३॥
प्रियव्रतअरुउत्तानपादको । वंशचरितवरण्योप्रसादको॥द्वीपखंडसागरसरितनको।परवततरुअरुवनउपवनको॥४॥
दोहा–वरण्योमहिमंडलहिको, लक्षणभागप्रमाण । तैसहिस्वर्गपतालको, जेहिविधिविधिनिरमाण ॥ ५ ॥
अबजेहिविधिअतिशयदुखद, नरकनहींनरजाय । सोमोपरकरिकैकृपा, दीजैनाथसुनाय ॥ ६ ॥
सुनिभूपतिकीमंजुलवानी । कहनलगेशुकदेवविज्ञानी ॥

श्रीशुक उवाच ।

मनवचकरमहुँबड़लघुपापा।करहिंजेजगमहँजीवअमापा॥तिनकोप्रायश्चितविनकीन्हें।जातनरकजेमैंकहिदीन्हें ॥७॥
तातेजेजगमहँमतिमाना । जबलोंरहैसमर्थमहाना ॥ तबलोंप्रायश्चित्तपापको । करैआशुउरभरिसँतापको ॥
लघुमहँलघुबड़महँबड़करई । प्रायश्चित्तपापसबदरई ॥ वैद्यजानिजिमिलघुबड़रोगू।करतसुखदऔषधिनप्रयोगू॥८॥
सुनिशुककीवाणीमनभाई । कुरुपतिपुनिअसगिरासुनाई ॥

राजोवाच ।

दोहा–लखतसुनतअतिअहितकर, पापनकोमतिमंद ॥ जनहठिवशपुनिपुनिकरत, किमिछूटैदुखद्वंद ॥९॥
प्रायश्चित्ततासुकिमिहोई । जानहिनहिंजगमहँजनकोई॥एकवारअवशोधनकीन्ह्यो । पुनिशठपापहिमहँमनदीन्ह्यो॥
तिनकोप्रायश्चित्तमुनीशा॥कुंजरमज्जनसममोहिदीशा१०असजबकह्योवचनकुरुराजा।कहशुकमध्यमुनीनसमाजा ॥

श्रीशुक उवाच ।

भूपतिकियेकर्मअघकरमा । छूटतनहिंसिगरोहरशरमा ॥ जबलोंजातिवासनानाहीं । मिटतनतबलोंअघजगमाहीं॥
करिप्रायश्चितचहअघनाशन । तिनपरढरतनयमकरशासन॥करिकैपुण्यकर्मअभिमाना।चहहिंतजनजेपापमहाना॥
दोहा–अज्ञानीतिनकोनृपति, तुमउरलेहुविचारि ॥ तातेकेवलहरिभजन, सबअघदेतनिवारि ॥ ११ ॥
जिमिपथभोजनकरतनरेशा।दैनसकतबहुरोगकलेशा॥तिमिजेनेमसहितजगमाहीं।तिनकेक्रमक्रमअघनाशिजाहीं १२
तपअरुब्रह्मचर्यअरुशमदम।दानशक्तिआचारनेमयम॥इनकोकरिश्रद्धायुतधीरा॥१३॥देहवाकबुधिकृतअघभीरा ॥
नाशहिपापनमंगलहारी । जिमिशिखिदेतवेनुवनजारी॥१४॥कोइजनवासुदेवकेदासा।करिडारिकेवलभक्तिप्रकासा॥

विनप्रयासनाशहिसबपापा । यथाभानुनीहारकलापा ॥१५॥ ब्रह्मचर्यशमदमतपनेमा । दानअचारसत्ययमक्षेमा ॥

दोहा—इनतेतसनहिंनशतअघ, तसनपवित्रौहोत ॥ जसहरिदासनसंगते, अरुहरिभक्तिउदोत ॥ १६ ॥

जगमहँभक्तिमार्गयहनीको।भवभयहरमंगलकरिठीको॥भगवतभक्तसंतशुभशीला।जेहिंमगचलिऐंचहिउरकीला१७

प्रायश्चित्तकरेबहुकोई । विनहरिभक्तिपुनीतनहोई ॥ जगमहँसकलधर्मकरिलीन्हा । पैहरिचरणचित्तनहिदीन्हा ॥

सोनपुनीतहोतनृपकैसे । सुराकुंभसरितामहँजैसे ॥१८॥ कृष्णपदारविंदएकहुछन । दियोलगाइप्रीतियुतजेमन ॥

तेप्रायश्चितकियोअशेषै । सपनेहुजगयमभटनहिंदेषै ॥१९॥ तामेंकहहूँएकइतिहासा । पापिनपापनकरनप्रनाशा ॥

दोहा—विष्णुदूतयमदूतको, भयोयथासंवाद ॥ सोमैंवरणनकरतहौं; सुनहुसहितअहलाद ॥ २० ॥

कनवजनगरमाहअघहोई । रह्योअजामिलब्राह्मणकोई ॥ सोकरिकोउविषयनकरसंगा । रँग्योकठिनकामहिंकेरंगा ॥

राखीएकअधमगृहदासी।तासंगनिशिदिनभयोविलासी २१ वरवसधनिनपकरिगृहधाँधी।लैतरह्योछोंड़ाइधनबांधी॥

दिनमेंजुवारातिकैचोरी।ठगतरह्योजनखोरिनखोरी॥२२यहिविधिकरतविविधव्यभिचारा।पालतरह्योसकलपरिवारा।

दियेअनेकनमनुजनपीडा । कबहुनल्यायोनिजमनव्रीडा ॥ दशसुतभेतेहिदासीकेरे । घोरकर्मकरिअघीघनेरे ॥

दोहा—कबहुनसुधिपरलोककी, सुतनखेलावततांहिं ॥ वितेअठासीवर्षगन, महाराजमहिमाहिं ॥२३॥

जबभोबूढशिथिलसबअंगा । भयेतासुसबउद्यमभंगा ॥ तबगृहबैठिकुमतिमहँपाग्यो।निजबालकनखेलावनलाग्यो ॥

लहुरोसुतनारायणनामा। तापरकियोप्रीतियुतबामा॥२४॥तोतरिबालककीमृदुवानी।सुनिकेसुखितरह्योअघखानी॥

निरखिताहिखेलतगृहभूमे।उठिउठिअंकलाइमुखचूमे॥२५॥निजसंगभोजनतेहिकरवावै। पानकरततेहिपानपियावै॥

इहिविधिगयोकालबहुबीती । मान्योनाहिंकालकीभीती॥२६॥मरणकालजबताकोआयो।महाघोरतेहिरोगसतायो॥

दोहा—यमकेदूतभयावने, गहेफांसअतिघोर ॥ खडेरोमटेढेवदन, हरणप्राणवरजोर ॥

श्यामशरीरमहामजबूता।देखिपरेतेहित्रययमदूता॥२८॥तबहिअजामिलअतिभयमानी।छोटेसुतकीसुधिउरआनी ॥

खेलतरह्योबालकहुँदूरी । तेहिगोहरायोव्याकुलभूरी ॥ २९ ॥ नारायणयेअक्षरचारी । जबैअजामिलकह्योपुकारी ॥

सुनतैतुरततहांमहराजा । कृष्णपारषदबलीदराजा ॥ आयगयेअतिसुंदररूपा । धारेआयुधअतिहिअनूपा ॥ ३०॥

लखेअजामिलकहँहरिदासा । खैंचतताहिनायगरपासा॥लैगमनततेहियमपुरपाहीं। कृष्णदूतयमदूतनकाहीं ॥३१॥

दोहा—बलसोंरोकिअजामिलै, लीन्हातुरतछुडाय ॥ तबयमदूतसकोपह्वै, बोलेआंखिदेखाय ॥

अहौकौनतुमरोकनवारे । धर्मराजकोशासनटारे ॥ ३२ ॥ कहँतेआयेकौनपठाये । केहिकारणरोकहुरिसिछाये ॥

अहौसिद्धधौंहौउपदेवा । धौंकिन्नरगंधर्वहुदेवा ॥ ३३ ॥ पदुमपलाशनैनअतिसोहैं । पीतांबरअतिशयमनमोहैं ॥

कुंडलकीटकंजकीमाला॥३४॥नूतनवयभुजचारिविशाला॥धनुनिषंगअसिचक्रगदाधर।श्यामशरीरकंजकरछविवर॥

निजप्रकाशतेदिशनप्रकाशो । धर्मराजकरशासननाशो ॥ ताकोकारणवेगिबतावहु।तबयहपापीकहँलैजावहु॥३६॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—इहिविधिजबयमभटकहे, तबहँसिकैहरिदास ॥ मेघगिराबोलतभये, कियहरिहुकुमप्रकास ॥ ३७॥

विष्णुदूता ऊचुः ।

होहुजोधर्मराजकेदूता । कारकतासुनिदेशअकूता ॥ तौकहिजाउधर्मकेलक्षण । धर्मरूपहूकहहुविलक्षण ॥ ३८ ॥

प्राणिनदेहुकौनाविधिदंडा । दंडयोगकोहोतअखंडा ॥ दंडयोगहैंधौंसबजीवा । दंडयोगधौंमनुजअतीवा ॥

तिनहींमेंधौंसबदमयोगू । धौंजेकरहिंपापउतलोगू ॥ यहहमकोसबदेहुबताई । तबहमसोंतुमपूंछहुभाई ॥ ३९ ॥

सुनतविष्णुदूतनकीवानी । बोलेयमकेभटअभिमानी ॥

यमदूता ऊचुः ।

वेदविहितजोहैसबकर्मा । सोईजानहुहैशुभधर्मा ॥

दोहा–अविहितवेदहिकर्मजो, जानहुअधरमसोइ । वेदअहैनारायण, यहजानतसबकोइ ॥
हरिकोश्वासअहैसबवेदा । यहमैंसुन्योंश्रवणमहँभेदा ॥४०॥ नामक्रियागुणवपुगुतजोई।सतरजतममयप्राणिनसोई ॥
यथायोगनिजतनमेंरचिकै।व्यापकरहतसकलमेंसँचिकै॥सलिलअनलअरुअनिलप्रकाशा।दोउसंध्यारविशशिदशआशा।
निशाद्योसधरणीअरुधर्मा । येसाखीजीवनकृतकर्मा ॥ ४२ ॥ येइअधर्मधर्महुँकहिदेहीं । तबयमराजजानिसबलेहीं ॥
क्रमतेकर्मीदंडहियोगू । त्रिगुणसँयोगअहेसबलोगू ॥४३॥ तातेसुखदुखसबकोहोई । विनाकर्मकोहैनहिंकोई ॥ ४४॥
दोहा–धर्मअधर्महुकरतहै, जितनोजगमेंजोय । तितनोसुखदुखपावतो, परलोकहिंमेंसोय ॥ ४५ ॥
जसकोइसुखीदुखीइतहोई । सुखदुखमिश्रपरैलखिकोई॥४६॥ताकोतसपरलोकहुजानो।गुणविचित्रतायहअनुमानो॥
औरजन्मइहविधिगुनिलेहू । यामेंकछुनकरहुसंदेहू ॥ जिमिपूरवपरगुनऋतुकेरे । वर्तमानतेपरहुनिवेरे ॥
तिमियहिजन्महिकोगतिदेखी। उभैजन्मगतिपरैपरेखी॥४७॥ईशजानिमनतेजनकर्मा।तेहिअनुगुणकलेशअरुधर्मा॥
देनहेतमनकरैविचारा । हैसर्वज्ञविश्वआधारा ॥ ४८॥ तमनहिंजानतजीवअज्ञानी । वर्तमानतनकोअभिमानी ॥
दोहा--जिमिसोवतमहँजीवसव, निरखतस्वप्नअपार । सोईभरजानतरहैं, पूर्वापरनविचार ॥ ४९ ॥
पंचकर्मइंद्रिनतेजीवा । कारजपांचहुकरतअतीवा ॥ पांचज्ञानइंद्रिनतेसाँचो । जानेजियशब्दादिकपाँचो ॥
मनकरिकेजियसुखदुखमोहू । पावतअहैकामअरुकोहू॥५०॥यहषोडशकलसूक्ष्मशरीरा।त्रैगुणकारजगुनहिंसुधीरा॥
सोईस्थूलदेहअवतारै । हर्षशोकभयप्रदसंसारै ॥ ५१ ॥ इंद्रिनजितेनजेअज्ञानी । जिनकीरहतिबुद्धिअलसानी ॥
विनचाहेहुतेकरहिंजोकर्मा । जानहुसंसकारकृतकरमा॥आपहिबँधहिकरमकरकैसे।कुसियारीकोकीटहिजैसे ॥५२॥
दोहा--विनाकर्मकीन्हेक्षणहुँ, प्राणीथिरनहिंहोइ । वरवशनिजप्रारब्धवश, करमकरतसबकोइ ॥ ५३ ॥
भाग्यकारनहिंलहिजगमाहीं । सूक्षमथूलधरतवपुकाहीं॥कर्मवासनाकेअनुसारा । लहतापिताजननीअनुहारा॥५४॥
प्रकृतिसंगतेपुरुषनकाही । होतविपरजैयहजगमाहीं ॥ हरिकीभक्तिकियेदिनराती । मिटैविपरजैसोइहिभाँती ॥
विप्रअजामिलयहशुभशीला । रह्योवेदविधिधरमअढीला ॥ गुणआगरव्रतमाहउजागर । मृदुसतिवादीनम्रहिनागर॥
इंद्रीजितपवित्रआचारी ॥ ५६ ॥ साधुसकलभूतनहितकारी ॥ वृद्धअतिथिगुरुपावकसेईअहंकारकामादिकजेई ॥
दोहा--कोहुकीनिंदानहिंकियो, मितभाषीमतिमान ॥ ५७ ॥ एकसमयपितुकेकहे, वनकोकियोपयान ॥
ईंधनकुशाफूलफललैकै । लौट्योगृहकोतुरिताकैकै ॥ ५८ ॥ देख्योएकशूद्रमगमाहीं । नीचनारिसँगनिरततहाँहीं ॥
कियेपानमदिराअतिमाती । घूँमतनैननफिरतअसलाती ॥५९॥ नीवीखुलीखुलेशिरबारा।शूद्रताहिसँगकरतविहारा॥
गावतहँसतछोडितनलाजा । भ्रष्टअचारतजेसबकाजा ॥ ६० ॥ भैरभुजनिभामिनमुखचूमै । करैप्रसन्नताहिपरभूमै॥
ऐसेशूद्रहिकरतविहारा।आइअजामिलतुरतनिहारा।लखितियकामविवशद्रुतभयऊ॥६१॥शास्त्रज्ञानतेरोकनचहेऊ॥
दोहा--पैनहिंमनसिजवेगवर, रोकेरुक्योप्रचंड । भयोविकलमनताहिक्षण, भोतपव्रतसबखंड ॥ ६२ ॥
तातियकोंचिततचितमाहीं । रह्योधर्मलेशहुतननाहीं ॥ ६३ ॥ सोईशूद्रनारिढिगजाई । तेहिधनदैसंगलियोलेवाई ॥
राख्योताहिआपनेअयनै । कीन्ह्योमैनचैनदिनरैनै ॥ जेतीपितुकीरहीकमाई । ताकेसँगसोदियोउडाई ॥
होइप्रसन्नभाँतिजेहिदासी।सोइसोइकरतरह्योकरिहासी ६४ कुलवतिनीसुवरीनिजनारी।जुवाउमरिअतिशैसुकुमारी॥
ताहिअजामिलतुरतहित्याग्यो।नारिस्वैरिनीमहँअनुराग्यो॥६५॥तासुकपक्षहियेमहँफूटी।धर्मम्रजादआशसबछूटी ॥
दोहा–कहुँचोरीकहुँमारिके, कहुँठगिकरिअन्याय ॥ देतरह्योतेहियहकुमति, यहिविधिवहुधनल्याय ॥६६॥
छोडिशास्त्रमरयादको, ह्वैस्वतंत्रमतिमंद ॥ तेहिनारीकोजूँठभाषि, मान्योपरमअनंद ॥
अतिनिंदितजगमेंरह्यो, अतिपापीअतिक्रूर ॥ व्यभिचारीअधरमाकियो, जगमहँपामरपूर ॥
जितनोकीन्ह्योपापयह, धर्मछोडिजगमाहिं ॥ प्रायश्चिततातिनकोकबहुँ, एकहुकीन्ह्योनाहिं ॥ ६७ ॥
तातेयाकोयमनिकट, लैजैहैंइहिकाल ॥ घोरदंडजहँपायकै, होतोपूतविशाल ॥ ६८ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदांबुनिधौषष्ठस्कंधे प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–यहिविधियमदूतनवचन, सुनिकैमाधवदूत ॥ विहँसिकहेमंजुलवचन, सिगरेसुमतिअकूत ॥ १ ॥

विष्णुदूता ऊचुः।

अहोकष्टयहपरतनिहारा। धरमिनसभाअधर्मअपारा ॥ जेअपापनहिंदंडहियोगू। तेजहँलहतदंडकरजोगू ॥ २ ॥
पितासाधुशासकसमहोहीं।इनकीविषमरीतिनहिंजोही।।विषमरीतिजोभइइनमाहीं।तौपुनिप्रजाशरणकेहिजाहीं ॥३॥
उत्तमपुरुषजोकछुआचरहीं। सोईरीतिऔरहुजनकरहीं।।बड़जनजोकछुकरहिंप्रमानै।सोइसिद्धांतऔरसबमानै ॥४॥
जाकेगोदशीशधरिलोका। सोवतसदाछोडिसबशोका ॥ अरुकछुधर्मअधर्मनजानै। रहतोसबसबपशुहिसमानै५॥

दोहा–सोदयालजोहोइगो, अरुविश्वासकेयोग ॥ तौकैसेतेहिनाशहित, करैघोरउतयोग ॥ ६ ॥

एकजन्मकीकहाचलावो। मेरेवचनसत्यउरलावो ॥ कोटिनजनमनपापनकेरो। कियहप्रायश्चित्तघनेरो ॥
ह्वैकेविवशहुमरतीवारा। मंगलकरहरिनामउचारा ॥७॥ नारायणयेअक्षरचारी। नामपुत्रकोकह्योपुकारी ॥
कहतहिंसकलपापभेक्षारा। अबयहभयोपुनीतअपारा ॥८॥ चोरचुगुलचंडालसुरापी। विषघातकीमित्रसंतापी ॥
अरुगुरुयुवतीसंगविहारी। नारिभूपपितुगोवधकारी ॥ औरहुजेपातकीअपारा ॥ ९ ॥ तिनप्रायश्चितयहनिरधारा ॥

दोहा–कृष्णनामजोमुखलियो, कीन्ह्योसज्जनसंग ॥ ताकेतेहिक्षणहोतभे, महापापसबभंग ॥ १० ॥

ब्रह्मवादिमनुआदिकजेते। कहेदानव्रतआदिककेते ॥ तिनतेतसपुनीतनहिंहोवै। जसगोविंदनामअघखोवै ॥
हरिचारित्रसूचकहरिनामा। करतउचारकरतशुचिधामा॥११॥करिपापनकेप्रायश्चित्ता।भोजननिरमलपैनहिंचित्ता॥
तातेपुनिपुनिपापकरतहै। असतपंथमहँपावँधरतहै ॥ जोजनतनमननिरमलचहई। तौहरिनामनिरंतरकहई ॥
पामरपावनकरहरिनामा।नहिंकलिऔरउपाइअरामा १२ सबपापनप्रायश्चितकीन्ह्यो।मरतजोनारायणकहिदीन्ह्यो॥

दोहा–विप्रअजामिलकेतनहिं, पापलेशहूनाहिं ॥ पैहौनहिंलैजानअब, तातेयमपुरकाहिं ॥ १३ ॥

सवैया–आगतबैठतबोलतखेलतसांसहुलेतसंकेतहुमाहीं।
दुःखमेंसुक्खमेंहांसहूमेंअरुवैरतेनेहतेगावैजहाहीं ॥
लाजतेकाजतेकौनिहूंव्याजतयोंरघुराजकहैमृषानाहीं।
कृष्णकोनामकढेमुखतेतनतेकढ़िपातकपुंजपराहीं॥ १४ ॥

कवित्त–ऊंचेतेनिपातहूमेंमगखसिजातहूमेंघातलागेगातहूमेंपावकजरेकहीं।
सर्पकेडसेमेंतनज्वरकेवसेमेंव्याघ्रसिंहकेग्रसेमेंऔहँसेमेंत्योंविवशहीं ॥
भयेअंगभंगहूमेंजुरेजोरजंगहूमेंआलसकेरंगहूमेंभोजनकरतहीं।
भाषैरघुराजरघुराजजूकोनामलेतजनयमराजजूकीयातनालहैनहीं ॥
सोवतजागतत्योंजमुहातडकारतछींकतत्योंअंगरातै।
कारजअंतअरंभहुमेंपरिरम्भहुटेंकदैबोलतबातै ॥
गावतधावतबाजबजावतआवतजावतहूअनखातै।
जोरघुराजकढ़ैमुखतेहरितौतेहिपापनहींनियरातै ॥ १५ ॥

दोहा–गुरुलघुपातककेअहै, गुरुलघुप्रायश्चित्त ॥ शास्त्रनसकलविचारिके, वरणेमुनिथिरचित्त ॥ १६ ॥
तेजपतपव्रतदानते, नशतपापयहनीति ॥ पैननशतअघवासना, विनयदुपातिपदप्रीति ॥ १७ ॥
ज्ञानहुतेअज्ञानतेश्रीहरिनामवखानु ॥ नाशतपातकपुंजको, जिमिवनसघनकृशानु ॥ १८ ॥
जिमिऔषधिगुणजानिअरु, विनजानेहुँजोखाय ॥ सोअपनोगुणकरततिमि, कृष्णकहेअघजाय ॥

कवित्त--पौनज्योंजलधरपरवज्रज्योंमहीधरपरक्रोधजिमिसिद्धपरभानुतमदापपै ।
ज्ञानज्योंअज्ञानपरमानअपमानपरकुयशपैदानज्योंकृपापशत्रुतापपै ॥
कुलपैकपूतज्योंसपूतज्योंकपूतपरजैसेपुरहूतदनुपूतनकलापपै ।
रघुराजरावनपैगंगज्योंअपावनपैदानवपैदावतैसेरामनामपापपै ॥
कृष्णभोजराजपरभीमकुरुराजपरजैसेरघुराजभृगुराजहैहैराजको ।
सिंहगजराजपरशंभुरतिराजपरपानजिमिलाजपरशांतरसराजको ॥
कृमिपरभेकजैसेभेकपैभुजंगजैसेकेकिहुभुजंगपैसकंधगिरिराजको ।
पापिनसमाजपरजोरयमराजजैसेपापनपैतैसेकृष्णनामव्रजराजको ॥
कीटनपैभृंगजैसेभृंगपैविहंगजैसेविपुलविहंगपैज्योंवाजजोरवारहै ।
वाजपैजोमारजारमारजारपैज्योंश्वानश्वानपैतरक्षुतापैगजमतवारहै ॥
गजपरसिंहजैसेसिंहहूपैशारदूलशारदूलहूपैजैसेसरभउदारहै ।
सरभपैजैसेनरसिंहभाषैरघुराजपापनपैतैसेहरिनामकोउचारहै ॥ १९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा--यहिविधिनाममाहात्म्यको, करिप्रकाशहरिदास ॥ विप्रअजामिलकंठकी, तोरीयमकीपास ॥
यमदूतनकेहाथते, तुरतहिताहिछोड़ाय ॥ तासुप्राणकोत्राणकिय, दिययमभटनभगाय ॥ २० ॥
गयेदूतयमनिकटदुखारी । वरणेसकलहवालपुकारी॥२१॥इतैअजामिलउठिसुधिपाई । तजीभीतियमकीदुखदाई ॥
हरिदूतनचरणनशिरनायो॥ह्वैअरोगआनंदहिपायो२२कछुककहनजबकियअनुमाना॥तबहरिजनभेअंतर्धाना ॥२३॥
यमदूतनहरिदूतनकेरो । परमभागइतधर्मनिवेरो ॥२४॥ औहरिनाममहात्म्यअनूपा । सुनिद्विजभक्तिमानभोभूपा॥
सुमिमिरिअजामिलनिजकृतपापा।पावतभयोपरमसंतापा२५हायहायमैंअतिदुखपायो॥मनचंचलमोहिंकहाकरायो॥
दोहा--मैंपापीदासीनिरत, बहुपुत्रनउपजाय । ब्राह्मणतावरआपनी, सिगरीदईगमाय ॥ २६ ॥
मोहिंनिंदितकोहैधिक्कारा॥कुलकलंकभोजन्महमारा॥तजिनिजतिययुवतीगुणखानी॥भयोनिरतदासीमदपानी॥२७॥
वृद्धअनाथमातुपितुकाहीं । तज्योहोइशठह्वैजगमाहीं ॥ नीचकृतघ्नीकपटीक्रूरा, पापकियेमेंअतिशयपूरा ॥२८॥
तातेघोरनरकमहँजाई । परिहौंअवशिमहादुखछाई ॥ जहँकामीअरुधर्मविनाशी । यमयातनालहैंदुखराशी ॥ २९ ॥
किधौंस्वप्नभोकीयहसांचो । मोरेमनमहँअतिभ्रममाँचो ॥ कहतवनतकछुमोसोंनाहीं । नहिंममरक्षककोउजगमाहीं॥
दोहा--फाँसिडारिममकंठमें, रहेजेऐंचतमोहिं । यहिक्षणअववेकहँगये, परैनदृगमहँजोहिं ॥ ३० ॥
कहँगेचारिपुरुषछविवारे । मेरीपाशछोडावनहारे ॥ ३१ ॥ पूरबकौनपुण्यमैंकीन्ह्यों । तातेतिनदर्शनदृगलीन्ह्यों ॥
भयोप्रसन्नमोरमनआजू । ह्वैहैसबमंगलममकाजू ॥३२॥अतिशयअधरमरतमोहिकाहीं॥कृष्णनामकहिआवतनाहीं॥
तातेरहीपुण्यकछुमेरी । जोरसनाहरिनामहिटेरी ॥ ३३ ॥ कहँमैंब्रह्मघातकीपापी । कपटीअतिनिरलज्जसुरापी ॥
कहँनारायणयहसुतनामा । दायकसुखनाशकअवधामा॥३४॥तातेनाशिचित्तचपलाई । करिहौंमैंयहअवशिउपाई॥
दोहा--जामेंपरौंननरकमें, लहौंनहींयमदंड । ह्वैहरिपदसेवकसुखद, विचरौंजगतअडंड ॥ ३५ ॥
छोडिअज्ञानजजगबंधनको॥करिहौंसज्जनसम्बंधनको ॥ सबसोंकरिहौंअमितमिताई॥करुणामानशांतसुखदाई॥३६॥
नारिविवशमेंमृगसमनाच्यो । कोहुसोकबहुँकह्योनहिंसांच्यो॥ऐसीमायारूपीनारी॥छोडिहोहुँगोआशुसुखारी॥३७॥
हरिपदपंकजमनमिलिंदकरि॥अहंकारममकारधूरिभरि॥निशिदिनगुणगोविंदकेगैहौं॥भवसागरयहिविधितरिजैहौं ३८

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिक्षणहरिजनसँगलागो॥भयोअजामिलपरमविरागी॥तियसुतगृहधननेहनशाना॥हरिद्वारकोगयोसुजाना॥३९॥
दोहा--बैठतभोतहँयोगकरि, रोकिइंद्रियनग्राम । मनलगायनिजआतमहि, ॥४०॥ त्रिगुणविगतसुखधाम ॥

आतमकोपरमातममहि, दीन्ह्योअचललगाय । परमपुरुषनिरख्योचखन, आधिरुव्याधिविहाय॥४१॥
तबतेंईआयेतहाँ, चारिसुभगहरिदास ॥ तिनकोचीन्हिप्रणामकिय, पायोपरमहुलास ॥ ४२ ॥
तिनकेदेखतगंगतट, तजीअजामिलदेह । लह्योतुरतहरिपारषद, रूपपरमछविगेह ॥ ४३ ॥
हरिदासनकेसंगमें, चढ़िकेकनकविमान । तेजसूरसमगगनपथ, हरिपुरकियोपयान ॥ ४४ ॥

छप्पै–सकलपापकोकरनहारसबधर्मविनासी । महापतितअरुमहाअधमपतिअधमादासी ॥
नीककर्मनहिंकियोकबहुँनिंदितसज्जनते । कियपुनीतनहिंअंगकबहुँसुरसरिमज्जनते ॥
असअघीअजामिलमरतमहँसुतप्रतिनारायणकह्यो।यमभटनकरननरकेपरतछूटितुरतहरिपदलह्यो ॥ ४५ ॥

स०–पापनकेजुहैंप्रायश्चित्तलिखेबहुभाँतिनग्रंथनमाहीं । कीन्हेंतीन्हैशुचिह्वैवेकेहेतसमूलतेछूटतकैसहुनाहीं ॥
पैरघुराजकहैयदुराजकोनामसुखैतेसबीजविलाहीं।तातेजोआवनचाहौजगेनहिंतौहरिनामहिगावौसदाहीं ४६

दोहा–नाशकअघगोपनपरम, यहअनूपइतिहास । श्रवणकरैश्रद्धासहित, गावैसहितहुलास ॥ ४७ ॥
सोयदिपापिहुहोयअति, तबहुँविष्णुपुरजाय । यमभटताकोनरकमें, नहींसकतलैजाय ॥ ४८ ॥
नारायणसुतमिसिमरत, कहिपायोद्विजधाम । तौपुनिकाश्रद्धासहित, जोगावैहरिनाम ॥ ४९ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ षष्ठस्कंधे द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

दोहा–सुन्योमहातमनामअरु, कथाअजामिलकेरि । कुरुकुलनायकजोरिकर, शुकसोंबोल्योफेरि ॥

राजोवाच ।

जबयमदूतजाययमधामा । बरण्योहरिदूतनकृतकामा ॥ सोनिजशासनभंगहिजानी । यमदूतनसोंकाकहुवानी ॥
जोयमकेवशहैसंसारा । धर्माधर्मनिबेरनहारा ॥ १ ॥ अबलौंसुन्योकबहुँनहिंकाना । यमकोशासनभंगमहाना ॥
अबभोयमकोशासनभंगा । कहहुनाथयहसकलप्रसंगा ॥ यहजोहैसंशयसबकेरी । ताकोनाशकरहुबिनदेरी ॥ २ ॥
सुनिकुरुपतिकेवचनसुहावन । कहनकथालागेशुकपावन ॥

श्रीशुक उवाच ।

जबहरिदूतनतेयमदूता । पावतभेअपमानअकूता ॥ तबसंयमनीपतियमपासा । जायविनयकियअतिहिउदासा॥३॥

यमदूता ऊचुः ।

दोहा–करतकर्मजेजगतमें, तिनकेफलकेदानि । कितनेहैंयहिजगतमें, तिनकोकहहुबखानि ॥ ४ ॥
रहेआजुलौंहमयहजाने । सुखदुखदायकतुमहिंनआने ॥ जुपैदंडदायकबहुहैहैं । करिविरोधजनसुखदुखखैहैं ॥
जोसंमतअपनोकरिलैहैं । यककालहिजनसुखदुखपैहैं॥५॥जोभेविलगविलगफलदाता।तौकोउनहिंप्रधानठहराता ॥
जिमिलघुबहुनृपप्रभुहिनपावैं । अपनीअपनीरीतिचलावैं ॥६॥ तातेसबकेशासनकरता । धर्मअधर्मनकेनिरधरता ॥
अहौएकतुमहींयमराजा । औरनकोउकारकयहकाजा॥७॥अबलौंतुवशासनजगमाहीं । रोकिगयोकबहूँकहुँनाहीं ॥
दोहा–सोप्रभुशासनरावरो, चारिसिद्धकोउआय ॥ हमसोंबरवशजोरकरि, अबतोदियोनशाय ॥ ८ ॥
तुवशासनलहिहममहिजाई । गहेपातकीकोतहँधाई ॥ चहेनरकमहँडारनताको । रह्योपातकिनकेरपताको ॥
तबवेचारिसिद्धतहँआई । पाशतोरिछीन्योबरिआई ॥ महापातकीदासीकोपति । निशिदिनजाकीकलुहिमेंरति ॥
सोनिजसुतप्रतिह्वैअतिआरत।नारायणअसवचनउचारत॥आवतभेअतिआशुहितहँवा॥गहेपातकीकोहमजहँवा॥९॥
सोहमकोप्रभुदेहुबताई । होयजोकहनयोगयमराई ॥ १० ॥

श्रीशुक उवाच ।

ऐसीयमसुनिदूतनवाणी । सुमिरिकमलपदशारँगपाणी ॥

दोहा–कारकदंडप्रजानिको, पायमहामुदऐन । दूतनसोंबोलतभयो, संयमनीपतिबैन ॥ ११ ॥

यम उवाच ।

मोरेदूसरहैकोउईशा । थावरजंगमकेरअधीशा ॥ तामेंग्रथितजगतसबअहई । गुह्योसूतमहँपटजिमिरहई ॥ जासुअंशतेयहसंसारा । लहतजन्मपालनसंहारा ॥ नथ्योवृषभपालकवशजैसे । तेहिअधीनसिगरोजगतैसे ॥ जैसेपशुबंधनमहँबाँधे । चलहिंसदाशकटनमहँनाधे ॥ १२ ॥ वेदरूपवाणीगुणमाहीं । नामविरंचिबाँधेसबकाहीं ॥ नामकर्मबंधिततेजीवा । तेहिडरकरमहिंकरैंअतीवा ॥ १३ ॥

दोहा–मरुतनकेगणसाध्यगण, सिद्धगणहुँआदित्य । विश्वेदेवाअष्टवसु, औरप्रजापतिनित्य ॥
शंभुस्वयंभुसुरेशसब, भृगुआदिकऋषिराज । जाकेमायावशपरे, जानहिनहिंतेहिकाज ॥

जबप्रधानसुरजेहिनहिंजाने।तबनरतिनकहँकौनबखाने॥१५॥इंद्रीअरुप्राणहुँवचननते।कबहुँनजानेकोउतेहिमनते ॥ जैसेदृगनिजरूपनदेखै । तिमिप्राणीपरप्रभुहिनपेखै ॥ १६ ॥ सोइसबकोहैअंतरयामी । ब्रह्मादिकदेवनकोस्वामी ॥ सोइस्वतंत्रमायाकरईशा । सोईमहात्माहैजगदीशा ॥ ताकेदूतमनोहररूपा । गुणस्वभावतेहिधरेअनूपा ॥ १७ ॥ बहुधाविचरहिंजगमहँआई । हरिदासनदुखदेहिंनसाई ॥ सुरपूजितऐसेहरिदासा । लखिनसकैकोउपरमप्रकासा ॥

दोहा–मोतेअरुसबशत्रुते, अरुसबतेसबकाल ॥ हरिभक्तनरक्षनकरै, तेहरिदासदयाल ॥ १८ ॥

ईशभनितयहिधरमहिंकाहीं।जानतदेवऋषीशहुनाहीं॥असुरदनुजचारणविद्याधर।नहिंजानहिनहिंकौतुकताकर १९ नारदसनकादिकमनुशंभू । कपिलजनकप्रहलादस्वयंभू॥बलिअरुहमअरुश्रीशुकदेवा । महाभागवतभीषमदेवा२० येद्वादशजानहिंहरिधरमा । गोप्यशुद्धदुर्बोधसुशरमा ॥ यहीभागवतधरमहिंजानी।लहतमुक्तिहेभटसुखखानी॥२१॥ परमधरमहैजगइतनोई । भगवतभक्तनामकहिहोई ॥ २२ ॥ श्रीहरिनामउचारनकेरो । लखोमहातमदूतघनेरो ॥

दोहा–सुतमिसिनारायणकहत, पतितअजामिलजोइ । कालपाशतेछुटिगयो, लह्योमुक्तिहठिसोइ ॥ २३ ॥

स०–जनकेअघओघविनाशनकोजगमेंइतनोइअहैबहुतै । हरिकेगुणनामओलीलाअनंतकहैनिशिवासरप्रेमयुतै॥
यहपापीअजामिलअंतसमैलियोनामनरायणहेतुसुतै।तिहुँलोकमेंवीरनिशानबजाइगयोहरिलोकविशोकह्वतै २४

दोहा–विविधशास्त्रकेहूअहैं, ज्ञाताअतिमतिधीर । तेहरिनाममहातमे, नहिंजानहिंगंभीर ॥

धर्माधर्मविवेचनकरहीं । माधवमायामोहितरहहीं ॥ प्रायश्चित्तसकलपापनके । कहहिंअमितव्रतउद्यापनके ॥ दायकस्वर्गकर्मसमुदाई । सोईकरतरहैचितलाई ॥ सोऊतुच्छअहैसबभाँती । जनमतमरतरहतदुखमाती ॥ कामकर्मजेकरहिंसदाहीं । तिनकेकृष्णप्रेमकछुनाहीं ॥ जिनकोभयोनहरिपदप्रेमा । तिनकेवृथाधर्मव्रतनेमा ॥२५॥ यहविचारिकेसंतसुजाना । करहिंकृष्णपदप्रेमहिपाना ॥ तेममदंडयोगहैंनाहीं । यहीजानिराखहुमनमाहीं ॥

दोहा–कहुँधोखेहरिजननसों, होतजुहैकछुपाप । सोउहरिकीर्त्तनतेनशत, कबहुँनकरसंताप ॥ २६ ॥

घनाक्षरी–समदरशीजेसाधुहरिअनुरागरँगेजिनकेसुयशकोसुरेशसिद्धगावैहैं ।
रक्षितगोविंदकीगदातेबेसदाईरहैंउनकेनिकटकालकर्मनाहिंजावैहैं ॥
भाषैरवुराजमानोमेरीकहीबातसाँचीजोरनाहमारोकछुतिनपैबतावैहैं ।
धोखऊमेंतिनकेसमीपजिनजैयोदूतबारबारतुमकोविशेषिकैबुझावैहैं ॥ २७ ॥
जोयाकहोदूतहमल्यावैइतैकौनकौनतोतोतुमजानिराखोबातयाहमारीहै ।
रसकेजनैयापरमहंसनतेसेवितमुकुंदकेपदारविंदमकरंदभारीहै ॥
ताकोजेनकीन्हेंपानतृष्णावशनिरैपथवरमेंलोभानहरिसुरतिबिसारीहै ।
तिनकोविशेषिल्याइमेरेधामदूतप्यारेपरमप्रचंडदंडदेहुदुखकारीहै ॥ २८ ॥

रसनानजाकीएकबारहूउचारचोकृष्णचित्तरघुराजजडराजपदध्यायोना ।
कृष्णचंदचरणसरोजमेंननायोशीशएकोरोजसंतसंगखोजमनल्यायोना ॥
दुनियांमेंआयहरिदासनामपायोनाहिंकेशवकीसेवामेंशरीरकोलगायोना ।
ऐसेमहापापिनकोंदूतोदीहदंडदेहुदिलमेंदयाकोकरिकबहूँबचायोना ॥
रोजरोजजायजगखोजिखोजिप्राणिनकोल्यायल्यायनरकनिवेशनमेंनाइयो ।
जाकोजैसोअपराधताकोतैसोदैकेदंडयेहीभाँतिपापिनकोपावनबनाइयो ॥
भाषैरघुराजराखोहुकुमहमारोअसएकबातमेरीकहींकेहूँनभुलाइयो ।
धोखेअनधोखेदूतौबातयहधोखेरहोरामकृष्णदासनकेपासनहिंजाइयो ॥ २९ ॥
दूतनसोंऐसोकाहिहरिपदध्याइउरकहैयमनाथअबदायारसभीजिये ।
पुरुषपुरातननारायणत्रिलोकनाथविनतीहमारीचितदैकैसुनिलीजिये ॥
मेरेदूतविनाजानेकीन्ह्योअतिअपराधताकोकृपासिंधुनेकौनजरनदीजिये ।
क्षमाउधरैयाक्षमाभारकेहरैयाक्षमासिंधुकेधरैयातातेक्षमाअबकीजिये ॥ ३० ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—तातेहरिकेनामको, कीर्त्तनकरोनरेश ॥ पापिनकेसबपापको, प्रायश्चित्तविशेश ॥ ३१ ॥
स०—हरिचारुचरित्रविचित्रसुनैहरिलीलाकथानितगावनते । लहिभक्तिपुनीतभयोजसजानिइशंकरहैनिरैजावनते ॥
रघुराजकहैजनतैसोपुनीतनाहोतअनेकउपावनते । जपतेतपतेव्रततेमखतेहिततीरथकेधराधावनते ॥
जेनिजपापछोड़ावनहेतअनेकनकर्मकरेंहरिछोडी। तौनहींकरमनतेउपजैअघहैतिनकीमतिकाचीनिगोडी३२॥
पातकताहिनहींनियरातकहैरघुराजसहीप्रणओडी।भक्तिसोंभावअनेकनकोकरिजेभजैंराधिकामाधवजोडी३३

घनाक्षरी ।

यमकोनिदेशसुनिअतिमजबूतदूततबतेनरेशताहिअसतिविचारैना ।
वागैठौरठौरहाथलीन्हेंपासमहावोरहरिविमुखीनडारिनरकनिकारैना ॥
भाषैरघुराजरोजरोजऐसोकाजकरैईशअपनेकोकामकबहूंबिगारैना ।
पैगोविंददासनकोदुरहीतेदेखतहीद्रुतहीदुरायजातदृगतेनिहारैना ॥ ३४ ॥
दोहा—मुनिअगस्त्यमलयाचलै, हरिपूजतसहुलास ॥ महाराजहमसोंकह्यो, यहसुंदरइतिहास ॥ ३५ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनंदाम्बुनिधौ षष्ठस्कंधेतृतीयस्तरंगः॥३॥

दोहा—पुनिकरजोरिविनीतअति, सोअभिमन्युकुमार ॥ बोलतभोशुकदेवसों, बाढ्योहरषअपार ॥

राजोवाच ।

सुरनरअसुरनागअरुपच्छी। अरुमृगगणकीउतपतिअच्छी ॥ स्वायंभूमन्वंतरपाहीं। वरणनकियसंक्षेपहिमाहीं॥१॥
ताहीकोविस्तारअपारा।अरुपतिसर्गरमेशउदारा॥जासुशक्तिकेजसकियउतपति।सोउसुनिवेकोममतिहुलसति २॥

सूत उवाच ।

सुनिशुकइमिभूपतिकीवानी। बोलतभयेमोदमनमानी ॥ ३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

जबप्राचीनबरहीकेजेई। दशसुतअहैंप्रचेतातेई ॥ निकसिउदधितेअवनीकाहीं। निरखतछाइतरुगणमाहीं ॥ ४ ॥
कोपिततेवृक्षनपरह्वैकै। तिनहिंजरावनहिताचितदैकै ॥

दोहा–पावकपवनप्रचंडअति, मुखतेकियोप्रकास ॥ ५ ॥ भूपतितिनतेजरतलखि, विटपनकोचहुँपास ॥
नाशततिनकोकोपमहाना । वचनचारुचंद्रमाबखाना ॥ ६ ॥ दीनद्रुमनतेद्रोहनकीजै । सावधानयेवैनसुनीजै ॥
दियोप्रजापतिजनमतुम्हारा।पुरजनवरधनहितसंसारा॥७॥अहैप्रजापतिपतिभगवाना। अव्ययविभुकहैंवेदपुराना ॥
तेऊप्रजनहेतजगमाहीं।सृज्योअन्नतरुऔषधिकाहीं॥८॥तृणतरुअशनपशुनकोजानो।जननअशनचोपदचरमानो॥९॥
प्रजनसृजनपितुशासनदीन्ह्यो।तुमतरुगणकतभसमहिकीन्ह्यो॥पितापितामहप्रपितामहकेके।मारगचलोरहोनहिंवहके
दोहा–सोतुमकरोमहाअनय, प्रगटजोकोपकृशान । सुतहिमातुपितुदृगनको, पलककरनसतित्रान ॥
नारिनकोपतिरक्षकहोई । रक्षकप्रजनप्रजापतिजोई ॥ भिक्षुकरक्षकधनीविख्याता । अज्ञानीकोज्ञानीत्राता ॥ १२॥
सबभूतनकेअंतरमाहीं । जानिलेहुहरिवसतसदाहीं ॥ तातेजोतुमइन्हेंबचैहौ । तौप्रभुकोअतिदोषहिदेहौ ॥ १३ ॥
जोजनहियकोकोपभराने । करैनिवारणआतमज्ञाने ॥ सोयहिभवसागरतरिजाई । तातेतुमहुँजाहुतरिभाई ॥१४॥
जेतेतरुदाहेतरुदाहे । दीननआवनचहहुमुदचाहे ॥ सुतालेहुयहवृक्षहिकेरी । अतिसुखपैहौसुनुशिखमेरी ॥ १५ ॥
दोहा–सोमदईअतिसुंदरी, जोअपसराकुमारि । नृपप्रचेतसनपाइलिय, श्रुतिविधिव्याहिविचारि ॥ १६ ॥
हिरदैगमनकरतनृपसोई । कह्योतुमहुँकोअतिसुखहोई ॥ सोसुंदरिअपसराकुमारी । लहिप्रचेतसुतकोपतिभारी ॥
दक्षप्रजापतिकोप्रगटायो।जिनकेयशत्रिलोकमहँछायो॥१७॥दक्षप्रजापतितेसुखमाती । मनअरुरेतहितेजेहिभाती ॥
सिरजतभेसबपरिजनकाहीं । सुनहुँतिनहिंवरणहुँतुमपाहीं॥१८॥देवअसुरनरप्रजावनेरे।नभजलथलवाशीजेनिवेरे ॥
तिनहिंप्रथममनहीतेजाये।१९वढ़तननिरखितोषनहिंआयो॥विगिविंधभूधरमहँगयऊ।महाकठिनतपमेंमनदयऊ २०॥
दोहा–तहँअघमर्षणनामको, अघहरतीर्थमहान । त्रययोजनचित्रकूटसों, दिशिआग्नेयहिमान ॥
योजनपंचप्रयागसो, नैर्ऋतदिशाविराज । तहाँजाहिकरिमहातप, तोषितकिययदुराज ॥
मोपुररींवासोअहै, योजनतीनिप्रमान । दिशिवायव्यहिमेंअहै, नाशतपापमहान ॥ २१ ॥
हंसगुप्तनामकजोहै, अस्तवराजविख्यात । तेहितेहरिअस्तुतिकरी, तहँपुनिपुनिपुलकात ॥
जाअस्तुतितेदक्षपै, करिकैकृपाअगाध । प्रभुसाध्योसबकाजको, रहीनयेकोसाध ॥
हंसगुप्तअस्तोत्रयह, पावनपरमभुवाल । सोतुमसोंहमकहतहैं, नाशकमलकलिकाल ॥ २२ ॥

प्रजापतिरुवाच ।

नमःपरायावितथानुभूतये गुणत्रयाभासनिमित्तबन्धवे।अदृष्टधाम्नेगुणतत्त्वबुद्धिभिर्निवृत्तमानायदधेस्वयंभुवे॥२३॥ न यस्य सख्यं पुरुषोऽवैतिसख्युःसखावसन्संवसतः पुरेऽस्मिन् । गुणोयथागुणिनोऽव्यक्तदृष्टेस्तस्मै महेशायनमस्करोमि ॥ २४ ॥ देहोऽसवोऽक्षा मनवोभूतमात्रा नात्मानमन्यं च विदुः परं यत् ॥ सर्वंपुमान्वेद गुणांश्च तज्ज्ञो नवेदसर्वज्ञमनन्तमीडे ॥ २५ ॥ यदोपरामो मनसो नामरूपरूपस्य दृष्टस्मृतिसंप्रमोषात् ॥ य ईयते केवलयास्वसंस्थया हंसायतस्मै शुचिसद्मनेनमः ॥ २६ ॥ मनीषिणोऽतर्हृदि सन्निवेशितं स्वशक्तिभिर्नवभिश्चत्रिवृद्भिः ॥ वह्निंयथादारुणि पाञ्चदश्यंमनीषया निष्कर्षंति गूढम् ॥ २७ ॥ सवैममाशेषविशेषमायानिषेधनिर्वाणसुखानुभूतिः ॥ स सर्वनामा स च विश्वरूपः प्रसीदतामनिरुक्तात्मशक्तिः ॥ २८ ॥ यद्यन्निरुक्तंवचसा निरूपितं धियाक्षिभिर्वा मनसावोत यस्य ॥ माभूत्स्वरूपं गुणरूपंहितत्त त्सवैगुणापाय विसर्गलक्षणः॥ ॥ २९ ॥ यस्मिन्यतोयेन च यस्य यस्मै यद्यो यथा कुरुतेकार्यते च ॥ परावरेषां परमं प्राक्प्रसिद्धं तद्ब्रह्म तद्धेतुरनन्यदेकम् ॥ ३० ॥ यच्छक्तयो वदतां वादिनां वै विवादसंवादभुवोभवंति ॥ कुर्वंति चैषां मुहुरात्ममोहं तस्मैनमोनंत गुणाय भूम्ने ॥ ३१ ॥ अस्तीति नास्तीति च वस्तु निष्ठयोरेकस्थयोर्भिन्नविरुद्ध धर्मयोः ॥ अवेक्षितं किंचन योगसांख्ययोः समं परह्यनुकूलं बृहत्तत् ॥ ३२ ॥ योऽनुग्रहार्थंभजतां पादमूलमनामरूपो भगवाननंतः ॥ नामानिरूपाणि च जन्मकर्मभिर्भेजे स मह्यं परमः प्रसीदतु ॥ ३३ ॥ यः प्राकृतैर्ज्ञानपथैर्जनानांयथाशयं देहगतो विभाति ॥ यथानिलः पार्थिवमाश्रितो गुणं स ईश्वरो मे कुरु तान्मनोरथम् ॥ ३४ ॥

दोहा--मंत्ररूपअस्तोत्रयह, कियोनभाषायाहि। पाठकरैजोनितयही, मिलैप्रेमरसताहि ॥ ३५ ॥

श्रीशुक उवाच।

जबइहिविधिअस्तुतिकियो, दक्षतहाँनृपदक्ष। तबअघमरषणमेंभये, दीनदयालप्रत्यक्ष ॥

छंदगीतिका--गोविंदजगतआधारसुखमासारगरुडसवारहै। भुजभोगिभोगसमानवसबहुदासकेरखवारहै ॥
दरचक्रचर्महुँधनुगदाअसिपाससुरआयुधलसै ॥ ३६ ॥ घनश्यामतनपटपीतराजतचंचलानितउरवसै ॥
शशिकोटिवदनप्रकाशसुंदरनैनगलवनमालहै। श्रीवत्सकौस्तुभकलितउरमणि-॥३७॥-कटिशशिविशालहै ॥
करकटककुंडलमकरआकृतिश्रुतिसुकिंकिणिकटिभली। मणिमूंदरीअँगुरिनमेंपगसुछविनूपुरकीरली ॥
अंगदअनूपमबाहुविलसतअलकछलकतझूलकहीं ॥ ३८ ॥ तिहुँलोकमोहनरूपसोहनलखिनपरतीपलकहीं ॥
नंदादिपारपदनारदादिकमुनिचहुँकितभावहीं।सुरसिद्धअरुगंधर्वचारणविमलअस्तुतिगावहीं ॥ ३९ ॥

दोहा--रूपअनूपमनाथको, निपटैनिकटनिहारि। दक्षमहाकौतुकगुन्यो, दियतनसुरतिविसारि ॥
गिरयोदंडसमभूमिमें, कीन्ह्योंपुलकिप्रणाम ॥ ४० ॥ कहिनसक्योकछुमुखवचन, उपज्योउरसुखधाम ॥
वारिधारदृगतेबही, इंद्रीसवहरिमाहिं ॥ लागिगईसोदक्षकी, रहीकहनसुधिनाहिं ॥ ४१ ॥
अंतरयामीजननके, जानिदक्षकीआस ॥ अतिविनीतनिजभक्तिलखि, बोलेरमानिवास ॥ ४२ ॥

श्रीभगवानुवाच।

महाभागहेदक्षविज्ञानी। मोमेंआपप्रीतिअतिठानी ॥ तपकरिसिद्धभयेमहिमाथा॥४३॥तुमपरहमप्रसन्नप्रजनाथा ॥
ममविभूतिजोयहसंसारा। तेहिवर्धनतपकियोअपारा ॥ मेरेहुमनमेंऐसाहिरहेऊ। सकलकाजसिधिआशुहिलहेऊ४४
शिवविरंचिअरुमनुविबुधेशा।अरुतुमसबतेराहितकलेशा॥ममविभूतिप्राणिनकीउतपति।ताहीकेहितजनमलियोसति
मोहितपरूपवेदसबकहहीं। हियतपमेरोतनतपअहहीं॥विद्यातपआकृततपजानो।अरुमखतपधर्महुतपमानो ॥४५॥

दोहा--प्राणदेवतपमयअहै, आत्मातपअवदात ॥ ४६ ॥ मैंहींकारणरूपहौं, प्रथमसृष्टिकेख्यात ॥

चिदचिदमोतेपृथकनकोई। वेदपुराणविदितहैसोई ॥ नामरूपऔराहितविभागे। ज्ञानरूपजियमहँजोजागे ॥
तेहिसमसोवतअसमैंरहेऊ॥४७॥मैंअनंतकोउअंतनलहेऊ॥ तेहिअनंतगुणतेगुणविग्रह। प्रगटतभोअनिरुद्धमोदगुह॥
तातेजन्मस्वयंभूअजलह४८सोविधिमोबलवर्धितहैमह॥यहसिगरेजगसिरजनमाहीं।तेअसमर्थमानिनिजकाहीं॥४९॥
आशुहिममशासनकोपाई। अतिदारुणतपकियमनलाई॥जेहितपकरसिरजैकरतारा। तुमसबरचिमुदलह्योअपारा॥

दोहा--जगतसृष्टितुमसबकरो, चितनधरोअबआन ॥ सुनहुँप्रजापतिवचनयह, औरहुकहभगवान ॥ ५० ॥
सुतापंचजनप्रजापति, कीसुअसिक्नीनाम ॥ ताकोतुमअबग्रहणकरि, करोआपनीवाम ॥ ५१ ॥
मिथुनधर्मवारेअहौ, तुमतासिहैयहनारि ॥ पायअनेकनप्रजनको, जननकरोसुखधारि ॥५२ ॥
तुमतेह्वैहैजेप्रजा, तेवशममायाहि ॥ नरतियमिलिउतपतिसुतन, करिमोहिपुजिहैचाहि ॥ ५३ ॥
कहशुकअसभगवानकहि, सबकेदेखतमाहिं ॥ निजवपुकियसुपनेसरिस, अंतर्धानतहाँहिं ॥ ५४ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ षष्ठस्कंधे चतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा--दक्षअसिक्नीसंगकरि, हरिमायाबलपाय ॥ हरिजकनामकदशसहस, सुतदीन्ह्योंप्रगटाय ॥ १ ॥
जिनकोधर्महुशीलसमाना। सृष्टिरचनकहँपितासुजाना॥तेसुनिकेपितुशासनकाना। तपहितपश्चिमकियोपयाना२॥

तहँनारायणसरयकरहेऊ । सिंधुसिंधुसरिसंगमभयऊ॥रह्योसिद्धमुनिसेवितसोथल । पातकपुंजविघातकहैभल॥३॥
तहँमज्जनकरिनिर्मलह्वैके । परमहंसधर्महिदृढकेके ॥४॥पितुशासनधरिदशौहजारा । लगेकरनतपकठिनअपारा ॥
वर्द्धनकरनप्रजनकेहेतू । करतरहेतपबुद्धिनिकेतू ॥ विचरतकहुँनारदतहँआये । तिनकोलखिअसवचनसुनाये ॥५॥
दोहा-अवनीअंतलहेविना, हेबालकमतिमंद ॥ केहिविधिरचिहौप्रजनकह, किमिछूटीदुखदंद ॥ ६ ॥
पुरुषएकसवराजहिमाहीं । विलयकनिर्गमजानहुँनाहीं ॥ बहुरूपिनीअहैइकनारी । ताकेपतिकीविनाचिह्नारी ॥ ७॥
सरिताउभैसुखीबाहिआई । वस्तुपचीसएनसुखदाई ॥ कुलिशसरिससोएनकठोरा । सोघरभ्रमतरहतचहुँओरा ॥
तामेंवसतमनोहरहंसा । करतविचित्रकथापरशंसा ॥८॥ इनसिगरीवस्तुनविनजाने । निजपितुशासनविनउरआने॥
करिहैंकैसेसृष्टिअपारा । निजलायकविनकियेविचारा ॥ ९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दक्षसुवनसुनिनारदवानी । बुधिमेंलगेविचारनज्ञानी ॥ १० ॥

दोहा-सूक्ष्मअहैशरीरजो, तेहिकियवरनिबखान, सोअनादितेजियनको, बंधनकरैअपान ॥
तासुनाशजानैनहिंजोई । असतकर्मतेकातेहिहोई ॥ ११ ॥ राजजगतसोपुरुषपरेशा । भौसागरतारतोहमेशा ॥
ताकोजोजानैनहिंकोई।असतकर्मतेकातेहिहोई॥हियबिचलसतजीवतेहिमाहीं।ताहिजातजानतकोउनाहीं॥१२॥
कहततहिकविज्योतिसरूपा।कढतनविनजानेनिजरूपा॥जैसेकीन्हेंगमनपताले।पुनिनाहिंआवतमहिकोइकाले॥
सोविलजानैनहिंजनजोई।असतकर्मतेकातेहिहोई॥१३॥बहुरूपीमतिस्वैरिनिनारी।गुणसबलितचंचलसुखहारी॥
तासुविवेकलह्योनहिंजोई । असतकर्मतेकातेहिहोई ॥ १४ ॥
दोहा-अतिभारीभूपतिविभौ, देतकुबुद्धिनशाय ॥ जिमिकुलटाकेकांतको, धर्मनाशह्वैजाय ॥
सोमतिगतिजानतनहिंजोई । असतकर्मतेकातेहिहोई॥१५॥ज्ञानविरागकर्मतेहिकूला । मायानदीजननप्रतिकूला ॥
कामक्रोधमदहैजलजाको । जननमरणप्रवाहदोउताको ॥ असमायाजानैनहिंजोई । असतकर्मतेकातेहिहोई॥१६॥
तत्वपचीसहिदेहअगारा । ताकोसाँचोपुरुषअधारा ॥ तनमेंताहिनजानतजोई । असतकर्मतेकातेहिहोई ॥ १७ ॥
बंधमोक्षदरसावनहारो । करतअचेतनचेतनन्यारो ॥ असभागवतपढतनाहिंजोई । असतकर्मतेकातेहिहोई ॥ १८ ॥
दोहा--कालचक्रनिशिदिनभ्रमत, रहतस्वतंत्रसदाहिं । खैंचतहैंसबजननको, तीषनरुकतोनाहिं ॥
ताकोजानिलियोनहिंजोई । असतकर्मतेकातेहिहोई ॥ १९ ॥ सबकोपिताशास्त्रहैपूरो । करिउपदेशकरतभ्रमदूरो ॥
शास्त्रसिखावतमुक्तिउपाई।ताकोजोनहिंजानतभाई॥करिकेप्रवृत्तिनिवृत्तिचहसोई।असाकिरमहितेगतिकिमिहोई २०
असविचारहरयश्वउदारा।मुनिहिप्रदक्षिणदियोत्रिवारा॥एकचित्तह्वैदशौहजारा।करितबभगवतलोकसिधारो ॥ २१ ॥
नारदमुनितबबीनबजावत । हरिपदध्यावतहरियशगावत॥विचरनलागेलोकनमाहीं । पावनकरतपाँवरनकाहीं२२॥
दोहा--अतिसुशीलनिजसुतनको, नारदतेसुनिनाश ॥ दक्षपरमतापितभये, कीन्ह्योंशोकप्रकाश ॥
निजसज्जनसुतजोमरिजाई।तोअतिशयपावेदुखदाई॥असगुनितहाँदक्षदुखपाये॥२३॥विकलविलोकिविरंचिबोलाये॥
पुनिकरिदक्षअसकीनीसंगा । सहसपुत्रजायेशुभअंगा॥ धरेनामतिनकोसविलासू॥२४॥पितुनिदेशलहितेसहुलासू॥
सृष्टिकरनहितदृढव्रतधारे । नारायणशरसकलासिधारे॥जहँअग्रजतिनकेतपकीन्हें।सिद्धभयेहरिपदमनदीन्हें ॥२५॥
तहँमज्जनकरिह्वैविनपापा । कीन्हेंतपकरियहमनुजापा ॥ २६ ॥
दोहा--जपतमंत्रयहदक्षसुत, जलभखिकेकछुमास ॥ मारुतभखिकछुदिनरहे, पूजेरमानिवास ॥ २७ ॥
ॐनमोनारायणाय पुरुषाय महात्मनेविशुद्धतत्वाधिष्ण्यायमहाहंसायधीमहि ॥ १ ॥
जपतजोयहिमंत्रहिजनकोई।चारिपदारथपावतसोई॥२८॥तिनहूँनिकटदेवऋषिआये।कहतभयेजसपूरवगाये॥२९॥
दक्षसुवनसुनियेममवानी । भायनकीगतिजाहुविज्ञानी॥३०॥ चलतजोजनबंधुनकीरीती । ताकीहोतिधर्मपरतीती॥

पुण्यातमसोपुरुषकहावै । देवनसंगवसतसुखपावै॥३१॥असकहिनारदकियोपयाना।बंधुनपथतेउगहेसुजाना॥३२॥
गयेमुक्तिमगपुनिनहिंआये।जिमियामिनिदिनकरकरपाये ॥ दक्षलख्योपुनिकेउतपाता।नारदकोसुनिकर्मविख्याता॥
प्रथमसुतनसमसुनिसुतनाशू ॥ ३४ ॥ दक्षकियोपुनिकोपप्रकाशू ॥

दोहा--अमरषतेफरकतअधर, दक्षधरतनहिंधीर ॥ नारदकोनिजनिकटलखि, बोलेवचनगँभीर ॥ ३५ ॥

दक्षप्रजापति उवाच।

रेअसाधुसाधुनवपुधारी । मोसुतसाधुनकियोभिखारी॥अतिनिंदितकीन्ह्योंयहकरमा । जानततैंनहिंनेकहुधरमा३६
अवैनछूटेतिनऋणतीना । कर्मविचारकछुकनहिंकीना ॥ ममपुत्रनकोंतैंवरियाई । उभैलोकसुखदियोनशाई ॥३७॥
बालकछलीअबोधअदाया । कैसेतैंहरिदासकहाया॥श्रीहरिकोयशनाशकसांचो । रेनिरलज्जकुमतिमहँरांचो ॥३८॥
हरिजनहोहिंसदासदयाला । प्राणिनकेनाशकदुखजाला ॥ पैतोहिंविनमित्रनकेद्रोही । विनवैरहुप्राणिनपरकोही३९

दोहा--धरेवेषअवधूतको, ज्ञानहीनसमकाग ॥ यहिविधिमतिचंचलकिये, होतनजननविराग ॥

शांतिविनानविरतिप्रगटतिहै।तेहिविनमोहफाँसनकटतिहै॥४०॥विषैभोगकोजोनहिंकीना।तासुवासनाहोतिनछीना।
विषैछोडिमनल्यायगलानी। छोड्योजगसोइपूरणज्ञानी॥जसगलानिकरिहोतविरागी।तसउपदेशहितेनहिंत्यागी४१॥
साधुगृहस्थनसुतनहमारे।जेजगासिरजनमनहिंविचारे॥तिनकोअसहकियोअपकारा।सोहमसहिलीन्ह्योंयकवारा ४२॥
पैपुनिकैममवंशविनाशी । कियोकर्मतैंसोइअघराशी ॥ तातेमूढ़भ्रमतजगमाहीं । तैंथिरह्वैनिवसैकहुँनाहीं ॥ ४३ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा--दक्षशापलीन्ह्योंहरषि, मुनिवराकियनविषाद ॥ लक्षणसाधुसमर्थको, सहैकुजनकटुवाद ॥ ४४ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजासिद्धिश्रीमहा-
राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंह
जूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ षष्ठस्कन्धे पंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा--पुनिदक्षैअजआयके, समुझायोबहुभाँति ॥ साठिसुतातवप्रगटाकिय, तेहितियमेंवरकाँति ॥ १ ॥

दुहितादशदियधर्महिपाहीं । दीनत्रयोदशकश्यपकाहीं ॥ शशिकहसत्ताइसपुनिदीनी । दियरुद्रहिदुइसुताप्रवीनी॥
दुइअंगिरैकृशासुहिदोई । दियोदानदुहिताकरसोई ॥ बाकीरहींऔरजेचारी । दईकश्यपैफेरिविचारी ॥ २ ॥
तिनकेअरुतिनकेसुतनामा । कहौंसकलसुनियेमतिधामा ॥ तिनहींकेपुत्रनकेथोका । पूरितभयेतीनिह्वैलोका॥३॥
भानुककुभलंवाअरुजामी । विश्वासाध्यामरुत्वतिनामी॥ वसुमुहूर्त्तसंकलपागुनिये।धर्मनारियेतिनसुतसुनिये॥४॥

दोहा--वेदऋषभभेभानुसुत, इंद्रसेनसुततासु ॥ लँबाकेविद्योतमें, वारिधभेपुनिजासु ॥ ५ ॥
ककुभासुतसंकटभये, तेहिसुतकीकटनाम ॥ दुर्गदेवतासुतरही, जामीधरमहिंवाम ॥

तेहिसुतस्वर्गनंदिमाताके ॥ ६ ॥ विश्वेदेवाभेविश्वाके ॥ तेसबअप्रजरहेसदाहीं । इमिभाषतऋषिगणतिनकाहीं ॥
साध्यासुवनसाध्यगनजानो । तिनकेअर्थसिद्धसुतमानो॥७॥मरुत्वानअरुदुतियजयंतहु । मरुत्वतीकेपुत्रनजानहु ॥
तहँजयंतहरिअंशसुहायो । नामउपेंद्रजगतकहवायो ॥ ८ ॥ नाममुहूर्तीगुणनसुहाये । पुत्रमुहूर्त्तदेवगनजाये ॥
जेनिजनिजकालहिसुखभीने।प्राणिनकानिजनिजफलदीने॥९॥संकलपहिसंकलपाजायो।ताकोतनयकामकहवायो॥

दोहा--वसुवामासुतआठवसु, सुनियेतिनकेनाम ॥१०॥ द्रोणप्राणध्रुवअर्थअरु, अग्निदोषवसुआम ॥

औरविभावसुआठोअहहीं।द्रोणतियाअभिमतिकोकहहीं॥हर्षशोकभयआदिकताके।होतभयेसुतजगअतिबाँके ११
उरजस्वतीप्राणतियतासुत। आयुपुरोजवसहजानोद्रुत॥ध्रुवकीधरनिनारितेहिसुतपर।ग्रामनगरमानहुँअपनेउर १२॥
तियवासनाअर्ककीमानो । तासुतत्तरषादिककोजानो॥ अग्निवामजानहुँवसुधारा।तासुतनयद्रविणादिउचारा॥१३॥

षटमुखसुवनकृत्तिकाकेरे। भयेविशाखादिकातिनतेरे॥दोषनारिनिशितासुकुमारा।हरिकीकलाभयोशिशुमारा॥१४॥
दोहा-वसुतियआंगिरसीभई, विश्वकर्मासुततासु ॥ शिल्पअचारजहोतभो, चाक्षुकमनुभोजासु ॥
मनुसतविश्वेसाध्याजाये॥१५॥तियऊषाहिविभावसुपाये ॥ व्यष्टरोचिषाआतपतासुत।आतपसुवनदिवसभोअद्भुत॥
जेहिदिनमेंजगिजागिसबप्राणी।निजनिजकर्मकरतसुखमानी ॥१६॥भूतिदारभैनामसरूपा।तेहिकोटिनगणरुद्रअनूपा।
प्रगटतभयेनामतिनकेरे। कहतअहौंजेमुख्यनिबेरे ॥ रैवतअजभवभीमकहाये । वामहुउग्रवृषाकपिगाये ॥ १७ ॥
औरअजैकपादकोजानो। अहिर्बुध्न्यबहुरूपमहानो ॥
दोहा-येएकादशरुद्रभे, अरुऔरोतियमाहिं ॥ भूतविनायकआदिबहु, घोरभयेजगमाहिं ॥
भयेपारषदतेशिवकेरे । सेवतसदावसेतिननेरे ॥१८॥ अरुअंगिराप्रजापतिभायो। तिहितियस्वधापितरगणजायो॥
सतीतीयप्रगट्योसुखमाहीं । वेदअथर्वांगिरसहिकाहीं ॥ १९ ॥ कृशास्वतियअर्चाहैजोई । धूम्रकेशप्रगटतिभैसोई॥
धिषणानारिवेदशिरदेवल। वयनहुँप्रगटतिभैअतिशयभल॥२०॥कश्यपकीजानहुँयेनारी।विनताकद्रूअतिजसवारी॥
औरपतंगीनामयामिनी । जगतनामिनीअहैकामिनी ॥ तीयपतंगीयामिनिजेई । पक्षिनशलभनजननीतेई ॥ २१ ॥
दोहा-विनताकेसुतहोतभे, गरुडअरुणसुखपूर । गरुडभयेहरिवाहने, अरुणसारथीशूर ॥
कद्रूकालीआदिकनागा । जगजनमावतिभैबड्भागा॥२२॥ नखतकृत्तिकादिकजेभारी । सत्ताइससेभइशशिनारी॥
दक्षशापतेनिशिकरकेरे । भयेनपुत्रवेदमुनिटेरे ॥ रोगितभयोयक्षमारोगे । पावतभयोअपारहिशोगे ॥ २३ ॥
दक्षहिकियोप्रसन्नहिंजबहीं ।पायोछीनकलानिजतबहीं ॥ अबसुनुजेकश्यपकीनारी । तिनकेनामकहौंसुखकारी ॥
जिनतेभैसबजगकीउतपति।लोककल्याणकारिकहश्रुतिसति।अदितिऔरदितिदनुकोजानो।काष्ठाऔरअरिष्टामानो
दोहा-सुरसाइला-॥२४॥२५॥-बखानिये, मुनिअनुक्रोधवसाह । सुरभीसरमाताम्रा, तिमियेसहितउछाह ॥
सकलजगतकेउतपतिकेरी । जबमनकीन्हीचाहघनेरी ॥ तबतिनितेजलजंतुभयेहैं ॥ २६॥ सरमातेवनजंतुभयेहैं ॥
सुरभीतेसुरभीवृषबहुभे । महिषादिकद्वैपुरजियबहुभे ॥ सेनगीधआदिकविहंगवर । भयेताम्राकेजगसुखकर ॥
मुनिकेहोतभिंईअपसरा ॥२७॥ क्रोधवशाकेभयेविषधरा ॥ जंतुसर्पआदिकबहुतेरे । जानिअशितनहिंनामनिबेरे ॥
तरुगनहोतेभयेइलाके ।यातुधानजनमेंसुरसाके ॥ २८ ॥ प्रगटतभयेअरिष्टाकेरे । गाननिपुणगंधर्वघनेरे ॥
दोहा-द्वैखुरतेजेअपरहै, पुहुमीजंतुअपार । तेकाष्टातेप्रगटभे, कोकरिसकैउचार ॥
दनुकेयकसठिसुतमतिमाना । तिनमेंवसुदशभयेप्रधाना ॥ महाबलीजेजगउजियारे । वासवहूकेजीतनहारे ॥
जेहरितजिनऔरसोंहीरे । सदासुतलकेनिवसनवारे ॥ तिनकेनामनिकरौंबखाना ।सुनहुसबैसादरदैकाना ॥ २९ ॥
द्वैमूरधअरिष्टऔशंबर । औरविभावसुहयग्रीववर ॥ जानअयोमुखशंकुसिराहू । कपिलपुलोमाअरुणहुराहू ॥ ३०॥
वृषपर्वाइकचक्रबखानो । धूम्रकेशअनुतापनमानो ॥ विरूपाक्षविप्रचितिहुदुरजे । इनसबकेरवमहँघनलरजे ॥ ३१ ॥
दोहा-राहुसुताभैसुप्रजा, तासुनमुचिकियव्याह । वृषपर्वाकेभैसुता, शर्मिष्ठाजगमाँह ॥
ताहिययातिभूपलियव्याही । होतभयेमनपरमउछाही ॥३२॥ वैश्वानरदानवकीकन्या।भइचारिजगमेंअतिधन्या ॥
उपदानविहयाशिरापुलोमा।औकालिकातीनजसतोमा॥३३॥तिनकीकथासुनहुनरनाहा।उपदानविहिरणाक्षविवाहा॥
हयलियव्याहिशिराकोजबहीं।कृशुलहिकैविधिशासनतबहीं।अपनोव्याहपुलोमाकोकिय।कश्यप्याहिकालिकाकोलिय
भयेपुलोमकालिकाकेरे । तनैनिवातकवचबलढेरे ॥३५॥ साठिसहसमखनाशहिकारी । होतभयेखलदुर्मदभारी ॥
दोहा-तिनहिंतिहारोपितामह, पार्थइंद्रप्रियहेत । वधकीन्ह्योहनिबाणतजि, रणमेंपरमसचेत ॥ ३६ ॥
विप्रचित्तिसिंहिकाविवाहीं । यकसैयकसुतजन्योउछाहीं॥तिनसतजेठराहुविकराला।भैसतकेतहुतेग्रहजाला ॥३७॥
अबक्रमसोंवरणौंतुमपाहीं।सुनियेअदितिवंशजेहिमाहीं॥नारायणकरिकृपाअपारा।निजअंशहितेलियअवतारा॥३८॥
विवस्वानअरयमाविख्याता। पूषात्वष्टासविताधाता।भगवहुविधातावरुणहिजानो।शक्रउरुक्रममित्रहिमानो॥३९॥
विवस्वानतियसंज्ञाजोई । श्राद्धदेवमनुप्रगटीसोई ॥ सोइतिययमअरुयमुनहिंजाई । वडवापुनिजमकहवाई ॥

दोहा–सुतअश्विनीकुमारको, जनमतभैसुखपाय ॥ ४० ॥ छायाफेरिशनिश्चरहि,सुवनदियोप्रगटाय ॥
सावर्णिहुमनुतपकीकन्या । जनमावतिभैसोअतिधन्या ॥ सोतपतीसंवरणहिकाहीं । धरमसमेतजातभैव्याही॥४१॥
त्रियमातृकाअरयमाकेरी । तेहिसतवपननामनिवेरी॥तिनतेविधिनरजातिमहाई । सादरविनश्रमहीउपजाई ॥ ४२॥
पूषाकेजनम्योसुतनाहीं । दक्षयज्ञमेंजोशिवकाहीं ॥ दंतनिकासिहँसतभोजबही । शिवगणतासुदल्योरदतबहीं ॥
तबतेपूषापीठीभोजन । लाग्योकरनसदाप्रतिरोजन॥४३॥दैत्यभगिनिरचनाजेहिनामा।त्वष्टातियंसोभईललामा ॥

दोहा–ताकेसुवनप्रसिद्धभे, सन्निवेशाविश्वरूप । जिनकोयशसबजगतमें, जागतभयोअरूप ॥
जर्वाहिबृहस्पतिकोकियो, वासवअतिअपमान । तबत्याग्योगुरुसुरनको, जाहिरसकलपुरान ॥
तबवासवरिपुसुतासुत, विश्वरूपजेहिनाम । ताहिपुरोहितकरणमें, वरणकियेसुखधाम ॥
सकलसृष्टिपरकरणयह, मैंसंक्षेपहिमाहिं । सादरसपदिसुनायदिय, कुरुनायकतुमकाहिं ॥ ४४ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशाविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंह जूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ षष्ठस्कंधे षष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

दोहा–सुरगुरुकोसुनिकेमहा, सुरपतिकृतअपमान । अचरजगुनिकुरुपतिकह्यो, श्रीशुकसोंमतिमान ॥

राजोवाच ।

निजआचारजकोजेहिहेतू । कीननिरादरसुरकुलकेतू ॥सुरगुरुविजशिष्यनसुरकाहीं।केहिकारणत्याग्योदिविमाहीं॥
सोवरणोहमसोंमुनिनाहा । बाढीहियेसुननकीचाहा॥१॥सुनतपरिक्षितवचनमुनीशा । वरणनलगेसुमिरिजगदीशा॥

श्रीशुक उवाच ।

त्रिभुवनकोऐश्वर्यमहाना । वासवपायपरमहरषाना ॥ लहिविभूतिमदसतपथत्याग्यो । सभामाहिंबैठ्योअनुराग्यो॥
संगमरुतगणरुद्रगनोहैं । वसुआदित्यनगनहुबनोहैं ॥२॥ विश्वेदेवारिभहुसाध्यगन । युगअश्विनीकुमारशोभधन ॥

दोहा–चारणकिन्नरसिद्धगण, अरुगंधर्वअपार । विद्याधरअरुअपसरा, रहेसदादरबार ॥
सकलब्रह्मवादीमुनिराई । औरहुभुजंगविहंगसमुदाई ॥ वासवकीनितअस्तुतिकरहीं । ताकीभौंहविलोकतरहहीं॥
मंजुललितहोतानितगाना । सिंहासनबैठ्योमघवाना ॥ छत्रछपाकरकीछविछाजै॥५॥युगलचारुचामरअतिराजै ॥
बंदीगणविरदावलिगावैं । खड़ेदेवबहुविजनडोलावैं ॥ अरधासनमहँशचीसुहाई । सभामध्यशोभितसुरराई ॥ ६ ॥
एकसमयसुरगुरुदरबारा।शिष्यनसहितआशुपगुधारा॥७॥सुरगुरुपैसुरपतिमदछाको।एकबारतिरछेचखताको ॥८॥

दोहा–आसनतेवासवतहाँ, टर्योनतिलभरतात । वन्दनपूजनआदरन, कहाचलैयेबात ॥
देखेहुपरदेख्योअसनाहीं ॥८॥ तबसुरगुरुखेदितमनमाहीं ॥ बहुरिशपदिनिजसदनसिधारे । बैठेभौनमौनमुखधारे ॥
जानिशक्रकरविभवविकारा । भयेबृहस्पतिदुखितअपारा॥९॥वासवतबमनमेंउतजान्यो।मैंगुरुसोंहेलनअतिठान्यो॥
तबअपनेकहँनिंदनलाग्यो।सभामध्यअतिशयदुखपाग्यो॥मैंमतिमंदकहायहकीन्ह्यो । गुरुहिंअनादरजोकरिदीन्ह्यो॥
ईश्वरजमदतमत्तमहाना । मैंगुरुकोकियनहिंसनमाना॥११॥चाहकरैपंडितनहिंकोई।त्रिभुवनपतिलक्ष्मिहुजोहोई ॥

दोहा–जेहिसंपतिमदमत्तमें, भयोअसुरसुरराव । तेहिलक्ष्मीधिक्कारहै, कारणक्रूरस्वभाव ॥ १२ ॥
जोबैठ्योराजासनपाहीं।ताहिनउठबउचितकोहुकाहीं॥जेअसकाहहिंवचनमुखमाहीं।परमधरमतेजानतनाहीं ॥१३॥
तिनउपदेशग्रहणजेकरहीं । तेजनअवशिनरकमहँपरहीं॥ज्योंपषाणतरिणीचढिकोई । चाहतसागरपारहिहोई॥१४॥
सोहमजायगुरूपदपरिकै।शठतातजिपदरजशिरधरिकै॥करवावहिंप्रसन्नसबभाँती।यहउपायपैहहिंसुखपाँती ॥ १५॥
यहिविधिशक्रहिकरतविचारा।लियोजानिसुरगुरुमतिवारा॥भयेभवनतेअंतर्धाना॥१६॥यहमर्महिशक्रहुनहिंजाना ॥

दोहा--हेरिथक्योवासवगुरुहिं, लग्योनतिनकोओज । तबवेसंतोसुरगणसहित, लख्योनसुखप्रतिरोज॥१७॥
वासवकृतसुनिगुरुअपमाना । उशनासंमतलहिबलवाना॥कियेसुरनपरअसुरचढाई॥अतिदुर्मदसिगरेअतताई॥१८॥
भयोसुरासुरसंगरघोरा । सुरनअसुरमिलिहनेकठोरा ॥ अंगभंगसिगरेसुरह्वैगे । चल्योनवलकछुभीतहुभैगे ॥
गयेविरंचिशरणदुखछाई॥विनयकियेवासवशिरनाई१९तिनकोदुखितनिरखिकरतारा॥करतकृपाअसवचनउचारा ॥

ब्रह्मोवाच ।

सुनहुसकलसुरअरुसुरराजू । कियोअमंगलदायककाजू ॥ शांतदांतवेदांतनवादी । सदाब्रह्मआनँदअहलादी॥
दोहा--ऐसेनिजगुरुकोकियो, मदवशतुमअपमान ॥ २१ ॥ तातेनिरबलरिपुनते, हारिगयेबलवान ॥ २२ ॥
देखहुअसुरशुक्रबलपाये । प्रबलपरेरणतुमहिंहराये ॥ श्रीगुरुकृपाहोतयहिभांती । सकलसिद्धदायकअघघाती ॥
गुरुप्रतापबलदानवराजू । चहैतोलेवैममगृहआजू ॥ २३ ॥ हैअमोघअसुरनकेमंत्रा । शुक्रकृपाबलअहैस्वतंत्रा ॥
जोगोविंदगोसेवनकरई । विप्रनकीपदरजशिरधरई ॥ ताकीकबहुँनहोतिपराजै । स्वर्गहुलघुलागततेहिराजै ॥२४॥
तातेविश्वरूपद्विजकाहीं । जोतपसीज्ञानीजगमाहीं ॥ जायतासुचरणनशिरनावो । निजउपरोहितआशुबनावो ॥
दोहा--जोवाकेअपराधसब, क्षमिहैहेसुरराज । तौतुम्हरोसबभाँतिते, सिद्धिकरैगोकाज ॥ २५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

असमुनिकेविरंचिकीवानी॥सिगरेसुरअतिशयसुखमानी॥विश्वरूपकेनिकटासिधारे॥करिप्रणाममिलिवचनउचारे २६

देवा ऊचुः ।

हमहैंअतिथआपगृहआये । रहैईशतुवमोदबढाये ॥ समयउचितकरुकाजहमारे । विश्वरूपहमपितरातिहारे ॥२७॥
परमधरमयहपुत्रनकेरो । पितुकोसेवनकरहिंघनेरो ॥ पुत्रनमानहुँकरयहधरमा ॥ २८॥ बटुकोतौविशेषयहधरमा॥
अहैवेदमूरतिआचारज । पितुकोजानहुहैसाँचोअज ॥ अहैमरुतपतिमूरतिभ्राता । धरनीमूरतिहैसतिमाता ॥२९॥
दोहा-धर्मरूपहैअतिथसाति, भागिनीदयास्वरूप ॥ अभ्यागतमूर्त्तियअगिनि, जगवपुकृष्णअरूप ॥ ३० ॥
हमहैंदुखितपराजयपाई । सोनिजतपबलदेहुमिटाई ॥ विश्वरूपकीजैममशासन । जामेंहमबैठेंनिजआसन ॥३१॥
हमसबतुमहिंपुरोहितकरहीं॥तुवतपबलसहजाहिंअरिदरहीं॥पितुकहँउचितनसुतहिप्रणामा॥करहुनयहशंकामतिधामा॥
यद्यपिगुरुलघुवैसहुहोई । ताहिप्रणामकरतसबकोई ॥ पुनिनिजअर्थहेतजगमाहीं । बड़ेनवहिंलघुलोगनकाहीं ॥
यहअनुचितजानहुँनहिंताता । तुमतोतपविद्याविख्याता ॥ ३३ ॥

शुक उवाच ।

जबसुरगणविनतीकियनिजहित । विश्वरूपकहँहोनपुरोहित ॥
दोहा-विश्वरूपतबनिजमनै, करिकेविमलविचार ॥ ह्वैप्रसन्नमंजुलवचन, बोलेसुखितअपार ॥ ३४ ॥

विश्वरूप उवाच ।

यद्यपिउपरोहितीतिहारी । ब्रह्मतेजकीनाशनिहारी ॥ धर्मशीलसबसंतसुजानै । उपरोहितीनिंद्यबहुमानै ॥
तद्यपितुमप्रभुजाँचनआये । दीनवचनममश्रवणसुनाये ॥ किमिउत्तरतुमकहँअबदेहीं । यहअपयशवरबसकसलेहीं॥
तातेजोकहिहौसोकरिहौं । तुम्हरोशासननिजशिरधरिहौं ॥यहस्वारथहैसकलहमारा । यामेंअहैनऔरविचारा ३५॥
अहहिंअकिंचनसज्जनजेते । असनकरहिंसीलाविनतेते ॥ सिगरीकरहिंक्रियातेहिमाहीं । सोइहमरोधर्मसदाहीं ॥
दोहा-पापवृत्तिउपरोहिती, जेअतिलहहिंअनंद ॥ द्वारद्वारदौरतफिरैं, तेअतिशयमतिमंद ॥ ३६ ॥
तेहितेहमरेकरननयोगू । येतुमहमकोदेहुनियोगू ॥ तातेउपरोहितहमह्वैहैं । तुवशासनमेंनाहिंनटिजैहैं ॥
जहँलोंचलिहैशक्तिहमारी । तहँलोंकरिहैंसिद्धतिहारी ॥ ३७ ॥

शुक उवाच।

असकहिंसिगरेदेवनकेहित।विश्वरूपमुनिभयेपुरोहित॥३८॥दानवविभवअमितजोलहेऊ।शुक्रप्रभावहिरक्षितरहेऊ।
करिविद्यावैष्णवीमहानी।असुरनसोंविभूतिसोइआनी॥विश्वरूपवासवकहँदीन्ही।जगतीमहँकीरतिअतिलीन्ही ३९॥
सोविद्याकरजानहुँनामा। नारायणकवचेसुखधामा॥

दोहा—सोनारायणकवचको, विश्वरूपचितलाइ॥ वासवकोउपदेशकिय, सविधिसमंत्रबताइ॥
जोनारायणकवचको, कसिकायासुरराज॥ विनप्रयासजीत्योतुरत, सबदानवीसमाज॥
यहसुनिकुरुपतिजोरिकर, शुकसोंबोल्योवैन॥ प्रभुनारायणकवचको, देहुसुनायसचैन॥
सुनतपरीक्षितवचनवर, श्रीशुकआनँदपाय॥ श्रीनारायणकवचको, दीन्ह्योंनृपहिसुनाय॥
सोमैंभाषानहिंकियो, जानिमंत्रमयताहि, सोईलैअध्यायवर, लिखिदीन्ह्योंयहिमाहि॥ ४०॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा-
धिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदांबुनिधौ षष्ठस्कंधे सप्तमस्तरंगः॥ ७॥

राजोवाच।

ययागुप्तः सहस्राक्षः सवाहान्रिपुसैनिकान्॥ क्रीडन्निवविनिर्जित्यत्रिलोक्याबुभुजेश्रियम्॥ १॥
भगवंस्तन्ममाख्याहिवर्मनारायणात्मकम्। यथाततायिनःशत्रून्येनगुप्तोऽजयन्मृधे॥ २॥

श्रीशुक उवाच।

वृतःपुरोहितस्त्वाष्ट्रोमहेंद्रायानुपृच्छते॥ नारायणाख्यंवर्माहतदिहैकमनाः शृणु॥ ३॥

विश्वरूप उवाच।

धौतांघ्रिपाणिराचम्यसपवित्रउदङ्मुखः। कृतस्वांगकरन्यासोमंत्राभ्यांवाग्यतःशुचिः॥ ४॥
नारायणमयंवर्मसन्नह्येद्भयआगते। पादयोर्जानुनोरूर्वोरुदरेहृद्यथोरसि॥ ५॥
मुखेशिरस्यानुपूर्व्यादोंकारादीनिविन्यसेत्। ॐनमोनारायणायेतिविपर्ययमथापिवा॥ ६॥
करन्यासंततःकुर्याद्द्वादशाक्षरविद्यया। प्रणवादियकारांतमंगुल्यंगुष्ठपर्वसु॥ ७॥
न्यसेद्धृदयओंकारंविकारमनुमूर्द्धनि। षकारंतुभ्रुवोर्मध्येनकारंशिखयादिशेत्॥ ८॥
वेकारंनेत्रयोर्युंज्यान्नकारंसर्वसंधिषु। मकारमस्त्रमुद्दिश्यमंत्रमूर्त्तिर्भवेद्बुधः॥ ॥ ९॥
सविसर्गंफडन्तंतत्सर्वदिक्षुविनिर्दिशेत्॥ ॐविष्णवेनम इति॥ १०॥
आत्मानंपरमंध्यायेद्ध्येयंषट्शक्तिभिर्युतम्। विद्यातेजस्तपोमूर्तिमिमंमंत्रमुदाहरेत्॥ ११॥

ॐहरिर्विदध्यान्ममसर्वरक्षांन्यस्तांघ्रिपद्मःपतगेंद्रपृष्ठे। दरारिचर्मासिगदेषुचापपाशान्दधानोष्टगुणोष्टबाहुः॥ १२॥
जलेषुमांरक्षतुमत्स्यमूर्तिर्यादोगणेभ्योवरुणस्यपाशात्।स्थलेषुमायाबटुवामनोव्यात्त्रिविक्रमःखेऽवतुविश्वरूपः१३॥
दुर्गेष्वटव्याजिमुखादिषुप्रभुःपायान्नृसिंहोऽसुरयूथपारिः।विमुंचतोयस्यमहाट्टहासंदिशोविनेदुर्न्यपतंश्चगर्भाः १४॥
रक्षत्वसौमाध्वनियज्ञकल्पःस्वदंष्ट्रयोन्नीतधरोवराहः।रामोद्रिकूटेष्वथविप्रवासेसलक्ष्मणोऽव्याद्भरताग्रजोऽस्मान् १५
मामुग्रधर्मादखिलात्प्रमादान्नारायणःपातुनरश्चहासात्। दत्तस्त्वयोगादथयोगनाथः पायाद्गणेशःकपिलःकर्मबंधात्।
सनत्कुमारोऽवतुकामदेवाद्धयशीर्षोमांपथिदेवहेलनात्।देवर्षिवर्यःपुरुषार्चनांतरात्कूर्मोहरिर्मांनिरयादशेषात्॥१७॥
धन्वंतरिर्भगवान्पात्वपथ्याद्द्वंद्वाद्भयादृषभोनिर्जितात्मा।यज्ञश्चलोकादवताज्जनांताद्बलोगणात्क्रोधवशादहींद्रः १८॥

द्वैपायनोभगवानप्रबोधाद्बुद्धस्तुपाखंडगणात्प्रमादात्।कल्किःकलेःकालमलात्प्रपातुधर्मावनायोरुकृतावतारः १९॥
मांकेशवोगदयाप्रातरव्याद्गोविंदआसंगवमात्तवेणुः । नारायणःप्राह्णउदारशक्तिर्मध्यंदिनेविष्णुररींद्रपाणिः ॥ २० ॥
देवोपराह्णेमधुहोग्रधन्वासायंत्रिधामाऽवतुमाधवोमाम् । दोषेहृषीकेशउतार्द्धरात्रेनिशीथएकोवतुपद्मनाभः ॥ २१ ॥
श्रीवत्सधामापररात्रईशःप्रत्यूषईशोसिधरोजनार्द्दनः।दामोदरोव्यादनुसंध्यंप्रभातेविश्वेश्वरोभगवान्कालमूर्त्तिः २२॥
चक्रंयुगांतानलतिग्मनेमिभ्रमत्समंताद्भगवत्प्रयुक्तम्।दंदग्धिदंदग्ध्यरिसैन्यमाशुकक्षंयथावातसखोहुताशः ॥ २३॥
गदेशनिस्पर्शिनविस्फुलिंगेर्निष्पिढिनिष्पिढ्यजितप्रियासि।कूष्मांडवैनायकयक्षरक्षोभूतग्रहांश्चूर्णयचूर्णयारीन् २४॥
त्वंयातुधानप्रमथप्रेतमातृपिशाचविप्रग्रहघोरदृष्टीन् । दरेंद्रविद्रावयकृष्णपूरितोभीमस्वनोरेर्हृदयानिकंपयन्॥२५॥
त्वंतिग्मधारासिवरारिसैन्यमीशप्रयुक्तोममछिंधिछिंधि।चक्षूंषिचर्मञ्छतचंद्रछादयद्विषामघोनांहरपापचक्षुषाम्२६॥

यन्नोभयंग्रहेभ्योभूत्केतुभ्योनृभ्यएवच । सरीसृपेभ्योदंष्ट्रिभ्योभूतेभ्योंऽहोभ्यएववा ॥ २७ ॥
सर्वाण्येतानिभगवन्नामरूपास्त्रकीर्तनात् । प्रयांतुसंक्षयंसद्योयेनश्रेयःप्रतीपकाः ॥ २८ ॥
गरुडोभगवान्स्तोत्रस्तोभश्छंदोमयःप्रभुः । रक्षत्वशेषकृच्छ्रेभ्योविष्वक्सेनःस्वनामभिः ॥ २९ ॥
सर्वापद्भ्योहरेर्नामरूपयानायुधानिनः । बुद्धींद्रियमनःप्राणान्पांतुपार्षदभूषणाः ॥ ३० ॥
यथाहिभगवानेववस्तुतःसदसच्चयत् । सत्येनानेननःसर्वेयांतुनाशमुपद्रवाः ॥ ३१ ॥
यथैकात्म्यानुभावानांविकल्परहितःस्वयम् । भूषणायुधलिंगाख्याधत्तेशक्तीःस्वमायया ॥ ३२ ॥
तेनैवसत्यमानेनसर्वज्ञोभगवान्हरिः । पातुसर्वैःस्वरूपैर्नः सदासर्वत्रसर्वगः ॥ ३३ ॥
विदिक्षुदिक्षूर्ध्वमधःसमंतादंतर्बहिर्भगवान्नारसिंहः । प्रहापयँल्लोकभयंस्वनेनस्वतेजसाग्रस्तसमस्ततेजाः ॥ ३४ ॥
विश्वरूप उवाच-मघवन्निदमाख्यातंवर्मनारायणात्मकम् । विजेष्यस्यंजसायेनदंशितोऽसुरयूथपान् ॥३५॥
एतद्धारयमाणस्तुयंयंपश्यतिचक्षुषा । तदावासंस्पृशेत्सद्यःसाध्वसात्सविमुच्यते ॥ ३६ ॥
नकुतश्चिद्भयंतस्यविद्यांधारयतोभवेत् । राजदस्युग्रहादिभ्योव्याघ्रादिभ्यश्चकर्हिचित् ॥ ३७ ॥
इमांविद्यांपुराकश्चित्कौशिकोधारयन्द्विजः । योगधारणयास्वांगंजहौसमरुधन्वनि ॥ ३८ ॥
तस्योपरिविमानेनगंधर्वपतिरेकदा । ययौचित्ररथःस्त्रीभिर्वृतोयत्रद्विजक्षयः ॥ ३९ ॥
सांगनोन्यपतत्सद्यःसविमानोह्यवाक्शिराः । सवालखिल्यवचनादस्थीन्यादायविस्मितः ॥ ४० ॥
प्रास्यप्राचीसरस्वत्यांस्नात्वाधामस्वमन्वगात् ॥ ४१ ॥

श्रीशुक उवाच ।

यइदंशृणुयात्कालेयोधारयतिचादृतः । तंनमस्यंतिभूतानिमुच्यतेसर्वतोभयात् ॥ ४२ ॥
एतांविद्यामधिगतोविश्वरूपाच्छतक्रतुः । त्रैलोक्यलक्ष्मींबुभुजेविनिर्जित्यमृधेऽसुरान् ॥ ४३ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा-
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ षष्ठस्कंधे अष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

दोहा-जोनारायणकवचयह, धारैसुनैसप्रीति । तेहिसुरवंदतअघनशत, लहतकतहुँनहिंभीति ॥

श्रीशुक उवाच।

विश्वरूपमुखतीनमहीशा । तिनकोवरणनसुनहुमुनीशा ॥ यकसोंकरहिंसोमकोपाना।यकसोसुरापानसविधाना ॥
यकसोंअन्नहिंभोजनकरहीं । तिनकर्मननामहुँअनुसरहीं॥१॥पितातासुदेवताविख्याता।रहीदैत्यदुहितातेहिमाता ॥
विश्वरूपसोमखकहठान्यो।सकलदेवतनबहुसनमान्यो॥मुखतेनामसुरनकरलेहीं॥२॥गुप्तभागदैत्यनकहँदेहीं ॥ ३ ॥

यहचरित्रजान्योसुरराई । तबअतिशभययाकेछाई ॥ लैकरकुलिशउठ्योतेहिकाला। विश्वरूपकेहन्योउताला ॥

दोहा–विश्वरूपकेतीनिहूँ, शीसकाटिसुरराय । तुरतधरणिमहँफेंकिदिय, मनमहँअतिहरषाय ॥ ४ ॥

विश्वरूपकेयकशिरकेरे । भेहरदोविहंगबहुतेरे ॥ भयेचटकखगयकशिरतेरे । यकशिरतेतीतरहिघनेरे ॥ ५ ॥

सुनासीरतहँअंजुलिओडी । लियोब्रह्महत्यानहिंथोडी ॥ निजअपवादछोडावनहेतू । आतमशुद्धहेतसुरकेतू ॥

वर्षदिवसभरधारणकीन्हें । पुनिमहितियतरुजलकहँदीन्हें॥६॥अवनीमेंऊसरतेहिजानो।तरुमेंगोदिताहिपहिचानो॥

नारिनमासमासरजसोई । जलमेंहुफेनहोइसोजोई ॥ लहिद्विजहत्यायेतहँचारी । कह्योवासवहिदुखितपुकारी ॥

दोहा–वासवतिनकोदुखितगुनि, दियोचारिवरदान । पृथक्पृथकतिनकोधरम, मैंअबकरहुँबखान ॥

महिमहँकहूंखातखनिआवै। पूरिआपहीतेफिरिजावै ॥ जोकोउवृक्षनकाटिहुडारै । तामेंहोइफेरिबहुडारै ॥

रतिमहँतुप्रहोयनहिंनारी । यहवरदानहिंलियोविचारी । जितनोजलऐंचतजनजावै । झरननसोतितनोबढ़िआवै ॥

यहवरदानचारिहूपायो । तबद्विजहत्यहुलहिसुखछायो ॥ त्वष्टामुनिनिजपुत्रनिपाता । रच्योयज्ञकरिकोपअघाता॥

चाह्योवासवकेरविनाशा । हवनकियोविधिमहितहुताशा ॥ इंद्रशत्रुइहिकालहिबाढो । मारहुवासवकहँबलगाढो ॥

दोहा–भयोमंत्रसुरहीनयह, तातेभोविपरीति । इंद्रहिताकोशत्रुभो, तेहिदायकअतिभीति ॥ ११ ॥

छंद–तहँहोमकरतहिकुंडतेनिकस्योपुरुषविकरालहै । तिमिप्रलैकालहिमहाकालसुविश्वभक्षकहालहै ॥ १२ ॥

सुरतजेजितनोजातऊरधबढ़ततितनोदिनदिनै । अतिभीमश्यामसरूपजगमहँभरतभैभलछिनछिनै ॥

मनुअग्निभसमितमहीभूधरसाँझकीमनुघनघटा॥१३॥मध्यानरविसमउग्रलोचनतपततामहिंसमजटा१४॥

लीन्हेंत्रिशूलप्रचंडमानहुँस्वर्गमहिछेदतअहै । नाचतनदतअतिनादउन्नतपदकपावतहीरहै ॥ १५ ॥

मुखमेरुकंदरसरिसमानहुँपियनचहुतअकासको । अधरानिचाटतजीभसोमनुचढ़तनखतानिवासको ॥

लीलतमनहुँतीनिहुँभुवन–१६–जमुहातबारहिंबारहै । दृढ़परमदीरघदाढदेखतभरतजनभयभारहै॥१७॥

जेहिनामवृत्रासुरसुरनदारनहुतैदारुणमहा । जाकोस्वरूपअनूपतीनिहुभुवनमेंभरिभलरहा ॥ १८ ॥

लखिवृत्रकहँदिगपासचारिहुसुरनजोरिसमाजहै । यकबारतेहिदिव्यास्त्रनिजनिजहनेजीतनकाजहै ॥ १९॥

दिव्यास्त्रएकहिबारवृत्रासुरहुवदनवगारिकै । द्रुतलीललीन्ह्योविनप्रयासहिहँस्योसुरननिहारिकै ॥

यहदशादेखतअमरगणतेहिक्षणसमरभयभरिभगे । अतिदुखितह्वैआरतपुकारतकृष्णकहँध्यावनलगे२०॥

देवा ऊचुः ।

दोहा–अनिलअनलआकाशअरु, अवनीअंबुअनादि ॥ इनतेनिरमितलोकत्रै, हमजेसुरब्रह्मादि ॥

छंदहरिगीतिका–भयधारिउरजेहिकालकोबलिदेहिंसोउजाकोडरै । हरिपूर्णसोसबथलहमारोवेगिचलरक्षनकरै२१॥

अहंकारविननिजलाभपूरणकामशांतसमानजो । असनाथश्रीयदुनाथकोतजिभजहिंदेवहिआनजो ॥

गजपूंछतजिसोश्वानपूंछहिगहिउदधिचाहततरो।जहिमीनवपुहरिसुगंधरनीबाँधितरनीसुखभरो ॥ २२ ॥

मनुशोकसागरतेतरयोसोइहरिहमैंसबदासकी । भयहरैवृत्रासुरहितेकरिकृपाआससुपासकी ॥ २३ ॥

लहिपौनगौनप्रचंडउठततरंगअतिहिकरालहै । असप्रलयजलतेकंपितैविधिलखिहरयोदुखहालहै ॥

सोइहरिहमारोदुखहरैजोईशयकप्रधानहै ॥ २४ ॥ निजमायहीसोहमहिंविरच्योजासुकृपामहानहै ॥

तेहिपाइहमहूविश्वविरचैजोप्रथमहीतेरह्यो । तेहिरूपअंतरयामिकोहमजानिबोमननाचह्यो ॥

मनआपनेकोईशमान्योनिजअज्ञानहितेमहा ॥ २५ ॥ प्रभुधारिजोबहुरूपदैत्यनमारिसुररक्षणचहा ॥ २६॥

सोइविश्वरूपप्रधानपुरुषहुइष्टदेवहमारहैं । अतिहीविलक्षणअसमुकुंदहिशरणकरतउदारहैं ॥

ढिगतासुकैपयानकरिहैत्राणदीनदयालहै । शरणागतैकोपालरूपरसालजोनँदलालहै ॥

दोहा–सोईसुरब्रह्मादिते, हमसबअहैंअपार ॥ करनहारमंगलसदा, तिनकोप्राणआधार ॥ २७ ॥

शुक उवाच ।

महाराजसवसुरनके, करतविनययहिभाँति ॥ पश्चिमदिशितेप्रगटभे, श्रीगोविंदवरकाँति ॥

कवित्त–एककरशंखएककरमेंसुचक्रराजैएककरधनुषगदाहैएकहाथमें ।
बिनाश्रीवत्सअरुकौस्तुभसुषोडशविराजैहरिपारषदरूपसमसाथमें ॥ २८ ॥
विकसितशरदसरोजसेसलोनेनैनभौंहकेसमानभ्राजैमुकुटसुमाथमें ।
भाषैरघुराजकृपासिंधुश्रीमुकुंदआयोआनँदबढ़ायोह्वैसवारखगनाथमें ॥ २९ ॥

दोहा–देखिनाथकोदेवसब, मुदजलदृगनबहाय । दंडसरिसधरणीगिरे, अस्तुतिकियसुखपाय ॥ ३० ॥
मंत्ररूपअस्तुतिसुखद, रच्योनभापाताहि । कटैकोटिसंकटकठिन, पाठकरैजोयाहि ॥

देवा ऊचुः ।

नमस्तेयज्ञवीर्यायवयसेउततेनमः नमस्तेह्यस्तचक्रायनमःसुपुरुहूतये ॥ ३१ ॥ यत्तेगतीनांतिसृणामीशितुः परमंपदंनावर्चीनोविसर्गस्यधातुर्वेदितुमर्हति ॥ ३२ ॥ ॐनमस्तेस्तुभगवन्नारायणवासुदेवादिपुरुषमहापुरुषमहानुभावपरममंगलपरमकल्याणपरमकारुणिककेवलजगदाधारलोकैकनाथसर्वेश्वरलक्ष्मीनाथपरमहंसपरिव्राजकैः परमेणात्मयोगसमाधिनापरिभावितपरिस्फुटपारमहंस्यधर्मेणोद्घाटिततमः कपाटद्वारेचित्तेऽप्रावृतआत्मलोकेस्वयमुपलब्धनिजसुखानुभवोभवान् ॥ ३३ ॥ दुरवबोधइवतवायंविहारयोगोयदशरणोऽशरीरइदमनवेक्षितास्मत्समवाय आत्मनैवाविक्रियमाणेनसगुणमगुणःसृजसिपासिहरसि ॥ ३४ ॥ अथतत्रभवान्किंदेवदत्तवदिहगुणविसर्गपतितः पारतंत्र्येणस्वकृतकुशलाकुशलंफलमुपाददाति ॥ अहोस्विदात्मारामउपशमशीलः समंजसदर्शनउदास्तइतिहवावनविदामः ॥ ३५ ॥ नहिविरोधउभयंभगवत्यपरिगणितगुणगणईश्वरेऽनवगाह्यमाहात्म्येअर्वाचीनविकल्पवितर्कविचारप्रमाणाभासकुतर्कशास्त्रकलिलांतः करणाश्रयदुरवग्रहवादिनांविवादानवसरेउपरतसमस्तमायामयेकेवलएवात्ममायामंतर्धायकोन्वर्थोदुर्घटइवभवतिस्वरूपद्वयाभावात् ॥ ३६ ॥ समविषममतीनांमतमनुसरसियथारज्जुखंडःसर्पादिधियाम्॥३७॥सएवाहिपुनःसर्ववस्तुनिवस्तुस्वरूपःसर्वेश्वरःसकलजगत्कारणकारणभूतः सर्वप्रत्यगात्मत्वात्सर्वगुणाभासोपलक्षित एकएवपर्यवशेषितः ॥ ३८ ॥ अथहवावतवमहिमामृतरससमुद्रविप्रुषासकृदवलीढयास्वमनसिनिष्पंदमानानवरतसुखेनाविस्मारितदृष्टश्रुतविषयसुखलेशाभासाः परमभागवताएकांतिनोभगवतिसर्वभूतप्रियसुहृदिसर्वात्मनिनितरांनिरंतरंनिर्वृतमनसःकथमुहवाएतेमधुमथनपुनःस्वार्थकुशलाह्यात्मप्रियसुहृदःसाधवस्त्वच्चरणांबुजानुसेवांविसृजंतिनयत्रपुनरयंसंसारपर्यावर्त्तः ॥ ३९ ॥ त्रिभुवनात्मभवनत्रिविक्रमत्रिनयनत्रिलोकमनोहरानुभावतवैवविभूतयोदितिजदनुजादयश्चापितेषामनुपक्रमसमयोयमितिस्वात्ममाययासुरनरमृगमिश्रितजलचराकृतिभिर्यथापराधंदंडंदंडधरदधर्थएवमेनमपिभगवञ्जहित्वाष्ट्रमुतयदिमन्यसे ४०॥ अस्माकंतावकानांतवनतानांततततामहतवचरणनलिनयुगलध्यानानुबद्धहृदयनिगडानांस्वलिंगविवरणेनात्मसात्कृतानामनुकंपानुरंजितविशदरुचिरशिशिरस्मितावलोकेनविगलितमधुरमुखरसामृतकलयाचांतस्तापमनघार्हसिशमयितुम् ॥ ४१ ॥ अथहभगवंस्तवास्माभिरखिलजगदुत्पत्तिस्थितिलयनिमित्तायमानदिव्यमायाविनोदस्यसकलजीवनिकायानामंतर्हृदयेषुबहिरपिचब्रह्मप्रत्यगात्मस्वरूपेणप्रधानरूपेणचयथादेशकालदेहावस्थानविशेषंतदुपादानोपलंभकतयानुभवतःसर्वप्रत्ययसाक्षिणआकाशशरीरस्यसाक्षात्परब्रह्मणःपरमात्मनःक्रियानिवहाअर्थविशेषोविज्ञापनीयःस्याद्विस्फुलिंगादिभिरिवहिरण्यरेतसः ॥ ४२ ॥ अतएवस्वयंतदुपकल्पयास्माकंभगवतःपरमगुरोस्तवचरणशतपलाशच्छायांविविधवृजिनसंसारपरिश्रमोपशमनीमुपसृतानांवयंयत्कामेनोपसादिताः ॥ ४३ ॥ अथोईशजहित्वाष्ट्रंग्रसन्तंभुवनत्रयंग्रस्तानियेननकृष्णतेजांस्यस्त्रायुधानिच ॥ ४४ ॥ हंसायदह्रनिलयायनिरीक्षकायकृष्णायमृष्टयशसेनिरुपक्रमायसत्संग्रहायभवपांथनिजाश्रमाप्तावंतेपरीष्टगतयेहरयेनमस्ते ॥ ४५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–यहिविधिअस्तुतिकियअमर, सादरश्रीहरिकेरि ॥ मंदविहँसिबोलेहरषि, नाथकृपादृगहेरि ॥ ४६ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

हैंप्रसन्नहमतुमपरदेवा । कीन्हीभलीहमारीसेवा ॥ अस्तुतिकीन्हींविपुलहमारी । ममपदभक्तिबढ़ावनहारी ॥
जौनभक्तिकीन्हेंजनकोई । आवागमनरहितहठिहोई ॥ ४७ ॥ मैंप्रसन्नहोवहुँजेहिपाहीं । ताकोकछुदुर्लभहैनाहीं ॥
तद्यपिमोरियकांतीदासा । मोहिंछोड़िकछुकरैनआसा॥४८॥ विषैविवशजेजनअज्ञानी । तेनिजमंगललेहिनजानी॥
तिनकोजेजनविषैवतावैं । तेऊअंतनरकमहँजावैं ॥ ४९ ॥ जोजानतममभक्तिहमेशा । करतनसोकमंत्रउपदेशा ॥
दोहा–जिमिरोगीमाँगतकुपथ, देतनवैदसुरेश ॥ तिमिसज्जनविषईजनन, देतनविषैनिदेश ॥ ५० ॥
जाहुसुरेशदधीचनगीचा । जोविद्यातपव्रततेसींचा ॥ माँगिलेहुद्रुतनृपतिशरीरा । तवमिटिजाइतिहारीपीरा ॥५१॥
जितनेदोउअश्विनीकुमारा । पढ़ीवेदविद्यासुखसारा ॥ जाकोअहैअश्वशिरनामा । जाहिपढेपावतहरिधामा ॥
द्विजदधीचतिनवेदपढ़ाई । दीनोजीवनमुक्तिबनाई ॥५२॥ सोइदधीचत्वष्टहिसुखभीनो । दीन्ह्योमेरोकवचप्रवीनो॥
नामनरायणकवचअखंडा । जाहिपढ़तहोतोवरिखंडा ॥ त्वष्टाविश्वरूपकहैंसोई । दियोकवचममपावनजोई ॥
दोहा–ताकेपढ़तशरीरके, होतपापसबछीन ॥ सोईनारायणकवच, विश्वरूपतोहिंदीन ॥ ५३ ॥
जायदधीचनगीचतुम, युतअश्विनीकुमार॥माँगहुगेतबदेइगो, निजतनगुनिउपकार ॥
तेहिहाड़नकोल्याइविसु, करमाकरबनवाइ ॥ आयुधकुलिशकठोरअति, ममप्रभावमनल्याइ॥५४॥
सोईवज्रतेवृत्रको, काटहुगेतुमशीश ॥ लहिहौतबअपनोविभव, नहिंसंशैदिविईश ॥
मेरोजननहिंपावई, कवहूँकहूँकलेश ॥ यहिमतमेंविश्वासतुम, राखेरहौहमेश ॥ ५५ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ षष्ठस्कंधे नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–दैसुरेशकोभाँतियहि, वरनिदेशभगवान ॥ देखतहींसबसुरनके, भेतहँअंतरधान ॥ १ ॥
गयोसुरेशदधीचसमीपा । माँग्योहाड़तासुकुलदीपा ॥ तबदधीचहरषितमुसकाई । दियोवासवहिवचनसुनाई ॥२॥
हेवृंदारकजानहुँनाहीं । होतजोदुखजनमरतहिमाहीं॥३॥ जियनचहततिहितनअतिप्यारो।माँगेतननहिंदेतउदारो॥
हरिहुजोमांगिचहेतेहिलेहीं । तदपिदेहिदेहीनहिंदेहीं ॥ ४ ॥ जबदधीचअसवचनसुनाये । तबसबदेवकहेदुखपाये ॥

देवा ऊचुः ।

जोप्राणिनपरपरमदयाला । परउपकारकरैसबकाला ॥ तिनकोहैअदेयकछुनाहीं । पुनिकाजेतुमसबजगमाहीं ॥५॥
दोहा–परसंकटजानतनहीं, स्वारथरतजनहोइ ॥ जोपरदुखजानतसही, तौमाँगतनहिंकोइ ॥
पैजगमहँसोसत्यउदारा । जोसुखतेननकारनिकारा ॥६॥ सुनिअसदेवनकीमृदुवानी। बोलेऋषिदधीचिद्विजज्ञानी ॥

दधीचि उवाच ।

तुवसुखधर्मसुननकरिआशा।मैंकीन्ह्योंअसवचनप्रकाशा ॥ तजिहिमोहियहअंतशरीरा।तातेकरिविचारगंभीरा ॥
अवहींयहमैंतनतजिदेहौं । तुवउपकारसाधियशलेहौं ॥ ७ ॥ यहअनित्यतनतेसुरराई । जोनहिंजगयशलेतबनाई ॥
दयाकरतजीवनपरनाहीं । जडचेतननिंदततोहिकाहीं ॥८॥ यहीधर्मजानहुअविनासी । जाकेहैयशवंतउपासी ॥
दोहा–जोजीवनकेदुखदुखी, सुखमेंसुखीसदाहिं । ताकेसमयहिजगतमें, तुमजानहुकोउनाहिं ॥ ९ ॥

हायहाययहबड़ोकलेशा । मोकोउपजतअतिअंदेशा ॥ क्षणभंगुरयहपायशरीरा । हरयोनतनधनतेपरपीरा ॥
अंतश्रृगालश्वानतनखाहीं।धनकुलसंगजातकोउनाहीं ॥ ऐसेहुमहँजोपरउपकारा।कियोनतेहिसमकौनगँवारा॥१०॥

शुक उवाच ।

असविचारकरिसुमतिदधीचा।दैमनमाधवचरणनबीचा ११ नैनमूंदिमतिथिरकरिज्ञानी।परमयोगधरिनिरअभिमानी॥
तज्योतुरंतदधीचिशरीरा । गन्योनेकुमनमेंनहिंपीरा ॥ लैदधीचिकेहाडसुरेशा । विश्वकर्माकहँदियोनिदेशा ॥
दोहा-यहदधीचिकेअस्थिको, दीजैवज्रबनाय । सोविश्वकर्मातुरतहीं, रच्योचतुरचितलाय ॥ १२ ॥
सोवज्रीलैवज्रकठोरा । कृष्णप्रभावराखिवरजोरा ॥१३॥ लैदेवनकोकटकमहाना । चढ़िऐरावतकियोपयाना ॥
अस्तुतिकरतसिद्धगणसंगा । चाल्योरणकोपरमउमंगा ॥ देवनदलयुतवासवघोरा॥१४॥चल्योदौरिवृत्रासुरओरा ॥
जानिपुरंदरकेरिअवाई । वृत्रासुरसैनासजवाई ॥ महामहादानवसँगलैकै । वासवसनमुखभोरिपुज्वैकै ॥
लखिवृत्रहिवासवतहँआयो । जिमिअंतकपरशंकरधायो ॥१५॥ त्रेतायुगमहँतहँमहराजा।भयोसुरासुरसमरदराजा॥
दोहा-भयोनर्मदातीरमहँ, देवासुरसंग्राम । अस्त्रशस्त्रबहुविधिचले, नाशकशत्रुनग्राम ॥ १६ ॥
रुद्रअग्निअश्विनीकुमारा । वसुआदित्यपितरबलवारा ॥ मरुतगणहुअरुविश्वेदेवा । ऋभुअरुसाध्यआदिबहुदेवा ॥
येसबअसुरनमारनलागे।कबहुँनजेसंगरमहँभागे॥लियेकुलिशकरकठिनकराला । वासववारणचढ्योविशाला ॥१७॥
निरखिपुरंदरकहँयहिभाँती।सहिनहिंसकेअसुरअरिघाती॥वृत्रासुरकहँआगेकरिकै।कियोयुद्धअतिकोपहिभरिकै १८
शंबरनमुचिऋषभद्वैशीशा॥हयग्रीवअरुशंकुहिशीशा॥विप्रचित्तिअंबरहुअनर्वा।अयमुख-१९-अरुपुलोमवृषपर्वा॥
दोहा-हेतिप्रहेतिहुउत्कलौ, दानवदैत्यअपार ॥ २० ॥ मालिसुमालीराक्षसहु, लैआयुधअनियार ॥
छंदचामर-राजहिकनककेवर्म । गहिवीरवीरनधर्म ॥ सुरसैनपतिकेओर । करिशोरपरमकठोर ॥ २१ ॥
धायेअसुरबलवान । नहिंनेकुशंकितप्रान ॥ शरगदापरिघप्रचंड । अरुपासमुद्गरदंड ॥
तोमरकुठार-॥२२॥-त्रिशूल । अरुतोपतुपकअतूल॥चहुँओरशस्त्रचलाय । लियदेवदलकहँछाय ॥२३॥
नहिंदेवदलतेहिठाम । देखापरैसंग्राम ॥ छायेगगनशरजाल । अँधियारभोविकराल ॥
जिमिघननक्षत्रछिपाहिं । तिमिदेवतहिंदरशाहिं ॥२४॥तबदेवसंगरकोपि । वधदानवनचितचोपि ॥
छांडेसमरशरधार । कियअसुरअस्त्रनछार ॥ २५ ॥ दानवदुरासदधाय । पाषाणतरुनचलाय ॥
बहुशैलशृंगनमारि । निजविजयलीनाविचारि ॥ तबदेवदीरघवान । हनिदानवनसहसान ॥
तरुशैलकियबहुखंड । पुनिहनेशरपरचंड ॥ २६ ॥ तबसकलदानववीरु । रणमहँभयेभवभीरु ॥ २७ ॥
दोहा-देवनकोलखिमुदितअति, विफलआपनोकर्म ॥ दानवअतिडरपेतहां, मानिहियेमहँशर्म ॥
भयेमोघअसुरनशरकैसे।दुष्टवचनहरिदासनजैसे ॥२८॥ हरिविमुखीदानवभयपागे।वृत्रासुरहिछाँडिसबभागे ॥२९॥
निजदलविचलतलखिदनुजेशा।अरुणनैनकरिकोपितवेशा ३० तिनकोकह्योउचितहँसिवानी।लैलैनामवीररसमानी॥
विप्रचित्तिमयनमुचिपुलोमा । शंबरअरुअनर्वबलतोमा ॥ मेरेवचनसुनहुँचितलाई । कहाँजाउंवीरताविहाई ॥३१॥
जोजनम्योसोअवशिमरैगो । टारेकैसहुँनाहिंटरैगो ॥ पैजोमींचुमिलैरणमाहीं । तौतेहिउभयलोकबनिजाहीं ॥
दोहा-मरेस्वर्गजगमेंसुयश, मृतकहुजियतसमान ॥ ऐसोसंगरकोमरण, कोनचहैमतिमान ॥ ३२ ॥
सवैया-इंद्रिनजीतिकैयोगविधानसोंछोड़ैशरीरजोब्रह्मकोध्यावत ।
कैरणमेंतनक्षोभकोछोड़िकैप्राणतजैअरिसन्मुखधावत ॥
श्रीरघुराजभनैउभैभाँतिसोंजेतनत्यागतमोदबढ़ावत ।
तेरविमंडलभेदिकैकृष्णपुरैगमनेजगफेरिनआवत ॥ ३३ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृतेआनन्दाम्बुनिधौ षष्ठस्कंधे दशमस्तरंगः ॥१०॥

शुक उवाच।

दोहा—वृत्रासुरयद्यपिकह्यो, धर्मवचनबहुभाँति ॥ तद्यपिअतिभयसाभरी, फिरीनभटनजमाति ॥ १ ॥
छंद्मोतीदाम—विलोकिदलैभगतोतेहिठाम। विजयलखिदेवनकीबलधाम ॥
हनेभटजातअनाथसमान ॥ २ ॥ हियेनहिंवृत्रहिकोपसमान ॥
भन्योवरवैनतिन्हैंडेरवाय ॥ ३ ॥ तजेकुलकीकतजाहुपराय ॥
वृथाजननीजनम्योतुमकाहिं। लगैसरपीठिफिरौकतनाहिं ॥
कह्योपुनिदेवनकोअतिकोपि। हनौकतभागतमेंचितचोपि ॥
नशूरवधैरिपुकाहिंपरात। वधेविमुखैदोउलोकनसात ॥ ४ ॥
खुशीयदिसंगरकीअतिहोय। लरौहमसोंअबसन्मुखजोय ॥
रहैइतठाढ़क्षणैभरिदेव। चहौजुनफेरिविषैसुखसेव ॥ ५ ॥
सुरानयहीविधिबैनसुनाय। महातनतेअतिशैडेरवाय ॥
कियोकरिजोरकठोरहिशोर। रह्योभरिसोजगमेंचहुँओर ॥ ६ ॥
सुनेसबदेवभयेविनचेत। गिरेमहिमेंनहिंआयुधलेत ॥
दियोपुनिवृत्रदोऊभुजताल। भयोअतिशोरसोऊविकराल ॥
भयेसुरसर्वपरैजिमिगाजु। बढ्योपुनिवृत्ररणैअतिगाजु ॥
लियेसुरमूँदितहाँसबनैन। भयेअतिआरतत्यागतचैन ॥ ७ ॥
बलीअसुरेशरँग्योरणरंग। दुरासदकोपितकंपितअंग।
कँपावतपायनसोंमहिकाहिं। त्रिशूलअतूललियेकरमाहिं ॥
दलैपदसोंसुरसैनअपार। दलैजिमिकंजकरीमतवार ॥ ८ ॥
प्रकोपिपुरंदरताहिप्रचारि। दियोतेहिताकिगदायकमारि ॥ ९ ॥
गह्योकरवामगदासोइदुष्ट। हत्योगजवासवकुंभहिरुष्ट ॥
सबैअतिलाघवतातेहिंकेरि। सराहतभेअसुरौसुरहेरि ॥ १० ॥

दोहा—लगीगदाअसुरेशकी, मनोगिरीगिरिगाज ॥ भ्रमतवमनशोणितदुरद, सातधनुषलोंभाज ॥ ११ ॥
वारणवासवकोविकल, लखिवृत्रासुरवीर ॥ पुनिनचलायोतेहिगदा, जानिधरमरणधीर ॥
सुधाश्रवतकरतेपरसि, संगरमहँसुरराज ॥ सावधानकरिलेतभो, पुनिअपनोगजराज ॥ १२ ॥
वज्रायुधकहनिरखिरण, सुधिकरिबंधुविनाश ॥ शोकमोहभरिवृत्रतहँ, कीन्ह्योंवचनप्रकाश ॥ १३ ॥

वृत्रोवाच।

रेभ्राताद्विजगुरुवधकारी। भलभोजोमोहिंपरयोनिहारी ॥ तुवपषाणसमहृदयकठोरा। तामेंमारिशूलभरिजोरा ॥
पठैतोहिंयमपुरकहँदैहौं।उऋणगुरूभ्राताहितेह्वैहौं॥१४॥अग्रजअनघहुआतमज्ञानी॥निजगुरुदीक्षितनिरअभिमानी॥
ऐसेविश्वरूपकहँल्याई। स्वर्गअनित्यहेतसुरराई ॥ कीन्हेंवधपशुसमतिनकाहीं। तोसमनिरदैकोजगमाहीं ॥१५॥
श्रीदायाकीरतिअरुलाजा। तोमहँनहिंएकोसुरराजा ॥ अपनीकरनीतेसुरनाहू। राक्षसतेमोहिंअधिकजनाहू ॥
दोहा—वेधितमेरेशूलते, तोतनलखिहैंसिद्ध ॥ पावकजारनयोगनहिं, खैहैंरणमहँगिद्ध ॥ १६ ॥
औरहुजेएैहैंइतआई। करनआजशठतोरसहाई ॥ तिनकोहनित्रिशूलगलकाटी। भूतनबलिदैहौंसखपाटी ॥ १७ ॥
जोकदाचिरणमांहिशचीशा। तैंकाटिहैमोरअबशीशा ॥ तौनिजतनसबजीवनदैकै। सबतेउऋणजगतमहँह्वैकै ॥
संतचरणधरिकैनिजशीशा। जैहौंजहाँजातयोगीशा॥१८॥हनहुँसुरेशकुलिशकसनाहीं।मैंतुवनिकटखड़ोरणमाहीं॥
गदासीरसनिष्फलयहहोई।यहशंकानहिंकरुमोहिंजोई ॥ यथासूमपहँयाँचकजाँचे। तासुमनोरथहोतनसाँचे ॥१९॥

दोहा-रक्षकजासुमुकुंदहैं, तासुविजयहठिहोय। हैदधीचितपतीपनै, वज्रतुम्हारोसोय॥
तातेहनहुमोहिंसुरराई। किमिठाढ़ेअशक्तकीनाई॥ २०॥ शेपचरणकमलनमनलाई। वज्रनिहतमैंजुगतविहाई॥
लखिहौंसंकर्षणपदकंजा। सदाजौनसंतनमनरंजा॥ २१॥ रसारसातलस्वर्गहुकेरी। जानहुँजौनविभूतिघनेरी॥
सोविभूतिसंतननहिंदेहीं। श्रीमुकुंदहैंसंतसनेही॥ जातेलोभमोहमदकामा। कलहकलेशबढतवसुयामा॥ २२॥
मेरोप्रभुहरिनिजजनकाहीं। देतधर्मधनकामहुनाहीं॥ जिनकेरहतिनकछुअभिलाषै। तेप्रभुचरणकमलरसचाषै॥
दोहा-कृष्णकृपातुमपरनहीं, तातेभोगहुभोग। मैंगमनहुँलहिहरिकृपा, हरिपुरह्वैविनशोग॥ २३॥
असकहिमूँदिनैनअसुरेशा। हरिसोंकहनलग्योमतिवेशा॥ तवपदकंजदासकरदासा। होहुँफेरिमैंरमानिवासा॥
तुवगुणगावतरहहुँसदाहीं। रहैमोरमनतुवपदमाहीं॥ तुवसेवनममलगैशरीरा। हरहुनाथअवभवकीपीरा॥ २४॥
सुरपतिपदब्रह्महुपदकाहीं। सार्वभौमह्वैवोमहिमाहीं॥ अधिपपतालादिककोहोनो। योगसिद्धमुक्तिहुपुनिजोनो॥
तुमहिछोड़िमैंदासतिहारो।इनकोनहिंचाहहुकरिप्यारो२५जिमिअपक्षपक्षीजननीको।चाहतजिमिबछवासुरभीको॥
दोहा-ज्योंविदेशवासीपतिहि, चहतिस्वकीयानारि। तिमिहमतुम्हरेचरणको, चितवनचहैंमुरारि॥ २६॥
लहौंकरमवशभ्रमतजग, जौनयोनियदुराय। तहौंहोयरतिसंतपद, सुततियनेहविहाय॥ २७॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा-
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ षष्ठस्कंधे एकादशस्तरंगः॥ ११॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-वृत्रासुरयहिभाँतिकहि, धारिशूलविकराल। समरमरणजयतेअधिक, गुनिधायोतेहिकाल॥
छँदगीतिका-जिमिवीरकैटभनीरमहँमधुसूदनैपहँजातभो।तिमिवृत्रवासवपैकुपितचटविकटानिकटदेखातभो॥१॥
प्रलयाग्निसमपरचंडशूलअतुलजासुप्रकाशहै। असुरेंद्रभरिभुजदंडछोडिसुरेंद्रपैसहुलासहै॥
पुनिघोरशोरअथोरकरितेहिठोरबोलतबैनभो। नहिंबचतअबपापीकतहुँतुवगणहटियमऐनभो॥ २॥
सुरपतिविलोकित्रिशूलउलकासरिसनभआवतजबै। अतिअभैवज्रचलायशूलहिकियोशतटूकहितबै॥
पुनिवाहिवज्रीवज्रवृत्रहिबाहुवासुकिसोदल्यो॥ ३॥ तबअसुरएककरकरिपरिघकोपितअमरपतिपैचल्यो॥
हरिकेहन्योहनुमहँपरिघपुनिदुरदकहँमारतभयो॥भोविकलतुरतवितुंडहरिकरतेकुलिशहूगिरिगयो॥ ४॥
लखिअसुरपतिकोकर्मअदभुतलगेसकलसराहने। सुरविकलवासवकोविलोकतकियोहाहारवने॥ ५॥
नहिंतकतलज्जितवज्रधरनहिवज्रबाहुउठावतो। तबविहँसिबोल्योवृत्रवासवलाजकतउरलावतो॥
गहिवज्रजहिनिजशत्रुकहँलहिविजयअभयनहोतक्यो। यहकालहैनविषादकोयहवृथाशोचउदोतको॥ ६॥
यकछोडिमाधवकोविजयरणमेंरहतिनाहिंएकपै। जिनकेरहतआधीनतीनिहुँलोकतेजअनेकपै॥ ७॥
दोहा-फँसेफाँसमेंविहँगजिमि, चलतकछूबलनाहिं। वासुदेवकेवशजगत, तिमिजानहुँमनमाहिं॥ ८॥
ओजवेगबलमृत्युहुप्राना। इनकेहेतुअहैभगवाना॥ सोनजानितनमानतहेतू। सोअतिशैअज्ञाननिकेतू॥ ९॥
जिमिमृगनारिदारुकलकेरे। नाचहिनटकेविवशघनेरे।तैसहिंजीवईशपरतंत्रा।विचरहिजगनाहिंसुनहुस्वतंत्रा॥१०॥
जीवप्रकृतिजगसिरजेजेते।विनप्रभुतेजनसमरथतेते॥११॥ हरिप्रभावजोजियनहिंजानै। सोअपनेकहँईश्वरमानै॥
भूतनतेभूतनकोसिरजत। भूतनतेभूतनकोनाशत॥१२॥ आयुषश्रीकीरतिहुविभूती। होतकाललहिनहिंकरतूती॥
दोहा-ऐसेदारिदुखअयश, विनचाहेहठिहोत॥ १३॥ तातेसुनहुँसुरेशतुम, ममवाणीसुखसोत॥
जियबमरबऔविजयपराजय।हानिलाभयशअपयशकाजय।इनमेंसुखदुखगुनैनकोई।जसहरिइच्छातैसहिंहोई १४॥
सतरजतममायागुणअहहीं। येआतमगुणकविनहिंकहहीं॥यहजोजानतअहैसदाहीं।भवबंधनबँधतोसोनाहीं॥१५॥

हमकोलखुभुजआयुधहीना। पैतुवप्राणलेनलवलीना॥ १६ ॥ संगरजुवादाँवहैप्राना । वाहनगोटीपांशावाना ॥
धरणीजानहुँतासुबिसाँती । विजयपराजयजानिनजाती ॥ १७ ॥

शुक उवाच।

वासवसुनतवृत्रकीबानी । मनहिसराहिकपटबिनजानी ॥
दोहा–करिकुलेशकाकुलिशधर, विहँसतविस्ममयछोड़ि।बोल्योवचनविचारिकै, छातीसन्मुखओड़ि ॥१८॥
दोनवअहौसिद्धितुमसाँचे। जोऐसीमतिमहँसतिराँचे॥हरिकेपरमभक्ततुमभयऊ॥१९॥अतिदुस्तरमायातरियगऊ॥
असुरभावतजिकैसबभाँती । सज्जनभयेमोहमदवाती॥२०॥पैमोकोअचरजअतिलागै । जिनकोमनरजतममहँपागै॥
तेकबहूँहरिभक्तनहोहीं। पैतुमभयेसोकौतुकमोहीं॥२१॥ जाकीमतिगोविंदपदराची । सोस्वर्गादिकसुखनहिंजाँची॥
जैसेसुधासमुद्रनहाई । कहाकामतेहितुच्छतलाई ॥ २२ ॥

शुक उवाच।

यहिविधिकरतपरस्परबातैं। लरहिंवृत्रवासवकरिघातैं॥ २३ ॥
दोहा–परिघवामकरलैअसुर, हन्योपुरंदरकाहिं ॥ २४ ॥ सोवज्रीनिजवज्रते, दल्योतुरतरणमाहिं ॥
छंदभुजंगप्रयात–तहाँफेरिवज्रीसुवज्रैचलायो । भुजावामताकोतुरंतैगिरायो ॥ २५ ॥
विनाबाहुकोदानवीसैननाथा । मनोपक्षतेहीनभोशैलनाथा ॥
वहीहैनदीसीउभैरक्तधारा । गिर्योभूमिवृत्रासुरैजोरवारा ॥ २६ ॥
अकाशैयकैओठदीन्ह्योंलगाई । रह्योभूमिमेंएकसोभीतिदाई ॥
मनोपानकीबोचहैसोअकासै । महानागसीदुष्टजिह्वानिकासै ॥ २७ ॥
महाकालसीतासुडाढ़ैविशालै । मनौतीनलोकैग्रसैदुष्टहालै ॥
महारूपधारेहरीओरधायो । महाजोरसोभूधरानैउड़ायो ॥ २८ ॥
पदैघातसोभूमिकोमंजिडारैं । डरैंदेवतातेतनैनानिहारैं ॥
महाशोरकैशक्रकोभीतिदीन्ह्यों । सऐरावतैवासवैलीलिलीन्ह्यों ॥ २९ ॥
ग्रसैज्योंगजैकाननैसर्पभारी । दशादेवदेवेशकीयोनिहारी ॥ ३० ॥
कियेशोरहाहाभईभीतिभारी । सबैआपनीमीचुलीन्हेंविचारी ॥
सुनासीरगोआसुरीकुक्षमाहीं । जरयोनामुकुंदैकृपातेतहाँहीं ॥ ३१ ॥
कढ्योवज्रतेकुक्षिताकीविदारी । महावेगतेवज्रतेवज्रधारी ॥
लग्योवृत्रकोकाटनेतत्रशीशा । गयोवीतिसोएकवर्षैमहीशा ॥ ३२ ॥
गिरायोजबैभूमिमेंशीशवाको । सोईकालहीमेंरह्योकालताको ॥
जबैदेवइंद्रैविजैकोनिहारे । बजायेअपारेसुखारेनगारे ॥ ३३ ॥
दोहा–बरषनलागेसुमनसुर, कहेउमहेंद्रहिनाम ॥ ३४ ॥ वृत्रासुरतनतेनिकसि, जीवगयोहरिधाम ॥ ३५॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते षष्ठस्कंधे आनन्दाम्बुनिधौ द्वादशस्तरंग१२

श्रीशुक उवाच।

दोहा–लोकपालसिगरेतहाँ, वृत्रविनाशनिहारि ॥ सुखीभयेयकशक्रबिन, यहतुमलेहुविचारि ॥ १ ॥
देवदेवऋषिदैत्यपितरगण।शिवविधिआदिगयेगृहतेहिक्षण२सुनिशुकदेववचनसुखपाई।कुरुपतिपुनिअसगिरासुनाई

राजोवाच।

औरदेवभेमोदनिकेतू। वासवदुखितभयोकेहिहेतू॥ यहसंशयअबदेहुमिटाई। सुनिशुककहनलगेसुखपाई॥ ३॥

श्रीशुक उवाच।

वृत्रासुरबललखिसबदेवा। इंद्रहिकहतभयेकरिसेवा॥ मारहुवृत्रहिंअबसुरसांई। दाहतदुष्टदहनकीनांई॥
सुनिदेवनकीआरतवानी।विश्वरूपवधगुनिभयमानी॥ चह्योनवृत्रासुरकहँमारयो।देवनसोअसवचनउचारयो॥ ४॥

इंद्र उवाच।

दोहा—विप्ररूपद्विजवधहिते, जोअबमोकोलाग। सोतियतरुजलभूमिकहँ, मैंकरिदियोविभाग॥
वृत्रहिवधेपापजोहोई। सोकेहिभाँतिजायगोखोई॥ ५॥

श्रीशुक उवाच।

ऋषिइमिसुनिमहेंद्रकीवानी।बोलेवचनयुक्तिउरआनी॥तुमभयमानहुँमतिसुरराई। हमतुमकोहयमेधकराई॥ ६॥
नारायणपूजनकरवैहैं। तातेसकलपापनशिजैहैं॥ ७॥ गोपितुमातुविप्रगुरुघाती। श्वपचकसाइनकीबहुजाती॥
श्रीहरिनामकहतइकबारा।तिनकेपापहोतजरिछारा॥८॥हरिकहितरतकियहुजगघाता। कृतवधखलअघकेतिकबाता॥
खलखंडनतेहोतनपापा। वृथाकरहुकतमनसंतापा॥ ९॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—असमुनिवरकेवचनसुनि, वृत्रहिंहन्योसुरेश। ताहिब्रह्महत्यातुरत, लागीकरनकलेश॥ १०॥
पायब्रह्महत्यासुरराई। सहनलग्योतहँतापमहाई॥ जैसेलाजवंतजनकाहीं। लज्जाहीनहोतसुखनाहीं॥
तिमिवासवकीविभवबडाई। द्विजहत्यावशभैदुखदाई॥११॥ जराकँपतअँगलँवशरीरा। यक्ष्मारोगसंगप्रदपीरा॥
रक्तवसन–॥१२॥–छूटेशिरबारा। ठाढरहहुबोलतिबहुबारा॥ मीनसरिसदुरगंधिमहाई। दईसकलमारगमहँछाई॥
मानहुँअतिकरालचंडालिनि।धावतसन्मुखसबसुखघालिनि॥देखतसहसअक्षमयपाग्यो।नभमगदशौदिशनभहँभाग्यो॥
दोहा—द्विजहत्याधावतभई, पीछेपीछेतासु। कहूँबचोवासवनहीं, कीन्ह्योपरमप्रयासु॥
मानसरोवरकहँपुनिजाई॥ १४॥ कमलनालमहँरह्योलुकाई॥ तहाँबीतिगेवर्षहजारा। कब्योनहींवासवभयभारा॥
रह्योविचारतयहीउपाई।केहिविधिद्विजहत्यायहजाई॥लह्योनयज्ञभागजलमाहीं। जायसक्योतहँपावकनाहीं॥१५॥
जबैस्वर्गवासवविनभयऊ। तबऋषिगणसुरगणदुखछयऊ॥ करनलगेतबमनहिंविचारा।कोयहधरैआज्ञुशिरभारा॥
पुनिविचारअसकियेमुनीशा।अहैनहुषजोमहीमहीशा॥ तपविद्याबलबुधिविज्ञानी। जाकीकीरतिजगतमहानी॥
दोहा—जबलोंसुरपतिशक्रपद, पावहिनहिइतआय। तबलोंनहुषनरेशको, वासवपदबैठाय॥
करवावहुवासवकोकर्मा। जातेहोयजगतकोशर्मा॥ असविचारिसिगरेमुनिराई। नहुषनृपहिंदिविगयेलेवाई॥
बैठायोइंद्रासनमाँहीं। पालनलाग्योत्रिभुवनकाहीं॥ एकसमयतहँनहुषनरेशा। दीन्ह्योंअनुचितशचिहिंनिदेशा॥
वैसोसुरपतिपदमैंआई। तातेतैंहूंकरुसेवकाई॥ कह्योशचीतवबातबनाई। रहेबोलावतनहिंसुरराई॥
ममढिगआवतरहेसदाहीं।मुनिनलगायपालकीमाहीं॥यहिविधिजोतुमहूंइतआवहु। तौमोकोमिलिअतिसुखपावहु॥
दोहा—शचीवचनसुनिनहुषनृप, मुनिनपालकीनाधि। चढितापैआतुरचल्यो, शचीवचनविधिसाधि॥
मुनिकबहूंशिबिकानहिंलीन्हें।तातेमंदगमनमगकीन्हें॥ नहुषनरेशविलंबनिहारयो। सर्पसर्पअसवचनउचारयो॥
तबअगस्तिकहकोपितवानी।सर्पहोहुभूपतिअज्ञानी॥तहाँनहुषह्वैअजगरभारी।गिरयोअवनिमहँअमितदुखारी॥ १६॥
तबविरंचिवासवबोलवाये।हरहरिकमलापपछोडाये॥१७॥हयमखमुनिवासवहिकराये।इंद्रासनमहँपुनिबैठाये॥ १८॥१९
छूटिगयोद्विजवधअघघोरा।भानुउदितजिमितमचहुँओरा॥२०॥अश्वमेधकरिकैसुरराई।कृष्णचरणपूज्योचितलाई॥
दोहा—त्रिभुवनपालनकरतभो, बैठिशक्रपदशक्र। सुरमुनिसिगरेसुखितभे, रहेशत्रुनहिंवक्र॥ २१॥

यहइतिहासअनेकअघ, नाशकगंगसमान । हरिचरित्रजामेंअहै, वर्धकभक्तिमहान ॥
द्विजहत्यातेमोक्षअरु, वासवविजयबखान । वर्णनजहँहरिजननको, दायकहरिपदज्ञान ॥ २२ ॥
पढ़ैसुनैसुमिरैसुमति, पर्वपर्वमहँजोय ॥ धनयशजयआयुषलहै, दुरितदूरिद्रुतहोय ॥ २३ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबान्धवेशश्रीमहाराजविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा-
राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौ षष्टस्कंधे त्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

दोहा–सुनिवृत्रासुरकीकथा, कुरुकुलमणिमतिवान । पाणिजोरिविस्मयभरे, बोलेवचनप्रमान ॥

राजोवाच ।

रजोतमोगुणजासुसुभाऊ । ऐसोपापीदानवराऊ ॥ ताकीमतिहरिपदरतिपागी । यहमोंकोअतिविस्मयलागी ॥ १॥
शुद्धसत्वगुणमयअसुरारी । अरुमुनिजेनिर्मलतपधारी॥तिनकीप्रीतिमुकुंदचरनमें । लागतकबहूंबड़ेजतनमें ॥२॥
महिरजकनसमजियजगमाहीं॥तिनमेंमनुजमुख्यदरशाहीं॥तिनमेंधर्मनिरतजेअहहीं॥नरनमध्यतिनकोवरकहहीं ३॥
तिनमेंफेरिमुक्तिअभिलाखी । विरलेहोयज्ञानरसचाखी ॥ तिनमुमुक्षुसहसनमहँकोई । ह्वैजगमुक्तसिद्धवरहोई ॥४॥
कोटिनसिद्धनमहँमुनिराई । विरलाकोउहरिपदरतिपाई ॥ ५ ॥

दोहा–ऐसीदुर्लभकृष्णपद, प्रीतिपरमसुखदानि । तिहिंदृढ़राख्योसमरमहँ, वृत्रासुरअघखानि ॥ ६ ॥

यहसंशयमेटहुमुनिराई । सुननमोहिंअभिलाषमहाई ॥ जोरणमहँवृत्रासुररोष्यो । करिविक्रमशक्रहिंअतितोष्यो ॥
सोवृत्रासुरमुनिकेहिभाँती । लह्योभक्तिभवसागरघाती ॥ ७ ॥

सूत उवाच ।

यहिविधिप्रश्नकियोकुरुनाथा॥सुनिअतिमोदितह्वैमुनिनाथा॥नृपहिंसराहिवचनअसबोले॥मानहुँसुधाधारमुखखोले ८

श्रीशुक उवाच ।

सुनियेमहाराजइतिहासा । कह्योजोनारददेवलव्यासा ॥ ९ ॥ शूरसेनजादेशदराजा । रह्योचक्रवर्तीतहँराजा ॥
जाकोचित्रकेतुअसनामा । भईताहिधरणीप्रदकामा ॥ १० ॥

दोहा–कोटितियाताकेरहीं, जन्योपुत्रनहिंकोय ॥११॥वयवपुविभौविराजतो, विनसुतशोकितसोय ॥१२॥

सकलसंपदातियमनभाई॥विनसुतभईनृपहिंदुखदाई॥१३॥एकसमयताकेगृहमाहीं॥आयेमुनिअंगिरातहाँहीं ॥ १४॥
भूपतिमुनिकरकरिसत्कारा॥ कियोप्रणामहिंबारहिंबारा॥मुनिकहँबड़आसनबैठाई॥बैठेहुनृपतिकरतसेवकाई ॥१५॥
मुनिअंगिरासराहतभूपै । अतिप्रसन्नकहवचनअनूपै ॥ १६ ॥

अंगिरा उवाच ।

कुशलअहैसबभाँतितिहारो । करहुतेकबहुँनमनहिंखभारो ॥ मंत्रीमित्रकोषगुरुदेशा ॥ दंडदुर्गयेप्रकृतिनरेशा ॥
रक्षितरहहुप्रकृतिसप्तनते । जैसेजीवसप्ततत्वनते ॥

दोहा–क्षितिजलपावकपवननभ, महत्तत्त्वअहँकार ॥ येसातौनृपजीवकी, कीजैप्रकृतिविचार ॥ १७ ॥

करैजोनिजकहप्रकृतिअधीना॥सोनृपसुखलहनित्यनवीना॥रक्षितनृपतेप्रकृतिहुसिगरी । रहैंसदाकोउलखैनबिगरी ॥
प्रजासचिवसेवकसुतनारी । तुम्हरेवशमहँरहैंसुखारी॥१८॥जिनकेवशमनरहैसदाहीं॥तिनकेवशजानहुइनकाहीं १९
जेअपनेवशमनकरिलेहीं । तिनहिंलोकपालहुकरिदेहीं ॥२० ॥ पैमलीनमुखपरैनिहारो । तातेमोहियहोतखँभारो॥
चिंताकरहुकौननृपराई । तुवकामनानपूरदेखाई ॥ २१ ॥ जबअंगिराकह्योयहिभाँती । चित्रकेतुनृपतबअरिघाती॥

दोहा–अतिविनीतह्वैजोरिकर, सुतअभिलाषीभूप ॥ कह्योअंगिरासोंवचन, मंदहिंमंदअनूप ॥ २२ ॥

चित्रकेतुरुवाच।

जेतपज्ञानसमाधिहुपूरे। योगीसकलदुरितनेदूरे॥ तिनकोविदितकहानहिंहोतो। भूतभविपाहियरहैउदोतो॥ २३॥
मुनितथापिपूँछ्योमोहिंकाँहीं। तातेमेरेजोमनमाँहीं॥ सोमैंदहौंतुमहिंसुनाई। कृपासहितसुनियेमुनिराई॥ २४॥
लोकपालजोचहैंविभूती। सोमैंलीन्ह्योंकरिकरतूती॥ पैसुतविननहिंसुखउपजावै। जैसेक्षुधितहिऔरनभावै॥२५॥
तातेरक्षहुमोहिंमुनिकेतू। जाहुँनरकनहिंपितरसमेतू॥मोहिइकपुत्रकृपाकरिदीजै।यहअनुपमजगमहँयशलीजे॥२६॥

शुक उवाच।

दोहा-चित्रकेतुकेबचनसुनि, मुनिअंगिराकृपाल॥ ताकेसंततिहेततहँ, कीन्ह्योंयज्ञविशाल॥
त्वष्टादेवहिंपूजनकीन्ह्यों। रचिपायसआहुतिबहुदीन्ह्यों॥ २७॥ शेषभागलैकेकरमाँहीं। गेमुनीशनृपमंदिरकाँहीं॥
रानीजेठिकृतद्युतिनामा। दियोताहिपायससुतकामा॥२८॥ पुनिनृपसोंबोलेमुनिराई। महाराजसुनियेचितलाई॥
ह्वैहैतुम्हरेएककुमारा। हर्षशोककोवरधनहारा॥ असकहिमुनिअंगिरासुजाना।निजआश्रमकहँकियेपयाना॥२९॥
पायसभोजनकरतहिरानी। गर्भवतीभैसुमुखिसयानी॥ जैसेअगिनयोगकहँपाई। धरच्योगर्भकृत्तिकासोहाई॥३०॥
दोहा-नितप्रतिबाढतगर्भतेहि, सुकुलपक्षजिमिचंद॥ चित्रकेतुकेतैसहीं, बाढ्योअमितअनंद॥ ३१॥
कालपायभोप्रगटकुमारा।सुनतप्रजनभोमोदअपारा॥३२॥मज्जनमुदितमहीपतिकीन्ह्यों।अलंकारअंगनिरचिलीन्ह्यों
विप्रनसोंलैआशिरवादा।जातकर्मकियेयुतअहलादा॥३३॥रजतकनकभूषणअभिरामा।वसनवाजिगजरथअरुग्रामा।
षटअर्बुदसुरभीयुतबछरन।भूपतिदियोदानबहुविप्रन३४दीननकहँधनसमधनवरष्यो।बारबारसुतकहँलखिहरष्यो॥
सुतकेआयुषअरुयशहेतू।दियोदानऔरहुचित्रकेतू ३५ करिकलेशसुतकोनृपपायो।निर्धनजिमिधनलहिसुखछायो॥
दोहा-दूनदूनदिनदिनकियो, सुतपैनेहनरेश॥ ३६॥ जननीजनकहुतेअधिक, कीन्हींप्रीतिहमेश॥
कृतद्युतिकोलखिपुत्रउछाहू।बाढ्योसवतिनकेउरदाहू३७लालनकरहिंबालकहँराजा।सुखवशतजिगुरुजनकीलाजा॥
अधिकसकलरानिनतेप्रीती।कृतिदुतिपैकियसंयुतनीती।लखिकृतदुतिकोअधिकसोहागा।सवतिनसकलनीकनहिंलागा
नृपतिनिरादरगुनिसुतहीनी। अपनेकोअतिनिंदाकीनी॥३९॥पुत्रविहीनपापिनीनारी। लहतिअनादरपतितेभारी॥
पुत्रवतीहोतीजोरानी। तैसौतिनदासीअनुमानी॥ करहिंअनादरबारहिंबारा। अनुचितउचितनकरहिंविचारा४०॥
दोहा-स्वामीसेवामहँनिरत, दासीपावतिमान॥ हमदासिहुँकीदासिका, अहैंअभागनिदान॥ ४१॥
यहिविधिसिगरीसवतिदुखारी।कृतद्युतिकोसुतहरखिनिहारी॥कियोवैरतासोअतिभारी।सिगरीचित्रकेतुकीनारी ४२
जबकृतद्युतिगुनिसोवतसुतको।बागनगईकहूँइतउतको॥ सूनपायतहँसवतिसिधाई। सुतहिंजहरदीन्ह्योंवरिआई४३
कृतद्युतिदासिचालिनहँधाई।सोवतसुतगुनवचनसुनाई॥ल्यावहुसुतकोआशुजगाई ४५धायसुनतसुतनिकटसिधाई॥
लख्योनैनउलटेसुतकेरे। जान्योमृतकसुतहिकरफेरे॥ हायहायतहँधायपुकारी।गिरीधरणितनसुरतिबिसारी॥४६॥
दोहा-पुनिलागीउरशिरधुननि, युगलपाणितेरोय॥ कृतद्युतिसुनिधात्रीरुदन, गयितहँशोकसमोय॥४७॥
सुतकहँनिरखिमृतकतबरानी। गिरीधरणिमूर्च्छितबिलखानी॥धुनतशीशशिरकेशहुछूटे।भूषणसुमनमालसबटूटे॥
रोवनलगीपुकारपुकारी। हायदशाकाभईहमारी॥ ४८॥ तहँअंतहपुरकेनरनारी। सुनिरोदनमनगुनिदुखभारी॥
धायधायआयेढिगताके। निरखिमृतकसुतसमदुखछाके॥ जैसोतिनकीन्ह्योंअपराधा। तेऊरचितनशोकअगाधा॥
कृतद्युतिढिगचलिरोवनलागीं।मानहुँमहाशोकमहँपागीं॥४९॥चित्रकेतुसुनिमृतककुमारा।गिरतपरतगोतासुअगारा
दोहा-निरखिमृतकसुतअंधसम, गिरच्योमूर्च्छिमहिमाहिं॥ मंत्रीमित्रहुबंधुगण, रहीखबरितननाहिं॥५०॥
गिरेबालचरणनमहँजाई। खुलेशिरोरुहतनशिथिलाई॥ बहतिनैनआँसुनकीधारा। दीरघश्वासलेतबहुवारा॥
सूखिगयोमुखअतिदुखछायो।कहनचहतकछुनहिंकहिआयो।निजपीतमकोदेखिदुखारी।एकपुत्रसोउमृतकनिहारी॥
औरहुजननदुखितदृगदेखी।अतिहिंअभागिनिआपुहिंलेखी।कियोकृतद्युतिविपुलविलापा। देखिशत्रुहुनभोसंतापा॥
कुचकुंकुमआंसुनसोंधोवति।बारबारबालकमुखजोवति।कज्जलवहिमुखमलिनदेखातो।ग्रसितराहुजिमिविधुनविभातो

दोहा–कुररीसरिसपुकारती, करिकरिआरतशोर। कहतवचनअतिशोककरुण, गिरतिउठतितेहिंठौर ॥५३॥
हायविधातादयानतेरे। मूरखतेंअबभयेघनेरे ॥ देमोहिंसंततितैंहरिलीन्हीं। रिपुसममोसनरिपुताकीन्हीं ॥
जियनजनकसुतमृतविपरीती।यहककहकियोअमितअनरीती।कहहुजोयहसंसारीधर्मा।तसफलपावतजसजेहिकर्मा ॥
तोपुनिकरमहिजगतप्रधाना। तुमहौवृथापरैअसजाना ॥ तोरहुवृथानेहकीडोरी। देसुखहरहुकरहुबरजोरी ॥५५॥
पुनिसुतसोंअसभाषनलागी। रानीमहाशोकसोंपागी ॥ हेसुततुममोहिंकियोअनाथा। तजहुनमोहिंनाउँपदमाथा ॥
दोहा–देखहुप्यारेपुत्रतुम, निजपितुशोकसरूप। पितुमातहिंडारहुवृथा, पुत्रशोककेकूप ॥
यमकेअयनअकेलनजाहू। लेहुलेवाइहमहुँसबकाहू ॥ उठहुतातबालकसबआवत। खेलनकेहिततुमहिंबोलावत ॥
बहुविलंबलगिसोयहुताता।भोजनकरहुउठहुसुखदाता॥५६॥करहुपुत्रअबपयकरपाना।हरोहमारोशोकमहाना ५७
मंगलहीनभयेहमजानी। लखैनतुवमुखयुतमुसक्यानी ॥ उठिकैमधुरकहहुनहिंबैना। तहाँगयेजहँफेरिफिरैना॥५८॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधितियकरसुनतविलापा।चित्रकेतुलहिअतिसंतापा॥खोलिकंठरोयोतिहिंकाला।फेरिपुहुमिपरगिर्‍योबेहाला ॥
दोहा–तहँदंपतिकोदुखितलखि, पुरवासीनरनारि। व्याकुलह्वैरोवनलगे, तनकीसुरतिबिसारि ॥ ६० ॥
चित्रकेतुदुखउदधिमहँ, पर्‍योजानिमहिमाँहिं ॥ नारदयुतमुनिअंगिरा, आयेतुरततहाँहिं ॥ ६१ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ षष्ठस्कंधे चतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–मृतकबालढिगमृतकसम, शोकितनृपकहँदेखि। नारदमुनिअरुअंगिरा, बोलेवचनविशेषि ॥ १ ॥
जेहिशोचहुसोकौनतुम्हारो। यहिकेतुमहौकौनउचारो ॥ पूरबपितारहतजोजाको। सोईसुतह्वैजनमहिताको ॥२॥
जैसेवारिवेगतेवालू। बिछुरतमिलतरहतसबकालू ॥ तैसहिदेहिनकोव्यवहारा। जानिलेहुजनिकरहुखँभारा ॥ ३ ॥
जैसेबीजबोयमहिजाहीं। कौनहुँहोहिकौनहूँनाहीं ॥ तैसेसुतकहुँहोहिंघनेरे। कहुँनहोहिंहरिमायाप्रेरे ॥ ४ ॥
हमतुमसकलचराचरजेते। एकहिंकालभयेसबतेते ॥ जीवनित्ययहरहतसदाहीं। तनअनित्यतिहुँकालहिमाहीं५॥
दोहा–भूतनतेभूतनसबै, भूतात्माभगवान। पालतघालतसृजतजग, खेलतबालसमान ॥ ६ ॥
मातुपितातनयोगसदाहीं। देहीदेहलहतजगमाहीं ॥ जैसेबीजबीजतेहोई। तैसेतनतेतनहुँबनोई ॥
पंचभूतजिमिनित्यरहतहैं। तिमिआत्महिकविनित्यकहतहैं॥७॥देहीदेहएकजोमानै। सोतौनृपतिगुनहुँअज्ञानै ॥
देवमनुजआदिकजेभेदा। जियकेनहिंतनकेकहवेदा ॥ जैसेशुक्तिरजतकरभानू। तिमितनजियमानवनप्रमानू॥८॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिदोउमुनिजबसमुझायो।राजहिंकछुकज्ञानतबआयो॥शोकितवदनधोयमुखपानी।बोलेवचनजोरियुगपानी॥

राजोवाच।

दोहा–दोउज्ञानीतुमकौनहौ, वेदविदांवरधीर। धारिवेषअवधूतको, आयेगोपिशरीर ॥ १० ॥
विचरहिंमहिहरिजनयहिहेतू।हमतेकुमतिनकरनसचेतू ११ नारदऋभुसनकादिकुमारा। देवलअरुअंगिराउदारा ॥
असितअपांतरतमअरुव्यासा।गौतमकपिलअरुणदुर्वासा॥शुकवसिष्ठलोमशभृगुरामा।याज्ञवल्क्यच्यवनहुतपधामा ॥
असुरिपतंजलिदत्तात्रेऊ। जातूकरणमारकंडेऊ ॥ धौमपंचशिखवेदशिराहू ॥१४॥ हिरण्यनाभकौशलमुनिनाहू ॥
ऋतुध्वजश्रुतदेवादिकजेते। ज्ञानदेनहितविचरहिंतेते ॥ १५ ॥ परेशोककेअंधहिकूपा। ज्ञानदीपहैअबहिंअनूपा ॥

दोहा–समरथउभयमुनीशतुम, वेगिउधारहुमोहिं। हौंमलीनदुखमीनमैं, दयाद्दगनतेजोहि॥ १६॥
सुनिकैचित्रकेतुकीवानी। भनेअंगिरामुनिविज्ञानी॥

अंगिरा उवाच।

हमहैंतोरपुत्रकेदाता। येनारदहैंपुत्रविधाता॥ १७॥ पुत्रशोकतेशोकिततोको। देखिदयालागीअतिमोको॥
तोपैंकृपाकरनइतआये।तोहिहरिदासनमाँहगनाये॥१८॥जेजगमाहिंभक्तभगवाना।तिनहिंशोकयोगमतिवाना॥१९॥
तवहीतुमहिज्ञानहमदेते। भवजलनिधिपारहिकरलेते॥ पैसुतआशजानिमैंतेरी। दियोपुत्रकरिप्रीतिघनेरी॥२०॥
सोअबपुत्रवानकरतापा। चित्रकेतुतुमकहँअतिव्यापा॥

दोहा–ऐसहिदारागृहविभव, संपतिसैनहुराज॥ २१॥ २२॥ जानहुँसबैअनित्यअहै, शूरसेनमहराज॥
हैसबशोकमोहदुखदाई। इंद्रजालसमपरैलखाई॥ जानहुइनहिंअनित्यनरेशा। स्वप्रसरिसनहिंरहहमेशा॥ २३॥
चाहतचितविषयीसुखजैसो।अनगुनकर्ममिलैतेहिंतैसो॥२४॥पंचभूतइंद्रियमयदेहू।देहिनकोअतिहीदुखगेहू॥२५॥
तातेथिरमतिकरिनृपकेतू। आतमरूपजानिसुखहेतू॥ देहसनेहछोडिसबभाँती।गहहुविरागजानिभववाती॥२६॥
तहँसुविसुंदरवचनअमोले। चित्रकेतुसोंनारदबोले॥

नारद उवाच।

भूपमंत्रयहमंगलदाई। सावधानसुनियेचितलाई॥

दोहा–जाकोप्रीतिप्रतीतियुत, जपतसातनिशिमाहिं। इमिदुर्लभतुमदेखिहौ, संकर्षणप्रभुकाहिं॥ २७॥
सवैया–जेप्रभुशेषसरोजपदैयुतप्रीतिप्रतीतिसोंपूरणध्यावत। शंकरआदिकज्ञानकोपायतजेभवकेभ्रमजेदुखछावत॥
पायमहत्त्वमहेशभयेरघुराजकहैनितहूंगुणगावत। तासुप्रसादसोआपहूँआशुलहौगेमहामहिमामनभावत॥ २८॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा-
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
षष्ठस्कंधे आनन्दाम्बुनिधौ पंचदशस्तरंगः॥ १५॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–राजसुवनकेजीवको, नारदतेहिंतनल्याय॥ दुखितनकाहदेखायकै, बोलेवचनसुनाय॥ १॥

नारद उवाच।

जोहहुजननिजनकहेजीवा।तुवहितशोचतबंधुअतीवा॥२॥ प्रविशिकलेवरमाहिंतुरंता। भोगहुशेषआयमतिमंता॥
पितुआसनमहँबैठिसुखारी।विभौभोगभोगहुअतिभारी॥३॥सुनतजीवनारदकीवानी।बोल्योवचनपरमविज्ञानी॥४॥

जीव उवाच।

कर्मविवशहमबहुतनधारे। कबकेयेपितुमातुहमारे॥ कहुँतिर्यककहुँमनुजहुदेवा। धरेअमिततनहमसुनिदेवा॥
शत्रुमित्रजननीयहजीके। होतपरस्परसबसबहीके॥ ५॥ जैसेहाटकहाटनमाहीं। बाटनबाटनविकतसदाहीं॥

दोहा–तैसेसिगरीयोनिमें, भ्रमतफिरतयहजीव। काकोसुतकाकोपिता, काकोमित्रअतीव॥ ६॥
यद्यपिनित्यजीवयहअहई। तेहिसम्बंधअनित्यहिरहई॥ जबलोंजाकरजापरनातो। तबलोंतापरनेहदेखातो॥ ७॥
जबलोंरहतजीवतनमाहीं। तबलोंहैममतातेहिकाहीं॥८॥इंद्रिनपतिसूक्षमअविनाशी। नित्यजीवपदस्वयंप्रकाशी॥
पूरवजन्मकर्मजसकरई। तेहिअनुसारजन्मजगधरई॥ ९॥ नाहिंअप्रियाप्रियजियकहँकोई। नाहिंआपनोपरायोहोई॥
गुणदोषककारकजेप्रानी। तिनमतिसाक्षीजीवहिजानी॥१०॥कर्मजनितसुखदुखतेहीना।होतनगुणदोषहुमहँलीना॥

दोहा–उदासीनसबदेहमें, रहतसदाआसीन॥ कारणकारजकोअहै, साक्षीपरमप्रवीन॥
अहैदेहकोसोइनियंता। स्वामीतासुरमाकरकंता॥ ११॥

श्रीशुक उवाच ।

असकहिजीवगयोतनत्यागी।लखिसबकीमतिविस्मयपागी॥सिगरेबंधुनेहकीडोरी।तासुवचनसुनितुरतहितोरी॥१२॥
मृनककर्मकीन्ह्योंपुनिताको।छाँड्योमहामोहममताको॥१३॥गरलदियोजेशिशुकहँरानी।लज्जितभईभईद्रुतिहानी॥
सिगरीकालिंदीतटजाई। जोविधिउपरोहितनबताई॥तेहिविधिकियोसकलव्रतभारी।शिशुहत्याछूटीदुखकारी॥१४॥
चित्रकेतुहूसुनिमुनिवानी । ह्वैगोआशुविमलविज्ञानी ॥

दोहा–अंधकूपगृहछोंड़िकै, कढ्योतुरंतनरेश ॥ पंकफँस्योगजराजजिमि, निकसतविगतकलेश ॥ १५ ॥

कालिंदीमहँमज्जनकीन्ह्यों । पितरनदेवनकहँजलदीन्ह्यों ॥ बैठ्योमौनमनहिथिरकरिकै।शेषचरणकोध्यानहिधरिकै॥
तहांअंगिरानारदआये । गुनिहरिदासमहामुदपाये ॥ चित्रकेतुकियतिनहिंप्रणामा । आसनदियोदुहुँनतेहिंठामा१६
नारदचित्रकेतुकेकाना । शेषमंत्रयहसुखदबखाना ॥ जाकेजपतसातदिनमाहीं । मनुजलखतसबदेवनकाहीं ॥
अवशिमुक्तिताकीनृपहोती । भगसागरउतरतसमसोती ॥ चित्रकेतुकहँदैयहमंत्रा । पुनिनारदमुनिप्रगटितितंत्रा ॥

दोहा–सुखदशेषअस्तोत्रयह, गतिदायकभवभंज ॥ चित्रकेतुसोंकहतभे, मुनिनायकमनरंज ॥ १७ ॥

नमस्तुभ्यंभगवते वासुदेवाय धीमहि ॥ प्रद्युम्नायानिरुद्धाय नमः संकर्षणाय च ॥ १८॥ नमोविज्ञानमात्राय परमानन्दमूर्त्तये ॥ आत्मारामायशान्तायनिवृत्तद्वैतदृष्टये ॥ १९ ॥ आत्मानन्दानुभूत्यैवन्यस्तशक्त्यूर्मयेनमः॥ हृषीकेशायमहतेनमस्तेविश्वमूर्त्तये ॥ २० ॥ वचस्युपरतेप्राप्ययएकोमनसासह ॥ अनामरूपश्चिन्मात्रः सोऽव्यान्नः सदसत्परः ॥ २१ ॥ यस्मिन्निदंपतश्चेदंतिष्ठत्यप्येतिजायते ॥ मृन्मयेष्विवमृज्जातिस्तस्मैते ब्रह्मणेनमः ॥ २२ ॥ यन्नस्पृशंतिनविदुर्मनोबुद्धीन्द्रियासवः ॥ अन्तर्बहिश्चविततंव्योमवत्तन्नतोस्म्यहम् ॥ २३ ॥ देहेन्द्रियप्राणमनोधियोमीयदंशाविद्धाः प्रचरन्तिकर्म्मसु॥नैवान्यदालोहमिवाप्रतप्तंस्थानेषुतद्द्रष्टृपदेशमेति ॥२४॥
ॐनमो भगवते महापुरुषाय महानुभावाय महाविभूतिपतये सकलसात्वतपरिवृढानिकरकरकमलकुड्मलोपलालितचरणारविन्दयुगुल परमेष्ठिन्नमस्ते ॥ २५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–संकर्षणअस्तोत्रयह, पाठकरैजेनित्त ॥ सोभयनहिंपावतकबहुँ, विमलहोतद्रुताचित्त ॥
चित्रकेतुकहँभाँतियहि, नारदकरिउपदेश ॥ गमनअंगिरासाहितकिय, वेगिविरंचिनिवेश ॥ २६ ॥

शूरसेनभूपतिविज्ञानी । सातदिवसजलपानहिंठानी ॥ सावधानह्वैशेषचरणमें । चितदैकीन्होंजयमधुवनमें ॥ २७ ॥
सातदिनहिंमहँमंत्रप्रभाऊ । भयोभूपविद्याधरराऊ ॥ जहँमनकरैतहँनृपजावै ॥ देवनसोंसतकारहुपावै ॥ २८ ॥
चित्रकेतुपुनिकछुदिनमाहीं । गयोशेषप्रभुरहेजहाँहीं ॥ लख्योफणीशरूपछविछावत । देखतपापिनपापनशावत ॥
दासनमृदुशत्रुनविकराला।जगमंगलदायकतिहुँकाला ॥ विधिशिवआदिसुरनतेवंदित । रहतसर्वदासुभगअनंदित॥

दोहा–आसनअंबरपादुका, सेजहुछत्रनिवास ॥ तेहिक्षणतैसहिहोतजस, चाहतरमानिवास ॥ २९ ॥

छंदमनोहरा–तनमहाप्रकासामनुकैलासादानिहुलासानिजदासाप्रभुअनयासा ॥
सबभाँतिसुपासाथानविलासारमानिवासाजसुभासाजेहिंचहुँपासा ॥
हलमूशलधारीमनहुँतमारीमुकुटउज्यारीपटभारीसितद्रुतिकारी ॥
पातालविहारीजनदुखहारीकुमतिविदारीमहिधारीतेहिबलिहारी ॥
कटिकिंकिणिराजैकंकनभ्राजैअरुणदराजैदृगराजैअंबुजलाजै ॥
मधिसिद्धिसमाजैशेषविराजैसबसुखसाजैअहिराजैनिरख्योराजै ॥ ३० ॥
दरशननृपपायोदृगजलआयोपापनशायोसुखछायोपदशिरनायो ॥ ३१ ॥
निर्मलहियभायोप्रेमबढ़ायोगरभरिआयोप्रभुपायोनहिकहिंआयो ॥ ३२ ॥

दोहा-इंद्रिनकीगतिरोकिकै, सावधानह्वैभूप ॥ शास्त्ररूपश्रीशेषकी, अस्तुतिकरीअनूप ॥ ३३ ॥

चित्रकेतुरुवाच ।

छंद-जेआतमजीतेतुमहितेजीतेतिनतुमजीतेह्वैवशमें । तुमअहोअजीतेप्रणतपरीतेत्रिगुणातीतेहरिरसमें ॥ ३४ ॥
जगउतपतिपालनअरुतेहिंघालनहेअरिशालनआपकरैं।अजअरुईशानादक्षमहानाउतपतिमानावृथाधरैं ॥३५॥
तवआदिनअंताजगतनियंतानित्यलसंताबलतामैं ॥३६॥ आवरननसातेअंडनव्रातेमोहिदेखातैप्रतिलोमैं॥३७॥
जेविषैपियासेनरपशुखासेसुरनउपासेतुमाहितजे । जोलहफलकाहींकछुदिनमाँहींसोनाशिजाहींविभौसजे ॥ ३८॥
जेतुमहिंसकामैपदाशिरनावैंवाँछितपावैंसुखधामैं । पुनिजगनहिंआवैंजिमिजरिजावैंबीजनजामैंवसुधामैं ॥ ३९॥
हेअजितसुकरमावैष्णवधरमाप्रदवरसरमाजोभाष्यो । तातेसबतेरश्रेष्ठघनेरेवेदनिटेरेगुणराख्यो ॥ ४० ॥
सोइधर्मजेकीन्हेंतेइप्रवीनेगेसुखभीनेतुवधामैं । लहिभगवतधरमाकियेजेकरमातेतजिभरमामदपामैं ॥ ४१ ॥
जेवैष्णवधरमातजिकियकरमातेदुखघरमानर्कपरैं । जेएकहुवाराकरिअभिचारामनुजनमारातेउमरैं ॥ ४२ ॥
प्रभुतुवसंकलपाकौनेहुकलपाहोतअनलपाअसतकहूं । जोहितेवैष्णवमतयुगयुगप्रगटतजननहीकरतपयानकहूं ॥
वैष्णवविज्ञानीनिरअभिमानीव्यापकजानीतुमहिंभजै।तेविनहिप्रयासाकरिभवनासाआपअवासाआशुव्रजैं॥४३॥
तुवदर्शनतेरेपापघनेरेरहतननेरेतनमाहीं । तुममहँअनुरागैअतिसुखपागैअचरजलागैमोहिनाहीं ॥
जाकेश्रुतिठामाप्रभुतुवनामापरचोललामायकवारे । सोअघिहुअपारैंतजिसंसारैंआपअगारैपगुधारैं ॥ ४४ ॥
यहरूपआपकोअतिप्रतापकोलखतपापकोनाशभयो। तुवभक्तसुहायोनारदगायोसोमतिभायोमोदमयो ॥४५॥
तुम्हरोसबजानैंजोजनठानैंकहाबखानैंजगव्यापी । नहिंसूरजआगैजुगुनूजागैतिमिमोहिंलागैपरतापी ॥ ४६ ॥
प्रभुजगविस्तारीरक्षनकारीअरुसंहारीमहिधारी । तुवप्रेमहिपानाकुमतिनजानाविपयलोभानाजडभारी ॥
हेशुद्धस्वरूपानाथअनूपात्रिभुवनयूपानमोनमो ॥ ४७ ॥ सरसौसमधाराभूतलभारावदनहतारापारतमो ॥
दोहा-श्वासलेतप्रभुआपुके, श्वासदिवादिकलेत । तुवचेतनतातेसकल, होतविश्वकोचेत ॥ ४८ ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिजबअस्तुतिकियो, चित्रकेतुमतिमान । तबप्रसन्नह्वैभनतभे, सहसवदनभगवान ॥ ४९ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

जोनअंगिरादेवऋषीशा । कह्योज्ञानतोसेअवनीशा ॥ तातेअरुममदर्शनपाये । भयेसिद्धविचरहुसुखछाये ॥ ५० ॥
हमसबभूतनअंतरयामी । अरुतिनकेकारणअरुस्वामी ॥ शब्दब्रह्मअरुपरब्रह्मवर । अहैसनातनमोरकलेवर ॥५१॥
जीवजगतमहँजगजियमाहीं । दोउमहँव्यापकहमहिसदाहीं॥जिमिसपनेनिजआतमकाही।देखतजनसिगरेजगमाहीं॥
जागेहोतहियेअसज्ञाना । हमतोरहेएकअस्थाना ॥५३॥ यहिविधिसुरमनुजादिकरूपा । स्वप्नसरिसमायामयभूपा॥
दोहा-अहैविलक्षणजीवयह, मायातेअसजानि । करतरहैसुमिरणसदा, साक्षीतेहिअनुमानि ॥ ५४ ॥
जोपरमात्मप्रभावते, देखतस्वप्नअपार । अरुसुषुप्तिमेंसुखलहत, सोहैरूपहमार ॥ ५५ ॥
जागतस्वप्नसुषुप्तिहुमाहीं । भिन्नहुँतिनतेरहतसदाहीं ॥ ज्ञानस्वरूपजीवहैजोई । परमातमशरीरहैसोई ॥ ५६ ॥
जिनकोऐसोज्ञाननआवत।जननमरनतेपुनिपुनिपावत॥५७॥पायजगतमहँमनुजशरीरा।साधकज्ञानविज्ञानगँभीरा ॥
जान्योनिजसरूपजोनाहीं । ताकोनहिंमंगलजगमाहीं ॥५८॥ तातेमोक्षमार्गमनलाई । जानिप्रवृत्तिमारगदुखदाई ॥
करिफलआशकर्मनहिंकरई । सदाकृष्णपदउरमहँधरई ॥५९॥ सुखपावनदुखनाशनहेतू।करहिंकर्मनरनारिसचेतू॥
दोहा-पैनलहतसुखनेकऊ, होतनशोकविनाश ॥ ६० ॥ जानिमहाविपरीतियह, छोडिसकलमनआश ॥
जागतस्वप्नसुषुप्तिहुमाहीं।मानिविलक्षणबुधजियकाहीं॥६१॥ह्वैअनन्यसोभक्तहमारा।करैप्रेमरसपानअपारा ॥ ६२॥
चिदचितवस्तुईशकररूपा। अंतरयामीसोइअनूपा ॥ यहीज्ञानस्वारथसबकेरो। बुद्धिमानकरिलेइनिबेरो ॥ ६३ ॥

तुमहूँश्रद्धासहितनिवेशा । ज्ञानविज्ञानसमेतहमेशा ॥ सावधानह्वैममउपदेशा । धारणकरितजिसकलकलेशा ॥
सिद्धिहोहुगेतुमततकाला । परिहोनहिंकबहूँजगजाला ॥ ६४ ॥

श्रीशुक उवाच ।

असकहिचित्रकेतुसोंवानी । सहसवदनजगगुरुविज्ञानी ॥
दोहा–चित्रकेतुकेदेखते, विश्वात्माभगवान । निजस्वरूपकोतुरतहीं, कीन्होंअंतरधान ॥ ६५ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ षष्ठस्कंधे षोडशस्तरंगः ॥ १६ ॥

दोहा–अंतरहितजबप्रभे, तबकरितिनहिंप्रणाम ॥ चित्रकेतुविचरनलगे, नभह्वैपूरितकाम ॥ १ ॥
भयोदिव्यइंद्रिनबलजाको।रुक्योगवनत्रिभुवननहिंताको।चारणसिद्धिमुनीशअनेकन।अस्तुतिकरहिंसंगचलिछनछन
नंदनचित्ररथौवनमाहीं । मंदरकंदरअंदरपाँहीं ॥ करवावतगोविंदगुणगाना । लीन्हेंसंगकिन्नरिननाना ॥
लाखनवर्षनकियोविहारा । चित्रकेतुहरिभक्तउदारा ॥ जबजैसोचाहतमनमाहीं । तबतैसोह्वैजाततहाँहीं ॥ ३ ॥
एकसमयअतिविमलप्रकासा । दियविमानजोरमानिवासा॥तामेंचढ्योजातकहुँकाहीं । गयोजबैकैलासहिमाहीं॥४॥
दोहा–मुनिसमाजमधितहँलख्यो, सेवितकिन्नरसिद्ध ॥ पारवतीकहँअंकले, बैठेशम्भुप्रसिद्ध ॥
चित्रकेतुशंकरढिगजाई । उमहिंविलोकतहँस्योठठाई॥मनमहँअतिशयकौतुकमानी॥चित्रकेतुबोल्योअसवानी ॥५॥

चित्रकेतुरुवाच ।

शिक्षकजनकेधर्मघनेरे । अहेगुरूसबलोकनकेरे ॥ ६ ॥ शीशजटाधरवरतपधारी । सकलब्रह्मवादीप्रभुभारी ॥ ७ ॥
ऐसोशम्भुसभामधिआजू । बैठअंकतियधरितजिलाजू ॥ प्राकृतपुरुषहोतजोकोऊ । बैठतअसनिरलज्जनसोऊ ॥
लैअपनीइकांतमहँनारी । होतविविधविधिविषैविहारी ॥ येतौशंभुमहाव्रतधारी । तजीलाजधौंकहाविचारी ॥
दोहा–मुनिसमाजमधिनारियुत, दियोलाजसबखोय ॥ अतिअचरजलागतहिये, अतिअनुचितयहजोय ॥ ८ ॥

श्रीशुक उवाच ।

सुनिकैचित्रकेतुकीवानी। हँसेमहेशपरमविज्ञानी॥कह्योनकछुकोपहुनहिंकीन्ह्यो॥मुनिहुँमौनव्रततबगहिलीन्ह्यो॥९॥
पैसुनिअमितअशोभनवानी । चित्रकेतुपैकुपितभवानी॥ताकोढीठसगर्वविचारी। सभामध्यअसगिराउचारी ॥१०॥

उमोवाच ।

हमसेशठनिरलज्जनकेरो । कबतेयहप्रभुभयोघनेरो ॥ कबतेगुरुहमारबनिआयो । जोहमकोउपदेशसुनायो ॥ ११॥
भृगुविरंचिनारदसनकादिक । अरुसिगरेज्ञानीकपिलादिक।येसबकहाधर्मनहिंजानैं । क्योंनहिंसिखवतअहैंइशानैं ॥
दोहा–जोशंकरप्रभुशास्त्रकी, तजेहोतमरयाद । तोविशेषिवारणकरत, बहुसुनाइश्रुतिवाद ॥ १२ ॥
सुरविरंचिआदिकसबजेते । जिनपदपंकजपूजततेते ॥ परमधर्ममूरतिजगस्वामी । तिनकोअधमकुमारगगामी ॥
देवननिंदरिनिरादरकरई । प्रभुहिंनिलज्जकहतनहिंडरई ॥ तातेचित्रकेतुकुलघाती । दंडदेनलायकसबभाँती ॥१३॥
यहशठचित्रकेतुनरनायक।नहिंहरिदासहोनकेलायक॥हरिपदसज्जनसेवनयोगू।तिनसेवनयहिअमितअयोगू॥ १४॥
तातेचित्रकेतुमतिमंदा । लहैअसुरतनलहिदुखद्वंदा ॥ जातेकरैनपुनिअपराधू । ईशसरिसमानैसबसाधू ॥ १५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–चित्रकेतुकहँजबउमा, दईशापअतिघोर ॥ तबविमानतेउतरिकै, करिप्रणामतेहिंठौर ॥
उमहिंप्रसन्नकरावतराजा । कह्योवचनमधिमुनिनसमाजा ॥ १६ ॥

चित्रकेतु उवाच ।

मातुशापशिरमैंधरितोरी । लीन्ह्योंतुलिनपाणिजुगजोरी ॥ मनुजनजोसुरवचनउचारैं । जानहुपैंवभागअनुसारैं ॥ १७ ॥
जोजनसुखदुखजगमहँभोगै । सोसबहोतकरमसंयोगै ॥ १८ ॥ अपनेतेपरतेजगमाहीं । सुखदुखभोगतहैंकोउनाहीं ॥
ईशजननकरमहिअनुसारा । सुखदुखदेतअहैसंसारा ॥ १९ ॥ शापअनुग्रहनरकहुस्वर्गा ॥ औरहुसकलसुखोदुखवर्गा ॥
येविचारकीन्हेंकछुनाहीं ॥ २० ॥ रचतएकईशहिजगमाहीं ॥

दोहा–बंधमोक्षसुखदुखसबै, देतसोईभगवान । आपरहतसबतेबिलग, यहजानतमतिमान ॥ २१ ॥

ताकोशत्रुमित्रकोउनाहीं । जातिबंधुनहिंतासुजनाहीं ॥ सबमेंसबनिजपरनहिंताको । रागरोषनहिंहैममताको ॥
सत्यईशहैसदानिरंजन । सकलजगतजनकेमनरंजन २२ बंधमोक्षसुखदुखअनहितहित । जननमरनजगजीवनकोलित ॥
पैतिनकेकरमनिअनुसारा । बारहिंबारहोतसंसारा ॥ २३ ॥ मैंजननीनहिंशापछुड़ाऊँ । पैयहविनतीतोहिंसुनाऊँ ॥
जौनकह्योमैंवचनकठोरा । सोअपराधक्षमहुअबमोरा ॥ २४ ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिउमाउमापतिकाहीं । करिकैभूपप्रसन्नतहोंहीं ॥

दोहा–चढ़िकैविमलविमानमें, तहँकोकियोपयान । तासुनम्रतादेखिभे, विसमितउमाइशान ॥ २५ ॥

तहाँसुगनअरुमुनिनसुनावत । कह्योउमासोंशिवसुखछावत ॥ २६ ॥

रुद्रउवाच ।

हरिदासनकेदासनकेरो । देख्योउमाप्रभावघनेरो ॥ २७ ॥ राखतकबहुँनकोहुकीआसा । मानतकबहुँनकिहुकीत्रासा ॥
स्वर्गनर्कअरुमुक्तिसमाना । मानतहैंहरिदाससुजाना ॥ २८ ॥ निग्रहऔरअनुग्रहजोऊ । जननमरनसुखदुखपुनिसोऊ ॥
जीवहिहोतदेहसंयोगू । करतअनेकभाँतिजगभोगू ॥ २९ ॥ जिनकेहियेहोतनहिंज्ञाना । तिनकोसुरनरआतममाना ॥
तिनहींकोसुखदुखअरुभासै । यथासीपमहँरजतप्रकासै ॥ ३० ॥

दोहा–भयेभक्तिभगवानकी, होतविरागहुज्ञान । तेकाहूतेकबहुँनहिं, राखहिंआशसुजान ॥ ३१ ॥

मैंविरंचिअरुसनत्कुमारा । अरुनारदमुनिसुरहुअपारा ॥ कृष्णचरितनकहुँनहिंजानैं । भरेसबैअपनेअभिमानैं ॥
हमसबतासुअंशकेअंसा । कहँलोंमुखकीजैपरशंसा ॥ ३२ ॥ प्रियअप्रियताकोनहिंकोई । सबमेंरहतसमाननहिंसोई ॥ ३३ ॥
तिनकोचित्रकेतुयहदासा । महाभागउरज्ञानप्रकासा ॥ सोऊसमदरशीसबमाहीं । रमाकंतकोप्यारसदाहीं ॥ ३४ ॥
तातेहरिजनमाँहभवानी । विसमयकरहुनयहउरआनी ॥ ३५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

ऐसीसुनतशंभुकीवानी । विसमयतजिभइमुदितभवानी ॥ ३६ ॥

दोहा–चित्रकेतुयद्यपिरह्यो, शापहुदेनसमर्थ । तदपिउमाकोनहिंदियो, जानिमहानअनर्थ ॥

लीन्ह्योंशापजोरियुगपानी । यहीसाधुकेलक्षणजानी ॥ ३७ ॥ उमाशापवशसोईभूपा । वृत्रासुरभोवीरअनूपा ॥
सोसप्रभावज्ञानविज्ञाना । असुरतनहुँमहँतेहिनभुलाना ॥ ३८ ॥ वृत्रजन्मपूछ्योजोराजा । भयोभक्तकिमिअसुरदराजा ॥
सोमैंतुमकोदियोसुनाई । सबविस्तारसहितकुरुराई ॥ ३९ ॥ चित्रकेतुकोयहइतिहासा । दायकसंपतिविविधहुलासा ॥
हरिदासनकोकथाप्रसंगा । दायकसुखकारकभवभंगा ॥ ४० ॥ हैपवित्रजनजोउठिप्राता । पढ़ैप्रीतियुतसुंदरज्ञाता ॥

दोहा–सुमिरतश्रीयदुनाथपद, समुझतरहतसदाहि । सोजगबंधनतोरिकै, जातकृष्णपुरकाहिं ॥ ४१ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ षष्ठस्कन्धे सप्तदशस्तरंगः ॥ १७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–सविताकोतियपृश्निजो, जन्योपुत्रबलतोम । सावित्रीव्याहृतित्रई, अग्निहोत्रपशुसोम ॥
चतुर्मासमखपंचमहाना॥१॥भगकीसिद्धनारिजगजाना॥महिमाविभुप्रभुयेसुतजाके।आशिषनामसुताभैताके ॥२॥
कुहूसिनीवालीअरुराका । अनुमतिधातातियजिनसाका ॥ सायंकालकुहूसुतभयऊ । दरशसिनीवालीसुतठयऊ ॥
राकाकेसुतप्रातप्रभासा । अनुमतिसुतभोपूरणमासा ॥३॥ क्रियाविधाकीहैजोनारी । तेहिसुतयाज्ञकअग्निविचारी॥
वरुणवामचर्पणीसुहाई । तेहिसुतभेपुनिभृगुसुखदाई ॥ ४ ॥ वामीतेभोद्वितियकुमारा । वाल्मीकियहनामउचारा ॥
दोहा–रामचरितजोभनतभो, अतिपावनसुखमूल । रामायणअसनामजेहिं, ओघदाहकसमतूल ॥
मित्रवरुणउर्वशीसमीपा । धरचोरेतघटमाहँमहीपा ॥तावटतेभेयुगलकुमारा । नामअगस्तिवसिष्ठउचारा ॥ ५ ॥
मित्रप्रियारेवतीसोहाई । तिनकेभेत्रयसुतसुखदाई ॥ पिप्पलअरुअरिष्टउतसर्गा । जिनतपकरिसाध्योअपवर्गा ॥६॥
शचीनामकीवासवनारी । ताकेभोजयंतबलभारी ॥ मीढुषऋषभऔरसुतदोऊ । भयेशचीकेजानहुँसोऊ ॥ ७ ॥
देवत्रिविक्रमवामनरूपा । कीर्त्तिजासुतियनामअनूपा ॥ तिनकेभयेबृहतअश्लोका । तिनकेसौभगआदिकतोका८॥
दोहा–वामनगुणअरुचरितसब, अरुतिनकोअवतार ॥ नृपअठयेंअस्कंधमें, कहिहौंयुतविस्तार ॥ ९ ॥
अबकश्यपदितिवंशबखानो॥बलिप्रहलादजन्मतहँठानो१०दितिकेद्वैसुतभयेप्रचंडा॥कनककशिपाहिरण्याक्षउदंडा ॥
हिरण्यकशिपकीनारिकयाधू।जंभसुतासोसुछविअगाधू॥सोसुतचारिबलीअतिजाये।क्रमतेतिनकेनामगनाये ॥१२॥
यकसल्हादद्दुतिअनुल्हादा । तीजोल्हादचौथप्रहलादा । तिनकीभगिनिसिंहिकाजोई। विप्रचित्तिदानवतियसोई॥
राहुकुमारभयोपुनिताकर। ग्रसतपर्वलहिचंद्रदिवाकर १३पियतपियूषतासुजगदीशा।चक्रचलायकाटिलियशीशा ॥
दोहा–दाराजोसल्हादकी, जाकोहैकृतिनाम ॥ सोउतपतिकियपंचजन, दानवअतिबलधाम ॥ १४ ॥
ल्हादतियाधमनीजेहिनामा । सोजायोदुइपुत्रललामा॥इल्वलअरुवातापिउदारा॥जिनकोकियअगस्त्यसंहारा १५॥
अरुल्हादहुकीसूर्म्यानारी।जन्योमाहिषवाष्कलबलभारी।श्रीप्रहलादकुमारविरोचन।भयोविरोचनकेबलिरोचन १६॥
बलिकीउसनानारिसयानी । बाणासुरतासुतबलखानी ॥ नब्बेअरुनौसुतपुनिताके । होतभयेजगपरमप्रभाके ॥
अठयेंअरुदशयेंअस्कंधा। कहिहौंबलिअरुबाणप्रबंधा॥१७॥शंकरकोबाणासुरध्यायो॥शिवगणमध्यमुख्यपदपायो ॥
दोहा–बाणासुरकेनगरको, करिकैकृपामहेश ॥ बसिसमीपरक्षतरहैं, गणनसमेतहमेश ॥ १८ ॥
दितिकेपुत्रमरुतउनचासा॥भयोनसुतसुखतिनाहिंप्रकासा॥तिनाहिइंद्रअपनेसमकीन्ह्यो॥सादरसुखददेवपददीन्ह्यो १९
सुनिशुकदेववचनसुखपागे । पूछतभयेभूपअनुरागे ॥

राजोवाच ।

मरुतछोडि निजआसुरभाऊ । कैसेभयेसरिससुरराऊ ॥ कौनकियोहितवासवकेरो । दियोदेवपदशक्रघनेरो ॥ २० ॥
मुनिनसहितमोहिसुननहुलासा । करहुनाथसोकथाप्रकासा ॥ २१ ॥

श्रीसूत उवाच ।

विष्णुरातकेसुनिअसबैना । देवरातभरिकैअतिचैना ॥ बारबारकुरुपतिहिसराही । कहनलगेशुकदेवउछाही॥२२॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–विष्णुबाँहबलसुरनते, असुरगयेजबमारि ॥ तबदितिअतिशैदुखितभे, निजसुतनाशनिहारि ॥
हियेविचारकरनतबलागी । शोकरोषआगीतनजागी ॥२३॥ क्रूरमहानिजबंधुविनाशी। कठिनचित्तपापीबलराशी॥
ऐसोवासवकोमैंमारी । कबस्वैहौंसुखपाँयपसारी ॥ २४ ॥ कीतौभसमकिमलकाकीरा । अंतसमययहहोतशरीरा ॥
ऐसेतुच्छतनहिंकेहेतू । बाँधतजौनवैरकरनेतू ॥ सोनिजस्वारथकोनहिंजानै । भूतद्रोहतेनरकपयानै ॥ २५ ॥
सोयहबातशक्रनहिंजानत । अपनेकोअजरामरमानत॥तातेअसउपायचितलाऊँ। जेहिवासवनाशकसुतपाऊँ॥२६॥

दोहा–असविचारिअसुरनजननि, कश्यपकेढिगजाय ॥ लगीकरनसेवाअमित, अतिशैप्रीतिबढाय ॥ २७ ॥
पतिकीकरिकैभक्तिमहानी।रुखलहिबोलिबोलिमृदुवानी॥करतकटाक्षमंदमुसकाई।कश्यपमनदितिलियोलोभाई २८
यद्यपिज्ञानीरहेमुनीशा । तद्यपितेहिंवशंभयेमुनीशा॥कहैजोदितिकश्यपसोइकरहीं।प्यारीरुखलखिअतिमुदभरहीं।
करहिमुनिहुँकहँनिजवशमाँहीं।नारिनकहँअचरजकछुनाहीं२९पुरुषनप्रथमअसंगनिहारा।वढ़तनदेख्योपुनिसंहारा।
तबअरधंगीविरच्यौनारी।होतभईसोजनमनहारी३०कश्यपलखिदितिकीसेवकाई।कह्योवचनहँसिप्रीतिबढ़ाई ॥३१॥

कश्यप उवाच ।

दोहा–हौंप्रसन्नमैंतोहिंपर, माँगुप्रियावरदान ॥ कंतकृपातेतियनको, दुर्लभकछुनजहान ॥ ३२ ॥
पतिहीपरमदेवतियकेरो । औरधर्मनहिंनिगमनिवेरो ॥ सबकेउरमहँकरहिविहारा । सबकेपतिवसुदेवकुमारा॥३३॥
सुरवपुतेसबपुरुषनकेरे । यदुपतिपूजनलेतघनेरे ॥ नारिनकोपूजनपतिरूपा । लेतसदायदुराजअनूपा ॥ ३४ ।
तातेपतिव्रताजोनारी । उभैलोकगतिचहैसुधारी ॥ तौपतिमेंअनन्यकरिभाऊ । भजैकृष्णगुनिपरमप्रभाऊ॥ ३५॥
सोतुमतेहमपूजनपायो । तैसबविधिमोहिंमोदबढ़ायो ॥ तातेजोअभिलाषतिहारी । सोपुजवनकीआशहमारी॥३६॥
दोहा–सुनतकंतकेवचनअस, दितिअतिशैसुखमानि ॥ अतिविनीतह्वैवचनमृदु, कह्योजोरियुगपानि ॥

दितिउवाच ।

जोमोहिंपरप्रसन्नअतिहोहू । अरुराखहुमेरेउरछोहू ॥ तौवासवहतसुतमोहिंजानी । मोपरकरिकैकृपामहानी ॥
देहुपुत्रमोहिंशक्रविनाशी । यहअभिलापमोरितपराशी॥३७॥सुनतबैनदितिकेमुनिराई ।लगेविचारकरनपछिताई॥
अहोअधर्मअमितमोहिंलाग्यो३८विषैविवशवनितारसपाग्यो॥अबमैंअवशिनरकमहँजैहौं।तियवशकरनीकोफलपैहौं।
यहनारिनकोसदासुभाऊ । चाहहिंस्वारथवशनहिंकाऊ॥ तातेमोहिंधिकवारहिंवारा।नारिसुभावनप्रथमविचारा ४०

दोहा–वदनकमलवचननसुधा, हीयछुराकीधार ॥ ऐसीनारिनकोमरम, कोगुणिपावहिपार ॥ ४१ ॥
निजस्वारथकीहोहिंतिय, तिनकहँकोउप्रियनाहिं ॥ स्वारथहिततेमारहीं, पतिसुतभ्रातहिंकाहिं ॥ ४२ ॥
दितिहिवचनमैंहारिदिय, मृषानह्वैहैसोइ ॥ तातेकरहुँउपायजेहिं, बचवइंद्रकोहोइ ॥ ४३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

असविचारिकश्यपतहो, दितिपैकछुअनखाय । अपनेकोनिंदतवचन, बोलेताहिसुनाय ॥ ४४ ॥

कश्यप उवाच ।

संवतसरलोंजोव्रतधरिहै । ताकीसकलभाँतिविधिकरिहै ॥ तौवासवनाशकसुतहोई । ब्रह्मंडेश्वरहितकरसोई ॥४५॥
सुनिकश्यपकेवचनसयानी । जोरिपाणिबोलीमृदुवानी ॥

दितिरुवाच ।

हमधारणकरिहैंव्रतसोई । जेहिंविधिआपुरजायसुहोई ॥ जेहिंविधिव्रतनहिंमोरनशाई।सोउपायप्रभुदेहुबताई ॥४६॥
दितिकेवचनसुनतअतिप्यारे । व्रतपुंसवनमुनीशउचारे ॥

कश्यप उवाच ।

धरैपुंसवनव्रतसुतदाता । करैनकोउजीवनकरघाता ॥ वदैमृषानहिंकरैनानिंदा । निशिदिनधावतरहैगोविंदा ॥
दोहा–छुवैनअशुचिपदार्थको, काटैनहिंनखलोम ॥ ४७ ॥ जलहिलिनहिंमज्जनकरहि, करहिनतामसतोम ॥
करैनदुर्जनसोंसंभाषन । वसनविनाधोयेनधरैतन ॥ पहिरीपहिरैनहिंसममाला ॥४८॥ भक्षैआमिषनहिंकोउकाला ॥
भूतभद्रकालीकरभोगू । करैनभक्षणव्रतकरिलोगू ॥ आनितशूद्रअन्ननहिंखावै । कोहुकोजूठोमुखनलगावै ॥
रजस्वलाडीठिहुजेहिंपरई । सोअनाजनहिंभोजनकरई । अंजुलितेनकरैजलपाना॥४९॥अशुचिभयेकीजेअस्नाना॥

संध्याकालकेशननिछोरे । रहैनभूपणबिनकेहुँठोरे ॥ वसनढाँपिअँगबाहरजावै ॥ ५० ॥ बिनशुचिह्वैह्गनींदनलावै ।
दोहा–बिनधोयेपगओदपद, औकाहूकेसंग । पश्चिमउत्तरशीशकरि, औरनग्नकरिअंग ॥
ओछे संध्यामाहँसयानी । कबहूँनहिंसोवैव्रतठानी ॥५१॥ धोयेवसनपहिरिनितनारी । सिगरीमंगलसाजुसँवारी ।
प्रथमपूजिजेद्विजभगवानै । एकवारदिनभोजनठानै ॥ ५२ ॥ सधवानारिनलेइबोलाई । तिनकोचंदनसुमनचढ़ाई ॥
भूषणवसनऔरनैवेदू । देइतिन्हेंनितरहैअखेदू ॥ पुनिपतिकोनितपूजनकरई । तेहिंस्वरूपउरध्यानहिधरई ॥ ५३ ॥
यहपुंसवननामव्रतप्यारो ॥ एकवर्षकोकह्योउचारी ॥ विधिसमेतजोयहव्रतठैहो । तौवासवहत्यासुतपैहो ॥ ५४ ॥
दोहा–ऐसेमुनिकश्यपवचन, दितिअतिशैसुखमानि । सविधिकरौंगीमैंव्रतै, कह्योजोरियुगपानि ॥
व्रतपागवनमहासुखदाई । ताकीविधिजसकंतबताई ॥ तेहिंरीतिधार्‍योव्रतकाँहीं ।कश्यपकृतगर्भहुउरमाँहीं ॥ ५५॥
इंद्रविमाताकोजनिजानी । निकटजायसेवाबहुठानी॥नितउठिवासववनमहँजाई।समिधिफूलफलदलसमुदाई ॥५६॥
अंकुरकुशहुमृत्तिकावारी । समैसमैआनहिंसुखकारी॥५७॥यहिविधिकरतमातुसेवकाई । निवसतरह्योतहाँसुरराई॥
व्रतखंडनकोघातलगाये । रह्योतहाँनिजकपटछिपाये ॥ जैसेवधिकधारिमृगरूपा । मारनचहतमृगनकहँभूपा॥५८॥
दोहा–पैदिनिकोव्रतभंगनहिं, होतभयोकिहुँकाल । पेखिपुरंदरनिजमनै, अतिशयभयोबेहाल ॥
चिंताकरनमहँकियोघनेरी । पूजैआशकौनविधिमेरी॥५९॥एकसमैदितिभोजनकरिकै।नहिंधोयोमुखआलसभरिकै ॥
संध्यासमैशयनतेहिंकीनी।विधिविपरीतिशक्रलखिलीनी॥सोइअंतरलहिदितिउरमाहीं।प्रविश्योवासवगहिपविकाहीं।
उदरमध्यमायाकरिजाई॥६१॥काटनलग्योगर्भवरिआई ॥ गर्भहिसातखंडकरिडार्‍यो।आरतरुततबगर्भपुकार्‍यो ॥
तबमारुतमारुदअसभाषत।वासवतहाँमनहिंमनमाषत॥पुनिलैकुलिशशक्रपरचंडा।यकयकसातसातकियखंडा ६२
दोहा–गर्भखंडउनचासभे, तेव्याकुलकरजोरि । वासवसोंविनतीकरन, लागेअतिहिंनिहोरि ॥
पैहौकहाहमहिंहरिमारे । हममारुतहैंभ्राततिहारे ॥६३॥ तबतिनकोसेवकपहिचानी ॥ बोल्योसुनासीरअसवानी॥
जोहौतुमसतिबंधुहमारे । तौनडरहुजेहौनहिंमारे ॥६४॥ यदपिकुलिशधरकुलिशचलाई । नाशनचह्योगर्भवरियाई॥
तद्यपिकृपाकृष्णकीपाई । मर्‍योनगर्भसुनहुनृपराई ॥ जैसेअस्त्रद्रोणसुतकेरो । चह्योरावरोनाशघनेरो ॥
पैतुमपरकरिकृपामहाई । लियोबचाइतुरतयदुराई ॥ ६५॥ यदुपतिकहँयकवारहुध्यावै । सोसारूप्यमुक्तिनरपावै॥
दोहा–दितितोदशदिनकमवरष, भरिकीन्ह्योहरिध्यान ॥६६॥ तातेभेउनचाससुत, मारुतशक्रसमान ॥
वासवजननीदोषविचारी।कीन्हचोयागभागअधिकारी ॥ दितिलखिउठिउनचासकुमारे।इंद्रसहितशिखिसमवपुधारे॥
तबप्रसन्नह्वैवासवपाहीं।बोलीविस्मितवचनतहाँहीं ॥ यकसुतलियेकठिनतपकीन्ह्यो।देवनजीतनहितचितदीन्ह्यो ॥
केहिविधिभयेपुत्रउनचासा।महाबलीतनमहाप्रकासा॥जानोहोइजोशक्रतुम्हारा। मृषाछोडिसतिकरहुउचारा॥७०॥
सुनिदितिकीअतिकोमलवानी । वासवकह्योहरषिभयमानी ॥

इंद्र उवाच ।

निजवधहितगुनितुवमतिमाता । करनहेततुवगर्भनिपाता ॥
दोहा–मैंतेरीसेवाकरी, निजहितधर्मविहाय । जानिअशुचितोहियाहिसमै, तेरेउदरहिजाय ॥ ७१ ॥
गर्भहिकियोखंडउनचासा॥मरेनतेभयपरमप्रकासा॥७२सोहमकोअतिअचरजआयो॥गुन्योकृपाहरिइनहिंबचायो॥७३॥
जोनिष्कामकृष्णकोध्यावै । स्वारथसकलसत्तिसोइपावै॥७४॥ध्यावतयदुपतिआतमदेही।कौनतासुसमदाससनेही॥
ऐसेप्रभुसोंकोमतिमंदा । जाँचैविषैभोगभवफंदा ॥७५॥ तातेममभूरखकीकरनी । क्षमाकरहुजननीसुखभरनी ॥
यकसुतकोअभिलाषतिहारी । दीन्ह्योंकरिउनचासमुरारी ॥ ७६ ॥

श्रीशुक उवाच ।

कपटविहीनशक्रकहँजानी । गमनहुकहीमुदितादितिवानी ॥

दोहा-अंबअंग्रिअभिवंदिके, अखिलअनिललेवेश । अमरपुरीगोअमरयुत, अमरमानिअमरेश ॥ ७७ ॥
मंगलप्रदमारुतजनम, जोपूछेहुनरनाह । सोवरण्योअवपुनिकहौ, जोसुनिवेकीचाह ॥ ७८ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा
राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ षष्ठस्कंधे अष्टादशस्तरंगः ॥ १८ ॥

दोहा-सुनिकैश्रीशुकदेवके, वचनकृपारसभीन । फेरिपरीक्षितजोरिकर, विनतीयहिविधिकीन ॥

राजोवाच ।

जोनपुंसवनव्रतकह्यो, जेहिंगिझतजड़राय । ताकीविधिमोसोंकहौ, परमकृपाउरलाय ॥ १ ॥
सुनतपरीक्षितराजके, वचनपरममुदपाय । विधिपुंसवनसुव्रतहिकी, शुकदियताहिसुनाय ॥

श्रीशुक उवाच ।

मार्गअसितप्रतिपदाते, पतिआज्ञालैनारि । प्रारंभइपुंसवनसुव्रत, ह्वैपवित्रसुखधारि ॥ २ ॥
प्रथममरुतगनकीकथा, श्रवणकरैचितलाय । पुनिआज्ञालैविप्रकी, सरिमेंजायनहाय ॥
बीरीनहिंभोजनकरै, पहिरिओढ़िपटश्वेत । निशिबाकीदुइदंडहरि, पूजैरमासमेत ॥ ३ ॥

पुनिइनमंत्रनतेभगवान्कोप्रणामकरै-

अलंतेनिरपेक्षायपूर्णकामनमोस्तुते । महाविभूतिपतयेनमःसकलसिद्धये ॥ ४ ॥
यथात्वंकृपयाभूत्यातेजसामहिनौजसा । जुष्टईशगुणैःसर्वैस्ततोसिभगवान्प्रभुः ॥ ५ ॥
विष्णुपत्नीमहामायेमहापुरुषलक्षणे । प्रियतांमेमहाभागेलोकमातर्नमोस्तुते ॥ ६ ॥
ॐनमो भगवते महापुरुषाय महानुभावाय महाविभूतिपतये सह महाविभूतिभिर्बलिमुपहराणीति ॥
दोहा-नितनितपुनियहमंत्रते, आवाहनभगवान । अर्घ्यपाद्यआचमनअरु, मज्जनकरैसुजान ॥
वस्त्रहुँअरुयज्ञोपवीत, भूषणचंदनफूल । धूपदीपनैवेद्यअरु, अरपैअरुतांबूल ॥
इन्हेंआदिषोडशविधिहि, पूजैनितभगवान । बचैखीरनैवेद्यते, द्वादशवारप्रमान ॥
करैअगिनिमेंहोमको, सादरमंत्रहिंमाहिं । लिखेदेतआगेअहौं, अबतेमंत्रहुँकाहिं ॥ ७ ॥
ॐनमो भगवते महापुरुषाय महाविभूतिपतये स्वाहेति ॥
दोहा-सबसंपतिकीकामना, करैजोमानुषकोय ॥ करैप्रार्थनाभाँतियहिं, हरिलक्ष्मीकीसोय ॥
तुमदोऊवेदनविदित, सकलकामनादानि ॥ करहुमनोरथपूरमम, मेरेहियकीजानि ॥ ८ ॥ ९ ॥
करिप्रणामपुनिप्रीतियुत, वासुदेवमनुकाँहिं ॥ जपिदशवारहिंपुनिपढै, यहअस्तोत्रतहाँहिं ॥ १० ॥
अथस्तोत्र-युवांतुविश्वस्यविभू जगतःकारणंपरम् । इयंहिप्रकृतिः सूक्ष्मामायाशक्तिर्दुरत्यया ॥ ११ ॥
तस्याअधीश्वरः साक्षात्त्वमेवपुरुषःपरः । त्वंसर्वयज्ञइज्येयंक्रियेयंफलभुग्भवान् ॥ १२ ॥
गुणव्यक्तिरियंदेवीव्यंजकोगुणभुग्भवान् । त्वंहिसर्वशरीर्यात्माश्रीःशरीरेंद्रियाशयः ॥ १३ ॥
नामरूपेभगवतिप्रत्ययस्त्वमपाश्रयः । यथायुवांत्रिलोकस्यवरदौपरमेष्ठिनौ ॥
तथामनुत्तमश्लोकसंतुसत्या महाशिषः ॥ १४ ॥
दोहा-यहअस्तुतिभगवानकी, करिकैप्रीतिबढ़ाय ॥ सामग्रीपूजाबची, ताहिधरैअलगाय ॥ १ ॥
हरिकोपुनिआचमनकरावै । बचीहोमतेखीरजोपावै ॥ ताकोसादरकरिअघ्राना । पूजनकरैहरिभगवाना ॥ १६ ॥
पुनिहरिरूपजानिपतिकाहीं । पूजैप्रेमसहितसुखमाहीं ॥ पतिकीआज्ञालैपुनिनारी । करैकर्मसिगरेसुखकारी ॥ १७ ॥

व्रनकर्मिमेंजोतियसोई । निजतनतेसमरथनहिंहोई ॥ तौसादरपतिहीव्रतठानै । व्रतखंडननहिंहोयमहानै ॥१८॥
विप्रनसधवानारिनकाहीं । चंदनमालाआदिकमाहीं ॥ पूजैनितप्रतिनेमहिंधरई ॥ १९ ॥ आवाहनहुँविसर्जनकरई॥
दोहा–हरिप्रसादकरिअशननिज, शुद्धिलियेसिधिकाम ॥ २० ॥ यहीरीतिदिनवरषकरि, पूजैश्यामाश्याम ॥
पुनिकार्तिककीपूर्णिमा, कोव्रतकरैमहान ॥ २१ ॥ भोरहिंउठिअस्नानकरि, पूजैश्रीभगवान ॥
होमकरैपुनिघृतयुतवीरै । द्वादशआहुतितेहैधीरै ॥ बारहनीकेब्राह्मणकाहीं । भोजनकरवावैसुखमाहीं ॥ २२ ॥
जलअरुतिलहुपात्रगुड़सहितै । तिनहिंदेइव्रतकारीसहितै॥तिनअशीसनिजशिरमोधारी। शिरसोंकरैप्रणामसुखारी॥
पुनितिनकीआशासुखलैकै।भोजनकरैमुदितमनह्वैकै ॥२३॥ बंधुनयुतआचार्यहिंआगू।करिह्वैमौनसहितअनुरागू ॥
निजतियकेसमीपमेंजाई । होयशेषपायससुखछाई ॥ सुतकेहेतदेइतेहिंकाहीं । अशनकरैसोअतिमुदमाहीं ॥ २४ ॥
दोहा–विधिपूर्वकयहपुंसवन, व्रतहिंकरैजोकोइ ॥ सकलकामनातासुको, आशुहिपूरणहोइ ॥
छंद–यहव्रतकरैजोनारिलहैसौभाग्यहिंकाँहीं । सुतयशपावैभूरिहोइविधवासीनाहीं ॥ २५ ॥
यहव्रतकन्याकरैसुलक्षणपतितौपावै । जेहिंपतिपुत्रनहोइकरैव्रतहरिपुरजावै ॥
जेहिंसुतजियतनहोयतासुकोसुतजियतोहै ।अतिअभागिनीजोइसुभागिनीह्वैसोउसोहै ॥ २६ ॥
अतिहिंकुरूपाहोइसोउह्वैजातिसुरूपा । परमरोगिनीजौनिअरोगिनिहोइअनूपा ॥
दोहा–व्रतकर्महिकीपूर्त्तिको, यहैयहीअध्याव ॥ होइपितरसुरतुष्टअति, सकलमनोरथपाव ॥ २७ ॥
श्रीलक्ष्मीनारायणहुँ, ताकेउपरसदाहिं । अतिप्रसन्नमनमेंरहत, देतमुक्तितेहिंकाहिं ॥
सोरठा–हेकुरुपतिमहराज, मरुतजन्मकीयहकथा ॥ सुनैजोजनजेहिकाज, तासुमनोरथसिद्धिसब ॥ २८ ॥
दोहा–दिशिनिधिशशिसंवतअसित, मधुपंचमिकुजवार ॥ छठयोयहअस्कंधवर, रच्योमहासुखसार ॥ १ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजासिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते षष्ठस्कंधेआनंदांबुनिधौ एकोनविंशस्तरंगः ॥ १९ ॥

दोहा–महाराजरघुराजकृत, शुभछठयोंअसकंध । यहसमाप्तमुद्रितभयो, संयुतछंदप्रबंध ॥

समाप्तोऽयं षष्ठस्कंधः ६.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना–बम्बई.

सप्तमस्कन्ध.
नारद
धर्म
दैत्य
हि.क.
हि क
हि क
नारद
देव
हिरण्यकशिपु
प्रह्लाद
गुरु
हिरण्यकशिपु
प्रह्लाद
प्र.
ल.
नृ.

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ श्रीमद्भागवत--आनन्दाम्बुनिधि ।

सप्तमस्कंधः ।

दोहा--जयश्रीकृष्णसरोजपद, मुनिमनमधुकरवास । सुमिरतनाशततापत्रय, आशुहिपुजवतआस ॥
जयवानीदानीसुमति, गुणखानीजगमातु । सुखसानीतेरीकृपा, चाहौंनितअवदातु ॥
जयजयगणपतिगजवदन, एकरदनशुभनामि । विघनसदनकेकदनकर, मदनकदनसुतस्वामि ॥
पुत्रपराशरव्यासजय, जयश्रीशुकमुनिनाथ । जयमुकुंदगुरुचरणजय, जयजयपितुजगनाथ ॥
देवनकेहितहरिहत्यौ, बहुदैत्यनबलवान । सोसुनिकुरुपतिजोरिकर, कीन्ह्योंप्रश्नमहान ॥

राजोवाच ।

सबभूतनमेंसमभगवाना।सबकेप्रियअरुसुहृदमहाना॥सोवासवहितदैत्यननाना।किमिमारचोमुनिविषमसमाना॥१॥
सदासच्चिदानंदस्वरूपा । विमलजासुगुणदिव्यअनूपा ॥ बसैनरागद्वेषजिनमाहीं । देवनतेकछुअर्थहुनाहीं ॥
जिनकोनहिंदैत्यनतेभीती । सोप्रभुकैसेकियोअनीती ॥२॥ नारायणकेगुणनविचारी।शंकितमतिमुनिहोतिहमारी॥
यहिसंशयकोदेउनशाई । तुमसरवज्ञअहौमुनिराई ॥३॥ सुनिकुरुपतिकेवचनसुहाये।पुनिमुनिव्याससुवनसुखपाये॥
दोहा—सुमिरतश्रीयदुवरचरित, श्रीशुकबुद्धिविशाल । सजलनैनगद्गदगिरा, बोलेवचनरसाल ॥

श्रीशुक उवाच ।

भलोप्रश्नकीन्ह्योंमहराजा। हरिचरित्रअद्भुतसुखसाजा॥हरिदासनकोचरितसोहावन।क्षणक्षणभगवतभक्तिबढ़ावन४॥
गावहिंनारदादिऋषिराई । परमपुण्यप्रदअतिसुखछाई ॥ यदुनंदनपदवंदनकरिकै । पिताव्यासपदशीशहिधरिकै ॥
श्रीहरिकथासदासुखदाई । देहौंतुमकोभूपसुनाई॥५॥ यदपिनप्राकृतगुणकविकहहीं।अजअव्यक्तप्रकृतिपरअहहीं॥
तदपिप्रविशिनिजमायामाहीं।वैरमित्रताप्रगटकराहीं६सतरजतमहिप्रकृतिगुणजानो।प्रभुहिनक्षोभकरहिंयहमानो ॥
दोहा—सतरजतमयेत्रिगुणको, सुनहुभूपहरिदास । कबहुँहोतयककालमें, नहिंसंकोचविकास ॥ ७॥
पैजबजीवकालअनुसारा । ईशकरतसदगुणविस्तारा ॥ देवऋषिनतबबरधनकरहीं । रजगुणउदैअसुरसुखभरहीं ॥
उदैतमोगुणमेंमहिपाला । यक्षरक्षसबकरहिंनिहाला ॥८॥ जैसेपावकदारुहिमाहीं । रहतलहतनहिंतेहिगुणकाहीं ॥
तिमिसबमहँव्यापकप्रभुरहहीं।तिनकोदोषगुणहुनहिंलहहीं ॥विनामथेजिमिदारुहिकाहीं।प्रगटतिपावकनेकहुनाहीं॥
तिमिसबमहँहैकृपानिधाना । जानेजानपरहिंभगवाना ॥९॥ उतपतिप्रजनकरनजबचाहैं।करहिंप्रेरणारजगुणकाहैं॥
दोहा—जबचाहैंपालनकरन, सतगुणप्रेरहिंनाथ ।नाशकरनमेंतमगुनै, निजसंकल्पहिसाथ ॥ १० ॥
निजअधीनप्रभुसिरजतकाला ।लवनिमेषआदिकमहिपाला॥चिदचितनामहिंरूपअयोगू।तिनहिनामवपुकियसंयोगू॥
जबदेवनपालनप्रभुकरहीं । तबअसुरनआशुहिसंहरहीं॥विषमदोषलागतनहिंतिनको।जीवकर्मअनगुणकृतजिनको॥
कहौंतासुमेंइकइतिहासा । जानोनारदकियोप्रकासा ॥ भूपपितामहधर्मआपके। रहेजगतमहँअतिप्रतापके ॥ १२॥
राजसूयकीन्ह्योंजबयागा । कृष्णचंद्रपदकरिअनुरागा॥ सभामध्यदमघोषकिशोरा । कृष्णहिबोल्योवचनकठोरा ॥
दोहा—तबहिंकृष्णहनिचक्रसों, ताकोकियोविनास । तासुज्योतिप्रभुवदनमें, प्रविशतिभैअनयास ॥ १३ ॥
सोलखिविस्मितधर्मभुवाला।मुनिहिसभामधिबुद्धिविशाला ॥ नारदसोंपूछेउहरषाई । सोमैंतुमकोदेहुँसुनाई ॥१४॥

युधिष्ठिर उवाच ।

हरिसोंवैरकियोशिशुपाला । सोहरिपदपायोयहिकाला ॥ दुर्लभजोयोगीनहिंपावै । यहमेरेमनअचरजआवै ॥ १५ ॥
मोपरकृपाकरहुमुनिभारी । यहसंशयअबदेहुनिवारी ॥ वेणुभूपकीन्ह्योंहरिनिंदा । ताहिशापदैकैमुनिवृंदा ॥

करिविनाशतेहिंनरकपठायो।हरिनिंदाकोफलदरशायो॥१६॥येतौदंतवक्रशिशुपाला।रहेस्वभाविककूरकराला१७॥
दोहा—बालहिपनतेकरतभे, हरिनिंदाबहुवार । कृष्टभयोनहिंजोभमें, परेननरकअपार ॥ १८ ॥
सबकेदेखतमेंमुनिराई।किमिनिजलीनकियेयदुराई॥१९॥यहलखिभ्रमतमोरमनमोरा।जिमिदीपकलहिपवनझकोरा॥
याकोवरणहुसकलनिदाना । सबजानहुनारदभगवाना ॥ २० ॥

श्रीशुक उवाच ।

सुनतधर्मभूपतिकेबेना । नारदपायपरमउरचैना ॥ सभासदनकहँसबनसुनाई । कथाकहनलागेमुनिराई ॥ २१ ॥

नारद उवाच ।

विनाविवेकईशअरुमाया । लहतजीवयहप्राकृतिकाया ॥ सोइतनमाहमानअपमाना।निंदाअस्तुतिहूकोज्ञाना॥२२॥
अभिमानहिमानहुअपमाना । अहंममहिममरहतभुलाना ॥ २३ ॥
दोहा—सोजैसेसबजीवको, रहतसदाअभिमान ॥ तैसेनहिंपरमातमहि, जानहुसत्यसुजान ॥
श्रीपतिकरहिंदण्डजबजेहीं । ताहिकृपाकरिशिक्षादेहीं ॥ ऐसेप्रभुकृपालुभगवाने । हिंसाकरबकहबअज्ञाने ॥२४॥
तातेवैरभक्तिअरुभीती । कामहुतेअरुकरिकैप्रीती॥जोकौनिहुविधिमनहिंलगावै । ताहिकृष्णहठिकैअपनावै॥२५॥
हरिसोंवैरकियेद्रुतजैसो । लागतमननभक्तितेतैसो ॥ यहमेरीहारिमहँसतिआवै । भीतिहुतेहरिकहँहठिपावै ॥ २६ ॥
भृंगीभीतकीटजिमिभूपा । होतआसुभृंगीकोरूपा ॥२७॥ यहिविधिवैरकियेहरिमाहीं । चिंततअतिपापीतरिजाहीं॥
दोहा—मनलगाइजिमिभक्तिते, पावहिंसुगतिदुराय ॥ तैसेकामहुद्वेषभय, नेहहुतेतजिपाय ॥ २८ ॥
लहीकामतेगतिव्रजनारी । कंसलह्योगतिकरिभयभारी॥चैद्यादिककरिद्वेषकराला।पांडवकरितुवनेहविशाला॥२९॥
यदुवंशीसनबंधहितेरे । हमसबभक्तिहितेहरिहेरे ॥ ३० ॥ येउपायएकोनहिंकरऊ । यातेवेणुनरकमहँपरऊ ॥
तातेकरिकौनिहूउपाई । देइकृष्णमहँमनहिंलगाई ॥ तौताकोसबविधिबनिजाई । यहमैंसत्यसुनावहुँभाई ॥ ३१ ॥
दंतवक्रअरुनृपशिशुपाला । कृष्णपारषदयेमहिपाला ॥ विप्रशापतेमहिंमहँआये । तबमाताभगिनीकेजाये ॥३२॥
दोहा—तातेइनकीमुक्तिमें, कौनअहैसंदेह । पापिहुहरिसोंवैरकरि, पावहिंगतिताजिदेह ॥
धर्मभूपसुनिनारदवाणी । विस्मितकह्योजोरियुगपाणी ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

कैसीअहैकौनकीशापा । जोहरिदासनकियसंतापा॥महिमहँजन्ममुक्तजनकेरो । सुनिकौतुकमानतमनमेरो ॥३३॥
येवैकुंठनगरकेवासी । नहिंप्राकृतजनआनँदरासी ॥ तिनकोप्राकृततनसंबंधू । कौनयोगतेभोजगबंधू ॥
नारदयहतुमकथासुनावहु । मेरोसबसंदेहमिटावहु ॥ ३४ ॥ सुनतअजातशत्रुकीवानी । बोलिउठेनारदमुनिज्ञानी॥

नारद उवाच ।

एकसमयकरतारकुमारा । सनकादिकजिननामउदारा ॥
दोहा—पूर्वजकेपूर्वजअहैं, पंचवर्षजिमिबाल ॥ विचरतलोकनलखनहित, गेवैकुंठविशाल ॥ ३५ ॥
निरखिदिगंबरचारिहुबाला।जयअरुविजयद्वारकेपाला॥रोकिदियोदीन्ह्योनहिंजाना।तबसनकादिककोपिमहाना २६
हरिपार्षदनदियोमुनिशापा । सुनहुँमूढकारकबहुपापा ॥ मधुसूदनचरणनाढिगमाहीं । रजहुतमोगुणकबहुँनजाहीं॥
तहँतुमनाहिरहनकेलायक । शुद्धसत्वमैंत्रिभुवननायक॥ ताते आशुआसुरीयोनी। पायमूढतुमविचरहुछोनी॥३७॥
इमिजबदियसनकादिकशापा । तबजयविजयपायसंतापा ॥ गिरनलगेजबहरिपुरतेरे । तबकृपालुसनकादिकटेरे ॥
दोहा—तीनिजन्मभरिपाइहौ, असुरयोनिमहिमाहिं । पुनिएहौवैकुंठपुर, यामेंसंशयनाहिं ॥ ३८ ॥
तब जयविजयधरनिमहँआये । कश्यपतियदितिकेदोउजाये॥जेठोहिरनकाशिपबलवाना। छोटोहिरण्याक्षजगजाना॥
दैत्यनअरुदानवनअधीशा । होतभयेदोउप्रबलमहीशा॥३९॥ जबहरिशूकररूपहिधारी । गतपतालधरनीउद्धारी॥
तबहींहिरण्याक्षकोमारयो।इंद्रादिककोशोकनिवारयो॥४०॥हिरणकशिपुकोसुतप्रह्लादा।धारकसकलधर्ममर्यादा।

सबमेंसमदरशीमतिमाना । कृपापात्रअतिशयभगवाना ॥ तासोंहिरणकशिपअतिघोरा । वैरकियोमतिमंदअथोरा ॥

दोहा-सभामध्यप्रह्लादपै, करिकैकोपमहान । ठाढ़भयोमारनहितै । काढ़िकरालकृपान ॥

तबश्रीपतिनरहरिवपुधारयो।निजनखकनककशिपउरफारयो४१पुनिविश्रवाकेशिनीनारी।ताकेजन्मलियोदोउभारी।

रावणकुंभकरणअसनाम।निजबलजीत्योत्रिभुवनधाम॥४३॥ दशरथसुतहरिह्वैरघुराई । मारयोदुहुँनलंकमहँजाई॥

मार्कंडेयकबहुँइतऐहैं । रामचरितसबतुमहिंसुनैहैं ॥ ४४ ॥ पुनिदोउक्षत्रीजनमहिंपाये । तबमाताभगिनीकेजाये ॥

तिनहिंसुदर्शनचक्राहिमारी । सनकादिककीशापनिवारी४५वैरकरतकीन्हेंहरिध्यान॥ताते हरिपुरकियेपयाना॥४६॥

दोहा-नारदमुखसोंसुनिकथा, तहांधर्मसुतभूप ॥ पुनिमुनिसोंकरजोरिकै, कीन्ह्योंप्रश्नअनूप ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

दोहा-दैत्यवंशमहँभागवत, कैसेभेप्रहलाद । प्रियसुतसोंकिमिवैरकिय, पितुतजिकैअहलाद ॥ ४७ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

दोहा-सुनतयुधिष्ठिरकेवचन, नारदआनँदपाइ । हिरणकश्यपनरहरिकथा, लगेकहनचितलाय ॥

नारद उवाच ।

धारिवराहरूपभगवाना । हिरण्याक्षकोहन्योमहाना ॥ सोसुनिहिरणकशिपुकुरुराई । शोचनलगेमहादुखछाई ॥१॥

पुनिदानवपतिकोपितह्वैकै ।दाबिदंतअधरनभुजव्वैकै॥लोचनलालकरालविशाला।आशुभयेजनुविमलप्रवाला॥२॥

कुपितदीठिनहिंअतिफरियाती।धूमिलसिगरीदिशादिखाती॥कालडाढसमडाढभयावनि।भृकुटीबंकशंकउपजावनि॥

देखिनसकैजासुमुखकोऊ । जायनसकतनिकटप्रियजोऊ ॥ लैकरमेंइकशूलप्रचंडा । गयोसभादानवबरिबंडा ॥

दोहा-सिंहासनआसीनह्वै, दानवदैत्यबोलाय ॥ यथायोगसतकारकरि, बोल्योबचनरिसाय ॥ ३ ॥

हेदुइशिरत्रयदृगसतबाहू । नमुचिपाकइल्वलअरिदाहू ॥ हयग्रीवशंबरबलवाना ॥४॥विप्रचित्तिअरुशकुनप्रधाना॥

अरुपुलोमआदिकभटनाना।मेरेवचनसकलसुनिकाना॥सिगरेकरहुआशुयहकाजा।अबविलमहुँनाहिंदैत्यसमाजा ५॥

येलघुसुरकरिहरिसेवकाई । हतवायोतासोममभाई ॥ ६ ॥ रह्योयदपिहरिमहाप्रकासी । समदरशीवैकुंठविलासी ॥

तद्यपिदेवनसेवनिहारी । धरयोतुच्छशूकरवपुभारी ॥ अतिकपटीचंचलमतिवारो । भयोबंधुहनिशत्रुहमारो ॥७॥

दोहा-ताहरिकोशिरशूलते, काटिरुधिरलैतासु । तरपनकरिहौंबंधुको, तबपूजिहिममआसु ॥ ८ ॥

हरिकेहतेदेवहतिजैहैं । विनजड़शाखासरिससुखैहैं ॥ सबदेवनकेहैंहरिप्राना । तातेउचिततासुवधजाना ॥ ९ ॥

जबलौंतेहिंवधकरहुँउपाई । तबलोंसकलजाहुमहिधाई॥ यज्ञदानजपतपव्रतधारिन । मारहुसबैपुण्यकेकारिन॥१०॥

द्विजकोकर्मविष्णुकोमूला । सोहैयज्ञधर्मअनुकूला ॥ देवपितरऋषिभूतअपारा । मानहिंहरिकोधर्मअधारा ॥११॥

तातेजहँजहँगऊनिवासा । विप्रवेदवादिनकरवासा ॥ औरहुहोहिंजहाँबहुयागा । पढ़हिंवेदजहँद्विजवड़भागा ॥

दोहा-जहँतहँदानवजायद्रुत, पावकदेहुलगाय । मारहुबाँधहुँतोरहू, द्विजनएकबचिजाय ॥ १२ ॥

हिरणकशिपजबयोंदियशासन । तबसिगरेभटपरमहुलासन ॥माथनवायनाथकहवीरा । गयेसकलपुहुमीरणधीरा ॥

करनलगेसबप्रजनविनासा । उरमेंनेकनदयाविलासा ॥१३॥ पुरव्रजपत्तनउपवनग्रामा । आकरखरवटखेटअरामा ॥

इनकोलावनलूटनलागे । बचहिनविप्रवनहुमहँभागे ॥ १४ ॥ केतेलैकरविपुलकुदारी । कोटद्वारखनिडारेभारी ॥

केतेलैकरकठिनकुठारा । काटनलागेवृक्षअपारा ॥ केतेदानवलूकलगाई । प्रजनसहितगृहदियोजराई ॥ १५ ॥

दोहा-यहिविधिजबदानवसबै, कियेउपद्रवघोर । तबस्वर्गेहिसुरछोड़िकै, छिपेअवनिविनजोर ॥ १६ ॥

प्रेतकर्मकरिभ्राताकेरो।हिरणकशिपह्वैकुपितघनेरो॥लग्योभ्रातपुत्रनसमुझावन।चाह्योतिनकोशोकमिटावन ॥१७॥

शंबरशकुनिभूनसंनापन। व्रतउतकचअरुधृष्टपायमन॥कालनाभअरुमहानाभखल।हरितमूछद्विजदुखदायकभल॥ येनपभ्रातासुतनयेलाई। लग्योबुझावनदानवराई ॥१८॥ औरहुबंधुवधूअरुमाता। तिनहिबुझावनहितविख्याता॥ दानवदेशकालकोज्ञाता। बोल्योमधुरमधुरमुखबाता॥ १९॥

हिरण्यकश्यप उवाच।

हेजननीहेभ्रातानारी। हेसुतअबजनिहोहुदुखारी॥

दोहा–शूरनकेमनमेंरहत, यहीसदाअभिलाख। मरबसमरमेंसनमुखे, जुपैहोहिरिपुलाख॥ २०॥

प्राणिनकोनिवाससंसारा। रहतनसबदिनकरहुविचारा॥ जैसेपथिकपौसरापाई। मिलियकक्षणहिंजाहिंबिलगाई॥ तिमिकर्महिअनुरूपहिभोगू।दैवहिकरतसँयोगवियोगू२१होतजीवकोकबहुँननासा। विविधयोनिमहँकरतनिवासा॥ अज्ञानहिंवशऐसोमानै। अहैदेहयहमोरिमहानै॥२२॥ जिमिजलधारमाहँतरुछाया। अहैअचलचलसरिसदेखाया॥ अरुजबभरिनैननमहँआई।अचलधरनितबचलतदेखाई२३इमिजबविषैविवशमनहोवै।तबहिंजीवदुखसुखनिजजोवै॥

दोहा–यदपिविलक्षणदेहते, जीवकहतसबकोय। तदपिनिजहिअज्ञानवश, सुरनरमानतसोय॥ २४॥

अरुअप्रियप्रियसंयोगवियोगू। जननमरनअविवेकहुशोगू॥ लह्योभागवशजोउपदेशू। भूलिजातसोरहतनलेशू॥ यहीकर्महेतुकसंसारा।जानिलेहुकरिहियेविचारा॥२५।२६॥यामेंसुनहुएकइतिहासा।कहहिंसंतजनसहितहुलासा२७ सुंदरएकउशीनरदेशा। तहँकोउरह्योसुयशनरेशा॥ सोशत्रुनसोंकरिसंग्रामा। जूझिगमनकीन्ह्योंसुरधामा॥ २८॥ कुसुममालभूषणसबटूटे। कवचकिरीटअंगतेछूटे॥ हृदयतासुसायकनविदारा। तनतेबहीरुधिरकीधारा॥ २९॥

दोहा–बैठगयेरदहगमुँदे, खुलेशीशकेबार। धूरिधूसरितकमलमुख, कटेहाथहथियार॥ ३०॥

यहिविधिमृतकनिरखिपतिकाहीं। रानीताकीआयतहाँहीं॥ औरहुकुलपरिवारहुकेरे। गिरआयतेहिपदकेनेरे॥ करसोधुनहिशीशउरमाहीं।हायहायबोलहिमुखमाहीं॥३१॥गहिकैचरणतासुप्रियनारी। रोदनकरहिपुकारिपुकारी॥ छूटिगयेभूषणअरुबारा। चलहिंनैनतेआँसुनधारा॥ करैंसबैतहँकरुणालापा। उपजत जिनहिनिरखिसंतापा॥ कहहिंवचनबहुभाँतिदयावन।अरिहुउरहिंकरुणाउपजावन॥विधिनिरदईमहादुखदीन्ह्यों।तुमकोनैनअगोचरकीन्ह्यों॥

दोहा–सुखदाताहमसबनके, तुमहिंरच्योविधिजोइ॥ दुखदातासोकरिदियो, क्रूरविधातासोइ॥ ३३॥

तुमबिनजीवनहैनहमारा। कहांगयेतुमभूपउदारा॥ जहांजाहुतहँदेहुबताई। बसबतहांहमहूंहठिजाई॥ ३४॥ यहिविधिनारीकरहिंविलापा।पतिपदपकरिपायसंतापा॥सांझभईनहिंदाहनदीन्ह्यों।मोहविवशविषादबहुकीन्ह्यों३५॥ सुनिरोदनयमराजहुकाहीं। अतिशयदयाभईउरमाहीं॥बालकरूपधारितहँआये।विविधभाँतितिनकोसमुझाये॥३६॥

यम उवाच।

देवहुरेमूढ़नकीरीती। देखेहुपरनहिंकरहिंप्रतीती॥ जहँतेआवततहँजनजाहीं। मोहविवशयहजानतनाहीं॥

दोहा–प्रथमहिंकेसबमरिगये, मरिहैआपविशेषि॥ जेह्वैहैंमरिहैंतेउ, पैशोचहिकालेषि॥ ३७॥

इनतेतोहमहींहैंनीके। अहैंनिकोरेपितुजननीके॥ वनमहँइतैअकेलेआये। हमकोवाघविगानहिखाये॥ मैंबालकसबभाँतिलचारा। पैमनमेंयहकियोविचारा॥ जोरक्षतहैगरभहिमाहीं। सोरक्षकहैकृष्णसदाहीं॥ ३८॥ जोप्रभुनिजइच्छातेशासत। जगसिरजतपालतअरुनाशत॥ ताकोखेलअहैसंसारा। रेमूरखयहकरहुविचारा॥३९॥ दईजोनहरिकीसबभाती। मगहुगिरेसोवस्तुनजाती॥ अरुजेहिंहरिहठिहरनचहतहैं। सोनहिंजतनहुँकियेरहतहैं॥

दोहा–इमिजेहिरक्षतकृष्णप्रभु, ताकोकबहुँननाश॥ कबहुँकहूँनहिजियतसो, जेहिंहरिकरहिंविनाश॥ ४०॥

निजनिजकर्मनकेअनुसारा। जीवलहतहैयोनिअपारा॥ छूट्योजबहिंकर्मसम्बंधा। तबहिंछूटिगोजगकोधंधा॥ पैसबमेंजोअंतरयामी। लहतनसोसुखदुखबहुनामी॥ ४१॥ जीवशरीरमोहवशपावै। तनजियमहाभेददरशावै॥ जैसेरहतगृहीगृहमाहीं। पैगृहगृहीएककहैनाहीं॥जिमिघटपटजलबुद्धनशतहै। तिमितननशेहुजीवविलसतहै॥४२॥ जैसेपावकदारुहिमाहीं। तिमिशरीरमहँपवनसदाहीं॥ जैसेसबथलरहतअकासा। तिमितनमाहँजीवकोवासा॥

दोहा-जिमिपावकनभअनलको, देहदारुकोदोष ॥ लागतनहिंतिमिजीवको, लगतनतनगुनचोष ॥ ४३ ॥
जेहिंसुयज्ञकोशोचहुमूढा । शोचतसोप्रत्यक्षनहिंगूढा॥बोलतसुनतरह्योजोतनमें।लख्योनताहिकवहुँनैननमें ॥४४॥
बोलतसुनतश्वासहैनाहीं । करतजीवहैकर्मनकाहीं ॥ अहैभिन्नसोदेहपवनते । किमिशोचहुअवतासुगमनते ॥४५॥
अपनेकर्महिकेअनुसारा । लहततजतजियदेहअपारा ॥४६॥ जवलौंरहतकर्मकीसींवा । तवलौंरहतदेहमेंजीवा ॥
तेहितेहोतदेहअभिमाना । तातेहैकलेशअज्ञाना ॥ ४७ ॥ तातेदेहमाँहपुरुषारथ । सवविधिमानवअहैअकारथ ॥
दोहा-जिमिअनित्यजनस्वप्नके, सकलपदारथहोय । तैसेसिगरेविषैसुख, अहैनित्यनहिंकोय ॥ ४८ ॥
तातेनित्यअनित्यहुज्ञानी।शोचहिनाहिंकवहूँजियआनी॥शोचकियेनहिंकछुमिलिजावै।नहिंअनित्यकोनित्यवनावै ॥
तामेंकहहुँएकइतिहासा । ह्वैहैसुनतशोककोनासा॥व्याधाएकविपिनमहँजाई । दियोखगनहितजाललगाई ॥ ५० ॥
तहँजगरहेकुलिंगविहंगा।विचरहिंचरहिंसुखीयकसंगा॥व्याधकुलिंगहिलियोफँसाई ५१ निरखिकुलिंगमहादुखपाई ॥
रोवनलग्योनसक्योछोडाई॥५२॥हायप्रियामैंवनहिगमाई॥रेविधिदियोदुःखजोमोको।तामेंकहामिलैगोतोको ॥५३॥
दोहा-मोहूँकोलैचलहुअब, जहँमेरीहैनारि । विनप्यारीजीवनकहां, लीन्ह्योंहियेविचारि ॥ ५४ ॥
विनपंखनकेबालकनेरे । होतभयेविनजननींकेरे ॥ ऐसीआशकियेवैह्वैहै । मातुपिताभोजनकवलैहैं ॥
तिनकोमैंकरिहौंकिमिपालन।महादीनजननीविनबालन॥यहिविधिकरतकुलिंगविलापा।बँध्योजालनिकटयुततापा॥
तबछिपिव्याधमारिशरदीन्ह्यों।दोहुनलैगृहगवनहिंकीन्ह्यों ॥ तुमहुविलापकरहुसप्रयासा।जानहुनाहिंआपनोनासा ॥
शतहुवर्षलगिशोचतमाहीं । पैहौकवहुँननिजपतिकाहीं ॥ ५७ ॥

हिरण्यकश्यप उवाच ।

यहिविधिजवबालकसमझायो । तवातिनमनअनित्यतनआयो ॥ ५८ ॥
दोहा-असकहिकेताहीसमय, यमभेअंतरधान । मृतककर्मनृपकोकियो, मिलिसबज्ञातसुजान ॥ ५९ ॥
तातेनहिंशोचहुसबै, अपनेहुआनिहुकाहिं । कोउनपरायोआपनो, मानिलेहुमनमाहिं ॥
यहमेरायहऔरको, यहजोसबकेभान । सोजानहुतुमसत्यकै, यहीमहाअज्ञान ॥ ६० ॥

नारद उवाच ।

हिरणकशिपकेसुनिवचन, दितिसुतवधूसमेत । पुत्रशोकत्याग्योतुरत, भोविवेकमेंचेत ॥ ६१ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा-
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

नारद उवाच ।

दोहा-महाराजसुनियेकथा, कनककशिपबलवान । होनचह्योअजरैअमर, रहैनमोसमआन ॥
फेरहुशासनत्रिभुवनमाहीं । मोकोजीतिसकैकोउनाहीं ॥ असविचारिजियदानवराई । मंदरकेकंदरमहँजाई ॥ १ ॥
तहाँकरनदारुणतपलाग्यो । ब्रह्माचरणनमहँअनुराग्यो ॥ ऊरधभुजऊरधदृगकरिकै । पदअँगुठाधरणीमहँधरिकै ॥
भयोमौनइंद्रिनगतिरोकी।खड़ोरह्योअतिअचलअशोकी ॥२॥ जटाजूटयुतसोहतकैसे।किरणनसहितप्रलयरविजैसे॥
असुरगयेजपतपकेहेतू । तबसुरनिनिजनिजवसेनिकेतू ॥३॥ करततातहितपपरमउदारा । बीतिगयेदशवर्षहजारा ॥
दोहा-ताकेशिरतेधूमयुत, कढीअनलकीज्वाल । तपबलसुरलोकनसबै, लावनिलगीकराल ॥ ४ ॥
लाग्योचुरनसिंधुकोनीरा । शैलसहितमहिडगीगँभीरा ॥ ग्रहणसमेतगिरेमहितारा। होनलगीदशहूँदिशिछारा ॥५॥
तपतेतापितदेवदिविवासी । गयेभागिविधिपुरसुखरासी ॥ विधिसोबोलेसबैप्रकारी । सुनहुप्रजापतिविनैहमारी ॥६॥
कनककशिपतपतेजहिपाई।वसिनसकहिंसुरपुरभयछाई ॥जोचाहौलोकनकल्याणा । तौद्रुतकरहुउपायविधाना ॥

जोउपायकरिहौनहिंआशू।तौसबह्वैहैसकलविनाशू॥७॥यदपितुम्हारसबैप्रभुजाना। तद्यपिहमकछुकरेंबखाना॥८॥

दोहा—हिरणकशिपतुमकोसुन्यो, तपकरिविविधिपदलीन।सोइविचारविधिहोनको, इमिकठोरतपकीन॥९॥

जानिनित्यआतमअरुकाला।करतमहातपअसुरकराला॥औरहुऐसोकिहेविचारा। मैंअवश्यह्वैकैकरतारा॥१०॥
अधकेलोकनउपरवसैहौं। ऊरधलोकअधैलैऐहौं॥ वैकुंठादिकलोकनकाहीं। लघुमानतअपनेमनमाहीं ॥ ११॥
ऐसीसुन्योतासुअभिलाषा।तुमसोंकह्योगोइनहिंराषा॥तातेकरिकैविमलविचारा।करहुउचितआशुहिउपचारा॥१२॥
हेप्रभुतुमगोद्विजहितकारी।तुमतेरक्षाअहैहमारी॥ तातेऐसीकरहुउपाई। रहैराउरेकीठकुराई॥ १३॥

दोहा—ऐसीसुनिदेवनविनय, चतुराननमुसक्याय। मुनिनसहितगमनतभये, जहँरहदानवराय॥ १४॥

हिरणकशिपकहदेख्योनाहीं। लागिविमौटगयोतनमाहीं॥जामिरहेतृणवंशशरीरा।खायोमांसरुधिरबहुकीरा॥१५॥
नैनज्योतिभरिपरतिदेखाई जिमिघनमधिरविज्योतिसुहाई।निजतपतापितती निहुँलोका।हिरणकशिपबाढ्योविनशोका।
निरखिहंसवाहनइमिताको। ह्वैविस्मितगुनिपात्रकृपाको॥दानवसोमोदितकरतारा।विहँसतऐसेवचनउचारा॥१६॥

ब्रह्मोवाच।

उठुरेउठुकश्यपकेनंदन। तुवतपसिद्धिभईअरिद्वंदन ॥ ह्वैहैआशुतोरकल्याना। आयेहमहुदेनवरदाना॥

दोहा—माँगुमाँगुअबदैत्यपति, जोतेरोमनहोय॥ अबनहिंशंकाकछुकरै, मैंदेहौंतुहिंसोय॥ १७॥

तोहिंसमाननहिंधीरजधारी। कीटखायलीन्ह्योंतनभारी॥ रहेप्राणहाड़नमहँजाई। तबहुँतज्योनहिंतपवरियाई १८
दशहजारवर्षहिंविनपानी।जीहैकौनजगतमहँप्रानी॥कियोनकोउकरिहैतपऐसो।हिरणकशिपकीन्ह्योंतुमजैसो॥१९॥
जीतिलियोहमकोतपकरिकै।तोहिदेहौंवरमैंमुदभरिकै॥२०ममदरशननिहफलनहिंहोई।जानहुदैत्यसत्ययहसोई २१

नारद उवाच।

असकहिकृपाकरतकरतारा।कृमिभक्षिततनतासुनिहारा॥छिरक्योदिव्यकमंडलनीरा।तबजसकोतसभयोशरीरा२२

दोहा—भोअखंडबलअसुरके, रविसमानपरताप॥ वज्रसरिससबअंगभे, वयकिशोरविनताप॥

तपतकनकसमवपुषप्रकाशा।फैलतिप्रभापुंजदशआशा॥वामिहितेआतुरकढिआयो।मनहुदारुपावकप्रगटायो २३॥
निरखिअसुरचतुराननकाहीं। चढेहंसमहँअंबरमाहीं॥ कियोभूमिमहँदंडप्रणामा।लहिदरशनपायोसुखधामा ॥२४॥
पुनिउठिअसुरजोरियुगहाथा। निरखतविधिकहनावतमाथा ॥ आनँदतेपुलकावलिछाई। बारबारदृगनीरबहाई ॥
गद्गदगिराकढतिनहिंबानी।मतिअतिविधिपदप्रेमहिंसानी॥पुनिधारिधीरजदानवराई।अस्तुतिकरनलग्योचितचाई२५

हिरण्यकशिप उवाच।

दोहा—कालशिष्टतमबलितजग, कलपांतहिमेंआप॥ उतपतिकियानिजतेजसो, हेतुवपरमप्रताप॥ २६॥

छंद—त्रिगुणतेजगसृजहुपालहुहरहुत्रयगुणमयनमो॥ २७॥ सबतेमहतपरआदिबीजविज्ञानज्ञानतनैनमो॥
मनप्राणइंद्रीबुद्धिरूपविकारह्वैप्रगटतनमो॥२८॥चितअचितचितमनइंद्रिभूतनिगननिकेनेतानमो॥ २९॥
त्रयवेदरूपहिधारिकैसबयज्ञकोप्रगटतअहौ । सबजननकेतुमएकआत्मअनादिकविहुकपारहौ॥ ३०॥
तुवकाललवनिमिषादितेआयुषजननकीहरतहौ। परमेष्टिअजअविकारसाक्षीजीवजीवनलसतहौ॥ ३१॥
चरअचरकारनकार्यतुमसेभिन्ननाहिंदरशातहै। विद्याकलातुवरूपबहुब्रह्मांडगर्भवसातहै॥ ३२॥
जेहिरूपतेजगत्रिगुणकरहुसोरूपनित्यतुम्हारहै। अतिगुप्तपुरुषपुराणनितसतिलोकविपुलविहारहै॥३३॥

दोहा—जोपूरणवपुतेरचहु, यहसिगरोसंसार॥ तावपुयुततुमकोअहै, ममप्रणामबहुवार॥ ३४॥

जोमेरेमनकोवरदीजे । तौऐसीप्रभुकृपाकरीजे ॥ जेभरितुवसिरजेवपुधारी । तिनसेमृत्युनहोयहमारी॥ ३५॥
होयनमीचरैनादिनमाहीं। गृहभीतरबाहेरहुनाहीं॥ जेजेतुवविरचितहथियारा। लगैनाततनतेकियेप्रहारा॥
मरहुँनभूमिअकाशहुजाई।नाहिंनरनहिंमृगसकैसताई॥३६॥जियतमृतकमोहिंसकैनमारी। मरहुँनसुरअसुरनतेभारी॥
युधमेंकोउनहिंहोयसमाना। सबकोपतिमैंहोउँमहाना॥ ३७॥ तवप्रभावजेऐश्वजेपाये। लोकपालसिगरेसुखछाये॥

दोहा–सोऐश्वर्यमोहिंदीजिये, जाकोकबहुँननास ॥ जोप्रभुमानेहुहोयमन. मेरोतपहिप्रयास ॥ ३८ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधि-
राजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

नारद उवाच ।

दोहा–हिरण्यकशिपयहिभाँतिजब, माँग्योबहुवरदान ॥ तबप्रसन्नह्वैचारिमुख, ऐसोकियोबखान ॥ १ ॥

ब्रह्मोवाच ।

दुर्लभवरमाँग्योतुमताता।तदपिकियोतुमतपविख्याता।तातेतुमहिसकलवरदीन्ह्यों।अनुचितउचितविचारनकीन्ह्यों
असकहिदैअसुरहिवरदाना । ब्रह्मलोककोकियोपयाना॥३॥कनककशिपएसोवरपाई।तपतकनकसमतनदुतिभाई॥
हिरण्याक्षकोवधसुधिकरिकै।हरिसोवैरकियोहठिधरिकै ॥४॥ देवअसुरभूपतिगंधर्वा।गरुडउरग-५-सिधिचारणसर्वा॥
विद्याधरऋषिपितरनपतिको।राक्षसयक्षपिशाचनततिको॥औरहुभूतनप्रेतनकाहीं ६ जीतिअसुरकछुकालहिमाहीं ॥

दोहा–दशौदिशनत्रैलोकमें, अपनोहुकुमपसारि ॥ इंद्रवरुणयमधनदको, गृहतेदियोनिकारि ॥ ७ ॥

इंद्रभवनजोपरमसुहावन।सकलसंपदायुतसुखछावन॥कनककशिपकीन्ह्योंतहँवासा।जेहिविश्वकर्माकियोप्रकासा ८॥
विरचितविद्रुमलसैसुपाना। जडीधरणिमरकतमणिनाना ॥ वैडूरजकेखंभविशाला।फबतीफटिकविशालदेवाला॥९॥
बहुविचित्रतहँबनेविताना । पद्मरागमणिआसननाना ॥ गोरसफेनसरिससुखसेजू ।लसहिमुक्तजालहियुततेजू॥१०॥
सुरसुंदरीसाजिशृंगारा । करहिंचलतनूपुरझनकारा ॥ रतनआरसीमहँमुखदेखै । अपनेसमऔरननहिंलेखै ॥११॥

दोहा–लसहिपरमसुखछावनी, गृहवाटिकाअनंत । षटऋतुतहँसोहैंसदा, कूजितविहँगलसन्त ॥ १२ ॥

ऐसेइंद्रभवनमहँराजा । लैआपनदानवीसमाजा ॥ हिरण्यकशिपबहुकियोविहारा । त्रिभुवनधनीनशत्रुनिहारा ॥
वंदनकरततासुपददेवा । करहिंभीतिभरिकैबहुसेवा ॥ बाढ्योअसुरप्रतापप्रचंडा । शासनकियोत्रिलोकअखंडा ॥
रहैमत्तकरिकैमदपाना । घूमतअरुणनैनदुतिमाना ॥ तपबलभयोत्रिलोकअधीशा । नजरदेहिंनिजजायदिगीशा ॥
बिनब्रह्माशंकरभगवाना। हिरणकशिपवशमेंसुरनाना॥१३॥हिरणकशिपइंद्रासनबैठ्यो। परमगर्बभरिनिजभुजऐंठ्यो॥

दोहा–तहँविश्वावसुतुंबरहु, विद्याधरगंधर्व ॥ जायतासुदरबारमें, करहिंगानकलसर्व ॥ १४ ॥

अस्तुतिकरहिंसिद्धिऋषिताकी।नितनाचहिंअप्सराप्रभाकी॥हमहुँगयेनृपअसुरनिवासा।लख्योअपूरबतहाँतमासा ॥
जोकोउकियोजगतमहँयागा।दैदक्षिणासहितअनुरागा॥तिनकोहिरणकशिपलियभागा।देवनकोकहुँखोजनलागा१५
धरनीहिरणकशिपभयपागी।बिनजोतेहुबहुउपजनलागी॥पुजवनलगेअकाशहुआशा।कियरत्नाकररतनप्रकाशा१६
लवणमद्यमधुदधिघृतक्षीरा।बहनलगेसरितनयुतनीरा॥१७॥ शैलकंदरनमाहँविशाला।फरेविटपकालहुविनकाला ॥

दोहा–सिगरेलोकनपालको, रह्योजौनभरिकाज ॥ सोएकहिसबकरतभो, आपुहिदानवराज ॥ १८ ॥

याहिविधित्रिभुवनऐश्वर्यपायो।भोगकरतसंतोषनलायो ॥१९॥भयोशास्त्रमरयादविनासी।महामत्तबहुभोगविलासी ॥
हिरणकशिपबलवंतविशाला।कियोराजयाहिविधिबहुकाला॥२०॥तासुप्रचंडदंडसुरपाई।सकेनत्रिभुवनमहँठहराई ॥
नहिंरक्षकदूसरोनिहारी । गिरेकृष्णकेशरणपुकारी॥२१॥ हैवैकुंठदिशहिपरनामा । जहाँकृष्णविलसहिंसुखधामा॥
जहँयोगीजनजांयउदारा।पुनिनहिंआवतयहसंसारा॥२२॥असकहिहरिपदमनहिंलगाई।कीन्हीअस्तुतिरुचिरबनाई॥

दोहा–मारुतभोजनकैसकल, खडेरहेदिनरैन । तज्योनींदनिजनैनमें, ध्यावतकरुणाऐन ॥ २३ ॥

तहाँमेघकैशोरसमाने । करतविनादितदशहुदिशाने ॥ साधुनकीअभीतकीदानी । ऐसीभयअकाशहीवानी ॥२४॥
होइदेवकल्याणतुम्हारा।डरहुनसुनहुवचनसुखकारा॥मोरिकृपाजापरसुखदाई।तासुविपतिआशुहिमिटिजाई॥२५॥
हिरण्यकशिपकीजोशठताई । मैंजानतहौंसबैबनाई ॥ करिहौंतासुविनाशउपाई । परिखहुकछुककालसुरराई॥२६॥

जोदेवनअरुवेदनमाहीं । विप्रधर्मगोसाधुनपाहीं ॥ अरुमोमेंजोवैरबढ़ावे । तासुविनाशआशुह्वैजावे ॥ २७ ॥

दोहा–समदरशीअरुशांतिअति, मेरोभक्तउदार । नामजासुप्रहलादहै, धराधर्मआधार ॥

ऐसेनिजसुतसोअसुरेशा । देहैकरिअतिवैरकलेशा ॥ तबमारिहौंताहिशठजानी । यद्यपिहैविरंचिवरदानी ॥ २८ ॥

नारद उवाच।

कृष्णवचनसुनिअसतेहिठामा।प्रमुदितसुरकियेप्रणामा॥हिरण्यकशिपकोवधजियजानी।लौटेअभैदेवसुखमानी।

हिरण्यकशिपकेचारिकुमारा।अतिअद्भुतभेपरमउदारा॥तिनमेंछोटोश्रीप्रहलादा । धारकभयेभक्तिमरयादा ॥३०॥

सज्जनसेवकसागरशीला । सत्यसंधइंद्रीजितडीला ॥ अपनेसमसबकोप्रियमाने ॥३१॥ गुरुजनकोनितसेवनठाने ॥

दोहा–निजसमकोभ्रातासरिस, पितुसमदीनदयाल । गुरुमानतभगवानसम, विद्यारूपविशाल ॥

उत्तमकश्यपकोवहनाती।धनमेंधनदसरिससबभाँती॥जाकेतननतनकअभिमाना।कबहुँनजासुचित्तघबराना ॥३२॥

वसहिनव्यसनकबहुँनमनमाहीं।गुनतअनित्यलोकदोउकाहीं।चंचलमनहिअचंचलकीन्हें।सकलकामनाकोतजिदीन्हें

यद्यपिअहैअसुरप्रहलाद।तदपिसुरनदायकअहलादा३३जासुगुणनकविचारहिंबारा।हरिसमअबलोंभनींहिउदारा ३४

साधुनकोजहँहोयबखाना।तहँरिपुसुरहुप्रथमतेहिगाना॥तौतवसरिसजेहैंमतिमाना।काअचरजजोकरहिंबखाना।॥३५

दोहा–गुणअसंख्यप्रहलादहै, दायकजनअहलाद । धारकधर्मम्रजादको, सकैकोकरिअनुवाद ॥

यदुवरपदपदुमनमहँप्रीती।भइस्वाभाविकसहितप्रतीती ३६ बालपनेखेलनतजिदयऊ।हरिध्यावतयदुसमह्वैगयऊ॥

पियोप्रेमआसवदिनराती।जान्योनहिंजगहैकेहिभाँती।॥३७॥बैठतबोलतविचरतमाहीं।सोवतखातपियततेहिकाहीं ॥

रह्योतनकतनकोनहिंभाना।श्रीगोविंदपदचितलोभाना॥करतध्याननितयदुपतिलीला।रोवतकबहुँहँसतशुभशीला॥

गावतकबहुँकृष्णअनुरागी।नाचतकबहुँलाजकहँत्यागी॥कहुँगोहरावहिहरिहुपुकारी।कहुँकुलकतपुलकतसुखकारी।

दोहा–धारिकृष्णकीभावना, लीलाकरतअपार । कृष्णमिलनकीकामना, नितउरकरतविहार ॥ ४० ॥

कहुँयदुपतिपदपरसतध्याने।आनँदमगनमौनविनभाने॥कहुँमूँदतदृगकतहुँउघारत।आनँदमगनदृगनजलढारत४१॥

इमिस्वाभाविकहरिपदप्रेमा । ताकोभयोभूपप्रदक्षेमा॥ऐसीलखिप्रहलादसुरीती।औरहुजनकियहरिपदप्रीती॥४२॥

ऐसेमहाभागवतपूते । हिरणकशिपकियवैरअकूते ॥ ४३ ॥ धर्मभूपसुनिनारदवानी । बोलेफेरिजोरियुगपानी ॥

युधिष्ठिर उवाच।

ऐसोमहाभागवतपूरो । भोप्रहलादजगतमहँरूरो ॥ हिरण्यकशिपतापैमुनिराई । कौनहेतवैरताबढ़ाई ॥ ४४ ॥

दोहा–यदपिहोयसुतशठहुअति, तदपिमातुपितुतासु । सिखवनहिततांडनकरहिं, करहिंनअरिसमनासु ॥४५॥

पितुसेवकप्रहलादसम, जेसुतहोहिंसुजान । तिनसोकबहुँनकरतहै, पितुअतिवैरविधान ॥

यहवरणौविस्तारते, सुननआशहैमोरि । मरचोपितासुतवैरकरि, कियोकौनसुतखोरि ॥ ४६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे चतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

नारद उवाच।

दोहा–असुरनकीउपरोहिती, लहीशुक्रमतिमान । तेकौनेहुकारजलिये, कहुँकहँकियेपयान ॥

तिनकेशंडामर्ककुमारा । होतभयेदोउगुणनअगारा ॥ निवसहिसदाराजगृहनेरे । हैंगुरुदैत्यबालकनकेरे ॥ १ ॥

सिगरेबालकतहँनितजाई । विद्यापढ़हिंअनेकबनाई ॥ दैत्यराजतिनकेढिगमाहीं । पढ़नहेतप्रहलादहुकाहीं ॥

पठयोअतिहरषितअसुरेशा । गेप्रहलादहुमानिनिदेशा ॥असुरबालकनकेसँगमाहीं । बोलतभेप्रहलादहुकाहीं ॥

असुरशास्त्रअरुनीतिविभागे । शंडामर्कपढावनलागे ॥ २॥ सुनिप्रहलादगुरूमुखवानी । पढ्योपैनकछुमनठहरानी॥

दोहा-नीतिशास्त्रमहानतहै, शत्रुमित्रकोभेद । समदरशीप्रहलादको, सुनतभयाअतिखेद ॥ ३ ॥
एकसमयनृपदानवराई । प्रहलादहिनिजनिकटबोलाई ॥ करिआदरअंकहिबैठाई । पूछेउमाधुरगिरासुनाई ॥
गुरुसोजोतुमपढ्योकुमारा । करिविचारसोकरहुउचारा॥४॥पितुकोवचनसुनतप्रहलादा।बोल्योसकलधर्ममरयादा॥

प्रह्लाद उवाच ।

सुनहुपितासबजीवनकाही । यामेंमंगलहोतसदाही ॥ अंधकूपतजिगृहपरिवारा । वनमेंजायअकेलउदारा ॥
तहाँसदायदुपतिपदध्यावै । याहीमेंसबविधिबनिजावै ॥ नातोमायामोहितजीवा । जातनर्कदुखलहतअतीवा ॥५॥

नारद उवाच ।

दोहा-पुत्रवचनपरपक्षके, सुनिकैदानवराय । दैतारीदरबारमें, बिहँस्योवलीठठाय ॥
पुनिबोल्योसबमंत्रिनपाहीं । बालकबुद्धिहोतिथिरनाहीं ॥ जोकोउजैसोआयसिखावै । तबहींतेसोईमनआवै ॥ ६ ॥
तातेसबतुमबालककाहीं । ताकेरहौगुरूगृहमाहीं ॥ जामेंकेसबदूतदुराई । सकैंनशिशुकहऔरसिखाई ॥
मोकोडरश्रीपतिकरिखेदा । करनचहतमेरोघरभेदा॥७॥सचिवसुनतदानवकीवानी । प्रहलादहिगुरुगृहमहँआनी ॥
शंडामरकहिप्रभुकैबैना । कहिकैताकनलगेसचैना ॥ शंडामर्कबोलिप्रहलादे । अतिसराहियशगुणमरयादे ॥
दोहा-पूछ्योमाधुरवचनसों ॥ ८ ॥ हेअसुरेशकुमार ॥ कहहुसत्यतजिकैमृषा, मंगलहोयतुम्हार ॥
यहविपरीतिबुद्धिदुखदाई । येकहितुवउरकहँतेआई ॥९॥ धौंकोउतुमकोआयसिखायो । धौंअपनेतेतुवउपजायो ॥
यहसुनिबेकीचाहहमारी । कुलनंदनभाषहुसुखकारी॥१०॥सुनिप्रहलादवचनगुरुकेरे । बोलेविहँसिहरिहिहियहेरे ॥

प्रह्लाद उवाच ।

भेदजुहैआपनोपरायो । जिनकीमायावशजगछायो ॥ सोकेशवकोअहैप्रणामा । दायकभक्तनकोनिजधामा ॥ ११॥
जबहरिकेशरणागतहोवै । निजपरायतबभेदनजोवै॥जिनकेस्वपरभेदकछुनाहीं । तेवरणींहियहिभाँतिसदाहीं॥१२॥
दोहा-परब्रह्मआत्माहरी, जिनकेचरितअनंत ॥ भलकैजानहिंनहिंजिन्हैं, ब्रह्मादिकश्रुतिसंत ॥
सोमुकुंदकरिकृपामहाई।ममउरवसियहदियोसिखाई१३॥जिमिचुंबकऐंचतहठिलोहा।तिमिहरिपदमोमनकरिछोहा॥
ताकोहेतनमैंकछुजानौं । दीनदयालहरिहिअनुमानौं॥१४॥असकहिशंडामरकहिपाहीं । भयोमौनमतिवंततहाँहीं ॥
शंडामर्ककोपअतिछाई । बोलेप्रहलादहिडेरवाई ॥ हिरणकशिपहमकहअनखैहैं । जोसूधेहमयाहिसिखैहैं ॥
सूधेकहेबालनहिंमानै । बारबारविपरीतबखानै ॥ १५ ॥ तातेचाबुकल्यावहुमेरो । मारिसिखैहौंयाहिघनेरो ॥
दोहा-मेरोयशहारीमहा, अपकारीयहबाल ॥ कुलवनदाहकदहनसम, हिरणकशिपकोलाल ॥
सामदामअरुभेदहुतीनों । याकेपठनहेतमैंकीनों ॥ रह्योचतुर्थकरनकोदंडा । सोअबकरिहौंअवशिप्रचंडा ॥ १६ ॥
दैत्यवंशचंदनवनमाहीं । भोबबूरतहँसोहतनाहीं ॥ अहैअसुरतरुकृष्णकुठारा । तासुबैठप्रहलादकुमारा ॥ १७ ॥
असबहुवचननतेडेरवाई । अरुमारनकीभीतिदेखाई ॥ शंडामर्ककोपअतिछाये ।प्रहलादहिनिजशास्त्रपढ़ाये॥१८॥
असुरशास्त्रसबयहपढिलीन्हों । जान्योभोप्रहलादप्रवीनो ॥ तबजननीगृहताहिपठाई । मज्जनअरुशृंगारकराई ॥
दोहा-शंडामर्कतेहीसमय, सँगमेलैप्रहलाद ॥ हिरणकशिपदरबारमें, गयेसहितअहलाद ॥ १९ ॥
पितुपदवंदनकियप्रहलादा।हिरणकशिपदियआशिरवादा॥उभयभुजनिभरिसुतकहँराजा।मिलतभयोसुखलह्योदराज ॥
आँसुनसींचिसूंघिसुतशीशा।बैठायोअंकहिअवनीशा।विकसितमुखनिजसुतहिनिहारी।हिरणकशिपयहगिराउचारी॥

हिरण्यकशिप उवाच ।

इतनेदिनमेंअतिचितलाई । तुमहिंकहागुरुदियोपढाई ॥ पढ्योकंठजोहोइतिहारे। सोकहिजाहुपुत्रअतिप्यारे॥२२॥
सुनिप्रहलादपिताकीवानी । बोलेगिराभक्तिरससानी ॥

प्रह्लाद उवाच ।

हरिकोसुयशसुनवदैकाना । वरणबयदुपतिनामनिनाना ॥

दोहा–हरिकोपदसेवनकरब, त्योंकरिबोहरिध्यान ॥ हरिपूजनबंदनसदा, रहैदासकोभान ॥
हरिकोसखामानिकरलीवो । हरिकोआतमअरपणकीवो ॥ २३ ॥ येहैपितुनौभक्तिप्रकारा । सोईसुंदरपढ्योहमारा॥
सुनिकुमारकेवचनसुहावन।हिरणकशिपकेभेदुखछावन२४अधरकोपवशकंपनलागे।बोल्योवचनमनहुँदुखपागे२५॥
रेशठगुरुसुतकहापढायो । मेरोसुतसबभाँतिनशायो ॥ शत्रुपक्षसबभाँतिसिखायो । मोकुलरीतिननेकुबतायो ॥
मेरीभाँतितोहिंनाहिंलागी । तहूँभयोअरिकोअनुरागी॥२६॥शठसाधुनकोरूपबनाये । विचरतजगनिजवेषछिपाये॥
दोहा–अवशिखुलतकपटिनकपट, कछुककालकोपाय ॥ जिमिपापिनकोपापहठि, रोगव्याजदरशाय ॥
सुनिकैदैत्यराजकीवानी । शंडामर्कभनेभयमानी ॥

गुरुपुत्र उवाच ।

जैसोवदतबालमुखमाहीं । तैसोहमसिखयोयहिनाहीं ॥ औरौकोऊनाहिंसिखायो । तुम्हैंडेरायनकोउनियरायो ॥
अपनेहीमनतेप्रहलादा । बारबारवादतयहवादा । हमकोनाथदोषजनिदेहू । आछीभाँतिनिरखकरिलेहू ॥
हमपैकरियनकोपवृथाहीं । पुत्ररावरोमानतनाहीं ॥ २८ ॥

नारद उवाच ।

शंडामर्कजबैअसभाषे । बोल्योअसुरफेरिमनमाषै ॥ रेप्रहलादनगुरूसिखाई । यहविद्याकहँतेतैंपाई ॥
दोहा–यहविद्यादुखदेइगी, तोहिंमैंदेउँसुनाय ॥ पिताबैनप्रहलादसुनि, बोलेआनँदछाय ॥ २९ ॥

प्रह्लाद उवाच ।

जिनकीइंद्रीगईनजीती । छाँड़हिंनाहिंपापकीरीती ॥ भोगिनरकपुनिपुनिजगआई । रहहिंविषैसुखसदालोभाई ॥
ऐसगृहिनबुद्धिहरिमाहीं । होतकहेहुअपनेहुतेनाहीं॥३०॥जेशठमहाभरेअभिमाने । तेनिजपतियदुपतिहिनजाने ॥
हरिविमुखीगुरुकरिजगमाहीं । गुरुसमेतनरकमहँजाहीं॥ जिमिआँधरलेआँधरकाहीं। पायकूपदोऊगिरिजाहीं॥३१॥
जेशठकुमतिविषैमदमाते । तेहरिपदकोनाहिंनियराते ॥ बिनामिलेहरिपदअरविंदा । कबहुँनकोहुहिहोतअनंदा ॥
दोहा–जबलोंसंतनचरणरज, शीशधरतनहिंकोइ ॥ तबलोंश्रीगोविंदपद, कबहुँनपावतसोइ ॥ ३२ ॥
असकहिश्रीप्रहलादउदारा । पुनिनहिंनेकहुवचनउचारा ॥सुनिसुतवचनदुखदअसुरेशा॥अशुहिभयोकोपकोवेशा॥
सुतहिंअंकतेअवनिगिरायो॥लोचनलालकालसमभायो ३३ अमरषवशकहवचनकठोरा।सुनहुसकलदानववरजोरा॥
मारनकेलायकयहबालक । मारहुआशुजातिकुलघालक॥मेरेढिगतेटारहुयाको । क्षणभरिहैनहिंपात्रकृपाको॥३४॥
जोहरिहिरण्याक्षकोनाशी । मानतताहिआदिअविनाशी॥यहशठसुततजिनिजपरिवारा । तेहिपदसेवतबारहिंबारा॥
दोहा–मेरेकाकाकोहन्यो, जानिहुकैमतिमंद ॥ तासुदासयहहोतहठि, गुनिमनपरमअनंद ॥ ३५ ॥
पंचवर्षहीतेयहबालक । तज्योमातुपितुनेहकुचालक ॥ तौकाकरीभलोहरिकेरो । कियोकालयाकेपरफेरो ॥ ३६ ॥
रिपुसुतहोइकरैहितसोई । सबप्रकारतेनिजसुतसोई ॥ जिमिऔषधिकंटकतरुफूला । होहिंसदाजनकोअनुकूला ॥
सुतहुहोइपैनहिंहितकारी । रोगसमानसोहैदुखकारी ॥ ज्योंभुजंगअँगुरीमहँकाटै । ताकहिआशुछुरीतेछाँटै ॥
जातबाँचिविषतेसबअंगा । सुखीशरीरहोतनहिंभंगा॥तिमियकहनेबचैपरिवारा।तौमारियनहिंकरियविचारा ॥३७॥
दोहा–तातेयाकोमारहू, करिकैअमितउपाय । सोवतजागतबैठियो । अथवाविषहिखवाय ॥
शत्रुभयोयहपुत्रहमारा।जिमिमुनितनमहँउपजतमारा३८हिरणकशिपकेवचनकठोरा।सुनिकैसकलदैत्यअतिघोरा ॥
वदनभयावनडाढ़कराला । लालमूछलालैशिरबाला ॥३९॥ करतभयावननादमहाना । मारहुमारहुकरहुनआना ॥
असकहिअसुरशूललैघोरा । धायेप्रहलादहिकीओरा॥शिरउरभुजनिमाँहइकसंगा । मार्योप्रहलादहिकेअंगा ॥४०॥
ताकोलग्योकृष्णपदध्याना । उदकिगयेसबशूलमहाना ॥ तिलभरतहँतेटर्योनटारो । कियेनकछुप्रहलादखभारो ॥
दोहा–जैसेउद्यमकरहिबहु, पुरुषभागकेहीन । मिलतनधनतिनकोकछू, रहतदीनकेदीन ॥ ४१ ॥
हिरणकशिपलखिवृथाप्रयासा । ह्वैशंकितकियकोपप्रकासा॥करनलग्योतहँऔरउपाई। जातेमरैपुत्रदुखदाई ॥४२॥

ठाढ़ोकियोमत्तगजआगे । पैप्रहलादेदेखिगजभागे ॥ लपटायेतनमाँहभुजंगा । डसतनभयेनेकुतेहिअंगा ॥
पुनिमारनहितकियेप्रयोगू । करतहिपायोअतिदुखभोगू ॥ पुनिअतिऊँचेशैलचढाई । प्रहलादहिदियदैत्यगिराई ॥
पैधरनीहाथहिमहँलीन्ह्यों।अतिअनन्यहरिभक्तहिचीन्ह्यों॥मायाकरिकियवज्रनिपाता।हरिप्रभावतेलग्योनगाता॥
दोहा–पुनिनिशिधरणीमहँअसुर, गाड़िदियोखनिखात । पैजसकोतसकढ़तभो, श्रीप्रहलादप्रभात ॥
पुनिशठभोजनमहँविषदीन्ह्यों।पैप्रहलादहिनशानकीन्ह्यों।पुनिकरवायेअमितउपासा।पैकीन्हींनहिंक्षुधाप्रकासा॥
पुनिहिमिमाँहगलावनलागे । परसतहिमिशीतलतात्यागे ॥ पवनप्रचंडहिचहेउड़ाई । पवनहुसक्योनतेहिलैजाई ॥
जारनलगीअगिनकीज्वाला । परसतप्रहलादहिभयमाला॥पुनिशठबोर्‍योसागरमाँहीं।सदनसरिसभोसलिलतहाँहीं॥
पुनिदैमार्‍योशीशपहारा । लगेनउनभेटूकहजारा ॥ यहिविधिकीन्हेंअमितउपाई । पैप्रहलादहिविथानआई ॥
दोहा–कैनसक्योकोऊकछू, करैकितेकप्रयास । चारिभुजाकेजासुहैं, रक्षकरमानिवास ॥
हिरण्यकशिपकरिकोटिउपाई।सक्योनमारिसुतहिनृपराई।।तबचिंताउपजीमनमाहीं।मरतपुत्रअबकैसहुनाहीं॥४४॥
कह्योयाहिमैंवचनकठोरा।कियोवधनहितजतनकरोरा।।पैनिजतेजहितेयहबालक।बचिबचिजातअधमकुलघालक ॥
मेरेढिगबैठोप्रहलादा।नेकुनमानतभीतिविषादा॥तजतअबहुँनहिंहठमतिकोती।श्वानपुच्छजिमिसूधनहोती ॥४६॥
किधौंअमरहैमहाप्रभाऊ । भीतिनमानतबाढ़तचाऊ ॥ धौंयाहीकेकियेविरोधू । ह्वैहैमोरप्राणअवरोधू ॥ ४७ ॥
दोहा–ऐसीकरतअनेकविधि, चिंताअसुरमहान । नीचेहीहगकरिलियो, मुखपरिगयोमलान ॥
शंडामर्कतबैतहँजाई । लैयकांतमहँकह्योबुझाई ॥ ४८ ॥ एकआपुत्रिभुवनकहँजीते।निरखतभृकुटिहोतसुरभीते ॥
ऐसेतुमत्रिभुवनकेनाथा । चिंताकरहुसमानअनाथा ॥ तुम्हैंनलायकहैयहरीती। शिशुगुणदोषनकरहुप्रतीती ॥४९॥
वरुणपाशमहँबालकबांधी । राखहुअंधकोठरीधांधी ॥ जातेकतहुँभागिनहिंजावै । जबलौंपिताशुक्रनहिंआवै ॥
नाथआपुकेजबगुरुऐहैं।तबसबविधियहिशठैसिखैहैं॥बालककरिवृद्धनसेवकाई।छोड़िहिसकलकुमतिदुखदाई ॥५०॥
दोहा–शंडामर्कनिदेशसुनि, हिरण्यकशिपबलवान । वरुणपाशतेबाँधिकै, प्रहलादहिधरिजान ॥
सौंपिदियोगुरुपुत्रनकाहीं । कह्योराखियोनिजगृहमाहीं ॥असुरधर्मकरहूउपदेशू । गुरुकुमारममानिनिदेशू॥५१॥
शंडामर्कसुनतप्रभुबैना । लायेप्रहलादहिंनिजऐना । सिखवनलगेअसुरकुलधर्मा । औरहुसबैभयानककर्मा ॥५२॥
सुनिप्रहलादनकछुउरआना।भक्तिमार्गतेभिन्नहिजाना॥५३॥जबगुरुसुतकौनहुगृहकाजा ।करनलगेतजिबालसमाजा
तबासिगरेबालकनबोलाई।कहैप्रह्लादमधुरमुसकाई॥बालकसुनहुज्ञानउपदेशा । जाकेसुनतामिटतअँदेशा ॥ ५४ ॥
दोहा–सुनतवचनप्रहलादके, बालकखेलविहाय ॥ घेरिचारिहूओरते, बैठेचित्तलगाय ॥ ५५ ॥
विषैवासनातेरहित, जानितिन्हैंप्रहलाद ॥ करनलग्योउपदेशबहु, कृष्णभक्तिमरयाद ॥ ५६ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे पंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

प्रह्लाद उवाच ।

दोहा–बालपनेतेकृष्णपद, प्रीतिकरैमतिवान ॥ दुर्लभयहमानुषजनन, रहतनबहुदिनप्रान ॥
जगमहँमनुजयोनिजोपावै । सोजोकरैसोइबनिआवै ॥ १ ॥ सबविधिमंगललोगनकाहीं । कृष्णचंद्रशरणागतमाहीं॥
सबप्राणिनकोसोइअतिप्यारो।सोइआत्मासोइईशउदारो ॥२॥ होतविषैसुखबिनैउपाई।खगमृगनरनकरमगतिपाई ॥
जिमिअभागवशबहुदुखहोवै । अनायाससबसुखहठिखोवै ॥३॥ तातेजतनकरबसुखहेतू । आयुसबृथानाशकोनेतू ॥
जोसुखदेतकृष्णपदप्रेमा । सोनमिलतजपतपकरिनेमा ॥४॥ तातेकरैकृष्णपदप्रीती।जातेमिटतिसकलभवभीती ॥
दोहा–पंचवर्षतेलैमनुज, जबलौंरहैशरीर ॥ तौलौंयदुपतिचरणकी, भक्तिकरैमतिधीर ॥

युवाउमरिजोभक्तिनआई।कहाकरिरहिपुनिपायबुढ़ाई।।८।।शतवरषहिंजनुआयुषहोवै।वर्षपचाससोइनिशिखोवै ॥६॥
गयेवर्षदशबालपनेसे । औरौदशगेयुवाखनैसे ॥ लहेजठरपनवीसगमावे । तामेंकछुनकरतबनिआवे ॥ ७ ॥
अरुजेरहेवर्षदशवाको । तिनमेंकामक्रोधमतिछाकी ॥ ऐसेनाहकजन्मसिराही । जोनलग्योमनहरिपदमाही ॥
सुततियमोहपाशकेबाँधे । कोउनछोडाइसकैगृहधाँधे ॥९॥ प्राणहुतेधनअतिप्रियलागे । कैसेतासुलालसात्यागै ॥

दोहा–जेहिधनकेकारणवणिक, गमनतदूरविदेश । प्राणआशकोछोडिकै, ल्यावतनिजहिनिवेश ॥

धनहितचाकरकरतचाकरी । प्राणदेतलहिसमैसाँकरी॥धनहितकरतचोरबहुचोरी।राखतप्राणआशनहिंथोरी॥१०॥
तजिनजातसुंदरनिजनारी । जातेलग्योनेहअतिभारी ॥ तजिनजातयेकोतविलासा । प्यारीसंगकरबपरिहासा ॥
तजिनजातनिजबालककेरी।बोलिनितोतरिसुखदघनेरी॥११॥तजिनजातअंतहिदुखदाई।मित्रपुत्रदुहिताप्रियभाई ॥
तजिनजातजनकहुअरुजननी।सासुश्वशुरऔरहुप्रियभगिनी ॥ तजिनतातसुंदरधनधामा।गजतुरंगचाकरकृतकामा॥

दोहा–तजिनजातकुलवृत्तिहू, तजिनजातगृहकाज ॥ १२ ॥ तजिनजातहैलोभयह, तजिनजातसुखसाज ॥

जिमिगृहरचतकीटकुसियारी।निकसनहितनहिंराखतद्वारी।तिमिजनकरतकरमसंसारा।निकसनहितनहिंराखतद्वारा
तेकबहूँसंतोषनपावे । बारबारतृष्णावशधावे ॥ मैथुनभोजनसुखअतिमानी । कैसेमोहतजैअज्ञानी ॥ १३ ॥
पालतनिजकुटुंबकीनाई । वृथाअवरदादेहिगँमाई ॥ जातेहोतपरमकल्याना । सोनहिंजानतजातनज्ञाना ॥
यदपितापत्रैतापितहोही । तदपिरहैपरिवारहिमोही ॥ १४ ॥ यद्यपिजानतपरधनलीन्हें । दोऊलोकखोयहमदीन्हें॥

दोहा–तदपिकुमतिअतिमोहवश, निजकुटुंबकेहेत । परधनकेहेरनहितै, नितउठिबांधतनेत ॥ १५ ॥

पंडितरहँवशमोहमहाना । पालतहेपरिवारलोभाना ॥ अपनोकरिअरुभेदविरानो।करतझूठसमनरकपषानो।।१६॥
कबहूँकहूँकैसेहूकामी । जानतनहिंनिजअंतरयामी ॥ मोहपाशनहिंसकतछोडाई । तरुणिनमहँनितरह्योलोभाई ॥
तियमरकटसमतिनहिनचावैं।सुतसनेहबेडीपरिजावैं ॥१७॥तातेहैदैत्यनकेबालक । तजहुसंगविषयनकुलबालक ॥
आदिदेवयदुनंदनकाही।भजउभजहिंजेहिसंतसदाही१८हरिसेवतनहिंहोतप्रयासा।अतिकरुणाकररमानिवासा१९॥

दोहा–जेतेलघुबडजीवजग, ब्रह्मापिपीलप्रयंत । थावरजंगममेंसबै, निवसतकमलाकंत ॥ २० ॥

सदासच्चिदानंदसुभाऊ।कुमतिनजानहितासुप्रभाऊ।कीन्हेंविनासंतसतसंगा।जानिपरतनहिंईशअभंगा २१-२२-२३
करहुसबैजीवनमहँप्रीती । छोडिदेहुअसुरनकीरीती ॥ जातेहोहिंप्रसन्नमुकुंदा । देहिसदानिरवधिकअनंदा ॥ २४॥
जबप्रसन्नभेरमानिवासा । ताहीक्षणपूजीसबआसा ॥ धरमादिकतेरहतनकामा । पानकरतहरिप्रेमललामा ॥ २५॥
धर्मअर्थअरुकामउपाई ! औरहुपढववेदसमुदाई ॥ जानबसिगरेशास्त्रनिदाना । करबसबैजपयोगमहाना ॥

दोहा–औहरिपदअनुरागभो, तौसबसफलजनाहि । जोहरिकोअनुरागनहिं, तौनिरफलसबजाहि ॥ २६ ॥

नारायणनारदसोंज्ञाना । जोमैंकहसोकियोबखाना ॥ सोसंतनचरणनरजपाई । होतज्ञाननहिंऔरउपाई ॥
शुद्धभागवतधर्ममहाना । यहअतिसुंदरज्ञानविज्ञाना ॥ प्रथमसुन्योमैंनारदमुखते । तबतेछूटिगयोसबदुखते॥२८॥
मुनिप्रहलादवचनसबवारे । अचरजगुनिअसवचनउचारे ॥

बालका ऊचुः ।

हेप्रहलादहमारतुम्हारो । हेगुरुशंडामर्कउदारो ॥ तिनसोंपढचोहमहितुमसंगै । तुमकहँपायोज्ञानअभंगै ॥ २९॥
जबतुमरह्योजननिगृहमाहीं । जातरहेसज्जनतहँनाहीं ॥

दोहा–तातेजातेतुमलह्यो, यहअतिसुंदरज्ञान । यहसंशयमेटनहितै, हमसोंकरहुबखान ॥ ३० ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा
राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराज
सिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ सप्तमस्कन्धे षष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

नारद उवाच ।

दोहा–असुरबालइहिविधिजवै, पूछैयुतअहलाद । तवमेरोभापितसुमिरि, विहँसिभन्योप्रहलाद ॥ १ ॥

प्रह्लाद उवाच ।

ममपितुजबतपहितबलवाना।कियोमंदराचलहिपयाना॥विनप्रभुकेलखिअसुरसमाजा।चढ़िआयोसुरलैसुरराजा॥२॥
विभौमानिसवचितमहँपागे।तहांदेवअसभापनलागे॥जिमिपिपीलिकाअहिकहखाही।तिमितेहिपापविनाश्योताही ३
देवराजकीजानअँवाई । विनप्रभुबलीअसुरसमुदाई ॥ गयेभागिदशदिशनिडेराई । कछुकसुरनमारेद्रुतधाई ॥ ४ ॥
सुततियगृहसम्पतितजिनाना।प्राणबचावनकियेपयाना॥पुनिनींहमुरुकिअसुरकहेदेखैं।मीचुआपनीसबविधिलेखे ॥
दोहा–असुरनकोभागतनिरखि, देवपसरकरिदीन । राजमहलसम्पतिविविध, पैठिलूटिसबलीन ॥
इंद्रधरयोममजननीकाहीं ॥ ६ ॥ लैगमन्योअपनेघरमाहीं ॥ जननीरोवनलगीडेराई । जिमिकुररीव्याधाकरिआई ॥
विचरतनारदआयतहाहीं । मिलेमहेंद्रहिमारगमाहीं ॥ ७ ॥ मोंजननीकहँदीननिहारी । वासवसोंअसगिराउचारी ॥

श्रीनारद उवाच ।

सतीदीनयहातियगुतलाजा । छोडहुछोडहुसुरमहँराजा॥ग्रहणकियोसुरपतिपरदारा । होतपापअतिवेदउचारा॥८॥
सुनिसुरपतिनारदकीवानी । कीन्ह्योंविनैजोरियुगपानी ॥

इंद्र उवाच ।

याकेउदरशत्रुहैमेरो । प्रगटभयेदुखदईवनेरो ॥
दोहा–तातेजबवहहोइगो, तवतेहिमारिविशेखि । याकोंदैहौंछोडिमैं, परमदीनतादेखि ॥ ९ ॥
सुनिवासवकेअनुचितबैना । बोलेमुनिभरिआयेनैना ॥

नारद उवाच ।

याकेउदरअपापप्रतापी । महाभागवतहैहरिजापी ॥ हैमुकुंदयाकोरखवारो । मरिहैनाहिंरावरोमारो ॥ १० ॥
नारदवचनइंद्रतहँमानी । तज्योजननिकहउरभैमानी ॥ भगवतभक्तजानिसुरराई । दैपरदक्षिणगयोसिधाई ॥ ११॥
तबममजननीकहऋषिराई।अपनेआश्रमआशुहिल्याई।वसहुइहाँअसकह्योबुझावत।जबलौंतुवनायकनहिंआवत १२
मुनिकेवचनमानिमहतारी । निवसीतहाँभीतितजिभारी ॥
दोहा–जबलौंवनतेघोरतप, करिकैपितुबलवान ॥ नहिंआयोतबलौंरही, मुनिआश्रममहिमहान ॥ १३ ॥
निजगर्भेहिकेमंगलहेतू । जामेंहोयपुत्रमतिसेतू ॥ असविचारिमेरीमहतारी । नारदकीसेवाकियभारी ॥ १४ ॥
ममजननीकीलखिसेवकाई । नारदकरिकैकृपामहाई ॥ भगवतधर्महिकियउपदेशू । औरहुज्ञानविज्ञानहिवेशू १५॥
नारिस्वभाउकालबहुपाई । जननीदियोज्ञानबिसराई॥कियनारदमोहिंकृपाअतूली।तातेसुधिमोकोनहिंभूली ॥१६॥
मानहुवचनमोरयदिबालक।तौदुखलहहुनजोकुलघालका॥होबहुआशुहमहिंसमज्ञानी।रहिहौपुनिनदेहअभिमानी ॥
दोहा–होवबढ़बवदलबरहव, वटबनसवषटभाव ॥ यतदेहीकेहोतहैं, अहैनजीवस्वभाव ॥ १७॥
जिमितरुरहतखड़ोवनमाहीं।फललगिबढ़तपकतनशिजाहीं॥आत्मासिद्धयेकअविनाशी।ज्ञानस्वरूपशरीरप्रकाशी॥
ईशसदाव्यापकअविकारी । यकसमनाहिंमायासंचारी॥१८॥ ज्ञानगुणकहेसदाअसंगी । मानैसबशरीरकोअंगी१९॥
येद्वादशलक्षणगुनज्ञानी । होयनकबहुँदेहअभिमानी ॥ जैसेचतुरमृत्तिकापाई । लेतअगिनिधरिकनकबनाई ॥२०॥
जिमिज्ञानीनिजजीवविशेखै । ज्ञानदृष्टितेईशहिदेखै ॥ २१॥ आठप्रकृतित्रैगुणतेहिकेरे । औविकारषोडशहुघनेरे॥
दोहा–एकआतमाकोरहत, इनसबमहँसम्बंधु ॥ ऐसोकहतविचारिकै, जेज्ञानीमतिसिंधु ॥ २२ ॥
इनसबकोमिलिहोतशरीरा । जडचेतनद्वैभेदगँभीरा ॥ मनवचकर्मपरेजोहोवै । तेहिबुधपरमपुरुषनितजोवै ॥२३॥
सोइसबतेबाहेरसबमाहीं । सिरजतपालतरहतसदाहीं॥२४॥तीनिअवस्थाबुद्धिहिकेरी । जाग्रतस्वप्नसुषुप्तितिवेरी ॥

सोसव[illegible]नजीवनिनभोगू।नहिंपरमात्माकोसंयोगू।।२५।।तेहिअनुभौकारकजियमानै।जिमिसुगंधतेधरनीजानै २६।।
यहीअज्ञानमूलसंसारा । हैनहिंपैजनकहतहमारा ॥ जैसेसपनमाँहधनपाई । जनकरिलेभलेहिअपनाई ॥ २७ ॥

दोहा–तातेतीनिहुँगुणनके, कर्मतजहुसबकोइ ॥ विषैवासनाछोड़िकै, बुद्धिविमलजशहोइ ॥ २८ ॥

सोइउपायहजारनमाहीं । भलीअहैमुनिकहतसदाहीं ॥ जोउपायकीन्हेंअतिआसू । लागैमनपदरमानिवासू ॥२९॥
भक्तिसहितगुरुसेवनकीन्हें । निजसर्वसनिजप्रभुकहँदीन्हें॥ कीन्हेंसंतजननसतसंगा।भजेईशकहतजिजगसंगा ३०॥
कृष्णकथामहँश्रवणलगाये। सुंदरकृष्णचरितमुखगाये॥कियेध्यानहरिपदमनभावन । देखेकृष्णस्वरूपसोहावन३१
देखिपरैहरिसबथलमाहीं । जियकीसबसंशयमिटिजाहीं॥३२॥तबहरिचरणपरमरतिहोवै।कोटिजन्मकोपातकखोवै॥

दोहा–श्रीमुकुंदलीलासुखद, जासमऔरनकोय ॥ ताहिसुनतसमुझतकहत, तनपुलकावलिहोय ॥

हरषितगद्गदगरह्वैजावै । आनँदनीरदृगनझरिलावै ॥ करैभावनाअसमनमाहीं । कृष्णसंगहमअहैंसदाहीं ॥
करैनित्यनदनंदनरासा । तहँगावतहैंसहितहुलासा॥ सखिनस्वरूपसखिनकेसंगा।नाचहिंसाजिशृंगारनअंगा ॥ ३४॥
मनमोहनकोभयोवियोगू । रोदनकरहिधारिबहुशोगू ॥ कहूँहँसैहरिसँगकरिहाँसी । कहुँगोहरावतआनँदरासी ॥
कहुँधरिध्यानपाइपुनिपरसै । बारबारश्वासनिपुनिहरसै ॥ हेनारायणहरेकृपाला । कहांगयेतजिदीनदयाला ॥

दोहा–जोभावनाकरैउहा, सोईतनप्रगटाहिं ॥ वसुधामेंवैकलसरिस, गुनैमूढ़तेहिकाहिं ॥

अथवाअसभावनानहोवै । मनचंचलताकरिहरिखोवै ॥ तौजनकरैभक्तियहिभाती । हरिकीकथासुनैदिनराती ॥
कथाशोकहरषहुकीआवै । आनँदशोकहुतबउरध्यावै ॥ हरिमूरतिसन्मुखनितगावै । लाजछोड़िबहुभावबतावै ॥
हरिढिगनाचतगावतमाहीं । कोटिजन्मकेअघनशिजाहीं ॥ करिअनुरागनैनजलढारै । पुलकावलितनबारहिंबारै ॥
जबअसकरहिकथामहँप्रीती । जानततबैप्रेमकीरीती॥तबजगछूटतविनाहिप्रयासा।करतिनमनपुनिकुमतिनिवासा ॥

दोहा–पुण्यपापमिटिजातसब, तुच्छलगतत्रयलोक ॥ प्रेममगननितहीरहत, होतकबहुँनहिंशोक ॥३५॥ ३६॥

जेऐसेजनहैंजगमाहीं । तिनहींहठिमाधवमिलिजाहीं ॥ हरिपदप्रीतिजोसुखउपजावै । ताकोब्रह्मानंदनपावै ॥
मगनजेहरिपदप्रेमहिपाना।विज्ञानिहुनहिंतिनहिसमाना।।तातेकरिविचारदुखगंजा।बालकभजहुकृष्णपदकंजा ३७॥
भजतकृष्णकहकौनप्रयासा । जोव्यापकहैसरिसअकासा॥यकक्षणकियेकृष्णपदप्रीती।सखासरिसमानहिप्रभुरीती॥
तातेऐसेछोड़िकृपालै। कौनपरेशठजगजंजालै ॥ ३८ ॥ सुततियधनधरनीगजवाजी । नहिंस्वारथपरमारथकाजी ॥

दोहा--नहिंविभूतिकहुँरहतितिन, चलैननिजकरतूति ॥ अंतसमैसुततियकरैं, तनकहजारिविभूति ॥ ३९ ॥

जैसेऐहिकविभौनशाहीं । तैसैस्वर्गादिकनशिजाहीं ॥ जबलोंरहतस्वर्गमहँजाई । तबहुँनतृष्णामिटतिमिटाई ॥
सोइतृष्णासबदुखकरमूला।मिटतसोभयेकृष्णअनुकूला।।तातेदोउलोकनकीआसा।छोड़िभजहुपदरमानिवासा४०॥
जौनकर्मवशिकरिअभिमाने। अपनेकहँबड़पंडितमाने ॥४१॥ सुखहितकरतकर्मबहुवारा।सोअंतहिदुखहेतअपारा॥
तातेतृष्णातजैनजबलों । कहोंनसुखपावतजनतबलों ॥४२॥जेहितनसुखहितकरैउपाई।सोतनअंतलेहिकृमिखाई ॥

दोहा–कीपावककेज्वालमहँ, जरिकैहोतोछार ॥ कीशृगालकीश्वानकी, शूकरकरैअहार ॥

[illegible]निपरतनहिंकवनशिजैहै । लिखोकरमकोकहकहहैहै॥४३॥जोअपनीदेहहुहैनाहीं । तौसुततियकेहिलेखेमाहीं ॥
धनधरनीधामहुपरिवारा । सुभटतुरंगमतुंगहजारा ॥ मंत्रीमित्रआदिसबजेते । इंद्रजालजानहुसबतेते ॥ ४४ ॥
येसबअहैंअनर्थहिकारी । जानतअर्थमोहवशभारी ॥ जेहरिप्रेमसुधारसपागे । तिनहिनेकुयेनीकनलागे ॥ ४५ ॥
गर्भहितेलैमरणप्रयंता । लहतदुसहदुखजीवअनंता॥विनहरिभजनहोतसुखनाहीं॥बालकलेहुशोचिमनमाहीं ॥४६॥

दोहा–करतदेहलेकर्मबहु, लहतकर्मवशदेह । यहसिगरोअविवेकहै, उचितकृष्णपदनेह ॥ ४७॥

अर्थकर्मकामहुनिरवाना । तिनकेदायकहैंभगवाना॥तातेसकलकामनाछोड़ी । भजौरुकुमिनीमाधवजोडी ॥४८॥
निजकृतजगकेअंतरजामी । सोइआत्माईश्वरप्रियस्वामी॥४९॥सुरऔअसुरमनुजमुनिसर्वा।चारणयक्षसिद्धगंधर्वा ॥
इनमहँजोकोउभजतमुकुंदै।सोमोहिंसमपावतआनंदै॥५०॥भयेविप्रवेदहुपढ़िलीन्हें।सुरसुरपतिहुभयेसुखभीने ५१॥

कीन्हेंधर्मभयेवड़ज्ञानी । कीन्हेंतपहुभयेजगदानी ॥ कियेयज्ञऔकियेअचारा । कियेप्रेमयुतव्रतहुहजारा ॥

दोहा-रीझतनंदकुमारनहिं, विनाभक्तियुतप्रीति । औरसवैएकनलहै, असमनकरहुप्रतीति ॥ ५२ ॥

तातेहेअसुरनकेवालक । हैमुकुंदशरणागतपालक ॥ करहुभक्तितिनकीसुखदाई । राखहुसवथलमहँसमताई ॥

जामेंलेहिनाथअपनाई । तवसवविधितुम्हरीवनिआई ॥५३॥ दैत्ययक्षराक्षसअतिघोरा । नारिशूद्रऔनीचकरोरा ॥

खगमृगऔरहुजेअतिपापी । रहेजगतमहँअतिसंतापी ॥ तेऊहरिपदनेहलगाई । वासकियोवैकुंठहिजाई ॥

कोअसदूसरदीनदयाला।सुमिरतहीकरिदेतनिहाला॥भजहिऔरजेअसप्रभुछोडी।तिनकीमतिसवभाँतिनगोडी ५४

दोहा-यहपरमारथजगतमें, भाषतवेदपुरान । भक्तिकरवगोविंदकी, सवथलतिनकोभान ॥ ५५ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

नारद उवाच।

दोहा-ऐसेसुनिप्रहलादके, वचनप्रेमरसभीन । असुरवालहरिभजतभे, गुरुशिक्षिततजिदीन ॥ १ ॥

शंडामर्कहुँकरिगृहकाजा । आवतभेजहँवालसमाजा ॥ सववालककहभक्तिविज्ञाना । दियपढायप्रहलादप्रधाना ॥

शंडामर्कदशायहदेखी । कोपितभेमनमहँअसलेखी ॥ कह्योआपवालकनवहायो । कहतेयाकुपूतकुलजायो ॥

नहिंसमुझिहैपूतगुणदोषू । हमहींपरकरिहैनृपरोषू ॥ असगुनिमनमहँनृपहिडेराई । जातभयेजहँदानवराई ॥

शंडामर्कजोरियुगहाथा । कह्योसुनोविनतीयहनाथा ॥ वहसुतशठप्रहलादतिहारो । मानतनहिंकछुकह्योहमारो ॥

दोहा-सववालकनवोलाइकै, सिखयोअपनीरीति । तुमहूंहमरेवचनमहँ, नेकुनकियोप्रतीति ॥

तातेउऋणहोनहमआये । जातसभामधियहगोहराये ॥ अवनपढ़ैहैहमप्रहलादै । वृथानलेहैंयहअपवादै ॥ २ ॥

शंडामर्कवचनसुनिराजा । सभामध्यकरिकोपदराजा ॥ सुनिदनुसुतनपढ़ाउवज्ञाना । लाग्योतातेतेलसमकाना ॥

भयोकुपितकाँपेसवअंगा।दाविअधरभ्रुकुटीकरभंगा॥प्रहलादहिमनवधनविचारी॥३॥हिरणकशिपअसगिराउचारी॥

भोसुतमोहिंदुसहदुखदाता । अवतोनहिंउरकोपसमाता ॥ सिखयहुपैछोड्योकुलरीती । वालकसदाकरतअनरीती॥

दोहा-तातेप्रहलादहितुरत, धरिल्यावोममपास । वधकरिहौंनिजहाथसों, डारिगरेमहँपास ॥

सुनतसुभटनिजनाथनिदेशा।दौरिगयेद्रुतगुरूनिवेशा॥सभामध्यप्रहलादहिल्याई।हिरण्यकशिपकहदियोदेखाई॥४॥

पितहिनिरखिप्रहलादललामा।हाथजोरियुगकियोप्रणामा॥अतिविनीतभोसन्मुखठाढ़ो।बुधवरकृष्णभक्तिमहँगाढ़ो॥

पुत्रनिरखिभोकोपअपारा । जिमिभुजंगचरणनकोमारा ॥ लेतश्वाससुखवारहिंवारा । तिरछोहैकरिनैननिहारा ॥

अतिदारुणदानवपतिघोरा। कह्योकुलिशसमवचनकठोरा॥५॥दुर्विनीतहैअधमकुमारा।कुलनाशनमतिमंदगँवारा॥

दोहा-मेरोअरुनिजगुरुको, कियोननेकुनिदेश । तातेतोहिपठाइहौं, अवयमराजनिवेश ॥ ६ ॥

जेहिकोपतकांपतत्रैलोका । उपजतअवशिईशउरशोका॥असमैंताकोकहानमान्यो।काकेवलतेयहवुधिठान्यो ॥७॥

सुनिपितुवचनहरषिप्रहलादा । वोलतभयोननेकुविषादा ॥

प्रह्लाद उवाच।

जिनकेवलतेमैंअसभाखौं । मनमेंकछुशंकानहिंराखौं ॥ तेतुम्हरोऔरहूवलिनके । अहैपरमवलसुरअवलिनके ॥

लघुवड़थावरजंगममाहीं । अंतरहितसोरहतसदाहीं ॥ शिवविरंचिआदिकहुसुरेशा।तिनहीकेवशहैअसुरेशा ॥८॥

सोईईश्वरसोइकालमुरारी । सोईवलइंद्रिनसंचारी ॥

दोहा-त्रिगुणनाथयहविश्वको, निजशक्तिनतेसोइ ॥ सिरजतपालतसंहरत, पिताऔरनहिंकोइ ॥ ९ ॥

पितातजहुयहअसुरस्वभाऊ । राखहुसवजगमहँसमभाऊ ॥ जोसवतेराखिहौसमताई । तौतुम्हाररिपुकोउनदेखाई॥

विननिजमनसारिपूनहिंआन । सोइकरावतपापनिनाना॥सबकहमानवपितासमाना।यहीपरमपूजनभगवाना ॥१०॥
श्रवणनैनरसनाअरुघ्राना । अरुउपस्थचंचलमनजाना । येपटचोररहैंतनमाहीं । सदाचोरावहिंचित्तहिकाहीं ॥
पिताविनाजीतेपटचोरा । मानहुजीतिलियोचहुँओरा ॥ सोहैयहअज्ञानतुम्हारा । असमहँनहिंछूटीसंसारा ॥
दोहा--जेअपनेवशमनकिये, तिन्हैंकहाँहैमोह ॥ तेईसमदरशीसुमति, राखतकतहुँनद्रोह ॥ ११ ॥
सुनियहवचनतासुअसुरेशा।भयोकुपितजनुप्रलैमहेशा॥दशनअधररदननवहुवारा।कनककशिपुअसवचनउचारा ॥

हिरण्यकशिपुरुवाच ।

भयेकालवशरेशठबालक । मैंजान्योसतितैंकुलबालक । मेरेसन्मुखबारहिंबारा । अतिअनुचिततैंवचनउचारा ॥
मेरेरिपुकीकरैबड़ाई । मोरभीतितितोहिनेकुनआई ॥ जाकोमरणकालनियराना । ताकोभूलिजातसबज्ञाना ॥
भूलिजातसबकुलकीरीती।भापतसकलसदाविपरीती१२मोहितजिदूसरईश्वरजान्यो।तबतेकालविवशतोहिंमान्यो॥
दोहा-बारबारजाकोकहत, मोप्रभुअमितप्रभाव । सोतेरप्रभुहैंकहां, मोकोवेगिबताव ॥
तबप्रहलादसभामधिबोले । अपनेउरकेआशयखोले ॥

श्रीप्रह्लाद उवाच ।

पितामोरप्रभुहैसबठामा । जाकेहैंअनंतगुणनामा ॥ मोमेंतोमेंसभासदनमें । जलमेंथलमेंशैलसदनमें ॥
पितानहैऐसोकहुँठोरा । जहाँरहतनहिंनंदकिशोरा ॥ मोकोदेखिपरतसबमाहीं । तोकोदेखिपरतधौंनाहीं ॥
हिरणकशिपुसुनिकैसुतबैना । कालसमानलालकरिनैना ॥ ऐंठेउदंडउभैभुजदंडा । कैकरमेंकरवालप्रचंडा ॥
मसकियुगलजानुनतेधरनी । करिकैभृकुटिबंकभयकरनी ॥
दोहा--हाथफेरिनिजमूछपर, कोपितकाँपतअंग । हिरणकशिपबोल्योवचन, भरिअतिउरहिउमंग ॥

हिरण्यकशिपुरुवाच ।

छंदतो०--बहुबारकुमारउचारकियो।मनमेंनहिंनेकविचारिलियो॥अपनेप्रभुकोसबठौरकहै।ममशासननेकुनचित्तचहै
शठतैंयहजानतनेकुनहीं । तिहुँलोकनदूसरईशकहीं॥ बहुद्यौसनतोहिंबचाइदियो । यहितेतैंअतिमनगर्वकियो ॥
शठमानहिंनाहिंसिखापनहै । मनकीकरतेहठआपनहै ॥ जेहिमाधवकोप्रभुजानततैं।सबठौरहिव्यापकमानततैं॥
डरिसोमोहिछोड़िविकुंठदियो।मिलतोअबलोंनहिंखोजकियो॥भजिधौंकहदुष्टदुरानअहै।जेहिकोशठतैंभगवानकहै
मिलतोकहुँकैसहुँमोहिहरी । बचतोनहिंमोसनएकघरी॥छलकैममभ्रातहिमारिलयो।शठतैंतेहिकोहठिदासभयो ॥
तोहिंदेखतबाढ़तदाहहिये । नहिंहैभलतोहिंबचायदिये॥कहतोजेहिंव्यापकविश्वभरे । मनमेंअतिजासुभरोसधरे॥
अबजोसतिवातुवरक्षकरै।कसखम्भहिमेंनहिंदेखिपरे १३ यदिखंभहितेवहनाप्रगट्यो।मनतौखलतोरवृथाभटक्यो॥
यहिमेंमतितोरलगीसिगरी । प्रगटेबिनजातसबैबिगरी ॥ अपनेप्रभुकोकसटेरतना । तोहिमारतमोंकसहेरतना ॥
दोहा--सुनिकठोरपितुकेवचन, पाइपरमअहलाद । सभामध्यबोलतभयो, बिहँसिमंदप्रहलाद ॥

श्रीप्रह्लाद उवाच ।

सवैया--पितुबावरोतूकछुजानेनहींप्रभुमेरोसबैथलमेंविचरै । अवनीमेंअकाशमेंशैलहुसिंधुमेंमोमहँतोमहँतेजभरै ॥
रघुराजबड़ोकरुणाकरसोनिजभक्तनकोप्रणपूरोकरै । यहखंभमेंमोहिंतोदेखिपरैतोहिंदेखिपरैधौंनदेखिपरै ॥
दोहा--सुनतवचनप्रहलादके, कनककशिपबलवानु । बोलतभोकोपितमनहुँ, मूरतिवंतकृशानु ॥

हिरण्यकशिपुरुवाच ।

छंद भुजंगप्रयात--अरेमूढयातोभलीबातबोले । सबैतोरपाखंडहौंदेतखोले ॥
जोपैखम्भतेनाकढ्योतोरईशा । तोमैंकाटिहौंलेगतेतोरशीशा ॥
कढ्योखंभतेजोइहाँतोरस्वामी । दोऊसंगह्वैहोयमैंलोकगामी ॥

इहाँआपनेईशकोंतेबूलावे । सबेआपनोजोरमोकोंदेखावे ॥ १४ ॥
महेशौगणेशौदिनेशौसुरेशौ । सकेंताहिनाराखिशेशौप्रजेशौ ॥
चहेजोबचायोमहाकालआजे । तहूँताहिकोंमैंकरोंगोपराजे ॥
अबेलौंनतूमोंहिजान्योकुमारा । कियेभूलफूलेफिरैतेंगवाँरा ॥
सुनोरेसभाकेसबेवीरप्यारे । कहेदेतहौंआजुमैंयोंपुकारे ॥
सुतैजानियाकोअबेलौंबचायो । बड़ोखेदयाकेलियेमोंहिआयो ॥
नदीजोकोईआजुतेदापमेरो । परयोबालयौंकालकेहालफेरो ॥
महामाषियौंभापिसिंहासनैते । उठ्योदैत्यकोनाथवीरासनैते ॥
करक्केकरीकौंचकीत्योंतरक्के । लखेदैत्यकोवीरसारेसरक्के ॥
तहाँवीरलेहाथमेंखड्गभारी । महाजोरसोंशोरकेभीतिकारी ॥
द्रुतैदोरिकैखम्भमेंमुष्टिमारी । हनैशैलमेंवज्रज्यौंवज्रधारी ॥
डग्योभूधरासाधराबारबारा । तजैहैकरारामहापारबारा ॥
छंदनाराच-विकुष्टदुष्टजोरजुष्टमुष्टखंभमेंहन्यों । अतीवगर्वपुष्टकोपतुष्टचित्तनागन्यो ॥ १५ ॥
तहाँअखंडअंडखंडसोविखंडतैभयो । प्रचंडशोरदैत्यदंडखंभदंडतेठन्यो ॥
धराधराधरौअधारछोडिकैठरक्किगे । सुमेरशृंगतुंगहूतुरंतहीतरक्किगे ॥
विरंचिसंचिबैठिचौकिचौकिकैसरक्किगे । सगौरिवैगिरीशहूगिरीशतेखरक्किगे ॥
प्रचंडमारतंडकोउदंडतेजठंडभो । गँभीरनीरथंभसातसिंधुकोअखंडभो ॥
फणीशकानफूठिगेफणाइकट्ठजूटिगे । दिशानदिग्गजानकोदिशानशानछूटिगे ॥
सुरेशशंकधारिबारबारहीविचारही । कहाँभयोमहानवज्रपातएकबारही ॥
विनाशमेंअबेकहांसमस्तकोसँहारभो । सुयोचितैसम्हारकोबिसारिवेअधारभो ॥
किधौंप्रलैपयोधएकबारहीगराजही । किधौंसबैसुपौनजोरशोरकैविराजही ॥
करैविचारऐसहीननेकठीकपावही । सबैगऊद्विजानदेवतानिस्वस्तिगावहीं ॥
सुनेसुखंभतेनवैमहाकठोरसोरहे । सुवीरधीरमेंअधीरताकिचारिओरहे ॥
केतानिकर्णफूटिगेकेतानिशस्त्रछूटिगे । महानआसमानतारचंद्रभानजूटिगे ॥
दिशानकेमुखानिमेंअमानशोरजातभो । त्रिलोकमेंतुरंतहीअनंतगर्भपातभो ॥
सनंकविश्वमेंभरीसबैभटेसनंकिभै । अशंकतेसशंकसोजनंककोअनंकिभै ॥
मकानदानवानकेगिरेधराधराकदे । सभाफटीसुवर्णकीबड़ीबनीकिराकदे ॥ १६ ॥
निशम्यदैत्यहूंकढीविश्वंभराभराकदे । उठ्योसँभारिकोपकेप्रवीरसोझराकदे ।
दंडक-आशुतेहिठोरवरजोरअतिघोरबलचोरसुनिरोरदातवअधीशा ॥
चितैचहुँओरकछुमनहिभोभोरजेहिजोरसोसोरभोसोनदीशा ॥
चकृतचितथोरनहिंचौंकिचितनलग्योकहायहभयोकारच्योईसा ॥
देखिनहिंपरतकछुश्रवणमहँरवभरतडरतदानवसकलबीसबीसा ॥ १७ ॥
गुनतअसहिरण्यकश्यपहिकेसभामधिकरकिकैफाटिगोखंभभारी ॥
कढीविकरालतहँकालसीकालकीज्वालकीमालअतिभीतिकारी ॥
जरलतहँअसुरबहुधीरउरनहिंधरतभरतकरशोकसुधिबुधिबिसरी ॥
करतनाहिंबनतकछुभजतयकयकदुरतगिरतपुनिपरतआरतपुकारी ॥

जरतकहुँपागकहुँफटकहुँकंचुकौरंचकौवंचकौबचतनाहीं ॥
भमरिभागतभ्रमतहहरिहारततुरतदरिदारतदुरतदीनकाहीं ॥
महाभयभीतिलखिरीतिततजिनीतितजिभयेविपरीतादितिसुवनआहीं ।
झटेंपटझपटिअतिविकलपिललपटिभटअटपटीलपटलावततहाहीं ॥
कटकवटघटडटीतेहिवटीसटपटीनटीसमनटतशिखिसभामाहीं ॥
सत्यनिजभृत्यप्रहलादकेवचनहितताहिहठिवधनहितरचतलीला ।
माधवैमासशितचतुर्दशिवारशनिसमैगोधूरिहरिदयाशीला ॥ १८॥
खम्भतेप्रगटिद्रुतझपटिअसुरनदपटिरटिरपटिबहुकपटिह्वैनाहिढीला ॥
दानवैसिंहसनमुख्यनरसिंहगोसिंहज्यौंजातवनओरपीला ॥
भृकुटिअतिवंकमनुमीचुकोअंकदृगततहेमाभमनुकालकाला ।
शीशकीसटामनुकरतखलदलकटाउड़हिजेहिजोरबाड़िघटाजाला ॥
बृहदविस्तारयुतमहाविकरारमुखकरतसंहारमनुजगतहाला ।
पविहुतेपीनपरपैनपरचंडअतिदुष्टद्रुतअंतकरदंतमाला ॥
भरतचकचौंधचंचलाचंचलासीचलतचहुँओरअधरानिमाहीं ।
कालकरवालसीभीषणीतीषणीलालरसनालसातिवदनपाहीं ॥
मेरुकेतुंगयुगशृंगसेश्रवणदोउक्षणहिक्षणकोपतेकँपतजाहीं ।
सुंदरैमंदरैकंदरैसरिसजगनासिकारंध्रअतिशैसोहाहीं ॥
परमविकरालपातालमुखसरिसमुखहरतसुखशठनिदुखद्रुताहिदाता ॥
नकततनमनहुसरवृंदकेआयतनग्रीवअतिछोटअतिमोटगाता ॥
वक्षवरविशदमनुवज्रकेपाट्युगखीनकटिमुद्रिकावपुविख्याता ।
सोमकरसरिसतहँतोमतनरोमहैजोमसोंयुक्तसुखमुच्छजाता ॥
परमप्रचंडवरिबंडभुजदंडबहुदैत्यद्रुतखंडकरचंडभासी ।
करजकुलिकठिनकुटिलानकारेजकेनेजसेरेजकरतेजरासी ॥
पुच्छअतिसुच्छलगिकुच्छअरितुच्छकररुच्छनाहिंगुच्छछविकीप्रकासी ।
दीर्घदुर्धरध्रुवैदीनउद्धरसदाक्रुद्धातिरशुद्धभोयुद्धआसी ॥

दोहा-निकस्योनरहरिखम्भते,कोटिनभानुप्रकाश॥देखिपरचोदरबारमधि,करतशत्रुदलनाश॥१९-२०-२१-२२॥

छंदतोमर--तहँहिरण्यकश्यपवीर । लखिनरहरीधरिधीर ॥ सोचनलग्योमनमाहिं । कछुठीकपरतोनाहिं ॥
अधऊर्धसिंहस्वरूप । अधआधनरकोरूप ॥ भारीभयंकरभूरि । दियतेजसबथलपूरि ॥
असकहुँनकानसुनान । अबलौंनकहुँदरशान ॥ धौंरच्योविधिममनीच । प्रगटचोजोअतिहिंनगीच ॥
धौंकृष्णमायप्रवीन । यहरूपनिजकरिलीन॥मोसोंकरनहितयुद्ध । आयोदरतरदक्रुद्ध ॥
ह्वैहैजोसत्यमुकुंद । तौचलीनहिंकछुफंद ॥ यहकहाकरिहैमोर । अबलौंदुरचोडरिचोर ॥
मोहिंब्रह्मकोवरदान । मोसरिसकोबलवान ॥ ममम्रीचुहैकहुँनाहिं । जीत्योभुवनत्रैकाहिं ॥
असगुनिसुपुनिधरिधीर । निजभटनसोंकहवीर ॥ निजकुलहिसुधिबिसराइ । कतजाहुसकलपराइ ॥
नाहिंवीरभागवधर्म । करिबोउचितरणकर्म । नरहरिजोयहभेदीन । प्रहलादमायाकीन ॥

दोहा--यहधोखोजोखोमनहि, रोषेरेरणधीर ॥ रूपअनोखोदेखिकै, भागहुनाहिंसमभीर ॥

छंदतोमर-सुनिकनककश्यपबैन । भटभीतितजिभरिचैन ॥ सबफिरेएकहिंबार । गहिहाथमेंहथियार ॥
कोइपरिघपरशुकृपान । कोउनिशितबानकमान ॥ कोउमल्लभल्लतवल्ल । कोउभिंडपालप्रवल्ल ॥
कोइमुष्टिजुष्टिनजुष्ट । इमिपुष्टदुष्टहुरुष्ट ॥ नरहरीपैयकबार । आयेअसुरविकरार ॥
जिमिदीपगिरहिंपतंग । नहिंजरबजानविअंग ॥ जिमिमशकनैननमाहिं । निजमरनहितघुसिजाहिं ॥
तिमिनरहरीपरआइ । दियअमितअस्त्रचलाइ ॥ नरसिंहकेचहुँओर । कियवैरिदानवशोर ॥
तहँलगतनरहरिश्वास । बहुउड़ेविनहिंप्रयास ॥ कोउकेशअरुझिप्रवीर । मरिगयेपावतपीर ॥
जहँलगतनखनिकठोर । नशिगयेदैत्यकरोर ॥ बहुगयेचरणचपाइ । बहुपिसेदंतनिधाइ ॥
लगिपुच्छकीफटकार । कटिगयेअसुरअपार ॥ बहुगयेदिशनपराइ । बहुरहेअवनिलुकाइ ॥
दोहा-दोरदंडकोदंडधृत, शठप्रचंडवरिबंड ॥ खंडखंडतनखंडभे, लहिनृसिंहभुजदंड ॥
छंदतोमर-निजसुभटनिरखिविनास । तिमिबढ़तनरहरिभास ॥ कोपितभयोअसुरेंद्र । जिमिपददलितभुजगेंद्र ॥
करकरिगदावरजोर । करिघोरशोरअथोर । नरहरीकेढिगआइ । असबैनदियोसुनाइ ॥
कहँरह्योअवलौंचोर । नहिंखोजपायोतोर ॥ जान्योनहींतवदंभ । लुकिरह्योमेरेखंभ ॥
प्रथमहिजोलेतोजानि । करतोउपायनआनि ॥ यहखम्भकाहविदारि । तोहितवहितुरतनिकारि ॥
रखतोमेबंधनबाँधि । यककोठरीमहँधाँधि । पुरजनलखतसबआइ । यहकोतकैचितचाइ ॥
पैअबहुँतैभलकीन । जोदरशमोकोदीन ॥ तोहिंदेखिगुनिअपराध । मोहिंबढतक्रोधअगाध ॥
अबबचबदुस्तरदुष्ट । हैहेमकश्यपरुष्ट ॥ छलकरिहन्योममभ्रात । सोदुखनमोहिसहिजात ॥
सुतनीकअवगुनिलीन । जोतोहिप्रगटकरिदीन ॥ अबकरुकितेकउपाइ । पैहैनअबकढ़िजाइ ॥ २३ ॥
दोहा-असकहिनरहरिहननको, गिरिगुरुगदाउठाय । जातभयोअतिशैनिकट, कोपितदानवराय ॥
छंदतोटक-असुरेशनृसिंहहिसंगभिरयो । जिमिपावकमाँहपतंगगिरयो ॥
लहिकैनरसिंहप्रकाशमहाँ । नहिंदानवनामदिखानतहाँ ॥
जेहितेजनसातमहातमहै । तिनकोयहकेतिकबातअहै ॥
तहँदानववीरबडेबलसों । नरकेहरिकेशिरमेंछलसों ॥
द्रुतमारिगदापुनितर्किगयो । नरसिंहहुताहिबचायलयो ॥
पुनिदौरिगदामुखमाँहहन्यो । असुरेशअतीवअमर्षसन्यो ॥
लगिदंतगदागुरुचूरभई । असुरेशतहाँइकफाँसलई ॥
नरसिंहगरेमहँडारिदियो । प्रभुताकहटूकहिटूककियो ॥
शठकुंतहुएककरालल्यो । यमदंडसमानप्रकाशछयो ॥
करिजोरहन्योहरिकेउरमें । जिमिबालकबाणधराधरमें ॥
ह्वैचूरणधूरणकेकणमें । मिलिगोनहिंदेखिपरयोक्षणमें ॥
करलैसितधारकुठारसबै । चहमारनकोढिगजायजबै ॥
तबहीनरसिंहसराजतभो । करतेछुटिगोअतिलाजतभो ॥
यहिभाँतिअनेकनआयुधको । यकबारपवारिदियोयुधको ॥
नगडेतनमेंसबटूटिगये । कितनौनरकेहरिघूटिगये ॥
लखिकैनिजशस्त्रनव्यर्थसबै । कछुशंकितभोअसुरेशतबै ॥
दोहा-बारबारतेहिबारमें, असुरबडोबलवार । कछुकबारलगिबारलगि, कियविचारदितिबार ॥ २४ ॥
छंदतोटक-नरकेहरिकोबहुशस्त्रहन्यो । यहतोनहिंनेकछुचित्तगन्यो ॥

कुलिसैंसरिसैंगिरिछेदनतें । नहिंभेदकियोअरिभेदनतें ॥
तेहितकरलैधनुसायककों । अवनाशकरौंमृगनायककों ॥
गुनियोंदितिनंदअमर्षतभो । सुरनायकपैशरवर्षतभो ॥
घनज्योंजलधारधराधरमें । तिमिमूँदिलियोहरिकोशरमें ॥
महिव्योमदिशाइषुछायगये । दिननाथतहाँनदेखातभये ॥
नभचारिनकीगतिरुद्धभई । सबदेवनकेउरभीतिछई ॥
शरजालहिफारिनृसिंहकढ़े । पतिदानवओरहिआशुबढ़े ॥
जरिगेमुखज्वालहिंसायकहैं । दिविदेखिपरेदिननायकहैं ॥
हनिबाणनकोपुनिमूँदिलियो । पुनिकैसुरनायकछारकियो ॥
यहिभाँतिदुरातदेखातहरी । जिमिसावनमेंघनधौंसकरी ॥
शठपावकअस्त्रतज्योविकटै । नहिंज्वालगईहरिकेनिकटै ॥
यहिभाँतिअनेकनशस्त्रतज्यौ । करिपानहरीअतिजोरतज्यौ ॥
असुरेंद्रतहाँअतिकोपितह्वै । नरसिंहहिमारनचोपितह्वै ॥
विधिअस्त्रअखंडप्रचंडलियो । प्रभुकोतुरतैतकिछोडिदियो ॥
हरिकेढिगजातहिशांतभयो । असुरेशतहांलखिश्रांतभयो ॥

दोहा-पुनिकोपितह्वैअसुरपति, गुनिनृसिंहपरचंड ॥ जीतनहितवरिखंडतहँ, मायाकियोअखंड ॥ २५ ॥

छंदपद्धरी-जलधारतहाँप्रगटीअपार । हरितेजलहतह्वैगईछार ॥
प्रगटीपुनिपावकज्वालजाल । मनुदहनचहततिहुँपुरविशाल ॥
मिलिगईनाथकेतेजमाहिं । नहिंदेखिपरयोपावकतहाहिं ॥
तहँअसुरकरतभोअंधकार ॥ दुरिगेदिनेशरजनीशतार ॥
पुनिरुधिरवृष्टिकीन्ह्योंअपार । त्वचमांसहाडअरुपीववार ॥
पाषाणवृष्टिभैअतिमहानि । पुनिवृक्षवृष्टिचहुँदिशिदिखानि ॥
धायेकरालततकालव्याल । मुखतजतअग्निकीज्वालमाल ॥
पुनिप्रगटभईयोगिनिजमाति । आभूतभूतआकृतपाँति ॥
तहँशारदूलप्रगटेअनंत । हरिधरनहेतधावतलसंत ॥
पुनिरच्योआपनेअमितरूप । नरसिंहहुकेतिमिदैत्यभूप ॥
यकअसुरहनतनरसिंहएक । असदेखिपरेआहवअनेक ॥
लखिदेवकियेहाहापुकार । नहिंरह्योतनकतनकोसम्हार ॥
लैलैविमानभागेसभीति । गुनिलियोकियोशठअतिअनीति ॥
सबअसुरअनंदितभेअपार । निजहाथहिकोगुनिविजैवार ॥
तेहिवेरिकियोनरहरीकोप । असुरेशवधनकीबढ़ीचोप ॥
इकक्षणहिंमाँहमायाविदारि । प्रगटतप्रकाशराज्योमुरारि ॥

दोहा-जिमिसाधुनउपदेशबहु, परिमूरखकेकान ॥ निष्फलह्वैजातेसबै, आवतनेकुनज्ञान ॥

छंद-कोपितनृसिंहकहपुनिनिहारि।करगदाधारिधायोसुरारि॥हरिकेचहुँओरहिभवनलाग।निजदाउँढुतैदेखतसराग॥
जहँजहँहिरणकश्यपदिखात।तहँतहँनृसिंहअतिचपलजात॥जहँजहँनृसिंहधावतप्रचंड । तहँतहँसुरारिआवतउदंड॥
यहिभाँतिकरतदोउयुद्धघोर।चहुँओरभरतअतिभीमशोर ॥ तहँअसुरवेगिकरिगदाहाथ । चाह्योनृसिंहकेहनमाथ ॥

नरसिंहतहँअतिकोपछाइ।गहिलियोहिरणकश्यपहिधाइ।जिमिगरुडभुजंगहिबिनप्रयासु।गहिलेतआशुकरिभक्षआसु
करिअसुरतहाँअतिछोटरूप। छुटिगयोनाथसोंधर्मभूप ॥ पुनिभीमरूपअसुरेशकीन।द्रुतपुच्छनाथकीपकरिलीन ॥
तबताहिगहनकोफिरेनाथ।तबदूरिकूदिगोगदाहाथ॥प्रभुपानिछुटोलखिअसुरकाहिं।सुरसकलशंकभरिमनहिंमाहिं ॥
हाहापुकारइकबारकीन। आधारछोडिभेशोकभीन॥डरिदैत्यकाहछिपिछननओट। पुनिलखनलगेधरिधीरमोट ॥
नरसिंहकरनतेछुटोजानि। प्रभुकोशठनिरबललियोमानि॥तहँअसुरनाथकरिकैघमंड। धायोप्रचारिकरिरवप्रचंड ॥

दोहा-गदाहन्योहरिशीशमहँ, करिकैजोरअथोर ॥ मारिलियोअसमानिकै, पुनिकीन्ह्योंबहुशोर ॥

छंदरोला-टूकटूककैह्वैगदातेहिंछनछितिमहँछहरी। मानहुनभतेएकबारतारावलिझहरी ॥
तबअसुरेशविचारकियोअपनेमनमाहिं। नरहरिमरतउपायकियेकौनौअबनाहिं ॥
तेहितेलैकरढालकठिनकरवालकराले। काटिलेहुगहिकेशशीशनरहरिकोहालै ॥
असविचारितरवारिढालकरधारिप्रचारि। धायोनरहरिओरघोरकरिशोरसुरारि ॥
तबअखंडबलदोरदंडयुगपरमप्रचंडा। निकसेनखकुलिशोकठोरद्युतिशतमार्तंडा॥
भुजऊरधकरितहँनृसिंहधायोविकराला। हन्योहस्तअसुरेशशीशकरिकोपविशाला ॥
रोकिढालहरिहस्तअसुरकछुदूरिकूदिगो। नरहरिकोवरतेजलगततेहिंतेजमूँदिगो ॥
पुनिनरमृगपतिदौरिकियोतेहितलहिप्रहारा। सोऊगयोबचायरोकिढालैबलवारा ॥
पुनिआकाशमहँआशुअसुरउड़िअतिअनखाई। हनिकृपाणनरसिंहशीशपुनिगयोपराई ॥
तासुसंगनभगेनृसिंहकरिवेगअभंगा। करनलगेरणरँगेउभेआकाशहिजंगा ॥
कहुँधरणीकहुँशैलमध्यकहूंसिंधुनपाहीं। कहुँवनहींउपवनहिकूदिपुनिभवननमाहीं ॥
करतयुद्धअतिक्रुद्धहोयनरहरिसबठोरा। चकितदेवजानतनभेबचितवतचहुँओरा ॥
रह्योनअसकहुँठौरजहांदोउयुद्धनकीन्हें ॥जगतहिरणकशिपनृसिंहमेंसुरगुनिलीन्हें॥
कियेयुद्धनरसिंहदैत्यसुरवर्षहजारा। सुरमुनिकरैंउचारयुद्धअसकहुँननिहारा ॥
पुनिदोउलरतहिलरतआशुअवनीमहँआये। निजपदजोरहिबारबारधरनीदरकाये ॥
होनलगीदिगदाहअवनिहुलूकनिपाता। ग्रस्योराहुशशिरविहिकालविनकेतुदिखाता ॥

दोहा-होतभयेऐसेतहाँ, नभमहिमहँउतपात। मान्योसुरमुनिनरसबै, भोत्रैलोकनिपात ॥ २७ ॥

जानिविनाशैकालशठकेरो।नरहरिनिजमूछनकरफेरो॥ देखिभीतिअतिसुरनसमाजै। कियनृसिंहतबमहागराजै॥
सुनतकठोरशोरअतिनेरे। मूँदिगयेद्दगदानवकेरे ॥ चपलासमतहँचमकिनृसिंहा। गह्योदौरिद्रुतदानवसिंहा ॥२८॥
जिमिभूखोअहिबिनहिंप्रयासा। धरैआखुकहँभक्षणआसा ॥ छूटनहिततहँदानवराई। तड़फडानकियकोटिउपाई॥
पैनछुट्योनरहरिकरतेरे। मान्योअसुरकालतबनेरे ॥ तहँनृसिंहदानवपतिकाहीं। अतिनिशंकधरिअंकहिमाहीं ॥

दोहा-बैठिदेहरीमध्यप्रभु, संध्यासमैविचारि। असुरउदरनिजनखनिते, नरहरिडारचोफारि ॥

जेमिभुजंगकहँगहिभुजगारी।बिनप्रयासडारहिद्रुतफारी॥तहँनरहरिकोरूपविशाला।देखिपरचोमनुकालहुकाला ॥
लालविलोचनपरमभयावन।निरखतहीजियकरतपरावन अतिविशालविकसितवरआनन अहैमोचुगृहयहमनुआनन
रसनातेअधरनिबहुवारा। चाटहिमनुजकरहिसंहारा ॥ परीअसुरशोणिततनबूटी। मानहुँशैलमहँवीरबहूटी ॥
हरिप्रभुआंतनकरमाला।हेरतंचहुँकितनैनविशाला॥सभामध्यनरसिंहविराजा।मनहुमत्तगजदलिमृगराजा॥ ३०-३१-३२-३३॥

दोहा-गडचोनजातनमेंकुलिश, सोतननखनिविदारि। दलिदुष्टनबैठतभये, सिंहासनैमुरारि ॥

मेल्योनयुद्धहेतकोउयोधा।काँपिउठेत्रिभुवनलखिक्रोधा।त्रिभुवनदुखदायककरनासा लखिसुरमुनिअतिपायहुलासा
प्रभुकेदरशनहिततहँआये।भीमरूपलखिनहिंनियराये।।वरषनलगीसुमनसुरनारी।विकसेबदनभयेसुखभारी ॥ ३९ ॥
श्रीनरहरिकेदरशनहेतू। आयेनभमहँनाकनिकेतू ॥ जहाँविमानहजारनभाये। वरअकाशमारगमहँछाये ॥

अतिआनंदभर्‌यदेवहजारा । बारबारनभदेहिंनगारा ॥ तानलेतगंधर्वबहुगावै । नाचिदेवतियमनहिंलोभावै ॥ ३६ ॥

दोहा–तहँब्रह्माशिवशक्रहू, ऋषिविद्याधरसिद्ध । पितरमहोरग–॥३७॥–मनुप्रजा । पतिगंधर्वप्रसिद्ध ॥
किन्नरचारणकिंपुरुष, अरुबैतालअनंत ॥ ३८ ॥ विष्णुपारषदकुमुदवर, नंदसुनंदअनंत ॥
हाथजोरिधरिशीशमें, ऐसबअतिसुखछाइ । जानिचहेनरहरिनिकट, अस्तुतिकरणबनाय ॥
पैनरहरिकेतेजसो, सकेनसुरनियराय । तबदूरिहितेकरतभे, एकटकअस्तुतिगाय ॥ ३९ ॥

ब्रह्मोवाच ।

सवैया–जगजन्मऔपालननाशनहूअपनेगुणसोंकरिलीलकरौ।तुवशक्तिदुरंतअनादिअहौहेअनंतअनन्तहिरूपधरौ॥
प्रभुआपचरित्रविचित्रबड़ेहैपवित्रअमित्रनशोकधरो।गुणआगरसागरहौकरुणातुमकोंहैंनमामिप्रमोदभरौ ॥ ४०॥

रुद्रउवाच ।

दोहा–जगनाशकप्रभुकोपकरि, हन्योअल्पअसुरेश । तासुतकोरक्षणकरौ, तजियेकोपरमेश ॥ ४१ ॥

इंद्र उवाच ।

कवित्त घनाक्षरी–असुरप्रचंडवरिबंडकोविनाशकैकै, यज्ञनकोभागआपहमकोदेवायेहौ ॥
जगतप्रशंसममसंशयकीफँसिसारी, ताहिकोविध्वंसिमनसुखउपजायेहौ ॥
यातोनहिंबहुतजनातरावरेको, नाथमुक्तिहुकोदानतूतोलघुठहरायेहौ ॥
दीननिजदासनकोदारहुदुरितद्रुत, तातेदयासिंधुयहनामप्रभुपायेहौ ॥ ४२ ॥

ऋषय ऊचुः ।

छंदभुजंगप्रयात–रचैविश्वकोजोहियेधारिधाता । जेहींतेतुम्हारोविभौजानिजाता ॥
पठायेहमैंआपहीवेदसोई । महादुष्टसोदैत्ययादीनखोई ॥
धर्‌योनारसिंहैस्वरूपैकृपाला । हन्योदुष्टदैत्यैरह्योजोकराला ॥
दियोहैहमैंफेरिकैवेदचार्‌यो । निजैदासकोआशुहीदुःखटार्‌यो ॥ ४३ ॥

पितर ऊचुः ।

पद्धरी–सुतपितहिदयोजोपिंडदान । सोलियोखाइयहशठमहान ॥
जोदियोतिलांजुलितीर्थमाहिं । यहदैत्यपानकरिलियोताहिं ॥
निजनखनअसुरकोपेटफारि । सोहमहिदियोनिजजनविचारि ॥
जयजयनृसिंहजयदीनबंधु । जयधर्मपालजयदयासिंधु ॥ ४४ ॥

सिद्धा ऊचुः ।

छंदतो०-अणिमादिकजोगनसिद्धसबै।तपकेबलछीनलियोकितबै।अतिगर्वभरोनहिंकाहुडरो।सबलोकनमेंभयभीतिभरो
नखतेतेहिंकाउरफारिहरी।सबलोकनकीअतिभीतिहरी।।तुम्हरेपदकेहमदासअहैं । बलआपसदानिरशंकरहैं ॥४५॥

विद्याधरा ऊचुः ।

वामनछंद–सबयोगविद्याजौन । यहअसुरहरिलियतौन ॥ गरवीपरमबलवान । जोरह्योमूर्खमहान ॥
पशुसरिसताकोनाथ । रणमेंहन्योनिजहाथ ॥ नरहरितुम्हैंपरणाम । दायकसदासुखधाम ॥ ४६ ॥

नागा ऊचुः ।

छंद–बरवै–रतनारिहरिलीन्ह्योंदानवसिंह । तेहिंउरफारिदियोसबजयनरसिंह ॥ ४७ ॥

मनव ऊचुः ।

छंदरोला-हमहैंमनुप्रभुसदारावरेशासनधारी । तिनकोयहदितिनंददियोदुखअतिशैभारी ॥
ताउरकरजनिफारिदर्दहियकीहरिलीनी । कहाकरैप्रभुकहोआपअज्ञासुखभीनी ॥ ४८ ॥

प्रजापतय ऊचुः ।

कुंडलिया-परजापतिहमकहँरच्यो, जगसिरजनकेहेतु । ताकोसिरजननहिंदियो, खेचरदानवकेतु ॥
खेचरदानवकेतुसरिसकीन्ह्योंउतपाता । ताकोनखनिविदारिप्रगटयशकियअवदाता ॥
अवदाताहौतुमहिंमोदकेनहिंआचरजा । सत्वमूर्त्तिअवतारकरहुमंगलसबपरजा ॥ ४९ ॥

गंधर्वा ऊचुः ।

छप्पय-नाचतगावतरहेसवैहमतुवदरबारै । निरखिआपकोलहतरहेआनंदअपारै ॥
तिनहमकोकरिनिजअधीनदानवबलवारो । निजहिनवाइगवाइकियोनिजसजितअखारो ॥
यहिदोषहितेयहनाशभोकुशलकिकुपथहिपगदिये । असकहतसर्वगंधर्वगणप्रभुहिदंडवतबहुकिये ॥ ५० ॥

चारणा ऊचुः ।

छंद-पदारविंदरावरोभवार्णवैनकामनो । तेहीसदाहिध्यावहींपुनीतप्रीतिछामनो ॥
कियोविरोधसाधुतेअतीवदानवेशहै । कियोविनाशताहितेदयालतूरमेशहै ॥ ५१ ॥

यक्षा ऊचुः ।

सोरठा-हमतुमअनुचरयक्ष, तिनकोयहवाहककियो । मुनितनतापप्रत्यक्ष, नाश्योधरिनरहरितनै ॥५२॥

किंपुरुषा ऊचुः ।

चौबोला-हमजोपुरुषआपपरपुरुषैयहकुपुरुषभोतीजो । जातेकियोसाधुसबधिगधिगनिजकर्मनतेछीजो ॥
ताकोमारिकोपकरियतअतिआपुहिबडीनबाता । परमातमापरहिहमपायनप्रभुपौरुषविख्याता ॥

वैतालिका ऊचुः ।

छंदझूलना-देवदरबारमधिगायतुवअमलयशकियेसनलोकशुचिअतिसदाहीं ।
ताहितेपाइसतकारजेहिपारनहिंरहीसंसारकीभीतिनाहीं ॥
हमहियहिरणकश्यपदियोदुसहदुखजीतिसबलोकविनशोकमाहीं ॥
धारिनरसिंहवपुतासुवधआपकियदियोकारिदूरिममव्यथाकाहीं ॥ ५४ ॥

किन्नरा ऊचुः ।

छंदत्रिभंगी-हमदासतिहारेपदरतिधारेकिन्नरसारेसुरवारे । तिनकोखलभारीकोपपसारीभोदुखकारीजयधारे ॥
नरहरिजगभासीताहिविनाशीदियसुखराशीहमकाहीं।यहिभाँतिसदाहींतुवभुजछाहींभैकछुनाहींहमपाहीं ॥५५॥

विष्णुपार्षदा ऊचुः ।

रूपघनाक्षरी-आजहिनिहारेरावरेरूपऐसोनाथकवहुँनदेख्योकहुँअदभुतनिजनैन ।
दीननकेरखवारेसंतनकेअतिप्यारेदयापासवारेदेनवारेविश्वमोदऐन ॥
आयपारषदयहविप्रवरशापहीतेभयोअसुरेशजीत्योलोकनकोलह्योचैन ॥
ताकोवधवोअहैसत्यतापैकृपाकीवोवैरभावनेकहूँतोजानिपरतोहमैन ॥ ५६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा
राजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदांबुनिधौ सप्तमस्कंधे अष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

दोहा–यहिविधिविधिशिवआदिसुर,अस्तुतिकियोअखंड।पैननिकटकोउगमनकिय,लखिप्रभुकोपप्रचंड ॥ १॥
रमानिकटतबसबअसुरारी । जायजोरिकरगिराउचारी ॥ जरतकोपतेलोकदिखाता । ताकोशान्तिजाइकरुमाता ॥
तहँदेवनपैदयामहाई।करिकमलाअतिआशुहिआई॥अतिकरालनिजप्रभुकोआनन ।जोनलख्योदृगसुन्योनकानन ॥
सोकितहूँनसकीढिगजाई । कमलाहूअतिशैभयपाई ॥२॥ तबप्रह्लादहिकह्योविधाता । तुमभागवतमुख्यहौताता ॥
निजपितुपैकोपितप्रभुकाहीं।क्षमाकरावहुयहिक्षणमाहीं ३ सुनिप्रह्लादचतुर्मुखबानी।कहितथास्तुअतिशैसुखमानी॥
दोहा–अतिअभीतनरहरिनिकट, मंदमंदसोजाइ ॥ जोरिपाणिपरनामकिय, तनपुहुमीपसराइ ॥ ४ ॥
निजपदपरोनिरखिनिजदासू । आयेनरहरिकेदृगआँसू ॥ ताहिउठायकृपाअतिकीन्हें।शिरप्रहलादपाणिधरिदीन्हें ॥
जोकरपरसकालभयजाती।बिनप्रयासमुक्तिहुढिगआती ५ नरहरिपाणिहोतसंयोगू।मिट्योसकलदुखजनितवियोगू ॥
ब्रह्मानंदमगनप्रह्लादा । प्रगटच्योपरमप्रेमउनमादा ॥ पुनिधरिधीरजप्रभुपदकंजन । निजउरधरच्योमुनिनमनरंजन ॥
बहतविलोचनआनँदधारा।पुलकावलितनबारहिंबारा ॥ गद्गदगरयकाग्रमनकरिकै।अनमिषचखनसुमुखपगपरिकै ॥
दोहा–करनलगेअस्तुतितहाँ, अतिविचित्रप्रह्लाद ॥ श्रवणकरतकविजनसदा, पूरतअतिअह्लाद ॥ ७ ॥

प्रह्लाद उवाच ।

छंदत्रिभंगी–विधिशिवसुरमानीमुनिसिधिज्ञानीसतगुणसानीजिनमतिहैतिसकैंनगाईतवप्रभुताईपारनपाईतुवगतिहै ॥
तौदानवजातीमैंकेहिभातीतोगुणपातीवरणिसकौं । मतिअतिलघुमोरीतापरभोरीअस्तुतितोरीकरतजकौं ॥ ८ ॥
कुलरूपसोहावनवेदहुगावनतेजहुछावनसबजगमें । बलपौरुषभारीबुद्धिअपारीजपश्रमकारीअँगअँगमें ॥
कौनेहुँजगमाहींहरिइनपाहींतोपतनाहींमैंमानो । यकभक्तिहिकीनेकरुणाभीनेमिलहिप्रवीनेप्रभुजानो ॥ ९ ॥
जैश्वपचहुपापीअमितसुरापीतुवजापीहैश्रेष्ठमहा । चहुँवेदविभागीअरुबहुजागीतुवपदत्यागीविप्रकहा ॥
जेहिआपअधारैसोपरिवारैभवनिधितारैआपतरै । जोतुवपदविमुखैसोशठसदुखैरहतनससुखैनरकपरै ॥ १० ॥
प्रभुअनुपमआभाअंबुजनाभापूरणलाभासत्यहरे । जनपूजनपाईकरुणाछाईदेहुमहाईभूतिखरे ॥
जोतुमहिचढ़ावतसोसबपावतभक्तकहावतप्रेमभरे । जिमिदरपनलीन्हेंचंदनदीन्हेंप्रतिमुखचीन्हेंशोभधरे ॥ ११ ॥
तातेगिरिधारीतुवगुणभारीहमहुँउचारीपापदरै । जेहिपापिहुगावतशुभगतिपावतपुनिनहिंआवतशोकधरै ॥ १२॥
तुवभयभरिभारीअजत्रिपुरारीकारजकारीहमहिसमै । प्रभुबहुअवताराधारिविहाराकरहुअपाराजगहितमै ॥ १३॥
यहअसुरहिमारीतापनिवारीदियसुखभारीसुरनरको । यहरूपहिध्यावतरिपुनसतावतजनसुखपावतपुरपरको ॥
अबदयाअगारोकोपनिवारोसुरननिहारोभीतिभरे । वृश्चिकअहिमारेसाधुअपारेहोतसुखारेनहिंनिदरे ॥ १४ ॥
मुखपरमकरालानैनविशालाप्रगटतज्वालारविसमहै । रसनाभयछावनिभृकुटिभयावनिदाहबढ़ावनिभययमहै ॥
शोणितयुतबालाआँतनमालाकरनविशालानखचोखे । सुनिनादमहानादिग्गजनानाकियेपयानालयधोखे ॥ १५॥
असरूपतिहारोआशुनिहारोमननहमारोकछुडरपै । पैलखिसंसाराअतिहिअपाराभोभयभाराजिमिसरपै ॥
मैंबँध्योकर्मतेहीनधर्मतेभरोभर्मतेअतिदीना । अबखबरिहमारीकरहुमुरारीभूलिविसारीलखिहीना ॥ १६ ॥
अप्रियप्रियलोगूयोगवियोगूशोकहिभोगूनित्यकरौं । संसारदमारीतरहुँदुखारीकिमिदुखहारीधीरधरौं ॥
बहुकियेउपाईअतिअधिकाईभ्रमहुसदाईजगजाले । तातेकरिदायानरहरिरायाकहौउपायामोहिहाले ॥ १७ ॥
तुवकरिसेवकाईविधिशिवगाईकथासुहाईश्रुतिधरिहौं । करिसज्जनसंगाअतिहिअभंगासंसृतिभंगाभैंकरिहौं ॥ १८॥
नकरैरखवारीपितुमहतारीजाहिमुरारीनहिंरखते । नहिंऔषधलागेबचतनभागेसबजनत्यागेतुमभखते ॥ १९ ॥
प्रभुतुमजगकरतातुमजगभरतातुमजगहरताजगस्वामी । तुमजगतअधाराज्ञानअपाराश्रुतिसुखसाराउरजामी२०॥
तुवप्रेरितमायामनउपजायाजगहिबनायासोमनहै । ऐसेसंसारेपरमअपारेतुमविनतारेकोजनहै ॥ २१ ॥
निजतेजहितेरेमायाकेरेगुणनघनेरेतुमजीते । जियमायाकालौनिजवशपालौदुष्टनघालौनहिंभीते ॥

मैंहोहुँविहालायहजगजालाहरहुदयालायहदुखको । मैंहोंतुवदासारमानिवासापुरहुआशाकरिसुखको ॥ २२ ॥
जेहिसुरसुखकाहींजनजगमाहींकरतसदाहींवहुनेनू । तेअमरहमारेपितुसोंहारेकुटिलनिहारेचलसेनू ॥
तेहिपितुवलवानेतुमभगवानेनखनिकृपानेहतिडारयो।नहिंपरयोप्रयासाकरतहिनाशावड़ातमासामेंन्यारयो ॥२३॥
जातेगिरिधारीदिविसुखभारीतुच्छविचारीनहिंचाहौं । निजदासनसंगादहुअभंगातुवरतिगंगाअवगाहौं ॥ २४ ॥
यहविपयअनंदाहैदुखद्वंदातेहिमतिमंदावहुश्रमकै । रुजवरयहजनहितचाहतसोनितपूरणनिजाचितवहुभ्रमकै ॥
पैतऊँनपामैंनिजमनकामैंतदपिघटामैंनहिंमनहै । बुधहुनयहिभाँतीवहुदिनरातीवीततजातीभरितनहै ॥ २५ ॥
कहँमैंअतिपापीसंततत्तापीकुगुणकलापीमुदमाती । कहँप्रभुतवदायानाशकमायाप्रदभुजछायादीनतती ॥ २६ ॥
तवसरिसविशालाकौनकृपालाकरनउतालाअहलादा । विधिशिवहुनपायोरमहुनछायोसोमोहिंआयोपरसादा ॥
प्रभुहौसमदरशीगतिसुरतरुसीजनसुखवरसीजगदीसा । जेइजसतुवध्यावैतेरतिपावैयहश्रुतिगावैविसवीसा ॥ २७ ॥
यहुकूपसंसाराअतिअँधियारातातहिहमारायजनभयो । तहँविपैभुजंगादस्यौसुअंगाकुमतिनसंगाठानिलयो ॥
पठयोमुनिनाथाजानिअनाथाकरनसनाथामाहिनाथा । तातेअबऐसेअनुपमतैसेतजिहौंकैसेसतसाथा ॥ २८ ॥
पितुनाशमहानाममतनत्रानासोअनुमानोमैंध्याई । नारदकीभाखीतुवसतिराखीजबपितुमाखीमुखगाई ॥ २९ ॥
जगआदिहुअंतामधिश्रीकंतातुमहिलसंतासबठोरा । यहजगविस्तारीवसहुमुरारीवहुतनधारीजनभोरा ॥ ३० ॥
जगतुमलक्ष्मीसेभिन्नहिदीसेजियकहँईशेकुमतिकहै । तेहितेजोजावैअरुलैपावैअरुसुखआवैसोइसुअहै ॥ ३१ ॥
गहितुरीदशाकोतजिमरपाकोविनचेष्टाकोसहितकलै।जगनिजमहलैकरिसोवहुसुखभरिवहुकालहिभरिप्रलैजलै ३२
जबनिद्रातजेऊइच्छाकरेऊअंबुजभयऊनाभितवै । वटबीजसमानाजगतमहानानहिंप्रगटानारूपतवै ॥ ३३ ॥
विधिप्रथमहिजायोकछुनदेखायोवाहेरध्यायोतुमनमिलै।तबअतिभ्रमिआयोतपमनलायोतुमकहँपायोहियअखिलै ॥
शिरमुखकरनासाहगश्रुतिभासासहसविकासारमनीया । आयुधआभरनावहुसुखभरनाअनुपमवरनाकमनीया ॥
तुममेंसंसारालखिकरतारामोदअपारालहतभयो । तवदोउकरजोरीबहुतनिहोरीविनैअथोरीकियोचयो ॥३४–३६॥
मधुकैटभभारीहयवपुधारीतुम्हींमुरारीकृपाकियो । मूरतिसतप्यारीवेदउधारीअतिसुखकारीविधिहिदियो ॥ ३७ ॥
प्रभुइमिबहुरूपाधारिअनूपाहानिशठभूपाजगपालै । तवत्रययुगनामाहैप्रदकामानहिंवपुवामाकलिकालै ॥ ३८ ॥
अतिपापहिपूरोकामहिकूरोभैदुखचूरोमनमेरो । मैंसुनैनपाऊंतुमयशनाऊंकेहिविधिध्याऊंपदतेरो ॥ ३९ ॥
रसनानिजओराहगनिजओराश्रुतिनिजओराऐंचतहै । उदरहुनिजओराकरनिजओरापदनिजओराखैंचतहै ॥
जिमिनिजपतिकाहींसवतिसदाहींनिजानिजपाहींकरनचहै । इंद्रीतिमिमेरीविथावनेरीकरहिंनदेरीरतिनिबहै ॥ ४० ॥
इमिभववैतरनीजननहिमरनीभलभयतरनीदुखदाई । तामेंवशकर्मापरेअशर्माजनविनधर्माभ्रमछाई ॥
बूडततिननरहंरिउरकरुणाभरिकरियेधरहरिद्रुतधाई । लीजेअपनाईपारलगाईआनउपाईनहिंभाई ॥ ४१ ॥
जगतारतमाहींहैश्रमनाहींप्रभुतुमकाहींजगहेतू । तुवजनतौपारेपैजलचारेतिनकहँतारेयशसेतू ॥ ४२ ॥
छंदचौपैया–यहभोवैतरनीजनदुखकरनीमैंनहिंताहिडाऊं । परमोदछावनीनित्यपावनीकथारावरीगाऊं ॥
पैजेविमुखीहैंदुसहदुखीहैंइंद्रीसुखानिजकारी । तेकिमितरिजैहैंतुमकहँपैहैंशोचयहीउरभारी ॥ ४३ ॥
उपदेशहिदाताजेमुनिख्याताजेनाहिंपरउपकारी । निजमुक्तिहिआशाकरिवनवासातपैसदातपभारी ॥
इनदीननसाथामैंतजिनाथाचहौंनतूपुरजाना । नहिंपरतानिहारीइनहिउधारीतुमबिनकोभगवाना ॥ ४४ ॥
सुखज्योंसँगनारीमहाविकारीहोतअंतदुखहैकाजू । प्रथमहिसुखनेतीपुनिदुखदेतीखजुआयेजिमिखाजू ॥
यद्यपिशठकरहीतोषनभरहींगवनहिंनरकगँभीरा।मनसिजकेबानाकठिनमहानासहतेकोउमतिधीरा ॥४५॥
व्रततपजपसँयमावेदहुनियमामौनसमाधिइकंता । धनहितभेदंडीतेपाखंडीविचरहिंजगतअनंता ॥
विनइंद्रीजीतेतुवपदप्रीतेसफलनएकौहोते । येसकलअभागीलोभीरागीजागतहूंमहँसोते ॥ ४६ ॥
जगकारजकारणकियेविचारनतुववपुअसश्रुतिगावै । वहिप्राकृतरूपानाथअनूपापूरणतुमसबठावै ॥

करियोगउपाईमुनिसमुदाईदोउमहँतुमहींदेखै। जिमिदारुहिमाहींशिखीसदाहींमंथनकरिशिखिपैखै ॥४७॥
नभअनलसमीराधरनीनीगाइंद्रीमनअरुप्राना। गुणविगुणहुजेतेमनवचनेतेसबमेंतुमभगवाना ॥ ४८ ॥
सुरनरमुनिजेतेविनशाहितेतेजनमहिपुनिजगमाहीं। विधिआदिसुरेशाशेषमहेशातुमकोजानतनाहीं ॥
यहगुनिमनसंतानिठिक्कैतातजहितुरतसंसारे। करिभक्तिहिरीतीतुवपदप्रीतीतुवपुरआशुसिधारै ॥
यहसरलउपाईअतिसुखदाईकोहुकेमननहिंआवे। तातेजगजीवालहिदुखसीवामंगलकतहुँनपावै ॥ ४९ ॥
प्रभुतुवपदवंदनसबदुखद्वंदनअस्तुतितुवसुखदाई। पूजनहुतिहारोअतिअवहारोपदसुधिप्रदशुचिताई ॥
तवकथासुहावनिप्रीतिबढ़ावनिकलिमलमपकीहरनी। भवपारावाराअतिहिअपाराताकीतारनतरनी ॥
दोहा—यषटविधिसेवनविना, कैसहुभक्तिनहोइ। तातेकीजेमोहिंनिज, दासदुरितसबधोइ ॥ ५० ॥

नारद उवाच।

भक्तिसहितप्रहलादजब, यहिविधिअस्तुतिकीन। तबनरहरितजिकोपको, बोलेप्रीतिअधीन ॥ ५१ ॥

श्रीभगवानुवाच।

मंगलहोइतोरप्रहलादा। तुहींभक्तिधारकमरजादा ॥ तोपैमैंप्रसन्नयहजानै। मनअभिलषितमाँगुवरदानै ॥
अहौमनोरथपूरणवारो। यहमानैअसुरेशकुमारो ॥ ५२ ॥ करतनजोशठभक्तिहमारी। तेहिदुर्लभममदर्शनभारी ॥
मेरोदरशपाइजगमाहीं। लहतकलेशफेरिकहुँनाहीं ॥ ५३ ॥ तातेमोक्षहेतुमतिधीरा। मोहिप्रसन्नकरतेसहिपीरा ॥
हमहैंसबमंगलकेदाता। सज्जनहोहिंमोरगतिज्ञाता ॥ इमहैंसदासाधुआधीना। सदासाधुममपदरतिलीना ॥ ५४ ॥

श्रीनारद उवाच।

दोहा—यहिविधिवरवरदेनकहि, बहुतलोभायोनाथ। भक्तिछोड़िप्रहलादकछु, चह्योनजोरेहाथ ॥ ५५ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

दोहा—भक्तिविघनसबकामना, गुनिप्रहलादसचाइ। नरहरिसोकरजोरिकै, कह्योमंदमुसक्याइ ॥ १ ॥

श्रीप्रह्लाद उवाच।

सकलकामनाछोड़नहेतू। तुवपदपकऱ्योकृपानिकेतू ॥२॥ सोईकामनाहितयदुराई। मोकोअबनहिंलेहुलोभाई ॥
पैजान्योअसमनहिंविचारी। लेहुपरीक्षामोरिमुरारी ॥३॥ कहिहौअसउरतैप्रभुनाहीं।भरीदयातुम्हरेहियमाहीं ॥४॥
जेचाकरठाकुरपहजाई। माँगतहैबहुविनयसुनाई ॥ सोठाकुरकोचाकरनाहीं। साँचोबनियाहैजगमाहीं ॥
जोप्रभुबहुसेवाकरवाई। चाकरकोधनदेतनभाई ॥ सोइठाकुरहैनामहिकेरो। लोभीसतसारथीवनेरो ॥ ४ ॥ ५ ॥
दोहा—तुमअकाममनाथहौ, हमअकामतुवदास ॥ लोभीचाकरस्वामिसम, हमतुमनाहिंयुतआस ॥ ६ ॥
यहीदेहुवरदानउदारे। होइनहियकामनाहमारे ॥ ७ ॥ इंद्रीमनमतिधीरजप्राना। सत्यधर्मद्युतितेजमहाना ॥
लाजहुसुधिमानहुअपमाना।माँगतहींयेकरहिंपयाना८कबहुँकामनाजोनहिंकरतो।आपुसरिसप्रभुतेहिसुखभरतो ९॥
श्लोक—"ॐनमो भगवते तुभ्यं पुरुषाय महात्मने। हरयेद्भुतसिंहाय ब्रह्मणे परमात्मने" ॥
असकरिविनयमंत्रयहपढ़िकै।करिप्रणामभोचुपमुदभरिकै१०सुनिप्रहलादवचनभगवाना।कहैवचनतबकृपानिधाना॥

श्रीनृसिंह उवाच।

तुमसमानजेभक्तहमारे। चहैंनउभैलोकसुखभारे ॥ पैमन्वंतरभरिप्रहलादा। करहुराजसंयुतअहलादा ॥

दोहा–कथाहमारीनितसुनहु, करहुमोरनितध्यान । करुसबमेंसमभावना, जानिमोहिंनहिंआन ॥ १२ ॥
भक्तियोगकरिमोंहिंअनुरागो । क्रमक्रमकामकर्मकोत्यागो ॥ करिकैभोगपुण्यअरुपापा।देहुछोड़िप्रगटहुपरतापा॥
तजिशरीरबहुकालहिपाई । निजकीरतितिहुँलोकनछाई॥यहिविधिसबदीननकहँतारी।आवहुमेरेलोकसिधारी १३॥
तुवकृतजोअस्तुतियहगाई । मोहिंतोहिंध्यानकरिहिमनलाई ॥ ताकोहठिछूटीसंसारा । रहीनकोनौहियेखँभारा ॥
यहमैंजननसिखावनहेतू । कह्योंसकलविस्तारसमेतू ॥ तुमतोहौममभक्तप्रधाना । जीवनमुक्तनमाँहमहाना ॥१४॥
दोहा–सुनिनृसिंहकेवचनतहँ, लहिअनुपमअहलाद ॥ जोरिपाणिशिरनायकै, पुनिबोल्योप्रहलाद ॥

श्रीप्रह्लाद उवाच ।

तुमतौहौप्रभुपावननामी । तातेयहवरदीजेस्वामी ॥ ममपितुनिन्दाकियोतिहारी । बारबारअसगिराउचारी ॥ १५॥
कृष्णहिममभ्राताकोमारयो । कृष्णहिबहुदैत्यनसंहारयो ॥ अरुप्रभुतुम्हरेभक्तहिमोही । पीडादियोबहुतह्वैद्रोही ॥
जान्योनहिंकछुआपप्रभाऊ । रह्योसर्वदाक्रूरस्वभाऊ ॥ १६ ॥ सोयहमहापापतेनाथा । करहुपवित्रदेहुसुखगाथा ॥
पितुतोतुवलखतैशुचिभयऊ।पैमैंनिजअज्ञानकहिदयऊ॥१७॥सुनिप्रहलादवचनजगदीशा ।बोलेकृपासिंधुअवनीशा

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा–यकइसपुस्तपवित्रभे, जहाँजनमतैंलीन ॥ तेरोबापसपापहै, यहशंकाकोकीन ॥ १८ ॥
बसैंजहाँजहँभक्तहमारे । तेतेदेशपवित्रअपारे ॥ जनिमानहुअचरजप्रहलादा । यहममभक्तनकीमरयादा ॥ १९ ॥
मोरभक्तममप्रेमहिंपूरे । समदरशीहोतेनहिंकूरे ॥ २० ॥ जोकरिहैतुम्हारिसेवकाई । सोऊमोरिभक्तिहाठिपाई ॥
ममभक्तनमेंअहौप्रधाना । सबउपमालायकमतिमाना॥२१॥निजपितुकोकीजेमृतकर्मा । हैपुत्रनकोयहीसुधर्मा ॥
मेरोअंगपरसिपितुतेरो । तबहींभयोपवित्रघनेरो ॥ जैहैमेरेलोकहिकाहीं । यामेंअबकछुसंशयनाहीं ॥ २२ ॥
दोहा–निजपितुआसनबैठिकै, द्विजकरलहिअभिषेक ॥ मोमैंचित्तलगायकै, भोगहुभोगअनेक ॥ २३ ॥

श्रीनारद उवाच ।

सुनिप्रहलादनाथकीवानी।अपनेकोअतिशयधनिमानी॥क्रियाकर्मकीन्हीपितुकेरी।जेहिविधिशास्त्रनमाँहनिवेरी२४॥
पुनिश्रीनरहरिकेढिगआयो । खड़ोभयोअतिशयसुखछायो॥शांतकोपनरहरिकहँदेखी । चतुराननअतिशैमुदलेखी॥
अस्तुतिकियोनाथढिगआई । पुनिदेवनजतगिरासुनाई ॥ २५ ॥

ब्रह्मोवाच ।

देवदेवत्रिभुवनपतिपावन । अहौसनातनभूतनभावन ॥ हन्योअसुरदेवनसंतापी । भलेकियोहैपरमप्रतापी ॥२६॥
मैंदीन्ह्योंअसवरयहिकाहीं । ममासिरजिततेतबधनाहीं ॥
दोहा–तपबलतेअतिशैबढ्यो, कियोत्रिलोकीराज ॥ सबधरमनकोभ्रष्टकिय, देवनकेदुखकाज ॥ २७ ॥
मेरोवचननभोमृषा, हन्योअसुरबलवान ॥ आपसरिसकोनरहरी, दूजोकृपानिधान ॥
महाभागवतअसुरकुमारा । ताकोरक्षणकियोउदारा ॥ सकेनहमसबकोपमिटाई । सोयहदियोक्षमाकरवाई ॥ २८॥
करतारावरोयहवपुध्याना । रहीनकालौकीभयनाना ॥२९॥ सुनिचतुराननकीबरवानी । बोलेश्रीनरहरिसुखदानी ॥

श्रीनृसिंह उवाच ।

ऐसोवरअसुरननहिंदीजे । शासनकमलासनयहलीजे॥इमिअसुरनदीबोवरदाना।अहैअहिनकहजिमिपयपाना॥३०॥

श्रीनारद उवाच ।

असकहिनृपनरहरिभगवाना।होतभयेतहँअंतरधाना३१पुनिप्रहलादविधिहिंशिरनाये।तैसेशंकरकहँसुखछाये ॥३२॥
दोहा–शुक्रादिकमुनिसहिततहँ, कमलासनसुखभीन ॥ दैत्यदानवनकोअधिप, प्रहलादहिकरिदीन ॥ ३३ ॥
पायदेवअतिशैअहलादा । दैप्रहलादहिआशिरवादा ॥ असुरअधिपतेपूजनपाई । गेनिजनिजगृहहरिगुणगाई॥३४॥

यहिविधिहरिपार्षददोउवीरा। दितिकेसुवनभयेरणधीरा॥ वैरभावतेहरिकहँध्याये। तातेवधहरिहाथहिपाये॥३५॥
विप्रशापतेपुनिहरिदासा। राक्षसभेत्रिभुवनकियत्रासा॥ रावणकुंभकरणअसनामा। तिनकोनाशकियोश्रीरामा॥३६॥
लागतबाणकरतहरिध्याना। रणमहँछोड़िदियोदोउप्राना॥३७॥ भेपुनिदंतवक्रशिशुपाला। महाबलीअतिरूपविशाला

दोहा–राजसूयजबरावरी, भईयुधिष्ठिरराज॥ तबयदुवरतुवदेखतै, मारयोमध्यसमाज॥ ३८॥

वैरभावकरिहरिमनदीन्हें। हरिपुरगमनदोऊभटकीन्हें॥ वैरभावकरिऔरहुभूपा। लहेमुक्तिसारूप्यअनूपा॥
यथाकीटभृंगीभयलेखी। लहततताहिसमरूपविशेखी॥ जिमिअनन्यकरिभक्तिविज्ञानी। लहतकृष्णपदअतिसुखमानी॥
तिमिचैद्यादिकवैरहिकरिकै। गयेकृष्णपुरअतिसुखभरिकै॥ जोमोसोपूछेहुकुरुराई। केहिविधिचेदिपादिगतिपाई ४०॥
सोमैंतुमसोंसकलसुनायो। नरहरिकोचरित्रवरगायो॥ ४१॥ येब्रह्मण्यदेवयदुनाथा। अहैंअनाथनकेसतिनाथा॥

दोहा–कथाकृष्णअवतारकी, जेहिदितिपुत्रननास॥ परमपुण्यमैंसोकह्यो, तुमसोंसहितहुलास॥४२॥ ४३॥

जगउतपतिपालनसंहारा। करहिंकृष्णजेवारहिंवारा॥ तिनकेगुणचरित्रसुखदाता। अरुजेहिविधितिहुँलोकनशाता४४॥
हरिभक्तनकोधर्ममहाना। जातेजानिपरतभगवाना॥ यहतुमकोमैंसकलसुनायो। अपनेहुउरआनँदअतिछायो॥ ४५॥
जोयहनरहरिकथासुहावनि। परमपुण्यप्रदहैअतिपावनि॥ प्रीतिसहितजोसुनैसुनावै। सोपुनिनहिंसंसारहिआवै४६॥
अथवानरहरिकीयहलीला। पाठकरैनितहीशुभशीला॥ ताकीजाहिसकलामिटिभीती। अवशिहोतिश्रीपतिपदप्रीती४७

दोहा–जगमेंतुमहींधन्यहौ, हेसतिपांडुकुमार॥ जहँनिवसहिश्रीकृष्णनित, आवतमुनिहुउदार॥ ४८॥

येप्रभुमातुलपुत्रतुम्हारे। सुहृदसखाप्राणहुतेप्यारे॥ पूजनीयरमणीयहुपावन। हैतुम्हारगुरुकाजकरावन॥
इनकीमहिमाश्रुतिनितगावै। तद्यपिकबहुँपारनहिंपावै॥ परमब्रह्महैमोक्षप्रदाता। जिनकोयशअतिशैअवदाता४९॥
विधिशंकरहुनमहिमाजानैं। भक्तिसहितनितपूजनठानैं॥ सोमोपरप्रसन्नहरिहोवै। उरअज्ञानमोरसबखोवै॥ ५०॥
मयदानवजबत्रिपुरबनायो। तातेशंकरसुयशनशायो॥ तबशंकरकरात्रिपुरनशाई। दियोकृष्णशिवसुयशबढ़ाई॥५१॥

दोहा–सुनिनारदकेबैनतहँ, धर्मभूपसुखपाइ॥ पूछ्योपुनिकरजोरिकै, हरिचरित्रमनलाइ॥

राजोवाच।

मयदानवकतत्रिपुरबनायो। कैसेशिवकोसुयशनशायो॥ कैसेशिवकोयशयदुराई। दियोबढाइकहौमुनिराई॥५२॥
धर्मभूपकीसुनिमुनिवानी। कहनलगेअतिशैसुखमानी॥

नारद उवाच।

जबशंकरसहायसुरपाये। तबअसुरनअतिदुखउपजाये॥ मयदानवढिगदानवजाई। देवनकृतदुखगेसबगाई॥५३॥
मयमायाविनमेंमतिवाना। सुनिकैअसुरनकोदुखकाना॥ रच्योतीनपुरपरमप्रचंडा। जिनकीगतिसिगरेब्रह्मंडा॥
एककनकयकरजतहिकेरो। एकलोहकोवेगवनेरो॥

दोहा–आवतजातनलखिपरत, फैलतपरमप्रकास। युद्धसाजसिगरीभरी, औरहुविविधविलास॥ ५४॥

तिनमेंचढिदानवबलवाना। सुधिकरपूरबवैरमहाना॥ लियेदेवदलकोद्रुतजीती। छायोतीनिलोकमेंभीती॥
युद्धकरतनहिंत्रिपुरदेखाने। तातेतजिसुरलोकपराने॥ ५५॥ शंकरशरणगिरेसुरजाई। त्राहित्राहिअससिगरासुनाई
त्रिपुरबैठिदानवदुखदीन्हें। विनप्रयासहमसेजयलीन्हें॥ कृपाकरहुकैलासविलासी। देहुद्रुतैदेवनदुखनासी॥५६॥
महादेवदेवनदुखदेखी। कह्योवचनकरिदयाविशेखी॥ नेकहुअबनहिंदेवडुराहू। अबहींकरौअवशिदुखदाहू॥

दोहा–धूरजटीधुरधनुषधरि, लैकरबाणकराल। ताकित्रिपुरतहँमंत्रपढ़ि, तज्योतरलततकाल॥ ५७॥

ताशरतेशरकटेहजारन। जिमिरविमंडलकिरणअपारन॥ ज्वलनसमानज्वलितबहुज्वाला। छायलियेशरत्रिपुरविशाला
लगतबाणमरिअसुरकराला। गिरतभयेधरणीततकाला॥ तिनकोमयमायावीवीरा। डारयोसुधाकूपगंभीरा॥५९॥
अमीपरसिसिगरेइकसंगा। उठेअसुरआशुहिवजरंगा॥ चपलासमचमकतसबबाना। धायेकढिकूपहितेनाना॥६०॥
निजसंकल्पशंभुलखिभंगा। भेउदासअनगनगणसंगा॥ तबआयेयदुपतिभगवाना। ऐसोकियोउपायविधाना॥

दोहा-आइभयेगैयातहाँ, वछराब्रह्महिकीन । जायत्रिपुरमहँमध्यदिन, कूपसुधापियलीन ॥ ६२ ॥
गोगुनिरोक्योनाहिंसुरारी।हरिमायामोहितभेभारी६३हरिचरित्रमयदानवजान्यो।ह्वैविशोकशोकिनसोगान्यो ॥६४॥
सुरअरुअसुरकोउअसनाहीं । करैअन्यथाहरिकृतकाहीं॥असुरपराजैगुनिचितलयऊ।मयदानवअसकहिगृहगयऊ॥
पुनिनिजशक्तिनतेभगवाना।रथसारथिधनुशरनिरमाना।अरुतुरंगकवचादिककीन्ह्यों।त्रिपुरदहनहितहरिकहदीन्ह्यों
रथचढ़िकवचपहिरिधनुधारी।संधान्योशंकरकरभारी॥लखिमुहूर्तअभिजिततेहिकाला।तज्योशंभुसोबाणकराला६७
दोहा-दुखदायकसायकलगत, जरिगेत्रिपुरतुरंत । लहिअमंदआनंदसुर, दुंदुभिदियेअनंत ॥ ६८॥
पितरसिद्धदेवर्षिमहाना । जयजयकरिवरषेसुमनाना ॥ सुरसुंदरीनचनतहँलागी । शंकरचरणपरमअनुरागी ॥६९॥
यहिविधिजारित्रिपुरत्रिपुरारी।लहिदेवनतेअस्तुतिभारी॥गेकैलासनाथकैलासा।सुरहुगमनकियनिजनिजवासा ७०॥
यहिविधिकरकैकृपाकृपाला । करहिंचरित्रविचित्रविशाला ॥ श्रवणकरतजेहिश्रवणनमाहीं।पामरहूपावनह्वैजाहीं ॥
धर्मभूपतुमधन्यधन्यहौ । सकलनृपनमहँअग्रगण्यहौ ॥ कृष्णकथासुनियतदिनराती ।मनलगायअतिशैसबभाँती॥
दोहा-जोजोपूछ्योधर्मनृप, सोसोदीन्ह्योंगाय । कहासुननकीलालसा, सोमोहिंदेहुसुनाय ॥ ७१ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा
राजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे दशमस्तरंगः ॥ १० ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-नरहरिअरुप्रह्लादकी, सुनिकैकथानरेश । सभामध्यमुनिसोकियो, पुनिकैप्रश्नसुवेश ॥ १ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

हेमुनीशदायकसबशर्मा । सुननचहौंवर्णाश्रमधर्मा॥जाहिकियेहरिकहँजगजानत।कबहुँगर्वनहिंनिजउरआनत ॥२॥
तुमहौनारदब्रह्मकुमारा । तपबलसबपुत्रनमेंप्यारा ॥ ३ ॥ तुमसमानजोश्रीपतिदासे । शांतसाधुकरुणाकरखासे ॥
तिनकेदरशपाइसुखधामा । पूरणहोतआशुमनकामा ॥ ४ ॥ धर्मभूपकेसुनिअसबैना । नारदकहतभयेभरिचैना ॥

नारद उवाच ।

करिश्रीकृष्णचंद्रपरनामा ।सबलोकनकेमंगलकामा ॥ कहौंसनातनधर्मनरेशा । जोनारायणकियउपदेशा ॥ ५ ॥
दोहा-जोदाक्षायणिसुतभये, जगकेमंगलहेत । बदरीवनमहतपकरत, श्रीपतिकृपानिकेत ॥ ६ ॥
धर्ममूलसोईभगवाना । सर्ववेदमयकृपानिधाना ॥आतमहोतप्रसन्नअपारा । करतधर्मयुतसदाअचारा ॥ ७ ॥
सत्यदयातपशौचतितिक्षा । ब्रह्मचर्यशमदमअरुदक्षा ॥ वेदपढ़बनम्रताअहिंसा ॥ ८ ॥ अरुसंतोषौसाधुप्रशंसा ॥
लौकिककर्मतजबक्रमक्रमहै।निष्फलजानबकामकरमहै॥मौनविचारबआतमज्ञाना॥९॥यथायोगजियअन्नहिंदाना ॥
भगवतमतिसबभूतनमाहीं । सबकोपूजनकरबसदाहीं ॥ सबतेअधिकगुनबहरिदासा।धर्मभूपयहहोतहुलासा ॥१०॥
दोहा-श्रवणकीरतनअसमरण, आतमअर्पणजोइ । सेवनपूजनवंदनहुँ, सखादासहरिहोइ ॥ ११ ॥
कृष्णभक्तियेनवौप्रकारा । देइछोड़ाइतुरतसंसारा ॥ सबमनुजनसाधारणधर्मा । मैंवरण्योंतुमसेप्रदशर्मा ॥
करतधर्मयेतीसप्रकारा । कृपाकरहिवसुदेवकुमारा ॥ १२ ॥ संस्कारसबहोहिंजहाँहीं । सोईद्विजवरहैजगमाहीं ॥
यज्ञअध्ययनऔरहुदाना । येद्विजकेहैंकर्ममहाना॥करिबोनिजनिजआश्रमकर्मा । यहौअहैद्विजहीकोधर्मा ॥ १३ ॥
पृथकपृथकअबचारिबरनके । कहौंधर्ममैंमोदकरनके ॥ दानदेवअरुलेबोदाना । करवाउबमखकरबमहाना ॥
दोहा-पढ़बपढ़ाउबविप्रको, येषटधर्मप्रवीन । अबसुनियेक्षत्रीधरम, जोब्रह्माकहिदीन ॥
यज्ञकरबअरुदीबोदाना । पढबवेदकोसंयुतज्ञाना ॥ मिलहिनविप्रपढ़ावनहेतू । यज्ञकरावनतिमिमतिसेतू ॥

तहँयेदोऊक्षत्रीकर्मा। जानिलेहुयहसतिसुतधर्मा॥ भूपतिधर्मप्रजाकोपालन।विप्रनतजिकरिलेवउतालन॥ १४॥
वैश्यधर्मगोरक्षणकरिवो। कृषिवाणिज्यहुकरिधनभरिवो॥ सदाकरैविप्रनसतकारा। वैश्यधर्मयेचारिउचारा॥
ब्राह्मणक्षत्रीवैश्यहुकेरी। सेवाशूद्रहुकरैघनेरी॥ यहीशूद्रकोधर्मविशालै। प्रभुकीसेवाकरिकुलपालै॥ १५॥
दोहा—वाणिजगोरक्षणकृषी, वृत्तिअयाचनजोइ। नितमाँगेभोजनकरै, संचितकरैनढोइ॥
अथवासीलावीनिकैखावै। अथवाहाटपरोलैआवै॥ चारिवृत्तियेविप्रहिजीकी। तिनमेंउत्तरउत्तरनीकी॥ १६॥
उत्तमवृत्तिनीचनहिंकरई। जबभरिअतिआपतनहिंपरई॥ सबकेधर्मकरैसबकोई। जबजनकोअतिआपतहोई॥
पैक्षत्रीकबहूँनहिंमाँगै। औरसबैकरमनमहँलागै॥१७॥१८॥१९॥ राजाविप्रनीचसेवकाई। करैनकबहूँबरुमरिजाई॥
सर्ववेदमयविप्रसमाजा। सर्ववेदमयजानियराजा॥ २०॥ इंद्रीजीतिबतपआचारा। अरुसंतोषक्षमासुखसारा॥
दोहा—सत्यज्ञानअरुनम्रता, दयाभक्तिभगवान। येदशलक्षणविप्रके, जानहुभूपसुजान॥ २१॥
धीरजक्षमादानरजपूती। तीषनतेजसमरकरतूती॥ शरणाँगतपालनअतिशीला। ब्राह्मणभक्तिकरबनहिंढीला॥
जीतबइंद्रीगणहुँघनेरे। येदशगुणहैक्षत्रीकेरे॥ २२॥ भगवतभक्तिदेवगुरुपूजन। अर्थधर्मकरहुसंपादन॥
आस्तिकताअरुअतिनिपुणाई। उद्यमकरबदेशबहुजाई॥ वैश्यहुकेनौलक्षणजानौ॥२३॥अबमैंशूद्रनलक्षणगानौ॥
विनाकपटनिजप्रभुसेवकाई। पूजवतीनिहुवरणबनाई॥ करैनचोरीसत्यउचारै। होइविप्रगौवनरखवारै॥
दोहा—विनामंत्रउच्चारकरि, करैउचितशुभकर्म॥ रहैअचारहितेसहित, आठशूद्रकेधर्म॥ २४॥
नारिनकोपतिसेवनधर्मा।पतिअनुमतिकरिवोशुभकर्मा॥औरहुपतिवंधुनसेवकाई।पतिकोव्रतधारणमनलाई॥ २५॥
होहिंसकलगृहकारजजेते। नारीकरैआपुहीतेते॥ भूषणवसनसाजिशृंगारा। निजपतिसेवनकरैअपारा॥ २६॥
अपनेगृहतेकहूँनजावै। परपुरुषनपरनहिंमनलावै॥ कोमलअतिनम्रतारचनते। प्रीतिप्रेमसतिभरेवचनते॥
कालकालमेंपतिपहँजाई। करैसदाचितदैसेवकाई॥ २७॥ राखैमनसंतोषसदाहीं। कबहूँलोभकरैकछुनाहीं॥
दोहा—जानैनारीधर्मको, वदैसदैसतिबात॥ सावधानअतिशुचिरहै, मृदुलस्वभावअवात॥
कृष्णविमुखजोनिजपतिहोवै।ताकीओरकबहुँनहिंजोवै॥२८॥करिहरिभावनजोपतिपूजै।तातियकेसमजननहिंदूजै॥
लक्ष्मीसरिसपरमसुखपाई। पतियुतवसैकृष्णपुरजाई॥२९॥निजनिजकुलमेंजोचलिआई। शंकरजातीवृत्तिसोगाई॥
पैचोरीअरुपापविहाई। सिगरेकर्मकरैसुखदाई॥ भिन्नचारिहूवरणहितेरे। तेईअंत्यजअहैघनेरे॥
नटबेड़ीअरुरजकचमारा। केवटगोंडहुकोलकुम्हारा॥ येआठोहैंडोमसमाना। परसतइनकहँपापमहाना॥ ३०॥
दोहा—जौनधर्मजाकोअहै, सोतेहिप्रदकल्यान। नीचहुतजिनिजधर्मको, करैनकर्ममहान॥
वेदविदाबहुवचनउचारे। इमियुगनिजधरमहिंनिरधारे॥भूपतिकियेआपनोधरमा। दोहुँलोकनहोतेप्रदशरमा॥३१॥
निजनिजवृत्तिकरतसबकाला। क्रमक्रमसोंतेहिछोडिभुवाला॥भगवद्भक्तिकरैमनलाई। लोभमोहअरुकोहुमिटाई॥
विनबहुभोगकियेजगमाहीं। होतविरागकैसहूनाहीं॥३२॥जबकरिभोगतुष्टचितहोतो। तबविरागउपजतसुखसोतो॥
जिमिबहुबारबयेमहिमाहीं।अंतकालउपजतकछुनाहीं॥३३॥ऐसहिकरतकरतसुखभोगू।स्वःतविरागलहतकोउलोगू
दोहा—जैसेडारेबहुतघृत, बुझतअग्निकीज्वाल॥ नेसुकघृतलहिवढ़ताशिखि, तिमिकामहुँसबकाल॥ ३४॥
जौनवृत्तिजेहिहोतिहै, ताअनुगुनतेहिनाम॥ लहतनामहैकर्मकरि, जातिनआवैकाम॥ ३५॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधि
राजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे एकादशस्तरंगः॥ ११॥

नारद उवाच।

दोहा—वरणधर्मसबकहिचुक्यो, अबमैंआश्रमधर्म॥ कहतअहौंसुनिलीजिये, सावधाननृपधर्म॥

वसैब्रह्मचारीगुरुगेहू । इंद्रीजितगुरुपदकरिनेहू ॥ दाससमानकरैसेवकाई गुनिअपनेकहँनीचमहाई ॥ १ ॥
गुरुरविअग्निगुविंदललामै । साँझप्रातहूकरैप्रणामै ॥ संध्याकरैउभैहैमौना । गायत्रीजपिकैसुखभौना ॥ २ ॥
जबगुरुनिजढिगलेइबोलाई । पढ़ैवेदमनदैतबजाई ॥ करैप्रणामअरंभहिमाहीं । पुनिवंदेअंतहूँसदाहीं ॥ ३ ॥
मंजुमेखलाकटिमहँधारै । मृगचर्महुअरुवसनसँभारै ॥ जटाकमंडलदंडजनेऊ । अरुकुशधारनकरैसुभेऊ ॥ ४ ॥
दोहा–साँझप्रभातहिमाँगिकै, भिक्षागुरुहिचढ़ाइ । गुरुशासनतेखाइतेहि, विनशासननहिंखाइ ॥ ५ ॥
थोरौभोजनकरैसुशीला । सावधानअतिरहैनढीला ॥ नारिननारिनतेहिनपाहीं । कहैप्रयोजनमात्रसदाहीं ॥ ६ ॥
नारीकथासुनैनहिंकाना । ब्रह्मचर्यव्रतधरैमहाना ॥ इंद्रीकठिनहोहिंसबकेरी।योगिहुँकरमनहरैनदेरी ॥ ७ ॥
केशसुधारबतेललगाउब । उबटनअँगमज्जनकरवाउब॥गुरुतिययुवतीतेनकरावै । युवाउमिरिजोनिजतनआवै ॥८॥
अग्निसरिसहैजगमेनारी । घृतघटसमनरलेहिविचारी॥दुहितहुढिगअकेलनहिंजावै । औरहुसमैकार्यभरिआवै ॥ ९॥
दोहा–करैकर्मतबलौंसबै, जबलौंतनकोभान । छूटिजातसबकर्मतब, जबआवतउरज्ञान ॥ १० ॥
सीलादिकजेधर्मनिबेरे । तेहैंयतीगृहस्थहुकेरे ॥ वसैगृहस्थननितगुरुगेहू । ऋतुकालहिविधिहैतियनेहू ॥ ११ ॥
कछुआमिषकोभोजनकरिबो । अंगरागतबभूषणधरिबो ॥ उबटनकरबतेलतनमाहीं । करैकबहुँव्रतधारीनाहीं ॥
पढभीतीमहतियतसवीरा।लिखैकबहुँनहिंजोमतिधीरा१२यहिविधिगुरुगृहरहिपढ़िवेदा । देइदक्षिणागुरुहिअखेदा॥
जोकछुहोयदेनकोनाहीं । करिप्रणामआवैगृहमाहीं ॥ अथवासंन्यासीह्वैजाई । अथवागुरुकुलवसैसदाई ॥ १४ ॥
दोहा–गुरुमोंनिजमेंअनलमें, अरुसबभूतनमाहिं । यदुपतिकोदेखैसदा, जिनमेंदोषनजाहिं ॥ १५ ॥
यहिविधिचारिहुँआश्रमकेरे।करिआचारतजहिहरिनेरे।१६॥कहौंवानप्रस्थनकोधर्मा।ऋषिपुरजातकियेजोकर्मा १७
जोतेतेअनाजजेजावें । तिनकोवनवासीनहिंखावें ॥ नहिंअकालकेफलमुनिभोजे । स्वतःहोहिखावेतेहिरोजे ॥
अग्निपकोकच्चोनहिंखावै।रविकरपकोसुफलमुखलावै॥१८॥वनवस्तुनतेहोमहिकरई।नूतनपाइपुराणहितजई॥१९॥
पावकहितविरचैतृणशाला । अथवागिरिकंदराविशाला॥वरषापवनघामहिमिसहई।ग्रीषमपंचअग्नितहँतपई ॥२०॥
दोहा–केशरोमनखमूछमल, तनमेंधरेसदाहि । दंडकमंडलचर्ममृग, वलकलअग्निहुकाहि ॥ २१ ॥
बारहवर्षवसैवनमाहीं । आठचारिदुइयकअथवाहीं ॥ करिवनमहँतपपरमप्रयासा । जामेंबुद्धिनहोइविनासा ॥२२॥
जबतनआवैव्याधिबुढ़ाई।क्रियाकरतअसमर्थदेखाई॥ छूटिहिज्ञानविचारगँभीरा।करिअनशनअसतजेशरीरा ॥२३॥
तीनिहुअग्निआत्ममहँलाई । अहंकारममकारविहाई॥कारणमहँकारणहिमिलावै।यथायोगकरिअतिसुखपावै ॥२४॥
तनकेछिद्रमिलाइअकासा । मारुतमहँपुनिमेलैश्वासा ॥ ज्ञानीयूषमतेजहिमेलै । शोणितकफरेतहुजलझेलै ॥
दोहा–अस्थिमांसमेलेपुहुमि ॥ २५ ॥ वाचापावकमाहिं । करनिपुणाईशक्रमहँ, विष्णुहिमहँपदकाहिं ॥
युतउपस्थिरतिब्रह्मामाहीं२६मुदविसर्गयुतमृत्युहिपाहीं।दिशिमहँश्रवणइंद्रियुतसोरा।परससहितत्वचमारुतओरा॥
रुपसहितदृगरविमहँजोतै । रसयुतरसनाजलहिसवोतै।मिलैगंधसहितमहिघ्राने ॥२८॥ मनहिमनोरथयुतसितभाने॥
बुद्धिबोध्ययुतविधिहिउद्रमें । अहंकारयुतकर्मरुद्रमें॥सत्वसहितवितजीवाहिमाहीं।अरुजीवहिपरमातमपाहीं ॥२९॥
क्षितिजलमहँजलकोपावकमहँ । पावकमारुतमारुतनभमहँ॥अहंकारमहँनभहिमिलावै । महातत्वमहताहिलगावै॥
दोहा–महातत्वकहपुनितहां, प्रकृतिहिमाहाँमिलाय । प्रकृतिहिपुनिपरमातमै, योगीदेयलगाय ॥ ३० ॥
स्वामीहैहरिदासजिय, यहिविधिभेदहिजानि । शांतहोइपावकसरिस, तबमिलतीसुखखानि ॥३१॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे द्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

नारद उवाच ।

दोहा—वानप्रस्थअसमर्थकी, देहत्यागिविधिमाषि । अबसमरथकीविधिकहौं, तुमसेनहिंकछुराखि ॥
जोहोवैसमरथवनवासी । तौसबहोइत्यागिसंन्यासी ॥ बसैएकरजनीइकग्रामा । विनइच्छाविचरैसबठामा ॥ १ ॥
जोपटधारणचहैप्रवीना । तौपथपटलैरचैकुपीना ॥ जटीकमंडलुदंडहुधारै । विनआपतऐसेनिरधारै ॥ २ ॥
विचरिअकेलेभिक्षामाँगै । काहूकेनसंगअनुरागै ॥ दयादीठिभूतनसबजोवै । नारायणपारायणहोवै ॥ ३ ॥
मायाजीवविलक्षणईसै । तिनमहँसकलजगतकहँदीसै ॥ परमात्माव्यापकसबमाहीं । ऐसोकरैविचारसदाहीं ॥ ४ ॥
दोहा—जागबसोउबसंधिमें, त्रयजगलखैसुजान । बंधमोक्षमायाअहै, राखैनितयहभान ॥ ५ ॥
जननमरनहितकरैनशंका । गुनैकालवशजगनिरतंका ॥६॥ असतशास्त्रमेंकरैनप्रीती । करैजीविकाकीनहिंरीती ॥
करैकबहुँनहिंवादविवादा । धारैसदाधर्ममरयादा ॥ पक्षपातकबहुँनहिंकरई । सत्यशास्त्रअरथहिनिरधरई ॥ ७ ॥
करिशिष्यनहितकरिधनआसा । करैनबहुग्रंथनअभ्यासा ॥ रचैननिजवासिवेहितगेहू । लौकिककर्मकरैनहिंनेहू ॥८॥
नहिंसंन्यासधर्मकेहेतू । अहैज्ञानहितकुरुकुलकेतू ॥ समदरशीजेशांतसुकर्मा । चहैकरैनकरैकछुधर्मा ॥ ९ ॥
दोहा—निजप्रभावप्रगटैनहीं, विचरैबालसमान ॥ जननदेखावैमूकता, यद्यपिकविहुसुजान ॥ १० ॥
तहँमुनिजनइतिहासबखाना । अतिसुंदरहैपरमपुराना ॥ दक्षिणकावेरीसरितीरा । सह्यशैलयकहैमतिधीरा ॥ ११॥
तहाँधारिअजगरकीरीती । रहैएकमुनितजिभवभीती॥१२॥ एकसमयविचरतप्रहलादा । जाननहेतलोकमर्यादा ॥
मंत्रिनसहितगयेतेहिठामा । देख्योअजगरमुनिहिअकामा ॥ परेपुहुमिमेंधूरिधूसरे । तेजवंतजनुभानुदूसरे ॥ १३॥
वरणाश्रमजेहिजातनजानो । ब्रह्मानंदसदामनसानो॥१४॥तेहिपदशिरधरिकियोप्रणामा।कृष्णभक्तप्रहलादललामा॥
दोहा—तिनकेमुखतेसुननहित, ज्ञानविरागहुजोय ॥ पूछतभोकरजोरिकै, महाभागवतसोय ॥ १५ ॥
होतनविनभोजनतनपीना । मिलैनभोजनजोधनहीना ॥ सोधनविनउद्यमनहिंहोई।विनगमनेउद्यमनहिंकोई ॥१६॥
सोतुममेंएकौनदेखाहीं । रहौमोटकसतातसदाहीं ॥ सुननयोगजोहोइहमारे । कहहुकृपाकरितौहरिप्यारे ॥ १७ ॥
तुमहौकविसमरथसबभाती।निपुणअहौसबसंशयघाती॥सबकहकर्मकरतमुनिदेखी।करहुनकाहेकर्मविशेखी ॥१८॥

नारद उवाच ।

जबअसमुनिसोंश्रीप्रहलादा । प्रश्नकियोसंयुतअहलादा ॥ सुधासमानवचनसुनिकाना।बोलेविहँसिमुनीशसुजाना ॥

ब्राह्मण उवाच ।

दोहा—हमजानहिंपरअसुरपति, तुमकियबहुसतसंग ॥ प्रवृतनिवृतफलजानहू, अंतरंगबहिरंग ॥ १९ ॥ २० ॥
जाकेहियमहँरमानिवासा । भक्तिविवशनितकरहिंनिवासा ॥ नाशकरहिताकोअज्ञाना। जैसेअंधकारकोभाना२१॥
यद्यपिजानहुसबअसुरेशा । पैमोसोंकियप्रश्नहिवेशा ॥ तातेजोकियश्रवणपुराना । सोतुमसोंमैंकरहुंबखाना ॥२२॥
महाराजकरिसंगतुम्हारा । होइहिशुद्धशरीरहमारा ॥ पूरवजन्मनितृष्णाकरिकै । कियोकर्ममैंबहुश्रमभरिकै ॥
तदपिकामनाममनहिंपूरी । बाढ़तभईनितैनितभूरी। ताकेविवशजनमबहुपायो॥२३॥भ्रमतभ्रमतअबयहतनआयो॥
दोहा—स्वर्गनर्कअपवर्गको, दातामनुजशरीर ॥ करैकर्मतसफललहै, यहितनतेमतिधीर ॥ २४ ॥
करतकर्मजोसुखकेहेतू । अंतहोतसोदुःखनिकेतू ॥ तातेकर्मतजेहमराजा । करैनहींकछुदुखसुखकाजा ॥ २५ ॥
सुखस्वरूपहैजीवसदाहीं । पैतृष्णाविनछोडेनाहीं । तातेतजितृष्णासबभाँती । मैंसोबहुँसुखसोंदिनराती ॥ २६ ॥
सुखहिततजियमूढ़उपाई । भ्रमहिजगतमहँबहुदुखपाई॥२७॥मुद्रितजलजैसेतृणकाई।निकटजननहिंपरतजनाई ॥
ताकोछोड़िमूढबहुधावैं । मृगतृष्णाजलकबहुँनपावैं॥जिमिविज्ञानजनितसुखछोरी । भ्रमतेभटकैबुद्धिनिगोरी॥२८॥
दोहा—दैवअधीनशरीरयह, जामेंवाहतहर्ष ॥ अरुकलेशनाशनचहै, वृथाकर्मबहुवर्ष ॥ २९ ॥
यद्यपिकबहुँकर्मसिधिभयऊ।अरुत्रितापदुखजोहिनहिंगयऊ॥तौताकेमखअहैवृथाहीं।नहिंसुखरहतनवैरहिजाहीं३०॥

लोभिनधनीदुःखबहुदेखे । नहिंसोवतनिशिप्रियधनलेखे॥३१॥भूपबंधुअरुखगमृगचोरा।औरजगतयाचककहुकरोरा॥
इनतेअपनेहुतेधनभीती । रहतसदाकोहुकीनप्रीती॥ तातेमिटतनहींदुखघोरा । प्राणसमानगनतधनभोरा ॥ ३२ ॥
शोकरागश्रमभीतिहुकोहू । जातेबढ़तकलेशहुमोहू ॥ ऐसीदुखदअहेधनआसा । ताहितजेबुधलहैंहुलासा ॥ ३३ ॥

दोहा–मधुमाखीमधुकहँरचहिं, लघुलघुरसकहजोरि ॥ मधुलोभीतिनजारियक, बारहिलेतानिचोरि ॥

तिमिजोरतधनऔरहिकोई । औरेखातउड़ावतसोई ॥ परोरहतअजगरइकठोरा । मिल्योजोखाइलियोबहुथोरा ॥
तातेमधुकरअजगरदोऊ।ममगुरुहैंयहजानतकोऊ३४--३८कहूँअलपकहुँबहुतकखायो।कहूँस्वादकहुँस्वादनपायो॥
कहुँमानतेकहुँअपमानै । कहूँदिवसकहुँनिशामहानै ॥ कहुँयकवारकहूँद्वैवारै । कहुँउपासकहुँसलिलअधारै ॥३८॥
कहुँकमरीकहुँमिलैदुशाला।कहुँवलकलकवहूँमृगछाला ॥ जोईमिल्योओढिसोइलीन्ह्यों।अपनेमनसंतोषहिकीन्ह्यों॥

दोहा–कहुँमहिमेंकवहूंतृणै, कवहुंपरेपरयंक ॥ कहुँपषाणकहुँभसममें, कहुँगृहमेंनिश्शंक ॥ ४० ॥

कहुँमज्जनसंयुतअँगरागा । कवहुँमालकवहूँशिरपागा ॥ कहुँस्यंदनतुरंगमातंगा । कवहुंदिगंवरकोऊनसंगा ॥
हमकोमिलैईशकृतजोई । ताहीमेंसंतोषहिहोई ॥४१॥ नहिंनिंदैनहिंकरैप्रशंसा । सवकोचहैअमंगलध्वंसा ॥
सबकेहोइभक्तिभगवाना । सबकोकृष्णकरैकल्याना ॥४२॥ जातिभेदमनवृत्तिहिकरई । मनवृत्तिहिकोमनमेंभरई॥
मनकोअहंकारमेंलोपै । अहंकारमायामेंगोपै ॥ ४३ ॥ मायाआतममेंकरलीने । आतमपरमातमरसभीने ॥

दोहा–यहिविधिअनुसंधानजो, करैछोड़िव्यापार ॥ मुक्तहोतसोअसुरपति, ऐसेवेदउचार ॥ ४४ ॥
जोपूछ्योसोमैंकह्यो, परमगुप्तहूशुद्ध ॥ मूढ़नलोकहुशास्त्रते, जानोपरतविरुद्ध ॥
असुरनाथयदुनाथके, तुमहोपरमपियार ॥ तातेमैंभाष्योसकल, संयुतयहविस्तार ॥ ४५ ॥

नारद उवाच ।

परमहंसकोधर्मयह, सुनिकैअसुरअधीश ॥ गमनकियोतहँभवनको, नाइमुनीशहिशीश ॥ ४६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधेत्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

दोहा–सुनिनारदमुनिकेवचन, धर्मभूपहरषाइ ॥ बोलेपुनिकरजोरिकै, कथासुननचितलाइ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

संन्यासीजोलहतहै, पदवीपरमपुनीति ॥ सोगृहस्थमोसमकुमति, किमिपावतकरनीति ॥ १ ॥

सुनतयुधिष्ठिरगिरासोहाई । कहनलगेनारदमुनिराई ॥

नारद उवाच ।

धरैगृहस्थधर्मयहकाजा । गृहकोउचितकरैमहराजा ॥ सकलकर्मअरपैहरिमाहीं । सज्जनपूजनकरैसदाहीं ॥ २ ॥
यदुवरसुधाकथाअवतारा । श्रद्धासहितसुनैबहुवारा ॥ चंचलचित्तअचंचलकरई । साधुसमाजबैठिसुखभरई ॥ ३ ॥
सुतदारादेहौंपरिवारा । स्वप्नसरिससुखकरैविचारा ॥ तेनहिंअंतकरहिंअनुरागे । तिनकहकसपहिलेनहिंत्यागे ॥
निजपरिवारनेहकीडोरी । क्रमक्रमतजैनबँधेबहोरी ॥ ४ ॥

दोहा–देहगेहमेंअर्थभरि, पंडितराखैप्रीति । आत्मपदैअनुरक्तसम, रहैविरक्तहिरीति ॥ ५ ॥

यहिविधिसिगरोजन्मवितावैं । ब्राह्मणवैष्णवपदशिरनावैं ॥ पुत्रमित्रअरुजनकहुमाता।ज्ञातिनातसुहृदोअरुभ्राता॥
तिनकेवचनउचितसबमानै । तिनमेंमहामोहनहिंठानै॥६॥सकलभोगदीन्ह्योभगवाना।ऐसोसदाकरैअनुमाना ॥७॥
दउरभरेजितनेधनमाहीं । तितनोनिजजानेबहुनाहीं ॥ अधिककुनैअपनोजोकोई । नृपतेदंडनीयसोहोई ॥ ८ ॥

खगमृगनरजगजीवनकाहीं । पुत्रसरिसमानैमनमाहीं ॥९॥ करैअर्थअरुधर्महुकामा । पैनहिंकरिकलेशमतिधामा ॥

दोहा—देशकालअनुगुनकरै, विभवभोगप्रमुदीन ॥१०॥ श्वानपतितचंडालहुन, भोजनदेइप्रवीन ॥

यद्यपिहोइएकहूनारी । तद्यपितजैसनेहविचारी ॥ ११ ॥ जगमहँजोनारीकेहेतू । हनैमातुपितुगुरुअघकेतू ॥

आतमघातकरैजेहिकाजू । छोडिदेहिनिजकुलकीलाजू ॥ जोछोडतजगमेंअसनारी।सोअपनेवशकरतमुरारी॥१२॥

कहँकृमिभसमसमलयहदेहू।कहँतियकहँआतमसुखगेहू॥असविचारिछाँड़ैअनुरागा।करैभक्तिहरिकीबड़भागा १३॥

बचैअन्नजोयज्ञकियेते।सोइखावैसुखमानिहियेते॥ १४ ॥सुरनरमुनिभूतनपितरनको । पूजैकरिभगवतसुमिरनको ॥

दोहा—जोधनपावैधर्मते, ताहीतेमहिपाल । यथाशक्तिसतकारकरि, सेवैबुद्धिविशाल ॥ १५ ॥

होइजोयज्ञकरनअधिकारा । तौहरिकेहितकरैउदारा १६जसप्रसन्नहरिद्विजमुखहोवै।तसनहिंपावकमुखसुदमोवै १७

तातेप्रथमविप्रपदपूजी । पूजाकरैदेवकीदूजी ॥१८॥ गुरुपितुमातुबंधुकीस्वक्षै । करैश्राद्धअश्विनवदिपक्षै ॥ १९ ॥

वरणहुँपुण्यकालअबराजा । सुनहुँसकलतुमसहितसमाजा ॥ उभैऐनजेदिनफिरिजाहीं ।दक्षिणउत्तररविविलगाहीं॥

जेहिदिनतुलामेपसंक्रमना।जादिनव्यतीपातअवदमना ॥ जादिनग्रहणहोइशशिभानू।अरुतिथिक्षयहोवैमतिमानू॥

दोहा—श्रावणद्वादशभाद्रसित, ॥ २० ॥ अक्षैतृतीयासोइ । नवमीकार्तिकशुक्ककी, चारिअष्टकाहोइ ॥ २१ ॥

माघशुक्कसतमीसोहावनि । माघपूर्णिमासीअतिपावनि ॥ औरहुसकलपुण्यमाजेई । मासनक्षत्रपवित्रहितेई ॥२२॥

त्रयउत्तराश्रवणअनुराधा । होवैजबद्वादशिसुखसाधा ॥ अथवाएकादशिमहँभूपा । येसबहोहिंनक्षत्रअनूपा ॥

अथवाहोइजन्मनक्षत्रा । अथवाश्रवणहुहोइपवित्रा ॥ २३ ॥ येसबयोगपर्वकहवावैं । मनुजनकोकल्याणबढावैं ॥

इनपरवनमहँकियेसुकर्मा । सफलहोइआयुषयुतधर्मा ॥२४॥ देवविप्रपूजनअस्नाना । जपव्रतश्राद्धऔरसबदाना ॥

दोहा—इनपरवनमहँजोकरै, श्रद्धासहितसुजान । सोसबअक्षैहोतहै, पावतफलहिमहान ॥ २५ ॥

औरहुपुण्यकालमैंकहहूं । तुम्हरेमंगलमैंअतिचहहूं ॥ नारीकोअपनेसुतकेरो । संस्कारजबहोइघनेरो ॥

जन्महोइजेहिदिवसकुमारा । सोऊपुण्यकालसुखसारा ॥ अरुजबहोवैपितरछयाहू । सोऊपुण्यकालअघदाहू ॥२६॥

अबमैंपुण्यदेशसबगाई । महापापहरदेहुसुनाई ॥ सोईपरमपुण्यहैदेशू ॥ जहाँमिलेसत्पात्रनरेशू ॥ २७ ॥

जहँयदुवरकीमूर्त्तिसुहाई । सोऊथलभलसबफलदाई ॥

दोहा—विद्यादयाविवेकयुत, जहँब्राह्मणकुलहोइ । तीरथसरिसपुनीतअति, सकलसुफलप्रदसोइ ॥ २८ ॥

जहँजहँहोइकृष्णकीपूजा।तेहिथलसमहैऔरनदूजा॥गंगादिकसरिप्रथितपुराना।गमनतवसतनसतअघनाना ॥ २९॥

पुष्करादिजेपुण्यतडागा ॥ होततहाँगमनतबड़भागा ॥ जहाँसाधुजनवसतसदाहीं । तासमतीर्थऔरकहुँनाहीं ॥

कुरुक्षेत्रअरुगयाप्रयागा । हरिहरक्षेत्रपुण्यअतिपागा ॥ ३०॥ फाल्गुनसेतुबंधयमआसा । नैमिषारअरुक्षेत्रप्रभासा॥

द्वारावतिमथुराअरुकासी । बिंदुऔरपंपासरभासी ॥३१॥ जहाँअलकनंदाअतिभाई । ऐसोबदरीवनसुखदाई ॥

दोहा—चित्रकूटआदिकसबै, सीयरामकेधाम । मलयमहेंद्रकुलादिगिरि, येसबपूरणकाम ॥३२॥

सकलदेशयेअतिहैंपावन । गमनतनिवसतपापनशावन ॥ जोकोउचाहैनिजकल्याना । वसैसदाकीकरैपयाना ॥

करैधर्मजोइनमहँकोई । सोसबअवशिसहसगुनहोई ॥३३॥ पूजनदानपात्रकविगाये।जेजगमहँहरिदासकहाये॥३४॥

देवर्षिहुब्रह्मर्षिहुजेते । आयेआपयज्ञमहँतेते ॥ ब्रह्मशिवादिकहूसबआये । पैनअग्रपूजनकोउपाये ॥

लह्योअग्रपूजनयदुराई । तेहितेसबजगपूजापाई ॥ कृष्णकृष्णकेदासनमाहिं । भूपभेदकछुजानहुँनाहिं ॥ ३५ ॥

दोहा—सकलचराचरजेअहैं, अरुब्रह्मांडहिमाहिं । कृष्णमूलकोसिंचतै, आपहितेहरियाहिं ॥३६॥

नरतिरयकऋषिदेवहुजेते । कृष्णविहारथानहैंतेते ॥३७॥ तारतम्यकरिसबजगमाहीं । निवसतहैभगवानसदाहीं ॥

तारतम्यपात्रहुमेंताते । लघुबडअंशईशकेजाते ॥३८॥ क्रोधलोभवशजीवअज्ञानी ।सबथलहरिकहुँनहिंशठमानी॥

जैहैनर्कघोरकरिपापा । असगुनिमुनिनभयोसंतापा॥हरिमहँपूजनहितविश्वासा॥हरिमूरतिबहुकियेप्रकासा ॥ ३९ ॥

त्रेतातेसबजनकरुराई। हरिपूजनलागेमनलाई॥ जननद्रोहतजिजोहरिपूजै। सोफललहतनतेहिंसमदूजै॥ ४०॥

दोहा-तपविद्यासंतोषयुत, पढ़ैजोहरितनवेद। सोत्राह्मणसतपात्रहै, जानहुँभूपअखेद॥ ४१॥
जेद्विजवरनिजपदरजहि, करतत्रिलोकपुनीत॥ इष्टदेवतेकृष्णके, मानहुसत्यप्रतीत॥ ४२॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधि
राजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे चतुर्दशस्तरंगः॥ १४॥

नारद उवाच।

दोहा-कर्मनिष्ठकोउनिष्ठतप, कोऊनिष्ठस्वाध्याइ। यागयोगकोउनिष्ठद्विज, कोऊध्यानचितलाइ॥ १॥

देवपितरकरमनचितलाई। ज्ञानिनभोजनदेइबुलाई॥ जोनहिंमिलैविप्रवरज्ञानी। यथायोग्यदीजैद्विजजानी॥२॥
देवकर्मद्वैद्विजनखवावै। पितरकर्ममेंतीनिबोलावै॥ अथवाएकएकहोउकरमें। भोजनकरवावैयुतधरमें॥
यद्यपिधनहुहोइअधिकाई। तदपिश्राद्धद्विजबहुनखवाई॥ जैसीविधिथोरेमहँहोई।विशदकियेतसलहतनकोई ३॥
श्रद्धाविधियुतदेशहुकाला।पात्रहिदानदियेफलहाला॥४॥सबमहँहरिकहँगुनिमहिपाला।क्षुधितहिअन्नदेयततकाला।

दोहा-देवनपितरनऋषिनको, देयअन्नजलदान॥ हरिअर्पणकरिसुजनयुत, भोजनकरैसुजान॥ ५॥ ६॥

आमिषश्राद्धमाहँनहिंदीजै। आपहुभोजनकबहुँनकीजै॥ जेतोअन्नदेतसुखभारी। तेतोआमिषदैदुखकारी॥ ७॥
भूपतिहिंसातजबसमाना। अहैनधर्मजगतमहँआना॥८॥कोउज्ञानीसबयज्ञनतेरे।गुनहिंज्ञानकहँअधिकनिबेरे॥९॥
यज्ञनिकरतछागबलिदेखी। डरहिंजीवसबनिर्दयलेखी॥१०॥ तातेअन्नहिजेसबकाजा। श्रद्धासहितकरैमहराजा॥
उपमाछलआभासविधर्मा। येचारहुँपाँचौपरधर्मा॥११॥येअधर्मकेशाखाजानै। इनकोकबहुँचित्तनहिंआनै॥ १२॥

दोहा-हैविधर्मछोड़बधरम, परसिखयोपरधर्म॥ करिपखंडजोकरतहै, सोउपमानृपधर्म॥ १३॥

श्रुतिकोअर्थफेरिबोजोई। कहतसुकविसबछलहैसोई॥ करैजोनिजमनकरिअनुमाना। जानहुँसोआभासमहाना॥
वेदविहितजोनिजनिजधर्मा। कहोदेतकाकोनहिंशर्मा॥१४॥ धर्महेतअरुहितनिरवाहू। होइनअपनेधनजेहिकाहू॥
सोनिरवाहधर्मकेहेतू। करैनकबहूँधनकोनेतू॥ अजगरसरिसरहैहरिध्यावै। कृपासिंधुतेहिसकलबनावै॥ १५॥
जोसुखहोततोषउरलाये। सोनहिंमिलतलोभवशधाये॥१६॥होततोषकरिअभैमहाना।लगैनकंटकरहैउपाना१७॥

दोहा-जोछोडयोसंतोषको, कीन्ह्योंलोभमहान॥ द्वारद्वारसोवागतो, भूखोश्वानसमान॥ १८॥

जोसंतोषसदाउरलावै। ताकोशत्रुनकहूँदेखावै॥ विप्रअसंतोषीजोहोई। तपविद्यायशडारतखोई॥ १९॥
ताकोमनकरिचंचलताई। ज्ञानयोगसबदेतनशाई॥ भोजनकीन्हेंभूखनशाई। पानकियेतिमिप्यासहुजाई॥ २०॥
क्षुधातृषातेकामनशाई। क्रोधानलरिपुमारिबुझाई॥ जोतेहुदशदिशिभोगेहुभोगू। पैनहिंमिटतलोभप्रदसोगू॥
अमितशास्त्रकेजाननवारे। संशयसकलविध्वंसनहारे॥ पंडितश्रेष्ठसभासदमाहीं। असंतोषतेनरकहिजाहीं॥२१॥

दोहा-कामहिजीतैजीतिमन, कामछोड़िपुनिक्रोध॥ लोभहिकरिसंतोषको, भयजीतैकरिबोध॥ २२॥

शोकमोहकोधारिविवेकू। मौनहिंलौकिकबातअनेकू॥ हिंसाजीतैदयामहाई। दंभहिकरिसज्जनसेवकाई॥ २३॥
दुखजीतैसबतेह्वैदीना। कर्महिजितैसमाधिहिलीना॥ जीतिलेइकरियोगशरीरा। लघुभोजनकरिनींदगँभीरा॥२४॥
सद्गुणतेरजतमकहँजीतै। उपसमतेसततेपुनिरीतै॥ गुरुकीभक्तिकियेमनलाई। येसबअनयासहिंमिटिजाई॥२५॥
गुरुभगवानज्ञानकोदाता। सोगुरुनरसमजाहिदेखाता॥ ताकोपढ़बधर्मअरुज्ञाना।कुंजरमज्जनसरिसदेखाना॥२६॥

दोहा-प्रकृतिपुरुषकेनाथहैं, येयदुपतिभगवान॥ इनकेपदढूँढ़तरहैं, योगीनितधरिध्यान॥ २७॥

तिनकोनरसबनरसमजानै। कोऊमित्रकोउशत्रुबखानै॥ कियोधर्मइंद्रीसबजीत्यो। लोभमोहममतातेरीत्यो॥२८॥

जोनभयोयदुपतिअनुरागी। तौतेहिजानहुँपरमअभागी॥ जैसेबहुधनधरचोकमाई।कियेनतसतौवृथाजनाई॥२९॥
तातेइंद्रीजीतनचाहे। तौअसकरैउपाइसदाहै॥ रहैअकेलतजैममताई। वसैइकांतनिवासबनाई॥
भिक्षामाँगिअन्नलवुखावै॥३०॥ आसनसमथलमाँहविछावै।तामेंथिरबैठेसवअंगा।जपैप्रणवरँगिहारिरातिरंगा॥३१॥

दोहा--पूरककुंभकरेचकै, रोकैप्राणअपान॥ देखैनासाअग्रको, जबलोंहोइनज्ञान॥ ३२॥

विषयविवशजहँलगिमनधावै। योगीतेहितहँतहँतेल्यावै॥ करैनपावैचंचलताई। देइअवशिहरिचरणलगाई॥३३॥
ऐसोसाधनकरतभुवाला। छूटतअवशिआशुजगजाला॥ विनाधूमपावकसमहोवै।विषैनींदमहँपुनिनिनहिंसोवै॥३४॥
ब्रह्मानंदलहतजबयोगी।होतअवशिमुक्तिहुकोभोगी॥३५॥तजिगृहप्रथमभयोसंन्यासी।पुनिधनजोरयोभयोविलासी॥
तौवहजगमेंश्वानसमाना। ताकेदोऊलोकनसाना॥ ३६॥ कृमिमलभसमअंतयहदेहू। तज्योइशतामेंकरिनेहू॥

दोहा--तनमेंतुच्छहिसुखकियो, पाल्योविविधप्रकार॥ ताकेसमसंसारमें, दूजोनहींगँवार॥ ३७॥

जोगृहस्थनिजधरमहिंत्याग्यो। व्रतैब्रह्मचारीनहिंराग्यो॥ वनवासीभोनगरनिवासी।ऐसेकरनचह्योसंन्यासी॥३८॥
तिनकेदोऊलोकनसाने। पंडिततेहिपाखंडीमाने॥ तिनकोसंगकबहुँनहिंकीजै। परमदुष्टतिनकोगुनिलीजै॥३९॥
जोकोउमायाईशविलक्षण।प्रभुकहँजानहिंसोइसुलक्षण॥सोकौनेफलहिततनपालै।केहिहितरचैभोगयुतआलै॥४०॥
कविजनरथसमकहैशरीरा। इंद्रीतुरँगवेगगंभीरा॥ चंचलमनतिनकोहैवागा। सोरथचलैविषैपथलागा॥

दोहा--बुद्धिसारथीचित्तगुन,॥ ४१॥ दंडअहैदशप्रान। चाकाधर्मअधर्मके, रथीअहैअभिमान॥

प्रणवधनुषशरजीवमहाना। सोपरमात्माअहैनिशाना। लोभशोकअरुमदभयमोहू। मानहुअपमानहुअरुकोहू॥
रागद्वेषमत्सरहुप्रमादा।मायाहिंसालघुअहलादा।रजतमक्षुधानींदअरुप्यासा।येसबशत्रुकरहिंसुखवासा४२-४३-४४
तवगुरुपदरतिचोषमहाना। ऐसीकरिकरिज्ञानकृपाना॥ हरिप्रतापबलशत्रुनमारै। मुक्तिरूपयशजगतपसारै॥४५॥
जोमानैप्रभुकोबलनाहीं। इंद्रियवाजिकुपथलैजाहीं॥ विषैचोरसोरथहिचोराई। संसृतिकूपहिदेहिंगिराई॥ ४६॥

दोहा--प्रवृतिनिवृतियेवेदके, कर्मउभयपरकार। निवृतिकियेहरिपुरलहै, प्रवृतिकियेसंसार॥ ४७॥

हिंसककाम्यकअग्निहोत्रवर। पौर्णमासअरुदर्शतुष्टकर॥चातुरमाससोमपशुयागा।वैश्वदेवअरुबलिकोत्यागा॥४८॥
येइसुखदअकामहिकीन्हें। एइदुखदकाममनदीन्हें॥ कूपसरोवरबागविधाना। मंदिररचनऔरजलदाना॥
येसबपूरतकर्मकहावैं। कियेअकाममोददरशावैं॥ ४९॥ याज्ञिकजातस्वर्गजेहिभाँती। सोमैंवरणौंहरिपुघाती॥
प्रथमहिधूमलोकमहँजावै। पुनिनिशिलोकमाँहसुखपावै॥ कृष्णपक्षलोकहिपुनिगमनै। फेरिदक्षिणायनकेभवनै॥

दोहा--चंद्रलोकपुनिजातहै, तहाँभोगिकेभोग। पुनिसंसारहिआवतो, चंद्रकिरणकेयोग॥ ५०॥

प्रथमअन्नपुनिपितुतनमाहीं।रेतहिमिलितियउदरहिजाहीं।यहिविधिफेरिजनमजगपावै५१संस्काररलहिद्विजकहवावै।
ज्ञानज्वलितइंद्रिनमहँराजा। हवनकरैसिगरेनिजकाजा॥५२॥मनसमुद्रमहँइंद्रिनवारै। वचनमाँहपुनिमतकहँधारै॥
वर्णनमहँपुनिवचनमिलावै। ओंकारमहचरणनलावै॥ ५३॥ बिंदुहिमहँमेलेओंकारा। करैनादमहँतेहिसंहारा॥
नादहुकहप्राणहिमहँराखै। प्राणहिंपरब्रह्मअभिलाषै॥ असविधानकरितजैशरीरा। ताकोगवनसुनोमतिधीरा॥

दोहा--प्रथमअग्निपुरजातहै, पुनिसूरजकेलोक॥ पुनिदिनपुरपुनिपक्षसित, फेरिपूनिकाओक॥ ५४॥

फेरिउत्तरायणपुरजावत। पुनिविरंचिपुरमहँसुखपावत॥ तहाँकालकछुभोगतभोगू। तहँतेकरतमुक्तिउतयोगू॥
मिलतविश्वमहँपुनितैजसमहँ।फेरिप्राज्ञपुनिकैतूरजकहँ॥पुनिवैकुंठजातमतिमाना।पुनिनकरतसंसारपयाना॥५५॥
प्रथमपितरजानहिंमेंगाई। देवजानपुनिदियोसुनाई॥ जोकोउउभयमार्गकोजाना।संसारहुमहँतेहिनअज्ञाना॥५६॥
बाहरभीतरआदिहुअंता। लघुबडहैयेईश्रीकंता॥५७॥ विनाविचारपरहिनहिंजाने।जानेजातविचारहिठाने॥५८॥

दोहा--तरुछायातरुनहिंअहै, नहिंविकारतरुकेर॥ नाहिंतरुकोतजिकैरहै, नितनरहैतरुनेर॥

तैसहिआतमतनसम्बंधू।यहप्रसंगजानहिंमतिसिंधू॥५९॥धातुपदारथकारजअहहीं।तातेबुधअनित्यतेहिकहहीं६०॥

जीवशरीरमिलेदरशाहीं । तातेकरैंमूढभ्रमकाहीं ॥ जिनकोहैनहिंआतमज्ञाना । तिनकोभ्रमज्ञानहुँअज्ञाना ॥ ६१॥
जैसेस्वप्नहिंजागबसोउब । अहैसकलभ्रमदुखसुखजोउब ॥ भावद्वैतक्रियाअद्वैता । अरुमनकरनद्रव्यअद्वैता ॥६२॥
इनकोगुनततीनिभ्रमजाहीं । ब्रह्मशेषजियगुनैसदाहीं ॥ कारणकारजजोयकभावै । सोईभावअद्वैतकहावै ॥ ६३ ॥

दोहा–मनवचतनकेकर्मसब, देहिजोप्रभुहिचढ़ाय ॥ सोइक्रियाअद्वैतहै, यहजानहुँनृपराय ॥ ६४ ॥

भेदछोड़िसबजनसममानै । तेहिबुधद्रव्याद्वैतबखानै ॥ ६५॥ जातेजोअद्वैतबतायो । तेहिगुनिकरैकर्मचितचायो ॥
करैनकोईऔरउपाई । जामेंयहसंसृतिरहिजाई ॥ ६६ ॥ यहजोमैंसिगरीविधिगाई ! औरहुवेदविहितविधिभाई॥
करतगृहस्थवसतगृहमाहीं । होइभक्तिसंशयकछुनाहीं ॥अवशिछूटिजातोसंसारा ।वसिवैकुंठलहतसुखसारा ॥६७॥
जेहियदुपतिपदकरिसेवकाई । दुसहविपतितुमदियोनसाई॥करिदिग्विजयभूपबड़भागा॥कीन्ह्योराजसूयबडयागा ॥

दोहा–तेहियदुपतिपदकमलके, सेवनतेकुरुराइ ॥ यहअपारसंसारते, पैहौपारसुभाइ ॥ ६८ ॥

महाप्रलयकेअंतहिकाला । हमगंधर्वभयेमहिपाला ॥ रह्योमोरउपबर्हणनामा । सबगंधर्वनमेंशिरनामा ॥ ६९ ॥
तनसुंदरसुखमाधुरबैना । देतरह्योंसबनारिनचैना॥फैलतरहीश्वासशुभवासा । लंपटअतिशयनिरतविलासा ॥७०॥
एकसमयवासवकेयागा॥हरियशगावनाहितबडभागा॥सकलप्रजापतिमोहिंबुलाये॥सोसुनिमैंअतिशयसुखपाये ॥७१॥
जोरिदेवसुंदरीसमाजा । चल्योनचनगावनसजिसाजा । यहिविधिजबपहुँच्योतहँजाई॥तबहिंप्रजापतिकोपाहिछाई ॥

दोहा–मोहिंमहामदमत्तगुनि, दियोशापअतिघोर ॥ शूद्रहोहुसोभारहित, मानभंगकियमोर ॥ ७२ ॥

तबमैंविप्रनकेगृहमाहीं । दासीपुत्रभयोसुखनाहीं ॥ पैकरिसज्जनकेसतसंगा । भयोब्रह्मकोपुत्रअभंगा ॥ ७३ ॥
मैंवरण्योंतुमसोंयहपावन । धर्मगृहस्थनपापनशावन ॥ करिगृहस्थयेधर्मसदाहीं । योगीसमहरिपुरकहँजाहीं॥७४॥
तुमहींहौजगमेंबडभागी॥आवतजिनकेभौनविरागी॥जिनगृहानितनिवसाहिंयदुराई॥जिनकीभागवरणिकिमिजाई७५॥
परब्रह्मनिरवारप्रदाता । खोजहिंजासुचरणमुनिव्राता ॥ सोमातुलसुतअहैतुम्हारे । सखामित्रगुरुप्राणपियारे ॥

दोहा–धन्यधन्यहौधन्यतुम, पांचहुपांडुकुमार ॥ जिनकेसँगविचरतरहैं, नितप्रतिनंदकुमार ॥ ७६ ॥

कमलाकैलासीकरतारा । कहिनसकहिंजेहिरूपअपारा ॥ करिकेभक्तिकरैपदवंदन । तबप्रसन्नहोवैंयदुनंदन ॥७७॥

श्रीशुक उवाच ।

सुनिनारदकेवचनसुहाये । धर्मभूपअतिआनँदपाये ॥ नारदकोपूजननृपकीन्ह्यों । चरणपखारिसलिलशिरलीन्ह्यों ॥
पुनियदुपतिकोपूजनकरिकै । विह्वलभयेप्रेमउरभरिकै ॥७८॥ धर्मभूपसोंपूजनपाई । नारदतिनसोंमाँगिविदाई ॥
यदुनंदनकोकरिपरणामा॥मुनिमोदितगमनेनिजधामा॥परब्रह्मसुनिकृष्णहिकाहीं॥विस्मितभेभूपतिमनमाहीं ॥७९॥

दोहा–वंशपृथकदाक्षायणी, मैंवरण्योकुरुराय । देवअसुरमनुजादिगण, यहिमेंप्रकटतजाय ॥
निधिनभनिधिशशिसंवतै, भाद्रमासरविवार । सतयोंयहअसकंधको, सितछटिभोअवतार ॥ ८० ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा
राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ सप्तमस्कंधे पंचदशस्तरंगः ॥ १५ ॥

दोहा–महाराजरघुराजकृत, शुभसप्तमअसकंध । यहसमाप्तमुद्रितभयो, संयुतछंदप्रबंध ॥

समाप्तोऽयं सप्तमस्कंधः ७.

इति

श्रीमद्भागवत--आनन्दाम्बुनिधि

सप्तमस्कन्ध समाप्त ७.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-बम्बई.

अष्टमस्कन्ध.
गजेंद्र
हरि
चं.
रत्नें
दैत्य
मंदराचळ
देव
मो
देव
कश्यप
वामन
बळी
वामन
मत्स्याव०
शं०

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ श्रीमद्भागवत-आनन्दाम्बुनिधि ।

अष्टमस्कंधः ।

दोहा-जययदुवरजयरुक्मिणी, जयराधाव्रजचंद ॥ शरणागतपालकप्रबल, जयसीतारघुनंद ॥
जयमुकुंदहरिगुरुचरण, जयसरस्वतिगणनाथ ॥ जयतिव्यासशुकदेवजय, जयश्रीपितुविश्वनाथ ॥
भाषाआनँदअंबुनिधि, यहअष्टमअसकंध ॥ रचहुँयथामतिमैंसुखद, श्रीभागवतप्रबंध ॥
सुनिनृसिंहकोचरितवर, अरुवर्णाश्रमधर्म ॥ फेरिप्रश्नकीन्ह्योनृपति, जोदायकअतिशर्म ॥

राजोवाच ।

दोहा-स्वायंभूमनुवंशको, सुन्योसहितविस्तार ॥ हैमरीचिआदिकनको, जामेंवंशप्रचार ॥
अबऔरहुमन्वंतरगावो । मोहिंकरणह्वैअमीपियावो ॥१॥ जेहिंजेहिंमन्वंतरमहँनाथा । होहिंजन्मकर्महुयदुनाथा ॥
जिनकोकविकोविदनितगामैं । तिनकोवरनिदेहुमुदधामैं॥२॥जेहिंमन्वंतरजोशुभकर्मा । कियोकरतकरिहैंजेकर्मा॥
पृथकपृथकतिनकोमुनिराई । मोकोतुमसबदेहुसुनाई॥३॥सुनतपरीक्षितवचनसुहाये।कहनलगेश्रीशुकसुखधाये ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिकल्पहिमहँसुनुनृपराई । षटमन्वंतरगयेसिराई ॥ इनमेंआदिकह्योतुमपाहीं । स्वायंभूमन्वंतरकाहीं ॥
दोहा-तेहिमन्वंतरमेंसकल, देवादिकउत्पत्ति ॥ तुमसोंमैंवरणनकियो, संयुतसबवितपत्ति ॥ ४ ॥
स्वायंभूमनुकेद्वैकन्या । होतभईत्रिभुवनमेंधन्या ॥ भेअकूतिकेयज्ञमुरारी । देवहुतीकेकपिलसुखारी ॥
यज्ञकियोधर्महिंउपदेशू।कपिलकियोवरज्ञाननिदेशू॥५॥कपिलचरितपहिलेमैंगायो।सुनहुयज्ञकोचरितसुहायो॥६॥
शतरूपापतिस्वायंभूमनु । राजछोडिनारीयुतगेवनु ॥७॥ जायअलकनंदातटमाहीं । यकपदपरसितहाँमहिकाहीं ॥
शतवरषहिलोंमनुतपकीन्ह्यों । श्रीपतिकीयहअस्तुतिकीन्ह्यों ॥ ८ ॥

मनुरुवाच ।

जौनविश्वकोचेतनकरतो । जेहिंनविश्वचेतनताभरतो ॥
दोहा-जोयहजगकेसोवतहुँ, जागतरहैसदाहिं । सोयहजगकोजानतो, तेहिंजगजानतनाहिं ॥ ९ ॥
यहजगकेजड़चेतनमाहीं । परमात्माव्यापितसबपाहीं॥जेहिपरतंत्रसकलजगअहई।जाहिस्वतंत्रवेदसबकहई ॥१०॥
निरखतसोतेहिंलखतनकोई । जाकोज्ञाननाशनहिंहोई ॥ सर्वभूतकोअहैअधारा । सोहरिदेवसत्यसुखसारा ॥ ११ ॥
जासुआदिमधिअंतहुनाहीं । जोसमरहतमहतत्त्वघुमाहीं॥जाकोहैनहिंबाहरभीतर।उतपतिथितिलयजातेजगकर ॥
उपादानऔहैअविकारी । सोइमहानवरगुणीमुरारी ॥ १२ ॥ सर्वशब्दजामेंलगिजावैं । विश्वरूपह्वैईशकहावैं ॥
दोहा-सत्यस्वयंपरकाशअज, यदुपतिपुरुषपुरान । मायाशक्तिहितेकरैं, जगजन्मादिमहान ॥
ज्ञानशक्तितेतजिसोमाया।रहैंजीवइवनहिंयदुराया॥१३॥प्रथमकरैंसुखहितऋषिकर्मा।कर्महिकरतहोतहतकर्मा १४
हरिकरिकर्मलिप्तनहिंहोवैं । आत्मलाभपूरणनिजजोवैं॥१५॥ऐसेहरिकोजोनितवंदत । ताकोयमकबहूँनहिंदंडत ॥
जनप्रेरककर्महिअनुसारा । सर्वज्ञहुअरुनिरहंकारा ॥ पूर्णस्वतंत्रनहैकछुआसा । निजदासनकोदेतहुलासा ॥
दीननअहैउधारनरीती । पालकसकलधर्मपरतीती ॥ ऐसेकृष्णचंद्रसुखदाई । तिनकेपदवंदौंशिरनाई ॥ १६ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-तिययुतमनुमहराजको, भनतमंत्रयहदेखि । असुरसबैतेहिखानको, दौरेक्षुधितविशेखि ॥ १७ ॥
तिनहिंविलोकियज्ञभगवाना।लैसँगजामसुरनबलवाना॥आशुहिमारिअसुरअतिघोरा।स्वर्गलोकपाल्योचहुँओरा १८

दुसरोमनुस्वारोचिपजानो।अग्नितनयताकोअनुमानो॥रोचिष्मतअरुद्युमतसुषेना।त्रयतिनसुतनमहाबिलऐना॥१९॥
तेहिमन्वंतरमहँनृपराई । रोचनइंद्रभयेसुरराई ॥ तुषितआदितहँभेअसुरारी । तहाँसततऋषिब्रह्मविचारी ॥
उर्जस्तंभादिकभेतेई । ज्ञानीविज्ञानीहरिसेई ॥२०॥ वेदशिराऋषिकेसुखकारी । तुषितानामभईवरनारी ॥

दोहा–ताकेभेश्रीकृष्णसुत, विभुयहजाहिरनाम ॥२१॥ तेहिंव्रतअट्ठासीसहस, मुनिसीख्योव्रतधाम ॥२२॥

तिसरोमनुप्रियव्रतसुतजोई । उत्तमनामकहायोसोई॥यज्ञहोत्रसृंजयपवनादिक । तिनकेसुतयेभेअहलादिक ॥२३॥
तहँसततिपवसिष्ठकुमारा । भेप्रमदादिकपरमउदारा ॥ सत्यवेदश्रुतभद्रादेवा । भयेसत्यजितइंद्रसुभेवा ॥ २४ ॥
धर्मतियासूनृतासोहाई । ताकेसत्यसेनयदुराई ॥ भयेसत्यवृतदेवनसंगै । वासवकेहैसखाअभंगै ॥ २५ ॥
तेअसत्यवादिनदुःशीलन । करतरहेजेप्राणिद्रोहघन ॥ ऐसेयक्षराक्षसनघोरा । औरहुभूतनहन्योकरोरा ॥ २६ ॥

दोहा–चौथोउत्तमअनुजमनु, तामसजाकोनाम । पृथुनरख्यातिहुआदितेहिं, दशसुतभेअभिराम ॥ २७ ॥

तहँशुरवीरसत्यहरिनामा।त्रिशिखइंद्रभोगुणअभिरामा।।ज्योतिधर्मआदिकहुतहाँहीं।भयेसततऋषितामसमाहीं २८॥
भयेविधृतसुतवैधृतनामा।नष्टवेदउद्धर्योललामा ॥२९॥ तेहिंमन्वंतरमहँहरिमेधा । भयोप्रजापतिअतिशुभमेधा ॥
ताकेहरिनीनामकनारी । तातेप्रगटेहरिगिरिधारी॥ग्राहग्रसितजोगजहिछोड़ायो। अतिकरुणाकरविरुदबढ़ायो३०॥
यहसुनिकुरुपतिअतिहरषाई । बोलेमुनिपतिसोंमनलाई ॥

राजोवाच ।

सुनहुबादरायणमुनिनाथा । मोहिंसुनावहुयहहरिगाथा ॥

दोहा–जेहिंविधिग्राहग्रस्योगजहिं, सुनिगजगिरागोविंद । चक्रनक्रहनिचक्रसों, तुरतहिंकाढ्योफंद ॥ ३१ ॥
सोईधन्यसोइपुण्यप्रद, सोईशुभसुखधाम । जासुकथामहँहरिचरित, वर्णनहोइललाम ॥ ३२ ॥

सूत उवाच ।

शुकसोंजवयहिविधिकह्यो, कुरुपतिगंगातीर । सबकेसुनतसराहितेहिं, कहनलग्योमतिधीर ॥ ३३ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते
अष्टमस्कंधे आनंदांबुनिधौ प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

शुक उवाच ।

दोहा–गिरिवररह्योत्रिकूटइक, क्षीरसिंधुकेबीच । चालिससहसैकोसको, उन्नतगगननगीच ॥ १ ॥

रहीतासुतेतीचौड़ाई । तीनिशृंगतहँरहेसोहाई ॥ कनकरजतआयसकेभावत । दिशनक्षीरनिधिनभछविछावत॥२॥
औरहुरतनधातुकेशृंगा । अतिविचित्रसोहतअभंगा ॥ लतागुल्मद्रुमसोहतनाना। झरननकोतहँशोरमहाना ॥ ३ ॥
पैनिधितरलतरंगहजारन । तासुचरणसींचहिंबहुबारन॥हरितमणिनकीछविछहराई।करतभूमिकोश्यामबनाई ॥४॥
विद्याधरचारणगंधर्वा । सिद्धमहोरगकिन्नरसर्वा ॥ सहितअप्सरनसजेशृंगारा । तासुकंदरनकरहिंविहारा ॥ ५ ॥

दोहा–नादसुनतसंगीतको, गुनिगर्जनिमृगराज । अतिअमर्षसोंयुद्धहित, गर्जेहिंसिंहसमाज ॥ ६ ॥

तहँअरण्यपशुसोहतनाना । द्रोणिनयुतगिरिलसैमहाना॥बहुविचित्रद्रुमदेवअरामा॥कलरवकरहिंविहंगललामा ॥७॥
सरितसरोवरनिर्मलनीरा । मणिवालुकसोहहितिनतीरा ॥ सुरभितअंगरागतनधारी । मज्जनकरहिंतहाँसुरनारी ॥
सुरभितासुमिलिमंदसमीरा।करतसौरभितसागरक्षीरा॥८॥तासुकंदरामहँछविछावनि।वरुणबागऋतुवंतसोहावनि ॥
सुखवनितातहँकरैंविहारा॥९॥चहुँकितद्रुमफलफूलनिभारा॥पाटलपारिजातमंदारा।चंपकअरुअशोकसुखसारा १०

दोहा–पनसप्रियालरसालबहु, अरुआमरेअनंत ॥ नारिकेलअरुक्रमुकवर, अरुखर्जूरलसंत ॥ ११ ॥

मधुअरुशालतमालहुताला । बिजैसारअर्जुनहुविशाला॥निंबउदुंबरपाकरिभावै । वटकिंशुकचंदनछविछावै॥१२॥

कोविदारसरलौपिचुमंदा। देवदारुअरुदाखअमंदा॥ इक्षुजंबुरंभावदरीतहँ। अक्षहरीतकिअमलकागिरिमहँ॥१३॥
बिल्वकपित्थऔरजंभीरा। भल्लातकआदिकद्रुमभीरा॥ जाकोरजतशृंगइकजोई। सेवनकरतनिशाकरसोई॥
दूजोकनकशृंगपरभाको। सेवनकरहिंदिवाकरताको॥ तीजेशृंगमाँहनृपराई। ब्रह्मसदनसोहतसुखदाई॥

दोहा–क्रूरकृतघ्नौनास्तिकौ, अरुपापीतपहीन॥ तिनकोगिरिनहिंलखिपरै, जेदुखदायकदीन॥

तामेंयकसररह्योअनूपा। कनककमलफूलतसुनुभूपा॥१४॥उत्पलकुमुदऔरकहलारे।सहसपत्रसोहहिंछबिवारे॥
मत्तमलिंदभरहिंगुंजारा। कलरवकरहिंविहंगअपारा॥१५॥ सारसचक्रवाकअरुहंसा। कारंडवजलकुक्कुटवंसा॥
औरहुजलविहंगचहुँओरा।करहिंमनोहरमोदितशोरा॥१६॥करहिंमच्छकच्छपसंचारा।पद्मपरागितजलसुखसारा॥
वेत्रकदंबपनसअरुनीपा। वंजुलकुंदकुरवअवनीपा॥१७॥इंगुदकुटजासिरीषअशोका। कुजकस्वर्णजूहीमुदथोका॥

दोहा–सतपत्रकअरुमल्लिका, जातिनागपुन्नाग॥१८॥ लतामाधवीजालिका, सोहहिंसरचहुँभाग॥

षटऋतुतहँनितकरहिंनिवासा।लसैसरोवरपरमप्रकासा॥१९॥एकसमयतहँसहितसमाजा। गजनसमेतमहागजराजा॥
कंटकवसनवेत्रउखारत। विहरतवनबहुविटपविदारत॥२०॥ जाकमदकोगंधहिपाई। दूरिभूरियेजाहिंपराई॥
सिंहगजेंद्रव्याघ्रअरुव्याला।मृगामहोरगशरभकराला॥खड्गीचमरीअसितहुगोरा॥२१॥वृकवराहमहिषाअतिघोरा॥
शालावृकमर्कटगोपुच्छा। औरहुशशशल्लकअरुऋच्छा॥जासुकृपालहिवसैंतहाँई।जासुकोपलहिजायपराई॥२२॥

दोहा–सोगजपतिविहरततहाँ, लहिग्रीषमकोघाम॥ करिणीकलभनसहितअति, तृपितभयोतेहिठाम॥

अतिआतुरसरवरकोधायो। धरतडगनिमहिशैलकँपायो॥गुंजतभृंगसंगतेहिंलागे।करिणीकलभचलेअनुरागे॥२३॥
कंजपरागसुगंधसमीरा। ताकोलहतगयोसरतीरा॥निजसमाजयुतपरमपियासो। मदघूमितदृगसहितप्रयासो॥२४॥
हिल्योसरोवरमहँगजराजा।जहँविकासितअंबुजगणभ्राजा॥कंजसुगंधितनिर्मलनीरा।पानकियोमेटचोश्रमपीरा॥२५॥
लैशीतलजलशुंडहिमाहीं। मज्जनकीन्ह्योमुदिततहाँहीं॥निजसुतवानितनकहँनहवायो। जिमिगृहस्थगंगामेंआयो॥

दोहा–सबकोपानकराइजल, कीन्ह्योविपुलविहार॥ गुन्योनहरिमायावशै, निजदुखहोवनहार॥२६॥

तहाँदैववशहेमहराजा। आयोएकग्राहबलभ्राजा॥ ग्रस्योचरणगजराजहिकेरो। कियोजोरकरिकोपघनेरो॥
गजहुजानिनिजकालकराला।कियोछुटनकोजोरविशाला।ग्राहग्रासितगजराजविलोकी।भयेकलभकरिणीअतिशोकी
सकेनतेहिंछोडाइकरिजोरा।करनलगेतबआरतशोरा॥२७-२८ खैंचततहांग्राहगजराजे।गजहुताहिंखैंचतअतिगाजे॥
गजग्राहहिलेआवततीरा। ग्राहहुगजहिंनीरगंभीरा॥ युद्धकरतगेवर्षहजारा। सुरसबपरमआचर्जविचारा॥२९॥

दोहा–महायुद्धकरियोंतहाँ, थाकिगयोगजराज॥ ग्राहखैंचिकैलैचल्यो, करिबलभक्षणकाज॥३०॥
यहिविधिगजकोजबपरयो, संकटपरमकठोर॥ तबयहमतिकीन्ह्योविमल, जबनचल्योकछुजोर॥३१॥
येगजगजीनमोहिंअब, दुखसोंसकैंछोडाइ॥ प्रबलग्राहमोकोग्रस्यो, रक्षकप्रभुदरशाइ॥
तातेमैंअबअवशिकै, सुमिरहुँजोजगनाथ॥ दीनबंधुगोविंदवै, हैंअनाथकेनाथ॥३२॥
धावतकालकरालते, जेरक्षतनिजदास॥ जेहिंडरमृत्युग्रसैसबै, करहुताहिकीआस॥३३॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराज
सिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे द्वितीयस्तरंगः॥२॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–यहिविधिमनहिंविचारिकै, हियधरिहरिकोध्यान॥ कियअस्तुतिश्रीकृष्णकी, भयोपूर्वकोभान॥१॥

गजेंद्र उवाच।

छंदगीतिका–प्रणमामितेहिंभगवानकोजेहितेचिदात्मकजगतहै॥प्रभुआदिकारणपुरुषईशहुईशजोदुखदरतहै॥२॥
जेहिमेंजगतयहलीनजातेहोतजातेपलतहै। जोजगवपुषजडजीवपरजोह्वैस्वतंत्रहिचलतहै॥३॥

संकल्पतेकगिनिजहिमेंलयकरहिंगोपितप्रगटऊ । जगकार्य्यकारणरूपयोतेहिलखतसाक्षीनिपटऊ ॥
हैनित्यजिनकोज्ञानआपहिआत्मकारणविमलहैं ॥ ४ ॥ जेपरहुतेपरहोहिरक्षणकरहिंतिनपदकमलहैं ॥
जबकालवशकारणसहितसबलोकलोकपनाशभे । तबगहनअतिगंभीरतमरहिगयोकोउनप्रकाशभे ॥
ऐसेहुसमयजोतमहुतपररहतसहितविकाशहै । ऐसेसमयविभुताहिकोसबभाँतितेमोहिंआशहै ॥ ५ ॥
सुरऋषिनजानहिजासुरूपहिऔरकेहिविधिजानई । नटइवभुलावतसकलजगसोइमोररक्षणठानई ॥ ६ ॥
मंगलसुखदजेहिलखनकोतजिसाधुसबजगसंगको । समसुहृदवनवासिजेहिंकैररतिसोकरेदुखभंगको ॥ ७ ॥
प्राकृतनजाकेजन्मकर्महुगुणहुनामहुधामहैं । पैभक्तरक्षणहेतप्रगटतकृपाकरिप्रदकामहैं ॥ ८ ॥
जयब्रह्मजयतिपरेशजयतिअनंतशक्तिकृपालजै । जयदिव्यमंगलरूपजयबहुरूपकर्मविशालजै ॥ ९ ॥
परमात्मआतमदीपजयजगसाक्षिलोकनपालजै।मनवचनचित्तअगम्य-॥१०॥-जयपरभक्तिलभ्यउतालजै ॥
सच्चिदानंदस्वरूपजयकैवल्यनाथउदारजै ॥ ११ ॥ जयत्रिगुणआश्रयनिर्विशेषविज्ञानकेअगारजै ॥ १२ ॥
जयप्रकृतिवपुक्षेत्रज्ञसर्वअधीशसाक्षीलोकके । जयमूलप्रकृतिसुपुरुषआतममूलप्रभुसरथोकके ॥ १३ ॥
द्रष्टासकलइंद्रियनकेजयहेतवरविज्ञानके । जयवासनातेरहितसहितप्रकाशजयसतध्यानके ॥ १४ ॥
जयअखिलकारणरहितकारणअद्भुतैकारणहुजै । जयशास्त्रश्रुतिगणरत्नसागरमोक्षकेकारणहुजै ॥
वैकुंठपतिजे-॥१५॥-प्रकृतियुतजीवनहिंकेधारकनमो।चेतनहुजड़क्षोभनसमैभासितसुसंकल्पहिनमो॥१६॥
पशुपासमोसमदासकीअनयासमोचकप्रभुनमो । विभुविकृतिपरकरुणायतनअविनाशिव्यापकसतिनमो ॥
निजअंशजीवांतरवसतभोसितसदाभगवतनमो ॥ १७ ॥ सुतबंधुतियगृहवित्तअनुरतजननकोंदुर्लभनमो ॥
शब्दादिगुणआसक्तनहिंसज्जनहृदयभावितनमो । ज्ञानात्मश्रीभगवानईश्वरपुरुषपरिपूरणनमो ॥
विरचतहरतपालतजगतअनुरतनतेहिविलसतनमो।अघहरतनिजजनदुखदरतबहुवपुधरतनिजरतनमो १८
गतिधर्मअर्थनिकामहितजेभजतपावतआशुते । बहुवरदकरुणानिधिसुवपुप्रदमोहिंछोडावहिपाशुते ॥१९॥
जेहिचरितगावतपरमपावनमोदसागरमगनह्वै । नहिचहतकछुएकांतसज्जनजगतगतिनाहिंलगनह्वै ॥ २० ॥
सोइब्रह्मपरपरईशनित्यअगम्यसूक्षमआदिहैं । अतिदूरसुलभसुभक्तितेपरिपूर्णअगजगमादिहैं ॥ २१ ॥
लघुअंशजेहिब्रह्मादिसुरअरुवेदलोकचराचरै । बहुनामरूपविभेदतेयहविश्वमेंबहुविस्तरै ॥ २२ ॥
जिमिअगिनिरवितेतेजनिकसिविलाततेहिंबहुवारहै । तिमिविश्वजातेप्रगटितेहिंमहँदुरतजगतअधारहै२३॥
सोनहिंअसुरसुरनरहुतिर्यकनारिक्लीबनकर्महै । नाहिंगुणहुजीवहुजडहुहैसोशेषमयसबधर्महै ॥ २४ ॥
मैंजियनकोनहिंचाहतोयहनागयोनिअपावनी । अभिलाषमेरेमुक्तिकीजोजननमरननशावनी ॥ २५ ॥
प्रभुविश्वकरविश्वहिविलक्षणविश्वपतिविश्वातमा । अजपरब्रह्महिपरमपदप्रणमामिमैंहेनिधिक्षमा ॥ २६ ॥
वरयोगनिर्मलचित्तयोगीजाहिनिजहियदेखहीं । योगेशतिनकेचरणकोप्रणमामिवारअलेखहीं ॥ २७ ॥
जिनकीअनंतनशक्तिअविहतअखिलमतिप्रेरकअहै । विषयीनदुर्लभदासपालकआजुमोउधरनचहै ॥२८॥
दोहा—अहंबुद्धिजेहिशक्तिते, आत्महिलखैनकोय । महिमाजासुअपारहै, सोरक्षकममहोय ॥ २९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—सोरक्षणमेरोकरै, जोयहिविधिप्रभुहोय । कीन्ह्योंविनैपुकारिकै, जबयहिविधिगजरोय ॥
तहँविधिशिवयुतगुणअभिमाना।गजपुकारकीन्ह्योंनहिंकाना॥तबप्रभुदयासिंधुगिरिधारी।नामभणितमुणनिजहिविचारी
सकलअमरपतिअंतरयामी । द्रुतदासनिदुखदारकनामी॥ऐसेयदुवरदीनदयाला।प्रगटभयेतहँअतिहिउताला॥३०॥
शंखचक्रआयुधकरधारी । पक्षिराजपरचढ़ेमुरारी ॥ वर्षहिंसुमनससुमनअथोरा । अस्तुतिकरहिंविरंचिहुँओरा ॥
रह्योसरोवरमहँगजराजा । तहाँगयोआशुहियदुराजा॥३१॥ग्राहग्रसितगजपरमदुखारी॥निरखिनाथनभआयुधधारी॥

दोहा–लैअंबुजकरऊँचकरि, तबकरिकह्योपुकारि ॥ जयनारायणअखिलगुरु, जयभगवानमुरारि ॥ ३२ ॥
देखिदुखीनिजदासको, उतरिगरुड़तेनाथ ॥ ऐंचिलियोजलतेद्रुतै, गहिहार्थीकोहाथ ॥
गहेतासुपदग्राहहू, जलतेकढ्योकराल ॥ गजहिछोड़ायोचक्रते, फारिग्राहकोगाल ॥
निरखिसबैसुरहरपिकै, वर्पैसुमनअपार ॥ कह्योसबैकोतुमहिंसम, दीननकरनउधार ॥ ३३ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ अष्टमस्कन्धे तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–तहँब्रह्माशिवआदिसुर, अरुसुरर्षिगंधर्व ॥ पुनिपुनिवर्षहिंपुष्पबहु, वरणहिंहरियशसर्व ॥
बाजहिंनभमहँदिव्यनगारे । गानकरहिंगंधर्वअपारे ॥ १ ॥ करहिंनृत्यअप्सरासुहाई । माधवकोयशसुखदबनाई ॥
ऋषिचारणअरुसिद्धसुरेशा।हरिकीअस्तुतिकियेसुवेशा॥२॥ग्राहआशुधरिसुभगशरीरा।छूटीदेवलशापहिपीरा॥३॥
हरिकोकरिबहुवारप्रणामा । गावतभयोसुयशयशधामा॥४॥माधवकृपातासुपैकीन्ही।निजपदकंजभक्तितेहिंदीन्ही॥
करिप्रदक्षिणापुनिपरणामा । हर्षितगयोआपनेधामा ॥ ५ ॥ रह्योप्रथमहूहूगंधर्वा । देवलशापदियोलखिगर्वा ॥
दोहा–तातेपायोग्राहतन, हरिताकोवधकीन । तातेविमलस्वरूपलहि, सुरनलखतगतिलीन ॥
हरिकरपरसलहतगजराजू । भोविनाशअज्ञानसमाजू ॥ भगवतरूपपीतपटधारी । चारिभुजासोहतसुखकारी ॥
केशवधामगयोअतिआसू । कियोकृपाअतिरमानिवासू ॥ ६ ॥ पूर्वजन्मकीसुनहुनरेशा । रह्योभूपवरद्राविड़देशा ॥
इन्द्रद्युम्नरह्योयहनामा । केशवव्रतधारकछबिधामा ॥ रहैकरतपूजनइककाला । धरेमौनव्रतभूपविशाला ॥
तपसीवेषजटाशिरसोहै । मज्जनकियेछोंड़िमदमोहै ॥७॥ मलयमहीधरमहँयहिभाँती।पूजनकरतरह्योदिनराती॥८॥
दोहा–मुनिअगस्त्यतहँऔचकै, आयेशिष्यसमेतु । तिनहिंनिरखिनहिंउठतभो, मौनरह्योनृपकेतु ॥
बैठइकांतभूपमुनिदेखी । कीन्ह्योपरमकोपशठलेखी ॥९॥ अहैअसाधुदुष्टमतिक्रूरा । द्विजअपमानकियोअघपूरा ॥
गजसमबैठिरह्योथिरछोनी । तातेलहैगजहिकीयोनी ॥ १० ॥

शुक उवाच ।

यहिविधिदैप्रचंडमुनिशापा।गयेशिष्ययुतपरमप्रतापा॥इंद्रद्युम्नभूपतिमनमाहीं।गुन्योभाग्यकृतशापहिकाहीं ॥११॥
गजकीयोनिलह्योदुखदाई।हरिप्रभावसुधिरहीबनाई१२यहिविधिहरिगजराजउधार्यो । पार्षदवपुधरिसंगसिधार्यो॥
सिद्धगंधर्वविबुधयशगाये । हरिकेचरणनचित्तलगाये ॥
दोहा–गजअरुग्राहउधारकरि, यहिविधिश्रीगोविंद । गमनकियोवैकुंठको, देतसुरनमुदवृंद ॥ १३ ॥
पूछचौ गोकुरुपतिमहराजा।सोवरण्योंमधिमुनिनसमाजा॥कृष्णचंद्रकोचरितसोहावन।यहगजेंद्रमोक्षणसुखछावन ॥
जोकोउसुनतभूपचितलाई । ताकोकलिकलमषनशिजाई ॥ जियतमाहँजगमेंयशछावै । अंतकालवैकुंठहिजावै ॥
अशुभस्वप्नकोफलनहिंहोवै।सशकभाँतिमंगलहगजोवै॥जोकोउअशुभस्वप्ननिशिदेखै।उठिप्रभातकरिशुचिनिजवेषै
पाठगजेंद्रमोक्षसुखगावै।ताकोअशुभस्वप्ननशिजावै॥१५॥सबकेसुनतभूपचितचायो।असगजेंद्रसोमाधवगाये ॥१६॥

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा–जोमोहिंतोहिंयहशैलसर, कंदरकाननकुंज । वेतवंशगिरिशृंगसब, सुरपादपमनरंज ॥ १७ ॥
ब्रह्मशम्भुममअयनललामा।क्षीरससुद्रमोरप्रियधामा॥श्वेतद्वीपवरविमलविकाशा१८कौस्तुभअरुश्रीवत्सप्रकाशा ॥
मालाकौमोदकीगदाको । चक्रसुदर्शनमोरसहाको ॥ पांचजन्यगरुडहिखगराई ॥१९॥ शेषकलाममरमासोहाई ॥
ब्रह्मानारदप्रदअहलादा।अरुममभक्तशम्भुप्रहलादा॥२०॥मत्स्यादिकअवतारउदारा।इनकेचरितअमितसुखसारा॥

सूर्यहुसोमहुताशनकाहीं॥२१॥प्रणवसत्यप्रकृतिहुँसुखमाहीं। गोद्विजधर्मसुभक्तिहमारी। दक्षसुतादशधर्महिनारी॥
दोहा–सत्ताइसशशिकीतिया, औरौकश्यपनारि॥ २२॥ गंगायमुनासरस्वती, नंदासरिशुभवारि॥
ब्रह्मऋषिनध्रुवऐरावतको।सप्तऋषिनगणधारकव्रतको॥ जिनकेपुण्यअहैंअश्लोका। ऐसेभूपसकलमुदथोका॥२३॥
इनसबकोजोजनअनुरागी। चारिदंडवाकीनिशिजागी॥ करपदधोयपलटिपटज्ञानी। सुमिरैइन्हैंमोरवपुमानी॥
ताकेछूटिजातसबपापा। तनकनरहततनहिंसंतापा॥२४॥जोप्रभातउठिकैगजराई। तुवकृतअस्तुतितेचितलाई॥
करैमोरिअस्तुतिसुखदाई। ताकोअंतकालमैंजाई॥ देहुँविमलमतिबंधछोड़ावनि। मेरेलोकहिकीपहुँचावनि॥२५॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–यौंकहिहरिसुरमोददै, शशिसमशंखबजाय। गयेआपनेधामको, ह्वैसवारखगराय॥ २६॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज-
श्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजू देवविरचिते
आनंदाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधेचतुर्थस्तरंगः॥ ४॥

शुक उवाच।

दोहा–पापप्रणाशनमैंकह्यो, यहमोचनगजराज। अबरैवतमन्वंतरै, सुनुकुरुपतिमहराज॥ १॥
पँचयोमनुकोरैवतनामा। तामसमनुकोबंधुललामा॥ अर्जुनबलिविंध्यादिकुमारा। रैवतमनुकेपरमउदारा॥ २॥
भयोइंद्रविभुजाकोनामा। भूतरयादिकसुरबलधामा॥ कनकरोमशिरवेदविज्ञानी। ऊर्द्ध्वबाहुआदिकमतिखानी॥
भयेसप्तऋषितेहिमन्वंतर। औरहुऐसहिजानहुनरवर॥ ३॥ शुभ्रप्रजापतिकीछबिछाई। नारिविकुंठानामकहाई॥
ताकेभेवैकुंठमुरारी। सुरसँगलैअरिसैनसँहारी॥ ४॥ जानिरमारुखश्रीभगवाना। कियवैकुंठलोकनिरमाना॥
दोहा–सकललोकअरुलोकपति, जाकोनितबहुवार। नमस्कारकरतैरहत, शोभाजासुअपार॥ ५॥
जाकोगुणप्रभावसुखछायो। प्रथमहिमैंतुमसोंनृपगायो॥धरणिरेणुकनवरुगनिलेवै। पैनसकतगुणगनिहरिदेवै॥६॥
छठयोंमन्वंतरसुविचित्रा। चाक्षुकनामसुचक्षुकपुत्रा॥ पुरुषसुद्युम्नपुरुषादिकताके। भयेपुत्रबहुपरमप्रभाके॥७॥
इंद्रभयोमंत्रद्रुमनामा। अप्यादिकसुरगणछविधामा॥ वीरहविष्मादिकहुमुनीशा। भयेसप्तऋषिसुनहुमहीशा॥८॥
तहँवैराजप्रजापतिकेरी। संभूतीतियसुछबिवनेरी॥ अजितनामयहश्रीभगवाना। प्रगटभयेतहँकृपानिधाना॥ ९॥
दोहा–जोमथिक्षीरसमुद्रको, सुधासुरनकोदीन। मंदरकोधारणकियो, कच्छपरूपनवीन॥ १०॥
यहसुनिकुरुपतिअतिहरषाई। श्रीशुककोयहविनयसुनाई॥

राजोवाच।

जेहिंविधिमथ्योनाथपयसागर।जेहिहितगिरिधार्योगुणआगर॥जेहिविधिदेवसुधाकियपाना।औरहुकेशवचरितमहाना॥
मोपरमुनिकरिकृपामहाई।वरणहुहरिचरित्रसुखदाई॥११॥हरिमहिमाविचित्रतुवगावत।मेरोचित्ततोषनहिंपावत १२
रह्योबहुततापनतेतापी। अबतुवकृपाभयोबिनतापी॥ १३॥

सूत उवाच।

यहिविधिकह्योपरीक्षितजबहीं।शौनकसुनहुव्याससुततबहीं॥नृपहिसराहिपरमअनुरागे।हरिचरित्रतहँवरणनलागे१४

श्रीशुक उवाच।

दोहा–जबअसुरनतेसुरसकल, गेअस्त्रनतेमारि॥ तबमरिपुहुमीमेंपरे, उठेनपुनिसुधिधारि॥ १५॥
औरहुएकसमयदुरवासा। रहेजातकहुँपरमप्रकासा॥ तहाँमिल्योमारगसुरराजा। भेटभईतेहिंसहितसमाजा॥
ऐरावतमेंरह्योसवारा। वज्रलियेकरप्रभाअपारा॥ मुनिदीन्हीइंद्रहिनिजमाला। सुमननकीसोहतिछबिजाला॥

सोलखुमानिशक्रमदछायो। ऐरावतकुंभनिपहिरायो ॥ ऐरावतलैशुंडहिधारी। चरणचापिचूरणकैडारी ॥
देखतमुनिकोभयोप्रकोपा। ज्वलितहुताशनमनुघृततोपा ॥ दीन्ह्योशापजवैदुर्वासा। तुवत्रिलोकश्रीहोइविनासा ॥
दोहा-वासवत्रिभुवनसहिततव, भयेविभूतिविहीन ॥ यज्ञादिकसिगरीक्रिया, आशुहिभईविलीन ॥ १६ ॥
सोलखिइंद्रादिकदुखपागे। ज्ञुरिसबमंत्रकरनतहँलागे ॥ पाईनहिंश्रीलाभउपाई। तबसिगरेसुरअतिदुखछाई ॥१७॥
शिरसुमेरब्रह्माढिगजाई।करिनतिविधिकोविनयसुनाई१८विनातेजविनबलतिनदेखी।बलप्रतापयुतअसुरनलेखी १९
करिएकाग्रमनकृष्णहिंध्याई।कह्योसुरनसोंविधिहरषाई२०हमतुमशिवअरुसबअसुरारी।नरतिर्यकतरुजेजियधारी ॥
जेहिंअवतारकलानिअंशते।उत्पतिहैंश्रुतिगनप्रशंसते॥तिनकेशरणहोबअबलायक।रक्षणकरिहैंत्रिभुवननायक २१॥
दोहा-यदपिनतिनकोवध्यकोउ, नहिंरक्षणकेयोग ॥ त्यागनयोगनआदरै, योगसुनहुँसुरलोग ॥
तदपिनाशसृजपालनहेतू।त्रिगुणधरतश्रीरमानिकेतू॥२२॥तिनकोपालनकोयहकाला।जानहुसत्यसकलदिगपाला ॥
तातेहरिकेशरणसिधारी। लेहुआपनोसकलसुधारी ॥ जगन्नाथहैदेवनप्यारे। देहिनकेदुखनाशनहारे ॥ २३ ॥
यहिविधिकहिविधिदेवनकाहीं।लैतिनकोअपनेसँगमाहीं॥गयेअजितकृष्णहिकेधामा।जोप्रकृतिहिपरअतिअभिरामा।
धर्‍योअजितअवतारमुरारी। प्रथमसुन्योयहसबअसुरारी ॥ लख्योनताकोरूपअनूपा। करिइंद्रीनिश्चलसुनुभूपा ॥
दोहा-करनलगेअस्तुतितहाँ, ब्रह्मासुरनसमेत ॥ अमलउपनिषदवाणिते, प्रगटनकृपानिकेत ॥ २४ ॥ २५ ॥

ब्रह्मोवाच।

गीतिकाछंद-अविकारसत्यअनंतआदिहुसकलअंतरगतअहै। प्राकृतशरीरहिरहितमनवचनैअगोचरदुखदहै ॥
नहिंतर्कणाकेयोग्यसुरगणश्रेष्ठसबजनचाहके। ऐसेसुहरिकेचरणवंदनकरहुलोकपनाहके ॥ २६ ॥
बुधिप्राणआतमइंद्रियनकेसाक्षिशक्तिनसहितजो। अरुविषयइंद्रिनकेप्रकाशकत्रयअवस्थारहितजो ॥
कहुँरागद्वेषनपुरुषज्ञानअज्ञानपक्षनजासुमैं। व्यापितगगनसमषट्गुणनयुतकरहुँवंदनतासुमैं ॥ २७॥
जेहिंपंचप्राणदशेंद्रिआरात्रिगुणनाभिविराजहीं। अरुपंचभूतहुप्रकृतिमहदहंकारधारसुप्रजहीं ॥
भवचक्रइमिचंचलमनोमयईशमायारचितजो।तेहिंअक्षप्रभुकीशरणनमैंनहिंविवशमायाअचितजो २८
जोएकरूपहितमसपरविषयिनविलोकनदुर्लभै। रागादिदोषनरहितानिरुपमधाममुक्तबसैअभै ॥
असधाममेंजोलसतनितजेहिंयोगियोगनध्यावहीं।तेहिसत्यपरमप्रकाशचरणनसुरनयुतशिरनावहीं २९
नहिंतरतकोऊजासुमायाकरतिहैमोहितजनै। परमार्थपुरुषनजानतोसोउजितजोजियजडगुनै ॥
सबभूतविचरतसमयजोअजईशकोजोईशहै। तेहिंबारबारप्रणाममैंकरतोचरणधरिशीशहै ॥ ३० ॥
येहमसकलसुरऋषिसकलजेहिंसत्त्वप्रियतननतेभये। अंतरबहिरकोज्ञानजिनकोज्ञानविज्ञानहिमये ॥
तेउजासुसूक्ष्मगतिनजानहिंकृपाजाकीचाहहीं। तेहिपरब्रह्मप्रकाशहरिपदप्रणतिकरहिंउछाहहीं ॥
दोहा-जिनकोसुरहुनजानहीं, मायहिरहतभुलान ॥ असुरादिककिमिजानहीं, जेरजतमहिंप्रधान ॥ ३१ ॥
गीतिकाछंद-जामेंचतुर्विधिभूतनिजकृतधरणिजाकोचरनहै। सोमहापुरुषविज्ञानमयपरतंत्रनहिंजगभरनहै ॥
करुणाअपारउदारअतिनिजदासकरतउधारहै। सोब्रह्मपरमविभूतिहोयप्रसन्ननंदकुमारहै ॥ ३२ ॥
सबलोकलोकनपालजेहिंतेजनतजीवतबढ़तहैं। सोअंबुवरिजवानजाकोवीर्य्यमुनिगणपढ़तहैं ॥
जाकेचरणकोध्याइजगजनलहतमोदअगारहैं। सोब्रह्मपरमविभूतिहोयँप्रसन्ननंदकुमारहैं ॥ ३३ ॥
सबप्रजनकोजोवृद्धिकारकतरुणकोजोईशहै। सबसुरनकोबलअन्नआयुषसर्वदारजनीशहै ॥
सोचंदजाकोअहैमानसनखतगणसरदारहै। सोब्रह्मपरमविभूतिहोयप्रसन्ननंदकुमारहै ॥ ३४ ॥
जोकर्मकांडनिमित्तप्रगट्योजन्योजातेकनकहै। जोउदरमधिवसिकरतअन्नहिपचनआनँदजनकहै ॥
सोअनलजाकोअहैआननजासुतेजअपारहै। सोब्रह्मपरमविभूतिहोयप्रसन्ननंदकुमारहै ॥ ३५ ॥
सज्जननगमनतहारिसदनजोमुक्तिकोवरद्वारहै। जोअमृतमृतकोहेतुश्रुतिमयब्रह्मकोआगारहै ॥

सोतरनिजाकोहैविलोचनजगतकोआधारहै। सोब्रह्मपरमविभूतिहोयप्रसन्ननंदकुमारहै ॥ ३६ ॥
सहओजबलजातेप्रगटचरअचरकोजोप्राणहै। अवनीशसमजेहिंहमउपासहिंवेगजासुअमानहै ॥
सोपवनजाकेप्राणतेप्रगटितपरमविस्तारहै। सोब्रह्मपरमविभूतिहोयप्रसन्ननंदकुमारहै ॥ ३७ ॥
तनछिद्रजाकेदूरतेउदैजगश्रवणतेदशदिशिभई। मनप्राणवपुअसुकोअधारविषेवजेहिंइंद्रीठई ॥
सोनभभयेजेहिंपरपुरुषकेनाभितेअविकारहै। सोब्रह्मपरमविभूतिहोयप्रसन्ननंदकुमारहै ॥ ३८ ॥
बलतेमहेंद्रप्रसादतेसुरकोपतेशिवजासुके। मतितेचतुर्मुखवेदऋषितनछिद्रतेअतिभासुके ॥
अरुप्रजापतितेहिमेंहतेउतपतिभयेबहुवारहैं। सोब्रह्मपरमविभूतिहोयप्रसन्ननंदकुमारहै ॥ ३९ ॥
उरतेरमाछायापितरजेहिधर्मअस्तनतेभयो। अरुपीठितेअधरमजन्योदिविशीशतेउतपतिलयो।
जेहिंवरविहारहितेभईसुरसुंदरींसुकुमारहै। सोब्रह्मपरमविभूतिहोयप्रसन्ननंदकुमारहै ॥ ४० ॥
अरुविप्रवेदहुजासुमुखतेबाँहतेक्षत्रीवले। जेहिंउरुतेउतपतिभयेसबवैश्यअतिचातुरभले ॥
अरुशूद्रपदतेप्रगटसेवावृत्तिजिनहिंअधारहै। सोब्रह्मपरमविभूतिहोइप्रसन्ननंदकुमारहै ॥ ४१ ॥
अरुअवअधरतेलोभऊरधओठतेजेहिप्रीतिहै। दुतिनासिकातेपरसतेभोकामहितपशुरीतिहै ॥
जेहिपलकतेभोकालमुखतेभयोयमविकरारहै। सोब्रह्मपरमविभूतिहोयप्रसन्ननंदकुमारहै ॥ ४२ ॥
गुनकर्मपाँचौंभूतवयब्रह्मांडजेहिंसंकल्पते। जेहिंजानहींबुधअबुधजाहिनजानहींमतिअल्पते ॥
जोभक्तकोरक्षकसदादुष्टनविमर्दनहारहै। सोब्रह्मपरमविभूतिहोयप्रसन्ननंदकुमारहै ॥ ४३ ॥
अविकारशक्तिअधारजेनिजआत्मकरनविहारजै। मायारचितगुणमैंनरतमारुतसरिससंचारजैं ॥
करुणाअपारअधारजगसुकुमारअतिछबिवारजै। आनंदसारविहारजैरघुराजनंदकुमारजै ॥ ४४ ॥
दोहा—शरणागतहमरावरे, कीजैत्राहिसनाथ। मंदहँसनियुतमुखकमल, लखनचहैंतुवनाथ ॥ ४५ ॥
जबजबभक्तनपरहिकलेशा।तबतबप्रगटहुतुमहिंरमेशा॥निजदासनकोदुःखविदारी।करौआशुहीकृष्णसुखारी॥४६॥
करहिंजेबहुकलेशयुतधर्मा। तुमहिंसमर्पणकरहिंनकर्मा॥तितिनकोफलदृगनहिजोवैं। तुमहिंसमर्पेपूरणहोवैं ॥४७॥
लैकिकपरलौकिकव्यापारा।तुमहिंसमर्पेदोउसुखसारा॥तुमहिंनाथजगअंतरचारी।तुमहिंनाथसबकेहितकारी॥४८॥
जिमितरुमूलहिंसिंचनकीने।होतसकलशाखारसभीने॥तिमिजोपूज्योतुमहिंमुरारी।सोसबदेवनकियोसुखारी ॥४९॥
दोहा—नहिंजानतकोउचरिततुव, त्रिगुणनाथबहुनामि॥प्राकृतगुणतेरहितहो, तुमहिंअनंतनमामि ॥
सतगुणतेहैंप्रगटसुर, सतगुणपालकआप। तातेप्रगटिमुकुंदअब, मेटहुसुरसंताप ॥ ५० ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे पंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

शुक उवाच।

दोहा—जबयहिविधिविधिसहितसुर, अस्तुतिकियोबनाइ ॥ तबतिनकेसनमुखनृपति, प्रगटेश्रीयदुराइ ॥ १ ॥
मानहुसहसउदितभेभानू। दिशनछाइगोभासमहानू ॥ देवनदृगछायोपरकाशा। लखिनपरैमहिनभदशआशा ॥
निरखिपरतनहिंनिजाहिशरीरा।कैसेनिरखिसकैंयदुवीरा॥२॥ब्रह्माशिवलखिरूपअनूपा। अतिआनँदपायोसुनुभूपा॥
मरकतमणिसमसुंदरश्यामा। अंबुजअरुणनैनअभिरामा ॥३ ॥ पुरटसमानपीतपटसोहै। चारुप्रसन्नअंगमनमोहै॥
भृकुटिविलासबंकछबिछावै। शशिसहस्रसमवदनसोहावै॥४॥मणिमयमौलिमौलिमहँराजै। भुजकेयूरअनूपमभ्राजै॥
दोहा-कुंडललोलअमोलअति, लहिकपोलकीकांति ॥ दुगुनीदुतिदरशावही, निरखतहोतिनशांति ॥ ५ ॥
क्षुद्रघंटिकाप्रभाविशाला। सोहतअतिसुंदरवनमाला ॥ कड़ेकरणमहँपरमसोहावन। नूपुरचरणनमहँछबिछावन ॥

कौस्तुभकंठमहाछबिछाई। अंबुधिजाउरमहँसुखदाई ॥ करैउदरलौंहारविहारा। लखतजाहिमनटरैनटारा ॥ ६ ॥
अस्त्रसुदर्शनादिनधारी। प्रभुकोसेवनकरहिंसुखारी ॥ निरखिनाथकोरूपअनूपा। ब्रह्माशिवऔरहुसुरभूपा ॥
कियोधरणिमहँदंडप्रणामा। पूरणभयेसकलमनकामा ॥ लैशिवसहितअमरअनुरागे। अस्तुतिकरनचतुर्मुखलागे ॥७॥

ब्रह्मोवाच।

दोहा—जैमुकुंदगोविंदजै, जैआनंदअमंद ॥ जैदुखद्वंद्वहिमंदकर, जैवृन्दावनचंद ॥
छंदगीतिका—नहिंहोतकर्माधीनतुवउतपतिपालनसंहारौ। प्राकृतगुणनतेरहितआनँदसिंधुहौविश्वंभरौ ॥
सूक्षमहुतेसूक्षमअहौपूरणप्रकाशअखंडहौ। प्रगटितप्रभावनमामितुमकोअसुरदरनप्रचंडहौ ॥ ८ ॥
यहरूपपूजहिंमोक्षकामीवेदतंत्रविधानसों। तिहुँलोकयुतआपुनहिमेंतुममेंलखोअवधानसो ॥ ९ ॥
जगआदितुममेंरह्योमधिमेंतुमहिंमेंअंतहुँरह्यो। तेहितेजगतकेआदिमध्यहुअंततुमकोश्रुतिकह्यो ॥
जैसेकलशकीमृत्तिकापैजीवजड़तेपरअहौ। सर्वदानाथस्वतंत्रविलसहुदासकोदुखनहिंसहौ ॥ १० ॥
निजप्रकृतितेयहविश्वसिरजिप्रवेशकरिविहरहुहरी। पैविश्वगुणनहिंलिप्तहौ। निरखैसुबुधध्यानहिंधरी ॥ ११ ॥
जिमिअनलईंधनमेंमहीमेंअन्नजलगोमेंपयो। तिमियोगबलतेतुमहिंनिरखहिंयोगिजड़जीवनठयो ॥ १२ ॥
हेकमलनाभिविलोकितुमकोसकलपूजीकामना। जिमिदुरददहितदमारितेसुरसरिहिलभतेसुखमना ॥१३॥
शरणागतनपालकप्रबलजेहिहेतहमतुवपदगहे। सोसकलअंतर्यामिजानहुकरहुसोकाबहुकहे ॥ १४ ॥
हमशिवसुरादिकहोहिंतुमतेअनलतेजिमिकणझरैं। नहिंजानहींआनंदकेहिविधिहोइगोअबकाकरैं ॥
दोहा—तातेकरिकैप्रभुकृपा, कृपासिंधुयदुराइ ॥ द्विजदेवनकोमोदकरि, देहुउपायबताइ ॥ १५ ॥

श्रीशुक उवाच।

जबयहिविधिब्रह्मादिकदेवा। विनयकियोकरजोरिससेवा ॥ तबसुरअभिप्रायप्रभुजानी। सुरकारजमहँअसअनुमानी ॥
सागरमंथनादिकरिलीला। करहुँविहारसुखदशुभशीला ॥ अससुरेशपतिमनहिंविचारी। सबदेवनसोंगिराउचारी १६-१७

श्रीभगवानुवाच।

हेविरंचिहेशंभुसुरेशा। हेसबसुरममसुनहुँनिदेशा ॥ जेहिंविधिपैहौसुखसुरराई। सोउपायमैंदेहुँबताई ॥ १८ ॥
जाइकरहुदानवनमिताई। जबलोंअपनोंबलनदेखाई ॥ अबैकालउनकोसुखदाई। तातेउचितहिंकरबमिताई ॥१९॥
दोहा—बड़ोकामकरिबेलिये, उचितअरिहुँसोहेत ॥ कामभयेपरमारिये, शत्रुनकोकरिनेत ॥
जिमिभुजंगजोपऱ्योटेपारी। निजनिकसनकेहेतदुखारी ॥ करतमूससोंप्रथममिताई। कढ़िआयेपुनिडारतखाई ॥२०॥
सुधानिकासनकरहुउपाई। अबनहिंकरहुविलंबमहाई ॥ जाकेपानकरतसंसारी। होतअमरआशुहितनधारी ॥२१॥
सबऔषधिपैनिधिमहँडारी। करिमंथानमंदरहिभारी ॥ वासुकिनागहिगुनकरिलीजै। सावधानह्वैमंथनकीजै ॥२२॥
ममसहाइसबसुरसुखपैहैं। दानवसकलदुःखतनछैहैं ॥२३॥ जोजोकहैंअसुरयहिकाला। सोसोमानिलेहुसुरपाला ॥
दोहा—सुनहुसकलसुरवरसही, यहजानतसबकोइ। जोउपायतेहोतहै, सोनपराक्रमहोइ ॥ २४ ॥
कालकूटतहँअवशिकढ़ैगो। ताहिनडरियोकछुनकरैगो ॥ कामक्रोधअरुलोभतहाहीं। कीजोनहिंसबवस्तुनमाहीं ॥२५॥

श्रीशुक उवाच।

असकहिदेवनसोंभगवाना। भयेभूपतहँअंतरधाना ॥२६॥ शिवविरंचिकरिहरिहिप्रणामा। गमनकरतभेनिजनिजधामा ॥
अरुमहेंद्रआदिकअसुरारी। बलिकेधामगयेछलकारी ॥२७॥ देखिसुरनकहँअसुरप्रचंडा। मारनकहँधायेबरिबंडा ॥
निरखिनिरायुधदेवनकाहीं। भईदयाबलिकेमनमाहीं ॥ संधिविरोधहिजाननवारो। निजसुभटनबलिवचनउचारो ॥
दोहा—देवनकेमारनहितै, करहुनअसुरप्रयास। अबनहिंरोकहुसुरनको, आवतमेरेपास ॥ २८ ॥
सुनतसबैदानवसुखपाये। देवनकोबलिढिगलैआये ॥ लख्योजायसुरदानवराजै। प्रभावंतमधिदैत्यसमाजै ॥

लियोजीतिजोत्रिभुवनकाहीं।जाकोयशफैल्योजगमाहीं२९मधुरमहेंद्रवचनमुखगाये।जेहिंविधियदुवरतिन्हैंसिखाये।
सुरअरुअसुरअहैंदोउभाई। उचितनतिनकेबीचलड़ाई॥ तातेअसमोहिंउचितदेखावै। जोतुम्हरेहुमनमेंपरिजावै॥
दोउपैनिधिमथिसुधानिकासी। करहिंपानहोवैसुखरासी॥ दानवदेवअमरजबह्वैहैं। तबकोउडसेभीतिनपैहैं॥ ३०॥

दोहा–यहिविधिसुनिवासववचन, दैत्यराजहरषाय। कह्योविचारकियोभले, तुमसुजानसुरराय॥

शंबरआदिकदैत्यमहाने। वासववचनसुनतहरषाने॥ ३१॥ तहंदेवदानवसुखछाई। आपुसमेंकरिसबैमिताई॥
उदधिमथनकोसमयविचारी। अमृतहेतदोउकियेतयारी॥३२॥बाहुदंडसोंसुरहुसुरारी। लियोमंदराचलहिउखारी॥
पैनिधिगमनेयुतअहलादा। बारहिंबारकरतदोउनादा॥३३॥ जबमंदरहिदूरिलैआये। तबसुरअसुरमहाश्रमपाये॥
सकेनलैचलिमंदरभारी।व्यथितदियोमारगमहँडारी॥३४॥गिरतमंदराचलखछायो।सबदेवनदानवनचपायो॥३५॥

दोहा–कंधबाहुकटिसबनके, टूटेलहिगिरिभार। जेकछुबाँचेअसुरसुर, तेकियहाहाकार॥

तिनकोजानिमनोरथभंगा। ह्वैसवारहरिनाथविहंगा॥ अतिआतुरआयेतेहिंठोरा। करुणाकरदेवकीकिशोरा॥३६॥
गिरितेमरेनिरखियदुराई। दियोदेवदानवनजियाई॥ उठेसकलसोवतसेजागे। मानहुकोहुतनकछुनहिंलागे॥३७॥
तहांमंदराचलकहनाथा। विनप्रयासगहिएकहिहाथा॥ गरुड़पीठिधरिचढिभगवाना। कियोक्षीरसागरहिपयाना॥
चलेसुरासुरदौरतसंगा। प्रभुकीअस्तुतिकरतअभंगा॥ पहुँचेजबैक्षीरनिधितीरा। सुरअसुरनसमेतयदुवीरा॥३८॥

दोहा–तबसागरकेतीरधरि, मंदरगरुड़उतारि। हरिशासनलहिगमनकिय, वासुकिभीतिविचारि॥ ३९॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे षष्ठस्तरंगः॥ ६॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–सुधाभागकहिदेनसुर, वासुकिनागबोलाइ। ताकोमंदरमध्यमें, गुनसमदियलपटाइ॥ १॥

मोदितअमृतहेतमनदीन्हें।सागरमथनअरंभहिकीन्हें।प्रथमगह्योहरिवासुकिआनन।अहिमुखअसुरनग्रहणकरावन॥
हरिपाछेदेवहुगहिलीन्हें।२।देखतअसुरतर्कमनकीन्हें।शुभमुखदेवनग्रहणकरायो।अशुभपुच्छहरिहमहिंवतायो ३
ऐसोदानवमनहिंविचारी। माधवसोंसबगिराउचारी॥शुभअरुअशुभहमहुँहरिजानैं।अशुभपुच्छकिमिग्रहणहिठानैं॥
असकहिमौनरहेअतिनिडरे।जानिअमंगलपुच्छनपकरे॥४॥असुरमौनलखिहरिमुसक्याई।सुरयुतगहेपुच्छसुखदाई॥

दोहा–तहँसुरासुरवासुकिहि, पकरिसुनिजनिजभाग॥५॥ अमृतहेतपयसिंधुको, मोदितमंथनलाग॥

लह्योनमंदरमथतअधारा। नीचेकोधसिचल्योअपारा॥६॥यदपिसुरासुररोकतजाहीं। चलोजातअधउमगतनाहीं॥
देखिसकलतहँभयेदुखारी। निजप्रयाससबवृथाविचारी॥ सूखिगयेमुखदोहुनकेरे। मानेसबअभाग्यकेफेरे॥ ७॥
विघनविलोकिवलीभगवाना।जिनकोबलत्रिभुवनकोजाना॥तहँधरिकच्छपरूपविशाला।क्षीरसिंधुमहँपैठिकृपाला॥
मंदरकोनिजपीठिहिधार्‌यो।अधतेऊरधतुरतउबार्‌यो॥८॥निकस्योनिरखिशैलदोउवीरा।मथनलगेपुनिकैधरिधीरा॥

दोहा–लाखयोजनहिपीठिकरि, मंदरधार्‌योनाथ। शोभितहोतभयेतहाँ, मनहुदीपनिधिपाथ॥ ९॥

तहँसुरासुरअतिसुखपागे।अतिबलसोंगिरिऐंचनलागे।निजपीठिहिमहँशैलभमावत।हरिमानतमोहिंकोउखजुआचत
देवनदैत्यनवासुकिमाहीं। धर्‌योतेजनिजभोश्रमनाहीं॥११॥मंदरउपरबैठिभगवाना। सहसबाहुसोधर्‌योमहाना॥
मनहुशैलपरशैलविराजा।कियअस्तुतिविधिशम्भुसमाजा॥वरषनलगेसुमनचहुँओरा। सुरसुंदरीकियोकलशोरा१२
मथनसाजुमहँहरिबलछायो।मथतसमयकोउदुखनहिंपायो।क्षीरधिमथनलगेबलवारे।मकरमीनभेदुखितअपारे१३॥

दोहा–सुरअसुरनऐंचततहाँ, पर्‌योवासुकिहिजोर॥ सहसवदनअरुदृगनसों, वम्योज्वालविषघोर॥

तहँबलिइलवलादिबलवाना। पौलोमहुकालेयमहाना॥ जरेसकलआगतविषज्वाला। ज्योंदवारिवनवृक्षविशाला॥

गहेपूछिनहिंअबपछिताने । माधवकृतयहछलसबजाने ॥१४॥ दहनदपटदेवनढिगजागी।पागबागदाहनद्रुतलागी॥
धूमधूसरितवदनभयेहैं । सकलदेवह्वैव्यथितगयेहैं ॥ तबहरिप्रेरितमेवअपारा । छोडनलगेअंबुकीधारा ॥
मारुतशीतलवहितेहिठोरा।कियोशांतवासुकिविषघोरा॥१५॥मथतसुरासुरकेयहिभाँती।बीतिगयेसहसनदिनराती॥
दोहा-कढयोअमृतनहिंजबअसुर, सुरहुथकेबड़भाग ॥ अजितछोडाइतिन्हैंतबै, आपहिमंथनलाग ॥ १६ ॥
छंदमनोहरा-पटपीतललामातनघनश्यामाअतिअभिरामाप्रदकामा, कटिअतिक्षामा ।
मधिअमलकपोलाकुंडललोलापरमअमोलाछविधामा, क्षणदुतिवामा ॥
चलकचघुँघुवारेअहिसमकारेसबसटकारेसुकुमारे, मुनिमनहारे ।
विलसतिवनमालानैनविशालापरमरसालाअनियारे, कछुअरुणारे ॥
निजभुजजैकारीजगभैहारीवासुकिधारीगिरिधारी, जनसुखकारी ।
तहँमथतमुरारीक्षीरधिभारीकरनपसारीछविधारी, मनुमहिधारी ॥
शिरमुकुटप्रकासीकौस्तुभभासीहृदयविलासीद्युतिखासी, आनँदरासी ।
पदकंजनिआसीमुनिमनवासीनाशकफाँसीसमकासी, जगपरकासी ॥ १७ ॥
दोहा-मच्छकच्छसबविकलभे, कीन्ह्योआरतशोर ॥ मथतउदधिप्रथमहिकढयो, हालाहलविषघोर ॥ १८ ॥
दिशिविदिशनमहँविषकीज्वाला । छाइरहीअतिअसहकराला ॥ जरनलगेसुरअसुरकतारे । भागिचलेसिगरेभैमारे॥
सक्योनकोइतिन्हैंबचाई । गिरेसदाशिवशरणहिजाई॥१९॥जोचाहतत्रिभुवनकल्याना । गौरीसहितधरैहरिध्याना॥
गिरिकैलासबैठिवृषकेतू।करतमहातपजनगतिहेतू॥निरखिशिवैसिगरेदुखधामा।कीन्हीअस्तुतिसहितप्रणामा॥२०॥

प्रजापतय ऊचुः ।

महादवदेवनप्रभुपावन । भूतात्मासबभूतनभावन॥हमैंदहतविषत्रिभुवनजारक।तुमबिननहिंदेखातउधारक ॥२१॥
दोहा-बंधमोक्षप्रदजगतके, तुम्हीएकहौईश ॥ यातेज्ञानीतुमहिंको, भजनकरैंगौरीश ॥ २२ ॥
छंदगीतिका-उतपतिपालनप्रलयजगकीकरनजबइच्छाकरो । निजशक्तितेतबब्रह्मविष्णुमहेशयेत्रैवपुधरो ॥ २३ ॥
तुमपरब्रह्मसुपरमगुप्तहुचितअचितसिरजकअहो ॥ २४ ॥ जाआदिजगतनिवासजगवपुजगतपतिजनसुखचहो ॥
तुमवेदवरणितसकलआत्माकालक्रतुसतिधर्महो । गुणद्रव्यइंद्रीप्राणआपस्वभावसबशुभकर्महो ॥
तुमप्रणवप्रतिपादित-॥२५॥-अखिलसुरमेंअनलतुववदनहै।पदकंजपुहुमीकालगतिदिशिकरनवरुणहुरसनहै ॥२६॥
नभनाभिमारुतश्वाससूरजनैनजलतुवरेतहै । आतमाजननआधारशशिमनशीशदेवनिकेतहै ॥ २७ ॥
दोउकुक्षसागरअस्थिगिरितरुलताओषधिरोमहै । हैधातुतुवयेछंदसातौहृदयधर्महुहोमहै ॥ २८ ॥
मुखपंचश्रुतितिहिरोअहैजेहिअष्टत्रिंशतमंत्रहैं । परमार्थतत्त्वशिवाख्यज्योतिस्वरूपआपस्वतंत्रहै ॥ २९ ॥
आवृतनआपअधर्ममेंजगवीजत्रिगुणत्रिनैनहै । प्रगटतनिगमसरवज्ञवेदहुलखनिछंदहिऐनहै ॥ ३० ॥
विधिहरिनजानहिंरावरीगतिअखिललोकनपालहौ ॥ ३१ ॥ तुवज्योतित्रैगुणहीनब्रह्मस्वरूपसमदिक्पालहौ ॥
मनसिजत्रिपुरअरुदक्षआदिविनाशनहिंतुवबलघनो । निजकृतजगतनिजदृगअनलकनशिखानाशतनहिंगनो॥३२॥
मुनिमनविचिंतितचरणजिनयुतउमातपकरिरक्षकै । निरलज्जशठतिनकोकहतरतअशमशानहिहिंसकै ॥ ३३ ॥
चिदचिदहुपरव्यापकतुम्हैंब्रह्मादिसुरनहिंजानहीं । तौकौनविधिअस्तुतिकरनहमरावरीअनुमानहीं ॥ ३४ ॥
दोहा-हमकेवलयहजानहीं, तुमतेपरनहिंकोइ ॥ जीवनकेमंगलहितै, रूपप्रगटतुवहोइ ॥ ३५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-निरखिप्रजनकोदुःखअति, करिकैकृपामहेश ॥ गौरीसोंबोलेतहाँ, भूतमित्रभूतेश ॥ ३६ ॥

महादेव उवाच ।

मथ्योसुरासुरक्षीरधिकाहीं । निकस्योहालाहलतेहिमाहीं॥तातेजरेजातसबप्रानी।निरखहुमहाकलेशभवानी ॥३७॥

तिनकोंअभयप्राणकोदाना।सकलभाँतिमोहिंउचितलखाना॥अहैप्रभुनकीयहप्रभुताई।दीननपालनकरबबनाई ३८
साधुप्राणदेप्राणिनपालै। सुरतिकरतनहिंवैरविशालै ॥३९॥ देतहिंजीवनजीवनदाना। आशुप्रसन्नहोतभगवाना॥
हरिप्रसन्नजेहिंहोतभवानी। तबहमसबप्रसन्नतेहिप्रानी॥तातेमैंसबहितकल्याना।करिहौंअवशिहलाहलपाना॥४०॥
दोहा-जबशंकरयहिविधिकह्यो, तबगौरीहरषाइ। गुनिप्रभावनिजनाथको, अनुमतिदियोसुनाइ॥
करनहेतहालाहलपाना।गयेक्षीरनिधितीरइशाना॥४१॥हरसमेटिधरिकरतलमाहीं।कियोपानहालाहलकाहीं॥४२॥
सोऊअपनोबलहिदेखायो।नीलकंठशिवकाहँबनायो॥ सोभूषितकीन्ह्योगलकाहीं॥४३॥ हरकेविथाभईकछुनाहीं॥
ह्वैवोपरदुखमाहँदुखारी। सोइआराधनहरिकोभारी॥४४॥निरखिशंभुकोकर्ममहाना। तहँविरंचिहरिकियेबखाना॥
प्रजासमूहमोदअतिपायो। उमानैनआनँदजलआयो॥ दैदुंदुभिवरषेसुरफूला। कह्योकौनप्रभुशंकरतूला॥४५॥
दोहा-पियतगिर्‌योकरतेजोकछु, विषतेहिंतुरतहिधाइ। विषीजंतुअहिआदिसब, पानकियेहरषाइ॥४६॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते अष्टमस्कंधे सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-हालाहलकोपानकिय, जबशंकरहरषाइ। तबहिंसुरासुरक्षीरनिधि, मथनलगेमनलाइ॥
सुरभीतवनिकसीसुखदाई॥१॥जाकोऋषिलीन्ह्योंतहँधाई॥सविधियज्ञकरिजाकेक्षीरा।गमनहिंब्रह्मलोकमुनिधीरा२
पुनिउच्चैश्रवातहँवाजी।निकस्योशशिसमानछबिराजी॥लीन्ह्योबलिअतिचाहतताको।हरिसिखयेहरि लियोनवाको॥
निकस्योपुनिऐरावतनागा।चारिदंतसुंदरसबभागा॥ श्वेतवरणतनपरमप्रकाशा।जाकोलखिलाजतकैलाशा॥३-४॥
पारिजातपुनिकढ्योसोहावन। जोसुरलोकनकोछबिछावन॥ देतकामनापूरिअरामै। जैसेकुरुपतिआपधरामै॥५॥
दोहा-पुनिकौस्तुभमणिकढतभो, अरुणवरणसुखकंद। उरधारणहितआशुहीं, लीन्ह्योताहिमुकुंद॥६॥
पुनिअप्सरासजीशृंगारा। निकसीतहँसुषमाआगारा॥ करहिकटाक्षमंदमुसक्याई।दिविवासिनकहँजेसुखदाई॥७॥
पुनिप्रगटीश्रीरमासोहाई। जाकीछबिदशदिशिमहँछाई॥चपलासमसबकेचखमाहीं।चौंधिपर्‌योचकिरहेतहाँहीं॥८॥
निरखितासुवयगुणवररूपा। सबकोमनहरिगोसुनुभूपा॥ लेनचहेसुरअसुरहुताको।जान्योनाहिंमनोरथवाको॥९॥
दीन्ह्योतेहिआसनसुरसाई।तनधरिघटभरिसरिजललाई॥औषधिअवनिउचितअभिषेकू।ल्याइदईअतिआशुअनेकू॥
दोहा-पंचगव्यगोवनदई। सुमनदियोऋतुराज॥१०॥११॥ कमलाकोअभिषेकविधि।विरच्योमुनिनसमाज॥
तहँगंधर्वकियेकलगाना। नाचनलगींअप्सरानाना॥१२॥ शंखवेणुअरुवीणमृदंगा। गोमुखमुरजढोलइकसंगा॥
मेघमूर्तिधरिलगेबजावन।भयोशोरतहँअतिसुखछावन॥१३॥लैदिग्गजकलशननिजशुंडा।करवायोअस्नानअखंडा॥
द्विजवरवेदपढ़नतहँलागे। रमाचरणमहँअतिअनुरागे॥१४॥ युगलपीतपटसिंधुविशाला।दियोवरुणवैजंतीमाला॥
जाकोकरिपानहिमकरंदा। वैरिरहतनहिंटरतमलिंदा॥१५॥तेहिंदीन्ह्योंभूषणविश्वकर्मा।अतिविचित्रसोहतप्रदशर्मा॥
दोहा-नागदियोकुंडलसुभग, दियोसरस्वतिहार॥ कमलाकोदीन्ह्योंकमल, कमलासनसुखसार॥१६॥
ताहीसमयमालिंदहुलासी। लैकरकमलमालछबिरासी॥चलीरमापुहुमीछबिछावत।कियसुस्तवनद्विजनश्रुतिगावत॥
कुंडलदियेकपोलनिमाहीं।मनहुशोभसरहंससोहाहीं॥जेहिंमुखलखिपूरणशशिलाजै।लाजसहितमुसकानिविराजै १७
सोहतयुगलउरोजउतंगा। मानहुस्वर्णशैलकेशृंगा॥ जाकेअंगअनूपमभावत। अंगरागजेहिंलगिछबिपावत॥
नूपुरचरणकरहिंकलशोरा।फैलतप्रभाजासुचहुँओरा॥कनकलताविरचीरतिराजा।लहरातिमनुसुरअसुरसमाजा १८
दोहा-अचलअदूषितरहनहित, हेरनलगीनिवास॥ सुरअसुरनमधिनहिंलख्यो, सबगुणपूरअवास॥१९॥
कोउमहँहैतपपैयुतकोपू। कोउमहँज्ञानविषैनहिंलोपू॥कोउमहानपैकामहिलीना। कोउसमरथपैपरआधीना॥२०॥

धर्ममानकोउपैनहिंदाया । त्यागवानकोउपैयुतमाया ॥ बलीकोऊपैकालडराने । परमहंसकोउपैगुणसाने ॥ २१ ॥
चिरंजीवकोउपैनहिंशीला । शीलवानकोउआयुपढीला॥ कहुँदोउहैंपैमंगलहीना॥कोहुमंगलपैनहिंममलीना ॥२२॥
असविचारिसुंदरिछविछाई । सबगुणसहितनिरखियदुराई॥अपनेलायकतेहिंवरचीन्ही॥रमामुकुंदहिकोवरिलीन्ही ॥
दोहा—जिनकेअंगनवसनको, गुणहुकरतानितचाह ॥ तिनकोतजिकैसेवरै, औरनकोनरनाह ॥ २३ ॥
अलिगुंजितनवअंबुजमाला॥ डारिकृष्णकेकंठविशाला॥निजनिवासहरिउरसुखदाई । निरखतलाजसहितमुसकाई॥
खड़ीभईहरिआयसुचाहत॥सुखसागरबहुविधिअवगाहत॥जगतजनकतहँजगतजननिको॥धारचोउरमहँमोदभरनिको
हरिउरबैठिरमायुतदाया । करिकटाक्षत्रैलोकबढ़ाया ॥ बजेमृदंगशंखअरुभेरी । करीअप्सरानृत्यघनेरी॥२४॥२५॥
तहँगंधर्वनकेगणगाये । पृथकपृथकसुरसबनभछाये ॥ सकलप्रजापतिब्रह्मगिरीशा । औरहुसबैसुरेशमुनीशा॥२६॥
दोहा—करसोंबर्षतसुमनबहु, निरखतश्रीभगवान ॥ वेदमंत्रवरवदनसों, अस्तुतिकियेसुजान ॥ २७ ॥
कमलाकृपादीठितहँपाई । प्रजाप्रजापतिसुरसुरराई ॥ शीलादिकगुणलहेअपारा । भयेआशुआनंदअगारा ॥२८॥
लख्योनजबश्रीदानवओरा । भेनिरलज्जअबलशठचोरा ॥२९॥पुनिक्षीरधिमंथतनृपराई । कमलनैनवारुणीसोहाई॥
कढीताहिदानवगहिलीन्ह्यों । माधवतिनहिंलेनकहिदीन्ह्यों ॥ मथतफेरिसुरअसुरनकेरे॥अमृतहेतकरिश्रमहिंघनेरे॥
महाराजयकपुरुषअनूपा । निकस्योप्रभावंतजेहिंरूपा॥३०॥समभुजंगगजाकेभुजदंडा । कंबुकंठजेहिंज्ञानअखंडा॥
दोहा—तरुणकमलदृगश्यामतन, उरसोहतवनमाल ॥ पीनवक्षपटपीतमणि, कुंडलकरनरसाल ॥ ३१॥ ३२ ॥
कोमलकुंचितश्यामसुकेशा । सिंहगवनअतिसुंदरवेशा ॥३३॥ कडेकरनमहँकांतिभरेहैं । अमृतपूरककलशधरेहैं॥
सोहैविष्णुअंशभगवाना । धन्वंतरिजेहिनामबखाना ॥ कर्तावैद्यशास्त्रकोसोई । भोक्तायज्ञभागकोजोई॥३४॥३५॥
अमृतकलशलखिअसुरमहाना । धायेअतिआतुरबलवाना॥सबैवस्तुहमलेबछुड़ाई । असविचारिअतिकोपाहिछाई॥
धन्वंतरिकरतेतहँजाई । सुधाकलशकोलियोछँडाई ॥ हरतअमीघटअसुरनकाहीं । देखिदेवह्वैदुखिततहाँहीं॥३६॥
दोहा—जाइकियोसबदेवता, हरिकेपासपुकार ॥ सुधाकुंभदानवहरचो, अबतुमहींरखवार ॥ ३७ ॥
देखिदीनतादेवनकेरी । कह्योनाथकरिकृपाघनेरी ॥ धीरजधारहुसुरनसमाजा । साधिलेहुँगोमैंसबकाजा ॥ ३८ ॥
उतअसुरनमहँभयोविरोधा । आपसमहँबोलेसबयोधा ॥ हमहींप्रथमकरैंगेपाना । तुमनपाइहोहमबलवाना ॥
जेकोउनिबलरहेतिनमाहीं । तेबोलेअसलायकनाहीं ॥ देवहुकियोप्रयाससमाना । तातेसुधाभागकोदाना ॥ ३९ ॥
उचितअहैउनहुँनकोपैबो । अनुचितहैआपुहिसबलैबो ॥ सत्रयागजिमिबहुयजमाना । पावतहैंफलसबैसमाना ॥
दोहा—यहिविधिबरज्योनिबलसब, प्रबलनकोबहुबार ॥ पैपियूपकेकलशको, दियोनवैमदवार ॥ ४० ॥
छंदबावन—तेहिसमयविष्णुसुरेश । जानतउपायअशेश ॥ ह्वैगेअनूपमनारि । सुरकाजकरनविचारि ॥ ४१ ॥
उत्पलसरिसतनश्याम । निरखतदृगनआराम ॥ सुंदरसकलवरअंग । श्रुतिसमविकाशअभंग ॥
निर्मलसुगोलकपोल । कुंडललसततेहिंलोल ॥ नासाअनूपउतंग । यौवनजगितनवअंग ॥ ४२ ॥
कुचभारतेलफिजाति । कटिलहिनितंबरुकांति ॥ मुखसुरभिपायमलिंद । गुंजतचहूँकितवृंद ॥
खंजननयनमनरंज । लखिजिनहिंलाजतकंज ॥ मल्लिकाविकसितफूल । युतलसतकेशअतूल ॥
दरकंठभूषिततासु । तनकरतपरमप्रकासु ॥ अतिलसतअंगदबाहु । जेहिंलखतबढ़तउछाहु ॥ ४३ ॥
अंबरअनूपसोहात । जेहिलखिननैनअघात ॥ सोहतनितंबसुपीन । लियदीपकीछबिछीन ॥ ४४ ॥
कटिकिंकिनीकोशोर । कलहंसरवकोचोर ॥ नूपुरलसतपदकंज । बाजतचलतमनरंज ॥ ४५ ॥
लज्जासहितमुसक्यानि । सरसातिआनँदखानि ॥ भ्रूबंककामकमान । तेहिमारिनैननबान ॥
दोहा—होनदानवनकामवश, ऐसोकृष्णअनूप ॥ देवनकेकारजलिये, धरचोमोहिनीरूप ॥ ४६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे अष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-तहाँबलीदानवसबैं, छोड़िमित्रताकोपि ॥ सुधाकुंभकोपरस्पर, रहेछोडावतचोपि ॥
आपुसमहँदेवैंबहुगारी । अबलनबलीदेहिंकहुँमारी ॥ कहूँचोराइकलशधरिराखैं । पूँछेहमनजानहींभाखैं ॥
यहिविधिकरतविरोधवनेरो । लख्योमोहिनीवपुहरिकेरो॥१॥आवतिचलीनिकटछविछाई।दौरेसबतनसुधिबिसराई॥
आपसमहँबोलेअभिमानी । ऐसीनारिनकबहुँलखानी ॥ लखीनऐसीसुंदरताई । जसयहनारिविरंचिवनाई ॥
यौवनभरीमत्तगजगामिनि।लखहुलखहुयहसुंदरिकामिनि॥असकहिघेरिलियोचहुँओरा।सबकोमनसिजमनहिंमरोरा
दोहा-पूछँनलागेअसुरसब,-॥ २ ॥-कमलनैनसुकुमारि ॥ कौनहेतआईइतै, होकाकीतुमनारि ॥
सुंदरिकहाकरनकोचाहो । अहौंकौनअसुरनमनदाहो ॥ ३ ॥ लख्योनतुम्हैंसिद्धगंधर्वा । अमरदैत्यअरुचारणसर्वा ॥
मनुजनकोअबकौनबखानी । ऐसोठीककियोअनुमानी।।४॥धौंहमपैकरिकृपाविधाता । करनकृतारथइंद्रिनत्राता ॥
पठयोतुमकोनिकटहमारे । बोलहुकसनहिंमौनहिधारे ॥५॥ सुधाहेतइतमच्योविरोधा । करनपानचाहतसबयोधा॥
तातेअबयहउचितलखाना । बाँटहुसबकोतुमहिंसमाना॥सुधापाइहमसबसुखपैहैं । तुम्हरोसुयशजियतभरिगैहैं॥६॥
दोहा-हमहैंकश्यपकेतनय, यहजानतसबकाय । जामेंभाइनबीचमें, कोहुअपमाननहोय ॥
बहुप्रयासकरिसुधानिकास्यो।मथतअमितजलजंतुननास्यो॥तुमसोंकहिहैंनहिंकोउरारी।तुम्हरेवशहैंसकलसुरारी ७
कह्योअसुरजबअसतहँभूपा । मोहितमोहिनिहरिकेरूपा॥तबकटाक्षकरिविहँसिमुरारी।बोलेअसुरनकेमनहारी ॥८॥

श्रीभगवानुवाच ।

हेकश्यपनंदनबड़भागे । मोहिंकुलटामहँकसअनुरागे ॥ नारिस्वैरिणीभाँतिहुकेहू । पंडितलोगनकरैंसनेहू ॥ ९ ॥
श्वानस्वैरिणीएकस्वभाऊ । नवनवनितहेरहिकरिचाऊ॥राखतनहिंएकरसप्रीती । मानतनहिंकबहूँपरतीती॥१०॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-तहाँमोहिनीनारिके, सुनिमनमोहनवैन । बिहँसतभेदानवसबै, इकटकनिरखतनैन ॥
भेविश्वासितअसुरप्रवीरा । मान्योनारिभावगंभीरा॥दियेपियूषकलशतेहिंकाहीं।गुनिबड़भाग्यआपमनमाहीं॥११॥
तबलैकलशमंदमुसिक्याई । कहीमोहिनीगिरासोहाई ॥ दानवसकलसुनहुममबैना । तुमहिंउचितअसहैबलऐना ॥
तुममिलिकियेसुरहुश्रमभारी । लियोनिकासिसुधासुखकारी ॥ तातेदेवनहूँकोदेहू । मेरोकह्योमानअसलेहू ॥
जोनमानिहौकह्योहमारो । तौनबाँटिहैंसुधातिहारो ॥ १२ ॥ सुनतमनोहरबैनअपारा । बोलिउठेसबएकहिबारा ॥
दोहा-जोमनआवैसोकरो, हमकछुकहिहैंनाहिं । लखतरहोहमरेतरफ, यहीविजयतुमपाहिं ॥
असकहिमान्योअसुरउराऊ।जानतनहिंकछुनारिप्रभाऊ॥१३॥तबसुंदरिबोलीमृदुबानी।बैठोसकलपंक्तिनिजठानी ॥
देवहुबैठेपाँतिलगाई । हमबाँटिहैंसुधासुखदाई ॥ सुनतमुदितभेसकलसुरारी । अमृतपानकीकरीतयारी ॥
प्रथमदिवसमेंसबउपवासी । दूजेदिनसुरअसुरहुलासी ॥ करिमज्जनकियहोमहुतासा । दियोद्विजनगोमंगलआसा ॥
भूतनकोकीन्ह्योवलिदाना । पढ़योविप्रस्वस्तैनसुजाना ॥१४॥ धार्योनूतनअंबरअंगा । भूषणभूषितह्वैइकसंगा ॥
दोहा-पूर्वाग्रेकुशआसन,-॥१५॥-मुखकरिपूरुबओर ॥ आगेदानवबैठितिन, पाछेदेवअथोर ॥
धूपसुरभिफैलतिजेहिशाला।दीपप्रकाशितबनीविशाला १६ तहँबैठीजबदोहुँनसमाजा।तबमोहनीचलीयुतलाजा ॥
करभसमानउरूछबिछावत।चरणकनकनूपुरनिवजावत॥कनककुंभकुचकटिअतिखीनी।सारीछविछाईअतिझीनी॥
मदघूमतलोचनअनियारे।कतलकरतसुरअसुरकतारे॥कुंडलकनकलसतवरकानन।शशिसमचारुप्रकाशितआनन॥
सोहतअमलकपोलसुनासा । फैलतचहुँकितपुंजप्रकासा॥गंदमंदगमनतवरनारी।करनकलशलैसभासिधारी॥१७॥
दोहा-तिरछेहैनैननिरखि, मंदमंदमुसक्याइ । सुरसमाजमेंमोहिनी, अंचलदियोउड़ाइ ॥
निरखिमोहिनिहिदानवदेवा । मोहिगयेजान्योनहिंभेवा ॥ सुधापानकीसुरतिबिसारी । यकटकआननरहेनिहारी ॥

कहाँमोहिनीसखीरमाकी।त्रिभुवनस्वामिनिसिंधुक्षमाकी१८मनमेंकियअसठीकप्रयोगू।सुधापाननहिंअसुरनयोगू ॥
ज्योंभुजंगकोदूधपियाउब।जानसर्वथाविपहिबढ़ाउब ॥ सहजहिअसुरक्रूरबलवारे । पुनिकोजीतिहिइनहिंअपारे ॥
तिनहिंनदियोअमीयहिहेतू । जाइदुहुनमधिकृपानिकेतू ॥ १९ ॥ असुरनतेबोलेयदुराई।सुनहुसबैयहमोरिउपाई ॥
दोहा–सुरनदूरिबैठाइकै, तिनकोतनकपियाय । पुनिसिगरोमैंप्याइहौं, सुधातुम्हेंसुखछाय ॥ २० ॥
असकहिसुरनदूरिबैठाई । तहँतेअसुरननाहिंउठाई ॥ सुरनपंक्तिप्रथमहिभगवाना । लागेसुधाकरावनपाना ॥२१॥
वचनमोहिनीमानिसुरारी । कह्योनकछुअसमनहिंविचारी॥२२॥हमरेबोलतयहिक्षणमाहीं।मोहमोहिनीकरिहैनाहीं॥
पुनिअनुचिततियसंगविवादा।तजबनयोगवचनमरयादा॥मोहिंमोहिनीरूपहिभोले।सुरनपियावतअसुरनबोले २३॥
तहाँराहुहरिकृतछलजानी । तुरतहिदेवरूपनिजठानी ॥ बैठ्योदेवपाँतिमहँजाई । धोखेतेहिहरिदियोपियाई ॥
दोहा–पानपियूपहिकरतहीं, रविशशिदियोबताइ ॥ दैत्यदेवकोरूपधरि, यहिमधिबैठ्योआइ ॥ २४ ॥
तुरतवसनतेचक्रनिकारी । काटयोराहुकंठगिरिधारी ॥ कियेकंठलोंपानसुधाको । तातेशशिअमरभोताको॥२५॥
महिमहँगिरयोरुंडनृपराई । विधिशिरकोग्रहदियोवनाई ॥ सोईवैरसुमिरिनृपराई । ग्रसतसूरशशिपर्वहिपाई॥२६॥
सुरनपियाइसुधाभगवाना । प्रगटकियोनिजरूपमहाना ॥ शंखचक्रआयुधकरधारे । चारिबाहुपटपीतसुधारे ॥
निरखिअसुरजकिरहेतहाँहीं । हरिचरित्रजान्योकछुनाहीं ॥ यदपिदेवदानवबलवाना । सबप्रकारतेरहेसमाना २७॥
दोहा–तदपिदेवयदुवरचरण, कमलरहेलवलीन ॥ तातेसुरनसुधालह्यो, असुरनहरिरतिहीन ॥ २८ ॥
तनमनधनवचहरिनिरत, सफलसोईसवहोइ ॥ तेईनिष्फलहरिविमुख, यहजानहुसबकोइ ॥
जैसेतरुवरपातको, सींचनवृथादेखात ॥ सलिलमूलकेडारते, डारपातहरियात ॥ २९ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–यदपिमथनमेंश्रमकियो, असुरसबैबलवान ॥ कुरुपतियदुपतिविमुखते, लहेनअमृतपान ॥ १ ॥
क्षीरधिमथिप्रभुसुधानिकासी । पानकराइसुरननिजआसी॥ ह्वैसवारगरुडहिभगवाना। सबकेनिरखतकियोपयाना॥
सुरनविभूतिविलोकिसुरारी । सहिनसकेकरिकोपहिभारी ॥२॥ लैलैआयुधपरमप्रचंडा । दवनपैधायेवरिबंडा ॥३॥
सुरहुपियूषपियेबलवाना । आवतनिरखिदानवननाना ॥ हरिपदसुमिरिसबैमनमाहीं । लैआयुधधायेतिनपाहीं॥४॥
दोउदलभिरतभयेतेहिठामा । तहँभोदेवासुरसंग्रामा ॥ तुमुलरोमहर्षणदुखछावन । क्षीरधिकेतटपरमभयावन॥५॥
दोहा–तहाँपरसपरसुरअसुर, करिकरिकोपमहान ॥ लड़नलगेनिजशक्तिभर, हनिशस्त्रनसहसान ॥
छंदतोटक–करवालकरालविशालहनैं।कोउमारहिंबाणमहानघनैं॥कोउतोमरभल्लतबल्लतहाँ।कोउभिंडहिपालकरालमहाँ ६
बहुशङ्खमृदंगहुऔतुरही । डमरूवरदुंदुभिवेनुसही । तहँबाजनयेसबबाजतभे ॥ गजवाजिभटौरथगाजतभे ॥७॥
रथिसोरथिपत्तिनपत्तिलरैं । असवारनसोंअसवारभिरैं ॥ गजसोंगजजोरिसुशस्त्रहनैं । सुरदानवहारिचहैंनरनैं ॥ ८॥
कोउदानवऊँटसवारभये । गजगर्दभपैकोउकोपछये ॥ कोउऋक्षमृगाकोउसिंहचढ़े । कोउबाँदरपैचढ़िवेगबढे ॥९॥
कोउचील्हनपैकोउगिद्धनपै । बकपैकोउभासनबाजनपै ॥ वृकचीतररोझनपैनिरभै।महिषापरकोउचढेसरभै॥१०॥
कोउमूषनऔरशृगालनपै । नरपैशशपैकृकलासनपै ॥ कोउहंसनसर्पनसूकरपै । कोउश्यामम्रृगाअरुकूकरपै॥११॥
कोउवीरतिमिंगिलछागनपै । चढिकैकोउगैंडनकागनपै ॥ चढिवीरजलौथलपक्षिसबै । विकरालनवाहनयुक्तरबै ॥
दलदानवतेनिकसेसुभटे । सुरसैनहिंसन्मुखकोझपटे ॥ सुरवीरहशस्त्रनधारनकै । कियेयुद्धहिदैत्यहिवारनकै ॥
दोहा–भयोभयावनयुद्धतहँ, सुरअसुरनकोभूप ॥ युगलउदधिमर्यादतजि, मानहुँमिलेअनूप ॥ १२ ॥

छंदभुजंगप्रयात—किताकेपताकेप्रभाकेसोहावैं। महाछत्रनाथैछपाकेलजावैं॥
जड़ेदंडहीरालसैंचारुचोरैं। कितेमोरपिच्छानिकेचारिओरैं॥ १३॥
लहेपौनकोपागफेंटाउड़ाहीं। अरूझेंजडेभूषणेवर्ममाहीं॥
चमंकैमहाशस्त्रआकाशकैसे। प्रचंडैप्रचंडांशुकीरश्मिजैसे॥ १४॥
तहाँदेवदैत्यानिकीभीरभारी। विराजीसुयुक्तैभटैशस्त्रधारी॥
चहूँओरतेशस्त्रकेसंप्रहारा। करैंदेवदैत्यौघरेकोपभारा॥ १५॥
तहाँदैत्यराजावलीवोजवाना। चढ्योआशुवैहाइसैनामजाना॥
रच्योजोमयैदैत्यकोकामचारी॥ १६॥ भरेयुद्धकेयोग्यहैंशस्त्रभारी॥
कहूँतोदेखातोकहूँनादेखातो। अजैहैनहींवेगजाकोजनातो॥ १७॥
चढ्योयोविमानैबलीवीरसाथै। लसैचौंरछत्रैमनोरैनिनाथै॥ १८॥
चहूँओरतेयूथपैघेरिताको। रुकैनाहिकोन्योथलैवेगजाको॥
करैंदानवाशोरघोराकठोरा। लियेशस्त्रमारीरणैठोरठोरा॥
कोऊदैत्यमूँछानपैहाथफेरैं। कोऊदेवकीओरआँखैंतरेरैं॥
कोऊजयपुकारैंकोऊत्योंप्रचारैं। कोऊनाहिहारैकोऊमारिडारैं॥
दुहूँओरकेशस्त्रछायेअकासै। गयोमूँदिमार्तंडकोभूरिभासै॥
लड़ेदेवदैत्योमहाजोरकैकै। करैवीरतावैकियेआसजैकै॥

दोहा—बलिविमानकोघेरिकै, परमवीरताछाइ॥ असुरयूथपतिसुरनपै, आतुरआयेधाइ॥

शंबरनमुचिवानवरवीरा।विप्रचित्तिअयमुखरनधीरा॥१९॥कालनाभद्वैसिरजनतापी।हेतिप्रहेतिशकुनिअतिपापी॥ वज्रदंष्ट्रइल्वलपरचंडा॥२०॥ शंकुशिराहयग्रीवउदंडा॥ कपिलमेघदुंदुभिअरुतारक। चक्रनैनउत्कलजयकारक॥ शुम्भनिशुम्भजंभरतदम्भा॥२१॥त्रिपुरनाथअरुमयरणखम्भा॥अरुअरिष्टअरुनेमिअरिष्टा।जाकोअहैपापनितइष्टा॥ औरहुकालयेहुपौलोमा। बलीनेवातकौंचबलतोमा॥ अरुवृषपर्वविरोचनवीरा। येतेसबदौरेरणधीरा॥ २२॥

दोहा—लह्योअमृतदानवनहीं, केवललह्योकलेश॥ प्रथमअनेकनबारहीं, जीतेसुरनअशेश॥ २३॥
गर्जततर्जतसुरनको, भर्जतमनहुकृशान॥ करतशंखध्वनिधीरधरि, धावतभयेमहान॥

निरखिदानवनतहँअमरेशा२४चढ्योऐरावतकोपितवेशा॥झरननझरतउदैगिरिमाहीं।युतप्रकाशजिमिभानुदेखाहीं॥ ताकेचहुँकितसुरबलवाना। ह्वैसवारवाहनविधिनाना॥ अस्त्रशस्त्रगहिलोकनपाला। लैलैनिजनिजसैनविशाला॥ अगिनिवरुणआदिकवरयोधा२५॥२६आगेबढितहँअसुरनरोधा॥सबैपरस्परनामपुकारी।कहिदुर्वचनशस्त्रबहुमारी॥ एकएककोबोलिप्रवीरा। पैठिपैठिरणमधिरणधीरा॥ द्वन्द्वयुद्धकीन्हेतेहिंठोरा।उतदितिसुतइतअदितिकिशोरा२७

दोहा—वासवतेबलिलडतभे, वरुणहेतिसोंधाय। कार्तिकेयतारकजुरे, मित्रप्रहेतिसचाय॥ २८॥

यमअरुकालनाभयुधकीने। विश्वकर्माअरुमयरणभीने॥त्वष्टाअरुशंबररणचोपी।वीरविरोचनसविताकोपी॥ २९॥ अपराजितअरुनमुचिउदारा। वृषपर्वाअश्विनीकुमारा॥बलिसुतबानसंगसतभाई।भिर्‍योदिवाकरसोंशरछाई॥३०॥ भिर्‍योराहुरणमेंसँगसोमा। अनिलजंगकियसंगपुलोमा॥शुम्भनिशुम्भसंगदोउभाई।भिरेभद्रकालीसोंजाई॥ ३१॥ लर्‍योशम्भुसोंजम्भप्रवीरा। महिषासुरसोंपावकधीरा॥इल्वलअरुवातापिमहाना। ब्रह्मसुतनकेसँगरणठाना॥३२॥

दोहा—कामदेवसोंलड़तभो, भटदुर्मर्षमहान। सप्तमातरनिसंगमें, उत्कलकियघमसान॥

सुरगुरुभिरेअसुरगुरुतेरे। शनिनरकासुरकोरणटेरे॥३३॥ मरुतनेवातकवचयुधकीने। अरुकालेयवसवरणभीने॥ विश्वेदेवाऔपौलोमा। रुद्रएकादशसोंअहितोमा॥३४॥ यहिविधिलरेपरस्परवीरा। तीखनतोमरमारततीरा॥

एकएकसोंजीतनआशा।कियेयुद्धकरिचलहिप्रकाशा ॥३५॥ तहँभुशुंडिअरुभिंडहुपाला।गदाचक्रपट्टिसहुकराला॥
परिघपरश्वधपाशप्रचंडा।शक्तिभल्लमुदगरहुउदंडा॥यष्टिगुरिदकरचालकगला।मारिशीशकाटहिंततकाला ॥ ३६॥

दोहा-पैदरअरुसारथिरथी, गजतुरंगअसवार । खंडखंडसबह्वैगये, विक्रमकरतअपार ॥

कटेबाहुऊरूपदकेते । कटेकंठबहुशीशसमेते ॥ भूषणध्वजाधनुपतनत्राना । छिन्नभिन्नभेतेहिथमसाना ॥ ३७ ॥
रथतुरंगगजचरणहिंपाई । उडीधूरिअंबरमहँछाई ॥ मारतंडनहिंपरतदेखाई । मिटतभईशोणितसरिताई ॥ ३८ ॥
क्रीटकुंडलहुजिनउलटेहैं । अधरदबेरदशीशकटेहैं ॥ कहूँकोपकरिनैनतरेरत । लागेवाणशत्रुकहँटेरत ॥
कटेशीशतैसेमहिमाहीं । परेसमरमहँजियतजनाहीं ॥ भूषणअस्त्रसहितभुजदंडा । कटेउरूमहिपरबहुखंडा ॥३९॥

दोहा-निरखिआसमैंमुंडसो, हनतरुंडतहँधाइ । ऐसेअमितकबंधरण, अंगनरहेसोहाइ ॥ ४० ॥

बलिमहेंद्रकोदशशरमाऱ्यो । त्रैशरऐरावतहिपँवाऱ्यो ॥ गजपदरक्षकजेभटचारी । चारिविशिखतिनहन्योप्रचारी॥
मारिमहाउतकोइकबाना । गरज्योदैत्यराजबलवाना ॥४१॥ वासवबाणनआवतदेषी । हस्तलाघवीकियोविशेषी॥
विहँसतशितबहुभल्लपँवारे।बीचहिशरनकाटिसबडारे॥४२॥निरखिलाघवीशक्रहिकेरी।लियोशक्तिबलिप्रभावघनेरी ॥
उल्कासमउठतीबहुज्वाला।दाहतमानहुँसुरनकराला॥बलिकरमेंवासवतेहिकाट्यो।ताकोऔरबाणहनिपाट्यो ॥४३॥

दोहा-शूलखड्गतोमरगदा, जोबलिजोकरलीन । सोसोशक्रचलाइशर, काटिकरहिमहँदीन ॥ ४४ ॥

सहिनगयोहरिविक्रमजबहीं।बलिमायाकीन्हीअतितबहीं॥असुरनाथह्वैअंतर्ध्याना।सुरदलमेंबरष्योगिरिनाना ॥४५॥
जरतदँवारिगिरिहितरुभारी।शिलाशिखरआयसभयकारी॥चूरणकरहिंसुरनदलकाहीं४६पुनिभुजंगधायेचहुँधाहीं ॥
प्रगटेविषीजंतुबहुघोरा । व्यथितकियोसुरदलतेहिंठोरा ॥ सिंहवराहबाघबहुधाये।तिनहिंदेखिगजयूथपराये॥ ४७ ॥
बिनाबसनकरशूलविशाला । प्रगटीतहँराक्षसीकराला ॥ मारहुकाटहुकरहिंपुकारा।प्रगटेइमिराक्षसहुअपारा॥४८॥

दोहा-पुनिअकाशमहँघोरघन, अतिकठोरकरिशोर । अंगारनबरसनलगे, पावतपवनझकोर ॥ ४९ ॥

पुनिआगीबरषीयकवारा । पवनप्रचंडपायदलजारा॥होतप्रलैअबसुरअसमान्यो।अपनोमरनसमरसतिजान्यो॥५०॥
पुनिलखिपऱ्योसिंधुतजिवेला।आवतबौरनजगकरिरेला॥लहिमारुतप्रचंडइकसंगा।उठतिभयावनितरलतरंगा ५१॥
इमिअवलोकिअसुरकीमाया।सुरदलसकलमहाभयपाया॥ चहुँकितधावतसायकघोरा।देखिनपरहिंअसुरतेहिंठोरा॥
जानहिंनहिंसुरतासुउपाई । जातेसबमायामिटिजाई ॥ इंद्रादिकसुरअतिदुखपाई । तहँकियसुमिरणश्रीयदुराई ॥

दोहा-त्राहित्राहिआरतिहरण, शरणागतप्रतिपाल । तुमबिनकोसमरथहमहिं, जोरक्षैयहिकाल ॥ ५३ ॥

तबहिंगरुडपरचढ़ेकृपाला । पीतांबरधारेवनमाला ॥ अंबुजनैनआठवरबाहू । आयुधयुतमेटनसुरदाहू ॥
श्रुतिशिरकुंडलक्रीटसोहाहीं।कौस्तुभरमालसतउरमाहीं॥ऐसेप्रभुप्रगटेतेहिठामा।लहतभयेलखिदेवअरामा ॥५४॥
प्रविशतरणमहँरमानिवासा।बलिमायाकोभयोविनासा॥जिमिजागेदुखसपनमिटातो।हरिसुमिरतसबथलसुखआतो॥
तौपुनिजहँप्रगटेभगवाना । कैसेरहैकलेशमहाना॥५५॥आवतगरुडध्वजहिंनिहारी । कालनेमिचढ़िसिंहहिभारी ॥

दोहा-गरुडशीशमहँहनतभो, शूलविशालकराल । ताकोबीचहिपकरिहरि, ताहिहन्योततकाल ॥

कालनेमिकहँसिंहसमेतू । पठैशूलदियमहिनिकेतू॥५६॥तहँभटमालीऔरसुमाली । धायेकाढिकठिनकरवाली ॥
कहनलगेरेहरिछलकारी । सुरनसुधादियतियतनधारी ॥ ताकोफलपावहिगोआजू । जोनभागिजैहैयदुराजू ॥
हरिआशुहिदियचक्रचलाई । भेबिनशिरइकसँगदोउभाई॥ माल्यवानलखिबंधुविनाशा। धायोगदाधारिजयआशा॥
मारतगदागरुडकेशीशा । हन्योचक्रताकोजगदीशा ॥ परयोमुकुटयुतमहिपरमुंडा।गिरयोपहाड़सरिसपुनिरुंडा ॥

दोहा-यहिविधिचारोंसुभटको, मारिसमरभगवान ॥ सुरनमोददैहोतभे, तेहिक्षणअंतर्धान ॥ ५७ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधि-
राजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे दशमस्तरंगः ॥ १० ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–पुनिसुरहरिकीलहिकृपा, सावधानरणमाहिं ॥ जिनसोंप्रथमजुरेरहे, हननलगेतिनकाहिं ॥ १ ॥
लैकरकुलिशइंद्रअतिकोप्यो।दैत्यराजकहँमारनचोप्यो।।असुरकियेतबहाहाकारा।बलिकछुभीतिनमनहिंविचारा २॥
रह्योखड़ोसन्मुखसुरपतिके । वीरहनतशरउरसुरततिके।।ऐसेहुबलिकोतुच्छविचारी।बासवकोपितगिराउचारी॥३॥
करिबहुमायासहितउछाहैं । मायाईशनजीतनचाहैं ॥ जिमिनटइंद्रजालदरशाई । मूढ़नकोधनलेतचोराई ॥ ४ ॥
जेजनकरिअनेकपाखंडा । चढनचहतसुरलोकअखंडा ॥ ताहिदेहुँमैंअवशिगिराई । यहौलोकहठिदेहुँनशाई ॥ ५ ॥
दोहा–सोईमैंयहकुलिशते, रेकपटीतुवशीस । अवशिकाटिहौंसुभटलै, करुविक्रमविसबीस ॥ ६ ॥
वासवकेसुनिवचनकठोरा । बोल्योबलिनिर्भयतेहिंठोरा ॥

बलिरुवाच ।

अहैकालवशजगजनकर्मा।सोइफललहतकरतजसधर्मा।।जसजयअजयमृत्युरखमाहीं।जानिनजातिहोतिसबकाहीं ७
तातेअवशिदैवगतिजानी । नहिंशोचहिंहर्षहिंकछुज्ञानी ॥ हौमहेंद्रमूरखसबभाँती । गुनौनधर्मशास्त्रकीपाँती ॥ ८॥
गुनहुदेहकोसुखदुखसाधक।तातेतुमहौमुनिमनबाधक।।हमनहिंमानहिंवचनतुम्हारे।यद्यपिअनुचितअमितउचारे९॥

शुक उवाच ।

असकहिश्रवणनिलोधनुतानी । हरिहिहन्योनराचबलिमानी ॥ १० ॥
दोहा–जबबलिवचननराचहनि, हन्यौनराचहुताहि । सहिनगयोतबइंद्रसों, जिमिगजअंकुशकाहि ॥ ११ ॥
तहँअमोघजेहिअरिदरिजाहीं । हन्योवज्रवासवबलिकाहीं ॥ लगतवज्रकेदानवराई । गिरयोभूमितनसुधिबिसराई ॥
मानहुँपक्षविहीनगिरीशा।।गिरयोगगनतेअवनिमहीशा१२बलिकोसखाजंभबलवाना।देख्योनिजनाथहिबिनप्राना १३
लैकरगदासिंहचढ़िधायो । गर्जतवासवसनमुखआयो ॥ हन्योइंद्रकेसोगलमाहीं । अरुऐरावतमस्तकपाहीं ॥ १४ ॥
गदालगतभोव्यथितगजेशा।।गिरयोजानुभरिधरणिनरेशा १५ ऐरावतकहँविकलनिहारी।मातलिलैआयोरथभारी ॥
दोहा–हयहजारलागेहरित, कनकरचितछबिवंत । ऐरावतकोछोंडिरथ, चढ्योशचीकोकंत ॥ १६ ॥
मातलिकर्मनिरखिरणमाहीं । करतप्रशंसाजंभतहाँहीं।।हन्योताहिविहँसतयकशूला।रह्योजोशम्भुशूलकेतूला।।१७॥
मातलिसह्योधीरधरिचाऊ।निरख्योदुखितओरसुरराऊ।।तबवासवअतिकोपहिधारयो।जंभहिताकिवज्रतकिमारयो।।
लगतजंभकोशिरकटिगयऊ।।१८।।असुरनसोंतबनारदकहेऊ।।करतकहाहौइतबलवान।।कियोजंभयमलोकपयाना।।
सुनतनमुचिबलपाकसुरारी । धायेक्रोधितआयुधधारी ॥१९॥ कहेइंद्रकोवचनकठोरा । मारतमर्मनिसायकघोरा ॥
दोहा–वरषिविशिखविषधरसरिस, वासवकोलियछाइ । ज्योंजलधरजलधारते, मूँदिधराधरजाइ ॥ २० ॥
तहँहरिकोयुतहयतहँजारा।हन्येबाणइकइकइकवारा।।करिबलदानवहस्तलाघवी।विकलकियोसबसैनवासवी ॥२१॥
एकहिबारपाकबलवाना।हन्योमातलिहिद्वैशतबाना।।रथकूबरचक्रनिशरमारयो।अद्भुतविक्रमरणहिंपसारयो ॥२२॥
तीखनपुरटपुंखदशपाँचा । मारिइंद्रकहँनमुचिनराचा।।घनसमगर्जतभयोकठोरा । छाइरह्योदशहूँदिशिशोरा।।२३॥
सारथिरथयुततहँसुरपाला।मूँदिगयेजिमिरविघनमाला२४निरखिननिजनाथहिसुरजूहा।।व्याकुलह्वैकीन्हेसबकूहा ॥
दोहा–हारिगयेबिनपतिभये, असगुनिभेसुरदीन । बूड़ततरणिसमुद्रजिमि, वनिकहोतदुखभीन ॥ २५ ॥
तबवासवकरिविक्रमभारी । कढ़िआयोशरपंजरफारी ॥ रथसारथियुतशक्रप्रकाशा । फैल्योअवनिअंबरहिआशा।।
मानहुँनिशाअंतदिनराऊ।कढ़िआयोअतिप्रगटिप्रभाऊ२६निरखिसैननिजशक्रदुखारी । जातिसमरअसुरनतेमारी ॥
लियोवज्रधरवज्रमहाना । नाशहेतनिजरिपुबलवाना ॥ २७ ॥ आठधारयुतवज्रकठोरा।हन्योपाकबलकेशिरघोरा ॥
कटेदुहुँनकेशिरइकसंगा । गिरेधरणिजनुद्वैगिरिशृंगा।।निरखिदुहुँनकोवधसंग्रामा । भागीअसुरसैनतजिठामा।।२८॥
दोहा–बलअरुपाकविनाशलखि, शोकरोषउरधारि । नमुचिइंद्रकेहननको, विक्रमकियेप्रचारि ॥ २९ ॥

लियोलोहमयशूलकराला। घंटाबद्धहेममणिजाला ॥ मारिडारिहैंतोहिसुरेशा । असकहिधाइकोपिअसुरेशा ॥
हन्योमहेंद्रहियुतअहलादा।सिंहसमानकरतरणनादा॥३०॥आवतशूलअकाशप्रकासी।वासवलखिशरतूणनिकासी॥
कियोशूलकोटूकहजारा।गिरचोभूमिमहँजनुबहुतारा॥नमुचिशीशकाटनमनकरिकै।हन्योकंधकुलिशहिबलभरिकै।
तिलभरिगडचोननमुचिशरीरा।उदकिकिरचोमहिवज्रगँभीरा।निरखिकुलिशनिःफलसुरराई।करनलग्योविचारभयछाई
दोहा-वज्रहन्योहमजोरसों, गड्योनयाकेचाम । वज्रहिलगिआयुधअवधि, किमिजितिहैंसंग्राम ॥
कहादैवगतिहोवनवारी । धौंनहिंह्वैहैविजयहमारी ॥३३॥ प्रथमहिमहिगिरिगिरिजनपाटे।तिनकेपरजेहिंपवितेकाटे॥
जेहितेवृत्रासुरशिरकाट्यो।औरहुअछतअरिनशिरछाँट्यो।सोइपवितुच्छनमुचितनमाहीं।लगतचामभरिकाट्योनाहीं।
लकुटसरिसअबपविह्वैगयऊ। ब्रह्मतेजअकारथभयऊ ॥ अबनहिंगहौंकुलिशकरमाहीं । याकोअहैभरोसवृथाहीं ॥
असविचारिवासवभयपायो।नमुचिहिअजयशत्रुठहरायो३६यहिविधिइंद्रदुखितरणजानी।आशुहिभैअकाशकीबानी।
दोहा-वासवतुमजानहुनहीं, मैंदीन्ह्योंवरदान । वोदझूरतेनहिंमरै, यहदानवबलवान ॥
तातेऔरउपायविचारो । जातेनमुचिशत्रुसंहारो॥३७॥३८॥सुनिअकाशवाणीसुरराई । कियोविचारतहाँमनलाई ॥
फेननहोइवोदनहिंझूरो । यहिवधकोविधानयहपूरो ॥३९॥ असकहिलैकरफेनसुरेशा।अभिमंत्रितकरिह्वैशुचिवेशा॥
हन्योनमुचिकोफेनप्रवीरा।गयोशीशकटिगिरचोशरीरा। निरखिनमुचिवधमुनिमुदछाई।करिअस्तुतिसुमननिझरिलाई
सुरगायकगावनतहँलागे । दियोदेवदुंदुभिमुदपागे ॥ नाचनलगींनर्तकीनाना । सुरदलभोजयशोरमहाना ॥ ४१ ॥
दोहा-अनलअनिलवरुणादिसुर, असुरनहन्योअनंत ॥ जिमिकेहरिकाननमृगन, मारतनिरभयवंत ॥ ४२ ॥
असुरनक्षयलखिब्रह्मपठाये । आशुसमरमहँनारदआये॥कियोनिवारणदेवनरणमें।दुखीविचारिदानवनमनमें ॥४३॥

नारद उवाच ।

श्रीपतिभुजसहायतुमपाई । लह्योसुधाविभूतिसुखदाई ॥ हनहुवृथाकसदैत्यनकाहीं । जाहुआपनेऐननमाहीं॥४४॥

श्रीशुक उवाच ।

देवनसुनिनारदकीवानी।तज्योकोपसुनिवचनहिमानी॥विजयसुनतनिजगायकमुखते।गयेस्वर्गसुरसिगरेसुखते ४५॥
दैत्यबचेजेकछुअतित्रासन।तेनारदकोलहिअनुशासन॥बलिहिविकललैसकलदुखारी।गयेअस्तगिरिअसुरपधारी४६
दोहा-मरेकटेजिनअंगनहिं, तिनकोशुक्राचार्य ॥ दैत्यनदियोजियाइकरि, विद्याजीवनआर्य ॥ ४७ ॥
शुक्रपरसतेबलिउव्यो, ह्वैगोपूर्वसमान ॥ पाइपराजयभोनहीं, नेकहुदुखीसुजान ॥ ४८ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे एकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-शम्भुसुन्योहरिमोहिनी, वपुधरिअसुरनमोहि ॥ सुधापियायोसुरनको, अतिदायाहगजोहि ॥ १ ॥
अतिअचरजनिजमनहिंविचारी। देखनअभिलाषेत्रिपुरारी॥रूपमोहिनीश्रीभगवाना। धरचोकौनविधिसुभगमहाना॥
लखौंअवशिवैकुंठहिजाई । कियोकौनकौतुकयदुराई ॥ असविचारिकैलासनिवासी। उमासहितचढिवृषभहुलासी॥
भूतनकेगणलैसँगमाहीं । गयेबसतश्रीकंतजहाहीं ॥ माधवनिरखिलियोचलिआगू । कह्योशम्भुसोंकियबडभागू ॥
उमासहितहरकोसतकारा । कीन्ह्योंमाधवपरमउदारा ॥ २ ॥ जबहरिहरबैठेसुखछाई । तबहरहरिसोंकहमुसकाई ३

श्रीमहादेव उवाच ।

दोहा-तुमसोंदीनदयालनहिं, त्रिभुवनरमानिवास ॥ भक्तनकोरक्षतरहो, करिकरिअमितप्रयास ॥
छंदभुजंगप्रयात-अहोदेवशत्रैलोकव्यापी । जगन्नाथजयजयजगन्मयप्रतापी ॥

सर्वेभावकेहेतुआत्मानियंता ॥ ४ ॥ अहौविश्वतेभिन्ननाआदिअंता ॥
अहौसच्चिदानंदरूपीपरेशा । तुम्हींविश्वकेहौशरीरीरमेशा ॥ ५ ॥
कियेमोक्षइच्छाफलेच्छाविहाई । उभैसंगछोडेमनैकोलगाई ॥
भजैसंतपादारविंदेतिहारे । बसैंतेसदाचित्तहीमेंहमारे ॥ ६ ॥
तुम्हींपूर्णब्रह्मामृतंशोकहीने । प्रमोदस्वरूपागुणैदिव्यभीने ॥
सदानिर्विकारीअहौविश्वकारी । अहौईशजीवादिपरमोपकारी ॥ ७ ॥
तुहींएककार्यंतुहींकारणेहै । यथाएकईश्वर्नऔभूषणैहै ॥
कहैंमूढ़अज्ञानतेभेदतामैं । तुम्हीतेगुणैकोअहैपारिनामै ॥ ८ ॥
कहैंब्रह्मवादीतुम्हैंब्रह्मपूरो । कहैंकर्मवादीतुम्हैंधर्मरूरो ॥
असत्सत्परैसांख्यवादीबखानै । युतैशक्तिनौपांचरात्रीसुगानै ॥
स्वतंत्रैमहापुर्षयोगीउचारैं । तुम्हैंनिर्विकारैविचारैअपारैं ॥ ९ ॥
नमैजेविधातामरीच्यादिज्ञानी । नजानैंतुम्हारोप्रपंचैप्रमानी ॥
तौकैसेतुम्हैंआपनेचित्तआनै । सबैरावरीनाथमायाभुलानै ॥
जोपैसत्त्वकीवृत्तिवारेनजानै । तौक्योंराजसीतामसीठीकठानै ॥ १० ॥
रच्योआपनोविश्वमेंव्याप्तआपै । यथाएकसर्वत्रहींवायुव्यापै ॥
अहौशास्त्रतेजानिवेयोगनाथा । तुम्हींजानहूविश्वजन्मादिगाथा ॥
सुनौप्रार्थनाश्रीहरेयाहमारी । सुदीजैपदैभक्तिजोसंतप्यारी ॥ ११ ॥

दोहा–लख्योअमितअवतारतव, करतविहारअपार ॥ लखनचहौंअबजोधरयो, मोहिनिरूपउदार ॥ १२ ॥

जौनमोहिनीरूपहितेरे । मोहितकीन्हेअसुरघनेरे ॥ सुरनपियायोसुधासुखारी । सोईलखनकीआसहमारी ॥
मोमनभोअचरजयहभारी । कैसेभयेकृष्णवरनारी ॥ १३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिकियोविनयत्रिपुरारी । तबमुकुंदहँसिगिराउचारी ॥ १४ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

सुरहितदैत्यविमोहनहेतू । जोतियरूपधरचोवृषकेतू ॥१५॥सोमैंतुमकोअवशिदेखैहौं । तबवचनहिमेंक्योंनटिजैहौं ॥
सोवपुकामिनकोअतिप्यारो । मनसिजकोउद्दीपनवारो ॥ १६ ॥

श्रीशुक उवाच ।

असकहिभेहरिअंतरधाना । उमासहिततेहिठौरइशाना ॥

दोहा–केहिविधिमोहिनिवपुधरत, हरियहकरतविचार ॥ निरखतचारिहुँओरतहँ, ठाढेरहेउदार ॥ १७ ॥

तहाँप्रगटभोसुंदरबागा । झरतकुसुमबहुउडतपरागा ॥ नवपल्लवअरुनितचहुँओरा । करतमत्तकोकिलकलशोरा ॥
मत्तमलिंदनकीझनकारी । बहतमंदमारुतमनहारी ॥ तहँयकमोहिनिनारिसुहाई । प्रगटभईछबिखानिमहाई ॥
मनुसमेटित्रिभुवनछबिभारी।श्रमकरिरचीविरंचिविचारी।कलकिंकिणीकलितकटिखीनी।सारीशशिमरीचिमनुबीनी
लैकरकंदुकखेलतिखेला । महामनोहररूपनवेला ॥१८॥ फेंकतलोकतगेंदलोकावत । कंपतकुचहिपहारसोहावत ॥

दोहा–हारउरोजनिभारते, पदपदलफिलफिजाति । मंदमंदकिसलयचरण, जहँतहँधरतसोहाति ॥ १९ ॥

गगनफेंकिकंदुककरवाला।निरखतिचंचलनैनविशाला॥कुंडललोललसतवरकानन।नीलअलकअतिमंडितआनन॥
धावतकेशपासखुलिजातो।ह्वैकहुँढीलवसनमहिआतो ॥ बाँयेंकरसोंतिनहिंसँभारति । दक्षिणकरकंदुकहिउछारति॥

निजछबिसोंत्रिभुवनकहँमोहति।बारबारवनविहरतसोहति २१ चितैलजोहैंकछुमुसक्याई।लियोशंभुकोचित्तचोराई॥
निरखिमोहिनीछविकामारी।भयेकामवशसुरतिविसारी॥गइभूलिनिजनिकटभवानी।निजगणहुँनकीसुरतिभुलानी॥

दोहा–गिरोदूरिकंदुककछुक, गईलेनतियधाइ। हरकेहेरतपवनलगि, अंचलदियोउडाइ॥ २३॥

यहिविधिनिरखिमोहिनीरूपा।शंकरकियोग्रहणमनभूपा॥२४॥उमालखततनलाजविहाई।दौरेशम्भुकामरँगछाई २५
लखिशंकरकोधावतआवत।लज्जितभागीवसनबनावत॥लागीदुरनद्रुमनमहँधाई।मुरिलखिविहँसतिनहिंठहराई॥२६॥
तेहिंपीछेपीछेहरधाये। करिनीसंगकरीशसोहाये॥२७॥गह्योबालवेनीशिवधाई। लियोभुजनभरिअंकलगाई॥२८॥
भरतअंककेमोहिनिनारी। छटपटानिलागीसुकुमारी॥ खुलेकेशबंधनतेहिंकेरे। चाहतिनहिंरहिबोशिवनेरे॥२९॥

दोहा–जसतसकैतियआपको, शम्भुजानिछोंड़ाइ। करिनीसीकरितेछुटी, आतुरचलीपराइ॥ ३०॥

पुनिधायेशंकरतेहिंपाछे।भयेकामवशनरइवआछे॥३१॥धावतहींभोवीर्यनिपाता।करिनिसंगजिमिगजमदमाता ३२
जहँजहँगिरयोवीर्यईशाना।कनकरजततहँभईखदाना॥३३॥सरिनसरनशैलनवनमाहीं।औरहुऋषिनआश्रमनपाहीं॥
तहँतहँशिवमोहिनिसँगभागे।भूल्योभानकामशरलागे॥३४॥हरकोरेतपातजबभयऊ।तबसँभारितनकीसुधिलयऊ॥
अतिदुःखितलज्जितफिरिआये।पारवतीकोमुखनदेखाये॥३५॥शंभुकृष्णमहिमाजियजाने।तातेकछुअचरजनहिंमाने

दोहा–सावधानलखिशम्भुको, मधुसूदनढिगआइ। धारिचतुर्भुजरूपनिज, कह्योमंदमुसकाइ॥ ३७॥

श्रीभगवानुवाच।

ममयामोहितईशाना। जोतुमलह्योफेरिनिजभाना॥मोहिनिमोहिमोहतजिदीन्ह्यों। हेशंकरयहअचरजकीन्ह्यों॥
क्रोधलोभमदमोहहिभरनी। सबजगकेजीवनवशकरनी॥ ऐसीअतिदुस्तरममाया। तुमहिंबिनाकोपाराहिपाया॥
ममायातुमकोवृषकेतू। मोहकरीनहिंगननसमेतू॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥

श्रीशुक उवाच।

असकहिहरसोंतहँजगदीशा। कियोबड़ोसतकारमहीशा॥ तबहरिसोंहरबिदाकराई। करिप्रदक्षिणाशीशनवाई॥
नंदीचढ़िलैगणसहुलासा। शंकरगवनकियोकैलासा॥ ४१॥

दोहा–अरधांगीप्यारीपरम, निजअंकहिंबैठाइ॥ पारबतीसोंयहकह्यो, शंकरमुनिनसुनाइ॥ ४२॥

देख्योपरमपुरुषकीमाया। कोऊजाकोपारनपाया॥ ईशहुमैंमोह्योपरिजामैं। जनमोहैअचरजकातामैं॥ ४३॥
जोतुमपूँछेहुमोहिंभवानी। वर्षहजारमहातपठानी॥ काकोनाथधरहुतुमध्याना। सोमेरेप्रभुयेभगवाना॥ ४४॥
जाकीगतिकालहुनहिंजानै। अरुजामेंप्रवेशनहिंठानै॥ सोईकृष्णयेपुरुषपुराना। जासुप्रभाववेदकियगाना॥

श्रीशुक उवाच।

विक्रमअजितउरुक्रमकेरो। क्षीरसिंधुमथनादिघनेरो॥ मोसोंपूँछ्योजोकुरुराई। सोमैंतुमसोंकह्योबुझाई॥ ४५॥

दोहा–कहतसुनतजोयहकथा, करिश्रद्धाबहुवार॥ ताकेकारजसिद्धिसब, आशुहिहोतअपार॥
अतिविचित्रश्रीकृष्णको, सबचरित्रसुखसार॥ श्रवणकरतगावतगुनत, नाशतपापअपार॥ ४६॥

कवित्त–क्षीरधिमंथनजोकरिकैश्रमहीनकियोउतपन्नसुधाको।
मोहिनीरूपकैदैत्यनमोहिअमीकोपियायोजोदेवसभाको॥
संतनकोसुलभैविषयिनकोदुर्लभहैपदपंकजजाको।
कामनापूरकसोयदुराजकोयारघुराजहैदाससदाको॥ ४७॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे द्वादशस्तरंगः॥ १२॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–विवस्वानकेमनुभये, श्राद्धदेवमतिधाम ॥ सतयोंमन्वंतरअधिप, तेहिंपुत्रनसुनुनाम ॥ १ ॥
धृष्टनभगइक्ष्वाकुनरेशा। नरिष्यंतनाभागसुवेशा ॥ औरदिष्टकरुषहुसरजाती। अहप्रसिद्धवसुमानुविख्याती॥२॥
सुतदशमनुवैवस्वतकेरे। भयेपरीक्षितवलीवडेरे ॥३॥ मरुतरुद्रवसुअरुआदित्या।ऋभुअश्विनीकुमारसुनित्या ॥
विश्वेदेवादेवललामा। इंद्रहुभयेपुरंदरनामा ॥ ४ ॥ कश्यपअत्रिवशिष्ठप्रकासी। भरद्वाजगौतमतपरासी ॥
कौशिकअरुजमदग्निमुनीशा। भयेसप्तऋषितहाँमहीशा॥५॥यहुमन्वंतरमहँभगवाना।लियोजन्मजोविदितपुराना॥
दोहा–कश्यपकेसनबंधते, अदितिगर्भमेंआय ॥ देवनकोभेअनुजप्रभु, वामननामकहाय ॥ ६ ॥
सातहुमन्वंतरमेंगायो। संक्षेपहितेतुमहिंसुनायो। अबभविष्यवरणौंमतिसेतू। मन्वंतरहरिशक्तिसमेतू ॥ ७ ॥
विशुकरमाकन्याद्वैजेई। भईविवस्वतकीतियतेई ॥ जिनहिंनामसंज्ञाअरुछाया। कुरुपतिसोइमैंप्रथमसुनाया ॥८॥
वडवातीसरिनारिनवीनी। तिनमेंसंज्ञाकेसुततीनी ॥ श्राद्धदेवअरुयमसुतदोई। यमुनानामकन्यकासोई ॥ ९ ॥
अबछायाकीसंततिसुनिये। सुतसावरणिशनैश्चरगुनिये ॥ अरुतपतीकन्यासुकुमारी। सोशंबरणहिकीवरनारी ॥
दोहा–वडवाकेवरसुतभये, द्वैअश्विनीकुमार ॥ अठयेंमन्वंतरहिमें, सुनियेंभूपउदार ॥ १० ॥
ह्वैहैंसावरणीमनुयशयुत। ह्वैहैंविरजसकादिकतिनसुत ॥ सुतपविरजअमृतप्रजजेई। ह्वैहैंमन्वंतरसुरतेई ॥ ११ ॥
तहाँविरोचनपुत्रसुजाना। ह्वैहैंबलिसुरेंद्रबलवाना ॥ धरिहरिवपुवामनबलिपाहीं। माँग्योजायत्रिपदमहिकाहीं॥१२॥
नाँपिलेहुतबबलिकाहिदीन्ह्यो। वामनत्रिभुवनत्रैपदकीन्ह्यो॥श्रीपतितेबलिबंधनपायो।तऊनखेदकछूउरलायो॥१३॥
हरिशासनलैतहँबलिराजा। गयोसुतलकहँसहितसमाजा॥अबलौंतहाँसरिससुरराई। निवसतत्रिभुवनविभौविहाई॥
दोहा–यहिविधिवामनकोदियो, बलित्रिभुवनकोदान ॥ ताकोफलपैहैंनृपति, ह्वैहैंइंद्रमहान ॥ १४ ॥
गालवदीप्तिमानभृगुरामा। कृपाचार्यऔअश्वत्थामा ॥ शृंगीऋषिअरुपिताहमारे। व्यासदेवजेवेदउधारे ॥ १५ ॥
ह्वैहैंयेसप्तर्षितहाँहीं। अबहैंनिजनिजआश्रममाहीं ॥ देवगुह्यकीसरस्वतिनारी। सार्वभौमतेहिंप्रगटिमुरारी ॥१६ ॥
वासवसोंलैत्रिभुवनराजू। बलिकोदेहैंसबसुखसाजू ॥ पुनिनवयेंमन्वंतरमाहीं। सुमनुदक्षसावरणितहाँहीं ॥ १७ ॥
ह्वैहैंवरुणपुत्रकुरुराई। ताकोविवरणदेहुँसुनाई ॥ भूतकेतुआदिकसुतताके। ह्वैहैंनरपतिपरमप्रभाके ॥ १८ ॥
दोहा–पारादिकसुरहोहिंगे, सुतमहेंद्रजेहिंनाम ॥ दुतिमतादिसप्तर्षितहँ, ह्वैहैंअतितपधाम ॥ १९ ॥
आयुषमतकीतियजलधारा।तामेंऋषभविष्णुअवतारा॥तेहिंभुजबलश्रुतइंद्रत्रिलोकै।पालनकरिहैंलहिमुदथोके२०॥
दशौंब्रह्मसावरणिसुजाना। ह्वैहैंमनुकुरुपतिबलवाना ॥ भूरिसेनआदिकसुतह्वैहैं। हविषमतादिसप्तऋषिरैहैं॥२१॥
तहाँप्रजापतिकेगृहमाहीं। भूपअवशिकेशवप्रगटाहीं ॥ नामअमूर्त्तिजासुमुनिधरिहैं। करुणानिधिजगपालनकरिहैं॥
विरुधसुवासनआदिकदेवा। शंभुइंद्रकीकरिहैंसेवा॥एकादशमधर्मसावरणी। ह्वैहैजासुशक्तिअरिदरणी॥२२॥२३॥
दोहा–धरमादिकसुतहोहिंगे, निरवातादिकदेव ॥ वैधृतइंद्रहुहोइगो, अरुणादिकऋषिभेव ॥ २४ ॥ २५ ॥
नारिवैधृताआर्जककेरे। धर्मसेनहरिदयाघनेरे ॥ प्रगटकृष्णअतिआनँदभरिहैं। त्रिभुवननिजबलधारणकरिहैं॥२६॥
फेरिरुद्रसावरणीराजा। ह्वैहैद्वादशमनुजगभ्राजा ॥ देववानआदिकसुतह्वैहैं। हरितादिकतहँदेवकहैहैं ॥ २७ ॥
तहँआग्नीध्रकादिऋषिसाता।ऋतधामासुरेशविख्याता ॥२८॥ सूनृतशक्तिसहाकीवामा।तिनकेह्वैहैंकृष्णस्वधामा ॥
मनुकारजसबसाधनकरिहैं।अनुपमयशत्रिलोकविस्तरिहैं।।सुमनुदेवसावरणित्रयोदश।चित्रसैनआदिकसुततेहिदश।
दोहा–सुत्रामादिकदेवतहँ, इंद्रदिवसपतिनाम ॥ निरमोकादिकसप्तऋषि, ह्वैहैंतहाँललाम ॥ २९॥ ३०॥३१।
बृहतीदेवहोत्रकीनारी। योगेश्वरतेहिंसुतगिरिधारी ॥ ह्वैहैंवासवकेरसहायक। करुणानिधिसुंदरयदुनायक ॥३२।
मनुचौदहौंइंद्रसावरणी। ह्वैहैंसुनौकथाशुभकरणी ॥ उरगंभीरआदिसुतताके। पवित्रादिसुरपरमप्रभाके ॥ ३३ ।
ह्वैहैंइंद्रतहाँशुचिनामा। अग्निआदिसप्तर्षिललामा ॥ सत्रायनकीनारिवितानां। जनमीबृहदभानुभगवाना ॥ ३४ ।
सोइप्रभुकुरुपतिमहराजा। प्रगटकरैंगेकर्मसमाजा ॥ येचौदहिंमनुमैंनृपगाये। तिनकेऋषिसुरइंद्रसुनाये ॥ ३५।

दोहा-मन्वंतरचौदहिंविते, ब्रह्माकोदिनहोइ ॥ सहसचतुर्युगजाहिंजव, एककलपकहिसोय ॥ ३६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे त्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

दोहा-मन्वंतरकीसुनिकथा, मुदितपरीक्षितराय ॥ कियोप्रश्नशुकदेवसों, पाणिजोरिशिरनाय ॥ १ ॥

राजोवाच ।

मन्वंतरिनमाहँऋषिराई । अहैंजेमनुअरुसुरराई ॥ जेजेजेहिजेहिकर्मनमाहीं । जेहितेअहैंनिरुक्तसदाहीं ॥ २ ॥
वरुणहुसोभागवतप्रधाना । मुनिवेकोममनहुलसाना ॥ सुनतनृपतिकेमाधुरबैना । वरणनलागेशुकमतिऐना ॥

शुक उवाच ।

मनुमनुसुतसप्तर्षिनरेशा । औरहुसुरगणसहितसुरेशा ॥ कृष्णचंद्रकेशासनमाहीं । सिगरेअविचलरहतसदाहीं ॥
यज्ञादिकजेहरिअवतारा । तिनप्रेरितमन्वादिउदारा ॥ थितह्वैनिजहिनिजहिअधिकारा । करतरहतपालनसंसारा॥

दोहा-मन्वंतरकेअंतमहँ, लोपहोहिंजबवेद ॥ तबनिजतपबलसप्तऋषि, करहिंप्रचारअखेद ॥ ३ ॥

जिनवेदनतेधर्मसनातन।प्रगटतउभयलोकसुखसाधन॥४॥चारिचरणतेहिंधरमहिकाहीं।भगवतप्रेरितमनुमहिमाहीं।
युगअनुरूपहिकरतप्रचारा । सावधानह्वैभूपउदारा ॥५॥ मनुकेपुत्रपौत्रधरमहिंधरि । पालतमन्वंतरअंतनभरि ॥
मन्वंतरनमाहँजेदेवा । यज्ञभागलेवेयुतसेवा ॥ ६ ॥ त्रिभुवनविभवदियोहरिकेरो । इंद्रकरतहैंभोगघनेरो ॥
वरषिअन्नउत्पन्नहिकरती।यहिविधितेसिगरोजगभरती॥७॥युगयुगसनकादिकहरिरूपा।कथतज्ञानविज्ञानअनूपा ॥

दोहा-याज्ञवल्क्यआदिककरहिं, युगयुगकर्मबखान । दत्तात्रेयादिकसबै, वरणहिंयोगविधान ॥ ८ ॥
प्रजापतिनकोरूपधरि, सृजतप्रजाभगवान । राजरूपपालनकरत, हरिपापिनकेप्रान ॥
कालरूपतेकरतहैं, श्रीहरिजगसंहार । गुणनलिप्तनहिंआपहैं, प्रेरकगुणनअपार ॥ ९ ॥
मायामोहितजननते, अस्तुतिकीनिजात, तद्यपिहरिऐसेअहैं, यहनहिंठीकजनात ॥ १० ॥
ऐसोकलपविकलपको, वरण्योभूपप्रमान । जेहिमेंचौदहिमनुअहैं, सोइविधिइकदिनजान ॥ ११ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे चतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

दोहा-सुनिमन्वंतरकीकथा, कुरुपतिआनँदपाय । बहुरिकह्योशुकदेवसों, मुनियहदेहुसुनाय ॥

राजोवाच ।

तीनचरणधरणीमुनिईशा । बलिसोंकिमियाच्योजगदीशा॥लोभीसमनिजअर्थहुलीन्हे।पुनिकसबलिकोबंधनकीन्हे॥
यहमोकोंअतिअचरजलागा । सुननचित्तचाहतबड़भागा॥दैत्यराजकोविनअपराधा।यज्ञेश्वरकियबंधनबाधा ॥२॥
देखिभूपकोअतिअनुरागे । वामनकथाकथनमुनिलागे ॥

श्रीशुक उवाच ।

भूपतिदेवासुररणमाहीं । लियोजीतिवासवबलिकाहीं ॥ हरयोप्राणऔरहुधनधामा । असुरबलिहिलैगेनिज
शुक्राचारजताहिजियाई । दियोजियाइअसुरसमुदाई ॥

दोहा–देधनबहुसबभाँतिसों, शुक्रहिबलिमतिमान। पुनितिनकहँआधीनह्वै, पूज्योसहितविधान ॥ ३ ॥
जानिस्वर्गजीतनकीआशा। शुक्राचारजपरमप्रकाशा ॥ अतिप्रसन्नबलिपैकरिदाया।सविधिविश्वजितयज्ञकराया॥
शुक्रसहितवरविप्रअनेकू। बलिकोकियोमहाअभिषेकू॥४॥होमप्रकाशिततहाँहुतासा।प्रगटकियोरथपरमप्रकासा॥
कंचनकलितकिंकिणीमाला।हरितवर्णबहुवाजिविशाला ॥ ध्वजाधवलअंकितमृगराजा।शारदवारिदसरिसविराजा५
चामीकरकोचापसुहायो।अक्षयतूणकवचछबिछायो॥दियप्रहलादबलिहिशुभमाला।शुक्रदियोतेहिंशंखविशाला ६॥
दोहा–यहिविधिरणकीसाजसब, देद्विजवरबलिकाहिं। आशिरवादहुदेतभे, लहौविजययुधमाहिं ॥
बलिविप्रनपरदक्षिणदीन्ह्यो। दंडप्रणामपुहुमिपरिकीन्ह्यो॥अज्ञालैप्रहलादहुकेरी।कियोप्रणतिप्रमुदितबहुतेरी॥७॥
दियोजोस्यंदनशुक्रसुहावन।तापरचढ्योदैत्यपतिपावन॥सुंदरसुमनमालउरसोहत।कवचकराललगतिभयजोहत ॥
शरपूरिततूणीरविशाला। दिव्यचापकरवालकराला॥८॥अंगदकनकबाहुमहँजाके। मकराकृतकुंडलश्रुतिभाके ॥
बलिस्यंदनपरसोहतकैसे। कनकशैलपरपावकजैसे॥९॥यूथपसबबलिसमबलवाना। विभौविभामहँसबैसमाना॥
दोहा–निजनिजसैनासाजिसब, रथमातंगतुरंग। गरजतबारहिंबारसब, चलेदैत्यपतिसंग ॥ १० ॥
यहिविधिअसुरसैनलैभारी। चढ्योपुरंदरपुरहिसुरारी ॥ कियेलेतमानहुनभयानू। दिशनदहतमनुदृगनकृशानू॥
अंबरजवनिकँपावतधाये।यहिविधिअमरावतिनियराये११अमरावतिनिरख्योबलिराजा।जहाँमनोहरसबसुखसाजा॥
परमरम्यउपवनउद्याना। नंदनादिवनसोहतनाना ॥ कूजहिंयुगलविहंगसुहावन।मत्तमधुपगुंजहिंमनभावन ॥१२॥
पछ[?]फूलसुमनकेभारा। झुकींदेवतरुशाखअपारा ॥ चक्रवाकसारसअरुहंसा। कारंडवकोकिलकलहंसा ॥
दोहा–करहिंमनोहरशोरअति, सरसिनमेंसुखपाय। तहाँखेलखेलतरहैं, सुरसुंदरीनहाय ॥ १३ ॥
परिखागगनगंगहैजामें। पुरटकोटपावकसमतामें ॥ उन्नतअटाअनूपमराजै ॥ १४ ॥ द्वारनकनककपाटविराजै ॥
फबैफटिकमणिकेपुरद्वारा॥१५॥लसतराजपथयुतविस्तारा॥गलीसभाचौहटचहुँओरा।विलसहिंमहाविमानकरोरा॥
मणिमयवणिकदुकानअखेदी। बलितवज्रविद्रुमवरवेदी॥१६॥नितनवयौवनवतीरसाला।विमलवसनधारेवरमाला ॥
जहँतहँविचरहिंदीपशिखासी।करहिंइंद्रनगरीपरकासी॥१७॥सुरतियविगलितकेशप्रसूना।ताकेसौरभयुतसबजूना॥
दोहा–जाकेमारगमेंबहत, मारुतमंदसदाहिं ॥ १८ ॥ धूपधूमसुरभि[?]तकढत, कनकगवाक्षनमाहिं ॥
धवलअमलपथबिछेबिछौना।तापरकरहिंनारिनितगौना॥१९॥मुक्तनयुक्तिवितानकिताके।तनेचंदचाँदनिसमताके ॥
हेमदंडयुतध्वजापताका। लसहिंमनहुदामिनिसबलाका ॥ छबिछायेछज्जाअतिछाजैं। तिनपरमोरकपोतविराजैं॥
चहुँकितउपजावनअहलादा।मत्तमलिंदकरतकलनादा॥बैठिमनोहरमुदितमकाना।सुरतियकरहिंसुमंगलगाना २०
वीनवेणुअरुमुरजमृदंगा। दुंदुभितालशङ्खसुरसंगा ॥ थलथलमहँगंधर्वबजावत। नाचतगावतभावबतावत ॥
दोहा–अतिविचित्ररमणीयअति, अमरावतीअनूप। जाकीप्रभालजावती, जगतप्रभाकहँभूप ॥
विशुकरमाकीरचितसुहावनि।स्वर्गलोकवासिनसुखछावनि २१ लोभीकामीशठखलमानी।औरअधर्मीबाधकप्रानी॥
येनहिंजानकबहुँतहँपावैं। इनतेभिन्नतेईजनजावैं ॥२२॥ कुरुपतिइमिअमरावतिकाहीं। बलिलेअसुरसैनसँगमाहीं ॥
बाहरतेघेरयोचहुँओरा।शुक्रदत्तशङ्खहिकियशोरा॥सुनतशंखकीध्वनिदुखदानी।भययुतभईशक्रकीरानी ॥२३॥
इंद्रजानिबलिराजचढ़ाई। लैदेवनकोसँगअकुलाई ॥ गयोबृहस्पतिपाससुरेशा ॥ चरणबंदिनिजकह्योअँदेशा ॥२४॥
दोहा–प्रथमहिदेवासुरसमर, मैंबलिवज्रहिमारि। रणगिराइदियआसुरी, सिगरीसैनबिडारि ॥
सोईपुनिबलिलैदलघोरा। चढिआयोमोपरवरजोरा॥कौनतेजदीन्ह्योअबयाको। हमसोंसनमुखजातनताको ॥२५॥
कोउदेखातनहिंरोकनहारा। मनुमुखसोंपीवतसंसारा ॥ मानहुँचाटनचहतदिशानन। दाहतमानहुँदृगनकृशानन ॥
उव्योमनहुँप्रलयानलघोरा।जारनसुरनचहतचहुँओरा॥२६॥याकोकारणगुरुभगवाना।करहुकृपाकरिसकलबखाना॥
ओजतेजबलअसकहँपायो।जातेमोहिंजीतनचढ़िआयो॥२७॥सुरगुरुसुनिसुरपतिकीवानी।कहनलगेकारणविज्ञानी॥

गुरुरुवाच।

दोहा-बलिकोपुनिचढ़िआवनो, ताकोकारणजोय। ताकोमैंजानतअहौं, सुनोदेवपतिसोय॥
शुक्रविश्वजितयज्ञकरायो। तातेबलिऐसोबलपायो॥२८॥तुमहुँऔरजोतुमसमकोई। आजनबलिसनमुखहरिहोई॥
जैसेमनुजमहाभयपागे। खड़ेनहोतकालकेआगे॥ बलिकेजीतनमहँसुरराई। समरथअहैंएकयदुराई॥ २९॥
तातेतजिनिजस्वर्गनिवासा। भागिजाहुसवसुरदशआसा॥ कालविपर्ययरिपुकरजोई। परखेरहोसबैसुरसोई॥३०॥
यहद्विजबलतेअबैप्रचंडा।चढिआयोइतबलिबरिबंडा॥जबकरिहैगुरुकोअपमाना।नशिजैहैतवविभवमहाना॥ ३१॥
दोहा-इमिसुनिसुरगुरुकेवचन, सुरसुरपतिसतिमानि। गमनकियेतजिस्वर्गको, नानारूपनिठानि॥ ३२॥
दिशनदेवदुरिगेसबजबहीं।पुत्रविरोचनकोबलितबहीं॥अमरावतीथानकरिराजा।त्रिभुवनवशकियसहितसमाजा ३३
निजशिष्यहित्रिलोकपतिकाहीं।कियेशुक्रगुरुकृपातहाँहीं॥अश्वमेधशतताहिकरायो।धरमिनमहँतेहिश्रेष्ठगनायो॥
तासुप्रभावकविनकीगाई। रहीकीर्तित्रिभुवनमहँछाई॥इंद्रासनबलिबैठिविराजा। मनहुँपूर्णिमाकोउडुराजा॥३५॥
शुक्रदत्तत्रिभुवनकीराजू। विनप्रयासलहिकैबलिराजू॥ अपनेकाहिंकृतारथमान्यों। नित्यनित्यनवमंगलठान्यों॥
दोहा-यहिविधिशुक्राचार्य्यबल, बलित्रिभुवनकोराज। अनयासहिपावतभये, संयुतअसुरसमाज॥ ३६॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे पंचदशस्तरंगः॥ १५॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यहिविधिशुक्रप्रभावते, बलिपाईसुरराजि। तबअधीरदेवनसहित, गयेदेवपतिभाजि॥
यहिविधिलखिसुतविभौविनासा।अरुदैत्यनहितस्वर्गमवासा॥अदितिदेवजननीअकुलाई।दुखितभईअनाथकीनाई॥
एकसमयतेहिंथलसुखछायो।तजिसमाधिकश्यपमुनिआयो॥लख्योतासुआश्रमसुखहीना।रहितसकलउत्सवअतिदीना॥
निरखिअदितिआसनतेहिंदीन्हा।विधिवतपतिकोपूजनकीन्हा॥मुखमलीननिजतियकोदेखी।कश्यपपूछ्योअतिदुखलेखी
किधौंअमंगलविप्रनकेरो। आवतभयोकरालघनेरो॥ कालविवशधौंहैकल्यानी। लोकधर्मकोनाशहिजानी॥३॥४॥
जेहिगृहमाहँअयोगिनकाहीं। अर्थधर्मफलकामसदाहीं॥
दोहा-तेहिगृहकीधौंकुशलनहिं, दीजैमोहिंबताय॥ तेरोवदनमलीनअति, आनँदरहितदेखाय॥ ५॥
किधौंअतिथिजबतुवगृहआयो।तबतुमनिजकुटुंबमनलायो॥उठिताकोआसननहिंदीन्ह्यो।बिनपूजितपयानसोकीन्ह्यो
अतिथिआयजाकेगृहमाहीं।सलिलहुजेविनपूजितजाहीं॥तिनपापिनकेभवनविशाला।अहैसमानहिंसदनशृगाला ७॥
कीधौंमेरेभयेप्रवासी। समयपायसुषमाकीरासी॥ रहीतोरिमतिअस्थिरनाहीं। कियोहोमनहिंपावकमाहीं॥ ८॥
ब्राह्मणपावकपूजनकीने। गवनतपुरुषस्वर्गसुखभीने॥
दोहा-येदोनोंद्विजअरुअनल, जानहुँसत्यसुजानि॥ सबदेवमयविष्णुके, वदनअहैंसुखदानि॥
कहिद्विजकोनदियोपुनिदाना। कैधौंतातेवदनमलाना॥ अहैंपुत्रसबकुशलतुम्हारे। जानिपरतदुखतुमहिंनिहारे॥
अदितिसुनतपतिकीप्रियवाणी। बोलीदुखितजोरियुगपाणी॥ ९॥ १०॥

अदितिरुवाच।

गोद्विजधर्मऔरजनकेरो। इनकरमंगलअहैघनेरो॥ अर्थधर्मकामहुँकरहेतू। ऐसोममहैकुशलनिकेतू॥ ११॥
याचकयतीअतिथिबहुतेरे।गयेविमुखनहिंमोगृहतेरे॥सविधिहोमपावकहमकीन्ह्यो।आपकृपातेसबसुखलीन्ह्यो १२॥
कौनकामनहिंहोहिंहमारे। जिनकेतुमउपदेशनवारे॥ १३॥

दोहा–पैप्रभुविनतीमोरियह, सोसुनियेचितलाय ॥ जातेमेरेमनहिको, सबकलेशकटिजाय ॥ १४ ॥
देवदैत्यतवसुतबलवाना । मानहुँप्रभुतुमतिनहिंसमाना ॥ तदपिकरहिंजेअतिसेवकाई।तिनपरकृपाकरहुअधिकाई॥
असविचारिमोहिंनिजगुनिदासी।होयमोदअसिकृपाप्रकासी॥ असुरसुरननेवैरहिकीन्हे।धरणिधामधनसबहरिलीन्हे ॥
सवतिसुतननतेरक्षहुनाथ।मोसुतह्वैगेसकलअनाथ॥१५॥सुतनसहितमोहिंदियोनिकारी।बूडहिंशोकसिंधुमहँभारी ॥
करहुकृपाअबअसमुनिराजू । जामेंममसुतपावहिंराजू ॥ १६ ॥ १७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

असजबअदितिकह्योसमुझाई । तबकश्यपबोलेमुसुकाई ॥
दोहा–अहोधन्यहैविष्णुको, मायाबलविस्तार ॥ बध्योमोहतेंहैसही, यहासिगरोसंसार ॥ १८ ॥
कहाँपंचभौतिकीशरीरा । कहाँजीवप्रकृतिहुंपरधीरा॥कोकाकोसुतकोपतिकाको । अहैमोहकारणसबयाको॥१९॥
प्रियाभजहुतुमश्रीभगवानै । जगतगुरूपरपुरुषपुरानै ॥ २०॥सोईमनोरथपूरणकरिहैं । दुखतेतोहिंआशुउद्धरिहैं॥
औरदेवकीभक्तिसमानै । भगवतभक्तिविफलनहिंजानै ॥ ऐसोमैंसतिलियोविचारी । ऐसेतहूँमानिसतिप्यारी॥२१॥
अदितिसुनतपतिकेप्रियबैना । बोलीपाणिजोरिभरिनैना ॥

अदितिरुवाच ।

केहिविधितेहरिकहँमैंध्याऊँ । जातेसकलमनोरथपाऊँ ॥ २२ ॥ २३ ॥
दोहा–तबकश्यपबोलेहरषि, सुनुसुंदरिचितलाय ॥ पैव्रतमाधवतोषकर, मैंतोहिंदेहुँबताय ॥ २४ ॥
पुत्रहोनकेहेतहीं, ब्रह्मासोंशिरनाय ॥ मैंपूछ्योसोविधिसहित, दीन्ह्योमोहिंबताय ॥

अथ पयोव्रतकी विधि ।

दोहा–फागुनसितमेंपयोव्रत, बारहदिनकोजानु । भक्तिसहिततामेंसविधि, पूजैश्रीभगवानु ॥ २५ ॥
दिवसअमावसप्रातउठि, खोदीविपिनिवराह । लाइमृत्तिकालाइतन, मज्जैसरिसउछाह ॥ २६ ॥
अथमृत्तिकालेपनकोमंत्र–त्वं देव्यादिवराहेण रसायाःस्थानमिच्छता।उद्धृतासि नमस्तुभ्यं पाप्मानं मे प्रणाशय२७
दोहा–संध्योपासनआदिजे, नित्यकर्मविख्यात । सावधानतिनकोकरै, करिमनअतिअवदात ॥
पुनिप्रतिमाकीवेदिमें, कीजलकीरविमाहिं । कीगुरुमेंआवाहनै, करिपूजैहरिकाहिं ॥ २८ ॥
अथावाहनमंत्राः–नमस्तुभ्यं भगवते पुरुषाय महीयसे ॥ सर्वभूतनिवासाय वासुदेवाय साक्षिणे ॥ २९ ॥
नमो व्यक्ताय सूक्ष्माय प्रधानपुरुषाय च ॥ चतुर्विंशद्गुणज्ञाय गुणसंख्यानहेतवे ॥ ३० ॥
नमो द्विशीर्ष्णेत्रिपदे चतुःशृंगाय तंतवे ॥ सप्तहस्ताय यज्ञाय त्रयीविद्यात्मने नमः ॥ ३१ ॥
नमः शिवाय रुद्राय नमः शक्तिधराय च ॥ सर्वविद्याधिपतये भूतानां पतये नमः ॥ ३२ ॥
नमोहिरण्यगर्भाय प्राणाय जगदात्मने ॥ योगैश्वर्यशरीराय नमस्ते योगहेतवे ॥ ३३ ॥
नमस्त आदिदेवाय साक्षिभूताय ते नमः ॥ नारायणाय ऋषये नराय हरये नमः ॥ ३४ ॥
नमो मरकतश्यामवपुषेधिगतश्रिये ॥ केशवाय नमस्तुभ्यं नमस्ते पीतवाससे ॥ ३५ ॥
त्वं सर्ववरदः पुंसां वरेण्य वरदर्षभ ॥ अतस्ते श्रेयसे धीराः पादरेणुमुपासते ॥ ३६ ॥
अन्ववर्तंत यं देवा श्रीश्च तत्पादपद्मयोः ॥ स्पृहयंत इवामोदं भगवान्मे प्रसीदताम् ॥ ३७ ॥
दोहा–इनमनुतेभगवानको, श्रद्धायुतआवाहि । अर्घ्यपाद्यआचमनको, देइप्रथमसुखचाहि ॥ ३८ ॥
पुनिद्वादशअक्षरमनुमाहीं । चंदनफूलअक्षतहुकाहीं ॥ देयचढ़ाइधूपपुनिदेवै । दैपुनिदीपभाँतिबहुसेवै ॥ ३९ ॥
पुनिलैपायससंयुतभावै । अरुघृतगुड़कोभोगलगावै ॥ होइजोअपनेविभौअपारै । तौरचिव्यंजनविविधप्रकारै ॥
सादरहरिहिनिवेदनकरई । परमानंदहियेनिजभरई ॥ द्वादशवरणमंत्रपढ़िफेरी । हवनकरैयुतप्रीतिघनेरी ॥ ४० ॥

जौनअन्नहरिभोगलगायो । सोहरिभक्तहिदेइसुहायो ॥ कीआपहितेहिंभोगलगावै । अनअधिकारिहिंनाहिंखवावै ॥
दोहा-पुनिनिवेदकेअंतमें, आचमनैकरवाय । मोदमूलताम्बूलको, देइसुभोगलगाय ॥ ४१ ॥
जपैफेरिइकशैवसुबारा । द्वादशाक्षरहिमंत्रउदारा ॥ विपुलअस्तवनकरिहरिकेरी । सादरअस्तुतिठानैफेरी ॥
करिप्रदक्षिणाचारिललामा । करैमुदितदंडवतप्रणामा॥४२॥पुनिशिरहरिनिर्माल्यचढाई।करैविसर्जनसुखसरसाई॥
द्वैद्विजतेबढ़िविप्रजेंवावै । दैबीरादक्षिणशिरनावै ॥ ४३ ॥ लैतिनकीआज्ञापुनिसोई । शेषअन्नजोबाँचोहोई ॥
तेहिंबंधुयुतयुतअतिभावै । सावधानह्वैआपहुँखावै ॥ विनतियरैनसैनसहिठानै । प्रातहिंउठिसोपुरुपसुजानै॥४४॥
दोहा-फागुनसुदिप्रतिपदाको, शुचिह्वैकरिअस्नान । सावधानह्वैमुदितमन, दूधहिलैसविधान ॥
श्रीपतिकोमज्जनकरवाइ । पूजनठानैभावबढ़ाइ ॥ पूजाकरैकुहूदिनजैसी । बारहौंदिनमेंठानैतैसी ॥ ४५ ॥
होमकरैअरुद्विजहिजेंवावै । हरिपूजनआदरहिबढ़ावै ॥४६॥ द्वादशदिवसकरैपयपाना । ब्रह्मचर्ययुतव्रतीसुजाना॥
करिमहिशयनत्रिकालनहाई॥४७॥४८॥काहूसोंनअसत्यबताई॥दुष्टनतेभाषणनहिंकरई॥वासुदेवपदनितरतिधरई ॥
द्वादशदिनद्वादशीप्रयंता । यहिविधिरहैव्रतीसोसंता॥४९॥जबफागुनसुदितेरसिआवै । तबविधिज्ञविप्रहिबोलवावै॥
दोहा-तासोंशास्त्रविधानते, पंचामृतअस्नान । करवावैभगवानको, भरिउरमोदमहान ॥ ५० ॥
हरिकीपूजाबडीकरावै । वित्तशाठ्यनकबहुँमनलावै ॥ पुनिपायसहरिहेतबनाई ॥५१॥ पुरुपसूक्तकीऋचासुहाई॥
सोरहतिनतेमनथिरकैकै । होमैअगिनिमोदितैह्वैकै ॥ षटरसहरिहिनिवेदलगावै।जेहितेश्रीपतिअतिसुखपावै ॥५२॥
आचार्य्यहितोषैमतिधामा । दैगोभूषणवस्त्रललामा । ताहीविधिऋत्विजहुँनकेरी । पूजाकरैप्रीतिकरिढेरी ॥
इनसबकीपूजाजोठानै । तौभगवानआपनीमानै॥५३॥पुनितियसोंभाषैहेप्यारी । ऋत्विजनआचार्य्यनसुखकारी ॥
दोहा-आछोअन्नजेंवावहू, आयेऔरजेविप्र । यथाशक्तिभोजनतिनहुँ, देहुमुदितह्वैछिप्र ॥ ५४ ॥
अरुआचार्य्यऋत्विजनकाहीं । उचितदक्षिणादेइउछाहीं ॥ आयेहोंइनीचजनजेई । अन्नमात्रतिनहूँकोदेई ॥ ५५॥
अंधकृपिणदीनहुँदैभोजन।करैसबंधुअशनआपहुजन॥५६॥ हरिप्रसन्नहितनिततिनआगे।गानसुनावैअतिअनुरागे॥
नृत्यकरायबाजबजवावै । करिअस्तुतिहरिअतिसुखपावै ॥ हरिसन्मुखहरिकथासुहाई । कहवावैसादरचितलाई ॥
याहीरीतिअमादिनतेरे । तेरसिलोंयुतनेहघनेरे ॥ सादरपूजैश्रीपतिकाहीं । पूजैकामतासुशकनाहीं ॥ ५७ ॥
दोहा-यहहरिआराधनपरम, पैव्रतहैसुकुमारि, मोसोंब्रह्माजोकह्यो, सोमैंदियोउचारि ॥ ५८ ॥
तुहूँयहीव्रतकरिभगवानै । शुद्धभावकरिभजनैठानै ॥ ५९ ॥ सर्वयज्ञमययहव्रतजानो । सर्वव्रतनमहँउत्तममानो ॥
यहव्रतसर्वदानतपसारा । अहैतुष्टिकरनंदकुमारा ॥ ६० ॥ सोईमुख्यसंयमअरुनेमा । सोइदानतपव्रतप्रदक्षेमा ॥
सोईयज्ञसुंदरहैभारी । जामेंहोयँप्रसन्नमुरारी ॥ ६१ ॥ तातेयहव्रतकरहुसनेमा । श्रीपतिपदलगायअतिप्रेमा ॥
ह्वैआशुहिप्रसन्नभगवाना । देहैंतवअभीष्टवरदाना ॥ पैव्रतकोकरतोजोकोई । सावधानह्वैहरिपदजोई ॥
दोहा-ताकेवामनसरिससुत, आशुअवश्यहिहोइ । सबकलुषनकोकूटिकै, हरिपुरगमनतसोइ॥ ६२ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ अष्टस्कंधे षोडशस्तरंगः ॥ १६ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-यहिविधिजबकश्यपकह्यो, तबहिंअदितिमहराज ॥ निरालस्यलागीकरन, पैव्रततजिसबकाज ॥ १ ॥
बुद्धिएकाग्रहिकोदृढधरिकै । चंचलमनहिंअचंचलकरिकै ॥ इंद्रीअश्वनदुष्टनकाहीं । मनगुनसोंमतिसूततहाँहीं ॥
निजवशकरितहँअदितिसयानी।कियोचिंतवनसारँगपानी॥निश्चलमनहरिचरणलगाई।कियोपयोव्रतअतिसुखछाई२
व्रतप्रभावतेतहँकुरुराई । प्रगटेतेहिमुकुंदयदुराई ॥ चारिबाहुपीतांबरधारे । शंखचक्रकरगदासँवारे ॥ ३ ॥ ४ ॥

निरखिनैनगोचरभगवानै। सादरउठीअदितिसुखमानै॥ प्रीतिविवशह्वैअतितेहिठामा। कीनभूमिमहँदंडप्रणामा॥५॥
पुनिउठिअदितिजोरियुगपाणी । अस्तुतिकरनचहीमृदुवाणी ॥

दोहा—पैगद्गदगरह्वैगयो, भरिआयोजलनैन ॥ कँप्योगातपुलकितवदन, कहिनसकीकछुबैन ॥ ६॥

पुनिजसतसकरिधीरजधारी। मंदमंदतहँकश्यपनारी॥हरिसुषमाद्दगकरतिपानसो।अस्तुतिकरनलगीप्रमानसो ॥७॥

अदितिरुवाच ।

यज्ञपुरुषअच्युतयज्ञेशा । तीर्थचरणतीरथजसवेशा ॥ श्रवणसुमंगलनामतुम्हारे । दासनदुखनाशकअवतारे ॥८॥
अबकरियोप्रभुमोहिंसनाथा । होतुमसत्यदीनकेनाथा ॥ विश्वरूपविश्वहिकेभावन । विश्वप्रगटकरविश्वनशावन॥
निजशक्तिहिसोंत्रिगुणहिंधारी । अहोविश्वव्यापकगिरिधारी ॥ नाथनिरंतरपूरणज्ञाना । जीवनकोनाशहुअज्ञाना ॥

दोहा—रहोनिरंतरस्वस्थप्रभु, अविकारीममस्वामि ॥ श्रीहरियदुपतिआपको, सदानमामिनमामि ॥ ९ ॥

विद्आयुषशुभवपुधनधामा॥त्रिभुवनसुखसबगुणमनकामा॥सकलसिद्धअरुज्ञानविज्ञाना॥तुम्हरिहिकृपामिलहिंभगवाना
तोरिपुजीतबकेतिकबाता । तवप्रसन्नताजगविख्याता ॥ १० ॥

श्रीशुक उवाच ।

अदितिकरीअस्तुतियहिभाँती । तबश्रीहरिदासनअरिघाती ॥ सबभूजनकेअंतरयामी । बोलेकमलनैनखगगामी ॥

विष्णुरुवाच ।

देवजननिअभिलाषातेरी । जानतहौंमैंबहुदिनकेरी॥लीन्ह्योराज्यछोंडाइसुरारी । तेरेपुत्रनदियेनिकारी ॥११॥१
रणदुर्मदतिनअसुरनकाहीं । जीतिलेहिममसुतक्षणमाहीं ॥

दोहा—लहैंराजतिहुँलोककी, मेरेसुतअनयास ॥ आनँदसोंपुत्रनसहित, करहुँस्वर्गमहँवास ॥ १३ ॥

इंद्रजेठनिजसुतकरतेरे । जाहिमारिदानवबहुतेरे ॥ रोवहिंतिनकीनारिदुखारी । अतिआनँदमैंलहौंनिहारी ॥ १४.
निजपुत्रनऐश्वर्यसमेतू । विहरतदेखौंस्वर्गनिकेतू ॥ श्रीयशसबपुनिकैसुतपावै । पुनिकैदैत्यपतालहिजावैं ॥ १५॥
तुवइच्छाऐसीसुखदाई । जानिलियोमैंसबशुरभाई ॥ ताकोकारणयहसुनिलीजै । युद्धहेतनाहिंअनुमतिदीजै ॥१६॥
अबैनअसुरनतेसुरनायक । अदितियुद्धहिंजीतनलायक॥अजहुकालउनकहँअनुकूला॥देवनकोसबविधिप्रतिकूला ॥

दोहा—तातेसुरकरिकैसमर, लहिहहिंसुखनअपार ॥ पैपैव्रततेतुष्टमैंकरिहौंअवशिविचार ॥

विफलनअरचनहोतहमारा।पावतफलश्रद्धाअनुसारा॥सुतरक्षणहितपयव्रतकरिकै।मोहिंकरिलियप्रसन्नसुखभरिकै ॥
तातेमैंतेरोसुतह्वैकै । तवपुत्रनपलिहौंमुददैकै ॥ जाहुआपनेपतिढिगमाई । लेहुमोरवपुपतिमैंध्याई ॥ १८ ॥ १९॥
काहूतेप्रसंगनहिंकहियो । पूछेहुमोहिंदुरायेरहियो ॥ गोपनकीन्हेसकलप्रसंगा । फलदायकहोवैसुखसंगा ॥ २० ॥

श्रीशुक उवाच ।

असकहिहरिभेअंतरधाना।अदितिधन्यअपनेकहँमाना॥दुर्लभकृष्णजन्मनिजमाहीं।जानिअदितिअतिमुदिततहाँहीं।

दोहा—परमभक्तियुतपतिनिकट, अदितिगईसुखछाय ॥ कश्यपपदसेवनकरन, लागीअतिमनलाय ॥ २१ ॥

कश्यपहूँतपबलहिविशेषी । निजमनमहँहरिअंशपरेषी ॥ अदितिहिंगर्भाधानकरायो।पवनदारुजिमिअनलजगायो॥
अदितिगर्भमहँलखिभगवानै । ब्रह्माअस्तुतिलगेबखानै ॥ २२ ॥२३ ॥ २४ ॥ २५ ॥

ब्रह्म उवाच ।

जैतिउरुक्रमजैउरुगाया । जैब्रह्मण्यदेवयदुराया ॥ त्रिगुणईशजैजैभगवाना ॥ पृश्निगर्भजैवेदनिधाना ॥ २६ ॥
जैवधात्रिविष्टनैनाभा । जयतिविष्णुजैअंबुजनाभा ॥ तुहीजगतमधिआदिहुअंता । परमपुरुषअरुशक्तिअनंता ॥
जगतप्रवर्त्तकहौतुमकाला । जैसेफेरतजलतृणजाला ॥ २७ ॥

दोहा-तुम्हींचराचरजगतके, स्वर्गिननंदकुमार ॥ गिरेस्वर्गतेतिनहुँके, तुमहींएकअधार ॥
जैसेबूड़तवारिमें, पोतहोतअवलंब ॥ तिमिडूबतदुखसिंधुसुर, रक्षहुप्रभुअविलंब ॥ २८ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे सप्तदशस्तरंगः ॥ १७ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यहिविधिविविधिअस्तुतिकियो, चारुचरित्रबखानि ॥ तबहिंअदितिकेप्रगटभे, श्रीपतिशारँगपानि ॥
छंदनराच-चतुर्भुजैगदासुशंखचक्रअंबुजैकरै । सुकंजनैनमोदएनराजतोपितांबरै ॥ १ ॥
पयोदश्यामवर्णकर्णमीनराजकुंडलै । निशाकराभआननैलसत्प्रकाशमंडलै ॥
स्ववक्षमेंलसैश्रिवत्सअंगदौभुजानमें । किरीटशीशलंककांचिनूपुरौपदानिमें ॥
करैकड़ेसुकांतितेमढ़ेजड़ेमणीनहैं ॥ २ ॥ मिलिंदवृंदगुंजयुक्तमालभानवीनहैं ॥
विराजमानकंठकौस्तुभैविभाविकाशते । मुनीशएनअंधकारनाशभोप्रकाशते ॥ ३ ॥
दिशानदीनदीसभूगिरासगोअकाशुही । प्रजाद्विजासुदेवभेऋतौप्रसन्नआशुही ॥ ४ ॥

दोहा-भाद्रशुक्लद्वादशिश्रवण, अभिजितभयोमुहूर्त्त ॥ मध्यदिवसवामनलियो, जन्मविनाशकधूर्त्त ॥
विजयानामकहावती, सोद्वादशीनरेश ॥ ताकोव्रतकरिसंतजन, पावहिंमोदहमेश ॥

ग्रहनक्षत्ररहेअनुकूला । भयेसुयोगयोगप्रतिकूला ॥५॥६॥ जानिदेववामनअवतारा । गगनबजावनलगेनगारा ॥
ढोलशंखऔतूर्य्यमृदंगा।विपुलवाजबाजेइकसंगा ॥७॥करहिंनृत्यअप्सरासुहावनि।सुरगायकध्वनिकियसुखछावनि॥
सुरमुनिमनुविद्याधरचारन। पितरअग्निअरुसिद्धहजारन॥किन्नरकिंपुरुषहुनागेंद्रा।राक्षसयक्षहुखगहुखगेंद्रा॥८॥९॥
करहिंप्रशंसनबारहिंबारा । गावतनाचहिंमोदअपारा॥आश्रमअदितिसुमनझरिलाई।अस्तुतिकरतदियोक्षितिछाई॥

दोहा-प्रगटआपनेगर्भते, अदितिविलोकिमुकुंद । अचरजगुनिपावतभई, तेहिंक्षणपरमअनंद ॥

करिकैकृपालियोअवतारा।विसमितकश्यपजयतिउचारा ११ जड़चेतनकेअंतरयामी।आयुधभूषणदुतियुतस्वामी ॥
मातुपितादेखतसुखछावन । सोइस्वरूपतेभेप्रभुवामन॥जिमिनटनिपुणसुवेपछिपाई।औरवेषनिजदेतदेखाई ॥१२॥
तिमिमहर्षिलखिवामनरूपा । महामोदपायोसुनुभूपा । कश्यपकेकरतेसुखछाये । जातकर्मविधिसोंकरवाये ॥१३॥
कियेमुनिनवामनव्रतबंधा । रविगायत्रीकियसनबंधा ॥ ब्रह्मसूत्रसुरगुरुतेहिदीना । दियकश्यपमेखलानवीना॥१४॥

दोहा-दियोमहीमृगचर्मतिन, दियोचंद्रवरदंड । मातादियकोपीनतिन, छत्रअकाशअखंड ॥ १५ ॥

दियोविरंचिकमंडलुताको।दियेसप्तऋषिसुभगकुशाको॥हेकुरुपतिमहराजविशाला।सरस्वतिदईअक्षकीमाला १६
भिक्षापात्रधनदसुखमानी।भिक्षादीनीतिनहिंभवानी॥१७॥युतब्रह्मर्षिसभासुखरासी।निजप्रकाशसोंकियोप्रकाशी ॥
आहिताग्निकेविधियुतवामन।चहुँकितकुशविछाइअतिपावन।पूजितज्वलनहिंज्वालबढ़ाई।समिधनसोंकियहोमबनाई
सुन्योतहाँवामनकुरुराई । करतवाजिमखबलिसुखदाई ॥ शुक्राचारजकृत्यकरावैं । तहाँविप्रवरहठिसबजावैं ॥

दोहा-सोसुनिवामनअतिबली, यज्ञविलोकनकाज । चलेदबावतपुहुमिको, पदपदमहँकुरुराज ॥ २० ॥

तहाँनर्मदाउत्तरतीरा । क्षेत्रनामभृगुकक्षसुनीरा ॥ शुक्रसहिततहँदैत्यअधीशा । करतवाजिमखरह्योमहीशा ॥
तहँजबवामनपहुँचेजाई । निरखेनिकटसबैबटकलाई ॥ २१ ॥ कैधौंउयेनिकटदिनराजा।असमानेसिगरेद्विजराजा ॥
किधौंअगिनिधौंसनत्कुमारा।आवतलखनयज्ञसंभारा॥वामनकोप्रकाशतहँछायो।बलिविप्रनकोतेजछिपायो ॥ २२॥
करतपरस्परविविधअँदेशा । मखगृहवामनकियेप्रवेशा ॥ सजलकमंडलुछत्रहुदंडा।मुंजमेखलातेजअखंडा ॥२३॥

दोहा—मृगाचर्मउपवीतसम, लसहिजटायुतशीश। करतप्रकाशितयज्ञथल, श्रीवामनजगदीश ॥ २४ ॥
प्रविशतवामनकोमखशाला। निरखिशिष्ययुतशुक्रउताला॥उठिसादरआगेचलिलीन्हें।कुशलपूँछिआसनतेहिदीन्हें॥
पूजिपखारिचरणबलिराजू।धरच्योशीशजलसहितसमाजू॥जोमुकुंदकोपदजलपावन।कलिमलसकलविशेषनशावन॥
परमभक्तिसोंजाहिंगिरीशा। धारच्योमुदितआपनेशीशा ॥ धर्मधराधारकबलिराजू।धारिसोजलशिरसहितसमाजू ॥
छविछावनवामनमनभावन । मुनिमानसकोमोदबढ़ावन ॥ जैसेवपुतैसेसबअंगा । अहैनकोईतिनकेसंगा ॥
दोहा—ऐसोलखिकरजोरिबलि, अनुपमनेहबढ़ाय॥भक्तिसहितअतिशयहराषि, बोल्योशीशनवाय॥२६॥२७॥२८॥

बलिरुवाच।

हेद्विजबालकमोरप्रणामा। लेहुकृपाकरिकैछविधामा॥ कौनितुम्हारिकरौंसेवकाई। देहुविप्रवरमोहिंसुनाई॥
ब्रह्मर्षिनकोतपवपुठानी। आयोइतैपरतअसजानी ॥२९॥ तोषितभयेपितरममआजू। भयोपूतमैंसहितसमाजू ॥
पूरणभईयज्ञअबमेरी । आयेइतकरिकृपावनेरी ॥ ३० ॥ भयोहुताशनहुततेपूरो । जहाँआपुधारच्योपगरूरो ॥
मोहिंशुचिकियपदजलद्विजराई।धन्यधरणिभयतवपदपाई॥जानिपरतअसबिनहिंबताये।कछुमाँगनहिततुमइतआये
दोहा—तातेमोसोंमाँगिये, जोइच्छामनमाहिं ॥ गऊहेमगृहअन्नजल, अरुद्विजकन्याकाहिं ॥
ग्रामतुरंगमतंगरथ, विप्रबालअरुजौन ॥ आजुमाँगिहोमोहिंपहँ, मैंदेहोंतोहिंतौन ॥ ३२ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा-
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे अष्टादशस्तरंगः ॥ १८ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—वैरोचनकेवचनसति, धर्मसहितसुनिनाथ ॥ तेहिंसराहिपरसन्नह्वै, कह्योऊर्द्धकरिहाथ ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच।

दैत्यराजयेवचनतुम्हारे। कुलकेउचितधर्मधुरधारे॥ सकलसत्यहैंयशविस्तारी । वैनआपकेममसुखकारी ॥
शुक्रधर्मउपदेशकजाके । ऐहिककर्मसफलसबताके ॥ जेहिंउपदेशकज्ञानमर्यादा। कुलमेंब्रह्मशांतप्रहलादा ॥
ताकोअचरजनहिंअसकहिबो। सदाधर्ममारगमहँरहिबो॥२॥भयेनकोउअसयहिकुलमाहीं।बोलहिंजेयाचकतेनाहीं॥
दानदेनकहिपुनिनाहिंदीन्ह्यों।ऐसोनाहिंकोउयहिकुलकीन्ह्यों॥माँगेदानकृपानहिंकाहीं।भयेविमुखकोउयहिकुलनाहीं॥
दोहा—पराधीनकोउनहिंभये, औउत्साहविहीन ॥ ताकुलकेभूपतिनको, असकहिबोननवीन ॥
निरमलयशयुतजहँप्रह्लादा। लसतचंद्रसमप्रदअहलादा॥हिरण्याक्षयाहिवंशहिभयेऊ। लैकरगदाविजयहितगयऊ॥
तिहुँलोकनमोंफिरच्योअकेलो। कोउनकियोयुधवीरनवेलो॥५॥जोलपेटिकैसमविमतरणी।द्रुतलेगयोरसातलधरणी॥
करनआशुअवनीउद्धारा। गेहरिधारिसूकरअवतारा॥ हिरण्याक्षकोतहाँनिहारच्यो। ताहिविष्णुजसतसकैमारच्यो॥
विक्रमसुमिरितासुभगवाना।अपनेकोविजयीनहिंमाना॥६॥हिरणकशिपुताकोवरभ्राता।सुनिकैतासुविष्णुतेघाता॥
दोहा—कियविचारमैंमारिहौं, जोमारच्योममभाय ॥ गयोविष्णुकेधामको, महाकोपउरछाय ॥ ७ ॥
लियेशूलकरमहाकराला।लख्योमनहुँकालहुकरकाला॥हिरण्यकशिपुकहँआवतदेखी।कीन्ह्योंविष्णुविचारविशेखी॥
जैहौंजहँजहँअवशिपराई । तहँतहँएहैदानवराई ॥ जैसेजहँजहँभागतप्रानी । तहँतहँमृत्युजातिपाछियानी ॥
यातेयहितनकरहुँप्रवेशा। तौनखोजपैहैअसुरेशा॥९॥ असगुनिविष्णुकालकेज्ञाता। मायाधारिनमहँविख्याता ॥
हिरण्यकशिपुकेधावतमाँहीं।श्वासहिसंगगयेहियपाहीं॥सूक्ष्मरूपकरिबसेशरीरा।जानिपरतमानहुँअतिभीरा ॥१०॥
दोहा—शून्यनिरखिवैकुंठको, कीन्ह्योंनादमहान। हिरण्यकशिपुविचरनलग्यो, पुनिखोजतभगवान ॥

दशदिशिस्वर्गसिन्धुमहँजाई।सप्तपतालधरणिमहँधाई॥हेर्‌यो हरिकहकतहुँनपायो॥११॥तबऐसोआनँदभरिगायो ॥
त्रिभुवनसकलखोजिमैंडारयो।नहिंपायोजोभ्रातहिमारयो॥श्रीनिवासकोभयोविनाशा।अबनहिंहैतेहिपावनआशा ॥
अज्ञानहिंतेकोपहिहोतो । अहंकारतेबाढ़तसोतो ॥ जियतमात्रभरिवैरहिकीजै । मरेशत्रुकोपहितजिदीजै ॥
असविचारितहँदानवराजू।तजिप्रकोपकियत्रिभुवनराजू॥१३॥नामविरोचनपितातुम्हारे।जोप्रहलादपुत्रअतिप्यारे ॥

दोहा—विप्रभक्तज्ञानीमहा, दानीसत्यस्वरूप । जिनकेदेखतमृत्युकहुं, जियतरह्योसुतुभूप ॥

निरखिविरोचनकोबलभारी । गयेनिकटसुरद्विजतनधारी ॥ माँग्योजायविरोचनपाहीं । देहुआयुनिजतुमहमकाहीं॥
देवनकोकपटहुगुनिलीन्ह्यों।याचकगुनिआयुषनिजदीन्ह्यों १४तैसहिआपुहुनिजकुलधर्मा।पालनकरतकरहुसबकर्मा
तातेतुमसोंमाँगहुँथोरा । पूरणकरहुमनोरथमोरा ॥ देहुतीनिपगपुहुमिप्रतापी । अपनेचरणलेहुँमैंनाँपी ॥ १६ ॥
औरकछूतुमसोंनहिंचाहौं । भूपतिमैंनहिंलोभिनमाहौं ॥ अर्थहिभरिमाँगहिजोकोई । दानलियेकरपापनहोई ॥

दोहा—तुमसमदानीकोउनहीं, त्रिभुवनपतिबलिराय । ताहूपैनिजअर्थभरि, माँगतहोसकुचाय ॥ १७ ॥

सुनतविप्रबालककेबैना । हँसिबोलेबलिभरिउरचैना ॥

बलिरुवाच ।

अरेविप्रबालकमतिहीना । माँगतमेंविचारिनहिंलीना ॥ जननिजनकसोनाहिंजनायो। तीनिचरणमहिमाँगनआयो॥
बोलहुबालकवृद्धसमानै।अर्थआपनोनेकुनजानै॥१८॥मोहिंयकात्रिभुवनपतिगुनिसाँचे । होतअयाचकयाचकयाँचे ॥
तैंद्विजबालआयमोहिपाहीं । माँगेतीनिचरणमेहिकाहीं ॥चहौंतोसप्तद्वीपदैराषौं । विप्रबालमैंयहसतिभाषौं ॥१९॥
तातेमाँगहुमहीमहाई । जातेतुवकुटुंबपलिजाई ॥ २० ॥

दोहा—सुनतदैत्यपतिकेवचन, वामनआनँदपाय । मधुरवचनबोलतभये, मंदमंदमुसकाय ॥

श्रीभगवानुवाच ।

तीनिलोकमहँसंपतिजेती । इकलोभीपूरकनहिंतेती ॥ २१ ॥ जोकोउतीनिचरणमहिपाई । अपनेउरसंतोषनलाई॥
सोलहिद्वीपहुतोषनपावै । सप्तद्वीपकीइच्छाआवै ॥ २२ ॥ पृथुअरुगयआदिकमहिईशा । सप्तद्वीपकेरहेअधीशा ॥
कियेभोगबहुधनगृहलाये । तद्यपितृष्णाअंतनपाये ॥ ऐसोसुन्योआपनेकानन । तातेकहिहौंआननआनन ॥ २३॥
यथालाभतेजोसंतोषी । सोईसुखीतासुमतिचोषी ॥ जोलोभीत्रयलोकहुपावै । दुखीरहैसंतोषनलावै ॥ २४ ॥

दोहा—असंतोषधनभोगको, अहैनरककोहेतु ॥ यथालाभसंतोषहै, जननमोक्षकोसेतु ॥ २५ ॥

यथालाभजोद्विजसंतोषी । ताकोतेजबढ़तसुखपोषी ॥ असंतोषतेविप्रनमाहीं । तनकौतेजरहततननाहीं ॥
जिमिजलदेतबुझायहुताशै । असंतोषतिमितेजहिनाशै॥२६॥तातेचरणतीनिहोधरणी।तुमसोंमैंमाँगहुँसुखकरणी ॥
इतनोईमेंमैंसुखभरिहौं । धनलैबहुतकाहमैंकरिहौं ॥ २७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

बलितहँसुनिवामनकीबानी । बोल्योविहँसिदानअभिमानी ॥ जितनोचहौलेउतितनोई । तुमसमसंतोषीनाहिंकोई ॥
असकहिजलभाजनबलिलीन्ह्यों । त्रैपदपुहुमिदानमनकीन्ह्यों ॥ २८ ॥

दोहा--देतदानत्रैपदपुहुमि, वामनकोबलिराय ॥ जानिविष्णुकोचरितसब, शुक्रमहादुखपाय ॥

शिष्यआपनेबलिसोंबोल्यो । विष्णुकपटासिगरोतहँखोल्यो ॥ २९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

सुनहुविरोचनसुवनसुजाना।इनकोजानहुँतुमभगवाना॥अदितिगर्भकश्यपतेजाये। देवनकाजकरनहितआये ॥३०॥
इनकोदेनकह्योजोदाना । अहैअनर्थतुमहिंनहिंज्ञाना ॥ इनकोदानदियेलघुजोई । दैत्यनकोदीरघदुखहोई ॥ ३१ ॥
भयोकपटतेविप्रकिशोरा । धामविभवयशतेजहुतोरा ॥ लैसिगरोवासवकोदैहै ॥३२॥ तीनिहुँलोकनापियहलैहै ॥
मूढत्रिलोकविष्णुकहँदेकै । रहिहैकहाँदानअसकैकै ॥ ३३ ॥

दोहा--इकपगपुहुमीनाँपिहै, स्वर्गदूसरेपाय ॥ तनसोंनभकोपूरिहै, तउतृतीयरहिजाय ॥ ३४ ॥
त्रिभुवनदीन्ह्योपैपछितैहै । तोरिप्रतिज्ञापूरिनह्वैहै ॥ तातेपैहैनरकमहाना । तोहिनउचितदेवअसदाना ॥ ३५ ॥
जातेहोयजीविकाहानी । सोनहिंदानसराहतज्ञानी ॥ जासुजीविकातेधनहोई । यज्ञदानतपकरतोसोई ॥ ३६ ॥
धर्मकामयशमित्रनहेतू । अरुधनआमदहितकुलकेतू ॥ करेखर्चजोपाँचप्रकारा । लहैसोदोऊलोकसुखसारा॥३७॥
सत्यअसत्यहुकेरविचारा । सुनुजोवैदिककियेउचारा ॥ हाँमीभरबसत्यहैसोई । नाहींकरबअसत्यबड़ोई ॥ ३८ ॥
दोहा--तनतरुकोसतिफूलहै, असतमूलहैतासु ॥ मूलगयेफलफूलको, होतवेगिहीनासु ॥ ३९ ॥
जौनकहतहैयाचकहि, तोंहिहमयेतोदेब ॥ देतननेतोहोतहै, निरधनसोनरदेब ॥
तातेकरहिनअंगीकारे । वितमाफिकताकोदैडारे ॥ तातेसत्यअपूरणजानो । औअसत्यहीपूरणमानो ॥ ४०॥४१॥
येजोकरतसर्वथानाहीं । देतनकछुधनहैघरमाहीं ॥ पावतसोनरअयशमहाना । जीवतहींसोमृतकसमाना ॥ ४२ ॥
नारिनसोंअरुहाँसीमाहीं । अरुविवाहकेकालसदाहीं ॥ अपनीवृत्तिहेतुअसुरेशा । औरपरैजबप्राणकलेशा ॥
औरहुगोब्राह्मणकेकाजा । कोहुकोजातप्राणजबराजा ॥ येसातहुँथलझूँठहुभाषे । होतनपापवेदकहिराषे ॥
दोहा--येसबमेरेवचनको, बलिविचारितुमलेहु ॥ वामनकोदैकछुकधन, वेगिविदाकरिदेहु ॥ ४३ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे एकोनविंशस्तरंगः ॥ १९ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा--दैत्यपुरोहितजबकह्यो, यहिविधिबलिहिबुझाय ॥ शोचतइकक्षणचुपरह्यो, बोल्योबलिकुरुराय ॥ १ ॥

बलिरुवाच।

जोगृहस्थकोधर्मबखाना । अहैसत्यसोगुरुभगवाना ॥ करैधर्मऐसोसबकोई । अर्थकामयशहानिनहोई ॥ २ ॥
करिहमवृत्तिलोभमनमाहीं । करहिंविप्रकोंकैसेनाहीं ॥ प्रथमदेनकहिपुनिनाहिंदैहैं । तौजगमेंमुखकौनदेखैहैं ॥
हैप्रहलादभूपकेनाती । अनुचितअसकहिबोसबभाँती॥३॥नहिंअसत्यसमऔरअधर्मा।असमैंजानहुँगुरुशुभकर्मा ॥
हरिसोंकह्योधरणिअसनाथा । सबकोभारसहौंनिजमाथा ॥ पैअसत्यवादीकोभारा । मोसोंसह्योनजातअपारा ॥४॥
दोहा--नहिंडरपोंमैंनर्कको, नहिंदरिद्रमुनिराय । नहिंडरपोंदुखसिंधुको, राजछूटिवरुजाय ॥
कालहुकीकछुडरनहिंलागै।जसअसत्यतेमोमनभागै॥करनअधर्मसोकछुनहिंराख्यो।जोअसत्यविप्रनसोंभाख्यो ॥५॥
मरेसंगपुनिधननहिंजावै । राज्यपुत्रतियकामनआवै ॥ सोकसजीवतहींनहिंदीजै । विप्रकाजकरिजगयशलीजै॥
धनदैविप्रतोषनहिंकीन्ह्यों । तौवहदानवृथासबदीन्ह्यों॥६॥शिविदधीचिआदिकनरराजू । प्राणहुँदानदियोपरकाजू॥
करहिंसाधुप्राणिनकल्याना । तनधनमनवचननतेनाना ॥ तौपुनिधरणिदेनकेहेतू । कौनविचारअहैमुनिकेतू ॥ ७॥
दोहा--ममपुरुषानहिंरणमुरे, भोगेभोगअपार । तिनहुँनकोलियकालग्रसि, रहिगोयशसंसार ॥ ८ ॥
सुलभसमरमरिस्वरगहिलेनो । दुर्लभद्विजकहँसरवसदेनो॥९॥दैद्विजकोसरवसभोदीना । तऊसराहैंताहिप्रवीना ॥
तौपुनिजेतुवसमविज्ञानी । लैहैंकैसेनहिंप्रियमानी ॥ तातेवामनकोमनकामा । मैंपूरणकरिहौंतपधामा ॥ १० ॥
श्रुतिविधानकेजाननवारे । जेहिंपूजहिंकरियज्ञप्रकारे ॥ सोईविष्णुहोइयदिवामन । अथवाशत्रुहुहोइभयामन ॥
तद्यपियहिवांछितमैंदैहौं । अबनदेनकहिगुरुनटिजैहौं॥यदपिशत्रुतुमयाहिबतायो।तदपिविप्रवेषहिधरिआयो॥११॥
दोहा--लेइबाँधिहूमोंहियह, यद्यपिबिनअपराध । विप्रपुत्रकोतदपिमैं, करिहौंनहिंकछुबाध ॥ १२ ॥
जोकैसबह्वैहैमुनिराई । तौसरवसुलैहैबरियाई ॥ कैसेहमजीतबहीरकाहीं । जानिपरतयहसतिमनमाहीं ॥ १३ ॥

श्रीशुक उवाच।

जबअसकह्योशुक्रसोंराजा।आज्ञाभंगकियोद्विजकाजा॥तबबलिपैकरिकोपकठोरा।दीन्ह्योंशुक्रशापअतिघोरा॥१४॥
रेमूरखपंडितअभिमानी। मान्योनहिंममहितकीबानी॥ तातेजडतेरोअनयासा। होइराजकोवेगिविनासा॥ १५॥
सत्यसंधबलिमहाप्रतापा। दैववशातलह्योगुरुशापा॥ तदपिसत्यछोंड्योनहिंराजा। गन्योनअपनोनेकुअकाजा॥
दोहा-वामनचरणपखारिकै, पूज्योसहितविधान। देतभयेबलिराजतहँ, त्रैपगपुहुमीदान॥ १६॥
बलिकीजोविंध्याबलिरानी। मुकुतमालिनीसुपमाखानी॥ आननजाकोचंद्रसमाना। पातिव्रत्यधर्मपरधाना॥
पुरटकलशभरिसोलैआई।डारिदियोजलअतिसुखछाई॥१७॥पुनिकैबलियजमानसुखारी।वामनकेपदकमलपखारी।
धारयोशीशसलिलजगपावन। जोत्रिभुवनकोकलुषनशावन॥१८॥तहँविद्याधरअरुगंधर्वा।यक्षसिद्धचारणसुरसर्वा॥
बलिकोकर्मसराहनलागे। बरषेफूलसबैमुदपागे॥ १९॥ तहाँहजारनबजेनगारे। किन्नरगावतबचनउचारे॥
दोहा-कर्मकियोबलिअतिकठिन, लियोशापद्विजकाज। जानिहुकैरिपुवामनै, दीन्ह्योंत्रिभुवनराज॥ २०॥
तीनिचरणपुहुमीदियो, वामनकोबलिराज। तबवामननाँपनलगे, सोसुनियेकुरुराज॥

छंद गीतिका।

तहँबढ्योवामनरूपभूपअनूपजगतअधारहै। भूगगनदशदिशिदेवऋषिनरबसतसबसंसारहै॥ २१॥
पातालसातहुँलोकसातहुँसिंधुसातहुँहरितनै। निरख्योद्विजनयुतआपनेकहँदैत्यपतिताहीछनै॥ २२॥
निरख्योरसातलचरणतलपदपीठिधरणीतलसही। भूधरनिजंघनिलोंलख्योयुगजानुभरिखगगतिरही॥
ऊरुनपवनगन-॥२३॥-वसनसंध्यागुह्यप्रजनपतीनको! हरिजघनअसुरननाभिनभयुगकुक्षनाथनदीनको॥
उरनखतमाला-॥२४॥-धर्महियअस्तनहुसतिअरुशीलहै। मनइंदुवक्षसिइंदिराअरविंदजेहिंकरनीलहै॥
प्रभुकंठमेंसबवेद-॥२५॥-भुजमेंदेवकाननमेंदिशा। शिरस्वर्गकेशनिमेघवरविशशिनैनपलकहुदिननिशा॥
प्रभुनासिकाहैपवनआननअग्निवाणीछंदहै॥२६॥रसनावरुणभ्रूविधिनिषेधहुभालक्रोधअमंदहै॥
अधअधरलोभहु-॥२७॥-कामत्वचजलरेतपीठिअधर्महै। प्रभुचरणगतिमखमृत्युछायाहँसनिमायापरमहै॥
ओषधीवीरुधरोमना-॥२८॥-ह्रीनदीनखहुपषानहै। बुधिवसतब्रह्माइंद्रियनमेंदेवऋषिहुमहानहै।
सबभूतचरअरुअचरनाथशरीरमेंलखिकैतहाँ। मनहींमनैप्रभुकोकियोपरणामबलिप्रमुदितमहाँ॥ २९॥
दोहा-हरिकेतनमेंनिरखिकै, यहसिगरोसंसार। अतिकलेशपावतभये, तेहिक्षणअसुरअपार॥
चक्रसुदर्शनतेजअथोरा। शारँगधनुषवज्रसमशोरा॥३०॥पांचजन्यदरघनधुनिनासी। कौमोदकीगदारिपुत्रासी॥
विद्याधरअसिचंद्रप्रकासी। अछैतुणीरबाणकीरासी॥ येहरिआयुधतेहिंक्षणआये।निजनिजअस्थाननमेंभाये॥३१॥
हरिपारषदसुनँदनंदादिक। लोकपालयुतअतिअह्लादिक॥ आइगयेसबएकहिबारा। आयुधसहितसजेशृंगारा॥
प्रभुकेशिरकिरीटअतिराजै। अंगदमकरकुंडलहुभ्राजै॥ श्रीवत्सहुउरमेंअतिसोहै। पीतांबरसुंदरमनमोहै॥
दोहा-कटिमेंसोहैमेखला, अलियुतउरबनमाल। कौस्तुभमणिअनुपमलसै, पदनूपुरमणिजाल॥
तहाँउरुक्रमश्रीभगवाना। शोभितभयेशरीरमहाना॥ इकपदसोंपुहुमीकहँनाँपी। तनसोंपूरयोगगप्रतापी॥
दिशनिपूरिलीन्ह्योंनिजबाहू३२।३३दुसरेपदसोंसहितउछाहू।स्वर्गहिनाँपिलियोनभनाकी।रहिगोचरणतीसरोबाकी।
हरिकोइकपदलगतविशाला। फूटिगयेसातहुपाताला॥ लागतहरिपदपरमप्रचंडा। फूटिगयोभूपतिब्रह्मंडा॥
निरखिसुरासुरअचरजमान्यों।हरिकोचरितकोऊनहिंजान्यों॥जयजयकहिकीन्ह्योंसुरशोरा।बरषनलगेसुमनचहुँओरा
दोहा-निरखिरूपभगवानको, बलिअसलियोविचारि।मेरेयाचकहरिभये, धनिधनिभाग्यहमारि॥ ३४॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे विंशस्तरंगः॥ २०॥

दोहा–हरिपदनखशशिसोंछिप्यो, निजलोकैपरकास । सोलखिब्रह्मादरशहित, आयेसहितहुलास ॥
मुनिमरीचिआदिकहुमहाना । नारदादिऋषिऔरहुनाना ॥ योगसिद्धवरसनत्कुमारा । आयेनृपतहँएकहिवारा ॥ १ ॥
यमअरुनेमतर्कउपवेदा । औपुराणइतिहासहुवेदा ॥ अंगसहितसंहितासुहाई । मूर्त्तिमानकुरुपतितहँआई ॥
योगपवनलहिपावकज्ञाना । जिनकेजरिगेकलुषमहाना ॥ ऐसेसकलब्रह्मपुरवासी । अपिवामनतनदरशहुलासी ॥
कियेभूमिमहँदंडप्रणामा । हरिप्रभावभेपूरणकामा ॥ २ ॥ जोपदब्रह्मलोकनकिगयऊ । सादरविधिपूजततेहिभयऊ ॥
दोहा–पूजिकियोअस्तुतिसुखित, चरणकमलजलधोय ॥ ३ ॥ राख्योनिजहिकमंडलुहि, जगपावनभोसोय ॥
सोइस्वर्गसुरधुनीकहाई । हरिकीरतिसमजवमहिआई ॥ गंगानामपरयोअतिपावन । त्रिभुवनपापिनपापनशावन ॥ ४ ॥
ब्रह्मादिकसबलोकनिपाला । पूजनकियनिजनाथकृपाला ॥ भेंटदियेसंयुतपरिवारे ॥ ५ ॥ पुनिपुनिजलसोंचरणपखारे ॥
चंदनतुलसीफूलचढ़ाये । धूपदीपनैवेद्यलगाये ॥ अक्षतजवअंकुरअरुलाजा । प्रभुहिसमर्प्योसहितसमाजा ॥ ६ ॥
अस्तुतिकियेचरित्रनगावत । जयजयशोरचहूँदिशिछावत ॥ मेनकादिनाचनतहँलागीं । गंधर्वनगावनध्वनिजागी ॥
दोहा–बजेशंखदुंदुभितहाँ, ढोलमृदंगमहान ॥ नौबतिबजवावनलग्यो, सुरपतिअतिहरषान ॥ ७ ॥
जबहिंत्रिविक्रमत्रिभुवनबाढ़े । जौलोंरहेनाथतहँठाढ़े ॥ तौलोंहियमेंगुनिनिजकाजा । जाम्बवंतऋक्षनको राजा ॥
मनसमगतिकरिदेतनगारा । दशदिशानहरिविजयपुकारा ॥ सहितत्रिविक्रमत्रिभुवनकाहीं । सातप्रदक्षिणदियक्षणमाहीं ॥
भयेफेरिप्रभुवामनरूपा । जैसेरहेप्रथमसुनुभूपा ॥ ८ ॥ तीनिचरणमहिमाँगनव्याजू । नाँप्योबलिकोत्रिभुवनराजू ॥
निरखिअसुरअतिकोपहिछाये । बलिहिंसुनावततहँअसगाये ९ याकोकोइब्राह्मणनहिंजानो । महाछलीमाधवयहिमानो ॥
दोहा–आयोद्विजकोरूपधरि, करनसुरनकोकाज ॥ १० ॥ त्रिपदभूमिमिसिहरिलियो, सरबसुबलिकोराज ॥
यज्ञकरतप्रभुरहेहमारे । दंडिनपैनहिंदंडहिंधारे ॥ ११ ॥ कबहूँअसतनभाषनवारे । ब्रह्मभक्तजनदयापसारे ॥
ताहूपैमखनेमहिंधारे । बलिहिछल्योहरिलखतहमारे ॥ १२ ॥ तातेयाकोमारहुधाई । यहीपरमबलिकीसेवकाई ॥ १३ ॥
असकहिलियेसकलहथियारा । बलीसबैबलिकेसरदारा ॥ यद्यपिबलिशासनहुँनपाये । तदपिकोपिवामनपैधाये ॥ १४ ॥
असुरनधावतआवतदेखी । विष्णुपारषदतिनलघुलेखी ॥ विहँसिआयुधनलैसुखछाये ॥ १५ ॥ नंदसुनंदविजयजयधाये ॥
दोहा–कुमुदऔरकुमुदाक्षभट, गुरुलहुविष्वक्सेन ॥ पुष्पदंतबलप्रबलश्रुत, देवजयंतसुखेन ॥
जिनकेदशहजारगजजोरा । मारनलगेरिपुनवरजोरा ॥ बलिविलोकिनिजसुभटविनाशा । शुक्रशापसुधिकरितजिआशा ॥
बरज्योअपनेभटनपुकारी । वृथाकरहुकाहेअबरारी ॥ १६ । १७ । १८ ॥ हेसिंहिकापुत्रबलवाना । विप्रचित्तिहेनेमिमहाना ॥
सुनियेसबमिलिवचनहमारे । जाहुलौटिसिगरेबलवारे ॥ करहुनयुद्धतजहुकरशूला । अबैनदैवहमैंअनुकूला ॥ १९ ॥
जोसबप्राणिनसुखदुखदाता । पुरुषएकईश्वरविख्याता ॥ ताकोकरतबमेटनकाहीं । तुमसमरथकोनेहुँविधिनाहीं ॥ २० ॥
दोहा–प्रथमरह्योअनुकूलमोहिं, देवनकोप्रतिकूल ॥ सोईविपर्ययहोतभो, दानवकालअतूल ॥ २१ ॥
बलबधिओषधीनतेवीरा । मंत्रनसोंमंत्रितमतिधीरा ॥ औरहुअमितउपाइबनाये । होनहारनहिंमिटतमिटाये ॥ २२ ॥
प्रथमहिंजिनदेवनबहुवारा । जीतिलियोतुमलगीनबारा ॥ तेईदेवजीतिहमकाहीं । नादकरहिंमोदितमनमाहीं ॥ २३ ॥
जबपुनिफिरिहैभाग्यहमारी । तबजीतबहमसुरनप्रचारी ॥ तातेपरखोआपनकाला । अबैकरहुनहिंयुद्धविशाला ॥ २४ ॥

श्रीशुक उवाच ।

सुनिनिजनाथवचनबलवाना । कियेरसातलअसुरपयाना ॥ हरिअनुचरपाछेतिनधाये । पठैरसातलफिरिफिरिआये २५ ॥
दोहा–जानिगरुलरुखनाथकी, लैकरवारुणपास ॥ बलिकोसोमहिदानदिन, बाँध्योबिनहिंप्रयास ॥ २६ ॥
बाँध्योबलिजबहरितेहिठोरा । हाहाकारभयोचहुँओरा ॥ २७ ॥ बाँधिगयोनिजराज्यगँवायो । तदपिनअसुरभूपपछितायो ॥
ऐसेमहायशीबलिपाहीं । बोलेवामनवचनतहाँहीं ॥ २८ ॥ असुरनाथत्रैपगमहिदीन्ह्यो । सोदुइचरणनाँपिमैंलीन्ह्यो ॥
तीसरचरणरह्योअबबाकी । वेगिउपायवताबहुताकी ॥ २९ ॥ जहँलोंकरहिंदिनेशप्रकासा । जहँलोंहैउडुयुतशशिभासा ॥
जहँलोंबरषहिंवारिदवारी । रहीतहाँलगिराज्यतिहारी ॥ ३० ॥

दोहा-मैंनाप्योइकपदपुहुमि, स्वर्गदूसरेपाय। तुम्हरेदेखतअसुरपति, तीसरदेहुबताय ॥ ३१ ॥
दानदेनकहिनहिंदियो, तुमकोनरकनिदान। तातेगुरुशापितनृपति, कीजैनरकपयान ॥ ३२ ॥
जोनदेतकहिविप्रको, सोनस्वर्गकोजाय। वृथामनोरथतासुसब, गिरतनरकमहँधाय ॥
दियोनकहिकैदानमोहिं, धनमानीमहिपाल।यहछलकोफललेहुतुम, बसहुनरककछुकाल॥३३॥३४॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे एकविंशस्तरंगः ॥ २१ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यहिविधिछलकरिराजलै, बाँध्योयदपिमुरारि। तदपिनत्याग्योसत्यबलि, बोल्योवचनविचारि ॥ १ ॥

बलिरुवाच।

प्रभुमिथ्यामानहुममवाणी। करिहौंसतिमैंशार्ँगपाणी ॥ तीसरचरणरह्योजोबाकी। ममशिरधरिकरिगाढ़कृपाकी॥
लेहुनाँपिमेरोतननाथा। अबमोहिंकीजैअवशिसनाथा ॥ २ ॥ नरकजानकोमैंनडेराऊँ। राज्यजायनिरधनह्वैजाऊँ ॥
यद्यपिपरैमोहिंदुखघोरा। बाँधहुअंगअंगवरुमोरा ॥ इनतेतसमोहिंभयनविषादा। जसअसत्यवादीअपवादा ॥ ३ ॥
तुम्हरेदंडदियेतेस्वामी। ह्वैहैमोरिनकछुबदनामी ॥ करहुदंडदैहिततुमजैसो। सुखदमातुपितुभ्राततनतैसो ॥ ४ ॥
दोहा-असुरनकेतुमगुप्तगुरु, करहुसदाप्रभुनेहु। हमसेश्रीमदअंधको, नाशिमदैदृगदेहु ॥ ५ ॥
जिनसोंकरिकैवैरमुरारी। योगिनसमगतिलियेसुरारी॥६॥तिनकेबाँधेराजहरेहूँ। मोकहँव्यथालाजनहिंकेहूँ ॥ ७ ॥
मोरपितामहश्रीप्रहलादा। साधुनमहँजाकीमरयादा ॥ पिताहिरनकश्यपतेसोई । सहेकलेशयदपिबहुतोई ॥
तद्यपितज्योआपकोनाहीं। उनकोयशजाहिरजगमाहीं ॥८॥ तजिहैअंतअवशियहदेहू। तासोंउचितकरबनहिंनेहू॥
धनकेचोरनातसुतबंधू । तिनसोंकाहकियेसंबंधू ॥ संश्रितहेतुअहैयहनारी । तासोंकाहकियेहैयारी ॥
दोहा-गृहबाँधेसबरीतिदुख, वृथाअवरदाजाति ॥ ९ ॥ असविचारिप्रहलादतुव, चरणगह्योसबभाँति ॥
यदपितासुपितुकोवधकीन्ह्यों।तद्यपितुवपदनहिंतजिदीन्ह्यों।रह्योबोधतेहिपरमअगाधा।संसारीजनकीनहिंबाधा १०
ऐसेमहूँभागवशनाथा। राख्योआपचरणमेंमाथा ॥ जाकेनिकटरहतनितकाला । ऐसीअसतदेहतिहुँकाला ॥
ताकेहितदुरमदजगमाहीं। जोरैधनअरुविभवसदाहीं ॥ धनअरुविभौभयेमतिहीना। होतआशुनहिंतुवपदलीना॥
सोतुममोरसकलहरिलीन्ह्यों।बिनप्रयासनिजदासहिकीन्ह्यों।।पूज्योसकलमनोरथमोरा।कियोधन्यमोकोंवरजोरा ११

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यहिविधिबलिकेकहतहीं, कृष्णभक्तप्रहलाद। आवतभोकुरुपतितहाँ, शशिसमयुतअहलाद ॥ १२ ॥
नलिननैनलंबेदोउबाहू। सुभगश्यामतनसहितउछाहू ॥ पसरतिजासुप्रभाचहुँओरा । ऊंचशरीरलसैनहिंथोरा ॥
ऐसेपितामहैबलिराई। देखतहींअतिशयसकुचाई ॥ १३ ॥ कियोनपूर्वसरिससतकारा। वरुणपाशसोंबँध्योउदारा॥
निरखिपितामहजलदृगआयो। नीचेमुखकरिशीशनवायो॥१४॥प्रहलादहुतहँलखिभगवानै।सेवितनंदसुनंदप्रधानै॥
निकटआयपुलकावलिछाई।कियोप्रणामभूमिशिरनाई॥विह्वलभयोअनंदअपारा।जोरियुगलकरवचनउचारा॥१५॥

प्रह्लाद उवाच।

दोहा-तुमहिंदियोप्रभुइंद्रपद, औतुमहींहरिलीन। सोकीन्ह्योंअतिशयकृपा, यहौजानिहमलीन ॥
श्रीमदभयेतुम्हैंनहिंजानै। बहुप्रकारकेऔगुनठानै ॥ सोबलिकोतुमकियोविनासा। याकोकियोआपनोदासा॥१६॥
जोधनपायपंडितौमोहै । तौंमूरखपूरुषपुनिकोहै ॥ तुमसमनहिंकोउउपकारी । बिनहिंहेतुसबकेहितकारी ॥
तातेअखिललोकगुरुस्वामी। हेनारायणतुमहिंनमामी ॥ १७ ॥

श्रीशुक उवाच।

सोकहतसहितअहलादा।दोउकरजोरिखड़ेप्रहलादा॥तिनहिंसुनावतमोदितगाता।हरिसोंबोलनचहेविधाता॥१८॥
विंध्यावलिपतिबंधनदेखी। पतिव्रताभैविकलविशेषी॥
दोहा–नीचेशीशनवायके, करिकैअमितप्रणाम। जोरिपाणिभगवानसों, कीन्हीविनयललाम॥ १९॥

विंध्यावलिरुवाच।

यहिजगकोप्रभुकृपानिकेतू। तुम्हींरच्योनिजखेलनहेतू॥ सोजगकोजिनकेमतिनाहीं। मानहिंस्वामिआपनेकाहीं॥
तेनिरलज्जतुम्हैंकादेहीं। हैअधीनतुम्हरेसबदेहीं॥२०॥सुनिविनतीविंध्यावलिकेरी। कियोविरंचिविनयहरिहेरी॥

ब्रह्मोवाच।

जगमयदेवदेवभूतेशा। जगभावनहेकृष्णरमेशा॥ सरवसुहरिलीन्ह्योंयदुनायक। यहबलिअबनहिंबाँधनलायक॥
छोरहुछोरहुयाहिमुरारी। ऐसीरीतिनअहैतुम्हारी॥२१॥करिविक्रमजीत्योत्रैलोका। सोतुमकहँसबदियोविशोका॥
दोहा–सरबसुदैतुमकोहरी, दियोतनहुँतुमकाहिं। तऊदुखितयहनहिंभयो, रह्योसुखितमनमाहिं॥ २२॥
जासुचरणमेंकपटविहाई। अंकुरदूबहुसलिलचढ़ाई॥ पूजनकरहिंजोयुतअनुरागा। सोपावतपरगतिबड़भागा॥
ताकोदैत्रिभुवनअसुरेशा। कसपावतअसनाथकलेशा॥२३॥सुनिस्वयंभुकेवचनसोहाये।कहतभयेवामनसुखछाये॥

श्रीभगवानुवाच।

जापरकृपाकरहुँमैंधाता। ताकेधनकोकरहुँनिपाता॥ जेहिंधनकेमदतेमतवारो। होतदासनहिंअवशिहमारो॥
करतअवशिसाधुनअपमाना। जातअंतसोनरकनिदाना॥२४॥चौरासीलखयोनिमझारी।भ्रमतकर्मवशजीवदुखारी॥
दोहा–कबहुँकबहुँकहुँजगतमें, कौनिहुँसुकृतवशात। अतिपावनसुखछावनो, लहतमनुजतनतात॥ २५॥
जन्मकर्मवयरूपसोहावन। विद्याविभौधनहुँसुखछावन॥ येलहिभयोअगर्वितजोई। मेरोकृपापात्रहैसोई॥ २६॥
रूपविभौविद्यातरुणाई। देहिंगर्वअविवेकबढ़ाई॥ पैजोतनमनमोहिंअवराधा। ताकोकरहिंनयेकछुबाधा॥ २७॥
दैत्यदानवनमाहँप्रधाना। कीरतिकरयहबलिप्रतिमाना॥मायाअजयमोरियहजीती।दुखौपरेनहिंकरीकुरीती॥२८॥
याकोसकलभयोधनछीना। भयोत्रिलोकराजतेहीना॥ निजरिपुसोंयहबंधनपायो।औरहुबड़ोअनादरआयो॥
दोहा–जातनातयहिछोंडिकै, सिगरेगयेपराय॥ सकलयातनाहैगई, लह्योदुःखसमुदाय॥ २९॥
गुरुकीशापलह्योद्विजकाजा। तदपिनसत्यतज्योबलिराजा॥मैंहूंकियोयदपिछलकर्मा।तदपिनयहछोंड्योसतिधर्मा॥
कोबलिसमयहजगतउदारो। सत्यधर्मधुरधारणवारो॥ ३०॥ तातेयाकोकरिनिजदासा। मैंदेहौंवैकुंठनिवासा॥
जोहैदुर्लभदेवनकाहीं। अंतसमययहबसीतहाँहीं॥ सावरणीमन्वंतरमाहीं। ह्वैहैइंद्ररहीरिपुनाहीं॥
याकोरक्षकमैंतहँह्वैहौं। पूरणभक्तिआपनीदैहौं॥ ३१॥ तबलोंबसैसुतलमहँजाई। विशुकर्माविरच्योसुखदाई॥
दोहा–आधिव्याधिआलस्यहूँ, औरहुदुखलघुघोर॥ तहाँबसेकछुहोतनाहिं, पायअनुग्रहमोर॥ ३२॥
बहुरिकह्योबलिसोंयदुराजा। सुनियेइंद्रसेनमहराजा॥ जाहुसुतलसंयुतपरिवारा। होयभूपकल्याणतुम्हारा॥
जहाँबसनकोदेवसदाहीं। चाहतरहतसबैमनमाहीं॥ ३३॥ इंद्रहुयमअरुवरुणकुबेरा। करिनहिंसकैंअनादरतेरा॥
तौऔरनकोकहागनावैं। जेतुम्हारभयनिजउरलावैं॥ असुरजोतुवशासननहिंधारी। ताकोचक्रमोरहतिडारी॥३४॥
तुमहिंकुटुम्बसहितदिनराती।मैंरक्षणकरिहौंसबभाँती॥तहँनिजनिकटनित्यलखिमोहीं।अतिआनँदह्वैहैहठितोहीं ३५
दोहा–दैत्यसंगतेजोभयो, तोकोआसुरभाव॥ ह्वैहैआशुविनाशसो, लखिकैमोरप्रभाव॥ ३६॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे द्वाविंशस्तरंगः॥ २२॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यहिविधिजबवामनकह्यो, बलिसोंसुंदरबैन ॥ असुरनाथतबविमलमति, पायोआनँदऐन ॥
जोरिपाणिनैननिभरिवारी। गद्गदगरबलिगिराउचारी ॥ १ ॥

बलिरुवाच।

जोतुमकोप्रभुकरनप्रणामा। चाहतमनहूँतेसुखधामा ॥ सकलमनोरथपूरणहोवैं। तासुओरयमकबहुँनजोवैं ॥
लोकपालहुनदुर्लभजोई। कियोअनुग्रहमोपरसोई ॥ मैंहौंनीचनहौंयहिलायक। पैतुमदीनबंधुयदुनायक ॥ २ ॥

श्रीशुक उवाच।

सुनिबलिवाणीदीनदयाला। करीदासपैदयाविशाला ॥ गरुडहिशासनदियोउताला। बंधनछोरिदियोततकाला ॥
सत्यसंधतहँदानवनाथा। बारबारधरिहरिपदमाथा ॥
दोहा-विधिशिवकोतहँअसुरपति, करिप्रमुदितपरणाम ॥ गमनकियोअसुरनसहित, सुतलआपनेधाम ॥ ३ ॥
यहिविधिबलिसोंत्रिभुवनलीन्ह्यो।कुरुपतिहरिइंद्रहिंपुनिदीन्ह्यो॥कैप्रभुअदितिकामनापूरी।पाल्योजगतदयाभरिभूरी
बलिपायोहरिपरमप्रसादा। राख्योसकलसत्यमरयादा ॥ लखिप्रहलादआपनोनाती। वंशप्रचारकजोसबभाँती॥४॥
बोल्योवचनभक्तिरसछाई। श्रीवामनकोविनयसुनाई ॥ ५ ॥

श्रीप्रह्लाद उवाच।

पूजतपदविधिशिवहूतेरे। भयेद्वारपालकबलिकेरे ॥ हेप्रभुदासनप्रदअह्लादा। जसबलिपैतुमकियोप्रसादा ॥
लह्योनतसशिवरमाविधाता। तहाँकहाँऔरनकीबाता ॥ ६ ॥
दोहा-जाकेपदअरविंदको, करिसेवनमकरंद ॥ ब्रह्मादिकअधिकारसब, पावतसहितअनंद ॥
ऐसेतुमहमनीचकुजाती। तिनपरकृपाकियोयहिभाँती ॥ ताकोहेतुपरयोनहिंजानी। अपनीकरनीकोअनुमानी७॥
बड़ोविचित्रचरित्रतुम्हारो। अनयासहिप्रभुजगविस्तारो ॥ समदरशीसबअंतरयामी। करहुकृपाभक्तनपरस्वामी॥
सोनविषमतापरैनिहारी। कल्पवृक्षकीरीतितुम्हारी ॥ ८ ॥ सुनिप्रहलादवचनभगवाना। बोलेवामनकृपानिधाना॥

श्रीभगवानुवाच।

सुनहुवचनप्रहलादहमारा। सबविधिहैकल्याणतुम्हारा॥नातिनातनिजज्ञातिनलीने।जाहुसुतलनिवसहुसुखभीने९॥
दोहा-तहाँगदाकरमेंलिये, ठाढ़ेबलिकेद्वार ॥ देखहुगेमोकहँसदा, बंधननाहिंतुम्हार ॥ १० ॥

श्रीशुक उवाच।

जबअसकह्योकृष्णकुरुराई।तबप्रहलादमहासुखपाई।प्रभुकीआज्ञाकोधरिशीशा।जोरिपाणिशिरनायमहीशा ॥११॥
आदिपुरुषकोदैपरदक्षिण।लैऔरहुअसुरनअतिदक्षिण॥कीन्ह्योंसुतलप्रवेशसुखारी।जोप्रहलादभक्तगिरिधारी॥१२॥
पुनिहरिनिकटशुक्रकहँदेखी।पग्योद्विजनमधिशोचविशेखी॥कह्योशुक्रसोंहरिमुसकाई १३ मखपूरणकीजैमनलाई॥
होइनयदपियज्ञयजमाना। पूरहिंतदपिविप्रमतिमाना ॥ १४ ॥ सुनिवामनकेवचनलजाई। बोलेमंदमंदभृगुराई ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-फलदातासबयज्ञके, जहँपूजितभेआप ॥ तहाँअपूरणयज्ञको, मेरेनाहिंसंताप ॥ १५ ॥
मंत्रतंत्रअरुदेशहुकाला। होतहीनजोकर्मकृपाला ॥ सोलीन्हेप्रभुनामतुम्हारा। पूरणहोतअवशिसंसारा ॥ १६ ॥
तदपिरावरोशासननाथा।बिनहिंविचारकरबधरिमाथा॥होइसोईजगमंगलकारी।करतजोतुवशासनशिरधारी ॥ १७॥

श्रीशुक उवाच।

कहिहरिसोंअसशुक्रतहाँहीं। लैविप्रननिजसंगहिमाहीं ॥ बलिकीयज्ञरहीजोबाकी। ताकोपूरकियोसुखछाकी॥१८॥
यहिविधिवामनबलिपैजाई।त्रैपदधरणिमाँगिकुरुराई॥त्रिभुवननाँपिइंद्रकहँदीन्ह्यो।जोबलिवासवसोंहरिलीन्ह्यो॥१९॥

दोहा–पुनिब्रह्मानारदतहाँ, महादेवसनकादि ॥ दक्षअंगिराभृगुयुतै, औरहुऋषिश्रुतिवादि ॥ २० ॥
कश्यपअदितिप्रीतिकेहेतू । होनलोकसबमोदनिकेतू ॥ लोकलोकपनकेकुरुराई । वामनकोपतिदियोबनाई ॥ २१ ॥
वेददेवयशधर्महुस्वर्गा । श्रीमंगलव्रतअरुअपवर्गा ॥ समरथइनकेपालनमाहीं ॥ २२ ॥ एकवामनदूजोहैनाहीं ॥
अरुउपेंद्रयहनामधरायो ।सुनिकैसकललोकसुखपायो ॥ २३ ॥ पुनिवामनकहँआगूकरिकै ।चढच्योविमानइंद्रसुखभरिकै ॥
लोकपालयुतलैविधिशासन । गयोइंद्रअपनेइंद्रासन ॥ २४ ॥ वामनभुजबलत्रिभुवनराजू । पायभयोमोदितसुरराजू ॥
दोहा–इंद्रासनपरबैठिकै, शोभितभयोसुरेश । लहिकैकृपाउपेंद्रकी, रह्योनकतहुँकलेश ॥ २५ ॥
ब्रह्माशिवअरुचारिकुमारा ।भृगुआदिकऋषिसबैउदारा ।पितरसिद्धअरुदेवसुखारी ॥ २६ ॥ गावतअद्भुतसुयशमुरारी ॥
अदितिहिंसबैसराहतराजा ।गेनिजनिजपुरसहितसमाजा ॥ २७ ॥ चरितउरुक्रमकोदुखदंडन ।मैंतुमसोंगायोकुरुनंदन ॥
श्रद्धासहितसुनतजोयाको । छूटतमहापापपहैताको ॥ २८ ॥ जोमहिरजकणगनैअनंता । लहैत्रिविक्रमविक्रमअंता ॥
भयोजोहैअरुहोवनवारो । लहैकहाहरिमहिमापारो ॥ ऐसोचारिवेदनिरधारे । सोइवशिष्ठआदिकहुउचारे ॥ २९ ॥
दोहा–यहवामनअवतारको, चरितसुनैजोकान । सोअनेकसुखभोगिकै, अंतलहैनिर्वान ॥ ३० ॥
सुरनरअरुपितृकर्ममें, पाठकरैजोयाहि । विनाविघ्नपूरहिसबै, होइपूर्णफलताहि ॥ ३१ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे त्रयोविंशस्तरंगः ॥ २३ ॥

दोहा–वामनकीसुनिकैकथा, कुरुपतिअतिसुखपाय । पुनियहश्रीशुकदेवसों, विनतीदियोसुनाय ॥

राजोवाच ।

हेशुकसुननचहौंसुखसारा ।जिमिहरिधरच्योमत्स्यअवतारा ॥ अतिनिंदितजगमीनशरीरा ।सोकेहिंहेतुधरच्योयदुवीरा ॥
हैंतोवहत्रैलोक्यगोसाँई । धरहिंशरीरजीवकीनाँई ॥ २ ॥ युतविस्तारकह्योमुनिराई । कृष्णचरित्रसबैसुखदाई ॥ ३ ॥

सूत उवाच ।

सुनिशुकदेववचनभूपतिके । अतिअनुरागभरेयदुपतिके ॥ मीनरूपकोचरितमहाना ।कह्योबादरायणिभगवाना ॥ ४ ॥
गोद्विजसुरसाधुनश्रुतिगाथा । इनकेईशअहैंयदुनाथा ॥ रक्षणहितधर्मादिककेरे । धरहिंशरीरमुकुंदघनेरे ॥ ५ ॥
दोहा–वायुसरिससबमेंवसत, यदपिधरहिंबहुरूप ॥ तदपिछोटबड़होतनहिं, हतमायागुणभूप ॥ ६ ॥
कलपअंतब्रह्माजबसोवै । तबैप्रलयनैमित्तिकहोवै ॥ तबहिंसिंधुछोंडहिंमरयादा । बोरहिंलोकनअसश्रुतिवादा ॥ ७ ॥
सोइकसमयमोहजबधाता । सोवनचहेत्रिलोकविख्याता ॥ हयग्रीवतहँदानवगयऊ । चारिहुँवेदहरतसोभयऊ ॥ ८ ॥
दानवकर्मजानिभगवाना । धरच्योमीनकोरूपमहाना ॥ ९ ॥ तहाँराजऋषिइकगुणधामा । रह्योधरणिसत्यव्रतनामा ॥
सलिलपानकरिबहुतपकीन्ह्यों ।नारायणचरणनमनदीन्ह्यों ॥ १० ॥ सोईमहाकल्पयहिपाहीं ।श्राद्धदेवमनुभोजगमाहीं ११
दोहा–द्रविडदेशकेभूपसों, एकसमयकुरुराय ॥ कृतमालासरिमेंगयो, तर्पणहितचितचाय ॥
तर्पणकरनलग्योजबराजा ।भरिअंजलिजलपितरनकाजा ।तबभूपतिनिजअंजलिमाहीं ।लख्योछोटइकमीनतहाँहीं १२
ताकोदियोनदीमहँडारी ॥ १३ ॥ मीनदीनतबगिराउचारी ॥ करुणावानबड़ेतुमराजा । निर्दयसमकीन्ह्योंयहकाजा ॥
जलकेबड़ेमीनमोहिंखैहैं । जातिमानिनहिंनेकुबचैहैं ॥ तातेमैंडरपहुँसरिमाहीं । लेहुनिकासिभूपमोहिंकाहीं ॥ १४ ॥
सुनिनृपदीनमीनकेबैना । रक्षणकरनचह्योभरिनैना ॥ हरिचरित्रभूपतिनहिंजान्यों ।ताकोदीनमीनलघुमान्यों ॥ १५ ॥
दोहा–जलतेताहिनिकासिकै, राखिकमंडलुमाहिं ॥ निजआश्रमकोलैगयो, कियविचारकछुनाहिं ॥ १६ ॥
एकहिरातिमाहँबढ़िगयऊ । सकलकमंडलुभरिसोभयऊ ॥ नृपसोंबोल्योभयेप्रभाता ॥ १७ ॥ मैनकमंडलुमाहँसमाता ॥
विस्तरअस्थलदेहुनरेशा । जहँसुहिंहोइनकछूकलेशा ॥ १८ ॥ तबराजाइकबडघटमाहीं । डारिदियोसोमीनहिंकाँहीं ॥

रह्योसोएकमुहूरतठाढो । देखतमीनतीनकरबाढ़ो ॥ १९ ॥ कह्योमीनपुनिसुनुनरराई । यामेंहोतिनमोरिसमाई ॥
औरबड़ेजलमेंमुहिंराखौ।मुहिंबाढ़तलखिनहिंमनभाखौ॥२०॥तवराजाकोअचरजलागा।डारयोतेहिंलेजाइतडागा॥
दोहा-भूपतिकेतबलखतहीं, बाढ्योमीनस्वरूप ॥ भयोसरोवरभरिद्रुते, नहिंसमाततहँभूप ॥ २१ ॥
मीनकह्योतबभूपतिपाहीं । साँकरजानिसरोवरकाहीं ॥ सरसमातनहिंमोरशरीरा।राखहुमुहिंजहँजलगंभीरा ॥२२॥
तबराजाद्राविडकोवासी । द्रुततड़ागतेताहिनिकासी ॥ जसतसकैभूपतिलैगयऊ। सिंधुमाहँतेहिंडारतभयऊ॥२३॥
तबपुनिकह्योमीननरपाले । खैहैंमहामकरमुहिंहाले ॥ लागतिदयानतोहिंनरेशा । जोराखहुमुहिंसिंधुप्रदेशा ॥
हमतोहैंशरणागततेरे । तुमबिनकोउरक्षकनहिंमेरे ॥२४॥ ऐसेमधुरवचनसुनिराजा। बोल्योवचनजानिनिजकाजा॥
दोहा-बढ़तजाहुलखतेलखत, दीनबैनबतराय ॥ आपकौनहैमोहिंअब, दीजैबेगिबताय ॥ २५ ॥
जगमेंऐसोमीनमहाना । लखेहुँननैनसुनेहुँनहिंकाना॥पुनिनरपतिकेदेखतमीना । शतयोजनकोनिजतनकीना॥२६॥
तबभूपतिबोल्योकरजोरी । अबलोंरहीमोरिमतिभोरी ॥ तुमहोनारायणभगवाना । भयेभक्तहितमीनमहाना॥२७॥
उत्पतिपालनलैजगकरहू । हेविश्वम्भरभक्तनभरहू ॥ हौसच्चिदानंदश्रीधामा । करहुँजोरिकरतुमहिंप्रणामा ॥२८॥
सबतुम्हारलीलाअवतारा । हैजनमंगलहेतअपारा ॥ धरयोमीनकोवपुकेहिकारण । सोकहियेप्रभुदीनउधारण२९॥
दोहा-जसऔरनसुरसेवनो, कहुँफलहोतउदोत ॥ तसपदसेवनरावरो, कबहुँवृथानहिंहोत ॥
तुमहोसबकेसुहृदपियारे । दृगगोचरभोरूपहमारे ॥ ३० ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिविनयनृपतिजबकीनी । सत्यव्रतमतिआनँदभीनी ॥ तबएकांतीजनकेप्यारे । युगछैमेंमीनाहिंवपुधारे ॥
प्रलयसिंधुमहँचह्योविहारा । सत्यव्रतसोंवचनउचारा ॥ ३१ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

आजुहिंतेसतयेंदिनमाहीं । तजिहैंवारिधिवेलाकाहीं ॥ भूर्भुवादिलोकनकहँभूपा । बोरिदेइँगेरहीनरूपा ॥ ३२ ॥
जबह्वैजैहैजलचहुँओरा । तबनृपपायअनुग्रहमोरा ॥ तेरेनिकटनावइकऐहै । अतिविशाललखितैंमुदपैहै ॥ ३३ ॥
दोहा-अन्नऔषधिनबीजलै, सप्तऋषिनकेसंग । चढिबोतुमतापैतुरत, लैनिजजनहेअंग ॥ ३४ ॥
चढेनावविचरेहुँचहुँओरा।मिलीनकहुँविनजलकोठोरा॥रहीऋषिनकोतहाँप्रकासा।करिहैंनहिंसूरजशशिभासा ३५॥
परमप्रचंडपवनकरिशोरा।बहनलगीअतिझोंकिझकोरा ॥ कँपनलगीअतितरणितुम्हारी । तबतुमकोह्वैहैभयभारी ॥
तबममप्रेरितवासुकिनागा । तुवसमीपऐहैबडभागा ॥ ताकोगुनकरिहितदुखभंगे । नावबाँधिदीजैमम शृंगे ॥ ३६ ॥
लैनावहिंतेहिसहितसमाजा । मैंवागिहौंसिंधुमहँराजा॥जबलौंब्रह्मनिशानहिंबीती।तबलौंतुमरहिहौयहिरीती ॥ ३७॥
दोहा-परब्रह्ममहिमाजोमम, तबजानिहौनरेश । अबैनेकहींजानहू, लहिममभक्तिनिदेश ॥ ३८ ॥

श्रीशुक उवाच ।

असकहिभूपतिसोंप्रभुमीना।अंतर्हितअपनोवपुकीना॥जौनकालकमलापतिभाष्यो।राजासोइसमयचितराख्यो ३९॥
अग्रभागभूपतिकरिप्राची । कुशाविस्ताररच्योमनराची ॥ बैठ्योजायसिंधुकेतीरा । करिकैउत्तरमुखमतिधीरा ॥
सुमिरणलग्योकृष्णपदकंजा।जातेहोतमहाभवभंजा४०कुरुपतिजबसतयोंदिनआयो।लख्योचरितजोप्रभुसबगायो ॥
चहुँकिततेकरिकैअतिनादा।दियोसमुद्रछोडिमरयादा ॥ तरलतरंगतुंगअतिघोरा । उठनलगींभूपतिचहुँओरा ॥
दोहा-बरषनलगेघोरघन, बुंदसरिसगजसुंड । लोकनकोबोरयोतुरत, वारिधिबाढिअखंड ॥४१ ॥
तबनरपतिकोअतिदुखआयो । बारबारश्रीपतिपदध्यायो ॥ तहँहरिकृपानावसोआई । निरखिमोदपायोनृपराई ॥
अन्नऔषधिहिंबीजाहिंलैकै।ऋषिमसहितहरिपदमनदैकै।चढ्योनावमहँसहितसमाजा।ज्ञानवानद्राविडकोराजा॥४२॥
तबप्रचंडमारुतचहुँओरा । बहनलग्योदैघोरझकोरा ॥ कंपनलगीतुरततबतरणी । बूडतजानिपरीदुखकरणी ॥

तबराजाकछुकियोविषादा । होतिअसतिअबहरिमरियादा ॥ तबसिगरेऋषिनृपसोंबोले । रक्षणकीउपायतहँखोले ॥
दोहा–महाराजयहिकालमें, करियेहरिकोध्यान । सोईसंकटकाटिहैं, करिहैंमोदमहान ॥ ४३ ॥
तबराजाकियकेशवध्याना । तुमहोकृपासिंधुभगवाना ॥ जगतारणदारणदुखदंदा । दीनहजारनदेहुअनंदा ॥
मैंतोतुवदासनकोदासा । मोहिंरावरीसबविधिआसा ॥ यहिविधिअस्तुतिकीन्ह्योंभारी । तबहिंमीनरूपीगिरिधारी ॥
प्रगटभयेतनपरमविशाला । मीनरूपप्रभुदीनदयाला ॥ शिरमेंस्वर्णशृंगइकतुंगा । मनहुँमेरुकोशृंगउतंगा ॥
चालिसकोशलक्षकोजाको।कनकवर्णतनपरमप्रभाको॥देहिसिंधुमहँजबहिंहिलोरा।मानहुचहहिंब्रह्मपुरघोरा ॥ ४४ ॥
दोहा–हरिकोशासनपायतहँ, प्रगट्योवासुकिनाग । एकलक्षयोजनवपुष, हरिसेवकबडभाग ॥
निरख्योभूपवासुकिहिंजबही।ऋषिनसहितमोदितभोतबही॥ ताहिरज्जुकरिसहितसमाजा।बाँधिनावकेडंडहिराजा॥
मीनशृंगमेंदियोलगाई । हरिजसआगेकह्योउपाई ॥ तबमेंनावमीनभगवाना । विहरनलागेसिंधुमहाना ॥
देखिकृष्णकोकौतुकभारी । सत्यव्रतनृपभयोसुखारी ॥ जान्योहरिमोहिंलियोबचाई । अतिकृपालकोमलयदुराई ॥
तबउरबाढ्योअमितउछाहा । अस्तुतिकरनलग्योनरनाहा ॥ ४५ ॥

राजोवाच ।

जैअनंतजयजयजगदीशा । जयपदवंदितशिववागीशा ॥
दोहा–जयकरुणाआकरनिकर, सद्गुणमंगलरूप । जयदीनोद्धारणप्रबल, जयजयमीनस्वरूप ॥

छंदगीतिका ।

अज्ञानजौनअनादितातेभयोज्ञानविनाशहै । संसारतापहितेतपितजिनजोगनरकनिवासहै ॥
तेमूढ़बिनहिंप्रयासजिनकोपावहींगुरुद्वारते । तेपरमगुरुममनाथद्रुतउद्धारकरसंसारते ॥ ४६ ॥
जेपुरुषमूरखदुःखसहिसुखहेतबहुकर्मनिकरैं । नहिंलहतसुखहूंनेककर्महिविवशअंतहिदुखभरैं ॥
तेजासुपदसेवनकरतपावतसुमतिगतिदायिनी । तेइतुमअहौममपरमगुरुश्रीवसतउरअनपायिनी ॥ ४७ ॥
जिमिअगिनिपरिरजतहुकनकमलरहितहोताविशेषहै।तिमिजासुसेवनकरतानिर्मलहोतजनअसलेखहै ॥ ४८॥
जोदेवगुरुहुस्वतंत्रचाहैदेनजनकोफलसही । सोदशसहसकोअंशजासुप्रसादकोतूलैनही ॥
जोजगतनायकध्यानलायकमोददायकदासको । सोपरमगुरुहैमोरनंदकिशोरपूजनआसको ॥ ४९ ॥
जिमिअंधअंधहिंलैचलैतिमिमूढमूढसिखावहीं । तातेजगतमहँरहतयेजनभ्रमतदुखबहुपावहीं ॥
तातेतुमहिंसरवज्ञसर्वप्रकाशगुरुमैंवरलियो ॥ ५० ॥ प्रभुरावरेकेचरणमेंसुखभरनहितमैंमनदियो ॥
अपराधअमितविसारिसकलसुधारिज्ञानवतावहू । बिनहेतुतुमजनपैकृपाकरिनिजपुरहिपहुँचावहू ॥ ५१ ॥
सबकेपरमप्रियमीतप्रभुगुरुज्ञानप्रदउरबसतहौ । मनकामनादाताविधाताजगतत्राताल्सतहौ ॥
तद्यपिनयहजनतुम्हैजान्योविषयकेबंधनबँध्यो । जगमेंवृथासोजन्मलीन्ह्योंतासुअर्थनकछुसध्यो ॥
सबदेवकेतुमदेवईशअनीशकेप्रदकामहो । सच्चिदानंदअनंतगुणश्रीकंतआनँदधामहो ॥ ५२ ॥
ऐसेतुम्हारेशरणगतहौंज्ञानपावनहेतमैं । उपदेशकरिअज्ञानमेटहुपरचोशोकनिकेतमैं ॥ ५३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–ऐसीजबअस्तुतिकरी, सत्यव्रतमतिमान । प्रलयसिंधुविचरततबै, महामीनभगवान ॥
राजहिकियोज्ञानउपदेशा । छूटिगयेउरकेअंदेशा ॥५४॥ पुनिभाष्योसोमत्स्यपुराना। कर्मज्ञानअरुभक्तिनिदाना॥
सत्यव्रतराजर्षिहिकाँहीं।कह्योगोप्यहूसकलतहाँहीं५५नावचढेऋषिसहितसमाजा।सुन्योसकलहरिभाषितराजा ५६
हयग्रीवतहँअसुरमहाना । चारिहुवेदनहरिबलवाना ॥ रह्योप्रलयसागरमहँजाई।ताकोकर्मजानियदुराई ॥
गयेनावलैजहाँसुमेरा । तहँवासुकिकोकरिबहुफेरा ॥ मेरुशृंगबाँध्योहरिनावै । जातेकहूंनहींबहिजावै ॥
दोहा–कल्पप्रलयमहँमेरुकछु, खुलोरहतहैभूप । ताकेऊपरब्रह्मपुर, सोहतसदाअनूप ॥

बाँधिनावकोमीनसुरारी । हयग्रीवपहँचलेसिधारी ॥ गहिरसहसयोजनजहँनीरा । हयग्रीवतहँरह्योप्रवीरा ॥
पहुँचेतहाँमीनभगवाना । देख्योदानवकोवलवाना ॥ महाभयावनश्यामशरीरा । हयसमआनननैनगँभीरा ॥
असुरलख्योहरिरूपअनूपा । सुवरणवरणसुतनुसुभूपा ॥ चालिसलक्षकोशविस्तारा । मानहुँग्रसनचहतसंसारा ॥
हयग्रीवनिजमनहिंविचारयो।असजलचरअबलोंननिहारयो॥याकोमारिवहुतादिनखैहौं।यहिथलतेअबअनतनजैहौं॥

दोहा-असविचारिकरलैगदा, कटिकोकसिबलवान ॥ वपुबढ़ायलीन्ह्योंअसुर, मंदरमेरुसमान ॥

इककरलैमायाकरजाला । एकहाथलैगदाकराला ॥ खुलेकेशसनमुखशठधायो । अतिकोपितआशुहिढिगआयो ॥
कनकमीनकोफँदवनहेतू । डारयोजालअसुरकुलकेतू ॥ परयोजालहरिपंखनपाहीं । लियोफँदायगुन्योमनमाहीं ॥
मीनदियोतवपंखपसारी । टूकटूककियजालहिफारी ॥ लगतमीनकोपंखहलोरा । उछल्योवारिधिजलचहुँओरा॥
भयोनीरकोशोरकठोरा । मानहुँगरजिउठेघनघोरा ॥ पुनिहरिदोऊपंखचलाई । असुरहिदियसौकोसहटाई ॥

दोहा-तबअतिकोपितह्वैअसुर, करिकैशोरकठोर ॥ धावतभोभगवानपै, लियेगदाकरघोर ॥

निकटजायकैअसुरमहीशा । मारयोगदामीनकेशीशा॥ ताकोनहिंकछुगनिहरिमीना । मुखमेंदाबिअसुरकहँलीना॥
लगतमीनकेदंतअपारा । बह्योअसुरतनरुधिरपनारा ॥ हयग्रीवछूट्योकरिजोरा । पैनहिसमरनेकुमुखमोरा ॥
हन्योगदाकछुदूरहिजाई । उछलिमीनतहँगयोवचाई ॥ उछलिअंबुउडिगयोअकासा । भीज्योविधिपुरवासिनवासा॥
उठीतरंगएकहीसंगा । भयोशोरचहुँओरअभंगा ॥ लागततहाँतरंगनजोरा । दानवहूँहठिगोतेहिठोरा ॥

दोहा-लाखनयोजनपुहुमिको, पंखउपरगोछाय ॥ जिमिलघुसरसीकेलिकरि, देतमतंगमताय ॥

ह्वैतबदानवशोकितभारी । लेहुँमीनकेपंखउखारी ॥ असविचारिधायोकरिशोरा ॥ लपटिगयोमीनहिंबरजोरा ॥
उभयपंखगहिउभयहाथसों । रेल्योकरिकैजोरमाथसों ॥ चालिसयोजनदियोहटाई । हरिकोनिजबलदियोदेखाई ॥
तवहरिनिजपंखनिफटकारयो।हयग्रीवकोदूरिपवारयो॥विकलभयोतवकछुकसुरारी।उठयोकोपकरिसुरतिसँभारी॥
मीनहिंधरनहेतुपुनिधायो।वचनचहतअसमनपछितायो ॥ आवतनिरखिअसुरबलवाना । शृंगसूधकीन्ह्योंभगवाना॥

दोहा-दानवपकरयोशृंगको, दोउकरसोंकरिजोर ॥ पैनतोरिशृंगाहिसक्यो, कीन्ह्योंजतनकरोर ॥

तवदानवदैशृंगहिछाती । चह्योपछेलनकोसबभाँती ॥ पीनमीनकोशृंगकठोरा । लागतहींदानवउरफोरा ॥
तहँबहिचलीरुधिरकीधारा । भयोलालजलसिंधुमझारा॥यहिविधिअसुरमारिझिटिकारी। ताहिदूरिकरिमीनमुरारी॥
जहाँनीरकोथंभनकरिकै । रच्यौनिवासअसुरसुखभरिकै ॥ राख्योचारिहुँवेदलुकाई । तहाँगयेप्रभुमीनसिधाई ॥
लैचारिहुँवेदनभगवाना । दियोविधातहिंकृपानिधाना ॥५७॥सोसत्यव्रतभूपविज्ञानी । हरिकीकृपापायसुखदानी ॥

दोहा-यहमन्वंतरमेंभयो, वैवस्वतमनुभूप ॥ धर्ममानयशमानअति, ज्ञानमाननयरूप ॥ ५८ ॥
सत्यव्रतहरिमीनको, सुनतजोकोउसंवाद ॥ ताकेछूटतकलुषसब, पावतअतिअहलाद ॥ ५९ ॥
जोगावतजननित्यहीं, कृष्णमीनअवतार ॥ ताकीपूरतिकामना, लहतमोक्षसुखसार ॥ ६० ॥

कवित्त-प्रलैकेसमैमेंभूभुवादिलोकलैमेंनिज नीरकेनिलैमेंसेइजातवेदकोभयो ।
मीनरूपधारिकरिरारिदैत्यकोसँहारि वेदनउधारिकैसुरारिधाताकोदयो ॥
ज्ञानऔविज्ञानकेनिदानकोसुनायनाथ सत्यव्रतभूपतिकोभक्तनिजकैलयो ।
मायागुणहीनदिव्यगुणमैंप्रवीणरघु राजदीनमाधोमीनकेरोदासह्वैगयो ॥

दोहा-संवतसैउनईसनिधि, माधववदिरविवार ॥ अठयोंअस्कंधहुलियो, आठैंकोअवतार ॥ ६१ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधि
राजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ अष्टमस्कंधे चतुर्विंशस्तरंगः ॥ २४ ॥

दोहा-महाराजरघुराजकृत, शुभअष्टमअसकंध । यहसमाप्तमुद्रितभयो, संयुतछंदप्रबंध ॥

समाप्तोऽयं अष्टमस्कंधः ८.

इति

श्रीमद्भागवत–आनन्दाम्बुनिधि

अष्टमस्कन्धः समाप्तः ८.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना–बम्बई.

नवमस्कंध
अश्विनीकुमार
सुकन्या
च्यवन
अंबरीष
सुदर्शन
कृत्या
दुर्वासा
सगरपुत्र
कपिल
सौदासरा॰
ऋषिप॰
राम
सीता
भ॰
श॰
मा
सह॰
पर॰
देवयानी
ययाति
ययातिपुत्र॰

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीमद्भागवत-आनन्दाम्बुनिधि ।

नवमस्कंधप्रारंभः ।

सोरठा-जयजयनंदकिशोर, यदुनायकदायकहरष । सिद्धिदेहुसबठोर, सुमिरतहीशरणागतन ॥
दोहा-जयवाणीजयगजवदन, जयशुकजयश्रीव्यास । जयमुकुंदहरिगुरुचरण, जयपितुज्ञानप्रकाश ॥
सुनिकच्छपवामनकथा, महाराजकुरुनाथ । मुदितफेरिशुकदेवसों, कह्योजोरियुगहाथ ॥

राजोवाच ।

प्रभुतुममन्वंतरसबगायो । मोहिंसहितविस्तारसुहायो॥अद्भुतमाधवचरितउचारचो । मेरेश्रवणसुधारसढारचो ॥१॥
अबमैंयहपूछहुँमुनिराई । दायाकरिकैदेहुसुनाई ॥ सत्यव्रतजोद्रविडअधीशा । ज्ञानमानसेवकजगदीशा ॥ २ ॥
सोयहकल्पहिमहँमनुठयऊ । वैवस्वतअसनामहिभयऊ॥ताकेसुतवरण्योमतिमाना॥नृपइक्ष्वाकुआदिबलवाना॥३॥
तिनकेवंशकहहुमुनिराई । सिगरेचरितहुदेहुसुनाई ॥ ४ ॥ भयेभूपजेहोवनवारे । वर्तमानजेजगउजियारे ॥
दोहा-जिनकीकीरतिकेकथत, बाढतपुण्यअपार । तिनकेविक्रमसुननको, हैअभिलाषहमार ॥ ५ ॥

सूत उवाच ।

यहिविधिपूछ्योकुरुपतिजबहीं॥मुनिनसभामधिश्रीशुकतबहीं॥परमधरमकेजाननवारे॥अतिप्रसन्नह्वैवचनउचारे॥६॥

श्रीशुक उवाच ।

सूर्य्यवंशसंयुतविस्तारा । कहतवर्षशतलहैंनपारा ॥ तातेमैंसंक्षेपहिगैहौं । सारवस्तुसबतुमहिंसुनैहौं ॥ ७ ॥
थावरजंगमआतमजोई । पुरुषपुरानकहावतसोई ॥ महाप्रलयकेअंतहिमाहीं । एकहिरह्योऔरकोउनाहीं ॥
जडचेतनह्वैसूक्षमरूपा । रह्योकृष्णमहँसबसुनुभूपा ॥ ८ ॥ शेषसेजसोवतभगवाना । तिनकीनाभीतेछविमाना ॥
दोहा-पुरटपद्मप्रगटतभयो, तेहितेभेकरतार ॥ ९ ॥ मनुतेतासुमरीचिभे, कश्यपतासुकुमार ॥
अदितिदक्षकन्यातिननारी । जोदेवनकीहैमहँतारी ॥ ताकेभयेसूर्यमहराजा । जासुतेजत्रिभुवनमहँभ्राजा॥ १० ॥
संज्ञाछायातियरविकेरी । जिनकीछवितिहुँलोकनिवेरी ॥ श्राद्धदेवसंज्ञासुतभयऊ । तातियश्रद्धानामहिंठयऊ ॥
श्राद्धदेवसंयोगहिपायो । श्रद्धादशपुत्रनकोजायो ॥११॥ नृगइक्ष्वाकुनभगसरजाती । दिष्टधृष्टकरुषहुअरिघाती॥
कविपृषध्रनरिष्यंतनरेशा । यदशपुत्रभयेशुभवेशा ॥१२॥ मनुकेजबहिंरहेसुतनाहीं । करवायोवशिष्ठमखकाहीं ॥
दोहा-मैत्रावरुणहिनामजेहिं, ॥ १३ ॥ तामखमेंनृपनारि ॥ होतासोंयाचीसुता, वंदिपयोव्रतधारि ॥ १४ ॥
अध्वर्यूहोतासोंभाषे । करहुयज्ञतुमसुतमनराखे ॥ १५ ॥ तबरानीअभिलाषहिजानी । होतासुताहोनमनआनी॥
वषट्कारकहिहोमहिदीन्ह्यों । विधिसंयुतमखपूरणकीन्ह्यों ॥ तातेरानीकेछविछाई । इलानामकन्यानृपजाई ॥
मनुकन्यालखिअतिदुखपाई।गुरुवशिष्ठसोंविनयसुनाई१६कर्मविपर्य्ययहकसभयऊ।कीअन्यथामंत्रह्वैगयऊ१७ ॥
तुमतोतपकरिपापनशाये । मंत्रसबैउद्धारकराये ॥ जसदेवनमहँअसातिनहीहै । तैसेतुमकोउ वंचतसहीहै ॥
दोहा-भयोआपसंकल्पको, फलविपरीतसुजान ॥ सुतकेहिततममखकियो, कन्याभईनिदान ॥ १८ ॥
मनुकेवचनसुनतदुखवारे । परप्रपितामहभूपहमारे॥कारिकैध्यानजानिसबलयऊ।श्राद्धदेवसोंअसकहिदयऊ ॥१९॥
लहिहोताकर्महिव्यभिचारा । कन्याइलालियोअवतारा ॥ पैदुहिताहिसुतमैंकरिदैहौं।अपनोतपपरभावदेखैहौं॥२०॥
असकहिमधुसूदनकोध्याई॥२१॥कन्याकोदियपुत्रबनाई॥इलाभयोसुद्युम्नकुमारा॥बाढ्योयशबलतेजअपारा ॥२२॥
सोनृपएकसमयमहराजा । लैधनुसायकसहितसमाजा ॥ कवचपहिरिचढ़िसिंधुतुरंगा । रह्योजोचंचलजीतनजंगा ॥

दोहा–मेरुनिकटउत्तरदिशा, खेलनगयोशिकार॥जहँभवानीसहितहर, नितप्रतिकरहिंविहार॥२३॥२४॥२५॥
तेहिंवनमेंजबकियोप्रवेशा । तहँनारीह्वैगयोनरेशा ॥ घोराभयोआशुतहँघोरी॥२६॥भयेसुभटभामिनिअसिछोरी ॥
निरखिपरस्परनारिस्वरूपा।भयेविषादितलज्जितभूपा॥२७॥यहचारित्रसुनिकैकुरुराई।श्रीशुकसोंअसविनयसुनाई ॥

राजोवाच ।

कैसोदेशरह्योवहभारी । गयेहोतजहँनरतेनारी ॥ अतिअचरजमोकोंयहलागा । कहौहेतुताकोबड़भागा ॥ २८ ॥
सुनतपरीक्षितबैनसुहाये । श्रीशुकदेवकहेचितचाये ॥

श्रीशुक उवाच ।

एकसमयशिवदरशनहेतू । गयेसकलमुनितेजनिकेतू ॥ २९ ॥
दोहा–करतरहेतहँसुखसहित, गौरीशंभुविहार । निरखिभवानीमुनिनको, लज्जितभईअपार ॥
त्यागिकंतकोअंकभवानी।पहिरयोवसनपरमदुखमानी३०करतकेलिशिवशिवानिहारे।मुनिहुबद्रिकाश्रमहिंसिधारे।
तहँभवानिकेप्रियहेतू । दीन्ह्योंशापकोपिवृषकेतू ॥ अबतेजोयहिदेशहिआवै । सोनरतेनारीह्वैजावै ॥ ३२ ॥
तबतेपुरुषनजायतहाँहीं । गयेअवशिनारीह्वैजाहीं ॥ सहितसमाजनारिह्वैराजा । विचरनलगेवनहिंधरिलाजा॥३३॥
विचरतवनमहँसुंदरिनारी।सखिनसहितबुधताहिनिहारी॥भयोकामवशमनअतिताको।रतिछविहारीहेरितियाको३४
दोहा–दोउशशिकोसुतनिरखि, मोहितकियोविहार । तातेभयेपुरूरवा, जिनकोसुयशअपार ॥ ३५ ॥
भोसुदुम्नयुवतीयहिभाँती।सुमिरयोगुरुहिदुखिततेहिंराती३६गुरुवसिष्ठवृत्तांतहिजानी।गयेतहाँआशुहिदुखमानी ॥
लखिसुद्युम्नदशामुनिराई।कोमलहृदयदयाअतिआई॥पुरुषसुद्युम्नबनावनकाहीं।सादरविनयकियोशिवपाहीं ॥३७॥
हरप्रसन्नह्वैमुनिसोंभाषे । अपनोसत्यवचनहूराखे ॥ ३८ ॥

शिव उवाच ।

एकमासरहिहैयहनारी । मासएकपुरुषयशधारी ॥ यहिविधिकैराज्ययहराजा । पालहिदेशनिप्रजनसमाजा॥३९॥

श्रीशुक उवाच ।

गुरुहिकृपातेअसवरपायो । भूपसुद्युम्नदेशनिजआयो ॥
दोहा–पाल्योजगतीजननयुत, सोसुद्युम्नजनेश । तद्यपिताकेप्रजनको, छूस्योनाहिंकलेश ॥ ४० ॥
उत्कलगयऔविमलये, भेताकेसुततीन । दक्षिणदिशिकेनृपतिभे, सबैधर्मलवलीन ॥ ४१ ॥
पुनिसुद्युम्नप्रयागमहँ, पुरूरवहिंबैठाइ । जानिजरठतनआपनो, कीन्ह्योंतपवनजाइ ॥ ४२ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा
जाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराज
सिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–यहिविधिगेसुद्युम्नवन, श्राद्धदेवतबभूप । यमुनातटमेंतपकियो, सुतकेहेतअनूप ॥ १ ॥
गयेवर्षशततपमनदीन्हें । फेरिपुत्रहितमनुमखकीन्हें ॥ लहेपुत्रआपनेसमाना । दशइक्ष्वाकुआदिबलवाना ॥ २ ॥
तिनकेनामप्रथममैंगाई । कुरुपतिदीन्ह्योंतुमहिंसुनाई ॥ तिनमेंजोपृषध्रबलवाना । तासोंकह्योवसिष्ठसुजाना ॥
तुमरक्षहुममगौवनकाहीं । जामेंरातिबाघनहिंखाहीं ॥ तबनृपलैकरिकरकरवाला । वीरासनबैठयोगोशाला ॥
यहिविधिगौवनरक्षणलाग्यो।दिवसशयनकरिनिशिमहँजाग्यो३एकसमयनिशिमेंघनघोरा ।बरषनलगेगरजिचहुँओरा
दोहा–अंधकारभारीभयो, कछुनहिंपरयोदेखाय । काननतेकढिकेसरी, गोशालैगोधाय ॥

देखिबाघगौवैंसबजागी । गोशालामहँभागनलागी ॥४॥ कुदिधरचोनाहरइककाहीं । गऊपुकारकियोनिशिमाँहीं ॥
सुनिपृषध्रतहँगऊपुकारा । धावतभोदुखभयोअपारा ॥५॥ रह्योतहाँअतिशयअँधियारा।तातेनृपनहिंबाघनिहारा
हन्योशोरतकितेगनृपाला । गऊशीशकटिगयोउताला ॥ ६ ॥ कढ्योकानहींकेहरिकेरो।भाजिगयोसोडरपिघनेरो ॥
परचोरुधिरमारगमहँताको७नृपजान्योमैंवधकियवाको॥भयोभोरगोवधलखिराजा।दुखितभयोगुनिकैनिजकाजा॥८॥
दोहा-गोवधनिरखिवसिष्ठहूं, कीन्ह्योंअतिसंताप । बिनजानेअपराधभो, तदपिदियोतेहिंशाप ॥
क्षत्रीअधमअहौनरराई । तातेहोहुशूद्रतुमजाई ॥ ९ ॥ गुरुकीशापलियोकरजोरी । भूपहिंभईव्यथानाहिंथोरी ॥
जितइंद्रीभूपतिव्रतकीन्ह्यों॥१०॥वासुदेवचरणनमनदीन्ह्यों॥भयोभक्तयेकोतीराजा११दियोसंगतजिजननसमाजा॥
जोकछुमिलैताहिनृपखाई१२बधिरअंधसमफिरचोसदाई॥१३॥पुनिकछुकालमाहँवनजाई।दावदहनतनदियोजराई।
तवगुरुशापछूटिगैताकी।लह्योमुक्तिजोजगअतिवाँकी१४रह्योलहुरभ्राताकविताको।राज्यकरनकोमननहिंजाको ॥
दोहा-वंधुनऔनिजराजतजि, कविकाननमेंजाय । श्रीपतिभजिवालकपनै, लह्योमुक्तिसुखछाय ॥ १५ ॥
मनुकोसुतकरूषनृपजोई । तीनिपुत्रकियउतपतिसोई । तेउत्तरकेभयेभुवाला । ब्रह्मभक्तधर्मनकेपाला ॥ १६ ॥
मनुकोपुत्रधृष्टजोरहेऊ । तासुसधार्ष्टकहावतभयऊ ॥ धृष्टवंशकेसहितसमाजा । विप्रभयेतहँकेसबराजा ॥
अरुनृगकेसुतमतिप्रवीना । भूतज्योतिजिनकेअवहीना॥भूतज्योतिकेसुतवसुप्यारे॥१७॥ वसुकेभयेप्रतीकउदारे॥
सुतप्रतीककेओघमानभो । ओघमानकेओघमानभो ॥ ओघवतीकन्यापुनिजाई । संगसुदर्शनभईसगाई॥१८॥
दोहा-नरिष्यंतकेहोतभे, चित्रसेनमतिमान ॥ चित्रसेनकेऋक्षभे, तिनकेभेमीढ्वान ॥
मीढवानकेकूर्चकुमारा । इंद्रसेनताकोबलवारा ॥ १९ ॥ ताकेवीतिहोत्रसुतभयऊ । ताकेसत्यश्रवासुखछयऊ ॥
ताकेउरूश्रवामतिधीरा । ताकेदेवदत्तबलवीरा ॥ २० ॥ ताकेअग्निलियोअवतारा । अग्निवेश्ययहनामउचारा ॥
जातूकर्णऔरकानीना । येऊउनकेनामप्रवीना ॥ २१ ॥ तातेभयोब्रह्मकुलभारी । अग्निवेश्ययहगोत्रउचारी ॥
नरिष्यंतकोवंशहिगाई । दिष्टवंशअबदेहुँसुनाई ॥ २२ ॥ भयोदिष्टकेसुतनाभागा । वैश्यकर्ममहँअतिअनुरागा ॥
दोहा-पुत्रभलंदनतासुभो, वत्सप्रीतिसुततासु ॥ २३ ॥ वत्सप्रीतिकेप्रांशुभो, ताकेप्रमितिप्रकासु ॥
भयोप्रमितिभूपतिकोपुत्रा।जाकोजगमेंनामखनित्रा॥सुतखनित्रकोचाक्षुषभयऊ।तासुतनामविविंशतिकहेऊ॥२४॥
रंभविविंशतिकोसुतप्यारो । खनिनेत्रहुताकोयशवारो॥तासुतभयोकरंधमराजा॥२५॥तासुअवीक्षितपुत्रविराजा ॥
मरुतनामभोतेहिसुतकाहीं । भयोचक्रवर्तीजगमाहीं ॥ अंगिरसुतसंवर्तमुनीशा । करवायोतेहियज्ञमहीशा ॥२६॥
पुरटपात्रसबरचिमखमाहीं । यज्ञअंतदियविप्रनकाहीं ॥ गयेनजोविप्रनकेठोये । परेरहेकोउतिनहिंनजोये ॥
दोहा-तिनहिंनलैहयमखकियो, आपपितामहभूप ॥ यदुपतिताहिवतायदिय, सोमखभयोअनूप ॥ २७ ॥
इंद्रसोमलहिभयोसुखारी । भेधनाढ्यजेरहेभिखारी ॥ पवनभयोजहँपरुसनवारो । विश्वेदेवासभासुधारो ॥ २८ ॥
मरुतसमानयज्ञजगमाहीं । कोउनकियोकरिहैअबनाहीं ॥ तिनकोसुतभोदमरणधीरा । तासुराज्यवर्धनसुतवीरा ॥
ताकेसुधृतिपुत्रनरतासू ॥ २९ ॥ तासुतकेवलजगयशजासू ॥ ताकेवंधुमानमतिमाना । ताकेवेगवानबलवाना ॥
वेगवानकेबंधुकुमारा । ताकेसुततृणविंदुउदारा ॥ ३० ॥ सुंदरतृणविंदुहिवरिलीनी । अलंबुषाअपसरानवीनी ॥
दोहा-नृपतृणविंदुसँयोगते, अलंबुषावरनारि ॥ सुताइडविडाप्रगटकिय, अतिसुंदरिसुकुमारि ॥ ३१ ॥
निरखिइडविडासुंदरिनारी । मोहिगयेविश्रवानिहारी ॥ तासँगकियोप्रसंगवनेरा । तातेप्रगटचोपुत्रकुबेरा ॥
पायपरमविद्यापितुपाहीं । धनदभयोदिगपालसदाहीं ॥३२॥ तिनतृणविंदुपुत्रभेतीना।जगजाहिरसबगुणनप्रवीना॥
प्रथमविशालभयेमतिसेतू।शून्यबंधुअरुधूम्रहुकेतू॥नृपविशालरचिपुरीविशाला।वंशचलायोसुयशविशाला ॥३३॥
हेमचंद्रताकेसुतजायो । धूम्रअक्षतेहिंपुत्रकहायो ॥ धूम्रअक्षसंयमसुतपायो । तिनकोसुतसहदेवसुहायो ॥
दोहा-सुतकृशासुसहदेवको, ॥३४॥ सोमदत्तसुततासु ॥ वाजिमेधकरितोषिहरि, लह्योविष्णुपुरवासु ॥३५॥
सोमदत्तकेसुमतिभे, जनमेजयसुततासु ॥ येविशालकेवंशके, भूपतिनीतिनिवासु ॥

तिनमेंसुमतिभक्तभगवाना। होतभयोजगविदितमहाना॥हनिसुबाहुमारीचहुकाहीं। करिरक्षणकौशिकमखमाहीं॥
श्रीरघुनंदनलषणसमेतू। विश्वामित्रसंगमतिसेतू ॥ सुमतिहिपावनकरनकृपाला। गमनकियेप्रभुपुरीविशाला ॥
सुनतभूपआगेचलिलीन्ह्यों। रामहिंमुनियुतपूजनकीन्ह्यों॥ मुनियुतलषणसहितरघुराई। अपनेऐनहिंगयेलेवाई॥
धनअरुधामसहितपरिवारै। सौंपिदियोअवधेशकुमारै ॥ रघुवरचरणभक्तिनृपपाई। सुखितगयोसाकेतसिधाई॥

दोहा–ऐसोसुमतिनरेशको, पावनचरितअनूप॥ नेशुकरामचरित्रयुत, तुमहिंसुनायोभूप ॥ ३६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–मनुकेशतसरजातिनृप, वेदप्रवीणसुधर्म॥ जोअंगिरमखकोकह्यो, दुसरेदिनकोकर्म ॥ १ ॥

नामसुकन्याकन्याताकी। त्रिभुवनमेंजोपरमप्रभाकी ॥ सोकन्यालैनृपसरजाती। गवनकियोकाननअरिघाती॥
गयेच्यवनमुनिआश्रममाहीं।कछुककालनृपबसेतहाँहीं।२॥नृपदुहितालैसखिनसमाजा।विपिनिविहारकरतभयराजा
करतरहेतपच्यवनतहाँहीं। लागिगयोविमोटतनमाहीं॥ जींगनसरिसनैनद्युतिदेखी।नृपकन्याअचरजउरलेखी॥३॥
लैकरकंटककयचपलाई। छेद्योयुगजोतिनबरिआई॥ तातेकढीरुधिरकीधारा। बालसुभावनकियोविचारा ॥ ४॥

दोहा–तबनृपदलमलमूत्रको, होतभयोअवरोध॥ लखिभूपतिविसमितभयो, पायोनहिंकछुशोध॥

निजसुभटनसोंपूछनलागे। कौनकर्मकरितुमदुखपागे॥५॥ किधौंकियोमुनिकोअपराधा। तातेहोतिभईयहबाधा॥
सुभटौमोहिंपरतअसजानी।कोउदूख्योआश्रमअज्ञानी॥६॥तबकन्याडेरायकहिदीन्ह्यों।पिताकर्ममैंअसकछुकीन्ह्यों।
गईकरनमैंविपिनविहारा।यकविमोटयुतज्योतिनिहारा॥कंटकलैतेहिंवेधनकीन्ह्यों।कछुविचारिमनमेंनहिंलीन्ह्यों॥७॥
सुनिकन्याकेवचननरेशा। अतिडेरायकीन्ह्योंअंदेशा॥ जानिच्यवनमुनिकोअपराधा। वामीनिकटजायअवराधा॥

दोहा–मेरीसुताअयानते, कियोआपअपराध॥ करियेकृपाकृपालअब, मिटहिसैनकोबाध॥ ८॥

तबनृपसोंपूछ्योमुनिराई। कितेवर्षकीसुतासुहाई ॥ हैविवाहिताकिधौंकुमारी। देहुबतायहमहिंधनुधारी ॥
ऐसेसुनिमुनिवचनभुवाला।मुनिअभिलाषजानितेहिकाला॥ दियोविवाहिसुतामुनिकाहीं।तबअनंदभोनृपदलमाहीं॥
च्यवनहिंकरिप्रसन्ननरनाहा।आयेनिजपुरसहितउछाहा ॥९॥ कन्याअतिकोपीपतिपाई।कियप्रसन्नकारिकैसेवकाई॥
जैसीहोइच्यवनअभिलाषै। तैसैकर्मकरैरुचिराषै॥ १० ॥ यहिविधिबीतिगयेकछुवारा। आयेतबअश्विनीकुमारा॥

दोहा–तिनकोकरिपूजनच्यवन, कियोविनैकरजोरि दीजैवरअसहोइद्रुत, युवाअवस्थामोरि॥

जामेंमुदितहोइलखिबाला।ऐसोदीजैरूपरसाला॥ ११ ॥ तोमैंकरिकैयज्ञसुजाना। दैहौंतुम्हैंसोमकोपाना॥
सोमपानअबलौंतुमकाहीं। करिकैयज्ञदेतकोउनाहीं॥१२॥ कह्योवचनतबवेदअधीशा। ऐसेहोइहैतुमहिमुनीशा॥
मज्जहुसिद्धिसरोवरमाहीं।अबविलंबकीजैकछुनाहीं॥१३॥सुनिमुनिकहहमबृद्धमहाना।केहिविधिजायकरैंअस्नाना॥
तबतिनकहँअश्विनीकुमारा।आशुउठायतडागसिधारा॥सरवरहिलिच्यवनहिंनहवाये।मुनिवपुअपनेसरिसबनाये १४

दोहा–सरतेनिकरेपुरुषत्रय, पहिरेवसनअनूप। कमलमालकुंडललसत, तियमनहरणस्वरूप॥ १५॥

निरखिपुरुषत्रयभानुसमाना। सुंदरिकोभ्रमभयोमहाना॥ इनमेंकौनअहैपतिमेरो। हेअश्विनीकुमारनिबेरो॥१६॥
तबअश्विनीकुमारसुखपाई।तियपतितियकोदियोबताई॥पुनिह्वैविदाच्यवनसोंदेवा।गयेधामकोउलख्योनभेवा १७॥
तहँमखकरनहेतशर्याती। च्यवनाश्रमहिगयेतेहिराती॥ युवापुरुषलखिसुतासमीपै।महाकोपभोतहाँमहीपै ॥ १८॥
पितुपदकन्यावंदनकीन्ह्यों। नृपउदासआशिषनहिंदीन्ह्यों॥१९॥दुहितासोंबोलेनृपज्ञानी।अरेपापिनिसुताअयानी॥

दोहा-सुरपूजितमुनिवृद्धपति, तिनकोतजियहिठाम ॥ जारपुरुपसोंप्रीतिकिय, कहाकियोयहकाम ॥
यहधौंकौनदेशतेआयो । करिअधर्मतेंनेहलगायो ॥२०॥ तेरीमतिकिमिभइविपरीती ।त्यागिदईममकुलकीरीती॥
कुलकलंकतेंकियोकुमारी।करिकैजारपुरुपसोंयारी॥लाजतज्योनहिंलियोविचारी।दोउकुलदियोनरकमहँडारी२१॥
सुनिकोपितपितुवचनकुमारी।बोलिमंदविहँसीसुकुमारी॥अहैंआपकेयेइजमाई । पिताकरहुनहिंभ्रमदुखछाई ॥२२॥
पुनिजनकहिवृत्तांतसुनायो।जेहिविधिच्यवनयुवावपुपायो।सुनतवचनभयशीतलछाती।कन्यहिमिलेमुदितसरजाती
दोहा-तहाँच्यवनमुनिभूपको, करवायोवरयाग ॥ दियअश्विनीकुमारको, सोमपानकोभाग ॥
सोमलह्योअश्विनीकुमारा।वासवलखिकरिकोपअपारा।नृपहिहननकहँकुलिशउठायो।देखिच्यवनमुनिअतिदुखपायो
तपबलसोंहुंकारहिछाँड्यो।वज्रसांहतवासवभुजआड्यो २५ तबसोंजगअश्विनीकुमारा।लह्योसोमपावनआंधेकारा॥
तिनकोप्रथमवैद्यगुनिदेवा । भागनदेतरहेनरदेवा ॥ २६ ॥ नृपसरजातिपुत्रत्रयजाये । तेऐसेजगनामकहाये ॥
एकउत्तानबर्हिमतिमाना । दूजोभोआनर्त्तसुजाना ॥ तीजोभूरिषेणअतिदाता । एतीनहुँभेजगविख्याता ॥
दोहा-रैवतसुतआनर्तको, भयोवीरकुरुराय ॥ देशअनर्तहिसिंधुमधि, दियद्वारिकाबसाय ॥ २७ ॥
तामेंबसिशत्रुनकहँघाल्यो । आनर्त्तदिदेशसबपाल्यो ॥२८॥ रैवतकेशतभयेकुमारा । तिनमेंज्येष्ठककुद्मिउदारा॥
अरुताकेयकभईकुमारी । नामरेवतीरतिछविहारी ॥ ताकोव्याहकरनकेहेतू । पूछनगयेविरंचिनिकेतू ॥
ब्रह्मसभामहँअतिसुखछावत । गणगंधर्वरहेबहुगावत ॥ पूँछनकोऔसरनहिंपायो । राजहुगानसुननमनलायो ॥
गयोमुहूरतभरिजबबीती।गानसमाप्तभयोयुतप्रीती२९॥३० तबभूपतिलहिआनँदधामा।सादरविधिकहँकियोप्रणामा
दोहा-हेविरंचिकरिकैकृपा, मोकोंदेहुबताय ॥ कौनेवरकोरेवती, देहुँधरणिमहँजाय ॥
सुनिविधिविहँसिकह्योमृदुबानी।अबलोंकसनकह्योविज्ञानी ३१ देनकह्योजिनभूपकुमारन।तेमहिमेंमरिगयेहजारन ॥
तिनकेनातिपनातिहुँनाहीं । नामहुनहिंसुनियतश्रुतिमाहीं ॥३२॥ गयोबीतिइकइतैमुहूरत।सत्ताइसचौकड़ीगईउत॥
तातेभूपभूमिमहँजाई ॥ ३३ ॥ देहुव्याहिकन्याबलराई ॥ हरनहेतभूभारमहाना । भूमहँप्रगटभयेभगवाना ॥ ३४ ॥
जाकीकीरतिकीर्त्तनकीन्हें।होतिपुण्यजानहिंबहुदीन्हें।ऐसोविधिशासनलहिराजा।आयोनिजपुरव्याहनकाजा॥३५॥
दोहा-तहँयक्षनकेत्रासते, रह्योनकोउमहिपाल ॥ बहुतकालमेंकृष्णप्रभु, विरच्योनगरविशाल ॥
तहँबलिरामहिंरेवती, रैवतदियोविवाहि ॥ बदरीवनकोतपकरन, गयेभूपचितचाहि ॥
सोरठा-रामरेवतीव्याह, रुक्मिनिपरिणयग्रंथमें ॥ वरण्योसहितउछाह, विस्तरतेइकसर्गभरि ॥ ३६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-नभगपुत्रनाभागभो, ब्रह्मचर्य्यलवलीन ॥ काव्यशास्त्रमेंअतिनिरत, पढ़नहेतुमनदीन ॥
गुरुगृहजायशास्त्रपढ़िलीन्ह्यों । बहुतकालतहँवासहुकीन्ह्यों ॥ जबवेपढ़नगयेगुरुपाहीं । तबतिनकेभ्राताग्रहमाँहीं ॥
पितहिंदूरिकरिधनअरुराजू । बाँटिलियोसबअपनेकाजू॥जबनाभागलौटिगृहआये।पढिकैसकलशास्त्रमनभाये ॥१॥
लख्योभागबाँटेसबभाई । नाभागहुपूछेहुतबजाई ॥ भ्रातदेहुअबभागहमारो । हमरहुहैयामेंअधिकारो ॥
तबसबभ्राताबचनउचारे । अहैपिताप्रभुभागतुम्हारे ॥ गयेभूलिहमबाँटतमाहीं । तातेलेहुजायपितुकाहीं ॥
दोहा-जनकपासनाभागतब, जायकह्योवृत्तांत ॥ देतभागभ्रातानहीं, कहैलेहुपितुदांत ॥
नभगकह्योतबसुतनाभागा । करिहौकाहहमहिंलैभागा ॥ छलकीन्हेंहुतुमसोंसबभाई । पैहमदेहिंउपायबताई ॥२॥
अंगिरविप्रकरहिंजहँयागा । जाहुतहाँआशुहिनाभागा ॥ यागकर्मछठयेंदिनकेरो ॥ तिनहिंनआवतपुत्रघनेरो ॥ ३॥

तिनहिंवेगितुमदेहुबताई। तबद्विजपैहैंमोदमहाई॥ यज्ञअंतजबस्वर्गहिजैहैं। ह्वैप्रसन्नतुमकोधनदैहैं॥ ४॥
तबनाभागयज्ञमहँजाई। दीन्ह्योंविप्रनमंत्रबताई॥ तबद्विजकृपाभूपपरकैकै। स्वर्गगवनकीन्ह्योंधनदैकै॥ ५॥
दोहा—यज्ञकियेतेधनबँच्यो, चह्योलेनसोभूप। तबउत्तरदिशितेपुरुष, आयोश्यामस्वरूप॥
बोल्योयहसबअहैहमारो। यज्ञशेषधननाहितुम्हारो॥६॥ तबनाभागकहीयहबाता।हमहिंदियोयहधनद्विजख्याता॥
श्यामपुरुषपुनिकह्योतहाँहीं।पूँछिलेहुअपनेपितुपाहीं॥ तबनाभागजनकपहँजाई। दियोसकलवृत्तांतसुनाई॥ ७॥
तबपितुकह्योसुनहिसुतमेरो। यज्ञशेषधनशंकरकेरो॥ दक्षयज्ञमहँमुनिनबताये। हठिशंकरतातेतहँआये॥
शिवहैश्यामस्वरूपहिधारी।तिनहिंदेहुधनतहाँसिधारी८तबनभागशिवनिकटसिधारा।करिप्रणामअसवचनउचारा॥
दोहा—हमसोंअसभाष्योपिता, वहधनतुमनहिंलेहु। यज्ञशेषधनशंभुको, तातेतिनकोदेहु॥
तुमहोमहादेवभगवाना। करहुअनुग्रहनाथमहाना॥ यज्ञशेषधनसबतुमलेहू। मोकोंकृष्णभक्तिअबदेहू॥ ९॥
तबप्रसन्नह्वैशिवअसभाष्यो।पितापुत्रतुमदोउसतिराष्यो॥ तातेतुमहिंदेहुँमैंज्ञाना॥१०॥ लेहुयज्ञकोधनहुमहाना॥
असकहिशिवभेअंतरधाना। सोनाभागलियोधननाना॥११॥
होयमंत्रकोजाननवारो। ज्ञानमानजगमहँयशवारो॥ १२॥ अबसुनियेंकुरुपतिचितलाई।अंबरीषकीकथासोहाई॥
दोहा—भयोपुत्रनाभागको, अंबरीषहरिदास। दुरवासाकाशापजेहिं, आयसकीनहिंपास॥
यद्यपिअतिअमोघद्विजशापा।तदपिनकीननृपहिसंतापा॥सुनतपरीक्षितअचरजमानी।शुकसोंविनयकियोमृदुबानी॥

राजोवाच।

अंबरीपकीकथासुननकी। हैअभिलाषनाथमोमनकी॥ जेहिद्विजशापहुपरमप्रचंडा।दैनसकीभूपहिंकछुदंडा॥१४॥
सुनिकुरुपतिकेवचनसोहाये। मुनिपतिकहनलगेचितचाये॥

श्रीशुक उवाच।

अंबरीपभूपतिबड़भागी। होतभयोहरिपदअनुरागी॥ कियशासनमहिसातोंद्वीपा। लह्योअतुलऐश्वर्यमहीपा॥
जोलहिविभौपुरुषजगमाहीं। करतअनेक कर्मसदाहीं॥ १५॥
दोहा—अतिदुर्लभसोलहिविभौ, अंबरी महराज। स्वप्नसरिसमानतभये, सकलसमाजसराज॥ १६॥
श्रीहरिमेंहरिभक्तनमाहीं। कियोप्रेमतजिकपटसदाहीं॥ महामोहमायासंसारा। ताकोमनमेंतुच्छविचारा॥ १७॥
कृष्णकंजपदमनहिंलगायो। हरिगुणगावतकालबितायो॥ हरिमंदिरहाथनसोंधोये। हरिव्रतकरतकबहुँनहिंसोये॥
कथाश्रवणमहँश्रवणलगाये॥१८॥ कृष्णदरशमहँद्दगसुखपाये॥ देखतद्दगनदासयदुराई। मिलतरहेदूरिहिंतेधाइ॥
हरिपदकमलतुलसिकहँराजा।कियोघ्राणनितसहितसमाजा॥भोजनकरहिंकृष्णपरसादा।तीरथगमनकियोनिजपादा
दोहा—कृष्णचरणवंदनकरन, सदानवायोशीश। हरिप्रसादसबजानिकै, भोग्योभोगमहीश॥
संतवेपहूमहँपरतीती। करिकैकरतरहेअतिप्रीती॥२०॥ यहिविधिअंबरीषमहराजा।हरिमहँसबसमर्पिनिजकाजा॥
करिभगवानहिंमहँबहुभावा। भूपतिमहामोदनितपावा॥ शासनलैहरिदासनकेरो।हुकुमदशौंआशनमहँफेरो॥२१॥
निरजलदेशसरस्वतितीरा। जायतहाँभूपतिमतिधीरा॥ सांगदक्षिणासहिततहाँहीं। लैवसिष्ठमुनिआदिककाहीं॥
कीन्ह्योंअश्वमेधबहुराजा। होनप्रसन्नहेतुयदुराजा॥२२॥ देखिपरेजेहियज्ञप्रसंगा। ऋत्विजसुरसमानसुरसंगा॥
दोहा—देवहुऔऋत्विजलसे,अनमिषतहँमतिसेतु। उनकेस्वाभाविकरहे, इनकेदरशनहेतु॥ २३॥
अंबरीपकेपरिकरजेते। गावतसुनतकृष्णयशतेते॥ वोऊस्वर्गचाहनहिंलावैं। अंबरीषकीकहाचलावैं॥ २४॥
देखहिंजेनिजउरहिंमुकुंदै। रहैंसदातेमगनअनंदै॥ सिद्धहुजिनसिद्धिनहठिलेहीं। तेऊतिन्हैंमोदनहिंदेहीं॥ २५॥
ऐसोभक्तराजहिमहिपाला।अंबरीषभोसुयशविशाला॥ करिकैभगवतधर्मअनूपा। कृष्णहिकेयप्रसन्नसुनुभूपा॥
क्रमसोंत्यागिदियोसबसंगा। निरतनिरंतरकृष्णप्रसंगा॥ २६॥ रथतुरंगमातंगनमाहीं। भूषणरतनआयुधनपाहीं॥
दोहा—राजकोशगृहबंधुतिय, भुवनशरीरहुकाहिं। जान्योंसबहरिकेअहै, अपनोंहैकछुनाहिं॥ २७॥

ऐसीभक्तिनिरखिभूपतिकी । बाढीदयाआशुयदुपतिकी ॥ अंबरीषकोगुनिअतिप्यारो । चक्रसुदर्शनकियरखवारो॥
जोकोउअंबरीषअरिह्वैवै । ताकोआशुसुदर्शनखवै ॥ २८ ॥ तैसेअंबरीषकीरानी । जाकीमतिहिरिपदरतिसानी ॥
संवतसरलौंनारिसमेतू । करहिंएकादशिव्रतहरिहेतू ॥ २९ ॥ वर्षउपरउद्यापनकरिकै । करहिंफेरिव्रतसंवतभरिकै॥
एकसमयतहँकार्तिकमासै।करित्रिरात्रव्रतसहितहुलासै॥मथुरामधियमुनामहँन्हाई।कृष्णचरणपूजनचितलाई॥३०॥

दोहा—करिसुमहाअभिषेकविधि, वटहजारभरिनीर । हरिकोनहवायोनृपति, कालिंदीकेतीर ॥

दिव्यनवीनवसनपहिरायो । चंदनसुभवनमालचढायो ॥ महामोलआभरणरतनके । पहिरायोजेधरेजतनके ॥
धूपदीपपुनिप्रभुहिंदेखायो । अर्घ्यपाद्यआचमनकरायो ॥ सुधासमानसकलपकवानै । प्रेमसहितअरप्योभगवानै ॥
दैताम्बूलनिराजनकरिकै । कियप्रदक्षिणाअतिमुदभरिकै॥ कीन्ह्योंधरणीदंडप्रणामा।अंबरीषभोपूरणकामा॥३१॥
निरलोभिनविप्रनबडभागन।निःकिंचनशांतनहरिदासन।विधियुतपूजनकियोमहीपा।चरणामृतलीन्ह्योंकुलदीपा३२

दोहा—कनकशृंगखुररजतरवि, वरपटपीठिवोढाय । पैवारीवछुरनसहित, सुंदरगऊमँगाय ॥ ३३ ॥

द्विजसाधुननाभागकिशोरा।दियोगऊतहँसाठिकरोरा॥वहुप्रकारव्यंजनबनवायो।प्रथमद्विजनभोजनकरवायो॥३४॥
पुनिदैतिन्हैंदक्षिणाराजा । लैशासननिजभोजनकाजा॥पारणकरनचह्योमहिपाला।दुरवासाआयेतेहिंकाला ॥३५॥
चलिआगेमुनिकोनृपलीन्ह्यों।करिप्रणामवरआसनदीन्ह्यों॥ कियोअतिथिपूजनदुर्वासै । पुनिपदवंदनकरिसहुलासै॥
कियोविनयमुनिसोंकरजोरी।अबभैवडीभागप्रभुमोरी॥मोरअन्नभोजनप्रभुकरहू।शिष्यनसहितमोदउरभरहू ॥३६॥

दोहा—नृपहिंसराहिमुनीशहू, मैंसंध्यामध्यान ॥ करिऐहौंआशुहिनृपति, कालिंदीअस्नान ॥

असकहियमुनहिंगयेमुनीशा३७इतविचारकियमनहिंमहीशा॥रहीदंडभरिद्वादशिवाकी।ताहीमेंपारणविधियाकी ॥
द्विजहिंनेउतिपारणकरिलीन्हें । होइहिपापकरमयहकीन्हें ॥ जुनद्वादशिपारणकरिलैहें । तौव्रतकोफलनेकुनपैहें ॥
परयोधर्मसंकटहमकाहीं । तातेपूँछहिंविप्रनपाहीं ॥ असविचारिकैद्विजनबुलाई । कह्योधर्मसंकटनृपराई ॥ ३९ ॥
सबैविप्रतहँकह्योविचारी । लेहुभूपऐसोनिरधारी ॥ अहैअभोजनभोजनसोऊ । जलकोपानकहतश्रुतिदोऊ ॥

दोहा—दुरवासहिंआवतनृपति, लागीकछुकविलंब ॥ रहीनतौलौंद्वादशी, करियअंबुअवलंब ॥

यहिविधिरहिहैधर्मआपको । ह्वैहैनहिंफलपापतापको ॥४०॥ अंबरीषतबपरमसुजाना । कीन्ह्योगंगाजलकोपाना॥
परिखेदुरवासाआगमनू । रहेकृष्णध्यावतदुखदमनू ॥४१॥ दुरवासायमुनामहँन्हाई । संध्याकरिद्विजयुतहरिध्याई॥
आयेभोजनहितदुरवासा।नृपप्रणामकियसहितहुलासा॥अंबरीषकहँकृतजलपाना।दुरवासाजान्योनिजज्ञाना ॥४२॥
उठीकोपकीहियेतरंगा । काँपनलागेमुनिकेअंगा ॥ भृकुटिवंकआननभोलाला । मानहुँप्रलयकरततेहिंकाला ॥

दोहा—अंबरीषठाढेरहे, करजोरेतहँभूप ॥ बोल्योवचनकठोरमुनि, भूखोरुद्रस्वरूप ॥ ४३ ॥

देख्योयहपापीमहिपाला । श्रीमदयाकोबढ्योविशाला॥ अहैअभक्तभक्तनिजमानै। सदाअधर्मकर्मअतिठानै॥४४॥
मोहिंभोजनकरवावनकहिकै।भोजनकियोआपसुखचहिकै॥ताकोफलमैंदेहुँदेखाई।मोहिंखायेबिनलियोजोखाई ४५॥
असकहिअपनीजटाउखारी।कोपभारनहिंसक्योसम्हारी॥तातेकृत्याकढीकराला।मानहुँकालानलकीज्वाला॥४६॥
लैविशालकरमेंकरवाला । तीनतालउन्नतदगलाला ॥ श्यामरूपरोमासवठाढे । विनावसनरसनारदकाढे ॥

दोहा—धरणिकँपावतिचरणसों, करिकैशोरकठोर ॥ ग्रसनहेतुधावतभई, अंबरीषकीओर ॥

कृत्याआवतलखितेहिंकाला । एकहुपदनहिंहट्योनृपाला ॥४७॥ अंबरीषकेरक्षणहेतू । चक्रसुदर्शनतेजनिकेतू ॥
जोमुकुंदप्रथमैकरिराख्यो।अतिकरालकृत्यैलखिभाख्यो॥धायोकोटिसूर्यपरकासा।कृत्यैजारचौविनहिंप्रयासा ४८॥
पुनिदुरवासहिलावनधायो।मनहुँदवानलआहिपरआयो॥अपनोबललखिविफलमुनीशा।जियलैभाग्योसुनहुमहीशा॥
पीछेचक्रसुदर्शनधायो । दुरवासौअतिद्रुतहिपरायो ॥ घुस्योमेरुकंदरमहँजाई । तहौंसुदर्शनपरयोदेखाई ॥ ५० ॥

दोहा—दुरवासाभाग्योनिकरि, चल्योअकाशअकाश ॥ धायोचक्रसुदर्शनहु, प्रगटतपरमप्रकाश ॥

पूरबतेदक्षिणदिशिआयो । दक्षिणतेपश्चिमकहँधायो ॥ पुनिगमन्योदिशिउत्तरओरा । पीछेचक्रसुदर्शनघोरा ॥

पुनिधरणीधसिगयोपताला । तहँपहुँच्योहरिचक्रकराला॥घुस्योसिंधुमहँतबदुरवासा । तहौंलग्योपुनिचक्रप्रकासा॥
चुरनलग्योसागरकोनीरा । तहँतेपुनिभाग्योअतिभीरा ॥ घुस्योस्वर्गकेलोकनमाहीं । गयोसुदरशनचक्रतहाँहीं ॥
जरनलगेसबलोकनपाला । सहेनचक्रहितेजकराला ॥ दुरवासहितबआशुनिकारा । दीन्हेंनिजनिजद्वारकेवारा॥

दोहा–जहँजँहँदुरवासागये, मानिचक्रकीत्रास ॥ तहँतहँपीछेलखतभे, ताकोदुसहप्रकास ॥ ५१ ॥

जबकहुँनहिंबाँचेदुरवासा।गमनकियोतबब्रह्मनिवासा॥त्राहित्राहिबोलतविधिपाहीं।गिरच्योदीनह्वैचरणनमाहीं ॥५२॥
दुरवासाहिलखिकैकरतारा । टरहुटरहुयहवचनउचारा ॥ युगलपरार्धबीतिजबजाहीं । तबहरिप्रलैचहैमनमाहीं ॥
उनकेभ्रकुटिविलासहितेरे । नाशहोहिंममलोकघनेरे ॥५३॥ हमअरुशिवअरुदक्षप्रजेशा । अरुसुरेशभूतेशहुशेशा॥
जिनकेशासनकोधरिशीशा । लोकनरक्षणकरहिंमुनीशा ॥ परमप्रभावप्रगटहैजाके । रोकिसकैकिमिचक्रहिताके॥

दोहा–तातेमेरेधामते, जइयेअनतपराय ॥ नहिंतोमोहिंममधामको, देहैचक्रजराय ॥ ५४ ॥

श्रीशुक उवाच।

असमुनिकैमुनिविधिकीबानी । चक्रसुदर्शनकीभयमानी॥ दुरवासागमन्योकैलासा । गिरच्योजायशंकरकेपासा ॥
कह्योमोहिंरक्षहुत्रिपुरारी।जारनचाहतचक्रमुरारी॥५५॥लखिदुरवासहिंतहाँमहेशा । अतिविस्मितह्वैदियोनिदेशा॥

शंकर उवाच।

भागहुभागहुद्रुतदुरवासा । यहाँतुम्हारिमिटीनहिंत्रासा॥सबविधितेनिहचैअसमोही।राखिकोसकहिभागवतद्रोही ॥
जिनहरितेहमअरुविधिकेते।उपजहिंनशहिंभ्रमहिंबहुतेते५६हमअरुनारदसनत्कुमारा।अरुब्रह्मामुनिकपिलउदारा॥
देवलआसुरिधर्म–॥५७॥–मरीची । अरुसिद्धेश्वरब्रह्मनगीची ॥

दोहा–जाकीमायामेपरे, लहैंनमायाअंत ॥५८॥ कैसेतिनकेचक्रको, रोकिसकैंमतिमंत ॥

पैहमदेहिंउपायबताई । जातेसकलव्यथामिटिजाई ॥ जाहुशरणहरिकेदुखधारे । वेशरणागतपालनवारे ॥ ५९ ॥
तबनिराशह्वैमुनिदुरवासा । गमनकियोश्रीनाथनिवासा॥जहँविकुंठमहँरमासमेतू । बैठरहैंप्रभुकृपानिकेतू ॥६०॥
जरतचक्रकेतेजहिभारी । त्राहित्राहितहँगिरच्योपुकारी ॥ काँपतछूटजटामुखसूखो ।भगतभगतथकिगोअतिभूँखो॥
पकरच्योहरिकोचरणकरनसों । बोलिनआवतवचनडरनसों॥पुनिधरिधीरजकछुदुरवासा।विनयकियोहेरमानिवासा॥

दोहा–हेअनंतअच्युतहरी, हेप्रभुकृपाअगाध । शरणागतरक्षणकरहु, मैंकीन्ह्योंअपराध ॥ ६१ ॥

नहिंजान्योरावरोप्रभाऊ । रह्योमोरअतिकोपसुभाऊ ॥ तातेअंबरीषतुवदासा । देनचह्योमैंशठतेहिंत्रासा ॥
सोअपराधमिटहिमजैसे । मोपरकरहुअनुग्रहतैसे ॥ अबहियदयानलागतितोहीं । चक्रसुदर्शनलावतमोहीं ॥
नरकहुपरेलेततुवनामा । पावतपुरुषअवशितुवधामा ॥ मैंतोगह्योचरणतुवआई । काहेअबनहिंलेहुबचाई ॥ ६२ ॥
आरतवचनसुनतयदुराई । बोलेमुनिसोंहरिमुसक्याई ॥

श्रीभगवानुवाच।

हमतोभक्तनकेआधीना । यामेंहोतनममकछुकीना ॥

दोहा–मोरभक्तमेरोहियो, हरिलीन्ह्योंमुनिराय । तातेतिनअपराधमें, कछूनमोरबसाय ॥

हमभक्तनकेप्राणपियारे । अतिप्रियभक्तहुअहैंहमारे ॥६३॥ भक्तनबिनहमचहैंनप्राना॥लक्ष्मिहुँकोनहिंचहैंनिदाना॥
हमैंअहैंसरबसुमुनिजिनके।सहिअपराधसकैंकिमितिनके६४जेममहिततजिसुतगृहनारी।लियेताकिइकशरणहमारी॥
उभयलोककीआशात्यागी । मेरेचरणभयेअनुरागी ॥ तिनकोहमकैसेतजिदेहीं । वेतोहमरेपरमसनेहीं ॥ ६५ ॥
सोपदबाँधिप्रेमकीडोरी । अपनेवशकीन्हेंबरजोरी ॥ जैसेपतिव्रतावरनारी । निजपतिवशकरिहोहिपियारी ॥ ६६॥

दोहा–मेरीसेवाछोडिकै, मोरभक्तमतिभौन । मुक्तिहिकोचाहैनहीं,औरविभवतहँकौन ॥ ६७ ॥

मैंसंतनहियबसौंसदाहीं । संतबसैंमेरेहियमाहीं ॥ मोहिंछोडितेऔरनमानैं । तिन्हेंछाँडिहमऔरनजानै ॥ ६८ ॥
पैहमदेहिंउपायबताई । जातेजहाँत्रासमिटिजाई ॥ ६९ ॥ चहैजोकरनसाधुअपराधा ॥ उलटिहोतिताहीकीबाधा ॥

यद्यपितपविद्याव्रतभारी। अहैंविप्रकोअतिहितकारी॥तद्यपिजैकोपीद्विजहोवै ॥ तिनकोतेहिमंगलहठिखोवै ॥७०॥
तातेअंबरीषकेपासा । गमनकरहुआशुहिदुरवासा ॥ क्षमाकरावहुनिजअपराधा । तवहीविप्रमिटिहितुवबाधा ॥
दोहा—विप्रनबँचिहौकैसहू, कीन्हेंआनउपाय । चक्रसुदर्शनमोरयह, देहैतोहिंजराय ॥ ७१ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेश विश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे चतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—यहिविधिदुरवासालह्यो, शासनरमानिवास । चक्रतेजतापितचल्यो, अंबरीषकेपास ॥
श्वासलेतमुनिबारहिंबारा । खुलेजटानहिंदेहसंभारा ॥ मुरिमुरितकतचक्रकीशोरा । चल्योसुदर्शनआवतघोरा ॥
शिथिलभयोअतिसकतनभागी।चलनस्वेदधारातनलागी॥गिरतपरतउठिभ्रमतमुनीशा॥मानोनिर्विषभयोफणीशा॥
अंबरीषकोलखिमुनिराई । दूरहितेअतिआतुरधाई ॥ गिरचोनिकटमहँभूपतिकेरे । विसुधिनृपतिकीओरनहेरे ॥
चरणगहनकोकरनपसारी । दुरवासाअसगिराउचारी ॥ अंबरीपअबमोहिंबचावो । दीनहिंदेखिदयाउरलावो ॥
दोहा—चक्रतेजतेजरतहौं, ठौरनऔरदेखाय । विधिहरिहररक्ष्योनहीं, दीन्ह्योंतोहितकाय ॥ १ ॥
देखिदशादुरवासाकेरी । नृपकेदायाभईघनेरी ॥ पकरिहाथलीन्ह्योमुनिकेरो । कह्योनगहहुचरणप्रभुमेरो ॥
मैंतोअहौंरावरोदासा। कहाकरहुयहऋषिदुरवासा ॥ चक्रसुदर्शनतहाँभयावन । दुरवासहिचाह्योहठिलावन ॥
अंबरीषतबदोउकरजोरी । चक्रहिअस्तुतिकियोनिहोरी ॥ २ ॥

अंबरीष उवाच ।

तुहींअग्निसूरजभगवाना । तुहींचंद्रमानषतप्रधाना॥तुहींधरणिजलपवनअकाशा॥करहुत्रिलोकतुम्हहिंपरकासा॥३॥
तुम्हैंप्रणामकरौंबहुबारा । केशवप्रियहजारहैंआरा ॥
दोहा—ब्रह्मशिरादिकअस्त्रसब, नाशहुदासनकाज । विप्रहिंदेहुबचायअब, राखहुमेरीलाज ॥ ४ ॥
छंद—जययज्ञभोगीयज्ञरूपीसत्यअमृतहुधर्मजे । जयलोकपालकृपालअंतरयामिउदभटकर्मजे ॥ ५ ॥
जयपरमसुंदरधर्मकेमरयाददुष्टविदारजे । जयकृष्णशक्तिप्रकाशशुद्धअपारवेगउदारजै ॥ ६ ॥
तुवधर्ममेंपरकाशकरतविनाशतमअज्ञानको । तुवतेजलहिअतितेजबाढतभानुऔरकृशानुको ॥
चेतनअचेतनमेंजगततुम्हरेप्रकाशप्रकाशहै । अनयासलहतहुलासतिहरोदासकरितवआशहै ॥ ७ ॥
हरिहाथतेछूटतअखंडितमंडलैकरचंडसो । बरिबंडअसुरनझुंडकीजतखंडखंडाहिडंडसो ॥ ८ ॥
तुहिंजगतरक्षणशत्रुभक्षणहेतहरिकरधरहीं । रक्षहुकृपाकरिकैमुनीशहिंबारबारपुकारहीं ॥
दोहा—करहुक्षमातुमसर्वदा, भक्तनकोअपराध ॥ कुलकलंकममभेटिये, मेटिविप्रकीबाध ॥ ९ ॥
यज्ञदानआदिकधरम, जोमैंकीन्ह्योंकोय ॥ तौदुरवासाविप्रयह, बिनातापअबहोय ॥ १० ॥
विप्रभक्तकुलमोरयदि, यदिप्रसन्नहरिसोय ॥ तौदुरवासाविप्रयह, बिनातापअबहोय ॥ ११ ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिचक्रसुदर्शनकेरी । राजाअस्तुतिकरीघनेरी॥तबहिंसुदर्शनपरमप्रकासा॥दियोबचायमुनिहिंदुरवासा॥१२॥
दुरवासालहितबअहलादा । राजहिदीन्ह्योंआशिरवादा॥ अंबरीषकहँलग्योसराहन । यहिसमानकोउजगनरनाहन॥
पुनिपुनिअंबरीषमुखदेखी । वचनकह्योअतिआनँदलेखी ॥ १३ ॥

दुर्वासा उवाच।

महिमाहरिदासनकीभारी।लियोआजुमैंअवशिनिहारी॥यद्यपिमैंअपराधहुकीन्ह्यों।तदपिबचायभूपतुमलीन्ह्यों॥१४॥
कठिनकहासज्जनकोहोतो। समरथसबत्यागनमेंसोतो॥

दोहा–जेसज्जननिजप्रेमबल, हरिहिंवश्यकरिलेयँ॥ तेमुक्तिहुकोलेतनहिं, यद्यपिहारिहठिदेयँ॥ १५॥

जाकोनामपरतजनकाना। छूटिजातकलिकलुषमहाना॥तेहिमाधवकेदासनकाहीं।दुर्लभकहाअहैजगमाहीं॥१६॥
गन्योनमोरभूपअपराधा।मोहिंरक्ष्योकरिकृपाअगाधा॥१७॥मुनिमुनिवाणीसहितसमाजा।मोदितअंबरीषमहराजा॥
दुरवासाकेपदशिरनायो। बहुप्रकारभोजनकरवायो॥१८॥करिभोजनसंतोषहिलहेऊ।अतिप्रसन्ननृपसोंमुनिकहेऊ॥
भोजनकरहुतुमहुँअवराजा॥१९॥ मोरसुधारिदियोसबकाजा॥अंबरीषतुवदरशनपाई। मैंपावनह्वैगयोबनाई॥२०॥

दोहा–महाराजयहआपको, जाहिरसुयशमहान॥ स्वर्गहुमेंसुरसुंदरी, करिहैंनितप्रतिगान॥ २१॥

श्रीशुक उवाच।

असकहिराजासोंदुरवासा। ब्रह्मलोकगोउड़तअकासा॥२२॥ चक्रत्रासभागतदुरवासे। गयोवर्षइकबिनाहुलासे॥
तबलोंभूपरह्योतहँठाढ़ो। सलिलपानकरिकैव्रतगाढ़ो॥२३॥जबदुरवासागमनहिंकीन्ह्यों।तबराजाभोजनमनदीन्ह्यों॥
अतिपवित्रद्विजकृतपकवाना। द्विजभोजनकोशेषप्रमाना॥अंबरीषसोभोजनकीन्यों।निजपरिवारसहितसुखभीन्यों॥
द्विजदुखमोचनअरुनिजधीरा। जान्योंसबैकृपायदुवीरा॥ ऐसेअंबरीषमहराजा। भयेश्रेष्ठहरिदाससमाजा॥ २४॥

दोहा–करिकैभक्तिअनेकविधि, कृष्णचरणचितदीन॥ विभौभोगविधिलोकलौं, नरकसरिसगुनिलीन॥ २५॥
पुनिनिजसुतकोराजदै, अंबरीषवनजाय। तनतजिवैकुंठैगयो, हरिपदचित्तलगाय॥ २६॥
अंबरीषकीयहकथा, जोगावतचितलाय॥ होतभक्तभगवानको, अवशिकृष्णपुरजाय॥ २७॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे पंचमस्तरंगः॥ ५॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–अंबरीषमहराजके, भेशततीनिअनूप॥ केतुमानअरुशंभुद्वै, तिनतेज्येष्ठविरूप॥

सुतविरूपपृषदश्वनरेशा। भयोरथीतरतासुसुवेशा॥ १॥ रह्योनपुत्ररथीतरकेरे। तहँअंगिरातेअसटेरे॥
मोतियमेंसुतप्रगटकरीजै। याकोकछुनदोषाचितदीजै॥ तबअंगिराअमितसुखपाये। नृपतियमहँसुतबहुउपजाये॥
ब्रह्मतेजयुतभयेकुमारा॥२॥ जिनहिंअंगिरानामउचारा॥ क्षेत्ररथीतरकोतहँरहेऊ। तातेगोत्ररथीतरकहेऊ॥ ३॥
मनुछींकतइक्ष्वाकुनरेशा। प्रगटभयेजनुद्वितियदिनेशा॥ श्रद्धातेइक्ष्वाकुजोगायो। सोसमुदायहिअर्थजनायो॥

दोहा–शतकुमारइक्ष्वाकुके, तिनमेंतीनिप्रधान॥ इकविकुक्षिनिमिदूसरो, दंडकतृतियसुजान॥ ४॥

आर्य्यावर्त्तहिसहितसमाजा। भेपचीसपूरबकेराजा॥ अरुपश्चिमकेभूपपचीसा। मध्यदेशकेतीनिअधीशा॥
तेइसबदक्षिणकेनरनाहा। चौविसभेनृपउत्तरमाहा॥५॥ एकसमयइक्ष्वाकुनरेशा। सुतविकुक्षिकहँदियोनिदेशा॥
हयअष्टकाश्राद्धगृहमाहीं। लावोद्रुतशुचिआमिषकाहीं॥६॥तबविकुक्षिवेगिहिवनजाई।मारचोमृगनशशनसमुदाई॥
लगीभूँखलीन्ह्योंशशखाई। पितुकोशासनदियोभुलाई॥ ७॥ औरसबैपितुपहँलैआये। तबइक्ष्वाकुवसिष्ठबुलाये॥

दोहा–कह्योयाहिशुचिकीजिये, होयश्राद्धकेयोग॥ तबवसिष्ठसबजानिजिय, ऐसोदियोनियोग॥

यहआमिषजूठोहैराजा। हैनहिंयोगश्राद्धकेकाजा॥ तुवसुतलियोशशाइकखाई। औरमृगनतुमकोदियल्याई॥८॥
यहसुनिकैइक्ष्वाकुउदारा। करिविकुक्षिपहँकोपअपारा॥गुनिअपराधतासुअतिभारी।दियोराज्यतेतुरतनिकारी॥९॥

योगीभेइक्ष्वाकुअभंगा । गुरुवसिष्टसोंकरिसतसंगा॥कछुककालमहँत्यागिशरीरा।गयेकृष्णपुरकोमतिधीरा ॥१०॥
मुनिपितुमरणविकुक्षिकुमारा।आयोकोशलनगरउदारा॥राजासनलहिमहिचहुँओरा।शासनकियइक्ष्वाकुकिशोरा ॥
दोहा-बहुमखकरिहरितुष्टकिय, राखिधर्ममरयाद ॥ शशखायोतातेपरचो, ताकोनामशशाद ॥ ११ ॥
ताकेप्रबलपुत्रएकजायो । कर्मप्रभावनामत्रयपायो ॥ प्रथमककुत्स्थपुरंजयदूजो । इंद्रवाहभोनामसुतीजो ॥ १२॥
जबदेवासुररणभोघोरा । चल्योनतबदेवनकोजोरा ॥ हारिमानिसबसुरदुखपाये । सिगरेअवधनगरमहँआये ॥
विनयकियोककुत्स्थढिगजाई । करियेभूपहमारिसहाई ॥१३॥ तबभूपतिअसवचनउचारे।नहिंवाहनरणयोगहमारे॥
जोवासववाहनममहोवैं । तौहमचलिअसुरनदलखोवैं ॥ सुनिवासवअसगयोलजाई । तबमुकुंदअसिगिरासुनाई ॥
दोहा-नृपकेवाहनहोहुतुम, लाजछोंड़िसुरराज ॥ अनुचितकरमहुँकोकरब, उचितआपनेकाज ॥
तबवासवभोवृषभअनूपा ॥१४॥ ताकेचढ्योककुदपरभूपा॥तातेनामककुत्स्थकहायो॥असुरनजीतनकोमनलायो ॥
कवचपहिरिसायकधनुधारी१५तापैकृपाकियोगिरिधारी॥नृपककुत्स्थलैसुरनसमाजा॥चल्योअसुरजीतनकेकाजा॥
दैत्यनपुरपश्चिमदिशिमाहीं॥घेरिलियोताकोचहुँधाहीं ॥१६॥ निरखिदैत्यनिकसेवरजोरा । भयोसुरासुरसंगरघोरा॥
वृषभइंद्रमहँचढ़चोभुवाला।तज्योविशिखधाराविकराला १७ उठीशरनतेपावकज्वाला।जरनलगेतहँअसुरकराला ॥
दोहा-तबदानवसिगरेसमिटि, धायेनृपकीओर । शरनमारिजर्जरकियो, नृपककुत्स्थवरजोर ॥
लागतभूपतिबाणप्रचंडा । खंडखंडभेरुंडहुमुंडा ॥ नृपककुत्स्थनिजबलप्रगटायो । मारिअसुरयमलोकपठायो ॥
जेदानवबाँचेतेहिकाला।तजिआयुधभजिगयेपताला१८यहिविधिजीतिदानवनराजा।शोभितभोअतिसुरनसमाजा ॥
दानवपुरकोसबधनलीन्ह्यों । वासवकाहँबकसिनृपदीन्ह्यों ॥ तातेपायपुरंजयनामा । नृपककुत्स्थआयोनिजधामा ॥
वासववाहनभोनृपकेरो । इंद्रवाहतेहिंनामनिवेरो ॥ १९ ॥ पुत्रपुरंजयभयोअनेना । ताकोसुतप्रभुभोबहुसेना ॥
दोहा-विश्वरंध्रितेहिसुतभयो, विश्वरंध्रिसुतचंद । चंद्रसुवनयुवनाश्वभो, दाताद्विजनअनंद ॥ २० ॥
फेरिभयोयुवनाश्वकुमारा । नामजासुशावस्तिउचारा ॥ जोशावस्तीपुरीबसायो । ताकोसुतबृहदश्वकहायो ॥
तासुतकुवलआश्वजगभयऊ।सोनितरामनाममुखलयऊ ॥ जबबृहदश्वलगेवनजाना । तबउतंकमुनिकियेपयाना ॥
कियोविनयबृहदश्वहिपाहीं । हमहिंरक्षिजैयेवनमाहीं ॥ धुंधुनामदानवइकघोरा । नाशिदियोसबआश्रममोरा ॥
वर्षरोजमहँछोडतश्वासा । रजउड़ायनाशतपरकाशा ॥ जंबुद्वीपहिकोशहजारा । ह्वैजातोअतिशयअंधियारा ॥
दोहा-ताकोमारिनरेशतुम, पुनितपहितवनजाहु । राजनकोयहधर्महै, दूरिकरनद्विजराहु ॥
तबबृहदश्वकह्योमुनिपाहीं । हमअबअसुरमारिहैंनाहीं ॥ मोसुतकुवलयाश्वबलवारा । ताकेसुतइकईसहजारा ॥
सोलैपुत्रनतहाँसिधारी । अवशिधुंधुदानवकोमारी ॥ असकहिदैनिजसुतहिंनिदेशा॥वनहिंगयेबृहदश्वनरेशा ॥२१॥
कुवलयाश्वकहसुतनसमेतू । लैगवनेमुनिनिजहिंनिकेतू ॥धुंधुकरततपजहँबलवाना॥ कुवलयाश्वतहँकियोपयाना ॥
देख्योजवनहिंदानवकाहीं । धरणिखनावनलगेतहाँहीं ॥ कोसएकजबमहिषनिडारचो॥तबहिंधुंधुदानवहिंनिवारचो॥
दोहा-महाभयंकरपीततन, रह्योलगायेध्यान । कुवलयाश्वताकेहन्यो, उरमेंशूलमहान ॥
तबखोल्योदानवदृगकाहीं । देख्योबड़ीसैनचहुँधाहीं ॥ तबकोपितह्वैपावकज्वाला । मुखतेछोड्योअसुरकराला ॥
नृपकेसुतइकईसहजारा । तिनकोअसुरक्षणहिमेंजारा ॥ तीनिपुत्रबाँचेनृपकेरे । सैनहुराहिनगईनृपनेरे ॥ २२॥२३॥
इकदृढाश्वकपिलाश्वदूसरो। अनुभारतभद्राश्वतीसरो।।येत्रयसुतनसहितमहिपाला।काटितेकाढिकठिनकरवाला ॥
धायधुंधुदानवकहँमारा । उभयखंडआशुहिकरिडारा ॥ तबउतंकमुनिलहिसुखधामा । धुंधुमारदियभूपहिनामा ॥
दोहा-यहिविधिदानवमारिकै, अवधपुरीमहँआय । देदृढाश्वकोराजनृप, तपकीन्ह्योंवनजाय ॥
पुनिदृढाश्वकोभयोकुमारा । जासुनामहर्यश्वउदारा ॥ ताकोतनयनिकुंभप्रवीरा ॥२४॥ ताकेवर्हणाश्वरणधीरा ॥
ताकेभयेकृशाश्वकुमारा । तासुसेनजितभूपउदारा ॥ सेनजीतकोपुत्रमहाना । भोयुवनाश्वभूपबलवाना ॥
ताकेतनयभयेजबनाहीं । सौरानीलैगोवनमाहीं ॥ २५॥ देखिदुखीयौवनाश्वभुवाला॥तापरमुनिकरिकृपाकृपाला॥

पुत्रइष्टतेहिंयज्ञकराये॥२६॥अभिमंत्रितजलघटहिभराये॥रानिनपीवनहेतविशाला। सोवतधरचोजायमखशाला॥
दोहा–एकसमयतहँरातिके, राजहिंलगीपियास। सोवतविप्रनजानिकै, गयोकलशकेपास॥
कियोपुत्रदायकजलपाना। भयेभूपकेगर्भमहाना॥२७॥ जबजागेमुनिसबैप्रभाता।लख्योकलशबिनजलतपत्राता॥
पूछेहुकौनकर्मयहकीन्ह्यों२८तबनृपकेअनुचरकहिदीन्ह्यों॥महाराजहिकीन्ह्योंजलपाना।डरसोंहमनहिंकियोबखाना॥
तबसिगरेमुनिवचनउचारा। लिखोभाग्यकोटरतनटारा॥ परमेश्वरकहदियोप्रणामा।देहुसुधारिनाथयहकामा॥२९॥
पुनिजबबीतिगयेदशमासा। सबैसुयोगकियेपरकासा॥तबनृपदक्षिणकुक्षहिफारी।कढिआयोसोसुतयशकारी॥३०॥
दोहा–तबमुनिकियोविचारसब, बिनमाताकोलेखि। दूधपियेगोकोनको, रोवतबालकदेखि॥
तबप्रसन्नह्वैवासवआयो। सबैमुनिनकोवचनसुनायो॥ मैंयाकोपयपानकरैहौं। रक्षणकैबालकहिबढ़ैहौं॥
पुनिबालकमुखअंगुलिडारी।रोवहुमतिअसिगिराउचारी॥ वासवतर्जनिअंगुलिपाई। सुधापानकरिगयोअघाई॥
यातेनामपरयोमांधाता। भयोभूपजगमेंविख्याता॥३१॥युवनाश्वहुनहिंमरयोभुवाला।लियबचायमुनिदेवकृपाला॥
तपकरिरतहँयुवनाश्वनरेशा। बस्योजायवैकुंठप्रदेशा॥३२॥ भयोचक्रवर्तीमांधाता। जाकोयशनहिजगतसमाता॥
दोहा–एकसमयकुरुनाथसों, मांधातानरनाह। चढ़िविमानगमनतभयो, सुरपुरसहितउछाह॥
करिकैवासवकोदरबारा। पायतहाँअतिशयसतकारा॥चढ़िविमानमहँपुनिमांधाता।अवधपुरीकहँचल्योविख्याता॥
सुमनमालअंगनिअँगरागा। पहिरेदिव्यवसनबड़भागा॥ सुरसुंदरीकरहिंकलगाना। फैल्योमणिप्रकाशतहँनाना॥
यहिविधिभूपमेरुनियराना। तहँरावणहूँकियोपयाना॥ चंदलोककेजीतनकाहीं। जातरह्योदशशीशतहाँहीं॥
लखिविमानमांधाताकेरो। रावणविस्मयकियोघनेरो॥ खड़ोभयोकोपहिउरछाये। तहाँआशुपरवतमुनिआये॥
दोहा–तबदशशिरमुनिसोंकह्यो, काकोअहैविमान॥ आवतमेरेसनमुखे, करतप्रकाशमहान॥
तबरावणसोंकह्योमुनीशा। यहहैअवधकेरअवनीशा॥ याकोनामअहैमांधाता। त्रिभुवनविजयीवीरविख्याता॥
तबरावणपूछयोमुनिपाहीं। मोसोंयालरिहैकीनाहीं॥ मुनितबकह्योसुनौभुजबीशा। यहतौमहाबलीअवनीशा॥
यातोऐसोयुद्धकरैगो। जामेंतुमकोजानिपरैगो॥ तबकोपितदशशिरबलवाना। खड़ोभयोमगरोकिमहाना॥
जबभूपतिविमानढिगआयो। तबमांधातैवचनसुनायो॥ करिरणमोसोंतबतुमजाहू। अबतोकठिनवचवनरनाहू॥
दोहा–वचनसुनतदशशीशके, कह्योभूपबलधाम॥ जोजीवनचाहैनहीं, तौतैंकरुसंग्राम॥
सुनिदशकंधरवचनउचारा। नहिंजानौबलभूपहमारा॥ वरुणकुबेरइंद्रयमराजै। मैंकीन्ह्योंरणइन्हैंपराजै॥
तैंमानुपलघुकेतिकबाता। नारिनमेंमदमत्तदेखाता॥ असकहिदीन्ह्योंसचिवनशासन। मांधाताभूपतिकोनाशन॥
शुकसारनप्रहस्तरणधीरा। औरमहोदरयुद्धगँभीरा॥ विरूपाक्षअरुबलीअकंपन। सबैयुद्धमहँनेकनकंपन॥
लैप्रभुशासनयेषटवीरा। मारयोमांधातहिबहुतीरा॥ पुनिनृपपैछोड़ीशरधारा। मनहुँधराधरजलधरधारा॥
दोहा–दीपकगयेछपायसब, सुरतियलगीपराय॥ धरयोधरापतिधनुषकर, कियोयुद्धमनलाय॥
छंदवामन–भूपतितजीसरधार। मूँद्योसचिवइकवार॥ नृपबाणलगतकठोर। गिरिगेसचिवतेहिठोर॥
पुनिउठयोवीरप्रहस्त। गहिकैशरासनहस्त॥ द्वैसहसबाणचलाय। अवधेशकोलियछाय॥
पुनिकैभुशुंडीभल्ल। अरुभिंडिपालतवल्ल॥ यकवारतजिनृपराय। दियराक्षसानिजराय॥
रावणसचिवतहँसोय। भागेसमरतजिरोय॥ दशवदनसमरअकेल। रहिगयोवीरनवेल॥
मुद्गरलियोनरराय। बहुबारताहिभँमाय॥ दशशीशकोरणहाँकि। मुद्गरहन्योतेहिताकि॥
सोलग्योराक्षसशीस। मुरछितगिरयोभुजबीस॥ नृपबढ्योमुदजयपेखि। ज्योंसिंधुशशिकहँदेखि॥
तहँभयोहाहाकार। निशिचरसबैइकबार॥ रावणहिलीन्ह्योंघेरि। नृपओरसकेनहेरि॥
द्वैदंडमहँलंकेश। ह्वैसावधानसुवेश॥ लैबाणपरमकराल। मारयोनृपतिकेभाल॥
मुरछितभयोनरनाह। नहिंसुधिरहीतनमाँह॥ तबसचिवआयेधाय। गुनिमरोसोनरराय॥

कियसिंहनादगंभीर । सुनिउठ्योनृपरणधीर ॥ करिकोपभूपअपार । पुनितज्योबाणनधार ॥
दशशिरहिलीन्ह्योंछाय । निजचापशोरसुनाय ॥ दशवदनहूगहिचाप । शरमारिकियसंताप ॥
तहँभोसमरअतिघोर । शरचलेदोउओर ॥ उतदशवदनवरजोर । इतबलीभूपकिशोर ॥
दोउअहैंसमरणधीर । दोउधरेकरधनुतीर ॥ नृपहनैरावणकाहिं । रावणहनैनृपपाहिं ॥
दोउकियेक्रोधमहान । दोउतजतशरसहसान ॥ दोउलेतदोहुँनछाय । दोउकढ़तबलदरशाय ॥
दोहुँनलगेतनघाव । दोहुँबढ्योयुद्धउछाव ॥ तनबहतिशोणितधार । मनुगेरुधारपहार ॥
दशशीशअसगुनिलीन । मांधातसमरप्रवीन ॥ तबलेतभोरुद्रास्त्र । मंत्रितकियोविधिशास्त्र ॥
रिपुताकिसोतजिदीन । गुनिमृतकभूपतिलीन ॥ सोचल्योअस्त्रकराल । छावतदिगंतनज्वाल ॥
नृपअग्निअस्त्रचलाय । दियरौद्रअस्त्रजराय ॥ गंधर्वअस्त्रसुवेश । पुनितज्योरणलंकेश ॥
तातेकढ़ेवेताल । धायेसोओरभुवाल । तबवरुणअस्त्रनरेश । दियछोंड़िकोपितवेश ॥
प्रगटीतहाँजलधार । बहिगयेभूतअपार ॥ रावणहुँबूडनलाग । पैवीरनेकनभाग ॥
तबकोपिकैवरिबंड । ब्रह्मास्त्रपरमप्रचंड ॥ लेतोभयोदशशीश । यहजानिकैअवनीश ॥
लैप्रबलपाशुपतास्त्र । पढिमंत्रशरविधिशास्त्र ॥ दोउअस्त्रदोऊवीर । छोंडनचहेरणधीर ॥

दोहा–तबसागरवेलातजी, होनलगीदिग्दाह ॥ सुरनरमुनिजानेसबै, प्रलयहोतजगमाह ॥

तहँगालवपुलस्त्यमुनिआये । दोउवीरनअसवचनसुनाये ॥ अहौवरोवरदोउरणधीरा । नहिंहारिहौदोऊवरवीरा ॥
पाशुपतास्त्रब्रह्मास्त्रचलाई । काहेदेहुजगतकहँलाई ॥ बंदकरहुअबयुद्धभयावन । गमनहुँअपनेअपनेधामन ॥
तबकहमांधातामहराजा । हमकिमिछोड़हियहरणकाजा ॥ जोरावणसोंहमभजिजैहैं । तौग्रहमहँमुखकौनदेखैहैं ॥
क्षत्रीधर्मरीतिचलिआई । भजहिंनरणमहँवरुमरिजाई ॥ जाहुजाहुमुनिनिजनिजआश्रम । करियतुकाहेवचनपरिश्रम ॥

दोहा–अवइक्ष्वाकहुवंशकी, लगीसकलमरयाद ॥ रावणसोंरणछोडिकै, किमिसहिहैंअपवाद ॥

रावणअहैसुरनकेधोखे । लह्योनकोउक्षत्रीसोचोखे ॥ कीमरिजैहैमुनियहिठामा । कैजीतिहैंआजुसंग्रामा ॥
सुनिमांधातावचनमुनीशा । गयेजहाँठाढेदशशीशा ॥ रावणकोतहँअससमुझाये । तुमतोत्रिभुवनमहँजैपाये ॥
तुम्हैंतजौयहरणबलवारो । वहक्षत्रीतौटरतनटारो ॥ तुम्हरीयामेंहैनपराजै । तुमतोजीत्यौसुरनसमाजै ॥
सुनिमुनिवचनवीरलंकेशा । कीन्ह्योंकछुनहिंमनअंदेशा ॥ गमनकियोमुनिकोशिरनाई । सचिवसहितअतिशयहर्षाई ॥

दोहा–तबअतिशयलहिमोदउर, मांधातामहराज ॥ अवधपुरीकोगमनकिय, चढ़िविमानसुखसाज ॥

ऐसोमांधातामहिपाला । भयोचोरदुष्टनकोकाला ॥ ३३ ॥ शासनकीन्ह्योंसातहुद्वीपा । भयोचक्रवर्तीकुलदीपा ॥
भगवतभक्तभयोअतिभारी । बढ्योतेजकियकृपामुरारी ३४ सबअंतरयामीभगवाने । कियप्रसन्नकरियज्ञमहाने ३५ । ३६
जहँलौंउदितअस्तदिनराजू । तहँलौंमांधाताकीराजू ॥ ३७ ॥ नृपशशबिंदुसुताछबिधामा । बिंदुमतीजाकोहैनामा ॥
ताकोमांधातानृपराई । युवाउमिरितेहिसंगनिवाही ॥ भयेभूपकेतीनिकुमारा । महाबलीजगपरमउदारा ॥

दोहा–इकपुरुकुत्सहिदूसरो, अंबरीषमतिमान । तीजोमुचुकुंदाहिभयो, भगवतभक्तप्रधान ॥ ३८ ॥

अरुमांधाताकेछबिवारी । होतीभईपचासकुमारी ॥ तहँयकसौभरिमुनितपधीरा । करतरहेतपयमुनानीरा ॥ ३९ ॥
मीनहिंमैथुनकरतनिहारी । कामबाणलाग्योमनहारी ॥ तबतोअवधनगरमुनिआई । मांधातासोंगिरासुनाई ॥
सुताएकहमकोनृपदीजै । हमरोपूरमनोरथकीजै ॥ ४० ॥ मुनिसोंबोलेतबाहिमहीशा । अंतःपुरमहँजाहुमुनीशा ॥
जोकन्यातुमकोवरिलेवै । सोईतुम्हैंसवदासेवै ॥ सुनिनृपवचनमुनीशविचारयो । मांधातामोहिंवृद्धनिहारयो ॥ ४१ ॥

दोहा–ताहीतेंहाँसीकियो, कह्योजनानेजान । तातेमैंकरिलेहुँगो, सुंदररूपमहान ॥

असविचारिकहँपुनिनृपपाहीं । अंतःपुरपठवहुमुहिकाहीं ॥ ४२ ॥ तबद्वारपसोंकहनरनाहू । अंतःपुरहिमुनिहिलैजाहू ॥
आज्ञासुनिद्वारपद्रुमहीशै । अंतःपुरलैगयोमुनीशै ॥ तहँकीन्ह्योंमुनिरूपअनूपा । जेहिलखिमोहहिसुरतियभूपा ॥

तबकन्यनढिगगयेसिधारी। तहँलखिमुनिकहँनृपतिकुमारी॥मोहिगईसबएकहिवारा। रह्योनतनकोतनकसम्हारा॥
मुनिकोसबैसुतावरिलीन्ही४३आपुसमाहँकलहअतिकीन्ही॥यहसुंदरवरहमरेलायक।तुम्हरेयोगनहैयहनायक४४॥
दोहा–ऐसोमांधातासुन्यो, दुहितनकेरविवाद। दियोपचासोंकन्यका, मुनिकहँयुतअहलाद॥
लैदुहितनआश्रमहिसिधारे। तपबलरचेअनूपअगारे॥ रचीविपुलवाटिकासुहाई। जहाँवहतमारुतसुखदाई॥
सहितसरोजसरोवरसोहैं। मंजुमरालमुनिनमनमोहैं॥काननकलितकुंजचहुँओरा।मत्तमिलिंदकरहिंकलशोरा॥४५॥
ठौरठौरवरसेजबिछाई। भूषणवसननकीसमुदाई॥ मज्जनहेतसुगंधितनीरा। अंगरागसुममालसुवीरा॥
नानाविधिव्यंजनपकवाना। धूमधूमचहुँओरमहाना॥ करनहेततहँमुनिसेवकाई। सजेदासदासीसमुदाई॥
दोहा–ऐसोथलरचिमुनितहाँ, कीन्ह्योविविधविहार। जहँबंदीगणहोतभे, भृंगविहंगअपार॥ ४६॥
सौभरिकोलखिविभौमहाना।तज्योचक्रवर्तीअभिमाना४७यहिविधिकरतविषयसुखभोगू।सौभरिकोभूल्योसबयोगू॥
भयेतोषनहिंकरतविहारा।तोषतिनहिंशिखिजिमिघृतधारा॥एकसमयमुनिकियोविचारा।मैंअनर्थयहकियोविहारा॥
लखतमीनमैथुनजलमाहीं।मनसिजबाणहन्योमोहिकाहीं ४९ देखहुतोयहमोरविनाशा।भोसबतपखंडितअनयासा॥
मैंशठमीनमैथुनैजोई। ब्रह्मज्ञानदीन्ह्योंसबखोई॥५०॥ जोकोउमुक्तिलहनमनलावै। तौकामिनसँगजियनलगावै॥
दोहा–जोगृहस्थकोसँगकरै, तौहरिभक्तनकेर। भजनकरैभगवानको, बैठिसाधुकेनेर॥ ५१॥
मैंतौप्रथमहिरह्योअकेलो।कियोकबहुँनहिंएकहुचेलो॥ निरखिमीनमैथुनदुखकारी। नृपसोंलह्योपचासकुमारी॥
तबममभयेपचासस्वरूपा। कीन्ह्योंइहाँविहारअनूपा॥ तियप्रतिशतशतजनमिकुमारा।बहुरिभयेहमपाँचहजारा॥
विषयतोषतद्यपिभोनाहीं।हमसोंकुमतीकोजगमाहीं५२यहिविधिसौभरिमनहिंविचारी।वनकोनिकरिगयेतजिनारी॥
तहँकरितपयोगानलमाहीं। दियजरायअपनेतनकाहीं॥श्रीभगवानचरणचितलाई। भयेमुक्तसौभरिमुनिराई॥५४॥
दोहा–तिनकीनारीछोडिगृह, जायकंतकेसंग। पावकमेंतनजारिकै, लीन्हींमुक्तिअभंग॥ ५५॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचन्द्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे षष्ठस्तरंगः॥ ६॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–मांधाताकोप्रवरसुत, अंबरीषभोजोइ। ताकोनृपयुवनाश्वकिय, अपनोसुतमुदभोइ॥
अंबरीषकोसुतबलधामा। यौवनाश्वभोताकोनामा॥ यौवनाश्वसुतभयोहरीता। मांधाताकेगोत्रपुनीता॥ १॥
मांधताकोसुतबलवाना॥ जोपुरुकुत्सभयोमतिमाना॥ तिनकोअवधनगरअहिआई। दियोनर्मदाभगिनिसुहाई॥
तासुकुमारीकेसबभ्राता। कह्योनर्मदासोंअसिबाता॥ लैआवैभूपतिहिउताले। इतैबसावहुविरचिसुआलै॥
तबभूपतिहिनर्मदारानी। लैगमनीपतालसुखदानी॥ तहाँजायभूपतिबलवाना। लहिकैकृपाकृष्णभगवाना॥ २॥
दोहा–गंधर्वनमारयोतहाँ, करिकैजंगमहान॥ सर्पनकोतहँमुदितकरि, पायोअसवरदान॥
जोनृपयहतुम्हारजसगावै। तौसर्पनतेंनहिंभयपावै॥ ३॥ त्रसतदस्युपुरुकुत्सकुमारा। होतभयोजगमाहिंउदारा॥
ताकेभोअनरण्यकुमारा। दीन्ह्योंदानअनेकप्रकारा। जबराजासनमहँमहराजा। बैठिवलीअनरण्यविराजा॥
तबरावणकोशलपुरआयो। युद्धकरनकहबैनसुनायो॥ तबकोपितअनरण्यनरेशा। सैनसजनकहँदियोनिदेशा॥
तबमंत्रीसबसैनसजाई। दियअनरण्यहिसबैदिखाई॥ तबअनरण्यकढ्योमहराजा। भाइनभृत्यनसहितसमाजा॥
दोहा–तहँदशशिरसोंनृपतिसों, होतभयोरणघोर। निशिचरनृपभटबहुमरे, चलेबाणचहुँओर॥
अनरण्यहुअरुरावणकेरो। द्वंद्वयुद्धतहँभयोघनेरो॥ भूपतितहँशरजालचलाई। दीन्ह्योंदशकंधरकहँछाई॥
[illegible]। गयोजहाँठाढोअवनीशा॥ तलप्रहारभूपतिकोकीन्ह्यों। रथतेद्रुतगिरायमहिदीन्ह्यों॥
लखिअनरण्यदशातेहिकाला। हँसाठठायतहाँदशभाला॥ कह्योनभूपमोरबलजान्यो। तातेमोसोंसंगरठान्यो॥

तबअनरण्यकह्योअसबानी । सुनुरेशठदशकंधरमानी ॥ हमतोबूढभयेयहिकाला । रह्योनममविक्रमहुविशाला ॥
दोहा-मोकोंसंगरमेंहने, तेंनकहैहैवीर ॥ पैमेरेकोउवंशमें, जोह्वैहैरघुवीर ॥
सोतोकोंपरिवारसमेतू । वधकरिहैरचिसागरसेतू ॥ असकहिसोअनरण्यभुवाला । तज्योप्राणरणमहँतेहिकाला ॥
लंकहिगयोमुदितलंकेशा । कियोनकछुमनमहँअंदेशा ॥ नृपअनरण्यपुत्रइकरहेऊ । नामतासुहर्यश्वहिकहेऊ ॥
ताकोसुतभोअरुणमहीशा । तासुत्रिबंधनअवधिअधीशा ॥४॥ ताकेभयोत्रिशंकुकुमारा।गुरुवासिष्ठसोंवचनउचारा॥
मोहिंऐसीतुमयज्ञकरावो । यहितनतेस्वर्गहिपहुँचावो ॥ तबवशिष्ठबोलेअसबानी । यहअसाध्यहैनृपअज्ञानी ॥५॥
दोहा-तबत्रिशंकुअतिदुखितह्वै, गुरुपुत्रनपहँजाय ॥ बोलेयहितनुतेस्वरग, दीजैमोहिंपहुँचाय ॥
तबअसकहेवसिष्ठकुमारा । तुम्हरेभूपननेकविचारा ॥ जोनहिंपितावसिष्ठकरायो । सोहमरोनहिंबनतबनायो ॥
तबअसकह्योत्रिशंकुमहीशा ।अबहमजैहैंअनतमुनीशा॥होइअवशिकल्याणतुम्हारा । असकहितहँतेभूपसिधारा ॥
तबगुरुसुतकरिकोपकराला । दीन्ह्योंशापहोहुचांडाला ॥ तबनृपअवधनगरमहँआई । शोचतसिगरीरैनबिताई॥
भयेभोरनृपभेचंडाला । नीलवसनतनुश्यामविशाला ॥ हेमरजतभूषणजेधारे । भयेलोहकेतेअतिकारे ॥
दोहा-महाज्वालहियतेउठी, जरोजातसबगात ॥ भूपतिव्याकुलभ्रमतभो, कहुँनलह्योनिजत्रात ॥
गुरुपुत्रनकोशापकराला । तेहितेजरोजातमहिपाला ॥ गोत्रिशंकुतबकौशिकपाहीं । दोउकरजोरिपरचोपगमाहीं॥
सबअपनोंकहिगयोहवाला।जेहिहितशापितभयोभुवाला॥मुनिकौशिकअसवचनउचारा।करुत्रिशंकुनहिंशोचअपारा
याहीतनुतेतोहिंदिविमाहीं । पहुचैहौंकछुसंशयनाहीं ॥ असकहिविश्वामित्रमुनीशा । रच्योयज्ञतहँबैठमहीशा ॥
सबदेवनकोभागसुदीन्हा । पैकोउदेवभागनहिंलीन्हा ॥ गाधितनयतबक्रियमखपूरो । मंत्रनसोंमंत्रितकरिरूरो ॥
दोहा-नृपत्रिशंकुकोवेगिही, पठयोदिविमुनिराज । अतिशंकिततहँहोतभो, सुरनसहितसुरराज ॥
आवतलखित्रिशंकुकहँदेवा । बोलेइंद्रजानिनृपभेवा ॥ तुमगुरुशापहिंदूषितराजा । इहाँतुम्हारनेकनहिंकाजा ॥
इततेजाहुवेगिमहिपाला । असकहिसुरपठयेततकाला ॥ दिवितेगिरतपुकारचोभूपा । इहाँनरहनदेतसुरभूपा ॥
गाधितनयसुनिनृपतिपुकारा । तिष्ठतिष्ठअसवचनउचारा॥मुनितपबलनृपरहेतहाँहीं । करिऊरधपगमुखअधकाहीं॥
गाधितनयपुनिकोपहिकीन्हा । दूसरस्वर्गरचनमनदीन्हा॥ विरचेसिगरेनखतसमाजू । नरियरादिफलऔरअनाजू॥
दोहा-कौशिककीकरतूतिलखि, रचनचहतसंसार ॥ मुनिसमीपसुरपतिसहित, आवतभेकरतार ॥
बोलेविधिकौशिकमुनिपाहीं । काहकरनदीन्ह्योंमनमाहीं ॥ तुमत्रिशंकुकोस्वर्गपठाये । तेउतरहेनाफिरिइतआये ॥
जेतोसुखसुरपुरकोह्वैहै । तेतोतहँत्रिशंकुनृपपैहै ॥ अबतुममुनिनरचहुसंसारा । मानहुइतनोकहाहमारा ॥
विश्वामित्रमानिलियबैना । कीनबिदाविधिगेनिजऐना ॥ तबतेतहैंत्रिशंकुभुवारा । अवलौंअहैवहतमुखलारा ॥
महिमेंकर्मनाशसरिसोई । जगमहँजानतहैसबकोई ॥ अंबुअपावनपरसतजासू । होतसकलशुभकर्मविनासू ॥
दोहा-गुरुसुतशापहितेभयो, असत्रिशंकुकोहाल ॥ तातेसदाबचाइये, गुरुअपमानभुवाल ॥ ६ ॥
सुतइकरह्योत्रिशंकुधरेशा । तासुनामहरिचंदनरेशा ॥ विश्वामित्रवसिष्ठहुकेरो । जेहिंहितभोसंग्रामघनेरो ॥
सोईआडीवकसंग्रामा । जाकोजगमेंजाहिरनामा ॥ ७ ॥ भेहरिचंददुखितसुतहीना । तबनारदतिनसोंकहिदीना ॥
शरणवरुणकेजाहुनरेशा । ह्वैहैसुतयहमोरनिदेशा ॥ वरुणशरणतबगेहरिचंदा । कह्योपुत्रदैकरहुअनंदा ॥ ८ ॥
वीरपुत्रहमरेजोहोई । बलिदैतुम्हैंपूजिहैंसोई ॥ तबहरिचंदहिकोअतिगुनिहित । वरुणदियोसुतताकोरोहित ॥९ ॥
दोहा-वरुणकह्योहरिचंदसों, मोहिंपूजहुअबभूप ॥ तबनृपअसबोलतभये, लखिकैपुत्रअनूप ॥
अबैनयातेकारजकोई ॥ १० ॥ दशदिनगयेपुत्रशुचिहोई ॥ जबदशदिनबीतेकुरुराई । वरुणपुत्रपुनिमाँग्योआई ॥
तबहरिचंदकह्योतेहिजोई । दंतनभयेपुत्रशुचिहोई ॥ ११ ॥ दंतहुभयेवरुणफिरिआई । देहुपुत्रअसिगिरासुनाई ॥
कह्योवरुणसोंनृपपुनिसोई । दंतनगिरेपुत्रशुचिहोई ॥ १२ ॥ जबफिरिगिरेदूधकेदाँता । वरुणबहोरिकहीसोबाता ॥

तवहरिचंदकह्योदुखभोई । अवरदभयेपुत्रशुचिहोई ॥ १३ ॥ जबपुनिदंतभयेसुतकेरे । तबतहँवरुणआयसोइटेरे ॥
दोहा–तबबोलेहरिचंदनृप, क्षत्रिजातिहमआहि ॥ जबपहिरैंगोसुतकवच, तबदेहैंतुमकाहिं ॥ १४ ॥
यहिविधिकहतकहतमहिपाला।टारिदियोशिशुकोबहुकाला॥जबभोरोहितवीरसयानो।निजहितपितहिबडोदुखजानो
कवचपहिरिसायकधनुधारयो।निजजियरक्षणवनहिंसिधारयो।तबहरिचंदहिपैजलराजा।कोपकियोनिजबलिकेकाजा
नृपकोदियोजलंधररोगू । सोलैकियोभूपदुखभोगू ॥ यहसुनिरोहितदुखितमहाना । पितुसमीपकहँकीनपयाना ॥
विप्रवृद्धतबवासवह्वैके । रोक्योआइरोहितहिज्वैके ॥ १७ ॥ करहुतीर्थपर्यटननरेशा । यहितेमिटिहैजनककलेशा ॥
दोहा–तबवासवउपदेशलहि, काननवसेनरेश ॥ कियेतीर्थसबपुहुमिके, मेटनजनककलेश ॥ १८ ॥
पितुदर्शनकोवर्षप्रति, रोहितकरहिंविचार ॥ विप्रवेषधरिइंद्रतहँ, रोकहिंबारहिंबार ॥ १९ ॥
पांचवर्षबीतेयहिभाँती । छठयेमहँरोहितरिपुवाती ॥ आवनलगेजबैपितुपाहीं । अजीगर्तमिलिगेमगमाहीं ॥
तेहिमाँझिलशुनशेपकुमारा । रोहितलैतेहिमोलउदारा॥२०॥दीन्ह्योंपितहिअवधपुरआई।पगवंदनकीन्ह्योंशिरनाई॥
तबहरिचंदकियोवरयागा।पूज्योवरुणहियुतअनुरागा॥होताविश्वामित्रहिभयऊ॥२१॥२२॥अध्वर्यूजमदग्निहुरहेऊ॥
ब्रह्माभेवसिष्ठअवदाता । भेअगस्त्यमुनितहँउदगाता ॥ जबशुनशेपहिचहबलिदीन्ह्यों । इंद्रआइतबवारणकीन्ह्यों ॥
दोहा–भूपतिसोंहरिचंदको, मिट्योजलंधररोग । यहिंविधिकर्मसमाप्तभो, पायोमखफलभोग ॥
इकसुवर्णस्यंदनसुरनाहू । राजहिदीन्ह्योंसहितउछाहू ॥२३॥ लखिहरिचंदभूपकोधीरा । विश्वामित्रज्ञानगंभीरा ॥
रानीयुतहरिचंदनरेशै । सादरकियोज्ञानउपदेशै ॥ सोहरिचंदभूपमतिमाना । यहिप्रकारसोकीन्ह्योंध्याना ॥
मनकोमाहिमेंदियोमिलाई।महिमेलयोजलमेंनृपराई।।जलकियसंगमतेजहिमाहीं।तेजहुलैकियपवनहुपाहीं।२४।२५॥
पवनहुदियोमिलाइअकासै । अहंकारमहँनभसहुलासै ॥ महत्तत्त्वमेंअहंकारको । दियमिलायकरिकैविचारको॥
म हत्तत्वमेंजीवहिध्यायो । तातेसबअज्ञाननशायो ॥ २६ ॥
दोहा–जियसुरूपतेभिन्नहै, यहउपासनाजानि । विगतफंदहरिचंदनृप, लह्योमुक्तिसुखखानि ॥ २७ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–रोहितकेपुनिहरितभे, तिनकेभेनृपचंद । जोबसाइचंपापुरी, अरिसोंभयेअकंप ॥
चंपभूपकेभयेसुदेवा ॥ १ ॥ तिनकेभयेमरुकनरदेवा ॥ तिनकेवृकवृककेभेबाहुक । तिनकीराजहरीअरिदाहुक ॥
तबरानिनयुतबाहुकराजा । वनगमनेतजिसचिवसमाजा ॥२॥ रहेवृद्धतहँमरेभुवाला।रानिहुँजरनलगीतेहिंकाला ॥
तहँसुनिच्यवनगर्भयुतजानी । वारणकियोजरहुजनिरानी॥रानीच्यवनवचनसुनिसोई । जरीनगर्भवतीरहजोई ॥३॥
औरसवतितेहिभोजनसंगै । दियोगरलगर्भहिहितभंगै ॥ पैनहिंभयोगर्भकोनासा । च्यवनकृपातेगैसबत्रासा ॥
दोहा–गरलसहितजनम्योसुवन, भयोसगरतेहिंनाम ॥ ४ ॥ भयोचक्रवर्तीनृपति, यशप्रतापबलधाम ॥
सगरनरेशअयोध्यहिआये । तहाँआपनोबलप्रगटाये ॥ वरवरहैहयसकवरवीरा । औरतालजंघहुरणधीरा ॥
येसबयमननसगरभुवाला।मारनलगेकोपितेहिकाला॥५॥तबवारणकियच्यवनमुनीशा।इनहिंनवधकरियेअवनीशा॥
इनसबकोकरिदेहुविरूपा । देहुनिकारिदेशतेंभूपा ॥ तबयमननकोपकरितहाँहीं । सगरकरतविरूपतिनकाहीं ॥
कोहुयमननकेमूँडमुँडाये।कोउकेमूँछनकोबनवाये।।कोउकेसाताशिखादियराखी।कोउकोअधमूँड़ोकियमाखी ॥६॥
दोहा–कोहुनकोबिनवसनकिय, कोहुनवसनहिएक । ऐसीकरियमननदशा, दियोनिकारिअनेक ॥
रहीभूपकेदुइमहरानी । सुमतिकेशिनीनामबखानी ॥ तिनतेसहितसगरवनजाई । बसेच्यवनआश्रमसुखदाई ॥

च्यवनहिंसेवनकियदोउरानी । मुनिप्रसन्नह्वैबोलेबानी ॥ कोइकपुत्रवंशकरिलेहे । काकोबहुसुतमाहँसनेहै ॥
तबकेशिनीकह्योकरजोरे । होइवंशकरसुतइकमोरे ॥ सुमतिकह्योहेच्यवनउदारा । मोहिंदीजैबहुबलीकुमारा ॥
मुनितथास्तुकहिआश्रमआये।रानिनकेभेगर्भसुहाये॥ असमंजसैकेशिनीजाई । सुमतिएकतुंबाजनमाई ॥

दोहा—सोतुंबातेप्रगटभे, साठिहजारकुमार । धाइतिन्हेंसेवनकियो, भेबलतेजअगार ॥

सगरअश्वमेधहिशतकीन्हें।अंतयज्ञहरिहरिहरिलीन्हें॥७॥८॥तबराजासुतसाठिहजारा।बोलिनिकटअसवचनउचारा॥
खोजिलैआवहुवेगितुरंगा । तौहमारमखहोइअभंगा ॥ तबपितुशासनमानिकुमारा । खोजनलगेतुरंगउदारा ॥
चहुँदिशिहेरिवाजिनहिंपाये । तबकुमारअतिकोपहिछाये ॥ खननलगेधरणीचहुँओरा । लैखनित्रकरपरमकठोरा ॥
सगरसुवनखनिसागरकीन्हें । धरणीजीवनकोदुखदीन्हें॥९॥खनतखनतजबपूरुबआये।कपिलकुटीकुमारनियराये ॥

दोहा—कपिलदेवकेनिकटमें, लखेतुरंगकुमार । कोपितह्वैतबकटुवचन, बोलेसाठिहजार ॥

यहैचोरमखहयहरिल्यायो।इहाँआयबकध्यानलगायो॥१०॥मारहुमारहुअसकहिधाये।आयुधलियेकपिलढिगआये॥
कपिलदेवतबनयनउघारे११साठिहजारभयेजरिछारे१२जोअसकह्योकपिलभगवाना यहिविधिकियकसकोपमहाना
तौनहिंकियोकपिलकछुबाधा।भस्मभयेअपनेहिंअपराधा॥वेतौसांख्यशास्त्रभवसागर।नावसरिसविरच्योगुनआगर॥
तिनमेंतामससंभवनाहीं । कुरुपतिजानिलेहुमनमाहीं ॥१४॥ साठिहजारसुवननहिंआये।तबनृपसगरमहादुखपाये ॥

दोहा—जोअसमंजसज्येष्ठसुत, रह्योपूर्वयुतयोग । योगभ्रष्टनृपसुतभयो, गयोनज्ञानसंयोग ॥ १५ ॥ १६ ॥

तबमनकियोकरनकोपापा । जामेंहोहिपितहिंसंतापा ॥ देहिमोहिंवनकाहँनिकारी । तौमैंतपकरिलेहुँसुधारी ॥
असविचारिसरयूसरिमाहीं।बोरेप्रजनबालकनकाहीं॥१७॥देखिसगरनिजप्रजनदुखारी।असमंजसकहँदियोनिकारी ॥
तबअसमंजसप्रजनकुमारा।सरयूसरितेआशुनिकारा।दैपितुकोवनकियोपयाना१८लखिकेप्रजनअचंभवमाना १९॥
असमंजसकेभयोकुमारा । अंशुमानजेहिनामउदारा ॥ अंशुमानकोसगरनरेशा । अतिदुःखितह्वैदियोनिदेशा ॥

दोहा—अंशुमानतुमजायके, लावहुखोजितुरंग । खोजमिलतनहिंजेगये, तुवकाकाइकसंग ॥

अंशुमानकरिसगरप्रणामा । खोजनचल्योसुरंगललामा ॥ खोदीमहिकीपायनिशानी । तेहिमारगगमन्योविज्ञानी ॥
तीनिहुँदिशाखोजिनृपढारचो।तबविस्मितह्वैपूर्वपधारचो॥तहाँलख्योइकभस्मपहारा।ताकेनिकटतुरंगनिहारा २०॥
तहाँकपिलमुनिकहलखिराजा।महिठाढेनिजमंगलकाजा॥करनलगेअस्तुतिमहिठाढे़अंशुमानधीरजकेगाढ़े ॥२१॥

अंशुमानुवाच ।

करिकैबहुसमाधिविख्याता।अबलौंतुमहिंनजानतधाता॥तौहमपामरकेहिविधिजानैं।आपअहौश्रीपतिभगवानै २२॥

दोहा—सदावसहुसबकेहिये, पैजानतकोउनाहिं । विषयवासनावलितजन, मोहेमायामाहिं ॥ २३ ॥

छंदनाराच—विभूतिभेदमोहियोसनत्कुमारआदिजे । कलेशकेलगायध्यानजानहींअनादिजे ॥ २४ ॥
अधीनकर्मकेनदेहदिव्यरूपआपहौं । उधारकोवतारहैविहीनपुण्यपापहौं ॥ २५ ॥
कलत्रपुत्रदेहमेंलगायनेहकैभ्रमैं । विमोहकोहतेभरेपरेभवाब्धिमेंभ्रमैं ॥ २६ ॥
गयोसोछूटिआजुघोरमोरमोहपासहौ । पदारविंदरावरेविलोकिबेप्रयासहौ ॥

दोहा—इकरसनासोंआपको, कैसेकरहुँबखान । तातेंकरहुँप्रणाममैं, तुमहौपुरुषपुरान ॥ २७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

अंशुमानजबअस्तुतिकीन्ह्यो । कपिलकृपाकरियहकहिदीन्ह्यो ॥ २८ ॥

कपिल उवाच ।

तोरपितामहकोयहवाजी । तातजाहुलैमैंअतिराजी ॥ अंशुमानयेककातुम्हारे । भयेभस्मसबनिकटहमारे ॥
स्वर्गहितेस्वर्धुनीउतारहु । साठिहजारककातुमतारहु ॥ औरयत्नइननहिंउद्धारा । बिनआनेधरस्वर्धुनिधारा॥२९॥

निकेकपिलदेवकेबैना। अंशुमानपायेअतिचैना॥ दैप्रदक्षिणाकरीप्रणामा। लायोमखतुरंगनिजधामा॥
सगरभूपमखबाजीपाई। कीन्ह्योंमखपूरणसुखछाई॥ ३०॥
दोहा–अंशुमानकोराजदै, छोडिमहावनजाय। च्यवनगुरूतेज्ञानलहि, सगरमुक्तिलियवाय॥ ३१॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीवांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे अष्टमस्तरंगः॥ ८॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–अंशुमाननरनाहके, भयोदिलीपकुमार। नृपदिलीपकोअंशुमत, सौंपिराज्यकोभार॥
करनमहातपगंगाआनन। अंशुमानकढ़िगेतबकानन॥ बहुतकालतपकीनमहाई। तज्योशरीरनसुरसरिआई॥१॥
इतदिलीपसुतभोमतिधामा। जाकोभयोभगीरथनामा॥ दैकैराज्यभगीरथकाहीं। तपकीन्ह्योंदिलीपवनमाहीं॥
पैस्वर्धुनीधरणिनहिंआई। सुरपुरगेदिलीपनरराई॥ पुनिजबभयोभगीरथराजा। पाल्योप्रजनसमेतसमाजा॥
धरिशिरसचिवराज्यकोभारा।चल्योलैआवनस्वर्धुनिधारा॥वर्षहजारदिलीपकिशोरा।कीन्ह्योंतपवनपरमकठोरा २॥
दोहा–तबगंगातहँप्रगटभै, कह्योमाँगुवरदान, तबैभगीरथजोरिकर, ऐसोकियोबखान॥
जौप्रसन्नमोपैतैंमाता। तौचलुधरणिराखुममबाता॥ जोआवैधरणीतवधारा। तरैंपितरममसाठिहजारा॥
तबगंगाअतिआनँदपायो। भूपभगीरथसोंअसगायो॥ ३॥

गंगोवाच।

मेरीधारधराकिमिधारी। औरहुयहतुमलेहुबिचारी॥ ४॥ निवसतबहुपुहुमीमहँपापी। तेमोहिंकरिहैंअतिसंतापी॥
तिनपापिनकेपापनशाई। मैंकहँपापछुडैहौंजाई॥ तातेनहिंजैहौंमहिमाहीं। दुइसंदेहटरतहैंनाहीं॥ ५॥
तभगीरथभयेदुखारी। पुनिगंगासोंगिराउचारी॥
दोहा–तवधाराकोधारिहैं, धूरजटीसुखपाइ। तेरोपापनशाइहैं, संतसमाजनहाइ॥ ६॥ ७॥
कह्योभगीरथसोंतबगंगा। ध्यावहुशिवधरिध्यानअभंगा॥ तबैभगीरथवनमहँजाई। कियोतपस्याध्यानलगाइ॥
रह्योअंगुष्ठहिकेवलठाढ़ो। संवतलोंकरिअतिव्रतगाढो॥ तबप्रसन्नह्वैकहत्रिपुरारी। स्वर्धुनिधारलेवहमधारी॥
तवगंगासोंकह्योनरेशा। चलहुमातुशिरधरहिंमहेशा॥ सुनिगंगामनकियोविचारा। किमिशंकरधरिहैंममधारा॥
धरिनिजधाराहिमाहँमहेशै। करिहौंअवशिपतालप्रवेशै॥ असगुनिकरिनिजवेगप्रचंडा। चलीगगनतेगंगउदंडा॥८॥
दोहा–धूरजटीकेजटनिमें, गिरीगंगकीधार। बहुवर्षनलौंसोतहाँ, भ्रमतनपायोपार॥
यहलखिचरितभगीरथराजा।पुनिकियशिवअस्तुतिनिजकाजा तबगंगाहिंशंकरमुदमाहीं। छोड्योबिंदुसरोवरमाहीं॥
भईसातगंगाकीधारा। चलीधरणिमहँवेगअपारा॥ अह्लादिनिपावनिऔनलिनी। पूर्वदिशागमनीअघदलिनी॥
अरुसुचक्षुअरुसिंधहुसीता।गईतीनपश्चिमजलसीता॥९॥ भागीरथीसातईधारा। चलीभगीरथसंगउदारा॥
होतभयोतहँशोरकठोरा। फोरतशैलकढीवरजोरा॥ १०॥ स्यंदनचढ़िकैभूपभगीरथ। आगेआगेगवनकियेपथ॥
दोहा–ताकेपीछेधरणिमहँ, गंगधारअतिजोर॥ धावतिछबिपावतिमहा, मच्छकच्छयुतघोर॥
भुजंगप्रयातछंद–लखेस्वर्धुनीकोधरामेंविलासा। सबैदेवआयेतकैकोतमासा॥
कहूँउच्छलैंमच्छकच्छादिस्वच्छे। मनोदामिनीसेतमेघानिलच्छे॥
कहूँवेगधावैकहूँमंदजावै। कहूँफैलिभावैकहूँगैलआवै॥
कहूँनीचह्वैऊँचकोधावतीहै। कहूँऊँचह्वैनीचकोआवतीहै॥

कहुँधारकोभेदिकैधारधावै । कहूँकुंडलावर्तह्वैवेगिजावै ॥
कहूँशैलकोफोरिकैगैलकीन्ही । कहूँवृक्षकीपातिकोढाहिदीन्ही ॥
उठैतोयमेंरंगरंगैतरंगैं । करैंभूमिकेपापतापानिभंगै ॥
करैंशोरपक्षीकहूँठौरठौरे । यहीभाँतिगंगानृपैसंगदौरे ॥

दोहा—जेहिंजेहिंपथरथजातहै, भूपभगीरथकेर ॥ तहँतहँगमनतगंगजल, नाशतपातकढेर ॥

सुरनरमुनिगुनित्रिभुवनपावन।मज्जनकियनिजपापनशावन। सुरसरिजलपदजलजगदीशा।पावनहितशिरधरयोगिरीशा।
आगेजातभूपबड़भागी । पीछेगंगजाहिंसँगलागी ॥ तिनपीछेसुरतियसुरगायक । गावतचलेजातसुखदायक ॥
यहिविधिगवनकीन्हतहँगंगा।गईकपिलआश्रमहिअभंगा॥सगरसुतनकीछारवहाई।सबकोदियहरिपुरपहुँचाई॥११॥
यद्यपिब्रह्मदंडतेतापी । तदपिमुक्तिपायेजिमिजापी ॥ भस्मभयेजेसगरकुमारे । परसिजाहिंहरिधामसिधारे॥१२॥

दोहा—अससुरसरिमेंभक्तियुत, जोकोउपुरुपनहाहिं ॥ सोगवनैहरिधामको, तौकाअचरजआहिं ॥ १३ ॥

सुरसरितामहिमाहैजोई । ताकोअचरजगुनहुँनकोई ॥ हरिचरणनतेप्रगटभईहै । पापिनभवनिधितारिदईहै ॥ १४॥
जामेंसबमुनिमनहिंलगाई।तनतजिहरिढिगपहुँचहिंजाई॥सुरसरिकीमहिमाकिमिगाऊँ।कहँहजाररसनामुखपाऊँ १५
सुवनभगीरथकोश्रुतभयऊ । तेहिसुतनाभनामजगठयऊ॥सिंधुद्वीपभोनाभकुमारा।अयुतायहुभोताकोबारा॥१६॥
ताकेभोऋतुपर्णनरेशा । नलमहीपकोसखासुवेशा ॥ लह्योअश्वविद्यानलपाहीं । दियोअक्षविद्यातिनकाहीं ॥

दोहा—पुत्रभयोऋतुपर्णके, सर्वकामअसनाम ॥ १७ ॥ ताकेभोसौदासनृप, मदयंतीजेहिंवाम ॥

जोवसिष्ठकीशापहिपाई । राक्षसभयोमहादुखछाई॥भोकलमाषपादजेहिंनामा । बिनसुतरह्योमहादुखधामा ॥ १८॥
तबकुरुपतिबोल्योकरजोरी । सुनियेंशुकविनतीयहमोरी ॥

राजोवाच ।

केहिंकारणसौदासभुवाला।लह्योवसिष्ठशापदुखजाला॥होइजोमेरेसुनिवेलायक।तौवरणनकरियेमुनिनायक ॥ १९ ॥
तबशुकदेवमोदअतिपाई । कुरुपतिसोंबोलेचितलाई ॥

श्रीशुक उवाच ।

एकसमयसौदासउदारा । वनमहँखेलनगयोशिकारा ॥ तहँइकघोरराक्षसैमारचो। ताकोभ्रातातहाँसिधारचो॥२०॥

दोहा—ताकोबदलोलेनको, राक्षसवेषसुवार ॥ धरिगमन्यौअतिवेगहीं, नृपसौदासअगार ॥

नरआमिषजेउनारबनाई।नृपसौदासहिंदियोदेखाई॥गुरुवसिष्ठकहँपरुस्योराजा॥२१॥मनुजमांसचीन्ह्योमुनिराजा ॥
मुनिबोलेरेभूपअपावन । मनुजमांसमोहिंचहैखवावन ॥ तातेराक्षसहोहुनरेशा । खाहुमनुजकोमांसहमेशा ॥ २२॥
तबराजाअसठीकहिकीन्ह्यों । बिनहिंविचारशापगुरुदीन्ह्यों ॥ तातेमहूँशापअबदेहौं । गुरुसोंमैंपलटोलैलेहौं ॥
असविचारिजललैकरमाहीं । लाग्योदेनशापगुरुकाहीं॥२३॥तबमदयंतीवारणकीन्ह्यों । गुरुकोशापदेननहिंदीन्ह्यों॥

दोहा—तबनृपदिशिमहिनभनिरखि, सकलजीवमैंजानि ॥ सोजलडारचोनिजचरण, बडीदयाउरआनि ॥

डारचोजलनिजचरणनजबहीं । नृपकलमाषपादभोतबहीं ॥ तबवसिष्ठराक्षसकृतकर्मा । जान्योसकलज्ञानतेमर्मा ॥
नृपसोंकहकछुदोषनतोरा । पैमैंशापदियोअतिघोरा ॥ तातेद्वादशवर्षहिताँई । रहिहौराक्षसअवधगोसाँई ॥ २४ ॥
राक्षसह्वैनृपगेवनमाहीं । करनलगेभक्षणनरकाहीं ॥ एकसमयद्विजदंपतिकाहीं । करतविहारलख्योवनमाहीं॥२५॥
अतिभूखेभक्षणकेहेतू । विप्रहिगहिलीन्ह्योंनृपकेतू ॥ तबह्वैदुखितकह्योद्विजनारी ॥ कैसेंपापकरहुनृपभारी ॥

दोहा—आपअहैराक्षसनहीं, मदयंतीकेकंत ॥ होइक्ष्वाकुहिवंशके, नृपअवतंससुसंत ॥ २६ ॥

अबैनपूरचोममरतिकामा । भयेनमेरेसुतसुखधामा ॥ तातेत्यागिदेहुद्विजकाहीं । करिकैदयाभूपमनमाहीं ॥ २७॥
यहमनुष्यकोतनमहराजा । प्रगटभयोपरमारथकाजा ॥ तातेविप्रहिकियेविनाशा । ह्वैहैसकलअर्थकोनाशा ॥२८॥

यहब्राह्मणपंडितसुखशीला। गावतरहतसदाहरिलीला॥ सबअंतर्यामीभगवाना। सेवनचाहतविप्रसुजाना॥२९॥
यहब्रह्मर्षिराजऋषिआपू। तुमकोउचितदेवसंतापू॥ प्रजाअहैसुतराजनकेरो। ताकोवधनहिंवेदनिवेरो॥ ३०॥
दोहा–त्यागिदीजियेजानिसुत, हैसौदासउदार॥ करिकैदायादीजिये, अबअहिवातहमार॥
कियोनकछुद्विजतुवअपकारै। अंगसहितनितवेदउचारै॥ ब्रह्मज्ञानीसाधुसुलक्षण। ऐसेद्विजहिकरहुकसभक्षण॥
अहैतुम्हारगऊमहिपाला। छोड़िदेहुकरिदयाविशाला॥३१॥ जोनविनयमानहुँनरराई। तौप्रथमैलीजैमोहिंखाई॥
यहिबिनहमक्षणभरिनहिंजीहैं।जैसेसकलअंगविनजीहैं॥३२॥यहिविधिविनयकरीद्विजनारी।ह्वैअनाथसमरोइपुकारी॥
पैगुरुशापविवशनरराई। तातेतेहिहियदयानआई॥ भक्षणकरतव्याघ्रपशुजैसे। भूपतिद्विजहिखाइलियतैसे॥३३॥
दोहा–पतिविनाशलखिब्राह्मणी, पायोअतिसंताप॥ अतिकोपितह्वैभूपकहँ, दीन्हींघोरशराप॥ ३४॥
मोकामिनिकोपतितुमखायो। मेरोसकलविलासनशायो॥तातेतियसँगकरतविलासा।होईभूपतुम्हारहुनासा॥३५॥
असदैशापनृपहिद्विजनारी। पतिकेहाड़बटोरिदुखारी॥ रचिकैचितासतीभैबाला। सत्यलोककहँगैततकाला॥३६॥
द्वादशवर्षवीतिगेजबहीं। नृपकीशापछूटिगैतबहीं॥ अवधनगरआयेसौदासा। चाहेतियसँगकरनविलासा॥
जानिब्राह्मणीशापहिरानी। वारणकियोजोरियुगपानी॥३७॥ छाँडिदियोरतिकर्मनरेशा। वंशहोनकोभोअँदेशा॥
दोहा–तबभूपतिकीसुनिविनय, गुरुवसिष्ठतहँजाइ॥ मदयंतीकोदेतभे, गर्भाधानकराय॥ ३८॥
सातवरषलौंगर्भहिरहेऊ। मदयंतीकेसुतनहिंभयऊ॥ तबवसिष्ठकरलैपाषाना। कूच्योउदरकठोरमहाना॥
तबमहिमेंगिरिपरयोकुमारा। अश्मकतातेनामउदारा॥३९॥अश्मककेसुतमूलकभयऊ।बारोंहितेनारिनमनदयऊ॥
जबनिछत्रकीन्ह्योंभृगुरामा। तबमूलककीसिगरीवामा॥ परशुरामकीअतिभयपाई। राख्योनिजपटओटलुकाई॥
तानेनारीकवचकहायो। सोईक्षत्रीवंशचलायो॥ याहीतेमूलकभोनामा॥ ४०॥ ताकोसुतदशरथसुखदामा॥
दोहा–पुत्रऐडविडतासुभो, भयोविश्वसहतासु। ताकोसुतखट्वांगभो, कीन्ह्योंसुयशप्रकासु॥
भूपचक्रवर्तीभोसोई। जाकोशत्रुरह्योनहिंकोई॥ ४१॥ तहँअसुरनसोंदेवपराई। खट्वांगहिकेनिकटहिजाई॥
बोलेकरहुसहायहमारी। सुनिराजारथचढ़िधनुधारी॥ सुरसँगजायअसुरबहुमारे। सुरप्रसन्नतबवचनउचारे॥
माँगहुहमसोंनृपवरदाना तहँभूपतिअरुकियोबखाना॥ मोरिअयुरदादेहुबताई। तबदेवनद्वैदंडसुनाई॥
जानिथोरिनिजआयुर्दाया। भूपतिआशुअवधपुरआया॥तहँकीन्ह्योंखट्वांगविचारा।काकरतव्यहमैंयहिवारा॥४२॥
दोहा–राजविभौअरुदारसुत, औरहुप्राणहमार। ब्राह्मणऔभगवानते, लागतनहिंमोहिंप्यार॥ ४३॥
बालहिपनतेयहमनमोरा। गयोनकबहूँपापकिओरा॥यहजगआयत्यागिभगवाना।मैंनहिंकबहुँऔरकछुजाना॥४४॥
यद्यपिदेवकामवरदाना। देनकह्योमोकोंमतिमाना। रहीभावनाहरिपदमाहीं। तातेमैंमाँग्योवरनाहीं॥ ४५॥
अहैदेवसबश्रीमदमाते। देहैंकहाविषयरसराते॥ नाहिंजानैजेपुरुषपुराना। तिनसोंनहिंममकामदेखाना॥
ये गिहुसकैननिगउरआनी।तिनकोऔरसकैकिमिजानी॥४६॥तातेयहअनित्यसंसारा। ताकोसंगछोडिदुखभारा॥
दोहा–श्रीजगदीशहिचरणमें, अपनोचित्तलगाइ। बिनप्रयासहीआशुहीं, क्योंनहिंलेहुबनाइ॥ ४७॥
असविचारिखट्वांगनृप, कृष्णचरणचितलाय। तजिशरीरलहिदिव्यवपु, हरिढिगनिवसेजाय॥ ४८॥
परब्रह्मअतिसूक्ष्मजो, दिव्यगुणनिकेखानि। भजैंसंततिनकोसदा, वासुदेवसुखदानि॥ ४९॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा
राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराज
सिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे नवमस्तरंगः॥ ९॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–पुनिखट्वांगनरेशके, भोसुतदीरघबाहु। ताकेरघुमहाराजभे, दायकद्विजनउछाहु॥

रघुकेअजमहाराजभे, जेकीन्हें[illegible]काज । चक्रवर्तिनाकेभये, श्रीदशरथमहाराज ॥ १ ॥
श्रीदशरथमहाराजके, स्वयंब्रह्मभगवान । निजअंशहिंनचारिवपु, प्रगटेहितविबुधान ॥ २ ॥
श्रीरघुनंदनलषणअरु, भरतशत्रुहननाम । रामचरितसोकोटिहै, इकअक्षरप्रदकाम ॥
वाल्मीकिभगवानऋषि, गायोरामचरित्र । बहुतवारकुरुनाथतुम, कीन्ह्योंश्रवणविचित्र ॥ ३ ॥
कवित्त--पितुप्रणधारिराजओरनानिहारिप्राणप्यागीपानिहूतेजाकीअतिसुकुमारीहै ॥
ऐसेपदकंजनतेवनकेविहारीभयेसखनकपीशसेवाकीन्हीसुखवारीहै ॥
कारककुरूपनारीसीताविरहैविचारीनेकुभ्रूकेभंगहीतेसिंधुसेतकारीहै ॥
खलदलकाननकेदाहकदहनरघुराजैएकआसरघुराजजूतिहारीहै ॥ ४ ॥
सवैया-चंडऔमुंडाहिसेवारिबंडघमंडभरेजेप्रचंडप्रहारी । वीरसुबाहुमरीचिनिशाचरकौशिकयज्ञविध्वंसनकारी ॥
लैभुजदंडअखंडकोदंडहन्योयमदंडसेबाणप्रचारी । खंडहिखंडकियोखलवृंदनश्रीरघुनंदनआनँदकारी ॥ ५ ॥
त्रैशतयोधनल्यायसभामधिशंकरचापप्रतापउदारो । रावणबाणहुआदिकवीरसकेनउठाइगयोमदमारो ॥
सीतास्वयंवरमेंरघुनंदनसोधनुपाणिविनाश्रमधारो । इक्षुकोदंडदलैगजज्योंतिमिशंभुकोदंडत्रिखंडकैडारो ॥ ६ ॥
डारिदईवनमालगरेअवधेशललाकेविदेहकुमारी । शीलवयोगुणरूपसमानसुजीतियोंजानकीकोधनुधारी ॥
आवतओधकेमारगमेंमिलोश्रीभृगुनंदनकोपकैभारी । सोबिनदर्पभयोक्षणमेंक्षितिवारइकीसनिक्षत्रकोकारी ॥ ७ ॥
नारिअधीनबँधेसतिपाशजोसोपितुशासनशीशमेंधारी । राजनिवासविलासविभौनिजमंत्रिनमित्रनतुच्छविचारी ॥
जानकीलच्छनकोसँगलैकारिकाननकोगयेरामसिधारी।ज्योंप्रियप्राणनकोतजिकैवरयोगीविकुंठकोजातसुखारी ॥८॥
सूपनखाकोविरूपकियोमनुभेज्योतिलाकहीपासदशानन । चौदहजारनिशाचरवैखरदूषणऔत्रिशिराबलमानन ॥
कुंडलीकैकरमाहँकोदंडहनेक्षणछोंडिअखंडनबाणन । कौशलनाथकृपाकरिकैनहिंराख्योकलेशकोलेशहुकानन९॥
सीताकथासुनिकैदशकंधरभेज्योमरीचैकुरंगबनाई । जानकीकीरुखराखनकेहितलैधनुबाणगयेप्रभुधाई ॥
दौरतदूरदुरातदेखातलेबाइगयोरघुनाथैलोभाई । जानिखलैतेहिनाथदल्योशरतेजिमिदक्षकोत्र्यक्षरिषाई ॥१०॥
शून्यकुटीवृकसोंदशशीशहरीहरिणीसीविदेहकुमारी । ताकेवियोगकोशोकबड़ोकरिभाइसमेततहाँधनुधारी ॥
काननकुंजनगोदावरीपहँपूछ्योबतावोपियारीहमारी। दीन्ह्योंदेखाइसबैजगकोदशानारिअधीननकेरिखरारी ॥११॥
आपनेहाँथसोंदाहकियोजोगयोमरिजानकीहितजटाई । त्योंहींकबंधकीशापछोडाइसरोवरमेंशबरीफलखाई ॥
मित्रबनाइसुकंठकपीशकोतालनवेध्योसुबाणचलाई । वालिकोमारिकैवालिकेबंधुकोवालिकोराजदियोरघुराई ॥
रामप्रतापतेरामकोदूतगयोशतयोजनएकैफलंका । भौननभौननजानकीहेरच्योसुरावणकीनगरीमेंनिशंका ॥
नाथनिदेशसुनायकैसीयकोमारिनिशाचरजारिकैलंका । वारिधिकूदिकैआयोवलीवरवानरवायुकोबालकबंका ॥
मारुतकेमुखतेरघुनंदनमोदमयीसियकीसुधिपाई । वानरीसैनलैसागरकेसमसागरतीरबसेप्रभुजाई ॥
जानिविभीषणकोशरणागतलंककोराजदियोरघुराई । जोपदपूजतहैंविधिशंकरसोपदसेवकलीन्ह्योंबनाई ॥ १२ ॥
नेकुचढ़ावतहींभ्रकुटीतहँघोरसमुद्रकोबंधभोशोरा । मक्रऔनक्रकेचक्रनिकारिकैवक्रभ्रमैलगेचक्रअथोरा ॥
ज्वालकीमालकरालविशालउठीतनकालजलैचहुँओरा ॥ भेटलैकंधमेंदीनकेबंधुकेपायनमेंगिरिसिंधुनिहोरा ॥१३॥
कौशलनाथहेदीनदयालविकारविवर्जितपुर्षपुरानै । रावरेसत्त्वतमैरजतेप्रगटैसुरभूतप्रजेशअमानै ॥
हंसकेवंशकेहेअवतंसप्रशंसजसैखलध्वंसमहानैं । ऐसेअखंडप्रभावतुम्हैंकुमतीहमसेकेहिभाँतितेजानैं ॥ १४ ॥
आनँदकंदसुनोरघुनंदनमोजलजारिकैचाहोपधारो । पैरचिसेतुकृपाकरिमोपररावणकोकुलतेयुतमारो ॥
श्रीमिथिलेशललीकोलेवाइकैऔधपुरीकोसुखीह्वैसिधारो । तौविजयीवसुधाकेसबैवसुधाधिपगैहैंचरित्रातिहारो १५॥
सोसुनिरामपठाइकपीशनपादपसंयुतशैलमँगाये । बाँधिकैसिंधुमेंसेतुमहाउतरेप्रभुलैदलकोसुखछाये ॥
नीलहनूमतआपसुकंठहुचारिअनीकापिसैनबनाये । लंककोवेरिलियोचहुँओरजहाँह्वैविभीषणराहबताये ॥ १६ ॥

जानकीकारणलंकविदारणधायेकपीशप्रकोपिहजारन । द्वारविहारअगारभँडारसभाकेमझारहूँजाइअपारन ॥
दारणकीन्हेंबजारनकोबलवारणकेसकेकोऊनिवारन । कैकेप्रहारपहारनलंकमथ्योज्योघुसैंसरसीबहुवारन ॥ १७ ॥
रावणकोपिकैबोलिप्रवीरनबोलतभोहनौकीशनजाई । सोसुनिकैभटकुंभनिकुंभसुरांतकढ्योहीनरांतकचाई ॥
सैनअधीशप्रहस्तअकंपनधूमविलोचनदुर्मुखधाई । वानरीसैनमेंचारिहुँओरतेमारिकैआयुधकीन्हेंलराई ॥ १८ ॥
शूलकृपाणऔबाणहुतोमरशक्तिऔयष्टिचलावनलागे । रावणकीजैपुकारिपुकारिकैमारेकपीशनकोपतेपागे ॥
सोलखिकैहनुमानऔअंगदनीलनलादिकविक्रमजागे । लैतरुशैलप्रचारिहनेरजनीचररामविजैअनुरागे ॥ १९ ॥
होतभयोतहँयुद्धभयावनशोणितकीसरिताबहेंलागीं । योगिनीजूहकरैंतहँकूहत्यौंगीधसमूहक्षुधाअतिजागीं ॥
रुंडऔमुंडभयेबहुखंडकपीशविजैलहिभेबडभागी । जानकीकेअपराधहींतेदशशीशबलीभटह्वैगेअभागी ॥
वीरअकंपनधूमविलोचनऔरनिकुंभसुरांतकपाहीं । पौनकोपूतप्रहारकियोपुनितैसहींअंगदसंगरमाहीं ॥
दुर्मुखैऔरनरांतकैमारयोप्रहस्तैसँहारयोसुनीलतहाँहीं । ह्वैअतिक्रुद्धबडोकरियुद्धवध्यौलखनौअतिकायहुकाहीं ॥
रावणराक्षसनाशविलोकिनिराशह्वैकुंभकरंनपठायो । भूधराकारशरीरसोआयअनेककपीशनकोशठखायो ॥
देखिदुखीनिजसैनकोनाथद्रुतैरघुनाथहीचापचढ़ायो । कालसमानचलायशरैदशशीशकेबंधुकोशीशगिरायो ॥
जायनिकुंभिलामेघननादकोरामानुजैरणकीन्ह्योप्रचारी । दोऊप्रवीरनकेवरबाणअकाशमेंछायकियेअंधियारी ॥
त्रैदिनरातिभयोयहिभाँतिमहासँगरामत्रिलोकभैकारी । लक्षनकैकैप्रतिज्ञाहन्योभटइंद्रजितैशरघोरपवारी ॥ २० ॥
देखिसँहारनिजैपरिवारकोकोपअपारकैरावणधायो । स्यंदनपैचढ्योस्यंदनपैचढेश्रीरघुनंदनकेढिगआयो ॥
नाथछपाचरकोछनमेंछितिछोरछुरप्रनछोंडिकैछायो । वानरीसैनअचैनकियोबलऐनसोंभैनकछूउरलायो ॥ २१ ॥
रामहूँरावणकेशरकाटिसमीपमेंजाइकैबैनसुनायो । रेशठचोरनमोरलख्योबलसूनेमेंजानकीकोहरिलायो ॥
सोफलपाइहैआजइहाँजोपराइनजैहैवरैडरछायो । वासवकेनहिंधोखेरहैअबजानुरेदासरथीइतैआयो ॥ २२ ॥
रामऔरावणह्वैअतिक्रुद्धकरैलगेयुद्धत्रिलोकभयावन । बाणकेपंखकेवेगतेसातहूसिंधुभेक्षोभितभीतिबढ़ावन ॥
ज्योंहैअकाशसमानअकाशऔसागरकेसमसागरपावन।त्योंकविकौनबखानिसकैसँगरामभयोजसरामऔरावन ॥
कालसमानलैबाणतहाँअभिमंत्रितकैअतिआनँदभीने । शत्रुहिकोवधचित्तमेंचोपिकैरामचलायप्रकोपितदीने॥२३॥
लागतहींउरफोरिकैआशुहीरावणकेहरिप्राणहिलीने । भूमिगिरयोरथतेदशकंधरहाहापुकारनिशाचरकीने ॥ २४॥
रावणरानीसुनीपतिकोवधबोलतबैनअचैनअधीनी । औरहुनारीभरीदुखभारीपुकारिपुकारीविलापहिकीनी ॥
आपनेआपनेकंतनकेशिरआपनेआपनेअंकनिलीनी।सूरजचंदलख्योजिनकोनहिंतेपुहुमीमेंपरींपटहीनी॥२५॥२६॥
रानीमँदोदरीशोकभरीशिरहाथधरेअसबैनउचारयो।ह्वैपतिकामकेवश्यनहींरघुनाथत्रिलोककेनाथविचारयो ॥२७॥
आनिघरैपरदारकियोकुलछारहमारहुगर्वहुगारयो । जानकीकेविधवाकरिवेहितलंकापुरीविधवाकरिडारयो ॥२८॥

श्रीशुक उवाच ।

रावणरानिनरावणभ्रातबुझायकैआशुगृहैपठैदीन्ह्यों । लैप्रभुशासनरावणकोतहँप्रेतकोकर्मसबैकरिलीन्ह्यों ॥
लोकसरन्निनित्रलोकमेंधन्निअनन्निसुभक्तहिआपनोचीन्ह्यों । रामहूँरामानुजैकोपठायविभीषणैलंककोनायककीन्ह्यों॥
दैकलपांतविभीषणैआयुषताहिऔपौनकुमारैपठाई । दूबरीद्वैजशशांकसीशोकतेसीतैअशोकवनैतेबोलाई ॥
पावकतेलहिकैरघुनंदनआपनेअंकलियोबयठाई । पीयकेसंगमेंसीयलसीज्योंतमालमेंहेमलताछबिछाई ॥३०॥३१॥
राक्षसराजकोवानरराजकोआपनेभ्राताहित्योंहनुमानैं । वानरीसैनचढ़ायकैआपहुजानकीलैप्रभुबैठेविमानैं ॥
दाशरथीनिजपूरप्रणैकरिऔधपुरीकोकियोहैपयानैं । वासवब्रह्माशिवादिकदेवप्रसूननवर्षिचरित्रबखानैं ॥३२॥३३॥
वासरपांचमैंमाँगिगोमूत्रचुरैजबसूखहीनेकअहारी । भूमिमेंशैनकरैंदिनरैनतजेंनिजपैनजटाजिनधारी ॥
आयप्रयागऋषीशतेयांसुन्योकेकईनंदनकोव्रतभारी।लज्जितह्वैगयोलंककोईशकपीशहूहोतभेरामदुखारी ३४॥३५॥
श्रीरघुनायकआवनकीभरतौहनुमानमुखेसुधिपाई । पौरअमात्यपुरोहितलैसँगपादुकाशीशधरेहरषाई ॥ ३६ ॥

गावतबाजनकोबजवावतविप्रनवेदपढ़ावतचाई । नंदिगिरामतेपायनसोंनिजनाथकोलेनचल्योअगुआई ॥ ३७ ॥
हेमपताकेरथैफहरैंत्योंहजारनमत्तमतंगतुरंगा । त्योंकनकैकवचैपहिरैभटरामकेदेखनछायेउमंगा ॥
वारवधूकेरैमंमलगानलियेवटमंगलसाजिकैसँगा।वारहिंवारविलोकैविमानभयोतिनकोक्षणकल्पअभंगा॥३८॥३९॥
केकईकेरोकुमारतहाँलखिकैदशरत्थकुमारकोधाई । प्रेमभरोपरोपायनमेंअतिचायनदेहदशाबिसराई ॥ ४० ॥
रामहूधायउठायलगायलियोउरमेंद्दगमेंजलछाई । आनँदतोंनसमैकोकहोरसनाइकसोंकविकोसकैगाई ॥
लक्षनहूभरतैकियोवंदनजानकीकोभरतौशिरनाये ॥ ४१ ॥ एकहींवारयथोचितरामामिलेपुरवासिनकोसुखछाये ॥
कौशलवासीभयेसुखराशीसुफूलनआँसुनकीझरिलाये । भावकेसाँचेसुप्रेममेंराँचेसबैतहँनाचेपटैफहराये ॥
लीन्हेसुकंठविभीषणचौरसुछत्रसितैलियेपौनकुमारहै४२॥४३शत्रुकेसूदनचापनिषंगकमंडलुजानकीपाणिउदारहै॥
लक्षणपंखाकृपाणकोअंगदढालकोऋक्षमकोसरदारहै४४वंदिनवंदितपुष्पविमानमेंरामलसेशशिज्योंयुततारहै ४५॥
आवतभेइमिऔधनरेशसोऔधपुरीभईऔधिअनंदै । रामवसिष्ठकेपायनमेंपरिनाइयोवियोगहिकोदुखदंदै ॥
राजनिवासमेंजायकैफेरिसोमातनपायपरेकुलचंदै तिऊउठायलगायलियेंद्दगवारिसोंसींचेसुतैसुखकंदै ४६॥४७॥४८
चारिहुबंधुनकेतहँआयवसिष्ठजीशीशजटानिरवारे । चारोंसमुद्रनकोजलआनिसबैअभिषेककीसाजुसँवारे ॥
जानकीसंयुतश्रीरघुनाथकोहेमसिंहासनमेंबयठारे । तीनिहुँलोकनकेतिलकैतिनकोतिलकैगुरुमोदितसारे ॥ ४९ ॥
आनँदकंदतहाँरघुनंदपदैयुवराजभरत्थकोदीन्ह्यो । शत्रुकेसूदनकोदियोकोशसुलक्षनैंलक्षनैसेवककीन्ह्यो ॥ ५० ॥
पाल्योप्रजानिकोपुत्रसमानप्रजाहूपितासमरामकोचीन्ह्यो५१त्रतायुगैअपनेपरभावतेराघवआदियुगैकरिलीन्ह्यो५२
रामहिराजाभयेमहिमेंसबकेगयेपूजिमनोरथभारी । आधिहूव्याधिजराभयशोककोपायकेकोऊभयेनदुखारी॥५३॥
मीचहूआईनचाहेबिनासबभाँतिरहेसबलोगसुखारी । ह्वैगेसनाथअनाथसबैजगकौशलनाथसोनाथनिहारी ॥ ५४ ॥

घनाक्षरी–एकनारिव्रतवारेधर्मवारेयशवारेनीतिवारेसबैलोगसीखदेनवारेहैं ।
सुखदअशोकवाटिकाकेसोविहारवारेसीतासंगमोदवारेरसरूपवारेहैं ॥
अधमउधारवारेशत्रुनसंहारवारेक्षमाकीसमानक्षमावारेतेजवारेहैं ॥
मुनिमनवासवारेदीननपैदयावारेदीनरघुराजैदयाबखशनवारेहैं ॥

दोहा–सीयप्रेममेंमोहिकै, श्रीदशरत्थकुमार ॥ दशसहस्रसंवतसुभग, कीन्हेविपुलविहार ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे दशमस्तरंगः ॥ १० ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–लोकनशिक्षाहेततहँ, यज्ञरूपश्रीराम ॥ अश्वमेधमखकरतभे, मुनिनसंगतपधाम ॥ १ ॥

यज्ञदक्षिणामहँमहराजा । होतहिदियोपूर्वदिशिराजा ॥ ब्रह्माकहँदक्षिणदिशिदीन्यों । पश्चिमअध्वरजैसुखभीन्यों ॥
उत्तरदियउदगाताकाहीं॥२॥दियोमध्यकीमहिगुरुपाहीं ३करहिंभोगद्विजअवनिअपारा।ऐसोप्रभुमनकियोविचारा॥
युगपटराखिरामवयदेही।दियोद्विजनसबद्विजनसनेही४ब्रह्मण्यतानिहारिविप्रवर।प्रीतिसहितद्विजकह्योजोरिकर॥५॥

ब्राह्मणा ऊचुः ।

पालहुपुहुमीत्रिभुवननायक । तुमसमतुमहिंअहौरघुनायक॥प्रगटितेजकरिहृदयप्रवेशा॥ नाशहुतमअज्ञानकलेशा॥
दोहा–अबप्रभुबाकीकारह्यो, तुमहिंदेनकहनाथ ॥ ब्राह्मणतेनहिंहोइगी, यहमहिसदासनाथ ॥ ६ ॥
जयब्रह्मण्यदेवधनुधारी । जयरघुनंदनअवधविहारी ॥ मतिअकुंठवैकुंठनिवासी । जयअतिपावनसुयशप्रकासी ॥

जयजयधराधर्मधुरधारी। जयमुनिमानसविमलविहारी॥ इमिसुनिद्विजनवचनरघुराई।धनदैपाल्योपुहुमिसुहाई७॥
एकसमयअसकियउतयोगू। इमकोकहाकहतसबलोगू॥ असविचारिनिजवेषछिपाई। अर्द्धरातिमहँश्रीरघुराई॥
अवधनगरमहँवागनलागे।गलिनगलिनसिगरीनिशिजागे।।८।।तियसोंरजककह्योयकमाली।तैंकुलकीमरयादनराखी॥
दोहा—परघरमेंरहिकैअरी, आईमेरेपास॥ अबतोकोंनहिंराखिहौं, सहिअपनोउपहास॥
मोहिंनरामचंद्रसमजाने। परघरतेजेनिजतियआने॥ ९॥ ऐसोसुनिअपनोअपवादा। रघुनंदनहियभयोविषादा॥
तहाँजानकीकोरघुराई। बालमीकिआश्रममेंपठाई॥ तहँकुशलवद्वैभयेकुमारा। जातकर्ममुनिकियेउदारा॥ ११॥
अंगदचित्रकेतुबलवाना। लपनपुत्रभेअतिमतिमाना॥ पुष्कलतक्षभरतकेजाये। परमधनुर्धरजगयशछाये॥१२॥
रिपुहनसुतसुबाहुश्रुतसेना। भयेबलीनाशकरिपुसेना॥ भरतजायउत्तरकीओरा। हनिगंधर्वनतीनिकरोरा॥१३॥
दोहा—तहँनिजपुत्रनराजदै, लैधनअवधहिआय। रघुनंदनकोनजरकिय, अतिआनँदउरछाय॥
रिपुहनलवणासुरहिनशाई१४मधुवनमेंवनपुरीबसाई॥कुशलवसीयसौंपिमुनिकाहीं १५सुमिरिरामप्रविशीमहिमाहीं॥
सोसुनियदपिधरचोप्रभुधीरा१६पैसियसुधिकरिभयेअधीरा॥ ऐसोहैनरनारिप्रसंगा॥१७॥करतईशहूकोचितभंगा॥
तौविषयीजनकोनरराई। अचरजकौनहोबदुखदाई॥ तीनिहजारवर्षरघुराई। धारिब्रह्मचर्जैचितलाई॥
कीन्हेंअग्निहोत्रमखनाना।दैदक्षिणाद्विजनसनमाना॥१८॥पुनिप्रभुसबैअयोध्यावासिन।कीटभृंगपशुपक्षिनिरासिन॥
दोहा—लैअपनेसँगमेंसकल, रघुपतिकृपानिधान। भ्रातनसखनसमेतप्रभु, कियसाकेतपयान॥ १९॥

श्लोक—नेदं यशो रघुपतेः सुरयाच्ञयात्तलीलातनोरधिकसाम्यविमुक्तधाम्नः॥
रक्षोवधोजलधिबन्धनमस्त्रपूगैः किं तस्य शत्रुहनने कपयः सहायाः॥ १॥
यस्यामलं नृपसदस्सु यशोऽधुनापि गायन्त्यघघ्नमृषयो दिगिभेंद्रपट्टम्॥
तन्नाकपालवसुपालकिरीटजुष्टपादाम्बुजं रघुपतेः शरणं प्रपद्ये॥ २॥

कवित्त—देवनकीदायादेखिमनुजस्वरूपधारिधरमविचित्रकियोलीलासुखछावनी।
तिनकोसुयशऐसोबहुतनजानोजातजाकीएकबारनातिनरकनशावनी॥
भाषैंरघुराजकोईअधिककहाँतेहोइनेकहूसमानताईकहूपैनआवनी।
ताकेसेतुबंधनमेंखलनकेखंडनमेंकपिनकीसेनक्योंसहायकीकरावनी॥ २०॥
पापकेनशावनप्रमोदउपजावनादिशानादिग्गजानभालपट्टसेसोहावैहैं॥
अबलोंगिरीशऔगिरेशऔनरेशनकेसभामध्यजायकैमुनीशसबैगावैहैं॥
ऐसेरघुनंदनपदारविंदरघुराजवंदनकरतदुखद्वंद्वकोनशावैहैं।
जिननखज्योतिभूमिपालदिगपालनकेमुकुटमणीनकेप्रकाशकोबढावैहैं॥ २१॥

सवैया—रामकेजेतनकोपरसेअरुरामकीमूरतिजेदरसे। अरुरामकोआदरजेउकियेअरुरामकेसंगचलेधरसे॥
रघुराजजेरामकीराजबसेअरुरामविलोकनकेतरसे। सिगरेबसितेअपराजितमेंनितरामैविलोकिनितैहरसे॥२२॥
कोटिशतैअहैरामचरित्रत्रिलोककेवासिनमोदबढ़ावै। प्रीतिप्रतीतितेताकोसुनैकहोकौतुकजोफलचारिहुपावै॥
भाषतहैरघुराजसुनोइकआखरजोमुखतेकढ़िआवै। ह्वैकैअपापसोरामप्रतापतेरामकेधामविशेषिसिधावै॥
दोहा—यहसुनिकैकुरुपतिनृपति, अदभुतआनँदपाय। पुनिपूछ्योशुकदेवसों, रामचरितचितलाय॥ २३॥

राजोवाच।

कौनआचरणतेश्रीरामा। रहतभयेकौशलपुरधामा॥ भ्रातनपुरवासिनसुखरासी। केहिविधिकीन्हेंपरमहुलासी॥
अरुभ्रातापुरवासीरामै।केहिविधिसेवनाकियसुखधामै॥सुनिकुरुपतिकेवचनसुहाये।कहनलगेश्रीशुकसुखछाये॥२४॥

श्रीशुक उवाच।

राजतिलकजबभयोरामको। पायेतबसबसकलकामको॥ तबनिजभ्रातनकोसुखछाये।करनदिगविजयरामपठाये॥
प्रजनपितासमपालनकीन्ह्यो।मातनबालसरिससुददीन्ह्यो॥गजचढ़िदललैकरीसिंगारा।कहुँकहुँखेलनकढ़हिंशिकारा।

दोहा-निरखहिंनगरनवीनछवि, नितप्रतिश्रीरघुनंद । पुरवासीलखिरामको, नितनवलहैंअनंद ॥ २५ ॥
गलिनगलिनगुलाबजलसींच्यो।तिसहितहँगजमदकुंडलीच्यो।।अवधपुरीलखिमनुश्रीरामे।ढारतआनँदआँसुनग्रामैं२६
दरवाजेदराजतहँराजे । अतिउतंगमंदिरअतिभ्राजे ॥ कनककलशविलसैंतिनमाहीं । सभादेवग्रहदिपैंतहाँहीं ॥
फहरहिंफविफविविमलपताका।अरुजांहिजिनमहँरविरथचाका।कदलीफलपल्लवयुतकलसें।सुमपटसहितद्वारप्रतिविलसें॥
ललितआरसीकलितकेवारे । बँधेबोरयुतवंदनवारे ॥ तेजवंततहँतनेविताने । मनुवहुरंगमेघदरशाने ॥
दोहा-मणिनसहिततोरणसजे, झालरिमुक्तनकेरि । स्वच्छगवाक्षविराजहीं, अच्छरतनोंहेहेरि ॥ २८ ॥
जहँजहँआवैअवधविलासी । तहँतहँअवधनगरकेवासी ॥ मंगलसाजुसाजिकरथारन । खडेहोहिंनिजद्वारनद्वारन ॥
निरखिरामकोआशिषदेहीं । जीवौसदारामवैदेहीं ॥ धरिवराहवपुधरणिउधारी । तातेअवपालहुधनुधारी ॥ २९ ॥
चौदहवर्षवसेवनमाहीं । चौदहिंकल्पगयेहमकाहीं ॥ असकहिचढ़िचढ़िऊँचअटारी । बरषहिंसुमनमुदितनरनारी ॥
अनमिषनिरखहिरघुपतिआनन।नवनवछविछाकहितनभानन॥खेलिशिकारएनजबआवैं।लखिसुंदरमंदिरसुखपावैं॥
दोहा-राममहलकीसंपदा, लखिलखिकेदिगपाल । सकुचिसकुचिमनमेंरहें, लघुगुनिदिवितेहिकाल ॥ ३१ ॥
विद्रुमकीदेहरीविराजैं । पन्ननकेखंभाअतिभ्राजैं ॥ स्फटिकफरशसोहैंछविश्रेणी । मनुथलथलमेंलसीत्रिवेणी॥३२॥
फैलिरह्योजहँमणिनप्रकासा । मुक्तझालरैंकरहिंविलासा॥ चंदचाँदनीसरिसचाँदिनी।चितवतहीमुनिमननिफाँदिनी॥
बनेविचित्रविलासनेवासा।भोगसाजसबकरहिंप्रकासा॥३३॥सुरभितधूपधूमचहुँओरा।फैलतपरिमलपवनझकोरा ॥
सुमनसेजतहँपरमसुहावनि।मणिनदीपअवलीसुखछावनि॥सुछविमयीतहँसखीसुहाहीं।जिनहिंदेखिरतिरमालजाहीं॥
दोहा-रसिकशिरोमणिजायतहँ, श्रीरघुवंशकुमार । जनकललीकेसंगमहँ, नितप्रतिकरहिंविहार ॥ ३५ ॥
यहिविधिकौशलनगरमहँ, निवसहिश्रीरघुनाथ । धर्मधरतप्रगटतसुयश, करतप्रजानिसनाथ ॥ ३६ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबान्धवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे एकादशस्तरंगः ॥ ११ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-कुशकेअतिथिकुमारभो, भयोनिषधसुततासु । ताकेभयोनरेशनभ, पुंडरीकसुतजासु ॥
ताकेक्षेमधन्वसुतजायो ॥ १ ॥ देवानीकतासुसुतभायो ॥ तासुअहीनपुत्रबलवाना । पारिजाततासुतमतिमाना ॥
ताकेबलभोबलकोधामा । ताकेथलभोगुरुनिललामा ॥ ताकेवज्रनाभमहिपाला । सूर्यअंशतेभयोविशाला ॥ २ ॥
तासुतखगनविधृतनृपताते । भयोहिरण्यनाभसुतजाते॥ जैमिनिशिष्यभयोसोराजा । जेयोगाचारजतपभ्राजा॥३॥
हिरणनाभसोंयाज्ञवल्क्यमुनि।योगशास्त्रपढ़िलीन्ह्योबुधगुनि॥जाकेपढ़ेविमलमतिहोवै।वरवसहृदयग्रंथिकहँखोवै॥४॥
दोहा-हेमनाभकोपुहुपसुत, ध्रुवसंधिहुसुततासु ॥ भयोसुदर्शनतेहिसुवन, अग्निवरणसुतजासु ॥
ताकेशीघ्रभयोमहिपाला।शीघ्रसुवनभोमरुतविशाला॥५॥योगसिद्धजेहिपरमप्रतापा।अबलोंनिवसतग्रामकलापा ॥
जबरविवंशहिनाशहिहोई । कलियुगअंतचलैहैसोई ॥ ६ ॥ मनुकेभयोप्रसुश्रुतवीरा । तेहिंसुतसंधिमहारणधीरा ॥
तेहिसुतभयोअमरषणनामा।महस्वानतासुतबलधामा।।ताकेविश्वसाहुनृपभयऊ॥७॥नृपप्रसेनजिततासुतठयऊ ॥
ताकेतक्षकभयोकुमारा । तासुबृहदबलसुवनउदारा ॥ भारतसमरमाहँकुरुराई । आपपितामारचोतेहिंजाई ॥ ८ ॥
दोहा-यहइक्ष्वाकुसुवंशमें, अवलोंभेयेभूप ॥ अबजेह्वैहैंभूपवर, वरणोंतिन्हैंअनूप ॥
अबतेहिंसुवनबृहद्रनह्वैहै ॥ ९ ॥ तासुउरुक्रियसुतयशछैहै ॥ ताकेवत्सवृद्धसुतहोई । प्रतिव्यौमतासुतखलखोई ॥
तासुभानुसुततासुदिवाकू ॥१०॥ ह्वैहैसुतसहदेवहुताकू ॥ तासुतबृहदअश्ववरवीरा । भानुमानुतासुतरणधीरा ॥
प्रतीकाशुसुतभानुमानुको । सुप्रतीकसुततासुमानुको ॥११॥ तासुतह्वैहैपुनिमरुदेवा । तासुतशुननक्षत्रनरदेवा॥

ताकोसुतपुष्कलपुनिह्वैहै । तासुतअंतरिक्षमुददैहै॥ पुनिह्वैहैसुतपासुतताको।पुनिअमित्रजितपरमप्रभाको ॥१२॥

दोहा–बृहदभोजपुनिह्वोइगो, तासुसुवनबलवान ॥ ताकोसुतवरहीप्रगट, करिहैसुयशमहान ॥

तासुऋतंजयसुतपुनिहोई । तासुरनुंजैसुतमुदमोई ॥ ह्वैहैतेहिसुतसंजयनामा॥१३॥तेहिसुतशाक्यपरमबलधामा॥

ताकेसुतशुद्धेतसुजाना । तासुतलांगलअतिबलवाना॥ताकोसुतप्रसेनजितवीरा । ताकोसुतक्षुद्रकमतिधीरा॥१४॥

रनककुमारहोइगोताके । तासुतसुरतनिधानविभाके ॥ ताकेह्वैहैपरमउदारा । जाकोनामसुमित्रउचारा ॥

येतेभूपबृहदबलतेरे । ह्वैहैंभूतलबलीघनेरे ॥ नृपसुमित्रलगिनृपअवतंसा । कियइक्ष्वाकुवंशपरशंसा ॥ १५ ॥

दोहा–यहइक्ष्वाकुनरेशको, वंशविमलमहिमाहिं ॥ नृपसुमित्रतेजगतमें, चलिहैंभूपतिनाहिं ॥ १६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे द्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–नृपइक्ष्वाकुकुमारभो, निमिनरपतिकुरुराय ॥ यज्ञकरनहितसोकह्यो, गुरुवसिष्ठतेजाय ॥

मोहिंमखकरवावहुगुरुज्ञानी । तबवसिष्ठबोलेअसवानी ॥ प्रथममोहिंवासवबोलवायो । इतैआशुमेरेढिगआयो ॥१॥

सोमैंइंद्रहिमखकरवाई । तुमहिंकरैहौंपुनिइतआई ॥ तबलौंतुममोहिंपरख्योभूपा । कियोनकौनहुयज्ञअनूपा ॥

सुनिराजाचुपरह्योतहाँहीं।गेमुनिमघवाकेमखमाहीं॥२॥निमिअनित्यनिजजानिशरीरा।औरेनऋत्विजलैमतिधीरा ॥

यज्ञकरनलागेअतिहरषे । गुरुवसिष्ठआगवननपरिषे ॥३॥ उतवासवकोयज्ञकराई । आयलख्योनिमिमखमुनिराई॥

दोहा–निरख्योअपनेशिष्यको, कियोजोआज्ञाभंग ॥ दियोशापनिमिराजको, करिकैकोपअभंग ॥

रेमूरुखपंडितअभिमानी । कियोयज्ञममकहोनमानी ॥ तातेहोइतोरतनपाता । जामेंकरहिनकोउअसबाता ॥ ४॥

निमिहुगुरुहिदीन्ह्योंतवशापा।तुमहुँत्यागितनलहहुसँतापा॥करिकैलोभमोरमखछोडी।लियोजाइवासवमखओडी ५

तज्योभूपतनशापहिभाषी । सक्योवसिष्ठहुनहिंतनराषी ॥ एकसमयउरवशीनिहारी । मित्रावरुणवीर्यतजिभारी ॥

राख्योकुंभमाहँतेहिकाला । तेहितेभयेवसिष्ठभुवाला ॥६॥ तेलमाहँद्विजनृपतनराषे।मखकरिपूरसुरनसोंभाषे ॥७॥

दोहा–जोतुमहोहुप्रसन्नतौ, निमिकोदेहुजिआय ॥ सुरतथास्तुसबकहतभे, तबनिमिकह्योबुझाय ॥

मैंनाहिंचाहौंअबतनकाहीं८जेहिंवियोगभयमानिसदाहीं॥पुनिसंबंधचहैंमुनिनाहीं।भजतरहैंहरिपदमनमाहीं ९॥१०॥

तबसबदेवनृपहिगुनिज्ञानी । बोलेपरमप्रमोदितवानी ॥

देवा ऊचुः ।

निमितुमवसहुनिमिषमहँजाई । मूँदहुप्रगटहुनैनबनाई॥तबतेह्वैविदेहदृगमाहीं । निमिनिवसतसवजीवनपाहीं ॥११॥

बिनभूपतिभूनिरखमुनीशा॥द्विजसबनिमितनमथ्योमहीशा॥तातेप्रगटच्योएककुमारा॥कियोजोमहिमेंधर्मअपारा १२

भयोविलक्षणजन्मसुहायो । तातेजनकनामसोपायो ॥

दोहा–भयोनजीवतदेहते, तातेभयेविदेह । मंथनतेसोमिथिलभो, मिथिलारच्योसनेह ॥ १३ ॥

तासुउदावसुभयोकुमारा । नंदीवर्धनतासुउदारा ॥ तासुसुकेतुतासुसुरराता ॥ १४ ॥ तासुबृहद्रथजगविख्याता॥

ताकेमहावीर्यनरनाहा । ताकेसुधृतिभयोगुनवाहा ॥ ताकेधृष्टकेतुबलवाना । ताकेभोहरियश्वमहाना ॥

ताकेमरु–१५–मरुपुत्रप्रतीयक॥ताकेभोकृतरथकुलदीपक॥ताकेदेवमीढमहराजा । ताकेविश्रुतकृतद्विजकाजा ॥

तासुमहाधृतभयोकुमारा ॥१६॥ तासुतभोकृतिरातउदारा॥ तासुमहारोमाबलवाना । तासुस्वर्णरोमामतिमाना॥

दोहा–तासुह्रस्वरोमाभयो, ॥१७॥ ताकेनृपतिप्रधान । सीरध्वजमहराजभे, सीतापितासुजान ॥

यज्ञहेतकरषतमहिमाहीं । सीतासुतामिलीतिनकाहीं ॥ १८ ॥ सीरध्वजकेभयेकुशध्वज । भयेकुशध्वजकेधर्मध्वज॥

दुइसुतभेधर्मध्वजकेरे। कृतधुजमितधुजज्ञानघनेरे॥१९॥केशध्वजभेसुतसुतधुजके। भेखांडिक्यपुत्रमितधुजके॥ केशिध्वजभोआतमज्ञानी२०कर्मकांडखांडिकलियजानी॥केशिध्वजभूपतिभयपाई।खांडिकअनुजवस्योवनजाई॥ केशिध्वजकेभानुमानभो।तासुतशतद्युम्नद्युप्रधानभो ॥२१॥ ताकेशुचिभोनृपतिप्रधाना।ताकेसनद्वाजमतिमाना ॥

दोहा-ऊर्ध्वकेतुताकेभयो, ताकेअजसुकुमार। ताकेपुरजितहोतभो, सिगरेगुणनअगार ॥ २२ ॥

भोअरिष्टनेमीसुतताके। परमबलीश्रुतायुभोजाके ॥ भयोसुपार्श्वश्रुतायुकुमारा। तासुचित्ररथपरमउदारा ॥ ताकेक्षेमधिमिथिलाधीशा ॥२३॥ ताकेसमरथभयोमहीशा ॥ तासुसत्यरथभयोसुजाना।ताकेउपगुरुभोबलवाना॥ तासुपुत्रउपगुप्तप्रशंसा। भयोभूपसोपावकअंसा ॥ २४ ॥ वस्वनंतताकेबलवाना। ताकेभोभूपतियुयुधाना ॥ ताकेभयोसुभाषणवीरा। ताकेश्रुतताकेजयधीरा ॥ जयकेविजयपुत्रऋतुताके॥२५॥शुनकतासुसुतपरमप्रभाके ॥

दोहा-वीतिहव्यताकेभये, जेकीन्हेंबहुयाग। ताकेधृतनरनाहभे, जेकियहरिअनुराग ॥

तिनकेश्रीबहुलाश्वभो, मिथिलाकियोसनाथ। आपहितेजिनकेसदन, जातभयेयदुनाथ ॥

भेबहुलाश्वनरेशके, कृतिकुमारमतिधाम। तिनकेमहावशीभये, जेपूरेद्विजकाम ॥ २६ ॥

येतेमिथिलाकेभये, महाराजमतिमान। हरिप्रसादतेघरहुमें, निवसेमुक्तसमान ॥ २७ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदांबुनिधौ नवमस्कंधे त्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

शुक उवाच।

दोहा-सोमवंशअतिपावनो,अवसुनियेकुरुराय। पुण्ययशीजहँहोतभे, ऐलादिकसमुदाय ॥ १ ॥

हरिनाभीतेसरसिजजायो। तामेंब्रह्माजनमहिपायो ॥ ताकेअत्रिपुत्रमतिमाना। अपनेगुणतेपितासमाना ॥ २ ॥ तिनकेदृगतेपरमप्रकासी। भयोचंद्रमाजगतहुलासी ॥ विप्रऔषधीउडुगणकेरो। ब्रह्माताकोनाथनिबेरो ॥ ३ ॥ त्रिभुवनजीतिविजयमदपागा।राजसूयकीन्ह्योंतवयागा॥नारिबृहस्पतिकीतहँआई।हरिलीन्ह्योंतेहिंविधुबरियाई॥४॥ गुरुमाँग्योनिजतियबहुबारा।पैनचंद्रकियदेनविचारा॥लैगुरुतियशशिशुक्रहिपाहीं।जातभयोरोषितमनमाहीं ॥ ५ ॥

दोहा-शुक्रबृहस्पतिवैरगुनि, कीन्ह्योंचंद्रसहाय। इतसुरगुरुकीओरभे, शिवगणयुतहरपाय ॥ ६ ॥

सुरपतिसुरनसहितगुरुओरा। होतभयोकरिकोपअथोरा ॥ उतदानवशुक्रहिढिगजाई। कीन्ह्योंशशिकीसबैसहाई॥ भयोसुरासुरकोसंग्रामा। समरतारकामयजेहिंनामा ॥ ७ ॥ तबअंगिरागयेविधिपाहीं। कह्योसोमकोकर्मतहाँहीं ॥ तबब्रह्माअतिकोपहिछाई। निंदाकरिसोमहिंडेरवाई॥ तारहिदियोबृहस्पतिकाहीं। गर्भवतीगुरुलख्योतहाँहीं॥८॥ तबकोपितबोलेतारासों। पापिनडरीनअबभारासों ॥ परकृतगर्भक्षेत्रममधारे। ताहित्यागुतैंबिनहिंविचारे ॥

दोहा-मैंकरिदेहौंभस्मतोहिं, करिकैकोपप्रकाश। पैसंततिकीआशकरि, तोकोंकरहुननाश ॥ ९ ॥

तबलज्जितह्वैकेतहँतारा। जनमीसुवरणवरणकुमारा ॥ सुरगुरुसुंदरशिशुहिंनिहारा। कहनलगेसुतअहैहमारा ॥ तबचंद्रमाकह्योअसिबानी१०यहतोसुतमेरोगुणखानी॥शशिशशिगुरुकोभयोविवादा।तबसुरमुनिराखनमरयादा ॥ तारासोंपूँछ्योअसजाई। काकोसुतयहदेहुबताई ॥ तबलज्जिततारानहिंबोली। काहूसोंसुतमरमनखोली ॥ ११॥ तबमातासोंकुपितकुमारा। बोल्योहमकाकेहैंबारा ॥ रेदुरमतितैंदेहिबताई। काहेतेंअबवृथालजाई ॥ १२ ॥

दोहा-ताहूपैबोलीनहीं, तबब्रह्माढिगजाइ ॥ तारहिलैएकांतमें, पूँछतभेसमुझाइ ॥

मंदमंदबोलीतबतारा। अहैचंद्रमाकोयहबारा ॥ तबचंद्रमापुत्रकहँलीन्ह्यों ॥ १३ ॥ निधिबुधतासुनामधरिदीन्ह्यों ॥ बुद्धिमानविधुबुधसुतदेखी।लह्योसकलविधिमोदविशेषी १४ तासुइलातियमहँकुरुराजा।प्रगट्योपुरूरवामहँराजा॥ तासुशीलगुणरूपउदारा ॥१५॥ नारदभन्योदेवदरबारा ॥ सुनिसोंगैउरवशीलोभाई।पुरूरवाभूपतिढिगआई॥१६

मित्रावरुणशापतेहिंदीन्ह्यों । तेहिंतेअवनिआगवनकीन्ह्यों॥कामसमानरूपनृपकेरो।तैसहिंबलहुप्रतापघनेरो॥१७॥
दोहा–ऐसोनिरखिपुरूरवै, तिरछोहेतेहिंलाकि ॥ व्यथितपंचशरशरनते, खड़ीभईछबिछाकि ॥
तेहिंलखिपुरूरवौमहिपाला।अतिमोदितदृगकंजविशाला॥अंगअंगपुलकावलिछाई।गिरामाधुरीताहिसुनाई ॥१८॥

पुरूरवा उवाच ।

भलीकरीसुंदरिजोआई । बैठोममसमीपसुखछाई ॥ करोंकाममैंकौनतिहारो । सोहमसोंअबवेगिउचारो ॥
विधुवदनीअबवर्षअपारा । मेरेसँगमेंकरहुविहारा ॥ १९ ॥ सुनिकैपुरूरवाकेवैना । कह्योउरवशीउरभरिचैना ॥

उर्वश्युवाच ।

तुमहिंनिरखिअसकोजगमाहीं । जातियकोमनमोहतनाहीं ॥
दोहा–लालनतवउरलगतहीं, बालदशाअसिहोइ ॥ तजिकुलकानिसयानिहू, त्यागिसकैनहिंकोइ ॥ २० ॥
येदुइपालहुमेषहमारे । अहैंपुत्रसमपरमपियारे ॥ देहुभूपहमकोयहमाना । तुमसमानकोऔरसुजाना ॥
मेषनजबलौंपालनकरिहौं । तबलौंमोसँगमेंमुदभरिहौं ॥ तुमललनागणकेमनहारी । धराधर्मधुरकेध्रुवधारी ॥ २१॥
पुरूरवाहेसुछबिनिकेतू । देहुमोहिंघृतभक्षणहेतू ॥ बिनमैथुनतोहिंनगननरेशा । निरखतमैंजैहौंनिजदेशा ॥
तबराजातथास्तुकहिदीन्ह्यों । परमानंदमनहिंगुनिलीन्ह्यों॥२२॥पुनिमोदितबोलेनृपराई । तेरोवपुनरपुरसुखदाई॥
दोहा–अपनेतेआईनिरखि, तोकोंसुषमाखानि ॥ कोअसजोसेवैनहीं, यहजगमेंसुखमानि ॥ २३ ॥
असकहिनरवरसुंदरिसंगा । विहरनलगेरचतरतिरंगा ॥ चैत्ररथादिकवननउदारा । कियेउर्वशीसंगविहारा ॥ २४ ॥
कमलसरिससुखसौरभताको।निशिदिनसेवनकरतनथाको॥यहिंविधिबीतिगयेबहुकाला।जातनजान्योंदिवसभुवाला
बिनाउर्वशीसभानिहारी । सुरपुरसुरपतिभयोदुखारी ॥ तबगंधर्वनकाहिंबोलायो । ऐसोशासनतिनहिंसुनायो ॥
बिनाउर्वशीसभाहमारी । फीकीसबविधिपरतिनिहारी ॥
दोहा–तेहितेआशुहिअवनिते, जायलैआवहुताहि ॥ सोसुनिकैगंधर्वसब, गवनेसोइचितचाहि ॥ २६ ॥
अर्धरातिभूपतिगृहआये । युगलमेषलैस्वरगसिधाये ॥२७॥ मेषकियेतबआरतशोरा । सुनिउरवशीजगीतेहिठोरा॥
निजसुतहरणउरवशीजान्यों । रोवतऐसेवचनबखान्यों ॥ नृपतिनपुंसककेवशपरिकै । भईअपुत्रामैंदुखभरिकै ॥
हैनवीरयहमानतवीरा । याकेनाहिंकछुहैममपीरा ॥ ऐसोमैंकुतासितपतिपाई । अपनीगतिसबदियोनशाई ॥ २८ ॥
बलीविलोकिकियोविश्वासा । यहिधोखेममसुतभेनासा ॥ लियेजातमेरेसुतचोरा । धावतनाहिंसोवतयहिंठोरा ॥
दोहा–जागतहैपरयंकमें, परोनजातडेरात ॥ जिमिनारीसोसकुचवश, बाहरकढोनजात ॥ २९ ॥
उरवशिवचनबाणजबमारयो । जिमिगजकोउअंकुशप्रहारयो ॥लैतरवारिनगननरराई।कोपितगयेमेषहितधाई३०॥
तबगंधर्वमेषतजिभागे । भूपतिमेषपाइसुखपागे॥ तेहिक्षणदमकिउठीतहँदामिनि।नगनलख्योनरपतिकहँभामिनि ॥
पूर्वप्रतिज्ञाजानिउरवसी । तेहिंक्षणजाइस्वर्गमहँनिवसी॥३१॥भूपतिमेषनलैतहँआये।नलखिउरवशीकहँदुखपाये ॥
अतिविह्वलह्वैमत्तसमाना । फिरनलगेकरिशोचमहाना ॥ खाननहानपाननृपत्यागे । उरवशिहेतरैनदिनजागे ॥३२॥
दोहा–यहीभाँतिविचरतनृपति, कुरुक्षेत्रमहँजाय ॥ सखिनसहितलखिउरवशिहिं, बोलेधायहहाय ॥ ३३ ॥

पुरूरवा उवाच ।

रेउरवशीखड़ीरहुप्यारी । अबहूँतैंकरुसुरतिहमारी ॥ ममसंकटकाटहिसुकुमारी । तजैनअबमोहिंदासविचारी ॥
चलिएकांतबोलहिमृदुबैना । अबैनपूरभयोरतिचैना॥३४॥जोमोकोंअबतूँतजिजैहै।मृतमोतनहिंगीधगणखैहैं॥३५॥
सुनिअसपुरूरवाकीवानी । कहनलगीउरवशीसयानी ॥

उर्वश्युवाच।

मतिममहेतमरौमहिपाला । क्योंतनभक्षैंगीधशृगाला ॥ सदानकाहिंएकसोंयारी । नारिसुभावहिलेहुविचारी ॥
अतिकठोरहियवृकासमानै ॥ ३६ ॥ करुणाकरबकबहुँनहिंजानै ॥

दोहा–कर्मकरहिंसहसासबहि, असहनक्रूरसुभाव ॥ निजलघुकारजहेतपति, भ्रातहिंबालहिंघाव ॥ ३७ ॥
प्रथमजननकहँलेहिलोभाई । करिप्रतीतिपुनिदेहिविहाई ॥ नितनवनवनरचाहहिंयारी । असपुँश्चलीहोतिहैनारी ॥
तातेकरहुननारिसनेहू । अबमहीपमोकोंतजिदेहू॥३८॥जोहठवशतजिहौनहिंमोहीं । तौमैंमिलिहौंयहिविधितोहीं॥
संवतसरकेअंतहिमाहीं । एकरैनरमिहौंमेहिपाहीं ॥ तुम्हरेह्वैहैंपुत्रसुजाना । ममविनतीमानहुमतिमाना ॥ ३९ ॥
गर्भवतीउरवशिहिनिहारी । अपनेपुरगोभूपसुखारी ॥ संवतसरअंतहितहँजाई । लियोउरवशीअंकलगाई ॥ ४० ॥
दोहा–रमेरातिभरताहिसँग, पुरूरवामहराज ॥ मानतभेअपनेहिये, सफलभयोसबकाज ॥
पुनिवियोगयुनिमहादुखारी । पुरूरवैउरवशीनिहारी॥४१॥कहगंधरवनितोषहुभूपा । करिकैअस्तुतिपरमअनूपा॥
तौवेतुमहिंदेहिंगेमोहीं । पुनिहमतुमनहिंहोबबिछोहीं ॥ तबराजागंधरवनतोपा । अग्निपात्रयकलह्योअनोपो ॥
ताकोभूपउरवशीमान्यों । वनहिचरनलाग्योसुखसान्यों॥तानेजबउरवशीनप्रगटी । तबजान्योगँधरवहैंकपटी॥४२॥
तौनपात्रधरिकाननमाहीं । आयेनृपअपनेघरकाहीं ॥ यहिविधिबीतिगयेबहुकाला । तहँत्रेतायुगलग्योविशाला ॥
दोहा–पुरूरवाकेमनहिंतब, प्रगटेचारिहुँवेद ॥ कर्मप्रबोधकजगतजेहिं, करिनरहोतअखेद ॥ ४३ ॥
तबनृपतेहिंकाननहिसिधायो।जहाँअग्निपात्रहिधरिआयो॥तहँलखिसमीवृक्षमधिपीपर।ताकोकियदुइअरनीनृपवर ॥
ऊरधनिजअधउरवशिकाहीं।मध्यसुतहिगुनिनृपमनमाहीं॥मंत्रहितेसोमंथनकीन्ह्यों।तातेअगिनिप्रगटकरिलीन्ह्यों ॥
संसकारकरिपावककेरो । जान्योपुत्रयहीहैमेरो ॥ ४६ ॥ उरवशिलोकजानकेहेतू । सोइपावकतेभूपतिकेतू ॥
करिमखपूजनकियभगवानै । जोसबकेघटघटकीजानै॥यहिविधिपुरूरवामखकरिकै । गोगंधर्वलोकमुदभरिकै॥४७॥
दोहा–प्रथमरह्योयकप्रणवही, अरुपावकपरवीन ॥ पुरूरवानृपतेभये, त्रेतामेंयेतीन ॥ ४८ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे चतुर्दशस्तरंगः ॥ १४ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–पुरूरवासंयोगते, उरवशिमहँषटपूत । होतभयेअतिशैप्रवल, जगयशछायोपूत ॥
आयुश्रुतायूअरुसत्यायू । रयजयविजयसबैदीर्घायू ॥१॥ नृपश्रुतायुकोसुतवसुमाना । सुतसत्यायुश्रुतंजयजाना॥
रयसुतभयोनामजेहिंएका । जयसुतभयोअमितसविवेका॥२॥विजयभूपकेभीमकुमारा । ताकेकांचनभयेउदारा ॥
ताकेहोत्रकपरमप्रवीना । ताकेजह्नुमहातपलीना ॥ जोगंगहिगंडूषहिभरिकै । कीन्ह्योंपानप्रकोपहिकरिकै ॥
तबसुनिविनयभगीरथकेरी । श्रुतिपयतज्योसुतागुनिफेरी॥पुनिभोजह्नुपुत्रपुरुनामा।तासुतभोवलाकबलधामा ॥
दोहा--अजकतासुसुत–॥३॥–तासुकुश, ताकेसुतभेचार । वसुमूर्तकुशनाभहू, अरुकुशांबुबलवार ॥
भोकुशांबुकेगाधिनरेशा । जाकोजगमेंप्रगटनिदेशा ॥४॥ ताकेसत्यवतीइककन्या । तेहिंऋचीकमाँग्योगुनिधन्या॥
कन्यासरिसनवरनृपदेखी । कहऋचीकसोंअनुचितलेखी॥५॥श्यामकर्णशशिसरिसतुरंगा।देहुहजारहमहियकसंगा॥
तौयहसुतातुमहिंदैडारैं । कन्याकोयहमोलविचारैं ॥ ६ ॥ सुनिनृपवचनसुनीशप्रवीना । वरुणहितेंवाजीलैदीना ॥
तबकन्याकोदियोभुवाला।त्रिभुवनजाकीसुछबिविशाला॥७॥पुनिसुताहितऋचीकसोंरानी । जोरिपाणिबोलीमृदुबानी॥
दोहा–मोदुहिताकेमेरेहू, देहुपुत्रबलवान । सूनुविनाजगसूनयह, मैंमानोंमतिमान ॥
तबऋचीकअतिशयहरषाने । द्वैपायसआशुहिनिरमाने ॥ रच्योएकछत्रीमंत्रहिते । दूजोब्रह्ममंत्रतंत्रहिते ॥
करिविभागतिनकोमुनिराई।गेमज्जनहितसरितसुहाई ॥८॥ मातादुहितातेअनुरागी।वरगुनितेहिभागहिलियमाँगी॥
तबदुहिताजननीकरभागा।भोजनकियोसहितअनुरागा॥९॥जानिव्यतिक्रमतहँमुनिराई।बोलेनिजतियसोंदुखछाई॥
तेरेतोह्वैहैसुतघोरा । जाकोदंडखलहिंचहुँओरा ॥ द्विजपूजकह्वैहैतवभाई । सकलवेदविदजनसुखदाई ॥ १० ॥
दोहा–सत्यवतीतबदुखितह्वै, कहपतिकोमुखजोइ ॥ ऐसीकीजैप्रभुकृपा, ऐसोसुतनहिंहोइ ॥

तबऋचीकबोलेयहिभाँती । सुतनहिंतसपैहैहैनाती ॥ तबप्रगट्योजमदग्निकुमारा । जोजगमेंतपतेजअपारा ॥११॥
सत्यवतीसरितामैपावनि । नामकौशिकीपापनशावनि॥रेणुसुतारेणुकासुहाई । व्याह्योतेहिंजमदग्निलोभाई॥१२॥
वसुमतआदितासुसुतजाये।बहुतजातिनहिंनामगनाये॥तिनकेअनुजविष्णुकेअंसा।परशुरामभेभृगुअवतंसा ॥१३॥
जोहैयहयवंशिनसंहारा।कियनिक्षत्रक्षितिइकइसबारा१४॥१५मुनिकैपरशुरामअवतारा।मुनिसोंभूपतिवचनउचारा

राजोवाच ।

दोहा–क्षोणीकेक्षत्रीसबै, कौनकियोअपराध ॥ परशुरामजातेकियो, तिनकेकुलकोबाध ॥ १६ ॥
यहिविधिकियजबविनयमहीशा । कहनलगेतबमुदितमुनीशा ॥

श्रीशुक उवाच ।

हैहयवंशकेरअवतंसा । अर्जुनप्रगट्योजगतप्रशंसा ॥ चक्रसुदर्शनकोअवतारा । दत्तात्रयदियबाहुहजारा ॥ १७ ॥
जासुपराक्रमसुयशप्रतापा।छायपुहुमिकियवैरिनतापा१८सिद्धिसबैअणिमादिकजामें।योगसिद्धिइमिलहिवसुधामें।
बाढ्योवैभवशक्रसमाना । पवनसरिसकियभुवनपयाना ॥१९॥ एकसमयलैबहुवरनारी । जायनर्मदातटधनुधारी॥
करनलग्योमदमत्तविहारा । सबभूषणअँगपहिरिउदारा ॥

दोहा–खेलतहीअर्जुनतहाँ, सरिनर्मदागँभीर । सहसधाररोकतभयो, सहसबाहुसोंवीर ॥ २० ॥
तहाँरहाकहुँरावणडेरा । सरितनर्मदाकेअतिनेरा ॥ बोरच्योताहिउलटिकैधारा । औरोमहिमेंकियोपसारा ॥
लखिदशवदनकोपअतिकीन्ह्यों।जाययुद्धअर्जुनसोंलीन्ह्यों।अर्जुननारिननिरखतकोपी।पकरिलियोदशवदनहिंचोपी
बाँधिताहिमँडिलापुरल्यायो।मुनिपुलस्त्यतेहिंजायछुडायो।।ऐसोनृपअर्जुनबलवारा।करनगयोइकसमयशिकारा ॥
विचरतनृपनिर्जनवनमाहीं।गोजमदग्निआश्रमेपाहीं॥२३॥हैहयेंद्रकोलखिमुनिराई ।तेहिसतकारकरनाचितलाई ॥

दोहा–कामधेनुकेजायढिग, सकलवस्तुप्रगटाय । अर्जुनकोसेनासहित, कियसतकारसुहाय ॥ २४ ॥
लखिअपूर्वअसधेनुभुवाला । लेनलालसाकियतेहिकाला ॥ विनयकियोजमदग्निहिपाहीं।देहुनाथसुरभीहमकाहीं॥
तेहिंजमदग्निगऊनहिंदीन्ह्यों । तबहैहयपतिक्रोधहिकीन्ह्यों॥निजअनुचरसोंकह्योरिसाई।छोरिलेहुसुरभीबरियाई ॥
मुनिभटवत्ससहिततेहिंछोरी । लैगेनिजनगरीवरजोरी॥२६॥अर्जुनहूँलौटयोपुरकाहीं।कियोनभयनेकहुमनमाहीं ॥
परशुरामपुनिआश्रमआये । पितातिन्हैंवृत्तांतसुनाये ॥ सुनिनृपकर्मभयोअतिकोपी । पितुसोंबोलेअसपणरोपी ॥

दोहा–नाथआपकोहोउँगो, जोसतिपुत्रप्रवीर । तौअर्जुनकोमारिहौं, आजुहिंसंयुतभीर ॥ २७ ॥

छंदनराच–प्रभाषिराममाखियौकुठारराखिकंधमें । कृपाणकालकेसमानबाँधिलंकबंधमें ॥
प्रचंडचापधारिबाणपूरद्वैनिषंगहैं । विकाशवानवर्मतेविराजमानअंगहैं ॥
नक्षत्रपालसीविशालढालपीठिपैंकसी । कुरंगचर्मअंबरैजटाछटाशिरैलसी ॥
नरेंद्रहैहयेंद्रपैद्विजेंद्रकोपछावतो । गयोगजेंद्रपैमृगेंद्रज्योंप्रकोपिधावतो ॥
पुरीप्रवेशकर्तहीलख्योनरेशरामको । मनोसँहारहेतरुद्रजाततीनिग्रामको ॥ २८ ॥ २९ ॥
तुरंगऔमतंगपैदरानिऔरथानको । दियोनिदेशहैहयेशरामयुद्धजानको ॥
सुभट्टउद्टझट्टपट्टपाणिपट्टकोलये । प्रकोपियुद्धचोपिचित्तरामपैद्रुतैगये ॥
शतघ्निशक्तिवानरिष्टयष्टिवृष्टिकैमहाँ । कियोअदृश्यरामकोचहूँदिशानितेतहाँ ॥
परशुरामकालसोंकराललैकुठारको । कियोनरेशसैनमध्यवेगसोंसँचारको ॥ ३० ॥
करैंकुठारकोप्रहाररामजूजहाँजहाँ । कटैंमतंगत्योंतुरंगजानहूतहाँतहाँ ॥
अखंडरुंडमुंडझुंडमंडितैमहीभई । प्रचंडमारतंडसीकुठारकीप्रभाछई ॥
सह्योगयोनरामकेप्रहारकोसँभारहै । अपारसैनभागतीपुकारिबारबारहै ॥

कठोरशोररामकैसुचारिओरधावहीं । परायकैदुरायकैनवीरगाँचिजावहीं ॥
बहेंलगींप्रवाहकैअथाहशोणितेसरी । अनेकजातियोगिनीजमातिनाचतीखरी ॥
विलोकिसैनकोसँहाररामकेकुठारसों । लियोप्रचंडपांचसैकोदंडकोपभारसों ॥
सवेगरामकेसमीपमेंमहीपआयके । चलायवेप्रमाणबाणआशुरामछायके ॥

दोहा-बोल्योबैनकठोरअति, रेभार्गवमतिमंद । अबनबचैगोयुद्धमें, करेकेतऊफंद ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

भुजंगप्रयात-तहाँरामकोदंडलैकोपकीन्ह्यों । शरैधारतेशत्रुकोछायलीन्ह्यों ।
भयेक्रुद्धदोऊकियेयुद्धभारी । कियेआशुहीरुद्धआकाशचारी ॥
गयेमूँदिचंडांशुभोअंधकारा । दशौंहूँदिशामेंछईवारुधारा ॥
तहाँरामकीन्ह्योंमहावेगवारी । सबैशत्रुकीबाणवर्षाविदारी ॥
शतैपंचलैबाणरामौंपवारा । शतैपंचचापैदल्यौएकवारा ॥
कियोभूपकोस्यंदनैआशुभंगै । दल्योसारथीकोमल्योंत्योंतुरंगै ॥ ३३ ॥
तहाँपंचशैढालत्योंहींकृपानैं । गह्योहाथमेंहैहरासोमहानैं ॥
महाकोपकैरामकीओरधायो । सबैएकबारैसकोपैचलायो ॥
हन्योपर्शुरामौतहाँपर्शुधारी । सबैशत्रुकेखड्गढालौविदारी ॥
सहस्रार्जुनैकेसहस्रौभुजाको । दल्योएकवारैनहींनेकुथाको ॥ ३४ ॥
तहाँरामताकोतहाँकाटिडारचो । सुरैअंबरैमेंविजैकोउचारचो ॥
गिरचोभूमिमेंभूपकोशीशभारी । गिरायोमनोशैलकोवज्रधारी ॥
भगेपुत्रताकेपितानाशदेषी । लह्योराममोदैविजैकोविशेषी ॥ ३५ ॥
तहाँधेनुकोलैसवत्सासुखारी । पिताकोदियोभोपितैमोदभारी ॥ ३६ ॥
महायुद्धवृत्तांतआनंदछायो । पिताऔरभ्रातानिसोंरामगायो ॥
सुन्योंहैहयेशैवधेपुत्रतेरे । कह्योकोपकैकैपितारामकेरे ॥ ३७ ॥

दोहा-वृथाहन्योंहेरामसुत, तुमहैहयकोजाय । महापापतुमयहकियो, सबसुरमयनरनाय ॥ ३८ ॥
हमसबब्राह्मणकरिक्षमा, पूजितहैंजगमाहिं । क्षमाप्रतापविरंचिहू, लह्योब्रह्मपदकाहिं ॥ ३९ ॥
क्षमामानद्विजकोबढ़त, रविसमतेजमहान । क्षमामानद्विजपैरहत, अतिप्रसन्नभगवान ॥ ४० ॥
अभिषेकितभूपालवध, द्विजवधतेगुरुहोइ । तातेतीरथकरिसकल, डारहुपातकधोइ ॥ ४१ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे पंचदशस्तरंगः ॥ १५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-सुनिपितुशासनमानिके, तहँकुरुपतिभृगुराम । संवत्सरभरतीर्थकरि, पुनिआयेनिजधाम ॥ १ ॥

मुनिजमदग्निनारिएककाला।नामरेणुकासुछबिविशाला॥गईभरनजलसुरसरिमाहीं।निरख्योगँधरवपतिहितहाँहीं ॥
कंजमालपहिरेतियसंगा।करतविहाररँग्योरतिरंगा ।२॥ करितापैकछुमनमुनिनारी।निरखनलगीविहारसुखारी॥३॥
होमकालभूल्यौतेहिकाहीं।पुनिसुधिकैशंकितमनमाहीं॥आइकलशधरिदोउकरजोरी।खड़ीभईमुनिनिकटबहोरी ४
लखिनिजतियकोमुनिव्यभिचारा।कुपितसुतनसोंवचनउचारा।याहिपापिनकोतुमहतिडारो।अनुचितउचितननेकुविचारो

दोहा-मातुजानितेहिंसुतसबै, ताकोवधनहिंकीन ॥ ५ ॥ तबकोपितजमदग्निअति, रामहिशासनदीन ॥

पिताप्रभावरामतहँजानी । मातुहिभ्रातनिहन्योविज्ञानी ॥६॥ तबपितुह्वैप्रसन्नअतिबोले । माँगहुवरहेपुत्रअमोले ।
परशुरामतबअतिअनुराग्यो । यहवरदानपितासोंमाँग्यो ॥ जियेजननिभ्रातोक्षणमाहीं।रहैनवधकोसुधितिनकाहीं।
मुनितथास्तुप्रमुदितकहिदीन्ह्यों।जीवसहिततियपुत्रनकीन्ह्यों॥उठेसकलसोवतसेजागे।रहीनवधसुधिअतिमुदपागे।
रहेजेअर्जुनभूपकुमारा । तेपितुवधलखिदुखीअपारा ॥ परशुरामकोअतिभयपाई । बसतरहेतेवनहिंलुकाई ॥ ९ ।

दोहा–एकसमयभ्रातनसहित, गयेरामवनमाहिं ॥ सोइअंतरलहिभूपसुत, साधनवैरतहाँहिं ॥

मुनिजमदग्निआश्रमहिंआये १० निरख्योऋषिकहँध्यानलगाये॥निराखिरेणुकारोवतधाई।करुणवचनकहदेहुबताई ॥
पैपापीनहिंकछुचितलाई।मुनिशिरकाटिलियेबरियाई॥पुरीगमनकियलैमुनिशीशा।अपनेकोधनिगुन्योमहीशा १२
लख्योरेणुकानिजपतिनासा ।रोवनलागीविगतहुलासा ॥हायगमनकीन्ह्योंकितरामा । पिताविनाशभयोदुखधामा॥
असकहिबारहिबारदुखारी । रामहिंऊँचेसुरहिपुकारी॥१३॥सुनिदूरिहितेमातुपुकारा । रामआश्रमहिंद्रुतपगुधारा॥

दोहा–जोहिजनकवध–॥१४॥–अतिदुखित, रोवनलागेराम ॥ हायतातमोहिंछोंड़िकै, आपगयेसुरधाम ॥

यहिविधिकरिकैविविधविलापा।कियोकोपपुनिमहाप्रतापा॥पितुशरीरभाइनढिगराखी।करननिक्षत्रचह्योअतिमाखी
धरिकैकंधपरशुअतिघोरा॥१६॥मँडिलापुरीगयोवरजोरा॥अर्जुनसुतजेदशौंहजारा।तिनकेशिरकाट्योइकवारा१७॥
तिनकेशोणितनदीबहाई । ब्राह्मणवधफलदियोदेखाई ॥ रामआपनेपितुवधकारन । मारचोक्षत्रिनकोपिअपारन ॥
परशुरामअतिकोपअपारा १८ करिनिक्षत्रक्षितिइकइसवारा॥कुरुक्षेत्रनवशोणितकुंडा।भरिदीन्ह्योंतिनकेदलिमुंडा ॥

दोहा–लैकरिनिजपितुशीशको, धरमेंदियोलगाय ॥ सर्वदेवमयदेवको, मखकरिपूज्योचाय ॥ २० ॥

होतहिप्राचीदिशिदियरामा।ब्रह्माकोदक्षिणबलधामा॥पश्चिमअध्वरजहिविख्याता।उत्तरदिशादियोउदगाता ॥२१॥
औरऋत्विजनदियोदिशांतर।मध्यदेशकश्यपकहँद्विजवर।आर्यावर्त्तदियोउपदिष्टै।औरसदस्यनकोविनकष्टै ॥२२॥
पुनिसरसुतीसरितमहँजाई।कियअवभृथमज्जनसुखछाई॥तातेभोसबकलुषविनाशा । विनघनरविसमबव्योप्रकाशा॥
यज्ञप्रभाउतहाँअवनीशा॥२३॥जियेआशुजमदग्निमुनीशा॥सतऋषिनिमंडलमहँजाई।भयेसातयोंऋषिकुरुराई२४॥

दोहा–दुसरेमन्वंतरनृपति, परशुरामहूजाइ ॥ ह्वैहैंसप्तऋषीनमें, सतयोंऋषिश्रुतिगाय ॥ २५ ॥

अवनिवसतमहेंद्रगिरिमाहीं । शांतचित्ततजिआयुधकाहीं॥तहाँसिद्धचारणगंधर्वा।रामसुयशगावतनितसर्वा ॥२६॥
यहिविधिभृगुवंशहिअवतारा।लैहरिमेट्योभूतलभारा॥२७॥विश्वामित्रगाधिसुतभयऊ।पावकसमप्रकाशतनछयऊ॥
तपकरिक्षत्रिधर्मकहँत्यागी।भयोब्रह्मऋषिहरिअनुरागी॥२८॥विश्वामित्रपुत्रशतजाये।सबहिंनाममधुछंदधराये २९
एकसमयहरिचंदनरेशा । कियोयज्ञमुनिदियोनिदेशा ॥ ल्यावहुभूपयज्ञपशुकाहीं । तवपूजिहैंयज्ञसुखमाहीं ॥

दोहा–तबऋचीकढिगजायकै, दैतिनकोधनवृंद ॥ मझिलोसुतश्वनशेफको, लैगमन्योहरिचंद ॥

विश्वामित्रआश्रमैजबहीं । आयेनृपश्वनशेफहुतबहीं ॥ तहँश्वनशेफगाधिसुतकेरे । परचोचरणकहिरक्षकमेरे ॥
मातुलऐसोकरहुउपाई । पूजैमखममजियबचिजाई ॥ तबमुनिनिजसुतशतहुबोलाई । कह्योगुनहुँयहिजेठोभाई ॥
पितुकेवैनपचासहिमाने । अरुपचासमनमेंनहिंआने ॥ तिन्हैंदियोकौशिकमुनिशापा । होहुमलेच्छसहहुसंतापा ॥
पुनिपचासजेपितुपनधारी। तिनसोंकौशिकगिराउचारी॥ तुमशासनाशिरधरचोहमारा। चलिहैजगमहँवंशतुम्हारा॥

दोहा–पुनिश्वनशेफहिकरिदया, दीन्ह्योंमंत्रसिखाय ॥ भूपतिकोमखपूरभै, सुतबचिआयोधाय ॥
भृगुवंशीश्वनशेफइमि,कौशिकभयोनरेश॥कौशिककेभेऔरसुत,अष्टकादिबरवेश ३०।३१।३२।३३।३४।३५।३६

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे षोडशस्तरंगः ॥ १६ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-पुरूरवाकोपुत्रजो, आयुनामभोजासु ॥ ताकेपांचकुमारभे, जिनकोयशचहुँपासु ॥
छत्रवृद्धअरुनहुषसुजाना । रजीरंभअतिशयबलवाना ॥१॥पंचमपुत्रअनेनसभयऊ । जोजगमहँअनुपमयशछयऊ॥
क्षत्रवृद्धभूपतिकोवंसा । सुनियेंअबकुरुकुलअवतंसा ॥ क्षत्रवृद्धसुतभोसुहोत्रवर । ताकेत्रयसुतभेजगयशकर ॥२॥
काश्यकुसोगृत्समदनरेशा।सुतगृतसमदहुसुनकशुवेशा॥ताकेशौनकभेऋगवेदी।सुन्योंपुराणसकलअघछेदी ॥ ३ ॥
काश्यपुत्रभोकाशिप्रवीना । ताकोराष्ट्रभक्तिरसलीना ॥ ताकेदीरवतमसुतजायो । तासुधन्वंतरतनयसुहायो ॥४॥
दोहा-भयोजोभगवतअंशते, वेदशास्त्रआचार्य ॥ नशहिंरोगजेहिंनामते, जानहुकुरुकुलआर्य ॥
केतुमानभोतासुकुमारा । तासुभीमरथपुत्रउदारा ॥ ५ ॥ दिवोदासतेहिसुवनद्युमाना । तासुप्रतर्दनभोमतिमाना॥
तासुअलर्कभूपभोदानी । जाकीकीरतिविबुधबखानी॥६॥छाछठसहसवर्षकियराजू।रह्योयुवानृपसहितसमाजू॥७॥
सुतअलर्ककीसंततिभयऊ । तासुसुनीतनामजगठयऊ ॥ ताकेभयोसुकेतनवीरा । ताकेधर्मकेतुरणधीरा ॥
ताकेसत्यकेतुमतिमाना ॥८॥ ताकेधृष्टकेतुबलवाना ॥ ताकेभोसुकुमारकुमारा । ताकेवीतिहोत्रयशवारा ॥
दोहा-वीतिहोत्रकेभर्गभो, भार्गभूमिसुततासु ॥ ९ ॥ क्षत्रवृद्धकोवंशमें, वरण्योंसहितहुलासु ॥
रंभभूपकोरभसकुमारा । ताकेअक्रियदानउदारा ॥ १० ॥ तिनकोवंशविप्रह्वैगयऊ । सुनहुँअनेनवंशजोभयऊ ॥
नृपअनेनकोशुद्धकुमारा । ताकेशुचिभोअतिसुकुमारा ॥ धर्मसारथीसुतभोतासू ॥११॥ भयोशांतिरैभूपतिजासू॥
सोनृपभयोपुत्रतेहीना । करिविरागहरिपदमनदीना॥रजीपंचशतसुतउपजाये।अपनोसुयशजगतमहँछाये ॥ १२ ॥
दैत्यदेवपतिपदहरिलीने । तबसुरसबहिप्रार्थनाकीने ॥ रजीभूपतबसुरपुरजाई । मारयोसबहिंदैत्यसमुदाई ॥
दोहा-दियोइंद्रकोइंद्रपद, रजीभूपहरपाय ॥ वासवडरिप्रहलादते, दियोनृपहिंपुनिआय ॥ १३ ॥
वासवभयेभूपआधीना । लैशासनकारजसबकीना ॥ गयेरजीनृपजबहरिधामै । तबतिनकेकुमारअभिरामै ॥ १४॥
करहिंलगेआपहिसुरराजू । इंद्रहिकारिदीन्हेविनकाजू॥तबसुरगुरुप्रयोगकरिघोरा॥१५॥नृपपुत्रनकीन्ह्योविनजोरा॥
तबवज्रीलैवज्रमहाना । मारयोसकलसुवनबलवाना ॥ कुशकोवंशसुनहुकुरुराई । कुशकेप्रतिसुतभोसुखदाई ॥
ताकेसंजयभयोप्रवीना । तासुभयोजयधर्मअधीना ॥ १६ ॥ ताकेकृतहर्यवनहुताके । ताकेभेसहदेवप्रभाके ॥
दोहा-तासुहीनसुतहोतभो, तासुभयोजनसैन ॥ १७ ॥ ताकेसंकृतितासुजय, क्षत्रधर्मकोऐन ॥
क्षत्रवृद्धकेवंशये, मैंगायेमतिवान ॥ सुनियेंकुरुकुलनाथअब, नाहुषवंशप्रधान ॥ १८ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजू
देवकृते आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे सप्तदशस्तरंगः ॥ १७ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यतिययातिसंयातिकृति, अयतीवियतिसुजान । नहुषराजकेपुत्रषट, जिमिइंद्रीयुतप्रान ॥ १ ॥
लग्योदेनयतिकोपितुराजू । पैसोलियोनगुनिदुखकाजू॥२॥बैठिइंद्रपदनहुपनरेशा । पाल्योस्वरगहिकरतनिदेशा॥
शचीगमनकहँजबमनकीन्ह्यों । शचीताहितबशासनदीन्ह्यों ॥ मेरेनिकटजबैसुरराई । आवतरह्योपरमसुखछाई ॥
शिविकामहँमुनिरह्योलगावत।तापैचढ़तरह्योसुखछावत॥सोसुनिनहुषमुनिनबोलवाई। शिविकाचढितिनसोंउँचवाई
चल्योशचीकेनिकटनरेशा । सर्पसर्पअसदेतनिदेशा ॥ तबअगस्त्यमुनिदीन्ह्योशापा।सर्पहोहुपावहुसंतापा ॥
दोहा-भयोसर्पतबनहुषनृप, गिरयोधरणिमेंआय । लह्योस्वर्गकोराजतब, अतिप्रमुदितसुरराय ॥
भूमेंतबययातिमहराजा।पाल्योसुतसमप्रजनिसमाजा३दियोचारिदिशिचारिहुभ्रातन।व्याह्योकविदानवद्वैदुहितन४
सुनिविलोमक्षत्रीद्विजबाहू । पूछ्योतबशुकसोंनरनाहू ॥

राजोवाच।

शुक्राचार्यसुताकहँकैसे। लियोययातिकहहुमुनिजैसे ॥५॥ सुनतपरीक्षितगिरासुहाई। शुकाचार्यबोलेसुखपाई ॥

श्रीशुक उवाच।

दानवेंद्रवृषपर्वाकन्या। नामजासुशरमिष्ठाधन्या ॥ एकसमयवनकरनविहारा। शरमिष्ठालैसखीहजारा ॥
देवयानिइकशुक्रकुमारी। ताकोलैसँगविपिनिसिधारी ॥ ६ ॥

दोहा-उपवनमेंतरुगणसबै, फूलिरहेचहुँओर। मधुमातेमधुकरनिकर, मधुरकरहिंतहँशोर ॥

नलिनीपुलिनअतीवसोहावन।विकसेकंजपरमसुखछावन७तहाँजायसिगरीसुकुमारी।जलविहरनहितवसनउतारी।
सबैहिलींजलपटधरितीरा। सींचनलगींपरस्परनीरा ॥८॥ ताहिसमैशिवसहितभवानी।तहँह्वैकढेचढेवृषज्ञानी ॥
शंकरनिरखिलजाइकुमारी।अतिआतुरसिगरीपटधारी ॥ देवयानिवसनैनिजजानी । शर्मिष्ठापहिरयोछबिखानी ॥
निजपटच्युतशरमिष्टहिदेषी। कह्योदेवयानीअतिद्वेषी ॥ ९ ॥ १० ॥

देवयानी उवाच।

लखहुसखीदासीयहमेरी। कीन्हीअनुचितरीतिघनेरी ॥

दोहा-लियोवसनमेरोपहिरि, समतानाहिंनिहारि। चाहहिमखकोभागजिमि, लेनश्वानकीनारि ॥ ११ ॥

हरिमुखविप्रहिवेदबखाना। द्विजतेप्रगटतजगतमहाना ॥ परब्रह्मकोविप्रहिध्यावै। विप्रहुवेदमार्गप्रगटावै ॥ १२ ॥
द्विजनलोकपतिकरहिंप्रणामा।विप्रहिंवैदेहरिहुअकामा ॥१३॥ हमहैंशुक्राचार्यकुमारी ।जोयाकेपितकोगुरुभारी ॥
सोसंबंधननेकविचारी। मेरोवसनालियोतनधारी ॥ जैसेशूद्रलेहिपढ़िवेदा। सुनतहोहिविप्रनमनखेदा ॥ १४ ॥
कह्योदेवयानीअसजबहीं। कोपितशरमिष्ठाभैतबहीं ॥ साँपिनिसरिसश्वासलैसोई। दशननअधरदाबितेहिंजोई ॥

दोहा-गुरुदुहितासोंकहतिभै, ॥ १५ ॥ रेभिक्षुकीअबूझि, करहिप्रशंसाआपनी, निजकरनीनहिंसूझि ॥

कागसमानधाममममाहीं।लैभिक्षातेंजियसिसदाहीं १६ असकहिशरमिष्ठारिषिरूपा।छीनिलियोतेहिंवसनअनूपा ॥
ताहिकूपमेंदियोगिराई। आपुआपनेभवनसिधाई ॥१७॥ तहँययातिनरनाहउदारा। आयेखेलनगहनशिकारा ॥
तृषावंतभेनृपतितहाँहीं। आयेभूपकूपढिगमाँहीं ॥ लख्योदेवयानीतहँराजा। बिनावसनतनसंयुतलाजा ॥ १८ ॥
झटकटिकोपटुकातेहिदीन्ह्यो।करगहिकाढ़िआशुतेहिलीन्ह्यो।नृपहिदेवयानीतहँबोली।निजउरकीआशयसबखोली

दोहा-मेरोकरसोंकरगह्यो, हेययातिमहँराज। करहुदारनिजमोंहिअब, बाहँगहेकीलाज ॥ २० ॥

गह्योजोकरतुमदैवहियोगू। सोकरऔरहिगहबअयोगू॥यहसंबंधईशकृतजानो। तातेतुमअनुचितनहिंमानो॥२१॥
कहाँकूपकोगिरबहमारा। कहँतुवआउबकरतशिकारा॥पुत्रबृहस्पतिकचजेहिनामा। सोदियशापमोहिंतपधामा॥
तेरोपतिब्राह्मणनहिंह्वैहै। क्षत्रीनाथपाइसुखपैहै ॥ तातेमोहिंकरहुनिजदारा। ब्राह्मणिजानिनकरहुविचारा ॥२२॥
तबययातिमनलगेविचारन। केहिविधिकरहुँधर्मनिरधारन ॥ देवयोगतेविप्रकुमारी। बरबसहोनचहतिममनारी ॥

दोहा-निरखिदेवयानीसुछवि, मोरहुमनललचात। ग्रहणकरबयाकोइहाँ, नहिंअधर्मदरशात ॥

असविचारिगुनिकैनिजकाजा। कह्योदेवयानीसोंराजा ॥ जोपितुतोरतोहिमोहिंदेहैं।तौतोकोविशेषिहमलैहैं ॥२३॥
असकहिनृपतिगयेनिजधामा। गईदेवयानिहुनिजठामा॥शुक्रनिकटरोवनसोलागी।सबवृत्तांतकह्योदुखपागी॥२४॥
सुनिकैशुक्रसुताकीबानी। दुखीभयेउरआनिगलानी ॥ निदरयोवृत्तिपुरोहितकेरी। जियमेंअनुचितमानिघनेरी॥
पराधीनरहिबोनहिंनीको। रहबस्वतंत्रविप्रकहँठीको॥जिमिकपोतवनविचरिसदाहीं। चाराचुनतमुदितमनमाहीं॥

दोहा-असविचारिवैअसुरगुरु, लैसँगसुतातहाँहिं ॥ निकरिचलेतेहिंनगरते, अतिउदासमनमाहिं ॥ २५ ॥

वृषपर्वागुरुगमनबदेखी। सुरसहायकरिहैंअसलेखी ॥ तबविचारिदानवद्रुतधाई।गिरयोगुरूचरणनपथजाई ॥२६॥
क्षणभरिकोपकियोभृगुराई । पुनिवृषपर्वैगिरासुनाई ॥ परहुदेवयानीकेपायन। ताकोकरहुसकलविधिचायन॥

तवतुमपैप्रसन्नह्वैहैं । नातोयाकेसंगसिधैहैं ॥ २७ ॥ सुनिगुरुवचनदैन्यसुखपायो । तहँदेवयानिहिसमुझायो ॥
तवदानवसोंशुक्रकुमारी । कोपितह्वैअसगिराउचारी॥ ममपितुमोंहिजेहिंपासपठावै । तहँतुवसुतासखिनयुतजावै॥

दोहा-ह्वैदासीतहँमोरिवह, सेवाकरहिसदाहि ॥ तौहमपितुयुतमुदितह्वै, बसिहैंतुवपुरमाहिं ॥ २८ ॥

सुनिगुरुसुतागिराअसुरेशा । शरमिष्ठाकोंदियोनिदेशा ॥ कह्योदेवयानीजसतोकों । करितैसेअवदेमुदमोकों ॥
दानवसुतासुनतापितुवैना । करनलगीतैसेभरिचैना ॥ सखीसहसलैहैनरदेवा । करीदेवयानीकीसेवा ॥ २९ ॥
शुक्राचारजतहँहरपाई । दियोययातिहिंसुतासुहाई ॥ शरमिष्ठहुकोतेहिसँगदीन्ह्यों । ऐसोनृपसोंमुनिकहिलीन्ह्यों ॥
शरमिष्ठाकहलैपरयंका । कवहुँननृपलइयोनिजअंका॥तवययातिह्वैमौनलजाये । लैनारिननिजधामसिधाये॥३०॥

दोहा-शुक्रसुताकेतहँभये, उभैपुत्रवलधाम ॥ परमयशीयहजगतमें, यदुऔतुरवसुनाम ॥

लखिशरमिष्ठाअतिदुखपाई।पतिकेनिकटएकांतहिजाई॥ऐसीविनतीकियकरजोरी।देहुपुत्रकरिकृपाअथोरी ॥३१॥
सुनिशरमिष्ठाविनयभुवाला।कियोविहारजानिऋतुकाला३२तवशरमिष्ठात्रयसुतजाये।द्रुह्युपुरूअनुनामकहाय ३३
शरमिष्ठैसुतवर्तानिहारी । निजपतिकृतसुतजन्मविचारी ॥ तहाँदेवयानीअनखाई । अपनेपितुकेधामासिधाई॥३४॥
तवययातिनृपचलिपथपाहीं । गिरेदेवयानीपदमाहीं ॥ बहुप्रकारताकोसमुझायो । सोनहिंनृपतिवचनचितलायो ॥

दोहा-तहँदेवयानीकुपित, पितुकेभौनहिंजाइ ॥ शुक्राचारजकोदियो, सववृत्तांतसुनाइ ॥ ३५ ॥

ताकेपीछेनृपहुसिधाये । शुक्रचरणमहँमाथनवाये ॥ निरखिअसुरगुरुकोपितबोले । रेअसत्यवादीनृपबोले ॥
नारिविवशह्वैप्रणनहिंराष्यो । जोप्रथमहिमैंतोसनभाष्यो ॥ तातेवृद्धहोहुतुमभूपा । होइतुम्हारसुरूपकुरूपा॥३६॥
तवययातिअतिशयदुखपाई । दानवगुरुसोंगिरासुनाई ॥

ययातिरुवाच ।

तुवदुहितासँगकरतविलासा । पूरीअबैमोरिनहिंआसा ॥ मुनिअसदेहुउपायवताई । जातेजराछूटिममजाई ॥
असुरअचारजतबसुखछाये । नृपययातिसोंतहँअसगाये ॥

दोहा-पलटिलीजियोकाहुकी, युवाउमिरिनरनाह ॥ जराउमिरितेहिंदीजियो, अपनीसहितउछाह ॥ ३७ ॥

ऐसोशुक्रवचनसुनिराजा । शुक्रसुतालैसहितसमाजा ॥ आशुआपनेऐनहिंआये । निजसुतयदुकोंगिरासुनाये ॥
अपनीयुवाउमिरिमोंहिंदेहू । मेरीजरापुत्रतुमलेहू ॥ ३८ ॥ तुवमातामहदईबुढाई । हितविलासमोमतिनअघाई ॥
युवाउमिरिलैपुत्रतिहारी । मैंह्वैहौंकछुकालविहारी ॥३९॥ जवययातिभूपतिअसभाषे । तवयदुबोलतभेअतिमाषे॥

यदुरुवाच ।

युवामध्यमेंपिताबुढ़ाई । ग्रहणकरबनहिंउचितदेखाई ॥ भयेवृद्धतुमतजेनआसा । हमकिमिछाँडहिंयुवाविलासा ॥

दोहा-बिनाविलासबहुविधिकिये, बिनभोगेबहुभोग ॥ नाहिंउपजतवैराग्यमन, तृष्णातजतनलोग ॥ ४० ॥

तबतुरवसुद्रुह्यूअनुकाहीं।युवादेनहितकह्योतहाँहीं॥पितुशासनतेनाहिंशिरधारे।अधरमरततनानित्यविचारे ॥ ४१ ॥
युवालेनअरुदेनबुढ़ाई । पुनिपितुपुरुसोंगिरासुनाई ॥ जिमिममसुतसवशासनभंगे । तिमितुमकरहुनसुयशअभंगे॥
यदपिसबनतेहौतुमछोटे।तदपिसबनतेहौगुणमोटे ॥४२॥ सुनपुरुपितावचनसुखमाने।जोरिपाणिअसविनयबखाने॥

पुरुरुवाच ।

कोअसशठजगमहँमहराजा।करैनजोतनमनपितुकाजा॥जोपितुतनप्रदअतिउपकारी।तेहिंनाहिंउरिणहोततनधारी॥

दोहा-पितुशासनमेंजोकरत, अनुचितउचितविचार ॥ सोपापीगमनतनरक, कबहुँनहोतउधार ॥४३ ॥

उत्तमसुतमनकीकरहि, मध्यमपायरजाय ॥ करहिप्रीतिबिनअधमसो, करैनसोमलआय ॥

पितुशासनधारतजोशीशा । तापैंकृपाकरतजगदीशा ॥ पितुसेवकसबथलसुखपावै । पितुआज्ञादूषकदुखछावै ॥
इष्टदेवसमजेपितुमानैं । लहहिंसुगतियदिपापहुठानैं॥४४॥असकहिह्वैप्रसन्नपुरुज्ञानी।पितुकोजरालियोसुखमानी॥

युवाउमिरिलैतासुययाती।भोगेहुभोगभूरिबहुभाँती४५सातद्वीपमहँसोमहराजा।पाल्योसुतसमप्रजानिसमाजा ४६॥
देवयानिहूकरिपरतीती।निशिदिनसेयोपतिरतिरीती॥४७॥पुनिययातिकरिकैबहुयागा।दैदक्षिणासहितअनुरागा॥
दोहा—सबहिंदेवमैंकृष्णको, पूज्योसहितविधान ॥ ४८ ॥ जिनमेंजगनभवनसरिस, प्रगटतदुरतमहान॥
नारायणकोध्यानधरि, भूपययातिउदार ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ह्वैअकामप्रियभोगको, भोग्योवर्षहजार ॥
तदपिचक्रवर्तीनृपति, लहिइंद्रिनकोदोष ॥ भोगतबहुविधिभोगको, पायोनहिंसंतोष ॥ ५१ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधि
राजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे अष्टादशस्तरंगः ॥ १८ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—यहिविधिविहरततियविवश, एकसमयनरनाहँ ॥ भूलआपनीजानिकै, भयेदुखितमनमाहँ ॥
देवयानिकोनिकटबोलाई। तासोंकहनलगेनृपराई ॥ १ ॥ सुनहुप्रियायहकथासुहाई। हमसमपुरुषनकेरिकमाई ॥
करनीकरहिंजेअसगृहवासी। तिनकोशोचहिंमुनितपरासी॥२॥छागएककाननमेंजाई। खोजतनवचाराचितलाई॥
परीकूपदेख्योतहँछागी॥३॥छागहितहाँदयाअतिलागी॥ताहिनिकारनकियोउपाई। शृंगहिखनिमहिराहबनाई॥४॥
तबतहँकूपहितेकढ़िलागी॥छागहिपतिमान्योअनुरागी॥तेहिंछागहिलखिऔरहुछागी॥सोइछागहिपतिमाननलागी॥
दोहा—सुभगकेशसुंदरवपुष, रतिबलीनअतिपीन। प्रतिछागिनसोंरमतनित, भयोछागनहिंछीन ॥
याहिविधिरमतगयोबहुकाला।जान्योनहिंनिजकर्मकराला६रमतऔरछागिनसोंदेषी।सोछागीकरिकोपविशेषी ॥७॥
अतिकपटीनिजनाहककाहीं।गुनिगमनीनिजपालकपाहीं ८ ताकेपीछेछागहुधायो।प्रीतिविवशअतिशोकहिछायो॥
मारगरोकिपुकारिपुकारी। ताकेपगनपरयोशिरधारी॥ पैमानेहुनहिंनेकहुछागी। गृहकीओरवेगकरिभागी॥
छागीनिजपालकपहँआई। सबैआपनीदशासुनाई ॥९॥ सोसुनिपालककोपहिछायो।तासुवृषणद्रुतकाटिगिरायो ॥
दोहा—ह्वैअधीनपुनिछागतहँ, विनयकरीपरिपाव। ताकोंफेरिबनायदिय, पालकमंत्रप्रभाव ॥ १० ॥
छागवृषणलहिपुनिबहुकाला। तेहिछागीसोंरम्योविशाला॥पैसंतोषलह्योनहिंछागा।भयोननेकहुहियेविरागा॥११॥
ऐसेहमतोसोंकरिप्रीती।दियोत्यागिपरमारथरीती॥१२॥जिनकोमनरमणिनिसोंरागत।तिनकोऔरनीकनहिंलागत॥
हयगयधरणिधान्यधनधामा।करिनसकहिंतेहिंपूरणकामा१३कामभोगतेकामनजाई।जिमिघृतपायनअनलबुताई ॥
जेतजिदीन्हेंवैरामिताई। तिनकोसकलठौरसुखदाई ॥१५॥ तनुहुयदपिजीरणह्वैजाई। तदपिनतृष्णाघटतिघटाई॥
दोहा—तातेजोमंगलचहै, चहैनरकनहिंजान। तौतृष्णादुखदानियह, आशुतजैमतिमान ॥ १६ ॥
भगिनिमातदुहिताढ़िगजाई।बैठहिनहिंइकांतकहँपाई ॥इंद्रीगणअतिशयबलवाना।ज्ञानिहुकेरभुलावहिंज्ञाना॥१७॥
तुवसँगविहरतवर्षहजारा।बीतिगयेमोहिलगीनबारा॥तदपिनतृष्णानेकुबुताई।दिनदिनबढ़तिअधिकअधिकाई १८॥
तातेअबयहतृष्णहित्यागी। ह्वैकैकृष्णचरणअनुरागी॥बसिहौंमुनिसँगकाननजाई। कामकोहमदमोहविहाई॥१९॥
मृत्युलोकादिविलोकहुभोगा। ताकोतुच्छजानिजोलोगा॥कैहैंसुनैंहियकरहिंविचारा।सोईपंडितपरमउदारा ॥२०॥
दोहा—असकहिनिजतियसोंनृपति, पुरुहियुवापुनिदीन। लियोजठरपनआपनो, भोसबविषयविहीन २१॥
अग्निकोणदियद्रुह्युकुमारै।यदुकोदक्षिणदिशाउदारै।पश्चिमदिशितुरवसुकहँदीन्ह्यों।उत्तरअधिपअनुहिकोकीन्ह्यों॥
सिगरोमहिमंडलकोएका।कीन्ह्योपुरुहिराजअभिषेका॥पुरुअग्रजनपुरुहिवशकरिकै।नृपययातिवनगेसुखभरिकै ॥
विषयसुखनिजेकियबहुकाला।इकक्षणमहँतिहिंतज्योभुवाला॥जिमिनीडहिवसिशिशुपनमाहीं भयेपक्षपक्षीउडिजाहीं
तहाँज्ञानगहित्रिगुणमिटायो।तनुतजिहरिपुरबासिसुखछायो॥भूपययातिकथाजोगाई।सुनतदेवयानीदुखछाई ॥२५॥

दोहा-प्रीतिमोरिअरुआपनी, तोरनकेहितकंत । मोसोंकरिपरिहाससम, गेकाननमतिवंत ॥ २६ ॥
शुक्रसुताअसमनहिंगुनि, ताजिअनित्यकुलनेह॥२७॥हरिचरणनचितराखिकै, तजिदीन्हीनिजदेह ॥२८॥
देवयानिअतिकामिनिहु, तेहिगतिदियसुखधाम । ऐसेकरुणासिंधुको, बारहिंबारप्रणाम ॥ २९ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराज सिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे एकोनविंशस्तरंगः ॥ १९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-अबवरणहुँपुरुवंशजेहि, भेराजर्षिउदार । जामेंकुरुपतिरावरो, होतभयोअवतार ॥ १ ॥
जगमेंजैभोपूरूकुमारा । प्राचिनवंतभोतासुउदारा ॥ तासुप्रवीरनमसुभोताके । तासुचारुभेचारुप्रभाके ॥ २ ॥
तासुसुद्युबहुगवसुततासू । भोसंयातिभूपसुतजासू ॥ अहंजातिभोसुतसंजाती । ताकेरऊद्राश्वअरिघाती ॥ ३ ॥
रऊद्राश्वकहँपायघृताची । प्रगटायोदशसुतरतिराची ॥ नृपऋतेयुकुक्षेयुकृतेयू । स्थंडिलेयुसततेयुजनेयू ॥
अनधरमेयुसतेयुव्रतेयू । सबतेछोटोभयोवनेयू ॥ येदशसुतभूपतिजनमाये । तिमिहरिदशइंद्रीप्रगटाये ॥ ४ ॥ ५ ॥
दोहा-रंतिभारयहनामको, भयोऋतेयुकुमार । अप्रतिरथध्रुवसुमतिये, तासुततीनिउदार ॥
अप्रतिरथकेकण्वमहाना ॥६॥ ताकेमेधातिथिमतिमाना॥प्रसकण्वादिकतासुद्विजाती॥काननमेंतपकियबहुभाँती॥
सुमतिपुत्रभोरैभमहाना । तासुतनयदुष्यंतसुजाना ॥ ७ ॥ एकसमयदुष्यंतनरेशा । खेलनगयोशिकारसुवेशा ॥
तहाँकण्वमुनिआश्रममाहीं । लख्योएकसुंदरातियकाहीं ॥ निजप्रकाशकरिवनहिंप्रकाशै॥रमासमानसुरूपविलासै॥
तेहिंलखिमोहिगयेमहिपाला॥लैनिजसखनसंगतेहिंकाला॥अतिप्रमुदिततजिदियोशिकारा॥मारताहिनिजसायकमारा
दोहा-मंदमंदताकेनिकट, जायमंदमुसक्याय । पूँछनलागेतेहिनृपति, मधुरेबैनसुनाय ॥ १० ॥
कमलनैनितैंकौनिकुमारी। कौनिअहैमेरोमनहारी ॥११॥ यहनिरजनवनमहँसुकुमारी॥कहाकरसितैंजनमनहारी॥
सुंदरिअसिमतिहोतहमारी । हैतैंकोउमहराजकुमारी ॥ राजसुताजोतैंनहिंहोती । तौममनननहिंप्रीतिउदोती ॥
पुरुवंशिनकोअधरममाहीं । कबहूँचित्तजातहैनाहीं॥१२॥सुनिभूपतिकीगिरासुहावनि॥शकुंतलाबोलीमनभावनि॥

शकुंतलोवाच ।

विश्वामित्रमेनकाकाहीं । एकसमयरतिकियवनमाहीं ॥ तातेमैंमेनकाकुमारी । प्रगटभईवनमेंधनुधारी ॥
दोहा-त्यागिमोहिइतमेनका, आपुगईसुरधाम । जानिचरितयहकण्वमुनि, पाल्योमोहिंयहिठाम ॥
भलीभाग्यभेआजुहमारी । करहुँकौनमैंसेवतुम्हारी ॥ १३ ॥ बैठहुआसनअंबुजनैना । ममसतकारलेहुभरिचैना ॥
कंदमूलफलभोजनलीजै॥चहौतोइकनिशिवासहिकीजै॥१४॥शकुंतलाकीसुनिमृदुबानी॥नृपदुष्यंतकह्योसुखमानी॥

दुष्यंत उवाच ।

कुशिकवंशकीआपकुमारी । उचितआपनेगिराउचारी॥ राजसुताअपनेवरयोगू । अपनेनतेवरिकरहिंसँयोगू॥१५॥

श्रीशुक उवाच ।

सुनिसुखसानीनृपकीबानी । तहँशकुंतलामहासयानी ॥ भाष्योवचनसुनहुनरनाहा । करिलीजैहमारप्रभुव्याहा॥
दोहा-गँधरवविधिकरिकैतहाँ, धरमसहितनरनाह ॥ देशकालकोजानिकै, कियशकुंतलैव्याह ॥ १६ ॥
सँगशकुंतलाकेसलहुलासा । तेहिरजनीनृपकियोविलासा ॥ गर्भवतीह्वैगैछबिवारी । भोरगयेनिजपुरनृपभारी ॥
पुनिशकुंतलाकेलहिकाला॥प्रगट्योअतिसुंदरयकबाला १७ जातकर्मकियकण्वमुनीशा॥भयोकुमारअंशजगदीशा ॥
जबबालकखेलनवनजावै । सहजैसिंहबाघधरिल्यावै ॥ १८ ॥ ऐसोनिरखिपुत्रबलवाना । भोशकुंतलैमोदमहाना ॥

ऐशकुंतलाबालककाहीं।गैदुष्यंतकंतगृहमाहीं॥१९॥जबनिजसुततियभूपनचीन्ह्यों।ग्रहणकरनकोमनननहिंकीन्ह्यों॥

दोहा-तबअकाशवाणीभई, कुरुपतिसबैसुनाय ॥ २० ॥ हेतुमात्रमाताअहै, सुतपितुरूपबनाय ॥

तातेयहसुतरावरो, प्रगट्योजगतअनूप ॥ तज्योनवीरशकुंतलै, पालहुपुत्रहिभूप ॥ २१ ॥

जौनपुत्रनिजवंशचलावै । सोइपितरनकहँनर्कबचावै ॥ यहतौसुततुम्हारयशकारी । सतिशकुंतलागिराउचारी ॥
तबनृपसुतशकुंतलैराष्यो।भरतनामसोसुतकहँभाष्यो॥२२॥करिदुष्यंतराजबहुकाला । स्वर्गलोकजबगयेभुवाला॥
भयोचक्रवर्त्तीमहिमाहीं । भरतभूपजेहिसमकोउनाहीं॥२३॥चक्रचिह्नजेहिदक्षिणहाथा।पद्मचिह्नपायनशुभगाथा ॥
मुनिसबआयतहाँसुखभीने । महाराजअभिषेकहिकीने॥२४॥भरतभूपसुरसरिकेतीरा । पचपनअश्वमेधकियवीरा॥

दोहा-सामतेयअसनामकिय, भयेपुरोहितजासु ॥ २५ ॥ अश्वमेधअठहत्तरे, भइयमुनातटतासु ॥

तेरासहसधेनुप्रतियागा । दियोद्विजनप्रतिनृपबड़भागा ॥२६॥ औरौतीर्थनमेंसुखभीने । अश्वमेधतेतिससैकीने ॥
चकितभयेनृपतिनसमुदाई।लखिविभूतिसुरगयेलजाई॥२७॥कनकसाजुतेसजेमतंगा।चौदहिलक्षदियोइकसंगा २८
भूमेंभूपतिभरतसमाना । भयेनहैंनहिंह्वैहैंआना ॥ भरतभूपसमताकोपावै । जिमिभुजबलनहिंस्वर्गसिधावै ॥ २९॥
भरतभूपबहुयवननकाहीं।करिदिगविजयहन्योरणमाहीं॥द्विजद्वेषीभूपनकहँनाश्यो।त्रिभुवनअपनोसुयशप्रकाश्यो॥

दोहा-एकसमयसबसुरनको, जीतिअसुरसुरनारि ॥ हरिकैजाइरसातलै, बसेनशंकविचारि ॥

देवसकेनहिलैनिजनारी । भरतद्वारकहँजाइपुकारी ॥ सुरनदुखितलखिभरतनरेशा । पठयोनारजहाँअसुरेशा ॥
दूतद्रुतैगेदानवदेशा । भरतभूपकोकह्योनिदेशा ॥ देहुदेवतियदानवराई । नातोहोतिहमारिचढ़ाई ॥
कियसंमततबअसुरमहाना । भरतभूपभारीबलवाना ॥ अबनहिंरहहुसुरनकेधोखे । भरतकरिहिवधहनिशरचोखे॥
ऐसोदानवसकलविचारी । पठैदईदेवनकीनारी ॥ ३१ ॥ भरतकरतशासनअभिरामा । पूरीपुहुमिप्रजनमनकामा॥

दोहा-भरतचक्रवर्त्तीभयो, सतद्वीपमहँराज ॥ संवतसत्ताइससहस, महिमहँकीन्ह्योराज ॥ ३२ ॥

विभौजासुवासवलखिलाजै।नामसुनतरिपुहोतपराजै ॥३३॥ ताकेतीनिसतीसमरानी। देशविदर्भहिकीछबिसानी॥
भयेतीनिकेतीनिकुमारा । तिनहिंननृपनिजसारिसनिहारा ॥ रानिनसोंअसकह्योनरेशा । हमरेसरिसनइनकोवेशा ॥
सुनिनृपबानीमानिगलानी।सुतनमारिडारेसबरानी॥३४॥भरतपुत्रहितपुनिकिययागा।मरुतभूपपरकरिअनुरागा ॥
भरद्वाजनामकसुतदीन्ह्यों।तबनृपपाइप्रणामहिकीन्ह्यों॥३५॥मुनिउतथ्यसुरगुरुकेभाई।तिनकीममतानारिसुहाई ॥

दोहा-गर्भवतीसोइकसमै, होतभईतहँबाल ॥ गयेबृहस्पतितासुढिग, भोगकरननिशिकाल ॥

सुरगुरुग्रहणकियोजबताको । बोलतभयोगर्भममताको ॥ इहाँनदुतीगर्भकीजागा । तजहिरेतकतअरेअभागा॥
तबसुरगुरुकोपितदियशापा । होहिअंधपावहिसंतापा ॥ पुनिमैथुनकीन्ह्योंबरियाई । तज्योरेतसुरगुरुनरराई॥
तबजोरह्योगर्भउरमाहीं।पगतेदियढकेलितेहिकाहीं॥परतपुहुमिभोतुरतकुमारा॥३६॥ताकोममतातजनाविचारा ॥
तबसुरगुरुयहगिराउचारी । तजहुनतुमसुतकहँसुकुमारी॥तबतियकह्योतुम्हीसुतलेहू।उचितनहमकोकरबसनेहू ॥

दोहा-करतपरस्परवादइमि, सुततजिदोऊदीन । मरुतदेवतेहिपुत्रकहँ, लैगृहपालनकीन ॥
दुइतेउतपतिसुतभयो, जानिदेवअभिराम । हरषितासिगरेधरतभे, भरद्वाजअसनाम ॥
व्यर्थजानिजननीतज्यो, तातेवितथहुनाम।भरद्वाजसोऋषिभयो, जगमहँअतितपधाम ॥ ३८॥३९॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ नवमस्कंधे विंशस्तरंगः ॥ २० ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–भरद्वाजकेमन्युभे, ताकेपंचकुमार। बृहच्छत्रजयनरगरग, महावीर्यमतिवार ॥
नरसुतसंकृतिअतिरणबाँके। गुरुअरुरंतिदेवसुतताके॥१॥रंतिदेवकोसुयशमहाना।उभयलोकसुरनरकियगाना २
निजभोजनकोजोपकवाना। देतरह्योसोद्विजनसुजाना॥माँगतरह्योनकोहुसोंराजा।निष्किंचननिजभोजनकाजा ॥
युतकुटुंबसवइंद्रिनजीते॥३॥विनजलअरतालिसदिनबीते॥उनचासयेंदिवसमेंभोरा।घृतयुतपायसमिल्गिोथोरा॥४॥
क्षुधातृषातेकाँपतअंगा। भोजनकरनचह्योयकसंगा ॥ ताहीसमयअतिथिइकआयो॥५॥भूखाहौंयहवचनसुनायो॥
दोहा–निजभोजनतेंहिंअतिथिको, रंतिदेवमतिवंत। देतभयेअसजानिकै, सबमेंहैंश्रीकंत ॥
सोभोजनकरिगयोसिधारी॥६॥शेषरह्योतेहिंयुतसुतनारी॥भोजनकरनलग्योमहिपाला।आयोएकशूद्रतेहिंकाला ॥
जानिअतिथिदुर्लभबड़भागा॥दियोताहिभूपतिनिजभागा॥७॥जबपुनिशूद्रगयोनिजधामा।तबदूजोआयोतेहिंठामा ॥
लीन्हेनिजसंगहिबहुश्वाना॥रंतिदेवसोंवचनबखाना॥श्वानसहितनृपभोजनदीजै।अतिशयक्षुधितजानिमोहिंलीजै॥८॥
तबकुटुंबकोभागहिलैकै।दियोताहिसतकारहिंकैकै ॥ सबथलमाहँजानिनिजनाथा।वंद्योतिन्हैंजोरियुगहाथा ॥ ९ ॥
दोहा–जबजलभरवाकीरह्यो, ताकेकरतहिंपान। तहाँआयचंडालइक, कह्योदेहुजलदान ॥ १० ॥
सुनिताकीअतिआरतबानी। देख्योप्राणजातविनपानी ॥ तबऐसेनृपवचनबखाने।अतिशयकरुणारसमेंसाने॥११॥
अष्टऋद्धियुतमुक्तिहुकाहीं। येनहिंमैंमाँगहुँहरिपाहीं ॥ सिगरेजगतजीवसुखपावें। सिगरेनकेदुखमोमेंआवें ॥१२॥
क्षुधातृषाश्रममोहविषादा। शोककदीनताअरुअपवादा॥येसबकरिहैंतुरतपयाना। प्यासेकहँदीन्हेजलदाना ॥१३॥
असकहितृषाआपनीसहिकै।चंडालहिजलदियसुखचहिकै १४ लखिसुररंतिदेवकरदाना।प्रगटेसबफलदायकनाना॥
दोहा–देखिभूपसबसुरनको, सादरकियोप्रणाम। तिनसोंकछुमाँग्योनहीं, नृपहरिभक्तअकाम ॥ १६ ॥
रंतिदेवकरिजीवनदाया। स्वप्नसरिसतरिगेहरिमाया ॥ १७ ॥ जेकियरंतिदेवसतसंगा। तेऊयोगीभयेअभंगा ॥
नारायणपारायणह्वैकै। गेहरिलोकबासनाछैकै ॥ १८ ॥ गर्गसुवनशिनितासुतगारग। क्षत्रीतेद्विजभेश्रुतिपारग ॥
पुनिभोमहावीर्य्यमहराजा। ताकेदुरितक्षयसुतभ्राजा॥ताकेसबैसुवनश्रुतिलीना।त्रैयारुणिपुष्करकवितीना ॥१९॥
तेऊब्राह्मणभेकुरुराई। कीन्हेंतपसिगरेमनलाई ॥ हस्तीबृहतक्षत्रकेजाये। तेइहस्तिनापुरहिबसाये॥२०॥
दोहा–हस्तीकेत्रयसुवनभे, इकअजमीढसुजान ॥ पुनिदुमीढपुरुमीढपुनि, महावीरबलवान ॥
भोअजमीढवंशविख्याता। प्रियमेधादिकगुनअवदाता॥२१॥औरौइकअजमीढकुमारा।बृहदिषुताकोनामउदारा॥
ताकेभयोबृहद्धनुवीरा। ताकेबृहत्कायरणधीरा। तासुजयद्रथभयोकुमारा। महावीरबलतेजअपारा॥ २२ ॥
ताकेविशदसेनजितताके। ताकेरुचिरअश्वपरभाके ॥ २३ ॥ रुचिरअश्वकेपारकुमारा। ताकेसैनारहीअपारा ॥
पारतनयभोनीपमहीपा। सोजायोशतसुतकुलदीपा ॥२४॥ छायाशुककीकृतीकुमारी। तासुतब्रह्मदत्तयशकारी॥
दोहा–ब्रह्मदत्तगविनारिके, विष्वक्सेनसुजान ॥ २५ ॥ जिगीषव्यउपदेशते, विरच्योयोगमहान ॥
तासुउदकसनधृतमरयादा। ताकेप्रबलपुत्रभल्लादा ॥२६॥ सोद्विमीढकेभयोयवीनर। ताकेभोकृतिमानमोदकर॥
ताकेभयोसत्यधृतिनामा। भोदृढनेमितासुबलधामा॥ताकेभोसुपार्श्वमहिपाला॥२७॥ताकेभयोसुमतिअरिकाला॥
सुमतिपुत्रभोसंनतिमाना।ताकोहिरणिनाभबलवाना॥हिरणिनाभकोकृतीकुमारा।जोश्रुतिषट्संहिताउचारा॥२८॥
अरुसोनीपपुत्रउग्रायुध। ताकेक्षेमभूपवरआयुध॥ तासुसुवीररिपुंजयतासू ॥ २९ ॥ ताकेबहुरथसुयशप्रकासू॥
दोहा–भयोनसुतपुरुमीढके, हेकुरुपतिमहराज ॥ नृपअजमीढहिकेरही, नलिनीतियगुतलाज ॥
ताकेभयोनीलबलवाना। ताकेशांतिकुमारसुजाना ॥३०॥ ताकेभयोसुशांतिकुमारा। ताकेपुरुजभयोयशवारा ॥
ताकेअर्कतासुभरम्यासू। ताकेमुदगलादियुतभासू ॥ ३१ ॥ बृहतविश्वकांपिल्लयवीनर।मुदगलसंजयपुत्रपंचवर॥
तिनकेपिताकहीअसबानी। येममपंचपुत्रगुणखानी ॥ पंचदेशकोरक्षणकरिहैं। औरपुत्रलैअबकाकरिहैं ॥ ३२ ॥

भेपंचालनरेशा । शासनकियपंचालहिदेशा ॥ मुदगलतेमौद्गलद्विजवंशा । होतभयोजगजासुप्रशंसा ॥ ३३ ॥
दोहा–जोमुदगलभूपतिभयो, सुताअहिल्यातासु ॥ दिवोदासपुत्रहूभो, जाकोपरमप्रकासु ॥
गौतममुनिकोपायकै, नारिअहिल्याजोइ ॥ शतानंदकोप्रगटकिय, जनकपुरोहितसोइ ॥ ३४ ॥
शतानंदकेसत्यधृति, परमधनुर्धरवीर ॥ शरद्वानताकेभये, तेऊअतिरणधीर ॥
शरद्वानकोइकसमै, देखिउरवशीकाहिं ॥ ३५ ॥ रेतपातह्वैजातभो, मोहितशरवनमाहिं ॥
कृपाचार्यतातेभये, महावीरबलवान ॥ औरकृपीकन्याभई, जाकोजगतबखान ॥
पायौसंतनभूपतेहि, काननकरतशिकार ॥ व्याह्योद्रोणाचार्यको, करिकैउचितविचार ॥ ३६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे एकविंशस्तरंगः ॥ २१ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–दिवोदासकेसुतभयो, मित्रायुषजेहिंनाम । तासुच्यवनसुततासुको, भोसुदासअभिराम ॥
अरुसोमकसहदेवउदारा।भयेच्यवनकेतीनिकुमारा॥सोमककेशतसुतमतिमोटे।जेठेजंतु–॥१॥–पृषततिनछोटे ॥
पृपतपुत्रभोद्रुपदमहीशा । महाराजपांचालअधीशा ॥ जासुद्रौपदीभईकुमारी । पितामहीमहराजतिहारी ॥
धृष्टद्युम्नभोद्रुपदकुमारा ॥ २ ॥ ताकेधृष्टकेतुबलवारा । येभार्म्यासबहैंपंचाला । सुनहुवंशअजमीढविशाला ॥
सुतअजमीढऋक्षइकजोई । ताकेसुतसंवरणहिहोई ॥ ३ ॥ तपतीसूर्य्यसुताकहँव्याहा । ताकेभोकुरुनृपनरनाहा ॥
दोहा–कुरुक्षेत्रपतिसोभयो, धरमधुरंधरभूप । सुधनुजह्नुपरिछितनिषध, येकुरुपुत्रअनूप ॥ ४ ॥
सुधनकुमारसुहोत्रमहाना । ताकेच्यवनभयेबलवाना ॥ तासुकृतीवसुतासुकुमारा । तासुबृहद्रथजगतउदारा ॥
चारिबृहद्रथकेभेभ्राता ॥ ५ ॥ चेदिपमत्स्यकुशांबुविख्याता ॥ अरुप्रत्यग्रगुनौकुरुराई । भयेचँदेरीकेनरनाई ॥
पुत्रबृहद्रथकेरकुशग्रा । ऋषभतासुसुतबुद्धिउदग्रा ॥ ६ ॥ ताकेपुष्पवानमहिपाला।तासुसत्यहितसुवनविशाला ॥
ताकेजहुकुमारसुखगाथा । इककौतुकसुनियेनरनाथा ॥ भूपबृहद्रथकेइकरानी । मनुजपिंडद्वैखंडहिव्यानी ॥७॥
दोहा–देखिपिंडद्वैदुखितसो, बाहरदियोपवारि । जराजोरिदियखेलतै, जीवहुतीहिपुकारि ॥
सोईजरासंधमगधेशा । होतभयोअतिप्रबलनरेशा ॥ ८ ॥ ताकेभोसहदेवकुमारा । तासुपुत्रसोमापिउदारा ॥
ताकेपुत्रश्रुतश्रवरहेऊ । अरुजोकुरुसुतपरिछितकहेऊ ॥ ताकेभयोनभूपकुमारा । जह्नुपुत्रभोसुरथउदारा ॥ ९ ॥
ताकेभयोविदूरथभूपा । सार्वभौमभोतासुअनूपा ॥ सार्वभौमकोसुतजयसेना । ताकेराधिकसुतगुनऐना ॥
ताकेअयुत-१०-अयुतसुतक्रोधन।तासुतदेवातिथिबुधबोधन।तासुऋष्यतासुवनदिलीपा।तासुभयोपुनिपुत्रप्रतीपा।
दोहा–बाहलीकदेवापिद्वय, अरुशंतनुमहराज । भेप्रतीपकेपुत्रत्रय, सुखप्रदसुरनसमाज ॥
राजछोंड़िवनगेदेवापी॥१२॥तबशंतनुनृपभयेप्रतापी ॥ जिनकोजिनकोकरसेपरसे । तेतेवृद्धयुवाद्भुतदरसे ॥ १३॥
प्रजनसकलविधिआनँदछाये । तातेशंतनुनामकहाये ॥ तासुराजमहँद्वादशवर्षा । कीन्हींमेघकतहुँनाहिंवर्षा॥१४॥
तबशंतनुब्राह्मणनबोलाई । पूँछ्योतासुहेतुदुखछाई ॥ तबद्विजवरसुनायतेहिंदीन्हें । ज्येष्ठजियततुमराजहिकीन्हें॥
तातेदेहुदेवापिहिराजू । तबहिंबरषिघनकरिहैंकाजू ॥ १५ ॥ तबशंतनुदेवापिसमीपा । राज्यदेनहितगयेमहीपा ॥
दोहा–तहँशंतनुकेसचिवसब, प्रथमहिद्विजनपठाइ । मारगवेदविरुद्धबहु, दीन्ह्योतेहिंसमुझाइ ॥ १६ ॥
शंतनुजाइविनयजबकीन्हीं । तबसोश्रुतिनिंदाचितदीन्हीं ॥ तबनहिंरह्योराज्यअधिकारी। तातेवृष्टिभईअतिभारी॥
शंतनुपुनिहस्तिनपुरआये । देवापीमनमहँपछिताये॥बदरीवनकहँगयेभुवाला । करतरहततपतहाँविशाला ॥१७॥
चंद्रवंशराहिहैकलिनाहीं । सोइप्रगटैहैसतयुगमाहीं ॥ बाहलीकजोशंतनुभ्राता । तासुतसोमदत्ताविख्याता ॥

ताकेभयेपुत्रबलपीने । भूरिश्रवाभूरि॥१८॥शलतीने ॥ शंतनुजोसमुद्रअवतारा ॥ गंगाकोव्याह्योबलवारा ॥

दोहा–ताकेभीषमदेवभे, धराधनुर्धरधीर । परमभागवतमहाकवि, ज्ञानविज्ञानगँभीर ॥ १९ ॥

सकलधर्मज्ञातनमेंज्ञाता।सकलवीरमहँअतिविख्याता॥कियनिछत्रछितिइकइसवारा।परशुरामगहिकठिनकुठारा ॥

तेइसदिनमहँतेईरणमाहीं । जीतिलियोकरिविक्रमकाहीं ॥ सत्यवतीमहँशंतनुतेरे । भयेपुत्रद्वैओजघनेरे ॥

इकचित्रांगदनृपशिरताजा ॥२०॥ द्वितियविचित्रवीर्यमहराजा॥रणमहँचित्रांगदगंधर्वा।मारयोचित्रांगदहियगर्वा ॥

सत्यवतीसुतमोपितुव्यासा । प्रगटेकृष्णअंशसहुलासा ॥२१॥ वेदविभागकियोमुनिराई ।मोपरकरिकैकृपामहाई॥

दोहा–योगीनिजशिष्यनपिता, पैलादिकनदुराइ ॥ २२ ॥ अतिरहस्यश्रीभागवत, मोकोदियोपढ़ाइ ॥

काशिराजकीद्वैदुहितनको । ल्यायोभीषमहनिभूपनको॥२३॥अंबालिकाअंबिकाकाहीं।दियविचित्रवीर्यैगृहमाहीं॥

तिनमेंसोकियअतिअनुरागा।भोयक्ष्मारुजतवतनुत्यागा ॥२४॥ होतवंशकोभंगहिजानी।सत्यवतीकोशासनमानी॥

अंबालिकाअंबिकापाहीं । अरुइकदासीकेसँगमाहीं ॥ करिरतितैसुतमुनिउपजाये । तेजगऐसेनामहिंपाये ॥

नृपधृतराष्ट्रअंबिकाजाई । अंबालिकापांडुप्रगटाई ॥ दासीकेइकसुतभोहरिरत।नामविदुरजेहिंमहाभागवत ॥२५॥

दोहा–गांधारीउतपतिकियो, लहिधृतराष्ट्रसँयोग ॥ दुरयोधनआदिकसुवन, शतपांडवप्रदशोग ॥

अरुइकसुतादुःशलानामा।कुरुकुलमहँअतिशयअभिरामा॥पांडुकियोनहिंरतिवशशापा।तवकुंतीकोभयोसँतापा॥

धर्मअनिलअरुइंद्रबोलायो ।तीनिपुत्रकुंतीउपजायो ॥ भूपयुधिष्ठिरधर्महिंअंसा । मारुतअंशभीमअरिध्वंसा ॥

इंद्रअंशअर्जुनजगजेता । महाधनुर्धरओजनिकेता ॥२७॥ औरअंशअश्विनीकुमारा । भयेनकुलसहदेवउदारा ॥

माद्रीसुतयेअतिरणबाँके । अतिसुंदरविहीनउपमाके ॥ पंचालीकेपंचकुमारा । होतभयेअतिशयसुकुमारा ॥२८॥

दोहा–धर्मभूपप्रतिविंध्यसुत, भीमसुवनश्रुतसेन ॥ अर्जुनकेश्रुतिकीर्त्तिभे, सूदनशत्रुनसेन ॥

शतानीकभेनकुलहितेरे ॥२९॥ श्रुतकर्मासहदेवहिकेरे॥पौरविधर्मराजकीरानी।तासुतदेवकभोअभिमानी ॥३०॥

नारिहिडिंबामहँबलवारा । भयोघटोत्कचभीमकुमारा ॥ कालीऔरभीमकीनारी । तासुतभयोसर्वगतभारी ॥

शैलसुताविजयाजेहिनामा । व्याह्योतेहिंसहदेवललामा॥ताकेभयोसुहोत्रकुमारा।सकलशास्त्रकोजाननवारा॥३१॥

नकलकरेणुमतीतियमाहीं । प्रगट्योवीरामित्रसुतकाहीं ॥ कन्यानृपमणिपूरपतीकी । नामउलूपीकांतिततीकी ॥

दोहा–अर्जुनताकोव्याहिकै, प्रगटायोसुतवीर ॥ नामबभ्रुवाहनभयो, सोअतिशयरणधीर ॥

नृपमणिपूरपतीगृहराख्यो । ताकोअपनोसुतकरिभाख्यो॥इरावतीइकअर्जुननारी।इरावानभोतेहिंसुतभारी ॥३२॥

अर्जुनयदुपतिभगिनीकाहीं। हरिलीन्ह्योंद्वारावतिमाहीं ॥ रह्योसुभद्राजाकोनामा । ताकेभेअभिमन्युललामा ॥

पितारावरेकेकुरुराई । सबअतिरथिनमाहँजयपाई ॥ ताकीनारिविराटकुमारी । ताकेआपभयेयशकारी ॥ ३३ ॥

जबकुरुकुलकोभयोविनाशा । द्रोणपुत्रतबकोपप्रकाशा ॥ पांडववंशनाशमनलाई । अस्त्रब्रह्मशिरदियोचलाई ॥

दोहा–तबश्रीयदुपतिकरिकृपा, तुमकोलियोबचाइ ॥ मारिसुदर्शनचक्रते, दियोब्रह्मशिरलाइ ॥ ३४ ॥

आपहुकेयेहैंसुतचारी । तिनमहँजनमेजयअतिभारी ॥ उग्रसेनदूजोश्रुतसेना । भीमसेनतीजोबलऐना ॥ ३५ ॥

तक्षकतेतुवमृत्युहिलेषी । जनमेजयकरिकोपविशेषी ॥ तुरहिपुरोहितकरिबड़भागा । सर्पनाशहितकरिहैंयागा ॥

सिगरेसर्पज्वलनजरिजैहैं।तक्षकसहितइंद्रबचिरैहैं॥३६॥पुनिजनमेजयधरणीजीती।करिहैंअश्वमेधश्रुतिरीती॥३७॥

शतानीकताकोसुतह्वैहै । याज्ञवल्क्यतेहिंवेदपढ़ैहै ॥ क्रियाज्ञानअरुअस्त्रहुज्ञाना।शौनकतिन्हैंसिखैहैंनाना ॥३८॥

दोहा–ह्वैहैतासुकुमारपुनि, नामसहस्रानीक ॥ हयमेधजताकोसुवन, सकलनीतिमहँनीक ॥

पुत्रअसीमकृष्णतेहिंकेरो । तासुनेमिसुतबलीबड़ेरो ॥ ताकोचक्रनामसुतह्वैहै ॥३९॥ जोहस्तिनपुरकोतजिदैहै ॥

कौशांबीनगरीमहँजाई । बसिहैचक्रभूपदुखपाई ॥ ताकोपुत्रचित्ररथह्वैहै । तासुतकविरथनामकहैहै ॥ ४० ॥

ताकोवृष्टिमंतसुतहोई । पितासुषेणहिंकोहैसोई ॥ पुत्रसुषेणसुनीथहिह्वैहै ॥ ताकोसुतनरचक्षुकहैहै ॥

तासुसुखीनलह्वैहैभूपा ॥ ४१ ॥ पारिप्लवतेहिंपुत्रअनूपा ॥ मेधावीह्वैहैसुततताको । सुनयतासुसुतपतिवसुधाको ॥

दोहा—तासुनृपंजयहोइगो, दूरवतासुकुमार ॥ ताकेतिमितेहिंबृहदरथ, ह्वैहैपरमउदार ॥
पुनिसुदासह्वैहैकुहराई ॥४२॥४३॥ शतानीकतासुतसुखदाई ॥ ह्वैहैशतानीकसुतजोई । नृपदुर्दमननामतेहिंहोई॥
तासुवहीनरह्वैहैवीरा । दंडपाणिताकोरणधीरा ॥ पुनिनिमिह्वैहैताछुकुमारा । तासुतक्षेमकनामउचारा ॥
वरण्योब्रह्मक्षत्रकोवंशा । जाकोसुरनरमुनिहुँप्रशंशा ॥४४॥ क्षेमकनृपलोंकलियुगमाहीं । चलिहैचंद्रवंशपुनिनाहीं॥
अवमागधराजाजेह्वैहैं । तिनकोहमवृत्तांतसुनैहैं ॥ ४५ ॥ जरासंधसुतजोसहदेवा । तासुतमारजारिनरदेवा ॥
दोहा—ह्वैहैताकेश्रुतश्रवा, ताकोसुतअयुतायु ॥ ह्वैहैतेहिंनिरमित्रसुत, जोपायोवड़आयु ॥ ४६ ॥
सुनक्षत्रपुनिहोइगो, बृहदसेनतेहिंपुत्र ॥ ४७ ॥ ताकेह्वैहैकर्मजित, जगमेंपरमपवित्र ॥
तासुश्रुतंजयविप्रतेहिं, ताकोशुचिवड़भाग ॥ तासुक्षेमतेहिंसुव्रततेहिं, धर्मनेत्रकृतयाग ॥
तासुतसमह्वैहैजगत, दुमदसेनसुततासु ॥ तासुसुमतितेहिंसुवलसुत, ह्वैहैनीतिनिवासु ॥ ४८ ॥
पुनिसुनीथपुनिसत्यजित, विश्वजीतरिपुजीत ॥ मगधदेशमेंयेनृपति, ह्वैहैंसकलअभीत ॥
जेभावीवरण्योंनृपति, तिनहिंलेहुनृपजानिं ॥ सहसवर्षकेअंतरे, नशिजैहैंवलखानि ॥ ४९ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे द्वाविंशस्तरंगः ॥ २२ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—चक्षुपरोक्षसभानरो, अनुकेतीनिकुमारु ॥ भयोसभानरकेसुवन, नामकालनरचारु ॥
तासुपुत्रभोसंजयनामा॥१॥ताकोजनमेजयबलधामा ॥ ताकोमहाशीलमतिमाना । तासुमहामनअतिबलवाना ॥
तेहितितिक्षुसुतऔरउशीनरा।उशीनरहुकेचारिपुत्रवरा॥शिविवनसमिअरुदक्षप्रधाना।२।शिविकेभेसुतचारिमहाना॥
केकयभद्रवृपदर्भसुवीरा । पुत्रतितिक्षुउशद्रथधीरा ॥३॥ तासुहेमसुतपासुतताको । सुवनभूपबलिभोसुतजाको ॥
दीर्घतमागलिकेतियमाहीं । उपजायोषटपुत्रनकाहीं ॥ सुह्मकलिंगपुंड्रअरुअंगा । पंचमअंधऔरषटवंगा ॥
दोहा—कुरुपतियेषटभूमिपति, निजनामनअनुसार ॥ षटदेशनकोरचतभे, करिप्राचीविस्तार ॥ ४ ॥ ५ ॥
अंगकुमारभयोखनपाना । ताकोदिविरथपरमसुजाना ॥ तासुधर्मरथतासुचित्ररथ ॥६॥ सोईरोमपादभोअतिरथ॥
सखामानिदशरथमहराजा।शांताकोदीन्ह्योंगुनिकाजा॥रोमपादशांतादुहिताको।शृंगीऋषिहिदियोसुखछाको॥७॥
रहेविभांडकइकमुनिख्याता । भोतिनकोपटरेतानिपाता ॥ सोपटकहँधोयेसरिमाहीं । पानकियोहरिणीतेहिकाहा॥
तेहिहरिणीकेभयोकुमारा । शृंगीऋषियहनामउचारा ॥ रोमपादकेराजिहिमाहीं । एकसमयबरषाभइनाहीं ॥
दोहा—शृंगीऋषिआगमनते, ह्वैहैवृष्टिवनाय ॥ रोमपादअसजानिमन, गणिकनदियोपठाय ॥
वारवधूमुनिकेढिगजाई । कहिफलमोदकदियोखवाई॥मधुरगायनिजनाचदेखाई । मिलिमुनिमनकोलियोलोभाई॥
गणिकामुनिहिंनगरजबल्याई।होतभईतबवृष्टितहाँई॥८॥शृंगीऋषितहँयज्ञकरायो ॥९॥ रोमपादकेसुतउपजायो ॥
ताकोनामभयोचतुरंगा । तासुभयोप्रपुलाक्षसुअंगा॥१०॥बृहदकर्मअरुबृहदभानुवर।ज्येष्ठबृहद्रथत्रैसुततिनकर ॥
भयोबृहद्रथबृहदभानुसुत।तासुजयद्रथपुत्रओजयुत।तासुविजयधृतितासुकुमारा ११ तासुतधृतरथपरमउदारा॥
दोहा—सतकर्माताकोसुवन, अधिरथतासुकुमार ॥ १२ ॥ गंगातटमेंयकसमै, करतरह्योसुविहार ॥
तहँवहतसंदूकनिहारा । खोलिताहिइकलख्योकुमारा ॥ ताकोनिजसुतमानिबढ़ायो । कुंतीसुतसोइकर्णकहायो॥
ताकोपुत्रभयोवृषसेना । जाहिहन्यो अर्जुनबलऐना ॥ तीजोसुतजोद्रुह्युययाती । ताकोपुत्रबभ्रुविख्याती ॥
ताकोसेतुअरब्धतासुसुत ॥१४॥ ताकोसुतगांधारकविननुत ॥ ताकोधर्मपुत्रधृततासू । ताकोदुर्मदसुयशप्रकासू॥
तासुप्रचेतातेहिशतसुतभे१५उत्तरदिशिनृपम्लेच्छनयुतभे।तुरवसुजोसुतद्वितिययताती।ताकेभयोवह्निजगख्याती

दोहा-ताकेभागकुमारभो, भानुमानसुततासु ॥ १६ ॥ तासुत्रिभानुनरेशभो, पुत्रकरंधमजासु ॥
मरुतकरंधमकेसुतभयऊ॥१७॥जोदुष्यंतहिसुतगुनिलयऊ॥असवरणोंमैंनृपयदुवंशा१८परमपुण्यप्रदजगतप्रशंशा
श्रवणनश्रवणकरतजेहिकाहीं।तनकोपापरहततनुनाहीं॥१९॥जहँभगवानलियोअवतारा।करिलीलाभूभारउतारा ॥
यदुभूपतिकेचारिपुत्रभल।सहसजीतकोष्टाअरुरिपुनल २० सहसजीतकेसतजितभयऊ।ताकेतीनिपुत्रविधिदयऊ॥
प्रथममहाहैद्वितियवेनुहय।तीजोभयोभूपपुनिहैहय ॥ २१ ॥ हैहयकोभोधर्मकुमारा । तासुनेत्रतेहिंकुंतिउदारा ॥

दोहा--सोहंजीताकेभयो, महिषमानसुततासु । भद्रसेन-॥२२॥-ताकेभयो, दुर्मदधनकहुजासु ॥
धनकहिचारिपुत्रयुतओजा।कृतवीरजकृताग्निधृतओजा॥अरुकृतवर्मामहाउदारा।जोयदुवंशिनमहँशिरदारा॥२३॥
कृतवीरजकेअर्जुनभयऊ । सातौंद्वीपराजिकरिलयऊ।दत्तात्रयतेयोगहिपायो।अनुपमसुयशपुहुमिपरछायो ॥२४॥
महिकेमिलिमहीपसमुदाई।हयहयेंद्रसमतानहिंपाई॥२५॥करतराजतेहिंविजयविलासी।बीतेसंवत्सहसपचासी २६॥
रहेपुत्रयुगपंचहजारा । बचेपाँचभृगुपतिसंहारा ॥ जयधुजशूरसेनमधुवीरा । ऊर्जितवृषभपंचरणधीरा ॥

दोहा--यज्ञदानतपयोगबहु, कीन्ह्योंअर्जुनभूप । यदुपतिपदरतिनिरतअति, सुमिरतसदाअनूप ॥
अर्जुनकहँसुमिरतजनकाहीं । कबहुँहोतदारिदभयनाहीं॥२७॥तासुजेष्ठसुतजयधुजनामा।ताकेतालजंघबलधामा॥
ताकेभेशतपुत्रमहाना । तिनकोहन्योंसगरबलवाना॥२८॥वीतिहोत्रजेठोतिनरहेऊ ।तिनकेसुतमधुनामककहेऊ ॥
तिनकेवृष्णिआदिशतसूना । होतभयेइकइकतेदूना ॥ २९ ॥ तबतेयादवभेमधुवंशी । वृष्णिवंशिहूभयेप्रशंशी॥
रह्योजोयदुसुतक्रोष्टहिनामा।तासुतवृजिनवानबलधामा ३० तासुतश्वाहितासुअनशेकू।तासुचित्ररथसाहितविवेकू॥

दोहा--ताकेभोशशिबिंदुनृप, कीन्ह्योंभोगमहान ॥ ३१ ॥ लह्योचौदहौंरतनको, चक्रवर्तिगुणवान ॥
रानीताकेंदशैहजारा ॥ ३२ ॥ तिनकेभेदशलाखकुमारा ॥ तिनमेंषटसुतभयेप्रधाना । पृथुश्रवादिमहाबलवाना ॥
पृथुश्रवाकोभोसुत-॥३३॥-धर्मा।ताकेभोउशनासुतकर्मा॥करिकैअश्वमेधशतराजा।कियाअयाचकविप्रसमाजा॥
ताकेप्रगटेपंचकुमारा । तिनकेऐसेनामउचारा ॥ ज्यामघरुक्मऔररुकुमेषू ॥ ३४ ॥ औपुरुजितऔपृथुवरवेषू ॥
ज्यामघकेसुतविधिनहिंदीन्ह्यों।तियभयवियविवाहनहिंकीन्ह्यों।पैअरिजीतिकुँवरिइकलायो।पातआगमसुनितियसुखपायो॥

दोहा-चढिशिविकामहँआपहूँ, लेनगईअगवानि । रथपरलखितेहिंसवतिगुनि, बोलीकोपितबानि ॥ ३६ ॥
रेकपटीयहकौनको, लायोमोहिंछिपाय । बैठारयोममआसनहिं, मेरीसवतिबनाय ॥
तबबोलेनृपमानिभय, यहसुतवधूतुम्हारि ॥ ३७ ॥ बिनासुतहिंकहँसुतवधू, रानीकह्योपुकारि ॥
एकतोमैंवंध्याअहौं, दूजेसवतिविहीनि । पुत्रवधूयहकौनविधि, आईइतैनवीनि ॥
तबज्यामघकंपतकह्यो, तुवसुतह्वैहैजौन । ताकीह्वैहैनारियह, अवविवादहैकौन ॥ ३८ ॥
सुरनभूपकेवचनसुनि, एवमस्तुकहिदीन । रानीहूमानतभई, फेरिकोपनहिंकीन ॥
तबरानीकेहोतभो, नामविदर्भकुमार । तेहिंकंन्याकोकरतभो, तासुविवाहउदार ॥ ३९ ॥

इतिसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे त्रयोविंशस्तरंगः ॥ २३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-सोविदर्भभूपतिभयो, भयेतीनिसुतजासु । इककुशकियकैथिकतृतिय,रोमपादसहुलासु ॥ १ ॥
रोमपादसुतबभ्रुसुजाना । ताकोकृतिभोअतिबलवाना॥ताकेकुशिककुशिकसुतचेदी।ताकेचैद्यादिकअरिभेदी॥२॥
क्रथकेकुंतिवृष्टिसुततासू । ताकेनिरवृतिजगयशभासू ॥ तासुदशार्हव्योमसुतताको॥३॥तासुतभोजीमूतप्रभाको॥
ताकोविकृतिभीमरथताको।ताकोनवरथदशरथजाको ४ दशरथसुवनशकुनिनरनाहा।तासुकरंभियशीजगमाहा॥
ताकोदेवरातमहिपाला।ताकोदेवक्षत्रअरिकाला॥तासुतमधुताकोसुतकुरुवश।तेहिंअनु-५-तेहिपुरुहोत्रविपुलयश।

दोहा--तासुआयुपुनितासुसुत, सात्वतभोमहिपाल । सात्वतकेसुतसातभे, सुनियेंनामभुवाल ॥

दिव्यवृष्णिभजऔभजमाना। अंधकदेवावृधबलवाना॥ ६॥ सतमममहाभोजयशवारा। भेभजमानहिषट्कुमारा॥ धृष्टींकिंकिणीऔनिमिलोची। यकतियमेंयेत्रयदुखमोची। शतजितसहसजीतअयुताजित। यकतियकेत्रयसुतयेबलमित देवावृधकेबभ्रुकुमारा। तिनयशकवियहिभाँतिउचारा॥ जसयशसुन्योदूरितेइनको। देख्योआइतैसईतिनको॥९॥ मनुजनमेंहैबभ्रुमहाना। देवावृधहैदेवसमाना॥ जिनसँगकरिजनमुक्तिहिपाये। पैंसठिचौदहसहससुहाये॥ १०॥

दोहा--धर्मात्माअतिहोतभो, महाभोजमहिपाल। कहवायोजेहिंसुयशते, भोजवंशसबकाल॥ ११॥

वृष्णिसुमित्रपुत्रइकवीरा। दूजोभयोयुधाजितधीरा॥ द्वैसुतभयेयुधाजितकेरे। इकशिनिइकअनिमित्रनिबेरे॥ भोअनिमित्रहिनिम्नकुमारा॥१२॥ ताकेभेद्वैपुत्रउदारा॥ सत्राजितप्रसेनजितनामा। होतभयेअतिशयबलधामा॥ शिनिकेभोसत्यकबलवाना१३तासुसात्यकीसमरसुजाना॥ ताकेविजयविजयसुतकुनिहै। तासुयुगंधरसुतसममुनिहै। अनिमित्रहियकऔरकुमारा। ताहुनामसबवृष्णिउचारा॥१४॥ तासुश्वफल्कचित्ररथदोई। नारिफश्वल्कगांदिनीजोई॥

दोहा--तासुत्रयोंदशपुत्रभे, अक्रूरादिसुजान। तिनकेसुनियेनामनृप, मैंअबकरहुँबखान॥ १५॥

मृदुवितमृदुरहुगिरिआसंगा। सारमेयशत्रुघ्नसुअंगा॥ धर्मवृद्धिपतिबाहुसुधर्मा। क्षेत्रोपेक्षकलितशुभकर्मा॥ गंधमादअरिमर्दनवीरा। अरुभगिनीइकनामसुवीरा॥ १६ १७॥ देववानउपदेवउदारा। भयेउभयअक्रूरकुमारा॥ पृथुविदूरथादिकबहुवीरा। भयेचित्ररथकेरणधीरा॥१८॥ शुचिकंबलबरहिषभजमाना। कुकुरादिअंधककियगाना॥ कुकुरकेभेवह्निकुमारा। ताकेभयेविलोमउदारा॥ १९॥ सोकपोतरोमासुतजायो। तासुतअनुतुंबुरुसँगभायो॥

दोहा--अनुकेअँधकहोतभे, ताकेदुंदुभिवीर। दुंदुभिकेदरिद्योतभे, तासुपुनर्वसुधीर॥ २०॥

सोएककन्याइकसुतजाये। तेआहुकआहुकीकहाये॥ आहुककेद्वैसुतकृतकाजा। देवकउग्रसेनमहराजा॥ देवककेसुतचारिसुहाये॥ २१॥ तिनकेऐसेनामगनाये॥ देववानउपदेवसुदेवा। औरदेववर्धननरदेवा॥ अरुदेवककेसातकुमारी। धृतदेवादिकअतिछविवारी॥ २२॥ सातहुमाहँदेवकीछोटी। सबतेभईभाग्यकीमोटी॥ तिनसातहुवसुदेवविवाहा॥ २३॥ नवसुतउग्रसेननरनाहा॥ कंसकंकनिग्रोधहुशंकू। राजपालकुहुसृष्टिनिशंकू॥

दोहा--अरुसुनामबलवानअति, तुष्टिमाननौपुत्र। उग्रसेनकेहोतभे, सिगरेधर्मअमित्र॥ २४॥

कंसाआदिकपंचकुमारी। भईदेवभागादिकनारी॥ २५॥ भयोविदूरथकोसुतशूरा। भोभजमानतासुसुतरूरा॥ ताकोशिनिसुतस्वयंभोजतेहिं। भयोहृदीककुमारनामजेहिं॥२६॥ देवबाहुशतधनकृतवर्मा। येताकेत्रयसुतशुभकर्मा। देवमीढसुतशूरसुहायो। तातियनाममारिषागायो॥ २७॥ ताकेभेदशप्रबलकुमारा। तिनकेऐसेनामउचारा॥ देवभागवसुदेवहुआनक। देवश्रवस--२८--सृंजयअरुश्यामक। कंकसमीकहुवत्सकअरुवृक। येदशहोतभयेजनरक्षक।

दोहा--जबमहिमेंवसुदेवको, जन्मभयोसुखछाय। तबआनकअरुदुंदुभी, सुरनरदियोबजाय॥ २९॥

तातेआनकदुंदुभिनामा। होतभयोहरिजनकललामा॥ पांचभगिनिवसुदेवहिकेरी। होतभईजिनसुछबिघनेरी॥ श्रुतिकीरतिकुंतीश्रुतदेवी। श्रुतश्रवाहु-३०-राजाअधिदेवी॥ कुंतिभोजकहँकुंतीकाहीं। शूरदियोगुनिसखातहाँहीं ३१। एकसमयदुर्वासाआये। कुंतीकहँइकमंत्रबताये॥ तासुपरीक्षाहेतुकुमारी। सूरजसनमुखमंत्रउचारी॥ भानुदेवकोआशुबोलायो। सूरजआशुउतरितहँआयो ३२ तबकुंतीअतिअचरजमानी। रविसोंविनयकियोमृदुबानी॥

दोहा--मंत्रपरीक्षाहेतुमैं, तुवसनमुखपढ़िदीन। तातेअबकरिकैक्षमा, निजथलजाहुप्रवीन॥ ३३॥

तवसूरजअसवचनउचारा। हैअमोघजगदरशहमारा॥ तैंसुतपैहैआज्ञामेरी। जैहैनहिंकुमारिततेरी॥ ३४॥ असकहिकुंतिहिगर्भहिदीन्ह्यो। सूरजस्वर्गहिंगमनहिकीन्ह्यो॥ सोकुंतीकेभयोकुमारा। भानुसरिसतेहिंतेजअपारा ३५ सोडुराइकुलकानिहिकाहीं। फेंकिदियोयकसरितामाहीं॥ पुनिप्रपितामहपांडुतुम्हारो। व्याह्योकुंतिहिपरमउदारो ३६ वृषशर्माश्रुतदेवहिव्याहा। सोइहैकरूषनरनाहा॥ दंतवक्रभोतासुकुमारा। जोजगमेंजाहिरबलवारा॥ ३७॥

दोहा--धृष्टकेतुअरुकेकयो, विप्रचित्तदनुजेश। श्रुतिकीर्तिहितेतरतभे, रतिचोराइयकदेश॥

केकैतेभेपंचकुमारा। परमबलीअरुपरमउदारा॥ ३८॥ लहिराजाधिदेविजयसेना। प्रगटकियेत्रयसुतबलऐना॥ विंदुऔरअनुविंदुहिनामा। भयेधर्मतेद्विजकृतकामा॥ श्रुतश्रवेव्याह्योदमघोषा॥३९॥ तातेभोशिशुपालसरोष

कंसादेवभागकहँपायो।परमबलीद्वैसुतउपजायो॥चित्रकेतुअरुदितिहिबृहदबल।जिनकीन्ह्योंभारतविक्रमभल ४०॥
कंसवतीलहिदेवश्रवाने । जन्योसुवीरऔरइपुवानै ॥

दोहा-आनकलहिकंकातिया, द्वैसुतजन्योअजीत । शत्रुजीतइकहोतभो, दूजोभोपुरुजीत ॥ ४१ ॥

सृंजयराष्ट्रपालिकापायो । वृषदुर्मर्षनादिसुतजायो ॥ श्यामकशूरभूमितियमाहीं । जन्योहिरणिहरिकेशहिंकाहीं ॥
वत्सकमिश्रकेशिकहँपाई । सुतवृकादिदीन्ह्योंउपजाई॥वृकदुर्वामहँअतिअहलादिक।पुष्कलतक्षजन्योशालादिक॥
लैसुदामिनीभूपसमोका । सुमित्रादिजनम्योसुतनीका ॥ कंककर्णिकामहँऋतुधामैं । औजयकोजनम्योगुणगामैं ॥
पौरविरोहिणिनिलनलोचना । मदिराभद्राइलारोचना ॥ येवसुदेवहिकीहैंरानी । इनमेंदेवकिअहैसयानी ॥ ४५ ॥

दोहा-दुर्मदगदध्रुवविपुलकृत, औसारणमतिधाम । रोहिणियेकेसुतभये, औजेठेबलराम ॥ ४६ ॥

भद्रसुभद्रहभद्रभुज, दुर्मदादिबलवान । येद्वादशभटहोतभे, पौरविपुत्रसुजान ॥ ४७ ॥

मदिराकेसुतहोतभे, शूरादिकअतिशूर । भद्राकेकेशीभयो, एकपुत्रजगरूर ॥ ४८ ॥

हस्तादिकरोचनाकुमारा । उरुवलकलसुतइलाउदारा ॥ भेविपृष्टधृतदेवाकेरे । शांतिदेवप्रशमादिघनेरे ॥ ५० ॥
उपदेवाकेदशसुतभाये । कल्पवर्षआदिककहवाये ॥ भयेपुत्रषटश्रीदेवाके । वसुहंसादिकश्रमदेवाके ॥ ५१ ॥
नवसुतदेवरक्षिताकेरे । भयेगदादिकबलीवनेरे ॥ सहदेवाकेआठकुमारा ॥ ५२ ॥ पुरुविश्रुतआदिकबलवारा ॥
श्रीदेवकीआठसुतजाये । तिनकेऐसेनामगनाये ॥ ५३ ॥ कीर्तिमंतऋजुभद्रसुपेना । संतर्दनअरुमंगलसेना ॥

दोहा-तहँासातयोंहोतभो, श्रीवलभद्रकुमार ॥ ५४ ॥ अठयेंमेंअंशनसहित । कृष्णलियोअवतार ॥

सुतासुभद्राअतिबड़भागिनि।पितामहीरावरीसोहागिनि॥५५॥जबजबहोइधर्मकरनाशा।औपुहुमीपरपापप्रकाशा॥
तबतबकृष्णलेहिंअवतारा।भंजैभूरिभूमिकरभारा॥५६॥औरजन्मकरकछूनहेतू।प्रगटहिंइच्छितकृपानिकेतू॥५७॥
जिनकीलीलाअहैअपारा।हितउतपतिपालनसंहारा॥मुक्तिहेतुजगजीवनकाहीं।लीलाकरहिंअमितजगमाहीं ॥५८॥
पुहुमीपरपुहुमीपतिपापी । होतभयेजबविप्रसँतापी ॥ तबह्वैश्रीवसुदेवकुमारा । करिभारतभूभारउतारा ॥ ५९ ॥

दोहा-अजशिवशक्रहुमनहिंते, जानहिंजाकोनाहिं । ऐसीलीलाकरतभे, बलयुतहरिमहिमाहिं ॥ ६० ॥

कलिमहँनिजभक्तनकेहेतू । प्रगटकियेयशकृपानिकेतू॥नाशकशोकमोहअज्ञाना।पावनपावनकरनमहाना ॥ ६१॥
हरियशतीरथमहँजोजाई । करणांजुलिह्वैजनमनलाई ॥ एकहुवारकराहिजोपाना । छूटहिंकर्मवासनानाना ॥६२॥
मधुदशार्हअंधकअरुभोजू । शूरसेनसंजययुतओजू ॥ यदुवंशीकुरुवंशिहुजेते । कियेप्रशंसनप्रभुकहँतेते ॥ ६३ ॥
मधुरबोलिलखिमृदुमुसक्याई । लीलाविक्रमसहितदेखाई ॥ मनुजलोककोमोदबढायो । भूपअनूपरूपछबिछायो॥

दोहा-जेहिंजेहिंदेशननगरमहँ, गवनकीनयदुनाथ । तहँतहँकेनरनारिसब, निरखतभयेसनाथ ॥ ६४ ॥

कवित्त-सोहिरहेमकराकृतकुंडलचारुकपोलनमेंलगिकानन ।
आनँदरूपसोंहासप्रकाशितयोंयदुनंदनकोवरआनन ॥
नित्यहींनारीनरौनिरखेवरषेजलनैननअनेकअघानन ।
कोपितवारहिंवारकहैंपलकेचखकाहेरच्योचतुरानन ॥ ६५ ॥
मथुराजनमिव्रजलीलाकरिमारिरिपुकरिबहुव्याहबहुसुतउपजायेहैं ।
लोकशिक्षाहेतकीन्हेंनयज्ञकेनिकेतपांडवानिकौरवमेंकलहबढ़ायेहैं ॥ ६६ ॥
बीरनकोबलहरिनिजदीठिहीसोंविजैवानतेहतायविजैविजयीबनायेहैं ॥
भाषैरघुराजदैकैउद्धवकोज्ञानयदुराजकरिकाजनिजधामकोसिधायेहैं ॥

दोहा-निधिनभनिधिशशिसंवतै, शितप्रतिपदभृगुवार । मासअषाढहिपूरभो, नवमस्कंधउदार ॥ ६७ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्री राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ नवमस्कंधे चतुर्विंशस्तरंगः २४

दोहा-महाराजरघुराजकृत, भाषानवमस्कंध । यहसमातमुद्रितभयो, संयुतछंदप्रबंध ॥

समाप्तोऽयं नवमस्कंधः ९.

इति

श्रीमद्भागवत--आनन्दाम्बुनिधि

नवमस्कन्धः समाप्तः ९.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-बम्बई.

दशमस्कंधपूर्वार्ध
कंस
देवकी
महामाया
देवकी
कं.
पूतना.
कृ.
शकटभंजन.
यशोदा.
कृ.
यमलार्जुन
बकासुर
अघासुर
कृ.
ब्र.
धेनुका
गोवर्धन
यज्ञपत्न्या.

अबिका
गोप
नंद
अरिष्टासुर
कृ.
केशीदै
रासक्रीडा
गोपी
अक्रूर
धनुर्भंग
कुवलयापीड
राम
कृ.
चा.
रा.
कृ.
कंस.
गोपी
उद्धव
पांडव
अक्रूर

श्रीगणेशाय नमः ।

श्रीमद्भागवत--आनन्दाम्बुनिधि ।

दशमस्कंध (पूर्वार्ध) प्रारंभः ।

सोरठा–जयजयश्रीव्रजचंद, नंदनंदआनंदकर ॥ मतिदायकजनवृंद, व्रजवनितामुखकंजअलि ॥
दोहा--पारथसारथिचरणमें, चितनकृतारथजासु ॥ स्वारथपरमारथसकल, अहैअकारथतासु ॥
जयजयश्रीसिंधुरवदन, चरणहरणसबशोक ॥ हरणविघनआनँदभरन, नरनसदामुदओक ॥
जयशारदपारदप्रभा, करुणाआरदबुद्धि ॥ नारदआदिकवंद्यपद, गारदकरनिकुबुद्धि ॥
जयमुकुंदहरिगुरुचरण, जोमोहिंसदाअधार ॥ जासुकृपातरिहौंसहज, यहसागरसंसार ॥
रघुपतिचरणसरोजमहँ, जाकोचितनितलीन ॥ सोपितुश्रीविशुनाथपद, वंदतहौंमुदभीन ॥
कवित्त–नातोनीलशैलवासनाहिंभयोपक्षीपति, नाहिंवलमीकहूँतेजनमकोपाइये ।
नाहिंहाथवीनापुलिनौमेंजन्मलीन्ह्योनाहिं, सुरअसुरौनउपरोहितकहाइये ॥
कहैरघुराजकृपाकैकैसुनोव्रजराज, रावरेकोचारितअपारक्योंबनाइये ॥
नातोभयेचारिमुखनातोभयेपांचमुख, नातोभोसहसमुखकहोकैसेगाइये ॥
दोहा–पैआनँदअंबुधिदशम, पूर्वारधयदुराय ॥ मेरेउरमेंबैठिकै, दीजैनाथबनाय ॥
सुनिकैअसकंधहिंनवम, नृपकुरुकुलकोनाथ ॥ फेरिकह्योशुकदेवसों, मुदितजोरियुगहाथ ॥

परीक्षित उवाच ।

सोमसूर्यवंशहिविस्तारा । तिननृपअद्भुतचरितअपारा॥मोहिंसकलमुनिदियोसुनाई।जदुनृपकीगाथासबगाई ॥१॥
पैअबनाथकृपाकरिभारी । सुनिकैनेशुकविनयहमारी ॥ यदुकुलहरिवललैअवतारा । जौनकरीलीलासुखसारा ॥
सिगरीआदिअंतसोंगाई । धन्यकरहुमोहिंसकलसुनाई॥२॥बसिकैनंदगेहनँदलाला । कहौकियोजोचरितविशाला॥
अरुमथुराद्वारावतिमाहीं । कहौजोकियोचरित्रनकाहीं॥३॥भवआमयऔषधिहैसोई । मनहिंहरतश्रवणनपरिजोई॥
जिनकेउरतृष्णानहिंआवैं । तेजनताहिंप्रीतियुतगावैं ॥
दोहा–ऐसोयदुपतियशसुधा, जगमेंअतिविख्यात ॥ पशुघातीकोछोड़िकै, कोकरिपानअघात ॥ ४ ॥
कवित्त–दुर्योधनवाडोआगिनीरजामेंसौबल, दुशासनगँभीरतातरंगबहुवीरकी ।
भीषमऔद्रोणकर्णआदिअतिरथीसवै, जामेंमहाग्राहमरयादनृपभीरकी ॥
कहैरघुराजऐसोकौरवसमुद्रघोर, वाढ्योचकराईपाइद्रौपदीकेचीरकी ।
ताकोपितामहमेरेगोपदसमानतरे, पायकैजहाजएकबाहुयदुवीरकी ॥ ५ ॥
पांडुकुरुकुलकोसंतानबीजमेरोतन, रह्योजननीकेगर्भहीमेंजेहिंकालहै ।
तापैकोपकरिकैप्रचंडद्रोणनंदन, पवारचोब्रह्मशिरअस्त्रपरमकरालहै ॥
सुनतपुकारउत्तराकीकहैरघुराज, जानिनिरमूलदोऊवंशकोउतालहै ।
पैठिकैउदरगदागहिकैकृपालकाल, मुहसोंबचायोमोहिंदेवकीकोलालहै ॥ ६ ॥
जगतप्रकासीजगअंतरकोवासीकाल, रूपजगनाशीयहमायजासुदासीहै ।
पुरुषसुरूपभासीदेनवारोमुक्तिखासी, भक्तशत्रुत्रासीपालैप्रजनहुलासीहै ॥
देवसरितासीताकीलीलासुखरासीकहौं, कृपाकैजोनरवपुधारचोअविनाशीहै ।
कहैरघुराजवृंदावनकोनिवासीचारु, चंद्रचंद्रिकासीव्रजवनिताविलासीहै ॥ ७ ॥

दोहा-रामरोहिणीकेतनय, प्रथमकह्योमुनिजोय ॥ तिन्हैंदेवकिहुकेकह्यो, बिनद्वैतनकिमिहोय ॥
हेमुनिपतिकरिकृपामहाई। यहशंकाममदेहुमिटाई॥८॥केहिहितयदुपतिताजिपितुगेहू। बसेजायव्रजमेंकरिनेहू॥
कौनकौनकियचरितउदारा। गोपसखनसँगनंदकुमारा॥९॥व्रजमथुराद्वारावतिमाहीं॥कियेचरितवरणहुतिनकाहीं॥
निजमातुलकंसहिंकेहिंहेतू। कियअयोगवधकृपानिकेतू॥१०॥पुरीद्वारकामहँमुनिराई। यदुवंशिनसँगमहँयदुराई॥
कितनेवर्षनकियोनिवासा। सोमोसोंमुनिकरहुप्रकासा॥कितनीभईकृष्णकीरानी॥११॥हरिचरित्रऔरहुसुखदानी॥
वरणहुनाथसहितविस्तारा। श्रवणकरनमनचहतहमारा ॥ १२ ॥
दोहा-परमदुसहयद्यपिछुधा, यहजगमेंमुनिराय ॥ तापरमैंत्याग्योजलहु, बैठ्योमुनिमधिआय ॥
निरगततुवमुखजलजते, यदुपतिकथापियूष ॥ पानकरतश्रुतिअंजुली, बाधतितृषानभूष ॥ १३ ॥

सूत उवाच।

हेशौनकअसनृपकीवानी। सुनिशुकदेवमहामुदमानी॥कलिकल्मषकीनाशनहारी। हरिकीकथासराहिसुखारी॥
कियोअरंभहिकरनबखाना। व्याससुवनभागवतप्रधाना ॥ १४ ॥

श्रीशुक उवाच।

भलीबुद्धियहभईतिहारी। सुननकृष्णगाथासुखकारी॥१५॥कृष्णकथाकोप्रश्नसुजाना॥करततीनितनपूतमहाना॥
वक्तापृच्छकऔरहुश्रोतै। जिमिपापिनगंगाकरसोतै ॥ १६ ॥ दैत्यअंशभेभूपअपारा। तातेभयोभूमिकहँभारा॥
भूरिभारभूपीड़ितह्वैकै। कौनहुँविधिननाशतेहिंज्वैकै ॥
दोहा-ब्रह्माकेशरणहिंगई, भू-॥१७॥-धरिसुरभिसरूप। करुणाकरिरोवनलगी, वरण्योनिजदुखभूप ॥ १८ ॥
सुनिविरंचिधरणीदुखभारी। लैसँगमेंसुरमहित्रिपुरारी॥गयेक्षीरसागरकहँआसू। शयनकरतजहँरमानिवासू॥१९॥
ठाढ़ेभयेक्षीरनिधितीरा। ब्रह्माशंकरयुतसुरभीरा॥ पुरुषसूक्तपढ़िकैजगदीशै। अस्तुतिकरनलगेनतशीशै ॥२०॥
तबभैतहँअकाशतबानी। ताकोसुनिब्रह्मासुखमानी॥ सबदेवनअसगिरासुनाई। सुनहुसकलसुरअवचितलाई॥
जोसमाधिमहँअतिसुखदाई।गगनगिरामोहिंपरीसुनाई॥सुनिकैकरहुसुरहुतेहिभाँती।तबमिटिहैसिगरीदुखपाँती २१
दोहा-प्रथमहिंसुररिपुजानिलिय, यहधरणीकोभार। यदुकुलमेंसिगरेअमर, लेहुआशुअवतार ॥ २२ ॥
श्रीवसुदेवभवनमहँजाई। ह्वैहैंप्रगटकृष्णसुखदाई ॥ हरिकेप्रियहितसबसुरदारा। लेहिंजाइअवनीअवतारा॥
जबलौंरहहिंकृष्णमहिमाहीं। तबलोंतुमसबरहहुतहाँहीं॥ भूभारहिउतारिहरिदैहैं। धरणीमेंध्रुवधर्मचलैहैं ॥ २३ ॥
वासुदेवकीकलाअनंता। सहसवदनजिनतेजनअंता॥ तेहरिकेतहँअग्रजह्वैहैं। हरिहितखलनखलककेख्वैहैं॥२४॥
जोभगवतीकृष्णकीमाया। जेहिंसिगरेजगकोभरमाया॥सोमुकुंदकोशासनपाई। कछुकारजहितप्रगटीजाई॥२५॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यहिविधिकहिसबसुरनसों, धरणिहिंबहुसमुझाय। गवँनतभोनिजधामको, धाताअतिसुखपाय ॥ २६ ॥
शूरसेनअसनामविशाला।मथुरामंडलकोमहिपाला॥मथुरामहँसोनिवसतरहेऊ।विविधभाँतिकेभोगहिलहेऊ ॥२७॥
मथुरायदुवंशिनसुखदानी। भईराजधानीछबिखानी॥ मथुरातेहिंनितरहहिंमुरारी। ऐसोभाषहिंवेदविचारी॥२८॥
पुनिकछुकालमाँहसुनुराजा। प्रगट्योउग्रसेनमहराजा॥ ताकेप्रगटच्योसुतबलधामा। ताकोरह्योकंसअसनामा ॥
देवकउग्रसेनलघुभाई। तासुदेवकीसुतासुहाई ॥ उग्रसेनह्वैपरमउछाही। वसुदेवहिदेवकीविवाही ॥
दोहा-बहुदाइजदैप्रीतिकरि, दुहितारथहिंचढ़ाइ ॥ २९ ॥ उग्रसेनकीन्हीबिदा, नैनननीरबहाइ ॥
भगिनीप्रीतिपरेखिविशेखी। चढ्योकंसरथपैसुखलेखी ॥ निजकरगह्योतुरंगनिडोरी। रहीतहाँरथभीरनथोरी॥
हाँक्योचपलहेमरथकंसा। करीसकलजगतासुप्रशंसा॥३०॥ कनकसाजसाजेमदवारे। दियोचारिशतनागदतारे॥
दियोपंचदशसहसतुरंगा।अष्टादशशतरथहुअभंगा॥ ३१ ॥ द्वैसैदियदुहितासँगदासी। अलंकारसंयुतछबिरासी॥

यहिविधिदेवकदाइजदीन्यो।दुहिताप्रीतिरीतिरसभीन्यो॥तुरहीशङ्खमृदङ्गनगारे।बाजतभेतहँबाजअपारे॥३२॥३३
दोहा-कछुकदूरजबदेवकी, गवँनतभैरथमाँहि। तबनभवाणीहोतिभै, अतिकटुकंसहिंकाँहि॥
सुनुरेकंसमहाअज्ञानी। जेहिरथमेंचढायसुखमानी॥ चलोजातपहुँचावनहेतू। हैनकछूतेरेचितचेतू॥
अठयोंगर्भदेवकीकेरो। करिहैअवशिकंसवधतेरो॥ ३४॥ ऐसीसुनततहाँनभवानी। कुलदूषणपापीअभिमानी॥
ऐसोकंसदयासबत्यागी। भगिनीहननचह्योभैपागी॥पकरचोकेशकाढ़ितरवारी।काटनलग्योशीशअविचारी॥३५॥
ताकोअतिनिंदितयहकरमा।त्याग्योलाजऔरसबधरमा॥सोवसुदेवनिरखिदुखपागे।कंसहिंअससमुझावनलागे ३६॥

वसुदेव उवाच।

दोहा-शूरसराहैंआपुगुण, हौनिजकुलयशकारि। सोविवाहिभगिनीहनन, कतकाढीतरवारि॥ ३७॥
जबतेजीवजन्मजगपावै। तबतेमृत्युसंगमहँआवै॥ मरैआजुकीबहुदिनमाँहीं। मीचुगुनहुँध्रुवजीवनकाँहीं॥३८॥
मरणकालजबगोनगिचाई। तबतनुदुतियकर्मवशपाई॥यहतनुकोत्यागतहैजीवा।सोदृष्टांतसुनहुमतिसीवा॥३९॥
जिमिआगेजोरईपदधरई। पीछेपगतृणत्यागनकरई॥जिमिधरिप्रथमचरणनरराऊ। नरहुउठावतपाछिलपाऊ४०॥
जिमिजागतमहँजोहतजोई। देखतपुरुपसपनमहँसोई॥ जागतकीसबसुधिविसरावै। ऐसेहिंश्रुतिदेहिनगतिगावै॥
दोहा-जबदूजोतनुकोलहत, जिययहतनुहिंविहाय॥ तबहींयहतनुकीसुरति, भूलिजीवकहँजाय॥ ४१॥
मरणसमयजहँजहँमनजावै।करमविवशजियसोइतनुपावै४२जिमिजलडोलेडोलतचंदा।तिमिमोहतजियमायाफंदा॥
असगुनिकरहुनकेहुसोंद्रोहू। सबअवमूलजानियेंकोहू॥ जोआपनचाहैकल्याना। तौछोडैसबवैरविधाना॥
जोसबसोंराखतरिपुरीती। ताकोभोजरोजहैभीती॥ ४४॥ सुतासरिसभगिनीयहतेरी। अतिशयदीननारिभैमेरी॥
हनहुनयहिकरिकोपकराला। अहहुकंसतुमदीनदयाला॥ ४५॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिसामभेदकेवचना। कहवसुदेवकरतबहुरचना॥
दोहा-पैअतिदारुणभोजपति, समुझ्योनेकहुनाहिं॥ दैत्यअंशतेप्रगटभो, दयानभैउरमाहिं॥ ४६॥
जबनहिंमान्योकंसकराला।तबवसुदेवहुबुद्धिविशाला॥असविचारकीन्ह्योमनमाहीं।कहाकरबअबउचितयहाँहीं४७॥
यदपिमृत्युनहिंबचैबचाई। तदपिबुद्धिबलजहँलोंजाई॥ तहँलोंउचितैकरबउपाई। भगवतगतिकछुजानिनजाई॥
बचैउपायहुकियोजोनाहीं।तौनहिंकछूदोषहमकाहीं॥४८॥ कंसहिदेवकिपुत्रदेनकहि।लेहुँबचाइनारिनिजकरगहि॥
जोकदाचिवीचहिंयहकंसा। मरैतौहोयसकलदुखध्वंसा॥ जोकदाचिजीवतहींरैहै। देहैंसुतहोनीसोह्वैहै॥ ४९॥
दोहा-अथवाहोयविपर्य्ययहु, हनैपुत्रईकंस॥ जानिजायनईशगति, जगमहँएकहुअंस॥
हालकालतेतौवचिजैहै।कौनदोषजोपुनिमृतिपैहै॥५०॥लगतदवारिजोकाननमाहीं। नेरेहुपरिकोउतरुबचिजाहीं॥
ऐसहिंजननमरणगतिसाँची।होतसोइजोविधिकछुराँची५१यहिविधिकरिवसुदेवविचारा।मुखप्रसन्नदुखहियेअपारा॥
पापीअतिनिरदयतेहिंकंसै। कह्योवचनअसकरतप्रशंसै॥ ५३॥

वसुदेव उवाच।

भोजराजजोभैनभवानी। सोयहिभाँतिपरतमोहिंजानी॥ हैनदेवकीतेतोहिंभीती। याकेसुततेमरणप्रतीती॥
तातेजबयाकेसुतह्वैहैं। तबहमतुमहिंसौंपिसबदैहैं॥ ५४॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-सुनतवचनवसुदेवके, कंसमानिमनलीन॥ देवकिकेकचछोडिकै, गमनभवननिजकीन॥
वसुदेवहुलैदेवकिकाहीं। ह्वैप्रसन्नगेनिजवरमाहीं॥५५॥देवकिप्रतिवरषहिंकुरुराई। आठपुत्रदुहिताइकजाई॥५६॥
कीर्तिवंतजेठोसुतजोई। अतिशयविकलसत्यनिजजोई॥होतहिंदियोकंसकहँजाई॥आनकदुंदुभिआशुबहाई॥५७॥

कहासहतनहिंसाधुसुजाना।कहँचाहतपंडितमतिवाना॥कहाकरहिनहिंकपटीकूरा।त्यागतकहानधीरहुशूरा॥५८॥
आनकदुंदुभिकोसतिदेखी।कंसकह्योहँसिमुदितविशेखी॥ लैवसुदेवजाहुसुतकाहीं। यहितेमोहिंभीतीकछुनाहीं॥
जौनभईमोकोंनभवानी। सोअठयोंसुतमीचुबखानी॥ ५९॥ ६०॥

दोहा–कहिवसुदेवतथास्तुतहँ, ल्यायेसुतकहँगेह॥ कंससुभाउविचारिकै, मिट्योनकछुसंदेह॥ ६१॥

तबहिंकंसढिगनारदआये। लैइकांतमहँवचनसुनाये॥ गोपनंदआदिकव्रजवासी। औरहुतिनकीतियछबिरासी॥
वसुदेवादिकजेयदुवंसी। देवकिआदिकनारिप्रशंसी॥६२॥भोजराजयेसबसुरजानों।इनकोधोखोकबहुँनमानों॥६३॥
हरिउतारिहैंहठिभूभारा। करिकैदैत्यनकोसंहारा॥६४॥यहिविधिकंसहिसकलबुझाई। गवँनकियोतहँतेमुनिराई॥
यदुवंशिनकहँदेवविचारी। एहैंदेवकिगर्भमुरारी॥ यदुवंशिनातियसुरतियमानी।हरिकेहाथमीचनिजजानी॥ ६५॥

दोहा–पुनिअसमनमेंगुनतभो, कंसमहामतिमंद॥ जहँतेगनियेंआठसोइ, इनमेंकौनगोविंद॥

तातेसबपुत्रनकोमारौं। अबनहिंनेकुदयाउरधारौं॥ असविचारिकैकंसतहाँहीं। देवकिअरुवसुदेवहुकाँहीं॥
पकरिपगनबेडीभरिदीन्ह्यों। कारागारकैदपुनिकीन्ह्यों॥ प्रथमपुत्रतुरतहिंमँगवाई। ताहिकियोवधदयाविहाई॥
जेजेभेदेवकिकेबारे। तेतेगयेकंसकरमारे॥६६॥ सुहृदमातुपितुभ्रातनकाहीं। हनहिंलोभवशनृपवसुधाहीं॥६७॥
कालनेमिमैंपूरवकेरो। मारयोहरिकरिवैरघनेरो॥ अबहूँयदुकुलप्रगटिमुरारी। मोकहँअवशिडारिहैंमारी॥
असविचारिमनकरिअतिक्रोधू। यदुवंशिनसोंकियोविरोधू॥ ६८॥

दोहा–भोजअंधययदुकुलअधिप, उग्रसेनमहराज॥ हरिसनबंधीताहिपुनि, कियोननिजपितुलाज॥
पकरिपगनबेरीभरी, राख्योकारागार॥ बैठिनृपासनकरतभो, शासनदेशमझार॥ ६९॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे प्रथमस्तरंगः॥ १॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–तृणावर्त्तचाणूरबक, केशीद्विविदप्रलंब॥ अघअरिष्टमुष्टिकबकी, अरुधेनुकतनलंब॥

येसबअपनेमत्रिनकाहीं। बोलिमंत्रकरिमुदिततहाँहीं॥ १॥ बाणभौमआदिकअसुरेशा। इनतेलैबहुपापानिदेशा॥
मागधकेबाहुनबलपाई। नाश्योयदुवंशिनबरियाई॥ २॥ पायकंसकृतमहाकलेशा। यदुवंशीभागेतजिदेशा॥
केकैकोशलकुरुपांचालू। निषधविदेहविदर्भहुशालू॥ इनदेशनमहँबसेपराई। कंसराजजहँखबरिनपाई॥ ३॥
अक्रूरादिजेरहेसयाने। तेकंसहिमिलिकियनपयाने॥ कंसदेवकीकेषट्बालक। जबकीन्ह्योंवधयदुकुलघालक॥४॥

दोहा–देवकिकेसप्तमगरभ, गयेशेशभगवान॥ तबदेवकिकेहोतभो, हरषहुशोकसमान॥ ५॥

जानिकंसकोभैभगवाना। करनहेतुयदुवंशिनत्राना॥ कह्योयोगमायासोंनाथा। हमतेयदुकुलअहैसनाथा॥ ६॥
तातेजाहुवेगिव्रजकाहीं। गोपगऊजहँलसहिंसदाहीं॥ रोहिणिआनकदुंदुभिनारी। मानिकंसनृपकीभयभारी॥
बसैनंदगोकुलमहँसोई॥ ७॥ औरहुगिरिदरीनमहँकोई॥ शेशगर्भजोदेवकिकेरो। ऐंचिताहिशासनगुनिमेरो॥
राखहुरोहिणिउदरहिमाहीं। यहप्रसंगजानैकोउनाहीं॥८॥ हमदेवकितेलैअवतारा। करिहैंजगमहँचरितअपारा॥

दोहा–यशुमतिरानीनंदकी, ताकेतुमहूंजाय। प्रगटहोहुव्रजमेंअवशि, ममनिदेशकहँपाय॥ ९॥

तुमकोजगमेंमनुजअपारा। पूजनकरिहैंदैउपहारा॥मनुजनसर्वकामनादायिनि। ह्वैहौदेविनिकीठकुरायिनि॥१०॥
विजयाअरुवैष्णवीइशानी। दुर्गाभद्रकालिसुखदानी॥११॥ कृष्णाकुमुदाऔरचंडिका।शारदनारायणीअंबिका॥
मायाअरुमाधवीसुकन्या। ऐसेनामपाइहौधन्या॥ रचिरचिविमलसुथलजगलोगू। थापितोहिंपैहैंसुखभोगू॥१२॥

शेशगर्भकोभोसंकर्पण । तातेनामभयोसंकर्पण ॥ जगमेंह्वैहैअतिअभिरामा । ह्वैहैतासुरामअसनामा ॥
अतिबलसोंअरिअमितनशैहैं । तातेजगबलभद्रकहैहैं ॥ १३ ॥

दोहा-सुन्योयोगमायाजबहिं, ऐसोनाथनिदेश । कहितथास्तुगवँनतभई, आईमाथुरदेश ॥
जसमधुसूदनशासनदीन्ह्यो।तहाँयोगमायातसकीन्ह्यो॥१४॥देवकिकोद्भुतगर्भनिकारी।राख्योरोहिणिउदरमँझारी॥
तबपुरजनअसकियोनिबेरो।गयोगर्भगिरिदेवकिकेरो॥१५॥अभैप्रदाताभक्तरमेशा।वसुदेवहिमनकियोप्रवेशा॥१६॥
तबतेभेवसुदेवसहर्षा । महादुरासदअरुदुरधर्षा॥भयोभासकरसरिसप्रकासा । अवलोकतउपजतअरित्रासा ॥१७॥
पुनिदेवकीउदरमहँस्वामी । आवतभेजगअंतरयामी॥जिमिपूरवदिशिचंदहिधारै।तिमिदेवकिमुकुंदसुखसारै॥१८॥
जगतनिवासहुकेरनिवासा । भईदेवकीसहितहुलासा ॥

दोहा-शिखीशिखासमदेवकी, रुकीभोजकेभौन । नहिंसोहतशठकंठजिमि, सरस्वतीधरिमौन ॥ १९ ॥
देवकितेजबढ़तलखिरोजू । करतशोचनितनितचितभोजू॥तबमनमेंअसकंसविचारचो।हरिदेवकिकेगर्भसिधारचो॥
अहैसत्यमेरोवधकारी । असनदेवकिहिंकबहुँनिहारी ॥२०॥ करबउचितअबकौनउपाई । जातेमिटैमीचदुचिताई॥
यदपिदेवकीहैवधयोगू । तदपिभगिनिवधअहैअयोगू॥गर्भवतीकोजोवधकरिहौं।तौअपनोयशआयुपहरिहौं ॥२१॥
जीतहिमरोमनुजहैसोई । गर्भवतीतियवधकियजोई ॥ बिनविचारजेकर्मकराहीं।जगनिंदालहिनरकहिंजाहीं ॥२२॥
तातेजबयाकेसुतहोई । तबहींअवशिमारिहौंसोई ॥

दोहा-असविचारिमनकंसकरि, भगिनीवधबविहाय । ह्वैहैहरिकोजन्मकब, यहचिंत्योचितलाय ॥ २३ ॥
बैठतवागतखातहूं, सोवतकरतविहार । हरिकोंचिंततहरिमयो, निरख्योनृपसंसार ॥ २४ ॥
जानिदेवकीगर्भमें, हरिकोसुरविधिसर्व । नारदादिमुनिसंगलै, अस्तुतिकीन्हेंसर्व ॥ २५ ॥

ब्रह्मादय ऊचुः ।

छंद-जयसत्यव्रतजयसत्यपरजयसत्यतीनिहुँकाल । जयसत्यजगमहँसत्यवासीसत्यसत्यविशाल ॥
जयसत्यसमदरशीअहौजयसत्यवक्तानाथ । जयसत्यवपुहमआपहीतेसत्यसत्यसनाथ ॥ २६ ॥
यहजगततरुआधारप्रकृतित्रिमूलहैंगुणतीन । फलयुगलसुखदुखधर्मआदिकचारिरसमहँभीन ॥
हैपंचप्राणहुपाँचअंकुरऊर्मिषटषटभाव । हैंसातधातुहुसाततत्त्वचनवछिद्रकोटरगाव ॥
मनबुद्धिअरुअहंकारपाँचहुभूतआठहुँशाख । दशइंद्रिपल्लवईशजीवहुयुगलखगश्रुतिभाख ॥ २७ ॥
ऐसेजगततरुआपकारणहरहुपालहुनित्य । तुमसोंजगतकोभिन्नमानहिंज्ञाननहिंतिनचित्य ॥
ज्ञानीगुणहिंआधारतुमहौजगतकेभगवान ॥ २८ ॥ जगकरनमंगलहेतुधारहुसत्त्वरूपअमान ॥
संतनसुखददुष्टनदुखदहैंरावरेकेरूप ॥ २९ ॥ अरविंदनैनप्रकाशऐनविराजपरमअनूप ॥
तुवदासकोसतसंगकरितुवचरणप्रेमजहाज । चढ़ितुरतगोपदसरिसयहसंसारसिंधुदराज ॥ ३० ॥
संसारसागरतरणकोप्रभुऔरनाहिंउपाय । तरिगेतरततरिहैंसकलतुवचरणचित्तलगाय ॥ ३१ ॥

कवित्त-दानीऔरज्ञानीऔरध्यानीतपठानीबड़े, जगकेगलानीनिरवानीकेमनैयाहैं ।
धर्मीऔरकर्मीऔरशर्मीबाडेमर्मीबन, तजेधनगर्वीजन्मीसुकुलखढैयाहैं ॥
रघुराजयद्यपिअनेकविधिऐसेभये, करतविवादवादजन्मबितवैयाहैं ।
रामरावरेकेपदप्रेमकोनकीन्ह्योपान, चढेअतिऊँचेपदतुरंतगिरैयाहैं ॥
कोईभेअचारीकोईधर्मधुरधारीध्रुव, कोईउपकारीबडेकोईनिर्विकारीहैं ।
कोईबड़ेपंडितविरागतेनखंडितअ, दंडितअवनिमेंउदंडितविचारीहैं ॥
कोईषटशास्त्रपढ़ेवादऔविवादबढे, कोईकुलकाव्यगढेदयामढेभारीहैं ।

छाकेनाहिंसीकेपीकेप्रेमरसपीकेनीके, कहाकियेजीकेजीकेफीकेसुखकारीहैं ॥ ३२ ॥
माधवजेरावरेकेदासहैंअनोखेचोखेधोखे, हूँसुपंथतेनगिरतलखेपरैं ॥
प्रभुपदपंकजसुप्रेमकीजँजीरैंडारि, कोठरीहियेमेंराखिनिजवशमेंकरैं।
रघुराजरक्षितरमेशबाहुदंडतेह, मेशहैअदंडयमदंडकोनहींडरैं ॥
भैरोंऔभवानिनकेशीशनमेंपाँवदैदै, निरभैसदाहींजगमाहींसुखिसंचरैं ॥ ३३ ॥
शुद्धसतोगुणआपनोरूपहितैजगमंगलकेतुमधारो।
ताकहँवैद्यसमाधिक्रियातपयोगतेपूजतआश्रमचारो ॥
जोप्रगटोअसरूपनकेसबहोइविनाशविश्वासतिहारो।
कैअतिमानुषकर्महरेरघुराजहरोअवनीकरभारो ॥ ३४ ॥ ३५ ॥
नामऔरूपहुधामऔलीलासकैगनिनाजोअनंतगनैया।
पैतिहरेपदपूरणप्रेमिलखैंनितहींहियध्यानधरैया ॥ ३६ ॥
जेअरपैंसबकर्मतुम्हैंअरुऔरेनकेउपदेशदेवैया।
तेनहिंआवतहैंजगमेंजेतिहारीकथाकेकहैयासुनैया ॥ ३७ ॥
पुरुषोत्तमकोपदहेपुहुमीअवताकरभारटरोसिगरो ॥
धनिभागहैरावरेपाँयनसोंयहअंकितह्वैहैथरोईथरो ॥ ३८ ॥
अवतारहैआपकोलीलाहितैकहैधर्मअधीनसोमूढ़खरो।
जनजेतुम्हैंजानेबनोतिनकोतुम्हैंजानेनहींतिनकोबिगरो ॥ ३९ ॥
मीनहयग्रीवअरुकच्छपवराहनर, सिंहअरुवामनहूँहंसभृगुरामहौ।
कौशलाकुमारआदिलैकैअवतारटारचो, भूरिभूमिभाररखवारतीनोंधामहौ।
रघुराजतैसहीकृपाकोकैकेदेवनपै, ह्वैकैवसुदेवकेदुलारेअभिरामहौ ॥
भूपदैत्यअंशनविध्वंसिबलरामसँग, हाइुयदुराजहैप्रणामघनश्यामहौ ॥ ४० ॥
फेरिदेवकीसोंसवैदेवअसबोलेबैन, परमपुरुषजाकोधामहैअशोकको।
जगतनिवाससोनिवासकीन्ह्योंतेरेकुक्षि, त्रासनाशिवेकोसबदेवनकेथोकको ॥
जगतजनकजननीतूधन्यरघुराज, कंसकालनिकटनकामकछुशोकको।
यदुकुलपालकअरीनकुलघालकसो, ह्वैहैंतुवबालकजोमालिकत्रिलोकको ॥ ४१ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–यहिविधिअस्तुतिकरतभे, जहँलोंजान्योभेव ॥ निजनिजभवननगवँनकिय, ब्रह्मशिवादिकदेव ॥ ४२ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–परमसुहावनकालजब, पुनिआयोमहिपाल ॥ छायरह्योत्रैलोकमें, आनँदआशुविशाल ॥
लाग्योभादवमाससुहावन। ग्रहनक्षत्रशांतसुखछावन॥१॥परमप्रसन्नभईसबआशा। भयोगगनमहँअमलप्रकाशा ॥
निरमलभयेनछत्रहुतारा। मंगलदायिनिमहीअपारा ॥ पुरआकरऔरहुव्रजगामा। उपज्योआनँदठामहिंठामा॥२॥

बहैंनदीनिर्मलजलधारा । विकसेसरनसरोजअपारा ॥ काननकलरवकियेविहंगा । तरुराजीफूलीबहुरंगा ॥ ३ ॥
शीतलमंदसुगंधसमीरा । बहनलग्योनाशकसबपीरा॥ विप्रनकेरिहोमशिखिज्वाला । प्रगटीदहिनावर्त्तविशाला॥४॥

दोहा-सबसाधुनकेजगतमें, भेप्रसन्नमनभूरि ॥ नभमंडलमेंदेवसब, दुंदुभिधुनिदियपूरि ॥ ५ ॥

गावहिंबहुकिन्नरगंधर्वा । कियअस्तुतिसिधचारणसर्वा ॥ विद्याधरीअप्सरानाना । नाचनलगींकरतकलगाना ॥६॥
नभतेबरषहिंसुरमुनिफूला । जानिमहामुदमंगलमूला ॥ सागरउपरउपरसंचरहीं । मंदमंदधुनिजलधरकरहीं ॥ ७॥
रहेमूरजवसिंहहिंरासी । भादौंकृष्णपक्षसुखरासी ॥ नखतरोहिणीअतिसुखदाई । तिथिअष्टमीलगनसोसुहाई ॥
रह्योअनूपमसोबुधवारा । पूरबदिशिशशिभासपसारा ॥ अर्धरातजबभैकुरुराई । देवकितेप्रगटेयदुराई ॥

दोहा-जैसेनृपपूरबदिशा, प्रगटेपूरणचंद ॥ तिमिप्रगटतिभेदेवकी, यदुकुलआनँदकंद ॥ ८ ॥

छंदमनोहरा-सरसिजयुगनैनासुखमाऐनादायकचैनाअनियारे, कछुअरुणारे ।
भुजचारिविशालाउरवनमालामणिहुँरसालाकरधारे, आयुधचारे ॥
श्रीवत्सललामाजलधरश्यामातनअभिरामादुखभारे, नाशनहारे ।
मणिमुकुटविराजैकुंडलभ्राजैअलकसमाजैमदहारे, अहिसुतकारे ॥
पटपीतसुहावनतडितलजावनमुनिमनभावनछविरासी,-॥९॥-कटिचौरासी ।
कंकनकरमाहींअतिहिंसोहाँहींअरुभुजपाहींछबिखासी, अंगदभासी ॥
मंजुलमंजीराजडितसुहीराछबिगंभीरापदवासी, जेसमकासी ।
सोहतनखश्रेणीमुनिमुददेनीशशिछबिलेनीअवनासी, सुरसरितासी ॥ १० ॥

दोहा-हेअभिमन्युकुमारनृप, सोसूतिकाअगार । हरिप्रकाशसोंपूरिगो, रहिनगयोअँधियार ॥

छंदचौपैया-लखिकैअसबालकत्रिभुवनपालकश्रीवसुदेवतहाँहीं।दृगनीरबहायोआनँदपायोकढ़्योवचनमुखनाहीं ॥
गुनिहरिअवतारापरमउदारासोअपनेमनमाहीं । गोदसैहजारादियइकबारामोदितविप्रनकाँहीं ॥ ११ ॥
पुनिधारिउरधीराबुद्धिगँभीराचरणनमेंशिरनाई । पंकजकरजोरीबहुतानिहोरीचरणनचित्तलगाई ॥
करिरवसमदुंदुभिआनकदुंदुभिकंसविभीतिविहाई।गुनिहरिपरभाऊमृदुलसुभाऊअस्तुतियहमुखगाई॥१२॥

वसुदेव उवाच ।

दोहा-अहोप्रकृतिपरनाथतुम, जानतहैंसबकोय ॥ सदासच्चिदानंदवपु, बुद्धिप्रकाशकसोय ॥ १३ ॥
प्रथमप्रकृतिनिजजगतरचि, यद्यपितेहिंननिविष्ट ॥ तद्यपितुमदेखेपरो, मानहुँअहहुप्रविष्ट ॥ १४ ॥
जैसेमहदादिकसबै, करहिंजगतनिरमान ॥१५॥ हैंप्रथमहिंतेताहिते, लीननलीनसमान ॥ १६॥
ज्ञानग्राह्यरूपादियुत, यद्यपिरहैमुरारि । जसरूपादिकलखिपरैं, तसनहिंपरोनिहारि ॥
सबथलव्यापीहौसदा, नहिंआवरणतुम्हार ॥ १७ ॥ तुमसोंभिन्नजोजगलखै, सोमतिमंदअपार ॥
जोकोउकरतविचारभल, तौयहजगतसदाहिं । तुमतेभिन्नतौहैनहीं, भिन्नलखैंकेहिकाहिं ॥ १८ ॥
उतपतिअरुपालनहरन, जगकोहैतुवहाथ । अगुनौअमलअनीहतुम, परब्रह्महोनाथ ॥
तुवअधीनयहप्रकृतिजो, करैसकलजगकाज । तातेकरतातुमहिंहो, भाषहिंवेदसमाज ॥ १९ ॥
तमगुणधरिनाशहुजगत, त्रैगुणईशमुरारि । सतगुणधरिपालनकरहु, उतपतिरजगुणधारि ॥ २० ॥
रक्षणहितयहधरणिके, ममगृहलियअवतार ।मारिअसुरअंशीनृपन, हरिहौभूकरभार ॥ २१ ॥
हेप्रभुपापीकंसवह, मारयोतुवशठभ्रात । तुवउतपतिसुनिअस्त्रगहि, ऐहैद्रुतअनखात ॥ २२ ॥

शुक उवाच ।

सोरठा-त्रिभुवनधनीकुमार, अपनोलखिकैदेवकी । अस्तुतिकरीउदार, मंदविहँसितजिकंसभय ॥ २३ ॥

देवक्युवाच।

कवित्त—आदिहैअव्यक्तपरब्रह्मपरकाशमान, निर्विकारसत्तामात्रदिव्यगुणरासीरूप।
निर्विशेषऔनिरीहज्ञानदीपआपहीहौ, अधमउधारेजेपरेरहेभवांधकूप ॥ २४ ॥
विधिहुनसततवपाँचौभूतजाइमिले, महत्तत्त्वहीमेंसोउमिलतप्रकृतयूप ॥
प्रकृतिविलीनहोतआपहीमेंरघुराज, तवरहिजातप्रभुएकआपहीअनूप ॥ २५ ॥
हैंनिमेषजाकेआदिसंवतहैजाकेअंत, जातेविश्वरचनामहानजौनकालहै ॥
सोहैरावरेकीलीलाभाषैंअसचारोंवेद, अभैप्रदआपपदप्रणतिविशालहै ॥ २६ ॥
कालव्यालभीतितेपलातसवठौरप्राणी, कवहूँनपावैत्राणरहतविहालहै ॥
भागवशगिरतजोशरणतिहारेआय, ताहीसमैताकोछूटिजातजगजालहै ॥ २७ ॥

दोहा—हेकृपालअबकंसकृत, हरहुहमारीभीति। अभयदानदीनोजनन, यहैरावरीरीति ॥ २८ ॥

डरहिंकंसतेंहमभगवाना। सोशठराखतवैरमहाना ॥ मोतेप्रगटवनाथतिहारो। जानैकंसनपापअगारो ॥
जोजानिहैदुष्टयहभेदू। तौमोकहँदैहैखलखेदू ॥ तुमकोकछूनअहैछपाना। सबथलव्यापीहोभगवाना ॥ २९ ॥
गदाचक्रदरअंबुजधारी। चारिवाहुशोभाअतिभारी ॥ यहअदभुतहैरूपतिहारो। योगीगणतेहिंध्यानहिंधारो ॥
सोमोपरकरिकृपामहाई। लेहुनाथअबआशुछिपाई ॥ ३० ॥ प्रलयअंतमहँरचिसंसारा। राखहुनिजतनुयुतविस्तारा॥

दोहा—सोप्रभुमेरेउदरते, प्रगटभयेसुरवर्ज। हैयहलीलाआपकी, पैमोहिंलगतअवर्ज ॥ ३१ ॥

सुनिदेवकिकीगिराडुखारी। बोलतभेकरिकृपामुरारी ॥

श्रीभगवानुवाच।

स्वायंभूमन्वंतरमाहीं। पृश्निनामतेरहीतहाँहीं ॥ सुतपानामप्रजापतिजोई। तेरोकंतरह्योतवसोई ॥ ३२ ॥
तुमदोउनकहँतहँकरतारा। सृष्टिकरनहितवचनउचारा॥इंद्रीजितह्वैतुमवनजाई। कीन्ह्योंदंपतितपमनलाई ॥३३॥
आतपवातवारिहिमसहेऊ। श्वासरोकिदारुणव्रतगहेऊ ॥३४॥ कहुँसूखेपत्रनकोखाई। कवहुँवातभखिकालबिताई ॥
ह्वैकैअमलचित्ततुमदोई। मोहिंआराधनकियमुदमोई ॥ ३५ ॥

दोहा—ऐसोतपकरिमोहिंसों, चह्योलेनवरदान। यहिविधिवीतेचारियुग, करतकलेशमहान ॥ ३६ ॥

लखिकैअतितपकठिनतिहारो। अतिकोमलदिलद्रयोहमारो॥तपश्रद्धाअरुभक्तितिहारी। भयममनप्रसन्नताकारी ॥
तवमैंतुवसमीपमहँआई। वरमाँगहुअसगिरासुनाई ॥ ३८ ॥ कवहूँसुखभोग्योतुमनाहीं। तातेरहीआशमनमाहीं ॥
यहितेमुक्तिनमोसनयाची। सुरमायामेंतुवमतिराची॥माँग्योतुमसुतमोहिंसमाना। औरहुभोगविलासहुनाना ॥३९॥
मैंतुम्हरीकरिपूरणआसा। पुनिगमन्योआपनेनिवासा॥४०॥पैअपनेसमदुतियनदेखी। अपनोवचनविचारिविशेखी॥
भयोपुत्रमैंजायतिहारो। पृश्निगर्भभोनामहमारो ॥ ४१ ॥

दोहा—अदितिकश्यपहुतुमभये, दुसरेजन्महिमाहिं। हमवामनतवसुतभये, नामउपेंद्रतहाँहिं ॥ ४२ ॥

अवतीसरेजन्मअसमानो। सोकश्यपवसुदेवहिजानो ॥ अदितिअहौतुमदेवकिमाई। तातेमैंप्रगट्योइतआई॥४३॥
सोइंसुरतिकरावनहेतू। मैंप्रगट्यौवपुप्रभानिकेतू ॥ जोप्रगटतोबालवपुधारी। तौनतुम्हेंसुधिहोतिहमारी ॥ ४४ ॥
पुत्रभावकरिमोकहँध्यावहु। कहुँकहुँब्रह्महुँभावलगावहु॥यहिविधिकरिमोमहँअतिनेहू। जैहौअवशिअंतममगेहू॥४५॥
जोकंसहितेअतिहिडेराहू। तौमोहिंगोकुलकोलैजाहू ॥ यशुदाअंकमोहिंधरिदीजे। तासुसुतातुरतहिलैलीजे ॥
सोदेवकिकहँदीजोआई। यहप्रसंगनहिंपरिहिजनाई ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—मौनभयेवसुदेवसों, असकहिकृपानिधान। पितुमाताकेलखतहीं, भेबालकभगवान ॥ ४६ ॥

लह्योमोदवसुदेवघनेरो। यहिविधिलखिचरित्रहरिकेरो॥ हरिकेवचनमानितेहिंकाले। पारिसूयमहँतुरतहिंबाले॥ सोशिरधरिवसुदेवसुजाना। सूतीगृहतेकियोपयाना॥उतगोकुलनंदहिकीजाया। प्रगटतभैनिशिमेंहरिमाया॥४७॥ इतआनकदुंदुभिमनमाँहीं। शंकाकियकिमिगोकुलजाहीं॥ अहैंबंदसातहुँदरवाजा। जागहिंचौकीदारदराजा॥ चरणनबेरीपरीहमारे। ताहूपरवरसैंघनकारे॥ तहाँयोगमायाहरिकेरी। कीन्हींअसगतिभईनदेरी॥ आपुहिआपुखुलीपगबेरी। भईद्वारपननींदघनेरी॥

दोहा-जकरेलोहिजँजीरसे, रहेजेबंदकेंवार॥ ४८॥ आवतहींवसुदेवके, खुलिगेसातहुँद्वार॥

जिमिरविउदैनशतअँधियारा। तिमिहरिआगमखुलेकेंवारा॥ पुरबाहरकढ़िगेवसुदेऊ।जानिपरचोतिनकोनहिंभेऊ॥ गरजिगरजिबरसैंघनघोरा। अंधकारभारीचहुँओरा॥ सूझतमारगहैकछुनाहीं। वारिधारधावतिचहुँधाँहीं॥ आगेआगेदमकतिदामिनि। मनहुँपंथदेखरावतियामिनि॥ आनकदुंदुभिपीछेभूपा। कियेऊँचफनसहसअनूपा॥ छत्रसरिसवारतजलधारै। मंदमंदमगशेषसिधारै॥ ४९॥ महावृष्टिजलधारनपाई। कालिंदीअतिशयबढ़िआई॥

दोहा-उठतींतुंगतरंगबहु, होतघर्घराशोर। भूरिभयानकभँवरबहु, भ्रमतबहतजलजोर॥

आनकदुंदुभियमुनातीरा। जायजोहिमेंपरमअधीरा॥ खड़ेतीरमहँकरतविचारा। केहिविधिजाँइंयमुनकेपारा॥ हरिवचनहिंपुनिकरिविश्वासा।हिलेनीरमहँतजिसबत्रासा॥जसजसआनकदुंदुभिजाँहीं।मिलतथाहथलयमुनामाहीं॥ दोहुँदिशियमुनधारकढिजाती।तासुचरणछ्वैनहिंअधिकाती॥जिमिरघुपतिहितसागरभूपा।दीन्ह्योमारगपरमअनूपा॥ तिमिवसुदेवहिसरितकलिंदी। मारगदीन्होंपरमअनंदी॥५०॥ गेवसुदेवयमुनकेपारा। गोकुलपहुँचेनंदअगारा॥

दोहा-रहेनींदवशगोपसब, खुलिगेद्वारकेंवार। जहाँयशोदासोवती, तहँगेशूरकुमार॥

निजबालकधरियशुमतिसेजू। सुताउठाइलियोअतितेजू॥ सोइसूपमहँधरिवसुदेवा। लैगवनेकोउजानननभेवा॥ तेहिविधिउतरियमुनपुनिआये।हरिचरणनमहँचित्तलगाये॥आयआशुअपनेगृहमाहीं ५१ दईदारिकादेवकिकाँहीं॥ तबजसपूरवसातहुद्वारा। बंदरहेतसलगेकेंवारा॥ पुनिवसुदेवपगनमहँबेरी। परतभईलागीनहिंदेरी॥ कहाँकहाँकरिधुनिबड़भागी। दुहितातहँपुनिरोवनलागी॥५२॥उतैयशोदागोकुलमाहीं।सेजहिंसोवतहुतीतहाँहीं॥

दोहा-जान्योमेरेउदरते, एकभयोहैबार। निद्रावशजान्योनहीं, दुहिताकिधौंकुमार॥ ५३॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाबान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजासिंहजू देवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे तृतीयस्तरंगः॥ ३॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-रहेबंदजसप्रथमहीं, भीतरबाहरद्वार। तैसहिजबह्वैजातभे, तबजागेरखवार॥

तबवसुदेवहिभौनमझारी। कहाँकहाँअसगिरापुकारी॥ रोवनलागीनंदकुमारी। तबजेकरतरहेरखवारी॥ बालकधुनिसुनिउठेतुरंतै। गुनिशिशुकरनहारनृपअंतै॥ सिगरेअर्धनिशामहँधाई। भोजराजकेद्वारेआई॥ एकहिबारहिकियेपुकारा। देवकिअठयोंजन्योकुमारा॥१॥जाकोशोचतनिशिदिनजाहीं।लहीनींदनहिंनैननमाहीं॥ सोदेवकिअबजन्योकुमारा। करहुनाथजोहोयविचारा॥ २॥ सुनिकैकंसभटनकीवानी।उठ्योसेजतेअतिदुखमानी॥

दोहा-ह्वैकैअतिशयविकलतहँ, मीचजानिविशबीश। दौरचोसूतीभवनको, पागहुधरचोनशीश॥

खुलेकेशपगलटपटपरई। गहेकृपाणधीरनहिंधरई॥ सूतीभवनकंसद्रुतआयो। दुहितादेखिदीहदुखपायो॥ ३॥ दीनदेवकीवचनहुँदीना। पाणिजोरिकंसहिकहिदीना॥ भगिनिसुतायहभाँजतिहारी।नहिंमारहुदायाउरधारी॥४॥ षटभाईयाकेतुममारे। रहेसकलजेसुछविअगारे॥ यहपुत्रिकादेहुमोहिंभ्राता। यातेतुमहिंभीतिनहिंताता॥ ५॥ मैंलघुभगिनीअहौंतिहारी। मेरेपुत्रगयेषटमारी॥ एकसुतातौदीजैमोहीं। हायदयानहिंलागततोहीं॥ ६॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–यहिविधिअतिशयदीनह्वै, दीनवचनकहिरोय । दुहिताकोतहँदेवकी, राखीगोदहिंगोय ॥
तबहुँकंसकैदयानआई । देवकिकोअतिशयडेरवाई ॥ देवकिकरतेतुरतकुमारी । लयोछोंड़ायकंसखलभारी ॥७॥
कन्याचरणपकरिकरमाहीं । पटकतभयोपषाणहिंपाहीं॥८॥करतेछुटिउपरहिंतेकन्या।गईगगनजहँसुरगणधन्या ॥
तहँतेअपनोरूपदिखायो । जाकोदेखिकंसभयपायो ॥ आयुधसहितआठहैंबाहू ॥ ९ ॥ धनुअसिचर्मशूलनरनाहू ॥
शंखचक्रशरगदासोहाहीं । फूलमालमंडितउरमाहीं॥लेपितअँगअँगरागसुवासी । रुचिररतनभूषणदुतिरासी॥१०॥
दोहा–चारणकिन्नरअपसरा, सिद्धनागगंधर्व । दैदैताकोभेंटबहु, अस्तुतिकीन्हेंसर्व ॥
देविगगनतेगिरासुनाई । सुनुरेकंससंतदुखदाई ॥ ११ ॥ पैहैकामोकहँतैंमारे । अनुचितउचितननेकुविचारे ॥
जहँकहँतेरोमारनहारा । अवनीमेंलीन्होंअवतारा ॥ पूरबशत्रुतोरहैसोई । दीननवृथावधेअबहोई ॥ १२ ॥

श्रीशुक उवाच ।

असकहिहरिअनुजाशठकाहीं।नामरूपधरिबहुमहिमाहीं॥निवसनभईअनेकअगारन।विंध्यआदिकनपुण्यपहारन ॥
सुनिकैदेवीवचनभयावन । मानिमहाभैकंसअपावन ॥ तहँवसुदेवदेवकीकेरे । बंधनछोंडिजायशठनेरे ॥
अतिविनीतह्वैगिरासुनाई । आँखिनआँसूधारबहाई॥ १४ ॥
दोहा–हेभगिनीहेभामसुनु, मैंपापीहौंपूर । राक्षससमतुवसुतहन्यो । कियोकर्मअतिकूर ॥ १५ ॥
सिगरीकरुणादईभुलाई । कुलकीकानिनकछुचितआई ॥ कौनलोकजैहौंमैंपापी । विप्रवधनसमभयोसँतापी ॥
जीवतहीमैंमृतकसमाना।भयोसत्यजगअवीमहाना१६मनुजहिंभरिनहिंमृषाउचारै।सुरहुअसतिमुखवचननिकारै ॥
गगनगिराजोअसमोहिंटेरी । अठयोंपुत्रमीचहैतेरी ॥ सोदेवकिइकजनीकुमारी । तेहिधोखेडारेसुतमारी ॥ १७ ॥
अबनहिंशोचकरहुबड़भागा । होतसोईजोलिख्योनिजभागा॥सदाएकसँगरहैनलोगू।होतदैवकृतयोगवियोगू॥१८॥
दोहा–महिविकारनाशिजातजिमि, नहिंमहिकेरविनाश । तिमिअनित्ययहतनुनशत, नहींजीवकरनाश॥१९॥
जाकेउपजतनहिंयहज्ञाना।ताकोहोतअवशिभ्रमनाना॥सुततिययोगवियोगभुलाना।छूटतनहिंसंसारमहाना ॥२०॥
तातेंयद्यपिमैंसुतमारो।तदपिनतुमकछुकरोषभारो॥निजकरनीफलसबकोउपावै।अपनोबलकछुकामनआवै ॥२१॥
जबलौंछूटतनहिंअज्ञानैं । तबलोंमारोमरिबोमानैं ॥ २२ ॥ क्षमहुमोरअबयहशठताई । संतरीतिऐसीचलिआई ॥
असकहिभगिनिभामपदजाई।कंसगह्योदृगवारिबहाई२३अतिशयआपननेहदेखायो।औरहुकोमलवचनसुनायो २४
दोहा–भ्राताकोसंतापलखि, तज्योदेवकीरोष । वसुदेवहुअसकहतभे, गुनिनकंसकरदोष ॥ २५ ॥
जोतुमकह्योसोइहैसाँचो । निजपरतेहिंजेहिंज्ञाननराँचो ॥२६॥ शोकहर्षभयलोभहुमोहू । मदमत्सरअरुईर्षाकोहू॥
इनमेंफँसेसकलजगलोगू । जानतनहिंवधईशनियोगू ॥ २७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिदेवकिअरुवसुदेऊ । शुद्धवचनकंसाहिंकहितेऊ॥तेहिनिदेशदैनिजघरआये।कंसहुगोनिजघरदुखछाये२८॥
सोयोनहिंनिशिभरिबिलखातै।उठतभयोपुनिजानिप्रभातै॥चिंततकारजसभासिधायो।तुरतहिंसबमंत्रिनबोलवायो॥
कह्योनिशाकोसकलहवाला । देविकह्योजोवचनकराला ॥ २९ ॥
दोहा–कंसवचनसुनिकेसबै, देवशत्रुमतिमंद । देवनपैकरिकोपअति, कहेवचनकरिफंद ॥ ३० ॥
जोभोजेंद्रअहैअसबाता । तौजसकहहुँकरहुतससताता ॥ पुरनऔरग्रामनव्रजमाहीं । पठैदेहुआतुरहमकाहीं ॥
दशदिनकेइतउतकेबालन।हमकरिहैंतिनकोहाठिवालन॥बचिहैकैसेहुकोउशिशुनाहीं।करीनआपशंकमनमाहीं ३१
कहाकरहिंगेदेवतुम्हारो । हैंकादरअसकरोविचारो॥आपुधनुषधुनिसुनिभयकारी।सदाडरतसिगरेअसुरारी ॥३२॥
तजहुनाथजबतुमशरधारा । तबसुरतजितनुकेरसम्हार॥भागहिरणतेकरिबहुनेतू । अपनेप्राणबचावनहेतू ॥३३॥

दोहा-कोऊजोरिकरदीनह्वै, परहिंपगनपरआय । कोऊदुरहिंदरीनमें, निजहथियारविहाय ॥
खड़ेरहहिंकोउकक्षहिछोरी।केशछोरिकोउभीतिवथोरी॥कोउदेवडरिहाहाखाहीं।कोउतृणदाविरहौमुखमाहीं ॥३४॥
जेनचलावहिंशरतुमकाहीं । कूदियानतेजेभजिजाहीं ॥ जिनकेचापगयेसबटूटी । जिनअसक्तकीचोटीछूटी ॥
जेतुम्हरेशरणागतहोंहीं । अथवाविमुखलेहुजिनजोहीं॥तिनकोतुमनहिंमारहुबाना।यहिउपायबाँचेसुरनाना ॥३५॥
जबलोंपरतनसंगरगाढ़ो । तबहींलोंदेवनमनबाढ़ो ॥ घरबैठेबहुवातवताहीं । संगरतेसुरअवशिपराहीं ॥

दोहा-सेतुद्वीपमधिक्षीरनिधि, तहँनिजतियगयुतजाय ॥ परोरहैअहिसेजमें, सोहरितुमहिंडेराय ॥ ३६ ॥
खंडइलावृतजाकरनामा । पुरुषहुगयेहोतजहँवामा ॥ तहँबहुनारिनकेमधिजाई । शंभुवसतहैंतुमहिंडेराई ॥
विप्रवापुरोब्रह्माअहई । कोहेकबहुँशस्त्रकरगहई ॥ कादरअहैपुरंदरपूरो । विक्रमवसततापहितेदूरो ॥
कनककशिपुकनकाक्षहुरावन । औरहुजेजेअसुरभयावन ॥ तेतेयहसबवासवकेरी । करीदुर्दशारणहिंघनेरी ॥
कबहूँकोहुसोंजीततनाहीं । वज्रलियेबलगतवरमाहीं ॥ औरसुरनकीकौनचलावै । पै यकवातउचितमनआवै ॥

दोहा-यदपिअबलसुरऐसहूँ, वैरीतदपिहमार ॥ तिनकोलघुनहिंमानियें, करियनाथउपचार ॥
तिनकोमूलउखारनहेतू । आयसुदेहुहमहिंकुलकेतू॥३७॥रिपुअरुरोगथोरनहिंजानी।प्रबलउपायतासुअनुमानी ॥
रिपुरोगहुजबअतिबढिजाहीं । तबपुनिनशतकैसहूँनाहीं॥इंद्रिनजबैविषयबढिजाई । पुनिनकैसहूँवटतघटाई॥३८॥
तातेसुनियेवचनहमारे । देवमूलहरिवेदउचारे ॥ सोहरिजहाँसनातनधर्मा । तहँवसतदायकसुरशर्मा ॥
वेदविप्रसुरभीतपयागा । धर्ममूलजानहुँवडभागा ॥ ३९ ॥ तातेवैदिकविप्रनकाहीं । करहिंजेतपअरुयागसदाहीं ॥
तिनकोसबविधिमारनकाजा । हमकोहुकुमहोयमहराजा ॥ औरहुगौवनमारनहेतू । जेदेदूधकरहिंमखनेतू ॥४०॥

दोहा-विप्रवेदतपशमदमहुँ, दयाक्षमाअरुसत्य ॥ श्रद्धामखसुरभीसकल, कृष्णरूपहैंनित्य ॥ ४१ ॥
सोईकृष्णसकलसुरईसा । असुरनकोवैरीबिसबीसा ॥ सोसुरप्रभुविकुंठकोसैरी । बीसबिसेअसुरनकोवैरी ॥
शिवविरंचिआदिकसुरजेते।हरिमूलकजानहुसबतेते॥ विष्णुवधनकीयहीउपाई।विप्रगऊअवनहिंवचिजाई ॥ ४२ ॥

श्रीशुक उवाच।

सुनतकुमंत्रिनमंत्रनकंसा । तिनकीकीन्हीपरमप्रशंसा ॥ विप्रगऊहिंसाहितमानी।कालपाशगलपाशनजानी ॥४३॥
पापिनपापकरनकेहेतू । दीन्ह्योंहुकुमभोजकुलकेतू ॥ धारिअनेकनरूपनकाँहीं । हनहुविप्रगौवनमहिमाहीं ॥
कैसेहुनहिंभागेहुवचिजाहीं । कियेहुकबहुँकरुणाकहुँनाहीं ॥

दोहा-ऐसोअघआदिकअघिन, दैआयसुअवनीश ॥ गमनकियोनिजभवनको, माननिदूसरईश ॥ ४४ ॥
धनहुँधर्मआयुषयशहुँ, उभैलोकमनआश ॥ साधुनकेअपराधते, होतआशुहींनाश ॥ ४५ ॥
तेसुनिशासनकंसको, महामूढमहिमाहिं ॥ मारनलागेद्विजगऊ, मीचगुनेढिगनाहिं ॥ ४६ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे चतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-कुरुपतिगोकुलमेंउतै, जगीयशोमतिभोर ॥ लखिअनुपमबालकजनम, मोदनमान्योथोर ॥
नंदनिकटएकसखीपठाई । भयोपुत्रअसकहिवोलवाई ॥ पुत्रजनमसुनिकैनँदराई । आयेभवनहिंभीतरधाई ॥
लखिअनुपमआपनोकुमारा । उरउमग्योआनंदअपारा॥गदगदकंठकढतिनहिंवानी।पुलकावलितनुअतिउमगानी॥

सुतमुखलखिअसआनँदआयो। जनुनिरधनीदेवतरुपायो ॥ रोवनलगेतहाँनँदलाला। सोसुनिजागेगोपीग्वाला ॥
आयेनंदमहलमहँधाई। लखिसुतमणिगणदियेलुटाई ॥ नंदनिकरिपुनिबाहेरआये। सुखदसुगंधितनीरनहाये ॥

दोहा–युगलपीतपटधारितन, भूषणपहिरिअमोल ॥ बोलवायोउपरोहितन, जिनकेज्ञानअडोल ॥ १ ॥

उपरोहितसुनिजनमकुमारा। आयेआशुनंदकेद्वारा ॥ तिनकोलैनँदभीतरआये। मंगलहेतुवेदपढवाये ॥
जातककर्महुँसविधिकराये। पितरदेवतनवहुपुजवाये॥२॥सुवरणशृंगरूपखुरजिनके। परीपीठपामरिसबहिनके ॥
असमुरभीद्वैलाखमँगाई। बछरासहितक्षीरवहुदाई ॥ विप्रनबोलिपूजिपदसादर। दीन्हेंनंदमगनसुखसागर ॥
पुनितिलपरवतसातबनाई। थलथलमणिगणदियसजवाई ॥ तामेंदियोलपेटिदुशाले। रचेकनककेशृंगविशाले ॥
ऐसेपरवतविप्रनदीन्हें। औरहुदानविविधविधिकीन्हें ॥ ३ ॥

दोहा–होततोषतेशुद्धमन, भूमिकालतेपूत ॥ मज्जनतेतनुहोतशुचि, धोयेवस्तुअपूत ॥

होतयज्ञकरिविप्रशुचि, जीवआतमहिंज्ञान। संसकारतेगर्भशुचि, धनपवित्रकरिदान ॥ ४ ॥

तातेनंददियोवहुदाना। भयेअयाचकयाचकनाना ॥ देहिंनंदकहँविप्रअशीसा। जियेकुँवरतुवकोटिबरीसा ॥
मागधसूतऔरवहुबंदी। आयेनंदहिंद्वारअनंदी ॥ भोसंघर्षनंदकेद्वारा। गोपलुटावहिंमणिभरिथारा ॥
गावहिंगायकमंगलगीता। बजहिंनगारेपरमपुनीता ॥ नौबतिवाजहिंद्वारहिंद्वारा। जैजैकरहिंगोपबहुबारा ॥ ५ ॥
सींचीगलीसुगंधितनीरा। जहँतहँधावहिंमुदितअहीरा ॥ द्वारनद्वारनबंदनवारे। फूलबिछेअँगननिअपारे ॥

दोहा–लाखनगोपनगेहमें, भीतरबाहेरभूप ॥ बिछेबिछौनारेशमी, सींचेअँतरअनूप ॥

कनकदंडमणिजटितअपारे।बँधेलसतजेऊँचअगारे ॥ तिनमेंपँचरँगफहरिपताके। सोहतमनुरोकतरविचाके ॥
चौकनचौकनतनीचाँदनी। तिनकेनीचेबिछीचाँदनी ॥ मोतिनकीझालरिझुकिझूलै। रतननिकरछरपरमअतूलै ॥
कदलीखंभगडेसवठोरा। दीपावलिजगमगचहुँओरा॥६॥धेनुवृषभबछराअरुबाछी। सोहहिंपीठिझूलतिनआछी ॥
केसरहरदअतरमहँबोरी। धरिगैयनबछरावरजोरी ॥ रँगहिंगोपतिनकोनिजहाथा। लालमालबाँधहिंतिनमाथा ॥
गरेपुरटपनवापहिराये। खरिकहिमहँसबखड़ेकराये ॥ ७ ॥

दोहा–गोपकहहिंइकएकसों, व्रजउमग्योआनंद ॥ नंदमहरकेमहलमें, जन्योयशोमतिनंद ॥

सुनिसुनियुवावृद्धगोपाला।पहिरिपहिरिमणिमोतिनमाला।बाँधिबाँधिशिरपागललामा।पहिरिपहिरिजरकसकेजामा
कसिकसिकटिपटछोरनछोरे।भरिभरिथारनरतनअथोरे ॥ जोरिजोरिनिजनिजहिसमाजै।चोपिचोपिबजवावतबाजै॥
पगपगमणिनलुटावतदीनन। चलेगोपकोउआनँदहीनम ॥ नंदरायकेनिकटहिआई। देहिंसबैसुतजनमबधाई ॥
कहहिंकबहुँअससुखनहिंभयऊ।जसयहकुँवरजनममुदभयऊ।कोउपुनिकुँवरहिंदेखनजाहीं।मणिननिछावरिकरतलजाहीं॥
कोउभीतरतेवाहेरआवैं। निजहाथनदुंदुभीबजावैं ॥ ८ ॥

दोहा–जहँतहँधावहिंगोपिका, इकइककहँहिंपुकारि ॥ येरीयशुमतिसुतजन्यो, लेरीजायनिहारि ॥

जिनगोपिनकेदूरिनिवासा। तेउसुनिनंदनिवासहुलासा ॥ व्रजयुवतीजुरियमुननहाई। भूषणभूषितअंगबनाई ॥
केसरतनुअँगरागलगाई। अंजनखंजननैनजिलाई ॥ सारीपहिरिसबैजरतारी। रतनभरितवाघरेसँवारी ॥ ९ ॥
कनकथारभरिमणिसमुदाई।निजनिजढोटनसंगलेवाई॥कोउकोउकनककलशधरिशीशा। देननंदकहँदूबमहीशा ॥
चलींसकलसजिसजिव्रजगोरी। कृष्णजनमआनँदरसबोरी ॥ महामनोहरसोहरशोरा। छायरह्योव्रजमेंचहुँओरा॥
चमकहिंचपलकपोलनकुंडल। छबिसरमनुमरालकेमंडल ॥

दोहा–अधरामृतमकरंदजिन, फैलतिविपुलसुवास ॥ विकसितवारिजवृंदसे, गोपिनवदनविलास ॥ १० ॥

लचकतिलंकललितलचकीली।चोटीचमकिचलतिचटकीली॥हलतपयोधरहारहुहलकैं।छनछनछटाछौनिछैछलकैं
वेंदीडोलतभालनमाहीं।गुनिहरिजननमनचतमनुजाहीं॥चंचलचलहिंपंथमहँगोपी।मनुछनछबिछितिमहँगतिरोपी ॥

झरहिंशीशतेंकुसुमचमेली। मनुव्रजमहिंपूजहिंव्रजहेली॥ पन्ननलालनहीरनहारे। चंचलचहुँकितपरहिंनिहारे॥ मनुहरिजनमजानिसुखपाई। धारात्रिवेणिनवहुचलिआई॥ आईनंदमहलमहँगोपीं। नंदकुँवरदेखनचितचोपीं॥ दईदूवब्रजनाथहाथमें। पुनिगावतसबएकसाथमें॥ ११॥

दोहा—गईयशोमतिभवनमें, कहहिंकुँवरदेखराउ। थर्कीमनायमनायहरि, तबयहभयोउराउ॥

यशुमतिलियेगोदनिजबालक। जोतीनहुँलोकनकोपालक॥धारहिंसबकेगोदयशोदा। कहहिंपुण्यतुवभोयहमोदा॥ बालकनिरखिसबैव्रजनारीं। मणिगणवारितनुहुँमनवारी॥ सबैअशीशहिंलेहिंबलैया। जियेबहुतदिनकुँवरकन्हैया॥ मुखचूमहिंहियलेहिंलगाई। कहहिंधन्यतैंयशुमतिमाई॥ कोउभीतरतेबाहेरआवैं। कोउबाहेरतेंभीतरजावैं॥ कोउआँगनमहँनाचतगावैं। कोउयकएकनटेरिसुनावैं॥ कोउसखिधनलैबाहेरआई। देहिंलुटायलेहिंपुनिजाई॥

दोहा—जेयाचकधनलूटहीं, तेऊदेहिंलुटाय॥ खानपानतनुभानको, दीन्हीसबैभुलाय॥

कनकरजतकेकलशहजारन। तैसहिंकुंभहुँऔरहुथारन॥ भरिभरिदहीघृतहुअरुक्षीरा। औरहुसुखदसुगंधितनीरा॥ केसरहरदऔरकस्तूरी। अँतरनकुंभदियोभरिपूरी॥ लैपिचकीगोपीअरुग्वाला। गावतमुखजैजैनँदलाला॥ डारहिंइकइकपैदधिक्षीरा। नँदआँगनभैजनकीभीरा॥ ग्वालिनभरिगुलालकीझोरी। गोपनपकरिमलहिंमुखरोरी॥ गोपहुअतरनसोंनहवावैं। कहुँदुरिजाहिंकहूँपुनिआवैं॥ दैदैतारीगावहिंगारी। भरिसुरंगमारहिंपिचकारी॥

दोहा—अबरखऔरगुलालतहँ, गयोव्योममहँछाय॥ मानहुँसंध्याकालमें, प्रगटीउडुसमुदाय॥ १२॥

बाजहिंतालपखाउजवीणा। नाचहिंबहुव्रजबालप्रवीणा॥ माखनमेलहिंहाथउठाई। हँसहिंगोपअंचलउड़िजाई॥ कोउगोपीगोपनकहँधरिकै। हरहिंवसनमाखनमुखभरिकै॥ सारीअरुलहँगेपहिराई। देहिंनारिकोवेषबनाई॥ पुनितारीदैहसैंठठाई। कहहिंनईदुलहीबनिआई॥ १३॥ गोपहुकुंडदूधदधिकेरे। बोरहिंगोपिनधाइघनेरे॥ लहिदधिदूधधीरसुखभरिता। भैयमुनापयस्रवणीसरिता॥देखहिंसुरसबचढ़ेविमाना। कहहिंननंदसरिसजगआना॥

दोहा—धनिव्रजकेखगधनिमृगा, धनितरुधनिव्रजभूमि॥ धनिधनिगोपीग्वालजे, निरखहिंहरिमुखचूमि॥

कहूँगोपगोपीमिलिजाहीं। मेलिगुलालफेरिबिलगाहीं॥ होतीकहुँअबीरअँधियारी। भूलेफिरहिंगोपव्रजनारी॥ पायदूधदधिकीअधिकाई। पुनितमारिकहुँपरहिंदेखाई॥झिलिझिलिझोकहिरोरिनझोरी॥चपलासीचमकैंव्रजगोरी॥ बाजिरहीचहुँओरबधाई। प्रगटेनंदनिवासकन्हाई॥ लपटतटूटहिमोतिनमाला। मनुतारागणझरहिंविशाला॥ रह्योनतनुसँभारतेहिंकाला। सुखमुदमोदितग्वालिगुवाला॥ कोउहरिकोलखिबाहरआवैं।मैंदेख्योअससबनिसुनावैं

दोहा—दधिकाँदौतहँअसमच्यो, ठौरठौरमहिपाल॥ कियगुलालसोंलालव्रज, जुरिजुरिगोपीग्वाल॥

बहतिदूधधारायमुनामें। छायगयोगुलालपुनितामें॥ मनुहरिजनमजानिसुखश्रेणी। प्रगटीव्रजमेंआयत्रिवेणी॥ खेलतदधिकंदोकुरुराऊ। होतनकोहुकेनेकअघाऊ॥ जेदूरीतेदेखनआवैं। तेउमुदमानितहैंमिलिजावैं॥ यकएकनकोसिखवतजाहीं। खेलहुअबैजाहुघरनाहीं॥ असप्रमोदपुनिकबहुँनपैहो। यदपिभागवशइंद्रहुह्वैहो॥ बछरावृषभऔरव्रजगैयाँ। कूदहिंतेउजनुदेहिंबधैयाँ॥ कूदिपरहिंरंगनकेकुंडन। धावहिंरँगेचहूँकितझुंडन॥

दोहा—बछरनदूधपियायबो, तृणचरिबोतेहिंकाल॥ भूलिगयोगोगणहुँको, भयेनंदकोलाल॥

यहिविधिपहरद्वैकदिनबीत्यो।दधिकांदौसोकोउनहिंरीत्यो॥यद्यपियशुमतिवारनकरहीं। तदपिनवचनकानकोउधरहीं पुनिसबगोपनगोपिनचोपिन। नंदबोलायोआभावेपिन॥ पृथकपृथकसबकोनहवाये।पृथकपृथकअँगरागलगाये॥ पृथकपृथकभूषणसजवाये। पृथकपृथकभोजनकरवाये॥ पृथकपृथकसबकोबैठाये। पृथकपृथकताँबूलखवाये॥ पृथकपृथकपुनिअँतरलगाये।पृथकपृथकसतकारकराये।पृथकपृथकजोजोजियकीन्हें।पृथकपृथकतिनकोनँददीन्हें

दोहा—पृथकपृथकसबसोंकरी, विनययुगलकरजोरि॥ भयोपुत्रतुवपुण्यते, यामेंकछुनाहिंमोरि॥

मागधबंदीसूतहुनाना। चारणसुकविसबैमतिवाना॥ गावहिंनंदसुयशसुखसारा। कहहिंजियहिबहुकालकुमारा॥

सुनिसुनिनंदसुपूतसनेहीं । मनवांछिततिनकोधनदेहीं ॥ १५ ॥ सादरबहुविप्रनदैदाना । फेरिजेमावैंव्यंजननाना॥
दैअशीशद्विजकहैंपुकारी । रक्षहुनंदकुमारमुरारी ॥ छायरह्योव्रजसवैदकारा । निकरिगयोनरनाथनकारा ॥
ठौरठौरबाजेबहुबाजैं । जिनरवसुनिजलधरगणलाजैं ॥ नंदविभौलखिदेवासिहाँहीं । कहहिंसुन्योदेख्योअसनाहीं ॥
दोहा–जाकोललकतलखनको, विधिशिवसुरनसमाज ॥ सोयशुदाकीगोदमें, विलसतबालकआज ॥ १६ ॥
ह्वैसबसुरनारीव्रजनारी । देवहुसकलगोपवपुधारी ॥ प्रविसाहियशुदामंदिरमाहीं । हरिदरशनकरिपुनिदिविजाहीं ॥
तहाँरोहिणीअतिसुखपाई । मज्जनकरिअँगरागलगाई ॥ भूषणवसनपहिरिछबिवारे । अरुसोरहूसिंगारसिंगारे ॥
कनकथारभरिरतनअपारा।जननलुटावतिबारहिंबारा॥आनँदउमगीफिरतिभवनमें। करतकाजनहिंथकतिगवँनमें॥
दियोरामकीसुधिबिसराई । जनुजनम्योआपुहींकन्हाई ॥ यशुदातेदूनोसुखताको । यहीरीतिनिर्मलमनजाको ॥
दोहा–जोहिरोहिणीकीदशा, नंदअनंदअपार ॥ बारहिंबारसराहिकै, करहिंतासुसतकार ॥ १७ ॥
व्रजवासीद्रुतनिजघरजावैं । खेलनहेतखेलौनालावैं ॥ कोउफुलेहराबाँधहिंआई । कोऊधरहिंदिवारिसोहाई ॥
नंदकुँवरढिगकोउव्रजनारी । रक्षाकरहिंमंत्रपढिझारी ॥ कोऊनीलपटदेहिंओढ़ाइ । कोउदिठौनादेहिंलगाई ॥
कोउबालकविलोकिबलिजाहीं।कहहिंहरषबाकीकछुनाहीं॥नेगचारजसजाकहँयोगू । यशुमतिकरपावहिंतसलोगू ॥
सुनिसुनिसुतकीकलकिलकारी।यशुमतिसुखनहिंजायसम्हारी॥द्वारनद्वारनगृहगृहपाहीं ।अतिकसमसनिकसतपारिजाहीं
दोहा–कृष्णजनमव्रजकोहरष, नंदयशोमतिनेहुँ ॥ सहसहुमुखसबनाहिंकहत, यकमुखकिमिकहिदेहुँ ॥
जबतेप्रगटेव्रजनँदलाला । तबतेनितनवमोदविशाला ॥ वसहिंऋद्धिसिधिव्रजथलथलमें।दूनदूनसुखभोपलपलमें ॥
करहिंकामनाजोइजोइजोई।तुरतहिंपावहिंसोइसोइसोई।रहीनकोहुकेकछुअभिलाखा।कछुसुखकोउबचाइनहिंराखा।
जोधनइकइकके़गृहमाहीं । सपनेहुधनदलख्योसोनाहीं ॥ नंदविभौलखिअतुलनरेशा । लजहिंसुरेशप्रजेशमहेशा ॥
कमलाकीकटाक्षकछुपाई । लहैंसकलसुरविभौबडाई ॥ सोकमलाव्रजमोंनितवागै । कोउनहिंतासुओरअनुरागै ॥
दोहा–अतुलविभौनँदरायको, कोकाहिपावैपार । जहँप्रतिक्षत्रिभुवनधनी, आयलीनअवतार ॥ १८ ॥
कियोछठीवरहीँनँदराई । सोआनंदसकैकोगाई ॥ यहिविधिबीतिगयोकछुकाला । तबगोपनकोबोलिउताला ॥
नंदसवनअसबैनसुनायो । करकोदेनकालअबआयो ॥ सोहमजैहैंमथुरहिंभाई । कंसहिंडाँड़देनअतुराई ॥
तुमरक्षेहुगोकुलसबभाँती । सावधानरहियोदिनराती॥असकहिमथुरहिंगयेव्रजेशा।कियेगोपजसनंदनिदेशा ॥१९॥
जायनंदकंसहिंकरदीन्ह्यों । मथुरामेंडेराकहुँकीन्ह्यों ॥ सुनिवसुदेवनंदआगमनू । मान्योअमितमोददुखदमनू ॥
दोहा–नंदहिंपूँछतरैनमें, मानिकंसकीत्रास । जातभयेवसुदेवचलि, आशुहिंनंदनिवास ॥ २० ॥
वसुदेवहिंविलोकिव्रजराई । उठ्योआशुमनुसरबसुपाई ॥ प्रीतिसमेतसखाप्रियकाहीं। दोउभुजभरिलगायउरमाहीं॥
प्रेमविकलनैननजलआये।मिलतनछूटेयामाविताये॥पुनिजसतसकैछुटिगयेदोऊ।धनिधनिकहँदोहुँनसबकोऊ ॥२१॥
पुनिआसनमहँअतिसुखछाई । आनकदुंदुभिकहँबैठाई ॥ करिसतकारसप्रीतिमहाई । पूँछ्योनंदसकलकुशलाई ॥
तबवसुदेवहुगिराउचारी।दोउसुतकीसुधिकरतदुखारी ॥२२॥ भलीभईतुमकहँहमदेखे ।आजहिंमोदमूलसबलेखे ॥
दोहा–बीतिगईसिगरीउमिरि, भयेवृद्धनँदराय । तबतुम्हरेसुतप्रगटभो, ईशकृपाअतिपाय ॥
जबमिटिगईपुत्रकीआसा । तबदीन्ह्योंसुतरमानिवासा॥पायोमोदजरठपनमाहीं।यातेअधिकजगतकछुनाहीं ॥२३॥
मीतमिलबदुरलभसंसारा । मिलेमनहुँपुनिभोअवतारा ॥ रहेकैदहमकंसअगारा । तातेदुर्लभदरशतिहारा ॥ २४॥
हैविचित्रगतिकरमहिंकेरी।बिछुरहिंमिलहिंमीतनहिंदेरी॥भागवशातमित्रामिलिजाहीं।कहुँअभागवशपुनिबिलगाहीं।
सरिप्रवाहजिमितृणगणबहते।कहूंमिलतकहुंबिछुरतरहते२५कहहुगऊहैंनिरुजतिहारी।जिनकोपैबालकहितकारी ॥
दोहा–तृणलतिकापादपसकल, औरहुवारिबयारि । बसहुबृहदवनसुहृदयुत, तहँसबहैंसुखकारि ॥ २६ ॥
मेरोसुतयुतरोहिणिमाता ।व्रजमेंबसतकुशलहैभ्राता॥तुमहींकोपितुजानतबालक। तुमहींहौताकेअबपालक ॥२७॥

मित्रहेतुजिनकोधनधर्मा। तिनहींकेसाँचेसबकर्मा॥ जिनकेमित्ररहैंदुखमाहीं। तिनकेधर्महुँधनहुँवृथाहीं॥
सुनिवसुदेववचनव्रजराई। बोलतभयेमहादुखछाई ॥ २८॥

नंद उवाच।

हायदेवकीपुत्रतिहारे। पापीकंसछहोंहनिडारे॥ रहीबाँचिदुहिताइकजोई। गगनपंथगमनतभैसोई॥ २९॥
भालपट्टजोलिखतविधाता। औरनहोतहोतसोइभ्राता॥

दोहा—जाकेमनमेंरहतहै, भागहिकेरविश्वास। सोकबहूँनाहिंहोतते, पावतसदाहुलास॥
सुनतनंदकेवचनसुहावन। बोलेआनकदुंदुभिपावन॥३०॥

वसुदेव उवाच।

करदैचुकेकंसकहँभाई। हमहूँकहँनिरखेसुखछाई॥ जाहुआशुमथुरातेताता। गोकुलमेंह्वैहैंउतपाता॥
इहाँबहुतदिनरहननलायक। साजहुसकलशकटव्रजनायक॥३१॥

श्रीशुक उवाच।

आनकदुंदुभिकेसुनिबैना। पुनिपुनिमिलिढारतजलनैना। प्रेमविकलह्वैमाँगिबिदाई। गोपनकोतुरतहिंबोलवाई॥
तिनमेंचढिसबसाजलदाई। गोकुलकहँगवँनेव्रजराई॥३२॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पंचमस्तरंगः॥ ५॥

श्रीशुक उवाच।

आनकदुंदुभिवचननकाँहीं। चिंताकरतचलेमगमाँहीं॥

दोहा—कह्योमीतवसुदेवजो, मृषानह्वैहैसोय॥ गोकुलत्रातागोविंदै, औरनदूजोकोय॥ १॥
जादिनतेनिजभटनको, दीन्ह्योंकंसनिदेश॥ तादिनतेबालकहनत, विचरतभेसबदेश॥

रहीपूतनाबालकघातिनि। मानोमहाकालकीनातिनि॥हनतशिशुनव्रजपुरअरुग्रामा।विचरैकरतकंसकरकामा॥२॥
जहँहरिकथाहोतिकुरुराई। जहँहरिनामउचारसदाई॥ भूतपिशाचहुप्रेततहाँहीं। सकैंउपद्रवकरिकोउनाहीं॥
तौजहँहैंप्रतिक्षभगवाना। करैकोतहँउतपातमहाना॥ ३॥ पैइकसमैपूतनाघोरा। मनमेंकियोविचारकठोरा
मैंमार्‌योमहिशिशुनकरोरा। बाकीरहयोनंदकोछोरा॥ मारहुँताहिगोकुलैजाई। पैपरगटनहिंलगीउपाई॥
तातेकरिसुंदररतिरूपा। हनहुँनंदसुतपरमअनूपा॥

दोहा—असविचारितहँपूतना, धारिमनोहरवेस। मंदमंदकरिगजगवँन, गवँनीनंदनिवेस॥ ४॥

त्रिभंगीछंद—शिरसुमनचमेलीनारिनवेली। सुवरणवेलीसमभाई॥
अतिशयकटिखीनीकसिकिंकीनी। छलनप्रवीनीव्रजआई॥
तनुजरकससारीबाँघरभारी। मुखउजियारीप्रगटिरही॥
युगअमलकपोलाकुंडललोला। परमअमोलाशोभसही॥
कुचसुवरणकुंभारंगकुसुंभा। जंघारंभाखंभासे॥
उरमोतिनमालाहीरनजाला। लालविशालाअतिभासे॥
अलकैंमुखहलकैंअतिछबिछलकैं। परहिनपलकैंजेहिंदेषी॥ ५॥

चहुँओरनिरखतीमोदबरषती। चित्तकरषतीछलवेषी ॥
सिगरीव्रजनारीताहिनिहारी। रमाविचारीचकितरहीं ॥
नहिंवारणकीन्हीजानहिंदीन्ही। छलयुतचीन्हीताहिनहीं ॥
घरघरहगफेरतनँदसुतहेरत। शिशुवधमेंरतमंदचली।
कहुँमृदुमुसकातीकहुँदुरिजाती। कहुँप्रगटातीगलिनगली ॥ ६ ॥

दोहा–यहिविधितेंसोपूतना, नंदमहलमहँजाय ॥ लखिशोभातहँठगिरही, निजकारजबिसराय ॥
कंसनिदेशफेरिसुधिकरिकै। पूँछ्योगोपिनसोंमुदभरिकै ॥ नंदलालकहँदेहुबताई। मैंआईइतदेनबधाई ॥
लेहुँललकभरिलालखेलाई। बिनदेखेअबजायनजाई ॥ असकहिभीतरचलीअशोकी। तासुप्रेमलखिकाहुनरोकी॥
पलनामाहिंपरेतेहिंकाला। खेलतरहेनंदकेलाला ॥ रहीनकोउतहँसखीसयानी। निजनिजकारजसबैलोभानी ॥
लखिइकांतपूतनाविचारी।डारहुँआशुहिंबालकमारी॥भस्मछिपितजिमिपावकराशी।जान्योनहिंसोअसुरविनाशी७
इतैउतैपूतनानिहारी। जबनहिंरोकीकोउव्रजनारी ॥ जिमिसोवतकारेअहिकाँहीं। गहैकुमतिगुनिगुनमनमाँहीं ॥
लियोअंकतिमिहरिहिंउठाई।मुखचुम्बनकरिकछुकखेलाई ॥ ८ ॥

दोहा–आवतलखिकैपूतनै, कृष्णमंदमुसक्याय ॥ मूँदिलियेदोऊहगन, जानितासुचितभाय ॥
बैठिगईपलनातरआई। लीन्ह्योहरिकीरोगबलाई ॥ मुखमंजुलउरअतिहिंकठोरा। भरेकुचनमहँविषअतिघोरा ॥
मूँदीम्यानमनहुँतरवारी।जान्योछलनहिंहरिमहतारी॥लखिपूतनासुछबिमनमोहिनि।चकितभईतहँयशुमतिरोहिनि॥
रहीदूरिरोक्योनहिंताको। जान्योकछुनकपटातिनताको ॥ ९ ॥

दोहा–भरोघोरजिनमेंगरल, असआपनेउरोज ॥ दूधपियावनमिसिधरयो, बालकवदनसरोज ॥
कुचकरगाढ़ेगहिभगवाना। कीन्ह्योंप्राणसहितपैपाना॥भयेशिथिलताकेसबअंगा।भयोतासुसिगरोछलभंगा ॥१०॥
व्याकुलभैतनसुरतिबिसारी। छोंडुछोंडुअसगिराउचारी॥ आँखनिकारिचरणकरपटकै। बारबारबालककहँझटकै॥
तनुतेबह्योप्रसेदअपारा। पुनिकीन्ह्योंअतिघोरचिकारा ॥११॥घोरशोरताकोसुनिभारी। गिरेसकलव्रजकेनरनारी॥
उठेसकलअसकियेविचारा। वज्रपातधौंभयोहजारा ॥ धरणिशैलसागरग्रहतारा। डोलिउठेसबएकहिबारा ॥

दोहा–झनकारीतेहिंशब्दकी, छाईदशहुँदिशान ॥ मानहुँएकहिंबारभो, चहुँकितशोरमहान ॥ १२ ॥

छंदभुजंगप्रयात–गिरीबाहिरेपूतनाभागिआई। तज्योनाहिंताकेउरोजैकन्हाई ॥
तहाँपूतनाकोभयोरूपभारी। भुजाकेशहूँकोपदौंकोपसारी ॥
परीसोव्रजैमेंमहाभीतिकारी। गिरघोवृत्रज्योंवज्रलागेसुरारी ॥ १३ ॥
षटैकोसकेह्वैगयेवृक्षचूरा। रह्योपूरिआकाशलोंधुंधधूरा ॥ १४ ॥
रहीतासुडाढ़ैंहलैकेसमाना। दरीतुल्यनासागुहातुल्यकाना ॥
उरोजेउभैहैशिलासेविशाला। करैभूरिमेंशीशकेकेशलाला ॥ १५ ॥
उभैनैनमानोंउभैअंधकूपा। नितंबौनदीकूलसेजासुभूपा ॥
भुजाऔउरूपादहूसेतुसेहैं। महामुंजसेजासुरोमागसेहैं ॥
सुखानेसरैसीउभैकुक्षजाकी। कहींकालकेफाँससाजीहताकी ॥
वटैवृक्षकैशाखसीअंगुलीहैं। परीअंगजाकेबलीहूँपलीहै ॥ १६ ॥

दोहा–असपूतनाशरीरलखि, महाकरालविशाल ॥ गुनिअचरजअतिशयडरे, सिगरेगोपीग्वाल ॥
प्रथमैसुनिकैशोरकठोरा। पुनिताकोलखिकैवपुघोरा ॥ कहाँहिंपरस्परगोपीग्वाला। कहाँरहीराक्षसीकराला ॥

कौनहेतुकियशोरमहाना। फूटेमनहुँहमारेकाना॥१७॥अबतौमृतकसमानदेखाती।विधिकीगतिकछुजानिनजाती॥
असकहिमंदमंदनरनारी। जायनिकटपूतनौनिहारी ॥ ताकेउरखेलतनँदलाला। डरतजिन्हहिंकालहुसबकाला॥
गोपीतुरतहिंतिनहिंउठाई। बारबारहियनैनलगाई ॥ १८ ॥ दौरियशोदाहिंदीन्ह्योंआई। ढारतआँसुनगिरासुनाई॥

दोहा-कहँकीपापिनिराक्षसी, सुताहिंलियोतैंखाय॥ यैविधितुमपैकरिकृपा, दीन्ह्योंयाहिबचाय॥

फेरिप्राणसमनिजसुतपाई। यशुदालीन्ह्योंहियेलगाई॥ आईरोहिणिहूँतहँधाई। हरिहिंलियोनिजअंकउठाई॥
तहँऔरहुगोपीजुरिआई। बारबारहरिकहँबलिजाई॥ कहहिंधन्यतैंयशुमतिमाई। मीचवदनतेबालकपाई॥
राईलोनउतारहिंकोई। बाँधहिंयंत्रपूजिपदधोई॥ पढ़तमंत्रगोपुच्छभवावैं। जलउतारिचुटकीचटकावैं॥ १९॥
कोऊजनार्दनधूपहिंदेहीं। कोउश्रीफलउतारिपुनिलेहीं॥ पुनिहरिकहँगोमूत्रहिंमाहीं।नहवायोविधिसहिततहाँहीं॥

दोहा-गोपदरजअंगनिमल्यो, दियोदिठौनाभाल॥ मूपमथानीससंवा, फेरहिंसबव्रजबाल॥

द्वादशकेशवादिलैनामा। नंदनँदनअँगद्वादशठामा॥गोबरकीटिकुलीदैदीन्ही।पुनियशुदारोहिणिअसकीन्ही॥२०॥
सबैवंदकरिद्वारहुखिरकी।करपदधोययमुनजलछिरकी निजतनमेंप्रथमहिंकरिलीन्ह्यो।बीजन्यासपुनिसुततनुकीन्ह्यो
रक्षहिंतुवपदअजभगवाना।रक्षहिंजानुतोरमणिमाना॥ रक्षहिंऊरूयज्ञअधीशा।रक्षहिंकटिअच्युतजगदीशा॥
रक्षहिहयग्रीवउदरहिंको। रक्षहिंकेशवसदैहृदहिंको॥ रक्षहिंवक्षहिंईशकृपाला। रक्षहिंइनकंठहिंसबकाला॥

दोहा-रक्षहिंभुजकोविष्णुप्रभु, मुखहिंउरुक्रमईश॥ रक्षहिंईश्वरसवेदा, बालकतेरोशीश॥ २२॥

रक्षहिंआगेहरिहिचक्रकर। रक्षहिंपाछेसदागदाधर॥ रक्षहिंदक्षिणमधुरिपुधनुधर। रक्षहिंवामेअजननँदककर॥
रक्षहिंकोणशंखकरधारे। रक्षहिंउपरखगेशसवारे॥ रक्षहिंअवनीहलधरशेशा। रक्षहिंचहुँकितपुरुषपरेशा॥ २३॥
रक्षहिंहृषीकेशइंद्रीगण। रक्षहिंप्राणनकोनारायण॥ रक्षहिंश्वेतद्वीपपतिचित्तै। रक्षहिंमनयोगीश्वरनित्तै॥ २४॥
रक्षहिंपृश्निगर्भबुधिकाहीं। रक्षहिंजियभगवानसदाहीं॥ रक्षहिंगोविंदखेलतमाहीं। रक्षहिंमाधवसोवतपाहीं॥२५॥

दोहा-रक्षहिंचलतविकुंठपति, बैठतरमानिवास॥ रक्षहिंभोजनकरतमें, यज्ञभोगसहुलास॥ २६॥

यातुधानडाकिनीशाकिनी। कूष्मांडहुयोगिनीबाकिनी॥भूतहुप्रेतपिशाचवेताला। यक्षविनायकरक्षकराला॥२७॥
ज्येष्ठाअरुरेवतीपूतना। कोटरादिजेऔरपूतना॥ औरहुग्रहजेबालकनासी। महाभयावनमरघटवासी॥
अपस्मारछैआदिकरोगू। अरुजेजियदायकदुखभोगू॥२८॥ सपनेहूँमहँअतिउतपाता। बालवृद्धजेग्रहदुखदाता॥
तेसिगरेहरिनामउचारे।दुरहिंद्रुतहिंनहिंपरहिंनिहारे॥२९॥ यहिविधिप्रीतिसहिततहँगोपी।हरिहिंरक्षकियमंगलचोपी

दोहा-फेरियशोदामोदभरि, सुतहिंगोदबैठाय॥ पैकोपानकराइकै, पलनादियोसोवाय॥ ३०॥

तबलोंमथुरातेअतुराई। आयेगोपनयुतनँदराई॥ व्रजमेंपरीपूतनादेखी। डरेसकलअचरजअतिलेखी॥ ३१॥
बोलेसकलपरस्परबानी।कह्योजोआनकदुंदुभिज्ञानी॥सोइउत्पातभयोव्रजमाँहीं।सज्जनवचनमृषाकिमिजाहीं॥३२॥
पुनिसिगरेजुरिगोपतहाँहीं। लैकुठारनिजनिजकरमाँहीं॥ काटनलगेपूतनाअंगा। जुरिजुरिजोरकरतयकसंगा॥
जबखंडबहुभयोशरीरा। इकइकखंडउठायअहीरा॥ फेंकेव्रजबाहेरतेहिंजाई। फेरिगोपईंधनबहुलाई॥
तापरशुचिपुनिअनललगाये। यहिविधिसबपूतनैजराये॥ ३३॥

दोहा-दहनपूतनादेहते, कढ्योधूमकुरुराउ॥ अगरसुरभिव्रजछैरह्यो, सोहरिपरसप्रभाउ॥ ३४॥

जगतशिशुनकीमारनहारी। सदामांसअरुरुधिरअहारी॥ विषलगायकुचनंदनिकेतू। आईहरिकेमारनहेतू॥
ऐसिहुरहीपूतनापापिनि। सोगतिलहीजोदुरलभजापिनि॥ ३५॥

दोहा-परमात्माश्रीकृष्णहीं, प्रियतमवस्तुहिदेत॥ तौपुनिश्रद्धाभक्तिकरि, माताप्रेमसमेत॥३६॥

जेपदयोगीजनहियकरहीं।जिनपदमेंविधिशिवशिरधरहीं।तेपदधरिपूतनैशरीरा। पानकियोहरिविषयुतक्षीरा॥३७॥
सोपूतनामातुगतिपाई। तौपुनिकाजेप्रीतिलगाई॥ कृष्णचंद्रकेचरणनध्यावैं। अचरजकाजोगोपुरपावैं॥ ३८॥
हरिहिसछलविषक्षीरपियाई। सोउपूतनापरमगतिपाई॥

दोहा–तौगोकुलगोपीगऊ, सुतसनेहसरसाय। दूधपियावहिंहरिहिंनित, बहुखेलायउरलाय ॥ ३९ ॥
तिनकीगतिकेहिंविधिकहिजाई।जिनकोहरिटेरहिमुखमाई।कन्हुवाँकन्हुवाँकहिसबगोपी।हरिहिंपुकारहिंआनँदवोपी
तिनकीभागकेरिप्रभुताई। सकैनसहसहुवदनगनाई ॥४०॥ अगरसुगंधधूमकरिघ्राना। करनलगेअसगोपवखाना॥
यहकाहैकहँतेइतआई। रहीसुरभिसिगरेव्रजछाई ॥ असभाषतासिगरेनँदगेहू। आयेसकलकरतसंदेहू ॥ ४१ ॥
पुनिपूतनाआगमनजैसो। भयोकृष्णकरतेवधतैसो ॥ सोसबकह्योनंदसोंगोपा। सोऊगुन्योविघनभोलोपा ॥ ४२॥
दोहा–पुनिसुतकोलैगोदमें, शीशसूँघिनँदराय। आनँदअवधिनपायकै, दियपलनापौढाय ॥ ४३ ॥
कृष्णचरितवधपूतना, यहजोसुनैसुरीति। सोगोविंदपदपदुममें, पावतपूरीप्रीति ॥ ४४ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे षष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

दोहा–तहाँपरीक्षितजोरिकर, अतिशयआनँदपाय। विनयकरीशुकदेवसों, निजअभिलाषदेखाय ॥

राजोवाच।

जौनजौनहरिलैंअवतारा। करहिंचरित्रविचित्रअपारा॥१॥तेसबयदपिकथामनहारी। शुचिकरनीअवओघविदारी॥
तद्यपिकृष्णचरित्रसुहावन। वरणौंविस्तरयुतमुनिपावन॥२॥श्रीमुकुंदबालकव्रजमाँहीं।कीन्ह्योंकौनचरित्रनकाँहीं॥
जाहिसुनेबाढ़तिअतिप्रीती।पुनिनाहिंरहतिजगतकीभीती॥यहिहितमनुजलोकहरिआवैं।छायसुयशजनपापनशावैं२
सुनिकैकुरुपतिकीमृदुबानी। बोलेव्यासमुवनसुखमानी ॥

श्रीशुक उवाच।

हरिजनमहितेसहितहुलासा। यहिविधिबीतिगयेत्रयमासा॥
दोहा–रह्योरोहिणीनखतनृप, जौनेदिनसुखभीन। ताहीदिनपलनापरे, कृष्णकरौटालीन ॥
लखिकरौटनिजबालककेरो। यशुमतिआनँदमानिघनेरो॥ सिगरीगोपिनकोबोलवाई। द्वारेमेंनौबतिधरवाई ॥
आशुहिंउपरोहितनबोलायो। विविधमंत्रमंगलपढवायो॥ पुनिगोविंदकोलैनिजगोदू। गोपिनमध्यबैठिभरिमोदू॥
विप्रनकरतेसहितविवेका। करवायोसुतकरअभिषेका ॥ तहाँबजेनौबतिहुनगारा। वेणुमृदंगझाँझकरतारा ॥४॥
औरहुगोदसबैजुरिआये। नंदभवनदरबारलगाये ॥ तहाँमनोहरसोहरशोरा। गोपीकरनलगीचहुँओरा ॥
दोहा–यहिविधित्रिभुवननाथको, नँदरानीसुखछाय। सगुनसहितद्विजकरनते, अभिषेकहिकरवाय ॥
करपदकड़ेछुगुनकटिमाहीं।गलतहबीजनजंत्रनकाहीं॥बालककहँयशुमतिपहिराई। नीलवसनपुनितनुहिंओढाई ॥
जानिसुतहिंआईऔंवाई। तबदीन्ह्योंपलनहिंपौढाई ॥ मंदमंदपगठोकतमाई। यहिविधिदीन्ह्योंहरिहिंसोचाई ॥
सोवतजानिसुतहिंसुखछाई। पुनियशुमतिबाहेरकढ़िआई ॥ विप्रनकेपदमेंशिरनाई। दियोअन्नबछुरनयुतगाइ ॥
पहिरायोगलमोतिनमाला। दियोओढायअमोलदुशाला॥ यशुदाकरतेंलहिसतकारा।दियआशिषसबविप्रउदारा॥
दोहा–जियेपुत्रतेरोसदा,नितनवकरैविनोद। असकहिद्विजनिजनिजभवन, गवँनकियेमढिमोद ॥ ५ ॥
करवटलियोनंदकेनंदा। यशुमतिभवनभयोआनंदा॥यहसुनिकैसिगरीव्रजनारी। प्रमुदितयशुमतिमहलसिधारी ॥
लैलैहरिकीरोगबलाई। वारिवारिमणिगणसुखछाई ॥ नँदआँगनव्रजांगनाबैठीं। अनुपमआनँदअंबुधिपैठीं ॥
तिनकोकरनहेतुव्यवहारा। बीरीअतरआदिधरिथारा ॥ उठिसुतकेढिगतेंनँदरानी। आईजहँव्रजवधूसयानी ॥
पृथकपृथकतनुअतरलगायो। पुनिसबकोतांबूलखवायो ॥ भईविलंबकरतसतकारा। तबउतजागेनंदकुमारा ॥
शकटाहिंतरपलनापरसोये। दूधपियनहेतुहिंहरिरोये ॥

दोहा-रहीभीरगोपिकनकी, होतरह्योकलगान। तातेबालकरोइबो, परयोनयशुमतिकान॥
रोयहुपैजबगईनमाता। तबउठायदोउपदजलजाता॥६॥ हन्योशकटमहँतुरतमुरारी। सबशकटनतेरह्योजोभारी॥
गयोउलटिसोशकटमहाना। भयोबिलगसबतासुविधाना॥ दहीदूधघृततैलनकेरे। कनकरजतकेपात्रघनेरे॥
तेऊगिरेभूमिमहँआई। दूधदहीघृतगयोअड़ाई॥७॥ शकटहिंलौटतभोअतिशोरा। गोपिग्वालचौंकेचहुँओरा॥
यशुमतिरोहिणिआदिकनारी। सुनिअवसरजेऔरसिधारी॥ तेसबउलटोशकटहिंदेखी।भोउत्पातमनहिंअसलेखी॥
दोहा-आईतुरतहिंदौरिकै, जहाँरहेनँदलाल॥ यशुमतितुरतउठायकै, उरलगायलियबाल॥
कैसेगिरयोशकटयहभारी। लियोराखिबालकहिमुरारी॥असकहिकोउबाहेरकढ़िआई।शकटपातव्रजपतिहिंसुनाई॥
सोऊदौरिगयेअकुलाई। कह्योशकटकोदियोगिराई॥तबयशुमतितहँअतिदुखपागी।चकितचहूँकितपूँछनलागी॥८॥
रहेजेबालकबालकनेरे। तेसबएकबारअसटेरे॥ कोउनहिंशकटगिरायोमैया। जागिउठ्योजबतोरकन्हैया॥
दूधहेतुबहुरोदनकरिकै। मारयोशकटहिपदबलभरिकै॥ उलट्योशकटचक्रसबटूटे। दूधदहीघृतभाजनफूटे॥९॥
बालकवचनसुनतव्रजवासी। मानिमृषाकीन्हेमुखहाँसी॥
दोहा-सोबालककोअमितबल, जान्योनहिंतहँकोय॥ यहसिगरेब्रह्मांडको, निजबलधारेजोय॥ १०॥
सुतहिंयशोमतिदूधपियाई। पुनिपंडितनआशुबोलवाई॥वेदमंत्रतेतेहिंझरवायो॥११॥ सविधिफेरितहँहोमकरायो॥
दधिअक्षतकुशअरुशुचिनीरा॥सींचेसुतहिविप्रमतिधीरा॥१२॥इरषाअसतिदंभअभिमाना।अरुहिंसातेविगतसुजाना
ऐसेविप्रनकेरअशीशा। कबहुँननिरफलहोतमहीशा॥१३॥असविचारिकैनंदसुजाना।वेदविहितकरिसकलविधाना॥
शुचिजलशुचिऔषधीमँगाई। द्विजकरसुतअभिषेककराई॥१४॥पुनिमंगलहितवेदपढ़ाई।आपहुँहोमकियोनँदराई॥
दोहा-विविधअन्नदीन्ह्योंद्विजन॥१५॥ दियबहुगऊँमँगाय॥ पटओढाइवछरासहित, पुरटमालपहिराय॥
अपनेसुतकेमंगलहेतू। यहिविधिदानदियोमतिसेतू॥ विप्रदियोसबआशिरवादा। रहौनंदसुतयुतअहलादा॥१६॥
जेद्विजवेदमंत्रकेज्ञाता।ध्यावहिंनितहरिपदजलजाता॥तेद्विजकहहिंजौनजेहिंकाहीं।तौनताहिकोहोतसदाहीं॥१७॥
तहँगोपसिगरेपुनिजुरिकैं। जसकोतसशकटहिंतेहिकरिकै॥भरिभरिभाजनदधिघृतक्षीरा।जसपूरुवतसधरेअहीरा॥
गवँनकियेसबनिजनिजगेहू। नहेनंदनंदनकेनेहू॥ यहिविधिबीतिगयोकछुकाला। एकसमैव्रजमेंमहिपाला॥
दोहा-आँगनमेंबैठीरही, यशुमतिसुतलैगोद॥ चूमतबदनखेलावती, पावतपरमप्रमोद॥
तहँगोविंदव्रजकेसुखदाई।तृणावर्त्तकीजानिअवाई।गरूगिरीशसरिसतनुकीन्ह्यों॥१८॥तबयशुदामहिमेंधरिदीन्ह्यों॥
लगीविचारकरनमनमाँहीं। मोशिशुरह्योगरूअसनाहीं॥कहाभयोकछुजानिनजाता।रच्योचरितयहकौनविधाता॥
पुनिमनमेंयशुमतिबड़भागी। महापुरुषकोसुमिरनलागी॥ रक्षहिंसुतहिंसदाभगवाना। दूजोकरनहारनहिंत्राना॥
अससुमिरतकहुँकारजहेतू। जातभईभीतरहिंनिकेतू॥१९॥ उतैकंससुनिवकीविनासा। मानिमहाअपनेमनत्रासा॥
दोहा-तृणावर्त्तकोतुरतहीं, निकटबोलायबुझाय॥ मारनहितनँदनंदनके, व्रजकोदियोपठाय॥
छंदनराच-सुरेशशत्रुकंसकोनिदेशशीशधारिकै। व्रजैव्रजोसुवासुदेवकोवधैविचारिकै॥
प्रचंडपौनबौडरैसुरूपकोबनाइकै। कियोमहाउपद्रवैसुनंदगाँउजाइकै॥ २०॥
दशौंदिशानमेंमहानधूरिधुंधकारभो। रह्योनभाँनभातुकोअमानुअंधकारभो॥
सगोकुलैसुगोकुलैसुगोपसंकुलैकुलै। थलैथलैसिलैप्रवर्षिकैसुव्याकुलैभुलै॥
अघातवज्रपातशोरसोकठोरशोरभो। अनेकठौरघोरभूमिकंपचारिओरभो॥
अनेककंकरैझरैंपुरैंसुभौनभौनमें। उठैंमहानबौडरैंधरन्निचारिकोणमें॥ २१॥
दोहा-हाथपसारेहूँतनक, सूझपरतकछुनाहिं॥ धूरिधारतहँभूरिभै, नृपसिगरेव्रजमाहिं॥
निरखहिंनाहिंपरस्परगोपा। मानतभयेभयोव्रजलोपा॥ जेजहँरहेतहँतेठाढे। मूँदेनैनसबैदुखबाढे॥
भूपतिअवनीऔरअकाशा।भरीधूरिनहिंकहुँअवकाशा॥२२॥कोहुँकेखबरिरहीतनुनाहीं। बैठेव्रजवासीबिलखाहीं॥

तृणावर्तयहिविधिअतिघोरा। कियोउपद्रवठोरहिंठोरा॥ पुनिशठनँदआँगनमहँआई। पुनिपुनिधूरिधुंधतहँछाई॥
तुरतहिंनँदनंदनहिंउठाई। खललैगयोअकाशउडाई॥उभैदंडमहँकछुअँधियारा। मिटतभयोकछुभोउजियारा२३॥
दोहा-प्रथमहिंथलजहँसुतरह्यो, तहँताकोनहिंदेखि॥ यशुमतिदुखपावतभई, सुतविनाशमनलेखि॥
जैसेबछराबिछुरेगैया।रोवतितिमिरोवतिहरिमैया॥ गिरीधरणिकरिआरतशोरा।कहतिकौनलैगोममछोरा॥२४॥
सुनियशुदाकोरोदनभारी। जुरिआईंसिगरीव्रजनारी॥ हायहायसबकरहिंपुकारा। कौनगयोलैजीवहमारा॥
नँदआँगनमेंआँसुनकेरो। करदमह्वैगोभूपघनेरो॥२५॥ तृणावर्तउतलैहरिकाँहीं। गयोअतिहिंऊरधनभमाँहीं॥
दुष्टरुष्टअघजुष्टकुष्टअति। ओजपुष्टहतदिष्टनष्टमति॥ सकलजोरभरिगलेदबाई। हरिहिंकंसढिगचहलैजाई॥२६॥
दोहा-तबहरिकिन्ह्योंआपने, अतिशयतनकोभार॥ तृणावर्तनहिंचलिसक्यो, तबकियतजनविचार॥ २७॥
तबहरिताकेकंठहिंमाँहीं। दियलपटायदोउभुजकाँहीं॥ परमजोरतेगलोदबाये। तबताकेदोउदृगकढ़िआये॥
छूटनकीबहुकरीउपाई।पैहरिभुजनहिंसक्योछोड़ाई॥गिरयोअवनिभोशोरमहाना।निकसेतनतेउपरहिप्राना॥२८॥
धूरिधुंधजबमिटिगोभारी। तबशोकितसिगरेनरनारी॥ देख्योअसुरहिंपरोपषाना। अतिकरालदृगकंदरकाना॥
महाभयावनश्यामशरीरा। मुखमनुअंधकूपगंभीरा॥ बिथुरेबारजीभकढ़िआई। चूरणभेसबअंगबनाई॥
दोहा-जिमिहरकेशरतेविधो,त्रिपुरगिरयोमहिआय।तिमिहरिकरकीफाँसफँसि,सोखलपरयोलखाय॥२९॥
ताकेउरमेंत्रिभुवनपाला। परेखेलखेलतनँदलाला॥ ऐसोतृणावर्तशठभारी। व्रजनरनारीपरोनिहारी॥
ताकेउरपैहरिहिंविलोकी। धायेगोपिगोपअतिशोकी॥ लियोनंदनंदनहिंउठाई। धनिधनियशुमतिभागगनाई॥
कहहिंपरस्परसबअसबानी। राखिलियोशिशुसारँगपानी॥ यहपापीरजमंडलछाई। लैअकाशगोसुतहिंउड़ाई॥
गिरयोव्योमतेलैशिशुघालक।बच्योमीचमुखतेंयहबालक॥पुनिलालनकहँअंकलगाई।दियोआययशुमतिकहँधाई॥
दोहा-कहतभईसिगरीवचन, लेहुयशोमतिमाय। कालवदनतेबालको, दीन्ह्योंईशबचाय॥
मृतकवदनजिमिधारसुधाकी। जिमिजलसुखीकृषीवसुधाकी॥ तैसहियशुमतिबालकपाई।तासुमोदकोसकैगनाई॥
नंदहुंद्रुतहिंदौरितहँआये।निजबालककोहियेलगाये॥३०॥कहीनंदयशुमतिसोंबानी। धन्यधन्यभागहिनिजमानी॥
यहराक्षसलैगयोकुमारा। करिकैधूरिधुंधअँधियारा॥पुनिमरिगिरयोमहीशिशुघालन।बच्योभागवशातिहरोलालन॥
पापीअपनेपापनशाहीं। साधुनकोकतहूँभयनाहीं॥ राखैंभावसमैसबमाहीं। तेजनआनँदलहतसदाहीं॥ ३१॥
दोहा-कौनधर्मअरुकौनतप, कौनकर्महमकीन॥ कौनविष्णुपूजनकियो, कौनदानबहुदीन॥
कौनखनायोकूपतडागा। कीन्ह्योंकौनयोगजपयागा॥ जौनफेरिलालनकहँपाये। उरलगायसबशोकमिटाये॥
यहबालकव्रजजीवनमूरी। याकेबिनहिंमुक्तिहूधूरी। असकहिदियोद्विजनबहुदाना। बजवायोव्रजबाजननाना॥
साँझजानिपुनियशुमतिमाई। दियपलनापरलालसोवाई३२लखिअसगोकुलमहँउतपाता।नंदकराहिंमनशोचअवाता
सुमिरहिंआनकदुंदुभिबैना। गोपनसोंभाषहिंअसबैना॥ हेवसुदेवसत्यऋषिकोई। कहतजौनहोतोहठिसोई॥
दोहा-नंदयशोमतिकोवसत, यहिविधिव्रजमहिपाल। बीतिगयोकछुकालतहँ, हरषतनिरखतलाल॥३३॥
एकसमययशुमतिहरिमाई।निजलालनहिंगोदबैठाई।निरखतिमुखअतिशयअनुरागी।प्रियपूतहिपयप्यावनलागी॥
प्यायदूधचूम्योमुखमाई।तबहरिकहँआईजमुहाई३५सुवनवदनत्रिभुवनतबदेख्यो।ठगिसीगैअचरजअतिलेख्यो।३६
आँखीमूँदिरहींभ्रममानी। पुनितकिताहिउपद्रवजानी॥ कंपरोमांचभयोतनुमाहीं। रक्षाकरिपुनिबालककाँहीं॥
पुनिपलनामहँदियपौढ़ाई। गायगीतकछुसुतहिंसोवाई॥ मंदमंदझूलनाझुलावति। मंदमंदकराबिजनडोलावति॥
दोहा-पुनिपुनिमुखतकिछविछकै, जातिमोदमितिनाखि।सूरतिपैतूरतितृणहिं,निजनैननिपरमाखि॥३७॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदांबुनिधौ दशमस्कंधे सप्तमस्तरंगः॥ ७॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-उपरोहितयदुवंशके, गर्गमहातपधाम ॥ पठयेश्रीवसुदेवके, गमनेगोकुलग्राम ॥ १ ॥
नंदभवनपहुँचेजबजाई। निरखिनंदतिनकोसुखपाई ॥ उठिआगूचलितिनकहँलीन्हें। दंडप्रणामजोरिकरकीन्हें ॥
लायेभीतरभवनलेवाई। पुनिकरगहिचौकीबैठाई ॥ विष्णुरूपगुनिप्रीतिसमेतू। कियोतिनहिंपूजनमतिसेतू ॥२॥
यहिविधिकरिमुनिकेसतकारा। नंदजोरिकरवचनउचारा॥पूरणकामअहौमुनिनायक।हमहैंकाहकरनकेलायक॥३॥
धन्यभागभैआजुहमारी। जोनिजपदरजममगृहझारी ॥ हमतौगृहीदीनसबभाँती। गृहकारजैनिरतदिनराती ॥
दोहा-तुमदरशनकिमिपावहीं, पैमुनिनाथकृपाल ॥ मेरेमंगलहेतुमम, गृहआयेयहिकाल ॥
विचरहुँजगहितपरउपकारा। औरनहैकछुकामतुम्हारा॥४॥ परैजानिजातेत्रयकाला।ऐसोज्योतिपशास्त्रविशाला॥
सोआपुहिंकीन्ह्योंनिरमाना।परब्रह्मकोतुमकहँज्ञाना॥५॥तातेमोरिविनयसुनिलीजे। नामकरणदोउशिशुकरकीजे॥
जन्महिंतेब्राह्मणसबकेरो। होतगुरूयहवेदनिवेरो ॥ ६ ॥ सुनिकैनंदवचनमुनिराई। मंदविहाँसिअसगिरासुनाई ॥

गर्ग उवाच।

उपरोहितहमयदुकुलकेरे ॥ यहजानहिंजगलोगघनेरे॥७॥ जोहमनामकरणकरिदेहें। तौअसजानिसकलजनलैहैं॥
दोहा-अहैंनंदकेसुतनहीं, हैंदेवकितेजात ॥ जोनहोततौगर्गतहँ, नामकरणनहिंजात ॥
असविचारिकैजोकोउजाई। देइकंससोंखबरिजनाई ॥ तुववसुदेवमित्रताजानी। तुवसुतकोदेवकिसुतमानी ॥८॥
करैकंसजोपापीवाता। तौअनरथहोवैयहताता ॥ याकोकारणजोनँदराई। सोमैंतुमकोदेउँबताई ॥
अठयोंगरभदेवकीकेरो। नहिंकन्याहैहैमतमेरो ॥ आनकदुंदुभिमोहिंडेराई। नंदगोपकीमानिमिताई ॥
गोकुलमेंनिजसुतधरिआये। नंदसुतानिजभवनहिंलाये॥ करिहैकंसअवश्यविचारा। देविवचनसुनिताहिखँभारा९
दोहा-गर्गवचनअससुनतहीं, नंदयुगुलकरिजोरि। तिनसोंपुनिऐसोकियो, बारहिंबारनिहोरि ॥

नंद उवाच।

भीतरभौनचलीमुनिराई। तहँहमरहुजनजाननपाई॥ नामकरणकीजैतहँज्ञानी। यहिविधिमेंकोउसकीनजानी१०

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिसुनतनंदकीबानी। गर्गाचार्यपरमसुखमानी ॥ जोअभिलाषकियेव्रजआये। सोपूरणभोअसचितलाये ॥
भीतरभवनहिंगयेतुरंता। बैठेमुनियुतनंदएकंता ॥११॥ तहाँगरगअसवचनउचारा। यहजोरोहिणिकेरकुमारा॥
सोअपनेगुणसुहृदरमैहैं। तातेनामरामअसपैहैं ॥ यहअतिशयबलवानहुहैहैं। तातेबलभद्रहुकहिजैहैं ॥
यदुकुलकलहमिटायमिलैहैं। तातेसंकर्षणकहवैहैं ॥ १२ ॥
दोहा-यहजोतिहरोपुत्रहै, तासुवरणभेतीन ॥ श्वेतअरुणअरुपीतहू, अब कृष्णहिंगहिलीन ॥
तातेजगमहँकृष्णकहाई। औरहुनामसुनहुनँदराई ॥ १३ ॥ पूरुबकबहुँसुवनयहतेरो। भयोपुत्रवसुदेवहुकेरो ॥
तातेवासुदेवअसनामा। कहिहैंमहिकेमुनिमतिधामा ॥१४॥ गुणअरुकर्महुकेअनुरूपा। हैतुवसुतबहुनामअनूपा॥
तेसिगरेहमहींनहिंजानैं। तौकिमिपुनिप्राकृतपहिचानैं॥१५॥यहव्रजकरकरिहैकल्याना।गोकुलगोपनमोदनिधाना॥
याकेबलतुमयशविस्तरिहौ। सहजहिंसंकटसागरतरिहौ॥१६॥पूरुषयुगहिचोरचहुँओरा।साधुनदियेकलेशकठोरा॥
दोहा-तबयाकोबलपायकै, साधुहनेसबचोर ॥ मेटीनिजतनकीव्यथा, अभयभयेसबठोर ॥ १७ ॥
जोकोऊजगमेंबड़भागा। तुवसुतपैकरिहैंअनुरागा॥रिपुदुखदैसकिहैंतेहिनाहीं। जिमिदानवहरिदासनकाँहीं॥१८॥
तातेव्रजपतितनयतुम्हारा। नारायणसमगुणनिअगारा ॥ शोभाकीरतिऔरप्रभाऊ। सुतकेसबहरिसमव्रजराऊ ॥
तातेबालककहँसबभाँती। सावधानरक्षहुदिनराती ॥ १९ ॥

श्रीशुक उवाच।

नामकरणकरिमुनियहिभाँती । हरिदरशनतेशीतलछाती ॥ नंदरायसोंमाँगिबिदाई । भवनगवँनकीन्हेहरषाई ॥ नंदहुपूर्णमनोरथमान्यो । भाग्यवंतदोउपुत्रनजान्यो ॥ २० ॥

दोहा–पुनिअतिआनँदसोंबित्यो, भूपजबैकछुकाल ॥ तबहिंघुटुरुवनचलतभे, रामकृष्णदोउबाल ॥ २१ ॥

नँदआँगनमहँअतिछबिपागे।हरिबलइतउतविचरनलागे।।पगनूपुरअतिसुछविप्रकासी।चलतबजतिकटिमहँचौरासी। पदसिकोरिकहुँहाथनचलहीं कहुँकिलकतब्रजधरणिघिसलहीं कहुँसुनिकिंकिणिकीझनकारी।आपहुँकरहिंपुलकिकिलकारी धूरधूसरितअंगसोहाहीं । घुंघुवारीअलकैंमुखमाँहीं ॥ कहुँब्रजकीचबीचदोउखेलैं । लैकरमेंकरदमकहुँमेलैं ॥ मनुहरिबलरूपहिंलखिमोहीं सात्विकभावप्रगटिमहिसोहीं।कहुँचौंकाहिचितवहिंचहुँओरा।कहुँक्षितिमेंबिछलहिंदोउछोरा

दोहा–कहूँदूरिकिढ़िजातकछु, चलहिंलोगमगमाँह ॥ पीछेपीछेजननके, चलहिंतकतातिनछाँह ॥

द्वारेलगिमातहुँसँगजाहीं । पुनिपठवहिंसँगगोपिनकाहीं ॥ गोपीअंकउठावनलागैं । तबतबघिसलतदोऊभागैं ॥ पुनिक्षणमहँकोउजनकहँडारिकै।भागहिंमुखकिलकारिनकरिकै।मातुसमीपदौरिदोउआवैं।कहुँकहुँतोतरिवानिसुनावैं लेहिंजननिद्रुतदौरिउठाई । चूमिवदनअतिशयसुखछाई ॥ पोंछहिंकछुकरदमतनुकेरो।कहाँहिरहोकन्हुवाकहँमेरो ॥ शिशुनसपंकअंकबैठाई । देहिंयशोमतिदूधपियाई ॥ कहुँरोहिणीदुहुँनपयप्यावैं । आनँदअंबुधितनुनहवावैं ॥

दोहा–धूरिझारिझालरिनकी, सुरभिततेललगाय ॥ भालडिठौनादैदुहुँन, नीलनिचोलओढाय ॥

लैकनियाँमहँसुतनझुलावैं।आपहुँहँसिपुनिसुतनहँसावैं।।विहँसतचमकहिंचारुदँतलियाँ।कुंदकलीसीसुछबिअतुलियाँ कहुँरोषितमैयाकहँमारैं । मचलैंकहुँनचलैंतजिद्वारैं ॥ माखनदैपुनिमायमनावैं । तबपुनिदौरिअंकमहँआवैं ॥ दोहुँकरयशुदालेहिंबलैया।होहिंमुदितब्रजलोगलोगैया।२३।।पुनिपुनिराईलोनउतारैं।तिनहिंनिराखिगृहकाजबिसारैं।। कहुँपलनापरशिशुनसोवावैं । तेदोउनिकासिबाहिरेआवैं ॥ अंकलेतकहुँरोदनकरहीं । कहुँआँगनचहुँकितसंचरहीं॥

दोहा–कहूँनमानहिंजबकहो, तबहिंयशोमतिमाय ॥ हाऊआयेभाषिअस, शिशुनदेतिडेरवाय ॥

हाऊसुनतहिंअतिहिंडेराई । जाहिंमातुगोदीलपटाई ॥ करउठायहाऊदरशावैं । तबयशुमतिबालकनबुझावैं ॥ ललानहाऊआवनपैहैं । हमलकुटीलैतिनहिंभगैहैं ॥ यशुमतिलालनलीलालोनी ।विचरहिंकिलकिघुटुरुवनछोनी ॥ सोइदेखनकोअतिचितचोपी । धायधायसिगरीब्रजगोपी ॥ आवहिंरोजयशोमतिद्वारे।निजनिजघरकरकाजबिसारे।। दैमाखनकोउनिकटबोलावैं । निकटगयेहरिहियेलगावैं ॥ कोऊखेलौनालैघरतेरे । यहिमिसिजाहिंललनकेनेरे ॥ कोऊकहहिंदेखरायखेलौना । हमरेघरकसलालचलौना ॥

दोहा–यदपियशोमतिडाँटती, छुवोनमेरोलाल ॥ तद्यपितहँतेटरहिंनहिं, हरिहेरतब्रजबाल ॥

कोउअसगोपीकहहिंसुनाई । मतिमाषैमोकहँतेमाई ॥ जोअससुतवरहोतहमारे । तौनआवतींऐनतिहारे ॥ दृगभरिदेखनदेहुललाको । अबैहमारोमननाहिंथाको ॥ धनिधनितूयशुमतिमहरानी । जायोजोबालकसुखदानी ॥ असकहिअनमिषदेखतजाहीं।तदपिनतिनकेनैनअघाहीं।।तिनहिंबोलावनकोजेआवैं।तेउतकिहरिछबिछकिरहिजावैं। भूलेउखानपानतनुभाना । करेकौनब्रजवधूपयाना ॥ होतिनंदअँगननितभीरा । सुखसागरकोउलहतनतीरा ॥

सोरठा–नंदयशोमतिभाग, बालचरितनँदलालको । गोपिनकोअनुराग, मैंएकमुखकिमिकहिसको ॥

कहुँबछराजेछोटेछोटे । जोटेजोटेमोटेमोटे ॥ गलमेंबँधीकनकचौरासी । श्वेतश्यामअरुनौछबिरासी ॥ छुटिगोशालातेंकहुँआई।कूँदहिंखेलहिंचहुँकितधाई।।तिनकोनिरखिरामघनश्यामा।घसिलघसिलचलिकैतिनठामा।। पकरेपूँछनपीछेपीछे । डहरैंसीधेकबहुँतिरीछे ॥ किलकतकुलकतपुलकतजाहीं । कहुँतोतरिवचनहुँबतराहीं ॥ कहुँगिरिपरहिंरुदनबहुकरहीं।नृपमाहिकहिजननीउरधरहीं।।रुदनकरहिंपुनिविहँसनलागैं।बछरनगहहिंतेहुपुनिभागैं।

दोहा–जबनहिंपकरनपावहीं, करतरुदनतबमंद । गहनहेतुबछरानिकहैं, जननीकोनँदनंद ॥

जननिफेरिबछरनिगहिल्यावैं।पकरिपूँछिपुनिशिशुनगहावैं।यहलीलालखिकैव्रजनारी।इँसहिंसबैंलहिआनँदभारी२४
कहुँगृहपालेकुरँगनकेरे। जाहिधायदोउबालकनेरे॥ देखियशोदाआशुहिधाई। असकहिलेतीअंकउठाई॥
इनकेहोतसींगखुरचोखे। जाहुनढ़िगवछरनकेधोखे॥ असकहिदेतिमृगनकहँहाँकी।सुतनखेलावतिसुखमितिनाँकी
जहँकहुँजातदूधबैठायो।अधिकअगिनिलहिकछुनहिआयो॥तेहिलखिकौतुकशुनिनँदलाला। जातचुटुरुवनतहँततकाला
दोहा-तबयशुमतिद्रुतदौरिकै, बोलतिवचनबुझाय। जाहुललाजनिअगिनिढिग, दूधदेहुँमैंलाय॥
जननिजबैकारजलगिजावैं। तबकहुँकहुँबाहेरकढ़िआवैं॥ तबकोउगोपीअंकउठाई। देहिंयशोमतिकहँरिसिहाई॥
अपनोलालनताकहुमैया। बाहेरलौंकढ़िजातकन्हैया॥ सुनैजोतोकोपहिव्रजनाहा। यहवनमेंवहुबाघवराहा॥
तबयशुमतिगोपिकनबोलाई। कह्योरहहुजहँरहहिंकन्हाई॥लैअसिआदिकरक्षणसाजू। रक्षहुलालनसहितसमाजू॥
लखिकृपाणकहँनंदकुमारा। करिचपलईधरहिंतेहिधारा॥ करगहिगोपीलेहिंछँडाई। कहहिंकहूँलगिजायकन्हाई॥
दोहा-भरेरहतजलजहँकहूँ, तहँकहुँजातगोविंद। परसनाहितप्रतिबिंबलखि, नावतकरअरविंद॥
छायामिटतिहलैतेजबहीं। कहँहिंअंगुलिसोंगोपिनतबहीं॥ वहछायाहैलालतिहारी। बारबारभाषहिंव्रजनारी॥
शुकसारिकापिंजरनिदेखी।दोउकरगहिकिलकहिमुदलेखी॥ हंससारसहुमोरनकेरे। जाहिंघुटुरुवनकहुँअतिनेरे॥
जबबरजहिंतिनकोव्रजनारी। मचलिपरहिंतबरोयमुरारी॥कहुँकरीलकेकुंजनमाँहीं। खेलतखेलतहरिबलजाँहीं॥
तबगोपीअसकहँहिंबुझाई। जाहुनललाकाँटलगिजाई॥ पैनहिंमानतचपलकन्हाई। बारतमारतहाथउठाई॥
दोहा-जबगोपीवरवसद्रुतै, अंकहिंलेहिंउठाय। तबरोवतऐंचतकचन, खसिलिजाहिमहिआय॥
गोपीकहहिंयशोमतिकाँहीं। तेरोलालनमानतनाँहीं॥ तबरोहिणीऔरनंदरानी। आवहिंदौरिकहहिंअसबानी॥
अबहींइतनीकरहुबकाई। तबआगेकेतनीप्रगटाई॥ असकहिचूमिवदनाशिशुकेरो। जननीपावहिंमोदघनेरो॥
सौंपिसुतनकहँजबनँदरानी। गृहकारजमहँरहहिंलोभानी॥ तबपुनिकरनलगेचपलाई।कह्योनमानाहिंरामकन्हाई॥
पुनिगोपीयशुदाहिंगोहरावैं। कारजतजिसोइआशुहिंआवैं॥यहिविधिहरिकीचंचलताई।यशुमतिकोगृहकाजभुलाई॥
क्षणहूँभरिबिनलखेकन्हाई। पावहिंनहिंकलदीनहुँमाई॥ २५॥
दोहा-यहिविधिवीत्योकालकछु, कुरुपतिराजऋषीश। धावनलागेव्रजधरणि, रामकृष्णजगदीश॥ २६॥
जेतनीवयकेत्रिभुवनपालक। तेतनीवयकेवहुव्रजबालक॥ नंदलालसँगखेलनलागे। दिनादिनदूनदूनअनुरागे॥
व्रजकेगलिनगलिनमहँजाई। खेलहिंबहुविधिखेलकन्हाई॥जुरिजुरिगोपीदेखहिंआई। लखिलखिपावहिंमोदमहाई॥
ग्वालबालसबहोतप्रभाता। आवहिंनंदद्वारनिततताता॥ खेलनजूनजानिहरिकेरी। देतिजगाययशोमतिटेरी॥
जागहुललाभयोअबभोरा। आयेखेलवारीसबछोरा॥ मातुवचनसुनिउठेकन्हाई। आयेआशुहिंबाहेरधाई॥
दोहा-सखनसहितव्रजछबिलखन, माखनचाखनलाल॥ गलिनगलिनग्वालनसहित, लीलाकरहिंरसाल॥२७॥
निरखिनंदसुतकीचपलाई। भीतरमुदितउपररिसिहाई॥ हरिकेदरशनकीअतिचोपी।वोरहनदेनव्याजव्रजगोपी॥
जुरिजुरियशुदाकेगृहजाई। कहँहिंवचनअसताहिसुनाई २८ तेरोपूतयशोमतिमैया। अतिशयचंचलभयोकन्हैया॥
देतप्रभातहिंवछरनछोरी।कोउकीभयमानतनहिंथोरी॥ बछरादूधपानकरिलेहीं। कछुदुहिआपहुँबालनदेहीं॥
जोहमनिरखिकोपकछुकीन्ह्यो।तौहमकोलखिसोहँसिदीन्ह्यो॥विहँसतवदनतासुदृगदेषी।रहतकोपनहिंउरहिंविशेषी।
दोहा-पुनिकोउगोपीकहतभे, सुनोयशोमतिमाय॥ ललातोरचोरीसिखी, सोकछुकहीनजाय॥
राखतनहिंकोउकोनिजभेले। सूनेगृहमेंजातअकेले॥ दूधदहीअरुमाखनकाँहीं। खातऐंचिअपनेकरमाँहीं॥
सद्यसद्यमिठायमिठाई। खातऔरसबदेतउड़ाई॥ जोकोउआइपरैतेहिकाला। तौछिपिजाततहैंनँदलाला॥
मटुकाओटनपरैलखाई। तहँतेभागतदीठिबचाई॥ पुनिआवतउपायकरिबासी। बजतननूपुरऔचौरासी॥
चपलासरिसचमकिकहुँजातो। खोलिकपाटफेरिकहुँआतो॥ पुनिकोउऔरकहीव्रजनारी।औरसुनोजोदेतबिगारी॥

दोहा–दधिमाखनअरुदूधऊ, जोआपहुँभरिखाय ॥ तौसबकोनीकोलगै, नेकहुँनाहिंगढ़ाय ॥
आपुखातअरुसखनखवावै । पुनिमरकटनअनेकबोलावै ॥ तिनकोदूधदहीअरुमाखन। देतखवायखूबअभिलाषन॥
तापरजोपुनिकछुबचिजाई । सोसबदेतधरणिढरकाई ॥ पुनिदोहँनीमटुकासबफोरै । गलिनगलिनग्वालनयुतदौरै॥
धुनिव्रजवधूऔरकहँकोऊ । औरहुकरतसुनहुँकछुसोऊ ॥ जोकाहूकेगृहमेंजाई । तहाँदूधदधिसकहिनपाई ॥
तबअसकहतपुकारिपुकारी । देहौरैनतोरघरजारी ॥ पुनिजेबालकपलनामाँहीं । सोवतपरेरहैंतिनकाँहीं ॥
तलप्रहारकरिदेतरोवाई । जाततहाँतेआशुपराई ॥ २९ ॥

दोहा–पुनिगोपीकोउकहतभै, सुनोयशोमतिमाय ॥ धौंकेतनीतेहिंआवतीं, चोरीकरनउपाय ॥
जहँनहिंपावतहाथपसारी । तहँअसकरतउपायविचारी ॥ राखिद्वारमहँबालकचौकी । धरतउलूखलपरइकचौकी ॥
ताकेउपरआपचढिजाई । सिकहरहूँपरलेतोखाई ॥ देतउपरतेधारलगाई । पियहिंसखासबमुखफैलाई ॥
जोनहिंपीठउलूखलपावत । तबलकुटीहनिछेदबनावत॥दधिकीधारसोऊमुखलेतो।तेहिविधिसखनभखनकहिदेतो॥
अथवासखाकंधचढ़िसोई । लेतएँचिमाखनदधिजोई ॥ बहुतौजोहमधरींहिछिपाई । तऊँजानिहींलेतकन्हाई ॥ ३६॥
दोहा–दूधदहीअरुमाखनौ, धरैंजोजहँअँधियार ॥ तौताकेमुखतेतहाँ, होतआशुउजियार ॥
पुनिऔरहुगोपीतहँबोलीं । अपनेउरकीआशयखोलीं ॥ जबहमगृहकारजलगिजाहीं ।तबहिंआशुआवतघरमाहीं ॥
नातोपकरितोहिंदेखरावै । तेरेउरविश्वासबढावै ॥ ३० ॥ तेरोलल्लाभयोअतिढ़ीठो । उरमेंछलबोलतमुखमीठो ॥
कहँहिंजेचोरनंदकोछोरा । तिनहिंउलटिकहतोतैंचोरा ॥ लीपितमार्जितगृहमहँजावै । मेहनकरिकैअशुचिबनावै॥
कोहुकेउपरमटुकिदैमारै । बाँधतपलँगपायकोउबारै ॥ काहूकीफारतहैसारी । देतलकुटियाकेहुकोमारी ॥
दोहा–तेरोहाँसकरावतो, गलिनगलिनव्रजगाँउ ॥ नंदरायकोपूतह्वै, चोरधरायोनाँउ ॥
सवैया–भोरहितेव्रजछोरनकोलियेछोरनकोबछराअरुगैया । धावतबागतहैघरहीघरमानतहैनकहोकछुमैया ॥
हौतुमहींव्रजकीठकुराइनिजोतुम्हरोअसह्वैगोकन्हैया । तौरघुराजकहौतुमहींअबकेसेबसैंव्रजलोगलोगैया ॥
लैलकुटीपहिरेझँगुलीगलिहींगलिबागतहैअतिऐंठो । बाँच्योनहींअसभौनहुँजामेंनहींदधिकेहितकान्हरपैठो ॥
दोहँनीऔमटुकामटुकीरघुराजगनैकोजोफोरेहुकैठो । पैअबसूधकोवेषबनाइयशोमतितेरेसमीपमेंबैठो ॥
भीतिभरेदृगआँसूबहावतखोदतहैनखतेमहिकाँहीं । मौनताधारेमुनीनसमानअजानसेबैठेहैंकोनहिंमाँहीं ॥
आयेअबैदधिखायचहूँकितमाखेहूँपैनहिंनेकुडेराहीं । श्रीरघुराजकहाँलोकहैंइनकेगुणजातकहेकछुनाहीं ॥
देवमनायमनायथकींतबएकआनंदभोनंदबबाके । श्यामसलोनोहरैमनकोहठिअंगहैताकेसबैउपमाके ॥
बोलैंमहामधुरीबतियाँसुनिकैउपजैनहिंआनँदकाके । चंचलचोरजोहोतोनहींतौअमोलरहेगुणतेरेललाके ॥
गोपिनकीबतियाँसुनिकैनिजआनँदकंदसमीपहिंपेषी । डाँटनकोकछुकीन्ह्योंविचारकुनामकन्हाईकोजानिविशेषी॥
पैरतनारेभरेअँसुवाअरविंदविलोचनलालकेदेखी । तासोंकछूकहिआयोनहींउरलीन्ह्योंलगायमहामुदलेखी ॥
प्रीतिप्रमोदभरीसोयशोमतिलीन्ह्योंगोविंदहिंअंकउठाई । चूमिकैआननकाननमेंलगिबैनकह्योबहुभाँतिबुझाई ॥
दूधदहीअरुमाखनकीललातेरेहिंभौनमेंहैअधिकाई । काहेकोजाइचवाइनिकेघरलेतहौचोरकोनामधराई ॥
कान्हकह्योनितगोकुलकीगलिखेलनजाहुँसखानिलेवाई । आपहींतेमैंडरौंसबकेघरजातचोरावतचीजपराई ॥
येव्रजनारींमहाछलवारींबोलावतिमोहिंलखेमुसक्याई । आपहींआवतींतेरेसमीपयेझूंठहिंदोषलगावतिमाई ॥
पूतकीतोतरिवाणिसुनेनंदरानीकहैंव्रजनारिनमाखी । चोरीकरैकन्हुवाकहजानैकहोकोउऔरअहैव्रजसाखी ॥
लेतिबलाइउतैमुसक्याइइतैंतौसुनावहुझूँठहिंभाखी । जानतीहौंमैंतिहारेपियामदमातीमहातुमकोकारिराखी ॥

दोहा–सुनतियशोमतिकेवचन, व्रजनारीमुसक्याय । निजनिजगृहगमनतभई, अतिशयआनँदपाय ॥ ३१ ॥
एकसमयजबभयोप्रभाता । हरिहिंजगायोयशुमतिमाता ॥ उठहुलालसबसखाबोलावैं। तुमहिंलखेबिनमोदनपावैं॥

मातुवचनसुनिपरमरसाला। उठेआँखिमीजतनँदलाला॥ यशुदालैकरवोदअँगोछी। दियोलालकरदृगमुखपोंछी॥
माखनरोटीमाँगनलागे। इतनेमेंबलरामहुँजागे॥ यशुमतिमाखनरोटील्याई। दईरामश्यामहिंसुखछाई॥
ठाढेखानलगेअतुराई। दियोऔरहूसखनबोलाई॥ जोकछुखातभूमिगिरिजाई। ताहिसखासबलेहिंउठाई॥
दोहा-जबभोजनदोउकरिचुके, तबहिंयशोमतिमाय। मुखधोवाइजलप्याइके, दियझँगुलीपहिराय॥
सखनसहिततहँरामकन्हाई। खेलनचलेचपलचितचाई॥ खेलतखेलततहँसुखछाये। दोउब्रह्मांडघाटमहँआये॥
तहँकीरहीसोंधअतिमाटी। सोहरिखायोनखनउपाटी॥ सोलखिबालकसबरिसिहाई। दियोरामसोंसकलसुनाई॥
रामहुँआयकह्योहरिकाँहीं। क्योंमेलीमाटीसुखमाँहीं॥ छोंडिमिठाईमधुरससानी। कसमाटीतोहिंबहुतमिठानी॥
तबनँदनंदनअतिहिंडेराई। कह्योरामसोंहाहाखाई॥ अबनकहोजननीपहँजाई। सुनताहिंअतिमोकहँरिसिहाई॥
इतनेमेंबालककोउआई। कह्योटेरिहेयशुमतिमाई॥
दोहा-कह्योनमानतलालतुव, ह्वैगोअबअतिढीठ। माटीमुखमेंमेलिलिय, तजिघरमाखनमीठ॥ ३२॥
सुनतहिंयशुमतिआशुहिंधाई। पहुँचिगईजहँरहेकन्हाई॥ कह्योरामसोंदेहुबताई। कन्हुवाँआजुमृत्तिकाखाई॥
कह्योरामसतिहैयहबाता। खाईकान्हमृत्तिकामाता॥ तबयशुदाहरिकहँधरिलीन्ह्यो। कछुककोपरखहुँनपरकीन्ह्यो॥
मातामुखताकततेहिंकाला। रहेमौनह्वैदीनगोपाला॥ बारबारनिजपूतहिंडाँटी। कह्योकान्हखाईकसमाटी॥
रोगहोतबहुमाटीखाये। यहमोकोंबहुवैद्यबताये॥ ३३॥ रेचंचलतैंसखनचोराई। माखनतजिमाटीकसखाई॥
दोहा-कह्योललामैयानहीं, मैंमाटीमुखदीन॥ कालिंदीकेतटरह्यो, खेलतखेलनवीन॥
तबपुनिकह्योनंदकीरानी। यहझूँठेतैंबातबखानी॥ सखातोरमोसेंकहिदीन्हें। जौनचोरायखायतैंलीन्हें॥
मनमानतीतबहुँविश्वासू। यदपिकहेबालकममपासू॥ पैतेरोजेठोयहभाई। रामहुँमोसोंदियोबताई॥
तातेसतिमाटीतैंखाई। तबबोलेपुनिकाँन्हडेराई॥ ३४॥ बारबारदृगवारिबहाई। मैंनमातुमाटीकछुखाई॥
सखादोषदियमृषालगाई। मेरीबातमानुसतिमाई॥ जोमाटीमैंखायोहोई। ममसुखलगीहोइगीसोई॥
दोहा-तातेमैंमुखआपनो, देतोअबहिंबगारि॥ करनहेतुविश्वासउर, मैयालेहिनिहारि॥ ३५॥
यशुदाकह्योकहीतैंनीकी। जानिलईमेरेअबजीकी॥ वदनबगारुदेखिमैंलेहूँ। मनिहौंऔरभाँतिनहिंकेहूँ॥
जबयशुदाअसवचनउचारयो। तबभगवानहुँवदनबगारयो॥ ३६ जननीनिजलालनमुखमाँहीं। निरखतभैसिगरेजगकाँहीं
थावरजंगमअवनिअकाशा। शैलद्वीपसागरअरुआशा॥ अनिलअनलरविशशिसबतारा ३७ इनतेसहितचक्रशिशुमारा
पंचभूतहुनकेआवरना। सातहुस्वर्गलोकसुखभरना ३८ निजयुतनंदहुअरुब्रजकाँहीं। निरख्योजननीसुतमुखमाँहीं॥
दोहा-असिसिगरोब्रह्मांडको, तहाँयशोमतिदेखि॥ अतिशयशंकाकरतिभै, अतिशयअचरजलेखि॥ ३९॥
कहामोहिंसपनोधौंभयऊ। बुद्धिमोहिंकैधौंलगिगयऊ॥ कैधौंअहैईशकीमाया। कैधौंममसुतहैहरिराया॥ ४०॥
यहचरित्रकछुजानिनजातो। बारबारममनाबिलखातो॥ जोजगपालतासिरजतरहई। जाकोपददुर्लभश्रुतिकहई॥
यहसतिहैत्रिभुवनकोपालक। भोअपराधगुन्योजोबालक॥ ४१॥ भयममसुतममपतिव्रजमेरो। गोपगोपिगोगनहुँघनेरो॥
जेहिंमायावशमैंनिजमान्यों। कबहूँनहिंनिजप्रभुपहिचान्यों॥ रक्षणकरैईशअबसोई। करहुँप्रणामताहिसुखमोई ४२॥
दोहा-वात्सल्यरसमिटतलखि, यशुदाकोभगवान॥ निजमायापुनिछायउर, मेटिदियोसोज्ञान॥ ४३॥
भूल्योज्ञानसकलयशुदाको। लीन्ह्योअंकउठाइललाको॥ चूमिवदनलाईनिजगेहू। प्रथमहुँतेअतिकियोसनेहू॥ ४४॥
सांख्यवेदजाकोयशगावैं। शिवब्रह्मादिजाहिशिरनावैं॥ सोहरिकोयशुदासुतमानी। तासुभागकिमिजाइबखानी॥ ४५॥
बालचरितहरिकोमुनिराजा। बोल्योमध्यमुनीनसमाजा॥

राजोवाच।

पूरबजन्मसाँहमुनिराई। कौनसुकृतकीन्ह्योनंदराई॥ कौनसुकृतयशुदाकरिलीन्ह्यो। दूधपानजाकोहरिकीन्ह्यो॥ ४६॥
जाहिसुनतअघनिकटनआवै। असहरिजसअवलोंकविगावैं॥

दोहा–बालचरितआनंदउधि, यातेअधिकनकोय। सोदेवकिवसुदेवको, केहिंहितपरयोनजोय॥
कहहुतासुकारणबड़भागा। मेरेमनअतिअचरजलागा॥४७ सुनिकुरुपतिकेवचनसुहाये। बोलेशुकअतिआनँदछाये

श्रीशुक उवाच।

वसुनप्रधानरह्योकोउद्रोना। नारीतासुधराछविभोना॥ विधिशासनलहिकैअहलादी। वैश्यकर्मगोपालनआदी॥
करनलगेजबद्रोणसुखारी। तवब्रह्मासोंगिराउचारी॥४८॥जबमहिहोइकृष्णअवतारा। बालचरितजोकरहिंअपारा॥
सोहमलखहिंसकलकरतारा। यहीमनोरथअहैहमारा॥४९॥ब्रह्माकह्योसबैतुमलखिहौ। पुत्रभावहरिपैनितरखिहौ॥
दोहा–जौनबालहरिकोचरित, सुनेलखेजगमाहिं। सहजहिमेंभवसिंधुको, उतरिसकलजनजाहिं॥५०॥
सोईद्रोणव्रजनंदभो, धरायशोमतिभूप। पुत्रभावहरिमेंकिये, लीलालखीअनूप॥५१॥
कृष्णहुँविधिकेवचनसब, सत्यकरनकेहेतु। बालचरितबलरामयुत, व्रजमेंकियसुतसेतु॥५२॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे अष्टमस्तरंगः॥८॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–एकसमयतहँभोरहीं, उठीयशोमतिमाय। सबदासिनकोबोलिगृह, कारजदियोलगाय॥
करनकलेऊलालनकाँहीं। भरिबहुदधिइकमटुकामाँहीं॥ मंथनलागीमाखनहेतू। करिकैमहरिमनहिंअसनेतू॥
जबलोंकन्हवाँजगननपावै। तबलोंजोमाखनबनिजावै॥ जगतैइतमाखनजोपैहै। तौकहुँचोरीकरननजैहै॥
असविचारिकैमंथनलागी।यशुमतिरामश्यामअनुरागी १ जौनजौनकियबालकलीला।गावहिंजेहिसज्जनशुभशीला॥
सोसुधिकरिकरियशुमतिमाई।गावतमुदितमथतदधिजाई।२॥जानिभोरतहँजगेकन्हाई।माइमाइकहितेहिंगोहराई॥
दोहा–होतरह्योदधिमथतमें, भूपतिशोरमहान। तातेलालनकेवचन, जननीकियोनकान॥
छंदमनोहरा–पटपीतप्रकासीकटिचौरासीसुवरणगासीमणिरासी, द्युतिचपलासी।
तेहिंमथतहुलासीनृपधुनिजासीफैलतिखासीअविनासी, आनँदभासी॥
कुंडलहुँडोलाहींकुचकंपाहींपयहुश्रवाहींसुतकाहीं, सुमिरतजाहीं।
श्रमबिंदुसोहाहींकचबिलगाहींसुमनखसाहींसुधिनाहीं, कछुतनुमाहीं॥
दोहा–कंकणयुगयुगकरनिसों, गहिडोरीनँदरानि। दधिमंथतिमोदितमहा, माखनसुतप्रियजानि॥३॥
गोहरायहुपरजबमहतारी। सुन्योनहींतबउठेमुरारी॥ करनहेतुजननीपयपाना। मंथानीढिगकियोपयाना॥
पकरिलियोदोउहाथमथानी। रोवतरह्योयशोदहिबानी॥जबलोंमोहिंनहिंदूधपिऐहै। तबलोंमातुमथननहिंपैहै॥४॥
सुनिलालनकेतोरतबैना। यशुदालियउठाइभरिचैना५ तुरतहिंताजिदधिमंथनकाँहीं।प्यावनलगींसुतहिमुखमाँहीं॥
मंदहँसनियुतसुतमुखदेखी। पावतक्षणक्षणमोदविशेखी॥ रह्योदूधतहँकहुँबैठायो। तेहिंक्षणपायआँचउफनायो॥
बहुतदूधकहँलखिनँदरानी। जानिअशुभकछुशंकामानी॥
दोहा–यदपिपानपयकोकरत, कान्हगयेनअघाय। तदपिलालकोछोडितहँ, दईदूधढिगधाय॥
तबहरिअसअपनेमनमान्यों।मोतेंप्रियजननीपयजान्यों॥ असगुनिनेशुककोपहिपागे।अरुणअधरतहँफरकनलागे॥
अधरदाबिदंतनसोंआसू। झूँठहिंआँखिबहावतआँसू॥ लैपखानलालनकरमाँहीं। फोरयोद्रुतदधिभाजनकाँहीं॥
गेपुनिदौरिभौनकेभीतर। फोरेदधिभाजनसबघरकर॥ दूधदहीकीधारबहाई। माखनऐंचिऐंचिलियखाई॥६॥
यशुमतिकोंडरितहँतेभागे। सिकहरिकेरिलेनअनुरागे॥ धरिकैआशुउलूखलनीचे। तामेंचढ़िकैपहुँचनगीचे॥
माखनखायफोरिमटुकीको। भगेतहाँतेगहिलकुटीको॥

दोहा-बैठेजायइकांतमें, लैदधिभाजनहाथ। बोलिबाँदरनबाँटहीं, निजकरत्रिभुवननाथ ॥
इतैयशोमतिदूधउतारी। पुनिधरिदीन्ह्योंआँचनवारी ॥ आईमथतरहीजहँसोई। फूटोदधिमटुकाकहँजोई ॥
भीतरभवनजाइनँदरानी। लखीसकलमटुकीढ़रकानी ॥ औरहुसबदधिदूधमटूका। फूटिफूटिभेटूकहिटूका ॥
दधिकाँदवसिगरेघरमाँच्यो। एकहुदधिभाजननहिंबाँच्यो ॥ यहचरित्रलखितहँनँदरानी।हँसीठठायललाकरजानी॥
पैनहिंललैलख्योतेहिंठोरा। तबहेरनलागीचहुँओरा ॥ ७ ॥ हेरतहेरतयकथलमाँहीं। लख्योआपनेलालनकाँहीं ॥
दोहा-दक्षिणपदधरिवामपर, बैठिउलूखलमाहिं ॥ चौंकिचौंकिकैअतिचपल, चितवतहैंचहुँधाहिं ॥
बोलिबाँनरनदहीखवावैं। माखनभरआपहिंसबखावैं ॥ तहँविचारअसकियहरिमाई। मोकहँलखतैंजाहिंपराई ॥
तातेपाछेह्वैनियराई। लेहुपकरिलालनकहँधाई ॥ असविचारकरिमंदहिंमंदै। पाछूह्वैपकरननँदनंदै ॥
चलीयशोमतिलिहेछरीकर। मुखमहँक्रोधमोदउरअंतर॥८॥मातहिंलखिआवतभयपागे।उतरिउलूखलतेहरिभागे॥
लैकरछरीहरिहिपछिआई। पकरनकोयशुदाद्रुतधाई ॥ योगिनकोमनजाहिनपावै।तेहिपकरनहितगोपीधावै ॥
अहोधन्यधनिहैंव्रजधरनी। धन्ययशोमतिपूरुबकरनी ॥ ९ ॥
दोहा-कहतिमुकुंदहिंमातुअस, कहँलोंजैहैभागि ॥ बाँधितोहिंहनिहौंछरी, बचिहैनाहिंकहुँलागि ॥
अबतैंकरनलगेबाड़िखोरी। व्रजमेंचोरभयेकरिचोरी ॥ दधिमटुकाडारेसबफोरी। नेकभीतमानतनहिंमोरी ॥
धावतअसकान्हैंगोहरावति। पैनहिंतिनकोपकरनपावति॥ लचतलंकमनुविनाहिंअधारा।गवनतिमंदनितंबहिंभारा॥
झरतजातबेनीकेफूला। मनुनभतेउडुआभअतूला ॥ वदनस्वेदकेबिंदुनिहारी। श्रमितजानिनिजजननिमुरारी ॥
मंदमंदतबधावनलागे। मातुनिरातनिराखिनाहिंभागे ॥ लियोपकरिकरदाहिनयशोदा। ऊपरकोपभरीउरमोदा ॥
दोहा-अंजनयुतदोउद्दगनको, बाँयेंकरसोंलाल ॥ मीजतहैरोवतफफाकि, तोरतउरकोमाल ॥
कहुँमातामुखकोडरिताकैं। कबहुँलौटिपुनिपीछूझाँकैं॥ कहतियशोमतिकन्हुवातोकों।बाँधतदयानलागिहिमोकों॥
तूअबकरतबहुतचपलाई। मानतकछूनबातसिखाई ॥ असकहिपकरिभौनमहँलाई। ह्वैगेहरितबदीनडेराई ॥११॥
जानिभयाकुलललनकाँहीं। दीन्हींफेंकिछरीमहिमाँहीं॥पुनिगहिकैसिकहरकीडोरी। बाँधनचह्योजानिबडखोरी ॥
यदपिकृष्णकेप्रगटप्रभाऊ। निरख्योनँदरानीव्रजराऊ ॥ तदपिवातसल्यहिरसवशमें।भूल्योगुन्योहरिहिंआगसमें ॥
दोहा-जाकोभीतरबाहेरहुँ, पूरुबअपरहुँनाहिं ॥ सबकोपूरुबपरसोई, हैसबजगजेहिंमाँहिं ॥ १३ ॥
ऐसेश्रीहरिकोनँदरानी। अपनोछोटछोहरामानी ॥ जोपूरुबबलिबाँधनहारो। जगमहँमायाबंधनडारो ॥
बाँध्योसेतसमुद्रमझारो। बाँधिवासुकिहिंमंदरधारो ॥ विधिशिवआदिदेवसमुदाई। जासुवचनमहँबँधेसदाई ॥
ताहिउलूखलमहँनँदरानी। बाँधनलगीसहजगहिपानी॥१४॥बाँधतमहँसिकहरकीडोरी। होतभईदुइआँगुरथोरी ॥
तबदूसरियशुमतिगहिडोरी।बाँधतभयहरिकहँतहँजोरी॥१५॥सोऊकमीअंगुरैदोई॥तबऔरौंपुनिदियोसमोई॥१६॥
यहिविधिभवनभरेकीडोरी। यदपियशोमतितेहिंमहँजोरी ॥
दोहा-तबहूँद्वैआँगुरकमी, भईनबाँधनपूरि ॥ लखिचरित्रसबसुरकहैं, यशुमतिभागहिंभूरि ॥
बँधेउलूखलजबैकन्हाई। तबगोपीदेखनजुरिआई ॥ कहनलगींअसयशुमतिकाँहीं। लागतितोहिंदयाकसनाँहीं ॥
कोमलअंगनबंधनयोगू। वृथालहतकान्हरदुखभोगू ॥ कोउकहजबपाहिलेहमआई। कान्हरकीसबदशासुनाई ॥
तबतोवचनझूँठसबमान्यों। अबतोचोरपरचोसतिजान्यों॥पुनिकान्हरकहँलखिमुसक्याई।कोउव्रजनारीगिरासुनाई॥
अबतोकहाँगईचपलाई। चोरीकोफलपरचोदेखाई ॥ तबतोबातअनेकबताते। अबतोसूधसरिसदरशाते ॥
दोहा-यशुदागोपिनसोंकह्यो, निजनिजघरसबजाउ ॥ क्योंमोकोंमेरेसुतहिं, बारबारअनखाउ ॥ १७ ॥
बाँधतबाँधतथकिगैमाई। केशविलगसुमगेझहराई॥जानिश्रमितनिजमातुमुरारी। आपहिंबँधेकृपाकरिभारी॥१८॥
भक्तनकेवशहैंजगदीशा। जिनकेवशजगयुतविधिईशा॥१९॥कमलासनऔरहुत्रिपुरारी।रमासदाउरनिवसनहारी ॥

हरिलीलासुखअसुनाहिंपायो।जसयशुदैआँखिनतरआयो२०॥जससहजैप्रेमिनजनकाँहीं।यशुदाकेनंदनामिलिजाँहीं॥
तसनाहिंज्ञानिनामिलैमुकुंदा।जिनकीबुधिबहुवादबसिंदा॥२१॥हरिकहँबाँधिउलूखलमाँहीं।करनहेतुगृहकारजकाँहीं॥
दोहा–यशुमतिजबउठिजातभे, तबहरिकियोविचार ॥ येद्वैवृक्षनकोकरौं, आशुहिंजायउधार ॥ २२ ॥
नलकूबरमणिग्रीवद्वै, धनदपुत्रमदछाय ॥ प्रथमाहिंनारदशापलहि, भयेवृक्षव्रजआय ॥ २३ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजासिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे नवमस्तरंगः ॥ ९ ॥

दोहा–धनदसुतनकीवृक्षता, सुनिकैकुरुकुलनाथ । प्रश्नकियोशुकदेवसों, जोरिजलजयुगहाथ ॥

राजोवाच ।

कहौशापकारणतिनकेरो । नारदकियकसकोपघनेरो ॥ नलकूबरदूजोमणिग्रीवा । कौनकियोअपराधअतीवा॥१॥
सुनिकैकुरुपतिकीअसबानी । बोलेशुकाचार्यविज्ञानी ॥

श्रीशुक उवाच ।

येदोउभूपकुबेरकुमारे । भयेरुद्रसेवकअतिप्यारे ॥ गर्वभरेइकसमयतहाँहीं । कैलासहिकेकाननमाँहीं ॥
मंदाकिनिगंगामहराजा । जोरिसकलसुंदरिनसमाजा ॥ २ ॥ दोऊकरिवारुणिकरपाना । घूमतनैनभरेअभिमाना॥
गावतनाचतबाजबजावत । विचरतवनमहँअतिसुखपावत ॥ ३ ॥
दोहा–श्रमितभयेतबयुवतियुत, करनकेलिमनरंज । प्रविशेसुरधुनिधारमधि, जहँविकसेबहुकंज ॥
कियजलकेलितहाँबहुभाँती।जिमियुगगजयुतगजिनजमाती ४ तहँविहरतनारदकहुँआये।देखतभेदोहुँनमदछाये५
नारदकहँलखिकैसुरनारी । लज्जितह्वैअंबरतनुधारी ॥ शापदेनकहँसबैंडेराई । जहँतहँसिगरीरहींलुकाई ॥
येदोऊतहँधनदकुमारे । मदमातेवसनाहिंनाहिंधारे ॥६॥ तिनहिंमदांधनिराखिमुनिराई । शापदईजनुकृपादेखाई॥७॥

नारद उवाच ।

विषयीजनकोयहजगमाँहीं । तसबुधिनाशऔरविधिनाँहीं॥ जसधनमदतेबुद्धिविनाशा।रहतनकछुविवेकपरकाशा॥
दोहा–धनमदतेखेलतजुवाँ, धनमदतेमदपान । धनमदतेनितनारिमें, अतिशयरहतलोभान ॥ ८ ॥
अजरअमरअपनोतनुमानी।मारतजीवदयानाहिंआनी ॥९॥ तदपिजनमराजहुघरपावैं । तबहुँअंतयहतनुजरिजावैं॥
जोनजरयोतोहठिकृमिपरहीं । कीभखसूकरकूकरकरहीं॥ ऐसेतनुहितजोभरिकोहू । कियोसकलप्राणिनसोंद्रोहू ॥
सोअपनोंदोउलोकनशायो।वृथाजगतमहँजन्मगँवायो॥१०॥ मातापिताअन्नकोदाता । अरुजोमाताकोजनमाता॥
बलीमोललेतोहैजोई । अग्निश्वानभखैजोकोई ॥ ११ ॥ आठोंकोपनबंधाविमानी । केहिअधीनतनुपरैनजानी ॥
दोहा–पंचभूततेप्रगटहैं, पंचभूतमेंलीन । ऐसेतनुकेहेतुको, जीवनहनैप्रवीन ॥ १२ ॥
श्रीमदांधमतिमंदनकेरो । अंजनहैदारिद्रघनेरो ॥ धनीनिअपनेसमसबजानै । दारिद्रीजनसमसबजानै ॥ १३ ॥
बिनकंटकलागेपगमाँहीं।कंटकपीराजानतनाँहीं।१४॥दारिद्रिनकेनाहिंअभिमाना।लहँहिंजोदुखसोइसुतपमहाना १५
भयदरिद्रतेदुरबलदेहू । राखतसदाअन्नपरनेहू ॥ तबइंद्रीबलचलतोनाँहीं । सकैनकारिसोहिंसहुँकाँहीं ॥ १६ ॥
मिलैंदीनहींकहँहठिसाधू । जेसमदरशीबुद्धिअगाधू ॥ जोसतसंगकियोजनकोई । तृष्णातासुआशुगैखोई ॥ १७॥
दोहा–जेसमदरशीसाधुजन, श्रीमुकुंदकेदास । तिनकोशठधनमदनते, कबहुँनकौनिहुँआस॥ १८ ॥
धनदसुवनधनमदमहँछाके । यद्यपिमोहिंप्रतिक्षहुताके॥ तदपिवसनतेतनुनहिंढाँके । जलमहँविहरताविवशसुराके॥
तातेइनदोउलंपटकेरो । हरिहौंहठिमैंमदहिघनेरो ॥१९॥ लोकपालकेसुतह्वैदोई । पहिरचोनाहिंवसनमोहिंजोई ॥

दोउदुरमदतनुकीसुधिभूले। अतिअविनीताफिरहिंफविफूले॥२०॥ तातेकहवाकेतरुह्वैकै।व्रजमेंवसेजायदुखम्वैकै॥
जामेंअसपुनिकरैनकवहूँ। ममप्रसादसुधिरैहैतवहूँ॥२१॥ दिव्यवर्षशतजवबितिजाँहीं। हरिप्रगटिहैजवव्रजमाँहीं॥
दोहा-तवहरिकेपदपरसिकै, लहिपुनिदेवसरूप॥ मोरिअनुग्रहतेतबहुँ, पैहैभक्तिअनूप॥ २२॥

श्रीशुक उवाच।

धनदसुतनअसशापसुनाई। बदरीवनगवँनेमुनिराई॥ नलकूबरमणिग्रीवौंसोऊ। यमलार्जुनभेव्रजमहँदोऊ॥२३॥
सत्यकरनसोईऋषिवानी। मंदमंदतहँशारँगपानी॥ बँधेउलूखलवँसिलतजाई। यमलार्जुनाढिगपहुँचिकन्हाई॥२४॥
तहँमनमेंअसकियोविचारा। जौनदेवऋषिवचनउचारा॥ सोमैंसिगरोसत्यदेखाऊँ। यमलार्जुनकोआशुगिराऊँ२५
असविचारिदोउतरुमधिजाई। दियोउलूखलटेढलगाई॥२६॥ दामोदरकियनेसुकजोरा।तहँकाँपेयुगवृक्षकठोरा॥
दोहा-शाखनपातनसहितमहि, भयोतरुनकोपात॥ सिगरेव्रजमेंछाइगो, तिनकोशोरअवात॥ २७॥
पुरुषयुगलदोउतरुतेनिकसे। तिनकेमुखमनुवारिजविकसे॥ छावतदशहूँदिशनप्रकासा। मनहुँमरातेवंतहुतासा॥
कृष्णहिंअखिललोककेनाथै।कियोप्रणामजोरियुगहाथै॥पुनिनलकूबरअतिहिंविनीता।हरिकीअस्तुतिकरीसप्रीता॥

नलकूबरमणिग्रीवावूचतुः।

कृष्णकृष्णतुमआदिपुरुषपर। अहोमहायोगीदीनोद्धर॥ सूक्षमथूलविश्वतवरूपा। जानैब्राह्मणबुद्धिअनूपा॥
भूतदेहआत्माइंद्रीपति। तुमहींएककालहौयदुपति॥ अविनाशीव्यापकभगवाना। तुमहिंनियंताकृपानिधाना२९
दोहा-सूक्षमसतरजतममई, प्रकृतिहिंप्रेरकआप॥ तुमहींपुरुषअध्यक्षहौ, त्रिभुवनप्रगटप्रताप॥
छंद-तुमसकलक्षेत्रविकारज्ञातासदादीनदयाल॥ ३१॥ प्राकृतिनइंद्रिनतेअगमप्रभुरहतसोसवकाल॥
कोउकरहिंतुमहिंप्रकाशनहिंतुमकरहुसबहिंप्रकाश। नहिंतुमहिंजानहिंवद्धजीवजेफँसेमायापाश॥ ३२॥
जयवासुदेवअनादिवेधापरब्रह्ममुरारि॥ ३३॥ जयजयअमितअवतारधारीअखिलअधमनउधारि॥
जयकृतअमानुषकर्मभासकआपनोपरभाव॥ ३४॥ जयलोककेकल्याणकारीसरलशीलसुभाव॥
जयव्रजधरणिविहरनकरनजनकामनापरिपूरि। जयपरममंगलभरनसुंदरअंगधूसरधूरि॥ ३५॥
वसुदेवनंदननंदनंदनशांतमधुरसरूप। यदुवंशकेअवतंसदुष्टनध्वंससुयशअनूप॥ ३६॥
दोहा-जानहुअपनेदासको, दासहमैंयदुराय॥ हमहिंदेखायोकरिकृपा, तुवपदसोंऋषिराय॥
पैअबमाँगहिंजोरिकर, भवनाशकभगवान॥ नाथकृपाकरिदीजिये, हमकोयहवरदान॥ ३७॥
कवित्त-कथाकृष्णरावरेकीश्रवणसदाहींसुनै, वानीसदारावरेकोयशकाहिबोकरै॥
हाथयेहमाररावरेकीसेवकाईलागैं, चारुचरणारविंदाचितचाहिबोकरै॥
जगतचराचरतिहारोरूपमानिनाथ, रघुराजमाथझुकिसुखलहिबोकरै॥
रावरेकेदासनकोदौरिदौरिदेखिदेखि, दृगकोदुरितदुतदृगदाहिबोकरै॥ ३८॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यहिविधिजबअस्तुतिकरी, नलकूबरमणिग्रीव॥ तबहँसिबँधेउलूखलै, हरिबोलेसुखसींव॥ ३९॥

श्रीभगवानुवाच।

श्रीमदांधजेहिविधितुमभयऊ।मुनिहुँनिरखिपटपहिरिनलयऊ॥मदमत्ततताहतनहितभूरी।कियोअनुग्रहमुनिपुनिपूरी॥
सबमोहिंविदितधनेशकुमारे।होतदासयहिभाँतिहमारे॥४०॥ममदासनदरशनतेआशू। यहभवबंधनहोतविनाशू॥
भानुउदितजिमिधनदकुमारा। देखिनपरतआँखिअँधियारा४१नलकूबरमणिग्रीवसुजाना।करहुआपनेऐनपयाना॥
लहीभक्तिचरणनकीमेरी। जोनाशनभवभीतिघनेरी॥ ४२॥

श्रीशुक उवाच ।

कृष्णवचनसुनिधनदकुमारे । दैपरदक्षिणमोदअपारे ॥

दोहा-बँधेउलूखलकृष्णको, करिप्रणामबहुवार । गवँनकियोउत्तरदिशा, जैहरिकरतउचार ॥ ४३ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमकंधे पूर्वार्धे दशमस्तरंगः ॥ १० ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-नंदादिकव्रजगोपसब, युगद्रुमपतनअवाज ॥ सुनिचहुँकितधावतभये, जोनिगिरीकहुँगाज ॥ १ ॥

निरखतभेयमलार्जुनपाता । करतभयेशंकाउत्पाता॥चहुँकितभ्रमनलगेसबताके । गोपिग्वालअतिविस्मयछाके ॥
गिरबोकारणपरैनजानी । आपुसमहँअसभाषहिंबानी ॥ कैसेगिरेवृक्षयेदोऊ । यहथलमहँलखिपरैनकोऊ ॥
अनायासभोविटपनिपाता । तातेजानिपरैउत्पाता ॥ पुनिदोहुँनविरुद्धबिचमाँहीं । निरखतभेनँदनंदनकाँहीं॥ २ ॥
बँधेउलूखलऐंचतजाँहीं । चितवतचकितचखनचहुँधाँहीं ॥ आयेनंदहुतहँद्रुतधाई । कह्योकौनतरुदियोगिराई ॥३॥

दोहा-तबबालकबोलेसकल, कोउनहिंदियोगिराय ॥ बँधोउलूखलकान्हरो, क्रमक्रमसोंघसिलाय ॥

दोहुँनतरुनबीचमहँआई । दीनउलूखलटेढ़लगाई ॥ तबहींगिरेवृक्षयेदोऊ । सुनहुऔरकौतुकभोजोऊ ॥
वृक्षनतेयुगपुरुषप्रकासी । कढ़िआयेतनुभूषणरासी ॥ तुम्हरेसुतसोंकछुबतराने । ताकोहमनेकहुँनहिंजाने ॥
तिनसोंकछुकान्हरकहिदीन्हें । तेयाकेपदमहँशिरकीन्हें ॥ यहथलतेदोउगयेबिलाई । सत्यकहैंनहिंबातबनाई ॥४॥
सुनिबालकनकेरिअसबानी । कोऊताहिसत्यनहिंमानी ॥ कहँलघुबालककहँतरुपाता।शिशुसबकहैंमृषायहबाता॥

दोहा-कोउकोउतहँनँदलालके, सुधिकरिचरितमहान ॥ तेसिगरेबालकनिके, मानेवचनप्रमान ॥ ५ ॥

तहँयशुमतिअतिशयपैमाषी । नंदरायवाणीअसभाषी ॥ याकेउरदायाकछुनाहीं । बाँध्योबालककाहँवृथाहीं ॥
कोमलअंगनबंधनयोगू । निरखतउपजतममनसोगू ॥ असकहिलालनकेढिगजाई । दामोदरकीदामछोडाई ॥
चूमिवदनलियअंकउठाई । लालनसोंबोलेमुसकाई ॥ कछुनहिंखेदकरहुअबताता । बंधनकीन्ह्योंजोतुवमाता ॥
हनौंलकुटियाअबमैंताको । घरतेअवनिकासिहौंवाको ॥ असकहिभवनहिंभीतरजाई । कान्हरकोभोजनकरवाई ॥
दीन्ह्योंदानद्विजातिनकाँहीं । बाजनबाजेघरघरमाँहीं ॥

दोहा-यहिविधिबहुलीलाकरत, गोकुलमेंगोपाल ॥ बसतभयेअतिमोदसों, व्रजजनकरतनिहाल ॥ ६ ॥

कहुँव्रजनारीदैकरतारी । ललाललाकहिहरिहिंपुकारी ॥ नईनाचनाचहुहरिनीकी । पूजहुआशहमारेजीकी ॥
तबहरिनाचनलगेनवीने । मानहुँसबदिननाचप्रवीने ॥ जबगोगीगावनसबलागैं । तबहरिहूँगावतअनुरागैं ॥
हरिकोगानसुनतव्रजनारीं । देहिंअनेकनमणिगणवारीं ॥७॥ कहुँकोउगोपीकहैंपुकारी । लावहुचौकीकान्हहमारी॥
तुरतहिधायलायहरिदेहीं । तबहरिवदनचूमितियलेहीं ॥ कोउकहसेरपसेरीलावो । ललामोहिंआनँदअतिछावो ॥

दोहा-दौरिउठावहिंकान्हतेहिं, उठैउठायेनाँहिं । पुनिल्यावैजनुजोरिकर, सिगरीसखियनकाँहिं ॥

कहैंसखीकोउलाउखराऊँ । तौकन्हुवाँमैंबहुतखेलाऊँ ॥ दौरिकान्हपादुकाउठाई । हँसतदेहिंसखियनकहुँआई ॥
सबीअशीशदेहिंशिरछैकै । छकितहोहिंआननछबिज्वैकै ॥ कहुँकहुँनिजसमसखानिहारी। तालदेहिंजनुमल्लमुरारी ॥
यहिविधिकरतअनेकनलीला।सुखदगोपगोपिनशुभशीला८ दरशावतजगमोहप्रवीने।यहिविधिहमनिजदासअधीने॥
नितनवकौतुकलखिव्रजवासी।पावतनितनवआनँदरासी ॥९॥ एकसमयफलबेचनवारी । नंदद्वारमहँआइपुकारी ॥

दोहा-मैंलाईमीठेफलनि, आजुहितरुतेतोरि। होयचाहजेहिंलेनकी, सोआवैइतदौरि॥
फलबेचनवारीकीबानी। सुनतैश्यामपरमसुखमानी॥दौरेभरिअंजलीअनाजू। सबफलदायकतेफलकाजू॥१०॥
फलभाजनमहँअन्नहिंडारी। लैनिजदोउकरफलनमुरारी॥ खातखातफलभीतरआये। तेअनाजभेरतनसोहाये॥
लखिकौतुकफलबेचनवारी।धन्यधन्यनिजभागउचारी॥११॥एकसमयउठिकृष्णप्रभातै।खेलनहितलैसखनजमातै॥
यमुनातीरगयेघनश्यामा। खेलनलगेखेलयुतरामा॥ खेलतखेलपहरदिनआयो। इतरोहिणिपंडितनबोलायो॥
पूँछिपंडितनतेसुखमानी। रोहिणिनखतरोहिणीजानी॥

दोहा-कछुककलेऊहुँनकरि, खेलनगोकढिकान्ह। जन्मनक्षत्रहुआजुहै, होनचहतमध्याह्न॥
असगुनिजायकान्हकहँटेरी। लालनसुनोबातकछुमेरी॥जन्मनछत्रहुआजुतुम्हारा। करिनहिंआयेकछुकअहारा॥
चलिनहाहुवरकरहुकलेवा। देहौंआजुमीठबहुमेवा॥ पूजहुछटीपीतपटधारी। देहुद्विजनबहुधेनुदुधारी॥ १२॥
सखनआपनेलेहुनिहारी। इनसबकोइनकीमहतारी॥ नहवायोभूषणपहिरायो। भोजनहूबहुभाँतिकरायो॥
तेरेसँगखेलनपठवायो। तुमअबहूँलगिनाहिंनहायो॥ तोहिंहँसतसिगरेव्रजछोरा। लज्जितहोतनहींमनतोरा॥

दोहा-हमन्हायेकान्हरनहीं, हमखायेनहिंश्याम। हमजसप्रियजननीनके, तसनश्यामनहिंराम॥
लालहमहुँकहँकिमिलजवावहु।चलहुभवननहिंविलँबलगावहु।मज्जनकरिअरुभोजनकरिकै। पुनिवरभूषणवसनपहिरिकै
खेलहुआयसखनसँगलाला अबहिंहोतभोजनअतिकाला यहिविधिरोहिणिवचनबखान्यो पैनहिंश्यामरामकछुमान्यो
लौटिरोहिणीतबघरआई। यशुदासनअसकह्योबुझाई॥ दोऊरँगेखेलकेरंगा। आयेगेहनमेरेसंगा॥
जाहुलैआवहुतुमवरिआई। मैंगृहकाजकरहुँचितलाई॥ १३॥ १४॥

दोहा-यशुमतिजानिविलंबअति, मनमहँकियोविचार। खेलनमेंअटकेललला, लियेसखाखेलवार॥
बिनागयेमेरेनहिंऐहें। खेलतखेलतदिवसबितैहें॥ असविचारिगमनीनँदरानी। सुतसनेहवशअतिअतरानी॥
कन्हुवाँकन्हुवाँकहिगोहरायो। कमलनैनभोजनबिसरायो॥आवहुतातकरहुपयपाना॥क्षुधाविवशमुखभयोमलाना॥
खेलतखेलतथाकिगयेहौ। ताहूपरअतिखेलठयेहौ॥ अबनहिंखेलहुखेलकन्हाई। चलहुभवनदुपहरह्वैआई॥
मातुवचनहरिकियोनकाना। खेलनमेंअतिचित्तलोभाना॥तबपुनिकह्योरामसोंमाता।चलहुभवनकुलनंदनताता॥

दोहा-मधुरकलेऊमैंरच्यो, तेरेहितबलराम। सोतुमहींभोजनकरो, मेरेसँगचलिधाम॥
कन्हुवाँकहानमानतमेरो।लैचलुकह्योजोमानैतेरो॥१५।१६।१७॥भोजनकोपरखेव्रजराई।तोहिबिननेकहुसकैनखाई
हमदोहुनकोतुमसुखदेहू। चलहुरामआशुहिंअबगेहू॥सबबालकनिजनिजगृहजाहू।निजजननिनकृतभोजनखाहू॥
रामचलहिंमेरेसँगमाँहीं। कन्हुवाँसँगरहियोकोउनाँहीं॥ बिनासखनखेलिहैंकिमिखेला। पुनिपाछेवरजइअकेला॥
सुनिव्रजबालकयशुमतिवानी।गेनिजनिजगृहअतिभयमानी॥रामचलेमातासँगमाँहीं।लियकान्हैंपछिआयतहाँहीं॥

दोहा-यहिविधिदोउसुतल्यायघर, उवटनअंगलगाय। पहिरायोभूषणवसन, सुरभिसलिलनहवाय॥
नंदरायनिजसंगबोलायो।विविधभाँतिभोजनकरवायो॥यहिविधिलीलाकरतअनेकन।बसतभयेव्रजसुखप्रदछनछन॥

श्रीशुक उवाच।

दोहुँकरगहिदोहुनकीबाँहीं। लैगमनीबरवसघरकाँहीं॥

दोहा-ईशशिरोमणिकृष्णप्रभु, तिनकोनिजसुतमानि। ल्याईयशुमतिभौनगहि, सकैकोभागबखानि॥
जन्मनक्षत्रजानिसुतकेरो। मानियशोदामोदघनेरो॥ बोलवायोबहुविप्रनकाँहीं। बजवायोबाजनव्रजमाँहीं॥
सुतहिसुगंधितजलनहवायो। सुंदरपीतवसनपहिरायो॥ छठीसविधिपूजनकरवायो। सुतकरविप्रनदानदेवायो॥
पुनिदोउनभोजनकरवाई। दियपलनापरतिनहिंसोवाई॥ १९॥

तहँमहावनगोकुलमाँहीं । होतअमितउत्पातनकाँहीं ॥ निरखिनंदजियअतिहिंडेराई । वृद्धवृद्धगोपनबोलवाई ॥
बैठसलाहकरनतहँलागे । तबैनंदबोलेदुखपागे ॥ इतअतिहोहिंउपद्रवघोरा । ईशकृपाबाँचतममछोरा ॥
कौनउपायकरैंअबभाई । सोसिगरेमिलिदेहुबताई ॥ २० ॥ तबउपनंदगोपइकबूढो । ज्ञानीबडोमंत्रजोहेंगूढो ॥

दोहा—देशकालसोंसकलगुनि, रामकृष्णप्रियहेत । कह्योमंत्रमंजुलवचन, बाँधिमनहिंमननेत ॥ २१ ॥

सुनहुतातजोमोमनआई । सोसलाहमैंदेतसुनाई ॥ गोधनहींधनअहैहमारा । इकयहवृत्तिनग्रामअगारा ॥
जहैंराखिगोधनरहिजाहीं । सोईसुखदहैभवनसदाहीं ॥ तातेजोगोकुलहितचहिये । तोइततेअंतेचलिरहिये ॥
इतआवहिंअनेकउत्पाता । बालकनाशहेतुहेताता ॥ २२ ॥ लेतिसकलबालकजोखाई । सोराक्षसीपूतनाआई ॥
तातेबाचिगयोयहबालक।ईशकृपातुमपरव्रजपालक॥गिरयोशकटयापैअतिघोरा । हरिदायाबाँच्योतुवछोरा ॥२३॥

दोहा—बौंडेडरवपुधारिकै, आयोदैत्यकराल ॥ धुंधकारव्रजछायकै, नभलैगोतुवलाल ॥

सोमरिगोगिरिबृहदपषाना । कियोईशबालककरत्राना ॥२४॥ अर्जुनवृक्षगिरेअरराई । परयोबीचहूँबँच्योकन्हाई॥
सोऊसबहैहरिकीदाया । यहीसत्यजानहुनँदराया ॥२५॥ तातेजबलौंअबउतपाता । आवहिंनहिंव्रजमहँदुखदाता॥
तबलौंग्वालग्वालिनीलैकै । चलियेगोगणआगेकैकै ॥ २६ ॥ जोयहकहोबसैंकहँजाई । तौसोथलहमदेतबताई ॥
वृंदावनजेहिंवनकरनामा। सबथलजोअतिशयअभिरामा॥गौवनकोअतिसुखदनिवासा।सबकाननसोहतचहुँपासा ॥

दोहा—गोपीगोपनकेसदा, सेवनलायकसोय ॥ तेहिंवनमेंतेहिंगिरिकिहत, गोवर्धनसबकोय ॥

महापुण्यप्रदसोगिरिराजा । सेवतसदासुसिद्धसमाजा ॥ सदाहरिततृणथलथलरहहीं । शाखनझुकिपादपमहिगहहीं
कोमलललताललिततहँलहरैं । सुखीकुरंगविहंगहुँविहरैं ॥ अतिनिर्मलजललेतहिलोरा ।यमुनाबहैतहांत्रैओरा ॥
कहिनजायवृंदावनशोभा।निरखतसुरनरमुनिमनलोभा॥सुदिनपूँछितहँचलहुव्रजेशा।अबनरहनलायकयहदेशा २७
आजुहिंसुदिनहुँहैअतिनीको । यहतौहैहमारमतठीको ॥ गौवनकोआगूकरिदेहू । लादिसाजिशकटननाधिलेहू ॥

दोहा—तिनमेंगोपीगोपचढ़ि, चलैंसकलसानंद ॥ पुनिविचारजसहोइतुव, तसकीजेअबनंद ॥ २८ ॥

सुनिउपनंदगोपकीबानी । बोलेसकलगोपमुदमानी ॥ भलीकहीउपनंदसलाहू । वृंदावनबसियेव्रजनाहू ॥
नंदतहाँबहुदूतपठाई । दियासिगरेव्रजमेंगोहराई ॥ वृंदावनगमनाहिंसबकोई । बालकयुवावृद्धजोहोई ॥
नंदनिदेशसुनतसबगोपा । साजिसाजिशकटनअतिचोपा २९ भारिभारिअपनीसिगरीसाजू। बालकवृधनरनारिसमाजू
बलीवृषभनाधिशकटनमाँहीं । ह्वैतयारगहिधनुषनकाँहीं ॥३०॥ गौवनकोआगूकरिलीने । नंदद्वारआयेशुभभीने ॥

दोहा—जानितयारीनंदसब, भयेशकटअसवार ॥ तेहींसमयचहुँओरव्रज, तुरहीबजीअपार ॥

गोपहुविपुलविषाणबजाये । महाशोरव्रजमंडलछाये ॥ करिकैगौवनकोगणआगे । चलेपुरोहितपुनिबड़भागे ॥
तिनकेपीछेगोपसमाजा । तिनकेमध्यलसेव्रजराजा ॥ ३१ ॥ केसारिकेसरिकेसरिअंगा । बेसरिबेसरिबेसरिसंगा ॥
धारेवसनवेषव्रजनारी । हीरनहाराहियेहियहारी ॥ रथनचढ़ीक्षितिमेंछबिछावैं । हरिलीलासप्रीतिमुखगावैं ॥ ३२ ॥
यशुमतिरोहिणियुतबलश्यामै।चढ़ीएकरथमहँअभिरामै॥सुनिसुनिलालनकथासुहावनि।लहहिंमोदमातामनभावनि

दोहा—यहिविधिगोकुलतेतुरत, गमनाकियोव्रजराय ॥ पहुँचेवृंदाविपिनिमें, गोपनयुतसुखछाय ॥

जहँवसंतऋतुरहैसदाहीं । कबहूँकौनहुँदुखतहँनाहीं ॥ अर्धचंद्रसमशकटनराषी ॥ निजनिजथलनपरस्परभाषी ॥
वृंदावनमहँकियोनिवासा । गोपसहितनंदसहितहुलासा ॥३४॥ वृंदावनगोवर्धनदेखी । यमुनापुलिनप्रमोदपरेखी ॥
रामश्यामहूँकोअतिप्रीती । बाढ़तभईविहारप्रतीती॥३५॥करतबाललीलामनभावन। व्रजवासिनविनोदउपजावन॥
कहुँबोलहिंकलतोतरिबानी । कहुँगतिचलहिंमंदसुखदानी ॥ कहुँलकुटीलैखेलहिंधूरी । दौरिजाइँकहुँघरसोंदूरी ॥
झँगुलीपहिरकछनीकाछे । पगनूपुरबाजतअतिआछे ॥

दोहा—बछरननितहिंखेलावहीं, अतिशयप्रीतिबढ़ाय ॥ कहुँछोरहिंकहुँबाँधहीं, कहुँजलदेहिंपिआय ॥

सुतकीलखिबछरनपरप्रीती । चारिवरषउमरिहुजवबीती ॥ नंदकाँन्हकोकह्योबोलाई । बछरालैचरावहुजाई ॥
पैरहिवोबलरामहिंसाथै । अलगनहोयहुतजितेहिहाथै॥३६॥औरहुग्वालनबालबोलाई।नंदकह्योअसतिनहिंबुझाई ॥
कन्हवाँकोतुमताकेरहियो । दौरतकूदतकैकरगहियो ॥ बहुतदूरियहजाननपावै । निकटचरायवत्सगृहलावै ॥
असकहिविदाकियोसुतकाँहीं । गयेरामबालकसँगमाँहीं ॥ नेसुकजाइदूरिबछरनको । लगेचरावनतृणकछरनको ॥

दोहा—आपहुँतहँबहुखेलको, खेलनलगेगोपाल ॥ कामपालतेहिंसंगमें, ग्वालबालततकाल ॥ ३७ ॥

कहूँबजावतवेणुमुरारी । देहिंसखासिंगरेतबतारी ॥ कहूँबेलअमराकरतूरी । फेंकहिंइकइकअधिकहिदूरी ॥
गयोहमारअधिकअसकहहीं।जिनकमजाततेलजिकैरहहीं॥ कहुँकिंकिणिकीकरिझनकारी।चलहिंबंककैचरणमुरारी
कहुँवनिजाहिंगऊअरुबछरा।डोलतबागतकछरनकछरा।३८वलीवृषभसमकरिकहुँनाद।मल्लयुद्धहितभरिअहलादा
लरहिंपरस्परगोपकुमारा । कोउजीतहिंकोउखाहिंपछारा ॥ कहूँहंसकीबोलहिंबोली।कहुँमयूरसमविचरहिंडोली ॥

दोहा—यहिविधिवृंदाविपिनिमैं, विविधविनोदविहार ॥ ग्वालबालसँगकरतहैं, रामहुँनंदकुमार ॥ ३९ ॥

चरतचरतसिगरेतहँबछरा । जातभयेयमुनाकेकछरा ॥ खेलतखेलततहँघनश्यामा । ग्वालबालसंगहिंलैरामा ॥
जातभयेयमुनाकेतीरा । जहाँत्रिविधनितबहतसमीरा ॥४०॥ तहँधरिकैबछराकररूपा । वत्सासुरआयोसुनुभूपा ॥
रामकृष्णकोहननविचारी । बछरनमेंमिलिगयोसुरारी ॥ चरतचरतहरिकोनियरायो । तबरामहिंनँदनंदबतायो ॥
यहिजानबदानवबलदाऊ । वत्सरूपकरिकियेदुराऊ ॥ कंसपठायोमारनहेतू । ताकोशठबाँधतहैनेतू ॥

दोहा—कानेमेंकहिरामके, करिकैगोपनगोपि ॥ मंदमंददानवनिकट, गेहरिवधचितचोपि ॥ ४१ ॥

पूँछसहितपिछलेपददोऊ । पकरयोहरिमान्योभयसोऊ ॥ चटपटानबहुयदपिसुरारी । तदपिनकरतेतज्योमुरारी ॥
तेहिंउठाइबहुवारभ्रमाई । पटक्योतरुकपित्थमहँजाई॥ फूट्योशिरटूट्योतनुभूपा । प्रगटभयोदानवकररूपा ॥
सोकपित्थगिरिगोतेहिंकाला।ताहिगिरततरुटुटेविशाला॥लखिकरालकायातेहिंकेरी।विसमितग्वालताहिलियघेरी॥
पुनिकान्हरकोलगेसराहन । खूबजोरहैतेरेबाँहन ॥ देखिपरततेतौअतिछोटो । जानिपरतबलकोअतिमोटो ॥

दोहा—देवसुमनबरषनलगे, दुंदुभिदीहबजाय ॥ वत्सासुरकोनिधनलखि, भेप्रसन्नसुखपाय ॥ ४३ ॥

सर्वलोककेपालकजोऊ । ब्रजबछरापालकभेसोऊ ॥ डेढ़पहरदिनजबचढिआयो । मातुकलेवातुरतपठायो ॥
सखनसहिततहँरामकन्हाई।वटछायामहँहिलिमिलिखाई॥लगेचरावनपुनितिनकाँहीं।यमुनातटविहरतचहुँधाहीं ४४
ग्वालबालदुपहरदिनदेखी । बछरनकोअतितृषितपरेखी ॥ लेलैनिजबछरनकेजूहा । चलेसलिलप्यावनकरिकूहा ॥
यमुनतीरपहुँचेजबजाई । पियेपानेपैबछरनप्याई ॥ ४५ ॥ तहँकालिंदीकेतटमाँहीं । महाभीमबकलखेतहाँहीं ॥

दोहा—मनहुँवज्रलगिशैलको, शृंगगिरयोइतआय ॥ नामबकासुरजासुहै, दीन्ह्योंकंसपठाय ॥ ४६ ॥

बकुलध्यानसोरह्योलगाई । कह्योकृष्णआवैनियराई ॥ हरिहुजानिताकेमनकेरी । कढेनिकटह्वैतेहिंतनुहेरी ॥
हरिहिंनिकटलखिचोंचपसारी।दानवलियोतुरतमुखडारी ४७ बकमुखग्रसितगोविंदहिंदेषी।गोपसबैदुखमानिविशेषी
हायहायसबलगेपुकारन । करिनसकेकोऊतेहिंवारन ॥ जैसेबिनाप्राणकीदेही । भयेगोपतिमिकृष्णसनेही ॥
यद्यपिभ्रातप्रभावबहुज्ञाता । खडेरहेरामहुँतहँताता ॥ तद्यपिवातसल्यरसवशमें । रामहुँकामनभोकसमसमें ॥४८॥

दोहा—जगतगुरूजगकेपिता, अगिनिबीजगोपालु ॥ तिनकोलील्योबकजबै, जरनलग्योतेहिंतालु ॥

उगिल्योसपदिशामरेकाँहीं। चोंचचोखकरिमूधतहाँहीं॥मारनधायोपुनिनँदलालै।गुन्योननिजकालैतेहिंकालै॥४९॥
आवतनिरखिताहियदुराई।धरचोचोंचयुगयुगकरधाई॥भूमिगिरायवदनतेहिंफारचो।सहजहिंबकासुरहिंहरिमारचो॥
तृणसमफारतबककोआनन।सखानिरखिकालिंदीकानन॥५०॥लियोदौरिद्रुतहरिकहँघेरी । लगेप्रशंसाकरनघनेरी॥
कान्हरतुमतौअतिबलवानै । हमतोअसपूरुबनहिंजानै ॥ तुमहिंमातुबहुदूधपियावै । माखनमिसरीनितहिंखवावै ॥
तातेबहुततुम्हारेजोरा । होतदूधहमरेघरथोरा ॥

दोहा–उतैगगननौबतिबजी, बजेशंखकरनाल। देवफूलबहुवरषिकै, छायलियोनँदलाल॥
अस्तुतिबहुविधिकीनमुनीशा।कहेबकारिनामजगदीशा।सुनिकैशोरसखानभदेखैं।कोहुकोनहिंलखिअचरजलेखैं९१
निकसेबकमुखतेहरिआये। ससामनहुँपुनिप्राणहिंपाये॥ बाहुपूजिहरिकिसिबगोपा। करीभवनगमननकीचोपा॥
सबबछरनसमेटितहँलीन्ह्यों। लैसँगसखनकृष्णचलिदीन्ह्यों॥आयेभवनजबैनँदलाला। लियेसंगबहुग्वालनबाला॥
नंदयशोमतिकेढिगजाई। ग्वालबालअसखबरिसुनाई॥ वत्सरूपधरिदानवआयो। ताकोकान्हरमारिगिरायो॥
दोहा–पुनिइकबककोवपुषधरि, बैठयमुनकेतीर॥ लीलिलियोसोलालको, हमलखिभयेअधीर॥
मुखबाहेरपुनिनिलबलाको।फारचोचोंचकृष्णपुनिताको९२ सुनियहबातगोपव्रजनारी।जुरिआयेआश्चर्यविचारी॥
नँदनंदनमुखअनमिषदेखैं। बालककोबलअदभुतलेखैं॥९३॥कहहिंपरस्परतेअसबानी।अबव्रजदशापरैनहिंजानी॥
कान्हअलपटरिगैबहुबारा। कियोईशयहिकृपाअपारा॥ जेकोउआयेकान्हहिंमारन। तेईमारिगयेबहुबारन॥९४॥
तबबोलीपुनियशुमतिबानी। मैंपूरुबकरनीकाठानी॥ जातेसुतकोनितभैहोई। अथवाहैवैरीममकोई॥
पैममसुतवधजेमनकरते। तेपावकपतंगसमजरते ॥ ९५॥
दोहा–अहोब्रह्मज्ञानीगरग, मृषानताकेबैन। कह्योजौनतेसेभयो, आयहमारेऐन॥ ९६॥
कह्योनंदपुनिवचनतहाँहीं।शोचठानिअबहमकहँजाहीं॥ वोहिंविधिबँचैकुमारहमारा। अबहमकाहकरीकरतारा॥
वृद्धगोपतबकहेबुझाई। ईशकृपातवसुतबँचिजाई॥ पुनियशुमतिदोउलालनकाँहीं। करगहिलैगैनिजगृहमाँहीं॥
दानकराइअशनकरवाई। राईलोनउतारिसोवाई॥ निशिदिनकरतकृष्णकीसेवा। हरिसुखहेतुमनावहिंदेवा॥
रामकृष्णगाथानितगावत। आनँदयुतवसुयामवितावत॥गोपगोपिकाबसेसुखारी।जानिनपरचोशोकसंसारी॥९७॥
दोहा–यहिविधिकरतविहारबहु, व्रजमहँनंदकुमार। पंचवर्षकेपूरभे, नाघेवैसुकुमार॥ ९८॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे एकादशस्तरंगः॥ ११॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–एकसमयव्रजगाँउमें, जबनृपभयोप्रभात। रामश्यामजागेप्रथम, पलनामेंअलसात॥
कियोविचारतबैमनमाँहीं। आजुजायवनहींमहँखाँहीं॥ असविचारियशुमतिपहँजाई। मायमायकहिदियोजगाई॥
कह्योआजुहमवनमहँखैहैं। सखनसहितउतवत्सचरैहैं॥ तबयशुमतिबोलीसुखसाजू। जन्मनक्षत्ररामकरआजू॥
तातेरामनजाहिंचरावन। जाहुसखनयुततुममनभावन॥ सुनतमातुकेवचनसुहाये। रामबहुरिपुनिभीतरआये॥
हरिघरतेकढिशृंगबजायो।मधुरशोरसिगरेव्रजछायो॥१॥ग्वालबालसबधुनिसुनिजागे।निजनिजबछरनकोकरिआगे॥
दोहा–नंदद्वारआवतभये, कीन्हेंहरिहिंप्रणाम। लकुटीवेणुविषाणहूँ, धारेअतिअभिराम॥
कटिकिंकिणीकाछनीकाछे। लिहेकामरीभूषणआछे॥२॥निरखिहजारनसखनमुरारी।विपिनगवँनकीकरितयारी॥
छोरिसकलबछरनकोनाथा। हाँक्योलैलकुटीनिजहाथा॥ कटिकिंकिणिपगमणिमंजीरा। हीरनहारहियेगंभीरा॥
मोरमुकुटशिरमेंअतिसोहै। जोहतजाहिरमामनमोहै॥ इककरमुरलीइककरलकुटी। कटिमहँकसेपीतपटदुपटी॥
अपनेलाखनबछरनकाहीं। आगूकरिप्रभुलियेतहाँहीं॥ ग्वालनबालनसहितगोपाला। बछरनहाँकतचलेउताला॥
दोहा–निजनिजघरसोंसबसखा, लियेकलेऊकाँध। डगरतभेबहुविपिनिके, खेलतखेलतबाँध॥
तहँहरिकेहितकरनकलेवा। माखनमिसरीऔबहुमेवा॥ औरवस्तुजोसुतहिंमिठानी। पठईसंगहिमेंनँदरानी॥
प्रथमहिंपृथकपृथकनिजवत्सा।लैगमनेबालकसबस्वच्छा॥ वटभाँडीरनिकटहरिआये। टेरिटेरिसबवत्समिलाये॥

बछरातहाँचरावनलागे। विहरतआपुमहासुखपागे॥ ३॥ मणिनजडितभूषणसुवरणके। पहिरायेमातासुवरणके॥
तद्यपिफलअरुपल्लवगुच्छा। फूलऔरमोरनकेपुच्छा॥ धातुअनेकनरंगनकेरी। काचऔरगुंजनकीढेरी॥

दोहा-धायधायवनतेसखा, लावहिंमुदितअपार। रचिरचिरुचिसोंअतिरुचिर, करहिंकृष्णशृंगार॥

नवपल्लवकेमुकुटबनावैं। सुमनरूपपुनिरतनलगावैं॥ रँगहिंधातुकेरंगनकेरे। साजेंमोरपखानघनेरे॥
असकिरीटरचिहरिशिरदेहीं। फेरिफूलमालाराचिलेहीं॥ तामेंबिचबिचपल्लवगुंजा। साजहिंवीचफलनकेपुंजा॥
हरिकोपहिरावहिंवनमाला। तिमिऔरहुभूषणगोपाला॥ धातुरंगहरिअंगनमाँहीं। हँसतहँसावतरंगतजाँहीं॥
हरिहुआपनेकररचिमाला। बकसहिंसखनिभूरितेहिंकाला॥ कोहुकोसुमनमुकुटरचिदेहीं। तेप्रणामकरिशिरधरिलेहीं

दोहा-रचहिंपरस्परभाँतियहि, अतिसुंदरसिंगार। करहिंग्वालबालनसहित, वृंदाविपिनिविहार॥ ४॥

जबपुनिपहरदिवसचढिआयो। तबहरिसिगरेसखनबोलायो॥ कह्योसकलअबकरहुकलेवा। हमहूँदेहैंअपनेमेवा॥
सुनतकृष्णवाणीसबबाला। बैठतभेजहँबैठगोपाला। खोलिखोलिनिजनिजतहँसीके। करनलगेभोजनरुचिजीके॥
कोहुकोसीकोकोऊचोरावैं। तबतेद्रुतहिछँडावनधावैं॥ वेतबदूरिफेंकितेहिदेहीं। कोउपुनिधायउठावहितेहीं॥
तेऊफेंकहिंताकहँदूरी। हँसहिंठठायमोदभरिभूरी॥ कोउपुनिल्याइदेहिहैजाको। मिलतमीतकहिसोपुनिताको॥

दोहा-निजहाथनसोंकृष्णप्रभु, देतसखानिखवाय॥ तेऊहरिमुखमेलहीं, मंदमंदमुसक्याय॥ ५॥

यहिविधिहरितहँभोजनकरिकै। करअरुचरणधोइसुखभरिकै। देखनकहुँवृंदावनशोभा। चलेकृष्णअतिशयमनलोभा
चलेसखाहारिआगेधाई। हमहींपहिलेदेखबजाई॥ इकतेइकआगूबढ़िजाहीं। कोउलखिहरिसोंलौटिवताहीं॥
कहुँकान्हरकढ़िजाहिंअकेले। तबसँगकेसबसखानवेले॥ मैंआगेहरिकोछ्वैऐहौं। तुमहिंलौटिमिगमहँलैलैहौं॥
असकहिवडोवेगकरिधावैं। हरिकरपरसफेरिफिरिआवैं॥ ६॥ कोउबालकवेणुबजावैं। कोऊशृंगशोरवनछावैं॥
कोऊसुनिभृंगनकीगुंजन। तेहिंमिलिगावतभरिसुखपुंजन॥

दोहा-कोईकोकिलकूकसुनि, तामेंसुरहिमिलाय॥ गावतहैंअनुरागभरि, रागिनिरागसुहाय॥ ७॥

कोउनभउड़तविहंगनदेखी। निजसोअधिकवेगनहिंलेखी॥ तेहिंछायाछायाद्रुतधावैं। जबवैठेखगतबफिरिआवैं॥
कोउहंसनलखिडोलतसरिमहँ। तैसहिंआपहुडोलततहँतहँ॥ कोउबैठोलखिबकजलमाँहीं। तैसहिंआपुबैठतहँजाँहीं॥
कोउनाचतलखिमत्तमयूरे। आपहुतिमिनाचतसुखपूरे ८ कोउकपिपुच्छहिझूलतदेखी। खींचहिंतेहिकरजोरविशेखी॥
कोउकपिपुच्छपकरितरुचढ़हीं। कोउमरकटविरायमुदमठहीं। कोउकपिजसकूदेतसकूदै। कोउद्रुतकपिनदृगनदुरिमूँदै

दोहा-कोउदादुरकूदतनिरखि, तैसहिंकूदतआपु॥ कोउनहातभरिखेलश्रम, यमुनसलिलहरपापु॥

कोउडगरहिंटेढीकरिकाया। हँसहिंठठायबंकलखिछाया॥ कोइदैकूकोसुनिझनकारी। तासोंकरैंबातदैगारी॥
कहुँखेलहिँअँखमुदउलश्यामा। जोरिसखनसंयुतअभिरामा॥ कहुँवनिआपरामरघुनंदन। जोरिग्वालकेवृंदनवृंदन॥
रामायणलीलासबकरहीं। सकलदेवलखिअतिमुदभरहीं॥ कहुँखेलतेचढाउगोटाऊ। सखासहितहरिकरिचितचाऊ॥
जीतहिंसखाहारीहिंखिसिआवैं। जीतहिंश्यामसखनसकुचावैं॥ निजनिजदलकीजबजैदेखैं। सबैसखाअतिशयसुखलेखैं॥

दोहा-यहिविधिकरतअनेकविधि, लीलानंदकुमार॥ सखनसहितआनँदभरे, वृंदाविपिनिमझार॥ १०॥

कवित्त-योगीजाहियुगयुगयोगकरिजोहैकहूँ, ब्रह्मज्ञानीजाकोपरब्रह्मअनुमानहीं।
भक्तिवारेभक्तनकोदैकैजौनआतमाहूँ, तिनकेअधीनरहैनितपछिआनहीं॥
नरसीनिरखिलीलाजाहिनरमूढनिज, चित्तमेंविचारैनरप्राकृतसमानहीं।
ऐसेश्रीगोपालसंगखेलतजेग्वालबाल, रघुराजतिनकीसुपुण्यक्योंबखानहीं॥ ११॥
शिवसनकादिशेषनारदपराशरादि, विश्वामित्रऔवासिष्ठब्रह्मवादिजेतेहैं।
करिकैअनेकयोगयागजाकीपदरज, जनमअनेकहूँमेंपायेनहिंकेतेहैं॥

रघुराजकहाँलोंबखानैकहौंगोपभागि, जौनप्रभुपंचहुँप्रकारमुक्तिदेतेहैं ।
सतचिदानंदरासीव्रजकोविलासीभयो, व्रजकेनिवासीतेहिंभुजभरिलेतेहैं ॥१२ ॥

दोहा–कंसपठायोतेहिंसमै, बलीअघासुरजोय ॥ आयोद्रुतवृंदावनहिं, हरिकोमारनसोय ॥

यद्यपिअमरअमीकियपाना । सपन्योनाहिंमरणकरभाना ॥ तद्यपिनिरखिअघासुरकाहीं । मरनहेतुसुरसदाडेराहीं॥ केहिंविधिहोयअघासुरनाशा । परखेरहतकियेयहआशा॥१३॥ बकीबकासुरकोलघुभाई।तौनअघासुरव्रजमहँआई॥ ग्वालबालसँगतहँनंदलाले । खेलतलखिजरिगयोकराले ॥ तबअसमनमहँकियोविचारा। मोरभ्रातभगिनीयहमारा॥ तातेसखनसहितनँदछोरै । करिहौंआजुएकहींकोरै ॥१४॥ इनकेमरेसबैमरिजैहैं । व्रजवासीनहिंएकौरैहैं ॥

दोहा–व्रजवासिनकोप्राणयह, तातेमारहुयाहि ॥ तनुतेनिकसेप्राणजिमि, रहतशरीरहुनाहिं ॥

कृष्णहिंबिनाप्राणतेकीबो।भगिनीभ्राततिलोदकदीबो॥१५॥असविचारिशठसर्पसुरूपा।रच्योएकयोजनभरिभूपा॥ महाशैलकेसरिसमोटाई । अतिकठोरततनुहिंदेखाई ॥ दीहदरीसमवदनबगारी । सबकोलीलनमनहिंविचारी ॥ पसरचोअजगरमारगरोकी।जोदेवनकोकारकशोकी॥१६॥एकओंठमहिमहँअहिराख्यो । एकओंठतेमेघननाख्यो॥ डाढशैलकेशृंगसमाना । तासुवदनअँधियारमहाना ॥ लंबीपथसमजीभअखंडा । कठतश्वासमनुपवनप्रचंडा ॥ दावानलसमनैनभयावन । परचोपंथमहँअतिहिंअपावन ॥ १७ ॥

दोहा–निरखिमहाअजगरतहाँ, ग्वालबालतेहिंकाल ॥ मानेंवृंदावनसुछबि, नहिंजानेनिजकाल ॥ १८ ॥

लगेपरस्परभाषनऐसो । देखहुसखाशैलयहकैसो ॥ मनहुँमहाअजगरमधिकानन । देखीपरैदरीजनुआनन ॥ मानहुँहमरेलीलनहेतू । बगरायोमुखव्यालसचेतू ॥ १९ ॥ कोउकहसत्यकहोतुमभाई । मोहूकहँअसपरैजनाई ॥ गेरुअंगलखिपरैदराजै । जनुसंध्याराविकरघनभ्राजै ॥ मानोंओंठउपरकीसोई । तेहिंछायाअधरहुअधजोई ॥ २० ॥ उभैदरीदुहुँओरसुहावै । ओंठप्रांततेईछबिछावै ॥ तुंगशृंगजेमधिलखिपरहीं । तेइजनुडाढमहाभयभरहीं ॥ २१ ॥

दोहा–जोमारगयहलखिपरै, सोमनुरसनाजासु ॥ दरीकेरतमलखिपरै, सोईमुखतमतासु ॥ २२ ॥

दावदहितवनमारुतआवै । सोअजगरश्वासहिसमभावै॥दहनदह्योबहुजीवनकाँहीं।तेहिंउरुगंधअहैयहिमाँहीं ॥२३॥ सखाकह्योकोउविहँसितहाँहीं । जोहमजैहैंयहिपथमाँहीं ॥ तोयहपरबतअजगररूपा । हमकोगहिडरिहैमुखकूपा ॥ तबकोउकहकसमृषावतावो । वृथाशैलकोसर्पबनावो ॥ जोअजगरहूह्वैहैभाई । तोबकहीसमहनहिंकन्हाई ॥ तासुवचनसुनिसखासुखारी । हँसतभयेसबदैदैतारी॥चलेअघासुरमुखकीओरा । हरिकोमुखनिरखतसबछोरा ॥२४॥ सुनिकैसखनपरस्परबानी । नँदनंदनमनमेंअनुमानी ॥

दोहा–निरखिअघासुरकोसखा, करिकैमृषाविचार ॥ प्रविशनचाहतवदनमें, रोकबउचितहमार ॥ २५ ॥

असविचारिजबलोंयदुराई । रोकहिंसखनदौरिनियराई ॥ तबलोंबालकवत्सनरेशा । कियेअघासुरवदनप्रवेशा ॥ बंदकियोनहिंवदनसुरारी।परखिरह्योआगमनमुरारी॥२६॥सखनअघासुरउदरविलोकी।प्रीतिविवशह्वैगेहरिशोकी ॥ पुनिअसमनमहँकृष्णविचारे । ग्वालबालहैंदासहमारे ॥ हमरेकरतेयेसबछूटी । अहिजठरानलजरिहैंजूटी ॥ २७॥ धौंइनकीअभागअबआई । कहाउचितकरिबोयाहिठाँई ॥

दोहा–सखाबँचैंअजगरमरे, येदोऊइकसाथ ॥ होयकौनविधियहिसमै, इनकेहमहींनाथ ॥
अबमेरेप्रविशेबिना, अजगरआननमाँहिं ॥ ग्वालबालबचिहैंनहीं, यहशठमरिहैनाँहिं ॥

असविचारिप्रविशेतेहिंमुखमें।दुखीदयालदासकेदुखमें॥२८॥प्रविशेलखिअहिवदनगोविंदै । रहेजेमेघओटसुरवृंदै॥ तेसभीतकियहाहाकारा । हरिद्रोहीभेसुखितअसारा॥कंसहुँखबरिपाइसुखमान्यो।राक्षसगणजैवचनबखान्यो ॥२९॥ सुरविलापरिपुविजयबखाना । दोऊशोरसुनतभगवाना॥ जरतजोहिजठरानलमाँहीं । बछरनग्वालनबालनकाँहीं ॥ तहँअघासुरकेगलकूपा । दियोबढ़ायकृष्णनिजरूपा३०॥रुकीअघासुरकीतबश्वासू । निकसेनैनबहतबहुआँसू ॥ तरफरानलाग्योचहुँओरा । लह्योअघासुरकसमलघोरा ॥

दोहा–रुकीश्वाससबमार्गकी, तबफूट्योब्रहमंड। ताहीमारगह्वैकढ्यो, अजगरजीवअखंड ॥ ३१ ॥
जबमरिगयोअघासुरभारी। तबहिंजियावनदीठिनिहारी ॥ बालकवत्सजियायमुरारी। ताकेमुखतेतुरतनिकारी ॥
आपहुनिकसेताकेमुखते।अतिशयसुखीसखनकेसुखते॥अतिअदभुतअहिजीवप्रकाशी। भयेदशहुदिशितेजहिराशी
निकस्योताकेतनुतेतबहीं।विस्मयभरतसुरनउरसबहीं।कछुक्षणनभमेंपेखिकृष्णकहँ।निकस्योहरिलखिप्रविश्योतिनमहँ॥
देवसबैअतिआनँदपाये। हरिपैअमितसुमनझरिलाये ॥ नाचनलगींअप्सरानाना। करतभयेगंधर्वहुगाना ॥

दोहा–चारणदीन्हेंदुंदुभी, मुनिगणअस्तुतिकीन। जैहरिजैहरिकरतभे, हरिपारषदप्रवीन ॥ ३४ ॥
मंगलशोरसुनतअतिभारी। औरहुबाजनकीझनकारी॥ब्रह्मलोकतेब्रह्माआयो। देखिचरितअतिविस्मयपायो॥३५॥
चर्मअघासुरकोमहराजा। वृंदावनमहँरह्योदराजा ॥ भोसुखायकंदरासमाना। बहुतकाललगिनाहिंनशाना ॥
केलिकंदरागोपनकेरी। होतभईअहिदेहबडेरी ॥ ३६ ॥ यहचरित्रबालनकेसाथा। कियकौमारवैसमहँनाथा ॥
पैअहितेआपनोबचाउब। दुष्टअघासुरकेरनशाउब ॥ यहपौगंडवैसमहँआई। व्रजमहँबालनदियेसुनाई ॥ ३७ ॥

दोहा–नहिंअचरजकछुकृष्णको,कृपासिंधुजगदीश। जेहिंपरसतअघअनघह्वै,लहगतिअसतअदीश॥३८॥
जासुरूपध्यावतउरमाँहीं।पतितहुद्रुतवैकुंठहिंजाँहीं ॥ सोप्रभुअहिउरगयेप्रत्यच्छा।काअचरजगतिलहीजोस्वच्छा॥
प्रभुसतचितआनँदघनरासी। अहजासुमायानितदासी ॥ ३९ ॥

श्रीसूत उवाच।

यहिविधिशुकमुखतेद्विजराई। यादवदेवदत्तनृपराई ॥ सुनिकैकृष्णचरित्रसुहावन। मोहिगयोनृपकोमनपावन ॥
पूछ्योव्यासपुत्रयहपुनिकै। कछुसंबंधलगतनहिंगुनिकै ॥ ४० ॥

राजोवाच।

पंचवर्षकेजबजगपालक। मारिअघासुररक्ष्योबालक ॥ बालकवर्षरोजमहँआये। हननअघासुरसबनसुनाये॥४१॥

दोहा–बालकइतनेकाललौं, कहाँरहेमुनिराय। यहअचरजलागतहमें, सोसबदेहुसुनाय ॥
याहूमेंकछुहोयगो, हरिलीलाविस्तार। अबनहिंगोबहुकरिकृपा, मोतेकरहुविचार ॥ ४२ ॥
क्षात्रनमेहमनीचहैं, तदपिधन्यहैंनाथ। क्षणक्षणपीवहिंआपसों, कृष्णकथामुदपाथ ॥ ४३ ॥

श्रीसूत उवाच।

सवैया–पूँछतभेअसजोरिकैहाथतहाँकुरुनाथजबैमुनिनाथै। प्रेमवसैंरहीभूलीशुकैंजोसोऊसुधिआइसुविस्तरसाथै ॥
एकमुहूरतलोंरघुराजरह्योमगनैसुखकेनिधिपाथै। फेरिसम्हारिकैकृष्णकेदाससोलागेकहेमुनिकृष्णकीगाथै॥४४॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे द्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–भलोप्रश्नकीन्ह्योंनृपति, महाभागकुरुराज। सबभागवतनमेंअहौ, सत्यसत्यशिरताज ॥
नवनवकथासुननहरिकेरी। क्षणक्षणबढ़ैभूपरुचितेरी ॥ १ ॥ जेजनअहैंसारकेग्राही। तिनकोयहीसुभावसदाही ॥
कृष्णकथाक्षणक्षणमेंसुनते। तदपिताहिनवनवनितगुनते ॥ वाणीश्रवणचित्तहरिमाँहीं। लगेरहतछूटतकहुँनाँहीं॥
जिमिकामीकामिनकीबाता। सुनतरहैनहिंकबहुँअघाता॥ तसहिंयदुपतिकथासदाहीं।सुनतसंतनहिंकबहुँअघाहीं २
अबमैंगुपतहुचरितभाषिहौं। तुमसोंकछुनछिपायराखिहौं॥सुमतिशिष्यभोगुरूसुजाना।वस्तुगोपहूँकरैंबखाना॥३॥

दोहा–जबहिंअघासुरवदनते, निकसेबछरागवाल ॥ तबातिनसोंविहँसततहाँ, बोलतभयेगोपाल ॥

चलहुयमुनकेपुलिनमझारी । तहँअतिशीतलबहैबयारी॥ ग्वालबालसुनिहरिकीबानी।निजनिजबछरालैसुखमानी॥
यमुनापुलिनगयेचलिआसू।तहँअतिशयसबलहेहुलासू॥सकलसखनअसवचनसुनाई।बोलतभेतहँकुँवरकन्हाई॥४॥
लखौसखौयमुनाकोतीरा । बहतसदाजहँत्रिविधसमीरा ॥ खेलनलायककोमलबालू।अतिहिस्वच्छमनुरतनरसालू॥
सरसमलसहिंयमुनकेसोता । जिनहिंनिरखिमुदहोतउदोता॥विकसेवारिजचारिप्रकारा।तिनमेंभ्रमरकरहिंगुंजारा ॥

दोहा–कालिंदीकेकूलमें, काननकुलकमनीय ॥ केकीकीरहुकोकिला, कलरवकरहिंसुकीय ॥

नवपल्लवकुसमिततरुसोहैं । कोअसजोलखिकैनहिंमोहैं॥अतिशीतलछायासुखदाई । झरेसुमनमनुसेजबिछाई ॥५॥
असमेरेमनआवतभाई । लैहैमोदइतसबमिलिखाई ॥ दिनदुपहरतेअधिकहुँआयो । ग्वालनबालनक्षुधासतायो ॥
तातेखाययमुनतटमाँहीं । पुनिखेलहिंबहुखेलनकाँहीं॥बछरहुकरहिंयमुनजलपाना।फेरिचरहिंकोमलतृणनाना॥६॥
सुनिकैकाँन्हकुँवरकीबानी । बोलेसखासबैसुखमानी ॥ भलोवचनयहकाँन्हसुनायो । हमहूँकोअतिक्षुधासतायो ॥

दोहा–असकहिकैबालकसबै, निजनिजबछरनआनि ॥ पानकरायोयमुनजल, अतिप्यासेतिनजानि ॥

पुनितहँछायातृणहुँनवीने । तहाँराखिबछरनसुखभीने ॥ आयेसकलरहेजहँश्यामा । बैठेहरिहिंघेरितेहिठामा ॥
खोलिबालकननिजनिजसींके । ऐंचेअन्नमधुरअतिनीके ॥७॥ हरिकेअतिसमीपसबबैठे । अनुपमआनँदअंबुधिपैठे॥
कियेसखामंडलीअनेका।निरखहिंसबयदुपतिमुखएका।जिमिविकसेसरसिजरविदेखी।तिमिहरिमुखलखिसुखितविशेखी
कमलकर्णिकाजिमिमधिराजैं।चहुँकितअमलदलनगणभ्राजैं।तिमिमधिमाधवबालनचहुँकित।बैठेवृंदावनमहँपुलकित।

दोहा–कोउकदलीकोउकुसुमदल, कोउपुरइनिकेपात ॥ कोउकोमलदलदोनरचि, कोउबहुतृणलैतात ॥

नारिकेलफलकोकोउफोरी। कोउकदलीबोकलाबहुजोरी॥यहिविधितेबहुभाजनकरिकै।ऐंचिसीकतेभोजनधरिकै ॥
सीकहिंमहँकोउसखातहाँहीं । खानलगेमाधवसँगमाँहीं॥९॥निजनिजयकएकनदरशावैं। अपनेनमहँबहुस्वादबतावैं॥
कोउकहहैतेरोअतिसीठो । तेरेतेमेरोअतिमीठो ॥ कोउकहमधुरमोहिंननहिंप्यारो । खानअमिलमनरहतहमारो ॥
कोउकहतीततोरअतिभोजन । ऐसहिसखाखातप्रतिरोजन ॥ लेहिंखायइकएकदेखाई।करपसारिसोरहैलजाई ॥

दोहा–कोउकाहूकोबरवसे, भोजनलेहिंछोंडाय ॥ अवलमानिताकोसखा, सिगरेहँसैंठठाय ॥

यकएकनमुखकौरहिडारैं । बडोस्वादअसवचनउचारैं ॥ कोहुकोहरिनिजहाथनदेहीं । बरवससखाखैंचिकोउलेहीं॥
खातखातकोउधूंईमचावैं । व्रजवल्लभपरिबीचबचावैं ॥ कोउकाहूपैमाखनडारी । जातपरायदूरिदैतारी ॥
कोहुकोदधिकोउलेतचोराई । पूछेबोलहिंबातबनाई ॥ कोहुकोहुकेमुखमाखनमेलैं । कोउकोहुकहँआगूकहँझेलैं ॥
कोउकहमैंतोरउबहुखायो । तवहूँमैंनाहिंआजुअवायो ॥ सोकहतैंघरकोकंगाला । कसनखाइलहिबहुयहिकाला ॥

दोहा–यहिविधिभोजनकरततहँ, बालनसहितगोपाल ॥ विविधिभाँतिआनँदभरत, लीलारचतरसाल ॥ १० ॥

सं०–कटिकेपटमेंकसीवंसीलसीदुपटीलपटीलकुटीविलसै।तिमिकाछनीवीचाविषाणकसेशिरमोरपखानिकोमौरवसै॥
रघुराजविराजतवामकरैफलगावनमेंनहिंकौरखसै । असमाधुरीमूरतिमाधवकीकहुकाकोलखेनाहियोहुलसै ॥
बैठेसखातुलसीवनमेंचहुँओरतेघेरिकैनंदकिशोरै । खायखवायहँसायहँसैअतिआनँदमाचिरह्योतेहिठौरै ॥
श्रीरघुराजलखैंसबदेवकहैंजोगहैमखभागकरोरै । ग्वालनबालनकेकरतेसोगोपालछोड़ावतमाखनकौरै ॥ ११ ॥

दोहा–हेकुरुपतियहिभाँतितहँ, करतसुभोजनकाँहिं ॥ तृणलोभीबछराचरत, गयेदूरिवनमाँहिं ॥ १२ ॥

बछरननिकटनबालविलोकी। भोजनत्यागिभयेअतिशोकी॥शंकितसखननिहारिमुरारी।तिनसोंमंजुलगिराउचारी॥
बैठिमित्रभोजनतुमकरहू । बछरनकोसंदेहनधरहू ॥ मैंहीलैलकुटीकरदौरी । लैहौंबछरनआशुबहोरी ॥ १३ ॥
असकहिकौरलिहेकरमाँहीं।इककरलकुटीलसीतहाँहीं॥बछरनहेरनहितनँदलाला । चलेतहाँतेअतिहिंउताला॥१४॥
उतैअघासुरकोवधदेखी । मनमेंकिंचितकौतुकलेखी ॥ औरहुलखनकृष्णकीलीला । विधिव्रजआयोहुतोसुशीला॥

दोहा–बछरनऔश्रीकृष्णको, अंतरलखिकरतार ॥ बछरनहरिलैगोतुरत, अजआपनेअगार ॥

बछरनढूँढनअतिअतुराई । गयेदूरिकढ़िजबहिंकन्हाई ॥ तबपुनिआइइतैंमुखचारी । बालनहूँलैगयोसिधारी ॥१५॥
उतैकृष्णबछरननहिंपाये । लौटिआशुताहीथलआये ॥ सखउनकोनहितहाँनिहारे। मित्रमित्रकहिऊँचपुकारे॥१६॥
पुनिखोज्योतिनको बहुँओरा॥मिलेनबछराअरुव्रजछोरा॥विधिकोकर्मसकलप्रभुजान्यो।तबअपनेमनअसअनुमान्यो
जोहमघरअकेलअबजैहैं । ज्वाबकौनव्रजवासिनदेहैं ॥ जबपुँछिहैंहमसेव्रजपालक । कहँछोरेबछराअरुबालक॥१८॥

दोहा-बनिहिनऊतरुदेततब, तातेअसअनयोग । मैंहींबछराबालह्वै, जाउँजहाँव्रजलोग ॥
तिनमातनमुददेनहित, असविचारिव्रजचंद । आपहिंतहँह्वैजातभे, बछराबालकवृंद ॥

कवित्त-जैसेजोनरंगवच्छजैसोजोनरूपबाल, जैसोजासुपदपानिजैसीजासुचालहै ॥
जैसोजासुवेणुओविषाणदीनसींकछरी, जैसोजासुभूषणऔवसनविशालहै ॥
रघुराजजैसोजासुशीलगुणबैननैन, जैसीजासुवैसऔविहारभौंहभालहै ॥
तैसेरूपतैसेरँगतैसीरुचितैसीरति, तैसीमतितैसीगतिह्वैगयोगोपालहै ॥

दोहा-निजरूपीबछरनसखन, संगखेलिकछुकाल । बहुरतभेव्रजगाउँको, संध्यासमैगोपाल ॥ १९ ॥

बालनबछरनसहितरमेशा॥नितप्रतिसमव्रजकियोप्रवेशा॥जिनकेजौनबच्छअसबालक॥तिनतिनघरलैत्रिभुवनपालक
सबकोयथायोगपहुँचाये । निजबछरनयुतनिजगृहआये२१बालकसबनिजनिजगृहआई। द्वारहिंतेदियवेणुबजाई ॥
वेणुशोरसुनितिनकीमाता । धायउठायलायलियगाता॥सुधासरिसपैपानकरायो।बहुविधिभोजनतिनहिंजेमायो२२
कान्हरआपआपनेद्वारे । वेणुटेरिनिजमातुपुकारे ॥ सुनतवेणुयशुमतिउठिधाई । लियोलालकहँअंकउठाई ॥

दोहा-गैभीतरलैलालको, चौकीपरबैठाय । लगीचरणचापनजननि, जेहिंपीरामिटिजाय ॥

पुनिउबटनसबअंगलगायो।सुरभिसलिललालहिनहवायो॥ अलंकारअंगनिपहिरायो । केसरिचंदनभाललगायो ॥
शिरटोपीझंगुलिपहिराई । मिश्रीमाखनसुतहिंखवाई ॥ पुनिपूँछनलागीतहँमाता । खेल्योखेलआजुकाताता ॥
काँन्हकह्योहमबच्छचरायो । वृंदावनलखिअतिसुखपायो ॥ पुनिपलनापरदियपौढाई । कथाकहनलागीसुखदाई ॥
देनलगेहरिहुलसिहुँकारी । तबयशुमतियहकथाउचारी ॥ रहेएकदशरथनरनाहू । ललातासुभेतीनिविवाहू ॥
इकद्वैद्वैकेइकइकएकै । रानिनकेसुतभेसविवेकै ॥

दोहा-जनकनृपतिइककोउरहे, रहीसुतातेहिंचारि । तिनसोंचारिहुँकुँवरके, भयेविवाहविचारि ॥

रामज्येष्ठपुनिभरतकुमारा । पुनिलछिमनरिपुदवनउदारा ॥ देनलगेरामहिंनृपराजू । संमतकरिसबप्रजनसमाजू ॥
तबकेकईभरतमहतारी । राजासोंअसगिराउचारी ॥ देनकहेजेद्वैवरदाना । तेअबदेहुतुरतमतिमाना ॥
भरतहिंराजरामकहँकानन । होइहिकंतबातअबआनन ॥ दशरथपरेधर्मकीफाँसी । दियोरामकहँवनहिंनिकासी॥
रघुवरकोलछिमनलघुभाई । रामनारिजानकीसुहाई ॥ येदोउगयेरामसँगलाला । चित्रकूटवनबसेविशाला ॥

दोहा-तिनहिंलेवावनभरतगे, तबहुँनआयेधाम । गयेदंडकारण्यको, सीतालछिमनराम ॥

पंचवटीमहँकुटीबनाई । बसेजानकीयुतदोउभाई ॥ तहँलंकापतिआयलोभाना । हरिसीताकहँतुरतपराना ॥
इतनाकहतयशोमतिकेरे । चौंकितहाँकान्हरअसटेरे ॥ लछिमनधनुषमोरद्रुतदेहू । तुमहुँशरासननिजगहिलेहू ॥
काटहुदशशिरदशशिरकेरे । देखहुबाणवृंदअबमेरे ॥ सुनिकैमातुललाकीबानी । डरेसपनमहँसुतकहँजानी ॥
कह्योललाइतहैकोउनाँहीं । मैंबैठीतुवनिकटहिमाँहीं ॥ असकहिराईलोनउतारी । हरिअँगतारंधजाइकजारी ॥

दोहा-ठोंकिठोंकिपुनिकृष्णको, दीन्ह्योमातुसोवाय । लगीविचारनपुनिमनहिं, कासुतडव्योबराय ॥२३॥

गौवेंसुनिबछरनगणशोरैं । दौरीकरिहुंकारअथोरैं॥निजनिजबछरनलगींपियावन । चाटहिंअंगप्रेमउपजावन ॥२४॥
बछराबालभयेहरिजबते । अधिकप्रीतिबाढीव्रजतबते॥जानीनहिंकोउहरिकीमाया । बिनाकपटहरिप्रेमबढाया २५
यहिविधिबछराबालकह्वैकै । दीन्ह्योंसुखलीलाबहुकैकै२६नितहिंचरायबाछरेलावैं।नितहिंबालसँगखेलमचावैं॥२७॥
बीतेवर्षदिवसयहिभाँती। बाकीरहीपाँचछवराती ॥ एकसमयबलरामहिंसाथा । बच्छचरावनगेयदुनाथा ॥ २८ ॥

दोहा–औरसयानहुँगोपसब, लीन्हेंलाखनगाय । गोवर्धनकेशिखरमें, तिनकोरहेचराय ॥ २९ ॥
शैलशिखरतेअतिशयदूरी । निरखेउनिजनिजबछरनभूरी ॥ गऊगोवरधनतेंसबधाई । राहुकुराहनकछुचितलाई ॥
कूँदतकानहुँपुच्छउठाई । करतशोरहुंकारहुआई॥३०॥सबबछरनकहँचाटनलागीं । स्रवतपयोधरअतिअनुरागीं ॥
लगींकरावनतेपयपाना । बछ्योदूधकछुधरणिअडाना ॥३१॥ रोकनलगेगोपवरजोरी । रुकीनधेनुप्रेमरसबोरी ॥
तवबाँधनलागेबहुनोई । तबहुँनरुकीबाछरनजोई ॥ हारिलजायरहेसबगोपा । कियेबालकनपैअतिकोपा ॥

दोहा–जसतसकैबहुकुपथते, उतरिगोवर्धनशैल । आयेबालकनकोनिकट, ताड़नहेतुउतैल ॥ ३२ ॥
निरखतबालकआँखिनमाँहीं।कोपरह्योतनकौतनुनाँहीं॥शीशसूंघिलियअंकउठाई । चूमतमुखदृगआँसुबहाई॥३३॥
गौवेंनौबछरनकहँत्यागी।भईप्रथमबछरनअनुरागी॥गोपहुसुतनपरसिसुखपाये । जसतसकैपुनिभवनसिधाये॥३४॥
लखिकैप्रीतिअलौकिकरामा।मनमेंकियविचारमतिधामा॥जेबछरात्यागेपयपाना । धेनुप्रेमतिनपैअधिकाना॥३५॥
जसबालनपैपूरुबप्रीती । तेहुँतेअधिकभईरतिरीती ॥ कहाभयोयहजानिनजातो।यहअतिअचरजमोहिंदरशातो ॥

दोहा–व्रजमेंबछरनबालपै, प्रेमरह्योअसनाँहिं । बिनाअवधिजसप्रेमअब, यहसंशयमनमाँहिं ॥ ३६ ॥
कहँतेंयहमायाव्रजआई । धौंसुरमानिधौंअसुरबनाई ॥ मोहिनमोइहिदूजीमाया । यहकीन्हीविशेषियदुराया ॥
मोप्रभुकोकछुअचरजनाहीं । ईशहुकेहैंईशसदाहीं॥३७॥असविचारकरिकैबलरामा। दिव्यदृष्टिकरिकैतेहिंठामा ॥
बछरनअरुबालकनअनूपा।जानिलियोसबहैंहरिरूपा॥३८॥पुनिइकांतमहँहरिपहँआई । रोहिणिनंदनगिरासुनाई ॥
प्रथमहिंव्रजबछराअरुबालक । सुरऋषिअंशरहेजगपालक ॥ तेयहिकालनपरैंनिहारे । जानिपरैंसबरूपतिहारे ॥
यहलीलाकीन्हीप्रभुकैसी । सोकहियेमोसोंअबजैसी ॥

दोहा–तबबलसोंहरिकहतभे, बछराबालनकाँहिं ॥ हरिलैगोकरतारसब, अपनेधामहिंमाँहिं ॥
मैंव्रजवासिनखेदविचारी । लियोबालबछरनवपुधारी ॥ वीत्योसंवतइकबलराई । तुमहूँकोनहिंपरचोजनाई ॥
असकहिवत्सचरावनलागे।रामहुँसुनिअतिशयसुखपागे॥उतविरंचिकोवीत्योइकछिन।यहाँव्यतीतभयोसुवरषादिन ॥
धरिनिजधामबालबछरनको।आयोपुनिविधिहरिनिरखनको।हरिकोबछरनबालनसंगा।तैसहिंखेलतलख्योअभंगा४०
करनलग्योतबमनहिंविचारा । काहभयोआश्चर्यअपारा ॥ मैंहरिबछरनबालनकाँहीं । राख्योमायासेजहिंमाँहीं ॥

दोहा–तेअबलोंनाहिंउठतभे, येकि–॥ ४१ ॥–ततेइतआय ॥ खेलतहैंहरिसंगमें, कछुनाहिंपरैजनाय ॥
पूरुबरहेजौनजसजेई । तैसहिवत्सबालजनतेई ॥ ४२ ॥ वैहैसाँचकियेहैंसाँचे । जानिपरहिनाहिंसाँचअसाँचे ॥
बहुतवारलगिअसकरतारा।खड़ोगगनमनकरतविचारा॥४३॥आयोहरिकेमोहनहेतू।मोहिआपहींभयोअचेतू ॥४४॥
जिमिनिशितमनिहारबढ़ावै । नहिंरविढिगजींगनदुतिपावै ॥ ऊँचसमीपनीचकीमाया। सकैनकरिप्रभावनरराया॥
परैआपनेऊपरआई । देतसबैनिजज्ञाननशाई ॥ ४५ ॥ देखतहींतुरतैविधिकेरे । बछराबालकसबैघनेरे ॥

दोहा–वृंदावनकेमध्यमें, करतप्रकाशअनूप ॥ देखिपरेकरतारको, सबनारायणरूप ॥

छंदगीतिका–तनश्यामजलदसमानसुंदरपीतपटअतिराजहीं।४६।भुजचारिअंबुजशंखचक्रगदादिकरमहँभ्राजहीं ॥
शिरकीटकुंडलकानहीरनहारउरवनमालहै ॥ ४७ ॥ कटिसूत्रकंकणकटकअंगदअंगुलीयविशालहै ॥
श्रीवत्सअरुकौस्तुभलसतपगमणिननूपुरसोहहीं४८निजजनसमर्पिततुलसिमालसुशीशपगलोंरमिरहीं ४९
मंजुलमयंकमरीचिसमसुसक्यानकीआभाभली।अतिचारुचंचलचखनचितवनिमुनिनकीआनँदथली॥५०॥
विधिआदितृणपरयंतलोंधरिरूपजगतचराचरैं । तेनाचिगायअनेकअस्तुतिपृथकप्रभुकोसबकरैं ॥ ५१ ॥
अणिमादिमहिमाअरुअजादिकशक्तितत्त्वहुचौबिसों।५२।गुणकालआदिकरूपधारीभजैप्रभुकोचौदिसौं५३
आनंदसत्यअनंतज्ञानसदैवमूरतियकरसै । वेदांतज्ञातनहूंहियेनाहिंसकलतिनमहिमाबसै ॥ ५४ ॥
जाकेप्रकाशहिविश्वयहपरकाशहोतसदैवहीं । तेहिंनाथकोबहुरूपदेख्योचारिवदनतदैवहीं ॥ ५५ ॥

दोहा–यहअचरजलखिअजतहां, करिकैविविधविचार ॥ रह्योअचलह्वैमौनतहँ, पटपूतरीअकार ॥ ५६ ॥
हरिमहिमाअतर्कसुखराशी । जोसबमायाकीहिनाशी ॥ नेतिनेतिजेहिवेदबखानें । मुनिजेहिंप्रकृतहुपरअनुमानै ॥
कछुककाललगिलखिसुखचारी।पुनिनकछुयानैनहुँनिहारी।असविधिकीहरिदशाविलोकी।लियमायाकनातनिजरोकी
तबविधिसावधानह्वैगयऊ।जसततसकैहगखोलतभयऊ।निजतेसहितविश्वकहँदेखी।मृतकसरिसउठिअचरजलेखी५८
चकितचहूँदिशिलखतदिशानन।जनजीवनबहुतुलसीकानन५९भूपतिजेहिंवृंदावनमाँहीं।वैरछोंडिनिजजंतुसदाँहीं॥
नरमृगसिंहसर्पखगजेते । मित्रसरिसविहरैंसँगतेते ॥ ६० ॥

दोहा–परब्रह्मनहिंअंतजेहिं, अद्वैबोधअगाध ॥ सोईनँदनंदनकरत, ब्रजमहँचरितअबाध ॥
पुनिसिगरेबछराअरुबालक।तैसहिलख्योब्रह्मपुरपालक॥लिहेकौरकरमहँनँदलालै । हेरतबछरनसखनउतालै॥६१॥
निरखिचतुरमुखतजिनिजहंसा।करतकृष्णकीविपुलप्रशंसा॥गिरयोकनकदंडहिंसमधरणी॥निंदनकरतआपनीकरणी
चारिहुमुकुटकोटिहरिचरणा।बारबारपरसतसुखभरणा॥पुलकिततनुढारतदृगआँसू।करिप्रणामपुनिसहितहुलासू ॥
पुनिपुनिउठिउठिकरतप्रणामा।निरखतनँदनंदनघनश्यामा।सुमिरिसुमिरिनिजमननिजकरनी। लखिलखिहरिमहिमासुखभरनी

दोहा–करिप्रणामबहुबारलगि, पुनिउठिमंदहिंमंद ॥ लखिमुकुंदभीजतदृगन, पावतपरमअनंद ॥
कंधरनेकुनवायकै, जोरिजलजयुगहाथ ॥ ह्वैविनीतगदगदगिरा, बोल्योवाणीनाथ ॥ ६४ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीम
हाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे त्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

ब्रह्मोवाच।

कवित्त–नवनीरदनीरजसोहतनैं, शिरमोरपखानकोमोरभलो ।
वरभूषणगुंजनकेपहिरे, वनफूलनकोवनमालगलो ॥
कटिमेंमुरलीलकुटीकरमें, यकपाणिमेंकौरकियेअमलो ।
मनमोहनकोमनमोहनरूप, निहारिगयोनहिंकौनछलो ॥

दोहा–कमलाकोधृतचिह्नउर, मृदुपदविचरहुँधाय । मैंशरणागतरावरे, परेउँआयशिरनाय ॥ १ ॥
छंद–मोपरकृपाकरियोगिदुर्लभरूपदीनदेखाय । जानैंनकोउमहिमातिहारीतौअचजनआय ॥ २ ॥
नहिंकछुप्रयासविज्ञानमेंकरिजेपुरुषचितचाय । सज्जनवदनतेसुनततुम्हरीकथानितमनलाय ॥
मनवचनकरमहुँतेकरतसेवनातिहारीनाथ । तेजीतितुमकोकरहिंनिजवशजगअजितयदुनाथ ॥ ३ ॥
जेमूढ़मंगलदायनीतुवचरणभक्तिविहाय । नितज्ञानअरुविज्ञानकेरविवादवदतबढ़ाय ॥
तेलहतनहिंतुमकोलहतकेवलकलेशहमेश । जिमिकूटिबदराधानकोनहिंलहततंदुललेश ॥ ४ ॥
योगीअनेकनयोगकरिनहिंलहेतुम्हरोज्ञान । सुनिकैकथातुवभक्तजनतुवनिकटकरहिंपयान ॥
नहिंतुमहिंजानतयोगकरिनहिंज्ञाननहिंविज्ञान । जाननतेईतुमकोअवशिजिनभक्तिरसकियपान॥ ५ ॥
चितअचितव्यापकब्रह्मकोज्ञानीयदापिलियजानि । पैभक्तिविनमाधुरीमूरतिसकतनहिंउरआनि ॥ ६ ॥
नभतारहिमकरधरनिरजकनयदापिजिनगनिलीन। नहिंतदपितेउबहुकालमहँतुवगुणनगणहिंप्रवीन॥७॥
कबहोइगीहरिकृपामोपरअसचहतमनमाँहिं । तनमनहुँतेतुमकोनवतजेजनकेदिनजाहिं ॥
तेपुरुषहैंसतिमुक्तिभागीतिनहिंनाहिंसंसार । सुनिसुनिकथानितहींमगनतुवप्रेममपारावार ॥ ८ ॥

प्रभुलखहुममममतिमंदताजोतुवसमीपाहिआय । देखनचह्योतुवविभौवैभवबालवत्सचोराय ॥
मायाविकेमायावितुममायाकरीतिनपाहिं । कहुँवाडवानलकेनिकटदीपतफुलिंगदेखाँहिं ॥ ९ ॥
मैंईशमानीहौंअज्ञानीविवशमायाअंधु । अपराधमेरोछमहुप्रभुअवआशुहींजगबंधु ॥
यहनाथकीसातिनाथताकरतोअनाथसनाथ । मेरेतुमाहिंहौनाथतातेमाथधरियेहाथ ॥ १० ॥
कहँएकमैंब्रह्मांडमधिजेहिंसप्तवीताकाय । कहँआपजाकेरोमरोमनिहैब्रह्मांडनिकाय ॥ ११ ॥
शिशुपदचलाउबउदरजननीगुनतनाहिंअपराध । तुवकुक्षमेंजगतेहिमहूँतातेक्षमहुँपतिसाध ॥ १२ ॥
जगप्रलैसागरशैननारायणसुनाभीकंज । तातेप्रगटविधिबातयहनाहिंमृषाहेदुखभंज ॥ १३ ॥
तुवसत्यनारायणजगतसाक्षीत्रिलोकअधीश । जलशायनारायणतिहारीमूर्तिहैयदुईश ॥ १४ ॥
उतपतिभयेजबहमकहातुवरूपदेखेनाँहिं । तबआपहींकरिकैकृपादरशनदियोमोहिंकाँहिं ॥ १५ ॥
अवतारयाहिनिजसुखदेखायोजननिकहँसंसार । ऐश्वर्यअपनोप्रगटकरिकियव्रजधराणिसंसार ॥ १६ ॥
जसकुक्षिमहँतिंहरेजगततसबाहिरहुदरशाय । केहिभाँतितेप्रभुरावरीमहिमासकैकोगाय ॥ १७ ॥
प्रथमाहिंरहेतुवएकपुनिजेतेसुबालकबच्छ । लेतेभयेसबतुमाहिंपुनिभुजचारिभेसबस्वच्छ ॥
मैंसकलतत्त्वनसहितातिनकोकियोअतिशयसेव । पुनिआपुहीकोलखतयकसन्मुखखडोयदुदेव॥ १८ ॥
जोरावरीपदवीनजानतातिनाहिंविविधप्रकार । तुमहींप्रकाशितहोहुकरिमायाविपुलविस्तार ॥
जिमिसृजनमेंमैंविष्णुपालनहरनमेंत्रिपुरारि । ज्ञानीगुनाहिंयेरूपतीनौअहैरूपमुरारि ॥ १९ ॥
निजदासपालनदुष्टघालनहेतुनाथअनूप । सुरनरऋषिनतिरजकसलिलचरधरहुविविधसरूप ॥ २० ॥
केहिंविधिकहाँकेहिकाजकबकितनेधरहुअवतार।भगवानव्यापकयोगपतिकोजानिचरितअपार ॥२१॥
यहअसतस्वप्नसमानदुखमयअहैविश्वमहान । तुवशक्तितेतुममेंत्रिविधलखिपरतानित्यसमान ॥ २२ ॥
परमात्मपुरुषपुरानसत्यअनादिआत्मप्रकास । अक्षरनिरंजननित्यसुखमयपूर्णरमानिवास ॥ २३ ॥
गुरुभानतेलहिज्ञानदृगअज्ञानतमकरिनास । तुमकोभजततेतरतयहभवसिंधुबिनाहिंप्रयास ॥ २४ ॥
चितअचितव्यापकब्रह्मजानतनसतयहसंसार । जिमिदाममेंअहिभोगकीभ्रमनसतकरताविचार ॥ २५॥
अज्ञानतेभवबंधमोक्षनज्ञानतेयहबात । सताचितअनंदसरूपतुम्हरोभजनभ्रमभजिजात ॥
जिमिभानुकेढिगरैनवासरकोरहतनाहिंभान । तिमिआपुकोप्रभुजानतैनाहिंरहतहैअज्ञान ॥ २६ ॥
परमातमैनहिंजानिदेहहिआतमाकोमानि । खोजतरहतआतमाहिंबाहेरअहैकुमतीखानि ॥ २७ ॥
जगमेंअनंतसुसंतजेतेजड़हुचेतनत्यागि । सबतेविलक्षणआपुकोगुनिहोतहैअनुरागि ॥
भ्रमजोभुजँगकोरज्जुमहँत्यागेबिनाप्रभुताहि । नहिंसत्यहोनिप्रतीतिजियतेपुरुषकोगुणमाहि ॥ २८ ॥
बिनतुवचरणपंकजकृपानहिंपरातितुवगतिजानि । चाहैअनेकनयोगजपतपकरैकोउश्रमठानि ॥ २९ ॥
अबनाथकरिकैकृपामोपरदेहुयहवरदान । यहजन्मतिरजकयोनिमहँजहँजन्महोयप्रमान ॥
तहँरावरेकेदासकोसतसंगमोकोंहोय । बडभागह्वैतुवचरणपंकजसेवहूँदुखखोय ॥ ३० ॥

स०अमरोअमरारिमुनीशमहीशकियेमखकोटिविभूतिघनी । अबलौंनहिंतोषैतुम्हेंयदुनाथतेईतुमआपतेप्रीतितनी॥
बछराशिशुह्वैजिनदूधपियोरघुराजसुभागनजाइभनी । धनिहैंधनिधेनुसबैव्रजकीधनिहैंधनिहैंव्रजकीरमनी ॥ ३ ॥

छंदचौबोला—अहोभाग्यहैअहोभाग्यहैव्रजवासिनकोनाथा । जिनकेपूरणब्रह्ममीतह्वैखेलहुएकहिसाथा ॥ ३२ ॥
व्रजवासिनकीभागकहाँलागिमोमुखजाइगनाई । पैहमहूँसबदेवधन्यहैंव्रजमंडलमहँआई ॥
प्रभुरावरोपदारविंदमकरंदअमीकरमूलै । बाराहिंबारापियतनैननतेकोहमकहँजगतूलै ॥ ३३ ॥
यकतौदुरलभमनुजजन्महीपुनिव्रजमंडलमाँहीं । पुनिदुरलभवृंदावनमेंअतिगोकुलगोपजहाँहीं ॥

जिनव्रजवासिनकेतुमजीवनतेइंहैंबड़भागी। तिनपदरजकेपरसहेतुमेंरहतसदाअनुरागी॥
देहुनाथअबमोहिंकृपाकरियहवृंदावनमाँहीं। लतागुलमतृणतरुह्वैपाऊँगोपनपदरजकाँहीं॥
जेमुकुंदपदरजकहँश्रुतिगणखोजतरहेसदाई। तेगोपालग्वालसंगखेलतरहतमीतकीनाई॥ ३४॥
कहादेहुगेव्रजवासिनकोयहबड़शोचहमारे। त्रिभुवनफलकेरूपआपहीचारिहुवेदउचारे॥
गरलदेनहितकपटरूपधरिव्रजपूतनासिधाई। सोऊसकलपापिनीपूरीजननीकीगतिपाई॥
येव्रजवासीतनुमनधनसबतुमहिंअरापिप्रभुदीन्हें। वाकीकौनवस्तुप्रभुमनमेंदेनविचारहिंकीन्हें॥ ३५॥
रागरोषमदलोभमोहसबतबहींलोंदुखदाई। यहसंसारकैदखानोसोतबलोंपरतदेखाई॥
महामोहकीजबरजँजीरैंतबहींलोंपगमाँहीं। जबलोंयदुपतिजीवजगतमेंहोतआपकोनाँहीं ॥ ३६॥
बिनुप्रपंचतुमयदपिनाथहोतदपिप्रपंचप्रपंचौ। लीलाललितदासहितकैकैधरणीमहँसुखसंचौ॥ ३७॥
जेअसकहैंतुम्हेंहमजानैंतेजानैमनमानैं । हमतौवचनतनुहुँअरुमनतेतुवप्रभावनहिंजानैं॥ ३८॥
तुमतौअहौनाथत्रिभुवनकेतुमतेकछुनछिपानो। आयसुदेहुकृपाकरिमोकहँनिजपुरकरहुँपयानो॥
क्षमहुनाथअबमोरकृपाकरियहसिगरोअपराधे। करहुदयामोपरयदुपतिअसतवमायानहिंबाधै॥ ३९॥

कवित्त-यदुकुलकमलदिवाकरक्षमाकेखानि, देवद्विजगौवेंसाधुउदधिमयंकजै।
परमप्रचंडजोपखंडसोअखंडतरु, दोरदंडपरशुविखंडननिशंकजै॥
क्षितिमेंक्षपाचरणक्षयकेकरनहार,भूमिकेहरनभारखलगणबाकजै।
कोटिनकलपमेरीकोटिनप्रणामतुम्हें, भानुआदिदेवनतेवंदअकलंकजै॥ ४०॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यहिविधिहरिकीकरितहाँ, बहुअस्तुतिकरतार। दैपरदक्षिणकृष्णको, चारिचारित्रैबार॥
निजपुरगमनहेतुमनदीन्ह्यो।पुनिपुनिप्रभुकोवंदनकीन्ह्यो॥४१॥माँगिसीखहरिहूविधिपाँहीं।लैनिजबालकबछरनकाँहीं॥
आयेजहाँरहेपहिलेहीं। भोजनकरतसखानिसनेहीं॥ तेहाँपुलिनमहँबछरनल्याई। बालनहूँकहँदियबैठाई॥ ४२॥
यहचरित्रबालकनहिंजाने। बैठेतहँअपनेकहँमाने॥ हरिबिनबीतिगयोइकशाला। पैक्षणार्धजानैसबबाला॥ ४३॥
हरिमायामोहितसंसारी। कहाकहानहिंदेतबिसारी॥ ४४॥ बछरनयुतहरिआवतदेखी। बोलेसखामहामुदलेखी॥
दोहा-आवहुआवहुकान्हँतुम, बैठहुमधिमेंआय। अतिआतुरलौटतभये। बछरनकोलौटाय॥
तुमबिनहमयककौरनखाये। परखेरहेसनेहलगाये॥४५॥ हरिकहँभलोकियोनहिंखायो।यहितेमैंजलदीतहँआयो॥
असकहिहरितहँभोजनकरिकै। सखनसहितउरआनँदभरिकै॥उठितहँतेयमुनैद्रुतजाई।सखनसहितकरधोयकन्हाई॥
बछरनकोआगूकरिलीन्हें। वनतेगवँनभवनकहँकीन्हें॥ बालकवत्सलसतचहुँओरा। मधिमहँराजतनंदकिशोरा॥
सूखोचर्मअघासुरकेरो। सखनदेखायकृष्णअसटेरो॥ अतिआशुहियहगयोसुखाई। पैरैनकारणकछूजनाई॥
दोहा-सुखदुखसबैकौतुकगुनत, बछरनहाँकतमंद। आवतभेव्रजगाँउको, संगसंगनँदनंद॥ ४६॥

सवैया-बरहीपखकोवनफूलनकोशिरमौरमहाछबिछावतुहैं।
बहुधातुनरंगतेरंगितअंगहियोवनमालसुहावतुहैं॥
लकुटीकरमेंकटिमेंकसेशृंगमनोहरवेणुबजावतुहैं।
कहिनामबोलावतहैंबछरानँदनंदनयोंव्रजआवतुहैं॥

दोहा-गावहिंमाधुरस्वरसखा, हरिचरित्रसुखखानि। जहँतहँठाढ़ीं देखतीं, व्रजवनितासुखमानि॥ ४७॥
यहिविधिनिजनिवेसहरिआये। बालहुनिजनिजभवनसिधाये॥निजनिजमातुनपहँसबजाई।दियेसबैअसवचनसुनाई॥

नंदलालइकअजगरमारचो। आजुमीचतेहमहिंउवारचो॥ हरिकोनिरखितहाँनँदरानी।करगहिगईभवनसुखसानी॥
चरणचापिमज्जनकरवायो। दैभोजनपुनिसेजसोवायो॥ ४८॥

सूत उवाच।

हरिचरित्रयहसुनिकुरुराई। शुकाचार्यसोंगिरासुनाई॥

राजोवाच।

निजसुतहूपैअसअतिप्रीती। कबहुँनहोतजगतयहरीती॥ सोयशुदासुतपैव्रजवासी। कसअसप्रीतिकरीसुखरासी॥
यहसंशयमुनिदेहुमिटाई। तबशुकदेवकह्योमुसक्याई॥ ४९॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–प्राणिनकोप्रियआतमा, तेहिंहितप्रियसबकोय।जसप्रियहोतोआतमा, तस कोउनहिंप्रियहोय॥५०॥
जेदेहैआतमहाठिमानै। तिनहुँदेहुँमैंनेहमहानै५१देहात्मवादीजिमिपुरुषनको।अतिप्रियदेहनतिमिपुत्रनको॥५२॥
यदपिदेहजीरणह्वैजाती। तदपिनजीवनआशसिराती५३ तातेआतमाप्रियसबकाँहीं।भूपतिजगतचराचरमाँहीं५४॥
सबकेआतमहैंयदुराई॥ देहीसमदरशैंव्रजआई॥ तातेतिनमेंसबव्रजवासी। करीप्रीतिअतिशयसुखरासी॥५५॥
थावरजंगमहैंहरिरूपा। असज्ञानीजानहिंसुनुभूपा॥ ५६॥ जोभूपतिकारणजगकेरो। तेहुकारणहरिवेदनिबेरो॥
तिनतेभिन्नवस्तुजगमाँहीं। कहौभूपभाषौंकेहिकाँहीं॥ ५७॥

दोहा–जेमुरारिपदकमलकी, प्रीतिपोतरचिलीन। तेगोपदसमभवउदधि, उतरिगयेसुखभीन॥
जेहरिकेपदपंकजप्रेमी। तेपदपदमहँक्षणक्षणक्षेमी॥ होयअवशिवैकुंठविलासी। पुनिनहोयसंसारनिवासी॥५८॥
यहजोतुमपूछ्योकुरुराई। सोमैंतुमकोदियोसुनाई॥ कियेचरितहरिवैसकुमारे। व्रजमेंभोपौगंडप्रचारे॥ ५९॥
अघविनाशिहरिसखनसमेतू। भोजनकीन्ह्योमोदनिकेतू॥ पुनिभेबालकबछराआपू।विधिमोहनकियपरमप्रतापू॥
पुनिविरंचिजोअस्तुतिकीनी।हरिमायामिटायपुनिलीनी॥यहहरिचरितसुनैजोगावै।सोनरअखिलमनोरथपावै।६०॥
दोहा–यहिविधिनंदकुमारप्रभु, व्रजमहँविविधिप्रकार। करिलीलालोनीअमित, निशिदिनकरहिंविहार॥६१॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाबान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजासिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौदशमस्कंधेपूर्वार्द्धेचतुर्दशस्तरंगः॥ १४॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–भयेकृष्णषटवर्षके, तबयशुमतिनँदराय। गोपनसोंकरिसंमतै, दियगोपालबनाय॥
कह्योललातुमभयेसयाने। लैगौवनवनकरौपयाने॥ पैरामहिंसँगरह्योकन्हाई। कीन्ह्योनहिंअतिशयचपलाई॥
नंदवचनसुनिमुदितगोपाला।विहरनलगेसहितव्रजबाला॥निजचरणनवृंदावनधरणी॥करहिंत्रिलोकधन्यमुदभरणी १
एकसमयउठिकाँन्हप्रभाता। रामहिंकहचोउठहुहेताता॥ ताहीसमययशोमतिजागी। हरिहिंकलेऊदैसुखपागी॥
भूषणवसनमंजुपहिराये। धेनुचरावनहेतुपठाये॥ कढ़िबाहेरद्रुतरामकन्हाई। सखनबोलायोवेणुबजाई॥
दोहा–वेणुटेरसुनिकैसखा, लैलैनिजनिजधेनु। नंदद्वारआवतभये, छावतअंबररेनु॥
कृष्णहुँनिजसुरभिनकहँछोरी। करिलीन्हीआगूसबजोरी॥ वृंदावनगौवनसुखदाई। चलेचरावनधेनुकन्हाई॥
कियप्रवेशसुंदरवनमाँहीं॥२॥सीरीसुखदकदंबनछाँहीं॥तहँवसंतऋतुरहीसुहावनि।जोअतिशयआनँदउपजावनि॥
फबैफूलफूलेचहुँओरा। गुंजाहिंकुंजनिकुंजनिभौंरा॥ काननकलरवकरहिंविहंगा। विहरहिंजहँतहँसकुलकुरंगा॥

सज्जनमनसमनिर्मलनीरा। यमुनाकोसोहतगंभीरा॥ बहतसदाजहँत्रिविधिसमीरा। हरतसकलप्राणिनकीपीरा॥
निर्मलजलबहुतालतलाई। विकसितअरविंदनसमुदाई॥

दोहा-पवनपरसबहुरंगको, चहुँकितउडतपराग। नवकोमलतृणसोंभरी, हरीभूमिबड़भाग॥

ऐसोलखिवृंदावनकाँहीं। रामश्यामभोदितमनमाँहीं॥ तहँविहरनकोकरतविचारा। गौवनलगेचरावनचारा॥ ३॥
रहीएकतरुशीतलछाया। तहाँसखनयुतश्रीयदुराया॥बैठेनिरखहिंकाननशोभा। जेहिंलखिसिद्धमुनिनमनलोभा॥
नवकिशलयकोमलदलपूरे। फूलेफरेवृक्षअतिरूरे॥ नमितफूलफलकेअतिभारा। सायाकरहिंधरणिसंचारा॥
मनहुँपरसिवृंदावनधरणी। वृक्षसराहँहिंअपनीकरणी॥ ऐसेद्रुमननिरखियदुराई। अतिमोदितनेसुकमुसक्याई॥

दोहा-बोलतभेबलदेवसों, पंकजपाणिउठाइ। वृंदावनकेतरुनको, अतिविनीतदरशाय॥ ४॥

श्रीकृष्णचंद्र उवाच।

सुनहुदेववरहेबलरामा। वृंदावनतरुअतिमतिधामा॥ करशाखनसोंभरफलफूला। वंदहिंतुवपदपंकजमूला॥
वृंदावनतरुजन्महिंदाता॥तुमकोमानिनवहिंसुनुताता॥५॥ अखिललोकअघनाशनहारो॥सुयशरावरोमोकहँप्यारो॥
मत्तभँवरसोचहुँकितगावैं॥मोकहँमुनिगणसरिससुहावैं॥यदपिआपव्रजरहेलुकाई॥तदपिनतुमकहँसकतविहाई॥ ६॥
तुमकोनिरखिमहासुखपाई॥नाचहिंमोरचहूँकितभाई॥हरिणीगणनिरखहिंतुमकाँहीं॥छनछनतुवछबिमहँछकिजाँहीं॥

दोहा-व्रजवनितनसमधन्यहैं, पीवहिंप्रेमपियूष। तुम्हरेदरशनहेतुइत, तजीतृषाअरुभूष॥

तुमहिंआपनेवरमहँआये॥जानिसबैकोकिलसुखपाये॥ चहुँकितकरहिंमनोहरशोरा। उपजावहिंआनँदनहिंथोरा॥
अहैसंतकोयहैसुभाऊ। आयेअतिथिकरैंचितचाऊ॥ ७॥ धन्यधन्यवृंदावनधरणी। तुवपदपरसिभईमुदभरणी॥
धनिवृंदावनतृणलतिकाली। तुवरजपदपरसैंवनमाली॥ धनिवृंदावनतरुगणकुंजैं। तुवकरपरसिलहतसुखपुंजैं॥
धनिधनिगोवरधनगिरिराजू! जहँविहरहुयुतसखनसमाजू॥धनियमुनासरितासुखदाई॥जहँतुमनितमज्जहुबलिराई॥
धनिवृंदावनविहँगकुरंगा। करैंजोतुवदरशनयकसंगा॥

दोहा-धनिवृंदावनकीवधू, तुमहिंजेभुजभरिलेहिं। जेहिउरकोतरसतिरमा, तेहिउरमहँउरदेहिं॥ ८॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिवृंदावनकीशोभा॥वरणतयदुपतिअतिमनलोभा॥धेनुचरावततुलसीवनमें॥अतिमोदिततनुमनछनछनमें॥
कहुँगोवर्धनपैचढिजाँहीं। कहुँआवेंयमुनातटमाँहीं॥९॥ कहूँसखनसंयुतनँदलाला। मत्तमधुपधुनिसुनिदैताला॥
गावहिंमाधुरवेणुबजावैं। सकलसखनसुठिसुखसरसावैं॥रामसहितसबसखासराहैं॥पहिरावैंमालागलमाहैं॥ १०॥
कहँकलहंसनकीसुनिकूंकें। तैसहिंबोलतआपुअचूकें॥ कहूँशिखीगणनाचतदेषी। तैसहिंआपहुँनचतविशेषी॥
नीकननचतसखाजोकोई। दैतारीविहँसततेहिंजोई॥ ११॥

दोहा-चरतचरतवनमेंजबै, जाँहिंधेनुकढ़िदूरि। मेघसरिसनिजवाणिको, गोहरावतमुदपूरि॥

कारीकाजरधूसरधौरी। वेणुमुखीहंसिनिबलबोरी॥ सखनलगतवानीयहप्यारी। आपहुगौवनलेहिंपुकारी॥
हरिकीटेरसुनतसबगैयाँ। आवहिंदौरिकृष्णजेहिंठैयाँ॥१२॥चक्रवाकचातकौचकोरा। कीरकपोतकराकुलमोरा॥
इनकोशोरसुनतघनश्यामा॥सखनसहितवनठामहिंठामा॥बोलहिंतिनकेबोलसमाना। करहिंकेलितिनसोंभगवाना॥
करिकैकहूँव्याघ्रसमशोरा। कहँआयगोकेहरीछोरा॥असकहिभागैसखनभगावैं॥पुनिअपनौहँसिसखनहँसावैं॥१३॥

दोहा-कहूँरामथकिजाँहिंजब, सखाअंकधरिशीश॥ करनलगहिंविसरामकहँ, कुंजनमहँजगदीश॥

तबपदमीजनलगैंकन्हाई। कहहिंव्यथामैंदेतमिटाई॥१४॥ कहुँनाचतकहुँगावतदोऊ। तैसहिंसखाकरतसबकोऊ॥
कसिकाछनीठोंकिकहुँताला॥सखनप्रचारिप्रचारिगोपाला॥करहिंमल्ललीलाबहुभाँती॥करिकरिजोरभिडावहिंछाती॥

तैसहिंलरहिंपरस्परगोपा। यकएकनजीतनकरिचोपा॥ जेकोउसखारामसोंलरहीं। बिनप्रयासबलतेनहिंपछरहीं॥ जेकोउलरहिंश्यामसोंजाई। हारहिंकोउकोउदेहिंहराई॥ सखाहँसहिंसबदैकरताला। हैंबलसबलअबलनँदलाला॥

दोहा–कहूँसखाकोहाथगहि, रामहुँनंदकिशोर॥ वेझेलहिंउनओरतेहिं, वेझेलहिंउनओर॥

झेलाझेलीतासुनिहारी। हँसैंसखासिगरेदैतारी॥ कहुँछ्वैपाणिभगहिंघनश्यामा। तिनहिंछुवनहितधावहिंरामा॥ हरिकढिजाहिंदूरिनहिंपावैं। लज्जितलौटिथानतेहिंआवैं॥ पुनिबलभागहिंहरिकरछ्वैकै।दौरहिंश्यामवेगअतिकैकै॥ छुवहिंरामकहँचलिकछुदूरी।हँसहिंसखाहाँसीकरिपूरी।कहहिंनधावतबनतरामसों।किमिआगेकढिजाहिंश्यामसों१५ पुनिथकिकैकहुँकुंजनछाँहीं। बैठहिंरामश्यामसँगमाँहीं॥तहँसखाकिशलयबहुल्याई। देहिंशयनहितसेजबनाई॥ तामेंलेटिरहैंसुखछाई। सखनअंकशिरधरिदोउभाई॥ १६॥

दोहा–लगेचरणचापनसखा, कोमलकरनलगाय॥ कोउपल्लववीजनविरचि, वीजहिंमंदडोलाय॥ १७॥

कोउतहँरागसुहावनगावैं। सखासनेहसरससरसावैं॥ ऊँचगिराकरिकोउनबताई।जामेंसोवहिंसुखितकन्हाई॥१८॥ यहिविधिग्वालनबालनसंगा। करहिंकृष्णलीलाबहुरंगा॥ जौनरमालालितपदपल्लव। सोपरसहिक्षणक्षणव्रजवल्लव॥ जोविधिशिवसुरआदिकईशा। व्रजवासिनसँगसोजगदीशा॥विहरतकरहिंअनेककलाको।लखैचरितकोनंदललाको॥ तहँपुनिजबैकृष्णबलजागे। सखनसहितबैठेसुखपागे॥१९॥रामकृष्णकोसखाललामा। रह्योनामजाकोश्रीदामा॥ सुबलतोककृष्णादिककाँहीं। सखनलिहेअपनेसँगमाँहीं॥

दोहा–रामश्यामकेनिकटहीं, अतिआशुहिंउठिआय॥ कह्योवचनकरजोरिकै, औरहुसखनसुनाय॥ २०॥

रामरामहेबाहुविशाला। दुष्टविनाशनहेनँदलाला॥ हमकोअतिशयक्षुधासतायो। घरहूँतेभोजननहिंआयो॥ क्षुधामिटनकीजौनउपाई। सोतुमसोंहमदेहिंबताई॥ इततेकछुकदूरिवनमाँहीं। नामतालवनहैजेहिंकाँहीं॥ २१॥ तहँतालफलपकेझरतहैं। पुहुमीपरबहुपरेलसतहैं॥ पैफलखाननपावतकोई। बसतधेनुकासुरतहँसोई॥ रोकततहँकोउजाननदेतो। आपहिंसबभोजनकरिलेतो॥२२॥महाबलीखरकोवपुधारी।करतसदातेहिंवनरखवारी॥ औरहुतासुजातिखरघोरा। बसहिंतासुवनटोरहिंठोरा॥ २३॥

दोहा–पशुपक्षीकोउजातनहिं, ताकोअतिभयमानि॥ भक्षतधेनुकमनुजको, देखतहींअवखानि॥ २४॥

कबहुँनहमतेहिंवनफलखाये। गयेनतहँधेनुकहिंडराये॥ पैफलहैंहरिसुधासमाने। अहैंहँमारसबैविधिजाने॥ तेहिंवनतेयहमारुतआवै। सुखदसुगंधचहूँदिशिछावै॥२५॥तेहिंवनकेफलहमकहँदेहू। यहयशरामकृष्णतुमलेहू॥ सुरभिपायमनक्षुभितहमारा। होतरामहरिबारहिंबारा॥ अतिलालसाबढ़ीहियमाँहीं। तातेविनयकीनतुमपाँहीं॥ जोतुमहूँनहिंताहिडेरावहु।तौउठिचलहुविलंबनलावहु॥ सखनवचनसुनिरामकन्हाई।अतिप्रियमानिदियोमुसक्याई मित्रमनोरथपूरणहेतू। चलेसखनयुतदोउबलसेतू॥ २७॥

दोहा–सबकेआगेरामभे, तिनपीछेघनश्याम। तिनपीछेसिगरेसखा, सोहतअतिअभिराम॥

प्रथमहिंरामतालवनजाई। गजसमतालनदियोकँपाई॥गिरेतालफलबहुतेहिंठोरा।देहिंवनभयोभभंराशोरा॥२८॥ सोरवसुनिधेनुकबलवाना।उठ्योतुरतकरिकोपमहाना॥धारच्योधरणीशैलकँपावत।लख्योरामकहँतालहलावत॥२९ निकटआयशठकुपितअपारा। कियदोउपाछिलचरणपहारा॥बलउरमारिचरणकछुदूरी। कढ़िगोदनुजउडावतधूरी पुनिगरदभकोकरिअतिशोरा।आयोकुपितरामकीओरा॥फिरिपाछिलकियचरणप्रहारा३१तबतुरंतरोहिणीकुमारा।

दोहा–एकहिकरतेपाछिले, दोऊपदगहिलीन। बारअनेकभमाइतेहिं, पटकितालपरदीन॥

कढ़ेभमावततासकेप्राना। भयेअंगसबचूरमहाना॥३२॥ सोतरुतालकँपतगिरिगयऊ। जोतेहिंढिगटूटतसोभयऊ॥ सोहिंगिरेगिरेजेताला।तेटोरेबहुतालविशाला॥३३॥यहिविधिसबतालवनताला।कँपेपायजनुपवनविशाला ३४॥

यहअनंतकोअचरजनाँहीं।सरसबसमजगजिनशिरमाँहीं॥३५॥सुनिधेनुककोआरतशोरा।ताकोवधगुनिकैतेहिंठोरा॥
धावतभयेप्रकोपिहजारन।करतशोरहरिरामहिंमारन॥३६॥तिनकोआवतनिरखितुरंता।बढ़िआगूतहँकृष्णअनंता॥
गहिपाछिलेचरणदोउभाई। पटकनलगेभमाइभमाई॥

दोहा–केतेनकेशिरफूटिगे, केतेनकेपदटूटि। केतेनकेअँगटूटिगे, गयेप्राणसबछूटि॥ ३७॥

फलअरुगरदभदेहँअपारा।परेतालवनभूमिमँझारा॥ तहँकीधरणीशोभितकैसी।गगनमध्यजलदावलिजैसी ॥३८॥
महतकर्मलखिहरिबलकेरो। विबुधवृंदलहिमोदघनेरो॥ बरषनलगेसुमनचहुँओरा। दैदुंदुभीकियोजैशोरा॥
पुनिबहुअस्तुतिवचनउचारे।अतिमोदितनिजसदनसिधारे३९॥तबतेमनुजतालवनजाँहीं।ह्वैअभीततहँकेफलखाँहीं
धेनुचरहिंनवतृणतहँजाई।हरिदियधेनुकभीतिमिटाई॥४०॥आयसखातहँअतिअनुरागे।रामहिंहरिहिसराहनलागे॥

दोहा–भलेदुष्टकोवधकियो, कोतुमसमबलवान। साँझसमयअबह्वैगई, व्रजकोकरहुपयान॥

भलीकहीअबहरिहुबखानी। वेणुटेरिगोवनकहँआनी॥ गोवनकोआगूकरिनाथा। तहँतेचलेसखनकेसाथा॥
कृष्णकमलदलनैनसुहावन।जिनकोयशत्रिभुवनकरपावन॥आगेरामश्यामातिनपाछे।चहुँकितसखालसतअतिआछे
ग्वालबालअसवचनउचारत। तुमबिनकोधेनुककहँमारत॥ जायतालवनअबफलखैहैं। तहाँसुखितसबधेनुचरैहैं॥
तुवभुजदंडनकोबलदेषी। लखिनपरैभटऔरविशेषी॥ तुम्हरेबलहमनिरभैरहहीं। नितनववनव्रजआनँदलहहीं॥

दोहा–यहिविधिभाषतवैनबहु, गमनतयदुपतिसंग। तिनसोंमुरिमुरिकहतहरि, वचनविरचिबहुरंग॥४१॥

कवित्त–गोरजसोंरंजितसुगोलनकपोलनपै; अलकहलकछबिछलकपरतजात।
बरहीपखानकोबिराजनमुकुटशीश, मंदमुसक्यानसुधाढारसीढ़रतजात॥
गावतगोपालयशग्वालबालचारोंओर, रघुराजवंशीसुरआपहूँभरतजात।
दरशकीआशभरीगोपिनकीगोलनपै, कान्हरोकटाक्षनसोंकतलकरतजात॥ ४२॥
गोकुलगलीमेंठाढ़ीव्रजकीअलीजेभली, दरशकीप्यासींचलींश्यामैंआवतैंनिहारि।
नैनअलिवृंदसोंमुकुंदमुखअरविंद, सुछबिमरंदपानकरिकैअनंदधारि॥
चारिहूपहरदिनविरहजहरकेरी, कहरगहरबिनडहरलईनिवारि।
पुलकैंप्रमोदभरींललकैंमिलनाहित,झलकैंदृगनजलपलकैंदईबिसारि॥

दोहा–चितवनिहँसनिसलाजलखि, गोपिनकीघनश्याम।अतिमोदितगमनतभये, सखनसहितनिजधाम॥४३॥

जबप्रभुगयेनंदकेद्वारे। निजनिजसदनसखहुपगुधारे॥ रामश्यामकीजानिअवाई। यशुमतिअरुरोहिणिउठिधाई॥
लियोदुहुँनकोअंकउठाई। मुखचूम्योअतिआनँदपाई॥पोंछिवदनतनुकीरजझारी।आशिषदईदोउमहतारी॥४४॥
पुनिकरगहिगइभौनलेवाई। चामीकरचौकीबैठाई॥ मींजतपदनिजहाथलगाई। गोचारणश्रमदियोमिटाई॥
पुनिसुखउबटनअंगलगाई। सुरभिसलिलदोहुँननहवाई॥ पोंछिवदनझंगुलीपहिराई।पुनिशिरमेंदियताजसोहाई॥
पुनिबहुविधिभूषणपहिरायो। अंगनमेंअँगरागलगायो ॥ ४५॥

दोहा–कनकपीठिपरदोउसुतन, यशुमतितहँबैठाय। राखेव्यंजनविरचिजेहि, कनकथारभरिल्याय॥

लगीखवावनपुत्रनकाँहीं। बीजनबीजतिमुदिततहाँहीं॥ कहुँबलकौरकृष्णलैलेहीं। कहुँअपनौबलरामहिंदेहीं॥
भोजनकरतजबैरहिजाहीं। तबयशुदाबोलतितिनपाहीं॥ एककौरमेरोबदिखाहू। एककौरबदिहैव्रजनाहू॥
यहिविधिवदतअनेकनबाता।सुतनखवावतियशुमतिमाता॥ सबव्यंजनकोपूँछतिस्वादू।सुतकहवतावतयुतअहलादू॥
यदपिमातुतैंरचेअनेकू। पैप्रियदधिमाखनमोहिंएकू॥ पुनिजबजेंइउठेदोउभाई। यशुमतिमुखकरदियोधोवाई॥

दोहा–पुनिकोमलइकसेजपर, दोहुँनदियपौढाय॥मंदमंदचापतिचरण, दीन्ह्योंसुतनसोवाय॥ ४६॥

यहिविधिश्रीवृंदावनचारी। करतअनेककलानिमुरारी॥ एकसमैउठिकौन्हप्रभाता। जागेजबनहिंजेठभ्राता॥

वेणुटेरिसबसखनबोलाई। चलेचरावनगाइकन्हाई॥ कालिंदीतटकेवनजाई। लागेतहाँचरावनगाई॥
तहाँअनेकनलीलाकरहीं। कुंजनकुंजनकृष्णविचरहीं॥ ४७॥ धेनुचरावतदुपहरआई। तबहरिबोलेसखनबुलाई॥
भोमध्याह्नधेनुहैंप्यासी। चलहुसबैयमुनासुखरासी॥ कह्योसखहुहमहूँअतिप्यासे। तुम्हरेसंगहुँगमनहुलासे॥

दोहा—सुनतसखनकीबानिअस, हाँकिधेनुनँदनंद। कालीदहतटगमनकिय, सहितसखनकेवृंद॥

ज्येष्ठमासकोतीषनघामा। तेहिंलगिगयेतृषितजलकामा॥ गऊग्वालजलदेखतधाये। कालीदहमहँकूदिनहाये॥
कालीविषसवलितसोनीरा।कियेपानसबधेनुअहीरा॥४८॥जलपीतहिंतहँहेकुरुवीरा।गिरेमृतकह्वैसबतेहिंतीरा॥४९॥
मृतकगऊग्वालनकहँदेखी। योगेश्वरप्रभुहरिदुखलेखी॥ अपनेकोतिननाथविचारी। अमृतवर्षिणीदीठिपसारी॥
ग्वालनगोवनदियोजियाई। कृपासिंधुयदुनाथकन्हाई॥५०॥ उठेसकलद्रुतयमुनातटते।पोंछनलगेवदनजलपटते॥
धोखासोंह्वैगोतिनकाँहीं। निरखिपरसपरअसबतराँहीं॥ ५१॥

दोहा—विषजलकरिकैपानहम, मरेयमुनतटआज। पैज्यायोयशुमतिलला, गौवनगोपसमाज॥
असकहिहरिकोमिलिसबै, पुनिमिलिआपुसमाँहिं। कालीदहकेतटनिकट, विहरतहरिहिंसराहिं॥ ५२॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमन्महाराजाधि
राजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे पंचदशस्तरंगः॥ १५॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—कृष्णसरपविषदूषितै, कृष्णाकृष्णनिहारि। शुद्धहोनहितजलदियो, तहँतेताहिनिकारि॥

व्याससुवनकीसुनिअसबानी। पूँछ्योपुनिकुरुपतिविज्ञानी॥

राजोवाच।

केहिविधिहरिकालीअहिकाँहीं।पकरयोप्रभुकालीदहमाँहीं॥ युगअनेकतेनीरअगाधै। बसतरह्योसोवर्जितबाधै॥
नाथकथायहदेहुसुनाई। जातेममसंशयमिटिजाई॥२॥ व्यापकस्ववशसुनंदकुमारा। कियचरित्रजोपरमउदारा॥
तेहिलीलामृतकोकरिपाना।कौनरसिकजगमाँहअघाना ३ सुनिकुरुनाथगिराअतिप्यारी।कहनलगेशुकदेवसुखारी॥

श्रीशुक उवाच।

कालिंदीकालीअहिआई। दहअगाधमहँरह्योलुकाई॥ लगिताकीविषज्वालफुँकारे। चुरतरह्योजलमध्यदहारे॥

दोहा—जेपक्षीतेहिंपंथह्वै, जानचहतवाहिपार॥ तेकालीविषज्वालते, गिरतहोतजरिछार॥ ४॥

नीरगँभीरश्यामअतिघोरा। लागतहींअतिपवनझकोरा॥ उठहिविषोदकतुंगतरंगा। आवहिंतटलोंबहुयकसंगा॥
जेजलपियनहेतुजियजाँहीं। पीवतहींजीवततेनाँहीं॥ कालीविषज्वालाकेजोरा। जरेतीरतरुतृणतेहिंठोरा॥
पैजबहरिगोग्वालजियाये। अमृतदीठिलहितरुहरिआये॥५॥कालिंदीमहँनंदकिशोरा।लखिप्रचंडकालीविषघोरा॥
तबमनमेंअसकियोविचारा। मेरोखलनाशनअवतारा॥ कालिंदीतेजबयहकाली। कढ़िजाइगोमहाविषशाली॥
तबहींशुद्धकलिंदीनीरा। ह्वैहैनहिंरैहैजनपीरा॥

दोहा—असविचारिविहरनलगे, सखनसहितगोपाल। तहँकदम्बतरुइकरह्यो, शाखाजासुविशाल॥

कसिफेंटोकटिमेंतेहिकाला। अलकसमेटिबाँधिनँदलाला॥ खेलतखेलतएकहिंबारा। गेकदम्बचढ़िनंदकुमारा॥
रहीयमुनजलपरइकशाषा। तेहिंचढ़िकियकुंदनअभिलाषा॥ दोउभुजदंडनदैप्रभुताला।जबलोंवारणकरैंगोवाला॥
तबलोंकालिंदीमहँनाथा। कूदिपरेऊरधकरिहाथा॥ ६॥ कृष्णजंघकोवेगाहिपाई। उज्योअकाशसलिलसमुदाई॥

बढीचहूँकिततरलतरंगा। मानोसरसीहिल्योमतंगा॥शतधनुलौंफैलोतेहिंनीरा। हरिहिनसोअचरजमतिधीरा॥७॥
दोहा–रहतरह्योकालीजहाँ, पहुँच्योतहँजलशोर॥ हरिप्रचंडभुजदंडबल, तहँलगिलगीहिलोर॥
छंदतोमर–सुनिशोरनिरखिहिलोर। कियकालिकोपकठोर॥ निकस्योसदनसोंसर्प। अतिशयभरोविषदर्प॥८॥
जलतेसुशीसनिकारि। निरख्योहरिहिंमाधिवारि॥ पैरतसुपाणिपसारि। तनुकीसुछबिमनहारि॥
सबअंगअतिसुकुमार। नवनीरदेअनुहार॥ श्रीवत्सउरहिंविशाल। पटपीतलसतरसाल॥
मुखमाधुरीमुसक्यानि। शशिसोवदनछबिखानि॥ युगलसतपदअरविंद। अतिशयअभीतगोविंद॥
छोंड़तमुखनविषझार। बहुबारकरिफुफकार॥अतिकुपितयदुपतिकाँहिं। डसिलपटिगोअँगमाँहिं॥९॥
अहिभोगमध्यमुकुंद। लखिगऊग्वालनवृंद॥ भेसकलदुखितअपार। तनुकोनतनकसम्हार॥
रोवहिंपुकारिपुकारि। यहिभाँतिवचनउचारि॥ वारणकियोकोउनाहिं। नँदनंदकूदतमाँहिं॥
व्रजकेरप्राणअधार। सोपरचोयमुनदहार॥ परिगयोअहिकेभोग। अबकढनकोनहिंयोग॥
दोहा–अबकेहिंलैव्रजमेंजियब, कोह्वैहैरखवार॥ असकहिकैसिगरेसखा, कीन्हेंहाहाकार॥
सुहृददारसुतधनपरिवारे। तनुहूँमनतेकृष्णपियारे॥ असकहिशोकितसिगरेगोपा। जानिसबैव्रजजीवनलोपा॥
ग्वालबालगिरिगेमहिमाँहीं।उठनशक्तिरहिगैतिननाहीं॥१०॥धेनुवृषभबछराअरुबाछी।रोवहिंतीरखडेअकुलाछी॥११॥
उतव्रजमाँहिंत्रिविधउतपाता। होनलगेदारुणदुखदाता॥ लगीभूमिडोलनतेहिंकाला। नभतेउलकागिरेकराला॥
यशुमतिकेदक्षिणनँदबाँयें।फरकेभुजदृगअशुभजनाये॥नंदयशोमतिअतिअकुलाई। लगेकहनकहँगयेकन्हाई॥१२॥
कोउकहआजुसंगबनश्यामा। गोचारनगमनेनहिंरामा॥
दोहा–नंदयशोमतियहसुनत, औरहुजियअकुलाय॥ तैसहिलखिउत्पातबहु, तनुकीसुधिबिसराय॥
निजसुतकोलियनिधनविचारी। जान्योनहिंप्रभाउमुरारी॥ तनुमनधनतेकृष्णपियारे। व्रजवासिनकेएकअधारे॥
शोकभीतिदुखयुतव्रजवासी। ह्वैजीवनतेतुरतनिरासी॥१३॥१४॥बालकयुवावृद्धनरनारी। पशुसमधायेहायपुकारी
जेजसरहेतेतैसहिंधाये। तनुधनभवनसुजनबिसराये॥व्रजजनयदुपतिदरशलालसी।धावतभेनहिंभयेआलसी॥१५॥
हरिकेविरहविकलतिनदेखी। विहँसेबलहरिलीलालेखी॥कहेनव्रजवासिनकछुबैना। तिनकेसंगगयेबलिऐना॥१६॥
गोकुलतेकढ़िकैकछुदूरी। हरिपदचिह्नलखैंजहँधूरी॥१७॥
दोहा–ध्वजअंकुशअंबुजअसनि, हरिपदचिह्ननिहारि। गौवनग्वालनपगनमधि,हरिपदलियोविचारि॥१८॥
सोइदेखतदेखतव्रजवासी। गेयमुनातटउरदुखरासी॥ यमुनतीरचलिनंदयशोदा। लख्योलालकोजोप्रदमोदा॥
लपटेभुजगभोगमहँभारी। कालीदहकेमध्यमुरारी॥ देखेग्वालगिरेतटमाँहीं। तिनकेतनुसुधिबुधिकछुनाहीं॥
देखिदेखिगौवेंहरिकाँहीं। खडींतीररोवतममिआँहीं॥ तहाँजायसबव्रजनरनारी। रोवनलगेपुकारिपुकारी॥
बारबारनिजनिजशिरधुनहीं। कोउकोहुनकीबातनसुनहीं॥१९॥व्रजगोपीनँदनंदनप्यारीं।हरिसनेहवशगिराउचारीं॥
प्रीतिरीतिअबकौनानिबाही। कोहमारकरिहैचितचाही॥
दोहा–कोकहिहैमंजुलवचन, काननसुधासमान। कोकाननगौवनसहित, करिहैप्रातपयान॥
कोकरिहैकटाक्षसुखदाई। कौनलेहिगोहमहिंलोभाई॥ कोव्रजमेंदधिदूधचोरैहै। कोनमाधुरिवेणुबजैहै॥
ऐसीकहैंविविधविधिबानी। गोपीनंदलालरससानी॥ गिरहिंउठहिंपुनिभ्रमहिंदुखारी। धावैंतीरतीरव्रजनारी॥
छूटेकेशनवसनसम्हारैं। हायहायचहुँओरपुकारैं॥उपजतक्षणक्षणतहँदुखदूना। हरिबिनदेखहिंत्रिभुवनसूना॥२०॥
यशुमतिउठतिगिरतिबहुबारा। कहतिहायकहँमोरकुमारा॥दियोजरठपनप्रभुसुतमोहीं।हायफेरिअबकरतबिछोहीं॥
केहिलखिमैंजीहौंव्रजमाँहीं। अबअधारदरशतमोहिंनाहीं॥
दोहा–कोपालिहिव्रजराजकी, येसुरभीनौलाख। कोपूरणकरिहैकहो, ममजियकीअभिलाष॥

कोमाँगिहिमाखनअबमोसों। केहिंचोरिकोदैहैंदोसो ॥ केहिंमणिकेभूषणपहिरैहौं। केहिरचिव्यंजनविविधखवैहौं ॥
पूतनादिदुष्टनतेबाले। प्रभुबचायल्यायोयहिकाले ॥ अबफँसिकैकालीकेफाँसी। नशतहाययहसुतसुखरासी ॥
कहाकरौंकेहिदेवमनाऊँ। हायकौनविधिलालबचाऊँ॥ बिनलालनममजियबवृथाहीं। द्वितियअधारपरतलखिनाहीं॥
असकहिबूडनचलीकलिंदी। बहुविधिभागआपनीनिंदी ॥ पकरेरहींचारिसखिताको। तिमिगोपहुबहुनंदबबाको॥

दोहा–सखिनफिटिकियशुमतिचली, सोलखिकैव्रजराज। बूडनकोआपहुचले, रेलतगोपसमाज ॥ २१ ॥

मच्योचहूँकितहाहाकारा। रह्योनकोहुकेतनकसम्हारा॥ बूडनचलेसकलव्रजवासी। हरिबिनह्वैसबजियननिरासी॥
तहँबलअनुजप्रभावहिंज्ञाता। नंदयशोमतिसोंकहबाता ॥ कोउनहिंबूडहधीरजधरहू। मेरेवचनकानसबकरहू ॥
ऐहैनिकसिनंदकोलाला। सकिहिनडसितेहिंसर्पकराला॥असकहिपाणिपकरियशुदाको।तैसहिंगहिकरनंदबबाको॥
तरुछायातरदियबैठाई। वचनकह्योबहुभाँतिबुझाई॥२२॥ मृतकसरिससिगरेव्रजवासी।परेपुहुमिहरिदर्शनआसी ॥

दोहा–अनमिषनिरखहिंकृष्णकहँ, लेहिंश्वासबहुबार। सूखिगयोसबकोवदन, शोकितभयोअपार ॥

बालयुवानिजहेतुदुखारी। व्रजवासिनअसदशानिहारी ॥ एकमुहूरतभरिभगवाना। रहेभोगिकेभोगमहाना ॥२३॥
पुनिमोटोकियनाथशरीरा। उठीभुजंगमकेतनुपीरा ॥ फाटतअंगजानिअहिराई। तबहींहरितनुदियोविहाई ॥
फननउठायठाढभोकाली। श्वासलेतनिरखतवनमाली॥कोपिततजतफननफुफकारा। मनहुँकरतयमुनाजलछारा॥
निकसतवदनविषानलज्वाला मनुप्रलयानलज्वालकराला॥अरुणनयनइकटकअहिदेखत।बालबाहुबलअचरजलेखत
एकएकमुखरसनाद्वैदोई। चाटतअधरक्षणैक्षणसोई ॥

दोहा–पुनिकरालकालीतहाँ, दीठिविषानलहेरि। कृष्णडसनधावतभयो, उरहिउरगरिसढेरि ॥

हरिहूतबतेहिसन्मुखधाई। तासुवदनकीचोटबचाई ॥ गयेतुरतपीछेप्रभुतासू। सोऊफिरयोमुखतजतहुतासू ॥
तबफिरिकृष्णदाहिनेआये। गरुडसरिसनिजवेगबढाये॥जितहरितितकालीपुनिआयो।तासुदाउहरिफेरिबचायो २५
यहिविधिभ्रमहिंदोउजलमाहीं। कालीहरिकहँपावतनाहीं॥कहुँहरितासुपूँछगहिलेहीं।फिरततहितुरतहिंतजिदेहीं ॥
यहिविधिभ्रमहिंदोउदहमाँहीं। तुंगतरंगउठहिंचहुँघाँहीं ॥ कालीकहयहिभाँतिखेलाई। दियोथकायवनायकन्हाई॥

दोहा–जबथकिगोकालीतहाँ, चलतोमंदहिंमंद। तबऔचकइकबारहीं, कूदतभयेगोविंद ॥

ताकेशीसगयेचढिनाथा। दियोनवायतासुवरमाथा ॥ ताकेशिरमणिपरसतचरणा। ह्वैगेआशुअरुणअतिवरणा ॥
अखिलकलाकेगुरुसुखपागे। कालीफनमहँनाचनलागे॥२६॥नाचतनिरखिकृष्णकहँसर्वा। चारणकिन्नरसुरगंधर्वा॥
परमप्रीतिसोंवेणुमृदंगा। लगेबजावनसबइकसंगा ॥ गावहिंसुरसुंदरीसुहावन। वर्षहिंफूलमोदउपजावन ॥
अस्तुतिकरहिंकृष्णकीभारी। जैजैकालीदमनविहारी॥२७॥फणीफणनगतिलेतविहारी।उठतपगननूपुरफनकारी॥
मुख्यतासुफणइकसेएकू। अरुछोटेनृपरहेअनेकू ॥

दोहा–जोइजोइशीशउठावतो, तोहिंतेहिंमहँनँदलाल। औरफणनपरगतिनलै, देतउतालहिताल ॥

हरिपदलगतशीसलचिजाहीं।पुनिनउठावतसोशिरकाहीं॥यहिविधिसकलभुजंगमशीशा।नचतनंदनंदनअवनीशा ॥
सबशिरदियेनवायप्रभुजबहीं। अहिदृगभवनलगेनृपतबहीं ॥ वमनलग्योमुखशोणितधारा।कालीलह्योकलेशअपारा
खसतचखनतेविषअतिघोरा। तरफरातकालीचहुँओरा ॥ बारहिंबारलेतमुखश्वासू। लहतनडसनकेरअवकासू ॥
कालिहिदमतानिरखिहरिकाँहीं।देवसराहतअतिमुदमाँहीं।वर्षहिंनभतेविपुलप्रसूना।नचतनिरखिपावतसुखदूना२९॥
लागतपदवैकुंठधनीके। फूटिगयेफणसकलफणीके ॥

दोहा–मरणलग्योकालीजबै, शिथिलभयेसबगात। परयोअचलह्वैसलिलपर, पौरुषनाहिंबसात ॥

तबनारायणपुरुषपुराने।अखिलचराचरगुरुभगवाने॥मनतेसुमिरिशरणभोकाली।अबरक्षहिंमोहिंअंबुजमाली ॥३०
निजपतिमरतभुजंगिनिदेखी। पुरुषपुराणकृष्णकहँलेखी॥अतिआशुहिंकालीकीनारी।आइहरिढिगअतिहिंदुखारी॥

छूटेभूषणवसनसुकेशा॥३१॥करिबालकआगूतेहिंदेशा॥महिपरपरिकरिहरिहिप्रणामा। खडीभईकरजोरिललामा॥
पतिकेछत्रसरिसफणटूटत। लाखबहुबारशीसनिजकूटत॥ अपनोकंतछोडावनहेतू। रचिरचिपदकोमलसुखसेतू॥
दोहा-गद्गदगरहगजलतजत, दीनदशादरशाय॥ हरिकीअस्तुतिनागिनी, करनलगींमनलाय॥ ३२॥

नागपत्न्य ऊचुः।

छंद-यहउचितकृतअपराधमहँयहिदंडदीन्होंआप। खलशासनैकेहेतुतुवअवतारपरमप्रताप॥
प्रभुशत्रुपुत्रहुपरसदाराखतसमानाहिंभाव। जोजसकरतसोतसलहतसुखदुखहुरङ्कहुराव ॥ ३३॥
यहसर्पकोजोकियोनिग्रहसोअनुग्रहभूरि। तुवहाथतेलहिदंडासिगरेहोतकल्मषदूरि॥
करिपापपाईसर्पयोनिअतीवक्रूरसुभाव। अबभयोशुद्धशरीरयाकोतुवचरणपरभाव॥ ३४॥
यहकियोपूरबकौनतपदैमानतजिअभिमान। कियकौनकर्महुँधर्मजामेंतुममिलेभगवान॥ ३५॥
जेहिंचरणरजकेहेतुकमलासकलतजितपकीन। तेहिंकौनपुण्यप्रभावतेअहिशीशसोंरजलीन ॥३६॥
नहिंभूपपदनहिंशक्रपदनहिंशम्भुपदविधिभौन।नहिंयोगसिद्धिनमुक्तिचाहततुवरसिकजनजौन॥३७॥
यहधन्यतामसयोनितुवपदरेणुधारीशीश। जेहिचहतासिगरेविभौनिजतेलहतजगजगदीश ॥ ३८॥
जयजयमहात्माजयपरात्मापुरुषजगतनिवास। जयपरमकारणआदिजैभगवानपरमप्रकाश॥ ३९॥
जैज्ञाननिधिविज्ञाननिधिजैब्रह्मशक्तिअनंत। जैअगुणअप्राकृतविकारविहीनकमलाकंत ॥ ४०॥
जैकालजैकालनाभत्रिकालसाक्षीसत्य। जैविश्वरूपीविश्वद्रष्टाविश्वकारणनित्य॥ ४१॥
जयभूतमात्राप्राणइंद्रीमनौचितबुधिनाथ। जैअहंकारअदृश्यरूपसुरूपनितमुदगाथ॥ ४२॥
जयसूक्ष्मजयकूटस्थजयसर्वज्ञजयातिअनंत। जयविविधवादप्रवृत्तिकारणशब्दअर्थलसंत॥ ४३॥
जयवेदशास्त्रनमूलकविजयप्रवृत्तिनिवृत्तिसरूप। जयजयतिनिगमागमप्रवर्तकउद्धरनभवकूप॥४४॥
जयकृष्णजयबलरामजयवसुदेवसुतअरिकंस। प्रद्युम्नजयअनिरुद्धजययदुवंशकेअवतंस ॥ ४५॥
जयगुणप्रदीपगुणावरणगुणवृत्तिदृश्यगुणेश। जयज्ञानरूपविहारविमलअतर्कमहिममहेश ॥ ४६॥
जयसबप्रकाशिनकेप्रकाशकहृषीकेशगोविंद। जयआत्मरामसुनीशज्ञातापरअपरगतिवृंद॥ ४७॥
जयजगतपतिजयजगविलक्षणजगतवपुजगदीश।जयजगतसिरजनहरनपालनकालशक्तिअधीश॥४८॥
जयसत्त्वरजतमगुणसुभाउप्रकाशकारीएक। जयजयअमोघविहारकारकदलनखलनअनेक॥ ४९॥
तुवशांतमूढअशांतलीलाहेतुवपुहेतीन। अबशांततुमकोप्रियकरहुनितधर्मरक्षप्रवीन॥५०॥
दोहा-जोअपनोपरजाकरत, कहुँअपनोअपराध॥ तौभूपतिकरतोक्षमा, देततहिनहिंबाध॥
कियअपराधनतुमकोजानी। करहुक्षमाअबशारँगपानी५१ कृपाकिहेविनकृपानिधाना।तजनचहतअबपन्नगप्राना॥
दीनहमहिंदीजैपतिदाना॥५२॥ हैंतुम्हरीदासीभगवाना॥जोप्रभुकहहुकरहिंहमसोई।तुवअज्ञामहँभैनहिंहोई॥५३॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिनागिनिअस्तुतिगाई।हरिकोदीनदशादरशाई॥दयादयानिधितहँउरभरिकै। तज्योभुजँगपदचिह्नितकरिकै
कालीशिरफूटेविकराला। रह्योदंडद्वैपरमविहाला॥५४॥ पुनिजसतसकैधरिजधरिकै।श्वासलेतकरमैकरकरिकै॥
बोल्योअतिविनीतह्वैकाली। भीतिभरीअतिवाणिरसाली॥५५॥

कालिय उवाच।

दोहा-हमस्वाभाविकखलअहैं, कोपीतामसयोनि॥ दुस्त्यजदुष्टस्वभावप्रभु, करैंसदाअनहोनि ॥ ५६॥
तुमत्रैगुणसिरज्योसंसारा।आकृतियोनिसुभाउअपारा॥५७॥हमकोपीप्रभुहैंअहिजाती।निजसुभावछोडैंकैहिभाँती॥

मोहितकठिनरावरीमाया। योगीजनजेहिंपारनपाया ॥ ५८ ॥ बिनसर्वज्ञकृपातुवपाई। मायासिंधुपारनहिंजाई ॥
निग्रहऔरअनुग्रहजोई। जसअबचहहुकरहुप्रभुसोई॥हमसबभाँतिअधीनतुम्हारे।सकलभाँतितुमनाथहमारे॥५९॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिसुनिकालीकीवाणी। बोलेबिहँसतशारँगपाणी ॥ रहहुसपर्ययमुनामहँनाहीं।जाहुनारिसुतलैसँगमाँहीं॥६०॥
दोहा-रमणकद्वीपसमुद्रमहँ, बसहुतहाँतुमजाइ ॥ गोगोपीअरुगोपनित, पियहिंसलिलइतआइ ॥
कालीदमनचरित्रहमारा। दोउसंध्याजोसुनैउदारा ॥ सुमिरैपाठकरैजोकोई। ताहिसर्पतेभयनहिंहोई ॥ ६१ ॥
जोकालीदहआयनहैहैं। देवनपितरनतर्पणठैहैं ॥ करिव्रतसुमिरतजोमोहिंपूजी। जरिहैंपापमनोरथपूजी ॥ ६२ ॥
पायगरुडकीभीतिमहाई। रमणकद्वीपछोडिइतआई ॥ बसेसपर्ययमुनाजलमाँहीं। सोअबगरुड़भीतितोहिंनाँहीं ॥
ममपदअंकितलखितुवशीशा। तोकोनहिंभक्षिहिपक्षीशा ॥ ६३ ॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिकहीकृष्णजबबानी।तबकालीअतिशयसुखमानी॥नागिनिसहितनागबड़भागा।कृष्णहिंपूज्योयुतअनुरागा
दोहा-भूषणवसनअमोलमणि, पहिरायेहरिअंग ॥ अंगरागलेपनकियो, सुरभितसुखदसुरंग ॥
पुनिपहिरायोअंबुजमाला। कह्योकृपाकीजैनँदलाला॥६५॥यहिविधिपूजनकरिजगदीशै।बारहिंबारनाइपदशीशै ॥
दैप्रदक्षिणाप्रभुकहँचारी।माँगिकृष्णसोंबिदासुखारी॥६६॥नागिनिनागबालयुतनागा। रमणकद्वीपगयोबडभागा ॥
कृष्णअनुग्रहयाहिविधिपाई। तबतेकालिंदीसुखदाई ॥ भईविगतविषतेहिंदहमाँहीं। गऊग्वालजलपीवनजाँहीं ॥
सबथलतेनृपतेहिंथलकेरो। भयोसलिलसबमीठघनेरो ॥ यहजोचरितकियोभगवाना। सोमैंतुमसोंकियोबखाना ॥
दोहा-व्रजमंडलमेंआइकै, यहिविधिनंदकुमार ॥ करतअनेकननितनवे, लीलाललितउदार ॥ ६७ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीम
हाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे षोडशस्तरंगः ॥ १६ ॥

दोहा-सुनिकालीअहिकीकथा, तहाँपरीक्षितराज। फेरिकह्योशुकदेवसों, मध्यमुनीनसमाज ॥

राजोवाच।

नागालैरमणकजोद्वीपा। कालीकागुनितज्योप्रतीपा॥कौनगरुडकोकियअपराधा। यहभाषौमुनिज्ञानअगाधा ॥१॥
सुनिकेकुरुपतिकीअसबानी। बोलेशुकाचार्यविज्ञानी ॥

श्रीशुक उवाच।

रमणकद्वीपजोनागनिवासा।तहँअहिसकलगरुडकीत्रासा॥करिलीन्हेंखगेशसोंअसप्रण।करहुनतुमसिगरेअहिभक्षण।
मासमासमहँहमतुमकाँहीं। बलिदेहैंअतिशयमुदमाँहीं ॥ २ ॥ तबतेतहँकेभुजँगवनेरे। लैबहुबलिइकतरुकेनेरे ॥
धरिआवैंहरिपूरणमासी।निजनिजपारीखगपतित्रासी॥यहिविधितहँकेअहिकुरुराई।निजनिजकुलसबलेहिंबचाई ॥३॥
दोहा-यहिविधिवीत्योकालबहु, इकदिनतहँकुरुराय। पारीकालीकीभई, तेहिंअहिदियोसुनाय ॥
सोखगेशकहँनाहिंदेराई। कालीविषपौरुषमदछाई॥लियआपहिखगपतिबलिखाई। खडोरह्योतहँफणनउठाई ॥४॥
सोसुनिगरुडकोपअतिकीन्ह्यो।कालीमारनकोमनदीन्ह्यो॥परमवेगकरिधावतभयऊ५ कालिहुतहँसन्मुखह्वैगयऊ॥
सिगरेफणउठाइद्रुतधाई। कोपितविहँगराजढिगजाई ॥ जीभनिकारैनैनकराला। छोडतमुखनगरलकीज्वाला ॥

डस्योविहंगअधीशहिंअंगा। चह्योरारिउरगारिहिंसंगा ॥६॥ तबतारिछभरिकोपप्रचंडा। करिकेतुरतहिंवेगउदंडा ॥
सुवरणवर्णपक्षनिजवामा। कद्रूसुतहिंहन्योवलधामा ॥ ७ ॥

दोहा-गरुडपक्षलागततुरत, कालीभयेविहाल। तहँतेभजिव्रजयमुनदह, निवसतभयोभुवाल ॥ ८ ॥

सकतरहेतहँगरुडनजाई। तासुहेतुमैंकहौंबुझाई ॥ एकसमयखगपतितहँआई। लगेखानजलचरसमुदाई ॥
रहेतहाँसौभरिमुनिधीरा। दीननमीननकीलखिपीरा॥खगपतिकोवारणबहुकीन्ह्यों। सोमुनिवचनमानिनहिंलीन्ह्यों॥
वरवसभख्योमीनपतिकाँहीं॥९॥ मीनदीनभागेजलमाँहीं॥तवसौभरिदायाअतिकरिकै।बोलेवचनकोपउरभरिकै १०
जोखगनाथआजुतेऐहैं। यदिदहकेजलचरगहिखैहैं ॥ तौविशेषह्वैहैविनप्राणा। हैयहमेरोवचनप्रमाणा ॥ ११ ॥
सोकालिहिभरिजानतरहेऊ। तातेभागिवासतहँलेहेऊ ॥

दोहा-गरुडभीतितहँवसतभो, तेहिंहरिदियोनिकारि। यहकारणअहिवासको, मैंसवदियोविचारि ॥ १२ ॥

यहिविधिकालीकाहिंनिकारी। पैरतआयेतीरमुरारी ॥ पहिरेभूषणवसनविशाला। मोतिनमणिनकंजवनमाला ॥
अनुपमअँगलेपितअँगरागा। पसरतअँगपरिमलचहुँभागा॥१३॥निरखिग्वालगोपीद्रुतधाये। जैसेइंद्रीप्राणहिंपाये ॥
लियोललैंउरललकिलगाई। बारबारदृगवारिबहाई॥पुनिपुनिमिलतवदनपुनिचूमै। कोउपुनिगहहिंचरणगिरिभूमै॥
आनँदसोंमुखकढतनबातैं।सोसुखइकमुखनहिंकहिजातैं ॥ पुनिइकएकनकहँगोहराये। यमुनातेकान्हरकढिआये ॥

दोहा-दौरिदौरितेऊद्रुतहिं, हरिकहँहियेलगाय। वारेमणिगणनिजकरन, आनँदउरनसमाय ॥ १४ ॥

कोउकहँजाययशोमतिपाँहीं।जेहिंहितपरीअहौमहिमाँहीं॥सोलालनजलतेकढिआयो।सबव्रजवासिनमरतजियायो ॥
चौंकिउठीसपनोअसजानी। चितवनलगींमहाप्रममानी॥मिलतनिरखिलालनव्रजवासी।धावतभईजननिचपलासी॥
गिरीचरणमहँकान्हपुकारी। पुनिनसकीकछुवचनउचारी ॥ परीरहीपगमहँद्वैदंडा। लियउठायहरिनिजभुजदंडा॥
लालनमुखलखिचूमनलागी। सूंघतियशुमतिशिरबडभागी ॥ इतनेमेंनँदहुँतहँजाई। लियोकृष्णकहँअंकउठाई ॥
कंतअंकतेयशुमतिछीनी। लैगमनीहरिकहँसुखभीनी।

दोहा-तासुअंकतेरोहिणी, हरिकहँलियेछोडाय। लेतिबलैयाचूमिमुख, तरुतरदियबैठाय ॥

यशुमतिहरिअँगपोंछनलागी। कहतिकौनमोसमवडभागी ॥ नंदअनंदभरेतहँआये। हरिकरतेबहुदानदेवाये ॥
बारबारदेखतहरिअंगा।कहँकहँलालहिंडस्योभुजंगा॥ कोउऔषधिल्यावतव्रजवासी। कोउझारतमंत्रनिसुखरासी॥
कोउमींजतकरपगप्रभुकेरे।कोऊझुकिहरिआननहेरे॥कोउकहयशुमतिहैबड़भागी। सुतहिंजोअहिविषज्वालनलागी
लालकालमुखतेबचिआयो।कालीविषनहिंयाहिसतायो॥यशुमतिकहतिईशकरिदाया।यहबालककोआपुबचाया ॥

दोहा-विरहभानव्रजजनकृषी, सूखतलखियहिठाम। प्रेमनीरझरिल्यायकै, लियजियायघनश्याम ॥१५॥

रामहुँकृष्णनिकटपुनिआये।विहँसतमिलतमहामुदछाये ॥ ज्ञाताबलयदुनाथप्रभाऊ। तातेदुखसुखगुनतनकाऊ ॥
वृषभधेनुबछराव्रजवासी।भयेसमानहिंआनँदरासी॥गिरिलतिकातरुतृणतेहिंकाला।लहेप्रमोदमिलेनँदलाला॥१६॥
कालीदहतेनिकसनकेरो। भयोशोरचहुँओरघनेरो ॥ सुनिसुनिद्विजलैलैसुतनारी। आवतभेतहँपरमसुखारी ॥
कहहिंनदसोंगिरासोहाई। तुवसुतकोप्रभुलियोबचाई ॥ कालीमुखतेबचिकढ़िऐबो। नयोजन्मकान्हरकोह्वैबो ॥

दोहा-धन्यभागहैनंदतुव, धन्ययशोमतिमाय। धन्यअहैयहछोहरो, हमकोलियोजियाय ॥ १७ ॥

देहुदेहुविप्रनकहँदाना। गऊकनकअरुमणिगणनाना ॥ विप्रवचनसुनिनंदसुजाना। सुवरणगऊरतनविधिनाना ॥
दियोद्विजनकहँकरिसतकारा। कहतभयोयहपुत्रहमारा॥जियोकृपालहिविप्रतिहारी। यामेंनहिंकरतूतिहमारी ॥
दियोविप्रगणआशिरवादा।चिरंजीवतुवसुतअविषादा १८पुनिपुनियशुमतिलालनकाँहीं।चूमतमुखअघातहियनाँहीं
त्रिभुवनमिलवमोदयकओरा।लगतलालमिलबेतेथोरा॥गुनतियशोमतिअसमतिमाँहीं।ढारतिदृगआनँदजलकाँहीं॥

दोहा-वारबारपूछतिहरिहिं, दरदतोनहिंअँगहोय ॥ हायतुम्हेंवरजेनहीं, खड़ेरहेसबकोय ॥

असकहिलीन्ह्योहियेलगाई।कहतमाहिंपुनिमिलेकन्हाई।औरहुसबप्रमुदितब्रजवासी।भयेअनेकनवचनविलासी१९॥
यहिविधितहँनिरखतवनमाली।कोहुकहँतृपाक्षुधानहिंशाली।यदपिगयेथकिधावतआये।हरिनिरखततनुसुधिबिसराये॥
ताहीसमयसाँझभैराजा। कहैंनंदतबबोलिसमाजा॥ इततेतौगोकुलहैदूरी। अँधियारीरजनीभैभूरी॥
तातेबसहुसबैयमुनातट। सेजबनाइलेहुनिजनिजपट॥ कहाँगोपभलकहँनँदराई। दीजेइतहींरजनिबिताई॥
भोरभयेजैहैंवृंदावन। हरिनिरखतबीतिहिनिशिजनुछन॥

दोहा–असकहियमुनातटबसे, गोपयशोमतिनंद। दिनभरिकेश्रममेंभरे, सोयेलहिआनंद॥ २०॥

छंदभुजंगप्रयात–चल्योपौनभारीरह्योज्येष्ठमासा। गयोलागिसोकाननेमेंहुतासा॥
उठीचारिहूँओरतेंज्वालमाला। मनौहैंप्रलैपावकैकीकराला॥
लपट्टैंझपट्टैंउठैंधूमधारा। झटैंवंशफुट्टैंरवैभोअपारा॥
कुरंगौविहंगौभगेएकसंगे। कितेशैलकेशृंगह्वैजातभंगे॥
उठैंलूकचारोंदिशामेंउतंगा। मनौहोतउल्काप्रपातैंअभंगा॥
कहूँचिक्करैंमत्तमातंगघोरा। कहूँकैगराजैंभजैंसिंहजोरा॥
बढ़ीज्वालमालाछुवैमेघमाला। कहूँपीतभासीकहूँरंगलाला॥
लियेगोपगोपीगऊघेरिआगी। नजानेसकैंकौनिहूँओरभागी॥ २१॥

दोहा–शोरभर्भराहोतभो, जागेगोपीग्वाल। देखतभेचारोंदिशा, पावकज्वालकराल॥
उठेसकलइकएकनटेरी। कहतभयेपावकलियघेरी॥ हाहाकारकियेब्रजवासी। जीवनतेभैसबैनिरासी॥
कहँनलगेसबआपसमाँहीं।केहिविधिबचैंकहाँभजिजाँहीं॥कोउकहभईभीतिब्रजजेती। नँदसुतनाश्योनिजकरतेती॥
तातेरामकृष्णढिगजाई। देहुसबैयहदशाजनाई॥ पहुँचेरामकृष्णकेनेरे। जाइगोपगोपीअसटेरे॥ २२॥
कृष्णकृष्णनँदसुतबड़भागी। रामअमितविक्रमअबजागी॥ दहनचहतयहदहनकठोरा। ब्रजवासिनघेरेचहुँओरा॥

दोहा–नेसुककरतविलंबहीं, जरततुम्हारेदास॥ उठहुलालततकालअब, मेटहुपावकत्रास॥ २३॥
बड़ेबड़ेसंकटतुमटारे। बड़ेबड़ेअसुरनकहँमारे॥ बड़ेबड़ेमेटेउतपाता। यहदावानलकेतिकबाता॥
आजुसबनकहँलेहुबचाई। तुमअतिबलहोरामकन्हाई॥ बरुहमयहिंठौरैंजरिजैहैं। तुमहिंत्यागिअंतैनहिंजैहैं॥
तुम्हरेनिकटभीतिहैनाहीं। असविश्वासहमरेमनमाँहीं॥२४॥गोपनवचनसुनततेहिकाला।उठेतुरतरामहुँनँदलाला॥
लखेचहूँकितपरमकराला। पसरतआवतिपावकज्वाला॥ तबग्वालनतेहरिदियभाषी।मूँदहुसिगरेनिजनिजआँषी॥

दोहा–केशवकेसबवचनसुनि, निजनिजमूँदेनैन॥ हरिहरिपावकज्वालसब, कियोपानबलऐन॥ २५॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे सप्तदशस्तरंगः॥ १७॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–चखनखोलिनिरखेंसबै, कहूँनपावकदीख। मनहुँकलपतरुकृष्णको, पायेजियकीभीख॥
कहनलगेसबआपुसमाँहीं। लालबचायलियोसबकाँहीं॥ यहधौंकौनदेवह्वैआयो। ब्रजकेसंकटअमितनशायो॥
कोउकहगरगगिराअसिभाषी। सोहमसिगरीसुधिकरिराषी॥ नारायणसमगणहैंजाके। ऐसेचारितनअचरजताके॥
असकहिमिलतभयेहरिकाँहीं।कहतभयेतुमसबकोउनाँहीं॥निशासिरानिभयोभिनसारा।गोपगोपितहँमुदितअपारा।
गोवनकहँआगेकरिलीन्ह्यों। वृंदावनहिंगमनसबकीन्ह्यों॥ चलेमध्यतिनकेहरिरामा। पुनियशुमतिनंदहुँसुखधामा॥
कृष्णचरित्रगोपसबगावैं। मारगमहँअतिआनँदपावैं॥

दोहा–जायसबैनिजनिजभवन, वसतभयेसुखछाय। नितनितनवलीलाकरैं, रामसंगयदुराय ॥१॥
विहरतव्रजमहँरामगोपाले। सुखयुतबीतिगयेबहुकाले॥ तहँआईग्रीषमऋतुघोरा।जोप्राणिनप्रियलागतिथोरा ॥२॥
पैवृंदावनकेगुणपाई। ग्रीषमहूँवसंतसमभाई॥ रामश्यामतहँकरहिंविहारा। तहँकोसुखकोकरैउचारा ॥ ३ ॥
यमुनानीरनिर्मलगंभीरा। शीतलमंदसुगंधसमीरा॥ निर्झरझरतहोतझनकारी। झिल्लिनझनकनिढाँपनहारी॥
शीतलसीकरचहुँदिशिझरहीं। नवनवतरुकोमलदलपरहीं॥ शीतलमंजुकुंजअलिगुंजैं। वंजुलतरुमंजुलसुखपुंजैं॥
कुसुमितकुंदकेतकीकेते। द्रुममंडलमंडितथलजेते॥

दोहा–नवनवनिकरेतृणनके, अंकुरतहँबहुरङ्ग। मनुवसुधामेंबिछिरही। बहुरँगसेजअभङ्ग ॥ ४ ॥
सरससरससरसीसरसोहत। मंडितमहामुनिनमनमोहत॥ फूलेसरसिजचारिप्रकारा। तिनतेझरतमरंदअपारा॥
चहुँकितचहुँरँगउडतपरागा। जनुवसंतऋतुखेलतफागा॥ वृक्षनकीछायाक्षितिछाई। रविप्रतापकीतापनजाई॥
चहुँकिततृणपल्लवहरियारी।कबहुँनदुखदैसकतिदवारी॥छैसारिसरझरमारुतानिसरत।तेहिंपसरतजलरविकरबिसरत५
यमुननीरमणिनीलसमाना।कहुँअगाधकहुँजानुप्रमाना॥ उठहिंतरंगअमितमनहारी। परसतपुलिनसुशीतलवारी॥

दोहा–शीतलताईतासुनित, रहीतटनमहँछाय। अतिप्रचंडकरचंडकर, होतठंढ़तहँजाय ॥ ६ ॥
सारसराजहंसचकवाके। बैठेतटनसतियसुखछाके॥ करहिंचहूँकितमाधुरशोरा। सोसुनिउपजतसुखनहिंथोरा॥
कुसुमिततरुअवलीजेहिंकानन।तेहिवृंदावनसमवनआनन॥कोइलकेकिकपोतहुकीरा।पिकचकोरचातकबिनपीरा॥
विहरहिंव्रजवनठौरहिंठौरा। करतअनेकनमंजुलशोरा॥ डगरडगरडगरहिंतियसंगा। चरतनवीनेतृणनकुरंगा॥
मत्तमधुपतहँकुंजनिकुंजनि। भमरीसंगकरतकलगुंजनि॥वृंदावनसमवननहिंदूजो। ताकीछबिनंदननहिंपूजो ॥७॥

दोहा–एकसमयतहँभोरहीं, जगेकृष्णबलराम। गहिवंशीटेरतभये, सुंदरसुरसुखधाम॥
सुनिवंशीकीधुनिसबग्वाला। लैगौवनडगरेततकाला॥ इतैयशोमतिउठिसुखछाई। कृष्णहिंतुरतकलेऊल्याई॥
दियोकलेऊहरिहिंकराई। पुनिसुंदरझँगुलीपहिराई॥ तैसहिंरामहुँकहँनँदराई। दियपठायभोजनकरवाई॥
लैअपनीगौवेंनँदलाला। औरहुगऊसहितगोपाला॥ चलेचरावनवृंदावनमें। जेहिलखिउपजतसुखछनछनमें ॥८॥
घनीकुंजयकरहीसोहाई। जाकीछायाअतिसुखदाई॥ तहँबैठेप्रभुसखनसमेतू। गौवेंचरनलगींमतिसेतू॥
मोरपुच्छकोमलहुप्रवाला। ल्यायेसखाहरषितेहिंकाला॥

दोहा–औरहुबहुरँगलाइतहँ, धातुनकोगोपाल॥ हरिबलकेअंगनिरँगे, हरितपीतसितलाल॥
मोरपखनिकेमुकुटबनाई। हरिबलकेशिरदियोसुहाई॥ पँचरँगपुहुपपत्रतेहिंकाला। तिनकीरचिवैजंतीमाला॥
रामश्यामकोदियपहिराई। हरिबलदियतिमितिनहिंबनाई॥ रामकृष्णयुततहँसबगोपा।नाचनलगेगाइभरिचोपा॥
कहुँकहुँमल्लयुद्धजुरिकरहीं। हारेहुजीतेउरसुखभरहीं॥कहुँगावनलागहिंसबग्वाला। सुरमिलाइदैदैकरताला ॥९॥
सखासुनहुँअसकह्योविहारी। लखहुसबैअबनृत्यहमारी॥ असकहिकरिनूपुरझनकारी। नचनलगेहरिदैकरतारी॥

दोहा–लेततानसुखमाधुरी, गावतरागवसंत॥ भरतअमितगतिचरणसों, भूमहँभूरिभ्रमंत॥
नचतनिरखितहँनवलकिशोरै। गावनलगेसखातेहिंठौरै॥ सुरमिलाइकोउवेणुबजावै। कोउविषाणकेसुरनिमिलावै॥
कोऊदेतदुहूँकरताला। कोऊसराहतहरिकहँग्वाला॥ असहमनृत्यकहूँनहिंदेषी। जसतुमनाचहुकान्हविशेषी॥
यहिविधिबहुविधिवचनबखानैं। मानतमीतगोपभगवानैं॥१०॥गोपरूपधरिनाकनिवासी।सिगरेहोतभयेव्रजवासी॥
रामकृष्णकोसेवनकरहीं। महामोदअपनेउरभरहीं॥ जिमिनटसबप्रधाननटकाँहीं। बारहिंबारसराहतजाँहीं॥
ग्वालबालतैसहिंनँदलालै। जातसराहतदैदैतालै॥ ११॥

दोहा–रेखखैंचिकहुँरेणुमें, तेहिंबिचह्वैघनश्याम॥ छुवहिंदौरिकैसखनको, पुनिआवहिंतेहिंठाम॥
कहुँरचिअपनीअपनीपाली। बलओहिओरइतैवनमाली॥ कूदिकूदिइकपगसोंग्वाला।छुवहिंएकएकनततकाला॥

फेंकिदेतलकुटीकहुँदूरी। कहहिंजोलावहिंतेहिंजयपूरी ॥ जोकोउदौरिताहिलैआवै। सोहरिकरइनामफलपावै॥
कहुँहरिह्वौहिंआशुइकओरा। एकओररोहिणीकिशोरा॥ ठोंकिठोंकिकैतालगुवाला। करहिंमल्लयुधजोरविशाला॥
ऐंचिलेहिंइकइककरगहिगहि।तोहिदेहौंपछारिअसकहिकहि।मल्लयुद्धहरिरामहुँकरहीं।दोहुँदिशिदोहुँनसखाप्रचरहीं॥
दोहा–सहजहिंमहँबलरामतहँ, हरिकहँलेहिंउठाय ॥ रामओरकेतबसखा, सिगरेहँसैंठठाय ॥
कबहूँपेचनकरिपगटारी। रामहिंदेतगिराइमुरारी॥ कृष्णसखातबहरिहिंसराहीं। अँगकीरजपोंछहिंउतसाहीं॥
काकपक्षधारेदोउशीशा।हलकेंअलककपोलमहीशा॥१२॥पृथकपृथककहुँसखासुखारी।नाचहिंलैलैगतिमनहारी॥
रामश्यामतबगावनलागैं। वेणुबजायमहासुखपागैं॥ कहहिंसराहिसखासुखरासी। करीनृत्यतुमबहुतैखासी॥१३॥
कहुँलैबेलउछालहिंहाथै। द्वैद्वैचारिचारिइकसाथै॥ कहुँकुंभीकेफलबहुतोरी। अरुधात्रीकेफलनबटोरी॥
भरिभरिमूठीसखनजनावैं। तेईफलबहुदाँवलगावैं॥ जेजानहिंतेफललैलेहीं। जेनहिंजानहिंतेफलदेहीं॥
दोहा–सबैसखाकहुँआइके, भाषहिंहरिबलपाँहिं॥ खेलहुचोरमिहींचनी, असहमरेमनमाहिं॥
प्रथमहिंरामश्यामदृगमूँदे। भागतसखाचहूँकितकूदे॥ सिगरेसखाजबैदुरिजाँहीं। तबछोंडैंबलकान्हरकाँहीं॥
जिनकोकृष्णढूँढिगहिल्यावैं। तेईबलसोंआँखिमुँदावैं॥ कहुँकुरंगकेसंगहिंधावैं। कहुँविहँगकेढंगदेखावैं ॥ १४॥
कहुँसरितनकेसोतनकाँहीं। चौफाफालकूदितेजाँहीं ॥ जेकोउकूदतबीचहिंगिरहीं। तिनकीसखाहासबहुकरहीं॥
कहुँतरुशाखनकोकरिझूला।पहिरिपहिरिअँगभूषणफूला॥रामश्यामतेहिंमध्यसोहावैं।सखासुखितनिजकरनझुलावैं॥
दोहा–कहँसिगरेजुरिकैसखा, रामहिंभूपबनाइ ॥ कान्हरकोमंत्रीकरहिं, आपुप्रजासमुदाइ ॥
नृपकैसीलीलाबहुकरहीं। हरिबलहुकुमसबैअनुसरहीं१५यहिविधिबहुलीलामहराजा।करहिंकृष्णयुतगोपसमाजा॥
कहुँखेलहिंयमुनातटआई। कहुँगोवर्धनकंदरजाई॥ कहुँकुंजनकुंजनमहँबागैं। कहुँकाननकाननसुखपागैं॥
कहुँगमनहिंदोउतालतलाई।पूरीजहँसरसिजसमुदाई॥१६॥यहिविधिहरिबलतेहिवनमाँहीं।रहेचरावतगौवनकाँहीं॥
कृष्णहरणहितकंसपठायो। तहाँप्रलंबासुरद्रुतआयो॥ सखनसंगखेलतलखिदोऊ।गोपरूपरचिलीन्ह्योसोऊ ॥१७॥
दोहा–सोउसखनमेंमिलिगयो, हरिबलहरणहिंहेतु ॥ पूँछेकहँनँदगाँउमें, भैयामोरनिकेतु ॥
जान्योताहिंकृष्णभगवाना।तेहिवधहेतुकियोअनुमाना॥कहँहरिहेनँदगाँउनिवासी।आवहुखेलहुतुमहुँहुलासी॥१८॥
असकहिऔरहुसखाबोलाई। दियोवचनअसतिनहिंसुनाई॥ खेलहिंआजुचढ़ाउगोटाऊ। असहमरेमनहोतउछाऊ॥
सखाकहेकहकान्हरनीकी। जानिलईहमरेसबजीकी॥ १९॥ एकओरभेरामप्रधाना। एकओरभेश्यामसुजाना॥
सखागोलयहिविधिमेंदोई॥ २०॥ असकरिदीन्हेंप्रणसबकोई॥ द्वैद्वैदौरिचढ़ैंतरुमाँहीं। तिनमेंजेआगेचढ़िजाँहीं॥
दोहा–सोइजीत्योतेहिपीठिमें, हारोलेहिचढ़ाइ॥ २१॥ वटभांडीरकलोंतुरत, ताहिदेहिंपहुँचाइ॥
असकहिखेलततहँअनुरागे।चढ़नदौरिद्रुममेंद्रुतलागे॥२२॥जीतेरामसखातेहिंकाला।हारेसखनसहितनँदलाला २३
हरिश्रीदामहिंपीठिचढ़ायो। वृषभहिभद्रसेनलैधायो॥ चढ़ेप्रलंबपीठिबलरामा। चलेवटाहिभांडीरकनामा॥
यहिविधिऔरहुसखातहाँहीं।लैगमनेनिजजोरिनकाँहीं२४कृष्णहिंमहाबलीअनुमानी।ताहिवधननिजशक्तिनजानी॥
दुष्टप्रलंबासुरयहिहेतू। रामहिंलैधायोछलकेतू॥ सखाऔरभांडीरसिधारी। दियोपीठितेसखनउतारी॥
दोहा–तहँप्रलंबबलरामको, वटभांडीरकनाकि। लैधायोअतिजोरसों, कृष्णओरनहिंताकि॥ २५॥
झूलनाछंद–नभधूरिकोभरतरिसिभूरिउरकरतलैदूरिद्रुतरामकोदुष्टआयो।
पैंधराकेधरनकीधराधरसरिसगरुआनिलहितासुतनसेदछायो॥
तबताकिचहुँओरतेहिंठोरतेजोरकरिघोरशठशोरभरिगोअकाशा॥
तहँरामकेइननकोमननकरिजननकोभीतिकरिआपनोवपुप्रकाशा॥
अतिचमकतेचटकयुगपुरटकेकटककरविकटनखतटनिपटकटकनाशी॥ २६॥

युगभृकुटिमिलिविकुटिमहँकसीदुपटीकटीनिटिललखिकीटचटपटप्रकासी ॥
अतिलालविकरालदृगकालकेकालमनुकढतिशिखिज्वालततकालभारी।
सुठिलसतउरमालउरमालमणिमालमुखतालसेचालअतिभीतिकारी ॥
भैगाढ़प्रदडाढ़मनुबाढ़तिनमेंधरीमेघआषाढ़सीकायकारी।
परलंबकेलसतपरलंबभुजदंडयुगमनहुँब्रह्मांडकेहैंविदारी ॥
युगगंडमंडलहिमधिकनककुंडलनकेसुभगमंडलअखंडलविराजैं।
युगजंघमनुखंभपापाणकेरंभजेहिंजंभअरिदेखिनिरदंभभाजैं ॥
मदअंधनिजकंधमहँलियेजगवंधुवलसिंधुसतिसंधरोहिणिकिशोरै।
शठलसतसुठिगगनमधिकनकभूपणसहितउडतअतिवेगभरिकरतशोरै ॥
सोइमनहुनभमध्यनभनवलनीरदविहदसहितछनजोतिछितिछटाछावै।
पुनिताहिपरपरमप्रकाशपूरितशशीउदितपूरबदिशाअतिसोहावै ॥ २७ ॥
परलंबकोबहतनभनिरखिनिजकाँहिंमनमाँहिंअसगुन्योहलमुसलधारी।
यहसखाहैमृषासातिअसुरकीन्हींदगापापमेंपगादुर्भगाभारी ॥
असठीकउरठानिबलखानिबलदेवतहँतासुवधचोपिकरिकोपभूरी।
तहँतुरतहींवज्रसममुष्टिनिजबाँधिदियतासुशिरमारिलखिजातदूरी ॥ २८ ॥
मनुभयोअवनीशगिरिशीशपैंवज्रकोपातसहसानयकबारभारी।
तबचटपटैचटकिशिरफूटिगोफूटसोंटूटिगोलंकविधितैंसुरारी ॥
मुखबमतबहुबारवहँरुधिरकीधारविकरारदृगकाढिरसनानिकारी।
करचरणपसराइअतिघोररवछाइमुखबाइमरिशठगिरयोभूमझारी ॥ २९ ॥

दोहा-लखिप्रलंबकोनिधनतहँ, बलकरतेगोपाल। धाइधाइबलरामको, मिलतभयेतेहिंकाल ॥

कहनलगेविसमितह्वैगोपा। यहशठकियोखेलकरलोपा ॥ दगाकरीतुमसेबलरामा। सखारूपधरिकैयहिठामा ॥
हैइयाबासतुम्हेंबलरामा। जोयाकोपठयोयमधामा॥३०॥पुनिपुनिबलहिंसराहतजाँहीं।नाहिंसमातआनँदउरमाँहीं ॥
पूजहिंप्रबलबाहुबलकेरी। पुनिपुनिआशिषदेहिंघनेरी३१॥निधनप्रलंबासुरकोदेखी। अमरसबैअतिआनँदलेखी ॥
बरषहिंविविधसुमनबलशीशा।कहहिंबारबहुजयतिअहीशा॥अस्तुतिकरहिंसबैबहुभाँती।बलसमानकोरिपुगणघाती

दोहा-पुनिआनँदअतिपाइकै, देवगयेनिजधाम। गोपनयुतविहरनलगे, वृंदावनबलश्याम ॥ ३२ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे अष्टादशस्तरंगः ॥ १८ ॥

दोहा-रामश्यामपुनिसखनयुत, लहिआनंदअनूप। खेलनलागेखेलबहु, वृंदावनमेंभूप ॥

रँगेखेलकेरंगनिभारी। गौवनकीदियसुरतिबिसारी ॥ गौवैंचरतचरततेहिंकाला। गईदूरिलौंबगरिभुवाला ॥
सुरभीचरतचरतअपनेमन। गईऔरआगेजहँघनवन ॥ १ ॥ पुनिवहवनतेचरतसुखारीं। आगेऔरहुधेनुसिधारीं ॥
रह्योमुंजवनतहँअतिघोरा। चरनलगींनवतृणतेहिंठोरा॥होतभईगौवैंअतिप्यासी।करहिंशोरहरिदरशनआसी ॥२॥
लखेनगौवँनकहँगोपाला। तबबोलेसुनियेनँदलाला ॥ खेलतहमअतिशयसुखमाँहीं। गौवनकीकीन्हीसुधिनाँहीं ॥

दोहा-चरतचरतगौवैंगईं, दूरकहूँवनमाँहिं। खेलछोंडिहेरहुतिनाहिं, औरदूरनहिंजाँहिं ॥

असकहिरामकृष्णयुतबाला। हेरनचलेगऊतेहिंकाला ॥ लैलैनामतिनाहिंगोहरावैं। वेणुशृंगकेशोरमचावैं ॥

कहाँगईसबधेनुहमारी।असकहिकहिवहुहोहिंदुखारी॥३॥तिनखुरखनितविलोकिमहीको।चलेसबैलहिसोइसहीको॥
धेनुदंततृणकटेनिहारी । तेहिंमारगगोगमनविचारी॥४॥खोजतचलेगयेयहिभाँती।मुंजविपिनमधिगऊजमाती ॥५॥
तहँनिरखेहरिसहितगुवाला । तृषितखरींजहँगऊविहाला॥५॥कारीकाजरिधूसरिधौरी । हंसिनवंशिनवासिनवौरी॥

दोहा—तिनकेलैलैनामअस, हरिबाँसुरीवजाइ । लीन्हेतिनकोआशुहीं, अपनेनिकटबोलाइ ॥ ६ ॥

गोपहुतृषितश्रमितअतिह्वैगे । गौवनसहितमहादुखछैगे ॥ मुरुकिचलेहाँकततिनकाँहीं । मध्यमुंजकेकाननमाँहीं॥
मिल्योनकहुँतहँमारगतिनको।उठ्योकोटमनुमुंजहितृणको।तहँआपहिंतेनृपतेहिंकाला।लागिगयोवनअनलकराला
धूमधुंधधायोचहुँओरा । अंधकारकीन्ह्योंअतिघोरा॥ पुनितेहिंविचविचतेविकराला । उठनलगीदावानलज्वाला ॥
पवनचल्योतहँदेतझकोरा । उठीलूकचहुँओरकरोरा ॥ कोहुकीरहीनजीवनआशा । मानेसबैआपनोनाशा ॥

दोहा—चटचटाइतहँवंशगण, फूटिफूटिफटिजात । पटपटाइतृणगणजरत, आरतजंतुभगात ॥

मनहुँप्रलयपावकवनआयो।सिगरेजगकोचहतजरायो॥लपटैंझपटैंविकटैंभारी । चटकैंशिलाअगिनिकीझारी॥ ७ ॥
चहुँकितेतेलखिपावकआवत । गोपसबैअतिशयभयपावत ॥ रामकृष्णकेचरणनआई । गिरेगोपगौवेंदुखछाई ॥
मीचुभीतिजिमिप्रजाघनेरे । जातशरणनारायणकेरे ॥ कहेगोपसबएकहिंबारा ॥८॥ कृष्णकृष्णहेबलीअपारा ॥
हेअथाहविक्रमबलरामा । रक्षणकरहुआजुयहिठामा ॥ दावानलजारतहमकाँहीं । दूजोरक्षकदरशतनाँहीं ॥ ९ ॥

दोहा—यहअचरजलागतमनहिं, हमसबसखातुम्हार । तुम्हरेदेखतशोकके, बूडतपारावार ॥

तुमतौसवधर्मकेज्ञाता । रक्षहुकसहमकोनहिंताता ॥ अहौनाथयकतुम्हींहमारे । द्वितियनदरशतनैननिहारे ॥
तुमकोतजिकेहिंठौररहिंजाँहीं । कसनहिंहोतिदयाउरमाँहीं ॥ १० ॥

श्रीशुक उवाच ।

दीनवचनसुनिदीनदयाला।कह्योसखनसोंवचनउताला॥मूँदहुआँखिसबैयकवारा।करहुनकछुजियमाहँखँभारा।११॥
सखासुनतहरिवचनतहाँहीं।मूँदिलियेनिजनिजदृगकाँहीं॥तबनिजमुखसोंतहँभगवाना।करिलीन्ह्योंदावानलपाना १२
सबकोनिकटवटैभाँडीरै । दियपहुँचाइमेटिसबपीरै ॥

दोहा—कह्योनैनकोखोलहू, सिगरेसखासुजान । दावानलसबमिटिगयो, आयेपुनितेहिंथान ॥

खोलेसखाचखनसुखलेखे । दावानलकोकतहुँनदेखे ॥ खड़ेसबैभाँडीरहिंनेरे । तबविसमितयकएकनहेरे ॥
सपनोंसोतिनकहँह्वैगयऊ।सबकेउरअतिआनँदभयऊ॥१३॥प्रभुकोऐसोनिरखिप्रभाऊ । कहनलगेसिगरेनृपराऊ ॥
अहैनंदसुतसत्यविधाता।यहिप्रभावकछुजानिनजाता॥१४॥तबहरिकह्योसाँझअबआई । चलहुसबैव्रजकोलैगाई ॥
असकहिगौवनहाँकिमुरारी।सखनसहितव्रजचलेसुखारी॥ग्वालबालमधिवेणुबजावत।मंदमंदनँदनंदनआवत ॥१५॥

दोहा—तहँगोपीसबदेखिकै, दरशनचोपीआसु । कढिकढिमगठाढीभई, तजितजिनिजैनिवासु ॥
जिनकोहरिदरशनबिना, क्षणसोयुगसमजाइ।तिनकोहरिमुखदरशको, सुखमुखकहिनसिराइ॥१६॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदांबुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे एकोनविंशस्तरंगः ॥ १९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—हरिबलअपनीधेनुलै, नंदभौनमेंजाइ । निजनिजथलमेंसबनको, लीन्हींबाँधिलगाइ ॥

यशुमतिकरगहिहरिबलकाँहीं । लैगैभीतरभौनहिंमाँहीं ॥ चरणचापिभोजनकरवाई । पलनापरदियदुहुनसोवाई॥
लैलैधेनुऔरसबग्वाला । निजनिजभवननगयेभुवाला ॥ नरनारिनयहकथासुनाई । आजहुअसुरहन्योबलराई ॥

पुनिगौअनहेरततहमजाई ॥ रहेमुंजवनमाँहहेगई ॥ तहँदावानललाग्योघोरा। जियनभरोसरह्योनहिंथोरा ॥
लियोबचाइनंदसुततहँते। दियपहुँचाइगयेहमजहँते ॥३॥सुनतबालकनकीअसबानी। नरनारीबहुविस्मयमानी ॥

दोहा-आपुसमेंअसकहतभे, रामऔरनँदलाल। हैंकोउवरदेवता, व्रजआयेयहिकाल ॥
यहिविधिकरतचरित्रबहु, वृंदावनमहँनाथ। रामसहिततहँवसतभे, व्रजजनकरतसनाथ ॥ २ ॥

कवित्त-ग्रीषमकभीषमतमारितापतापितवि-लोकिकैमहीकोजानिपरमदुखारीहै।
तैसहिंपहारनकोझरेपत्रपूरेपेखि, मोरनमतंगनपरावनोनिहारीहै ॥
दीनसेसरितसरसरसीसलिलहीन, विश्वकोबहुतविधिव्याकुलविचारीहै।
जेठकीकठिनशठताईमेटिबेकोअब-नीपतिअषाढ़आयोकरिकैतयारीहै ॥
कारीकारीघटामतवारेहैंमतंगमनु, विविधिकिताकेलसैंदामिनिपताकेहैं।
घनकीगरजसोईदुंदुभिधुकारहोत, वाँसुरीसिफूकैंमोरपैदरवलाकेहैं ॥
चातकनकीवबोलिपावसअदंकदेत, सुखितकुरंगतेतुरंगममजाकेहैं।
वाणवारिमारिदियोग्रीषमैनिकारिवसुधातेमजबूतमेघभेजेमघवाकेहैं ॥

दोहा-पावसऋतुव्रजमेंलगी, उतपतिप्रभुपदजीव। छाईदशहुँदिशानमें, घनमंडलीअतीव ॥ ३ ॥
करतशोरदामिनिसहित, घनलीन्होंनभछाइ। जिमिअज्ञानआवर्णते, सगुणब्रह्मछपिजाइ ॥ ४ ॥
आठमासनिजकिरणिसों, जलशोखतहैभानु। चारिमासवरषतसोई, ज्योंभूपतिवरदानु ॥ ५ ॥
जलवरषहिंचपलासहित, घनलहिपवनझकोर। द्रवहिंसाधुजिमिदीनपर, जीवनदेसबठोर ॥ ६ ॥
ग्रीषमतापतपीधरणि, लहिघनभैसुखभीन। जिमितपफललहितपकृशित, तपीहोततपपीन ॥ ७ ॥
नखतनभासितहोतनिशि, जोगनभासअपार। जिमिकलियुगमेंवेदनहिं, होतपखंडप्रचार ॥ ८ ॥
घनकीघोरगरजसुनि, दादुरकीन्हेंशोर। नेमसमापतवेदजिमि, भाषतविप्रकिशोर ॥ ९ ॥
क्षुद्रनदीबाढ़ीविपुल, कीन्हेंवेगविशाल। धनलहिचलतकुचालज्यों, जनमकेरकंगाल ॥ १० ॥
अरुणचँदेनीहरिततृण, युतछत्राकवलाक। जनुपावसआवतसदल, छाजतछत्रपताक ॥ ११ ॥
कृषिककृषीबाढ़तनिरखि, हरषलहतादिनदून। जैसेलोभीधननिरखि, मानतकबहुँनऊन ॥ १२ ॥
जलथलवासीजीवलहि, नवजलभेसुखरूप। जिमिहरिभजनप्रभावते, होतरुचिरवपुभूप ॥ १३ ॥
मिलैंनदीसागरउठै, पवनप्रसंगतरंग। विषयलहैयोगीनयो, जिमिमनकरबहुरंग ॥ १४ ॥
हनेजातजलधारगिरि, पैनाहिंकरतखँभार। जिमिहरिजनकोविषयकी, बाधानहिंसंसार ॥ १५ ॥
जानिपरैमारगनहीं, तृणसंकुलजलधार। विनअभ्यासजिमिवेदको, द्विजमुखनहिंसंचार ॥ १६ ॥
सुखकरघनमेंछनछिपति, छनछहरतिछनजोति।मुनिहुँकंतकुलटानिकी, जिमिथिरप्रीतिनहोति ॥१७॥
इंद्रचापआकाशमें, विनगुणअसछबिदेहिं। विनगुणकेबहुपुरुषजस, यहजगमहँयशलेहिं ॥ १८ ॥
निजकरशोभितघननसों, छपितशशीनसोहाय। अहंकारसवलितपुरुष, जिमिनछजतनृपराय ॥१९॥
देखिघटीवनकीघटा, नचतमोरचहुँओर। दुखितगृहीजिमिसाधुको, लहिमुदलहतअथोर ॥ २० ॥
नवजललहिवनकेविटप, भयेसपत्रसशाख। तपीकृशितफलपायजिमि, पूरहिंसुखअभिलाख ॥ २१ ॥
सरतटकंटककीचबिच, कहुँबससारसकोक। जिमिकुमतीलहिदुखबहुअति, तजहिनआपनओक॥२२॥
सलिलधारकेजोरसों, फूटिगयेबहुसेत। वेदनकीमरयादजिमि, कलिपखंडहरिलेत ॥ २३ ॥
मारुतप्रेरितजलदजिमि, जीवनजीवनदेत। द्विजप्रेरितनृपसोंयथा, प्रजामनोरथलेत ॥ २४ ॥

रहेपाकिचहुँओररसाला। मनुउपकारीपुरुषविशाला ॥ पकेजंबुफलभूमहँगिरहीं। द्रव्यदानदानीजनुकरहीं ॥

पकेगुच्छसोहतखरजूरा। मानहुँखड़ेजीतिरणशूरा॥ ऐसीलखिकाननकीशोभा। हरिबलकोविहरनमनलोभा॥
लियोआशुसबसखनबोलाई। धेनुचरावनचलेकन्हाई॥ पुनिमाधुरिबाँसुरीबजाई। लैलैनामनिधेनुबोलाई॥
वेणुटेरसुनिगौवैंधाई। आशुहिंनँदनंदनढिगआई॥ २५॥ बोयनभारहिंमंदगामिनी। हरिआगेगवँनीसोहावनी॥
थनतेढारहिंपयकीधारैं। फिरिफिरिनिरखहिंनंदकुमारैं॥ २६॥

दोहा—यहिविधिग्वालनबालअरु, गौवनयुतगोपाल। जातभयेविहरनहितै, वृंदाविपिनिरसाल॥

गिरितेगिरहिंशोरकरिघोरा। जलकीधारचारुचहुँओरा॥ हरितवरणसिगरीवनराजीं। मधुधाराढरकततरुराजीं॥
तहँगिरिगुहाअनेकसोहाँहीं। तिनमेंसलिलधारनहिंजाँहीं॥ऐसोवनविलोकिनँदलाला। मुदितभयेयुतग्वालनबाला॥
धेनुचरावनतहँप्रभुलागे।सखनसहितअतिशयअनुरागे२७उमडिघुमडितहँनभघनश्यामा। बरषनलगेजहाँघनश्यामा
तरुकोटरहरिभागिलुकाने। ऐसहिऔरहुसखादुराने॥ तहँतेइकएकनगोहरावैं। हमरेनिकटबूँदनहिंआवैं॥

दोहा—झरझरजलधाराझरति, मरमरतरुदलहोंय। तरतरथरथरजलबहत, उपरउपरसबकोय॥

नेसुकनिकरिगयेजबमेवा। बोलनलगेचहूँदिशिमेघा॥ निजनिजकोटरतेतबग्वाला। आयेनिकसिजहाँनँदलाला॥
खोजिखोजितहँकंदमूलफल। लायदियेकहँलेहुकृष्णबल॥ सखनबाँटिहरिबलसुखपागे।भोजनकरनआपहूँलागे॥
फलभोजनकरिरामकन्हाई। लगेचरावनविहरतगाई।२८॥इतैयशोमतिढुपहरजानी। ह्वैहैंक्षुधितकृष्णअनुमानी॥
दधिओदनमिश्रीअरुमाखन। औरहुविजनयोग्यजोचाखन॥थारनकलशनछीटभराई। गोपिनहाथदियोपठवाई॥
सोलहिकृष्णपरमसुखपाई। सखनसहितयमुनातटजाई॥

दोहा—मृदुलशिलाछायाघनी, बहतिधारचहुँफेरि। तहँहरिबलबैठतभये, सखासबैतिनघेरि॥

सखनबाँटितहँव्यंजननाना। भोजनकरनलगेभगवाना॥ स्वादसराहिआपुकहँदेहीं। कबहूँसखनकेरलैलेहीं॥२९॥
हरिचहुँओरहरिततृणमाँहीं। चारिचारिआयमूँदिदृगकाँहीं॥ वृषभगऊबछराअलसाँहीं। बैठेपागुरिकरतसोहाँहीं॥
तिनहिंनिरखिहरिबलअरुग्वाला।भोजनकरतलहतसुखमाला ३० बारहिंबारकहैंसबपाँहीं। पावससीदूजीऋतुनाँहीं॥
यहसबकोहैआनँदकारी। प्रीतिबढ़ावनहारिहमारी॥ पावसमेंवृंदावनशोभा। कहहुकौनलखिकैनहिंलोभा॥३१॥

दोहा—यहिविधिविहरतविविधविधि, गोपनयुतगोपाल। लागीव्रजमेंशरदऋतु, बीत्योबरषाकाल॥

कवित्त—मोरऔपपीहनसोंनिरखिनिरादरम-रालचक्रवाकनकोसारसनहदहै।
तैसेचंदचाँदनीकीचाँदनीनपूरीपेखि, मेघनकीमालाघेरिकीन्हीजाहिरदहै॥
रघुराजसलिलसरनमेंसरसह्वैके, बोरिदियोवारिजकेवृंदनविहदहै।
जानिकैदरदऐसीपावसैगरदकैके, आयगयोवृंदावनमरदशरदहै॥
मंदभयोमारुतअमंदभयोचंदअर-विंदनकेवृंदवैअनंदभरेविकसे।
मत्तभेमतंगऔकुरंगऔविहंगबहु, त्योंहीह्वैअमत्तमोरदुरिगेवनिकसे॥
पुलिनदेखावतींघटावतींसलिलयोंसो-हावतींसरितआयेखंजनपथिकसे।
रघुराजमेघनकेमंडलमयंककेम-यूखकोडेरायनभमंडलतेनिकसे॥ ३२॥

दोहा—शरदपायजलअमलभो, फूलेकंजप्रसिद्ध। योगभ्रष्टपुनियोगकरि, जिमिसुधरतहैसिद्ध॥ ३३॥
नभकेघनजनुरिरहत, जलमलपुहुमीपंक। शरदहन्योंजिमिकृष्णकी, पदरतिहरतिकलंक॥ ३४॥
विनघहरणिविनवारिके, विलसतवारिदसेत। जिमिजगआशुनिराशह्वै, लसतसंतमतिसेत॥ ३५॥
कहुँढारतजलधारगिरि, कहुँढारतहैनाहिं। देतकबहुँनहिंदेतजिमि, ज्ञानीज्ञानहिंकाँहिं॥ ३६॥
दिनदिनसूखतक्षुद्रजल, जानतहैंनहिंमीन। जिमिक्षणक्षणआयुषघटत, गुनतनजनमतिहीन॥ ३७॥
होतदुखीलघुसरनके, जियलहितरनिप्रताप। कृपिणकुटुंबीदारिदी, जिमिपावतबहुताप॥ ३८॥

क्रमक्रमसोंकरदमसुख्यो, पीनलतातरुडारि। जिमिक्रमक्रमममतातजें, धीरधीरताधारि ॥ ३९ ॥
खजवकमकरिअचलजल, सिंधुभयोसवठाम। परमहंसजनहोतथिर, तजिसिगरेजगकाम ॥ ४० ॥
बाँधिसेतुसींचनकृपी, लावतसलिलकिपान। जिमिविषयनतेखैंचिमन, थिरराखतमतिमान ॥ ४१ ॥
तरणितापदिनकीहरत, जीवनकीनिशिचंद। जिमिविज्ञानअभिमानअरु, व्रजतियतापमुकुंद ॥ ४२ ॥
अमलतारनिर्मलगगन, अतिशयशोभितहोय। वेदअर्थधारीसतो, गुणयुतमनजससोय ॥ ४३ ॥
व्योमअखंडलमंडलै, सोहतउडुयुतचंद। जिमियदुनगरीयदुनयुत, सोहतश्रीयदुनंद ॥ ४४ ॥
तापरहितसबजनभये, परसततत्रिविधसमीर। पैविनहरिहियरालगे, मिटीनगोपिनपीर ॥ ४५ ॥
भेसगर्भगोखगमृगी, तिनपाछेपतिजाँहिं। जिमिकीन्हेहारिभक्तिके, सिगरेफलपछिआँहिं ॥ ४६ ॥
भानुउदैकुमुदिनबिना, विकसहिंकंजअथोर। जिमिधर्मीलहिनृपतिको, प्रजासुखीबिनचोर ॥ ४७ ॥
पकीकृषीग्रामनपुरन, प्रचर्योअन्ननवीन। घरघरउत्सवहोतजिमि, हरिलहिमहिसुखभीन ॥ ४८ ॥
व्रतीवनिकनृपअर्थहित, गमनकियेतजिओक। जिमिसुकाललहिसिद्धजन,तनुतजिजिनजसलोक ४९ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे विंशतितमस्तरंगः ॥ २१ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-एकसमयतहँभोरहीं, जगेरामअरुश्याम। सखनसहितगमनतभये, धेनुचरावनकाम ॥

कवित्त-पन्नासमपूरेनीरपरमगँभीरसर, विकसीजलजभरिकैरैंउरपरिहैं।
शीतलसुगंधधीरबहतसमीरतहाँ, तीरतीरतरुनमेंबोलिरहेकीरहैं ॥
मुनिमतिधीरहूँविलोकतअधीरहोत, मदनअमीरउरबेधैतीखेतीरहैं।
छीरदाचरावनकोसहितअहीरवृंद, वृंदावनपैठेबलवीरबलवीरहैं ॥ १ ॥
फूलिरहेफूलबहुफैलिरहींलोनीलता, फाबिरहींफटिककेफरससीधरनी।
शीतलसघनकुंजमंजुतहँभौंरनके, पुंजनकीगुंजछाईअतिमुदभरनी ॥
रघुराजरंगरंगकेविहंगबोलिरहे, आनँदउमंगभरेसंगनिजघरनी।
मोहनजूमुरलीबजाईतहाँमाधुरीसों, व्रजवनितानजोमनोजवशकरनी ॥ २ ॥
बाँसुरीकीटेरव्रजबालनकेकाननमें, काननसोंआपसुधाधारहीसीढरकी।
चौंकिचौंकिचारोंदिशाचितैकैचकितह्वैके, चातुरीविसारिभूलिगईसुधिघरकी ॥
रघुराजदौरिदौरिआईजुरिएकैठौर, छूटीअलकालीसारीसम्हरैनधरकी।
आननमेंआनरंगभाननकलेवरमें, प्राणनमेंपूरीप्रीतिनँदकेकुँवरकी ॥ ३ ॥
कान्हरकलाकोकछुकहनकोचाहीचित, पैनकहीनेसुकहूँवदनतेबानीहै।
नंदजूकेनंदनकीमंदविहँसनिचित-वनिऔचलनिचारुसुधिकैलोभानीहै ॥
मदनमहीपनेदोहाईतनफेरिदीन्ही, कहैरघुराजव्रजबालबउरानीहै।
पलकैंपरतनहिंललकैंललनुलागि, ललनालगनलागीलाजहूँपरानीहै ॥

सोरठा-पुनिमनमोहनरूप, धारिहियेमहँधीरधरि। बोलींवचनअनूप, जसतसकैइकएकसों ॥ ४ ॥

कवित्त-काननमेंसोहैंकर्णिकारकेकुसुमआली, माथेमोरपंखमोरछबिकोछवैयाहै।

पुरटप्रभाकोपटकटिमेंविराजिरह्यो, उरवैजयंतीमालमनकोहरैयाहै ॥
वंशीविधआँगुलीदैतानलैप्रमोदभरै, रघुराजग्वालनमेंआगूकिहेगैयाहै ॥
निजपदवृंदावनशरणीकरतधन्य, नटवरवेषवरोशामरोकन्हैयाहै ॥ ५ ॥
दोहा–यहिविधिकाहिकहिव्रजवधू, सुनिसुनिवंशीटेर । लगींकरनवरणनसबैं, इकएकनसोंफेर ॥ ६ ॥

गोप्य ऊचुः ।

सवैया–संगसखालैचलैंतुलसीवनधेनुचरावनकोअनुरागी । भौंहकमानकोतानिकैनैनकेवाणकोमारिकरैंरीविरागी ।
श्रीरघुराजव्रजायकेबाँसुरीदेतसबैव्रजकोसुखपागी । तानँदनंदनकेमुखकीछबिजेदृगपीवैंतेहीबडभागी ॥ ७ ॥
लालरसालरसालकेपल्लवनीरजमोरहुपंखलगाई । सोपहिरेपटपीतकेऊपरलालहियेवनमालबनाई ॥
श्रीरघुराजसिंगारकियेअनुरागनसोंरह्योरागनगाई । कुंजकदंबतरेनटनागरसोहतग्वालनमध्यकन्हाई ॥ ८ ॥
जोसिगरीव्रजनारिनकोरघुराजछनैछनदेतहुलासुरी । पीवतहींजेहिहोतभईविरहागिव्यथाकोविशेषविनाशुरी ॥
पूरीभईयहसौतिहमारिकरैनितलालनकेमुखवाँसुरी । पानकरैहरिकोअधरामृतकौनकियोतपवाँसकीबाँसुरी ॥
विकसीअरविंदनकीअवलीपुलकावलीसोसरसीनकीहै । मकरंदहीद्वारेअनंदकेआँसुविचारैनिजैदुखछीनकीहै ॥
हमरेपयतेह्वैगईअतिपीननडाटिठईकहुँवीणकीहै । रघुराजलगीहरिकेमुखमेंमुरलीभईप्यारीप्रवीनकीहै ॥ ९ ॥
जिनकीरजपावनदेहअरीजगयोगीअनेकनयोगकरैं । विरहानलतापबुझावनकोहमहूँहठिकैकुचबीचधरैं ॥
नँदनंदनकेपदपंकजसोंव्रजमेंथरहींथरमेंविचरैं । तुलसीवनसोंरघुराजसखीदृगदूसरेदेशनदेखिपरैं ॥
मनमोहनीवाधुनिकोसुनिकैघनश्यामहिकोघनश्यामगनै । मनमोहिमहामतवारेमयूरनगीचहीनाचैछनैहींछनै ॥
तिनकोलखिनाचतओरहुजंतुरहैसबठाढ़ेठगेसेबनै । रघुराजकहोसखिकौनवनायगहाइदईमुरलीमोहनै ॥ १० ॥
जोमतिमंदकहैव्रजकीहरिणीनकोसोमतिमंदकुरागी । साँवरेकीछबिमेंछकिकैठिगठाढीरहैपतिलैअनुरागी ॥
श्रीरघुराजललाकोकटाक्षनिसोंसतकारकरैंबडभागी । तेहरिकेहियलागिबेकोहमेंरोकतगोपगवाँरअभागी ॥ ११ ॥
बालनवृंदअनंदकोदायकशीलभरोनँदनंदनरूपहै । ठाढोकदंबकेकुंजथलीअलीबाँसुरीकीधुनिछावैअनूपहै ॥
सोसुनिव्योमविलासिनीबालविमानमेंमोहैविसारिसरूपहै । ढीलभेनीवीखसैंसुमकेशतेयद्यपिसंगसुरासुरभूपहै ॥ १२ ॥
वामुरलीधुनिमंजुगोपालकीगौवनकानसुधासीढ़रैहै । चौंकिकेकानउठायकैधायसमीपमेंगोगणआयअरैहै ॥
त्यों बछरासुरभीमुखकौरलियेनहिंलीलहिनाहिंझरैहै । श्रीरघुराजनिवारिनिमेषनिहारिललाकोप्रमोदभरैहै ॥ १३ ॥
बाँसुरीकीधुनिश्रौणकेहेतुलगायकैऔननमेंमसोखाँचे । बोलनवंदकैकुंदकदंबनिशाखनबैठअनंदमेंराँचे ॥
नैननिमूँदिअचंचलह्वैपियेंवेणुसुधामनकेनहिंकाँचे । श्यामसनेहीविहंगसबैतुलसीवनकेयेविहंगहैंसाँचे ॥ १४ ॥
माधवकीमहामाधुरीवामुरलीधुनिकोसुनिआभअमंदी । कामसोंकाँपिउठोहियरोभईताहीसमैअतिवेगतेमंदी ॥
श्रीरघुराजतरंगभुजानिसोंकंजनकेगहिपुंजअनंदी । प्रीतमकेपदपंकजकोपगिप्रेममेंपूजतप्यारीकलिंदी ॥
उपजीव्रजमेंयमुनाजलसोंअतियोषितह्वैसकलासुरीभै । गिरिकाननऔरकुरंगविहंगनआनँददायनिआसुरीभै ॥
रघुराजसखीकहिकारणसोंयहिकीइतनीमतिआसुरीभै । विलसैव्रजनाथकेहाथपरीव्रजवासिनीवैरिणिबाँसुरीभै ॥ १५ ॥
ग्वालनबालनसंगलियेविचरैंसुरभीनकेपीछेकन्हाई । चेतनकोतोअचेतकरैंओअचेतनचेतनवेणुबजाई ॥
श्रीरघुराजप्रमोदितह्वैघनआतपवारणहेतुतहाँई । छत्रसेछायेरहैंनभमेंकलकुंदसेबुंदनकीझरिलाई ॥ १६ ॥
कमलाकुचकुंकुममंडितमंजुलकंजसेकोमलपायनिसों । तुलसीवनमेंसुरभीनकेपीछेचलैंहरिचौगुनेचायनिसों ॥
रघुराजलग्योतृणसोंअँगरागपुलिंदीउठायउडायनिसों । विरहागिबुझावैंलगायहियेधनितेहमऐसीलोगाइनिसों ॥ १७ ॥
नँदनंदनकेअरविंदपदैनितहींलहिमोदउरैभरतो । फलफूलनसोंझिरनाजलसोंसतकारसखानिजुतेकरतो ॥
धनिहैधनियाधरणीधरजोमुरलीसुनिधीरजनाधरतो । हमहायतहाँकीशिलौनभईकबहूँहरिकोपगतोपरतो ॥ १८ ॥

कवित्त-जबतेगोपालनिजमुखमेंलगायलीन्हीं, तबहींतेवंशीऐसीसानकोसम्हारती।
जड़तेप्रगटपुनिजातजडकेरीताते, चेतनकोजडसोंबनावनोविचारती॥
रघुराजजातिहीकीमित्रताविचारिसब, जडनकोचेतनकैआनंदपसारती।
भुवनतेभिन्ननईरीतिकोचलावतीहै, क्षणक्षणव्रजमेंउछिन्नकियेडारती॥ १९॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-वृंदावनकीवासिनी, गोपवधूयहिभाँति। वरणहिंवंशीकेगुणनि, हरिमहँरतिअधिकाति॥ २०॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे एकविंशस्तरंगः ॥ २१॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-पुनिकुरुपतिलागतभयो, व्रजमेंअगहनमास। व्रजकुमारिकातबसबै, पायोपरमहुलास॥
नंदकुँवरवरहोयँहमारे। ऐसोसकलमनोरथधारे॥ मंत्रकियोमिलिगोपकुमारी। केहिविधिपूजैंआशहमारी॥
तिनमेंकोउसखिरहीसयानी। सोसबसोंबोलीअसबानी॥ कात्यायनीसत्यव्रजदेवी। होहुतासुचरणकीसेवी॥
करिहिपूरिसोआशहमारी। देहैवरवरकुंजविहारी॥ सोइसंमतकीन्ह्योसबगोपी। कात्यायनिपूजनकीचोपी॥
भोजनकरहिंभविष्यकुमारी।गौरीव्रतठानैसुखकारी॥१॥चारिदँडपाछिलनिशिजागी। इकएकनबोलायअनुरागी॥
दोहा-एकएकनकेकरगहे, यमुनामज्जनजाँहिं। गावतगोविंदकेगुणन, निजनिजमुखसुखमाँहिं॥
मज्जनकरियमुनाजलमाँहीं।शुद्धपीतपटपहिरितहाँहीं॥रचिसिकताकरगौरिसरूपा।पूजनकरहिंसविधितहँभूपा॥२॥
प्रथमहिंतेहिंमज्जनकरवाई। चंदनसुमनसमालचढ़ाई॥ सुरभिधूपअरुदीपदेखाई। बहुप्रकारनैवेद्यबनाई॥
फलप्रवालतंदुलसमुदाई। अर्पहिंदेविहिंप्रीतिबढ़ाई॥ ३॥ पुनिगौरीसनमुखव्रजगौरी। ठाढीभईयुगलकरजोरी॥
जपहिंमंत्रयहकरिविश्वासू। मिलहिंनंदनंदनपतिआसू॥
श्लोकः-कात्यायनि महामाये महायोगिन्यधीश्वरि॥ नंदगोपसुतं देवि पतिं मे कुरु ते नमः॥ ४॥
पूजनकरिपुनिकृष्णसनेहीं। पुनिउतारिनीरांजनलेहीं॥
दोहा-यहिविधिअगहनमासलौं, सिगरीगोपकुमारि। पूजिभद्रकालीसरति, दियोनेमनिरधारि॥ ५॥
आईजबपुनिपूरणमासी। गोपीनंदलालपतिआसी॥ सबदिनतेकछुउठींसबेरे। यमुनामज्जनचलींअँधेरे॥ ६॥
ऊँचेसुरलैलैबहुताने। करहिंगोविंदकेरगुणगाने॥ जबपहुँचींयमुनाकेतीरा। तबउतारिप्रथमहिंसबचीरा॥ ७॥
हिलींयमुनमहँमज्जनहेतू।विहरनलगींसलिलसुखसेतू॥जानिकुमारिनकीअभिलाषा। हरिउठिभोरसखनसोंभाषा॥
चलहुप्रथमयमुनातटमाँहीं।पुनिवनगऊचरावनकाँहीं॥८॥असकहिग्वालनसंगलेवाई। यमुनतीरद्रुतगयेकन्हाई॥
दोहा-गोपकुमारिनकामना, पूरणकरनगोपाल। करतरहींमज्जनजहाँ, खड़ेभयेयुतग्वाल॥
धरेतीरमहँचीरनिहारी। तिनकोतुरतउठायमुरारी॥ चढिगेहँसतकदंबहिंमाँहीं। सखहुहँसेलखिचरिततहाँहीं॥९॥
शाखनशाखनसिगरेचीरा। ऊँचेबाधिदियोबलवीरा॥ हँसततहाँतबदियोपुकारी। सुनहुकुमारीबातहमारी॥
इहाँआयनिजनिजपटलीजे।यामेकछुशंकानहिंकीजे॥१०॥कहहिंसत्यकरतेनहिंहाँसी। तुमव्रतकीपूरीविधिखाँसी॥
हाँसीकरबव्रतिनतेअनुचित।ऐसोहमजानतअपनेचित॥कबहूँहमनहिंमृषाउचारे। जानतहैंसबसखाहमारे॥ ११॥
दोहा-सिगरीमिलिआवहुइतै, वसनलेनइकबार। अथवाइकइकआवहू, जैसोहोयविचार॥

जोकरिहौतुमकहोहमारो। तौमनिहौंविश्वासतिहारो॥ कपटहीनपरिहैचितजानी। नातौतुवमतिहैछलसानी॥

श्रीशुक उवाच।

हाँसीगिरासुनतहरिकेरी। गोपीयकएकनकहँहेरी॥ प्रेमसिंधुमहँमगनकुमारी। लोकलाजनहिंजातिविसारी॥१२॥
लोकलाजअरुकान्हरप्रीती। तौलहिमनमेंनीतिअनीती॥ तियमनतुलाप्रीतिगरुवाँनी। भूपतिलोकलाजहलुकाँनी॥
निरखतकाँन्हकुँवरकररूपा। तनुकोभानभूलिगोभूपा॥ सबकेमनअसभयेतुरंता। सोईकरहिंकहैजोकंता॥
दोहा–पुनिपुनियकएकनलखहिं, कढ़हिंनजलतेकोय। करहिंकटाक्षनिकान्हपै, आननमेंमनमोय॥
कृष्णबैनसुनिमनहरिगयऊ। विकसितवारिजसममुखभयऊ॥ खड़ीकंठभरिसलिलकुमारी। कँपतगातअसगिराउचारी
करहुनलालनयहअनरीती। हमतुमसोंअतिराखहिंप्रीती॥ नंदकुँवरप्राणहुँतेप्यारे। देहुकृपाकरिचीरहमारे॥
तुम्हरेगुणसिगरेसुखरासी। रहींसराहतनितव्रजवासी॥ कबहूँअसनगहीनिठुराई। लालआजजसपरैलखाई॥
शीतसतावतकाँपतगाता। हमरेमुखअबकढ़तिनबाता॥१४॥ सुनहुश्यामसुंदरमनहारी। हमदासीसबअहैंतिहारी॥
दोहा–जोतुमकछुकहिहोलला, हमकरिहैंसबसोय। कृपाकरहुयहिभाँतिअब, जामेंहँसीनहोय॥
रहेप्रथमतुमपरमरसीले। अबतौलालभयेहठकीले॥ कोहुकीकानिकरहुअबनाँहीं। तनकौनेहनतुवतनुमाँहीं॥
भयेढीठकछुकहानमानो। यद्यपिधर्मसकलविधिजानो॥ हौव्रजराजकुमारकन्हाई। तुमसोंबातनयहबनिआई॥
देहुचीरबलवीरहमारे। नातोअबहमकहहिंपुकारे॥ कहिहैंनंदबबासोंजाई। लियोचीरतुवलालचोराई॥
व्रजपतितुमहिंपकरिलैजैहैं। फेरिबाहिरेकढनन्दैहै॥ यशुदातुमहिंउलूखलबाँधी। अथवाभवनभीतररहिंधाँधी॥
जोअपनोभलचहौगोपाला। देहुवसनतौहमहिंउताला॥ १५॥
दोहा–गोपकुमारिनकीगिरा, सुनिनिसुकमुसक्याय। मंदमंदबोलतभये, नंदनंदसुखपाय॥

श्रीभगवानुवाच।

जोसतिहौहमरीतुमदासी। मेरोकहोकरहुछबिरासी॥ तौनिजनिजदुकूलइतआई। लेहुसबैकसखड़ीलजाई॥१६॥
हरिकेवचनसुनतमनहारी। अतिलज्जिततहँगोपकुमारी॥ निजकरसोंनिजअंगछिपाई। निकसिनीरतेनैननवाई॥
काँपतगातकृशितव्रतअंगा। हरिकेढिगआईइकसंगा॥१७॥ कपटविहीनप्रीतिरससानी। गोपसुतनलखिहरिसुखमानी॥
सिगरेवसनकंधिनिजधरिकै। बोलेवचनप्रीतिरसभरिकै॥१८॥ व्रतकरिनिजसबवसनविहाई। आययमुनमहँलियोनहाई॥
कियोदेवहेलनयहसाँचो। तातेव्रतपूरणफलकाँचो॥
दोहा–सोअपराधक्षमावने, ऊरधकरिकरजोरि। शिरसोंकरहुप्रणामसब, लीजेवसनबहोरि॥१९॥

श्रीशुक उवाच।

ऐसीसुनिगोपालकिबानी। गोपसुताअसमनअनुमानी॥ जिनकेहितहमकियव्रतभारी। जाहिमिलनकीआशहमारी॥
तिनकोजोअबकह्योनमनिहैं। लोकलाजनेसुकहमठनिहैं॥ तौनँदलालरूसिहठिजैहैं। हमसिगरीव्रतफलनहिंपैहैं॥
तातेजौनकहैनँदलाला। सोईउचितकरबयहिकाला॥ असविचारिसबगोपकुमारी। करिकरऊरधअंजुलिधारी॥
शिरनवाइकैकियोप्रणामा। कहिकहिकंतहोहिंघनश्यामा २०॥ गोपकुमारिनकीलखिप्रीती। जानिआपनेचरणप्रतीती॥
दोहा–जिनकेजेजेपटरहे, तिनकोतहँयकबार। गोपकुमारिनकोदिये, विहँसतनंदकुमार॥२१॥
ठग्योलाजतेकियोविहीना। पुनिबहुभाँतिहाँसरसकीना॥ पुनितिनसोंबहुकलाकरायो। करिउपायबहुचित्तडोलायो॥
तदपिनतिनमानीअनरीती। क्षणक्षणबढ़तगईहियप्रीती॥ निजनिजवसनपहिरिव्रजबाला। ललकहिंमिलनहेतुनँदलाला
हरिलीन्ह्योंहियरोहरिहेरी। थकितभईगतिमतिसबकेरी॥ ठाढीठगीविलोकहिंश्यामै। भूलीसुधितनुमनधनधामै॥
लाजभरीकछुवचननभाषैं। क्षणक्षणमिलनबढविअभिलाषैं। गोपकुमारिनकीयहिरीती। निजपदपरसनिगुनिअतिप्रीती

दोहा-देनहेतुव्रतकोसकल, पूरणफलनँदनंद । गोपकुमारिनसोंकह्यो, भरिउरअतिआनंद ॥ २४ ॥
जौनमनोरथअहैतिहारो । सोजानोसबभाँतिहमारो ॥ जेहिंहिततुमकरिकैव्रतभारी । पूजाकरीसप्रीतिहमारी ॥
सोसिगरीअभिलाषतिहारी।मैंपूरणकरिहौंअबप्यारी।॥२५॥जिनकीरतिममचरणनमाँहीं।तिनकोकामकामहितनाँहीं॥
जेममप्रेमपियूषप्रमत्ता।तिनकोपुनिलौटतनहिंचित्ता॥भूँजेअन्नपुनिजिमिजामै।तिमितिनकेपुनिद्वितियनकामै २६
जाहुसबैंव्रजगोपकुमारी । भईकामनासिद्धितिहारी॥ जेआगामिनिशरदयामिनी । मोहिंमिलिहौतिनमाँहकामिनी॥
दोहा-जाकेहितकात्यायनी, तुमपूजीव्रजबाल । सोपूरोह्वैहैसकल, सादरशारदकाल ॥ २७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-ऐसेहरिकेवचनसुनि, पूरमनोरथजानि । अतिमोदितव्रजकन्यका, हरिपदनिजउरआनि ॥
यद्यपिहरिढिगतेहरिप्यारी।गवनिसकैंनहिंहरिहिंनिहारी॥तद्यपिजसतसकैसबगोपीं।व्रजकोगईकृष्णचितचोपीं॥२८॥
यहिविधिबीतिगयेबहुकाला।करतअनेकनचरितरसाला॥ एकसमयव्रजग्वालनबाला । गऊचरावनगयेगोपाला ॥
करतवेणुधुनिआनँदपूरी । गेवृंदावनतेबहुदूरी ॥ तहाँचरावनलागेगैया । सखनसहितबलरामकन्हैया ॥ २९ ॥
आतपघोरग्वालगणलहेऊ । ज्येष्ठमासलाग्योतहँरहेऊ ॥ शीतलकुंजकदंबनछाँहीं। जातजहाँआतपतपनाँहीं ॥
सबलसवालश्यामसुखपाई । बैठतभेतहँअबलिलगाई ॥

दोहा-वृंदावनकेतरुसबै, वृंदावनकीभूमि । शाखनसोंपरसतरहत, मनहुँलहतसुखचूमि ॥
छाजहिंछत्रसरिसक्षितिछाये।हरितपत्रफलफूलसोहाये॥तिनहिंनिरखिसबसखनबोलाई।बोलेमंजुलवचनकन्हाई३०॥
हेअस्तोककृष्णसुखधामा । अंशुसुबलअर्जुनश्रीदामा ॥ देवप्रस्थहेऋषभविशाला। तेजमानवरुथपगोपाला॥३१॥
येवृंदावनकेतरुदेखहु । बडभागीइनकोअतिलेखहु ॥ परउपकारहेतुइनकेरो । हैजीवनयहसत्यनिबेरो ॥
हिमिआतपबरषाअरुवाता । आपुसहतवारतपरताता॥३२॥ सबप्राणिनतेतरुगणकेरो । धन्यजन्महैयहमतमेरो ॥
जोअरथीइनकेढिगआवैं । तेकैसहुपुनिविमुखनजावैं ॥ ३३ ॥

दोहा-पत्रफूलफलमूलत्वच, अंकुरछायादारु । रससुगंधभस्महुँसखा, हैहितपरउपकारु ॥ ३४ ॥
बडेकृपालुवृक्षवनकेरे । पूरहिंजनमनकामघनेरे ॥ जन्मसफलतिनकोजगमाँहीं । जेसप्रीतिबहुजीवनकाँहीं ॥
तनुमनधनअरुवचनलगाई । परउपकारैंकरैंसदाई ॥ ३५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिवृक्षनवरणनकरिकै । सखनसहितहरिआनँदभरिकै ॥ तरुछायाछायालैगया।सखनसहितसंयुतबलभैया॥
निरखतनमितशाखतरुकेरी । गयेयमुनतटप्रीतिघनेरी ॥३६॥ तहँगौवनपयपानकराई।अतिशीतलसुगंधसुखदाई॥
आपहुपानकियोयमुनाजल।गोपहुसलिलपियेशीतलभल॥३७॥कूलकलिंदीकाननमाँहीं।लगेचरावनगौवनकाँहीं ॥
दोहा-गयोनभोजनऐनते, गईदुपहरीबीति । क्षुधितगोपहरिबलनिकट, जायकहेयहिरीति ॥ ३८ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे द्वाविंशस्तरंगः ॥ २२ ॥

गोपा ऊचुः ।

दोहा-रामरामहेअतिबली, खलखंडननँदनंद । हमकोअतिलागीक्षुधा, मेटतसबैअनंद ॥
ताकोदेहुउपायबताई । अथवाभोजनदेहुमँगाई ॥ १ ॥

श्रीशुक उवाच ।

सुनिग्वालनबालनकीबानी । भक्तआपनीद्विजतियजानी ॥ तिनपैकृपाकरनकेहेतू । तासुबाँधिमनमेंअसनेतू ॥
कह्योसबनसोंतहँनँदलाला । यहउपायकीजैसबग्वाला ॥ २ ॥ मथुरानगरीकेढिगमाँहीं । इततेसोऊदूरिहैनाँहीं ॥
तहाँब्रह्मवादीद्विजआई । स्वर्गगवँनकेहितमनलाई ॥ करहिंआंगिरसयज्ञसोहाई । जोरेअमितअन्नसमुदाई ॥ ३ ॥
सखाजायतहँयाचहुओदन । औरहुव्यंजनस्वादुसुमोदन ॥ तिनकोऐसोवचनसुनायो । रामकृष्णहमकोपठवायो ॥

दोहा–गऊचरावनहेतुइत, कढ़िआयेअतिदूरि । गृहभोजनआयोनहीं, क्षुधासबनिभैभूरि ॥

सुखस्वादुभोजनबहुदेहू । क्षुधानिवारियज्ञफललेहू ॥ ४ ॥ सुनतग्वालअसप्रभुकीबानी । यज्ञभवनगवनेसुखमानी ॥
विप्रनदेखिजोरियुगहाथा । कियेप्रणामधरणिधरिमाथा ॥ तिनसोंभोजनमाँगनलागे । वचनविनीतक्षुधारसपागे ॥५॥
सुनहुविप्रहमकृष्णसखाहैं । पठयोरामनकहतमृषाहैं ॥ नंदकुँवरकेअज्ञाकारी । चितदैसुनियेबातहमारी ॥
गऊचरावतदूरिगोपाला । कढिआयेसंयुतबहुग्वाला ॥ ६ ॥ इततेहैंबहुदूरहुनाँहीं । रामश्याममधिग्वालनमाँहीं ॥

दोहा–दुपहरभैकछुवरहुते, आयोभोजननाँहिं । सखनसहितअतिक्षुधितभे, रामश्यामवनमाँहिं ॥

तातेतुवसमीपमतिसेतू । हमहिंपठायोभोजनहेतू ॥ जोद्विजश्रद्धाहोइतिहारी । तौभोजनदीजैसुखकारी ॥ ७ ॥
तुमतोसकलधर्मकेज्ञाता । क्षुधितखवायेफलबहुताता ॥ जायसबैजबवचनबखाना । पैद्विजनेकुकियोनहिंकाना ॥
बैठेद्विजअंगिरायज्ञमहँ । पशुहिंसनविधिसाहितकरततहँ ॥ सौत्रामणीसोयज्ञविहाई । अन्नदानमखउचितलखाई ॥
असद्विजसबमनकियोविचारा। अनुचितभाषतगोपगँवारा। जेनहोहिंदीक्षितमखमाँहीं। मखभोजनअनुचिततिनकाँहीं
भोजनकरैआनजोआई । तौमखविघनअवशिहैजाई ॥ ८ ॥

दोहा–असविचारिगोपनवचन, सुनेहुनसुनेद्विजेश । क्षुद्रस्वर्गकेवासहित, करहिंकर्मसकलेश ॥

मूरखमहाभक्तिनहिंजाने । अपनेकोपंडितवरमाने ॥९॥ देशकालऋत्विजअरुतंत्रा । अगिनिद्रव्यदेवतासुमंत्रा ॥
धर्मयज्ञऔरहुयजमाना । इनमेंसबमेंहैंभगवाना ॥ १० ॥ परब्रह्मसोकृष्णमुरारी । इनकोद्विजवरमनुजविचारी ॥
करियाचनातिनकीभंगा । मूरखभरेयज्ञकेरंगा ॥ ११ ॥ हाँनाहींजबकछुनप्रकाशा । ग्वालबालतबभयेनिराशा ॥
लौटिकृष्णबलकेढिगआई । क्षुधितदीनह्वैगिरासुनाई ॥ द्विजतौबोलतऊभरिनाँहीं । देवनदेवकौनकहिजाँहीं ॥१२॥

दोहा–ग्वालगिरागोविंदसुनि, कह्योफेरिमुसक्याय । सखाजायअबफेरितहँ, असतुमकरहुउपाय ॥ १३ ॥

द्विजनारिनसोंकहहुबुझाई । आयेबलयुतइतैकन्हाई ॥ सुनतैमोरनामतेआसू । भोजनदेहैंसहितहुलासू ॥
मेरेचरणप्रीतिलौलीनी । द्विजनारीहैपरमप्रवीनी ॥१४॥ सुनतकृष्णकेवचनगुवाला । गयेफेरिआशुहिंमखशाला॥
द्विजनारिनकहँकियेशृंगारा । बैठींगृहमहँलखेगुआरा॥ ह्वैविनीतकरिदंडप्रणामा । बोलेवचनगोपसुखधामा ॥१५॥
वचनसुनहुद्विजनारिहमारे । इतसमीपनँदकुँवरपधारे ॥ १६ ॥ गऊचरावतआयेदूरी । सखनसहितभूँखेहैंभूरी ॥

दोहा–पठयोहमकोतुवनिकट, भोजनहितद्विजनारि । विरचेव्यंजनविविधविधि, दीजेविमलविसारि ॥ १७ ॥

कृष्णकथाप्रथमहिंसुनिराखी । तबतेदर्शनकीअभिलाखी॥ पुनिसमीपसुनिनाथहिंआये। तिनकेमनप्रमोदअतिपाये॥
जैसहिंबैठिरहींद्विजनारी । तैसहिंउठींत्वराकरिभारी॥१८॥ भोजनचारिप्रकारसुस्वादू। भरिभरिथारनयुतअहलादू॥
चलींतहाँनँदनंदजहाँहीं । जिमिसरितासागरपहँजाई॥१९॥ तिनकोनिरखिकंतसुतभाई । रोकनलगेतिन्हैंबरियाई॥
कृष्णप्रीतिवशरुकींनरोके। कढिआईंतिनकोंदैठेके।॥२०॥ आईकान्हकुँवरजहँसोहत। जेनिरखतबनितनुमनमोहत ॥

दोहा–कालिंदीकेकूलमें, नवअशोककीकुंज । बहतत्रिविधमारुतसुखद, गुंजतभृंगनिपुंज ॥ २१ ॥

कवित्त–साँवरोसलोनोगातपीतपटफहरात, उरमेंसुहावतवनमालहुँविशालहै ।
अंगनरचीहैधातुमोरमौलिदरशात, नटवरवेषसेविख्यातछविजालहै ॥

कुंडलसोकानझलकातत्योंकपोलन, अलकछविछलकातअधरप्रवालहै ।
एककरसखाकाँधएककरजलजात, मुरिमुसक्यातवतरावतनँदलालहै ॥ २२ ॥
स०-रूपगुनोप्रथमैसुनकैहरिदेखनकीअतिलालसाजागी । आयप्रत्यक्षलखीतिनकोअपनेकोगुनीजगमेंबड़भागी ॥
श्रीरघुराजअनूपमरूपहियेधरिमूँदिदृगेंअनुरागी।मोहनकोमिलिकेमनमेंद्विजनारिबुझाइदईविरहागी॥२३॥
दोहा-सर्वसुतजिनिजदरशहित, आईप्रीतिबढाय । गुनिगोविंदयहिविधितिन्हैं, बोलेमृदुमुसक्याय ॥ २४ ॥
हेबड़भागिनिसबद्विजनारीं । सिगरीतुमइतभलेसिधारीं॥ बैठहुइतहिंसमीपहिंआई । कहहुजोहमसबकरहिंबनाई ॥
आईममदेखनयहिठाई । उचितहिकियोयदपिचरिआई ॥२५॥ जेमतिमंतभक्तिरसपूरे । ममअनुरागरँगेअतिरूरे ॥
तेनहिंहोहिंकबहुँफलआसी।तिनमतिकेवलप्रेमपियासी॥ तिनकेहमप्राणहुँतेप्यारे । प्राणहुँतेप्रियतेइहमारे ॥ २६ ॥
प्राणबुद्धिमनतनुधनदारा । आतमयोगहोतअतिप्यारा॥तेआतमकेआतमहमहैं।कोप्रियदूजोजगमोहिंसमहैं॥२७॥
दोहा-जाहुसबैमखभवनको, तुमहिंसंगलैविप्र । सविधिसमापतिकरहिंगे, मखआनँदभरिछिप्र ॥ २८ ॥
सोरठा-तबबोलीकरजोरि, द्विजनारींहरिछबिछकीं । बहुविधिहरिहिंनिहोरि, बैनविनयरससेंसने ॥

विप्रपत्न्य ऊचुः ।

कवित्त-नंदकेकुमारऐसोकरौनाउचारअब, कोमलवदनबैनकठिननसोहते ।
एकबारभजैमोहिंताकोमैंतजहुँनाहिं, ऐसीनिजवाणीसत्यकरौकहाजोहते ॥
रघुराजरावरेकेचरणशरनभई, तजिकुलकानिकान्हआपहींकेमोहते ॥
पदअरविंदकीउतारीतुलसीकोहमैं, शीशधारिबेकोनाथदेहुअतिछोहते ॥ २९ ॥
पतिपितुभ्रातमातुनातमित्रबंधुजेते, राखैंगेनभौनयहदोषकोलगायकै ।
ऐनहींकीऐसीदशाबाहेरकीकौनकहै, सूझतनऔरठौरतुमकोविहायकै ॥
पदअरविंदमकरंदकीपियासीदासी, काहेदुखदेहुनिठुराईदरशायकै ।
मनकीहरनहारीमूरतितिहारीत्यागि, कौनदईमारेकेसमीपबसैजायकै ॥ ३० ॥
दोहा-सुनिद्विजनारिनकीगिरा, जानिअनूपमप्रीति । बोलेप्रभुमंजुलवचन, दरशावतरसरीति ॥

श्रीभगवानुवाच ।

तुवपतिपितुसुतबंधुनवृंदा । करिहैंनहींतिहारीनिंदा ॥ हैंममरचितलोकसबजेते । तहँकेवासीदेवहुतेते ॥
ममप्रसादतेसबैतिहारी । करिहैंसदाप्रशंसाभारी ॥ ३१ ॥ हेद्विजजियअँगसँगजगमाँहीं । सुखअनुरागहेतुहैनाँहीं ॥
मोहिंमहँमनहिंलगायेरैहौ । तौमोकहँआशुहिंतुमपैहौ ॥ सुमिरणदर्शनअरुममध्याना । अरुकरिबोमेरोयशगाना ॥
इनतेजसरतिहोतिहमारी । तसनहिंनिकटरहेद्विजनारी ॥ तातेजाहुभवनकहँआसू । पूरहुयज्ञकर्मसहुलासू ॥३२॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-ऐसेसुनिहरिकेवचन, द्विजनारीसुखमानि । गवँनकियोमखभवनको, हरियशविशदबखानि ॥ ३३ ॥
प्रभुढिगप्रथमहिंआवतमाँहीं।रोकेद्विजवरबसइककाँहीं॥सोजसहरिमूरतिसुनिराखी।सोइधरिध्यानमिलनअभिलाखी
तनुतजिदिव्यरूपकहँपाई।हरिहिंमिलीप्रथमहिंसोजाई॥३४॥द्विजनारिनलायेपकवाना।सखनसहिततहँलैभगवाना
यथायोग्यसबग्वालनदैकै।बहुविधितातहिप्रशंसनकैकै॥यमुनातटकुंजनकीछाँहीं।भोजनकियोपरमसुखमाँहीं ॥३५॥
यहिविधिलीलाललितअपारा।करतमनुजसमनंदकुमारा॥वपुदरशायमधुरकहिबानी।दियोगोपगोपिनसुखमानी ॥
दोहा-जबद्विजनारीयज्ञगृह,गवनीपतिनसमीप । तिनहिंदेखिनिंदनवचन, कहेनविप्रमहीप ॥
लैअपनेसँगनारिनकाँहीं । कियोसमातयज्ञसुखमाँहीं ॥ सुमिरिसुमिरिअपनोअपराधा । पावतभयेविप्रअतिबाधा॥

पुनिसिगरेअसमनअनुमाने।हरियाचनानहमकछुमाने॥३७॥पुनिहरिमहँनारिनकीप्रीती।तैसीनिरखिनअपनीरीती॥
अपनेकोनिंदतद्विजराई। कहेवचनयाहिविधिपछिताई३८हरिविमुखीधिकजन्महमारे।धिकधिकशास्त्रहुपठबअपारे॥
धिकव्रतधिकसिगरीचतुराई।धिककुलधिकविज्ञानबड़ाई॥३९॥हममनुजनकेगुरूकहावैं।सबकोबहुउपदेशसुनावैं॥

दोहा—पैहमहींनहिंजानहीं, अपनोकिमिकल्यान। हरिमायायोगीजनहुँ, मोहनकरैंमहान॥ ४०॥

हायलखोइननारिनकेरी। यदुनंदनमहँप्रीतिघनेरी॥ ह्वैकैकृष्णचरणअनुरागी। तजिजगजालभईबड़भागी॥४१॥
नहिंतपनहिंगुरुभवननिवासू।नहिंअचारविज्ञानप्रकासू।संस्कारनहिंकछुशुभकर्मा।नहिंकछुदाननेमनहिंधर्मा४२॥
केवलकरिहरिकेपदप्रीती। नारीलियनेवारिजगभीती॥ संस्कारभेयदपिहमारे।तदपिहायहमहरिहिंबिसारे॥४३॥
अतिलोभीगृहकारजमाँहीं। स्वर्गकाममखकरैंसदाहीं॥ तद्यपियदुपतिदीनदयाला।भोजनमिसिपठवायगुवाला॥
अपनीसुधिहमकोकरवाई। हायतबहुँहमरेनहिंआई॥ ४४॥

दोहा—कैवल्यादिकमुक्तिपति, यदुनंदनश्रीधाम। दयाछोंड़िहमपैतिन्हैं, औरनदूजोकाम॥ ४५॥
औरनकोतजिकैरमा, चंचलधर्मविहाय। हरिमूरतिमेंमोहिकै, जिनपदरहीलोभाय॥

तिनहरिकोमाँगबहमपाँहीं। मोहनहेतुऔरकछुनाँहीं॥४६॥देशकालऋत्विजाशिखिमंत्रा।देवदिव्ययजमानहुतंत्रा॥
यज्ञधर्मऔरहुसबसाजू।हरिमयजानहुसतिद्विजराजू॥४७॥सोइयोगिनपतिकृपानिधाना।यदुकुलमहँप्रगटेभगवाना॥
सोहमसुनेआपनेकाना। पैमतिमंदनहमतेहिंजाना॥ ४८॥ पैहमहूँधनिहैंजगमाँहीं। मिलींनारिऐसीजिनकाँहीं॥
जिनकीप्रीतिकृष्णसोंलागी। तेहमहूँकहँकियबड़भागी॥४९॥बारबारहरितुमहिंप्रणामा।तुवमायामोहितवसुयामा॥
भ्रमणकरैंहमकरमनिकाँहीं॥ ५०॥ आदिपुरुषतुमअहौसदाँहीं॥

दोहा—तुवमायावशभ्रमहिंहम, गुनेनकृपाअगाध। क्षमाकरहुतातेसकल, यहहमरोअपराध॥ ५१॥
चूकसुमिरिअसआपनी, कृष्णदरशमनदीन। कंसभीतिपैभवनते, गवँननद्विजवरकीन॥ ५२॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे त्रयोविंशस्तरंगः॥ २३॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—यहिविधिआनँददेतहरि, ब्रजमहँकरतविलास। बीतिगयोकछुकालनृप, लाग्योकातिकमास॥

वृंदावनमहँघरघरगोपा। भरेइंद्रपूजनमखचोपा॥ रचहिंविविधविधिजनपकवाना। साजहिंसाजऔरहूनाना॥
इंद्रयागउद्यमकहँदेषी॥ १॥ यद्यपिजानतरहेविशेषी॥ सर्वात्मात्रिकालकेज्ञाता। धर्मधुरंधरधातहुधाता॥
ऐसेहरिअजानअसजाई। बैठेजहाँगोपसमुदाई॥ वृद्धवृद्धबैठेब्रजवासी। तिनकेमध्यनंदमुदरासी॥
अतिविनीततहँबिहँसिमुरारी। मंदमंदकहँनंदनिहारी॥ २॥

श्रीभगवानुवाच।

पिताआजुसिगरेब्रजमाँहीं। रचहिंगोपबहुव्यंजनकाँहीं॥ मच्योमहासंभ्रमसबठोरा।धावतग्वालत्वरितचहुँओरा॥

दोहा—होतकौनउत्सवपिता, कौननामकीयाग। काफलकौनेदेवको, पूजहुतुमबड़भाग॥ ३॥

देहुहमहुँकोपिताबताई। करिहैंहमसबविधिसेवकाई॥ जेसज्जनसबमेंहरिभावैं। तेनहिंकौनहुँवस्तुछिपावैं॥ ४॥
निजपरदृष्टिनहैंजिनकेरी। कहूँनमित्रकहूँनहिंवैरी॥ तेऊउदासीनहूँकाँहीं। मंत्रछिपावतमित्रननाँहीं॥
हमतौबालकअहैंतिहारे। क्योंनबतावहुपिताहमारे॥५॥ जानेबिनजानहुजगमाँहीं। करैंपुरुषबहुकरमनिकाँहीं॥
करहिंकर्मजेजनजियजानी।तिनकोहोतसिद्धिसुखदानी॥करहिंबिनाजानेजोकरमा।तिनकोहोतअसिद्धिअधरमा॥६

दोहा-तातेतातकियोजोकछु, मनमेंहोयविचार। सोहमपूँछतजोरिकर, कीजेसकलउचार॥

परंपरातेधौंचलिआयो। धौंकोउपंडितआयबतायो॥ ७॥ सुनिकेश्यामवचननँदराई। वदनताकिबोलेमुसकाई॥

श्रीनंद उवाच।

कान्हकौनपोथीपढ़िआजू। कहैवृद्धसममध्यसमाजू॥ तैनहिंजानतहैकछुकाजू। सुरपतिपूजनकीयहसाजू॥
सुरपतिमूरतिमेघमहाने। तिनकेहितपूजनहमठाने॥ लहिपूजावरषहिंमहिमाँहीं। जीवनजीवनजीवनकाँहीं॥८॥
तिनवरषाजलपायदुलारे। अन्नहोंहिंमहिविविधप्रकारे॥ सोईअन्नलैवारिदनाथै। हमऔरहुपूजहिंसुखसाथै॥ ९॥

दोहा-अन्नशेषलैपुनिसबै, कुलयुतकरैंअहार। अर्थधर्मअरुकामहूँ, तातेहोतअपार॥

पुरुषनकेपुरुषारथदाता। हैंपरजन्यसकलविधिताता॥१०॥हमरेपरम्पराचलिआई। कोउपंडितनहिंआजुबताई॥
कामलोभभयद्रोहविचारी। तजैजोयहपूजनसुखकारी॥तौनहिंहोततासुकल्याना। यामेंहैविचारनहिंआना॥११॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिनंदबैनजबखोले। सत्यसत्यगोपहुसबबोले॥सुनतेतहाँविहँसिभगवाना।शक्रकोपहितवचनबखाना॥१२॥

श्रीभगवानुवाच।

हमतौपढ़ेनशास्त्रपुराना। पैकछुकहतसुनहुँदैकाना॥ जीवजनतसबकरमहिंतेरे। करमहिंतेपुनिलीनघनेरे॥

दोहा-भीतिक्षेमअरुसुखदुखहु, होतकर्मतेतात। बिनाकर्मतेकबहुँनहिं, होतिकौनिहुँबात॥ १३॥

जोमानेफलदायकईशै। देतकर्मफलसोउविसबीशै॥ करैकर्मजोनहिंजगमाँहीं। तेहिंदैसकैईशफलनाँहीं॥
अहैईशतेनहिंकछुहेतू। करमहिंसबबाँधतहैंनेतू॥ १४॥ लहैंकर्मनिजनिजफलप्रानी। तौपूजहिंकाइंद्रहिंजानी॥
पूरबकर्मजौनकरिराखत।सकैनमेटिइंद्रश्रुतिभाषत॥१५॥देवअदेवमनुजसंसारा।सकलकर्मवशअहैअपारा॥ १६॥
लघुवड़योनिकर्मवशपावै। कर्महिंवशतनुतेजियजावै॥ शत्रुमित्रआदिकसबजेते। होतकर्मअनुसारहिंतेते॥

दोहा-कर्महिंईश्वरकर्मगुरु, कर्महिंजगतप्रधान॥ १७॥ तातेपूजहुकर्मको, अहैईशनहिंआन॥ १८॥

भजैंऔरनिजकर्मविहाई। सोकबहूँमंगलनहिंपाई॥जिमिनारीनिजपतिकहँत्यागी। भजैजाइसोसदाअभागी॥१९॥
वेदवृत्तिहैब्राह्मणकेरी। क्षितिपालनक्षत्रीकीहेरी॥ वैश्यवृत्तिजानहुव्यापारा। शूद्रवृत्तिद्विजसेवउचारा॥ २०॥
कृषिवाणिज्यपालिबोगाई। उचितव्याजलीबोव्रजराई॥वैश्यवृत्तियेहैंविधिचारी। पैगोपालनअवशिहमारी॥२१॥
सतरजतमथितिउतपतिलयके।हेतुगुनहुपितुसकलसमयके॥रजगुणतेउत्पतिसंसारी२२रजप्रेरितवरषहिंघनवारी॥

दोहा-तातेजीवनप्रजनको, होतसिद्धिसबकाज। पितावृथाहींपूजिके, काकरिहोसुरराज॥ २३॥

नहिंहमरेपुरदेशहुग्रामा। नहिंगृहएकठौरअभिरामा॥ हमहैंनित्यपितागिरिवासी। रहैंसदावनमेंसुखरासी॥
हैगोवरधनदेवहमारा। जोगौवनतृणदेतअपारा॥ २४॥ तातेऔरदेवनहिंपूजो। करौंविचारनअबकछुदूजो॥
इंद्रयागकोजोसंभारा। निजनिजकरलैविविधप्रकारा॥ गोवैंसिगरीआगेकीजे। विप्रनकोअपनेसँगलीजे॥
पूजहुपितुगोवर्धनकाँहीं।यहकुलरक्षणकरिहिसदाँहीं॥२५॥विविधभाँतिपाकनबनवाओ।मूँगसितामोदकबँधवाओ॥

दोहा-पायसपूरीपूपपै, पपरीपपरीपान। पालपेराकहुपपचिहू, पेराप्रथितअमान॥

अरुशष्कुलीआदिबहुव्यंजन। बनवावहुपितुद्रुतमनरंजन॥ तीनदिवसकोदूधसमेटी। भरिभरिताकोमेटनमेटी॥
दूधदहीबासौंधीबाफा। विविधमलाईरबरीसाफा॥ औरहुजेव्यंजनजोइजानै। सोनिजनिजगृहमेंनिरमानै॥ २६॥
ब्रह्मवादिबहुविप्रबोलाई। लेहुसविधिहोमहुँकरवाई॥ धेनुदक्षिणाविप्रनदीजै। औरहुअन्नदानबहुकीजै॥ २७॥
अरुपतितनचंडालनश्वानन। दीजैअन्नसहितसनमानन॥ गौवनकोनवतृणहुँखवाई। गोवर्धनदेवहिंढिगजाई॥

दोहा-गिरिराजहिंसबसाजिके, दीजेभोगलगाइ। जोरिसमाजपितातहाँ, लेहुप्रसादहिंखाइ॥ २८॥

भूषणवसनपहिरिपुनिताता । अंगरागलेपितकरिगाता ॥ सिगरेगोपनजोरिसमाजू । लैसँगवेदवादिद्विजराजू ॥
गोवरधनपरदक्षिणदेहू । फेरिलौटिऐयेनिजगेहू ॥ २९ ॥ यहमततौपितुअहैहमारा । पुनिजोकरहुविचारतुम्हारा॥
वासवबलिगिरिपतिकहँदीबो।पुनिप्रदक्षिणाताकीकीबो।यहमोकोंलागतअतिनीको।यहीकरहुअबकरिमतठीको ३०

कालात्मावासवमदनासी । तेहरिभेवृंदावनवासी ॥ तिनकेवचनसुनतनँदराई । बोलेगोपनसबनसुनाई ॥
यहबालकदेखतकोछोटो । पैहैबुद्धिकेरअतिमोटो ॥

दोहा—पुनिहरिकोमुखचूमिकै, कहैंवचननँदराय । लालकह्योजोअर्थतुव, सोसबहेतुलगाय ॥
जामेंप्रीतितोरिहठिहोई । हमसिगरेकरिहैंअबसोई ॥ जोतोहिंनीकनलागहिंलाला । हमकरिहैंनहिंकोनहुँकाला ॥
बोलिउठेगोपहुइकबारा । करहुनंदजोकहतकुमारा ॥३१॥ नंदतहाँनिजदूतबोलाई । दियोसकलव्रजमेंगोहराई ॥
चलहुसाजुलैहमरेसाथै । प्रातकालपूजबगिरिनाथै ॥ नंदनिदेशसुनतव्रजवासी । कियेतैसहींगुनिसुखरासी ॥
पहरनिशाबाकीनँदराई । उठिमज्जनकियथमुनैजाई ॥ भौनआइव्यंजनबहुजोरी । पूजनसाजरचीनहिंथोरी ॥

दोहा—सकलवेदवादीद्विजन, आशुहिंतहँबोलवाय । चलेधेनुआगूकिहे, बहुस्वस्तैनपढ़ाय ॥
इतनेमेंसिगरेव्रजग्वाला । लैगिरिपूजनसाजउताला ॥ गवँनेनंदसंगसानंदा । गावतसुंदरसुयशगोविंदा ॥
गोवरधनढिगपहुँचेजाई । क्षिप्रहिंविप्रनसबनबोलाई ॥ करनलगेपूजनगिरिकेरो । वेदविधानसहितसुखढेरो ॥
प्रथमहिंपंचामृतनहवाये । विविधवरणअंबरनचढ़ाये ॥ अगरतगरमृगमदअरुचंदन । अरुकेसरमिलायरचिवंदन॥
सोगिरिराजहिंनंदलगाये । विविधभाँतिपुनिसुमनमँगाये॥ तिनकेरचिभूषणबहुभाँती।अरपेगिरिकहँसहितजमाँती॥

दोहा—खुलेफूलभरिटोपरन, औरहुदियेचढ़ाय । शैलनाथकेमध्यजनु, सुमनशैलदरशाय ॥
दीन्हीफेरिविविधविधिधूपा। दीपदेखायोअतिहिअनूपा३२चलेप्रदक्षिणकरनसुखारी।भूषणवसनविविधविधिधारी॥
लेपिलेपिअंगनअँगरागा । लीन्हेसंगविप्रबडभागा ॥ पतितनअरुचांडालनश्वानै । तिनकोदेतअन्नसनमानै ॥
गौवतकोनवतृणनचरावत। औरहुदीननधनलुटवावत॥३३॥चढीशकटसिगरीव्रजनारी।गावतकृष्णचरित्रसुवारी ॥
गिरिकोकरनप्रदक्षिणलागीं।आशिषदेतविप्रबडभागीं॥३४॥ पुनिजेविविधभाँतिपकवाना।लैलैगृहतेकियेपयाना ॥
तेसबगिरिकोअर्पणलागे । नंदादिकअतिशयअनुरागे ॥ रचीअन्नकीथलथलरासी । औरमिठाईसकलसुधासी ॥
दहीदूधघृतनदीबताई । माखनमेवादियोचढाई ॥ तहँयककौतुककियदुराई । वपुआपनोद्वितियप्रगटाई ॥
अतिशयबृहतलंबभुजदंडा । दिशनवदनपरकाशअखंडा ॥ अतिशयथूलजंघपदजानू । शीशशैलकेशृंगसमानू ॥
भूषणवसनमुकुटमणिमाला । शैलमध्यअतिरूपविशाला ॥

दोहा—पेखिप्रतिक्षगुवालसब, गोवर्धनकोरूप । मानिमानिवंदनकिये, कौतुकनिरखिअनूप ॥
गोवर्धनवपुवचनउचारा । पूजनलेनप्रतिक्षतुम्हारा ॥ हमप्रगटेकरिकृपामहाई । लैहैंआजुभोगसबखाई ॥
असकहिअपनीभुजापसारी।सिगरोभोजनकियोमुरारी३५तबहरिचहुँकितलगेपुकारन।गोवरधनकियधन्यगुवारन॥
लखहुप्रतिक्षदेवसबग्वाला । यहिसमदूजोनाहिंकृपाला ॥ करहुसबैसाष्टांगप्रणामा । यहतुमकोदैहैमनकामा ॥
असकहिअपनेरूपहिंकाहीं । नँदनंदनगोपनसँगमाँहीं ॥ जैप्रतिक्षप्रभुकहिघनश्यामा । कियेधरणिमहँदंडप्रणामा॥

दोहा—पुनिग्वालनसोंकहतभे, लखेकबहुँजेहिनाँहिं । तेहिवासवपूजावृथा, करतरहेव्रजमाँहिं ॥
ऐसोदेवमानिकोचाही । प्रगटैजोपूजितैसदाही ॥ ३६ ॥ यहप्रत्यक्षदेवनहिंमनिहौ । तौजोहहैसोपुनिजनिहौ ॥
भुजंगबाघवपुधरिभरिकोपा । लैहैंखायतुमहिंसबगोपा ॥ जोअपनोअरुगाँवनकेरो । मंगलचाहौसबैघनेरो ॥
तौनितपूजिकरौपरनामा । वहदेहैसिगरेमनकामा ॥३७॥ सुतकेवचनसुनतनँदराई । गोपनयुतअतिआनँदपाई ॥

सहसबातिआरतीबनाई। कनकथारधरिहाथउठाई॥ लगेउतारनश्रीगिरिराजै। विविधभाँतिबजवावतबाजै॥ सबगोपीलैपाणिआरतीं। गिरिगोवर्धनकोउतारतीं॥

दोहा-निजनिजकरलैआरती, गोपहुसबसुखपाय। लगेउतारनशैलको, बाजनविविधवजाय॥

यहिविधितहँआरतीउतारी। करनप्रदक्षिणनंदविचारी॥पुनिजेव्यंजनकछुतहँबाँचे। तिनकोभोजनकरिसुखराँचे॥

दोहा-यहिविधितेगिरिराजको, गोपिनसंयुतगोप। दैप्रदक्षिणासुखभरे, मानेनिजदुखलोप॥

पुनिग्वालनलैकृष्णयुत, व्रजपतिपूरणकाम। मंदमंदआवतभये, साँझजानिनिजधाम॥ ३८॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे चतुर्विंशस्तरंगः॥ २४॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-व्रजमेंवासवदेखिकै, निजपूजाकोनाश। हरिदासननंदादिपै, कीन्ह्योंकोपप्रकाश॥ १॥

सांवर्तकगणमेघअधीशा। करतजोजगकीप्रलयमहीशा॥ ताहितुरतवासवबोलवायो॥अतिकठोरअसवचनसुनायो॥ लैसिगरेमेघननिजपासू। व्रजमंडलबोरहुअबआसू॥२॥ नंदगोपकरिममअपमाना। कियमखभंगभरोअभिमाना॥ क्षुद्रगोपकाननकेवासी। थोरेहविभौगर्वकेरासी॥ इनकोधनमदनहिंसहिजाता। छोटेनछमामहाउतपाता॥ हमहूँसोंकोन्हीइनहाँसी। गसीसोहमरैहियमहँगाँसी॥ कृष्णमनुजकेबलसबगोपा। कियोहमारेमखकोलोपा॥३॥

दोहा-जैसेज्ञानजहाजतजि, चढ़िमखनाउअयान। तरनहेतुजगजलधिको, हठवशठानतठान॥ ४॥

अहैकृष्णअतिहीवाचाला। हैकुमतीकठोरअरुबाला॥ बिनाशीलकोसामरवेशा। विद्याकोताकेनहिंलेशा॥ अपनेकोपंडितअतिमानै। अनुचितउचितनेकुनहिंजानै॥ ऐसेकृष्णमनुजबलभारा। हमैनसमझहिंगोपगँवारा॥ ममअप्रियममदेखतकीन्ह्यों। यज्ञभागपरवतकहँदीन्ह्यों॥५॥ सबैमानिकैकृष्णभरोसो। जीवनचहतवैरकरिमोसो॥ तातेकृष्णभरोसिनकेरो। बढ्योविभौमदजोनघनेरो॥ सोमैंआजुहिंकरिहौंनाशा। देखतहौंअबकृष्णतमाशा॥ राखिचारिगैयाघरमाँहीं। अपनेसममानतकोउनाँहीं॥

दोहा-जलधरधावहुयहिसमयं, बरषिघोरजलधार। सहितधराधरसमाशिला, करहुधेनुसंहार॥

बोरिदेहुव्रजकीसबधरनी। पावहिंफलकीन्हीजोकरनी॥ धेनुवृषभबछराअरुबाछी। बचैंनअबएकौव्रजमाछी॥ नरनारीसनंदतेहिंदेशू। रहिनजायतिनकरकहुँलेशू॥जलधरकछुनभीतिउरल्यावहु॥प्रलयकालधाराढरकावहु॥६॥ हौंऐरावतमैंचढ़िआजू। लियेकुलिशयुतदेवसमाजू॥ रैहौंपीछेपड़ेतुम्हारे। सन्मुखऐहैकौनहमारे॥ उनचासौंमारुततुवसंगा। पठवहुँकरननंदव्रजभंगा॥ समरथहोयजोयहजगमाँहीं। रक्षणकरैसोअबव्रजकाँहीं॥

दोहा-कृष्णबचावनहेतुजो, ऐहैविधिहरआज। तौतिनहूँकोजीतिमैं, लैहौंसहितसमाज॥ ७॥

श्रीशुक उवाच।

असकहिशक्रकोपमहँछायो। मेघनकोबंधनखोलवायो॥ अरुउनचासौंवायुनकाँहीं। आयसुदियोमेघसँगजाँहीं॥ मातुलिसोंअसकह्योसुरेशा। लावहुमेरोतुरतगजेशा॥ मातलिनागदियोद्रुतलाई। तापरभोसवारसुरराई॥ लियेकुलिशकरपरमकठोरा। चितवनअरुणनैनचहुँओरा॥ चतुरंगिनीसुरनकीसेना। आईसजिकैजोबलऐना॥ महामेघतहुँश्यामहजारन। संवरतादिप्रलयकेकारन॥ आवहप्रवहआदिजेपवना। सजेसबैवासवअरिदमना॥

दोहा-साजिसैनयहिभाँतितहँ, मेघनपवनसमेत। चल्योशक्रअतिवक्रह्वै, व्रजनाशनकेहेत॥

छंदसंख्यानारी-चलेमेघआगे। महाकोपपागे॥ भयोअंधकारा। नभैमेंअपारा॥

जलैसिंधुसाता । भरेतेअघाता ॥ करैंशोरभारी । जगैभीतिकारी ॥
भरेघोरघोरा । गिरैसेकरोरा ॥ महावेगधाये । द्रुतैव्योमछाये ॥
व्रजेखंडखंडा । करैंकोप्रचंडा ॥ भरेहैंघमंडा । बलीहैंअखंडा ॥
दशौहूँदिशानै । तमैभोमहानै ॥ भईयामिनीहीं । दियेदामिनीहीं ॥
भईभीतिभारी । कँपीभूमिसारी ॥ कहैदेवराजा । करौआशुकाजा ॥
व्रजैबोरिदीन्हें । वेलैवैनकीन्हें ॥ हनेगोपग्रामा । लहौगेइनामा ॥
बँचैएकनाँहीं । कहूँजोपराहीं ॥ करैंकृष्णरक्षा । बलीजोप्रतक्षा ॥

दोहा—यहिविधिभाषतवननसों, व्रजचौरासीकोस । घेरिलियोसुरपतिकुमति, करिमनमेंअतिरोस ॥ ८ ॥

छंदनराच—तहाँजलधजोरसोंकियोकठोरशोरहै । प्रलैसमानभोरहैगयोसोचारिओरहै ॥
क्षणेक्षणैप्रकाशकोकरैदमंकिदामिनी । मनौमहाभयंकरीकरालकालयामिनी ॥
प्रचंडवेगकैतहाँपवन्नवन्नचासहूँ । चलेदिशानचारितेतजेनिजैनिवासहूँ ॥
व्रजेधरासुछैगईमहानधूरिधारहै । नदेखिनेकहूँपरैनिजैभुजैपसारहै ॥ ९ ॥
तजैलगेअकाशतेजलध्रवारिधारहै । अतीवआतुरैवितुंडसुंडकेअकारहै ॥
गिरैलगेकरोरिघोरओरचारिओरते । महानशैलकेसमानतेअतीवजोरते ॥
अवातशोरतेव्रजैअनेकवज्रपातभे । झकोरपौनतेततक्षवृक्षव्रातघातभे ॥
नदीसतीदिशानिशानघोषहूँशुनोपरै । ननेकहूँनगीचकानबैनहूँसुनोपरै ॥
गँभीरहैनवीननीरधारधावतीधरा । परैअवर्त्तहूँउठैतरंगशोरभभँरा ॥
परैनऊँचनीचठौरजानिगोकुलैमही । कलिंदिजाकरारकोविहायऊपरैवही ॥
बनैनजातआवतोकहूँव्रजैपगैभरै । खडोनहोतहूँबनैकछूनिहारिनापरै ॥
कुरंगऔविहंगचीतकारकोकरैलगे । कहुँभ्रमैंकहूँथिरैंकहूँचलैंकहूँभगे ॥
अनेकजीवगाजकीगराजसोंअप्रानभे । अनेकतासुज्वाललागभस्मकेसमानभे ॥
अनेकतासुज्योतिकोविलोकिअंधहैगये । अनेकजंतुनीरधारमध्यबूड़तेभये ॥ १० ॥
परायवच्छबाछिधेनुबैलगोष्ठमेंगिरे । तहूँशिलाप्रहारतेनबैठतोबनैथिरे ॥
गुवालऔगुवालिनीकरैहहापुकारहैं । नदेहकीनगेहकीतिन्हैंकछूसम्हारहैं ॥

दोहा—यदपिघुसेघरमेंसबै, तद्यपिपवनझकोर । रहतबनतनाहिंनेकहूँ, लागतवीरकरोर ॥

छंदतोमर—विलखनेगोपीग्वाल । सबकहहिंआयोकाल ॥ अबबचबदीसतनाँहि । हमभागिकेहिथलजाँहिं ॥
नहिंनीककीन्ह्योनंद । कियशक्रयागहिबंद ॥ निजसुतकह्योउरआनि । दुखलियोगिरिमखठानि ॥
अबहोतव्रजकरनाश । सबतजौजीवनआश ॥ असकहतरोवतगोप । कियबेसवासवकोप ॥
कोउसुतनकोउरलाय । गोपीरहींशिरनाय ॥ कोउकहैनारिनपासु । भजिआवरीइतआसु ॥
लहिबोरघातकराल । गिरतींविशालदेवाल ॥ छप्परउडतलहिपौन । टूटतशकटघृतभौन ॥
फटफटफुटतघटवृंद । तटतटटुटततरुकंद ॥ कबहूँनभोजिनसोग । तेअतिदुखीव्रजलोग ॥
भाषहिंपरसपरबात । जेहिंहितभयोउतपात ॥ सोनंदसुतहिंनजीक । अबचलबसबकोनीक ॥
करिहैंअवशिसोरक्ष । समरत्थकान्हप्रतक्ष ॥ बचिहैंनऔरेठौर । बिननिकटनंदकिशोर ॥

दोहा—असकहिगोपीग्वालसब, हाहाकरतपुकार । इकएकनकोगहिद्रुतै, गेजहँनंदकुमार ॥

काँपतगातबोलिनहिंआवत।गिरतपरतपुनिपुनिउठिधावत॥११॥गौवनवछरनउरहिंछिपाई।गईनंदसुतकेढिगधाई॥

दुखितचहूँकिततेविमिआँहीं।कहहिंमनौतुमतजिकहँजाहीं॥गोपीहरिपदगिरींबिहाला।कहहिंकरहुरक्षणनँदलाला॥
कृष्णकृष्णकहिगोपपुकारे। गोकुलकेहौतुमरखवारे॥ तुम्हरेहिकहेशक्रमखमेटी। पूज्योगिरिहिनतेहिंकछुसेटी॥
तातेवासवकरिअतिकोपा। कीन्हेंदेतसकलव्रजलोपा॥देखतखड़ेकहानँदलाला।रक्षणकरहुनकसयहिकाला॥१३॥

दोहा-सुनिगोपिनगोपनवचन, अतिआरतदुखभीन। गौवैंबछराबाछरो, निरखिखड़ेअतिदीन॥

वोरनसहितसलिलकीधारा। बरषिरहेघनवारहिंवारा। झंझापवनचलतचहुँओरा। अशनिनिपातहोतअतिघोरा॥
ऐसोनिरखिकृष्णभगवाना।महाकोपवासवकरजाना॥१४॥पुनिअसमनमेंनाथविचारचो।मैंवासवकोयागनिवारचो
तातेबरषिसलिलचहुँओरन।चहतआजवासवव्रजबोरन १५ मैंनिजबलव्रजकीरखवारी।करिहौंकहाकरिहिपविधारी।
भयोविभौमदमत्तसुरेशा। मूढ़नजाहिज्ञानकरलेशा॥याकोमदमैंअबहिंउतरिहौं।सहजहिंमेंव्रजरक्षणकरिहौं॥१६॥

दोहा-मोरभक्तजेदेवहैं, तिनकेगर्वनहोय। शक्रमोहिंजानतनहीं, रह्योविभौमदमोय॥
तातेकरिबोयोगहै, मानभंगयहिकेर। नातोअनरथऐसहीं, करिहैयहशठफेर॥ १७॥

मैंहींहौंव्रजकोरखवारा। व्रजकोमैंहींअहौंअधारा॥ मैंहींएकअहौंव्रजनाथा। व्रजकोसुखदुखमेरेहिहाथा॥
मोहिंदेखिजीवतव्रजवासी। सदारहतममदरशनआसी॥ तनुमनधनमोहींकोजानैं। दूजोईशमनहिंनहिंआनैं॥
जोइनकोनराखिमैंलीन्ह्यों। पुहुमीप्रगटिकहातोकीन्ह्यों॥ जगमेंमेरेदासनकाँहीं। दुखदैसकैंरुद्रविधिनाँहीं॥
क्षुद्रइंद्रयहकैतिकबाता। चाहतव्रजजोकरननिपाता॥असगुनिगोपिनगोपनकाँहीं।कह्योचलहुममसंगनमाँहीं॥१८॥

दोहा-असकहिनिजगौवनलिये, गौवनग्वालिनग्वाल। गवनेगोवर्द्धननिकट, गिरिधारणगोपाल॥

कवित्त-महामदमत्तमघवाकेभेजेमहामेघ, महादुखदैनेहेतुमहाजलढारचोहै।
गौवनकोगोपिनकोगोपनकेतौनेसमै, दूजोनहिंत्रातातीनोंलोकमेंनिहारचोहै॥
रघुराजएकहाथहींसोंअतिआतुरीसो, क्षितिधरक्षणमेंछत्राकसोउपारचोहै।
इंद्रगर्वगारिबेकोगोकुलउधारिबेको, गरुयोगोवरधनगोविंदकरधारचोहै॥ १९॥

दोहा-गोपिनगोपनसोंकह्यो, गिरिधारीगोपाल। आवहुगिरिनीचेसबै, लैगौवनयहिकाल॥ २०॥

गिरिवरकोगिरिबोममकरते। करहुनकछुभ्रमयहनिजडरते॥ नंदबबाकेपुण्यप्रभाऊ। मैंउठायलीन्ह्योंगिरिराऊ॥
इहाँनवातवर्षकीभीती। आवहुकरिमनमाहँप्रतीती॥ गोवर्धनकरिहैतुवरक्षा। प्रगटिभरूयोवलिजौनप्रतक्षा॥
नंदबबाहेयशुदामाई। आवहुगोपगोपिलैधाई॥ जबलोंवर्षाहोयमहानी। तबलोंवसहुइतैसुखमानी॥ २१॥
सुनिनँदनंदनकीअसबानी। गोपींग्वालत्राणनिजमानी॥ गिरिवरजरजरहरवरभरभर। थरथरपरघरकरडरदरवर॥

दोहा-लाखनगौवैंबाछरा, अरुबाछिहूअनंत। गोवर्धनतरमेंरहे, नहिंसंकेतसहंत॥

सिगरीसाजसाथलैगोपा। बैलनयुतकियशकटअरोपा॥पैनहिंकोहुकोसाँकरभयऊ। सबैसुपासतहाँह्वैगयऊ॥२२॥
लगीनकाहुकोभूखपियासा। हरिमुखछविपीवतसहुलासा॥कहहिंसबैव्रजराजकुमारा। सातवर्षकोअतिसुकुमारा॥
गोवरधननिजकरपरधारचो। दुखसागरतेहमहिंउबारचो॥कोउकहकरपिरातअबहोई। ललाधरहुधरिहैंसबकोई॥
कोउकहअवसबदेखतकाहैं।शिशुकरगिरनशैलअबचाहैं॥ निजनिजहाथलगावहुभाई।श्रमितलालगिरिकीगरुवाई॥

दोहा-कोउगोपीगिरिवरधरे, गिरिधरकोलखिनैन। ताकीवरणनकरतछबि, सखिसोंबोलीबैन॥

कवित्त-तारनपैकंजकंजहूँपैरंभखंभराजैं, रंभखंभहूँपैसिंहतापैएकवापीहै।
वापीपैभुजंगहैंभुजंगपैकपाटत्यों, कपाटपैकपोततापैबिंबदुतिथापीहै॥
तापैशुकतापैमीनतापैअहिबालकारे, तापैअर्धचंदतापैसूरजप्रतापीहै।
मध्यतेउव्योमृणालतापैछत्रछायाकिये, रघुराजएसीछविमेरेदृगव्यापीहै॥

दोहा-पुनिबोलीव्रजबालकोउ, मंदमंदमुसक्याय। लखोसखीकौतुकपरम, मोमुखकह्योनजाय॥

कवित्त–सनमुखसामरेकेआयव्रजवालकोऊ, तकीतिरछोहेंचखचंचलचलायकै।
ताहीसमैकान्हकरकाँपतहीकाँप्योगिरि, व्रजजनजानेगिरिगिरतबनायकै॥
रघुराजरामतहाँऐसीदशादेखतहीं, बंधुपैविलोक्योनेकुमंदमुसक्यायकै।
अवलोकिअग्रजाकोआनननवायनैन, शैलकोसँभारयोफेरिलालनलजायकै॥

दोहा–गिरिधरकोगिरिकरधरे, बीतिगयेदिनसात। व्रजवासीमोदितवसे, लगीनबरषावात॥ २३॥

सातादिवसनिशिशक्रअथोरा। व्रजमंडलवरस्योजलघोरा॥ पैनलहेदुखकोउव्रजवासी। तबमघवाह्वैगयोनिरासी॥ निरखिकृष्णकोमहाप्रभाऊ।अतिशयविस्मितभोसुरराऊ॥वारणकीन्ह्योंमेघनकाँहीं।अबव्रजमेंबरषहुकोउनाँहीं २४ सुरनसहितलैमेघसमाजू। सुरपुरकहँगवनेउसुरराजू॥ उदितभानुभोअमलअकाशा। मिटीवातबरषाकीत्रासा॥ तहँसिगरेगोपनगिरिधारी। गहेगोवर्द्धनगिराउचारी॥ २५॥

श्रीभगवानुवाच।

सुनहुवैनव्रजकेसबलोगू। अबनकरौबरषाकरशोगू॥

दोहा–लैलैअपनीसाजसब, नारीसुतनसमेत। गिरितरतेअबनिकसिकै, गमनहुनिजैनिकेत॥

भयोभानुकरविमलप्रकाशा।दिसितघननहिंकौनिहुँआशा॥बहैयमुनअबबीचकरारा।छल्योछोनिकोसलिलअपारा॥ ऐसीसुनतकृष्णकीबानी। सिगरेगोपमहासुखमानी॥निजनिजशकटनभरिसबसाजू। बालवृद्धसबसहितसमाजू॥ गौवैंबछराआगूकरिकै। गवँनेगिरितरतेमुदभरिकै॥ बाहेरठाढभयेव्रजवासी। पावतभेअतिआनँदरासी॥ २७॥ तहँसबकोदेखतगिरिधारी।जैसोरह्योप्रथममहिधारी॥तैसहिंपुनिताकोधरिदीन्ह्यों।आपहुगवँनतहाँतेकीन्ह्यों॥२८॥

दोहा–देखतहींनँदनंदको, व्रजवासीद्रुतधाय। प्रेमसिंधुमहँमगनसब, लियोघेरितहँआय॥

कोउचूमैमुखलालनकेरो। मिलैप्रभुहिंकोमोदघनेरो॥ गोपीहरिभुजमीजनलागी। बोलहिंवचनप्रेमरसपागी॥ परचोलालतुमकोश्रमभारी। ह्वैहैभुजापिरातातिहारी॥ दधिअक्षतलैसहितउछाहू। कोउगोपीपूजहिंहरिबाहू॥ देहिंवृद्धसबआशिरवादा। बढेबहुतआयुषमरयादा॥२९॥ यशुमतिरोहिणितहँद्रुतआई।लियोगोविंदगोदबैठाई॥ पुनिकरजललैलगीउतारन। निजसुतबलकीनजरनिवारन॥रामआयपुनिमिलेगोविंदै। विहँसतपावतपरमअनंदै॥

दोहा–नंदरायतहँआयकै, अपनेसुतकेहाथ। भयेदेवावतद्विजनको, गोधनमणिगणसाथ॥ ३०॥

गगनसाध्यअरुसिद्धसिधारे। भयेबजावतशंखनगारे॥ चारणविद्याधरगंधर्वा। हरियशगावतमोदितसर्वा॥ बरषहिंसुमनदेवझरिलाई।हरिकीअस्तुतिकरहिंसोहाई३१लगींअपसरानाचननाना।सोसुखकेहिविधिजायबखाना॥ तहँआगूकरिगौवनकाँहीं। गोपसबैअतिआनँदमाँहीं॥ नंदलालकोमधिमहँकीन्हें। वृद्धचढ़ेशकटनसुखभीने॥ हरिकीरतिगावहिंसबगोपी। निरखतहरिमुखआनँदवोपी॥ बजवावतबहुविधितहँवाजा।मंदमंदचलिगोपसमाजा॥ आवतभेवृंदावनकाँहीं। निवसेतबनिजनिजगृहमाँहीं॥

दोहा–यदपिउपद्रवशक्रकिय, व्रजमंडलमहुँघोर। हरिप्रभावतेतदपितहँ, नश्योनएकौठौर॥ ३३॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे पंचविंशस्तरंगः॥ २५॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–कर्मअमानुषभाँतियहि, निरखिकृष्णकेग्वाल। अतिअचरजमानतभये, इकएकहिततकाल॥

आवतभयेनंदकेद्वारे। सभाबैठिअसवचनउचारे॥ १॥ तुवसुतकेरअमानुषकर्मा। निरखिहोतहमकोअतिभर्मा॥

इवहैबालक। धौंप्रतक्षप्रगट्योजगपालक॥ नीचअहीरनभौनहमारे। शिशुवपुधरिकोउसुरपगुधारे॥२॥
सातबरिषकोपुत्रतिहारो। सातदिवसलोंगिरिवरधारो॥ जैसेकरिवरकंजहिधारे। तिमिकैसेशिशुगह्योपहारे॥३॥
पलनामहँमूँदेदृगकाँहीं। परोरह्योबालकगृहमाँहीं॥ आईतहाँपूतनाघोरा। विषप्यावनलागीतेहिठोरा॥
करिपयपानलियोहरिप्राना। हरतआयुजिमिकालमहाना॥ ४॥

दोहा-तीनिमासकोजबरह्यो, तबकरिचरणप्रहार। शकटदियोउलटायचट, मटुकेफुटेअपार॥ ५॥

शिशुजबएकवर्षकोभयऊ। तबहरिनभदानवलैगयऊ॥ तासुकंठगहिभूमिगिराई। हरचोप्राणतुवसुतव्रजराई॥६॥
पुनिकहुँमाखनलियोचोराई। तबसकोपह्वैयशुमतिमाई॥ बाँध्योयाहिउलूखलमाँहीं। आपुगईगृहकारजकाँहीं॥
बँध्योउलूखलकोविसिलाई।भुजबलयुगतरुदियोगिराई७काननमेंपुनिबच्छचरावत। रामसहितग्वालनसुखछावत॥
मारनहेतुबकासुरआयो। बदनफारितेहिमारिगिरायो॥८॥ पुनिबछराकोधारिसरूपा। बछरासुरआयोव्रजभूपा॥

दोहा-तेहिगहिपटकिकपित्थमहँ, दिययमलोकपठाय। गिरेकपित्थअनेकतरु, तुवसुतभुजबलपाय॥ ९॥

रह्योतालवनरासभघोरा। ताकेबंधुबहुतबरजोरा॥ तेहिबधायपुनिबहुखरमारी। कियोतालवनमंगलकारी॥१०॥
बलकरपुनिप्रलंबहतवायो। दावानलसोंसखनबचायो॥११॥यमुनामहँभुजंगभयकारी।बसतरह्योकरालविषधारी॥
ताहिदमनकरिपुत्रतिहारो।यमुनादहतेद्रुतहिनिकारो॥कालीदहबिनविषकरिदीन्हों।गौवनग्वालननिरभैकीन्हों१२॥
व्रजवासिनकीभैयहरीती। दिनदिनदूनबढ़ातियहिप्रीती॥ नंदरावरोकुँवरकन्हाई।कौनअहैकछुजानिनजाई॥१३॥

दोहा-कहाँरावरोपूतयह, सातबरसकोआज। कहाँधारिबोएककर, सातदिवसगिरिराज॥

तातेहेव्रजनाथउदारे। अतिशयशंकाहोतिहमारे॥ १४॥ नंदसुनतगोपनकीबानी। सबतेकह्योवचनसनमानी॥

नंद उवाच।

मेरेवचनसबैसुनिलेहू। तातेमिटिहिसकलसंदेहू॥ जबयहरह्योवर्षदुइकेरो। तबहींगर्गपुरोहितमेरो॥
आयकृपाकरिभौनहमारे। यहसुतकेहितवचनउचारे॥१५॥सतयुगभयोसेततुवबालक।त्रेताअरुणवर्णजगपालक॥
द्वापरपीतरंगछविधामा।अबप्रगट्योकलियुगमहँश्यामा॥१६॥भयोकबहुँवसुदेवकुमारा।वासुदेवबुधनामउचारा १७

दोहा-गुणअनगुणतुवपुत्रके, नामहुरूपअनंत। हमहिंनजानैतौअवर, जनकिमिपावहिंअंत॥ १८॥

यहतुम्हारकरिहैकल्याना। गोगोपनदैहैसुखनाना॥ याकेबलदुस्तरसंसारा। सहजहिंतरिहौनंदउदारा॥ १९॥
प्रथमहिबढेजगतमहँचोरा। साधुनदियोकलेशकठोरा॥ रह्योभूपकोउरक्षकनाँहीं। तबतुमपुत्रप्रगटेजगमाँहीं॥
साधुनकोऐसोबलदीन्ह्यो। जातेदुष्टदलनतिनकीन्ह्यो॥२०॥जेकोउतुवसुतकेबड़भागी।ह्वैहैंचरणकमलअनुरागी॥
सकिहैंशत्रुतिन्हेंनहिंजीती।जिमिहरिजननदानवभीती॥२१॥तातेनंदकुमारतिहारो।नारायणसमगुणनिअगारो॥
श्रीकीरतिअरुसकलप्रभाऊ। विष्णुसरिसह्वैहैव्रजराऊ॥ २२॥

दोहा-हमसोंकहिपरतक्षअस, गेगृहमुनिअवतंस। तबतेहमकृष्णैगुनै, नारायणकोअंस॥
तातेनहिंशंकाकरौ, कृष्णचरित्रविलोकि। वृंदावनमेंबसहुसब, ह्वैकैपरमअशोकि॥ २३॥
नंदवचनयाहिभाँतिसुनि, शंकागोपविहाय। नंदनंदनंदनहुँकहँ, आंतसराहिसुखपाय॥
गयेआपनेआपने, भौननकोसबगोप। वसतभयेअतिमोदयुत, हरिदरशनचितचोप॥ २४॥

छंदझूलना-जंभरिपुयज्ञनिजभंगअवलोकिकरिकोपसाँवर्तमेघनहँकारी।
पौनउनचासलैनागचढ़िबेनबढ़िआयव्रजमंडलैवज्रधारी॥
वर्षिगजसुंडसमधारबहुबारअतिपौनझकझोरचहुँओरझारी।
॥
देखिनिजदासगणदीहदुखदयानिधिशक्रकोदर्पखंडनविचारी।

एकहींहाथसोंमंदहँसिनंदसुतद्रुतैगोवर्धनैलियउपारी ॥
सातदिनधारिछत्राकसमछोनिधरलियोव्रजराखिहरिगर्वगारी ।
कहतरघुराजव्रजचंदनँदनंदगोविंदसोइसुधिकरैअबहमारी ॥ २५ ॥
इति श्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजासिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे षड्विंशस्तरंगः ॥ २६ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-जादिनगिरिधरगिरिधरचो, धराताहिनिशिभोर । गऊचरावनसखनयुत, गमनेनंदकिशोर ॥
वनमेंगऊचरावनलागे । सखनसाहितअतिआनँदपागे ॥ गुनिसुरभीअरुशक्रअवाई । बैठेकृष्णइकांतहिंजाई ॥
तबजोदियगोपनकहँबाधा । सोअतिगुनिअपनोअपराधा ॥ क्षमाकरावनहितप्रभुकाँहीं।आवतभोवासवव्रजमाँहीं ॥
तहँगोलोकतेसुरभिहुआई । बैठेजेहिथलमहँयदुराई॥१॥हरिहिंनिरखिसुरनाथलजाई । गिरयोदंडसमचरणनधाई ॥
निजकिरीटसोंप्रभुपदपरस्यो । बारबारनैननजलबरस्यो ॥२॥ देख्योसुन्योकृष्णपरभाऊ।बिनागर्वकोसोसुरराऊ ॥
दोहा-आगेठाढोजोरिकर, कंपतगातविनीत । लग्योकरनअस्तुतितहाँ, यदुपतिकीअतिभीति ॥ ३ ॥

इंद्र उवाच ।

छंद-तुवरूपसत्यविशुद्धसत्त्वसुशांततपमेंतमनहीं । मायाप्रवाहनिबद्धयहसंसारतुममेंनहिंसहीं ॥ ४ ॥
अज्ञानबोधकलोभआदिकनाहिंहैयहकाकही । तद्यपिखलनकेदलनहितप्रभुदंडदायनिमतिगही ॥ ५ ॥
तुमगुरुपिताजगदीशकालसरूपधारकदंडहौ । जगकरनमंगलहेतुकरहुचरित्रनाथअखंडहौ ॥
जगदीशमानिनमानमोरनहेतुतुवअवतारहै । तुवगायसुयशगोविंदजनद्रुतलहतभवनिधिपारहै ॥ ६ ॥
जगदीशमोसमजेअज्ञानीअभैतुमहिंविलोकिकै । मदतेरहितह्वैभक्तिमारगचलतअतिमनरोकिकै ॥ ७ ॥
ऐश्वर्यकेमदमत्तमेंजान्योप्रभावनरावरो । अपराधक्षमिकरियेकृपाफिरिहौंउँअसनहिंबावरो ॥ ८ ॥
अयओवनृपसंहारकरिकैहरणहितभुवभारको । निजचरणदासनकरनमंगललेहुमहिअवतारको ॥ ९ ॥
जयपुरुषजयभगवानजयतिमहानजयसुखधामहै । वसुदेवनंदनकृष्णयदुकुलनाथतुमहिंप्रणामहै ॥ १० ॥
निजभक्तइच्छातेविशुद्धविज्ञानमूरतिधरतहौ । सर्वात्मतुमहींसर्वकारणवाससबउरकरतहौ ॥ ११ ॥
मैंमूढ़निजमखभंगलखिकरिकोपव्रजलोपनहितै । बहुपवनपानीअरुपषानहुपाविहुबरख्योचहुँकितै॥ १२ ॥
तुवकृपहितेगोकुलबच्योमैंगर्वहतह्वैजकिरह्यों । करुणायतनयदुनाथतातेआयतुवपदकोगह्यों ॥
अबकृपाकीजैनाथमोपरमाफकीजैचूकहै । यहरावरेअपराधकीनहिंमिटीजनमहुँहूकहै ॥ १३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-यहिविधिअस्तुतिजबकरी, सुरपतिअतिभयभीर। तबहिंविहँसिहरिवचनकहँ, मेघसरिसगंभीर ॥ १४ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

तोपैकरनकृपाकेहेतू । मैंमखभंगकियोसुरकेतू ॥ शक्ररहेमदमत्तमहाना । मेरोसुमिरणतेहिंभुलाना ॥
हमनिजसुरतिकरावनकाजा । गर्वपरयोतेरोसुरराजा ॥१५॥ श्रीमदअंधमोहिंनहिंदेखै । यदापिदंडमैंकरहुँविशेषै॥
गुन्योजाहिपरकरनकृपाको।श्रीमदसकललेहुँहरिताको ॥सुरपतिअवनिजलोकसिधारो।होइअवशिकल्याणतुम्हारो
मानोशासनशक्रहमारा । बैठहुतजिमदानिजअधिकारा ॥ १६ ॥ १७ ॥

श्रीशुक उवाच।

पुनिसुरभीहरिकेढिगआई। बारहिंबारचरणशिरनाई॥
दोहा-गौवेंबछराबाछरी, निजसंतानबोलाय। कह्योनंदसुतसोंवचन, परमप्रीतिदरशाय॥ १८॥

सुरभिरुवाच।

कृष्णकृष्णहेयोगअधीशा। विश्वात्माजगकरलछमीशा॥ लोकनाथलहितुमसमनाथा। आजुभईहमसवैसनाथा १९॥
इष्टदेवतुमअहौउदारे। तुमहींहौप्रभुइंद्रहमारे॥ गोविप्रनसाधुनसुखदीजै। सदायहीविधिरक्षणकीजै॥ २०॥
हरणहेतुयहभूवरभारा। लियोनाथव्रजमेंअवतारा॥ करनहेतुअभिषेकतिहारा। हमहिंपठायदियोकरतारा॥२१॥

श्रीशुक उवाच।

असकहिसुरभीसुरभितकाँहीं। अपनेनिकटबोलायतहाँहीं॥ निजथनपयधारणयदुनाथै। कियअभिषेकसहितसुखगाथै
दोहा-अदितिआदिसुरमातुसब, कह्योशक्रसोंबैन। तुमहुँकरहुँअभिषेकअब, यदुपतिकोभरिचैन॥
तबअकाशगंगाकोजलभरि। लायोऐरावतघटकरधरि॥ तेहिंजलसोंसँगलैअसुरारी। इंद्रकियोअभिषेकसुखारी॥
धरयोगोविंदनामहरिकेरो। देवलहेसबमोदघनेरो॥ २३॥ नारदतुंबरुआदिकआये। विद्याधरगंधर्वहुचाये॥
चारणसिद्धसाध्यगणनाना। करनलगेयदुपतियशगाना॥ जाहिंसुनतसबलोकनपापा। पुनिनकरतप्राणिनकहँतापा॥
नाचनलगींअपसरानाना। मढींमोदमंजुललैताना॥२४॥सुरगणफूलनबरषनलागे। अस्तुतिकरहिंअतिहिंअनुरागे॥
रह्योछायत्रिभुवनआनंदा। कहहिंसबैजयजयगोविंदा॥
दोहा-गौवेंनिजथनढारिपय, दीन्हीभूमिभिगाय॥ २५॥ सरितनमेंबहुरसबह्य, त दियमधुढ़रकाय॥
जबतेहरिअभिषेकभो, तबतेअन्नअनंत। बिनजोतेव्रजधरणिमें, लगेपकन त्यंत॥
धरणीधरप्रगटनलगे, मणिनअनेकनभाँति॥ २६॥ छोरिवैरइकथलबसे, गौवाबहुपशुजाति॥
सिगरेजीवजहानके, यदपिशूरकुरुराय। अभिषेकेजेकृष्णके, तेस्वभावबिसराय॥ २७॥
यहिविधिगोकुलचंदको, धरिकैनामगोविंद। बिदामाँगिगवँनेभवन, शक्रादिकसुरवृंद॥ २८॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे सप्तविंशस्तरंगः॥ २७॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-एकसमयएकादशी, व्रजमेंरहीनरेश। निराहारव्रतनंदकरि, पूज्योसविधिरमेश॥
दंडएकद्वादशीविहाने। ज्योतिषविदव्रजपतिहिबखाने॥ लिख्योशास्त्रमहँअसनृपराई। कलाअर्द्धद्वादशीलिखाई॥
तौएकादशिकीनिशिमाँहीं। बीतिजबैयुगयामहिंजाँहीं॥ तबहींतेमध्याह्नभरेकी। निरवाहैसबक्रियाविवेकी॥
करैद्वादशीहीमेंपारण। यहिविधितेकीजैव्रतधारण॥ करैत्रयोदशिपारणकोई। तौएकादशिफलनहिंहोई॥
शुद्धद्वादशीजोव्रतधारै। तबहिंत्रयोदशिकरैअहारै॥ ऐसीविधिमनमाहँविचारी। उठेनंदनिशिअर्द्धनिहारी॥
दोहा-यमुनामेंमज्जनकरन, गमनतभेनँदराय। गुनीनवेलाआसुरी, जलप्रविशेअतुराय॥ १॥
वरुणदूतविचरततेहिंकाला। गह्योनंदकहँआशुभुवाला॥ वरुणसमीपगयेलैआशू। करिकैअतिशयकोपप्रकाशू॥२॥
गोपसबैनहिंनंदनिहारे। रामकृष्णकहितुरतपुकारे॥ तुवपितुकोकोउहरिलैगयऊ। कोहुकोदेखिपरतनहिंभयऊ॥
वरुणदूतहरिबोहरिजानी। वरुणलोकगेशारँगपानी॥ निजदासनकेअभैप्रदातै॥३॥ देखिवरुणअतिशयडरपातै॥

दौरिदूरितेगिरयोचरणमें । शिरधरिपुनिपदपरसिकरनमें ॥ सिंहासनबैठायनाथको। अतिपूजनकरिजोरिहाथको॥ धन्यधन्यअपनेकहँमानी । अतिहर्षितबोल्योमृदुवानी ॥ ४ ॥

दोहा–आजुजन्मभोसफलमम, सबकछुपायोआज । तेइभवनिधिउतरेअवशि, तुवजनजैयदुराज ॥ ५ ॥
परब्रह्मजयजयभगवाना । परमात्माजैकृपानिधाना ॥ तुममेंसुनीपरेनहिंमाया । जोविरचैयहजगतनिकाया ॥ ६ ॥
मेरोदूतमहामतिमंदा । हरिलायोतुम्हरोपितुनंदा ॥ जानतरह्योननेकहुँकाजा । सोअपराधक्षमहुँयदुराजा ॥ ७ ॥
हेगोविंदनिजपितुयहलीजै । मोपरनाथअनुग्रहकीजै ॥ ८ ॥

श्रीशुक उवाच ।

तबैवरुणपैह्वैप्रसन्नहरि । चलेतहाँतेलैपितुमुदभरि ॥ आयेपुनिवृंदावनमाँहीं । दीन्ह्योंआनँदगोपनकाँहीं ॥ ९ ॥
व्रजवासिनकहँनंदबोलाई । विस्मितदीन्ह्योंवचनसुनाई ॥ जैसोविभौवरुणपुरमाँहीं । तसतोहमदेखेकहुँनाहीं ॥
दोहा–लोकपालसोंवरुणहूँ, कृष्णहिंकियोप्रणाम । तातेकान्हरसत्यकै, हैंईश्वरसुखधाम ॥ १० ॥
सुनतनंदकेवचनगुवालै । मान्योपरमेश्वरनंदलालै ॥ मनमेंकरनलगेअसिआसा । देहैंहमेंविकुंठविलासा ॥ ११ ॥
अभिलाषाव्रजवासिनकेरी । निजपुरदेखनहेतुघनेरी ॥ जानिकृष्णसर्वज्ञउदारा । लगेकरनकरिकृपाविचारा ॥
व्रजवासिनजोमनसंकल्पा । सोकौनिहुँविधिहोइनअल्पा॥१२॥कर्मविवशसंसारहिमाँहीं।भ्रमतरहतयहजीवसदाँहीं॥
कहुँनरकहुँतिर्यककहुँदेवा।पावतयहिविधियोनिनभेवा॥जानतकबहुँनआतमगतिको।करतनकबहूँममपदरतिको ॥
व्रजवासीतोममअनुरागी । इनसमाननहिंकोउबडभागी ॥ इनकोयहीदेहलैजाई । देहुँविकुंठलोकदरशाई ॥ १३ ॥
दोहा–असविचारिनिजचित्तमें, करुणासिंधुमुरारि । आशुवैष्णवीशक्तिनिज, सिगरेव्रजविस्तारि ॥
युवाबालवृद्धनव्रजवासिन।गोयुतनिजपुरदरशहुलासिन॥दियोविकुंठलोकदरशाई।हरिविमुखीजहँकबहुँनजाई॥१४॥
ब्रह्मअनंतज्ञानसतिरूपा । सूर्यप्रकाशअनादिअनूपा ॥ त्रैगुणहीनसिद्धिजेहिंदेखैं । धन्यधन्यअपनेकहँलेखैं ॥१५॥
असविकुंठमहँसबव्रजवासी । भयेसच्चिदानंदहिरासी ॥सोइविकुंठलखिकैमुदपूरा । पूरबजहँगवँन्योअक्रूरा ॥१६॥
तहँमणिसिंहासनमधिमाँहीं।रमासहितनिरख्योसुतकाँहीं।निगममूर्त्तिधरिअस्तुतिकरहीं।पार्षदगणचहुँकितसुखभरहीं
दोहा–नंदादिकअसदेखिकै, विस्मितभेमनमाँहिं । पुनितिनकोहरितुरतहीं, पहुँचायोव्रजकाँहिं ॥ १७ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमन्महाराजाधि राजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे अष्टाविंशस्तरंगः ॥ २८॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–पुनिव्रजमेंआवतभई, शरदनिशाछबिखानि । तहँचाँदिनिसीचाँदिनी, चारुचंदद्युतिदानि ॥
फूलिरहीचहुँओरचमेली । लहरिलहरिछहरैछितिबेली ॥ तबहरिव्रजनारिनकेसंगा । विहरनकियोविचारअभंगा ॥
भईशरदकीपूरणमासी । जानितहीअतिआनँदरासी ॥ मातुपिताकहँकृष्णछिपाई । यमुनातटआशुहिंप्रभुआई ॥
पूरनकरनराससुषमाको । सुमिरणकियोयोगमायाको ॥ दिव्यविभूषणवसनहुँनाना। अंगरागतिमिविविधमहाना॥
औरहुबाजेविविधप्रकारा । प्रगटतभेतहँएकहिंबारा ॥ षटऋतुकेफूलेसबफूला । घनीकुंजह्वैगईअतूला ॥
दोहा–मंदवेगयमुनाकियो, उथलनीरगंभीर । बहनलग्योसुरभितमहा, शीतलमंदसमीर ॥ १ ॥
कवित्त–बापुरेवियोगिनिकेवेधनविरहबाण, सुखदसयोगिनिकेश्रमकोहरणहै ।
रघुराजकरतप्रफुल्लितकुमुदकुल, उदितभयोहैइंदुआनंदभरनहै ॥

शरदनिशाकेमुखपूर्वदिशाकेमुख, लेपतसोंअंगरागअरुणकरनहैं।
बालमविदेशीबहुदिवसबिताइजैसे, प्यारीकोमिलतधायआयकैंवरनहैं ॥ २ ॥
मेदनीकेमंडलमयंककोमयूखनको, मंडलअखंडलअखंडछविछाईहै।
कुंकुमनवीनदललालिमाललितकम, लोकचारुवदनकीदुतिदरशाईहै ॥
रघुराजकालिंदीकेकूलनकेकुंजकुंज, कांतिनकलापकलानिधिअधिकाईहै।
मनमोहनीनमनमोहनकेहेतुमन, मोहनजूवंशीमनमोहनीबजाईहै ॥ ३ ॥
मदनकोबीजदैकैकान्हजबलैकेतान, व्रजसुंदरीनकोबोलायोवंशीटेरिकै।
वेणुकीझनकनिजकाननमेंअनकिरही, प्रथमेंसनकिव्रजनारीउठींफेरिकै ॥
रघुराजजेईजहाँजैसीरहींतेईतैसी, चलींअकुलाइइकएकननहेरिकै।
तनुकोसम्हारनहिंवरकोखँभारकछु, प्राणहूँतेप्यारनँदनँदनैनिवेरिकै ॥

दोहा-गमनैमगअतिहींचपल, डोलहिंकुंडलकान। तद्यपिपगपगपंथतिन, कोटिनकोशदेखान ॥

हरिलीन्होंहियरोहरिजिनको। सूझैविपमपंथनहिंतिनको ॥ हमहींसबतेपहिलेजैहैं। हमहींमिलिपहिलेसुखलैहैं ॥ याहीहितइकएकनकाँहीं। व्रजसुंदरीकह्योकछुनाँहीं ॥४॥ दुहतरहींसुरभीकोउनारी। तेतजिदुहबतुरंतसिधारी ॥ दियेरहींकोउदूधचढाई। नहिंउतारितेअतिअतुराई ॥ गमनीकृष्णप्रेमरससानी। वरकीसिगरीसुरतिभुलानी ॥ रचतरहींकोउमोहनभोगू। लहिमोहनकोमुरलिनियोगू॥गयोपाकिपयतेहिंनउतारी।तुरतगईजबकुंजविहारी ॥५॥

दोहा-कोउपरसतजननिनरहीं, सुनिमुरलीधुनिकान। पटकिपुहुमिमहँथारद्रुत, आशुहिंकियोपयान ॥

रहीपियावतकोउशिशुकाँहीं।तेतुरतैतजितिनहिंतहाँहीं॥गइयमुनातटजहँगिरिधारी।तृणसममिजनिजतनैविचारी ॥ पतिसेवनकोउकरतरहींतिय।तेउतुरतैहरिनिकटगमनकिय॥भोजनकरतरहींकोउप्यारी।तेगमनीसबक्षुधाबिसारी ६ लेपतरहींकोऊअँगरागा। तेउगमनीभरिहरिअनुरागा ॥ करतरहींकोउउबटनप्यारीं। तैसहिंमुरलीसुनतासिधारीं॥ आँजतरहींआँखिकोउअंजन।करतरहींकोउगृहमहँमंजन॥अधअंजितदृगअधमंजिततन।गईकृष्णकेनिकटमुदितमन।

दोहा-कोऊकानवंशीसुनत, अतिआतुरव्रजवाल। ओढ़िअंगमेंघावरो, सारीपहिरिविशाल ॥

गईकृष्णढिगकुंजनमाँहीं। तनुकोभानरह्योकछुनाँहीं ॥ कंकणपगनूपुरकरमाँहीं। गलकिंकिणिकटिमालसोहाँहीं॥ यहिविधिकरिभूषणविपरीती।चलींचपलहियभरिहरिप्रीती ७ पतिपितुभ्रातबंधुतिनकेरे।वारणहितकियजतनघनेरे॥ पैनरुकीहरिलियहरिहियरो। तनुतौइतैकृष्णढिगजियरो ८ कोउगोपिनकहँगोपगँवारा। रोकतभेदैभवनकेंवारा॥ प्रथमहिंमनतिनकोतहँगयऊ। पियवियोगइनसहतनभयऊ॥मूँदिनैनहरिनटवररूपा।उरधरिकरीभावनाभूपा॥९॥

दोहा-हमनँदनंदननिकटचलि, दोऊभुजनवढाय। कालिंदीकेकुंजमधि, लैहैंअंकलगाय ॥

असभावनाकरततेहिक्षणमें।पुण्यपापनहिंरहिगेतनुमें।१०।भवबंधनछूट्योतेहिंकाला।दियोतुरततनुतजिव्रजबाला॥ दिव्यरूपलहिप्रथहिंसबते।मिलीमोहनेचलिअतिजवते॥यदपिजारमतिहरिमहँठानी।तदपिबालप्रभुउरहिंसोहानी॥ यहसुनिअतिशंकितकुरुराई। कह्योवचनशुकसोंशिरनाई ॥

राजोवाच।

कृष्णहिंपरब्रह्मनहिंमान्यो। केवलकंतगोपिकनजान्यो ॥ तिनकोकिमिछूट्योसंसारा। मेटहुयहसंदेहहमारा॥१२॥ सुनतपरीक्षितकीइमिबानी। बोलेशुकाचार्यविज्ञानी ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यहतोहमतुमसोंनृपति, प्रथमहिंकियोबखान। हरिवैरीशिशुपालजिमि, हरिपुरकियोपयान ॥

वैरिहुकोगतिदेतमुरारी। तौकापुनिजेहरिकीप्यारी ॥१३॥ जनकोमंगलकरनअपारा। लेहिंविकुंठनाथअवतारा॥

दिव्यगुणीप्राकृतगुणनाँहीं । सबकेआदिअनादिसदाँहीं ॥ १४ ॥ कामक्रोधभैनेहहुतेरे । अरुभक्तिहुसनबंधघनेरे ॥
हरिमहँकौनहुविधिमनलावै।अवशिनरेशमुक्तिसोपावै॥१५॥ हरिमहँकछुविस्मयनहिंकीजै।योगीश्वरईश्वरगुनिलीजै।
कृष्णकृपातेहियहसंसारा।छूटतहैनहिंऔरप्रकारा।१६।आईनिकटनिरखिगोपिनको।वचनरचनमोहतमनतिनको॥
नटनागरबोलेअसबानी । सुनहुसबैसुंदरीसयानी ॥ १७ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

दोहा—प्यारीतुमनीकीकरी, जोआईममपास । कहौजौनसोहमकरैं, जेहिंतुवहोयसुपास ॥
कहौआगमनकारणराती । हैव्रजमेंमंगलसबभाँती ॥ १८ ॥ अहैरजनियहअतिशयघोरा।घोरजंतुविचरैंचहुँओरा ॥
क्षणभरिरहनयोगनहिंप्यारी।जाहुसबैव्रजआशुसिधारी॥१९॥मातपितासुतभ्रातातिहारे।पतिपितुबंधुसुहृदपरिवारे॥
तुमकोशंकितखोजतह्वैहैं । दुखपैहैंजोतुमहिंनपैहैं ॥ तिनकीभयमेटहुतहँजाई । इहाँरहबनहिंउचितदेखाई ॥२०॥
आईवनदेखनअभिलाषी । असजोदेहुसबैमुखभाषी ॥

दोहा—तौशशिकररंजितरुचिर, कुसमितवनचहुँओर । ललितपल्लवनपल्लवित, शोभितह्वैसबठोर ॥
शीतलमंदसुगंधसमीरा । बहतमनोहरनाशकपीरा ॥ यमुनापरमप्रमोदबढावनि । उठहिंपुलिनवेलहरिसुहावनि ॥
सोऊसबविधिलियोनिहारी ॥२१॥अबगोकुलगमनहुव्रजनारी॥सेवनकरहुपतिनकहँजाई।रोवतशिशुनदेहुपयप्याई॥
बछराछूटिगयेसबह्वैहैं । तिनकोतुमबिनकोगृहलैहैं॥गौवनकोदुहिबछरनकाँहीं । पानकरावहुचलिगृहमाँहीं ॥२२॥
अथवाममसुरलीधुनिसुनिकै।आईइतमोहिंअतिप्रियगुनिकै॥तबहूँकीन्ह्योंउचितअतीवा।मोपरकरतप्रीतिसबजीवा।
पपतिसेवननारिनकाँहीं । बिनछलकरिबोधर्मसदाँहीं ॥

दोहा—पतिबंधुनसेवाकरब, पालबसुतनसप्रीति । जगमेंनारिनकीयही, परमधरमकीरीति ॥ २४ ॥
रोगीवृद्धदरिद्रअभागी । कुत्सितकपटीकुमतिकुरागी ॥ ऐसहुपतिकहँअनघविचारी । सपनेहुँकबहुँनत्यागैनारी ॥
चहैजोउत्तमलोकनिवासा । तौपतिसेवैसहितहुलासा ॥२५॥ जोपतितजैभजैतियजारै। तेहिंनिदानहैनरकअगारै॥
निंदाअयशभीतिदुखभारी । ताहिहोतजगमेंहठिप्यारी२६जोअसकहौप्रीतिभरिआई। जायसकैंनहिंतुमहिंविहाई॥
तौममसुयशसुनेजसकाना । कीन्हेजसदरशनअरुध्याना ॥ अरुममजसकीरतिकोगाई। होतिप्रीतिमोमहँमनभाई॥
तसनहिंनिकटरहेव्रजनारी । यहीसत्यतुमलेहुविचारी ॥

दोहा—तातेगमनहुँआपने, भवनसबैव्रजबाल । तहँबैठिथिराचित्तकरि, मोहिंभजौसबकाल ॥ २७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—प्रीतमवचनअप्रीतिके, परेजबहिंसुनिकान । हेलिनकेहियरेमनहुँ, बेधेह्वैवरबान ॥
वदनश्वासततुसेदभो, शिथिलभयेसबअंग । अतिदुरंतचिंताभई, भूल्योप्रेमप्रसंग ॥ २८ ॥
कवित्तरूपघनाक्षरी—नीचेकोनवायशीशशोकभरिसासलेती, सूखिगेअधरबिम्बकम्पनलगेहैंगात ।
नैनजलधारबहिउरलगिआयहोत, कुंकुमकोपंककेरितनतापतेसुखात ॥
जरतींविरहज्वालठाढ़ींमौनव्रजबाल, खनतींअवनिपगनखदुखअधिकात ।
मानौकहैंमहीमाईमगदेसमायजायँ, प्यारेकोविहायनहिंअनतबनतजात ॥ २९ ॥
सुधारससानेसदावचनबखानेजिन, तिनकेवदनसुनिनिकसीकटुकबानि ।
करतींविचारप्राणप्यारोनंदकोकुमार, जाहीकेलियेहीहायछोंडिदीनीकुलकानि ॥
रघुराजसोतोसबसखिनसमाजमध्य, बैनकीनलाजकीन्हीउरनिठुराईठानि ।
तिनकेतकततातेतरनितनूजातीर, त्यागिहैंतलफिततनुतीखनतपहितानि ॥
दोहा—भीजिदृगनगद्गदगरो, पुनिकछुउरधरिधीर । गोपसुताअनुरागभरि, बोलींगिरागँभीर ॥ ३० ॥

गोप्य ऊचुः।

सवैया-कोमलअंबुजआननसोंअसवैनकठोरखुलैंयहिकालन। छोंडिसवैकुलकानिगेहेहमरावरेकेपदकंजरसालन॥
स्वामिहूँसेवककीरुखराखततूँकसत्यागतनंदकेलालन। वेणुबजायबोलायछलीअबदेतदगासिगरीव्रजबालन॥३१॥
जोपतिसेवननारिकोधर्मकह्योसतिहोयगोसोऊकन्हाई। पैहमवेदपुराणसुनैहितरावरेकोढिगनाहिंसिधाई॥
श्रीरघुराजसुनौमनभावनआवतीकेहूँनहींइतधाई। पैदईमारीतिहारीललामुरलीहठिकैहमकोधरिल्याई॥ ३२॥
जेतुवप्रीतिकेरंगरँगीतिनकोनसुहातकछूपरिवारो। प्राणहूँतेतुमप्यारेललाकहिवोनहिंलायकऐसोतिहारो॥
अंबुजनैनसुनोरघुराजद्रुतैदिलतेदयादोठिपसारो। बैनकठोरकुठारनसोंमतिकाटोमनोरथवृक्षहमारो॥ ३३॥
रेचितचोरचितैचखचंचलचोरिलियोचितचोरचलाको। यातनुतोतुवनेहकेभारभरोगृहकाजकरैंमहँथाको॥
भौनकोगौनचहैंहमहूँपैचलैंअबकैसेकहाकरैंयाको। श्रीरघुराजपदौभरियेपदतीरतजैंनललायमुनाको॥ ३४॥
वेणुबजायबोलायहमेंमुसकायलगायदईमदनागी। सोअधरामृतधारनसींचिबुझावहुलालवेलंबहिंत्यागी॥
श्रीरघुराजनतोविरहानलदाहिहैदेहकोज्वालनजागी। प्राणनसोंमिलिहैंतवहूँअयशैयकरावरेकेकरलागी॥ ३५॥
इंदिराआनँदअंबुधिदानिसदातुलसीवनवासिनप्यारे। आयलखेइननैननसोंजबतेपदपंकजनैनतिहारे॥
श्रीरघुराजतेहींक्षणतेजगमेंदृगदूजोपरैननिहारे। प्राणहुँनातुमतेप्रियहैंपतिपूतकहाँरहतेदईमारे॥ ३६॥
सुरजाकीकृपाकीकटाक्षकीकोरलियेश्रमभारीकरैंप्रबला। पदकंजरजैतुलसीसँगमेंसोऊचाहेहियेहूबसीकमला॥
शिरनायकैहाहापुकारकरैंदिलदायागहौहमहैंअबला।रघुराजजूलालसीसोंरजकीखड़ीयाचतीहैंव्रजकीनवला॥३७॥
बाँसुरिकीधुनिकोसुनतैकुलकीकुलकानितजीदुखरासी। तापरतूँदृगबाणनबेधिफँसायलियोमुसक्यानकीफाँसी॥
प्रेमकीप्यासीखड़ींरघुराजतजौनिठुराईव्रजैदुखनासी। हायअनंगकीआगिजरैंअबरावरेदेखतरावरीदासी॥ ३८॥
कुंडलकाननमेंझलकैंअलकैंहलकैंछलकैंछविभारी। त्यौंअधरानिसुधानिबसैरघुराजचितैमुसक्यानहुँप्यारी॥
हैउरश्रीकोविलासनिवासउभैभुजरासहुलासपसारी। मूरतियामनहारीजिहारीभईहमनारीविहारीनिहारी॥ ३९॥
तीनिहुँलोकनकीसुषमाहरिरावरेरूपमेंआयबसीहै। देखिकैधेनुकुरंगविहंगअजंगमकेपुलकालिलसीहै॥
श्रीरघुराजकहौंकेहिकेमुरलीधुनिधायहियेनधसीहै। कोतियताकितुम्हेंकुलकानिविहायनप्रेमकेफाँसफँसीहै॥४०॥
जाहिरहैजगमेंरघुराजभयेतुमगोकुलकेदुखहारी। सोतुम्हरेलखतैव्रजबालनजारनचाहैअनंगदवारी॥
पीछेतुहूँपछितैहोललाभलायेतीविनैसुनियेंतोहमारी। दीजियेआपनोकौलकरैंहमजीवतहींहियेलेहिंतोधारी॥४१॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-प्रेमपगेरतिरसरँगे, विरहजगेसुखएेन। सुनिव्रजबालनबैनहँसि, बोलेवारिजनैन॥
सत्यकह्योसिगरीव्रजनारी। मोपरअतिशयप्रीतितिहारी॥ मैंतुमसोंकीन्हींयहहाँसी। सोनहिंचितलावहुछबिरासी॥
करहुसबैमेरेसँगरासा। पूरहुसबउरकीअबआसा॥ मैंनिवसहुँनितहियेतिहारे। तुमनिवसहुसखिहियेहमारे॥
सुनिकैकृष्णवचनव्रजबाला।अनुपमसुखपायोतेहिंकाला॥४२॥भयेप्रफुल्लितवदनमलीना।ताकिरहींप्रीतमैप्रवीना॥
तहँहरिसखिसमाजमधिजाई। हँसेआपहूँतिन्हेंहँसाई॥ फैलिरहीदुतिदंतनकेरी। मनहुँकुंदकीकलीघनेरी॥
युवतिनमधिराजैंयदुराई। मनुमयंकउडुबीचसोहाई॥

दोहा-तहँव्रजकीनबलासकल, करिमंडलचहुँओर। इकएकनकरपकरिकै, करिबिचनंदकिशोर॥ ४३॥
गावनलगींमनोहरराग। हियउमग्योहरिकोअनुरागा॥ बाजनलगींबजावनप्यारी। चहुँकितसुरछायोमनहारी॥
भूषणवसनादिव्यसबधारी। नचैंचहूँकितदैदैतारी॥ अतिचंचलचमकतींकामिनी। सहसनमनुदमकतींदामिनी॥
छायरहींनूपुरझनकारी। मधुरतानलेतींव्रजनारी॥ तिनकेमधिमेंकहितत्थेइया। नाचतनटवरवेषकन्हैया॥

उरसोहतिवैजंतीमाला। जनुनीरदमधिधनुसुरपाला॥करतरासयहिभाँतिअखंडित। थलथलभोवृंदावनमंडित॥
दोहा–यहिविधिविहरतकान्हतहँ, लैसँगसखिनजमाति। तहाँमहामुदमचिरह्यो, शरदपूनिमाराति॥४४॥
रासकरनसरिपुलिनविचारी। लैव्रजनारिनकुंजविहारी॥ नाचतगावतदैकरताला। गमनेयमुनापुलिनविशाला॥
तहँकोमलबालुकारसाला। शीतलसरससुखदसबकाला॥बहतपवनसुरभितचहुँओरा। छायपरागरह्योतेहिठोरा॥
गुंजतमधुपमत्तमनहारी। फैलिरहीशशिकीउजियारी॥तहँव्रजबालननंदकुमारा। विहरतआनँददेतअपारा॥४५॥
कोउसखिकोहरिहाथपसारी।परसिकपोलदेहिंमुदभारी॥कोहुकहँमिलतधायमनमोहन।चूमतबदनसछबिछकिछोहन॥
दोहा–कोउनाचतव्रजगोपिका, बिथुरिजातिअलकालि। निजकरताहिसँभारते, अतिमोदितवनमालि॥
कोउसखिकीऊरूपरसि, रम्भखम्भदरशाय। यहिसमताईकरहुतुम, असकहिहँसेहँसाय॥
कोहुकीनीवीहरिगहे, सोलखिकैमुसक्याति। मनहुँआपनेप्रेमको, गर्वदेखावतजाति॥
कोहुकेकुचनकठोरनिज, करपरसतयदुराय। रूपदरपतेदरपनहिं, तहँसोदियोदेखाय॥
कोउकामिनिकोकान्हगुनि, कामकलानिप्रवीन। नखछततेहिंअंगनिकियो, मनुमोहरकरिदीन॥
कोउसखिकोकौतुकलखनि, मिसिबोलाइयदुराउ। मिलतभयेमोदितमनौ, सोकियमुग्धाभाउ॥
कोहुकोकरगहिनचतमुरारी।सोसुखताकिछाकिछबिप्यारी॥थिरह्वैरहतिफिरतिनहिंबाला।थकींथकींकहिहँसतगोपाला
कोहुकोकरिकटाक्षमुसकाई। लियोआशुहींचित्तचोराई॥ सोजबमिलनहेतुढिगआई। आपगयेतबअनतपराई॥
नीचेशिरकरिरहीलजाई। हरिहँसिहेलिनदियोहँसाई॥ कोहकोनैननचाइविहारी। कहतभयेकहँआसतिहारी॥
कोहुसोंहँसिकहँसुनहुकामिनी।विरहनलायकशरदयामिनी॥चलहुरहसियहरासविहाई। तौलहिहौसुखकीअधिकाई
दोहा–यहिविधिहरिव्रजसुंदरिन, विविधभावदरशाय। कलाकुतूहलकरतबहु, मनसिजदियोबढाय॥४६॥
सबकोकियसनमानविहारी। सबकोदीन्ह्योंआनँदभारी॥ मान्योअससिगरीव्रजनारी। हमरेहींवशभेगिरिधारी॥
बहुआदरकरवावनलागी। अतिशयप्रेमगर्वमहँपागी॥ अपनेकाहँगुन्योमनमाँहीं।हमसमऔरयुवतिजगनाँहीं॥४७॥
कहनलगींहरिसोंअसबाँनी।श्रमितभईगतिजातिनठाँनी॥कोउकहनृत्यदेखाउकन्हाई। कोउकहदीजेअलकबनाई॥
कोउकहबाजबजायसुनावो।कोउकहतुमहिंकान्हअबगावो।कोउकहसुमनलाइमोहिंदीजे कोउकहभूषणभूषितकीजे
दोहा–ऐसोव्रजनारिननिरखि, निजवशकोअभिमान। विप्रलंभरससुखलहन, हरिवेहेतुगुमान॥
अलिनमंडलीमध्यमें, चितैचपलचहुँओर। अंतरहितह्वैजातभे, आशुहिंनंदकिशोर॥४८॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहा
राजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौदशमस्कंधेपूर्वार्धेएकोनत्रिंशस्तरंगः॥२९॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–बिनमाधवसखिमंडली, परीननेकुसुहाय। जिमितारापतिकेविना, तारनकीसमुदाय।
मोहनकोमधिमेंनलखि, प्रथमचकितअकुलाय। पुनिसबकेइकबारहीं, कढ्योवदनतेहाय॥

छंदद्रुतविलंबित।

पुनिसखीसिगरीजुरिकैतहाँ। विरहतापतपीतनुमेंमहाँ॥ निपटनागरिबावरिसीभई। कहँहिंवारहिंवारहिहादई॥
सघनकाननमेंकरिणीयथा।बिनकरिंदहिंपावतिहैंव्यथा॥तिमिमुकुंदबिनाव्रजकीवधू।बिलखतींलिखतींधरनीयधू १॥
चलनिमंदगयंदगुविंदकी। नहितनेहचितौनिअनंदकी॥हँसनित्योंहरिकीसुविलासकी।वचनकीरचनादुखनासकी॥
नचनत्योंनिजनैननचाइकै। मधुरगानसुतानबढ़ायकै॥ करनकुंजनकुंजविहारहूँ। मुरलिमोहनमंजुपुकारहूँ॥
शशिमुखीहरिकीसकलाकला। सुधिकरैंविरहानलविह्वला॥ तनहुँतेमनतेहरिमेंलगीं। रमणितेरमनैरँगमेंरँगी॥२॥

कहइंबैनपरस्परतेसखी। गुनहुँतूँहरिकोहमहींलखी॥ परमचंचलसोछलिकेगयो। विपिनिकेबिचप्राणनिकोलयो॥
निरदईनँदनंदनहादई। कहँगईहियतेकरुणाबई॥ विपिनिमेंब्रजबालविहायकै। कितछिप्यौछलियाछलछायकै॥
असउचारिपुकारिपुकारिकै।चकितचौंकितकंजुनिहारिकै॥हरिहिंटेरहिंप्रेमजनाइकै।मिलहुमोहनआशुहिंआयकै ३
कहुँकहूँकेहुँकाननधावतीं। लहिनतेपियकोफिरिआवतीं॥ युवतिजोरिजमातिनफेरिकै।कहहिंमाधवतूँकहँटेरिकै॥
तुलसिकाननकीतियवासनी।बिनहरीनिजजीवनिराशनी॥ तुलसिकेवनकेतरुवृंदको॥पियहिंपूँछहिंछोंडिअनंदको ४

बरवै-हेचलदलकरुणाकरिदेहुबताय। वहचंचलचितकेहिवनरह्योदुराय॥
पाकरिपरमकृपाकरिनाकरिदेर। पियहिबतावोनहिंपछितैहौफेर॥
बटबताउयहिबाटैंगोचितचोर। भूरिभामरीभरिहैंहोतहिंभोर॥ ५॥
हेकुरबकतौबकसमधारेध्यान। जोनबतैहौकेहिदिशिगेप्रियप्रान॥
विगतशोकतुमनितहींरहहुअशोक। हमसशोककहँकीजैआशुअशोक॥
नामतुम्हारोजाहिरजगमेंनाग। पियनबतैहौतौसतितक्षकनाग॥
तुमहूँताकेभाईहौपुंनाग। जोप्रीतमैबतावोतौबड़भाग॥
अलिद्रोहीनाहिंमोहीचंपसदाहिं। वोहीनिरमोहीकोकहिहौनाहिं॥
मानिनमानविनाशीअतिहिंअधीर। मिल्योमीततुवह्वैहैइतबलवीर॥ ६॥
तुलसीहरिपदप्यारीसरलसुभाउ। पियाबताउविहाउसबतियाभाउ॥ ७॥
अलिनसहिततुमनिवसहुनितवनमाल। तातेजानैह्वैहैमोहनलाल॥
सत्यचमेलीहेलीदेख्योकंत। पियकरपरसतफूलीबिनहुँवसंत॥
वेलाअबयहिंवेलामतिहिंदुराउ। कितगोनाहनवेलाबेगिबताउ॥
जातीनिजसुमनेरँगहमहिंनिहारि। कसनप्रकाशहुपियकोदायाधारि॥
जूहीतूँहीकोमलहोतकठोर। कसबतायनहिंदेतीनंदकिशोर॥ ८॥
आमअरामप्रदायकतुमवसुयाम। तुमसतिदेखेह्वैहौकहैघनश्याम॥
हेप्रियालतुम्हरोहियकोमलभूरि। कहहुकृष्णकितगमनेकेतकिदूरि॥
यदपिकठिनतुवऊपरकोमलहीय। क्योंनपनसकहिदीजैकहँगेपीय॥
असनअसनअबकीजैयहिवनमाँहि। बिनहरिकेहियरेलगियेजियजाँहिं॥
कोविदारतुमकोविदकरुउपकार। पलनबितायबतावहुनंदकुमार॥
जामुनतुम्हरोहमाहिंनपरतप्रमान। कारेकारेहोतेएकसमान॥
विषधारीतुमजाहिरहोमंदार। विरहविषमविषहरिहौतुमनहमार॥
बिल्वसदाप्रियहरकेहररिपुकाम। क्योंनबतायबिनाशहुकहँघनश्याम॥
बंजुलमंजुलसुखप्रदहरिसँगमाँहिं। अबदुखप्रदकतहोतेकहितेहिंनाँहिं॥
एकअलंबरहेतुमहमहिंकदंब। अबजियजातोहरिबिनहोतबिलंब॥

दोहा-यहिविधितरुणीतरुलतन, पूँछतपूँछतजाय। कुंजकालिंदीकूलकी, लखिबोलीदुखछाय॥

सवैया-एकहीठौरमेंजन्मभयोअरुएकहीठौरबसेसुखपाई। बारहिंबारकियोउपकाररहेतुममित्रहमारेसदाई॥
हेयमुनातटकीलतिकातरुक्यौंनबतावहुआजुकन्हाई। साँकरेमेंजोसहायकरैरघुराजसोमीतकीसाँचमिताई॥ ९॥
फेरिकह्योक्षितिसोंब्रजबालकरैतेदयानिजमाहबँसेकी। नातोवराहकेअंगछुयेकीनवामनकेपदकेपरसेकी॥
देखिपरैपुलकावलीतोमेंसोहैइतह्वैहरिकेनिकसेकी। श्रीरघुराजबतावतीनासुधिह्वैहैसबैथलकेबिलसेकी॥ १०॥

लखिफेरिकहैंहरिनीनसोंहेलीलखीतुममूरतिलालकीहै।चकितैचितवोचलिओरवहीछविनीकीसोनैनविशालकीहै॥
इतहींह्वैगयेयहजानिपरैयावयारिवहैउरसालकीहै। कोउकामिनिकेकुचकुंकुमरंजितसौरभयावनमालकी॥ ११॥

कवित्त–पुनिव्रजबालकहैंवृंदावनवृक्षनसों, कीन्ह्योहैप्रणामतुमश्यामपगलपटी।
प्रीतमकेपीतपगींउमगींअनंदअति, अवलोंतिहारीशाखाछोनीछायछपटी॥
रघुराजनिकस्योविशेषिइतह्वैकेकान्ह, तुलसीसुगंधरहेभौरझौरझपटी।
कामिनिकोकंधएककरसोंकलितएक, करमैंकमलकमलाकोकंतकपटी॥ १२॥
सखियासयानकोईकह्योपुनिसाखिनसों, लहरैंललितलतिकालीआलीदेखिये।
लपटींतरुनहूंपैकपटीनिपटकान्ह, करकोपरसपायआनँदअलेखिये॥
रघुराजजाकेहितत्यागिदीन्हींकुलकानि, आईवनवीचतजिवासकोविशेखिये।
व्रजकीनवेलिनविहायकेविहारीलाल, प्रीतिकीन्हींबेलिनसोंबूझितौपरेखिये॥ १३॥

दोहा–विरहविकलवहुविधिवचन, वदतविविधव्रजबाल। विषमवियोगविथाव्यथित, विचरहिंविपिनिविशाल॥
पुनिथकिथकिसिगरीव्रजनारी। इकथलैबैठतभईदुखारी॥ सूखेवदनशिथिलसबअंगा। तापरजारतअंगअनंगा॥
तनुमनसकलकृष्णमहँलाग्यो।विषमविरहवडवानलजाग्यो॥प्राणपयानजानिव्रजबाला।करनलगींहरिचरितरसाला॥
कोउपूतनासरूपसखिधरहीं।कोउहरिह्वैपयपानहिंकरहीं॥शकटसरिसकोउथिरह्वैजाँहीं। कोउशिशुह्वैरोवततेहिंकाँहीं
करहिंआशुहींचरणप्रहारा।गिरैंभूमिसोखायपछारा॥१५॥तृणावर्तवपुधरिकोउप्यारी।कोउसखिकोनँदलालविचारी॥

दोहा–ताकोअंकउठायकै, लैदूरीकछुजाति। तेहिंऊपरकरिगिरतमहि, मृतकसरिसदरशाति॥
नूपुरपगनिबजायरसाला।कोऊघुटुरुवनिगवँनतिबाला॥१६॥कोउसखिरामकृष्णह्वैजाँहीं।पुनिकोउसखाहोइसँगमाँहीं॥
कोउवत्सासुरह्वैतहँआवै।हरिरूपीसखिताहिगिरावै॥कोउपुनिहोयवकासुरनारी।कोउहरिह्वैतेहिंदेतिपछारी॥१७॥
कोउसखिव्रजगोवैंह्वैजाती।तिनटेरहिंकोउहरिकीभाँती॥ कोउविहरतपुनिवेणुबजावैं।तेहिसराहिकोउसुखउपजावैं॥
कोहुकोउकंधननिजभुजधरिकै।गमनहिंमंदकटाक्षनकरिकै॥हमहैंकृष्णकहहिंव्रजनारी।लेहुललितगतिमोरिनिहारी

दोहा–कोउकहपानीपवनतै, अबनडरहुव्रजलोग। मैंरक्षणकरिहौंअवशि, मेटिसबनकोशोग॥
असकहिएकवसनफहराई।लियोगोपिकाऊँचउठाई॥२०॥पुनियकसाखिकोउसाखिशिरमाँहीं।पदधरिबोलतभईतहाँहीं॥
रेकालीअहिविषधरघोरा।तजहुआशुतुमअवयहिठोरा॥मैंखलमदखंडनअवतारा। लीन्ह्योंव्रजटारनभुवभारा॥२१॥
पुनिसखियनसोंकोउसखिबोली।अपनेउरकीआशयखोली॥देख्योसखाकरालदवारी।जारनचहतिप्रगटिदिशिचारी॥
मूँदहुनयनसबैइकबारा। तौहरिहौंदुखसकलतिहारा॥२२॥दूसरिसखिकहँमानिमुरारी।कोऊसखिपुनिमालउतारी॥

दोहा–शिलाउलूखलथापिकै, बाँधितहिमहँतौंहि। अतिशयडेरवावनलगी, लैलकुटीकरमाँहिं॥
बँधीसखिसोमुखअसगायो। मैयामैंदधिनाहिंचोरायो॥असकहिमूँदिलियोदृगदोऊ। भईभयाकुलसीतहँसोऊ॥२३॥
यहिविधिऔरकृष्णकीलीला। विचरतभईसुखीशुभशीला॥पुनिसिगरीजुरिकैव्रजबाला।आगेगमनीविरहबिहाला॥
पूँछतवृंदावनतरुलतिकन।शरदछपामहँछीजतछनछन॥कछुआगेचलिकैव्रजनारीं।धरणीमहँहरिचरणनिहारीं॥२४॥
कह्योसाखिनसोंतहँकोउप्यारी।इतहींह्वैनिकस्योछलकारी। जवध्वजअंकुशकुलिशहुकंजा।हरिपदचिह्नलखहुमनरंजा

दोहा–यहीपंथह्वैकढिगयो, सोकपटीचितचोर। यहिमगह्वैआलीचलहु, अबआशुहिंयहिओर॥
असकहिचपलचलींव्रजनारी।निरखतहरिपदचिह्नदुखारी॥लखतभईचलिकैकछुदूरी।पियपदयुततियपदमधिधूरी॥
सिगरीसखीतहाँजुरिआई। एकएकनकोवचनसुनाई॥ लखहुकपटकपटीकरआली। हमकोयहछिपायवनमाली॥
कोउप्यारीकोलैनिजसाथा। रह्योलुकायगहेतेहिहाथा॥२६॥कौननारिकेयेपदसजनी।कौनसोहागिनभैयहिरजनी॥
जेहिंसुखकीहमसबअधिकारी। सोसुखलेतिएकवहनारी॥इकपगप्रगटनयकप्रगटतभला।तातेजानिपरतएसोछल॥

दोहा-इककरकामिनिकंधमें, करिकेकान्हरजात। अवलपरततातेचरण, नहिंभलकेप्रगटात॥
जिमिकरिंदकरिणीकेकंध। केआपनीशुंडसनबंध॥झूमतझुकतमहामदछाको। तिमिगमनतसुतनंदबबाको॥२७॥
कारिसनेहहरिकोअवराधा। तातेलहिनविग्रहकीबाधा॥ संगसंगडोलतिवनमाँहीं। तेहिसमभागऔरकीनाँहीं॥
गुणअनगुणपियकेहैंनामा। सोनहिंदीसतहैयहिजामा॥ कहवावतुदक्षिणभगवाना। चहियसबमेंभाउसमाना॥
सोहमकोतजिलैइकप्यारी। छिपेकुंजमहँकुंजविहारी॥ हरहिंकलेशनामहरितिाते। सोगुणअबनहिंनेकुदेखाते॥
दोहा-तजिकुलकुलिकुलकानिहूँ, आईवनजिनहेत। सोछलिहमकोछिपिरह्यो, क्योंदुखनहिंहरिलेत॥
सबकोउवाकोईश्वरभाषै। वहईश्वरतानेकुनराषै॥ जोसमरथहोवैसबभाँती। तौदुखहरैआययहिराती॥
हैंगोविंदमनकीसबजानै। मेटतविपतिननिकसतप्रानै॥वहसखियहतजिसखिनसमाजू।व्रजमेंसुखलूटतिसतिआजू॥
ह्वैअभीतसबातिनसोंआली। लगतिहोयगीहियवनमाली॥२८॥ सोधनधनधनिधनिधरणीमैं।वरवर्णीवरवरवर्णीमें॥
कैलासीकमलाकरतारा। नाशनहितअघजन्मअपारा॥ जेहिंपियकीपदरजशिरधारे। सोपियकीरजवारहिंवारे॥
लहतिहोयगीआजुअकेले। विहरतवनवनकान्हरभेले॥ २९॥
दोहा-तबकोउपुनिबोलीसखी, साँचकहतितैंवीर। पियपदपरतेहिंपदपरखि, उपजतिपुरीपीर॥
जोदुर्लभअधरामृतपियको। रह्योअधारहमारेजियको॥ आजुअकेलीसोइअनोखी। पियतहोइगीभागनिचोखी॥
कुंजनकुंजनविहरतिह्वैहै।पियकोतजिअबक्योंइतऐहै॥३०॥पुनिकछुआगूचलिव्रजनारी।नवतृणकेअंकुरनिनिहारी॥
तहँनहिंकामिनिकेपददेखी। तबबोलींचितमेंअसलेखी॥ प्यारीकेपदतृणगडिजैहैं। तामसंगखेदअतिपैहै॥
असविचारितेहिंकंधचढाई। चलोगयोअबहींकितधाई॥ तिनकोतनुमनतेसोइप्यारी। सुधिनहिंताकोनकुहमारी॥
कछुआगेचलिकैकोउबोली। सत्यकहतितैंबातअतोली॥
दोहा-कामिनिकोकाँधेलिये, कामीकान्हरजात। भारभरपदधसिगये, तेपरगटदरशात॥ ३१॥
पुनिकछुदूरिगईसबहेली। देखीकुसुमचुनीयकबेली॥ तहँबोलीकोउलखइकसजनी। लीलाकरीजोपीतमरजनी॥
तोरनहेतुकुसुमयशुदाको। दियउतारिकंधतेप्रियाको॥ लगेकुसुमतोरननिजहाथा। प्राणपियारीकोलैसाथा॥
तोरनकह्योकुसुमसखिजोई। ऊँचेकरकरितोरयोसोई॥ येंडीउठींकरतकरऊँचाहिं। पगअँगुरीउपटीरजवीचाहिं॥
कान्हभयोकामिनिकरचेरो। करतसोईतेहिकेमनकेरो॥३२॥पुनिकोउबोलीव्रजनारी।यहथलतोसखिलेहुनिहारी॥
दोहा-प्यारीकोबैठाइकै, याहींकुंजरसाल। निजकरसोंबहुकुसुमचुनि, वेणीगुहीगोपाल॥ ३३॥
कीन्ह्योंकेलिकुतूहलआली। नँदनंदनकपटीवनमाली॥हमकोछलिछलियाइतआई। लियनिशंकतियअंकलगाई॥
सौतिसनेहहिंसनोसाँवरो।ताकीछविमहँभयोबावरो॥३४॥यहिविधिकहतविविधविधिवैना।बारबारढारहिंजलनैना॥
हेरहिंहरिकहँकुंजनिकुंजनि।तपैंतापसुनिसुनिअलिगुंजनि॥लगैंचंदकरशरसमतिनतन।कलपसरिसवीततहैंछनछन
लाग्योमनप्रियचंद्राननमें। विलखितवागैंवृंदावनमें॥ गोपिनमधितेजेहिंदियकाँहीं।लैदुरिगहरिकाननमाँहीं॥३५॥
दोहा-सोसिगरिनतेआपनो, मान्योपरमसोहाग। सखिनत्यागिमोपरकियो, हरिअतिशयअनुराग॥
मेरेवशहैंकुंजविहारी। मोहींकोमानतनिजप्यारी॥ जोकहिहौंमैंकरिहैंसोई। औरसखीसोंप्रीतिनहोई॥ ३६॥
जबवेणीगुहिचलेविहारी। तवहरिसोंसखिगिराउचारी॥ बहुतदूरिसखियनतजिआई।विविधभाँतिकीकलादेखाई॥
हमथकिगईसकहिंचलिनाँहीं। कहाकरैंअबकाननमाँहीं॥ तुमतौसखनसंगखेलवैया। बहुतदूरलोंनाहिंथकैया॥
ममकोमलपदकंटकलागे। श्रमितकहौचलिहैंकिमिआगे॥ जोहमेरपराखहुप्रीती। तौअबकरहुलालयहरीती॥
हमहिंलेहुनिजकंधचढ़ाई। चलहुजहाँमनहोयकन्हाई॥ ३७॥
दोहा-सुनिप्यारीकेबैनअस, गर्वितजानिबनाय। नँदनंदनबोलेवचन, मंदमंदमुसक्याय॥
तैंसतिमेरीप्राणपियारी। मनिहौंसबविधिसीखतिहारी॥ चढ़िममकंधचलैद्रुतआछे। आवनचहहिंसखीसबपाछे॥

असकहिबैठिगयगिरिधारी।चद्दनलगीसोगोपकुमारी।तेहिंक्षणमेंहरिअंतरधाना।पियहिनलखिउतरच्योअभिमाना३८
गिरीभूमिमहँविलपतप्यारी।तनुकीसुधिनहिंनेकुसँभारी।।पसरिपुहुमिउठिकैपुनिप्यारी।चहुँकितचितवतिरुदतिपुकारी
हायनाथहेप्राणपियारे।मोहिंतजिअबतुमकहाँसिधारे।केहिदिशिकेहिथलकेहिवनमाँहीं।हौकहँकहहुकंतकतनाँहीं॥

दोहा–जिनकुंजनमेंमोहिंमिले, भरिभरिबाहुविशाल। तिनकुंजनतेअबनकत, कढ़िआवोनँदलाल॥

कियोकौनदासीअपराधा। दईजोदुसहविरहकीबाधा॥ मैंगरीबिनीहौंव्रजनारी। सबविधिपीतमआशातिहारी॥
तुमबिनइकक्षणनाहिंजियोंगी।खोजिगरलयहिठौरपियोंगी।।तुवबिनइकक्षणकलपसमाना।बीततमोहिंकहँअहेसुजाना॥
ऐसीहाँसीमतिपियकीजै। जामेंयहतनुक्षणक्षणछीजै॥ बिनारावरीमूरतिदेखे। त्रिभुवनसूनसत्यममलेखे॥
वेगिमिलहुमोकहँअबप्यारे। कसनदयाहियहोतितिहारे॥ मोहिंअकेलीछाँड़िछिपाने। तेरेगुणइतहींप्रगठाने॥

दोहा–रेकपटीअतिनिरदई, कारेनंदकिशोर। कसतरसावतदरशबिन, व्रजवनिताचितचोर॥ ३९॥

विलपतियहिविधिसोव्रजबाला।डोलतिमंदहिमंदविहाला।।श्यामश्यामसुखटेरतिश्यामा।छनछनछीजिहोतितनुछामा
सोसखिकोअतिकरुणविलापा।सुनियेऊसखिलहिसंतापा॥ तासुनिकटचलिगईतुरंते। देखीतेहिंविलपतबिनकंते॥
पूँछनलगीताहिकसप्यारी। फिरहुअकेलीविपिनिमँझारी॥ धौंइततुमकोकान्हलेवाई। छोंडिअकेलेगयोछिपाई॥
कैधौंतजिसबसखिनसमाजै।हेरहुतुमहुँआजुव्रजराजै॥४०॥सुनिऐसीसखियनकीबानी। बोलीव्रजसुंदरिछविखानी॥

दोहा–तुम्हरेमधितेमोहिंसखी, लैआयोइतश्याम। सेवकाईसबविधिकरी, यहिवनठामहिंठाम॥

अबहींमोहिंदगादैप्यारी। कहुँदुरिगोकपटीगिरिधारी॥ सुनिमृदुवचनभईमतिभोरी। ताकोछलजानेउनहिंगोरी॥
जोपहिलेअसजनतीसजनी। तौनआवतीसँगयहिरजनी।।प्रथमहिंबाँधिप्रीतिकीडोरी। पुनिक्षणहींमेंडारचोतोरी॥
दईनिर्दईकेसँगमाँहीं। विरचैप्रीतिरीतिकीनाँहीं॥ सुनितीकीअसगिरादुखारी। बोलतभईसकलव्रजनारी॥
कोअसजोकरिहरिसँगप्रीती।पाइहिपुनिनविरहकीभीती।। कान्हवानिजेकरैंप्रतीती। नितकीहोतिअवशियहरीती॥
दोहा–मुखकोमलउरअतिकठिन, छलतनहोतअघाउ। छलिछलिछलियाअलिनको, केहिउरकियोनघाउ॥४१॥
असकहिकैतेहिंसंगलेवाई। हरिहेरनहितसकलसिधाई॥ जहँलगिरहीमयंकजोन्हाई। तहँलगिहेरतभईकन्हाई॥
आगेरह्योसघनवनघोरा। ठौरठौरअँधियारअथोरा॥ सोतमलखिसजनीकोउबोली। आगेजायहोहुकतभोली॥
चंदचाँदिनीचहुँकितछाई।छिपतिनकौनिहुँवस्तुछिपाई।।यहिमहँकिमिछिपिहैघनश्यामा।होतोतौदीसतकहुँठाँमा॥
कहँहुजोवनछिपानकहुँह्वैहैं।खोजेतेहठितिनकहँपैहैं।तोतेहिंमुखशशिकोटिप्रकाशा।किमिछिपिहैतममहँकहिंआशा

दोहा–तातेअबहेरहुनहीं, हेरेमिलिहैंनाँहिं। मिलिहैंतबह्वैहैअवशि, दायाजबउरमाँहिं॥

चलहुकलिंदीतटमहँआली।तनुमनसोंसुमिरहुवनमाली।।गावहुतिनकीकीरतिप्यारी। तोमिलिहैंहठिकुंजविहारी॥
यहसुनिलौटिचलींव्रजबाला।मनलाग्योसबकोनँदलाला।।४२करहिंगोविंदकेरगुणगाना।हरिचरित्रकोउकरैमहाना॥
तनुमनसकलकृष्णसोंलाग्यो।दुसहविरहबडवानलजाग्यो।भूलिहुघरसुधिआवतिनाँहीं।छाइहरिछविनैननिमाँहीं ४३
आयपुलिनपुनिअलियमुनाके।ताकतितरलतरंगनिताके॥ बैठींसबसमाजनिजजोरी। बोरीविरहविथाव्रजगोरी॥
दोहा–प्रगटनहितनँदलालके, रचिरचिपदनरसाल। विनयकरतगावनलगीं, अतिविनीतव्रजबाल॥ ४४॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे त्रिंशस्तरंगः॥ ३०॥

गोप्य ऊचुः।

अथ गोपीगीतललितपद।

जयतिनँदनंदनप्राणप्रिया, व्रजमेंप्रगटिनाथव्रजकोगोपुरतेअधिककिया॥
रामविहरैंव्रजमेंनितहीं, तेहिव्रजकीअबलातुमबिनविरहानलमेंजातदही॥
मिलहुअबकहुँदिशितेआई, प्रानपियारेबहुतभईअबछोंडहुनिठुराई॥
लगेतुममेंतनुमनप्राना, वनवनखोजिथकींहियमेंधरितुवमूरतिध्याना॥ १॥
शरदसरसरसिजहगवारे, ताकितिरीछेसैनशरनकसअबलनकोमारे॥
आयअबऔषधिअसकीजै, कोमलकरनदुसालघाउछेपूरणकरिदीजै॥
बिकानीमोलबिनातुमसों, ऐसीदगाकरबतुमकोनहिंउचितरह्योहमसों॥
कहावधहोतकृपाणहिंते, जेहिंउपायजियजायसोईवधसुकविबखानहिंते॥
वृथाहींकियोवियोगलला, जोनभईसोभईअबहुँतौदरशनदेहुभला॥ २॥
महाअहिकालीविषजलसों, बकहुअघासुरइंद्रकोपतेअरुदावानलसों॥
भईजबजबव्रजमेंभीती, तबतबअभैतुम्हींकरिदीन्हीकरिहमपरप्रीती॥
नहींयहजानिपरैरीती, काकेवशह्वैमनमोहनजूकरियतुअनरीती॥
विरहवैरीव्रजवासिनको, विथावृथाहींकरततुम्हेंबिनतुवपददासिनको॥
आयकसनहिंयहअरिमारो, तुमबिनअबनदूसरोदीसतगोपिनरखवारो॥ ३॥
नहींयशुदैभरिसुखदाता, सबदेहिनकेउरनिवसतहौसतिमतिगतिज्ञाता॥
विरंचिविनैसुनिकैनाथा, हरणहेतुभूभारलियोऔतारमोदगाथा॥
हरोहमरोयदिदुखभारा, तौमहिभारउतारिप्रतीतिकरीसतिकरतारा॥
भयेयदुकुलकेसुखदाई, प्रीतिरीतिरावरीरुचिरअतिकहँपियबिसराई॥ ४॥
सदाशरणागतपालकहौ, निजदासनसंसारदीहदुखआशुहिंघालकहौ॥
दयाकरिबिनतीसुनिलीजै, हमगरीबिनीगोपिनकोपियअबनविथादीजै॥
कमलकरकमलाकरधारी, मनकोसकलमनोरथदायकविरहतापहारी॥
कमलकरऐसोनिजप्यारे, हमरेशिरमहँधरहुआयअबमतिहोवहुन्यारे॥ ५॥
सुनोपियगोकुलदुखनासी, हेलिनकोहरिलेहुगर्वकरिमंजुलमुखहाँसी॥
नहमसमविरहीजगमाँहीं, यहीगर्वसुसक्यायलालअबनाशहुकसनाँहीं॥
सुनेबलवीरवीरसाँचे, वैरीविरहविनाशनमेंपियह्वोहुनअबकाँचे॥
किंकरीहमचरणनकेरी, निजअधीनजनतजनबानकबहूँनरहीतेरी॥
चलावहुअबनहिंरीतिनई, गहतनिर्दईबानिसखीनहिंजीहैहायदई॥
देखावहुसरसिजचारुमुखै, अबनलाजव्रजराजकरहुमिलिदारहुदीहदुखै॥ ६॥
जौनपदकालीशिरसोह्यो, दासनकोदुखहरणहारजेहिंकमलामनमोह्यो॥
चलैगौवँनपीछेपीछे, जातेललितमंदगतिकोवनकेगयंदसीछे॥
आपनोचरनकमलसोई, कुचनवीचधरिमदनविथाकरकदनकरहुजोई॥ ७॥
तिहारीवैमधुरीबतियाँ, अबसुधिकरिकरिव्रजवनितनकीफटीजातिछतियाँ॥
कौनचतुरोअसजगमाँहीं, जोतुम्हरोसुनिवचनरचनकोमोहतहैनाँहीं॥

पियावहुलालनअधरअमी, व्रजयुवतिनकीविरहव्याधिविनपानकियेनकमी ॥ ८ ॥
तिहारीकथापरमलोनी, मुनिजनगावतरहतदिवसनिशिनाशतिअनहोनी ॥
श्रवणमंगलप्रदछविछाई, पूरबपुण्यकियेतेइजेमहिवितवहिंवयगाई ॥
सोईअवरह्योअधारहमैं, नातोक्षणविछुरेतुमकोजियमेंटतजाययमें ॥ ९ ॥
हँसनिहारिहेलिनिसुखदाई, प्रेमपगीवहतकनितिरीछीचलनिचारुताई ॥
ललितविहरनिकुंजनिमाँहीं, हाँसीकरनिरावरीहँसिहँसिविसरतिअबनाँहीं ॥
करैजोकोउतिहरोध्याना, ताकीविथानरहतितनकतनुसुखपावतनाना ॥
हियेधरिमूरतितिरभंगी, बैठींहमयमुनाकेतटमेंप्रेमरंगरंगी ॥
नहोतिविथातनुकीदूरी, यहमनमेंगोपाललालअचरजलागतभूरी ॥
छपेकहँरेकपटीकारे, कतनसुनतअबबातहमारीजातचलोमारे ॥ १० ॥
कठिनवनकोमलपदतेरे, लगिनजाहिंकहुँकंटकआवहुआशुसखिननेरे ॥
चलहुजबगौवनकेपाछे, लैकरलकुटीवेणुबजावतबानिकबनिआछे ॥
तबहिंमनहोतरह्योऐसो, लालहिधेनुचरावनपठवतनंदबबाकैसो ॥
कमलकोमलसुंदरपगमें, लगतकबहुँकंटककंकरजोकाहकहतजगमें ॥
हमारोमनअबहूँडरपै, हैकरीलकीकुंजवनीवृंदावनथरथरपै ॥ ११ ॥
जबैतुमसाँझसमैप्यारे, आवतहौगौवनकेपाछेमुरलीकरधारे ॥
कपोलनझलकिअलककारी, गोरजरंजितरुचिरवदनछविआलिनसुखकारी ॥
मनहुँइंदीवरअलिमाला, ऐसोमोहनतुवमुखनिरखतमोहैंव्रजबाला ॥
ललाललचावहुक्योंजियरो, क्योनहुलसिहरिनिजहियकीजतुव्रजहेलिनहियरो ॥ १२ ॥
मनोरथपूरकपदतेरे, जोकोउविपतिपरेपरसुमिरतदुखनरहतनेरे ॥
सुन्योंऐसोहमनिजकाना, धरहुआयनिजपदहियरेहमरेतोफलजाना ॥
धरणिमंडलमंडनकारी, जोकोउपरसतचरणतिहारोतेहिंआनँदभारी ॥
मिलौनहिंतौपगभारिदेहू, तौहमविरहविपतितजिवनतेजैहैंनिजगेहू ॥
चरणजसपूजतिहैकमला, तातेअधिकप्रेमभरिपुजिहैंगोकुलकीनबला ॥
नसोहतिऐसीनिठुराई, जोअसकरनहतोतोकरपरकसलियगिरिराई ॥ १३ ॥
तिहारोअधरामृतप्यारे, सुरतिसमैंआनँदउपजावनहरतशोकसारे ॥
सवतिमुरलीकियतेहिंजूँठो, तदपिदेहुहमपानकरैंगीकहहिंनहींजूँठो ॥
ललातेहिंएकहुबारापिये, पुनिनरहतिसुखआशऔरकछुतेहिंविनकाहाजिये ॥ १४ ॥
कुटिलकुंतलतुवअहिकारे, हेरतहींहठिमदनविषमविषपसरततनुसारे ॥
कलानिधिकोटिनछविछावै, देखतहींमुखवनतकहतमुखकछुनहिंबनिआवै ॥
विरंचिमहाजडहमजाने, तुवमुखनिरखतइननैननमेंपलकनिनिरमाने ॥
जाहुजबधेनुचरावनको, तबतुवविनइकपलककलपसमबीततयातनको ॥ १५ ॥
पितापतिपूतसुजनभ्राता, तुम्हरेहितगोपालनराख्योतिनसोंकछुनाता ॥
सुनतमुरलीधुनिइतआई, ताकोफलतुमदियोलालजूवनवनबिलखाई ॥
नंदकोपूतधूतधूतै, व्रजनारिनदैदगादुरचोनहिंआवतअजहूँतै ॥

करतकोउजगमहँअसनाँहीं, प्रथमपियाइहिपियूपफेरिविषमेलतसुखमाँहीं।
रसिकतुमनामहींकेलाला, जोरसरीतिजानतेतौनिशितजतेव्रजबाला॥ १६॥
ललावैविसरिगईबतियाँ, कहतहतेव्रजबालनकोलखिशीतलममछातियाँ।
यदपितुमभूलिजाहुहमहीं, तद्यपिहमभूलेहुनभूलिहैंकबहुँकंततुमहीं॥
हँसनिकीफँसनिफँसितेरी, तापरपुनिचितवनिकोचाबुकमारयोहरिहेरी।
धाँधिपुनिप्रेमकोठरीमें, क्योंनआयदरशावतआननअबकाहेजीमें॥
कौनहमकीन्ह्योंअपराधा, जातेहमेंबोलायबीचमनदीन्हीअसबाधा।
करौतकसीरमाफप्यारे, निजविशालउरमेंलगायअबहोउनहिंन्यारे॥
यदपितहँकीवासीकमला, तद्यपितासुदासिकाह्वैसबरहींहैंव्रजअबला।
ललकलागीहियलागनकी, मिलहुहमैकरिशपथलालअबपुनिनहिंत्यागनकी॥
मोहनामोहिलियोमनको, मनमोहनकतकरतहमारोतजतप्राणतनुको॥ १७॥
अहौव्रजजीवनयशुदाके, महामाधुरीमूरतितेरीबसीनउरकाके।
निरखितुमकोदुखकेहिनगयो, तुवपदप्रेमपगेव्रजनायकमंगलकेहिंनभयो॥
तुम्हैंहमहींभरिअधिकभई, प्राणदानकिमिआयदेहुनहिंविरहसतायतई।
विनातुम्हरोहियमेंलागे, विरहानलजरिहैव्रजगोरीअबनबनतत्यागे॥
सखिनसुखदायकवनमाली, कतयहनामधरावतअपनोदुखदायकआली।
मिलोगेजबलौंनहिंप्यारे, तबलौंइतहीबैठिरहैंगीअनशनव्रतधारे॥ १८॥
कवित्त—चरणसरोजरोजरोजजेउरोजनमें, नाशनमनोजओजहेतुधारतींरहीं।
पैअतिकठोरकुचकोमलपदारविंद, निजजियजानिकैविथाविचारतींरहीं॥
तेईमृदुपायँनसोंविचरौकठिनभूमि, जामेंहमतनुमनधनवारतींरहीं।
रघुराजयहदुखअबतौसह्योनजात, औरजसतसकैइहाँबिसारतींरहीं॥ १९॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते
आनंदांबुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे एकत्रिंशस्तरंगः॥ ३१॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—यहिविधिकरतप्रलापबहु, बीतिगयोकछुकाल। व्रजनारिनविरहिनतहाँ, मिलेनहींनँदलाल॥
तबतिनकेतनुतेतुरत, धीरजसिगरोभाग। व्रजवनितारोवनलगीं, रागतरागविराग॥
तलफिरहींहरिदरशको, भरींलालसाबाल। केवलजियजैबोरह्यो, सरितटपरींविहाल॥ १॥
कवित्त—आँधरेकोआँखिजैसेकलपबितायमिलैं, बरसेसलिलज्योंसुखातलखिशालीहै।
मृतककेमुखजैसेपरतिपियूषधार, पारावारिबूडतमेंनौकाज्योंविशालीहै॥
रघुराजचातकवदनजैसेस्वातिबुंद, जनमदलिद्रैदेवद्रुमज्योंसुखालीहै।
जरतनिहारिविरहागिव्रजहेलीवेली, प्रगटभातेसेवनश्यामवनमालीहै॥
लसतअमंदमंदहँसतमुखारविंदपीतपटफहरातउरवनमालहै।
बाँयेंहाथबाँसुरीलैदाहिनेलकुटलोनी, कटिचउरासीपगनूपुररसालहै॥

अलकैंअमोललोलकुंडलकपोलगोल, मौलिमोरपङ्खनकोमुकुटविशालहै ।
कोटिमनमथनकेमनकोमथनवारो, बीचव्रजबालनकेविलस्योगोपालहै ॥ २ ॥

स०–प्रीतमकोलखिप्यारिनकेविकसेदृगवारिजसेछबिरासी । एकहिंबारउठीं अतुराइमिल्योमृतकेमनुप्राणप्रवासी ॥
जेदुखकेअँसुवाँतेभयेसुखकेअँसुवाअतिप्रीतिप्रकासी।चारिहुँओरतेचैनसनीघनश्यामकोघेरच्योघनीचपलासी ॥३॥
कोइलगाइहियेपियकोपुनिप्रीतमकेरसमेंअतिबोरी । कान्हरकोकरकंजगह्योअपनेकरकंजनसोंव्रजगोरी ॥
श्रीरघुराजकहैमनोबालवपायकरोअबलालकरोरी । पैअबजाननपैहौकहूँहमसोंकरिकैकेतनौंबरजोरी ॥
कोइललीललाकोहियलाइअन्हायप्रमोदकेसिंधुसोहाई । चंदनचर्चितचारुभुजापियकोलियोकंधमेंधारितहाँहीं ॥
श्रीरघुराजकहैमनोगोरिरिहेअबलौंकेहिंकुंजदुराई । येभुजभ्राजैंहमारेभुजानिपैनाहिंलताविषैंराजैंकन्हाई ॥ ४ ॥
कामिनीकोईनिशंकतहाँभरिकंतकोअंकहिंप्रेमकिप्यासी । प्रीतमकेमुखकीगिरिबीरिगहीयुगहाथनसोंसुखरासी ॥
श्रीरघुराजकहैमनुऐसोयहीलहिबेकिरहीहमआसी । जूँठिहुँहैमुरलीकीसहीपैतऊतजिजातनमीठिसुधासी ॥
कोईसखीहरिकोहियरोअपनेहियरेधरिकामकोजीती । फेरिगोविंदपदैअरविंदधरच्योउरमेंसुखकंदसप्रीती ॥
तापतईरघुराजमनोव्रजराजेकहैगुनिकैश्रमभीती । येउरधारिवियोगलखाविचरेवनमेंसोबडीविपरीती ॥ ५ ॥
कोईवधूभृकुटीत्रिकुटीकरिदंतनिसोंअधरानिकोदाराति । प्रीतमप्रेममेंपूरीप्रियारसहूरिरिसिकेदृगआँसुनिढाराति ॥
श्रीरघुराजवियोगकीभूलिहियमहँबारहिंबारविचाराति।कैतीकलाकैकटाक्षनिसोंमनोकान्हकोकामकशानिसोंमाराति

ई । कान्हकेआननकीसुखमासुधापीवनहेतुप्रियाललचाई ॥
जानिपलैकलपैसीनेवारिपलैरघुराजचलैनचलाई । पानकरैक्षणहूँक्षणपैअधिकातितृषानाहिंनेकअघाई ॥ ७ ॥
व्रजवासिनीप्राणप्रियाहरिकीक्षणमेंछकिकैमनमोहिगई । हरिकीमहामाधुरीमूरतिधारिहियेहठिऐसिविचारिलई ॥
अबजाननपैहैकहूँरघुराजललायहबातभईसोभई । असठीकहिठानिठगींसीठईठकुराइनिनैननिमूँदिलई ॥ ८ ॥

दोहा–जिमिचतुराकोपायकै, चितवेकुमारिपराय । तिमिव्रजपतिलहिबालदिय, विरहव्यथाबिसराय ॥९॥

विरहविगतव्रजबालविशेषी।हरिकहँप्राणहुँतेप्रियलेषी॥चहुँकितघेरिखडींछबिछाई । हरिआननिनिरखहिंटकलाई ॥
तिनकेमधिसोहतघनश्यामा।मनुशक्तिनमधिब्रह्मललामा॥पुनिहरिहेलिनसोंअसगायो। तुमहिंविरहदुखबहुतसतायो
विरहतापतेतपीसुंदरी । पहिरीकंकणसरिससुंदरी ॥ चलहुयमुनतटमहँसबप्यारी । छतियाँशीतलहोयँतिहारी ॥
असकहिसिगरीसखिनलेवाई । यमुनापुलिनगयेयदुराई ॥ विकसेकुंदवृंदमंदारा । बहतात्रिविधमारुतसुखसारा ॥
गुंजहिंकुंजनिकुंजनिभृंगा । निशिहूँबोलहिंविविधविहंगा ॥ ११ ॥

दोहा–चंदचाँदनीचारुअति, चारिहुदिशिक्षितिछाय । अतिआनँदउपजावती, इकमुखवरणिनजाय ॥

उठहिंयमुनकीतरलतरंगा।उडहिंशीतकणपवनप्रसंगा॥कोमलअमलपुलिनतेकरहीं।मिलिपरागबहुरँगछबिभरहीं ॥
श्यामसहितसखियाँतहँजाई।मनकोसकलमनोरथपाई॥विरहतपितआँसुनतेभीनो।कुचकुंकुमसवलितअतिझीनो ॥
ऐसेनिजनिजवसनउतारी । महिमहँबैठनहेतुमुरारी ॥ निजहाथनसोंदियोबिछाई । मानहुँविरहदशादरशाई ॥१३॥
योगिनाहियकोबैठनवारो । सोबैठोतेहिंनंददुलारो ॥ चहुँकिततेसिगरीव्रजनारी । बैठतभईघेरिगिरिधारी ॥

दोहा–जोहरिमूरतिमेंबसी, त्रिभुवनकीसबशोभ । तेहिंदर्शनबाढ़ततियन, क्षणक्षणनवनवलोभ ॥ १४ ॥

मंदविहँसिकरिभृकुटिविलासू।हेरिहेरिदैहारिहिंहुलासू॥बहुविधिप्रियकोतियसनमानी।निजनिजउरधारिपियपदपानी
सुमुखिसराहिसराहिकन्हाई।प्रणयकोपनेसुकदरशाई॥युवतीयुगलजलजकरजोरी।कहीकृष्णसोंगिरानिहोरी ॥१५॥

गोप्य ऊचुः ।

कोउजनपियअसबसतजगतहैं।भजैंनिजैतेहिंआपुभजतहैं॥ कोउअसजगमहँहोइदयाला।बिनहूँभजेभजहिंसबकाला
कोउनिरदैहोतेजगमाँहीं । भजेहुअनभजेहुभजतेनाँहीं॥इनमेंकहोकौनपियनीको।सोहमकारिलेवहिंमनठीको॥१६॥

दोहा–सुनिव्रजवनितनकेवचन, युक्तिभरेयदुराय । मंदमंदबोलतभये, मंदमंदमुसकाय ॥

श्रीभगवानुवाच।

भजहिंपरस्परजेजगमाँहीं॥तिनमेंप्रीतिरीतिकछुनाँहीं॥केवलनिजनिजस्वारथहेतू। बाँधहिंपरमप्रीतिकरनेतू॥१७॥
बिनहुँभजेजेभजतसदाहीं। तेईकरुणाकरजगमाँहीं॥ हैतेजननीजनकसमाना। प्यारीतिनकोप्रेमप्रमाना॥
नेहधर्मयहहैनिरदोषू। करवनरोपहुँपरकोहुँरोषू॥ १८॥ भजेहुँभजैंनहिंजेसंसारा। सखितेप्राणीचारिप्रकारा॥
प्रथमतेईजेधरेसमाधी। तनुसुखहितमतिकबहुँनसाधी॥ दूजेपुनिजेपूरणकामा। जिनकोकाहूसोंनहिंकामा॥
दोहा-तीजेजेउपकारको, मानतकबहूँनाँहिं। तेईकृतघ्नकहावहीं, अतिनिंदितजगमाँहिं॥
चौथेहैंपुनिजेगुरुद्रोही। सबपैरहतसदाअतिकोही॥१९॥यहसुनिसबैसखीमुसकानी। तिनकोअभिप्रायहरिजानी॥
बोलतभेहँसिरसरसिबानी। मोहिनितीजोलीजैमानी॥ जोकोउभजैमोहिंजगमाँहीं। तेहिंहितहोतभजौमैंनाँहीं॥
जामेंकरैनिरंतरध्याना। ममपदबाढैप्रेममहाना॥ ज्योंअधनीधनपायोभारी। भयोविनाशतासुपुनिप्यारी॥
तौताकोधनसुरतिनभूलै। क्षुधापियासकरातिनाहिंशूलै॥२०॥तुमतौहमरेहितव्रजनारी। लोकवेदजातिहूबिसारी॥
दोहा-अंतरधानभयोजोमैं, सोप्यारीयहिंहेत। जामेंतुममोमेंकरहु, प्रीतिरीतिसुखसेत॥
तातेकरहुकोपनहिंहमपै। प्रीतिहमारीहैअतितुमपै॥ गनौनहींअपराधहमारो। दियबढ़ायमैंप्रेमतिहारो॥ २१॥
दुस्त्यजगेहनेहकीडोरी। तुममेरेहितसिगरीतोरी॥ रहौंजोकोटिवर्षजगमाँहीं। तुमसोंकबहुँउऋणमैंनाँहीं॥
करिनसकौंकछुप्रतिउपकारा। यहीसत्यमतअहैहमारा॥ बढ़ीप्रीतिसबमाहँहमारी। एकहमहिंमहँप्रीतितिहारी॥
तातेअधिकअहौतुमहमते। हमसबविधितेहारेतुमते॥ करहुरासअबमोसँगमाँहीं। व्यथारहीनेकहुँतनुनाँहीं॥
दोहा-यहिविधिवचननरचनकारि, गोपिनकोसमुझाय। भयेमौनमाधवतहाँ, महामोदउपजाय॥ २२॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे द्वात्रिंशस्तरंगः॥ ३२॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-माधवकेमाधुरवचन, सुनिसिगरीव्रजबाल। बारहिंबारसराहिकै, त्याग्योविरहविशाल॥
सबकेपूरणभयेमनोरथ।मानहुँजीतिलियोतिनमन्मथ॥१॥तहँउठिवृंदाविपिनविलासी॥व्रजबालनबोल्योसुखरासी॥
चलहुकरहुअबसुंदररासा। लेहुअनूपमसबैहुलासा॥ सुनतसुंदरिनअतिसुखपायो। रासकरनसिगरिनचितलायो॥
उठींसकलतहँएकहिंबारा। गमनींसंगहिंनंदकुमारा॥ यमुनापुलिनपरमछविछावन।व्रजहेलिनकोहियहुलसावन॥
तहँयदुपतियुवतिनयुतजाई। लागेकरनरासरसछाई॥इकइककोकरगहिगहिआली॥कारिलीन्ह्योमधिमेंवनमाली॥२॥
यहिविधिमंडलमंडितभयऊ।सबकोमनमोहनमहँगयऊ॥मिलहिंहमहिंकोनंदकुमारा।अससिगरीमनकियोविचारा॥
दोहा-व्रजयुवतिनकीजानिकै, अभिलाषाअसश्याम॥ बहुतरूपतहँकरिलिये, सुखदायकसुखधाम॥
इकइकप्यारीकमधिप्यारो। सोहतभयोशृंगारसमारो॥ मनहुँहेमलतिकाचहुँओरा। बिचबिचतरुतमालसबठोरा॥
मानतभईतहाँसबप्यारीं। मेरेहींढिगहैंगिरिधारी॥ मोहनअरुमोहनीतहाँहीं। करिलीन्हेंसिगरेगलबाँहीं॥
तहँमृदंगमुरचंगसुवीना। बहुउपंगजलभंगनवीना॥ डफकरनालवेणुकरतारा। दारापटहसितारगितारा॥
बेहलासरँगिरबाबसरोदू। डिंडिमितुरहीदायकमोदू॥ तबलतमूरासुरजमँजीरा। नौबतिढोलकझाँझअसीरा॥
दोहा-विविधभाँतिकेऔरहू, बाजेबजेंअपार। मानहुँवृंदाविपिनिको, कीन्ह्योसुरनशृंगार॥ ३॥
लखनहेतुतहँयदुपतिरासा। चढेविमाननबढेहुलासा॥ दारनसहितदेवतहँआये। सुनिबाजेबहुबाजबजाये॥
लखिव्रजनारिनअरुव्रजनाथै।रहींयदपिनिजनिजपतिसाथै॥तद्यपिसुरदारनहियहारिगो।हरिशोभासमूहदृगभरिगो ४

सुमनससुमनससुमनसनारी।बर्षहिंसुमनससुमनसवारी॥हरिकोअमलसुयशसबगावैं।व्योमविमाननचढेसुहावैं ॥ ५॥
कोउकरिनूपुरकीझनकारी।गतिलैलैनाचहिंव्रजनारी॥कोउकटिकिंकिणिकलरवकरिकै।गतिराचतीनाचतीफिरिकै।
कोउकरिकंकणकोकलशोरा । नाचहिंचलिचितवहिंचितचोरा ॥

दोहा–रासमंडलीमध्यमें, रहीमधुरधुनिछाय । गावहिंरागसुहावने, चतुराईदरशाय ॥ ६ ॥

व्रजनारिकेबीचविहारी । बीचविहारीकेव्रजनारी ॥ मानहुँपुष्परागकोमाला । मधिमधिनीलकमणिछबिजाला ॥ ७॥
कोउघूँघुरुकोकरिअतिशोरा । लेहिंभेदकरिबहुविधितोरा ॥ कोउफेरीलैवसनउठावैं । विविधभाँतिकेभावदेखावैं ॥
कोऊसखीमंदमुसक्याई । नैननवावतिलाजदेखाई ॥ कोऊनचावतिभृकुटिनकाँहीं । तालवधानडगतिकहुँनाँहीं ॥
कोऊचटकलैटतिव्रजनारी । ताकीकटिनाहिंपरैनिहारी ॥ कोउचितचंचलनिरखिकन्हाई।निजअंचलपटदेतिउडाई॥

दोहा–कोऊआपनेअमलजे, अनुपमगोलकपोल । मधिमुक्तननिरतावती, कुंडलमंडललोल ॥

नाचहिंगावहिंभावबतावहिं। मनमोहनसुखमेंटकलावहिं॥नीवीशिथिलबहततनुस्वेदू।नचतकरतश्रमतदपिअखेदू॥
खुलीअलकमुखमेंछहराहीं मनहुँश्यामघनशशिदरशाहीं।श्यामाश्यामश्यामसँगश्यामा।जनुबहुदामिनिबहुघनश्यामा
कोउदैतालकहततततथेइया । तहीतालपैनचतकन्हैया ॥८॥ अतिऊँचेसुरसुखदलगाई । गावहिंहरिप्यारीमनभाई ॥
गोपिनगावतमेंतेहिकाले । भयोविश्वयहस्वरकोआले॥कोकहिसकैभागतिनकेरी।क्षणक्षणजिनपरसहिंहरिहेरी॥९॥

दोहा–तानलेतकहुँकान्हतहँ, पंचमत्रिविधबोलाय । तहँप्यारीकोउतानलै, टीपहिंदेतिलगाय ॥

नंदकुमारमहासुखछाको । बारहिंबारसराहतताको ॥ सोसुनिकोउसखिकृष्णसनेही । टीपहुकीटीपहुलैलेही ॥
ताहिलालहँसिहियेलगाई।कहहिंनतोसमकोउजगगाई॥श्रमितसामरीहरिकरकरि । हरषनिकरलहिथिरहिरहीअरि॥
कोउहरवरगिरिधरउरउरधरि।असमरसरकरज्वरभरदियदरि॥कोऊश्रमितहरिनिकटनिहारी। हरिकंधहिंअपनोभुजधारी
जनुतमालपरकनकवल्लिका।ढीलबलैकचविलगमल्लिका॥कोउसखिकोहरिनिकटबोलाई। धरहिंकंधतेहिंभुजाउठाई॥

दोहा–इंदीवरकीसुरभिजेहिं, केसरलेपितबाहु । सुखीसखीपुलकितवपुष, चूमतिसहितउछाहु ॥ १२ ॥

कोउसखितहँनाचतिरँगराँची । लेतितालयुगगतिअतिसाँची॥गतिजतिजेचरणनतेलेती।कुंडलकरहिंकपोलनतेती॥
पुनिहरिकोबहुभाउबताई । देतिकपोलकपोलमिलाई ॥ निजमुखकीबीरीव्रजसाँई । तेहिंआलीकहँदियोखवाई ॥
मनहुँश्रमिततेहिजानिमुरारी।दैपियूषश्रमदियोनिवारी १३कोउनाचतिगावतितहँप्यारी।करतिचरणनूपुरझनकारी॥
नूपुरपगकटिमणिमंजीरा । करहिंसमानशोरगंभीरा ॥ नाचतनाचतहरिढिगआई । हरिहिंविरहकोभाउदेखाई ॥

दोहा–हरिकोकरनिजकुचनमधि, लीन्ह्योंललकिलगाय । मदनविजैहितमनुहरहि, पूज्योकमलचढाय ॥१४॥

यहिविधिकरहिंअनेकनभाऊ।हरिनिरखतबाढतचितचाऊ॥कमलाकंतकंतजिनकेरो।तिनकोसुखकहकिमिमुखमेरो
कुंजनकुंजनमेंव्रजनारी । विहरहिंविविधकलाकरिप्यारी॥ हरितिनकेकीन्हेंगलबाँहीं।डोलततिनमुखनिरखतजाँहीं॥
गावहिंनाचहिंगोपिनसंगा।उपजावहिंबहुविधिरसरंगा॥१५॥केशनढिगचमकततटंका।मनुघनढिगदामिनीदमंका॥
माँगमध्यमोतीदरशातीं । मानहुँबकपाँतींलहरातीं ॥ झरहिंकपोलनतेश्रमवारी । जनुबहुवर्षाऋतुवपुधारी ॥

दोहा–पूरणशशिसममुखलसत, पसरतिप्रभाअपार । खंजनदृगकुचकोककल, उडुगणहीरनहार ॥

मनहुँशरदऋतुअतिछबिछाई । व्रजवनितनसरूपधरिआई। फहरतपीतवसनचहुँओरा। शालिपकीमनुठोरहिंठोरा॥
करपसारिअंगुलिनसकेली । लेहिंविविधविधिगतिव्रजहेली । तेइमनुबिनपंकजनिमृणाला।नूपुरसारसशोररसाला ॥
पन्नाछबिगोधूमकिआरी । मनुहेमंतऋतुमूरतिधारी॥कँपतगातहरिकोलखिसखियन।भोरोमांचबहतजलअँखियन॥
मनहुँशिशिरऋतुबहुवपुधरिकै । आईरासमध्यसुखभरिकै ॥ केशनतेप्रसूनबहुरंगा । परहिंपुहुमिपरपरनिप्रसंगा ॥

दोहा–अलिगणअलिगणसुखभरहिं, पिकरवनूपुरशोर । करपिकवल्लभपल्लवै, पंकजमुखचहुँओर ॥

जनुवसंतऋतुयदुपतिरासा।नाचतिबहुवपुधरिचहुँपासा॥किंकिणिझिल्लिनकीझनकारी।तैसहिंमुखमयंकउजियारी॥

रिमिलिबोअनंदरविपाई। विरहसरितसरगयेसुखाई ॥ मनुग्रीषमऋतुधरिबहुमूरति। आईलखनसाँवरीसूरति ॥
कबहुँजोहोयमदनकरतारू। शोभाचक्रचैशिशुमारू ॥ प्रेमपयोनिधिउपजाहिइंदू। उडुगणप्रीतिसुधाकेबिंदू ॥
होयगगनजोरसशृंगारू। परमानंदसुमेरुपहारू ॥ तौकछुकृष्णरासछविकेरी। उपमाकहैसकुचिमतिमेरी ॥

दोहा-बिचसोहतव्रजचंदजू, चहुँकिततेव्रजबाल। मनुमंडितमहताबमधि, चहुँकितमालमशाल ॥

सवैया-गायगोविंदकीकीरतिग्वालिनीशंभुकोशैलत्रिलोकबनावैं।मोहनकोतकिवारहिंबारअनेकप्रकारकेभाउबतावैं
वेणीछुटीखसैंफूलफबेछविछाकींशरीरकोभानभुलावैं। रासविलासमेंश्रीरघुराजभरेंसुरभौंरकीभीरहँभावैं ॥
जोगतिलैलैनचैंसिगरीतेउतालविशालकेकोटिकलैया। जोनहींताननमहानहूलेतींप्रवीणवेगोकुलगाँउलोगैया ॥
तैसहीताननतेईगतीसहजैमहँलेतोरिझायकन्हैया। नाचिरह्योमधिमेंमनमोहनदैकरतालकहैततथेइया ॥ १६ ॥

घनाक्षरी-कहूँहरिधायलेतेहेलीउरलायकहूँहेलीगहिहरिहिंहुलासउपजाउतीं।
कहूँकान्हकरतकटाक्षकामिनीपैकुलिकामिनीकटाक्षकहूँकान्हपैचलाउतीं ॥
मृदुमुसक्याइकहूँलेतव्रजचंदजीतिचंदमुखीकहूँव्रजचंदकोलजाउतीं।
बालनकेबीचकहूँलालछबिछावैंकहूँलालनकेबीचव्रजबालछविछाउतीं ॥ १७ ॥
कोईमृगनैनीकीसुवेणीछविबनीछुटीकोईपिकबैनीवाहिनीवीहूँसम्हरतीं।
कोईचातुरीकोभयोअंचलहूँचंचलपैनेकहूँदृगंचलकोचंचलनकरतीं ॥
रघुराजभूषणकेजालतनुछूटेटूटेफूलनकेमालतनुहालकोविसरतीं।
प्रीतमकोप्रेममदपानकैकैप्यारीसबैभईमतवारीव्रजकुंजनविचरतीं ॥ १८ ॥

दोहा-यदुपतिरासविलासलखि, मोहिगईसुरनारि। जेजहँतेतहँअचलह्वै, इकटकरहींनिहारि ॥

कृष्णमिलनकहँललकतरहहीं। धन्यधन्यगोपिनकहँकहहीं॥तारनपतितारनयुतजोही।गमनविसारिरह्योतहँमोही।
शरदपूर्णिमादीरघराती। होतभईव्रजतियदुखघाती॥हरिकोरासनिरखिसुखसारा।थिरह्वैरह्योचक्रशिशुमारा ॥१९॥
रहींतहाँजेतीव्रजनारी। पुनितेतनेहिंह्वैगयेविहारी ॥ तितनेहींकुंजनमहँजाई। विहरतभेकरिकलाकन्हाई ॥ २० ॥
जानिश्रमितगोपिनागिरिधारी। निजपटपीतकमलकरधारी ॥ पोंछनलगेस्वेदअनुकूला।भेदक्षिणनायकसुदमूला ॥

दोहा-कोकविव्रजसुंदरिनकी, वरणिसकैसुखभाग। जिनकेवशवैकुंठपति, ह्वैगेकरिअनुराग ॥ २१ ॥

छंदमनोहरा-कुंडलछविखासीअलकप्रकासीगंडविलासीछविभासी, अतिउल्लासी।
असमरसरगासीदुखद्रुतनासीचंद्रकलासीमृदुहाँसी, पियमनफाँसी ॥
हरिकोसुखरासीदेहरिदासीप्रेमपियासीकमलासी, नचिचपलासी ॥
हरिकीर्तिसुधासीकलपलतासीत्रिभुवनवासीगंगासी, गामैजासी ॥ २२ ॥

दोहा-श्रमितजानिसखियनसकल, करनयमुनधनिलाल। जलविहारसुखलेनहित, बोलेवचनरसाल ॥

चलहुकरैंअबसलिलविहारा। बहुतकियोकुंजनसंचारा ॥ करिजलकेलिकरैंश्रमदूरी। जैहैसकलआशतहँपूरी ॥
सुनतकह्योव्रजबालसुखारी। चलहुलालजहँखुसीतिहारी ॥ तबलैसखिनसमाजकन्हाई।चलेयमुनमज्जनसुखछाई ॥
मधिमोहनचहुँकितव्रजनारी। चलेजातगावतदैतारी ॥ यहिविधिचलेयमुनागिरिधारी।प्रीतमसंगप्रमोदितप्यारी ॥
मिलतसखिनभेमर्दितमाला। कुचकुंकुमतेरँगीरसाला॥लहतसुरभिसँगकियेपयाना।गँधरवसरिसकरतअलिगाना॥
तहँजलकेलिकरनसखिलागीं। परमप्रेमपागींबडभागीं। नँदनंदनअरुगोपनंदिनी। मनुगयंदइकबहुगयंदिनी ॥

दोहा-कुचकुंकुमकामिनिनको, छुट्योयमुनजलमाँहिं। श्यामपीतसुरभितसलिल, थलथलमेंदरशाहिं॥ २३ ॥

रतनजडितकंचनपिचकारी। निजनिजकरलैसबव्रजनारी ॥ हरिपैडारहिंवारहिंवारा। करहिंआडकरनंदकुमारा ॥
आपहुँलैमारहिंपिचकारी। चमकिजाहिंचंचलव्रजनारी ॥ ताकिउरोजसरोजनमारैं। चंचलअंचलसखीनिवारैं ॥

ुरिमुसक्यायकटाक्षनिकरहीं। प्रीतमकेउरआनँदभरहीं॥ कहुँकुचकेसरिसखियनकेरी।धोवतहरिविहँसतकरफेरी॥
ःयोंकपोललखिकज्जलरेखा। पोंछींहविहँसिअनंदअलेखा॥ बर्षींहकुसुमदेवबहुरंगा। चढ़ेविमाननअतिहिंउतंगा॥

दोहा–भईकलिंदीकुसुममय, उडतसुरभिचहुँओर। सखिनसहितविहरतसलिल, हिलिमिलिनंदकिशोर॥

जिमिकिरणनमधिमत्तकरिंदा।केलिकलाकरिदेतअनंदा।तैसहिंकरतसखिनसनमाना।विहरतबहुविधिश्यामसुजाना
यहिविधिबहुकरिसलिलविहारा सखिनसहितपुनिनंदकुमारा।निकसिसलिलतेसखिनसमेतू पहिरेनवलवसनछबिसेतू
आलिनसहिततहाँवनमाली।यमुनाकूलनकुंजरसाली॥ विहरनलगेलखतवनशोभा।जेहिंलखिकाकोमननहिंलोभा॥
थलथलकुसुमनिसेजबिछाई। उडतपरागपरमसुखदाई॥ करतेभौंरशोरचहुँओरा। नवलतिकालहरैंसबठोरा॥

दोहा–कलाकुतूहलविविधविधि, कुंजनकुंजनमाँहिं। कान्हकरतकामिनिसहित, इकमुखकिमिकहिजाँहिं २५

यहिविधिशरदनिशामहँभूपा।कियोरासयदुनाथअनूपा।कोउनहिंअसजान्योव्रजनारी।हमतेअधिकद्वितियपियप्यारी
सबकोकियोमनोरथपूरो। तनुतेभयोविरहदुखदूरो॥ सौरतरुद्धरहेभगवाना। यहप्रसंगसखिकोउनहिंजाना॥
कहेकाव्यमहँजेरसनाना। तेसेवनकियरसिकसुजाना॥ सोयदुपतिकोरासविलासा। सुनतकाहिनहिंपूजतिआसा॥
कामिनकोनिजकथासुहावन। यहलीलाकीन्हीव्रजभावन॥ सबसखियनसमानहरिप्रीती। दईनिबाहिप्रेमकीरीती॥

दोहा–जेतेनायकनायका, हाउभाउअनुभाउ। व्रजनारीव्रजनाथहूँ, कियतेतेचितचाउ॥ २६॥

सुनिकेरासकथाकुरुराई। भयेसुखितपुनिविनयसुनाई॥

राजोवाच।

राखनहेतुधरममरयादा। देनहेतुसंतनअहलादा॥ नाशनहेतुपापसंसारा। जगमहँलियोकृष्णअवतारा॥ २७॥
धर्मसेतुकेवकताकरता। अरुरक्षितारमाकेभरता॥ अतिअवयहपरसनपरदारा। कौनहेतुकियनंदकुमारा॥२८॥
यदुपतितौहैंपूरणकामा। कसयहकीन्योंनिंदितकामा॥ अभिप्राययाकोजोहोई। नाशहुसंशयकाहिमुनिसोई॥२९॥
सुनतनरेशवचनमुनिराई। बोलतभयोमंदमुसक्याई॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–धर्मव्यतिक्रमसाहसहु, लख्योईश्वरनमाँहिं। तेजस्विनकोदोषनहिं, जैसेपावककाँहिं॥ ३०॥

ईश्वरछोंडिऔरजगमाँहीं।मनहुँतेकरहिंकबहुँअसनाहीं।करहिंजोहठवशनशहिंअजाना।पीवहिंविषजिमिहरतजिआना।
वचनईश्वरनकेसतिजानो। पैआचरणकहुँसतिमानो॥ धर्मविरुद्धईश्वरहुबैना। सोनहिंग्रहणकरहिंमतिऐना॥
संमतधर्मकेरजोहोई। ईश्वरवचनगहहिंसबकोई॥अनुचितउचितजोईश्वरकरई।तेहिंफलदुखसुखनहिंअनुसरई३२॥
तिनकेनहींदेहअभिमाना। वैकिमिलहैंकर्मफलनाना॥जेजगमहँअनन्यहरिदासा।तिनहिंनपापहुपुण्यप्रकाशा॥३३॥

दोहा–तौजगकेप्रेरकसदा, यदुपतिपरमप्रताप। महाराजकैसेकहैं, तिनकोपुण्यहुँपाप॥ ३४॥

सवैया–जोपदपंकजपरागकोसेवतपूरणकामभयेबड़भागी। योगप्रभावसबैजगबंधनछूटिगयेभयेपूरोविरागी॥
तेहरिदासनकोसपन्योजगपुण्यऔपापसकैनहिंलागी।तौयदुराजकोश्रीरघुराजकहैकिमिपापऔपुण्यकेभागी॥३५॥

दोहा–गोपिनकेतिनपतिनके, अंतरयामीनाथ। तौपरदाराकहँभई, हियेगुणहुनरनाथ॥ ३६॥

करनअनुग्रहप्राणिनकाँहीं।धरयोमनुजवपुहरिव्रजमाँहीं॥ऐसीलीलाकरीउदोती।जाहिसुनतहरिपदरतिहोती॥३७॥
गोपसबैहरिमायामोहे।निजनिजतियननिकटनिजजोहे।दोषदियेकोउकृष्णहिंनाँहीं।रहेसबैनिजनिजगृहमाँहीं॥३८॥
रहीनिशाजबदंडहिंचारी। तबव्रजनारिनकह्योविहारी॥ गमनहुनिजनिजगेहनप्यारी। मानहुअबयहसीखहमारी॥
सुनिप्रियवचनदुखितव्रजबाला।भवनगमनलागतसमकाला॥ पैजसतसकैहरिहिंविहाई। गमनीगेहनकोदुखछाई॥

दोहा–पुनियदुनायकहूँतहाँ, नंदभवनमेंआय। कियोशयननिजसेजपर, काहुनपरयोजनाय॥ ३९॥

छंदहरगीतिका-ब्रजवधुनसंगव्रजचंदकोयहरासपरमसोहानो। गावतसुनतश्रद्धासहितआनंदपरमउपजावनो ॥
अनयासआशुहिंआशपूरतिकृष्णभक्तिसुपावतो । अवओापरमअमोधमोघविशेषह्वैजरिजावतो ॥
दोहा-कामविजययहकृष्णकी, सुनैकहैजोकोय। कामविजयतेहिंपुरुषको, जगतमध्यहठिहोय ॥ ४० ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजवांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे त्रयस्त्रिंशस्तरंगः॥ ३३॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-एकसमयव्रजअंबिका, उत्सवरहोनरेश। नंदादिकगोपालतहँ, सिगरेविगतकलेश ॥
नाँधिशकटवैलनबलवानन। गमनतभयेअम्बिकाकानन ॥१॥ तहाँसरस्वतीनदीनहाई।शिवकोपूजिपरमसुखछाई॥
लैबहुविधिपूजाकीसाजू। नंदसकललैगोपसमाजू ॥ सविधिअंबिकापूजनकीन्ह्यों ॥२॥ रतनवसनगोविप्रनदीन्ह्यों ॥
अन्नविविधविधिऔरमिठाई। सादरविप्रनदियोजिमाई ॥ ईशप्रसन्नकृष्णपरहोहीं। असबोलेसिगरेहरिमोहीं ॥ ३ ॥
पुनिसिगरेसरस्वतिकेतीरा। निवसतभेअतिमुदितअहीरा॥करतभयेनहिंकछुकअहारा।केवलसलिलपानसविचारा॥
दोहा-असव्रतकरिसोवतभये, निशिमहँदिवसविताय। मधिमहँकरिकैकान्हको, चहुँकितगोपनिकाय ॥ ४ ॥
तेहिवनमहँइकमहाभुजंगा। रहतरह्योकछुशापप्रसंगा॥सोअतिक्षुधितभयोतेहिंकाला।आयोजहँसोवतसवग्वाला ॥
ग्रस्योनंदपदतुरतहिंआई ॥५॥ जागिपुकारकियोव्रजराई ॥ कृष्णकृष्णहेप्राणपियारो। ग्रसेउरगइकचरणहमारो॥
आयछोडावहुआशुहिंलाला।तुववलहमअभीतसवकाला॥६॥नंदपुकारसुनतसवग्वाला।उठेतुरतकरिशोरबिहाला॥
बारिलुकेठनमारनलागे। तबहींनंदलालहूजागे॥ ७ ॥ हायहायसवगोपपुकारैं । बहुविधियदपिलुकेठनमारैं ॥
तदपिभुजँगअतिक्रूरस्वभाऊ। छोंड़तनाहिंनंदकरपाऊ॥

दोहा-तवयदुपतिद्रुतदौरिकिय, अहिकहँचरणप्रहार ॥ ८ ॥ प्रभुपदपरसतहींभये, ताकोअघजरिछार ॥
व्यालवपुषतजिसुंदररूपा। ह्वैगोवरविद्याधरभूपा ॥९॥ पहिरेकनकमालछबिराशी।करतदिशनचहुँओरप्रकाशी ॥
करिप्रणामहरिकोकरजोरी। ठाढोभयोप्रीतिनहिंथोरी॥तवहरिकहीताहिअसबानी॥१०॥आपकौनशोभाकीखानी॥
अतिअद्भुतहैरूपतिहारो। कसनिंदितभुजंगवपुधारो ॥११॥ विद्याधरसुनियदुपतिबैना। बोलतभोकरजोरिसचैना॥

विद्याधर उवाच।

विद्याधरकीजातिहमारी। नामसुदर्शनरह्योमुरारी ॥ अतिसुंदरममरह्योशरीरा। रहेसराहतसबमतिधीरा ॥
दोहा-एकसमयहमसजिसुभग, चढिकैविमलविमान। भरेगर्वनिजरूपके, विचरतरहेदिशान॥ १२ ॥
अतिविरूपअंगिराऋषीशा।हँसेतिनहिंलखिहमजगदीशा।तबमुनिकोपिदियोमोहिंशापा।अजगरहोहुलहौअतितापा
यहिविधिमैंकरिमुनिअपकारा। भयोभुजंगमनंदकुमारा॥१३॥करुणाकरअंगिरमुनिराई। मोपैकीन्हीकृपामहाई ॥
जातेतुवपदपरसनपायो। कोटिजन्मकेपापनशायो १४॥ शरणागतभवभीतनकेरे। नाशकदुखयदुपतिप्रभुमेरे ॥
शासनहोयतोसदनसिधारौं। अतिमोदितपरिकरननिहारौं१५महापुरुषयोगिनकेस्वामी।लोकेशनपतिअंतरयामी॥
जानहुयदुपतिमोहिंनिजदासा। तुमसज्जनकेपूरकआसा ॥ १६ ॥
दोहा-तिहरोपदपंकजपरसि, मुनिकोशापदुरंत। जोकबहूँनहिंछूटतो, छूट्योतौनतुरंत ॥
जाकोनामसुनेमुखगावत।पुनिनतनकतनुमेंअघआवत॥१७॥तौपुनिचरणपरसितिनकेरो।होवपुनीतनअचरजमेरो॥

यहिविधिकरिविनतीघनश्यामै।दैप्रदक्षिणाकियोप्रणामै।गयोसुदर्शननिजैनिवेशा।छुटचोनंदकोसकलकलेशा॥१८॥
ऐसीदेखिकृष्णप्रभुताई। सिगरेव्रजकेलोगलोगाई॥ अतिशयअचरजमनमेंमाने। कियेसमापतनेमजोठाने॥
चढ़िचढ़िशकटनवैललगाई। आवतभेव्रजकोसुखछाई॥आदरसहितमोदउपजावन।गावतयदुपतिसुयशसुहावन॥

दोहा–यहिविधिनिवसतभेसकल, व्रजमेंगोपीग्वाल। नितनूतनलीलाकरत, नितनूतननँदलाल॥१९॥
यहिविधिवीत्योकालकछु, आयोफागुनमास। जोव्रजलोगनशोकहर, दायकपरमहुलास॥

स०-फागुनमासकीपूरणमाशीभईसुखराशीजवैव्रजगाँउमें।चंदकीचाँदिनीचाँदनीचारुतनीदिशिचारिहूँठाँउहिंठाँउमें
गोपसवैइततेजुरिकैगयेग्वालिनीआईउतैनिजदाँउमें। फागुमचीरघुराजतहाँवरसानेकेआनँदगाँउकेगाँउमें॥
फाविरहेकटिफेंटेकसेकरमेंलियेकंचनकीपिचकारी। शीशमेंसूरसेसोहैंकिरीटलसैंतिमिवागेवनेजरतारी॥
रोरीभरीलियेझोरीसखाकटिपीतपिछोरीसुहोरीतयारी। गोपसमाजमेंश्रीरघुराजविराजिरहेवलदेवविहारी॥
सजिकैवरसानेतेआईअलीकियेखेलनफागुतयारीभली। तहँठाढीभईगहिगोकुलकीगलीलैपिचकीदुनलीतिनली॥
तनुसारीविराजिरहीअमलीरघुराजमनौवहुचंपकली। इमिगोपलली़प्रणरोपिचलींवचिजैहैंहलीनहिंछैलछली॥
वाजेतहाँडफढोलउभैदिशिरागवहारमेंगायधमारी। ह्वैगोझिलाझिलिदोहुँनकीचलींमूठिगुलालकीऔपिचकारी॥
सावनसाँझसोंसोह्योअकाशअवीरकीछायगईअँधियारी। केसरिकीचकेवीचमेंभूलेभ्रमैंवलिरामऔकुंजविहारी॥
खेलतींफागफवींअवलाकमलासीअनेककलानिदेखावें। लैपिचकीकहुँऔचकआयविहारीकेअंगनिरंगचलावें॥
जौलौंगुलालकीमूठिभरैंरघुराजचलावनकोहरिधावें। तौलगिवैव्रजकीनवलाचमकैंचपलासीललानहिंपावें॥
वादलेकीह्वैगईवसुधातिमिगाँठीगुलालकीभेअँधियारी। वाजिरहेवहुवाजेसुहावनह्वैरहिकिंकिणिकीझनकारी॥
देखोपरैनहिंनैननसोंरघुराजभयोतहँयोंभ्रमभारी। लालनधायगहैंललितिकानतमालनधायगहैंव्रजनारी॥
गोकुलगाँउकेगोपनगोलसोआगूगोविंदकहूँकढ़िआये। त्योंवरसानेकीप्यारीललीइतजेनिकसींसुखसिंधुनहाये॥
होतजुराजुरीश्रीरघुराजचलावनकोचलेमूठिउठाये। दोऊरहेछविमैंछकिकैव्रजवालगोपालगुलालवहाये॥
लैकेअवीरकीझोरिनकोकरफूटिसखानिसोंरामकन्हाई। धायधसेव्रजग्वालिनगोलमेंचारिहूँओरअवीरउडाई॥
धाईसबैगहिवेकोअलीजुरिकेसरिकीपिचकारिचलाई। चंचलतोचपलासोचमंकिगोगोपिकाँघेरिगह्योवलराई॥२०॥

घनाक्षरी–लीन्ह्योगहिरामैवामभालींवदुलालदीन्ह्योटीकुलीदैत्रिकुटींमैंभ्रुकुटीनचायकै।
बाहुनमेंवाजूवंदगलमेंत्यांगुलवंदवाँधिहगकंजनमेंअंजनलगायकै॥
कटिकिंकिणीकोकसिनूपुरचरणचारुसारीरघुराजविधुवदनओढ़ायकै।
फागखेलिवेकोफेरिऐयोरोहिणीकेलालछोंडचोव्रजनारिनयोंतारिनवजायकै॥

दोहा–जोचितवतअंचलतियन, अतिचंचलचितचोर। तहाँकह्योकोईसखी, वचिगोनंदकिशोर॥

सवै०-कोईसखीतहँबोलीनिशंकनशंककरोहौंतिहारईबोरिहौं। गायधमारिकोधायधरापरग्वालनगोलनहौंहठिफोरिहौं
तेरियेसौंहँकरौंरघुराजलैपिचकारीनमैंमुखमोरिहौं।गोपिनभीरलैमेलिअवीररँगेवलवीरकेवीरकोवोरिहौं॥
धीरधरौनडरौनटरौंसवदेखिहौंआजुजोखेलिहौंख्याले। गाइयेगीतवजाइयेवाजवुलाइयेऔरसुहागनवाले॥
आवनदेरघुराजइतैसजिलावनदेसँगग्वालनलाले। गोपिनगोलगुलालकीगेरिकैघेरिकैहौंगहिलेहौंगोपाले॥
रोरीकिझोरीभरेव्रजगोरीसुखेलतींहोरीजहाँछविछाई। आयोतहाँसुखसोंसनिकैवरवानकसोवनिकैव्रजराई॥
जौलौंचलायोचहैंलखिकैउनपैभरिमूठिचहूँकितधाई।तौलौंकियोसबकोमुखलालगोपालगुलालविनामुसकाई॥
मूठिगुलाललैआलिनतेकढ़िसाँवरेपैचलगोपकिशोरी। त्योंनँदनंदनहूँउतधायमहासुखछायलईकररोरी॥
होतजुराजुरीहाँउमड़ेदोउखेलैंअनूपमप्रेमकीहोरी। हाथदुहूँकेउठायेउठेंनरहेलिखेचित्रसेनैननजोरी॥

दोहा–ताकीदशाविलोकिअस, तहँसिगरीव्रजवाल। गहनहेतुगोपालको, गमनतभईउताल॥

सवैया-गहिकेसरिरंगभरीपिचकीसबग्वालरसालगुलाललई। रघुराजबजावतबीनधमारिकोगावतकान्हपैजातभई॥
अतिआनँदसोंउतवोऊखड़ेजुडिठाढीभईअनुरागमई॥ जकिकैभयेसाँवरोबावरोसोव्रजडावरीबावरीसीह्वैगई॥

कवित्त-सजनीसयानीवरसानेकीसम्हारितन, चंचलासीचमकिकैचंचलनगीचमैं।
चटकीलीचटकपकारिपदुकाकोछोर, आननअबीरमल्योआनँदउलीचमैं॥
रघुराजकेतीकरीछूटनछतीसीछैल, छूटेनाछबीलीसोंछबीलिनकेबीचमैं।
करिकरजोरीव्रजगोरीहोरीखेलतमैं, लैगिरीगोविंदजूकोकेसरिकेकीचमैं॥
मुकुटउतारिचारुचंद्रिकासमारिशीश, कुंडलउतारिपहिराईढारदामिनी।
दूरिकैवलाकनाकवेसरिविरचिपट, पीतकोउतारिसारीसाजीदविछामिनी॥
नूपुरनिकारिअँगलीनविछियाँनिडारि, रघुराजकह्योयदुराजैव्रजभामिनी।
फागुनकीयामिनीमेंगजगतिगामिनीधौं, कौनव्रजवासीकीसिधारीनईकामिनी॥

दोहा-गयेसखनमधिलालजब, तबहँसिहँसिसबग्वाल। पहिरायेपुनिकैनये, भूषणवसनरसाल॥

कवित्त-फेरियशुदाकेरोहिणीकेलालदोऊआय, गारीगायगायकहीवाणीसुखसानेकी।
साँचीचंदमुखीरदैरैनहींमेंसुखीदुखी, दंपतिकहायेविनरुखीरूपवानेकी॥
गैलगैलछैलनकोछेवतीनछोड़तीहैं, रघुराजबातैंकरैंविविधबहानेकी।
अजबअनोखीनारिऊधुमअपारकरैं, बचतबटोहीकैसेबाटबरसानेकी॥
गारीसुनिगोविंदकीग्वालिनिहूँगायकह्यो, करतकहाहैबातलाजनहिंलागती।
जायोऔरहीकोकहवायोऔरहीकोआय, औरहीकोखायजियोकीरतियाँजागती॥
रघुराजआयबरसानेमेंबहानेकैकै, तेरीमायथोरीथोरीछाँछनितमाँगती।
जानीहैबड़ाईसुनोकपटीकन्हाईतेरी, बैनरचनामेंकोईचतुरिनरागती॥

दोहा-यहिविधिफागुनमेंमुदित, खेलतयदुपतिफाग। विहरहिंचहुँकितगोपिका, लहिलहिपरमसोहाग॥२१॥

कुंजनकुंजनगुंजहिंभौंरा। बहतत्रिविधमारुतचहुँओरा॥ विकसेकुमुदचंदकरपाई। फूलिमल्लिकारहीसोहाई॥
वनकुंजनमहँगोपिनसंगा। खेलतफागुकरतबहुरंगा॥२२॥गावतपरमसुहावनदोऊ। मोहतसुनिसुनिकैसबकोऊ॥
जैसेहरिबलसुरनलगावैं। तैसेकोउगोपीनहिंगावैं॥ जौनतानहरिबलमुखलेहीं। सोआवैकहुँकामिनिकेहीं॥२३॥
रामकृष्णसोंसुनिसुनिगाना।व्रजवनितनतनुभानभुलाना॥ झरैंसुमनछूटेंशिरकेशा। ढीलेह्वैगेवसननरेशा॥२४॥

दोहा-यहिविधिविहरतरामहरि, फावेफागुसमोद। व्रजवनिताचहुँकितकरैं, रचिरचिविविधविनोद॥

तहँकुरुपतिधनपतिअनचारी।शंखचूडनामकबलभारी॥जातरह्योकहुँकौनिहुँकाजा। सोलखिकैव्रजबालसमाजा॥
आयोतुरतकामवशह्वैकै।विहरिरहींजहँतियमुदम्वैकै॥२५॥रामकृष्णकेदेखतमाँहीं। हरतभयोसबगोपिनकाँहीं॥
लैगमन्योउत्तरदिशिआसू। करीनकछुहरिहलधरत्रासू॥२६॥तहँआरतगोपिकापुकारी। हेमाधवहलमूसलधारी॥
यहशठलिहेजातबरियाई। जैसेचोरहरैबहुगाई॥ तुमहिंउचितनहिंअसहरिरामा। हरीजाततुवदेखतवामा॥

दोहा-सुनिगोपिनआरतगिरा, आशुहिरामसुरारि। धावतभेअतिवेगसों, युगतरुशालउखारि॥२७॥

गोहरायोगोपिनकहँदोऊ। अबनहिंभीतिमानियेकोऊ॥ जैहैदुष्टकहाँलगिभागी। हठिहतिजैहैपरमअभागी॥
असकहिनिकटगयेदोउभाई।तबचितयोशठलौटिडेराई। कालमृत्युसमदोउकहँदेख्यो।निजमरिबोविशेषतहँलेख्यो॥
चाह्योप्राणबचावनभागी। शङ्खचूडतबगोपिनत्यागी॥ भाग्योशठदिशिउत्तरओरा। तबबलसोंकहँनंदकिशोरा॥
आपताकियेप्यारिनकाँहीं।मैंअबजैहौंयहिखलपाँहीं॥२९॥असकहिराखिरामकहँतहँवै। धायेआपजातखलजहँवै॥

दोहा-शङ्खचूडजहँजहँसभै, भागतधावतजात। तहँतहँमणिकेहरनहित, यदुपतिद्रुतनियरात॥३०॥

कछुकदूरिमहँतहँयदुराई।हनीमुष्टिताकेशिरजाई।।घटसोफूटिगयोशिरताको।परचोरतनमहिपरमप्रभाको ॥ ३१ ॥
यहिविधिशङ्खचूडतहँमारी। लैकेरतनैतुरतमुरारी ॥ आयेआशुहिंनिकटरामके । देखतहींसबसुखितवामके ॥
शङ्खचूडकीमणिकरधरिकै। कह्योरामसोंप्रेमहिंभरिकै ॥ ताकेशीशरतनयहपाये । आरजआपहेतुइतलाये ॥
लेहुकृपाकरिकैमणिकाँहीं।औरनयोगरतनयहनाँहीं ॥ सुनिहरिवचनहरषिबलिरामा। लैलीन्ह्योंहँसिरतनललामा ॥
दोहा–शङ्खचूडकोनिधनलखि, तहँसिगरीव्रजबाल । बहुसराहियदुनाथको, लह्योअनंदविशाल ॥ ३२ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे चतुस्त्रिंशस्तरंगः ॥ ३४ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–गऊचरावनजातजब, सखनसहितनँदलाल। गावतहरिगुणविरहवश, दिवसबितावहिंबाल ॥ १ ॥

युगलगीत।

गोप्य ऊचुः ।

वामबाहुधरिवामकपोलैभृकुटिनचावतकछुबाँकी। अधरमुरलिधरवेधनअँगुरिनमूँदतहरिअतिसुखछाकी ॥
ठाढ़ोअलीकदंबनकुंजनिवेणुबजावतजबप्यारो ॥ २ ॥ तबसुरसुंदरिसुरनसमेतविमानचढ़ीगुनिसुखसारो ॥
सुनिसुनिमुरलीधुनितजिलाजैंकरहिंमदनकेविवशमनै । नीवीशिथिलसमारहिंनाहींरहतिसुरतिनहिंतनकतनै॥३॥
अलबेलोसुतनंदबबाकोसुनहुसखीकौतुकवाको। सोकिनकोसुखदायकजेहिंउरहैनिवासनितकमलाको ॥
हीरनहीरसरिसमृदुहाँसीपीतवसनदामिनिभासी। चखननचायजबैचितचंचलटेरतवंशीधुनिखासी ॥ ४ ॥
तबव्रजवृषभधेनुमृगवृंदनमोहतपरमअनंदलहे। कानउठायकौरमुखलीन्हेआयदूरतेनेहनहे ॥
नैननमूँदिअचलतहँठाढेहरिमूरतिहियध्यानधरे। चहुँकितचित्तलिखेसेराजतनँदनंदनकेप्रेमभरे ॥ ५ ॥
मोरपंखकोमुकुटमाथमेंसोहतअलिबलिरामलगे। नवपल्लवफूलनवनमालाअंगअनेकनधातुरँगे ॥
फूलगुच्छलरकेशिरमाहींवसनछोरक्षितिलोंछहरैं। मल्लवेषबनिकैव्रजराईसखनसहितकुंजनविहरैं ॥
धेनुचरावतधेनुबोलावतवेणुबजावतजबप्यारी ॥ ६ ॥ तबमुरलीध्वनिसुनतकलिंदीकरततरंगमंदसारी ॥
मोहनपदरजमारुतआनितलहनहेतुनितहींतरसैं। सुकृतहीनहमकोजिमिइकक्षणपियबिनबितितबहुतबरसैं ॥
कँपहितरंगप्रेमकीबाढीघनियमुनामोहननेही। हमसमयमुनहुँलहतिशोकअतिछल्योनयहछलियाकेही ॥ ७ ॥
गावतसँगसँगसुयशग्वालसबआदिपुरुषसमसुछबिनिते। वृंदावनकोविहरनवारोचितैचोरावतचोरचितै ॥
गोवर्धनकेनिकटसिधारीजबबजायबाँसुरिभली। गिरिढिगचरतबोलावतगाइनिछावतक्षणक्षणसुछबिछली ॥ ८ ॥
तबवृंदावनद्रुमकेवेलीफूलहिंफलहिंनवहिंडारैं। ढरकावहिंमकरंदनधारैंप्रेमितपुलकहिंबहुबारैं ॥
हरिछबिछकिहरिमयसबह्वैकेनिरमोहीकेहैंमोही। आदरकरतफूलफलसोंबहुआनँदलहतश्यामजोही ॥ ९ ॥
सुंदरतिलकसोहातभालमेंउरतुलसीकीवनमाला। तासुसुरभिलहिअलिमतवारीसँगसँगगुंजहिंसबकाला ॥
मधुपनधुनिसुनिश्यामसराहतजबटेरतमुरलीसुखमें। तबसरसारसहंसविहंगासुनतहिंसकलपगतसुखमें ॥ १० ॥
निकटआयनैननकोमूँदेचहुँकितअचलरहैंठाढे। सुनैंमौनह्वैमुरलीकीधुनिप्रियप्यारेप्रेमहिंबाढे ॥ ११ ॥
रामसहितपहिरेसमभूषणव्रजभूषणगोवर्धनमें। विहरतविश्वअनंदबढावतवेणुबजावतक्षणक्षणमें ॥ १२ ॥
तबरविअधिकनहोयभीतिअसमानिमेघनभमंडलमें। घहरहिंमंदमंदनँदनंदनसंगसंगसबसुखभलमें ॥
बरषतबुंदकुंदसुमसेगमनतमुकुंदजेहिंजेहिंठोरा। छायेरहैंछत्रसेऊपरघामनिवारतसबओरा ॥ १३ ॥

गोपकलोंमेंपरमप्रवीनोयदपिनकोउसिखायदीनी। तदपियशोजातिलल्लातिहारोजबमुरलीकीधुनिकीनी ॥ १४ ॥
तबधुनिसुनतशंभुविधिवासवयदपिसुकविजगकहवावैं। तदपिनवाइकंधरनदैंमनआनंदमगनमोहिजावैं ॥
सुनैंअचंचलमुरलीकीधुनिचढेविमाननदैंकाना। रागविभागतालततिसुरकोहोतनकछुकातिह्नैंज्ञाना ॥ १५ ॥
पंकजअंकुशकुलिशसोहावनजिनचरणनमेंछविधारे। गोखुरखनीअवनीकीपीरानाशतचलीयशुदाप्यारे ॥
गहिगयंदगतिव्रजव्रजचंदबजावतवंशीमुदबाढी ॥ १६ ॥ टेढीतकनिअनीअनियारीहियलगिकढतिनहींकाढी ॥
ऐसेमनमोहनकहँदेखीहमसबतरुसमह्वैजाँहीं। बसनकेशकीसुरतिरहतिनहिंबहतनीरनैननिमाँहीं ॥ १७ ॥
तुलसीसुरभिलगतिप्रियपियकोतातेपहिरततेहिमालै। इकभुजसखाकंधमहँधारेमणिनगनतगोवनजालै ॥
छाँहकदंबनिखडोत्रिभंगीजबटेरतलालनबंसी ॥ १८ ॥ तबहरिणीधुनिसुनिमनहरिणीफँसीकंतप्रेमहिंफंसी ॥
आयअचलसमीपमहँठाढीरहैंअनंदितचहुँपासा। मोहनकीमूरतिमहँमातीजिमिगोपीतजिगृहआसा ॥ १९ ॥
कुंदकलिनकोलसतमालउरगोपनगौवनयुतप्यारो। यमुनापुलिनप्रमोदितविहरतप्रियनप्रमोददेनहारो ॥ २० ॥
मलैपरसितबमारुतबहतसुगंधितशीतलसुखदाई। बाजबजावतवलिहिंचढावतगावतसुरसबढिगआई ॥ २१ ॥
व्रजवासिनगौवनकोप्यारोनंददुलारोगिरिधारी। साँझसमयआगेसुरभिनकरिआवतगोपिनाहियहारी ॥
सखासंगमहँगावतकीरतिआपुबजावतमुखमुरली। आयआयमगमहँब्रह्मादिकनिजशिरपगरजलेतभली ॥ २२ ॥
गोरजरजितअलकछलकतछबिसेदबिंदुमुखझलकभली। पेखतपलककलपसमबीततलखनललकनहिंअलपअली ॥
घूमिरहेयुगदृगमदमातेचंचलनेसुकअरुणारे। वनमालाविशालउरराजतिसखनमानबखशनहारे ॥
कुंडलकनककपोललोलअतिबदरपांडुसमदुतिधारे। देवकिउदरउदधिविधुआवतमनशाकेपूरनहारे ॥ २४ ॥
मदगयंदसमविहरनिजाकीजेहिंलखिदिनदुखनशिजावै। कोटिछपाकरकीछबिछावतसाँझसमययदुपतिआवै ॥ २५ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—हरिलीलायहिविधिदिवस, व्रजनारीसबगाय। प्रीतमसोंविहरैंनिशा, अतिआनँदउपजाय ॥ २६ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे पंचत्रिंशस्तरंगः ॥ ३५ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—आयोएकदिनभूपव्रज, वृषभासुरबलवान। डीलजासुराजतबडी, नीलजलधसमान ॥
खुरसोंखनतमहीबहुबारा। रेणुउडायकरतअँधियारा॥ दहकतदिशनिभरतकटुशोरा। धरणिकँपावतअतिबरजोरा ॥ १ ॥
जहँजहँखुरमारतमहिमाँहीं। दरीसरिसतहँथलह्वैजाँहीं ॥ उठीउतंगजासुलंगूला। अतिशयपीनतालुतरुतूला ॥
खनतशृंगकालिंदीकँगारा। शोरहोतमनुगिरतपहारा ॥ २ ॥ करतमूत्रमलथोरहिंथोरा। खुलेनैनआधेअतिघोरा ॥
जासुशोरमानहुँपविपाता। करतअकालहिंगर्भनिपाता ॥ ३ ॥ जेहिंदेखतगौवेंव्रजकेरी। स्रवहिंगर्भभयमानिघनेरी ॥
दोहा—वृषभासुरकेककुदको, मानिमहानपहार। आयआयजलधरसबै, करतसदासंचार ॥ ४ ॥
ऐसोवृषभासुरबलवाना। आयोव्रजमहँचोखविषाना ॥ निरखिताहिगोपीअरुग्वाला। मानतभेआयोमनुकाला ॥
ह्वैकैसबजीवनकेआसी। गोकुलतजिभागेव्रजवासी ॥ धेनुकरतआरतअतिशोरा। भागीलैबछरनचहुँओरा ॥ ५ ॥
कृष्णकृष्णहेव्रजरखवारे। कहाँगयेयशुदाकेप्यारे ॥ यहिविधिकहतगोविंदसमीपा। गयेभागिव्रजलोगमहीपा ॥
कृष्णहुँधेनुचरावनहेतू। जातरहेकाननबलसेतू। आवतनिरखिवृषासुरकाँहीं। सुनिहाहापुकारव्रजमाँहीं ॥
गोकुलकोभयव्याकुलदेषी। जान्योहरिआयोव्रजद्वेषी ॥ ६ ॥

दोहा–व्रजवासिनसोंकहतभे, व्रजनायकतहँटेरि। मतिभागहुमतिकोउडरहु, यहदानवकोहेरि॥

असकहिशठकेसनमुखजाई। बोलेताकोवचनसुनाई॥ रेशठदीननगोवनकाँहीं। क्योंडरपावतहैव्रजमाँहीं॥
गोपवापुरेयुद्धनजानैं। देखततोहिंमहाभयमानैं॥ ७॥ मैंदुष्टनबलदर्पविनाशी। सनमुखखड़ोयुद्धकोआशी॥
तोहिंसमकेतेअसुरसँहारे। बडेबडेव्रजविघ्ननिवारे॥ होइजोकछुशरीरबलतोरे। तौआवहुसन्मुखशठमोरे॥
असकहिताहिकोपउपजाई। दैकैतालतहाँयदुराई॥ सखाकंधधरिभुजापसारी। खडेभयेसहजहिंगिरिधारी॥ ८॥

दोहा–तबअरिष्टसुनिहरिवचन, धराखनतखुरचोप। पूँछउठायभमायबहु, धायोकरिअतिरोष॥

छंदभुजंगप्रयात–भमैंमेघलांगूलताकेभमाये। डगैबारबारैधरातासुधाये॥ ९॥
महाचोखआगूदोऊशृंगकीने। भ्रमैंलालनैनाबडेकोपभीने॥
हरीकोतकैटेढ़मानोजरावै। कियेवेगभारीचलोदुष्टआवै॥
तजेवज्रवज्रीयथाइंद्रसेनै। गयोतैसहींकृष्णपैप्राणदेनै॥ १०॥
जबैनाथदेख्योअरिष्टैसमीपा। गहेधायदोऊविषानैमहीपा॥
अठारैपदैताहिदीन्ह्योंहटाई। यथानागकोनागदेतोहराई॥ ११॥
गिरयोसोधरामेंसह्योजोरनाँहीं। उठयोआशुहींठेधिकैभूमिकाँहीं॥
भयेअंगढीलेबहैस्वेदलाग्यो। मुखैश्वासलेतोमहाकोपजाग्यो॥
लख्योकृष्णकोसन्मुखैआशुधायो। बडेजोरसोंघोरकैशोरआयो॥ १२॥
तुरंतैहरीहूअरिष्टैनिहारी। गहेदौरिदोऊविषानैमुरारी॥ १३॥
बिनाहीप्रयासैधरामेंपछारी। दबायोपगैसोउठैनासुरारी॥
उखारयोउभैशृंगताकेसुरेरी। हन्योताहिसोंताहिंकीन्ह्योंनदेरी॥
गिरयोंहमहीमेंमरयोहैसुरारी। वहीआननैरक्तकीधारभारी॥
मलौमूत्रत्याग्योदृगैकोनिकारी। परयोभूमिमेंपायँचारोंपसारी॥
यहीभाँतिपायोअरिष्टोविनासा। लहेदेवताहीसमैमेंहुलासा॥
विमानैचढेव्योमवर्षैप्रसूना। करैंकृष्णकीअस्तुतीमोददूना॥ १४॥

दोहा–याहिविधिवृषभासुरहिंहारि, बधकरिपायअनंद। गोपमंडलीमध्यमें, सोहतभेनँदनंद॥

हरिकोलगेसराहनग्वाला। बडोजोरतेरेनँदलाला॥ बलीवृषभकोबिनहिंप्रयासा। हमरेदेखततैंकियनासा॥
कह्योकृष्णसबकृपातिहारी। ऐसीशक्तिनअहैहमारी॥ असकहिकैप्रभुसखनसमेतू। गयेरामयुतनंदनिकेतू॥
व्रजनारिनदृगकेव्रजचंदा। मूरतिवंतप्रतिच्छअनंदा॥१५॥हरिकरसोंवृषभासुरनासा॥लखिनारदलहिपरमहुलासा॥
गयेदेवऋषिकंससमीपा। पायतहाँसतकारमहीपा॥ कह्योकंससोंअसमुनिराई। तोहिंनभेदयहपरयोजनाई॥१६॥
जोनसुतातैंभूमिपछारी। सोयशुदाकीअहैकुमारी॥ जौनकहावतनंददुलारो। अठयोंसोदेवकीकुमारो॥

दोहा–तोकोंयहवसुदेवडरि, होतहिंअठयोंबाल। पहुँचायोनंदहिंभवन, सोतेरोवहकाल॥

जाकोरामअहैअसनामा। सोरोहिणिकोसुतबलधामा॥१७॥आनकदुंदुभितोहिंडेराई। रोहिणिहूँकोव्रजपहुँचाई॥
गयेजेतेरेभटव्रजमाँहीं। रामकृष्णवधकियतिनकाँहीं॥ मेरेवचनसत्यगुनिलेहू। करुअसजेहिंमहँमिटैसँदेहू॥
सुनतदेवऋषिकीअसिबानी। कीन्ह्योंकोपकंसअभिमानी॥लागेकँपनअधरतेहिंकाला॥१८आशुहिंगहिकरालकरवाला
दूतपठैवसुदेवबोलाई। काटनलग्योशीशनृपराई॥ तबनारदबोलेमुसकाई। इनहिंहतेकाहैनृपराई॥
दोहा–जोवसुदेवहिंमारिहौ, सुनतदशाइनकेरि। दोउसुतभगिलुकिहैंअनत, उन्हैंनपैहौफेरि॥

तातेउनकेमारनहेतू। बाँधहुभोजराजबहुनेतू॥ सुनतकंसनारदकीबानी। दोउसुतमीचुआपनीमानी ॥ १९ ॥
तबवसुदेवदेवकीकाँहीं। भरिदीन्हींबेरीपगमाँहीं॥ तिनकोंकैदभवनमहँराषी। बैठ्योसिंहासनमनमाषी॥
तबदेवर्षिसिद्धिलखिकाजा।गमनेव्रजकहँजहँयदुराजा॥ केशीकहँतबकंसबोलायो। सादरतेहिंअसवचनसुनायो॥
तुमजानहुसबदशाहमारी।तुमसमाननहिंकोउहितकारी॥तुमसबविधितेहौबलवाना।तुम्हरोबलदेवनकोजाना॥२०॥
रामकृष्णवसुदेवकुमारे। कीजैजतनजाहिंजेहिंमारे॥ केशीगोकुलगमनहुआशू। दुहूँदुवनकरकरहुविनाशू॥

दोहा-कंसबैनकेशीसुनत, बोल्योआनँदपाय। अबलोंआपकह्योनहीं, हनतोतबहींजाय॥

जैहौंव्रजमंडलैविशेषा। रखिहौंनहिंराउररिपुरेषा॥ असकहिवंदनकरिव्रजगयऊ। कंसदूतसोंबोलतभयऊ॥
प्रबलमल्लमुष्टिकचाणूरा।शलतोशलआदिकबलपूरा॥२१॥अरुअंबष्ठबलीगजपाला। लावहुबोलिइन्हैंयहिकाला॥
औरहुमंत्रिनलेहुबोलाई। सबकोशासनदेहुसुनाई॥ दूतसुनततुरतैतहँधाई। लायेसबकोसभाबोलाई॥
तिनसोंकहीभोजपतिबानी। बाततिहारीहैसबजानी॥२२॥ मेरेरिपुवसुदेवकुमारा। रामकृष्णजिननामउचारा॥

दोहा-मोहिंछपायवसुदेवयह, होतहिअठयोंबाल। नंदभवनपहुँचायदिय, जोसाँचोममकाल॥ २३॥

तातेमैंअसकियोउपाई। लेतदुहुँनकोइतैबोलाई॥ रंगसभामहँजबदोउआवैं। मारचोअवशिजाननहिंपावैं॥
मल्लयुद्धकेमिसिरिपुमारो। तौहमारकियसबउपकारो॥ हेमंत्रीममशासनसुनिये। तामेंऔरनअबमनगुनिये॥
रंगसभायहिभाँतिबनावो। ऊँचनीचबहुमंचगड़ावो॥खोदिअवनिरचिदेहुअखारो। ताकोहोयनलघुविस्तारो॥२४॥
जामेंपुरवासीसहुलासा। मल्लयुद्धकोलखहिंतमासा॥ तेअंबष्ठसुनहुगजपाला। नागकुवलयापीडकराला॥
राखेहुतुमताकोमधिद्वारा। जबआवैंवसुदेवकुमारा॥ २५॥

दोहा-बचिआवैंपावैंनहीं, डारेहुतहँहतवाय। यातेअधिकनदूसरो, मेरोहितदरशाय॥

आश्विनचतुर्दशीदिनदंभा।धनुषयागकोहोयअरंभा॥ पशुनमँगावहुबलिकेयोगू। भूतराजकोलागैभोगू॥ २६॥
असकहिमंत्रिनसोंनृपराई। पुनिअक्रूरहिंनिकटबोलाई॥करसोंकरगहिगिरासुनाई २७ सुनहुदानपतितुमचितलाई॥
कपटछोंडिकीजैयहकाजू।तुमसमानममीतनआजू॥अंधकवृष्णिभोजकुलमाँहीं।तुमसमानहितकरकोउनाँहीं २८
तातेदीरघकारजहेतू। तुमहिंनियोगकरहुँमतिसेतू॥ जिमिगहिइंद्रविष्णुकरपक्षा। साधेउसिगरेअर्थततक्षा॥

दोहा-तैसहिंतुम्हरोपक्षगहि, हमचाहतनिजअर्थ। तुम्हरेकीन्हेकबहुनहिं, ह्वैहैकारजव्यर्थ॥ २९॥

जाहुअक्रूरनंदव्रजकाँहीं। आनकदुंदुभिपुत्रजहाँहीं॥ रथचढ़ायदोहुँनइतलैयो। कारणकछूनतिन्हैंबतैयो॥ ३०॥
नारायणवैकुंठअधीशा। तिनकेबलहैंदेवदिगीशा॥ तेसुरमोहिंमारनकेहेतू। प्रगटेरामश्यामबलसेतू॥
तातेइतलावहुदोउभाई। पैअसकियोअक्रूरउपाई॥ कहवेनँदसोंतुमयहिभाँती। चलहुमधुपुरीजोरिजमाती॥
भेटसाजसिगरीविधिसाजी।जामेंहोयभूपअतिराजी॥ असकहिनंदसहिततिनकाँहीं। ल्यावहुआशुमधुपुरीमाँहीं॥
यहिविधिकहेजानिनहिंपैहैं। नंदसहितमथुराकहँऐहैं॥

दोहा-औरहुकह्योअक्रूरतुम, धनुषयज्ञतहँहोय। सोकौतुककेलखनको, जातचलोसबकोय॥ ३१॥

धनुमखसुनिदोउलखनतमासा। बालकऐहैंबिनहिंप्रयासा॥गजकुवलयापीडसमकाला। रहिहैद्वारखड़ोविकराला॥
तातेप्रथमवचननहिंपैहैं। जोकैसेहुँपुनिइतबचिऐहैं॥ तौपुनिवज्रसरिसभुजदंडा। मुष्टिकअरुचाणूरप्रचंडा॥
तिनसोंमल्लयुद्धकरवाई। डरिहौंसभामध्यहतवाई३२॥यहिविधिहानिवसुदेवसुतनको।पुनिकरिहौंसबअपनेमनको॥
पुनिकटिहौंवसुदेवहुमाथा। औरहुजेरहिहैंतिनसाथा॥ जेवसुदेवमित्रयदुवंसी। करिहौंनाशडारिगलफंसी॥ ३३॥

दोहा-उग्रसेनमेरोपिता, भयोयदापिअतिबूढ़। तदपिराजकरिबोचहत, मोहिंनिदरिकैमूढ़॥

परीयदपिताकेपगबेरी। तदपिराजलालसावनेरी॥ लैअपनेकरमेंकरवाला। तासुशीशकाटिहौंउताला॥
जोदेवकिममरिपुउपजायो। तासुपितादेवककहवायो॥ उग्रसेनकोलहुरोभाई। वेहिंवधकरिहौंबाचिनहिंजाई॥

अरुजेममवैरीबहुतेरे। बचिहैंनहींबाणतेमेरे ॥३४॥ बिनअरिकीअवनीयहकरिकै। करिहौंविभौभोगसुखभरिकै ॥
ससुरअहैममजराकुमारा। जाकेबलगजदशहजारा ॥ सखाद्विविदवानरहैमेरो। जोरणमेंरावणमुखफेरो ॥ ३५ ॥

दोहा–कालसरिसशंबरअसुर, नरकासुरबलवान। बाणासुरयेतीनिहूँ, मेरेमित्रमहान ॥

मोकोंतनुमनतेअतिमानैं। मेरोबलसबविधितेजानैं ॥ तिनकेसहितसैनलैभारी। सुरपक्षीभूपनकहँमारी ॥
ह्वैकेचक्रवर्तिमहराजू। करिहौंसुखितअशंकितराजू ॥३६॥ यहअक्रूरसबलेहुविचारी।लावहुद्रुतहलधरगिरिधारी ॥
पुरछबिधनुमखदेखनकाहीं। ऐहैंदोऊविलंबविनाहीं ॥ ३७ ॥ सुनिअक्रूरकूरनृपबानी । बोलेवचनपरमविज्ञानी ॥

अक्रूर उवाच।

महाराजभलकियोविचारा। पैकछुसुनियेवचनहमारा ॥ अपनोमरणनिवारणहेतू । बाँध्योजौनसकलयहनेतू ॥
सोजैहैंधोंकाकेमाथे। सिद्धिअसिद्धिदैवकेहाथे ॥ ३८ ॥

दोहा–करतअभागिहुपुरुषबहु, मनकामनाअनूप। दैवविवशसुखदुखलहत, नहिंनिजबलकछुभूप ॥
पैहमकोमहिपालतुम, आयसुदीन्ह्योंजोय। सोअवश्यकरिबोहमहिं, जसचाहेतसहोय ॥ ३९ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–असकहिगेअक्रूरगृह, बिदासचिवकरिकंस। अंतःपुरहिप्रवेशकिय, मानिसकलदुखध्वंस ॥ ४० ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे षट्त्रिंशस्तरंगः॥ ३६ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–पठयोकेशीकंसको, धारिघोरतनुघोर। आयोवृंदावनतुरत, करतघोरसुरभोर ॥

छंदनराच–खनैखुरैमहीमहाउतंगहेतुरंगसो। मनैसमानवेगजासुधावतोउतंगसो ॥
सटानिमेंविमानदेवतानकेअरूझहीं। महीध्रसेबसैजलध्रकेसकोनबूझहीं ॥
कठोरदंतपीसिपीसिहीन्सिहीन्सिहेरतो। हरौलकंसकोव्रजैहरीहलीहिहेरतो ॥
दिशानकेप्रमानलोंअमानशोरछावतो। अघातवज्रव्रातकेनिपातकोलजावतो ॥
करालअलकालसेविशालजासुनैनहैं। दरीसमानआननैअतीवदंतपैनहैं ॥
अकुंठओजदीहकंठशत्रुहैविकुंठको। अतीवकुंठबुद्धिपैचलोचहैविकुंठको ॥
अढीलडीलनीलमेघसोमहाभयावनो। विलोकिदेवतानिलोकमेंपरैपरावनो ॥
करैकुहेतुपापकोनिकेतकंसकाजको। तुरंतकैदुरंतकोपभृत्यभोजराजको ॥
धस्योसुनंदकेव्रजैगजैगजैसमानहीं। कँपैमहीतहींतहींजहींजहींपयानहीं ॥ १ ॥
तुरंगताकित्राससोंनिराशप्राणकेभये। व्रजैविचारिलोपगोपभागिदूरिलोंगये ॥
बिहालदेखिगोकुलैगोविंदरोसठानिकै। सिधारिसन्मुखैगयेतुरंगतुच्छमानिकै ॥
लख्योगोविंदजासुपुच्छवेगसोंउडैघनै। प्रचंडयुद्धहेतुखोजतोहमैंछनैछनै ॥
विचारिनाथयोंप्रचारिबैनभाषतेभये। फिरैनऔरठौरआउकृष्णहैइतैठये ॥
सुनीमुकुंदकीगिरातुरंगधावतोभयो। मृगेंद्रसीगराजचारिओरछावतोभयो ॥ २ ॥
मनोकरैमुखैतुरंगपानआसमानको। निकारिनैनदंतकाढिकैचपायकानको ॥
समीपजायनाथकेकियोपगैप्रहारहै। महादुरासदैप्रचंडवेगदुर्निवारहै ॥ ३ ॥

दोहा-मारिपाछिलेचरणजब, मुरकनलग्योसुरारि। तबबचायद्रुतपगनको, निजकरगह्योमुरारि॥
छंदरूपमाला-प्रभुआशुताहिंउठाइचहुँदिशिबारबारभमाय। अतिऊर्ध्वतेंकोफेंकिदीन्ह्योंओजनिजदरशाय॥
सोचारसैकरपैपरचोतेहिंगिरतडोलीभूमि। अतिविकलह्वैगोवमतशोणिततउठतभोपुनिघूमि॥
जिमिपतिविहंगभुजंगफेंकतपरतकछुनप्रयास। तिमिसहजहींठाढेरहेबाढ़ेगोविंद्हुलास॥ ४॥
पुनिसम्हरिकेशीदीर्घकेशीझपटिकेसबओर। विकरालवदनबगारिधायोकरतशोरकठोर॥
आवतनिरखिहरिअसुरकहँचलिकछुकआगूलीन। असुरेशमुखमेंवामभुजहरिडारिहरवरदीन॥
विषधरघुसतजिमिबिलरुखिततिमिगयोबाहुसमाय। केशीकियोनिजरदनसोंअतिकदनकोपवढ़ाय॥ ५॥
परसतभुजाखलदंतसवटूटेदुरंततुरंत। जिमिलागिआयसदारुदरकतचूरहोतअनंत॥
हरिभुजगयोघुसिउदरलौंमनुभोजलोदररोग॥६॥ तहँबढ्योभुजअरुपरचोमोटोमनोवासुकिभोग॥
रुकिगईसिगरीश्वासतनुकीरह्योनहिंऔकाश। पटकनलग्योचहुँकितचरणह्वैगयोजीवनिराश॥
बहुबहनलाग्योस्वेदसकलशरीरतेतेहिंकाल। युगदृगनिकसिचटउलटिगेविकरालललविशाल॥
करिदियोमूत्रहुमलहुगुदमुखचलीशोणितधार। गिरिपरचोधरनीमेंतुरतकरिमरचोघोरचिकार॥ ७॥
तहँकायकेशीकीफटीकरकटीसरिसकराल। तेहिंमृतकगुनितेहिंउदरतेकरखेंचिलीनगोपाल॥
केशवकमलकरतेनिरखिकेशीकदनसुरवृंद। हरषेसकलवरषेसुमनह्वैगेविगतदुखदंद॥
बहुभाँतिबाजबजायजैजैशोरचहुँकितछाय। गावनलगेगोविंदगुणगंधर्वगणनभआय॥
गोपालकोमिलिग्वालसबपूजनलगेभुजदंड। असकहहिंनंदकुमारतेसमकौनजगबरिबंड॥
तहँसखनकोसतकारकरिहरिजायबैठएकंत। मनमेंगुन्योऐहैंइतैनारदअवाशिमतिवंत॥ ८॥
दोहा-जानिअकेलेकृष्णको, तहँनारदमुनिराय। आयकमलपदवंदिकै, बोलेप्रीतिबढाय॥ ९॥

नारद उवाच।

कृष्णकृष्णजगपतिअविनाशी। वासुदेवयोगेशप्रकाशी॥जगव्यापीयदुकुलकेस्वामी॥सबजीवनकेअंतरयामी॥१०॥
जिमिनिवसतपावकसबदारू॥तिमिजगमहँवसुदेवकुमारू॥देखिपरोनहिंपुरुषपुराना॥जगसाक्षीईश्वरभगवाना ११॥
हौआत्मातुमजगतअधारा॥प्रथमहिंतुमगुणतीनिप्रकारा॥मायातेसिरजनकरिदीन्ह्यों॥तिनतेजगनिरमाणहिंकीन्ह्यों॥
पालहुसृजहुहरहुसंसारा। अहैसत्यसंकलपतिहारा॥१२॥ राक्षसदैत्यदुष्टमहिपाला। तिनकेनाशनहेतुकृपाला॥
रक्षणहेतुधर्मसंभारा। धरचोधरणिमहँतुमअवतारा॥ १३॥
दोहा-घोरवपुषयहधारिकै, दानवआयोघोर। तेहिंलीलाकरितुमहन्यो, भलकियनंदकिशोर॥
घोरशोरसुनिकैसुरयाको॥भगतरहेडेरायतजिनाको॥यहिकरनाशलख्योहमआजू॥अबसुनियेऔरहुयदुराजू॥१४॥
मुष्टिकचाणूरादिकमल्ला॥करीकुवलयापीडप्रबल्ला॥अरुकंसहुँकहँतुम्हरेकरसों॥लखिहौंहिनिहतअवशिहमपरसों १५
शङ्खयवनमुरनरकसुरारी॥इनकोवधकरिहौगिरिधारी॥करिहौपारिजातकरहरना। अरुप्रभुशक्रदर्पकरदरना॥१६॥
विक्रममोलनरेशकुमारी। हरिकरिहौतुमव्याहमुरारी॥पुनिनिवसतद्वारावतिमाँहीं। दैहौमोक्षभूपनृगकाँहीं॥१७॥
दोहा-जाम्बतीयुतनाथतुम, सेमंतकमणिल्याय। सत्राजितकीकन्यका, व्याहौगेसुखछाय॥
मृतकपुत्रब्राह्मणकोदैहौ॥अर्जुनयुतनिजपुरतेलैहौ॥१८॥पौंड्रककोकरिहौप्रभुगाहन। पुनिकरिहौकाशीकरदाहन॥
हनिहौदंतवक्रहूँकाँहीं। चेदिपकरवधनृपमयमाँहीं॥१९॥बसिद्वारावतिमहँशुभशीला॥औरहुजौनजौनतुमलीला॥
करिहौतौनतौनहमदेखिहैं॥धनिधनिजन्मआपनोलेखिहैं॥सज्जनसुकृतीसुकविसदाहीं॥गैहैंचारिहुयुगजगमाँहीं॥२०॥
भयेजोयहअवनीकरभारा। जुरिहैंअक्षौहिणीअठारा॥ तबहमपारथकेरथमाहीं। सारथितुमकोलखबतहाँहीं॥
दोहा-कालडीठिसोंआपनी, कुंतीपुत्रनहाथ। हरिहौअवनीभारको, करिहौसुजनसनाथ॥ २१॥

छंदझूलना–शुद्धविज्ञानघनआपनेरूपमेंपूरमनकामसंकल्पसाँचे।
आपनेतेजमायादिकेगुणनतेरहितहौअधमउद्धरनराँचे ॥ २२ ॥
जगतकरतत्वमहदादिनिरमानकरिस्ववशईश्वरहरेव्रजविहारी।
ललितलीलाकरननौमिनरतनुधरनतिमिरखलदलनयदुपतितमारी ॥ २३ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–यहिविधिकहिमुनिभागवत, प्रभुसोंआयसुपाइ। वंदिचरणयदुनाथके, गमन्योआनँदछाय ॥ २४ ॥
यहिविधिहनिकेशीयदुराई। लगेचरावनवनमहँगाई॥ सखनसहितव्रजकेसुखदाई।डोलहिंकुंजनकुंजकन्हाई ॥२५॥
कोउकहसखाजोरियुगहाथा। चलहुनाथगोवर्धनमाथा ॥ तहँचरावहिंगौवनकाँहीं। खेलहिंखेलसबैसुखमाँहीं ॥
सखावचनसुनिनंदकुमारे। गोवर्धनकेशिखरसिधारे ॥ लागेतहाँचरावनगाई। सखनबोलिपुनिकह्योकन्हाई ॥
खेलहुचोरमिहींचनखेला। होहुमेषअरुपालउतेला ॥२६॥ मेषभयेबहुसखातहाँहीं। रहोकितेकहुताकनकाँहीं ॥
केतेसखाभयेपुनिचोरा। असकहितीनियुत्थतेहिंठोरा ॥ असप्रणकीन्ह्योंआपुसमाँहीं। जोइनकोचोरायलैजाँहीं ॥
दोहा–तौजीतेहमतुमहिंसों, पावैजोनचोराय। तौहमहारेतुमजिते, करैनकोउकुन्याय ॥
असकहिसिगरेखेलनलागे। बिनाभीतिवनमेंसुखपागे॥रक्षकयुत्थमाहँनँदलाला।रहतभयेलैकछुकग्वाला॥ २७ ॥
तहँमायावीमयसुतचोरा। कंसभृत्यआयोतेहिंठोरा ॥ खेलतनिरखितहाँहरिकाँहीं। भलोवातअसकियमनमाँहीं ॥
ग्वालरूपधरितबैसुरारी।खेलनलग्योकियेछलभारी॥लगेउचोरावनआपहुग्वाला।कोउनहिंजान्योकपटविशाला५८
हरिकेसखाचोरायचोराई। शैलकंदरामहँलैजाई ॥ तहाँधाँधिदैद्वारपषाना। आवतजातरह्योबलवाना ॥
दोहा–व्योमासुरयहिभाँतिते, लियबहुसखनचोराय। चारिपाँचबाकीरहे, जेढिगमेंयदुराय ॥ २९ ॥
सखाजायतेआवैंनाँहीं। पुनिपुनिऔरहुऔरहुजाँहीं ॥ तबहरिगुन्योकछूछलहोई। इतआयोदानवशठकोई ॥
यहिविधितेमनमेंअनुमान्यो।व्योमासुरकोछलपहिचान्यो ॥ लियेजातनिजसखैपरेखी।धरयोदौरिह्वैकुपितविशेषी॥
जैसेविगाधरैमृगराजू। तैसहिताहिगह्योयदुराजू ॥ ३० ॥ हरिकेगहतमाहँसुनुभूपा। प्रगट्योव्योमासुरनिजरूपा ॥
भयोमंदराकारशरीरा। कियोशोरसुरदायकपीरा ॥ छूटनकीकियकोटिउपाई। पैनहिंछूटिसक्योकुरुराई ॥
दोहा–छटपटानकरिजोरअति, करअरुचरणचलाय। हरिकोचह्योगिरावनो, बहुविधिपेंचचढाय ॥
पैहरिसोंव्योमासुरकेरी। चलीनपेचकरीबहुतेरी ॥३१॥ कृष्णताहिभुजफाँसफँसाई। दियोअवनिमहँआशुगिराई॥
चढ़िताकीछातीयदुनाथा। दोउपगसोंदबाइदोउहाथा ॥ मुठिकनसोंमारनतेहिलागे। महादुष्टगुनिकोपहिपागे ॥
करनलग्योजवघोरचिकारा। तबमुखमूँद्योनंदकुमारा ॥ दिवितेदेवनदेखतमाँहीं। पशुमारहिमारयोखलकाँहीं ॥
ह्वैगेव्रणअंगमहाना। कढ़िगेताकेतनुतेप्राना ॥ ३२ ॥ मृतकजानिताकोभगवाना। दरीद्वारद्रुतकियोपयाना ॥
दोहा–द्वारशिलाकोदूरकिय, करिप्रभुचरणप्रहार। खैंचिलियोसिगरेसखन, मेटिकलेशअपार ॥
देवनसोंअस्तुतिलहत, गावतकीरतिग्वाल। गहगहमनगोकुलगये, गौवनयुतगोपाल ॥ ३३ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे सप्तत्रिंशस्तरंगः ॥ ३७ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–उतअक्रूरबितायनिशि, प्रातकर्मकरिभोर। चढिचामीकरचारुरथ, गवँन्योगोकुलओर ॥१॥
यदुपतिकमलचरणरतिगाढ़ी। दीहदरशलालसउरबाढ़ी॥महाभागवतमारगमाँहीं।मनमेंमुदितविचारतजाँहीं ॥२॥

कौनपुण्यमैंपूरबकीन्ह्यों। कौनदानविप्रनकहँदीन्ह्यों ॥ पूरबकियोकौनतपभारी। जातेलखिहौंआजुमुरारी॥ ३ ॥
हरिकोदर्शनदुर्लभमानें। हमनितहींअघओघनठानें ॥ जैसेविषयीशूद्रनकाँहीं। दुर्लभवेदपढ़नजगमाँहीं ॥ ४ ॥
मोहिंअधमैंहरिदरशनहोई। यहअचरजमानिहिसबकोई ॥ पैरहिबहुतेसिंधुसंसारा।तिनमेंकोउजनलागतपारा॥५॥

दोहा-मोरअमंगलनाशभो, भयोसकलकृतकाजु। योगीजनवंदितचरण, वंदनकरिहौंआजु ॥ ६ ॥

करीकंसमोहिंकृपामहाई।दियोजोगोकुलकहँपठवाई॥ इनआँखिनसोंहरिपदकंजन।लखिहौंललकिमुनिनमनरंजन ॥
जेहिंनखकोदुतिमंडलदेखी। अंबरीषआदिकसुखलेखी ॥ तीखनतमसंसारनशाई। भयेमुक्तवैकुंठसिधाई ॥ ७ ॥
जेपदपूजहिंविधित्रिपुरारी। कमलाअरुमुनिप्रीतिपसारी ॥ जेपदभक्तनआनँददाई। सुमिरतभवरुजदेतमिटाई ॥
जेपदगौवनपाछेपाछे। विचरतव्रजधरणीमहँआछे ॥ व्रजनारीकुचकुंकुमअंकित। तेपदगहिहौंआजअशंकित॥८॥
जेहिंमुखमेंयुगअमलकपोला।कुंडलमंडललोलअमोला।जेहिंमुखमेंअतिशुभगनासिका। मंदहँसनिआनँदप्रकाशिका
वारिजअरुणविलोचनचारू।चितवनितियउपजावनमारू।जेहिंमुखअलककुटिलछबिछावनि।चितवतहींचखचित्तचोरावनि
सोमुकुंदमुखमेंचलिआजू। देखहुँगोमधिग्वालसमाजू ॥

दोहा-मेरेरथकोदाहिनो, दैदैजाहिंकुरंग। होतसुमंगलप्रदसगुन, करनअमंगलभंग ॥ ९ ॥

हरनहेतुहरिभूकरभारा। व्रजमेंलियोमनुजअवतारा ॥ त्रिभुवनकीसबसुंदरताई। नंदकुवँरकेतनुदरशाई ॥
नँदनंदनछविनैनछकैहौं। यातेअधिककौनफलपैहौं॥१०॥ यदपिकार्यकारणकेकरता। तद्यपिअहंकारनहिंधरता॥
निजतेजहिंअज्ञानभ्रमनाशी।निजमायाकृतजगतप्रकाशी।११॥सखनसहितवृंदावनमाँहीं।रमाकंतविलसंतसदाँहीं ॥
हरिगुणलीलासवलितवानी। नाशहिंकोटिअघनकीखानी ॥

दोहा-जगशुचिकरशोभनकरन, जीवनजीवनदानि। हरियशबिनवाणीसोई, लेहुमृतकसमजानि ॥ १२ ॥

निजमरयादपालअसुरारी। श्रीहरितिनकेमंगलकारी ॥ लीन्ह्योंयदुकुलमहँअवतारा। हरणहेतुप्रभुभूकरभारा ॥
निजयशविस्तारतव्रजमाँहीं।निवसतकरतचरितबहुकाँहीं॥मंगलकरनसुयशजगकेरो।गावतसुरलहिमोदघनेरो१३॥
सोसज्जनकेगतिगिरिधारी। त्रिभुवनकेगुरुदुष्टनदारी ॥ नहिंसुंदरअसत्रिभुवनकोई। कमलारहीमोहिंजेहिंजोई ॥

दोहा-जोकोउदेख्योकृष्णको, सपनेहुँमाहँनजीक। ताकेनैननमेंनितै, लागतत्रिभुवनफीक ॥

सोछबिइनदृगकरिअनुरागा।करिहौंपानआजधनिभागा॥ भयोआजुमोहिंसुखदप्रभाता।देखिहौंकृष्णचरणजलजाता
जबदेखिहौंरामघनश्यामे। रथतजिहौंतुरतैतेहिठामै ॥ गिरिहौंदौरिचरणमहँजाई। लेहौंपदरजनैनलगाई ॥
जिनअंघ्रिनबुधबुधिधरिध्याना।पावहिंआशु मनोरथनाना॥तेइचरणकरनसोंगहिहौं। पुनिनाहिंकबहुँयोगअसलहिहौं॥
रामश्यामपदवंदिललामा।पुनिकरिहौंसबसखनप्रणामा॥धनिव्रजधामधन्यव्रजधरणी।धनिव्रजतरुधनिव्रजवरवरणी।

दोहा-जबमैंधरिहौंदौरिकै, यदुपतिपदनिजमाथ। तबविशेषिप्रभुशीशमम, करिहैंपंकजहाथ ॥

जोकरकालभुजँगभयमेटत। शरणागतभवरुजलघुसेटत ॥ जोकरपूजिइंद्रसुखछायो।यहत्रिलोककोएश्वजेपायो ॥
त्रिभुवनदैकैजेहिंकरमाँहीं।बलिनिजवशकीन्ह्योंतिनकाँहीं१६जोकरव्रजबालनमधिरासा।परसतहींविहारश्रमनासा ॥
सरसिजसौरभहैजेहिंकरकी। हरतव्यथाव्रजनारिननरकी॥सोकरताकिदयादृगकोरे।धरिहैंनाथमाथमहँमोरे॥१७॥
यदपिकंसकोपठयोजातो। बारहिंबारमनहिंपछितातो ॥ तद्यपिवैरबुद्धिमोहिंमाँहीं। करिहैंकबहुँदयानिधिनाँहीं ॥
वैतौसबघटघटकेवासी। जानहिं जियकीजगतप्रकासी ॥ १८ ॥

दोहा-पगपरिहैहौंठाढमैं, जबसमीपकरजोरि। तबमोतनतकिहैंतुरत, करिकैकृपानथोरि ॥

तेहिंक्षणकोटिजनमअघओघा।जरिहैंममअमोघहैमोघा॥विनाअवधिकोआनँदपैहों।निजसमजगमहँकोहुनगनैहों १९
सुहृदजातिकुलदेवहमारे । करिकैंकृपाभुजानिपसारे ॥ धायमिलैंगेमोकहँआई । देहैंममतनुपूतवनाई ॥
कर्मबंधछूटीततकाला । ह्वैजैहोंसवभाँतिनिहाला॥२०॥मिलिप्रणामकरिपुनिकरजोरी । खडोहोहुँगोजवहिंनिहोरी॥
तवकहिहैंवसुदेवकुमारे । खुशीककाअक्रूरहमारे ॥ तवहमसकलजनमफलपैहैं । कछुनहिंपुनिबाकीरहिजैहैं ॥
जोकरिभक्तिनहरिप्रियभयऊ । तहिंधिक्वृथाजन्मविधिदयऊ ॥ २१ ॥

दोहा–शत्रुमित्रप्रियअरुअप्रिय, हरिकोहैंकोउनाहिं । पैजोजसहरिकोभजत, तेहितैसाहिंदरशाहिं ॥

जैसेसुरद्रुमढिगसवजावैं । जोजसयाचैंसोतसपावैं ॥ २२ ॥ खड़ोहोउँगोजवकरजोरी । रामहुदेखिदीनतामोरी ॥
मिलिहैंमोहिंमंजुमुसकाई । गहियुगकरमेरेवलराई ॥ लैजैहैंनिजभवनलेवाई । करिसतकारमोरदोउभाई ॥
कियोजोकंसयदुनअपकारा । सोपुछिहैंमोहिंनंदकुमारा ॥ तवमैंदैहौंसकलवताई । नेकहुँनहिंराखिहोंदुराई ॥२३॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिमनमेंकरतविचारा । गमनतपथगांदिनीकुमारा ॥ छुटीवागघोड़नकीकरते । अनतडगरतेतुरँगडगरते ॥

दोहा–कृष्णप्रेमसागरमगन, मुदितश्वफलककुमार । पंथअपंथहुँतुरँगको, कछुनहिंकरतविचार ॥

सोमथुरातेचल्योप्रभाता।पहुँच्योरविअँथवतव्रजताता २४ गोकुलकेग्वैडेजवगयऊ। हरिपदचिह्नलखतमहिभयऊ॥
थलथलव्रजधरणीरजमाँहीं । हरिबलचरणचिह्नदरशाँहीं॥जोपदरजकोसबअसुरारी।निजनिजमुकुटलेतनितधारी ॥
भूतलकेभूषणपदतेई । रहतसुखितजनाजिनकोसेई ॥ अंकुशअम्बुजआदिकरेषा । सोहिरहेजिनमाहिंविशेषा॥२५॥
तहँव्रजकीरजकीछविछावनि।हरिपदअवलीहियहुलसावनि।लखिश्वफलकसुतलहिअहलादा।त्यागीतुरतलाजमर्यादा

दोहा–रहीतनकतनुमेंनसुधि, पुलकावलिसबगात । क्षणक्षणदृगजलजातसों, बहतविपुलजलजात ॥

तुरतकूदिरथतेअनुराग्यो । व्रजकीरजमेंलोटनलाग्यो ॥ बोलतगिराप्रेमकेहदकी । यहरजहैमेरेप्रभुपदकी ॥
धन्यधन्यमैंहौंजगमाँहीं । भागवंतमोसमकोउनाँहीं ॥ लोटतरहेउउठतनहिंभयऊ । तवअनुचरचढ़ायरथदयऊ ॥
सन्मुखडगरयोनंदनिवासै।निरखतचहुँकितगोपअवासै॥२६॥सुनुकुरुपतिजनमेंजगमाँहीं।पुरुषारथइतनैजनकाँहीं।
जबतेमथुरातेअक्रूरा । चलिदरशेहरिकोमुदपूरा ॥ इतनेवीचदशाअक्रूरकी । जौनभईहैप्रेमपूरकी ॥

दोहा–सोईअवशिलहेपुरुष, होनजोचहैअदंड । यदुपतिदासअनन्यह्वै, तजिभयशोकपखंड ॥ २७ ॥
पुनिआगेअक्रूरचलि, नंदचौकढिगजाय । रामश्यामकोलखतभो, अनिमिषनैनलगाय ॥

स०–नीलऔपीतपोशाककियेकलकाननमेंलसैंकुंडलजोटा।शारदअंबुजसीअँखियाँचटहोतहैलोटलगेजिनचोटा ॥
श्रीरघुराजसखानिकेवीचविराजिरहेकरकंचनसोटा । दोहनीलीन्हेखड़ेखरिकैदोउदूधदुहावतनंदकेढोटा ॥ २८ ॥
शारदसावनमेघसेमंडितश्रीकेनिवाससुवाहुविशालहैं । पूरणचंदसेसुंदरआननकाननफूलहियेवनमालहैं ॥
ज्वानीघमंडभरेरघुराजवितुंडविराजैंमनोबियवालहैं । दाहिनेओरखड़ेबलिरामत्योंवामविराजिरहेनँदलालहैं ॥२९॥
कुलिशैध्वजअंकुशअंबुजपायनचिह्नसोअंकितभूव्रजकी। निजशोभसोंताहिसलोनीकरैंमुखमेंमुसक्यानिमहासजकी
दृगमेंभरीदीहदयारघुराजरसालसुचालमतंगजकी । असधीरकोधीरनधूरमिलैलखिमूरतिमंजुबड़ेधजकी ॥ ३० ॥
हीरनहारपैमोतिनमालसुमोतिनमालपैत्योंवनमालहैं । अंगनमेंअँगरागरँगेकियेमंजनधारेदुकूलरसालहैं ॥ ३१ ॥
विश्वकेईशदोऊप्रगटेपुहुमीकोउतारनभारविशालहैं३२आननभाससोंनाशैंदिशातमरोहिणीलालयशोमतिलालहैं॥
हैंकलधौतकड़ेकरमेंकटिमेंकलकिंकिणिराजतिखासी । बाहुविजायठवेषवनेपगनूपुरनौलमहाछविरासी ॥
त्योंअँगुरीनमेंशोभाभलीमुँदरीनकीश्रीरघुराजविभासी । नीलकऔरजताचलमानौसुकंचनदामभेबाँधेप्रकासी३३

दोहा–यहिविधिहरिकोनिरखिकै, सोअक्रूरहरिदास । आनँदसोंविह्वलपरम, परयोप्रेमकीपास ॥

रथतेकूदिपरयोतेहिठामा।धायोहरिसन्मुखमतिधामा॥रामकृष्णकेचरणनजाई । गिरयोदंडसमसुरतिभुलाई॥३४॥

बहतिनैनआनँदजलधारा। रहिनगयोतनुतनकसँभारा॥ प्रगटीपुलकावलीशरीरा। गद्गदगररहिगयोनधीरा॥
कढ़िनसकतिमुखतेकछुबानी।प्रेमदशाकिमिजाइबखानी॥३५॥लखिअक्रूरहिंतहँयदुराई।लियोदौरिद्रुततताहिंउठाई॥
उभैभुजाभरिमिलिभगवाना। प्रेमविकलह्वैगयेसमाना॥३६॥ रामहुँदौरिद्रुतैअक्रूरै। मिलतभयेअतिआनँदपूरै॥
पुनिअक्रूरकरकोकरतेगहि। लैगेभवनलेवाइचलोकहि॥३७॥ अक्रूरहिंसादरदोउभाई। दियपरयंककनकबैठाई॥

दोहा-रामश्यामनिजहाथसों, पुनिअक्रूरकेपाय। धोवतभेअतिप्रीतिसों, सुरभिसलिलढरकाय॥

पुनिमधुपर्कदियोकरमाँहीं॥३८॥दियोधेनुदरशायतहाँहीं॥पुनिअक्रूरकहँथकेविचारी।चाँपनलगेचरणगिरिधारी॥
सादरपुनिप्रभुवचनउचारे। रहेकुशलतुमककाहमारे॥प्रेममगनतेहिंतनुसुधिनाँहीं। बोलतनहिंचितवतहरिकाँहीं॥
पुनिप्रभुकहीगिरासुखपागी। तुमकोककाक्षुधाअतिलागी॥ताते भोजनकरहुविशेषी। सकलभाँतिअपनोगृहलेषी॥
असकहिभोजनविविधप्रकारा। लायेनिजकरनंदकुमारा॥सादरदियअक्रूरजेमाई।बहुविधिव्यंजननामबताई॥३९॥

दोहा-सोजबभोजनकैचुके, तबअचमनकरवाय। बैठायोपरयंकमें, अतिशयआनँदपाय॥

तबबलिरामधरमकेज्ञाता। लैवीरादीन्ह्योंकहिताता॥सुमनमालपुनिदियपहिराई।पुनिदीन्ह्योंबहुअतरलगाई॥४०॥
इतनेबीचनंदतहँआये। अक्रूरहिंमिलिअतिसुखपाये॥ पूछिभाषिउतइतकुशलाई। बोलतभेआनँदअतिपाई॥
अतिनिरदयहैकंसमहीपा।केहिंविधिजीवहुतासुसमीपा॥जैसेअजासमीपकसाई।सोइअचरजजेहिंदिनबचिजाई॥४१॥
जोनिजभगिनीसुतनसँहारच्यो। यदपिदेवकीदीनपुकारच्यो॥नेकहुदयानतेहिंचितआई।किमिवरणैंखलकीखलताई॥
ताकेपुरतुमकरहुनिवासा। पूँछहिंकौनतुम्हारसुपासा॥ ४२॥

दोहा-यहिविधिभाष्योनंदजब, तबअक्रूरनृपराय। मारगकोश्रमदूरकिय, अतिशयआनँदपाय॥ ४३॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे अष्टत्रिंशस्तरंगः॥ ३८॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-बैठेमोदितपलँगमें, लहिहरिकृतसतकार। पूरच्योमारगमनोरथै, सकलश्वफलककुमार॥ १॥

भेप्रसन्नयदुपतिजेहिंपाहीं। तेहिंपुनिकछुदुरलभहैनाहीं॥पैनृपजेअनन्यहरिदासा। कबहूँकरहिंनकौनिहुँआसा॥२॥
पुनिहरिगवँनेकरनबियारी। जहँबैठीयशुमतिमहतारी॥ राख्योव्यंजनजौनबनाई। सोदीन्ह्योंदोउसुतनखवाई॥
करिब्यारूहरिराममहीपा। बैठेआयअक्रूरसमीपा॥ पुनिइकांतयदुकुलकुशलाता। पूँछीकंसमनोरथबाता॥ ३॥

श्रीभगवानुवाच।

भलेअक्रूरकाकातुमआये। हमकोसबकोआनँदछाये॥यदुकुलकीभाषहुकुशलाई।हैसबसुखीसुहृदअरुभाई॥ ४॥

दोहा-पैतहँकीनहिंकुशलकछु, जहँअधीशहैकंस। रोगरूपमातुलअतुल, ममकुलकोसुखध्वंस॥ ५॥

हायमातुपितुहेतुहमारे। परेमधुपुरीकैदअगारे॥ परीजँजीरैंममहितचरणा। ममहितभयोसुतनकरमरणा॥
यातेअधिकनमोहिंकलेसू। परेमातुपितुकैदनिवेसू॥ ६॥ पैभलभौयहदर्शतुम्हारा। रह्योमनोरथयहीहमारा॥
आवनकोकारणकहुताता। पठयोकंसकिधौंदुखदाता॥ ७॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिजबपूछ्योभगवाना। करनलग्योअक्रूरबखाना॥बाँध्योवैरयदुनसोंकंसा। करनचहतवसुदेवविध्वंसा॥८॥
नारदकंसनिकटमहँजाई। दियोसकलविधिभेदबताई॥

दोहा-रच्योधनुषमखमधुपुरी, आपबोलावनहेतु। पठयोइतैबनायमोहिं, बाँधेछलकोनेतु॥ ९॥

सुनिअक्रूरवचनयहिभाँती । रामश्यामआशुहिंतेहिंराती ॥ विहँसतजायनंदपहँगाये । कंसराजपितुतुमहिंबोलाये ॥
होतधनुपमखमथुरामाँहीं।हमहुँचलबतुवसंगतहाँहीं॥लखनधनुषमखनगरतमाशा।हमरेजियबाढ़ीअतिआशा॥१०॥
कंसनिदेशसुनतव्रजराजू । जान्योअवशिगवँनकरकाजू ॥ सबगोपनकहँतुरतबोलाई। दियशासनयहिभाँतिसुनाई॥
दहीदूधमाखनअरुमेवा । औरहुसबैकरननृपसेवा ॥ औरहुभेटदेनकीसाजू । सबैसमेटिलेहुनिशिआजू ॥

दोहा—साजहुसिगरेशकटतुम, चलनलेहुबोलाइ । अबविलंबनहिंकीजिये, ममनिदेशअसपाय ॥ ११ ॥

मथुरैअवशिकाल्हिहमजैहैं । बहुविधिभेंटभूपकहँदैहैं ॥ धनुषयज्ञकरवावतराजा । जाहिमनुजसबजोरिसमाजा ॥
लखबहमहुँमखधनुपतमासा । कछुदिनवसिआउबनिजवासा॥ यहिविधिशासनसबहिंसुनाई।दूतनगररक्षकपठवाई॥
सिगरेव्रजमहँदियगोहराई । मथुराकाल्हिगमनव्रजराई ॥ भईखबरिसिगरेव्रजमाँहीं । हरिबलरामलेवावनकाँहीं ॥
यहअकूरगोकुलमहँआयो।दोउकहँचहतकाल्हिलैजायो१२रामश्यामसुनिगवँनप्रभाता।गोपिनलग्योवज्रकसपाता॥
जेजसरहींतहाँव्रजनारी । तेतसतहँतनुसुरतिबिसारी ॥

दोहा—जौनअंगजैसेरहे, करतहुतींजेकाज । तौनअंगतैसेरहे, ह्वैगोसकलअकाज ॥ १३ ॥

कोइठगीठठकीसीठाढ़ी । बैठीकोऊविरहअतिबाढी ॥ कोइनैननीचेकरिप्यारी । यकटकअवनीरहीनिहारी॥
लागीकोउउरविरहदवारी । क्षणमहँचहतदेहजनुजारी ॥ कोहुकोआननचंदसमाना । हरिपयानसुनिभयोमलाना॥
कोहुकैतनुप्रसेदकीधारा । बहनलगीतबबारहिंबारा ॥ कोहुकेभयेवसनबहुढीले । कोहुकेभयेअंगसबपीले ॥
कोहुकीछूटिगईशिरवेणी।कोहुकीखसीवलयकीश्रेणी१४ कोउसखिकरनलगींहरिध्याना।भूलिगयोनिजतनुकरभाना।

दोहा—सुरपुरनरपुरनागपुर, अरुबैकुंठहुमाँहिं । व्रजवनितनव्रजराजबिन, दूसरदीसतनाँहिं ॥ १५ ॥

कोउहरिकोसुमिरहिंअनुरागा।जेहिंलखिलोगकहैंधनिभागा॥कोउतिरछीताकतिहरिकेरी।जोहियलागिकढतिनाहिंफेरी॥
सुमिरिसुमिरिसोइसखीसयानी।सरसैंसपदिशोककीसानी ॥ कोऊमंदहँसनिसुनिकरिकै।बिलपहिंबारबारदुखभरिकै॥
कोउनँदनंदनकीमृदुबानी।वशकरणीतरुनीसुददानी।सुमिरिसुमिरिसखिहोतिविहाला।वरणिनजातिदशातेहिंकाला॥
कोउसुमिरैंगजगतिगिरिधरकी।जेहिंलखिबिसरिजातिसुधिघरकी।कोउकुंजनकुंजनकीविहरनि।कोउसुधिकरिवंशीकीसुधरनि।

दोहा—कोउविहँसनिनँदनंदकी, सुधिकरिकरिव्रजबाल । अंगशिथिलह्वैजातसब, अतिशयविरहविहाल ॥

कोउसखिनँदनंदनकीहाँसी । जेहिंलखिपरहिंप्रेमकीफाँसी॥सोसुधिकरतदुखितअतिहोहीं।व्रजनारीमाधवकीमोहीं ॥
हरिकोसुखदउदारविहारा।सोसुधिकरिअसकरहिंविचारा।अबकेहिंलखिव्रजमेंहमरहिहैं।काकोसुखदकमलकरगहिहैं।
कोविरहानलतापबुझाई । कौनविपिनिबाँसुरीबजाई॥यहिविधिसबव्रजमेंव्रजनारी।रमनगमनसुनिभईदुखारी॥१७॥
इकएकनकोकहहिंबोलाई । सुनीसखीकहँजातकन्हाई ॥ सोकहँतेंनहिंजानतिआली । जातकाल्हिमथुरैंवनमाली॥

दोहा—यहिविधिइकएकनकहहिं, कहतदेहिंसखिरोय । गोकुलमेंघरघरसखी, परभरमच्योबड़ोय ॥

इकएकनकोवेगिबोलाई । धायधायगोपींजुरिआई ॥ बैठिगईसबजोरिजमाती । कहहिंहोहिविधिकीयहराती ॥
गोपिनतनुमनहरिमहँलाग्यो । मूरतिवंतप्रेमजनुजाग्यो ॥ कृष्णविरहदुखबढ्योअपारा।बहीसरितआँसुनकीधारा॥
सूखेमुखकाँपहिंसबगाता । जिमिमारुतलहिकदलीपाता ॥ गिरीसुंदरिनरतनसँवारी । करिलीन्ह्योंकंकणकरप्यारी॥
हायहायनिकसतमुखमाँहीं । सुनतधीरछूटतकेहींनाँहीं ॥ पुनिजसतसकैधीरजधारी । सुमिरतमथुरागमनमुरारी॥

दोहा—गदगदगरगोपीसबै, इकएकनकहँहेरि । कहनलगींमंजुलगिरा, विधिकरतूतिनिवेरि ॥ १८ ॥

अथ गोपीविलाप ।

गोप्य ऊचुः ।

अरेनिर्दईदईभलोतैं । कोहूकोनहिंकबहुँफलोतैं ॥ क्योंदीन्ह्योंजगमेंजनमाई । पुनिकाहेतैंरचीमिताई ॥
जोविरचीमित्रताविचारी । तौकसरच्योवियोगअनारी ॥ जोवियोगतैंरचेविधाता । कसनहिंहोतमीचकोदाता ॥

प्रथमलगायदुरंतसनेहू । अबकसपुनिवियोगविधिदेहू ॥ कछुनकामनापूरणपाई । बीचहिंहरिसोंकरतजुदाई ॥
तातेतुवकरतबकरतारा । बालखेलसमपरतनिहारा ॥ भयोयदपिवृढोविधिराई । पैनगईतेरीलरिकाई ॥

दोहा-कौनवैरतोहिंपावनो, ब्रजसोंरह्योविरंच । जोब्रजराजबिछोहमें, छोहनआवतरंच ॥ १९ ॥

जामुखमेंअलकैंघुँघुरारी । हलकनिहेरतिहीहियहारी ॥ मदनआरसीसीरिसकपोला । तामेंकुंडललोलअमोला ॥
अतिशयसुभगनासिकाराजै । जेहिंलखिकीरतुंडमदभाजै ॥ वामुखकीमुसक्यानिमिठाई। जानतसोइजोनेकहुँपाई॥
धोखेहुजोहरिहँसनिविलोकी । होतमुदितसोकैसहुशोकी॥ भ्रुकुटीअहिशावकसीसोहैं। काकोनिरखतनहिंमनमोहैं॥
ऐसोसुंदरमुखलालनको । जीवनप्रदसबब्रजबालनको ॥ सोतैंप्रथमहिंहमहिंदेखाई। रेविधिअबकसदेतदुराई ॥

दोहा-अबहूँबूझअबूझविधि, तोहिनकछुदरशात । वृथाव्यथादेतोहमहिं, बनतिनतोसोंबात ॥ २० ॥

रेकरतारक्रूरदुखदाई । निजअक्रूरलियनामधराई ॥ धरिकैयदुवंशीकररूपा । भेज्योकहतकंसमोहिंभूपा ॥
आयोकृष्णलेवावनहेतू । बाँध्योब्रजवधूनवधनेतू ॥ रच्योनैनहमरेतनुमाँहीं । जिननैननितेसुखितइहाँहीं ॥
रचीतोरिसबसुंदरताई । औरहुजोनाहिंबनैबनाई ॥ सोसबनंदकुँवरइकअंगा । हमसखियाँदेखीयकसंगा ॥
सोहगदैअबकसहारिलेतो । लेतोकोउनवस्तुजोदेतो ॥ बिनदेखेयहनंददुलारे । रहिहैंकैसेनैनहमारे ॥

दोहा-चतुराननसिरजनचतुर, पुनितेरेचकआठ । अचरजयहदीसतनहीं, तौकहँपाठकुपाठ ॥ २१ ॥

कोउकहनाहिंविधिकहँकछुदोषू ।कारोकान्हकपटकरकोषू॥याकेनाहिंप्रीतिकरलेशू।कोउनकरतकछुयहिउपदेशू ॥
यहब्रजराजकाजब्रजनारी । हमदियगृहपरिवारविसारी ॥ भईजाइचरणनकीदासी । अधरसुधापीवनकीप्यासी ॥
तिनकेतनुनहिंतनकनिहारत । बरवशमथुरागमनविचारत ॥ जोब्रजतेनब्रजैब्रजराई । काअक्रूरबरवशलैजाई ॥
पैकपटीअसमनहिंविचारी । मिलिहैंमथुरानवनवनारी ॥ तातेइतसनेहसबतोरी । जातचलोकीन्हेंबरजोरी ॥

दोहा-नँदनंदननहिंनेहकी, जानतनेकहुँरीति । सबसोंराखतहैकपट, मुखदेखेकीप्रीति ॥ २२ ॥

सजनीयहरजनीपरभाता । ह्वैहैपुरनारिनसुखदाता ॥ कीन्हेंरहींमनोरथजोरी । ह्वैहैसुफलकालिहअबसोई ॥
मोहनकोमुखकमलसोहावन।आसवहँसनिभरोसुखछावन॥जामुखमेंदृगकोरअलीरी।करहिंकतलजेहिंकढाहिंगलीरी।
सोमुखमथुराप्रविशतमाँहीं।धायधायपथजहाँतहाँहीं॥केतींचढिचढिऊँचअटारी।निरखहिंगीमोदितपुरनारी ॥२३॥
कहिहैंएसहुँबैनहुँजीके । मोहनकहोरहेतुमनीके ॥

दोहा-आयेमथुरामेंभले, पूरकरीमनआस । बहुतदिवसलगिनाथतुम। कीन्ह्योंविपिनिविलास ॥

तिनकीसुनतमाधुरीबानी । यहचंचलचितअतिसुखमानी ॥ तिनकेविवशअवशिह्वैजैहैं । यद्यपिनंदब्रजासँगरैहैं ॥
लोभिललापुरनारिनमाँहीं । रहिजैहैउरधीरजनाँहीं ॥ कबहूँनहिंसुधिकरीहमारी । नहिंएहैंब्रजमेंबनवारी ॥
निपटनागरीनगरवासिनी।कामिनकेहियकीहुलासिनी॥विहँसनिलाजसहिततिनकेरी।तिनकीनचनिभ्रुकुटिकीहेरी॥
हमगँवारिनीगोपिनकाँहीं । कबहूँमनहिंआनिहैंनाँहीं ॥ लखिलखिमणिनजटितबहुगेहा।तजिहैंब्रजकुंजनकरनेहा ॥

दोहा-वृंदाविपिनिनिकुंजसुख, गमनतअबैविहाय ॥ पैपुनिमोहनकोअवशि, बीतिहिंदिनपछिताय ॥ २४ ॥

अंधकभोजदशारहवंशी । औरहुयदुकुलकेअरिध्वंसी ॥ येसबनैननकोफलपैहैं । बहुतदिननकीललकमिटैहैं ॥
कमलाकंतसकलगुणआगर । नँदनंदनसुंदरनटनागर ॥ जबजैहैंजेहिंमारगमाँहीं । तबपुरजनसबतेहिंपथपाँहीं ॥
दौरिदौरिदेखनकोऐहैं । घरकोकाजसकलबिसरैहैं ॥ देखिदेखिमनमोहनरूपा । ह्वैजैहैंमानसकेभूपा ॥
कोअसहैत्रिभुवनमेंआली । नहिंदेखनदौरेवनमाली ॥ कोहैयहजगमेंअसनारी । जोनछकेनँदनंदनिहारी ॥

दोहा-मुखमीठीबतियाँवसैं, रूपमदनमदचोर । कारोभीतरबाहिरेहु, जान्योनंदकिशोर ॥ २५ ॥

कोउकहजोमथुरातेआयो । दयाकरबयाहिकोउनसिखायो ॥ कहवावतहैयहअक्रूरा । हैसाँचोजगमेंअतिक्रूरा ॥
लेतपापब्रजआयमहाना। हरनकरतब्रजनारिनप्राना ॥ ब्रजनारिनकोप्राणपियारा । एकअनोखोनंदकुमारा ॥

तेहिलैगमनतहैमथुराको। जानतनहिंव्रजवधुनविथाको॥ लिहेजातहैजीवहमारा। दिहेजातकहँहमहिंअधारा॥
मथुरायदपिकोशहैतीनै। पैहमहींबिनश्यामप्रवीनै।कोटिनकोशनगतयहिकाला। जियबनक्षणभरिबिननँदलाला॥
दोहा–जिनकेदेखतमेंअली, पलककलपह्वैजाँहि। तिनबिनदेखेक्षणहुँभरि, किमिरहिहैंव्रजमाँहि॥ २६॥

तबकोउकहैसुंदरीबैना। यहअतिक्रूरकुमतिकरऐना॥रथचढिश्यामलेवावनआयो। अपनोअतिअभिमानदेखायो॥
याकोरथअबलेहुछँडाई। किमिलैजैहैकुँवरकन्हाई॥ तबकोउपुनिबोलीव्रजबाला। हैंनिरदयीसबैव्रजग्वाला॥
येऊकरतचलनअतुराई। गाजपरैइनकीचतुराई॥तबकोउकह्योगोपजेबूढे। तेऊभयेआजुसबमूढे॥
देतसिखापननंदहिनाहीं। तुमभरजाहुकान्हकसजाँहीं॥ कबहुँनगयेश्यामपरदेशू। पैहैंपरबरपरमकलेशू॥
दोहा–तबसखिकोउबोलतभई, व्रजकीभईअभागि। रामश्याममथुरैचले, वृंदावनकोत्यागि॥
नहिंयमुनाबढिआवती, नहिंबरषतघनघोर। नहिंअक्रूरकेशीशमें, परतोकुलिशकठोर॥ २७॥

तबकोउव्रजसुंदरीबखान्यो।मोहिंतौउचितपरतअसजान्यो॥सिगरीसखिजुरिकैतहँजाई।प्रीतमपाणिपकरिगृहलाई॥
अबगोविंदकोजाननदीजै। गोपनसोंजुरिरारिकरीजै॥ कहाकरैंगेगोपगँवारा। जिनकेनहिंहितअहितविचारा॥
बिनमुकुंदइकक्षणहमकाँहीं।दीरघविरहजातसहिनाहीं॥ करिहैंपियसँगप्राणपयाना। रहिहैंनहिंभोगनदुखनाना॥
दैबहुनहिंदीनतानिहारत। बूडतविरहउदधिनउबारत॥यशुदहुतज्योछोहयहिकाला।पठवनिपुरप्राणहँप्रियलाला॥
दोहा–हायदईकैसीभई, व्रजमेंयहअनरीति। एकबारनँदबारकी, छोंडिदईसबप्रीति॥ २८॥

हरिकोहमपरजोअनुरागा।तिमिकरिबोबहुभाँतिसोहागा॥तैसहिललितमाधुरीविहँसनि।तिमिकहिबोबतियाँमृदुसुखसनि
तिमितिरछीताकनिहरिकेरी।मिलनिभुजनभरिसुखदघनेरी॥बिसरतिनहिंकैसेहुँबिसराये।सबव्रजनारिनरहतलोभाये
यमुनाकूलअनंदअखंडल। कीन्ह्योंरुचिररासकरमंडल॥ जेहिंरासैषटमासैरजनी। बीतीक्षणसमानहींसजनी॥
तेहिंबलवीरबिनाव्रजनारी। रहिहैंकैसेधीरजधारी॥ विरहअनलअबअवशिजरैहै। कोअधरामृतप्यायबुझैहै॥
दोहा–त्रिविधपवनवनकोकिला, सरसरासरसरंग। अबसबवैरीहोइँगे, रहेमीतहरिसंग॥ २९॥

रहींबितावतदिवसमनाई। वनकोपंथतकतटकलाई॥ बनतेबनिबानिकवनमाली। आवतहुतोसाँझकेआली॥
सखनगोलमधिगोधनआगे।धातुअनेकअंगअँगरागे॥गोरजरंजितरुचिरअलकछबि।जनुअंबुजअलिअवलिरहीफबि॥
वंशीविषवजावतप्यारो। वनमालाउरशोभअगारो॥ चारुचखनचितवतचहुँओरा। चंचलचितचोरतचितचोरा॥
ऐसीछबिलखिनंदकुँवरकी।दुसहदाहदुरतीदिनभरकी।अबकहुनंदकुँवरबिनसजनी।कोहिंविधिबीतिहिदिवसहुरजनी॥
दोहा–सजनीत्रिभुवनमेंदगन, असकोउनहिंदरशाय। व्रजजीवनबिनएकक्षण, हमैंजोलेयजिआय ३०॥ ॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिकरिकरिविविधविलापा। व्रजनारीपावहिंबहुतापा॥श्रीमुकुंदकेपदअरविंदा। गोपिनकेमनवसेमिलिंदा॥
सहिनजातहरिविरहदुरंता। होनचहतव्रजनारिनअंता॥बालमवारिधिविरहभयावन। लागिअक्रूरपवनदुखछावन॥
तरलतरंगनगोपतयारी। भरीप्रेमकेभारहिंभारी॥ कृष्णमिलनटूटीपतवारी। बूडनचहहिनाउव्रजनारी॥
यहिविधिकरिविलापतहँसजनी।दईबितायपहरत्रयरजनी॥रहीयामनिशिजबनृपबाकी। निकटपयानजानिमतिथाकी
दोहा–जगगोपजहँतहँजबहिं, करीतयारीजानि। गोपिनकेतनुतेतबहिं, कीन्ह्योंलाजपयान॥
उक्तियुक्तिभूलीसबै, भयेशिथिलसबअंग। कृष्णनामकेवलकहन, लागीएकहिसंग॥

हामनमोहनप्राणपियारे। हायगोविंदसनेहबिसारे॥ हायहरेनिवसहुहियमाँहीं। हादामोदरदायानाँहीं॥
हायनंदनंदनछविवारे। हायश्यामव्रजरक्षणहारे॥ हायरमापतिकुंजविहारी। हायगोपसुतकरगिरिधारी॥
हाबलवीरनिपटनटनागर। हाचितचोरसकलगुणआगर॥ हायकान्हकाननसंचारी। हायगोपालनाथवनवारी॥

हाययशोमतिकेपियलालन । हासुकुमारसुखदव्रजवालन ॥ हामंजुलमुरलीमुखधारी । हायसुरासविलासविहारी ॥
दोहा-हाव्रजजीवनप्राणपति, हानाशकव्रजशोक । हायहायव्रजराजवर, तुमविनसूनत्रिलोक ॥ ३१ ॥
यहिविधिविलपतव्रजवधुन, भयोभूपभिनसार । प्राचीपतिप्राचीदिशा, कियोप्रकाशपसार ॥
तबअक्रूरकालिंदिनहाई । संध्यावंदनकरिअतुराई॥नंदभवनपुनिआशुहिंआयो । चलनहेतुस्यंदनसजवायो ॥३२॥
गोपहुनिजनिजसहितसमाजे । भरिभरिसाजनशकटनसाजे ॥ गमनमधुपुरीभरेउमंगा । चलनहेतुअक्रूरहिंसंगा ॥
नंदहुँअपनोशकटसजाई । दहीदूधमाखनभरवाई ॥ पुनिअक्रूरसोंकहअससोऊ । लेहुबोलाइलाड़िलेदोऊ ॥
द्रुतअक्रूरहरिबलहिंबोलाई । लियोआपनेरथहिंचढ़ाई ॥ पुनिनंदादिकसोंअसटेरे । हमपरखिहैंमधुपुरीनेरे ॥
दोहा-असकहिऊँचकरीतुरत, गहिवाजिनकीवाग । घोरशोरहरिरथचल्यो, व्रजसोंबिलमनलाग ॥ ३३ ॥
लखिव्रजवनगवँनीव्रजनारी।तेहिंक्षणकुलिकुलकानिविसारी॥धाईकहतहायघनश्यामा। कहाँजाततजिकैव्रजधामा॥
बालपनेकीप्रीतिकन्हाई । तोरिचलेतिनुकाकीनाई ॥ रह्योनउचिततुमहिंअसमोहन । तजिव्रजचलेक्रूरकेगोहन ॥
कहतहतेहमसोंहेप्यारे । तुमसमानकोउप्रियनहमारे॥भूलिगईरतियाँकीबतियाँ। सोइसुधिकरतफटतिअबछतियाँ॥
विरहवारिनिधिकतव्रजओरत।लालनलगातिलताकततोरत ॥ होतदयानहिंकतहियतेरे । रेकपटीकान्हरनँदकेरे ॥
दोहा-तैंतौमथुराकोचल्यो, नागरनंदकुमार । दिहेजातकापुरिन, व्रजवनितनआधार ॥
यहिविधिकहतविविधविधिवानी।चलीजाहिंरथमेंलपटानी॥गिरहिंपरहिंपुनिउठहिंभामिनी।छूटीवेणीखुलीदामिनी॥
रजरंजितह्वैगेसबअंगा । भोकरदममहिआशुप्रसंगा ॥ हायहायमँच्योचहुँओरा । दुखितयुवाजररहुअरुछोरा ॥
कोहुकेतनुनहिंतनकसँम्हारा । देखहिंदृगभरिनंदकुमारा॥व्रजनारिनकोदेखतशोका।गयोशोकमढितीनिहुँलोका ॥
हरिणीहरिणहेरिहरिरोवैं । रहेअचलतरुहरिमनुजोवैं ॥ बोलिरहींवनकुंजचिरैयाँ । मनहुँकहहिंकहँजातकन्हैयाँ ॥
दोहा-सुनिव्रजवधुनिविलापतहँ, जाकोमिलतनपार । विरहव्यथितह्वैथम्हिरही, तेहिंथलयमुनहुँधार ॥
जिनकेतनुधनप्राणते, अतिप्रियनंदकुमार । तेव्रजनारिनकोविरह, कोकहिपावतपार ॥ ३४ ॥
व्रजवनितानिविलोकिविनाशा।जानिनकैसहुँजीवनआशा।मुरिमुकुंदचितयोमुसक्याई।मनुआलिनजियआशजमाई
सुबलआदिसबसखनबुलाई । कह्योकहहुगोपिनसमुझाई ॥ हमऐहैंविशेषिव्रजमाँहीं । यामेंहैकछुसंशयनाँहीं ॥
लगेगोपगोपिनसमुझावन।कान्हरकहतबहुरिव्रजआवन॥३५॥चल्योचपलउत्तरथहरिकेरो।उड़ीधूरिकछुपरतनहेरो॥
जबलोंदेखतरहींपताका । जबलोंसुनतरहींध्वनिचाका ॥ जबलोंदेखिपरीरथधूरी । जबलोंकठिनगयेहरिदूरी
दोहा-तबलोंइकटकनैनसों, निरखिरहींतेहिंकाल । अचलखरींदुखमेंभरीं, चित्रलिखीसीबाल ॥ ३६ ॥
परीदेखिजबधूरिहुनाँहीं । हाकहिसखीगिरींमहिमाँहीं ॥ रह्योएकहरिनामअधारा । जनुजियनिकसतलगेकेंवारा ॥
श्यामश्यामटेरतमुखमाँहीं । गोपिनबीतिदिवसनिशिजाँहीं ॥ बैठिबैठिहरिलीलागावैं।उठतज्वालजनुकछुजलनावैं ॥
आपुसमहँअसभाषहिंताता । कहिगेपियआवनकीबाता ॥ ऐहैंकाल्हिअवशिव्रजमाँहीं।त्यागेतनुमिलिहैंकेहिकाँहीं॥
यदपिदुसहसहिजातिनपीरा।तदपिकृष्णहितधरौशरीरा।यहिविधिनितानितकरहिंमनोरथ।ऐहैंआजुअवशिहरिचढिरथ।
दोहा-यहिआशाअटकेरहत, तिनकेतनुमेंप्रान । नातोहरिविछुरननिरखि, तबहींकरतपयान ॥ ३७ ॥
उतैअक्रूरसहितहरिरामा । करिसवेगरथअतिअभिरामा ॥ यमुनाकेतटपहुँचेजाई । पहरएकआयेदिनराई ॥३८॥
रहीतहाँशीतलअमराई । मारुतबहतत्रिविधसुखदाई ॥ तबअक्रूरकह्योमृदुबानी । दोहुँनमुखद्युतिभईमलानी ॥
यमुनामेंमज्जनकरिलीजै।चढिरथचपलफेरिचलिदीजै॥कालिंदीकलिमलविनाशिनी। आशुहिंअतिआनँदप्रकाशिनी
सुनतदानपतिकेअसबैना । रथतेउतरिदोऊभरिचैना ॥ कालिंदीतटकियोपयाना । कियमज्जनहिलिकैभगवाना ॥
दोहा-गयेअक्रूरहुसंगमें, खडेरहेसरितीर । पहिरेवसननवीनपुनि, बलवीरहुबलवीर ॥
पन्नासरिससलिलयमुनाको । अतिशयमीठसुधाकोनाको॥ भरिभरिअंजुलतहँभगवाना।कीन्ह्योंपरमप्रीतिसोंपाना॥

आयेफेरिहुतोजहँस्यंदन । बलअक्रूरसहितयदुनंदन ॥३९॥ तबअक्रूरकहीपुनिबाता । जोतुमरथचढ़िबैठहुताता ॥
कीजेकछुनाहिंइतचपलाई । तौमैंआवहुँयमुननहाई ॥ असकहिदोहुँनयानबैठाई । यमुनातीरआशुहींआई ॥
हिल्योगहिरदहसहितविधाना॥लग्योदानपतिसुखितनहाँना४० बुडकीदईफेरिजलभीतर।जप्योमंत्रगायत्रीसुखकर॥

दोहा—तहाँरामश्यामाहिंलख्यो, जलभीतरमतिवान । करनलग्योतबमनहिंमन, अससंदेहमहान ॥ ४१ ॥

येदोऊवसुदेवकुमारा । आयेजलमाधिकौनप्रकारा ॥ मैआयोरथमेंबैठाई । आयगयेकारिकैचपलाई ॥
असगुनिजलतेशीशनिकारी।देखेरथपरहरिहलधारी४२तबपुनिलग्योविचारनमनमें।भयोमोहिंकछुभ्रमयहिछनमें ॥
पुनिजलबूडिलखनसोलाग्यो । श्वफलकसुवनमहाभ्रमपाग्यो॥तहँदेख्योयाहिविधिकुरुराई।सोमैंतुमकोदेहुँजनाई ४३
सिधचारणकिन्नरगंधर्वा । शीशनवायेदेवहुसर्वा ॥ अस्तुतिकरहिंखड़ेचहुँओरा॥तिनकेमध्यप्रकाशअथोरा ॥ ४४ ॥
सहसमौलियुतसहसहुशीशा । लसतकुंडलाकारफणीशा ॥

दोहा—नीलवसनतनुअतिलसत, प्रगटतपरमप्रकास । सहसशृंगमेघनमढो, मनुउतंगकैलास ॥ ४५ ॥

ताकेभोगमध्यछविधामा॥लसतपुरुषसुंदरघनश्यामा॥पीतांबरसोहततनुमाँहीं।दृगछबिलखिसरसिजसकुचाँहीं ४६॥
चारुचारिभुजलसैंविशाला॥चारुप्रसन्नवदनमहिपाला॥चारुहँसनिचितवनिअतिचारू।चारुभ्रुकुटिफेरनसुखसारू ॥
चारुश्रवणअरुचारुकपोला॥चारुलसतकुंडलअतिलोला॥अरुणअधरचिबुकहुअतिचारू।छविहरिकंठकंबुकृतमारू
वृषभकंधउरआयतअमला॥जामेंवासकरतनितकमला॥त्रिवलीवलितनाभिगंभीरा।चलदलसुदलउदरमतिधीरा४८
कटिसूक्षमानितंबअतिपीना । ऊरूयुगलपरमछविभीना ॥

दोहा—युगुलजानुअतिचारुहै, युगुलजंघअतिचारु॥४९॥ तुंगगुलफनखज्योतिवर, परपंकजसुकुमारु ॥५०॥

मणिमंडितशिरमुकुटविशाला । सोहतउरसुंदरवनमाला॥ भुजअंगदकरकटकविभासी॥कटिमेंचामीकरचौरासी ॥
जातरूपकोलसतजनेऊ॥पगनूपुरशोभितअतितेऊ ॥५१॥ पद्मचक्रकरगदासुहावन॥चारिहुँकरमेंअतिछबिछावन ॥
वक्षलसतश्रीवत्सविभासी॥कौस्तुभमणिसोहतिछबिरासी॥पार्षदनंदसुनंदहुआदिक।औरहुखड़ेसुखितसनकादिक॥
ब्रह्मसुरेंद्ररुद्रदिगपाला । नवौंप्रजापतिबुद्धिविशाला ५३ नारदअरुवसुअरुप्रहलादा॥बहुभागवतसहितअह्लादा ॥
पृथकपृथकनिजवचननतेरे । प्रभुकीअस्तुतिकरहिंघनेरे ॥ ५४॥

दोहा—कांतिकीर्तिश्रीपुष्टिअरु, ऊर्जाइलागिरादि । येशक्तिनतेसहितप्रभु, सोहतअलखअनादि ॥

[illegible]याऔरअविद्यादोई । अरुमायाजगमोहतिजोई ॥ मूर्तिवंतठाढींप्रभुपासा । हरिहिंहेरिहियलहहिंहुलासा ॥५५॥
[illegible]खिवैकुंठहरिधामा । तिमिश्रीपतिसुंदरघनश्यामा ॥ परमप्रसन्नभयोअक्रूरा । परमप्रेमसोंहियभोपूरा ॥
[illegible]मातनुठाढे॥युगुलनैनआनँदजलबाढे॥५६॥गद्गदगरअतिशिथिलशरीरा।पुनिधरिकैधीरजमतिधीरा ॥
[illegible]याचरणधरिशीशप्रणामा । सावधानह्वैउठिमतिधामा॥जोहतयुगुलजलजकरजोरी। मंदमंदकहिगिराअथोरी ॥

दोहा—लग्योकरनअस्तुतिविमल, हरिकीआनँदछाय । ब्रजरजलोटनकोतुरत, गोअक्रूरफलपाइ ॥ ५७ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे नवत्रिंशस्तरंगः ॥ ३९ ॥

अक्रूर उवाच ।

छंदहरिगीतिका ।

जयपरमपूरुषसकलआदिअनादिआनँदधामहै । जयअखिलकारणहेतुनारायणकरौंपरनामहै ॥
जोहिंनामपंकजतेलियोकरतारहूँऔतारहै । जोरावरीलैशक्तिविरच्योसकलयहसंसारहै ॥ १ ॥

भूसलिलपावकपवननभअहंकारतत्त्वमहानहूँ । मायामनहुँइद्रीपुरुषइंद्रीविषैगिर्वानहूँ ॥
येअखिलकारणजगतकेउपजेतुम्हारेअंगते ॥ २ ॥ जानतनतिहरोरूपसबजडअहेयाहिप्रसंगते ॥
मायागुणनतेबँध्योब्रह्मागुणनतुवपररूपको । नहिंजानतोतपठानतोउरआनतोअनरूपको ॥ ३ ॥
योगीतुम्हैंबहुयोगकरिध्यावतसमाधिलगायकै । अध्यात्मऔअधिभूतऔअधिदैवसाक्षीभायकै ॥
बहुसांख्यवादीजीवअंतरयामितुमकोजानिकै । ध्यावतरहतपावतसकलफलपरमश्रमतनठानिकै ॥ ४ ॥
मीमांसिकौतुमकोभजतपढिवेदतीनिहुँनेमसों । करियज्ञबहुतुवरूपदेवनभागदैअतिप्रेमसों ॥ ५ ॥
ज्ञानीअरपिसबकर्मतुमकोशांतह्वैथिरचित्तहीं । बहुज्ञानमखकोठानिज्ञानसरूपभजतेनित्तहीं ॥ ६ ॥
तुमकोभजतश्रीवैष्णवबहुप्रभुपंचरात्रप्रकारते । ह्वैतसचक्रांकितहूअशंकितरहतयहसंसारते ॥
संकर्षणहुँप्रद्युम्नअनिरुधवासुदेवहुँचारिमें । नारायणैअंशीगुनततुवऔरहूँअवतारमें ॥ ७ ॥
बहुशैवतुमकोशिवसरूपीशैवमारगतेभजैं । तिनमेंअनेकनभेदकरिकाविवादआपुसमेंगजैं ॥ ८ ॥
औरहुजेऔरनदेवभजतेतेतुमहिंभजतेसही । सबदेवमययदुनाथतुमसुरभिन्नकोउतुमतेनहीं ॥ ९ ॥
जिमिशैलतेसरितानिकसिसागरसमिटिजातीसबै । तैसहिंसकलतिहरोअहैसबसुरनकोआराधबै ॥ १० ॥
प्रभुप्रकृतितिहरीशक्तितातेसतोरजतमहोतहै । तिनतेप्रगटित्रिनविधिप्रगटिविशेषिविश्वउदोतहै ॥ ११ ॥
जयसकलअंतरयामिजगसाक्षीअखंडितज्ञानहौ । गुणकार्यजगउपजतनशततुमएकरूपअमानहौ ॥ १२ ॥
तुववदनपावकपगपुहुमिचखचंदसूरजश्रुतिदिशा । नभनाभिशिरहैस्वर्गसुरसबबाहुपलकैदिननिशा ॥
हैंकुक्षिसागरश्वासपवनहुँरोमओषधितरुलता । शिरकेशघनगिरिअस्थिनखहैंबीजबरषामहिगता॥१३॥१४॥
बहुजीवसंकुलसकलजगहैतुमहिंपुरुषप्रधानमें । जिमिमसकऊमरिमेंवसतजलजीवज्यौंसलिलानमें ॥१५॥
जोइजोइकरनबहुचरितधारहुरूपआपुसुहावने । व्यापितभुवनतिहरोसुयशगावतमुदितकविपावने ॥१६॥
जयमीनरूपअनूपप्रलैपयोधिकरनविहारहे । जयहयग्रीवप्रचंडमधुकैटभकरनसंहारहे ॥ १७ ॥
जयरूपकच्छपउदधिमंथनमंदराचलधारने । जैवपुषबृहदवराहदानवदलनधरणिउधारने ॥ १८ ॥
जयअतिउदंडनृसिंहअदभुतरूपजनभयहारिणे । जयसुरनपालनअसुरघालनभक्तलालनकारिणे ॥
जयविदितवामनपुनित्रिविक्रमनापित्रिभुवनकोलये । देराजत्रिभुवनइंद्रकोबलिद्वारपालकह्वैगये ॥ १९ ॥
जयअमलभृगुकुलकमलदिनकरछुद्रछत्रिनछयाकिये । कुरुक्षेत्रशोणितकुंडनवराचिधरणिकश्यपकोदिये ॥
जयरघुकुलोदधिचंद्रदशरथनंदजनकललीशहैं । जोहिंबानतराणिप्रकाशकीनविनाशतनुदशशीशहैं ॥ २० ॥
जयदेवकीदुखदलनजयवसुदेवआनँदकंदहे । जयकरनभूमिअदंडकौरवकंसक्रूरनिकंदहे ॥
जयमुसलधरबलभद्रदासनभद्रप्रदरेवतिपते । जयनागपुरकरषणसुसंकर्षणविकर्षणअरिफते ॥
जयमदनवपुप्रद्युम्नशंबरसंवरनसंगरमहा । जयवज्रनाभविनाशिजयकौरवदलनमदद्रुहसहा ॥
जयबाणदुहितारमणशुद्धसरूपश्रीअनिरुद्धहैं । जिनक्रुद्धशरगतियुद्धमहँअवरुद्धशत्रुअबुद्धहैं ॥ २१ ॥
जयबुद्धशुद्धसरूपप्रगटैदैत्यदानवमोहने । जयकृष्णकलकीरूपम्लेच्छनसरिसक्षत्रिनकोहने ॥ २२ ॥
हमहैंहमारोहैसकलयहरावरीमायामहा । सबजगतकोमोहितभ्रमावतिज्ञाननहिंकोहुकेरहा ॥ २३ ॥
हमहैंहमारअगारदारकुमारअरुपरिवारहूँ । मैंहूँभ्रमहुँयहिभ्रमपरोसतिमानिबिनहिंविचारहूँ ॥ २४ ॥
नहिंकर्मफलहैनित्यतिनकोनित्यगुनिविपरीतिसों । अँधियारयहसंसारकूपाहिंपरोतुवबिनप्रीतिसों ॥ २५ ॥
जिमिअबुधतृणछादितसलिलतजिचलतमृगतृष्णाजलै ।तिमिनेहततुधनठानितुमसेविमुखमूरखमेंभलै॥२६॥
मतिमंदमैंमनासिजमथितमनचपलरोकिनसकतहौं ॥ २७॥ तातेतुम्हारेचरणकीअबवेगिशरणहिंतकतहौं ॥
तुवचरणपंकजदुष्टदुरलभमोहिंजोअबमिलिगयो । सोऔरकारणकछुकनहिंगुनिदीनमोहिंनिजकरिलयो ॥

जबभोगिभवकछुभाग्यभयतबतुमकृपाप्रभुकरतहौ।तबसंतसेवनलगतमतितबमोक्षसुदतुमभरतहौ ॥२८॥
जपुज्ञानवपुसबज्ञानकारणकालरूपप्रधानहौ। परपुरुष–॥२९॥–जयवसुदेवनंदनसर्वभूतनिदानहौ ॥
जयहृषीकेशप्रपन्नरक्षककालभक्षकनामहै। मैंहौंतिहारीशरणयदुपतिबारबारप्रणामहै ॥ ३० ॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे चत्वारिंशत्तमस्तरंगः ॥ ४० ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–यहिविधिअस्तुतिजबकरी, सोअक्रूरमतिवान। तबअंतरहितकारिलियो, निजसरूपभगवान ॥ १ ॥
निरखिकृष्णवपुअंतरधाना।जलतेनिकसिअक्रूरसुजाना।।नित्यकर्मकरितुरततहाँहीं।विस्मितगोबलकृष्णजहाँहीं २॥
तबबोलेयदुपतिमुसकाते।कहँकौतुकतुमलखेनहाते।।धौंजलधौंमहिकिधौंअकाशा।जानिपरतकछुलखेतमाशा ॥३॥
तबअक्रूरदोउकरजोरी। बोलेबहुविधिहरिहिंनिहोरी ॥

अक्रूर उवाच।

भूमहँजलमहँगगनहुँपाँहीं। जेतनेकौतुकहैंजगमाँहीं ॥ विश्वरूपतुममेंसबतेते। तुमहिंदेखिदेखिहैअबकेते ॥ ४ ॥
अबनमोहिंलखिवेकोबाकी। तवपदप्रीतिरहैमतिछाकी ॥ ५ ॥
दोहा–चलहुनाथअबमधुपुरी, मारगहोतबेलम्ब। पुरवासिनदीजेदरश, यदुकुलकेअवलम्ब ॥

श्रीशुक उवाच।

असकहिचढिरथवाजिनहाँकी।लैगमन्योहरिसुखबलछाकी॥६॥थलथलसबग्रामनकेवासी।आयेहरिबलदरशनआसी
निरखियुगुलवसुदेवकुमारे।पुनिनहिंऔरनओरनिहारे।।७।।ढेढपहरजबदिनरहिगयऊ।मथुराढिगपहुँचतरथभयऊ ॥
इनकोबिलँबभईयमुनामें। नंदादिकहुआइमथुरामें ॥ ठाढेरहेपहुँचिअमराई। हरिबलकोपरिखेसुखछाई ॥
हरिअक्रूरबलआयेजबहीं। डेराकरतभयेतहँतबहीं ॥८॥तबकरसोंकरगहियदुराई। कहअक्रूरसोंमृदुमुसकाई ॥९॥
दोहा–नगरडगरगहिकैककका, लैस्यंदनतुमजाहु ॥ हमरेहैंइतआपपुनि, लखिहैंनगरउछाहु ॥ १० ॥
सुनिअक्रूरकृष्णकीबानी। कीन्हीविनयप्रेमरससानी ॥

अक्रूर उवाच।

तुमबिनहमजैहैंनाहिंनगरी। तुमविनसिगरीगतिममबिगरी ॥ अहैंभक्तहमनाथतिहारे। तुमकोभक्तअहैंअतिप्यारे॥
तजहुनाथमोकोंअबनाँहीं। तुमहिंछोंडिअबहमकहँजाँहीं ११लैअग्रजअरुसबगोपालन।नंदसहितयशुदाकेलालन ॥
मेरेभवनचलहुयदुराई। देहुपूतपरिवारबनाई ॥ १२ ॥ टूटिपुरानीमोरिमडैया। तुमबिनकौनपुनीतकरैया ॥
डारितहाँपदपंकजधूरी। कीजैअवशिआशममपूरी ॥

दोहा–हमगृहमेधीमूढअति, परमअपावनकर्म। विषैनिरतनितहींरहत, लहैंकौनविधिशर्म ॥
पैभरोसअबतोहियहोई।तरिहौंआपचरणजलधोई।सींचततुवपदसलिलअदोषित।होहिंपितरपावकसुरतोषित॥१३॥
तुवपदपंकजधोयमुरारी। बलिलीन्हीगतिसकलसुधारी॥भयोजगतमेंअतियशकारी। पायोविभौइंद्रतेभारी ॥१४॥
प्रभुरावरोचरणजलजोई। कियोपुनीतत्रिलोकहुसोई ॥ जाकोपरसतसगरकुमारा। मुक्तभयेद्रुतसाठिहजारा ॥
जाकोशंभुसदाशिरधारे। निजपुनीतकोहेतुविचारे ॥ सोतुवपदजलमेंनिजगेहू। आजुसींचिहौंसहितसनेहू ॥१५॥
दोहा–कहतसुनततिहरोसुयश, पाँवरहोतपुनीत। यदुपतिजगपतिदेवपति, वंदौंतुम्हैंविनीत ॥ १६ ॥
सुनिअक्रूरकेवचनसुहाये। बोलेप्रभुअतिआनँदपाये ॥

श्रीभगवानुवाच।

हमआरजयुतधामतिहारे। अवशिआइहैंविनिहिंविचारे॥ यदुवंशिनकोरिपुहनिकंसै। देहौंसुहृदनमोदअसंसै॥१७॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिजबैवचनहरिकहेऊ।तबअक्रूरअतिशयदुखलहेऊ॥कह्योनकछुमुखरह्योविलोकी।नगरडगरडगरयोअतिशोकी।
प्रथमहिंगमन्योकंसअगारा। भोजराजकहँजायजोहारा॥ मंदमंदअसवचनसुनाये। रामकृष्णयुतनंदसिधाये॥
डेराहैपुरकीअमराई। दूतपठैनृपलैहुदखाई॥

दोहा-यहिविधिभाषिश्वफल्कसुत, गोनिजसदनसिधारि। गुन्योकंसपूरणभई, मनअभिलाषहमारि॥१८॥

सोरठा-उतैरामअरुश्याम, पहरदिवसबाकीरहे। देखननगरललाम, सखनसहितगमनतभये॥ १९॥

छंदत्रिभंगी-जहँफटिकप्रकारातुंगदुवाराहेमकेंवाराराजिरहे। छोटेहुदरवाजेथलथलभ्राजेतोरणछाजेद्युतिउमहे॥
परिखागंभीरापूरणनीरायुतभटभीराशस्त्रगहे। वाटिकाललामाबहुआरामाउपवनरामाचित्तचहे॥ २०॥
चामीकरचारूबनीवजारूधनिकअगारूअतिऊँचे। बहुवणिकदुकानैंतनीबितानैंदेवमकानैनपहुँचे॥
बहुरतनसमाजैंछज्जाछाजैंसभादराजैंमणिनजडी॥ २१॥ पारावतपोखेमंजुझरोखेमोरअनोखेध्वनिउमडी॥
सुरभितजलसींचींऊँचननीचींअँतरउलीचींपुरराहैं। अंगनहुँरसालाफूलनमालाबँधीविशालागृहमाहैं॥
तंदुलअरुलाजेमंगलकाजेथलथलसाजेशोभभरे॥ २२॥ दधिचंदनडारेकुंभकतारेसुमनअपारेद्वारधरे॥
दीपनकीअवलीसोहतिअमलीनहिंकहुँविगलीगलिनगली।बहुपल्लवरम्भातिनकेखम्भामोदअरम्भाभाँतिभली॥
बहुखम्भसुपारीनवफलधारीपटजरतारीपरभाके। बहुलसतपताकेअमितकिताकेछैरविचाकेनभनाके॥ २३॥

दोहा-यहिविधिनिरखतनगरतहँ, नागरनंदकिशोर। मंदमंदगमनतमगै, युतरोहिणीकिशोर॥
मच्योमहीपतिमधुपुरी, पौरपौरयहशोर। ब्रजतेआयेआजुयुग, सुंदरनवलकिशोर॥

कवित्त-खोरिखोरिखुशिआलीखलककीआयपरी, माँचिरह्योखरभरखबरकेपावते।
खेलतींजेखेलनखुआरकरिखेलनको, खोलिखिरकीनखड़ीखुशीकेखरावते॥
रघुराजखासीसौखवारीआमखासनते, खिजमितखामिदखराबकैउरावते।
खुलिगेखजानेखैरखूबीकेविचारिनारि, धाईनिजसुतनखेलावतेखवावते॥ २४॥
कोईसारीघाँघरेकीघाँघरोकैसारीकोई, कोईहारकिंकिणीकैकिंकिणीकोहारहै।
कोईएककरनकरनत्योंचरनहूँमें, कुंडलऔकंकणऔनूपुरसिंगारहै॥
परख्योनकोईएकएकनकोरघुराज, कीन्हीनहिंकोईएकएकनपुकारहै।
वाममथुरामेंचढीऊँचेनअटामेंयहगामेंयह, नामैंआयोनंदकोकुमारहै॥
एकदृगखंजनमेंअंजनलगायेउठी, कोईएककौरमुखगेरेउठिधाईहै॥ २५॥
कोईअँगरागआधेअंगनलगायेचली, कोईपुरनारीचलीआधेहींनहाईहै॥
रघुराजकोईगृहकारजबिसारिचली, कोईबालअधप्यायोबालकविहाईहै।
चहरपहरमाच्योशहरपहरदिनै, डहरडहरडोलैकुँवरकन्हाईहै॥ २६॥
ताकिकैतिरीछेनैनबाणसमवेधिसैन, देतहैंपरमचैनभृकुटीनचाइकै।
सुखमानिकायदेखेकामबिकिजायऐसो, रूपदरशायकीन्ह्योंविवशबनाइकै॥
रघुराजआलिनसमाजतेपरानीलाज, देखैंयदुराजप्यारीपलकैंविहाइकै।
मंदमंदगौवनगयंदगतिमोह्योमन, मथुराकेमगमेंमुकुंदमुसकाइकै॥

साजिकैसिंगारसँगरोहिणीकुमारसखा, सोहैंरघुराजमुरिमोदहिंभरतजात।
करिकैकटाक्षनिमृगाछिनिछकावैछैल, धामधामधूमधामपुरमेंकरतजात॥
केतीभईकायलतेपरींघूमैंघायलसी, केतीबालबायलसीजियरोजरतजात।
जौनहींडहरह्वैकेकान्हरोकढततहँ, तौनहींडहरमेंकहरसीपरतजात॥ २७॥
निमिषनेवारिघनश्यामकोनिहारिचित्र, पूतरीसीठाढीपुरनारिआनँदैभरी।
कान्हकीतकनित्योंहींहँसनिसुधाकीसींची, पायकैसोहागअनुरागयुतहैंखरी॥
रघुराजप्यारोप्रेमबेरीपायनायदीन्ही, तापहरिलीन्हीभईपुलकधरीवरी।
माधवकीमूरतिमनोहरीकोमथुराकी, पलककपाटदैकैधाँधीउरकोठरी॥ २८॥

दोहा—चढ़िकैउच्चअटानिमें, विकसितमुखजलजात। बरषहिंहरिबलपरसुमन, हरषहिंपुलकितगात॥ २९॥
औरहुपुरवासीद्विजआये। दधिअक्षतसुगंधबहुलाये॥ सुरभितजलहरिबलपगधोई। पूजनकरहिंपरममुदमोई॥ नजरदेहिंबहुविविधप्रकारा॥३०॥जोरिपाणिअसकरहिंउचारा॥ धनिधनिहैंसिंगरेब्रजवासी।कौनकरीपूरबतपरासी॥ जोइनयुगलकुमारनकाँहीं। दृगदेखततिनकेदिनजाँहीं॥ त्रिभुवनकोआनंदबटोरी। रचीविरंचिमनोहरजोरी॥ यहिविधिलहतविविधसतकारा।गमनतदोउवसुदेवकुमारा॥जहँजहँविचरहिंहरिहलधारी।तहँतहँथकितहोंहिंनरनारी कछुआगेचलिगेजबदोऊ। औरहुसँगपुरजनसबकोऊ॥

दोहा—तबइकचाकरकंसको, जातिरजककीनीच। उद्यमजेहिंरँगरेजको, मिलतभयोमगबीच॥
कंसहेतुरँगिविमलदुकूला। लिहेजातबहुरह्योअतूला॥ आवतताहिनिरखिगिरिधारी। तुरतठाढ़ह्वैगिराउचारी॥ ऐहोपथिककौनतुमआहू। वसनविचित्रलिहेकहँजाहू॥ वसनअनेकरँगेअतिनीके। अतिप्रियअहैंहमारेजीके॥३२॥ देखिदोऊभाइनकरूपा। देहुहमैंसबवसनअनूपा॥ हमरेहिंयोगऔरकेयोगन। असतगुनहुँतौपूँछहुँलोगन॥ जोहमकोतुमअंबरदैहौ। तौबिनसंशयमंगलपैहौ॥ ३३॥ यहिविधिजबजाँच्योयदुराई। तबतोरजककोपअतिछाई॥

दोहा—प्रथमहिंयदुपतिकेवचन, कियोनहींकछुकान। कछुकचित्तमहँगर्वभरि, करिकैभौंहकमान॥
टेढीनजरताकिकहँवानी। भोजराजचाकरअभिमानी॥३४॥मतिबोलैअसबैनअहीरा। तौहिंनलगतजीवकीपीरा॥ मुखतौदेखिलेहुतुमअपने। पहिरेहुवसनकबहुँअससपने॥ होतुमगाइचरावनहारे। निवसहुवनगिरिविरचिअगारे॥ राजपोशाकलेनअभिलाषौ। अपनीजातिसुरतिनहिंराषौ॥३५॥सूधेचलेजाहुजहँजाते। कसबढिबातबहुतबतराते॥ जान्योंतुममूरखदोउभाई। अनुचितउचितनपरतजनाई॥ अबहूँमोरसिखापनगहियो।कोहुसोंऐसेवचननकहियो॥

दोहा—चहौबचावनआपने, जोअहीरतुमप्रान। तौतुरतहिंअबकीजिये, इततेअवशिपयान॥
जोकहुँकंसराजसुनिपावैं। तौदोहुँनबंधनबँधवावैं॥ ३६॥ गोपनकोलूटहिंधनभूरी। तुमकोअवशिदेवावैंसूरी॥ गर्वनरहतभूपकेनेरे। तातेवचनमानियेमेरे॥ रजकवचनसुनिपरमकठोरा। कुपितभयोदेवकीकिशोरा॥ बढ़िद्वैपगथापरइकमारयो।तासुकंधतेशीशउतारयो॥मृतकरजकगिरिगोधरणीमें।भयेचकितजनहरिकरणीमें ३७॥ अनुचररजकरहेसँगतेते। भगेडारिपोटरिपटतेते॥ जबसबभागिगयेचहुँओरा। तबहिंतुरतवसुदेवकिशोरा॥३८॥ आपहुवसनपहिरिकछुलीने। वसनकछुकबालिरामहिंदीने॥

दोहा—औरहुदीन्हेंसखनको, रहेजेजाकेयोग। व्यर्थबहुतमहिफेंकिदिय, हँसेदेखिपुरलोग॥ ३९॥
पहिरिपोशाकनढीलेढाले। हँसतचलेआगेयुतग्वाले॥ रह्योएकछींपीकरगेहा। ताकेद्वारगयेयुतनेहा॥ तातेवचनकह्योयदुराई। अंगढारपटदेहुबनाई॥ सुनतहिंप्रेमभरोसोधायो। रामश्यामचरणनशिरनायो॥ साधिदियोअंबरअँगतारा। बेलिबूँटरचिदियोअपारा॥ वसनविचित्रपहिरियदुराई।सहितरामग्वालनसमुदाई॥४०॥ शोभितभेअतिशत्रुप्रमाथी।सजेअसितसितजनुयुगहाथी॥अतिप्रसन्नह्वैपुनियदुराई।तेहिंबायककहँनिकटबोलाई ४१

दोहा-दियोमुक्तिसारूप्यतेहिं, जगमहँविभौअतूल। शोभाऔरशरीरबल, सुमतिसकलसुखमूल ॥ ४२ ॥
आगेचलेबहुरिदोउभाई। सखनसहितअतिआनँदपाई ॥ मालाकारएकमतिवाना। रह्योमधुपुरीभक्तप्रधाना ॥
रह्योसुदामाताकरनामा। तासुहाटमधिहाटकधामा ॥ ताकेभवनगयेदोउभाई । सोदेखतअतिशयअतुराई ॥
परचोचरणकहिहेवनमाली। मैंतुवदासजातिकोमाली॥करहुपुनीतगेहयदुराई।असकहिभीतरगयोलेवाई ॥ ४३ ॥
सुंदरआसनमेंबैठायो। अर्घ्यपाद्यआचमनकरायो ॥ धूपदीपनैवेद्यहुदीन्ह्यो। चंदनप्रभुअँगलेपनकीन्ह्यो ॥
दोहा-जसपूजाप्रभुकीकरी, मालाकारसुजान। तैसहिंसिगरेसखनको, कीन्ह्योंअसिसनमान ॥
पुनिसबकोतांबूलखवायो ४४ जोरिपाणिअसवचनसुनायो॥पावनमोरजन्मकुलआजू।तुमकीन्ह्योंसबविधियदुराजू॥
देवपितरऋषिऋणहुँहमारे। आयनाथतुमसकलउधारे॥४५॥अहोजगतपरकारणदोऊ।यहप्रसंगजानतकोउकोऊ॥
लियोधरणिमहँप्रभुअवतारा। करनहेतुमंगलसंसारा ४६ विषमदृष्टिनहिंअहैतिहारी। तुमदोऊजगकेहितकारी ॥
सबमेंहौसमानभगवाना। जेजसभजैताहितसजाना ॥४७॥ मैंहौंप्रभुलघुदासतुम्हारा। शासनदेहुजोहोइविचारा ॥
दोहा-धन्यभागतेहिंपुरुषकी, तेहिंसमजगतनआन। जापैतुवशासनकरहु, ह्वैप्रसन्नभगवान ॥ ४८ ॥
सुनिमालीकेवचनमुरारी। रहेमौननहिंगिराउचारी ॥ मालीमाधवमनकीजानी। धन्यभाग्यआपनअनुमानी ॥
महासुगंधितकोमलफूला। तिनकीरचिद्वैमालअतूला॥रामश्यामकेगलपहिराई। औबहुदीन्ह्योंसखनबनाई ॥४९॥
सखनसहितहरिबलछबिछाये। मालीगृहमेंअतिसुखपाये॥हरिबलजानिताहिनिजदासा। कह्योमाँगुजोहोवैआसा५०
तबकरजोरिकह्योपुनिमाली। निजपदभक्तिदेहुवनमाली॥होवैप्रीतिसंतपदपाँहीं। परमदयासबजीवनमाँहीं ॥५१॥
दोहा-सुनिमालीकहँदेतभे, येतीनिहुँवरदान। विभौपुस्तदरपुस्तको, दीन्ह्योंताहिमहान ॥
अरुशरीरबलजगसुयश, आयुषपूर्णप्रमान। दैताकोबलिरामयुत, तहँतेकियोपयान ॥ ५२ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे एकचत्वारिंशस्तरंगः ॥ ४१ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-पुनिवसुदेवकुमारदोउ, चलेबजारबजार। संगसखासोहतसकल, कियेविविधशृंगार ॥
कछुआगेचलिकेदोउभाई। आवतनारिनिहारिसुहाई ॥ हैकुबरीपैउमिरिकिशोरी। करमेंलीन्हेंकनककटोरी ॥
तामेंकुंकुमचंदनघोरा। चितवतचलीजातिचहुँओरा॥ताकोनिकटनिहारिविहारी। भौंचलाइहँसिगिराउचारी॥१॥
सुंदरितुमहोकौनिबतावहु। अंगरागकेहिहितलैजावहु ॥ हमहिंनदेहोयहअँगरागा। तुमतौनिरखिपरौबड़भागा ॥
जोअँगरागहमहिंकहँदेहो। तौसुंदरिद्रुतमंगलपैहो ॥ हरिकीगिरासुनतअतिप्यारी। परममनोहररूपनिहारी ॥
दोहा-मोहिगईकुबरीतहाँ, बाढ्योप्रेमविशाल। खड़ीभईकरजोरिकै, कीन्हीविनयरसाल ॥ २ ॥

सैरंध्र्युवाच।

नंदकुँवरसुंदरछबिरासी। मैंहौंभूपकंसकीदासी ॥ हैकुबरीयहनामहमारो। कंसहिँप्रियममचंदनगारो ॥
तातेमैंअँगरागबनाऊँ। नृपतिनिकटनिततहीपहुँचाऊँ ॥ सौंपेहुमोहिंकर्मयहराजा । औरकरहुँनहिंकौनहुँकाजा ॥
पैप्रियतुमसोकोयदुनंदन।जाहिदेहुँगारोनिजचंदन॥३॥असकहिलगीलखनयुगरूपा।जेहिंलखिमोहततिभुवनभूपा॥
मधुरवचनबोलनिमनहारी। चितवनिचलनिचारुसुकुमारी॥मोहिगईयदुपतिकोदेखी।कुबरीधन्यभाग्यनिजलेखी ॥
दोहा-रामश्यामकेअंगमें, सोकुंकुमअँगराग। लेपनकीन्ह्योंनिजकरन, करिअतिशयअनुराग ॥ ४ ॥
नाभिउपरतेकंठलगि, लसतपीतअँगराग। मनहुँयमुनअरुगंगमहँ, आवतप्रातप्रयाग ॥ ५ ॥
भेप्रसन्नवसुदेवकुमारा। तहँमनमेंअसकियेविचारा ॥ यहकुबरीकोसुभगबनावैं । निजदरशनकोफलदरशावैं ॥

उरुग्रीवाकटिटेढ़ीअहई । तातेजगकुबरीअसकहई ॥ मुखहूँकीद्युतिहैअतिनीकी । उमिरियुवारमणीममजीकी ॥६॥
असविचारकरितहँयदुराई।करअँगुरीद्वैचिबुकलगाई॥पगअँगुठनसोंपगनदबाई । वदनतासुदियउपरउठाई ॥ ७ ॥
मिट्योतासुकूबरतेहिंकाला । भयोकूबरीरूपरसाला ॥ उन्नतकुचह्वैगेकटिखीनी । रंभखम्भसीजंघनवीनी ॥

दोहा–खंजनदृगभृकुटीधनुष, मुखशशिभालरसाल । रूपकूबरीलखिलजीं, सुरललनातेहिंकाल ॥ ८ ॥

भयोरूपगुणपरमउदारू।हरिहेरतउपज्योहियमारू ॥ यदुपतिकोपटुकाकरछोरा।गहिबोलीहँसिकैतेहिंठोरा ॥ ९ ॥
प्रीतमचलहुअवासहमारे।निकसतजियअबतजततिहारे।मैंनछोंडिहौंइकक्षणतुमको। द्वितियनप्रियअसलागतहमको
रूपरावरोलखिमनमेरो।परयोकामकराफिरतनफेरो॥अबकीजैकछुकृपाकन्हाई।लेहुमोहिंपियमरतजियाई ॥ १० ॥
सुनिकुबरीकीविनयविहारी।गयेसकुचिबलवदननिहारी॥ सखनमुखनपुनिश्यामविलोकी।कह्योवचनकुबरीकरठोकी
ऐहैंसुंदरिभवनतिहारे । करिकारजजेहिंहेतुसिधारे ॥

दोहा–परदेशिनकोअतिसुखद, कुबरीतोरअगार । जेपरदेशीनारिबिन, तिनकोतुहींअधार ॥ १२ ॥

सुनिमुकुंदसुखमंजुलहाँसी । लहिकूबरीमहासुखरासी ॥ तजिपटुकागमनीनिजगेहू । यदुपतिपैकियपरमसनेहू ॥
हरिहुचलेपुनिवणिकबजारा । थलथललहतअमितसतकारा ॥ कोउपुरजनतांबूलखवावैं।कोउफूलनमालापहिरावैं॥
कोईचंदनचरणचढावैं । कोईअतरलैवसनलगावैं ॥ १३ ॥ हरिबलरूपनिरखिपुरबाला । देहभानभूलीतेहिंकाला ॥
मनसिजविवशभयेमनतिनके । हरिबलदेखिपरेदृगजिनके॥ छूटेवसनऔरशिरकेशा।लुटिगोललिनलाजकरलेशा ॥

दोहा–चित्रपूतरीसीखडीं, निरखहिंयुगलकुमार । बारबारतनुमनधनहुँ, वारहिंबारहिंबार ॥ १४ ॥

पुनिआगेचलिकछुदोउभाई । पूँछनलागेजननबोलाई ॥ अहैकहाँमखधनुषनिवासा । हमहूँआयेलखनतमासा ॥
लोगनकह्योचलेइतजाहू।आगेलखिहौधनुषउछाहू१५पुरजनवचनसुनतनँदलाला।कछुचलिलख्योधनुषमखशाला॥
बारनयदपिकियोमखपालक । पैनहिंमान्योत्रिभुवनपालक॥गेमखभवनप्रविशिबरिआई।देख्योमहाधनुषदोउभाई ॥
खड़ेबलीबहुरक्षणवारे । विविधभाँतिकेशस्त्रनधारे ॥ बडोविभौपूजितबहुसाजू । लखनजननकोजुरयोसमाजू ॥

दोहा–यदुपतिचापनिहारिकै, गहनहेतुमनदीन । तबरखवारेधनुषके, कोपबडोईकीन ॥

कहोअहौकाकेतुमजाये । कारणकौनकहाँतेआये ॥ बरज्योनाहिंमानोकेहुँकेरो । जाहुअनतटेढक्योंहेरो ॥
देहुइन्हेंकोउपुरुषनिकारी । छुवनचहतधनुपूजितभारी ॥ ऐसाहिंकहतरहेरखवारे। हरिकरवामतुरतधनुधारे ॥१६॥
ख्यालहिंसोलियताहिचढाई।सकलजननजोहतयदुराई ॥ तोरयोधनुषसहजमुसक्याई।जिमिगयंदकरऊखलगाई१७
टूटतधनुभोशोरअखंडा । पूरिरह्योसिगरेब्रह्मंडा ॥ परयोशोरसोकंसहुँकाना । बैठसभामधिबहुतडेराना ॥ १८ ॥
टूटतधनुषधनुषरखवारे । अतिकोपितह्वैवचनउचारे ॥

दोहा–देखनकोअतिमीठये, दोऊबालकढीठ । बाँधहुइनकोआशुहीं, करिकरदोहुँनपीठ ॥

पुनिमारहुदायाउरखोई।धरहुधरहुधावहुसबकोई॥ असकहिकैसिगरेशठधाये । रामश्यामकेजबढिगआये ॥ १९ ॥
तबगहिकरहरिबलधनुटूकें । कसिकसिकोपितकमरपटूकें ॥ दौरिदौरितिनकेशिरमारे । केतेनकेउरतुरतविदारे ॥
चरनकरनकेतेनकेतोरे । केतेनशिरमटुकीसमफोरे ॥ २० ॥ हायकहतभागेरखवारे । कंसद्वारमहँजायपुकारे ॥
जेव्रजबालकआयेदोई । नँदकेतिन्हेंकहतसबकोई ॥ तेडारेउधनुराउरतोरी । मखशालामधिकरिबरजोरी ॥

दोहा–कछुमारेमदैंकछुक, कछूमिलायेधूरि । कछुरखवारेभागिहम, आयेभरिभयभूरि ॥

सुनतकंसअतिकोपहिंछायो।जाहुहनहुकहिभटनपठायो॥तेप्रभुशासनशिरधरिधाये । मारुमारुधरुधरुकहिआये ॥
तिनकोरामश्यामधनुखंडन । मारितुरंतहिंकियोविखंडन ॥ भगेकंसभटहायपुकारत।रामश्यामबलधामविचारत ॥
यहिविधिनृपकेभटनसँहारी।मखगृहतेनिकसेगिरिधारी॥२१॥हरिबलबलछबितेजाढिठाई।औरअनूपचरितबहुताई ॥

दोहा–सुनेबहुतदेखेबहुत, मथुरापुरनरनारि ॥ रामश्यामकोदेववर, लीन्हेसकलविचारि ॥ २२ ॥

छबिनिरखतविहरतपुरमाँहीं।लौटतभेदोउडेराकाँहीं॥अस्ताचलरविगेतेहिंकाला।पितुढिगहरिबलगेयुतग्वाला २३॥

स०-विधिआदिकसेवतदेवविहायभरीअतिचातुरीहैचपला।जिनकीछविमेंछकिकैछनमेंउरमेंनिवसीअचलाकमला।
रघुराजतेईयदुराजैविलोकिलह्योसुखवैमथुरानवला।सतिआजुभैवानीपयानसमेंजोकहीव्रजकीविरहीअबला ॥२४॥

दोहा-रामश्यामआवतभये, जबनिजडेरामाँहिं। नंदमहरतबचलिकछुक, कियआगूतिनकाँहिं ॥

कह्योलालकीन्हीकसदेरी। लागिरहीतुममेंसुधिमेरी ॥ करौनइतैबहुतचपलाई। अनखैहैंसुनिकैनृपराई ॥
असकहिहरिबलकोकरगहिकै।लायेनंदशिविरसुखलहिकै।।मीजिमींजिदोउचरणपखारे। विचरणकोश्रमसकलनिवारे
कह्योलालअबकरहुबियारी।सोइरहौकीन्ह्योंश्रमभारी ॥ असकहिदूधभातलैआये। रामश्यामकहुँसुखितजेमाये ॥
पुनिकरचरणधोइदैबीरा। शैनकराइदियोमतिधीरा ॥ जानिकंसकेमनकीबातैं। शैनकियोहरिबलहरषातैं॥ २५ ॥

दोहा-उतैकंसधनुभंगअरु, रक्षकभटनविनास। रामकृष्णकरतेसुनत, उपजीहियमेंत्रास ॥ २६ ॥

बहुतकाललगिजागतरहेऊ। नहिंआईनिद्रादुखलहेऊ ॥ करतरह्योमनमाहँविचारा। जाहिंकौनविधिमारिकुमारा॥
पुनिउठिगयोसभातेराजा। विदाकरचोसबसचिवसमाजा ॥ सोइरह्योपरयंकहिंजाई। निरखनलग्योसपनदुखदाई॥
कंसहिलेनहेतुमजबूता। आयेमनहुमीचुकेदूता॥२७॥ निरखनलग्योअशुभतेहिकाला।प्राणबिछोहनकरनकराला॥
लख्योआरसीनहिंनिजशीसा।जलहूमेंशिरताहिनदीसा।द्वैलखिपरैंचन्द्रअरुतारा।यदपिनअंगुलिदिहेनिहारा ॥२८॥
लख्योछिद्रतनुछायामाँहीं। प्राणघोषसुनतोश्रुतिनाँहीं॥सुवरणवरनतरुनकहँदेख्यो। रजमेंनिजपदचिह्ननपेख्यो ॥

दोहा-औरहुऐसेअशुभबहु, लख्योकंसतेहिकाल। उपजीमनमेंभीतिअति, जान्योअपनोकाल ॥ २९ ॥

मरेपुरुषसोंमिल्योसपनमें। खरचढिगमन्योदिशादखिनमें॥सपनेविषकोकियोअहारा। पहिरचोदसमतफूलनहारा॥
सपनेअंगनतेललगायो। पटविहीनदक्षिणदिशिधायो ॥ ३० ॥

दोहा-यहिविधिऔरहुअशुभप्रद, सपनविलोक्योकंस। रातिनींदआईनहीं, भयोसकलसुखध्वंस ॥ ३१ ॥

जसतसकैतेहिंभयोविहानू। उदितभयेजबपूरबभानू ॥ बंदीगणयशगावनलाग्यो। तबहिंकंसउठिअतिभयपाग्यो ॥
बैठ्योआइसभामधिराजा। भयोबोलावतसचिवसमाजा ॥ आयेसचिवसकलदरबारा। तिनसोंभूपतिवचनउचारा ॥
रंगभूमिकीकरहुतयारी।बोलवावहुमल्लनबलभारी ॥नृपशासनसुनिसचिवसयाने।कीन्ह्योंतैसहिसकलविधाने॥३२॥
प्रथमहिंरंगभूमिकियपूजन। रचवायेउतंगबहुमंचन ॥ चहुँकितमंचउतंगअपारा। बीचखनावतभयेअखारा ॥
मंचनमेंबहुविविधकिताकें। बँधवायेपटअमलपताकें ॥ बँधेकनकतोरणचहुँओरन। सुमनमालबहुठौरनठौरन ॥
रंगभूमियहिविधिसजवाई। पुनिदीन्ह्योदुंदुभीबजाई ॥

दोहा-घनघहरनसोंघोरअति, भयोदुंदुभीशोर। छायरह्योकुरुपतितुरत, मथुरामेंचहुँओर ॥ ३३ ॥

सुनिदुंदुभीशोरपुरवासी। पावतभेसबआनँदरासी ॥ रंगभूमिमहँमल्लतमाशा। होतजानिकरिदेखनआशा ॥
ब्राह्मणक्षत्रीवैश्यहुशुद्रा। औरहुरहेजेबहुबड़छुद्रा ॥ येसबरंगभूमिकहँआये। निजनिजथलबैठेसुखछाये ॥
आयेऔरहुबहुरजवारे। बैठेनिजनिजयोगअगारे॥३४॥यहिविधिजबजुरिगईसमाजा।तबउठितुरतभोजपतिराजा ॥
राजमंचमहँबैठ्योआई। सचिवसहितकछुमनहिंडेराई ॥ मंडलमध्यविराजतकैसे। तारनमध्यनिशाकरजैसे॥३५॥

दोहा-सुनतदुंदुभीशोरतहँ, निजनिजगृहतेमल्ल। सभामध्यआवतभये, लिहेतबल्लप्रवल्ल ॥

दैदैतालमल्लबलधामा। भोजराजकहँकियेसलामा ॥ धूरिभूरिसबअंगलगाये। कटिकाछनीकसेअतिभाये ॥
जेवरपहिरेविविधजराऊ। मल्लयुद्धकेभरेउराऊ ॥ मानहुँमदवारेबिनशुंडा। सभामध्यसोहतेवितुंडा ॥
युतशागिर्दसबैउस्ताजू। बैठिसभामधिजोरिसमाजू ॥३६॥ मुष्टिकअरुचाणूरप्रबल्ला। कूटऔरशलतोशलमल्ला॥
येसबमल्लनमाहँप्रधाना। जिनकेबलकोनाहिंप्रमाना ॥ देहिंतालकरिजोरअघाता। मानहुँहोतवज्रकरपाता ॥३७॥

दोहा-रंगभूमिमहँजुरिगई, सिगरीजोहिसमाज। चोपदारबोलवायतब, कह्योभोजकुलराज ॥

लखनतमाशाकोअतुराये। नंदादिकजेव्रजतेआये ॥ तिनकोलावहुआशुलेवाई । कौतुकलखहिंतेऊइतआई ॥
प्रतीहारद्रुतनंदसमीपा। आयकह्योअसवचनमहीपा ॥ भोजराजतुमकोबोलवायो। मल्लअखारोसकलसजायो ॥
नंदमहरसुनिनृपतिनिदेसा। लैगोपनगेरंगनिवेसा ॥ भूपतिकहँसबकियेसलामा । दूधदहीमाखनकहिनामा ॥
नजरदियोपूँछीकुशलाई । बैठेरायरजायसुपाई ॥ व्रजकेरहेगोपसबजेते । बैठेएकमंचमहँतेते ॥
दोहा–करीकुवलयापीडजो, एकसहसगजजोर। रंगद्वारपरकंसतेहिँ, ठाढकियोअतिघोर ॥ ३८ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदांबुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे द्विचत्वारिंशस्तरंगः ॥ ४२ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–चलनलगेजबशिबिरते, रंगभूमिकोनंद। तबकरगहिबोलतभये, हलधरअरुनँदनंद ॥
हमहूँचलिहैंलखनतमाशा। देखनकीमनमेंअतिआशा ॥ रहिहैंहमडेरामहँनाँहीं । लैचलुनंदबबासँगमाँहीं ॥
बोलेमहरतबैरिसिहाई। करहुनबहुतलाललरिकाई ॥ उहाँनहैकछुकामतिहारो। कियोबोलावननृपतिहमारो ॥
असकहिशिविरराखिसुतदोऊ। गयेनंदऔरहुसबकोऊ ॥ कछुकबारमहँसुनतनगारे। गमनहेतुदोउभयेतयारे ॥
द्रुतमंजनकरिभोजनकरिकै। पहिरिपोशाकसखासबजुरिकै॥रंगभूमिकहँचलेमुरारी। संगसखासोहतहलधारी ॥१॥
दोहा–करीकुवलयापीडकहँ, लख्योद्वारमहँठाढ़। गजपालकअंबष्ठशिर, चढ्योकोपअतिबाढ़ ॥ २ ॥
छंदनराच–विलोकिमत्तनागरामकृष्णकाछनीकसी। सँवारिकुंतलानिबाँधिलीनमंजुलैरसी ॥
कह्योपुकारिपीलवानसोंजलंध्रशोरकै। हटायनागनागपालदेहुऔरठोरकै ॥ ३ ॥
तुरंतदेहुपंथरंगभूमिजानहेतुहै। नतोनगीचमीचकेपठाइहैंअचेतहै ॥
सुनैनहींलखैनहींहटावतोनसिंधुरै। चहैपयानआपनोगजैयुतैयमैपुरै ॥ ४ ॥
सुनेमुकुंदबैनपीलपालकोपकैमहाँ। दवायकैकरींद्रकुंभपैनअंकुशैतहाँ ॥
तुरंतदेवकीकिशोरघोरओरजोरसों। सवेगधाइआइगोकियोकठोरशोरसों ॥
करिंदसोकरालहैमनौसरूपकालको ॥ ५ ॥ लपेटशुंडसोंलियोतुरंतनंदलालको ॥
द्रुतैवितुंडशुंडकोछोड़ायदेवकीलला। कियोतलैप्रहारतासुदंतऊपरैभला ॥
गयेलुकायतासुपायबीचकीनचातुरी ॥६॥ फिरैलग्योमहाकरीकरीगोविंदआतुरी ॥
सुगंधिपायशुंडकोपसारिमाधवैगह्यो। छुट्योगयंदहाथतेहरीधरोनहींरह्यो ॥ ७ ॥
गोविंदजायपाछिलेगहेप्रतक्षपुच्छको। पचीसचापलैगयेघसीटिनागतुच्छको ॥
महाबलीअहींद्रकोविहंगनाथज्योंगहै। गयंदतैसहींगह्योहरीनजोरकेमहै ॥ ८ ॥
इतैउतैविलोकतैचलोगयोहटोकरी। नसावकाशठाढहोनकोलह्योतहींधरी ॥
जहाँजहाँकरीभ्रमैतहाँतहाँभ्रमैहरी। भ्रमैद्विवर्षबालज्योंगहेसोपुच्छबाछरी ॥ ९ ॥
तुरंतहीतरक्किकैमुकुंदजायसन्मुखै। भगेनवेगसोंचलायथापरैकरीमुखै ॥
चल्योपछेड़मेंगजोसगर्वसोगराजतो। गहैपदैपदैमनोगोविंदमंदभाजतो ॥ १० ॥
धोखाउनेहितैगिरेमुकुंदधावतेधरा। तहाँसुदंतकेभरैगिरयोप्रकोपमेंभरा ॥
तरक्किदेवकीकिशोरऔरठौरजातभे। मतंगदंतजोरसोंधरासबैसमातभे ॥ ११ ॥
उपीछिकैमहीउठायशीशनागठाढभो। नपाइकैगोविंदकोगयंदगर्वगाढ़भो ॥

तुरंतपीलपालहूजोहैअंबष्ठनामको । दबायकुंभअंकुशैप्रचारिरामश्यामको ॥
धवायकैमतंगकोतुरंततत्रआइगो । हलीकह्योहनौहरीकरीखरोखेलायगो ॥ १२ ॥
तबैनभागकान्हठाढसन्मुखैभयेतहाँ । नगीचहींपहूँचिगोद्रुतैमतंगजोमहाँ ॥
वितुंडशुंडकोगह्योपसारिदोरदंडको । गिरायदीनभूतलैहरीकरीप्रचंडको ॥ १३ ॥
गिरैगजैमृगेंद्रसोंदवायशीशपाँउसों । उखारिलीनदंतएकहाथसोंउराउसों ॥
दोहा-पीलपालअंबष्ठको, तेहींदंतसोंनाथ । मारिनेकहींजोरसों, कियोछटूकोमाथ ॥
बलिरामहुँयकदंतउखारा । मरयोनागकरिघोरचिकारा ॥ मरोमतंगजतहाँनिहारी । औरहुपीलपालबलभारी ॥
धायेअसकहिहरिबलओरा । बचिनजाहिंवसुदेवकिशोरा॥तिनहिंदंतहनिहरिहलधारी॥बचेनएकहुडारेमारी॥ १४ ॥
मृतकमतंगजत्यागिमुरारी । रंगभूमिकहँचलेसिधारी ॥ निजनिजकंधधरेगजदंता । करनहारमनुअंतकअंता ॥
हरितनुगजशोणितकीबूटी । मनुतमालपरबीरवहूटी॥बिचबिचगजमदबिंदुसोहाँहीं॥तैसहिंस्वेदबिंदुदरशाँहीं॥१५॥
दोहा-रामश्यामग्वालनसहित, रंगभूमिमधिजाय । रहीजाहिजसभावना, तेहिंतसपरेदेखाय ॥ १६ ॥
कवित्त-मल्लजान्योवज्रआयोनरजानेनरवर, नारीजान्योसभामध्यआयोमूर्तिमानमार ।
गोपजान्योमीतनिजपापीजेपुहुमीपति, तेऊमनजान्योआयोशासनकरनहार ॥
रघुराजवसुदेवदेवकीतोजानेबाल, मूढलोविराटजानेयादवगुनेअधार ।
योगीजान्योपरतत्त्वकंसजान्योआयोकाल, रंगभूमिभायोरामसंगदेवकीकुमार ॥ १७ ॥
दोहा-करीकुवलयापीडको, सुनिकैकंसविनास । लखिदोहुँनदुरजैमहा, मानीमनअतित्रास ॥ १८ ॥
रंगहिंरोहिणिदेवकिलाला । सोहतभेदोउबाहुविशाला॥ अंबरअभरणअरुवनमाला॥सोहिरह्योअतिशयछबिजाला॥
मानहुँउत्तमनटयुगआई॥चितवतहींचितलियोचोराई॥१९॥ सभामध्यऔरहुदशआशा॥छायोरामश्यामपरकाशा ॥
बैठिरहेमंचहुँमहँजेते । पुरजनऔररहेमहिकेते ॥ तेसबनिरखतयुगलकिशोरा । पायेकुरुपतिमोदनथोरा ॥
मुखयकटकह्गरहेलगाई । तदपिनिरखिनहिंगयेअघाई ॥२०॥ पियेलेतमनुनैनलगाई । चाटतहैमनुजीहचढाई ॥
दोहा-नासातेजनुसूँघते, मिलतभुजानिबढाय । पुरजनासिगरेमोहिगे, देखतहींदोउभाय ॥ २१ ॥
कहहिंपरस्परमनुजअलेखे । जैसहिंसुनेतैसहींदेखे ॥ रूपमधुरसिगरेगुणआगर । महाप्रबलदोऊनटनागर ॥
जौनजौनकाननसुनिराखे । सोलखिहरिबलपुरजनभाखे॥२२॥येनारायणकेअवतारा॥प्रगटतभेवसुदेवअगारा॥२३॥
देवकिउदरउदधिविधुभयऊ॥ वसुदेवहुव्रजकोलैगयऊ॥बढ़ेगुप्तदोउनंदनिवासा॥२४॥शिशुपनकियपूतनाविनासा ॥
तृणावर्त्तदानवकोमारयो॥युगअर्जुनतरुतुरतउखारयो ॥ शंखचूडकेशीसंहारयो॥औरहुबहुदानवनबिदारयो॥२५॥
दोहा-ग्वालनगौवनकोलियो, दावानलतेराखि । कालीमथिमघवानको, बिनमदाकियइनमाखि ॥ २६ ॥
सातदिनागिरिवरकोधारयो॥वातवर्षतेव्रजैउधारयो॥विहँसितमुदितनिरखिमुखइनको ॥विरहकलेशमिट्योगोपिनको
यहउग्यतयदुवंशउजागर । जगजाहिरविशुद्धगुणसागर॥इनहींतेमहत्त्वअतिपैहैं । जबयहकुटिलकंसहनिजैहैं ॥२९॥
येजेठेभाईहरिकेरे । रामनामजगओजघनेरे ॥ शोभामानसरोरुहनैना । सुधासमानमधुरजेहिंबैना॥
वत्सप्रलंबबकादिकवीरा॥हन्योसबनकहँयेबलवीरा॥३०॥यहिविधिकहेसकलपुरवासी॥हरिबललखिपायेसुखरासी ॥
रंगभूमिमहँबजेनगारे । ठोंकेंतालमल्लबलवारे ॥
दोहा-रामश्यामकोतुरततहँ, अपनेनिकटबोलाय ॥ गर्वभरोचाणूरभट, दीन्ह्योंवचनसुनाय ॥ ३१ ॥

चाणूर उवाच ।

हेव्रजराजकुँवरहेरामा । तुमदोऊहोअतिबलधामा ॥ मल्लयुद्धमहँपरमप्रवीना । सुनिनृपतुमहिंलखनमनकीना ॥
मल्लयुद्धकरवावनहेतू । तुमहिंबोलायोरंगनिकेतू ॥३२॥ मथुरामंडलमेंजेप्रानी । तेसबकंसप्रजासुखखानी ॥

भाषतसुनहुबैनयहसाँचा। मनसाऔरकर्मणावाचा ॥ प्रजाभूपकोखुशीजोराखै। तौसबविधिमंगलफलचाखै ॥
प्रजाजोनहिंभूपतिरुखराखै। तापरईशसकलविधिमाखै ॥३३॥ मल्लयुद्धमधिरंगतिहारो। देखनचाहतभूपउदारो ॥
दोहा–गऊचरावतमेंदोऊ, तुमयमुनाकेतीर। अतिशयआनँदहैबहुत, निकटबोलायअहीर ॥
रहेखेलतेमल्लडाई। हमैंपरयोयहश्रवणसुनाई ॥ मल्लयुद्धजानोसबभाँती। हेतुम्हारिचौड़ीअतिछाती ॥ ३४ ॥
हमकोतुमकोअबअसचाही। जामेंभूपतिहोयउछाही ॥ जिनपैनृपप्रसन्नअतिहोई। तापरछोहकरतसबकोई ॥
सकलभूतमयहोवैराजा।तातेकरहुनृपतिकरकाजा ॥३५॥ सुनिचाणूरवचनयदुराई। तैसहिंनिजअभिलाषमहाई॥
देशकालकेउचितसुबैना। बोलेकृष्णपायअतिचैना॥३६॥ हमहैंप्रजाभोजपतिकेरे। वनचरहूँसबकहैंनिबेरे ॥
दोहा–मल्लयुद्धकेकरनको, जोयहदियोनिदेश। परमअनुग्रहसोकियो, हमपरभोजनरेश ॥ ३७ ॥
राजरजायसुमैंशिरधरिहौं। मल्लयुद्धसबविधिइतकरिहौं ॥ पैकछुगिरालेहुसुनिमोरी। लरिहौंमैंअपनीजोजोरी ॥
हैंबालकनहिंहैबलवारे। लरैंबरोबरहोयँहमारे ॥ सुनुचाणूरमल्लताहूपै। धर्मरहतथिरसबकाहूपै ॥
सभामध्यनहिंहोयअधर्मा।हमयहकहेदेतनिजभर्मा॥३८॥सुनिकैयदुपतिवचनसुहावन।बोलतभोचाणूरअपावन ॥

चाणूर उवाच।

नहिंतुमबालकनाहिंकिशोरा।तुमऔबलदोऊबरजोरा॥रह्योजोसहसगजनकहँझेलत।सोगजकहँमारयोतुमखेलत३९
दोहा–तातेमल्लजेअतिबली, जिनहिंनतुम्हरीभीति। तेतुमसोंलरिहैंअवशि, यामेंनहिंअनरीति ॥
मेरेसँगतुमहींलरौ, हेवसुदेवकिशोर। मुष्टिककेसँगरामहूँ, लरैंखूबकरिजोर ॥ ४० ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे त्रिचत्वारिंशस्तरंगः ॥ ४३ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–सुनतवचनचाणूरके, कृष्णठोंकिकैताल। रंगभूमिमधिठाढ़भे, भुजावढ़ायविशाल ॥
तैसहिंबलिरामहुँतेहिंकाला। मुष्टिकसन्मुखभेदैताला ॥१॥ प्रथमहाथसोंहाथमिलाये।फेरिचरणसोंचरणभिड़ाये ॥
लपटिगयेचारिउबलवाना। होनलग्योतहँयुद्धमहाना॥ रामकृष्णमुष्टिकचाणूरा। निजजयहेतुकरहिंबलपूरा ॥२॥
(इकइककहँऐचहिंनिजओरा।इकइककहँझेलहिंबरजोरा॥१॥)मुष्टिमध्यकरअँगुठाकरिकै।मारहिंइकएकनबलभरिकै
ठोकरदेहिंकहूँटिहुनीको।दाँउकरहिंबहुनिजनिजजीको॥कहूँजोरितहँनिजनिजमाथा।जोरकरहिंगहिगहिदोउहाथा॥
कहुँछातीसोंछातीमेली। लैदोउजाहिंदूरिलगिरेली ॥
दोहा–तहँकोउकोउकहँहाथगहि, झेलहिंभूरिभमाइ। पुनिकोउकोउकहँदूरिलगि, फेंकहिंतुरतउठाय ॥
कहुँभुजभरिभरिअंगदबावैं। जामेंअस्थिचूरह्वैजावैं ॥ कहुँइकएकनदेहिंपछारी। उठहिंतुरंतकोपकरिभारी ॥
ठाढ़होहिंकहुँपुनिदोउछूटी।कछुहरिफेरिजाहिंकहुँजूटी॥३॥कहुँपुनिभ्रमणलगहिंनृपराऊ।देखहिंअपनोअपनोदाऊ॥
कहुँकोउकोहुकेपाछेजाहीं।कोऊकोहुकेपारसुमाँहीं ॥ जहँजहँजातचपलचलिजोई। तहँतहँरोकततुरतहिंसोई ॥४॥
जोइजोइजोनहिंपेंचचलावैं। सोइतहँरोकहिंचलननपावैं ॥ जोकोउकबहुँपीठिपरजावै। सोताकोबहुविधिलौटावै ॥
दोहा–जबलौटतनहिंतबतुरत, लेतसमेटिउठाय। अतिबलसोंतहँभूमिमें, चाहतदेनगिराय ॥
सोतोउपरछूटिद्रुतजावै। कौनिहुँविधिधरणीनहिंआवै ॥ कोउबाँधतगलभुजापसारी। ताहिछोंडायलेतबलभारी॥
कोउकोहुकहँधरणीबैठावैं।कोउकोऊकहँपकरिगिरावैं॥कैसहुँधरणिपीठिनहिंजाती। फेरिउठतसन्मुखकरिछाती ॥
कोउकोऊकहँधोखादेते। लपटितुरंतचरणगहिलेते ॥ बिचबिचबोलहिंसावधानरहु। नहिंघबरावहुहियेधीरगहु ॥

असहरिबलमुष्टिकचाणूरा।करहिंयुद्धचाहतजैशूरा॥करहिंपरस्परपेंचअपारा।कछुश्रमकोनहिंकरहिंविचारा॥ ५ ॥

दोहा-अतिसुकुमारकुमारदोउ, मल्लप्रबल्लमहान। रंगभूमिमहँलरततहँ, तियनअयोगदेखान॥

भरिउरअतिदायामहराजा। कहहिंपरस्परनारिसमाजा॥६॥ राजसभामधिहोतअधर्मा। बैठेसज्जनसकलसुकर्मा॥
होतबलाबलयुद्धअयोगू। कोउनकरतवारणकसलोगू॥ राजहुकहुँरोकतकसनाँहीं।कढ़तनकछुकोहुकेमुखमाँहीं॥
जोनसिखापनभूपतिमानै।तौसज्जनउठिकरहिंपयानै॥७॥ कहाँमल्लअँगकुलिशकठोरा। कहँसुकुमारअंगयुगछोरा॥
कहँगिरिसरिसमल्लबलरूरे।कहँबालकयौवननहिंपूरे॥८॥ अबनहिंदेखिजातयहभाई। बैठहिंचलहुभवनमहँजाई॥

दोहा-होतअधर्मसमाजमधि, कैसेदेखोजाय। पुहुमीपतिपापीदियो, बलअरुअबललराय॥

जौनसभागहँहोइअधर्मा।तहँनहिंबैठहिंकबहुँसुकर्मा॥९॥ लिख्योधर्मशास्त्रहुमहँभाई। सोहमसिगरोदेहिंसुनाई॥
सभासदनदूषणगुनिनाना।जाइनसभाकबहुँमतिवाना॥लखिअनुचितजोरोक्योनाँहीं। तौअतिपापभयोतेहिकाँहीं॥
जोअनुचितनृपकोरुखराख्योतबहूँसकलपापफलचाख्यो१०तबकोउकहीफेरिअसिबाता लखुसजनीहरिमुखअवदाता
शत्रुओरधावतश्रमपाये।स्वेदबुंदसिगरेमुखआये॥कमलकोशजिमिजलकनसोहै।तिमिहरिमुखश्रमजलमनमोहै ११

दोहा-पुनिकोउकहलखुरामको, मुखअंबुजदृगलाल। मुष्टिकपरअतिकोपकरि, विहँसतरोहिणिलाल॥१२॥

सवैया-जिनकेपदशंभुस्वयंभुरमाकरसेवितेतेनरसेदरसैं। बहुधेनुचरावतवेणुबजावतगावतसंगसखाविलसैं॥
वनमालविराजतहैरघुराजसुबैनकहैंजनुफूलखसैं। धनिहैव्रजकीधरणीजहँयेप्रभुदोऊविकुंठविहायबसैं॥ १३॥
सुंदरतासिगरेजगकीइनहींकेशरीरबसीसबआई। हैनबरोबरकोऊकहूँअधिकेइनतेमुखक्योंकहिजाई॥
श्रीरघुराजरमाहूँरहीरमिसोंछविपीवहिंनैनलगाई। गोकुलगाँउकीग्वारिगमारिनीपूरबकौनकियोतपमाई॥ १४॥
दोहनमेंगृहलेपनमेंदधिमंथनमेंअरुमंदिरझारत। झूलतमेंत्योंझुलावतमेंशिशुकोदुलिरावतसेजमेंपारत॥
अंगनमेंअँगरागलगावतवैधनिहैंरघुराजउचारत। गोकुलगाँउकीग्वारिनीग्वालगोविंदगोविंदगरेसोंपुकारत॥ १५॥
भौरसमैअरुसाँझसमैसुरभीनसखानलैजातऔआवत। वेणुकीटेरसुनेसिगरीव्रजकीवनितागृहकाजभुलावत॥
श्रीरघुराजकढ़ीवरतेखरीखोरिविधव्रितिन्हेंकविगावत। देखहिंश्यामकोसुंदरआननननैननिमेंननिमेषलगावत॥१६॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यहिविधिनारिनिकेकहत, यदुनंदनकरिकोप। महामल्लचाणूरके, वधकीकीन्हीचोप॥ १७॥

कहहिंनारिसबआरतबानी। रामश्यामकेनेहहिंसानी॥ बाँधेहतोकंसअसनेतू। निजपुत्रनवधदेखनहेतू॥
वसुदेवहिंदेवकिहिंबोलाई। दियोएकमंचहिंबैठाई॥ तेनिजपुत्रनमल्लनसंगा। लरतविलोकिशिथिलभेअंगा॥
कहेंकुमारनरक्षैईशा। हमहिंअधारअहैंजगदीशा॥ नहिंजानतसुतबलमतिभोरी। जिनकीनहिंत्रिभुवनमहँजोरी॥
जसजसमल्ललरतकरिजोरा। तसतसबढ़तदुहुँनदुखघोरा॥वसुदेवहुदेवकिदुखतापी।भाषहिंहायकंसबड़पापी॥१८॥

दोहा-इतैप्रबल्लनमल्लसँग, मल्लयुद्धकेरंग। रँगेरामअरुश्यामदोउ, थकेनथोरेहुअंग॥

कृष्णऔरचाणूरप्रवीरा। करहिंविविधविधिपेंचअपीरा॥ तैसहिंमुष्टिकअरुबलरामा।लरहिंपेंचकरिकरितेहिंठामा॥
कुलिशकठोरकृष्णकेअंगा। तिनकेलहतप्रहारअभंगा॥ महाप्रबल्लमल्लचाणूरा। ताकेअंगभयेसबचूरा॥ १९॥
हैगोशिथिलथाकअतिलागी।तबतौकोपज्वालजियजागी२०बाजवेगकरिकैअतिरूठी।हरिउरहन्योबाँधियुगमूठी२१
टरेनहरितिलभरितेहँटारे। जिमिमतंगसुममालनमारे॥पुनियदुपतिचाणूरभुजागहि।पटक्योबहुभमाइताकोमहि२२
पटकतभूमिनिकसिगेप्राना। गिरयोकुलिशमनुमहीमहाना॥

दोहा-बिलगभयेशिरकेशसब, मुखकढिआईजीह। रुधिरधारदशद्वारह्वै, बहनलगीतहँदीह॥ २३॥

इनकेपहिलेमुष्टिकमल्ला। हन्योरामकहँमुष्टिप्रबल्ला॥ तबसकोपह्वैतहँबलराई। तलप्रहारकीन्ह्योनजिकाई॥२४॥
रामपाणिकरलगतप्रहारा। कम्पतमुष्टिकखायपछारा॥गिरयोधरणिमहँसोबिनप्राना।जिमिपादपलहिपवनमहाना॥

मुखतेनिकर्सोशोणितधारा। बिथुरिगयोसिगरेशिरबारा॥२५॥मुष्टिकअरुचाणूरविनासा।लखिकैकूटमल्लबिनत्रास॥
तुरतरामकेपाछेआई। बाँधिमुष्टिभरिजोरचलाई॥ तेहिंनाचितैरोहिणीकिशोरा। हनीवाममूठीकरिजोरा॥
लागतरामवामकरघाता। मर्योमनहुँभोवज्रनिपाता॥ २६॥

दोहा–तोशलमल्लप्रबल्लअति, यदुपतिपैद्रुतधाइ। मारनचाह्योतेगशिर, अतिशयवेगबढाय॥

ताकेपहिलेहितहँयदुराई। चरणप्रहारकियोशिरधाई॥ भयोछ्टूकतासुतहँशीशा। मरिकैगिरयोअवनिअवनीशा॥
पुनितोशलकोपितअतिधायो। ह्वैसवेगतहँतेगचलायो॥ तेहिंहरिकियद्रुतचरणप्रहारा। ताकोह्रदयभयोदुइफारा॥
तोशलमरिगिरिगोधरणीमें। जनमोदितभेहरिकरणीमें॥२७॥ शलतोशलमुष्टिकचाणूरा।औरहुकूटमल्लअतिशूरा॥
जबपाँचहुँनकृष्णबलमारे। तबसबमल्लभगेभैभारे॥ लैलैजीवादिगंतनजाई। कृष्णरामभयरहेलुकाई॥ २८॥

दोहा–रह्योनकोऊलरनको, रंगभूमिमहँभूप। रामश्यामठाढेरहे, शोभापरमअनूप॥

पुनिसखानिकहँनिकटबोलाई। करनलगेप्रभुमल्ललड़ाई॥ बहुविधिपेंचनकोदरशावैं। हारैंकबहूँतिनहिंहरावैं॥
रंगभूमिनूपुरझनकारी। लायरहीअतिआनँदकारी॥ रामश्यामतालनबहुठोकें। करहिंपेंचपेंचनकहुँरोकें॥ २९॥
करनीदोहुनकेरिनिहारी। पुरवासीपायेसुखभारी॥ लगेसराहनरामश्यामको। सकलपुकारिपुकारिनामको॥
भलोकियोमल्लनकोमारयो। कंसमहीपतिकोमदगारयो॥ औरसबैपायेआनंदा। छोडेएककंसमतिमंदा॥
भयेतहाँदुंदुभिधुंकारा। औरहुबाजनबजेअपारा॥ ३०॥

दोहा–चाणूरादिकमारिगे, मल्लऔरजबभाग। रंगभूमिदुंदुभिबजे, कंसहिंनीकनलाग॥

तबमंचहिंतेआपुपुकारा। बंदकरहुमतिमंदनगारा॥ पुनिसिगरेवीरनगोहरायो। अतिसकोपतिनबैनसुनायो॥३१॥
दोउवसुदेवकुमारनकाँहीं। देहुनिकारिरहैंइतनाँहीं॥ मथुरामेंकहुँरहननपावैं। रहैंतौअवशिदोउवधिजावैं॥
लूटिलेहुसबगोपनकाँहीं। नंदमुसुकबाँधियोइहाँहीं॥ नंदमहामतिमंदअहीरा। याकेकछुनमोरिहैपीरा॥ ३२॥
काटहुवसुदेवहुकरमाथा। यहकुमतीऔगुनकरगाथा॥ मेरेसँगछलकियोमहाना। अवनाविलंबहुवीरप्रधाना॥

दोहा–कहवावतजोममपिता, उग्रसेनअसनाम। ताहूकोवधकीजिये, लायआशुयहिठाम॥
हैमेरोरिपुपूरसो, राजकरनकीआश। मोरेरिपुसोंनेहकरि, चाहतमोरविनाश॥
उग्रसेनकेऔरजे, हितकरसाथीहोय। तेसिगरेवधिजायँअब, बचननपावैंकोय॥ ३३॥

कवित्त–भूपललकारसुनिउठेसरदारसबै, काढेशस्त्रचारिओरचमकेचमाकदै।
धायेरामश्यामपैसुनायेमारुधरुशोर, आयेनजिकायतेगँवारनधमाकदै॥
रंगभूमिरघुराजबाजेबजिरहेतामें, नूंपुरबजाइइतैगतिलैछमाकदै।
तरकिदमंकिदामिनीसोकंसमंचपै, तुरंतनंदलालतालदेतभोझमाकदै॥ ३४॥

दोहा–कंसकान्हलखिमंचपर, गुनिनिजकालकराल। उठिआसनतेतुरतहीं, गह्योढालकरवाल॥ ३५॥

प०छंद–उडिगयोकंसतुरतैअकास।नहिंकरीकान्हकीनेकुत्रास॥यदुनाथगगनमेंगोतुरंत। द्रुतकरनहेतुमातुलैअंत॥
चहुँओरमंचकेभ्रमतकंस। मनचहतकरनभगिनेयध्वंस॥दोउफिरतमंचकेचारिओर।जिमिव्योमवाजिविचरंतघोर॥
जबकान्हजातदाहिनीओर।तबकंसआवतोवामठोर॥ जबकंसजातदिशिवामकोपि।तबकृष्णचलतदाहिनेचोपि॥
नहिंलहतघातमारनकृपान।द्रुतचमकिजातयदुकुलप्रधान॥अतिवेगकियोयदुकुलदिनेश।युतक्रीटगह्योद्रुतकंसकेश
जिमिगहतविहँगपतिभुजँगकाँहिँ।तिमिगह्योकंसकहँमंचमाँहिँ॥जेसाचिवरहेतेहिंमंचबैठ।तेकूदिभगेभयसिंधुपैठ ३६
नहिंचलीतासुकरवालढाल। दियपटकिपुहुमिपरनंदलाल॥ सोरंगभूमिमधिगिरयोआय।प्रभुकूदिपरेकंसहिदबाय॥
तहँकंजनाभधरिविश्वभार।परिकंसपीठिपरबलअपार॥विनप्राणकियोनिजअरिरमेश।पुनिपकरिपाणिसोंकंसकेश॥
घसिलायताहिमधिरंगभूमि।सबसभासदनढिगघूमिघूमि॥यदुराजफेंकिदियफेरिकंस।जिमिसिंहतजेकरिकारिविध्वंस॥

दोहा–यदुपतिकोवहचरितलखि, तैसहिंकंससँहार। रंगभूमिमहँमचिरह्यो, थलथलहाहाकार॥ ३८॥

हरिभयतेसोभोजपति, जागतबैठतमाँहि। खातपियतसोहतश्वसत, निरख्योश्रीपतिकाँहिं ॥
तातेदुरलभयोगिहुन, जोयदुनाथसरूप। कंसलीनभोताहिमें, ताहीक्षणमेंभूप ॥ ३९ ॥
भुजंगप्रयातछंद-तहाँकंसकेकंकन्यग्रोधआदी। रहेआठभाईबडेजेप्रमादी ॥
लखेकंसकोध्वंसतेकोपकैकै। चलेरामश्यामैवधैशस्त्रलैकै ॥
अदाहोनभ्रातेरणआठभ्राता। धरेमारुवालेसभामध्यजाता ॥ ४० ॥
रहेकंसकोकर्पतेकृष्णलीन्हें। तिन्हेंओरनेकौनहींचित्तकीन्हें ॥
रहेरामठाढेतहाँओजधामा ॥ चितैकंसभ्रातानिकोताहिठामा ॥
लियोद्वारकोबेडनासोनिकारी ॥ चलेकंककेसन्मुखैकोपधारी ॥
हन्योबेडनाकंककेशीशभारी। मिल्योसोमहीमेंपरचोनानिहारी ॥
तबैआपन्यग्रोधमारचोकृपाना। गईटूटिसोलागिजैसेपपाना ॥
हन्योबेडनाताहुकेशीशमाँहीं। सबैअंगटूटेमरचोसोतहाँहीं ॥
रहेओरहूँजेसबैकंसभ्राता। कियेएकबारैबलैशस्त्रघाता ॥
तहाँअद्भुतैविक्रमैरामकीन्ह्यो। चल्योचक्रहीसोपरचोनाहिचीन्ह्यो ॥
कियोबेडनाकोप्रहारेअपारे। कितेकेपगैओभुजैतोरिडारे ॥
कितेशीशफूटेकितेलंकटूटे। कितेएकजूटेभयेबूटबूटे ॥
मरेकंसकेजेरहेआठभाई। भटाजेबचेतेगयेहैपराई ॥
हनैसिंहजैसेमतंगेवरूथै। हन्योरामत्योंकंसकेभ्रातयूथै ॥
पड़ोकालसोरंगकेभूमिमाँहीं। कोऊरामओरैसकैदेखिनाँहीं ॥ ४१ ॥
दोहा-रामकृष्णकीलखिविजै, शिवब्रह्मादिप्रवीन। हरषतअतिबरषतसुमन, देवदुंदुभीदीन ॥
नाचनलगींअप्सरानाना। करनलगेगंधर्वबहुगाना ॥ सुरमुनिकिन्नरभरेउछाहन। रामश्यामकोलगेसराहन ॥ ४२ ॥
सुनिवधकंसकंसकीनारी। महाराजह्वैपरमदुखारी ॥ शिरपीटतदृगआँसुनढारत। हायहायबहुबारपुकारत ॥
गिरीकंसकेऊपरआई। छुटेकेशतनुभानभुलाई ॥ औरहुनृपभ्रातनकीनारी। निजनिजपतिपैगिरींदुखारी ॥ ४३ ॥
करिआलिंगनरोदनकरहीं। बारबारपतिशिरउरधरहीं। निजनिजपतिमुखलखिदुखसानी। बोलहिंनारिविविधविधिबानी
दोहा-हायनाथधरमज्ञप्रिय, करुणाकरगुणधाम। हमअनाथतुमबिनभई, हायअवशियहिठाम ॥
तुमबिनगृहसुतअरुपरिवारा। हमहिंभयोसिगरोदुखभारा। तुमबिनप्रीतममथुरानगरी। नहिंसोहतिसिगरीविधिबिगरी ॥
भईसकलमंगलतेहीनी। लियोदैवसबआनँदछीनी ॥ ४६ ॥ सबभूतनतेबिनअपराधा। कियोद्रोहताते भैबाधा ॥
वैरबाँधिसबप्राणिनमाँहीं। मंगलपावतहैकोउनाँहीं ॥ ४७ ॥ जगसिरजकपालकसंहारक। रामकृष्णजगमंगलकारक ॥
ताहूपैतवभगिनिकुमारा। इनसोंबैरकियोनविचारा ॥ हरिद्रोहिनकोयाजगमाँहीं। सुखपावतकहुँदेख्योनाँहीं ॥ ४८ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-विलपतनृपरानिननिरखि, यदुनंदनढिगजाय। तिनकोबहुसमझायकै, दीन्ह्योप्रभुरखवाय ॥
पुनिजेकंसादिकमरे, तिनकोतहँयदुराय। मृतकक्रियाकरवायदिय, यमुनातटपहुँचाय ॥ ४९ ॥
पुनिहरिबलवसुदेवअरु, देवकिकेढिगजाय। तिनकेचरणनकीतुरत, बेरीदईकटाय ॥
पुनिजननीअरुजनकको, पंकजपाणिपसारि। कियप्रणामशिरधरिपगन, हलधरऔरमुरारि ॥ ५० ॥
तहँवसुदेवहुदेवकी, जानिदुहुँनजगदीश। शंकितह्वैनहिंमिलतभे, रहेचितैअवनीश ॥ ५१ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे चतुश्चत्वारिंशत्तमस्तरंगः ॥ ४४ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—हरिजान्योपितुमातुको, भयोहमारोज्ञान । वातसल्यरसमेटिके, जानेमोहिंभगवान ॥
असविचारिवैष्णवीसुमाया । भैफैलावततहँयदुराया ॥१॥ पुनिदोउजननदोऊकरजोरी । बोलेबारहिंबारनिहोरी ॥
हेजननीहेजनकहमारे । हमरेहितपायेदुखभारे ॥ २ ॥ ममशिशुपनपौगंडकिशोरा । भयोव्यतीतऔरहींठोरा ॥
हमरेबालखेलसुखआशा । भईतिहारीसकलविनाशा॥३॥हमअभागवशआपसमीपा । बसेनबालकालकुलदीपा ॥
पितुलालितपितुवरमहँबालक।लहतजोसुखसनेहकुलबालक॥सोहमपायेतुवघरनाँहीं।भागिकरतसोहोतसदाँहीं।४॥
दोहा—सबसुखकोसाधकअहै, ऐसोजोनशरीर । तेहिंपितुपालितप्यारकरि, देतविविधसहिपीर ॥
ऐसेजननीजनकहुँकाँहीं । उरिणहोतशतबरषहुनाँहीं ॥५॥ समरथभयोआपुसबभाँती । तनुधनतेपरिवारजमाती ॥
तबजोमातुपितैनहिंपालै । निजपुत्रननारिनकहँलालै ॥ ताहिमरेयमभटलैजावैं । मांसताहिकोताहिखवावैं ॥ ६ ॥
मातुपिताशिशुस्वकियानारी । गुरूविप्रअरुवृद्धविचारी ॥ औरहुनिजशरणागतकाँहीं । समरथहैअरुपालतनाँहीं॥
सोजीतहिंहैमृतकअजाना । श्वासलेतभस्त्राकसमाना ॥ ७ ॥ सोहमकंसराजभैपाई । नंदभवनमहँबसेलुकाई ॥
नहिंसेवनकियचरणतिहारे । इतनेदिनगेविफलहमारे ॥ ८ ॥
दोहा—परअधीनहमदोउरहे, कुटिलकंसकियबाध । करीनसेवाक्षमहुअब, तातमातुअपराध ॥ ९ ॥

श्रीशुक उवाच ।

गिरामृदुलयदुकुलसुदेवकी । सुनिमोदितवसुदेवदेवकी ॥ भूलिगयोईश्वरपरभाऊ । दोउसुतउरलगायकुरुराऊ ॥
लीन्ह्योंअंकमाहँबैठाई।सोसुखइकमुखनहिंकहिजाई॥१०॥सींचहिंसुतननैनजलधारा। रह्योनतनुकरतनकसम्हारा ॥
गद्गदगरोननिकसतिबानी।प्रीतिरीतिअतिशयअधिकानी॥यहिविधिमातुपितहिंसुखदैकै । उठेकृष्णरामहिंसँगलैकै॥
उग्रसेनकेगयेसमीपा । पगवेरीकटवायमहीपा ॥ जोरिपाणितिनसोंअसबोले । अपनेजियकेआशयखोले ॥
दोहा—तुमहिंहोनलायकअहौ, यदुकुलकेमहराज । पालहुसिगरेप्रजनको, करहुराजकेकाज ॥ १२ ॥
मैंययातिकेशापवश, ह्वैहौंनाहिंनरेश । तुममातामहमोरहो, कीजैसकलनिदेश ॥
मैंतिहरोसेवकह्वैरहिहौं । शासनसकलरावरोगहिहौं ॥ १३ ॥ मेरेसेवकभयेनरेशा । इंद्रादिकसबआयसुरेशा ॥
तुमहिंनजरदैकैयहिठामा । करिहैंशिरधरिपगनप्रणामा ॥ औरनृपनकीकेतिकबाता । तुवअधीनरहिहैंसबताता ॥
असकहिसिंहासनमँगवाई । तामेंआहुककोबैठाई ॥ गर्गादिकउपरोहितआनी । राजतिलककियसारँगपानी॥१४॥
अंधकमधुदशार्हयदुवंशी । औरहुज्ञातिबंधुसुरअंशी ॥ भागिगयेजेकंसडेराई । रहेदिशनमहँजीवलुकाई ॥ १५ ॥
दोहा—खोजिखोजितिनकोसकल, बोलिबोलियदुराय । धनदैदैसतकारकरि, तिनगृहदियोबसाय ॥ १६ ॥
तिनहिंविदेशकलेशहुलेशा । रह्योननिरखतवदनरमेशा ॥ रामकृष्णभुजरक्षणपाई । लहेमनोरथकीसमुदाई ॥
देवसरिसविहरहिंगृहमाँहीं।तिनकेसुखकैसेकहिजाँहीं१७दयादीठिजेहिंवसतसदाहीं।कोटिकलानिधिलखतलजाहीं॥
नितनितनवनवसुछबिघनेरी।नितनितहरिमुखअम्बुजहेरी॥१८॥मथुरावासीभेसुखराशी।रहेनकछुकवस्तुकेआशी॥
हरिमुखसुधादृगनकरिपाना।भेपुरकेवृद्धहूजुवाना॥१९॥रामश्यामपुनिआनँदछाये। नंदनिकटतुरतहिंचलिआये ॥
बहुविधिमिलिबोलेमृदुबानी । सुनिममविनयलेहुपितुमानी ॥ २० ॥
दोहा—पालनहमरोदुहुँनको, तुमदोउकीनअपार । जननीजनकहुतेअधिक, कीन्ह्योंपरमदुलार ॥
प्राणहुँतेहमकोप्रियमान्यो।सुहितजिदूसरकबहुँनजान्यो॥२१॥करैपुत्रसमपालनजोई । जननीजनकअहैसतिसोई ॥
कुटिलकंसकोअतिहिंडेराई। सुहितुवगृहपितुदियपहुँचाई ॥ तबहूँकंसत्रासनहिंधारी । तुमकीन्हीहमारिरखवारी ॥
तुमहींपितायशोमतिमैया।अहैंमीतव्रजलोगलोगैया॥कबहुँनआनभाँतिपितुजानेहुँ।मोहिंदोहुँनकहँनिजसुतमानेहुँ ॥
अबैजाहुवृंदावनताता । विरहतुम्हारनमोहिंसहिजाता ॥ बँधेनेहरज्जुअहैंतिहारे । तुमतेप्रियकोउनाहिंहमारे ॥

दोहा-हमनिजमीतनकोमिलन, अवशिआइहैंफेरि।मेटिव्यथासिगरीइहाँ, यदुकुलसुहृदनकेरि ॥
मेरेविरहअवशिव्रजवासी।ह्वैहैंआजुअमितदुखरासी ॥ कीजेअवशंकाकछुनाँहीं । हमएहैंविशेषिव्रजमाँहीं ॥ २३ ॥
यहिविधिवहुप्रकारसमुझाई । भूषणवसनबहुतमँगवाई ॥ कनकरजतकेपात्रघनेरे । औरहुकाँसआदिबहुतेरे ॥
दियोनंदकहँसादरनाथा। कियोप्रणामजोरियुगहाथा ॥२४॥ पुनिपुनिनंदमिलेहरिकाँहीं।रहीतनकतनुमेंसुधिनाँहीं ॥
प्रेमविकलमुखकढ़तिनबाता । आँसुनधारनैनजलजाता ॥ नंदप्रेमकरपारावारा । कोकविवर्णिलहतहैपारा ॥
जेतनेकहैंलगेंसवथोरी । किमिवरणौंथोरीमतिमोरी ॥

दोहा-जसतसकैनँदग्वालयुत, वसतभयेव्रजजाय । मानहुँसरवसआपनो, मथुरहिंदियोगँवाय ॥ २५ ॥
पुनिवसुदेवसुतनबोलवाई । दोउव्रतबंधकरनमनचाई ॥ गर्गाचारजतुरतबोलाई । औरबोलिब्राह्मणसुखछाई ॥
वेदविहितव्रतबंधकरायो।दीननमणिगणअमितलुटायो २६ पुनिवछरनयुतगायमँगाई।तिनकोकनकमालपहिराई ॥
औरहुसिगरेभूषणसाजी । वसनविशेषिढाँपिविनदाजी ॥ विप्रनअलंकारपहिराई । पूजिपाँवदीन्हीसबगाई ॥
बहुधनतासुदक्षिणादीन्ही । धरणीशिरधरिनतिबहुकीन्ही२७पुनिजोकृष्णजनमदिनमाँहीं।दशहजारगोविप्रनकाँहीं॥

दोहा-कंसभीतिकोमानिकै, मनहींमेंवसुदेव । देवेकोसंकलपकिय, जान्योनहिंकोउभेव ॥
तेसुरभीमँगायतेहिंकाला।दईद्विजनकहँबुद्धिविशाला ॥२८॥ जबव्रतबंधदुहुँनहैगयऊ।ब्रह्मचर्य्यतबदोउगहिलयऊ॥
गर्गाचार्य्यआयसुखछाई । गायत्रीदियदुहुँनपढाई ॥ २९ ॥ सबविद्यनकेप्रगटनहारे । जगपतिदोउवसुदेवकुमारे ॥
दिव्यज्ञानअपनोदोउभाई। प्रगटिमनुजवपुदियोछपाई॥३०॥ऐसेरामश्यामतेहिंछनमें।गुरुगृहवासकरनकियमनमें॥
सुवरणस्यंदनचढ़िछविधामा । गेअवंतिकापुरीललामा ॥ तहँमुनिसांदीपिनिअसनामा।रहेउज्जैननगरमतिधामा ॥
तिनकेनिकटजायदोउभाई । कियोप्रणामपगनशिरनाई ॥ ३१ ॥

दोहा-विनैकियोकरजोरिकै, हमेंपढावहुनाथ । हमदोऊतुवशिष्यहैं, धरहुमाथमहँहाथ ॥
सुंदरसरलस्वभावहिंदोऊ । जाकोंनिंदतकबहुँनकोऊ ॥ सोईरीतिगहिनिवसनलागे । गुरुकेचरणअमितअनुरागे ॥
गुरुपगकेसेवनकीरीती । अरुकरिबोजैसीगुरुप्रीती ॥ सोजगकहँसिखवतदोउभाई।गुरुगृहमहँनिवसेसुखपाई॥३२॥
शुद्धवृत्तिदोहुँनकीदेखी । उत्तमशिष्यलियेचितलेखी ॥ सांदिपिनिअतिआनँदपाई।लगेपढावनदुहुँनबोलाई ॥
प्रथमहिंवेदअंगअरुवेदा । फेरिउपनिषदसहितविभेदा ॥ ३३ ॥ धनुर्वेदपुनिसकलपढायो । मंत्रदेवतातासुबतायो ॥
धर्मशास्त्रपुनिदियोपढ़ाई । पुनिमीमांसादियोबताई ॥

दोहा-न्यायशास्त्रसिगरोसिखै, षटविधिभूपतिनीति । रामश्यामसांदीपिनी, दियपठाययुतप्रीति ॥ ३४ ॥
सबविद्याकेदोऊनिधाना । सबपुरुषनमेंदोऊप्रधाना॥एकबारजोगुरुकहिदीन्हे । सुनतहिंसकलकंठकरिलीन्हे॥३५॥
चौसठविद्याचौसठदिनमें । रामश्यामधरिलियोबुधिनमें ॥ प्रथमगाइबोद्वितियबजाउब । तीजोनाचभाउदर्शाउब ॥
चौथोनटकोनाचबजानो । पँचयोंचित्रलिखबअनुमानो ॥ छठयोंतिलकदेवबहुभाँती । सतयोंतंदुलफूलनजाती ॥
तिनकीचौकबनाउबनीकी । हेरतहरणहारजोहीकी ॥ अठयोंफूलनसेजविरचिबो । नवयोंदशनवसनअँगरचिबो ॥

दोहा-सभाबैठवेकीरचन, वसनबिछाउबतत्र । जेहिंजसतेहिंतसथापिबो, दशयोंजानहुअत्र ॥
पलँगसेजरचिबोइग्यारहिं । सलिलतरंगबजाउबबारहिं ॥ पैरबजलरोकिबोत्रयोदश । चेटककरिबोअहैचतुर्दश ॥
सुमनमालनिरमाणपंचदश । पागबाँधिबोजानहुषोडश ॥ रतनजडबजानियेसप्तदश । नारीभूषणरचबअष्टदश ॥
बहुसुगंधनिरमाणवोनीसा । भूषणपहिराउबहैबीसा ॥ इंद्रजालजानिबोइकीसा । करिबोबहुरूपहिंबाइसा ॥
हस्तलाघवीहैतेइसा । पाकविविधरचिबोचौबीसा ॥ रचिबोबहुमदपानपचीसा । छींपीकर्मजानुछब्बीसा ॥

दोहा-कठपूतरीनचाइबो, सत्ताइसयोंभेद । वीणाडमरुबजायबो, अष्टाइसयोंवेद ॥
कहनीजानबहैउनतीसा । मूरतिरचनजानियेतीसा ॥ सभाचातुरीहैइकतीसा । पुस्तकबाँचबहैबत्तीसा ॥

नाटकशास्त्रज्ञानतेतीसा। पुरनसमस्याहैचौतीसा॥ शरचढायरचिवोपैंतीसा। धातुनताररचवछत्तीसा॥
काष्ठकर्मजानहुँसैंतीसा। गृहरचिवोसवविधिअरतीसा॥ धातुज्ञानहैउनतालीसा। सुवरणरजतरचवचालीसा॥
रतनरंगरचिवोइकतालिस। रतनखानिजानिबोबयालिस॥वृक्षजातजानिबोतेतालिस।पशुखगयुधविद्याचौंवालिस॥
दोहा—शुकमैनादिपढ़ाइवो, जानहुपैंतालीस। वरतेउच्चाटनकरब, यहहैषटचालीस॥
केशरचवऐंचवसैंतालिस। मुष्टिप्रश्नकहिवोअरतालिस॥ पढ़वपारसीहैउनचासा। ज्ञानदेशभाषापंचासा॥
कहवभविष्यप्रश्नइक्यावन। पूजनयंत्ररचवहैबावन॥ तंत्रशास्त्रपढ़िबोहैतिरपन। रतनवेधिबोजानहुचौवन॥
मानसप्रश्नकहवहैपचपन। विविधकोपकोजानवछप्पन॥ बहुकरिएकसिद्धिसत्तावन। ठगवदूसरेकोअट्ठावन॥
सूतरचवरेशमपुनिउनसठि। जुवाखेलिवोसाठिजानुगठि॥आकर्षणकरिवोहैइकसठ। बालखेलकहियेपुनिबासठ॥
दोहा—तिरसठविघ्नविनाशिवो, कौनिहुँविधिजोहोय। चौसठिथोरीवस्तुको, बहुतदेखावैसोय॥
ये हैंचौसठहूँकला, वर्णोंहिंकविमतिधाम। इकइकदिनमेंसिखिलिये, रामऔरघनश्याम॥
गुरुकेनिकटजाइकुरुराई। जोरिपाणिअसविनयसुनाई॥ माँगहुगुरुदक्षिणाविचारी।देहैंजोरुचिहोयतुम्हारी॥३६॥
रामश्यामकीसुनिमृदुवानी। मनहिंगुन्योसांदीपिनिज्ञानी॥ इनकीमहिमाअहैमहाई। नहिंमानुषकैसीप्रभुताई॥
तातेकरिसलाहनारीसों। लेवदक्षिणागिरिधारीसों॥ असकहिउठिनारीढिगजाई। करिसलाहद्रुतबाहरआई॥
रामश्यामसोंवचनउचारा।क्षेत्रप्रभासहिंमोरकुमारा॥ बूडिमरयोसागरमहँजाई। सोईदक्षिणादीजैल्याई॥ ३७॥
दोहा—रामश्यामगुरुवचनसुनि, कह्योजोरिकरबात। देहैंतुवसुतदक्षिणा, भलीकहीयहतात॥
असकहिचढ़िस्यंदनप्रभुदोऊ। गयोनऔरसंगमहँकोऊ॥ क्षेत्रप्रभाससिंधुकेतीरा। जायभयेठाढेदोउवीरा॥
हरिबलआगमजानिनदीशा।तेहिंक्षणलैबहुरतनमहीशा॥आयभेंटदैपगशिरनायो॥३८॥तबप्रभुताकोवचनसुनायो॥
देहुसिंधुगुरुपुत्रतुरंता। नातोकरबतिहारोअंता॥ तिहरीतुंगतरंगअपारा। बूड़िगयोयहिठौरकुमारा॥ ३९॥
तबसागरकरजोरिडेराई। रामश्यामकोविनयसुनाई॥

समुद्र उवाच।

हमनहरचोगुरुपुत्रतिहारो।दैत्यपंचजनइकबलवारो॥रहतसलिलमधिशंखसरूपा॥४०॥ तौनहरचोगुरुपुत्रअनूपा॥
दोहा—सुनतसिंधुकेवचनप्रभु, तुरतसलिलमहँजाय। निरखिपंचजनदैत्यको, दियोकृपाणचलाय॥
तुरतकढ्योदानवकरशीशा।ताकेउदरमाँहजगदीशा॥हेरचोगुरुसुतकोनहिंपायो॥४१॥निरख्योएकशंखछविछायो॥
पांचजन्यजाकरहैनामा। गह्योतुरंतताहिघनश्यामा॥ सागरतेकढिरथमहँआये। यमपुरकोगमनेअतुराये॥ ४२॥
रामसहितयमपुरमहँजाई। पांचजन्यदियशंखबजाई॥ सुनतशंखध्वनितहँयमराजा। आयोआशुजोरिसमाजा॥
रामश्यामकहँकियोप्रणामा।लैगोपुनिलेवायनिजधामा॥४३॥ पूजनकियषोडशहुप्रकारा।नैननबहतिप्रेमजलधारा॥
दोहा—पुनियमबोल्योजोरिकर, मैंतुम्हरोहौंदास। करौंकाहमैंआपको, आयसुरमानिवास॥ ४४॥
सुनियमवचनतहाँभगवाना। मंदमंदमुखकियोबयाना॥ तासुकर्मवशगुनिअधिकारा। लायेसंदीपिनीकुमारा॥
सोगुरुसुतममदेहुमँगाई। ममशासनशिरधरियमराई॥४५॥ सुनिहरिवाणीसंयमनीशा।दियोतुरतसुतलायमहीशा॥
रामश्यामलैगुरुसुतकाँहीं। आयेलौटिगुरूगृहमाँहीं॥ दियोगुरूकहँगुरुसुतप्यारो।कहँलैहौपुनिवचनउचारो॥४६॥
सांदीपिनिअतिआनँदपाई। रामश्यामकहँगिरासुनाई॥तुमसबविधिगुरुदछिनादीन्ह्यों।कोउनहिंअसगुरुपूजनकीन्ह्यों
दोहा—जाकेतुमसमशिष्यहैं, तागुरुकोमनकाम। कबहुँनकछुबाकीरहत, रहतमुदितवसुयाम॥ ४७॥
जाहुभवनअपनेदोउभाई। जगमेंकीरतिहोइमहाई॥ यहलोकहुपरलोकअतूली। कबहुँनकौनिहुँविद्याभूली॥४८॥
यहिविधिगुरुशासनकहँपाई। रामश्यामअतिआनँदछाई॥सुवरणस्यंदनचढितेहिंकाला।गमनेआनकदुंदुभिलाला॥

मारुतसरिसवेगहैजाका। वहरतमेघसरिसजेहिंचाका॥ ऐसेस्यंदनचढ़िदोउभाई। आयेमथुरापुरीसोहाई॥ ४९॥
रामश्यामकहँलखिपुरवासी। भयेसकलअतिआनँदरासी॥ जेदिनबीतेबिनभगवाना। तेदिनबीतेबरषसमाना॥

दोहा—पुनिमथुराकेजनसबै, हरिपदनैनलगाय। मनहुँहेरानोसर्वसहु, गयेफेरिसबपाय॥ ५०॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिरा
जश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे पंचचत्वारिंशस्तरंगः॥ ४५॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—यदुपुरमेंमंत्रीप्रवर, कृष्णसखाअतिप्यार। शिष्यबृहस्पतिकोरह्यो, उद्धवबुद्धिउदार॥ १॥

हरिभक्तनमेंपरमप्रधाना। हरिबिनदूजोकबहुँनजाना॥ अंतरंगसंगीहरिकेरो। प्रीतिपात्रप्रभुकेरनिबेरो॥
ऐसेउद्धवकहँइककाला। करसोंकरगहिकैनँदलाला॥ बोलेमधुरवचनमुसक्याई॥ २॥ सखाजाहुद्रुतब्रजैसिधाई॥
मातुपितामममनंदयशोमति। ह्वैहैंमेरेविरहदुखितअति॥ जिनकोजायदेहुसमुझाई। ऐहैंब्रजमेंअवाशिकन्हाई॥
नंदयशोमतिदुखनहिंकरहू। कछुककालउरधीरजधरहू॥ कान्हतुम्हारपुत्रकहवाई। अवनऔरकेह्वैहैंजाई॥

दोहा—असकहियोंकान्हरकह्यो, वहमाखनअतिमीठ। ताकीसुधिकरिकैहमहिं, लगतसुधासुठिसीठ॥

औरहुतुमबहुभाँतिबुझाई। विरहशोकसबदियहुमिटाई॥पुनिगोपिनकेनिकटसिधारी। यहपातीतुमदिहेहुहमारी॥
कहियोकोमलकोमलबतियाँ। नातोफटिजैहैतिनछतियाँ॥३॥गोपिनकेहमप्राणपियारे। हमपरतनुमनधनजनवारे॥
ममहितछोंड़िदईकुलकानैं।मोहिंछोंड़िदूसरनहिंजानैं॥ऐसीब्रजवासिनीवियोगिनि।मोहिंबिनशोकसिंधुकीभोगिनि॥
केवलब्रजमेंपरोशरीरा।तिनकोजियममढिगमतिधीरा॥ममपथलखतदिवसनिशिजाती।पपिहातकतपंथजिमिस्वाती

दोहा—लोकलाजकुलधर्मसब, तजेंजेमेरेहेतु। तिनकीमैंसबभाँतिते, सुरतिकरौंकुलकेतु॥ ४॥

सवैया—विरहानलतेसबदेहदहीममनेहकीबाँधीजँजीरिनीहैं।अँगुरीनमेंछालेपरेगनतेतजेभोजनपानहुजीरिनीहैं॥
रघुराजबुझाइयोऊधवजायसबैपहिलेकीअमीरिनीहैं। अबमेरेबिछोहतेप्यारीअहीरिनीह्वैगईखासीफकीरिनीहैं॥

दोहा—वृंदावनतेमधुपुरी, यदपितीनहींकोस। तदपिकोसकोटिनभई, ब्रजवनितनबिनहोस॥ ५॥

सखाकरततिनकोसुधिमोरी। व्यथाहोतह्वैहैनहिंथोरी॥ जीवतपावहुधौंअवनाहीं। यहसंशयमेरेमनमाँहीं॥
पैहमआवतसमैपुकारी। कह्योतिन्हैंआइहौंसिधारी॥ यहआशाअटकेजियह्वैहैं। बिनागवँनतुवतनुतजिदैहैं॥
अवनहिंऊधवकरहुविलम्बा। जाहुहोहुब्रजकेअवलम्बा॥ मेरेविरहवारिनिधिमाँहीं। बूड़तगहहुसुंदरिनकाँहीं॥
तेमोहुँकोतनुमनतेप्यारी। तिनसुधिबिसरतिनाहिंबिसारी॥ कारजवशमैंरहौंइहाँहीं। प्राणवसतब्रजनारिनमाँहीं॥

दोहा—मेरेअरुब्रजतियनके, जुरतरहेजबनैन। कबहुँपलकपरिकलपसम, करतेरहेअचैन॥

बहुतकहौंकातुमहिंबुझाई।जसमानहिंतसदिहेहुमनाई॥ब्रजनारिनगाथासुखगावत।वचनकढ़तनहिंगरभरिआवत॥
उद्धवप्रीतिरीतिहैजैसी। ब्रजमेंजायदेखिहौतैसी॥ वैकालिंदीकुंजनकेरी। केहिविधितजैंसुरतिमतिमेरी॥
त्रिभुवनराजविभौबहुनीको। ब्रजसुधिकरतलगतमोहिंफीको॥गोपीप्रेमपयोनिधिभारी। ब्रजधरणीवटपत्रसुखारी॥
आदिबालखेलततनुमेरो। लहिसुरकारजपवनवनेरो॥ लागिअकूरतरंगमहाई। वटदलतेदीन्होंबिलगाई॥

दोहा—औरहुअसकहियोउन्हें, हमतुमनहिंबिलमंत। जहाँकंततहँकामिनी, जहँकामिनितहँकंत॥ ६॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिप्रभुकोआयसुपाई।उद्धवअतिशयआनँदछाई॥करिवंदनयदुनंदनपायन। चढ़िस्यंदनगवँन्योअतिचायन॥
गयोनंदगोकुलनृपराई॥७॥ अस्ताचलअथवतदिनराई॥ साँझसमैसुरभीचरिवनते। आवतरहींसबैखरिकनते॥

उड़ीचहूँकितगोखुरधूरी। ठौरठौरब्रजमेंगयपूरी ॥ ८ ॥ कहुँकहुँवृषभमहामतवारे। लरहिंधेनुहितसींगसुधारे ॥
गर्जहिंमेघसरिसचहुँओरा। चलहिंधेनुपाछेसबठोरा ॥ बोयनभारभरींतहँगाई। विचरहिंचहुँकितआनँदछाई ॥

दोहा--तिनकेपाछेबाछरा, चलहिंकरतमृदुशोर। मानहुँनिजनिजमातुप्रति, पयहितकरहिंनिहोर ॥

गोवैंनिजबछरनप्रतिधावें। रोकनकहँअहीरकहुँआवें ॥ ९ ॥ जहँतहँबछराकूदिरहेहैं। पियनहेतुअतिशयउमहेहैं ॥
छायरह्योगोदोहनशोरा। प्रतिगोशालनमेंचहुँओरा॥कहुँकोउकहहिंबाछराछाँड़हु। कहुँकोउकहैंअबैकछुआड़हु ॥
कोउकहधेनुधूमरीधोरी। हैंकहँनीलीलालकलोरी ॥ कोऊकहतदूधलैजाहू। दोहनिदेहुकहतकोउकाहू ॥
कोऊगोपतहँवेणुबजावें। कृष्णविचित्रचरित्रनगावें ॥ १० ॥ ऐहैंआजुविशेषकन्हाई। असगोपीअभिलाषबढ़ाई ॥
भूषणवसनपहिरिअतुराई। खड़ीपंथमहँनैनलगाई ॥

दोहा--ऐसहिंअभिलाषाभरे, गोकुलगोपीग्वाल। चितवहिंमथुराकीडगर, आवनचहतगोपाल ॥

रामश्यामकेचरितसोहावन।गोपीगायरहींमनभावन॥११॥कोउगोकुलकेग्वालिनिग्वाला। आवनहेतुनंदकेलाला ॥
पूजहिंदेवीदेवमनावें। धूपदीपनैवेद्यलगावें ॥ अग्निअतिथिरविपितरनपूजैं। जामेंसकलमनोरथपूजैं ॥
कहहिंप्रीतिअवछोडिविहारी। औरठौरनहिंहोयहमारी॥ जन्मदेहितेहियोनिविधाता।जहँनिरखहिंनैननदोउभ्राता ॥
असकहिफूलनमालचढाई। करहिंवंदनाशशिनवाई ॥ कृष्णप्रीतिब्रजखोरिनखोरी। विहरतिमनुसरूपधरिगोरी ॥
धामधामअरुठामहिंठामा। निकसिरह्योसुखश्यामहिंश्यामा ॥

दोहा-कुरुपतिवहगोकुलनगर, लखिनपरचोअसकोय। हायश्यामामिलिहोकबै, असनकहतजोहोय ॥

ऐसहुउद्धवतहँनहिंजोवत। श्यामनामसुनिजोनहिंरोवत॥१२॥फूलेकुसुमढरतमकरंदा।हरिविरहीमनुआँसुनवृंदा ॥
बैठतरुनखगशोरसुनावत। मानहुँकहहिंकृष्णअबआवत॥कुंजनकुंजनगुंजहिंभौंरा। कहहिंमनहुँकहँनंदकिशोरा ॥
विकसहिंसरासिजसरनिप्रभातै। मनुहरिआगमगुनिहरषातै॥साँझसमयमुद्रितनहिंभाये।मनहुँदुखीगुनिहरिनहिंआये॥
कोककराकुलमदगुमराला। टेरतमनहुँहायनँदलाला ॥ गौवैंमथुरामगकछुजावैं। हरिहिनतकिरोवतफिरिआवैं ॥

दोहा-हरिणीअरुहरिणीसकल, जेब्रजबसतसदाहिं। धावतकुंजनिकुंजप्रति, मनुहेरहिंहरिकाँहि ॥

उद्धवप्रेममयोब्रजदेख्यो। धन्यधन्यत्रिभुवनतेलेख्यो ॥ असलागतउद्धवकेमनमें। कहुँतेकृष्णकढ़तयहिछनमें ॥
लख्योनकौनौछलब्रजमाँहीं। जहँहरिचरणचिह्नहैंनाँहीं॥खातपियतबागतअरुबैठत। हँसतबतातकढ़तअरुपैठत ॥
गोकुलमेंसबटोलहिंटोलैं। गोविंदगोविंदगोविंदबोलैं ॥ सोहतश्यामरंगयमुनाको। मनुहरिध्यानप्रगटरँगताको ॥
मंदधारभैकुशिततरंगा। हरिबिनबाँधतमनहुँअनंगा॥निरखिपरतिपियरीब्रजधरणी। कृष्णविरहमनुभईविवरणी ॥

दोहा-उद्धवब्रजमंडललख्यो, रँग्योकृष्णअनुराग। परमप्रमोदितकरतभो, त्रैप्रणामबड़भाग ॥

रहेखेलतेबाहरबाला। उद्धवकोरथनिरखिविशाला ॥ तेद्रुतदौरिकह्योसबपाँहीं। नंदलालआवतब्रजमाँहीं ॥
बालवचनसुनिकैब्रजवासी। धायेदेखनलहिसुखरासी ॥ कहँहैंकहँहैंअसरवभयऊ। धरीएकसबदुखमिटिगयऊ ॥
नंदहुँनिकसिबाहिरेआई। पूँछनलागेशिशुनबोलाई ॥१३॥ देख्योउद्धवकोरथजबहीं। जान्योकृष्णसखाहैंतबहीं ॥
हरिकोमिलनमोदभोआधा।चलेमहरमिटिगैकछुबाधा॥आगूचलिउद्धवकहँलीन्ह्यो।नंदहिंलखिसोउरथतजिदीन्ह्यो॥

दोहा-आयआशुहींनंदढिग, कीन्ह्योंचरणप्रणाम। लीन्ह्योंनंदलगायउर, उद्धवकोतेहिठाम ॥

भयोतासुउरआनँदधामा। मानहुँआजुमिलेबनश्यामा ॥ पुनिकरगहिगेभवनलेवाई। दीन्ह्योंपर्यंकहिंबैठाई ॥
उद्धवकोयदुपातिसमजाना। नंदकियोसतकारमहाना॥१४॥विविधभाँतिमेवापकवाना।अरुव्यंजनमनरंजननाना ॥
कनकथारभरिनिजकरलाये। सादरउद्धवकाँहिंजिमाये ॥ पदपखारितांबूलखवाई। सुखितसेजउद्धवबैठाई ॥
चापतचरणनंदरतिसाने। मेटिपंथश्रमवचनबखाने ॥ मथुरातेउद्धवभलकीन्ह्यों। आयजोहमकहँदर्शनदीन्ह्यों ॥
तुमहौलालसखाअतिप्यारे। प्राणहुँतेप्रियअहौहमारे ॥

दोहा-अबहमपैकरिकैकृपा, कहहुसकलकुशलात। रामश्यामकोछोड़िमम, दृगनहिंद्वितियदेखात ॥१५॥
हैंवसुदेवकुशलबड़भागी। सखाहमारपरमअनुरागी॥तिनसहितवसतगृहनीके। अहैंसुहृदउनकेप्रियजके ॥१६॥
भलीभईबैरीपगछूटी। भलीभईचिताचितटूटी॥ भलीभईजोभ्रातसमेतू। कंसमारिगोपापनिकेतू॥
निजपापहिंतेलह्योविनासा। करतरह्योसाधुनकहँत्रासा॥ मानतरह्योवैरयदुकुलको। फोरनचह्योधर्मकेपुलको॥
पैइकअचरजलागतप्यारे।लघुबालककंसहिंकिमिमारे१७॥उद्धवकहहुएकअबबाता।जेहिंसुधिआवतमानभुलाता॥

दोहा-कबहूँकाहूसोंकहूँ, कान्हरसुरतिहमारि। करतअहैंकीनिपटकै, दीन्ह्योंहमहिंबिसारि॥
कबहुँयशोमतिकीसुधिकरहीं। जेतिनकेदुखपावकजरहीं॥ जबतैमैंमथुरातेआयो। तबतेयशुमतिअन्ननपायो॥
श्यामश्यामरटमुखमेंलागी। जरतिवियोगदशाकीआगी॥ उद्धवकहहुसखालालनके। रहेअनोखसुवनग्वालनके॥
तिनकीकरतकबहुँसुधिप्यारो। धौंव्रजकोखेलिबोबिसारो॥ केहिंवनआजुचरावनजाँहीं। रहोपूँछतोअसजिनपाँहीं॥
तिनकीसुरतिकरतकहुँलाला। कीधौंभूलिगयोयहिकाला॥ जिनगोपनकेघरमहँजाई। माखनखातोरह्योचोराई॥

दोहा-करतसुरतितिनकीलला, उद्धवदेहुबताय। सरबसमेरोमधुपुरी, लीन्ह्योंदैवछोड़ाय॥
उद्धवकहहुकान्हव्रजकेरी। करतकबहुँसुधियहिदिशिहेरी॥जाव्रजमेंकरिमाखनचोरी॥खातफिरयोवहखोरिनखोरी॥
याव्रजकोहैकान्हरनाथा। उद्धवकहौंछुयेतुवमाथा॥ वृंदावनकोसुमिरणआवत। जहाँरह्योबाँसुरीबजावत॥
गिरिकीसुधिभूलीकीनाँहीं।जेहिंदिनसातधरयोकरमाँहीं१८उद्धवकबहुँआइहैंलालन।कबहुँकरिहिंग्वालनकुलपालन।
कबहुँआपनेसखनविलोकी। कबहुँकरिहिगोकुलहिंअशोकी॥कबहुँनरह्योनिठुरअसलाला।ऐहैइतविशेषिकेहुँकाला॥

दोहा-कौनदिवसवहहोइगो, जबऐहैंव्रजलाल। पूरणचंदसमानमुख, कवलखिहोबनिहाल॥
जबऐहैंव्रजनगरकन्हाई। आननआभदिशानभछाई॥ जेहिंआननमहँसुभगनासिका।मंदहँसनिआनँदप्रकाशिका॥
प्रफुलितनीरजसमयुगनैना॥चितवतकेहिंनभरताचितचैना।दावानलतेव्रजहिंउबारयो।सातदिवसनखपरगिरिधारयो।
वृषभासुरकालीभयतेरे। लियबचायव्रजग्वालघनेरे॥ जबजबआयपरीव्रजभीती। लियबचायकान्हरअरिजीती॥
उद्धवअबव्रजकौनबचैहै। हमहिंयशोमतिकोसुखदैहै॥२०॥ कोवृंदावनधेनुचरैहै। कौनमाधुरीवेणुबजैहै॥
कोदधिमाखनदूधचोरैहै। कोहँसिहँसिमृदुबैनबतैहै॥

दोहा-नंदबबाकहिकौनअस, गोद्दरैहैमोहिंजौन। मैयाभोजनदेहुमोहिं, कहिहैयशुदेकौन॥
उद्धवकान्हसुरतिजबआवति। तबदवारिसीदेहँजरावति॥ सिगरेअंगशिथिलह्वैजाँहीं।फेरिकराहिंकारजकछुनाँहीं॥
दिनबीततनहिंबिनाकन्हाई। नैननींदनहिंनिशासिराई॥२१॥ईयमुनाकीकूलनिकुंजें। जिनमेंअलिकुलमंजुलगुंजें॥
तेकान्हरबिनसोहहिंनाहीं। जिमिबिनजीवशरीरवृथाहीं॥ यागोवर्धनगोसुखदाई। भोदुखदायकबिनाकन्हाई॥
यावृंदावनअतिरमणीको। बिनलालनलागतअतिफीको॥ परेश्यामपगजेहिंअस्थाना। तेउपटेद्रविगयोपषाना॥

दोहा-तेसुखबातीअबभये, लखिछातीफटिजाति। केहिंभाँतीव्रजमेंबसैं, नहिंजातीदिनराति॥
जहँजहँखेलतरहेकन्हाई। तेथलअबकैसेलखिजाई॥ येईथलतबरहेरसाला। तेईलखततनुहोतदुशाला॥
उद्धवकेहिविधिसुधिबिसरावैं।असकहुँनहिंजहँलालनभावैं२२उद्धवरामश्यामसुतदोऊ।इनहिंकहतसुरवरसबकोऊ॥
देवकाजहितव्रजमहँआये। ऐसहिंहमसोंगर्गहुगाये॥२३॥ कंसरह्योअतिशयरणघोरा। दशहजारहाथीकरजोरा॥
निमिमल्लहुमुष्टिकचाणूरा। शलतोशलकूटहुबलपूरा॥ नागकुवलयापीडमहाना। सहसनागसमजोबलवाना॥

दोहा-इनसबकोअतिसहजहीं, हनेरामअरुश्याम। बिनप्रयासगजयूहजिमि, हनैसिंहबलधाम॥२४॥
तीनतालकीधनुलंबाई। वज्रसारसमजेहिंकठिनाई॥ ताहिएककरतेगहितोरा। ऊखदंडजिमिसिंधुरछोरा॥
सातदिनानखपरगिरिधारयो॥२५॥वृषप्रलंबधेनुकसंहारयो॥तृणावर्त्तबकआदिसुरारी।हन्योखेलतहिंमहँगिरिधारी।
तातेअसमनपरतविचारा।रामहुँश्यामईशअवतारा॥निरखिदुहुनकरसरलसुभाऊ।नहिंजनातमोहिंईश्वरभाऊ।२६॥

श्रीशुक उवाच ।

कहतकहतयहिविधिहरिलीला। सुमिरतश्यामसरूपसुशीला॥कढोनबैनगरोभरिआयो । नेहनीरनिधिनंदनहायो ॥
दोहा–प्रेमविकलव्रजपतिभये, गयेतुरतहैंमौन । हरिकेतनुमेंमनबस्यो, तनुरहिगोव्रजभौन ॥ २७ ॥
जबतेमधुनगरीतेनंदा । आवतभयेविहायमुकुंदा ॥ तबतेयशुमतिअतिदुखपागी । भोजनपानसबैदियत्यागी ॥
परीरहतिधरणीविनशेजू । मनहुँफस्योहरिविरहकरेजू ॥ बंदहोतनहिंआँसुनधारा । हैनहिंतनुमेंतनकसँभारा ॥
हाकन्हुवामुखमेंरटलागी । चितवतरैनदिवसदुखपागी ॥ नंदहुँयदपिबहुतसमुझायो । पैताकेमनधीरनआयो ॥
सुनतनंदउद्धवसंवादा । कोउगोपीलहिकैअहलादा ॥ दौरियशोदहिंवचनसुनायो । कान्हसखामथुरातेआयो ॥
दोहा–कान्हनाउसुनिश्रवणमें, उठीतुरतअकुलाइ । गिरीकहतकन्हुवाँकहाँ, उद्धवकेढिगजाइ ॥
उद्धवसोअसकह्योयशोदा । कन्हुवाबसतअहैयुतमोदा॥कहँमाखनपावतवहहोई । केहिढिगरहतहोइगोसोई ॥
कौनकरतहै हैसबसोंपति । नहिंमथुरामहँवसतियशोमति॥बीततरह्योनपहरदिवसजब । देतीरहीखवायताँहितब ॥
निजकारजवशमथुरामाँहीं । तिनकीसुरतिकरीकोउनाँहीं ॥ व्रजआवनपावतनहिंहोई । रोकतहै हैंशठसबकोई ॥
सुमिरतयदुपतिगुणनिकलापा।करतियशोमतिविविधविलापा॥बहतिपयोधरतेपयधारा।तैसाँहिंदृगतेआँसुअपारा ॥
दोहा–नंदयशोमतिकोअतित, हरिमेंलखिअनुराग । ढारतदृगजलनंदसों, कहउद्धवबड़भाग ॥ २९ ॥

उद्धव उवाच ।

धन्यधन्यहोनंदयशोमति । नारायणमहँकियऐसीमति ॥ जगकेजननमाहँसुखदायक । तुमहींसत्यसराहनलायक॥
हरिमहँजसतुवकियअनुरागा । तैसोतुमहिंकियोबड़भागा॥औरजीवकोऊजगमाँहीं।मेरेदृगनपरतलखिनाँहीं॥३०॥
येदोउजगकारणभगवाना । रामश्यामहैंपुरुषप्रधाना॥भूतनहै व्यापितभगवाना।प्रेरकअहैंविविधविधिज्ञाना॥ ३१ ॥
जोजनप्राणवियोगकालमें । सुधिमनछनभरिकियगोपालमें॥सोजनकर्मवासनामेटी । निपटनिडरहै यमलघुसेटी ॥
फैलावतरविसरिसप्रकासा । गमनतरमानिवासनिवासा ॥ ३२ ॥
दोहा–अखिलहेतुमानुषवपुष, श्रीनारायणमाँहिं । तुमदोऊनितनितनयो, कियअनुरागसदाँहिं ॥
जेपरमारथपंथासाकी । तुमहिंकरनकछुरहीनबाकी ॥ ३३ ॥ थोरेहिकालमाहँव्रजआई । तुमकोसुखदेहैंयदुराई ॥
तुमसतिमातुपिताहरिकेरे । प्रेमीतुमसमपरैनहेरे ॥ ३४ ॥ यदुकुलकोवैरीनृपकंसा । रंगभूमिकरितासुविध्वंसा ॥
तुम्हरेनिकटआयदोउभाई । जौनदियोअपनेमुखगाई॥सोकरिहैंसुनिअवशिगोविंदा।तिनसमसत्यसंधकोनंदा ॥३५॥
शोचकरहुनहिंदोउबड़भागी । तुमसमकोऊनहरिअनुरागी॥ निरखहुगेसमीपयदुराई।हरिसबथलनिवसतश्रुतिगाई॥
दोहा–बसतदारुमहँजिमिअनल, मंथतहोतउदोत । तिमिव्यापकहरिसकलथल, प्रगटप्रेमतेहोत ॥ ३६ ॥
नहिंतिनकोअप्रियाप्रियकोऊ।नहिंअभिमाननेकतनुहोऊ॥ऊँचनीचकोहुकोनहिंजानत।सबजीवनसमानप्रभुमानत॥
नहिंमातानपितानहिंनारी । नहिंसुतशत्रुमित्रहितकारी । नहिंतिनकेआपनोपरायो । कर्मअधीनजन्मनहिंगायो ॥
पंचरचितनहिंअहेशरीरा ॥३८॥ पैसाधुनरक्षणमतिधीरा ॥ उत्तमअधमयोनिमहँनाथा।लैअवतारनकरहिंसनाथा ॥
करहिंअनेकनजगमहँलीला।जिनकोनितगावहिंशुभशीला३९सतरजतमविनयदपिमुरारी।लीलाहिततबहूँतनुधारी॥
उत्पतिपालनअरुसंहारैं । करहिंकृष्णइकयहसंसारैं ॥ ४० ॥
दोहा–भ्रमतमाहँजिमिलखिपरै, सिगरोजमतभ्रमात । हैचितकरतामोहवश, आत्माजनहिंजनात ॥ ४१ ॥
हरितुम्हरेहीसुतनहिंताता।सकलजगतकेसुतपितुमाता॥अहैंनियंतासकलजगतके।जगआतमसुखदानिभगतके ४२
देख्योसुन्योभूतअरुभावी । वर्तमानअरुप्रश्नजवावी ॥ चरअरुअचरछोटबडजेते । हरिबिनहैंनपदारथतेते ॥
परमारथसरूपयदुराई । यामेनहिंसंशयव्रजराई ॥ ४३ ॥ ऐसीसुनिउद्धवकीबानी । नंदयशोमतिअसअनुमानी ॥
उद्धवतोकहवावतज्ञाता । यहबोलतउलटीसबबाता ॥ कान्हरमेरोप्राणपियारो । ताहिकहतपितुमातुहमारो ॥

दोहा–कान्हविरहतेप्राणमम, कढ़नचहतयहिकाल । उद्धवसमुझावतकहा, राचेरांचेबातनजाल ॥
यहिविधिउद्धवनंदयशोमति । कियव्यतीतवतरातनिशाअति ॥चारिदंडजबरहीत्रियामा।उठतभईसिगरीव्रजवामा॥
इकएकनकोकहीपुकारी । उठहुसबैसखिकरहुतयारी ॥ तुरतसबैदधिमंथहुआली । ऐहैंआजुअवशिवनमाली ॥
जागितुरंततहाँव्रजनारी । निजनिजभौनदीपबहुबारी ॥ निजनिजगेहलीपिअरुझारी।गृहकीसबविधिसुछबिसँवारी॥
महामधुरदधिमंथनलागीं।यदुपतिचरणकमलअनुरागीं॥हरिऐहैंअसकियेविचारा।कीन्हेंसकलभाँतिशृंगारा ॥ ४४ ॥
दोहा–इकदृगसोंदधिदेखतीं, इकदृगभरिअनुराग । मथुराकीमगहेरतीं, माधौमेंमनलाग ॥ ४५ ॥
ऐंचहिंरजुयुगपंकजपानी । जगमगातजेवरछबिखानी ॥ होतकरनकंकणझनकारी । फैलतिवदनचंदउजियारी ॥
लफतिलंककछुकछुकुचभारा । टूटनचहतमनहुँहरिबारा॥उपरउरोजनडोलतहारा।मनुयुगशिवशिवसुरधुनिधारा॥
डोलतकुंडलअमलकपोला।मदनमीनमनुछबिसरलोला॥उदितपूरशशिमुखछबिजागा।मनउमँग्योहरिकोअनुरागा॥
ऐंचतरज्जुवपुषचलिजाँहीं । मनहुँकनकलतिकालहराहीं ॥ चंदनचंद्रकयदपिलगावैं । तदपितजीविरहानलजावैं ॥
दोहा–भैरविआदिकरागिनी, भैरवआदिकराग । प्रातकालकेऔरसब, करिकैसुरनाविभाग ॥
श्रीअरविंदविलोचनकेरो । गावहिंगोपीसुयशघनेरो ॥ स्वरलगायलेतींबहुताना । नकिजातींतीनऊप्रमाना ॥
बोलतसुंदरसुरनमथानी । मानहुँदेतिखरजसुरसानी ॥ गोपीगावनकीध्वनिजाई । रहतिदेवलोकनलगिछाई ॥
श्रीगोविंदकेगुणगणगाना।करतअमंगलभंगदिशाना॥४६॥श्यामसुयशव्रजमेंचहुँओरा।छायरह्योअतिमंजुलशोरा ॥
सोसुनिउद्धवजानिप्रभाता । गयेयमुनमज्जनाहितगाता ॥ उदितभयेपूरबदिशिभाना । पूरणभयोप्रकाशदिशाना ॥
दोहा–उद्धवकोस्यंदनकनक, रचितपरमछबिवार । खडोरह्योनिशिभरनृपति, निकटनंदकेद्वार ॥
जानिप्रभातसबैव्रजनारी । दधिकोमथिबोदियोनिवारी ॥ नंदद्वारह्वैयमुननहानै । जुरिव्रजवनितनकियोपयानै ॥
कुंदनस्यंदनउद्धवकेरो । व्रजनारीनिजनैननहेरो ॥ ह्वैकैचकितभईंतहँठाढीं । पूँछतभईंशंकउरबाढ़ी ॥
अलीकौनकोयहरथआयो।नंदद्वारकछुउजरबनायो॥४७॥कोउकहआयोअवशिकन्हाई।फेरितासुहिव्रजकीसुधिआई॥
कोउकहश्यामबडोनिरमोही । कबहुँनऐहैंव्रजसुधिवोही ॥ काहेकोवहव्रजमेंऐहैं । कौनसुमतियहबातासिखैहैं ॥
दोहा–कोउपुनिबोलीसुनिसखी, असमेरेमनमाँहिं । रथचढिगमनतनंदपुनि, कान्हलेवावनकाँहिं ॥
कोउकहयहूबातनहिंठीकी । सुनहुसजनिसिगरीममजीकी ॥ नामअक्रूरक्रूरनिरदाया । जाकोप्रथमहिंकंसपठाया ॥
सोआयोजेहिंकारजहेतू । सोमैंकहहेदेतिहौं नेतू ॥ प्रथमहिंव्रजमंडलमहँआयो । रामश्यामकोबहुबहकायो ॥
पुरलैजायकंसकुटवायो । ठगिनंदहिंव्रजकोपठवायो ॥ अबव्रजबालनबालनकाँहीं । आयोपुनिकैयहव्रजमाँहीं ॥
यहविश्वासघातकोपूरा । नामअक्रूरकलुषकोकूरा ॥ निजस्वामीकोभोसगनाँहीं । तौअबसगह्वैहैकेहिकाँहीं ॥
दोहा–कोउकहयहपायोकहाँ, हरिव्रजतेलैजाय । इतव्रजतियउतकंसकी, दियआयुषाघटाय ॥
कोउकहहायफेरियहआयो।अबधौंचाहतकाहकरायो॥कमलविलोचनप्राणपियारो।करिदीन्ह्योंनैननिसोंन्यारो ४८॥
तनुलगायकैविरहदवारी । डारीजारिसकलव्रजनारी ॥ विरहजरींलैमासहमारी । जाययमुनतटपहँदुखकारी ॥
उऋणहेतुनिजस्वामीकेरे । तारनहेतुपितरबहुतेरे ॥ आमिषपिंडदानयहकरिहै । ऐसोअयशअवशिजगभरिहै ॥
कोउकहभईसाठिबुधिनाशा । अबहूँराखतजीवनआशा ॥ जसयहदियोहमहिंदुखपापी । तसयमपुरह्वैहैसंतापी ॥
दोहा–कोउकहअसतिसखीकह्यो, मानतिनाहिंमतिमोरि । पुनिकावदनदेखाइहै, करिकैअसबड़िखोरि ॥
यहिविधिकहहिंविविधविधिबानी । रथविलोकिव्रजतियचौआनी॥उतैयमुनउद्धवहुनहाई।प्रातकर्मकरिकैअतुराई ॥
भूषणवसनसाजिशृंगारा । वंदिद्वंदपदनंदकुमारा ॥ व्रजनारिनसंभाषणहेतू । देखनकृष्णप्रेमकरसेतू ॥
हियमहँकीन्हेंपरमहुलासा । उद्धवगमन्योनंदनिवासा॥करतमनहिंमनविविधविचारा । कहँमिलिहैंगोपनकीदारा ॥

जिनसोंकहौंसकलसंदेशू। जोदीन्ह्योंयदुनाथनिदेशू ॥ जोइकांतसिगरीमिलिजाँहीं। तौसमुझायदेहुँसबकाँहीं॥
दोहा—यहिविधिउद्धवगुनतमन, नंदनिलैनियरान। तबताकेरथकेनिकट, गोपिनयूहदेखान ॥ ४९ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजासिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे षट्चत्वारिंशस्तरंगः ॥ ४६ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा—आवतउद्धवकोतहाँ, अवलोक्योव्रजबाल। प्रथमहिंसबकेमनपरचो, यहसाँचोनँदलाल ॥
हैंसुंदरयुगबाहुविशाला। पहिरेनवनीरजकरमाला ॥ पीताम्बरअतिशयछविछावे। मुखसरोजदृगमौजबढ़ावे॥
अमलआरसीसरिसकपोला। मुक्तनयुक्तसुकुंडललोला॥ नीरजनैनरुचिररतनारे। रतनजड़ितशिरकीटसँवारे ॥
करकंकणकटिमेंचौराशी। हीरनहारहियेछविराशी॥ मुखयौवनजागतिअरुणाई। महामधुरमुसक्यानिसोहाई॥
नवनीरदसमश्यामशरीरा। सोहतचरणमंजुमंजीरा॥ ऐसोकृष्णसखाकहँदेखी। तियसबपायोमोदविशेखी॥
दोहा—आयसबैव्रजसुंदरीं, भृकुटीनैनचलाय। मंदमंदभाषणलगीं, मंदमंदमुसक्याय॥
सुंदरपुरुषश्यामअनुहारी। तैसहिंभूषणवसनहुँधारी। कौनअहैयहरूपअनूपा। यहरथयाहीकेअनुरूपा॥
कौनदेशतेव्रजमेंआयो। भागवंतकाकोहैजायो॥ नंदनिवासवासकसकीन्ह्यों। कैसेकैव्रजपतिकहँचीन्ह्यों॥
जानिपरतअतिमृदुलसुभाऊ। जाननहितकछुकरहुउपाऊ॥ धौंहरिकेसमीपतेआयो।जननिजनकपहँकृष्णपठायो॥
हमहिंनिरखिअतिशयरतिराँचो। सजनीसखाश्यामकोसाँचो॥ चलहुसबैपूँछहिंढिगजाई।देहैभेदविशेषबताई॥१॥
दोहा—असकहिसिगरीगोपिका, भरींअलेखउछाह। उद्धवकहँदुतदौरिके, घेरिलियोमगमाहँ॥
यदुपतिप्रीतिरीतिमहँसानी। बोलतभईमहामृदुबानी॥ कोहौकौनदेशतेआयो। कौनहेतुइतकौनपठायो॥
कबतेकीन्हीनंदचिन्हारी। जानहुँतुमजोहैंगिरिधारी॥ धौंउनहींतुमकाँहिपठायो। रथचढ़िकैमथुरातेआयो॥
धौंतुमहोअक्रूरकुमारा। जोलैगोव्रजप्राणअधारा॥ हरिकोहरिव्रजबापजरायो। राखउठावनपूतासिधायो॥
आवतअसहमरेमनमाँहीं। तुमनिवसहुहरिसंगसदाहीं॥ तुमहिंनिरखिबाढ़तिउरप्रीती। लागतनाहिंअक्रूरकसभीती॥
दोहा—तातेजोतुमहोहुअब, आयेजौनेहेतु। सोवतायदीजैसकल, गोपहुनहिंमतिसेतु॥
सुनिव्रजवनितनकीमृदुबानी।उद्धवअतिशयआनँदमानी॥तिनहिंमनहिंमनकियोप्रणामा।बोल्योवचनमहासुखधामा॥
मैंहौंयदुपतिपदलघुदासा।तिनहींकीसबविधिमोहिंआसा २ मोहिंरमापतिनिकटबोलाई।कह्योविविधविधिवैनबुझाई॥
पठयोनंदयशोमतिनेरे। समुझावनकहिवचनघनेरे॥ तुम्हरेहीतलशीतलकारी। असपातीदियकुंजविहारी॥
औरहुकह्योबहुतसंदेशू। सोकहिहौंइकांतलहिदेशू॥ व्रजहिंआइतुवदरशनपाई। लियोजनमनिजसफलबनाई॥
दोहा—चलियेकहूँइकांतमें, अबसिगरीव्रजनारि। तहँप्रभुकोसंदेशमैं, देहौंसकलउचारि॥
उद्धववचनसुधांबुधिमाँहीं। करिमज्जनगोपिकातहाँहीं॥ जानिश्यामकोसखापियारो। करिउरमेंअभिलाषअपारो॥
अतिविनीतह्वैमृदुमुसक्याई। मंजुलवचनपूँछिकुशलाई॥ तिमिकरिकैसतकारमहाई। करिकटाक्षतहँनेकलजाई॥
चलहुयमुनतटकृष्णपियारे। तहँहुकह्योजेहिंहेतुसिधारे॥ असकहिगईयमुनतटमाँहीं। थलइकांतकुंजनकीछाँहीं॥
तहँगयउद्धवसुखपाई। गोपीआसनदियोबिछाई॥ तेहिंआसनपरउद्धवबैठे। यदुपतिप्रेमपयोनिधिपैठे॥
दोहा—उद्धवकोचहुँओरते, घेरिसकलव्रजबाल। बैठतभईसनेहयुत, बोलींवचनरसाल॥ ३॥
उद्धवतुमकोजान्योजान्यो। जेहिंहिततुमआवनइतठान्यो॥पठयोश्यामतुमहिंव्रजमाँहीं।समुझावनमातापितुकाँहीं॥
इनकोनंदयशोमतिदोई। प्रीतियोगहैंऔरनकोई॥ हमतौहैंव्रजनारिगँवारी। काहेकोसुधिकरहिंविहारी॥

तुमहूँअहौश्यामकेसंगी। तुम्हरिहुमतिहोइहिबहुरंगी॥ नंदयशोमतितजिव्रजमाँहीं। हरिकोऔरअहैकोउनाँहीं॥
औरनकछुपठवनकोकारन। केवलयशुमतिनंदनिहारन॥ यशुमतिनंदपूँछिकुशलाई। उद्धवजाहुजहाँयदुराई॥

दोहा—तुमहींमहागरीविनी, लखिव्रजनारिनकाँहि। भाषहुबातबनायबहु, वैकछुभाष्योनाँहि॥ ४॥

बालपनेतेनंदयशोमति। पालिपालिकीन्ह्योंतयारअति॥ तिनहींकेहरिभेसगनाँहीं। हमअबलाकेहिंलेखेमाँहीं॥
पैउद्धवअसरह्योनजानो। जसयहकारोकर्महिंठानो॥ जोजनतींपहिलेयहिऐसो। तौकरतींहमप्रीतिनकैसो॥
कियोनेहकहिकरिहैंपारा। दीन्हीदगाश्यामममधिधारा॥ यहिहितलग्योकलंकमहाहै। लागिगईतवलाजकहाँहै॥
पंहिलेप्रीतिकरबअतिसूधो। पैपुनिकठिननिवाहवऊधो॥जोकोउफँस्योप्रीतिकीफाँसी।सोइताकीजानतगतिखाँसी॥

दोहा—जेमुनिवनवासीअहैं, निवसतनहिंघरमाँहि। तिनहूँकीलागीलगन, कबहूँछूटतिनाँहि॥ ५॥

श्यामहिंयहमतिकौनसिखाई। अवनहिंव्रजैव्रजौव्रजराई॥ तोरवजोरवप्रीतिसदाहीं। सहजैजानिपरतहरिकाँहीं॥
जानतकछुननेहकीरीती। श्यामहिंसुखदेखेकीप्रीती॥ जबलगिरह्योप्रयोजनवाको। भयोतबैलगिनंदबबाको॥
प्रथमहिंराख्योबहुतबताई। करिप्रयोजनकेरिमिताई॥ निरमोहीकपटीसतिकारे। होतेनिजअर्थहिंकेयारे॥
उद्धवप्रीतिरीतिउनकेरी। निपटनकलजानियेवनेरी॥ कारेनकीयहरीतिसदाकी। करतकपटमतिकबहुँनथाकी॥

दोहा—फूलनमेंमधुकररमत, मधुहितसहितनिहोर। जबकरिलीन्ह्योंपानरस, तबनतकततेहिंओर॥ ६॥

उनकोयहिमेंनहिंकछुदोषू। उद्धवहमहुँकरहिंनहिंरोषू॥ हैसंसारकेरियहरीती। होतआपनेहेतुहिंप्रीती॥
कारजभयेनरहतिमिताई। काहेअसनाहिंकरहिंकन्हाई॥ जबलगिरह्योधनीधनगेहू। तबलगिवारवधूकरनेहू॥
घट्योधनिककोधनजबभारी। तबनकरतपातुरीचिन्हारी॥ समरथरह्योजबैलगिराजा। सेवैतबलगिप्रजासमाजा॥
जबअसमर्थभयोमहिपाला।ताकोप्रजातजततत्काला॥तबलगिशिष्यसनेहहिंभीने। जबलगिनहिंविद्यापढिलीन्हे॥
जबविद्याकोह्वैगोकारज। तबतजिदेहिंशिष्यआचारज॥

दोहा—ऐसहिंजबलोंयज्ञको, लह्योदक्षिणानाँहि। तबहींलगियजमानको, ऋत्विजतजिनहिंजाँहि॥ ७॥

जबलगिरहेतरुनफललागे। तबलगिपक्षीतेहिंअनुरागे॥ तरुकेफलसबझरिगेजबहीं। जातेसबलविहंगउड़ितबहीं॥
जबलगिलहैंनअतिथिअहारा।तबलगिछोंडतनाहिंअगारा॥अतिथिजबैभोजनकरिचुकतो।तबनहिंक्षणहुँमात्रघररुकतो।
जबलगिकाननमहँहरियारी। तबलगहोतमृगासंचारी॥ जबजरिगोवनलागिदवारी। तबनरहतमृगदुखदविचारी॥
ऐसहिजबलगरम्योनजारा। तबलगिनारिनकरतपियारा॥ जबकरिचुक्योभोगसबभाँती।तबनहिंरहतजारइकराँती॥
कैरयदपितियप्रीतिहुरीती। पैनजारपुनिराखतप्रीती॥

दोहा—तैसहिंजबलगिश्यामकी, नहिंपूजीमनआस। तबलगिचाह्योअतिहमैं, करिसेवनरहिपास॥ ८॥

अबतौहमहिंबूढ़िगुनिश्यामा। देखनयुवानगरकीवामा॥ चलेगयोसबतोरिसनेहू। मान्योनहिंव्रजअपनोगेहू॥
तुमसोंबहुतकहेअबकाहै। उद्धवसबमनकीमनमाहै॥ असकहिउद्धवसोंव्रजनारी। लागींरोदनकरनपुकारी॥
तनुमनवचनलगेहरिमाँहीं। नेकहुलाजरहीतनुनाँहीं॥ जबतेउद्धवव्रजमेंआयो। दूनविरहतबतेबढ़िआयो॥
रह्योनहींतनुकेरसम्हारा। बढ़ीयमुनलहिआँसुनधारा॥भूषणवसनयदपिखुलिजाँहीं। तिनकोतदपिसम्हारहिंनाहीं॥

दोहा—अगरतगरसुरभितसलिल, सीरसमीरउशीर। व्रजसुंदरिनशरीरमें, करततीरसीपीर॥

तलफहिंपरीधरणिव्रजबाला। नीरहीनजिमिमीनविहाला॥बारबारबोलहिंव्रजनारी। हायकान्हकससुरतिबिसारी॥
हाययशोमतिनंददुलारे। रहेतुमहिंव्रजकेरखवारे॥ तुमबिनयहव्रजलागतसूनो। दिनदिनबढ़तविरहअबदूनो॥
भूलिगईमाखनकीचोरी।जाँचवदधिनिहोरिकरजोरी॥ कबकबतुमनहमहिंछलिडारचो।कबकबतुमनहिंशोकनेवारचो
किमिअबकीगहिकैनिठुराई। माधवरहेमधुपुरीछाई॥ इंद्रकोपतेलियोबचाई। कसनविरहदुखदेहुमिटाई॥

दोहा—अहिअबबकवत्सहुवृषभ, धनदानुचरतुरंग। इमसबकेहितश्यामतुम, हनेरामकेसंग॥

होतरह्योजिनबिनयुगसमछिन। तिनबिनबीतेहायबहुतादिन॥हरिबिनजीवनअहैवृथाहीं। पापीप्राणकढतकसनाँहीं॥
यहपपिहाहैमीतहमारो। पियपियकहिकछुकरतअधारो॥ परतिदीठियमुनैजबजाई। तबकछुनैनहोतिसियराई॥
रहेजेहरिसँगमीतहमारे। तेअबभयेसकलदुखकारे॥ रहीसुखदजोयहब्रजधरणी। सोअबभईमहादुखभरणी॥
रह्योशशीप्रथमहिंसुखदाई। सोनिजकरनदवारिलगाई॥ रहींजेकुसुमसेजअतिकोमल। तेकृपाणकीधारभईभल॥

दोहा–यहिविधिकरहिंविलापबहु, करिगोविंदगुणगान। तलफिरहींब्रजकीवधू, क्षणक्षणदुखअधिकान॥ ९॥

रोदनकरहिंपुकारिपुकारी।दीन्हीतनुतेलाजनिकारी॥ध्यानकरहिंयदुपतिकीमूरति।चौंकिकहहिंकहँसाँवलिसूरति॥
तहँककहुँतेइकअलिउड़िआयो। बैठोनवलननिकटसोहायो॥उद्धवकेअपनेमधिमाँहीं।लखिब्रजवनितामधुकरकाँहीं॥
कहँनहेतुविरहाकुलबानी। तेहिंमधुकरकहँउद्धवमानी॥ यहप्रीतमकोपठयोआयो। वरणसमानमीतकहवायो॥
कहनचहतहरिकोसंदेशू॥ यहिनहिंविरहव्यथाकरलेशू॥ तातेहमहिंप्रथमकहिदेहीं। मनकीपुनिसुनाइहैंकेहीं॥

दोहा–असविचारिब्रजसुंदरी, उद्धवकाँहसुनाय। कहनलगींवहिभ्रमरसों, विविधभावदरशाय॥ ११॥

गोप्युवाच।

भ्रमरगीत–रेरेमधुकरयाब्रजमेंतूकैसेकैचलिआयो। जानिपरतयहकपटीकारोकान्हरतोहिंपठायो॥
जौनछोड़ियहअनुपमआनँदगोकुलकुंजगलीको। भयोकंतकुबजाकुरूपकोनायकछैलछलीको॥
ताकेतुमहुँमीतहौमधुकरवदनपीतदरशानो। तातेसबहवालमथुराकोहमहिंपरोअबजानो॥
कान्हकूबरीकेपगपरिपरिबहुतकबारमनायो। पैकुलटाकैसेहुनहिंमान्योतबतुमहूँशिरनायो॥
श्यामभालकीकेसरितापदसोतुववदनलगीहै। सोतुम्हरीतुम्हरेठाकुरकीकीरतिजगतजगीहै॥
मधुपजाहुमधुपुरीलौटितुमइतनहिंकामतुम्हारो। कहियोउन्हैंसँदेशोऐसोछुवौनचरणहमारो॥
कुवरीकुचकुंकुमतेरंजितउनकेउरकीमाला। हमरेउरमहँपरसहोतमहँह्वैहैदुसहकसाला॥
अबनहिंकामकान्हकोब्रजमेंकाहेकोइतआवैं। मानवतीमथुराकीनारीतिनकोअबशिमनावैं॥
ग्वालसमाजविहायलालअबराजसमाजविराजे। भूलिगयोमाँगबमाखनकोदरवाजेदरवाजे॥
यदुवंशिनमेंउनकीचोरीकरिसुखप्रीतप्रकासी। जिनकेतुमसेदूतजगतमेंतिन्हैंहोतिहठिहाँसी॥ १२॥
तुम्हरीऔरश्यामकीसंगतिसाँचीहैहमजानी। अपनीरीतिसिखायदईतुमउनहूँकीछलसानी॥
तुमवनवनमेंसुमनसुमनकोकरिकैसबरसपाना। पुनितेहिंसुमनओरनहिंझाँकहुकबहूँसाँझविहाना॥
ऐसोवहकारोछलवारोप्यारोनंदकुमारो। जाकेहेतुबिसारोभारोहमसारोपरिवारो॥
मधुकरसोइकबारअधरकोआसवपानकराई। चलोगयोमथुराकोमाधवछलियाहमैंछिपाई॥
जोकारेनसोंलगनलगावततासुयहीगतिजोई। वहवाकेहितदेहदेतपैताकेदरदनहोई॥
पैउपजतअफसोसएकमनसोतुमदेहुमिटाई। कौनेकारणसोंवरुकमलाहरिपदरहीलोभाई॥
जानीजानीहमअबसोऊपियकीकोमलबानी। घरीघरीछलभरीनजानतिसुनिसुनिताहिलोभानी॥१३॥
भौंरजायकहियोकमलासोंयहहमारसंदेशा। भूलिनजायदेखिमनमोहनमनमोहनकरवेशा॥
सुंदररूपसुधासमबतियाँऊपरमृदुलसुभाऊ। भीतरभरोछैलकेछलबलप्रगटतसमैप्रभाऊ॥
देखतसूधोसुंदरछोटोघावकरतगंभीरा। जानिलेहुयदुपतिकहँतैसेज्योंनावककोतीरा॥
मधुकरऐसेठाकुरकीतुमगावहुबहुतबड़ाई। सोहमरेमनमहँअबकैसेसाँचीपरैजनाई॥
जोनहिंजानैकान्हरकेगुणसोतिनकीसतिमानै। सोउसमेंकैसेसतिमानैजोउनकेगुणजानै॥
ब्रजमेंएकसंगमेंइतनीउनकीऔरहमारी। बीतीउमिरिखेलबहुखेलतजानिपरीअबसारी॥
उनकोनहिंअयोगकछुमधुकरअसमनकाँहिंबुझावैं। अर्जुननामकपांडुसुवनकेकान्हरसखाकहावैं॥

जौनविजैयुगयुगधनुशरगहिसहसनजननसँहारै । ताकेसखाकहायलालअबअबलनहूँनहिंमारै ॥
जिनकेहेतुछोंड़ियहगोकुलमथुरैगयेमुरारी । तेमथुराकीनिपटनागरीकसनहोहिंपियप्यारी ॥
करिछलबलछलियहुछलिलीन्ह्योंइनकोछलछाँगिगयऊ । धन्यधन्यमथुराकीवासिनिवशकारिहुवशकयऊ ॥
जिनसजनिनकींइनरजनींमेंमेटिमदनकीबाधा । चूमिवदनहँसिरसरासिविलसतलहतअनंदअगाधा ॥
तिनहींकेआगेतुममधुकरगावहुहरियशजाई । काहेकोव्रजबालबापुरिनदेतेव्यथाबढाई ॥
तेईतुम्हरोसकलमनोरथपूरणकरिहैंआसू । हमकोतुम्हरेवचनसुननकोअबनाहिंहैअवकासू ॥ १४ ॥
देवनगरनरनगरऔरहूँनागनगरमधिमाँहीं । ऐसीकोईनारिनवीनीनैननननाहिंदरशाँहीं ॥
जोकान्हरकीकपटभरीवहतिरछीताकनिफाँसी । तामेंनहिंफँसिजायजायकैतैसाहिलखिमृदुहाँसी ॥
मधुकरअसनहिंदेखिपरतहगयहजगमेंकोउबाला । भृकुटिकमानबाणनैननकेजेहिंउरभेनदुशाला ॥
बड़ीशूरताकरीश्यामजूव्रजसुंदरिनसँहारचो । तापैतुमइतआयमधुपकसलवणजरेपरडारचो ॥
हमगँवारिनीअहैंग्वालिनीअतिगरीबिनीवामा । उनकीसेवतसदाचरणरजरमारूपअभिरामा ॥
माधवकीअरुमधुपहमारीकौनअहैसमताई । तिनकेहमकेहिंलेखेमाँहीं ऐसीजासुबडाई ॥
पैतुमकरियोजायकान्हसोंऐसीविनैहमारी । जैसोरूपजैसहींकीरतिविभौजौनविधिभारी ॥
तैसीचालचलैनँदनंदनमानैकहोहमारो । नातोकहेदेतहैंसाँचीबिगारिजायगोसारो ॥
ऐसीमहामाधुरीमूरतिअनुचतअसनिठुराई । पैकुबजाजसरीतिसिखावतितैसहिकरतवहाई ॥
सूझतनाहिंआपनोपरायोनेकहुँमनमेंजिनको । जानिपरतकछुकियोकूबरीजालिमजादूतिनको ॥ १५ ॥
छोंडहुछोंडहुचरणहमारोधरहुनपगधरिशीसा । माधवसखामधुपतुमसाँचेतिहरोछलसबदीसा ॥
तुमकोसिखैरीतिछलकेरीमोहनइतैपठायो । मीठेमीठेवचनबोलिबहुआयसँदेशसुनायो ॥
तैसहितुमहुँछलीपूरेहौजैसोनाथतिहारो । तुम्हरेबैननमेंनहिंनेकहुँपरतविश्वासहमारो ॥
जाहुकरोबावरीतियनसोंउतैयहैचतुराई । हमरेनेरेकपटरीतियहछापिहैनहींछिपाई ॥
हरिसोंप्रीतिरीतिकीन्हेकोगईसकलफलपाई । जैसीदगादईहरिहमकोसोनजातिमुखगाई ॥
जाकेलियेमातुपितुपतिसुतऔरसकलपरिवारो । लोकलाजपरलोकशोकसबव्रजसुंदरीबिसारो ॥
मुरलीध्वनिसुनिशरदनिशामहँकाननमेंचलिआई । भूरिभयंकरगहनजंतुकीभीतिनउरकछुलाई ॥
सोव्रजनारिनकीव्रजसुंदरक्षणमेंतोरिसनेहू । करनचलोगोकूरसंगमेंवाकुबरीकेगेहू ॥
जोउपकारनमानतएकौतासोंकौनमिताई । मरीएकहींबारदगामेंदूजीकिमिसहिजाई ॥
जातिदूबरीकुटिलकूबरीताकोहियेलगाई । मोदितबसैंमधुपुरीमोहनकरिहैंकाव्रजआई ॥ १६ ॥
युगयुगमेंउनकोयशजाहिरजगमेंपरचोजनाई । सुनिसुनिलगतिभीतिअतिहमकोकैसेकरैंमिताई ॥
अनुचितउचिततनेकुविचारचोव्याधासारिसलुकाई । वानरराजवालिकोमारचोदयानकछुउरआई ॥
सूपनखासरूपलखिसुंदरछकितमिलनअभिलाखी । ताकोनाककानबिनकीन्ह्योंजनकसुतारुखराखी ॥
वामनआँगुरकोवपुराचिकैअसुरनाथमखआयो । ताकेकरतेसकलभाँतितेसादरपूजनपायो ॥
तीनिचरणमहिमाँगिप्रथमपुनिअपनोरूपबढायो । दोईचरणनापित्रिभुवनकोतीजोघटोसुनायो ॥
ताबदलेबलिपीठिनापिकैपुनितेहिंबंधनकीन्ह्यों । यहिविधिछलकरिअसुरराजहारिहारिसुरराजहिंदीन्ह्यों ॥
ऐसेचरितअनेकनइनकेकहँलोंवदनबखानैं । तातेकरैंनकारेनकोपतकहोजोहमरोमानैं ॥
जोरचलतजोमधुपहमारोतौबजवौतींडौंडी । व्रजवनिताविहायगहिलीन्हीकान्हकंसकीलौंडी ॥
अबनाहिंचलतप्रीतिकारिवेकोमानसमधुपहमारो । पैनहिंछोंड़िजातमुखगैबोउनकोसुयशउदारो ॥

व्रजयुवतिनकेजीवनकोअबरहिगोयहीअधारा। तौनहुँचहतछँडायोमधुकरकरिउपदेशअपारा ॥ १७ ॥
जाकीअतिशयसुंदरलीलाश्रवणपियूषसमाना। ताकोबिंदुताहुकीकणिकाइकबारहुमतिवाना ॥
कबहूँकौनिहुँकरिउपायजोकैस्योकीन्ह्योपाना। तौतिनकेतनुपुनिसुखदुखकोरहतनेकनहिंभाना ॥
तुरतदीननिजघरकुटुंबतजिकहुँकाननमहँजाई। भौनभौनमेंभीखमाँगिकैजीवनलेतचलाई ॥
भूषणवसनविभौकीआशारहतनहींमनमाँहीं। तिनकोविचरतयहवसुधामेंबीतिवर्षबहुजाँहीं ॥
मधुकरजिनकेचरितसुननकोऐसोहैपरभाऊ। तिनकोकछुनाहिंअचरजमानैऐसोहोबसुभाऊ ॥ १८ ॥
माधवमथुराबैठमधुपअबजौनचहैसोभाषैं। वैकालिंदीकुंजनकीसुधिकाहेकोअबराषैं ॥
जबकरजोरिनैननीचेकरिहाहाखातरहेहैं। तबयेनैननतनकतिरछेह्वैतिनपैजातरहेहैं ॥
बाँधतरहींयशोमतिजबहींतबहमदेहिंछोंडाई। इकअंजलीछाँछकेकारणरहतेहाथओडाई ॥
यहउपकारधूरिमिलिगयऊकछुनहिंमुखकहिजाई। छोटोखायहोतअतिमोटोतजतनखोटखोटाई ॥
असकपटीसोंकरीप्रीतिजोहमसोंनहिंबनिआई। बिनहिंविचारकरतकारजजोसोइपीछेपछिताई ॥
पैहममहामोहनीवामनमोहनकीमृदुवानी। सुनिसुनिसाँचीजानिजीवमेंतामेंरहींलोभानी ॥
जैसेवधिकजायकाननमेंमंजुलवेणुबजाई। मृगनमोहिमनलेतोतेहिंक्षणअपनेनिकटबोलाई ॥
पुनिसमीपमहँदेखिकुरंगनतिनकेअंगनमाँहीं। बेधिबाणकरिदेतप्राणबिनकरतदयाकछुनाँहीं ॥
तैसहिंकपटीकुटिलकान्हरोटेरिकुंजबिचबंसी। वशकीन्ह्योंव्रजवधुनबापुरिनडारिप्रेमकीफंसी ॥
ढिगबुलायदरशायभावबहुकरिनखछतउरमाँहीं। नाचिगायउपजायकलाबहुदियहुलासहमकाँहीं ॥
जबमधुकरबहरासविलासहुलासहियेसरसानो। तबसबव्रजयुवतीनजीवलैह्वैगोअंतरधानो ॥
जसतसकैबहुदेवमनायेजोपैपुनिप्रगटानो। तौअबकुटिलकंसकेकारणकियमधुपुरीपयानो ॥
कहतबनैनहिंसुनतबनैनहिंसमुझिबनतपछितातै। मधुकरवाकीकथाछोंड़िकैऔरचलावहुबातै ॥
भागिविवशकबहूँजबहमकोनँदनंदनामिलिजैहैं। तबपाछिलीबातकीसुधिकरिनिजमनकीकरिलैहैं ॥
अबैआपनोचलतनवशकछुपरिगोउनकोदाऊ। भेंटभयेइककीदशकरिहैंदेखतहींबलदाऊ ॥ १९ ॥
दीसहुभ्रमरसुशीलबहुततुमलैसंदेशहमारो। किधौंमधुपुरीजायकह्योसबपुनिपठयोइतकारो ॥
हौतुमसखाश्यामकेसाँचेयहहमजानोजानो। होइजोमनकामनातिहारीसोअबसकलबखानो ॥
मानकरनकेलायकतुमहौहमकोपरचोजनाई। व्रजसेहमींहिलेवावनकेहितयदुपतिदियोपठाई ॥
पैकौनीविधिकान्हकुँवरढिगतुमहमकोलैजैहो। जोकदाचिलैजैहौमधुकरतौउतकहँबैठैहो ॥
कमलालक्षणभरितिन्हैंनछोंडतिनिवसतिनितउरमाँहीं। कहहिंसौंहकरिताकेनीचेकैसेहुँबैठबनाँहीं ॥
हरिकोहमतेऔरआजुलौंरहीनहींकोउप्यारी। करिहैंअबअपमानविहारीकमलावदननिहारी ॥ २० ॥
जनमभरेकोसुखसोहागकोअबमथुरामेंजाई। हमकोकहालाभहैमधुकरआवैसोऊगमाई ॥
जोतुमश्यामसखाहोसाँचेहमकोहोइविश्वासू। तुमसोंनहिंअनरीतिकरैंगेकबहूँरमानिवासू ॥
तौहमसिगरीअबैमधुपुरीचलिहैंसंगतिहारे। नातोऔरभाँतिनहिंबनिहैबिनउनकेपगुधारे ॥
कहहुकहहुमथुराकीखबरैंजहँहैनंददुलारो। सबलबसतप्रियकुशलसकलविधिगुरुगृहतेपगुधारो ॥
कबहूँनंदयशोमतिकोघरसुरतिकरतबनमाली। कबहुँसखनकीसुरतिकरतहरिरहेलालअतिख्याली ॥
जिनगौवनकोरहेचरावतवंशीवटकीछाँहीं। कबहूँसुरतिकरतमनमोहनतिनकीनिजमनमाँहीं ॥
भोजनकरिकैमातुपितागृहप्रियछप्पनपकवाना। अबगोपिनकोमथोतुरतकोमाखनस्वादभुलाना ॥
यमुनाकूलनिकुंजनमेंजोखेलयोखुलिखुलिख्यालै। ताकीसुरतिकबहुँआवतिहैनिरमोहीनँदलालै ॥

कबहुँमधुपुरीनारिनागरिनसभामध्यहरिजाई। चरणकिंकरिनव्रजनारिनकीसुरतिकरतमुखगाई॥
पुरनारिनचातुरीचितैचखतिनकीछबिमहँछाकी। अबनबापुरिनव्रजनारिनमेंह्वैहैसुरतिललाकी॥
मधुकरकौनदिवसवहह्वैहैजादिनप्रियव्रजआई। अगरसुरभिनिजभुजाशिरधरिकैदेहैंतापमिटाई॥
पूरणशशीसरिसवहआननकबइनआँखिपरैगो। कौनदिवसवहश्यामसुंदरोनिजभुजहमहिंभरैगो॥
ऐसेहुकालकबहुँपुनिह्वैहैव्रजकुंजनमहँआई। सखनसहितहरिधेनुचरैहैंमुखबाँसुरीबजाई॥
मधुकरवहव्रजराजकाजगृहकाजलाजबिसराई। श्रीरघुराजसमाजसहितप्रभुलेहिंआजअपनाई॥ २१॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यहिविधिविलपतव्रजवधुन, कोमलवदनसुखान। प्रेममूरछाह्वैगई, रह्योनतनुकरभान॥
सुनिव्रजनारिनकीअसबानी। प्रेमदशातिमिनिरखिमहानी॥व्रजनारीहरिदरशलालसी। बीततिघरीकरालकालसी॥
तिनहिंजोरिकरकियोप्रणामा। समुझावतबोल्योमतिधामा॥ २२॥

उद्धव उवाच।

जननिसुनहुयदुनाथसँदेशू। यामेंमिटिहैसकलकलेशू॥ पूरणकामतुमहिंजगमाँहीं। तुमसमकोउदीसतदृगनाँहीं॥
त्रिभुवनवंदितचरणतिहारे। भयेधन्यहमआयनिहारे॥ हमहूँसमजगअहैनकोऊ। शिवविरंचिवासवसमजोऊ॥
जननिजोतुम्हरोदरशनकीन्ह्यों। सोहरिप्रेमरूपलखिलीन्ह्यों॥
दोहा-तुमसमानकोजगतमें, करिहैहरिपदप्रीति। कोलैहैयदुनाथको, प्रीतिरीतिकरिजीति॥ २३॥
जपतपव्रतसंयमअरुदाना। होमपढ़वशास्त्रनकोनाना॥ औरहुकर्मकल्याणहिंकारी। यहजगमेंजितनेहैंभारी॥
तिनकोकरतकरतथकिजाँहीं। पैहरिभक्तिहोतिहियनाँहीं॥ कोटिनकलपकलेशनकीन्हें।साधुनकीसंगतिमनदीन्हें॥
भागविवशजबभेंहरिदाया।तबजनकृष्णभक्तिकहँपाया॥२४॥ सोहरिभक्तिसहजमहँमाता।तुम्हरेउरआईअवदाता॥
सुरसनकादिकनारदशेशू। वासवऔरविरंचिमहेशू॥औरहुमुनिजेतेजगमाँहीं। असहरिरतिदुर्लभसबकाँहीं॥२५॥
दोहा-पितुपतिसुतसुजनहुँसकल, औरगेहअरुदेह। भलीकरीइनकोजोतजि, तुमकीन्ह्योंहरिनेह॥
अहैंकृष्णप्रभुपुरुषपुराना। शरणागतपालकभगवाना॥तनुमनतेहरिभक्तिमहाई।जगमेंइकतुमहींकियमाई॥ २६॥
मेरेरह्योज्ञानअभिमाना। निरखिप्रेमतुवसकलभुलाना॥ मोपैकृपाकरीयदुराई। तुवदरशनहितादियोपठाई॥२७॥
मोहिंहरिपदगुनिकैलघुदासा। जननिकियोतुमप्रेमप्रकासा॥ ऋणीरहौंगोसदातिहारो। याकोहैनहिंप्रतिउपकारो॥
अबजोनाथपत्रिकादीनी। निजकरलिखीप्रीतिरसभीनी॥ मैंशिरधरिलायोंतुवपासा।सुनहुसोअबमैंकरहुँप्रकासा॥
दोहा-नर्मसखायदुराजमोहिं, कियोकृपारसमोइ। तातेमनकीबातकछु, राखतकबहुँनगोइ॥
सोरठा-असकहिपातीखोलि, चरणवंदियदुनाथके। सुनहुजननिअसबोलि, उद्धवतहँबाँचनलग्यो॥ २८॥

श्रीभगवानुवाच।

हैनहमारतुम्हारवियोगू। यहमनशोचिकरहुनहिंसोगू॥ हैसंयोगसुखदसबकाला। यहजानहुँप्यारीव्रजबाला॥
अनिलअनलअपअशनिअकासू।जिमिसिगरेजगइनकरवासू।तैसहिंमैंनिवसहुँसबमाँहीं।जहँमैंनहिंअसकहुँथलनाँहीं॥
मनबुधिइंद्रिनप्राणअधारा। पालहुँहरहुँसृजहुँसंसारा॥निजसंकलपहितेसबकरहूँ। सूक्ष्मरूपसबजगसंचरहूँ॥३०॥
रहौंभिन्नगुणतेसबकाला।शुद्धआतमाज्ञानविशाला॥जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिवृत्तिमन।मोरिप्रतीतिरीतित्रैश्रुतिभन॥३१॥
मनौवृत्तितेभेदप्रतीती। तातकरैआचलमनरीती॥
दोहा-जौनेमनकीवृत्तिते, चिंततविषैअनित्य। तौनेमनकीवृत्तिको, करैअचंचलनित्य॥
मनहिंवृत्तितेस्वपनहिंदेखै। ताकोसुखदुखअपनेलेखै॥ जागेसोरहिजातोनाँहीं। फेरिहोतजसजागतमाँहीं॥
तातेमनवशकरैसदाँहीं।असतमानिजगसुखदुखकाँहीं॥३२॥ त्यागसत्यसमदमअरुवेदा।तत्वज्ञानअरुयोगविभेदा॥

मनकीवृत्तिअचंचलठानो। यहीसारसबकोफलमानो ॥ जैसेबहतसरितसमुदाई । मिलिसागरमहँजाहिबिलाई ॥
तैसहिंसबशास्त्रनकोमतभल। मनकोकरबविशेषअचंचल॥३३॥जोहमइतदृगदूरितुम्हारे।कढ़िआयेसोदेहिंउचारे॥
दोहा–हेव्रजनारीविरहवश, ठानिअचंचलचित्त। मोमेंमनाहिंलगायकै, ध्यानकराहिंगीनित्त॥ ३४ ॥
दूरिदेशजबप्रीतमरहतो। तबतियकोजियलगिजसचहतो ॥ तसनाहिंनिराखिनैनकेनेरे। यहआईसाँचीमनमेरे॥३५॥
विषैवृत्तिसबभाँतिविहाई।सबविधिमोमेंमनहिंलगाई॥जोतुममोहिंसुमिरणनितकरिहौ।तौमेरेढिगआशुसिधरिहौ ३६
जबमैंशरदनिशामहँप्यारी। कियोरासव्रजकुंजसुखारी॥ तबजिनतियनगोपमतिहीने।राखेरोकिनआवनदीने ॥
तेतियतहैंमोरधरिध्याना। प्रथमहिंममढिगकियेपयाना ॥ तातेमोमेंमनहिंलगाउब। प्यारीसाँचोहैमोहिंपाउब ॥
दोहा–हमतुममेंतुमहममहिंमें, यामेंनाहिंसंदेह। प्रियाहमारतुम्हारहै, मनएकैद्वैदेह ॥

श्रीशुक उवाच।

ऐसीसुनिप्रीतमकीपाती।व्रजनारिनशीतलभैछाती॥बोलीकृष्णप्रीतिमहँसानी।आगेकीसिगरीसुधिआनी॥३७।३८॥

गोप्य ऊचुः।

उद्धवतुमहिंनसमुझिपरतहै। कंतजियतकोउयोगकरतहै ॥ युगयुगजीवहिंकुँवरकन्हाई। हैहमरेअहिवातसदाई ॥
उनकेसंगकियेबहुभोगू। हमरोकीनहोतनहिंयोगू ॥ लिखीकान्हमनथिरकरिलेहीं । सोमनथिरकीरुचिनहिंकेहीं ॥
पैजिनकोमनतनुमहँहोई। करैअचंचलमनकोसोई ॥ हमरोतौमनहरिहरिलीन्ह्यो। अबकसलौटिसिखापनदीन्ह्यो ॥
दोहा–तनुतोयहपापीरह्यो, गयोनहरिकेसंग। पैसुकृतीमनकबहुँनहिं, छोडैगोहरिअंग ॥
करैअचंचलचंचलसोई। जाकोमनअपनेहियहोई ॥ क्योंनहिंकहैकंतअसबानी। अबभेराजपायविज्ञानी ॥
उद्धवमनगोबिगरिहमारे। अबसुधरतकैसेहुनसुधारे ॥ जिनअंगनलाग्योपियप्यारो । तिनअँगयोगजातनहिंधारो ॥
जिनदृगसाँवलिसूरतिदेखी।तिनदृगऔरपरतिनहिंपेखी।निकरचोहरिहरिजिनमुखमाँहीं।तिनमुखअबनवेदपढिजाँहीं
लपटचोजिनअँगहरिअँगरागा।तिनमेंधूरिधरतमनभागा।पियेजेश्रुतिहरिवचनमिठाई।तिनश्रुतिनाहिंपुराणसुनिजाई।
दोहा–हममान्योंजोहरिकह्यो, पैकछुवशनहमार। येतनुमनमानतनहीं, कियेकोटिउपचार ॥
सोऊअहैश्यामकरदोषू। वृथाकरतहमपरकतरोषू ॥ जोपहिलेहितेयोगसिखावत । तौयहतनुअबक्योंदुखपावत ॥
योगविरागभक्तिअरुज्ञाना। इनकेकीन्हेमुक्तिनिदाना ॥ ऐसीमुक्तिपरैअबधूरी । बसबकान्हतेक्षणभरिदूरी ॥
योगकियेवैकुंठहिंजैहैं। तहँवहदुभुजश्यामकहँपैहैं ॥ परिहैकबबाँसुरीसुनाई । कहँएहैंहरिधेनुचराई ॥
असवैकुंठलगतनहिंनीको। व्रजसुंदरबिनहैसबफीको ॥ यद्यपिमनरोकहिंबरियाई। तदपिजातकढिजहाँकन्हाई ॥
दोहा–उद्धवजाकीबानिजो, पहिलेतेपरिजाय। सोनहिंवहकैसेहुमिटति, कीन्हेकोटिउपाय ॥
परिगैछलकरिबोहरिरीती। सोनहिंमिटतिजाहियुगबीती॥अपनोकससमुझहिंसबकाँहीं।लिखीबातकतबहुतवृथाँहीं।
आपनसमुझैहमहिंबुझावै । सोकैसेहमरेमनआवै ॥ जोसमरथसमुझावनकोहै । आयबुझावैरोंकतकोहै ॥
उऋणहोतलिखिकैयहपाती। काहेजरीजरावतछाती ॥ उद्धवतुमहींकहौविचारी। छोड़बहमकोउचितविहारी ॥
अबनहिंऔरबुद्धिअनुरागी। एकलगनलागीसोलागी ॥ उद्धवतुमहिंनलागतलाजू। भोगछोंडावतयोगहिकाजू ॥
दोहा–पैजोअबहोनीरही, सोह्वैगईविशेषि। कहहुमधुपुरीकीखबरि, जोआयेदृगदेपि ॥
हमअससुन्योकान्हहनिकंसा। कीन्ह्योयदुवंशिनदुखध्वंसा॥सोयहभलीकरीनँदलाला।मह्योयदुकुलकेरकशाला ॥
औरहुसुन्योमल्लबहुमारे । आठकंसकेभ्रातसँहारे ॥ मातुपिताकेबंधनछोरे । लहेविभौयदुवरनहिंथोरे ॥
यहसुनिसुनिउरबाढ़तचैना। दुखइतनोनलखैंनिजनैना॥बसैंकुशलमधुपुरदोउभाई। अबउद्धवयहदेहुबताई॥३९॥
पुनिबोलीकोउव्रजनारी । कृष्णसखासुनुबातहमारी ॥ नँदनंदनहैंप्रीतिजनैया । नारिनकेमनमोदसनैया ॥
दोहा–पुरनारिनकीप्रीतिलखि, सुनिकैमीठेबैन। आदरअतिशयपायकै, सहिकैनैनहिंसैन ॥

क्योंनहिंउनकेवशमेंह्वैहैं। हावभावतियबहुतदेखैहैं ॥ हरिचातुरपुरनारिचातुरी । लगीदुहुँनकीबुद्धिआतुरी ॥
धौंहरिजीततहैंपुरनारी। धौंपुरयुवतीजितैंविहारी ॥४०॥ पुनिबोलीकोउहरिप्यारी। श्यामसखायहदेहुउचारी ॥
करतरहेजसहमसोंप्रीती । तैसहिंउतहूँराखतरीती ॥ हरिकोलखिमथुराकीनारीं । करतींकबहुँकटाक्षसुखारीं ॥
जिनकोहरिनिरखहिंदृगमाँहीं। तेकबहूँसलाजमुसकाँहीं ॥ जानिगईह्वैहैंछलइनको। मूँदोरह्योहोइगोकिनको ॥

दोहा-सबदिनतेनँदलालकी, चलिआईयहरीति। सबनारिनसोंहठिकरत, मुखदेखेकीप्रीति ॥

पुनिबोलीकोऊब्रजबामा। सुनहुवैनउद्धवमतिधामा ॥ ४१ ॥ कबहुँकयदुवरसाँझसबेरे। जबबैठतपुरनारिननेरे ॥
बचनरचनकरितिन्हैंलोभाई। निजअधीनताविविधदेखाई॥जबतिनकेरसमेंरसिजाँहीं।तबसुधिकरतकबहुँहमकाँहीं॥
कबहूँअसमुखभाषतप्यारो। हैयकगोकुलगाँउहमारो ॥ पैनहिंसुरतिकरतवहहोई । पुरनारिनकोआननजोई ॥
हमतोउद्धवग्वारिगमारी । दहीमहीकीबेचनहारी ॥ अहैंकौनहमउनकेलेखे । वोकुलवंतिनकुबरीदेखे ॥

दोहा-पैकबहूँबतरातमें, बातबातकेबीच। कहतअवशिह्वैहैलला, ब्रजतियरहींनगीच ॥ ४२ ॥

ब्रजसुंदरीफेरिकोउबोली। उद्धवसोंयहबातअमोली ॥ रहीशरदकीपूरणमासी । जगतीजगीजोन्हाईखासी ॥
फूलेकुंदवृंदचहुँओरा। सरसरविकसितकुमुदनथोरा ॥ तबयहवृंदावनकीधरणी । भईमहाआनँदकीभरणी ॥
कान्हकलिंदीकुंजनजाई। टेरिबाँसुरीहमहिंबुलाई ॥ रासविलासरच्योतेहिंकाला । मधिनँदलालचहूँकितबाला ॥
मचीचरणनूपुरझनकारी । सोसुखकिमिमुखजायउचारी॥करनलगींहमहरिगुणगाना।मिट्योअमंगलदशौंदिशाना॥

दोहा-तानिशिकीवहकान्हरो, कबहुँसुरतिकरिलेत। जानिशिमेंयाचतरह्यो, हमहिंमिलनकेहेत ॥ ४३ ॥

पुनिबोलीकोऊब्रजबाला। रेउद्धवकहँहैंनँदलाला ॥ बढ़ीमहाविरहानलज्वाला । अबतोनहिंसहिजातकसाला ॥
कहँअपकारकियोहमवाको। जोअसदुखदियसुतयशुदाको ॥ कबहुँगोविंदगोकुलैआई। देहैंहियलगितापबुझाई॥
मरीगोपिकनकंतजिऐहैं । अधरसुधारसकबहुँपिऐहैं ॥ जिमिवासववारिदनपठाई । वारिधारवसुधाबरषाई ॥
सूखोवनकरतोहरियाई। तिमिहरिहमैंकबैब्रजआई ॥ हमहिंजिऐहैंतोयशलैहैं । असअवसरपुनिकबहुँनपैहैं ॥

दोहा-ग्रीषमदिनकरविरहकृत, उठीअनलव्रजग्राम। जारतिव्रजवनितालता, कबबरषिहिंघनश्याम॥४४॥

कोउबोलीपुनिगोकुलवारी। सुनहुसखीसबबातहमारी ॥ अबक्योंब्रजऐहैंयदुराई । देहैंक्योंपितमातुपठाई ॥
बहुतदिननमेंनिजसुतपाये। हियलगायदुखसकलमिटाये॥हमगरीबिनीगोपिनिकाँहीं।श्यामसुरतिकरिहैंअबनाँहीं॥
लाग्योराजकाजकोरंगा। रहिहैंसबयदुवंशीसंगा ॥ गोपगमारनक्योंसुधिकरिहैं । रैनदिवससुहृदनमुदभरिहैं ॥
व्याहिसुंदरीभूपकुमारी। करिहैंकहँअबसुरतिहमारी ॥ कहँगोपीकहँभूपकुमारी। तुमहिंनकसमनलेहुविचारी ॥

दोहा-समयसुरतिकीतबरही, द्वारद्वारजबआय। हरिमाखनमाँगतरहे, दोऊहाथओडाय ॥ ४५ ॥

ब्रजवनिताकोऊपुनिबोली। साँचीकहीसखीचिततोली ॥ वनवासिनीगमारिनिगोपी। ह्वैहैंकसइनकेअबचोपी ॥
सुनीपरतिअबबड़ीबड़ाई। देहैंकसइतआपगमाई ॥ कहवावतयदुकुलकेनाथा । विधिशिवधरततासुपदमाथा ॥
सबविधितेहैंपूरणकामा। हैंकमलाजिनकीप्रियबामा ॥ रमाविहायअहीरिनिलैके । रहिहैंकसजगमहँअसकैके ॥
अबनहिंहरिआवनअभिलाषौ । मेरीबातकहीमनराषौ ॥ छूटोशरनशरासनआवै । टूटोनेहनपुनिजुरिजावै ॥

दोहा-दर्पणपाहनप्रीतिपय, इनकोएकसुभाउ। फाटेफेरिजुरैनहीं, करियेकोटिउपाउ ॥ ४६ ॥

ब्रजअंगनाफेरिकोउभाषी। सिगरीगोपिनसोंअसभाषी ॥ गणिकारहीपिंगलाकोई । भाषतिहौंभाषीवहजोई ॥
सबतेह्वैकैरहबनिराशी। यहीसकलविधिहैसुखराशी ॥ महाकठिनसखिहोतिमिताई । पहिलेसुखपीछेदुखदाई ॥
तातेवनतप्रीतिकेत्यागे। कहिराख्योपिंगलाजोआगे ॥ पैसखिकाहकरैंयहिकाला । जादूडारिगयोनँदलाला ॥
बिसरतनहिंवहश्यामसलोनो। हैधौंकाहहमैंसखिहोनो॥समुझावहिंहममनकोभलभल।क्योंनहिंहोतअचलरेचंचल॥

दोहा-पैमनमोहनरूपमें, मोहिगयोमनदुष्ट। उततेतौलौटतनहीं, होतहमहिंपररुष्ट ॥ ४७ ॥

कोउव्रजवधूकहीपुनिबानी। यद्यपितैंसखिसत्यबखानी॥ पैनँदनंदनछैलछबीलो। रसिकशिरोमणिबड़ोमजीलो॥
तासुसनेहतोरिकिमिजाई। बीतिचारियुगयद्यपिजाई॥ जौनरंगचढिगोत्रयबारा। सोनहिंछुटैकोटिउपचारा॥
अबतोचढोसामरोरंगा। छूटिहिनहिंछोडेहुतेअंगा॥ भईनहमहींयहिविधिआली। रमहुँरीतिअसगहीरसाली॥
मोहिगईमोहनकेरूपा। छोडतिनहिंक्षणअंगअनूपा॥ यद्यपिहरिनहिंतेहिंअनुरागै। तद्यपिसोलाकोनहिंत्यागै॥
दोहा–वाकीऐसीवानिअलि, वरबसलेतलोभाय। फिरिवहितनुचितवतनहीं, मारतलगनलगाय॥ ४८॥
पुनिव्रजललनाकोउअसगायो। किमिअलिवहविसरैविसरायो॥ यहगोवरधनसुंदरशैला। धेनुचराईजहँव्रजछैला॥
यहवृंदावनमंजुलकुंजै। जहँप्रियसँगलूट्योसुखपुंजै॥ येगौवेंहरिचारनवाली। रह्योसंगजिनकेवनमाली॥
औरभूलियद्यपिसबजाई। क्योंवंशीविसरैविसराई॥ रामसंगखेल्योबहुखेला। कुंजनकुंजनछैलनवेला॥
भूलिजायकैसेयदुराजू। यदपिनवहपैइतसबसाजू॥ ४९॥ पुनिबोलीकोउगोपकुमारी। उद्धवतुमहूँलेहुनिहारी॥
दोहा–यायमुनाप्रियरंगकी, येकुंजैंसुखधाम। पुनिपुनिसुरतिकरावती, ऐसोसुंदरश्याम॥ ५०॥
जाकीगतिलखिलागिगयंदा। भोपरायवनकेरबसिंदा॥ जाकीललितमृदुलवहहाँसी। भैव्रजयुवतिनकीगलफाँसी॥
जासुतकनितिरछीमतिधीरा। लगीहियेमनुकैवरतीरा॥ जाकेवचनसुधारससानें। हरतेहियोपरतहींकाने॥
जाकीमहामाधुरीलीला। गावहिंरसिकरुचिरसबशीला॥ उद्धववैमनमोहनऐसे। व्रजवनिताबिसरावहिंकैसे॥५१॥
ऐसीसुनतसखीकीबानी। सबकीप्रीतिरीतिअधिकानी॥ करनलगींमूँदेदृगध्याना। प्रेमसोसुखनहिंजाइबखाना॥
दोहा–तदाकारह्वैकृष्णमें, अचलभईव्रजनारि। ठाढोनंदकुमारगुनि, तासोंकह्योपुकारि॥
कवित्त–सकलअनाथनकेनाथकमलाकेनाथ, व्रजकेभयेहोरखवारबारबारमें।
व्रजवनितानकेसनाथकेकरनहारे, प्राणनाथप्राणप्यारेउदितउदारमें॥
रघुराजआजुव्रजराजजूगोहारिसुनो, तुमतजिदूजोनादेखातहैसँसारमें।
करहुउधारअबव्रजकेअधारव्रज,-बूडतविरहविचवारिधिकीधारमें॥ ५२॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–पुनिउद्धवव्रजतियनको, नाथसँदेशबखानि, पुनिपुनिसमुझायोबहुत, हरिप्यारीपहिचानि॥
जबउद्धवबहुकह्योनिहोरी। तबभैविरहतापकछुथोरी॥ आयोतनुमेंनेसुकभाना। तनुतेनेसुकशोकपराना॥
धरिधीरजनेसुकव्रजबाला। पूजनसाजुआनितेहिंकाला॥ उद्धवकोहरिसखापियारो। जानिसबैकरिविमलविचारो॥
उद्धवकीपूजासबकीन्ही। आशिषबालविविधविधिदीन्ही॥ रचिरचिस्वादसुखदपकवाना।तुरतमँगायगृहनतेनाना॥
उद्धवकोभोजनकरवायो।निजकरसलिलढारिअँचवायो॥५३॥साँझसमयगुनिकैहरिदासा।आयबसतभोनंदनिवासा।
गोपिहुँनिजनिजभवनसिधारी। हियमहँसाँवलिमूरतिधारी॥
दोहा–यहिविधिउद्धवबसतभे, चारिपाँचहूँमास। वरणतश्रीयदुपतिचरित, भेटततियनउच्छ्वास॥
भोरहिंतेअरुसाँझप्रयंता। हरियशगावतसोमतिमंता॥ कढ़तजबैगोकुलकीखोरी। धायधायमिलतींव्रजगोरी॥
वरणतसुनतकृष्णकीलीला। चितवतरैनदिवसशुभशीला॥ उद्धवजहँजहँव्रजमहँजाई। तहँहरिनामैपरैसुनाई॥
श्यामनामअंकितगृहसोहैं। नितसनेहनवउद्धवजोहैं॥ बढतप्रेमव्रजदिनादिनदूना। देखिनपरतएकक्षणऊना॥
उद्धवकरिसुखमंजुलशोरा। कृष्णसुयशव्रजमेंचहुँओरा॥ गावतफिरतलाजतनुत्यागी। देतगोपिकनआनँदपागी॥
दोहा–जहँजहँउद्धवजातहैं, तहँतहँसबव्रजबाल। संगसंगविचरतफिरैं, कहतहायनँदलाल॥
यहिविधिगोकुलमहँसुखछावत। उद्धवबसेकृष्णगुणगावत ५४ जैदिनरहेनंदव्रजमाँहीं। तैदिनसबव्रजनारिनकाँहीं॥
क्षणसमबीतिगयेसहुलासा। कोहुकोजानिपरेनहिंमासा॥वरणतसुनतकृष्णगुणगाथा। विचरतगोपिनसाथहिंसाथा॥
उद्धवभूखप्याससबत्यागे।यदुपतिचरणकमलअनुरागे५५कहुँउद्धवयमुनातटआवत।गोपिनहरियशसुनतसुनावत॥

कहुँवृंदावनकुंजनमाँहीं। हरिविहारथलगुनितिनकाँहीं॥ गोपिनसंयुतकरतप्रणामा। व्रजरजलोटततामहिंठामा॥ प्रेमविवशमुखकढ़तिनबानी। उद्धवकीतनुसुरतिभुलानी॥

दोहा-कुसुमितवनसुरभितपवन, शीतलकुंजनछाँह। गोपिनयुतगावतसुयश, सुमिरतश्रीव्रजनाँह॥

जहँजहँयदुपतिलीलाकीन्हीं।तौनतौनथलउद्धवचीन्हीं॥गोपिनकोहरिसुरतिकरावत।तिनतेसहितआपशिरनावत॥ व्रजनारिनकोप्रेममहाना। इकमुखकोकरिसकैबखाना ५६ उद्धवअदभुतलखिहरिप्रेमा। जोफलज्ञानयोगतपनेमा॥ प्रेमरूपसिगरीव्रजनारी। हरिकेहितसबदियोबिसारी॥ कृष्णकृष्णमुखरटनलगीं हैं। सबकीमतिहरिपगनपगीहैं॥ उद्धवअचरजमनमहँमानी। गमनमधुपुरीसुरतिभुलानी॥ काकेकौनकहाँतेआये। प्रेमविवशउद्धवबिसराये॥

दोहा-एकसमयव्रजकुंजमहँ, बैठिकृष्णकोदास। वंदतव्रजवनितनचरण, गायोसहितहुलास॥ ५७॥

कवित्त-जनममरनमेंपरनतेडरनवारे, मुनिजनजाकोमनपावनसदाचहैं।
तौनयदुनाथजूकेपगनकोपूरोप्रेम, लीन्ह्योंलूटिगोकुलकीग्वालिनीमुदीमहैं॥
भुविकेभयेकोभूरियेइफलपायोपूरि, बिनहरिनेहकविदेहमुरदाकहैं।
हाथजोरिमाँगैयदुराजजूसोंरघुराज, व्रजवनितानसोंनकबहुँअदारहैं॥ ५८॥
कहाँतोयेगहनकीग्वालनीगँवारनीवि-शेषिव्यभिचारिणीनरूपकीनकांतिकी।
कहाँहरिप्रेमपूरोजाकोचहैंयोगीजन, जपतपयोगरीतिकरिबहुभाँतिकी॥
रघुराजपियतपियूषऊँचनीचकोऊ, मृतकजियतकौनऔधिदिनरातिकी।
ऐसेयदुराईप्रीतिकियेअपनाईलेत, गनतबड़ाईनाछोटाईजातिपाँतिकी॥ ५९॥
सौरभसरोजतनुवदनसरोजसम, ऐसीदेवदारामहासुछबिप्रकाशिनी।
तिनहूँनपायोनहिंपायोकमलाहुकहूँ, यदपिहियेकीहैनिरंतरनेवासिनी॥
नृपतिकुमारीऔरनारीहैंविचारीकौन, जेतीरघुराजरतिराजकीविलासिनी।
सुखकीअवधिजोपसारिनिजहाथैमिलि, वृंदावननाथैलूट्योवृंदावनवासिनी॥ ६०॥
छोड़ोनहिंजातजोकुटुम्बताहित्यागिदीन्ह्यों, त्यागिकुलकानिवेदपंथहूँप्रमाणके।
हरिकीसनेहीभईभईवसुधामेंधन्य, जाकेहेतुतरशैंमुनीशब्रह्मज्ञानके॥
तातेरघुराजव्रजराजकृपाकैकैमोहिं, देहींवरयेहींदेनवारेवरदानके।
पावैंजन्मवृंदावनकुंजनलतानिकब-हूँतौपरिजैहैंपगव्रजवनितानिके॥

दोहा-वृंदावनतरुलतनमें, जन्मआशममभूरि। जातेनितउड़िउड़िपरै, व्रजवनितनपगधूरि॥ ६१॥

सवैया-पंकजपाणिपसारिजिन्हैंपदमानितपूजतिहैनिजदासी।त्योंपदमासनऔरपुरारिमुनीशधरैंहियप्रीतिकैखासी॥
तेयदुनंदनकेपदपंकजगोकुलकीनवलाचपलासी। धारिहियेविरहानलतापबुझायदईभइआनँदरासी॥६२

दोहा-व्रजवनितनकीचरणरज, वंदहुँबारंबार। जिनमुखनिर्गतहरिसुयश, हरतकलुषसंसार॥ ६३॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधितेउद्धवमतिधामा।व्रजनारिनकरिविविधप्रणामा॥पुनिगोपिनसोंदोउकरजोरी। बोल्योबारहिंबारनिहोरी॥ जननिदेहुजोमोहिंरजाई। तौअबजाउँजहाँयदुराई॥ जानततौविसबकेघटकी। पैतुवदशाप्रेमलटपटकी॥ मैंहूँनेकुकहौंतहँजाई। सकैंनसिगरोशेषहुगाई॥ सुनिगोपीह्वैगईअधीरा। उपजीदुसहदूनउरपीरा॥ बोलीनैननसोंजलढारत। उद्धवकहामरेकहँमारत॥ तुमहिंदेखिआयोकछुधीरा। तुमहिंबिनाकिमिरहिहिशरीरा॥

दोहा-उद्धवतुमकोनिरखिकै, रहिगेतनुमेंप्रान। व्रजवनितनतनुदाहिकै, तुमहुँकहतअबजान॥

सुनिउद्धवअतिशयदुखपायो।नंदयशोमतिढिगपुनिआयो॥कह्योसुनहुहेनंदयशोमति। शासनदेहुजाहुँजहँयदुपति॥

नंदयशोमतिसुनिदुखपागे । नैननवारिबहावनलागे ॥ कह्योकहैंहमकेहिंविधिजाना । जसमनतसकीजैमतिमाना ॥
उद्धवकियसाष्टांगप्रणामा।चढ़तभयोरथपरछविधामा॥नंदयशोमतिहूदुखछाये। उद्धवकहँपहुँचावनआये ॥ ६४ ॥
उद्धवगमनसुनतब्रजवासी । आवतभेसबह्वैदुखरासी ॥ घेरिलियोरथकोचहुँओरा । दुखीकरहिंअतिआरतशोरा ॥
दोहा–भूषणवसनअमोलबहु, निजनिजघरतेलाय । हरिकेहितअरुउद्धवै, दीन्हेंप्रीतिबढ़ाय ॥
गोपनंदआदिकचितचोपी।औरयशोमतिआदिकगोपी॥ढारतआँसुपुकारतआरत।बोलतभेतनुसुधिनसम्हारत ६५
उद्धवमनकीवृत्तिहमारी।अनतजायनहिंछोंड़िविहारी॥हमहैंकृष्णकमलपददासा । क्षणक्षणकृष्णदरशकीआसा ॥
श्यामनामनिकसैंमुखमाँहीं।औरबातनिकसैकछुनाँहीं॥यहतनुकरैकृष्णपरणामा।औरनचहैंकछूधनधामा ॥ ६६ ॥
कर्मविवशजेहिंयोनिहिंजाई । चौराशीमहँभ्रमैसदाई ॥ तहँतहँहोइकृष्णपदप्रीती । गहैचित्तदूसरीनरीती ॥
दोहा–जपतपसंयमनेमयम, जोनकियोहमकोय । जोयाकोफलहोइकछु, तौहरिपदरतिहोय ॥
उद्धवयहसबहरिसोंकहियो।पुनिहमारबदिदोउपदगहियो ॥जोहमकरीकछूसेवकाई।तौवरदेहिंयहीयदुराई ॥ ६७ ॥
असकहिविकलभयेब्रजवासी।उद्धवभोसमानदुखरासी॥जसतसकैपुनिरथहिंचलायो।हरिपालितमथुरहिंपुनिआयो॥
कियोजाइहरिचरणप्रणामा।दौरिमिलेतिनकोघनश्यामा॥ कह्योसखाब्रजतेतुमआये । ब्रजमेंदिनकसबहुतबिताये ॥
कहौसबैब्रजकेरहवाला । कहाकह्योतुमसोंब्रजबाला ॥ कहौनंदयशुमतिकुशलाई । विरहमोरजिनसह्योनजाई ॥
दोहा–तबउद्धवकरजोरिकै, करिगोपिनपरणाम । मंदमंदबोलतभयो, सुनहुनाथघनश्याम ॥
कहाकहौंकछुकहिनहिंजातो । तुमहिंदेखिइतमनपछितातो ॥ तुमसोंवनीनयहयदुराई । आयेवृंदावनहिंविहाई ॥
मेरेरह्योज्ञानअभिमाना । ब्रजतियप्रेमविलोकिविलाना॥कहनशक्तिइकमुखममनाँहीं।शेषसहससुखनहिंकहिजाँहीं॥
तुमजानहुउनकीरतिरीती । जानहिंवईकरबजसप्रीती ॥ असकहिभूषणवसनदियेसब । दीन्हेनंदपयानकियोजब ॥
उग्रसेनढिगप्रभुपठवायो । उद्धवजायसोसकलदेखायो ॥ पुनिवसुदेवहुकेढिगजाई । कहीसबैब्रजकीकुशलाई ॥
दोहा–रामनिकटपुनिजायकै, ब्रजकोसकलहवाल । आदिअंततेकहतभो, उद्धवबुद्धिविशाल ॥ ६९ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीम
हाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे सप्तचत्वारिंशस्तरंगः ॥ ४७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–पुनिसबकेमनकीसदा, ज्ञाताश्रीभगवान । सोकुबरीकोजानिलिय, वेधितमनसिजबान ॥
सुधिकरिपूर्वदत्तवरदाना । लैसँगउद्धवकियेपयाना॥१॥देख्योतासुभवनकीशोभा।जेहिंलखिशचीशिवामनलोभा॥
अनुपमसकलभौनकोसाजू । रच्योमदनमनुनिजकरआजू॥सोहहिंसखी[illegible]हसछविधामा।मानहुँसजीकामकीवामा ॥
मोतिनकीझालरिझुकिझूलैं । बँधेपताकाऊँचअतूलैं ॥ परमप्रकाशिततनेविताना । सुखदसेजसंयुतउपधाना ॥
आसनअनुपमअमलअमोला । बंदनवारविराजतलोला ॥ धूपसुरभिछाईचहुँओरा । मणिमयदीपप्रकाशअथोरा॥
दोहा–विविधरंगकेसुमनयुत, लसैंभौनमेंमाल । भागतासुकोकहिसकै, जेहिंचाह्योनँदलाल ॥ २ ॥
हरिकहँआवतनिरखिकूबरी । ह्वैगैतुरतअभागदूबरी ॥ उठीआशुआसनतेराजा । तुरतजोरिनिजसखिनसमाजा ॥
नहिंसमातआनँदउरमाँहीं । चलीलेनआगूहरिकाँहीं ॥ हरिप्यारीद्वारेलगिआई । हरिहिंहाथगहिगईलेवाई ॥
मणिमयआसनमहँबैठाई । बीरीदैपुनिअतरलगाई॥औरहुकियोविविधसतकारा।प्रेमविवशनहिंतनुहिंसम्हारा ॥३॥
जससतकारकियोभगवानै । तिमिउद्धवहिंकियोसनमानै ॥ उद्धवतेहिंकरपूजनपाई । हरिआसनसमीपमहँजाई ॥
दोहा–आसननिजकरपरसिकै, बैठ्योमहिमतिवान । कुबरीहूँगमनतभई, करनहेतुअस्नान ॥ ४ ॥
करिमज्जनलगायअँगरागे । पहिरचोवसनज्योतिकेजागे॥रतनऔरकुसुमनके षण । पहिरचोअँगअँगअमलअदूषण ॥

कियोसुखदआसवकरपाना। खायोपुनिसुरभितमुखपाना ॥ हरिकेमिलनहेतुहरिप्यारी। हरिसमीपहरवरपगुधारी॥
कुबरीकीतहँजानिअवाई। उद्धवबैठोद्वारहिंजाई ॥ रत्नजड़ितपरयंकअमोला। झुर्कीझालरैंमुक्तनलोला ॥
तेहिपरयंकजाययदुराई। बैठतभेआशुहिंसुखपाई ॥

दोहा-उतैकूबरीसाजिसब, सखिनसहितशृंगार। मिलनहेतुआवतभई, श्रीवसुदेवकुमार ॥

करतिकटाक्षमंदमुसक्याई।चलतिकछुकपुनिरहतिलजाई॥हावभावलीलादरशावै।यहिविधिकंतनिकटसोआवै ५॥
ताकोयदुपतिनैनचलाई। लियोसमीपहिंआशुबोलाई ॥ नवसंगमलज्जितसुकुमारी। मंदमंदप्रियनिकटसिधारी ॥
शंकितचरणधरतिमहिधीरे।चमकहिंचहुँकितनूपुरहीरे॥कंकणकलितकमलकरताको।गह्योकृष्णआनँदरसछाको ॥
बरवशलियोसेजबैठाई। तासुभागकछुकहीनजाई ॥ नेसुकताकरचंदनलीन्हें। प्रभुतेहिंजगतधन्यकरिदीन्हें ॥

दोहा-तरसहिंजाकेदरशको, दिविदेवनकीदार। सोहरिकुबरीसंगमें, कीन्ह्योंविविधविहार ॥ ६ ॥

प्रियहिंपेखिनैननभरिप्यारी। नैनसफलनिजलियोविचारी ॥ मध्यउरोजनपायमुकुंदै। वारतिजगकेसकलअनंदै ॥
मेट्योमदनतापअतिघोरा।सोसुखकहिनसकतमुखमोरा॥७॥कोटिजन्मजेयत्नकराहीं। तेयोगिनिकबहूँमिलिजाहीं॥
तेहरिताकोलैअँगरागा। मिलेआपकरिअतिअनुरागा ॥ सोकैवल्यनाथकहँपाई। बडभागिनिमाँग्योसुखछाई ॥
प्रीतमयहवरमोकोदेहू।जोमोपरअतिकरहुसनेहू॥८॥करहुकछुकदिनममगृहवासा। कीजैममसँगविविधविलासा ॥

दोहा-सुंदरश्यामसरूपयह, होतनैनतेओट। मेरेउरमेंलागिहै, कुलिशसरिसचटचोट ॥ ९ ॥

ताकेवचनसुनतयदुराई। बोलेमधुरमंदमुसकाई ॥ हमहींहैंमधुपुरीसदाहीं। विहरहिंगेतिहरेसँगमाँहीं ॥
तुमसमाननहिंकोउजगप्यारी। तुवमेंअतिशैप्रीतिहमारी॥यहिविधिदैकुबरीकहँमाना। उद्धवयुतमानदभगवाना ॥
तासोंपूजितह्वैघनश्यामा। आवतभयेआपनेधामा॥१०॥दुराराध्यसर्वेश्वरयदुपति। तेहिंआराधनकरिकैशुभमति ॥
हरिपदप्रीतिनचितअनुरागै।होईब्रह्महमअसजोमाँगै॥सोशुभमतिनहिंजगतकहायो।उदधिहुँपैठिसींपलैआयो ॥११॥

दोहा-भोरभयेयदुनाथप्रभु, कीन्ह्योंमनहिंविचार। पूर्वकह्योअक्रूरसों, ऐहैंआपअगार ॥

असविचारिकैरामहुँश्यामा। लैसँगमेंउद्धवमतिधामा ॥ प्रियअक्रूरकरनकेहेतू। बाँधनकछुकारजकोनेतू ॥
गयेककाकेभवनमुरारी ॥१२॥ प्रभुआवतअक्रूरनिहारी ॥ भाइनसहितदूरितेदोरी। पर्‌योचरणमहँदोउकरजोरी ॥
कह्योअक्रूरनामहैमेरो। लघुसेवकपदपंकजतेरो॥यदुपतिआशुहिंलियोउठाई। अतिमोदितह्वैगिरासुनाई ॥ १३ ॥
तुमसयानहौककाहमारे।पालनीयहमबालतिहारे॥ हमहिंउचितकीबोपरनामा। तुमहिंउलटिकसकियमतिधामा ॥
असकहिरामश्यामदोउभाई। सादरअक्रूरहिंशिरनाई ॥

दोहा-पृथकपृथकपुनिमिलतभे, उद्धवरामहुँश्याम। कहिनसक्यो कछुप्रेमवश, दानपतीतेहिंठाम।

रामश्यामलैगयोलेवाई। कनकसिंहासनपरबैठाई ॥१४॥ दोउप्रभुकेपुनिचरणपखारी। लियोधारिशिरमेंसोवारी ॥
पुनिअंगनलेप्योअँगरागा।अरपेउसुमनमालबड़भागा॥भूषणवसनअमोलअनेका। साज्योअँगअँगसहितविवेका ॥
सादरधूपदीपदरशायो। विविधभाँतिनैवेद्यलगायो ॥ प्रभुकीपूजाकीन्हींजेती। उद्धवआदिकदासनतेती ॥ १५ ॥
यहिविधिपूजिप्रणामहिंकीन्ह्यो।हरिपदनिजगोदहिंधरिलीन्ह्यो॥मंदमंदमींजतकरलाई।बोल्योहरिबलसोंसुखछाई १६

दोहा-जोपापीकंसहिंहन्यो, भलोकियोयदुनाथ। यदुकुलकोदुखसिंधुते, लियउधारिनिजहाथ ॥

यहयदुकुलहैनाथतिहारा।याकेहौतुमहींरखवारा ॥ १७ ॥ तुमदोऊहोपुरुषप्रधाना। जगकारणजगमयभगवाना ॥
तुमदोउबिनावस्तुनहिंकोई।लघुबडऊँचनीचजगजोई १८निजशक्तिनसिरजतजगमाँहीं। करिप्रवेशभासहुबहुधाँहीं॥
जिमिचरअचरअनेकनयोनिन।भासतपंचतत्त्वबहुविधितिन॥तिमिअनादितुमसदास्वतंत्रा।भासहुबहुविधियहजगतंत्रा
निजशक्तिनसतरजतमगुनतै।यहजगसिरजहुपालहुहनतै॥बँधहुनतासुकर्मगुणमाँहीं।ज्ञानीमेंअज्ञानकहुँनाँहीं॥२१॥

दोहा-जेउपाधिदेहादिहैं, तेतुममेंहैंनाँहिं। तातेतुम्हरोजन्मनहिं, असमुनिकहहिंसदाहिं ॥

छंदहरिगीतिका–यातेनवंधमोक्षतुमकोवंधमोक्षजेभाषहीं। तेपुरुषविमलविचारमनमेंनेकहूँनहिंराखहीं ॥ २२ ॥
तुमतेप्रगटयहवेदपंथपुराणजगमंगलहितै। पाखंडपथतेहोतवाधितजवैखलतेचहुँकितै ॥
तवशुद्धसतोगुणमयतुम्हेंअवतारधारिधराथलै। पाखंडपथखंडनकरहुखेलतनिसूदतखलुखलै॥२३॥
तिमिअवहुँप्रभुवसुदेवगृहयुतशेषलियअवतारहै। हरिहरणहेतुअपारयहभुवभारतवसंचारहै ॥
करिहौकरैहौअपुरअंशीनृपनकोसंहारहै। अक्षोहिणीहनिअमितदैहौयदुनसुयशअपारहै ॥ २४ ॥
येघरहमारेआयकेपगपरतवडभागीभये। सबदेवअरुनरदेवपितरहुभूतभयतुमइतठये ॥
दोहा–तुवचरणोदकसुरसरी, पावनकरतितिलोक। सोप्रवेशतुमहींकियो, धन्यधन्यममवोक ॥ २५ ॥
कवित्त–भक्तनकेप्यारसत्यवार्णाकेवदनहार, नेकउपकारमेंअपारमानियतुहै।
वारवारदासनकीकामनाकेदेनहार, तुमसेउदारनहिठीकठानियतुहै ॥
कहैंरघुराजबढिबोहूघटिबोहूनाहिं, दीसततुम्हारयाविचारआनियतुहै।
नंदकेकुमारतुम्हैछोडिकैभजतआन, पंडितगँवारताहिहमजानियतुहै ॥ २६ ॥
सवैया–शेषमहेशसुरेशहुआदिकनारदआदितिन्हैतपभारो। दुर्ल्लभहैतिनहूँतुम्हरीगतिसोप्रगटैप्रभुनैननिहारो ॥
श्रीरघुराजकृपाकरिदीजियेयावरदाननआनविचारो। पुत्रकलत्रहुदेहमेंगेहमेंनेहनहोइहमेशहमारो ॥ २७ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–यहिविधिअस्तुतिसुनतहरि, मंदमंदमुसक्याय। मधुरगिरामोहतमनहिं, वोलतभेयदुराय ॥ २८ ॥

श्रीभगवानुवाच।

वृथावडप्पनआपउचारे। हमतोवालकअहैंतिहारे ॥ तुमसयानपुनिककाहमारे। अहौसराहनयोगउदारे ॥
यदुकुलकेतुमसदासलाही। ज्ञानवृद्धवयवृद्धउछाही ॥ पोषणलालनपालनकारी। तुमहिंहमारेहौमतिधारी ॥
हमपरकरहुकृपासबकाला।जानहुहमकोतुमनिजबाला॥२९॥जेजनअपनोमंगलचहहीं। तुमसमसज्जनकेपदगहहीं॥
देवहोतस्वारथीसदाँहीं।जानतदीनदशाकछुनाँहीं ॥ महाभागवतआपसमाना। हेतुअहेतुकदयानिधाना ॥ ३० ॥
दोहा–माटीपाहनदेवजे, अरुजलतीर्थअगाधु। वहुतकालमहँशुचिकरत, दरशकरतहींसाधु ॥ ३१ ॥
सुहृदश्रेष्ठतुमअहौहमारे। करहुकाजयहककाउदारे ॥ मोरमीतजेपांडुकुमारा। वसैंहस्तिनापुरैमँझारा ॥
तिनकीखवरिलेनकेहेतू। जाहुहस्तिनापुरमतिसेतू ॥ ३२ ॥ हमअससुन्योआपनेकाना। जवतेमरिगेपांडुप्रधाना ॥
तवतेकुंतीसहितदुखारी। पांडवरहतधर्मकेधारी ॥ यहवसंतऋतुमहँनृपराई। लियोपांडवनपुरहिंवोलाई ॥ ३३ ॥
नृपधृतराष्ट्रमोहवशमाँहीं। निजसुतपांडुकुमारनकाँहीं॥मानतहैंनहिंतिनहिंसमाना। निजपुत्रनकीप्रीतिलोभाना ॥
दुर्योधनजेहिंज्येष्ठकुमारा। सोहैसाँचोअघनिअगारा ॥ ३४ ॥
दोहा–जाहुहस्तिनापुरककका, लखहुअंधनृपरीति। नीकीनहिंनीकीकिधौं, कीन्ह्योसकलप्रतीति ॥
तहँकोसबवृत्तान्तजो, कहिदीजोमोहिंआय। जेहिविधिलहिहैंसुहृदसुख, करिहौंसोइउपाय ॥ ३५ ॥
यहिविधिकहिअक्रूरको, रामऔरघनश्याम। पगुधारेउद्धवसहित, मुदितआपनेधाम ॥ ३६ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजवांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजावहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते
अनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे अष्टचत्वारिंशस्तरंगः ॥ ४८ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–सुनिशासनयदुनाथको, सोअक्रूरमतिमान। रथचढ़ितुरतहिंकरतभो, हस्तिनपुरहिंपयान ॥

द्वारदेशपहुँच्योजवजाई। द्वारपालदियखबरिजनाई॥ अधनृपतिलियतुरतबोलाई। पहुँच्योजबैसभामधिजाई॥
पौरवेंद्रजसअंकितऐना। निरखतभोअक्रूरनिजनैना॥ लख्योअंबिकासुतमहराजै। शतपुत्रनयुतसहितसमाजै॥
भीष्मद्रोणविदुरमतिवाना॥१॥कृपाचार्य्यबाह्लीकप्रधाना॥ सोमदत्तअरुभूरिश्रवहू। कर्णद्रोणसुतअरुपांडवहू॥
औरहुसुहृदनसकलनिहारा। निरखिअक्रूरउठेदरबारा॥अंधनृपतिउठिनिकटबुलाई। हाथपकरिलीन्ह्योबैठाई॥२॥

दोहा--यथायोग्यसबकोमिले, तहाँगांदिनीनंद। कुशलप्रश्नपूँछ्योकह्यो, पायोपरमअनंद॥ ३॥

नृपअक्रूरसुबुद्धिविशाला। रह्योनागपुरमहँकछुकाला॥ देख्योअंधनृपतिकीरीती। करतआपनेसुतपरप्रीती॥
रहतसुयोधनकेआधीना। सोछलमेंअतिअहैप्रवीना॥४॥ तेजओजबलसद्गुणजेते। निवसहिंपांडुसुतनमहँतेते॥
सोनहिंनीकलगतनृपकाँहीं।प्रजाप्रीतिपांडवहिंनमाँहीं॥सोनलग्योअक्रूरहिंनीको।गुन्योतिनहिंअधरमरतठीको॥५॥
पुनिअक्रूरकुंतीगृहआये। तहाँअकेलेविदुरसिधाये॥ विषभोजनलाक्षागृहदाहन। कर्मसुयोधनकेजेआहन॥

दोहा--विदुरकह्योअक्रूरसों, आदिहुअंतलगाय। सोसुनिकेअतिदुखलह्यो, आँखिनआँसुबहाय॥ ६॥

पुनिअक्रूरकेचरणनआई।गिरिपृथाअतिशयदुखछाई॥सुधिकरिनैहरकीभरिआँसू। कह्योभ्रातसोंविगतहुलासू॥७॥
मातापिताभगिनिअरुभाई। भ्रातपुत्रऔरहुभौजाई॥ कबहुँकसुरतिकरतहैंमेरी। कहहुभ्रातअक्रूरनिबेरी॥८॥
मेरेभ्रातपुत्रभगवाना। दासनपालककृपानिधाना॥ कबहूँपितुभगिनीसुतकाँहीं। सुमिरतहैंनिशिवासरमाँहीं॥
तैसहिंकमलनैनबलरामा। सुरतिकरतकबहूँबलधामा॥९॥रिपुनबीचमैंबसौंदुखारी।जिमिवृकमधिहरिणीभयभारी॥

दोहा--कौनदिवसवहहोइगो, जादिनयदुपतिआय। मोरिगरीबिनिकीविपति, दैहैंद्रुतहिंमिटाय॥

कौनदिवसहोईवहभाई। जादिनकरुणाकरियदुराई॥ पिताहीनबापुरेबालकन।समुझैहैंकहिवचनसुखदघन॥१०॥
असकहिलगीकरनहरिध्याना। कहतिवचनहेयोगप्रधाना॥हेविश्वात्मविश्वकेभावन।कृष्णकृष्णदासनसुखछावन॥
हेगोविंदमैंहौंशरणागत। पाहिपाहिकसदुखननिवारत॥बूड़हुँसुतयुतशोकसिंधुमहँ।कसनउधारकरहुगहिकरकहँ॥
तुवपदकमलछोड़ियदुराई। रक्षकदुतियनमोहिंदेखाई॥ विनाकृपावसुदेवकुमारा। होतनपारसिंधुसंसारा॥
तुमहींअहौमुक्तिकेदाता। तुमहींअहौविश्वकेत्राता॥ १२॥

दोहा--परब्रह्मपरमातमा, योगेश्वरयदुराज। मैंशरणागतआपकी, राखहुमेरीलाज॥ १३॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिसुमिरिचरणहरिकेरे। तैसहिंनिजकुलजननवनेरे॥भूपतिप्रपितामहीरावरी।रोवनलागीशोकबावरी॥१४॥
विदुरअक्रूरशोकसमछाये। कुंतीकोयहिविधिसमुझाये॥ तैंनिजसुतनछोटनहिंजानै। कृपापात्रयदुपतिकेमानै॥
धर्मअनिलअश्विनीकुमारा। औरइंद्रकेअहैंकुमारा॥१५॥ असकहिपुनिअक्रूरउठिधाये।बिदाहोननृपनिकटसिधाये॥
जानिअंधनृपकोसुतनेही। पांडुसुतनमेंप्रीतिनतेही॥ सभामध्यतेहिंवचनउचारा। जौनकह्योवसुदेवकुमारा॥१६॥

अक्रूर उवाच।

दोहा--हेविचित्रवीरजसुवन, कुरुकुलकीरतिदानि॥ तुमहिंनऐसेचाहिये, देखहुमनअनुमानि॥

अनुजरावरोपांडुउदारा। जबतोवहसुरलोकसिधारा॥ तबतेतुमराजासनपाये। यदपिताहितेज्येष्ठहुजाये॥ १७॥
धर्मसहितमहिकोमहिपालै। आनँदप्रजनदेतजोपालै॥ निजपुरसुतराखैसमदीठी। देतकबहुँनहिंसंगरपीठी॥
होइनीतिरतशीलसुभाऊ। सोपावतमंगलनृपराऊ॥ ताहीकीकीरतिजगमाँहीं। यामेंनृपसंशयकछुनाँहीं॥ १८॥
यातेऔररीतिजोकरई। सोनृपअवशिनरकमहँपरई॥ जगमहँसहतअवशिअपवादा। कबहुँरहतनहिंबिनाविषादा॥
तातेमोरवचनाचितआनहुँ। पांडुसुतननिजसुतसममानहुँ॥ १९॥

दोहा--बहुतकालकोजगतमें, नहिंकोहुकोसंवास। रहततनुहुँभरिनहिंसदा, तौकहाँविभौविलास॥

सुतदारादिकअरुपरिवारा। लहिहैंफलकरनीअनुसारा॥कोउकाहूकेजाइनसाथै।रोकिहिंकोउनमरतगहिहाथै॥२०॥

एकहिमरतेएकहिजनमत। एकहिसुखएकहिदुखभोगत॥२१॥ पुत्रसरिसहैशत्रुनआना।मरेहरतधनधामहुँनाना॥
जेहिंसुतहितअधर्मकरिभारी। जोरयोधनमान्योहितकारी॥सोपुत्रहुनहिंरहतनिदाना।जीतहुकरतबापअपमाना२२
मूढमोहवशसुतहितमानै। धर्मअधर्मनेकुनहिंजानै॥ पुत्रअधर्मीपितुकेजीतै। धनकोहरतअधर्मअभीतै॥
दोहा–जोअधर्मकरिकुमतिजन, रक्षतधनपरिवार। तेताकोबीचहिंतजत, करतकलेशअपार॥२३॥
आपहिंजौनपापकरिराखत। ताकोअवशिसकलफलचाखत॥जगमेंसुखहुभोगतोनाँहीं।रहतलालचीअतिमनमाँहीं॥
मरेजातहैनरकनिघोरा। तहँपावतोकलेशकठोरा॥ अहैअधर्मिनकीगतिऐसी। तुमकोबूझिपरैपुनिजैसी॥ २४॥
पैमानहुँनृपकहोहमारो। स्वप्नसरिसयहलोकविचारो॥निजआतमसरूपकोजानहुँ। पांडुसुतननिजसुतसममानहुँ॥
सुनिअक्रूरवचनमनभाये। नृपधृतराष्ट्रसभामधिगाये॥ २५॥

धृतराष्ट्र उवाच।

कहीदानपतिजोतुमवाणी। धर्मरीतिमंजुलकल्याणी॥
दोहा–सोसुनिमोहिंवाढ्योहरष, होतनहियेअघाउ। अमीपियावतजिमिजनहिं, क्षणक्षणअधिकउराउ॥२६॥
पैअक्रूरतेरोउपदेशा। ममममनचंचलधरतनलेशा॥ बँधिगोसुतसनेहकेडोरे। अबनहिंबहुरतअहैबहोरे॥
जिमिचपलाचमकैघनमाहीं। पैठहरतिएकहुछिननाहीं॥२७॥ कोअन्यथाईशकृतकरई।कोवाहनचढ़िसागरतरई॥
हमजानहिंअक्रूरउदारा। हरणहेतुसिगरोभूभारा॥ हरियदुकुलमहँलियअवतारा॥२८॥ जोसिरजतनाशतसंसारा॥
मायातासुकोऊनहिंजानै। सबथलरहतविश्वभगवानै॥ हरिविहारथलयहसंसारा। विश्वनाथवसुदेवकुमारा॥
ताकोबारबारमतिधामा। हममहिशिरधरिकरहिंप्रणामा॥ २९॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–अंधनृपतिकेवचनसुनि, ह्वैअक्रूरउदास। माँगिबिदासबसुहृदसों, गमन्योनिजैनिवास॥
तुरतदानपतिमथुरहिंआयो३० रामश्यामकेपगशिरनायो॥कह्योजोरिकरदोउप्रभुकाँहीं।वहआँधरनृपमानतनाँहीं॥
फूटीहियहुउपरकीआँखी। विषमरीतिउरमेंकरिराखी॥ जेहिंहितमोकोनाथपठायो। सोमैंताहिबहुतसमुझायो॥
पैनिजपुत्रअधिकसोमानै। पांडुसुतनपरनेहनठानै॥ अहैंपांडुसुतराउरदासा। कियेरावरेकोविश्वासा॥
पृथादशाप्रभुदेखिनजाती। सुमिरतअश्रुधारबहिआती॥ कहिअसमौनदानपतिभयऊ।हरिहूँहियविचारअसठयऊ॥
दोहा–पांडुपुत्रममदासहैं, तिनकोशोकनिवारि। देहुँभारतिराजमें, कौरवकुलसंहारि॥
सुखकरआनँदअंबुनिधि, यहपूर्वार्धप्रमान। मैंनिजमतिअनुसारकछु, भाषाकियोबखान॥
हरिलीलामृतजानिकै, जहँतहँकियविस्तार। तासुदोषनहिंदीजिये, सज्जनसकलउदार॥
यदपिमूलभारिरचनको, मैंकियनिजअनुमान। वरणतवरणतहरिचरित, अपनेहिंतैअधिकान॥
उनइससैग्यारहिंसुभग, संवतआश्विनिमास। कृष्णतृतीयाशनिदिवस, श्रीपूर्वार्धप्रकाश॥ ३१॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे पूर्वार्धे नवचत्वारिंशस्तरंगः॥ ४९॥

दोहा–महाराजरघुराजकृत, आधोदशमस्कंध। यहसमातमुद्रितभयो, संयुतछंदप्रबंध॥

समाप्तोऽयं दशमस्कन्ध पूर्वार्धः।

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालय–(बंबई.)

दशमस्कंधउत्तरार्ध.
द्वारका
कालयवन
कृ.
मुचकुंद
कृ.
रु.
युद्ध
कृ.
जांबुवंत
मणि
सदा वृषभाः
सत्राजित
कृ.
स.
का.
अ.
कृ.
लक्ष्मणा
भौ.
कृ.
स.
शंबर
पौंड्र
कृ.

द्विविद
रा
कृ
सुदामा
सुभद्रा
रा
अर्जुनयति
शिशुपाल
कृ
शाल्व
प्रद्युम्न
कुरुक्षेत्र
यात्रासमूह
रोम.
राम
भस्मासुर
कृ
परब्रह्म
वेद.

श्रीगणेशाय नमः।
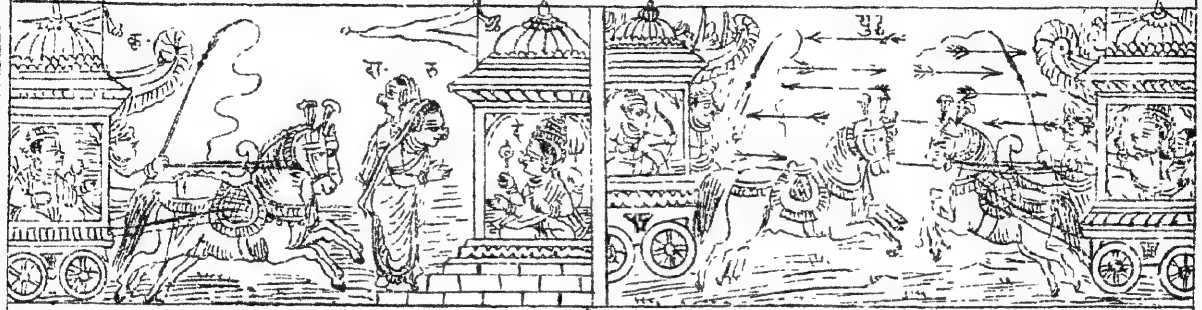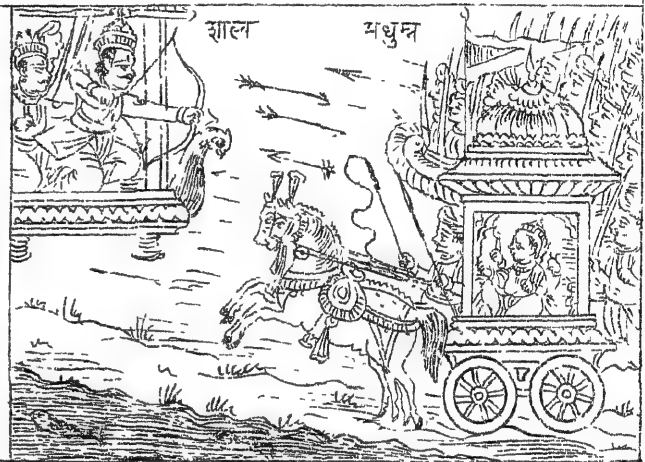
श्रीमद्भागवत–आनन्दाम्बुनिधि।

दशमस्कंध (उत्तरार्ध) प्रारंभः।

सोरठा–जयजयआनँदकंद, दासदीहदुखदंशकर। जयवृंदावनचंद, जयलीलालोनीकरन॥
दोहा–जयहरिगुरुअरविंदपद, तरणिसिंधुसंसार। जयगुरुपितुविश्वनाथपद, वंदौंबारहिंबार॥
जयवाणीजयगजवदन, जयशुकजयश्रीव्यास। दशमउत्तरार्धेरचौं, पुरवहुमेरीआस॥
कछुहरिवंशहुकोलियो, गर्गसंहिताकेरि। औरब्रह्मवैवर्त्तकछु, औरहुरोचकहेरि॥
उत्तरार्धमेंसकलथल, कृष्णकथाविस्तार। व्यंग्यभावऔतरनऊ, हैमूलहिंअनुसार॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–अस्तिप्राप्तिरानीउभै, भोजराजकीजोय। जरासंधनिजजनकयह, जायपरीपगरोय॥ १॥
कह्योपितासोंकंतविनाशा॥२॥सुनिमागधकियकोपप्रकाशा॥करीप्रतिज्ञाभूपतिभारी॥करिहौंमहिअयादवीसारी॥३॥
असकहितेइसअक्षौहिणिदल॥साजिचल्योमथुरैकोपितभल॥मथुरैघेरिलियोचहुँओरा॥कियोउपद्रवपरमकठोरा॥४॥
देखिविकलपुरवासिनकाँहीं। हरिबोलेबलरामहिंपाँहीं॥५॥मागधलैआयोदलभारी। मारहुयाकोविक्रमधारी॥६॥
याहीहेतुहमारतुम्हारा॥होतभयोअवनीअवतारा॥७॥हरिबलके-८।९।१०-असकरतविचारा॥नभतेद्वैरथतेजअपारा॥
दोहा–दारुकलैआवतभयो,नायनाथपदशीश॥करीविनयकरजोरिकै,रथतयारजगदीश॥११।१२।१३।१४।१५॥
चढिकैदोउवसुदेवकुमारा। करहुजरासुतसैन्यसंहारा॥ सूतवचनसुनिदोउभगवाना। आयुधसहितचढेदोउयाना॥
कछुकसैन्यलीन्हेंनिजसंगा। चलेकरनमागधसोंजंगा॥ पूरबद्वारहिंकढिभगवाना। कियोशङ्खकोशोरमहाना॥१६॥
पांचजन्यधुनिसुनिअरिसैना॥होतभईआशुहीअचैना॥कृष्णनिरखिमागधमुसक्याई॥कोपितदीन्ह्योंवचनसुनाई १७॥
बालककृष्णलौटिगृहजाहू॥तुमसोंहोतनयुद्धउछाहू॥१८॥होयसानुतोलरुबलरामा॥मोहिंहनुकीगमनहुयमधामा १९
दोहा–जरासंधकेवचनसुनि, यदुपतिकछुमुसक्याइ। मंदमंदमाधुरवचन, दीन्ह्योंताहिसुनाय॥

श्रीभगवानुवाच।

विक्रमकरैंशूरनहिंभाषै। तैंतोयमपुरकोअभिलाषै॥ तातेतोरवचननहिंमानै। मरणशीलकिमिऔषधिजानै॥२०॥
माधववचनसुनतमगधेशा। दियोसैन्यकोतुरतनिदेशा॥ धावहुधरहुधरहुदोउभाई। जामेंकैसहुनहिंबचिजाई॥
सुनिप्रभुशासनभटचहुँओरा॥छायलियोहनिआयुधघोरा२१परेनलखिहरिबलधनुधारी॥दुखितभईतियचढींअटारी॥
तबहरिबलनिजधनुटंकोरा॥ छायरह्योअरिदलमहँशोरा॥२३॥शरऐंचतखैंचतधनुदोऊ॥लख्योनमागधदलमहँकोऊ॥
दोहा–भयेमंडलाकारधनु, रहेदिशनशरछाय॥ २४॥ गजवाजीराजीकटी, भाजीसैन्यसकाय॥
करिनकुंभकटिगेतहँकेते। कटेतुरंगसवारसमेते॥ पैदलरुंडमुंडमहिछाये। टूकटूकबहुरथदरशाये॥ २५॥
बहनलगीतहँशोणितसरिता२६।२७कादरउरहिंभीतिकीभरिता॥ हलमूसलबलभद्रौधारी॥मागधकीसबसैन्यसँहारी
यहिविधिमागधकटकअपारा॥रामकृष्णकीन्ह्योंसंहारा२९यहनहिंतिनकोअचरजअहई॥जोजगविरचिफेरिसंहरई ३०
सिंहसमानदौरितेहिंठामा। गह्योविरथमागधकहँरामा॥३१॥ताकेमारनकोमनदीन्ह्यों॥आयकृष्णतबवारणकीन्ह्यों॥
दोहा–लैऐहैयहसैन्यपुनि, नहिंमारोबलभाय। जरासंधकोछोड़िदिय, कृष्णवचनचितलाय॥ ३२॥
चल्योकरनतपमानिगलानी। अबतोजियेहोययशहानी॥मारगमहँतेहँनृपसमुझाई॥मगधदेशमहँदियपहुँचाई॥३३॥

रामकृष्णरिपुतेजयपाई ॥३६॥ मथुरहिंगेदुंदुभीवजाई ॥ ३७ ॥ तबतोउग्रसेनमहराजा।चलेलेनहरिजोरिसमाजा ॥
मथुरांविविधभाँतिसजवाई।घरवरकनककुंभधरवाई॥३९॥हरिवलभूपहिंकियेप्रणामा।तेउआशिषदीन्हीअभिरामा॥
बंदीयशगावहिंअनुरागे।बाजकबाजबजावनलागे॥मथुराकहँप्रवेशप्रभुकीन्ह्यो।नगरनिवासिनअतिमुददीन्ह्यो ॥४०॥
दोहा-निरखिनगरसुखमासुखद, गयेभौनदोउवीर । मागधदलकोसकलधन, दियभूपहिंमतिधीर ॥ ४१ ॥
यहिविधिमागधसत्रहिंवारा।लैलेआयोसैन्यअपारा।पैशठरामकृष्णसोंहारच्यो।यवनयुद्धअवमनहिंविचारच्यो॥४२।४३
तेहिसमीपनारदहिंपठायो । सोयवनेशहिंबहुसमुझायो॥४४॥तहँयवनेशमहावरजोरा । साजियवनदलतीनकरोरा ॥
मथुराकहँघेरच्योद्रुतआई४५यदुकुलकहँअतिभयउपजाई॥लखियदुवंशिनशोकअपारा।कृष्णरामअसकियोविचारा।
याकेलड़तमाहँमगधेशा । ऐहैकाल्हिपरौंयहिदेशा४७॥मथुरानगरीसूनिविचारी । धरिलैजैहैयदुकुलभारी ॥ ४८ ॥
दोहा-तातेअवनहिंउचितहै, करिबोइहाँनिवास । औरठौरकुलराखिकै, याकोकरौंविनास ॥ ४९ ॥
असविचारिसागरमधिमाँहीं । विरच्योपुरीद्वारिकाकाँहीं॥द्वादशयोजनकीचौड़ाई । तैसेहिनगरीकीलंबाई ॥ ५० ॥
जहँविशुकरमाविधिनिपुणाई।विरचिआपनीदियोदेखाई ५१॥कल्पवृक्षकेसोहैंवागा।सुधासरिसजलकूपतड़ागा५२॥
कनकस्फटिककेभौनउतंगा।परसहिंरविमंडललतिनशृंगा५३लोकपालनिजनिजप्रभुताई।सवैद्वारिकादियोपठाई ५४
पारिजातअरुसभासुधर्मा । पठयेइंद्रपरमप्रदशर्मा॥५५॥ वसतद्वारिकामरैनकोई।सबकोशक्रसरिससुखहोई ॥५६॥
दोहा-तहँयदुकुलपहुँचायप्रभु, मथुरावलकहँसौंपि । आपुनिरायुधकढ़तभे, यवनजरामनचोंपि ॥ ५७॥५८ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्री
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ
दशमस्कंधे उत्तरार्धे पंचाशत्तमस्तरंगः ॥ ५० ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-पूरणिमाकेचंद्रसे, जबकढिचलेगोविंद । कालयवनलखिकैतहाँ, पायोपरमअनंद ॥ १ ॥
चारिबाहुसोहतवनमाला।पीतांबरश्रीवत्सविशाला॥कमलनैनसुंदरतनुश्यामा।युगकपोलकुंडलछविधामा२॥३।४॥
इमियदुपतिकहँलखियवनेशा।सुधिकरिनारदकेरनिदेशा ॥५॥ येईकृष्णअहैंअसजानी।धायोशस्त्रछोडिअभिमानी ॥
आवतयवनहिंलखिहरिभागे।मानहुँमहाभीतिरसपागे॥६॥पगपगमहँपकरतसोधावत।पावैकिमिजेहिंयोगिनपावत ७
बारबारअसकहतपुकारी।उचितनभागबतोहिंगिरिधारी८यहिविधितेहिंलैगयकृपाला।जहँसोवतमुचुकुंदभुवाला ९॥
दोहा-निजपटनृपहिंओढाइकै, कियहरिगुहाप्रवेश । पाछेकोपितजातभो, आतुरतहँयवनेश ॥
लखिपीतांबरजानिव्रजेशै।भयोकोपअतिशययवनेशै॥मोहिंलेयाइइतसोवतकारो।असकहिकीन्हिसिचरणप्रहारो १०
उठ्योनैनमींजतमुचुकुंदा । चहुँदिशिनिरख्योतेजअमंदा११भूपतिदीठपरतयवनेशा। भयोभस्मतेहिंक्षणैनरेशा१२
तबकुरुपतिशुकसोंकरजोरी । बोलतभयेबहोरिनिहोरि ॥

राजोवाच।

कोवहपुरुषपराक्रमकैसो । कहौनाथसोयोतहँजैसो॥१३॥ सुनिकुरुपतिकीगिरासुहाई । शुकाचार्यबोलेसुखपाई ॥

श्रीशुक उवाच ।

सोइक्ष्वाकुवंशअवतारा । मांधाताकोअहैकुमारा ॥
दोहा-नामरह्योमुचुकुंदजेहिं, विप्रभक्तिमतिमान । वडोसत्यवादीनृपति, शीलमानवलवान ॥ १४ ॥
एकसमयसुरअसुरलड़ाई । होतभईअतिशयभयदाई ॥ असुरनसोंसुरविजयनपाये । तबमुचुकुंदसहायबोलाये ॥

तहँधनुशरधरिनृपमुचुकुंदा । रक्षाकीन्होंदेवनवृंदा ॥ एकवर्षलोयेनृपनाँहीं । कियोपगजयदैत्यनकाँहीं ॥ १५ ॥
तवप्रसन्नह्वैकहँसुरवानी।माँगहुवरभूपतिमलखानी॥१६॥१७अंश्रीतियसुतजनपरिवारा।रहिनगयेसंसारतुम्हारा ॥१७॥
जैसेगोगोपालचरावैं । तैसेप्रभुयहिजगतनचावैं ॥१९॥ मुक्तिछोडिमाँगहुवरदाना । गतिदातातोहैंभगवाना ॥२०॥

दोहा-तवभूपतिकरजोरिकै, माँग्योयहवरदान । बहुतदिनातेनाँहिंकियो, शयनअहौंअलसान ॥

तातेमोहिंनींदअतिआवै।भस्महोयजोमोहिंजगावै२१एवमस्तुकहिदेवनदीन्हें।नृपगिरिगुहाशयनतबकीन्हें २२।२३
गयोयवनजवजरितेहिंठामा।तवनृपपढिगआयेवनश्यामा।।अतिसुंदरस्वरूपलखिराजा।शंकितभोसुमिरतनिजकाजा।
पुनिनवाइभूपतिनिजमाथा । बोल्योवचनजोरियुगहाथा ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥

मुचुकुंद उवाच ।

कौनआपहैंमोहिंवतावो । निजप्रकाशत्रिभुवनमहँछावो॥ कमलचरणकंटकपथगामी। केहिकारणआयेइतस्वामी ॥
कीरविकीशशिकीसुरराई । कीपावकप्रकाशअधिकाई ॥ ३० ॥

दोहा-पैमोहिंजानोपरतहै, होनारायणनाथ । वचनसुधासमप्याइकै, कसनहिंकरहुसनाथ ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

हमइक्ष्वाकुवंशकेअहहीं । नाममोरमुचुकुंदहिकहहीं ॥ मांधाताकोअहौंकुमारा ॥३३॥ गयोकालसोवतहिंअपाग॥
मोकोंकोजगायप्रभुदयऊ३४अपनेहिंपापभस्मह्वैगयऊ॥पुनिमोकोतुमपरेलखाई३५तेजाविवशनहिंपरोदेखाई।३६॥
जवमुचुकुंदकहीअसिवानी । तवहँसिवोलेशारँगपानी ॥ ३७ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

जन्मकर्मममअहैंअनंता।विधिशिवशेषहुलहैंनअंता॥३८।३९।४०॥पैतुवप्रीतिदेखिनरराई।नेसुकतुमकोदेहुँसुनाई॥
हरणभूमिभाराकरतारा । विनयकरीअतिवारहिंवारा ॥ ४१ ॥

दोहा-तवमैंश्रीवसुदेवको, भयोसुवनमहिआय । वासुदेवकहवावतो, जानिलेहुनृपराय ॥ ४२ ॥

कंसप्रलंबादिकखलमारचो।वहुविधिसंतनकोदुखटारचो॥तुम्हरेतेजजरचोयवनेशा।कृपाकरनआयोयहिदेशा॥४३॥
पूरबतुममाँग्योवरदाना । मोकोदरशदेहिंभगवाना । तुमकोमहाभागवतचीन्ह्यों । यातेआयदरशइतदीन्ह्यों ॥४४॥
मांगहुवरमोसोंमहिपाला । होहिंकामनासिद्धिउताला ॥ मेरीशरणआयकैकोई । भूपतिकवहुँदुखीनहिंहोई ॥ ४५॥

श्रीशुक उवाच ।

यदुपतिकीसुनिगिरासुहाई । नृपमुचुकुंदमोदअतिपाई ॥ गर्गवचनकोसुमिरणकरिकै । प्रेममगनह्वैधीरजधरिकै ॥

दोहा-तीनिलोककेनाथको, जानिआपनोनाथ । करनलग्योअस्तुतिनृपति, मुदितजोरियुगहाथ ॥ ४६ ॥

छंदत्रिभंगी-जयजयसुखकारीलोकविहारीभवभयहारीदासनके । अरिगर्वप्रहारीवरवपुधारीनित्यविहारीरासनके ॥
अजशक्रमहेशाशारदशेशासकलसुरेशापदवंदैं । प्रभुकृपानिवेसाधरिवहुवेषाहरहुहमेशादुखदंदैं ॥
तुममायामोहेजनदुखपोहेतुमहिंनजोहेअंधलखैं । दुखरूपनिकेतैतियासमेतैतहँसुखहेतैविषभखैं ॥ ४७ ॥
लहिवरनरकायाविनहिंउपायानहियदुरायातुमहिंभजैं । जिमिपशुहरषानैकूपमहानैतृणहिंलोभानैगिरिनछजैं ॥४८॥
सुतवित्ततियरातेनृपमदमातेकालहिंजातेमैंनगन्यो ।तजिजगतअशक्तिहिकियोनभक्तिहिलह्योनमुक्तिहिंवृथाहिंजन्यो
तनुसतिपहिचाने-॥४९॥-नृपमदमानेचढिवहुयानेसैन्ययुतै ।महिफिरेभुलानेकरिमदपानेतुमहिंनजानेनंदसुतै॥५०॥
बहुविषयहुलासेलोभहिंफाँसेकरतविलासेजेजनहैं । तिनकोतुमकालैभक्षतहालैआपुहिंव्यालैजिमिवनहैं ॥ ५१ ॥
तनुभक्षशृगालनतेहिंकरिपालनरचिवहुमालननरपतिह्वै।स्यंदनचढिधायोआरिनभगायोकालगमायोशठमतिह्वै ५२
समनृपमोहिंवंदैंमैंअरिदंदेकरिवहुफंदेभूमिजित्यो।रमणिनरसराच्योतिनवशनाच्योमृगसमसाँच्योवारकित्यो ॥५३॥
तजिसवजगभोगैकरिवहुयोगैचाहतलोगैस्वर्गसुखै । तृष्णावशधावैनहिंमुदआवैश्रमभारिपावैहोतदुखै ॥ ५४ ॥
जनभ्रमतअभंगैलहिसतसंगैतवभवभंगैहोतअहै । तवचरितअलेखैतुमकहँदेखैअतिसुखलेखैमगनरहै ॥ ५५ ॥

नाहतवनजाईसतनृपगईराजिमहाईलजनहितै । सोविनहिंउपाईमैंअवपाईश्रीयदुराईतुमहिंचितै ॥ ५६ ॥
पदकमलहिलागीभजहिंविरागीतिहिहत्यागीवरनरैं । तजिदीनदयालैलहिकलिकालैयहिजगजालैकाहँपरैं ॥५७॥
तेहिंतेतजिआसैसहितहुलासैरमानिवासैतुमहिंभजौं । तुमहोअविकारीअघमउधारीयहीविचारीअवनतजौं ॥ ५८॥
अनितापनितायोलोभसतायोतोषनपायोभाँतिकोई । अवसरनहिंआयोदासकहायोसबसुखछायोचरणजोई ॥
प्रभुकृपाकरीजैयहथशलीजैभक्तिहिंदीजैमोहिंहरे । मतितुवरसभीजैदुखसुखछीजैप्रेमहिंपीजैमोदभरे ॥ ५९ ॥

दोहा–सुनिअस्तुतिमुचुकुंदकी, बोलतभेयदुनाथ । महाराजतुमविमलमति, पैहौसतिसुदगाथ ॥

वरदीबोकहियदपिलोभायो।तदपिनतुवमनडुल्योडुलायो६०मोरभक्तजेहैंजगमाँहीं।तिन्हैंकामनाउपजतिनाँहीं ६१
जासुवासनाभयनहिंछीनी।कबहुँकतेहिमतिहोतमलीनी॥६२॥ पैजिनकेउरभक्तिविलासै।तिनकीमतिकोनिषैनत्रासै॥
विचरहुजगमहँमोकहँध्याई।पैहौभक्तिमेरिसुखदाई६३॥क्षत्रियधर्ममहँजियगनमारा।तपकरितिनकहँकरोउधारा ६४॥
औरजन्मविप्रवरह्वैके । सबभूतनदायाद्दगज्वैके ॥ करिहौगमनभूपममधामा । जहाँजातयोगीतजिकामा ॥

दोहा–यामेंऔरनहोयगो, जानिलेहुमहिपाल । भक्तहमारेरहहुगे, तुमसर्वदाविशाल ॥ ६५ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे एकपंचाशत्तमस्तरंगः ॥ ५१ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–यहिविधिप्रभुकीलहिकृपा, सोमुचुकुंदनरेश । करिप्रदक्षिणाकृष्णको, तजनचह्योवहदेश ॥

कह्योकंदरातेमहिपाला।लखिलघुजीवशुन्योकलिकाला१उत्तरदिशिवदरीवनजाई२कियचितदैतपपरगतिपाई ३।४
तहँतेलौटिकृष्णभगवाना । यवननमारिहरयोधननाना ॥५॥ चलेद्वारिकैवृषनलदाई । जरासंधआयोतहँधाई ॥६॥
मागधसैन्यदेखिप्रभुभागे । मनुजचरित्रकरनअनुरागे॥७॥ छोडिदियोधनमनहुँडेराई । बहुयोजनगेहरिबलराई॥८॥
भगेजातमागधदोउदेखे । लियोयवनधनकादरलेखे ॥ सैन्यसहितधायोमगधेशा । कृष्णरामगमनतजेहिंदेशा ॥९॥

दोहा–दूरिजायहरिबलतहाँ, थकिगिरिचढेउतैल । जहँवरषहिंवारिदनितै, नामप्रवर्षणशैल ॥ १० ॥

हरिबलदुकेजानिगिरिमाँहीं।घेरलियोमागधचहुँधाँहीं॥शुचिइंधनादियअनललगाई । शैलप्रवर्षणदियोजराई ॥११॥
जरतशैलतहँतेदोउतरके । एकादशयोजनमहँढ़रके॥१२॥पुनिद्वारिकैगयेदोउभाई।मागधतिनकीखबरनपाई॥१३॥
मरेजानितजिनिजअदेशा । मगधदेशगमन्योमगधेशा ॥१४॥ द्वारावतीजाययदुराईवसतभयोअतिशयसुखपाई ॥
व्याह्योरेवतिकहँबलराई । नवमस्कंधकथासोगाई॥१५॥ शाल्वऔरमागधशिशुपाला । कुंडिनपुरमहँजुरेभुवाला॥

दोहा–श्रीभगवानगोविंदपुनि, व्याहेभीष्मसुताहि । कमलारूपिणिरुक्मिणी, स्वयंवरहिदरशाहि ॥ १६ ॥
तिनभूपनमदमोरिकै, हरिरुक्मिणिहरिलीन । जैसेदेवनजीतिकै, गरुड़सुधावशकीन ॥ १७ ॥

सुनिशुकदेववचनकुरुराई । फेरिजोरिकरगिरासुनाई ॥

राजोवाच ।

यदुपतिकरिराक्षसीविधाना।रुक्मिणीहरयोसुन्योयहकाना।जेहिविधिजीतिशाल्वशिशुपालै।हरिरुक्मिणिल्यायेनिजआलै
कृष्णचंद्रकीकथासुहाई।देहुसुनाइमोहिंमुनिराई।।कृष्णकथाअतिशयसुखदाई।श्रवणपरतकलिमलनाशिजाई ॥१८॥
कथासुधाकोपानहिंपाई।कौनरसिकजोजायअघाई।।सुनतपरीक्षितकेमृदुबैना।कहतलगेशुकदेवसुचैना ॥१९॥२०॥

श्रीशुक उवाच ।

देशविदर्भएकअतिपावन । तहँकोभीष्मकभूपसुहावन ॥

दोहा–ताकेइककन्यारही, अरुनृपपंचकुमार । रुक्मीतिनमेंज्येष्ठभो, जगमहँअतिबलवार ॥ २१ ॥ २२ ॥

सुनिरुक्मिणीकृष्णगुणरूपा।वरिलीन्ह्योंमनतेइरभूपा॥२३॥२४भ्रातमातुपितुसहितउछाहू।करनचहेहठिकृष्णविवाहू॥
तबरुक्मीवरज्योतिनकाँहीं।देनचह्योशिशुपालविवाहीं॥२५सुनिरुक्मिणीपरमदुखपायो।इकपंडितहरिपासपठायो॥२६
सोद्वारिकैगयोद्रुतधाई। हरिढिगद्वारपदियपहुँचाई॥ सिंहासनबैठेयदुनाथा। लखिद्विजकहँनायोप्रभुमाथा॥२७॥
पुनिपूजनकियविविधप्रकारा।जिमिहरिपूजहिंदेवउदारा॥२८पुनिविप्रहिंभोजनकरवायो।चरणचापिअसवचनसुनायो
दोहा-विप्रकुशलहैधर्मतुव, करोतोनहिंकलेश। रह्योसदासंतोषकरि, यहद्विजधर्महमेश॥ २९॥ ३०॥
जोसंतोषकरैमनमाँहीं। तासुवचनहैसत्यसदाहीं॥३१॥ असंतोषशक्रहुसुखनाँहीं। सुखसंतोषीदीनहुँकाँहीं॥३२॥
जेसंतोषीसाधुउदारा। तजेअहंकारहुममकारा॥ जीवदयापरहैतपधामा। शिरसोंतिनकोअमितप्रणामा॥ ३३॥
विप्रजौनराजाकेराजै। वसैप्रजासुखसहितसमाजै॥ सोभूपतिमोकोअतिप्यारो। मेरेपुरकोगमननहारो॥ ३४॥
जौनदेशतेतुमइतआये। ताकीकुशलकहोसुखछाये॥ हमकोजेहिंविधिशासनदेहू। सोहमकरिहैंनहिंसंदेहू॥३५॥
दोहा-जबब्राह्मणसोंअसकह्यो, शीलसिंधुयदुनाथ। तबरुक्मिणिकीपात्रिका, दीन्ह्योंहरिकेहाथ॥
तबयदुपतिबोलतभये, तुमहींदेहुसुनाय। तबब्राह्मणबाँचनलग्यो, परमानंदहिपाय॥ ३६॥

रुक्मिण्युवाच।

छंदचौ०-त्रिभुवनसुंदरजनश्रुतिकंदरतवगुनबसिदुखछीने। तवरूपसुहायोजिनदृगआयोदृगफलपूरणकीन्हें॥
सुनिसोगुनरूपैपरमअनूपैममनलाजविहाई। तवपदढिगजाईरह्योलोभाईकह्योसत्ययदुराई॥ ३७॥
असकोकुलवारीअहैकुमारीवरैनतुमहिंनिहारी। विद्याकुलशीलैधनवयडीलैतुमसमतुमहिंविहारी॥
अतिआनँदकंदैसबजगवंदैनरलोकहिंअभिरामै। यदुकुलकेनायकसबविधिलायकपूरणसबमनकामै॥३८॥
तेहिंतेवरिलीन्ह्योंतनुमनदीन्ह्योंतुमहिंसमर्थहिंजानी। प्रभुदयाविचारीइतपगधारीकरोदारगहिपानी॥
तुववीरहिंअंशैचेदिपदंशैकरैनहींद्रुतजामैं। मृगपतिकेभागेअबनहिंलागैजंबुकऔरदगामैं॥ ३९॥
मैंजोशुभकर्मैकरियुतधर्मैदानयज्ञव्रतनेमा। सरकूपअरामैरचिअभिरामैजप्योहरिहिंसहप्रेमा॥
तौदेवकिनंदनदुष्टनिकंदनकरैव्याहइतआई। नहिंनृपशिशुपालादिकविकरालागहैपाणिदुखदाई॥ ४०॥
ममकालिविवाहाहैउरदाहातातेकरिअतुराई। प्रथमहिंछिपिआवोपुनिदललयावोसबलदभंकन्हाई॥
चैद्यादिकसैनेहनिशरपैनेमोरिमदेहठिनाथा। राक्षसविधिखोलैवीरजमोलैमोहिंहरिकरहुसनाथा॥ ४१॥
अंतःपुरमाँहींबंधुनकाँहींहनिहमकेहिंविधिव्याहैं। असजोप्रभुभाषौतौकरिराखौयहउपायमनमाहैं॥
कुलरीतिहमारीव्याहअगारीगिरिजामंदिरजाँहीं। तहँआयमुरारीकरधनुधारीहरहुहमैंसुखमाँहीं॥ ४२॥
जेहिपदरजकाँहैशिवसमचाहैसज्जनहितअघनासै। तेहिंजोनहिंपैहौंतजितनुदैहौंकरिव्रतविनाहिंप्रयासै॥
प्रभुसत्यबखानोयहहठिमानोजबलगिमिलिहोनाँहीं।तबलगिशतजनमैंहैयहमनमेंवरिहौंआपहिकाँहीं॥४३॥
दोहा-यहविधिपातीबाँचिकै, फेरिजोरियुगहाथ। कहनलग्योसोविप्रवर, निरखतमुखयदुनाथ॥

ब्राह्मण उवाच।

दोहा-यहरुक्मिणिसंदेशमैं, गोविँददियोसुनाय। अनुचितउचितविचारिकै, करहुसोइयदुराय॥ ४४॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे द्विपंचाशत्तमस्तरंगः॥ ५२॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-पातीरुक्मिणिकीसुखद, सुनिकैपायअनंद। करसोंकरगहिविप्रको, हँसिबोलेयदुनंद॥ १॥

श्रीभगवानुवाच।

जबतेरुक्मिणिकीसुधिपाई। तबतेंनैननींदनहिंआई॥ मैंजानेहुँयहविप्रउदारा। रुक्मीरोक्योव्याहहमारा॥ २॥
द्विजसबभूपनकोमदमोरी। हरिलैहौंरुक्मिणिवरजोरी॥३॥कालिजानिप्रभुहोनविवाहा।दारुकसोंकहँसहितउछाहा॥
परमवेगचारिहुँमम वाजी। लैआवहुस्यंदनमहँसाजी॥४॥ सुनतसूतरथसाजितुरंता।लायठाढ़भोजहँश्रीकंता॥५॥
साँझजानिवसुदेवकुमारा। लैद्विजकहँरथभेअसवारा॥ दारुकताजिनहन्योतुरंगा। वाजीचलेपवनकेसंगा॥
दोहा–एकरातिहींमेंगये, कुंडिनपुरयदुनाथ। रुक्मिणिकोअरुविप्रको, कीन्ह्योंआशुसनाथ॥ ६॥
भीषमभूपरुक्मकहँडरिकै।चेदिपकोविवाहचितधरिकै॥व्याहचारसबलग्योकरावन।दुःखितह्वैसुमिरतजगपावन ७॥
नगरवजारनगलिनझराई।भवनभवनमहँध्वजाबँधाई॥८॥बहुविधिनरनारिनसजवायो।सुरभितधूपितधूपकरायो।९॥
पितरनदेवनपूजनकीन्ह्यों। भूसुरकोबहुभोजनदीन्ह्यों॥विप्रनसोंस्वस्तैनपढ़ाई॥१०॥ कन्याकोविधिवतनहवाई॥
सुभगवसनभूषणपहिरायो।रक्षाबंधनपुनिबँधवायो ११ तहाँविप्रवरहोमहिंकीन्हें १२राजाकनकधेनुबहुदीन्हें॥१३॥
दोहा–तैसहिंदमघोपहुतहाँ, करिचेदिपकोचार॥ १४॥ कुंडिनकोगमनतभये, सँगलैनृपवलवार॥ १५॥
तिनकोलैरुक्मीअगुवानी॥दियजनवासपरमसुखमानी॥१६॥ दंतवक्रशाल्वहुमगधेशा॥पौंड्रकविदुरथआदिनरेशा॥
चेदिपव्याहकरावनहेतू। आयेकुंडिनसैन्यसमेतू॥१७॥जोकहुँरामकृष्णइतऐहैं।तोरणमेंभगायहमदैहैं॥ १८॥१९॥
यहहवालसुनिकैवलरामा। कृष्णहुगयेहरणकेकामा॥२०॥ युद्धजानिलैसैन्यमहाई।आयेकुंडिनकोबलराई॥२१॥
रुक्मिणिमनसंदेहबढायो। आयेहुद्विजनहिंजाहिंपठायो॥२२॥गईयामभरीबीतितियामा।काहेनहिंआयेश्रीधामा२३
दोहा–मोमेंकछुनिंदितलख्यो, तातेश्रीयदुराय। मेरेकरकोगहनहित, आयेनहिंइतधाय॥ २४॥
भोअभागिनीपरशिवरानी। भइप्रातिकूलपरतयहजानी२५यहिप्रकारचिंताकरिबाला।मूँदेउअंबुजनैनविशाला२६॥
तेहिंक्षणरुक्मिणिकेछविधामा।फरकेउरूभुजाहगवामा२७ताहीक्षणयदुनाथपठायो।रुक्मिणिनिकटविप्रवरआयो॥
विप्रहिंपेखिपरमसुखपागी। कृष्णआगमनपूछनलागी॥२९॥विप्रकह्योआयोयदुनंदन।तेरोप्रणराख्योरिपुदंदन३०॥
यदुपतिआगमसुनतकुमारी। मगनभईसुखसिंधुमँझारी॥तीनहुँलोकविप्रकहँथोरा। देतहोतछोभितमनमोरा॥
दोहा–असविचारिपंडितपगन, रुक्मिणिकियोप्रणाम। कह्योऋणीहौंउऋणनहिं, तोसोंमैंमतिधाम॥ ३१॥
भूपतिसुनियदुनाथअवाई। धन्यभाग्यआपनीगनाई॥३२॥विविधभाँतिलैपूजनसाजू।विविधभाँतिबजवावतबाजू॥
विविधभाँतिभूषणपटआछे।विविधभाँतिमणिगणबहुआछे। विविधभाँतितियगानकराई। लेनचलेनृपहरिअगुवाई॥
गयेजबहिंभूपतिकछुदूरी।देखीउड़तव्योमअतिधूरी॥ निकटजाइयदुवरकहँदेखी। लह्योमोदभीषमकविशेखी॥
कियोधरणिमहँदंडप्रणामा।पूजनकियोसविधिसुखधामा॥३३॥ पुरबाहेरजनवासकराई।विविधभाँतिकीभेटचढाई॥
दोहा–यथायोग्यसबकोकियो, भूपतिसबव्यौहार। यथायोग्ययदुवरसहित, पायोसबसतकार॥ ३४॥ ३५॥
रामकृष्णनिरखनपुरवासी।आयेसकलमानिमुदरासी॥निरखिकृष्णशोभासुखदाई। रहेपलकतजिदीठिलगाई॥३६॥
आपुसमहँसिगरेबतराहीं। येइरुक्मिणीलेहिंविवाहीं। रुक्मिणिकेहैंयोग्यविहारी।अहैविहारिहिंयोग्यकुमारी॥३७॥
जोकछुसुकृतकियेहमहोहीं।दैवहोइजोहमपरछोहीं॥ तोरुक्मिणिकरगहैंमुरारी। पूजैतबहीआशहमारी॥ ३८॥
असकहिपुरजनगेनिजगेहू। बँधेसकलयदुनाथसनेहू॥पुनिमातारुक्मिणिनहवाई।गिरिजागृहकोचलीलेवाई॥३९॥
दोहा–चलीचरणसोंरुक्मिणी, कृष्णकमलपदध्याय४०गहेमौनव्रतसखिनयुत, पीतांवरछविछाय॥
गिरिजामंदिरमहँयदुराई। हरिहैंरुक्मिणिकहँहठिआई॥ असशंकितह्वैसबमहिपाला।चलेसैन्यलैसंगविशाला॥
भेरीदुंदुभिशंखमृदंगा। बाजेतेहिंक्षणएकहिसंगा॥४१॥ यहिविधिगिरिजामंदिरपाहीं। चलीरुक्मिणीपूजनकाँहीं॥
करहिंमंगलामुखीसुगाना।चलीअलंकृतद्विजतियनाना४२गायकगिरिजाअस्तुतिकरहीं।रुक्मिणिसंगपरमसुखभरहीं
गिरिजामंदिरमहँयहिभाँती।पहुँचिगईरुक्मिणिछविपाँती॥चरणपखारिआचमनकरिकै।कियमंदिरप्रवेशसुखभरिकै॥

दोहा–तहँवृद्धाद्विजनारिसब, विधिकीजानविहारि। चंदनकरवावतभई, मंगलवचनउचारि ॥
गिरिजावंदनरुक्मिणिकीन्ह्यों ॥४५॥ ऐसेवचनमंदकहिदीन्ह्यों॥शक्तियर्तजोहोहुभवानी।गहेंपाणिममशारँगपानी ॥
बारबारमैंकरोंप्रणामा। पुजवहुआजमोरमनकामा॥४६॥असकहिपुनिमज्जनकरवायो। चंदनअक्षतसुमनचढ़ायो ॥
धूपदीपपुनिमुदितदेखायो॥विविधभाँतिनैवेद्यलगायो॥४७। पुनिसधवानारिनकहँपूर्जी।रुक्मिणिकृष्णआशनहिंदूजी
तेसधवातियुतअह्लादा।रुक्मिणिकहँदीन्ह्योंपरसादा॥भूपसुताकियतिन्हैंप्रणामा४९।तज्योमौनव्रतसोछविधामा॥
दोहा–गिरिजामंदिरसोंकढी, भीषमसुतासुजानि। रत्नजडितकंकणसहित, सखीपाणिगहिपानि ॥ ५० ॥
कुंडलमंडितयुगलकपोला। रत्नमेखलालंकअमोला॥अलकैंलटकिलटकिमुखहलकैं।अधरबिंबशोभासुठिझलकैं ॥
मधुरकरहिंनूपुरपगशोरा। गमनजासुगजगतिमदमोरा॥ कुंदकलीसेदंतविराजैं।रतिरंभाजेहिंछविलखिलाजैं॥५२॥
भूपसुताकहँनिरखिनरेशा। मोहिगयेभूलेनिजवेशा ॥ लगेपंचशरशरदुखदाई ॥ ५३ ॥ गिरभूमिमहँसुधिबिसराई ॥
अस्त्रशस्त्रछूटेइकसंगा। तिमिस्यंदनमातंगतुरंगा॥ मनहुदेवमायामहिआई। सबभूपनकहँलियोलोभाई ॥ ५४ ॥
दोहा–मंदमंदगमनतलली, जबगेमंदिरद्वार। अलकटारिनिरखनलगी, कहँवसुदेवकुमार ॥
यदुनंदनकोतहँलख्यो, स्यंदनसपदिसवार। दुखद्वंद्वनिदूरीकियो, आनंदनिइकवार ॥ ५५ ॥
रथआरोहिततुरततहँ, यदुपतिरथहिंचलाय। रुक्मिणिकोशत्रुनलखत, निजरथलियोचढाय ॥
युद्धरामकोसौंपिकै, गमनद्वारिकाकीन्ह। मनहुँशृगालनमध्यते, सिंहभागनिजलीन्ह ॥ ५६ ॥
जबदलतेरथनिकासिगो, तबजागेसबभूप। गोपहर्योधिकधिकहमैं, असबोलेमतिकूप ॥ ५७ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधि
राजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे त्रिपंचाशत्तमस्तरंगः ॥ ५३ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–निजनिजवाहनमेंचढ़े, निजनिजलैहथियार। निजनिजदललैचलतभे, सबभूपतिइकबार ॥ १ ॥
आवततिनहिंदेखियदुवीरा। सन्मुखखड़ेभयेरणधीरा॥ करिकोदंडकठिनटंकोरा। कीन्हेंसिंहनादअतिघोरा ॥२॥
कोउमतंगकोउचढेतुरंगा। कोउस्यंदनमहँयुद्धउमंगा॥ नृपनसैन्यमहँएकाहिबारा। यदुवंशीछोड़ोशरधारा ॥
तैसहिंमगधादिकबलवाना। बारबारवर्षतभेबाना॥ जैसमघामेघगिरिमाहीं। बारबारबूँदनझरिलाहीं ॥ ३ ॥
यदुदलमूँदिगयोशरधारैतबरुक्मिणिकोभयोखभारै॥शंकितपतिमुखनिरखनलागी।कहीनकछुलज्जितभैपागी ॥४॥
दोहा–विहँसिकह्योगोविंदतब, सुंदरिभयमतिमानु। तेरोदलशत्रुनदलै, अबहिंजितैयहजानु ॥ ५ ॥
तेहिंक्षणभयोयुद्धअतिघोरा। यदुवंशिनभूपनवरजोरा॥ तहँगदआदिकयदुवरवीरा। मारिशरनकियअरिनअधीरा॥
गजवाजिनशिरमहिकटिपरहीं। सिंहनादभटबहुविधिकरहीं६कोटिनकीटकवचकटिजाँहीं।रुंडमुंडबहुखंडलखाँहीं ७
अंगदगदासहितकरवाला। परहिंधरणिकटिभुजाविशाला॥ कटेउरूमानहुँगजशुंडा। वाजीराजीभेबहुखंडा ॥
खच्चरऊँटअश्वखरनागे। भागहिंरणमहँबाणनलागे॥ कोटिनिभटनमुंडकटिजाँहीं। धावतसमरकबंधलखाँहीं ॥
दोहा–कोटिनशोणितसरिबही, योगिनिप्रेतअघान। काकगृद्धगोमायहू, मच्योमहावमसान ॥ ८॥
द्वंद्वयुद्धपुनिभोतेहिंठामा। जुरेवीरसोंवीरललामा ॥ पुनिबलभद्रभयंकररूपा। धारिकियोतहँयुद्धअनूपा ॥
लियोजीतिरिपुदलइकछनमें। भागेभूपदुखितअतिमनमें॥रामबजावतविजयनिशाना।कियेद्वारिकैसुखितपयाना ॥
जरासंधआदिकमहिपाला। गयेभागिजहँरहशिशुपाला॥शिशुपालहुनिजलखोपराजै।दुखितभयोकरिकैअतिलाजै॥
सूखिगयोमुखबोलतनाँहीं।मरनठीककीन्ह्योंमनमाँहीं॥तबमगधादिकभूपअभागे। शिशुपालहिंसमुझावनलागे१०॥

दोहा–सुनहुभूपशिशुपालअब, छोडहुसकलगलानि । कबहुँकप्रियकबहुँकअप्रिय, देहिनकोनितजानि॥ ११ ॥
कलवशदारुनारिजिमिनाँचेईशहाथतिमिसुखदुखसाँचे॥१२॥हरिसोंहारचोसत्रहिंबारा।तेइसअक्षौहिणिदलभारा ॥
अष्टादशहिंबारजयपायो।१३तद्यपिसुखदुखनहिंमनलायो ॥ लघुयदुवंशिनतेयहिकाला।लह्योपराजयतुमशिशुपाला
जानिईशगतिशोचहुनाँहीं।राखहुमनउत्साहसदाँहीं॥ह्वैहैजबहिंदैवअनुकूला।तबजीतिहैफेरगहिशूला ।।१४।१५।१६
यहिविधिचेदिपकहँसमुझाई। गेनृपनिजनिजऐनपराई॥१७॥ रुक्मीसुन्योभूपसबहारे।हरिरुक्मिणिकोहरिहुँसिधारे॥
दोहा–एकअछौहिणिसैन्यलै, पुरतेकह्योकुमार ॥१८॥ करीप्रतिज्ञामधिसभा, भरचोघमंडअपार ॥१९॥
बिनरुक्मिणिभगिनीकहँआने । बिनयदुपतिवधरणमहँठाने॥ऐहौंनाहिंअबकुंडिनमाँहीं।भाषौंसत्यमृषाहैनाँहीं ॥२०॥
असकहिरथपरभयोसवारा।सारथिसोंअसवचनउचारा॥मारहुताजिनअश्वनकाँहीं।लैचललैचलजहँहरिजाँहीं ॥२१॥
आजुमारिबाणनगोपालैं।लैहौंभगिनिछीनिवहिकालै।दुर्मतिकोमदअबशिउतरिहौं।लैभगिनीनिजअथनसिधरिहौं २२
कहतकहतअसहरिनियरानो।कृष्णप्रभावकुमतिनहिंजानो॥आशुहिंअपनीजानधवाई।यदुपतिकोअसिगिरासुनाई॥
दोहा–चोरठाढ़रहुठाढ़रहु, लीन्हीभगिनिचोराय । ताकोफलआजुहिंअबहिं, तोकोंदेहुँदेखाय ॥ २३ ॥
असकहिहरिहिंमारित्रयबाना । पुनिबोल्योरुक्मीबलवाना ॥ हेकुलदूषणजाननपैहै । आजुसमरमहँगर्वगमैहै॥२४॥
काकलहैकहुँयागनिभागा । ममभगिनीतिमिबहसिअभागा॥२५॥रेमतिमंदमहाछलकारी।जीवचहैतोतजैकुमारी ॥
रुक्मीगिरासुनतयदुराई।तजेविशिखनेसुकमुसुकाई॥धनुषकाटित्रयशरतेहिंमारचो २६ पुनिचारिहुँतुरँगसंहारचो॥
सूतहिंहन्योध्वजापुनिकाट्यो॥मारिबाणरथचक्रनिछाट्यो॥तबद्वितीयलैधनुषकुमारा।पांचबाणयदुपतिकहँमारा २७
दोहा–बाणमारियदुनाथपुनि, काटिदियोतेहिंचाप । लियदूसरकाटचोसोऊ, तबउपज्योसंताप ॥ २८ ॥
पट्टिशपरिघतज्योपुनिशूला।तोमरशक्तिकृपाणअतूला॥जोजोरुक्मीशस्त्रचलायो।बिनप्रयासयदुनाथनशायो ॥२९॥
तबकरमेंगहिढालकृपाना । रथतेकूदिरुक्मबलवाना ॥ धायोकोपितयदुपतिओरा।ज्योंपतंगपावकमहँभोरा ॥३०॥
धावतआवतनिरखिमुरारी।ढालतेगतिलसमकरिडारी॥लैकृपाणमारनकहँधाये॥३१॥ तबरुक्मिणिकेदृगजलछाये ॥
चरणपकरिबिनतीबहुकीनी॥भ्राताबधगुनिअतिदुखभीनी३२मोभ्राताकहँमारहुनाँहीं।तुमतोकरुणासिंधुसदाँहीं ३३

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–तहँरुक्मिणिकेवचनसुनि, करुणाकरयदुनाथ । रथतेआशुहिंकूदिकै, धरेरुक्मकेहाथ ॥ ३४ ॥
बाँध्योताहिपागमहँताके।सातभागकरितासुशिखाके ॥३५॥ मूँडचोमूँछऔरशिरबारा।भोविरूपभीषमककुमारा ॥
तबलौंमारिसैन्यरिपुकेरी । आयेबलबजवावतभेरी ॥ कृष्णसमीपगयेबलरामा।निरखिप्रणामकियोघनश्यामा ॥
पुनिदेख्योरुक्मीबलराई । कह्योकहाकीन्ह्योंयदुराई ॥ भोसयाननहिंगेलरिकाई । करहुरणहुमहँतुमचपलाई ॥
उचितनबाँधबनातनकाँहीं । हँसीहोयगीसबजगमाँहीं ॥ असकहिरुक्मीकोबलरामा । बंधनछोरिदियोतेहिंठामा ॥
दोहा–पुनिरुक्मिणिकेनिकटचलि,बलसमुझानलाग।सुखदुखदेतनऔरकोउ, मिलतलिखोजोभाग ॥३८॥३९॥
छत्रिजातिकरहैबड़रोपू । भ्रातहिंहनतभ्रातगुनिदोषू॥४०॥भूमिमानधनहेतुकुमारी।क्षत्रीलरहिंनदोषविचारी॥४१॥
सुखदुखमानवहैअज्ञाना । दंडिनदंडदेवकल्याना॥४२॥जननमरणयहदेहहिकेरो।जीवहिंनहिंअसवेदनिवेरो ॥४३॥
एकईशसबदेहिनमाँहीं।जिमिबहुघटरविबहुतदेखाँहीं॥तातेअज्ञानजयहशोकू।छोडिकुँवरधारैमुदओकू ॥४४–४९॥

श्रीशुक उवाच ।

असबलरामजबैसमुझायो।तबरुक्मिणिअतिशयसुखपायो५०कृष्णरुक्मिणिहिंरथहिंचढ़ाई। सैन्यसहितगमनेबलराई
दोहा–रुक्मिप्रतिज्ञासुमिरिनिज, गयोनकुंडिनकाँहिं।विरचिभोजकटनगरतहँ,बस्योदुखितमनमाँहिं ५१॥५२॥
द्वारावतिकहँयदुपतिआये।यदुवंशीअतिशयसुखपाये।नगेकियोतहँसहितउछाहा।कृष्णरुक्मिणीसविधिविवाहा ५३
यदुपुरगृहगृहमंगलगाना । लागेकरननारिनरनाना ॥५४॥ भूषणवसनपहिरिपुरवासी।दुलहिनिदूलहदेखनआसी ॥

लैलैभेटमुदितसबआये।कृष्णरुक्मिणिहिंलखिसुखपाये॥ महलनमहलनबँधीपताका।शरदमेघजिमिलसहिंबलाका॥
दोहा-द्वारनद्वारनकनकघट, फैलतसौरभधूप ॥ ५६ ॥ गजमदतेसींचींगली, कदलीखंभअनूप ॥५७॥५८॥
फैलीसबदेशनखबरि, रुक्मिणिहरिहरिलीन । सुनतपरस्परमुदितजन, कहँप्रभुकौतुककीन ॥
रुक्मिणिकोसुनिहरणबहु, राजसुतासुकुमारि । कृष्णमिलनललकनलगीं, अनुपमनाथविचारि ॥ ५९ ॥
द्वारावतीनिवासकिय, श्रीवसुदेवकुमार । करतकलानअनेकनित, रुक्मिणिसहितविहार ॥
रुक्मिणिकृष्णविवाहमें, वरण्योंयुतविस्तार । रुक्मिणिपरिणयग्रंथमें, इतसंक्षेपउचार ॥ ६० ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे चतुःपंचाशत्तमस्तरंगः ॥ ५४ ॥

दोहा-अबभागवतहूँकीकथा, अरुहरिवंशहुँकेरि । औरहुकछुरोचकरचहुँ, कविजनलेहुनिबेरि ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-जरच्योप्रथमहरतेजलै, मारमहासुकुमार । रुक्मिणिकेसोजन्मलिय, भोप्रद्युम्नकुमार ॥ १ ॥ २ ॥
सातदिवसकोजबसुतभयऊ । दानवआयताहिहरिलयऊ ॥ रह्योकालशंबरजेहिंनामा । कालहुँकोजीत्योंसंग्रामा ॥
रहीकामतेतेहिंरिपुताई । तेहिंतेहरयोकृष्णसुतआई ॥ डारिदियोसुतसागरमाँहीं॥३॥लीन्ह्योंमीनलीलितेहिंकाँहीं ॥
ताहिमीनकोउकेवटआई । जालडारिकहुँलियोफँसाई॥४॥मीनभखनअतिप्रीतिहिजानी।ताहिमीनकहँकेवटआनी ॥
शंबरकेआगेसबराखे । पावनधनबहुमनअभिलाखे ॥ सोमछरीलैशंबरहरष्यो । तिनकेवटनअमितधनबरष्यो ॥
दोहा-दियोसुवारनमीनसो, कह्योरचहुपकवान । करनलगेतखंडबहु,लैघुचोखकृपान ॥ ५ ॥
मीनउदरफारतमहँभूपा । निकस्योबालकपरमअनूपा ॥ सूपकारलखिअचरजमाने । बालकलैअतिशयहरषाने ॥
मायावतिशंबरकीरानी । सोईकामनारिछबिखानी ॥ जबैकामहरदियोजराई । तबरतिअतिशयतापहिंपाई ॥
गिरिशंभुकेचरणनजाई । कह्योमोरपतिदेहुजियाई ॥ तबशंकरकहँशंबरगेहू । पैहौनिजपतिनहिंसंदेहू ॥
तबमायावतिनामधराई । शंबरकीतियभैरतिआई ॥ सोमायावतिकेढिगजाई । सूपकारअसगिरासुनाई ॥
दोहा-मीनउदरमेंहमलहे, यहबालकमहरानि । याकोराखहुपासनिज, पालनकरहुसयानि ॥
मायावतीबालकहँपाई । राख्योनिजगृहअतिहरषाई ॥ तबनारदमुनिआतुरआई । मायावतिहिंकह्योसमुझाई ॥
सुंदरियहबालकपतितेरो । भयोपुत्रयहयदुपतिकेरो॥यहिविधिसिगरीकथासुनाई।नारदगमनकियोहरषाई॥६॥७॥
मायावतीजानिपतिबालै । करिकेप्रेमलगीतेहिंपालै॥८॥कछुककालमहँकृष्णकुमारा।भयोकिशोरसुछबिआगारा ॥
नवनीरदसमरूपसुहावन।पद्मपलाशनैनसुखछावन॥युगुलजानिलौंबाहुविशाला।शशिमुखअहिमनुअलकनिमाला९
दोहा-नैसुककरतकटाक्षजेहिं, मोहहिंसुरतियवृंद । मृदुहाँसीफाँसीसरिस, ऐसोरुक्मिणिनंद ॥
सकलशास्त्रकोजाननवारो । विक्रममहात्रिविक्रमप्यारो॥कृष्णसुवनकीसुछबिनिहारी । मायावतीअतिभईसुखारी॥
एकसमयनिशिमेंहरषाई । फूलनकीसुखसेजबिछाई ॥ केशवसुतकहँतहाँबुलाई । मायावतीमंदमुसक्याई ॥
करिकटाक्षअसगिरासुनाई।विरहदाहपियदेहुबुझाई॥१०॥ सुनिमायावतिगिराकुमारा। कोपितह्वैअसवचनउचारा ॥
रेजननीकसभाषसिबैना । फूटिगयेतेरेदोउनैना ॥ तैंजननीममेंसुततेरो । कतयहअनुचितचहतिघनेरो ॥
दोहा-पैअतिचंचलहोतहै, जगमहँनारिस्वभाव । सुंदरवपुलखिसुतहुको, करहिंकामकेभाव ॥ ११ ॥
मायावतीसुनतिपतिबैना । बोलीहाथजोरिभरिनैना ॥

रतिरुवाच ।

आपअहैंयदुनंदननंदन । मेरेनाथकहोजगवंदन ॥ शंबरशठतुमकोहरिल्यायो । आपपिताजाननहिंपायो ॥
आपकाममैंरतितुवनारी । नाथदियोकतसुरतिविसारी॥१२॥ फेंकिदियोशठसागरमाँहीं।एकमीनलील्योतुमकाँहीं॥
केवटपकरिमीनह्वतल्याये । तासुउदरमहँतुमकहँपाये॥केवटतुमहिंदियोमोहिंआई । नारदसिगरीकथासुनाई॥१३॥
यहशंबरजीत्योसुरराजै । महाकालकीकियोपराजै ॥

दोहा—अतिदुर्जयदुर्धर्षहै, शंबरदानवराज । प्रीतमयाकोजोहनो, तोसतिसुतयदुराज ॥ १४ ॥

मायावीअतिशयवलवारो । कवहुँनकाहूसोंरणहारो ॥ याहिमारिमोहिंलैसुखदायक । चलहुद्वारिकैजहँयदुनायक॥
सुनिरतिवचनमुकुंदकुमारा।फरकेभुजकियकोपअपारा॥अबलोंतैंकसगोपनकीन्ह्यों।कसनमोहिंप्रथमहिंकहिदीन्ह्यों।
तबहिंनमैंशंबरकोमारी।तोहिंलैजातेउअयनमँझारी ॥ तबपुनिबोलीरतिमुसक्याई । तुमसबविधिसमरथसुखदाई ॥
असकहिमायावतीसुहाई । सबमायाहरिसुतहिंपढाई ॥ अस्त्रशस्त्रजेत्रिभुवनमाँहीं । दियपठायकेशवसुतकाँहीं ॥

दोहा—सबमायाकीनाशिनी, नामवैष्णवीजासु । सोप्रद्युम्नहिंदेतभे, त्रिभुवनजासुप्रकासु ॥१५॥१६॥

तबकेशवसुतकियोविचारा। केहिंविधिहोवैयुद्धहमारा ॥ अबैमोहिंयहजानतनाँहीं । करिबोछलअनुचितजगमाँहीं॥
तातेकरिकौनिहुँउपाई । याहिकोपमेंदेहुँबढाई ॥ याकोजोहैविजयनिशाना । देहुँकाटिमैंहनिइकबाना ॥
तबजबकोपितमारनआवै । तबमोसोंपुनिजाननपावै ॥ असविचारियदुनाथकुमारा । निकरिमहलतेंतेजअगारा ॥
मायामयरथतुरँगबनाये । अक्षयतुणीरधनुषशरभाये ॥ यदुपतिनंदनलैइकबाना । काट्योशंबरविजयनिशाना ॥

दोहा—जेभटध्वजरक्षकरहे, तेसबआतुरधाय । पाणिजोरियुगशंबरै, कहैंअसवचनसुनाय ॥

शिशुपनतेजोबालकपाल्यो।सोतुम्हारविजयध्वजघाल्यो॥आपुभीतिहमताहिनमारा।अतिअनुचितनहिंजायनिहारा।
सुनतकालशंबरअतिकोप्यो । कृष्णकुँवरकहँमारनचोप्यो ॥ फरकेअधरअरुणदृगमाष्यो।बारबारवीरनसोंभाष्यो ॥
यहबालकअतिअनुचितकीन्ह्यों।विजयनिशानकाटिममदीन्ह्यों॥मारनलायकहैयहबालक। अतिनिरशंकभयोममपालक
असकहिनिजशतसुतनबोलाई । कह्योकालशंबरअनखाई ॥ मारहुयहिबालककहँजाई । बचेनकौनिहुँओरपराई ॥

दोहा—चित्रसेनअतिशयबली, तिनमेंरह्योप्रधान । हाथजोरिसोकियविनय, सुनियेपितुबलवान ॥

बचिहैनाहिंकौनेहुँविधिवालक । हमसबहैंतवशासनपालक । असकहिकवचपहिरिधनुधारे।शंबरकेसुतरणअनियारे॥
कोउमतंगकोउचढेतुरंगा । कोउस्यंदनमहँयुद्धउमंगा ॥ औरविविधवरवाहनसाजे । विविधभाँतिबजवावतबाजे॥
कढ़ेनगरतेंशंबरसूना । समरउराउभयोउरदूना ॥ पट्टिशपरिघचक्रअसिशूला । तोमरशक्तिवज्रकेतूला ॥
औरहुआयुधविविधप्रकारा । धारणकीन्हेंसकलजुझारा ॥ गयेजहाँयदुपतिसुतठाढो । समरबाँकुराविक्रमबाढो ॥

दोहा—नवनीरदसमरूपजेहिं, सुंदरत्रिभुवनमाँहिं । वामचरणअंगुष्टते, गहेतुरंगनकाँहिं ॥

चित्रसेनतबकह्योपुकारी । रेपालकमुनिगिराहमारी ॥ पितुकोकाट्योविजयनिशाना । तातेतोरकालनियराना ॥
अबदेखाउँअपनीमनुसाई । भयोपुष्टमेरोधनखाई ॥ मंदविहँसितबकृष्णकुमारा । नेसुकवाजिनदियोइसारा ॥
चंचलरथचमकतचहुँओरा । सन्मुखचल्योंकरतअतिशोरा ॥ अद्भुतनामगंधरबजोई । कह्योजायवासवसोंसोई ॥
दानवसतइककृष्णकुमारा । युद्धकरनकाकरतविचारा ॥ कैसेविजयनाथवहपैहै । हारेतुम्हरेहुउरदुखऐहै ॥

दोहा—तबवासवबोलेविहँसि, ममजियनहिंपछितात । त्रिभुवनविजयीकृष्णसुत, शतसुतकेतिकबात ॥

असकहिलैदेवनगंधर्वा । सिद्धमहोरगचारणसर्वा ॥ चढिविमाननभसहितहुलासा । सुरपतिआयेलखनतमासा ॥
आवतलखितहँकृष्णकुमारा । शंबरशतसुतकियेप्रहारा ॥ मुसलभुशुंडीतोमरचक्रा । शक्तिपरश्वधबाणहुँवक्रा ॥
छोडिशस्त्रसबएकहिंबारै । लियोतोपितहँकृष्णकुमारै ॥ तहँकोपितरुक्मिणीकिशोरा।चपलचापतेंहिछनटंकोरा ॥
तज्योशरासनतेंशरधारा । मनुश्रावणघनबूँदअपारा ॥ सकलशस्त्रकियरेणुसमाना । एकहुनेकहूनहिंदरशाना ॥

दोहा-महाप्रवलप्रद्युम्नपुनि, पंचपंचशरमारि। शंबरकेशतसुतनको, दीन्ह्योंगर्वउतारि॥
पुनिदानवरणमाहँअमर्षे। माधवसुतपरवाणनवर्षे॥ तिनकेशरतिलसमकरिडारे। दशशरसोंदशपुत्रनमारे॥
पुनिलैसायकएकप्रचंडा। काटच्योचित्रसेनकोमुंडा॥ तबकोपितसबदानवधाये। शरछाँडतसमीपअतिआये॥
तबआतुरलैवाणनवासी। रुक्मिणिनंदनसमरविलासी॥ काटच्योसबकोशिरइकवारा। अद्भुतविक्रमकृष्णकुमारा॥
खड़ोभयोपुनिसमरमँझारी। मनहुँसिंहगजराजनमारी॥ जेभटबचेकुमारनकेरे। भागिगयेशंबरकेनेरे॥
दोहा-दरबाजहिंतेकरतभे, आरतसकलपुकार। वहपालकप्रभुरावरो, मारचोशतोंकुमार॥
सुनतकालशंबरसुतनाशा। भयहुकुपितजनुज्वलितहुताशा॥सारथिकोआतुरबोलवायो।शासनसेनासजनसुनायो॥
कह्योलेआवहुसारथिस्यंदन। मैंकरिहौंअबशत्रुनिकंदन॥ सुनतसूतनाथहिंशिरनाई। स्यंदनऔसेनासजवाई॥
नाथहजूरहिंहाजिरकीन्ह्यों। शंबरतेहिंइनामअतिदीन्ह्यों॥ नहेऋक्षरथमाहँहजारा। अहिबंधनजेहिंबँधेअपारा॥
बाजहिंकनककिंकिणीमाला। बाघचर्मतेमढोकराला॥ फबिफबिफहरतासिंहपताका। घनसमघर्घरातजेहिंचाका॥
दोहा-निरखिकालशंबरसुरथ, कनककवचतनुधारि। चामीकरकरचापकरि, युगलतुणीरसँवारि॥
चढ्योकालशंबररथमाँहीं। भयोकालवशशंकितनाँहीं॥ सेनापतिगवँनेसँगचारी। कुँडलकवचसायकधनुधारी॥
केतुमालिदुर्धररिपुहंता। औरप्रमर्दनओजअनंता॥ आठहजारचलेअसवारा। पैदलबीसहजारउदारा॥
दशहजारहाथीसँगमाँहीं। द्वैशतस्यंदनसजेसोहाँहीं॥ निकसतद्वारहिंशंबरकेरे। होनलगेउतपातघनेरे॥
व्योमगीधमंडलमडराँहीं। वारिदअरुणघोरवहराँहीं॥ शिवाज्वालवमिसन्मुखबोलैं। बारबारसबकेअँगडोलैं॥
दोहा-गिरच्योध्वजामहँगिद्धइक, रथमहँगिरच्योकबंध। ग्रस्योराहुबिनकालरवि, काकबैठिगोकंध॥
चींचींकूचींकियखगशोरा। वर्षनलगेरुधिरघनघोरा॥ शंबरदृगभुजफरकहिंवामा।हयगयचलिनसकहिंतेहिंठामा॥
उल्कापातहजारनभयऊ। सूतहाथचाबुकगिरिगयऊ॥ ऐसेलखिअनेकउतपाता। शंबरमनमहँनहिंबिलखाता॥
भेरीशंखहुपणवमृदंगा। औरहुबाजबजेइकसंगा॥ डगनलगीधरणीध्वनिपाई। खगमृगडरिसबगयेपराई॥
गयोकालशंबरबलवारा। जहाँखड़ोयदुनाथकुमारा॥ घेरिलियोदलतेचहुँओरा। डरच्योनकछुरुक्मिणीकिशोरा॥
दोहा-सहसबाणशंबरहन्यो, प्रद्युम्नहिंइकबार। बिनप्रयासतिलसमकियो, शरहनिकृष्णकुमार॥
पुनितहँधनुषधारिरणधीरा। शलभसरिसछोडचोक्षुरतीरा॥ रह्योनकोउशंबरदलमाँहीं। जाकेबाणलगेतनुनाँहीं॥
भगीसैन्यशंबरकहँछोडी। सक्योनकोउसन्मुखदृगओडी॥शंबरलख्योसैन्यसबभागी।सचिवनकह्योकोपअतिपागी॥
सचिवलखौअबकौनतमासा। करहुबालककहँआशुविनासा॥ यहनहिंअहैबचावनयोगू।जिमिरुजरहेकरततनुसोगू॥
सचिवसुनतशंबरकोशासन। चलेरुक्मिणीसुवनविनाशन॥ बाणनवर्षतरथनधवाये। यदुनंदननंदनढिगआये॥
दोहा-धावतआवतनिरखितहँ, सचिवनकहँरणधीर। धनुषधारनिःशंकह्वै, सन्मुखभयउप्रवीर॥
शरपचीसदुर्धरकहँमारे। केतुमालिपैतिरसठझारे॥ रिपुहंतहिंसत्तरशरभासी। हन्योप्रमर्दनबाणबयासी॥
बेधिगयेशरलागतअंगा। मानहुँबिलमहँघुसेभुजंगा॥ तबचारिहुँमंत्रीअतिकोपे। कृष्णतनयकहँबाणनतोपे॥
तेबाणनकहँबीचहिंकाटी। पुनिप्रद्युम्नदियोशरपाटी॥ पुनिलैअर्धचंद्रइकबाना। दुर्धरसूतहिंहन्योमहाना॥
चारिबाणतेहन्योतुरंगा। एकबाणतेकियध्वजभंगा॥ सातबाणतेस्यंदनकाट्यो। एकबाणतेछत्रेछाँटयो॥
दोहा-शंबरकेदेखततहाँ, लैइकबाणकराल। दुर्धरकेउरमेंहन्यो, करिनैसुकदृगलाल॥
कुलिशसमानलगतउरबाणा। दुर्धरगिरयोधरणिबिनप्राणा॥ केतुमालिलखिदुर्धरनाशा।धायोशरछावतदशआशा॥
कियेबंकभ्रुकुटीअरुनैना। ठाढोरहुअसबोलतबैना॥ तजेबाणतबकृष्णकुमारा। मनहुँधराधरजलधरधारा॥
मरेतुरंगकटचोरथआशू। भयउकेतुमालीसुखनाशू॥ केतुमालितबचक्रचलायो। चक्रसुदर्शनकेसमभायो॥
उपरहिंकूदिगह्योहरिनंदन। हन्योकेतुमालिहिंअरिदंदन॥ कट्योकेतुमालीकोशीशा। अचरजमानेदेवमुनीशा॥

दोहा—तहँप्रमुदितसुरसुंदरी, वर्षनलगींप्रसून । चारणअरुगंधर्वगण, गावनलागेदून ॥

छंदपद्धरी—तहँकेतुमालदुर्धर्षहुअंत। लखिवीरप्रमर्दनशत्रुहंत॥लैसकलसैन्यकरिसिंहनाद।धायेप्रकोपतजिमनविषाद
तोमरकुठारअरुभिंदिपाल । मुद्गरहुचक्रमूसलकराल॥हनिइकबारकियमहाशोर । तबधारिधनुषयदुपतिकिशोर॥
इकलक्षदुलक्षत्रयलक्षबाण । पुनिसायकछोंडेवेप्रमाण ॥ रिपुशस्त्रटूटिकटिभयेधूरि । नभमारगमेंशररहेपूरि ॥
दुरिगेदिनेशभोअंधकार । धनुतेंनिकरैशतशरनधार ॥ इकइकदानवपरलाखबाण । जिमिशलभवृक्षपरचेप्रमाण॥
बिनदंतशुंडभेमदमतंग । तिनकेसवारहूँअंगभंग ॥ रथरथीसारथीअरुतुरंग । कटिगयेलगतशरइकसंग ॥
बाजीसमेतमरिगेसवार । भेरुंडमुंडपैदलअपार ॥ द्वैदंडमाहँदानवीसैन । यदुपतिकुमारमारीसचैन ॥
तहँमाँचिरह्योहाहापुकार । बहिचलीबहुततहँरुधिरधार ॥ पदकेअँगूठासोंधरेबाग । रथसमरमद्धिचहुँओरबाग ॥
कोउजुरचोनभटप्रद्युम्नपाँहिं।नहिघाउलग्योकछुअंगमाँहिं॥तबशत्रुहंतरथकोचलाइ।लियकृष्णतनयकोशरनछाइ ॥
पुनिहन्योहृदयमहँइकबाण । प्रद्युम्नभयोनहिंकंपमान॥यदुपतिकुमारतबशक्तिलीन।रिपुहंतहृदयतकिछोड़िदीन॥
भोलगतशक्तिरिपुहंतवीर । मरिगिरचोधरणिमहँपायपीर ॥ तहँवीरप्रमर्दनखेदवंत । लखिसमरभयोरिपुहंतअंत ॥

दोहा—वीरप्रमर्दनमुसललै, बोल्योवचनकराल । खड़ोरहैअबसमरमहँ, रेरुक्मिणिकोलाल ॥

दानवशत्रुतोरपितुसाँचो । ब्रजमेंजोगोपनसँगनाँचो ॥ तोकोपुत्रमारिहौंआजू । परमदुखीहोईयदुराजू ॥
[illegible]ववधकरिअसुरनसुखदैहौंयदुवंशिनयमपुरहिंपठैहौं ॥ तेरोशोणितजलकरिलैहौं । शंबरसुतनतिलांजलिदैहौं ॥
सुनिसुतवधभीषमककुमारी।रोदनकरीपुकारिपुकारी॥असकहिरुक्मिणिनंदनओरा । तज्योप्रमर्दनमुशलकठोरा ॥
ताहिकूदिगहिकृष्णकुमारा । ताकिप्रमर्दनकोरथमारा ॥ लागतमुशलभयोरथचूरा । सारथितुरँगगयेमिलिधूरा ॥

दोहा—आपगदालैकूदिगो, हन्योगदासोंवीर ॥ स्वईगदागहितेहिंहन्यो, कृष्णकुँवररणधीर ॥

लागतगदाप्रमर्दनशीशा । घटसमफूटिगयोअवनीशा ॥ गिरचोप्रमर्दनमरिमहिमाँहीं । रहेनभटकोउठाढ़तहाँहीं ॥
मृगराजहिंडरिजिमिगजराजा । तिमिभागीदानवनसमाजा॥हायहायह्वैरह्योतहाँहीं । लखिप्रद्युम्नरुकतकोउनाँहीं ॥
कहँसबैअसवारहिंबारा । यहदानवकुलकालकुमारा ॥ भगीसैन्यशंबरकीकैसे । नारिनवोढालखिपतिजैसे ॥
शोणितमयीसैन्यभैभारी । मानहुँरजस्वलाहैनारी ॥ हरिसुतकोरथचहुँकितचमकै। मनहुँश्यामघनदामिनिदमकै॥

सोरठा—निरखिसैन्यकोनाश, शंबरबोल्योसूतसों । यहिकुमारकेपास, लैचलुचपलचलायरथ ॥

बचिहैबालककैसहुनाँहीं।निरखतनाश्योसचिवनकाँहीं॥सुनिसारथिशंबरकोशासन । ऋक्षनकोमारचोद्रुतताजिन ॥
लैरथधायेऋक्षतुरंता । गयेआशुजहँरतिकोकंता ॥ शंबरकोआवतलखिवीरा । धरचोधनुषरतिपतिरणधीरा ॥
दानवकोमारचोइकबाना॥हृदयफोरिकढ़िगयोमहाना॥ ह्वैकछुविकलबोढकिरथगयऊ।पुनिसम्हारिउठबैठतभयऊ॥
कोपितकठिनशरासनधारचो । सातबाणहरिसुतकहँमारचो॥बीचहिंकाटचोरिपुशरचंडा । सातहुँसातसातभेखंडा॥

दोहा—शंबरकहँसत्तरविशिख, मारचोकृष्णकुमार । पुनिहजारशरहनतभो, पुनिछोडीशरधार ॥

जिमिघटशतछिद्रनजलधारा । तिमिधनुतेशरकढ़ेअपारा ॥ रहेपूरिदिशिविदिशनबाना । अंधकारभोतहाँमहाना ॥
लखिनपरेदिनकरतेहिंकाला । मनुभादौंकीकुहूकराला॥तबशंबररविअस्त्रचलायो । रतिपतिकोशरजालजरायो ॥
यदुनंदननंदनकोस्यंदन । शंबरछायोहानिशरवृंदन ॥ शंबरबाणनतिलतिलकाटी । कृष्णतनयपुनिदियशरपाटी ॥
पुनिशंबरकीन्ह्योतहँमाया । बरषिवृक्षप्रद्युम्नहिंछाया ॥ क्रियमायाहरिसुतबडभागी । लागीचहुँकितवर्षनआगी ॥

दोहा—भस्मभयेजरिवृक्षसब, लखिशंबरबलवान । मायाकरिवर्षतभयो, रणमहँअमितपखान ॥

छंद—तहँकृष्णकुँवरप्रवीर । प्रगटचोप्रचंडसमीर ॥ उड़िगेसबैपाषान । तबदानवेशरिषान ॥
मायाकियोरणमाँह । बहुसिंहबाघवराह ॥ ऊँटहुँतुरंगमतंग । धायेसबैइकसंग ॥
तहँकुपितकृष्णकुमार । मायाकियोबलवार ॥ प्रगटेपरेतपिशाच । लियखायकोउनहिंबाँच ॥

नहँकालशंबरवीर। मायाकियोरणधीर॥ मदमत्तबहुमातंग। प्रगटेमहाउतसंग॥
धायेकुमारहिंओर। करिघोरशोरकठोर। प्रद्युम्नलखिगजयूह। छोड्योसुसिंहसमूह॥
तेगजनलीन्हेंभक्ष। नहिंपरेएकहुलक्ष॥ तबकालशंबरकोपि। मोहनीमायाचोपि॥
तजिदियोहरिसुतओर। तबप्रबलकृष्णकिशोर॥ मायासुसंज्ञानाम। तुरतहिंतज्योतेहिंठाम॥
भोमोहनीकोनास। दशआशप्रगट्योभास॥ मायासोंसिंहीजोइ। रणतज्योदानवसोइ॥
धायेगरजिमृगराज। जहँखडोसुतयदुराज॥ शार्दूलमायाछोडि। लियसिंहमायाओडि॥
पगआठचोंचकराल। प्रगटेविहंगविशाल॥ लियकेशरिनकोखाय। एकहुपरेनदेखाय॥

दोहा-सिंहीमायानाशलखि, शंबरकियोविचार॥ चलतनकौनौयत्नअब, मरतनहींयहबार॥

हायभलोमैंनाहिंविचारो। शिशुपनमेंजोमारिनडारो॥ सेइपालिमैंकियोतयारो। सोशठचहतमोहिंअबमारो॥
नागपाशजोहरमोहिंदीन्हीं। जोममरिपुनप्राणहरिलीन्हीं॥ तातेबाँधौंबालककाँहीं। औरउपायचलीअबनाँहीं॥
असकहिदानवलैअहिफाँसी। तज्योकृष्णसुतपरबलरासी॥ यदुनंदननंदनसुतस्यंदन। बाँधिगयेरणमहँअहिबंधन॥
तबमायागारुड़ीप्रवीरा। छोड्योकृष्णसुवनरणधीरा॥ पन्नगारिसबपन्नगखाये। सुरमुनिसबअचरजचितलाये॥

दोहा-लग्योसराहनशंबरहु, धनिधनिकृष्णकुमार। नागफाँसमेरीतजी, जोकरिदियोनेवार॥

पुनिशंबरशंकितसुरघालक। कियोविचारमरैकिमिबालक॥ मुद्गरमोहिंगौरीइकदीन्हों। जेहिंनिशुंभशुंभहिंवधकीन्हों॥
परमप्रचंडअमोघकराला। नाशकशत्रुनबलीविशाला॥ सोईमोहिंह्वैहैसुखदाई। यहिबालककोआशुजराई॥
असविचारलियमुद्गरघोरा। तबदेवनकियआरतशोरा॥ डगीधरणिभेलूकनिपाता। दिशनभयोदिगदाहअघाता॥
ग्रहनलग्योशशिसूरजमाँहीं। सिंधुतजेनिजवेलाकाँहीं॥ मुद्गरभीमविलोकिकुमारा। ऐसोमनमहँकियोविचारा॥

दोहा-अबशंबरकेसमरमहँ, वैष्णवास्त्रकोकाम। जाकेसमदूजोनहीं, दायकसुखसबठाम॥

असगुनिवैष्णवास्त्रकरलीन्हों। मानहुँचहतप्रलयकरिदीन्हों॥ इतनेहिमेंशंबरबलवाना। मारेहुमुद्गरभीममहाना॥
हाहाकारकियोसुरवृंदा। मानहुँमरोरुक्मिणीनंदा॥ पैगिरिजाकीकृपामहाई। भयोमोघमुद्गरकुरुराई॥
लगतकंठमुद्गरभोमाला। कृष्णकुँवरछबिलह्योविशाला॥ तबशंबरतहँभयोनिराशा। छूटीसबविधिजीवनआशा॥
वैष्णवास्त्रतबकृष्णकुमारा। शंबरदानवओरपँवारा॥ चल्योत्रिलोकप्रकाशहिछावत। कोटिसूर्यसमप्रभादेखावत॥

दोहा-दानवकेउरलगतभो, वैष्णवास्त्रअतिघोर। रथसारथियुतशंबरै, कियोभस्मतेहिंठोर॥

शंबरभस्मनिरखिसुरवृंदा। जयजयकीन्हेंपायअनंदा॥ गानमनोहरसुरनउचारे। पूरिरहेदुंदुभीधुकारे॥
तहाँअप्सरानाचनलागी। कृष्णकुमारविजयअनुरागी॥ सुरमुनिभाषैंबारहिंबारा। ऐसोविक्रमकहुँननिहारा॥
लयीजीतिजोकालहुकाँहीं। ताहिहन्योहरिसुतरणमाँहीं॥ अंबरतेशंबररिपुशीशा। वर्षहिंअमरप्रसूनमहीशा॥
गावतरतिपतिविजयसुखारे। सुरमुनिनिजनिजधामसिधारे॥ रुक्मिणिनंदनशंबरकेरो। भयोआठदिनयुद्धघनेरो॥

दोहा-शंबरारिहनिशंबरै, पुनिशंबरपुरजाय। मायावतिकोमोदयुत, दियवृत्तांतसुनाय॥

मायावतीपरमसुखपाई। हाथजोरिपुनिविनयसुनाई॥ चलहुद्वारकाकोसुखदायक। आपजनकजहँहैंयदुनायक॥
प्रद्युम्नहुँतथास्तुकहिदीन्हों। शंबरपुरतेगमनहिंकीन्हों१७-२४चलेअकाशअकाशहिंदोऊ। रह्योसंगतीजोनाहिंकोऊ॥
इकक्षणमेंयदुपुरमहँआये। दंपतिअतिअनूपछबिछाये॥२५॥उतरिपरेअंतःपुरमाँहीं। यहप्रसंगजान्योकोउनाँहीं॥
निजनिजअंगनमेंछबिखानी। बैठीरहीकृष्णकीरानी॥ दामिनिसमदमकेदोउआई। सबकेचखनचौंधगोछाई॥२६॥

दोहा-वसनअनूपप्रलंबभुज, अरुणनैनघनश्याम। कोटिशशीसीवदनछबि, ॥२७॥ लरकैंअलकललाम॥

तियजानोआयेयदुराई। जहँतहँरहींलजाइलुकाई॥२८॥२९॥ पैलखिकैसँगमेंइकनारी। नईसौतिसबहियेबिचारी॥
पुनितहँचीन्हिकह्योयहकोहै। यदुपतिसमसबकोमनमोहै। तहँरुक्मिणिअतिशयदुखपागी। सबसोंवचनकहनअसलागी

मेरोसुतइककोउहरिलयऊ । सातदिनाकोवहजवभयऊ ॥ जोवहजीवतजगमेंहोई । तौऐसेह्वैहैसुतसोई ॥
अथवाविधिगतिजानिनजाती । यहीहोयमोमतिअकुलाती ॥ याकोरूपअनूपमहेरे । स्रवतपयोधरतेपयमेरे ॥३०॥
दोहा–काकोसुतयहहैसखी, हरिकेरूपसमान । केहिविधिआयोभौनमम, परतनहींकछुजान ॥ ३१॥३२ ॥
इतनेमेंइकसखीसयानी । बाहरकोगमनीमतिमानी॥यदुपतिकोसबहालसुनायो।पुरुषएकअंतःपुरआयो॥३३॥३४॥
प्रभुआयेअंतःपुरधाई । मातपिताकहँखबरिजनाई ॥ तहँवसुदेवदेवकीरानी । आतुरआयेविस्मयमानी॥
बलभद्रौतहँकोपितधाये।अंतःपुरकहँआशुहिआये॥३५॥यदपिजानिलीन्होंयदुराई । तदपिकह्योकछुनाहिंलजाई ॥
तबनभतेनारदतहँआये । मुनिकहँदेखिसबैशिरनाये ॥ कह्योऋषीशमंदमुसक्याई । निजसुतजानहुँनहिंयदुराई ॥
दोहा–जाकोशंबरहरिलयो, सूतीगृहमेंआय । सोइकुमारयहरावरो, लेहुनकसउरलाय ॥
मारिकालशंबरहिंकुमारा।नारीसहितभौनपगुधारा॥३६॥सुनिनारदकीगिरासोहाई। रुक्मिणिअतिशयआनँदपाई ॥
औरहुकृष्णचंद्रपटरानी । शंबरवधअतिअचरजमानी ॥ मिलैहेरानसुधाजिमिआई ।पुत्रवधूपुत्रहिंतिमिपाई ॥३७॥
रुक्मिणिदौरिदुहुनउरलाई । नैननआनँदनीरबहाई ॥ नातिनतोहुमिलेसुखमानी । श्रीवसुदेवदेवकीरानी ॥
तहँवलभद्रहुआनँदपाई । सुतकहँलियोगोदबैठाई ॥ बारबारमुखचुंबनकरहीं । शिरसूँघहिंदृगमुदजलढरहीं ॥
दोहा–पुत्रवधूअरुपुत्रको, पुनिरुक्मिणीलेवाय । करिपरछनिमणिमंदिरै, दीन्ह्योंसुखितटिकाय ॥ ३८ ॥
आयोशंबरमारिकै, यदुनंदनकोनंद । द्वारावतिवासीसुनत, पायेपरमअनंद ॥ ३९ ॥
सवैया–रूपअनूपमजासुविलोकतमोहिगईसिगरीमहतारी । कृष्णकोनंदनदुष्टनिकंदनहैजगवंदनआनँदकारी ॥
यौवनअंगप्रभावपसारिविमोहतहैतिहुँलोककिनारी । कौनअचर्जअहैरघुराजजोमोहिगईतेहिंसाँगनिहारी ॥४०॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधि
राजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनं
दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे पंचपंचाशत्तमस्तरंगः ॥ ५५ ॥

दोहा–कहिरतिपतिउत्पातिकथा, श्रीशुकअतिसुखपाय । कुरुपतिकोपुनिमुनिकथा, दीन्हीसकलसुनाय ॥

श्रीशुक उवाच ।

यदुपतिकोकीन्ह्योंअपराधा ।सत्राजितदुखपायअगाधा॥आपहिंतेउपाययहकीन्हों । कन्यासहितस्यमंतकदीन्हों ॥
पुनिकुरुपतिकरजोरिबहोरी । श्रीशुकदेवहिंकह्योनिहोरी ॥ १ ॥

राजोवाच ।

हरिकोकौनकियोअपराधा।सुतादईकससुछबिअगाधा॥केहिविधिमिलीस्यमंतकताको। कहहुनाथपुजवहुआशाको
सुनतपरीक्षितकेवरबैना । कहनलगेशुकदेवसचैना ॥२॥

श्रीशुक उवाच ।

यदुवंशीसत्राजितनामा । रविकोभक्तभयोमतिधामा ॥ कियोभानुकीअतिसेवकाई । भेप्रसन्नआशुहिदिनराई ॥
दोहा–दईस्यमंतकमणिमहा, सत्राजितहिंदिनेश । प्रगटतसुपरभाउभो, देशनदेशनरेश ॥ ३ ॥
सत्राजितमणिकंठहिंधारे । रविसमानपरकाशपसारे॥गयोद्वारिकहिंजहँयदुराई । तेजबलितनहिंपरदलखाई ॥ ४ ॥
सत्राजितप्रविश्योपुरजबहीं । नगरबालदेखैंतेहिंतबहीं ॥ दूरहिंतेलखितेजविशेषी । लियेमूँदिदृगसकेनदेखी ॥
गुनिसूरजनगरीमहँआये । बालकयदुनंदनपहँधाये ॥ सभासुधर्मामेंतेहिंकाला । लगोरहैदरबारविशाला ॥
बैठेउग्रसेनमहाराजा । यदुवंशिनकीसजीसमाजा ॥ तहाँकनकसिंहासनमाँहीं । बैठेश्रीयदुराजसोहाँहीं ॥
दोहा–खेलतचौपडप्रभुरहे, सात्विकउद्धवसंग । दाँवरामलेतेरहे, करिविनोदबहुरंग ॥

तहाँजाइअसकियेपुकारा। बारबारबारहिंतेबारा ॥ ५ ॥ चक्रगदाधरअंबुजधारी। यदुनंदनगोविंदमुरारी ॥
दामोदरअरविंदविलोचन। नारायणदासनदुखमोचन॥हमसबकीप्रभुलेहुसलामा॥सुनहुनाथइकविनयललामा॥६॥
तुम्हरेदरशहेतुरविआवत। द्वारावतीतेजनिजछावत ॥७ ॥ हरेंत्रिभुवनमहँतुमकाँहीं। सुरपालकपावहिंकहुँनाँहीं ॥
यदुकुलप्रगटतुमहिंप्रभुजानी। आवहिंदरशहेतसुखमानी ॥ ८ ॥

श्रीशुक उवाच।

यदुनंदनसुनिबालकबानी। बोलेविहँसिचरित्रहिंजानी ॥

दोहा—बालकसोदिनकरनहीं, हैसत्राजितसोय। धरेंस्यमंतककंठमें,तेहिंप्रकाशयहहोय ॥ ९ ॥

पुरबालकसुनियदुपतिवैना। गवँनेअपनेअपनेअयना ॥ सत्राजितआयोनिजधामा। देवहुदानपूरिद्विजकामा ॥
देवसदनमहँप्रविशिसुखारी।तहाँदानदैविप्रनभारी॥करिदर्शननिजमंदिरआयो।यत्नसहितसोमणिहिंधरायो ॥ १० ॥
नितप्रतिआठभारचामीकर। उत्पतिकरतिस्यमंतकसुखकर॥जहँपूजितमणिरहैनरेशा। मारीनहिंआवैतेहिंदेशा ॥
सर्परोगकीभीतिनहोवै। अरुदुर्भिक्षअमंगलखोवै ॥ रहैंनताकेनिकटकुचाली। जहाँस्यमंतकआभामाली ॥ ११ ॥

दोहा—सत्राजितसोइकसमै, गोयदुपतिदरबार। करिप्रणामबैठतभयो, पायपरमसतकार ॥

तबयदुनाथकहीअसबानी। सुनियेसत्राजितबड़ज्ञानी ॥ सुमणिस्यमंतककोकरिनेहू। उग्रसेनमहराजहिंदेहू ॥
यहअमोलमणिपरतनिहारी। भूपहिंहोतरत्नकोहारी ॥ सुनियदुनाथवचनअभिमानी। सत्राजितबोलेहुअसबानी ॥
हैयदुनाथतुम्हारसुभाऊ। नीकवस्तुलखिहठिअपनाऊ॥ नहिंराजाहितहममणिलाये। महापरिश्रमकरियहपाये ॥
सुनतवचनभेयदुपतिमौना। सत्राजितउठिगोनिजभौना॥१२॥रह्योप्रसेनतासुइकभाई।सोकरिकैअतिशयचपलाई॥

दोहा—पहिरिस्यमंतककंठमें, खेलनगयोशिकार। तहँकाननमेंसिंहके, नेजाकियोप्रहार ॥ १३ ॥

भयोकेशरीघायलघोरा। धरयोप्रसेनहिंसंयुतघोरा ॥ मारिप्रसेनहिंलैमणिराजा। गिरिकंदराघुस्योमृगराजा ॥
जाम्बमानतहँऋक्षअधीसो।रहतरह्योतेहिंगुहाबलीसो॥सोआशुहिंसिंहहिंवधकीन्ह्यों।रतनस्यमंतकदुहितहिंदीन्ह्यों॥
जाम्बवतीमणिखेलनलागी। धायसंगअतिशयअनुरागी॥गेदिनदुइप्रसेननहिंआयो।तबसत्राजितअतिदुखपायो१५॥
गोपितकहनलग्योयहबाता।मणिहितभ्रातहिंकृष्णनिपाता॥भ्रातपहिरिमणिगयोशिकारा।कियोपापवसुदेवकुमारा॥

दोहा—सत्राजितकेवचनसुनि, पुरजनकानहिंकान। कृष्णहिंलग्योकलंकयह, असलागेबतरान ॥ १६ ॥

कहतकहतकोउहरिसोंकहेऊ। यहकलंककैसेतुमलहेऊ ॥ वृथाकलंकसुनतयदुराई। मनमहँबारबारपछिताई ॥
सोकलंकमेटनयदुनाथा। काननगेपुरजनलैसाथा॥१७॥जहाँप्रसेनहिंकेशरिमारयो।सोथलपुरजनसहितनिहारयो॥
पुनिखोजतखोजतयदुराई। गयेशैलकेऊपरधाई॥ तहँकेशरिलखिमृतकमुरारी। औरहुइकागिरिगुहानिहारी॥१८॥
गुहाद्वारकरिपुरजनठाढ़े। यदुपतिगुहाघुसेतमगाढे ॥१९॥ गयेदूरिनाशतअँधियारा। प्रगटतरविसमतेजअपारा ॥

दोहा—तहँदेख्योइकबालवर, मणिधारेनिजकंठ। खेलतधात्रीसंगमें, शोभाजासुअकुंठ ॥

मणिहिंछोडावनलगेमुरारी।तबडेरायअतिधायपुकारी२०॥यहअपूर्वनरकहँतेआयो। बालकंठमणिचहतछोडायो ॥
जाम्बवानसुनिआतुरधाये।यदुपतिनिकटकोपिअतिआये॥प्राकृतपुरुषऋक्षपतिजान्यो।करनयुद्धमनठीकहिठान्यो॥
प्रथमभयोआयुधसंग्रामा। हनेपषानफेरिबलधामा ॥ ऋक्षनाथयदुनाथप्रवीरा। हनेवृक्षपुनिदोउरणधीरा ॥
रहेनद्रुमआयुधपाषाना२२भुजनभिरेभटदोउबलवाना॥लरेंमाँसहितजिमियुगबाजा।तैसहिंऋक्षराजयदुराजा॥२३॥

दोहा—अट्ठाइसदिनरातिलों, लरेयुगलबलधाम। थापरुमुष्टिप्रहारकरि, लियेनकछुविश्राम ॥ २४ ॥

कृष्णमुष्टिलगिवज्रसमाना। बूढोजाम्बवानबलवाना ॥ थकिगोभयेशिथिलसबअंगा।उरतेउतरयोयुद्धउमंगा॥२५॥
तबविचारकीन्ह्योंमतिमाना। येहैंपरमपुरुषभगवाना॥ऋक्षराजयदुपतिकहँचीन्ही। बारहिंबारविनयअसकीन्हीं ॥
हमजानहिंतुमकोभगवाना।सबभूतनकेतुमबलप्राना।विष्णुजगतपतिपुरुषपुराना२६ जगसिरजकसिरजकहमजाना

कालहुकेतुमकालकराला । ईशहुकेतुमईशविशाला ॥ लोकनपालनपालनकरहू।प्रभुअनंतगुणनामहिंधरहू ॥

दोहा-आतमकेआतमअहौ, कारणकारणनाथ । तुमसमदीनदयालको, म्वहिंप्रभुकियोसनाथ ॥ २७ ॥

सवैया-नैसुकहीभृकुटीनकेफेरतनक्रनचक्रनधारणवारो। भीमभयावनभारीमहोदधिमारगदेतभयोहैलचारो ॥

उज्ज्वललंककरीयशतेहितदासविभीषणरावणमारो। श्रीरघुराजसोईरघुराजगरीबनेवाजभोनंददुलारो ॥२८॥

दोहा-ऋक्षराजजान्योहमें, यहजान्योयदुराज । करुणाकरकरकरहिंकारि, मेटोव्यथादराज ॥ २९ ॥

मृदुलवचनबोलेयदुराई । जानिभक्तकरिकृपामहाई ॥३०॥ पुरजनमृषाकलंकलगाये।ऋक्षराजमणिहितहमआये ॥

देहुस्यमंतकहमहिंमँगाई । सत्राजितहिंदेहुँमैंजाई ॥ ३१ ॥ जाम्बवंतसुनियदुपतिबैना।मणिसमेतदियसुतासुनैना॥

जाम्बवतीजाकोहैनामा । शीलसुभाउभरीछबिधामा ॥ ३२ ॥ दरीदुरेद्वादशदिनबीते।पुरजनसकलदुखीभेभीते ॥

लौटिद्वारकैजायपुकारे । दुरेदरीदेवकीदुलारे ॥ ३३ ॥ सुनिवसुदेवदेवकीरानी । कियेविलापमहादुखमानी ॥

दोहा-ज्ञातिबंधुमंत्रीसुहृद, कीन्हेंपरमविलाप । रुक्मिणिहूँअतिशयलह्यो, दुसहशोकसंताप ॥ ३४ ॥

सत्राजितहिंदेहिंबहुगारी । यदुपतिकहँशठदियोनिकारी ॥ मरचोकहाँयाकोधौंभाई । मिथ्यादियोकलंकलगाई ॥

सकलद्वारकापुरीनिवासी । दुखितकृष्णकेदर्शनआसी ॥ जायभवानीमंदिरमाँहीं । विधियुतपूजनकियेतहाँहीं ॥

हरिआवनहितसबहिंमनाये।बारहिंबारगौरिगुणगाये॥३५॥प्रगट्योगौरिप्रभावमहाना।नारिसहितआयेभगवाना।३६॥

निरखिकृष्णइमिभयेसुखारे।मनुमुखमृतकअमृतकोउडारे॥नारिसहितधारेमणिकंठा।पुरप्रवेशकीन्ह्योंवैकुंठा ॥३७॥

दोहा-मातुपिताकेवंदिपद, सभामध्यपुनिजाय । उग्रसेनमहराजढिग, सत्राजितहिंबोलाय ॥

मणिमिलिबेकीकथासुनाई।पुनिमणिकहँसबजननिदेखाई॥सत्राजितहिंसौंपिप्रभुदीन्ही।सोलजायअधमुखकरिलीन्ही

गयोभवनकहँअतिपछिताई।सिगरीरैनिनींदनहिंआई ॥३९॥ लग्योविचारकरनमनमाँहीं।मोसोंबनोकामकछुनाँहीं ॥

कैसेयदुपतिकरहिंप्रसादा।केहिविधिमिटैमोरअपवादा॥४०॥मैंमतिमंदस्यमंतकलोभी।भयोसभामधिआजुअशोभी

मेरीजोदुहितासतिभामा।ताहिव्याहिहरिदेहुँललामा॥तबकलंकमेरोमिटिजैहै।यदुपतिकोप्रसन्नचितह्वैहै ॥४१॥४२॥

दोहा-सत्राजितअसठीकदै, हरिकहँसुताबिवाहि । दायजमेंमणिकोदियो, लह्योमोदमनमाँहिं ॥ ४३ ॥

यदुपतिकीन्ह्योंसपदितहँ, सतिभामाकोव्याह । जासुसरिसनहिंसुंदरी, त्रिभुवनमहँनरनाह ॥ ४४ ॥

सत्राजितसोंहरिकह्यो, राखहुमणिनिजभौन । हमतोफलभागीअहैं, हमहिंकाममणिकौन ॥ ४५ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा
श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृत आनन्दाम्बुनिधौ
दशमस्कंधे उत्तरार्धे षट्पंचाशत्तमस्तरंगः ॥ ५६ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-लाक्षागृहमेंपांडवन, दियदुर्योधनजारि । सुनतहस्तिनापुरगये, संगहिंराममुरारि ॥

पांडवबचेयदपियहजाने । तद्यपिउचितगमनउरआने॥१॥जायहस्तिनापुरगिरिधारी । मिलेविदुरभीषमगांधारी ॥

द्रोणाचार्यकृपाचारजको । औरहुभूपअंधआरजको ॥ तेपांडवनशोकसोंभीने । रामकृष्णलखिरोदनकीने ॥

हरिबलशोकितभयेसमाना । कह्योहायभोकष्टमहाना॥पुनिसबसोंमिलिलहिसतकारा।रहेकछूदिनशौरिकुमारा॥२॥

इहाँद्वारकामेंकुरुराई । कृष्णगमनकोअंतरपाई ॥ कृतवर्माअक्रूरदोउजाई । शतधन्वासोंगिरासुनाई ॥ ३ ॥

दोहा-हमकोकन्यादेनकहि, सत्राजितमतिमंद । दीन्हींव्याहिमुकुंदको, कपटीकीन्ह्योंफंद ॥

तातेसत्राजितकहँमारी । लेहुछोडाइस्यमंतकभारी ॥ ४ ॥ सुनिअक्रूरकृतवर्मकिबानी।शतधन्वाकुबुद्धिउरआनी॥

आधीनिशाखड्गलैहाथै । गयोअकेलछोडिसबसाथै ॥ सोवतसत्राजितकोशीशा । काट्योछागसरिसअवनीशा ॥५॥

मणिअपनेअयनासधारयो।नारीआरतशोरपुकारयो॥नारीरुदनसुनतसतिभामा।ल्याखवरिजागीनिजधामा॥६॥
सुनिपितुवधअतिशयदुखपायो।हायतातअसवचनसुनायो।रोवतमोहतिभोदुखभारी।शतधन्वहिंदीन्हींवहुगारी॥७॥

दोहा—पुनिडोंगीमहँतेलभरि, पितुशरीरतेहिंराखि। चढिशिविकाहस्तिनपुरे, चलीचपलअनिमाखि॥

यदुपतिरामनिकटसोजाई। दियोपितावधदुखितसुनाई॥८॥सुनिवधश्वशुरकेरदोउवीरा।कग्तविलापवहतदृगनीरा॥
पुनिस्यंदनचढ़िद्रुतयदुनंदन।भीषमद्रोणआदिकरिवंदन॥लियसमुझायसंगसतिभामे।अरुचढ़ायनिजरथमेंरामे॥९॥
दारुकसोंअसकहयदुराई। आजुदेहुनगरीपहुँचाई॥ सुनिदारुकहनिकशातुरंगे। चल्योद्वारिकेमारुतसंगे॥
भोरचलेसंध्यापुरआये। शतधन्वहिंपुरमहँखोजवाये॥शतधन्वासुनिहरिबलकोपू।जान्योअवशिहोतममलोपू॥१०॥

दोहा—प्राणबचावनहेतुडरि, गोकृतवर्मसमीप। कह्योबचावहुमोहिंअब, हैयदुनाथप्रतीप॥ ११॥

तबकृतवर्मकहीयहबाता। करिहरिवैरकोमंगलपाता॥ हमतोहरिसोंवैरनकरिहैं। तेरेसँगकसकुलहिंउखरिहैं॥१२॥
यदुपतिसोंकरिवैरहिकंसा।मरयोराजह्वैगईविध्वंसा॥सत्रहबारजरासुतहारयो।कृष्णसकलदलतासुसँहारयो॥१३॥
उठहुआशुहमरेगृहतेरे। तोहिंबचावनवलनहिंमेरे॥ तवशतधन्वाअतिदुखपाई। जायअक्रूरहिंगिरासुनाई॥
प्रथमहिंतुमअरुभटकृतवर्मा। मोहिंकरायोकुत्सितकर्मा॥ करहुनतुमकसमोरिसहाई। मारहिंमोकोअबयदुराई॥

दोहा—तवअक्रूरबोलेवचन, नहिंजानहिंमतिमंद॥ १४॥ सिरजतपालतसंहरत, यहिजगकोयदुनंद॥

जिनकीगतिविधिशिवहुनजानै।तिनसोंकसविरोधहमठानै॥१५॥सातवर्षकेजेयदुराई।इककरसोंलियशैलउठाई १६॥
तिनकोबारबारपरणामा। कृष्णअनंतआदिअभिरामा॥ तेरेहितहमनहिंमरिजैहैं। प्रभुसोंकहँपरायबचिजैहैं॥१७॥
उठमेरेगृहतेमतिमंदा। मोहूँकोफाँसतनिजफंदा॥ तवशतधन्वाअतिदुखपाई। अक्रूरहिंमणिदैपछिताई॥
ह्वैसवारइकचपलतुरंगा। भाग्योपूरबकाँपतअंगा॥ १८॥ शतधन्वाभागनसुधिपाई। द्रुतरथचढ़िरामहुँयदुराई॥

दोहा—शतधन्वापीछेलगे, कीन्हेंकोपअपार। कहँभरिजैहैभागियह, असमनकियेविचार॥ १९॥

शतधन्वाभाग्योशतयोजन। आयोजवहिंजनकपुरउपवन॥तबतुरंगमरिगोतेहिंठामा।गयेपहुँचियदुपतिअरुरामा॥
निरखिकृष्णकोअतिभयपाग्यो।पैदलशतधन्वातबभाग्यो॥२०॥रथतेकूदिदौरिगिरिधारी।हन्योचक्रशतधन्वहिंभारी
गिरयोधरणिमहँगोकटिशीशा।आयतासुढिगयदुकुलईशा॥ताकेवसननमाहँमुरारी।मणिकोहेरनलगेविचारी॥२१॥
जबमणिमिलीनतबगोहरायो।बड़ेभाग्यहमरतननपायो॥शतधन्वाकोहन्योवृथाहीं।मणिधरिआयोयहगृहमाँहीं२२॥

दोहा—सुनतवचनश्रीकृष्णके, कीन्ह्योरामविचार। मोहूँसोंचोरीकरत, चंचलबंधुनमार॥

असविचारिरथतेगोहरायो। भलीभईजोरतननपायो॥ यहमणिअपनेपासनल्यायो। नगरीमहँकाहूदैआयो॥
तातेयदुनगरीतुमजाहू। खोजिलीजियेमणियदुनाहू॥२३॥तुमविदेहकोचहैंनिहारे। मोहिंजनकलागतअतिप्यारे॥
असकहिस्यंदनतजिबलरामा।प्रमुदितगयेजनककेधामा॥२४॥सुनिविदेहबलभद्रअवाई। लीन्ह्योंपुरवाहरअगुआई॥
पूजनकीन्होंविविधप्रकारा। प्रेमसहितपुनिचरणपखारा॥ पुनिरामहिंगृहगयेलेवाई। तहँकीनीबहुविधिसेवकाई॥

दोहा—वसतभयेकछुकालतहँ, अतिमोदितबलराम॥२५॥ दुर्योधनतहँआयकै, करिचरणनपरणाम॥

सिखीगदाविद्याबलपाँहीं।कियसतकारजनकतेहिंकाँहीं२६उतशतधन्वहिंमारिमुरारी।तासुवसनमहँमणिननिहारी॥
चढिस्यंदनद्वारकैसिधारे। सतिभामासोंवचनउचारे॥ हममारेशतधन्वहिंप्यारी॥तासुपासमेंमणिननिहारी॥२७॥
असकहिपुनिसत्राजितकेरो। प्रेतकर्मकरवायवनेरो॥ वसेद्वारकामहँसुखपागे। मणिकोखोजकरावनलागे॥२८॥
शतधन्वावधखवरिहिंपाई। कृतवर्माअक्रूरडेराई॥ भगेद्वारकातेदोउवीरा। काशीमहँदोउवसेअधीरा॥ २९॥

दोहा—यदुपुरतेजबतेगये, काशीकहँअक्रूर। होनलगेतबतेतहाँ, महाउपद्रवक्रूर॥ ३०॥

असकोउकहैंमुनीशमहीशा।जानहिंनहिंप्रभावजगदीशा॥होउजासुनामहिंतेमंगल।तेहरिजहँतहँकौनअमंगल॥३१॥
वाराणसीदेशइककाला। अनावृष्टिभैदुखदकराला॥ ह्वैहैवृष्टिश्वफलकहिंआये। काशिराजअसगुनिसुखपाये॥

दई श्वफलकहिंव्याहिकुमारी। गमनततितिनहिंवृष्टिभैभारी॥गांदिनिनामसुताछविवारी।सोअक्रूरकेरिमहतारी ॥३२॥
जहँजहँजातरहअक्रूरा। सोइप्रभाववनतहँजलपूरा॥ प्रगटैनहिंतिनदेशनमारी। होइनकछुउतपातहुभारी ॥३३॥

दोहा—असवृद्धनवाणीसुनत, यदुपतिकहँअसवैन। यतनैभरकारणनहीं, मणिहुँविनादुखऐन॥

असकहियदुपतिचारपठायो। काशीतेअक्रूरबोलायो॥ करिसतकारवचनकहप्यारे।तुमअक्रूरहोककाहमारे॥३४॥
सबकेमनकेजाननहारे। पुनियदुपतिअसबैनउचारे॥३५॥ शतधन्वातुमकोमणिदैकै। भाग्योइततेअतिभयकैकै॥
ककाप्रथमहमजान्योसोई। पैतुमसोंतवराख्योगोई॥ ३६॥ सत्राजितकेनाहिंकुमारा। प्रेतकर्महमकियोअपारा॥
अहैउचितहमकोधनताको॥३७॥पैतुमराखोरतनप्रभाको ॥ ब्रह्मचर्यधरिपूजनकरहू। तासुजनितधनसबघरधरहू॥

दोहा—यहीस्यमंतकहेतुहीं, दैकलंकमोहिंराम। ह्वैउदासमिथिलापुरी, वसेजनककेधाम॥ ३८॥

पैतुमहनकोदेहुदेखाई। जामेंमथकलंकमिटिजाई॥ जोयहककहहुनहैहमपाँहीं। मिल्योतोअसधनकहँतुमकाँहीं॥
[illegible]हुयज्ञरचिसुवरणवेदी।देहुदानसनाद्विजनअखेदी॥३९॥सुनिअक्रूरअसयदुपतिबानी।मधिदरबारस्यमंतकआनी॥
खोलिवसनतेहिंदयोदेखाई।रह्योप्रकाशमूर्यसमछाई॥४०॥हरिमणिकोसबजननदेखाई। अपनोदियोकलंकमिटाई॥
[illegible] हँसीन्हीं [illegible] जयजयकीन्ही॥जोकोउसुनतस्यमंतकगाथा।करतपाठअतिप्रेमहिंसाथ

दोहा—[illegible]कलुखनाशजातहै, अपकीरतिनहिंहोइ। सकलभाँतिमंगललहै, करहुनसंशयकोइ॥ ४२॥

इति सिद्धश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे सप्तपंचाशत्तमस्तरंगः॥ ५७॥

दोहा—द्रुपदगेहमेंप्रगटभे, पाँचौंपांडववीर। आयेहस्तिननगरमहँ, द्रुपदीयुतरणधीर॥

सोसुनिपरमसुखितयदुनाथा।सात्विकआदिकलैयदुसाथा॥हस्तिननगरगयेयदुराई॥१॥हरिआगमपांडवसुधिपाई॥
जेगसरहेतेतसउठिधाये। हरिअगमानिहेतुद्रुतआये॥ जैसेइंद्रीप्राणहिंपाई। चेतनहोंहिसकलसुखछाई ॥ २॥
निरखिपांडवनकोयदुराई।भरिअनुरागदियोमुसक्याई॥ यदुनंदनकोवदननिहारी। सबपांडवअतिभयेसुखारी॥
प्रथममिलेसबएकहिंबारा।अनुचितउचितनरह्योविचारा॥३॥ धर्मभूपकहँयदुपतिवंदे। अरुभीमहुकहँपरमअनंदे॥
पुनिअर्जुनहिंमिलेसुखधामा। माद्रीसुतदोउकियेप्रणामा॥ ४॥

दोहा—पुनिपांडवअपनेअयन, यदुपतिकहँपधराय। पूजनकीन्हेंप्रेमभरि, सिंहासनबैठाय॥

पुनिद्रौपदीपरमसुकुमारी।लज्जितयदुपतिनिकटसिधारी॥मंदमंदपदवंदनकीन्ह्यो।अपनोजन्मसफलगुनिलीन्ह्यो ५॥
पुनिपांडवसात्विकउरलाई। पूजेसादरतेहिंबैठाई॥ पुनिपांडवनकेरकरगहिकै। लियबैठायबैनमृदुकहिकै॥
बारबारयदुपतिसुखदेखै। धन्यधन्यअपनेकहँलेखै॥ ६॥ पुनिप्रभुकुंतीनिकटसिधारे। करिवंदननैननिजलढारे॥
कुंतीहरिकहँहियेलगाई। पूछीविविधभाँतिकुशलाई॥७॥ यदुपतिहूँपूछीकुशलाता। प्रेमविवशसुखकढ़ीनबाता॥

दोहा—भयेविलोचनसजलयुग, भरिआयोगलतासु। प्रेमविवशकछुक्षणविकल, पुनिसम्हारिउठिआसु॥

पूर्वकलेशनसुमिरिसयानी।दोउकरजोरिकहीअसबानी॥८॥कृपाराबरीममकुशलाई। पठयोममसुधिहितममभाई॥
तबतेहमसबलहेअनंदा। छूटिगयोसिगरोदुखदंदा॥भ्रातअक्रूरआइमोहिंपाँहीं।कहितुववचनदल्योदुखकाँहीं॥ ९॥
नहिंतुवशत्रुमित्रखगगामी।जगतमित्रहोअंतर्यामी॥तद्यपिदासनदीनदयाला। सुमिरतटरहुकलेशकराला॥ १०॥
धर्मभूपपुनिकहकरजोरी।भैबड़भागआजप्रभुमोरी॥कीन्ह्योंकौनसुकृतनहिंजानो। आवतनहिंकछुमनअनुमानो॥

दोहा—जाकोयोगीयोगबल, दर्शनपावतनाँहिं। सोदरशनप्रभुरावरो, मैंकियइनदृगमाँहिं॥ ११॥

धर्मराजकीसुनिप्रभुबानी। मोदितभयेपरमप्रियमानी॥ भूपविनयसुनिरमानिवासा। कियनिवासपावसचौमासा॥
दिल्लीनगरनिवासिननाथा।निजदर्शनदैकियोसनाथा॥१२॥ एकसमययदुनंदनकाँहीं। लैअर्जुनचढ़िस्यंदनमाँहीं॥
धनुषतुणीरधारिवरवीरा१३गेअखेटहितगहनगँभीरा॥व्यालमृगनमयकाननघोरा।तहँप्रवेशकियपांडुकिशोरा १४॥

तहँखुलिखेलनलगेशिकारा । अर्जुनअरुवसुदेवकुमारा ॥ हनेवाघअरुगोझवराहा । मासरहरिणभ.हिपन्नगनाहा ॥

दोहा-खड्गीस्याहीशशकहनि, ॥ १५ ॥ जानिपर्वदोउवीर । शुचिआमिषजनहाथदै, भेज्योजहँनृपधीर ॥

तहँदोउवीरनलगीपियासा।थाकिगयेअतिपरेप्रयासा॥तवगमनेयमुनासरितीरा ॥ १६ ॥ कीन्हेंपानसुधासमनीरा ॥
वदनधोइकरचरणपखारे । शीतलछायाघामनिवारे ॥ तहँइकसुंदरिलखोकुमारी । यमुनातटबैठीतपधारी ॥
तबअर्जुनसोंकहयदुराई ।पूँछहुकुँवरिकाँहिंढिगजाई॥१७॥जायकुमारीनिकटकिरीटी।पूछनलगेनयनखंजरीटी१८॥
अहौकौनितूँकसइतआई।केहिहिततपधारेचितलाई ॥ हमहिंजानिअसिपरतकुमारी । तुमतपकरहुकंतहितभारी ॥

दोहा-जबपारथपूछतभये, मंदमंदमुसक्याय । धन्याकन्यातबतुरत, दीन्ह्योंवचनसुनाय ॥ १९ ॥

कालिंद्युवाच ।

हमहैंभानुसुताधनुधारी।त्यहिंहितकरहुँतपस्याभारी ॥ होहिंहमारकंतगिरिधारी।दूजीनहिंअभि[illegible]पहमारी॥२०॥
मरिहौंवरुवरिहौंनहिंदूजो।विनहरिजिनपदविधिशिवपूजो॥२१॥कालिंदीहैनामहमारा।पितुविरच्यो.जलमाहँअगारा।
जबलोंमाधवनहिंबरिलैहैं।तबलोंइततेहमनहिंजैहैं ॥ २२ ॥ तबअर्जुनहरिपहँफिरिआये । कालिंदीके[illegible]वचनसुनाये ॥
तबयदुवरकरिकृपामहाई।कालिंदीनिजरथैचढ़ाई॥नृपतिनिकटअर्जुनयुतआये।लखतयुधिष्ठिरअतिसुखपाये॥२३॥

दोहा-विशुकर्माकोबोलिपुनि, दियशासनयदुराय । पांडवपुरअनुपमरचहु, निपुणाईतरसाय ॥

यदुवरकोशासनसोपाई । दियोअनूपमनगरबनाई ॥ २४ ॥ तहाँवसेकछुकालमुरारी । दियोपांडवनआनँदभारी ॥
अर्जुनसारथिह्वैयदुराई।खांडौवनदियअग्निजराई॥२५॥धनुतुणीरदियोशिखिह्वैराजी।रथअभेदकवचहुसितवाजी २६
जरतबचायोमयदानवको । रचीसभासोसुखप्रदसबको ॥ जौनीसभामाहँकुरुराई । दुर्योधनजलथलभ्रमपाई ॥२७॥
माँगिविदापुनिधर्मराजते । औरहुसबसुहृदनसमाजते ॥ सात्यकादिवीरनसँगलीन्हें।द्वारावतीगमनप्रभुकीन्हें॥२८॥

दोहा-नगरआयशुभलग्नमें, कालिंदीकोव्याह । करतभयेविधिसहितप्रभु, पुरजनलहेउछाह ॥ २९ ॥

विंदऔरअनुविंदसुवेशा । रहेअवंतीनगरनरेशा ॥ रहेसुयोधनकेवशदोऊ । तिनकीभगिनिलेनचहसोऊ ॥
दुर्योधनबोल्योतिनपाँहीं।यदुवरकोव्याहहुतुमनाँहीं॥हमहिंव्याहितुमदेहुकुमारी।करहुनयदुवरकोभयभारी ॥३०॥
नाममित्रविंदाहैजाको । त्रिभुवनमेंअनूपवपुताको ॥ ताहिस्वयंवरमध्यमुरारी । दुर्योधनदेखतधनुधारी ॥
हरयोमित्रविंदहिंयदुराई । सबभूपनकोगर्वनशाई ॥ ३१ ॥ धर्मधुरंधरअवधअधीशा । रह्योनग्नजितनाममहीशा ॥

दोहा-कन्यासत्यानामकी, परमप्रभाकीजासु । भूपतिऐसोप्रणकियो, करनस्वयंवरतासु ॥ ३२ ॥

जोकोउसातवृषभमदवारे । तीखनशृंगमहाबलधारे ॥ नाथैइनकोएकहिंबारा । लेयसुतासोभूपकुमारा ॥
यहप्रणसुनतघमंडाहिंछाये । भूपकुमारअवधपुरआये ॥ नाथनलगेवृषभइकवारे।वृषभवलीतिनकहँहनिडारे ॥३३॥
सुनिप्रणअवधभूपकोभारी।अवधनगरगवनेगिरिधारी॥चल्योसंगमहँकटकमहाना।चल्योसव्यसाचीबलवाना॥३४॥
सुनिअवधेशकृष्णआगमनू । मान्योसकलअमंगलदमनू ॥ लीन्हेकछुचलिकैअगुवानी।सादरप्रभुहिंऐननिजआनी॥

दोहा-प्रीतिसहितपूजनकियो, कौशलेशमतिमान । धन्यभाग्यअपनोगुनो, बारबारहरषान ॥ ३५ ॥

तहाँझरोखनतेसुकुमारी । सत्यानिरखतभयगिरिधारी ॥ लखिमोहितअसलगीमनावन।होपतिहोइँपतितकेपावन॥
जोकछुममजपतपविधिजोवैं।तौयदुनायकनायकहोवैं३६जिनकेपदपंकजरजकाँहीं।विधिशिवरमाधरहिंशिरमाँहीं ॥
राखनधर्महेतुमरयादा । लीलाकरहुदेहुअहलादा ॥ ३७ ॥ पुनिहरिसोंबोल्योअवधेशा । कहाकरौंप्रभुदेहुनिदेशा॥
हैनारायणहेजगदीशा । सबविधिपूरणईशहुईशा ॥ मैंलघुकहाकरनकेलायक।तुमसबविधिसमरथयदुनायक॥३८॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-तबसिंहासनमेंलसे, मेघसरिसगंभीर । कौशलपतिसोंकहतभो, विहँसिवचनयदुवीर ॥ ३९ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

धर्मधुरंधरजेनृपअहहीं । यावतिनहिंनिंदाकविकहहीं ॥ तद्यपिमैंतुवप्रीतिनिहारी । माँगहुँनृपरावरीकुमारी ॥

कन्यामोलतुम्हेंनहिंदेहैं । वचनपूरकरिदुहितालैहैं ॥ जबयदुनंदनआशयखोले । तबअवधेशमुदितपुनिबोले॥४०॥

राजोवाच ।

तुमसेवरवरकोजगमाँही । देहुँजाहिमैंसुताविवाही ॥ गुणनिधितुम्हरेउरमहँकमला।करैनिवासनिरंतरअमला॥४१॥
पैहमकियेएकप्रणभारी।राजसुतनवलचहहुँनिहारी ॥४२॥सातवृषभयेअतिबलवारे।येबहुराजसुतनकहँमारे॥४३॥

दोहा—एकसाथवृषसातहुन, जोनाथहुयदुनाथ । तौकन्याधन्याभई, मैंह्वैगयोसनाथ ॥ ४४ ॥

कौशलपतिप्रणसुनतविशाला । मनमहँकियोविचारकृपाला ॥ ऐसेखेलबहुतहमखेले । व्रजमहँगोपनसंगनवेले ॥
असगुनिकस्योकठिनकटिफेंटो।उठेआशुलघुकारजसेटो॥सातरूपधरितहँयदुनाथा।नाथेसातवृषभइकसाथा॥४५॥
बाँधिदाममहँनृपढिगलाये।सातहुवृषभनगर्वनशाये॥खेलैदारुवृषभजिमिबालक।तिमिबाँधेवृषभनयदुपालक ॥४६॥
अवधनरेशप्रीतिअतिछाई । दीन्हीव्याहिसुतायदुराई॥लियोकुँवरिकहँहरषिविहारी।वेदविधानसकलनिरधारी॥४७॥

दोहा—मतिमानीरानीतहाँ, पायकृष्णजामात । धन्यभाग्यअपनोगुनो, आनँदउरनसमात ॥ ४८ ॥

बजेशंखनौबतिहुनगारे । द्विजवरआशिषवचनउचारे ॥ नगरनारिनरआनँदपाये । भूषणवसनसाजिसबआये॥४९॥
दशसहस्रदियेधेनुभुवाला । त्रैसहस्रयुवतीमणिमाला ॥५०॥ नौहजारहाथीमदमाते । रथनवलाखसहितसुखमाते॥
दियोकोटिनवचपलतुरंगा।दियोपद्मनवभटजयजंगा ॥५१॥ सुतासहितयदुनंदनकाँहीं।दियचढ़ायनृपस्यंदनमाँहीं॥
प्रेमविकलदृगमुदजलढारा।रह्योनतनुकरतनकसम्हारा॥यहिविधिदंपतिकहँअवधेशा।विदाकियेलहिमुदसरितेशा ॥

दोहा—तवजेसातहुवृषनते, हारेराजकुमार । तेयदुपतिकोव्याहसुनि, करिकैकोपअपार ॥

किमिलेजैहैकृष्णकुमारी । असविचारसिगरेधनुधारी ॥ मारगरोकिखड़ेभेघेरे । चहकारेनटभाटनकेरे ॥ ५३ ॥
छोड़ेसकलविविधविधिबाना । छायलईयदुसैन्यमहाना ॥ तबअर्जुनगांडीवटँकोरा । छोड़ीबाणधारअतिघोरा ॥
एकहिंवारसबनकहँमारे । औरहुसकलकटकसंहारे ॥ जेबाँचेतेगयेपराई । जिमिमृगवनकेहरीडेराई ॥ ५४ ॥
लैदायजअतिशयसुखछाये।यदुपतियदुनगरीकहँआये॥लह्योमोदअवधेशकुमारी।भईकृष्णकीअतिशयप्यारी ५५॥

दोहा—श्रुतिकीरतिफूफूसुता, भद्राजाकोनाम । केकैदेशहिंसोभई, रहीसोछबिकीधाम ॥
ताकेभ्रातासकलमिलि, कृष्णहिंकियेविवाह । लायेयदुपतियदुनगर, पुरजनलहेउछाह ॥ ५६ ॥
भद्रदेशमहिपालकी, सुतालक्ष्मणानाम । शुभलक्षणतेलक्षिता, सकलअंगअभिराम ॥
ताहिअकेलेजायहरि, हरचोस्वयंवरमाँहिं । जिमिपियूषखगपतिहरचो, रोकिसकेसुरनाहिं ॥ ५७ ॥
भौमासुरकोमारिकै, औरौसहसननारि । लायेयदुपतिअयनमहँ, शीलसुछबिसुकुमारि ॥ ५८ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे अष्टपंचाशत्तमस्तरंगः ॥ ५८ ॥

दोहा—व्याससुवनकेवचनसुनि, तहँमुनिमध्यसमाज । भौमकथाकेसुननको, कह्योपरीक्षितराज ॥

राजोवाच ।

भौमासुरजेहिविधिहरिमारचो।लैबहुतियद्वारकैसिधारचो॥यहौत्रिविक्रमविक्रमभाखो।मोसोंमुनिछिपायनहिंराखो ॥
सुनिकुरुपतिकेबैनसुहावन । बोलेबैनव्याससुतपावन ॥ १ ॥

श्रीशुक उवाच ।

कबहूँभौमासुरबलवाना । कीन्ह्योसुरपतिपुरहिंपयाना ॥ देवनजीत्योबिनहिंप्रयासा । शक्रछत्रहरिलियअनयासा ॥
लियोउतारिअदितिकेकुंडल।जीतिसकलअमरावतिमंडल॥सुरपुरविजयबजायनिशाना।प्राग्ज्योतिषपुरगोबलवाना॥
सुनासीरअतिभयेदुखारे । गुजचढ़िद्वारावतीसिधारे ॥

दोहा--सतिभामाकेभौनमें, मोदितरहेमुकुंद। द्वारपालतहँजायकै, कीन्होविनयअमंद॥

नाथइंद्रठाढ़ेदरवाजे। आपभेटहितमणिगणसाजे॥ शासनहोइतोसभासिधारें। नातोखड़ोरहैप्रभुद्वारे॥
वासवआगमसुनियदुराई। कह्योल्याइयोवेगिबोलाई॥ नाथवचनसुनिद्वारपधायो। वासवकहँहरिढिगपहुँचायो॥
इंद्रहिंउठिप्रणामप्रभुकीन्ह्यों। सिंहासनआसनहितदीन्ह्यों॥ पूँछनलगेनाथकुशलाई। तबवासवबोलेदुखछाई॥
भौमासुरहमकोदुखदीन्ह्यों। कुंडलमातुछत्रममलीन्ह्यों॥ शरणागतहमभयेतुम्हारे। रक्षकतुमबिनकौनहमारे॥

दोहा--प्रभुवासवकेवचनसुनि, कह्योमंदमुसक्याय। कतअनाथइवशोचहू, हैममजेठेभाय॥

मोदितह्वैअबसदनसिधारो। देखहुवासवयुद्धहमारो॥ सुनियदुनाथवचनसुखपाई। सुरपुरकोगमनेसुरराई॥ २॥
तबयदुपतिखगपतिहिंबोलाये। गमनकरनकहँमनमहँलाये॥तबकरजोरिकहीसतिभामा।हमहूँनाथलखबसंग्रामा॥
हरितथास्तुकहिआयुधधारे। प्रियासहितभेगरुड़सवारे॥भौमनगरगमनेयदुराई। खगपतिक्षणमहँदियपहुँचाई॥३॥
प्रथमकोटपर्वतकरघोरा। गदामारिताकोप्रभुफोरा॥ दूजोशस्त्रनकोटनिहारचो। ताकोबाणनवर्षिविदारचो॥

दोहा--तीजोजलचौथोअनल, पँचयोंमारुतकेर। मारिसुदर्शनचक्रते, नाइयोलगीनबेर॥

छठयोंमुरदानवकीफाँसी। नंदकतेयदुवरतेहिंनासी॥ ४॥ कियोशंखकोशोरकठोरा। फूटिगईतहँतोपकरोरा॥
कौमोदकीगदागहिमारी। शहरपनाहफोरिप्रभुडारी॥५॥ मुरदानवखामाजलमाँहीं। सोवतरह्योशंककछुनाँहीं॥
शंखशोरसुनिपरमकठोरा।भाग्योमुरदानवअतिघोरा॥लख्योपुरुषतियगुतइकसुंदर।खगमहँचढ़योभानमनुमंदर॥६॥
लियत्रिशूलइकमहाकराला। मनुप्रगटीप्रलयानलज्वाला॥मुरदानवहरिसन्मुखधायो।मनहुँचहतत्रिभुवनकहँखायो॥

दोहा--पंचवदनविकरालअति, कज्जलशैलशरीर। खड़ेकेशहगकूपसम, लखिसुरहोहिंअधीर॥ ७॥

छंदगीतिका-अहिसरिसखगपतिनिकटचलिअतिविकटमारित्रिशूलहै।पुनिशोरघोरकठोरकीन्ह्योंपंचमुखनअतूलहै।
छायोसकलब्रह्मांडमहँसुरसुनतकीनपरावने। सागरउछलिवेलातज्योमुनिलगेस्वस्तिमनावने॥ ८॥
लखिशूललैशारंगयदुवरकियोताहित्रिखंडहै। पुनिविपुलबाणकरालतेहिंसुखहनेसमयमदंडहै॥
पुनिलैगदागिरिसीगरूगलतकिहनीगोपालके॥ ९॥ तेहिंगदातकिनिजगदाछोडिगदाग्रजहुसमकालके॥
रिपुगदाचूरचोसहसधावसुधामनोउल्कावली। तबकोपिमुरभुजकोउठायगराजकरिधायोवली॥
यदुनाथचक्रप्रचंडलैकियमुंडपाँचौंखंडहै। जिमिकुलिशदलितागिरिंद्रगिरतोत्योंगिरचोजलरुंडहै॥ १०॥

दोहा--सातरहेमुरकेसुवन, मुरकेनहिंसंग्राम। पितुविनाशलखिकृष्णसों, भयेकोपकेधाम॥ ११॥
वसूविभावसुवरुणअरु, श्रवणताम्रनभस्वान। अंतरिक्षयेसातहू, कियरणकोपिपयान॥

छंदभु०-रह्योभौमसेनापतीपीठजो।दियोसंगरैमेंनहींपीठिजो॥कियोताहिआगेसवैकोपिकै।बड़ीसैन्यसाजेरणैचोपिकै॥
सबैकृष्णकेसन्मुखैधाइकै। तजेअस्त्रभारीढिगैआइकै॥ गदाशक्तितेगौशरैशूलहै। हनेमूसलौतोमरौतूलहै॥
विलोकेहरीशस्त्रकोआवते। तजेबाणभारीबड़ेचावते॥कियेहैंतिलैसेसबैशस्त्रको।लियोफेरिभासीमहाअस्त्रको॥१३॥
हन्योपीठिकोऔमुरैपुत्रनै। कटेबाहुशीशौभुजावर्मनै॥ गयेएकबारैयमैएनको। द्रुतैहींसँहारचोसबैसैन्यको॥

दोहा--जेबाँचेतेभागिगे, भौमासुरकेपास। अँगकाँपतविनतीकरी, भोप्रभुमहाविनास॥

एकपुरुषपक्षीचढ़िआयो। सुंदरिनारिसंगमेंलायो॥ सोसातौंकोटनकोफोरचो। मुरकोमारिदैत्यमदमोरचो॥
पीठिसहितमुरकेसुतसातौ।आशुहिंसेनासहितनिपातौ॥सुनिकोपितभोधराकुमारा।सबवीरनकोआशुहँकारा॥१४॥
लैमदमत्तमतंगहजारन। भौमासुरनिकस्योरणकारण॥लख्योगरुडपरतियगुतकृष्णै।रविपरचपलायुतघनकृष्णै॥
हरिकहँलखिसोहँस्योठठाई। यहकोआयोस्वाँगबनाई॥ नारीसंगविहंगसवारा। चारिबाहुधारेहथियारा॥

दोहा--भौमासुरबोलतभयो, सिगरेभटनसुनाइ। यहिकामीकोमारिकै, तियकोलेहुछुडाइ॥

भौमवचनसुनिभटसमुदाई। मारेहरिकहँतोपलगाई॥ आयहुहन्योतोपकरधारी। माँचिरहीरणमहँघहरारी॥
लूकसमानचलेबहुगोला। बारहिंबारभयोभूडोला॥ गोलालगतगरुडकेअंगा। चूरचूरभेएकहिंसंगा॥ १५॥

तबयदुनंदनशार्ँगलीन्ह्यों । इकइकगोलनतिलतिलकीन्ह्यों ॥ तहँप्रभुतजीवाणकीधारा । मूँदेरविह्वैगोअँधियारा ॥
कटेन्हाहुशिरउरुपदकंधा । उठतभयेरणमध्यकबंधा ॥ कटेतुरंततुरंगमतंगा । खंडखंडभेयोधनअंगा ॥ १६ ॥
दोहा--जोजोभटआयुधतजत, हरिहिंवेरिचहुँओर । तिनतिनत्रैत्रैबाणहनि, काटेशौरकिशोर ॥ १७ ॥
पक्षिराजपुनिपक्षिनमाँहीं । डारच्योपेरिसुपीलनकाँहीं ॥ लगतपक्षिपतिपक्षप्रवाता । केतेउडिगेगजसंघाता ॥
केतेबिनदंतनबिनशुंडा । भयेलगतनखचोंचप्रचंडा ॥ १८ ॥ केतेगजचिक्करतपराई । घुसेनरककेनगरहिंजाई ॥
नरकासुरलखिसैन्यविनासा।युद्धकरनकहँकियोहुलासा१९लैइकशक्तिकुलिशतेभारी।हन्योगरुडकहँताकिप्रचारी॥
लगीशक्तिखगपतिअँगमाँहीं।जैसेकुसुममालगजकाँहीं२०निष्फलनिरखिपराक्रमआपन।कोपितभौमासुरसुरतापन।
दोहा--लीन्ह्योशूलकरालइक, मारनकोयदुनंद । चह्योचलावनजबतहाँ, अतिआतुरमतिमंद ॥
दानवशूलचलननहिंपायो।कृष्णसुदर्शनचक्रचलायो।।भौमासुरगजरह्योसवारा।कटच्योशीशगजयुतइकबारा ॥२१॥
सहितकिरीटकुंडलनचारू । गिरच्योधरणिशिरधरयुतहारू॥हाहाकारदैत्यसबकीन्हें । सुमनसुमनवर्षिबहुदीन्हें ॥
साधुसाधुबोलेऋषिज्ञानी।यदुवरकीअस्तुतिबहुठानी॥२२॥देखिधरणिनिजपुत्रविनासा।गमनकियोआतुरहरिपासा॥
चामीकरकुंडलपरकाशी । औरहुशक्रछत्रछविराशी ॥ हरिकहँकीन्ह्योंअर्पणआई । वैजंतीमालापहिराई ॥ २३ ॥
दोहा--पुनिलागीअस्तुतिकरन, यदुनंदनकीभूमि । मणिपर्वतकोअर्पिके, बारबारपदचूमि ॥ २४ ॥

भूमिरुवाच ।

छंदपद्धरी--जयदेवदेवधृतशंखचक्र । स्वेच्छास्वरूपमदमथनवक्र ॥
जयजगतआत्मपरमात्मशुद्ध । जयज्ञानऔरविज्ञानबुद्ध ॥ २५ ॥
जयकंजनाभजयकंजमाल । जयकंजनैनपदकंजलाल ॥ २६ ॥
जयविष्णुभूतिभृतवासुदेव । जयआदिहेतुसबसुरनसेव ॥
जयपरमपुरुषजयपूर्णबोध ॥ २७ ॥ जयपरब्रह्मअजरहितक्रोध ॥
जयअंतरंगबहिरंगज्ञात । जयअलिअनंगअरिसरसिजात ॥ २८ ॥
दोहा--सिरजनरजनाशनतमै, पालनसतगुणधारि । सिरजहुनाशहुपालहू, हेजगदीशविचारि ॥ २९ ॥
छंदगीतिका--मैंसलिलअनलहुअनिलनभसुरइंद्रिमात्राअरुमनौ । अरुसबचराचरजीवतुममेंएकपतितुमत्रिभुवनौ ॥
जेगुनतजगव्यतिरिक्ततुमतेयोग्यनरकनिवासके । तुमआदिकारणपतिततारणशोकदारणदासके ॥ ३० ॥
यहभौमसुतअतिदीनसबगुणहीनपरममलीनहै । तापरपरमभयभीततुवपदकमलयहिगहिलीनहै ॥
हेनाथपरमकृपालकीजैयाहिशिरकरकंजहै । दीजैअभयवरदानयातेहोइदुखसबभंजहै ॥ ३१ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा--भूमिवचनभगवानसुनि, दैतेहिंअभयनिदेश । भूरिभूतियुतकरतभे, भौमभौनपरवेश ॥ ३२ ॥
तहाँसहससोरहशतएका । सुरनरकन्यारहींअनेका ॥ हरिलायोभौमासुरभारी । कियेरह्योअसप्रणयविचारी ॥
सवालाखकन्यनिकोजोरी । करिहौंव्याहिविहारबहोरी ॥ तेकन्यनकहँलयेमुरारी ॥३३॥ यदुनंदनतेलखींकुमारी ॥
लखतैमोहिगईसुखधारे।चहींकृष्णपतिहोहिंहमारे॥३४॥तिनकीजानिनाथअभिलाषा।भौमभटनसोंअसप्रभुभाषा ॥
लावहुशिविकाविपुलमँगाई । देहुद्वारकहिंइन्हेंपठाई॥३५॥प्रभुकेवचनसुनतसुखपाये । पालकद्रुतपालकीमँगाये ॥
दोहा--मंजनअंजनवसनवर, अँगभूषणपहिराइ । शिविकनसबनचढ़ाइद्रुत, दियद्वारकहिंपठाइ ॥ ३६ ॥
चारिदंतकेउज्वलनागा । ऐरावतकुलकेबड़भागा ॥ ऐसेचौसठिगजछबिवारे । अरुरथवाजीवेगहिंधारे ॥
यदुनंदननिजसंगलेवाये । सतिभामायुतनिजपुरआये ॥३७॥ बसेतहाँकछुकालमुरारी । सुंदरिसोरहसहसविहारी॥
एकसमयरुक्मिणीअगारा । बैठिरहेवसुदेवकुमारा ॥ बैठीरहींऔरसबरानी । पैनहिंसतिभामाछविखानी ॥
तहँनारदमुनिआशुहिंआये । यदुवरदर्शनमहँमनलाये ॥ मुनिकहँदेखिउठेयदुराई । सादरआसनमहँबैठाई ॥

दोहा-पूजनकरिवंदनकियो, पुनिपूँछीकुशलात। तबनारदमुनितहँहरषि, हरिसोंबोलेबात॥
पारिजातकोसुमनसोहावन। मैंलायोतुवहितजगपावन॥ लेहुनाथयहधारहुशीशा। पावनकरहुपुहुपजगदीशा॥
तबलैपारिजातकोफूला। मुनिकहँहरिवंदेमुदमूला॥ रुक्मिणिकहँदीन्ह्योंयदुराई। जानिपरमप्यारीमनभाई॥
सोईपारिजातकोफूला। रुक्मिणिधारयोशिरमनफूला॥ तबनारदबोलेमुसक्याई। रह्योसुमनतुवयोग्यबनाई॥
होइहिनहिंयहकबहुँमलाना। दिनदिनदूनदूनद्युतिनाना॥ मनकामनासकलयहदेई। तनुमलानतासबहरिलेई॥
दोहा-पैहमकोअबरुक्मिणी, ऐसोपरोजनाय। सबरानिनतेआपको, प्रियमानतयदुराय॥
आजुसवतिसबरुक्मिणितेरी। तुवसोहागलखिलागहिंचेरी॥ इकतोहरिकहँतूअतिप्यारी। दूजेपारिजातसुमधारी॥
हमतोजानतहैंछबिधामा। हरिकहँअतिप्यारीसतिभामा॥ पैअबजानिपरोसतिमोहीं। हैंयदुवरतुम्हारअतिमोहीं॥
तहाँसत्यभामाकीदासी। खड़ीरहीसुनिभईउदासी॥ निजठकुराइनपहँगैदौरी। बोलीवचनदुखितकरजोरी॥
पारिजातसुमनारदलाये। यदुनंदनकहँमुदितचढाये॥ सोईसुमननाथप्रियकरिकै।दीन्ह्योंरुक्मिणिकहँमुदभरिकै॥
दोहा-तबनारदबोलेवचन, रानिनसकलसुनाय। सबतेतुमकहँअधिकप्रिय, मानतहैंयदुराय॥
असप्रथमहिंजानी। पैअबरुक्मिणिकोप्रियमानी॥ स्वामिनिरह्योकाहअबतेरो।रुक्मिणिलह्योसोहागघनेरो॥
जनिअपनेकहँमानहुँरानी। मैंहौंअतिप्रियशार्ँगपानी॥दासीवचनसुनतसतिभामा। बोलीवचनभ्रुकुटिकरिवामा॥
अबलोंतोहमरहीसोहागिनि।पैअबहरिमोहिंकियोअभागिनि॥कहिहैंकानकानसबरानी।रानिनकीरुक्मिणिठकुरानी।
औरसहैंसबवचनभलाई। पैहमसोंकैसेसुनिजाई॥ रह्योआजलोंमोहिंअभिमानै। मोहितजिहरिऔरहिनहिंजानै॥
दोहा-सभामध्यसोआजुसखि, हरिलीन्ह्योंहरिसोइ। प्यारिहिंसुरतरुसुमनदिय, प्रेमबेलिउरबोइ॥
असकहिभूषणवसनउतारी। वसनएकश्वेतहितनुधारी॥ तज्योअंगरागहुमणिमाला।कोपितमनहुँअनलकीज्वाला॥
बाँधिदुकूलश्वेतशिरमाँहीं। आतुरगईमानगृहकाँहीं॥ सजलजलदजिमिउडुछिपिजाँहीं।छिपीअकेलकोपगृहमाँहीं॥
लेपिअरुणचंदनसोंधरणी। बैठीभूमिमौनवरवरणी॥ सुमिरिसुमिरियदुपतिकेकर्मा। शीशकँपावतिसमुझतिमर्मा॥
महिनखखोदतिबारहिंबारा। श्वासलेतिबहुउरदुखभारा॥ बाँधीविलखिएकशिरवेणी।चूरणकरतिकमलछबिश्रेणी॥
दोहा-नीचेनैननवाइकै, बैठीकोपहिंधाम। यहिविधिसतिभामैतहाँ, बीतीनिशियुगयाम॥
तहँमुकुंदप्रद्युम्नबोलाई। मुनिकोसेवाहितबैठाई॥ दारुककोनिजसंगहिंलीन्ह्यों। सतिभामागृहगमनहिंकीन्ह्यों॥
जायतहाँनिरखीनहिंप्यारी। नाथसखीसोंगिराउचारी॥ कहाँगईप्यारीयहिछनमें। सखिकहस्वामिनिकोपभवनमें॥
कोपभवनगवनेयदुराई। दारुककहँद्वारहिंबैठाई॥ लख्योसत्यभामैगोविंदा। दृगनिओटकीन्हेंअरविंदा॥
बागतिबैठतिबारहिंवारा। तनुमहँकोपनजातसम्हारा॥ करिहरिओरपीठिमुसक्याती। पाँवनसोंमहिखोदतजाती॥
दोहा-सखिकरतेलैचंदनै, नेसुकहियेलगाय। करततापगुनितजतिसो, अलिकहँआँखिदेखाय॥
चढ़िपरयंकउतरिपुनिआवै।कोपभारतेहिंसहोनजावै।पुनिमुखमोरिभूमिमहँपौढी।सखिनठाढ़कीन्ह्योंनिजड्योढ़ी॥
यहअंतरलखिकेगिरिधारी। तुरतसखिनसोंगिराउचारी॥ प्यारीकोनहिंमोहिंजतावहु। मानकारणहिंवेगिबतावहु॥
सखिनकह्योहमजानहिंनाँहीं। आपहिपूँछिलेहुतिनपाँहीं॥ तबमाधवमंदिरमहँजाई। लियोव्यजनकरआशुउठाई॥
मंदमंदतहँहाँकनलागे। सतिभामाकेप्रेमहिंपागे॥ पारिजातसुमसौरभपाई। चौंकिउठीहरिप्रियासुहाई॥
दोहा-पूँछनलागीसखिनसों, यहसुगंधकितहोत। हैमहितेधौंव्योमते, बारहिंबारउदोत॥
करिप्रणामतहँसखीसयानी॥ बोलतभईभीतिअतिमानी॥स्वामिनहमनहिंजानतिअहहीं॥सौरभभेदकौनविधिकहहीं॥
लगीनिहारनतबचहुँओरै। लख्योशीशढिगशौरिकिशोरै॥ कँपतअधरलैश्वासअघाई। फिरिबैठीमुखनीचनवाई॥
नैननचायभ्रुकुटिकरिवामा। करमुखधरिबोलीसतिभामा॥ इततेगवनहुवेगिमुरारी। जाहुजहाँरुचिरचीतिहारी॥
कहतहिंआशुआँसुदृगआये। मनुमरंदअरविंदबहाये॥ दृगजलकमलकरनहरिलीने। बोलेवचनप्रेमरसभीने॥

दोहा—नीरजनैननननीरकत, ढारतिहैसुकुमारि। मुखमलीनममहोतहै, तुवमुखमलिननिहारि॥
बरवै—केसररंगितसारीकसतजिदीन। बिनाकालसितअंबरकसगहिलीन॥
भूषणतेबिनभूषितअंगदेखात। वेगिबतावहुप्यारीजियअकुलात॥
श्वेतवसनवरबाँधेभ्रकुटीबंक। धरणिसोहावनिकरतीतजिपरयंक॥
तेरीरोपितचितवनिआयसुनीर। मेरेहियउपजावतिअतिशयपीर॥
कसप्यारीनहिंबोलतिकेहिंअपराध। कसबोरहिमोहिंदुखकेसिंधुअगाध॥
मंदविहँसिचितवैरीएकहुबार। करुमेरोहियशीतलकरुदुखछार॥
अंजनयहमनरंजनभंजनशोक। बहतसलिलउरउपजतरंजहिओक॥
मोरचकोरचखचाहततुवमुखचंद। मनमिलिंदमोहीतुवमुखअरविंद॥
कौनचूकभैमोसोंदेहुबताइ। काहेदुखउपजावैवदनदुराइ॥
हैजहाँनमहँजाहिरयहप्रियबात। सेवतसतिभामैहरिनिशिदिनजात॥
सत्यसत्ययहभाषहुँमृषानमान। मोकोऔरनप्रियकोउतुमहिंसमान॥
दोहा—शशिपियूषधरणीक्षमा, रतिछबिरविजसतेज। तिमितोसोंममनेहहै, तुवरुचिनितबंधेज॥
असमुनिप्रीतमकीमृदुवानी। कहतभईमृदुवचनसयानी॥ मोकहँरह्योआजुलगधोखो।जान्योंकपटतोरनहिंचोखो॥
कारेकपटीहोहिंसदाँहीं। प्रीतिरीतिजानहिंकछुनाँहीं॥ जानीआपरीतिहमभूरी। मुखमहँसुधाहृदयमहँछूरी॥
चाहहुऔरनदाहहुमोहीं। जानिपरहुँमैंबावरितोहीं॥ होगोपिनसँगकेखेलवारी। कैसेजानहुँरीतिहमारी॥
गोपिनकेधोखेयदुराई। हमहूँसोंकीजतचपलाई॥ माखनदहीचोरावनवारे। कैसेजानहुगुणनहमारे॥
दोहा—बालपनेकोरंकजो, होतभागवशराउ। ताकोंकैसेहुमिटतनहिं, अपनोजातसुभाउ॥
असकहिसत्राजितललीं, ढारतिदृगजलधार। मुखहिंनिपटपटओटकरि, फिरिबैठीदुखभार॥
हरिबहोरिनिजओरकरि, बारहिंबारनिहोरि। वदनओरचलिकहतभे, विरचतविनयकरोरि॥
तेरोशोकअंगममजारे। कसकारणनहिंतासुउचारे॥ मेरीशपथतोहिंहैप्यारी। जोकारणनहिंदेहिउचारी॥
तबनीचेकरिआननचंदा। सुंदरिबोलीमंदहिमंदा॥ तुमहिंदियोमोहिंप्रथमसोहागा। हरयोतुमहिंतातेदुखलागा॥
सबतेअधिकमोहिंप्रियमाने। मोकहँअबसबतेलघुजाने॥ नारदपारिजातसुमलायो। सोतुमरुक्मिणिशीशचढायो॥
सोईअहैआपकीप्यारी। काहेकोसुधिकरहुहमारी॥ नारदकीन्हीतासुवड़ाई। सोतुमसुन्योश्रवणमनलाई॥
दोहा—नारदकाजानैहरे, अनुचितउचितउचार। भीखमाँगिघरघरजिये, वनकोनिवसनहार॥
जाहुरुक्मिणीनिकटमुरारी।जासोंकियोप्रीतिअतिभारी॥प्रथमप्रीतियदिममसुधिकीजै।तौतपकरनसीखमोहिंदीजै॥
अवनद्वारकामहँहमरैहैं। तपकरिकाननतनुतजिदैहैं॥ जोलहिमानलहतअपमाना। अधमकौनजगताहिसमाना॥
असकहिरुदनकरनपुनिलागी।हायनाथमैंसकौंनत्यागी॥तुमहिंछोड़िहमकेहिंवनजैहैं।केहिविधिहमतनुकहँतजिदैहैं।
नहिरहिजातनजातबनतहै। सकलभाँतिदोउभाँतिनशतहै॥ तातेतुममेंप्राणलगाई। तनुतजितुवतनुरहिहौंआई॥
दोहा—कंतअहौकपटीकठिन, कृपाणकूरसुभाउ। काहेकोकुलिकीजियतु, कोमलपनदेखराउ॥
सुनतसत्यभामाकीवानी। मंदविहँसिकहशारँगपानी॥ तुमतोहोस्वामिनममप्यारी। तुवअधीनहमहैंसुकुमारी॥
असमुखलसतनवचनकठोरा। वृथाजरावसिकतहियमोरा॥क्षमाकरहुअपराधहमारो। कोमलअहैसुभाउतुम्हारो॥
दियोदेवद्रुमसुममुनिराई। मैंदियरुक्मिणिशीशचढ़ाई॥ तातेकहौंसत्यमैंप्यारी। आशुहिंअमरनिवाससिधारी॥
पारिजातकोविटपउखारी। नाकनिवासिनगर्वउतारी॥ देहौंतेरेभवनलगाई। एकफूलकीकाहचलाई॥
दोहा—तबसुंदरिबोलीवचन, सकौजोसुरद्रुमल्याय। अबविलंबकतकीजियतु, कसनहिंदेहुदेखाय॥
जोतुमपारिजातद्रुमल्यायो। तौआशुहिंममानछोड़ायो॥हमहूँतबअसमनमहँजानैं। सबतेअधिकमोहिंप्रियमानैं॥

तबहरिकह्योकहीअबनीकी। करिहौंसकलकाजरजनीकी॥ अहिहैंरविबीतिगईसबरजनी। आईसबैजगावनसजनी॥
बंदीगणविरदावलिगाये। खगरवचहुँकितमधुरसुनाये॥ तबउठिकीन्हमंजनशुचिनीरा। प्रातकर्मकरिकैयदुवीरा॥
बैठेसतिभामागृहजाई। तहँआयेनारदमुनिराई॥ सतिभामायुततहँयदुराई। पूज्योविधियुतमुनिशिरनाई॥

दोहा—नारदपदधोवनलगी, सतिभामानिजहाथ। सलिलसुखदढ़ारनलगे, लैझारीयदुनाथ॥

चरणपूजिआसनबैठायो। विविधभाँतिभोजनकरवायो॥ मुनिआशिषलैपुनियदुराई। भोजनकियोप्रियायुतजाई॥
पुनिबैठेनारदढिगआई। तबऋषिशअसगिरासुनाई॥ शासनहोइतौसुरपुरजाहूँ। बोल्योगानसुननसुरनाहूँ॥
तबयदुनाथकह्योकरजोरी। सुनुदेवर्षिविनययहमोरी॥ कहियोवासवसोंअसजाई। आपअनुजनारीमनभाई॥
माँग्योपारिजाततरुकाँहीं। देहुकृपाकरिकरहुननाँहीं॥कृष्णहुँकियतेहिंहितबहुविनती।कहँलगिकरौंतासुमैंगिनती॥

दोहा—औरहुबहुविधिभाषियो, सुरपतिसोंसमुझाइ। जामेंसुरतरुदेहिंमोहिं, असतुमकिहोउपाइ॥

मैंतोवासवकोलघुभाई। लालनपालनयोग्यबनाई॥ सुरतरुलावनहमप्रणलीन्हें। पूरहोतवासवकेकीन्हें॥
अबनहिंऔरकढ़ीमुखबाता। असतभयेप्रणअवगोवाता॥ कहिमुनिकियोमृपानहिंकबहूँ।बालकरह्योनंदघरजबहूँ॥
मिथ्याजोमेरोप्रणहोवै। सकलधर्ममरयादहिंखोवै॥ पन्नगयक्षसिद्धगंधर्वा। सुरराक्षसआदिकजेसर्वा॥
सकैंनकोउमेरोप्रणटारी। राखहिंमोरसदाभयभारी॥ कहेहुप्रथमविनतीमुनिमोरी। वारबारवासवहिंनिहोरी॥

दोहा—देइनहींजोदेवतरु, कीन्हेंसामउपाय। तौसुरपतिकोममवचन, ऐसहुदिहेहुसुनाय॥

देवदेवद्रुमजोनहिंदैहौ। तौपुनिपाछेअतिपछितैहौ॥ गदामारिसुरपतिकीछाती। लैऐहौंसुरतरुयहिभाँती॥
वासवमुखनाँहींसुनिलीजो। तबममआगमतुमकहिदीजो॥ जाहुमुनीशशक्रकेधामा। अबनहिंहैविलंबकोकामा॥
कृष्णवचनसुनिमुनिसुखपाये। शचीरमणकेभवनसिधाये॥ नारदलख्योशक्रदरबारा। होतरहैअनुपमनटसारा॥
बैठीचहुँकितदेवसमाजा। ताकेमध्यमुदितसुरराजा॥ तहँगंधर्वमधुरसुरगावैं। नाचिअप्सराभावबतावैं॥

दोहा—नारदकोनिरखततहाँ, सिगरीउठीसमाज। दियोकनकआसनसुभग, पूजिवंदिसुरराज॥

तबनारदसबसभासुनाई। कह्योवचनसुनियेसुरराई॥ दूतकृष्णकोमैंबनिआयो। कछुकारजहितनाथपठायो॥
जौनकृष्णकहँसहितसनेहू। शासनहोइतोसबकहिदेहू॥ तबसुरपतिबोलेमुसक्याई। कहहुकहहुकाकहँयदुराई॥
आतिप्रियअहैमोरलघुभाई। बहुदिनमहँताकीसुधिपाई॥ तबदेवर्षिकहनसबलागे। यदुपतिचारुचरणअनुरागे॥
मैंइकसमयगयोयदुनगरी। रहेकृष्णयुतरानिनसिगरी॥ प्रभुमेरोकरिकैसतकारा। कनकासनपरमोहिंबैठारा॥

दोहा—दियोदेवद्रुमसुमनमैं, हरिकेशीशचढ़ाय। सोसबरानिनलखतदिय, रुक्मिणिकोयदुराय॥

सोसुनिकैप्यारीसतिभामा। कियोमानजवगेहरिधामा॥ तबहरिअसकहिदियसमुझाई। तोहिंदेवद्रुमदेहौंलाई॥
तेहिंहिततुवढिगमोहिंपठाये। तुमसोंकियोविनयसुखछाये॥ मोप्रणराखहिंअबबड़भाई। पारिजातद्रुमदेहिंपठाई॥
याहीमेंहैहैसंबोधू। अनुजअनुजातियमिटीविरोधू॥ सुनतवचनबोल्योसुरईशा। कहिवोतुमअसजायमुनीशा॥
स्वर्गवस्तुनहिंमानुषयोगू। उचितननरनस्वर्गसुखभोगू॥ हरिभूभारस्वर्गजबऐहैं। पारिजातकोतरुतबपैहैं॥

दोहा—गयेदेवद्रुममहिमुनी, मिटिजैहैमरयाद। होइममअपवादअब, पैहैंदेवविषाद॥

अबैसकतनहिंअसुरछोडाई। मेरेकुलिशकेरभैपाई॥ धरणिगयेदानवहाठिहरिहैं। असुरनसोंकेहिविधिनरलरिहैं॥
कहाविभूतिथोरिमहिमाँहीं। जोहरिपारिजातललचाँहीं॥ नारीहितहमसुरतरुदैकै। रहबस्वर्गमहँकापुनिलैकै॥
यहतरुहमकोदियोविधाता। कैसेदेहिंऔरकहँताता॥ पारिजातहैशचीहिंपियारा। तातेअतिप्रियअहैहमारा॥
भयोकृष्णअबनारिअधीना। अनुचितउचितविचारनकीना॥ जोहरिपारिजातलैजैहैं। तौदेवनसमाननरह्वैहैं॥

दोहा—शचीरूषिहैमोहिंपर, पारिजातकेदेत। तातेमैंदैहौंनहीं, सुरद्रुमनारीहेत॥

औरजौनमाँगैलघुभाई। सोलैजाहुदेहुतेहिंजाई॥ कैसहुपारिजातनहिंदैहैं। नारीहितअपयशकिमिलैहैं॥
सुनिवासवकेवचनकठोरा। तबनारदबोल्योतेहिंठोरा॥ ऐसेहुकह्योमोहिंयदुराई। सोतुमकोमैंदेहुँसुनाई॥

पन्नगअसुरदेवगंधर्वा । यक्षराक्षसहुचारणसर्वा ॥ कोउनहिंसकैमोरप्रणटारी । सकौंमृषानहिंवचनउचारी ॥
जोनहिंपारिजातमोहिंदैहै । तौममगदाशक्रउरलैहै ॥ मारिगदासुरद्रुमलैऐहौं । सवदेवनकोगर्वनशैहौं ॥

दोहा—मुनिनारदकेवचनतहँ, सुरपतिकरिअतिकोप । बोल्योवचनकठोरअति, मानिकृष्णलघुगोप ॥

गईनबालकबालकताई । बोलतमुखकरिचंचलताई ॥ वहउपेंद्रमानुषलघुभाई । मैंमहेंद्रसुरपतिमुनिराई ॥
प्रथमहुँकियोबहुतअपकारा । यहनारदवसुदेवकुमारा ॥ पावकतेखांडववनजारा । लैअपनेसँगपांडुकुमारा ॥
कियोमोरमखभंगमुरारी । गोपनहितगिरिवरकरधारी ॥ क्षमाकियोगणिकैलघुभाई । अबतोसहिनजातमुनिराई ॥
मानतअपनेसममोहिंकाँहीं । सक्योमारिवृत्रासुरनाँहीं ॥ कहेकहाबहुहैमुनिराई । अबदेखवयदुपतिमनुसाई ॥

दोहा—आयदेवद्रुमलेहिंइत, गदैमारिगोविंदु । बदैवीरतातौसही, अहैवंशसतिइंदु ॥

कामकोपवशहैंयदुराई । नारिविवशमतिदियोगमाई ॥ धिगधिगहैधिगनारिनकाँहीं । धिगतिनजेतियवशह्वैजाँहीं ॥
अबलौंभयोनसुरकुलमाँहीं । देवनसमरजीतिनरजाँहीं ॥ अहैनबंधुसरिसरिपुकोई । बंधुसरिसमीतहुनहिंहोई ॥
यदुपतिअबआशुहिंइतआवैं । मोहिंजीतिसुरतरुलैजावैं ॥ करिहौंप्रथमनशस्त्रप्रहारा । वहतोप्रियलघुबंधुहमारा ॥
जाहुजाहुमुनिअसकहिदेहू । आवहिंकृष्णनाहिंसंदेहू ॥ सजिआयुधचढ़िगरुडविहंगे । करैंआयमाधवअबजंगे ॥

दोहा—विनायुद्धपैहैंनहीं, अवसुरतरुयदुनाथ । देतोतोमैंप्रथमहीं, कहतजोरिजोहाथ ॥

वहनरह्वैअसकरतघमंडा । मैंतोस्वर्गअधिपबरिबंडा ॥ मोसेलघुह्वैभीतिदेखावै । तातेनारदकिमिसहिजावै ॥
आजुहिंयेहीछिनतुमजावहु । हरिकहँमेरेवचनसुनावहु ॥ अबमुनिवरनहिंकरहुविवादा । अहैनमोहिंकछुहर्षविषादा ॥
ह्वैहैवीरतोआशुहिंऐहै । बिनायुद्धइकपातनपैहै ॥ यहूभाषियोमोरनियोगू । छलकरिसुरतरुहरबनयोगू ॥
कपटकरहिंकबहूँनहिंशूरा । रणमहँकपटनकेप्रदपूरा ॥ वासववचनसुनतमुनिराई । करगहिगयेइकांतलिवाई ॥

दोहा—तहँमहेंद्रसोंअसकह्यो, भूलिगयोतुवभान । जानतनहिंत्रिभुवनधनी, वैयदुपतिभगवान ॥

जासुप्रकाशप्रकाशितलोका । नाशतब्रह्मांडैनखनोका ॥ मीनकमठकोलहुमृगराजू । वामनभृगुपतिरघुकुलराजू ॥
अबहैंयदुकुलकमलदिनेशा । तुवहितबहुवपुधरचोसुरेशा ॥ सहसआँखितुवदेखनकाँहीं । देखिनपरतएकहुनमाँहीं ॥
परमात्मासोंकरैविरोधू । बोधेहुबोधनहोतअबोधू ॥ तबसुरपतिपुनिमुनिसोंभाष्यो । बारबारयदुपतिपैमाष्यो ॥
यहसबसत्यजौनतुमगायो । पैमेरेमननेकुनआयो ॥ विनायुद्धजीतेयदुराई । सुरतरुपैहैंनहिंमुनिराई ॥

दोहा—लखिमघवाकोमदमहा, मायावशतेहिंमानि । मनमहँमुदितमुनीशभो, युद्धहोनसतिजानि ॥

सुरपतिसोंलैसीखमुनीशा । गमन्योआशुजहाँजगदीशा ॥ द्वारावतीआयतपधामा । देख्योप्रभुहिंसहितसतिभामा ॥
यदुनंदनउठिवंदनकीन्ह्यों । परमअनंदनचंदनदीन्ह्यों ॥ पूछ्योफेरिमंदमुसक्याई । कहियेकहाकह्योसुरराई ॥
तबनारदबोलेअसबानी । सुरपतिगर्वनजाइबखानी ॥ देहैदेवदेवद्रुमनाँहीं । बिनागदालागेउरमाँहीं ॥
असकहिमुनिपुनिसकलसुनायो । जौनवचनवासवमुखगायो ॥ तबअसबोलेरमानेवासा । लखहुआजुमुनिसमरतमासा ॥

दोहा—कहियोमुनितुमजाइकै, सजगहोहुसुरराज । पारिजातकेहरणहित, आवतहैंयदुराज ॥

मुनिनारदसुरसदनसिधारे । वासवसोंहरिवचनउचारे ॥ सोरजनीकरिशयनमुरारी । जागिभोरसंध्यानिरधारी ॥
दारुकसोंअसवचनउचारे । लावहुरथहमजाहिंशिकारे ॥ दारुकलायोतुरतहिंस्यंदन । भयेसवारआशुयदुनंदन ॥
सात्यकिकोपुनिलियोचढाई । पुनिप्रद्युम्नहिंकह्योबोलाई ॥ खेलनचलहुशिकारकुमारा । ममसँगकरियोविपिनविहारा ॥
तबप्रद्युम्नकह्योकरजोरी । तबगतिजाननमतिनहिंमोरी ॥ चलिहौंनाथआपकेसंगा । करिहौंप्रभुकीसेवअभंगा ॥

दोहा—तबयदुपतिनिजपुत्रको, रथमेंलियोचढ़ाय । रैवतागिरिमेंजायकै, सूतहिंकह्योबुझाय ॥

तबलगिरथराख्योयहिठाऊँ । जबलगिशक्रहिंजीतिनआऊँ ॥ असकहिगरुडहिंसुमिरणकीन्ह्यों । सोद्रुतआयचरणगहिलीन्ह्यों ॥
सात्यकियुतवसुदेवकुमारा । पक्षिराजपरभयेसवारा ॥ चढ़नहेतुपुनिसुतहिंबोलाये । तबप्रद्युम्नकहेसुखछाये ॥
मैंविहंगपतिसंगहिजैहौं । आपप्रतापतापनहिंपैहौं ॥ असकहिमायायानबनाई । नह्योभुजंगमहाभयदाई ॥

तूणअखंडकोदंडप्रचंडा। पहिरचोकवचकीटवरिबंडा॥ कह्योकृष्णसोंकृष्णकुमारा। चलहुनाथजहँहोयविचारा॥
दोहा–तबगरुड़हिंशासनदियो, आशुहितहँभगवान। पहुँचावहुअमरावती, करिकैवेगमहान॥
लहिप्रभुशासनसुखितखगेशा। चल्योअनिलतेअधिकनरेशा॥ सक्योनदेखिबीचमहँकोई। मनसमगयोशक्रपुरसोई॥
तैसहिंगरुडपक्षमहँलागे। प्रद्युम्नहुगमनेसुखपागे॥ नंदनवनयदुनंदनजाई। पारिजातकोलखिसुखपाई॥
तहँदेख्योसुरपतिकेयोधा। सुरतरुकहँकीन्हेंअवरोधा॥ आयुधधरेअनेकप्रकारा। पारिजातकेहैंरखवारा॥
तिनकेदेखतदपटिमुरारी। लियोदेवद्रुमद्रुततेउखारी॥ धरचोब्रह्मपतिपक्षीपतिपर। डरहुनसुरतरुअसकहँयदुवर॥
दोहा–जाननहितसुरनाथके, गरुडचढेयदुनाथ। नगरप्रदक्षिणकरतभे, सात्यकिनिजसुतसाथ॥
सात्यकिचहुँदिशिकहपुकारकरि। पारिजातहरिलियेजातहरि॥ रहेजेपारिजातरखवारे। तेवासवसेजायपुकारे॥
पक्षीचढेपुरुषत्रयआये। हरचोपारिजातहिंमदछाये॥ नाथरावरीभीतिनमाने। लियेजातसुरतरुबलवाने॥
सुनिमहेंद्रकरिकोपमहाना। ऐरावतपरचढिबलवाना॥ लियोसंगमहँपुत्रजयंतै। प्रवरसखाजेहिंओजअनंतै॥
झूमतचल्योमतंगमहाना। पीछेयुगलवीरयुगजाना॥ आवतवासवनिरखिमुरारी। पूरबद्वारखड़ेधनुधारी॥
दोहा–निरखिमहेंद्रउपेंद्रको, बोल्योवचनकठोर। पारिजातमेरोहरचो; डरचोननंदकिशोर॥
तबमधुसूदनकहँमुसुक्याई। माँग्योअनुजवधूतुवभाई॥ पारिजाततातेलैजातो। वृथामोहिंतुमकतअनखातो॥
वासववचनकोपितबबोला। मेरोबलमनमहँनहिंतोला॥ पारिजातलैजाननपैहौ। यवभरनहिंवीरतादेखैहौ॥
हैमेरोछोटोतैंभाई। लेहिशस्त्रतैंप्रथमचलाई॥ पुनिलखुविक्रममोरमहाना। परिहैकठिनआजुवचिजाना॥
मारहुमारहुगदामुरारी। सफलप्रतिज्ञाहोइतिहारी॥ तबमुकुंदशारंगटँकोरा। भरचोभयावनसुरपुरशोरा॥
दोहा–लैसायकतीखनतुरत, मारचोमाथमतंग। फोरिकुंभशरकढिगयो, भोगजश्वेतसुरंग॥
छंद–तबकोपिवासवविशिखलैबहुविहँगपतिकेशिरहन्यो। तिनवासुदेवहुबीचकोटिवितानबाणनकोतन्यो॥
पुनिशक्रशरसहसानमारिमुरारिशरकाटतभयो। शारंगअरुमाहेंद्रधनुकोशोरत्रिभुवनमहँछयो॥
तहँजानिपितुसोंलरतहरिकोशक्रसुतधावतभयो। सुरतरुहरणहितअतिचपलखगनाथढिगआवतभयो॥
तेहिंनिकटनिरखिमुकुंदतहँप्रद्युम्नसोंभाषतभये। अबकाकरतहौकरहुरणडुखलहहुगेसुरतरुगये॥
तबकह्योहरिसुतसुनहुँपितुकतप्रथमदियननिदेशहै। तुवकृपाबलमैंएकहीबिनसुरकरौंदिविदेशहै॥
असकहिशरासनगहितज्योशरवृंदवासवनंदपै। रुकिगयोस्यंदनशचीसुतपहुँच्योनयदुकुलचंदपै॥
तबबाणधारअपारवारहिंबारकृष्णकुमारपै। भरिकोपभारपँवारिहरष्योशक्रबारउदारपै॥
प्रद्युम्नतहँबरिबंडपंडहिखंडकियशरतोमको। पुनिविशिखवासवतनेवध्योमदनरोमहिरामको॥
तहँकृष्णनंदनदुष्टदंदनशक्रनंदनशरनको। तिलतिलतुरंतैतूरिमारचोपुनिजयंतैकरनको॥
दोउभरेजोवनपरमशोभनतजतशरचहुँओरहैं। कश्यपकिशोरकिशोरउतइतयदुकिशोरकिशोरहैं॥
दोउभटपरस्परविजैतत्परतजतशरभभैरमहाँ। दोउवदतवरवरवचनवरदोउहोतवरवररथतहाँ॥
तहँसिद्धचारणदेवमुनिआयेसुकौतुकलखनको। लखिदुहुनभटसंग्रामचक्रितभेनमूँदहिंचखनको॥
तहँप्रवरनामकविप्रसोवासवसखाधायोबली। चाह्योहरणद्रुतदेवद्रुमजिमिशिशुचहततारावली॥
द्विजवरैलखियदुवरकह्योसात्यकिहियाकोरोकियो। पैविप्रहैतातेनसायककठिनयापैझोकियो॥
यहचपलद्विजकीचपलताअतिसहबसबविधिउचितहै। जोहनतनहिंहनतहुँद्विजहिंपरलोकतेसोइसुचितहै॥
बतरातअसतहँसाठिसायकप्रवरसात्यकिकहँहन्यो। युयुधानसबशरछाँटितेहिंधनुकाटिद्विजवरसोंभन्यो॥
दोहा–करहुविप्रअपनोकरम, छोड़िदेहुधनुबाण। कहुँतीरथमेंबैठिकै, बाँचहुवेदपुराण॥
क्षात्रधर्ममेंनिरतहैं, जेक्षत्रीविख्यात। तेअपराधिहुँविप्रको, करतनकबहूँघात॥
सहजहिमेंमानवद्विजै, सबकोसरलजनाय। पैद्विजमारतमानहीं, सोईमानवआय॥

सोरठा–यदुकुलकीयहरीति, चलिआईहैसर्वदा । द्विजपरराखहिंप्रीति, करहिंक्षमाअपराधमें ॥

भुजंगप्रयात–कह्योवैनवज्रीसखाहाँसकैकै । तजौनाहिंयुद्धैक्षमावीरधैकै ॥
अहौंरामकोशिष्यमैंवीरभारी । सुप्यारोसखाजानियोवज्रधारी ॥
लरैंकृष्णसोंआजुयेदेवनाँहीं । करौंयुद्धतातेमहीशत्रुपाँहीं ॥
तहाँभाषियोविप्रलीन्ह्योंकोदंडा । तज्योंकालदंडैसमैबाणचंडा ॥
भयोसात्यकीविप्रकोयुद्धभारी । तजैहैंसुशस्त्रैमहास्त्रैप्रचारी ॥
जुरेकृष्णकेशक्रकेनंददोऊ । करैंयुद्धक्रुद्धैंटरैंनाहिंकोऊ ॥
उब्योकंपस्वर्गैजतैस्वर्गचारी । विजैवीरचाहैंनिजैधीरधारी ॥
हन्योइंद्रअस्त्रैशचीकोकुमारा । दईरोकिप्रद्युम्नसोबाणधारा ॥
तहाँकोपिवज्रीतनैब्रह्मअस्त्रै । चलायोजरायोसुप्रद्युम्नशस्त्रै ॥
दियोकृष्णकेपुत्रकोजानलाई । सक्योपैनप्रद्युम्नकोसोजराई ॥
गयोकूदिआकाशमेंकृष्णपुत्रा । शचीकेसुतैबैनभाष्योविचित्रा ॥
तज्योब्रह्मअस्त्रैजोवज्रीकुमारै । लगैमोहिंऐसेनअस्त्रैहजारै ॥
सिख्योऔरहूँजोसबैछोडिदीजै । रणैमध्यमेंआजुक्योंगुप्तकीजै ॥
डरौंमैंननेकौंगनौवीरनाहीं । सदादैत्यकोदेवदेखेपराहीं ॥
मनौंतेनतूछ्वैसकौपारिजाता । करैतेगहैकीअहैकौनबाता ॥
तज्योब्रह्मअस्त्रैदियोजानलाई । सकोंमैंसहस्त्रैतुरंतैबनाई ॥

दोहा–यदुपतिसुतकेवचनसुनि, वासवसुतबलवान । यमअस्त्रहिंछोडतभयो, करिकैकोपमहान ॥

चल्योकालसमअतिविकराला।छोडतचहुँदिशिपावकज्वाला॥तबप्रद्युम्नछोड्योशरजाला।रोकिदियोयमअस्त्रविशाला
सक्योनशस्त्रनिकटतेंहिंआई । बीचहिंपावकगयोबताई ॥ तबकोपितसुरनाथकुमारा । चारिअस्त्रइकबारपँवारा ॥
वारुणपावकमारुतशैला।चहुँकितरोक्योनभकीगैला ॥ उठीएकदिशिपावकज्वाला । गिरैएकदिशिशैलविशाला ॥
बह्योएकदिशिपवनप्रचंडा । एकदिशाजलधारअखंडा ॥ कृष्णकुँवरतबधनुटंकोरा । भयोभयावननभमहँशोरा ॥

दोहा–इकइकअस्त्रनकृष्णसुत, कोटिकोटिशरमारि । द्वैद्वैदिव्यास्त्रनैते, चारौंदियोनेवारि ॥

तज्योशलभसेशरसमुदाई । गयेबाणचारौंदिशिछाई ॥ लक्षलक्षशरएकहिंवारा । गिरहिंशीशमहँशचीकुमारा ॥
मूँदिगयोसुरपतिसुतयाना।अंधकारभोदिशनमहाना॥उठहिंगिरहिंपुनिपुनितहँवाजी।ताजिनतजिसारथिभोपाजी ॥
गयोजयंतैयुद्धहुलासा । रह्योनशरनतजनअवकासा ॥ भोअमरावतिशरअँधियारा । हायहायसबप्रजापुकारा ॥
वासवसुतहगखोलतनाँहीं । बैठ्योऔंधशीशरथमाँहीं ॥ तहाँपुलोमजयंतहिनाना । निजनातीकोमरणहिंजाना ॥

दोहा–समरमध्यआयोतुरत, नातिहिंगोदउठाय । लैगमन्योअमरावती, दियतेहिंमातहिंजाय ॥

तबसिधचारणअतिसुखपागे । केशवसुतहिंसराहनलागे ॥ लख्योनऐसोविक्रमकबहूँ । भयोसुरासुरसंगरजबहूँ ॥
पुनिसात्यकिइकबाणचलाई । प्रवरधनुषकाट्योसुखछाई ॥ इंद्रसखाकेयुगदस्ताने । काट्योसात्यकितजिबहुबाने ॥
वासवदत्तप्रवरधनुलीन्ह्यों।पावकसरिसबाणतजिदीन्ह्यों॥इंद्रसखासात्यकिधनुकाट्यो।रिपुकहँपुनिबाणनतेपाट्यो ॥
तबसत्यकदूसरधनुधारी । हन्योहजारनबाणप्रचारी ॥ पुनिदोउदोहुनकवचाविदारे । तनुतेनिकसेरुधिरपनारे ॥

दोहा–फेरिविप्रसात्यकिधनुष, काटितीनिशरमारि । लेतसात्यकिहिंद्वितियधनु, मारीगदाप्रचारि ॥

तबसात्यकिलियचर्मकृपाना।काट्योप्रवरतहिंबलवाना।जानिसात्यकिहिंमदननिरायुध।दियकरवालकरालकरनयुध
प्रवरकाटिताहूकोडारचो।सात्यकिहृदयशूलइकमारचो। मूर्च्छितह्वैसात्यकिगिरिगयऊ।प्रवरसमरमहँमोदितभयऊ
हरणकरनसुरद्रुमतहँवीरा । गरुडसमीपगयोतजिनीरा ॥ पक्षिराजतबपक्षचलाई । दियोद्विजैद्वैकोशउडाई ॥

गिरयोविसंज्ञविप्रमहिमाँहीं । भयोनूरस्यंदनौतहाँहीं ॥ तबजयंततेहिंजायउठाई । द्विजकहँदूजेरथहिंचढाई ॥
दोहा-मूर्च्छातासुनिवारिकै, ल्यायोनिजपितुपास । सावधानकियसात्यकिहिं, केरगहिरमानिवास ॥
हरिकेसात्यकिदक्षिणओरा । खड़ोवामरुक्मिणीकिशोरा ॥ तिमिजयंतप्रवरहुरणधीरा।खड़ेशक्रकेदोहुँदिशिवीरा ॥
वासवकहँसुतसबैबोलाई । कबहुँनजाहुनिकटखगराई ॥ पक्षिराजअतिशयबलवाना । देहैपुनिउडाययुतयाना ॥
दोउदिशितेताकहुहमकाँहीं । जामेंयदुपतिजीतिनजाँहीं॥ असकहिगरुड़हिंबाणहजारा।करिबलकीन्ह्योंशक्रप्रहारा॥
लागततनुटूटेसबबाना। गन्योनपक्षराजबलवाना ॥ तबसुरपालकह्योगजपाले । गरुडहिंगजसोंआशुहिंचाले ॥
दोहा-पीलपालतबपीलको, पेल्योपक्षीपाँहिं । पक्षिराजगजराजको, भयोसमरदिविमाँहि ॥
मारतदंतशुंडफटकारी । करतनादगजअतिभयकारी ॥ वज्रसरिसनखचोंचहितेरे । दल्योखगेशकुंभगजकेरे ॥
गजविहंगकोएकमुहूरत । भयोभयावनसंगरजयरत ॥ पक्षिराजअतिकोपितहाँहीं । हन्योपक्षऐरावतकाँहीं ॥
तहाँस्वर्गतेयुतसुरराजा । गिरयोधरणिमहँसोगजराजा ॥ पारियात्रइकशैलअनूपा । गिरयोतहाँगजयुतसुरभूपा ॥
ताकेपाछेलगेमुरारी । गरुडचढेआयेधनुधारी ॥ सम्हरिफेरिगजअरुगजसाई । करनलग्योयुधकरिमनुसाई ॥
दोहा-हन्योहजारनविशिखवर, यदुपतिकहँइकबार । शक्रबाणहरिकाटिकै, पुनिछोडीशरधार ॥
रणमहँतहाँआशुसुरराई । मारयोगरुडहिंवज्ररिसाई ॥ तज्योगरुडइकपरअविषादा । राखीवज्रहुकीमर्यादा ॥
जबजबवासववज्रचलावैं । तबतबइकपरगरुडगिरावैं॥गजअरुगरुडकेरअतिभारा।सहिनसक्योगिरिकियोचिकारा॥
धस्योधरणिधरणीधरघोरा । फूटेसकलशृंगचहुँओरा ॥ तहँगरुडकहँछोडिगोविंदा । खड़ेभयेनभसहितअनंदा ॥
पुनिप्रद्युम्नहिंकह्योबोलाई । जाहुद्वारकैआतुरधाई ॥ लावहुदारुकयुतरथमेरो । रथचढिकरिहौंसमरघनेरो ॥
दोहा-उग्रसेनअरुरामको, कहिबोमोरिसलाम । कृष्णइंद्रकहँजीतिकै, काल्हिआइहैंधाम ॥
सुनियदुनंदननंदनवीरा । गयोद्वारकैअधिकसमीरा ॥ उग्रसेनकहँअरुबलरामै । कुशलसहितकहिपितासलामै ॥
लैरथदारुकसहितकुमारा । एकदंडमहँतहाँसिधारा ॥ सुतकोविक्रमनिरखिमुरारी । अचरजमनमहँलियोविचारी ॥
चढिस्यंदनयदुनंदनवीरा । धायेजहँवासवरणधीरा ॥ पारिजातलैपीछेपीछे । पक्षिराजउडिचलेतिरीछे ॥
सात्यकिऔयदुनाथकुमारा । भयेगरुडमहँहुतैसबारा ॥ कृष्णाहिंआवतलखिसुरराई । करनयुद्धकहँचलयोरिसाई ॥
दोहा-पैगरुडहिंगजराजलखि, भरचोसक्योनहिंजाइ । वासुदेवतबवासवै, बोलतभेमुसक्याइ ॥
गजडेरातआवतनाहिंनेरो । करिहैकेहिविधियुद्धघनेरो ॥ ऐसेगजमेंचढ़िसुरराई । जीतौकैसेअसुरनजाई ॥
गयेभानुअस्ताचलकाँहीं । बलहुनरह्योअंगतुवमाँहीं ॥ तातेनिशिनिवारिश्रमलेहू । भोरभयेमोकहँयुधदेहू ॥
तबइंद्रहुतथास्तुकहिदीन्ह्यों।तेहिंनिशिमहँनिवासतहँकीन्ह्यों जबबीतीनिशिभयोप्रभाता तबयदुपतिरथचढिविख्याता
युधहितवासवकाहँबोलायो।सोरथचढिरणहितद्रुतधायो॥सुरपतियदुपतिकोसंग्रामा।होनलग्योअतुलिततेहिंठामा ॥
दोहा-करनसहाइसुरेंद्रकी, सुरसेनासबआइ । सहस्राक्षरथवेरिकै, खड़ीभईहरषाइ ॥
तबयदुपतिछोडीशरधारा । मूँदिगयोसुरदलइकबारा॥पुनिमहेंद्रकहँबहुशरमारचो।इकइकतुरँगनदशदशझारचो ॥
सोऊतज्योविशिखबहुतेरे। मनहुँभीमभटहैंयमकेरे॥तिनकहँमधुसूदनद्रुतनाशा । जिमितमनाशतभानुप्रकाशा ॥
पुनिवासवगरुडहिंशरमारचो । वासुदेवगजपरशरझारचो॥रथनकियेमंडलभटदोऊ । निरखिसकेनहिंसुरवरकोऊ॥
दोहुननिरखियुद्धअतिघोरा । सुरनमुनीशनहैगोभोरा ॥ तरणीसीधरणीतहँडोली । भैदिगदाहदिशानअतोली॥
दोहा-पर्वतकँपिफाटतभये, टूटेद्रुमनसमूह । लौटिबहनलागींसरित, गिरेलूककेयूह ॥
लगेपरानदिशानगजेशा । ब्रह्महुकोतहँभोअंदेशा ॥ तबविरंचिकश्यपहिंबोलाई । ऐसोभाष्योताहिबुझाई ॥
वासववासुदेवकहँजाई । रोकहुयुद्धदेहुसमुझाई ॥ दोहुनकेरणकरतकठोरा । प्रलयहोतचाहतअबघोरा ॥
तहाँअदितिकश्यपरथचढ़िकै । दोहुँनबीचखरेभेबढ़िकै॥दोहुँनसोंअससैनहिंभाषे । तुमकतप्रलयकरनअभिलाषे ॥
बंदकरहुअबयुद्धभयावन।जोमानोहमकहँपितुपावन॥कश्यपअदितिनिरखिदोउवीरा।निजनिजधनुउतारिरणधीरा॥

दोहा-दंपतिकेढिगजाइकै, कीन्ह्योदंडप्रणाम। अदितिकश्यपहुसुतनकहँ, आशिषदीन्हललाम॥
तबकुंडलजेअदितिकरणके। हन्योभौमनिजहेतुमरणके॥ तेकुंडललैकरयदुराई। अदितिकानदीन्ह्योंपहिराई॥
आशिषदईअदितिसुरमाता। कोतुमसमप्रभुजगविख्याता॥इंद्रकह्योकरजोरिबहोरी। तुमसोंरणनकरनमतिमोरी॥
त्रिभुवनपतितुमरमानिवासा। मानहुमोहिंआपनोदासा॥ पारिजातलैऐनसिधारो। क्षमाकरहुअपराधहमारो॥
तबशक्रहिंदेअभयप्रदाना।निजपुरकियोगवनभगवाना३८मारुतसमरथचल्योप्रचंडा।शोरभरयोतिहुँलोकअखंडा।
दोहा-पक्षिराजपीछेचल्यो, पारिजातधरिपीठि। सात्यकिऔप्रद्युम्नदोउ, चढेदियेतेहिंदीठि॥
रैवतगिरिआयेयदुराई। तहँतेबिदाकियेखगराई॥ तीनोंभटरथचढिसुरद्रुमधरि। यदुनगरीप्रवेशकियसुखभरि॥
सुरनजीतिलैसुरद्रुमकाँहीं। आवतहैंमाधवपुरमाँहीं॥३९॥असमुनिकैसिगरेपुरवासी। लियअगवानजाइसुंदरासी॥
प्रभुहिंनिरखिकियसफलविलोचन।वारयोतेहिंक्षणमणिगणतनुमन॥पुनिलैपारिजातयदुराई।सतिभामागृहदियोलगाई॥
तबतजिमानतहाँसतिभामा।मिलीप्रियहिंह्वैपूरणकामा॥पारिजातमहँस्वर्गमलिंदा।आवहितहाँलेनमकरंदा॥ ४०॥
दोहा-जेहिंप्रभुचरणकिरीटधरि, याचिलह्योमनकाम। सोइसुरपतिहरिसोंलरयो, धिगदेवनमदधाम॥ ४१॥
सोरहसहसएकसैनारी। व्याहीइकसँगतिनहिंमुरारी॥ तेतनेईमंदिरछविछाये। तिनमहँतिनकहँवासकराये॥
तेतनेईवपुधारिविहारी॥४२॥सबकहँइकसँगकियोसुखारी॥४३॥विधिशिवजाकीगतिनहिंजानै।बारबारपदवंदनठानै।
ऐसोकृष्णचंद्रपतिपाई। तिनतियभाग्यनजाइगनाई॥ नितनवमंगलमोदहिंपूरी॥ कोविभूतिवरणैतिनभूरी॥४४॥
यद्यपिइकइकसहसनदासीं। तद्यपिकृष्णप्रेमरसप्यासीं॥ करहिंकृष्णकीआपहिंसेवा। जानिनाथनिजइष्टहिंदेवा॥
दोहा-जबनिजमंदिरमेंमुदित, माधवकरहिंपयान। तबआगूचलिलेहुकछु, रहिनजाततनुभान॥
सेजआपनेहाथबिछावैं। सिंहासननिजहाथनलावैं॥ प्रभुपदपद्मपाणिनिजधोवैं। देवीरीनिजकरछबिजोवैं॥
बहुविलंबलगिव्यजनडोलावैं। निजकरकमलनिचमरचलावैं॥चाँपहिंचरणचारुनिजहाथै।कुसुमकिरीटधरैंप्रभुमाथै॥
अंगरागप्रियअंगलगावैं। बारहिंबारअलकविलगावैं॥ मनरंजनमंजनकरवावैं। विविधभाँतिजेउनारजेवावैं॥
यहिविधिऔरहुबहुसेवकाई। करहिंनित्यतियचित्तलगाई॥प्रियमुखचंदचितैसुखसानी। कियेचकोरचखनसबरानी॥
दोहा-नितप्रतिजिनपरकरतहैं, यदुनायकअनुराग। इकमुखतेतिनकीनृपति, वरणिसकौंकिमिभाग॥ ४५॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे एकोनषष्टितमस्तरंगः॥ ५९॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-एकसमयसुखधाममें, बैठेश्रीयदुराज। राजिरहीरुक्मिणितहाँ, संयुतसखिनसमाज॥ १॥
जोलीलाकरिविश्वविशाला। रक्षतसृजतहरतसबकाला॥ सोरक्षणहितधर्महिंसेतू। प्रगटेयदुकुलमोदनिकेतू॥ २॥
ताकेअंतःपुरछविभारी। वरणिसकैकोसुकविविचारी॥ विपुलकिताकेतनेवितानें। मुक्तनझालरिसहितसुहाने॥
दीपतदीपप्रदीपतभारी। मणिमयमदनरचितसुखकारी॥३॥ सुमनमल्लिकाझालरभाई। गुंजिरहेअलिसौरभपाई॥
झीनीझरफझरोखनमाँहीं। प्रविशिमयंकमरीचिसुहाँहीं॥४॥ पारिजातसौरभितबयारी। मंदमंदआवतिसुखकारी॥
दोहा-अगरतगरकेधूपको, धूमधाममेंछाय। शीतलमंदसमीरयुत, झझरिनकढ़तसुहाय॥ ५॥
प्रभापूरपर्यंकसुहावै। मणिमंडितमनमदनलजावै॥ तामेंलसैसेजसुखछावनि। शशिकरगोरसफेनलजावनि॥
रेसमकसनेकसेसुहाये। उपबर्हनअनूपछविछाये॥ तापरसोहतश्रीयदुराई। प्रियासुमुखनिरखतसुखपाई॥ ६॥
रचिरुचिरुक्मिणिअनुपमरमनी मंदमंदसिंधुरगतिगमनी।बीजतविजणनिरखिसखिकाँहीं रुक्मिणिकियोविचारमनमाहीं
सखीलेतिसुखव्यजनडोलाई। मेरेसन्मुखअतिछविछाई॥ सोइसुखक्योंनलेहुँमैंआसू। लैकरवीजनसहितहुलासू॥

दोहा-योंविचारिसुकुमारितहँ, प्रियप्रेमहिंउरधारि। भारिअनंदआतुरउठी, तनुकीसुरतिबिसारि॥ ७॥
सवैया-नूपुरकेसुरतेसुकुमारिमरालनिशावकसोरलजाई। अंगकेआभतेहीरनमुक्तनहारनहेमकेहारबनाई॥
श्रीरघुराजत्योंकांतिमतीकटिसोंकलकिंकिणिकांतिकराई। वेसवलैसुँदरीनकोसोभकपाणिसोंवीजनलेनकोधाई॥
दोहा-जडितजवाहिरतेजगत, जासुप्रकाशअखंड। सखिकरतेनिजकरकियो, वीजनरुचिरसदंड॥ ८॥
सवैया-सुंदरिकेमुखसुंदरिसोहिरहीमुसक्यानिसुधारसपागी।देखिश्रीमंतसुकंतकोआननप्रेममयीदुगुनीद्युतिजागी॥
श्रीरघुराजकहैलघुलाजसोंनैननवाइललीअनुरागी। मंदहिंमंदहिंमोहनकेमनमोहनिवीजनवीजनलागी॥
अनुरूपहिंआपनेरूपअनन्यगतीनिजप्रेमसोंपूरोहियो। असिरुक्मिणीकोयदुराजचितैपरिहासहिकीबोविचारिलियो
रघुराजकहैअतिप्रीतिसोंप्रीतममंजुमुखैमुसक्यानिकियो। विपरीतिकेवैनबनाइअचैनसोंनैननचाइसुनायदियो॥९॥
दोहा-राजकुमारीतूँसुनै, ममवचननिचितलाइ। सत्यमानिसोइकीजिये, मेरोआयसुपाइ॥
रूपउदारसुबलहुविशाले। शोभावंतसरिसदिगपाले॥ १०॥ कामीपरमकामनाकीने। तेरीलेनलालसाभीने॥
ऐसेभूपअमितकरिचाहै। आयेतुवहितकरनविवाहै॥ रुक्मीतुवभ्राताबलवारो। शिशुपालहिंकहँदेनबिचारो॥
तिनहिंनिदरितूँमोहिंवरिलीन्ह्यो।निजसमवरविचारनहिंकीन्ह्यो।मैंजिनभूपनअतिहिंडेराई।बस्योउदधिमधिनगरबसाई।
वैरकियोबलवाननसंगे। मथुरातज्योनृपासनभंगै॥१२॥औरहुयहजगरीतिसदाकी।सुनहिंसत्यगुनिभ्रुकुटिसुबाँकी॥
दोहा-जेवनितनकेविवशनहिं, अरुअविदितआचार। वरितिनकहँयोषितसबै, पावहिंशोकअपार॥ १३॥
निर्धनहोनिर्धनप्रियप्यारी।धनीनराखहिंसुरतिहमारी॥१४॥निजधनकुलवयरूपविभूती।होहिंसमानसकलकरतूती॥
तिनसोंव्याहमित्रतायोगू।उत्तमअधमअवश्यअयोगू॥१५॥सोतुमनेकुविचारनकीन्ह्यो।गुणनहीनमोकोंवरिलीन्ह्यो॥
मोहिंप्रशंसहिंवृथाभिखारी। तामेंभूलिगईसुकुमारी॥१६॥ तातेअबहूँवेगिविचारहु। निजसमभूपतिपासपधारहु॥
उभैलोकजामेंबनिजावैं।जगकविकुलकीरतिकुलिगावैं॥१७॥जरासंधशाल्वौशिशुपाला।दंतवक्रआदिकमहिपाला॥
दोहा-रुक्मीतेरोबंधुहू, तिनमिलिमान्योद्रोह। कारणविनमारनचहे, मोहिंकुटिलकरिकोह॥ १८॥
जेभूपतिवीरजमदवारे। आयेकुंडिनरुक्महँकारे॥ करीप्रतिज्ञाजोरिसमाजू। नहिंआवनपैहैंयदुराजू॥
तिनकेगर्वगिरावनहेतू। तोहिंल्यायोतिनजीतिनिकेतू॥१९॥ मोकोंनहिंइनतेंकछुकामा। इस्त्रीअर्थपुत्रधनधामा॥
पूरणकामआपहीमाहीं। पावतहैंआनंदसदाहीं॥ सबमेंरहौंसमानसदाई। निःक्रियअहौंज्योतिकीनाई॥
चारिबाहुनहिंसुंदररूपा। भूपनअहैभृत्यहैंभूपा॥ तातेअबनाहिंकरैविचारैं। जहँभावैतहँवेगिसिधारैं॥
दोहा-तुमतोसुंदरिगौरतनु, मैंहौंश्यामअकाम। होतिमित्रतायोगमें, सुंदरिवरसमवाम॥
प्राणहुँतेप्रियमानती, रहीआपनेकाँहिं। हरिवियोगमेरोकबहुँ, ह्वैहैक्षणहूँनाँहिं॥ २०॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-तासुगर्वगंजनहिते, विमनहिंसेयदुराज। मौनभयेकहिकटुवचन, मध्यसखीनसमाज॥ २१॥

कवित्त-देवकीकिशोरकोकठोरबैनप्यारीकान, वोरजोरमानोभयोअशनिकोपातहै।
चौंकिचहुँओरचितेस्वप्नहीसोंगुन्योचितै, सुन्योकबहूँनऐसीअहितैकीबातहै॥
भाषैरघुराजभारीभीतिभरीभामिनिसो, रोदनकरनलागीशोकनसमातहै।
क्षणनासिरातथहरातगातबारबार, वातकेससातजैसेकदलीकँपातहै॥ २२॥
कज्जलसहितदृगजलतेउरोजनको, अंगरागकुंकुमकोवेगिधोइडारचोहै।
दुखकटुबैनतेविभीतित्यागशंकामानि, गरोभरिआयोउरशोकअतिधारचोहै॥
भाषैरघुराजखसेकरनतेकंकणहू, झरेकेतेकुसुमजेकेशनसमारचोहै।
बारबाररोदैतहाँनखनितेखोदैमही, मानोंमाँगैविवरप्रवेशकोविचारचोहै॥ २३॥

देहमेंप्रसेदछायोआँखिनमेंआयोअंबु, शिरकोनवायोमनमहामोहपाग्योहै ।
छाईशिथिलाईधीरताईसोपराईतहाँ, कहैनासिराईदुखज्वालजालजाग्योहै ॥
भाषैरघुराजरुक्मिणीकेपाणिपंकजते, व्यजनगिरयोहैमानोअतिअनुराग्योहै ।
परिकैसुपाययदुरायजूकेविनैकरि, रुक्मिणकिहेतुआशुअभैदानमाँग्योहै ॥
दोहा–अतिकठोरसुनिवचनश्रुति, प्रीतमवदननिहारि । घूमिभूमिमेंगिरपरी, रुक्मिणिसुठिसुकुमारि ॥ २४ ॥
निरखिप्रेमबंधनप्रिया, हँसीसत्यलियजानि । करुणानिधिभगवानके, करुणाभईमहानि ॥ २५ ॥
स०–भरिआयेललाकेदृगैअँसुवागयोभूलिहँसीकरिबोछनमें ।
परयंकतेकूदिकेआशुतहाँभयेआपौदुखीअतिहीमनमें ॥
रघुराजकहैद्वैभुजानितेनायउठायलगायलियोतनमें ।
इकपाणिसोंकेशसँवारेलगेइकपाणिकोफेरतआननमें ॥ २६ ॥
पुनिःप्राणप्रियाकीपरेखिदशापरयंकतेवेगिउठेगिरिधारी ।
धायउठायलईउरलायदयानिधिदीठिदयाकिपसारी ॥
आँसुनपोंछिदियोइकपाणिसोंत्योंइकपाणिसोंकेशसँवारी ।
बारहिंबारगोविंदगुनैतियफाँसिभईयहहाँसिहमारी ॥ २७ ॥
दोहा–प्राणप्रियाकेप्राणपति, पोंछिनैनअँसुवानि । समुझायोबहुभाँतिते, बैनसप्रीतिबखानि ॥ २८ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

हेरुक्मिणिनहिंहोइदुखारी । हमतोहँसीकरीसुकुमारी ॥ तैंमानेसतिराजकुमारी । मोहिंतनुमनधनहूँतेप्यारी ॥
मोपरतेअनन्यअनुरागिनि।तुवसमाननहिंआनसोहागिनि॥सुनैजौनमैंकह्योविचारी।तुवसँयोगमोहिंसबदिनप्यारी२९
विरहदशादेखनकरिकामा। सुननकोपकेवचनललामा ॥ फरकतअधरभृकुटिअतिबामैं।कोपकटाक्षवदनछबिधामैं॥
येसबकलालखनकेहेतू । करीहँसीमैंबैठिनिकेतू ॥दुखितहोइनहिंकछुमनमाँहीं । ममवियोगकबहूँतोहिंनाँहीं ॥३०॥
दोहा–परमलाभयहहैलली, गृहवासिनकोनित्त । प्यारीसँगपरिहाँसमैं, जामजातमुदचित्त ॥ ३१ ॥

श्रीशुक उवाच ।

प्रीतमवचनसुनतसुकुमारी।तजीत्रासपरिहासविचारी॥३२॥करिकटाक्षयुतलाजमंदहँसि।कह्योकंतसोंबैनमोदरसि ॥

रुक्मिण्युवाच ।

सुनहुविनयममराजिवनैना । अहैसत्यजोभाषेहुबैना ॥ हमनहिंतुवसमानयदुनाथा।कहँलघुतियकहुँत्रिभुवननाथा॥
योगीजनतुमकोनितध्यावैं । लोभीजनमोहमेंमनलावैं॥३४॥ कह्योजोतुममैंनृपनडेराई । सिंधुमध्यमहँरह्योलुकाई ॥
सोऊसत्यअहैयदुराई । जनगुणरूपभूपभयपाई ॥ अंतरयामीरूपसदाँहीं । सोवतहोहियसागरमाँहीं ॥
दोहा–जौनकह्योहमवैरकिय, बलवाननकेसंग । साँचअहैयदुराजसो, सुनियेसकलप्रसंग ॥
जिनकेइंद्रीगणबलवाना । तिनसोंवैरकियोभगवाना ॥ छोडिनृपासनहमइतआयो । नहिंकौतुकजोप्रभुतुमगायो ॥
तजहिंभक्ततुवत्रिभुवनभोगू।आपुतज्योतौकौनअयोगू३५जोनकह्योममअविदितमारग।सोसबसत्यअहैश्रुतिपारग॥
तुवभक्तनपथकोउनजानै । केहिविधिकोरावरोबखानै ॥ कह्योजोहमलौकिकनहिंजानै । सोऊसाँचहिंआपबखानै ॥
तुवजनचरितअलौकिकअहहीं।तुवचरित्रलौकिककिमिकहहीं३६जोतुमकह्योअहैंधनहीने।सोऊसत्यसुनहुँरसभीने॥
दोहा–सुरपतिधनपतिशैलपति, वाणीपतिसुरसर्व । लैलैऔरेनतेसबलि, अपैंतुमहिंअगर्व ॥
कह्योजौनहैदीनपियारे । सोऊसत्यहैनाथहमारे ॥ जेतियसुतधनतजिवनजाँहीं । तिनकोतुमप्रियहोहुसदाँहीं ॥
कह्योसत्यनहिंधनीभजतहैं।धनमदअंधनतुमहिंलखतहैं ३७ कह्योजौनवयवंशसमानै।उचितव्याहसोसतिहमजानै॥

सबपुरुषारथमयसुफलात्मा।तुमहिंचाहिसवतजहिंमहात्मा॥तिनसोंतुवसम्बंधउचितहै।सुखदुखभोगिनतेअनुचितहै
कह्योजोममजसवदतभिखारी। सोऊभाप्योसत्यविहारी॥ मननशीलमुनिगर्वविहाई। तिहरोयशगावहिंयदुराई॥
दोहा-विनहिंविचारेवरेहुमोहिं, कह्योजोंनतुमवैन। सोमैंत्रिभुवननाथगुनि, तुमहिंवरयोमुदऐन॥ ३९॥
जौनकह्योहमनृपनडेराई। वसेसिंधुमधिपुरीवनाई॥ सोनहिंसोहतमुखहिंरावरे। मोहिंछिपायलायेनसाँवरे॥
भूपनमध्यधनुषटंकोरी। लायेमोकोंकरिवरजोरी॥ ज्योंजंबुकगणतेनिजभागै। लावैमृगपतिडरनहिंत्यागै॥ ४०॥
जौनकह्योमोहिंसमजनलहिकै।दुखीहोइतियनेहहिनहिंकै॥ सोऊकहहुनजानिमुरारी। तामेंविनतीसुनहुहमारी॥
अंगपृथुभरतगयादिययाती। तजितजिराज्यविभौबहुभाँती॥वनवसितवपदलहियदुनाथ॥किमिवैपावतहैंदुखगाथ॥
दोहा-जौनकह्योहेप्राणपति, अपनेयोग्यविचारि। जाहुनृपतिकेपासतुम, दोऊलोकसुधारि॥
संततसंतप्रशंसतजाको। सुखप्रदमुक्तिरूपजनताको॥ सदाकियेजहँरमानिवासू। ऐसोतुवपदकमलसवासू॥
गुणआगरलहितियतेहिंत्यागी।भजैऔरकहुँकौनअभागी ४२ तातेमैंसबभाँतिविचारी।वरयोसुवरयदुवरगिरिधारी॥
जगदात्माजगदीशमुरारी। जनदोहुँलोकनदेहुसुधारी॥ भक्तनदूरिकरहुसंसारा। असजेतुमयदुनाथउदारा॥
तिनपदपंकजरक्षकमेरे। रहैंसर्वदासुखदवनेरे॥ ४३॥ कह्योजौनयेवचनकृपाला। तजिदिक्पालनसममहिपाला॥
दोहा-मोहिंवरयोमनमेंकवन, करिविचारसुकुमारि। तातेसुनियेप्राणपति, प्यारीविनयहमारि॥
जेभूपनकोआपवखाने। खरबिडालवृषश्वानसमाने॥ शिवचतुराननआननगाई। असितुवकथानजिनश्रुतिपाई॥
तेनारिनकेपतितेहोवैं। भृत्यसरिससेवतमुखजोवैं॥ ४४॥ छायोउपरचामनखरोमें। अंतरअस्थिमांसरुधिरोमें॥
कृमिविटपित्तवातकफसाने।जीतहिंमृतकसरिसदरशाने॥ तुवसरोजपदगंधविहाई।भजहिंजोतियअसपतिमनलाई॥
तिनहींकेपतिवेनृपहोवैं। नरकसाजुभारानितढोवैं॥ ४५॥ जौननाथयहमोहिंसुनाई। उदासीनआदिकमुखगाई॥
दोहा-आतमरतअतिशैनरत, मोहूँपैबडभाग। ऐसेतुवपदकमलमें, होइमोरअनुराग॥
दासनकेसुखदेनहित, लीलाकरियदुनाथ। कृपाविलोकनिकरहुजव, तबमैंहोहुँसनाथ॥ ४६॥
जौनकह्योतुमयहयदुनाहू। अवहूँनिजसमनृपकेजाहू॥ सुनियेमधुरिपुविनयहमारी। नहिंअसत्ययहबाततिहारी॥
पैवरवर्णप्रीतिअतिभारी।अवशिलोकमहँकरहिंकुमारी।जिमिअंबाशाल्वहिंमनदीन्ह्यो।बरवशभीष्मताहिहरिलीन्ह्यो।
पुनिशाल्वहिंपहँताहिपठायो।सोउपरतियगुनितेहिनाटिकायो।गयोतासुहरिजन्मवृथाहीं।सुनीकथावृद्धनमुखमाँहीं॥
व्याहिनमेंजेकुलटानारी। तेनितनववरचहहिंमुरारी॥ तातेकुलटानारिनवरहीं। तेनरउभैलोकसुखचहहीं॥ ४८॥
दोहा-सुनिरुक्मिणिकेवैनप्रभु, वोलेमृदुमुसक्याय। कहेजोतूनहिंअसवचन, तौकोकहैवनाय॥
सुननहेतुयहराजकुमारी। मैंतोसोंयहहँसीपसारी॥ तातेजोतुमउत्तरदीन्ह्यो। सोसबसत्यमानिमैंलीन्ह्यो॥ ४९॥
जेकामनाकरहुमोहिंमाँहीं। मोक्षहेतुतुवहोहिंसदाहीं॥५०॥पतिपदप्रेमपतिव्रतप्यारी।लख्योतोहिंमहमैंअतिभारी॥
यदपिकरीरचिवचनउपाई।तदपिनतुवमतिचलीचलाई५१जेदंपतिसुखहितमोहिंभजहीं।तेकामीसंसारनतजहीं ५२॥
जेजनमोहिंसंपतिपतिपाई।माँगहिंविषयभोगसमुदाई॥तिनकोमंदभाग्यअतिजानो।अवशिनरकगामीपहिचानो५३॥
दोहा-करिप्रतीतिप्यारीजउन, कहेप्रीतियुतवैन। कुटिलतियनऔखलनको, अहैकठिनताऐन॥ ५४॥
पतिव्रतातोहिंसमहेप्यारी। मोहिंनहिंत्रिभुवनपरतानिहारी॥ जेनृपतुमविवाहकेकाले। आयेअगणितओजविशाले॥
सुनिममकथातिनहिंपरित्यागी।मोढिगद्विजपठयोअनुरागी ५५ हरिलैआवततोहिंसुकुमारी।रुक्मीतुवभ्राताधनुधारी॥
लरयोनर्मदापारहिंआई। बहुविधिमोपैविशिखचलाई॥ तहँतेरेदेखतसुकुमारी। दियोकाटिस्यंदनशरमारी॥
तासुआशुअसिचर्महिंकाटी। लैकरवालताहिपुनिडाटी॥ बंधनकरिशिरमुंडनकीन्ह्यों। तामेंतुमननेकुचितदीन्ह्यों॥
दोहा-मेरेपैअतिप्रीतिकरि, आनँदअधिकबढाइ। मेरेगृहगमनीललीं, निजकुलसुधिबिसराइ॥
पुनिअनिरुद्धविवाहहिंमाँहीं। गमनहिंकियोभोजकटकाँहीं॥ तहाँविवाहअंतमेंप्यारी।कलिंगरुक्मसोंगिराउचारी॥
जुआमखेलनजानहिंरामा। तातेवेगिबोलावहुधामा॥ चौपरिरचहुविजयकेहेतू। बैठहुमोहिंयुतसुभटसमेतू॥

सुनिरुक्मीशठतैसहिंकीन्ह्यों । अपनेमरणहेतुमनदीन्ह्यों ॥ ममभ्राताकोवेगिबोलाई । खेलनलग्योपरमसुखपाई ॥
जीत्योरुक्मीप्रथमहिंबारा । पुनिद्वैबाजीबलहुउदारा ॥ तबहुँरुक्मकहभैममजीती । पूँछिपंचसोंकरहुप्रतीती ॥
दोहा—कलिंगराजतबअसकह्यो, जीत्योभीष्मकुमार । बलखेलननहिंजानते, गायचरावनहार ॥
भईतहाँतबहीनभवानी । कलिंगराजयहमृषाबखानी ॥ कलिंगराजतबदंतदेखाई । सभामध्यशठहँस्योठठाई ॥
तबबलरामभ्रातममकोपे।रुक्मबधनकोअतिचितचोपे ॥ खम्भउखारितातिहिनिडारचो।औरहुसुभटसमूहसँहारचो॥
बलहिंबिलोकिकलिंगजबभाग्यो।तबबलताकेपीछेलाग्यो।।दशर्येकदमपकरितेहिलीन्ह्यों।परिबमारिमुखबिनरदकीन्ह्यों।
तैंलेपौत्रवधूहरषाई । मेरेसँगद्वारकासिधाई ॥ एतेहुपैतुमकछुनहिंमान्यो । मेरेप्रेममाहँचितसान्यो ॥
दोहा—तुमरुक्मिणिऐसेगुणनि, मोकोंलीन्ह्योंजीति । तुमसमनहिंकोउकरहिंगी, मोपरप्रीतिप्रतीति ॥ ५६॥
पठयोद्विजममिलनेहेतू । सोसंदेशकहआइनिकेतू ॥ करिहौविलमजोआवनमाँहीं । तौमैंमिलिहौंजीवतनाँहीं ॥
अर्प्योनिजतनुतुमहिंसुरारी । त्रिभुवनसूनोहगनिनिहारी ॥ ऐसेवचनतुवैमुखयोगू । अहैनऔरेनईशनियोगू ॥
ताकोकरिबोप्रतिउपकारो । मेरोमनसबविधिसोंहारो ॥ तातेमैंतोहिंमोदबढावत । रहौंसराहततुवयशगावत ॥५७॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिरुक्मिणिकोसमुझाई।बारबारतेहिंहियेलगाई ॥ सोऊअतिआनंदहिंपाई।प्रीतमसुखछबिहगनिछकाई।।५८॥
दोहा—यहिविधिबहुविधिरचतनित, रुक्मिणिसंगविहार । सिखवतजगकेनरनहरि, करतचरित्रउदार ॥ ५९॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे षष्टितमस्तरंगः ॥ ६० ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—इकइकरानीकेभये, दशदशप्रबलकुमार । पृथकपृथकसोवरणहूँ, सुनुअभिमन्युकुमार ।१।२।३।४।५।६।
तिनमेंजौनआठपटरानी । तिनकेसुतमैंकहौंबखानी ॥७॥ चारुदेष्णसुदेष्णचारुतन।चारुभद्रअरुचारुचंद्रभन॥८॥
चारुसुचारुविचारहुचारू । येरुक्मिणिनवप्रबलकुमारू॥दशयोंज्येष्ठप्रद्युम्नप्रवीरा।नहिंत्रिभुवनजोहिंसमरणधीरा॥९॥
भानुसुभानुऔरस्वरभानू।भानुमानप्रतिभानुश्रिभानू।चंद्रभानुअरुबृहदभानुवर।रतिभानहुप्रतिभानसुयशकर१०
येदशसुतसतिभामाकेरे।होतभयेसबबलीघनेरे॥साम्बसुमित्रसहसाजितशतजित११विजयचित्रकेतुहुक्रतुपुरुजित ॥
दोहा—द्रविडऔरवसुमानिये, जाम्बवतीदशपुत्र । तिनमेंजेठोसाम्बभे, विक्रमजासुविचित्र ॥ १२ ॥
वीरचंद्रअश्वसेनवसु, वेगबाणवृषआम । शंकुकुंतिवसुदशकुँवर, सत्याकेबलधाम ॥ १३ ॥
श्रुतकविवृषसोमकसुभट, ऐकलभद्रसुबाहु । दर्शपूर्णमासहुछमा, यमुनासुतनरनाहु ॥ १४ ॥
अपराजितसहओजबल, महाशक्तितनुमान । सिहप्रवोघोध्वगप्रवल, सुतलक्ष्मणासुजान ॥१५॥
अर्कअनिलवृकगृध्रक्षुधि, पावनवह्निमहीस । पुत्रमित्रविंदागुनो, वर्धननदअधवीस ॥ १६ ॥
बृहदसेनप्रहरणसुजय, अरिजितरणजितवाम । शूरहुसत्यकआयुभद्र, भद्रासुतबलधाम ॥
दीप्तिमानअरुताम्रहू, तप्तादिकबलवान । रोहिण्यादिकरानिके, भेप्रभुतनयअमान ॥ १७ ॥
रुक्मवतीजोरुक्मकुमारी । रुक्मस्वयम्वरकियोविचारी ॥ जुरेसकलभूपतितहँजाई । कन्याहरणमनहिललचाई ॥
सोसुनिकैप्रद्युम्नकुमारा । रथचढ़िएकहिंतहाँसिधारा ॥ सबभूपनकेदेखतमाँहीं । रुक्मवतीहरिलियोतहाँहीं ॥
नृपनमोरिमदयदुपुरआयो । सबपुरजनघरघरसुखछायो ॥ रुक्मवतीकेभयोकुमारा । तासुनामअनिरुद्धउचारा ॥
एकलाखइकसठिहुहजारा।सोलहसहसतियानिकुमारा॥तिनकेकोटिनभेसुतनाँती॥वरणैसुकविकहाँकेहिंभाँती १९॥
दोहा—अबसुनियेकुरुपतिकथा, श्रवणनसुधासमान । षटपुरमेंदानवनको, जीत्योजिमिभगवान ॥

रह्योविप्रइकअतितपधामा । ब्रह्मदत्तताकोरहनामा ॥ वेदषडंगनिजाननवारो । याज्ञवल्क्यकोशिष्यसुप्यारो ॥
रह्योसखावसुदेवहुकेरो । पढ़ेएकसँगशास्त्रघनेरो ॥ एकसमयताकोवसुदेवा । वेगिबोलायकियोबहुसेवा ॥
कीन्हीविनययुगुलकरजोरी।करहुवाजिमखद्विजबदिमोरी ॥ तवबोल्योद्विजअतिसुखपाई।अश्वमेधकरिहौंचितलाई॥
असकहिमनहिंविचारचोभूपा । पारियात्रजहँशैलअनूपा ॥ आवर्त्तागंगाजहँपावनि । करोजायतहँयज्ञसुहावनि ॥

दोहा-माँगिविदावसुदेवसों, ऐसोमनहिंविचारि । पारियात्रगिरिकहँचल्यो, लैसँगमेंनिजनारि ॥

रहींपंचशततासुकुमारी । तिनहुँनकहँलियसंगहँकारी॥ जायशैलमहँद्विजाविनदम्भा।विधियुतकीन्ह्योंयज्ञअरम्भा ॥
तहाँजुरेसिगरेमुनिराई । ब्रह्मदत्तसुखशासनपाई ॥ याज्ञवल्क्यअरुहमपितुव्यासा । जैमिनिजाजलिसुतपप्रकासा ॥
मुनिसुमंतअरुदेवलआदिक । आयेसकलधर्ममरयादिक ॥ ब्रह्मदत्ततबदूतपठायो । वसुदेवहुँदेवकिहुँबुलायो ॥
ब्रह्मदत्तकोशासनपाई । वसुदेवहुँदेवकिसुखछाई ॥ ब्रह्मदत्तकेनिकटसिधारे । भयेमुदितमनमुनिनानिहारे ॥

दोहा-कियेवासवसुदेवतहँ, देवकियुतसुखपाय । दीन्हेंधनबहुमुनिनकहँ, सादरपदशिरनाय ॥

ब्रह्मदत्ततहँद्विजबडभागा । लग्योदेनदेवनमखभागा ॥ तहाँशैलनीचेअतिनेरो । षटपुररह्योदानवनकेरो ॥
रह्योनिकुंभदैत्यबलवाना । दानवसाठिहजारमहाना ॥ ताहीसमयनिकुंभपठाये । दानवचारिविप्रढिगआये ॥
ब्रह्मदत्तसोंरोषितभाषे । कहाँनिकुंभभागतुमराषे ॥ ऐसहुदियोनिकुंभनिदेशा । कहियोद्विजसोंयहूसँदेशा ॥
षटपुरनिकटयज्ञद्विजकरिकै।सिद्धकीनचहहमाहिंनिदरिकै।दैत्यनलघुतासुरनबडाई।द्विजकहँउचितनपरतदेखाई ॥

दोहा-जोनहिंदैहैभागद्विज, तौयहनिश्चयजानि । हमवाकीहरिलेइँगे, कन्यापंचशतानि ॥

राख्योजोमखहितधनजोरी । सोसबआइलेइँगेछोरी ॥ ब्राह्मणयज्ञकरननहिंपैहै । जोनहिंयज्ञभागमोहिंदैहै ॥
ब्रह्मदत्तसुनिदानवबैना । बोल्योभीतिमानिभरिनैना ॥ यज्ञभागअसुरननहिंयोगू । यहविरंचिकोअहैनियोगू ॥
पूँछहुसकलमुनिनकहँजाई । जोमुनिकहैंतोलेहुमँगाई ॥ कन्याजेशतपंचहमारी । तिनकोराख्योमनहिंविचारी ॥
अंतरवेदीविप्रनकाँहीं । देहुँसुतासैंसकलविवाहीं ॥ कैसेलैजैहोबरजोरा । रक्षकहैंवसुदेवकिशोरा ॥

दोहा-ब्रह्मदत्तकेवचनअस, सुनिदानववैचारि । जाइनिकुंभसमीपमें, दीन्ह्योंसकलउचारि ॥

सुनतनिकुंभकोपअतिकीन्ह्यों । सकलदानवनआयसुदीन्ह्यों॥यज्ञभंगकीजेतुमजाई । ल्यावहुकन्यासकलछुडाई॥
मखशालासबदेहुजराई । बाँधहुद्विजकहँबँचिनहिंजाई ॥ इतैदानवनविप्रडेराई । भूपनदियनेवतापठवाई ॥
पांडवकौरवमालवभूपै । दंतवक्रमागधैअनूपै ॥ रुक्मीऔशिशुपालहुकाँहीं । द्रुपदविराटजयद्रथपाँहीं ॥
शाल्वशल्यशकुनिहुँदलवृंदा । भूपअवंतीविंदनुविंदा ॥ औरौसबधरणीकेराजन । बोल्योविप्रसमेतसमाजन ॥

दोहा-भूपनआगमजानिकै, नारदकियोविचार । ऐसीकरोउपायमैं, जातेहोइसँहार ॥

जाइनिकुंभनिकटमुनिराई । मंदमंदअसगिरासुनाई ॥ ब्रह्मदत्तसबनृपनबोलायो । तुमकोचाहतरणहिंहरायो ॥
तातेऐसीकरहुउपाई । जेहिविधिअबमैंदेहुँबताई ॥ पावहुशतकन्याद्विजकेरी । लावहुआशुकरहुनहिंदेरी ॥
देहुबाँटिभूपनबलवारे । तोसबह्वैहैंअवशितुम्हारे ॥ नारदवचनसुनतअसुरेशा । दीन्ह्योंतैसहिंभटननिदेशा ॥
तेप्रचंडदानवद्रुतधाये । माषमखढिगआतुरआये ॥ मखशालासबदियोजराई । फोरेयज्ञपात्रसमुदाई ॥

दोहा-पाँचौशतकन्याहरचो, ब्रह्मदत्तकहँबाँधि । देवकिऔवसुदेवको, राख्योधामहिंधाँधि ॥

हाहाकारकरतदुखपाई । मखकरताद्विजगयेपराई ॥ मानिनिकुंभभीतिसुरभागे । कारिनहिंसकेयुद्धभयपागे ॥
तबवसुदेवनिकटमुनिजाई । कह्योकहाअबपरतदेखाई ॥ तबवसुदेवकह्योदुखछाई । जाहुद्वारकैद्रुतमुनिराई ॥
हरिसोंकहियोदशाहमारी । पुनिकहियोममवचनउचारी ॥ परेमातुपितुकैदतिहारे । तुमसोवहुगृहपाँयपसारे ॥
सुनिवसुदेववचनऋषिराई । कह्योलाइहौंद्रुतहिंलेवाई ॥ असकहियदुनगरीमहँजाई । यदुपतिसोंसबखबरिसुनाई ॥

दोहा-द्विजबंधनकन्याहरन, कैदमातुपितुजानि । द्रुतहिंबोलिप्रद्युम्नको, भाष्योशारँगपानि ॥

षटपुरकोनिकुंभअसुरेशा । सुरनसहितजोजित्योसुरेशा ॥ ब्रह्मदत्तकेमखमहँआयो । द्विजनमारिमखभौनजरायो॥

विप्रनपगमहँबंधनडारे। कैदकियोपितुमातुहमारे॥ पाँचहुशतजोविप्रकुमारी। हरिलैगयोतिनहिंशठभारी॥
जननीजनकहुबंधनकेरो। मोहिंनातितनोशोचघनेरो॥ जेतनोकन्याहरणविषादा। जातिआजद्विजकीमरयादा॥
षटपुरजाहुपुत्रयहिक्षणमें। रक्षेहुकन्यनडरहुनमनमें॥ हरिसुतविहँसिकह्योकरजोरी। आपप्रतापबातयहथोरी॥
दोहा—धौंकन्यनरक्षणहिको, मोकोंहोतानिदेश। धौंशठहनिकन्यासहित, द्विजलाऊँयहिदेश॥
किधौंपितामहपितामहीको। बंधनछोरिदेहुँतिनहीको॥ तबयदुपतिबोलेमुसक्याई। जबलगिहमनहिंआवैंधाई॥
तबलोंकरिकौनिहूँउपाई। कन्यनकोरक्षहुतहँजाई॥ सुनिपितुबैनबंदिरणधीरा। चल्योगगनमगमनहुँसमीरा॥
जायतहाँभोअंतरधाना। मायावीअसकियनिरमाना॥ रच्योपाँचसैसुतासुहाई। राखिदियोनिकुंभगृहजाई॥
पाँचहुशतजेविप्रकुमारी। हरचोतिनहिंमायापटडारी॥ द्विजदुहितनमखशालामाँहीं। राख्योद्विजवररह्योजहाँहीं॥
दोहा—युतनिकुंभदानवसबै, जान्योनाहिंचरित्र। मायावीजोकरतभो, यदुपतिकोप्रियपुत्र॥
ब्रह्मदत्तकोनेवताजबहीं। आयोहस्तिनपुरमहँसबहीं॥ तबदुर्योधननृपअभिमानी। कियोमंत्रसबमंत्रिनआनी॥
कर्णशकुनिदुःशासनकाँहीं। भीषमद्रोणहुँकृपहुँतहाँहीं॥ पांडवहुनकहँलियोबुलाई। लाग्योकरनमंत्रमनलाई॥
बैनतहाँदुर्योधनभाखे। कहौमंत्रजोजियगुनिराखे॥ ब्रह्मदत्तनिजनेवतपठायो। याकोकसविचारमनआयो॥
किधौंउचितहैजावतहाँहीं। किधौंउचितगमनबतहँनाँहीं॥ भीषमदेवतहाँअसभाष्यो। कहेदेतजोमैंसुनिराष्यो॥
दोहा—ब्रह्मदत्तकीपंचशत, सुताहरचोदनुजेश। तातेद्विजपठयोडरो, नेउतासबैनरेश॥
देवकिअरुवसुदेवहुकाँहीं। असुरकैदकियमखगृहमाँहीं॥ तातेतहँयदुवंशीजैहैं। कृष्णमातुपितुअवशिछुडैहैं॥
यदुपतिआगमसुनतनिकुंभा। करिहिअवशिआतुरअसदंभा॥ लेइहिधनदैतुम्हैंलुभाई। यदुवंशिनसँगयुद्धकराई॥
तातेउचितनजावतहाँहीं। बैठोचुपह्वैनिजगृहमाँहीं॥ विदुरद्रोणकृपमंत्रप्रवीने। भीषममंत्रहिंसम्मतकीने॥
तहँदुःशासनशकुनिप्रवीरा। बोलेउरकरिगर्वगँभीरा॥ पाँचशतद्विजसुतासुहाई। औरहुमणिगणधनअधिकाई॥
दोहा—अपनीकरनसहायहित, जोहमकोवहदेय। तौसहायकरिबोउचित, युधयशकोनाहिंलेय॥
सूतपुत्रतबकह्योप्रकोपी। यदुवंशिनजीतनमहँचोपी॥ भलीकहीशकुनिहुँदुःशासन। यहिविधिकीजैयदुकुलनाशन॥
उचितयदपिनहिंदानवयच्छा। तदपियुद्धहितगमनबअच्छा॥ यदुवंशीनृपहुक्मनमानैं। अपनेकहँसबतेबडजानैं॥
यदपिसुयोधनकियबड़वारी। तदपिनजानहिंआदिभिखारी॥ बढ्योगर्वयदुवंशिनकेरे। सबदिनतेकुरुकुलकेचेरे॥
तबभीषमकछुकह्योरिसाई। कर्णतोरिशठतानहिंजाई॥ करहुवैरकसअर्थपराये। यदुवंशिनजीतनमनलाये॥
दोहा—यदुवंशीकीन्ह्योंकहा, कुरुकुलकोअपराध। विनाहेतुबिनकाजकत, कीजतुकोपअगाध॥
यदुवंशिनजीतबयुधमाँहीं। जानहुँसहजसबैतुमनाँहीं॥ परब्रह्मयदुपतिभगवाना। तिनसोंवैरनहैकल्याना॥
जबअसभीषमवचनउचारे। कह्योकर्णकीदृगअरुणारे॥ तुम्हरेतौनयुद्धकरचाऊ। यदुवंशिनकहँसदाडेराऊ॥
बूढेभयेभईमतिभोरी। आयुर्दायरहीअबथोरी॥ यदुवंशिनकीबहुचपलाई। सोहमसोंअबनाहिंसहिजाई॥
तबदुर्योधनगिराउचारी। कर्णकह्योतुमबातविचारी॥ जोमानहुँसलाहसबमेरी। षटपुरचलहुकरहुनहिंदेरी॥
दोहा—भलीब्याजयहह्वैगई, दीन्ह्योंदईबनाय। यदुवंशिनकीकीजिये, अवशिपराजयजाय॥
हमरेगमनतसबनृपजैहैं। यदुवंशीअबबचननपैहैं॥ जहाँभीष्मद्रोणहुँबलवाना। कर्णकृपाचारजमतिमाना॥
जहँअर्जुनगांडीवहिंधारी। भीमसेनतहँगदाप्रहारी॥ तहँनहिंशंकाहोनपराजै। होहिंशक्रजोसहितसमाजै॥
यदुवंशीकरिहैंनलराई। बालकसकैंनशैलउठाई॥ तबभीषमबोलेमतिमाने। तुमअपनेबलफिरहुभुलाने॥
क्षुद्रनृपनजीत्योसंग्रामा। अबैवीरसोंपरचोनकामा॥ जबधैहैंहलमूसलधारी। तबकोजुरीसमरधनुधारी॥
दोहा—अबैनदेख्योकृष्णसुत, जासुप्रद्युम्नहिंनाम। जाकेसमदूसरनहीं, रिपुजेतासंग्राम॥
अबैसुन्योनहिंशारँगशोरा। जौनपुरंदरकोमदमोरा॥ देख्योनहिंअनिरुद्धकुमारै। मघामेघजलसमशरझारै॥
लख्योअबैनहिंसात्यकिशूरा। राखतजोधनुगर्वगरूरा॥ गृहबैठेभाषहुमनमाने। अबैनदृगयदुवीरदेखाने॥

करहुजौनतुमकोअतिभावे। चलहुजहाँतुम्हरेमनआवे ॥ हमकहिउऋणहोतहैंआजू। करबनवैरउचितयदुराजू ॥
हमतुम्हरेआश्रितकुरुनाथा। तातेचलवतुम्हारेसाथा ॥ तहँलखबसबकेरतमासा। करहिंजेइतबलवचनविलासा ॥
दोहा-असकहिभीषमगृहगये, द्रोणविदुरकृपयुक्त। तबपांडवअसकहतभे, सुनहुसवैममउक्त ॥
हमतोहरिकेहाथबिकानें। दूजोप्रभुमनमेंनहिमानें ॥ जहँयदुपतिजैहैंतहँजैहैं। करिहैंसोजोआयसुदैहैं ॥
असकहिपांडवसदनसिधारे। तवदुर्योधनवचनउचारे ॥ इनकीसदाकेरियहरीती। करहिंअवशिममरिपुसोंप्रीती ॥
जानदेहुअबनाहिंबलावहु। इनकीकछुनशंकमनलावहु ॥ पांडुसुतनकीवदिरणजाई। देहौंशरमैंपाँचचलाई ॥
बोल्योकर्णतहाँरणधीरा। साजहुसैन्यचलहुकुरुवीरा ॥ उतैपांडुनंदनचढ़िस्यंदन। गयेद्वारकैजहँयदुनंदन ॥
दोहा-एकादशअक्षौहिणी, साजिइतैकुरुनाथ। षटपुरकोगमनतभयो, लैबहुभूपनसाथ ॥
सृंजयविदुरअंधनृपतीने। रहेहस्तिनापुरदुखभीने ॥ सुनिषटपुरकुरुनाथजवाई। औरहुनृपसबसैन्यसजाई ॥
गयेसकलषटपुरहरषाई। सुनियदुवंशिनकेरिअवाई ॥ तेइसअक्षौहिणिमगधेशा। इकअक्षौहिणिरुक्मसुवेशा ॥
कोउइककोउद्वैकोउत्रयचारी। इमिअक्षौहिणिभूपसँवारी ॥ कियेजायषटपुरमहँडेरा। सवकेशीशकालकरफेरा ॥
सबभूपनकीसुनतअवाई। तहँनिकुंभदानवसुखपाई ॥ निजमंत्रिनकहँदानवकेतू। पठयोकुरुपतिपहँनिजहेतू ॥
दोहा-दुर्योधनढिगसचिवचलि, कह्योवचनकरजोरि। कछुनिकुंभविनतीकरी, सोसुनियेप्रभुमोरि ॥
करहुसहायमोरिसबभूपा। लेहुपंचशतसुताअनूपा ॥ लीजेबहुधनमणिगणनाना। कीजैअसविक्रमबलवाना ॥
यदुपतिपिताछोडावनआवैं। सोयामेंपुनिबाचिनहिंजावैं ॥ औरहुजेयदुवंशीएहैं। तिनकोदौरिदैत्यसबखैहैं ॥
तुमसमनहिंजगमहँधनुधारी।सबैभाँतिहमलियोबिचारी॥कर्णसुयोधनशकुनिदुशासन।प्रमुदितभेसुनिदानवशासन॥
मागधदंतवक्रशिशुपाले। शल्यशाल्वविदुरथहुकराले ॥ धृष्टद्युम्नजयद्रथपाहीं। द्रुपदविराटसुशर्माकाहीं ॥
दोहा-विंदहुअरुअनुविंदको, भीष्मद्रोणकृपकाँहि। रुक्मीअरुभगदत्तको, आन्योनिजढिगमाँहि ॥
यथायोग्यतहँभोसतकारा। लागिगयोशोभितदरबारा ॥ तबदुर्योधनमनहिंविचारी। सबभूपनसोंगिराउचारी ॥
मंत्रीचारिनिकुंभपठाये। विनयकरनमेरेढिगआये ॥ दैत्यदेतशतपंचकुमारी। औरहुमणिगणहैधनभारी ॥
सबसोंमाँगतकरनसुहाई। यदुवंशिनकीलगीलराई ॥ तामेंकहाउचितहैभाई। सबमिलिमोकोंदेहुबताई ॥
जोममसम्मतिजाननचाहो। तौसुनियेसिगरेनरनाहो ॥ यदुवंशीअबहींकेबाढे। सबसोंहोतसमरमहँठाढे ॥
दोहा-कियेवैरसबनृपनसों, सबकेहैंदुखदानि। अपनेकहँसबतेअधिक, मानतहैंबलखानि ॥
हमरेघरमहँकरहिंविरोधा। मिलिपांडवनवृथाकरिक्रोधा ॥ हरहिंस्वयंवरमाहँकुमारी। जगमहँजाहिरहैंव्यभिचारी॥
तातेभलोयोगपरिगयऊ। दानववसुदेवहिंधरिलयऊ ॥ कीजेसबैनिकुंभसहाई। मारहुसबयदुवंशिनधाई ॥
जबवैपितैछोडावनआवैं। तबयामेंफिरिनहिंबचिजावैं ॥ सबजुरिवैरआजुलैलीजे। यदुकुलजगमेंरहननदीजे ॥
अवशिपांडवनकोमैंमरिहौं।कुलकलंककोकछुनहिंडरिहौं।यदुवंशीकुमतीसनअडहीं। सबकेदृगसिकतासमगडहीं॥
दोहा-लैहौजोनहिंवैरअब, तौपछितैहौफेरि। कबहुँनपैहौअससमय, कहौसबनसोंटेरि ॥
सुनिदुर्योधनकेरनिदेशा। कोपितकह्योतहाँमगधेशा ॥ हमतोहारेसत्रहिंवारा। तातेयुधकोअवशिविचारा ॥
कौनिहुँभाँतिहरिहिंधरिपाऊँ। तौशरीरकोशोकमिटाऊँ ॥ बोलेतबरुक्मीशिशुपाला। वचिनजानपैहैंगोपाला ॥
करिनिकुंभकीअवशिसहाई। करबयुद्धयहउचितदेखाई ॥ औरहुसबनृपसम्मतकीन्हें।युद्धकरनकहँसबचितदीन्हें॥
तबभीषमपुनिगिराउचारी।कालिहिलेबसबबलहिंनिहारी॥मंत्रहिंकरतबीतिदिनगयऊ।अस्ताचलहिंअस्तरविभयऊ॥
दोहा-तबनिजनिजडेरागये, भूपसबैबलवान। यदुवंशिनसोंयुधकरन, कीन्हेंसबैप्रमान ॥
उतपांडवद्वारावतिआई। सभामध्यहरिकहँशिरनाई ॥ यथायोग्यमिलिकैसबभाई। बैठेसभासकलसुखछाई ॥
कुशलप्रश्नपूँछ्योयदुनंदन।तबकरजोरिपांडुकुलनंदन ॥ कह्योमोदजलदृगनबहावत। कुशलनाथतुवदर्शनपावत॥
हस्तिनपुरकोसुनहुहवाला। दुर्योधनाकियमंत्रकराला ॥ दानवएकनिकुंभमहाना। सोतुमसोंरणमनअनुमाना ॥

तासुओरदुर्योधनधाई। गयोनाथसबनृपनलेवाई॥ चलनकह्योहमहूँकहँसंगा। चाह्योजीतनयदुकुलजंगा॥

दोहा–तबहमतासोंरूसिकै, लैनिजचारौंभाय। दशरावरेकोकरन, आयेआशुहिंधाय॥

धनहुँधामधरणीपरिवारा। लाग्योतुमसोंनाथहमारा॥कैसेजायँआपअरिओरा। अमीछोडिविषभक्षहिंवोरा॥

तबयदुनंदनगिराउचारी। जानीसिगरीदशाहमारी॥ असकहिपांडवसंगलेवाये। उग्रसेनकीसभासिधाये॥

सबयदुवंशिनतहाँबोलाई। मंत्रकरनलागेयदुराई॥ उग्रसेनप्रथमहिंतबबोले। अपनेउरकीआशयखोले॥

देवकिअरुवसुदेवहुकाँहीं। कियोनिकुंभकैदमखमाँहीं॥ हैनिकुंभदानवपरचंडा। दीन्ह्योंसुरयुतशक्रहिंदंडा॥

दोहा–वज्रहुगह्योनतासुतनु, विनश्रमलियदिविजीति। लुकेरहतलोकनअमर, मानितासुअतिभीति॥

महादेवकोहैवरदानी। तीनरूपधारेबलखानी॥ अहैअवध्यसुरासुरतेरे। साठिहजारदैत्यतेहिंकेरे॥

तेऊहैंअतिशयबलवाना। करहिंअकाशअकाशपयाना॥ मायावीअतिशयबलवारे। अस्त्रशस्त्रसबजाननहारे॥

सोदानवकीकिरनसहाई। गयोतहाँदुर्योधनराई॥ भीषमद्रोणकर्णरणधीरा। कृपदुःशासनशकुनिप्रवीरा॥

कुरुकुलसिगरोसमिटिसिधारा। लैदलगेनृपऔरअपारा॥ संगरतहाँभयावनहोई। दानवसोंजुरिसकीनकोई॥

दोहा–तुमसुकुमारअपारहो, हेवसुदेवकुमार। महाभयंकरदैत्यवह, शक्रसुजीतनहार॥

तातेमेरेमनअसआवै। आपसहितयदुदलनहिंजावै॥ नारदआदिकमुनिनपठाई। दानवकोबहुविधिसमुझाई॥

देवकिअरुवसुदेवछोडाई। लीजैसामरीतियदुराई॥ सबभूपनकोकरिसतकारा। ब्रह्मदत्तकोयज्ञप्रकारा॥

करवावहुइततेयदुनाथा। होइयुद्धनहिंभूपनसाथा॥ ऐसोमेरेमनमहँआवै। पुनिजैसोतुम्हरोचितभावै॥

हगनहोततुवदर्शनओटू।लागतवज्रसरिसहियचोटू॥ परतपलककलपहिंसमजाँहीं। तुवदर्शनबिनहगबिलखाँहीं॥

दोहा–वरुहमहींतहँजायकै, दानवकोसमुझाय। पाँचौंशतवैकन्यका, द्विजकहँदेवदेवाय॥

भूपतिवचनसुनतयदुराई। कह्योनकछुदीन्ह्योंमुसक्याई॥ तबबोलेबलभद्रप्रवीरा। सुनहुवचनममनृपमतिधीरा॥

भईआजुलोंअसकहुँनाँहीं। पुनिविशेषियहियदुकुलमाँहीं॥ पिताकैदसुनिकैनिजकानै। बैठरहबगृहमाहँलुकानै॥

द्विजदुहितनकोहरणहुसुनिकै।करबनयुद्धभीतिमनगुनिकै॥विप्रकाजमहँलागहिंप्राना।जगतमध्यकोताहिसमाना॥

भूपतिसैन्यजौनजुरिआई। रहैंऐनकिमिताहिडेराई॥ हैनिकुंभयद्यपिबलवाना। साठिहजारहुदैत्यमहाना॥

दोहा–तद्यपिभयकछुलगतनहिं, मेरेमनहिंनरेश। दानवकैकारहैकहा, कसनहिंदेहुनिदेश॥

ऐहैंजोविधिशंकरसंगा। तौविशेषिजीतवहमजंगा॥ येकौरवहैंकेतिकबाता। तिनमहँकोउनहिंवीरविख्याता॥

रुक्मीअरुमागधशिशुपालू। दंतवक्रविदुरथअरुशालू॥ इनकीअहैवीरताजानी। कुंडिनपुरमहँप्रगटलखानी॥

कर्णसुयोधनशकुनिदुशासन।इनकोकियगंधर्वहुशासन॥ जिनकोजीतिलियोसुरगायक।तैकैसेयदुकुलरणलायक॥

हमअवश्यजैहैंनृपतहँहीं। जननीजनककैदहैजहँहीं॥ मारिअसुरभूपनमदमोरी। लैहैंजननीजनकहिंछोरी॥

दोहा–सुनतबैनबलभद्रके, यदुवंशीसबवीर। लगेसराहनरामकहँ, कसनकहहुरणधीर॥

मुसँयदुनाथकहनपुनिलागे। मानहुँवचनअमीरसपागे॥ करहुभूपशंकानहिंकोई। आपप्रतापसिद्धिसबहोई॥

बैठहुआपद्वारकामाँहीं। शासनदेहुवेगिहमकाँही॥ गमनबउचितनअहैआपको। विजयहेतुबलतुवप्रतापको॥

उग्रसेनतबकह्योहुलारी। जोभावैसोकरहुमुरारी॥ तबयदुनंदनकैअभिवंदन। सैन्यसाजिआशुहिंअरिदंदन॥

बारहिंअक्षौहिणिदललैकै। षटपुरगवनकियेजयज्वैकै॥ सारणउद्धवबितरणभोजा। विपृथुपृथुविचक्षअतिओजा॥

दोहा–कृतवर्मासात्यकिसुभट, चारुदेष्णबलवान। अक्रूरहुगदसांबभट, सनत्कुमारसुजान॥

अरुअनिरुद्धधनुर्धरधीरा। निशठउल्मुकहुसुतबलवीरा॥ अनाधृष्टसेनापतिजोई। दलआगेगमन्योभटसोई॥

यहिविधियदुवंशीअतिकोपे। षटपुरगयेसमरचितचोपे॥ ब्रह्मदत्तमखगृहकेनेरे। डेराकियोकृष्णतेहिंघेरे॥

तहँप्रद्युम्नआयाशिरनायउ।कहहरिद्विजदुहितानिछोडायउ॥तबप्रद्युम्नबोलेकरजोरी।द्विजदुहितनल्यायोकरिचोरी॥

मायाकीरचिसकलकुमारी। राखीदानवभवनमझारी॥ यहप्रसंगदानवनहिंजाने। अपनेबलमदफिरैंभुलाने॥

दोहा-यदुवंशिनआगमनसुनि, उतनिकुंभअसुरेश। मायाकीकन्यासकल, दीन्हीनृपनिनरेश॥
पुनिनिशिमहँपठयोइकचारा।सोदुर्योधनशिविरसिधारा॥कह्योजोरिकरकुरुपतिपाँहीं।नृपनिकुंभभेज्योमोहिंकाँहीं॥
कह्योवचनअसदानवराई। सबनृपमिलिअसकरहिंउपाई॥ यदुवंशिनपरकोपहिंकैकै। परहिरैनमहँसैन्यहिंलैकै॥
यहिउपायबिनश्रमनाहिंजैहै। भागतबनिहिनिनिशिवासिजैहै॥ अथवालरैनरातिउपाई। काल्हिलरौंतोबाजवजाई॥
दुर्योधनतबकहहँसिबानी। परतनिशायुधअनुचितजानी॥ तातेलरहिंकाल्हिदनुजेशा। करिहैंसबैसहायनरेशा॥

दोहा-दुर्योधनकेवचनसुनि, चारिदैत्यढिगआय। कुरुपतिकोसिद्धांतसब, दीन्ह्योंताहिसुनाय॥
कृष्णमखशालहिंआये। ब्रह्मदत्तबंधनहिंछोडाये॥ मातापितालखिभयेदुखारी। कैदभवनतेलियेनिकारी॥
तबवसुदेवसुतनउरलाये। बारबारदृगवारिबहाये॥ कृष्णरामवंदनतहँकीन्हें। मातुपिताआशिषबहुदीन्हें॥
पुनिवसुदेवकहीमृदुवाणी। सुनहुप्राणप्रियशारँगपाणी॥हैनिकुंभअतिशयबलवाना।उचितनयुद्धपरतमोहिंजाना॥
कहँतुमअतिसुकुमारकुमारे। कहँदानवनरभक्षणहारे॥ चलहुद्वारकैअबयदुनाथा। मातपितालैअपनेसाथा॥

दोहा-तबबोलेयदुपतिविहँसि, पितानतुमघबराहु। इतहींबैठेदेखिये, संगरसहितउछाहु॥
ताहीसमयचारद्वैआये। यदुपतिकोअसखबरिसुनाये॥ नृपनिकुंभसंमतसबकीन्हें। छापामारननिश्चितदीन्हें॥
अथवाकाल्हिहोतहींभोरा। करिहैंयुद्धआपसोंघोरा॥ करनमंत्रयदुपतिचितचाये। सबसचिवननिजनिकटबुलाये॥
सात्यकिउद्धवअरुकृतवर्मा। रामजासुअद्भुतरणकर्मा॥ अनिरुधअरुप्रद्युम्नप्रवीरा। औरहुसबयदुवरमतिधीरा॥
अरुपाँचौंपांडवतहँआये। मंत्रकरनलागेमनलाये॥ प्रथमहिंबोलेयदुकुलकेतू। सबैसुभटबलतोलनहेतू॥

दोहा-हैनिकुंभअतिशयप्रबल, दानवसाठिहजार। तापरपुनिभूपतिबली, समिहैंसबएकबार॥
महारथीभीषमरणधीरा। शलभसरिसछाँडतधनुतीरा॥ क्षत्रीरहितक्षमाकरिदीन्ही।इकइसबारविजयजिनलीन्ही॥
ऐसोप्रबलपरशुधरराम। कियभीषमतासोंसंग्रामा॥ तेइसदिनकरिकैरणघोरा। हारिगयोजमदग्निकिशोरा॥
करीदिग्विजयजगत्रयबारा। कबहुँनकाहूसोंरणहारा॥ सोभीषमआयोधनुधारी। तासोंसकीकौनकरिरारी॥
धनुविद्याआचारजजोई। आयोद्रोणाचारजसोई॥ कर्णकठिनकोदंडविधर्ता। शत्रुनकोटिकतलकोकर्ता॥

दोहा-दशहुदिशनकेनृपनकहँ, जीतिकरणबलवान। करवायोदुर्योधनहिं, अश्वमेधसविधान॥
अहैसुयोधनयुतशतभाई। बलीसुशर्माआयोधाई॥ द्रुपदविराटजयद्रथयोधा। धृष्टद्युम्नशत्रुप्रदरोधा॥
रुक्मीशाल्वऔरशिशुपाला। दंतवक्रविदुरथहुभुवाला॥ औरहुमहारथीसबआये। यदुवंशिनसोंयुधमनलाये॥
तातेमेरेमनअसआवै। यामेंसकलभाँतिबनिजावै॥ अर्जुनअरुप्रद्युम्नकुमारा। भीमसेनअनिरुद्धउदारा॥
रहैंचारियेदलकेआगे। करहुतीनिदलकेरविभागे॥ सात्यकिअरुउद्धवगदवीरा। रहहिंसैन्यपीछेयुतभीरा॥

दोहा-हमअरुबलअरुधर्मनृप, रहबसैन्यमधिठौर। युगमाद्रीसुतदानपति, फिरहिंसैन्यचहुँओर॥
जोतुमसबयहिविधिसोंलरिहौ। तबतोनहिंभूपनसोंहरिहौ॥ सहसाकियेबातनहिंबनिहै।यदुवंशिननिकुंभहठिहनिहै॥
पैमेरेभरोसअसआवत। जेहिंसँगअर्जुनसोंजयपावत॥ नहिंगांडीवसरिसधनुदूजो। त्रिपुरजयीजेहिंविक्रमपूजो॥
सुनिहरिकेअसवचनप्रचंडा। फरकेशंबरारिभुजदंडा॥ जोरिपाणिअसवचनउचारा। पितासत्यजोकियोविचारा॥
जाहिंआपयहिभाँतिबखाने। ताकेसरिसकौनजगआने॥ पैहमारिविनतीसुनिलीजे। करिकैकृपाऐसहींकीजे॥

दोहा-कीअर्जुनजीतैरिपुन, अवशिअकेलेआजु। कीरिपुजीतनमोहिंकहँ, काहिदीजैयदुराज॥
लखनहमअर्जुनइकसाथै। विजयपराजयनिजनिजहाथै॥ करीकोउकेतोमनुसाई। यद्यपिरिपुनजीतिजयपाई॥
तदपिअर्जुनहिंकहँयदुराई। देहौयुधमहँविजयबड़ाई॥ अहैअर्जुनहिंभरिधनुधारी। सूनजगतकापरतनिहारी॥
जोकरधरेधनुषप्रभुहोई। विक्रमतासुरहीनाहिंगोई॥ नातोइतकराययुधलीजे। जोजीतैतेहिंआयसुदीजे॥
बरुहमनाथबैठइतरैहैं। पैअर्जुनसँगसमरनजैहैं॥ आपअनुग्रहहैजेहिपाँहीं। सोजीतीरणशंसयनाँहीं॥

दोहा-आयेजुरिकैजेसबै, जानेअहैंनरेश। जाकोमनभावैपिता, ताकोदेहुनिदेश॥

जीत्योविप्रनापुरेकाँहीं । भीषमदेवअवेरणमाँहीं ॥ जबभिरिहैकोउक्षत्रीनाथा । कठिनवचावनपरिहैमाथा ॥
भीषमकेदिगविजयकरतमें । रह्योनहींप्रद्युम्नजगतमें ॥ नातोदिगविजयीनहिंहोते । औंधशीशकरिरणमहँसोते ॥
द्रोणाचारजबूढ़महानै । सबैबालकनसिखवनजानै ॥ जौनकर्णकीकरीबडाई । नाथबातयहसजिनहिंआई ॥
हमयदुकुलवहसूतकुमारा । किमिसन्मुखतजिहैशरधारा ॥ नीचबडेनकेसौंहनआवै । देखतहींद्रुतहींदबिजावै ॥

दोहा–औरविचारेभूपसब, करननजानहिंयुद्ध । लालचवशआयेसबै, काकरिहैंह्वैक्रुद्ध ॥

जोअर्जुनतेविजयविचारो । तौमानहुँप्रभुवचनहमारो ॥ जोनदेहुपांडवहुनकाँहीं । जुरेभूपसबजेहिंदलमाँहीं ॥
यदुवंशीकोउकरहिंनयुद्धा । मोकहँआयसुदीजैशुद्धा ॥ अहैनाथतुवचरणदोहाई । धरिलैहौंसबकहँरणधाई ॥
बचीनएकोभूपसमाजा । आपुप्रतापसिद्धसबकाजा ॥ खड़ेआपुइतलखहुतमासा । करैकामजोराउरदासा ॥
मैंनहिंकछूकरनकेलायक । मोपरतुवप्रतापयदुनायक ॥ तुवसुतह्वैयदुकुलमहँजाई । सकौंनविधिशंकरहुँडेराई ॥

दोहा–येदानवअरुभूपसब, हैंप्रभुकेतिकबात । जीतबइनकहँसमरमहँ, मोकहँसरललखात ॥

यदुनंदननंदनकीबानी । सुनिकैसकलसुभटअभिमानी ॥ सभामध्यबोलेकछुनाँहीं । कौतुकसकलगुनेमनमाँहीं ॥
तबसुतकहँहरिआँखिदेखाई । भोप्रद्युम्नचुपशीशनवाई ॥ परसिप्रद्युम्नशीशअभिरामा । तहाँवचनबोलेबलरामा ॥
सत्यकह्योतैंकृष्णकुमारा । जान्योविक्रमतोरहमारा ॥ कृष्णकह्योनहिंवचनविचारी । चहहिंपांडवनकीबडवारी ॥
ऐसीरहीनरीतिहमारी । होहिंऔरसँगविजयविहारी ॥ यदुकुलसदारीतिचलिआई । अपनेबलसोंकरहिंलराई ॥

दोहा–तातेजैसोहमकहैं, तिमिकीजैयदुनाथ ॥ समरभारयहआजुअब, धरिदीजैसुतमाथ ॥

पाँचपांडवनअसकहिदीजे । मखशालातुवरक्षणकीजे ॥ भीमसेनअर्जुनजहँरैहैं । दानवतहाँकिबहुँनहिंऐहैं ॥
जोऐहैंअतिआतुरधाई । तौअस्त्रनसोंविजयजराई ॥ यामेंहैनाहिंकछुसंदेहू । बलीसोईजेहिंतुमकियनेहू ॥
हमअरुतुमनिकुंभसोंभिरहीं । दानवदलसोंयदुदलजुरहीं ॥ भूपनकोदलजौनअपारो । तासोंसमरकरीसुतप्यारो ॥
अबनहिंकीजैऔरविचारा । मानहुँयदुपतिवचनहमारा ॥ देखहुविक्रमअबसुतकेरो । बालहिंतेपाल्योजोमेरो ॥

दोहा–सुनतवचनबलभद्रके, कह्योकृष्णमुसक्याय । उचितहोतसबभाँतिसोइ, कहतजोजेठोभाय ॥

धर्मभूपलैतुमनिजभाई । रक्षणकरहुयज्ञगृहजाई ॥ दानवबलिजोसाठिहजारा । तिनकोकरहुपार्थतुमछारा ॥
हमदेखबसबकेरतमाशा । कौनवीरकसकरतप्रकाशा ॥ सुनिपारथयदुपतिपदवंदे । उच्योसभातितमाकिअनंदे ॥
गयोयज्ञशालेधनुधारे । भीमादिकयुतनृपद्रुसिधारे ॥ तबवसुदेवकहीमृदुबानी । लीजेप्रवरजयंतहुआनी ॥
तबदुनहुँनकहँकृष्णबोलाये । शासनपायआयाशिरनाये ॥ तबदरबारभयोबरखासू । गयेवीरानिजनिजैनिवासू ॥

दोहा–तबप्रद्युम्नसोंहरिकह्यो, रक्षहुतुमनिशिमाँहिं । फिरहुचहूँकितसैन्यके, आयसकैंअरिनाँहिं ॥

बीबीजबैत्रियामत्रियामा । नींदछोडितबहरिबलरामा ॥ प्रातकर्मकरिमज्जनकीने । संध्यावदनकरिसुखभीने ॥
सकलसैन्यमहँचारपठाये । हयमतंगस्यंदनसजवाये ॥ सजगभयेसबआशुहिंवीरा । कसिकसिकूँडकवचरणधीरा ॥
चढिचढ़िरथनमतंगतुरंगन । आयेहरिढिगयुद्धउमंगन ॥ बाजिउठेतहँविविधनगारे । सिंहनादकीन्हेंभटभारे ॥
मकरव्यूहरचितहँजगदीशा । खड़ेभयेयुधहेतुमहीशा ॥ कूँडकवचनिषंगधनुधारी । रथचढिकरिसबसमरतयारी ॥

दोहा–निकसिअकेलेसैन्यते, यदुनंदनकेनंद । खडोभयोआकाशमें, मनुरवितेजअमंद ॥

बजनलगेतहँबाजजुझाऊ । सबवीरनकेबढ्योउराऊ ॥ पूरबपूषनप्रगटिप्रकाशा । कीन्ह्योंदशआशनतमनाशा ॥
गरुडचढ़ेसात्यकिहरिरामा । मधिदलखड़ेकरनसंग्रामा ॥तहाँभूपदुर्योधनजाग्यो । युद्धकरनकहँअतिअनुराग्यो ॥
सबभूपनकोदियोनिदेशा । सजगहोहुयुधहेतुनरेशा ॥ सबभूपनकेबजेनगारे । एकसंगसबभयेतयारे ॥
निजनिजअक्षौहिणिदलसाजे । निकसेसबैबजावतबाजे ॥ द्रोणभीष्मकर्णहिंकरिआगे । ठाढेभयेवीररसपागे ॥

दोहा–मानहुँसातहुँसिंधुबाढि, तजितजिनिजैकरार । बीरनचाहतजगतकहँ, तिमिदललख्योअपार ॥

तबदुर्योधनचारपठायो । तुरतहिंदानवकेढिगआयो ॥ कह्योयुद्धहितकरहुतयारी । आवहुजुरिसबसमरमँझारी ॥

तबनिकुंभदानवनिबोलायो। युद्धहेतुसबकहँसजवायो॥ आपहुँलैमुद्गरविकराला। चल्योयुद्धहितमानहुँकाला॥
दानवचढेतुरंगमतंगे। युद्धकरनकहुँअंगउमंगे॥ कोउगर्दभकोउमहिषनमाँहीं। कोउगेंडनकोउऊँटनपाँहीं॥
कोउचढिकच्छमच्छशिशुमारा। निकसेदानवसाठिहजारा॥ आयेभूपनसैन्यमँझारा।प्रलयकरनमनुकियेविचारा॥

दोहा-दानवदलअरुभूपदल, मानहुँसिंधुअपार। ताकेमधियदुदललसत, जिमितडागछबिवार॥

गरजहिंतरजहिंदानवछोरा। छावहिंदशदिशिशोरकठोरा॥ बजैंशङ्खभेरीसहनाई। मानहुँमेघरहेघहराई॥
तबकुरुपतिकोकहअसुरेशा। देहुप्रथममोहिंयुद्धनिदेशा॥ जोमोतेबचिहैंयदुवंशा। ताकोपुनितुमकियोविध्वंसा॥
तबकुरुपतितथास्तुकहिदीन्ह्यों। तहँनिकुंभशासनउरकीन्ह्यों॥दानवजेतुमसाठिहजारा।जायजरावहुयज्ञअगारा॥
ब्रह्मदत्तवसुदेवहुकाँहीं। पांडवहुनकोभखियोतहाँहीं॥ आयसुपायदैत्यद्रुतधाये। मखशालाढिगआशुहिंआये॥

दोहा-ब्रह्मदत्तवसुदेवहूँ, आवतदैत्यनदेखि। वेदकियोमखकर्मको, डरेमृत्युनिजलेखि॥

तबअकाशतेकृष्णकुमारा। ब्रह्मदत्तसोंवचनउचारा॥ डरहुदानवननहिंद्विजराई। करहुकर्मअपनोमनलाई॥
इतगांडीवधनुषकहँधारी। खडोधनंजयविक्रमभारी॥ जहँअर्जुनरहिहैरणधीरा। तहँकालौकरिसकीनपीरा॥
येदानवहैंकेतिकबाता। अर्जुनकरीआजुइनघाता॥ इतनीकहतहिंअसुरप्रचंडा। छायगयेनभमहँबरिबंडा॥
चहुँदिशितेकरिशोरभयावन। चाहेमखशालाढिगआवन। तहँअर्जुनगांडीवटँकोरा। भयोभयावनचहुँदिशिशोरा॥

दोहा-सभामध्यजोकृष्णसुत, वचनबाणहनिदीन। ताकीसुधिकरिपांडुसुत, कोपितभयेप्रवीन॥

साज्योएकबाणविनसोगू। तामेंकियब्रह्मास्त्रप्रयोगू॥ प्रद्युम्नहिंकेदेखतवीरा। छोड़िदियोअसुरनपरतीरा॥
चल्योबाणमनुकालहुकाला। उठीचहूँकितपावकज्वाला॥जरनलगेदानवविकराला॥चल्योनविक्रमकछुतेहिंकाला॥
रहेजेदानवसाठिहजारा। इकक्षणमहँसबभेजरिछारा॥ गिरीभूमिमहँभस्मतहाँहीं। देखिपरेदानवकोउनाहीं॥
तबदेवतासराहनलागे। विजयविजयविक्रमअनुरागे॥ प्रद्युम्नहुँअर्जुनहिंसराहीं। कह्योऐसहींतुमकहँचाहीं॥

दोहा-तहँनिकुंभकोपितभयो, लखिदानवनविनाश। चल्योअकेलेयदुनको, जीतनकीकरिआश॥

आवतदेखिनिकुंभहिकाँहीं। अनाधृष्टदलपतिरणमाँहीं॥ अपनोस्यंदनतुरतचलाई। लियोनिकुंभहिंआगेजाई॥
तबदानवकरिकोपमहाना। छोड्योयदुदलपहँबहुबाना॥ अनाधृष्टतबबाणनकाटी। दियोनिकुंभहिंविशिखनपाटी॥
दानवकेसारथिकोशीशा। काटिदियोयदुदलकोईशा॥ कियेतुरंगअंगसबभंगा। स्यंदनकाटिदियोध्वजसंगा॥
पुनिमारचोसहसनशरतेहिंकहँ। देखिनपरचोनिकुंभसमरमहँ॥ गदाधारितबदानवकोपी।अनाधृष्टकहँमारनचोपी॥

दोहा-बाणजालकोफारिकै, अनाधृष्टढिगआय। गदागरूमारतभयो, चह्योनअबबचिजाय॥

लगीगदास्यंदनसबटूट्यो।तुरँगसहितसारथिशिरफूट्यो॥रथतेकूदिगयोसेनापति।हन्योत्रिशूलरिपुहिंकरिबलअति॥
सबनिकुंभधरिशूलहिंतोरा। मायाकरिकैतहँअतिघोरा॥ पकरिअनाधृष्टहिंतहँबाँध्यो। षटपुरगुहातुरततेहिंधाँध्यो॥
सेनापतिबंधनलखिसेना। डगमगानिह्वैगईअचैना॥ तहाँनिशठउल्मुककृतवरमा। सनत्कुमारभोजधृतवरमा॥
अरुवैहरणआक्षरणधीरा। हन्योनिकुंभहिंबाढ़िबहुतीरा॥ तहँकरिअसुरआसुरीमाया। सबवीरनकियथंभितकाया॥

दोहा-पुनिषटवीरनबाँधिशठ, दियोगुहामहँडारि। तबअक्रूरउद्धवहुँगद, धावतभयेप्रचारि॥

हन्योनिकुंभहिंबाणकराला। दानवदौरितिनहिंततकाला॥ मायाबंधनतिनहुँनबाँधी। षटपुरगुहामाहँदियधाँधी॥
औरहुबलीवीरयदुवंशिन। बाँधिगुहाडारच्योअरिध्वंसिन॥ येसबवीरनबंधनदेखी। यदुदलभाग्योभयअतिलेखी॥
तहँनिकुंभलैधनुषकराला। तज्योबाणमानहुँबहुव्याला॥ हन्योशतघ्नीपरिघहजारन। पावकतूलशूलअरिदारन॥
फरशाकुंतकृपाणमहाना। मुद्गरमूसलतोमरनाना॥ पुनिबरष्योबहुवृक्षपषाना। भयोतहाँअँधियारमहाना॥
शस्त्रवृष्टिभैचहुँदिशिघोरा। बनतनठाढहोततेहिंठोरा॥

दोहा-अतिविषादभरियदुशयन, चलीभागितेहिंकाल। मानेसबैनिकुंभको, आयोकालकराल॥

देखिविकलदलरमानिवासू। उतरिविहंगराजतेआसू॥ रथचढिदारुकसोंअसभाषा। लैचलरथजहँदानवमाषा॥

तवदारुकरथद्रुतहिंधवायो। विकटनिकुंभनिकटपहुँचायो॥बलिरामहुँरथचढितहँधायो।दानवपासआशुचलिआयो॥
हनेकुलिशसमविशिखकराला। तेनिकुंभतनुभयेदुशाला॥ दानवगुन्योप्रबलदोउवीरा। अंतरधानभयोतजितीरा॥
गयोकर्णकेनिकटसुरारी। शंकितह्वैअसगिराउचारी ॥ करहुगुहाकीतुमरखवारी । लेइनकोउयदुवरननिकारी॥
दोहा-जहँतुमरेहौशूरसुत, तहँशंकाकछुनाँहिं। शक्रहुसकीनिकारिनहिं, रामकृष्णकाआहिं॥
दैत्यवचनसुनिभातुकुमारा। ठाढोभयोगुहाकेद्वारा ॥ कीटकवचसायकधनुधारी। मनमेंकछुनहिंशंकविचारी॥
कर्णहिंनिरखिगुहाकेद्वारा। असुरचल्योयुधकरनअपारा॥हनेहुहरिहिंरामहिंबहुबाना। सिंहनादकियमेघसमाना॥
दानवरामकृष्णकोघोरा । होनलग्योसंगरतेहिंठोरा ॥ तबयदुसेनामरुकिसिधाई। शस्त्रनहनतदैत्यढिगआई॥
यदुदलनिरखिसुयोधनबोलो।हेनृपअवनिजनिजबलखोलो॥मारहुयदुदलनहिंबचिजावै।नहिंनिकुंभढिगआवनपावै॥
दोहा-दुर्योधनकोहुकुमसुनि, सकलकौरवीसन। यदुदलपैधावतभई, छाँडतआयुधपैन॥
छोडेंमनहुँसकलनिजवेला। कियेसातहूँसागररेला॥ कह्योकृष्णतबहेबलिभ्राता। अबतोसंगरकठिनजनाता॥
यदुवंशिनदानवगहिलीन्ह्यों। हमतेआययुद्धपुनिकीन्ह्यों॥ हमतुमकरहिंयुद्धयहिसंगा। आयोनृपदलइतैअभंगा॥
कोकरिहैयदुदलरखवारी।लैहैंकौरवआशुहिंमारी॥ कहाँगयोसुतजेहिंकहिराख्यो। सभामध्यजोअतिशयमाख्यो॥
वेगिबोलावहुनिजसुतकाँहीं। करैआजुविक्रमरणमाँहीं ॥ तबबलभद्रकह्योमुसकाई । खड़ोपुत्रमेराथदुराई॥
दोहा-देखहुअबप्रद्युम्नको, कृष्णभयावनयुद्ध। रुकिहिकौनसन्मुखसुभट, जबहोइहिवहक्रुद्ध॥
असकहिटेरिकह्योबलरामा । अहैप्रद्युम्नतोरअबकामा॥ देखहुकहातमाशाठाढ़े । आवहिंयेकौरवमनबाढ़े॥
कृष्णकुमारतहाँमुसकाई। रामकृष्णकेपदशिरनाई॥ सारथिसोंअसवचनउचारा। रिपुसन्मुखकरुयानहमारा॥
लावहुभीतिनकछुमनमाँहीं।बहुसँगभिरतनिरखिमोहिंकाँहीं॥ एकहुबाणनलागनपैहै। हमतोकोंसबभाँतिबचैहैं॥
यहठाढ़ोदुर्योधनराजा। शतभाइनयुतजोरिसमाजा॥ शकुनिदुशासनदक्षिणओरा। द्रोणकृपहुहैंवामहिंठोरा॥
दोहा-मातुलरुक्मीशाल्वनृप, अरुमागधशिशुपाल॥ दंतवक्रविदुरथसुभट, पीछेखडेभुवाल॥
धृष्टद्युम्नजयद्रथवीरा। द्रुपदविराटसुशर्माधीरा॥ उत्तरनीलविंदुअनुविंदा। अरुभगदत्तहुचढ़ोकरिंदा॥
येसबभटहैंदलकेआगे । तिनकेमधिमेंरणअनुरागे॥ तारध्वजाजिनकोफहराई । अचलशैलसमजौनदेखाई॥
सोईपितामहकुरुकुलकेरो । भीषमहैविक्रमोघनेरो॥ याहीकेभुजबलकुरुराई । यदुवंशिनपरकरीचढ़ाई॥
तातेसुनुसारथिमतिधीरा। लैचलुरथजहँभीषमवीरा॥ जोभीषमढिगद्रुतपहुँचैहो । तोसारथिजगमेंयशलैहो॥
दोहा-सुनतसूतहरिसुतबयन, धारिचैनचितमाँहिं। कह्योवचनबलऐनपहँ, मोहिंकछुभयनजनाँहिं॥
असकहिस्यंदनधरणिउतारी। बारबारवाजिनपुचकारी॥ सूधोकरिकौरवदलओरा । सावधानह्वैकैतेहिंठोरा॥
करीबागवाजिनकीऊँची। तनुतजिवकीतजीनिकूँची॥ अधरातस्यंदनअतिघोरा । चल्योशत्रुसन्मुखबरजोरा॥
जैसेकढ्योचापतेबाना । कोहूकोनहिंबीचदेखाना॥ तैसहिंकृष्णकुमारप्रवीरा । आयोनिकटधनुर्धरधीरा॥
तहाँदेवसबलखनतमाशा। आयेचढ़िचढ़ियानअकाशा॥कृष्णकुँवरकहँलखिसुखपागे।आपुसमहँअसभाषणलागे॥
दोहा-धन्यधन्यप्रद्युम्नहै, कोजगयाहिसमान। सहसनमहारथीनपै, इकयहकियोपयान॥
सहसनफहरहिंजहाँनिशाना। मारूबाजबजैंविधिनाना॥ चमकिरहैंचैंचापप्रचंडा। खड़ेवीरबहुभरेघमंडा॥
कौरवसागरमहाअथाहा। लेनगयोहरिसुततहँथाहा॥ इतबोलोभीषमरणधीरा। नैनखोलिदेखहुरेवीरा॥
यहजोश्यामवर्णधनुधारे। कीटकवचकरबाणसँवारे॥ कम्मरकसीकृपाणकराली। उभैनिषंगकंधशरजाली॥
आवतहैंअकेलचढिस्यंदन। सोहैयहयदुनंदननंदन॥ फहरतहैंनिशानछबिभूरी। रथनलखातपरतिलखिधूरी॥
दोहा-जाकेविक्रमकेरिअव, मनमहँहोयघमंड। हरिकुमारकेसन्मुखे, होवहुसोबरिबंड॥
सभामध्यहस्तिनपुरमाँहीं। जेभाषेबढिवातनकाँहीं॥ तेअबविक्रमकरहिंनकाहे। देखतकहाखड़ेनरनाहे॥

इतनाकहतहिंभीपमकेरे । दरशीधूरिसैन्यकेनेरे ॥ हरिकुमारकोरथदलमाँहीं । प्रविशेउद्भुतदेख्योकोउनाँहीं ॥
जाहिंमेघमंडलजिमिभानू।जिमिकाननमहँकुपितकृशानू॥कौरवदलतिमिकृष्णकुमारा।मिल्योधायलागीनहिंबारा॥
करिशंतनुसुतधनुषटँकोरा।गयोआशुजहँकृष्णकिशोरा॥मारचोसहसबाणविकराला । चलेफुंकरतमानहुँव्याला ॥

दोहा–शरनकाटिप्रद्युम्नतहँ, द्वैहजारहनिबान । पुनिभीषमकेयानपर, मारचोविशिखअमान ॥

तज्योभीषमहुँबाणअपारा । मानहुँतासुमातुजलधारा ॥ जिमिघटशतछिद्रनतेनीरा । तैसहिंकढेभीष्मधनुतीरा ॥
अंबरतेधरणीलोंराजा । बाणवृंदलसिरहेदराजा ॥ तैसहिंतहँयदुनाथकुमारा । बाणछोड़िकीरदियअँधियारा ॥
भीषमबाणकुँवरदलिवारै । कुँवरबाणभीषमहनिवारै ॥ भीषमकरहिंबाणअँधियारा । तबकुमारकरतोउजियारा ॥
जबकुमारकरिदेतअँधेरा । तबभीषमपुनिकरतउजेरा ॥ जैसेमेघवलितादिनमाँहीं । कहुँप्रकाशकहुँतमह्वैजाँहीं ॥

दोहा–रहेमंडलाकारह्वै, दोहुँनकेकोदंड । खैंचतऐंचततजतशर, लखिनपरहिंबरिबंड ॥

दोऊदुहुँनकहँतकिशरछाड़ैं।मानहुइकएकहिंमहिगाड़ैं ॥ सबदलदेखनलग्योतमाशा । खड़ेजकेजिमिचित्रअवासा ॥
अंबरअवनिउदधिअरुआशा।छायरहेशरसहितप्रकाशा॥कढ़िनसकततहँनेकुसमीरा । सँगसिरहेअतिशयबहुतीरा॥
भूभूधरभेबाणनजंजर । मानहुँविश्वमब्योशरपंजर । सरितसमुद्रसलिलरुकिगयऊ । शरनसेतुथलथलमहँठयऊ ॥
रहिनसकेतहँव्योमविमाना । ब्रह्मलोकसुरकियेपयाना॥कटिकटिगिरहिंतहाँनभचारी । देवनभईभीतिअतिभारी ॥

दोहा–कहाँहिंपरस्परसकलअस, असनलख्योकहुँयुद्ध । जसदोउविक्रमकरतभे, भीषमहरिशतक्रुद्ध ॥

भीषमनिचयनराचचलावै । कृष्णकुँवरकरिरेणुउडावै ॥ कृष्णकुँवरछोड़ैशरभूरी । सुरसरिसुवनकरैसबधूरी ॥
जुरिजुरिदोउभटपुनिबिलगाँहीं । कहूँवामदहिनोदैजाँहीं ॥ कहुँसारथिसारथिताकिपारैं।कहुँवाजिनपरबाणनिझारैं॥
गर्जहिंतर्जहिंदोउरणधीरा । गनहिंनअंगविशिखकीपीरा ॥ भीषमपलकपरतशरसारै । हरिसुतकाटिनराचपँवारै॥
रिरह्योफरपरअतिशोरा । मूँदिगयेदुंदुभिरवघोरा ॥ जिमियुगभानुलरैंमहिमाँहीं । तिमिदोऊभटसमरसोहाँहीं ॥

दोहा–किरणिसरिससायकझरैं, चारुचक्रभोचाप । भूपनदलतापितकरैं, प्रगटहिंपरमप्रताप ॥

पुनिबोल्योहँसिकृष्णकुमारा । परशुरामनहिंनामहमारा ॥ भीषममैंनहिंशाल्वभुवाला । जासुनारिहरिलईउताला॥
नहींपांडुकुलनहिंकुरुकुलमैं । सिखबहुजिनहीसदनअमलमैं ॥ हौंयदुवंशीवीरउदारो । कृष्णतनयबलभद्रहुप्यारो॥
जीत्योलघुनभूपजगमाँहीं । कबहुँनपरचोकामभटपाँहीं ॥ भीषमलखहुआजबलमेरो । मैंदेखिहौंसकलबलतेरो ॥
भीषमसुनतकृष्णसुतबानी । बोल्योवचनवीरविज्ञानी ॥ मेरेप्रभुकेअहौकुमारे । तुमसमसुभटनजगतनिहारे॥

दोहा–पुनिकुमारतुमहोयुवा, हमहैंवृद्धमहान । विक्रममेंनहिंह्वायहै, बालकवृद्धसमान ॥

यदपिहारिहमतुमसोंजैहैं । तद्यपिकछुलघुतानहिंपैहैं ॥ असकहिपुनिबहुबाणचलाई । लियोकृष्णनंदनकोछाई ॥
भीषमबाणविदारिकुमारा । पुनिछोडीअनुपमशरधारा॥यदपिलियेकरएककमाना।जानिपरतजिमिधनुशतबाना ॥
भीषमधनुषधारशरकेरी।कढतहिंकटतलगतिनहिंदेरी ॥ जिमिघृतधारअग्निमहँजावै।नहिंदेखातिअतिज्वालबढावै॥
तिमिभीषमबलबाढ़तजसजस । दूनकरतहरिनंदनतसतस ॥ दिव्यअस्त्रलैभीषमचारी । प्रद्युम्नहिंपैदियोपँवारी ॥

दोहा–अग्निपवनअरुवारुनौ, पर्वतास्त्रअतिघोर । आवतलखिसंग्राममें, सन्मुखकृष्णकिशोर ॥

धनदयाम्यअरुइंद्रादिनेशा । येचारिहुँअस्त्रनतेहिंदेशा ॥ तजिप्रद्युम्नभीष्मकेअस्त्रन । विनप्रयासनाइयोताहीछन ॥
शंतनुसुततबकोपितह्वैकै । लियब्रह्मास्त्रहिंनिजछयज्वैकै॥कृष्णकुँवरकहँताकिचलायो।कालसरिससन्मुखसोधायो ॥
तबप्रद्युम्नब्रह्मशिरमारचो । सोब्रह्मास्त्रहिंआशुहिंजारचो ॥ लाखबाणकरिअतिचपलाई । तज्योकुँवरनहिंपरेदेखाई॥
भीषमधनुसारथिरथवाजी।काटिकियोतिलतिलरणगाजी॥द्वितियधनुपरथलैनहिंलागे।पैनहिंआयसक्योतेहिंआगे ॥

दोहा–तहँप्रद्युम्नकेबाणको, पौनहिंपायतुरंत । भेजेदुर्योधनहिंके, रथउड़िपरेदिगंत ॥

तहँमोहनीमायाफाँसी । हरिसुतहन्योभीष्महींभासी ॥ ताहीक्षणभीषमकेअंगे । बंधनपरिगेएकहिसंगे ॥
गिरचोविसंज्ञभूमिमहँभीषम । रह्योसमरमहँजोअतिभीषम ॥ पावसयनप्रद्युम्नहिंपाई । मनुभीषमरवितापगमाई ॥

शंतनुसुतकहँगिरतनिहारा। माँचिरह्योदलहाहाकारा॥ सकलसुभटएकहिंसँगभागे।कृष्णकुमारभीतिअतिपागे॥
तहँद्रोणअरुकृपवलवाना। हरिसुतसन्मुखकियेपयाना॥ उभैओरतेउभैप्रवीरा। झारनलगेशरनरणधीरा॥

दोहा–छायलियोप्रद्युम्नको, मारिवाणसहसानु। हरिसुततहाँछिपानइमि, जिमिनिहारमहँभानु॥

तहँप्रद्युम्नधनुर्धरधीरा। काट्योएकसंगसवतीरा॥ पुनिहरिनंदवैनअसभाषे। तुमदोउविप्रसमरकसमाषे॥
कीजैजपतपकहुँवनजाई। धनुषधरवनहिंउचितदेखाई॥ यदुकुलकेरिसदाकीरीती। करहिंविप्रसोंनहिंविपरीती॥
काहेपापदेहुइतआई। समरछोडिद्विजजाहुपराई॥ सिखवहुकहूँशिशुनकहँजाई। जामेंजियहुजीविकापाई॥
वोलेविहँसिद्रोणकृपतवहीं। निजनिजधर्मकरबभलसवहीं॥पैहमअसब्राह्मणनहिंअहहीं॥जोलहिसमरधनुषनहिंगहहीं॥

दोहा–देखहुविक्रमविप्रको, समरमध्यअवआज। सुनहुअनोखेलाडिले, हेवीरनशिरताज॥

असकहिदोहुँदिशितेदोउवीरा। विपुलविशिखछोडेरणधीरा॥ जलधरउभयमनहुँजलधारा।तजैंधराधरपैइकवारा॥
दोहुँदिशितेंमनुइकतउमाँहीं। शलभझुंडइकसंगसमाँहीं॥ हरिसुतकेरथतेनभताई।वहुविधिविशिखनकीततिछाई॥
हरिनंदनस्यंदनतेंहिठोरा।लखिनपरचोजिमिशशिघनघोरा॥तहँसवभटअसवचनउचारे।द्रोणकृपहुहरिसुतकहँमारे॥
तहँप्रद्युम्नप्रवीरप्रचंडा। अद्भुतविक्रमकियोउदंडा॥ क्षणमहँकरितिलतिलशरवृंदा। कढिआयोजनुघनतेचंदा॥

दोहा–उभयओरतहँछोडिकै, उभयविशिखकीधार। उभयवीरकोछायलिय, रणबाँकुरोकुमार॥

दोहुँदिशितजतबरोबरबाना।फिरतनजानिपरतबलवाना॥जिमियुगमुखनलतेजलनिकसत।तिमिप्रद्युम्नविशिखबहुबरषत
सपदिद्रोणकृपबहुशरमारे।हरिसुतरजसमकरिमहिडारे॥पहुँचहिंनहिंशरहरिसुतपाहीं।निरखिलाघवीदोउसकुचाहीं॥
तहँपुनिकौतुककियोकुमारा। इकइकशरपैयुगशरमारा॥ लाखनबाणद्रोणकृपकेरे। दियलौटायगयेतिननेरे॥
निजबाणनकहँकाटनलागे। मानेअचरजदोउबडभागे॥ द्रोणतज्योतहँअस्त्रपिशाचा। छोडेहुकृपहुभुजंगनराचा॥

दोहा–एकओरधावतभये, बहुवेतालकराल। एकओरपावकवमत, धायेव्यालविशाल॥

तहँप्रद्युम्नकोपअतिकैकै। गरुडइंद्रअस्त्रनकोलैकै॥ एकहिंवारतज्योदोहुँओरा। दियोनाशिदोउअस्त्रनिघोरा॥
दोहुँदिशिद्वैहजारशरछाँड्यो।उभयवीरकहँमनुमहिगाड्यो॥पुनिरविआग्निअस्त्रकरलैकै।छोड्योद्रोणकृपहिंरथज्वैकै
लगतबाणजरिगेजगजाने। ध्वजतुरंगसारथिनदेखाने॥ कूदिद्रोणकृपहनोत्रिशूला। हरिसुतपकरिटोरिसमतूला॥
मायाबंधनदोहुँगलडारी। पकरचोदोहुँनकाहँहँकारी॥ विप्रजानितिनवधनहिंकीन्ह्यों॥निजविक्रमदेखायतहँदीन्ह्यों॥

दोहा–मायाकीरचिइकगुहा, जामेंअतिअँधियार। भीष्मद्रोणहुँकृपहुँको, डारेहुकृष्णकुमार॥
मातुलअरुनिजजनकको, बंधनलखिकरिकोप। अश्वत्थामाधनुषलै, धायोजीतनचोप॥

दूरिहितेअसवचनपुकारा। खडेरहोयदुनाथकुमारा॥ भीषमअरुपितुमातुलकाँहीं। करिवीरताजित्योतुमनाँहीं॥
करिमायाकोकपटकुमारा। सबअंगनमहँबंधनडारा॥ जोअतिहोहुसमरमहँगाढे। तोनहिंटरहुरहहुइतठाढे॥
जोकरतोनहिंअसअपराधा। तोदेतोनहितोहिजियबाधा॥ अवतोजियतजाननहिंपैहो। क्षणइकइतैठाढ़जोरैहो॥
असकहिमारतबाणप्रचंडा। धायोद्रोणसुवनबरिवंडा॥ टेरिकह्योतवकृष्णकुमारा। बालिसअहौविप्रकेवारा॥

दोहा–वृथानदोषलगाइये, रणमहँमोढिगआय। उमिरिभरेकीवीरता, काहेदेतगमाय॥

द्रोणसुवनतवकह्योप्रचारी। देखहुअववीरताहमारी॥ असकहिसातसहसशरमारे। कृष्णसुवनबीचहिंदलिडारे॥
द्रोणसुवनहरिसुतसारथिकहँ। मारचोपंचबाणतकिउरमहँ॥तेबाणनबीचहिंमहँकाटी।हरिसुततासुध्वजादियछाँटी॥
काटिधनुषतरकसदोउकाट्यो।फेरितुरंगनकाँहिंनिपाट्यो॥सारथिशिरविदारिरथचूरचो। द्वैशतबाणतासुतनुपूरचो॥
द्रोणपुत्रलैकठिनकृपाणा। खंडखंडकियद्वैशतबाणा॥ तासुकृपाणकाटिशरमाँहीं। कूदिकृष्णसुतसमरतहाँहीं॥

दोहा–द्रोणपुत्रकोधरिलियो, मायाबंधनबाँधि। मायाविरचितकंदरा, तामेंदीन्ह्योंधाँधि॥

लखितहँबंधनवीरनचारी। दुर्योधनअतिभयोदुखारी॥ पुनिअसमनमहँभूपविचारचो। बन्योनजोमैंइतैसिधारचो॥
छेतोभीष्मसीखजोमानी। होतिनतोदुखदइशामहानी॥ पुनिविचारकीन्ह्योंमनमाँहीं। भागबउचितसमरमहँनाँहीं॥

वृद्धनधरयोसुरारिकुमारा। अवैनआननलख्योहमारा॥ असगुनिसारथिसोंकहवानी। लैचलुरथजहँअरिदुखदानी॥
हैयदुवंशीकुरुकुलदासा। राखतरेहहमारिनिआसा॥ अबकछुधनलैखायमोटाई। लागेहमसोंकरनखोटाई॥
दोहा-असकहिकुरुपतिकोपकरि, स्यंदनचपलचलाय। हरिनंदनकोहनतभे, दशनराचढिगआय॥
सहजहिंतिनकोकाटिकुमारा। दुर्योधनसोंवचनउचारा॥ कुरुपतियुद्धकरननहिंजानहुँ। वृथावीरअपनेकहँमानहुँ॥
हस्तिननगरलौटितुमजाहू। जीवबचावनजोचितचाहू॥ विलसहुवनितनसंगविलासी। काहेकरवावहुनिजहाँसी॥
तबदुर्योधनकह्योरिसाई। वृद्धनजीतिगर्वअतिछाई॥ बालकवदसिनबातविचारी। जियेसदाकरिसेवहमारी॥
छोडिदईतैंकुलकीलाजू। ताकोफलपावैगोआजू॥ असकहिपुनिशतबाणचलायो। कृष्णकुँवरतबकाटिगिरायो॥
दोहा-कुरुपतिकीइकबाणते, ध्वजाकाटियदुवीर। सारथिकोशिरसूदिकै, हन्योतुरंगनतीर॥
भेतुरंगपदविनतहँचारों। पुनिबहुबाणनयानविदारों॥ कवचकाटिदीन्ह्योंशतबानै। कियोखंडत्रयकटिकिरवानै॥
रहेजेसबआयुधरथमाँहीं। तजननपायोनृपतिनकाँहीं॥ रथमहँधरेकटेइकसंगा। बेधेबाणसुयोधनअंगा॥
तजिदुर्योधनयुद्धउमंगा। शिरभरभूपरगिरयोविसंगा॥ जानिमृत्युतहँकुरुपतिकेरी। शल्यकरीवेगताघनेरी॥
यानधवायआशुतहँआई। कुरुपतिकोतिययानचढ़ाई॥ चल्योताहिलैतुरतपराई। हरिसुतशरतहँसहसचलाई॥
दोहा-शल्यसूतरथधनुकवच, औरपताकतुरंग। रणमहँतहँइकक्षणहिंमें, कणकणकियइकसंग॥
हरिकुमारपुनियानधवाई। शल्यहिंपकरिलियोढिगजाई॥कुरुपतिकोलियक्रीटउतारी॥विहँसिमंदअसगिराउचारी॥
शीशबचायदेतहौंतोरा। सुधिराखियोसदाबलमोरा॥ मैंनहिंपांडवहौंदुर्योधन। जिनकोदावदेहुतुमछनछन॥
सुनिकुरुनाथनीचकरिशीशा। भागिगयोजहँमगधमहीशा॥ मायागुहाशल्यकहँडारी। धायोपुनिप्रद्युम्नप्रचारी॥
उतैसुयोधनपरमदुखारी। सबराजनसोंगिराउचारी॥ तुम्हरेसबकेवलहमआये। तुम्हरेदेखतयहदुखपाये॥
दोहा-अहौनपुंसकसकलनृप, राखहुवृथाघमंड। वासुदेवकोबालइक, जीत्योबहुबरिबंड॥
सुनिकैदुर्योधनकेबैना। बोलिउठेसबनृपबलऐना॥ कतविषादकुरुपतितुमकरहू। नेसुकक्षणलौंधीरजधरहू॥
यहबालककीकेतिकबाता। हमकरिहैंसबयदुकुलघाता॥ असकहितहँमागधरणधीरा। विंदऔरअनुविंदप्रवीरा॥
धृष्टद्युम्नहूंद्रुपदविराटा। औरसुशर्मामालवराटा॥ दंतवक्ररुक्मीशिशुपाला। आहितअरुविदुरथमहिपाला॥
सोमदत्तभूरिश्रववीरा। तैसहिंबाहलीकरणधीरा॥ पुरुजितकाशिराजअरुभोजा। युधामन्युअरुनृपउत्तमोजा॥
दोहा-चेकितानअरुकुंतनृप, धृष्टकेतुअरुशैव। शकुनिदुशासनहूंतहाँ, दायककुमतिसदैव॥
तहाँजयद्रथरथचढिराजा। दुर्योधनशतबंधुसमाजा॥ एतेसुभटकोपअतिकीन्हें। प्रद्युम्नहिंजीतनमनदीन्हें॥
लैलैनिजअक्षौहिणिधाये। एकहिंबारसमिटिसबआये॥ सहसनगजमदगलितगरट्टा। करिदीन्हेंआगेतेहिंठट्टा॥
पुनिलाखनतुरंगतिनपाछे। बाँध्योठट्टसुभटयुतआछे॥ तिनपीछेपैदरहुकरोरे। मधिमधिस्यंदनकरिसबठोरे॥
यहिविधिमंडलकरिचहुँओरै। घेरिलियोरुक्मिणीकिशोरै॥ योजनचारिमाहँदलठाढ़ो।कृष्णसुवनतामधिरणगाढ़ो॥
दोहा-अस्त्रशस्त्रसबसुभटतहँ, कोपितह्वैइकबार। चहुँकिततेप्रद्युम्नपर, हरबरकियेप्रहार॥
जैसेश्रावणकेघनघोरा। वर्षहिंजललहिपवनझकोरा॥ ऐसहिंशस्त्रवृष्टिभैभारी। गगनक्षमाछाईअँधियारी॥
रुक्मिणिसुतरथतेनभताई। विविधभाँतिअस्त्रावलिछाई॥ देखिनपरचोकुँवरकोयाना।मनहुँमेघमहँभानुछिपाना॥
हाहाकारहिंकरिअसुरारी। यदुपतिसुतकीमीचविचारी॥ जानिलियोभूपहुअसमनमें।डारचोमारियाहियहिछनमें॥
विजयबाजबाजकनबजाये। बंदीगणअनगनगुणगाये॥ अतिप्रमुदितभेसबमहिपाला।विजयविचारिलईतेहिंकाला॥
दोहा-तहाँअनोखोअतिप्रबल, वीरधनुर्द्धरधीर। यदुपतिकोप्रियलाडिलो, कियविक्रमगंभीर॥
तजीशरासनतेशरधारा। मनहुँप्रलयघनबूंदअपारा॥ शतसहस्रलाखहुकरोरन। चलेझुंडशरकेचहुँओरन॥
सबशस्त्रनकोकाटिकुमारा। कढ़िआयोशरतजतअपारा॥ जैसेप्रथमधूमछपिआगी।कढ़िआवतपुनिज्वालहिंजागी॥
कोटिनआयुधसुभटनकेरे। क्षणमहँतिलतिलकियेघनेरे॥ देखिपरेदिनकरकछुकाला। पुनिछिपायगेसायकजाला॥

नभमहँछाइरहेशरवृंदा । रोकिगईगतिदिनकरचंदा ॥ देवविमाननलैपुनिभागे । ताराटूटिपरनमहिलागे ॥

दोहा–वारिदव्योमहिंछोडिकै, द्रुतहिंदुरानदिशान। पवनहुँपरमप्रचंडतहँ, प्रविशिनाकियोपयान ॥

बाणवरेजविश्वमहँछायो। नागवेलिदलनजरिनआयो ॥ सातहुँसुरपुरसायकछाये। सुरनप्रलयभ्रममनउपजाये ॥ सातहुँसिंधुनमहँशरपरहीं । वारवारजलनभउच्छरहीं ॥ कटेजाहिंजलजीवअनंता। नीरगँभीरलुकाहिंतुरंता ॥ सायकमेरुशृंगलगितिड़कैं।झरनासलिलचहूँदिशिछिड़कैं॥उदधिअकाशअवनिअरुआशा।सँगसिरहेशरनहिंओकाशा॥ कृष्णसुवनअसजानिपरतहै। रोमनरोमनशरनतजतहै ॥ बाजिनसारथिअंगनितेरे । जनुनिकसहिंनाराचघनेरे ॥

दोहा–देखिपरतनहिंकुँवरको, रथरणमहँतेहिंठोर। बाणधारचहुँओरते, धावतिहैंचहुँओर ॥

कटहिंकुंभकेतेकरिकेरे । विनादंतविनशुंडघनेरे ॥ हौदासंयुतसुभटगिराहीं । महिआवतबहुखंडलखाहीं ॥ केतेभागतनागचिकारत । सुभटहुआरतवचनपुकारत ॥ केतेमहिमरिगिरेकरिंदा। मानहुँप्रगटढहेगिरिवृंदा ॥ इकइकशरमहँशतशतफूटैं। बचैंतेभाजतनिजदलकूटैं ॥ पेलहिंपीलपालगजकाहीं । चीतकारकरिपीलिपराहीं ॥ फूटिगयोगजमंडलकैसे । प्रबलपवनवनमंडलजैसे ॥ निजदलदलतद्विरदद्रुतदोरी। दूरिगयेकरिकरिवरजोरी ॥

दोहा–बाँध्योयोजनएकको, मंडलकृष्णकुमार। धावतरथनहिंलखिपरत, देखिपरतिशरधार ॥

मनहुँअलातचक्रअतिभावैं। चहुँदिशिअग्निपुंजझहरावैं ॥ रथमंडलाकारपरधावत। धनुमंडलाकारछविछावत ॥ कटहिंतुरंगनअंगअनंता। महिकटिगिरहिंसवारतुरंता ॥ लाखनइकबारहिंजुरिधावैं । शरनवाततिलतिलह्वैजावैं ॥ जहँलोंजायपरायप्रवीरा । तहँलोंलागेहरिसुततीरा ॥ कटहिंकवचधनुचर्मकृपाना । मुद्गरतोमरमूसलनाना ॥ धावहिंसुभटसमिटिचहुँओरा। करहिंजोरसोंघोरहिंशोरा ॥ मारुमारुधरुधरुधरुधाई। अबनहिंकृष्णकुँवरबाचिजाई॥

दोहा–लाखनकोटिनसुभटको, धावतआवतझुंड। लाखनकोटिनबाणलगि, कटहिंरुंडअरुमुंड ॥

जेआयुधलैहाथउठावैं । आयुधसहितभुजाकटिजावैं ॥ देखहिंजेभटआँखिउठाई । तिनकेलगहिंबाणदृगजाई ॥ मनुअवनीतेअंबरतेरे। निकसहिंभरभरबाणघनेरे ॥ जानिपरतअसनहिंकोहुकाहीं । बाणधारआवतिकेहिंधाहीं ॥ बाणनकीवरषाचहुँओरा । होतिनिरंतरनृपतेहिंठोरा ॥ लागतविशिखप्रचंडतहाँहीं । रुंडमुंडकेझुंडउडाहीं ॥ बाढिहटिसकहिनकोउसंग्रामा। भयभयगिरहिंवीरतेहिंठामा॥जबकोउसमरमाहिंधनुधारी।बाणधारइकदेहिंविदारी ॥

दोहा–तबताकेपीछेलखैं, आवतत्रयशरधार। रथीसारथीयानयुत, होहिंकतलइकबार ॥

तहँशोणितसरिताबहुबहहीं। योगिनियूहनृत्यबहुकरहीं ॥ काककंकगीधनगणधावैं। आमिषभखिअतिक्षुधाबुझावैं॥ भईकीचशोणितपलकेरी । समरभूमिभैघोरघनेरी ॥ किलकिलाहिंकालीविकराली। लैकरमेंखप्परकरवाली ॥ आयेतहाँभयंकरभूता । गेअघायपलखायअकूता ॥ लागिगयेतहँलोथिपहारा । मनहुँत्रिनेत्रत्रिनेत्रउवारा ॥ दिनकरतेजमंदपरिगयऊ। स्वस्तिस्वस्तिअसमुनिगणकहेऊ ॥ रुधिरधारसागरमहँजाई।सागरकोदियशोणबनाई॥

दोहा–द्वैफाँकेह्वैजाततनु, स्यंदनचाकेलाग। तुरँगटापतेफूटिगे, केतनशीशअदाग ॥

रह्योनकोउअसभटदलमाँहीं । जाकेबाणलग्योतनुनाहीं ॥ तहाँकृष्णनंदनबलवारो। कीन्ह्योरथकोवेगअपारो ॥ ताकिताकिरथबाणतजतहैं । छैनजाततबवीरलजतहैं ॥ यहआयोयहआयोवीरा। असपुकारिबोलहिंरणधीरा ॥ पैनहिंदेखिपरतहैकाहू । जाकेनिकटजायनहिंताहू ॥ रणमहँवीरनवीरनआगै । हरिसुतशरमारततहँबागै ॥ जानिपरतअसदलभटजेते । हरिकुमारप्रगटेअबतेते ॥ जोजिहिंकरतेयुद्धजहाँहै। तेहिंतहँराख्योरोकितहाँहै ॥

दोहा–एकहिंहरिसुतसोंबचब, दुर्घटरह्योदेखात। अबप्रगटेबहुकिमिबचब, बोलहिंयहसबबात ॥

हाहाकारकरततेहिंठोरा । भाजिचलेसबभटचहुँओरा ॥ आपुसमहँअससबबतराहीं । बन्योनजोआयेसँगमाँहीं ॥ कोउकहकुरुपतिकरीननीकी। मान्योकहानकीन्हीजीकी ॥ कृष्णकुँवरसँगलायलरायो। सबसुभटनकोगर्वगँवायो॥ महाकालहैकृष्णकुमारा। यासोंअबनहिंअहैउबारा ॥ असकहिभयभरिभागतजाहीं। तदपिबाणतैंबाँचतनाहीं ॥ सन्मुखहूँपीठहुशरलागैं । थलथलशरधाराबहुबागैं ॥ जिमिघनपूरबपौनहिंपावैं । दैझकोरजलकीझरिलावैं ॥

दोहा-शरवर्षातिमिहोततहँ, वचतनकोऊभागि। हायहायरवह्वैरह्यो, सकतशस्त्रनहिंत्यागि॥
कृष्णकुँवरकोयुद्धनिहारी। भयोनिकुंभहुँचकितभारी॥ देखनलाग्योसमरतमासा। भूलिगयोनिजयुद्धविलासा॥
लखिप्रद्युम्नपराक्रमघोरा। हरिसोंकहरोहिणीकिशोरा॥ देखेहुकृष्णपुत्ररणआजू। भिरच्योएकवहुवीरसमाजू॥
जिमिगजगणहिंसिंहहिंसमुहाँहीं। सोसुतलखितिमिसुभटपराँहीं॥तवयदुपतिमोदितमुसकाई।वलसोंबोलेमंदलजाई॥
वालकतेपाल्योजेहिंआपू। कसनहोयअसप्रगटप्रतापू॥ कृपासहितजेहिंआपुसिखावैं। तासुऔरसमताकिमिपावैं॥
दोहा-सोईहैअतिशयबली, सोईहैमतिमान। जापैतुमकीजतकृपा, तासमजगनहिंआन॥
द्वैघटिकामहँकुरुपतिसैना। मारिकृष्णसुतकियोअचैना॥ बच्योनकोऊअसतेहिंजंगा। जाकेकटिनगयेसबअंगा॥
तहँकुरुपतिलखिदलसंहारा। सबभूपनसोंवैनउचारा॥ धावहुरेधावहुबलवारा। बचिनजायअबकृष्णकुमारा॥
तहाँचढ्योभगदत्तकरिंदा। चल्योधसावतधरणिगिरिंदा॥कह्योमहाउतसोंअसबानी। रथतोरायडारहुअभिमानी॥
पेल्योपीलवानतहँपीलै। जाकोरह्योमेरुसमडीलै॥ सिंधुरखचवशुंडफटकारत। मानहुँमहिकेशैलउखारत॥
दोहा-निकटआयप्रद्युम्नके, भूपतिहनीत्रिशूल। तीनिशरनसोंकाटिदिय, हरिसुततृणकेतूल॥
पुनियदुनंदननंदनवीरा। कियोवेगरथकोगंभीरा॥ उड़िरथनागशीशमहँदीशा। चाकाचप्योमहाउतशीशा॥
शिरझिझिकारतकरतचिकारा।भागिचल्योसिंधुरबलवारा॥पकरयोभगदत्तहिंहरिनंदन।डारिपगनमहँमायाबंधन॥
रथउड़िपुनिमहिपरयोनरेशा। प्राग्जोतिषपुरगयोगजेशा॥ तहाँद्रुपदअरुभूपविराटा। आहितअरुमालवकोराटा॥
विदुरथदंतवक्रमगधेशा। विंदऔरअनुविंदनरेशा॥ नीलनरबदातटकोवासी। कुंतिभोजअरुभूपतिकासी॥
दोहा-युधामन्युउतमोजहूँ, औरसुशर्मावीर। हरिसुतकोचहुँओरते, मारनलागेतीर॥
कोउशतकोउशतपंचपँवारा। कोउसहस्रकोउदशैहजारा॥तिनकेबाणकाटियदुवीरा। मारिशरनकीन्ह्योंअतिपीरा॥
पुनिदशलक्षबाणइकबारा। तज्योनृपनपैकृष्णकुमारा॥सबकेसारथिस्यंदनकाट्यो।ध्वजाधनुषकवचहुँअसिछाट्यो॥
तजीफेरिमायाकीफाँसी। सोलीन्ह्योंसबहिनकहँगाँसी॥ सबकोपकरिकुमारमुरारी। डारिदियोतेहिंगुहामँझारी॥
तहँउत्तरअरुधृष्टद्युम्ना। आयेनिकटआशुप्रद्युम्ना॥ तेनहिंबाणचलावनपाये। बीचहिंबाँधिगुहामहँनाये॥
दोहा-तहँदुश्शासनशकुनिद्वै, औरसुयोधनवीर। सबभाइनकोसंगलै, तजेआयबहुतीर॥
कृष्णकुँवरबोलेअसबानी। अतिनिर्बलतिनकोअनुमानी॥ तुमकोहमनहिंकरधनुलैहैं। बाँधिबिनाश्रमगुहापठैहैं॥
असकहिरथतजिअंबरजाई। कूद्योशकुनिस्यंदनहिंआई॥शकुनिकेशगहिताहिवसेटत। गयोदुशासनरथहिंदपेटत॥
तासुकेशगहिएकहिंसाथा। बाँध्योउभैवीरकोमाथा॥ मायागुहाडारितिनदीन्ह्यों। सबबंधुनपुनिबंधनकीन्ह्यों॥
तिनहुँनकहँपुनिगुहामँझारी। डारिदियोरणमध्यप्रचारी॥पुनिकुरुपतिकेसन्मुखधायो। आवतसोलखिपेलिपरायो॥
दोहा-पीछ्धायोकृष्णसुत, कह्योनपैहैजान। कुरुकुलकेतुमनाथहो, बाढ्योगर्वमहान॥
असकहिदौरिसुयोधनकाँहीं। पकरिकेशधरिलियोतहाँहीं॥तरफरानबहुकुरुकुलराई। छूटनकीकियकोटिउपाई॥
छूटिसक्योनहिंहरिसुतकरते। उतरयोतेहिंलैतेहिंरथपरते॥इककरग्रीवएककरपायन।कृष्णकुमारउठायसुभायन॥
मायागुहाडारिदियजाई। बाँध्योनाहिंजानिकुरुराई॥ पुनिरथचढ़ितहँकृष्णकुमारा। लग्योनिहारनसमरमँझारा॥
कोअसरह्योवीरइतबाँकी। मायागुहागयोनहिंढाँकी॥ तहँदेख्योरुक्मीशिशुपालै।निजनिजसैन्यसहिततेहिंकालै॥
दोहा-बोल्योकृष्णकुमारतहँ, शिशुपालहिंकहँटेरि। चेदिपनिजगृहजाइये, अबनकरहुरणफेरि॥
तुमहुँभवनकहँगमनहुमामा। अबतुमवृथाखड़ेसंग्रामा॥ हमबालककैंआपसयाने। उचितनहोतयुद्धअबठाने॥
आपुकृपाशत्रुनकहँजीते। समरमध्यमेंरह्योअभीते॥ यदुवंशिननाशनशठआये। तातेनिजकर्मनिफलपाये॥
चेदिपरुक्मसुनतअसबानी। बोलेवचनमहाअभिमानी॥ रेगोपालबालमतिमंदा। इतनेहिंमेंदृगभयेबेलंदा॥
नृपतिविचारेदीननकाँहीं। जीतिगर्वबाढ्योमनमाँहीं॥ हमनहिंकियबलसमरविलासा। लखंतरहेसबकेरतमासा॥
दोहा-जाहुद्वारकैभागितुम, अपनोजीवबचाय। नातोतोकोंपितुसहित, अबहिंमारिहौंआय॥

रुक्मऔरचेदिपकेवैना। सुनिबोल्योहरिसुतबलऐना॥ इमतोजानिसयानबताये । तुमतोअतिघमंडमहँछाये॥
प्रथममारियेहमकहँआई। पुनिपितुरामहुँमारहुजाई॥ हैसुधिनहिंकुंडिनपुरकेरी। कीन्हीदशाजौनपितुतेरी॥
जानेअहौवीरतुमदोऊ। तुमसमाननिर्लज्जनकोऊ॥ सुनतवचनहरिसुतकेवीरा। धायेदोउमारतबहुतीरा॥
आवतनिरखिरुक्मशिशुपाले। छोड़तवाणजालविकराले॥शरअपारतहँतज्योकुमारा। मानहुँमघामेघजलधारा॥

दोहा–तिलतिलकरितिनशरनको, धायोसन्मुखवीर। जैसेबाजलवानपै, धावतवेगगँभीर॥ १३॥

दोऊहैंयद्यपिबलवाना। मारचोकृष्णसुतहिंबहुबाना॥ तदपिरुक्योनहिंस्यंदनताँको। कृष्णकुमारयुद्धमहँबाँको॥
हरिसुतलखिआवतभयपागी। चेदिपरुक्मसैन्यसबभागी॥ बढ़िदोऊभटसायकमारे। कृष्णकुमारकाटिसबडारे॥
दोहुँनधनुषदल्योइकबारा। दोहुँनकेसारथीसँहारा॥तबदोऊलियशूलविशाला। अतिकरालनिकसतिजेहिंज्वाला॥
शूलचलावनवीरनपाये। करमहँकाटिप्रद्युम्नगिराये॥ हरिसुतततजीनागकीफाँसी। बाँधिलियोदोहुँनबलरासी॥

दोहा–तहाँरुक्मशिशुपालको, रथतेआशुउतारि। पगमेंबंधनबाँधिकै, दियोगुहामेंडारि॥ १४॥

रह्योनकोऊभटतेहिंठामा। देइजोहरिपुत्रहिंसंग्रामा॥ चारिहुँओरनिहारनलाग्यो। कृष्णकुँवरअतिकोपहिंपाग्यो॥
लख्योदूरकर्णहिंरणधीरा। गुहाद्वारमहँठाढ़ोवीरा॥ तबअनिरुद्धहिंवेगिबोलाई। मायाकंदरद्वारटिकाई॥
कह्योवचनऐसेबलधामैं। कौरवकैसेहुँकढ़ननपामैं॥ रहियोखड़ेधनुधरधीरा। मारेहुजोआवैइतवीरा॥
तहाँधनुधरध्रुवअनिरुद्धा। पितुपदवंदिखड़ोभोक्रुद्धा॥ गुहाद्वारअनिरुद्धनिहारी। कौरवछूटनशंकनिवारी॥

दोहा–सारथिसोंबोल्योबहुरि, कोपितकृष्णकिशोर। लैचलुचपलचलायरथ, खड़ोकर्णजेहिंओर॥

यहअपनेकहँजानतसूता। मोसमऔरनउपज्योपूता॥ कायरकुटिलकुमतिअतिकूरा। पापकरनमहँअतिशयपूरा॥
कुरुपतिकोकुमंत्रयहदेतो। वृद्धनकियोअनादरकेतो॥ हैकुमंत्रकोयेहीकारन। जोदुर्योधनआयोमारन॥
अपनोभुजअरुधनुषनिहारी। सबकहँलीन्ह्योंतुच्छविचारी॥ तातेयाकोशरनचलैहौं। दौरिकेशधरियहिंधरिलैहौं॥
सारथिसुनतरथीकेवैना। रथलैचल्योकरनपैपैना॥ यदुनंदननंदनलखिआवत। बोल्योकर्णनकछुभयलावत॥

दोहा–आवहुआवहुकृष्णसुत, सन्मुखमेरेधाय। करुअपनोविक्रमसकल, अबनअनततूँजाय॥

वाणनशीशकाटिमैंलैहौं। उऋणसकलसुभटनसोंह्वैहौं॥कर्णवचनसुनियदुपतिनंदन।दौरचोकूदिछोडिनिजस्यंदन॥
मायापाशलियेइकहाथा। धायोधरनकर्णकरमाथा॥ तहाँकर्णकोदंडटँकोरा। मारचोशरसमूहअतिघोरा॥
हरिसुतढिगलोंअरुनिजपाँहीं। बाँधिदियोशरसेतुतहाँहीं॥ तहाँकृष्णनंदनरणधीरा। अतिअद्भुतविक्रमीप्रवीरा॥
शरनबीचह्वैशरनबचावत। तरुनबीचजिमिमारुतधावत॥परचोनदेखिवीरमहिमाँहीं।दमक्योदामिनिसारिसतहाँहीं॥

दोहा–कीउतकीद्रुतकर्णढिग, परचोदेखिहरिनंद। गयोचोंधभोचखनमें, कर्णधनुषभोबंद॥

सूतधूततहँखड़ोरहोजकि।सक्योनप्रद्युम्नहिंरणमहँताकि।।हरिसुतकियउरचरणप्रहारा।गिरचोकर्णमहिखायपछारा॥
उठनलग्योतहँसमरतुरंतै। होतजानअपनोजियअंतै॥ तहाँकृष्णसुतकेशपकरिकै। बाँध्योकरअरुचरणजकरिकै॥
विनप्रयासकर्णहिंधनुधारी। डारचोमायागुहामँझारी॥ रहिनगयोकोऊधनुधारी। करैजोहरिसुतसोंरणरारी॥
पुनिचढिरथमहँकृष्णकुमारा। रामकृष्णकेनिकटसिधारा॥ आवतनिरखिपुत्रबलरामा।धायेरथतजिआनँदधामा॥

दोहा–मंदमंदपीछेतिन्हें, चलेकृष्णमुसुकात। मनमहँऐसेगुनहिंप्रभु, यहिसमकोउनदेखात॥

आवतपितुप्रद्युम्ननिहारी। रथतेउतरिपरचोधनुधारी॥ तहाँदौरिद्रुतहीबलराई। हरिसुतकहँलियअंकउठाई॥
शीशसूँघिउरलियोलगाई। आँखिनआनँदअम्बुबहाई॥ पुनिप्रद्युम्नचरणशिरनायो।अतिआदरगुनिअतिसकुचायो॥
आशिषअमितहरषिदियसोऊ।चिरंजीवप्यारेसुतहोऊ॥निजपटपोंछितासुमुखरामा।बिथुरीअलकसम्हारिललामा॥
पीठिपाणिफेरतहरषाई। बोलेवचनविहँसिबलराई॥ तोरेबलहमडरहिंनकाहू। छोरिधरेह्वैसुचितसनाहू॥

दोहा–जाकेतुमसोपुत्रहै, सोईजगबड़भाग॥ सोईअहैअजातअरि, ताकोयशजगजाग॥

पुनिप्रद्युम्नकृष्णपदपाँहीं। वंदनकीन्ह्योंपरिमहिमाँहीं॥ मंदमंदआशिषहरिदीनी। कह्योनकछुबलललाजहिंभीनी॥

पुनिप्रद्युम्नसोंकहबलराई । यदुवंशिनअबलेहुछोराई ॥ तबप्रद्युम्नवंदिसुखपाई । षटपुरगुहाद्वारमहँजाई ॥
सबयदुवंशिनबंधनछोरी । लायोकृष्णनिकटद्रुतदौरी ॥ बंधनलखिकौरवदलकेरो । अरुयदुवंशिनमोदघनेरो ॥
भागेजेकछुदानवबाँचे । युद्धकरनकोनहिंमनराँचे ॥ तिनकोरोकिनिकुंभसुरारी । कोपितह्वैअसगिराउचारी ॥

दोहा-जोभागतहैंसमरते, जीवनहेतुडेराय । सोलहिजगमेंअतिअयश, अवाशिनरककहँजाय ॥

जोजीतिहोयुद्धमहँवीरा । तोपैहोजगमोदगँभीरा ॥ जोमरिजैहोसंगरमाँहीं । तौवसिहोतुमस्वर्गसदाँहीं ॥
भागिदेखैहोकेहिंमुखजाई । नारिनसोंकिमिअइबताई ॥ सुनिकुंभजकीदानवबानी । कोपितफिरेसकलअभिमानी ॥
आवतनिरखिसुरारिनकाँहीं । रामकृष्णप्रद्युम्नतहाँहीं ॥ सात्यकिअरुउद्धवरणधीरा । गदअक्रूरकृतवर्मप्रवीरा ॥
भीमसेनअरुधर्मनरेशा । नकुलऔरसहदेवसुवेशा ॥ तेऊमखशालातेआये । अर्जुनहींकोतहाँटिकाये ॥

दोहा-असुरनपैछोडेंसबै, बाणजालततकाल । रुंडमुंडबहुखंडभे, भागेदैत्यविहाल ॥

अरिदलजयनिजनिरखिपराजै । भगतदेखिआसुरीसमाजै ॥ तहाँनिकुंभवीरबलवाना । उडिअकाशभोअंतर्धाना ॥
रहेजयंतप्रवरनभमाँहीं । तेशरमारेंताहितहाँहीं ॥ तबनिकुंभकरिकोपकराला । दंतनदंशिअधरततकाला ॥
प्रवरहिंहन्योपरिघइकभारी । गिरयोआयसोमहीमँझारी॥शचीकुँवरतेहिंदौरिउठायो । मूर्च्छिनिवारिजानबैठायो ॥
हन्योकृपाणनिकुंभहिंधाई । पैदानवहिंव्यथानहिंआई ॥ हन्योजयंतहिंपरिघसुरारी । शोणितधारबहीतनुभारी ॥

दोहा-काँपनलाग्योशक्रसुत, रहीनसुधितनुकेरि । तबनिकुंभमनमेंकियो, यहविचारनृपफेरि ॥

येनिर्बलदेवताविचारे । इनकोकहासमरमहँमारे ॥ असविचारिह्वैअंतर्धाना । रामकृष्णढिगकियोपयाना ॥
तहँजयंतपुनिप्रवरउठाई । वासवनिकटगयोसुखपाई ॥ वासवदेखिसुतहिंसुखमान्यो । बारबारअसवचनबखान्यो ॥
असुरहिंखड्गमारिसुतमेरो।लायोप्रवरहिंबलीघनेरो॥असकहिमुदितसराहनलाग्यो।मिल्योसुतहिंप्रवरहिंसुखपाग्यो॥
बजवायोतहँविजयनिशाना।मानिजयंतहिंअतिबलवाना॥इतनिकुंभमखशालहिंआयो।करिअतिशोरघोरनभछायो॥

दोहा-तबगोविंदचढिकैगरुड, सात्यकिबलहिंचढ़ाय । लैयदुसेनासंगमें, गेमखशालहिधाय ॥

तहँअर्जुनअरुयदुपतिरामै । सात्यकिसांबभीमअरुकामै ॥ धर्मनृपहिंनकुलहुसहदेवै । औरहुवीररहेबहुजेवै ॥
तिनकोनिरखिनिकुंभमहाना । मायाकरिभोअंतर्धाना ॥ तबसवशंकितभेतेहिंकाला । कहाकरतयहदैत्यउताला ॥
तबप्रद्युम्नहिंकहबलरामा । मायामेटिदेहुबलधामा ॥ हरिसुततहाँशंकरीमाया । करितेहिंमायामोहरसाया ॥
समरमध्यतहँपरमप्रकाशी । देखिपरयोनिकुंभबलराशी॥धायोमनहुँशिखरकैलासा । लीलनचहतमनहुँदशआसा॥

दोहा-तहाँपुकारयोबारबहु, खड़ोरहैगोपाल । आवतनिरखिनिकुंभको, कुपितपांडुकोलाल ॥

द्रुतहिंचापगांडीवचढ़ायो । दानवपैबहुबाणचलायो ॥ अर्जुनबाणदैत्यतनुपाँहीं । लगिमुरिटूटिगिरेमहिमाँहीं ॥
गडेनजबदानवतनुबाना । तबपारथभोदुखितमहाना ॥ यदुपतिसोंबोलेकरजोरी । नाथसुनोविनतीअबमोरी ॥
काहभयोयहमोहिंबतावो । आशुहिंसंशयसकलमिटावो ॥ शैलविदारकसायकमेरे । गडेनअंगहिंदानवकेरे ॥
मैंतोअबनहिंबाणचलैहों । जगमेंमुखअबकौनदेखैहों ॥ तबयदुपतिबोलेमुसकाई । होउअधीरनशंकालाई ॥

दोहा-याकीहैविस्तरकथा, देहैंफेरिसुनाय । अबविलंबकोकामनहिं, मारहुशरसमुदाय ॥

तबपारथछोडेशरजाला । मूँदिगयोदानवविकराला ॥ दानवतहाँसमरतेभाग्यो । षटपुरगुहाघुस्योभयपाग्यो ॥
तबबलसोंबोलेयदुराई । गयोभागिदानवदुखदाई ॥ आपप्रतापविजयहमपाई । द्रुतहिंमातुपितुलियेछोडाई ॥
अबकुरुवंशिनदेहुछोराई । पावहिंसुखनिजनिजगृहजाई ॥ इनमहँबडेबडेधनुधारी । तेलज्जितह्वैरहेदुखारी ॥
यदुपतिबैनसुनतबलराई । करिउरमेंतबदयामहाई ॥ कृष्णकुमारहिंवेगिबोलाई । मंदमंदअसकह्योबुझाई ॥

दोहा-छोडिदेहुसबनृपनकहँ, निजनिजगृहअबजाँहिं । यहसुधिभूलिकबहूँनहिं, तुमसेलरिहैंनाँहिं ॥

तबरुक्मिणिकेनंदनबोले । मैंतोसबहिंदेतहौंखोले ॥ पैनिर्लज्जकुमतिकुरुवंशी । मानतअपनेकहँअरिध्वंसी ॥
इततेछूटिभवनमहँजाई । पुनिबताइहैंबातबढाई ॥ तातेयदुनगरीलैचलिये । अहंकारइनकोसबदलिये ॥

अबनहिंइनकोछोरहुताता । मेरीकहीमानियेंबाता ॥ इनपांडवसोंवैरबढ़ाई । करिहैंफेरिविशेषलडाई ॥
तातेजोपांडवभलआड़ौ । तोइनकेबंधननहिंछाड़ौ ॥ तबबलरामकह्योमुसकाई । अहैबातसतितैंजोगाई ॥

दोहा—अबहींकायेकरिलिये, फेरिकरेंगेकाह । तातेसबकोछोड़िबो, हैसबभाँतिसलाह ॥

सुनतरामकेवचनसुहाये । हरिकुमारअतिआनँदछाये ॥ सबकेबंधनछोरिकुमारा । सबकोलैसँगएकहिंबारा ॥
रामकृष्णकेनिकटसिधारा । जहँयदुवंशीखड़ेअपारा ॥ तेलज्जितनीचेमुखकीने । कोहुकीदीठिदीठिनहिंदीने ॥
खड़ेभयेहरिनिकटविचारत । मरिबोभलोनवनतनिहारत ॥ रामकृष्णतिनभूपनकाँहीं । गजवाजीरथदियोतहाँहीं ॥
यथायोग्यअभिवंदनकीन्ह्यों । भवनगवनकोशासनदीन्ह्यों ॥ तेलज्जितवीरतागँवाई । शोचतचलेसकलनृपराई ॥

दोहा—हरिकुमारतहँकहतभो, कुरुवंशिनकोटेरि । सदाराखियेचित्तमहँ, सुधियदुवंशिनकेरि ॥

निजनिजधामगयेजबभूपा । तबयदुपतिअरुरामअनूपा ॥ प्रविशेषटपुरगुहामँझारी । रहीजहाँअतिशयअँधियारी ॥
तहँनिकुंभकोपितपुनिधाई । मारचोपरिघशीशयदुराई ॥ कौमोदकीगदाअतिभारी । हरिहुहनीदानवहिंप्रचारी ॥
दोउमाहिमहाँगिरिसमाना । कछुविलम्बलगिरह्योनभाना ॥ हरिकहँमूर्च्छिततहाँनिहारी । यदुपांडवभेपरमदुखारी ॥
स्वस्तिमनावनलगेमुनीशा । जीतहिंदानवकहँजगदीशा ॥ उठेतुरंतकृष्णतेहिंकाला । उतेउठचोदानवविकराला ॥

दोहा—उद्धयुद्धअतिक्रुद्धह्वै, शुद्धविजयकेहेतु । बहुप्रकारकीन्हेंदोऊ, करिकरिमारननेतु ॥

तहँपुनिभैअकाशकीवाणी । हनहुचक्रतेशारँगपाणी ॥ यदुपतितुरतहिंचक्रचलायो । षटपुरगुहाभासअतिछायो ॥
लगतसुदर्शनरवअतिभयऊ । शीशनिकुंभकेरकटिगयऊ ॥ गिरचोरुंडधरणीमहँताको । वज्रहुँलगेकस्योनहिंजाको ॥
निरखिनिकुंभमरणअसुरारी । दियेदुंदुभीदिविमहँभारी ॥ लगेसुमनवर्षनचहुँओरा । जयहरिजयहरिकीन्हेंशोरा ॥
द्वैशतरहींनिकुंभकुमारी । यदुवंशिनकहँदियोमुरारी ॥ षटहजाररथसहिततुरंगा । मणिगणबहुविचित्रबहुरंगा ॥

दोहा—यदुपतिदीन्ह्योंपांडवन, आदरसहितबुलाय । पुनिषटपुरमहँप्रवरकहँ, दीन्ह्योंनाथबसाय ॥
ब्रह्मदत्तकीयज्ञकहँ, पूर्णकरीयदुनाथ । यदुपुरकोगमनतभये, पितामातुदलसाथ ॥
द्वारकेशदैदुंदुभी, द्रुतहिंद्वारकाआय । उग्रसेनकोकरतभे, अभिवंदनशिरनाय ॥
यदुनगरीमहँवसतभे, यदुवंशिनसुखदेत । यदुकुलमर्यादाधरे, श्रीयदुकुलकेकेत ॥
षटपुरकीसुनिकैविजय, तहाँपरीक्षितराज । शुकसोंबोलेजोरिकर, मध्यमुनीनसमाज ॥

राजोवाच ।

यदुवंशीशत्रुनकेहिंभाती । कन्यादईरुक्मअरिघाती ॥ तासुदुदेशाकरीमुकुंदा । तातेरुक्मतहाँमतिमंदा ॥
चाहतरह्योकृष्णकोघाता । दाउँलगावतरह्योअघाता ॥ रुक्मीअरुपुनिकृष्णहिंकेरो । केहिहितभोसंबंधघनेरो ॥
सोवरणहुमोसोंमुनिराई । देहुविवाहहिंकथासुनाई ॥ भयोजोहैअरुहोवनवारो । जानोहैशुकदेवतिहारो ॥
दूरनेरअरुअंतरजोऊ । जानोहैतुम्हारसबसोऊ ॥ सुनिकुरुपतिकीमंजुलवाणी । सुमिरिकह्योशुकशारँगपाणी ॥ २० ॥ २१ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा—रुक्मवतीजोरुक्मकी, सुतास्वयम्वरमाहँ । रुक्मिणिकोनंदनहरी, जीतिसकलनरनाहँ ॥ २२ ॥

रुक्महुनिजभगिनीप्रियकारण । भयोमुदितनाहिंकियोनिवारण ॥ २३ ॥

दोहा—रुक्मिणिपुत्रीचारुमती, कृतवर्मासुतताहि । महाबलीदीर्घाक्षकहँ, परमउछाहविवाहि ॥ २४ ॥

रुक्मीकेसुतकेरिकुमारी । नामरोचनाअतिसुकुमारी ॥ रुक्मतहाँरुक्मिणिप्रियकाजा । करनचह्योअनिरुधकोकाजा ॥
रुक्मयदपिअनुचितयहजान्यो । तदपिरुक्मिणीमोहभुलान्यो ॥ २५ ॥ यदुपतिपहँपत्रिकापठाई । आपव्याहकीसाजुसजाई ।
रुक्मपत्रसुनिहरिहरषाने । अनिरुद्धव्याहकरनमनआने ॥ श्रीबलरामनिकटपुनिजाई । दियोसकलवृत्तांतसुनाई ॥
रामहुतहँसंवतकरिदीने । नातीव्याहआनँदरसभीने ॥

दोहा—तहँयदुपतिशासनदियो, साजनतुरतबरात । नातीव्याहउछाहको, आनँदउरनसमात ॥

तहँरुक्मनिजपत्रपठाई । रुक्मिणिकोनिजभवनबोलाई ॥ उतैबरातसकलविधिसाजे । बजवावतभेअनगनबाजे ॥
रामकृष्णअरुसांबकुमारा । औरप्रद्युम्नमहाछविवारा ॥ सात्यकिउद्धवआदिकवीरा । औरहुयदुवंशीरणधीरा ॥
कोउगजचढिकोउवाजिनस्यंदन।कोऊपालकीचढेअनंदन॥आयेसबयदुपतिकेद्वारा।साजिसाजिसबभाँतिसिंगारा ॥
सजीबरातजानियदुराई । अनिरुधकोपरछनकरवाई ॥ रत्नजड़ितपालकीचढाई । सुदिनमुहूरतसकलशुधाई ॥

दोहा-चलेभोजकटनगरको, सुखितकृष्णबलराम । दूलहकरिआगूलिये, साजिबरातललाम ॥ २६ ॥

चारिदिवसमगडारतडेरे । गयेभोजकटनगरहिंनेरे ॥ रुक्मीसुनतबरातअवाई । लईकछुकचलिकैअगुवाई ॥
नगरनिकटजनवासदेवायो । विविधभाँतिसतकारपठायो ॥ दैवज्ञनशुभलग्नविचारे । करवावतभेद्वारहिंचारे ॥
पुनिजबलग्नघरीशुभआई । करवायेविवाहसुखछाई ॥ व्याहउछाहचारिदिनबीते । जबहिंरुक्मकारजतेरीते ॥
तबकलिंगआदिकमहिपाला । रुक्मसमीपगयेतेहिंकाला ॥ रुक्मीकहँअसवचनसुनाये । हरिसोंआपपराजयपाये॥

दोहा-करीआपकीदुर्दशा, यहगोपालकुमार । वैरलेबतातेउचित, ताकोकरहुविचार ॥

सन्मुखलरेविजयनहिंपैहो । अवशिहारिरणमहँतुमजैहो ॥ तातेकरहुकपटयहिभाँती । जामेंजरहिंहरिपुनकीछाती ॥
खेलनजुआरामनहिंजाने । पैखेलनकोरहैलोभाने ॥ २७ ॥ तातेसबभटलेहुबोलाई । बैठहुइतदरबारलगाई ॥
खेलनजुआहेतुबलरामै । आनहुवेगिआपनेधामै ॥ तुमअरुरामजुआइतखेलो । पैपासालगायतुममेलो ॥
देहुपंचबदितुमहमकाँहीं । हारिजीतिहमरेसुखमाँहीं ॥ जैहैंइतैरामजबहारी । पैमानिहैंनहैंमदभारी ॥

दोहा-तबकहिकैकटुवचनकछु, करिदरवाजेबंद । रामशीशकाटबतुरत, चलीनएकौफंद ॥

यदुवंशिनमहँबलैप्रबीरा । औरसबैतोहैंभयभीरा ॥ याकेमरेसकलमरिजैहैं । बिनप्रयासहमतुमजयपैहैं ॥
रुक्मीसुनिकलिंगकीबानी । कहँयहभलीबातअनुमानी ॥ असकहिसुभटनवेगिबोलाई । ह्वैतयारदरबारलगाई ॥
पुनिइकचारहिंवेगिबोलायो । ऐसोताकोरुक्मबुझायो ॥ कहोरामसोंतुमअसजाई । मेरेकुलहिंरीतिचलिआई ॥
व्याहअंतसमधीदोउआई । खेलहिंजुआसभासुखपाई ॥ कन्याबिदाहोतितेहिंपाछे । साधिमुहूरतशुभदिनआछे ॥

दोहा-तातेतुमकोरुक्मनृप, वेगिबोलायोराम । कीजेनाहिंविलंबअब, नाथचलहुतेहिंधाम ॥

सुनतदूतरुक्मीकीबानी । गयोरामढिगअतिसुखमानी ॥ रामहिंरुक्मीवचनसुनायो।सोसुनतहिंअतिआनँदपायो ॥
कह्योजुआखेलैंगेआई । यामेंतोममप्रीतिमहाई ॥ चलनलगेजबहींबलरामा । तबवारणकीन्ह्योंघनश्यामा ॥
रुक्मीहैकपटीअतिखोटो । करिहैदगाबुद्धिकोछोटो ॥ तातेउचितनजावतुम्हारा । असहमरेमनपरतविचारा॥
तबहिंविहँसिबोलेबलराई । याकीडरनाहिंहमैंकन्हाई ॥ असकहिचढिस्यंदनयदुनंदन । गयेजुआखेलनजगवंदन ॥

दोहा-सभामध्यजबरामगे, उठ्योसकलदरबार । बैठेसिंहासनसुभग, लह्योअमितसतकार ॥

कुशलपूँछिरुक्मीकहँबानी । खेलहुचौपरतुमबलखानी ॥ हमतुमखेलहिंएकहिसंगा । हारजीतसबकहैकलिंगा ॥
बलरामहुँतथास्तुकहिलीन्ह्यों।रुक्मीमधिचौपररचिदीन्ह्यों।२८। मोहरसहसहिरामलगाये।तैसहिंरुक्मिहुदाँउधराये
जीत्योरुक्मप्रथमकीबाजी । होतभयोअतिशयमनराजी ॥ तबठठायकैदाँतनिकासी । हँस्योकलिंगराजकरिहाँसी॥
तबकछुकोपितभेबलरामा । पैनहिंवचनकह्योबलधामा॥२९॥तबबलमोहरलाखलगाई। पासादीन्ह्योंतुरतचलाई ॥

दोहा-सोबाजीजीतीतुरत, श्रीबलभद्रप्रवीर । तबरुक्मीबोल्योतहाँ, करिकैकोपगँभीर ॥

हमजीतेतुमजीतेनाँहीं । सभामध्यनहिंमृषाबताहीं ॥ पूँछिलेहुपंचनपहँरामा । बोलहुझूठविजयकेकामा ॥ ३० ॥
रुक्मीवचनसुनतबलकेरे । भयेनैनयुगअरुणघनेरे ॥ सागरपर्वेवगजिमिगाढो । तिमिबलसदनकोपतनुबाढ़ो ॥
फरकिउठेभुजदंडउदंडा । करनचहतमनुअंडहिखंडा ॥ भृकुटीवंकअधरअतिकाँपे । युगुलजानुधरणीमहँचाँपे ॥
पुनिमोहरदशकोटिलगायो । पासारोषितरामचलायो ॥३१॥ भयअतितहँविलम्बलगिबाजी । जीतिअंतरामभेराजी

दोहा-तबरुक्मीबोल्योबहुरि, हमजीतेबलराम । अबतुमफेरिलगाइयो, अपनोसबधनधाम ॥

जोनसत्यमानहुबलराई । पूँछहुपंचनशपथधराई ॥ तबकलिंगसोंकहबलरामा । कोजीत्योसातिकहहुसभामा ॥

तबकलिंगबोल्योअसबाता। जित्योरुक्मअसमोहिंलखाता॥यहभीष्मककुमारबलवारा। काहूसोंकबहूँनहिंहारा॥
तुमहींअसकेतेबलराई। जुआजीतिधनलियोलुटाई॥ देहुलगायद्वारकानगरी। यदुवंशिनकीवनितासिगरी॥
तऊजीतिरुक्मीहठिलेई। माँगेहुँतेतुमकोनहिंदेई॥ असकहिहँस्योकलिंगठठाई। समवराटिकादाँतदेखाई॥३२॥
दोहा–तहँअकाशवाणीभई, बोलतमृषाकलिंग। बलजीतेबाजीउभय, यहसतिअहैप्रसंग॥३३॥
तहँनभगिरादुरावनहेतू। रुक्मीगर्जिकह्योदुखदेतू॥ ३४॥ तुमकाजानहुखेलनरामा॥खेलहिंजुआभूपमतिधामा॥
तुमतोगायनकेचरवैया। गोपसंगकेसदाखेलैया॥ कुरुपतिचेदिपमगधगोसाई। अरुबाणासुरदानवराई॥
ऐसेनृपयहखेलनजानैं। हारिजीतिउचितैभरिमानैं॥ तैंतोअपनेगर्वभुलाना। सोवहिसदाकियेमदपाना॥
थोरोधनथोरीप्रभुताई। भाषहुसदाबातबढिआई॥ तुमहोनहिंनृपहोवनवासी। ताहूपैनिजकुलकेनासी॥
दोहा–अबतोपैहोजाननहिं, बिनदीन्हेंधनधाम। यहिक्षणबचिबोकठिनहै, सत्यकहहुँबलराम॥
सुनतरुक्मकेवचनगँभीरा। हँसेठठायसभाकेवीरा॥ कहीरुक्मसबसोंअसबानी। जायनपावहिंयहअभिमानी॥
धरिबाँधहुकोठरीमहँराखो। छूटिसकैनयत्नकरिवाखो॥ सुनतवचनअसवीरसमाजै। भुजबलदियदेवायदरवाजै॥
चहुँकितकरिकैबंददुआरा। तबरुक्मीअसवचनउचारा॥ जोममशरणहोहुबलरामा। देहुमोहिंसिगरोधनधामा॥
तोतुमकोहमदेहुँबचाई। नातोतेरिमीचुअबआई॥ असकहिसुभटनदियेइशारा। बचिनजायवसुदेवकुमारा॥
दोहा–रुक्मनैनकिसैनलखि, सकलसैन्यरुखपाय। सैन्यमध्यअतिचैनसों, उठेभयनउरलाय॥३५॥
तहाँरामअतिकोपितह्वैकै।धावतधरनभटनकहँज्वैकै॥उच्योआशुभुजबलहिनिकारचो।दौरिपरिघरुक्मीशिरमारचो॥
परिघलगतशिरपेटपैठिगो।धरहुतासुइकवारऐंठिगो॥रुक्मीचपटिगयोमहिमाँहीं॥लखिनपरचोशरीरतेहिकाँहीं ३६॥
बलकरतेलखिरुक्मविनाशा। भग्योकलिंगमानिमनत्रासा॥ दरवाजेह्वैभागतदेखी। धायेबलकरिकोपविशेखी॥
दशयेंकदमपकरितेहिलीन्ह्यों। मुष्टिप्रहारतासुमुखकीन्ह्यों॥ भरिगेसकलदाँतमुखकेरे। जहँतहँमहिमहँपरेघनेरे॥
दोहा–पकरिकेशपटक्योपुहुमि, पुनिबलताहिउचाय। फेंकिदियोकालिंगको, परचोकलिंगहिंजाय॥३७॥
तबसबसुभटकाढितरवारी। धायेबलपरकरिबलभारी॥ मारतबलहिंखड्गसबटूटे। बलहुपरिघलैसबकहँकूटे॥
केतेनकेशिरभेबहुफाँके। कितेहुछमाचपटेरणबाँके॥ केतेनबाहुउरूसबटूटे। केतेनशिरमटुकीसमफूटे॥
कूदिकोटसबसुभटपराने। बलदेवहिंकोउनहिंसमुहाने॥ तबबलदेवहुफारिकेंवारे। परिघकंदधरिशिबिरसिधारे॥
घूमतहगझूमतसबअंगा। मानहुँसोहतमत्तमतंगा॥ जायदूरबैठ्योबलरामा। गयोनकृष्णशिबिरअभिरामा॥३८॥
दोहा–सुनिरुक्मिणिनिजबंधुवध, कीन्ह्योंमहाविलाप। उतयदुवंशीमुदितभे, बलकोनिरखिप्रताप॥
जोरुक्मीवधहरिसुखमानै। तोरुक्मिणिकोअप्रियजानै॥ जोरुक्मीवधकोदुखल्यावै। तौबलभद्रहिंनेकुनभावै॥
उभैभाँतिविपरीतविचारी। शोकहर्षनहिंकियोमुरारी॥ ३९॥ तबप्रद्युम्नादिकनबोलाई।कहतभयेबलरामबुझाई॥
जौनहोइकोरह्योसोह्वैगो। जोजसकियोसोतसफललैगो॥ चलहुद्वारकैअबसबभाई। दूलहदुलहिनिसंगलेवाई॥
तबसात्यकिआदिकउठिधाये। रुक्मभवनपालकीसजाये॥ दुलहिनिदूलहताहिचढाई। लायेबलढिगआशुलेवाई॥
दोहा–तहाँरामदैदुंदुभी, कियोकूँचदलसाथ। पीछेलैरुक्मिणिप्रिया, संगचलेयदुनाथ॥
दूलहदुलहिनिजपुरजबआये। पुरवासीसबदेखनधाये॥ मंगलसाजिसाजुतहँनारी। दूलहदुलहिनिसुछबिनिहारी॥
जेतीदेवकिआदिकरानी। परछनकियोपरमसुखसानी॥ दुलहिनिदूलहऐनलेवाई। गईसकलअतिशयसुखछाई॥
मणिमंदिरइकपरमसुहावन। षटऋतुकीशोभासरसावन॥ तेहिंमंदिरवरवधूटिकाई। वसीआयनिजनिजगृहजाई॥
तेहिंमंदिरप्रद्युम्नकुमारा। कियोकालबहुसुखदविहारा॥ करहिंसेवजिनसखीहजारैं। कामकुँवरछबिलखिजियवारैं॥
दोहा–रामकृष्णहूँकरतभे, अनिरुधपैअतिप्रीति। अनिरुद्धहुतिनचरणमें, कीन्ह्योंपरमप्रतीति॥ ४०॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे एकषष्टितमस्तरंगः॥ ६१॥

दोहा-तहँपरीक्षितराजपुनि, जोरिहाथशिरनाय। विनयकरीशुकदेवसों, अतिअभिलाषजनाय॥

राजोवाच।

दोहा-बाणासुरकीकन्यका, जाकोऊषानाम। व्याह्योतेहिंतहँजाइकै, श्रीअनिरुधबलधाम॥
तहँहरिशंकरयुद्धमहाना। भयोसुनोमैंहूंनिजकाना॥ कहौनाथवहकथासोहाई। होइजोमोपैकृपामहाई॥
जानिपरीक्षितकोअनुरागे। श्रीशुककहनकथातहँलागे॥ १॥

श्रीशुक उवाच।

जोहरिकहँदियधरणिधुर। सोबलितासुतनयबाणासुर॥बलिकेशतसुततिनमहँजेठो॥२॥करीभक्तिशिवकीगृहबैठो॥
सत्यसिंधुधृतव्रतमतिमाना।चतुरचलाकबडोबलवाना॥३॥राजकियोशोणितपुरकेरो।शिवप्रसादसुरगणतेहिंचेरो॥
रहेहजारबाहुनृपजाके। कारकअरिदलतुरतकटाके॥

दोहा-शंकरकेसन्मुखगयो, बाणासुरइकबार। नाचनलाग्योमधुरअति, सहसबाहुदैतार॥ ४॥
करुणाकरशंकरभगवाना। ह्वैप्रसन्नअसवचनबखाना॥ बाणासुरमाँगौवरदाना। जौनमनोरथहोयमहाना॥
तबबोल्योकरजोरिसुरारी। करहुनाथममपुररखवारी॥ एवमस्तुकहिशंकरदीन्हें। बाणासुरपुररक्षणकीन्हें॥ ५॥
एकसमयबाणासुरवीरा। शंकरपदवंदतरणधीरा॥ विनयकरीदुर्मदकरजोरी। आपहाथहैसबगतिमोरी॥ ६॥
तुमतोलोकईशगुरुज्ञाता। तुवपदसबमनकामनदाता॥७॥दियोबाहुप्रभुमोहिंहजारा।सोबिनयुद्धलगतअतिभारा॥

दोहा-देययुद्धजोमोहिंअब, असत्रिलोकनहिंकोइ। पैप्रभुतुमकोछोडिकै, द्वितियपरतनहिंजोइ॥ ८॥
जबभुजमोरलगेखजुआई। गयोदिग्गजनकरनलराई॥ मगमहँचूरणकरतपहारा। जायदिग्गजनदौरिनिहारा॥
तेमोहिंदेखतगयेपराई। औरवीरनहिंपरतदेखाई॥ ९॥ बाणवचनसुनिसंयुतगर्वा। कोपितबोलतभेतहँसर्वा॥
जबतेरीयहतुंगपताका। गिरहिंटूटिकैमिलिहिंछमाका॥ तबतेरोमदगंजनहारी। ममसमतेह्वैहैयुधभारी॥ १०॥
असमुनिशंकरवचनसुरारी। गयोभवनकहँपरमसुखारी॥११॥ऊषानामकन्यकाताकी। वर्णीजातिनहींछबिजाकी॥

दोहा-एकसमयसोऐनमें, करतरहीसुखशैन। लख्योस्वप्नइकचैनको, सुखदायककृतमैन॥
एककुँवरजेहिंश्यामसरूपा। लंबेभुजशशिवदनअनूपा॥ शीशकीटउरमंजुलमाला। पीतांबरतनुलसतविशाला॥
जाकोरूपपरेदृगदोई। फिरिनआँखितरआवतकोई॥ स्वप्नमाहँअसपुरुषपधारा। ऊषातासँगकियोविहारा॥
विरचिकेलिफिरिरूपदुरायो।ऊषाकेमनअतिदुखछायो॥कबहुँनअससुंदरवरदेख्यो।तासुवियोगसोगअतिलेख्यो॥१२॥
कहाँगयोपियअससुखभाषत।ऊषाउठिबैठीदुखचाषत॥सखिनमध्यउठिअतिहिंलजाई।विह्वलह्वैनीचेशिरनाई॥१३॥

दोहा-बाणासुरकोसचिवइक, कुंभांडैजेहिंनाम। तासुचित्ररेखासुता, अतिविचित्रगुणधाम॥
रहीनिकटऊषाकेसोऊ। औरहुसखीरहींसबकोऊ॥ ऊषहिंनिरखिविकलदुखछाई। तहाँचित्रलेखाअसगाई॥
क्योंचटपटतजिनींदसखीरी। उठिचक्रितचहुँओरलखीरी॥१४॥ काकोतैंखोजतिसुकुमारी।तेरोकौनमनोरथभारी॥
सखीजौनह्वैहैमनतेरे। सोजानहिंकरतलमहँमेरे॥ जाकोतैंमोहिंदेहिबताई। ताकोदैहौंतोहिंदेखाई॥
सुनतचित्रलेखाकीबानी। ऊषाकहतभईसुखमानी॥ १५॥

ऊषोवाच।

सखीआजमैंसाँझहिंसोई। कौनिहुँव्यथारहीकछुभोई॥

दोहा-लख्योअपूरबस्वप्नमें, जाकोसंभवनाँहिं। सुनहुचित्रलेखासखी, वरणतहौंतेहिकाँहिं॥

कवित्त-आजुलख्योसपनेमेंसखी, इकसाँवरोसुंदरप्राणपियारो। कंजसेनैनपियूषसेबैन, अनंदकोऐनधौंमैनसँवारो॥
बाहँविशालसोंधायमिल्योमोहिं, मैंहूँचहीकरिबोहियहारो। ताहीसमययहनींदनिगोडी,गईलैगईवहप्राणहमारो॥१६॥

दोहा–अधरसुधाअपनोअली, मोकोपानकराय। मोहिंडारिदुखसिंधुमें, कहँधौंगयोपराय ॥
ताहीकोहेरोमैंआली। मिलैकौनविधिअंबुजमाली ॥ ऊषावचनसुनतसुखछाई। कहीचित्रलेखामुसकाई ॥ १७ ॥

चित्रलेखोवाच।

देहौंतेरोविरहनिवारी । सखीकहहुँकरिशपथतिहारी ॥ जोयहत्रिभुवनमेंवहहोई । सखीनतैंकरुसंशयकोई ॥
देहौंल्यायअवशिमैंतोहीं । सखित्रिभुवनलघुलागतमोहीं ॥ त्रिभुवनमेंसुंदरजेवीरा। तिनकीलिखेदेउँतसवीरा ॥
तिनमेंजोतेरोमनहारी। ताहिबतायदेहिमोहिंप्यारी॥१८॥असकहिसबहिंलिखनसोलागी। ऊषाकेअतिप्रेमहिंपागी ॥
दोहा–प्रथमलिख्योदेवनसबहिं, पुनिगंधर्वनरूप। फेरिसिद्धचारणभुजग, पुनिदानवनअनूप ॥
विद्याधरनलिख्योसुविचक्षण।फेरिलिख्योमहिमनुजततक्षण।मनुजनमहँयदुवंशिनखाँची।शूरसबिहिंपुनिकैरुचिराँची
पुनिवसुदेवहिंलिख्योकुमारी।पुनिबलकीतसवीरउतारी १९ पुनियदुपतिकोचित्रबनायो।निरखितहिचौंधिचखछायो।
पुनिप्रद्युम्नसबिहिंलिखिदीन्ही।ऊषानिरखिदीठिअधकीन्ही॥रहीलजायकहीनहिंबानी।तहँचित्रलेखाकछुजानी २०॥
पुनिअनिरुद्धसबिहिंनिर्मानी। ऊषानिरखिताहिमुसक्यानी॥ नीचेमुखकरिअतिहिंलजाई । ऊषाबोलीसैनचलाई ॥
दोहा–अरीचित्रलेखासखी, सुन्दरनवलकिशोर। याकोलैआवहुइतै, यहीमोरचितचोर ॥ २१ ॥
तबहिंचित्रलेखामुसकाई । ऊषासोंअसकह्योबुझाई ॥ इनकोमैंजानतिहौंप्यारी । यातोमहावीरधनुधारी ॥
यदुवंशीयदुपुरकोवासी। क्षमाशीलक्षितिमेंछबिरासी ॥ अतिसुंदररमणीचितचोरा। नंदकिशोरकिशोरकिशोरा ॥
सुखीरहैशोचैजनिसजनी। करिहौंकाजतोरयहिरजनी ॥ भाषिचित्रलेखाअसबानी। उडीअकाशअकाशसयानी ॥
गईद्वारकापुरीमँझारी। देख्योकृष्णमहलअतिभारी ॥२२॥ पुनिअनिरुद्धअगारगैसोई। चक्रितभईसुछबिदृगजोई ॥
दोहा–कामकुँवरपर्यंकपर, करतरह्योसुखशैन। करिमायातुरतैलियो, तेहिंउठायभरिचैन ॥
उडिअकाशलैचलीकुमारी। जान्योनहिंतहँकोइनारी॥एकदंडमहँनिजपुरआई।ऊषहिंअनिरुधकोदरशाई॥२३॥
सुंदरवरलखिबाणकुमारी। धन्यआपनोभाग्यनिहारी ॥ उठीआशुमंजुलमुसक्याई। करगहिकुँवरहिंदियोजगाई ॥
सोऊलखिऊषाकोरूपा । मोहिगयेसुखभयोअनूपा ॥ पुनिकरगहिलैचलीलेवाई । आँखिनआनँदअंबुबहाई ॥
सातपरतअंतःपुरमाँहीं। मनहुँतेजहाँपुरुषनहिंजाँहीं॥मणिमंदिरसुंदरअतिसोहत।निरखतचंद्रभानुमनमोहत॥२४॥
दोहा–विविधभाँतिपकवानजहँ, विविधभाँतिकेपान। विविधभाँतिमणिगणनके, वासनजिनउपमान ॥
चहुँकितधूपसुरभितहँछाई। लसीफूलकीसेजबनाई ॥ तहँऊषाअनिरुद्धहिंलैके । निवसतभईपरमसुखकैके॥२५॥
दोऊफँसेप्रीतिकीफाँसी । उभयउभयमुखदर्शनआसी ॥ कालजातनहिंनेकहुजाने । कियेविहारमहासुखसानें ॥
चारिमासजबयहिविधिबीते। ऊषाअनिरुधप्रीतिप्रतीते ॥ २६ ॥ तबऊषाकीबालकताई। छूटिगईआईतरुणाई ॥
बोलनिचितवनिचलनिविशेषी।निरखिसखीकौतुकउरलेषी ॥ करहिंजेअंतःपुररखवारी।तिनसुभटनसोंसखीउचारी॥
दोहा–बाणसुताकोलखिपरत, कछुविपरीतसुभाव। कहाभयोकैसोभयो,काकोअहैप्रभाव ॥
सखिनवचनसुनिसुभटसशंके। आपसमेंसबरहेसनंके ॥ ऊषाकोसुभटौइककाला। निरखेपुरुषसंगकछुहाला॥२७॥
सखिनवचनसबसतिअतिमाने, आपुसमहँलागेबतराने ॥ यहकुलदूषणउपज्योकैसे । रविमहँहोयकलंकहिंजैसे ॥
असकहिद्वारपालभयभारे। जायबाणपहँवचनउचारे॥सुनियेभूपतिविनयहमारी । कुलदूषणभइसुतातिहारी॥२८॥
परतजानिऔरैगतिताकी। जानिनजायदैवगतिवाकी ॥ करीद्वारकीअसररववारी । गयोनपक्षिहुँभौनमँझारी ॥
दोहा–पैनजानिपरतोकछू, कहाभयोयहनाथ। सूरचंद्रमाहूकहूँ, तक्योनताकोमाथ ॥ २९ ॥
सुनतबाणठगिसोरहिगयऊ। यथाबाणबेधितहियभयऊ ॥ बारबारपुनिबाणविचारी। सकलद्वारपनगिराउचारी ॥
मेरअंतःपुरकोआयो । कौनहलाहलकोमुखलायो ॥ रह्योनअसत्रिभुवनमहँकोई । मेरोभौनसकैजोजोई ॥
असकहिकियोकोपपरचंडा। लैकरशूलमनहुँयमदंडा ॥ चल्योआशुअंतःपुरकाँहीं । लैदानवसहस्रसँगमाँहीं ॥
तहँऊषाकीसखिनबोलाई । कह्योवचनअतित्रासदेखाई ॥ कहाँसुताहैदेहुबताई । कारजकौनकरतिमनलाई ॥

दोहा-सखीकह्योकरजोरिकै, मणिमंदिरमहँसोय। नाथतहाँकछुदिननते, जाननपावैकोय॥
सखीवचनसुनिकोपहिंछायो। कन्याभवनआशुचलिआयो॥कामकुँवरकहँदेख्योजाई।ताहूकोमनगयोलोभाई॥३०॥
श्यामस्वरूपनैनअरविंदा। आननकोटिलजावनचंदा॥ लंबेसुभगबाहुअतिपीने। लसहिंपीतपटयुगलनवीने॥
कलकपोलश्रुतिकुंडलराजे।अलकलटकितिनपरअतिछाजे३१खेलिरहेप्यारीसँगपासा।निरखतबहुनहिंपूजतिआसा।
ऊषाकुचकुंकुमतेरंजित। लसतमालगलमेंअलिगुंजित॥ एकपाणिऊषागलमाँहीं। एकपाणिपासापलटाँहीं॥
दोहा-तहँअनिरुद्धहिंयोंनिरखि, बाणासुरबलवान। सबवीरनसोंकहतभो, अनिरुधरूपलोभान॥ ३२॥
हैनबालयहमारनलायक। यदपिअनीतिकरीदुखदायक॥ मैंसकिहौंनहिंशस्त्रचलाई। देखतयाहिदयाउरआई॥
तातेलहिअनुमतिभटमेरी। धरिलींजेबालककहँघेरी॥ बाणासुरशासनसुनिवीरा। धायेचहुँदिशितेरणधीरा॥
आवतनिरखिदानवनकाँहीं। उठिबैठयोअनिरुद्धतहाँहीं॥ लियोनिकारिपरिघइकधाई। द्वारेद्रुतठाढोभोआई॥
मानहुँकालदंडकरभाजा। समरकरनआयोयमराजा॥३३॥ धायेधरनहेतुरणधीरा। चहुँकिततेकरिशोरगँभीरा॥
दोहा-परिघभमावतओरचहुँ, धायोश्रीअनिरुद्ध। दानवसम्हरिसकेनहीं, कैनसकेगतिरुद्ध॥
जहँजहँअनिरुधदौरतबागै, तहँतहँदानवकोदलभागै॥ जिमिसूकरवेराहँशुनजाई। ताकेधावतजाहिंपराई॥
तहँदानवसबवचनउचारा। करहुउपायजायजेहिंमारा॥अबनहिंधरेमिलीयहबालक। ह्वैहेअमितअवशिभटघालक॥
असकहिदानवशस्त्रप्रहारे। परिघहिसोंअनिरुद्धनिवारे॥ परिघभमावतमारनलाग्यो। जालिमजोरयुद्धमहँजाग्यो॥
मुंडफूटिगेकाहुनकेरे। टूकटूकभुजभयेघनेरे॥ रहिनसकेकोऊतहँठाढे। भागेकतलसमरकेगाढे॥
दोहा-भागिगयेजेभौनते, तेईबँचेप्रवीर। डारचोबहुदानवनहनि, द्रुतअनिरुधरणधीर॥ ३४॥
दानवभागिबाणपहँजाई। सकलयुद्धकीखबरिजनाई॥ कह्योबालहैअतिशयबाँको।कोउभटपकरिसक्योनहिंताको॥
परिघमारिमारेभटकेते। सन्मुखगयेबचेनहिंतेते॥ सुनतबाणअतिशयदुखछायो। कामकुँवरपरकोपितधायो॥
बाणहिंआवतनिरखिकुमारा।धायकियोशिरपरिघप्रहारा॥दानवमूर्च्छितगिरचोतहाँहीं।रहिनगईकछुसुधितनुमाँही॥
तबअनिरुद्धताहिगोहरायो। एकहिंबाउमाहँमहिआयो॥ सुन्योप्रथमऐसोहमकाना। बाणासुरहैअतिबलवाना॥
दोहा-सुनतवचनअनिरुद्धके, उठचोआशुअसुरेश॥ मानहुँचरणप्रहारते, कुपितभयोभुजगेश॥
शुनिअनिरुद्धहिंअतिबलरासी। लैकरब्रह्मदत्तअहिफाँसी॥ बाणचलायदईविकराली। धावतभईयुगलतहँव्याली॥
अनिरुधकेलपटीइकसंगा। एकहिंबारबँधेसबअंगा॥ गिरचोभूमिमहँकामकुमारा। रहिनगयोतनुमाहँसम्हारा॥
लियोउठायबाणतेहिकाँहीं। राख्योकैदकोठरीमाँहीं॥ निरखतअनिरुधबंधनऊषा। ताकोहृदयकमलद्रुतसूषा॥
लाजछोडिबहुकियोविलापा। मरणसरिसपायोसंतापा॥ ताहूकोबाणासुरजाई। राख्योइककोठरीधँधाई॥
दोहा-ताकनहिततिनदुहुनके, तहँटिकायरखवार। आपभवनकोगमनकिय, दुखसुखभोइकबार॥ ३५॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे द्विषष्टितमस्तरंगः॥ ६२॥

दोहा-इतैचित्रलेखाहरचो, जबतेअनिरुधकाँहिं। तबतेयदुवंशीरहे, शोचतसबमनमाँहिं॥
जुरिजुरिअससबकरहिंविचारा। कहाँगयेप्रद्युम्नकुमारा॥ कृष्णरामसात्यकिरणधीरा। सारनगदप्रद्युम्नप्रवीरा॥
उद्धवकृतवरमाअक्रूरा। औरहुसांबआदिबहुशूरा॥ उग्रसेनकेसभासिधारी। सकलबैठितहँगिराउचारी॥
महाराजप्रद्युम्नकुमारा। रह्योजोहमकोप्राणपियारा॥ सोकहँगयोनजानहिंकोई। धौंकोउहरयोरूपवरजोई॥
ताकोकैसोकरहिंविचारा। जेहिंप्रकारसुतमिलहिहमारा॥ बोल्योउग्रसेनमहराजा। सुनहुसबैयदुवंशसमाजा॥
दोहा-सबथलभेजोदूतबहु, सुरनरअहिपुरमाँहिं। जहाँखोजसुतकोलगै, तहाँसचिवकोउजाँहिं॥

करिकैसामपुत्रकहँल्यावैं। वृथारारिकेहिंहेतुमिटावैं॥ तबबोल्योबलदेवरिसाई। देयखोजजोकोऊलगाई॥
जोअनिरुद्धहिंराखिहुगोई। सोशिवविधिलोकहुयदिहोई॥ तोलैऐहैंतोहिंकरिघाता। औरठौरकीकेतिकबाता॥
मासअषाढहिंकुँवरहेरान्यो। अबआश्विनलौंनहिंदरशान्यो॥१॥ इतनोजबबोलेबलराई। तबआयेनारदमुनिराई॥
उठीसभानारदकहँदेखी। सबकेउरभोमोदविशेषी॥ खड़ेखड़ेबोलेमुनिराई। यदुवंशीतुमबुद्धिगमाई॥
दोहा—अनिरुधऐसोलाडिलो, अतिअनोखकुलमाँहि। ताकोघरतेहरणभो, तुमजानहुकसनाँहि॥
बाणासुरअतिशयबलवाना। शोणितपुरकोईशमहाना॥ ताकीऊषानामकुमारी। सखीचित्रलेखातेहिंप्यारी॥
हरिलैगईसोइअनिरुद्धै। बाणासुरकीन्ह्योंअवरुद्धै॥ बाणासुरकेभवनमँझारी। परयोकैदअनिरुधधनुधारी॥
तुम्हैंदियोवृत्तांतसुनाई। जोमनआवैकरहुबनाई॥ शिवरक्षहिंशोणितपुरभूरी। योजनसहसद्वादशैदूरी॥
असकहिसुरपुरगेमुनिराई। रामकृष्णअनिरुधसुधिपाई॥ सबसुभटनसोंगिराउचारी। शोणितपुरकीकरोतयारी॥
दोहा—सुनिशासनप्रभुकोतुरत, साजिसाजिनिजसैन। आवतभेद्वारेतहाँ, लखिबलबोलेबैन॥२॥

कवित्त—चंचलचलाकेचारुताकेसाजुढाँकेअंग, परमप्रभाकेत्योंमजाकेरणबाँकेहैं।
सरिसहवाकेसोहैंविविधाकिताकेजात, आशुनाकनाकेबहुधावतनथाकेहैं॥
भाषेरघुराजकाठियाकेहैंउडाकेअति, गटतपराकेदेतपगनझमाकेहैं।
ऐसेवाजीसंगजाकेवीरवीररसछाके, आवैसात्यकीसोजासुविजैधराधाकेहैं॥
राजैकसोकनककवचाशिरकूँडत्योंहीं, युगकरवालकटिपीठिढाकीढालहै।
कंधनतुणीरतीरपूरेहैंगंभीरवेग, करमेंकोदंडउरमुक्तनकीमालहै॥
मंदमंदगौनैमंदमंदचहुँओरहेरै, मंदमंदफेरैउरमालमुखलालहै।
विक्रमकरालसेरशत्रुनकेसबकाल, बाँकुराविशालआवैसैनिजूकोलालहै॥
कनककिरीटशीशजटितजवाहिरात, व्रातचहुँओरचमकातद्युतिवारोहै।
हेमतनत्राणकटिसोहतकृपाणवाम, पाणिमेंकमानवाणदाहिनेमेंधारोहै॥
चंचलतुरंगसखाचारिपांचशतसंग, रणकेउमंगभरोस्यंदनसँवारोहै।
रुक्मिणीदुलारोतीनोंलोकनकोविजैवारो, आवतप्रद्युम्नप्राणप्यारोयाहमारोहै॥
झझकिझमंकैचंचलासेवैचमकैटाप, धरणिधमंकैयोतुरंगएकओरहैं।
मदकेअमंदभरेयुद्धकेअनंदऐसे, वृंदवैगयंदनकेगाढेएकठोरहै॥
ऐंडदारबोजदारसोहैशिरदारसबै, धारेतलवारढालअतिबरजोरहै।
सैनलेअथोरऐसीसमरकठोरआवै, सूरकेकिशोरकेरोसारनकिशोरहै॥
रथमेंदुजानुबैठोक्षणैक्षणजातऐंठो, वीररससिंधुपैठोवीरवरख्याताहै।
कवचकृपाणिकूँडकरत्राणधारेअंग, बाणपुरगौनिगुनिमृदुमुसक्याताहै॥
वीरताईधीरताईयौवनललाईमुख, प्रकटजनाईसाजिसैन्यइतआताहै।
वीरशिरनामगदनामजाकोआमजग, बाँकुरोबहादुरगोविंदजूकोभ्राताहै॥
नैनअरुणारेउरलालनकीमालधारे, कीटकोसँवारेकटियुगतरवारहै।
उदितशशीसोमुखमंजुमुसकानिसोहै, मैनकरढारेमानोअंगसुकुमारहै॥
परमछबीलोअलबेलोहैनवेलोवीर, परमघमंडभरोमोहिंअतिप्यारहै।
सैन्यचतुरंगलैकैजीतनकोबाणजंग, आवतहैशूरसांबकृष्णकोकुमारहै॥
दोहा—दरशनहितआयेरहे, व्रजतेनंदसुजान। सोऊसाज्योगोपदल, बाणयुद्धहितजान॥

सवैया-श्वेतपोशाककियेसिगरेकटिमेंकसिनोईसुकामरिकाँधे। पानकैआसवह्वैकरिमत्तचढेशकटानिमेंबैलमनाँधे॥
आनँदसोंबतरातहैबातअवातउछाहहियेमहँधाँधे। गोपसबैअतिचोपसोंआयेसोलोहकेबंधनबोंगनबाँधे॥
दोहा-आईसबविधितेसजी, सकलयादवीसैन। बाणभौनकेगौनको, नहिंसमातउरचैन॥
छंद-दुंदुभीशोरचहुँओरबरजोरसोंभयोअतिघोरतेहिठोरभारी।
मत्तगजचिक्करतवाजिगणहिक्करतदिक्करिनदिक्करतवेगचारी॥
चक्ररथघरघरतवीरबरबर्रतहरबरतगर्वरतशीघ्रकारी।
शुद्धउद्धतदधतशत्रुबुद्धतक्रुद्धतयुद्धउद्धतबधतधीरधारी॥
दोहा-हरिबलनिजबलसयुगलखि, चढ़िचढ़िनिजनिजयान। अनिरुधहिततुरतहिंकिये, शोणितपुरहिंपयान॥३॥
चल्योकटकयदुवंशिनकेरो। रजउडायरविमंडलघेरो॥ फहरिरहेतहँविविधनिशाना। बाजहिंमारूबाजमहाना॥
बारहिंअक्षौहिणीदलभारी। सबयदुवंशीअतिधनुधारी॥ अरतालिसहजारहैकोसू। अरिपुरजावनपरतभरोसू॥
असबभटमनकरहिंविचारा। होतनकैसेहुकछुनिरधारा॥ यदुपतिजानिभटनकीशंका। कियउपायतहँविगतअतंका॥
प्रगटियोगमायातेहिकाला। पहुँचेशोणितपुरहिंउताला॥ बाणनगरतहँलख्योविशाला। उठतिचहूँकितपावकज्वाला॥
दोहा-घेरिलियोशोणितपुरै, रामकृष्णचहुँओर। खडेभयेसँगमेंसुभट, रह्योनतिलभरठोर॥
वारुणास्त्रतहँकृष्णचलायो। अनलप्रचंडहिंआशुबुझायो॥४॥ शोणितपुरकेबागतडागे। लावनलूटनलोपनलागे॥
कनककोटजोरह्योउतंगा। खनिखनिफोरिकियेतेहिंभंगा॥ पुनिगिराइदीन्हेंदरवाजा। रह्योजोपुरकेप्रथमदराजा॥
शोणितपुरकेप्रजादुखारे। बाणद्वारमहँजाइपुकारे॥ यदुवंशीतुवपुरचढिआये। प्रजनमारिपुनिद्वारगिराये॥
प्रजनवचनसुनिबाणरिसाई। शासनदीन्ह्योंसचिवबोलाई॥ लावहुसैन्यसाजिद्रुतमेरी। यदुवंशीलीन्ह्योंपुरघेरी॥
दोहा-सुनिनिदेशअसुरेशको, सचिवसाजिसबसैन। बाणद्वारलायेतुरत, भरेयुद्धकेचैन॥
बारहिंअक्षौहिणिदलसाजे। कढ़्योबाणबजवावतबाजे॥ कोपितह्वैअसदियोनिदेशा। बचिनजाइयदुकुलकोलेशा॥५॥
बाणहेतुशंकरभगवाना। यदुवंशिनपैकियेपयाना॥ कोटिनगणधायेविकराला। पहिरेगलेमुंडकीमाला॥
स्वामीकार्त्तिकचढेमयूरा। चलेसंगशिवशतअतिशूरा॥ नंदीश्वरचढ़िकैत्रिपुरारी। धरेधनुषकरशरअतिभारी॥६॥
तहाँजुरेहरिशंकरदोऊ। चाहतनाहिंपराजयकोऊ॥
दोहा-कार्तिकेयसोंकरतभो, संगरकृष्णकुमार॥७॥ कूपकर्णकुंभांडकिय, बलसँगयुद्धअपार॥
बाणपुत्रऔसांबकुमारा। बाणासुरसात्यकीउदारा॥८॥ यदुवंशिनअरुअसुरनकेरो। तुमुलयुद्धतहँभयोघनेरो॥
ब्रह्मादिकतहँसबैसुरेशा। मुनिचारणगंधर्वसिधेशा॥ चढ़ेविमाननसहितहुलासा। आयेनभमहँलखनतमासा॥९॥
तहँशारंगनाथटंकोरा। भयोभयावनशोरकठोरा॥ भूतप्रेतअरुगुह्यकनाना। यातुधानवेतालमहाना॥
डाकिनिशाकिनिमहायोगिनी। कूष्मांडाअरुमातृभोगिनी१०औरब्रह्मराक्षसहुपिशाचा। इनसँगगणपतितजतनराचा।
दोहा-एकबारसबमिमिटिकै, करिकैकोपअपार। धायेयदुपतिपरतुरत, नादकरतविकरार॥
छंदतोमर-तहँहरितजीशरधार। जिनपरमतीखनधार॥ ह्वैगयोतहँअँधियार। सूझतनहाथपसार॥
इकएकपिशाचनपाँहिं। शरसहसलागतजाँहिं॥ भूभ्रमहिंभूतभुलान। गिरिउठहिंकोपिमहान॥
कोउकरहिंआरतशोर। नहिंचलतनेकहुँजोर॥ जेजाहिंउडिहुअकास। शरतहहुँपहुँचहिंपास॥
तबभागिपुनिमहिआइ। इकओटरहहिंलुकाइ॥ तबजाइँदोऊफूटि। रहिजाहिंशरविधिजूटि॥
कोहुकेगयेकटिमुंड। कोउखंडभेबहुरुंड॥ शरलगतभुजकटिजाँहिं। नभकेतुसरिसलखाँहिं॥
जिनकेरहेबड़सीस। तिनकेलगेशरतीस॥ जिनकेरहेदृगभूरि। तेगयेबाणनपूरि॥
जिनकेरहेबहुबाहु। तेकटेसहितसनाहु॥ पदरहेजिनहिंहजार। तेभेविखंडअपार॥
जिनकेशरीरविशाल। तेगयेकटिसमताल॥ जिनकेरहेबहुकेश। तेरहेनहिंशिरलेश॥

कोउनासिकाभेहीन । कोउभयेदंतविहीन ॥ कोउभूतभेविनओंठ । कोउजरेशरलगिलोंठ ॥
चहुँओरसायकजाल । धावतलसैंविकराल ॥ जहँभागिशिवगणजाँहिं । तहँकृष्णबाणदेखाँहिं ॥
कसमसपरचोरणमाँहिं । धसपसपरचोसबकाँहिं ॥ तबभयोहाहाकार । रहिगयोकोहुनसँभार ॥
तहँभगेभमरिपिशाच । सहिसकेनहिंशरआँच ॥ बहिचलीशोणितधार । जुरिभयेलोथिपहार ॥
रहिगयेतहँनहिंभूत । छिपिरहेदिशनअकूत ॥ तबहुँनशरभेबंद । परिगयेदिनकरमंद ॥ ११ ॥
निजदलविकललखिईश । दंतनदरतबतीस ॥ लैशूलपरमकराल । धावतभयेतेहिंकाल ॥
शरधारतजतपिनाक । मनुनाशकरतेनाक ॥ यदुपतिनिकटचलिआशु । कियशरनतमदशआशु ॥
शारँगकोटंकोर । तिमिरवपिनाकहुँघोर ॥ पूरितभयोचहुँओर । भोसकलदेवनभोर ॥

दोहा—शंकरनंदीपैचढे, मंडलकरहिंकितेक । इतदारुककरिचपलरथ, विरचतगतिनअनेक ॥

छंदचामर—कहूँतरंगवेगसोंअकाशमेंदेखातहैं । कहूँसुवामदाहिनेअलातसेसोहातहैं ॥
दोऊप्रवीरबाणधारछोडिछाँडिधावहीं । दोऊप्रवीरयुद्धमेंविजयविलासध्यावहीं ॥ १२ ॥
तजैंप्रचंडवायव्यास्त्रयुद्धमेंपुरारिहैं । नगास्त्रकोपवारिकैनिवारतोमुरारिहैं ॥
तजैगिरीशपावकास्त्रअग्निचंडधावतो । तजैमुकुंदमेघअस्त्रआशुहींबुझावतो ॥

सोरठा—तहाँशंभुअतिकोपि, लेतभयेब्रह्मास्त्रको । जीतनकोअतिचोपि, यदुपतिपरछोडतभये ॥

छंद—ब्रह्मास्त्रप्रचंडचल्योजवहीं।हरिहुब्रह्मास्त्रतज्योतवहीं॥ दोउज्वालअकाशहिंछायगई।सबदेवनकोअतितापभई॥
लरिअस्त्रउभेतहँशांतभये । हरिशंकरहूँतवकोपछये ॥ लियपाशुपतास्त्रगिरीशतहाँ । करतेमनुलोकसंहारमहाँ ॥
चहुँओरमहादिगदाहभई । वरुणालयछोडिमजाददई ॥ सबकोअसजानिपरोतवहीं । परलैजगहोनचहैअबहीं ॥
इतकृष्णहुँवैष्णवअस्त्रलियो।तकिपाशुपतास्त्रहिंछोडिदियो ॥ इकबारहिंलोकउठेबरिहैं।विधिबोलहिंवीरकहाकरिहैं॥
लहिवैष्णवतेजतहाँरणमें।नशिपाशुपतास्त्रगयोक्षणमें॥१३॥यदुनाथतहाँअतिकोपहिकै।लियमोहनअस्त्रहिंचोपहिकै
हरकोलखिछोडतभेतुरतै । निजस्यंदनरोकिरणैपुरतै ॥ तेहिंअस्त्रहिंशंभुनआडिसके । रहिजातभयेरणमाहँजके ॥
पुनिमोहितह्वैजमुहानलगे।तजिचापरहेवृषमाहँठगे ॥ शिववाहनलैशिवभाजिगयो ।लखिसैन्यहिंकौतुकहोतभयो ॥
तबदारुकसोंयदुनाथकह्यो । अबदानवकोदलबाँचिरह्यो ॥ रथलैचलतूँमधिसैन्यहिमें । सुनिदारुकगोद्रुतचैनहिमें॥

दोहा—तहँगोविंदहनिकैगदा, अरुनंदकअसिमारि । दानवकेदलकोद्रुतहिं, दीन्ह्योंदौरिविदारि ॥ १४ ॥

छंद-इतैकार्तिकेयोहरीकोकुमारा।जुरेजंगमेंशीशधैकोपभारा।तजीवीरदोऊद्रुतैबाणधारा।कियोजंगमेंआशुहींअंधकारा।
भयेमंडलाकारकोदंडदोऊ । विजैकेविलासीनहैंहीनकोऊ॥ दलैबाणप्रद्युम्नकेशंभुनंदा।हरीपुत्रत्योहीनिवारैअमंदा॥
दोऊगर्वछायेदोऊकैगराजै । दोऊचाहतेहैंदोऊकीपराजै ॥दोऊवीरकेआननैस्वेदआयो।दोऊवीरकेखूबहीहूबछायो॥
दोऊवीरकेजोमछाईजवानी।दोऊवीरनेकोनहींशंकमानी।दोऊलाडिलेहैंपिताकेअनोखे।दोऊयुद्धमेंक्रुद्धहैंचित्तचोखे।
सुदोऊदुहूकोतहाँताकिमारे । सुदोऊदुहूँकेशरैंकाटिडारे ॥ कहूँदौरिदोऊजुरैंजायनेरे । कहुँवीरदोऊकरैंजानफेरे॥
लसैंशीशदोहूनकेकीटभारी । रहीछायताकीचहुँधाँउज्यारी॥दोऊदामिनीसेदमंकैंप्रवीरा।झनंकैंठनंकैंदोहूँवीरतीरा॥
तहाँयादवौआसुरौहूहुलासे । लखैयुद्धछोडेदोहूँकेतमासे ॥ ऋषीशौसुरेशौदुहूँकोसराहैं । दुहूँकीअहैजानुपर्यंतबाहैं॥
दोऊवीरनेकौतहाँनाहिंथाके।दोऊयुद्धमेंबाँकुरेवेशवाके।यहीभाँतिकीन्ह्योंदोऊयुद्धभारी।दुहूँकीपराजैपरैनानिहारी॥

दोहा—कृष्णकुँवरकोप्रबललखि, शंभुकुँवरअनखाय । लीन्ह्योशूलअमोघकर, रह्योभासरणछाय ॥
शूललेतगहिभरतकर, चहतचलावतमाँहिं । अतिविचित्रविक्रमकियो, यदुपतिपुत्रतहाँहिं ॥

द्वैहजारशरकरपरमारचो । द्वैहजारशरभुजपरझारचो॥एकहजारशरमाधिमहँगाड्यो।उभैकोटिशरशूलहिंआडचो ॥
तजिनसक्योशूलीतहँशूला । भयोहाथमानहुँनिर्मूला ॥ शूलगिरचोकरतेछुटिधरणी । भैअसकंदवृथारणकरणी ॥
लयोलेनधनुशंभुकुमारा । तबैप्रद्युम्नतजीशरधारा ॥ मूँदिगयोसुरदलकोनाथा । शतशरहन्योमयूरहिंमाथा ॥

जबलोंकाढैशिवसुतबाना। तबलोंकियोमयूरपयाना ॥ जाइमयूरदुरयोकैलासा। रोकेरुक्योनशुनिअतित्रासा ॥

दोहा-रुक्मिणिनंदनकीविजय, लखियदुवंशीवीर। बहुसराहिजयजयकिये, हर्षितह्वैरणधीर ॥ १५ ॥

कूपकरनकुंभांडदोउ, बाणसचिवबलवान। दलविचलतलखितुरतहीं, रणकहँकियेपयान ॥

छंद-महाप्रचंडचंडमुंडसेअखंडओजके। घमंडकेउमंडमेंभरेउदंडमोजके ॥
करालकालरूपलालनैनबालवेशहैं। विशालदंतमुंडमालतालशेशलेशहैं ॥
करैंकठोरशोरदौरिदौरिचारिओरहैं। अथोरवीरभोरहोतजोरहूँअजोरहैं ॥
लियेत्रिशूलवज्रतूलहूलमारिधावहीं। अतूलशत्रुप्रत्तिकूलफूलसेउडावहीं ॥
भगीयदूनसैन्यह्वैअचैननैनमूँदिकै। उकैनवैसनैनवैनजाहिंशैलकूदिकै ॥
विलोकिवाहिनीसशोकजातिओरधामहै। विशोकसोंविशोककह्वैकह्योसुवैनरामहै ॥
चलोचलाइचंचलैरथैदइत्यहैजहाँ। करैंसँहारसैन्यकोमनोसुकालहैमहा ॥
विशोकसूतलैचलयोतुरंतहींतुरंगनै। लख्योकुँभांडकूपकर्णरामकोरणंगनै ॥
कठोरशोरकैअथोरशूलधारिधायक। हनेप्रयासआशुकैसुरामकोनेरायकै ॥
लगोविशोककेसुएकवाजिबेधिएकगे। विसंज्ञह्वैगिरयोसोसूतवाजिभूमिटेकगे ॥
तहाँसकोपमूसलीसुमूसलैहलैलियो। तुरंतकूदियानतेमहानशोरकोकियो ॥
कुँभांडकोफँसाइकैहलैतेखैंचिलेतभो। सजोरतासुशीशमध्यमूसलैसुदेतभो ॥
भयोछटूकशीशअंगचूरचूरह्वैगये। कुँभांडकेशरीरकेरहाडभूमिमेंछये ॥
प्रकोपिकूपकर्णशूलरामकेद्रुतैहन्यो। बचैगोकैसहूँनदैत्यऐसहींसुखैभन्यो ॥
लियोछँडाइशूलकोलगाइहाथहाथमें। हन्योसुरामसूसलैप्रकोपितासुमाथमें ॥
लगेपषाणज्योंघटैपटाकमाथफूटिगो। धराधडाकदैगिरयोदइत्यलंकटूटिगो ॥

दोहा-कूपकर्णकुंभांडको, कीन्ह्योंवधबलराम। बाणासुरकीसैन्यमें, भरयोभीतिकोधाम ॥ १६ ॥

बाणपुत्रअरुशावकुमारा। कियेयुद्धअतिघोरअपारा ॥ रथमंडलदोऊभटकरहीं। बारबारसायकतनुभरहीं ॥
दोऊदुहुँनताकिशरमारैं। दोऊदुहुँनसुबाणनिवारैं ॥ दोहुँनदोहुँनमूर्च्छितकरहीं। उठिउठिपुनिदोऊभटलरहीं ॥
दोऊध्वजादुहुँनकीकाटी। दोऊदोहुँनकेरथछाँटी ॥ दोऊदोहुँनहनेतुरंगन। दोऊदुहुँनधनुषकियभंजन ॥
दोउलैचर्मकृपाणप्रवीरा। दौरिभिड़ेरणमहँरणधीरा ॥ तहाँशावकरिअतिचपलाई। बाणपुत्रशिरतेगचलाई ॥

दोहा-कट्योशीशताकोतुरत, गिरयोभूमिमहँवीर। निरखिबाणसुतनाशतहँ, भभरिभगानीभीर ॥

बाणासुरमारयोबहुबाना। लियोछाइसात्यकिकोयाना ॥ सात्यकिहूँतहँसायकझुंडा। काटिअनेकदानवनिमुंडा ॥
पुनिमारयोबाणहिंबहुबाना। सिंहनादपुनिकियोमहाना ॥ शिवसुतसहितपराजयदेषी।बाणकियोउरशोकविशेषी ॥
तजिसात्यकिकहँहरिपरधायो।कालसमीपमनहुँजनिआयो॥भुजशतपंचचापशतपाँचा।धारितज्योतहँसहसनराचा॥
तहँमुकुंदइकबारहिंकाट्यो। धनुषपंचशतइकसँगछाँट्यो ॥ हरिहन्योशरफेरिइजारा। रथसारथितुरंगदलिडारा ॥

दोहा-पांचजन्यपुनिशंखलै, माधवमुदितबजाइ। एकबाणपुनिकरलियो, हननबाणहरषाइ ॥ १९ ॥

बाणवधतहरिकहँतहँजानी। मातातासुकोटरारानी ॥ खोलिकेशकरिनग्नशरीरा। मानिपुत्रवधकीअतिपीरा ॥
ठाढीभईकृष्णकेआगे। जाकोनिरखिवीरसबभागे॥२०॥कृष्णहुमुखनीचेकरिलीन्ह्यो।भागुभागुतहँहरिकहिदीन्ह्यो॥
यहअवकाशबाणतहँपाई। स्यंदनलेनगयोपुरधाई ॥ २१ ॥ भागिगयोजबभूपसमाजा।तहँधायोज्वरकोपितराजा ॥
तीनिशीशचरणहुहैंतीना। लंबशरीरमांसतेहीना ॥ खड़ेरोमतनुकेशिरकेशा। महाभयावनहैजेहिंभेशा ॥

दोहा-धायोसन्मुखकृष्णके, लावतदशहुँदिशान। लीन्हेंषटहुँनकरभसम, मानहुँकालमहान ॥ २२ ॥

लखिज्वरकहँबलमोहहिंपागे, दौरिखड़ेभेहरिकेआगे ॥ ताहिदेखिज्वरकोपहिंछायो । बलकेउरमहँभस्मचलायो ॥
रालतिड़िकिगैबलउरलागी।बलकेवदनज्वालज्वरलागी ।।बलतनुतिड़िकिमेरुकोशृंगा।ज्वरकोभस्मकियाद्रुतभंगा॥
इतैरामघूमनकछुलागे। तिनकहँनिरखिकृष्णदुखपागे ॥ रामहिंदौरिमिलेयदुराई । तासुसकलज्वरतापनशाई॥
पुनिवैष्णवज्वरउतपतिकीन्ह्यो।सोशिवकेज्वरकहँदुखदीन्ह्यो।कहुँभागिनहिंशिवज्वरबाँचो ।तद्यपितिहुँलोकनमेंनाचो
दोहा-गिरोआइहरिशरणमहँ, आरतवचनपुकारि। त्राहित्राहिआरतहरण, रक्षाकरहुमुरारि ॥ २४ ॥

ज्वरउवाच।

चामरछंद-जैअनंतशक्तिजैपरेशसर्वआत्मजै। जैविशुद्धज्ञानरूपकृष्णजैपरात्मजै ॥
जैतिविश्वसृष्टिपालनाशहेतुब्रह्मजै। जैप्रधाननाथशांतरूपखंडदंभजै ॥ २५ ॥
कालदेवकर्मजीवद्रव्यऔसुभावहूँ। प्राणदेहकोविकारसृष्टिऔअभावहूँ ॥
मायआपहीकिहैद्वितीयईश्वरौनहीं। जाहिजैसनोकरोसुहोततासितैसहीं ॥ २६ ॥
धारिकैअनेकरूपधर्मसेतुपालहू। साधुदेवविप्रकेअनेकशत्रुघालहू ॥
भूमिभारहारहेतुजन्मनाथहैयहू। आपकेप्रपन्नकोनहोतत्योंकनेकहू ॥ २७ ॥
त्राहित्राहिनाथमोहिंदीनकोबचाइये। उग्रराबरोज्वरैहमैंदहैमहाइये ॥
जीवकोतबैलोंतापजौलोंआपकोनहीं। ह्वैगयोतुम्हारजोनताहिशोकहैकहीं ॥
दोहा-मैंशरणागतमेंपरो, हेवसुदेवकिशोर। जारतमोहिंयहिठोरमें, शीतज्वरयहतोर ॥ २८ ॥
यहिविधितेज्वरअस्तुतिकीन्हीं। कृष्णचरणमहँनिजमतिदीन्हीं॥ तबप्रसन्नह्वैकह्योमुरारी। अबतोपरमैकृपाहमारी॥
मेरोज्वरतोहिंदुखनहिंदैहै। औरहुकहूँभीतिनहिंपैहै ॥ यहमेरोतेरोसंवादा। गैहैजोसंयुतअहलादा ॥
ताकोतोरिभीतिनहिंहोई। ऐसोजानिलेइसबकोई ॥ २९ ॥ सुनिहरिवचनमोदज्वरपाई । गयोआपनेऐनसिधाई ॥
बाणासुरचढिरथधनुधारी। आयोकरनयुद्धपुनिभारी॥सहसबाहुसहसैहथियारा। हरिपरकोपितकियोप्रहारा ॥३१॥
दोहा-बाणासुरकेअस्त्रसब, काट्योरमानिवास। तज्योसुदर्शनचक्रको, कोटिनभानुप्रकास ॥
सहसबाहुबाणासुरकेरे। काट्योचक्रकरतबहुफेरे ॥ जिमिभूरुहशाखाकटिजाँहीं। बाणासुरइमिरह्योतहाँहीं ॥ ३२॥
मारतजानिबाणकहँईशा। आयेदौरिजहाँजगदीशा ॥ बारबारयदुपतिहिंनिहोरी।अस्तुतिकरनलगेकरजोरी ॥३३॥

रुद्रउवाच।

तुमहिंब्रह्मपरजोतिमुरारी।वेदहुगतिनहिंजानतुम्हारी॥लखततुमहिंज्ञानीतवदासा।व्यापितजैसेजगतअकासा ॥३४॥
अहैनाथनभनाभितिहारी। आननअनलरेतहैवारी ॥ स्वर्गशीशदिशिश्रुतिमहिचरणा।अहंकारश्रुतिमोकहँवरणा॥
दोहा-सिंधुजठरभुजइंद्रहै, ॥ ३५ ॥ रोमवृक्षघनकेश। बुधिविरंचिहियधर्महै, मेढ्रप्रजापतिवेश ॥
छंदगीतिका-सबलोकहैंप्रभुतुमहिंतेयहवेदकरतउचारहैं ॥ ३६ ॥ हठिधर्मपालनजगउदैहितआपकेअवतारहैं ॥
प्रभुआपतेपालितहमहुँसबभुवनसातहुँपालहीं ॥ ३७॥ तुमएकआदिसुपुरुषतुमतेसमअधिककोउहैनहीं ॥
वपुशुद्धस्वयंप्रकाशहोअनिहेतुईशअनंतहूँ ॥ पैकरिकृपानिजदासहितप्रभुअमितरूपधरंतहूँ ॥ ३८ ॥
जिमिभानुमुदितरहतघनतेपैरहततेहिंदूरहै। तिमिरहतिमायादूरितुमतेमूढकहतअदूरहै ॥ ३९ ॥
मायाविवशजनदारसुतगृहमोहिसिंधुहिमहुँपरे। बूडतकहूँउतरातकहूँनहिंपारपावतदुखभरे ॥ ४० ॥
कहुँभागवशलहिमनुजतनुनहिंजीतिइंद्रिनकेगनै। नहिंभज्योतुवपदमूढतेहिंहमशोचनीयसदागनै ॥ ४१ ॥
प्रियईशतुमहिंजोछोडिऔरनप्रेमरसमनमेंचष्यो। सोमूढत्यागिपियूषमानहुँगरलनिजमुखमेंभष्यो ॥ ४२ ॥
हमअरुचतुरमुखदेवसबमुनिऔरजेबिनआशहैं। तेप्राणप्यारेनाथतुम्हरेसकलविधितेदासहैं ॥ ४३ ॥
दोहा-जगउत्पतिपालनहरण, हेतुतुमहिंहोनाथ। इष्टदेवमेरेतुमहिं, शांतसुहृदसुखगाथ ॥

जगदातातुमएकही, अहैनकोईआन। हमसंसारउधारहित, तुमहिंभजैंभगवान ॥ ४४ ॥

यहबाणासुरदासहमारा। असुरनाथबलिकेरकुमारा ॥ धरिनरसिंहसरूपमुरारी। करीकृपाप्रहलादहिंभारी ॥ तैसहिंअबहूँकृपानिधाना। करहुकृपायहिपरभगवाना ॥ अजरअमरयाकेभुजचारी। होंहिंनाथलहिकृपातिहारी ॥ याकोअभयदानमैंदीन्ह्यों। अपनोदासमानिमैंलीन्ह्यों ॥ याकोवधनहिंकरहुमुरारी। राखहुअबतोबातहमारी ॥ असकहिबहुविधिअस्तुतिगाई। शिवअपनीदीनतादेखाई४५तबबोलेहँसिकृपानिधाना। सुनहुवचनमेरेईशाना ॥

दोहा-जैसेतुमकोप्यारयह, तैसेअहैहमार अभयदानहोहूदियो, दूसरनाहिंविचार ॥ ४६ ॥

यहअवध्यसबतेअबहोईयाकोजीतिसकिहिनहिंकोई॥प्रहलादहिमैंदियवरऐसो।तुवकुलवधकरिहौंनहिंकैसो ॥ ४७॥ याकेगर्वनशावनहेतू। सहसभुजाकाट्योबलसेतू ॥ कटकहुयाहीहेतुसंहारा। रहोजौनअतिभूकरभारा ॥ ४८ ॥ चारिभुजारैहैंयहिकेरे। ह्वैहैंअजरहुँअमरवनेरे ॥ आपपारषदयहुसुखिहोई। याकोभीतिकरिहिनहिंकोई ॥ ४९ ॥ जबहरिअभयदानअसदीन्ह्यों।बाणासुरप्रणामतबकीन्ह्यों॥अनिरुधऊषारथहिंचढाई।लायोहरिढिगआशुलेवाई ५०॥

दोहा-वंदनकरिकैलासगो, बाणासुरबलवान। अनिरुद्धहिंइतपाइकै, यदुवंशीहरषान ॥

दंपतिकोतहँकरिशृंगारा। देशोणितपुरमध्यनगारा ॥ माँगिबिदाशंकरतेनाथा। दुलहिनिदूलहलैनिजसाथा ॥ लैसिगरीसेनासुखछाई। चलेद्वारकैतबयदुराई५१यदुनगरीनिकटहिंजबआये। उग्रसेनतबखबरिहिंपाये ॥ द्वारद्वारबहुध्वजाबँधाये। तोरनतेसंयुतकरवाये ॥ द्वारावतीसकलविधिसाजी। कनककलशकीसोहहिंराजी ॥ गलिनबजारगुलावसिंचाये। थलथलकदलीखंभगडाये ॥ साजिनगरयहिविधिनरराई।विविधभाँतिबाजनबजवाई ॥

दोहा-उग्रसेनगवँनतभये, लेनकृष्णभगवान। संगस्वस्तयनपढहिंद्विज, पुरवासीसुखमान ॥
लैअगवानीकृष्णकी, लायेमहलमँझार। ऊषाअरुअनिरुद्धको, राख्योरत्नअगार ॥ ५२ ॥
कृष्णविजयशंकरसमर, जोसुमिरैंपरभात। तासुपराजयहोतनहिं, पावतमोदअघात ॥ ५३ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे त्रिषष्टितमस्तरंगः ॥ ६३ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-एकसमययदुनाथके, प्रद्युम्नादिकुमार। काननमेंसबसमिटिकै,खेलनगयेशिकार ॥ १ ॥॥

बहुतकाललगिखेलिशिकारा।भयेतृषिततहँसकलकुमारा॥गदप्रद्युम्नसांबधनुधारी।चारुदेष्णतिमिविपिनिविहारी ॥ खोजनलगेजलाशयधाई। तहाँकूपइकपऱ्योदेखाई ॥ पानकरनजलतहाँसिधारे। पैनकूपमेंनीरनिहारे ॥ २ ॥ लखेकूपमेंइककृकलासा। शैलसरिसतनुपरमप्रकासा ॥ निरखितहिविस्मितमनमाँहीं।करिकैकृपाकुमारतहाँहीं॥ ताहिनिकारनकरीउपाई ॥ ३ ॥ चामसूतरसरानिमँगाई ॥ बाँधितासुकंमरमेंडोरी। ऐंचनलगेसकलबरजोरी ॥

दोहा-पैनसकेतेहिंऐंचिकोउ, तबसबरहेलजाय। पुनियदुपतिसोंकहतभे, सबहवालपुरजाय ॥ ४ ॥

तहाँतुरतयदुनाथहुआये। सबयदुवंशिनसंगलेवाये॥कृकलासहिंलखिवामहिंहाथा।विनप्रयासऐंच्योयदुनाथा ॥ ५॥ भगवतकरपरसततेहिंकाला।छूट्योसरटरूपविकराला ॥ तप्तकनकसमचारुशरीरा।जगमगभूषणअनुपमचीरा॥६॥ तबपूछ्योतेहिंरमानिकेतू। यदुकुलजननजनावनहेतू ॥ होतुमकौनकहोबडभागे। देवसरिसमेरेमनलागे ॥ ७ ॥ कौनकर्मसोंयहतनुपायो। कारणकौनकूपमहँआयो॥कहोजोहोयकहनकेलायक। अपनीदशामहादुखदायक॥८॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-कह्योकृष्णयहिभाँतिजब, तबहरिपदशिरनाय। जोरिपाणिबोल्योपुरुष, अतिआनँदउरछाय ॥ ९ ॥

नृगउवाच ।

हमहैंनृपइक्ष्वाकुकुमारा । अहैनाथनृगनामहमारा ॥ दानीभूपनकथाश्रवणमें । परचोहोयजोनामश्रवणमें ॥ १० ॥
छिप्योआपतेहैकछुनाँहीं । अंतर्यामीहोसबमाँहीं ॥ पैतुम्हारशासनप्रभुपाई । देहुँसकलगाथानिजगाई ॥ ११ ॥
जेतनेहैंअकाशमेंतारा । जेतनेबूँदवर्षकीधारा ॥ जेतनेहैंरजकणमहिमाँहीं । तेतनीगोदियविप्रनकाँहीं ॥ १२ ॥
तरुणीशीलवतीपैवारी । वत्सनयुतकपिलामनहारी ॥ रूपवतीगुणवतीसुहावनि । देखतहींमनुसुखउपजावनि ॥
दोहा–कनकशृंगखुररजतके, तामकपीठिमढ़ाय । न्यायसहितलीन्ह्योंजिन्हैं, वसनमालपहिराय ॥ १३ ॥
ऐसीगऊदईद्विजकाँहीं । धर्मवानजेरहेसदाँहीं ॥ शीलवानगुणवानकुटुंबी । तपव्रतवेदसत्यअवलंबी ॥
जुआउदारआपकेदासा । तिनहिंअलंकृतकरिसहुलासा ॥ १४ ॥ औरहुभूहिरण्यगजवाजी । दासिनयुतकन्यनकीराजी ॥
भूषणवसनरत्नतिलरूपा । साजभरायअवासअनूपा ॥ शय्यारथआदिकबहुदाना । दियोद्विजनकरिअतिसनमाना ॥
कूपतडागवागवनवायो । निर्जलमगपौसराकरायो ॥ १५ ॥ एकसमयकोऊद्विजकेरी । गऊहेरानिमिलीनहिंहेरी ॥
दोहा–मेरीगौवनमहँमिली, गोपनचीन्ह्योंगाइ । धोखेमेंसोलाइकै, दीन्ह्योंदानकराय ॥ १६ ॥
जवमैंगऊद्विजैदैडारी । जासुगायसोआयनिहारी ॥ कह्योविप्रसोयहहैमेरी । पूँछिलेहुयहहैनहिंतेरी ॥
तबवहकह्योभूपमोहिंदीन्ही ॥ विप्ररारिअसकहिदोउकीन्ही १७ लरतलरतमेरेढिगआये ॥ निजनिजदोउवृत्तांतसुनाये ॥
सुनिकैमोहिंभयोभ्रमभारी । तासोंमैंअसगिराउचारी ॥ १८ ॥ विप्रगऊसतिअहैतुम्हारी । मैंधोखेमेंयहदैडारी ॥
लक्षगऊहमसोंद्विजलीजे । अबयासोंझगरोनहिंकीजे ॥ १९ ॥ तबबोल्योवहद्विजमुहिंपाँहीं ॥ लेहौंसोईलाखमैंनाँहीं ॥
दोहा–तबमैंपुनिजाकोदियो, तासोंकह्योबुझाय । आपहिंलीजेलाखगौ, दीजेअबयहजाय ॥ २० ॥
सोऊद्विजमोसनअसभाषो । लेहौंसोईनलेहौंलाषो ॥ तबमैंकह्योफेरिकरजोरी । सुनहुविप्रदोउविनतीमोरी ॥
नरकपरतमोहिंकरहुउधारा । तुम्हरेकरहैबनबहमारा ॥ पैदोऊद्विजमान्योनाँहीं । दोऊछोडिगेनिजगृहमाँहीं ॥ २१ ॥
कछुककालमहँपुनियदुवीरा । छूटिगयोतहँमोरशरीरा ॥ लैगेयमकेदूतयमाले । पूछ्योमोहिंयमराजउताले ॥ २२ ॥
प्रथमपापकीपुण्यभोगिहो । भूपतिअबतुमदुहूँयोग्यहो ॥ अहैनआपदानकरअंता । पैपापहुकछुभयोतुरंता ॥ २३ ॥
दोहा–तबमैंयमसोंअसकह्यो, प्रथमभोगिहौंपाप । तबयमभाष्योगिरहुमहि, होहुसरटयुतपाप ॥
तबमैंह्वैकृकलासमहाना । गिरचोअंधकूपहिंयुतज्ञाना ॥ २४ ॥ आपप्रसादखबारिनहिंभूली ॥ मेरीभाग्यजायनहिंतूली ॥
रह्योकूपमहँसोभलभयऊ । आपदरशमोकहँप्रभुदयऊ ॥ २५ ॥ दिव्यदृष्टियोगीश्वरजाहीं । देखैंअपनेहृदयसदाहीं ॥
पावतजासुदर्शगतिहोती । मीचुभीतिनहिंहोतिउदोती ॥ सोमेरेदृगगोचरकैसे । होतभयेत्रिभुवनपतिऐसे ॥ २६ ॥
देवदेवजगदीशगोविंदा । नारायणअच्युतहुअनंदा ॥ हृषीकेशपुरुषोत्तमस्वामी । जगनिवासजगअंतर्यामी ॥ २७ ॥
दोहा–मोहिंविदाअबकीजिये, देहुदेवगतिनाथ । रहौंकौनहूँयोनिमें, लहौंआपजनसाथ ॥ २८ ॥
जयजगसिरजकशक्तिबहु, परब्रह्मयदुनाथ । वासुदेवजययोगपति, मोहिंअबकियोसनाथ ॥ २९ ॥
असकहिदैप्रदक्षिणानाथै । वारवारप्रभुपदधरिमाथै ॥ सबकेदेखतचढ्योविमाना ॥ माँगिविदानृपकियोपयाना ॥ ३० ॥
श्रीब्रह्मण्यदेवधरमात्मा । देवकिनंदकृष्णपरमात्मा ॥ यदुवंशिनकोलगेसिखावन । बोलेवचनमंजुसुखछावन ॥ ३१ ॥
अग्निहुअधिकतेजजोधारे । तेहिंब्रह्मस्वनपचतानिहारे ॥ तौअभिमानीभूपनकाँहीं । किमिब्रह्मस्वपचैजगमाँहीं ॥ ३२ ॥
नाहिंहलाहलहमविषमानैं । जासुउपायअनेकबखानैं ॥ हैब्रह्मस्वहलाहलसाँचो । जाकोजतनविरंचिनराँचो ॥ ३३ ॥
दोहा–जोविषखावैसोइमरै, आगीसलिलबुझाय । खायेयहब्रह्मस्वके, जरामूलतेजाय ॥ ३४ ॥
जोब्रह्मस्वखायविनजाने । तीनपुस्ततेहिंगुनैहुनशाने ॥ जोब्रह्मस्वखायबरजोरी । नरकपरैदशदशदोहुँओरी ॥ ३५ ॥
भूपराजमदधनमदआँधर । आपननाशगुनतनहिंतेनर ॥ जोब्रह्मस्वलेनकेनेतू । रच्योमनहुँतेनकोनिकेतू ॥ ३६ ॥
ब्रह्मवृत्तिजेहरैंनरेशा । तातेद्विजकुलभयोकलेशा ॥ तेविप्रनकेरोदनकीने । जेतेकणधरणीकेभीने ॥ ३७ ॥
तेतनेवर्षनकुंभीपाके । पचहिंभूपतेअतिदुखछाके ॥ ३८ ॥ अपनीदत्तअरुदत्तपराई । विप्रवृत्तिजोहरतोभाई ॥

दोहा-वर्षसोसाठिहजारभरि, विष्टाकोकृमिहोय। पुनिनिर्जलकेदेशमें, होतसर्पहठिसोय॥ ३९॥
द्विजधनलेनकरैजोचाहा। तासुराजछूटेनरनाहा॥ हरिब्रह्मस्वधरैजोगेहू। होतपराजयमनहिंसंदेहू॥
द्विजधनहोयनकबहुँहमारे॥४०॥ सुनहुसबैयदुवंशकुमारे॥ करैजोविप्रकाजुअपराधा। क्षत्रीतासुकरैनहिंबाधा॥
जोमारैगरीबहूँदेवे। क्षत्रीतासुचरणहींसेवे॥ ४१॥ द्विजकहँजसमैंकरौंप्रणामा। तैसेतुमहुकरहुसबयामा॥
जोममशासननहिंचितलैहै। ममकरअवशिदंडसोपैहै॥ ४२॥ विनजानेहुजोद्विजधनलेतो।नर्कपरैपरिवारसमेतो॥
दोहा-बिनजानेजिमिलेतभो, नृगनरेशद्विजगाय। लक्षवर्षसोसरटह्वै, रहेकूपमहँआय॥ ४३॥
यदुवंशिनकोकृष्णअस, शासनसुखदसुनाय। जगपावननिजमंदिरहिं, गवनकियेहरषाय॥ ४४॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे चतुःषष्टितमस्तरंगः॥ ६४॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-सखनलखनकोललकिमन, एकसमयबलराम। यदुपुरतेचढियानद्रुत, गयेनंदकेधाम॥ १॥
जबआयेगोकुलबलराई। नंदयशोमतियहसुधिपाई॥ सबविधिमंगलसाजसजाई। लेनगयेबलकोअगुआई॥
नंदयशोदहिंलखिबलरामा। दौरिदुहुनकोकियेप्रणामा॥ मातुपिताबहुदिनमहँनिरखे। नैननतेआनँदजलबरषे॥
नंदयशोदहुआशिषदीने। रह्योनतनुसम्हारसुखभीने॥ २॥ तेनिजऐनहिंगयेलेवाई। रामहिंलियोअंकबैठाई॥
पुनिआशिषदियपितअरुमाई।जियोबहुतदिनरामकन्हाई॥३॥गोपीग्वालसबैजुरिआये।रामहिंनिरखिपरमसुखपाये।
दोहा-यथायोग्यसबकोमिले, वृद्धनसखनशिशून। तैसहिंगोपिनकोमिले, उपज्योआनँददून॥ ४॥
नंदगोदतेउठिबलराई। गेइकांतमहँसखनलेवाई॥ तहँगहिहाथहाथगोपालन। खेलनलागेहाँसिख्यालन॥
घेरिचहूँदिशिअतिअनुरागे। कुशलक्षेमपूँछनतहँलागे॥५॥ गद्गदगरोकहैंमृदुबानी।कृष्णप्रेमतनुसुरतिभुलानी॥
हैबांधवसबकुशलहमारे। यदुवंशीहमकहँअतिप्यारे॥ अबतोभयेपुत्रअरुनारी। करहुकबहुँसुधिनाथहमारी॥
संगसखनलैकरिबरजोरी। करतरहेमाखनकीचोरी॥तासुसुरतितुमकोअबभूली। अबतोभूपतिभयेअतूली॥६॥७॥
दोहा-हन्योकंससोभलभयो, यदुकुलकियोउधार। रिपुनजीतिहनिअबकरहु, द्वारावतीविहार॥ ८॥
तहाँसकलगोपीजुरिआई। रामहिंनिरखिपरमसुखपाई॥ हँसिहँसितहँपुनिपूँछनलागी।रामकृष्णअनुरागहिंपागी॥
कहोरामहैंकुशलकन्हाई। गयेद्वारकानेहछोडाई॥ पुरनारिनसोंकीन्हीप्रीती। छोडदियोनिजकुलकीरीती॥ ९॥
कबहूँनंदयशोमतिकेरी। करहिंसुरतिमाधवमनहेरी॥ सखनसुरतिकहुँकरहिंकन्हाई। जिनकेसंगवनगायचराई॥
कबहुँयशोमतिदेखनऐहै। ब्रजनारिनउरतापबुझैहै॥ सुरतिकरहिंकबहूँयदुराई। गोपिनकीअतिशयसेवकाई॥१०॥
दोहा-जाहिलियेजननीजनक, भ्रातश्वशुरअरुसासु। सुजनपरमदुस्त्यजतजे, हमसबबिनहिंप्रयासु॥ ११॥
ऐसीहमहिंछोडिनिरमोही। भयोजायपुरनारिनछोही॥ ऐसेकपटीचंचलकेरो। किमिमानहिंविश्वासघनेरो॥१२॥
कान्हकृतघ्नीहैजगजाहिर। उरसेऔरऔरहीबाहिर॥ ऐसेमोहनतेकेहिरीती। करीचतुरपुरनारिनप्रीती॥
पैभाषतह्वैहैमृदुबानी। तातेसबवैरहैंलोभानी॥ तासुमंदमुसक्यानिसुहावनि। देखतहीसबसुरतिभुलावनि॥
पुरनारीताहीकोज्वैकै। मोहिगईमनसिजवशह्वैकै॥ १३॥ कहाकृष्णकीकथाचलाई। कहियेऔरकथामनभाई॥
दोहा-कालकटतजैसेउन्हें, तिमिहमारऊजात। अहैबरोबरदुहुनपै, दुखसुखभेदनजात॥ १४॥
असकहिकृष्णतकनिअरुबोलनि।विहँसनिकुंजकुंजकीडोलनि।प्रेमसहितमिलबोद्रुतधाई।कहुँप्रगटबकहुँरहबलुकाई।
येसबसुधिकरिकैब्रजनारी। रोदनकरनलगींसुकुमारी॥१५॥तिनकोरोदनकरतानिहारी। कहिकैरामसँदेशमुरारी॥
बहुविधिगोपिनकहँसमुझायो।कृष्णवियोगहिंशोकमिटायो॥१६॥तहाँराममधुमाधवमासा।ब्रजमेंकरतभयेसुखवासा॥

जानिमनोरथगोपिनकेरो । तैसहिंपूरणचंदहिहेरो ॥१७॥ रामकर्णमनकियवलरामा । देखिसुखदरजनीअभिराम ॥

दोहा–सखिनसंगलैरामतहँ, साजेसकलसिंगार । कालिंदीकेपुलिनमें, विरचतभयेविहार ॥

शीतलमंदसुगंधसमीरा । वहतभयोयमुनाकेतीरा ॥ तहँसघनकुंजनमेंरामा । रासविलासकियेयुतवामा ॥ १८॥
वरुणवारुणीसुरापठाई । वृक्षनवृक्षनधारबहाई ॥ तासुसुगंधसकलवनछाई ॥ १९ ॥ लहिसोरामयुवतियुतजाई ॥
गोपिनसहितकियोबलपाना॥२०॥करनलगेपुनिहिलिमिलिगाना॥रामचरित्रगोपिकागावैं।मंडलमध्यरामअतिभावैं॥
मंदमंदनाचहिंरतिरांचे।नृत्यभेदएकौनहिंवाँचे।झुमतझुकतझुझुकितकहुँझाँकत।उझकिउझकिझपिझपिद्दगताकत।

दोहा–टूटिमालआधीगले, कुंडललहैइककान । वैजंतीवनमालहू, टूटतकुसुमझरान ॥

घूमहिंमत्तनैनअरुणारे । रुकतरुकतमुखवचनउचारे ॥ कहुँकहुँराममंदमुसक्याई । लेहिंसखिनमुखसुखाहिंलगाई॥
नीलवसनसुंदरतनुराजै । रासकरहिंलैसखिनसमाजै ॥ रमावदनश्रमबिंदुसुहाये । मनुमधुबिंदुजलजमहँछाये ॥
युवतिनयूथजोरितहँवैठे । मानहुँसुखसागरमहँपैठे ॥२२॥करनचह्योबलवारिविहारा । यमुनातकिअसवचनउचारा॥
यमुनामेरेढिगद्रुतआवै । मोकोशीतलजलनहवावै ॥ यमुनाकियोवचननहिंकाना ॥ मनहुँरामकहुँमदवशजाना ॥

दोहा–कालिंदीआईनहीं, तबकोपितबलराय । सबसखियनकोदेखतै, हलकोदियोवढ़ाय ॥

यमुनाधारमध्यहलघोरा । देतभयोवसुदेवकिशोरा ॥ दक्षिणकरसोंकरितहँजोरा । खैंचिलियोयमुनहिंनिजओरा ॥
ह्वैगैबंककोशयुगधारा । सुरमुनिसकलअचर्जविचारा ॥ जहाँरामतहँआयोनीरा । रामभूमिह्वैगैअतितीरा ॥ २३ ॥
पुनिबोलेबलदेवरिसाई । मत्ततोहिमैंपरचोजनाई ॥ आईतूँनहिंनिकटबोलाये । ताकोफलअबदेहुँदेखाये ॥
हलसोंधारएँचियहतेरी । करिदेहौंशतटूकनदेरी ॥२४॥ जवयदुपतियमुनहिंडेरवायो । तबकालिंदीउरभयछायो॥

दोहा–चकितह्वैधरिमनुजतनु, परीरामपगआय । परमदीनताकेवचन, बलकहँदियोसुनाय ॥ २५ ॥

रामरामहेमहावाहुवल । जानेहुँनहिंतुम्हारविक्रमभल॥ जासुएकफणकेइकदेशा।धरीरहतियहधरणिहमेशा॥२६॥
परमप्रभावनतुम्हरोजान्यों।मत्तसरिसतुमकोपहिचान्यों॥सोअपराधक्षमहुँप्रभुमोरा।छोडिदेहुरोहिणीकिशोरा॥२७॥
तवछोड्हुयमुनहिंबलवीरा । बहनलग्योतहँतेशुभनीरा ॥ पुनिलैसखिनसंगबलराई । जलविहारकीन्ह्योंसुखछाई ॥
जिमिसुरसरिमहँमत्तमतंगा।विहरतलैकरेणुगणसंगा२८यहिविधिकरिजलविविधविहारा।जलतेनिकरिवसनतनुधारा

दोहा–भूषणअरुसुंदरवसन, अरुमालाछविधाम । देतभयेसबगोपिकन, परमप्रीतियुतराम ॥ २९ ॥

आपहुनीलवसनतनुधारे । कनकमालगलमाहँसँवारे ॥ लेप्योअंगनमेंअँगरागा । लसेराममनुवासवनागा ॥ ३० ॥
यमुनाअबलौंटेढदेखाती।सूचनकरतरामबलजाती ३१ यहिविधिरामव्रजहिंसुखछावन।रजनीमहँसजनीमनभावन॥
सहसनसखिनसहितबलरामा । रासकियोकुंजनअभिरामा ॥ रामवदनअभिरामनिहारी।हँसनिमाधुरीबोलनिप्यारी॥
मोहिगईसिगरीतहँगोपी । औरनिहारनभईनचोपी ॥ होतप्रभातजानिबलराई । आयेनंदभवनसुखछाई ॥

दोहा–यहिविधिवीतेमासद्वै, रामहिंकरतविलास । पैगोपिनजान्योपरचो, एकनिशाकोवास ॥ ३२ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजावान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजासिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे पंचषष्टितमस्तरंगः ॥ ६५ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–व्रजकोजबबलभद्रगे, लखनयशोमतिनंद । शून्यजानिद्वारावती, पौंड्रककियसहछंद ॥

तेहिसमयनिजसभामँझारी । पौंड्रकवैठरह्योधनुधारी ॥ रत्नजटितशिरक्रीटविशाला । पहिरिलियोवैजंतीमाला॥
युवाहोनहितमोंछमोडायो । नीलहोनहितनीललगायो ॥ पहिरयोयुगलपीतपटभारी । रत्नजटितभूषणहुँसुधारी॥
लोहचरणरचिअंग्रितपाई । उरदगायभृगुलतावनाई ॥ काठहिंकीद्वैभुजाबनाई । लियोबाहँमेंजबरबँधाई ॥
दारुहिंकोरचिगरुडविहंगा । कललगायतामेंवहुरंगा ॥ चलतरह्योतामेंसुखछाई । आपनिनारिअंकवैठाई ॥

दोहा-इककरमेंकीन्हेंकमल, इककरगदाप्रचंड । इककररचितसुदर्शनै, तिमिशारँगकोदंड ॥
निजदासनकहँअसकहिराषो । वासुदेवमोकहँनितभाषो॥१॥तेसबघेरिताहिचहुँओरा।जयहरिजयहरिछावहिंशोरा॥
कनकसिंहासनमध्यसमाजा । तापरबैठ्योपौंड्रकराजा ॥ अंकहिंलियेआपनीदारे । बारबारतेहिंवदननिहारे ॥
चामरचारुचलैंचहुँओरा । छग्योछत्रमनुअत्रिकिशोरा ॥ खड़ेसभासदहैंकरजोरे । बारबारपौंड्रकहिंनिहोरे ॥
तुमहोजगकेअंतरयामी । करुणासिंधुनाथखगगामी ॥ वासुदेवतुमहींसतिअहहू । जगमंगलहितनितइतरहहू ॥
दोहा-हमपरकीजैअसकृपा, जगकलेशमिटिजाय । कोदयालहैआपसम, गिरेशरणहमआय ॥
तबबोल्योपौंड्रकमुसुकाई । सबपैमेरीकृपामहाई ॥ पैतुवप्रीतिप्रतीतिविलोकी । करिहौंतुमकहँआशुअशोकी ॥
जोकोउआवतशरणहमारे । ताकेपुनिनहिंरहतखँभारे ॥वासुदेवमोहिंरच्योविधाता । मोसमाननहिंकोउविख्याता॥
हरिमैंयहधरणीकरभारा । पुनिजैहौंआपनेआगारा ॥ सबजीवनकेहितमैंआऊँ । करिकारजनिजलोकसिधाऊँ ॥
पौंड्रकवचनसुनतसरदारा । पाणिजोरियहिभाँतिउचारा ॥ धनिधनिहौलक्ष्मीनारायण।दीननपैअतिकृपापरायण ॥
दोहा-पैइकशंकाहोतिप्रभु, दुखदेतीजियकाँहिं । नामरावरोधारिको, वसतद्वारकामाँहिं ॥
बोल्योपौंड्रकसुनिभटबानी । जोतुमकह्योलियोहमजानी ॥ अहैप्रथमकीजातिअहीरा । व्रजमेंवसतरह्योभयभीरा ॥
वनवनगायचरावतरहेऊ । अबकछुदिनतेकछुधनलहेऊ ॥ तबतेगर्वनजातसँभारो । मेरोरूपगोपवहधारो ॥
वहूगरुडचढ़िवागतरहतो । शंखचक्रमेरेसमगहतो ॥ तातेअसमतिहोतिहमारी । मारिचकतेहिंदेउँविदारी ॥
तबबोलेतेहिंभटधनुधारी । सुनहुनाथकछुविनयहमारी ॥ क्षमहुगोपकरयहअपराधा । झूँठसाँचगुनिकीजियबाधा॥
दोहा-बूझहुताकेकर्मसब, प्रथमहिंदूतपठाय । जोकीन्हेंअपराधसति, तोहठिमारोजाय ॥
आपवैरकरिहैजोकोई । ताकोनाशआपतेहोई ॥ २ ॥ सुनिपौंड्रकसुभटनकीबानी । लियोबोलिदूतहिंअभिमानी ॥
कह्योदूतसोंअससमुझाई । वेगिहिंजाउद्वारकहिंधाई ॥ कह्योगोपसोंअसममवानी । मेरोरूपधरोअभिमानी ॥
नकलकियेअवनहिंकलपैहै । कुलयुतसकलविकलहठिह्वैहै॥यहिविधिऔरहुकह्योबुझाई।दियोदूतकहँद्रुतैपठाई॥३॥
गयोदूतद्वारकामँझारी । जाययादवीसभानिहारी ॥ सिंहासनमणिजटितविशाला । तापरबैठेकृष्णकृपाला ॥
दोहा-दूजेदिव्यसिंहासनै, उग्रसेनमहराज । सात्यकिप्रद्युम्नादिसब, बैठेसहितसमाज ॥
द्वारपालहरिढिगलैआयो । कह्योपौंड्रकौयाहिपठायो । हरिकहदूतवचनउच्चरहू । कोमलकठिनकहतनहिंडरहू ॥
सुनतैदूतजोरियुगहाथा । बोल्योवचननायपदमाथा ॥ मोकहँपौंड्रकराजपठायो । राजसँदेशकहनकछुआयो ॥ ४॥
वासुदेवमोहिंरच्योविधाता । मोसमदूजोनाहिंदेखाता ॥ मैंसबभूतनकोहितकारी । सबअवतारनकोअवतारी ॥
मैंहीहौंसबजगकोकरता । मैंहींपालकअरुसंहरता ॥ पैअसकाननपरचोसुनाई । तूहुँचहहुममसरिसवडाई ॥ ५ ॥
दोहा-मेरेसमरचिचारिभुज, ममसमगरुडबनाइ । तुमहूँवागतजगतमहँ, वासुदेवकहवाइ ॥
जोयहझूँठहोयसबभाँती । तोबैठोकरिशीतलछाती ॥ जोकदाचिसतिकैवहगोपू । करैरूपममधारणचोपू ॥
बिगरिजाइतोसबविधिताको । रहीनरूपरेखकछुवाको ॥ ईशविमुखकोउसुखनहिंपावै । ईशदासह्वैसबसुखछावै ॥
शासनसुनततजैममरूपा । मरणहेतुकूदतकतकूपा ॥ अहैसदाकीरीतिहमारी । क्षमाकरहिंइकबारबिचारी ॥
तातेचक्रादिकहथियारा । धोखेमाहँगोपजोधारा ॥ सोसबकरमेंलैइतआई । मोहिंसोंपिगिरिहैशिरनाई ॥
दोहा-तोमैंकरिकैअतिकृपा, देहौंताहिबचाय । नातोगोपहिसकुलमैं, देहौंसपुरजराय ॥ ६ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-सुनिपौंड्रककेवचनभट, करअरुनैनचलाइ । सभामध्ययदुवरसबै, विहँसेविपुलठठाय ॥
उग्रसेनभूपतिकहबानी । याहिआजुलोंहमनहिंजानी ॥ कहाँवसतहैकोननरेशा । वाकेहैनबुद्धिलवलेशा ॥ ७ ॥
यदुवंशीपुनिअतिशयमाषे । तिनहिंनिवारतयदुपतिभाषे ॥ सुनहुँदूततुमअसकहिदेहू । हमहैंगोपनकछुसंदेहू ॥
हमजेधारेअस्त्रतिहारे । तेनहिंएकौअहैंहमारे ॥ आयआपकेनिकटविशेषी । देहैंछोडिअस्त्रसबलेषी ॥ ८ ॥

जोकछुबनीकरतसेवकाई । सोहमदेहैंतुमहिंदेखाई ॥ ऐसहिंदूतजायकहिदीजे । अबकाहेविलंबइतकीजे ॥ ९ ॥

दोहा–नायमाथयदुनाथको, गयोदूतनिजदेश। पौंड्रकसोंश्रीकृष्णको, वरण्योसकलसँदेश ॥

सुनिपौंड्रकबोल्योमुसक्याई । शासनमान्योमोरिडेराई ॥ इतैद्वारकामहँगिरिधारी । काशीगमनहिंकरीतयारी ॥ दारुककोबोलायतेहिंकाला । कह्योलैआवहुयानविशाला ॥ दारुकसाजितुरतहींस्यंदन । लायोजहँबैठेयदुनंदन ॥ हरिहुक्रीटकवचहुँतनुधारे । लियेअनूपमनिजहथियारे ॥ चढनलगेजबरथमहँनाथा । तुरतहिंतबहिंजोरियुगहाथा॥ सात्यकिअरुप्रद्युम्नप्रवीरा । औरहुसबयदुवररणधीरा ॥ कहतभयेभरियुद्धउमंगा । हमहूँचलबरावरेसंगा ॥

दोहा–तबयदुपतितिनयदुनसों, बोलतभेमुसक्याय। लघुकारजहितसबनको, उचितनजाबदेखाय ॥

यहपौंड्रककोनिर्बलमानो । गर्वहिंभरियहकियोमहानो ॥ इकशृगालपरबहुमृगराजा । मारनधावतलागतलाजा ॥ तबसात्यकिप्रद्युम्नकहऐसे । हमतोचलबरहबनहिंकैसे ॥ आपसमरकहँनाथसिधारें । हमगृहबैठेनारिनिहारें ॥ तबबोलेयदुपतिमुसकाई । सुनहुपुत्रसात्यकिप्रियभाई ॥ धौंकौरवनसंगरणभारी । धौंमागधपरकरीतयारी ॥ धौंदिगपालनजीतनजावें ॥ धौं दैत्यनसोंरारिबढ़ावें ॥ कौनकठिनधौंहैउतकामा । जातेचलहुसबैबलधामा ॥

दोहा–यहलघुपौंड्रककेलिये, उचितनजाबतुम्हार। बलरामहुँनहिंताहिते, ताकहुनगरहमार ॥

तबसात्यकिबोल्योधनुधारी । करहुनाथतोविदाहमारी ॥ मारिदुष्टकहँमैंइतऐहौं । आपकृपातेसुयशबढैहौं ॥ तबबोलेहँसिरमानिवासा । हैतुम्हारऐसहिंविश्वासा ॥ पैपौंड्रकइकमोहिंबोलायो । तातेनिजगमनबचितलायो ॥ असकहिदारुकसोंकहनाथा । हाँकहुरथकोउलेहुनसाथा॥सुनिदारुकहरिवचनसुहाये।वाजिनपीठिनपाणिछुआये ॥ उडेअकाशअकाशतुरंगा । घरघरघोषभयोइकसंगा ॥ अतिआतुरकाशीकहँआये।पौंड्रकपहँदारुकहिंपठाये॥१०॥

दोहा–तेहिंढिगदारुकजायकै, कहतभयेइमिबैन। तुवढिगअस्त्रनतजनको, आयेकरुणाऐन ॥

सुनिपौंड्रककियकोपअपारा।बजवायोयुधहोननगारा ॥ द्वैअक्षौहिणिलैसँगमाँहीं।पौंड्रकचल्योकुपितरणकाँहीं॥११॥ तासुमित्रजोकाशिनरेशा । इकअक्षौहिणिलैदलवेशा ॥ पौंड्रकसंगचल्योअतिकोपी । यदुपतिकोमारनअतिचोपी॥ दारुकआयकह्योहरिपाँहीं । पौंड्रकआवतहैयुधकाँहीं ॥ त्रयअक्षौहिणिदलकहँसाजे । विविधभाँतिबजवावतबाजे ॥ कढेनगरतेदोउमहिपाला।मानहुँमिलनजातहैंकाला॥निरख्योपौंड्रककाहँमुरारी।आवतचल्योनकलनिजधारी॥१२॥

दोहा–शंखचक्रसरसिजगदा, सोहतउरबनमाल। श्रीवत्सादिकचिह्नसब, मणिकौस्तुभहुविशाल ॥

युगविधिकृतयुगदारुहिंकेरे । चारिबाहुयुतअस्त्रबनेरे ॥ १३ ॥ श्यामरंगपीतांबरधारे । गरुडकाठकोरह्योसवारे ॥ तैसहिंगरुडध्वजाफहराती । कुंडलक्रीटप्रभादरशाती ॥१४॥ इमिपौंड्रककहँलखियदुराई।देरुमालमुखहँसेठठाई ॥ जैसेभाँडस्वाँगकरिआवै । तैसोपौंड्रकसजोसोहावै॥हँसतनिराखियदुपतिकहँराजा।दीन्ह्योआयसुसबनसमाजा॥१५॥ धावहुधावहुसबैप्रवीरा । बचिनजायअबभागिअहीरा ॥ सुनतसुभटधायेइकबारा । यदुपतिपरडारेहथियारा ॥

दोहा–शूलपरिघतोमरगदा, शक्तिरिष्टिअसिप्रास। पट्टिशअरुबाणहुविपुल, छायगयेआकाश ॥ १६ ॥

छंद–यदुवंशभूषणबाणतीखणसमरभीषणलेतभे। शरधारछोडिअपाररणअँधियारकरिद्रुतदेतभे ॥ १७ ॥
गजवाजिस्यंदनखंडखंडनमुंडझुंडउडातहैं। कहुँगदाचक्रहुँचक्रवक्रहुँयत्रतत्रलखातहैं ॥
पुनिकह्योदारुकसोंहरषिहरिकरिसुचंचलस्यंदनै। लैचलहुआशुप्रकाशुकरिजहँखडेशत्रुनवृंदनै ॥
सुनिनाथवचननिकरतरचननिलैरथचल्योरथसूतहै। कहुँसरलअतिकहुँतरलधावतमनहुँविनतापूतहै ॥
शारंगकोटंकोरशोरअथोरभोतेहिंठौरहै। चहुँओरबाणकरोरझारतशूरशौरिकिशोरहै ॥
बहिचलीशोणितसरिततहँधावतपिशाचबेतालहै। कालीलियेकरखड्गखप्परभावतीतेहिंकालहै ॥
कहुँकंककाकशृगालअतिविकरालभक्षहिंमांसको। करिपानरुधिरअघानअतिपायेमहानहुलासको ॥
कहुँखंडखंडवितुंडशुंडअखंडहैवरखंडितै। कहुँरुंडकेअरुमुंडकेबहुझुंडवसुधामंडितै ॥
कहुँऊटजूटनजूटफूटेफूटसेमुखफूटिगे। बहुकूटसेकटिगेकरीजनबूटबूटहुजूटिगे ॥

तहँसमरधरणीभीतिभरणीसुभटमरणीह्वैगई । मनुशंभुनेत्रनप्रगटिज्वालकरालपरलैकरिदई ॥
शारंगकीशरधारसनहुँदमारिधावतधधाकिकै । पौंड्रकहुकाशीराजभटतरुभस्महोतेभभाकिकै ॥
नहिंभजिसकतनहिंबचिसकतनहिंतजिसकतशरयूहहैं । इकवारतहँबलवारअतिहिंलचारकरतेकूहहैं ॥
तहँपरचोहाहाकारसमरमँझारवारहिंवारहै । सवसुभटकरहिंउचाराकियसंहारशौरिकुमारहै ॥
जयजयकरहिंसुरसिद्धऋषिपरसिद्धनभमहँआयकै । वरषैंप्रसूनअनंददूनसुदुंदुभीनबजायकै ॥
द्वैदंडमहँपौंड्रकहुकाशीराजसेनाहतिगई । जेबचेनेसुकबाणलागेकहतभागेहादई ॥
तवकोपिकाशीराजपौंड्रककरतधनुटंकोरहै । धायेधसावतधरणिदोउकरतशोरकठोरहै ॥
दोहा-काशिराजपौंड्रकदोहुन, धावतआवतदेखि । दारुकसोंबोलतभये, यदुपतिअतिलघुलेखि ॥
चलहुविलंबहोयकसभारी।मारिद्वारकहिंजाहिंपधारी॥सुनिदारुकरथचपलचलाई।दियोपौंड्रकहिंढिगपहुँचाई ॥१८॥
पौंड्रकसोंबोलेभगवाना । मेरेवचनकीजियेकाना ॥ कहिपठयोजोतुममोहिंपाँहीं । दूतपठायद्वारकामाँहीं ॥
मेरेअस्त्रधरेगोपाला । धरयोरूपहूमोरविशाला ॥ सोद्रुतछोडिदेयइतआई । मेरेचरणपरैशिरनाई ॥
नातोसकुलकरौंगोघाता । वासुदेवमोहिंरच्योविधाता॥यहीवचनसुनिराजतिहारे । आयगयेहमअतिडरधारे ॥१९॥
दोहा-छोड़िदेतहैंअस्त्रको, वासुदेवतुमलेहु । अबतोहैअपराधनहिं, वृथादोषनहिंदेहु ॥ २० ॥
असकहिसायकसातचलाई । गरुडहिंकाटिदियोयदुराई ॥ शंखचक्रआदिकसबकाटे । वनमालाकीटहुँकरछाँटे ॥
पुनिद्रुतचक्रसुदर्शनमारे।पौंड्रकधरतेशीशउतारे॥गिरचोभूमिमहँपौंड्रकराजा।चलीभाजिलखिसुभटसमाजा ॥२१॥
काशिराजतबकोपहिंछायो । यदुवरपरशरनिकरचलायो ॥ एकबाणलैतहाँमुरारी । काटिकाशिभूपतिशिरभारी ॥
बाणवेगितेताहिउडाई । काशीमहँडारचोयदुराई ॥२२॥ यहिविधिपौंड्रककाशिनरेशै । मारिसैन्ययुतद्रुततेहिंदेशै॥
दोहा-यदुपतिद्वारावतिगये, विजयमानहरषान । जहँतहँहरियशसिद्धसुर, करनलगेसुखगान ॥ २३ ॥
पौंड्रकहरिकोदेखकरि, निशिदिनमनहिंलगाय । हरिपुरकोगमनतभयो, दिविदुंदुभीबजाय ॥ २४ ॥
उतैकाशिभूपतिकोशीशा।तासुभवनमहँगिरचोमहीशा॥कुंडलसहितशीशसोदेषी।पुरजनकौतुकगुन्योविशेषी॥२५॥
काशिराजकोशीशहिजानी । रोदनकियेसबैदुखमानी ॥ रानीराजपुत्रनृपभाई । शीशनिकटआयेद्रुतधाई ॥
करनलगेतहँमहाविलापा । पावतभेसिगरेसंतापा ॥ हायनाथहममेरेअनाथा । असकहिपुरजनमींजहिंहाथा ॥२६॥
काशिराजसुतरह्योसुदक्षिण।क्रियाकांडमहँअतिशयदक्षिण।सोपितुकोकरिमृतकविधाना।सभामध्ययहवचनबखाना
दोहा-जोमारचोमेरेपितै, ताहिमारिकैआशु । पितैउऋणह्वैहौंद्रुतै, तबपूजिहिंममआशु ॥ २७ ॥
असप्रणकरिशठद्विजनबोलाई। शंकरकोपूज्योचितलाई॥२८॥शंभुप्रसन्नभयेतेहिंकाला।कह्योमाँगुवरदानविशाला॥
तहाँसुदक्षिणकहकरजोरी । सुनहुनाथविनतीयहमोरी ॥ मारचोजोमेरेपितुकाँहीं । ताकोमारहुँमैंक्षणमाँहीं ॥
असउपायमोहिंदेहुबताई । अवनवचैजामेंदुखदाई ॥ २९ ॥ तवबोलेशंकरहँसिबानी।सुनहुसुदक्षिणतुमअभिमानी॥
दक्षिणाग्निअभिचारविधानै । करहुजोरिऋत्विजनमहानै ॥ वहीअग्नितेरेमनकामै । पूरणकरिहैंएकत्रियामै ॥ ३० ॥
दोहा-पैह्वैब्रह्मण्यजो, लगीनकृत्याताहि । लौटिनाशकरिहैतुम्हैं, यहमेंसंशयनाँहि ॥
असकहिभेशिवअंतर्धाना । कियोसुदक्षिणसोईविधाना ॥३१॥ कियोमांसकोहोमहिंकुंडा।तातेप्रगटीज्वालप्रचंडा॥
मूर्त्तिमानकृत्यानलनिकसो । जाकोनैनलालयुगविकसो ॥ महाभयावनतनुअतिकारा । तपेताम्रसमऊरधवारा ॥
नैननतेनिकसतअंगारा । श्वासलेतहैवारहिंबारा ॥ ३२ ॥ डाढ़दाँतहैंजासुकठोरा । भृकुटीविकटतकतचहुँओरा ॥
रसनातेअधरनकहँचाटै । अरुअधरनदंतनतेकाटै ॥ अहैनगनद्वैपदसमताला । लियेहाथमहँशूलविशाला ॥ ३३ ॥
दोहा-ऐसोकृत्यापुरुषवह, कह्योसुदक्षिणपाँहिं । भक्षणदेहुबताइद्रुत, ताकोआशुहिंखाहिं ॥
कह्योसुदक्षिणयदुपुरजाहू । कुलतेयुतयदुपतिकहँखाहू॥सुनतसुदक्षिणवचनविशाला।धायोपश्चिमदिशिमनुकाला॥
चलेभूततेहिंसंगअनंता । नाचतगावतकूदिहसंता ॥ कृत्यापुरुषजहाँजहँजावै । जारतपुरनप्रजनकहँखावै ॥

यहिविधिगयोद्वारकामाँहीं।लग्योजरावननगरीकाँहीं॥३४॥कृत्यापुरुषनिरखिअतिभासी।हाहाकारकरतपुरवासी॥
जरतनारिनरभगेपुकारत । अतिआरततनुनाहिंसँभारत ॥ जैसेवनमहँलगेदँवारी । भागहिंमृगगणपरमदुखारी ॥
दोहा–तैसहिंभागतपुरप्रजा, पीछेपुरुषप्रचंड । धावतआवतअतिविकट, धारेशूलउदंड ॥ ३५ ॥
गिरतपरतद्वारकानिवासी । आयेजहाँनाथसुखरासी ॥ त्राहित्राहिरक्षकगिरिधारी । कृत्यापुरुषदेतदुखभारी ॥
जरतनगरबाँचतअबनाँहीं । तुमहिंछोडिहमकहिंपहँजाँहीं ॥ तहाँयादवीसभामँझारी । खेलतचौपरिरहेमुरारी ॥
सात्यकिउद्धवहैंइकओरा । एकओरदेवकीकिशोरा ॥३६॥ सुनिपुरवासिनआरतशोरा । उठेसकलयदुवरवरजोरा॥
हरिहुसुन्योबोलेकछुनाँहीं ॥३७॥कृत्यापुरुषजानिमनमाँहीं॥सहजहिंचक्रसुदर्शनकाँहीं।फेंकिदियोकृत्यानलपाँहीं॥
दोहा–पुनिपासाखेलनलगे, सात्यकिउद्धवसंग । नेकुसोचकीन्ह्योंनहीं, रँगेखेलकेरंग ॥ ३८ ॥
छंदभुजंगप्रयात–चल्योचक्रमानोउदैकोटिभानू । मनोधावतीहैप्रलैकीकृशानू ॥
गयोछाइताकोत्रिलोकैप्रकाशा । नदेखीपरैभासपूरीदशाशा ॥
जितैकालकृत्यारह्योहैकराला । तितैचक्रधायोवमज्वालमाला ॥
सह्योनागयोचक्रकोतेजभारी । भग्योसोद्रुतैबारबारैपुकारी ॥ ३९ ॥
चल्योचक्रपाछेमहावेगताके । महावेगसोंशैलफूटेंधराके ॥
गयोभागिकृत्यानलौफेरकासी । गह्योदक्षिणैक्रत्विजैयुक्तभासी ॥
दियोडारिकुंडैसबैएकबारै । भयेपावकेआशुहींदुष्टछारै ॥ ४० ॥
पहूँच्योतहाँचक्रतौलौंप्रकाशी । गह्योदौरिकृत्यानलैकोपराशी ॥
दियोडारिकृत्यानलैताहिकुंडै । नदेखोपरैताहिकोरुंडमुंडै ॥
सह्योनागयोचक्रकोतेजभारी । द्रुतैदौरिकाशीपुरीजारिडारी ॥
सभामंदिरौगोपुरौऔबजारा । गलीऔअटारीसबैधायजारा ॥
जरैबाजशालेतथानागशाले । जरैवस्त्रशालेतथाशस्त्रशाले ॥
हाहाकारभारीरह्योमाँचिकाशी । बढीचक्रकीज्वालमालाप्रकाशी ॥ ४१ ॥
घरीद्वैकमेंसोपुरीकोजराई । गयोचक्रसोद्वारकैफेरधाई ॥
रह्योपूर्वकालैधरचोसोजहाँहीं । गयोबैठितैसेतुरंतैतहाँहीं ॥
जरायोपुरीकोखलैमारिआयो । लियोजानिकृष्णैमहामोदछायो ॥ ४२ ॥
दोहा–सुनैसुनावैजोपुरुष, यहहरिविजयसुजान । तासुपापजरिजालसब, शठदक्षिणैसमान ॥ ४३ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्री राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे षट्षष्टितमस्तरंगः ॥ ६६ ॥

दोहा–सुनिपौंड्रककीयहकथा, मुदितपरीक्षितराज । फेरिकह्योसुकदेवसों, मध्यमुनीनसमाज ॥

राजोवाच।

दोहा–औरसुननहमचहतहैं, श्रीबलदेवचरित्र । सोवरणौअद्भुतपरम, जगजनकरनपवित्र ॥
सुनतपरीक्षितकीमृदुबानी । कहनलगेशुकअतिसुखमानी ॥ १ ॥

श्रीशुक उवाच।

जोसुग्रीवसचिवइकरहेऊ । वानरद्विविदनामसोलहेऊ ॥ जोमयंदकोहैलघुभाई । मारचोजोराक्षससमुदाई ॥ २ ॥
सोवहकालपायमहिपाला । ह्वैगोकुमतीक्रूरकराला ॥ नरकासुरसोंकरीमिताई । लाग्योकरनपापसमुदाई ॥

दशहजारहाथीकोजोरा। करतरह्योअतिशोरकठोरा ॥ सोनरकासुरवधसुनिकाना। कियोकृष्णपरकोपमहाना ॥
चल्योअनर्तदेशकहँकोपी। यदुवंशिनमारनप्रणरोपी ॥

दोहा–आयदेशआनर्तमें, करनलग्योउतपात। करनचह्योसबगाजको, एकहिंबारनिपात ॥

नगरनपुरनआकरनमाँहीं। गोशलनमखमालनकाँहीं ॥ आगलगायदियोसबजारी।मारिप्रजनकहँकियोदुखारी॥३॥
कहुँशैलनकहँलेतउखारी।चूरणकरतग्रामपुरडारी॥४॥कहँद्विविदहिलिसागरबीचै। दोउअंजुलिसोंसलिलउलीचै ॥
बोरहिंसिंधुतीरकेग्रामा। कहूँबहायदेतबलधामा ॥ ५ ॥ मुख्यमुनिनकेआश्रमजाई। भंजनकरतवृक्षसमुदाई ॥
करैमूत्रमलकुंडनमाँहीं। जिनमेंमुनिजनहोमकराँहीं ॥ ६ ॥ पकरिसकैंनहिंपुरनरनारी। देतोशैलकंदरनडारी ॥

दोहा–तिनकेद्वारनमेंद्विविद, देतपषाणदबाय। तहाँनारिनररुदनकरि, मरहिंसबैअकुलाय ॥ ७ ॥

यहिविधिकरतउपद्रवभारी।धर्षणकरतसकलकुलनारी॥देशअनर्तहिंवागतभयऊ।सकलप्रजनकहँअतिदुखदयऊ ॥
एकसमयरैवतगिरिनेरा। गयोकरतकबहूँकपिफेरा ॥ करतरहेतहँरामविहारा। सखिनसंगलैसजेसिंगारा ॥
बाजिरहेतहँबाजसुहावन। रह्योगानहोतोसुखछावन ॥ सुनताद्विविदअतिसुंदरगाना।रैवतगिरिकहँकियोपयान॥८॥
शैलशिखरमहँजबचढिगयऊ। तहँबलभद्रहिंदेखतभयऊ ॥ कमलमालपहिरेबलरामा।सुंदरसकलअंगछबिधामा ॥

दोहा–सखिमंडलकेमध्यमें, मंडितहैंमुदवार ॥ ९ ॥ पानकियेअतिवारुणी, गानकरतलैतार ॥

मदमातेघूमतदोउनैना। एककर्णकुंडलछबिऐना ॥ आधेशीशक्रीटकहँदीने। टूटीमालरंगमहँभीने ॥
घूमतवागतठोरहिंठोरा। मनहुँमत्तमातंगकिशोरा ॥ तरुणतरुणतरदोरतवागैं। दोरिदोरिआलिनउरलागैं ॥ १० ॥
तहाँद्विविदवानरद्रुतजाई। चढ्योवृक्षमहँताहिहलाई ॥ शाखनशाखनकूदतजाई। शाखामृगसबशाखहलाई ॥
कियोकिलकिलाशोरअपावन।प्रगटकियोनिजरूपभयावन॥११॥सखीदेखिमर्कटचपलाई।सिगरीलागीहसनठठाई ॥

दोहा–पुनिबलभद्रहिंआयकै, आलिनदियोबताय। यहवानरअतिशयचपल, करतकलाइतआय ॥ १२ ॥

तहाँद्विविदअतिकोपहिंछायो।मुखचलायकैसखिनबिरायो॥लग्योफेरिभृकुटीमटकावन।काढिदंतसबलग्योदेखावन ॥
पुनिझुकिसखियनगुदैदेखाई। तहाँकछुकरिषरामहिंआई१३हन्योपषानरामतेहिंकाँहीं। सोबचायगोलाग्योनाँहीं ॥
तहाँकूदिकैधरणिसिधारो।मदिराकलशफोरिकपिडारो१४रामहुँकहँपुनिलग्योबिरावन।गुददेखायभृकुटीमटकावन॥
फेरिसखिनकोवसननिफारचो१५कूदितुरततरुउपरसिधारचो।तासुचपलतारामनिहारी।तेहिंकृतदेशनदुखितविचारी

दोहा–हलमूसलहलधरलियो, कपिकहँहननविचारि। कसिफेंटोकटिमेंतुरत, शोकितसखिननिहारि ॥

द्विविदहुँलियउखारितरुशाला।कियोशोरतहँपरमकराला१६दौरिजोरभरिरामहिंशीशा।मारचोशालवृक्षअवनीशा ॥
पकरिलियोतरुकोबलरामा।तोरिफेंकिदीन्ह्योतेहिंठाँमा१७।१८हलतेऐंचिरामतेहिंकाँहीं।मारचोमूसलमाथहिमाँहीं॥
फूट्योशिरतेहिंलगतप्रहारा। बहतभईशोणितकीधारा ॥१९॥ जैसेगिरितेगेरुपनारा। सोप्रहारकपिनाहिंविचारा ॥
शालवृक्षइकद्वितियउखारी।मारचोरामहिंकरिबलभारी२०राममारितहँमुसलविशाला।कियोटूकशतसोतरुशाला ॥

दोहा–शालवृक्षलैतीसरो, मारचोबलकेमाथ। ताहूकोशतटूककिय, राममुसलधरिहाथ ॥ २१ ॥

यहिविधियुद्धकरतबहुकीशा।पुनिपुनिवृक्षहनतबलशीशा॥विनावृक्षकोवनसबकीन्ह्यों।सबउखारिबलपरहनिदीन्ह्यों
रहिगेवृक्षनतहाँमहाना॥२२॥तबकपिमारनलग्योपषाना॥तहँबलभद्रमुसलकरलीन्हें।सबपषानकहँचूरनकीन्हें॥२३
तहाँद्विविदकरिकोपकराला। भुजाउठायसरिसयुगताला ॥ मूठीबाँधिशोरकरिधाई। उरमहँलपटिगयोद्रुतआई ॥
वसनफारितनुचींथनलाग्यो॥तहँबलभद्रकोपमहँपाग्यो२४फेंकिदियोहलमूसलकाँहीं॥द्विविदहिंधरचोदोहुकरमाँहीं।

दोहा–सुतवाकापिकेपकरिदोउ, लीन्ह्योंरामउखारि। द्विविदतहाँशोणितवमरि, महिमहँगिरचोचिकारि॥२५॥

द्विविदगिरतपर्वतसबडोला। बारबारजिमिमंजुहिंडोला ॥ औरहुटूटिगयेसबवृक्षा। भागिगयेतहँकेकपिऋक्षा ॥
डोलिउठीआशुहिंतबधरणी। सागरपवनपायजिमितरणी॥२६॥तहाँदेवगंधर्वमुनीशा। चारणअरुअप्सराऋषीशा॥
नमोजयतिगावतअनुरागे। रामहिंसुखितसराहनलागे ॥ वर्षनभतेफूलनवृंदा। मानतभेअतिउरहिंअनंदा ॥ २७ ॥

यहिविधिजौनद्विविददुखकारी।ताहिरामबिनश्रमतहँमारी॥ अपनोसुयशसुनतनिजकाना।पुरप्रवेशकीन्ह्योंभगवाना

दोहा–द्वारावतिवासीसबै, सुनिकैद्विविदविनास। लगेसराहनरामको, पायोपरमहुलास॥ २८॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे सप्तषष्टितमस्तरंगः॥ ६७॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–एकसमयहस्तिननगर, दुर्योधनकुरुराज। सुतास्वयंवरकरतभो, जोरिमहीपसमाज॥

रहीलक्ष्मणानामकुमारी। दुर्योधनकीअतिछबिवारी॥ तासुस्वयंवरसुनिमहिपाला। हस्तिनपुरआयेतेहिंकाला॥
सभामध्यसबजोरिसमाजा। बैठतभेपुहुमीकेराजा॥ खबरस्वयंवरकीसोइपाई। रामकृष्णकोतुरतछिपाई॥
अर्धरातियदुपतिकोनंदन। जाकोसांबनामचढिस्यंदन॥ गयोहस्तिनापुरकहँधाई। लियोनदूजोसंगलेवाई॥
पहुँच्योहोतस्वयंवरमाँहीं। दूरिखरोभोजहँकोउनाँहीं॥ निकसीलैजैमालकुमारी। पहिरावनकोहुनृपहिंविचारी॥

दोहा–तहँसांबरथतेउतरि, दौरिसभामधिजाय। लियोलक्ष्मणाकोतुरत, अपनेअंकउठाय॥

निजस्यंदनमेंताहिचढाई। चल्योद्वारकाकीदिशिधाई॥१॥ सांबहिंहरतनिरखिकुरुवीरा।सिगरेकोपकियेगंभीरा॥
तहँदुर्योधनकह्योरिसाई। यदुकुलकीशठतानहिंजाई॥ दुर्विनीतहरिसुतव्यभिचारी। लियेजातमरयादहमारी॥
यहशठहमहिंनपुंसकजानै। बलीआपनेकहँअतिमानै॥ बरवशहरीकुमारकुमारी। सुतानतेहिंजयमालाडारी॥२॥
तातेधायधरहुशठकाँहीं। जाननपावैयहगृहमाँहीं॥ वेरिचहूँकितेतेयाँहिबाँधो। ल्यायअंधकोठरीमहँधाँधो॥

दोहा–जोसांबहिंबंधनसुनत, यदुवंशीरिसिछाय। सैन्यसाजिसबआपनी, हमपरऐहैंधाय॥

ताकाकरिहैंयदुकुलकेरे। अहैंसदाकेसेवकमेरे॥ भूभोगतहैंदीनिहमारी। चमरछत्रदैकियअधिकारी॥ ३॥
जोकरिहैंहठिआयलराई। तोजैहैंवीरतागमाई॥ यदुवंशिनकोगर्वमहाना। सहिनजातसुनिजातनकाना॥ ४॥
तहँभीषमभाष्योधनुधारी। वधिहैंनहिंबालकव्यभिचारी॥ कर्णकह्योकरिकोपअघाता। यदुवंशीहैंकेतिकबाता॥
मोहींकहँआयसुनृपदेहू। आपकरहुनहिंकछुसंदेहू॥ महीअकेलबालधरिलैहौं। यदुवंशिनउतारिमददेहौं॥

दोहा–असकहिधनुशरकर्णकरि, कर्णकरनशिशुअंत। सांवओरस्यंदनचल्यो, धावतभयोतुरंत॥

भूरिश्रवाऔरशलवीरा। यज्ञकेतुतैसेरणधीरा॥ भीषमभीषमग्रीषमभानू। कियोसांबपरकोपिपयानू॥
चढिस्यंदनदुर्योधनराजा। धायोसांबधरनकेकाजा॥ येषटवीरमहाधनुधारी। धायेसांबहिंओरप्रचारी॥ ५॥
आवतषटवीरनकहँदेखी। सावधानह्वैसांबविशेखी॥ सारथिसोंअसवचनउचारा। फेरोरथअबआशुहमारा॥
भागबयदुकुलकोनहिंधर्मा। जायदेखाउबकिमिसुखधर्मा॥यदुकुलकीयहरीतिसदाकी। करहिंवीरतारणमहँबाँकी॥

दोहा–यदुवंशिनकोधर्मयह, आपअकेलेहुहोय। कबहुँसुरहिंनहिंसमरते, सहसनशत्रुनजोय॥

सुनतसूतस्यंदनद्रुतफेरा। सांबहुकियोशोरधनुकेरा॥ खरोअकेलसिंहसमवीरा। सांबकुमारमहारणधीरा॥ ६॥
कर्णदूरतेतेहिंगोहरायो। रेदुर्मदद्रुहिताहरिल्यायो॥ ताकोफलअबवेगिहिंपैहै। जोरनतेकहुँभाजिनजैहै॥
ठाढोरहुठाढोरहुबालक। तैंउपजेअपनोकुलघालक॥ असकहिकर्णशरनबहुमार्‍यो। तिमिभीषमबहुबाणपँवार्‍यो॥
भूरिश्रवासुयोधनदोऊ।विशिखनिशितछाँडतभेसोऊ॥भीष्मदेवपुनिबाणनिधारा।सांबहिंपरतजिकियअँधियारा ७॥

दोहा–गयोबेधिबाणनिविपुल, तहँयदुनाथकुमार। पैनगनतभोनेकहूँ, रणबाँकुरोजुझार॥

छंद–ज्योंक्षुद्रमृगनविलोकि। मृगराजरहतअशोकि। त्योंवीरसांबकुमार॥ ८॥ कोदंडकियटंकार॥
चमकायछनछनचाप। बहुकरतअरिपरदाप॥ स्यंदनतुरंतधवाय। बरतजतबाणनिकाय॥
पहुँच्योजहाँषटवीर। चहुँओरमार्‍योतीर॥ कर्णहिंहन्योशरबीस। कुरुनाथकहँशरतीस॥

देवव्रतैऔनचास। शलकोहन्योपंचास॥ भूरिश्रवैशतवान। मखकेतुद्विशतशरान॥ ९॥
पुनिकर्णकहँशरचारि। हनिदियतुरंगविदारि॥ पुनिकाटिसूतहिंशीश। रथकाटिदियशरबीश॥
अरुभीषमहिंशरधार। पुनिहन्योसांबकुमार॥ ध्वजसूतस्यंदनकाटि। पुनिशरनदियतेहिंपाटि॥
भूरिश्रवैदशपाँच। कोपितहन्योनाराच॥ हनिसूतरथकहँकाटि। हयचरणदीन्ह्योंछाँटि॥
दुर्योधनैशरधार। मारतभयोबलवार॥हयसूतजानविनाशि। रणमध्यओजप्रकाशि॥
मखकेतुकोतिमिवीर। दलिदियोरथहनितीर॥ भेविरथषटबलवान। लगिसांबकेबहुबान॥
दोहा-सांबओजअद्भुतनिरखि, षटभटरणमहँताहिं, एकबारबोलेवचन, विविधप्रकारसराहिं॥
छंद-धनिधंनिकृष्णकुमारहै। भुजबलहुतोरअपारहै॥ षटवीरकेइकवारहीं। रथदल्योतजिशरधारहीं॥ १०॥
पुनिषटबलीअतिकोपिकै। सांबहिंधरनचितचोपिकै॥ चहुँओरतेवोहिंघेरिकै। मारनलगेशरटेरिकै॥
भटचारिचारितुरंगनै। शरमारिकियबिनअंगनै॥ इकहत्योसारथिशीशहै। एकदल्योधनुशरबीसहै॥
ह्वैगयउविरथकुमारहै। लियपरिघकरदशभारहै॥ दोरयोसुभटभटसन्मुखै। मारनरिपुनद्रुतउन्मुखै॥
तहँकर्णपरिघहिंकाटिकै। सांबहिंदियोशरपाटिकै॥११॥षटवीरकोपहिंछायकै। सांबहिंलियोधरिधायकै॥
पुनिबाँधिकृष्णकुमारको। लैचलेनिजाहिंअगारको॥ कुरुपतिसुताकोजानमें। चढ़वायमोदमहानमें॥
अतिमुदितहस्तिनपुरगये। निजविजयमनमहँगुनिलये॥ कन्याकुँवरकहँऐनमें। राख्योसजगयुतशैनमें॥
कुरुनाथमनमोदितभयो। हरिरामभयकोतजिदियो॥यदुवंशअबनहिंआयहैं। जोखबरिहूँयहपायहैं॥१२॥
दोहा-निरखिसांबबंधनतहाँ, नारदअतिदुखपाय। गयोद्वारकाकोतुरत, जहाँकृष्णबलराय॥
सभासुधर्माअतिछबिछाई। तामेंबैठरहेयदुराई॥ कनकसिंहासनअतिछबिछाजा। बैठेउग्रसेनमहराजा॥
तैसहिंसुवरणआसनमाँहीं। राजिरहेबलरामतहाँहीं॥ तहँअनिरुद्धधीरधनुधारी। सोहिरह्योरणअरिदुखकारी॥
महाबलीप्रद्युम्नप्रवीरा। राजतरामनिकटरणधीरा॥ सात्यकिअरुउद्धवअक्रूरा। गदसारणकृतवर्माशूरा॥
दीप्तिमानअरुभानुजुझारा। औरहुँबैठेकृष्णकुमारा॥ उठीसभानारदकहँदेखी। यदुवंशीनुदलहेविशेखी॥
दोहा-पूजनवंदनकरिमुनिहिं, पूँछीपुनिकुशलात। पुनियदुपतिकरजोरिकै, कहतभयेयहबात॥
कहहुखबरिहस्तिनपुरकेरी। कुरुकुलसुरतिकरहिंकहँमेरी॥ तबनारदयहवचनबखाने। अबलोंनाथआपनहिंजाने॥
सांबहरीकुरुनाथकुमारी। तबकोपितह्वैषटधनुधारी॥ भीषमकर्णसुयोधनवीरा। शलमखकेतुभूरिश्रवधीरा॥
विरथसांबकहँकरितहँबाँधी। राखेउएककोठरीधाँधी॥ नारदवचनसुनतयदुवंशी। कोपवंतभेशत्रुनध्वंशी॥
उग्रसेनभूपतितहँबोले। अपनेउरकीआशयखोले॥ अबलोंऐसीयहिकलिमाँहीं। बातअनैसीभइकहुँनाँहीं॥
दोहा-करिअधर्मषटवीरमिलि, एकबालककोचेरि। करिविरथैधरिलेतभे, परलोकहिंनहिंहेरि॥
तातेअससबकरहुविचारा। जेहिंप्रकारमिलिजायकुमारा॥ सामदामअरुभेदहुदंडा। करहुसबैयदुवरबरिबंडा॥
हैंकुरुवंशीअतिबलवाना। तेहिंतेकरहिंअधर्ममहाना॥ सात्यकिसुनतभूपकेबैना। मसकिजानुयुगमहिभरिचैना॥
सभासदनसबकाहँसुनाई। बोल्योवचनवीररसछाई॥ भरेघमंडमाहँकुरुवंसी। अपनेकहँमानहिंअरिध्वंसी॥
कृष्णकुँवरबंधनसुनिकाना। क्षणभरिरहतनबनतमकाना॥ हुक्मकरहुयेहीक्षणनाथा। यदुवरलेहिंशस्त्रनिजहाथा॥
दोहा-साजिसकलदलआजुहीं, करिभलबलअवलंब। हस्तिनपुरैपधारिये, अबनहिंकरहुवेलंब॥
तहाँदानपतिगदकृतवर्मा। संबतकीन्हेसात्यकिमर्मा॥ तबअनिरुद्धकह्योअतिकोपी। कुरुवंशिनकटकनमहँचोपी॥
आजुहिंहस्तिनपुरकहँघेरी। मारहुँकुरुवंशिननहिंदेरी॥ इनकेअतिघमंडमनबाढ़ो। मिलोसुभटअबलोंनहिंगाढ़ो॥
खोदिहस्तिनापुरहिंबहैहैं। तबयदुवंशीनामकहैहैं॥ तबबोल्योप्रद्युम्नधनुधारी। सुनहुनाथअबबातहमारी॥
जाहुनकोउहस्तिनपुरमाँहीं। देहुअकेलसीखमोहिकाँहीं॥ लघुकारजहितसबयदुवंसी। काहेगँवनकरहिंअरिध्वंसी॥
दोहा-सबकुरुवंशिनपकरिकै, पगमहँबंधनडारि। आपनिकटलैहौंतुरत, तौसतिबातहमारि॥

कुरुवंशिनजोपकरिनलाऊँ। तोसुतराउरमैंनकहाँऊँ॥ जोकरिहैंशंकरहुसहाई। तोधरिलैहौंआपदोहाई॥
भीषमविजयकरनकेभुजबल। कीन्हेकौरवहैंघमंडभल॥ जहँनिर्बलकाहूकोदेखैं। कौरवतहँयुधकरहिंविशेखैं॥
कौरवअहैंऔरकेधोखे। लखैंनआपदासशरचोखे॥ पितानअबबेलंबकछुकीजे। मोकहँआसुहिंआयसुदीजे॥
क्षणभरिरहिजातोअबनाँहीं। बंधनसुनतबंधुपदमाँहीं॥ सुनिप्रद्युम्नवचनथदुराई। बोलेवचनमंदमुसक्याई॥
दोहा-हस्तिनपुरचलिहैंहमहुँ, साजिसैन्यचतुरंग। देखबकौरवकसकरत, अबयदुकुलसोंजंग॥
असकहिसेनापतिहिंबोलायो। सैन्यसजावनहुक्मसुनायो॥१३॥कौरवयादवहोतिलराई। जानिवचनबोलेबलराई॥
सुनहुसुनहुसबवचनहमारा। यहअनुचितनहिंकरहुविचारा॥ कौरवहैंसबनातहमारे। तिमिपांडवहूँअतिशैप्यारे॥
तिनसोंअनुचितकरबलराई। अवशिउभयकुलछैहैजाई॥ दुर्योधनसोंगयोनशाई। सांबहिंधरच्योकरीचपलाई॥
तातेहमहस्तिनपुरजैहैं। सांबहिंहठिछोडायइतलैहैं॥ जैसीकौरवकियअनरीती। तैसेतुमहूँकरतअनरीती॥
दोहा-सुनतवचनबलभद्रके, यदुवंशीशरदार। भीतिमानसबमौनभे, कोउकछुकियनउचार॥
तबयदुपतिअसवचनबखाने। हमसबमहँतोआपसयाने॥ जोमनभावैसोईकीजे। उचितहोयसोआयसुदीजे॥
शासनहोयजोभ्राततिहारो। सोईकरिबोउचितहमारो॥ तबउद्धवबोलेअसबानी। बलविचारिकैबातबखानी॥
आपुसमहँनहिंउचितविरोधू। तातेकरहुकोपअवरोधू॥ रामजायकौरवनबुझाई। सांबहिलैहैंअवशिछोराई॥
जोनमानिहैंकहीहमारी। तोचलिकरबउचितपुनिरारी॥ तहाँवचनबलभद्रउचारा। जोनमानिहैंकहाहमारा॥
दोहा-तोनहिंखबरपठायहैं, सैन्यहेतुहरिपाँहिं। दंडदेइंगेकौरवन, मथिहस्तिनपुरमाँहिं॥ १४॥
असकहिस्यंदनचढिबलरामा। जासुतेजरविसरिसललामा॥ लियोउद्धवैसंगलेवाई। विप्रनअरुब्रह्मनसमुदाई॥
विप्रनमधिराजतबलकैसे। तारनमध्यनिशापतिजैसे॥ १५॥ जायरामहस्तिनपुरनेरा। बाहेरनगरबागकियडेरा॥
कुरुपतिआशयजाननहेतू। उद्धवकहँपठयोमतिसेतू॥ १६॥ उद्धवराजभवनमहँजाई। धृतराष्ट्रहिंवंद्योशिरनाई॥
वाहलीकदुर्योधनद्रोणे। वंद्योपुनिभीषममतिभौने॥ उद्धवपूँछिसबनकुशलाई। जाहिरकीन्हीरामअवाई॥ १७॥
दोहा-रामआगमनसुनततहँ, कौरवकलितअनंद। उद्धवकोसतकारकरि, जोरिसकलकुलवृंद॥
मंगलसाजिसाजसबभाँती। गावतबारवधुनलैपाँती॥ कर्णशकुनिआदिकबलवाना। लैदुर्योधनमुदितमहाना॥
गयोरामडेरैसुखछाई। औरहुबहुकौरवनलेवाई॥ १८॥ बलहिंनिरखिदुर्योधनधायो। बारबारचरणनशिरनायो॥
रामहिंविधिवतपूजनकीन्ह्यो। सुरभीरत्नभेंटमहँदीन्ह्यो॥ औरहुसबकौरवशिरनाई। रामहिंकियप्रणामसुखछाई॥
सिंहासनबैठेबलराई। दुर्योधनहिंलियोबैठाई॥ १९॥ रामफेरिपूँछीकुशलाता। कुरुपतितहाँकहीअसबाता॥
दोहा-आपकृपातेसकलविधि, हैप्रभुकुशलहमार। कहहुनाथयदुवरसकल, हैंकुशलीममप्यार॥
रामकहीयदुकुलकुशलाई। दुर्योधनउरआनँदछाई॥ २०॥ फेरिरामअसवचनबखाना।कौरवसकलसुनहुदैकाना॥
सकलभूपकोजोशिरताजा। ऐसोउग्रसेनमहराजा॥ ताकोशासनसुनिचितलाई। बिनाविलंबकरहुसबभाई॥२१॥
षटभटजुरिअधर्मअतिकरिकै। जीत्योएकबालककहँअरिकै॥ ताहिबाँधिराख्योनिजऐना।महाराजकीमानेहुभैना॥
उग्रसेनसुनिकोपहिंकीन्ह्यो। यदुवंशिनकहँआयसुदीन्ह्यो॥ हनहुजाइकुरुवंशिनकाँहीं। बचैनअबहस्तिनपुरमाँहीं॥
दोहा-तबमैंनृपहिंबुझाइकै, करिकैअमितउपाइ। हेतुबचावनकौरवन, आयोहौंइतधाइ॥
छोडिदेहुबालककहँअबहीं। नहिंविनाशह्वैहैंअबसबहीं॥ २२॥ गर्ववीरताभरेघनेरे। निजसमवचनसुनतबलकेरे॥
दुर्योधनतनुलागीआगी। बोल्योवचनकोपअतिपागी॥२३॥हायकालविपरीतदेखाना।सुननपर्‌योऐसहुँअबकाना॥
सोहतजाशिरमुकुटमहाना। ताशिरचढनलगींपदत्राना॥ २४॥ यदुवंशिनकहँनातबनाये।चमरछत्रदैविभौबढाये॥
अपनेआसनमहँबैठाये। हमहींइनकहँभूपबनाये॥ २५॥ तेसमतामाननअबलागे। प्रथमहिंभोजनभरिजेमाँगे॥
दोहा-जेहमतेपायोविभौ, दियोनरेशबनाइ। तेईअबहमपरलगे, शासनकरनबनाइ॥ २६॥
यदुवंशिनकोविभौबढाउब। भोभुजंगपयपानकराउब॥ यदुवंशीनिर्लज्जमहाने। कुरुकुलकानिनेकुनहिंजाने॥

कोयहसुनैकहैकोवाता । सहिनजातिअनरीतिअवाला ॥२७॥ जहँभीष्मअर्जुनधनुधारे। हैंत्रिभुवनकेजीतनवारे ॥
अहैनइतगतिइंद्रहुँकेरी । चहैदावजोकुरुकुलफेरी ॥ मेषजोलेनचहैहरिभागा । तोविनाशह्वैजातअभागा ॥ २८॥

श्रीशुक उवाच ।

योंकुरुपतिधमंडकैवोरे । रामहिंकहिबहुवचनकठोरे ॥ तमकिउठ्योआसनतेराजा । लैसिगरेकौरवीसमाजा ॥

दोहा-गयेहस्तिनापुरसबै, अतिपापीमतिमंद । गनेनकछुबलदेवकहँ, परेविभवकेफंद ॥ २९ ॥

देखिकुशीलकौरवनकाँहीं । सुनिकठोरवाणीश्रुतिमाँहीं ॥ कियोकोपबलभद्रअनूपा । भयेआशुपावककररूपा ॥
लखिनसकतकोउरामहिंओरा।भयेअरुणलोचनयुगघोरा॥बिहँसिरामतहँबारहिंबारा।वचनवज्रसमवचनउचारा ३०॥
होहिंदुष्टजेधनमदअंधा । तेमानतनहिंकछुसंबंधा ॥ तेशठपूरणदंडहिंपाई । देहिंसकलनिजगर्वगँवाई ॥
ज्योंपशुकीनहिंआनउपाई।लगतलकुटद्रुतजातसुधाई॥३१॥यदुवंशीजबकोपहिंकीन्हें।कुरवंशिनमारनचितदीन्हें ॥

दोहा-तबमैंतिनकहँसकलविधि, करिउपाइसमुझाइ । कुरुवंशिनकल्याणचहि, मैंआयोइतधाइ ॥ ३२ ॥

कौरवदुष्टमहामतिमंदा।कलहनिरतखलअहैंस्वछंदा॥मोहिंसुनाइकहीकटुबानी।जान्योनहिंममबलअभिमानी॥३३॥
भोजवृष्णिअंधककरईशा । उग्रसेनअसअहैमहीशा ॥ जाकेशक्रादिकदिगपाला । खड़ेरहैंद्वारेसबकाला ॥ ३४ ॥
बैठिसुधर्मासभामँझारी । पारिजाततरुकोअधिकारी ॥ सुरपुरतेवासवमदमोरी । मँगवायोसुरतरुवरजोरी ॥
सोनहिंकाकौरवनसमाना । ह्वैहैनहिंकाकेअसज्ञाना ॥३५॥ चरणकमलकमलाजेहिंसेवै।सोहरिधरेदेहनरदेवै ॥३६॥

दोहा-लोकपालजेहिंपदरजहि, पूतहोनकेहेतु । निजशिरमेंधारणहितै, करतसर्वदानेतु ॥

जासुचरणरजतीरथकाँहीं । अतिपावनकरिदेतसदाँहीं ॥ मैंविधिशिवजेहिंअंशहिंअंशा।देतमुक्तकरिजासुप्रशंसा ॥
सोयदुवरकौरवसमनाँहीं । कोअसबातकहैसुखमाँहीं ॥ ३७ ॥ कौरवदीनमहीयदुभोगै । सोदुर्योधनकहतअयोगै ॥
कौरवशिरहमारपदत्राने । केकाकेबलअहैंभुलाने ॥ ३८ ॥ ऐसेमदमत्तनकेबैना । कौनसहैजोह्वैबलऐना ॥
आयेधौंशराबकरिपाना । धौंगवाइदीन्हेंसबज्ञाना ॥ उद्धवअबतोनहिंसहिजातो। आँखिननहिंकछुमोहिंदेखातो ३९

दोहा-बिनाकौरवनकीमही, करिडारौंगोआज । जोनहिंगिरिहैंदीनह्वै, ममपाँयनकुरुराज ॥

असकहिकोपविवशबलरामा । हलमूसललीन्ह्योंबलधामा ॥ उठ्योसभातेरामतुरंता । मानहुँकरतलोकत्रयअंता ॥
चल्योहस्तिनापुरकीओरा।अतिकोपितरोहिणीकिशोरा॥पगनधरतधसकतिहैधरणी।चढ्योमनहुँसिंधुरलघुतरणी ॥
श्वासलेतबलबारहिंबारा । मानहुँकरतजगतसंहारा॥बालसूर्यसमवदनविराजे । अतिशयनीलवसनतनुछाजे ॥४०॥
शहरपनाहनिकटबलजाई । आशुहिंहलकहँदियोगडाई ॥ फूटीधरणिलगतहलघावे । जिमिशरपात्रपारह्वैजावे ॥

दोहा-तहँदबायहलकौतुकै, पुनिलियआशुउठाय । हलैसंगहस्तिनपुरौ, उठिआयोकुरुराय ॥

छंद-अमरावतीसमहस्तिनापुरकोशअरतालीश । लौटायकैतेहिंचह्योबोरनगंगमहँजगदीश ॥
पुरउठ्योजबतिरछाभयोधासिचल्योसुरसरिओर । तबपुरप्रजासबकहनलागेकहाभोयहघोर ॥
गिरिगईढेलीसीहवेलीजेनवेलीऊँच । पुरहाटहाटनबाटबाटनअशुभअतिशयसूँच ॥
हाहापुकारपुकारिपरजाभगेचारिहुँओर । गजबाजिऊँटहुछूटिभागेकरतआरतशोर ॥
गिरिपरतनरउठिभजततजिनिजनारिबालकसंग । कहुँरहतबनतनखसतपगपगकँपतथरथरअंग ॥
कोउकहतपरलैह्वैगईदुर्योधनहिंकेपाप । अबबचबकैसेभागिकहुँनहिंमिटतयहसंताप ॥
सरकूपवापिनढरकिगोजलवृक्षगेसबटूटि । कुरुनाथकेजेमहलऊँचेतेगयेसबजूटि ॥
कोउकहतकहँगोभीष्मकहँगोपार्थकहँगोकर्ण । कहँद्रोणकहँकृपद्रोणसुतकहँभीमअबभोमर्ण ॥
सबवीरगृहसेनिकरिभागेछोडिकैहथियार । तनुवसनकोसंभारनहिंपुरपरयोहाहाकार ॥ ४१ ॥
जिमितरणिबूडततरणिकेजनहोतबनहिंअधार । तिमिहस्तिनापुरकेप्रजाजियकीनमरणविचार ॥

कोउकहतकायहहोतकोऊदेहुवेगिवताय। जामेंसकैबचिसकलहमसोइकरहिंआशुउपाय॥
सववीरचकितह्वैरहेकछुचलतविक्रमनाँहि। पुरपरयोखरभरहरबरैघरगिरतभरभरजाँहि॥
कहुँचपीवाजिनराजिकहुँमातंगगणदविजाँहि। कहुँस्फटिककीफरसैफटतगोपुरगिरतभहराँहि॥
बहुध्वजपताकाध्वस्तभेनहिंनेकहूँदरशाय। कुरुनाथकौरवकुलविनाशविलोकिअतिअकुलाय॥
लेबंधुनिजअतिभीतियुतभीषमभवनगोधाय। करजोरिकैपूँछतभयोअतिदीनवचनसुनाय॥
यहकहाहोतबताइयेमोहिंनेकुनाँहिजनाय॥

दोहा-तबबोलेभीषमविहँसि, सुनकुरुपतिमतिमंद। गंगामहँबोरतनगर, सोरोहिणिकोनंद॥

जापैजायवमंडदेखाये। शठजाकोपदत्राणबनाये॥ कैरसोइअबतवकुलनाशा। छोडिदेहुअबजीवनआशा॥
जोजसकरतसोतसफलपावै। यामेंकोउसंदेहनल्यावै॥ सरसवसमजाकेशिरमाँहीं। धरनधरीहैधसकतिनाँहीं॥
तासोंकरिकैवैरमहाना। कुरुपतिअबचाहहुकल्याना॥ ताकेपगनपरहुअबजाई। औरनदीशतबचबउपाई॥४२॥
भीषमवचनसुनतकुरुनाथा। लेकुटुंबसिगरेनिजसाथा॥ सुतालक्ष्मणेरथैचढाई। तासँगसांबहुकहँबैठाई॥

दोहा-तिनकोआगूकरिलिये, सबकौरवकरजोरि। गयेशरणबलरामकी, गुनतआपनीखोरि॥४३॥

कौरवलखेरामकहँजाई। मानहुँमहाकालभयदाई॥ हस्तिनपुरलीन्हेंहलपाहीं। बोरनचाहतसुरसरिमाहीं॥
दौरिकियेसबदंडप्रणामा। कहतभयेरक्षहुबलरामा॥ रामरामहेअखिलअधारा। जान्योनहींप्रभाउतुम्हारा॥
हमहैंमूढकुबुद्धिअगाधा। क्षमाकरहुहमरोअपराधा॥४४॥ जगउतपतिपालनसंहारा। ताकेतुमहोप्रभुकरतारा॥
आपखेलहितहैंसबलोकू। ऐसेवदहिंवेदकेथोकू॥ ४५॥ सर्षपसरिसएकफणमाहीं। धरेधराहौसंशयनाहीं॥

दोहा-परमप्रकाशीआपके, सोहतफनाहजार। अंतसमयउरधारिजग, कीजैसैन्यविहार॥४६॥

आपकोपसबरक्षणहेतू। नहिंमतसरनहिंवैरानिकेतू॥सदासत्त्वगुणधारेरहहू। स्थितिपालनमहँतत्परअहहू॥४७॥
सबभूतनकेअंतर्यामी। सर्वशक्तिधरजयबहुनामी॥ जयविशुकर्माजयअविनाशी। जयअनंतजयपरमप्रकाशी॥
तुमहोसदादासकेछोहीं। हमतुम्हरेशरणागतहोहीं॥४८॥

श्रीशुक उवाच।

असकहिदुर्योधनकुरुराई। गिरचोरामचरणनअकुलाई॥ काँपतअंगबहतदृगनीरा। गयोछूटितनुकोसबधीरा॥
विनयकियोयहिविधिकुरुवीरा। तबप्रसन्नह्वैबलमतिधीरा॥

दोहा-कीरकुरुपतिपैअतिकृपा, वचनकहेगंभीर। पैहौसकलअनंदअति, अबनहोहुभयभीर॥४९॥

असकहिपुरतेहलअतिभारी। लियोआशुबलरामनिकारी॥पुनिकुरुपतिसोंगिराउचारी।राखेहुतुमसुधिसदाहमारी॥
दुर्योधनतहँकह्योसुखारी। अबनहिंभूलीसुरतितिहारी॥ असकहिंबारहसैगजभारी। साजिसाजुसुंदरछबिवारी॥
दशहजारवाजीजबधारी६०षटहजाररथसाजुसँवारी॥ द्वैहजारदासीछबिवारी। दाइजदीन्ह्योसंगकुमारी॥ ५१॥
लैसिगरोबलरामसुखारी। सुतसुतवधूसंगसुखकारी॥ उद्धवआदिकलियोहँकारी। चलेद्वारकैआशुपधारी॥५२॥

दोहा-बलआयेद्वारावती, सुतसुतवधूसमेत। पुरवासीआगमनसुनि, सबभेमोदनिकेत॥
उग्रसेननृपकीसभा, जायतुरतबलराम। करिवंदनबैठतभये, पावतभेसुखधाम॥
हस्तिनपुरवृत्तांतसब, सभामध्यमहँगाय। यदुवंशिनकोदेतभे, आशुहिंरामसुनाय॥५३॥
अबलोंदक्षिणऊँचकछु, नीचोगंगाओर। बलविक्रमसूचनकरत, पुरदेखातसबठोर॥५४॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे अष्टषष्टितमस्तरंगः॥६८॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-भौमासुरहनिकृष्णप्रभु, सोरहसहसकुमारि। ल्याइद्वारकहिंव्याहिलिय, निवसेतहाँसुखारि॥
मंदिरसोरहसहससुहावन। तिनमेंनितहिंरमतमनभावन॥१॥ यहसुनिकैनारदमुनिराई।मनमहँविस्मयकरीमहाई॥
सुंदरनारीअहैंअनेकू। तिनमहँरमहिंकृष्णकिमिएकू॥ २॥ यहविचारिमुनिदेखनहेतू।आयेआशुहिंकृष्णनिकेतू॥
देखनलागेयदुपुरशोभा। जाकोनिरखिशक्रमनलोभा॥ फूलेउपवनवनगृहबागा। गुंजहिंमधुकरउडतपरागा॥३॥
सोहतसरसरसिजकेवृंदा। फूलिरहेसुंदरअरविंदा॥ इंदीवरअंभोजसुहावन। अरुकह्लारकुमुदसुखछावन॥

दोहा-कूजहिंसारसहंसबहु, बैठेप्रमुदितवीर। नीलकमणिसमलसतअति, नीरपरमगंभीर॥ ४॥
जहँयदुवंशिनकेसुखकारी।नवनवलक्षमहलअतिभारी॥रजतफटिककेहैंबहुधामा।बहुतकनकमरकतअभिरामा॥५॥
चौहटहाटबाटबहुघाटा। तिनमहँठटेअनूपमठाठा॥ शालासभासुरालयनीके। जिनआगेसुरसदनहुँफीके॥
सुरभिसलिलगलियाँसबसींचीं।रुचहिंसुरभिकीचहुँदिशिबीचीं॥कनकदेहलीरजतअंगना। तिनमहँबैठीचारुअंगना॥
विविधपताकेंनभमहँलहरैं। रविछपाइछायाछितिछहरैं॥६॥अंतःपुरमहँनारदआये। निरखितासुसुखमासुखपाये॥

दोहा-चारिहुँलोकनपालकी, जेतीअहैविभूति। हरिमंदिरमेंएकथल, देखीपरेअकूति॥
जहँविशुकर्मानिजनिपुणाई।मनभरिरचिरचिसकलदेखाई७मंदिरसोरहिंसहससुहावन।शतअरुआठमहाछबिछावन॥
इकमंदिरमहँनारदआये। जहाँरुक्मिणीकृष्णसुहाये॥८॥ खंभविशालप्रवालनकेरे। जटितजवाहिरलसहिंघनेरे॥
वैदूरजमणिछज्जाछाजैं। बिचबिचइंद्रनीलमणिराजैं॥ मणिनजटिततहँलसैंदेवाला। पुहुमीपन्नगमढ़ीविशाला॥९॥
विविधभाँतिकेतनेविताना। मुक्तझालरैंलहरैंनाना॥ गजदंतनपर्यंकसुहावैं। मणिनजटितआसनछविछावैं॥१०॥

दोहा-सखीसँवारेंवरवसन, पहिरेहीरनहार। रत्नजरीकरलैछरी, खरीद्वारहिंद्वार॥
बाहेरकेदरवाजेनमाहीं। द्वारपालठाढेचहुँघाहीं॥ जरीपागशिरवपुवरजामा। रत्नजटितभूषणअभिरामा॥
कनकदंडसवकेकरभारी।रत्नजटितफैलतिउजियारी११विविधभाँतिमणिकेतहँदीपा।नखतनवाहिमनुलसहिंमहीपा
कढतझरोखनसुरभितधूमै। पसरतसोअकाशअरुभूमै॥ तिनहिंनिरखिजलधरमनमाने।करतशोरअतिशयहर्षाने॥
विविधभाँतिबारजेविराजैं। नचतमोरतिनमहँअतिभ्राजैं॥१२॥ऐसेसुंदरमंदिरमाहीं। सखीसहससंयुतसुखमाहीं॥

दोहा-निजकरकारिढारतचमर, ठाढीकृष्णसमीप। ऐसीरुक्मिणिकोलख्यो, नारदजायमहीप॥ १३॥
नारदकोलखिकैयदुराई। उठेआशुपर्यंकविहाई॥ सकलधर्मकेहैंधुरधारी। चरणगहेदोउकरनपसारी॥
क्रीटसहितमुनिपदशिरनाई।पाणिजोरिआसनबैठाई॥१४॥नारदचरणधोयजगदीशा।धारणकियोसलिलनिजशीशा॥
जोहरिकोचरणोदकगंगा। करतिजगतकोपातकभंगा॥ तेधोयेमुनिपदश्रीधामा। सतिब्रह्मण्यदेवकियनामा॥१५॥
मुनिकहँविधिवतपूजनकरिकै। बोलेवचनप्रेमरसभरिकै॥ कहहुनाथकाकरहिंतिहारो। आपकृपासवबनबहमारो॥

दोहा-सुनियदुपतिकेवचनतहँ, नारदमृदुमुसक्याय। जोरिपाणिबोलेवचन, आनँदउरनसमाय॥ १६॥

नारद उवाच।

आपहिमेंहमलखेंअखंडा। दीनदयादुष्टनपरदंडा॥ सोनहिंकछुअचरजउरआवत। अखिललोकपतिआपकहावत॥
जगतकरनकल्याणतुरंता। धरहुनाथअवतारअनंता॥सोहमभलीभाँतियहजानैं। विचरहिंकरतआपयशगानैं१७॥
ब्रह्मादिकजेबोधअगाधा। तेउरधरनकरहिंजिनसाधा॥ जेसंसारकूपउद्धारण। हैंअपवर्गदानकेकारण॥
ऐसेयदुपतिचरणतिहारे। धन्यभाग्यहमआयनिहारे॥अबअतिकृपाकरहुयदुराई।तवपदतजिमनअनतनजाई॥१८॥

श्रीशुकउवाच।

दोहा-असकहिकैनारदउठे, गेहरिमंदिरओर। लखनयोगमायाचहे, द्वारावतिसबठौर॥ १९॥
तहँदेखेयदुनंदनकाहीं। बैठेसतिभामासँगमाहीं॥ उद्धवसंयुतरमानिवासा। खेलिरहेप्यारीसँगपासा॥

नारदकोलखिउठेमुरारी । पूजनकियोप्रीतियुतभारी ॥ २० ॥ पूछ्योआपकबैइतआये । बडेभाग्यदर्शनहमपाये॥
तुमपूरणहमअहैंअपूरण। आपमनोरथकिमिहमपूरण॥२१॥कहहुँतथापिकृपाकरिनाथा।करहुजन्मअबमोरसनाथा॥
सुनिनारदयदुपतिकीबानी । उठेमौनअतिअचरजमानी ॥ औरभवनमहँगेपुनिधाई । तहाँजायदेखेयदुराई ॥ २२॥
दोहा–बैठेनारिसमीपमें, लियेगोदबहुबाल । तिनहिंखेलावतहैंमुदित, श्रीपतिपरमकृपाल ॥
फेरिऔरगृहगेमुनिराई । तहँनहातदेखेयदुराई ॥ २३ ॥ यहिविधिबागनलगेमुनीशा । दर्शनकरनहेतजगदीशा ॥
कहुँयज्ञबहुकरतमुरारी । कहूँजेमावतद्विजगनभारी ॥२४॥ संध्याकरतमौनकहुँनाथा।जपतमंत्रकहुँगोमुखिहाथा ॥
कहुँसात्यकिकेसंगसुखारी।खेलतपटाविपुलगिरिधारी॥कहूँतुरंगनफेरतअहहीं।कहुँमतंगयुधलखिसुखलहहीं ॥२५॥
कहुँसवारह्वैसुंदरस्यंदन । सखनसंगविचरतयदुनंदन ॥ करतनाथकहुँशैनविहारैं । बंदीविरदावलिउच्चारैं ॥ २६ ॥
दोहा–मंत्रीउद्धवआदिले, बैठिएकांतविचारि । मंत्रकरतकहुँराजही, यदपिस्वतंत्रमुरारि ॥
कहुँजलक्रीडाकरहिंमुकुंदा । वारवधूलैसहितअनंदा ॥२७॥ कहूँअलंकृतकरिबहुगाई । सादरद्विजनदेतयदुराई ॥
कहुँसुनैइतिहासपुराना । कहूँसुनहिंप्रभुमंगलगाना ॥२८॥ कहूँहँसीकीकथाबखानी । हँसहिंप्रियासँगशारँगपानी ॥
कहूँधर्मकरसेवनकरहीं । कहूँअर्थकामहुँचितधरहीं॥२९॥कहुँनिजरूपप्रकृतिपरध्यावैं । कहुँगुरुसेवनकरतसुहावैं॥
भोजनकरतकहूँपकवाना । कहुँविहारमहँरहेलोभाना ॥३०॥ कहूँकरहिंशत्रुनसँगरारी । कहूँसंधिकरिलेतमुरारी ॥
दोहा–कहूँबैठिबलभद्रके, संगमुकुंदकृपाल । सज्जनकोचिंतनकरत, मंगलमोदविशाल ॥ ३१ ॥
कहुँकरतहैंपुत्रविवाहू । कहूँसुताकरव्याहउछाहू॥कहुँबेटिनिकीकरहिंबिदाई । कहुँल्यावहिंनिजवधुनलेवाई॥३२॥
कहूँपुत्रकोजन्मउछाहा । कहुँव्रतबंधकरतनरनाहा ॥३३॥ कहुँपूजनकरियज्ञसुरेशन।कहुँतडागकहुँरचतअशेषन॥
कहूँकूपयदुनाथखनावैं । विविधबागकहँनाथलगावैं ॥ कहुँहरिमंदिरसुंदररचहीं । कुहुँप्रभुबैठेतियगणनचहीं ॥
कहूँसिंधुकेतुरँगसँवारे । सँगलीन्हेंयदुवरशरदारे॥ खेलहिंकाननमाहँशिकारा।करहिंपुनीतपशुनसंहारा॥३४॥३५॥
दोहा–कहूँकामरीओढिकै, पुरजनद्वारहिंद्वार । तिमआशयजाननहिते, विचरहिंशौरिकुमार ॥ ३६ ॥
निरखियोगमायाप्रभुकेरी । जाकोअंतपरतनहिंहेरी ॥ नारदतबप्रभुसोंहँसिबोले । कपटआपनेउरकोखोले ॥ ३७॥
मैंभ्रमसोंआयोइतधाई । देखनतबविभूतियदुराई ॥ आपयोगमायामैंदेखी । योगिनकोदुर्दर्शविशेषी ॥
तुवपदपद्मकृपामैंपाई । लखीतुम्हारिविभूतिमहाई ॥३८॥ अबमोहिंबिदाकरहुयदुराई । कियेरह्योप्रभुकृपामहाई॥
आपुसुयशपूरितसबलोका । तहँमैंविचरहुँसदाअशोका।।जगपावनतुवकीरतिगाई।मैंत्रिभुवनविचरहुँसुखपाई ॥३९॥
दोहा–यदुपतितबबोलेविहँसि, सुनहुविप्रमतिमान । करतावकतामोदिता, धर्मनिकेमोहिंजान ॥
लोकनिकेसिखवनकेहेतू । करहुँकर्ममैंसबमुनिकेतू ॥ तातेतातनकौतुकमानो । मोहींकोसबकारणजानो ॥ ४० ॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिकरतगृहस्थनकर्मा।शिखवतसबलोकनकहँधर्मा॥वसतद्वारकामहँगिरिधारी।नारदमुनियहिभाँतिनिहारी॥
अनुपमउदयविभूतिविलोकी । नारदमुनिजेसदाअशोकी॥ कौतुकगुनिमुनिबारहिंबारा।लहिहरिसोंसतकारअपारा॥
कृष्णपद्मपदमनमहँध्यावत।नारदगयेकृष्णगुणगावत॥यहिविधिकरतमनुजसमलीला।नारायणयदुपतिशुभशीला॥
दोहा–महिषिनसोरहसहससँग, विहरतसदामुकुंद । हावभावहाँसीकरत, पावतपरमअनंद ॥ ४४ ॥
हरिचरित्रजोप्रीतिसों, गावतसुनतबतात । भक्तिहोतभगवानमें, आशुकृष्णपुरजात ॥४५॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्री
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ
दशमस्कंधे उत्तरार्धे एकोनसप्ततितमस्तरंगः ॥ ६९ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-एकसमयरजनीरही, पाँचदंडअवशेप। लालशिखालागेकरन, सुंदसोररविशेप॥
दिवसविरहकोआगमजानी। भईदुखितअतिशयसबरानी॥लालसिखनकोदेतसरापा। कंतकंठलागीलहितापा॥१॥
कलरवकियऔरहूविहंगा। मंजुगुंजिकियअलितिनसंगा॥ मानहुवंदीगणहरिकेरे। प्रातजगावनाहितबहुटेरे॥
शीतलमंदसुगंधसमीरा। बहनलग्योविरहिनप्रदपीरा॥यद्यपिसुखकसमारुतबहतो।तद्यपिहरिप्यारिनउरदहतो॥२॥
पियभुजमधियद्यपिसुखकरती।तदपिदिवसविरहानलजरती॥३॥ब्रह्ममुहूरतजानिमुरारी।उठिअंबुजकरचरणपखारी॥
दोहा-प्रकृतिहुपरनिजरूपको, यदुनंदनकियध्यान॥ ४॥ उत्पतिपालननाशको, सोईहेतुमहान॥ ५॥
कनककलशभरिसुरभितनीरा।मज्जनहितल्यायेमतिधीरा॥यदुपतिविधिवतकियअस्नाना।नित्यकर्मकियसकलमहाना॥
युगपीतांबरधारिमुरारी। पूजनकीन्ह्योंविशदसुखारी॥ होमकियोपुनिपावकमाँहीं। गायत्रीजपिमौनतहाँहीं॥ ६॥
उदितअर्ककहँअर्घ्यहिंदीन्ह्यों।उपस्थानविधिवतपुनिकीन्ह्यों।सुरनऋषिनपितरनकियतर्पन।विप्रनवृद्धनकीन्ह्योंअर्चन॥
मुक्तमालिकासुवरणशृंगा। शुद्धदूधप्रदबछरनसंगा॥ वसनसहितखुररजतहिकेरे। औरहुभूषणसाजिघनेरे॥
दोहा-सहिततिलाजिनयोगऊ, विप्रनकरिसत्कार। नित्यदेततेरासहस, श्रीवसुदेवकुमार॥ ७॥ ८॥ ९॥
पुनिगोविप्रदेवगुरुवृद्धन। वंदनकीन्ह्योंप्राणिनसिद्धन॥मंगलद्रव्यपरसिगिरिधारी।विविधभाँतिभूषणतनधारी॥१०॥
अद्भुतकीन्ह्योंअँगअँगरागा। पहिरच्योतेजवंतपुनिबागा॥ क्रीटशीशमहँदियोप्रकाशी। कटिफेंटोबाँध्योछबिराशी॥
कटिपरतलोडारितेहिंनंदक। गदाचक्रधरधनुअरिद्वंदक॥धरेचारिहूभुजनविशाला।पहिरिविमलवैजंतीमाला॥११॥
घृतआरसीमाहँमुखदेखी। गोवृषसुरद्विजवंदिविशेषी॥ पुनिकढ़िसभामध्यप्रभुआये।पुरजननिजनिजविनैसुनाये॥
दोहा-यथायोग्यआयसुदियो, पूरिसबैमनकाम। नाथनिरखिइकवारते, प्रमुदितकियेसलाम॥ १२॥
पुनिसबयदुवंशीसरदारा। कियेआयवंदनइकवारा॥ तिनकोदियेहाथानिजवीरा। सुमनमालविप्रनयदुवीरा॥
फेरिसुहृदमंत्रीजनआये। निजनिजकारजसबैसुनाये॥आयसुउचिततिनहिंप्रभुदैकै। अंतःपुरकोकारजकैकै॥१३॥
दारुकसोबोलेअसवानी। ल्यावहुस्यंदनममछबिखानी॥ ताहीक्षणदारुकरथल्याये। सुग्रीवादितुरंगसुहाये॥
करिप्रणामसन्मुखभोठाढो। रथतयारबोल्योसुखबाढो॥१४॥ दारुकपाणिपकरिनिजपानी।रथसवारभेशारँगपानी॥
दोहा-सात्यकिउद्धवसंगचढे, लियेचमरकरछत्र। जातलसेभगवानमनु, पूरबगिरिरवितत्र॥ १५॥
चलेसुधर्माकहँयदुराजा। जहँहैउग्रसेनमहराजा॥ आवतनिरखितहाँयदुराई। युवतीलगींझरोखनधाई॥
तिनपैताकिमंदमुसकाई। मनहरिलीन्ह्योंप्रीतिदेखाई॥ १६॥ जोरिसकलयदुवंशसमाजा।सभासुधरमैगेयदुराजा॥
शोकमोहअक्षुधापिपासा। जरामृत्युदायकअतित्रासा॥जौनसभामहँजातसदाहीं।येषटउर्मिआशुनाशिजाँहीं॥१७॥
वंद्योउग्रसेनयदुराई। बैठेसिंहासनछबिछाई॥ फैलिरह्योयदुनाथप्रकाशा। पूरितहोतभईदशआशा॥
दोहा-यथायोग्यबैठेसुभट, यदुपतिशासनपाइ। तिनकेमधिहरिलसतजनु, उडुगणमधिउडुराइ॥ १८॥
तहाँहासरससखाविलासी। आयकरनलागेमृदुहाँसी॥ तहाँनर्तकीनर्तकआये। पृथकपृथकनाचेमनभाये॥ १९॥
करनलगेगायकगणगाना। लैलैमंजुलताननिनाना॥ वीणावेनहुमुरजमृदंगा। तालशंखबाजेइकसंगा॥
नाचिगायबहुभाँतिरिझाई।लहीइनामअधिकमनभाई॥२०॥सभाब्रह्मवादीद्विजआये।पूर्वयशीनृपकथासुनाये॥२१॥
तहँइकपुरुषअपूरबआयो। द्वारपालतबखबरिजनायो॥ कृष्णताहिनिजनिकटबोलायो॥ २२॥
दोहा-प्रभुहिनिरखिसोंजोरिकर, कीन्ह्योंमुदितप्रणाम। विनयकरनलाग्योवहुरि, सुनियेकरुणाधाम॥ २३॥
मगधराजअतिशयबलधामा। जरासन्धहैजाकोनामा॥ सोदिग्विजयकरीमहिमाँहीं। जीतिलियोबहुभूपनकाँहीं॥
वीसहजारभूपकहँधरिकै। राख्योकारागारहिकरिकै॥ तेनृपतुमढिगमोहिंपठाये। भूपतिविनयदेतमैंगाये॥ २४॥
कृष्णकृष्णहेदीनदयाला। नाशकदासदुःखतत्काला॥ हमहैंमंदमतीभवभीते। आपशरणहोमैंजगमीते॥ २५॥

पापनिरतासिगरेजगलोगू । उत्तमकरमकरतनहिंभोगू ॥ वेदविहिततुवपूजनभूले । बागहिंजगमहँधनमदफूले ॥
दोहा–शतवर्षनलैजेकरें, अपनोजिअवविचार । तिनकुमतिनतुमनाशहू, आशुहिंनंदकुमार ॥
ऐसतुमहिंअहैपरनामा । दुखनाशकदायकविश्रामा ॥ २६ ॥ खलनाशनसतरक्षणहेतू । तवअवतारहोतसुखसेतू ॥
ऐसेतुमहिंकुमतिनहिंजानै।अरुतुम्हारशासननहिंमानै॥तुम्हरेशरणागतहमह्वैकै।कौतुकगुनहिंकलेशहिभ्वैकै ॥२७॥
भूपतिसुखसवसपनसमानै । तामेंहमसवरहेभुलानै॥प्रथमहिंयहतजितुमकोभजते।तौकाहेअसदुखमहँरजते ॥२८॥
आपचरणदुखनाशनवारे । तातेअवहमशरणतुम्हारे ॥
दोहा–मेषनकोजिमिकेहरी, घेरतभयदरशाय । तिमिहमकोमागधप्रबल, कैदकियोयदुराय ॥
औरनआवतकछूविचारा । मागधबलदशनागहजारा ॥ तुमहींइकप्रणतारतिहारी । तातेहमकोलेहुउवारी ॥ २९॥
हारयोतुमसोंसत्रहिवारा । मागधलैदलसंगअपारा ॥ एकवारतुमसोंयहजीत्यो । तबतेशठयहभयोअभीत्यो ॥
देतदुसहदुखतुवजनजानी । हनहुताहिअवशारँगपानी॥३०॥राजसँदेशदूतअसभाषी। कह्योभूपदर्शनअभिलाषी ॥
कैदमगधकोठरीपरेहैं । चरणआशरावरीधरेहैं ॥ करहुदीनदासनकल्याना । यदुपतिहौतुमकृपानिधाना ॥ ३१ ॥
दोहा–राजदूतकेकहतअस, देखिपरेऋषिराय । शीशपीतसोहतजटा, मानहुँहैदिनराय ॥ ३२ ॥
मुनहिनिरखियदुपतिजगदीशा।उठिवंदनकियमहिधरिशीशा॥सिगरेयदुवंशीउठिधाये।नारदचरणआयशिरनाये३३
नारदपदपूज्योयदुराई । विधिवतआसनमहँबैठाई ॥ प्रीतिसहितअतिकोमलवानी । बोलेमुनिसोंशारँगपानी॥३४॥
लोकअभयसवहैंमुनिराई । कहहुनाथहमसोंसवगाई॥तुम्हरेदरशमहतगुणयेहू।त्रिभुवनखवरिसकलकहिदेहू ॥३५॥
ईश्वरजोलोकननिरमाना । तिनमेंकछुनहिंतुमहिछिपाना ॥ कहहुखवरिहस्तिनपुरकेरी। पांडवकहाकरनचितहेरी॥
यदुपतिकेसुनिवचनसुहाये । बोलेनारदअतिसुखपाये ॥ ३६ ॥

नारद उवाच।

दोहा–जगकरताप्रभुआपजो, शक्तिनसहितलसंत । व्यापिरहीजोसकलतुव, मायालखीअनंत ॥
छंद–सवजगतमेंतुमव्याप्तहौजिमिदारुअनलछिपानहैं । तुमकौनहैकछुगुप्तपूछहुँमोहिंयदपिसुजानहैं ॥ ३७ ॥
तुवचरितजानतकोउनहींजगरचहुनानाशक्तिते । मायाविवशसुततियगुनतनिजजगतजनअनुरक्तिते ॥
सवतेविलक्षणआपतुमकोवारवारनमामिहे । संसारछोडननहिंजोजानततताहितुमखगगामिहे ॥ ३८ ॥
अज्ञानतमनाशनहितेजसदीपज्वालिप्रकाशिकै । श्रवणनिसुधारसप्याइकैअपनोकरहुसुखराशिकै ॥ ३९ ॥
दोहा–यद्यपिसबजानोअहै, हेयदुनाथतुम्हार । तद्यपिमैंभाषतअहौं, यहवृत्तांतउदार ॥
आपपिताभगिनीकेनंदन । भक्तयुधिष्ठिरपरमअनंदन ॥ जोकछुकीन्हेंमनहिंविचारा।सोसुनियेवसुदेवकुमार॥४०॥
राजसूयकरिकैवड़यागा । पूजनचहततुमहिबड़भागा ॥ कियेमोक्षकामनाभुवाला । आपहुशासनदेहुदयाला ॥
यहिकारणमोहिंभूपपठाये । तुमकोनाथबुलावनआये॥चलहुनाथहस्तिनपुरकाँहीं।नृपहिकरावहुयज्ञतहाँहीं ॥४१॥
राजसूयमहँसवसुरऐहैं । महीमहीपसकलजुरिजैहैं ॥ कोअसशठतुवदरशनहेतू । नहिंऐहैनृपधर्मनिकेतू ॥ ४२ ॥
दोहा–रूपध्यानकरिनामसुनि, गायचरित्रतुम्हार । पापीपामरपतितहू, गमनतआपअगार ॥
तौपुनिजोप्रभुरावरे, दरशपरशपदकंज । कहँअचरजतरिजातहै, नाशअघनकेगंज ॥ ४३ ॥
स०–जसरावरोतीनहुलोकनमेंतनोतानोदिशानवितानवनो॥पदकंजनकोमकरंदमदागिकिननामकअम्मरमोदसनो॥
तिमिभोगवतीभोपताललोंजाँयसुरारिननाशतपापगनो ॥अवनीमेंतरंगिनीगंगभयोरघुराजकियोजगपूतघनो॥४४॥

श्रीशुक उवाच।

सोरठा–सुनिनारदकेबैन, यदुपतिअतिमोदितभये । बोलेमंजुलबैन, रामओरहरिहेरिकै ॥

श्रीभगवानुवाच।

जिनभूपतिमागधदुखदीन्हें । दूतभेजितेविनतीकीन्हें ॥ फेरिआयनारदमुनिराई । हस्तिनपुरकीखवरिसुनाई ।

पांडवराजसूयअभिलाषी। मेरीआशउरहिकरिराषी ॥ उचितअथयगमनवकहँकेरो। याकोआरजकरहुनिबेरो ॥
कृष्णवचनसुनिकहबलिराई। मेरेमनअसउचितजनाई ॥ शरणागतकोरक्षणकरिबो। सबतेअधिकधर्मध्रुवधरिबो ॥
तातेकूचकरहुहरिआजू। मारहिंमागधसहितसमाजू ॥ सबभूपनकोलेहिछोड़ाई। मोहितासमरउचितयदुराई ॥

दोहा-पांडवतोममदासहैं, अनुचितमनिहैंनाहिं। मारिमागधैआयपुनि, करवाउबमखकाँहि ॥

पूँछिलेहुसबवीरनपाँहीं। उचितहोइसोकरहुसदाहीं ॥ तबसात्यकिप्रद्युम्नप्रवीरा। गदकृतवर्मसांवरणधीरा ॥
कहेसबैअतिशयसुखमानी। भलीबातयहतातबखानी ॥ जरासंधपरकरयचढाई। हमसबकहँयहउचितदेखाई ॥
मागधकहँदलसहितसँहारी। इंद्रप्रस्थकहँफेरिसिधारी ॥ करवाउबपुनिभूपहिजागै। यहीमंत्रहमकोप्रियलागै ॥
यदुपतिसुनियदुवंशिनवानी। उद्धवसोंअसबातबखानी ॥ ४५ ॥

श्रीभगवानुवाच।

उद्धवतुमहौनैनहमारे। सुहृदमंत्रकेजाननहारे ॥

दोहा-भाषहुमंत्रविचारिकै, उचितजोयामेंहोइ। प्रीतिसहितसबभाँतिसोइ, करिहैंहमसबकोइ ॥ ४६ ॥
तहँउद्धवयदुनाथको, शासनधरिनिजशीश। मृदुलवचनबोलनचह्यो, सभामध्यअवनीश ॥ ४७ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे सप्ततितमस्तरंगः ॥ ७० ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-नारदकोअरुकृष्णको, अरुवृद्धनमतदेखि। बोल्योउद्धववचनतहँ, बुद्धिविचारिविशेखि ॥ १ ॥

उद्धव उवाच।

धर्मभूपकोयज्ञकरावन। जौनकह्योनारदमुनिपावन ॥ मगधदेशतेदूतहुआई। सबभूपनकीविनयसुनाई ॥
तासुउचितजोमोमनआयो। सोमैंतुमकोचहौंसुनायो ॥२॥ प्रथमपधारहुहस्तिनपुरको। जहाँभूपधरधर्महिधरको॥
करवावहुमखताहिमुरारी। तामेंहोतदिगविजयभारी ॥ दिशाविजयमहँमागधकाँहीं। जीतिलेहुगेसंशयनाँहीं ॥
यामेंउभयअर्थबनिजैहैं। धर्मभूपहूआनँदपैहैं ॥ ३ ॥ औरहुहोइहिअर्थहमारा। नाथलहौगेसुयशअपारा ॥

दोहा-बंदिछोरिसबनृपनकी, इंद्रप्रस्थसिधाइ। राजसूयकरवाइये, धर्मभूपकोचाइ ॥ ४ ॥

मागधभूपमहाबलवाना। दशहजारगजजोरमहाना ॥ दूजोहैनहिंताहिसमाना। एकभीमतेहिसममजाना ॥ ५ ॥
सातअक्षौहिणिजोरिजोजैहो। तऊनसन्मुखजीतनपैहो ॥ हैब्रह्मण्यधर्मधुरधारी। नाहिंकबहुँनमुखैउचारी ॥ ६ ॥
तातेभीमपार्थअरुआपू। विप्ररूपधरिगोइप्रतापू ॥ जरासंधकेद्वारेजाई। माँगेहुयुधदीनतादेखाई ॥
आपुकृपालहिभीमप्रचंडा। करिहैंजरासतहिंद्वैखंडा ॥ ७ ॥ आपुसमीपवृकोदरजीती। तासुहननकीऔरनरीती॥

दोहा-जगउत्पत्तिअरुनाशको, परमहेतुहौआप। पैविधिशिवमुखतेकरहु, हैतुवकालप्रताप ॥ ८ ॥

श्लोक-गायंतितेविशदकर्मगृहेषुदेव्योराज्ञांस्वशत्रुवधमात्मविमोक्षणंच।
गोप्यश्चकुंजरपतेर्जनकात्मजायाःपित्रोश्चलब्धशरणामुनयोवयंच ॥ ९ ॥

दोहा-नाथजरासुतकेहने, ह्वैहैबहुसुखभाग। मागधकेमारेविना, होइहिपूरिनयाग ॥ १० ॥

श्रीशुक उवाच।

असकहिकैउद्धवचुपह्वैकै। रहेकृष्णकेसन्मुखज्वैकै ॥ उद्धवमंत्रसुनतसुखपागे। तबयदुनाथसराहनलागे ॥
यदुवंशीजेवृद्धमहाने। बारबारउद्धवहिंबखाने ॥ नारदमुनिउरआनँदराखे। कह्योउद्धवैतुमभलभाखे ॥

बोलेहरषितहाँयदुराई । उद्धवमंत्रकरहुबलभाई ॥ रामहुसंमततहँकरिदीन्हें । बुद्धिवृद्धउद्धवकहँचीन्हें ॥
उग्रसेनवसुदेवहुपाहीं । कृष्णकरीविनतीसुखमाँहीं ॥ हुकुमहोयहस्तिनपुरजावैं । धर्मभूपकहँयज्ञकरावैं ॥

दोहा–उग्रसेनवसुदेवहू, सुनिहरिवचनउदार । कहतभयेसंमततुव, सोईमतोहमार ॥ ११ ॥

यदुपतिवचनसुनतसुखमाने । दारुकअनाधृष्टकहँआने ॥ तिनकोअसदियवचनसुनाई । हैहस्तिनपुरमोरिजवाई ॥
साजहुसकलसैनअबआसू । हयगयस्यंदनसाहितहुलासू॥१२॥सोरहसहसरानिसँगजाहीं । आठौपटरानीमुदमाहीं॥
विविधभाँतिबाजेसँगबाजैं । चलैंसकलयदुवंशसमाजैं ॥ अनाधृष्टसुनियदुपतिबानी । दारुकसहितपरममुदमानी॥
लगेसजावनसैनसुखारी । रानिनहूँसबकरीतयारी ॥ यदुपतिइतैरामसोबोले । वचनप्रीतिरसभरेअमोले ॥

दोहा–आपरहहुद्वारावती, उग्रसेनढिगतात । करिदायारक्षहुप्रजा, असमोहिंउचितदिखात ॥

जोहमनगरगयेकरिसूना । तौकरिहैरिपुअनरथदूना ॥ तातेआपरहहुगृहमाहीं । तौहमभूपधर्मढिगजाहीं ॥
रामकह्योजसतुमकहिदेहू । तैसहिकरबनकछुसंदेहू ॥ अनाधृष्टदारुकपुनिआये । यदुपतिसोंअसवचनसुनाये ॥
नाथसैनसबसजीआपकी । त्रिभुवनमेंभयजेहिंप्रतापकी ॥ सुनियदुवरभूपतिढिगजाई । बिदाभयेतिनकहँशिरनाई॥
पुनिबलभद्रहिवंदनकीन्हें । आशिषहरषिहीरहिसोंदीन्हें ॥ पुनिराजनकोदूतबोलाई । नाथकह्योकरिकृपामहाई ॥

दोहा–राजनसोंसंदेशमम, कहहुदूततुमजाय । मारिमागधैआशुही, देहैंबंदिछुडाय ॥

सोरठा–यदुपतिकेसुनिबैन, चल्योदूतशिरनायकै । कह्योजायभरिचैन, सुखदसँदेसोकृष्णको ॥
सुनिनृपपायअधार, बारबारवंदेहरिहि । आशाकरीअपार, हरिदरशनकीआशुही ॥
दारुकस्यंदनल्याय, जायनिकटयदुनाथके । दीन्हीविनयसुनाय, रथतयारहैआपको ॥
सूतवचनसुनिनाथ, आशनतेंआसुहिउठे । सात्यकिउद्धवहाथ, गहिगमनेरथचढनको ॥
तहँनारदमुनिख्यात, माँगिबिदायदुनाथसों । चलेअकाशउड़ात, यदुपतियशगावतविमल ॥
भेप्रभुजानसवार, मंदमंदगमनतभये ॥ १३ ॥ बाजेबजेअपार, कोलाहलचहुँदिशिभयो ॥

छंद–तहँनदत्तमत्तमतंगतरलतुरंगसंगहिमहनचे । रथलसहिपथपरविपुलगथकेमनहुँमनमथकेरचे ॥
फहरानविविधनिशानदशहुँदिशानछायमहानहैं । अतिविकटसुभटनठट्टझट्टहिंफट्टकीनपयानहैं ॥
उरलसहिंमालप्रवालवसनविशालअतिहिरसालहैं । अतिकालयदुपतिदलकरालसुचालकियततकालहैं ॥
भेरीमृदंगहुशंखगोमुखदुंदुभीकरनालहैं । झरझरपटहडिंडिमपणवआनकहुडफकरतालहैं ॥
एकवारबाजेबजतभेगैपरहुगनतहँगजतभे । दशदिशिनिशोरअतीवघोरसुठोरठोरहिसजतभे ॥ १४ ॥
सोरहसहसअरुआठऔशतपालकीमणिजालकी । एकएककेसंगभटसहसछबिढालकीकरवालकी ॥
बरवसनभूपनअंगरागप्रसूनमालतिराजही । यदुनाथरानीमोदसानीचलीयहिविधिभ्राजहीं ॥ १५ ॥
बहुऊँटजूटनमहिषवृषभनखच्चरिनखच्चरनमें । जुनसाजुलादेसंगपयादेमोटजादेउरणमें ॥
परिजनहुअरुगानिकागनहुचढिचलेशकटनगाजिनमें । पहिरेकटककुंडलचटकचटपटचलेनहिवृजिनमें ॥
ओढेदुशालेगाथविशालेमुक्तमालेसबलसे । शिरजरीपागेअंगबागेजोतिजागेअसिकसे ॥ १६ ॥
बहुछत्रचामरव्यजनअभरणक्रीटवर्मचमकहीं । बहुरंगवनमधिमनहुदामिनिबारबारदमकहीं ॥
उड़िधूरिधारहिंधुंधकारअपारअंबरमेंछयो । करचंडतेजअखंडतेहिक्षणठंडह्वैतहँछपिगयो ॥
भेक्षुभितबारीहिबारपारावारतजतकरारहै । गिरिगेधडाधडधराधरसरितनभयोजलछारहैं ॥
तहँबाजध्वजकेविपुलवाहनजनहुआगेचलतभे । पीछेलसततिनभीरपैदलफेरिहयमहिमलतभे ॥
पुनिवृंदस्यंदनअतिरथीयुततासुमधियदुनंदहै । दक्षिणहिसात्यकिवामउद्धवभरेपरमअनंदहै ॥
पीछेलसहिंप्रद्युम्नअनिरुधऔरकृष्णकुमारहैं । कृतवर्मगदअक्रूरआदिकसजेसबसरदारहैं ॥

पुनिलसतिगोलगयंदकीसाजेसकलशृँगारहैं। डगधरतमंदहिमंदमगमदझरतजलधरधारहैं॥
पुनितासुपीछेनालकीमणिजालकीजिनसोभहै। नारीसिंगारीचलीसंगगजिनलखतरंभहुछोभहै॥
दोहा–यहिविधिलैयदुनाथदल, चलेधर्मनृपपाहिं। बंदीगणविरदावली, भाषतसंगहिजाहि॥ १७॥
प्रथमअनर्तदेशमधिजाई। करतभयेडेरायदुराई॥ पुनिसौवीरदेशगेनाथा। पुनिमरुदेशहिकियोसनाथा॥ २१॥
दृषदवतीसरिउतरिमुरारी। सरस्वतीतिमिउतारिसुखारी॥ पुनिपंजाबदेशकरिडेरा। मच्छदेशपुनिकियोबसेरा॥
गिरिगोशालनग्रामनमाहीं। सैनसहितनिवसतहरिजाहीं॥ कुरुक्षेत्रआयेयदुराई। खबरिधर्मभूपतितबपाई॥ २२॥
साजिसैनचतुरंगिनिराजा। जोरिसबैपांडवनिसमाजा॥ विप्रनसुहृदनसंगलेवाई। चलेलेनहरिकीअगुवाई॥
दोहा–चलेजातअतिशयमुदित, छनछनगिराउचारि। आजुलखवयदुराजको, धनिधनिभागहमारि॥२३॥
गणिकागणगावतसँगजाहीं। चहुँकितमंगलशोरसुहाहीं॥ पढ़ेंविप्रगणवेदसुहावन। थारनलियेदूबदधिपावन॥
औरहुमंगलसाजुसमारी। आगेकलशलियेद्विजनारी॥ उतैवामदैहस्तिनपुरको। छावतदिशनिधूरिसुरपुरको॥
आयेइंद्रप्रस्थमुरारी। देखिपरीसेनाअतिभारी। हरिहिहेरिपांडवसुखछाये। इंद्रियगणजनुप्राणहिपाये॥ २४॥
हरिकहँदेखतपांडवधाये। नैननआनँदनीरबहाये॥ हरिहुलसतउतरेरथतेरे। गयेपांडवनकेचलिनेरे॥
दोहा–हरिहिलपटिगेपाँचहूँ, रहिगोतननसँभार। पुनिपुनिपरसतनाथपद, आनँदउमँगअपार॥
बहुतकालमहँप्राणपियारे। धर्मभूपयदुनाथनिहारे॥२५॥ मिलेरमापतिकोपुनिराजा। गन्योंसिद्धआपनसबकाजा॥
नैनननीरपुलकावलितनमें। भूलीसुधिसिगरीतेहिछनमें॥ मिल्योभीमपुनिकैप्रभुकाहीं। जलधिप्रेमबाढ्योदृगमाहीं॥
नकुलऔरसहदेवहुदोऊ। लीन्हेंप्रभुहिअंकभरिसोऊ॥ गद्गदगरोकढतनहिंबानी। पांडवदशानजायबखानी॥
पुनियदुपतिअरुअर्जुनधाई। मिलेवीरदोऊसुखछाई॥ रहेदंडदुइलगिनहिंछूटे। उभयप्रेमबंधनमहँजूटे॥ २७॥
दोहा–यदुपतिपारथछूटिपुनि, करिनिजतनहिंसम्हार। यथायोग्यपुनिमिलतभे, जाकोजसअधिकार॥
यदुपतिधर्मभूपपदवंदे। भीमहुकहँतैसहीअनंदे॥ मिलेअंकभरिअर्जुनकाहीं। तेसुखइकमुखनहिंकहिजाहीं॥
फेरिनकुलसहदेवहुधाये। प्रभुपदपद्मपुलकिशिरनाये॥ भीमयुधिष्ठिरआशिषदीन्हें। विजयबराबरवंदनकीन्हें॥
नकुलऔरसहदेवहुकाहीं। आशिषदिययदुनाथतहाँहीं॥ पुनिप्रद्युम्नसांबगदवीरा। सात्यकिअनिरुधउद्धवधीरा॥
कियेपंचपांडवनप्रणामा। परममोदउपज्योतेहिठामा॥ तिनकहँपांडवअंकलगाई। आशिषदियदृगनीरबहाई॥
दोहा–पुनिवृद्धनअरुब्राह्मणन, यदुपतिकियेप्रणाम। तिनआशिषदियविविधविधि, पूजैसबमनकाम॥२८॥
सृंजयकैकयवंशिनकाहीं। यदुपतिकियसत्कारतहाँहीं॥ पुनिहरिसोंपांडवकुशलाई। पूँछनलगेप्रीतिअधिकाई॥
सबसेकुशलप्रश्नहरिकहिकै। पूँछ्योतिनकीकुशलउमहिकै॥यथायोग्ययदुवंशिनकाहीं। पांडवपूँछीकुशलतहाँहीं॥
मागधबंदीसूतअपारा। बिरदबखानहिंबारहिबारा॥ २९॥ शंखमृदंगपटहअरुवीना। गोमुखपणवबजेसुरपीना॥
करहिंनृत्यगणिकागणनाना।गायकतहाँकरहिंगुणगाना॥अस्तुतिकरहिंविप्रहरिकेरी।बारबारयदुपतिमुखहेरी॥३०॥
दोहा–तहँअर्जुनकोकृष्णप्रभु, रथपरलियोचढ़ाय। आगूकैनृपधर्मको, चलेनगरसुखपाय॥
नगरप्रवेशकियोयदुनाथा। पुरवासिनकहँकियोसनाथा॥३१॥ इंद्रप्रस्थअनूपमशोभा। निरखतजाकोशक्रहुलोभा॥
गजमदतेगलियाँसबसींचीं। फहरहिंध्वजादिनेशनगींचीं॥ चामीकरतोरणचहुँओरा। धरेकनकघटठोरहिंठोरा॥
तहँदुकूलभूषणसुममाला। इंद्रप्रस्थनगरकीबाला॥ मज्जनकरिअँगरागलगाई। थारनभरिमुकुतासमुदाई॥
हरिदर्शनहितललकतधाईं।निजनिजद्वारखड़ीछबिछाईं।दर्शनपावतमुक्तलुटावैं।नाथहिअनमिषलखिसुखपावैं॥३२॥
दोहा–गृहगृहपैदीपावली, सुंदरमंदिरतुंग। सुरभिधूँमझकियनकढ़त, लसहिपताकउतंग॥
चामीकरकलशाचयचमकैं। तिनमहँरतननकीद्युतिदमकैं।ऐसोलखतनगरयदुराई।गयेयुधिष्ठिरमहलमहाई॥३३॥
यदुपतिआगमसुनतसुखारी।भईमहीपमहलकीनारी॥लोचनसफलआशअबजेही।हरिहिनिरखिकिमिकरिनहिंलेही॥
असकहिगृहकोकाजबिसारी।भूषणवसनहुनाहिंसुधारी॥ ढीलदुकूलबंधअरुकेशा।चढ़ीअटारिननारिसुवेशा॥३४॥

जवगेराजचौकमेंनाथा। तबसंहर्षभयोजनसाथा॥ रथतुरंगमातंगनसंगा। पीसेजायथयदपिजनअंगा॥
दोहा–रेलिरेलितव्यपिकढै, घुसिघुसिहरिढिगजाय। करहिंनगरवासीदरश, अनिमिषनैनलगाय॥
रानिनसहितकृष्णकहँदेखी।चढ़ींअटातियमुदितविशेषी॥बरषिकुसुमहरिकहँलियछाई।इकटकलखहिंमंदमुसुकाई॥
इंद्रप्रस्थभलेहरिआये। हमहुसवैलोचनफलपाये॥३५॥ पुनिलखिहरिरानिनकहँनारी। मोदितह्वैअसगिराउचारी॥
रानीहरिसँगसोहहिंकैसे। तारापतिसँगताराजैसे॥ पूरवपुण्यकौनइनकीनी। भईकृष्णकीवधूप्रवीनी॥
रसिकशिरोमणिजिनयदुराई।लीलासहितमंदमुसकाई॥कलाकलितअतिआनंददेहीं।छनछनतियसुपमासुखलेहीं३६
दोहा–उपरोहितधौम्यादितहँ, जदुपतिनिकटसिधारि। दधिअक्षतदैभालमें, रथतेलियोउतारि॥
विप्रवेदभाषतहरिसंगा। भरेअनंदउमंगअभंगा॥ करतनिछावरमणिगणनाना।यदुपतिसँगमहँकियेपयाना॥३७॥
चलेकृष्णअंतःपुरकाहीं। रहीपृथाद्रौपदीजहाहीं॥ तहँअंतःपुरकेजनआये। विकसेकमलसरिसमुखभाये॥
हाँकतविजनचमरकरढारें। जयहरिजयहरिवचनउचारें॥ गयेराजमंदिरयदुनाथा। प्रद्युम्नादिलियेसबसाथा॥३८॥
कुंतीहरिकहँआवतदेखी। धन्यभाग्यअपनीतहँलेखी॥ तजिपर्यंकआशुउठिधाई। लियोकृष्णकहँअंकलगाई॥
दोहा–रह्योनतनकसम्हारतन, बहतनैनजलधार। प्रेमहिपारावारमहँ, मगनभईतेहिंवार॥
पुनिसम्हारिनिजसंगलिवाई। यदुपतिकहँआसनबैठाई॥ लगीचरणचापनचितचाई।इकटकमुखमहँनैनलगाई३९॥
तहाँयुधिष्ठिरअतिसुखपागे। कृष्णकमलपदपूजनलागे॥ पूजनमेंह्वैगयविपरीती। रहीनसुधिबाढीअतिप्रीती॥
प्रथमहिनीराजननृपकीन्हें। दीपहिदैधूपहिपुनिदीन्हें॥ दैप्रदक्षिणासुमनचढ़ायो। चंदनदैनैवेद्यलगायो॥
पुनियदुपतिकेचरणपखारी। धर्मभूपलीन्ह्योंशिरधारी॥४०॥पुनिगुरुनारिनकहँयदुराई। वंदनकीन्ह्योंशीसनवाई॥
दोहा–पांचालीकोवंदिकै, दीन्ह्योंफेरिअशीस। आयसुभद्राकृष्णके, नायोचरणनशीस॥ ४१॥
पांचालीकहँपृथाबुलाई। मृदुलवचनअसदियोसुनाई॥ हरिरानिनकहँल्यावहुजाई। पृथकपृथकगृहदेहुटिकाई॥
द्रुपदसुतासुनिआशुहिधाई।सबहरिप्यारिनकहँशिरनाई॥रुक्मिणिजांबवतीसतिभामा॥४२॥भद्राकालिंदीछबिधामा
शैव्याअरुअवधेशकुमारी। औरमित्रविंदाछबिभारी॥ इकशतसोरहसहससुरानी। इनसबकोनिजमंदिरआनी॥
बारबारमिलिद्रुपदकुमारी।कुशलप्रश्नपूँछीसुखकारी॥ सबकोविधिवतपूजनकीन्ह्यों। भूषणवसननजरिबहुदीन्ह्यों॥
दोहा–सुमनमालगलडारिकै, अँगअँगरागलगाय। पृथक्पृथक्मणिमंदिरन, दीन्ह्योंतिन्हैंटिकाय॥ ४३॥
हरिकुंतीसोंविदामाँगिकै। धर्मभूपसँगमोदपागिकै॥ प्रभुअर्जुनकोपाणिपकरिकै। अंतःपुरतेआशुनिकरिकै॥
बाहरआयेआनँदछाई। धर्मभूपतहँप्रीतिबढाई॥ निजमंदिरमहँरमानिवासै। दीन्ह्योंसाजिसाजुसुखवासै॥
यथायोग्ययदुवंशिनकाँहीं। डेरादीन्ह्योंभूपतहाँहीं॥ चारिमासतहँरहेमुरारी। इंद्रप्रस्थजनकरतसुखारी॥
सैनसुभटवाहनअरुरानी।सचिवनसहितहरिहिसुखमानी॥भूषणवसनविविधपकवाना।नितानितनवनवदियोमहाना॥
दोहा–पुनियदुनंदनपार्थयुत,खांडववनकहँजाय। वासवकोमदमोरिकै, अग्निहिदियोजराय॥
मयदानवपरकरिकृपा, ताकोलियोबचाय। धर्मराजकीसोसभा, दीन्हीदिव्यबनाय॥ ४५॥
धर्मभूपकेप्रीतिहित, वसेतहाँयदुनाथ। वनविहरतप्रभुभटनयुत, चढिरथअर्जुनसाथ॥ ४६॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे एकसप्ततितमस्तरंगः॥ ७१॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–एकसमयदरबारमें, बैठेधर्मनरेश। भीमादिकभ्रातासबै, सोहतसुंदरवेश॥ १॥
व्यासादिकमुनितहाँसुहाये। औरअचार्यपुरोहितआये॥ ज्ञातिनातबांधवछबिछाये। अरुकुलवृद्धतहाँसुखपाये

ब्राह्मणक्षत्रीवैश्यहुजेते। इंद्रप्रस्थरहेबुधतेते॥ सबभूपतिदरबारसिधाई। बैठेआइनृपहिशिरनाई॥
तहँयदुवंशिनसहितसमाजा।आयेसभामध्ययदुराजा॥ धर्मभूपउठिवंदनकीन्ह्यों। कनकसिंहासनआसनदीन्ह्यों॥
सबयदुवंशिनकरिसत्कारा। बैठायोनृपधर्मउदारा। सकलसमाजैतहाँसुनाई। हरिसोंकह्योयुधिष्ठिरराई॥ २॥

श्रीयुधिष्ठिर उवाच।

दोहा-मेरेमनअभिलाषअस, पूरकरहुयदुनाथ। राजसूयकरवाइके, मोकोंकरहुसनाथ॥
छंद-मखराजमेंप्रभुपूजितुमकोमोहिंनकछुआशारही। मोपैकृपाहैआपकीयहबातजगजानतसही॥ ३॥
जेरावरेचरणारविंदअनंदनितध्यावतरहैं। जेदेनमंगलचरिततिहरेगावतेनितहीमहैं॥
जेमनुजपावनजगतमेंअपवर्गकोहठिपावहीं। नहिंलहतसोकुमतीकबहुँयहवेदचारिहुगावहीं॥ ४॥
प्रभुरावरेचरणारविंदहिकृपाकोफलजगलखै। जेभजहिंतुमकोनाहिंभजैतेउलखैतुमकोचखै॥
अपनोप्रभावलपाइयेममयज्ञमेंसबजननको। मैंतोकछूनहिंकरनलायककरतनिततुवमननको॥ ५॥
सर्वात्महौसमदिष्टसबपरनित्यआत्मारामहौ। नहिंभेदजेजसभजततुमकहँदेततेहिंतसकामहौ॥
दोहा-धर्मभूपकेवचनसुनि, यदुपतिअतिहरषाय। बोलतभेमंजुलवचन, सभासदानिसुनाय॥ ६॥

श्रीभगवानुवाच।

भलोविचारकियोनृपराई। ह्वैहैलोकनकीर्तिमहाई॥ ७॥ ऋषिनसुरनसुहृदनपितरनको। राजसूयहैमेरेहुमनको॥
चाहतयहीजगतकेप्रानी। करहियुधिष्ठिरमखसुखदानी॥८॥सबभूपनकोजीतिनरेशा।सकलपुहुमिफैलायनिदेशा॥
करिकैसकलयज्ञसंभारा। राजसूयनृपकरहुउदारा॥९॥ लोकपालसमयेतुवभ्राता। तीनहुँलोकनमेंविख्याता॥
जोयोगिनसोंजीतिनजाहू। सोमोहितुमवशकियनरनाहू॥१०॥जेमोपरहैंसदासनेही। धनहुँधाममममहिततजिदेहीं॥
दोहा-तिनकेसमयशतेजमें, देवहुहेनृपनाहिं। तौपुहुमीकेपुहुमपति, कैसेसमताताहिं॥ ११॥

श्रीशुक उवाच।

सुनतवचनयदुपतिकेराजा। लह्योमोदउरमाहँदराजा॥ विकस्योवदनकमलनृपकेरो। कृष्णअनुग्रहगुन्योघनेरो॥
दशहुदिशाजीतनअरित्रासन। दीन्ह्योंचारिउभ्रातनशासन॥कृष्णकृपालहिपांडववीरा।चलेदिशाजीतनरणधीरा१२
दक्षिणदिशिसहदेवसिधारे। सृंजयवंशिनसुदलसमारे॥ पश्चिमनकुलगयेयुतसैना। उत्तरअर्जुनगेबलऐना॥
गयोवृकोदरपूरबओरा। कैकयमद्रमत्स्यबलघोरा॥ १३॥ तेसबदिशननरेशनजीती। लैलैडाँडफेरिकरिप्रीती॥
दोहा-लैलैसोधनआशुही, आयेनृपतिसमीप। राजसूयकरवावने, जुरिगेसबैमहीप॥ १४॥
कह्योधर्मनृपतबहरिपाँहीं। याशंकाहैमोमनमाँहीं॥ मगधमहीपजीतिनहिंजाई। ताकीयदुपतिकरहुउपाई॥
तबयदुराजवचनअसभाखे। उद्धवप्रथमहिमोहिंकहिराखे॥सोइउपायकरिमागधकाँहीं।जीतिलेबकछुसंशयनाहीं १५
असकहिपार्थभीमकहँलैके। कृष्णविप्रकोवेशहिकैकै॥ गयेगिरिव्रजकहँत्रयवीरा। वसतजरासुतजहँरणधीरा॥१६॥
तासुरीतियहरहीसदाँहीं। पहरदिवसलगिद्वारेमाँहीं॥ बैठतरह्योदेतबहुदाना॥ जोजसमाँगैताहिमहाना॥
दोहा-सोईसमयविचारिकै, भीमविजययदुराय॥ विप्ररूपधारेसबै, कहेवचनतहँजाय॥ १७॥
महाराजहमअतिथिहैं, सुनिदानीतुवनाम॥ दूरदेशतेआयकै,माँगतहैंमनकाम॥
जोहममाँगैंसोतुमदेहू। करहुनमनमेंकछुसंदेहू॥ १८॥ शीलवानकोअसहनकोई। जिमिशठसहजकरहिसबजोई॥
काअदेइहैदानिनकाँहीं। समदरशीकोपरकोउनाँहीं॥१९॥ जाकेविभौविभूतिबडाई। सोयशकीनहिंकियोउपाई॥
यहअनित्यतनकोनितपाल्यो।दीननकोदारिदनहिंघाल्यो।सोईसबविधिशोचनलायक।जियतहिमरयोगुनहुनरनायक
रतिदेवअरुनृपहरिचंदा। शिविअरुवीरविरोचननंदा॥ उंछवृत्तिनृपव्याधकपोतू। दानदियोजसकियोउदोतू॥
दोहा-यहअनित्यतनतेसबै, करिदीननउपकार। गवनतभेसुरपुरसही, अबलोंसुयशअपार॥ २१॥

श्रीशुक उवाच।

सुनितीनोंविप्रनकीवानी। मागधराजमनहिंअनुमानी॥ इनकेशोरकठोरअघाता। लग्योकरनमेंज्याकरघाता॥
इनकोरूपद्विजनकसनाँहीं। कबहूँहमदेख्योइनकाँहीं॥ २२॥ हैंनहिंद्विजक्षत्रीहैंकोई। आयेअपनेरूपहिगोई॥
असविचारबोल्योमगधेशा। तुमक्षत्रीधारेद्विजवेशा॥ पैहमरेहगृमाँगनआये। दानकालमहँवचनसुनाये॥
देहेंहमजीवहुतुमकाँहीं।जोसबकोप्रियपरमसदाँहीं॥२३॥बलकीकीरतिचहुँदिशिछाई।हमरेहुकाननपरीसुनाई॥२४॥

दोहा–विप्ररूपधरिविष्णुतहँ, देनइंद्रकहँराज। माँगनगेबलिराजपहँ, साधनहितसुरकाज॥

जदपिविष्णुकहँजानिहुँलीन्ह्यों।शुक्राचारजवारणकीन्ह्यों॥तद्यपिवामनकहँबलिराई।त्रिभुवनराजदयोसुखछाई २५
जोक्षत्रीविप्रनकेहेतू। दियोनधनजीवहुनिजनेतू॥ तासुजन्महेजगतवृथाही। श्वानसमानजियतमरिजाही॥२६॥
असगुनिपुनिबोल्योमगधेशा। तीनिहुभटजेधृतद्विजवेशा॥ माँगहुजौनविप्रमनहोई। देहौंतुम्हैंशीशहूँसोई॥
सुनिमागधकेवचनमुरारी। मंदमंदअसगिराउचारी॥ २७॥

भगवानुवाच।

द्वन्द्वयुद्धहमकोनृपदेहू। करहुजोहमपरतुमअतिनेहू॥

दोहा–युद्धहेतुआयेइतै, औरनहैकछुकाज। हमक्षत्रीहैंविप्रनहिं,यहजानोमहराज॥ २८॥

यहतोपार्थवृकोदरनामा।तासुबंधुअर्जुनबलधामा॥इनकोमातुलसुतआनुमानो।कृष्णनाममोहिंनिजरिपुजानो॥२९॥
कृष्णवचनसुनिमागधराई। देतारीकरहँस्योठठाई॥कोपितकह्योसुनहुमतिमंदा। देहौंअवशितुम्हहिंयुधद्वंदा॥३०॥
यदुपतितोसौंलरिहौंनाँहीं। तेकादरहैसंगरमाँहीं॥ रहतनयुधमहँचितथिरतेरो। सदाअहैतेछलीघनेरो॥
मोहिंडरमथुराछोंडिपराई।कियोवाससागरमधिजाई॥३१॥अर्जुनतोबालकसबभाँती।निरखतयहिदायाबढ़िजाती॥

दोहा–विक्रमहूऔवपुषमें, मोतेसबविधिहीन। याजानेयुधकरननहिं, योधाहैयहदीन॥

भीमसेनअतिशयबलवाना। मोसोंहैयुधकरनसमाना॥ ताकौमैंविशेषियुधदेहौं। लैहौंयुधकीयमपुरजेहौं॥ ३२॥
असकहिगृहमेंजायभुवाला। द्वैद्रुतल्यायोगदाविशाला॥ एकगदाअपनेकरलीन्हीं। भीमसेनकहँदूसरदीन्हीं॥
गयोनगरबाहिरमगधेशा। ताक्षणभयोभयंकरवेशा॥ ३३॥ भीमहिलैअर्जुनयदुराई। मागधाढिगगेकरनलड़ाई॥
ऊंचनीचजहँनहिंथलरहेऊ। कोमलभूमियुद्धतहँठयऊ॥ इतहिभीमउतमगधभुवाला।वज्रसरिसगहिगदाकराला॥

दोहा–रणदुर्मददोउप्रबलअति, दोऊदुहुनप्रचारि। दोऊदोहुनडाटिकै, करनलगेतहँरारि॥ ३४॥

प्रमाणिकाछंद–करैंअनेकमंडलै। गदासुपाणिचंडलै॥ जराकुमारदक्षिणै। तौवामभीमदक्षिणै॥
कहूँसुदूरजातहैं। कहूँभिरेदेखातहैं॥ कहूँलरैंअकासमें। कहूँमहीविलासमें॥

दोहा–भीमसेनमागधतहाँ, शोभितभेतेहिठोर। रंगभूमिमेंयुगलनट, लरहिंमनहुकरिजोर॥ ३५॥

भुजंगप्रयातछंद–तहाँचटचटाशब्दछायोअखंडा। मनोवज्रकोपातहोतोप्रचंडा॥
उडैंत्यौंगदाकेकनाजोतिजागे। महीमेंझरैंतारमानोंअदागे॥
मनोमत्तमातंगदंतैप्रहारैं॥ ३६॥ जरासंधभीमोगदाताकिमारैं॥
भुजापाणिपादौउरूकंधमाँहीं। हनैजोरतेवेगदाकोतहाँहीं॥
गदाकेलगेअंगह्वैचूरजाहीं। भरेक्रोधदोऊहटैंनेकुनाहीं॥
जबैभीममारैतबैसोबचावै। जरासंधत्योंभीमसेनैनपावै॥
कितैपैंतरेधारिधावैंप्रवीरा। भिरैऔफिरैवैगनैनाहिंपीरा॥
मनोनागद्वैअंकशाखागहेहैं। लड़ैंक्रोधधारेविजयकोचहेहैं॥ ३७॥
गहेहैंगदामुष्टिसोंजोरभारी। हनैहाकिकैहेरिमानैनहारी॥
दोऊवीरहैंविक्रमीत्योंसमानै। दोऊशत्रुसोंहारिनेकौनमानै॥

दोऊहैंगदासंगरैमेंअतूले। दोऊशत्रुकेजीतिकेगर्वफूले ॥
दोऊकेमुखैस्वेदकेबिंदुसोहैं। दोऊआपनोआपनोघातजोहैं॥
दोऊकेबढ्योयुद्धमेंवेगभारी। दोऊकीनजानीपरैआशुहारी ॥
दोऊकेभयेलालनैनाविशाले। दोऊकेभयेरूपकालैकराले ॥ ३८ ॥
दोऊकोपकैकैकरैंसिंहनादा। दोऊकेबढ्योयुद्धकोमोदजादा ॥
दोऊवीरगाढेटरैंनाहिंटारे। दोऊबाँकुरेजग्गकेजैतवारे ॥ ३९ ॥

दोहा-महाराजयहिभाँतिसों, सत्ताइसदिनयुद्ध। वसेरातिकेमीतसम, एकहिसेजअक्रुद्ध ॥

अट्ठाइसौंदिवसजबआयो। हरिसोंकह्योभीमदुखछायो ॥ मागधकोमैंसकतनजीती। लगहिनयदपिनेकहूभीती ॥ भयेअंगसबचूरनमेरे।लगेगदाकेघातघनेरे ॥ ४० ॥ ४१ ॥ तबबोलेयदुपतिमुसकाई। आजुहिमरितुमकरहुलराई ॥ देखेहुममदिशिकरतलराई। तबहमदेबउवायबताई ॥ तैसहिभीमकियहुतुमतबहीं। शत्रुहिमरिहौदेखतसबहीं ॥ असकहिधरचोभीमपरतेजू।कहतबुझायदैतबहुजेजू।।तुमसमानकोजनविख्याता।करिहौअवशिजरासुतघाता ४२॥

दोहा-तहाँभीमअतिभीमभट, वंदिकृष्णपदकंज। युद्धकरनकोसजतभो, गंजिसकलदुखगंज ॥

उतैमागधौसाजितहँआयो। होनलग्योसंगरमनभायो ॥ गदाशब्दतहँहोतकठोरा। मागधभीमकरतबहुशोरा ॥ भीमलरतमागधसोंघिरिघिरि।ताकतहरियहँपुनिपुनिफिरिफिरि।यदुपतिश्रमितभीमकहेदेखी।करिदायाउरमाहँविशेषी भीमहिसन्मुखचितैमुरारी। लैइकसींकदुहूँकरफारी॥४३॥भीमसेनकहँकियोइशारा। तहँप्रमुदितह्वैपांडुकुमारा ॥ करीचपलतालख्योनकोऊ। पकरिजरासुतकेपगदोऊ ॥

दोहा-क्षितिमेंताहिपछारिकै ॥ ४४ ॥ इकपदसोंपगदाबि। एकचरणगहिदोहुनकर, भीमसेनरनफाबि ॥

बीचहितेमागधकोफारो।जिमिशाखाकहँगजमतवारो४५इकइगकरदृगश्रुतियकओरा।तिमिवियखंडपरचोतेहिंठोरा मगधभरेभोहाहाकारा। भीमलह्योतबमोदअपारा ॥ अर्जुनऔमुकुंदसुखपागे। भीमहिबहुतसराहनलागे ॥ भीमसेनकहँमिलेमुरारी। नृपप्रहारकीपीरनेवारी ॥ भीमसेनभोपरमसुखारी। पूर्वसमानभयोबलभारी ॥ ४७ ॥ मागधतनयनामसहदेवा। जानिनाथकरिहैममसेवा ॥ कियअभिषेकभवनतेहिंजाई। दियोमगधकोभूपबनाई ॥

दोहा-बंदीखानेआठसै, अरुनृपवीसहजार। तिनकोजायछोडायदिय, श्रीवसुदेवकुमार ॥ ४८ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजश्री राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे द्विसप्ततितमस्तरंगः ॥ ७२ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-वीससहसशतआठने, मागधजीतेभूप। तेगिरिकंदरतेकढे, परममलिनजिनरूप ॥ १ ॥

क्षुधाकृशितमुखगयोसुखाई।कैदपरेअतिशयदुखपाई ॥ तेकढियदुपतिदरशनकीन्हें। परमभागअपनोंसबचीन्हें ॥ पीतांबरसोहतछबिधामा।सुंदरतननवीनघनश्यामा॥२॥ उरश्रीवत्सचारिभुजभ्राजैं। अरुणकमलदलसमदृगराजैं ॥ चारुवदनमनुपूरणचंदा। कीटशीसयुतरतननिवृंदा॥दिपतमकरकुंडलहुकपोला।छबिछलकैंअलकैंअतिलोला॥३॥ कटिकटिसूत्रकड़ेकरमाहीं।राजतअंगदवाहुनपाहीं॥सरसिजगदाशंखअरुचक्रा।नासतअमितअरिनगनवक्रा ॥ ४ ॥

दोहा-कौस्तुभसोहतकंठमें, जाकीप्रभाविशाल। पाँचरंगकेसुमनकी, मंडितहैवनमाल ॥

ऐसेयदुपतिकहँलखिभूपा।पायोतेहिंक्षणमोदअनूपा ॥मनुहरिछबिदृगपानकराहीं। मनुरसनातेचाटतजाहीं ॥ ५ ॥ हरिपदकमलसुरभिनिजनासै।आणकरहिंमनुसहितहुलासै॥भरहिंअंकमनुभुजापसारी। प्रेमदशानहिंजातिउचारी॥

कियेपुहुमिपरदंडप्रणामा । भिन्नभिन्नकहिसबनिजनामा ॥६॥ निरखतमाधवपदअरविंदा।छूट्योभूपनकोदुखद्वंदा॥
सिगरेलगेसराहननाथै । अस्तुतिकरीजोरियुगहाथै ॥ ७ ॥

राजोवाच ।

देवदेवजयजयतिरमेशा । दासनकोदुखहरहुहमेशा ॥
दोहा–शरणागतहमआपके, अहैसबैयदुनाथ । भवनिधितेद्रुतकाढिये, गहिहमारप्रभुहाथ ॥ ८ ॥
छंद–चौपैया–हमजराकुमारैभलोविचारैकैदकियोजोल्याई । सुधिआपहमारीकरीमुरारीतुवछबिदृगमहँआई ॥
तुवकृपामहाईजापरआईतबछूटतजगजाला । सोइबुद्धिविशालारूपरसालाहोतनाथततकाला ॥ ९ ॥
इश्वजेमदमातेनृपदुखपातेजानतनहिंकल्याना । तबमायामोहैधनप्रियजोहैसोअनित्यहमजाना ॥ १० ॥
मृगतृष्णाकाँहींजलमनमाहीँजिमिधावतगुनिप्यासो।तिमिजगतभुलानोतुमहिंनजानोसतिमानतधनवासो॥११॥
हमश्रीमदछयकैअंधहिद्वैकैप्रथमहिरिपुजयआसा । जनहनेपरस्परशठतातत्परछोडिआपकीत्रासा ॥ १२ ॥
ताकोफलपायोविभोगमायोकैदभयेइतआई । प्रभुदीनदयालाअबयहिकालासुरतिआपकीपाई ॥ १३ ॥
हमचहैंनराजूअतिदुखसाजूयहप्राकृततनहेतू । लघुकालहिकेरोमोदघनेरोवासननाकनिकेतू ॥ १४ ॥
असदेहुबताईनाथउपाईजामेंतवपदकंजै । मनमधुपसदाहींबसितिनमाहींतुवकीरतिकलगुंजै ॥ १५ ॥
वसुदेवकुमारैकृष्णउदारैश्रीहरिदयाअपारे । दासनदुखदारेसुयशपसारेश्रीगोविंदमुरारे ॥
निजआयुधधारेकीटसँवारेसुंदरतनघनकारे । उरमंजुलहारेदृगअरुणारेरक्षकअहौहमारे ॥ १६ ॥

शुक उवाच ।

दोहा–कैदछुटेराजासबै, यहिविधिअस्तुतिकीन । तबतिनसोंकरुणायतन, मंजुवचनकहिदीन ॥ १७ ॥

भगवानुवाच ।

आजुहितेलैसुमतितिहारी । अखिलईशमोमहँसुखकारी॥लगीरहींअबटरिहिनटारी।तुवउरउपजीभक्तिहमारी॥१८॥
सबैसत्यजोगिराउचारी । यहतोमनमेंभलीविचारी ॥ मेरेशरणभयेरतिधारी । लैहौंतुमकोआशुउधारी ॥
जिनकेधनमदहैतनभारी । सुखीनहोंमैंतिनाहिनिहारी॥१९॥हयहयनहुषवेनमहिधारी । नरकासुररावणअघकारी ॥
औरहुवेददतुजनृपभारी।श्रीमदतेसबभयेदुखारी॥श्रीमदवशममसुरतिविसारी । उभयलोकशठदीनबिगारी ॥ २० ॥
दोहा–यहविचारितुमभूपसब, जगअनित्यजियजानि । प्रजारक्षियेधर्मयुत, पूजहुमोहिमखठानि ॥ २१ ॥
राखहुजगमहँनिजनिजवंशा।सममानेहुअपवादप्रशंसा।तैसहिदुखसुखमानिसमाना।विचरहुजगमहँधरिममध्याना ॥
उदासीनह्वैदेहादिकमहँ।धृतव्रतकरिसंतोषीमनकहँ॥मोमहँमनलगायतजिकामा । अंतसमयजैहौममधामा ॥ २३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

असकहिभूपनकहँयदुराई । बहुपुरुषननारिनबोलवाई ॥ मज्जनअरुअँगरागकराई । सबभूपनपैंकृपादिखाई ॥ २४ ॥
पुनिसहदेवहिंनाथबोलाई । ऐसोकह्योताहिसमुझाई ॥ सुनियेंमागधराजकुमारा । करियेभूपनकरसतकारा ॥
दोहा–सुनिसहदेवअनंदलहि, भूपनकोसनमान । करनलग्यौश्रीकृष्णको, शासनसहितविधान ॥
भूषणवसनअनूपमदीन्हें । सुमनमालरंजितगलकीन्हें ॥२५॥ अपनेसँगभोजनकरवाये। भोगवस्तुदीन्ह्योंसुखछाये॥
सादरवीरानृपनिखवायो । चमरछत्रकरिअतरलगायो ॥२६॥ लहिसहदेवकेरसत्कारा । भयेमहीपतिमुदितअपारा॥
कुंडलकटककीटशिरधारे । प्रभुकहँबंदेपाणिपसारे ॥ बंदिद्वंदहतसोहतकैसे । पावसअंतअमलउडुजैसे ॥ २७ ॥
रथतुरंगमातंगचढ़ाई । मणिभूषणबहुविधिपहिराई॥ कहिकहिमंजुलवचनमुरारी।बिदाकियेकरिनृपनसुखारी॥२८॥
दोहा–हरिकेछोरेबंदिते, भूपतिअतिसुखमानि । निजनिजदेशनकोगये, नाथचरणउरआनि ॥ २९ ॥
गृहमेंबसेकृष्णयशगावत।शासनधरनिकियेहरिध्यावत।जेहिंविधिशासनयदुवरदीन्ह्यों।भूपतिसकलताहिविधिकीह्यो

श्रीशुक उवाच।

इतैमुकुंदराजगृहमाहीं। माँगिबिदासहदेवहिपाहीं॥ तासोंपाइपरमसत्कारा। कृष्णसहितयुगपांडुकुमारा॥ ३०॥
इंद्रप्रस्थचलेसुखछाये। भीमसेनकरसुयशबढ़ाये॥ ३१॥ शत्रुनदुखदसुहृदसुखदाई। नगरनिकटआयेयदुराई॥
निजनिजशंखबजावनलागे।जीतिसुयसयुगयुगजगजागे॥३२॥पांचजन्यध्वनिसुनिपुरवासी।ह्वैगेसकलआशुमुदरासी।

दोहा-जरासंधकोवधगुन्यो, कृष्णचंद्रकीजीति। धर्मभूपकीपूजिगै, सकलमनोरथरीति॥ ३३॥
अर्जुनकृष्णहुभीमपुनि, गयेधर्मनृपपास। तिनकोसादरमिलतभे, धर्मभूपसहुलास॥
जरासंधकोभाँतिजेहिं, भीमसेनकियसंत। नृपतियुधिष्ठिरसोंकह्यो, वासुदेववृत्तांत॥ ३४॥
धर्मभूपसुनिसुखितभे, कृष्णकृपागुनिलीन। तनपुलकावलिदृगसजल, भनेनप्रेमहिभीन॥ ३५॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिरा
जश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे त्रिसप्ततितमस्तरंगः॥ ७३॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-यहिविधिजराकुमारवध, सुनतयुधिष्ठिरभूप। मानिकृष्णकीअतिकृपा, बोलेवचनअनूप॥ १॥

युधिष्ठिर उवाच।

ब्रह्मशिवादिकजेजगदीशा। शासनजासुवहैंधरिशीशा॥२॥गुरुसनकादिकलोकनकेरे। जेहिशासनसिरधरहिघनेरे॥
सोमुकुंदहेदृगअरबिंदा। ईश्वरकेईश्वरगोविंदा॥ मोकुमतीकपटीकरशासन। करियतसेवकसमरिपुनाशन॥
सोमोंहिकौतुकलागतभारी।यहकसअनुचितकरहुमुरारी॥३॥परब्रह्महौआपुहिएकू।घटहुबढनाहितरविसमनेकू॥४॥
मैममतैंतवयहकुटिलाई। तुम्हरेदासनपासनजाई॥ ५॥

श्रीशुक उवाच।

सुनतधर्मभूपतिकीवानी। कृष्णकह्योसतिभूपबखानी॥

दोहा-राजसूयकोकीजिये, अबअरंभमहाराज॥ वेदवादिबहुविप्रकी, वेगिबोलायसमाज॥

सुनतधर्मनृपअतिसुखमानी।यज्ञयोगकालहिंतहँजानी।करिऋत्विजनमुनिनसुखभरणा।राजसूयहितकीन्ह्योंवरणा॥६
भरद्वाजगौतमऋषिव्यासू। असितसुमंतुच्यवनतपरासू॥ कण्ववसिष्ठकवषमैत्रेया॥ ७॥ पैलपराशरगर्गअजेया॥
वामदेवक्रतुवैशंपायन। जैमिनिविश्वामित्रसुखायन॥८॥कश्यपधौम्यअथर्वारामा॥ आसुरिवीतिहोत्रतपधामा॥
बीतसेनकृतव्रणमधुछंदा। लगेकरावनमखसानंदा॥ ९॥ भीष्मदेवअरुद्रोणाचारज। कृपाचार्यकुलकेआचारज॥

दोहा-धृतराष्ट्रहुशतपुत्रयुत, विदुरहुबंधुसमेत। बोलवायेनृपधर्मके, आयेयज्ञनिकेत॥ १०॥

ब्राह्मणक्षत्रीवैश्यहुशुद्रा। मंत्रिनसहितभूपबड़छुद्रा॥ राजसूयदेखनसबआये। बोलवायेअरुअनबोलवाये॥ ११॥
तहाँकनकहलरचिमुनिराई। शोध्योयज्ञभूमिश्रुतिगाई॥ दीक्षामहँभूपहिबैठाई। लगेकरावनमखमुनिराई॥ १२॥
रचेकनककेपात्रघनेरे। रहेप्रथमजिमिवरुणहिकेरे॥ तहँवासवशंकरचतुरानन। औरहुलोकपालसुखआनन॥१३॥
सिद्धमहोरगअरुगंधर्वा। विद्याधरचारणगणसर्वा॥ यक्षरक्षखगकिन्नरनाना। मननशीलजेमुनिहुमहाना॥ १४॥

दोहा-राजराजरानीसबै, संयुतराजकुमार। अचरजमानतभेसबै, निरखियज्ञसंभार॥ १५॥

धर्मभूपकोगुनिहरिदासा। कियेसबननिजविस्मयनासा॥ मुनिगणदेवसरिसमहराजै। सविधकरावतभेमखकाजै॥
जैसेवरुणहिअमरसुहाये। राजसूयमखकीकरवाये॥१६॥ सोमपानकरजबदिनआयो। तादिनधर्मभूपसुखछायो॥
याजकसदसपतिनकहँआनी।पूजनकियोपरमसुखमानी१७तहाँसकलमुनिगणजुरिआये।लगेविचारकरनभ्रमछाये॥

लहैअग्रपूजनकोआजू । बैठेऋषिमुनिनृपनसमाजू ॥ यकतेएकअधिकदरशाही । परतनहींनिश्चयमनमाहीं ॥
दोहा-पुनिसबतेपूँछनलगे, सभासदनपहँजाय । तेउविचारिनहिंकहिसके, मौनरहेभ्रमल्याय ॥
शंकामचीसभामेंजबहीं । गुनिसहदेवकह्योअसतबहीं ॥१८॥ सुनहुसबैनृपवचनहमारा।जोहमकरिकैकहतविचारा॥
लहैंअग्रपूजनयदुराई । उचितसकलविधिमोहिजनाई ॥ येसज्जनपतिहैंभगवाना।सुरधनदेशकालप्रभुजाना ॥ १९॥
इनकोरूपविश्वकहँजानो । राजसूयइनवपुअनुमानो ॥ शांतयोगअरुआहुतमंत्रा । अग्निहुहैइनकेपरतंत्रा ॥ २० ॥
एकहियेइनसमनहिंकोऊ । अंतरयामीहैजगसोऊ ॥ इनकोनहिंकोउअहैअधारा । सिरजतपालतकरतसंहारा॥२१॥
दोहा-येईयदुपतिकीकृपा, पायसकलजगलोग । धर्मकर्मसबकरतहैं, लहतमुक्तिअरुभोग ॥ २२ ॥
अतोअग्रपूजनसुखछाई । देहुकृष्णकेचरणचढाई ॥ पूजतइनहिंपूजिसबजैहैं । धर्मभूपअतिआनंदपैहैं ॥ २३ ॥
पुनिपुनिकहहुँपुकारिपुकारी।सुनहुसभासदसज्जनभारी॥चहहुजोफलअनंतमखमाहीं।देहुअग्रपूजनहरिकाहीं २४॥
असकहिमौनभयोसहदेवा । जानतहरिप्रभावकरभेवा ॥ सुनिसहदेववचनमुनिराई । लगेसराहनअतिहरषाई॥२५॥
सबैसभासदसंमतकीन्हें । हरिहिअग्रपूजनकहिदीन्हें ॥ धर्मभूपतहँआनँदपाई । पूज्योकृष्णहिप्रेमबढ़ाई ॥ २६ ॥
दोहा-हरिकेचरणपखारिनृप, जगपवित्रकरवारि । मंत्रीअनुजकुटुंबतिय, सहितालियोशिरधारि ॥ २७ ॥
प्रभुकहँपीतांबरपहिरायो । भूषणअंगदिव्यसजवायो ॥ आनँदअंबुभरेदृगमाँहीं । विधिवतपूजनकियोतहाँहीं ॥
प्रेमाकुलनृपधर्ममहाना । लगेकरनयदुपतिपदध्याना ॥२८॥ निरखिअग्रपूजनहरिकेरो । लहेसभासदमोदघनेरो ॥
हाथजोरिजयजयसबगाये । यदुनंदनकेपदशिरनाये ॥ नभतेसुमनदेवझरिलाये । बाजबजायकृष्णगुनगाये ॥ २९॥
रह्योतहाँशिशुपालहुबैठो । कृष्णसुयशगुणसुनिअतिऐंठो ॥ उठिआसनतेहाथउठाई । हरिनिंदाकियनहिंभयलाई॥
दोहा-सभासदनसनकहतभो, बानीपरमकठोर । वीरबलीगर्वितमहा, नृपदमघोषकिशोर ॥ ३० ॥
कालअहैअतिशयबलवाना । सतिभाषैयहवेदपुराना॥वृद्धनबुद्धिनीतिरसपागी। खोइजातिबालकमतिलागी ॥३१॥
कहाकरहुरहेअनुचितभाई । अबतोमोसोंदेखिनजाई ॥ सबैपात्रकेजाननहारे । करहुकाजकसबिनाविचारे ॥
दियोअग्रपूजनजोकृष्णै । देहुसबैउत्तरममप्रश्णै ॥ ३२ ॥ हौसबतपव्रतविद्याधारी । ज्ञानध्वस्तपातकभोभारी ॥
जेब्रह्मर्षिब्रह्मविज्ञाता । देवनपूजितपदजलजाता ॥ ३३ ॥ तिनकोतजिकैसभामँझारी। कृष्णहिपूज्योकाहविचारी॥
दोहा-कुलकलंककारकसदा, नीचजातिगोपाल । कागनपावतभागमख, सोंदेख्योयहिकाल ॥ ३४ ॥
वर्णाश्रमतेरहितसदाँहीं । धर्मकर्मकछुजानतनाँहीं ॥ जोमनभावैसोईकरतो । परनारिनकेसंगविहरतो ॥
सकलभाँतितेसतगुणहीना। कहाजानियहिपूजनकीना॥३५॥बैठनयोगनसज्जनपाँती।दियोशापयहिकुलहियथाती॥
भाषतहैयहमृषासदाहीं । पानकरतयहमदिराकाहीं ॥ नंदगोपकोसुतअभिमानी । पूजनकियोकाहतुमजानी॥३६॥
मथुरातजिकैकृष्णअहीरा । वस्योजाइसागरकेतीरा ॥ पथिकनलूटतदैदुखघोरा । अहैअहीरसदाकोचोरा ॥ ३७ ॥
दोहा-ताहिअग्रपूजनदियो, नृपनमध्यमुनिराय । भयोकहासोबुद्धवर, दीन्हींबुद्धिगमाय ॥
ऐसेवचनकठोरकराला।सभामध्यबोल्योशिशुपाला॥बोलेनहिंयदुपतिसुनिकानन।शिवानैनसहिजिमिपंचानन ३८॥
हरिनिंदासुनिकैनिजकाना । रहेसभासदजेतहँनाना ॥ मूँदिकर्णउठिगेतेहिकाले । गारीदेतभूपशिशुपाले ॥
हरिहरिजनकीनिंदाकोई । सुनिनहिंउठतबैठरहजोई॥अवशिनरकसोमनुजसिधारै।सकलपुण्यहोतोजरिछारै ॥३९॥
चेदिपकेसुनिवचनकठोरा । सुभटपाँचऊपांडुकिशोरा॥उठेशस्त्रलैकरनकराले । मारनकोआशुहिशिशुपाले ॥४०॥
दोहा-सृंजयकुलकेअरुबली, केकयकुलकेवीर । पांडवसँगउठिचलतभे, चेदिपपैरणधीर ॥ ४१ ॥
पांडवतहँबोलेअसवानी । रेशिशुपालमहाअभिमानी ॥ हमरेसुनतकृष्णकीनिंदा । करसितासुफललेमतिमंदा ॥
असकहिचेदिपसन्मुखधाये । धनुषगदाअसिहाथउठाये॥ तबनहिंनेकडरच्योशिशुपाला।लियोढालकरवालकराला॥
आसनतेउठिबैठतुरंता । मानहुकरतपांडवनअंता ॥ वचनकह्योकटुनैननिकारी । भगहुनआवहुओरहमारी ॥
तुमहिसंगकृष्णहिवधकरिकै। जैहौंनिजनगरीमुदभरिकै॥असकहिधायोपांडवओरा।सभाभयोकोलाहलघोरा॥४२॥

दोहा-भिरतजानिपांडवनको, उठिआशुहियदुनाथ। बरजतभेकुंतीसुतन, चलितिनकोगहिहाथ॥
नाथकह्योयासोंनहिंभिरहू। कहोहमारमानितुमफिरहू॥ आवनदेहुइतैशिशुपालै। बँचिआयोयहशठबहुकालै॥
कृष्णहिंदेखतचेदिपराई। चल्योकोपिपांडवनविहाई॥चक्रचलाइतहाँयदुनाथा। लियोकाटिचेदिपकरमाथा॥४३॥
गिरयोभूमिमहँभूपभयावन। तेहिपक्षीनृपकियोपरावन॥सभामध्यकोलाहलमाचा। हरिप्रभावजान्योसबसाँचा४४॥
कढ़ीजोतिचेदिपकेतनते। प्रविशीहरिमुखगईनअनते॥निरखिसभासदअचरजमाने। हरिचरित्रकाहूनहिंजाने॥४५॥
दोहा-इनकौत्रैजन्महिकथा, मैंवरनीमतिमान। वैरभावकरिकृष्णसों, हरिपुरकियोपयान॥
जैसोकरहिकृष्णमहँभाऊ।मिलहिताहितसकरनसुभाऊ॥कुंतीसुतलखिचेदिपनासा।लहतभयेहियपरमहुलासा ४६
धर्मभूपऋत्विजनबोलाई। दियोदक्षिणाधनसमुदाई॥ विधिवतसबकोपूजनकीन्ह्यों। औरहुदानद्विजनकहँदीन्ह्यों॥
पुनिपरिवारसहितमतिवाना।सुरसरिकियअवभृथअस्नाना॥४७॥यहिविधिराजसूयकरवाई।धरमभूपकोआनँदछाई॥
कछुकमासतहँवसेमुरारी। करिपांडवनप्रीतिअतिभारी॥४८॥यद्यपिचहतनकृष्णविछोहू।हरिकोधर्मभूपयुतमोहू॥
दोहा-तदपिधर्मढिगजाइहरि, माँगिविदासकुचाइ। सदलसदारनगमनकिय,द्वारावतियदुराइ॥ ४९॥
येवैकुंठनगरकेवासी। कह्योचरिततिनकोसुखरासी॥ विप्रशापतेपुनिपुनिआई। जगमहँलियोजन्मकुरुराई॥५०॥
करिअवभृथअस्नानसुवेशा। लस्योसभामधिधर्मनरेशा॥भूपनमध्यलस्योनृपकैसे।सुरपुरसुरयुतसुरपतिजैसे॥५१॥
सुरनरनृपमुनितहाँअपारा। पाइधर्मनृपसोंसत्कारा॥राजसूयऔहरिहिसराहत।निजनिजगृहनगयेसुखगाहत॥५२॥
येदुर्योधनकलिकोरूपा। राजसूयलखिपरमअनूपा॥धर्मभूपकोविभवनिहारी। सहिनसक्योअतिभयोदुखारी॥५३॥
दोहा-राजसूयशिशुपालवध, भूपनमोचनवंदि। हरिचरित्रजोसुनतयह, रहतिनतेहिअघदंदि॥ ५४॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहारा
जाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दा
म्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे चतुःसप्ततितमस्तरंगः॥ ७४॥

दोहा-राजसूयकीसुनिकथा, भूपपरीक्षितफेरि। प्रश्नकियोशुकदेवसों, बारबारमुखहेरि॥

परीक्षित उवाच।

राजसूयलखिधर्मनृपतिको।पायअवधिपरमानँदततको॥सुरऋषिनृपसबकरतवखाना।निजनिजगृहकहँकियेपयाना।
पैदुर्योधनलखिमुखकाँहीं। भयोउदासपरममनमाँहीं॥ ताकोकारणकहहुमुनीशा। दुखितभयोकसकुरुकुलईशा॥
सुनतपरीक्षितवचनसुहावन। कहनलगेश्रीशुकअतिपावन॥ २॥

श्रीशुक उवाच।

आयपितामहकेमखमाँहीं। असबांधवकियकाजतहाँहीं॥ धर्मभूपपैकरिअतिनेहू। करनलगेकारजमतिगेहू॥ ३॥
भीमसेनपकवानसोहावन। बनवावनलागेअतिपावन॥
दोहा-भयोभँडारेकोअधिप, दुर्योधनकुरुनाथ। उचितजहाँजसखर्चको, सोकीन्ह्योंनिजहाथ॥
सहदेवहिनृपधर्मउदारा। सोंप्योकरननृपनसत्कारा॥ जेतीआमदनीतहँआवै। नकुलताहिलैकोशपठावै॥ ४॥
गुरुजनकेतहँसेवनमाँहीं। भूपतिराख्योअर्जुनकाँहीं॥ सबसाधुनकेचरणधोवावन। लगेतहाँयदुवरमनभावन॥
द्रुपदसुतातहँपरुसनलागी। विप्रनकोअतिशयअनुरागी॥ कर्णहिंदियोदानअधिकारै। एकदेवावतदशदैडारै॥५॥
तहँविकर्णहार्दिकयुयुधाना। अरुविदुरादिकसबैप्रधाना॥ भूरिश्रवादिकसहितकुमारा। बाहलीकतहँपरमउदारा॥
दोहा-संतर्दनआदिकसबै,॥ ६॥ पायपृथकअधिकार। यज्ञकाजलागेकरन, मानिनृपहिअतिप्यार॥ ७॥
धर्मनृपतितहँहरिसोंभाषे। रामदरशकहँअतिअभिलाषे॥ बलभद्रहुकहँलैहुबोलाई। तौममयज्ञपूरह्वैजाई॥
भूपवचनसुनिअतिसुखपायो। यदुपतिरामहिंतुरतबोलायो॥ तहँजबहरिशिशुपालसँहारे।साधूजनसबभयेसुखारे॥

तहँऋत्विजअरुसदस्सनाजा । औरसकलसुहृदनकहँराजा ॥ करिसत्कारदक्षिणादैकै । प्रेमवचनकहिमोदितकैकै ॥
सबकोलैसिगंदलसाजी । पैदलऔमतंगरथवाजी ॥ करनभूपअवभृथअस्नाना । सुखितसुरसरीकियेपयाना ॥

दोहा--तहँकोसुखकहिजातनाहिं, इकमुखतेनरनाह । करतकाजयदुराजजहँ, धर्मभूपसँगमाँह ॥ ८ ॥

छंद--तहँशंखपणवमृदंगधुंधुरअनेकगोमुखबजतभे । डफढोलतूरजझाँझबीनसुबेनकेसुरसुजतभे ॥
औरहुअनेकविचित्रबाजेसकलदरबाजेबजे । वरवेदपढ़तसुविप्रराजेबंदिविरदावलिगजे ॥ ९ ॥
तहँसकलसाजिशृंगारवारवधूनकेगणनचतभे । गुरुगुणगणनगर्वितसुगायकगानबहुविधिरचतभे ॥
सोसुभगधुनिदिविलोकलोंछ्यरहीपरमसुहावनी । गंधर्वअरुअप्सरनकीधुनिकरनआसुलजावनी ॥ १० ॥
तहँबहुकिताकेध्वजपताकेपरमभाकेलहरहीं । रथचक्रकेचयचक्रकीततिबारबारहिघहरहीं ॥
बहुकनककवचहुजटितभूपणकीटकोटिचमंकहीं।भटसजितसँगमहँव्रजितअतिहींछजितदीतिमंदकहीं ११॥
मधिमहँविराजतधर्मनृपदक्षिणलसतयदुराजहैं । दिशिवामपारथभीमआदिकव्रजितसहितसमाजहैं ॥
कृपद्रोणभीषमविदुरआदिकवृद्धसबआगूचले । कुरुनाथयुतशतबंधुअरुकरणादिभटपीछेभले ॥ १२ ॥
तहँसदस्सऋत्विजमुनिनऋषिगणकरतवेदउचारहैं । देवर्षिअरुगंधर्वपितरहुलहतमोदअपारहैं ॥
नृपधर्मकेगमनतसदलसुरधुनीअवभृथहिनको । उडिधूरिधारदिशानछाईमूँदिमधिदिनभानको ॥
धुतधराधरडोलतधराशिरशेषकेभारपरा । मातंगतुंगतुरंगपदछायोधरारवखरभरा ॥ १३ ॥
नरनारिभूषणवसनअँगअँगरागधारिविराजहीं । वरवारयोषितसकलसाजिशृँगारसँगमहँभ्राजहीं ॥
दधिअतरकेसरिअगरतगरहुरंगराचिपिचकारिलै । सबभटनपैसींचतचलींतेउसींचहींकरवारिलै ॥ १४ ॥
कोउपुरुषमुखअँगरागचलताहिमलतवारवधूनके । तेउकरहिंतिनकोनारिवपुपहिरायहारप्रसूनके ॥ १५ ॥
मणिजालकीचढिनालकीमहिपालकीरानीसवै । करवालकीअरुढालकीछबिसहितभटसँगमेंफबै ॥
बहुकरतमंगलगानपुरनारीसबैसँगमेचलीं । सोरासहस्रशतआठयदुपतिरानिछविवारीभलीं ॥
यहिभाँतिगंगातीरजायविहायनिजनिजजानहैं । बहुकेलिकरतनवेलिनारीलगींमुदितनहानहैं ॥
अतिलसतिमध्यमेंद्रुपदकन्याकृष्णातियचहुँवोरहैं । तहँअर्जुनादिकमज्जनैहितगमनकियतेहिठौरहैं ॥
सुरभितसलिलपिचकारिभरिरह्योजेहिंजसनातहै । तेहिंतसचलावनलगीतेहिंक्षणमोदउरनसमातहै ॥
विकसेवदनसरसिजसरियदुराजातिथसुसक्याइकै ॥१६॥ देवरनपरडारहिंसलिलयुतसखिननिकटहिंजाइकै ॥
तेउलैकनकपिचकारिकरमेंतजहिंनारिनवदनमें । झिझकारितेमुखटारिफेरिनिहारतींसुखसदनमें ॥
अँगतेछुटतअँगरागसुरधुनिधारसुरभितकरतहैं । पटभीनह्वैतनलीनह्वैअंगनिप्रगटिमुदभरतहैं ॥
तहँकेशपाशनमालकेबहुसुमनगनझरिझरिपरैं । तिनतेसहितकरकमललैनरनारिह्वानिउरसुखभरैं ॥
यहिभाँतिसलिलविहारकरहिंअपारसुरसरिधारमें । नरनारिलैपिचकारिहारिनमोदपारावारमें ॥ १७ ॥
तहँधर्मराजविराजरथतेउतरिगंगातीरमें । मनुक्रियाश्रुतक्रतुराजराजतनिजतियनकेभीरमें ॥ १८ ॥
ऋत्विजसदस्सियुतअवभृथमज्जनद्रुपदकन्यासहितमें। कियधर्मभूपतिमहामतिसुरसरीकलमषरहितमें ॥१९॥
तहँदेवदुंदुभिबजतभेनरदुंदुभीकेसंगमें । सुरपितरवरषेकुसुमकलिआनंदउरहिउमंगमें ॥ २० ॥
पुनिसबैभूपतिजाइतहँकियअवभृथमज्जनगंगमें । जाकेनहातनरहतनेकहुपापपापिनअंगमें ॥ २१ ॥
पुनिपहिरिपीतांबरअलंकृतह्वैसुधर्मनरेशहैं । ऋत्विजसदस्सिबहुविप्रकहँदियवसनभूषणवेशहैं ॥ २२ ॥
बहुबंधुज्ञातिनमित्रसुहृदनऔरनृपनअपारहैं । नृपधर्मबारहिंबारकीन्ह्योंप्रीतिसोंसतकारहैं ॥ २३ ॥
पुनिनृपतिसबअरुऔरजनतनपहिरिवागेपागहैं । कटिफेटकसिमणिमालउरकुंडलसुखौरअदागहैं ॥
सुरसरिससोंहैसकलजनपुरकोचलेनृपसाथहैं । तबधर्मएककरपार्थकोगहिएककरयदुनाथहैं ॥
तहँगौनकीन्होंभौनकोनृपधर्ममंदहिमंदहैं । वरमित्रमंत्रीसुहृदसुभटहुसखासहितअनंदहैं ॥

कुंडलअलकवृंदनसहितसोहतसुगोलकपोलहैं । कटिमेखलाकिंकिणिहुनूपुरपहिरिनागिनिचोलहैं ॥
सबतहाँशशिवदनीविराजहिकृष्णरानीछबिसनी । अधिकैद्रुपददुहिताचलींतहँऔरनृपतियअध्वगनी ॥
यहिभाँतिआयअवासमेंनृपधर्मकियदरबारहैं । युतकृष्णभीषमआदिकनकोकरतअतिसतकारहै ॥ २४ ॥
दोहा–महाशीलतहँऋत्विजन, धर्मभूपबोलवाय । करिपूजनतिनकोदियो, दानमानअधिकाय ॥
सदसिब्रह्मवादिनबोलवाई । पूजनकरिदियधनसमुदाई॥ब्राह्मणक्षत्रिनवैश्यनशुद्रन । करिसत्कारदियेबहुमुद्रन॥२५॥
सेवकसहितसुलोकनपाला । पितरभूतदेवर्षिविशाला ॥ धर्मभूपतेपूजनपाई । माँगिबिदाअतिशयसुखछाई ॥
धर्मभूपकीकरतबडाई । निजनिजगृहनगयेहरपाई ॥ २६ ॥ भूपयुधिष्ठिरसोंहरिदासा । राजसूयकरिदियोहुलासा ॥
ताहिदेखिसुरनरहरषाने । क्षणक्षणवर्णतनाहिंअघाने ॥ जैसेमनुजअमृतकहँपाई । पानकरतनहिंनेकुअघाई ॥ २७॥
दोहा–पुनिसुहृदनअरुबांधवन, अरुसबनातनकाँहि । भयेटिकावतधर्मसुत, इंद्रप्रस्थपुरमाँहि ॥
कह्योकृष्णसोंपुनिकरजोरी।नाथआशऐसीअसमोरी॥रहौकछुकदिनयहगृहमाँहीं।पावनकरहुसकुलहमकाँहीं ॥२८॥
एवमस्तुकहिरहेमुरारी । नृपकीप्रीतिनिरखिअतिभारी॥सांबादिकनबोलियदुवीरन । दियोहुकुमयदुपतिरणधीरन॥
जाहुद्वारिकैयदुदललैकै । हमबलवसबइतैसबज्वैकै॥सुनिप्रद्युम्नआदिकप्रभुशासन।यदुनगरीगमनेअरिनाशन॥२९॥
यहिविधितहँनृपधर्मकुमारा । तरेमनोरथउदधिअपारा॥सोसबकृपाकृष्णकीजान्यो । अपनोनहिंकरतबकछुमान्यो॥
दोहा–सुखितसाहिवीकरततहँ, युतपांडवीसमाज । इंद्रप्रस्थमहँइंद्रसम, वसेयुधिष्ठिरराज ॥ ३० ॥
दुर्योधननृपएकदिन, धर्मभूपकेभौन । विभौविलोकनहेततहँ, भाइनयुतकियगौन ॥
राजसूयकोलखिसंभारा।प्रथमहिजरितेहिंउरभोछारा॥३१॥पुनिनिरख्योईश्वरजनृपकेरो।जोनहिंकबहुँआँखनिजहेरो
कृष्णकृपालहिकैविश्वकर्मा । अपनेहाथनसोंकियकर्मा ॥ जहँसुरेंद्रअसुरेंद्रहुकेरी । महीनरेंद्रनकेरबनेरी ॥
थलथलमहँलखिपरैविभूती। जनुप्रगटीसबविधिकरतूती॥३२॥सोरहसहसकृष्णकीरानी।उपमाहतसुखमाकीखानी॥
दिव्यविभूषणवसनसवाँरे । कोटिचंदपरकाशपसारे ॥ कृष्णचंद्रकीरानिनकेरी । वरणिसकैकिमिछविमतिमेरी ॥
दोहा–तिनकेमधिमेराजती, द्रुपदसुतासुकुमारि । अचरजगुनिठाढोभयो, जकिकुरुनाथनिहारि ॥ ३३ ॥
मौनपलटिटितहँतेकुरुराई । चल्योधर्मनृपपहँयुतभाई ॥ शीसकीटसोहतिउरमाला । लियेहाथकरवालकराला ॥
आयोपौरिप्रथमअभिमानी । तहाँजननकीभीरमहानी ॥ कढतअंगपौसिसबजाँहीं । सातपौरियाहिविधिदरशाँहीं ॥
तबदुर्योधनकोपितह्वैकै । असिउठायबोल्योजनज्वैकै ॥ फरकफरकहोबहुमतिमंदा । मोहिनजानहुँकुरुकुलचंदा ॥
सुनिदुर्योधनकीयहबानी । द्वारपभीरमंदमुसक्यानी ॥ जसतसकैकढिकैयुतभाई । चारिपौरिनाघ्योंकुरुराई ॥
दोहा–दुर्योधनतहँतेलख्यो, धर्मभूपदरबार । सुरसमाजमधिलसतजनु, देवराजछबिवार ॥
मयदानवसोंसभावनाई । जहँप्रगटीनिजसबनिपुणाई ॥ ३४ ॥ बंदीगणविरुदावलिगावैं । नाचिअप्सराभाउबतावैं ॥
तहँगंधर्वकरहिंबहुगाना । बाजहिंबाजमधुरसुरनाना ॥ कनकसिंहासनमध्यविराजा । तापरलसैयुधिष्ठिरराजा ॥
दक्षिणदिशिसिंहासनमाँहीं । कृष्णचंदप्रभुलसैंतहाँहीं ॥ वामदिशाअर्जुनअरुभीमा । सहसहदेवनकुलबलसीमा ॥
कृष्णदहिनदिशिराजतरामा । मनहुचंदसूरजइकठामा॥दूरिहितेलखिधर्मसभाको । कुरुपतिचल्योगमायप्रभाको॥
दोहा–ब्रह्मलोकशिवलोकमें, विभौनजोदरशात । धर्मभूपकेसदनमें, सोसबप्रगटजनात ॥ ३५ ॥
तेहिगृहअसथलबनेछबीसे । थलमेंजलजलमेंथलदीसे ॥ तहँदुर्योधनगोयुतभाई । भयोमहाभ्रमकह्योनजाई ॥ ३६॥
थलैमानिजलवसनसकेली । चल्योद्वारपालनकहँपेली ॥ जलनरह्योपगलग्योपषाना । सबभाइनयुतभूपलजाना ॥
पुनिजहँभरयोनीरगंभीरा । तहाँजायदुर्योधनवीरा ॥ मानिथलैनहिंवसनउठायो । बिछलिनीरकेभीतरआयो ॥
गयोभीजिभाइनयुतभूपा । जैसेगिरहिअंधबहुकूपा ॥ निकरिनिचोमनलगेनिचोला । मयमायामेंह्वैगेभोला ॥ ३७॥
दोहा–दैतारीतहँभीमभट, हँसेतुरंतठठाइ । सकलसमाजसुनायकै, बोलेतेहिंगोहराइ ॥
अंधकुमारअंधहठिहोवैं । जलमेंथलथलमेंजलजोवैं ॥ तहाँयुधिष्ठिरवारनकीन्ह्यों । सभामध्यअनुचितलखिलीन्ह्यों॥

तबयदुपतिपुनिदियोइशारा । धर्मबोरनहिंनेकुनिहारा ॥ तहँसमाजसबहँस्योठठाई । कहेसुजोधनबुद्धिगमाई ॥
दुर्योधनहिनिरखिसबनारी।लगीहँसनदैदैकरतारी॥३८॥तहँकुरुनाथकोपअतिछाई।तक्योनतिनतनअधिकलजाई ॥
पुनिअसमनमहँकियोविचारा । करिहौअबइनकरसंहारा ॥ असगुनिजरतबरतकुरुराई । चुपह्वैबहुरिचल्योयुतभाई॥
दोहा–सातपँवरिकोनाँघिकै, चढिस्यंदनमेंआसु । नागनगरकोगमनकिय, दलयुतछाँडिहुलासु ॥
दुर्योधनकेसुरकतमाँहीं । हाहाकारभयोचहुँघाहीं ॥ रहेवृद्धतहँतेअसभाषे । कुरुपतिपांडवपैअतिमाषे ॥
भयोठीकमतिवंतनमतको । बीजगडचोतरुयुधभारतको ॥ धर्मभूपतहँभयेउदासा । जान्योकौरवपांडवननासा ॥
असविचारिनहिंवचनबखाने । पैहरिकृपाजानिसुखमाने ॥ कृष्णचंद्रसुखलह्योघनेरो । जान्योटरचोभारभुविकेरो ॥
याहीहितहमधरणिसिधारे । सोअबछूटेसकलखँभारे ॥ अर्जुनादिसिगरेतहँवीरा । मानेउरमहँमोदगँभीरा ॥ ३९ ॥
दोहा–प्रश्नपरीक्षितजौनकिय, राजसूयकोहाल । दुर्योधनकोकपटहू, मैंसबकह्योविशाल ॥ ४० ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे पंचसप्ततितमस्तरंगः ॥ ७५ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–औरकथागोविंदकी, सुनहुपरीक्षितभूप । शाल्वभूपकोवधकियो, लीलाकरतअनूप ॥ १ ॥
सोभदेशकोशाल्वनरेशा । महाबलीमायाविवेशा ॥ शाल्वसखाशिशुपालभूपको । कालसरिसविकरालरूपको ॥
जोशिशुपालकाहिंसुखछायो । कुंडिनपुरमेंब्याहनआयो ॥ तहाँरामसँगभईलराई । जरासंधआदिकनृपराई ॥
गयेहारियदुवंशिनतेरे । भागिगयेरणबहुरिनहेरे ॥ दंतवक्रविदुरथशिशुपाला । जरासंधअरुशाल्वभुवाला ॥
जोशिशुपालधर्ममखसुनिकै । आयोकृष्णवधनचितगुनिकै ॥
दोहा–सभामध्यतेहिंहरिहन्यो, जरासंधकहँभीम । पौंड्रककोकेशवहन्यो, मारिचक्रबलसीम ॥ २ ॥
दंतवक्रविदुरथअरुशालू । बाँचिरहेत्रैभूपकरालू ॥ शाल्वभूपदोउनृपनबोलाई । कियोमंत्रअतिकोपहिछाई ॥
यदुवंशीभेअतिबलवाना । सदाकरहिंछलपापमहाना॥हरिचेदिपहिंदगाकरिमारचो । सभामध्यकोउभूपनवारचो॥
करिछलजरासंधढिगजाई । भीमसेनकरताहिहताई ॥ मारचोपौंड्रकनंदकुमारा । करतअनर्थहिबारहिंबारा ॥
तातेअसतुममनहिंविचारहु । जेहिप्रकारयदुवंशिनमारहु ॥ दंतवक्रविदुरथअसभाषे । यहविचारहमहूँकरिराखे ॥
दोहा–जैसेवेहमसोंकरत, भलछलबारहिंबार । तैसेहमहूँकरिछलै, यदुकुलकरहिंसँहार ॥
तबपुनिबोल्योशाल्वप्रवीरा । मेरेवचनसुनहुरणधीरा ॥ जबलौंतपमैंकरिनहिंआऊँ । तबलौंतुमरहिबोयहिठाऊँ ॥
मैंअबयहप्रणकरहुँमहाना । सुनहुसबैभूपतिदैकाना ॥ अवनीअबअयादवीकरिहौं । रणमहँअतिविक्रमविस्तरिहौं ॥
देखहुसबनृपविक्रममोरा।किमिबाचतवसुदेवकिशोरा॥३॥असप्रणकरिकैसबनसुनाई।शाल्वकरनतपकोचितलाई ॥
गयोअकेलेकाननमाँहीं । शंकरकोकरिध्यानतहाँहीं ॥ करनलग्योतपशठयहिभाँती । ठाढोरह्योअचलदिनराती ॥
दोहा–खातरह्योदिनअंतमें, एकमूठिभरिधूरि ॥ ४ ॥ यहिविधिवीतेवर्षदिन, भईतपस्यापूरि ॥
तबशंकरप्रभुकृपानिधाना।शाल्वनिकटकहँकियेपयाना।शाल्वहिकह्योमाँगुवरदाना।तोहिमैंनिजकिंकरकरिजाना ५
सुनतशंभुकेवचनसुहाये । भूपतिखरोभयेसुखछाये ॥ शिवपदकरिकैप्रीतिअथोरी । सौभनाथबोल्योकरजोरी ॥
सुरनरअसुरउरगगंधर्वा । राक्षसकिन्नरचारणसर्वा ॥ भेदिसकैंजाकोनहिंकोई । देहुविमाननाथइमिजोई ॥
जहँमैंचहौंतहँलैजाऊं । तापरचढिनहिंअरिनदेखाऊं ॥ यदुवंशिनदुखदेहुँमहाना । ऐसोनाथदेहुमोहिजाना ॥ ६ ॥
दोहा–शाल्ववचनसुनिशंभुतब, एवमस्तुकहिदीन । मैंदानवकोबोलिद्रुत, ऐसोशासनकीन ॥
रचहुशाल्वहितएकविमाना । जीतहिजोहैंनहिंसुरहुमहाना ॥ जहाँशाल्वअपनेमनभावै । तहाँताहितुरतैलैजावै ॥

जोजनएकतासुविस्तारा। आयसकौनकटैशरधारा ॥ शंकरशासनसुनिदनुजेशा । रच्योविमानमहाननरेशा ॥
भटनभीतिभरभूरिभयावन। द्रुतअकाशचारीमनभावन। असविमानरचिदानवराइ।दयोशाल्वभूपतिकहँजाइ॥७॥
मानहुअंधकारकोधामा। दुसहदुरासदरिपुसंग्रामा॥तामेंचढ्योशाल्वमहिपाला। आयोनिजपुरमोदविशाला ॥८॥

दोहा-दंतवक्रविदुरथहुको, अपनेनिकटबोलाय। निजतपशिववरदानको, दीन्ह्योंहालसुनाय॥

शाल्वकह्योपुनिकोपप्रकाशत।लागिहिदेरिनहिंयदुकुलनाशत।साजिसैनचढिसौभविमाना।करहुद्वारिकैआशुपयाना॥
एकबातऔरहुअवनीकी । सोमैंतुमसोंभाषहुजीकी ॥ रामकृष्णहस्तिनपुरमाहीं । प्रद्युम्नादिकअहैंतहाँहीं ॥
उग्रसेनभरिहैतेहिंनगरी। ताहिमारिल्याबहुतियसिगरी ॥ पुरीलूटिसिगरीपुनिलाई । खोदिसिंधुमहँदेहुबहाई ॥
इंद्रप्रस्थआशुहिपुनिचलिकै । छलकरिपुरवासिनमहँमिलिकै॥पांडवसहितकृष्णबलरामै।मारिपठायदेहुयमधामै॥

दोहा-शाल्ववचनसुनिमुदितह्वै, उभयभूपमतिकीन। साजिसैनचतुरंगिणी, चढेविमाननवीन॥

छंद-तहँशाल्वभूपरिसाय। असवचनकह्योसुनाय॥ जोसत्यशिववरदान। तौमोरजानमहान॥
द्वारावतीकोजाय। नहिंनेकविलंबलगाय॥ सुनिशाल्ववचनमहान। उडिचल्योव्योमविमान॥
जिमिश्यामजलधरघोर। धावतगगनकरिजोर॥ तिमिकरतशोरकठोर। धायोसुयदुपुरओर॥
जहँपरतछायाजाति। तेहिदेशकीजनपाति॥ असकहँहिंलखिकैबात। विनकालग्रहनलखात॥
गमनतप्रथमसुविमान। पीछेसुपवनमहान॥ द्वारावतीयहीभाँति। नृपजानगोअधराति॥
लखियदुपुरीनृपशाल। करिकोपउरहिविशाल॥ सुधिकरिसुयदुकुलवैर। कियेतुरततोपनफैर॥
निजजानधरितेहिठोर। लैउतरिसैनअथोर॥८॥ चहुँओरयदुपुरघेरि। इकबारसुभटनटेरि॥
खोदनलाग्योपुरकोट। हनिकैकुदालनचोट॥ उपवनहुबागअराम। जेरहेअतिअभिराम॥
तिनमेंलगायोआगि। नहिंबचेरक्षकभागि॥ जिमिविपिनलगतिदवारि। तिमिदियोबागउजारि॥
जेबचेतरुतेकाटि। शरकूपमहँदियपाटि॥ वाटिकागृहगिरवाय। बहुदेवसदनफोराय॥ ९॥
पुनिकनककोटगिराइ। बहुगुरिजदीनुढहाइ॥ पुरद्वारखिरकीफोरि। कंचनकपाटनतोरि॥
भटघुसेपुरमहँधाइ। तहँआगिदीनलगाइ॥ जेअतिहिंऊँचअवास। तिनखोदिकीनविनास॥
अट्टालिकानिउतंग। पुनिखोदिकियतिनभंग॥ बहुविधिविहारअगार। जेरहेअतिछविवार॥
भटशाल्वकेअतिरूसि। घुसिघुँइसिसेधनघूसि॥ लूटनलगेपुरनारि। पुरजननहनितरवारि॥
कोउरहेसोवतलोग। जेलहेकबहुँनसोग॥ तेविपतिऐसीदेखि। भागेभभरिभयलेखि॥
इकभागपुरलियलूटि। पुरजननकोबहुकूटि॥ असशाल्वबोलतजाइ। यदुबचैंनाहिंभगाइ॥
जेनगररक्षकवीर। तेनिरखिअरिकीभीर॥ मारनलगेबहुतीर। अरिभटनकीन्हेंपीर॥
कछुभागिअरिकीभीर। तहँशाल्वअतिरणधीर॥ करिकोपउरगंभीर। हनिबाणवेगसमीर॥
पुररक्षकनकोमारि। मायादईविसतारि॥ १०॥ बहुशैलवरषनलाग। प्रगटेभयंकरनाग॥
तेमनुजभक्षहिंधाइ। विषज्वालविविधउड़ाइ॥ द्वारावतीचहुँओर। भोअशनिपातकठोर॥
तरुशालतालतमाल। गृहपैगिरैंविकराल॥ पुनिचल्योपवनप्रचंड। बहुमहलकियबहुखंड॥
चहुँओरधुंधाकार। भोधूरिकोअँधियार॥ यदुनगरमहँइकबार। तहँमच्योहाहाकार॥
चौहट्टहाटनठाट। अरुफूटिगेबहुघाट॥ नरनारिकरतपुकार। भागेजरतलैबार॥
सबकहहिंयहकाहोत। कोविपतिकीनउदोत॥ कहँकृष्णहैंकहँराम। प्रद्युम्नकहँबलधाम॥
कहँसात्यकीअक्रूर। कृतवर्मकहँअतिशूर॥ कहँगयोयदुदलभागि। असकहहिंसबभयपागि॥
यहशाल्वनृपअतिख्यात। यदुनगरकियउतपात॥ जिमित्रिपुरकहँत्रिपुरारि। ह्वैकुपितदीन्ह्योंजारि॥
तिमिशाल्वकोपहिछाइ। यदुनगरदीनजराइ ॥ पुनिलग्योवर्षनशस्त्र। पुनिहन्योबहुदिव्यस्त्र॥

बहुमुशलतोमरबाण। वरभल्लपरिघकृपाण॥ वर्षतनगरचहुँओर। ज्योंभाद्रजलघनघोर॥
कहँभागसिंधुरछूटि। बाजीजेरकहँजूटि॥ यहिभाँतिलखिउतपात। कहँवचवनाहिंदिखात॥
जनकरतहाहाकार। सँगलियेतियअरुवार॥ नृपउग्रसेनहिद्वार। जनजाइकीनपुकार॥
रक्षहुहमैमहिपाल। हमजरहिंपावकज्वाल॥ कछुजानिपरतोनाहिं। कोदेतदुखपुरमाहिं॥
नृपसुनतआरतशोर। उठिलख्योभयचहुँओर॥ तबशंकमनमेंलाइ। अनुचरहिंबोलिबुझाइ॥
प्रद्युम्नपासपठाइ। असदियोताहिसुनाइ॥ यहकहाभोउतपात। मोहिंनेकुनाहिंजनात॥ ११॥ १२॥

दोहा-अनुचरआशुहिदौरिकै, मदनसदनमहँजाइ। सखीबोलिप्रद्युम्नढिग, दीन्ह्योतुरतपठाइ॥
जाइसखीरतिकेनिकट, मंदहिचरणदबाइ। ताहिजगाइसुनाइदिय, तुरतनरेशरजाइ॥
रतिसोंरतिपतिपदपदुम, पंकजपानिलगाइ। उठहुवीररक्षहुनगर, असकहिदियोजगाइ॥
अरुणारेआलसभरे, अनियारेविलसंत। मींजतदृगनिजसेजते, उठिबैठ्योरतिकंत॥
पूँछनलाग्योहोतकस, पुरमेंहाहाकार। कौनशत्रुइतआइकै, चाह्योकालअगार॥
सतिबोलीकरजोरिकै, नहिंजानहिंकुलकेतु। उग्रसेनकोचारइक, आयोयाहीहेतु॥

उग्रसेनकोशासनसुनिकै। चल्योकुँवरद्रुतकारजगुनिकै॥ बाहिरकढिपूछ्योतेहिंचारै।कौनपर्योनृपकाहिंखँभारै॥
दूतकह्योनृपतुमहिबोलायो। दुवनदुरासदकोउइकआयो॥ जारतनगरीनाथतिहारी। रक्षितजानिआपभुजभारी॥
दूतहिकह्योजाहुनृपगेहू। नृपसोंअससँदेशकहिदेहू॥ करहिंननृपअबकछुसंदेहू। हमआवतहैंभूपहिगेहू॥
असकहिकवचक्रीटधनुधारी। उभयकंधयुगतूणसवारी॥दारुकसुतहिंदूतहिबोलवाई। ल्यावहुरथममकहेहुबुझाई॥

दोहा-प्रभुशासनसुनिसूततहँ, ल्यायोस्यंदनसाजि। यदुनंदननंदनतुरत, तापरचढ्योविराजि॥ १३॥

पुनिचारणकहँवेगिबोलाई। सबवीरनपैंदियोपठाई॥ सात्यकिसांबगदौअक्रूरा। भानुविंदुशुकसारणशूरा॥
अरुहार्दिकआदिकरणधीरा।कृष्णकुँवरशासनसुनिवीरा॥सजिसजिचढ़िचढ़िरथद्रुतधाये।कृष्णकुमारसमीपहिंआये॥
तबअतिकोपितकृष्णकुमारा। उग्रसेनकेसदनसिधारा॥ तहँप्रद्युम्नहिभूपनिहारी। बोलेवचननयनजलढारी॥
होतनगरमहँअतिउतपाता। रक्षणकरहुतुरततुमताता॥ रामकृष्णहैंगृहमहँनाहीं। हमशुहरावहिंअबकेहिकाँहीं॥

दोहा-तुमसमरथसबभाँतिहौ, कृष्णकुमारप्रवीन। तुम्हरेदेखतहोतरण, पुरवासिनयुतदीन॥

होतआजुसबनगरविनासा। ऐसीकबहुँलहीनहिंत्रासा॥ तबबोल्योप्रद्युम्नरिसाई। संशयकरहुनाहिंनृपराई॥
रामकृष्णहस्तिनपुरछाये। तदपिनहमकछुसंशयल्याये॥ तिनप्रतापतेइकक्षणमाँहीं। करिहौंअरिनसंहारयहाँहीं॥
असकहिरथचढ़िकुपितकुमारा। नृपहिंवंदिनिकस्योतेहिंद्वारा॥प्रद्युम्नहिलगिप्रजादुखारी।आयेआरतवचनपुकारी॥
तुम्हरेदेखतकृष्णकुमारा। लहिकलेशभेविनाहिअधारा॥ यदुनंदननंदनअसभाषो। अबकछुनहिंशंकामनराषो॥

दोहा-दीजैमोहिंबतायअब, दुखदायककहँदुष्ट। अर्धरातजोनगरमें, कियोउपद्रवपुष्ट॥

प्रजनकह्योहमजानतनाहीं। जरतनगरदेखतचहुँघाहीं॥तबप्रद्युम्ननिजरथहिबढ़ायो। करमेंकरिनिजधनुषचढ़ायो॥
तहँसात्यकिअरुसांबप्रवीरा।बढ़िआगेह्वैगेरणधीरा॥ भानुविंदहार्दिकअक्रूरा। अरुगदशुकसारणरणशूरा॥ १४॥
औरहुयूथपयूथपयूथा। गजरथतुरँगपदातिवरूथा॥ कृष्णकुँवरकहँपीछेकरिकै। आगेबढ़ेआयुधनधरिकै॥
विविधभाँतिवाजेतहँबाजे।फहरतबहुनिशानवरराजे॥१५॥ सुभटसरोषितगाजनलागे। सुनतक्षुद्रअरिभाजनलागे॥

दोहा-करतरहेजेशाल्वभट, नगरउपद्रवघोर। तिनपैसात्यकिसांबभट, हनेबाणवरजोर॥

छंदभुजंगप्रयात-तहाँशाल्वकेवीरधायेप्रचारी। हनेसात्यकीसांबकोशस्त्रभारी॥
द्रुतैयादवीसैनकेवीरधाये। हनेशाल्वकीसैनकोकोपछाये॥
कियेचित्तशुद्धैउभैवीरक्रुद्धै। कियेउद्धतैरुद्धतैजोरयुद्धै॥

सुदेवासुरैसोभयोयुद्धघोरा। कटेनाहटेतेरटेजीतशोरा॥
चलेभल्लतेसेतवल्लोकृपाना। प्रबल्लोसुसल्लोमरैवीरनाना॥
क्षणैएकएकैहनैहैहकारे। भरेमोदभारेटरैनाहिटारे॥
कहूँअस्त्रमारैकहूँभूपछारैं। कहूँअंगफारैकहूँवैप्रचारैं॥
भईसोनिशावीरकीप्राणहारी। रहीछायदीपावलीकीउज्यारी॥
चमंकैउतैव्योममेभूरितारे। इतैभूमिमेंभूपणैकेकतारे॥
सबैद्वारिकामेयहीशोरछायो। लरौनाडरौनाटरौशत्रुआयो॥
तुरंगैसँवारेतुरंगैसँवारे। जुरेनागवारेनसानागवारे॥
लरेत्योंरथीसोंरथीकोपधारे। जुरेपैदरेपैदरेसोंप्रचारे॥
तहाँयोगिनीभूतवेतालआये। पियेशोणितैआमिषैखूबखाये॥
कटेनागकेतेपटेवाजिकेते। गिरैऔउठैवीरकेतेसचेते॥
तहाँसात्यकीसांबकेबाणवर्षा। हनेशाल्वकीसैनकोयुक्तहर्षा॥
परीशत्रुकीसैनमेंबाणधारा। मतंगौतुरंगौमरेहैंअपारा॥

दोहा–साम्बसात्यकीशरनको, औगदगदाप्रहार। शाल्वसुभटसहिनहिंसके, भजेभीतिकेभार॥
पुरतेकढिबाहेरगये, छोडिछोडिहथियार। शाल्वनिकटमहँजायकै, यहिविधिकियेपुकार॥

छंदभुजंगप्रयात–सजीयादवीसैनआईप्रचारी। पुरैतेहमैंकोदियोहैनिकारी॥
लियोलूटिकैजोधनैगोछडाई। दुखीरावरीसैनआईपराई॥
पुरैभीतरैनावनैनाथजातो। हमारेपिछारीदलैभूरिआतो॥
इतेमेंमहाशोरकोछावतेहीं। देखानेभटैआवतैधावतेहीं॥
लख्योसात्यकीसांबकोशाल्वराजा। द्रुतैरोशतेचापमेंबाणसाजा॥
हन्योसांबकोसत्तरैबाणवीरा। असीसात्यकीकोमहाचोखतीरा॥
गदैसाठित्योंभानविंदैपचासा। शुकैसारनैतैसहींजीतिआसा॥
तहाँसात्यकीअद्भुतैयुद्धकीन्ह्यों। सबैशाल्वकेबाणकोभंजिदीन्ह्यों॥
हन्योताहिचालीसचोखेसुबाना। गदौसायकौवीसमारयोमहाना॥
शुकौशारनैवीसवीसैप्रहारे। शरैभानविंदौदशैताहिमारे॥
तहाँसांबकीन्हीमहावेगताई। दल्योशाल्वकोजानबाणैचलाई॥
दल्योशाल्वकीतासुकोदंडभारी। गदैहूँगदालैहन्योवाजिचारी॥
यहीभाँतिकैशाल्वकोहीनजानै। दियोशाल्वकीसैन्यमेंछायबानै॥
दुखीह्वैसबैभूपकीभीरभागी। सुखीह्वैसबैयादवीसैन्यजागी॥
तहाँशाल्वहूभागिकैभीतिछाई। चढ्योआपनेयानमेंआसधाई॥
लियोताहिपैसैन्यहूकोपठाई। दियोसोविमानैअकाशैउडाई॥

दोहा–यदुवंशीतहँमुदितह्वै, विजयनिशानबजाय। खड़ेभयेतेहिठौरमें, अतिआनँदउरपाय॥

छंदनराच–महानसोविमानआसमानमेंभ्रमैलग्यो। अलातचक्रसोसोहाततेजहूँमहाजग्यो॥
चढ्योप्रवीरशाल्वचापआशुहीटँकोरकै। हन्योकुशानबाणवेप्रमाणघोरशोरकै॥
तहाँअक्रूरभानविंदसांबओरसात्यकी। पवारिबाणधारबेशुमारशत्रुघातकी॥

किियोअखंडबाणखंडखंडशाल्वभूपके। दियोपवारिफेरिबाणमारतंडरूपके ॥
लगेविमानमेंसुबाणटूटिटूटिटूकभे। सबैप्रवीरदेखिकैचरित्रआशुमूकभे ॥
मनोमहानसानुबाणशाल्वडंडलागहीं। प्रचूरह्वैगिरैंमहीननेकुजोरजागहीं ॥
विलोकिचूरतीरकोप्रवीरभेअधीरहैं। तजेप्रकोपिफेरिबाणबारतीरभीरहैं ॥
उतैनरेशबाणधारव्योमतेपवारहै। मनोमघामहानबूँदआवतेअपारहै ॥
कटैमतंगऔतुरंगजानवृष्णिसैन्यमें। नभागतेप्रवीरधारिधीरयुद्धचैनमें ॥
तहाँप्रवीरशीवसात्यकीगदौप्रकोपिकै। दलैनरेशबाणजेतजेसुचित्तचोपिकै ॥ १६ ॥
दोहा–ताहीक्षणपूरवदिशा, कीन्होंभानुप्रकाश। नृपविमानदेखोपरो, मानहुकालअवास ॥
निजनिर्फललखिबाणतहँ, शाल्वभूपरिसिछाइ ॥ अतिप्रचंडमायाकरि, जोमुखवरणिनजाइ ॥
छंदनराच–कियोमहानअंधकारचारिहूदिशानहैं। झरैंलगीअनेकआशमानतेकृशानहैं ॥
कृपानऔपषाणकीमहानवृष्टिहोतिभे। अनेकदामिनीनपातिआशुहिंउदेतिभे ॥
दशौदिशानबाणधारधावतीकरालहै। महाप्रचंडपौनजोरसोबह्योविशालहै ॥
रहीअकाशधूरिपूरिभूरिधुंधकारभो। प्रपातवारिकोमहाबितुंडशुंडधारभो ॥
उडैंकटैंबहैंदबैंप्रवीरवृष्णिसैनके। गिरैंमरैंफिरैंभिरैंथिरैंभरैअचैनके ॥
तुरंगत्यौंमतंगस्यंदनौकटैंअनंतहैं। उडातउंडमुंडझुंडव्योममेंलसंतहैं ॥
तहाँसुवृष्णिसैन्यमध्यआर्तशोरह्वैरह्यो। महानभीतिव्याकुलैप्रवीरशस्त्रनागह्यो ॥
सात्यकीनसांबनागदौनहींअक्रूरहू। चलायबाणकोशकेरहेजेवृष्णिशूरहू ॥
नशाल्वकोविमानआसमानमेंदेखातहै। सबैप्रवीरकोसँहारआशुहीलखातहै ॥
सबैप्रवीरमोहिकैगिरेसुजानमेंतहाँ। मच्योहहापुकारवृष्णिसैन्यमेंद्रुतैमहाँ ॥
असंख्यवीरमारिगेअसंख्यहूखराइगे। अनंतशस्त्रडारिगेअनंतहूलुकाइगे ॥
विलोकिसैन्ययादवीविनाशआसुतासमै। मुकुंदकोकुमारसूतसोंकह्योहुलासमै ॥
बढावरेबढावरेबढावजानआशुही। विलोकुआजुवृष्णिवंशकोविशेषिनाशुही ॥
अहैनरेशशाल्वयाकरालकालकेसमैं। लखोंमैंमायदृष्टितेविमानव्योममेंभ्रमैं ॥
सुन्योकुमारवैनसूतहाँकिकैतुरंगनै। गयोसँहारह्वैरह्योजहाँमहारणांगनै ॥
विलोकिकृष्णनंदकोनरेशशाल्वकोपिकै। हन्योहजारबाणकोचढाइचापचोपिकै ॥
पषाणऔकृपाणओकृशानवृष्टिकोकियो। मुकुंदनंदस्यंदनैसुमंदगौनकैदियो ॥
गिरेतुरंगभूमिमेंविमोहिसारथीगयो। प्रद्युम्नदेखिनापरेसुरानसोकहूभयो ॥
दोहा–जसतसकैउठिसारथी, ताजिघोरेनकीवाग। बोलतभोप्रद्युम्नसों, अतिशयउरभयपाग ॥
छंदनराच–किधौंमरेकुमारतूकिधौंविनाअधारहौ। शरासनैसँभारियेतुविक्रमीअपारहौ ॥
कह्योप्रद्युम्नशोकसूतनेकहूनकीजिये। तुरंगबागसावधानह्वैसुपाणिलीजिये ॥
विलोकियेसुविक्रमैंहमारआजुयुद्धमें। नहोतहैप्रवीरधीरशत्रुफंदरुद्धमें ॥
उचारिबैनऐसहींकोदंडचंडशोरकै। लियोसोब्रह्मअस्त्रघोरशत्रुचित्तभोरकै ॥
दोहा–तामेंसबलितकैदियो, शंकरमायाघोर। खैंचिकमानाहिकानलों, तज्योबाणवरजोर ॥
छूटतविशिखअखंडभो, घोरशोरदिशिछाइ। शाल्वप्रबलमायासकल, क्षणमेंदईनसाइ ॥
जिमितमारिकेउदेते, होतोतमकोनाश। तिमिहरिनंदनबाणते, मायाभईविनाश ॥
देखिपरैसूरजविमल, देखिपरच्योनृपजान। देखिपरीयदुसैन्यसब, रहीजोमृतकसमान ॥ १७ ॥

छंदचामर–देखिशाल्वभूपकोमुकुंदनंदनंदसों। मारिकैपचीसबाणकोपकैअमंदसों॥
शाल्वकोदेवाणसेननाथजोद्युमानहै। पाँचसैप्रचंडताहिमारिकैसुबाणहै॥ १८॥
घोरसोसुबाणफेरिशाल्वकोप्रहारिकै। कोटिद्वैसुसायकैपवारिकैप्रचारिकै॥
यानकोछपायदीनजोरबाणजालमें। शाल्वकेभटानफेरिकोपिताहिकालमें॥
एकएकबाणएकएकवीरकोहने। सारथीनकोदशैदशैहनेशरैघने॥
तीनतीनबाणवाहनानिवेधदेतभो। युद्धमेंअमंदकृष्णनंदकीर्तिलेतभो॥ १९॥
व्याकुलैभयेनरेशसैन्यकेभटैमहाँ। बाणधारधावतीप्रद्युम्नकीजहाँतहाँ॥
शत्रुमित्रसैन्यकेलगेसबैसराहने। कृष्णकेकुमारकेसमानवीरनाहिने॥ २०॥
खंडशुंडह्वैवितुंडजानतेगिरेलगे। वाजिअंगभंगह्वैगिरेसवारकेसँगे॥
उंडमुंडझुंडखंडखंडह्वैअकाशमें। राहुकेतुसेलखातबोशकेप्रकाशमें॥
रक्तधारजानतेढरैंसुबारबारहैं। श्यामशैलतेमनोसुगेरुकेपनारहैं॥
शाल्वकेविमानमेंशरैअनेकभाँतिहै। श्याममेघमध्यजोसुदामनीनपाँतिहै॥
बाणधारभूमितेविमानलोंदेखातिहैं। गंगधारस्वर्गज्यौंपवित्रहेतजातिहैं॥
बाणकीदशानमेंपरंपरादेखातिहै। स्वर्गवीरगौणकीसुपानसीसुहातिहै॥
शाल्वकोविमानव्योममेंभ्रमैजहाँजहाँ। कृष्णपुत्रबाणधारधावतीतहाँतहाँ॥
बाणतेविमानमेंसकैप्रवेशकैनहीं। छायकैनछत्रसेअकाशमेंरहेतहीं॥

दोहा–यदपिभेदकरिसकतनहिं, बाणविमानअभेद। तदपिउपरतेगिरिविशिख, करैंसकलदलखेद॥
यहिविधिलगिप्रद्युम्नशर, भयोव्यथितनृपशाल्व। दशयोजनआकाशमें, लैगोयानविशाल॥
ज्यौंपूरुबकोपौनलहि, धावतमेघमहान। तिमिधावतअकाशमें, शाल्वनरेशविमान॥
एकरूपकहुँलखिपरै, कहुबहुरूपदेखात। मायामयमयकृतमनो, शैलसपक्षउडात॥
पैनहिंआवतमहिनिकट, लहिप्रद्युम्नशरघात। दशयोजनकेउपरनभ, यानमहानभ्रमात॥
तेहिछनश्रीयदुवरकुँवर, निजदलमधिमेंजाय। सात्यकिसांबादिकनको, मोहितदियोजगाय॥
सावधानह्वैसुभटसब, करधनुध्वनिधरिबाण। मारनलगेविमानको, करिकरिकोपमहान॥

छंदचामर–वीरकृष्णपुत्रहूँविचित्रविक्रमैंकियो। वेगसोंप्रहारबाणछाययानकोलियो॥
आशमानमेंजहाँपरायजातयानहै। भासमानहूँतहाँसुजातवृंदबानहै॥ २१॥
भूमिमेंविमानआयकैकहूँदेखातहै। आशमानमेंकहूँदिशानमेंभ्रमातहै॥
शैलशीशमेंगिरैकहूँसुबाणजोरते। सिंधुनीरमेंगिरैकहूँफिरैहिलोरते॥
आशमानमेंअलातचक्रसोंफिरातहै। एकहूपलैनएकहूथलैथिरातहै॥
बाणडोरिसोप्रद्युम्नजानचंगखेलतो। व्योममेंबढावतोघटावतोसुमेलतो॥ २२॥
कृष्णकेकुमारकीसुबाणधारिदेखिकै। शाल्वराजमारतोअनंतबाणतेखिकै॥
शाल्वकेसुभट्टहूँअनेकशस्त्रमारते। यादवीदलानिकेभटानिकोसँहारते॥
जानतेउठायशीशबाणजोचलावतो। कृष्णपुत्रचित्रबाणमारिकैगिरावतो॥
यानमैंमहानबानवृष्टिव्योमतेभई। शाल्वराजसैन्यकीअघातदुर्दशाछई॥ २३॥
भागतेबनैनबैठतेबनैनयानमें। युद्धकेविलासकोहुलासनाहिंप्राणमें॥
कृष्णचंदनंदकेअमंदवृंदबाणमें। जानऔरभानहूछपानआशमानमें॥
ठाढह्वैनरेशकोपिओंठदाबिदाँतसों। मूँदिदीनकृष्णपुत्रघोरबाणघातसों॥

चूरचूरशाल्वबाणकैप्रद्युम्नसायकै। शूरपावकैसमानबाणशोकदायकै॥
मारिमारिवज्रबाणशाल्वअंगअंगमें। मूर्छितैदियोगिरायकृष्णपुत्रजंगमें॥
भूपहोतमूर्छितैहहापुकारमाचिगो। वीरमानिलीनकालसर्वशीशनाचिगो॥ २४॥

दोहा--शाल्वमूरछादेखिकै, तासुदिमानद्युमान। छिपिविमानतेहनतभो, यदुदलमेंबहुबान॥
हन्योपाँचशतसहसपुनि, लक्षिफेरिदशलक्षि। शत्रुवधनचितचोपिकै, करियदुदलकोलक्षि॥
भानकृशानसमानवर, बहुद्युमानकेबान। करतभयेविनप्रानतहँ, वीरमहानमहान॥
अटपटभटझटपटकटत, कोउलटपटह्वैजात। पैनहटतबढिबाढिदँटत, नटवटसेदरशात॥
मरिकैपैहैंस्वर्गहठि, जीतिभोगिहैंभूमि। असविचारिनहिंतजतरन, धावतघायलघूमि॥ २५॥

शाल्वदिमानद्युमानप्रधाना। लगेप्रथमजाकेतनबाना॥कृष्णसुवनशरकीसुधिकरिकै। ताहिहननकहँकोपहिभरिकै॥
देखिकृष्णसुतशरअँधियारा। उतरचोतहँविमानतेसारा॥ अंतर्हितह्वैचल्योतिरीछे। गयोदूरियदुदलकेपीछे॥
यदुदलकेभटकोधरिरूपा। प्रविशतभोदलमेंसुनुभूपा॥ लरनलग्योआपहुसँगमाँहीं। तासुकपटजान्योकोउनाँहीं॥
गयोतुरतप्रद्युम्नसमीपा। पीछेठाढभयोमहीपा॥ रह्योकुँवरछोडतशरधारा। तासुओरनहिंनेकनिहारा॥

दोहा--शाल्वसचिवसोलहिसमैं, गदाधारिदोउहाथ। मारतभोअतिजोरसों, कृष्णकुँवरकेमाथ॥ २६॥

लागतहींशिरगदाप्रहारा। मुरछिगिरचोरथमध्यकुमारा॥ मारिगदाद्युतभागिद्युमाना। चल्योवेगिसोजाइविमाना॥
मुरछितशाल्वहिसचिवजगायो। सुधासरिसतेहिंवचनसुनायो॥हरिकुमारकहँमारिनरेशा॥विजयपायआयोयहिदेशा॥
प्रभुवजवावहुविजयनिशाना॥अबनहिंकोउभटउतबलवाना॥सुनतशाल्वअतिशयसुखपाग्यो॥विजयबाजबजवावनलाग्यो।
इतैप्रद्युम्नहिविकलनिहारी। दारुककोसुतधरमविचारी॥ दलतेनिकसिचल्योरथलैकै। यदुवंशिनहुलासछैकैकै॥

दोहा--प्रद्युम्नहिमूर्च्छितलखत, नगरओररथजात। हाहाकारकियोतबै, यदुदलअतिबिलखात॥ २७॥

भगीनसैन्ययदुवंशिनकेरी। कहनलगेइकएकनटेरी॥ अबयदुकुलकोभयोविनाशा। छोडहुसबजीवनकीआशा॥
असकहिफेरिलौटिनहिंहेरे। गयेद्वारिकेदौरिघनेरे॥ कृष्णकुमारहिव्यथितनिहारी। भागतलखीसैन्यभयभारी॥
तहाँसात्यकीवचनउचारो। सुनहुँसांबगदकह्योहमारो॥ कृष्णकुँवरकहँमुरछितदेखी॥भागबअनुचितअहैविशेखी॥
कहाँदेखाउबमुखगृहजाई। कृष्णकुँवरकहँरणहिंगँमाई॥ रामकृष्णसोंक्योंबतरैहैं। जीतहिसकलमरेह्वैजैहैं॥

दोहा--कृष्णकुमारहिविनजगत, जिअबअहैधिक्कार। तातेरणमहँप्राणदै, लेहुस्वर्गसुखसार॥

सुनतसात्यकीवचनउदारा। कोपितबोल्योसांबकुमारा॥ रणमहँउचितमरबसबकाँहीं। क्षत्रीभागतहैंकहुँनाँहीं॥
भ्राततातसुतमातहुज्ञाती। मरैयुद्धमहँसबबहुभाँती॥ सदाधीरधारतरणधीरा। कायरकुमतीहोतअधीरा॥
कोपिततहाँबैनगदभाखे। सांबविचारसत्तिकरिराखे॥ रह्योप्रद्युम्नएकइतनाँहीं। तौकसभयोसमरमहिमाँहीं॥
अबैजियतहमसबइतठाढे। जीतिलेबशत्रुहिरणगाढे॥ पैनद्वारिकैजावबहोरी। विनाप्रद्युम्नजिअबबडखोरी॥

दोहा--तवकृतवर्माकहतभो, लेबसहजअरिजीति। पैप्रद्युम्नविनगौनगृह, कीलागतअतिभीति॥

रामकृष्णजोपुछिहैंआई। कहँप्रद्युम्नहैदेहुबताई॥ तबहमकहबकाहातिनपाँहीं। किमिदेखाइहैंमुखतिनकाँहीं॥
तातेउचितहिप्राणपयाना। पैनहिंसुनबवचनअसकाना॥ असकहिमरणठीकदैवीरा। छोडनलगेकोपिबहुतीरा॥
उतैकृष्णसुतकहँकछुदूरी। लैगोसारथिभयभरिभूरी॥ तहँमूर्च्छातजिकृष्णकुमारा। उठिपरातानिजसुरथनिहारा॥
गहिसारथीहाथअतिमाष्यो। वैनकठोरकृष्णसुनभाष्यो॥ रेदारुकसुतसूतअज्ञानी। मोहिकहँलयेजातभयआनी॥

दोहा--लैचलुलैचलुसमरमहँ, फेरुफेरुरथमोर। नातोकाढिकृपानमैं, शीसकाटिहौंतोर॥

अनुचितकीन्ह्योंसूतमहाना। जीतहिमोरहरेतैंप्राना॥ जोक्षत्रीरणतेभगिजातो। उचिततासुनहिंजिअबजनातो॥
कूरकुकर्मीकुमतिकुचाली। कायरकुत्सितकुनपहिपाली॥होतसोईजोरणमहँभागै॥तापरक्षत्रिहिअतिअघलागै॥२८॥
पुनितापरयहयदुकुलमाँहीं। कबहूँरीतिरहीअसनाँहीं॥ सुन्योनमैंकबहूँअसकाना। यदुवररणतजिकराहिंपयाना॥

महींनपुंसकयहकुलमाँहीं। होतभयोकछुसंशयनाँहीं ॥ सूतमोहिंदियसबविधिखोई। मोरिवीरताननतेधोई ॥
दोहा-सूतआजुलोशत्रुरण, लखीनमेरीपीठि। सुरहुअसुरकेसनमुखे, नीचभईनहिंदीठि ॥
यहकलंकतेंदियोलगाई। उमिरिभरेकीगईकमाई ॥ २९ ॥ हस्तिनपुरतेजबपितुरामा। एहैंआशुसुनतसंग्रामा ॥
तबहमकैसेमुखदरसैहैं। कैसेतिनकेपदशिरनैहैं ॥ जबकहिहैंयदुपतिमुसकाई। देहुसमरकीखबरबताई ॥
तबहमकहबकौनगतिगाई। कादरसेतहँरहबलजाई ॥ जबकहिहैंमोसेबलरामा। कसपरायआयेतैंधामा ॥
बालकपनतेतोकहँपाल्यो। गोदधारिचूमतमुखलाल्यो ॥ सोसबमेरोपालनपोषण। कियोअकारथसबतैंयहिक्षण ॥
दोहा-तबहमतिनकोदेइँगे, कैसेचितैजबाब। तातेअबमोहिंलखिपरत, उचितस्वर्गपुरजाब ॥
मेरेभुजबलयहयदुनगरी। वसतरहीनिर्भयअतिसिगरी ॥ सूतसोईमेरेभुजदंडा। तेकरिदियेरेडकेदंडा ॥
भलीऔरगतिविपतहुनीकी। पैयहसंशयटरतनजीकी ॥ ३० ॥ जबहमअपनेगृहमेंजैहैं। तबनारिनमुखकौनदेखैहैं॥
हँसिहँसिजबपुँछिहैंभौजाई। वीरवीरताकहाँगमाई ॥ तुमतोरहेविक्रमीचोखे। गृहमहँभजिआयेकेहिधोखे ॥
अबलोंसुनीनतुवकदराई। नईवातदेखनमेंआई ॥ धौंप्यारीकीसुधिउरकरिकै। आयेभौनभाजिकेभरिकै ॥
दोहा-धौंरथटूट्योआपको, धौंधनुटूट्योतुम्हार। वाउभीतिधौंतुमभजे, जानिअंगसुकुमार ॥
जबऐसोपुछिहैंगृहनारी। बातकहबतबकौनउचारी ॥ तातेमरबनीकअबलागत। अनुचितजिअबयुद्धतेभागत ॥
लैचलरथसंगरमहमोरा। सूतकियोतैंअनुचितघोरा॥सुनिसारथिहरिसुतकेबैना। बोल्योपाणिजोरिभरिनैना॥३१॥

सारथिरुवाच।

वृथादेहुमोहिंदोषकुमारा। मैंसारथिकोधर्मविचारा ॥ रथीमुरछिरथमहँगिरिजावै। तबसारथितेहिलैचलिआवै ॥
परहिंरथीकहँजबसंकेतू। रक्षहिसारथिकरिबहुनेतू ॥ सोसबधर्मनिआपहुजानो। काहेकोपमोहिंपरठानो ॥ ३२ ॥
दोहा-शत्रुगदातेमुरछिकै, गिरेआपुरथमाहिं। तातेमैंबाह्योरथहि, धर्मसोचिमनमाहिं ॥ ३३ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजा
धिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे षट्सप्ततितमस्तरंगः ॥ ७६ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-सुनिसारथिकेवचनतहँ, कृष्णसुवनसुखपाइ। धोइसलिलसोंवदनवर, शिरमहँक्रीटबनाइ ॥
सोरठा-कवचऔरकरत्रान, कटिकृपाणतूणीरयुग। करेकरैबलवान, धनुषधारिअसकहतभो ॥
नाकरुसारथिदेरि, कोपज्वालजारतिअँगनि। स्यंदनमेरोफेरि, लैचलुशत्रुसमीपमहँ ॥
सुनिसारथिप्रभुबैन, वाजिनकोताजनदयो। हाँकतभोलहिचैन, लीकसरिसरथकढिगयो ॥
हरिसुतशंखबजाइ, सिंहनादकरिकैमहा। पुनिआनँदउरछाइ, कीन्ह्योंधनुटंकोरअति ॥ १ ॥

छंदत्रोटक।

धनुकीध्वनिसात्यकिकानसुने। तहँसांबहिसोंअसबैनभने॥यदुनाथकुमारअपारबली।अबधावतआवतयाहिगली ॥
असकोजगमेंबलवानअहै। यहिसन्मुखसंगरसानगहै ॥ हरिनंदनकेदलआवतहीं। यदुवीरसबैलहिमोदतहीं ॥
गरजेतरजेवरजेभटहैं। दरजेकरजेअरिजेचटहैं ॥ इकवारअपारनिशानबजे। यदुकेदलकेसरदारगजे ॥
हरिपुत्रहिंआवतदेखितहाँ।द्रुतशाल्वभुआलुसभीतमहाँ।ढिगबोलिद्युमानहिंबैनभन्यो।फिरिआवतसोजेहिंतूनिधन्यो।
यहवीरप्रचंडधनुर्धरहै। यहिनाशनकोअबशंकरहै ॥ सुनिबैनद्युमानकह्योतोहिंको। अबकोसनमुख्यहनोंयहिंको ॥
कहियोधनुधारिकियोध्वनिको। वरबाणतज्योअरिजोमुनिको॥शरसोंसबसैन्यहिछाइलियो।बहुवीरनवेगिहटाइदियो॥

नहिंजातद्युमानहिसोंहकोऊ। धनुधारिनमेंजिनधाकसोऊ ॥इतकृष्णतनैपहुँच्योदलमें।लखिसैन्यसँहारतेहीथलमें ॥
ध्वनिकैधनुधावतवीरबढ्यो । तनकोपहिज्वालविशालमढ्यो ॥भटजौनद्युमानसुबाणतजै।करतोहरिनंदनताहिरजै॥
लखिव्यर्थप्रयासद्युमानतहाँ।हरिकेसुतपैंकरिकोपमहाँ ॥निजसारथिसोंअसबातकही । अबघोरेनकीदृढबागगही ॥
हरिनंदनस्यंदनसौंहचलो । यहिमारनकोअबकालभलो॥शरसोंयहिकोशिरकाटिसही।मुरिहौंसिगरीयदुसैन्यदही॥
बचिहैअबकोनहिंकृष्णतनै । विधिरक्षहुतेहमसत्यभनै ॥सुनिकैअसबैनद्युमानहिते। रथलैनिकस्योद्युतजानहिते॥
कढतेनिरख्योअरिकृष्णतनै।कियअद्भुतविक्रमताहिछनै ॥२॥शरचारिपरारिअभंगमको।हनितासुतुरंततुरंगनको ॥
इकबाणहिसूतहिशीशदल्यो।इकसोंपुनितुंगपताकमल्यो॥धनुबाणयुगैयुगखंडकियो। पुनिसायकएकप्रचंडलियो ॥
हनिकैअरिशीशहिकाटतभो । पुनिबाणसहस्रनपाटतभो॥अरिरुंडहुमुंडहुवाजिनको। ध्वजकोरथचक्रनराजिनको॥
मृतसूतहुखंडकोदंडहुको।युगतूणहुशस्त्रप्रचंडहुको॥शरसोंहनिरेणुसमानकरयो।युतयानद्युमाननदेखिपरयो ॥३॥
पुनिकोटिनबाणहन्योक्षणमें ।अँधियारअपारभयोरणमें ॥ चहुँओरभईशरकीबरषा । अतिबाढिगयोउरआमरषा ॥

सोरठा–भयोमंडलाकार, तरणिसरिसकोदंडवर। छोंडतसायकधार, यदुपतिकोसुतपाटवी ॥

छंदपद्धरी ।

निकसैंकोदंडतेबाणवृंद । नभमारतंडकोकरहिंमंद ॥ दशदिशनिसिंधुअरुधरनिमाँहिं। प्रद्युम्नतेजसायकदेखाँहिं ॥
असठौररह्योनहिंचहूँवोर । जहँबाणसंडसिगेनहींघोर ॥ शरपंखशोरदशदिशनहोत । मनुप्रलैपवनकोरवउदोत ॥
जिमिजेठमासकोपवनपाइ।अतिधरणिरेणुद्रुतहींउडाइ ॥ भरभरअखर्वतिमिकढतबान।नहिंदेखिपरतकरमेंकमान ॥
जिमिशलभवृंदतरुपैगिराहिं।तिमिबाणवृंदनृपजानपाहिं॥कोटिनपतत्रितेहियानलागि।बहुटूकहोतशरजोतिजागि॥
कोटिनअकाशतेगिरतबान।तेलगतभटनकेमधिविमान।तहँरहतबनतनहिंक्षणहुएक।लगिविशिखकटेभटचटअनेक॥
यद्यपिसुशाल्वनृपदलतजात।तद्यपिनकृष्णसुतशरघटात ॥शतसहसलक्षकोटिनअखर्व।संगसेअकाशमहँबाणसर्व॥
स्थिरभोविमाननहिंचलिसकात।जिमिपंकगडोगैयरदेखात॥तबमच्योयानमहहहाकार।नहिंदेखिपरतभटकोउबार॥
गैयरतुरंगभेअंगभंग । भटकितेकटेशिरएकसंग ॥ नहिरहतबनोजबमधिविमान । तबशाल्वभूपकेभटप्रधान ॥
तजिजानकूदिभागेअकाश । सबछूटिगयोरणकोहुलाश॥ तहँसांबसात्यकीगदसुवीर । धरिधनुषहननलागेसुतीर ॥
कटिशीशउरुपदकरहुग्रीव । कटिझरनलगेनभतेअतीव ॥ मनुभयोसुरासुरयुद्धस्वर्ग । तहँतेगिराहिंबहुअंगवर्ग ॥
जेगिरहिंघायलहुशाल्ववीर । तेबूडिमरहिंसागरगँभीर ॥तहँउदधिमाहँबहुरुंडझुंड । सबठौरछायगोझुंडझुंड ॥
मरिगिरेबहुतवाजीवितुंड । भोसिंधुतहाँशोणितैकुंड ॥ तहँमच्छकच्छअरुगीधकाग । पलखानलगेलैनिजभाग॥४॥
यादवनकाहियादइहूँसर्व । मंगलमनावतेसुहअखर्व ॥ यहिभाँतिभयोदलकोसँहार । सबगयेमारिनृपभटउदार ॥
तबशाल्ववीरबहुभीतिमान । लैगोउडायदूरौविमान ॥ तहँविजैमानियदुवरकुमार । कियसिंहनादअतिशयउदार॥
तहँसुमनसुमनवरषेअनंत । सबकहतभयेजयसुरतिकंत ॥ गदसांबआदियदुवंशवीर । हरिसुतहिसराहनलगेधीर ॥
यहिभाँतिजीतिनृपशाल्वकाहिं।प्रद्युम्नलरयोरणमध्यमाहिं।बाजतनिशानफहरतनिशान।यदुवीरकहतजयजयमहान

दोहा–जबसिगरेशरझरिगये, प्रगट्योभानुप्रताप । तबविमानचढिहनतशर, आयोशाल्वसताप ॥

आवतफेरिशाल्वकहँदेखी । कियोकोपप्रद्युम्नविशेषी ॥ गदसात्यकिअरुसांबप्रवीरा । लागेबढिबढिमारनतीरा ॥
प्रद्युम्नहुरथआशुधवाई । शाल्वविमानबाणझरिलाई ॥ विदुरथदंतवक्रअरुशालू । रहेतीनहींसुभटकरालू ॥
ओरनकोउभटरह्योविमाना । भेरप्रद्युम्नादिककेबाना ॥ उतैशाल्वविदुरथदँतवक्रा । मारनलगेबाणअतिवक्रा ॥
सात्यकिविदुरथदोउरणकीनो । दंतवक्रगदसांबप्रवीनो ॥ शाल्वऔरश्रीकृष्णकुमारा । छोडनलगेबाणकीधारा ॥

दोहा–तहँकृतवर्माकोपिकै, विदुरथकोबहुबान । मारयोधनुटंकोरिकै, करिकैकोपमहान ॥

तीनहुभूपविमानहिंचोटै । यदुवंशिनपरमारहिंचोटै ॥ तिनकेबाणकाटिरणधीरा । मारहिसात्यकादिबहुतीरा ॥

यहिविधिभयोयुद्धतहँभारी। धीरधुरंधरदोउधनुधारी॥ तहँअद्भुतविक्रमहरिनंदन । करतभयोदीरघअरिदंदन ॥
कोटिनशरहनितोपिविमाना। मारिमारिपुनिपुनिबहुबाना॥ शाल्वविमानहिंआशुहटाई।मायाबलनिजरथैउडाई॥
गयोविमानसमीपकुमारा। शरपंजरकीन्ह्योशरधारा॥ लैविमानभूपतितबभाग्यो। पाछेचल्योकुँवररिसिपाग्यो॥
दोहा-जहँजहँजातोशाल्वको, जानजोरजबधारि। तहँतहँकृष्णकुमारउडि, मारतबाणप्रचारि॥
ऊरधजहँजहँजातविमाना। तहँतहँचारिमहाबलवाना॥ नीचेधरणीमहँद्रुतधावैं। बारबारबहुबाणचलावैं॥
गदसात्यकीसांबकृतवर्मा। धावतकरहिंअपूरबकर्मा॥ कहुँविमानयदुदलमहँआवे । द्रुतहिमारिबहुवीरगिरावे ॥
तबप्रद्युम्नबहुबाणचलाई । देतविमानहिंदूरिउडाई ॥ लसहियानाढिगनभरथकैसे। श्याममेघढिगदिनकरजैसे ॥
शाल्वयानरथकुँवरप्रकाशा। होहिमंडलाकारअकाशा॥ धावतधरणिफिरहिंभटचारी।मारिमारिसायकबहुभारी॥
दोहा-कहूँशैलशिरकहुँगगन, कहुँसमुद्रमहँजात। कहुँदिशानकहुँअवनिकहुँ, थलथलमहँदरशात॥
यदुभटहनैविमानहिबाना। दूतटूकह्वैजाहिमहाना॥ यदुदलपरशरशाल्वचलावै। कृष्णतनयतेहिधूरिमिलावै ॥
जोकहुँलहतशाल्वअवकाशा।तबयदुदलकरकरतविनाशा॥ लुकेविमानओटत्रैवीरा। मारहिंयदुवंशिनबहुतीरा॥
पैनटरहिंयदुवंशीटारे। यद्यपिमरहिंशाल्वकेमारे। हरिकुमारकेचपलतुरंगा। यानहिंसंगउडहिंबहुरंगा॥
गदामुसलअरुतोमरभल्ला। परिघकृपाणहुशूलतवल्ला॥ शाल्वनृपतिबहुबारपवारे। कृष्णकुँवररजसमकरिडारे॥
दोहा-गदसात्यकिअरुसांबभट, मारहिंऊरधबान। मनहुश्यामनैमिलनहित, बकगणकरहिंपयान॥
तहाँप्रद्युम्नदेखितेबाना। टूटिजाँहिद्रुतलगतविमाना॥ तबमायाबलनिजरथकाँहीं। लैगोऊरधअंबरमाँहीं॥
तहँतेसायकवर्षनलाग्यो। तबहिंशाल्वअतिशैभयपाग्यो॥ रथहुतेऊरधलैगोयाना । मारनलग्योप्रद्युम्नहिबाना ॥
तातेऊरधगयोकुमारा। तहँतेतजनलग्योशरधारा॥ भयोशाल्वतातेपुनिऊँचो । मारनलग्योबाणतकिनीचो ॥
तातेभोपुनिकुँवरउतंगा। मारतबाणशाल्वकेअंगा॥ शाल्वकृष्णसुतसोहतकैसे । नभबलाकबहरीचढिजैसे ॥
दोहा-जातजातयहिभाँतिनभ, भेअदृश्यदोउवीर॥ तबसात्यकिगदआदिभट, तजनबंदकियतीर॥
ऊरधलाखयोजनहिमाँहीं। शाल्वकुँवररणकियेतहाँहीं॥ पुनिक्रमसोंउतरनदोउलागे । मारतबाणविक्रमहिंजागे॥
शाल्वयानकियअंतधाना। पैनकुँवरकहँकहूँछिपाना ॥ कृष्णकुमारपरममायावी। लियोबाणतेयानहिदावी ॥
करीशाल्वभूपतितबमाया। ज्वालजालहरिसुतपरछाया ॥ करिमायावारुणीकुमारा। कियोशाल्वमायासंहारा॥
वारुणास्त्रपुनिशत्रुहिमारी । वारिधारतेहियानहिंडारी ॥ नृपमायापार्वतीपसारी । वर्षनलग्योशैलबहुभारी॥
दोहा-वज्रीमायाकरिकुँवर, पार्वतिमायानाशि। हन्योफेरिवज्रास्त्रको, निजबलपरमप्रकाशि॥
यहिविधिजोमायाकरत, नृपअतिमायावार। सोमायाकरिपुनिहनत, सोइदिव्यास्त्रकुमार॥
जहँजहँधावतवेगसों, शाल्वयाननभपाहिं। तहँतहँछोडतविशिखबहु, हरिसुतआशुहिजाहिं॥
गदसात्यकिकृतवर्मअरु, सांबमहारणधीर। रथधवावतेवेगते, महितेछाँडततीर॥
यहिविधिसत्ताइसदिवस, भयोयुद्धअतिघोर। निशिवासरइकछनलह्यो, अवकासोनहिंथोर॥ ८॥

श्रीशुक उवाच।

रामकृष्णपांडवपुरमाँहीं । बसतरहेकछुजानेनाँहीं ॥ असगुणहोनबहुततहँलागे । बोलहिंवामदिशामहँकागे॥
सन्मुखशिवावमहिशिखिज्वाला।वामभुजाफरकतीविशाला।यहिविधिअशकुनलखियदुराई।सुन्योद्वारकाखबरनपाई
तहँमनमेंअसकियोविचारा। भयोउपद्रवपुरहिंअपारा॥ पुनिबलरामहिंवेगिबोलाई। निजविचारसबदियोसुनाई॥
कह्योरामयहअसतिनहोई। जैहैंशत्रुसूनपुरजोई॥ चलहुद्वारकैअबयदुराई। धर्मभूपसोंमाँगिबिदाई॥
दोहा-मखहुसमापतिह्वैगयो, शिशुपालहुगोमारि। अबयदुनंदनद्वारकै, वेगिहिचलहुसिधारि॥ ९॥
अससंवतकैयदुपतिरामा। गयेधर्मधरणीपतिधामा॥ धर्मभूपकरिकैसतकारा। आसनदैअसवचनउचारा॥
केहिकारणप्रभुभईअवाई। दुचितचित्तमोहिपरतजनाई॥ यदुपतिकह्योभूपसुनिलीजै।घरकोवेगिबिदामोहिंदीजै॥

धर्मभूपतनकह्योदुखारी। मनभावैसोकरहुमुरारी॥ भीष्मद्रोणकृपादिकपाँहीं। माँगिबिदाप्रभुतुरततहाँहीं॥
भीमहिपृथहिनृपहिकरिवंदन। अर्जुनसोंमिलिकैयदुनंदन॥ नकुलऔरसहदेवनआदिक। आशिषदैअतिशैअहलादिक।

दोहा—माँगिबिदापुनिमुनिनसों, करिवंदनयदुराज। दारुकसोंपुनिकहतभे, ल्यावहुरथद्रुतकाज॥

स्यंदनसाजितुरतसोल्यायो। यदुवरसोंकरजोरिजनायो॥ रामकृष्णद्रुतभयेसवारा। दारुकसोंअसवचनउचारा॥
सारथिएकह्योसनिशिमाँहीं। पुरपहुँचायदेहुमोहिंकाँहीं॥ सारथिकह्योयुगुलकरजोरी। आपप्रतापबातयहथोरी॥
असकहिछुयोतुरंगनपीठी। चल्योयानसँगजातिनडीठी॥ चक्रनकीभोघरघरशोरा। किंकिणिकोरवभयोनथोरा॥७॥
तबयदुनाथकहनअसलागे। अशुभविचारिशोकअतिपागे॥ चलिआयेहमतुमदोउभाई। रहेइतैबहुकालबिताई॥

दोहा—शून्यजानिद्वारावती, चेदिपमित्रनरेश। अवशिउपद्रवकरहिंगे, जायआशुतेहिदेश॥

भुजंगप्रयातछंद।

पुरीद्वारकालूटिलैहैंविशेषी। हनैगेकुमारानिकोशत्रुतेषी॥ तहाँरोहिणीकेतनैयोंउचारे। सबैविक्रमीवीरमेरेकुमारे॥
पुरीयद्यपैजायँगेभूपभारी। सुनोतद्यपैजाँयगेशत्रुमारी॥ तहाँसूतकीन्ह्योंजरीबागऊची। चलेवाजिमानोंकढैंवेधसूची॥
भयोशोरभारीउडीभूरिधूरी। दिशाआसमानैरहेदोउपूरी॥ नहींकृष्णकोयानमार्गेंदेखातो। छुटोचापतेबाणसोवेगजातो।
तज्योइंद्रप्रस्थैप्रभातैमुरारी। रह्योद्योसबाकीजबैदंडचारी॥ लखेआयकैद्वारकाकेपताके। हरैंमानजेचंचलाकेप्रभाके ८
लख्योदूरतेपुत्रकोबाणजाला। सुन्योंशोरसंग्रामकोत्योंकराला। लख्योशाल्वकोजानधावैअकासै। महाभीतिकारीतमकोअवासै।
उडैतासुपीछैरथैपुत्रकेरो। तजैंसात्यकीसांबहूवाणढेरो। कह्योकृष्णरामैलखोयुद्धभारी। कोऊभूपआयोमहापापकारी॥
पुरीकोटभंज्योसुगंज्योअरामैं। लरैयादवीसैन्यसोंजीतिकामैं। पुरीशून्यजानीहमारीभुवाला। जितैंहेतआयोइतैयाहिकाला
कह्योरामहैभूपयाशाल्वभारी। चढोकामगैयानमेंशस्त्रधारी॥ करैयुद्धप्रद्युम्नआकाशपाहीं। लरैंसात्यकीसांबहूभूमिमाँहीं
कह्योसूतसोंदेवकीकोकिशोरा। चलोसंगरैलैतुहूँयानमोरा॥ तज्योदारुकौपंथद्वारावतीको। दियोफेरिवाजीनकीवेगतीको॥
गयेआशुसंग्रामकीभूमिमाँहीं। गदैसात्यकीसांबठाढेजहाँहीं॥ लखेनाथकोआशुहींवीरधाये। सबैरामकृष्णैपदैमाथनाये।
प्रद्युम्नैनभैतेरथैकोउतारी। कियोवंदनारामकृष्णैसुखारी॥ लख्योयादवीसैन्यकोसोसँहारा। भरेरामकृष्णैमहाकोपभारा
कह्योसात्यकीसंगरैकोहवालू। जेहींभाँतिआयोपुरीशत्रुसालू॥ कह्योआजुसत्ताइसैद्योसबीते। भयोयुद्धभारीक्षणोनाहिंरीते॥
दोऊनाथतूंद्वारकाकोपधारो। हनोशाल्वकोमैंनहींशंकधारो॥ तबैकृष्णसोंयोंकह्योरामबैना। पधारोगृहैयादवीसंगसैना॥
हनोशाल्वकोमैंअकेलेप्रचारी। नवारोअहैआशएसीहमारी॥ तहाँकृष्णरामैभन्योबैनऐसे। तुम्हैंयुद्धमेंछाडिकेजाँउकैसे।
करोप्रीतिजोमोहिंपैभ्रातभारी। करोगोनतोभौनकोहैसुखारी॥ सबैवीरसत्ताइसौद्योसजागे। लियेजाउसंगैअहैंघायलागे।
पुरीआपरक्षौसजेसावधानै। करौंशाल्वकेसन्मुखैहोंपयानै॥ अहैआपकोराममेरीदोहाई। पधारोपुरीकोकृपाकैमहाई॥
तहाँबाँकुरोवीरप्रद्युम्नभाखे। नजैहोंपुरैकोविनाजीतिचाखे। बचीभागितीनोंपुरैशाल्वनाँहीं। कहौंहौंप्रनैकोकयेमैंइहाँहीं
तवैकृष्णआँखैंसुतैकोदेखाई। कियोशीशनीचेपिताकोडेराई। कह्योरामकृष्णैखुसीजोतिहारी। करौंगोसोईमैंनदूजोविचारी

सोरठा—असकहितहँबलराम, प्रद्युम्नादिलैवाइकै। गयेआपनेधाम, करनलगेरक्षणनगर॥
यहअंतरलहिशाल, मारतसरभरभरनिकर। लैनिजयानविशाल, धनुषधुनतधावतभयो॥
शाल्वहिआवतदेखि, दारुकसोंकेशवकह्यो॥ १०॥ करुरथचपलविशेषि, लैचलुशाल्वसमीपमहँ॥
जामेंसौभविमान, मेरेबायेंदिशिपरै। तेसहिलैचलुयान, अबविलंबनहिंकीजिये॥
मानहुनेकुनभीति, मायावीहैशाल्वनृप। जानतसारथिनीति, बुद्धिमानदारुकअहो॥ ११॥
दारुकसुनिप्रभुबैन, विनयकरीकरजोरिकै। नाथमोहिकछुभैन, पदप्रतापबलरावरो॥
असकहिदारुकसूत, सावधानसबभाँतिह्वै। वाजीवेगअकूत, नेकुबागऊँचीकरी॥
नेशुकपानिलगाय, पीठपोंछिपुचकारिकै। तुरँगनदियोबढाय, किंकिणिझनकारीभई॥

छंदमोती०—रथचक्रनघर्घरशोरभयो। कढ़िबाणसमानसुजानगयो। मगमेंनहिंदेखिपरचोद्दगमें। रथगोद्रुतपौनहिंकेसँगमें

अतिधूरिहिधुंधुरकारभयो।नृपशाल्वविमानहुमूँदिगयो॥ खगराजपताकविराजिरह्यो। रथमेंयदुनायकगाजिरह्यो॥
चमक्योचपलासमयानतहीं।नृपकेचखचौंधभरयोतबहीं॥लखिकेशवकोनृपशाल्वतहाँ।उरआनतभोरणमोदमहाँ॥
द्रुतयानहिमेंकढिकैबढिकै।लघुमानतक्रोधहिमेंमढिकै॥ करकालसमानहिशूललियो। हरिमारनहेतविचारकियो॥
रथचंचलचारिहुँओरभ्रमैं।नहिंदेखिपरैकेहिठोररमैं॥निजजानहियेअतिकोपभरयो।करशक्तिलियोनृपशाल्वफिरयो।
नहिंमारनकोअवकाशलह्यो।रथमंडलशोचहुँओररह्यो॥तबदारुकपैकरिकोपतहाँ।तजिदीनसुशक्तिकरालमहाँ १३॥
चमकीचपलासमचारुचली।भरिगैध्वनिचारिहुओरभली॥नभऔदिशिमेंपरकाशछयो।सबदेवनकोअतिभोरभयो॥
उलकासमआवततािहरी।हनिबाणनसौशतटूककरी॥१४॥पुनिशाल्वहिषोडशबाणहने। तनवेधिगयेकढिवेगघने॥
तबव्याकुलह्वैनृपजानयुतै। उडिअंबरलागभ्रमानद्रुतै॥ तहँशारँगकोहरिशोरकियो। बहुसायकधारिपवारिदियो॥

दोहा-हरिकेसायकसौभमें, वेधिगयेचहुँओर। जैसेनभमेंरविकिरनि, छायजातसबठौर॥ १५॥

छंद-शाल्वमहिपालकरिकोपविकरालयदुपालकेबाणतेहिकालकाटयो।
धारिकोदंडपरचंडयमदंडसबबाणवरिखंडताजिहरिहिपाटयो॥
शौरिकोनंदरिपुशरनकेवृंदलखिपूरिनिजबाणतेहिधूरिकीन्ह्यों।
कोपकरिशाल्वयुगसहसशरजालतजिवामभुजकृष्णकीवेधिदीन्ह्यों॥
छूटशारंगशारंगधरहाथतेगिरयोझनकारकरियानपाहीं।
निरखियहअद्भुतैसिद्धमुनिसुरयुतैकँपेहाहाउतैव्योममाहीं॥ १६॥
सौभपतिकोपभरिजीतिकोलोभकरिबलगिबहुबारकरिघोरशोरा।
हाथकोऊँचकरिशीशझमकायकैकह्योरेसुनहितैनंदछोरा॥ १७॥
दौरियहिकालतूकालकेमुखपरयोबचतनहिंहालकौनिहूँभाँती।
बहुतदिनमाहिंममदृगनपथपहँपरयोमारितोहिकरहुशीतलहिछाती॥
बारहीबारतैकियेअपकारबहुभयोपरदारलैव्रजविहारी।
कुंडनैनगरमहँभूपशिशुपालकीनारिहरिलैगयोदगाकारी॥
राजगृहमाहमगधेशसोंकियोछलपाँडुसुतहाथतेहिंकोहतायो।
भीष्मकैसुवनशिरकेशकियमुंडनैमुंचसोकंसबोषेगिरायो॥
सभामध्यफेरिमहिपालशिशुपालकोदगाकरिशीशतेकाटिलीन्ह्यों।
औरधरमातमाधराकेनृपनतद्वेषकरिदीहतेदुखहिदीन्ह्यों॥
रह्योशिशुपालमहिपालमोहिप्यारअतिसखाअरुसचिवस्वामीशसाँहीं।
तासुवधसुनतमोहिंवज्रसमलगतभोएकक्षणसाहसैहोतनाहीं॥ १८॥
मारिशरघोरशिरकाटिकैतोरअबपठैयमलोककोआशुदैहौं।
भूपशिशुपालआदिकनसबसखनतेसकलविधिआजुमैंउरिणह्वैहौं॥
मोरप्रणसत्यहैतोरवधकरनकोएकप्रणऔरहैधर्मधारी।
वीरकेभजतमेंबाहतोबाणनहिंताहितेहोतउरशंकभारी॥
जायभजिजोकहूँयुद्धतेगोपसुतहोयतोआशनहिंमोरिपूरी।
ताहितेभागुमतिठाढरहुसन्मुखैहोयजोवीरतातोरिभूरी॥
पुत्रप्रद्युम्नआदिकनबलिरामकोमोहिंडरितूँदियोपुरभगाई।
आपनोजीवदैयुद्धमहँमोहिपहँतूँचहतसकलनिजकुलबचाई॥
राखुनहिंकृष्णअभिलाषअसमनहिंमहँतोहिंहनितोरपरिवारमारी।

जाइहौंऐनकीविजययशसहितयहद्वारकापुरीसिगरीउजारी ॥ १९ ॥
सुनतअसशाल्वकेवचनबहुरचनयुतमंदमुसकाइबोलेमुरारी।
लखतनहिंकालनिजहालरेशाल्वशठबकतकतबातबहुबिनविचारी ॥
शूरजेयुद्धजगहोतहैंयुद्धमहँशूरताकबहुँनहिंवदनभाखै।
क्रूरऔकायरौकुमतिकपटीसदावचनकोबलहितेमनहिराखैं ॥ २० ॥

दोहा–असकहिकैकौमोदकी, गहिकैगदागोविंद। शाल्वभूपकेउरहन्यो, करिकैकोपअमंद ॥

छंदमोतीदाम।

गदालगतैतहँशाल्वभुआल।वम्योरुधिरैगिरिभूमिविहाल।रह्योघटिकायुगमूर्च्छितभूमि।उठ्योपुनिभूपतिघायलघूमि
तहाँहरिकोबलजानिमहान। भयोशठआशुहिअंतरधान ॥ घरीयुगमेंइकपूरुषआइ। कह्योहरिसोंनिजशीशनवाइ ॥
लग्योपुनिरोवनसन्मुखठाढ।वहावतनीरबढ्योदुखगाढ।कह्यौपुनिजोरियुगैनिजहाथ।सुनोविनतीहमरीयदुनाथ २२॥
तुम्हैंडरिशाल्वभुआलुकराल।गयोतुम्हरेमनिमंदिरहाल।लियोवसुदेवहिकोशठबाँधि।भग्योरथमेंचढिवाजिननाँधि॥
गहैजिमियागपशूकरविप्र।गह्योतिमिआपपिताकहँछिप्र। दियोमोहिंदेवकिमातुपठाइ।कह्योमोहिंकोयहिभाँतिबुझाइ
कहोतुमकृष्णहिजाइतुरंत।कियोइतशाल्वपिताकरअंत॥ करैंघरकीसुधिआइकुमार।गयेमरिहैंइतकेबलवार ॥२३॥
निजैपितुबंधनकोसुनिकान। सबैहरिकोयुधहर्षभुलान ॥ लगेदृगतेबहुढारननीर । कियोबहुरोदनह्वैविनधीर ॥
कह्योपुनिवित्तसँभारिसुरारि।कहोसबदूतवृतांतविचारि ॥ २४ ॥ रहेसुप्रद्युम्नबलीबलराम।जितेजेसुरासुरसंगरआम॥
गदौअरुसात्यकिसांबहुवीर। सबैयदुवीरवधैरणधीर ॥ गयेबलखोइकिधौंसबसोइ । रहेकहुंगोइकिधौअरिजोइ ॥
लियोधरिशाल्वपिताकहँजाइ।नहींयहमोमनबातसमाइ।नहींकछुजानिपरेविधिलेख।तऊनहिंहोतविचारविशेख२५॥
बतातयहीविधिदूतहिपाहिं। देखाइपरचोरणशाल्वतहाँहिं ॥ धरेकरकेशहरीपितुकेर। लियेदहिनेकरमेंसमशेर ॥
घसीटतल्याइरणैमधिशालु।कह्योहरिसोंअसबैनकरालु॥२६॥अहैपितुप्राणहुतोप्रियतोर।यहूअरिमोरअहैअतिचोर॥
यहीहितजीवहुयाजगमाँहि। गुमानभरेतुमगोपसदाँहि ॥ बधौंयहिकोतुवदेखतआजु। बचावहुआइइतैयदुराजु ॥
जोपैसतिहौतुमयाहिकुमार।तोपैकिनहोहुनहींरखवार२७तहाँअसबैनहिंशाल्वउचारि।करालकृपाणहिहालनिकारि॥
लियोवसुदेवहिकोशिरकाटि।तक्योहरिकीदिशिहूँअतिडाँटि।गयोपुनिसौभविमानहिआसु।लह्योनृपशाल्वभुआलहुलासु
विनाशविलोकिनिजोपितुकेर। गिरेहरिमूर्च्छितशोकघनेर ॥ रहेयुगडंडप्रजंतविहाल। रहीतनमेंसुधिनाततकाल॥
तहाँपितुकोतनऔसोइदूत।विलाइगयेजिमिचेटकभूत।कह्योतबदारुकनाथहिटेरि।सुनोप्रभुमायहिशाल्वहिकेरि २९
नहींवसुदेवनदूतदेखात। करैअवशाल्वविशेषिहिघात ॥ उठेप्रभुभूपतिकोछलजानि । गहेहर्षाइशरासनपानि ॥

दोहा–शाल्वभूपमायासकल, क्षणमहँगईविलाइ। जैसेजागेस्वप्नके, सबदुखजातनशाइ ॥३०॥३१॥ ३२ ॥ ३३ ॥

छंद–कृष्णतहँशाल्वकेवधनहितकोपिकै। पानिमेंलीनसारंगचितचोपिकै ॥
देखितहँसौभपतिधारिधनुहाथमें। हन्योबहुशस्त्रयदुनाथकेमाथमें ॥
कृष्णअरिशस्त्रसबनाशिबहुवाणते। काटिदियतासुध्वजाविशिखबलवानते ॥
मारिपुनिसहसशरकवचतेहिछाँटिकै। खड्गद्वैधनुषकियशत्रुकहडाँटिकै ॥
तीनिशरमारिकियक्रीटबहुखंडहै। लीनकौमोदकीगदापरचंडहै ॥
ताहिकैजोरसोंसौभकोहनतभे। कौनिहूँभाँतिनाहिंबचतअसभनतभे ॥ ३४ ॥
लगतहरिहाथकीगदातेहियानमें। टूकह्वैसहसगोसौभअसमानमें ॥
सिंधुमेंगिरतभोमनहुँतारावली। भूमिमेंखरोभोशाल्वअतिशयबली ॥
शोरकरिशाल्वगहिगदाअतिघोरहै। कोपकरिचल्योयदुनाथकीओरहै ॥ ३५ ॥
देखिअरिआवतैभल्लशरलेतभे। कृष्णकरिकोपतेहिबाहुमेंदेतभे ॥

बाहुयुतगदाकटिगयोशरलागतै । रुक्योनहिंशाल्वअरिवधनअनुरागतै ॥
शाल्वकेवधनहितचक्रतबहरिलियो । कोटिरविउदयगिरिमनहुँभासैकियो ॥ ३६ ॥
छोड़िदियचक्रआनंदउरछायकै । शाल्वशिरकाटिलियआशुहीधायकै ॥
कुंडलैयुक्तअरिशीशअवनीगिरयौ । रुंड़हूँसन्मुखैपरयोनहिकछुफिरयो ॥
वृत्रकोवज्रधरयुद्धमेंज्योंदल्यो । शाल्वकहँकृष्णतिमिसमरसन्मुखमल्यो ॥
शाल्वकेगिरतमेंहहारबह्वैरह्यो । देवऋषिसिद्धगणमुदितह्वैजयकह्यो ॥ ३७ ॥
दोहा–सुमनसुमनवरषेमुदित, बहुदुंदुभीबजाय । नाचनलागीअप्सरा, गंधर्वयुतबहुगाय ॥
सोरठा–शाल्वविनाशविलोकि, दंतवक्रअतिकोपिकै । धावतभोभुजठोंकि, सखावैरकेलेनहित ॥ ३८ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्री
राजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ
दशमस्कंधे उत्तरार्धे सप्तसप्ततितमस्तरंगः ॥ ७७ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–शाल्वऔरशिशुपालको, अरुपौंड्रककोमित्र । दंतवक्रदुर्मदमहा, कृष्णहिंमानिअमित्र ॥
निजमित्रनकोनिरखिविनाशा।गदाधारिकरिकोपप्रकाशा॥१॥शैलसमानविशालशरीरा।महाभयंकरअतिरणधीरा ॥
निजपायनतेपुहुमिकँपावत।अपनेसन्मुखधावतआवत ॥ दंतवक्रएकहरिहिदिखान्यो।दूजोभटनहिंसंगमहान्यो॥२॥
दंतवक्रकहँतहाँनिहारी । गदागदाधरनिजकरधारी ॥ रथकोतजिसन्मुखप्रभुधाये । दंतवक्रढिगआशुहिआये ॥
हरिकहँनिरखिरुक्योशठकैसे । लहिवेलावारिधिजलजैसे ॥३॥ बोल्योदुर्मदगदाउठाई । भलीबाततोसोंवनिआई ॥
दोहा–बहुतदिननतेखोजतै, रह्योतोहिनँदनंद । बहुतदिननलोंबचिगयो, करतअनेकनफंद ॥
परयोनयनपथमहँवरिआई । तोरमीचइतहीलैआई ॥ ४ ॥ मातुलसुततैंमाधवमोरा । तेरेअहैधर्मनहिंथोरा ॥
मैंसम्बंधीअहौंतिहारो । तासुहननकहँभयोतयारो ॥ तातेअवनहिंतोहिंवचैहौं । मारिगदायमपुरैपठैहौं ॥
कोटिवज्रसमगदाहमारी । तासुचोटमहँमीचतिहारी ॥५॥ आजुतोहिंहतिकैरणमाँहीं । उऋणहोउंगोमित्रनकाँहीं॥
तैंजेछलकरिभूपनमारे । रहेनृपतितेमोकहँप्यारे ॥ तोहिमारिसुखपैहौंकैसे । तनतेव्याधिदूरिभयजैसे ॥ ६ ॥
दोहा–दंतवक्रयदुनाथको, असकहिवचनकठोर । गदाधारिधावतभयो, करतसिंहसमशोर ॥
शठकेवचनसुनेहरिऐसे । लागतचाबुकगजतनजैसे ॥ हनीगदायदुपतिकेशीशा । कीन्ह्योंघोरशोरअवनीशा ॥ ७ ॥
यदुपतितासुगदाकेमारे । तिलभरितहाँटरेनटारे ॥ कौमोदकीगदागहिहाथा । हनातासुउरमहँयदुनाथा ॥ ८ ॥
दंतवक्रउरगदाप्रहारा । लाग्योमानहुँकुलिशप्रहारा ॥ भयेछटकछातीतेहिकेरी । रुधिरधारमुखकढ़ीघनेरी ॥
दंतवक्रपगकरनपसारी।महीगिरयोमरिआँखनिकारी९सूक्षमज्योतितासुतननिकसी।सबकेदेखतहरिमहँप्रविसी१०॥
दोहा–भ्रातातासुविदुरथौ, निरखिबंधुकरनाश । धावतभोअसिचर्मगहि, शोकितलेतउसाँस ॥ ११ ॥
कोपितकृष्णहिंमारनआयो । निरखिताहिहरिचक्रचलायो॥कुंडलकीटसहिततेहिशीशा।काटिगिरायोमहीमहीशा॥
जयजयशोरसुरनसबकीन्हें।प्रभुपैपुहुपबरषिबहुदीन्हें॥१२॥ यहिविधिशाल्वविदूरथकाँहीं।दंतवक्रकरमारितहाँहीं॥
सुरनरतेअस्तुतिबहुपावत । रथमहँचढ़ेमोदअतिछावत ॥ चलेद्वारिकाकहँयदुराई । रणमहँविजयनिशानबजाई॥
विद्याधरगंधर्वमहोरग । गावतचलेसुयशहरिकेसंग१३मुनिऋषिसिद्धपितरगणनाना।किन्नरऔचारणहुमहाना १४॥
दोहा–गायगायहरिकोसुयश, पायपायमुदथोक । बरषिबरषिपुनिपुनिसुमन, गेनिजनिजसबलोग ॥
प्रद्युम्नादिकसंगलिवाई । आयेरामलेनअगुआई ॥ तिनतेयुतहरिपरमसुखारी । कियप्रवेशद्वारिकामँझारी ॥
पुरशोभानिरखतयदुराई । गयेमहलकहँअतिसुखछाई॥१५॥यहिविधिकृष्णचंद्रभगवाना।मारेपापिननृपनमहाना॥

जेकुमतीपशुसमजगमाहीं।कबहूँतेकहहिंहारिहारिजाहीं ॥ नहिंजानहिंलीलाहरिकेरी।करहिंदासरक्षणविनदेरी॥१६॥
बसेद्वारिकामहँकछुकाला । रामयदुवरनसहितकृपाला ॥ इतैकौरवनपांडवसंगा । जुरिगोमहाभयानकजंगा ॥

दोहा–अर्जुनसारथिहोनहित, श्रीवसुदेवकिशोर ॥ तजिकैआयुधकरिकृपा, भयेपांडवनओर ॥

तबइहिविधिबलरामविचारे । अहैंबरोवरदोउहमारे ॥ उभयसहायकरबनहिंनीको । यहीउचितमनमेंदेठीको ॥
प्रद्युम्नहिटिकायनिजधामा । तीरथकरनव्याजबलरामा ॥ लैसँगवृद्धनविप्रनकाहीं।तीरथकरनचलेसुखमाहीं ॥१७॥
प्रथमहिगमनेक्षेत्रप्रभासा । पितरनदेवनदियेहुलासा॥पुनिसरस्वतिकेतीरहितीरा । तीरथकरतचलेबलवीरा ॥१८॥
गयेपृथूदकमहँसुखछाये । पुनिप्रभुबिंदुसरोवरआये ॥ मज्जनकरिकैपुनित्रितकूपा । गयेसुदर्शनतीर्थअनूपा ॥

दोहा–नरनारायणकोरह्यो, जहाँसुभगतपठाम । ऐसेबदरीवनगये, अतिमोदितबलराम ॥

फेरिब्रह्मतीरथमहँआई । दियअन्हायमणिगणबहुगाई ॥ गयेचक्रतीरथपुनिचारू । तहाँदानदैविविधउदारू ॥
प्राचीसरस्वतीकहँजाई । मज्जनकरिदियदानमहाई॥१९॥पुनियमुनागंगातटआये । मज्जनकरिअतिशयसुखछाये ॥
गंगायमुनातीरहितीरा । तीरथकरतचलेबलवीरा ॥ आयेनैमिषारजगदीशा । जहाँअठासीसहसमुनीशा ॥
कराहिंयज्ञपरिपूरणपावन।ध्यावहिंसदाकृष्णजगभावन२०आवतरामहिंलखिमुनिराई।उठेसकलअतिशयसुखछाई ॥

दोहा–चलिआगेसबकरतभे, रामहिविविधप्रणाम । प्रीतिसहिततिनकोकिये, बहुप्रणामबलराम ॥

बलकोबहुविधिपूजनकीने।कुशलप्रश्नकहिकैसुखभीने॥२१॥यहिविधिविप्रनयुतबलराई।बहुसतकारमुनिनसोंपाई ॥
विप्रनसहिततहाँहलधारी । बैठेसुखितसिंहासनभारी॥जासुरोमहर्षणअसनामा । व्यासदेवकोशिष्यललामा ॥२२॥
कथाकहतसोबैठतखतमें ।उठोनसोबलरामलखतमें॥नहिंकरजोरिकियोसोवंदन । ताहिनिरखिकोपेयदुनंदन॥२३ ॥
मनमहँलगेकरनविचारा । सूतनकियोमोरसतकारा ॥ बैठोसबविप्रनतेऊँचो । हैसबभाँतिजातिकोनीचो ॥

दोहा–जानिपरतसोहेतनहिं, हैयहअतिमतिमंद । धर्मपालमोहुकहँनिरखि, उठ्योनमधिमुनिवृंद ॥ २४ ॥

व्यासशिष्यबहुपढ़ेपुराना।धर्मशास्त्रइतिहासमहाना॥२५॥यहशठभरोमहाअभिमानै । अपनेकहँपंडितअतिमानै ॥
पढ़ैयदपिशास्त्रौसमुदाई । तऊनशठकीशठताजाई ॥ जैसेनटनिजउदरनिमित्ता । करैकलाबहुचंचलचित्ता ॥२६॥
जेपाखंडीअतिशयपापी । अहैंसदाजीवनसंतापी ॥ तिनकेवधहितममअवतारा । होतभयोयहिजगतमँझारा ॥
तातेयहहैमारनलायक । असविचारिमनमेंयदुनायक ॥२७॥ यद्यपिकरतरहेतीरथभल । रह्योनहींसँगमेंमूसलहल॥

दोहा–तद्यपिलैकरमेंकुशा, कोपितह्वैजगदीश । फेंकिसूतपैआशुही, काटिदियोतेहिशीश ॥ २८ ॥

गिरयोसूतआसनतेजबहीं । हाहाकारकियेमुनितबहीं ॥ पुनिभावीकोप्रबलविचारी । कह्योरामसोपरमदुखारी ॥
बड़ोअधर्मकियोबलरामा । तुमतोरहेमहामतिधामा॥२९॥हमपौराणिकयाकहँकीन्हे। प्रतिलोमजतेद्विजकरिदीन्हें॥
ऊँचेआसनमहँबैठाये । कथासुननहितअतिचितचाये ॥ दईयाहिआयुषाघनेरी । जबलौंहोययज्ञसबकेरी ॥
ऐसहुदियेरहेवरदाना । सदाकहैयहसकलपुराना॥३०॥सोतुमविनजानतअसरामा । कियोब्रह्मवधअतिअघधामा ॥

दोहा–यद्यपिईश्वरजगतके, वेदप्रवर्तकआप । करहुनीकनेवरकरम, लगैपुण्यनहिंपाप ॥ ३१ ॥

तद्यपियहद्विजहत्यामाहीं । प्रायश्चित्तकरौजोनाहीं ॥ तौविप्रनकहँवधिवहुपापी । ह्वैहैनहिंअतिशयसंतापी ॥
तुमहौवैष्णवमतआचारज।तातेसमुझिकरहुसबकारज॥सुनतमुनिनकेवचनसुहाये।बोलेरामपरमसुखछाये ॥ ३२ ॥

बलभद्र उवाच ।

प्रायश्चित्तयाहिवधकेरो । जनशिक्षणहितकरहुघनेरो ॥ होइमुख्यसोसबकहिदेहू।तेहिविधिकरिहौंनहिंसंदेहू ॥३३॥
इंद्रियबलअरुआयुरदाई । औरदेहुतुमजौनसुनाई ॥ सोसबमैंसूतहिकरिदैहौं । तुमकोसकलभाँतिमुदछैहौं ॥

दोहा–सुनतवचनबलभद्रके, सबमुनिआनँदपाय । कहतभयेकरजोरिकै, सुनहुनाथचितलाय ॥ ३४ ॥

ऋषय ऊचुः।

आपुअस्त्रअरुवचनहमारे। सत्यहोहिंदोउसबहिप्रकारे॥ करहुनाथतुमसोइउपाई। जामेंउभयभाँतिबनिजाई॥
सुनिकैरामऋषीसनवानी। बोलेवचनहियेअनुमानी॥ ३५॥

बलदेव उवाच।

पुत्रआतमावेदउचारे। तातेअसशंकानिरवारे॥ होइहिसोसुतसूतसमाना। भाषिहिवेदपुरानहुनाना॥
ह्वैहैआयुर्दायमहानी। ममप्रसादलीजैसतिजानी॥ ३६॥ कहहुऔरजोआशतुम्हारी। सोउकरनकीचाहहमारी॥
कियोविनाजानेमैंपापा। जामेंकरहिंनसोसंतापा॥

दोहा-सुनतवचनबलदेवके, हरषितभयेमुनीश। जोरिपाणिकीन्हेंविनय, नायरामकहँशीश॥ ३७॥

ऋषय ऊचुः।

बल्वलसुतदानवअतिघोरा। बल्वलनाममहावरजोरा॥ पर्वपर्वमहँसोइतआवै। करैउपद्रवत्रासदिखावै॥ ३८॥
सुरामूत्रमलशोणितपीवा। मज्जामांसहुहाड़अतीवा॥ वरषहिंमखवेदिनमहँधाई। करहिनदेतयज्ञदुखदाई॥
ताकोवधकीजैबलरामा। तौहमरोपूजैमनकामा॥ यहैहमारिकरहुसेवकाई। होब्रह्मण्यदेवबलराई॥ ३९॥
भरतखंडकीकरिप्रदक्षिणा। तहाँद्विजनकहँदेवदक्षिणा॥ जावोयहिविधिद्वादशमासै। करिआवोइतसहितहुलासै॥

दोहा-तहँइततीरथमेंसविधि, मज्जनकीजेतात। तवपातकसबछूटिहै, यहिविधिवेदविख्यात॥ ४०॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे अष्टसप्ततितमस्तरंगः॥ ७८॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-सुनतमुनिनकेवचनबल, मुदितकहेमुसक्याइ। बल्वलकोवधहमकरब, नहींशंकदरशाइ॥
असकहिरहेराममखशाले। करतविचारदैत्यकरकाले॥ जबपहुँचीपूरणमासी। होमकरनलागेतपरासी॥
प्रथमहिधूरिधारदिशिधाई। प्रगटेमेघमहाभयदाई॥ लगेरुधिरवर्षनमखमाँहीं। मुनिगणभेअतिदुखिततहाँहीं॥
बह्योप्रचंडपवनअतिघोरा। होतभयोनभशोरकठोरा॥ वर्षनलगीपीवकीधारा। होतभईदुरगंधिअपारा॥ १॥
पुनिमलमूत्रहाड़अरुमाँसा। महावृष्टिभैतुरतअकासा॥ हाहाकारसकलमुनिकीने। कहाँगयेबलभद्रप्रवीने॥

दोहा-पुनिमखशालैलखिपर्यो, बल्वलदानवघोर। गरजतघनसमवारबहु, लीन्हेंशूलकठोर॥ २॥

मानहुँमेदुरमेघभयावन। तुरतहिचहतमुनिनकहँखावन॥ मानहुँकज्जलकेरपहारा। महारूपअतिशयविकरारा॥
ठाढ़ेलालबालशिरमाँहीं। तरुखजूरसममूछसोहाहीं॥ कालडाढ़समडाढ़विशाला। केतुसरिसदोभ्रुकुटिकराला॥
निपटनरकसमआननभारी।श्रवणशैलकंदरभयकारी॥ बारहिंवारवमतशिखिज्वाला।बल्वलमनुकालहुकरकाला॥
नभमहँदेखिपर्योयहिभाँती।छाइगयोतमभैमनुराती॥तबमुनिअतिशयदुखितपुकारे।कहाँरामरखवारहमारे॥ ३॥

दोहा-तबबलभद्रप्रवीरतहँ, हलमूसलसुधिकीन। ततहैंतुरतहिंआइगे, वज्रहुतेबहुपीन॥

शत्रुसैनसंहारनवारे। कितेदानवनिप्राणनिकारे॥ तेहलमूसललैहलधारी। मखगृहतेद्रुतकढ़ेप्रचारी॥ ४॥
बल्वलबलभद्रहुकहँदेखी। धायोकरिउरकोपविशेखी॥ रामतहाँनिजहलहिपसारी। दियोअकाशहितेहिगलडारी॥
ऐंचिबल्वलहिनिजढिगलीन्ह्यों।तासुशीशमहँमूसलदीन्ह्यों ५ मूसललागतफट्योललाटा।शोणितधारबहीमुखबाटा॥
गिरयोधरणिमहँकरतचिकारा।गिरैशैलजिमिवज्रविदारा॥६॥तबमुनिबलहिबखाननलागे।आशीर्वाददियेअनुरागे॥

दोहा-करतभयेबलभद्रको, मुनिगणसबअभिषेक। वृत्रहनेजिमिवासवहि, कीन्हेंदेवअनेक॥ ७॥

वैजंतीसुमनोहरमाला। गुँदेजाहिमेंकंजरशाला॥ रामहिमुनिजनदियपहिराई। दिव्यविभूषणवसनमँगाई॥

तातेरामहिभूषितकीने । आशिरवादविविधविधिदीने ॥ ८ ॥ तिनतेविदामाँगिबलराई । तीरथकरनचलेसुखछाई ॥
विप्रनसहितकौशिकीआई । दानदियेतहँसबिधिनहाई ॥ मानसरोवरगेसुखभरिता । प्रगटीजहँतेशरयूसरिता ॥९॥
पुनिशरयूकेतीरहितीरा । आयेद्रुतप्रयागबलवीरा ॥ मज्जनकरिदानहुतहँदीन्हें । ऋषिसुरपितरनतर्पणकीन्हें ॥
दोहा–पुनिहरिहरक्षेत्रहिगये, ॥ १० ॥ पुनिगोमतीनहाय । करिमज्जनपुनिगंडकी, तीर्थविपासाजाय ॥
करिमज्जनदानहुपुनिदीन्हें । शोणभद्रपुनिदर्शनकीन्हें ॥ दियेदानतहँसविधिनहाई । वासत्रिरातकियेसुखछाई ॥
गयाजायपितरनकहँतरपे । पिंडदानविधियुतबहुअरपे ॥ गमनेगंगासागरसंगम । तहाँत्रिरातवसेयुतसंयम ॥११॥
पुनिमहेंद्रपर्वतमहँजाई । परशुरामकहँलखेतहाँई ॥ यदुनंदनअभिवंदनकरिकै । गोदावरीगयेमुदभारिकै ॥
कृष्णासरिमहँफेरिनहाई । पंपासरगेपुनिबलराई ॥ भीमरथीमहँकीन्हेंमज्जन । दानदियेविप्रनमनरंजन ॥ १२ ॥
दोहा–कार्तिकेयकोकरिदरश, तहँतेपुनिबलराम । गमनकियेश्रीशैलकहँ, जहँशंकरकोधाम ॥
महापुण्यजोद्राविडदेशा । तहाँगयेबलरामसुवेशा ॥ वेङ्कटशैलनिरखियदुराई । पुरीकामकोष्णीपुनिआई ॥ १३ ॥
कांचीपुरीगयेसुखपाई । कावेरीसरिसविधिनहाई ॥ पुनिश्रीरंगनगरकहँआये । परमपुण्यप्रदजेहिमुनिगाये ॥
जहाँरहतानितहीभगवाना । वासकरहिंसंतहुतहँनाना ॥१४॥ ऋषभशैलकहँगेहलधारी । हरिक्षेत्रकहँजायनिहारी ॥
पुनिदक्षिणमथुराकहँदरसे । विप्रनपूजिअमितधनबरसे ॥ सेतुबंधरामेश्वरआये । महापापजहँनशतनहाये ॥ १५ ॥
दोहा–दशहजारगौवैंदई, विप्रनकहँबलदेव । शंकरकोपूजनकिये, प्रीतिसहितकरिसेव ॥
फेरिताम्रपर्णीकृतमाला । मज्जनकियेपुण्यप्रदहाला ॥ मलयकुलाचलपर्वतदेषी । तहाँदानदैसविधिविशेषी ॥१६॥
तहाँरहेअगस्तिमुनिराई । तिनकोजायरामशिरनाई ॥ तिनतेप्रभुलैआशिरवादा । गयेसमुद्रहियुतअहलादा ॥
पुनिकन्यादुर्गाकहँदेषे । फाल्गुनक्षेत्रआयशुभवेषे ॥ १७ ॥ पंचअप्सरातीर्थप्रकाशा । सदावासजहँरमानिवासा ॥
रामतहाँविधिसहितनहाई । दशहजारदीनीवरगाई ॥ १८ ॥ पुनित्रिगर्तअरुकेरलदेशा । गेगोकर्णहुँयदुवंशेशा ॥
दोहा–वसतजहाँशंकरसदा, शिवक्षेत्रजेहिनाम । दीपमध्यदेवीलखे, आर्याकोबलराम ॥ १९ ॥
सूर्यक्षेत्रकहँपुनिबलआये । तापीसरितामाँहनहाये ॥ फेरिपयोष्णीसरिनिर्विंध्या । तहँत्रिकालकीन्हीबलसंध्या ॥
पुनिदंडकारण्यह्वैरामा ॥ २० ॥ गयेनर्मदातटबलधामा ॥ तहँमज्जनकरिदैबहुदाना । मडिलानगरीकियेपयाना ॥
पुनिरेवाकेतीरहितीरा । मनुतीरथकोपरसतनीरा ॥ आवतभेपुनिक्षेत्रप्रभासू । मिलेविप्रतहँसहितहुलासू ॥ २१ ॥
तहँविप्रनसोंपूछेरामा । केहिविधिभोभारतसंग्रामा ॥ दियेविप्रसबकथासुनाई । कुरुपांडवजसभईलराई ॥
दोहा–सुनिभारतकोसमरबल, मनमेंकियोविचार । केशवदियोउतारिअब, सकलभूमिकोभार ॥ २२ ॥
फेरिविप्रबोलेअसबानी । भीमभीमबलकोअभिमानी ॥ अरुदुर्योधनहूविनयोधन । करहिंगदायुधदोउजयशोधन ॥
अससुनितहँबलभद्रउदारा । मनमहँकीन्ह्योंविमलविचारा ॥ भीमसुयोधनमोरासिखाये।करहिंयुद्धदोउकोपहिछाये॥
इनकोवरजिदेहुँमैंजाई। होहिंशांतदोउतजहिंलराई॥असविचारिवसुदेवकुमारा । कुरुक्षेत्रहिकहँशीघ्रसिधारा॥२३॥
आवतबलभद्रैतहँदेषी । पांडवदलभोशोकविशेषी ॥ धर्मभूपअर्जुनयदुराई । नकुलऔरसहदेवहुधाई ॥
दोहा–आगेबढ़िबढ़िकरतभे, मोदितसकलप्रणाम । तिनकोआशिषदेतभे, यथाउचितबलराम ॥
लौटिलौटिपुनिनिजनिजठामा । बैठतभयेमौनभयरामा॥लगेविचारनसोकहिछाये । रामकौनकारणइतआये॥२४॥
जहाँभीमदुर्योधनवीरा । करतरहेयुधदोउरणधीरा ॥ दोऊवीरविजयअभिलाषी । करहिंपरस्पररणअतिमाषी ॥
मंडलकरहिंविचित्रअनेकन । नाहिंविश्रामलेहिंएकहुछन॥तहाँजाइबलभद्रउदारा।कोपितह्वैअसवचनउचारा ॥२५॥
सुनहुभीमदुर्योधनराजा । तुमसमानहोबलीदराजा ॥ वृथालरहुअबकोपबढाई । वसहुआपनेएनसिधाई ॥
दोहा–भीमसेनतुमतेअधिक, बलमेंअहैअनूप । भीमसेनतेतुमअधिक, शिक्षामहँकुरुभूप ॥ २६ ॥
तातेविजयपराजयनाँहीं।जानिपरतयुधमहँमोहिकाँहीं २७ दोउदुहुनअपकारसुमिरिकै।दोउदुहुनवचनसुधिकरिकै॥
श्रीबलभद्रवचनभटदोऊ । बढ़ेवैरमान्योनहिंकोऊ ॥ २८ ॥ तहँनिजशिष्यनकोबलमेतू । युद्धतमाशादेखनहेतू ॥

बैठिगयेतेहिथलबलरामा । लागेलखनयुद्धअभिरामा ॥ धर्मनरेशनकुलसहदेवा । बैठेइकथलमानहुँदेवा ॥
अर्जुनयदुपतिइकथलजाई । बैठतभेबलभयसकुचाई ॥ लाग्योहोनगदायुधभारी । कहँलोंसोमुखजाइउचारी ॥
दोहा–जोरजासुगजसहसदश, ऐसोभीमअनूप । गदायुद्धतिमिअतिचतुर, दुर्योधनकुरुभूप ॥
लरतलरतबोल्योबहुकाला । हारेनहिंदोउबीरविशाला ॥ भीमसेननेसुकथकिगयऊ । तबहरिओरनिहारतभयऊ ॥
भीमहिश्रमितजानियदुराई । जाँघठोंकिसंज्ञादरशाई ॥ भीमसेनतहँजानिइशारा । लरनलग्योलहिमोदअपारा ॥
तरकिसुयोधनभीमहिशीशा । मारीगदाजोरिअवनीशा॥जानचह्योपुनितेहिथलमाँहीं । भीमहन्योतबभूपतिकाँहीं ॥
लगीजाँघमहँगदाप्रचंडा । टूटिजंघजोसमगजशुंडा ॥ गिरोभूपतहँखाइपछारा । माच्योचहुँदिशिहाहाकारा ॥
दोहा–करीप्रतिज्ञाभीमजो, सभामध्यबरजोरि । तेरेशिरपगदेहुँगो, जांघगदातेटोरि ॥
सोइसुधिकरिरदरदछददाबी।भीमदयाबनबीरसिताबी ॥ मुकुटसहितदुर्योधनशीशा।निजपदधरिदीन्ह्योंअवनीशा ॥
यहलखिधर्मभूपदुखमान्यो । पैनकछूमुखवचनबखान्यो ॥ निरखिअधर्मयुद्धतेहिठामा । कियोप्रचंडकोपबलरामा॥
ऊरधदोऊबाहुउठाई । धिगधिगभीमहिंकह्योसुनाई ॥ तैंअधर्मकीन्ह्योंयहिठोरा । मान्योनहिंसकोचकछुमोरा ॥
मूरधअभिषेकितनृपशीशा । धरचोचरणकछुधर्मनदीशा॥याकेअतिशयभरचोगुमाना।अपनेसमजानतनहिंआना॥
दोहा–आजुहिबिनपांडवमही, मैंकरिहौंहलमारि । असकहिहलमूसलगहे, वारहिवारपुकारि ॥
उठचोरामरोषितअतिघोरा । धायोभीमसेनकीओरा ॥ भयोरूपतहँमहाभयावन । मानहुँचहतजगतकहलावन ॥
धर्मभूपलखिकोपितरामैं । मानिमीचुमूर्च्छितभेठामैं ॥ भीमसेनतहँगयोसुखाई । मानौंमीचुनगीचाइआई ॥
ठाढ़ोभयोगदामहिडारी । बारबारबलवदननिहारी ॥ अर्जुनहूँतहँगयोसुखाई । हरिहिलख्योदीनतादेखाई ॥
नकुलऔरसहदेवहुदोऊ । महारथीतहँकेसबकोऊ ॥ कीन्ह्योंमनमहँसत्याविचारा । ह्वैगोअर्जुनभीमसँहारा ॥
दोहा–बलधावतधरणीधसी, धरणिधरनभोकंप । वारिधिहूवेलातजी, रविभेमानहुचंप ॥
जानिपांडवनकोसंहारा । धायोतहँवसुदेवकुमारा ॥ भीमहिजुमकतमहँहलधारी । गह्योकृष्णदोउभुजापसारी ॥
कह्योसमुझिलीजैकछुबाता । भीमघातकीजैपुनिभ्राता ॥ रेल्योरामभीमकीओरा । ऐंचतभोदेवकीकिशोरा ॥
लसेसितासितदोऊतहाँहीं । मनुरविशशिसँगसाँझसोहाँहीं ॥ कह्योवैनयदुनाथबहोरी । सुनियेभ्रातविनयकछुमोरी॥
भीमनकीन्ह्योंकछुअपराधा । दुर्योधनकीन्हीबहुबाधा ॥ द्रुपदसुताकहँसभामँझारी । विनपटकरनचह्योअघकारी ॥
दोहा–खेलिजुवांछलकारिसभा, हरचोराजधनधाम । बारहवर्षनिकारिदिय, बागेठामहिंठाम ॥
भीमकियोप्रणसभामँझारी । तोरिहौंजंघगदातुवमारी ॥ धरिहौंमैंपदतेरेशीशा । ह्वैहैनाहिंऔरविसवीसा ॥
सोप्रणभीमपूरकरिलीन्ह्यों । राउरकछुअपराधनकीन्ह्यों॥तवबललोटिकह्योघनश्यामैं । अनुजतोरहैयहकृतकामैं ॥
महाअधर्मीपांडुकुमारा । जानतनहिंकछुधर्मविचारा ॥ असअनुचितकैसोलघुभाई । अपनेसन्मुखनहिंसहिजाई॥
तेरीछूटिनचंचलताई । कीजतबारबारलरिकाई ॥ तोहिंमोहिंकौरवपांडुसमाना । तैंगहिपांडवपक्षमहाना ॥
दोहा–देतासियापनइनहिंको, ह्वैअर्जुनकोसूत । तोहिंनऐसीचाहिये, तैंयदुवंशसपूत ॥
तबबोलेयदुवरमुसकाई । मोरमीतपांडवहैंभाई ॥ धर्मधुराधरनीमहधारी । धीरधराधरयुद्धविहारी ॥
रहेसबैकौरवअतिपापी । वृथापांडुपुत्रनसंतापी ॥ इनकोपक्षछोडिहेभाई । पापिनपक्षगहेंकिमिजाई ॥
पांडवमित्रसोमित्रहमारो । पांडवशत्रुसोशत्रुविचारो ॥ तुम्हैंशपथहैभ्रातहमारी । तजहुभीमसुखमोरनिहारी ॥
तबहलमूसलमाहिमहुँडारी । बोलेहलधरतहाँपुकारी ॥ दुर्योधनपापीहैनाँहीं । यहिपापीसबकहहुवृथाँहीं ॥
दोहा–सबसुभटनकेलखतइत, दुर्योधनकहँआज । देहुँमुक्तिमैंशाश्वती, लहतजोयोगिदराज ॥
लहहुसुयोधनमुक्तिसुखारी । गेअघजरिजिमिदारुदवाँरी ॥ असकहिचढेजाइरथरामा । चलेद्वारकाकहँसुखधामा ॥
रोषितजानिरामकहज्वैकैं । धर्मनृपतिअतिविमनसह्वैकैं ॥ चलेमनावनरामहिंकाँहीं । तबयदुवरगहिकैतिनबाँहीं ॥
कह्योनअबसबनहुमहराजा । राममनावनकेरणकाजा ॥ जानदेहुयदुपुरभ्राताको । काकरिहौमनाइअबताको ॥

ह्याँतोबनेसमीपतिहारे। सिगरेकाजसुधारनहारे॥ सिंहासनमहँबैठिनरेशा। मोकहँपुनिकैदियोनिदेशा॥

दोहा–मैंद्वारकासिधारिकै, रामहिंवहुतबुझाइ। लैहौंहस्तिननगरमें, तिनकोअवशिलेवाइ॥

ऐसीसुनतकृष्णकीवानी। नाथरजाइलईनृपमाँनी॥ रहेमौनछूव्योदुखनाँहीं। बारबारमनमहँपछिताँहीं॥

रामगमनसबसुभटनिहारे। गनेवचेअवजीवहमारे॥ समरछोंडिकैतहँबलरामा। विप्रनवृद्धनसंगललामा॥

द्रुतहिद्वारकाकेढिगआये। खबरिजनावनचारपठाये॥ उग्रसेनसुनिरामअवाई। मुदितजायलीन्हीअगुवाई॥

गृहमेंल्याइपूँछिकुशलाई। कहीसकलआपनीभलाई॥ तहँप्रद्युम्नसांबादिकुमारा। रामचरणमहँपरेउदारा॥

दोहा–तिनकोआशिर्वाददै, बारबारउरलाय। रहेद्वारकात्रयदिवस, आनँदसोंबलराय॥ २९॥

लैरेवतीसंगसुकुमारी। औरौंसुहृदनबंधुहँकारी॥ नैमिषारकहँफेरिपधारे। जहँमुनीशगणरहेउदारे॥

मुनिगणरामहिंयज्ञकरायो। मनहुँसूतवधपापधोवायो॥३०॥तिनसोंपुनिविशुद्धविज्ञाना।भाषतभयेरामभगवाना॥

तौनज्ञानकरिप्रेमहिछावत।कृष्णचंद्रकोमुनिगणपावत॥३१॥तियसुहृदनबंधुनयुतनाना।रामकियेअवभृथअस्नान॥

भूपणवसनपहिरिहलधारी। सोहतभयेसहितनिजनारी॥मनहुँचंद्रचंद्रिकासमेतू। तारनसहितलसतछबिसेतू॥३२॥

दोहा–बलशालीबलभद्रके, यहिविधिचरितअसंख्य। महाराजकोकारिसकै, अपनेमुखमेंसंख्य॥ ३३॥

सांझप्रातबलभद्रके, गावैंचरितअपार। सोनरश्रीयदुराजको, होतप्राणतेप्यार॥ ३४॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे एकोनाशीतितमस्तरंगः॥ ७९॥

दोहा–रामकृष्णकीसुनिकथा, अतिशयआनँदपाय। कह्योपरीक्षितजोरिकर, धनिधनिभागगनाय॥

श्रीमुकुंदकेचरितसुहावन।कारकपतितजननकहँपावन॥हरिचरित्रऔरहुप्रभुगावो।प्यायपियूषपिआसबुझावो॥१॥

सुनहुव्याससुतहरिगुणगाथा।श्रवणकरतकरिदेतसनाथा॥ रसिकपुरुषजेहैंजगमाँहीं। जिनकेकामवासनानाँहीं॥

तेहरिकथासुधाकरिपाना। नहिंअघातललचातसुजाना॥ २॥ सोईजीभसराहनलायक।गानकरैजोयशयदुनायक॥

अहैंधन्यतेईजगहाथै। सेवाकरहिंजेनितयदुनाथै॥ सोईमनहैधन्यमहाना। जामेंधरैकृष्णकरध्याना॥

दोहा–कृष्णकथाजिनमेंपरै, सोईकहावतकान। नतोभुजंगनकेभवन, भीमभयावनजान॥ ३॥

मानिचराचरवपुजगदीशा। नवैजोईसोईशतशीशा॥ कृष्णसुछविजिनआँखिनदेखै। सोईकहावतआँखिविशेखै॥

हरिपदकीहरिजनपदनीरा। जाकोभीगोरहैशरीरा॥ सोईगातकहावतसाचो। नातोरचोकाचकोकाचो॥ ४॥

सूत उवाच।

यहिविधिकह्योपरीक्षितराजा। मुदितमुनिनकेमध्यसमाजा॥सुनतव्यासनंदनसुखपाई।यदुपतिपदमहँध्यानलगाई॥

प्रेमपयोधिमगनमुनिराई। कथनलगेहरिकथासुहाई॥ ५॥

श्रीशुक उवाच।

यदुपतिकोइकसखापियारो। नामसुदामाजासुउचारो॥

दोहा–ब्रह्मवेदज्ञातासबै, इंद्रिनसुखनहिंलीन। शांतदांतहतभ्रांतसब, अतिवेदांतप्रवीन॥ ६॥

विनमाँगेजोकछुमिलिजावै। तेहिमेंसंतोषहिउरलावै। गृहतेजातरह्योकहुँनाँहीं। यदपिदरिद्रीरह्योसदाँहीं॥

चिरकुटओढेशीतनिवारै। कबहुँकबहुँकछुकरैअहारै॥ रहैक्षुधावशअतिशयछामा। रहीतैसहीताकरिवामा॥ ७॥

पतिव्रतासतिवतीविशेखी। सकीनसोपतिकरदुखदेखी॥ एकसमैपतिनिकटहिजाई। दारिदसोंअतिशयदुखपाई॥

कँपतअंगअतिवदनमलीना। पियसोंकह्योवचनअतिदीना॥हमहिंतुम्हैंदारिद्रसतावै।अवतोगृहमेंनहिंरहिजावै॥८॥

दोहा–कहतरहेयहबाततुम, प्रथमहिमोतेकंत। सोरमित्रयदुनाथहैं, श्रीरुक्मिणिकेकंत॥

परब्रह्मसोइभगवाना। हैंब्रह्मण्यशरण्यसुजाना॥ हैंअंधकयदुमधुकुलपालक। दीरवदुवनदनुजकुलघालक॥ ९॥
दीहदुरितदरदीनदयाला। दासनदेखिद्रवततकाला॥ तिनकेनिकटसहितअनुरागा। काहेनहिंगमनहुबडभागा॥
जिनकेमित्रअहैंभगवाना। तिनकोदुखआश्चर्यमहाना॥ तुमकहँदेखतकृष्णकृपाला। करिहैंतुमकहँतुरतनिहाला॥
जानितुम्हैंसकुटुंबदुखारी। देहैंधनबहुतुम्हैंमुरारी॥ वसैंद्वारिकामहँयदुराजू। अवैगयेनहिंकौनेहुकाजू॥

दोहा–अपनोपदसुमिरतहिमें, यदुपतिदीनदयाल। अपनेजनकोदेतहैं, आतमहूँततकाल॥ १०॥ ११॥

जोसबछोड़िकृष्णकोध्यावै। दुर्लभताहिनकछुदरशावै॥ तातेजाहुकंतअबआसू। जहाँवसतहैंरमानिवासू॥
यहिविधिमृदुलगिराद्विजनारी।पतिसोंबहुविधिकह्योदुखारी।।तबविचारिमनकह्योसुदामा।कहतिनीकमेरीयहवामा॥
मिलिहैधनकीमिलिहैनाँहीं। पैहरिदरशमिलीहगमाँहीं॥होइमोहिंपरमयहलाभै। मिलिहौंभुजभरिअंबुजनाभै॥१२॥
असविचारिअतिशयरतिभीनी गमनकरनकहँद्विजमतिकीनी पुनिबोल्योनिजतियसोंवानी भलीबाततुमकहीसयानी

दोहा–छूछेकरमित्रहिमिलब, उचितपरतनहिंजोय। भेटदेनकहँदेहुकछु, जोतुम्हरेघरहोय॥ १३॥

पतिकेवचनसुनततियधाई। माँगिचारिघरचाउरल्याई॥ चारिहुँमूठीदियपतिकाँहीं। विप्रपायमोदितमनमाँहीं॥
फटेवसनमहँसातपरतकारि। बाँध्योब्राह्मणपरमजतनधारि॥१४॥फटेवसनबहुकटिमहबाँधी।तामेंतंदुलपुटकीकाँधी॥
कसिचीथरेवसननिजशीशा।चलोद्वारिकाहिजहँजगदीशा॥मारगमहँअसलग्योविचारन।किमिपैहौंमैंहरिहिनिहारन॥
द्वारपालकिमिदेहैंजाना। कहँमिलिहैंमोकहँभगवाना॥ असविचारकरतैमतिधीरा। गयोअगमसागरकेतीरा॥१५॥

दोहा–चढितरणीउतरचोतुरत, रोक्योतहँकोउनाहिं। गयोद्वारकानगरमहँ, अतिमोदितमनमाहिं॥

रहेतीनपुरकेदरवाजे। सुभटहजारनतहाँविराजे॥ तेऊतहाँद्विजकोनहिंरोके। नाँघतपुरपुरजनहुनटोके॥
खासकिलाकेजबगोनेरे। जहँमंदिरयदुवंशिनकेरे॥ सोहहिंजहाँमहलनौलाखा। निजकरविश्वकर्मारचिराखा॥
घरघरलिख्योकृष्णअसनामा।सुरपतिसदनहुतेअभिरामा १६पुनिडेउढीनाँघ्यौद्विजतीना।तहाँलख्योबहुवासनवीना।
सोलहसहसमहलअतिराजैं।जिनकोदेखिदेवगृहलाजै।देखितिनहिंजकिरह्योसुदामा। पुनिविचारकीन्ह्योंतेहिठामा॥

दोहा–धनियदुपतिधनिद्वारका, धनियदुवंशप्रवीन। मोहिरंककहिरोक्योनहीं, जानिविप्रअतिदीन॥

अबमैंकेहिविधिहरिकहँपाऊँ।कौनेभवनआशुअबजाऊँ॥असकहिमंदहिमंदसिधारचो।तहँअद्भुतएकभवननिहारचो॥
डरतडरतपैठच्योतेहिमाहीं। कोऊतहौंतेहिरोक्योनाहीं॥चलोगयोद्विजधीरेधीरे। पुलकतजकतरुकतकछुभीरे॥
लखिमंदिरकछुरुकितहँगयऊ।ब्रह्मानंदमगनमनभयऊ॥जायसक्योनहिंद्विजपुनिआगे।जकोखरोरहिगोसुखपागे १७
बैठरहेयदुपतिपरयंका। लीन्हेंरुक्मिणिकोनिजअंका॥ दूरिहितेतहँलख्योसुदामैं। पायोमनहुसकलमनकामैं॥

दोहा–उठेआशुपरयंकते, तजिरुक्मिणिकोनाथ। धावतभेअतिवेगसों, युगुलपसारेहाथ॥

तहँनिजतनकीखबरिविसारी।मीतमीतकहिमिलेमुरारी॥१८॥ढारतयदुपतिदृगजलधारा।बाढ्योउरमहँमोदअपारा॥
सखाभलेतुमतोइतआये।बहुतदिननमहँवदनदेखाये॥१९॥पुनिकारिकैद्विजकीगलवाहीं। लायेनिजसेजहिढिगमाहीं॥
निजपर्यंकमाहँबैठाये। लगेकरनपूजनसुखछाये॥ निजहाथनसोंचरणपखारी। लियोशीशमहँसोजलधारी॥ २०॥
निजपदजलजगपावनकरहीं। तेद्विजपदजलनिजशिरधरहीं॥ जनिअचर्जमानहुँकोउभाई। हैब्रह्मण्यदेवयदुराई॥

दोहा–पुनिनिजहाथनविप्रतन, चंदनदियोलगाइ। चंदनकुंकुमअगरकी, रहीसुरभितहँछाइ॥ २१॥

पुनिमित्रहिदीन्ह्योंहरिधूपा। देखरायोतिमिदीपअनूपा॥ निजकरसोंपुनिद्विजहिजेंवायो।तैसहिबीरापानखवायो॥
पुनिआरतीसाजिमनथारैं। निजमीतैपरलगेउतारैं॥ दैप्रदक्षिणागऊदेखाये। कुशलप्रश्नकीन्हेंचितलाये॥ २२॥
चिरकुटपटअतिमलिनसुदामा। रह्योक्षुधातेअतितनछामा॥ निकसीनसासिगरीदरशाहीं।सोबैठ्योपरयंकहिमाहीं॥
तहँरुक्मिणिअतिशयसुखपागी।विप्रहिचमरचलावनलागी॥हरिनिजहाथनपंखाहाँकै।निजनैननमीतहिमुखताकै २३

दोहा—यहकौतुकतहँदेखिकै, अंतहपुरकीनारि । सिगरीविस्मयरसभरी, बोलीप्रीतिविचारि ॥

स्त्रीजन उवाच ।

यहअवधूतकहाँतेआयो।कृष्णहाथसोंपूजनपायो॥२४॥कौनपुण्ययहपूरुबकीन्हों । कौनदानअतिद्विजकहँदीन्हों ॥
जोयहांनंदितअधमअपारा । हैदरिद्रकोसहीअगारा ॥ २५ ॥ सोत्रिभुवनपतिकेकरतेरे । लहतभयोसतकारघनेरे॥
उठिपरयंकाहितेतजिनारी । अग्रजसमजेहिमिलेमुरारी॥असकहिकहिचकितह्वैरहहीं।हरिचरित्रलखिआनँदलहहीं ॥
पुनिहरिपकरिसुदामाहाथा । कहनलगेपूरुबकीगाथा ॥

श्रीभगवानुवाच ।

हमतुमररहेजबहिंगुरुगेहू । पढेएकसंगसहितसनेहू ॥

दोहा—हमअरुबलमथुरैगये, कछुकारजवशमीत । तुमवरणहुअपनीकथा, कहँयेतेदिनवीत ॥ २७ ॥

गुरुदक्षिणदेगुरुहरषाये । गुरुगृहतेजवतुमपढिआये ॥ व्याहकियोकीनहींसुखारी । मीतलहेनिजमनकीनारी॥२८॥
पैमोहिमीतजानिअसपरतो।विषयसंगनहिंतुममनकरतो॥तुमकोधनअतिप्यारनलागै।पापनिरखितुवमनअतिभागै ॥
विषयकर्मजोकरहिंप्रवीना । तामेंहोतनअतिलवलीना ॥ करमवासनाछोडतजाहीं । यदपिरहेअपनेगृहमाहीं ॥
जैसेमैंगृहकारजकरऊँ । पैआसक्तनातिनमहँहरहऊँ ॥ ३० ॥ हमतुमगुरुगृहवसतरहेजब।ताकीसुधिकीजतकबहूँअब॥

दोहा—जोगुरुगृहमहँवासिसदा, लहिजनज्ञानअपार । यहसंसारसमुद्रके, आशुहोतसोपार ॥

तीनिभाँतिकेगुरुजगमाहीं । सोमैंकहेदेततुमपाहीं ॥ देतजगतमहंजन्महिजोई । पिताप्रथमगुरुज्ञानहुसोई ॥
पुनिविद्याजोसकलपढावै । दूजोगुरुसोमीतकहावै ॥ पितुतेअधिकताहिजनजानै । सकलभाँतिताकोसनमानै ॥
करहिंजोफेरिमंत्रउपदेशा । सोतीजोगुरुगुनोद्विजेशा ॥ सोतोमहीअहैंजगमाहीं । यामेंकछुसंशयहैनाहीं ॥
मोररूपगुरुसुखउपदेशू । काटतहैअज्ञानकलेशू॥३१॥३२॥मनवचकर्मगुरुहिजोमानै । सोइसंसारतरतनहिंआनै ॥

दोहा—हैप्रतक्षमेरोवपुष, उपदेशकगुरुजोइ । तातेयहसंसारमें, अधिकनकोईहोइ ॥

करैयज्ञजोजनजगमाहीं । ब्रह्मचर्यहूकरैतहाहीं ॥ अरुतपव्रतयमनियमअनेका । धर्मदानसनमाननेका ॥
तसइनतैंमैंतोपहुँनाहीं । जसगुरुसेवनकियेसदाहीं ॥ जोगुरुकीकीन्हीसेवकाई । सोकरिचुक्योधर्मसमुदाई ॥ ३४ ॥
हमतुमरहेगुरूगृहमाहीं । तबकीसुधिआवतकीनाहीं ॥ सबशिष्यनइकसमैबोलाई । गुरुदाराअसकह्योबुझाई ॥
ल्यावहुइंधनसबवनजाई । येतीकरहुमोरिसेवकाई ॥३५॥ हमसबसुनतगुरूतियवानी । चलेलेनइंधनसुखमानी ॥

दोहा—महाभयावनसघनवन, तहाँसिमिटिसबजाय । लैइंधनमुरकनलगे, जानिअस्तदिनराय ॥

तहँअकालवरषाभयभारी । मेघनकीछाईअँधियारी ॥ वर्षैगरजिगरजिघनघोरा । परेकठोरओरचहुँओरा ॥
दामिनिदमकिरहीचहुँचाहीं।करहुपसोरेसूझतनाहीं॥३६॥भयोभयावननिशिअँधियारा।चहुँकितबहनलगीजलधारा
ऊँचनीचथलपरैनजानी ।हमसबकोतहँराहभुलानी ॥ ३७ ॥ पवनबह्योतहँदेतझकोरा । लहेतहाँहमसबदुखघोरा ॥
इकइकेकेकरगहिदुखपागे । गेहगलीकोखोजनलागे ॥ दिशानजानिपरीतेहिकाला । निशिभरिवनमेंभ्रमेंविहाला ॥

दोहा—पैनहिंगुरुइंधनतजे, यद्यपिलहेकलेश ॥ ३८ ॥ जसतसकैबीतीनिशा, प्रगटतभयेदिनेश ॥

जबहमरातिभवननहिंआये ।तबसांदीपिनगुरुदुखपाये ॥ भोरभयेशिष्यनकहँहेरत । आयेवनमहँपुनिपुनिटेरत ॥
खोजतखोजतहमकहँपाये।शिष्यनदुखितनिरखिदुखछाये३९निजशिष्यनसोंवचनउचारे।सुनहुशिष्यसबपुत्रहमारे
मेरेहितअतिशयदुखपाये।इंधनहेतविपिनमहँआये ॥यद्यपिदेहिनकोजियप्यारे।तद्यपिममहितनाहिनिहारे ॥ ४० ॥
शिष्यनउचितऐसहीकरिबो । गुरुकारजमहँजियनविचरिबो ॥ तनमनवचनहुतेगुरुकेरी । जोसेवकाईकरैघनेरी ॥
ताकोरह्योकछूनहिंबाकी । विनाप्रयासमोक्षहैताकी ॥ ४१ ॥

दोहा—तुमपरमैंपरसन्नअति, सुनहुशिष्यसुकुमार । सिद्धमनोरथहोयँसब, आशिरवादहमार ॥

जेबिद्यातुमपढीकुमारा।सदानवीनरहैसुखसारा॥असकहिहमसबकहँगृहल्यायो।विविधभाँतिभोजनकरवाये॥ ४२ ॥
यहिविधिवसतगुरूगृहमाँहीं। खेलेबहुविधिखेलनकाँहीं ॥ जापरगुरुकीकृपामहाई । ताकेदोऊलोकबनिजाई ॥
यदुपतिकेसुनिवचनसुहावन । बोलतभयेसुदामापावन ॥ ४३ ॥

ब्राह्मण उवाच।

पूरबकौनपुण्यमैंकीनो। कौनदेवसेवामनदीनो। जातेहमतुमकरिअतिनेहू। बसेएकसंगहिगुरुगेहू ॥
पूरेसबैमनोरथमेरे। पहुँचेआजुआपकेनेरे ॥ ४४ ॥

दोहा-सकलवेदमैंजासुतन, यशमंगलकोमूल। ताकोगुरुगृहमेंबसब, कहबसुनबबडिभूल ॥ ४५ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा
बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ
दशमस्कंधे उत्तरार्धे अशीतितमस्तरंगः ॥ ८० ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-मित्रमित्रयहिभाँतिबहु, अतिशयआनँदपाय। अपनी २ सबकथा, दियोपरसपरगाय ॥ १ ॥

पुनिब्रह्मण्यदेवखगगामी। सबभूतनकेअंतर्यामी ॥ प्रेमहिपगेमीतसुखदेखत । आनँदअवधिउरहिमहँलेखत ॥
मित्रसुदामातेयदुराई। बोलेमंदमंदमुसकाई ॥ २ ॥

श्रीभगवानुवाच।

अहोमीतअबदेहुबताई। देपठयोमोहिंकाभौजाई ॥ जोमोहिंदेनहेतइतल्यायो । देहुवेगिकसमीतदुरायो ॥
मोरभक्तममप्रेमहिपूरी। थोरहुदेइगुनौसोभूरी ॥ जोविनप्रेममोहिंबहुदेतो । सोमैंकबहुँताहिनहिंलेतो ॥ ३ ॥
पत्रपुहुपफलजलजनजोई। मोकहँदेयप्रीतिरसमोई ॥

दोहा-सोमैंअतिआदरसहित, भोजनकरहुँसप्रीति । मीतजानियोयहसदा, अहैहमारीरीति ॥ ४ ॥

देहुमोहिंजोममहितल्याये।अबतुमसोंनहिंछिपतछिपाये॥यदुपतिकेसुनिवचनसुदामा।करनलग्योविचारमतिधामा॥
मैंचाउरयेमूठीचारी। श्रीपतिकहँकहदेहुँविचारी ॥ असविचारिनीचेशिरनाई। रह्योसुदामातहाँलजाई ॥
दियोनहींतंदुलहरिकाहीं। दाबेरहेकाँखरीमाँहीं ॥ ५ ॥ ताकोआवनहेतुविचारी। धनहितपठयोयहियहिनारी ॥
यहतौरह्योअकामसदाहीं। धनहितभज्योनाहिंमोहिंकाँहीं॥६॥तातेभीतनारिप्रियहेतू। यहिकंचनकोकरहुनिकेतू॥

दोहा-धरणीमेंजोनृपनकहँ, दुर्लभअहैविभूति। सोमैंदैहौंविप्रकहँ, सबसंभारसंजूति ॥ ७ ॥

असगुनिविप्रहिवचनसुनाये। मीतकहातुमकाखचोराये ॥ असकहिपुटरीचाउरकेरी। लईऐंचिहरिकरीनदेरी ॥
फटेवसनसबखोलिमुरारी।मूठीचाउरचारिनिहारी॥ ८ ॥ कहनलगेअसपुलकितबानी। येतंदुलतोअतिसुखदानी ॥
कहोमीतकसरहेछिपाये। चाउरचारुनमोहिंदेखराये ॥ जोतुमल्यायेमीतहमारे। येतंदुलमोहिंपरमपियारे ॥
इतनेचाउरमैंद्विजराई। जैहैसिगरोविश्वअघाई ॥ ९ ॥ असकहिमूठीभरीमुरारी। लियेआपनेआननडारी ॥

दोहा-तहाँमुरावततंदुलन, पुनिपुनिजातबतात। स्वादसुधामहँअसनहीं, जसइनमाहँजनात ॥

त्रिभुवनव्यंजनलागतसीठे। राउरचाउरहैंअसमीठे। पायेकबहुँनअसअहलादू। मीतमिल्योजसतंदुलस्वादू ॥
असकहिभरिप्रभुमूठदूसरी।चाह्योडारनमुखहिसुखकरी॥तबरुक्मिणीअसमनहिविचारी।त्रिभुवनसंपतिदैप्रभुडारी॥
देनचहतअबमोकहँनाथा। असगुनिगहिलीन्ह्योंहरिहाथा॥१०॥करीविनयकरजोरिवहोरी।इकमूठीकाहैप्रभुथोरी ॥
इकमूठीतंदुलपियखाई। दीन्हीसकलविभूतिसुहाई ॥ पैअबहमहूकोकछुराखो। सबैनमीतचाउरैचाखो ॥

दोहा-सुनिरुक्मिणिकेबैनप्रभु, तंदुलदीन्ह्योंताहि। देखिसुदामायहदशा, अतिमनरहेसराहि ॥ ११ ॥

पुनिपुनिभोजनपानकरावत।चापतचरणनिचँवरचलावत॥ यहिविधितहँवसुदेवकुमारै।करतकरतमीतहिसतकारै॥

बीतीनिशाभयोभिनसारा। कीन्ह्योंवंदीविरदपुकारा॥एकनिशाभरिहरिकेधामा।वसिवैकुंठहिसरिससुदामा॥ १२॥
जानिप्रभातविदाद्विजमाँग्यो।यदुवरवंदनकियअनुराग्यो॥मीतहिद्वारेभरपहुँचाई।पुनिपुनिमिलिफिरिगेयदुराई १३
चलोसुदामाअपनेधामा। दियोनधननेकहुश्रीधामा॥ नहींमीतसोंमीतहुमाँग्यो। चल्योभवनकहँलाजहिपाग्यो॥
दोहा–कृष्णचंद्रकोनिरखिकै, गईसकलसुधिभूलि॥ लहिसतकारहिमगनभो, चल्योभवनकहँफूलि॥१४॥
मारगमहँअसकरतविचारा। येहगमेंयदुनाथनिहारा॥ अरुब्रह्मण्यदेवकेऐने। देखीब्रह्मण्यतासचैने॥
सुनतरहेजोश्रवणविशेखी। सोअबआइआजुइतदेखी॥ मैंअतिमालिनदरिद्रभिखारी। ताहिमीतकहिमिलेमुरारी॥
मैंअतिपामरवेअतिपावन।सोइविचारिनातोमनभावन॥ मोहिरंककहँअंकलगायो।निजहाथनभोजनकरवायो॥१५॥
कहँदरिद्रमैंकहँश्रीकंता। कहांअल्पमैंकहाँअनंता॥ ऐसेहुँकहँऐसेयदुराई। लियोभुजनभरिहियेलगाई॥ १६॥
दोहा–बैठायोपरयंकमें, जिमिनिजजेठोभ्रात॥ हाँकनलागीचमरतहँ, रुक्मिनिछविअवदात॥
मारगथकोविलोकतमोहीं।हाँकनलगेविजनअतिछोहीं॥१७॥यदुपतिपाउदबावनलागे। पूजनकियोपरमअनुरागे॥
सबप्रकारकीन्हीसेवकाई।कहँमैअधमभाग्ययहपाई॥ इष्टदेवकहँजिमिजनजानै।तिमित्रिभुवनपसिमोकहँमानै॥१८॥
स्वर्गऔरअपवर्गहुकेरी। धरणिहुकीसंपदावनेरी॥ जिनपदपूजनइनकरमूला। तेममपदधोयेअनुकूला॥
अबमोहिरह्योकौनजगवाकी।करोमनहिंअभिलाषाजाकी१९यहनिर्धनजोअतिधनपाई।तौमोकहँपुनिकबहुँनध्याई॥
दोहा–यहीहेततेकृष्णप्रभु, करुणासिंधुमुरारि। मोकोंधनदीन्ह्योंनहीं, दीरघदयापसारि॥ २०॥
ऐसेमनमहँकरतविचारा। गयोरह्योजहँतासुअगारा॥ लख्योदूरितेनिजहिअवासा। कोटिसूर्यशशिकेरप्रकाशा॥
मणिमंदिरचहुँओरविराजैं।निजछबिसुरगृहकरहिंपराजैं२१बहुविचित्रअभिरामअरामा।कूजहिंकुंजनकोकिलग्रामा॥
अलिकुलसंकुलकुलिफुलवारी। सरसीसोहिरहींसुखकारी॥ विकसेसरसिजचारिप्रकारा। उत्पलपद्मकंजकह्लारा॥
मणिसमसोहतनिर्मलनीरा। सारसचक्रवाककीभीरा॥२२॥सजीवसनभूषणमृगनैनी। जहँतहँविचरिरहींपिकबैनी॥
दोहा–दिव्यविभूषणवसनयुत, अतिसुंदरसुकुमार। जहँतहँडोलहिंपुरुषबहु, जिनकोतेजअपार॥
कनकभवनमणिजटितसोहावैं। तुंगमेरुमंदरहिलजावैं॥ दिगपालनकीजौनविभूती। विश्वकर्माकीजोकरतूती॥
सोसबविप्रभवनमहँदीशै। कहाविभवजेमहिअवनीशै॥ दूरिहितेलखिविप्रअगारा। यहकाहैअसमनहिंविचारा॥
धौंशशिसूर्यउतरिमहिआये। धौंपावकइतज्वालबढाये॥ असकहिगयोजबहिंकछुनेरे।तबसुंदरमंदिरदृगहेरे॥
तबअसलागेकहनसुदामा। यहहैकौनभूपकोधामा॥ दियउजारिशठमोरिमडैया। कहाँगईधौंमोरिलगैया॥
दोहा–पुनिकछुनेरेजाइकै, जहाँरह्योनिजधाम। तहँदेखिमणिमंदिरहि, कियोतर्कतेहिठाम॥
यहकैसेयहिथलबनिगयऊ।धौंकोउखलमायारचिदयऊ॥२३॥असकहितहँजकिरहेसुदामा।गयेनजानिपरायेधामा॥
तहाँसुदामाकीप्रियवामा। निरख्योकंतहिशोकितछामा॥ उतरिअँटातेआतुरधाई। सुरसमसँगनरनारिलेवाई॥
मधुरसुरनबाजेसँगबाजैं। नाचततहँअप्सराविराजै॥ दिव्यवसनभूषणअँगरागा। मुखसोहतमनुशशीसरागा॥२४॥
चलतहोतनूपुरझनकारी।संगसहस्रनसखीसिधारी॥कढीभवनतेद्विजातियअमला।मनुविकुंठतेनिकसीकमला॥२५॥
दोहा–पतिव्रतापतिकोनिरखि, दृगआनँदजलढारि। मगनप्रेमपाथोधिमहँ, मंदहिमंदनिहारि॥
बारबारकरिपतिहिप्रणामा।मनसोंमिलीमानिमुदधामा॥२६॥रमासरिसनिजवामनिहारी।लह्योसुदामाआनँदभारी॥
मणिनजटितलखिसखिनसमाजा।विस्मितभयोमनहिंद्विजराजा।सखिनमध्यतियसोहतिकैसी।तारनमधिशशिकीछविजैसी
पुनिपतिकरकरकरिमनभाई। गेमणिमंदिरमुदितलेवाई॥जहँरत्ननकेखंभअनेका।महलमहेंद्रहुकीदुतिछेका॥२८॥
पर्यंकेफेनसरिससुखसेजू। प्रगटतजिनमहँशीतलतेजू॥ दंतिदंतमहँकनकखिचाये। सोहहिंसुखदपलँगकेपाये॥
दोहा–खणछप्परमणिमयलसैं, चारुचारिमणिदंड। चमरछत्रअरुविजनवर, जिनकीप्रभाअखंड॥ २९॥
कनकसिंहासनलसहिंविशाला।मृदुविस्तरेपरेछबिजाला॥ कोमलगिलिमगलीचागोरे।धसहिंजानुलोंपगजेहिठोरे॥
मुक्तझालरैंलइरैंलंबी। लसहिंचँदोवारतनकदंबी॥३०॥ स्वच्छफटिकफरसैंअतिफावैं। दीपतिभरींदेवालसुहावैं॥

मरकतमणिकीछबिहरिपाई।जोनैननकोअतिसुखदाई ॥ रतनदीपदीपतद्युतिवारे । मनहुँअवनिमहँउतरेतारे ॥३१॥
ललनासोहहिंसजीशृंगारे । जेरतिरंभामानउतारे ॥ यहिविधिअपनोविभवनिहारी । तहाँसुदामाभयोसुखारी ॥
दोहा-पुनिविचारअसमनकियो, विप्रसुदामादीन । करुणाकरश्रीकृष्णप्रभु, करिकरुणाअहदीन ॥
उनकीहैकरुणाअहेतुकी।दीननकीदुखदरननेतुकी ३२ मैंदारिद्रअतिरह्योअभाग्यो।कृष्णहिंलखतभाग्यसबजाग्यो॥
मैंनरह्योअसपावनलायक । पैसमरथसबविधियदुनायक ॥ रावहिंरंककरंकपुनिराऊ । करतरहैंअसनाथसुभाऊ ॥
हरिकटाक्षकोअहैप्रभावै । औरहेतकछुमनहिनआवै ॥३३॥ नहिंमुखकहहिनसन्मुखदेहीं।पदुरायनिजदाससनेही ॥
वासवसमविभूतिदैडारैं । तदपिलजायनसोहनिहारैं ॥ जैसेघननिशिमहँबहुवरषैं । भोरकृपिकलखिअतिशैहरषैं ॥
दोहा-तिमियदुवंशप्रशंसके, वरअवतंसउदार । करैंध्वंसदारिद्रवरु, ऐसेमीतहमार ॥ ३४ ॥
यदपिशक्रसंपतिप्रभुदेहीं । तद्यपिथोरमानिमनलेहीं ॥ थोरहुदेयजोदाससप्रीती । मानहिअमितमातकीरीती ॥
एकमूठिलैचाउरमेरे । चाबेप्रभुकरिप्रेमघनेरे ॥ यदुनंदनकेसरिसविशाला । कौनदूसरोदुनीदयाला ॥ ३५ ॥
ऐसेमेरेमीतहिमाँहीं । रहेमिताईमोरिसदाँहीं ॥ कौनिहुयोनिकर्मवशपाऊँ । तहौंकृष्णकोमीतकहाऊं ॥
यहीसदाअभिलाषहमारी।सोपुजवहिंकरिकृपामुरारी ॥ होयमीतदासनकोसंगा । सखाकथामहप्रेमअभंगा ॥३६॥
दोहा-दीनदरिद्रीजननकहँ, देतविभूतिनभूरि । फेरिमोहिंभजिहैनहीं, अतिशैधनमदपूरि ॥
धनमदभरिजनहरिहिभुलावैं।तातेअवशिनरककहँजावैं॥३७॥यद्यपिदियसंपतियदुराई।तदपिनदैहौंतिनाहिभुलाई ॥
असगुनिवामासहितसुदामा।कृष्णभक्तिरामाप्रदकामा ॥ करनलगेअतिप्रीतिलगाई।भोगेभोगपैनचितलाई ॥ ३८ ॥
देवदेवश्रीयदुपतिकेरे । इष्टदेवहैंविप्रघनेरे ॥ अपनोप्रभुविप्रनकहँजानै । तिनतेअधिकऔरनहिंमानै ॥ ३९ ॥
यहिविधियदुपतिमीतसुदामा।गावतश्रीगोविंदगुणग्रामा॥अमलज्ञानलीहतजिसंसारा।कृष्णचंद्रकेधामपधारा॥४०॥
दोहा-सुनिब्रह्मण्यसुदेवकी, ब्रह्मण्यतासुजान । लहैभक्तिभगवानमें, भवनिधितरैमहान ॥ ४१ ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्री
महाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे एकाशीतितमस्तरंगः ॥ ८१ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-रामकृष्णद्वारावती, वसतरहेइककाल । परतभयोसूरजग्रहण, प्रलयसरिसविकराल ॥ १ ॥
सुनेजोतिषिनमुखकीवानी ।सूरजग्रहणपरतजियजानी ॥ भारतखंडप्रजासुखछाई । कुरुक्षेत्रकहँगेअतुराई ॥ २ ॥
जहाँनिक्षत्रक्षमाकरिरामा । रचेरुधिरनवकुंडललामा ॥३॥ कीन्हेंयज्ञतहैंभगवाना । मुनिनवोलियुतवेदविधाना ॥
तहाँयज्ञकरिरामसुहाये । मनुक्षत्रिवधपापनशाये ॥ ४ ॥ सूरजगृहवसुपर्वविचारी । आईभीरजननकीभारी ॥
तहँश्रीउग्रसेनमहराजा । यदुवंशिनकीजोरिसमाजा ॥ श्रीबलभद्रकृष्णकेसंगा । कुरुक्षेत्रकहँचल्योअभंगा ॥
दोहा-श्रीवसुदेवअक्रूरहू, आदिकयदुकुलवृद्ध । कुरुक्षेत्रकहँगमनकिय, ज्ञानविज्ञानसमृद्ध ॥ ५ ॥
जेनिरखतनितयदुकुलकेतू। तेनिजपापछुडावनहेतू ॥ सूर्यग्रहणपरतशुभलेखी । कुरुक्षेत्रकहँजातविशेखी ॥
यहअचरजदेखहुरेभाई । कृष्णकलाकछुकहीनजाई ॥ तहाँप्रद्युम्नसांबबलवाना । गदशुकसारनचंद्रसुजाना ॥ ६ ॥
चढिचढिरथनचलेधनुधारी । रामकृष्णकेसंगसुखारी ॥ चलीसैनकछुवरणिनजाई । मनहुपौनपूरुबमेघवाई ॥
कृतवर्माअनिरुद्धधनुर्धर । रहेद्वारिकामहँरक्षतघर ॥ राजैरथमनुदेवविमाना । तरलतरंतसमूहसुहाना ॥ ७ ॥
दोहा-मंडितमेदुरमेघसम, मत्तमतंगअथोर । नादकरहिअतिजोरसो, भरहिशोरचहुँओर ॥
तहँपैदरकीभीरविराजी । विद्याधरनिकेरिमनुराजी ॥ सोरहसहसआठशतयेकू । हरिरानीतियऔरअनेकू ॥
चढींनालकीरतनजालकी । भरींप्रीतवसुदेवलालकी ॥ चलींकृष्णकेसंगसिधारी । जेरतिरंभागर्वउतारी ॥

चलीदेवकीआदिसयानी । औरहुउग्रसेनकीरानी ॥ पहिरेसबभटकंचनमाला । लियेढालकरवालकराला ॥ ८ ॥
दिव्यविभूषणवसनसँवारे । कवचकुंडकरत्राणहुधारे ॥ यदुवंशीसोहतमगमाहीं । मानहुअवनिदेवदरशाहीं ॥

दोहा—कुरुक्षेत्रयहिविधिगये, मज्जनकरिव्रतकीन ॥९॥ कंचनभूषणपटवलित, गऊद्विजनकहँदीन ॥

पुनिभृगुपतिकेकुंडनमाहीं । कियमज्जनयदुवंशतहाँहीं ॥१०॥ विप्रनबहुविधिअन्नखवाई।दियेदानअतिप्रीतिबढाई॥
देतदानअसबचनउचारे । कृष्णचरणरतिहोयहमारे॥पुनिविप्रनसोंशासनमाँगी । भोजनकियेकृष्णअनुरागी॥११॥
पुनिघनतरुजहँशीतलछाया । सलिलसुधासममोदनिकाया॥तहँडेराबहुभाँतिलगाई । बसतभयेयदुपतिसुखछाई॥
तहँयदुवंशिनदेखनहेतू । बंधुसुहृदमित्रहुसुखसेतू ॥१२॥मत्स्यउशीनरकोसलराजा । कुरुविदर्भसृंजयससमाजा॥

दोहा—केरलकेकैकुंतिनृप, अरुकांबोजनरेश । अरुआनर्तनृपमद्रके, जेहरिदासहमेश ॥ १३ ॥

औरहुशत्रुमित्रइकवारा । हरिकेदर्शनहेतअपारा ॥ यदुवंशिनकेशिविरसिधारे । प्रभुहिंविलोकतभयेसुखारे ॥
तहँलीन्हेंवहुगोपसमाजा । आयोनंदअनंददराजा ॥ बहुदिनतेहरिदरशनप्यासी । गोपिहुआईपरमहुलासी ॥
कौरवपांडवहूसबआये । औरहुभूपबहुतसुखछाये ॥१४॥ निरखिपरस्परआनँदबाढे । मिलतभयेभुजभरिभरिगाढे॥
ढरेमदेजलबारहिंबारा । रह्योनतनमहँतनकसँभारा ॥ पुलकावलिसिगरेतनछाई । गद्गदगरोगिरारुकिजाई ॥

दोहा—कमलसरिसविकसेवदन, पुनिपुनिप्रमुदितधाइ । यथायोग्यसबजनमिलहिं, सोसुखकहोनजाइ ॥ १५ ॥
नारींनारिसोंललकि, निरखिमंदमुसक्याइ । मिलहिपरस्परभुजनिभरि, आनँदअंबुबहाइ ॥
प्रगटभयोतहँप्रेमको, पूरणपारावार । कृष्णचंद्रकेदरशते, बाढतभयोअपार ॥ १६ ॥

पुनिबालकवृद्धनकहँवंदे । तेऊआशिषदियेअनंदे ॥ पूँछिपरस्परपुनिकुशलाई । कृष्णकथावरणैसुखछाई ॥ १७ ॥
भगिनिभ्रातसुतपितहिनिहारी । औरहुभ्रातनकीवरनारी॥तिमियदुपतिकोवदनविलोकी। तहाँपृथानैननजलरोंकी॥
वसुदेवहिकेपायँनपरिकै । बोलीवचनकरुणरसभरिकै ॥ १८ ॥

कुंती उवाच ।

मानहिंहमअभागनिजभाई । जोतुमहूँदियसुधिबिसराई ॥ विपतिपरीअतिऊपरहमारे ।तबहुनकछुसुधिभईतिहारे॥
दूतहुभरभेजेहुनहिंभाई । औरबातकीकहाँचलाई ॥ १९ ॥

दोहा—सुहृदज्ञातिसुतभ्रातपितु, सुजनऔरअनुकूल । तासुसुरतिकरतेनहीं, जाहिदैवप्रतिकूल ॥

पृथावचनसुनिपरमदुखारी । कहवसुदेवनैनभरिवारी ॥२०॥

वसुदेव उवाच ।

वृथापृथामोहिंदोषलगावै । सबकहँईश्वरनाचनचावै ॥ चलतनअपनोबलजगमाहीं । तातेदोषकोहुकोनाहीं॥ २१॥
कंसभीतितेगयेपराई । हमसबदशदिशिरहेलुकाई॥ भाग्यवशातअबहिंघरआये । भाग्यवशातमोदअतिपाये॥२२॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिदोउभगिनीअरुभ्राता । कैसंवादलहेसुखत्राता ॥ पुनिजेभूपतिडेरहिआये । कृष्णदरशकरिअतिसुखपाये॥
तिनकहँउग्रसेनमहराजा । अरुवसुदेवहुसहितसमाजा ॥

दोहा—विविधभाँतिसत्कारकरि, कुशलप्रश्नकरिभूरि । साँझजानिकीन्हीबिदा, बसेआपुमुदपूरि ॥ २३ ॥

भोजजानिहरिदरशनहेतू । आयेरमानिकेतनिकेतू ॥ भीष्मदेवअरुद्रोणाचारज । नृपधृतराष्ट्रऔरकृपचारज ॥
गांधारीदुर्योधनभूपा । अपनेभाइनसहितअनूपा ॥ पांडुपुत्रदारनयुतआये । कुंतिहुआईमोदबढाये ॥
संजयअरुविदुरहुमतिवाना॥२४॥कुंतिभोजअरुशल्यसुजाना॥नग्नजीतअरुभूपविराटा।भीष्मकद्रुपदठटेअतिठाटा।
पुरुजितधृष्टकेतुकाशीशा । तिमिदमघोषहुचेदिमहीशा॥२५॥मैथिलकैकैमद्रभुआला । युधामन्युत्रैगर्तविशाला॥

दोहा—बाह्लीकभूरिश्रवा, सोमदत्तबलवान ॥ २६ ॥ धर्मभूपकेमित्रजे, औरहुभूपमहान ॥

हरिदरशनहितलैसँगनारी।गयेकृष्णकेशिविरसुखारी२७आवतनिरखिसकलमहिपाला।रामकृष्णकछुबढितेहिंकाले॥
सबकोअपनेशिबिरलेआये। यथायोग्यआसनबैठाये॥ मधिमहउग्रसेनमहराजा। वामरामदहिनेयदुराजा॥
कृष्णदहिनिदिशिपांडुकुमारा। भीष्मद्रोणकृपसबैउदारा॥रामवामदिशिप्रद्युम्नादिक। दुर्योधनभटअरुकरणादिक॥
लागिगयोजबअसदरबारा। तबउठियदुपतिरामउदारा॥ निजकरसबकेअतरलगाये। दियेसबनतांबूलसुहाये॥
दोहा-शीतलसुरभितअतिसुखद, मणिभाजनभरिनीर। रामकृष्णअतिप्रीतिसों, सींचेसबनशरीर॥ २८॥
पुनिबैठेनिजनिजसिंहासन। तहाँसबैनृपभरेहुलासन॥ उग्रसेनसोंसबइकबारा। भीष्मादिकअसवचनउचारा॥
उग्रसेनतुमधन्यधन्यहौ। महिमहिपनकेअग्रगण्यहौ॥ सफलजन्महैजगततिहारो। तुवसमाननहिआननिहारो॥
योगिनकोजेकबहुँलखाँहीं।तिनहरिकोतुमलखौसदाँहीं॥२९॥जासुकथाजगपावनकरनी।बारहिबारजाहिश्रुतिवरनी॥
जाकोचरणोदकहैगंगा। जासुवचनहैशास्त्रअभंगा॥ यद्यपिकालविवशयहधरणी। रहीप्रजानिमहादुखकरणी॥
दोहा-अबसोइपरसतकृष्णके, सुंदरचरणसरोज। अखिलअर्थइमसबनकहँ, बर्षतहैंप्रतिरोज॥ ३०॥
तेप्रगटेहरितुवग्रहमाँहीं। करहिंसदासबकारजकाँहीं॥ तिनकोदर्शनपर्शनकरहू। संगगमनकरिअतिमुदभरहू॥
बैठिएकआसनबतराहू। बहुविधिभोजनयकसँगखाहू॥ तिनतेहैंसंबंधअनेकै। बसहुप्रमोदितभवनहियेकै॥
नरकहुस्वर्गनिवारनहारे। निजपदकेपहुँचावनवारे॥हैजिनकोहरिसंगसदाँहीं॥तिनकोभाग्यवरणिकिमिजाँहीं॥३१॥

श्रीशुक उवाच।

ऐसेवचनभूपसबभाषी। ह्वैकैविदाकृष्णउरराषी॥ करिवंदनसबशिलिरिसिधारे। उग्रसेनकहँधन्यविचारे॥
दोहा-तहँशकटनमेंसबचढे, मित्रनदेखनहेत। नंदगोपआवतभये, गोपिनगोपसमेत॥ ३२॥
यदुवंशीलखिआवतनंदे। लियआगूचलिसहितअनंदे॥ मृतशरीरजिमिप्राणहिपाये। उठैतैसहीसबउठिधाये॥
भरिभरिअंकमिलेमुदभारी।बहुतदिननमहमीतनिहारी॥३३॥पुनिवसुदेवनंदकहँधाई।मिलतभयेतनसुधिबिसराई॥
सुमिरिकंसकृतकठिनकलेशू।तिमिगोकुलनिजबालनिवेशू॥आनकदुंदुभिप्रीतिबढाई।मिलेनंदकहहगजलछाई३४॥
मिलेफेरिहरिबलव्रजराजे। अभिवंदनकिन्ह्योंसुखसाजे॥ प्रेमविवशकछुबोलिनआयो। गद्गदगरोहगनजलछायो॥
दोहा-फेरियशोमतिकेपगन, परेकृष्णअरुराम। अंकहिलियोउठाइसो, चूमिवदनअभिराम॥ ३५॥
बारबारनैननजलढारी। कृष्णहिलखितनसुरतिविसारी॥ हरिबलनंदयशोमातिकाहीं। बैठायोसिंहासनमाहीं॥
नंदयशोमतिहरिअरुरामैं। बैठायोनिजअंकललामैं॥३६॥ पुनिरोहिणीदेवकीआई। मिलीयशोमतिकोसुखछाई॥
सुमिरिमित्रतापूरबकेरी। बहीहगनजलधारघनेरी॥ पुनिजसतसकैधीरजधारी। रोहिणिदेवकिगिराउचारी॥३७॥
भूलतितेहिरावरीमिताई।कहँलौंवरणैआपबढाई।शक्रहुसमलहिविभौअपारा।करिनसकहिकछुप्रतिउपकारा॥३८॥
दोहा-थातीसमतुवघररहे, येदोउबालहमार। जिमिपलकनकेवोटमें, नैनलहतसुखसार॥
यशुमतियेबालकतवपाले। तुम्हरिहिदयादनुजबहुघाले॥ तुम्हहीइनकहँपोषणकीन्हें। भाँतिअनेकनकेसुखदीन्हें॥
जातकर्मसबआपकराये। आपहिकेयेबढेबढाये॥ यशुमतिहैंयेबालतिहारे। नाममात्रकेअहैंहमारे॥
जेसज्जनजगमेंमतिमानै। तेआपनपरायनहिजानैं॥ ३९॥

श्रीशुक उवाच।

सुनिदेवकिरोहिणिकीवानी। मोदितभईनंदकीरानी॥ पुनिगोपीसिगरीतहँआई। कृष्णहिनिरखिपरमसुखछाई॥
आपुसमहँअसभाषनलागी। सिगरीविरहज्वालतनपागी॥
दोहा-जिनहियरनकेबीचमें, परेकसकतेहार। तिनहियरनकेबीचमें, परिगेहायप्रहार॥
सवैया-जबतेव्रजतेव्रजराजव्रजेतबतेसबईशैमनायथकी। जसहूँतसहूँइतदूरलोआयगोपालकोलोइतलायतकी॥
तबहूँनहिंदेखनपाउतीहैंइनआँखिनकोकरिएकटकी। विधिनिर्दईयेदईजैनदईपलकैंकलपैंसीपुरैंदुखकी॥

अबजाननपैहौकहूँनँदनंदनआँखिनसोंगहिल्यायहिये। निजनेहकीडारिजँजीरपगैंउरकोठरीराखिहैंबंदकिये॥
छलियाछलिहैपुनिकैइतओसिहिऔरउपायनयाहिलिये। दुखसागरकोनवृथापैरबोहैनटनागरहीनवृथाहैजिये॥
दोहा–असकहिहरिमूरतिसुखद, नैननमूँदिहियलाय। हरिछबिमेंछाकीखड़ी, योगिहुजोनदेखाय॥ ४०॥
पुनितिनकोइकांतलैजाई। मिलेललकिगोपिनयदुराई॥हँसिहँसिकुशलप्रश्नबहुकीने। ऐसेवचनकहेरसभीने॥४१॥
कवहुँसखीसुधिकरहुहमारी। तुमसबमोहिंप्राणहुतेप्यारी॥ मैंनिजदासनकारजहेतू। मथुरहिगवनेहुछोडिनिकेतू॥
तहँविलंबलगिगईमहाई। वस्योद्वारिकामहँपुनिजाई॥ तहँहरिकियोउपद्रवघोरा। शरनमारितिनकोशरतोरा॥
तातेतहाँबहुतदिनबीते। अबलोंनहिंकारजतेरीते॥ ४२॥ चूकमाफकीजैसबप्यारी। मैंयहभूलशीशनिजधारी॥
दोहा–ईशकरावतहैसदा, दुखसुखकेरोभोग। सोइमित्रनकेबीचमें, करतसँयोगवियोग॥ ४३॥
जैसेघनतृणतूलरज, पवनप्रवेगउड़ाइ। कहँकोकहँलैजातहै, कहँकहँदेतमिलाइ॥ ४४॥
मोरभक्तिजगजननको, प्यारिप्रदकल्याण। पैजोमोमहँप्रीतिअति, सोस्वरूपममजान॥ ४५॥
बाहिरभीतरव्यापतहौं, विश्वमाहवपुधारि। जिमिअकाशअवनीअनिल, अनलअंबुसुकुमारि॥४६॥
जिमिजडमेंचेतनरहत, सूक्ष्मवपुषव्रजनारि। तिमिजडचेतनदोउरहत, मोमहँलेहुविचारि॥४७॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–हरिमुखतेसुनिकैतहाँ, यहआतमउपदेश। प्रेममगनतहँगोपिका, बोलींछोडिकलेश॥ ४८॥
सवैया–ज्ञानअगाधकेजेबहुसाधुतेऊजेहिंपावनध्यानहिंधारे। भूरिभयानकजोभवकूपतेदीननकोबहुबारउधारे॥
श्रीरघुराजकरैंविनतीसुनियेंचितदैप्रभुनंददुलारे। तेईसरोजसेरोजरहैंपदयेयुगरावरेहीमेंहमारे॥ ४९॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे ब्यशीतितमस्तरंगः॥ ८२॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–पुनिगोपिनसमुझाइकै, बिदाकरीप्रभुरैन। करिप्यारीसुखसेजमें, कियोविहारीसैन॥
भोरभयेदिनकरउये, उठिप्रभुकियनितकर्म। तहँआयेहरिदरशहित, भाइनयुतनृपधर्म॥
आगेचलितिनकोलियो, पुत्रनयुतयदुराज। करगहिल्यायेमधिसभा, जहँयदुवंशसमाज॥
कनकासनआसीनकरि, करिबहुविधिसतकार। सुहृदनयुतपूँछेकुशल, श्रीवसुदेवकुमार॥ १॥
जबप्रभुसोंपूँछेगये, पांडुपुत्रमतिवान। कहतभयेकरजोरिकै, उरआनँदनसमान॥ २॥

पांडवा ऊचुः।

सवैया–रावरेदासनकेमुखतेनिकसीतुवकीरतिकीसुधाधारा। कर्णकिअंजलीतेकबहूँतेहिपानकरैंजेसप्रेमअपारा॥
तेउजनैनिकटैविकटैनअमंगलजातअमोलअगारा। हैंहमतोतुम्हरेपगसेवकपूँछतकाहहोक्षेमहमारा॥ ३॥
सोरठा–तीनिअवस्थाजौन, होतनहींसोआपकी। अछैज्ञानमुदभौन, सबथलमेंव्यापितरहौ॥
कालविलोपितवेद, तिनकीरक्षाकरनहित। अवनीआइअखेद, भूभारहिसंहरतहौ॥
ऐसेतुमयदुनाथ, सज्जनकेसाँचेसुपति। तुवपदनावहिमाथ, दीनजानिकीजेकृपा॥ ४॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–अससंभाषणकेकरत, द्रुपदसुतासुकुमारि। हरिरानिनकेदरशहित, लैबहुकुरुकुलनारि॥
कृष्णशिबिरआवतभई, भूषणवसनहिठानि। ताहिनिरखिचलिकैलयो, रुक्मिणिआदिकरानि॥

द्रौपदिकोसिंहासनहि, सहितप्रेमबैठाइ। करतभईसत्कारसब, निजनिजहाथलगाइ॥
घेरिचारिहूँओरते, बैठीयदुपतिरानि। कुशलाईपूँछनलगी, सिगरीमधुरीबानि॥
पांचालीतहँमुदितह्वै, कहिबहुविधिकुशलात। हरिरानिनसोंजोरिकर, पुनिपूँछीयहबात॥ ६॥

द्रौपद्युवाच।

स०-रुक्मिणिभद्रेसुजांबवतीसतिभामाहैकोसलराजकुमारी।कालिंदिरोहिणिलक्ष्मणशैब्यासुनौसबऔरहूहैंहरिनारी
जाविधितेतुम्हैंव्याह्योगोविंदकहोसबमोपैकृपाकरिभारी। जानोसबैतुममेरोस्वयंवरतातेकहीमैंकथानहिंसारी॥
दोहा-पांचालीकेवचनसुनि, तहँरुक्मिणिमुसक्याय। कहनलगीनिजव्याहकी, कथापरमहर्षाय॥ ७॥

रुक्मिण्युवाच।

कवित्त-घोरधनुधारेमगधेशआदिबलवारे, चेदिपहँकारेमेरेहरैकोसिधारेहैं।
हैंवरहजारेत्योंमतंगनकतारेबहु, स्यंदनसवारेगयेगिरिजाअगारेहैं॥
रघुराजतहाँवसुदेवकेदुलारेवीर, मोरिडारेमदहिंमहीपनकेभारेहैं।
जैसेसिंहजंबुककेमध्यतेलैआवैभाग, तैसेमोहिंलैकैनाथद्वारिकापधारेहैं॥
दोहा-ऐसेश्रीयदुनाथके, मंजुलचरणसरोज। मेरेपैकरिकैकृपा, बसैंहियेमहँरोज॥८॥

सत्यभामोवाच।

दोहा-छविधामाबोलतभई, पुनिसतिभामाबैन। अभिरामाकृष्णासुनौ, कथाललामाऐन॥
कवित्त-सूरजकीकृपापायसत्राजितमणिल्याय, नाथकोनदीनीजायदीनीनिजभाईको।
सोचढ़ितुरंगगयोकाननशिकारहेत, मारिताहिसिंहगयोकंदरामहाईको॥
कृष्णहीप्रसेनैहतेमणिहेतजनभाषे, जानिकैकलंकजायजीतिऋक्षराइको।
मणिल्यायनाथपुनिदीनीमेरेपिताहाथ, देखियदुवंशीयशगायेयदुराईको॥
सोरठा-मेरोपितागलानि, मानिमोहिंमणितेसहित। दियोविवाहहिठानि, यदुपतिकोअतिहरषिकै॥ ९॥
दोहा-पांचालीसोहरषिकै, जांबवतीछविखानि। कहतभईनिजव्याहकी, कथाश्रवणसुखदानि॥
कवित्त-नाथकोविलोकितहीमेरोपिताऋक्षराज, दिवससताइसलोंकीन्ह्योंयुद्धभारीहै।
गातगातकृष्णमुष्टिवज्रसोंनिपातपात, सहिनसकाततातत्वयोंविचारीहै॥
सोईरघुराजरघुराजयदुराजसाँचो, लंकराजकोसमाजसंयुतसँहारीहै।
ऐसेठीककैकैनाथहाथमणिधैकैमोहिं, दीन्ह्योमुदम्वैकैज्वैकेरूपमनहारीहै॥
सोरठा-अहैमोरियहआस, दासीरमानिवासकी, भईरहौंतिनपास, सदाजन्मजन्मांतरे॥ १०॥
दोहा-द्रुपदसुतासोपुनिकह्यो, कालिंदीसउछाह। सुनहुश्रवणदैकैकथा, यथाभयोममव्याह॥

कालिंद्युवाच।

सवैया-कालिंदीमेंतपमेंकरतीरहीबीसबिसेबरिबेकोविहारी। आनँदकंदसुपांडुकेनंदगोविंदसिधारेतहाँह्वैशिकारी॥
आपनेपायनपावनहेतकलेशितदीनदयालनिहारी। भेजिसखाकोबोलायचढायरथैपुरल्यायकरीनिजनारी॥
सोरठा-पांचालीतैंजानु, ताकीमैंगृहदासिका। प्रेमसुधाकरिपान, निशिदिनछविछाकीरहौं॥ ११॥
दोहा-भद्रापुनिबोलीवचन, सुनहुद्रौपदीरानि। मोहिंव्याह्योयहभाँतिते, श्रीयदुपतिगुणखानि॥
कवित्त-मेरेबंधुरचिकैस्वयंवरविचारचोमन, भूपदुरयोधनकोदेउँयाकुमारीहै।
ताहीसमैसूरनकेमध्यमेंसभासिधारि, मेरोपाणिपकरिकैहरचोगिरिधारीहै॥
श्वाननसमानमहिपालनकोमोरिमद, सिंहसोनिकारिल्यायोद्वारिकामझारीहै।

तासुपदधोवनमेंनित्तमुखजोवनमें, जनमजनमबाढैप्रीतिगेहमारीहै ॥ १२ ॥

दोहा–पुनिसत्यावोलीवचन, सुनपांचालिपियारि । अवधपुरीमहँव्याहकिय, जेहिविधिमोरमुरारि ॥

कवित्त–तीक्षणविषाणवारेसातवलवारेबैल, भूपवलजाननकेहेतुपितुकेरहे ।

अवधपुरीमेंजायइकसाथमिजहाथ, नाथिनाथविनहीप्रयासतिनकोगहे ॥ १३ ॥

मोहिंव्याहिलैकैचलेमारगमेंरोकेभूप, मारिसहसानवाणइकछिनमेंदहे ।

ऐसेयदुनंदकेपदारविंदकेरीरहौं, दासीमैंसदाहींकरौंसेवामोदकोलहे ॥ १४ ॥

दोहा–फेरिमित्रविंदाकह्यो, सुनुद्रौपदीसयानि । जेहिविधिव्याह्योकृष्णमोहिं, सोमैंकहौंबखानि ॥

सवैया–मोरपिताअतिशयमतिमानहरीपरमोरिरुखैअनुमानी ।

सादरश्रीयदुनाथबोलायविवाहकियोधनिभाग्यकोमानी ॥

दाइजमेंचतुरंगनीसैन्यसखीनसमाजदियोछविखानी ॥ १५ ॥

कर्मवशैजेहियोनिभ्रमौंतहँमोहिंमिलैप्रभुशारँगपानी ॥ १६ ॥

सोरठा–गुनिलक्ष्मणासयानि, द्रुपदीकेगर्वितवचन । लागीकहनबखानि, ममविवाहसिगरीकथा ॥

लक्ष्मणोवाच ।

अबसुनुद्रुपदीमोरविवाहू । जोसुनिपैहौपरमउछाहू ॥ बृहत्सेनऐसोजेहिनामा । सोमेरोपितुअतिमतिधामा ॥

तासुभवनजबरह्योकुमारी । तबनारदमुनिजायनिहारी॥मोहिंसुनायतहँमुनिमतिमाना । करनलगेगोविंदगुणगाना॥

सुनिमाधवलीलामनहारी । मैंलियअपनेमनहिंविचारी ॥कीतोमैंयदुपतिकहँवरिहौं । नातोज्वलनज्वालमहँजरिहौं॥

जिमिसबलोकनपालविहाई । रमारमापतिवरचोसुहाई ॥१७॥ यहप्रणजानिमोरपितमेरो । करिकैमोपरप्रेमघनेरो॥

दोहा–रच्योस्वयंवरतहँमुदित, मीनलक्षलटकाय । द्रुपदनगरमहँजसरह्यो, तैसहिदियोबनाय ॥ १८ ॥

ताहूतेयहकठिनविशेषी । परैनबाहेरहूँतेदेषी ॥ सोतोगमनथंभढ़िगकीन्हें । परतरह्योलखिअतिदृगकीन्हें ॥

यहतोखंभनिकटहूजाई।परतरह्योनहिंमीनलखाई॥खंभनिकटघटजलदृगदीन्हें।परतरह्योलखिअतिश्रमकीन्हें ॥१९॥

सुनतस्वयंवरपरमअनूपा । आयेपितुनगरीबहुभूपा ॥ अस्त्रशस्त्रकेजाननहारे । रहेजगतमहँजेबलवारे ॥

बलीसुभटसँगलियेहजारन।आवतभयेसकलममकारन॥२०॥तिनकोममपितुपरमउदारा।यथायोगकीन्ह्योंसतकारा

दोहा–पुनिसबभूपनहरिसहित, सभामध्यपितुआनि । करिपूजनबोलतभये, ऐसेवचनबखानि ॥

जोकोउजलतकिमीनहिमारी । सोव्याहीयहसुताहमारी ॥ असकहिधनुषबाणमँगवाई । सभामध्यदियभूपधराई ॥

बलीभूपबहुउठेसुखारी । लगेचढ़ावनतेधनुभारी ॥ पैप्रणिचानींहंचढीचढाई । तवसंचाहिमधिधरेलजाई ॥ २१ ॥

पुनिभूपतिकोउजोरदेखायो।गुनहिरोशकरिगोसमिलायो ॥ रुकिनसक्योगुनतहँछुटिगयऊ।सोलगिमहिनृपगणगिरिगयऊ॥

जरासंधअरुनृपशिशुपाला । अरुअंबष्टभूपविकराला॥धायधनुषदुतहाथउठाई । करिअतिशयबललियेचढाई॥२२॥

दोहा–पैनसाजिशरतेहिसके, सकेनखैंचिकमान । तबपुहुमीमेताहिधरि, बैठेआयलजान ॥

पुनिदुर्योधनअरुभटभीमा । उव्योकरनआशुहिबलसीमा ॥ धनुषचढायसाजिशरभारी । चहैंचलावनमीननिहारी ॥

तिनकोदेखिपरचोनहिंमीना।भ्रमतरह्योअतिवेगहिंभीना॥तबतीनिहुभटगयेलजाई।बैठेनिजनिजआसनआई ॥२३॥

पुनिआयोअर्जुनधनुधारी।विनप्रयासधनुमहँज्याडारी॥साजिविशिखजलमहँलखिमीना।तकिकैतुरतबाणतजिदीना।

मीनहिछैशरगयोअकाशा । कह्योननेकहुभयोनिराशा॥ बैठोपुनिआसनमहँजाई । अर्जुनहूकछुरह्योलजाई ॥२४॥

दोहा–यहिविधिजबसिगरेनृपति, बैठगर्वगमाय । तबमुकुंदमोदितउठे, मंदमंदमुसक्याय ॥

सहजहिलीन्ह्योंधनुषचढाई । पुनिसायकतेहिमाहँलगाई॥रह्योमुहूरतअभिजितनामा।जामेंसिद्धहोतसबकामा॥२५॥

जलमहँनिरखिमीनयदुराई।तुरतताहितकिबाणचलाई॥लागतबाणमीनकटिगयऊ।तुरताहिगिरतभूमिमहँभयऊ २६॥

तहँअकाशमहँबजेनगारे । जयहरिजयहरिदेवउचारे ॥ रहेधरामहँजेहरिदासा । तेऊजयजयवचनप्रकासा ॥

सुमनससुमनसुवर्षनलागे। कृष्णचंद्रचरणनअनुरागे॥ गावनलगेसकलगंधर्वा। मुदितअप्सरानाचहिसर्वा॥ २७॥

दोहा-मत्स्यबेधलखिकृष्णकर, हौंअतिआनँदपाय। सखिनसहिततहँतेउठी, धनिनिजभाग्यगनाय॥

सवैया-केशनमल्लिकामोतीगुहेकरतीकलनूपुरकीझनकारी। भूरिविभूषणअंगनिधारिपितांबरकीपहिरेशुभसारी॥

कुंचितकुंतलकुंडलसंयुतलोलकपोलनमेंछबिकारी। पानिमेंमंजुलहैमणिमालसभामधिमंदहिमंदसिधारी॥ २८॥

देखिकैश्रीयदुनाथकोआननकिंचितमैंहूकटाक्षचलाई। लाजभरीअनुरागपगीतहँनेसुकहीमुखमेंमुसकाई॥

देखतहीसबराजनकेयदुनंदनकेढिगमेंदुतजाई। श्रीनँदलालकेकंठविशालमैंहौंमणिमालदईपहिराई॥ २९॥

दोहा-तहाँशंखभेरीपटह, अरुमृदंगकरनाल। एकबारबाजेसकल, बाजेमधुरविशाल॥ ३०॥

मोहिडारतहरिगलजयमाला।देखिनसकेतहाँमहिपाला॥हरिकहँधरनहेतसबधाये।मोहिछडावनकहँचितचाये॥३१॥

तबदारुकतुरतैरथल्यायो। तामेंमोकहँनाथचढायो॥ खडेभयेफिरिकैधनुलैकै। महिपालनघालनमनकैकै॥३२॥

तबदारुककहँप्रभुसुनिर्लाजे। चढिरथशत्रुनसँगयुधकीजे॥ तबरथमहँचढिगयेमुरारी। दारुकसोंअसगिराउचारी॥

चलहुद्वारकेकैअतुराई। इनभूपनमेंदेतभगाई॥ सूततुरंगनकियेइशारा। निकसिगयोरथसैनिमँझारा॥

दोहा-जिमिमतंगगणमध्यते, निकसतहैमृगराज। तिमिभूपनकेमध्यते, निकसिचलेयदुराज॥ ३३॥

तहँभूपसबकोपहिछाये। मारगमहँरोकनकहँधाये॥ छोडेआयुधविविधमहाना।जिमिरोकहिसिंहहिसबश्वाना॥३४॥

तबशारंगशरनकीधारा। परीमहीपनसैनमँझारा॥ भयेखंडकेहुकेभुजदंडा। चरणकरनलागिशरनप्रचंडा॥

केतेमरेगिरेमहिमाँहीं। भागतभेकेतेघरकाँहीं॥ ३५॥ यहिविधिहरिसबभूपनजीती। आयेयदुनगरीयुतप्रीती॥

फहरिरहेजहँविविधनिशाना। जिनकीछायाभानछिपाना॥ ठौरनठौरनतोरनराजैं। चित्रविचित्रअवासविराजैं॥

दोहा-नरपुरसुरपुरनागपुर, ढूँढिलेहुसबठौर। यदुपुरसमशोभानहीं, यहमतमानहुँमोर॥

तहँप्रभुप्रविशेअतिसुखमाँहीं।जैसेभानभौनकहँजाहीं॥३६॥पुनिमेरोपितुअतिबलवाना।सुहृदबांधवनबहुसनमाना॥

वसनविभूषणअनुपमदीन्हें। सज्याआसनरतननवीने॥३७॥पुनिदासीतुरंगमातंगा। रथअरुआयुधअमितअभंगा॥

यदुपतिपैदाइजपठवायो।जनमआपनोसफलबनायो॥ ३८॥ सोयदुनंदनकीमैंदासी। चरणकमलसेवनकीआसी॥

चाहौंमैंनविभूतिमहाई। रहैंकृपाकीन्हेंयदुराई॥ असकहितहँलक्ष्मणासुहाई। मगनभईअतिआनँदछाई॥ ३९॥

दोहा-पुनिबोलींसोरासहस, हरिरानीछबिखानि। भयोहमारोब्याहजस, सुनुद्रौपदीसुजानि॥

दिशाविजयभौमासुरकीन्ह्यो।बहुराजनकन्याहरिलीन्ह्यो॥ तहाँगरुडचढिगयोगोविंदा।सदलभौमकहँकियेनिकंदा॥

निजपदकीगुनिआसहमारी।हमसबकोकीन्ह्योनिजनारी॥पूरणकामयदपियदुराई।तद्यपिकीन्हीकृपामहाई॥ ४०॥

तिनप्रभुकेपदकीहमदासी। रहैंसर्वदाहियेहुलासी॥ औरआशनहिंकछुउरराखी। येकबातकीहैंअभिलाखी॥

सोसुनुद्रुपदसुतासुकुमारी।सभामध्यहमकहहिंपुकारी॥ यद्यपिअहैतेरऊजानी। तदपिप्रीतिलखिकहौंबखानी॥

दोहा-सोईसतसोईसुखद, सोईउदधिसँसार। पारकरनबारोसही, सज्जनकोसुखसार॥

कवित्त-पुहुमीप्रमोदवर्गस्वर्गत्योंअखर्वब्रह्म, पदअपवर्गहूँकोनेकुनहिंचाहैंहैं॥ ४१॥

वृंदावनविपिनसुगौवनचरावतमें, लपटिरहीहैंजौनत्रिनतरुमाहैंहैं॥

विपुलपुलिंदीलह्योयदुराजपदरेणु, गोपिकारमाकेजाहिलेनकीउमाहैंहैं॥

सोईपदकंजमनरंजनकीरेणुपाय, शीशमेंलगायनिजभाग्यकोसराहैंहैं॥ ४२॥ ४३॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे त्र्यशीतितमस्तरंगः॥ ८३॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-गांधारीअरुद्रुपदजा, औरसुभद्राजोय। अरुव्रजगोपीजेसबै, अरुनृपरानीसोय॥
हरिरानिनकोसुनतविवाहा।अचरजगुनिअतिलह्योउछाहा॥हरिपदकियोपरमअनुरागा।गुणिसंबंधगुन्योधनिभागा॥
सबकेबहनलग्योदृगनीरा।सबकोपुलकितभयोशरीरा॥ १॥ यहिविधिहोततहाँसंवादा।नरनारिनपावतअहलादा॥
कृष्णरामदर्शनकेहेतू।आयेसबमुनीशतपसेतू॥ २॥ देवलच्यवनदेवऋषिव्यासू। विश्वामित्रअसितमतिरासू॥
शतानंदअरुभारद्वाजा॥३॥परशुरामयुतशिष्यसमाजा॥गालवभृगुवसिष्ठश्रुतिधारी।कश्यपअत्रिपुलस्त्यसुखारी॥
दोहा-मार्कंडेयबृहस्पतिहु, ॥४॥ एकतद्वितत्रितजौन। सनकादिकअरुअंगिरा, अरुअगस्त्यमतिभौन॥
याज्ञवल्क्यअरुवामहुदेवा। औरहुजेहरिकारकसेवा॥ ५॥ येसबआयेसभामँझारी। उठेभूपइनसबनिनिहारी॥
बैठेप्रथमउठेतेप्रथमै। वंदनकीन्हेंऋषिगणप्रथमै॥ पुनिपांडवअरुयदुपतिरामा। उठिसादरकीन्हींपरिनामा॥ ६॥
पूजनकरिआसनबैठाये। कुशलप्रश्नपूँछेसुखछाये॥ अर्घ्यपादआचमनहुदीने। धूपदीपबहुफूलनवीने॥
अंगनअंगरागअनुरागे।यदुपतिनिजकरलेपनलागे॥७॥जबबैठेमुनिनिजनिजआसन।तबकरजोरिकृष्णभवनाशन॥
दोहा-सभामध्यअतिमृदुवचन, सभासदानिसुनाय। बोलेयदुपतिमुनिनसों, अतिशयआनँदपाय॥ ८॥

श्रीभगवानुवाच।

जन्मसफलभेआजुहमारे।जोइनदृगतुवचरणनिहारे॥कहँहमलघुजनअतिमतिमंद।कहँतुमसबगुरुज्ञानअनंदा॥९॥
दरशपरशपूजनहुतिहारो।हमकहँदुर्लभपरतविचारो॥जापैईशकरहिंअनुरागा।ताकोमिलहिंसंतबडभागा॥ १०॥
जेतीरथअघखोवनहारे। मृदुपषाणमयसुरहुअपारे। तेतोबहुदिनसेवनलेते। तबजनकहँपावनकरिदेते॥
जेसज्जनजगमहँसंचरहीं। दरशकरतहींपावनकरहीं॥११॥ सूरजअगिनिचंद्रअरुतारा। जलनभमारुतभेदअपारा॥
दोहा-तिनकोसेवनजोकरै, अमितकालचितलाइ। तौमनकीसबकामना, कबहुँकबहुँमिलिजाइ॥
तैसहिसज्जनकीमनलाई। करैदंडद्वैहूसेवकाई॥ तौसबपूजिमनोरथजाहीं। रहैंनकछुबाकीजगमाहीं॥ १२॥
जोकुमतीयहिअधमशरीरै। सुततियअरुकुटुंबकीभीरै॥ हमहमारजानतकरिमोहू। राखतसदावित्तपरछोहू॥
मृदुपषाणकीमूरतिमाहीं। करैतुम्हैंतजिप्रीतिसदाहीं॥ नीरहिभरितीरथजेमानै। सज्जनचरणनवंदनठानै॥
गर्दभबैलअहैनरसोई। जासुसाधुपदप्रीतिनहोई॥ १३॥

श्रीशुक उवाच।

सुनिमुकुंदकीअद्भुतबानी। रहेमौनचिंतनविज्ञानी॥ १४॥
दोहा-करिविचारकछुबारलगि, पुनिकीन्ह्योंयहठीक। जनशिक्षणहितहरिकह्यो, वचनधर्मकेलीक॥
कहेमुदितमुनिपुनिमुसक्याई। यदुपतिकोअसवचनसुनाई॥ १५॥

मुनय ऊचुः।

जाकीमायापरमअपारा। मोहेहमशंकरतारा॥ यद्यपिबहुतत्त्वनमनलावे। तद्यपितिहरोपारनपावे॥
परब्रह्मतुमधरणिपधारी। लीलाकरहुविचित्रमुरारी॥ १६॥ हौअनंतयकेअविकारी। जगउतपतिपालनसंहारी॥
जिमिमृदुकेबटबनहिंअनेका। पैमृत्तिकारहतिवहएका॥आपचरित्रविचित्रअपारा। जाकोशेषहुलहैंनपारा॥१७॥
ऐसहुहौयद्यपितुमनाथा। तद्यपिदासनकरनसनाथा॥
दोहा-मनुजसरिसविचरोधरणि, दासनदुवनसँहारि। राखिधर्ममर्यादसब, देहुभारमुविटारि॥
प्रकृतिपुरुषतेअहौविलक्षण। दीननरक्षणकरहुततक्षण॥१८॥चारिवेदहैंहृदयतिहारा। होतजाहितेतपअवतारा॥
पढ़िकैजोनवेदमतिवाना। जानतकारणकारजनाना॥१९॥ शास्त्रपढ़ैजोयुतअनुरागा। सोजानैतुमकहँबडभागा॥
यहीहेतुवसुदेवकुमारा। विप्रनकोकीजतसतकारा॥ तातेंपायहुहेश्रीधामा। जगब्रह्मण्यदेवअसनामा॥ २०॥
विधातपदृगजन्महमारे। भयेसफलअबतुमहिंनिहारे॥ कियोरावरोदर्शनजोई। मंगलमूलमुदितभोसोई॥ २१॥

सोरठा-नमोकृष्णभगवान, सदासच्चिदानंदघन। प्रगटप्रभावमहान, अज्ञानीजानैंनहीं॥ २२॥
तिमितुमकोयदुवंशीवीरा। तातनातमानहिंमतिधीरा॥धनिधनिभाग्यअहैतिनकेरी।कैसेवरणिसकैमतिमेरी॥२३॥
जिमिसोवतजनअपनेकाँहीं।जानतहैअरुजानतनाँहीं॥२४॥तिमिलीलालखिमनुजसमाने।यदुवंशीजानेंनहिंजानै२५
जेसबपापनशावनवारे। तीरथतीरथकारनहारे॥ योगविमलजिनचित्तसदाँहीं। धारहिंजिनकोनिजहियमाँहीं॥
ऐसेआपचरणअरविंदा। लखिसुखपायेसरिसमिलिंदा॥ करहुनाथअबहमपरदाया। जाततरैंरावरीमाया॥
दोहा-आपसरिसकोजगतमें, साँचोदीनदयाल। सुमिरतहींनिजचरणके, जारहुजगजंजाल॥ २६॥

श्रीशुक उवाच।

असकहितहँसिगरेमुनिराई। सभामध्यअतिआनँदपाई॥ पुनिधृतराष्ट्रयुधिष्ठिरराजै। यदुपतिउग्रसेनमहराजै॥
इनतेबिदामाँगिमुनिलीन्हें।निजआश्रमनगमनमनकीन्हें२७तबवसुदेवमुनिनढिगजाई।बोलेवचनसुखितशिरनाई२८
आपसबनकहँअहैप्रणामा। सकलदेवमैंतुमतपधामा॥ मेरेवचनसुनहुचितलाई। जोपूछहुँसोदेहुबताई॥
जौनकर्मकीन्हेंमुनिराई। अशुभकर्मआशुहिनशिजाई॥ सोकरिकृपामोहिअबकहहू। दासआपनोजानतरहहू॥
दोहा-सुनतवचनवसुदेवके, ऋषिअचर्जलियमानि। तबनारदबोलतभये, गिरापरमसुखदानि॥ २९॥

नारद उवाच।

येकृष्णैनिजबालकमाने। सबसोंपूँछतहैंकल्याने॥ सुनहुसबैयहअचरजभाई। सोमोसोंकछुकहोनजाई॥
पैयहपरचोसत्यअबजानी। सोमैंसबसोंकहौंबखानी॥३०॥रहैजोअतिसमीपमहँकोई। तासुअनादरअवशिहिहोई॥
जिमिसुरसरितटमनुजरहतहैं।पापछुडावनअनतचहतहैं३१जेहियदुपतिकोविभौमहाना।वटबबढवनहिंवेदवखाना॥
ऐसेहरिपरमेश्वरकाँहीं।मानहिमूढमनुजमनमाँहीं॥३२॥जिमिघनहिमरजभानुछिपाने।तेजहीनमानहिअज्ञाने॥३३॥
दोहा-कह्योफेरिवसुदेवसों, सिगरेमुनिहरषाय। रामकृष्णअरुनृपनको, मंजुलवचनसुनाय॥ ३४॥
करमहिकरिछूटहिसबकरमा।यहीवेदभाषहिसतिधरमा॥करिमखप्रीतिसहितहरिपूजै।ताकेसमजगमहनहिंदूजै ३५॥
जेकविसबशास्त्रनकेज्ञाता। तेविचारिबोलहिंअसबाता॥ जेहरिपदमहँप्रीतिलगावैं। तेसहजाहिभवनिधितरिजावैं॥
जानिलेहुयहसहजउपाई।औरनअबयहकालदिखाई॥३६॥ बडलघुयदुपतिकबहुँनदेखैं।प्रीतिविलोकतमिलैंविशेखैं॥
अनायासजोकछुमिलिजाई। ताहीतेपूजैचितलाई॥ यहीग्रहस्थनकोअतिधरमा। ऐसेकियेनशतसबकरमा॥३७॥
दोहा-तीनईषणाहोतिहैं, यहजगमेंवसुदेव। सोयहिविधितेछूटतीं, यहवेदनकोभेव॥
यज्ञदानकरिधनकीआसा। तजैग्रहस्थवसतनिजवासा॥ करिग्रहस्थकेधर्मनिबेरे। तजैनारिसुतप्रेमघनेरे॥
जानिअनित्यस्वर्गसुखकाँहीं। करैविवेकीइच्छानाँहीं॥३८॥ यहीरीतिकरिकैमतिधीरा। गयेतपनहितवनगंभीरा॥
तैसहिऋणहैतीनिप्रकारा। यहिविधिछूटतवेदउचारा॥३९॥ प्रथमदेवऋणकहँमतिमाना।छोडैकरिकैयज्ञमहाना॥
करिकैब्रह्मचर्यपढिवेदू। छोडैऋषिऋणसुमतिअखेदू॥सुतउतपतिकरिग्रहमहँवसिकै।तजैपितरऋणतियसँगरसिकै॥
दोहा-सोतुमद्वैऋणतेउऋण, होवसुदेवसुजान। बाकीहैअबदेवऋण, ताकोकरहुवखान॥ ४०॥
कुरुक्षेत्रमहँअबमखकीजै। देवनतेउतरिनह्वैलीजै॥ पुनिकरिभगवतभक्तिमहाई। लेहुमुक्तिसज्जनमनभाई॥
परब्रह्मकरतहुकरतारा। सोइयहहैरावरोकुमारा॥ यदपितुम्हेंकरतबकछुनाँहीं। तद्यपिशिक्षणहितजगमाँहीं॥
करहुवेदकेधर्मअनूपा। सकलभाँतितेनिजअनुरूपा॥ ४१॥

श्रीशुक उवाच।

ऐसेसुनिमुनिवचनमहाने। तहँवसुदेवपरमहरषाने॥ तिनहिमुनिनकहँशीसनवाई। विनैसहितबहुविनैसुनाई॥
कियोवरणमखहिततिनहीको। परमअनंदभयोसबहीको॥ ४२॥
दोहा-तेमुनिसबवसुदेवको, लगेकरावनयाग। कुरुक्षेत्रमहँधर्मयुत, करिविधिवेदविभाग॥ ४३॥

होनलगीजबयज्ञअनूपा। तबयदुवंशीआनँदरूपा॥ मज्जनकरिकंजनउरमाला। धारेभूषणवसनविशाला॥
औरहुभूपतहाँवहुआये। करनसहायलगेसुखछाये॥४४॥ भूषणवसनसाजिमनहारी। आनकदुंदुभिकीसबनारी॥
मखशालागवनीछविखानी। मंगलसाजीनिजनिजपानी॥४५॥ शंखमृदंगपटहढफभेरी।बजतभयेधुनिभईघनेरी॥
नचनलगीनर्तकीसयानी। बंदीविरदावलीवखानी॥ तहँगंधर्वअप्सराआई। गावननाचनलगीसुहाई॥४६॥

दोहा—अष्टादशनारीसहित, श्रीवसुदेवसुजान। सोहिरह्योजिमिउडुनमधि, परिपूरणसितभान॥

तहँअंगनऔषधीलगाये।अंजनरंजितदृगअतिभाये॥असआनकदुंदुभिढिगआये।सविधिऋषिनअभिषेककराये ४७॥
सुभगदुकूलवलैअरुहारे।कुंडलकलकपोलछविवारे॥नूपुरकरहिंपगनमहँशोरा। वसनविभूषणजनचितचोरा॥
ऐसीअष्टादशतियसंगै। दीक्षितधारेअजिनअभंगै॥ ४८॥ सोहेतहँवसुदेवसुखारे। ऋत्विजरतनपीतपटधारे॥
तहाँइंद्रकेयज्ञसमाना। लसेसभासदसुमतिमहाना॥ ४९॥ श्रीबलभद्रऔरयदुराई। सोहतभेसंयुतनिजभाई॥

दोहा—रेवतिरुक्मिणिआदितिय, युतसोहेहरिराम। मनहुँविभूतिनतेसहित, जीवईशअभिराम॥५०॥

अग्निहोत्रआदिकबहुयागा।कियेसविधिसंयुतअनुरागा॥प्रकृतिविकृतियुतयज्ञनिकाँहीं।क्रियाज्ञानद्रव्यनियुततांहीं॥
प्रभुकेप्रीतिहेतमखकीन्ही ५१ ऋत्विजद्विजनदक्षिणादीन्ही॥भूषणभूकन्याअरुगाई।दियोद्विजनकहँधनसमुदाई५२
पुनिअवभृथकेसहितविधाना।परशुरामह्रदकियेपयाना॥यजमानहिंतहँआगूकरिकै।मज्जनकीन्हेंअतिसुखभरिकै ५३
भूषणवसनसुवंदिननारिन। देतभयेबहुदानभिखारिन॥जीवमात्रभरिजेतहँआये। भोजनवसनउचितसबपाये॥५४॥

दोहा—पुनिसुततिययुतबांधवन, कीन्ह्योबहुसतकार। भूषणवसनअनेकदिय, श्रीवसुदेवउदार॥

सुनिविदर्भकोसलकुरुदेशू।केकयसृंजयकाशिनरेशू॥५५॥ऋत्विजसदसिऔरसुरचारन।पितरभूतअरुमनुजहजारन
श्रीयदुपतिसोंमाँगिबिदाई। निजनिजभवनगयेयशगाई॥५६॥ विदुरऔरधृतराष्ट्रउदारा। कुंतीपाँचौंपांडुकुमारा॥
भीष्मद्रोणनारदअरुव्यासा।सुहृदनातबांधवसहुलासा५७प्रेमभरेयदुवंशिनमिलिकै।विरहजनितदुखसागरहिलिकै॥
निजनिजदेशनकियेपयाना। यदुवंशिनकरकरतबखाना॥५८॥गोपनसहितनंदगोपालै।यदुवरकियसत्कारविशालै॥

दोहा—उग्रसेनमहराजअरु, रामकृष्णसुखछाइ। कछुकदिवसलोंनंदकहँ, राख्यौतहाँटिकाइ॥५९॥

निजहिमनोरथपारावारा। आनकदुंदुभितरचोउदारा॥ तहँवसुदेवप्रीतिकरिभारी। नंदशिविरयुतमित्रसिधारी॥
नंदहाथनिजहाथहिगहिकै। बोलेश्रीवसुदेवउमहिकै॥ ६०॥

श्रीवसुदेव उवाच।

नेहपासयहविधिकृतजोई। हेभाईछूटतनहिंसोई॥ बहुयोगिनअरुसूरनकाँहीं। छूटतज्ञानहुबलतेनाँहीं॥ ६१॥
ऐसीतुमकियमीतमिताई। जासुसरिसदूजीनदिखाई॥ सकौंनभैकरिप्रतिउपकारो। रैहौंतनभरिऋणीतिहारो॥६२॥
रहेप्रथमकरिबेनहिंलायक। रह्योकंसभयअतिव्रजनायक॥

दोहा—अबतोधनमदछाइकै, होतभयेअतिअंधु। निजनिकटहुनहिंलखिपरत, सुनहुनंदप्रियबंधु॥ ६३॥

असधनमदकाहुहिनहिंहोवै।जातेमित्रमित्रताखोवै॥अनुचितउचितभूलिसबजातो।पुनिआँखिनमेंकछुनदिखातो६४॥
असकहिआनकदुंदुभिधीरा।प्रेमविकलदृगढारतनीरा॥पुनिपुनिसुधिकरिनंदमिताई।रोदनकियेपरमदुखछाई॥६५॥
यहिविधिनंदसहितयदुवंशी। कुरुक्षेत्रमहँवसेप्रशंसी॥ नितनंदमागहिंविदातहाँहीं। कहियेतौवृंदावनजाँहीं॥
तबयदुवंशीयुतअभिलाषैं। कालिहजाइयोनितअसभाषैं॥ कहेसाँझकेकहहिंसबेरैं। प्रातहिकहतसाँझपुनिटेरैं॥

दोहा—बिदाहोतयहिभाँतितहँ, बीतिगयेत्रयमास। यदुवंशीसिगरेबँधे, नंदनेहकेपास॥ ६६॥

पुनिनंदहिंकरिकैसत्कारा। दैकैभूषनवसनअपारा॥ ६७॥ कृष्णरामउद्धववसुदेवा। तैसैउग्रसेननरदेवा॥
मिलिमिलिफेरिदरशअभिलाषे।वृंदावनहिजाहुअसभाषे॥लहियदुवंशिनतेसनमाना।विविधभाँतिलैधनहुमहाना ६८
लैसंगगोपिनगोपनकाहीं। राखिगोविंदचरणउरमाहीं॥ विरहविवशशकटनधरिसाजू। व्रजाहितव्रजहिंव्रजेव्रजराजू॥

वृंदावनजबनंदसिधारे। तबयदुवंशीप्रभुकेप्यारे॥ आवतपावसकालनिहारी। गयेद्वारकैपरमसुखारी॥ ७०॥
दोहा-कुरुक्षेत्रमेंजोकियो, आनकदुंदुभियाग। नंदसमागमहूँकहे, पुरजनसोंयुतराग॥ ७१॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजू देवकृते आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे चतुरशीतितमस्तरंगः॥ ८४॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-एकसमयवसुदेवके, निकटगयेहरिराम। सहितनम्रताकरतभे, पितुकहँमुदितप्रणाम॥
सोऊदीन्ह्योंहरषिअशीशा।जियोपुत्रदोउकोटिवरीशा॥१॥पुनिनारदकीसुधिकरिवानी। निजपुत्रनपरमातमजानी॥
लखिविक्रमहुबढ्योविश्वासा। बोलेपुत्रनसोंमृदुभासा॥ २॥ कृष्णकृष्णहेयोगिमहाने। बलहुसनातनहेबलवाने॥
तुमहौदोऊपुरुषपुराना। यहमेरेमनपरचोप्रमाना॥३॥ पटकारकहुअधीनतिहारे। हौप्रधानपुरुपेशमुरारे॥ ४॥
विरचिविविधविधिविश्वअपारा।तामेंप्रविशिकरहुसंचारा॥ अंतर्यामीह्वैजगमाहीं। धारणपालनकरहुसदाहीं॥५॥
दोहा-सिरजनादिकीशक्तिबहू, प्राणादिकमहँजौन। सकलशक्तिसोआपकी, जिमितृणउडतसपौन॥ ६॥
शशिरविउडुदामिनिअरुपावक।इनकोतेजजौनजगछावत॥अवनिगंधगिरिथिरताजोऊ७जलमहँतर्पणजीवनसोऊ॥
मारुतमहँगतिबलजोरहई। सोसबशक्तिआपकीअहई॥८॥दिशिकोजोसिगरोअवकाशू।अरुजोशब्दहोतआकाशू॥
परमध्यमपश्यंतिवैखरी ९ इंद्रिनशक्तिशक्तिहैतिहरी॥बुद्धिबोधगुनजियगुणसुमिरण॥१०॥पंचभूतकोतामसकारण॥
अहंकारइंद्रिनकोराजस। देवनकोशालवकहैतादस॥ बद्धजीवबंधनजोमाया। सोसबशक्तिआपकीगाया॥ ११॥
दोहा-जेअनित्यकारजअहैं, तिनकारणहौनित्य। जैसेघटपटकार्यमें, अहैमृत्तिकासत्य॥ १२॥
सतरजतमअरुवृत्तितिन, परब्रह्मतुवमाहिं। रचितयोगमायासबै, यहजगअहैसदाहिं॥ १३॥
तातेतुमतेभिन्नकछु, सत्यपरतनहिंजानि। भीतरबाहिरव्याप्तहौ, नहिंव्यौहारहिठानि॥ १४॥
अज्ञानीजानतनहीं, अखिलात्मातुमकाहिं। तातेयहसंसारमें, पुनिपुनिभ्रमैंसदाहिं॥ १५॥
अतिदुर्लभयहमनुजतन, कबहुँगयोतेहिपाय। प्रभुमायावशताहुको, हमसबदेहिभुलाय॥ १६॥
हमहमारमायामहा, फाँसीगलमहँडारि। यहजगकोबाँधेअहौ, तुमहीएकमुरारि॥ १७॥
तुमहौमेरेपुत्रनहिं, हौदोउपुरुषप्रधान। धरणिभारकेहरणहित, लियअवतारमहान॥ १८॥
पारकरनभवसिंधुको, चरणरावरोनाथ। शरणतासुहमहोतहैं, दरनकरोदुखगाथ॥
अबयहविषयभोगकीचाहा। होतमोहिंअतिशयदुखदाहा॥ तवमायावशरहेभुलाने।पुत्रआपनोतुमकोमाने॥१९॥
सूतीग्रहमहँजोप्रभुकहेऊ। मोहिंअबलोंभुलानसोरहेऊ॥ हरणहेतअवनीकरभारा। होतजन्मबहुबारहमारा॥
सोसतिहैप्रभुवचनआपके। तुमहोप्रभुअनुपमप्रतापके॥ जबजबहोतिधर्मकीहानी। तबतबरक्षहुबहुवपुठानी॥
जानतकोउनआपकीमाया। पैतुमकरहुदीनपैदाया॥ २०॥

श्रीशुक उवाच।

सुनिपितुगिराकृष्णभगवाना। बोलेहँसिभरिप्रेममहाना॥ २१॥

श्रीभगवानुवाच।

दोहा-निजपुत्रनकेव्याजते, तत्त्वकहेसबबात। सोयथार्थनहिंअन्यथा, अहैवेदविख्यात॥ २२॥
हमतुमयदुवंशीसकल, अरुपुरजनसबजोई। जगतचराचरजानिये, परब्रह्ममैंसोई॥ २३॥
आत्मप्रकाशअनादिइक, नित्यप्रकृतिगुणहीन। निजकृतजगमहँलखिपरत, बहुवपुमनुगुणलीन॥२४॥
जिमिनभमारुतजोतिजल, कहुँलघुकहुबहुहोत। अहैसकलतेएकही, तिमिआतमाउदोत॥ २५॥

श्रीशुक उवाच ।

यहिविधिसुनियदुपतिकेबैना । आनकदुंदुभिआनँदऐना॥लहतभयेकछुकहीनबानी । आईतहाँदेवकीरानी ॥२६॥
सुन्योंकृष्णगुरुसुतमृतलायो देगुरुकोअतिआनंदछायो॥तबनिजमृतपुत्रनसुधिकरिकै अतिशैदुखितदृगनजलभरिकै
बोलीरामकृष्णसोंबानी । कृष्णचरितअचरजमनमानी ॥ २८ ॥

देवक्युवाच ।

हेयोगीशईशयदुराई । महाबलीसुनियेंबलराई ॥ पुरुषप्रधानतुम्हैंहमजानैं । अपनोपुत्रनअबतेमानैं ॥ २९ ॥
नशैसतोगुणजबलहिकाला । उपजैंपापीपुहुमिभुवाला ॥

सोरठा–हरनकरनभुवमार, होतनाथअवतारतब । करिकैकृपाअपार, मोमेंप्रगटेईशदोउ ॥

जासुअंशअंशनकरअंशा । पालतसृजतकरतजगध्वंसा ॥ असतुममातापददियमोहीं । तुम्हरेशरणागतहमहोहीं ॥
मृतगुरुसुतगुरुदछिनाहेतू । जायलायदियपितरनिकेतू ॥३२॥ कंसहनिततिमिममपटबारे।देखनकोहैचाहहमारे ॥
ल्यायदेखायदेहुयदुराई । देहुमनोरथमोरपुजाई ॥ ३३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

हरिबलसुनिमाताकीबानी।सुतलगवनकियअतिसुखमानी३४कृष्णरामकहँआवतदेखी।दैत्यराजबड़भागहिलेखी ॥
गिरयोचरणकमलनमेंधाई । आँखिनआनँदअंबुबहाई ॥

दोहा–दैत्यराजतहँमुदितह्वै, कहिअपनोपुनिनाम । कृष्णचंद्रबलरामको, कीन्हेंविविधप्रनाम ॥ ३५ ॥

पुनिसिंहासनकरिआसीना।चरणपखारतभोमुदभीना॥जोजलत्रिभुवनपावनकारी।दैत्यराजसोलियाशिरधारी॥३६॥
प्रभुकहँपीतांबरपहिरायो । अंगनिमेंअँगरागलगायो ॥ बहुभूषणतेभूषितकीन्ह्यों । धूपदीपपुनिप्रभुकहँदीन्ह्यों ॥
विविधभाँतिअरप्योपकवाना।तिमितांबूलहुप्रेममहाना।पुनितनमनधनप्रभुकहँअरप्यो।जासुकृपालहिकाहुनडरप्यो।
प्रभुकेचरणकमलधरिअंका।पुलकिततनभूलीसबशंका।बारबारनैननजलढारयो ।गद्गदगरअसवचनउचारयो ३८॥

बलिरुवाच ।

दोहा–परब्रह्मपरमातमा, जयश्रीकृष्णअनंत । सांख्ययोगकारकनमो, जगधाताश्रीकंत ॥ ३९ ॥
दुर्लभहमकोदरशतुव, रजतमगुणमहलीन । मोपैकीन्ह्योंअतिकृपा, जोदरशनप्रभुदीन ॥ ४० ॥
विद्याधरगंधर्वसिध, दानवचारणयक्ष । भूतप्रमथनायकहुदिति, सुतपिशाचअरुरक्ष ॥ ४१ ॥
शास्त्रशरीरीशुद्धसतु, मयववुतुम्हरेमाहिं । नित्यवैरकीन्हेंविपुल, हमसवरहहिंसदाहिं ॥ ४२ ॥
मिलहिंतुम्हहिकोउवैरकरि, कोऊभक्तिकरिनाथ । जसइनकोतससुरनको, प्रभुनहिंकरहुसनाथ ॥ ४३ ॥
यहमायाप्रभुआपकी, जानहिनहिंमुनिवृंद । तौहमकेहिंविधिजानहीं, असुरमहामतिमंद ॥ ४४ ॥
तातेअसकीजेकृपा, जामेंतुवपदकंज । जाकोमुनिध्यावतरहैं करैसकलदुखभंज ॥
अंधकूपजगतेनिकरि, सोध्यावतमनमाहिं । कीतुवदासनसंगकी, रहहुअकेलसदाहिं ॥ ४५ ॥

सिखहिदेहुमोहिंनिजरतिरीती।मेटहुसकलपापकीभीती ॥ जोतुवशासनकरहिसप्रीती।लेतसोविधिनिषेधकोजीती॥
बलिकेवचनसुनतयदुराई । बोलेप्रीतिसहितमुसक्याई ॥ ४६ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

स्वायंभूमन्वंतरहीमें । मुनिमरीचितेउरनातीमे ॥ प्रगटभयेषटदेवकुमारा । एकसमयतेपरमउदारा ॥
विधिनिजसुताकरनकोभोगू।अपनेमनहिकीनउतयोगू ॥ यहलखिविहँसेपटहुकुमारा।तबविधिकीन्ह्योंकोपअपारा॥
दियोशापतिनदेवनकाहीं । आशुअसुरहोबहुजगमाहीं ॥

दोहा–हिरणकशिपुकेसुतभये, मायाबलतिनकाहिं ॥ मैदेवकिकेउदरमहँ, प्रगटायोजगमाहिं ॥ ४८ ॥

तिनकोकंसभूपहनिडारचो।सभयउचितअनुचितननविचारचो॥तिनसुतहितशोचतिममभ्राता।तुम्हरेनिकटरहहिंतेतात॥
याहींहेतुहमहुँइतआये। तुमकोसबवृत्तांतसुनाये॥ जननिशोकनेवारणहेतू। देहुमँगायसुतनमतिकेतू॥
तिनकोजननीढिगलैजेहैं। शापमेटितिनपुरपहुँचैहैं॥ असमरअरुउदगीथपतंगा। घृणीक्षुद्रभुकअरुपरिष्वंगा॥
येषटसुरलहिकृपाहमारी।पैहैंगतिविधिशापनेवारी॥५१॥ असकहिलेषटदेवकिबालक।बलिसोंपूजितह्वैयदुपालक॥

दोहा-आवतभेपुनिद्वारकै, कृष्णचंद्रबलिराम। देवकिकोदीन्ह्योसुतन, करिकैपगनप्रणाम॥५२॥

देखिदेवकीपुत्रनकाहीं। बैठायोनिजअंकहिमाहीं॥ स्त्रवीपयोधरतेपयधारा। तिनकोशिरसूँघ्योबहुबारा॥५३॥
तहाँप्रीतिकरिकैअतिभारी।लगीपियावनपयमहतारी॥ मोहिगईहरिमायामाहीं। जातेजगउपजतोसदाहीं॥५४॥
कृष्णप्रसादीपयकरिपाना। अरुहरिअंगनिपरसिसुजाना॥पटसुरभयेतुरतविनुतापा।मिटीमहाधाताकीशापा॥५५॥
तेदेवकिवसुदेवहुकाहीं। औगोविंदरामपदमाहीं॥ करिवंदनसबजनकेदेखत। गेनिजलोकमहामुदलेखत॥५६॥

दोहा-मृतकआगमननिरखितहँ, देवकिविस्मयमानि। कृष्णचंद्रमायाप्रबल, लईसत्यजियजानि॥५७॥
महाराजयहिभाँतिबहु, अद्भुतकृष्णचरित्र। श्रवणसुधाडारनसदा, पामँरकरनपवित्र॥५८॥

सूत उवाच।

सवैया-श्रीशुकआननइंदुहीतेहरिकीरतिकीसुधाधारसुढारी।काननअंजुलितेकरिपानसुप्रीतिप्रतीतिसमेतसुखारी॥
श्रीरघुराजकहैसोविशेपितरैभवसागरसोचनिवारी।याकलिकालकरालमेंआँखिनआनउपायपरैननिहारी॥५९

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबान्धवेशश्रीविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौदशमस्कंधे उत्तरार्धे पंचाशीतितमस्तरंगः॥८५॥

दोहा-भूपपरीक्षितहरषिकै, श्रीशुकसोंकरजोरि। मृदुलगिराबोलतभयो, बारहिंबारनिहोरि॥

राजोवाच।

यहहमसुननचहतमुनिराई। रामकृष्णकीभगिनिसुहाई॥ जाकोरह्योसुभद्रानामा। मेरीपितामहीवरश्यामा॥
ताकोअर्जुनकेहिविधिव्याहा।सोसुनायदीजैमुनिनाहा॥सुनतपरीक्षितनृपकीबानी।कहनलगेश्रीशुकविज्ञानी॥१॥

श्रीशुक उवाच।

एकसमयअर्जुनमतिमाना। करनतीरथनकियोपयाना॥ करतपर्यटनपुहुमीसबहीं। गयोप्रभासछेत्रमहँजबहीं॥
तबैसुभद्रामातुलकन्या। सुनतभयोअतिसुंदरधन्या॥२॥ औरौंअससुनिकाननमाहीं। देहिंरामदुर्योधनकाहीं॥

दोहा-यदुवंशीअरुकृष्णहू, यद्यपिकह्योबुझाय। तदपिआनकेदेनहित, नहिमान्योंबलराय॥

यहसुनिअर्जुनशंकितभयऊ।वेषत्रिदंडीकोधरिलयऊ॥ हरणकरनमातुलदुहिताको।गयोद्वारकाकोछलछाको॥३॥
वरषाकेतहँचारिहुमासा। विजयत्रिदंडीकियोनिवासा॥ निजअर्थहिकेसाधनहेतू। माँगेहुभीखनिकेतनिकेतू॥
पुरजनसबकरिकैसन्माना।नितहिजिमावहिंबहुपकवाना॥ एकसमैंकहुँपायइकंता। यदुपतिसोंकहिगोविरतंता॥
यदुपतिहरनकरनकहिदीने। सुनतसव्यसाचीमुदभीने॥ यदुवरमातुपितापहँजाई। यहहवालसबदियोसुनाई॥

दोहा-तेऊसंमतकरिदियें, विजयसुभद्रादैन। जानिविरुषतहँरामकी, प्रगटकहेनहिबैन॥४॥

एकसमयग्रहमहँबलिरामा।अतिथिनपूजनकियमनकामा॥ न्योंताकरिबहुअतिथिबुलाये।तिनकेसंगअर्जुनहुआये॥
यहचरित्रबलभद्रनजान्यो।अतिथिमानिअतिशैसनमान्यो॥निजहाथनसोंतिनहिजिमाये।सादरशुभआसनबैठाये॥५॥
तहाँसुभद्रारहीकुमारी।अनुपमसकलवीरमनहारी॥ अर्जुनताकोतहाँनिहारी। चकितभयोमनहरणविचारी॥६॥
सोऊअर्जुनकीछविदेखी।करनकंतमनचह्योविशेखी॥७॥ करिकटाक्षलज्जितमुसक्याई।अर्जुनमहँमनदियोलगाई॥

दोहा–विजयसुभद्राकोलख्यो, जबतेबलगृहमाँहि । तबतेताकेनैनमें, परीनींदनिशिनाँहि ॥

दियोताहिमेंचित्तलगाई । हेरनलाग्योहरणउपाई ॥ ८ ॥ एकसमयद्वारावतिमाँहीं । देवनयात्राभईतहाँहीं ॥
तहाँगमनकीन्हेंपुरवासी । यदुवंशीसबपरमहुलासी ॥ तादिनदारुकसूतबुलाई । श्रीमुकुंदअसदियोबुझाई ॥
भगिनिसुभद्रैरथहिचढाई । देवनदरशनदेहुकराई ॥ तहँअर्जुनहरिहैंभगिनीको । सोसंमतहैमेरोठीको ॥
अर्जुनयहिरथचढिहरिलैहैं । सहितसुभद्रैनिजपुरजैहैं ॥ तबतुमअतिद्रुतरथहिधवाई । इंद्रप्रस्थदियहुपहुँचाई ॥

दोहा–दारुकसुनिहरिकोहुकुम, निकटसुभद्राजाय । ताहिचढायसुयानमहँ, लैगमन्योहरषाय ॥

निकरिकिलातेजबरथआयो।तबअर्जुनकहँकृष्णबुलायो॥हरनकरनकहँसैन्यचलायो।तबअर्जुनआशुहितहँधायो ९॥
रथपरचढिगांडीवटँकोरा । भर्योभयावनचहुँकितशोरा ॥ हरतसुभद्रैअर्जुनकाँहीं । निरखेसिगरेसुभटतहाँहीं ॥
घेरिलियेताकोचहुँवोरा । मारनलागेशस्त्रकठोरा ॥ अर्जुनकरीबाणकीबरषा । गयोछूटिसबवीरनहरषा ॥
तबदारुकछुइपीठितुरंगा । कीन्ह्योंगौनपौनकेसंगा ॥विजयकरयौंदलमथितकैसे । इवाननमध्यपंचाननजैसे ॥१०॥

दोहा–हरयोसुभद्राकोइहाँ, आयोकहँकोचोर । लैगोलैगोह्वैरह्यो, यहीशोरचहुँवोर ॥

आयसुभटसबहरिबलद्वारे । हरनसुभद्रादुखितपुकारे ॥ सुनतरामभोकोपितभूपा । मानहुमहाकालकोरूपा ॥
जैसेसिंधुपर्वकहँपाई । बाढतअमिततरंगबढाई ॥ तिमिसुनिभगिनिहरणबलराई । बाढतभयोकोपभयदाई ॥
भटनसुनावतवचनउचारा । बचैनअबशठपांडुकुमारा ॥ मैंअपांडवीधरनीकरिहौं । यदुवंशिनउरआनँदभरिहौं ॥
असकहिलैहलमूसलरामा । चल्योआशुअर्जुनवधकामा ॥ जानिअनर्थमहायदुराई । पकरेपाँयरामकेधाई ॥

दोहा–कहतभयेबलभद्रसों, वानीदीनसुनाय । मोहिंमारिपुनिमारिये, मेरेमीतहिजाय ॥

नातोकोपतातसंहारो । कछुकवचनसुनिलेहुहमारो ॥ दुर्योधनअर्जुनसमदोऊ । तातेकहीनअनुचितकोऊ ॥
यहधरमात्मावहममद्वेषी । यतनोयामेंअहैविशेषी ॥ तातेअबनकरौंकछुरोसू । गनहुँनकछुअर्जुनकरदोसू ॥
सुनतसात्यकीउद्धवआदिक । बोलेवचनधर्ममरयादिक ॥ देवकिअरुवसुदेवहुकेरो । संमतकृष्णहुकेरघनेरो ॥
हमहूकोअनुचितनहिदीसै । करियेक्षमात्यागिप्रभुरीसै ॥ तबहरिसोंबलवचनउचारो । अहैसकलकृतकर्मतिहारो ॥

दोहा–असकहिकैतजिहलमुसल, रोकिरोषबलराम । लौटतभेतुरतैतहाँ, गयेआपनेधाम ॥ ११ ॥
मोदितह्वैपठयौतहाँ, दाइजअर्जुनपास । हयगयरथभूषणवसन, बहुधनदासीदास ॥ १२ ॥

श्रीशुक उवाच ।

विप्रभक्तइकयदुपतिकेरो । नामजासुश्रुतदेवनिवेरो ॥ कृष्णभक्तितेपूरितकामा । कबहुनचाहतविषयअरामा ॥
सुकविशांतप्रियबोलनवारो।रह्योजनकपुरतासुअगारो॥१३॥विनमाँगेजोकछुमिलिजावै।ताहीतेगृहकाजचलावै १४
करैनउद्यमकछुनिजहेतू । बसैभवनसंतोषनिकेतू ॥ १५ ॥ तैसेमिथिलाधिपबहुलाशू।तनकनतनअभिमानप्रकाशू॥
उभैभक्तयदुपतिकहँप्यारे । यदुपतिदरशआशउरधारे ॥१६॥ तिनकोजानिमनोरथनाथ।दारुकसोंबोलेधरिहाथ॥

दोहा–ल्यावहुरथहमजायँगे, मिथिलापुरकहँसूत । सोसुनिल्यायोरथतुरत, दारुकबुद्धिअकूत ॥

रथमहँचढिबहुमुनिसँगलीन्हे।मिथिलापुरहिगमनप्रभुकीन्हें॥वामदेवनारदअरुव्यासू।असितअरुणअरुअत्रित्यदासू।
मित्रासुतहुकण्वभृगुरामा । सुरगुरुअरुच्यवनादिललामा ॥ विचरतरहेहमहुकहुँराजा । मारगमहँदेखेयदुराजा ॥
सादरअपनेसंगलेवाई । चलेविदेहनगरयदुराई ॥ १८ ॥ मारगमहँजहँजहँप्रभुजावैं । तहँतहँपुरजनधावतआवैं ॥
अर्घ्यपाद्यआचमनहुदेहीं । दैकैभेटपरममुदलेहीं ॥ मुनिनसहितहरिराजहिकैसे । ग्रहनसमेतदिवाकरजैसे ॥ १९॥

दोहा–प्रथमअनर्तहिधन्वकुरु, जांगलकंकपँजाब । मत्स्यकुंतिमधुकेकयो, कोसलअरुअरनाव ॥

इनदेशनमहँकरतनिवासा । मिथिलागमनेरमानिवासा ॥ जेहिजेहिदेशनमहँप्रभुआये । तहँतहँकेनारीनरधाये ॥
निजदृगहरिछविरसकरिपाने।अनिमिषरहेननेकअघाने॥२०॥तिनकोनिरखिमंदमुसक्याई।करिसनाथदीन्हेंयदुराई॥
उपजावतसबकेउरज्ञाना।करतअनुग्रहअतिभगवाना ॥ अशुभहरनदिशिकरतप्रकासू।जेहिगावतसुरनरसहुलासू ॥

असनिजसुयशसुनतनिजकाना।गयेजनकपुरकृपानिधाना॥हरिआगममिथिलापुरवासी।सुनतभयेअतिआनँदरासी॥
दोहा-लैलैमंगलसाजुकर, तनकीसुरतिविसारि। जेजसरहेतेतसचले, दरशनहेतमुरारि॥ २२॥
निरखतयदुपतिमुखसुखपाये।विकसितवदननैनजलछाये॥शिरमेंधरिधरिअंजुलिधाई।प्रभुकहँकियप्रणामसुखछाई॥
जेमुनीशप्रथमैसुनिराखे। तिनकोवंदिमुदितअसभाखे॥ हमरेभागनतेइतआये। हमकोआजुसनाथबनाये॥ २३॥
सुनिहरिआगमभूपविदेहू। तिमिश्रुतदेवविप्रयुतनेहू॥ प्रेमभरेदोउवेगहिधाई। परेचरणतनसुरतिभुलाई॥ २४॥
तहँदोउधीरजधारिवहोरी। दोऊविनैकियेकरजोरी॥कहेदोऊममभवनपधारो। मुनिनसहितममकुलउद्धारो॥२५॥
दोहा--दोहुनकेमृदुवचनसुनि, प्रीतिबरोबरजानि। उभयरूपह्वैगेतुरत, मुनियुतशारँगपानि॥
दोहुनकेप्रभुसदनसिधारे। दोहुँनबरोबरभक्तनिहारे॥ भूपविप्रयहमर्मनजान्यो। प्रथमैनिजग्रहआगतमान्यो॥२६॥
श्रवणहुमहँदुष्टनतेदेरी। ऐसेमुनिनानिरखिसुखपूरी॥ प्रेमविवशह्वैभूपविदेहू। ल्यायोनिजगृहसहितसनेहू॥
यदुपतिकहतहँमुनिनसमेतू।आसनआसितकरिमतिसेतू२७परमप्रीतितेचरणपखारी।सहितकुटुंबशीशनिजधारी२८
निजकरचंदनअंगलगाई। भूषणवसनमालपहिराई॥ धूपदीपनैवेद्यलगाई। गोवृषसगुणहेतदरशाई॥ २९॥
दोहा-तनमनधनपुनिअरपिकै, कृष्णचरणधरिअंक।मींजतमृदुबोल्योवचन, मिथिलानृपतिनिशंक॥३०॥

राजोवाच।

सबभूतनकेआतमआपू। साक्षीविभुहौपरमप्रतापू॥ जोहमबहुदिनतेकरिरापा। सोप्रभुपूरीकियअभिलाषा॥
चरणकमलकोदरशनपाई। आजुनैनगेमोरअवाई॥ ३१॥ जोयहवेदपुराणहुगावैं। निजदासनग्रहहरिहठिआवैं॥
सोईवचनसतिकरनमुरारी। मोहिसनाथकियइतहिसिधारी॥ श्रीअजशंकरशेषउदारे। हैंनमोहिदासनतेप्यारे॥
यहजोतुमभाषहुयदुराई। सोसबजगमहँप्रगटदिखाई॥३२॥ऐसेतुमकहँछोडिगोविंदा। भजहिंऔरकहँतेमतिमंदा॥
दोहा--जेसज्जनसबछोडिकै, तवपदकमललुभान। तिनकोकृपानिधानतुम, देहुआपनोप्रान॥ ३३॥
लैयदुवंशमाहँअवतारा। सुंदरसुयशदिशनिविस्तारा॥ दुखीजीवसागरसंसारा। गाइगाइतेउतरहिपारा॥
यदुपतिऐसोसुयशतिहारो।त्रिभुवनकोदुखनाशनवारो३४ज्ञानसरूपकृष्णभगवाना।नारायणऋषिशांतमहाना३५॥
कछुदिनवसियेमुनिनसमेतू।यहगृहमेंप्रभुकृपानिकेतू॥चरणकमलकीरजइतडारी।निमिकुलपावनकरहुमुरारी३६॥
ऐसीसुनिविदेहकीवानी। अतिप्रसन्नह्वैशारंगपानी॥वसेविदेहनगरकछुकाला। मिथिलापुरजनकरतनिहाला॥३७॥
दोहा-जिमिविदेहकेगेहमें, मुनियुतकीनपयान। तिमिश्रुतदेवहुसदनमें, गमनकीनभगवान॥
गृहमहँआयेलखियदुनाथै।नायसकलमुनिकेपदमाथै॥द्विजश्रुतदेवपरमअनुराग्यो।पटफहरावतनाचनलाग्यो॥३८॥
काठकुशासनआसनमाहीं। बैठायोमुनियुतहरिकाहीं॥ कुशलप्रश्नकरिपुनिअसभाषा।आजुपूरिगेममअभिलाषा॥
असकहिसहितनारिमुदमोयो।मुनिनसहितयदुपतिपदधोयो३९सोजललैअपनेशिरधारा।सींचिशुद्धकियगृहपरिवारा
पूजेसकलमनोरथताके। प्रेमदशावर्णतकविथाके।४०।निजकरलैखसप्रभुहिसुँघायो। सुरभिमृत्तिकाअंगलगायो॥
सोरठा-हरिआगमगृहजानि, तोरिधरेफलप्रथमते। तेअरपेनिजपानि, प्रेमविवशश्रुतदेवद्विज॥
प्रभुद्विजप्रीतिउदधिअवगाही।खायेफलनिसराहिसराही॥पुनिद्विजशीतलजललैआयो।निजकरप्रभुकहँपानकरायो।
पुनितुलसीअरुअंबुजमाला।हरिकहँपहिरायोततकाला॥यहिविधिहरिकहँमुनियुतपूजो।गन्योआपनेसमनहिंदूजो॥
पुनिअसमनहिविचारनलागो।कौनसुकृतमैंकियोअभागो॥परेरह्योगृहअंधहिकूपा। किमिहरिदरशनलह्योअनूपा॥
जिनपदरजसबतीरथमूला।असमुनियुतहरिभेअनुकूला॥४२॥असविचारिश्रुतदेवउदारा।प्रभुकेनिकटजाययुतदारा
दोहा-निरखतयदुपतिकोवदन, चापतचरणसप्रेम। मृदुलवचनबोलतभयो, छूटिगयोसबनेम॥ ४३॥

श्रुतदेवउवाच।

तुमनहिंप्रातआजुमोहिभयऊ।जबशक्तिनतेजगरचिदयऊ॥विश्वविरचिजबकियोप्रवेशा।तबहीतेमोहिमिलयोरमेशा॥

जिमिजियसोवतसपनमाहीं। मनतेविरचिऔरतनकाहीं॥तिहिप्रवेशकरितादशभासा।तैसेतुमहोरमानिवासा॥४५॥
सुननकहतजेकथातुम्हारी। पूजहिवंदहिप्रीतिपसारी॥ तिनहिध्यानलखिपरहुमुरारे। पैधनिहैप्रभुभागहमारे॥४६॥
नीककर्मकवहूँनहिंकीन्ह्यों। कबहुँनतवचरणनमनदीन्ह्यों॥तिनकोदृगगोचरतुमभयऊ।दीनबंधुनामहिसतिकियऊ॥

दोहा-जेकपटीकुमतीसदा, विषयवासनापूर। व्यापतरूपतेनिकटहू, रहौतदपिअतिदूर॥४७॥

जयविज्ञानिनआतमकृपाला। जयअज्ञानिनकेतुमकाला॥ कारणऔरअकारणकेरे। तुमहीहेतुसत्यबुधहेरे॥
जेतुम्हरेमायामेंमोहैं। तेतुम्हारवपुकबहुँनजोहैं॥४८॥ हमतोअहैंरावरेदासा। करहिकौनसेवासहुलासा॥
प्रीतिरीतिप्रभुदेहुबताई। करैंतैसहीतवसेवकाई॥ तीनहुतापननाशनवारो। ऐसोहैप्रभुदरशतुम्हारो॥४९॥

श्रीशुक उवाच।

विप्रवचनसुनिकृपानिधाना।दीननकेनाशकदुखनाना॥गहिनिजहाथहिसोद्विजहाथा।बोलेविहँसतश्रीयदुनाथा ५०॥

श्रीभगवानुवाच।

दोहा-तुमपरकरनअनुग्रहै, मुनिआयेयहजान। पदरजसोपावनकरत, विचरतजगतमहान॥५१॥

देवक्षेत्रतीरथहैंजेते। दर्शनस्पर्शनकरतहुतेते॥ बहुतकालमेंपावनकरहीं। तऊमोरजनजेहिअनुसरहीं॥५२॥
जनमहितेसबजातिनमाहीं। विप्रहोतहैंश्रेष्ठसदाहीं॥ ताहूपैजोतपपुनिकरतो। सोविशेषितेजगमुदभरतो॥
भईताहुपैविद्याजाके। विनप्रयासतेभवनिधिनाके॥ तापरजेसंतोषहुआने। तेहिद्विजकेनहिंदेवसमाने॥
पुनिजवमोरभक्तभोजोई। त्रिभुवनताकेसमनहिंकोई॥५३॥ यहीचतुर्भुजरूपहमारो। ब्राह्मणतेनहिंमोहिंपियारो॥

दोहा-सर्ववेदमयविप्रको, जानहुतुममतिमान। सर्वदेवमयतैसहीं, हमकोगुनहुसुजान॥५४॥

विप्ररूपममयहमतगूढा। जानतनाहिंजनायहुमूढा॥ प्रतिमामेंकरिप्रेममहानै। ममसूरतिगुरुद्विजनहिंमानै॥५५॥
जगकारणमैंजगममरूपा।जानहिंबुधवरबुद्धिअनूपा॥५६॥ तातेमोररूपपहिचानी। पूजहुमुनिनप्रीतिअतिठानी॥
तिनकेपूजनकियेद्विजेशा।ममपूजनह्वैजातहमेशा॥ मोहिंपूजैद्विजपदतजिनेहूँ। पूजनकबहुँतासुनहिलेहूँ॥५७॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधियदुपतिकीसुनिवानी।मुनिनसहितहरिकोसनमानी॥द्विजश्रुतदेवभूपबहुलासू।पायेरमानिवासनिवासू ५८॥
दोहा-भक्तभक्तभगवाननिज, यहिविधिभक्तनभाषि॥ कछुदिनरहियदुपुरगये, पितुदरशनअभिलाषि॥५९॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे षडशीतितमस्तरंगः॥८६॥

सोरठा-जयमुकुंदयदुनाथ, दयासिंधुदुखदंदहर। ममशिरधरिप्रभुहाथ, वेदस्तुतिभाषारचौं॥
दोहा-सबवेदनप्रतिपाद्यहरि, जोमुनिकह्योप्रवीन। गुनतअसंभवताहिनृप, हुलसिप्रश्नअसकीन॥

परिक्षित उवाच।

दोहा-अकथब्रह्मचितअचितपर, निरगुणजौनसदाहिं। सगुणकहनवारीजेश्रुति, किमिवरणहिंतिनकाहिं॥

सुनतभूपकीसुंदरवानी। शुकाचार्यबोलेविज्ञानी॥१॥

श्रीशुक उवाच।

प्राकृतमनबुधिइंद्रिअगोचर। अपनेकहँगुनिनाथचराचर॥ निजसेवनसुखभोगनहेतू। सदावसनवैकुंठनिकेतू॥
मेरोकरैंप्रेमरसपाना। विषयभोगनहिंरहैलोभाना॥ दिव्यइंद्रिमनप्राणहुवाचा। रच्योकृष्णनिजजनहितसाँचा॥
तिनमनबुधिप्राणनकेगोचर। तेइप्राकृततेअहैंअगोचर॥२॥ हरिरहस्ययहजानैजोई। लहैभक्तिभगवतकीसोई॥
यहरहस्यसनकादिकजानै। जेपूरपकेपूर्वमहानै॥३॥

दोहा-तामेंमैंइतिहासइक, वरणौयुतअहलाद। नारायणकोजोभयो, नारदसँगसँवाद॥ ४॥
एकसमयनारदमुनिराई। विचरतलोकनमहँसुखदाई॥ नारायणकेदर्शनहेतू। गयेबद्रिकाश्रममतिसेतू॥ ५॥
जेहिबद्रीवनमहँजगस्वामी। सबभूतनकेमंगलकामी॥ धर्मज्ञानसमसहितसुखारी। कलपप्रर्यंतकरततपभारी॥६
तहाँकलापग्रामकेवासी। बैठेचहुँकितमुनिसुखरासी॥ नारायणपदशीशनवाई। कियप्रणामनारदमुनिजाई॥
यहीप्रश्नकीन्ह्योंतिनपाँहीं। जोपूछ्यौतुमनृपमोहिंकाँहीं॥७॥तबनारायणमुनिनसुनाई। कहीकथासनकादिजोगाई॥८

श्रीभगवानुवाच।

दोहा-एकसमयजनलोकमें, सनकादिकमतिवार। बैठितहाँमोदितमहाँ, कीन्हेंब्रह्मविचार॥
जामेंसकलश्रुतिनकोअर्था। होयएकहीमिटैअनर्था॥ ९॥ नारायणदर्शनहितजबहीं। गयेश्वेतद्वीपहितुमतबहीं।
ब्रह्मविचारभयोसुखसारा। तातेसुन्योनब्रह्मकुमारा॥१०॥तहाँप्रश्नयहभयोसुहावन। जोतुमपूछ्योमोहिंमुनिपावन।
शास्त्रशीलतपसबैसमाना। जिनकेशत्रुमित्रसमभाना॥ सनकसनातनसनतकुमारा। तेइश्रोताह्वैप्रश्नउचारा
तहाँसनंदनतिनहिंसमाना। कीन्ह्योंतिनसोंतुतबखाना॥ ११॥

सनंदन उवाच।

निजशिरजितजगनिजकरिलीना। शक्तिसहितसोवतसुखभीना॥
दोहा-ताप्रभुकीअस्तुतिकरत, वहश्रुतिमूरतिमान। सिगरीहरिहिजगावतीं, करिकैविविधबखान॥ १२
सोरठा-जिमिप्रभातकोपाय, राजद्वारमहँजायकै। विरदावलीसुनाय, बंदीभूपजगावहीं॥ १३॥

श्रुतय ऊचुः।

दोहा-जयजयअजितछोडाइये, जीवनकोअज्ञान। सतदोषहुमहँगुणग्रहक, प्रगटोविभवमहान॥
ज्ञानादिकऐश्वर्यसब, स्वतहबसैतुवमाँहि। शक्तिचराचरजीवकी, तुमतेप्रभुप्रगटाँहि॥
हौविशिष्टचितअचिततुम, जगसिरजकभगवान। यहप्रतिपादनहमकरैं, तुमकोकरतबखान॥ १४॥
उत्पतिथितिलयतुमहिंते, तातेजगतुवरूप। जिमिघटह्वैमृदुतेमिलत, पुनिमृदुमेंअनुरूप॥
जेऔरहुसुरकोभजत, तेनकहातुमकाँहि। काठपषाणहिंपगधरे, कापगनहिंमहिमाँहि॥ १५॥
त्रिगुणनाथतुवजोकथा, सुधासिंधुहरपाप। तेंहिअन्हवाइसुसाधुजन, हरहिंजननत्रयताप॥
तौपुनिजेतुवध्यानकरि, निर्मलमनमतिवान। रहततुम्हारेनिकटजे, तिनकोकहाँबखान॥ १६॥
जासुअनुग्रहतेरचै, महदादिकब्रह्मंड। अन्नमयादिकमेंपुरुष, मुदमयजौनअखंड॥
अन्नमयादिकचारिके, विनशेजोरहिजात। चिदऔअचिदविलक्षनै, निर्विकारदशांत॥
असतुवभजनहियोगके, पायमनुजतनजोइ। भजैंनतनपोषैसदा, समहिषलायतमोइ॥ १७॥
उदरअँगुष्ठप्रमाणतुम, भजैस्थूलमतिवार। सूक्षममतिकेभजतहैं, दहराकाशउदार॥
हियतेशिरलौरहतिहै, नारिसुषुम्णाजौनि। तेहिंस्थिरजेतुमकोभजै, तेउनजनैयहिऔनि॥ १८॥
निजनिर्मितबहुयोनिमें, प्राप्तजेजीवनव्रात। तिनसमअंतर्यामिह्वै, नूनाधिकदर्शात॥
जैसेतृणअरुदारुमें, न्यूनाधिकतेआगि। कहूँनिरखिटेढीपरति, कहूँसूधिहीजागि॥ १९॥
यहअनित्यसंसारमें, नित्यएकरसरूप। तुवज्ञानीजनभजतहैं, त्यागिस्वर्गदुखकूप॥
भीतरबाहिरव्यापक, सकलशक्तिधरआप। निगमगम्यप्रदजननगति, असकहवेदकलाप॥
असगुनिबुधविश्वासकरि, भवहातुवपदकाहिं। वृंदावनअवधादिमें, बसिकैभजतसदाहिं॥ २०॥
अतिदुर्गमनिजतत्वको, जननजनावनहेत। प्रगटहुपुहुमीमेंसदा, हेप्रभुयदुकुलकेत॥
सुधासिंधुतुवचरितमें, करिमज्जनताजिताप। तारतजनसतसंगकरि, नाशतविषैकलाप॥

प्रभुतुवपदकमलमें, हंससरिसकरिनेह । भक्तमुक्तिहूँनहिंचहत, विचरतविनसंदेह ॥ २१ ॥
तुवसेवनकेयोगयह, दुर्लभमनुजशरीर । मानतआतमसुहृदप्रिय, नेहकरतगंभीर ॥
सबकेप्रियतुमअरुसकल, हितकरजेतुवदास । तिनहिंभजहिंनहिंमंदमति, करहिंकुसंगप्रयास ॥
जोनकुसंगप्रभावते, पुनिपुनियहसंसार । जनतमरतबहुयोनिमहँ, लहतनकबहुँउबार ॥ २२ ॥
रोकिइन्द्रियनतीतिमन, योगीप्राणचढ़ाइ । जोतवपदकंजहिलहत, निशिदिनध्यानलगाइ ॥
सोईचरणसरोजको, सुमिरतवैरबढाइ । पावतभेवैरिहुविपुल, चैद्यादिकरराइ ॥
व्रजनारिहुँसोईलह्यो, भुजभरिभुजनभराइ । हमहुँलह्योसोइरावरे, प्रभुताकहीनजाइ ॥
हौसमानसबमेंसदा, समरथहौसबभाँति । लहततुम्हेंबेधिकौनिहूँ, जोसुमिरैदिनराति ॥ २३ ॥
जिनकीउतपतिआधुनिक, तुमकोतेकिमिजान । अहौअग्रसरनाथतुम, तुमतेविधिप्रगटान ॥
मरीच्यादिजेप्रवृतिरत, निर्वृतितैसनकादि । द्विविधिदेवप्रगटतभये, जेहिंविधितेजगत्रादि ॥
वेदउदरधरिरहतहौ, जबमुकुंदतुमसोइ । स्थूलजगतअरुकालगति, रहिनजाततबकोइ ॥ २४ ॥
पूरवयहजगनहिंरह्यो, उतपतिभोयहिकाल । आतमनवगुणध्वंसगति, यहकणादमतजाल ॥
रतानप्रथमहिजीवमें, जोब्रह्मत्वमहान । उतपतितातकीमुक्तिहै, पातंजलमतजान ॥
षटइंद्रीपटविषैषट, उर्मीसुखदुखदेह । येयेइसकोनाशगति, नैयाइकमतयेह ॥
आत्मजियतआत्मैमरत, आतमकृशअरुस्थूल । अहैदेहहीआतमा, चार्वाकमतमूल ॥
स्वर्गनित्यहैनसतनहिं, हैजगकर्मप्रधान । यहमतमीमासकनको, नहिंकोउईशमहान ॥
ब्रह्मभिन्नमिथ्यासकल, अहैब्रह्मसतिएक । कलिपतब्रह्महिमेंजगत, यहअद्वैतमतटेक ॥
प्रकृतिपुरुषयेतत्वद्वै, अहैंअपरनहिंईश । तासुविवेकहिमुक्तिहै, यहीसांख्यमतदीश ॥
प्रेमसुधारसरावरो, जोनाकियोजनपान । भ्रमतरहतहैसोसदा, येसबमतनभुलान ॥
प्रकृतिपुरुषतेपरअहौ, सदासच्चिदानंद । ऐसेतुमकोजानतही, छूटतसबमतफंद ॥ २५ ॥
त्रिगुणवलितयहमनपरत, कारजकारीजानि । शुद्धभयेविनआपको, सकैनहींपहिचानि ॥
जिनकोह्वैगोशुद्धमन, तेजनयहसंसार । चितअरुअचितविशिष्टप्रभु, मानतरूपतुम्हार ॥
जैसेजोजनचहतहै, कनककलेनमनमाँहिं । सोकबहूँकातजतहै, कटककुंडलहुकाँहिं ॥
तुवविरचितप्रविशतजगत, जानिस्थूलतुवरूप । मृषानमानतहैकबहूँ; जिनकेज्ञानअनूप ॥ २६ ॥
सकलचराचरमेंतुम्हें, मानिभजेंमतिवार । मृत्युशीशमेंचरणधरि, तेउतरहिंसंसार ॥
जेतुवअनुरागहिरँगे, करहिकथारसपान । तेभवाब्धिउतरतसहज, याहिविचारनहिंआन ॥
पैजेतुवविमुखहुँअहैं, तिनहुँनकृपानिधान । बाँधिकथागुणतेकरहु, निजवशपशुनसमान ॥ २७ ॥
तुमसबकारकशक्तिधर, करनअधीननज्ञान । तुवदीन्ह्योअधिकारलहि, सुरबलिदेहिंडेरान ॥
विभोआपुप्रदभोगही, जैसेलघुनरपाल । चक्रवर्तिनृपदंडदे, भोगहिंभोगविशाल ॥ २८ ॥
सकलचराचरप्रकृतिवश, पावतदुःखमहान । तिनउधारविनतुवकृपा, हैनहिंकृपानिधान ॥
अहौंप्रकृतिपरप्रभुसदा, तुमतेपरकोउनाहिं । दोषलिप्तनहिंहोहुकहुँ, नभसमसबथलमाहिं ॥ २९ ॥
जोविभुमानहुजीवतो, आवागमननयोग । तुवशासननहिंहोयगो, नहिंईश्वरताभोग ॥
जीवहिअनुविभुईशको, मानेसबबनिजाय । अहैनिअंताव्याप्तसो, जडचेतनसमुदाय ॥
जोकरिविमलविचारमन, यहमतजानतनाँहिं । दुष्टताहिपहिचानिये, सज्जनगहैनताहि ॥ ३० ॥
प्रकृतिपुरुषदोउअजयदपि, उत्पतिसंभवनाँहिं । तदपिपुरुषप्रकृतिहुमिले, जगउत्पतितुममाँहिं ॥
जैसेसलिलसमीरको, पाययोगततकाल । बद्बुदप्रगटतहैंअमित, वरणहिंवेदविशाल ॥

होयलीनवशतुम्हहिंमें, जगबहुरूपसनाम। जैसेसरितासिंधुमहँ, मधुमहँज्योंरसग्राम ॥ ३१ ॥
तुममायावशनरनभ्रम, जानिहेतुसंसार। भवहारीतुमकोभजहिं, जेजनबुद्धिउदार ॥
जोतुवप्रेमसुधापिये, भवभयताहिनहोय। कालभ्रुकुटितुवदेतभय, तुवविमुखीजनजोय ॥ ३२ ॥
जीतेहुप्राणहुइंद्रियन, चंचलमनहितुरंग। विनगुरुपदवशकियचहत, करिउपायबहुरंग ॥
तेमूरखलहिदुखभ्रमत, होतसिद्धिनहिंकाज। उदधिभ्रमतकेवटविना, जिमिचढिवणिकजहाज ॥ ३३ ॥
जगदात्माआनंदमय, तुवपदकरहिजोनेह। तिनहिंस्वजनसुततियधरनि, धामधनहुअरुदेह ॥
इनतेअहैनहेतुकछु, जोयहजानतनाँहिं। सुखदकहातिनतियवसिन, दुःखरूपजगमाँहिं ॥ ३४ ॥
जेतुवपदपंकजनमें, मनदियएकहुवार। तेविरागहारीसदन, पुनिनकरहिंसंचार ॥
तुवपदप्रेमहिपानकरि, कामक्रोधमदत्यागि। निजपदजलजगअघदरत, विचरततीर्थविरागि ॥ ३५ ॥
सतउत्थितजगसतअहै, तर्कपराहतसोइ। जोयहभापोतौनहीं, कहुँव्यभिचारहुहोइ ॥
शुक्तिरजतस्वप्नादिमें, कहोजोहैव्यभिचार। तौवहसतमिथ्यानहीं, ऐसोवेदविचार ॥
कहोजोजगसतहीअहै, तौउत्पतिकिमिहोत। ताकारणकेरूपयह, प्रथमहिरह्योउदोत ॥
अवकारजकेरूपभो, सोईउतपतिजान। सोउतपतिव्यवहारहित, मानैसकलसुजान ॥
एकब्रह्मसतिहैसदा, हैमिथ्यासबओर। यहजोतुववानीकहै, होतसोजडमतिभोर ॥ ३६ ॥
रह्योनयहजगप्रथमहीं, ह्वैहैअंतहुनाँहिं। कहँतेआयोमध्यमें, मृषाजगततुममाँहिं ॥
तातेमृदहुघटादिको, दियोतासुदृष्टांत। यहमतअज्ञानीगुनै, सतिनहिंविदवेदांत ॥ ३७ ॥
मायामोहितजीवह्वै, सुरनररूपहिधारि। विषयभोगरतदेहको, आतमलेतविचारि ॥
तबआनंदादिकविगत, जनतमरतबहुवार। नहिंउधारविनतुवकृपा, भ्रमतरहतसंसार ॥
तुममायाकोतजतहौ, जिमिकेंचुरिकहँनाग। वसुगुणषडज्ञानादियुत, रहहुसदाबडभाग ॥ ३८ ॥
कामवासनाजोयती, उरतेदियनविहाय। मिलहुनतिनतुमस्थितिहूहृदि, जिमिगलमणिसुधिजाय ॥
इतैनश्योसुखजगतको, उतैनश्योपरलोक। मिलेआपताकोनहीं, बीत्योजनमसशोक ॥ ३९ ॥
जेजनजानतआपको, कियेभक्तिरसपान। पापपुण्यफलदुःखसुख, तिनकोहोतनभान ॥
तौपुनिकाजोनहिंसुने, अस्तुतिनिंदाकान। तुवदासनकेसंगमें, विचरतसखीसुजान ॥
युगयुगकोतुवरसकथा, करहिंसर्वदापान। ताहिकृपाकरिदेहुगति, तुमहीकृपानिधान ॥ ४० ॥
तुवअनंतमहिमासुरहु, आपहुलहहुनपार। तुवरोमनजिमिगगनरज, तिमिब्रह्मांडअपार ॥
तातेपुरुषप्रधानते, अहौविलक्षणआप। इतनोईकहिसफलहम, महिमाआपअमाद ॥ ४१ ॥

श्रीभगवानुवाच।

सुनिअससुभगसनंदनवानी। सनकादिकअतिशयसुखमानी॥ आतमस्वरूपजानिसबलीन्हें। परपूजनसनंदनहिकीन्हें ॥
वेदउपनिषदऔरपुराना। करिनिर्णयसिद्धांतबखाना॥ करहिगगनमगसदापयाना। पूर्वहुकेहैंपूर्वमहाना ॥ ४३ ॥
हैनारदतुमब्रह्मकुमारा। आतमशासनसुखदअपारा ॥ मेटतकामवासनाजनकी। देतपरमगतिमज्जनमनकी ॥
श्रद्धाकरियाकोउरधारी। विचरहुजहँअभिलाषतिहारी ॥ ४४ ॥

श्रीशुक उवाच।

यहनारायणऋषिकोशासन। श्रद्धाकरिशिरधरिमुनिताछन ॥
दोहा--ह्वैप्रसन्नश्रुतधरमहा, नारदनेष्टामान। नारायणसोंकहतभे, जोरिपाणिहरषान ॥ ४५ ॥

नारद उवाच।

नमोअमलकीरतिभगवाना। नमोकृष्णजैकृपानिधाना॥ जगजनकेमंगलकेहेतू। धरहुअनेककलाखगकेतू ॥४६॥

असकहिनारदतहँतपधामा । नारायणकहँकरिपरणामा ॥ वंदिचरणतिनशिष्यनकेरे । चलेगगनमगमुदितघनेरे ॥
ममपितुव्यासआश्रमहिंआये४७करिसत्कारतिनहिंबैठाये॥जोनारायणवर्णनकीन्ह्यों।सोनारदपितुसोंकहिदीन्ह्यों ४८
जेहिविधिनिर्गुणब्रह्महिमाँहीं।तात्पर्यहैश्रुतिनसदाँहीं ॥४८॥ यहजोप्रश्नकियोकुरुराई।सोमैंतुमकोदियोसुनाई॥४९॥

कवित्त--जगउपजैयाऔपलैयाऔहरैयाईश, प्रकृतिपुरुषहूँकोप्रेरणकरैयाहै ।
जगरचिजीवयुतप्रविशिरचैयातन, जाकोपायजीवहोतमायाकोतजैयाहै ॥
जैसेयाशरीरकेरीछोडतसोवैयासुधि, तैसेजगछोडैप्रेमपूरणपियैयाहै ॥
मुक्तिकोदेवैयासबभीतिकोनसैयारघु, राजउधरैयावृंदावनकोवसैयाहै ॥

दोहा--ऐसेकृपानिधानको, भजहुसदासबकोय । यहकलिकालकरालमें, रक्षकहैसतिसोय ॥ ५० ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजा श्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे सप्ताशीतितमस्तरंगः ॥ ८७ ॥

दोहा--पुनिबोलेकरजोरिकै, श्रीशुकसोमतिमान । करिआशंकाकछुमनहि, सुननहेतसमाधान ॥
देवअसुरऔमनुजनमाँहीं । जोकोउभजतअशिवशिवकाँहीं ॥ बहुधातेहोवैंधनमाना । भूरिभोगसुखलहैमहाना ॥
अरुजेलक्ष्मीपतिकहध्यावैं । तेबहुधासंपतिनहिंपावैं ॥१॥ यहविरुद्धगतिदोउप्रभुकेरी । तैसहितिनभक्तनकीहेरी ॥
शंभुरंकतिनकेजनराऊ । रमानाथजनरंकसुभाऊ ॥ यहशंकाप्रभुबडीहमारी । सोकरिकृपादेहुनिर्धारी ॥
सुनतपरीक्षितनृपकीवानी । बोलेश्रीशुकदेवविज्ञानी ॥ २ ॥

श्रीशुक उवाच ।

शिवहैंशक्तिसहितमहिपाला । अहंकारकेईशविशाला ॥

दोहा--अहंकारतेत्रिगुणहैं, तेहिषोडशहुविकार । तिनकेफलऐश्वर्यसब, यहसतिअहैविचार ॥ ३ ॥
तातेजेकोउशिवकहँध्यावैं । तेसंपतिविभूतिबहुपावैं ॥ ४ ॥ प्राकृतगुणतेरहितरमेशा । प्रकृतिपुरुषपरसोइनरेशा ॥
तिनकोजोकोउभजतसदाँहीं । प्राकृतगुणतेहिनिकटनजाँहीं॥५॥राजसूयकेअंतहिकाला।आपपितामहधर्मभुवाला॥
हरिमुखभगवतधर्महिसुनिकै । ऐसोप्रश्नकीनहियगुनिकै॥६॥तबकरिकृपाभूपपैंभारी।कहतभयेद्वारकाविहारी ॥७॥

श्रीभगवानुवाच ।

जापैकृपाभूरिहमकरहीं । ताकोक्रमसोंधनसबहरहीं॥ निरखिदरिद्रीसबपरिवारा । कोउनजाहिंपुनितासुअगारा॥८॥

दोहा--जोजोकरतउपाउबहु, धनहितअतिअकुलाइ । सोनिरफलहोइजातसब, तबसँतोषउरलाइ ॥
करतमोरदासनकरसंगा । तबउपजैउरप्रेमअभंगा ॥ ९ ॥ तबसतचिद्घनआनँदराशी । सूक्षमपरब्रह्मपरकाशी ॥
ऐसेमोकहँपावतसोई । पुनितेहिभवबंधननहिंहोई ॥ यातेदुर्लभमोकहँजानी । औरेनभजहिमोहितजिप्रानी ॥ १० ॥
होहिप्रसन्नदेवजेआसू । तिनकोभजिलहिविभवविलासू ॥ धनमदछायतिनहुकहत्यागें।बहुप्रकारपुनिनिदरनलागे ॥
ऐसेकुमतीजेजगकेरे । जातसदातेयमपुरपेरे ॥ ११ ॥

श्रीशुक उवाच ।

जसविरंचिशंकरसुरनाना । तोषहिकोपहिआशुमहाना ॥

दोहा--तसनहिंहृदयविचारहू, यदुपतिकोकुरुनाथ ॥ १२ ॥ तामेंहैइतिहासइक, सुनहुपुरातनगाथ ॥ १३ ॥
असुरनामवृकशकुनिकुमारा । रह्योभूपअतिशयबलवारा ॥ एकसमयसोमारगमाँहीं । आवतदेख्योनारदकाँहीं ॥
कियोप्रश्नसोतजिनिजरोषैं । तीनदेवमेंकोद्रुततोषैं ॥ १४ ॥ तबनारदहँसिबोलेवानी । आशुतोषहैशंकरज्ञानी ॥
तिनकोअवराधहुअसुरेशा । होइहिसिद्धिमनोरथवेशा ॥ थोरेहीगुणमोशिवरीझै । थोरेहीऔगुणमहँखीझै ॥ १५ ॥

रावणकेनेशुकतपकीन्हें। त्रिभुवनअधिकविभौप्रभुदीन्हें ॥ तिमिबाणासुरकेरमहेशा। पुरपालकह्वैरहेहमेशा ॥
दोहा-यद्यपिलह्योकलेशबहु, शंकरदेवरदान। तदपिनसेवासहिसके, सेवककीईशान ॥ १६ ॥
असमुनिदानवनारदवानी। करनलग्योहरभक्तिमहानी ॥ दानवद्रुतकेदारमहँजाई। विरचिकुंडपावकप्रगटाई ॥
काटिमांसनिजहोमनलाग्यो।हरप्रसन्नहितअतिसुखपाग्यो१७बीतेयहिविधिजबपटवासर।प्रगटभयेनहिंतहाँचंद्रधर ॥
सतयेंदिनसुरसरीनहाई।काटनलग्योशीशतहँआई॥१८॥तबशंकरअतिकृपानिधाना।शिखितेप्रगटेशिखीसमाना ॥
निजहाथनगहिदानवहाथा। कियोनिवारणतेहिगिरिनाथा॥हरकरस्पर्शपायतेहिक्षणमें।जसकीतसपलभैतेहितनमें॥
दोहा-पुनिबोलेनहिंकाटुनिज, असुरशीशबलवान। हौंप्रसन्नमैंतोहिपर, माँगुमाँगुवरदान ॥
जेजनप्रीतिसहितजलदेहीं। तिनकेहमहोइजाहिसनेहीं ॥ तैतनकाटहिकसबहुवारा। भयेदासतैअसुरहमारा ॥
दानवजोमँगिहैवरदाना। सोईहमदैहैनहिंआना ॥ २० ॥ असमुनिशंकरवचनमुरारी। महाभयावनगिराउचारी ॥
जोप्रसन्नमोपरप्रभुहोहू।यहवरदानदेहुकरछोहू ॥ जेहिजेहिशीशधरहुँनिजहाथा।तेहितेहिफाटिजाहिद्रुतमाथा ॥२१॥
असुरवचनसुनिहरभगवाना। अपनेमनमहँअतिदुखमाना ॥ पुनिहँसिकह्योएसंहीहोई। यामेंहैसंदहनकोई ॥
दोहा-देतभयेशिवअसुरको, महाघोरवरदान। सुधापिआयेसर्पके, जिमिविषहोतमहान ॥ २२ ॥
असुरपायशिवकोवरदाना। मान्योमनमहँमोदमहाना ॥ देखिउमाकोअतिअभिरामा। दानवदुष्टभयोवशकामा ॥
करनपरिक्ष्यासोवरकेरी। गौरीहरनहेतहियहेरी ॥ धरनहाथशंकरकेमाथा। आयोसन्मुखदानवनाथा ॥ २३ ॥
सत्यवचननिजराखनहेतू। लैगौरीभागेवृषकेतू ॥ कँपतभगतदशहूदिशिधावत। तासुउपायनकछुमनआवत ॥
सातखंडनौद्वीपनमाहीं। औपतालकेलोकनपाहीं ॥ सुरपुरमहँदेवनकेधामा। भ्रमतरहेभवस्थिरनहिंयामा ॥२४ ॥
दोहा-ताकोवारणकीनहिं, जानेदेवउपाय। मौनरहेतातेसबै, अतिकौतुकचितलाय ॥
तबशंकरअसमनहिविचारो। औरठौरनहिंबचबहमारो ॥ शरणागतपालकभगवाना। तहाँअवशिमैंकरहुँपयाना ॥
असकहिकैवैकुंठसिधारा। प्रकृतिपारजेहितेजअपारा ॥२५॥ जहँसंतनकेपरमपियारे। श्रीपतिवशहिदयाउरधारे ॥
जहाँगयेपुनिआवतनाहीं।नित्यभक्तजहँवसतसदाहीं॥२६॥दुखीजानिशंकरहिमुरारी।अद्भुतआशुवपुषवटुधारी२७॥
अजिनमेखलादंडहिधारे। पावकसमप्रभुतेजपसारे ॥ लियेहाथमेंकुशछविपूरी। शंभुहिलियेनाथचलिदूरी ॥
दोहा-कह्योआपयहकाकियो, विपतिलियोदैदान। तुमबैठहुवैकुंठमें, हमअबकरहिंपयान ॥
असकहिनिकटवृकासुरकेरे। गवनेनाथविनीतघनेरे॥२८॥दानवकहँलखिवचनउचारे। शकुनिपुत्रकहँआपपधारे ॥
देखिपरहुतनमेंश्रमछाये। कैधौंबहुतदूरितेआये ॥ क्षणभरिइतनेवारिश्रमलेहू। बहुश्रमकाहेतनकहँदेहू ॥ २९ ॥
जोइजो हमेरसुनिबेलायक।तौकरिकृपाअसुरकुलनायक ॥ कहहुसकलनिजआवनहेतू।हमहुसहायकरहिंमतिसेतू ॥
बलवानहुजनपायसहाई। सिद्धिकरहिंकारजसुखदाई ॥ ३० ॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिप्रभुकीसुनिमृदुबानी। सुधासमानकानसुखदानी ॥
दोहा-दानवतुरतैसुखितह्वै, हरिकोदियोसुनाय। हरकोवरनिजकृतकरम, जेहिहितआयोधाय ॥
माधवसुनिदानवकेबैना। बोलेवचनविहँसिछलऐना ॥ ३१ ॥

श्रीभगवानुवाच।

यहिविधिजोहैकामतुम्हारो। तामेंसुनियेवचनहमारो ॥ हमनहिंशंभुवचनसतिमानैं। अबवेसदाअसत्यबखानैं ॥
जबतेदक्षशापकहँपाई। तबतेभोपिशाचगिरिराई ॥ ऐसेभूतराजकीवानी। तुमसुजानकसलियसतिमानी ॥ ३२ ॥
शंकरवचनमाहँबलवारो। जोसतिहोइविश्वासितुम्हारो ॥ तौअपनेशिरमहँधरिहाथा। करहुपरीक्षादानवनाथा ॥
लागततातकरटारचो। तबशंकरसातिवचनविचारचो ॥ ३३ ॥

दोहा–जोपैतपकरनहिंलगे, तवरिपुकोपमहान । ताड्हुतेहिजातेकबहुँ, करहिनमृषावखान ॥ ३४ ॥
ऐसेमधुरवचनप्रभुकेरो । सुनिदानववगुनिउचितघनेरो ॥ भूलिगईसुधिउठनिजहाथा।धारयोतुरतआपनेमाथा ॥३५॥
धरतहाथतेहिशिरफटिगयेऊ।मरिअसुरेशगिरतमहिभयऊ।।देखिदेवतहँअसुरविनाशा।जयजयकीन्हेंसवहिअकाशा॥
पुनिबहुभाँतिसराहनलागे । प्रभुहिंप्रणामकियेमुदपागे ॥ पितरदेवगंधर्वनपाँती । वर्षनलगेसुमनबहुभाँती ॥
यहिविधिशंकरसंकटकाटी॥३७॥बोलेहरसोंहरिमुदठाटी॥यहपापीनिजपापहितेरे।गमनकियोयमराजहिनेरे ॥३८॥
दोहा–सहजहुजनकोजोकरत, जगमहँअतिअपकार । सोउकल्याणनपावतो, पुनिकाकहैंतुम्हार ॥ ३९ ॥
यहिविधिशिवकोनाशिदुख, विदाकीनभगवान । गेगिरीशकैलासको, उमासहितहरषान ॥
हरिकोयहशिवदुखदलन, गावैसुनैजोकोइ । सोछूटैसंसारते, शत्रुभीतिनहिंहोइ ॥ ४० ॥
इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजा
बहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ
दशमस्कंधे उत्तरार्धे अष्टाशीतितमस्तरंगः ॥ ८८ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–महाराजइककालमें, सरस्वतीकेतीर । करतरहेमखविधिसहित, जुरीमुनिनकीभीर ॥
होतभयोतिनकोसंदेहू । कहेपरस्परमिथ्योनकेहू ॥ विधिहरिहरयेबडेसदाहीं । अहैअधिककोतिनहूँमाहीं ॥ १ ॥
यहजाननहितसकलमुनीशा । भृगुहिपठावतभयेमहीशा॥प्रथमविरंचिसभासोजाई॥२॥वंदनकियोनतेहिशिरनाई॥
तवविरंचिकीन्ह्योंअतिरोपू॥३॥पुनिसुतजानिगन्योनहिंदोषू॥४॥तवभृगुगमनकियोकैलासा।रहेउमायुतजहँदिग्वासा ॥
निजभ्राताकहँलखित्रिपुरारी । उठेमिलनकहंभुजापसारी ॥५ ॥ भृगुकहँमिलनयोगनहिंमेरे । वेदविरुद्धकर्महैंतेरे ॥
दोहा–सुनिमहेशकैअरुणदृग, लीन्ह्योंशूलविशाल । धावतभेभृगुहननको, करिकैकोपकराल ॥ ६ ॥
तबगौरीपदपरिससुझायो।मृदुलवचनकहिकोपमिटायो॥पुनिभृगुगमनकियोवैकुंठा।जहँकमलापतिबुद्धिअकुंठा ७॥
रमासेजसोवतसुखकारी । ऐसेभृगुमुनिलख्योमुरारी ॥ कीन्ह्योंउरमहंचरणप्रहारा । तबहरिउठिभृगुमुनिहिनिहारा॥
उतरिसेजतेयुतनिजवामा । शिरसोंमुनिकहँकीनप्रणामा॥८॥पुनिबोलेमाधवसुखछाई । बैठोमुनियहिसेजसुहाई ॥
मोपरकरिकैकृपामहाई । दर्शनदियोनाथइतआई ॥ आगमजान्योनाहिंतिहारो । क्षमाकरहुअपराधहमारो ॥ ९ ॥
दोहा–अतिशयकोमलचरणतव, अतिकठोरहियमोर । दरदहोतिह्वैहैसही, यहदुखहोतनथोर ॥
असकहिविप्रचरणनिजहाथा । मींजनलागेत्रिभुवननाथा॥१०॥पुनिबोलेप्रभुमंजुलवानी।सुनहुँविनैमेरीमुनिज्ञानी ॥
लोकलोकपनयुतमुदभरहू । मोहिंपदजलतेपावनकरहू॥११॥लक्ष्मीयोग्यभयोमैंआजू।कृपापायतुम्हरीद्विजराजू ॥
तवपदहतगतअघममछाती । वसीआजुतेश्रीदिनराती ॥ १२ ॥

श्रीशुक उवाच ।

असमुनिअद्भुतवचननाथके । जेदीननकर्तासनाथके॥गद्गदभरभृगुभरिदृगनीरा । चल्योमौनलहिमोदगँभीरा॥१३॥
मुनिनयज्ञमहँसोफिरिआयो । तीनहुदेवचरितसोगायो ॥ १४ ॥
दोहा–सुनिभृगुमुनिकेवचनसब, अतिशयआनँदपाय । विस्मितभेहरिचरितमहँ, शंकासकलविहाय ॥
कृष्णहिसबतेअधिकगुनि, तिनकेचरणसरोज । भजनलगेअतिप्रीतिकरि, सिगरेमुनिप्रतिरोज ॥
हरिकेभजेशांतिहोइजाती । हरिकेभजेअभैसबभाँती ॥ १५ ॥ हरिकेभजेधर्मसबपूरै । हरिकेभजेपापसबदूरै ॥
हरिकेभजेहोतहैज्ञाना । हरिकेभजेविरागमहाना ॥ हरिकेभजेविभौसबपावै । हरिकेभजेसुयशजगछावै ॥
हरिकेभजेभक्तिउरहोती । हरिकेभजेबुद्धिनहिंकोती ॥ हरिकेभजेहोतभवपारा । हरिकेभजेमिलतसुखसारा ॥
हरिकेभजेनरकनहिंजावै । हरिकेभजेनपुनिभवआवै ॥ हरिकेभजेउभैगतिबनती । हरिकेभजेसंतमेंगनती ॥

दोहा-हरिकेभजेअनंदहै, हरिकेभजेनदंद। हरिकेभजेनफंदहै, हरिकेभजेनमंद ॥ १६ ॥
जेसबजगनिजसमहियहेरे। शांतअकिंचनसज्जनकेरे॥ अहैंपरमगतिश्रीयदुराई। सत्यकहौंयहभुजाउठाई॥ १७॥
अहैसतोगुणमयप्रभुप्यारे। इष्टदेवजेहिविप्रउदारे॥तिनकोभजहिंछोडिसबआसा॥जिनकेउरवरबुद्धिविलासा॥१८॥
आकृतिताकीतीनप्रकारा।राक्षसअसुरहुसुरहुअपारा॥सतरजतमत्रिगुणितप्रभुमाया॥विविधभाँतिइनसबउपजाया॥
पैप्रभुकेमिलिबेकोसाधन। अहैसतोगुणकरिअवराधन ॥ १९ ॥

श्रीशुक उवाच।

यहिविधिसरस्वतीतटवासी। भाषिभाषिमुनिपरमहुलासी॥
दोहा-सबनिजशंकामेंटिकै, कृष्णचरणचितलाय। प्रेमपयोनिधिपूरिहिय, निवसेहरिपुरजाय ॥ २० ॥

सूत उवाच।

स०-श्रीशुकआननइंदुतेकृष्णकथासुधारकढ़ीमनहारी। पापिनतापिनजीवसतापिनभौनिधिकीविधितारनवारी॥
जोश्रुतिअंजुलितेबहुबारकरैंजनपानसुप्रीतिपसारी। ताकहँश्रीरघुराजकरैंयदुराजविशेषिविकुंठविहारी ॥ २१ ॥
सोरठा-अबसुनियेकुरुनाथ, परमविजयप्रद्युम्नकी। हन्योआपनेहाथ, वज्रनाभअसुरेशकहँ॥
रह्योअसुरइकअतिबलधामा। वज्रनाभअसजाकोनामा॥ सोशठमेरुशिखरमहँजाई। कियोमहातपअतिमनलाई॥
तापरह्वैप्रसन्नकरतारा। आयनिकटअसवचनउचारा॥ माँगुमाँगुवरदानवराई। कियोकठिनतपयहथलआई॥
माँग्योवज्रनाभवरभारी। देवनतेप्रभुमीचुहमारी॥ होइकहूँनहिंकौनिहुकाला। जीतहुँमैंसबसुरनउताला॥
नाथवज्रपुरमोहिरचिदेहू। प्रविशिनसकैंकबहुँकोउकेहू ॥ विनामोरअनुशासनपाई। पवनहुसकैकबहुँनहिंआई॥
दोहा-सकलरतनमैंहोयपुर, सबसंपदासमेत। भेदिसकैनहिंसुरअसुर, असकरुकृपानिकेत ॥
एवमस्तुकहिकैकरतारा। बहुरिआपनेभवनसिधारा ॥ वज्रनाभलहिअसवरदाना। भयोजगतमहँअतिबलवाना॥
विश्वकर्माकृतवज्रनगरमहँ। वज्रनाभभटवस्योसैनसह ॥ रहेदैत्यतेहिंतीनकरोरा। बलिमायावीअतिवरजोरा॥
रहेअवध्यसुरनतेसर्वा। भरेमहाबलकेनिजगर्वा॥ तेभटवज्रनगरचहुँओरा। वसतरहेरचिभौनकरोरा॥
यहिविधिवज्रनाभबलवाना। पायविरंचिमहावरदाना॥ चह्योउपद्रवकरनजगतमें। दियोनकोउयुधजगतभमतमें॥
दोहा-तबइंद्रहिजीतनचल्यो, करनत्रिलोकीराज। गमनकियोअमरावती, लैदानवीसमाज॥
कह्योइंद्रसोजायसुरारी। अबइच्छाअसभईहमारी॥ हमहिकरहिंत्रिभुवनकोराजू। तुमबहुकालकियोसुरराजू॥
तातेछोडिदेहुअमरावति। रहियोह्वैममदासमहामति॥ मनिहौजोसाधारणनाहीं। तौहमजीतिलेबतुमकाँहीं ॥
जोबलहोययुद्धतोदेहू। नातोभजहुछोडियहिगेहू॥ वज्रनाभकीसुनिअसबानी। युद्धकियेजीतबनहिंजानी ॥
मंत्रबृहस्पतिकेसँगकरिकै। बोल्योवासवअतिभयभरिकै॥ जेकश्यपपैहैंपिताहमारे। अबैकरतहैंयज्ञउदारे॥
दोहा-ह्वैहैयज्ञसमाप्तजब, तबकरिविमलविचार। जानिपरीजोकछुउचित, सोकरिहैंतेहिवार॥
दानवइंद्रवचनअससुनिकै। कश्यपनिकटगयोसुखगुनिकै॥निजअभिलाषइंद्रकीबानी॥वरनिगयोपितुसोअभिमानी॥
सुनिकश्यपअसगिराउचारी। अबैहोतिहैयज्ञहमारी॥ जबयहमखतेनिर्वृतह्वैहैं। तबतुमसोंविचारिपुनिकैहैं॥
अबैवज्रपुरकहँतुमजाहू। वसहुपुत्रनहँसहितउछाहू॥ सुनिअसकश्यपकेरनिदेशा। वज्रनगरगवन्योअसुरेशा॥
वासवतहँअतिमनहिडेराना। कियोद्वारिकैतुरतपयाना॥ अंतरहितह्वैहरिढिगआई। वज्रनाभकीकथासुनाई॥
दोहा-तबहरिबोलेविहँसिकै, सुनाशीरसुनिलेहु। दूरिकरहिंगेआशुही, हमतुम्हारसंदेहु ॥
ह्वैहैपितुवसुदेवकी, अश्वमेधजबयाग। तबदानवकोदलहिगे, करिउपायबडभाग॥
असकहिइंद्रविदाप्रभुकरिकै। जनकयज्ञविरच्योसुखभरिकै॥ तामखमेंमुनीशबहुआये। नर्त्तकगायकबहुदरशाये॥
भद्रनामनटहूतहँआयो। नाचिमुनिनबहुभाँतिरिझायो॥ ह्वैप्रसन्नमुनिकहवरदेनै। सोमाँग्योअसवरभरिचैनै॥

जाकेसन्मुखकरहुँतमासा। सोप्रसन्नपुजवहिममआसा॥ गतिनरोकिकहुँजायहमारी। गमनहिनहिंजहँसुरहुसुरारी॥
एवमस्तुकहिसबहिमुनीशा। गमनकियेनिजधाममहीशा॥असवरमुनिगणतेनटपायो।त्रिभुवनविचरनलग्योसुहायो॥

दोहा—तेहिऔसरवासवहराषि, धार्तराष्ट्रजेहंस। तिनकोआसुबोलायकै, ऐसोकियोप्रशंस॥

हंसवज्रपुरगवनहुआसू। तहँसरसिनमहँकरहुविलासू॥ वज्रनाभकीजोइककन्या। प्रभावतीनामकजगधन्या॥
चंद्रसरिसजेहिवदनप्रकासा। पसरतिजासुप्रभाचहुँपासा॥ करिउपायताकेढिगजाई। दिहेहुकृष्णसुतकथासुनाई॥
कुलअरुशीलरूपप्रभुताई। बलविक्रमदीन्ह्योंसबगाई॥ जबप्रद्युम्नमहँवहअनुरागै। तासुबाततेहिश्रुतिप्रियलागै॥
सबद्वारावतिआशुहिजाई। लैजैयोप्रद्युम्नलेवाई॥ हरिसुतदैत्यसुताकोसंगा। करवायेहुतुमहंसअभंगा॥

दोहा—पुनिकीजोअसजतनतुम, जातेकृष्णकुमार। वज्रनाभकोसैनयुत, संगरकरैसँहार॥

हमसुरसहितसकैंनसँहारी। वज्रनाभहैभटबलभारी॥ वज्रनाभकोमारनहारो। इयजगमेंइककृष्णकुमारो॥
तेहिंपुरप्रविशिसकैनहिंकोई। महाबलीजगमहँहैसोई॥ ममशासनशिरधरितुमहंसा। यहउपायकरिकरुअरिध्वंसा॥
हंससुनतवासवकेवैना। एवमस्तुकहिलहिअतिचैना॥ वज्रनगरकहँकियेपयाना। वासववचनपरमहितमाना॥
अतिरमणीयतड़ागसोहावन।विलसहिंविपुलकमलसुखछावन।कनकवापिकाजहाँसोहाँहीं।बनीवाटिकाथलथलमाँहीं

दोहा—मंजुमनोहरनादकरि, वसेहंसतहँजाइ। वज्रनाभअंतहपुरहि, सरसिनरहेलोभाइ॥

सुनतमनोहरसुरतिनकेरो। भूपअनूपरूपतिनहेरो॥ वज्रनाभहंसनढिगजाई। दियोमनोहरवचनसुनाई॥
रहहुहंसतुमसदास्वर्गमहँ। बोलहुसदामनोहरस्वरकहँ॥ रहहुसदाइतआवतजाता। हमतेनिर्भयरहोविख्याता॥
बज्रनाभकेवचनमानिकै। वसेहंसअतिमोदजानिकै॥ सुरपतिकार्यकरनकेहेतू। करिलीन्हेंपरिचयमतिसेतू॥
मानुषसमबोलनतेलागे। नरनारिनमहँअतिअनुरागे॥ एकसमयतहँविचरतमाँहीं। लखेहंसपरभावतिकाँहीं॥

दोहा—हंसीइकअतिशयचतुरि, नामशुचीचिमुखिजासु। प्रभावतीसौकारिलियो, अतिमित्रताप्रकासु॥

एकैसंगरहनदोउलागीं। प्रीतिरीतिकेरसमेंपागीं॥ एकसमैशुचिमुखीसयानी। प्रभावतीसोंबोलीवानी॥
अतिशयसुंदररूपतिहारो। सकलगुणनयुतशीलअगारो॥ तातेमैंकछुकहनचहतिहौं। पैतुवभयवशमौनिरहतिहौं॥
ऐसोरूपभरयोअतियौवन। विनविलासवीततहैछनछन॥ जोजोहैसोबहुरिनऐहै। सरितनीरसोपुनिनदेखैहै॥
भोगयोगतुमभईसयानी। पैकोउवारनमिल्योछबिखानी॥ ऐसोउमिरिमिल्योवरनाहीं। तातेदुखनहिंऔरंजनाहीं॥

दोहा—करनस्वयंवरकहतहै, तवपितुअतिमतिवान। सुरअसुरनकेसुमतमहँ, पैहौपैनसमान॥

कहँऐहैइतकृष्णकुमारा। नामजासुप्रद्युम्नउदारा॥ जाकेरूपसरिससुनुप्यारी। मैत्रिभुवनमहँकहुँननिहारी॥
परमविमलकुलहैयदुकेरो। जेहिंपरशंसतवेदघनेरो॥ तामेंकृष्णलियोअवतारा। ताकोहैप्रद्युम्नकुमारा॥
जासुसरिसत्रिभुवननहिंशूरा। सकलगुननतेवहहैपूरा॥ देवनमेंहैदेवसमाना। दानवमेंदानवपरधाना॥
मानुषमेंअतिमानुषसोई। धरमात्मातेहिसमनहिंकोई॥ जेतनीमायाहैंजगमाहीं। असनहिंकोउजोजानतनाहीं॥

दोहा—त्रिभुवनकेसबवस्तुको, ऐंचिऐंचिसबसार। प्रगटायोयहजगतमें, हरिप्रद्युम्नकुमार॥

स०—कोटिशशीसिलसीमुखमेंछटिसीसिसुधासीढरैमृदुवानी।भौंहकसीधनुसीविलसीगतिमेंनसिकेहरिकीगतिमानी।
कामफँसीसिफबैमुसक्यानियशीजगमेंसबभाँतिसयानी। नेसुकनैनकिसैनलखेदिविदेवनदारहुहोतिदेमानी॥
तेजमेंसूरजसोजगमेंसुगभीरतासिंधुसीशीलकिभाई। पावकसेहैप्रकाशमेंपूरछमासीछमासबकोसुखदाई॥
विक्रममेंतोत्रिविक्रमकेसमशक्रौअतिक्रमतानहिंपाई। मारहिकृष्णकुमारभयोतौकहाँलगिजायबडापनोगाई॥

सोरठा—तेरेभाग्यवशात, कृष्णकुँवरजोपैमिलिहि। तौसतिमानहिबात, पूजिहितुवमनकामना॥

दोहा—सखीशुचीमुखिकेवचन, चंद्रमुखीसुनिकान। प्रभावतीअसिकहतिभै, आनँदउरनसमान॥

महूँसुन्योकाननबहुवारा। नारदअरुपितुवचनउचारा॥ अच्युतलियअवनीअवतारा।मनुजसरिसबहुकरहिंविहारा॥
निजआयुधदैत्यमकुलजारा।होइनकसअसतासुकुमारा॥ पितुकुलतेपतिकुलबडवारा।असवेदनसतिकियोउचारा॥

तातेहेसखिसुनहुहमारा । जोकीन्ह्योंउरविमलविचारा ॥ होइकंतममकृष्णकुमारा । सोउपायकरुलगैनवारा ॥
सुन्योमहूँहरिसुतअवतारा । कियसंवरसंगरसंहारा ॥ विक्रमताकोसत्यअपारा । ताहिसरिसनहिंऔरउदारा ॥

दोहा–जबतेश्रवणनमेंपरे, सुंदरवचनतुम्हार । तबतेमनप्रद्युम्नमें, लाग्योसखीहमार ॥

पैनहिंसखीदेखातउपाई । जामेंहरिसुतमोहिमिलिजाई ॥ मैंदासीहौंसखीतिहारी । अबपुजबहुअभिलाषहमारी ॥
तेरेपाँयनपरहुँसयानी । ल्यावैइतसुतशारंगपानी ॥ जोइतकृष्णकुँवरकोलैहै । तौफलप्राणदानकोपैहै ॥
प्रभावतीकीसुनिमृदुवानी । हंसीकहनलगीहरषानी ॥ तेरेहितमैंदूतिहुह्वैहौं । करिउपायहरिसुतहिमिलैहौं ॥
बैठैहौंहरिसुततुवपासा । तबपूतिहिसबविधिममआसा ॥ अबनहिंकरुशंकासुकुमारी । सुरतकियेरहुगिराहमारी ॥

दोहा–असकहिकैहंसीतहाँ, वज्रनाभढिगजाय । करिवंदनबैठतभई, दानवउरसुखछाय ॥

तबअसुरेशकह्योअसिबानी । सुंदरिहमसोंकहहुबखानी॥त्रिभुवनमहँतुमविचरतरहहू । कहँकौतुकदेख्योसोकहहू ॥
तबहँसीहँसिगिराउचारी।कौतुकयहमोहिपरयोनिहारी ॥ नटनिरख्योमैंयकहगमाहीं।जाकेसमत्रिभुवनकोउनाहीं ॥
जोकबहूँकोउकियनप्रकासा । सोनटनाटककरततमासा ॥ अहैकामरूपीनटसोई । मोहतहैजोहतहैजोई ॥
शिवविरंचिवासवदरबारे । औरहुभूभूपतिनअपारे ॥ जहाँतमासाकरतोजाई । तहँतुरततेहिंलेतरिझाई ॥

दोहा–सुरपुरनरपुरनागपुर, कौतुककरतविचित्र । नटनितविचरतरहतहै, मानहिसबतेहिंमित्र ॥

सुनिहंसीकेवचनसुरारी । ललकिआशुअसगिराउचारी ॥ कौतुकसोनटकेरमहाना । चारणमोसेंकियेबखाना ॥
तबतेदेखनतासुतमासा । मेरेमनबाढीअतिआसा ॥ ल्यावैहँसीताहिलेवाई । तुरततमासादेदिखवाई ॥
तबशुचिमुखीकह्योमुसक्याई । गुणग्राहकतुमदानवराई ॥ काननसुनतरावरोनामा । नटऐहैंआशुहियहिधामा ॥
मैंतेहिलैहौंअवशिलेवाई । कौतुकदेहौंतुम्हैंलखाई ॥ तबदानवबोल्योहरषाई । करिउपायतैल्यावलेवाई ॥

दोहा–तबहंसीचलिकैतुरत, सबहंसनलैसाथ । सुरपतिसोवृत्तांतकहि, गईजहाँयदुनाथ ॥

हरिसोकहिगैसकलहेवाला । तबप्रदुम्नहिकह्योकृपाला ॥ गवनहुँवेगिवज्रपुरमाहीं । व्याहहुतहाँप्रभावतिकाहीं ॥
तबहर्षितयदुनंदननंदन । चल्योतहाँकरिपितुपदवंदन ॥ आपभयोसबनटकोनायक।सांबहिकियोविदूषकलायक ॥
गदकोपारिपार्श्वतहँकीन्ह्यों । औरहुनर्तकबहुसँगलीन्ह्यों ॥ वारवधुनकोनटीबनाई । भद्रहुनटकोसंगलेवाई ॥
मायामैंरचिकामगजाना । जौनउडनवारोअसमाना ॥ तापरसबकोलियोचढाई । चल्योवज्रपुरसुतयदुराई ॥

दोहा–रह्योवज्रपुरबाहिरे, शाखानगरमहान । तहँपहुँच्योप्रद्युम्नभट, धरिनटवेषसुजान ॥

दानवसकलसुन्योंअसकाना । आयेनटकौतुकीमहाना ॥ तिनहिबोलायकियोसतकारा । लागिगईदानवदरबारा ॥
औरहुजुरेबालबहुनारी । देखनकोनटकौतुकभारी ॥ तबजेदानवरहेप्रधाना । नटनबोलिअसवचनबखाना ॥
जोआवैतुमकोगुणखासा । सोकीजैअबआशुतमासा ॥ एवमस्तुप्रद्युम्नउचारी । रामायणलीलाविस्तारी ॥
आपभयेरघुनंदनरूपा । गदकहँलछिमनकियोअनूपा ॥ सांबहिजनकसुताकरिलीन्ह्यो।भद्रनामनटदशरथकीन्ह्यो॥

दोहा–औरहुसबजेनटरहे, औरनटीछविखानि । तेतेसोईरूपधरि, लीलारचेमहानि ॥

प्रथमहिप्रगटेदशरथराजा । भाइनभृत्यनसहितसमाजा ॥ विनापुत्रतिनकोदुखभयऊ । तबसुमंत्रसोमंत्रहिलयऊ ॥
रोमपादभूपतिपुनिप्रगटे।गणिकनआन्योपुनिनिजनिकटे॥तिनसोंकहइऋषिशृंगीहिल्यावहु।तौतुममेरेउरसुखछावहु॥
वारवधूकाननमहँजाई । शृंगीऋषिकहँतुरतलोभाई ॥ रोमपादकेनिकटहिआनी । तिनकोलखिनृपअतिमुदमानी॥
तिनकहँशांतासुताविवाही।तहँगवन्योदशरथहुउछाही॥शांतायुतमुनिकहँघरल्यायो । अश्वमेधकीन्ह्योसुखछायो ॥
पुत्रइष्टिकियरघुकुलराऊ । चारिपुत्रभेंअमितप्रभाऊ ॥

दोहा--रामभरतअरुलखनरिपु, सूदनअसजिननाम । करीबाललीलाललित, अवधनगरकेधाम ॥

विश्वामित्रभूपढिगआये । मखरक्षणहितविनैसुनाये ॥ रामलखनकहँमाँगिमुनीशा । चलेसंगलैदेतअशीशा ॥

मारगमहँमुनिअतिसुखछाई। रामलखनकहकथासुनाई॥ पुनिताडकैहन्योरघुनाथा।पुनिमुनिआश्रमगेधनुहाथा॥
तहँमारीचहिरामउडायो॥ हन्यौसुबाहुपरमसुखछायो॥ पुनिविशालपुरगेरघुराई। मिलेसुमतिकहँअतिहरषाई॥
रघुवरपदलहिगौतमनारी। प्रगटकियोसत्काररहिभारी॥ जनकनगरगैपुनिदोउभाई। सभामध्यधनुभंज्योजाई।
दोहा–सीयस्वयंवरहोतभो, चारिउबंधुविवाह। परशुरामकोमदहन्यो, अवधगयेसउछाह॥
रामतिलकलखिकैकइशोकू। पुरजनकाहभयोदुखथोकू॥ रामसीयलछिमनवनगौने। दशरथगेसुरपतिकेभौने॥
गंगातटनशिमिलेनिषादे। पुनिप्रयागगैयुतअहलादे॥ चित्रकूटगैअतिसुखधामा। वसेजानकीलछिमनरामा॥
भरतशत्रुहनअवधहिआये। करिपितकृत्तिपरमदुखछाये॥ चित्रकूटगैरामलेवामे। लैपादुकागयेनिजधामैं॥
अनसुइयाआश्रमगैरामा। लैपादुकावसेनिजधामा॥ मिलिशरभंगहिकृपानिकेतू। मिलेअगस्तिहिशिष्यसमेतू॥
दोहा–पंचवटीमहँवसतभे, काटिसुपनखानाक। खरदूषणत्रिशिरादिवधि, कियोविजैकीधाक॥
हन्योमरीचहिपुनिरघुराई। रावनहरीसीयकहँआई॥ पुनिजटायुसँगसंगरभयऊ। ताहिसीयसुधिपितुगतिदयऊ॥
पुनिकबंधकराकियोविनाशा। शबरीकहमिलिसहितहुलासा॥ कियोसुकंठहिसंगमिताई।बहुरिवालिमारयोरघुराई॥
मारुतसुतहिसीयसुधिहेतै। पठयोलंकाधिपतिनिकेतै॥ सोकूद्योशतयोजनसागर।सियहिरामसुधिदियसुखआगर॥
बागउजारिराक्षसनमारी। आयोतहँलंकापुरजारी॥ सागरतटगवनेरघुराई। सेतुरचेकपितरुगिरिल्याई।
दोहा–सेनसहितसागरउतरि, जायलंकरघुनाथ। सकुलसदलरणघोरकरि, हनतभयेदशमाथ॥
सीतालहिचढिपुहुपविमानै। कियेअवधपुररामपयानै॥ पुनिभोरघुपतिनृपअभिषेकू। भयेसुखीपुरप्रजाअनेकू॥
रामचरित्रनिरखितेहिठामा। जकिसबरहेलहेसुखधामा॥ वृद्धअसुरतेहिकालहिकेरे॥ बारबारवचननअसटेरे॥
हँसतिहँसतिहँसतिभयऊ।यहनटअतिअचरजकरिगयऊ उठिउठिरेलिरेलिझुकिझुकिकै।लखहितमासाकोउलुकिलुकिकै
अनमिषदानवसबैनिहारैं। अपनेउरविस्मयअतिधारैं॥ बारबारसबनटनसराहै। सबकेअतिशयबढ्योउछाहै॥
दोहा–मणिनमनोहरहारबहु, वसनअमोलअनेक। ल्यायल्यायनिजगृहनते, दीन्हेंनटनअनेक॥
कोउदानवद्रुतहीतहँधाई। वज्रनाभकोविनयसुनाई॥ नाथनवीननगरनटआये। अबलोंआँखिनअसनलखाये॥
गाउबनाचबबाजबजाउब। तिनकोसत्यसुधाकरप्याउब॥लख्योननैननसुन्योनकाना।जसनटकौतुककरहिंमहाना॥
वज्रनाभसुनिदानववानी। दूतनबोलिकह्योसुखमानी॥ शाखानगरजाहुतुमधाई। ल्यावहुममढिगनटनबोलाई॥
दूतहुनटननिकझटआई। वज्रपुरहिलैगयेलेवाई॥ तिनकोघेरिसबैपुरवासी। चलेसंगमहँआनँदरासी॥
दोहा–वज्रनाभकेनिकटमहँ, चलिनटकीनसलाम। तिननिवासहितदेतभो, नवअवाससुखधाम॥
बहुविधिभोजनहितपकवाना। पठयकियोसत्कारमहाना॥ सभामध्यबैठोअसुरेशा। सजवायोसबसाजुनिवेशा॥
महामहादानवनबुलाई। अतिदीरघदर्बारलगाई॥ नटनबोलावनदूतपठायो। तेनटसभाजायशिरनायो॥
मोहितभोलखिनटनसुरारी। दियोभूरिभूषणपटभारी॥ तहँझरोखनचिकनदुराई।लखनतमासातियनबोलाई॥
सकलसमाजजबैजुरिआई। तबदानवअसगिरासुनाई॥ नटअबअपनोकरहुतमाशा। देखनकीसबकीमनआशा॥
दोहा–सुनिप्रद्युम्नउठिकैतुरत, दियोलगायकनात। पहिरिपोशाकसुहावनी, कौतुककियोविख्यात॥
लगेसुहावनबाजबजावन। सुधासरिसश्रवणनसुरप्यावन॥ हरिसुतलियनिजहाथमृदंगा। तैसहिसांबवीनबहुरंगा॥
गदबाँसुरीबजावनलागे। सबदानवनमोहसोपागे॥ नाचनलगीनटीगतिधारी। इकटकदानवरहेनिहारी॥
कियोअरंभरागगांधारा। काननपरीअमीसीधारा॥ सुरसंपदासहितलैताला। गावतभईनटीतेहिकाला॥
लीलाकियगंगाअवतारा। ल्यायेभूपभगीरथधारा॥ पुनिप्रद्युम्नअसवचनबखाना। औरतमाशालखहुसुजाना॥
दोहा–रावणकृतरंभागवन, नलकूबरकीशाप। सोहमदेतदेखाइहैं, तुमकोमहाप्रताप॥
असकहिसूरनाभयदुकाही। रावणरूपबनायतहाँही॥ पुनिमायामयरचिकैलासा। मनोवतीरंभासविलासा॥
नलकूबरप्रद्युम्नह्वैगयऊ। सांबकुमारविदूषकभयऊ॥ गह्योदशाननजेहिंविधिरंभै। सोइलीलासबकियोसदंभै॥

जेहिविधिनलकूबरिदियशापा। लहीदशाननजेहिविधितापा॥ सोसबलीलाप्रगटदेखायो।सकलदानवसत्यजनायो॥
नाचहिंगावहिंभाउबतावहिं। नकलदेखावहिंबाजबजावहिं॥ मोहिगयेसबदानववीरा। बहनलगेसबकेदृगनीरा॥
दोहा-वज्रनाभअतिमोदलहि, बारहिंबारसराहिं। कह्योनअसनिरख्योकबहुँ, सुन्योनकाननमाहिं॥
असकहिभूषणवसनअमोला। औरहुमणिगणपरमअतोला॥ वैदूरजमणिकेबहुहारा। औरविमानविचित्रअपारा॥
कामगरथअकाशकैगामी। गजअकाशचारीबहुनामी॥ शीतलसुखदसरसअँगरागा। वज्रनाभदीन्ह्योंसुखपागा॥
औरहुबहुतरतनपटभारी। नटनदियेदानवदरबारी॥ दियोइनामअमितसुखमानी। वज्रनाभदानवकीरानी॥
बारबारकरिकैसतकारा। वज्रनाभवरवचनउचारा॥ नटदीन्ह्योंहमकोसुखभारी। कबहुँनहमअसनृत्यनिहारी॥
दोहा-जाहुसदनकहँआजुअब, कालिहआइयोफेरि। वसहुहमारेनगरमहँ, करिकैप्रीतिघनेरि॥
असकहिनटनविदाकरिदीन्ह्यों। आपहुगवनभवनकहँदीन्ह्यों॥तहँहंसीशुचिमुखीसुहाई।प्रभावतीकेनिकटहिजाई॥
बोलीवचनमंदमुसक्याई। मैंद्वारिकापुरीमहँजाई॥ लखिइकांतमहँकृष्णकुमारे। तोरिप्रीतिकहिगईअपारे॥
सोसुनिअतिआनंदितभयऊ। मोहिंनिदेशवेशअसदयऊ॥ आजुसाँझकेहमउतऐहैं। प्रभावतीकहँअतिसुखछैहैं॥
कंतमिलनकीकरहुतयारी। धनिहैभाग्यतोरसखिप्यारी॥ मेरेवचनसत्यउरराखे। मृषाकबहुँयदुकुलनहिंभाखे॥
दोहा-सखीशुचीमुखिकेवचन, प्रभावतीसुनिकान। हरषीवरषीनैनजल, रह्योनतनमनभान॥
पुनिहंसीसोंगिराउचारी। आजुसत्यसखिभईहमारी॥ आजुनिशामहँममगृहमाहीं। सैनकरहुकछुसंशयनाहीं॥
तुमतेयुतमैंप्राणपियारो। देखनचहौंमहाछबिवारो॥ मिलतअकेलेमोहिंभयलागी। बोलिनअईलाजअतिजागी॥
हंसीकह्योसैनमेंकरिहौ। तुवकारजकरिअतिमुदभरिहौ॥ तबहंसीकहँलैसँगप्यारी। मणिमंडितचढिगईअटारी॥
रचितजौनविश्वकर्माकरकी। मनुप्रगटीसुखमाआकरकी॥ तहाँसाजुसबसुखदसजाई। बैठीकंतमिलनचितचाई॥
दोहा-बिदामाँगितातेतुरत, हंसीवायुसमान। कृष्णकुँवरआननहितै, आशुहिकियोपयान॥
जायप्रद्युम्ननिकटसोहंसी। कहीप्रभावतिप्रीतिप्रशंसी॥ दनुजसुताढिगआशुहिआई। अतिप्रमुदितह्वैगिरासुनाई॥
इकक्षणधीरजधरहुकुमारी। आवतहैंतुवआनँदकारी॥ उतैकृष्णनंदनछबिवारो। मालिनिकोमगमाहिंनिहारो॥
प्रभावतीहितलैसुममालै।जातरहीसंयुतअलिजालै॥तबमधुकरह्वैकृष्णकुमारा। मिलिप्रविश्योअलिअवलिमँझारा॥
मुदितमालमालिनलैजाई। प्रभावतीकहँनजरकराई॥ तासुसमीपधरयोसुमभाजन। गुंजहिंभृंगपरमसुखसाजन॥
दोहा-एतनेमेंआवतभई, साँझसमयसुखदानि। जातभईउडिअलिअवलि, गुंजतमत्तमहानि॥
अलिवपुकृष्णकुमारतहँ, अलिअवलीनविहीन। धारिरूपलवुलुकिरह्यो, तेहिंतार्टकप्रवीन॥
इतनेहीमेंउदितभो, पूरुवपूरणचंद। विरहिनकोदुखदंदकर, संयोगिनआनंद॥
बरवैछन्द-वैदमुखीलखिचंदैगहिसखिहाथ। बोलीवहकबऐहैंसुतयदुनाथ॥
शशिकरनिकरशरीरैसरसीलागि। होतीहालदुशालैअतिदुखपागि॥
तनकंपतमुखसूखतबहदृगवारि। विरहज्वालजारतिअँगमलयबयारि॥
ललकतमेरोजियरादरशनहेत। अबसखिवेगिमिलनकोकछुकरुनेत॥
यदपिसुधाकरसुखकरसबकहँहोत। तदपिआजुमोहिंदाहतकियोउदोत॥
एकरविअस्तप्रतीचिलियजलसेज। एकरविप्रगटेप्राचीतीखनतेज॥
असदुखपरयोनकबहूँसजनीमोहिं। वेगिमिलावैपियकोदयानतोहिं॥
श्रवणसुन्योनहिंदेख्योतासुसरूप। जरनलगेअबहीतेअंगअनूप॥
धिगधिगहैधिगहैसखिनारिसुभाउ। थोरेहिमेंदुखथोरेहिहोतउछाउ॥
हेसजनीसतिमानैमेरीबात। विनापियमिलनभयेजिययमपुरजात॥
नहिंसोहातघरबाहेरनहिंपरिवार। छलियाअतिछलकीन्ह्योंछलीकुमार॥

मदनभुजंगमकाटचोमोहिसखिधाय। चढिआयोविषकैसेजीहैंहाय॥
आलीअबअचरजयहलेहिनिहारि। चंद्रकिरणतेप्रगटीआजुदमारि॥
सुनतरहीमलयानिलशीतलहोत। मेरेअँगअँगपावककरतउदोत॥
लागीउरमेंआलीमदनदमारि। प्यायपियाअधरामृतदेहिनेवारि॥
सजनीजससजसरजनीआवतजाति। तसतसउरहिधीरतामोरिपराति॥
अंगशिथिलसबह्वैगेदृगनदेखात। येतेहुपरवहकपटीनहिंदरशात॥

दोहा–मरीमर्रामैंयहघरी, सुनुरीअरीसयानि। असउचरीरीपीरिपरी, विरहभरीमुरझानि॥

प्रभावतीताटंकहितेतव। हंसीकोसुनिपरचोसुखदरव॥ मोविरहानलजरतिकुमारी। प्रगटबउचितहिपरतनिहारी॥
तातेप्रगटतहौंअबहंसी। देहौंसुखयाकोदुखध्वंसी॥असकहिप्रगटचोकृष्णकुमारा। मनहुकोटिशशिप्रभापसारा॥
रह्योप्रकाशअवासहिछाई। देखतबनैवरणिनहिंजाई॥ प्रभावतीसोंतबकहहंसी। उठुलखुपतिनिजजगतप्रशंसी॥
उठीचंद्रमुखिचौंकितुरंते। लख्योकंतविलसंतअनंते॥ उरहिबढ्योआनंदअपारा। पर्वपायजिमिपारावारा॥

दोहा–कबहुँलख्योअसरूपनहिं, प्रभावतीनिजनैन। मदनभयोमाधवसुवन, कोवरणैमतिऐन॥

सवैया–नेशुकहीतिरछोंहेचितैपुनिघूँघुटकोपटवोटहिकीन्हीं।मंदहिमंदमुखैमुसक्यायनबायनिजैनवलामिरलीन्हीं॥
श्रीरघुराजप्रमोददराजमनैमनआपनेकंतहिचीन्हीं। बोलनकोकियोकेतौविचारपैलाजनिगोडिनबोलनदीन्हीं॥

दोहा–तुमतनपुलकावलिवलित, गहिप्यारीकोहाथ। मंदमंदबोल्योवचन, देतमोदरतिनाथ॥

कबित्त–तेरोपायसासनमैंद्वारिकातेआयोधाय, करिकैउपायकेतीआयइतहूँगयो।
तेरोचंदवदनविलोकिकैअशोकह्वैकै, लहिमुदथोकमैंनिहालअतिशयभयो॥
रघुराजमोहिलखिबोलतिनकाहेवैन, अमलकमलसेनवायनैनक्योलयो।
प्रथमसुधाकेकुंडमोहिअन्हवायप्यारी, अबविषवेलिबीजमेरेउरक्योवयो॥

स०–कोटिशशीसीप्रभामुखकीनहिंतेरेछिपायेछिपैगीकहीरी।प्रीतिकीरीतिकरैतजिभीतिअरीअनरीतियोंकाहेगहीरी
जोरिकरैमैनिहोरिकहौंविनतीयहमोरिसुनैतौसहीरी। मोहिलगाउहियेमहँप्यारीनतोममजीवनरैहैनहींरी॥

सोरठा–रचिगंधर्वविवाह, करैअनुग्रहमोहिंपर। अबहैकालउछाह, प्यारीप्रीतिनिवाहिये॥

असकहिकैमनिखंभहिंमाँहीं। पावककोप्रगटायतहाँहीं॥ सुमनहोमतहँकियोकुमारा। पाणिग्रहणकेमंत्रउचारा॥
कंकणकलितकमलकरताको।गहिरतिकंतपरममुदछाको।पावककोपरदक्षिणदीन्ह्यों।यहिविधितासुब्याहतहँकीन्ह्यों
पुनिहंसीसोंकह्योकुमारा। बैठहुजाइसखीतुमद्वारा॥ काहूकोनहिंआवनदेहू। हमदुनहुँनरक्षहुकरिनेहू॥
हंसीजाइद्वारमहँबैठी। मानहुँसुखसमुद्रमहँपैठी॥ तबअतिमोदितह्वैरतिनाथा। मंदमंदगहिसुंदरिहाथा॥

दोहा–सेजहिपैबैठाइतेहिं, कियअधरामृतपान। जिमिअरविंदमरंदमें, रहैमिलिंदलोभान॥

सवैया–खोइमनोजविथारसमोइरहेदोउसेजमेसोइसखारी। सेदकेबुंदनवृंदनसोंअरविंदसेआननसोहतभारी॥
श्रीरघुराजसुवासविलासअवासकरैचहुँपासपसारी। मानोहेमंतमेंहेमलताल्पटीहैतमालहिमैकनधारी॥

दोहा–करतप्रभावतिसंगमहँ, बहुविधिरासविलास। पूषणप्रभुप्राचीदिशा, पूरणकियोप्रकाश॥

जानिभोरयदुनाथकुमारा। प्रभावतीसोंवचनउचारा॥ डेरहिगमनहिजोकहुँप्यारी। फिरिऐहैंतुवनिकटसिधारी॥
प्रभावतीअतिशयदुखछाई। जसतसकैतेहिंदयोबिदाई॥ जायदिवसभरिरहिनिजडेरा। आयोफेरिसांझलहिबेरा॥
यहिविधितहँयदुनंदननंदन। बस्योप्रभावतिऐनअनंदन॥ वज्रनाभकेनितैनिवासा। आयकरैनटनटीतमासा॥
यहिविधिगयोकालकछुबीती। दानवकरीनटनपरप्रीती॥ एतनेमेंकश्यपकेजागा। भईसमापतसहितविभागा॥

दोहा–वज्रनाभयहजानिकै, सिगरेसचिवबोलाय। जीतनकोसबसुरनको, मंत्रकियोमनलाय॥

सचिवविचारिअषाढअवाई। कियोमंत्रअतिशैचितचाई ॥ पावसमेंनहिंकरहुजवाई। कातिकमेप्रभुकिह्योचढाई ॥
हंसद्वारिकहिनितउडिजावैं। हरिसोनितकीखबरिजनावैं॥ तैसहिअमरावतिकहँजाई। देहिइंद्रसोखबरिजनाई॥
वज्रनाभयहचरितनजानो। भयोकालवशअतिबलवानो॥ प्रभावतीकेसंगहिमाँहीं। करैरैनभरिसैनतहाँहीं॥
रतिपतिरहैदेवसनिजडेरे। देखनहेतकरैपुरफेरे॥ कछुदिनमहँपुनिसोनटनागर। रहनलग्योतेहिसँगनिशिवासर ॥
अंतरहिततहँरतिपतिरहहीं। सदाहंसतेहिरक्षणकरहीं॥

दोहा-विविधविलासहुहासनित, रतिपतिकरहिंसलील। प्रीतिरीतिअरुचातुरी, हैसमानदोउशील॥
प्रभावतीप्रद्युम्नके, लखिलखिविपुलविलास। सुरललनाललचाहिनित, पूजहिंनाहिंमनआस॥

वज्रनाभकोभ्रातसुनाभा। सुतातासुद्वैअद्भुतआभा॥ चंद्रवतीगुणवतीसोदूजी। जिनकीसुरललनाछबिपूजी॥
तेइकसमयप्रभावतिभवनै। सहजहिंसाँझदोउकियगवनै ॥ प्रभावतीप्रद्युम्नहिकाहीं। निरख्योएकशेजहीमाहीं ॥
तबविस्मयभरिबूझनलागी। तैकाकेसँगसखिअनुरागी॥प्रभावतीकहँबातबनावति। भगिनिमोहिविद्याइकआवति॥
जाकोचहौंताहिढिगआनो। प्रगटैकबहुँनयहतुमजानो ॥ दानवदेवविवशअनुरागू। जोइआवैसोइकरैसोहागू ॥

दोहा-सोमैदेवकुमारइक, नामप्रद्युम्नहिजासु। ताहिबोलिनिजऐनमें, पूरहुँगीनिजआसु॥

तबगुणवतीचंद्रवतिबोली। अपनेउरकीआशयखोली॥ हमहूँकोतुमदेहुदेखाई। जोसुरसुवनरहैइतआई ॥
प्रभावतीतवरतिपतिकाहीं।दियोदेखाइभगिनिकहँताहीं॥निरखतमोहिगईतहँदोऊ।कहहिंकिअसवरलख्योनकोऊ॥
दोउप्रभावतिसोंपुनिभाषी। रतिपतिकहँनिजपतिअभिलाषी॥हमहूँकहुँहेभगिनिसोहाई।यहीकुवँरकहँदेहुमिलाई॥
तबसोकह्योकाह्वितुमऐयो।तवमोवचनसत्यसुनिलैयो॥असकहिभगिनिनकरीबिदाई। प्रभावतीपुनिअतिसुखछाई॥

दोहा-कह्योकंतसोवचनअस, ममभगिनिनसुखदेहु। तुवअधरामृतपियनको, तेऊकियेसनेहु॥

तबप्रद्युम्नकह्योमुसकाई। हमउपाइसोदेतबताई॥ बलीअहैगदककाहमारे। सांबभ्रातमोहिंप्राणपियारे॥
तिनदोहुँनतिनदोहुँनकेरो। होवसमागमउचितनिवेरो॥ लैऐहौंमैकाल्हिदुहुँनको। होइव्याहतुवभगिनिनउनको॥
असकहिभोरहिशिविरसिधारयो।गदअरुसांबहिवचनउचारयो॥चलहुतुमहुअसुरेशनिवेशू।करहुतहाँअबवासहमेशू॥
असकहिमायापटहिवोढाई। दुलहुँनकोलैगयोउडाई॥ राख्योजाइप्रभावतिऐनै। तहँआईंदोउसाँझसचैनै॥

दोहा-प्रभावतीतवकहतिभै, दोहुँनभगिनिसुनाइ। तेरेहितमैंदेवद्वै, राखेइतैबोलाइ ॥

असकहिगदअरुसांबकुमारे। दियदेखाइदोउसुछबिअगारे॥ गुणवतिसांबगदैचंद्रावति। भोगंधर्बव्याहसुखकीतति॥
तहाँवसतभेतीनिहुँवीरा। रँगेसरसरतिरंगगँभीरा॥ असतीनहुमनमाहँविचारैं। कबद्वारावतिकाहसिधारैं॥
केशववासवअवद्भुतशासन। पठवहिंहमकहँअसुरननाशन॥ तौसिगरेअसुरनकहँमारी। जाहिंद्वारिकैसंयुतनारी॥
कबलौंगृहमहँरहहिंछिपाने। रहिनजातदानवभयमाने॥ ऐसोकरतविचारतहाहीं। रमतअसुरदुहितनसँगमाहीं ॥

दोहा-आयोमासअषाढतहँ, घेरिसुवनवहरान। प्रभावतीसोंतहँलग्यो, करनप्रद्युम्नबखान॥

सवैया-आननतेरेसमानशशीअबनाहिंदेखातमहासुखदाई। तेरिएकेशनकेसरिसैविचवारिदमाहँरह्योहैदुराई॥
तेरिएमोतिनहारहिसीजलधारहीहैधरामहँछाई। ज्योंतूलसेममअंकमेंप्यारीलसैघनमेंचपलात्योंसुहाई॥

दोहा-सुंदरिरदअवलीप्रिया, जैसीतुवदरशाति। तैसेवारिदवीचमें, बकअवलीविलसाति॥
बूडेसरनसरोजसब, अवनहिंकतहुँदेखात। बाढ्योयद्यपिअतिसलिल, विनसरोजनसोहात॥

सवैया-मारुतकेवशअंबरमेंचहुओरतेंधाइमिलेघनकोरे। शोरकरैंअतिघोरपरैतिनकेबिचमेंबकवृंदनिहारे॥
श्रीरघुराजमनोवनमेंमदझारतउज्वलदंतनिवारे। मत्तमतंगकैकोपमहाँउभेयुद्धकरैमघवाकेप्रचारे॥

दोहा-तीनवरणकोधनुषयह, सोइतसुघरिअकाश। मानहुँतेरेनैनकी, कियोकटाक्षप्रकाश॥

कवित्त–नदतनिरखिनवघननभठौरठौर, पुच्छपसराइशोरकैकैमतवारेहैं ।
मंडितकरतकुलिकाननमहलहूँको, नाचतमयूरचहँओरछविधारेहैं ॥
भाषैरघुराजसुखीसंगलैमयूरिनको,विहरैंहरिततृणमध्यमुदवारेहैं ॥
प्यारीअहैपूरेवैरीविश्वमेंवियोगिनके, तैसहीसंयोगिनकेसाँचेसुखकारेहैं ॥

सवैया–वारिकेधारनछैनिकसैअतिशीतलमंदसुगंधसुखारी । हेलिनकोसुखहेतसहीहठिहारकहैरतिस्वेदकोप्यारी ॥
श्रीरघुराजनयासमदूसरोदेखिपरैजगमेंसुखकारी । पावसकालमैपौनविनापरिपूरणप्रीतिनहोतीहमारी ॥

दोहा–मोरनकोअतिमुदितलखि, भयेमानतेध्वंस । मानसरोवरवासके, लोभीउडिगेहंस ॥
सारससहितकराकुलौ, निरखिपुलनिजलपूर । चातकतेअपमानलहि, गवनतभेबहुदूर ॥
शेषसेजमैंशैनकीय, नारायणयहिकाल । अमलाकमलाकरतमैं, सेवनकलारसाल ॥

सवैया–मंजुलवंजुलफूलिरहेतिमिकेताकिकाननमेछविछावैं । सोहैंकदंबकदंबहरेलतिकालहरेतरुसौंमिलिभावैं ॥
वारिभरेविलतेविषकेधरवाहरवीरुधमेंचढिजावैं । तेपुनिकैपुहुमीमेंपरैंतहँभोरनभीरतेजाननपावैं ॥
सोहिरहीअरिभूमिहरीहगहेरतहींहियमोदबढावै । बीचहिबीचहिवीरवधूटिनकीअवलीअतिशैछविछावै ॥
श्रीरघुराजविचारिकहैउपमाअसमेरेहियेमहँभावै । चूनरीवोढनईदुलहीउमहीमहीमेंघमिलैमनुजावै ॥

दोहा–प्यारीयहनभमेंलखै, कौतुककरतसमीर । मेघनमेघलरावतो, करिकैंवेगगँभीर ॥

सवैया–घेरिचहूँकिततेघनघोरधराओंधारधरमेंजलढारै । फूटिगयेसरऔसरिसेतसबैथलपूरितवारिकीधारै ॥
चातककेमुखएकहूबूँदपरच्योनहिंश्रीरघुराजउचारै । ज्योसुकियाकेविलोचनमेंपरपूरुपकेपरतेनासेगारै ॥

सोरठा–दादुरधुनिचहुँओर, ठौरठौरसोहतिभली । मनहुवेदकोशोर, शिष्यसहितद्विजबरकरहिं ॥

सवैया–ग्रीषमभीषमतापतचीमहिकोकहोशीतलकौनबनावत।विश्वप्रजानिकेजीवनहेतअनेकनऔषधकोउपजावत।
श्रीरघुराजसँयोगिनकोयौअनूपमआनँदकोसरसावत । माननीमाननशावतकोपियाजोयहमासअषाढनआवत ॥

दोहा–पैप्यारीयहपावसै, मोहिइकदोषदेखात । तेरेमुखसमइंदुयह, बारहिंबारछिपात ॥
कबहुँकबहुँजबलखिपरत, मधिमेघनकेवृंद । मीतसरिसतबमोहिंमिलत, यहअनंदकरचंद ॥
संयोगिनसुखकरसदा, विरहिनकोदुखदानि । एकरूपतेकरतहै, गुणऐगुणछविखानि ॥
यदपिछिपायोविधिविभा, येवारिदकेवृंद । तदपिचारुयहचाँदिनी, फैलीतुवमुखचंद ॥

यदुकुलकोमूलकशशिजानो । ताकोबुधउत्तमसुतमानो ॥ बुधसुतपुरूरवामहराजा । जौनचक्रवरतीक्षितिराजा ॥
आपुआदिकहुभेसुततिनके।सुवननहुषभूपतिभेजिनके॥ सुरपतिराजनहुषनृपकीन्ह्यो।त्रिभुवनसुयशपूरिनिजलीन्ह्यो।
पुनिजेहिवंशमाहसुनुप्यारी।वसुयदुभूपतिभेजसधारी ॥ पुनिजेहिवंशहिमहनृपभोजू । भयेजगतमहँअनुपमवोजू ॥
जेहिवंशहिमहँत्रिभुवनवाला।मोपितुप्रगटेकृष्णकृपाला॥नहिंअधर्मरतजेहिकुलभयऊ।नहिंमिथ्याभाषीकोउठयऊ ॥

दोहा–नहिंनास्तिककपटीभयो, नहिंकादरनकुरूप । नहिंअदाननिनहिंऐगुनी, यहिकुलप्रगट्योभूप ॥
तासुवंशकीतैंवधू, होतभईगुणखानि । करुप्रणामनिशिनाथको, ममकुलवृद्धिहिजानि ॥
नारायणममजनकको,जोत्रिभुवनकेनाथ । करुप्रणामसुंदरितिन्है, जोरिजलजयुगहाथ ॥

यहिविधिवर्णतपावसकाहीं । विहरतप्रभावतीगृहमाहीं ॥ बीतिगयेवरषाकेमासा । छायोशरदप्रकाशअकासा ॥
भईसमापतिकश्यपयागा । तहँगवनेसुरअसुरसरागा ॥ गयोवज्रनाभऊतहाँहीं । त्रिभुवनविजयचह्योमनमाहीं ॥
दानवसोकश्यपतबबोले । वज्रनामतुमहोउनभोले ॥ तुमनइंद्रपदपावनलायक । निजतपअधिकअहैसुरनायक ॥
कश्यपवचनअसुरनहिंमाना । करिवंदनगृहकियोपयाना ॥ भौनआयनिजसैनबोलाई । कियवासवपरकोपिचढाई ॥

दोहा–वासवयहसुधिपायकै, हँसनतुरतबोलाय । कहिसँदेसद्वारावती; दीन्हेंतुरतपठाय ॥

हंसआयहरिसोंअसभाषे । वासवअवअसमनअभिलाषे ॥ अवप्रद्युम्नआदिकबलवारा । वज्रनाभकोकरहिसँहारा ॥

नातोअसुरमहाबलवाना। मोहिंजीतनकोकरतपयाना॥ तबहंसनतेहरिहँसिकहेऊ। जाइप्रद्युम्नपासकहिदयऊ॥
वज्रनाभकोहनैतुरंतै। जबलोंकरैसुरननहिंअंतै॥ यहिविधिशासनहरिकोपाये। हंससवेगवज्रपुरआये॥
हरिशासनहरिसुतहिसुनाये। तबप्रद्युम्नतिनसोंअसगाये॥ गर्भवतीहैनारिहमारी। करैयुद्धनहिंयहीविचारी॥

दोहा-असमुनिबोलेहंसतहँ, हरिशासनयहदीन। होतजन्मह्वीहोंयगे, सुतकिशोरबलपीन॥

शस्त्रशास्त्रसबजाननवारे। ह्वैहैंतीनहुँसुतछबिवारे॥ असकहिकीन्हेंहंसपयाने। प्रद्युम्नादिकहूँसुखमाने॥
प्रभावतीकेभयोकुमारा। हंसकेतुजेहिनामउदारा॥ चंद्रावतीचंद्रप्रभजायो। गुणवतिगुणवंतहिप्रगटायो॥
जन्महोतहीभेबलवाने। शस्त्रशास्त्रतेसहितसयाने॥ विचरनलगेमहलमहँसिगरे। सायुधसुंदरअतिह्वैनिदुरे॥
गृहरक्षकजेरहेतहाँहीं। तेनिरखेतिनपुत्रनकाँहीं॥ अतिसभीतह्वैकरिअतुराई। वज्रनाभकेनिकटहिजाई॥

दोहा-जोरिकरनअतिकँपततन, दियअसवचनसुनाय। तीनपुरुषअंतहपुरे, हमकहँपरेदेखाय॥

हमतिनकोनहिंजानहिंनाथा। तेवरआयुधलीन्हेंहाथा॥ अहैकहाँकेकौनपठाये। भीतरमौनकौनविधिआये॥
पवनहुँनहिंकरिसक्योपयाना।हमयहिविधिकियरक्षविधाना॥वज्रनाभसुनिरक्षकवानी।महाकोपकीन्ह्योंअभिमानी॥
बोल्योसिगरेभटनबोलाई। जाहुसबैअंतहपुरधाई॥ तीनचोरआयेगृहमाहीं। तिनकोधरिल्यावहुममपाहीं॥
दानववज्रनाभकीवानी। सुनिगवनेअतिशयअभिमानी॥ घेरिलियेअंतहपुरजाई। चहुँदिशितेबहुबाजबजाई॥

दोहा-कहतभयेऐसेवचन, करिकैशोरकठोर। धरहुधरहुधावहुतुरत, बचिनजाहिंअबचोर॥

सुनिगरजनिदानवदलकेरी। जानिचहूँकितलीन्ह्योंघेरी॥प्रभावतीगुणवतिचंद्रावति। रुदनकरनलागीसभीतअति॥
प्रभावतीप्रद्युम्नबोलाई। जोरिपाणिपगमेंशिरनाई॥ रुदनकरतबोलीअसवैना। अबतोबचबकठिनबलऐना॥
हमरेसँगतुमहूँकहँप्यारे। असुरमारिडरिहैंबलवारे॥ तातेतुमलैपानिकृपाना। करहुद्वारिकैतुरतपयाना॥
सुतअनिरुद्धैरुक्मिणिमातै। देखहुजाइसहितकुशलातै॥ जोहमकैसहुजीवतरैहैं। तौफिरिकंततुम्हैंमिलिजैहैं॥

दोहा-गदसांबहुकोसंगलै, अपनेजीवनहेत। भागहुकौनिहुभेषधरि, गवनहुतुरतनिकेत॥

दुर्वासामोहिंगिराउचारी। ह्वैहैविधवानाहिंकुमारी॥ तिनकेवचनमोहिंविश्वासा। तासुसर्वदाराखहुँआसा॥
असकहिभौनजायअसिल्याई। दियप्रद्युम्नहिकरहिगहाई॥सोप्रणामकरिलियमुसक्याई।बोल्योवचनपरमसुखदाई॥
मतिभैआनसिउरमहँप्यारी। सुनैगिरायहसत्यहमारी॥ काकरिहैदानवबलवाना। होइहिसकलभाँतिकल्याना॥
पिताककाजेअहैंतिहारे। जैहैंतेशरहतेहमारे॥ नेकहुजोदुखतोहिनहोवै। तौभुजदंडमोररिपुखोवै॥

दोहा-कृष्णकमलपदकीकृपा, मोपरयहिविधिजान। त्रिभुवनमेंअसकोउनहीं, जितैजोमोहिंबलवान॥

वज्रनाभकीकेतिकबाता। पैसँदेहयहउरनसमाता॥ पितापितृव्यनिरखिवधघोरा। पाछेहोइदुखितजियतोरा॥
तौदुखदूनहोइपुनिमोको। यहितेप्रथमजनावहुँतोको॥ प्रभावतीपुनिमंदहिमंदा। बोलीसुनहुकृष्णकेनंदा॥
रक्षहुजियअपनोसबभाँती। तुमतेहैममशीतलछाती॥ पिताककाअरुबंधुहमारे। पियतुमतेनहिंप्राणपियारे॥
प्रियावचनसुनियदुपतिनंदा। लह्योतहाँउरपरमअनंदा॥प्रभावतीगुणवतिपुनिदोऊ।निजनिजपतिनदियेअसिसोऊ॥

दोहा-हंसकेतुआदिकसुतन, दियप्रद्युम्ननिदेश। तुमरक्षहुनिजनिजजननि, सायुधरहियहिदेश॥

सांबप्रथमतववचनउचारा। हमहिंप्रथमयुधकरबअपारा॥ जेठबंधुतुमअहौहमारे। प्रथमगवननहिंउचितविचारे॥
विहँसिकह्योतबगदबलवाना। प्रथमउचितमोहिंकरबपयाना॥हौहमारबालकतुमदोऊ।यहअनुचितकहिहैसबकोऊ॥
चढेमहलमहँलखहुतमाशा। आजुकरहुँदानवदलनाशा॥ तबप्रद्युम्नबोल्योमुसकाई। तीनिहुँजनशिलिकरहिंलराई॥
वज्रनाभजेहिंबँचिनाहिंजाई। पैअबइकशंकाउरआई॥ युधहितजोतीनिहुँजनजैहैं। तौदानवआसुहिइतऐहैं॥

दोहा-पुत्रनकोवधकरितुरत, लैजैहैंधरिनारि। तातेमैंअसकहतहौं, अपनेमनहिंविचारि॥

गदकाकापश्चिमकेद्वारा। खड़ेयुद्धतहँकरहिंअपारा॥ पूरुबद्वारसांबभटजाई। सावधानतहँकरहिंलराई॥

मैंप्रविशतहौंदानवदलमें।करिहौंनाशसकलखलपलमें॥गदसांबहुसंमतकरिदीन्ह्यो।निजनिजद्वारहिकहँगहिलीन्ह्यो ।
तहँकृष्णसुतसमरसयाना । कियोनिरायुधनभमहिंपयाना ॥ सबमायाकोजाननवारो । महाबलीरुक्मिणीदुलारो ॥
मायाकोरथतुरतबनायो । तैसहितूणधनुषशरभायो॥रच्योसहसशिरकोइकनागा । तेहिसारथिकीन्ह्योसुखपागा ॥
दोहा–निकसतनिरखिनेवासते, दानवकृष्णकुमार । धरहुधरहुधावहुधुवै, सबबोलेइकवार ॥
छंद वामन–असकहिअसुरवरिवंड । गहिशस्त्रपरमप्रचंड ॥ धायेसबैइकवार । कियसिंहनादअपार ॥
तबकृष्णनंदनकोपि । दानवदलमचितचोपि ॥ कीन्ह्योधनुषटँकोर । छायोदिगंतनशोर ॥
छोडीशरनकीधार । मनुशलभवृंदअपार ॥ फुंकरतमानहुँव्याल । धायेविशिखविकराल ॥
मुखतजतज्वालामाल । मनुमहाकालहुकाल ॥ सोविशिखवृष्टिअपार । रहिछाइखलनमँझार ॥
बहुअर्धचंद्रसबान । बहुहरेअसुरनजान ॥ इकएकशरनअनूप । दशदशकढेतिनरूप ॥
दलदलबदानवकेर । हरिपुत्रशरनघनेर ॥ सूखोकृशानकछार । जिमिकरतआसुहिआर ॥
तहँअसुरकोउभागि । असुरेशपैदुखपागि ॥ असकियेदीनपुकार । वहचोरअतिबलवार ॥
कियअसुरदलसंहार । मचिगयोहाहाकार ॥ अबकरहुनाथउपाय । जेहिभाँतिवहवधिजाय ॥
दोहा–वज्रनाभदानववचन, सुनिअतिशयकरिकोपि । बोलिसुनाभभ्रातको, शासनदियोसचोपि ॥
वेगिबुलावहुसैन्यहमारी । करहुसमरकीतुरततयारी ॥ सुनिसुनाभअसुरेशमहाना । बोलेदानवदलबलवाना ॥
दैत्यबलीजेतीनकरोरा । विधिकेवरतेअतिवरजोरा ॥ स्यंदनतरलतुरंगमतंगा । महारथीअतिरथीअभंगा ॥
परशुपरिघकरवालकराला । मुद्गरमूशलभिंडहुपाला॥औरहुआयुधतीक्षणनाना । धारिअसुरचढिचढिनिजयाना ॥
आयेवज्रनाभकेद्वारे । सुरनसमरमेंसूदनवारे ॥ वज्रनाभलखिसैन्यअपारा । रथचढिसंगरकरनसिधारा ॥
दोहा–वज्रनाभरणमहँगयो, हरिसुतपरचोदेखाय । सबैदानवनकहतभो, धरौनअबबँचिजाय ॥
सुनिस्वामीकेवचनकठोरा । धायेदानवतीनकरोरा ॥ घेरचोहरिपुत्रहिचहुँओरा । मारनलागेशस्त्रकठोरा ॥
तीरनतोपितुरंतहिताको । जिमितोयदततितरनिप्रभाको ॥ तहँअद्भुतविक्रमीकुमारा । छाँडीधनुषधुनतशरधारा॥
छुरछुरप्रनालीकनाराचा । कढेबाणबहुवदनपिशाचा ॥ छायरहेदानवदलमाँहीं । असनहिंकोउजेहितनशरनाँहीं ॥
कहूँफिरहिंबिनशुंडवितुंडा । कहूँउडहिमुंडनकेझुंडा ॥ इकशरलगिदशविशतनफूटें । एकहिसाथअसुरमरिजूटें ॥
दोहा–उठतगिरतपुनिपुनिभ्रमत, नदतवढतभजिजात । सहिनसकतदानवप्रबल, कृष्णकुँवरशरघात ॥
अंतरिक्षतेकृष्णकुमारा । छोडतबारबारशरधारा ॥ अंशुमानजिमिउदितअकाशा । किरणछायजगकरतप्रकाशा॥
तैसहिकढतधनुषशरधारा । लखिनपरतगोविंदकुमारा ॥ तीनकरोरदैत्यरणमाहीं । भिझियाकुंभसरिसदरशाहीं ॥
कियोदानवीदलइकवारा । परमदुखितहैंहाहाकारा ॥ शोणितनदीबहनतहँलागी । प्रगटीयोगिनततिअनुरागी ॥
काककंकअरुगृद्धअपारा । रुधिरपानपलकरहिअहारा ॥ धावतभूतपिशाचवेताला । गावतनाचतदैदैताला ॥
दोहा–लोथिनसोंपुहुमीपटी, कटीसैन्यतहँआसु । घटीद्वैकमहँभटनकी, घटीविजयकीआसु ॥
छंदतोमर–भोअनलकृष्णकुमार । दलवनदहततेहिंवार ॥ कोउसक्योनहिंसमुहाय । सबचलेदैत्यपराय ॥
गदसांबकेढिगजाय । लागेकरनरणचाय ॥ गदगहिगदागुरुबान । कियसमरमध्यमहान ॥
फोरच्योमतंगनमाथ । भंज्योरथनबहुगाथ ॥ इकवारअसुरहजार । कीन्हेंप्रहारअपार ॥
तिनकोसहतरनमाहिं । गदधावतोभैनाहिं ॥ कहुँद्विरददंतउखारि । वधकरततासुप्रचारि ॥
गजदंतलैदोउहाथ । फोरतअसुरगणमाथ ॥ गदलखतदानवजूह । भागतकरतअतिकूह ॥
लेहिमहाकालकराल । दानवगुनेतेहिकाल ॥ उतसांबवीरप्रचारि । दानवनपैसरझारि ॥
कियअंगभंगअनंत । कैदियेकेतनअंत ॥ जेसांबकेसनमुख्य । गेसुभटदानवमुख्य ॥
तेगयेयमपुरवीर । तजिसमरमध्यशरीर ॥ पुनिरुक्मिणीकोनंद । वर्ष्योविशिखकेवृंद ॥

ह्वैगोतहाँअँधियार। पुनिमच्योहाहाकार॥ यहवज्रनाभविलोकि। दौरतभयेअतिशोकि॥
सोहिंसंगसुनाभसुरारि। धावतभयोधनुधारि॥ प्रद्युम्नदेदोउवीर। मारेअनंतननतीर॥
तिनकेशरनसबकाटि। हरिसुतदियोशरपाटि॥ लखवैतमासाहित। नभरहेनाकनिकेत॥
गदसांबविरथहिजानि। वासवउरैदुखआनि॥ निजनागअरुनिजजान। भेज्योतुरतहरपान॥
गदचढ्योगदपरजाय। सांबहुरथैसुखपाय॥ लहिवीरवाहनदोय। दियअसुरगर्वनखोय॥
पुनिप्रवरऔरजयंत। लहिशक्रहुकुमतुरंत॥ प्रद्युम्नकरनसहाय। आयेसमरमहँधाय॥
तिनसोंकह्योहरिनंद। तजियोनअवसरवृंद॥ जबहमकहैंगेटेरि। तबछोडियोशरफेरि॥
रक्षहुसुतनातियजाय। दानवनऔंधाय॥ गदसांबहूँयुधकाहिं। आयेनिकरिदलमाहिं॥

दोहा–नारिनधरपनजगतमें, सुनियेप्रवरजयंत। होतमरनहूँतेकठिन, तातेजाहुतुरंत॥

छंद–सुनीहरिकेसुतकीवरवानि। गयेदोउवीरमहासुखमानि॥चढेदोउऐनतजेबहुवाण।लियेवहुदानवकेहरिप्राण॥
सुवज्रहुनाभसुनाभप्रवीर। बलीसबदानवहूरणधीर॥ झुकेहरिनंदनपैइकबार। हनेअतिकोपितह्वैहथियार॥
कहेबचिहैनहिंकृष्णकुमार। कियेअपकारहमारअपार॥ रहेअवलौंछिपिकेइतचोर। नजानेहुकालवशैबलमोर॥
सुनेअसदानवकीतहँवानि। कह्योहरिनंदनकैमुसक्यानि॥खडोतुवसैन्यहिमध्यअकेल।करोमोहिंमारनकीकनफेल॥
तहाँअसुरेशमहाउरकोपि। दियोहरिकेसुतपैशरतोपि॥ कियोरणमायहिकोअँधियार। भईवर्षाबहुशोणितधार॥
मलौअरुमूत्रहुपीवहुवारि। रणैवरष्योबहुवारसुरारि॥ तहाँहरिकोसुतमायप्रधान। कियोसत्वात्मिकमायविधान॥
तुरंतहिनाशिदियोअँधियार। सबैअरिमायभईजरिक्षार॥ कियोहरिनंदनमायअनूप। रचेरणमेंनिजकोटिनरूप॥
रहेजेतनेअसुरेशप्रवीर। लडेतितसोंहरिनंदनवीर॥ सुरारिसबैयहकौतुकदेखि। भगेभयमानिमनेअसलेखि॥

दोहा–इकप्रद्युम्नसोसमरमहँ, बचतरहेनहिंसोय। कोटिनप्रगटप्रद्युम्नभे, अववचिहैकिमिकोय॥

छंद–लखीदेवराजौहरीपुत्रमाया। भयोचक्रतेठीकयेकोनआया॥
तहाँकीनमायाबलीवज्रनाभा। देखायोसोऊआपनीकोटिआभा॥
कुमारौतहाँपावकीकीनमाया। दलैदानवैज्वालमालानिछाया॥
तहाँवारुणीकोकियोदानवेशा। जलैधारधाईसवैयुद्धदेशा॥
तहाँवायवीकोपसारचोकुमारा। उडेमेवमाच्योमहाधुंधकारा॥
महापार्वतीकोपसारचोसुरारी। गिरेव्योमतेशैलपाषाणभारी॥
नश्योवायुकोवेगसंग्राममाँहीं। रच्योवज्रमायाप्रद्युम्नौतहाँहीं॥
तबैतोपिसाँचीरचीदैत्यमाया। कटीयोगिनीभूतिनीभीमकाया॥
तहाँदेवमायाप्रकाश्योरतीशा। तुरंतैदह्योयोगिनीऔषवीशा॥
महादैत्यगंधर्वमायापसारी। रच्योयुद्धकेमध्यमेंग्रामभारी॥
नचैअप्सरागानगंधर्वकर्तें। महामाधुरैशोरकैमोदभर्तें॥
तहाँज्ञानमायाप्रकाश्योकुमारा। नश्योआशुगंधर्वकोनाटचसारा॥
सुमायामहाँमोहिनीदैत्यकीनी। सबैदेवतैकोमहाभीतिदीनी॥
रचीसंगिमायातहाँकृष्णनंदा। महामोहिनीकोकियोतत्रमंदा॥
रचीसर्पमायातहाँदैत्यराया। महीअंबरैसर्पसंवातछाया॥
गोविंदोतनैगाडुरीकोपसारचो। कढैवैनतेवैअहीभक्षडारचो॥

दोहा–मायाबलीविचारिकै, प्रद्युम्नहिअसुरेश। हननलग्योदिव्यास्त्रतहँ, करिकैकोपअशेश॥

छंद त्रोटक ।

वरुणास्त्रहिवेगिचलायदियो । पढिमंत्रहिंकोइकबाणलियो॥हरिकोसुतआवतदेखितहाँ । तुरतैधनदास्त्रचलायमहाँ॥
कियवारणवारुणअस्त्रहिको । तबदैत्यलियोइकशस्त्रहिको॥यमराजहिमंत्रहिकोपढिकै । हनिदीनप्रद्युम्नहिकोबढिकै॥
तबवासवअस्त्रकुमारलयो । हनियाम्यसुअस्त्रहिरोंकिदियो॥तबलैविधिअस्त्रसुरारिहन्यो।अबबाँचतनाअसवैनभन्यो॥
तहँकृष्णकुमारहुब्रह्मशिरे । लियचित्तविचारिनऔरभिरे॥ दोउसायकजायअकाशलरे । समताल्हितेतहँआशुजरे॥
तबदानवपाशुपतास्त्रलियो।सबलोकनकोअतिभीतिकियो॥चहुँओरहहारवछायरह्यो॥सुरसिद्धहुस्वस्तिसखेदकह्यो॥
लखिपाशुपतास्त्रप्रकाशमहाँ॥पितुकोलियअस्त्रकुमारतहाँ॥उतशंकरअस्त्रचल्योरवकै। इतअच्युतअस्त्रचल्योजबकै॥
सुरमानिमहापरलैमनमैं । भजिगेतजिअंबरताक्षणमैं ॥लहिवैष्णवअस्त्रप्रकाशबडो॥छिपिगोशिवअस्त्रक्षणौनअडो ॥
दलदानवजारनलागतभो । असुरेशसभ्रातहुभागतभो ॥ भटहूँसबभागिचलेभभरे । रनमेंयुधहोतनहींसँभरे ॥

दोहा—जेभागेतेबँचिगये, रुकेभयेतेछार ॥ तबनिजपितुकेअस्त्रको, कियकुमारसंहार ॥

छंदगीतिका—तहँवज्रनाभसुनाभदानवनिरखिअस्त्रसँहारको । धावतभयेदोउधनुषधरिवधकरनकृष्णकुमारको ॥
औरहुसबैदानवबलीसुरिकैगहेहथियारको । इकबारशोरअपारकैकैकियेविपुलप्रहारको ॥
तहँकृष्णनंदनखलनिकंदनरोंकिस्यंदनव्योममें । हनिसुरप्रचंडनअसुरमुंडनकियोखंडनजोममें ॥
चहुँओरतेशरधारधावतिधधकिपावकज्वालसी । केतेजरेकेतेमरेकेतेभरेभयआलसी ॥
कोदंडतहँमंडलाकारहिदामिनीसोदमकतो । वरषाचहूँकितविशिखकीटंकोरवनसोंधमकतो ॥
उतवज्रनाभसुनाभदोउकरिसिंहनादअपारको । हर्षतेमनहिंकर्षतधनुषवर्षतशरनिकीधारको ॥
तिनकेअँगनतेहिक्षणशरनरणमहँरजयकरियोरहै । चहुँओरसायकघोरझोरतचलतकृष्णकिशोरहै ॥
नहिंलखिपरंतप्रद्युम्नवपुनाहिंरथहुसारथितेहिछनै । शरपुंजशत्रुनगंजचहुँकितकटतभरभरतेहिरनै ॥
कहुँलीकसोंकढिजातद्दगनदेखातकृष्णकुमारहै । कहुँठोरठोरहिंदोरिदोरिकरोरिकरतसँहारहै ॥
सुरसिद्धऋषिगंधर्वसर्वविलोकिविक्रममारको । बहुविधिसराहतविजयचाहतझारिसुमननिधारको ॥
दानवनजियकीहरनहारीनिशाभैकारीभई । धरितेगकंधकबंधधावतमारुधरुमुखध्वनिठई ॥
सबकहँहिंयदुवंशीनहींयहकालवपुधरिआइगो । भागहुसबैअबलरबउचितनसकलदलयहखाइगो ॥
असकहतभाजतअसुरसबपैबँचतनाहिंशरधारते । कोउगिरतपुनिकोउउठतपुनिकोउभ्रमतआर्तपुकारते ॥
हैरह्योहाहाकारसिगरेदानवीदलमेंतहाँ। मिटिगयोयुद्धउछाहदानवनाहदुःखितभोमहाँ ॥
यहिभाँतिबीतीरातिसार्धत्रियामअतिहिभयावनी । प्राचीदिशामहँप्रगटभेपूषणप्रभापरपावनी ॥
बँचिरह्योरणत्रैभागकोत्रैभागदानवदलतहैं । अरुसबैकृष्णकुमारशरसंहारकियअसुरनमहैं ॥

सोरठा—चारिदंडनिशिजानि, संध्याकालविचारिकै । प्रवरजयंतहिआनि, कहतभयोकेशवकुँवर ॥

दोहा—जोतुमअरुरोकोसमर, घरीद्वैकलोंवीर । संध्याकरिआऊँतुरत, नभगंगाकेतीर ॥

प्रवरजयंतकह्योअसवानी । संध्याकरहिजाहुबलखानी ॥ हमकरिहैंसंगरयहिकाला । वधविशेषिदानवनविशाला ॥
तौप्रद्युम्नउडिगयोअकाशा ॥ जहाँकरतिनभगंगविलासा॥प्रातकर्मकियकरिअस्नाना॥संध्याकरिकियपितुकोध्याना॥
इतजयंतअरुप्रवरप्रवीरा । मारनलगेदानवनतीरा ॥ इकशतद्वैशतत्रैशतबाना । इकसहस्रद्वैसहसमहाना ॥
मारतपिलेदानवनदलमें । कियोनाशअसुरनबहुपलमें । तवप्रगटायकालसीआभा । वज्रनाभअरुदैत्यसुनाभा ॥
धायेप्रवरजयंतहिवोरा । काटिशरनमारतशरघोरा ॥

दोहा—वज्रनाभदानवइतै, अरुसुनाभरणधीर । उतैजयंतसुरेशसुतसखासुप्रवरप्रवीर ॥

द्वंद्वयुद्धतहँभयोभयावन । सुरअसुरनकोभयउपजावन ॥ दोउदुहुनकेबाणनकाटै । दोऊदोहुनकेतनशरपाटै॥

दोऊबहुविधिरथनधुमावें। जुरिजुरिफेरिविलगह्वैजावें॥ दोउकेधनुषमंडलाकारा। दोऊभरेकोपकेभारा ॥
दोऊभटविक्रमीमहाने। दोऊछोडेंबाणसमाने॥ दोऊदोहुनकेधनुभंजे। दोऊदुहुनवाजिनगतिगंजे॥
दोऊदुहुनपरशूलचलाये। दोउदुहुनकेकाटिगिराये॥ दोऊदुहुनमारिशरचोखे। दोउदोहुनकियसुरछितरोखे॥

दोहा-इतनेमेंअस्नानकरि, प्रातकर्मनिधारि। आयोकृष्णकुमारतहँ, दानवयुद्धविचारि॥

हननलग्योसायककरिसपागी। मनुदानवदललागीआगी॥ इतनेमेंपरकाशपसारी। पूरुबप्रकटतभयेतमारी॥
जानिवज्रनाभहिवधकाला। गरुडचढेतहँकृष्णकृपाला॥ जहँअकाशमहँवासवठएऊ। यदुपतितहाँतुरंताहिगएऊ॥
लखनलगेतहँखड़ेतमाशा। पांचजन्यकोशोरप्रकाशा॥ लखियदुपतिकहँहंससुखारी। आयकामसोंगिराउचारी॥
पितारावरेकेइतआये। वासवनिकटखड़ेसुखछाये॥ शंखशोरयहयदुपतिकीन्ह्यो। कुँवरताहितुमकसनहिंचीन्ह्यो॥

दोहा-जानिपिताआनवनतहँ, दरशनकरनविचारि। तुरतहिउडिआकाशमें, गयोकुमारसिधारि॥

निरखिपिताकहँकियोप्रणामा। सुतहिंविलोकिकह्योश्रीधामा। अबलोंतुमवेलंबकसकीन्ह्यों। दानवक्षयकरिजयनहिंलीन्ह्यों
चढहुगरुड़परजाहुकुमारा। करहुद्रुतैदानवसंहारा॥ प्रभुकोशासनधरिनिजशीशा। चढ्योगरुड़परसुतजगदीशा॥
तुरतहिवज्रनाभढिगआयो। जोरशोरकरिगदाचलायो॥ दानवकेउरगदाप्रहारा। लगतभयोजसकुलिशपहारा॥
गिरचोभूमिमेंमूर्च्छिसुरारी। निकसीरुधिरधारमुखभारी॥ उठचोसँभारिफेरिबलवाना। लग्योकुँवरकरकरनबखाना॥

दोहा-जगतसराहनजोगहो, हेममरिपुबलवान। मोहिमुरछाकारकसमर, त्रिभुवनमहँनहिंआन॥

पैअवसहहुप्रहारहमारा। परेरहहुनहिंभगहुकुमारा॥ असकहिकीन्ह्योंशोरकठोरा। मानहुँघहरिउठेघनघोरा॥
बहुकंटकघंटनयुतजोई। हन्योगदाप्रद्युम्नहिंसोई॥ वज्रनाभकीजोरपवारी। लागीगदाललाटहिभारी॥
शोणितवमतविकलहरिनंदन। गिरचोभूमिपरयदुकुलचंदन॥ निरखिपुत्रमोहितयदुराई। दियोजोरकरशंखवजाई॥
सुनतप्रद्युम्नशंखधुनिभारी। उठ्योतुरंतशरीरसम्हारी॥ छोड़नचहीबाणरणगाढ़ो। सन्मुखवज्रनाभलखिठाढ़ो॥
तबयदुनंदनचक्रपठायो। तुरतप्रद्युम्ननिकटसोआयो॥

दोहा-उडिअकाशमेंआशुही, गह्योआपनेहाथ। छोडतभयोतुरंततकि, वज्रनाभकोमाथ॥

भयोसुदर्शनकेरप्रकासा। मानहुँकोटिभानुकरभासा॥ लग्योतुरंतचक्रगलजाई। वज्रनाभशिरदियोगिराई॥
तबसुनाभलखिबंधुविनाशू। धावतभोप्रद्युम्नपरआशू॥ तेहिप्रद्युम्नपरजातविलोकी। लियोताहिगदबीचहिरोकी॥
करिकैअतिशयजोरतहाँहीं। हनीगदागदतेहिउरमाँहीं॥ लागतगदकरगदाप्रहारा। कढीअसुरउरशोणितधारा॥
कढीपीठह्वैगदामहानी। मरिमहिगिरचोअसुरअभिमानी॥ शतपचासजेदानववाचे। भागिगयेतेअतिभयराचे॥

दोहा-श्रीप्रद्युम्नगदसांबभट, कीन्ह्योंअसुरविनास। देखिदेवअंबरखड़े, पायेपरमहुलास॥

वर्षहिंसुमनससुमनअथोरा। करहिंदुंदभिनकोबहुशोरा॥ नचहिंतहाँअप्सराकरोरा। देवनकेदिलकीद्रुतचोरा॥
दानवभागिगयेवरजोरा। निरखिवज्रनाभहिवधघोरा॥ तहँकश्यपकोसुखितकिशोरा। अरुवसुदेवहिछोटोछोरा॥
उतरिअवनिआयेतेहिठोरा। जहँठाढोरुक्मिणीकिशोरा॥ वासववचनकह्योसुखओरा। चितैरुक्मिणीनंदनओरा॥
अद्भुतहैविक्रमसुततोरा। जेहिंलखिभाप्रसन्नमनमोरा॥ तैसहिगदबाहुँनकोजोरा। गदामारिजोअरिउरफोरा॥

दोहा-फेरिचक्रधरवज्रधर, गमनवज्रपुरकीन। बालवृद्धदानवनको, संबोधनबहुदीन॥

केशववासवतहँसुखपागे। वज्रनाभधनकियचौभागे॥ प्रद्युम्नहिंसांबहिगदकाँहीं। विजयजयंतहिसुतहितहाँहीं॥
भागचारिचारिहुभटकाहीं। बाँटिदियोहरिकरिसुखमाहीं॥ चारिकोटदानवकेग्रामा। तेऊबाँटिदियोतेहिठामा॥
चारिभागतहँपुरकोकरिकै। दियोचारिहुँनकोसुखभरिकै॥ हंसकेतुआदिकसुतकाँहीं। करिदीन्ह्योंअभिषेकतहाँहीं॥
हरिवासवदीन्ह्योंवरदाना। अमरहोहुसिगरेबलवाना॥ रुकैनगतितिहुँलोकतिहारी। कीजैराज्यसदायहभारी॥

दोहा-तबसिगरेसुतमुदितह्वै, भूषणवसनमनीन। रथतुरंगमातंगबहु, हरिवासवकहँदीन॥
गदप्रद्युम्नादिकनको, बोलितहाँयदुराय। कछुककालतहँवसनको, शासनदियोसुनाय॥

तबसिगरेभटकियेप्रणामा।गमनकियेसबनिजनिजधामा॥असकहिहरिअतिआनँदछाये॥चढिखगपतिद्वारावतिआये॥
अरुऐरावतचढिअमरेशा । गमनकियोअमरावतिदेशा ॥ सुनिप्रद्युम्नविजयपुरवासी । होतभयेअतिआनँदरासी ॥
नहिंप्रद्युम्नकेसमबलवाना।ऐसोकियोठीकअनुमाना ॥ गावतरहहिंकृष्णगुणगाना । प्रेममगनतनरहहिनभाना ॥
अबलोंनृपतिनपुत्रनकेरी । मेरुनिकटहैराजघनेरी ॥ कहुँकहुँजातरहेगदआदिक । कछुदिनबसतरहेअहलादिक ॥

दोहा–रुक्मिणिनंदनकीविजय, सुनैजोकोउचितलाइ । पुत्रपौत्रसबसंपदा, ताहिदेहियदुराई ॥

विप्रएकसंतुष्टसदाँहीं । बसतरह्योद्वारावतिमाँहीं ॥ एकसमयताकेसुतभयऊ । धरणिछुवततुरतैमरिगयऊ ॥ २२ ॥
मृतकबालल्लैविप्रदुखारी । राजद्वारगवन्योयुतनारी ॥ तहँबालकवसुधामहधरिकै । लगोविलापकरनदुखभरिकै ॥
लागोकहनपुकारिपुकारी । सुनहुसबैजनगिराहमारी ॥ २३ ॥ ब्राह्मणवैरिनपापिनचूडो । विषयमोदसारमहँबूडो॥
अतिलोभीक्षत्रिनमहँनीचो । कियोधर्मकोकर्मनऊँचो ॥ ऐसेभूपतिकर्मदोषते । मरचोमोरसुतकालरोपते ॥ २४ ॥

दोहा–हिंसाकारीशीलविन, अजितइंद्रियनजोय । ऐसेनृपकेराज्यमे, प्रजादुखितहठिहोय ॥

जेसेवहिंऐसेनृपकाहीं । तेदरिद्रजनरहैंसदाहीं ॥ असकहिबहुविधिकरतविलापा । गयोऐनकहँभरिसंतापा ॥ २५ ॥
पुनिताकेसुतदूसरभयऊ । तेहिविधिसोहोतैमरिगयऊ ॥ ब्राह्मणराजद्वारलैजाई । कियोविलापमहादुखछाई ॥
पुनितीसरसुतजबद्विजजायो । सोऊहोतहिमृतकदेखायो॥यहिविधिआठबालद्विजकेरे।मरेहोतहीदुखदघनेरे ॥२६॥
नवयोंबालकलैद्विजराई । आशुहिराजद्वारमहँजाई ॥ अतिशयनिंदितगिराउचारी । दियोउग्रसेनहिबहुगारी ॥
तहाँकृष्णकीसभामँझारी । बैठेअर्जुनहूँधनुधारी ॥

दोहा–सोसुनिआरतविप्रके, बैनआपनेकान । बोल्योअर्जुनतमकिअति, करिकैकोपमहान ॥ २७ ॥

रोदनकरहुवृथाद्विजराई । इहाँधनुर्धरमोहिंनदेखाई ॥ येसबक्षत्रीनामहिकेरे । यज्ञदानभरिकरहिंघनेरे ॥ २८ ॥
जहँधनसुतदाराकेहेतू । शोचकरतद्विजबसतनिकेतू ॥ तिनक्षत्रिनक्षत्रियपननाहीं । वृथाधरहिधनुशरकरमाहीं ॥
केवलउदरहिभरभरतवै हैंनटवभूपतिकेभेवै ॥ २९ ॥ तुमदंपतिकहँअतिसुखभरिहौ । कालहुतेसुतरक्षणकरिहौ ॥
सुनहुँप्रतिज्ञाविप्रहमारी । सभामध्यहमकहतपुकारी ॥ जोतुवसुतैनरक्षनकरिहौं । तौविशेषिपावकमहँजरिहौं ॥

दोहा–गर्वभरेकपिकेतुके, वचनसुनतद्विजराज । विस्मितह्वैबोल्योवचन, बैठ्योबीचसमाज ॥ ३० ॥

ब्राह्मण उवाच ।

जिनसमजगतनकोउबलधामा । ऐसेअहैंयहाँबलरामा ॥ पुनियदुपतित्रिभुवनकेनायक । बैठेइतसमरथसबलायक॥
पुनित्रिभुवनकोजीतनवारो । नामप्रद्युम्नहिकृष्णकुमारो ॥ वीरधनुर्धरजासुसमाना।कोउनहिंलख्योसुन्योनहिंकाना॥
ध्रुवअनिरुद्धधनुर्धरधीरा । जाकेसरिसऔरकोवीरा ॥ येप्रभुरक्षिसकेनहिंजोई । करनचहततुमदुर्लभसोई ॥ ३१ ॥
मोहिंविश्वासनहिंवचनतिहारे।होमूरखतुमपांडुकुमारे॥विप्रवचनसुनिकैनिजकाना।अर्जुनबोल्योकोपिमहाना॥३२॥

अर्जुन उवाच ।

दोहा–विप्रनहौंबलिरामर्मैं, नहिंप्रद्युम्नयदुनाथ । अर्जुनमैंगांडीवधनु, रहतसदाजेहिहाथ ॥ ३३ ॥

नहिंइनसममोहिंद्विजदगहेरो । त्र्यम्बकतोषकविक्रममेरो॥ मीचबीचहियबाणलगाई । लैऐहौंतुवसुतद्विजराई॥३४॥
सुनिफाल्गुनकीगर्वितवानी । ब्राह्मणमनविश्वासहिमानी ॥ कहिनवैनकछुभरोचैनको । गयोरैनआपनेऐनको ॥
अर्जुनविक्रमसुनतअपारा । बसतभयोआपनेअगारा ॥३५॥ आयोजबप्रसूतिकोकाला । तासुनारिजबभईविहाला॥
तबपुकारिकरिआरतशोरा । रक्षहुरक्षहुपांडुकिशोरा॥असकहिगिरचोपार्थढिगआई।दीनदशाद्विजदईदेखाई ॥३६॥

दोहा–तबअर्जुनयदुपतिनिकट, जायविनयअसकीन । केहिविधिरक्षणहमकराहैं, शासनदेहुप्रवीन ॥

तबबोलेयदुवरमुसकाई । हमसोंकापूछहुकुरुराई ॥ हमतोक्षत्रिभेषभरिधारे । नटसमजीवतवसैंअगारे ॥

रक्षहुजायविप्रसुतकाँहीं। मीचनगीचजायजोहिनाँहीं॥ हमनहिंजेहैंसंगतिहारे। यदुवंशिनलैजाउउदारे॥
प्रद्युम्नहिअरुआरजरामैं। लैनजाइयोतुमवाहिधामैं॥ औरचहौमनमेंतुमजाको। लैजैवोअपनेसँगताको॥
वहबालकवेवृद्धमहाने। धनुपधरनकरककवहुँनजाने॥ तबअर्जुनकछुशंकितह्वैकै। बारबारमाधवमुखज्वैकै॥

दोहा-गयोविप्रकेगृहतुरत, लैगांडीवहिहाथ। यदुवंशिनऔरनसबै, लियोनअपनेसाथ॥

तहाँजायमंजनकरिवीरा। पहिरिकवचआचमनसुनीरा॥ करिवंदनमहेशचरणनको। आवाहनकरिदिव्यास्त्रनको॥
धनुगांडीवहितुरतचढाई। छोडनलग्योशरनसमुदाई॥३७॥ अवनीतअकासलौंराजा। छायदियोबहुबाणदराजा॥
कारकजेशत्रुनतनजंजर। सातपरतकोकियशरपंजर॥ यहिविधिकियअतिकाअगारा। रह्योनपवनहुकरपैठारा॥
छोडिबालकोमरनखभारै। आपगयोयदुनाथअगारै॥३८॥तबबालकजायोद्विजनारी। भूमिगिरतसोपरयोनिहारी॥

दोहा-पुनिविलानबालकतहाँ, रोयउठीद्विजनारि। लैगोलैगोपुत्रमम, लागीकहनपुकारि॥ ३९॥

तबधायोद्विजकरतपुकारा। आयोयदुपतिसभामँझारा॥ देनलग्योअर्जुनकहँगारी। देखहुयहमूढताहमारी॥
वचननपुंसककेसतिजानी। मैंभरोसलीन्ह्योंउरआनी॥४०॥ जोप्रद्युम्नअनिरुद्धहुधीरा। श्रीबलभद्रऔरयदुवीरा॥
करिनसकेसुतरक्षणमेरे। राखेरहैंकिपारथकेरे॥ यहविराटपुरकेरनचैया। अहैउत्तराकोखेलवैया॥
गिनतीवीरनमेंनहिंयाकी। बलकवीरसमबडीदगाकी॥ ४१॥ रेमिथ्याकोबोलनहारा। अर्जुनअहैतोहिधिक्कारा॥

दोहा-वृथासराहतनिजबलहि, दुर्मतिपांडुकुमार। तेरेधनुगांडीवको, बारबारधिक्कार॥

मरयोदेवजेसुतगृहमाँहीं। तिनकोचाहतल्यावनकाँहीं॥तातेतोरिकुमतिप्रगटाती। तोहिजोहिछातीजरिजाती॥४२॥
सुनतविप्रवाणीबलऐना। उठ्योमौनकछुकह्योनवैना॥ पढ्योसव्यसाचीवरमंत्रा। स्यंदनचढिउडिचल्योस्वतंत्रा॥
गोयमराजऐनबलवारो। तहँनविप्रबालकननिहारो॥४३॥तबपुनिआशुइंद्रपुरगयऊ। तहाँनद्विजसुतदेखतभयऊ॥
अग्निलोकपुनिगयोप्रवीरा। वायुलोकपुनिगेरणधीरा॥ वरुणलोकपुनिलोककुबेरा। कियोसातहूँलोकनफेरा॥

दोहा-अतलहुवितलहुसुतलतिमि, औरतलातलवीर। महातलौसुरसातलौ, औपातालहुधीर॥

द्विजसुतखोजोइनमहँजाई॥४४॥पैनकतहुँदृगपरेदेखाई॥तबसुधिकरिप्रणपांडुकुमारा। दुखीद्वारकैबहुरिसिधारा॥
नगरबाहिरेचिताबनाई। जरनचह्योअर्जुनदुखछाई॥ यदुवंशीसबयहसुधिपाई। प्रद्युम्नादिकहँसेठठाई॥
आपहुजरयोबालकनिखोयो। तनतेनिजविक्रमसबधोयो॥ जेअसबिनाविचारबतराहीं। तिनकीयहीदशाजगमाहीं॥
सुनिअर्जुनकहँजरतमुरारी।गयेआपुअतिआशुसिधारी।लियोचितातेताहिउतारी।सुधासरिसमुखगिराउचारी॥४५॥
अबनहिंजरहुअनलअरिघालक।हमदेखायदेहैंद्विजबालक॥ह्वैहैकीरातिविमलतिहारी।गेहैंजाहिमनुजगुणिप्यारी ४६

दोहा-असअर्जुनसोंकहिहरी, दारुकसूतबोलाय। ल्यावहुरथमेरोतुरत, दियोनिदेशसुनाय॥

ल्यायोदारुकतुरतरथ, जेहिरविसरिसप्रकास। अर्जुनकोकरिसारथी, चढिगेरमानिवास॥

कह्योपार्थतेतबयदुराई। पश्चिमदिशिचलुरथहिधवाई॥४७॥ सुनिपारथकेसबकेवैना। वाजिनबागगह्योभरिचैना॥
हरिकहँनेकुपीठछुइदेहू। अतिदृढनिजआसनकरिलेहू॥पारथपीठछुयोवाजिनकी। मचीझनककिंकिनिराजिनकी॥
लूकसरिसकढिगोहरिजाना। कोहुकेदृगमेंनाहिंदेखाना॥ छायरह्योतहँघरघरशोरा। मानहुँघहरिरहेघनघोरा॥
सिंधुतीरजबगेयदुराई। तबअर्जुनकहँशंकाआई॥ हरिकहँकछुसंदेहनकीजे। वारिधिमाधिवाजिनकरिदीजे॥

दोहा-तबअर्जुनकछुपीठछुइ, ऊँचीकरिहैबाग। हूँकीदैसागरबिचै, डारयोविलमनलाग॥

सागरजलमहँकृष्णतुरंगा। परसतपगकढिगयेअभंगा॥ यहिविधिसातसमुद्रनडाके। तदपितुरंगनेकनहिंथाके॥
सातहुद्वीपनमहँयदुराई। मारुतसमकढिगेसुखछाई॥ जहँजहँयदुनंदनरथजातो। तहँतहँशोरहिमात्रसुनातो॥
सकैंदेखिनहिंद्वीपनिवासी। चकितखड़ेदेखनकेआसी॥ रहेजेगिरिसातहुद्वीपनमें। तिनकोनाघिगयेयककछिनमें॥
निरख्योलोकालोकपहारा। ध्रुवसुमेरुतेऊँचअपारा॥ अतिउतंगलखिअर्जुनवीरा। ह्वैशंकितकियवाजिनधीरा॥

दोहा-तबहरिपारथसोंकह्यो, लैचलुचपलचढाय। यहिपहारवहिओरमें, रविप्रकाशनहिंजाय॥

अर्जुनऊँचबागकछुकीन्ही। तबहितुरंगपवनगतिलीन्ही ॥ तुरतहिलोकालोकहिशृंगा। बिनबिलंबचढिगयेतुरंगा ॥
तहाँमहातममहाभयावन।सुरासुरहुजहँसकहिनजावन॥४८॥अर्जुननिरखिरोंकितहँस्यंदन।कह्योजोरिकरहेयदुनंदन
अबतोआगूअतिअँधियारा। गमनयोगनहिंपरैनिहारा ॥ हरिकहँसीधेकरहुतुरंगा। प्रविशेमारगमिलीअभंगा ॥
पारथवाजिनदियोइशारा। सनमुखचलेमहाअँधियारा ॥ निरखिमहातमशिरझिझकारी। लौटिभगेतुरंगजवधारी ॥

दोहा--तबहरिकहताजनहनो, वाजिनवागउठाउ। डारिदेहुतममहँतुरँग, मनमहँशंकनलाउ ॥

पारथतुरतहिफेरितुरंगन। ताजनहन्योजोरिकरअंगन॥कलातगतचपलासमचमके। वाजीउडिअकाशमहँझमके ॥
परेकूदितेहिंअतिअँधियारा। कर्दमसमतमगाढअपारा ॥ गडिगेतहँचारिहूतुरंगा। उठतउठायेनहिंतिनअंगा ॥
मारुमारुताजनहरिकहेऊ। अर्जुनतुरतकसाहनिदयऊ ॥ वाजिनताजनहन्योत्रिवारा। पैतुरंगनहिंलहेउबारा॥४९॥
तबअर्जुनकहअबकाहोवै। अंधकारवाजिनबलखोवै ॥ हरिकहकछुसंदेहनकीजै। अश्वनकोआश्वासनदीजै ॥

दोहा--असकहिपारथसोतहाँ, तुरतहिरमानिवास। लियोसुदर्शनचक्रकर, कोटिनभानुप्रकास ॥

छंद--चक्रहितज्योयदुनंदस्यंदनअग्रसोनृपचलतभो ॥५०॥ कर्दमसरिसतमअतिभयावनतेजसोंनिजदलतभो ॥
जहँजहँचलतअँधियारफारतकरतचक्रप्रकाशको। तहँतहँतुरतगमनतसुरथकरिवेगजगतनेवासको ॥
तमदलतसोहतचक्रभलरघुनाथकोजिमिबाणहै। लंकाधिपतिकीमूलसैन्यविनाशकीनमहानहै ॥ ५१ ॥
लखिकैसुदर्शनभासअर्जुनतकिसक्योनहिंसन्मुखै। व्याकुलितदोउदृगमूँदिकीनोआपनोनीचेमुखै ॥ ५२ ॥
इमिसार्धद्वादशकोटियोजनमहातमनाँवतभये। महिनीरमारुततेजनभअ।वरनपांचौनाँघिगये ॥
त्रयकोटियोजनकनकधरणीशून्यजनतेनवतभे। तहँपरमअद्भुतधामइकअभिरामकामदतकतभे ॥
मनिजटितकंचनखंभसहसविराजमानअमानहैं ॥ ५३ ॥ तेहिमध्यसहसफणशेषसोहतशंभुशैलसमानहैं ॥
अतिभीमभावतनैनरसनाकंठश्यामबिराजहीं ॥ ५४ ॥ तेहिमध्यपरमप्रभावपुरुषोत्तमजगतपतिराजहीं ॥
घनश्यामतनपीरोवसनशशिसमवदनईशनभले ॥ ५५ मणिमयकिरीटविभातशीशसुकुंडलौकाननरले ॥
झलकैंसुआननआयकैंअलकैंअमलसुखमाभरीं। सोहतप्रलंबसुबाहुआठहुहियेकौस्तुभमणिधरी ॥
वनमालऔश्रीवत्सरेखविशेषउरमहँसोहनी। कमलाकरनचाँपतिचरणनिजकंतआननजोहनी ॥ ५६ ॥
पार्षदसुनंदहुनंदआदिकचक्रआदिकआयुधौ। चहुँओरसोहतसुभगतनपरिपूरप्रेमपयोनिधौ ॥
श्रीपुष्टिकीरतिअजाअणिमादिकहुसिद्धिसुतनधरी। सेवनकरहिंप्रभुकोसदाचहुँओरतेमोदितखरी ॥ ५७ ॥
असनिरखिनारायणसुभौमैंछोंडिरथढिगजाइकै। वंदनकियोयदुनंदतामिकछुपांडुनंदडेराइकै ॥
हरिपार्थकोलखिमुदितह्वैभौमामृदुलमुसकाइकै। अतिमधुरमंदहिमंदसुंदरवचनकहशिरनाइकै ॥ ५८ ॥
मैंविप्रबालकआपदर्शनहेतहारिल्यावतभयो। अबपाइदर्शनरावरोममकामपूरणह्वैगयो ॥

दोहा--हरणहेतभूभारके, लियभूमेंअवतार। सोहरिइतआवहुतुरत, हेवसुदेवकुमार ॥ ५९ ॥

नरनारायणपूरणकामा। देनहेतजगमंगलधामा ॥ प्रगटकरहदोउधर्मअनंता। जोकरिलहतमोदजनसंता ॥ ६० ॥
असकहिआठहुबालकदीन्ह्यों।दोउतथास्तुकहिवंदनकीन्ह्यों॥लैद्विजबालकचढिरथमाँहीं।आयेतेहिपथयदुपुरकाँहीं।
विप्रहिबालकदीन्हेंजाई।सोआशिषदियआनँदछाई॥६१॥अर्जुनविष्णुधामकहँदेखी।मनमहँविस्मितभयोविशेषी६२
पुनिअसमानिलियोमनमाँहीं।बिनहरिकृपामोरबलनाँहीं६३असबहुचरितननैनदेखावत।करतयज्ञद्विजवरसुखछावत

दोहा--विषयभोगभोगतअमित, वर्षतजनमनकाम। मानतविप्रनइष्टनिज, वसेनगरश्रीधाम ॥ ६४ ॥ ६५॥
निजकरअर्जुनआदिकर, पापिननृपननशाइ। धर्मचलायोधरणिमें, धर्मराजसुखछाई ॥ ६६ ॥

इति सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराज
श्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ दशमस्कंधे उत्तरार्धे एकोननवतितमस्तरंगः ॥ ८९ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा-अबसुनियेकुरुपतिकथा, श्रीवसुदेवकुमार। लैयदुवंशिनसंगमें, कीन्ह्योंवारिविहार ॥
एकसमयद्वारावतिमाँहीं। रामकृष्णकेवसततहाँहीं ॥ भैसमुद्रयात्रातेहिकाला। तबपरजालहिमोदविशाला ॥
गयेक्षेत्रपिंडारकासिगरे। मज्जनदानकियेमतिअगरे ॥ तहँवसुदेवहिआहुकराजे। औरहुवृद्धनछोंडिसमाजे ॥
पुत्रपउत्रनमित्रनमंत्रिन। सुहृदसखाअरुलैबाजंत्रिन ॥ निजराणीअरुसबयदुनारी। हरिवललैसंगगयेसिधारी ॥
तहँलाखनगणिकागणगवने। गायकनर्तकतजिताजिभवने ॥ जबसागरतटगेयदुराई। जुरीसभाजमहासुखदाई ॥
दोहा-प्रथमहिरेवतिकोकमल, करगहिबलवलवान। विहरनहितप्रविशेउदधि, करिकदंबरीपान ॥
पुनिसोरहसहस्त्रछविखानी। अरुशतअरुआठौंपटरानी ॥ लैसँगप्रविशेजलयदुनाथा।पुनिसबयदुप्रविशेतियसाथा॥
तबयदुनंदनगिरासुनाई। हिलतकोउनहिंकरैलराई ॥ हरिप्रतापतेसागरनीरा। भयोसुखदनाहिरह्योगंभीरा ॥
शीतलसुखदसुगंधसमीरा। बहतभयोतेहिक्षणअतिधीरा॥वारवधूसजिसकलश्रृंगारन।जलमहँप्रविशतभईहजारन॥
तहँमणिजटितकनकलघुतरनी।ल्यायेदूतपरममुदभरनी॥मकरविहँगमृगमुखबहुसोहैं। नारिपरस्परतिनआरोहैं ॥
दोहा-तहँबाजेबाजेविपुल, रह्योमधुरसुरछाय। गानकरनलागीललित, वारवधूहरषाय ॥
गंधर्वनआवाहनकीन्ह्यों। अरुहरिशक्रहिशासनदीन्ह्यों ॥ तहाँअप्सराकोटिनआई। स्वर्गलोकतेअतिछविछाई ॥
तहँकिन्नरगंधर्वबहुनाना। आयेलैलैबाजविधाना ॥ तिनअप्सरनकह्योभगवाना। यादवसबहैहमहिंसमाना ॥
तातेइकइकयदुवरपाहीं। शतशतकरहुविहारइहाँहीं ॥ तेहरिशासनधरिधरिशीशा। सबसुंदरीमुदितअवनीशा ॥
यदुवंशिनकेसंगअपारा। लगीकरनबहुभाँतिविहारा॥गावहिंनाचहिंबाजबजावहिं। यदुवंशिनउरसुखउपजावहिं॥
दोहा-राणिनसोरहसहसमधि, यदुपतिकरहिविहार। तिमिनिजनिजनवलानिसँग, सोहतसकलकुमार ॥
करतभयेसबआसवपाना। होतभयेमदमत्तमहाना ॥ करतकटाक्षमंदमुसकाई। लेहिअप्सराचित्तचोराई ॥
हँसतहँसावतहुलसतहेरैं। बारबारमुखमहँकरफेरैं ॥ कोउअप्सरनसंगलैजावै। रैवतगिरिविहारकरिआवै ॥
सुरसुंदरिनसहितगृहजाई। कोउतहँविहरहिअतिसुखछाई ॥ कोउअप्सरनसहितअनुरागे।बननबननबागनवरबागे॥
सुधासरिसभोसागरनीरा। पानकरहिंमोदितयदुवीरा ॥ कटिलौंभयोउदधिइकयोजन। प्रगटायोरँगचारिसरोजन ॥
दोहा-विविधभाँतिसरसिजप्रभा, परीउदधिजलमाहिं। विविधभाँतिथलथलसबै, सललिललितदर्शाहिं ॥
विविधभाँतिप्रगटेपकवाना। विविधभाँतिसुंदरअतिपाना॥विविधभाँतितहँसुमनसुहाये।विविधभाँतिमालादरशाये।
विविधभाँतितहँकुसुमविभूषण।विविधभाँतिपहिरेयदुवरतन।विविधभाँतिभाजनतहँल्याये।विविधभाँतिकेरत्नसुहाये
विविधभाँतिकेवसननवीने। विविधभाँतिपहिरेपरवीने॥विविधभाँतिकीनाउविराजैं। विविधभाँतिकेमणिघटछाजैं॥
विविधभाँतिकेतहँअँगरागा। विविधभाँतिलेपहिबडभागा ॥
दोहा-विविधभाँतिमज्जनकरैं, करिकरिविविधविहार। विविधभाँतिकीन्हेंतहाँ, नरनारिनश्रृंगार ॥
विविधभाँतिकीलैपिचकारी।विविधभाँतिसींचहिनरनारि।विविधभाँतितहँउडैपरागा।विविधभाँतिबाढ्यौअनुरागा॥
विविधभाँतिबोलतेविहंगा। विविधभाँतिकीउठतितरंगा॥विविधभाँतिप्रगटेतहँबागा। विविधभाँतितहँबनेतडागा॥
विविधभाँतिकीकुंजसोहाहीं।विविधभाँतिलतिकालहराहीं॥विविधभाँतिसुरललनागावैं।विविधभाँतिकेबाजबजावैं ॥
विविधभाँतिकीगतिनिदेखावैं।विविधभाँतिकेभाउबतावैं॥विविधभाँतिआनँदप्रगटाने। विविधभाँतिकेशोकनसाने॥
दोहा-विविधभाँतिकीमाधुरी, बोलहिवनितावानि। विविधभाँतिकीकांतितहँ, विविधभाँतिदरशानि ॥
विविधभाँतिकोबहैसमीरा।विविधभाँतिअप्सराशिशरीरा।विविधभाँतिअलिकूजहिंवृंदा।विविधभाँतिदेतोमुदचंदा॥
विविधभाँतिकीऋतुप्रगटानी।विविधभाँतिकीरतिदरशानी।विविधभाँतिलखिपरहिविमाना।विविधभाँतिफहरतेनिशान।
विविधभाँतितहँहोततमाशा।विविधभाँतिउपजीउरआशा।विविधभाँतिप्रगटेतहँरागा। विविधभाँतिरागनीसरागा।

विविधभाँतिमुनिपरतसुताला। विविधभाँतिकीतानरसाला ।विविधभाँतिकोविभौदेखानो।विविधभाँतिसुरपतिललचानो

दोहा—विविधभाँतियदुनाथजो, कीन्ह्योंसलिलविहार । विविधभाँतितेसुकविजन, करतभयेउच्चार ॥

छंदगीतिका—तहँकलितचंदनपंकतनकादंबरीकरिपानहै । दृगअरुणसोहतलंबबाहुप्रथातझुकतमहानहै ॥
वरवसनधारेनीलनीलनवीननीरदसमलसैं । तेहिमध्यमुदितमयंकसोमुखहासछनछविकोहसैं ॥
यककानकुंडलकालितटेढीमुकुटभ्रुकुटीनैनहैं । बलरामआनंदधामविहरतहरतसुखमामैनहैं ॥
कहुँभ्रमतकहुँरुकिरमतकहुँडगडगतडगमगचलतहैं । करिपानआसवरेवतीसँगकेलिरसरँगरँगतहैं ॥
तहँकृष्णसुरसुंदरिनशासनदेतभैयहिभाँतिहैं । बलरामकोसबघेरिनाचहुजोरिजोरिजमातिहैं ॥
तहँकृष्णशासनपायसुरतियवंदिरेवतिरामको । नाँचनलगींगावनलगींछावनलगींत्रयग्रामको ॥
बाजनबजावनलगींसिगरींतालदेततितालहैं । बलरामकृष्णचरित्रगावहिंभरीआनँदवालहैं ॥
तहँआशुउठिदैतालदोउकरपकरिरेवतिहाथको । अतिशयसुहावनलगेगावनरामझमकतमाथको ॥
गावतनिरखिबलभद्रकहँगहिसत्यभामाकरनको । यदुनाथहूमुखमधुरसुरगावनलगेमुदभरनको ॥
अर्जुनसुभद्रासहितआसवपानकरिहरिसंगमें । गावनलगेनाचनलगेमातेमहारसरंगमें ॥
रतिनाथतहँरतिसहितआसवपानकरिगावनलगे । गदसांबसात्यकिशुकहुसारनचारुदेष्णहुरसरँगे ॥
बलभद्रसुतदोउनिशठउल्मुकअनाधिष्टअकूरहूँ । अरुभानदीपतिमानपूरणमासउद्धवसूरहूँ ॥
निजनारिलैलैसंगमहँगावतबजावतनचतहैं । आसवमतेचहुँकितभमतगतिभेदबहुविधिरचतहैं ॥
यहदेखिकौतुककृष्णकोनारदपरमसुखपायकै । लैवीणपाणिप्रवीणप्रेमहिभीनआशुहिआयकै ॥
यदुवंशकेमधिजायकैपरवीणवीणबजायकै । छूटेजटानाचनलगेचहुँओरभाउवतायकै ॥
लखिसत्यभामैमाधवैपारथसुभद्रैवामको । विहँसतहँसावतदेवऋषितहँरेवतीबलरामको ॥
इकहाथसत्याकोपकरिएकहाथनारदकोगहे । जलकरतरासविलासमाधवहिलेसागरसुखनहे ॥
अर्जुनसुभद्रासहिततहँझूमतझुकतहिलिगेजवै । श्रीकृष्णयदुवंशिनबुलायसुनायशासनदियतवै ॥
आधेहमारेओरआधेरामओरहिजायकै । कीजेविविधजलकेलिनीरतरंगफेलिउडायकै ॥
तिनमहँरहैआधेहमारेसुतनसंगयदुवरसवै । अरुनिशठउल्मुकसंगआधेहोंहियदुवंशीअवै ॥
असकहिसहितसत्याहरीमुनिपैलगेजलसींचने । मुनिविमलवीणबजायनाचतलगेहरिपटखींचने ॥
बलभद्रतुरतसमुद्रप्रविशेरेवतीकरपकरिकै । तबघसेउल्मुकनिशठआदिककमरअंबरजकरिकै ॥
इतकुँवरप्रद्युम्नादिसबपिचकारिचारुचलावहीं । उतकरनसोअरुनलनसोनिशठादिनीरउडावहीं ॥
पुनिपुनिकरततहँपानआसवनशावशझूमताफिरैं । गावतबजावतबाजबहुभावतभ्रमतभुजभारिभिरैं ॥
हनिसुमनकंदुकसुमनकंदुकसुमनढालहिरोकहीं । अरविंदकेलैवृंदबहुइकयेकपैंझिलिझोंकहीं ॥
तहँरेवतीरुक्मिणिसुभद्रासत्यभामासखिनलै । करतीकुतूहलकेलिकुलकरकमलअवलिविशेषलै ॥
तेइयुवतिमध्यसमुद्रविलसहिंकराहिकेलिकुतूहलैं । मनुसहसइंदुअकाशप्रगटिप्रकाशकीन्हेंभूतलैं ॥
कहुँचपलचटकचलायगेंदनचतुरिचातुरिकरतिहैं । जिमिशरदघनमेंदमाकिदामिनिचहूँकितछविभरतिहैं ॥
तहँसंगनारदसहितमित्रनपानिपिचकारिनगहे । गावतबजावतझुकतझूमतरामकोसींचनचहे ॥
तहँरामसखनसमाजसंयुतधायपिचकारिनहने । दुहुँओरतेतहँकंजकंदुकचलतभेअतिशयघने ॥
तहँरुचिररेवतिरुक्मिणीपैजायपिचकारीहनी । सोउसकलसखिनसमाजयुतहनिअमलकमलनिसुखसनी ॥
मदमत्तअतिजलकेलिरतलखिसकलनारिननरनको । श्रमकेनिवारणहेतवारणकियोहरिसुखभरनको ॥
यदुनाथकीरुखजानिसबकियवंदकंदुकयुद्धहैं । पुनिसकलहिलिमिलिनचनलागेरागरागेशुद्धहैं ॥
अर्जुनहुनारदसहितयदुपतिजलतरंगबजावहीं । तेहिंमध्यमेंबलभद्रनाचहिरागसोरठगावहीं ॥

यहिभाँतिकरिजलकेलिबहुविधिनिकसिततटठाढेभये। तनलपटिपटअँगप्रगटलखिविहँसतपरस्परसुखछये।
पुनिपहिरिपटभूषणअनूपमअंगअँगशोभितकिये। तहँनारदहिनिजहाथसोंहरिवसनभूषणसजिदिये॥
पुनिरेवतीरुक्मिणीआदिकवरवसनपहिरतभई। बैठींसखीनसमाजजोरिकरोरिशशिमुखमाछई॥
तहँरामकृष्णहुपार्थनारदसहितयदुवंशिनसँगे। बैठतभयेदरवारसुभगलगायरसरँगहिरँगे॥
तहँमंजुमनरंजनसुव्यंजनसूपकरल्यावतभये। बहुभाँतिअन्नप्रकारपानप्रकारअतिस्वादनिछये॥
बहुमांसकेपरकारसुफलप्रकारसुमनप्रकारहैं। दधिकेप्रकारसुपयप्रकारहघृतप्रकारअपारहैं॥
मधुकेप्रकारहुशरकरापरकारलवनप्रकारहैं। कटुकेप्रकारहुतिक्तकेपरकारअम्लप्रकारहैं॥
मिष्टानकेपरकारत्योंपक्वानकेपरकारहैं। आसवप्रकारहुजलप्रकारसुकंदमूलप्रकारहैं॥
वटकेप्रकारहुवटीकेपरकारशाकप्रकारहैं। चोखनप्रकारसुलेह्यकेपरकारचर्वप्रकारहैं॥
यदुनाथकीज्योंनारएकमुखवरनिकेहिविधिमेंसकौं। जोकियोवर्णनताहिकविमधिवारबारहिमेंजकौं॥
यहिभाँतियदुपतिरामपुत्रनमित्रसुहृदसखानिलै। भोजनकरतरुक्मिणीसुरेवतिआदितियछबिखानिलै॥
विहँसतहँसावतएकइकभोजनकरावतकरनते। इकइकदुगवतपुनिदिखावतलजिलजावतनरनते॥
यहिभाँतिभोजनकरततहँरविअस्तगिरिअथवतभये। आईनिशाअतिशैसुहावनिकृष्णवलअतिसुखछये॥
प्रमुदितसबैकरपदपखारिसुपानआसवकरितहाँ। बैठतभईसिगरीसभायदुराजराजतमधिजहाँ॥
इकओरपुरुषसमाजलैबलरामअतिअभिरामहैं। इकओररुक्मिणिरेवतीबैठीसहितबहुवामहैं॥
ताहीसमैबाजेबजावतरामतहँगावतभये। उतरेवतीयुतरमणिगणगावतमधुरसुरसुखछये॥
तेहिमध्यपरमप्रवीणनारदवीणसरसबजायकै। नाचनलगेपहिरेवसनदोहुओरभाववतायकै॥
तहँकृष्णमंजुमृदंगलैकरविविधभेदबजावहीं। लैबाँसुरीमाधुरसुरीबहुरागपारथगावहीं॥
इकहाथउद्धवकंधधरिइकहाथसात्यकिकोगहे। बलरामझूमतझुकतझझकतझपतदृगउठिअसकहे॥
अबधरणिइततेटारियेमोहिदेहुनाचनहेसखा। आसवसलिलयहसिंधुमोसुखआवईअतिशयतृषा॥
भभभभ्रमतिभूभभरिमोहिमैंभ्रमहुनहिंभमरौंनहीं। ललछंबमानविलोकुचंदहिचारुताअसनहिंकहीं॥
धधधरक्कतधराधरचहुँओरशोरसनातहै। ढढरक्कतसुखदआसवव्योमतेसरसातहै॥
तहँमिस्त्रकेशीमेनकारंभासुकेशितिलोत्तमा। उरवशीहेमाअरुघृताचीमंजुलघोषाउत्तमा॥
सबनचनलागीमोदपागीगायरागनरागिनी। बलकृष्णओरखतायभावनभामिनीबडभागिनी॥
तहँरामकृष्णसराहिबहुतांबूलनिजकरदेतभे। गावतसुयशयदुनाथकोसबलोकआशुहिसेतभे॥
यहनिरखितहँप्रद्युम्नमंजुलमधुरसुरगावनलगे। रंभादिसुरसुंदरिनगणसुनतैसबैसुखमहँपगे॥
तहँकृष्णपारथरामनारदचूमिप्रद्युम्नैमुखै। गावनलगेचहुँओरतेतोहिसंगमंजुलयुतसुखै॥
तहँसुनतसिगरेनारिनरमोहतभयेएकवारहीं। अनमिषअचलतेहिक्षणभयेनहिंनेकुअंगसम्हारहीं॥
यहिभाँतिकौतुककरतरासविलासगावतनचतहीं। बीत्योदिवसवीतीनिशाक्षणएकसममानततहीं॥
पुनिसुरतियनिगंधर्वगणकोविदाकियहरिरामहैं। मणिगणविभूषणवसनवरबहुदीनमुदितइनामहैं॥

सोरठा-यहिविधिरासविलास, होतसिंधुमधिविविधविधि। तहँयदुनाथनिवास, भयोएककौतुकसुनो॥

जोनिकुंभदानवबलवाना। यदुवंशिनकोशत्रुमहाना॥ तीनरूपतेजगमहँरहेऊ। एकरूपपटपुरहनिगयऊ॥
वज्रनाभयकताकोभ्राता। हन्योप्रद्युम्नताहिविख्याता॥ व्याहप्रद्युम्नप्रभावतिकेरो। सुनिनिकुंभकियकोपघनेरो॥
आयोकुशस्थलीअभिमानी। सूनमहलयदुपतिकेजानी॥ मायाकरीमहलमहभारी। अंतर्धानहिभयोसुरारी॥
सिगरोउग्रसेनकीरानी। देवकिरोहिणिहूँछबिखानी॥ सोइगईकोउमरमनजाना। तेहिसमैआयोबलवाना॥

दोहा-रहेभानुयदुवरकोऊ, तासुसुतासुकुमारि। भानुमतीअसनामकी, विनव्याहीछबिवारि॥

भानुरहेतपहितवनमाँहीं। रह्यौसूनवरतासुतहाँहीं ॥ दानवअधमतहाँद्रुतगयऊ। हरतभानुदुहिताकहँभयऊ ॥
तहँदानवकेहरतकुमारी। आरतऊँचीगिरापुकारी ॥ तवसिगरीअंतहपुरनारी। भानुमतीकोहरननिहारी ॥
रोदनकरनलगींइकवारा। भयोशोरचहुँओरअपारा ॥ दानवभानुमतीकहँहरिकै। उड्योनगरतेतुरतनिकरिकै ॥
अंतहपुरसुनिआरतशोरा। कोपकियोवसुदेवकठोरा ॥ तैसहिउग्रसेनमहराजा। दानवपैकरिकोपदराजा ॥

दोहा–पहिरिकवचदोउवृद्धतहँ, चढिस्यंदनधनुधारि। निकसतभेदानवहनन, लेनछडायकुमारि ॥

लखिनपरयोदानवअपकारी। रहेदोऊचहुँओरनिहारी ॥ तवदोउगयेसखेदअपारा। करतरहेजहँकृष्णविहारा ॥
पितुअरुउग्रसेनमहराजै। लखियदुपतिमानेअतिलाजै ॥ करिवंदनकीन्हींअगवानी। आयसुकहाकहीअसवानी ॥
तवदोउकह्योकोपअतिकीने। तुमतोजलविहाररसभीने ॥ सिगरीभूलिगईसुधिघरकी। मानहुनहींभीतिकछुपरकी ॥
दानवउतनिकुंभइकआयो। अंतहपुरमहअतिभयछायो ॥ भानुमतीजोभानुकुमारी। हरयोताहिमायाविस्तारी ॥

दोहा–सुताछुडावनहमगये, चढिस्यंदनधनुधारि। पैनभपथह्वैनिकसिगो, परयोनहमहिनिहारि ॥

असुरहरीमरयादहमारी। करीभीतिनहिनेकुतुम्हारी ॥ सुनिअतिअनुचिततहँयदुनाथा। बोलेदुहुनजोरियुगहाथा ॥
आपजायबैठहुग्रहमाँहीं। हमगमनतहैंअसुरजहाँहीं ॥ असकहिदोहुनविदाप्रभुकरिकै। उद्धवसोंबोलेसुखभरिकै ॥
आरजरामहिदेहुसुनाई। हरयोभानुमतिदानवआई ॥ चलहितासुमारनकेहेतू। अवविलंबकोहैनाहिनेतू ॥
असकहिसकलतियनयदुराई। दियोमहलकहँतुरतपठाई ॥ उद्धवतुरतरामढिगजाई। दियोकृष्णसंदेशसुनाई ॥

दोहा–मोदितरासविलासमें, आसवकीन्हेंपान। रामसुनतउद्धववचन, प्रथमकियोनहिंकान ॥

पुनिउद्धवबोलेमुसकाई। हरिसँदेशसुनियेवलराई ॥ असकहितीनवारगहिपानी। उद्धवकहीरामसोंवानी ॥
तवमूँदेहगउद्धवओरा। कह्योमंदरोहिणीकिशोरा ॥ उद्धवहमहिजगावहुनाँहीं। कहिदीजेअसकेशवपाँहीं ॥
करैजौनवाकेमनआवै। यहिअवसरकछुहमहिनभावै ॥ जायचहैनाहिजायतहाँहीं। अवैकहूँहमजैहैंनाहीं ॥
उद्धवसुनतरामकीवानी। हँसतगयेजहँशारंगपानी ॥ कह्योसुनहुहेरमानिवासा। रामरँगेरसरमानिवासा ॥

दोहा–उचितहोयसोकीजिये, आपैसमौविचारि। वैनपधारैंगेकतहुँ, असतौविनयहमारि ॥

उद्धववचनसुनतमुसकाई। गरुडहिवेगिवोलियदुराई ॥ गहिशारंगचढेसुखछाई। अर्जुनकोसंगलियोचढाई ॥
पुनिप्रद्युम्नसोंवचनउचारा। चलहुहमारेसंगकुमारा ॥ कहप्रदुम्नमेंरथचढिधैहौं। पक्षिराजपक्षहिसँगजैहौं ॥
असकहिमायामयरथरचिकै। चढ्योकुँवरधनुधरिरिसतिचिकै ॥ गरुडहिदियशासनयदुराई। दानवनिकटदेहुपहुँचाई ॥
पवनहुतेकरिवेगप्रचंडा। लैहरिउड्योगरुडवरिवंडा ॥ पक्षलग्यौरथचढोकुमारा। चलोजातकरिवेगअपारा ॥

दोहा–तहाँवज्रपुरकेनिकट, लखिनिकुंभयदुनाथ। पांचजन्यवरशंखको, दियवजायगहिहाथ ॥

दानवपांचजन्यधुनिसुनिकै। लौटयोयदुपतिआगमगुनिकै ॥ दानवतीनहुवीरनिहारी। तीनरूपकरिलियअतिभारी ॥
करिकैघोरशोरदिशिछायो। दानवयदुपतिसन्मुखधायो ॥ प्रभुसन्मुखधावततेहिंदेखी। कृष्णकुँवरकरिकोपविशेखी ॥
तीनरूपअपनहुकरिलयऊ। यदुपतिकेआगूबढिगयऊ ॥ मारनलाग्योविशिखकराला। धायेखासलेतमनुव्याला ॥
तीननिकुंभतीनहरिनंदन। करतयुद्धउरभरेअनंदन ॥ गदाधारिधावतवलवारा। रोंकतसरहनिकृष्णकुमारा ॥

दोहा–गरुडचढेअर्जुनसहित, माधिठाढेयदुवीर। दानवधावतओरचहुँ, हरिसुतमारततीर ॥

दानवनिकटनआवनपावै। मारिबाणप्रद्युम्नहटावै ॥ तवकढिगयोदूरिअसुरेशा। तहँतेधायोकोपितवेशा ॥
अतिलाघवकारितवहरिनंदन। छायदियोअरिपथशरवृंदन ॥ पुनिअरिमूँदिदियोशरधारन। जलबुंदनजिमिजलदपहारन ॥
सगासिगयेसरनभमहिमाहीं। मारतंडतहँनहिंदरशाहीं ॥ बाणजालफारतअसुरेशा। धावतआवतहरिजेहिदेशा ॥
जिमिअतिशयघनशरवनमाहीं। धावतत्रयमतंगदरशाहीं ॥ रुक्योनजवदानवढिगआयो। तवप्रद्युम्नइकबाणचलायो ॥

दोहा–मारिवज्रसमशीसमहँ, दीन्ह्योंताहिहटाय। तवनिकुंभइकरूपकिय, लियवियरूपदुराय ॥

तवयदुपतिअसवचनउचारा। तुमनयुद्धअबकरहुकुमारा ॥ पुनिअर्जुनसोंकह्योमुरारी। करहुयुद्धअवतुवधनुधारी ॥

सुनतवचनगांडीवटँकोरा । तजेसहसशरपांडुकिशोरा ॥ बाणनलियोनिकुंभहिछाई । शरपंजरपरिगोनदेखाई ॥
तहाँअसुरअतिशयअकुलाई । बचनहेतअसरच्योउपाई ॥ भानुमतिहिलैअरिकरवामा । दक्षिणकरगहिगदाललामा॥
बाणनरोकतकन्यामाहीं । सन्मुखधायोअसुरतहाँहीं ॥ शंकितभयोसव्यसाचीतहँ । कियोबंदसायकछोडनकहँ ॥
दोहा–तबकेशवअसकहतभे, कन्यहिविजैबचाय । मारहुँअसुरहिबाणबहु, जातेनहिंबचिजाय ॥
पारथलैवयतस्तिकवाना । अहिगतिसमछोड्योबलवाना ॥ कन्यहिबहुतबचाइबचाई । मारतभयेबाणसमुदाई ॥
गडेबाणताकेतनमाहीं । तिलभरठौररह्योकहुनाहीं ॥ भयोसह्लिकीसमअसुरेशा । तबउपज्योमनमहँअंदेशा ॥
तबकन्याकेसहितसुरारी । अंतरहितभोगुनिभयभारी ॥ तबप्रद्युम्नसोंकह्योमुरारी । तुमहिंकहाँअरिपरतनिहारी ॥
कह्योमदनपश्चिमदिशिनाथा । भगोजातहैनहिंकोउसाथा॥चलहुँयहीदिशिअबखगगामी।मैंगमनहुँआगूअबस्वामी॥
दोहा–मीनकेतअसकहितहाँ, चल्योअग्रकरिजान । गरुडचढेअर्जुनहरी, पीछेकियोपथान ॥
पहुँचेतुरततासुढिगजाई । निरखितिन्हैंदानवभयपाई ॥ तबमायाशठकरीविशाला । हारिलविहँगभयोततकाला ॥
खडोभयोसन्मुखतिनकेरे । विजयबाणतबहनेघनेरे ॥ कन्याकोरक्षततेहिंक्षणमें । बिंधेबाणवयतस्तिकतनमें ॥
सहिनसक्योसायकअतिघोरा । तबभाग्योकरिआरतशोरा॥पुनिधायेतीनिहुतेहिपाछे।मारतनिशितबाणअतिआछे॥
धरणिसातहूद्वीपनमाहीं । भग्यौनिकुंभबच्योकहुँनाहीं ॥ आगेजातनिकुंभपराना । पाछेगरुडमदनकरयाना ॥
दोहा–जिमिधावतहैंअतिक्षुधित, तीतरपैत्रयबाज । ससुतसखातिमिअसुरपै, धावतभेयदुराज ॥
गोगोकरनशैलपरजबहीं । नघनचह्योगिरिकोशठतबहीं ॥ गिरच्योसुतायुतदानवराई । परचोइ गामहँजाई ॥
सुरासुरहुजेहिंनकिनहिंजाहीं । शिवकोवरतेहिगंगाकाहीं॥गिरतअसुरलखिजलचरकेतू।रथर्ता ।योअतिबलसेतू॥
भानुमतीकहँलियोछँडाई । अर्जुनकृष्णबाणझरिलाई ॥ नरनारायणकेशरघाता । सहिनस. ानवविलखाता ॥
माँग्योभानुमतीकहँछोडी । सक्योनशठसन्मुखउरओडी ॥ दक्षिणदिशिखटपुरकहँजाई । गहिरगुहामहँरह्योदुराई॥
दोहा–तबकहयदुपतिकुँवरसों, भानुमतीपहुँचाइ । द्वारवतीआवहुतुरत, मोसमीपमहँधाइ ॥
मदनभानुमतियानचढाई । गयोआशुद्वारावतिधाई ॥ ताकेभवनताहिपहुँचाई । चल्योबहुरिजहँपितुयदुराई ॥
इतअर्जुनवसुदेवकुमारा । चलेअसुरपैंगरुडसँवारा ॥ षटपुरगुहाद्वारजबआये । तहैंआइहरिसुतशिरनाये ॥
तेहिगुहामहँअसुरहिजानी । सहितसखासुतशारँगपानी ॥ खड़ेरहेताकेसोइद्वारा । बीतीनिशाभयौभिनुसारा ॥
असुरजानिलीन्ह्योमनमाहीं । गयेकृष्णअपनेगृहकाहीं । गदागहेनिकस्योविलतेरे । तबयदुपतिअर्जुनकहँटेरे ॥
दोहा–मारहुमारहुपार्थतुम, नहिनिकुंभबचिजाय । करीउपद्रवफेरिबहु, जोअबरहहिपराय ॥
तबअर्जुनगांडीवटँकोरा । हन्योंनिकुंभहिबाणकरोरा ॥ प्रथमकियोताकोतनजर्जर । पुनिकरिदियोताहिशरपंजर ॥
पुनिअकाशमहिदिशिकपिकेतू।बाँधिदियोबाणनकरसेतू॥देखिपरतनहिंतहाँनिकुंभा।भोतनतेहिंझिझिपाकसकुंभा।
तहँअतिकोप्योअसुरमहाना।फारतबाणजालबलवाना।मंदहिमंदपार्थदिशिधायो । पुनिपुनिअर्जुनविशिखनछायो ॥
बहुकंटकीगदाकरधारे । परतलालनैननननिहारे ॥ अर्जुनशीशगदाशठमारी । बचतनअबअसगिराउचारी ॥
दोहा–लगतगदापारथगिरचो, शोणितवमतविहाल । रुक्मिणिनंदनतबहन्यों, असुरहिबाणकराल ॥
वेधिदियोरोमनप्रतिबाना । मनुभूधरमहँभूरुहनाना ॥ लखिनपरच्योतहँदानवराई । शरअवलीअकाशमहिछाई ॥
विशिखनकोह्वैगोअँधियारा । मदनधनुषछूटतशरधारा ॥ ताहिबाणतममाहिंमहीपा । दानवद्रुतगोकामसमीपा ॥
छिपिकैगदाहन्योतेहिशीशा।पुनिउडिअंबरमहँशठदीशा॥लगतगदाशिरकृष्णकिशोरा।गिरच्योमोहिंमेदिनितेहिठोरा
दोउवीरनकहँमूर्च्छितदेखी।दानवहँस्योजीतिनिजलेखी ॥ सोनहिंसहियदुपतिअतिकोपी।गदाधारिधायेवधचोपी ॥
दोहा–आवतनिरखिगोविंदको, गदागहेअसुरेश । दौरियुद्धलाग्योकरन, करिमंडलतेहिंदेश ॥
गदायुद्धहरिदानवकेरो । भयोभयावनतहाँघनेरो ॥ तहँसुरेशयुतसुरनअपारे । युद्धलखनकेहेतसिधारे ॥
दोऊवीरमंडलबहुकरहीं । कहूँनिकटकहुँदूरविचरहीं ॥ दोऊगरजहिंबारहिंबारौ । दोऊनिजनिजदाउनिहारौ ॥

दोऊसोहैंरणमहँकैसे । अतिबलमत्तमतंगजजैसे । पायतहाँअंतरजगदीशा । गदाहनौदानवकेशीशा ॥
सोऊगदाहरिकेशिरमारी । दोऊपाइप्रहारहिभारी ॥ गिरेमूर्च्छितवहरिमहिमाहीं । हाहाकारभयोचहुँवाहीं ॥
दोहा–उतैनिकुंभहुमूर्च्छिकै, गिरचोधरणिलहिपीर । पुनिदानवउतउठतभो, इतैउठेयदुवीर ॥
तबलैचक्रकह्योयदुराई । ठाढरहसिजनिजाहिपराई ॥ तहाँआपनोवधैविचारी । मायाकरीतहाँअतिभारी ॥
मृतकएकनिजतनमहिडारी।अंतरहितह्वैगयोमुरारी॥जानिमृतकहरिचक्रनमारचो । सखापुत्रकेनिकटसिधारचो ॥
दोहुनशंखवजायजगायो । विजैमानिअतिशैसुखपायो ॥ जानिसकलदानवकीमाया । तवहरिसोंमकरध्वजगाया ॥
मरचोअबैयहशठहैनाहीं । मैंदेखौंदानवनभमाहीं ॥ सुनिकौतुकदानवयदुराई । हँसनलगेदोउवीरठठाई ॥
दोहा–पुनिनिकुंभमायाकरी, कियोहजारनरूप । अवनिअकाशहिदिशिविदिशि, रहेछायतेभूप ॥
कोटिनकृष्णहुकृष्णकुमारा ।मायाकरिशठरच्योअपारा ॥ बहुनिकुंभआशुहितहँधाई । लपटिगयेअर्जुनतनआई ॥
कोउचरणकोउकर्णगहतभे । कोउतूणीरधनुपकरिरहतभे ॥ अर्जुनकहँलैगयेउडाई । अतिऊँचेअकाशमहँजाई ॥
अर्जुनकोकचगहिबलवाना । काटतशीशनिकारिकृपाना ॥ ऐसेकोटिनरूपअसुरके । परेदेखिद्दगपतियदुपुरके ॥
निरखिनिकुंभअंततहँनाँहीं । हरिकेभ्रमदुखभयेतहाँहीं ॥ कौननिकुंभहिचक्रहिमारैं । कौनअर्जुनहिसत्यविचारैं ॥
दोहा–मकरकेतुतबकहतभो, इतनिकुंभहैनाँहि । लियेजातसतिअर्जुनहि, सहसयोजनहिमाँहि ॥
मारहुचक्रअमोघमुरारी । कटिजैहैताकोशिरभारी ॥ तबजेहिदिशिप्रद्युम्नबतायो । तहँतकिमाधवचक्रचलायो ॥
लग्योनिकुंभशीशमहँजाई । शिरविहीनभोदानवराई ॥ मरतनिकुंभगईमिटिमाया । गिरीअवनिमहँताकीकाया ॥
अधमुखपार्थहिगिरतनिहारी । हरिप्रद्युम्नसोंगिराउचारी ॥ धरहुधरहुअवगिरननपावैं । जेहिपारथकेप्राणनजावैं ॥
सुनिपितुवचनकुँवरतहँआशू।रथतजिकैउडिगयोअकाशू।सहजहिडभेपाणिसोंगहिकै।ल्यायोकृष्णनिकटसुखलहिकै
दोहा–बहुविधिसुतहिसराहिकै, अर्जुनमोहनिवारि । पारथऔप्रद्युम्नयुत, गेद्वारकैमुरारि ॥
हरिआगमजान्योपुरवासी।धायप्रणामकियेसुदरासी ॥ सहितसखासुतअतिसुखछाये । यदुनंदनमहलनमहँआये ॥
उग्रसेनकोकियोसलामा । पुनिवसुदेवहिकियेप्रणामा ॥ पुनिवलभद्रचरणशिरनाये । रामहुआशिषवचनसुनाये ॥
पुनिवलरामकह्योमुसकाई । तुमसोंवनीनवातकन्हाई ॥ हमहिंछोडिकसगयेसिधारी । तीनहुबालकवडेखेलारी ॥
रह्योनकोउसंगसयाना।यहअतिअनुचितमोहिंदेखाना ॥ तवबोलेकरजोरिमुरारी । माफकरहुयहचूकहमारी ॥
दोहा–बालककेअपराधवहु, गनैनवृद्धसुजान । तातेहमविनतीकरत, समरथआपसयान ॥
रामकह्योकहिजाहुहेवाला।केहिविधिमारचोअसुरकराला॥तवयदुपतिवृत्तांतसुनाये । सुनतरामअतिआनँदपाये ॥
सभामध्यनारदतहँआये । सबयदुवंशीउठिशिरनाये ॥ कह्योभानुयादवसोंमुनिवर । सुताहरणजनितैदुखजनिकर॥
याकोशापदईदुरवासा । सोईभयोसुनोअनयासा ॥ भानुमतीहैशुद्धकुमारी । उचितमोहिंअसपरतनिहारी ॥
देहुव्याहिसहदेवहिकाहीं । माद्रीसुतजाहिरजगमाहीं ॥ नारदवचनसुनततहँभानू । सहदेवहिव्याहीमतिमानू ॥
दोहा–सहदेवहिभूषणवसन, दैसादरयदुराय । इंद्रप्रस्थकोकरिबिदा, दियोमोदअतिछाय ॥
यहिविधिकरतअनेकचरित्रा।सुनतजाहिजनहोहिंपवित्रा॥वसहिकृष्णद्वारावतिमाहीं।जाकीछविमुखवरणिनजाहीं ॥
सबसंपदापरीमहँपूरी । यदुवंशिननिवासततिभूरी ॥ १ ॥ उत्तमभूषणवसनसमारे । औरहुषोडशकरिशृंगारे ॥
यौवनजोमभरींछविरासी।खेलहिंगेंदनवलाचपलासी॥जहँतहँमहलनपरैंनिहारी।जिनछविसुरललनालखिहारी ॥२॥
नितसिंधुरसंकुलपथरहतो । तहँजलधारनसममदवहतो ॥ भूषणवसननअंगसमारे । तरलतुरंगनरथनसँवारे ॥
दोहा–डगरडगरसवनगरमहँ, यदुवंशीसरदार । सैरकरतविचरतफिरैं, मानहुँमूरतिमार ॥ ३ ॥
कहुँकहुँसोहतसुखदतडागा । फूलिरहेउपवनवनबागा ॥ लफिलोनीलतिकालहराहीं । गुंजहिमत्तमधुपतिनमाहीं॥
बोलिरहेबहुरंगविहंगा । चहुँदिशिछायरह्योरसरंगा ॥ ४ ॥ इमियदुनगरीमहँयदुराई । षोडशसहसमहलसुखदाई ॥
षोडशसहसरूपधरिनाथा । षोडशसहसनारिकेसाथा ॥ करहिंविहारसमारिशृंगारा । नितनवमंगलमोदअपारा ॥

गृहवाटिकाविराजहिंलोनी।जगमगातिमरकतकीक्षोनी॥५॥सरसीसोहिरहींसुखखानी।मणिसमनिर्मलसुरभितपानी॥
विकसेचारिरंगअरविंदा । उडतपरागढरतमकरंदा ॥

दोहा–कनकवाटमंडितमणिन, जगमगातचहुँओर । गुंजिरहेमधुकरनिकर, करहिमंजुखगशोर ॥ ६ ॥

कौनिहुँसमयतहाँयदुराई । सबरानिनकहँसंगलेवाई ॥ करनहेततहँसलिलविहारा । गयेसजेसुंदरशृंगारा ॥
प्रविशेसरसीमहँयुतनारी । गहेकरनकंचनपिचकारी ॥ कुंकुमकलितअंगअँगरागा । पूरणउरपियकेअनुरागा ॥
वैटींसोरहसहससुंदरी । इकइककरगहिसहितमुंदरी ॥ सखीबजावहिबीनमृदंगा । छायरह्योरागनरसरंगा ॥ ७ ॥
तहँगंधर्वअकाशहिआये । जलविहारदेखनसुखछाये ॥ बरबाजेबहुभाँतिबजाई । संयुततालशुद्धसुरछाई ॥

दोहा–रुचिरचिरुचिरपदनको, पावनयशयदुनाथ । गावतभेगंधर्वगण, रागरागिनिनसाथ ॥

छंदचौबोला–कोउभैरौभैरौवैराटहूआनँदभैरौकलगावैं । कोउबहारभैरौंरगभैरौमंगलभैरौभलभावैं ॥
कोऊभैरवीसिंधुभैरवीमुदितमध्यमहुबंगाली । खंभावतीविभासदेशकरवरवषारकोउरसशाली ॥
कोऊविभाकरभटिहारहिकोउललितललितकोइसुखसाने।कोइकुंतलआनंदितगायोरामकलीगुणकरिगाने ॥
कोइदेवंतीदेवगिरीकोउदेवहुतीकोउसुरठाने । कोऊविचित्रबिलावलकोऊसुकुलबिलावलसुखमाने ॥
इंसबिलावलशुद्धबिलावलजीतबिलावलसुरछाये । इमनबिलावलकोइबिलावलीकुकुभसुकुभकोउमनलाये॥
कोउकुंभारगायकोउहरषनकोउसंक्रमनसुरसभीने । कोउनटनारायणीअलहियाकोउअलहीयासुरलीने ॥
मंझअलहियाकोउसरपरदाभूपशाखरागहिकोऊ । दीपशाखकोउलक्षशाखकोउदेवशाखगायेसोऊ ॥
कोउसुघराईसूहासूहीकोउअसावरीसरसावैं । कोऊगूजरीरामगँधारहिकोईजोगियासुरछावैं ॥
कोइगँधारकोइदेवगँधारहिकोउदेशीकोउषटरागा । कोऊवरारीटोडीकोऊकोउबहादुरीयुतरागा ॥
यमनपुरीलछमीढोढीकोउसरस्वतीकोउलाचारी । दरबारीटोडीगायोकोउपारवतीटोडीभारी ॥
मुलतानीटोडीतुरकानीकोइमधुमाधहिबडहंसा । वृंदावनीगायकोउसारँगकीनीयदुपतिपरशंसा ॥
कोउकुरंगशाँरगसुधशाँरगकोउसेमंतशारँगगायो । कोऊगौरसारँगकोउजूहीकोउमुलतानीरसछायो ॥
भीमपलासीमालसरीकोउश्रीरागहिकोउसुखल्यायो।धनाशिरीकोउरूपशिरीकोउधवलसिरीकोभलभायो ॥
पटमंजरीशिरीकोउवरवाबंगशिरीकोउरससराचे । कोईभीमपलाशीगावतवरहिंडोलहीकोउसाचे ॥
कोउवसंतकोउपंचमकोऊकोऊवसंतहीबाहारै । कोऊबहारअडानागावतकोऊसहानाबाहारै ॥
कोउपंचमबहारकोइगावतश्रीबहारहिबाहारै । कोउबहारखंभाइचभनतेकोईपरजहिबाहारै ॥
कोईहिंडोलबहारहिगावतजयतबहारकोऊभावै । पटमंजरीबहारविकासतकोउगँधारवडवागावै ॥
शिरीरागकोउशिरीटंककोउनिराटंककोउसुरछाको । धनाशिरीपूरियाकहतकोउकोउपूरियाशंकराको ॥
ललितपूरियात्रिमनपूरियाकोऊपूरियाभैरवको । कोऊपूरवाकोऊपूरवीकोऊत्रिमनसुखदैवेको ॥
कोईमारवामालीगौरागौरीआशाकोउगौरी । कोउगौरीकुसुंभियाचैतीगौरीगरीविनागौरी ॥
कोउगौरीनायकीअलाप्योकोऊगौरीभटिआरी । कोउगौरीवडहंसीगायोकोउगौरीपुनिलाचारी ॥
कोउगौरीगोधनीभनतभैकोउसाझियागौरीगायो । कोऊविराटीगौरीमंजुलकोउदीपकसुरसुखल्यायो ॥
कोऊपूरियाकोईजयतपुनिकोउतहँईमनकल्याणा । कोऊशुद्धसालंकइमनकोउपुनिकोउशुद्धहिकल्याणा ॥
कोऊशुद्धसंकीरनबरण्योविजयकल्याणभन्योकोई । कोउविनोदकल्यानबखानतभूपकल्यानकोऊसोई ॥
कोउगोचरनकोऊतहँहैमैकोऊश्यामनटकल्याणा । कोउकामोदश्यामगायोतहँकोईकमोदहिकल्याणा ॥
कोऊकमोदहितिलककमोदहिकोईकामोदीकेदारा । कोईकमोदहमीरहिगायोकोईहमीरहिउच्चारा ॥
कोईपरजकोईखंभाइचकोउधूरियाखमायचको । देवनाटकोउनटनारायणकोउनटगायोसुरचयको ॥
नटभूपालीछायानटकोउकेदारानाटहिगायो । शुद्धनाटकोउनाटहमीरहिकोइइमनीसुरसुखछायो ॥

कोउकेदारागावतहैंतहँकोइजलधरकेदारा । कोईमालोहाकेदाराकोईपूरियाकेदारा ॥
कोईगोलिरीकेदाराकहकोईसंकराकेदारा । कोइभूपालीमंजहिगावहिकोईहमीरहिकेदारा ॥
कोऊभूपालीकोईसिंधुकहँकोऊसोहनीसुखसाने । कोउकाफीकोउकावेरीकहँकोउविडंगरागहिगाने ॥
कोइवरधनकोउशारँगदेशैकोऊकलँगराकोगावैं । कोउकरनाटीकोउआनँदकहँकोऊझँझोटीसुरछावैं ॥
कोऊपहारीकोईपीलूकोईगावतहैंमारू । कोऊअहेरीकोईकान्हरीकोऊसहनासुखसारू ॥
कोईअजनाकोऊकान्हराबागेसरीकोईगायो । कोइअडंबरीकोईनायकीकोईमुद्रिकाहिसुरछायो ॥
कोइकौशिकलीलावतिकहँकोईकोईछेमकान्हैरा । कोउमंगलकान्हरासुनायोकोऊदरबारीऐरा ॥
कोइकेहरीकान्हरागावतकोइनराचकेसुरछाये । कोउगाराकोइरासाकान्हरजाजकान्हराकोउभाये ॥
कोईदेशकान्हरासुनावतकोइकान्हरापूरियाको । कोईजाजवंतीकोठानैकोइमंगलरागहिछाको ॥
कोईमालकोशहिकोगावतकोउविहागराकीतानै । कोउविहागकोउइमनविहागैकोउविहागदेसाहिगानै ॥
कोईसंकरावलीसुनावतकोईसंकरासरसावैं । कोईसंकराभरानअलापैकोउसुधंकरासुरछावैं ॥
कोईसंकरामेलनगावतकोईगावतरतिवाही । कोउसोरठकोइदेशसुनावतकोउसिंदूराउतसाही ॥
मेघरागकोउगावतहैंतहँमेघमलारहिकोइगावैं । कोइकान्हरामलारसुनावतकोइमल्लीरशुद्धछावैं ॥
कोइगंधर्वगोडमुखगावतसूरमलारहिकोउभाखे । गोडमलारहिगोडनायकीगोडगिरीकोमुखराखे ॥
कोइसावंतीमल्लारइकोकोईअडानामल्लारे । कोइमलारसुहराईगावतकोईसूहामल्लारे ॥
कोइमलारकेदाराछावतकोईजाजहिमल्लारे । कोइभामनीमलारहिगावतकोऊअहीरीमल्लारे ॥
कोइमलारसिंदूरागावतकोइगावतनटमल्लारे । कोइधूरीयामलारसुनावतकोइतहँगौरीमल्लारे ॥
कोइसावनीमलारसुनावतरूपभामिनीमल्लारे । कोउकुकुभीमल्लारसुनावतऔरहुरागनउच्चारें ॥
सोरठा–अष्टयामकेराग, सप्तस्वरगंधर्वगण । गावहिसहितविभाग, तालमूर्छनासुरसहित ॥
बजेहजारनपवनमृदंगा । वीणाडफसुरचंगउपंगा ॥ ८ ॥ तहँषोडशहजारवरनारी । लैकरमणिनजटितपिचकारी ॥
हरिपैसींचहिसुरभितनीरा । हँसहिँहँसावहिँमोदगभीरा ॥ मणिनभईकंचनपिचकारी । तिनपरडारहिदौरिविहारी ॥
जलविहाररतसोहतकैसे । यक्षिणसहितयक्षपतिजैसे ॥ कहुँहरिनाथनतेपिचकारी । लेहिछुडाइदौरिकोउनारी ॥
पुनिकहुँहरिहुछुडावहिधाई । तेझिझिकारतजाहिपराई॥९॥खसहिकचनतेसुमनचमेली।दौरहिँचहुँकितचारुनवेली॥
दोहा–लपटिगयेपटअंगमें, निपटप्रगटदरशात । सुमनमारियदुपतिहँसत, उरअनंगअधिकात ॥
कंचनकोकरिओटनवेली।लज्जितलौटहिंसहितसहेली॥१०॥कुचकुंकुमरंजितहरिमाला।छूटिरहींअलकनकीजाला ॥
मिलैंदौरियदुपतिकहुँआली। हनिपिचकारिनप्रभाविशाली॥तेऊपियमुखमलहिंपरागा॥बढतपरस्परअतिअनुरागा॥
युवतिमध्यसोहतयदुराजा॥मनहुमतंगिनमधिगजराजा॥११यहिविधिकरिबहुवारिविहारा।अतिमोदितवसुदेवकुमारा॥
नटनरतकिनगायकनकाँहीं । अनुपमभूषणवसनतहाँहीं ॥ यदुपतिदैतहँविविधइनामा।गयेप्रमोदितअपनेधामा१२॥
दोहा–मंदहँसनिचितवनिललित, वचनरचनिसुखदानि । यदुपतिकीलखियुवतिसव, मोहिरहीछविखानि ॥ १३ ॥
शैनकरयोनिजनिजसदन, सहितरमणसवरानि । तिनकोसुखमुखएकते, कैसेसक्योवखानि ॥
आगमजानिप्रभातको, दिवसवियोगविचारि । वदनलगीउनमत्तसे, वचननिकलहरिनारि ॥
सोमैंवरणनकरतहौं, मध्यमुनीनसमाज । चितदैकैअवसोसुनहु, सुमतिपरीक्षितराज ॥ १४ ॥
बोलीकहूँकराकुली, प्रमुदितपायप्रभात । शोकसनीसुनिरुक्मिणी, भनीभामिनीवात ॥

रुक्मिण्युवाच ।

छंद–रेकुररीविलपसिआधीनिशिनैननींदनहिंआई । सोवतपियकोवृथाजगावसिकोयहरीतिसिखाई ॥
धौंहरिचितवनिहँसनिफाँसिमेंहमसमतहूँफँसीरी । तातेसमयसुरतिसवभूलीबोलसिनिकटबसीरी ॥१५॥

दोहा-पुनिचकईकीवानिसुन, मनमहँअतिविलखानि। सतिभामाबोलीवचन, कंतविरहजियजानि॥

सत्यभामोवाच।

छंदचौबोला-रेचकवाकीनिशिवियोगिनीकरुणगिराबहुरोवे। अबभोरनहिंभयोभयाबनसुखितसेजपियसोवै॥
धौंयदुपतिकेसुछविसिंधुमहँबूडिगयोमनतेरो। शिरमहँधरनचहसिपदपंकजतासुकरासिअवसेरो॥१६॥

दोहा-घरघरशोरसमुद्रको, भानुसुतासुनिकान। सुनिप्रभातअतिशैदुखित, लागीकरनबखान॥

कालिंद्युवाच।

छंद-हेसरितापतिनिशिनहिंसोवहुसदाकरहुरवभारी। जानिपरतिभयदशातिहारिहुजैसीभईहमारी॥
नैननपथह्वैप्रविशिहियेमहँमनकोहरोहमारो। तैसहिकौस्तुभहरचोसाँवरोमथिकैउदरतिहारो॥ १७॥

दोहा-निरखिमलीनमयंकको, दिवसवियोगविचारि। कहतभईअतिशयदुखित, कौसलराजकुमारि॥

नाग्रजित्युवाच।

छंद-अरीजोन्हैयासुखदजोन्हाईकाहेलेतछिपाई। कैधौंकियेजोरजछमातोहितेंहिंप्रगटीप्रियराई॥
कैगोविंदकेवचनफंदमेंफँसिआनँदअतिभाये। तातेअचलअकाशविराजसिमंदतेजदरशाये॥ १८॥

दोहा-बहतिविलोकिबयारितहँ, शीतलमंदसुगंध। कह्योलक्ष्मणावचनअस, जान्योनिशानिबंध॥

लक्ष्मणोवाच।

छंद-अरेमलैकोअनिलकहाहमकियअपकारातिहारो। बहतबावरोबारहिंबारहिंक्योंरिपुहोतहमारो॥
इकतोयदुपतिनैनबाणतेजरजरहियोबनायो। तापरतूअबमदनदहनतेपुनिपुनिआयजरायो॥ १९॥

दोहा-विरलेतेहिक्षणगगनमहँ, निरखिघननगुनिभोर। जाम्बवतीअसभनतभै, बाढ्योविरहअथोर॥

जांबवत्युवाच।

छंद-मीतमेघमाधवकेसुदकररूपसमानहिंपाये। नेहनहेध्यावहुतिनहीकोउरअभिलाषबढाये॥
हमहींसमतुमहूँतेंहिंसुमिरतढारहुआँसुनधारा। अतिदुखदाईतासुमिताईप्रथमनाकियोविचारा॥२०॥

दोहा-फेरिमित्रविंदासुघरि, सुनिकोकिलकोबोल। बोलीविपुलविषादभरि, मंजुलबैनअतोल॥

मित्रविंदोवाच।

कोकिलकंतसरिसअतिकोमलबोलहुबोलपियारे। अमननसुधासरिससोलागतमृतकजिआवनहारे॥
कौनकरहिंउपकारतिहारोहमकोदेहुबताई। असउपायकलकंठकीजियेजगैनजेहियदुराई॥ २१॥

दोहा-यदुपतिअबउठिजायँगे, यहगुनिदुखनसमात। पुनिभद्राभाषतभई, भयभरिजानिप्रभात॥

भद्रोवाच।

छंद-हेरैवतधरणीधरसुनियेंचलहुवदहुकछुनाहीं। तातेजानिपरतकरियतकछुबडविचारमनमाहीं॥
तुमहूँधौंहमरेसमपियकीछविमहँमोहिगयेहौ। तासुचरणउरधरनलालसामनमहँअतिहिठयेहौ॥
पैउरदयाधारिअबकीजेयहउपकारहमारो। देहुदुरायदिवसकरकोबढिमोहिंभरोसतुम्हारो॥ २२॥

दोहा-पुनिशतरानीकृष्णकी, निजनिजभौननमाँहि। जानिभोरअतिशयदुखित, हरिवियोगबतराहिं॥

छंद-सूखेह्रदसरसिजसरितनकेशोभाहीनदेखाहीं। जानिपरतपियकोवियोगबहुइनहूँकेमनमाहीं॥
जैसेहमसबदिवसपायबिनबालमवदननिहारी। क्षणक्षणसूखततनमनविलखतदुखनहिंजातउचारी॥२३॥

दोहा-पुनिरानीसोरहसहस, दिवसवियोगविचारि। निरखिहंसभाषनलगीं, बहुविधिगिराउचारि॥

छंद–भलेहंसतुमतोइनआयेकरहुसुखदपयपाना । तुमतोदूतकृष्णकेकीजेअबतिनकोगुणगाना ॥
अहैंकुशलपियसुमिरतकहुप्रणजोप्रथमहिमुखभाख्यो । पैवहचारुचतुरचंचलचितहमसोंनेहनराख्यो ॥
जोअसकहहुहंसतुमविरहविदुखनाशनवारे । तौवेएकरुक्मिणीकेवशह्वैहमरोप्रेमबिसारे ॥
जायकहोउनहीसमीपमहँहंसवचनसमुझाई । इतहैकामनकछूतिहारोजानीहमचतुराई ॥ २४ ॥

दोहा–यहिविधिभाउअनेककरि, यदुपतिमहँसबरानि । वसतिभईद्वारावती, सिगरीछविगुणखानि ॥ २५ ॥
परतनामजाकोतियकानन।हठिमनहरतरहैतनआनन॥सोहरिकोनिरखतहगमाँहीं।मोहिंजःहितौअचरजनाँहीं॥२६॥
जेकरिप्रेमजगतगुरुकेरो । पदसेवनआदिकबहुतेरो ॥ मानिप्राणपतिसेवनकीन्ह्यों। निशिदिनहरिध्यावनमनदीन्ह्यों॥
तिनकोपूरुवतपकुरुराई।मैंकेहिभाँतिसकौंमुखगाई॥२७॥यहिविधिवेदभनितसबधर्मा।करतसंतपतिबहुविधिकर्मा॥
अर्थधर्मकामहुँपदकाँहीं । दरशायोनिजगृहजगमाँहीं ॥२८॥ करतगृहस्थधर्मतिनकाँहीं। वसतद्वारकानगरीमाँहीं ॥

दोहा–आठऔरशतसोरहै, सहसनारिसुकुमारि । आठपट्टरानीरहीं, तिनमेंअतिछविवारि ॥ २९ ॥
रुक्मिणिआदिप्रियाहरिकेरी।प्रथमकह्योतिननामनिवेरी।३०।दशदशसुतइकइकातियकेरे।महाबलीविक्रमीघनेरे ३१
महारथीतिनमाहँअठारे । तिनकेनामनिकरहुँउचारे ॥३२॥ श्रीप्रद्युम्नअनिरुधरणधीरा । दीप्तिमानअरुभानुप्रवीरा॥
बृहद्भानुअरुचित्रभानुवर। सांबअरुणवृकमधुअतिधनुधर॥३३॥पुष्करवेदबाहुश्रुतिदेवा।कविन्यग्रोधविरूपसभेवा॥
चित्रभानुअरुवीरसुनंदन । येअष्टादशदुष्टनिकंदन ॥ ३४॥ इनहुनमहँसुनियेमहराजा । भोप्रद्युम्नअतिरथीदराजा॥

दोहा–बलबुधिविक्रमरूपगुन, शीलसकोचसुभाउ । भयोपिताकेसरिससो, त्रिभुवनविदितप्रभाउ ॥ ३५ ॥
रुक्मीसुताव्याहिसोलीन्ह्यों।सुतअनिरुद्धप्रगटतेहिंकीन्ह्यों॥दशहजारगजकोजेहिंजोरा।जोसुरअसुरहुकोमदमोरा३६
सोरुक्मीकीनातिनव्याही । वज्रतासुसुतभोअरिदाही ॥ भोजबमूसलतेसंहारा । बच्योएकसोइवज्रकुमारा ॥ ३७॥
तासुपुत्रनामकप्रतिबाहू । तासुसुवनभोसबलसुबाहू ॥ शांतसेनभोतासुकुमारा । तासुसूनुश्रुतसेनउदारा ॥ ३८ ॥
अधनअपुत्रअबलअलपायुष।यदुकुलमहँकोउभोनविनासुष॥भूसुरभक्तिहीननहिंकोई।वीरधीरविजईअरिखोई॥३९॥

दोहा–जगजाहिरयदुकुलभयो, संख्यातासुअपार । सकैकौनकरिजोजिए, दशहूँवर्षहजार ॥ ४० ॥
सहसअठासीतीनिकरोरी । बालकगुरुभेबुद्धिनथोरी॥४१॥संख्यासबयदुवंशिनकेरी।क्योंकरिसकैनृपतिमतिमेरी ॥
दशहजारकेदशौंहजारा । यदुवंशीसिगरेसरदारा ॥ तिनयुतउग्रसेनमहराजा । राजकियोतहँसहितसमाजा ॥४२ ॥
देवासुरसंग्रामहिंजेते । मरेअसुरप्रगटेमहितेते ॥ देनप्रजनपीडाबहुलागे । कियेअनर्थगर्वमहँपागे ॥ ४३ ॥
तिनकेनाशनहितभगवाना।प्रगटायोयदुकुलसुरनाना॥भयेएकशतइककुलजिनके।यदुनायकनायकभोतिनके।॥४४॥

दोहा–यदुपतिपदसेवनकरत, बढ्योसकलयदुवंश । तिनबाधककोउनहिंभयो, सकलजगतअवतंस ॥ ४५॥
मज्जनभोजनशैनसुख, विचरनचोलनिवानि । निशिदिनहरिसँगकरतते, सकेनानिजतनजानि ॥ ४६ ॥

कवित्त–जाकीभक्तिकीनेअरुवैरहूतेदीनेमन, पूरनपरमपदपावतसमानहै ।
जाकीनेकुनजरगिरीशब्रह्मचाहैंसदा, सोऊरमाकरैजाकोरूपरसपानहै ॥
आपनेसुयशआगेसुरसरिहूकोनीर, न्यूनकरिदीन्ह्योंपापनाशकमहानहै ।
भाषैरघुराजयदुराजजूकोछोंडिमोहि, हगनादेखातआनकरुणानिधानहै ॥
जाकोएकबारनामश्रवणकरतश्रुति, मुखहूँभनतअघओघनिजरावैहै ।
धर्मधुराधारनकैधरणिचलायोधर्म, कीन्हेंजाहिसज्जनअनंदअतिपावैहै ॥
भाषैरघुराजजाकोकालैचक्रआयुधहै, सुरऔअसुरनरसकलनशावैहै ।
ताकोभूमिभारकोउतारिबोविचारकीन्है, मेरेमननेकहूँअचर्जनहिंआवैहै ॥ ४७ ॥

तेहिसमयपहुँच्योतहँजाई । लखिसंहारागिरच्योमुरझाई ॥ कृष्णविरहसुधिरहीनतनमें।मृतकसमानभयोतेहिक्षणमें ॥

दोहा-पुनिजोहरिगीताकह्यो, सोसुधिकरिमनमाहिं । उठ्योसँम्हारिसचेतह्वै, अर्जुनरणथलपाहिं ॥ २१ ॥

मृतकक्रियासबकीकरवाई । जैसीलोकवेदविधिगाई॥२२॥जादिनहरितजिगेमहिकाहीं । तादिनतेसतयेंदिनमाहीं ॥ दियोद्वारिकासिंधुडुबाई । हरिमंदिरभरिदियोबचाई ॥२३॥ महाराजतेहिमन्दिरमाहीं।बसतरुक्मिणकृष्णसदाहीं ॥ सुमिरतसबअघकरतनिपाता । सबमंगलकेमंगलदाता ॥२४॥ बालकवृद्धऔरजेनारी । बचेरहेद्वारकामझारी ॥ तिनकोलैपारथसँगमाहीं । गवन्योंइंद्रप्रस्थपुरकाहीं ॥ मथुरामेंवज्रहिबैठायो । सविधिराजअभिषेककरायो ॥ २५॥ आयोइंद्रप्रस्थमेंजबहीं । कृष्णपयानकहतभोतबहीं ॥ अर्जुनमुखसुनिकृष्णपयाना । आपपितामहपाँचप्रधाना ॥ तुमकोराजासनबैठाई । सुरदुर्लभसबविभवविहाई ॥ तुरतमहापथकियोपयाना । तहँतेगवनेजहँभगवाना ॥ २६ ॥

दोहा-देवदेवयदुनाथको, जन्मकर्मजोकोय । गावहिप्रीतिसमेतनर, पापरहितसोहोय ॥ २७ ॥

क०-श्रीयदुनाथकेजेअवतारके,बाल्युवाकेचरित्रसोहावन। द्वारकाकेव्रजकेमथुराकोदिलीके,सोऔरथलैकेजेपावन ॥ गावतहैंतिनकोजोसप्रीतिसों, औरसुनैंऔगुनैंमनभावन । श्रीरघुराजलहैहरिभक्तिसो, जातनऔरकछूसुखछावन ॥

दोहा-रुद्रऔरनिधिशशिसुभग, संवतमारगमास । कृष्णपक्षछठिवारभृगु, एकादशैप्रकाश ॥ २८॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे एकत्रिंशस्तरंगः ॥ ३१ ॥

दोहा-आनँदअम्बुधिग्रंथको, शुभग्यारहोंस्कंध । यहसमाप्तमुद्रितभयो, संयुतछन्दप्रबन्ध ॥

समाप्तोऽयमेकादशस्कन्धः ११.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना-मुम्बई.

कपास

द्वादश स्कन्धः
शुक
परीक्षित
परीक्षित
ऋषि
कश्यप
व्यास
मार्कंडेय
बालमुकुंद
श्रीधरस्वामी

श्रीगणेशाय नमः।

श्रीमद्भागवत–आनन्दाम्बुनिधि।

द्वादशस्कंधप्रारंभः।

दोहा–जयजययदुवरवरचरण, मुनिमानससरहंस। ज्ञानक्षीरअज्ञानजल, कारकभिन्नप्रशंस॥ १॥
जयबानीजयगजवदन, जयशुकजयश्रीव्यास। जेहिपदध्यावतहोतहठि, बुद्धिविलासविकास॥ २॥
जयमुकुंदहरिगुरुचरण, जोमोहिंएकअधार। जेहिध्यावततरिहोंसहज, याभवपारावार॥ ३॥
जयहरिपितुविश्वनाथपद, जेहिसबभाँतिभरोस। जाकेबलमिटिहैंमिटे, मनकेसबअफसोस॥ ४॥
एकादशअस्कंधको, सुनिकैकुरुकुलनाथ। पुनिबोल्योशुकदेवसों, जोरिजलजयुगहाथ॥ ५॥

राजोवाच।

कृष्णचंद्रयदुवंशहिभूषन। जबगवनेनिजपुरमुनिपूषन। तबमहिमहँकेहिनृपकोवंसा। होतभयोसोकरहुप्रशंसा॥ सुनिमुनिपतिकुरुपतिकीबानी। बोलतभेअतिआनँदमानी॥ १॥

श्रीशुक उवाच।

जरासंधकेवंशहिजोई। नामपुरंजयनृपइकहोई॥ शुनकनाममंत्रीसोकरिहै। सोनिजस्वामीकोहनिडरिहै॥ २॥ सुतप्रद्योतह्वैहैइकताको। करिहैतेहिठाकुरवसुधाको॥ तासुतह्वैहैपालकनामा। तासुविशाखयूपबलधामा॥ ताकेराजकसुतइकजोई॥ ३॥ नंदिवर्धनोतासुतहोई॥ तिनकोनामप्रद्योतनजानो। अबमैंइनकोभोगबखानो॥ वर्षएकशतऔअरतीसा। भूमिभोगिहैंपाँचमहीसा॥ ४॥ पुनिह्वैहैभूपतिशिशुनागा। ताकेकाकवर्णबड़भागा॥ पुत्रक्षेमधर्मापुनिहोई। पुनिक्षेत्रज्ञतासुसुतहोई॥ ५॥

दोहा–ताकेह्वैहैएकसुत, जासुनामविधिसार। पुनिअजातरिपुतासुसुत, ह्वैहैपरमउदार॥

ताकेदर्भकनामकुमारा। तासुअजयसुतजानुउदारा॥ ६॥ पुत्रनंदिवर्धनपुनिताके। महानंदिह्वैहैसुतजाके॥ शिशुनागादिकदशनृपमहिभालि।भोगिहैंत्रिशतसाठिवर्षनकलि॥ महानंदिनृपकोसुतजोई। शूद्रीगर्भहितेसोहोई॥ ताकोह्वैहैनंदिहिनामा॥ ७॥ ८॥ महापद्मदलपतिबलधाम॥सोकरिहैछत्रिनसंहारा।तहँनृपह्वैहैंशूद्रअचारा॥९॥ करिहैंअतिअधर्मजगमाहीं। शासनवेदमानिहैंनाहीं॥ तिनछत्रिनकोतौननरेशा। शासनकरिहैदेतकलेशा॥ परशुरामसमसोबलवाना।भोगिहैसकलभूमिपरधाना॥ १०॥ ताकेह्वैहैंआठकुमारा। नामसुमाल्यादिकाहिउचारा॥ तेनृपशतबरषहिपरयंता। करिहैंभूमिभोगबलवंता॥ ११॥ चाणकद्विजह्वैहैमहिमाहीं। तेआठौंसुतयुतनंदकाहीं॥

दोहा–हनिडारिहैविशेषिकै, चंद्रगुप्तनिजपूत। ताकोचाणकदेइँगे, भूकोभोगअकूत॥ १२॥

चंद्रगुप्तसुतह्वैहैंजेते। मौर्यानामकह्वैहैंतेते॥ वारिसारतिनकोसुतहोई। तेहिअशोकवर्धनसुतजोई॥ १३॥ ताकेह्वैहैंसुयशकुमारा। तासुसुवनसंगतसुकुमारा॥ ह्वैहैंशालिसूकतेहिपुत्रा। तासुसोमशर्मासुविचित्रा॥ १४॥ ताकेशतधन्वाबलवाना। तासुबृहद्रथपुत्रसुजाना॥ येदशमौर्यनृपतिकरईसा। कलिमहँइकशतऔसैंतीसा॥ करिहैंयेतेवर्षहिराजू। पुष्यमित्रतेहिसचिवदराजू॥ सोमंत्रीस्वामीकहँमारी। निजसुतकोदैहैमहिसारी॥ अगिनमित्रतेहिनामउचारा।ताकेफेरिसुज्येष्ठकुमारा॥१५॥१६॥ताकेपुनिवसुमित्रउदारा। होईभद्रकतासुकुमारा॥ ताकेपुनिपुलिंदसुतहोई। ह्वैहैतासुघोषसुतजोई॥ ताकेवज्रमित्रसुतह्वैहै। तासुपुत्रभागवतकहैहै॥ १७॥

दोहा–देवभूतिताकोसुवन, येदशशुंगभुवाल। भोगकरैंगेभूमिको, इकशतऔदशसाल॥ १८॥

देवभूतिकामीअतिहोई। कण्वनाममंत्रीतेहिजोई॥ स्वामिहिमारिहरीधनधामा। निजवसुदेवधरैहैनामा॥ १९॥
तासुपुत्रभूमित्रउदारा। नामविक्रमादित्यप्रचारा॥ यहथलतेकछुअबकेनामा। मैंबरणनकरिहौंमतिग्रामा॥
कियशुकऔरैनामबखाना। तेईनामअबऔरविधाना॥ सोमैंसबकेजाननकाजा। पृथक्पृथक्बरणौंसवराजा॥
भूपविक्रमादित्यसुजाना। पायोदेवीकरवरदाना॥ जबजबतासुमरणनियरावै। तबदेवीकोशीशचढावै॥
तातेजियोभूपबहुकाला। अबलौंशाकाचलतिविशाला॥ भयोशालिवाहननृपकोई। हन्योविक्रमादित्यहिसोई॥
सोऊनर्मदादक्षिणपारा। अपनोशाकाकियोप्रचारा॥ रचिमृत्तिकाकेरदलभारी। जीवितकरिलियमंत्रउचारी॥

दोहा—उतरनलाग्योनर्मदा, तबतेहिसैनअपार। जलपरसतसिगरीघुरी, तातेलह्योनपार॥

तातेरेवाउत्तरपारा। शाकाविक्रमनृपतिप्रचारा॥ अबभागवतप्रसंगहिगाऊँ। शुकनृपकोसंवादसुनाऊँ॥
विक्रमसुतनारायणह्वैहै। तासुकुमारस्वशर्मोठैहै॥२०॥ बरषतीनिशतपैतालीसा। करिहैराजचारिअवनीसा॥२१॥
रहीस्वशरमाकेइकमंत्री। शूद्रबलीनामकअघजंत्री। तौनस्वशरमाकोहनिडारी। आपहिराजकाजविस्तारी॥
राजकरीसोईकछुकाला। कृष्णनामतेहिभ्रातविशाला॥२२॥तेहिपीछूप्रभुसबवसुधाको। शांतकरनहैहैसुतताको॥
ताकोसुतपुनिपौरनमासा। लंबोदरसुततासुप्रकासा॥२३॥ चिविलकनामतासुसुतहोई। मेघस्वातिताकोसुतजोई॥
ताकोसुतहोईअटमाना। तेहिअनिष्टकर्मामतिवाना॥ २४॥ ताकोसुतहोईहालेया। तलकनामसुततासुअजेया॥

दोहा—भीरुपुरीषहुतासुसुत, तासुसुनंदननंद। होईतासुचकोरसुत, तासुतनवमअमंद॥ २५॥

तासुतकोशिवहोईनामा। ताकोस्वातिपरमबलधामा॥ तासुगोमतीपुत्रसुजाना। ह्वैहैतासुपुत्रपुरिमाना॥ २६॥
ताकोमेदशिरासुतहोई। शिवअस्कंधतासुसुतजोई॥ यज्ञश्रीताकोसुतजानी। ताकोतनैविजयपहिचानी॥
ताकेभाव्यपुत्रअतिसाके। चंद्रविसिप्रकटीसुतताके॥ तासुसलोमधिसुतअरिध्वंसा।येतनोबलीशूद्रनृपवंसा॥२७॥
चारिशतैअरुवर्षछियासी। करिहैंभूमिभोगसुखरासी॥२८॥ ताकेपीछेपुनिमतिधीरा। ह्वैहैअतिशयप्रबलअहीरा॥
सातपुस्तिकरिहैंतेराजू। पालनकरिहैंप्रजासमाजू॥ पुनिगर्दभीभूपजेह्वैहैं। प्रगटनामतोमरकहवैहैं॥
करिहैंतेदशपुस्तहिराजू। रखिहैंबहुखच्चरनसमाजू॥ तिनकेपीछूशुकमुनिराई। सोरहिभूपनदियोगनाई॥

दोहा—कंकनामतिनकोकह्यो, चक्रवर्त्तिहैनाहिं। हैंमहीपमंडलहिके, मैंबरणौंतिनकाँहिं॥

पृथीराजजयचन्दनवेला। औरहुसारंगदेवबघेला॥ अरुइकनृपचँदेलपरिमाला। अरुपवाँरजगदेवभुवाला॥
औरहुअसमंडलहिमहीपा। सोरहकेमधिहैंकुलदीपा॥ शारँगदेवबघेलबलीना। बड़ोकामयहजगमहँकीना॥
नृपपरमालचँदेलहिनेरे। आल्हाऊदलबलीघनेरे॥ बांधवगढऊदलकहुँआयो। शारंगदेवताहिबँधवायो॥
तबतेताकोजगतललामा। भोसंग्रामसिंहअसनामा॥ जगतदेवरानाकीकन्या। व्याहीसंग्रामहिजगधन्या॥
अरुपरमालचँदेलकुमारी। व्याहीसँग्रामहिबलभारी॥ रह्योजोपृथीराजचहुआना। सोलैसंगहिकटकमहाना॥
करीचँदेलनपाँहचढ़ाई। दोउदलमेंभैबडीलड़ाई॥ ऊदलरह्योचँदेलहरौला। सोकीन्ह्योंपरदलपररौला॥

दोहा—पृथ्वीराजनरनाहके, रहेजोसौसामंत। तिन्हमेंकान्हबलीरह्यो, कियोसोऊदलअंत॥

मारिचँदेलनकोपृथिराजू। लियोछीनितिनकासबराजू॥ पुनिजयचंदहिकेरिकुमारी। संयोगितासुनामउचारी॥
तेहिछबिसुनिअतिमनहिंलोभायो।ताहिहरनपृथिराजहुआयो॥रह्योभूपजयचंदउदारा। ताकेअशीलाखअसवारा॥
सत्तरसहसमत्तमातंगा। रहीछापताकीदलपंगा॥ संयोगितेहरच्योपृथिराजू। कियोयुद्धजैचंदहुराजू॥
जूझेऔरसबैसामंता। बाकीरहेपाँचबलवंता॥ पृथीराजयहिविधिकरिरारी। हरिलैगोजैचंदकुमारी॥
दिल्लीजायकियोबहुभोगू। भूलिगयोसबराजनियोगू॥ गाफिलपृथीराजकहँजानी। काबुलकोमलेच्छबलखानी॥
गौरीअलाउदीनहिनामा। चढिआयोदिल्लीबलधामा॥ पकरिलियोपृथिराजहिकाहीं। राख्योकैदहिकाबुलमाहीं॥

दोहा—बहुतकालमेंचंदकवि, खोजतकाबुलजाय। पृथीराजकेबाणते, म्लेछहिदियोहटाय॥ २९॥

आठयवनजेशुकमुनिभाषे। तिनकोमैंयहिविधिगुनिराषे॥प्रथमअलाउदीनहैसोई। तिमिरलिंगतेहिवधकियजोई॥

भयेशाहमीरासुतताके । भोसुलतानमहम्मदजाके ॥ अबूसैदपुनितासुकुमारा । ताकेबावरशाहउदारा ॥
ताकेभयेहमायूंशाहा । भयोतासुअकबरनरनाहा ॥ जैसोअकबरजगयशलयऊ । ऐसोबादशाहनहिंभयऊ ॥
ताकीउतपतिदेतगनाई । शेरशाहकोउकरीचढ़ाई ॥ तासोंकरिकैअतिशयरारी । रणमंगयोहुमायूँहारी ॥
दुरच्योहुमायूँचलिकंधारा । शेरशाहकियअमलअपारा ॥ रानीएकहुमायूँकेरी । चोलीबेगमनामनिवेरी ॥
ताकोतहँनरहरिकविजाई।लियोमाँगिनिजबुद्धिदेखाई ॥ गर्भवतीगुनिशाहहुमाख्यो।ताकीभयनहिकोउतेहिराख्यो॥
• दोहा-चोलीबेगमसंगलै, नरहरिकविमतिमान । वीरभानुबग्घेलढिग, आयोबांधवथान ॥
बीरभानुभूपतितेहिकाहीं । दियटिकायबांधवपुरमाहीं ॥ अकबरजनमसुनतनृपशेरा । चढ्योसंगलैकटकघनेरा ॥
बीरभानसुनिशाहअवाई । लैअकबरबांधवगढ़जाई ॥ लरनहेततहँसैनसमेटी । शेरशाहकहँअतिलघुसेटी ॥
बारहिलाखसैनलैशाहा । गेरच्योबांधवविजैउछाहा ॥ बारहबरसरह्योसोगेरे । पैनजानपायोगढ़गेरे ॥
उतैहुमायूँयवनसैनलै । चल्योदिलीपैपरमचैनलै ॥ यहसुनिशेरदिलीकहँगयऊ । तासोंलरिजूझततहँभयऊ ॥
वीरभानुसुतरामसिंहजो । सबवीरनमेंरह्योसिंहजो ॥ तेहिसँगकरिपुनिअकबरशाहै । दिल्लीबैठामनकीचाहै ॥
वीरभानुदियपठैउदारा । करिसँगअसीहजारसवारा ॥ बीचसलेमशाहमिलिगयऊ । मारोगयोसमरबड़भयऊ ॥
दोहा-दिल्लीमेंजबरामनृप, पहुँच्योअकबरसंग । तबहिहुमायूँलखनहित, चढ्योअवासउतंग ॥
भागविवशतहँतेगिरिगयऊ । गिरतहिप्राणरहितसोभयऊ ॥ अकबरशाहतखतमहँबैठे । बैठतनीतिसिंधुमहँपैठे ॥
भयोखानखानातिनमंत्री । बीरबलहुभोसखासुतंत्री ॥ मानसिंहआमेरनरेशा । रामसिंहबांधवनृपवेशा ॥
येसबसुहृदशाहअकबरके । रहेप्रधानसकलबुधिवरके ॥ अकबरशाहपुत्रजहँगीरा । तिनकेशाहजहाँमतिधीरा ॥
आठयवनजेकहसुनिराई । तेईआठमैंदियोंगनाई ॥ चौदहिऔरतुरुष्कनकाहीं । जोशुकदेवकह्योनृपपाहीं ॥
तिनमेंप्रथमभयोनरनाहा । नामतासुभोआदमशाहा ॥ भयोबहादुरशाहदूसरो । मज्जुदीनभोशाहतीसरो ॥
फनुकशेरचौथोनृपवादा । पचयोंरफीयूँरदरजादा ॥ ताकेसुतनहिंदियविधिराई । तातेतखतबैठतेहिभाई ॥
दोहा-ताकेसमशुद्दीनभो, ताकेमहमदशाह । ताकेअहमदशाहभो, दायकप्रजनउछाह ॥
भयोतासुसुतआलमगीरा । ताकेगौहरशाहप्रवीरा ॥ येदशबादशाहह्वैआये । परम्परातोतिनहिंगनाये ॥
इनकेबीचबीचमहँजेते । दिल्लीआयअमलकियकेते ॥ तिनहूँकोमेंदेहुगनाई । नादरशाहैकरीचढाई ॥
दिल्लीआयकटासोकीन्ह्यों । फेरिसौंपिशाहैंकोदीन्ह्यों ॥ आपचलोगोनगरइराना । दिल्लीमेंराख्योनहिंथाना ॥
महमदशाहकोऊअवदाली।सोऊआयकियदिल्लीखाली॥पुनिगुलामकादरइकभयऊ । गौहरशाहनिकटचालिगयऊ ॥
बरवसलीन्ह्योंआंखिनिकारी । पुनिमनमेंयहिभाँतिविचारी ॥ गौहरकेवंशहिजोहोई । बादशाहहोवैहाठिसोई ॥
रह्योविदारवखतकोउतिनकुल । दियोबाहशाहीतेहिबिलकुल॥यहसुनिजैपुरकेमहराजा । अरुसंधियामहाजीराजा ॥
दोहा-लाखलाखअसवारलै, चढिधायेअतिआशु । तबगुलामकादरभग्यो, करिजीवनकीआशु ॥
बचिगुलामकादरगोनाहीं । पकरिलियेवृंदावनमाहीं ॥ वसनतेलैलपेटिशरीरा । दहनलगेयहिविधिदैपीरा ॥
इकतिसदिनयहिविधितेहिलाये।मरचोनतबअचरजउरलाये॥सपनमाँहितबकृष्णउचारो।यहिपापीदिव्रजमाँहिंनमारो
व्रजमेंमरेमुक्तिह्वैजाती । यहशठहैनिजठाकुरघाती ॥ तबलायोतेहिव्रजबाहरकारि । तुरतहिंगोगुलामकादरमारि ॥
फिरिगौहरशाहहिबैठायो । अंधशाहकछुकालवितायो ॥ पुनिदक्खिनीभीरलैभारी । दिल्लीअमलनकरीतयारी ॥
तबगौहरकीबेगमजोई । रहीगर्भतेसंयुतसोई ॥ ताकोलैतबगौहरशाहा । भग्योछोडिदिल्लीनरनाहा ॥
आयोआशुनगररीवाँमह । जहँअजीतमेरेप्रपितामह ॥ नृपअजीतसोवचनउचारे । होयजोअवचलभूपतुम्हारे ॥
दोहा-तौनिजपुरमेंराखियो, हमकोतुमयहिकाल । इतैदक्षिणीअतिबढ्यो, राख्योफौजविशाल ॥
तबअजीतकहयुतउत्साहा । रहौंसुकुंदपुरैमेंशाहा ॥ असकहिनृपमुकुंदपुरमाँहीं । राख्योगौहरशाहहिकाँहीं ॥
भोमुकुंदपुरमाँहउछाहा । गौहरकेभेअकबरशाहा ॥ पुनिअजीतलैगौहरशाहै । गमन्योदिल्लीसहितउछाहै ॥

शाहैदिल्लीमहँबैठाई। फिरिआयोअजीतनृपराई ॥ यहिविधिभयेतुरुष्कचतुर्दस । तिनकोमैंकहिदियोभेदजस ॥
फेरितुरुष्कनअंतहिमाँहीं। शुकजोकह्योगोरंडनकाँहीं ॥ नामगोरंडयहीअँगरेजू । जिनकोहैअतिशयअबतेजू ॥
तेपहिलेतोकरिव्यापारा। हिंदुथानमहँकियोप्रचारा ॥ जोरिफौजकलकत्तेआये। यहशुजातदौलासुनिपाये ॥
जोरिफौजयउकरीचढाई। बकसरमेंतहँभईलडाई ॥ तहँनवाबकीभईपराजै। लियअंगरेजअमलसबराजै ॥
जबअंगरेजआगरेआयो। अपनोअमलसकलफैलायो ॥

दोहा–अट्ठारहसैसाठिमें, अकबरशाहसुनाथ। सौंपिदियोसिगरेमुलुक, अंगरेजनकेहाथ ॥

ममपितुअधिकारीसियरामा। रहविशुनाथसिंहजेहिनामा ॥ तेटीकाभागवतबनाई। तामेंसंख्यासकलगनाई ॥
सोईसंख्याकेअनुसारा। यहकीन्ह्योमैंसत्यप्रचारा ॥ दुइसैऔरहुसत्रहिवर्षा। हैअंगरेजराजउतकर्षा ॥
बितेपचासवर्षयहिकाला। बाकीइकसैसरसठिसाला ॥ अबभागवतप्रबंधहिगाऊँ। नृपप्रतिशुककीउक्तिसुनाऊँ ॥
गोरंडनकेअंतहिमाँहीं। मौनशासिहैंयहिमहिकाँहीं॥३०॥३१॥वर्षतीनिसैसहितसमाजू।करिहैंपुरुतएकादशराजू ॥
नगरीएककिलकिलाठामा। अबजेहिहैकलकत्तानामा ॥ सोईराजधानीपुनिह्वैहै। तामेंएकभूपबसिजैहै ॥
भूपनंदप्रथमैनृपह्वैहै। ताकोसुतवंगिरकहवैहै ॥ ३२ ॥ तासुभ्राताशिशुनंदीनामा। ताकोजसोनंदिबलधामा ॥

दोहा–ताकोपुत्रप्रवीरको, येभुवालजेपाँच। वर्षएकशतषट्उपर, भोगिहैंभोगनिसाँच ॥ ३३ ॥

पुनितेरहितिनकेसुतह्वैहैं। बाहलीकनामहिकहवैहैं ॥ पुष्पमित्रह्वैहैंकोउराजू। सोईकरिहैंसबमहिराजू ॥
तासुपुत्रदुर्मित्रहिहोई। राजकरीपुनिमहिकीसोई ॥ ३४ ॥ तासुउपरपुनिसुनहुभुवाला। सातअंधह्वैहैंमहिपाला ॥
ह्वैहैंपुनिकौशलनृपसाता। वैदूरहिदेशहिपतिताता ॥ कुरुपतिनिषधदेशकेवासी। ह्वैहैंऔरभूपसुखरासी ॥
धुनिमागधवंशीजेराजा। तेह्वैहैंमहिनाथदराजा ॥ ३५ ॥ प्रथमतासुविस्फूरजनामा । सोईपुरंजयहैबलधामा ॥
थपिहैंसोशठबरननवीना। यदुपुलिंदमद्रकयेतीना ॥ ३६ ॥ तेसबह्वैहैंम्लेच्छसमाना। करिहैंप्रजाअधर्मननाना ॥
तंइप्रजनकहँसोनृपपाली। धर्मात्माक्षत्रिनकहँघाली ॥ पद्मावतीपुरीतेहिधामा। पन्नाप्रगटपुहुमिजेहिनामा ॥

दोहा–हरद्वारतेलैनृपति, औप्रयागपर्यंत। अमलकरीसोअवनिमें, अतिपापीबलवंत ॥ ३७ ॥

पुनिसौराष्ट्रअवंतीमाँहीं। अर्बुदमालवदेशनपाँहीं ॥ ह्वैहैंविप्रधर्मतेहीने। म्लेच्छसमानमहाअघलीने ॥
व्रतबंधादिककरिहैंनाँहीं। ह्वैहैंतेइनृपतितहाँहीं ॥ ३८ ॥ सिंधुचंद्रभागाकेतीरा । कुंतिदेशऔरहुकशमीरा ॥
तेईविप्रतहाँकेवासी। अरुभूपहुह्वैहैंअघरासी ॥ विप्रहिरूपम्लेच्छपरचंडा। करिहैंपापबडेबरिबंडा ॥
थोरोदानाकोपमहाना। धर्मकेरकबहूँनाहिंमाना ॥ ३९ ॥ ४०॥ बालगऊब्राह्मणअरुनारी। निर्दयइन्हेंडारिहैंमारी ॥
परधनपरदाराहरिलैहैं। जलदीह्वैजलदीमरिजैहैं ॥ थोरीआयुषअरुबलथोरा। ह्वैहैंधनहुभयेबरचोरा ॥ ४१ ॥
संसकारनहिंनेकुकरैहैं। धर्महीनसबकालहिरैहैं ॥ रजोतमोगुणकरिहैंप्रीती। करिहैंनाहिंनरककीभीती ॥
भूपरूपअसम्लेच्छमहाना। हनिहैंप्रजनअधर्मनिधाना ॥ ४२ ॥

दोहा–राजाजिनकेजैसही, प्रजातैसहीतासु। लरिमरिहैंकछुपरसपर, कछुनृपकरीविनासु ॥ ४३ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्रीमहा
राजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजू
देवकृते आनन्दाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–कलिमेंकुरुमहराजसुनु, क्षमासत्यआचार। बलआयुषसुधिबुधिदया, धर्मघटीहरबार ॥ १ ॥

कलियुगमेंजाकेधनहोई। गुणीकुलीनधर्मयुतसोई ॥ जोह्वैहैअतिशयबलवाना। सोनियाउजीतीविधिनाना ॥ २ ॥
लगीकौनिहूनीकजोनारी। तेसनेहकरिहैंजनभारी। तेहिमिलिकैदंपतिकहवैहैं। कुलअरुजातिविचारिनलैहैं ॥

जोकरिहैंसबछलकर्मनमहँ । महाचतुरकहिहैंजनतेहिकहँ॥ ह्वैहैंजगमहँकोकमतीजे । कहिहैंसुमतितिनिनहिंकुमतजि ॥
रतिमेंचतुरनारिजोहोई । वरतियतेहिकहिहैंसबकोई ॥ कलिमेंपहिरवणकजनेऊ ॥ ३ ॥ ह्वैहैंविप्रशूद्रकरभेऊ ॥
विप्रधर्मब्राह्मणनहिंकरिहैं । शूद्रनकेसंगसदाविचरिहैं ॥ राखिनहाअरुशिरमहँबारा । औरछोडिसिगरोआचारा ॥
सबैब्रह्मचारीकहवैहैं । कौड़ीकेहितघरघरधैहैं ॥ कुमतिकुशीलकपटमेंनागर । सबअवगुणमेंपरमउजागर ॥

दोहा—अतिथिपूजनादिककरम, हेंगृहस्थकेजोइ । तिनहिंजोकरिहेंकबहुँनहिं, गृहीकेहैंसोइ ॥

जेबसिहैंकाननमहँजाई । धनकेहितएहेंपुरधाई ॥ ऊपरतापसवेपबनाये । भीनरगहिहैंगंडठिकाये ॥
ऐसेवानप्रस्थकहवैहैं । धनहितअवकरिहेंकरवैहैं ॥ गेरुवावस्त्रकोऊतनधरिहैं । गरवलगायेपुरनविचरिहैं ॥
लीन्हेंदंडहरीहरबोलिहैं । सबसोंलालचवचनहिखोलिहैं ॥ ऐसेजनपखंडविलासी । कहवैहैंकलिमेंसंन्यासी ॥
दिनकोकरिहैंजोपरनामा । रातिभूलिहैंताकरधामा ॥ धनवानहिंकलियुगमहँजीती । देअंकोरपाइनहिंभीती ॥
जोनदरिद्रीह्वैहैंभारी । न्यायकुन्यायहुमेंसोहारी ॥ जोनचपलबहुवचनबतैहैं । सोकलिमहँपंडितकहवैहैं ॥ ४ ॥
जौनदरिद्रीअतिशयहोई । कहवैहैंअसाधुकलिसोई ॥ जोकरिहैंबहुविधिपाखंडा । सोइकहवैहैंसंतउदंडा ॥

दोहा—कौनिहुनारीजोकोऊ, घरमेंलैहैराखि । सोइविवाहककहवाइहै, नहिंह्वैहैंश्रुतिभाखि ॥

देहैंदिवसनहातबिताई । मलिमलिकरिहैंअंगसफाई ॥ यतनोईभूपणकलिमाहीं । नहिंकरिहैंभूपिततनकाहीं ॥ ५ ॥
ह्वैहैंदूरजोनदीतडागा । सोइतीरथमानिहैंअभागा ॥ तहँनहानहेतहठिजैहैं । गुरुपदजलमहँनाहिंनहैहैं ॥
होईजेतनैतीरथदूरी । तेतनैकरिहैंमहिमाभूरी ॥ तेलऔरजोसलिललगाई । निजकेशनअतिशयचिकनाई ॥
औरटेढ़कछुजुलुफबनाई । तासुकहैंगेसुंदरताई ॥ सदाउदरभरभरीजोकोई । पुरुपारथीकहैहैंसोई ॥
जोवतातमहँकरीढिठाई । सोईसत्यवादीकहवाई ॥ ६ ॥ जेपालीअपनेकुलकाहीं । औरेनकोदैहैंकछुनाहीं ॥
जोरैगोवरमेंधननाना । सोईकहैहैचतुरसुजाना ॥ धर्मकरेंगेयशकेहेतू । नहिंपरलोककेरकछुनेतू ॥

दोहा—यहिविधिपापिनतेपरम, पुहुमीह्वैहैपूरि । मनुजनकेतनतेतबै, धर्महोइगोदूरि ॥ ७ ॥

ब्राह्मणक्षत्रीवैश्यहुशूद्रा । औरहुकलिकेजेजनक्षुद्रा ॥ तिनमेंजबरजौनजनहोई । ह्वैहैबरियाईनृपसोई ॥
अतिलोभीकलिकेमहिपाला । प्रजनलूटिहैंदेतकशाला ॥ जबधनधामधरणिअरुदारा । लूटिलेइँगेनृपतिअपारा ॥
तबैदरिद्रीप्रजादुखारी । ह्वैहैंगिरिकाननकेचारी ॥ शाकबीजबलकलफलफूला । खैहैंमधुमांसहुअरुमूला ॥ ८ ॥ ९ ॥
नहिंबर्षिहैंमेघजलधारा । परीअकालबारहीबारा ॥ होईशीतहुपवनप्रचंडा । उपलपरहिंगेअतिहिअखंडा ॥
तातेह्वैहैंप्रजादुखारी । करिहैंआपुसमहँबहुरारी ॥ १० ॥ भूखपियासव्याधिबहुहोई । चिंतावढिसिगरीबुधिखोई ॥
पैहैंनिशिवासरसंतापा । ताहूपैकरिहैंपुनिपापा ॥ बीसतीसबर्पाहिनृपराया । ह्वैहैंकलिपरमायुरदाया ॥ ११ ॥
बढिहैंजबकलिदोषप्रवीना । जबह्वैहैंप्राणीसबछीना ॥

दोहा—जबवर्णाश्रमधर्मसब, ह्वैहैंजगतविनाश । जबवेदनकेपंथको, नेकुनरहीप्रकाश ॥ १२ ॥

जबपाखंडधर्मअतिह्वैहैं । जबनृपचोरसरिसह्वैजैहैं ॥ जबहिंसाअसत्यअरुचोरी । लैहैंयहीजीविकाजोरी ॥ १३ ॥
जबसबवरणशूद्रसमह्वैहैं । जबगोअजासरिसह्वैजैहैं ॥ जबह्वैहैगृहसमसबआश्रम । जबह्वैहैंनातेभ्रातासम ॥ १४ ॥
जबसूक्षमह्वैजाइअनाजू । जबतरुह्वैहैंनाहिंदराजू ॥ जबदामिनिभरचमकनलागी । जबनबर्पिहैघनबड़भागी ॥
जबह्वैजैहैंसबवरसूना । जबदिनदिनबढिहैअघदूना ॥ जबखरसरिसमनुजह्वैजैहैं । अनुचितउचितनकछुचितलैहैं ॥
जबयहिविधिकलियुगबढिजैहै । धर्मलेशकहुँनहिंदरशैहै॥तबसबधर्मनिरीक्षणहारा।लैहैरमारमणऔतारा॥१५॥१६॥
जौनचराचरकेगुरुस्वामी । सबजीवनकेअंतरयामी ॥ जिनकोजन्मकर्ममतिसेतू । संतधर्मकेरक्षणहेतू ॥

दोहा—गंगाकेतटमेंअहै, संभलनामकग्राम । तहाँविष्णुयशविप्रकोउ, ह्वैहैंअतिमतिधाम ॥

ताकेगृहमेंमाधवमासा।शुक्लद्वादशीदानहुलासा॥लैहैंप्रभुकलकीअवतारा । हरिहैंअवनिपापकरभारा ॥१७॥१८॥
दैहैंकोउसुरातिनाहिंतुरंगा । तामेंचढिहैंगिकैरणरंगा ॥ करमेंकरिकरालकरवाला । आठविभूतिसमेतकृपाला ॥ १९॥

चहुँकितचपलतुरंगचलाई। धीरजधारिधरापरधाई ॥ भूपरूपजेशूद्रअपारा। तिनकोटिनकरिहैंसंहारा ॥ २० ॥
जबपापिनह्वैजेहैंनासा। अरुकल्कीअँगरागसुवासा ॥ फैलीपौनपायजगमाँहीं। सोइशुचिकरिहैंजीवनकाँहीं ॥२१॥
प्रजायथोचितउतपतिह्वैहैं। वासुदेवपदचित्तलगैहैं ॥२२॥ जबहोईकलकीअवतारा। तबह्वैहैसतयुगसंचारा ॥२३॥
चंद्रसूर्यअरुसुरगुरुभूपा। तीनिहुएकहिसाथअनूपा ॥ प्रविशैंपुष्यनखतमहँजबहीं।सतयुगप्रगटहोतहैतबहीं ॥२४॥
दोहा–सोमसूर्य्यवंशीनृपति, जेतनेभेमतिमान। वर्त्तमानअरुभाविहूँ, मैंसोकियोबखान ॥ २५ ॥
तुमतेलैनंदहिपरयंता। ग्यारहसैपंद्रहिमतिवंता ॥ इतनेवर्षवीचहींमाँहीं। येसबनृपह्वैहैंकलिपाँहीं ॥ २६ ॥
उत्तरदिशिजेशकटाकारा। उदितहोहिसप्तर्षिउदारा ॥ तिनमेंप्रथमकेरदुइतारा। पुलहऔरक्रतुनामउचारा ॥
तिनकेमधिनखतनमहँएकू। रहतसदाअसशास्त्रविवेकू ॥२७॥ सौसौवर्षभोगनोसोई। असज्योतिषविदकहसबकोई ॥
अहैमघातिनमधियहकाला। यहिविधिकालभेदमहिपाला ॥२८॥ जादिनयदुकुलकमलदिनेशा। कियोगवनवैकुंठनिवेशा
दोहा–तादिनतेयहअवनिमें, कलियुगकियोप्रचार। जेहिकलियुगमेंमनुजसब, भयेअधर्मअधार ॥ २९ ॥
जबभरिहरिपदपरस्योधरणी। तबभरचलीनकलियुगकरणी ॥३०॥ मघानक्षत्रमाहँजेहिकाला। भोगकरैंसप्तर्षिभुआला॥
तबतेयहकलियुगपरगटतो। दिव्यवर्षद्वादशशतरहतो ॥३१॥ जबसप्तर्षिमघाकहँत्यागी। पूर्वाषाढहोतअनुरागी ॥
तबप्रद्योतनृपतितेलैकै। कलियुगबढीधर्मछैकैकै ॥३२॥ जादिनहरिविकुंठअनुराग्यो। ताहीदिनतेकलियुगलाग्यो ३३॥
दिव्यवर्षवीतिहैंहजारा। तबसतयुगपुनिकरीप्रचारा ॥ निजनिजधर्मवर्णसबकरिहैं। ज्ञानविज्ञानसुजानसुधरिहैं ॥३४॥
यहजोवरण्योमानववंसा। तेहिविधिहेकुरुकुलअवतंसा ॥ विप्रक्षत्रिवैश्यहुशूद्रनके। जानहुयुगयुगसबवरणनके ॥३५॥
धर्मात्माजेयशीमहीपा। भयेमहात्माजेकुलदीपा ॥ तिनकीकथाकीर्त्तिअवरहिगै। सोऊकविसुजानमुखकहिगै ॥३६॥
दोहा–भ्राताशांतनुभूपके, देवापीजेहिनाम। चंद्रवंशकोभूपयक, सुनुदूजोमतिधाम ॥ ३७ ॥
कलिकेअंतमाहकुरुराई। येदोउनृपहरिशिक्षापाई ॥ करिहैंपुनिकैवंशविवर्धन। थपिहैंवर्णाश्रमभरिश्रद्धन ॥ ३८ ॥
सतयुगत्रेताद्वापरकलऊ। यहिविधिहोतवेदकहिदियऊ ॥३९॥ भयेजेहैंअरुह्वैहैंराजा। मैंबरण्योंकुरुकुलमहराजा॥
ममताकरिभूमिकीभारी। पैनभूमिगेसंगसिधारी ॥ ४० ॥ राजहुहोयतदपिमतिधीरा। अंतसमैमहँतासुशरीरा ॥
कृमिविटभस्महोतहठिसोई। तेहिशरीरकेहोतहिजोई ॥ द्रोहकरैंसबजीवनपाँहीं। तातेअवशिनरककहँजाँहीं ॥४१॥
भूकेभूपतिअससुखभापे। यहपुरपाकमायमहिरापे ॥ यहधरणीसबअहैहमारी। केहिविधिमोसुतपालैसारी ॥
ऐसीकौनिहुँकरैंउपाई। जामेंकोउनहिंलेयछोडाई ॥ पुत्रपौत्रजेहोहिंहमारे। तेइभोगहिंभुविभोगअपारे ॥
दोहा–करतकरतमरिजातहैं, धरणीहेतउपाय। अंतसमैजरिजाततन, धरणीसंगनजाय ॥
भरिकैअतिअभिमानजे, भोगकरतनृपराय। तिनकोकछुनहिंरहतहै, कथाएकरहिजाय ॥ ४२॥४३॥४४॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धि
श्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुरा
जसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥

श्रीशुक उवाच।

दोहा–अपनेकोजीततनिरखि, हँसतिनृपनयहभूमि। अहोखेलौनामृत्युके, नृपजितिहैंकाघूमि ॥ १ ॥
हैनरेंद्रमतिमंतहुजेऊ। वृथाकरतअभिमानहुतेऊ ॥ राजसैनधनधरनिहमारी। कियेगर्वऐसाहिउरभारी ॥
फेनसरिसयहअनितशरीरा। तामेंकियेविश्वासगँभीरा ॥२॥ मनमेंकरहिंविचारसदाहीं। जीतिकामक्रोधादिककाँहीं॥
पुनिमंत्रिनकोबुधितेजीती। अवशिचलाउबअपनीरीती ॥ कंटकरिपुजेहैंममराजू। तिनकोजीतबसहितसमाजू ॥ ३॥
यहिविधिक्रमसोंसिंधुमेखला। करबजीतिमहिराजएकला ॥ यहीबँधेआशाकीपासा। लखतनकालआपनेपासा ॥४॥
यहूकरहिंपुनिभूपविचारा। पुनिजीतबसागरहुअपारा ॥ द्वीपांतरलैहैंहमजीती। कबहूँकोहुकीकरबनभीती ॥

यहशठनाहिंविचारैंमनमें । कहाभोगक्षणभंगुरतनमें ॥ जेतनोश्रममोहिंजीतनकाँहीं । मूढनृपतिजेकरहिंसदाँहीं ॥
तेतनीकरैजोमोक्षउपाई । तौतिनकोसबविधिबनिजाई ॥ ५ ॥

दोहा-मनुआदिकमहराजसब, मोहितजिगेसुरधाम । तौअबकेशठनृपतिक्यों, जितिहैंमोहितमाम ॥ ६ ॥

मोरेहितपितुपुत्रहुभ्राता । औरहुजातिबंधुअरुनाता ॥ करिकरिकुमतिपरस्पररारी । फँसेफाँसममताकेभारी ॥
कृष्णभजनकेयोगशरीरा।ताकोदेहिंनशाइअधीरा॥ऐसहिममहितलरिमरिजाहीं।नहिंसमुझहिंअनित्यतनकाँहीं ७॥८
पुरूरवापृथुगाधिनरेशा । नहुषभरतसहस्रार्जुनवेशा ॥ मांधातासगरहुखट्वंगा । धुंधुमाररघुअतिशुभअंगा ॥ ९ ॥
तृणविंदहुशांतनुसरजाती।नलनृगगयहुककुस्थसजाती॥कुवलयाशुअरुभूपभगीरथ।औरहुजेनरनाथमहारथ॥१०॥
हिरणकशिपत्रिभुवनजयवारो । रावणलोकरोवावनहारो॥नमुचिवृत्रसंबरभौमासुर।हिरण्याक्षतारकताडकसुर॥११॥
औरहुदैत्यऔरसबराजा । सिगरेज्ञाताशूरदराजा ॥ जीतेसबहिआपनहिंहारे । विदितविश्वविजयीबलवारे ॥ १२॥

दोहा-तेअतिममतामोहिमहँ, कियेमरेसबकोय । रहेनसबदिनमोरप्रभु, कथारहीअबसोय ॥ १३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-यशीमृतकभूपनकथा, मैंजोकह्योनरेश । सोसबज्ञानविरागहित, नहिंपरमारथवेश ॥ १४ ॥

सवैया-जोजनश्रीयदुनाथचरित्रअमंगलमूलउखारनहारो।काननमेंसुनैरोजहीरोजगुनैअरुगावैमहासुखसारो ।
सोलहिभक्तिकहैरघुराजनआवतफेरिसँसारअसारो । देवकिनंदनकेमिलिवेकोउपाययहीनाहिंदूजोविचारो ॥ १५ ॥

दोहा-व्याससुवनकेवचनसुनि, वाराहिवारनिहोरि । पुनिबोल्यौकुरुकुलकमल, दिनकरदोउकरजोरि ॥

राजोवाच ।

कलिकेजनकरिकौनउपाई । देहैंकलिकेदोषनशाई ॥ सोभाषौमोसेमुनिराई । कलिमोहिकालकरालदेखाई ॥ १६॥
युगअरुयुगयुगकेजेधर्मा । थितिअरुप्रलैकालमुनिशर्मा ॥ यहदीजैमोहिंसकलउचारी । जाननचहौंकालगतिभारी॥
नगअरिसुतसुतसुतकेवैना।विधिसुतसुतसुतसुतसुतचैना।भरिबोलेअतिमंजुलवानी।लखिभूपतिमतिभगतिलोभानी॥

श्रीशुक उवाच ।

सतयुगमाहिधर्मपदचारी । रह्योसबैजनलियतेहिंधारी॥सत्यदयाऔरहुतपदाना । धर्मचारिपदजानसुजाना ॥१८॥
तोषितक्षमीमित्रअरुदांता।समदर्शीकरुणाकरशांता॥आत्मारामशीलमयसिगरे।सतयुगकेजनकोउनहिंबिगरे॥१९॥
हिंसाअसतिअतोषलराई । चारिअधर्मचरणदियगाई ॥ धर्मसत्यपदत्रेतामाहीं । कह्योअनृततेएकतहाँहीं ॥
यज्ञतपोनिष्ठायहत्रेता । जानहुधर्मअरीनविजेता ॥

दोहा-नहिंलंपटनहिंहिंसकौ, त्रेताकेसबलोग । अर्थधर्मअरुकाममें, पारायणबिनशोग ॥

वेदत्रयीकेसबअभ्यासी।विप्रनपूजकप्रीतिप्रकासी ॥ २० ॥ २१ ॥ द्वापरमाहिधर्मद्वैपादा।रहेदानतपयुतमरयादा ॥
जनकुलीनवेदहिअभ्यासी।यशीकुटुंबीधनीहुलासी॥ऐसेद्वापरकेजनजानो । क्षत्रीब्राह्मणश्रेष्ठबखानो ॥२२॥ २३ ॥
कलियुगएकधर्मपददाना।कलिअंतहिसोउनशीनिदाना॥क्रमसोंवढ़िअधर्मकेपादा।क्रमसोंहरिहैंधर्ममरयादा ॥२४॥
दुराचारकलिकेजनह्वैहैं । जीवनपैनदयाचितलैहैं ॥ करिहैंबैरसबैबिनहेतू । बँधिहैंसदापापकरनेतू ॥
लोभीअरुलालचीअभागी।अनुचितकरतलाजनहिंलागी॥कलियुगमहँनृपशूद्रनकेरी।ह्वैहैंमहिमाभूतिघनेरी ॥२५ ॥
सतरजतमत्रैगुणजनमाहीं।रहिहैंहेनरनाहसदाहीं॥तपअरुज्ञानहोयरुचिजबहीं।उदैसतोगुणकीगुणतबहीं॥२६।२७॥
कामकर्ममहँजबरुचिहोई । उदैरजोगुणकीगुनसोई ॥ २८ ॥

दोहा-असंतोषअरुलोभहूँ, मदमत्सरपाखंड । रजतमकीयहहैउदै, जानहुभूपउदंड ॥ २९ ॥

हिंसादुखअसत्यछलतंद्रा।शोकमोहभयदैन्यहुनिंद्रा ॥ येसबहोहिंजौनजनकाहीं।उदैतमोगुणकीतेहिमाहीं ॥ ३० ॥
सतयुगमाहिंसतोगुणजानो । त्रेतामांहिरजोगुणमानो ॥ रजतमद्वापरमाहिंविचारो । कलिमहँकेवलतमहिउचारो ॥

कलियुगमहँसुनियेंकुरुराई। शुद्रसबैह्वैहैंनृपराई॥ ह्वैहैंसबजनमहाअभागी। सपनेहुनाहिंधर्मअनुरागी॥
होईघरदारिद्रप्रचारा। मनुजकरेंगेबहुतअहारा॥ ह्वैहैंसबजनअतिशयकामी। करिहैंनारिनकेरगुलामी॥
घरमेंधनरहिहैकछुनाहीं। ऐशकरनचाहिहैंसदाहीं॥ तियकरिहैंपरपूरुषप्रीती। मनिहैंनहिंनेकहुपतिभीती॥
श्वशुरसाससोंकरिहैंरागी। देहैंसदापरोसिनगारी॥ धेहैंदेशनचहुँकितचोरा। करिहैंपुरनउपद्रवघोरा ॥ ३१॥

दोहा—साधुनकोधरिभेषशठ, वेदअर्थकरिखंड। अपनीरीतिचलायकै, फैलैहैंपाखंड॥

राजाप्रजनलूटिसबलैहैं। निजदलसोंनिजराजजरैहैं॥ विप्रमहाविषयीह्वैजैहैं। गणिकाकोनिजघरहिबसैहैं॥
करिहैंसोईकहीजोनारी। देहैंपढ़िसबशास्त्रविसारी। उदरहेतकरिहैंबहुकर्मा। कौडीकेहितछोडिहैंधर्मा॥
बचिहैंनीचकर्मअसनाहीं। करिहैंविप्रनाहिंजिनकाहीं॥ ३२॥ कुमतिब्रह्मचारीकहवैहैं। एकोव्रतकरनामनलैहैं ॥
करिहैंअनाचारसबकाला। धारेरहिहैंतेमृगछाला॥ जिनकोबहुहोईपरिवारा। भीखमाँगिहैंद्वारहिद्वारा॥
तपीकरेंगेतपघरमाहीं। वसनहेतजैहैंवननाहीं॥ सन्यासीलोभीअतिह्वैहैं। कौड़ीकेहितघरघरधैहैं॥ ३३॥
अतिछोटीह्वैहैंकलिनारी। तापरह्वैहैंबहुतअहारी॥ ह्वैहैंबहुतसुतासुततिनके। असनबसनहोईनहिंजिनके॥

दोहा—कलिकीनारीकबहुँनहिं, करिहैंकोहुकोलाज। रहिहैंपरघररातिकै, तजिनिजघरकोकाज॥

जोकोउसूधहुवचनउचारी। तोदैहैंतेहिलाखनगारी॥ करिहैंरातिशहरमहँचोरी। वागतफिरिहैंखोरिनखोरी॥
कोहुसोंकबहुँनसत्यबतैहैं। देखिनपरदेशिनठगिलैहैं॥ अपनेयारहेतकलिकाला। मरिहैंपतिसुतलैकरवाला॥
अथवाविषदैडरिहैंमारी।अथवाफाँसिगलेमहँडारी॥३४॥ कलिकेवणिकछलीअतिह्वैहैं। यककीवस्तुचारिकोदैहैं॥
दैहैंतौलतमाहिंघटाई। लैहैंतासोंदामबढ़ाई॥ क्षत्रीऔरब्राह्मणहुजेते। करिहैंवणिकउद्यमहितेते॥
विनाविपत्तिहुपरेनरेशा। त्यागिदेइँगेधर्महमेशा॥ जोकोउकोहुकीचुगुलीकरिहैं। सोसुनिकैअतिशयसुखभरिहैं ॥
नीचहुकर्मकरतजगमाहीं। कोऊकोहुकोबरजीनाहीं॥ सोऊकरिहैंअसमनटीको। हमहूँकरहिकर्मयहनीको॥३५॥

दोहा—ठाकुरदाताआपनो, सुभगशीलमतिधाम। ताकोचाकरछोड़िहैं, ह्वैहैंनिमकहराम॥

पालनकरीजन्मतेलैकै। असनबसनबहुविधितेदैकै॥ तेहिठाकुरकहँविपतिपरेहीं। तजिदैहैंचाकरबिनतेहीं॥
ह्वैहैंचाकरनिमकहरामा। तिनकोनरकहुमहँनहिठामा॥ ऐसेकलिकेस्वामिहुह्वैहैं। बिनकसूरचाकरहिछोड़ैहैं॥
सेवाकरतकरतजोकोई। रोगीअथवावृद्धहुहोई॥ ताकोप्रभुपालननहिंकरिहैं। ज्वानीलौंताकोधनभरिहैं॥
बूढिगायजबदूधनदैहै।तबपालकतेहिनाहिंखवैहै॥३६॥ पिताभ्रातअरुजातिहुनाता। भगिनीमीतगुरूअरुमाता॥
जहाँहोइगीअपनीथारी। ताहीकेह्वैहैंउपकारी॥ सारीसारसलाहीह्वैहैं। निशिदिननरतियकोमुखज्वैहैं॥
पापकरतमेंपरमप्रवीना। धर्मकरतमेंह्वैहैंदीना॥ ३७॥ लैहैंशूद्रसकलविधिदाना। विप्रसरिसकरिहैंअभिमाना ॥

दोहा—ब्राह्मणकोधरिभेषशठ, अपनेपेटहिहेत। करिहैंतपपाखंडबहु, बँधिहैंधनकरनेत॥

बैठतखतमहँकरिअभिमाना।शूद्रबाँचिहैंकथापुराना॥ महाअधर्मीधर्मभाषिहैं। क्षत्रिनविप्रनपाहिमाषिहैं॥ ३८॥
नितहीचित्तरहीउद्विग्ना। रहिहैंदुखसागरमहँमग्ना॥ नहिंवर्षिहैंमेघनिजकाला। वारवारकलिपरीअकाला॥
जुरीअन्ननहिभोजनकाहीं।भीखमाँगिहैंघरघरमाहीं॥ तापरनृपतिलगायपियादा। लैलैहैंघरकीमरयादा ॥ ३९ ॥
बसनमिलोनहिंपहिरनकाहीं। तौभूषणकीकौनचलाहीं॥ मिलीनखाटभूमिमहस्वैहैं। पियनहेतभलजलहुनपैहैं॥
करिहैंमैथुनपशुनसमाना। भोजनकरिहैंबिनअस्नाना॥ ह्वैहैंसकलवस्तुतेहीना। महाकुरूपीपापप्रवीना॥
ऐसेकलिमहँह्वैहैंप्रानी। जायकहाँलगिदशाबखानी॥ रहिनहिंजैहैंकछूविवेका। ह्वैहैंचारिवरणमिलिएका॥ ४०॥

दोहा—यकयककौड़ीकेलिये, तजितजिपरमसनेह। मारिमारिमरिमरिकुमति, सबजैहैंयमगेह॥ ४१॥

मातापितावृद्धजबह्वैहैं। तिनहिनिकारिगेहतेदैहैं॥ सुतअरुसुताबेचिशठडरिहैं। जातिनातकोनेकुनडरिहैं॥
होतहिकन्याघातकराई। कहिहैंपरम्पराचलिआई॥ शिश्नउदरहितचहुदिशिधैहैं। यहिविधिसिगरीउमिरबितैहैं ॥
जगतगुरूत्रिलोककेस्वामी। सबजीवनकेअंतरयामी॥जेहिपदमहँविधिशिवदिगपाला। नायनायशिरहोतनिहाला॥

ऐसेयदुवरकोकलिमाहीं । कवहूँमनुजपूजिहैंनाहीं ॥ करिहैंऔरअनेकपखंडा । जातेंह्वैहैंशुभमतिखंड़ा॥४२॥४३॥
नृपजोयदुनंदनकोनामा । लेतमरतमहँकोउमतिधामा ॥ अथवाजवकहुँलहैकलेशा । कहतरामहरिकृष्णनरेशा ॥
गिरतपरतछटिलतमहँजेई । हरयेनमऐसेहुकहिदेई ॥ सोसबजगबंधनतेछूटी । लेतविकुंठवाससुखलूटी ॥

दोहा-ऐसोदीनदयालप्रभु, जौनदेवकीलाल । ताकोनहिंभजिहैंकुमति, यहिकरालकलिकाल ॥ ४४ ॥
कलिकेजेतेदोषहैं, मनुजनकेदुखदानी । तेसबहियमेंबैठिकै, नाशतशारँगपानी ॥ ४५ ॥

स०-कृष्णकथाजोसुनैचितलायत्योंकृष्णकोनामसदासुखगावै।कृष्णकोध्यावतकृष्णकोपूजतकृष्णकोसादरशीशनवावै
ताकेहियेचलिकृष्णवसैंहठिकृष्णहिसोंअघओघजरावै। कृष्णहिभक्तिभरैरघुराजसोकृष्णहिआपनेधामपठावैं॥४६॥
जैसेहिरण्यमेंधातुअनेकहिरण्यकेरंगहिदेतनशाई । ताहिज्योंपावकधातुजराइकैदेताहिरण्यकोरंगबनाई ॥
तैसेहिंश्रीरघुराजहियेयदुराजदयाभरिकैद्रुतआई । दासनकेदुरितानिकोदाहिदुनीदुगुनीदुतिदेतदेखाई ॥ ४७ ॥

घनाक्षरी-अतिश्रमकरिकैरिविद्याबहुपढिलीबोवनमेंनिवासकैकैमहातपठानिबो ।
मनकोअचलकीबोसंध्याआदिअर्घ्यदीबोतीरथनहाइबोहूँव्रतविधिजानिबो ॥
विविधप्रकारनकेमंत्रनकोजपिलीबोदानदीबोऔरविषयसुखकोगलानिबो ॥ ४८ ॥
रघुराजयेतेसबैतेसनापवित्रकारीजैसोहैपवित्रकारीहरिहियआनिबो ॥

दोहा-तातेकुरुमहराजतुम, कुरुकेसबउरमाहीं । मरतजाहिधावतमनुज, माधवपुरकोजाहि ॥ ४९ ॥
मरतसमयजोमनुजकोउ, रामकृष्णलियध्याय । ताकोदीनदयालप्रभु, लेतआशुअपनाय ॥ ५० ॥

सवैया-याकलिकालकरालमहाखलव्यालसोजीवनभक्षणहारी । पैकुरुनाथसुनोयहमेंगुणएकअपूरुबलेहुनिहारी ॥
श्रीरघुराजनयोगहुजापनदानव्रतौजेलियेकछुधारी।जीवतरेभवसागरकोमुखमेंयुगआखरकृष्णउचारी॥५१॥

घनाक्षरी-बरषअनेकजौनमनकोअबलकीन्हेंसतयुगहोतरह्योहरिपदध्यायेते ।
त्रेतायुगजौनयागकीन्हेंफलहोतरह्योजोरिजोरिधनहुअसंख्यनलगायेते ॥
कहैरघुराजजौनद्वापरमेंपूजेहरिहोतफलनेमजपव्रतकेबढायेते ।
तौनकलिकालमाहिंबिनाहिप्रयासहोतयादवेंद्रराघवेंद्रनामगुणगायेते ॥ ५२ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मजसिद्धिश्री
महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते
आनंदाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा-परमाणुहिजेहिआदिहै, द्वैपरार्धहैअंत । कहिआयोसोकालमें, तुमसोंसबमतिमंत ॥

औरहुभाष्योयुगनप्रमाना । अबसुनुकल्पहुप्रलैविधाना॥१॥सहसबारजबहीयुगचारी।बीतहिसोइविधिदिवसउचारी॥
एककलपकहवावतसोई । भोगचौदहौमनुकोहोई ॥ २ ॥ सोइकलपकेअंतहिमाहीं । ब्रह्माकोनिशिहोतिसदाहीं ॥
जितनेयुगकोविधिदिनजानो।तितनेयुगकोविधिनिशिमानो॥ब्रह्माकेदिनअंतहिमाहीं।प्रलयहोतितिहुँलोकनकाहीं ॥
यहनैमित्तिकप्रलयविचारा । जामेंसोवतहैकरतारा ॥ शेषसेजनारायणसोवत । त्रिगरेजगकोनिजतनगोवत ॥ ४ ॥
जबब्रह्माकेसोइदिनराती । बीतहिशतवर्षहियहिभाँती ॥ प्राकृतप्रलयहोतितेहिकाला । ताकोसुनहुप्रकारभुवाला ॥
सातहुप्रकृतिलीनह्वैजाहीं।अपनेअपनेकारणमाहीं॥५॥यहब्रह्माण्डप्रकृतिकोकारज।लीनहोतप्रकृतिहिमहँआरज ६॥

दोहा-धरणीमहँसौवर्षलौं, मेघवर्षिहैंनाहीं । ह्वैहैतबपरजादुखी, अन्नविनामहिमाहीं ॥

क्षुधाविवशहनिकैयकयकन । करिलेहैक्रमसोंसबभक्षन॥७॥यहिविधिह्वैहैप्रजाविनाशा।करिहैंद्वादशभानुप्रकाशा ॥

सिगरोसलिलशोपिनलेहैं।पुनिनहिंकहुँथलमहँवरसेहैं॥शेपवदनतेनिकसीज्वाला।सोलहिपवनसहायविशाला॥८।९॥
सोसबभूमिभसमकरिदेई । बढिज्वालालोकनहदिलेई॥ऊपररविअधशेषहिज्वाला।भसमकरीयहविश्वविशाला॥१०॥
यहब्रह्मांडजोअहमहाना । हैहजराकरीपसमाना ॥ पुनिसौवर्षहिपवनप्रचंडा । चलिहेभूपतियहब्रह्मंडा ॥ ११ ॥
हैहधूमधरणआकाशा । धूरधूसरितविगतप्रकाशा ॥ तहँमेघरंगनकेनाना । करिकरिनभमहँशोरमहाना ॥
वरपहिंगसौवर्पप्रयंता । शुंडसमानधारमतिवंता ॥ यहसंसारइकार्णवहोई । बिनजलकोथलपरीनजोई ॥ १२ ॥ १३ ॥

दोहा–सहितगंधगुणभूमितहँ, होतजलहिमहँलीन । रसगुणयुतजलतेजमहँ, होतलीनपरवीन ॥
रूपसहितपुनितेजहूं, पवनहिंजातविलाय । परससहितपुनिपवनहू, नभमहँजातसमाय ॥
शब्दसहितनभतामसे, अहंकारमहँजात । इंद्रियसुरयुतसाजुकै, अहंकारहिसमात ॥
अहंकारसबहोतलय, महत्तत्त्वमेंजाय । महत्तत्त्वपुनिजायकै, प्रकृतिहिमाहसमाय ॥
सतरजतमगुणविषमजे, तेसबहोतसमान।सोईप्रकृतिपरमात्महि, लीनहोतिमतिवान१४।१५।१६।१७।१८
सोपरमात्माकेनहीं, कालहिकृतपरिणाम । आदिअनादिअनंतहू, अव्ययनित्यललाम ॥ १९ ॥
मनवचनहुनहिंजातजहँ, सतरजतमगुणनाहिं । प्राणबुद्धिइंद्रियसुरहु, नहींआहिंजेहिमाँहिं ॥
महदादिकजामेंनहीं, नहिंकछुजगतविकार । हैनस्वप्नजागर्त्तिहू, नहींसुषुप्तिउदार ॥
अनिलअनिलआकाशअप, अवनिअर्कयेनाहिं । सोसुषुप्तिसमरहतनित, नभसमअमलसदाँहिं ॥२०॥२१॥
सोअतर्कसबमूलहै, प्रकृतिहुजेहिलयहोय । सोपरमात्मामेंसकल, यहजगजातसमोय ॥
जबमायाअरुजीवहू, होतईशमहँलीन । सोईप्राकृतिकीप्रलय, कहतसबैपरवीन ॥ २२ ॥
बुद्धिइंद्रियनअर्थको, हैपरमात्मअधार । शास्त्रहितेदेखोपरै, तेहिबिननहिंसंसार ॥

जोउपजतअरुहोतविनाशा । सोइअनित्यसबवेदप्रकाशा॥२३॥दीपचक्षुआदिकहैंजेते । ज्योतिकार्य्ययेजानहुतेते ॥
ऐसहियहसिगरोसंसारा । परमात्माकेकार्य्यअपारा ॥ बिनपरमात्मारहैनकोऊ । थावरऔरहुजंगमजोऊ ॥
जियकोधर्मभूतजोज्ञाना । तासुअवस्थात्रिविधिबखाना ॥ ज्ञानविकाशजागरणजानो । कछुसंकोचस्वप्नसोमानो ॥
अतिसंकोचसुषुप्तिविचारो।मायाकृतअनित्यउरधारो॥२४।२५॥जैसेनृपजलधरनभमाँहीं।कहुँप्रगटहिंकहुँफेरिबिलाहीं
व्योमरहतहैविगतविकारा।तिमिजगअरुपरमात्मविचारा॥२६॥सूतभिन्नजिमिपटनहिंहोई।कारणभिन्नकार्यनहिंहोई
तैसहिईशभिन्नजगनाहीं । समुझिदेखियेनिजमनमाहीं ॥ जोनैयायिकअसउरआनै । कारणभिन्नकार्यकोमानै ॥

दोहा–सोतिनकोभ्रममानिये, कारणहीहैकार्य । अहैअवस्थाभेदयह, सोसुनुकुरुकुलआर्य्य ॥
देवमनुजपरतीतिजिय, सोभ्रमजानुनरेश । जोयहसतितौसुक्तिमें, आवतदोषहमेश ॥

जीवहिंजेसुरमानुपमानैं । तिनहिंअवबुधिवंतबखानैं ॥ घटअकाशजिमिमठहुप्रकाशा । जैसेलघुअरुमहाहुताशा॥
बाहरभीतरपवनसमाना । तिमिजियरहतशरीरननाना॥ होतकनकजिमिबहुतप्रकारा । तिमिहरिधारतरूपअपारा॥
ऐसोलोकवेदसिद्धांता।यहमनजानिरहोनृपशांता२७।३१ जिमिरवितेउपजहिघननाना।करहिओटपुनिरविहिमहाना
तिमिईशहितेहोतशरीरा।लखतईशरोकतमतिधीरा॥जबनहिंरहतमेघनभमाँहीं।दरशनहोततबैरविकाँहीं॥३२।३३॥
इमिजबछूटततनअभिमाना। जियहिहोततबज्ञानविज्ञाना॥३४॥तातेगहिविवेककरवाला।मायाबंधनकाटिकराला॥
मिलैअनीशईशकहँजाई । यहआत्यंतिकप्रलयकहाई ॥ ब्रह्मादिकजेतेहैंप्रानी । नितउपजतअरुनशतविज्ञानी ॥
नितउत्पतिनितप्रलययहीहै । सूक्षमदरशीकहतसहीहै ॥

दोहा–जैसेसरिताधारलहि, वहततृणादिअनंत । तैसहिकालप्रवाहलहि, जगउपजतविनसंत ॥ ३५ ॥ ३६ ॥
यहअनादिजोकालहै, सोहरिकेरसरूप । याकोचलवनलखिपरत, जिमिरविकीगतिभूप ॥ ३७ ॥
नित्यप्रलययहजानुनृप, प्रलैचारिकहिदीन । नैमित्तिकअरुप्राकृती, अत्यंतिकपरवीन ॥ ३८ ॥
जगअधारयदुनाथप्रभु, नारायणजेहिनाम । तेहिलीलासंक्षेपते, मैंभाष्योमतिधाम ॥

काकेमुखमेंजीहहै, जोहरिचरितअपार । वरणिसकलविधिताहिको, केहुविधिपावैपार ॥ ३९ ॥

कवित्तरूपवनाक्षरी–विविधिकठोरघोरदुखकीदवानलसोजरतजेपापीपूरप्राणीअतिबिलखात ।

तेऊजोअपारभवपारावारपारजानबिनहीप्रयासचाहैहियहठिहरषात ॥

भनैरघुराजदोऊहाथनउठाइतिन्हैंऔरनाउपाइमेरेदृगनमैंदरशात ॥

नंदलालललीलाकथारसकीजहाँजपाइकेतेगयेकेतेजैहैंकेतेअबैचलेजात ॥ ४० ॥

दोहा–यहपुराणशुभसंहिता, नामभागवतजासु । नारायणप्रथमहिकियो, नारदसोंपरकासु ॥

नारदपुनिममजनकसों, व्यासदेवजेहिनाम । कह्योभागवतग्रंथयह, ज्ञानभक्तिकोधाम ॥ ४१ ॥

सोकहिकैमोहिंपरकृपा, व्यासदेवभगवान । दियोपढाइसुझाइसब, यहभागवतपुरान ॥ ४२ ॥

कुरुपतिअबयहकालमें, नैमिषवनमेंबैठि । शौनकआदिकमुनिसबै, सुखसागरमेंपैठि ॥

इनहींसूतसुजानको, पौराणिकैबनाइ । सुनिहैंयहभागवतको, पूँछिप्रीतिदरशाइ ॥ ४३ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराज सिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे चतुर्थस्तरंगः ॥ ४ ॥

श्रीशुक उवाच ।

दोहा–यहपुराणमेंसुनहुनृप, हरिपरत्वसबठौर । जेहिहरिकोपरसादविधि, शंकरकोपकठौर ॥ १ ॥

अबशिमरैंगेहमयहिकाला । यहपशुबुद्धिछोडुमहिपाला ॥ कबहुँभयोनहिंजन्मतुम्हारा।कबहुँनाशनहिंअहैउदारा ॥

तनभरिजन्मतमरतरहतहैं । जननमरणनहिंजीवगहतहैं ॥२॥ ह्वैउत्पन्नपूतअरुनाती । अबतुमनहिंह्वैहौअरुघाती ॥

जैसेबीजबीजतेअंकुर । ह्वैहौतिमितुमनाहिंधर्मधुर ॥ देहादिकतेभिन्नभुवाला । जानहुअपनेकोसबकाला ॥

जैसेपावकदारुहिमाहीं । दरशतहैपैभिन्नसदाहीं ॥ ३ ॥ जैसेस्वप्नकह्योनिजशीशा । आत्मभिन्नहैलखतमहीशा॥

तैसेभूपतिजागेहुमाहीं । निरखतजियतनभिन्नसदाहीं ॥ आत्माअजरअमरअविकारी।विषयविवशह्वैतोसंसारी ॥४॥

घटाकाशजबघटफुटिजातो । तबवहशुद्धतहैंरहिजातो ॥ ऐसहिजीवहुनशेशरीरा । शुद्धसरूपरहतमतिधीरा ॥ ५॥

दोहा–जीवहितनकेबंधको, मनहींकारणजान ॥ मनहीतेहैत्रिगुणतन, तनतेकर्मअमान ॥

सोमनहैमायाकोकारज । चारिहुतेसंसारहिआरज ॥ ६ ॥ तेलअगिनिपात्रहुअरुवाती । दीपतारितेहैतमघाती ॥

ऐसहितनमनकर्महुमाया । चारिहुतेसंसृतिनृपराया ॥ सतरजतमगुणतेतनहोई । ताहीमेंपुनिनाशहुसोई ॥

देहजन्मनहिंजन्मजीवको।मरेमरणनहिंज्ञानसीवको ॥ ७ ॥ आत्माहैनृपस्वयंप्रकासी । देहप्रकृतिपरज्ञानविभासी ॥

जिमिअकाशघटकेरअधारा।तिमितनकोजियजानउदारा।अपरिच्छिन्नस्वभावहितेजिय।निजसरूपमेंनहिंविकारलिय

ऐसहिशास्त्ररीतितेराजा।भजौसकलविधितुमयदुराजा॥परमात्माहैआत्मअधारा।तेहिभजितरहुसिंधुसंसारा॥८॥९॥

विप्रशापवशतक्षकनागा । तुमहिनजारिसकीबड़भागा ॥ अहैंमृत्युकेमृत्युमुरारी । तिनमेंनृपमतिलगीतिहारी ॥

दोहा–तातेमृत्युहुतुमहिंनृप, कछुकरिसकिहैनाहिं । पंचरचितयहतनअहै, सोमिलिहैनिजमाहिं ॥ १० ॥

मैंहौंशुद्धसरूपअति, परमात्माकोदास । परमप्राप्यपरमातमा, यदुपतिरमानिवास ॥

यहिविधिअनुसंधानकरि, हरिपदचित्तलगाय । ईशभिन्नतुमजगतको, नहिंलखिहौनृपराय ॥ ११ ॥

चाटतरदपटविषवदन, कालसमानकराल । निजतनभक्षततक्षकहि, नहिंलखिहौभुवाल ॥ १२ ॥

हरिचरित्रयहभागवत, तुमकोदियोसुनाइ । ज्यौंपूछ्योभाष्योकहा, अबसुनिहौनृपराइ ॥ १३ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्री रघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे पंचमस्तरंगः ॥ ५ ॥

सूत उवाच ।

दोहा–अखिलअनूपमभागवत, यदुपतिरूपपुरान । व्यासस्रुवनमुखतेसुन्यौ, जेहिपरअपरनभान ॥
धन्यधन्यनिजजन्मगुनि, नृपकौरवकुलनाथ । जायनिकटशुकदेवके, धरयोचरणमेंमाथ ॥
पुनिकरअंजुलिनिजशिरधरिकै । बोल्योविष्णुरातमुदभरिकै ॥ १ ॥

राजोवाच ।

हेकृपालमुनिव्यासकुमारा । तुमसमकोजगअधमउधारा॥मोहिंकृतारथप्रभुकरिदीन्ह्यों।मोपरपरमअनुग्रहकीन्ह्यों ॥
यहप्रत्यक्षकृष्णकोरूपा । श्रीभागवतपुराणअनूपा ॥ करनांजुलिह्वैसोमतिमाना । कथापियूषकरायोपाना ॥ २ ॥
हरिदासनयहअचरजनाहीं । कर्राहंदयाहठिदीननमाहीं ॥ तपितमूढजनजेजगरोगू।आपदयातिनऔषधियोगू ॥३॥
यहभागवतपुराणसुहावन।दियसुनायमोंहितुममुनिपावन॥यामेंकेवलकृष्णचरित्रा।अखिलजगतकहँकरनपवित्रा४॥
तक्षकनागकेरकहबाता।मोहिंनहिंमीचहुकीभयताता॥मुनिवरमोहिंदियअभयबनाई।मुक्तिमार्गसबदियोदेखाई ॥५॥
अबनिदेशमोंहिंदेहुमुनीशा । तोमेंमनलगायजगदीशा ॥

दोहा–जगतवासनासकलतजि, ह्वैहरिपदअनुरागि । गवनकरहुँयदुपतिनगर, यहप्राकृततनत्यागि ॥
जगनिवासकीआशहमारी । क्षणभरिहैनहिंहेभ्रमहारी ॥ ६ ॥ दूरभयोमेरोअज्ञाना । प्रविश्योउरमहँज्ञानविज्ञाना ॥
आपकृष्णपुरपथकहिदयऊ । अबनहिंकछुबाकीरहिगयऊ ॥ ७ ॥

सूत उवाच ।

राजहिजानिपरमविज्ञानी।चलनचह्योतबशुकसुखखानी॥व्याससुवनकोगवनतजानी । उठिकुरुनाथपरममुदमानी॥
चरणपखारिशीशजललीन्ह्यो।औरसविधिमुनिपूजनकीन्ह्यो।फेरिगिरयोमुनिपदबड़भागा।उमग्योंउरअंबुधिअनुरागा
नृपहिसराहिबहुतमुनिराई।प्रेमभरोपुनिमाँगिविदाई॥ चल्योतहाँतेव्यासकुमारा । चलेभिक्षुकहुसंगअपारा ॥ ८ ॥
हरेकृष्णगोविंदमुकुंदा । जयजययदुकुलकौरवचंदा ॥ जयरुक्मिणीरमणगिरिधारी । जयसीतापतिअवधविहारी ॥
जयरघुनंदनजययदुनंदन । रावणगंजनकंसनिकंदन ॥

दोहा–जयदेवकीकुमारप्रभु, जयकौशलाकुमार । भवसागरपारहिकरन, जयरघुरायअधार ॥
जबकीन्ह्योंशुकदेवपयाना । तबराजर्षिभूपमतिवाना ॥ यदुपतिपदमनदियोलगाई । रह्योअचलतरुसमनृपराई॥९॥
पूरुबअग्रकुशासनमाँहीं । उत्तरमुखनृपबैठतहाँहीं ॥ ध्यावतहरिपदसुरसरितीरा । छूटिगईसबजगकीपीरा ॥
भयोमहायोगीकुरुनाथा । नायोजायकृष्णपदमाथा॥१०॥प्रातभयोदिनसातौसोई । हैशौनकऋषिमुनिसबकोई ॥
बैठेरहेनरेशसमीपा । दारुपुरुपसमरह्योमहीपा ॥ विप्रश्रापवशतक्षकधायो । कोपितजबमधिमारगआयो ॥
सुन्योकानकश्यपमुनिराई । कुरुपतिपैकरिकोपमहाई ॥ द्विजसुतशापहिदियोततक्षै । सतयेंवासरतक्षकभक्षै ॥
सोईकालआयगोआजै । तक्षकजातडसनकुरुराजै ॥ यहसुनिकैकश्यपमतिसेतू । अहिविषनृपहिनिवारनहेतू ॥

दोहा–आश्रमतेगमनतभये, जबआयेमगमाहिं । तबतक्षकसोंभेटभै, तक्षककहतिनकाहिं ॥ ११ ॥
तक्षकविषकेनाशनकाहीं । आपसमर्थअहेंमुनिनाहीं ॥ तबकश्यपकहतक्षकदंसित । भूपनहोनपाइहैग्रसित ॥
तक्षककह्योहमहिंसोअहहीं । निजविषसोंहमयहतरुदहहीं॥असकहिडस्योताहितरुकाँहीं।सोतरुह्वैगोभसमतहाँहीं॥
कश्यपपढिकैमंत्रनकाँहीं । जसकोतसतरुकियोतहाँहीं ॥ तबशंकितह्वैतक्षकभाष्यो।कश्यपतूमनकाअभिलाष्यो ॥
जाकेहेतआपउतजाहीं । सोलैलेहुइहैंहमपाहीं ॥ कश्यपकह्योयज्ञकेहेतू । चाहहिंधनसोलगतननेतू ॥
अहिविषनृपकोतुरतनशाई । लहिधनकरिहैंयज्ञमहाई ॥ जोइतपावैंतौनहिंजामैं । धनहीसोहमारहैकामैं ॥
तबतक्षकतिनकोधनदीन्ह्यों । कश्यपगवनभवनकहँकीन्ह्यों ॥ तक्षकधारिविप्रकररूपा । आयोजहँबैठोकुरुभूपा ॥
निकटआयधरिरूपभुजंगा । डसतभयोकुरुनाथहिअंगा ॥ १२ ॥

दोहा—जरोवसनसमभूपतन, लहिअहिविषशिखिज्वाल । सबदेहिनकेदेखते, भयोभस्मतेहिकाल ॥ १३ ॥
भस्मभयोजबभूपउदारा । मच्यौचहूँकितहाहाकारा ॥ सुरनरविस्मितभयेअपारे । बजोव्योममहँविविधनगारे ॥
तहँअपसराऔरगंधर्वा । लगेबजावनगावनसर्वा ॥ वर्षेदेवसुमनसुखपागे।कुरुपतिकाहँसराहनलागे ॥ १४ ॥ १५ ॥
सुवनपरीक्षितकारकरिपुजय।जाकोनामरह्योजनमेजय ॥ तक्षकभक्षितपितुसुनिसोई । तेहीसमयकरिकोपबड़ोई ॥
आशुहिमुनिवरसकलहँकारी।करनलग्योमखसर्पसँहारी ॥१६॥ कीन्हेविप्रहोमजेहिकाला।उठीकुंडतेपावकज्वाला॥
लगेगिरनभुजंगहजारन । करनलगेकरिघोरचिकारन ॥ पावकज्वाललगीतिनजारन । लागेजरनकरतफुफुकारन ॥
होतविनाअहिकोजगदेखी।तक्षकवधआपनोपरेखी ॥ लुक्योशक्रकेशरणहिजाई । कह्योनाथमोहिंलेहुबचाई ॥१७॥

दोहा—कोटिनसर्पनकोजरत, इतेकुंडमहँदेखि । बोल्योजनमेजयद्विजन, नहिंतक्षककहँपेखि ॥
जरेअमितअहिपावकमाहीं।तक्षकअधमजरतकसनाहीं ॥ तबबोलेसिगरेमुनिराई।तक्षकछिप्यौइंद्रढिगजाई ॥ १८ ॥
वासवआवनदेतनताको।रक्षणकियेकुलिशगहिवाको ॥तातेपरतनपावकमाहीं । भूपतिकहाकरैतेहिकाहीं ॥ १९ ॥
तबबोल्योजनमेजयकोपी । तक्षकअहैमोरपितुलोपी ॥ तेहिरक्षतवासववरियाई । तातेसोउममशत्रुमहाई ॥
तातेशक्रहुसहितअहीशा।होमहुपावकमाहिमुनीशा ॥ २० ॥ सुनिनृपवचनसबैमुनिराई । एकबारसबस्रुवाउठाई ॥
तक्षकसहितइंद्रकीस्वाहा।बोलतभेकरिकोपअथाहा॥२१॥विप्रवचनमुखकढतहिमाहीं । देवराजहुतकँप्यौतहाँहीं ॥
भयोचकितअतिशयतेहिकाला।गुन्योमरबअपनोसुरपाला॥रह्योबैठितेहिसमयविमाना।तामेंतक्षकरह्योलुकाना २२

दोहा—तक्षकयुतवासवतहाँ, तैसहिचढ्योविमान । देवलोकतेगिरतभो, जरनहितेहेतकृशान ॥
तक्षकसहितइंद्रतेहिकाले । नभतेगिरतआशुसुरपाले ॥ त्रिभुवनहोतविनावासवको । ऐसोजानिपरचोतहँसबको ॥
असअनर्थलखिपरमउदारा।नृपहिबृहस्पतिवचनउचारा॥सुनियेंजनमेजयमहराजा।होतमहाअनुचितयहकाजा २३
तक्षककियोअमृतकरपाना । यहनहिंवधलायकमतिवाना ॥ करिकैतापरकृपामहाई । इंद्रहुकोनृपदेहुबचाई ॥
अजरअमरसिगरेसुरहोहीं।तिनपरहोहुतुमहुअबछोही ॥नातोहोतइंद्रबिनलोका।तातेउपजतअतिउरशोका ॥ २४ ॥
जीवनमरणहुप्राणिनकेरो । कर्महिकेवशहोतघनेरो ॥ ईशअहैसबसुखदुखदाता । यामेंकोहुकोजोरनताता ॥२५ ॥
चोरअग्निअहिगाजनिपाता।क्षुधातृषाअरुरोगअघाता॥इनतेमरहिंजेपुरुषअपारा।सोसबनिजकर्महिअनुसारा ॥२६॥
तातेयज्ञबंदअबकीजै । जनमेजयजगमेंयशलीजै ॥

दोहा—कोटिनविषधरबापुरे, जरेविनाअपराध । जोजसकर्महिकरततस, सुखदुखलहतअगाध ॥
सुनतबृहस्पतिकेवचन, जनमेजयलियमानि । सर्पविनाशीयज्ञको, कियोबंदअघजानि ॥ २७ ॥

सूत उवाच ।

सुरगुरुकोबहुभाँतिसों, करिकैभूपबखान । वासवकोअरुतक्षकै, दियोप्राणकोदान ॥ २८ ॥
शौनकादिसिगरेसुनहु, यहमायाहरिकेरि । यामेंमोहितहोतसब, फेरीफिरतितफेरि ॥ २९ ॥

गुनैजोआछीविधिमनमाहीं । तौमायाईशहिमहिमाहीं ॥ जोमायापखंडकीकरनी । जनकोमोहफाँसविस्तरनी ॥
अरुसंकल्पविकल्पविवादा । हैनईशमेंमनमर्यादा ॥ ३० ॥ अहैनप्राकृततनप्रभुकेरो । प्राकृतकर्महिनाहिंनिवेरो ॥
सुखदुखहैप्रभुमेंकछुनाहीं । यहिविधिजानैयदुवरकाहीं ॥ तौत्रैगुणकेवशजोजीवा । सोपटउरमिनत्यागिअतीवा ॥
पावतहैयदुपतिपदकाहीं।पुनिआवतसंसारहिनाहीं।वैष्णवपदसोइपरमकहावत।नेतिनेतिजेहिश्रुतिगणगावत ३१-३२
जेअनन्यप्रेमीहरिदासा । तेसबछोडिजगतकीआसा ॥ कृष्णरूपछविछकेरहतहैं । भानदेहकोनाहिंगहतहैं ॥
अहंकारममकारविहीने । देहगेहमेंनेहनकीने ॥ विष्णुपरमपदहैद्विजजोई । जाततहाँवैष्णवजनसोई ॥ ३३ ॥

दोहा—जोकोउनिंदाकरै, सोसहिलेहिसुजान । यहअनित्यतनपायकै, तजैवैरअपमान ॥ ३४ ॥
जयजयव्यासकृष्णभगवाना।उद्धतशुद्धसुबुद्धिनिधाना॥ जासुपदुमपदकोधरिध्याना।मैंपढिलियभागवतपुराना३५
सुनतसूतकेवचनसुहावन । बोलेशौनकमुनिअतिपावन ॥

शौनक उवाच ।

व्यासशिष्यपैलादिकजेते । वेदाचार्यमहात्मातेते ॥ केतनेकीन्हेवेदविभागा । सोहमसोंवरणहुबड़भागा ॥
सुनतसूतशौनककीवानी । बोलेतिनकोअतिसनमानी ॥ ३६ ॥

सूत उवाच ।

सावधानजबभोकरतारा । तबउरमेंभयनादप्रचारा ॥ उभैकानमूँदेद्विजराई । प्राणघोषसोपरतसुनाई ॥ ३७ ॥
जासुउपासनतेसबयोगी।करतअमलमनविषैवियोगी॥जबमनअमलकृष्णमनलागत।तबहींमनुजमोक्षसुखपागत ३८
प्रगट्योप्रणवकाँहसोनादा।त्रयअक्षरकीजेहिमरयादा॥जेहिउतपतियोगिहुनाहिंजानै।प्रणवहिस्वयंप्रकाशबखानै॥४०॥
सोइबोधकपरमात्माकेरो । ऐसोहैसबशास्त्रनिवेरो ॥

दोहा–सोवतमेंजैसेकोऊ, काहूदियगोहराय । सोसुनिकैपरमातमा, जीवहिदेतजगाय ॥

तैसहिशौनकमूँदेकाना । प्राणघोषसुनतोभगवाना ॥ जीवज्ञानइंद्रियनअधीना । सुनैसुकिमिजबइंद्रीलीना ॥
तैसहिकानहुमूंदेमाहीं । सुनैजीवकिमिशब्दहिकाहीं ॥ इंद्रियबशनईशकरज्ञाना । रहतस्वतंत्रसदाभगवाना ॥
सोईप्रणवतेप्रगटतिवानी।प्रणववासहियमेंमतिखानी ॥ मंत्रउपनिपदवेदपुराना ।सबकोकारणप्रणवबखाना ॥ ४१ ॥
विप्रअकारउकारमकारा।यहीजानियेप्रणवअकारा ॥हरिअकारअरुजीवमकारा।अरुलक्ष्मीकोजानउकारा ॥ ४२ ॥
सोईप्रणवतेपुनिकरतारा । चौसटवरणनकियोउचारा ॥ सोइवरणतेचारिहुवेदा । चारिहुमुखविधिकियोसभेदा ॥
जिनवेदनमेंहैसबकर्मा।जातेयज्ञहोहिशुभधर्मा॥४३॥४४॥तिनवेदनकोविधिबडभागा।दियपुत्रनकहकरिअनुरागा ४५

दोहा–तेउनिजनिजपुत्रनदिये, तेनिजशिष्यनदीन । परम्परायाहिभाँतिसों, चल्योवेदपरवीन ॥ ४६ ॥

थोरीआयुषभैजबजनकी । अतिचंचलह्वैगैगतिमनकी ॥ अल्पबुद्धिभैमनुजअभागी । तबहरिप्रेरितमुनिबड़भागी ॥
कियेवेदकेविविधविभागा । द्वापरअंतजबैकलिलागा ॥४७॥ यहुकालहिंलोकनकेस्वामी।सबजीवनकेअंतरयामी ॥
ब्रह्माशिवादिऔरदिगपाला । इनतेप्रार्थितकृष्णकृपाला ॥ सकलधर्मकेरक्षणहेतू । सत्यवतीमहँकृपानिकेतू ॥४८॥
सुमुनिपरासरतेनिजअंसा । प्रगटेव्यासनामअघध्वंसा ॥ कियेवेदकेचारिप्रकारा । ऋक्यजुसामअथर्वउदारा॥४९॥
यहीविभागसंहिताकेरो।मणिसमूहजिमिमणिहिनिवेरो५०चारिशिष्यकहँलियोबुलाई।यकयकतिनकोदियोपढाई५१
ऋक्संहितापैलकहिदीन्ही । यजुकीवैशंपायनलीन्ही॥५२॥सामहिकीछंदोगसंहिता । जैमिनिकोदियव्यासबृंहिता॥

दोहा–पुनिअथर्वकीसंहिता, दियोसुमंतहिव्यास । इंद्रप्रमितऔबाष्कलै, कीन्ह्योपैलप्रकास ॥ ५३ ॥५४॥

अपनेचारिशिष्यबड़भागा । दईवाहकलकरिचौभागा ॥ याज्ञवल्क्यअरुबोध्यपराशर । अग्निमात्रयेशिष्यचारिवर॥
इंद्रप्रमितकेमांडुकेयसुत।तिनकोनिजसंहितादईउत॥देवमित्रतेहिशिष्यहिरहेऊ।सौभरआदिकतेसोकहेऊ।५५।५६
मांडुकेयसुतजोसाकल्या । शिष्यपाँचयेकहैगोवल्या ॥ वात्साशिशिरसुद्गलशालीया । इन्हेंसंहितादियकमनीया ॥
पुनिसाकल्यशिष्यसोवरना । नामजासुहैजातूकरना ॥ सोसंहिताकरीत्रयभागा । यकनिरुक्तकियकरिअनुरागा॥
चारिशिष्यतेहिबुद्धिविशाला।विरजबलाकपैजवैताला।तिनकोदियसंहितासुहाई।अरुनिरुक्तिहूँदियोपढाई ।५७।५८
बाष्कलपुत्रबाष्कलीजोई । पूरुववेदसाखतेसोई ॥ बालखिल्यसंहिताबनाई । दियोतीनिनिजशिष्यपढाई ॥

दोहा–बालायनअरुभज्यहू, अरुकासारसुजान । शिष्यतीनियेपढिलिये, सोसंहिताप्रमान ॥ ५९ ॥

येसंहिताजेमैंसबगाई । तिनकोधारणकियमुनिराई ॥ वेदविभागसुनैजोकोई । सकलपापतेरहितसोहोई ॥ ६० ॥
वैशंपायनशिष्यसुचित्ता । कियेविप्रवधप्रायश्चित्ता ॥ तातेचरककहावनलागे । विधिवतायदियगुरुअनुरागे ॥
पढेफेरिअध्वर्यहिशाषा । तातेअध्वर्यूयमभाषा ॥ ६१ ॥ वैशंपायनशिष्यललामा । रह्योयाज्ञवल्क्यहिजेहिनामा ॥
सोगुरुसोंअसवचनउचारा । मैंकरिहौंतपकठिनअपारा॥कठिनजौनविधिहमतपठेहैं । सोयेसबकसकैकरिलैहैं॥६२॥
वचनकठोरशिष्यकेसुनिकै । बोल्योगुरुसगर्वतेहिगुनिकै ॥ तोसेकछुनपरोजनमेरो । तैंकियद्विजअपमानघनेरो ॥

पढ्योजोमोसोंसोंद्रुतत्यागी।ममआश्रमतेभागुअभागी ॥ याज्ञवल्क्यमुनिगुरुमुखवानी।देवरातसुतसोअभिमानी ॥ यजुर्वेदगनजोपढिलीन्ह्यों। ताकोतुरतवमनकरिदीन्ह्यों ॥

दोहा-याज्ञवल्क्यगमनतभये, तत्रतहँकेसबविप्र ॥ ६३ ॥ तीतरपक्षीह्वैद्रुतै, लियेवेदचुनिक्षिप्र ॥
तैत्तिरीयशाखाभई, यजुर्वेदरमणीय ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ याज्ञवल्क्यपुनिजायकै, थलएकांतकमनीय ॥
गुरुबहुजोजानतनहीं, सोऊपढ़नकरिआस। आराधनकियोभानुको, कर्रिकैपरमप्रयास ॥ ६६ ॥
याज्ञवल्क्ययहमंत्रपढि, रविचरणनचितदीन। गायत्रीसममंत्रगुनि, मैंभाषानहिंकीन ॥

याज्ञवल्क्य उवाच।

ॐनमो भगवते आदित्यायाखिलजगतामात्मस्वरूपेण कालस्वरूपेण चतुर्विधभूतनिकायानां ब्रह्मादिस्तंब-पर्यंतानामन्तर्हृदयेषु बहिरपि चाकाश इवोपाधिनाऽव्यवधीयमानो भगवानेक एव लक्षणनिमेषावयवोपचित-संवत्सरगणेनादानविसर्गाभ्यामिमां लोकयात्रामनुवहति ॥ ६७ ॥ यदु ह वाव विबुधर्षभ सवितरदस्तपत्यनु-सवनमहरहराम्नायविधिनोपतिष्ठमानानामखिलदुरितवृजिनबीजावभर्ज्जन भगवतः समभिधीमहि तपनमण्डलम् ६८ य इह वाव स्थिरचरनिकराणां निजनिकेतनानां मनइंद्रियासुरगणाननात्मनः स्वयमात्मान्तर्यामी प्रचोदयति ६९ य एवेमं लोकमतिकरालवदनांधकारसंज्ञाजगरग्रहगिलितं मृतकमिव विचेतनमवलोक्यानुकंपया परमकारुणिक ईक्षयैवोत्थाप्याहरहरनुसवनं श्रेयसि स्वधर्माख्यात्मावस्थाने प्रवर्त्तयत्यवनिपतिरिवासाधूनां भयमुदीरयन्नटाति ७० परित आशापालैस्तत्र तत्र कमलकोशांजलिभिरुपहृताहेणः ॥ ७१ ॥ अथ ह भगवंस्तव चरणनलिनयुगलं त्रिभुवनगुरुभिरभिवंदितमहमयातयामयजुःकाम उपसरामीति ॥ ७२ ॥

सूत उवाच।

दोहा-सूर्य्यमंत्रयेषट्अहैं, रविसन्मुखहीनित्त। जपैजपावैजोकोऊ, सविधिसप्रीतिसुचित्त ॥
ताकोभानुप्रसन्नह्वै, करहिंकामनापूर। ताकेतनतेहोतहै, महापापसबदूर ॥

यहिविधियाज्ञवल्क्यमतिमानू। आराधनकीन्ह्योंजबभानू॥तबवाजीकोवपुरविधरिकै। आयेअतिप्रसन्नमनकरिकै ॥ याज्ञवल्क्यकहदीन्ह्योंवेदा। गुरुअपमानजनितहरिखेदा॥यजुर्वेदहैजाकोनामा। विसरचोतेहिनहिंएकोयामा॥७३॥ यजुर्वेदकहयाज्ञवल्क्यमुनि। कियोपंचदशशाखातिनपुनि ॥ अश्वकेशतेनिकस्योजोई। वाजसनीनामाहिभोसोई॥ कण्वऔरमाध्यंदिनआदिक। मुनिकियग्रहणधर्ममर्यादिक॥७४॥जैमिनिकेरसुमंतकुमारा।ताकेभोसुन्वानउदारा ॥ जैमिनिनिजसुतनातिहुकाहीं।दियपढायसंहितनतहाँहीं॥७५॥जैमिनिशिष्यसुकर्माकोई।सहसशाखकियसामहिकोई॥ शिष्यसुकर्माकेमतिधामा। हिरणनामपौष्यंजीनामा ॥ एकअवंतीपुरकोवासी। जानतरह्योब्रह्मसुखरासी ॥ ७६ ॥

दोहा-तीनसुकर्माशिष्यये, पढ्योसहस्रहुशाख। तासुशिष्यशतपंचभे, चलीजगततिनशाख ॥ ७७ ॥
आधेब्राह्मणकरतभे, उत्तरदिशानिवास। अरुआधेनिवसतभये, ब्राह्मणपूरुवआस ॥ ७८ ॥
लौगाक्षिअरुकुक्षिहू, मांगलिकुल्यकुसीद। शिष्यपांचपौष्यंजिके, करिकैगुरुहिप्रसीद ॥
सामवेदशाखानिको, तेद्विजपरमप्रवीन। विस्तारनहितविश्वमें, यकयकशतसबलीन ॥ ७९ ॥
हिरणनाभकेशिष्यकृत, सोनिजशिष्यनकाहिं। दीन्हीचौविससंहिता, अतिशैआनँदमाहिं ॥ ८० ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराज सिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे षष्ठस्तरंगः ॥ ६ ॥

सूत उवाच।

दोहा-फेरिअथर्वणवेदके, ज्ञातासुमतिसुमंत। तिनकोशिष्यकबन्धयक, ताकोगुनिमतिवंत ॥

ताहिअथर्वणदियोसंहिता। जोसबमुनिकोमनहिरंजिता ॥ भयेकबंधशिष्यपुनिदोई। वेददर्शअरुपथ्यहुजोई ॥
उभेविभागसंहिताकरिकै।दियोपढायतिनहिंमुदभरिकै ॥१॥ शिष्यवेददर्शहुकेचारी।तिनकोअसदियनामउचारी ॥
एकब्रह्मबलिअरुशौक्कायनि।अरुमोदोपऔरपिपलायनि॥भयेपथ्यकेशिष्यहितीना।कुमुदसुनकजाजलिपरवीना२॥
सुनकशिष्यबभ्रुसिंधवायन।यकयकपढेसंहिताचायन॥ सेंधवादिकेशिष्यउदारा। सावर्ण्यादिकभयेअपारा ॥ ३ ॥
औरअथर्ववेदआचारज। होतभयेहैंशौनकआरज ॥ कश्यपशांतनुछत्रहुकलपा। अंगिरसादिकऔरअनलपा ॥
येअथर्वआचारजजानो। अबपुरानआचार्यबखानो ॥ ४ ॥ त्रय्यारुणिकश्यपसावरणी।वैशंपायनजिनशुभकरणी ॥
दोहा—अक्रितव्रनहारीतये, पटपुरानआचार्य्य। व्यासशिष्यजेममपिता, तिनमुखसोंहेआर्य्य ॥
येपटमुनिहेंगुरूहमारे। इनतेपढ्योपुराणअपारे ॥ रामशिष्यअक्रितव्रनजोई। अरुकश्यपसावरणिहुसोई ॥५॥६॥
व्यासशिष्यममपितावदनते। यसबपढेपुराणसुमनते ॥ ७॥चारिअहैंद्विजमूलपुराना। अबपुराणलक्षणमतिमाना॥
वरणहुँवेदशास्त्रअनुसारा। जिमिऋषिगणसबकियोउचारा॥८॥सर्गविसर्गवृत्तिअरुरक्षा। अरुमन्वंतरशौनकदक्षा ॥
राजवंशवंशनकेकर्मा। अरुसंस्थाअरुहेतसुधर्मा ॥ औरअपाश्रयश्रीभगवाना। येदशलक्षणमहापुराना ॥ ९ ॥
कोइपंचलक्षनहिंभाखैं। महतअलपकोभेदहिराखैं ॥ १० ॥ विषमहोतजबहींगुणतीना। तातेमहत्तत्वपरवीना ॥
तातेहोतत्रिविधहंकारा। तातेइंद्रियआदिअपारा ॥ ११ ॥ यहिविधिउतपतिजोमैंगाई। सोईसर्गजानहुद्विजराई ॥
दोहा—औरचराचरकीसबै, उतपतिअहैविसर्ग। जिमिबीजहितेहोततरु, पुनिबीजहिकोवर्ग ॥ १२ ॥
द्विजजगमेंचरप्राणिनकाहीं। जीवनचरअचरहुजगमाँहीं ॥ जाहिजौनवरजितनहिंहोई। ताकीउचितवृत्तिहैसोई ॥
यहीवृत्तिलक्षणअनुमानो। अबरक्षालक्षणहुबखानो ॥ १३ ॥ हरिलैविविधभाँतिअवतारा। रक्षहिंधर्महरहिंभूभारा॥
रक्षालक्षणयहीविचारो। अबमन्वंतरकरहुँउचारो ॥ मनुमनुसुतसुरसुरपतिजेते। हरिअंशावतारऋषिकेते ॥ १४ ॥
शौनकयेपट्जामेंरहहीं। ताकोमन्वंतरकविकहहीं ॥ १५॥मनुसुतशुद्धवंशविस्तारा। यहीवंशमुनिकरहिंउचारा ॥
तेराजनकेचरितअपारा। वंशचरितसोइअहैउदारा ॥ १६ ॥ चारिप्रकारप्रलयजेगाई। सोईसंस्थाहैमुनिराई ॥१७॥
भोगकिहेजेपुण्यहुपापा। बंचततेईकरतसंतापा ॥ सोईफेरिजगतमहँल्यावै। लक्षणहेतसोईकहवावै ॥
नामरूपकरनाहिविभागा। जीवहिकोउभाषहिंबड़भागा ॥ १८ ॥
दोहा—जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिहू, जीवअवस्थातीन। तामेंहैपरमातमा, पैतामेंवहिलीन ॥
यहअन्वयव्यतिरेककहावै। यहगुनजियहरिआश्रैपावै ॥ सोईअपाश्रैलक्षणजानो। तामेंमैंदृष्टांतबखानो ॥ १९ ॥
जसमृत्तिकाकेरजगमाँहीं। होतरहतहैवस्तुसदाँहीं ॥ पैमृत्तिकारहतिहैसोई। बिचबिचबहुतअवस्थाहोई ॥
तिमिपरमातमआतममाहीं। शौनकयद्यपिरहतसदाहीं॥ होतअवस्थाआतमकेरी। नहिंपरमात्माकेरनिवेरी॥२०॥
योगअभ्यासहितेद्विजराई। मनकीतीनिहुवृत्तिविहाई ॥ विषयवासनाकोजियत्यागै। यदुपतियुगलजलजपदरागै॥
तबसंसारछूटितेहिजातो। पुनिताकोनहिंदुखदरशातो ॥२१॥ येदशलक्षणहैंपुराणके। कहहिंसुजाननिधानज्ञानके॥
शौनकअहेपुराणअठारा। तिनकेनामहिकरोंउचारा ॥ २२ ॥ ब्रह्मऔरहैपद्मपुराना। वैष्णवऔरहुशैवमहाना ॥
दोहा—शौनकलिंगपुराणहू, औरहुगरुडपुरान। नारदअगिनपुराणहू, अरुअस्कंदमहान ॥ २३ ॥
औरभविष्यपुराणहू, औरब्रह्मवैवर्त्त। मार्कंडेयपुराणहू, अरुवामनअघहर्त्त ॥
औवाराहपुराणहू, औरहुमहापुरान। कूर्मऔरब्रह्मांडहू, श्रीभागवतमहान ॥ २४ ॥
अष्टादशहिपुराणये, अरुवेदनकीशाख। शिष्यनशिष्यप्रशिष्यहू, कह्योसहितअभिलाख ॥
वेदनऔरपुराणको, वर्ण्योजौनविभाग। ताहिसुनतजनकोवढ़त, ब्रह्मतेजबड़भाग ॥ २५ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्री
रघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे सप्तमस्तरंगः ॥ ७ ॥

दोहा-सुनतसूतकेवचनअस, शौनकतहँसुखपाइ । बोलतभेमधुरीगिरा, अतिशयप्रीतिबढ़ाइ ॥

शौनक उवाच ।

साधुसूततुमबुद्धिविशाला । जियतरहोबुधवरबहुकाला ॥ भ्रमतजेजीवसिंधुसंसारे । तिनकेपारलगावनहारे ॥
यहशंकाहमरेमनआई । सूतताहितुमदेहुमिटाई ॥१॥ परमचिरायुपजनजगमाहीं । भाषहिंमुनिमृकुंडसुतकाहीं ॥
जामेंडूबिजातसंसारा । तौनप्रलयमहँलाग्योपारा ॥ २ ॥ सोयहभृगुकुलकोपरधाना । मार्कंडेयनाममतिमाना ॥
अैसेप्रलयभइकौनिहुनाहीं । जामेंलोकलीनह्वैजाहीं ॥ कैसेप्रलयसलिलमहँसोई । भ्रमतरह्योपैरतदुखमोई ॥ ३ ॥
किमिवटपत्रमाहँमुनिराई । सोवतलख्योबालसुखदाई ॥ ४ ॥ यहसंशयहैसूतहमारे । मेटहुतुमहौबुद्धिउदारे ॥
जानेतिहरेसकलपुराना । औरसबैजेयोगविधाना ॥ सुनतसूतशौनककेवैना । बोलेभरिउरमेंअतिचैना ॥ ५ ॥

सूत उवाच ।

दोहा-कीन्ह्योप्रश्नमहर्षियह, जगभ्रमनाशनहार । कृष्णकथाजहँहोतितहँ, कलिहोतोजरिछार ॥
मार्कंडेयमुनीशसुहावन । विप्रसंसकारहिलहिपावन ॥ पढ्योपितासोवेददृढुचारी । भयोमहातपधर्महिधारी ॥ ७ ॥
ब्रह्मचर्यव्रतगह्योअखंडल ।धारचोवलकलदंडकमंडल ॥ शीशजटाअरुशांतसरूपा।अरुमेखलाजनेउअनूपा ॥८॥
मृगचर्महुकमलाक्षहिमाला । कटिसूत्रहुअरुकुशाविशाला ॥ येसबनेमवृद्धिकेहेतू । धारणकीन्ह्योंमुनिमतिसेतू ॥
अग्निअर्कगुरुविप्रनमाहीं । हरिकोपूजतरह्योसदाहीं ॥ दोउसंध्यनमहँसोमतिमाना।धारतरह्योधीरहरिध्याना ॥९ ॥
सांझप्रातभिक्षाकोमाँगी।देतरह्योगुरुकोअनुरागी ॥ गुरुसन्मुखबहुवचननभाष्यौ । गुरुआज्ञाभोजनअभिलाष्यौ ॥
भोजनकरतरह्योयकबारा।जौनकहैगुरुतौनअहारा ॥१०॥ यहिविधिकरतताहितपभारी।पूजतहरिपदप्रीतिपसारी॥
दोहा-बीतेलाखनबरसतेहि, लियोमृत्युकोजीति । जोनमृत्युकेभीतिते, कोउनहिंहोतअभीति ॥ ११ ॥
ब्रह्माभृगुदक्षहुसनकादी।अरुशंकरविज्ञानमर्यादी॥अरुसुरनरपितरहुसबजेते।मुनितपलखिविस्मितभेतेते ॥ १२ ॥
यहिविधिब्रह्मचर्यव्रतधारी।मार्कंडेयकियोतपभारी ॥धरचोध्यानयदुपतिकोपूरो।कियकलेशहियतेसबदूरो ॥ १३ ॥
यहिविधिहरिपदमनहिलगाये।महायोगकरिअतिसुखछाये ॥ बीतेषटमन्वंतरताको । तबअतिभीतिभईमघवाको ॥
कियोविघ्नतपकरनविचारा।मान्योमुनिपदलेतहमारा॥१४॥गंधर्वनअप्सरनमदनको।अरुवसंतऋतुमलयपवनको ॥
तिनकोआशुहिनिकटबुलाई । ऐसोशासनदियोसुनाई ॥ मार्कंडेयकरततपभारी । विघ्नकरहुतुमतहाँसिधारी ॥
यहिविधितिनकोतहाँपठायो । फेरिलोभअरुमदहिबोलायो ॥ तिनहूँकोशासनदियसोई । मार्कंडेथदेहुतपखोई ॥
दोहा-लहेपाकशासनहिको, शासनतेसुखपाय ॥ १६ ॥ गेतपकेनाशनहितै, जहँआसनमुनिराय ॥
शैलहिमालयउत्तरपाषा।बैठ्योमुनिकरिहरिअभिलाषा ॥ नदीपुष्पभद्राजहँसोहै । चित्रानामशिलामनमोहै ॥१७॥
परमपुण्यआश्रमसुखदाई । प्रगटीतहँवसंतऋतुजाई ॥ रहेविलसिबनवेलिविताना । बोलहिंवरविहंगविधिनाना ॥
अतिमंजुलतहँतालतलाई।निर्मलसलिलसकलसुखदाई॥१८॥गुंजहिमत्तभँवरचहुँओरा।मानहुगानकरहिंसबठौरा ॥
कूजहिंकोकिलमत्तसुहावन।नाचहिंमोरमंजुमनभावन॥सारसहंसऔरचकवाका।सोहिरहेतिमिविविधबलाका॥१९॥
हिमनिर्झरलैनाशकपीरा । वहतमंदतहँमलयसमीरा ॥ सुमनसुमनकोपरसतसोई । तातेपरमसुगंधितहोई ॥
उपजावतमनसिजतेहिकाला।कोनहोततेहिकालबिहाल॥२०॥कीन्ह्योंपूरणशशीप्रकाशा।चमकनलगीतहाँदशआशा।
दोहा-पल्लवपल्लमेंतहाँ, गईचंद्रकरछाय । फूलिउठीसिगरीलता, संध्यासमयसुहाय ॥ २१ ॥ २२ ॥
तहँगंधर्वहुगावहिंरागे । बाजेविविधिबजावनलागे ॥ मनसिजकुसुमधनुषधरिधायो । मार्कंडेयसमीपहिआयो ॥
करिकैहोमतहाँमुनिराई । धारेरह्योध्यानयदुराई ॥ रह्योनैनमूँदेतेहिकाला । मानहुमूर्त्तिवंतशिखिज्वाला ॥
असमार्कंडेयहिमुनिकाहीं।वासवकिंकरलखेतहाँहीं ॥२३॥मुनिआगेशौनकमतिमाना । नाचनलगीअप्सरानाना ॥
गानकरनलागीतेहिठोरा । मच्योमृदंगमनोहरशोरा ॥ बाजेपणवऔरबहुवीना । सजेपंचशरकामप्रवीना ॥ २४ ॥
यहिविधितहँवसंतमनभावन।मुनिमानसकोलगेकँपावन॥लोभऔरमदमुनिमनजाई।मुनिमनलेनचहेअपनाई ॥२५॥

पुंजिकथलीअपसराजोई। आयगईसन्मुखमहँसोई॥ खेलनलागीगेंदतहाँहीं। डोलतकुचडोलतचहुघाहीं॥
दोहा–खसतकेशतेसुमनबहु, लचतलंकलचकील। करतिकटाक्षनसोंकटा, चढ़ीमत्तमदपील॥ २६॥
कंदुकहेतधरणिमहँधावत। चंचलअंचलपवनउड़ावत॥२७॥मोहितमुनिकहँमनसिजमानी। मारच्योपंचबाणसंधानी॥
भेनिष्फलमनसिजकेबाना। मुनिहिंनभयोतनकतनभाना॥ जैसेहरिविमुखीजनकेरे। होतविफलसंकलपघनेरे॥ २८॥
यहिविधिकरतविघ्नतेहिकाला। मुनितननिकसीपावकज्वाला॥ जरनलगेसिगरेतेहिठोरा। भागतभेकरिआरतशोरा॥
जिमिबालकसोवतअहिकाहीं। देतजगायभागिपुनिजाहीं२९॥यहिविधिवासवकिंकरआई। यदपिकियोतपविघ्नमहाई॥
नहिंविकारभोमुनिमनमाहीं। यहअचरजनहिंसंतनकाहीं॥३०॥ कामवसंतादिकसबजाई। इंद्रहिदियोहवालसुनाई॥
मदनहिलखिविनतेजसुरेशा। मनमेंमान्योअतिअंदेशा॥ सुनतमार्कंडेयप्रभाऊ। बारबारडरप्योसुरराऊ॥ ३१॥
दोहा–मुनिध्यायोयहिभाँतिजब, करितपचित्तलगाय। करनकृपाप्रगटेतहाँ, नरनारायणआय॥ ३२॥
कवित्त–लसतसरूपएककेरोनिशिभूपकैसो, एककोसरूपत्यौंअनूपघनश्यामहै।
वारिजविलोचनविमोचनअखिलताप, चारिबाहुराजतमृगाजिनललामहै॥
रघुराजकरमेंपवित्रहूँविचित्रराजै, यज्ञउपवीतभ्राजैअतिअभिरामहै।
दंडऔकमंडलअखंडलउदंडआभ, मोदिनिकेमंडलकोमंडलमुदामहै॥
ऊर्ध्वपुंड्रतिलकविराजतविशालभाल, तैसेसबकालउरपदुमाक्षमालहै।
करमेंरसालकुशसदाधर्मपालप्रभु, असुरकरालनकोकालसोकरालहै॥
तनछविभाललसेदामिनिकेजालहीसो, कंजपदलालमुनिमानसमरालहै।
करतउतालरघुराजकोनिहालदेव, वृंदपैदयालयेहीदेवकीकोलालहै॥ ३३॥ ३४॥
दोहा–नरनारायणकोनिरखि, मुनिलहिआनँदधाम। सादरधरणीमेंकियो, दंडसरिसपरणाम॥ ३५॥
गन्योजन्मआपनोसफल, गयोमनोरथपूरि। पुलकिततनलोचनसजल, भयोदुसहदुखदूरि॥
सक्योचितैनहिंप्रेमवश, पुनिउठिकैकरजोरि। जयहरिजयहरिकरतभो, बारहिबारनिहोरि॥ ३६॥
गदगदगरअनुरागअति, मनहुँलेतउरलाय। पुनिधीरजधरिनाथके, चरणधोयशिरनाय॥ ३७॥
बैठायोप्रभुदुहुनकहँ, सुंदरआसनमाहीं। सुमनमालधूपादिते, पूजनकियोतहाँहीं॥ ३८॥
जबबैठेप्रभुदोउसुखित, तबमुनिपदशिरनाय। लग्योकरनअस्तुतितहाँ, अनुरागहिउमँगाय॥

मार्कंडेय उवाच।

छंद हरिगीतिका–तुवप्रेरणातेप्राणचलतेब्रह्मशिवसुरआदिके। पुनिवचनइंद्रियमनहुचलतेआपुकृतमरयादके॥
जेरावरेपदभजतनितहींमित्रहोतिनकेसही। केहिभाँतितुम्हरोकरहुँवर्णनकहनकीकछुगतिनहीं॥ ४०॥
यहरूपयुगतिहरोसुहावनजगतमंगलहेतहै। दलितापत्रैबाँधतरहतहठिसदामुक्तिहिनेतहै॥
प्रभुधर्मकीमर्यादराखनलेहुबहुअवतारहै। यहजगतरचिपुनिपालिनिजमहँकरहुपुनिसंहारहै॥ ४१॥
जिमिविरचिमकरीजालतामेंआपहीबहुखेलती। पुनिऐंचिजालासकलसोईआपनेउरमेलती॥
हेभुवनरक्षकजगतिनेतायुगलपदअरविंदको। हैएकनिःश्वलवाससुखथलमोरमनहिमिलिंदको॥
तुवपदकमलजेभजतनिततिनकेनमनमलरहतहै। सोइपदलहनकेहेतजगयहरीतिमुनिगणगहतहै॥
कोउकरहिवंदनप्रणतकोउपूजनकरैकोउनित्तही। कोउसुनहिगाथारटहिनामहिध्यानधारहिचित्तही॥ ४२॥
तुवचरणपंकजछोड़िजियहिनदूसरोकल्याणहै। तुवचरणपंकजभजतजोसोजगअभीतअमानहै॥
द्विपरार्धआयुदायजाकोऐसहूकरतारजो। तुवभृकुटिभंगहिडरतसोकहवातयहसंसारजो॥
तुवशक्तिहैसंकलपगुरुकेगुरूतुवपदकंजको। तजितुच्छतनअभिमानभजतेहमहुँमुनिमनरंजको॥ ४३॥

तुवपदकमलजोभजतप्राणीताहिकछुदुर्लभनहीं । तुवपदकमलजेविमुखशठतिनकोनकछुसुलभैसही॥४४॥
उत्पत्तिपालनसंहरनहिततीनिमूरतिधारते । शुधसत्त्वमूरतितेसदाप्रभुमोक्षमोदपसारते ॥
प्रभुराजसीअरुतामसीभजिपुरुषमोहितहोतहै । येहितेसुमतिकेहियेसात्त्विकरूपसदहिउदोतहै ॥ ४५ ॥
तेहिकोपुरुषसबभक्तभापताहिभजिभैतजतहैं । संसारसागरकोउतरिवैकुंठपुरकोव्रजतहैं ॥ ४६ ॥
जयकृष्णजयभगवानभूमाविश्वगुरुजगदीशजै । परदेवनरनारायणौजयहंसकुशस्थलीशजै ॥
जयसत्यवाणीनिगमप्रभुजयअखिलधर्मअधारहै । नहिंगूढ़जानतजननकेहियेयदपिवासतुम्हारहै ॥ ४७ ॥
मायातिहारीकियेमोहितसकलयहसंसारहै । सोइजानतोजोतुवकृपातेकरतवेदविचारहै ॥ ४८ ॥
तिहरोसरूपसुभावसुंदरकरतवेदप्रकाशहै । तुम्हरोप्रभावविरंचिशंकरआदिकननहिंभासहै ॥
बहुशास्त्रतुमकोकहतबहुविधिपैनपावतपारहै । हेपुरुषबोधअगाधतुमहिप्रणामममबहुवारहै ॥ ४९ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्री
रघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे अष्टमस्तरंगः ॥ ८ ॥

सूत उवाच ।

दोहा-यहिविधिजबअस्तुतिकियो, मार्कंडेयसुजान । तबनारायणनरसहित, बोलेकृपानिधान ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच ।

हेब्रह्मर्षिवर्य्यमतिधामा । भयेसिद्धकरिभक्तिअकामा ॥ संयमतपस्वाध्यायतिहारो । सफलआजुह्वैगयोउदारो॥२॥
मनवांछितमाँगहुवरदाना । हमवरदानिनमाहँप्रधाना ॥ सुनिनरनारायणकीयहबानी । बोलेमार्कंडेयविज्ञानी ॥ ३॥

मार्कंडेय उवाच ।

देवदेवअच्युतगिरिधारी । सबदासनकेआरतिहारी ॥ यहीबहुतवरमैंप्रभुपायो । जोनिजसुंदररूपदेखायो ॥ ४ ॥
करिकैयोगशंभुकरतारा । मनहिलखतपदकमलतिहारा ॥ खड़ेतेप्रभुप्रत्यक्षममआगे । औरकाहदूसरवरमाँगे ॥५॥
पैइतनीमनआशहमारी । मायादेखनचहौंतिहारी ॥ ब्रह्मादिकजेहिमायामाहीं । जगमेंमोहितरहहिंसदाहीं ॥ ६ ॥

सूत उवाच ।

यहिविधिसुनिमुनिकीवरवाणी । हँसितथास्तुकहिशारंगपाणी ॥

दोहा-लहिमुनितेपूजनसविधि, नरनारायणदोय । बदरीवनकहँगवनकिय, महामोदमनमोय ॥ ७ ॥

सुमिरतहरिकेवचनमुनीशा । ध्यानकरतउरमहँजगदीशा ॥ आश्रममाहँवस्योमुनिराई । मायादरशनआशलगाई॥
इंदुअर्कअपअवनीपाहीं । अनिलअनलअकाशउरमाँहीं॥८॥इनमेंहरिकहँदेखनलाग्यो।कियमानसपूजनअनुराग्यो॥
प्रेमविवशभूलीकहुँपूजा । हरितजिदेखिपरचोनहिंदूजा ॥ ९ ॥ नदीपुष्पभद्राकेतीरा । एकसमयबैठ्योमतिधीरा॥
संध्याकरतरह्योतेहिकाला।चल्योपवनतहँमहाकराला॥१०॥उदितभयेतहँद्वादशभानू।जारेहुजगसबउपजिकृशानू॥
पुनिचहुँदिशिकरिशोरप्रचंडा । छायेनभघनघुमडिअखंडा ॥ मेघशोरअरुपवनहुशोरा । होतभयोचहुँओरकठोरा॥
परनलगेतहँवज्रअघाता।होनलग्योपुनिजलहुनिपाता ॥बुंदवितुंडशुंडसमगिरहीं।घोरघोरचहुँओरहिझरहीं ॥ ११ ॥
पुनिचहुँदिशितेसिंधुअपारा । कीन्ह्योंरेलाछोड़िकरारा ॥

दोहा-चोरचौसिगरीधरणिको, मारुतबढ्योप्रचंड । उठनलगीचहुँओरते, तुंगतरंगअखंड ॥

वंक्रनक्रचक्रहिचहुँघाहीं।विचरनलगेभीतिदरशाहीं ॥१२॥बूडिगयोजबसबजगजलमें । पीड़ितभोबहुगाजउपलमें ॥
बुडतअपनेहुकाहँनिहारी । तबमुनिमनसंशयभैभारी॥पवनप्रसंगपायद्विजपावन।उठैंचहूँकितभवरभयावन॥१३ ॥

बारबारसागरअररार्इ। बरपहिंजलधरधारमहाई॥ सातद्वीपह्वैगयेसमाना। नेकहुथलनहिंकहींदेखाना॥ १४॥
महिअकाशस्वर्गहुअरुतारा।बूड़िगयेदिशिविदिशअपारा॥मार्कंडेयएकरहिगयऊ।प्रलयसलिलमहँवहतसोभयऊ॥
खुलीजटातनमेंसुधिनाहीं।वहतभ्रमतजलमेंचहुँवाहीं॥१५॥नैननदेखिपरतकछुनाहीं।क्षुधिततृषितभोअतिहितहाँहीं
कोउवड़मीनलीलिलेहिलेहीं।मलमारगपुनितेहितजिदेहीं॥ लगततरंगलहतदुखभारी।कबहुँडरतबड़मकरनिहारी॥
दोहा–कबहूँतेहिमारुतप्रबल, दूरिहिदेतउड़ाय। नहिंअकाशनहिंमहिदिशा, ताकोपरतदेखाय॥
कबहूँमिलतमहाअँधियारा। ताहूकोपावतनहिंपारा॥ १६॥ परिकैकहँभौरनमुनिराई। बूड़िगँभीरतरिमहँजाई॥
लहिजलजोरकहूँउतरात।कहुँपुनिलगततरंगनवाता॥ धरतताहिकोउदंतनमीना। कोउपुनिछीनतताहिबलीना॥
लीलिलेतजबकोउतेहिकाहीं।तेहिकोउकहुँमेलतउरमाहीं।यहिविधिशोकलहतकोहुकाला।कहूँमोहपुनिलहतविशाला
कहुँदुखपावतहैमुनिराई।कहूँकहूँसुखलहतमहाई॥कहूँमरतकहुँजियतमुनीसा।कहुँभयकहुँरोगहुविसवीसा॥ १८॥
यहिविधिसहसनलाखनवर्षा। बीतिगयेताकोविनहर्षा॥ प्रलयपयोनिधिमहँमुनिराई। भ्रमतरह्योकहुँथाहनपाई॥
जोदेखनमाँग्योचितलाई।तेहिमायामहँगयोभुलाई॥ २०॥ बहतवहतऊँचीमहिमाहीं।निरख्योलघुवटवृक्षतहाँहीं॥
दोहा–अतिकोमलपल्लवअमल, फलभलसकलसुहाय। ताकेउत्तरशाखमें, मुनिकोपरचोदेखाय॥ २०॥
इककोमलदलपरइकबालक।सोवतहैनिजदुतितमघालक॥अतिसुंदरतनमरकतश्यामा।पंकजसरिसवदनअभिरामा॥
कम्बुकंठउन्नतअसकंधू।सुभगभ्रुकुटिनासाछविसिंधू।२१।कुंचितकुंतलकोमलकारे।लहिमुखपवनहलतसुकुमारे २१
कानलहरदाड़िमआकारा। शंखसरिसभीतरसुकुमारा॥ विद्रुमसरिसअधरयुगसोहैं।हाँसछटानेशुकअरुणोहैं॥२३॥
वारिजकोशविलोचनकोरे।चितवतलेतमनहुँचितचोरे।चलदलदलदुतिउदरसुअमली।श्वासलेतकाँपतशुभत्रिवली॥
नाभिशोभअतिशयगंभीरा।चारुअंगअंगुलिमतिधीरा॥२४॥दोउकरसोंगहिदक्षिणपाऊ।पियतअंगूठाबालस्वभाऊ॥
असबालकजबदेखतभयऊ।मुनिअतिशयविस्मितह्वैगयऊ॥दरशनकरतभयोश्रमदूरी।विकस्योहियपंकजसुखपूरी॥
दोहा–निमिषखोलिदेखनलग्यो, पुलकावलिसबअंग। लग्यौविचारनचित्तमें, कोबालकविनसंग॥
पूछनहेतगयोशिशुपासा। लागीतबबालककीश्वासा॥श्वासहिलगतगयोउरमाहीं।जिमिमुखमशकश्वासवशजाहीं॥
बालकउदरमाहँमुनिराई। निरखतभयोजगतसमुदाई॥ जैसेप्रलयपूर्वजगदेख्यो। बालउदरतैसहीपरेख्यो॥ २७॥
नभधरणीसागरशशितारा। द्वीपखंडदिशिशैलअपारा॥ बनसरितापुरआकरग्रामा। ब्रजआश्रमअरुदेशललामा॥
औरसुरासुरचारिहुवर्णा। आश्रमधर्मवेदजसवर्णा॥ २८॥ पंचभूतअरुयुगअरुकाला। औरहुसबजगकरजंजाला॥
यहलखिकैअतिमोहितभयऊ।तेहिछिमशैलपहुँचिपुनिगयऊ॥नदीपुहुपभद्राकहँदेख्यो।अपनोआश्रमसकलपरेख्यो॥
निजआश्रमवासिनऋषिकाँहीं। देखतभोमुनिनाथतहाँहीं॥तहाँवसनकोकियोविचारा।तबछोड्योपुनिश्वासकुमारा॥
छोड़तश्वासबाहिरेआयो। प्रलयसलिलमहँपुनिउतरायो॥ २९॥ ३०॥
दोहा–सोइवटसोइवटकेदलहि, सोइबालककहँदीख। बालकहुँविहँसतलख्यो, पैनादियोकछुसीख॥ ३१॥
मार्कंडेयमुनीशतहँ, बालककाहँविलोकि। ध्यानधारिमिलबेहितै, चलेनिकटअतिशोकि॥ ३२॥
तबह्वैगोतुरतैतहाँ, बालकअंतरधान। हरिविमुखिनकेहोतजिमि, व्यर्थमनोर्थमहान॥ ३३॥
मिव्योवटहुअरुमिटतभो, रह्योप्रलयजलजोय। वैठ्योमुनिप्रथमहिसरिस, निजआश्रममहँसोय॥ ३४॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारि
श्रीरघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे नवमस्तरंगः॥ ९॥

दोहा–मार्कंडेयमुनीशसों, हरिमायाकोदेखि। अतिविस्मितहरिशरणमें, जातभयोमुदलेखि॥
हरिपदकमलहियेनिजधारी। बोलतभोपुनिवचनपुकारी॥ १॥

मार्कंडेय उवाच ।

माधवहरेमुकुंदमुरारी । निजदासनकेभवभयहारी ॥ हमशरणागतचरणतिहारे । हौअधारप्रभुतुमहिंहमारे ॥ तुवमायामोहितसुरसर्वा । तुमहिंनजानतकरिअतिगर्वा ॥ २ ॥

सूत उवाच ।

हरिअस्तुतिहिकरतयहिभाँती । बस्योतहाँबितवतिदिनराती ॥ एकसमयतहँवृषभसँवारा । करतसैरसिगरेसंसारा ॥ गौरीसहितशंभुभगवाना । संगमाहिंगणसोहतनाना ॥ ३ ॥ मार्कंडेयहिआश्रमह्वैके । निकसतभेमुनिपतिकहँज्वैकै ॥ शंकरतौनकह्योकछुबैना । उमादयाकरिभरिजलनैना ॥कहीमहेशहिअतिमृदुवानी । देखहुप्रभुयहमुनिविज्ञानी ॥४॥ अचलबैठहैमौनहिधारी । विगतवातजिमिवारिधिवारी ॥ करतकठिनतपयहत्रिपुरारी । तातेयहिढिगमाहिंसिधारी ॥ मुनिकोजौनमनोरथहोई । पूरणकरहुनाथतुमसोई ॥

दोहा–दातासिगरीसिद्धिके, आपहिअहौमहेश । तुमजाकेढिगह्वैकढौ, तेहिकिमिरहैकलेश ॥

कबित्त–विधिसुतताकोसुतताकोसुतताकोसुत, ताकोसुतताकोसुतताकोगुरुअवदात ।
ताकोपितुताकोपितुताकोपितुताकोपितु, ताकोबंधुताकीदिशाताकोनाथताकोतात ॥
ताकोरिपुताकोनाथताकोसुतताकीसुता, ताकोपतिताकोपितुताकोपितुलोकत्रात ।
ताकोपदजलजाकेशिरमेंसदाहीरहै, ताकीनारिजबअसहुलसिकैबोलीबात ॥
चातककोजीवनजोताकोपतिताकोमित्र, ताकोधनताकोरसताकोजोकरतपान ।
ताकोरिपुताकोवर्णजातेहोतताकोजौन, पूरोसहकारीताकेउरकोनिवासीजान ॥
ताकोवासताकोरिपुताकोरिपुताकीनिधि, ताकोरिपुताकोपितुताकोपितुअनुमान ।
ताकोजौनधरेतामेंसोवैजौनताकीनारि, ताकोबंधुजाकेशीशकह्योबैनमुसुकान ॥ ५ ॥

शंकर उवाच ।

कंजजातताकोजातताकोजातताकोजात, ताकोजातताकोजातताकोजातताकोजात ।
ताकोगुरुताकोगुरुताकोगुरुताकोगुरु, ताकोगुरुताकोगुरुताकोगुरुअवदात ॥
रघुराजसोईनामजाकोअहैताकोभ्रात, ताकोभ्रातताकोभ्रातताकोरिपुजोअघात ।
ताकोवासताहीमेंजोकरतसदानिवास, यामुनिलगायेमनताकेपदजलजात ॥

दोहा–याकेमनमेंकौनिहू, अहैउमानहिंआस । कृष्णप्रेममेंमगनयह, हैअनन्यहरिदास ॥ ६ ॥

पैहमयाकेनिकटसिधारी । करिहैंसंभाषणहेप्यारी ॥ साधुसमागमसोंजगमाहीं । उमालाभदूसरकछुनाहीं ॥ ७ ॥

सूत उवाच ।

असकहितहँशंकरभगवाना।मुनिकेनिकटहिकियोपयाना।।सबविद्यासबदेहिनस्वामी।हैंजगकेप्रभुअंतरयामी ॥ ८ ॥ उमासहितशंकरआगमनू । जान्योनहिंमुनिप्रेमहिमगनू।।रहीनसुधिकछुतासुशरीरा।अचलबैठध्यावतयदुवीरा।।९॥ मुनिमनकीगतिजानिमहेशा।करियोगहिउरकियोप्रवेशा ॥ देखिपरेमुनिध्यानहिमाहीं।तडितपीतशिरजटासोहाहीं ॥ तीननैनसुंदरदशबाहू । उन्नततनललाटनिशिनाहू ॥ ११ ॥ अंगदुकूलव्याघ्रकोचर्मा । धनुशरशूलखड्गअरुचर्मा ॥ डमरूअरुरुद्राक्षहिमाला । धारणकियेकुठारकपाला ॥ उदितप्रभाकरसरिसकाशा । नाशतअंधकारदशआशा ॥

दोहा–शंभुरूपअसध्यानमें, देखिपरयोजबताहि । तबअतिशयविस्मितभयो, मुनिअपनेमनमाहि ॥

मैंतोधरयोंचतुर्भुजध्याना।यादशभुजकोआनदेखाना१२-१३असविचारिदियनैनउघारी।देख्योउमासहितत्रिपुरारी। संगगणनिरखितहँशंकरकाहीं।त्रिभुवनकोगुरुगुनिमनमाहीं।।शिरभरिकीन्ह्योशिवहिंप्रणामा।पायोमुनिवरआनँदधामा गणनसहिततहँगौरिगिरीशै । पाद्यअर्घ्यदियनावतशीशै ॥ दैचंदनमालापहिराई । धूपदीपनैवेद्यदिखाई ॥ १५ ॥

बोल्योफेरिजोरियुगहाथा। कहाकरनलायकमेंनाथा॥ तुमतोईप्रभुपूरणकामा।तुमसोंपावतजगतअरामा॥१६॥
जयशंकरशिवशांतसरूपा।त्रिगुणईशनाशकभवकूपा॥संतनकेतुमहोसुखदाता।सततअसंतनकारकघाता॥ १७॥

सूत उवाच।

यहिविधिअस्तुतिसुनित्रिपुरारी। ह्वैप्रसन्नहँसिगिराउचारी॥ १८॥

श्रीभगवानुवाच।

माँगहुमुनिवरतुमवरदाना। वरदायकहमविधिभगवाना॥

दोहा—हमरोतीनहुदेवको, दरशनअहैअमोघ। तीनिहुँदेवउपासना, होतिकबहुँनहिंमोघ॥ १९॥

विप्रसाधुजेशांतउदारा। करहिंसदादीननउपकारा॥ समदर्शीजगसंगविहीना। विनावैरहरिभक्तप्रवीना॥ २०॥
ऐसेविप्रनकहँदिगपाला।करिप्रणामपूजहिंसवकाला॥हमअरुविधिप्रभुकृष्णसदाहीं।वंदनकरहिंसुविप्रनकाहीं॥२१॥
मेरोअरुविधिअंतरयामी। ऐसोजोयदुपतिबहुनामी॥ तामेंनेकुभेदनहिंराखैं। कोहुसोंनेहनकोहुपैभाखैं॥
आपसरिसजेविप्रप्रवीना।वंदनकरहिंतिनहिंहमतीना॥२२॥ जलतीरथप्रतिमामयदेवा। करहिंपवित्रकियेबहुसेवा॥
तुमसमानजेकृष्णसनेही। तेदरशतहिपूतकरिदेही॥ २३॥ हमविप्रनकोकरहिंप्रणामा। ब्राह्मणवेदरूपमतिधामा॥
वेदत्रयीजोरूपहमारा। ताकोधारहिंविप्रउदारा॥ २४॥ संतनकेपददरशकियेते। संतकथामहँचित्तदियेते॥
महापापतनमेंनहिंरहहीं। संभाषणतेपुनिकाकहहीं॥ २५॥

सूत उवाच।

दोहा—शंकरमुखशशितेयदपि, वचनसुधाकियपान। पैमुनिमार्कंडेयको, नेकुनचित्तअवान॥
हरिमायामेंभ्रमतबहु, दीन्ह्योकालविताय। अमीवचनसुनिशंभुके, सोदुखगयोबिलाय॥

फेरिऋषीशयुगलकरजोरी। कह्योशंभुसोंबहुतनिहोरी॥ २६॥ २७॥

मार्कण्डेय उवाच।

ईश्वरकीयहअद्भुतलीला। कोउनहिंजानतहेगलनीला॥वंदततुमनिजदासनकाहीं।कोदयालुतुमसमजगमाहीं॥२८॥
धर्मसिखावनहेतमहेशा। करतकर्मतुमरहौहमेशा॥ धर्मात्माकोसदासराहौ। धर्मकरावनकरहुउछाहौ॥
तुमहींवक्ताधर्मनिकेरे। तुमतेजनसुखलहतघनेरे॥ सबकोकरहुँप्रणाममहेशा। घटतनतुवप्रभावलवलेशा॥ २९॥
करतइंद्रजालीजिमिमाया।पैनघटतिताकीकछुकाया३०निजमनतेयहविश्वविरचिकै।तामेंप्रविशिबहुतविधिनचिकै।
पुनिअपनेमहँकरहुसँहारा।गुणकृतजगतुममेंनविकारा॥३१॥निर्गुणसगुणशंभुभगवाना।मायारहितईशनहिंआना॥
परब्रह्ममूरतित्रिपुरारी। तुमकोप्रणतिअनेकहमारी॥ ३२॥

दोहा—माँगहुँकावरदानमैं, तुमसोंचंदललाम। तुवदरशनतेहोतजन, सबविधिपूरणकाम॥ ३३॥

पैप्रभुपायतुम्हेंअसनाथा। माँगहुँयहबरजोरेहाथा॥ यदुपतिपदमहँप्रीतिहमारी। रहैअचलप्रभुटरैनटारी॥
तैसहिसवहरिदासनमाहीं। होयप्रीतितैसहितुवपाहीं॥ ३४॥

सूत उवाच।

यहिविधिमुनिमाँग्योवरदाना।लह्योशंभुतवमोदमहाना॥कह्योमहेशहिउमातहाँहीं।मनवांछितदीजेमुनिकाहीं॥३५॥
मुनिसोंबोलेवचनमहेशा।कृष्णभक्तितोहिंहोयहमेशा।कल्पप्रयंतसुयशशुभछैहो।तवभरिअजरअमरमुनिह्वैहो॥३६॥
ह्वैहैतुमकोज्ञानत्रिकाला। अरुविरागविज्ञानविशाला॥ ब्रह्मतेजह्वैहैअतिआरज। अरुह्वैहौपुरानआचारज॥ ३७॥

सूत उवाच।

यहिविधिदैमुनिकोवरदाना। करतउमासोंतासुवखाना॥गणनसहितकैलासविहारी।मुनिआश्रमतेचलेसिधारी॥३८॥
मार्कंडेयमुनीशसुजाना। भयेपरमभागवतप्रधाना॥

दोहा-एकांतीहरिभक्तहै, ध्यावतहरिपदकाँहिं । अवलौंविचरतजगतमें, मगनप्रेमरसमाहिं ॥ ३९ ॥
मार्कंडेयसुजानको, मैंकियचरितबखान । जेहिविधिनिरख्योकृष्णको, मायाविभवमहान ॥
हरिमायाकोआदिनाहिं, यहअनादिसंसार । जोवरणतआधुनिकयहि, सोमतिमंदगँवार ॥ ४१ ॥
हरिप्रभावतेयुक्तयह, मार्कंडेयचरित्र । सुनैसुनावैजोकोऊ, तेदोउहोतपवित्र ॥ ४२ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्री
रघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे दशमस्तरंगः ॥ १० ॥

दोहा-सुनतसूतमुखतेसकल, मार्कंडेयचरित्र । पुनिपूछ्योअतिशयमुदित, शौनकपरमपवित्र ॥

शौनक उवाच ।

हेभागवतसूतबहुज्ञाता । तुमजानहुतंत्रनकीबाता ॥ हमतुमतेयहप्रश्नकरतहैं । जेहिसुनिजनमनमोदभरतहैं ॥
पंचरात्रकेजाननवारे । जेश्रीपतिकेपूजनहारे ॥ १ ॥ तेजनकौनभाँतिप्रभुअंगा । ध्यावतहैंरँगिप्रेमहिरंगा ॥
प्रभुआयुधकेहिभाँतिविचारैं । पार्षदवाहनकौननिहारैं ॥ भूषणअहैंकौनप्रभुकेरे । जाननयहीमनोरथमेरे ॥ २ ॥
सोवरणहुतुमसूतसुजाना । जैसीपूजनविधिभगवाना ॥ जेहिविधितेपूजैंहरिकाहीं । मर्त्यअमर्त्यहोतजगमाहीं ॥
सुनिशौनककीमंजुलवानी । बोलेसूतमहामुदमानी ॥ ३ ॥

सूत उवाच ।

करिकैअपनेगुरुनप्रणामा । हरिविभूतिभाषौंअभिरामा ॥ वेदतंत्रमेंजोसबगाई । नारदादिब्रह्मादिसुनाई ॥ ४ ॥
मायामहत्तत्त्वआदिकनव । पंचभूतऔरोइंद्रियसब ॥ शौनकयहीविराटकहावै । श्रीपतिअंगयहीश्रुतिगावै ॥
मायामहत्तत्त्वआदिकनव । पंचभूतऔरोइंद्रियसब ॥ शौनकयहीविराटकहावै । श्रीपतिअंगयहीश्रुतिगावै ॥
दोहा-त्रिभुवनयामेंजानियो, कोटिनजीवनिवास । पुरुषरूपयहिकोउकहत, सुनियेऔरप्रकास ॥ ५ ॥
धरणीचरणकृष्णकोजानो । शौनकस्वर्गलोकशिरमानो ॥ अहैनाभिनभयदुपतिकेरी । अहैदिवाकरआँखिउजेरी ॥
कर्णदिशाअरुमारुतनासा । मेढ्रप्रजापतिवेदप्रकासा ॥ मृत्युजानिप्रभुअंगअपाना । लोकपालहरिभुजामहाना ॥६॥
मनुचंद्रमाभृकुटिमनुराजू । प्रभुकोऊपरवोठहैलाजू ॥ अधकोअधरलोभद्विजराई । प्रभुदंतनकोजानुजोन्हाई ॥७॥
प्रभुकोमंदहँसनिभ्रमभारी । लेहुवृक्षप्रभुरोमविचारी ॥८॥ मेघजानुकेशवकेकेशा । जसनरतनतसहैप्रभुवेशा ॥९॥
कौस्तुभमणिसबजीवनिमानो । जीवज्ञानश्रीवत्सहिजानो॥१०॥मायाहैप्रभुकीवनमाला।वेदअहैप्रभुवसनविशाला॥
अहैप्रणवप्रभुकेरजनेऊ । सांख्ययोगकुंडलगुनिलेऊ॥११॥ब्रह्मलोकप्रभुकेरकिरीटा।मूलप्रकृतिआसननैतिरीटा॥१२॥
दोहा-शुद्धसतोगुणजानिये, पदुमासनसुखठेर । ओजसहोबलसहितहै, प्राणगदाप्रभुकेर ॥ १३ ॥
अहैशंखजलयदुपतिकेरो । अहैसुदर्शनतेजघनेरो ॥ १४ ॥ प्रभुकृपाणजानहुतुमज्ञाना । प्रभुकीढालमानुअज्ञान॥
अहैकालकोदंडउदंडा । कर्मअहैप्रभुतूणअखंडा ॥ १५ ॥ इंद्रियजानहुप्रभुकेबाना । मनकोप्रभुरथजानुसुजाना ॥
शब्दस्पर्शरूपरसगंधू । प्रभुरथसाजुजानुमतिसिंधू ॥ अभैहस्तजनकशुभकरनी। हरिगृहसुरपूजासुखभरनी॥१६॥
प्रभुकोसंसकारजनदिक्षा । पापनाशप्रभुपूजनइक्षा ॥ १७ ॥ षटऐश्वर्यकेलिअरविंदा । अहैधर्मचामरचयचंदा ॥
अहैसुयशप्रभुविजनअकुंठा । प्रभुकोछत्रजानुवैकुंठा॥१८॥विप्रमुख्यमंदिरप्रभुकेरो । वेदगरुडहैशास्त्रनिबेरो॥१९॥
लक्ष्मीजानहुप्रभुकीनारी । विष्वक्सेनशास्त्रबलभारी२०द्वारपालआठौनंदादिका अणिमादिकहरिगुणअहलादिक ॥
लक्ष्मीजानहुप्रभुकीनारी । विष्वक्सेनशास्त्रबलभारी । अणिमादिकहरिगुणअहलादिक ॥ शुद्ध ॥ २१ ॥
दोहा-वासुदेवसंकर्षणहु, प्रद्युम्नहुअनिरुद्ध । कृष्णचंद्रकीजानिये, चारिमूर्तियेशुद्ध ॥ २१ ॥
जाग्रतस्वप्नसुषुप्तिहू, औरतुरीयाजोय । इनअभिमानिनकोअधिप, चारिमूर्त्तिप्रभुसोय ॥ २२ ॥
भूषणआयुधअंगउप, अंगसहितजनजेय । हरिकोध्यावततिनाहिंहरि, चारिपदारथदेय ॥ २३ ॥

कवित्तरूपघनाक्षरी–शौनकसुनहुयदुनाथब्रह्मकारणहै, आपनेप्रकाशहीतेपरमप्रकाशमान ।
महिमामहानमहिमाहिजाकीपूरणहै, विधिवपुधारिविश्वरचतअहैअमान ॥
पालतरमेशरूपघालतमहेशरूप, मूढ़नकोगूढहैअगूढजेहैभक्तिमान ।
ज्ञातासबजगतकोत्राताविजदासनको, दातारघुराजैनिजकंजपदप्रीतिदान ॥ २४ ॥

घनाक्षरी–मूढ़नमहीपनकोमदकोमथैयाभूको, भारउतरैयाधर्मधुराकोधरैयाहै ॥
ब्रजवनितानिसंगरासकोरचैयावृंदावनको, बसैयाद्रुतदीनपैद्रवैयाहै ॥
जाकोनामपापिनकोपापकोहरैयाप्रभुपारथको, सारथिह्वैभारथजितैयाहै ॥
यदुकुलउदधिकोअमलजोन्हैयासोकन्हैया, रघुराजदीनकृपाकोकरैयाहै ॥ २५ ॥

दोहा–महापुरुपलक्षणयही, जोनितपढ़ैप्रभात । अंतर्यामीकृष्णको, साजोनैअवदात ॥

कमल १ ब्रह्मा २ मरीचि ३ कश्यप ४ सूर्य्य ५ मनु ६ इक्ष्वाकु ७
कवित्त–शेपशाईनाभिजात, ताकोजात ताकोजात । ताकोजात ताकोजात, ताकोजात ताकोजात ॥
कुक्षि ८ विकुक्षि ९ वाण १० अनरण्य ११ पृथु १२ त्रिशंकु १३ धुंधुमार १४ युवनाश्व १५
ताकोजात ताकोजात, ताकोजात ताकोजात । ताकोजात ताकोजात, ताकोजात ताकोजात ॥
मांधाता १६ सुसंधि १७ ध्रुवसंधि १८ भरत १९ असित २० सगर २१ असमंजस २२ अंशुमान २३
ताकोजात ताकोजात, ताकोजात ताकोजात । ताकोजात ताकोजात, ताकोजात ताकोजात ॥
दिलीप २४ भगीरथ २५ ककुत्स्थ २६ रघु २७
ताकोजात ताकोजात, ताकोजात ताकोजात । सोईरघुवंशअवतंस, रघुराजत्रात ॥ २६ ॥

सुनिकैसूतवचनसुखमानी । बोलेशौनकपुनिअसबानी ॥

शौनक उवाच ।

भूपपरीक्षितविनयसुनाई । पूछ्योजोअतिशयचितचाई॥तबशुकदेवपरममतिवाना॥मासमासकेभानुबखाना॥२७॥
सूतदेहुसोमोहिंसुनाई । भानुनामकर्मनिसमुदाई ॥ सूरजकेआतमयदुनाथा । ह्वैहौंतिनयशसुनतसनाथा ॥
सुनतसूतशौनककेबैना । बोलेअतिशयभरिउरचैना ॥ २८ ॥

सूत उवाच ।

सूतकेरसबक्रियाप्रकासी । शौनकजानहुभानुविभासी॥हरिमायाविरचितसंसारा। जानहुयाहिअनादिउदारा॥२९॥
सूरजकोहरिमूरतिजानो । जगकेकर्त्तातेहिअनुमानो ॥ वेदक्रियाकेतेहैंमूला । बहुविधिभाषहिंबुद्धिअतूला॥ ३० ॥
कालक्रियाकारणअरुकारज॥आगमकर्तादेशहुआरज॥द्रव्यऔरफलयेनवभाँती॥हरिकहँवदहिंविप्रअघघाती ॥३१॥

दोहा–चैत्रादिकजेद्वादशौ, मासअहैंमतिवान । तिनमेंद्वादशरूपधरि, भ्रमैभानुभगवान ॥

प्रथमचैततेकरहुँबखाना॥ताकोसुनिशौनकमतिवाना॥३२॥चैतमासमहँदिनकरधाता॥कृतस्थलीअप्सराविख्याता ॥
राक्षसहैंतहँहेतीनामा । नागवासुकीहैअभिरामा ॥ रथकृतनामयक्षहैसंगा । हैपुलस्त्यऋषिसाथअभंगा ॥
तहँतुंबुरुगंधर्वसुअंगा । चितवैचैतमासरविसंगा ॥ ३३ ॥ अबवैशाखमासकेसुनिये । नामअर्यमारवितहँगुनिये ॥
ऋषिहैंपुलहअथौजायक्षा । राक्षसहैंप्रहेतिअतिदक्षा ॥ पुंजिकथलीअप्सराजानो । गंधर्वनारदनामबखानो ॥
कच्छनीरनामकतहँनागा । बितवहिंवैशाखहिवरभागा॥३४॥जेठमासमेंमित्रदिवाकर । जानहुतहाँअत्रिहैंमुनिवर ॥
पौरुपराक्षसतक्षकनागा । यक्षरथस्वनतहँबड़भागा ॥ तहँमेनकाअप्सरानामा । अरुहाहागंधर्वललामा ॥
एबितवहिंसबजेठहिमासा । अबसुनियेआपाढ़सहुलासा ॥ ३५ ॥

दोहा–वरुणनामकेभानुहैं, हैंवशिष्ठमुनिदक्ष । रंभाहैतहँअप्सरा, अरुसहजन्यहुयक्ष ॥

हहूहूनामकंगधर्वा । शुक्रनागतहँअहैअखर्वा ॥ राक्षसअहैचित्रस्वननामा । येबितवहिंआपाढ़मतिधामा ॥ ३६ ॥
सावनमासइंद्ररविनामा । विश्वावसुगंधर्वललामा ॥ श्रोतानामयक्षबड़भागा । एलापत्रनामकोनागा ॥

तहँजानहुअंगिराऋषीशा । प्रमलोचाअप्सरामुनीशा ॥ वर्यनामराक्षसबलवाना । बितवहिंसावनमासमहाना॥३७॥
भादौंविवस्वानरविनामा । उग्रसेनगंधर्वललामा ॥ व्याघ्रनामराक्षसतहँजानो । नामअसारनयक्षवखानो ॥
अप्सरअनुलोचाहैभृगुमुनि । शंखपालतहुँनागलेहुगुनि॥येसबरविकेसंगहिमाहीं । बितवहिंभादौंमासहिकाहीं॥३८॥
माघमासमहँसुनियेंमुनिवर । पूषानामजानियेंदिनकर ॥ तहँहैप्रबलधनंजयनागा । हैऋषीशगौतमबडभागा ॥
अहैतहाँगंधर्वसुखेना । वातनामराक्षसजितसेना ॥ हैअप्सराघृताचीनामा । सुरुचिनामकोयक्षललामा ॥
येसबरविकेसंगहिमाहीं । बितवहिंमाघहिमाससदाहीं ॥ ३९ ॥ फागुनमासमाहमुनिराई । हैपर्जन्यनामदिनराई ॥
वर्चाराक्षसहैक्रुतयक्षा । सेनजिताअप्सराप्रत्यक्षा ॥ विश्वनामगंधर्वसुजाना । अहिऐरावतअहैमहाना ॥
भरद्वाजहैंतहँऋषिराई । बितवहिंफागुनमाससदाई ॥ ४० ॥ मार्गशीर्षमहँहैमतिमानू । अंशुमाननामकहैभानू ॥
कश्यपऋषितहँयक्षहैरक्षा । महाशंखहैनागप्रत्यक्षा ॥ हैऋतुसेनतहाँगंधर्वा । राक्षसविद्युतशत्रुअखर्वा ॥
हैअप्सराउर्वशीनामा । बितवहिंअगहनमासललामा ॥ ४१ ॥ पूसमासमहँहैभगसूर्या । राक्षसनामअहैअस्फूर्या ॥
अहैअरिष्टनेमगंधर्वा । ऊरननामयक्षगुणगर्वा ॥ आयुषनामकअहैमुनीशा । कर्कोटकतहँअहैअहीशा ॥

दोहा-पूर्वचितीतहँअप्सरा, येसबरविकेसंग । पूसमासबितवहिंतहाँ, पावहिंमोदअभंग ॥ ४२ ॥

आश्विनमासमाहँद्विजराई । त्वष्टानामअहैदिनराई ॥ अग्निसरिसजमदग्निमुनीशा । कंबलनामकअहैफनीशा ॥

दोहा-तहँतिलोत्तमाअप्सरा, राक्षसब्रह्मापेत । सताजितनामकयक्षहै, तेहिजानहुमतिसेत ॥

धृतराष्ट्रहुगंधर्वउदारा । येसबबितवहिंमासकुँवारा ॥ ४३ ॥ विष्णुसूर्यहैकार्तिकमाहीं । नामअश्वतरनागतहाँहीं ॥
रंभातहँअप्सरासुहाई । सूर्यवर्चगंधर्वतहाँई ॥ अहैसत्यजितनामकयक्षा । मखापेतनामकतहँरक्षा ॥
विश्वामित्रमुनीशतहाँहीं । बितवहिंकार्तिकमाससदाहीं॥४४॥यहजोरविकीमहिमागाई।ताहिजोसांझप्रातमुनिराई॥
प्रीतिसहितजेसुमिरणकरहीं।तिनकेनिशिदिनकेअघजरहीं४५यहिविधिद्वादशमासनमाहीं।विचरतदिनकररहैंसदाहीं
उभयलोककेरविसुखदाई । देतउभयतमअवशिनशाई ॥ ४६ ॥ जेजेमैंअप्सरागनाई । तेरविसन्मुखनचहिंसदाई ॥
जेजेमैंगंधर्वबखाना । करहिंतेरविसन्मुखनितगाना ॥ जेजेमैंभाषेहुँऋषिराई । करहिंतेअस्तुतिवेदनगाई ॥ ४७ ॥

दोहा-जेजेनागनमैंकह्यौं, तेतेरविरथमाहिं । बंधनहैसबसाजके, त्यागतकबहूँनाहिं ॥

जेजेयक्षदियेमैंगाई । तेरविरथकोदेहिंसजाई ॥ कह्योंराक्षसनमैंजिनकाहीं । पीछेतेरथझेलतजाहीं ॥ ४८ ॥
वालखिल्यमुनिसाठिहजारा।जिनकोअँगुठासरिसअकारा॥रविसन्मुखमुखपछिलतजाहीं।रविअस्तुतिगावतमुखमाहीं
सूर्यरूपजानहुहरिकाहीं । यामेंहैकछुसंशयनाहीं ॥ जिनकोअहैनआदिहुअंता । अहैसकलजगकेरनियंता ॥
कल्पकल्पमहँद्वादशरूपा । जानहुदिनकरकेरअनूपा ॥ करिकैतेइरूपविभागा । करहिंजगतरक्षणबडभागा ॥

दोहा-पूछ्यौशौनकजौनतुम, सूरजचरितअपार । सोमैंतुमसोंसकलयह, कीन्ह्योंसविधिउचार ॥ ५० ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्रीरघु
राजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे एकादशस्तरंगः ॥ ११

सूत उवाच ।

दोहा-परमधरमकोप्रणतिकरि, यदुपतिपदशिरनाय । विप्रनकेपदवंदिकै, वरणौंधर्मनिकाय ॥ १ ॥
हरिचरित्रअद्भुतपरम, पूछ्यौजौनमुनीश । सोमैंवरण्योसकलविधि, सकलचरितजगदीश ॥
जेहिविधियहसंसारमें, पावतजनकल्यान । शौनकादितुमसोंसकल, सोमैंकियोबखान ॥ २ ॥
हरणहारसबपापके, नारायणयदुनाथ । हृषीकेशभगवानप्रभु, भक्तनकरनसनाथ ॥
जगसिरजकपालकहरन, परब्रह्मगंभीर । यहपुराणभागवतमें, वरणितयकयदुवीर ॥ ३ ॥

अवशौनकभागवतको, यहसुनियेसंक्षेप। जाहिपढ़तहरिमिलतहैं, होतपापपरलेप॥

विष्णुपद।

जयभागवतरूपयदुवरकोज्ञानविज्ञानभक्तिदाता। सुनतसुनावतसमुझतजाकोंमिलतकृष्णपदजलजाता॥
शौनकऔरसूतसंभाषणनैमिषवनमेंप्रथमकह्यौ। वरणनचौविसअवतारनकोहरिमहिमाकहिमोदलह्यौ॥
व्यासभवननारदकोआगमव्यासहिनारदउपदेशा। नारदकीपुनिजनमकथासबसनकादिकआगमवेशा॥
व्यासबोधभागवतरचनपुनियथासमरकुरुपतिकेरो। भीमसेनकृतजंगभंगपुनिकोपद्रोणसुतकरटेरो॥
पांडवसुवनपंचनिशिवधिवोद्रुपदसुताकोवधभारी। बहुरिद्रोणनंदनकोबंधनजिमिकियपारथगिरिधारी॥
पुनिशिरतेमणितासुखैंचिबोपुनिपांडवविलापगायो। चारिबंधुयुतधर्मसुवनकोसंतनसुताजिमिसमुझायो॥
बहुरिकह्योयदुपतिकोध्यावतजेहिविधिभीषमतनत्यागा। धर्मराजकोराजकरवपुनिबरण्योकुंतीअनुरागा॥
द्रोणतनैकेअस्त्राहितेपुनिगर्भहिरक्षनवैराटी। पुनिद्वारिकागवनयदुवरकोकह्यौप्रजनमुदपरिपाटी॥
पारथकोपयानद्वारावतिपुनिहस्तिनपुरआगमनू। बहुरिकह्योअर्जुनविलापसबपांडुसुवनसबसुखसमनू॥
तिलकपरीक्षितपांडुसुवनकोगवनमहापथकोगायो। कलिकोदमनश्रापद्विजकोलहिगंगातटजिमिनृपआयो॥
मुनिसमाजमधिबहुरिकह्योजसकुरुपतिशुककरसंवादा॥४॥५॥६॥ योगधारणाबहुरिबखान्योहरिवंदनकीमर्यादा॥
पुनिसंवादब्रह्मनारदकोपुनिबरण्योहरिअवतारा। जगतरचनकोबहुरिकह्योक्रमपुनिपुराणलक्षणसारा॥
मित्रासुतअरुविदुरकेरपुनिकहसंवादमोददाई। यदुकुलकीसंहारकथापुनिमहापुरुषकीथितिगाई॥ ७॥ ८॥
प्रकृतिसर्गपुनिब्रह्मसर्गअरुपुनिभगवतविराटरूपा॥ ९॥ सूक्षमथूलकालकीगतिजिमिपुनिउपज्यौजिमिमनुभूपा॥
पुनिवराहअवतारकृष्णकोवरण्योधरणीउद्धारा। पुनिबरणनविकुंठकोगायोहिरण्याक्षकोसंहारा॥ १०॥ ११॥
कर्दमउत्पतिमनुमिलापपुनिबरण्योदेवहुतीव्याहू। पुनिविमानकीविहरनिगाईकपिलजननकोउत्साहू॥
देवहुतीअरुकपिलदेवकोपुनिबरण्योसबसंवादा॥१२॥१३॥ पुनिकहशिवकृतदक्षभंगमखध्रुवचरित्रप्रदअहलादा॥
बहुरिकह्योपृथुकथासुहावनिपुनिप्रचीनवरहीगाथा॥१४॥फेरिपुरंजनकथाबखानीकथाप्रचेतनसुखसाथा॥
पुनिसुवादप्रियव्रतनारदकोराजप्रियव्रतकीभाई। पुनिअगनीध्रअप्सरासंगमनाभिनृपतिउतपतिगाई॥
ऋषभदेवकोचरितकह्योपुनिभरतचरितसुकमुखभाष्यौ१५॥पुनिभूगोलखगोलकह्योपुनिअरुपतालवरणनआष्यौ।
नरकबरणिपुनिकथाअजामिलपुनिप्रभावकहहरिनामा १६ दक्षजन्मपुनिचरितप्रचेतनपुनितिनसततिसुखधामा॥
पुनिनारायणकवचवृत्रवधचित्रकेतुकीकथाकही। पुनिप्रहलादजनमगुणगायोहिरणकशिपसुरविजैसही॥
पुनिप्रहलादचरितसबगायोपुनिकहनरहरिअवतारा।हिरणकशिपकोनाशबखान्यौवरणधरमकहसुखसारा १७॥१८
पुनिमन्वंतरकथाकहीकछुपुनिगजेंद्रमोक्षहिगायो॥ १९॥ पुनिकच्छपअवतारकथाकहिक्षीरसिंधुमंथनभायो॥
देवासुरसंग्रामकह्योपुनिवरण्योवामनअवतारा। बलिकोछलननापिबोत्रिभुवनसुतलअसुरपतिपगुधारा॥
मीनसरूपवरणियदुपतिकोसूरजवंशहिविस्तारचो॥२०॥ पुनिइक्ष्वाकुसुद्युम्नजन्मकहिइलाचरितपुनिनिरधारचो॥
पुनिताराआख्यानकह्योसबनृपससादनृगचरितकह्यो॥२२॥पुनिसर्यातिककुस्थचरितकहिखट्वांगहिजसकहिउमह्यो।
मांधाताकोचरितकह्योपुनिसौभरिमुनिगाथागाई। सगरसगरकेसुवनचरितकहिकथाभगीरथसुखदाई॥ २३॥
वरण्योकोशलेशरघुपतिकोचरितसकलकलिमलहारी। निमिनरेशकोकह्योतजनतनवंशविदेहमोदकारी॥ २४॥
क्षमानिक्षत्रकरवभृगुपतिकोजेहिविधितेयकइसवारा। पुरूरवाकोचरितकह्योपुनिचंद्रवंशपुनिविस्तारा॥
पुनिययातिअरुनहुषचरितकहिभरतचरितबरण्योभारी।शंतनुभीषमपांडुपांडवनचरितकह्योअतिसुखकारी॥
नृपययातिकोजेठसुवनयदुवरण्योतासुबहुरिवंसा। जौनवंशमेंत्रिभुवननायकलियअवतारदुष्टध्वंसा॥ २५॥ २६॥
पुनिवसुदेवभवनदेवकीतेप्रगटतभेयदुकुलचंदा॥ २७॥ पयपानहिमिसिमारिपूतनाशकटगिरायोगोविंदा॥ २८॥
तृणावर्तअरुवत्सासुरहनिहन्यौबकासुरगिरिधारी। मारिअघासुरविधिमोहनकरिधेनुकमारचोहलधारी॥

करिकालीकोदमनपारकरिदावानलब्रजगाँउँधनी।पुनिप्रलम्बवधकह्यौरामकृतबरण्योवेनुगीतरमनी ॥ २९ ॥ ३०॥
पुनिपावसअरुशरदवरणिपुनिगोपसुताव्रतआचरना । चीरहरणलीलागोविंदकीब्रजतियहरिवरपुनिवरना ॥
द्विजनारिनकृतव्यंजनभोजनविप्रनकोपुनिसंतापा ॥ ३१ ॥ बहुरिकह्यौवासवमखभंजनइंद्रकोपकृतव्रजतापा ॥
गोवर्द्धनउद्धरनकह्योपुनिकहसुरभीकृतअभिषेका । वरुणदूतकृतहरणनंदकोहरिपुरदरशनसविवेका ॥
कह्यौरासपंचाध्यायीपुनिनंदचरणगहिभुजगतरचो॥३२॥फागुचरितपुनिकहयदुवरकोशंखचूड़जेहिभाँतिदरचो ॥
युगलगीतपुनिवृषभविनाशननारदकंसहिसंवादा । केशीवधनारदआगमव्रजपुनिव्योमासुरवधवादा ॥
पुनिआगमअक्रूरकोगोकुलमहाविरहपुनिव्रजनारी ॥ ३३ ॥ पुनिमधुपुरीगवनहरिबलकोदानपतिहिदरशनभारी ॥
पुनिमधुपुरीप्रवेशरजकवधधनुषभंगगैअरघाता । पुनिमुष्टिकचाणूरविनाशनकियोकंसमंचहिपाता ॥ ३४ ॥
उग्रसेनकोराजतिलककहिगुरुसुतमृतकगुरुहिदीबो । उद्धवकोब्रजगवनकह्योपुनिगोपिनकोप्रबोधकीबो ॥
बहुरिकह्यौकुबिजाविहारबहुदानपतीगृहआगमनू । पुनिसुफलकसुतअस्तुतिगाईनागनगरताकोगवनू ॥ ३५ ॥
फेरिसत्तदशबारमगधपतिदलनदलनपुनिकाहिदीन्ह्यो । पुनिकहकालयमनकोजेहिविधिनृपमुचकुंदभसमकीन्ह्यो ॥
बहुरिकह्योरुक्मिणिविवाहजिमिकिययदुपतिनृपमदमोरी । पुनिप्रद्युम्नकोजन्मबखान्यौअरुशंबरवधबरजोरी ॥
कह्योसिमंतकमणिचरित्रसबसत्राजितवधआदिसबै । जाम्बवानकोसमरकह्योपुनिजाम्बवतीकोब्याहतबै ॥
अवधभूपकोसुतास्वयंवरऔरहुहरिविवाहभायो । भौमऔरमुरमथनकथनकरिसोरहसहसब्याहगायो ॥ ३६ ॥
माधवमघवामदमर्दनकरिनिजपुरमेंसुरद्रुमल्याये । पुनिपरिहासकह्योरुक्मिणिकोअनिरुधकोविवाहगाये ॥
ऊषास्वप्नहरणअनिरुधकोहरिशंकरसंगरभारी । मृगउद्धारविप्रकीमहिमाकह्यौगवनव्रजहलधारी ॥ ३७ ॥ ३८ ॥
मिथ्यावासुदेवकोवधकहिशंकरपुरीदहनगायो । बहुरिद्विविदवधहलधरकृतकहिसांबकेदमहँजिमिआयो ॥
पुनिकहजिमिहलधरहलकरकरिनागनगरकरषनकीन्ह्यों । पुनिकहहरिजिमिनारदकोनिजमायाविभवदरशदीन्ह्यों ॥
इंद्रप्रस्थआगमयदुपतिकोभीममगधपतिजिमिमारचो । धर्मराजकीराजसूयजिमिशिशुपालहिहरिसंहारचो ॥
यज्ञअंतमज्जनउछाहकहिबरण्योशाल्वयुद्धभारी । दंतवक्रविदुरथकोवधकहिबलतीरथयात्रासारी ॥
वरणिसूतवधकह्योफेरितहँकौरवकुलकोसंहारा । पारथसारथिह्वैयदुवरजिमिभंज्यौभुवभारीभारा ॥ ३९ ॥ ४० ॥
बहुरिसुदामाचरितबरणिपुनिकुरुक्षेत्रयात्रागाई । देवकिकेमृतसुतजिमिलायेपितुहिज्ञानदियसुखदाई ॥
केह्योसुभद्राहरणबहुरिकहजनकनगरहरिकोजैबो । वेदनअस्तुतिबहुरिबखानीतीनदेवमहँवरठैबो ॥
कह्योविप्रसुतमृतकल्याइबोमहिषीगीतसकलगायो । बरण्योबहुरिजौनविधियदुकुलशापदंडमुनिसोंपायो ॥
नारदकोअरुवसुदेवहिकोबरण्योसुखकरसंवादा । हरिउद्धवसंवादकह्यौपुनिज्ञानभक्तिकीमरयादा ॥
पुनियदुकुलसंहारबखान्योपुनिभावीभूपनगाथा । कलियुगकोपुनिधर्मकह्यौसबकलिकीअवतारहिनाथा ॥ ४१ ॥
बहुरिचारिविधिप्रलयबखानीउत्पतिकह्यौभाँतितीना४२शुककोगवनकह्यौपुनिपारिक्षितजेहिविधितनत्यागनकीन॥
वेदविभागबहुरिसबबरण्योमार्कंडेयकथागाई । पुनिविराटवपुवरणनकीन्ह्योंसूरजकथामोददाई ॥ ४४ ॥
हरिकीमहिमागायसकलविधिश्रीभागवतप्रभावकहे । यहसमासभागवतसुहावनगायमनुजफलचारिलहे ॥
एकआशयदुनाथतिहारीदूजाहैननाथमेरे । परचोअहैरघुराजशरणमेंजायकहाँताजिपदतेरे ॥ ४५ ॥

दोहा–गिरतपरतछींकतछटत, विवशहुमहँजोकोय । हरयेनमअसमुखकहत, सकलपापहतहोय ॥ ४६ ॥

छंद–कोअससाहेबसरलदूसरोयदुपतिसमत्रिभुवनमाँहीं । रामकृष्णमुखकहतसुनतहूँहियमेंअवशिप्रविशिजाहीं ॥
कोटिनजन्मनअघओघनकीदरशतिनहिंपुनिपरछाहीं । जैसेपवनप्रचंडचलेनभघनमंडलसबउडिजाहीं ॥
जैसेभानुउदयतमनाशतपावकतूलरासिकाहीं । बिगरीजन्मअनेकनकीप्रभुलेतसुधारिक्षणैंमाहीं ॥
कायरकपटिनकूरकुचालिहुनिजपुरकोप्रभुपहुँचाहीं । देखतदोषनकबहुँदयानिधिदीननपैद्रुतद्रविजाहीं ॥
मोसमपतितनअहैपुहुमिमेंतुमसमपावनकोउनाँहीं । यहसँयोगयदुराजदेखिअबतारहुरघुराजहिकाहीं ॥ ४७॥

भजनलावनी–हरिलीलाजेहिमेंनहिंगाई। सोईअसतिअपावनअनुचितकथाअहैअतिदुखदाई॥
सोइअहैअभागिनकोप्यारी। नरकनिवासविलासकरनकोसुनहिअघीरुचिभरिभारी॥
सोइकरनिकुमतिकलिमलभरनी। आयुपविभवसुयशसुखसंपतिशीलस्वभावसकलहरनी॥
सोइसाधुनकानकुलिशसींहै। कोटिजन्मकोपुण्यमीनगणखैंचनकोवन्सीसींहै॥
सोइधरमगहनपावकज्वाला। सुमतिविटपकेकाटनकोसतिसोइकुठारहैविकराला॥
सोइविषैअनलकोघृतभूरी। ज्ञानविज्ञानविनाशकरनकीअडीखडीहैसोइशूरी॥
मनविहँगफँदावनकीफाँसी। जपतपसंयमधनहरिबेकोसोइखासीहैगणिकासी॥
हरिलीलाजामेंहैगाई। सोईपरमसुहावनजगमेंकथासंतजनसुखदाई॥
सोइप्रेमकृषीकीऋतुवर्षा। हरिपदपहुँचनसोईनिसेनीलगीललितदेनीहर्षा॥ ४८॥
सोइखुलोखजानामंगलको। सोइसावनघनअहैवढावनजननसुकृतकेजंगलको॥
कलिमलहरनीसुरधुनिधारा। कोटिनविषयवासनाकदलीकदनकरनकीअसिधारा॥
भवभक्तिसृजनकोकरतारा। सुमतिकमलकुलकरनप्रफुल्लितसोइरविअघहरअँधियारा॥
करिसकैवड़ाईकोताकी। तासुजनमधनिधनिधरनीमेंकृष्णकथामहँरुचिजाकी॥
यदुराजदेहुवररघुराजै। करहुँपानतुवकथासुधानिततजितनलाजैकुसमाजै॥
कृष्णजसजामेंसुखदाई। सोइपुराणसतिसोइप्रवंधसतिसोइउत्तमहैकविताई॥
रुचिरनहिंकछुजगमेंताते। सुमतिकुमतिकोकछुविचारनहिंसुनतहिजाहिमोहिजाते॥
बढ़तनितनितनवनवसुखहै। देशजनमकायाकुलकरनीहोतपुनीतकहतमुखहै॥
लहतमनक्षणक्षणउत्साहू। दीरघदुसहदुरितदुरिजातेहगमेंदरशतव्रजनाहू॥
शोकसागरशोषनहारो। कियोकरतकरिहैकेतनकोयहजगअधमनउद्धारो॥
करैरघुराजयहीअरजी। यदुपतिसुयशसुधापीवनकोरहौंसदाअतिशयगरजी॥ ४९॥
यदपिमनोहरसुंदरबहुपदउक्तियुक्तिखासीवहहोई। तद्यपिजगपावनहरियशविनकथावृथापरतीमोहिंजोई॥
जेहिथलजेहिगृहजेहिसमाजमेंगोविंदगुणगावहिनहिंकोई।मलभक्षकवायसहिवासदुखदायकहैसाँचोथलसोई॥
जेजडयदुपतिकथाछांडिहठिऔरकथागावैंमुदमोई। तेसुरद्रुमकोबीजऐंचितहँदेतेगरलवीजकोबोई॥ ५०॥
जहँगावतहरिसुयशसुहावनमनभावनतनलाजबिगोई। तहँहरिदासजातसुनिहाठिकैभरिअनुरागदेतहैरोई॥
सोइसवतीरथसोइसबसंपतितहँसबमोदजातहैढोई। तहँकलिमलप्रचारनहिंकरतोसुधरतलोकअहैतहँदोई॥
वेदपुराणशास्त्रसबग्रंथनलेहुसकलरघुराजटटोई। विनयदुराजकथासुखगायेकैसेहुकलिमलजातनधोई॥
सोइसतिसुंदरसुखकरवानी। जामेंपदपदछंदछंदमेंयदुपतिकीरतिविमलबखानी॥
छंदबद्धअथवाअछंदहूजेहरिकीरतिरतिकरिगावैं। तेइजनसमूहकेकेकलिमलकलिमहँसकलखाकहैजावैं॥
हरियशअंकितसुभगमृदुलपदअतिशयप्रीतिप्रतीतिबढाई। गावतगुनतसुनतधारतचितसंतसमाजसदासुखदाई॥
धनिधनिधरनीमेंरसनासोइकृष्णकथाजोनितरटलाई। विनयकरैरघुराजकृष्णतुवकथाछोडिमतिअनतनजाई॥
यदपिविज्ञानपरमहैपावन। तदपिकृष्णअनुरागविनासोउअहैनथोरहुसुखदसुहावन॥
ज्ञानविज्ञानपाइजनपावतब्रह्मानंदमहामनभावन। पैयदुपतिसेवासुखअनुपमकबहुँनलहतहियोहुलसावन॥
ज्ञानविज्ञानहुसकतअहैअनुरागहिसमतापहुँचावन। तौपुनिजागादिककरमनकीकौनभाँतिकीकथाचलावन॥
हरिकोअरपेसफलकर्मसबविनहरिअरपेसकलअपावन। हैरघुराजउपायसरलयहनिशदिनयदुनंदनगुणगावन॥५१॥
जसधनहिततपधरमअचारा। अहैवृथासबअंतव्यथाप्रदविनहरिकथासुधाकीधारा॥
कियोकठिनतपधरचोधरमबहुसुन्योपुराणअनेकनकाँहीं। हरिपदपदुमप्रीतिनाहिंउपजीतौताकोश्रमसकलवृथाहीं॥

दानधरमतपश्रुतिअचारकोयहीसत्यफललेहुविचारा । हरिपदयुगलकमलअमलनतेकबहूँमतिगतिटरैनटारी ॥
हेयदुनाथअनाथनाथप्रभुधरिमेरेमाथहिनिजहाथा । रघुराजहिनिजकथासुधाकोपानकरावहुसंतसनाथा ॥ ५२ ॥
काफलहरिपदसुरतिनदेती । कोटिजनमकीकरमवासनायकक्षणमाहिंछीनिसबलेती ॥
कौनपदारथहोतसुलभनहिंमंगलखानिखुलतनहिंकेती । योगभक्तिअरुज्ञानविरागहुमिलतमुक्तिसंपदसबजेती ॥
भमहियथलमेंभक्तिबीजबयकरिकरुणाकरकरुणाखेती।देहुमोहिंनिजचरणप्रीतिफलविनैकरतरघुराजहियेती ॥५४ ॥

दोहा–हेशौनकबडभागतुम, नारायणकेदास । जेहिनारायणकेसरिस, द्वितियनदेवप्रकाश ॥

धनिधनिहौतुमधरणीमाहीं।कृष्णकथाजोसुनौसदाहीं५५नृपअभिमन्युकुवँरजेहिकाला।मुनिसभाजमधिबुद्धिविशाला
अनशनव्रतकरिसुरसरितीरा।सुखपावतध्यावतयदुवीरा॥व्याससुवनशुकदेवसिधारचौ।नृपसोंयहभागवतउचारचौ ॥
हमहूँबैठेरहेतहाँहीं । पियोपुराणअमीरसकाहीं ॥ ५६ ॥ सोतुमशौनकसुरतिकराई । मैंतुमकोसबदियोंसुनाई ॥
यहयदुपतिकोचरितसुहावन । कोटिजन्मकोपापनशावन ॥ सोमैंतुमसोंकियोबखाना । वासुदेवमाहात्म्यमहाना ॥
इकयामहुभरिक्षणहुँजोकोई।सुनैभागवतरतिरसमोई॥५७॥अथवाप्रीतिसमेतसुनावै।ज्ञानभक्तिउरबरबसआवै ॥५८॥
एकादशीद्वादशीमाहीं । जोकोउसुनैभागवतकाहीं ॥ अथवापढ़ैविहायअहारा । सावधानह्वैसुमतिउदारा ॥

दोहा–सोजनपावतअवशिकै, पूरणआयुदाय । कोटिनजन्मनकोदुरित, क्षणहीमेंजरिजाय ॥ ५९ ॥

पुष्करअथवामथुरामाहीं । द्वारावतिनगरीअथवाहीं ॥ इंद्रियजीतिसविधिव्रतकरिकै । पढ़ैभागवतश्रद्धाभरिकै ॥
तेहिनहोतिसंसारिकभीती।उपजतिकृष्णपदुमपदप्रीती६०सिद्धदेवमुनिपितरनरेशा।पूरततेहिमनकामहमेशा ६१॥
जोभागवतसुनैअरुगावै । पढ़नचारिवेदनफलपावै ॥ मधुकुल्याऔरहुघृतकुल्या । अरुतीरथजोहैपैकुल्या ॥
इनकेमज्जनकोफलपावत।जौनभागवतसुनतसुनावत॥६२॥परमहंससंहितासुनामा।यहिस्वामीयदुपतिघनश्यामा ॥
पढैजोयहपुराणअरुसुनई।सावधानजोअर्थहिगुनई ॥ जातपरमपदसोहठिप्रानी।जोहरिश्रुतिपुरदियोबखानी ॥६३॥
पढ़तभागवतजोकोउविप्रा । शुद्धिबुद्धिपावतसोक्षिप्रा ॥ राजापढ़तभागवतजोई । होतचक्रवर्तीहठिसोई ॥

दोहा–वैश्यपढ़ैजोभागवत, अथवासुनैसप्रीति । धनदसरिसधनलहतसो, मिटतिजगतकीभीती ॥
सुनैशूद्रअथवापढ़ै, जोभागवतपुरान । कोटिजन्मकेपापतेहि, जरततुरतसहसान ॥ ६४ ॥

कवित्त–औरेनपुराणनमेंग्रंथनअनेकनमें, भाँतिनअनेकनकीकथाकोबखानहै ।
शिवकोपरत्वकहूँविधिकोपरत्वकहूँ, देवीकोपरत्वकहूँकहूँभगवानहै ॥
कहैरघुराजयापरमहंससंहितामें, अधमउधारनजोजाहिरजहानहै ।
सोईहरिकोपरत्वभाष्योआदिअंतहूँलों, तातेसबग्रंथमेंपुराणमेंप्रधानहै ॥
असकंधअसकंधपरबंधपरबंध, अध्यायअध्यायनमेंकथाकेविराममें ।
प्रश्नप्रश्नहूमेंत्योंहींउत्तरउत्तरहूमें, कथाकथामाहित्योंहीवंदनललाममें ॥
असलोकअसलोकतुकतुकपादपाद, पदपदआखरनआखरनआममें ।
कहैरघुराजसत्यपरमहंससंहितामें, कढ़तहैकेशवजूयाकेसबठाममें ॥ ६५ ॥
अजहैअनंतनिजशक्तिहीतेरचिरचिपालै, अरुघालैयहजगबहुवारहै ।
आपनेप्रकाशहीतेपरमप्रकाशमान, अधमउधारीनाथदयापारावारहै ॥
स्वर्गकेनिवासीसुरशक्रऔस्वयंभुशंभु, कबहूँनपावैंजासुमायासिंधुपारहै ।
ताकेपदकरहुँप्रणामबारबारसोई, देवकीकुमाररघुराजकोअधारहै ॥ ६६ ॥
निजनवशक्तिनतेरचिकैजगतजाल, रमाकोनिवासयामेंकरतानिवासहै ।
धर्मयशश्रीऐश्वर्यज्ञानऔविरागयुत, सुरनकोसंकटजोकरतविनासहै ॥
भासमानजाकोधामसाहेबसनातनहै, प्राणहूँतेप्यारजौनमानैनिजदासहै ।

करहुँप्रणामताकेचरणकोबारबार, दीनरघुराजैयदुराजहीकीआसहै ॥
दोहा–यदुपतिचरणसरोजको, यहिविधिमुदितमनाय । अबवंदौंशुकदेवपद, बारबारशिरनाय ॥ ६७ ॥
कवित्त–कृष्णहिकृपातेजाकोव्यापीकृष्णमायानाहिं, कृष्णहीकोप्रेमरसपानकोकरैयाहै ।
कृष्णभावनातेभिन्नजगतकोदेखैनाहिं, साँचोकृष्णलीलाछोनीलालचीलखैयाहै ॥
कृपाकरिकृष्णकोपुरानतत्त्वदीपकह्यो, कृष्णमुनिनंदनआनंदकोदेवैयाहै ।
कृष्णकोअनन्यभक्तताकेवंदौंपदद्वंद्व, सोईरघुराजकेकलेशकोहरैयाहै ॥ ६८ ॥
इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धिश्री महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिरघुराज सिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ एकादशस्कंधे द्वादशस्तरंगः ॥ १२ ॥

सूत उवाच ।

कवित्त–ब्रह्मावरुणइंद्ररुद्रअरुमरुतगण, जाकीकरैंअस्तुतिसुदिव्यपदगाइकै ।
अंगक्रमपदओउपनिषदवेदनते, जाकोसदागावतमुनीशगणलाइकै ॥
बैठिकैइकांतध्यानधारिजाकोयोगीजोवैं, सुरासुरजासुअंतपावैंनाबनाइकै ।
यादवसमाजसिंहदेवकीदुलारोतासु, ध्यावतचरणरघुराजशिरनाइकै ॥ १ ॥
कमठस्वरूपजबधारिकैमुकुंदप्रभु, धारयोपीठिमंदरअमंदनिधिक्षीरमें ।
मथतसुरासुरधराधरभ्रमनलाग्यो, सोयेनाथमानिखजुआयबोशरीरमें ॥
हरिमुखश्वासपौनपायकैप्रचंडतहाँ, उठनतरंगतुंगलागीतेहिनीरमें ।
तौनेश्वासवेगबीचीअबलौंनबंदहोती, सोईकरैरक्षारघुराजेभवभीरमें ॥ २ ॥

सूत उवाच ।

दोहा–अबपुराणसंख्यासुनहु, बिषयभागवतकेर । औरभागवतदानविधि, दानमहातमढेर ॥ ३ ॥
दशहजारहैब्रह्मपुराना । पचपनसहसैपदुममहाना ॥ तेइससहसैविष्णुपुराना । शिवपुराणचौविसपरमाना ॥ ४ ॥
नारदसहसपचीसउचारा । मार्कंडेयहुनवैहजारा ॥ पंद्रहसहसहिअग्निपुराणा । औरचारसैतासुप्रमाणा ॥ ५ ॥
साढ़ेचौदहसहसप्रमाणा । शौनकजानुभविष्यपुराणा ॥ कहौंब्रह्मवैवर्तपुराणा । सहसअठारहतासुप्रमाणा ॥
लिंगपुराणहुसहसइग्यारा ॥ ६ ॥ चौबिससहसवराहउचारा ॥ अस्कंदहुपुराणसुखरासी।अहैएकसैसहसइक्यासी ॥
दशहजारवामनैपुराना ॥ ७ ॥ सत्रहिसहसकूर्मकोमाना ॥ सहसचतुर्दशमत्स्यपुराणा।सहसओनसैगरुड़प्रमाणा ॥
अबब्रह्मांडपुराणविचारो । तेहिप्रमाणद्वादशैहजारो ॥ ८ ॥ सबपुराणकोहैसुखसारा । श्रीभागवतहजारअठारा ॥
दोहा–चारिलाखअश्लोककहैं, अष्टादशहुपुरान । सारभूतश्रीभागवत, कृष्णरूपमतिमान ॥ ९ ॥
प्रथमकालमहँबुद्धिअगारा । संसारहिडरप्योकरतारा ॥ तबहरिकीरिकैकृपामहाई । दीन्ह्योंयहभागवतसुनाई ॥
नाभिकमलबैठ्योमुखचारी।सुनिभागवतमिटीभयभारी १० श्रीभागवतपुराणहिंपाहीं।आदिमध्यअरुअंतहुमाहीं ॥
अहैविज्ञानविरागबखाना ।हरिलीलारससुधाप्रधाना ॥ श्रीभागवतपुराणमहाई । सुरनरमुनिसबकोसुखदाई ॥ ११ ॥
वेदऔरवेदांतनकेरो । औरशास्त्रजेकियेनिवेरो ॥ अहैभागवततिनकोसारा । परब्रह्मकोरूपउदारा ॥
जौनवस्तुयामेंमुनिराई । सोनहिंमोहिंकहुँपरैलखाई ॥ सकलशास्त्रअरुसकलपुराना । औरग्रंथजेछोटमहाना ॥
तिनकोमैंदेख्योबहुतोई । अहैभागवतसरिसनकोई ॥ याकेसरिसनदूसरग्रंथा । हैप्रत्यक्षयहहरिपुरपंथा ॥
यहिमेंअस्थलहैनहिंकोई । मुक्तिप्रयोजनजहँनहिंहोई ॥
दोहा–यहसतिआनँदअंबुनिधि, श्रीभागवतपुरान । यामेंयदुपतिछोडिकै, द्वितियनअहैबखान ॥ १२ ॥

अबसुनुविधिभागवतदानकी । जोहैसबशास्त्रनप्रमानकी ॥ भाद्रमासकीपूरणमासी । जबआवैअतिआनँदरासी ॥
तबसुबरणसिंहासनकरिकै । तेहिभागवतपुस्तकहिधरिकै ॥ देयसुपात्रविप्रकहँजोई । अचलवासलहहरिपुरसोई ॥
देयजोश्रीभागवतपुराना ।यातेअधिकनहैकछुदाना ॥ १३ ॥ तबलोंसंतसमाजनमाहीं । सिगरेऔरपुराणसुहाहीं ॥
जबलोंअमीपयोदधिकाना।परैनहींभागवतपुराना॥जबभागवतपर्योसुनिकानन।नीकपुराणलगततबआनन॥१४॥
श्रीभागवतपुराणउदारा । सकलवेदवेदांतनसारा ॥ श्रीभागवतसुधारसपाना । करिकैसज्जनजौनअघाना ॥
तासुऔरग्रंथनमहँप्रीती । होतिनकबहुँजानुयहरीती ॥ १५ ॥ सरितनमेंजसपावनिगंगा।देवनमेंजसविष्णुअभंगा॥
हैवैष्णवमहँजसत्रिपुरारी । तेजिनमेंजसअहैतमारी ॥ १६ ॥

दोहा–क्षितिकेक्षेत्रनमेंयथा, वाराणसीबखान । तैसहिसकलपुराणमें, श्रीभागवतप्रधान ॥ १७ ॥

कवित्त–श्रीमतपुराणयहभागवतनामजाको, अहैसरवस्वधनसबैवैष्णवनको ।
अमलअनूपमअदूषनअद्वेषप्रद, अच्युतकेअंघ्रिअंबुजातप्रेमघनको ॥
परमहंसरीतिभक्तिज्ञानऔविज्ञानगायो, विरतिअकामधर्महूदेखायोजनको ।
सुनतपढ़तत्यौंविचारतसप्रीतिजौन, बसतविकुंठसोकहोमैंकियेप्रणको ॥ १८ ॥
नारायणपूर्वकह्योविधिसोंश्रीभागवत, ब्रह्माकह्योनारदसोंसबसमुझायकै ।
नारदबखान्यौफेरीव्याससोंनिवासजाय, व्यासजूपढ़ायोशुकदेवैहरषायकै ॥
शुकदेवगंगातटबरण्योपरिक्षितसों, यदुपतिरूपयहभागवतआयकै ।
सोईशुद्धविमलविशोककोकरनहारो, वंदैरघुराजैयदुराजैशिरनायकै ॥ १९ ॥

दोहा–जयतिलोकसाक्षीअमल, वासुदेवभगवान । जोमुमुक्षुविधिसोंकह्यो, श्रीभागवतपुरान ॥ २० ॥
ब्रह्मरूपशुकदेवजय, ममगुरुकृपानिधान । जौनछोडायोभूपकों, भवअहिग्रसितमहान ॥ २१ ॥
जनमजनमतुवचरणमें, भक्तिहोययदुनाथ । करहुकृपाअसमोहिंपर, तुममेरेहोनाथ ॥
जासुनामपावककरत, कोटिपापवनछार । पदप्रणामजेहिदुखदहत, तेहिप्रणामबहुवार ॥
जासु[illegible]ककरत, कोटिपापवनछार । पदप्रनामजेहिदुखदहत, तेहिप्रनामबहुवार ॥
जासुनामपावककरत, कोटिपापवनछार । पदप्रनामजेहिदुखदहत, तेहिप्रनामबहुवार ॥ २२ ॥
रामकृष्णगोविंदजय, माधवजयतिमुकुंद । मधुसूदनदामोदरहु, जयजययदुकुलचंद ॥
कृपासिंधुजगबंधुजय, हरिगुरुजयतिमुकुंद । जयजयपितुविश्वनाथप्रभु, दायकमोहिंअनंद ॥ २३ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज
सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्री
रघुराजसिंहजूदेवकृते आनंदाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधे त्रयोदशस्तरंगः ॥ १३ ॥

दोहा–आनंदअंबुनिधिग्रंथके, अंतमंगलैहेत । सहसनाममैंकहतहौं, छंदपद्धरीनेत ॥ १ ॥

छंदपद्धरी ।

जयविश्वविष्णुजयवषट्कार।प्रभुभूतभव्यभवतहुउदार॥जयभूतकृतहुजयभूतभृत्त।जयभावजयतिभूतात्मनित्त १॥
जयजयतिभूतभावनपरेश।जयपूतात्मापरमात्मवेश॥जयमुक्तनकेगतिपरमनाथ।जयअव्यक्तकृतदासनसनाथ ॥२॥
जयपुरुषसाक्षिक्षेत्रज्ञवीर । जयअक्षरयोगसरूपधीर ॥ जययोगविदनकेहौनियंत । परधानपुरुषईश्वरअनंत ॥ ३ ॥
जयनारसिंहवपुश्रीनिधान।जयकेशवपुरुषोत्तमसुजान।जयसर्वसर्वजयशिवसुथान।भूतादिहुअव्ययनिधिसुजान ॥४॥
जयसंभवभावनभर्त्तसोय । जयप्रभवप्रभोईश्वरहिजोय॥जयजयस्वयंभुजयशंभुईस।आदित्यपुष्कराक्षहुसुदीस॥५॥
जयजयतिमहास्वनभुवनमाहिं।जयजयअनादिनिधनहुसदाहिं॥धाताविधातजयधातधेय।जयधातउत्तमहुअप्रमेय ६

जयहृषिकेशजयपद्मनाभ।जयअमरप्रभोवनश्यामआभ॥जयविश्वकर्मजयमनसुत्वष्ट।जयजयथविष्टजयथविष्ट॥७॥
जयध्रुवुअग्राह्यहुसरसिजाक्ष।जयशाश्वनकृष्णहुलोहिताक्ष।जयजयतिप्रतर्दनजयप्रभूत।जयत्रिककुबधामहुयशअकूत८
जयकरनपातकिनकहँपवित्र।जयमंगलपरईशान मित्र॥जयप्राणदप्राणहुजेष्ठश्रेष्ठ।जयपरजापतिअतिकुमतिनेष्ठ॥९॥
जयहिरणगर्भभूगर्भधारि । जयमाधवमधुसूदनमुरारि ॥ जयईश्वरजयविक्रमीराम।जयधन्वीमेधावीअराम ॥ १० ॥
जयविक्रमजयक्रमकोशलेश।जयजयतिअनुत्तमद्वारकेश।जयदुराधर्षजयजयकृतज्ञ।जयजयकृतिआतमवंतप्रज्ञ११
जयजयसुरेशजयशरणशर्म।जयविश्वरेतधारकसुधर्म।जयजयतिप्रजाभवअहकृपाल।जयजयसंवत्सरजयतिव्याल१२
जयप्रत्ययसवदरशनप्रसिद्ध।जयअजसरवेश्वरजयतिसिद्ध॥जयसिद्धिजयतिसर्वादिश्याम।जयअच्युतजयसबअँगललाम।
जयजयतिवृपाकापिअमेयात्म।जयसर्वयोगविनश्रितमहात्म।जैवसुवसुमनससुसतिसमात्म।जैसंमितसमजैअमोघात्म॥१४॥
जैजयतिपुंडरीकाक्षदक्ष । जैजैवृषकर्माप्रवलपक्ष ॥ जयजयतिवृषाकृतिरुद्ररूप । जयबहुसिरजैबभ्रूअनूप ॥ १५ ॥
जैविश्वयोनिशुचिश्रवससत्य।जैअमृतशाश्वतस्थाणुनित्य॥जैवरारोहयादवप्रधान।जयजयतिमहातपप्रभुमहान १६
जयजयसर्वगसर्वहिविज्ञात।जयविष्वक्सेनहुभानुभात।जयजयतिजनार्दनजयतिवेद।जयजयतिवेदविदप्रदअषेद१७
अव्यंगजयतिवेदांगज्ञात।जयजयतिवेदविदकविविख्यात।जयजयतिसकललोकनअध्यक्ष।जैजयतिसकलदेवनअध्यक्ष
जैधर्माध्यक्षहुजैसुआत्म । जैजयतिकृताकृतचतुरआत्म।जैचतुरव्यूहजैचतुर्दंत।जैचारिबाहुभ्राजिष्णुसंत ॥ १९ ॥
जैजैभोजनभोक्तालखाभ । जैजैसहिष्णुजगदादिजाम ॥ जैअनवविजैजेतागोविन्द । जैविश्वयोनिआनंदकंद ॥२०॥
जैजयतिपुनर्वसुजैउपेंद्र । जैवामनजैप्रांसुव्रजेंद्र ॥ जैजैअमोघजयशुचिसरूप । जैऊर्जितअतिइंद्रहुअनूप ॥ २१ ॥
जैसंग्रहसर्गधृतात्मसोय।जैनियमजयतिजमवैद्यजोय ॥ जैवैद्यसदायोगीअकाम । वीरघ्नजयतिजयकृष्णराम ॥२२॥
जैमाधवजैमधुरमाकंत । जैअतींद्रियहुआधारसंत ॥ जैमहामायजैमहोत्साह । जैजयतिमहाबलयशअथाह ॥२३॥
जैमहाबुद्धिजैमहावीर्य्य । जैमहाशक्तिजैमहाधीर्य्य॥जैजयतिमहाद्युतिजगतवास । जैअनिर्देश्यवपुश्रीनिवास॥२४॥
जैअमेयात्मईश्वरमहान । जैमहाअद्रिधृतयुतविज्ञान॥जैमहेष्वासजैमहीभर्त्त । जैश्रीनिवासखलदलनदर्त्त ॥ २५ ॥
जैसंतनगतिअनिरुद्धशुद्ध । जैसुरानंदगोविंदबुद्ध ॥ जैजयतिगोविंदनपतिसुजान।जैजैमरीचिदमनोमहान ॥ २६ ॥
जैहंससुपर्नहुहिरणनाभ।भुजगोत्तमसुतपरुपदुमनाभ॥जैजयतिप्रजापतिजैअमृत्यु।जैजयतिसर्वदृससिंहसत्य॥२७॥
संधाताजैजैसंधिमान । जैथिरजैअजकरुणानिधान ॥ दुर्मर्षनशास्तहुविश्रुतात्म । जैसुरारिघ्नगुरुपरमआत्म॥२८॥
जैगुरुतमजैजैधामसत्य।जैसत्यपराक्रमरूपनित्य ॥ जैनिमिषजयतिअनिमिषसुमाल । जैवाचस्पतिव्रजकुंजसाल॥२९॥
जैबुधिउदारअग्रणीज्ञान।जैजयतिग्रामणीजैश्रीमान॥जयन्यायसमीरनजयनियंत । जयसहसशीर्षविश्वात्मसंत॥३०॥
जयसहसअक्षजयसहसपाद।जयआवर्त्तनजयधृतप्रयाद॥जयनिवृतआत्मसंवृतसुजान।जयसंप्रमर्दनहुअमलथान३१
जयजयअहसंवर्त्तकपरेश।जयवह्निअनिलधरणीधरेश।जयसुप्रसादजयप्रसन्नात्म।जयविश्वसृजकजयशुद्धआत्म ३२
जयविश्वभोजिविभुसतकरंत।जयजयसतकृतजयसाधुसंत॥जयजन्हुनरायननराकार।जयअसंख्येयअतिशैउदार३३
अप्रमेयात्मजयजयविशिष्ट।जैजयतिशिष्टकृतशुचिप्रतिष्ट॥सिध्यर्थसिद्धसंकल्पनाम।जयसिद्धिदसिद्धसाधनअराम॥
जयजयतिवृषाहीवृषभविष्णु।वृषपर्ववृषोदरवर्धइष्णु।जयवर्द्धमानजयजयविविक्त।जयजयश्रुतिसागरसुभुजानिक्त ३५
जयदुर्धरवाग्मीजयमहेंद्र।जयवसुदजयतिवसुजयगवेंद्र।जयजयअनेकवपुबृहद्रूप।सिपिविष्टप्रकाशनअवधभूप॥३६॥
जयओजतेजद्युतिधृतअनंत।जयप्रकाशात्मजयरमाकंत।जयजयतिप्रतापनऋद्धसोय।जयजयअसपष्टाक्षरहुजोय ॥
चंद्रांशुमंत्रभास्करप्रकास।जयअमृतांशूभवभानुभास॥शशबिंदुसुरेश्वरऔषधीश।जयजगतसेतुजयसत्यईश ॥३८॥
जयसत्यधर्मविक्रमअमान।जयभूतभव्यभवपतिमहान॥जयपौनजयतिपावनमुरारि।जैअनलजयतिमनसिजविदारि।
जयजयतिकामकृतकांतकाम।जयजयतिकामप्रदप्रभुललाम।जयजययुगादिकृतयुगावर्त्त।जैनैकमायबहुअसनकर्त्त
जयजयअदृश्यअव्यक्तरूप।जयजयसहस्रजितछविअनूप॥जयजयअनंतजितमोदधाम।इष्टहुविशिष्टशिष्टेष्टनाम४१
जयजयशिखंडिजयनहुषवीर।जयजयवृषजयक्रोधघ्नधीर।जयजयतिक्रोधकृतकर्त्रिकृष्णु।जयविश्वबाहुमहिधरसुविष्णु

जयजयअच्युतजयप्रथितप्रान।जयप्रानदइंद्रानुजप्रधान॥जयजयतिअंबुनिधिअधिष्ठान।जयअप्रमत्तभगवानज्ञान॥
असकंदप्रतिष्ठितजैतिराम । असकंदधारजैध्रुवधाम ॥ जैवरदवायुवाहनमहान । जैवासुदेवजैबृहदभान ॥ ४४ ॥
जैजयतिपुरंदरआदिदेव । जैजैअशोकतारणसुभेव ॥ जैतारशूरजैशौरिशुद्ध । जैजयतिजनेश्वरशुद्धबुद्ध ॥ ४५ ॥
जैजैअनुकूलहुशतावर्त । जैपद्मीदासनदुःखदर्त ॥ जैपद्मनिभेक्षणपद्मनाभ । जैअरविंदाक्षअनूपआभ ॥ ४६ ॥
जैपद्मगर्भजैभृतशरीर । जैजैमहर्धिजैऋद्धधीर ॥ वृद्धात्मजयतिजैजैमहाक्ष । जैगरुडध्वजजैविशालाक्ष ॥ ४७ ॥
जैअतुलशरभजैजयतिभीम । समयज्ञहविर्हरिधर्मसीम॥जैसर्वलक्षणलक्षण्यनाथ।जैलक्ष्मीपतिजैकरसनाथ ॥ ४८ ॥
जैसमितिंजयविक्षरललाम । जैरोहितमार्गहुहेतुराम ॥ दामोदरसहजैसुरसहाय । जैजयतिमहीधरमोददाय ॥ ४९॥
जैमहाभागजैवेगवान । जैजैअमिताशनमोदमान ॥ जैउद्भवक्षोभणजयतिदेव । श्रीगर्भहुपरमेश्वरसुसेव ॥ ५० ॥
जयकरणजयतिकारणहुकर्त । जैगहनगुहाजैजैविकर्त॥जैजैव्यवसायहुव्यवस्थान । जैसंस्थानस्थानदमहान॥५१॥
जैध्रुवंपरर्धिजैपरमस्पष्ट । जैतुष्टपुष्टशुभनयनइष्ट ॥ जैजयतिरामजैजैविराम । जैविरजजयतिमार्गहुललाम ॥५२॥
जैनिजभक्तनकेसततुनेय । जैनयजैअनयहुदेवधेय ॥ जैवीरशक्तियुतश्रेष्ठनाथ । जैधर्मधर्मधरकरसनाथ ॥ ५३ ॥
जैजैविकुंठजैपुरुषप्रान । जैप्राणदप्रणवहुपृथुप्रधान॥जैहिरण्यगर्भशत्रुघ्नव्याप्त । जैवायुअधोक्षजऋतुसुआप्त ॥५४॥
जैजयतिसुदर्शनजयतिकाल । जैपरमेष्ठीपरिग्रहकृपाल ॥ जैउग्रजयतिसंवत्सरेश । जैदक्षजयतिविश्रामवेश॥५५॥
जैविश्वदक्षिणहुजगअधार । जैविस्तारहुजैनंदकुमार ॥ जैस्थावरस्थाणुहुजैप्रमान । जैजैबीजहुजैजैअमान ॥५६॥
जैजयतिअर्थजैजैअनर्थ । जैमहाकोपजैजैसमर्थ ॥ जैजयतिमहाधनमहाभोग । जैअनिर्विण्णजैजगतरोग ॥ ५७ ॥
जैजैथविष्टभुवधर्मयूप । जैजयतिमहामखवपुअनूप ॥ जैजैनक्षत्रिनक्षत्रनेमि । जैछमहुजयतिजैछामछेमि ॥ ५८ ॥
जैजयतिसमीहनयज्ञइज्य । जैक्रतुजैसत्रहुजैमहेज्य ॥ जैसंतनकेगतिसर्वदर्सि । जैविमुक्तात्मसर्वज्ञहर्सि ॥ ५९ ॥
जैजैसुव्रत्यउत्तमहुज्ञान । जैसुमुखजयतिसूक्षममहान ॥ जैजैसुघोषजैसुखदभूरि । जैसुहृदमनोहरसुछविपूरि॥६०॥
जैजैजितक्रोधहुवीरबाहु।जैजयतिविदारणदुष्टदाहु॥जैस्वापनस्ववशहुजयतिव्यापि।जैजैअनेकआतमप्रतापि ॥६१॥
जैजैअनेककर्मनिकरंत । जैवत्सरवत्सलनाथसंत ॥ जैवत्सिजयति जैरत्नगर्भ । जैजयतिधनेश्वरनंदअर्भ ॥ ६२ ॥
जैधर्मरक्षधर्महिकरंत । जैधरमीपालकसदासंत ॥ जैम्दसतक्षरअक्षरअज्ञात । जैसहस्रांशुजैजैविधात ॥ ६३ ॥
जैकृतलक्षणहुगभस्तिनेमि । सत्वस्थसिंहजैकृतसोर्मि ॥ जैभूतमहेश्वरआदिदेव । देवेशदेवभृतमहादेव ॥ ६४ ॥
जैगुरुउत्तरगोपतिललाम । जैगोप्ताज्ञानगम्यहुअराम॥जैजयतिपुरातनप्रभुअकाम । जैदेहभूतभृतभोक्तृश्याम॥६५॥
जैभूरिदक्षिनजैजैउपेंद्र । जैसोमपअमृतपजैमहींद्र ॥ जैसोमजयतिपुरुजितव्रजेश । पुरुसत्तमजैजैविनयवेश॥६६॥
जैसत्यसधदाशार्हवीर । जैसात्वतपतिजैजीवधीर ॥ जैजैविनायितसाक्षीमुकुंद ॥ जैअमितविक्रमहुवदनचंद॥ ६७ ॥
जैजैअंभोनिधिअनंतात्म।जैजयतिमहोदधिसैमहात्म।जैजयअंतकअजमहाअर्ह।जैजैस्वभाव्यशुचिजसअगर्ह॥६८॥
जैजयतिप्रमोदनजितामित्र।आनंदनंदनहुनंदामित्र॥जयजयतित्रिविक्रमसत्यधर्म।जयकपिलाचार्य्यमहर्षिसर्म॥६९॥
जयजयतिमेदिनीपतिकृतज्ञ।जयत्रिपदत्रिदशअध्यक्षप्रज्ञ ॥ जयजयकृतांतकृतमहाशृंग।जयमहावराहगोविंदअंग ॥
जयकनकअंगदीजैसुखैन।जयगुह्यगंभीरहुगहनचैन॥जयगुप्तचक्रअरुगदाधारि।जयवेधस्वांगअजितहुखरारि ॥७१॥
संकर्षणजैदृढकृष्णनाथ।जयवरुणवारुणहुअच्युताथ॥जयवृक्षजयतिजैपुष्कराक्ष।जयमहामनहुभगवानस्वाक्ष ॥७२॥
जयजयभगघ्ननंदीकृपाल।जयवनमालीहलधरविशाल ॥ आदित्यज्योतिआदित्यवेश।जयजयसहिष्णुगतिसत्तमेश॥
जयखंडपरशुजैजैसुधन्व।जयद्रविणप्रदहुदारुणअकन्व॥जयजयतिदिणवस्पृकसर्वदर्स।जयवाचस्पतिजैव्यासहर्स ७४
जयजयतिअजोनिजजैत्रिसाम।जयजयसामगनिर्वाणसाम॥जयभेषजभिषजसन्यासकारि।जैसमजैशांतहुनिर्विकारि॥
जयनिष्ठाशांतिहुसुभगअंग।जयजयतिपरायणजसअभंग॥जयशांतिदस्रष्टाकुमुदकांत।जयकुवलेशैगोहितसुशांत७६
जयगोपतिगोप्तावृषभअक्ष।जयवृषाप्रियअनवर्तीप्रत्यक्ष॥जयनिवृत्तात्मसंक्षेमृक्षेम।जयजयतिक्षेमकृतशिवसुनेम ७७॥
जयश्रीवक्षसश्रीवासश्रीद।श्रीमंतश्रेष्ठश्रीपतिप्रसीद ॥ जयश्रीनिवासजैजयतिश्रीश।जयश्रीविभावनहुश्रीनिधीश ७८
जयश्रीकरश्रीधरजयतिश्रेय।जयश्रेयश्रीमानविरंचिधेय॥जयलोकत्रयाश्रैस्वच्छस्वंग।जयशतानंदनंदीअभंग ॥७९॥
जयज्योतिगनेश्वरविजितआत्म।जयअविधेयात्मजैजैपरात्म।जयजयतिछिन्नसंशयउदीर्ण।जैजैसतिकीरतिबलअजार्ण
सर्वत्रचक्षुजैजैअनीश।जयशाश्वतथिरभूशयमहीश ॥ जयभूषणभूतिविशोकराम।जयजयतिशोकनाशनअकाम८१॥

जयदुःकृतिघ्नजयपुण्यशील।दुःस्वप्नविनाशनजयसुशील १२१ जीवनरक्षनवीरघ्नसंत।जयजयतिपर्यवस्थितअनंत॥
जयजयअनंतश्रीविजितमन्नु।जैजैतिभयापहप्रबलधंनु॥जयजयचतुरस्त्रगभीरआत्म।जैविदिशव्यादिशहुदिशअनात्म
जैजैअनादिभूर्भुवलधाम।जयजयसुवीरलक्ष्मीअकाम॥१२३॥जयरुचिरांगदजयजननईस।जनजन्मादिहुसुक्विवीस॥
जयभीमपराक्रमभीमकर्म।आधारनिलैधातासुधर्म १२४ जयजयतिप्रजागरपुष्पहास।जयऊर्ध्वगप्रभुलक्ष्मीनिवास॥
जयजयतिसत्पथाचारज्ञान।जयप्राणदप्रणवहुपणप्रमान ॥ जयप्राणनिलयजयप्राणभर्त । जैजैतिप्राणजीवनशुभर्त ॥
जयतत्वतत्ववितजयइकात्म।जैजन्महुमृत्युजरातिगात्म१२६जयभूर्भुवस्वःतरुस्तार।जयसपिताप्रपितामहउदार ॥
जैयंयज्ञयज्ञपतियज्वरूप।यज्ञागयज्ञवाहनअनूप ॥ १२७ ॥ जयजयतियज्ञभृतयज्ञकारि।जैयज्ञीयज्ञभुजीमुरारि ॥
जयजयतियज्ञसाधनपरेश।जययज्ञअंतकृतजैरमेश ॥१२८॥जययज्ञगुह्यअन्नादअन्न।स्वयजातआत्मयोनिहुप्रसन्न ॥
वैखानसामगायनगोविंद । जयजयस्रष्टादेवकीनंद ॥ १२९ ॥ जैजैतिपापनाशनक्षितीश । जैजैतिशंखधारीमहीश ॥
जयजयचक्रीनंदकीनाथ।जयजयकोदंडशारंगहाथ १३०जयजयतिगदाधररमाजानि।जैजयतिअछोभ्यरथांगपानि ॥
जयसर्वप्रहरणायुधउदार । रघुराजदीनकेजयअधार ॥ १३१ ॥

दोहा–सहसनामयहमैंकह्यौं, तुकहितऔरमिलाय । छंदभंगनहिंहोयजेहि, सोबुधलिहेहुलगाय ॥ १ ॥

जययदुनंदनदीनदयाला । दासनकेरक्षकसबकाला ॥ तुमसमानको अधमउधारी । तुम्हैंलैवैयासुरतिहमारी ॥ २ ॥
अहैभागवतसहसअठारा । सत्यसत्यप्रभुरूपतुम्हारा ॥ ३ ॥ जानिंदीनकरिकृपामहाई । मेरेहियेबैठियदुराई ॥ ४॥
रच्योसुभगभाषाकरपंथा । आनंदअंबुधिनामकग्रंथा॥५॥यामेंनहिंकछुमोरिसपूती । हैसबयदुपतिकीकरतूती ॥६॥
जानहुँमैंनछंदकीचाली।कव्यशास्त्रमेंमतिनविशाली॥७॥अहैशक्तिनहिंकछूरचनकी।नहिंसहूरकछुवदनवचनकी ८॥
मोतेंहिसकहैनहिंदूजो।सबपापिनप्रधानकरिपूजो ॥९॥ अतिशयहौंचंचलचितवारो।होतनधर्महिकरनविचारो॥१०॥
मोतेअधिकनकोउकलिकामी।डरहुँनकबहुँहोनबदनामी११प्रभुकीसुरतिहोतिहियनाहीं।खड़ोरहौंजगजालहिमाहीं॥

दोहा–अधमअलालहुआलसी, करहुँअनुचितैकर्म । चलतिमोरमतिसर्वदा, करिबेहेतअधर्म ॥ २ ॥

कहँलगिअपनेऔगुणगाऊँ । जोगाऊँतोपारनपाऊँ ॥ १ ॥ ऐसेहुपतितलाजतेहीना । दीनदयालजानिअतिदीना ॥
मेरेहियेबैठियदुराई । आनँदअँबुधिदियोबनाई ॥ ३ ॥ यामेंरहेसहायकदोई । तिनकेनामकहौंमुदमोई ॥ ४ ॥
दक्षिणयादवाद्रिकेवासी।अतिसुशीलसुंदरमतिरासी ॥५॥ जिनकोनामअनंताचारी । तिनकेपुत्रनृसिंहाचारी ॥ ६॥
रंगाचार्यपुत्रहैतिनके।शीलस्वभावअनूपमजिनके॥७॥न्यायवेदांतव्याकरणआदिक।सकलशास्त्रज्ञाताभरयादिक८॥
जतिघंटावतारपरकाला । तिनकेशिष्यसुबुद्धिविशाला॥९॥करिदायारीवाँपगुधारे।भयेसहायकआयहमारे ॥ १०॥
मोहनार्जिकेशिष्यमहाना।रामचंदपादार्यसुजाना॥११॥तासुशिष्यश्रीअवधनिवासा।नामजासुरामानुजदासा॥१२॥

दोहा–रतनसिंहासनकेविमल, सोइमहंतपरवीन । रामायणअरुभागवत, मोहिंपढ़ायजोदीन ॥ ३ ॥

वेदांतादिशास्त्रकेज्ञाता।शीलस्वभावप्रभावविख्याता॥१॥तेऊकृपाकरिभयेसहायक।मोकोअतिआनँदकेदायक॥२॥
जिंदारामनामजिनकेरो । सकलप्रधानप्रधाननिवेरो ॥ ३ ॥ ठाकुररामपुत्रभोतिनको।रामनाथनंदनभोजिनको ॥४॥
रामभक्तशुभबुद्धिउदारा।करतसकलरसकाव्यअपारा ॥ ५ ॥मेरेपितुकोतीजोमंत्री । विद्यमानहैधर्मनिजंत्री ॥ ६ ॥
हैताकोनंदनहनुमाना । सोईलिख्योयहग्रंथमहाना॥७॥ संवतओनइससैसुखछावन । सालसातकोपरमसुहावन॥८॥
कातिकमासअरंभहिकीनो । आनँदअँबुधिग्रंथनवीनो॥९॥रचतबीतिगैबरषाहिचारी।कियोकृपाकरिपारमुरारी॥१०॥
ओनइससैग्यारहकोसाला।पूसमासगुरुवारविशाला॥११॥कृष्णपक्षदशमीसुखदाई।धनकीजबसंक्रांतिहुआई ॥१२॥
आनँदअंबुनिधिहिशुभग्रंथा।जोसंतनसंततसतपंथा॥१३॥तबयहग्रंथसमापतभयऊ।ममवांछितपूरणह्वैगयऊ॥१४ ॥

दोहा–सत्यसत्यमैंकहतहौं, दोऊहाथउठाय । मेरीनहिंकरतूतिकछु, सबकीन्हींयदुराय ॥ ४ ॥

भयोसमाप्तग्रंथबडभागा । बैठेशुभथललछिमनबागा॥१॥जयहरिगुरुमुकुंदपदकंजू। निजदासनकेभवभ्रमभंजू॥२॥
जिनकेसुमिरणकियेसदाहीं।रहतकलेशलेशतननाहीं॥३॥सोइभवसागरकोहैपोतू । तमअज्ञानकोभानुउदोतू ॥ ४॥
किंकरकुमुदकलानिधिसोई।भवफाँसीकाटनअसजोई॥५॥अघनगहनकोदहनकराला।दासमरालअमीरसताला ॥६॥
तपिततापत्रयजीवनकाहीं।प्रेमपयोनिधिसोईसदाहीं॥७॥जनमनमधुपसुखदअरविंदा।भवरुजहरणअमीकरकंदा ८॥
यदुपतिपुरकोकरनपयाना।हरिदासनकोसोईसुपाना॥९॥स्वातिबुंदचातिकदासनके।कलपवृक्षपुजवनआसनके १०

अहैगारुडीकालव्यालके।हैंसुरसरिकलिमलकरालके ११ पंथीपतितनशीतलछाया।कुमतितिमिरकेदीपनिकाया १२

दोहा-तेईहरिगुरुचरणको, पायप्रचंडप्रताप । रच्यौग्रंथरघुराजयह, सुनतमिटतभवताप ॥ ५ ॥

पितुविशुनाथचरणसुखगाथा । वंदहुँहाथजोरिधरिमाथा ॥ जिनकेचरणनरहीसदाहीं । महीमहीपमुकुटमणिछाहीं॥ कविकोविदकल्पद्रुमजोई । सज्जनसरसिजसवितासोई ॥२॥ धरणीमेंध्रुवधर्मअधारा । नीतिनिपुणधर्मज्ञउदारा॥४॥ ज्ञानविज्ञानवारिनिधिसाँचो।रघुपतिचरणकमलरतिराँचो॥दीननदारिदवनकोपावक।विरचकउक्तियुक्तिशिरनावक। ईशसरिसपालकपरिवारा।अधरमदरनदेवधुनिधारा ७ सुहृदकुमुदगणशशिसुखछावन।सरितद्वैतमतशैलसुहावन॥ रघुपतिरसरतनकोआकर।जनअज्ञानतमहरनदिवाकर॥शुभगुणजलचरजलनिधिभारी।दाननतरुकाननसुखकारी॥ शूरपुरुषगिरिमध्यसुमेरा।शीलविहंगकोथानबसेरा॥११॥कीर्तिचंद्रिकाचारुचंद्रमा।द्वितियविधाताकरनभद्रमा१२॥

दोहा-यकमुहमैंकिमिकहिसकौं, पितुविशुनाथप्रभाउ । जासुकृपातेमोहुसम, रच्योग्रंथभरिचाउ ॥ ६ ॥

शुद्धअशुद्धभयोजोहोई । सुमतिसुधारिलिहैंसबकोई ॥ मैंभागवतअर्थसबलीन्ह्यों । तेहिअनगुनभाषाकरिदीन्ह्यों॥ हरिवंशहुअरुभारतआदी । औरहुबहुपुराणमरयादी॥३॥गर्गसंहिताआदिककेरी । कथारुचीजोजोमतिमेरी ॥ ४ ॥ कहुँकहुँतेहिसनबंधविचारी।मैंलिखिदियोंसुमतिमनहारी।कृष्णचरितअतिसुखदविचारी।सुनहुसुमतियहविनयहमारी मैंअतिकरिकैउरहिढिठाई । जोकछुबन्योसोदियोबनाई॥पैअसमनमेंअहैभरोसू । हरियशगुनिकोउकरीनरोसू ॥ ८॥ सज्जनप्रीतिसहितमुदमोई । आनँदअंबुधिग्रंथहिजोई ॥ ९ ॥ पढ़ैसुनैजोप्रीतिसमेतू । भगवतदाससमाजसमेतू ॥ तिनकोबहुहैमोरप्रणामा । मोपरकृपाकरहिंमतिधामा ॥११॥ देहिंहरिहियहविनयसुनाई । रघुराजहिलीजैअपनाई॥

दोहा-जयरघुपतियदुपतिजयति, रघुनंदनयदुराज । मोमनअपनेवशकरहु, विनयकरतरघुराज ॥ ७ ॥

इति सिद्धिश्रीमन्महाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरबांधवेशश्रीविश्वनाथसिंहदेवात्मज सिद्धिश्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाश्रीराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रकृपापात्राधिकारिश्री रघुराजसिंहजूदेवकृते आनन्दाम्बुनिधौ द्वादशस्कंधः समाप्तः ॥ १२ ॥

दोहा-आनँदअंबुधिग्रंथको, बारहवोंअस्कंध । यहसमाप्तमुद्रितभयो, संयुतछंदप्रबंध ॥ १ ॥
सोध्योदुर्गादत्तद्विज, इहिनिजमतिअनुसार । जातेलखिआनँदलहैं, श्रीरघुराजउदार ॥ २ ॥
याहीठौरसमाप्तहू, भयोसुभगयहग्रंथ । जातेनिर्मलहोतहै, उभयलोककोपंथ ॥ ३ ॥
व्यासकथितभारतविषै, जेहरिनामहजार । तेहूयाकेअंतमैं, कहेसुकलसुखसार ॥ ४ ॥
आनँदअंबुधिग्रंथमें, जिनजिनलायोचित्त । तिनतिनकेआसीसको, देतबनायकवित्त ॥ ५ ॥

कवित्त-मंगलहमेशताकेग्रंथविरच्योहैजिन, मंगलहमेशरहैयाहिकेलिखैयाकी ।
मंगलहमेशतिन्हैंसीखैंजेसुप्रेमकरि, मंगलहमेशपुनियाहिकेसिखैयाकी ॥
मंगलतिन्हैंहूयाकीकथाजेबखानैंबैठि, मंगलहमेशयाकेरसकेचिखैयाकी ।
मंगलहमेशयाकेशोधककीबोधककी, मंगलहमेशयाकेदानीकीदिखैयाकी ॥ १ ॥

कवित्त-भारतकेभूपनकैभोगभोगिवेकीभली, भईहैबड़ाईकहँरीतिचलीआईहै । रीमाकेनरेशनकीतजतजभोगभले, भजभजभगवतभौनकीर्तिछाईहै ॥
वेंकटरमणसिंहदेवजूकोयशजग, जाहिरभोंमेंचारुचंद्रिकासीछाईहै । दानिनमेंदानशूरज्ञानिनमेंज्ञानशूर, रीझखीझबेमेंयक्षराजयमराईहै ॥ १ ॥
वेंकटेशजूकोवंशबषजाकहियेंबसे, ऐसेजोनरेशरीमाराजधानीवारेहैं । वेंकटरमणदेवसिंहजूकोयशजग्यो, जानचहैंदरशकोवृद्धअरुवारेहैं ॥
चातुरीचमकीचहुँओरभारीकरशोर, सुनसुनशत्रुसंघर्शीतलहैहारेहैं । धनिधनिसांईमजाभारतकोभोगभोग्यो, ऐसेगुणकूपभूपजाकेरखवारेहैं ॥२॥
जनककोयशजगजगाबेकोजाहिदीन्ह्यों, आनंदांबुनिधिग्रंथमुद्रणकेहेतहै । भवतरबेमेंसांतोकालिकालमाहँऐसो, सिंधुतरबेकोमानोरघुमनिसेतहै ॥
श्रेष्ठिखेमराजसोतोमुद्रितमकाशकीनो, धनउतसाहकेमवाहकेसमेतहै । ऐसोयहग्रंथसूर्यचंद्रमंडलकेसाथ, जगमेंमकाशिरहोकृष्णभक्तहेतहै ॥ ३ ॥
निजसुतयुतमाजीसाहिबजगतहित, कीनोउपकारजोतोदोनोंलोकसारहै । आनंदांबुनिधिनिजयशकेउजारबेको, बहुधनयुतदीनोवेंकटेशद्वारहै ॥
श्रेष्ठिखेमराजनिजमस्तकबिराजपुनि, पत्रलिखदीनोपायोमुद्रणकरारहै । अतिशुद्धस्वच्छइसग्रंथकोतयारकीनो, अतिशीघ्रभेटदीनोरीमादरबारहै ४॥

सवैया-रीमानरेशकेपुण्यकीसीमाको, पारनपायोकवीशहुहारे । भक्तनिमज्जनहेतुरच्यो, जिनआनँदअंबुधिग्रंथसुढारे ॥
सोयहग्रंथसुधायछपायकै, श्रीखेमराजसंभांहैउजारे । शोधकजाकैहैदेवचरण्ण, अवस्थीउन्नावमेंबद्रकावारे ॥ ५ ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेंकटेश्वर" छापाखाना-मुंबई.